आनन्दाम्बुनिधिकी-

प्रस्तावना।

प्यारे विचारशील सज्जनो ! यह अमूल्यरत्नरूप नरशरीर लब्ध होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष संपादन करना अत्यावश्यक है शरीर बडी कठिनतासे लब्ध होताहै; परंतु भगवत्कृपा विना तो यह मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता, इसलिये हरिशरणागति सिद्ध करनेवाली है, क्योंकि कलिमेंतो मोक्षभी हरिभक्तिद्वारा ही कहा है जैसे " कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा " हरिभक्तिको पुष्ट करनेवाला श्रीमद्भागवतसे भिन्न अन्य शास्त्र नहीं, इसीकारण परमज्ञानी महर्षि शुकदेवजीने श्रीमद्भागवतका और निदिध्यासन रक्खा है जैसे " पठन्भागवतं शनैः " अर्थात् शनैः शनैः श्रीमद्भागवतका पाठ करते हुए शुकदेवस्वामी राजा णार्थ गंगातटपर प्राप्त हुए। (प्रश्न) भागवतमें ऐसी सर्वोपरि कल्याण करनेवाली शक्ति कहाँसे आई (उत्तर) भगवान् श्रीकृ- प्रति कहा है कि, हे उद्धव ! यह श्रीमद्भागवत " पुराणार्कोधुनोदितः " अर्थात् पुराणोंमें सूर्यरूप है और हे उद्धव ! जगत्के हम अपना तेज प्रविष्ट करके भूतलमें स्थापनकर वैकुंठ धामको जायँगे। इसलिये शेष आदिकोंने गाया है माहात्म्य जिसका ागवतका माहात्म्य हम स्वल्पबुद्धि एक मुखसे कैसे कहसकते हैं ? और जो कुछ कहैं भी तो वह पिष्टपेषणसे कुछ पृथक् न कहा- स वृत्तान्तको यहीं समाप्त करते हैं। अब जिस पद्यभाषात्मकटीकारत्न " आनन्दाम्बुनिधि " नाम टीकासे भूषित होकर जो यह र हुआहै उसकी प्रशंसा लिखे विना तो चित्तको तृप्तिही नहीं होती है इस कारण कुछ लिखते हैं। भागवतशिरोमणि, परमका- सी रीवाँनरेश श्रीमहाराजाधिराज श्री १०८ श्रीरघुराजसिंहजूदेवने वेदव्यासजीके समान बहुत भाषाग्रंथ निर्माण कर चित्त शांत त्माओंकी प्रेरणासे चित्तशांतिके लिये-ब्रह्मवैवर्त्त, हरिवंश, वायुपुराण, गर्गसंहिता, नृसिंहपुराण, विष्णुपुराण और रामायण इत्या- वात्त अतिरोचक कथायें लेकर श्रीमद्भागवतकी पद्य भाषात्मकटीका " आनन्दाम्बुनिधि " नामक निर्माणकी है। इस टीकामें नृप- के सर्व अंग ऐसे दरशाये हैं कि, इसको पढते २ भक्ति रसिकजनोंकी रुचि यहाँतक बढती चली जाती है कि, इसको छोड़नेको त् नहीं चाहता, विशेष क्या लिखें पद्यबंध भाषाकाव्योंमें महात्मा तुलसीदासजी और सूरदासजीकी कविताके समान अन्य कविता इस " आनन्दाम्बुनिधि " के विख्यात न होनेके कारण इसकी प्रशंसा लिखनेमें हम को संकोच करना पड़ता है। जब इसकी जायगी तब तो भक्त कविजन स्वयं ही कहने लगेंगे कि, हाँ कविता अत्युत्तम होनेके कारण तुलसीदासजी और सूरदासजीकी न नहीं है। बड़े शोकका स्थल है कि, साधारण कविजन महात्माओंकी वाणी मानकर रामायण और सूरसागरकी प्रशंसा राजाकी वाणी मानकर आनन्दाम्बुनिधिकी प्रशंसा नहीं करेंगे, परन्तु ऐसा नहीं, उक्त महाराजासाहिब तो महात्माही थे। जिन्होंने राज्य करते हुए भी राजाजनकके समान मोक्ष संपादन किया। यदि सुहृद् कविजन पक्षपातको छोड़कर कविता मात्रको दाचित यह नहीं कहेंगे कि, तुलसीकृत रामायण और सूरसागरकी अपेक्षा यह कुछ नीरस कविता है। बड़े संदेहका स्थलहै कि ाधिक वस्तुओंका न्यूनाधिकभावकी परीक्षा उत्तम परीक्षक विना नहीं होसकती। यदि गोस्वामी तुलसीदासजी और सूरदासजीके ह ग्रंथ होता तो वे महात्मा स्वयं राजाकी कविताकी प्रशंसा करते। अथवा अब तो संदेह होनेके कारण हे सरस्वति देवि ! आपसे : रामायण और सूरसागरके सदृशगुणोंवाली आनंदाम्बुनिधिकी प्रभा हमको चंद्रप्रभाके समानही प्रतीत होती है परंतु यथार्थ- से यह सर्वके, क्योंकि चंद्रप्रभाके रसको जाननेवाला तो एक चकोरपक्षी ही है वहां आप नहीं फुरती और जहां शुकमुखमें आप फुरती चंद्रप्रभाके रसको नहीं जानता, हाँ यदि आप कृपाकरके शुकमुखकी समान चकोरमुखमें फुरो तो यह चकोर कह सकता है कि, और महाराजासाहिबकी कविताकी प्रभामें यह अन्तर है। अब विशेष लिखना व्यर्थ है, क्योंकि सागरका माप कभी गागरमें समा फिर न्याय भी है कि " प्रत्यक्षे किं प्रमाणम् " अर्थात् प्रत्यक्षमें प्रमाणका क्या प्रयोजन इसको प्रत्यक्ष देखनेसे आप महाशयोंको विदित हो ही जायँगे। यह " आनन्दाम्बुनिधि " ग्रंथ राज्यसिंहासनासीन रीवाँनरेश महाराजासाहिब श्री १०८ श्रीवेङ्कटरमण सिंहजू- का यश विख्यात होनेके कारण मुद्रित करनेके लिये हमको आज्ञा दी। उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर हमने निज " श्रीवेङ्कटेश्वर " यंत्रा- त कर प्रकाशित किया है और भी महाराजासाहिबके निर्माण किये 'भक्तमाला (रामरसिकावली) रामस्वयंवर, रुक्मिणीपरिणय, जगदी- पुराजविलास, आनन्दाम्बुनिधि इत्यादि ग्रंथ तो हमारे यहां मुद्रित होकर तैयार हो चुकेहै' और 'धर्मविलास, शंभुशतक, सुभगशतक, त्यासर, सुंदरशतक, गंगाशतक, मीटाचलपतिशतक, चित्रकूटमहिमा, पदावली, रघुराजविलास, विनयपत्रिका, विनयप्रकाश, राज- ग्रंथ मुद्रित होनेवाले हैं इसलिये उक्त महाराजासाहिबको कोटिश: धन्यवाद देते है कि, जो अपने वंशके यशके लिये रत्नरूप ग्रंथ प्रका- य २ जगद्धितैषी होरहे है। उक्त महाराजासाहिबकी विद्यार्थिता, स्वधर्मरुचि, दृढ भक्तिरुचि, दानशूरता, रणशूरता, नीतिज्ञता, तावरता इत्यादि स्वाभाविकगुणोंको सुन २ हर्षसे रोमांचित हुए हम परमकारुणिक श्रीवेङ्कटेश्वर भगवान्से नित्य यह प्रार्थना करते हैं ! ! उक्त महाराजासाहिब, हृदयाकाशमें राज्यसिंहासनारूढ हुए, सज्जन सरसिजको प्रकाश करते हुए कमलदलके सदृश निज मुद्रित करते हुए तरणि तारानाथके समान भारतभूमिको विभूषित करो. अंतमें सज्जन रसिक महाशयोंसे प्रार्थना है कि, यदि कोई स्थल में अशुद्धि रहगई हो तो उसे क्षमाकरें. इत्यलम्.

गुणिजनकृपाभिलाषी-

क्षेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष

आनन्दाम्बुनिधिकी-

प्रस्तावना।

...रे विचारशील सज्जनो! यह अमूल्यरत्नरूप नरशरीर लब्ध होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष संपादन करना अत्यावश्यक है ...र बड़ी कठिनतासे लब्ध होताहै; परन्तु भगवत्कृपा विना तो यह मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता, इसलिये हरिशरणागति ... करनेवाली है, क्योंकि कलिमेंतो मोक्षभी हरिभक्तिद्वारा ही कहा है जैसे "कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा" ... हरिभक्तिको पुष्ट करनेवाला श्रीमद्भागवतसे भिन्न अन्य शास्त्र नहीं, इसीकारण परमज्ञानी महर्षि शुकदेवजीने श्रीमद्भागवतका और निदिध्यासन रक्खा है जैसे "पठन्भागवतं शनैः" अर्थात् शनैः शनैः श्रीमद्भागवतका पाठ करते हुए शुकदेवस्वामी राजा ... गंगातटपर प्राप्त हुए। (प्रश्न) भागवतमें ऐसी सर्वोपरि कल्याण करनेवाली शक्ति कहाँसे आई (उत्तर) भगवान् श्रीकृ... प्रति कहा है कि, हे उद्धव! यह श्रीमद्भागवत "पुराणार्कोधुनोदितः" अर्थात् पुराणोंमें सूर्यरूप है और हे उद्धव! जगत्के ... हम अपना तेज प्रविष्ट करके भूतलमें स्थापनकर वैकुंठ धामको जायँगे। इसलिये शेष आदिकोंने गाया है माहात्म्य जिसका ... माहात्म्य हम स्वल्पबुद्धि एक मुखसे कैसे कहसकते हैं? और जो कुछ कहैं भी तो वह पिष्टपेषणसे कुछ पृथक् न कहा... वृत्तान्तको यहीं समाप्त करते हैं। अब जिस पद्यभाषात्मकटीकारत्न "आनन्दाम्बुनिधि" नाम टीकासे भूषित होकर जो यह ... हुआहै उसकी प्रशंसा लिखे विना तो चित्तको तृप्तिही नहीं होती है इस कारण कुछ लिखते हैं। भागवतशिरोमणि, परमका... रीवाँनरेश श्रीमहाराजाधिराज श्री १०८ श्रीरघुराजसिंहजूदेवने वेदव्यासजीके समान बहुत भाषाग्रंथ निर्माण कर चित्त शांत ... प्रेरणासे चित्तशांतिके लिये-ब्रह्मवैवर्त्त, हरिवंश, वायुपुराण, गर्गसंहिता, नृसिंहपुराण, विष्णुपुराण और रामायण इत्या... अतिरोचक कथायें लेकर श्रीमद्भागवतकी पद्य भाषात्मकटीका "आनन्दाम्बुनिधि" नामक निर्माणकी है। इस टीकामें नृप... सर्व अंग ऐसे दरशाये हैं कि, इसको पढते २ भक्ति रसिकजनोंकी रुचि यहाँतक बढती चली जाती है कि, इसको छोडनेको ... नहीं चाहता, विशेष क्या लिखें पद्यबंध भाषाकाव्योंमें महात्मा तुलसीदासजी और सूरदासजीकी कविताके समान अन्य कविता ... "आनन्दाम्बुनिधि" के विख्यात न होनेके कारण इसकी प्रशंसा लिखनेमें हम को संकोच करना पड़ता है। अब इसकी ... तो भक्त कविजन स्वयं ही कहने लगेंगे कि, हाँ कविता अत्युत्तम होनेके कारण तुलसीदासजी और सूरदासजीकी नहीं है। बडे शोकका स्थल है कि, साधारण कविजन महात्माओंकी वाणी मानकर रामायण और सूरसागरकी प्रशंसा राजाकी वाणी मानकर आनन्दाम्बुनिधिकी प्रशंसा नहीं करेंगे, परन्तु ऐसा नहीं, उक्त महाराजासाहिब तो महात्माही थे। ... राज्य करते हुए भी राजाजनकके समान मोक्ष संपादन किया। यदि सुहृद् कविजन पक्षपातको छोड़कर कविता मात्रको ... चित यह नहीं कहेंगे कि, तुलसीकृत रामायण और सूरसागरकी अपेक्षा यह कुछ नीरस कविता है। बडे संदेहका स्थलहै कि ... वस्तुओंका न्यूनाधिकभावकी परीक्षा उत्तम परीक्षक विना नहीं होसकती। यदि गोस्वामी तुलसीदासजी और सूरदासजीके ... होता तो वे महात्मा स्वयं राजाकी कविताकी प्रशंसा करते। अथवा अब तो संदेह होनेके कारण हे सरस्वति देवि! आपसे रामायण और सूरसागरके सदृशगुणोंवाली आनंदाम्बुनिधिकी प्रभा हमको चंद्रप्रभाके समानही प्रतीत होती है परंतु यथार्थ... से यह स्पष्ट है, क्योंकि चंद्रप्रभाके रसको जाननेवाला तो एक चकोरपक्षी ही है वहां आप नहीं फुरती और जहां शुकमुखमें आप फुरती ... द्रप्रभाके रसको नहीं जानता; हाँ यदि आप कृपाकरके शुकमुखकी समान चकोरमुखमें फुरो तो यह चकोर कह सकता है कि, ... महाराजासाहिबकी कविताकी प्रभामें यह अन्तर है। अब विशेष लिखना व्यर्थ है, क्योंकि सागरका जल कभी गागरमें समा... फिर न्याय भी है कि "प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्" अर्थात् प्रत्यक्षमें प्रमाणका क्या प्रयोजन इस...। प्रत्यक्ष देखनेसे आप महाशयोंको ... हो ही जायँगे। यह "आनन्दाम्बुनिधि" ग्रंथ राज्यसिंहासनासीन रीवाँनरेश महाराजासाहिब श्री १०८ श्रीवेङ्कटरमण सिंहजू... पर विख्यात होनेके कारण मुद्रित करनेके लिये हमको आज्ञा दी। उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर हमने निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" यंत्रा... कर प्रकाशित किया है और भी महाराजासाहिबके निर्माण किये 'भक्तमाला (रामरसिकावली) रामस्वयंवर, रुक्मिणीपरिणय, जगदी... आनन्दाम्बुनिधि इत्यादि ग्रंथ तो हमारे यहां मुद्रित होकर तैयार हो चुके हैं' और 'धर्मविलास, शंभुशतक, सुभगशतक, ... सुंदरशतक, गंगाशतक, सीतावल्लभपतिशतक, चित्रकूटमहिमा, पदावली, रघुराजविलास, विनयपत्रिका, विनयप्रकाश, राज... मुद्रित होनेवाले हैं इसलिये उक्त महाराजासाहिबको कोटिशः धन्यवाद देते है कि, जो अपने तातके यशके लिये रत्नरूप ग्रंथ प्रका... जगद्धितैषी होरहे है। उक्त महाराजासाहिबकी विद्याशीलता, स्वधर्मरुचि, दया अभिरुचि, दानशूरता, रणशूरता, नीतिज्ञता, ... इत्यादि स्वाभाविकगुणोंको सुन २ हर्षसे रोमांचित हुए हम परमकारुणिक श्रीवेङ्कटेश्वर भगवान्से नित्य यह प्रार्थना करते हैं ... उक्त महाराजासाहिब, बहुकालपर्यन्त राज्यसिंहासनारूढ हुए, तदनंतर तदनिशदल प्रदान करते हुए कमलकंदलवत् निज... करते हुए तरणि तारानाथके समान भारतभूमिको विभूषित करो. अंतमें सज्जन रसिक महाशयोंसे प्रार्थना है कि, यदिकोई उसमें अशुद्धि रहगई हो तो उसे क्षमाकरें. इत्यलम्.

गुणिजनकृपाभिलाषी-

क्षेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष

॥ श्रीः ॥

अथ श्रीमद्भागवत (आनन्दाम्बुनिधि) पद्यात्मकभाषानुवादस्य विषयानुक्रमः प्रारभ्यते ।

प्रथमस्कन्ध १.

द्वितीयस्कन्ध २.

तृतीयस्कन्ध ३.

आनन्दाम्बुनिधिविषयानुक्रमणिका।

इति पूर्वार्द्ध।

दशमस्कन्ध–उत्तरार्द्ध।

इति दशमस्कन्ध उत्तरार्द्ध ।

एकादशस्कंध ११.

प्रथमस्कन्ध

आनन्दाम्बुनिधिविषयानुक्रमणिका ।

इति श्रीमद्भागवत (आनन्दाम्बुनिधि) पद्यात्मकभाषानुवादस्य विषयानुक्रमः समाप्तः ।

प्रथमस्कन्ध
नारद
व्यास

आनन्दाम्बुनिधिविषयानुक्रमणिका।

इति श्रीमद्भागवत (आनन्दाम्बुनिधि) पद्यात्मकभाषानुवादस्य विषयानुक्रमः समाप्तः।

नारद
व्यास
परीक्षित
उत्तरा
कृष्ण
भीष्म
परीक्षित

श्रीमदेङ्कटेशोविजयते ।

आनन्दाम्बुनिधि.

श्रीमद्भागवतका पद्यात्मक भाषानुवाद ।

श्री १०८ श्रीमहाराजाधिराज राजाबहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहदेवजू प्रणीत ।

सोरठा–जयहरिपदअरविंद, भक्तभृंगआनंदकर ॥ स्त्रवतसुयश मकरंद, कुमति क्रूरता तापहर ॥

–भवभयभंजनकरनपूरमनकामजननके । तीर्थास्पदविधिशंभुवंद्यमुनियोग्यमननके ॥

प्रणतपालभवसिंधुयोजजेहिसुरमुनिगावें । जाकिसेवाछोड़ि भक्तजनमुक्ति न ध्यावें ॥

कुलकुमतिहरणअशरण शरणभक्तिभरण सुखप्रदनरन । अज्ञानछरनआपदहरन वंदोंश्रीयदुवरचरन ॥

–तजिसुरदुर्लभसंपदा, पितुशासनधरिशीश । जिनकीन्होवनकोगमन, जयतिरामजगदीश ॥

–भारतेपीडितभूकोविलोकिकेजेप्रगटेमथुरामेंमुरारी । लीलाअनंतकरीव्रजमें दुखदाई अनेकनि मारिसुरारी ।

औ मथुरामें बसेप्रभु दासनको सबभाँति सुधारी । ते यदुनंदनके पदवंदतहें रघुराज सदे सुखकारी ॥

...गोकिकेनाशनकोकरिऔधिखरारे । रूपकीऔधिधन्योनरकोवपुमातुपितासुदऔधिपसारे ।

...निदेखाइसुवीरताऔधिकेदुष्टनमारे । कीरतिऔधिकेदानकीऔधिदेऔधिपुरीअवधेशसिधारे ॥

दोहा–तवपदपोतप्रभावलहि, हेदशरत्थकुमार । ज्ञानसिंधुभागवतको, पावन चाहों पार ॥

मीन कमठ शूकर नृहरि, वामन राम सुराम । राम कृष्ण बुध कल्किपद, वंदोंप्रदमनकाम ॥

दंडक–जयतिनँदनंदआनंदवरकंदनिजदासद्युतदीहदुखद्वंद्वहरता । सुमुखअरविंदद्युतिमंदकरचंदनद्दुलसतसु-

॥ भनतरघुराजव्रजराजराजतरुचिरकोटिरतिराजछविमंदकरता । कुमतिसंडनकरनसुम-

...ापभरता ॥

दोहा–जयजयजयव्रजनाथप्रभु, तुवपद नाऊंमाथ । श्रीभागवतपयोधिके, पारकरहुगहिहाथ ॥

जानहुँनहिंकछुछंदगति, नहिंग्रंथनकीरीति । आनँदअंबुनिधिरचों, तुवपदकरिपरतीति ॥

नंदनंददयासदन, विनयकरहुँकरजोरि । जानिआपनोदासप्रभु, करहुविमलमतिमोरि ॥

ध्रुवकपोलनिजशंखतें, परसिविमलमनिकीन । निजप्रस्तुतिकरवायप्रभु, द्रुतहिदासकोंलीन ॥

दीनदयालुनदूसरो, तुमसमहेयदुनाथ । गुणिअनाथनिजहाथमम, शिरधरिकरहुसनाथ ॥
एकभरोसो आपको, अहै न मेरे ओर । दीजेमति यहरचनकी, श्रीवसुदेवकिशोर ॥

या—जाकीप्रभावरकुंदकलानिधिहारतुपारपहारलजावै । पाणिमेंवीणाविराजतहैअँगअंबरश्वेतअनूपसोहावै ।
जआसनमेंविलसै सुरवंदित जासुपदांबुज भावै । सोजगदंब सरस्वतिदेवि सदारघुराजकी बुद्धिवढ़ावै ॥

दोहा—तेरीकृपाकटाक्षको, करिभरोस जगमात । रचत अहौंआनंदको, अंबुनिधैअवदात ॥
कहँमोलघुमतिकहँ अगम, यहसागरजगदंब । तेरिकृपासों पोतको, अहैएक अवलंब ॥
ताते हेसरस्वतिजननि, करहु कृपा अबसोइ । तेरे यह लघुदासकी, जामें हँसी न होइ ॥
जयजयगणपतिगजवदन, विघनकदनशुभरूप । एकरदनआनँदसदन, वंदौं चरणअनूप ॥
विनयकरहुँकरजोरिकै,सुनियेयहगणनाथ । आनँदअंबुनिधैरचत, विघनविनाशहु नाथ ॥

०—याकलिकालकरालविलोकिकैजीवनकीगतिहोतनजानी।सत्यवतीकेलियोअवतारजुव्याससरूपह्वैसारँगपानी।
ाठदशैसुपुराणनको अरुभारतको विरच्यो गुणखानी । वंदतहै तिनकेपदको रघुराजसदा युगजोरिकै पानी ॥
ानविरागहुयोगविहीनन दीननको हरिओर लगोतो । याकलिकालकरालकलेशको कोअनयासहिमें हठिखोतो ॥
ारतकोरघुराजगोविंदकेभक्तिसुधारसकोसुखसोतो । सातदिनामेंकोतारतोभूपहि जोजगमेंशुकदेवनहोतो ॥

दोहा—व्याससुवनशुकदेवके, वंदौंपदजलजात । आनँदअंबुनिधैरचन, देहुबुद्धि अवदात ॥
संतकमलपदअतिअमल, वंदहुँवारहिंवार । जेहिरजशिरधारतमिलत, श्रीवसुदेवकुमार ॥

ौ०—जेहिसुमिरतदुखजातनशाई । वंदौंसंतचरणसुखदाई ॥ जेहिपरसतकलिजालपराई । वंदौंसंतचरणसुखदाई ॥
जेहिप्रभावनहिंभ्रमनियराई । वंदौंसंतचरणसुखदाई ॥ तीरथजेहिनलहतसमताई । वंदौं संतचरणसुखदाई ॥
जेहिधारतशिरश्रीयदुराई । वंदौं संतचरणसुखदाई ॥ तरतपराशिजेहिक्रूरकसाई । वंदौंसंतचरणसुखदाई ॥
हृदयग्रंथिजेहिलहिखुलिजाई । वंदौंसंतचरणसुखदाई ॥ कलिमहँजेहिविनकछुनउपाई । वंदौंसंतचरणसुखदाई ॥
चहतजाहिनितसुरसमुदाई । वंदौंसंतचरणसुखदाई ॥ जोतारतभवनिधिवरियाई । वंदौं संतचरणसुखदाई ॥
वेदपुराणकीर्तिजेहिगाई । वंदौंसंतचरणसुखदाई ॥ जीवनजीवनमूरिसोहाई । वंदौं संतचरणसुखदाई ॥

दोहा—सुंदरसंतसरोजपद, महिमा जासुअपार । वेदनजाकोकहिसकै, मोकिमिकरौं उचार ॥
परंपरामेंगुरुनकी, वंदतहौं प्रदक्षेम । जाकी समता लहतनहिं, जप तप संयम नेम ॥
कमलापतिकेपदकमल, वंदौं परमउदार । जासुकृपाबलसतजनन, जननकियेभवपार ॥

चौ०—कृष्णसदनश्रीजयहितकरनी । रमादयाननमहिदमथरनी ॥ वंदौंविष्वकसेनकृपाल । हरिसेनापतिओजविशाल ॥
पायभीतिनाकेनरडंडा । तजै न मर्यादाब्रह्मंडा ॥ तासुशिष्यशठकोपहिनाऊं । तिनकेचरणकमलशिरनाऊं ॥
तासुशिष्यपुनिनाथमुनीशा । तिनपदधरहुँआपनेशीशा ॥ तासुशिष्यपुंडरीकाक्षकहँ । बारबारवंदौंप्रमोदमहँ ॥
राममिश्रतेहिशिष्यसुजानी । तिनकेपदवंदौंयुगपानी ॥ तासुशिष्ययामुनजगजाना । वंदौंतिनकेपदजलजाना ॥

दोहा—ताकेशिष्यभयेविमल, पूर्णाचार्यमहान । तिनकेपदवंदनकरौं, निजजनदयानिधान ॥

चौ०—तासुशिष्यलक्ष्मणमुनिस्वामी । तिनकेपदपंकजनतमामी ॥ तासुशिष्यगोविंदाचारी । मैंवंदौंतिनपदसुखकारी ॥
भयेपराशरभट्टशिष्यजिन । वंदौंपरमप्रीतिसोंपदतिन ॥ तासुशिष्यकलिवैरिदासमुनि । वंदौंतिनपदमंगलप्रदगुनि ॥
तासुशिष्यश्रीकृष्णपादवर । वंदौंतिनपदसुखदनागिवर ॥ तासुशिष्यलोकाचारज । मैंवंदौंतिनकेपदआरज ॥
शैलनाथतिनशिष्यसदाहीं । तिनपदवंदौंअतिमनलाई ॥ तिनकेशिष्यभयेवरनामा[illegible] । तिनपदमैंवंदौंपुनआदर ॥

दोहा— [illegible] तिनपदनाऊंमाथ । श्रीनिवासमनतिशिष्यवर, वंदौं दीननाथ ॥

चौ०—तासु शिष्य [illegible] । वंदौं [illegible] ॥ [illegible] । शिष्यभये वंदौंपद तिनके ॥
[illegible] । तिन पद वंदौं [illegible] ॥ तासुशिष्य [illegible] । तिनपदवंदौंज्ञानभक्तिकर ॥
[illegible] । तिन पद वंदौं [illegible] ॥ श्रीनिवास [illegible] । वंदौं [illegible] तिनके ॥
[illegible] । वंदौंतिनपद [illegible] ॥ [illegible] श्रीनिवास [illegible] । तिन [illegible] ॥
[illegible] । तिनकेपदवंदौं [illegible]

दोहा-मंत्ररत्नकुलकमलरवि, श्रीमन्नाथमुनीश । वंदौंतिनकेपदविमल, पुनिपुनिधरिमहिशीश ॥

[illegible]श॥ । पुनिपुनिनाऊंतिनपदशीशा ॥ तासुसौम्यजामातरस्वामी । तिनपदवारहिंवारनमामी ॥
[illegible]त । निजजनकहँश्रीहरिपददाता ॥ कृपापात्रनीलाद्रिनाथके । वद्धेकवरवेदांतगाथके ॥
[illegible] । कारुण्यादिगुणनकेआकर ॥ वासकियोनीलाचलमाहीं । कियउद्धारअमितजनकाहीं ॥
[illegible]पाल । वंदौंतिनपददीनदयाला ॥ जाकेबलजगसागरतरिहौं । यहकलिकालकरालनडरिहौं ॥

दोहा-हेश्रीराजगोपालप्रभु, तवपदकृपाअधार । सोलहिआनँदअंबुनिधि, जानचहौंभवपार ॥

चौ०-श्रीहरिगुरुमुकुंदममस्वामी।कृपापात्रविनतासुतगामी॥जगजीवनलखिपरमअनाथा।प्रगटेकनउजदेशहिनाथा॥
[illegible] । हरिपदमहँउपज्योअनुरागा॥कुलपरिवारगेहतजिदीन्ह्यो । कछुदिनगंगासेवनकीन्ह्यो ॥
[illegible] । दरशनकरहुँनिलाचलनाथा ॥करतपर्यटनदेशनिमाहीं । देतज्ञानबहुलोगनकाहीं ॥
[illegible]चलकहँगयेकृप[illegible] । दरशनलैजनभयेनिहाला ॥ लैदरशनजगदीशहिकेरो । वसेसहितआनंदघनेरो ।

दोहा-तहँश्रीराजगोपालगुरु, निजढिगप्रभुकोआनि । कियोसमाश्रैमुदितमन, महतपुरुषपहिचानि ॥

चौ०-तहाँनाथकछुकालहिमाहीं।पढ्योनिखिलवेदांतनिकाहीं॥इतिहासनपुराणप्राचीने । औरौभक्तिग्रंथपढ़िलीने ॥
सेवनकरहिंसुमहाप्रसादा । रहहिंएकांतसहितअहलादा॥हरिविमुखनकहँकरिउपदेशा।दियोप्रीतिकरिश्रीपतिदेशा॥
सिखवतजननभक्तिकीरीती।यहिविधिगयोकालकछुबीती ॥ श्रीगुरुराजगोपालविज्ञानी । यहअपनेमनमेंअनुमानी ॥
सबआचार्यननिकटबोलायो । सभामध्यअसवैनसुनायो॥ममस्थानअधिपकेलायक।कियोमुकुंदहिश्रीरघुनायक ॥

दोहा-कृपापात्रजगदीशके, एहेंज्ञानअगार । इन्हैसोंपिदीबोउचित, और न कछूविचार ॥

चौ०-सोसुनिसबसम्मतयहकीन्हे।पदवीआचारजकीदीन्हे॥कह्योवहुरितिनकोगुरुज्ञानी। यहऐश्वर्य लेहुगुणखानी॥
सोनालियोगुरुआयसुमाँगी । ह्वैतिचलेकृष्णअनुरागी ॥ आयेतीर्थराजमहँनाथा । जहाँकियोवहुजननसनाथा ॥
पुनिवदरीवनकहँप्रभुजाई । रहेतहाँकछुदिनचितलाई ॥ हरिद्वारलोहितपुरह्वैके । नैमिषकुरुक्षेत्रथलज्वैके ॥
अवधपुरीओजनकनगरमहँ । कियोवासएकांतसोथलमहँ ॥पुनिमथुराकहँगयेकृपाला । तहाँकियोसतसंगविसाला ॥

दोहा-तहँममपितुगुरुनामजेहि, प्रियादासमुनिराज । व्रजमंडलविचरतमिले, लेसँगसंतसमाज ॥

चौ०-प्रियादासवोलेवरज्ञानी । तुमहोसकलज्ञानकेखानी ॥ भनहुभागवतकरसप्ताहा । सबसंतनमधिहोइउछाहा ॥
सोसुनिमुदितकीनआरंभा । रचितहँसप्तलोककोखंभा ॥ तामेंएकयकवन्ह्योआई । अकथकअहितहँपरयोदसाई ॥
तिनलखिप्रियादासकहवानी।कथासुननआयेदोउज्ञानी॥तवअहिआइसम्भमेंलपट्यो।पदपिभक्षंपसकहिनझपट्यो॥
होतअरंभनितेदोउआवें । कथासमाप्तभयेदोउजावें ॥ जवसप्ताहसमापनभयऊ । तेहिदिनदोऊननुनागिदयऊ ॥

दोहा-यहअचरजलखिसन्तसब, मुक्तगुण्योदोउकाहिं । हरिगुरुकी प्रियदासकी, प्रस्तुतिकरि तहाहिं ॥

चौ०-कछुदिनवसितहँफेरिकृपाला।गंगातटकहँचलेउताला॥यकथलब्रह्मशिलाजेहिनामा । गंगातटसुंदरसुखधामा॥
ताकेनिकटवसे प्रभुआई । पुरवासीसवरस्वागितपाई ॥ आयेसकल किये परणामा । दरशपाइ पूजे मनकामा ॥
कह्यो न यहथलनिवसनयोगू । इहाँनआवहि दिवशहुलोगू ॥ रहतब्रह्मराक्षसयहिठामा।महाभयानकतनुघनश्यामा ॥
जोकोउवसत इहाँदिनराती।मारतनेहिप्रत्यक्षचाढ़िछाती ॥चलहुवेगि यामिंयपहिग्रामा।करहु पवित्रसकलजनधामा॥

दोहा-विहँसि कह्यो प्रभुअब अवशि, करिहौं इहं निवास । सबथलमेंनिवसनसदा, रघुपतिरमानिवास ॥ २८ ॥

चौ०-ब्रह्मशिलामधिपनपुराना । रहतब्रह्मराक्षसमहाना ॥ तहाँवासकीन्ह्योप्रभुनाई । आनिग्रामगयेहिगगुसाई॥
तहाँब्रह्मराक्षसनिशिआयो।प्रभुहिनिरखिनभमेंगोहरायो॥कियोकृतनाथ मोहिकृपाला। वसहुनाथयहिथामविशाला ॥
यहिथलमहँ वाँचहु समाहा । मोहिनाथदीजै मुनिनाहा॥ सुनतवचन दाया उरआई । दियो नाहिमनाह सुनाई ॥
सुनत ब्रह्मराक्षसगतिपाई । पुरवासिनदर विस्मयनाई ॥ दासनागतभे सबजन आई । रह अंतनै पदपदुगाई॥

दोहा-या विधिप्रभुकेवसतुनहँ, सुर्यमसादहिनाम । आयोप्रभुकेनिकटलो, जानतहन हरोग्यान ॥

चौ०-कह्योनाथमो मोहिगतिदेहू।मोतिभागवतपरमसनेहू ॥प्रभुकरत्थनदहउजीनिनाके।कौनदसागमुनिदौनाको ॥

विनयकरीकरजोरिवहोरी । राज्यकरनकीनहिंमतिमोरी ॥ तबप्रभुकहछाँड़हुदुचिताई । श्रीपतिकृपासबैबनिजाई ॥
मोहुँसमलहिप्रभुकृपामहाई । राजभारशिरलियोउठाई ॥ मोपरकरिकेकृपाकृपाला । लक्ष्मणबागरहेकछुकाला ॥

दोहा—तुलसीरामहि वैदसुत, राधेकृष्णहिनाम । तेहिसुतरघुनंदन भये, बालहिते मतिधाम ॥

चौ०—भयेसमाश्रयप्रभुपदजाई । पढ्योभक्तिमारगसुखदाई ॥ एकसमैतेहिरोगसतायो । सन्निपातभोबोलिनआयो॥
तबस्वप्नहिद्वैपुरुषपधताये । बचिहैनहिंविनगुरुढिगजाये ॥ तेहिघरकेतेहिकोधरियाना । प्रभुसमीपमहँकियेपयाना ॥
ताकोप्रभुसमीपधरिदीन्हे । करिरोदनविनतीबहुकीन्हे ॥ प्रभुकेदरशनपावतसोई । उठिकहअबमोहिंकछूनहोई ॥
गईव्याधिमिटिरहीनथोरी । लहिआयसुगृहजैहोंदोरी ॥ असकहिरघुनन्दनगृहआयो । तेहिपरिवारलोगसुखपायो ॥

दोहा—पुनि मम अन्तरपुर महल, होतरहै यहहाल ॥ प्रसवभये दिनचारिमें, नारि होहिं वशकाल ॥

चौ०—यहिविधिभईमृतकत्रयनारी।तबप्रभुदासनआरतहारी॥जानिसमैनिजनिकटबुलाई।राख्योलक्ष्मणबागटिकाई॥
नाथकृपाप्रसवहिकेकाला । ग्रस्योनतियकोकालकराला ॥ आनँदसहितनारिगृहआई । मेरे गृहमें बजी बधाई ॥
पुनिकछुकालरहेपुरमाहीं । करतकृतारथममकुलकाहीं ॥ रामायण भागवतसुनाई । दीन्हीं भक्तराह दरशाई ॥
रामकृष्णकोकीर्तनशोरा । मच्योबघेलखंडचहुँओरा ॥ पुनिहरिगुरुकछुकालबिताई । गमनेब्रह्मशिलासुखछाई ॥

दोहा—कछुककाल लगिनाथमम, ब्रह्मशिलासुखधाम । सुरसरितटनिवसतभये, सबविधि पूरण काम ॥

मैंपुनिगयोंबितेकछुकाला । प्रभुदरशनकरिभयोंनिहाला॥प्रभुसोंविनयकरीकरजोरी । पुरीपुनीतकरहुचलिमोरी ॥
सुनिममविनयदियोमुसकाई । कह्योयकांतहिमोहिंबोलाई ॥ करिहोंमेंउतअबशिपयाना । हरिदासनसबठोरसमाना॥
असकहिरीवाँकोपगुधारे । हमहुँनाथकेसाथसिधारे ॥ उनइससंगेरहकरसाला । मधुसितएकादशीविशाला ॥
कृष्णप्रपन्नशिष्यकहँबोली।कह्योआपनीआशयखोली ॥ रामानुजस्वामीनिशिआई । मोहिंअसशासनदियोसुनाई॥

दोहा—लीलाविभवमेंबसत, बीतिगयेकछुकाल । चलहुत्रिपादविभूतिको, बोल्योत्रिभुवनपाल ॥

चौ०—मैंकरिहोंवैकुंठपयाना।वितेबहुतदिनबिनभगवाना ॥ कृष्णप्रपन्नकह्योकरजोरी।यहअबविनयसुनहुप्रभुमोरी॥
चित्रकूटकीतीर्थप्रयागा । अथवाब्रह्मशिलाबड़भागा ॥ जहाँआपकोआयसुहोई । तहँपहुँचेंहंहमसब कोई ॥
तबबोलेहरिगुरुमुसुकाई । केहिथलहेनहिंथायदुराई ॥ अपरिछिन्नजोहरिकहँमानहु । ममपयानतोअनतनठानहु ॥
कृष्णप्रपन्नफेरिकरजोरी । कहेउसुनहुविनतीयहमोरी॥केहिदिनआपविकुंठसिधरिहैं । तहँकेवासिनकोसुखभरिहैं ॥

दोहा—तबकहकृष्णप्रपन्नसों, श्रीहरिगुरुमुसकाइ । अक्षयतृतियाकोअवशि, हमदेसब यदुराइ ॥

चौ०—सोइजबअक्षयतृतियाआई । तबहरिगुरुवैष्णवनबोलाई॥झांझआदिबाजनबजवाई। रामकृष्णकीर्त्तनकरवाई॥
एकमुहूरतलगिकरजोरी । नैनमूंदिश्रीपतिहि निहोरी ॥ करिमुद्रासंहार तहाहीं । आतमअर्पणकरिदियकाहीं ॥
पुनिदोउकरनाथउठाई । कृष्णदत्तनिजनिकटबोलाई ॥ अरचाविग्रहनिजशिरथापी । ऊर्ध्वपुंड्रदप्रभाअमापी ॥
शुद्धकुशासनमहँथिरह्वेके । कृपादीठिदासनपरज्वैके ॥ दुतियातिथिकोनाथबिताई । उत्तरदिशिपगकरिसुखछाई ॥

दोहा—रुद्रखंडशशिसंवत, माघसुमासअकुंठ । अक्षयतृतियाकोगये, श्रीहरिगुरुवैकुंठ ॥

चौ०—तिनकोलहिपरतापप्रचंडा । रामानुजसिद्धांतअखंडा ॥ प्रब्ददेशमेंप्रचरयोपूरो । नास्तिकवादभयोसबदूरो॥
प्रभुदासनकोभवकीभीती । मिटीसकलभेहरिपदप्रीती ॥ कोकृपालुऐसोजगमाहीं । भवसागरतारयोसबकाहीं ॥
यहिविधिप्रभुकेचरितअपारा । बरणिसकेनहिंमुखदुहजारा ॥ प्रभुपदपानपाइमुदमाहीं । तारिहोंमेंभवसागरकाहीं ॥
श्रीप्रभुपदप्रतापबलपाई । आनँदअंबुनिधिसुखछाई ॥ विनश्रमजानचहौंनहिंपारा । हरियशमार्दनसुमतिनिस्तारा ॥

सोरठा—जयप्रभुपदअरविंद, दुरनकठिनत्रयतापके ॥ निजजनमनहिमलिन्द, नितअनंदमकरंदप्रद ॥

दोहा—अबवंदोंपितुपदपदुम, प्रदप्रमोदकेकंज । मैंअलिनासुकृपासुमधु, न्हाहिकियग्रंथहि गुंज ॥

इत्यागतसंपुस्तिभे, ब्रह्मनिममवंश । मोविस्तृनवंशावली, मंकाविकियोमसंग ॥
मेंसंक्षेपहिकहतहौं, मंर्पाहिमंगलहेन । जिनकेपुण्यप्रतापतें, पापोमोदनिकेत ॥

श्रमैभरिहैहै। मेरोतौसवविधि वनिजैहै॥ सोसुनिकरुणाकरममनाथा। कियअरंभसताहसुगाथा॥
पद यदुवर॥सतयेंदिनशरीरतजिदीन्ह्यों॥द्विजकोमुक्तजानिजनलीन्ह्यों॥
। गमनेध्यावत अंतर्यामी॥ तहाँमृतक यकवालकलीन्हे। तासुजनकजननीदुखभीने॥
दोहा—देखिनाथकोरुदनकरि,गहेकमलपदजाइ। कह्योराखियेवंशमम, दीजे याहि जियाइ॥
प्रभुकहमृतकनहैयहवालक।ह्वैहैवहतुवकुलकोपालक।देख्योवसनटारिमुखवाको।रोवतलखिफलगुन्योकृपाको॥
इ। वजनलगीआनंदवधाई॥ ऐसेचरितन करत अपारा। ब्रह्म शिलामहँ वसे उदारा॥
। भयोसमाश्रितप्रभुपहिचानी॥ प्रभुपढाइभागवतपुराना। दीन्ह्योताहिविमलविज्ञाना॥
। आयोरीवाँनगरहिकाहीं॥सोसुनिमोपितुआदरकरिकै।राखेउनिजभवनहिमुदभरिकै॥
दोहा—सोप्रभुकेसवचरितवर, दीन्ह्योंपितहिसुनाइ। सोसुनितिनकेदरशको, दीन्ह्यो मनहरषाइ॥
[illegible]
। गमनकियोपुनिपुरभगवाना॥ द्विजरघुवरप्रपन्नमतिधामा। यथालाभमहँपूरणकामा॥
। स्वामीकहँआनहु यहिदेशू॥ सोकहमैंअवश्यलैऐहों। तवमनकामहिं पूरकरैहों॥
। प्रभुसोंकहदीनतादेखाई॥
दोहा—रीवाँनगरनरेशप्रभु, नामजासुविशुनाथ। सोचाहतदरशनकरन, चलितहँ करिय सनाथ॥
०—सुनिरघुवरप्रपन्नकेवैना॥ आयसुदियोनाथमुदऐना॥ नृपतिनगरगमनहुँमैंनाहीं। पैनृपप्रेमसोचमनमाहीं॥
। भक्तभूपकोदरशनदैहों॥ असकहिकरिदायाममनाथा। आयसवनदीन्ह्योमुदगाथा॥
मन्दिर... वसेतहाँयुतहरिअनुरागा॥पितुममजाइदरशतहँलीन्हे। ममहितविनयवचनकहिदीन्हे॥
। तवसुतकहँयहथलमखठानी॥ विधिपूर्वकचक्रांकितकरिहौं। देहरिमंत्रमोदउरभरिहौं॥
दोहा—संवत अष्टादशशते, अष्टावनके साल। कार्त्तिकसित एकादशी। दियमोहिं मंत्ररसाल॥
०—औरहुजेममवंधुअपारा। करिकेकृपातिनहिंउद्धारा॥ मंत्रीसुभटआदिममजेते॥ प्रभुकेशरणागतभेतेते।
। तहाँवसेंवहुअवुधववेला। तिनकेगृहमेंयहकुलरीती। हरितजिकरहिंप्रेतसोंप्रीती।
॥ मानहियहीमरणकरनेतू॥ तुलसीपूजहिंविधवानारी। सधवाडारहिंवेगिउखारी।
देवरानामा। वहुगिरिमधिदुर्गमवहठामा॥ तहांनाथयकसमयपधारे। तिनपरकृपाकरनचितधारे।
दोहा—तहँप्रभुके दरशनलिये, आये सव यकसाथ। पायदरश सुखछायके, ह्वैगेसवे सनाथ॥
०—गईकुमतिभैशुभमतिभारी। प्रेमवीजउरवयोमुरारी॥होनसमाश्रमकोचितदीन्हे। प्रभुसोंविनयवारवहुकीन्हे॥
तनकोलखिदी... इ। भईदया दियमंत्रसुनाई॥ तवतेतहँके लोगलुगाई। करनलगेहरिभक्तिसहाई॥
। ज्ञानवानह्वैहरिकहँचीन्हे॥ पुनिदेवराधिपसवनवोलाई। देशासनव्रतवंधकराई॥
तिनकेरी। तिनपेकीन्ही कृपापनेरी॥ पुनिरीवाँनगरहिप्रभुआये। वसततहाँकछुकालवितायें॥
दोहा—यकदिन मज्जनकरनहरि, गयोपुजारीप्रात। अतिकराल तहँ व्यालयक, डस्यो करत जिय घात॥
०गिरयोआइसोप्रभुपदपाहीं।कह्योनाथरक्षहुमोहिंकाहीं॥प्रभुकहयहिहरिमन्दिरमाहीं। शोचहिमतिलगिहैविपनाहीं
। याहिविधिचरितकियेप्रभुनाना॥
...हरिदर्शनकियआनंदपाई॥ पुनिदक्षिणयात्राप्रभुकीन्हो। दिव्यमूर्तिकेदरशनलीन्हो॥
पुनिजगदीशपुरीकहँजाई। हरिदर्शनकियआनंदपाई॥ पुनिदक्षिणयात्राप्रभुकीन्हो। दिव्यमूर्तिकेदरशनलीन्हो॥
रंगनाथप्रभुप्रथमपधारयो। पुनितोताद्रिहि जाइ निहारयो॥ करतकरततीरथवहुतेरे। पहुँचे पद्मनाभके नेरे॥
दो०—तहाँ रह्यो यक देशमें, रामराज तेहिनाम। सोप्रभुपदहि प्रणामकरि, माँगी भक्ति ललाम॥
चौ०—ताहिभक्तिशिक्षादैस्वामी। तहँ नेचकेमुनिमारगगामी॥विचरतविचरनपुनियहदेशू।आयेकरतज्ञानउपदेशू॥
ग्रामअमरपाटनजेहिनामा। तहँजवआयेप्रानकामा॥ तहँ मंजाइविनयवहुकरिके। ल्यायोनिजपुरप्रभुपदपरिके॥

विनयकरीकरजोरिवहोरी । राज्यकरनकीनहिंमतिमोरी ॥ तवप्रभुकहछाँड़हुदुचिताई । श्रीपतिकृपासवैवनिजाई ॥
मोहुँसमलहिप्रभुकृपामहाई । राजभारशिरलियोउठाई ॥ मोपरकरिकेकृपाकृपाला । लक्ष्मणवागरहेकछुकाला ॥

दोहा–तुलसीरामहि वेदसुत, राधेकृष्णहिनाम । तेहिसुतरघुनंदन भये, वालहिते मतिधाम ॥

चौ०–भयोसमाश्रयप्रभुपदजाई । पढ्योभक्तिमारगसुखदाई ॥ एकसमैतेहिरोगसतायो । सन्निपातभोवोलिनआयो॥
तवस्वप्नहिद्वैपुरुषवताये । वचिहैनहिंविनगुरुढिगजाये ॥ तेहिघरकेतेहिकोधरियाना । प्रभुसमीपमहँकियेपयाना ॥
ताकोप्रभुसमीपधरिदीन्हे । करिरोदनविनतीवहुकीन्हे ॥ प्रभुकेदरशनपावतसोई । उठिकहअवमोहिंकछूनहोई ॥
गईव्याधिमिटिरहीनथोरी । लहिआयसुगृहजैहोंदोरी ॥ असकहिरघुनन्दनगृहआयो । तेहिपरिवारलोगसुखपायो ॥

दोहा–पुनि मम अन्तरपुर महल, होतरहे यहहाल ॥ प्रसवभये दिनचारिमें, नारि होहिं वशकाल ॥

चौ०–यहिविधिभईमृतकत्रयनारी।तवप्रभुदासनआरतहारी॥जानिसमैनिजनिकटवुलाई।राख्योलक्ष्मणवागटिकाई॥
नाथकृपाप्रसवहिकेकाला । ग्रस्योनतियकोकालकराला ॥ आनँदसहितनारिगृहआई । मेरे गृहमें वजी वधाई ॥
पुनिकछुकालरहेपुरमाहीं । करतकृतारथममकुलकाहीं ॥ रामायण भागवतसुनाई । दीन्हीं भक्तराह दरशाई ॥
रामकृष्णकोकीर्तनशोरा । मच्योवघेलखंडचहुँओरा ॥ पुनिहरिगुरुकछुकालविताई । गमनेव्रह्मशिलासुखछाई ॥

दोहा–कछुककाल लगिनाथमम, व्रह्मशिलासुखधाम । सुरसरितटनिवसतभये, सवविधि पूरण काम ॥

मैंपुनिगयोंवितेकछुकाला । प्रभुदरशनकरिभयोंनिहाला॥प्रभुसोंविनयकरीकरजोरी । पुरीपुनीतकरहुचलिमोरी ॥
सुनिममविनयदियोमुसकाई । कह्योयकांतहिमोहिंवोलाई ॥ करिहोंमैंउतअवशिपयाना । हरिदासनसवठौरसमाना॥
असकहिरीवाँकोपगुधारे । हमहुँनाथकेसाथसिधारे ॥ उनइससैगेरहकरसाला । मधुसितएकादशीविशाला ॥
कृष्णप्रपन्नशिष्यकहँवोली।कह्योआपनीआशयखोली ॥ रामानुजस्वामीनिशिआई । मोहिंअसशासनदियोसुनाई॥

दोहा–लीलावैभवमेंवसत, वीतिगयेकछुकाल । चलहुत्रिपादविभूतिको, वोल्योत्रिभुवनपाल ॥

चौ०–मैंकरिहोंवैकुंठपयाना।वितेवहुतदिनविनभगवाना ॥ कृष्णप्रपन्नकह्योकरजोरी।यहअवविनयसुनहुप्रभुमोरी ॥
चित्रकूटकीतीर्थप्रयागा । अथवाव्रह्मशिलावड़भागा ॥ जहाँआपकोआयसुहोई । तहँपहुँचैंहैंहमसव कोई ॥
तववोलेहरिगुरुमुसुकाई । केहिथलहैनहिंश्रीयदुराई ॥ अपरिछिन्नजोहरिकहँमानहु । ममपयानतौंअनतनठानहु ॥
कृष्णप्रपन्नफेरिकरजोरी । कहेउसुनहुविनतीयहमोरी॥केहिदिनआपविकुंठसिधरिहैं । तहँकेवासिनकोसुखभरिहैं ॥

दोहा–तवकहकृष्णप्रपन्नसों, श्रीहरिगुरुमुसकाइ । अक्षयतृतियाकोअवशि, हमदेखव यदुराइ ॥

चौ०–सोइजवअक्षयतृतियाआई । तवहरिगुरुवैष्णवनवोलाई॥झांझआदिवाजनवजवाई। रामकृष्णकीर्त्तनकरवाई॥
एकमुहूरतलगिकरजोरी । नैनमूंदिश्रीपतिहि निहोरी ॥ करिमुद्रासंहार तहाहीं । आतमअर्पणकरिहरिकाहीं ॥
पुनिदोऊकरनाथउठाई । कृष्णदूतनिजनिकटवोलाई ॥ अरचाविग्रहनिजशिरथापी । ऊर्ध्वपुंड्रदप्रभाअमापी ॥
शुद्धकुशासनमहँथिरह्वैके । कृपादीठिदासनपरज्वैके ॥ दुतियातिथिकोनाथविताई । उत्तरदिशिपगकरिसुखछाई ॥

दोहा–रुद्रखंडशशिसंवतै, माघसुमासअकुंठ । अक्षयतृतियाकोगये, श्रीहरिजूवैकुंठ ॥

चौ०–तिनकोलहिपरतापप्रचंडा । रामानुजसिद्धांतअखंडा ॥ प्रद्वदेशमेंप्रचरयोपूरे । नास्तिकवादभयोसवदूरो॥
प्रभुदासनकीभवकीभीती । मिटीसकलभैहरिपदप्रीती ॥ कोकृपालुऐसोजगमाहीं । भवसागरतारयोगहिवाहीं ॥
यहिविधिप्रभुकेचरितअपारा । वरणिसकेंनहिंमुखहुहजारा ॥ प्रभुपदपोतपाइमुदमाहीं । तरिहौं मैंभवसागरकाहीं ॥
श्रीप्रभुपदप्रतापवलपाई । आनँदअंवुनिधेसुखछाई ॥ विनश्रमजानचहौं तोहिंपारा । हरियशसहितसुमतिविस्तारा ॥

सोरठा–जयप्रभुपदअरविंद, दरनकठिनभवतापके ॥ निजजनमनहिमलिंद, नितअनंदमकरंदप्रद ॥

दोहा–अववंदोंपितुपदपदुम, प्रदप्रमोदकेकंज । मैंअलिजासुकृपासुमधु, लहिकियग्रंथहि गुंज ॥

इग्यारहसैपुस्तिभे, व्रह्मानिममवंश । सोविस्तृतवंशावली, मैंकीवांकियाप्रशंस ॥
मैंसंक्षेपहिकहतहौं, ग्रंथहिमंगलहेत । जिनकेपुण्यप्रतापतें, पायोमोदनिकेत ॥

वीरध्वजव्याघ्रदेवकरनसोहागदेवसंगरामसिंहऔविलासदेवजानिये।भीमलअनीकदेवबलदेवदलकेन्द्रमलकेसबु
वरियारमानिये ॥ सिंहदेवभैरौंदेवनरहरिभेददेवत्यौंशालिवाहनवीरसिंहदेवगानिये ॥ वीरभानरामसिंहवीरभद्र
राजूअमरअनूपभावसिंहकोबखानिये ॥

दोहा–भावसिंहमहराजके, अनिरुधसिंहसुजान । श्रीअनिरुधमहाराजके, श्रीअवधूतमहान ॥
महाराजअवधूतके, श्रीअजीतबलवान । श्रीअजीतमहराजके, श्रीजयसिंहसुजान ॥
फहरातोजेहिधर्मको, अवलौंध्वजामहान । जेहिगमनतगोविंदपुर, गंगलियोअगवान ॥
तिनकेपदवंदनकरौं, मंगलमोदअपार । जासुकृपालहिचहतहौं, आ नँदअँबुधिपार ॥
महाराजजयसिंहके, धर्मज्ञानयशधाम । महाराजनृपमुकुटमणि, विश्वनाथप्रदकाम ॥

–बालहितेहरिपदरतकीन्ही।दानदेनकीमतिगहिलीन्ही॥सज्जनसंगहिमेंचितलाग्यो।श्रीअवधेशचरणअनुराग्यो॥
घोरविसमजासुप्रतापा।करतसदाशत्रुनकहँतापा॥जासुसुयशनिशिकरकरपाये।कविकुलकुमुदरहहिंसुखछाये ॥
करतनाहिंदौलतदेख्यो।मानदेतनहिंआतमलेख्यो॥ तीर्थकरतनहिंकछुश्रमजान्यो।यज्ञकरतनहिंआलसठान्यो ॥
कियोनहिंद्विजगणमाहीं । राख्योरामभरोससदाहीं ॥ सतपथजेपदकबहुँनटारे । अपनेराजसुधर्मपसारे ॥

दोहा–भाइनभृत्यनविष्णुसम, हरसोंशत्रुनकाहिं । सत्यवचनमेविधिसरिस, तीनहुगुणप्रभुमाहिं ॥

०–पुरश्चरणबहुराममंत्रके । लिखेविविधजेशास्त्रतंत्रके ॥ चित्रकूटआदिकहरिधामैं । करवायोबहुवारअकामैं ॥
रीकआदिकमखनाना । करवायोयुतवेदविधाना ॥ दईदक्षिणातिनमहँभारी । पायविप्रअतिभयेसुखारी ॥
वेदानकमलाकरकेरे । दानमयूखहुग्रंथनिवेरे ॥ दीवेकोरहिगयोनयेको । देतक्षोभमनभयोननेको ॥
त्योप्रजनपुत्रसमनाथा । दीननकोद्रुतकियोसनाथा ॥ जासुशीलसागरकीथाहा । पाईनाहिंवरणिकविनाहा ॥

दोहा–श्रीशुकदेवहिप्रगटिकै, प्रियाचार्यमेंआइ । तेममपितुकोकरिकृपा, दिय हरिमंत्रे सुनाइ ॥

०–गुरुकेपदप्रसादकोपाई । बाढ़ीप्रभुकीसुमतिसुहाई ॥ सबग्रंथनकोकरिअवगाहा।रामतत्त्वलहिबढ़्योउछाहा ॥
मसुयश वर्णन मनलाये । येते सुंदर ग्रंथबनाये ॥ विनयमाल आनँदरामायन । गीतावली नाटकौ चायन ॥
प्णावलीसुमारगटीका । शांतशतककृष्णाह्निकनीका ॥ श्रीरघुनंदनगीतसुभासा । तत्त्वप्रकाशहुव्यंग्यप्रकासा ॥
थविश्वभोजनहुँप्रकासा । वैदकविश्वनाथपरकासा ॥ धर्मशास्त्रअरुबीजकतिलकैं । राजनीतिहूँविरच्योभलकैं ॥

दोहा–हनुमतपैंतीसीरच्यो, औरविचारसुसार । धनुविद्याआरामविधि, शालहोत्रसुखसार ॥
नाटकपरमप्रबोधविधि, येतेभापाग्रंथ । विरचिचलायेपुहुमिपर, जेसिगरेसतपंथ ॥

ा०–येतेग्रंथसंस्कृतजानो । प्रथमसर्वसिद्धांतबखानो ॥ राधावल्लभभाष्यसोहाई । रामाह्निकविरच्योसुखदाई ॥
रतिसुंदरसंगितरघुनंदन । नाटकहूआनँदरघुनंदन ॥ रामायणअध्यात्महितिलकैं । तिलकवाल्मीकीकियभलकैं ॥
तिलकभागवतकोअतिभारी । विरच्योवर्णतनित्यविहारी ॥ येतेवृहदग्रंथप्रभुकीन्हे । औरहुलघुनाहिंमेंलिखिदीन्हे ॥
निशिदिनआठोयामनमाहीं । रामनाममुखरटतसदाहीं ॥ कोवरणैप्रभुचरितअपारो । धराधर्मधुरधारनहारो ॥
क्रमसोंसकलचरित्रनाथके । धरिछंदनिबहुमोदगाथके॥रच्योसुकविप्रभुजनयुगलेशा । नामचरितविश्वनाथसुवेशा ॥
तिनकेपदसहायमोंहिहोवें । देहिंसुमति कुलकुमतिहि खोवें ॥

दोहा–पैंसठवपंदिमासपट, बेसगईजबआइ । तबरघुनंदनस्वप्नमें, सादरदई रजाइ ॥

चौ०–देसुतकोनिजबांधवराजू । इतआवहुअवयहतुवकाजू॥भोरजागितवमोहिंबोलाई।असशासनपितुदियोसुनाई ॥
यहमुद्रिकाराममोहिदीन्ही।मोपरकृपाकृपाप्रभुकीन्ही ॥ तिनबलअवलौंहमकियराजू । अबतुमलेहुराज्यकरकाजू ॥
हरिविश्वासजसोहममान्यो । तसोतुमहुजन्मभरिठान्यो ॥ अहसाहनीसंपतिजेती । श्रीरघुनंदनकी है तेती ॥
कबहूंनिजकरमानेहुनाहीं । अपेरघ्योकृष्णहीकाहीं ॥ असकहिमोहिमुद्रिकादीन्ही । मोशिरनाइशीशधरिलीन्ही ॥

दोहा–चनइससतएकादशे, संवतकार्तिकमास । असितसप्तमीवारभृगु, पितुगे रामनिवास ॥

महाभागवतजनकसम, जोममजनकसुजान । तिनकेचरणप्रतापबल, ग्रंथहिकरौंबखान ॥
जेजेजगगुरुपितुचरण, भरणमोद उरमाहिं । पापदरनकुमतिहिहरण, वर्धनबुद्धिसदाहिं ॥
यहिविधिसबकोजोरिकर, सादरकरिपरणाम । भाषाभागवतहिरच्यो, आनँदअंबुधिनाम ॥
भाषाविरचहुँभागवत,सकलमूलअनुसार । कहुँकहुँहरिलीलाललित, करिहौंकछुविस्तार ॥
कहूंब्रह्मवैवर्त अरु, कहुँहरिवंशहु केरि । वायुपुराणहुकीकहूँ, गर्गसंहिता केरि ॥
अरु नरसिंहपुराणकी,औरहु विष्णुपुराण । कहुँ रामायणकीकथा, लैकरि करिहौं गान ॥
जहाँ जहाँ संक्षेपसों, अहै भागवतमाहिं । इनग्रंथनते लै कथा, करिहौं वृहद तहाँहिं ॥

अथ कथाप्रबंधारंभः ।

दोहा–यहजगब्रह्महिमेंअहै, तेहिविनरहैनसोइ । यहअन्वयव्यतिरेकको, अर्थकहैकविलोइ ॥
यह अन्वयव्यतिरेकते, जेहितेजगजन्मादि । औअभिज्ञअर्थनविषे, स्वयंप्रकाशअनादि ॥
चौ०–जोकविआदिहेतुवेदनको।निजसंकल्पहिकियमुदघनको॥निजसूरिहुँजामेंभ्रमपावत।तेजवारिमृदुजोनमिलावत॥
मृषात्रिसर्गकहैजेहिमाहीं।निजप्रकाशहतकुहकसदाहीं॥तौनसत्यपर कृष्णहिध्याऊँ।जासुकृपा निर्मलमति पाऊँ॥१॥
यहभागवतमहामुनिकृतमहँ । रहितकपटकहँपरमधरमजहँ॥निर्मत्सरसज्जनकेयोगू । वास्तववस्तुजानतेहिलोगू ॥
सोयहमन त्रयताप नशावन। जगतजननको सुखसरसावन॥और शास्त्रतेका भगवाना।होहिंकियेद्रुतथिरखगजाना॥
दोहा–यहश्रवणेच्छाकरतमें, सुकृतनहियदुनाथ । अतिआतुरआवतअवशि, छाँड़तनहिंतेहिसाथ ॥ २ ॥
चौ०–निगमकल्पपादपअतिभावै।शुकमुखगलितसुफलछविछावै॥अनुपमद्रवपियूषतेसंयुत।रसआलयभागवतसुअद्भुत
भुविमेंभावुकरसिकसुजाना।वारहिंवारकरौतेहिपाना।३(व्यासउवाच)विष्णुक्षेत्रनैमिषतेहिनामा।तहाँशौनकादिकतपधामा॥
स्वर्गलोकहित वर्षहजारा।कियेसकल मुनियज्ञ उदारा ॥४॥ एकसमै तेहरिरस भीने।प्रातहि हव्यहवन ऋषिकीने॥
बैठेलहे सूतसनमाना।तिनसों शौनकादि मुनिनाना॥अति आदर पूंछी यहबाता।कथा श्रवणमेंपरमविख्याता॥५॥
(ऋषयऊचुः)॥दोहा–अनघलियोपढ़िसतिसकल,युतइतिहासपुरान।धर्मशास्त्रहूँसकलतुम,कीन्ह्योसकलविधान ॥६॥
चौ०–वेदविदन महँ वरभगवाना । व्यास बादरायणजोजाना॥औरौ मुनि जे वरतपधारे । सूत परावर जाननवारे॥
तेजानहिंजेसकलपुराना । व्यासकृपासतिउत्तमजाना ॥७॥गोपितहूगुरुसबकहिदेहीं।प्रेमीशिष्यजानितेहिलेहीं॥८॥
तिनतिनमें जन मोक्ष उपाई।चिरंजीव तुम निश्चय पाई॥हमसों कहो कृपाकरि सोई।जामें मुक्ति अवश्यहि होई॥९॥
सुनौसूत कलिकाल कराला।बहुधाजन जीवहिं लघुकाला॥मंदमंदमति मंदहिभागा।तपेत्रिताप पापमन लागा॥१०॥
दोहा–भिन्नभिन्नसाधनविपुल,अहैंसुननकेयोग । तिनमहँकर्मअनेकहैं,जानहिंकोविदलोग ॥
चौ०–यातेइनमेंजोसतिसारा।निजमतितेनिकारिसुविचारा॥श्रद्धामानहमहिंअतिजानी।कहहुसूततुमसकलबखानी ॥
जाते हरिप्रसन्न हठि होवें । जन्मजन्मके पातकखोवें॥११॥सूत होइ कल्याणतुम्हारा।जानहुतुमभगवानउदारा ॥
श्रीवसुदेवदेवकीमाहीं । भक्तनपतिजेहिकारजकाहीं ॥ प्रगटेश्रीहरिकृपानिधाना।अहहुयोग्यसोकरनबखाना ॥१२॥
हमरे श्रवण करनकी चाहा।वर्णहुहरियशसहित उछाहा॥जेहिअवतार अनंदनिकेतू।भूतन भव पालनके हेतू॥१३॥
दोहा–परेघोरसंसारमहँ, विवशहुहैजेहिनाम । लेतअवशिछूटततुरत, यहसंसृतदुखधाम ॥
चौ०-अपनेतेजेहिडरडँडराई।हरिजनके समीप नहिं जाई१४हरिपद प्रगटत गंगविशाला।करतपूतसेऽये कछुकाला१५
सुनहुसूतजेमुनिअतिसाता।जेहिहरिपदआश्रितवरदाता॥तेनिजपदपरसतजनकाहीं।करहिंसुपावनतेहिछनमाहीं १६
वर्णनकरनयोगजेहिकर्मा । पुण्यकीर्त्तिविस्तारकधर्मा॥ तेहरिकेयशकलिमलहारी।कौनसुनैशुचिहोनविचारी॥१७॥
लीलाहित जेबहुवपुधारहिं।दासन दीहदुरित दुखदारहिं॥तासु उदार कर्मबुधगाये।गुण श्रद्धाकहियसुखछाये॥१८॥
दोहा–जेहरिनिजआधीनते, लीलाकरहिंअपार । तिनशुभअवतारनिकथा, कहौसकलमतिचार ॥ १९ ॥
चौ०-उत्तमकीरतिविक्रमकाहीं।श्रवणकरतहमनाहिंअघाहीं॥जोनसुनतसबरसिकनकाहीं।होतस्वादअनिपदपदमाहीं२०
लीलाअमितगूढ़भगवाना । बल्युतकेशवकृपानिधाना ॥कियेअमानुपकर्मअमाना।परतश्रवणमहँसुधासमाना॥२१॥

...सरलहहीं ॥२२॥
...तरणचाहकीन्हेततकाला॥तिनहमकोविभिन...
दोहा—योगेश्वरब्रह्मण्यहरि, धर्मवर्मअभिराम। करिभूतलली...
कहहुसूतमतिमंततुम, हमकोसकलबुझाय। धर्मकौनकेशरणअब, जातभयोअकुलाय॥ २३ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजबांधवेश विश्वनाथसिंहात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदांबुनिधौप्रथमस्कंधेप्रथमस्तरंगः॥ १ ॥

श्रीवेदव्यास उवाच।

...इमिजबहीं॥सूतभये आनंदित तबहीं॥तिनकोवचनसराहिअदंभा॥सूतकहनकोकीनअरंभा१
...) जेजन्महितेकर्महिंत्यागी॥दुतीसहायनलियेविरागी॥चलेजातपरिपूरणज्ञाना॥व्यासपिताजेहिपरमसुजाना
... । शुकमें तरुह्वैउतरउचारे॥ सबभूतनके अंतर्यामी। तिनशुकदेवमुनीशनमामी॥२॥
... । अखिलश्रुतिनसारहिजोगावा॥अनुपमअखिलपुराणअनूपा। जीवईशपरकाशकदीपा॥
दोहा—तरिबोचाहैजीवको, यहभवपारावार। ताकेउरअज्ञानको, नाशलगावत पार॥
—ऐसोश्रीभागवतपुराना॥गोप्यकृपाकरिकियजिनगाना॥व्याससुवनमुनिगुरुविख्याते॥तिनकेअबशिशरणहमजाते
... । देवसरस्वतिव्यासहिमुदमहँ॥वंदनकरितिनचरणसदाहीं॥वरणहिंसकलपुराणनकाहीं॥४
... काहीं। तुमपूछ्योसुंदरमोहिंपाही॥ कृष्णविषयकियप्रश्नहिसोई। जातेआत्मप्रसन्नहिहोई॥५॥
... । जातेईशप्रसन्नहिहोई॥ सोसुभक्तिजातेहरिमाही। होइसोपरमधरमजनकाही॥६॥
दोहा—वासुदेवभगवानमहँ, भक्तिकरनजोलाग॥ उपजावतनिरहेतुके, तुरतज्ञानवैराग॥ ७॥
... जोजनधर्मकियोशुभरीती। श्रीपतिकथाभईनहिंप्रीती॥तौताकोकेवलश्रमजानो। वृथाजन्मसंसारहिमानो ८
... । ताकोफलनहिंअर्थहिमानो॥ जेहिधनकोफलधर्महिंभावै। तेहिधनफलनहिंकामकहावै ९
जीवनहेतुअहैयहकामा। तेहिफलनहिंइंद्रिनआरामा॥जीवनफलहैतत्त्वविचारब। करिजगकर्मनस्वर्गसिधारब १०
तत्त्वकहैमुनिअद्वयज्ञानहि। ब्रह्मपरमात्महिभगवानहि॥ तातेमुनिजेश्रद्धामाना। धर्मजनितवैरागसुजाना॥११॥
दोहा—इनतेयुतवरभक्तिते, निजजीवात्मामाहिं। अंतर्यामीकृष्णको, निरखत रहैसदाहिं॥ १२॥
यातेद्विजवरजननकृत, वर्णाश्रमअनुसार। सकलधर्मकीसिद्धिहै, हरितोषनसुखसार॥ १३॥
चौ०—तातेकरिइकाग्रचंचलमन। श्रवणकीर्तनसुमिरणपूजन॥करैसदाभगवानहिकेरो। जोभक्तनकोनाथनिवेरो
कोविदजासुध्यानअसधारे। कर्मग्रंथखंडनकरिडारे॥ ताकेकथामाहँअतिप्रीती। कोनहिंकरैसहितपरतीती
जाकेश्रवणकरनकीचाहा। बाढ्योश्रद्धासहितप्रवाहा॥ पुण्यतीर्थसेवनतेताके। तिमिमहानजनपरमदयाके
तिनकेसेवनतेशुभरीती। बिप्रहोतहरिकथासप्रीती॥१६॥ पुण्यश्रवणकीर्तनजेहिकेरे। सबसज्जनकेसुहृदनिबेरे
दोहा—श्रवणकरतहीनिजकथा, ताकेहियकरिवास। सकलअमंगलकोहरत, जेहरिरमानिवास॥ १७॥
चौ०—भयेदूरिअघबहुजबतनते। संततसंतनकेसेवनते॥ तबउत्तमश्लोकाहिमाही। होतिनिश्चलाभक्तिसदाही॥१
... थितसतगुणमहँचित्तप्रसन्ना॥होतिसर्वदारुचिसंपन्न
... । भगवतभक्तियोगतेजाको॥ भगवततत्त्वविज्ञानहिहोवै। जनमजनमकेसंसृतखोवै २
... काही। हृदकीग्रंथछूटिसबजाही॥ दूरिहोहिंसबसंशयतासू। छीनहोहिंसबकर्मउआसू॥२
दोहा—यातेमुदतेसुकविचित, करप्रसादिनिभक्ति॥ करहिंसदाभगवानमें, तजिजगकीआसक्ति॥ २२॥
चौ०—सतरजतमगुणप्रकृतिहिकेरे॥तिनमेंएकपरपुरुषनिवेरे॥सोजगभवपालनलयहेतू। धराहिनामविविधहरिवृषकेतू

तेनमेंतत्त्वनियामकजोहै । सतितातेमंगलजनकोहै ॥ २३ ॥ जैसे महिविकारहैदारू । तेहितेप्रगटधूमपरचारू ॥
.तेअनलहोतमखसाधक । पुण्यप्रवर्तकअरुअघबाधक ॥ तैसेतमतेरजकोजानो । रजतेसत्वगुणहिअनुमानो ॥
ातुसाधनहरिदरशनकेरो । तमरजतेअघबाधकहेरो ॥ २४ ॥ यातेअधोक्षजहिभगवाने । सत्वप्रचारकशुद्धमहाने ॥

दोहा–कियोसकलमुनिजनप्रथम, सेवनमनहिलगाइ । तिनअनगुणयहजगतमें, भजतसबैबनिजाइ ॥ २५ ॥

तेमुमुक्षुहैंपरमसुजाना । तेतजिघोरभूतपतिनाना ॥ अरुनिंदातजिदेवनकेरी । नारायणकीकलाघनेरी ॥
त्त्वप्रचारतिआनँदमाहीं।भजतरहैजगमहँतिनकाहीं॥२६॥जेरजतमप्रकृतिहिजगमाहीं।तेरजतमप्रकृतिहिसुरकाहीं।
रजाभूतपितरनकेईशन । भजहिपुत्रधनभूतिहेतुजन ॥ २७ ॥ वासुदेवपरवेदहिजानो । वासुदेवपरयज्ञबखानो ॥
वासुदेवपरयोगगनायो । वासुदेवपरकृपावतायो ॥ वासुदेवहैंपरमहिज्ञाना । वासुदेवपरतपहिबखाना ॥ २८ ॥

दोहा–वासुदेवपरधर्महैं, परगतिवासुहिदेव । अंतर्यामीसुरनके, रक्षत जनन सदेव ॥ २९ ॥

सोईयकहरिसृष्टिहिआगे।तेहिप्राकृतगुणकबहुँनलागे॥सतअरुअसतगुणमयीमाया। तातेविभुयहजगउपजाया॥३०॥
मायाकृतयहजगगुणकाजू । तामेंजीवसहितयदुराजू ॥ अंतःप्रविसिमनोगुणवाना । देखिपरैसबमेंभगवाना ॥ ३१ ॥
जैसेविविधदारुमहँयेके । प्रगटिशिखामनुलसतअनेके ॥ तैसेहरिजीवांतर्यामी । भूतनमेंविलसैबहुनामी ॥ ३२ ॥
भूतसूक्ष्मइंद्रियमनजोहै।गुणमयभावकह्योतिनकोहै ॥ इनतेनिजनिर्मितभूतनमें । प्रविशिजीवद्वाराबहुजनमें ॥३३॥

दोहा–सकलगुणनकोभोगहीं, येईश्रीभगवान । सकलकर्मकोकरतहीं, जीवहिद्वारमहान ॥
यहीलोककर्ताहरी, तत्त्वप्रवर्तकजोइ । तिर्यकदेवमनुष्यमें, लीलावपुधरिसोइ ॥
लोकनकीपालनकरहिं, तिनकेचरितनगाइ । विनप्रयासभवसिंधुको, पामरहूतरिजाइ ॥ ३४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंद
अंबुनिधौप्रथमस्कंधेद्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

श्रीसूतउवाच ।

प्रथमहिहरिमहदादिककरिकै । लोकनिउत्पतिइच्छाधरिकै ॥ पंचभूतइंद्रियएकादश । येहीकलाकहावतषोडश॥१॥
इनअभिमानीसुरमयरूपा । प्रगटसुपौरुषधर्योअनूपा ॥ सोवतिजेहिजलमहँभगवाना । नाभीसरतेकमलमहाना॥
तातेभयोचतुर्मुखसोई । पतिमरीचिआदिककोजोई॥२॥तिनकेअंगप्रकृतिपरिणामा । कियेकल्पनालोकनग्रामा ॥
सोहैशुद्धरूपभगवाना । उत्तमसद्गुरुकेरनिधाना ॥ ३ ॥ सहसचरणउरभुजमुखजामें । अद्भुतसहसशीशशोभामें ॥

दोहा–नासाश्रुतिदृगसहसपर, कुंडलमुकुटलसंत । सोहरिवपुनिर्महदगनि, देखहिंसंततसंत ॥ ४ ॥

यहअनिरुधअवतारनिधाना।अव्ययबीजवेदकरिगाना ॥ जेहिअंशांशसृजतसंसारा । सुरनरतिर्यकयोनिअपारा॥५॥
सोईहरिविरंचिकेद्वारा । धर्योप्रथमशूकरअवतारा ॥ दुष्करपरमअखंडितजोने । द्विजह्वैब्रह्मचर्यकियतौने ॥ ६ ॥
पुनियहजगमंगलकेकारण । गईरसातलरसाउधारण ॥ श्रीयज्ञेशचरित्रउदारा । धर्योदुतीशूकरअवतारा ॥ ७ ॥
पुनितृतीयधरिनारदरूपा । पंचरात्रकियप्रगटअनूपा ॥ जामेंजानिपरतयहधर्मा । करैमुमुक्षुनप्रवृतिहिकर्मा ॥ ८ ॥

दोहा–नरनारायणधर्मसुत, लैचौथोअवतार । पुष्कर इंद्रियदमनयुत, कीन्ह्योतपहिअपार ॥ ९ ॥

सिद्धनपतिपाँचोअवतारा । कपिलदेवजेहिनामउचारा ॥ लुतभयोजोकालहिपाई [illegible] ॥
ऐसोसांख्यशास्त्रचितलाई । आसुरिमुनिसोंकह्योबुझाई॥१०॥
अनुसुइयाकेभयेकुमारा । आतमविद्याकोविस्तारा
[illegible]

दोहा–मेरुदेवभेनाभिते, ...

सवआश्रमतेश्रेष्ठगनायो । परमहंसकोधर्मदिखायो॥१३॥ऋषियांचितनवयोंवपुधारयो॥पृथुमहीपह्वैमुयशपसारयो॥
दुह्योधरणितेओषधिसवो । तातेभेकमनीयअखर्वा ॥ १४ ॥ पुनिचाक्षुपमन्वंतरमाहीं । प्रलयपयोधिनिढेचहुँवाहीं ॥
दशयोंधरयोमत्स्यअवतारा । पुहुमीरूपपोतविस्तारा ॥ तामेंसत्यव्रतहिचढ़ाई । रक्षाकियोदयादरशाई ॥ १५ ॥
एकादशैकमठवपुधारी।उदधिमथतसुरअसुरनिहारी॥पृष्ठहिपरमंदरगिरिधारयो॥क्षीरधिमथिनहुरत्ननिकारयो॥१६॥

दोहा—द्वादशयोंधन्वंतरे, धरतभयेअवतार । अमृतकुंभल्यायेरच्यो, आयुर्वेदअपार ॥ १७ ॥

चतुर्दशौनरहरिवपुधारयो । तृणसमहिरनकशिपुउरफारयो॥१८॥पंचदशोवामनवपुधारी॥इंद्रहिदेनहितेगिरिधारी ॥
महिपदत्रेयांचतवलिपासा । जातभयेभ्रुरमानिवासा॥१९॥ सोरहेंपरशुरामअवतारा । द्विजद्रोहीनृपक्षत्रिअपारा॥
तिनपरपरमकोपवपुधारा॥महिनिक्षत्रकियसकयकवारा॥२०॥ फेरिनिरखिजनअलपमतीके॥सुबुधिपराशरसत्यवतीके
सप्तदशौधरिव्यासस्वरूपा । कियेवेदतरुशाखअनूपा ॥ २१ ॥ अष्टादशपेसुरकेकाजा । भयेरामकोशलमहराजा ॥

दोहा—उदधिनिबंधनदशवदन, दवनसहितपरिवार । कियेअमानुपचरितबहु, श्रीदशरथ्यकुमार ॥ २२ ॥

उनइसयेंबलदेवस्वरूपा । प्रगटभयेयदुवंशअनूपा॥विसयेंकृष्णरूपप्रभुधारयो । करिचरित्रभुविभारउतारयो॥२३॥
इकइसयेंकलिकालहिघोरा॥मोहनहितअसुरनवरजोरा॥कीकटदेशनजिनसुतह्वैहे । बुधवपुनास्तिकमतप्रगटैहै॥२४॥
पुनिकलियुगकेअंतहिमाहीं । भयेचोरसवभूपनकाहीं ॥ विष्णुयशाब्राह्मणकेऐने । बाइसयेंकल्किकीयुतचैने ॥
ह्वैहैपापिननाशनहेतू। धर्मथापिहैरमानिकेतू२५॥सत्वनिधिहरिवपुअगणितहोते।जिमिअगाधसरसहसनिसोते॥२६॥

दोहा—ऋषिमुनिसुरमनुसुतबली, औरप्रजापतिजोइ । शौनकादितुमजानहू, कृष्णकलाहैसोइ ॥ २७ ॥

एहैंअंशकलाहरिकेरे । कृष्णस्वयंभगवाननिवेरे॥ असुरनतेव्याकुललखिलोकू । युगयुगमेंप्रगटतमुदथोकू ॥ २८ ॥
यहरहस्यहरिजन्मउदारे । भक्तिपूर्वकसांझसकारे ॥ ह्वैशुचिचितलगाइजोगावे । दुखसमूहसोवेगिनशावे ॥ २९ ॥
प्राकृतरूपरहितभगवाना॥जिनकोवपुगुणमयविज्ञाना॥ मायागुणमहदादिकतेयह॥जगनिजमयनिर्मिततातिनविग्रह३०
जिमिनभघनरजपवनहिमाहीं । अहैभिन्नपैमिलतलखाहीं॥जिमिजियकेदेवादिशरीरा॥कुमतीमानहिंनाहिंमतिधीरा३१

दोहा—जोयहदेहसँयोगते, लहैजन्मवहुजीव । अहैविलक्षणदेहते, सोवहजीवअतीव ॥

जीवनचक्षुरादिकोगोचर । कारणकारजप्रकृतिहुतेपर ॥ ३२ ॥ भिन्नथूलजगतेहैजोई । जीवस्वरूपजानियहसोई ॥
जनममरनजीवात्माकेरे । होतअज्ञानहिवशबहुतेरे ॥ हरिशेपीनिजशेपहिभाऊ । मिटतअज्ञानहितेमुनिराऊ ॥
ज्ञानस्वरूपजातजबपाई । तबयहजीवमुक्तह्वैजाई ॥ ३३ ॥ वैशारदीईशकीमाया । मायाकृतअभिमाननिकाया ॥
येजबद्वैनिवृत्तह्वैजाहीं । तवहिजीवमहिमाप्रगटाहीं ॥ पूजितहोतजीवतेहिमाहीं । यहजानहितत्त्वज्ञसदाहीं ॥

दोहा—प्राकृतजन्महितेरहित, जन्मनजीवसमान । हृदयवैठिसबजगतके, रक्षकहैंभगवान ॥ ३४ ॥
ऐसेहरिजन्मनिकरम, वेदगुह्यसहसान । ज्ञानीजनअनुरागसों, तिनकोकरहिंबखान ॥ ३५ ॥
जिनअमोघलीलाअमित, सोहरियहजगकाहि । सिरजहिंपालहिंनाशहीं,नहिंअसक्ततेहिमाहिं ॥

हैस्वतंत्रह्वैअंतर्यामी । पडगुणनायकखगपतिगामी॥ पडइंद्रियविपयनिकोभोगै । होहिनतिनअधीनकहुँयोगै॥३६॥
येयदुनायककीबहुलीला । करिकुतर्कनहिंजानिकुशीला ॥ मनतेरूपवचनतेनामा । जोविस्तारकरहिसुखधामा ॥
नटकसइंद्रजालसवलोगू । जानहिनहिंकेहिकौनसँयोगू॥३७॥जासुपराक्रमकोनहिंअंता । चक्रपाणिसवपरभगवंता॥
तिनकेमारगसोइपहिचानै। जोतजिकपटकृष्णकहँजानै॥सेवहिहरिपदकंजसुगंधू ।प्रीतिसहिततजिदुस्तरबंधू ॥३८॥

दोहा—यातेतुमजगधन्यहौ, शौनकादिमुनिराज । लोकनाथहरिमेंकरहु, भक्तिभावसुखसाज ॥

भयेकृष्णमेंअविचलभावे । आवागमनरहितह्वैजावे ॥३९॥ यहभागवतपुराणमहाना । हरिचरित्रमयवेदसमाना ॥
सबलोकनकेमंगलहेतू । कियोव्यासमुनिमोदनिकेतू ॥ ४० ॥ मंगलधामधन्यसुखदाई । सोयहभागवतैमनलाई ॥
ज्ञानिनवरदियशुकहिपढ़ाई । जोभवसिंधुनामश्रुतिगाई॥४१॥ सववेदनइतिहासनसारा।यहपुराणश्रीव्यासनिकारा॥
जबमुनियुतगंगातटमाहीं । धरिबैठेअनशनव्रतकाहीं ॥ तबशुकदेवपरिक्षितभूपे । दियसुनाइभागवतअनूपे॥४२॥

दोहा—धर्मज्ञानआदिकसहित, गयेधामभगवान ॥ ४३ ॥ कलिकुमतिनतमहरणअब, उयउभागवतभान ॥
सुजाना। सोश्रीशुकभागवतमहाना ॥४४॥ जबराजापरीक्षितहिकाहीं । यहभागवतपरममुदमाहीं
सुनावनश्रुतिसुखकंदा । बैठेसकलतहाँमुनिवृंदा ॥ सुनहुशौनकादिकतहँजाई । हमहूँबैठिरहेसुखपाई
सुहावन । श्रीभागवतजगतकरपावन ॥ हमहूँश्रीशुकदेवकृपाते । पढ्योभागवतकोदिनसाते
जेहिभांती । मतिअनुसारहिकथासोहाती ॥ सोहमतुमसोंसकलसुनैहैं । ताकोगुणहमहूँमुदपैहैं
दोहा—नैमिषवैष्णवक्षेत्रयह, तामेंबैठिसप्रीति । सुनहुविप्रहरिचरितको, यहीमुक्तिकीरीति ॥ ४५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृतेआनंदांबुनिधौप्रथमस्कंधेतृतयिस्तरंगः ॥ ३ ॥

व्या०उ०)यहिविधिसूतकहीजबबानी।तबसराहिमुनिकुलपतिज्ञानी॥ऋगवेदीबूडेसुखधारे।ऐसेशौनकवचनउचारे
शौ०उ०)—सूतसूतबुधवरबड़भागी।कथाभागवतसुखमेंपागी॥हमसोंकहहुपुनीतकहानी।जोनृपसोंशुकदेवबखानी
कौनेयुगकौनेअस्थाना । कौनहेतुकेहिकह्योसुजाना॥वेदव्यासमुनिअतिसुखछायो । श्रीभागवतपुराणहिगायो॥२
समदरशीतिनसुतशुकदेवा।जेजानहिंजियतनकोउभेवा॥तिनकीमतिनहिंहरिपदत्यागै।स्वातमअनुसंधानहिंजागै
दोहा—जिनमहत्वप्रगटैनहीं, मूढसरिसदरशाहिं । परमहंसअवतंशशुक, विचरहिंमही सदाहिं ॥ ४ ॥
एकसमैसुरसरिसुरनारी । नग्ननहातरहींछविवारी ॥ श्रीशुकदेवकढ़तहहँकै । बसननपहिरयौनग्नहुँज्वैकै
व्यासअनग्नकढ़ेजबजाई।पटपहिरयोतियतिनाहिंलजाई॥व्यासकह्योरेसुनहुगँवारी । मोहिंलखिलियकिमिपटतनुधारं
लखिसुतयुवानसारीलीन्ही।म्वहिंविलोकिक्योंलज्याकीन्ही॥तियकहतेहिननारिनरभानू।देखतजगस्वरूपभगवानू।
तुम्हरेनरनारिनकरभेदा । जानहुयदपिशास्त्रअरुवेदा॥५॥सोशुकमत्तमूकवतजडवत।कुरुजाँगलदेशनमेंविचरत ।
दोहा—सोहस्तिनपुरकौनविधि, आयोकाउरचाहि । कौनभाँतिपुरजनसकल, चीन्हिलेतभेताहि ॥ ६ ॥
भूपपरीक्षितमुनिसंवादा । भयोकौनविधियुतअहलादा॥जेहिसंवादमाँहश्रुतिरूपा । प्रगटभयोभागवतअनूपा ॥७॥
सोशुकगोदोहनकालैभर । पावनकरनगृहस्थनकेघर ॥ थिरह्वैखडेरहहिंसुखपाई । यहिविधिविचरहिंमहिमुनिराई।
सातदिनासोथिरह्वैकैसे । कह्योपुराणश्रेष्ठमुनिऐसे ॥८॥ परमभागवतअर्जुननाती । भाषहिंजिनकोमुनिनजमाती॥
जन्मकर्मतेहिअचरजकारी । कहहुसूतसोसकलविचारी॥९॥पांडवसुयशबढ़ावनवारो।सकलपुहुमिपतिजीतनहारो।
दोहा—सोगंगातटजायकै, अनशनव्रतकोधारि ॥ तज्योकौनेहेततें, नृपश्रीतुच्छविचारि ॥ १० ॥
लेधननिजशुभहितअरिपुंजा।शिरनावहिंजाकिपदकंजा ॥ जोलक्ष्मीनहिंछोड़नलायक।ताकोवहकिशोरकुरुनायक॥
प्राणसहितसोतजनउछाहा । कैसेकियोकहोकविनाहा॥११॥जोहरिभक्तिअहैजगपावन । तेजगमंगलभूतिबढ़ावन॥
निजजीवनराखहिंजगमाहीं।जिनजीवनस्वारथहितनाहीं॥सोभूपतिकिमिपरउपकारी।तज्योकलेवरतुच्छविचारी १२
सोसबकहोसूतसमुझाई । पूछ्योअनपूछ्योचितलाई॥जानहुतुमसबवेदमहाई । यहहमलियनिजमनठहराई ॥१३॥
दोहा—शौनकादिकेवचनसुनि, कह्योसूतहरपाइ । निजप्रश्नकेउत्तरन, सुनोसबैचितलाइ ॥
द्वापरकीसंध्यासमै, सत्यवतीकेव्यास ॥ सुमुनिपराशरतेभये, कलासुरमानिवास ॥
सोकबहूँसरस्वतिकेतीरा।प्रातहिकालपरशिशुचिनीरा।बैठनभयेअकेलइकांता।जोविप्रकनिर्ईश्वगविदांता१४॥१५॥
सोऋपिनिरखिअलखगतिकाले।ताकरिकैयुगधर्मविसाले।भयेअवनिमहँनेविपर्गने।प्रनियुगमुग्नग्शक्तिदिंगने॥१६॥
श्रद्धाहीनकुबुद्धिअधीरा । लघुआयुपहतभाग्यसुपीरा॥१७॥ऐसजननजोहिमुनिव्यासा।कांक्षिदिव्यदृष्टिपरकासा॥
सबवर्णाश्रमकोजोक्षेमू । सोविचारकीन्ह्योसतनेमू ॥ प्रजनशुद्धकरवैदिककर्मा । चातुर्होननामशुभधर्मा ॥ १८॥

दोहा—सोयज्ञनविस्तारहित, एकवेदकोव्यास । चारिभागकरदेतभे, पूरकरणद्विजआश ॥ १९ ॥

यजुसामअथर्वनवेद।। तिनकोकियउद्धारसुभेदा ॥पँचयोजोइतिहासपुराणा।ताकोभेदकियोनिरमाणा ॥ २०
ऋपिपैलवेदऋगधारी । कविजैमिनिसामहिअधिकारी ॥ वैशंपायनयजुगुणज्ञाता॥२१॥
इतिहासनपुराणकेधारक।पितारोमहर्षणजनतारक।२२
कियेविभागअनेकनतिनते । भयेवेदशाखायुतजिनते ॥२३॥जामेंतिनवेदनमतिमंदा । जानहिंविनप्रयाससानंदा

दोहा—ऐसोव्यासविचारिकै, विरच्येवेदविभाग । दीननपैअतिद्रवितहैं, दयाकरीवडभाग ॥ २४ ॥

औरोशूद्रद्विजाधमनारी । हैंनहिंएवेदनअधिकारी ॥ जानहिंनिजजनकर्मकल्याना । कैसेपैहैंक्षेममहाना ॥ २५
यहविचारिमुनिकृपानिधाना । रच्योमहाभारतभगवाना ॥ वैठेपुण्यसरस्वतितीरें । रहीजहाँनहिंजनकीभीरें
यदपिभयोनहिंजवसंतोपा ॥२६॥ तवनहिंभोप्रसन्नमनचोपा ॥
तहँविचारियहवैनउचारे।सकलधर्मकेजाननहारे॥२

दोहा—इनसवशासनमानिकै, यहभारतकेव्याज ॥ सववेदनकोअर्थमैं, दरशायोसुखसाज ॥

तियशूद्रादिकहूजेहिमाहीं॥निजधर्मादिकलखैंसदाहीं॥२९॥एतेहुपैआतमशुधमेरो।भयोनहींकियजतनघनेरो॥३०
किधौंनभगवतधर्मउचारे।जेहरिप्रियपरहंसनिप्यारे॥३१॥यहिविधिमुनिकेकरतविचारा ।
तवसरस्वतितटव्यासहिंपासा।आयेनारदसहितहुलासा॥३२॥ सुरपूजितनारदमुनिकाहीं । विधिवतपूज्योव्यासतहाँहीं
आदरकरिआसनवैठाये । अर्घ्यपाद्यदियअतिसुखछाये ॥

दोहा—कुशलप्रश्नसवभाँतिसों, पूछ्योव्यासमुनीश । अतिप्रसन्नमुनिहोतभे, नारददेवऋपीश ॥ ३३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीमद्भा-
गवतेआनंदअंबुनिधौप्रथमस्कंधेचतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

(सू०उ०)दोहा—पूजनकरिजवव्यासमुनि, वैठेआनँदपाय ॥ महायशीनारदकह्यो, वीणलियेमुसक्याय ॥ १ ॥

(ना०उ.)तनयपराशरकेवड़भा
सबअर्थनकरिकैपरिपूरो । रच्योमहाभारतअतिरूरो ॥३॥ धर्मादिकजेजाननलायक । तेउ
औरसनातनवेदनकाहीं । पढ्योविचारयोसंशयनाहीं ॥ एतेहुपैप्रभुशोचहुकैसे । आतमकोअकृतारथजैसे ॥
सुनिनारदकीमोहितवानी।वोलेव्यासजोरियुगपानी(व्या०)

दोहा—याकोकारणजोनहै, सोहमजानतनाहिं । हौसर्वज्ञविरंचिसुत, पूछतहैंतुमपाहिं ॥ ५ ॥

जेनिजमनहींतेजगकाहीं । सिरजहिंपालहिंनाशकराहीं ॥ जिनकोअहैनगुणसंबंधू । नाथपरावरसज्जनबंधू ॥
भजहुसदाअसपुरुषपुराना । तातेसकलगोप्यतुवजाना ॥ विचरहुत्रिभुवनमेंजिमिभानू । अंतरचरहौवायुसम
यातेआतमसाक्षीरूरे । परमभागवतसद्गुणपूरे ॥ वोधकवेदपरावरकेरो । तामें करिव्रतधर्मघनेरो ॥
महांपारजानियहलीजे । न्यूनहोइसोसवकहिदीजे ॥ ७ ॥ यहसुनिनारदकहहरपाई । सुनहुवादरायणचित

दोहा—विमलसुयशश्रीकृष्णको, गायोनहिंरसमाति । यातेनहींप्रसन्नमन, यहीन्यूनसवभांति ॥ ८

धर्मअर्थअरुकामकहानी । भारतमेंजसकह्योवखानी ॥ तसयदुपतिप्रभावनहिंगायो । तातेमनसंतोप न पाये
पदविचित्रहूग्रंथनमाहीं । जगपवित्रहरियशजिननाहीं ॥ तेकुमतिनकेग्रंथननाना । करतनहींसज्जनस
जैसेवहुवापसनिनिवासू । मानसहंसकरहिंनहिंवासू ॥१०॥ जामेंहरियशअंकितनामा । यदपि
सोइप्रबंधजनपापनशावन । वर्णतसुनतसंतजेहिगावत॥११॥ज्ञाननिरंजनज्ञानवखान्यो। कर्महुँतवरजोहि

दोहा—सोउहरिकेभक्तिविन, नेकुनशोभितहोय ॥ विनहरिअर्पितकर्म जो, कैसेशोभितहोय ॥

सोतोसदाअमंगलकारी । यद्यपिकियोअकामहुँभारी ॥ १२ ॥ यातेमहाभागहेव्यासा । सुयशरावरोजगतप्रकाशा ॥
मअमोघदरशीव्रतधारी । सवभूतनकेअतिहितकारी ॥ १३॥ तातेश्रीहरिसुयशअपारे । संसृतवंधनमोचनवारे ॥
करिविचारगावहुहरिलीला । सहितपरमअनुरागसुशीला ॥ लीलानामरूपगुणधामा । यदुनंदनकेअतिअभिरामा॥
नकोछोड़िऔरजोगेहो।तौमतिकीथिरतानहिंपैहो ॥ उदधिमध्यलहिपवनप्रसंगा।भ्रमतिनावजिमिसंगतरंगा ॥१४॥
दोहा–अर्थकाममेंसहजही, जगजनहेंआसक्त ॥ अर्थकामाहितधर्मतिन, उपदेश्योतुमव्यक्त ॥
[illegible] सजगलो [illegible] । करिहैंमोक्षधर्मउतयोगू ॥ उपदेशतकहिहैंयहवानी । व्यासदेवतौयहीवखानी ॥
[illegible]तेतुमयहनिंद[illegible] [illegible]वतधर्मजु [illegible] ॥ अर्थधर्मतजिमोक्षउपाई।करिहैंनाहिंकहेसमुझाई ॥१५॥
जेनिवृत्तिमारगरतज्ञानी । तेचरित्रवहुशारँगपानी ॥ लहेंजानिअनंदहिमाहीं । हेंहैकछुप्रयासतिननाही ॥
पजेनरमायागुणभीने । अरुहैंआतमज्ञानविहीने ॥ तेजानहिंजिमिकृष्णचरित्रै । रचउव्याससोइपरमपवित्रै ॥ १६॥
दोहा–अपनोधर्महिछोड़िके, श्रीहरिपदअरविंद ॥ भजनकरतजोसर्वदा, कीरनिजमनहिं मिलिन्द ॥
यद्यपिभयोसिद्धतेहिनाहीं । छूटिगयोतनुवीचहिंमाहीं ॥ तदपिअमंगलभयोनतासू । करहिंआपनोरमानिवासू ॥
तजिहरिभक्तिकरतनिजधर्मा।होतनकवहुँकाहुकोशर्मा॥यागंभीरकालगतिपाई । त्रिभुवनभ्रमततजीदुखछाई॥१७॥
हरिकेदरशनमिलेंनकवहूं । तातेकरिविचारजनअवहूं ॥ जामेंमिलैभक्तियदुराई । सोइनरकरैविशेषउपाई ॥
भगवतभक्तछोड़िकेजोसुख।मिलतअहैसवथलसोअतिदुख ॥१८॥श्रीमुकुंदपदजेअनुरागी।तेइजगतमें हेंवड़भागी ॥
दोहा–आवहिंतेनहिंऔरसम, कैसेहु यहसंसार ॥ श्रीहरिपदछोडहिनहीं, हैग्राहीरससार ॥ १९ ॥
उत्पतिअरुपालनसंहारा । जेहरितेहोतेवहुवारा ॥ यहसवविश्वसोइभगवाना । तदपिविलक्षणपुरुषपुराना ॥
सोतुम्हारसवविधितेजानो । तातेमैंइकदेशवखानो॥२०॥तुमअमोघदरशीहौव्यासा । अहोअंशतुमजगतनिवासा ॥
प्रगटेजगमंगलकेहेतू । कर्मअधीननजन्मनिकेतू ॥ ऐसेनिजतेनिजकोजानहु । तातेहरिगुणचरितवखानहु ॥ २१ ॥
तपकीन्हेकोशास्त्रपढ़ेको । दानदियेकोयज्ञकियेको ॥ वापीकूपतडागघनेरो [illegible] ज्ञानविज्ञानआदिसवकेरो ॥
दोहा–इनसवकोफलअचलयह, सवकविकरहिंवखान ॥ प्रीतिसहितजोहरिचरित, करतनिरंतरगान ॥ २२ ॥
प्रथमकल्पमहँपूरवजनमें । वेदवादिभूसुरनसदनमें ॥ दासीसुतहमरहेमुनीशा । तहँआवतभेकोउयोगीशा ॥
वर्षाकालजानिकियवासा।तवद्विजवरसवसहितहुलासा॥वालकगुणिवहुभाँतिसिखाये ।तिनसेवामेंमोहिंलगाये ॥२३॥
तवयेंनाहिंचपलताकीन्हीं।वालखेलकीरुचितजिदीन्हीं ॥ अनुवर्तीजितइंद्रियहैके।भापुतरह्योनवहुतिनज्वैके ॥२४॥
यहिविधिगयोकालकछुवीती । सेवाकरतरह्योयुतप्रीती ॥ यद्यपियोगेश्वरसमदरशी । तदपिकृपादियमोपरवरशी ॥
दोहा–एकवारयोगीशने, निजजूठनमोहिंदीन । सोप्रसादमेंखायकै, भयोपापतेहीन ॥
यहिविधिकियसेवातिनकेरी । भईचित्तशुद्धतायनेरी ॥ भगवतभजनमाहँमतिगाढ़ी । मेरेमानसमेंरुचिवाढ़ी ॥२५॥
कृष्णकथानितगावतमाहीं । मुनिनअनुग्रहपायतहाँहीं ॥ हमहूँनितहिंमनोहरगाथा । सादरसुनतभयेमुनिनाथा ॥
कथाश्रवणतेसहितप्रतीती । हरिचरणनमेंभेममप्रीती ॥ २६॥ प्रीतिलगेहरिमेमुनिराई । ममनिश्चलमतिभईमहाई ॥
मैंहरिदासआपनेमाहीं । कारणकार्यरूपजगकाहीं॥हरिमायाकरिरचितवखान्यो।जेहिमतिकरिकेयहमेंजान्यो ॥२७॥
दोहा–यहिविधियोगिनिमुखसुनत, कृष्णकथातिहुँकाल । वीतीवर्षाशरदऋतु, म्वहिंभेभक्तिरसाल ॥ २८ ॥
मोहिंअकल्मषनामृतजानी । श्रद्धावानपरमपहिचानी ॥ अनुचरइंद्रियजितअनुरागी।वालकहूं मेंरह्योसुभागी॥२९॥
ऐसेहुँमुहियात्राकेकाला । तेयोगीश्वरदीनदयाला ॥ हरिकोकह्योगोप्यअतिज्ञाना । सोमोसोंकरिकृपावखाना॥३०॥
जेहिज्ञानहितेंमैमुनिराऊ। जान्येहरिमायापरभाऊ ॥ जोनज्ञानतेसकलमुनीशा । पावहिंपदउत्तमजगदीशा॥३१॥
ब्रह्मईशभगवानहिमाहीं । अर्पणकियतेकर्मसदाहीं ॥ तइत्रैतापनशावनवारे । निगमागमयोंकहहिंपुकारे ॥३२॥
दोहा–जोनवस्तुतिननरनके, रोगहोतहेंजोन ॥ तौनवस्तुसेवनकिये, मिटतनहींकुजतोन ॥ ३३ ॥

हरिमहँअर्पितकर्महिंकीने । लहतमोक्षहिंनरसुखभीने ॥ कियेसकामकर्मपुनिसोई । आवागमनरहितनहिंहोई ॥२४॥
हरितोषकजोकर्मकहावै । सोइजगज्ञानभक्तिउपजावै ॥ २५ ॥ हरिशासनतेवारहिंवारा । करतकर्मजेसुजनउदारा ॥
तेऊपायभक्तिभगवाने । रूपध्यानकरिनामहिंगाने ॥ ३६ ॥
'नमोभगवतेतुभ्यंवासुदेवायधीमहि।प्रद्युम्नायानिरुद्धायनमःसंकर्षणायच' ॥३७॥ यहमंत्रहितेएवपुचारी । पूजनकरैं
नामउच्चारी । प्राकृतमूर्तिरहितभगवाना । मंत्रमूर्तियुतकृपानिधाना॥ऐसेयज्ञपुरुषकहँजोई। पूजेज्ञानवानजगसोई ॥
दोहा—यहनिजआज्ञामेंनिरत, मोहिंसमुझिभगवान । दियोज्ञानऐश्वर्यपुनि, निजपदभावमहान ॥ ३९ ॥
हैबड़यशहरिकोसुयश, करहुतुमहुँअवगान । जाननकीजेहिजानिकै, इच्छारहतनआन ॥
जिनकोमनत्रयतापते, तापितवारहिंवार ॥ तिनकीताप नशावनो, इकयशनंदकुमार ॥ ४० ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा-
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदअंबुनिधौप्रथमस्कन्धेपंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

सूतउवाच ।

दोहा—नारदकोयहिभाँतिसुनि, जन्मकर्म सहुलास ॥ तिनसोंपुनिपूँछतभये, सत्यवतीसुत व्यास ॥ १ ॥
(व्या०उ०) जबवेयोगेश्वरदैज्ञाना।औरठौरकोकियोपयाना॥तबतुमकाहकियोमुनिराई । तुमतोबालकरहेबनाई॥२॥
कौनभाँतितवउमिरिसिरानी । कैसेतज्यौकलेवरज्ञानी ॥३॥ पूर्वकल्पकोसुरतितिहारी । काहेसक्योनकालबिसारी॥
जौनकरतसबकोसंहारा४यहसुनिनारदवचनउचारा(ना०उ०)मुहिंदैज्ञानगयेसंन्यासी।तबशिशुमैंयहकियतपराशी५।
इकसुतमैंद्विजदासीमाता । मोपैकियेसनेहअघाता ॥ ६ ॥ यदपिचहैमेरोकल्याणा । परवशकरिनसकीममत्राणा ॥
दोहा—करिनसकतकछुआपसे, ईश्वरवशयहलोग । दारुमयीयोषितयथा, नाचत नटसंयोग ॥ ७ ॥
पंचवर्षकोबालकरूपा।रहतभयोद्विजकुलहिंअनूपा॥जननिनिहवशकर्महिंठान्यो।देशकालदिशिकछुनहिंजान्यो ॥८॥
गऊदुहनहितनिशिइकवारा।ममजननीतजिगईअगारा॥तिहिपगतलमगपरचोभुजंगा।प्रेरितकालडस्योतिहिअंगा ९॥
तबजननीसुरलोकसिधारी । मैंमानीअतिकृपामुरारी॥हरिनिजजननचहैकल्याना।यहगुणिउत्तरकियोपयाना ॥१०॥
तहँदेशधनधान्यहिंपूरे । नगरग्रामव्रजआकररूरे॥वनउपवनवाटिकासुहावन । गिरितटकृपिकग्रामसुखछावन॥११॥
दोहा—चित्रधातुतेशैलबहु, परमविचित्रसोहाय ॥ गजगंजितशाखाविपुल, ऐसेद्रुमदरशाय ॥
विमलवारियुतविपुलतड़ागा । सुरसेवितसरसीबहुजागा॥१२॥गुंजहिकूजहिंभृंगविहंगा।यहसबनिरखतगयोअसंगा ॥
पुनिइककाननलख्योभयावन।कुशकीचकसरवंशसोहावन१३व्यालउलूकशृगालहुँघोरा।डरपावहिंकरिशोरकठोरा ॥
श्रमितक्षुधिततृपितोतहँभयऊ।तबसरितातटतुरताहिंगयऊ॥न्हाइपानकरिश्रमकरिदूरी१५तिहिनिर्जनवनमहँभैभूरी॥
वासुदेवतरुकेतरजाई । बैठ्योपरममोदकहँपाई ॥ जियअंतर्यामीभगवाना । गुरुशिक्षितकीन्ह्योमनध्याना ॥ १६॥
दोहा—भावमगनमनदृगसजल, ध्यानकरतपदकंज ॥ धीरेधीरेहरिहिये, प्रगटतभेसुखपुंज ॥ १७ ॥
प्रेमपुलकयुतभयोशरीरा । बूड्योआनँदसिंधुगँभीरा ॥ भूलिगयोआपनोपरायो । केवलकृष्णरूपमनलायो ॥ १८ ॥
परममनोहरशोकनशावन । ऐसोश्यामस्वरूपसोहावन ॥ क्षणभरप्रगटरह्योमनमेरे । फेरिनदेखिपरच्योबहुहेरे ॥
तबव्याकुलमैंउठ्योमुनीशा।मणिविहीनजिमिविकलफणीशा१९पुनिथिरमनकियदेखनहेतू।प्रगटभयेनहिंरमानिकेतू।
जैसेविषयलालचीकोई।लहिलघुभोगनतोषितहोई ॥२०॥ यहिविधियत्नकरततेहिवनमें।गिराअगोचरप्रभुतेहिक्षणमें॥
दोहा—कह्योवचनगंभीरअति, नभतेसुधासमान । शोकमिटावनमोरसब, सुनियेव्याससुजान ॥ २१ ॥
सुनुबालकयहिजन्महिंमाहीं । मेरेदरशयोगतूनाहीं॥जिनकेकामादिकनहिंजाहीं । तेकुयोगिमोहिंदेखतनाहीं ॥२२॥

योदेखायरूपइकवारा । सोअनुरागहिंहेतुकुमारा ॥ ममअनुरागिपुरुषजोकोई । क्रमसेविषयनाशतेहिहोई ॥२३॥
बड़ी संतसेवा ते तेरी । मोमैं लागी सुमति घनेरी ॥ यह निंदिततनुतजिमुनिराई । जैहौमेरेलोकसिधाई ॥
नबमेरोपार्षदह्वैजैहो । तबतुमपरमानंदहिपैहो ॥२४॥तेरीमतिजोमोमहँलागी । सोममकृपातोहिंनहिंत्यागी ॥
दोहा-प्रलयकालहूमेंसुरति, रहिहैमोमहँलागि । ममप्रसादतेसर्वदा, दुखजैहैसबभागि ॥ २५ ॥
कहिमौनभयेतेईश्वर । प्राकृतगुणनरहितवपुजिनकर ॥ पायकृपातिनकीवनमाहीं । मैंतबशिवअजपूजितहाहीं ॥
[illegible] ।उरमहँभयोअनंदअपारा ॥२६॥ मंगलकरणनामहरिकेरे । अतिगोपितअरुकर्मघनेरे ॥
[illegible] ॥२७
[illegible] ॥२८
दोहा-देनलगेजबमोहिंवपु, भागवतीयदुवीर । प्रारब्धहिंभोगीतबै, भौतिकछुट्योशरीर ॥ २९ ॥
[illegible] सोयेसिंधुसलिलभगवाना॥नाभिकमलअजशैनैलीन्ह्यो । तिनप्राणहिंप्रवेशमेंकीन्ह्यो ३०
[illegible] ३१
[illegible] । मेरीगतिकहुँरोकिनजाई॥ भीतरबाहरत्रिभुवनमाहीं।विचरहुँअविचलभक्तिसदाहीं ॥३२॥
[illegible] । जेहिसुरब्रह्मबोधउपजावन॥ताहिवजायगायहरिगाथा॥मैंविचरहुँत्रिभुवनमुनिनाथा॥३३॥
दोहा-निजचरित्रगावतनिरखि,प्रिययशतीरथपाद । कृष्णबोलायेसमहियै,ममआवहिसुप्रसाद ॥ ३४ ॥
चाहतविषयनबारहिबारा,व्याकुलचित्तपरेसंसारा ॥ तिनकोश्रीहरिकथासोहाई । भवसागरनौकाश्रुतिगाई ॥ ३५ ॥
कामलोभहतमानसजोई। जसहरिकथासुनतशुचिहोई॥तसनहिंहोतकियेतपयोगू।यहरहस्यजानहिंमुनिलोगू ॥३६॥
परमगुप्तममजन्महिंकर्मा । अरुतुमआत्मतोषहरिधर्मा ॥ येसबपूछ्योजोमुनिराई । सोसबतुमसोंकह्योबुझाई॥३७॥

सूतउवाच ।

सत्यवतीसुतसोंयहिरीती।नारदमुनिकहिकथासप्रीती॥माँगिविदाकरवीणबजावत।मुनिस्वतंत्रगवनेसुखछावत॥३८॥
दोहा-अहोधन्यदेवर्षिहरि, कीरतिवीणबजाय । हर्षितगावतजगतजो, हर्षितकरतबनाय ॥ ३९ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौप्रथमस्कंधेषष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

दोहा-नारदमुनिअरुव्यासको, सुनिअद्भुतसंवाद । बोलेशौनकसूतसों, पाय परमअहलाद ॥

शौनकउवाच ।

जबनारदमुनिकियेपयाना । तबमुनिव्यासदेवभगवाना ॥ सुनिनारदकीगिरासुहाई । कहाकियोहियहर्षबढ़ाई ॥
सुनिशौनककेवचनसुहाये।बोलेसूतहर्षउरछाये॥१॥(सूतउ०)सरस्वतिसरपश्चिमतटमाहीं।आश्रमशम्याप्रासतहाँहीं
ऋषिनयज्ञकोवर्द्धनहारा ॥२॥ तहाँबसेंद्विजविपुलउदारा ॥ बदरीवनमंडितचहुँवोरा । अतिरमणीयलगतसबठोरा ॥
तेहिनिजआश्रमव्याससुजाना।शुचिह्वैमनथिरकियभगवाना३निश्चलनिर्मलमनमाहीं।भक्तियोगकरिव्यासतहाहीं
दोहा-पुरुषपुराणोलखतभे, मायातेहिआधीन ॥ ४ ॥ जेहिमायाकरिजीवयह, मोहितहै प्राचीन ॥
यद्यपित्रिगुणात्मकयहितनते । जीवविलक्षणहैअरुमनते॥तदपिआपनोवपुयहमानन।तेहिवशकर्मअनर्थकठानन॥५॥
जेहितेसकलअनर्थनशाहीं । भक्तियोगतेजानतनाहीं ॥ तिनकेहेतुव्यासमुनिगाई । श्रीभागवतसंहितागाई ॥ ६ ॥
जेहिभागवतसुनतश्रवणनमें । जगतजननकेताहीक्षणमें ॥ भक्तिहोतिपदशार्ङ्गधारी । शोकमोहभैभंजनवारी॥७॥
सोभागवतेशोधिबनायो । विरतिनिरतिसुतशुकेपढ़ायो ॥८॥ तबशौनकपूछ्योदरपाई । यहशंकाहमरेमनआई ॥
दोहा-विरतिनिरतिचाहतनकछु,आत्मसुखहिंरतिसेव॥पढ्योमहापदसंहिता,केहिकारणशुकदेव ॥ ९ ॥
कह्योसूततबअतिहरपाई । सुनहुशौनकादिकचितलाई ॥ जेआत्मिकमंथननहिंमाने । आनममुराकृष्णउरआने ॥

तेतजिसकलफलनकीआशा।भक्तिकरहिंनितरमानिवासा।कृष्णचंद्रकेगुणयहिभाँती।करहिंस्ववशनिजभक्तिजमाती१
हरिगुणमेंमोहितमतिजाकी । संततरहतिभक्तरसछाकी॥सोशुकहरिभक्तनकोप्यारो।पढ्योमहाभागवतउदारो॥१
भूपपरीक्षितजेऋपिराऊ । जन्मकर्मतिनमुक्तिप्रभाऊ ॥ अरुपांडवनचरित्रअपारा । जिनमेंकृष्णकथाविस्तारा
दोहा—यहसबवर्णनकरहिंगे,तुमकोसपदिबुझाइ । सुनोशौनकादिकसबै, सावधानचितलाइ ॥ १२ ॥
जबकौरवअरुपांडवकेरो । संजयवंशिनकेरबनेरो ॥ कुरुक्षेत्रमहँभोसंग्रामा । वीरगयेसबवीरहिंधामा
रह्योएकदुर्योधनराई । भीमसेनतहँक्रोधहिछाई ॥ गदायुद्धमहँगदाचलाई । जानुतोरितेहिदियोगिराई ॥ १३
तेहिनिशिद्रोणपुत्रतहँआयो । लखिदुर्योधनकहँदुखपायो ॥ राजाकेप्रियकरनविचारी । गयेरैनिअरिसैनमँझारी
पंचद्रौपदीकेसुतजहँ वै । सोवतरहेगयोद्विजतहँ वै ॥ खड्गनिकासिशीशतिनकाटे । धृष्टद्युम्नादिकशिरछाँटे
दोहा—द्रुपदसुतासुतशिरनको, ल्यायोजहँकुरुभूप । जानिशिशुनशिरनृपतिकह, कियोननिजअनुरूप ॥
निंदितकर्मकियोद्विजराई । वंशछेदह्वैगयोवनाई ॥ हर्षशोकजबभयोसमाना । त्यागोतबदुर्योधनप्राना ॥ १४
देखिद्रौपदीसुतनविनाशा । दुसहदुःखतनुकियोप्रकाशा ॥ रोदनकरनलगीभरिदाहा । बह्योविलोचनअंबुप्रवाहा
तहँअर्जुनअतिकोपहिपागे।द्रुपदसुतहिसमुझावनलागे।(अ.उ०)अ [illegible]
ताकेनिकटवेगिमैंजाई । गांडीवहिंसोबाणचलाई ॥ काटितासुशिरजबमैंलैहौं । तेहिबैठायतुमहिनहवैहौं ॥
दोहा—तबतेरोमैंपोंछिहौं,नैनवारिसुकुमारि । मृतसुतवारीममवचन, तूलेसत्यविचारि ॥ १६ ॥
(सू०उ०)यहिविधिद्रौपदिकहँसमुझाई।विविधमनोहरवचनसुनाई॥कवचपहिरिगांडीवहिलैके।मीतकृष्णकोसारथिकैकै
रथचढिकपिध्वजकोपहिछायो । द्रोणसुवनपरआतुरधायो॥१७॥आवतकोपितअर्जुनकाहीं।दूरिहितेदेखतदृगमाहीं॥
सुतघालकनिजमनहिंडराई । रथचढ़िभाग्योप्राणबचाई ॥ जैसेशंकरकोभयपाई । दक्षचल्योगेविकलपराई ॥
भरिशकभाग्योद्रोणकुमारा१८अश्वभयेमगथकितअपारा॥बचबआपनोजबहिंनदेख्यो।अस्त्रब्रह्मशररक्षकलेख्यो१९॥
दोहा—निजप्राणहिंसंकटनिरखि, सावधानशुचिविप्र । जानतउपसंहारनहिं, तज्यो ब्रह्मशरछिप्र ॥ २० ॥
तातेप्रगट्योतेजप्रचंडा । छायोदशहूँदिशनअखंडा ॥ तबप्राणनआपत्तिनिहारी । हरिसोंअर्जुनगिराउचारी ॥ २१ ॥
(अ०उ०)महाबाहुहेकृष्णमुरारी । निजभक्तनकेसंकटहारी॥जेजगतापजातहैंजारे । तिनकेतुमहिंबचावनहारे॥२२॥
तुमहींआदिपुरुषप्रकृतिहुपर।मुख्यतुम्हैंईश्वरकरुणाकर।ज्ञानशक्तिकरिमायात्यागी।रहौसदानिजरूपहिरागी ॥२३॥
मायामोहितजननसदाहीं।निजबलदेहुचारिफलकाहीं२४यहअवतारहरणभुविभारा।निजजनध्यानहेतुप्रभुधारा २५॥
दोहा—हमजानहिनहिंकृष्णयह, कहँतेआवतकौन । दारुणधावतओरचहुँ, तेजभीतिकोभौन ॥
यहिविधिकह्योपार्थअकुलाई । बोलेकृष्णचंद्रमुसक्याई।(श्रीभ०उ०)जानहुअस्त्रब्रह्मशरघोरा।छांड्योद्रोणपुत्रबरजोरा
जानतनहिंयाकोसंहारा । जियसंकटलखियाहिपवाँरा ॥२७॥ औरअस्त्रकरिसकैनवारण । अहैब्रह्मशरयाहिनिवारण ॥
तातेपार्थब्रह्मशरछाँडहु । अस्त्रतेजतेअस्त्रहिआडहु(सू०उ०)सुनतकृष्णकेवचनसुहाये।शत्रुदमनफाल्गुणसुखछाये॥
सलिलपराशिकरिहरिपरदक्षिण।तज्योवीरब्रह्मास्त्रहितेहिक्षण।दोउअस्त्रनकेमिलेप्रकाशा।बढ़ेछायसबअवनिअकाशा॥
दोहा—मानहुदिनकरदहनदोउ,दहनहेतुसबलोक । लरतमयूखपसारिकै,देवनकरतसशोक ॥ ३० ॥
महातेजदोउअस्त्रनकेरो । जारतलोकनघोरघनेरो । जरतप्रजासबताहिनिहारी।प्रलयअग्निलियमनहिविचारी ॥३१॥
यहिविधिमहाउपद्रवदेखी । वासुदेवकोसम्मतलेखी ॥ दुहुँनअस्त्रकोएकहिवारा । कियोधनंजय उपसंहारा ॥ ३२ ॥
तबहरिअर्जुनरथहिधवाई । दारुणद्रोणसुवनढिगजाई ॥ रिसवशविजैनैनकरिलाले । बाँध्योद्रोणसुतेतेहिकाले ॥
जैसेयज्ञपशुहिद्विजराई । बांधहिबंधनसोहरपाई ॥ ३३ ॥ ताहिबांधिबलतेदोउवीरा । डेराहिलैगमनतरणधीरा ॥
दोहा—कमलनयनयदुनाथतब,अर्जुनसोंयुतचैन । कोपितह्वैबोलेवयन, सुनहुपार्थमतिऐन ॥ ३४ ॥
यहसोवतमहँरैनिसिधारयो । बिनअपराधबालकनमारयो॥तातेयहिरक्षहुअबनाहीं । मारहुवेगिद्विजाधमकाहीं३५॥
तियबालकसोवतमतवारे । शरणागतविरथेभेवारे ॥ रुजीजडौअसजगरिपुकाहीं । मारहिंधर्मधुरंधरनाहीं ॥ ३६ ॥

[illegible] । पालतजोखलदयानआनै ॥ तेहिवधकरवतासुकल्याना। नहिंतौपावतनरकमहाना ॥३७।
[illegible] ुभजाई । कियोप्रतिज्ञाहमहिंसुनाई ॥ जोतुवसुतनकियोवधरैनै । लैऐहौंतेहिशिरतुवऐनै ॥ ३८ ।

दोहा-तातेयाकोवेगिवध, करहुधनंजयवीर । अप्रियदुर्योधनहुको, कियोकर्मबेपीर ॥

०-आततायिपापीइहिजानौ । निजसुतहनिकुलदूपकमानौ ॥ ३९ ॥

सूतउवाच ।

[illegible] ।अर्जुनसोंकहरमानिकेतू ॥ तवहूंगुरुसुतगुणिमतिवाना॥मारनकोनहिंकियअनुमाना॥४०।
[illegible] मझारी । अर्जुनजेप्रियसूतसुरारी ॥ पुत्रविलापकरतदुखछाई । तेहिद्रुपदीकहँदियोदेखाई॥४१।
[illegible] दितहिमहानो । नीचेकोशिरकियेलजानो ॥ पशुसोंवँधोपरमअपकारी । लखिइमिगुरुसुतद्रुपदकुमारी।
[illegible] । कियोप्रणामनयनभरिवारी ॥ ४२ ॥

दोहा-ताकोवांधिलेआइवो, द्रुपदीसकीनजोइ । छोडहुछोडहुयहकह्यौ, विप्रनित्यगुरुहोइ ॥ ४३ ॥

सहितविसर्जनउपसंहारा । धनुर्वेदयुतमंत्रप्रकारा ॥ सकलअस्त्रतुमजासुकृपाते । पढ्योधनंजयवलभोजाते ॥ ४४ ।
सोइभगवानद्रोणसुतरू । वर्तमानयहतेतेहिअनुरूपा ॥ कृपीद्रोणदाराअरधंगी । वनीरहैजेहिसुतरणरंगी ॥ ४५ ।
जातमहाभागमतिवारे । सकलधर्मकेजाननहारे ॥ देहुनतुमयाकोदुखभोगू । गुरुकुलवंदनपूजनयोगू ॥ ४६ ।
पतिदेवताद्रोणकीनारी । अश्वत्थामाकीमहतारी । जसमेरेवहुसुतहतजाके । तसनहिंहोइव्यथाअवताके ॥ ४७ ।

दोहा-जेअजितेन्द्रियनृपतिहठि, द्विजनकरावहिंकोप॥सोशोकितद्विजकुलकरत, तुरतराजकुललोप ॥ ४८ ॥

सूतउवाच ।

न्यायधर्मयुतकपटविहीने । सवमेंसमवरकरुणाभीने॥कहिद्रुपदीइमिधर्मनिवाह्यो।सुनतधर्मनृपताहिसराह्यो ॥ ४९ ।
नकुलहुऔसहदेवधनंजय । सात्यकिकृष्णचंद्रदृगकंजय ॥ रहेऔरहूजेनरनारी । कहतभयेधनिद्रुपदकुमारी ॥५०।
भीमसेनतवकोपहिछाये । सवसोंऐसेवचनसुनाये ॥ सकलभांतियहमारनयोगू । अवनहिंऔरकरौउतयोगू ।
निजनिजप्रभुकोकरहितनाहीं । सोवतवालकवध्योवृथाहीं ॥५१॥ तवद्रुपदीअरुभीमहुकेरी।सुनिवाणीअर्जुनवपुहेरी।

दोहा-चारिवाहुसुंदरलसत, कह्योकृष्णमुसकाइ । मेरेहूकछुयेवचन, सुनहुपार्थचितलाइ ॥ ५२ ॥

विप्रनीचहूवधनअयोगू । सवविधिआततायिवधयोगू । दोऊविधियेकहिहमारी । पालहुशासनमोरविचारी ॥ ५३ ।
जामेंसत्यप्रतिज्ञाहोई । कियोप्रियासमुझावतिजोई ॥ द्रुपदीभीमहुकोअरुमेरी । करोसोजेहिप्रियहोइघनेरी ॥ ५४ ।
(सूतउ.)अर्जुनवेगिकृष्णरुखजानी।काटितेकाढिकरालकृपानी॥काटिकेशताकेशिरकेरी।काढिलियोमणिकियोनदेरी।
वंधनछोरितासुधनुधारी । निजडेरातेदियोनिकारी ॥ मणिअरुब्रह्मतेजतेहीनो । चल्योवालपातीद्विजदीनो ॥ ५६ ।

दोहा-मुंडनअरुसंपतिहरन, देशनिकारनजोइ । नीचहुद्विजकहँदंडयह, देहिकदंडनहोइ ॥ ५७ ॥
पुत्रशोकतेदुखितसव, पांडवद्रुपदीयुक्त । मृतनिजवंधुनकीक्रिया, करीसकलश्रुतिउक्त ॥ ५८ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्री
महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराज
सिंहजूदेवकृतेआनंदांबुधिनिधौप्रथमस्कंधेसप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

सूतउवाच ।

दोहा-पुनिनिजवांधवमृतकजे, तिनहिंतिलांजलिदेन । यदुपतियुतपांडवसवै, गंगागयेऽनैन ॥

आगेकरिपुरवारीनारी । करतविलापपुकारिपुकारी १ त्यादितिलांजलिदियनिनकाहीं । पुनिमज्जनकियगंगामाहीं ।
जाकोजलहरिपदरजपावन । तुरतदितानहुतापनशावन ॥ २ ॥ तहँधृतराष्ट्रदेनृपगाइं । औरयुधिष्ठिरसंयुनभाई ॥
द्रुपदीकुंतीअरुगांधारी । रहेसवशोकितअतिभारी ॥ मुनिनसमेतकृष्णतहँजाई ॥ ३ ॥ इतसंधुनकोकह्यो बुझाई ॥

कोउकहतअसुरनवधनहितअरुसाधुजनरक्षनहिते । हरिप्रगटभेमथुरापुरीवसुदेवदेवकियाचिते ॥ ३३ ॥
कोउकहैसागरमध्यडूबतिनावजिमिवहुभारते । तिमिदुखितमहिभाराहरनप्रगटेविनयकरतारते ॥ ३४ ॥
कोउकहिअजातहिकामकर्महितेदुखितनरदेखिके । जगश्रवनसुमिरनयोग कर्मनकरनकोचितलेखिके ॥
प्रगटेत्रिलोकीनाथतुम्हरोसुयशजेवहुवारहे ॥ ३५ ॥ सुखभनतसुमिरतसुनतगावत हर्षलहतअपारहे ॥
जेइवेगिहींभवनाशकरितुवचरणकमलविलोकते । तिहुँलोकमेंमुदथोकलहिविचरहिंसदाविनशोकते ॥३६॥
हमसुहृदअनुचरावरेतजिचरणओरनआसहे । हमसकलभूपनकेविरोधीआपविननहुलासहे ॥
अवतेहमेंतुमभक्तहितकरछोंडिचाहतजानहो । तुमहैगरीवनिवाज यदुवरपरमकृपानिधानहो ॥ ३७ ॥
हमनामरूपविख्यातयद्यपितदपितुमविननाथजू।जिमिजीवविनइंद्रीविकलतिमिहमहुँसकलअनाथजू॥३८॥
जिमितुवचरणचिह्नितधरणिअतिहीलसतियहिकालहे । तिमिगमनकीन्हेनाथइततेलसैगीनविलासहे॥३९॥
धनधामपूरणदेशको ओपधितरुनकेजालहे । वनशैलसरितासरितपतितुवपलखेहोतनिहालहै ॥ ४० ॥
प्रभुविश्वआतमविश्वमूरतिद्वारकाजोजाइये । तौपांडवनअरुयदुनमेंममनेहपाशछुडाइये ॥ ४१ ॥
यहविनयसुनियेनाथमेरीप्रीतितजिसंसारही । तुवचरणमेंअविचलरहैजिमिगंगपारावारही ॥ ४२ ॥
जयकृष्णअर्जुनसखायदुपतिदहनखलनृपवंशके । अतिवीरश्रीगोविंदगोद्विजसुरनपीडाध्वंसके ॥
दोहा—हरणहेतुभूभारके, लेहुनाथअवतार । योगेश्वरहेअखिलगुरु, तुम्हेंनमहुँवहुवार ॥ ४३ ॥
(सू.उ.)-यहिविधिकहीमनोहरवानी।प्रस्तुतिकरीजवहिंसुखमानी॥तवतेहिमोहतअसयदुराई।कुंतीसोंवोलेमुसक्याई॥
तेरीप्रीतिप्रतीतिविचारी । जावद्वारकेनहिंमतिवारी ॥ धर्मभूपहूतहँसुखछाई । जातजानियदुपुरयदुराई ॥४४॥
प्रेमसहिततहँकियोनिवारन।तवह्वैमोदितहरिजगकारन॥पृथाआदिनारिनसमुझाई । प्रविशिहस्तिनापुरहिकन्हाई ॥
कछुककालकीन्ह्योतहँवासा । सहितपांडवनरमानिवासा ॥४५॥ तहँस्त्रीचरित्रजेजाने।व्यासादिकमुनिपरमसयाने॥
दोहा—तिनहूंते अरु कृष्णमधि, यदपि युक्तइतिहास । समुझायेंगे धर्मसुत, भयोन शोचविनाश ॥४६॥
प्राकृतमनते कौरवराजा । शोचवंधवांधवनसमाजा ॥ हे द्विजनेह मोहवशह्वैकै । वोलेसकलसभासुखज्वैकै ॥ ४७ ॥
इहांलखो अज्ञानहमारो । मेरेहियमें कियोअगारो ॥ गृध्र काग भक्षकयहदेहा । ताकेहितसवको तजिनेहा ॥
मेंदुरात्मनहिं धर्म विचारी । अक्षौहिणी अनेकनमारी ॥ ४८ ॥ वालविप्रसंवन्धहुमित्रै । पितावंधुगुरुभ्रातपवित्रै ॥
इनकोद्रोह कियोवरजोरा । तातेनरकपरहुँगोघोरा ॥ यदपिजातवहुवर्ष हजारा । तदपिननरकहुते उद्धारा ॥४९ ॥
दोहा—यदपिनृपतियुत धर्ममें, नृपवधदूषत नाहिं । है यह हरिशासनतदपि, नहिंआवत मनमाहिं ॥ ५० ॥
जिनके सुतपतिहमहने, तिनतिय दोहन दोष । यज्ञादिककरि मिटहिंगे, यह न होत संतोष ॥५१॥
कीचिछुटै नहिं कीचते, जिमि मदते मदनाहिं । येकहुजियवधदोष तिमि, जातन जागनमाहिं॥५२॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजा वांधवेश विश्वनाथसिंहात्मज सिद्धि श्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजा श्रीराजावहादुर श्रीकृष्णचंद्र कृपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव
कृतेआनंदांवुनिधौ प्रथमस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

सूत उवाच ।

दोहा—वंधुवधवअपते त्रसित, जाननको सवधर्म । परेभीष्मकुरुक्षेत्रतहँ,तहँ गमनेनृपधर्म ॥१॥
तवतिनकेवरचारिउभाई । कनककलितस्यंदनन मँगाई॥ तरलतुरंगननुरतहिधाई । चढिनृपसँगगमनेछविछाई ॥
व्यासधौम्यआदिकमुनिराजू।चलेसकल निजसहितसमाजू॥२॥अर्जुनसंगचढेवरस्यंदन।गमनकियेदर्पितयदुनंदन ॥
तिनयुतधर्मराज अतिराजे । जिमिकुवेरमधियक्षसमाजे ॥३॥यहिविधिसकल समाजसुहाई । पहुँचीकुरुक्षेत्रमहँजाई॥
सवविलोक्यो भीष्मदेवकहँ । दिवितेगिर्योदेवजनुभूमहँ।शरशय्यामहँपर्योप्रवीरा । कृष्णसहितपांडवतहँधीरा ॥
दोहा—भीष्मदेवकोकरतभे, सहितसमाजप्रणाम । वैठेतिनकोघेरिकै, भोउरआनँदधाम ॥ ४ ॥

मानहुँसवैकालगतिकाहीं। जगमेंजासुनिवारणनाहीं॥४॥पुनिजेहिद्रुपदिहिसभामँझारी। ल्यायेकेशपकरिअपकारी॥
दोहा—गतआयुपतेहिकमंते, ऐसेरिपुनहताइ। कितवहरीनृपधर्मको, दियेराजयदुराइ॥५॥
नृपतियुधिष्टिरकोयदुराई। अश्वमेधत्रैसविधिकराई॥ तिनकोयशशतमखसमपावन।जगफैलायोहरिमनभावन॥६॥
पांडुसुतनसोंविदाकराई। सात्यकिउद्धवयुतयदुराई॥ पूजितमुनिव्यासादिकतेरे। पूजितह्वैमुदपायघनेरे॥७॥
गमनद्वारकाकरनविचारी। शौनकस्यंदनचढेमुरारी॥ तवउत्तरापायभयधाई। हरिढिगआइगईअकुलाई॥८॥

उत्तरोवाच।

देवदेवयदुपतिदुखघाती।रक्षाकरहुमोरिसबभांती॥ तुमहिंछोड़िकोअभयप्रदाता। सबकोकालकरतजगघाता॥९॥
दोहा—आपसशरअतितप्तप्रभु, आयोसन्मुखधाइ। बरुनाशैमोहिंनाथपै, गर्भहिदेइबचाइ॥१०॥
(सू.उ.)सुनिउत्तरागिरागिरिधारी।प्रणतपालयहलियेविचारी।करनअपांडवअवनिविचार्यो।द्रोणपुत्रब्रह्मास्त्रपवाँर्यो।
तेहिक्षणज्वलितपंचवरवान।गयोपांडवनओरमहान॥पांडवतोलखिवाणनआवत।लियोअस्त्रनिजकोपहिछावत॥१२॥
लखिअनन्यदासनदुखकाहीं।तवश्रीहरिकरिकृपातहाँहीं॥रक्षाकियनिजचक्रचलाई। अंतर्यामीयोगिनराई॥१३॥
गर्भउत्तराकोकरिदाया। छाइलियोहरिअपनीमाया॥ कौरववंशबढावनहेतू। कियेकृपाद्रुतकृपानिकेतू॥१४॥
दोहा—अस्त्रब्रह्मशिरमोघनहिं, यद्यपिपरमप्रचंड। तदपिसुदर्शनतेजलहि, भयोतुरतशतखंड॥१५॥
जनिअचरजमानहुमुनिराई। सबअचरजमयहैंयदुराई॥ जोनिजमायातेजगकाही। सिरजहिपालहिनाशकराही॥
मुनिजबकृष्णचंद्रसुखपागे। द्वारावतीचलनप्रभुलागे॥ तबजेब्रह्मअस्त्रतेछूटे। तिनकेदुखबंधनसबटूटे॥१६॥
ऐसेसुतसुतवधूसमेतू। आइपृथाढिगरमानिकेतू॥ स्तुतिकरनलगीसुखपाई। सुनहुशौनकादिकचितलाई॥१७॥

कुंत्युवाच।

पुरुषआपईश्वरप्रकृतिहिपर। जनअदृश्यथितवाहरभीतर॥१८॥मुद्रितमायारूपकनाते। मूढमतिनकोनाहिंदेखाते॥
दोहा—इंद्रजालयुतजिमिनटै, जानतनहिंजनग्राम। अविनाशीइंद्रिनअदृश, ऐसेतुमहिंप्रणाम॥१९॥
छंदगीतिका—जेहिअमलमुनिपुनिपरमहंसहुभक्तिकरउरआनहीं।प्रभुतिनहिंतुमकोनारिहमलघुकोनविधिपहिचानहीं
वसुदेवश्रीदेवकीनंदनकृष्णनंदकुमारहो॥२१॥ अरविंदनामगोविंदपंकजमालिपरमउदारहो॥
जलजातदृगजलजातपगतुमकोनमामिनमामिजू॥२२॥ करुणानिधानप्रधानदेवनजगतअंतर्यामिजू॥
जिमिकंसखलतेकैदेदेवकिदुखहर्योयदुनाथहे। तिमिमोरपुनिपुनिसुतनयुतदुखनाशकियोसनाथहे॥२३॥
विषवलितमोदकदानतेजिमिलाखभवनकृशानते। अरुद्यूतकोदरवारतेत्योंहिंडवादिखलानते॥
वनवासदुखअरुप्रतिसमरभीष्मादिअस्त्रअमानते। कियत्राणतुमहमसबनकोद्रुतद्रोणअस्त्रमहानते॥२४॥
मोहिंपरैविपतिविशेषिकैजेहिविपतिनाशनहेततू। प्रदमोक्षदर्शनदेहुसबथलआइकृपानिकेततू॥२५॥
यहुशास्त्रपढिवेकोसुकुलकोविभवकोजेहिगर्व है। शठसोनलेतोनामतुम्हरोवृथाताकोसर्वहै॥२६॥
निःकामभक्तनकोपियारेपरमदीनदयालहो। तुमवैष्णवनकेपरमधनविनकामक्रोधहिजालहो॥
दोशांनआत्मारामजनकैवल्यपदसुखधामहो। तिनतुमहिंकरहुँप्रणाममैंनिजभक्तपूरणकामहो॥२७॥
प्रभुकालरूपहितुमहिमानहुँनादिलादिजनलखनहै। विभुआदिअंतविहीनसबथलसमविचरतरहतहै॥२८॥
[illegible]॥२९॥
[illegible]॥३०॥
[illegible]॥
[illegible]॥
[illegible]॥३१॥
[illegible]॥३२॥
[illegible]

कोउकहतअसुरनवधनहितअरुसाधुजनरक्षनहिते । हरिप्रगटभेमथुरापुरीवसुदेवदेवकियाचिते ॥ ३३ ॥
कोउकहैसागरमध्यडूबतिनावजिमिबहुभारते । तिमिदुखितमहिभाराहरनप्रगटेविनयकरतारते ॥ ३४ ॥
कोउकहिअजातहिकामकर्महितेदुखितनरदेखिके । जगश्रवनसुमिरनयोग कर्मनकरनकोचितलेखिके ॥
प्रगटेत्रिलोकीनाथतुम्हरोसुयशजेबहुवारहे ॥ ३५ ॥ सुखभनतसुमिरतसुनतगावत हर्षलहतअपारहे ॥
जेइवेगिहींभवनाशकरितुवचरणकमलविलोकते । तिहुँलोकमेंमुदथोकलहिविचरहिंसदाविनशोकते ॥३६॥
हमसुहृदअनुचरावरेतजिचरणऔरनआसहे । हमसकलभूपनकेविरोधीआपविननहुलासहे ॥
अवतेहमेंतुमभक्तहितकरछोंडिचाहतजानहो । तुमहैगरीबनिवाज यदुवरपरमकृपानिधानहो ॥ ३७ ॥
हमनामरूपविख्यातयद्यपितदपितुमविननाथजू।जिमिजीवविनइंद्रीविकलतिमिहमहुँसकलअनाथजू॥३८॥
जिमितुवचरणचिह्नितधरणिअतिहीलसतियहिकालहे । तिमिगमनकीन्हेनाथइततेलसैगीनविलासहे॥३९॥
धनवामपूरणदेशको ओपधितरुनकेजालहे । वनशैलसरितासरितपतितुवलखेहोतनिहालहे ॥ ४० ॥
प्रभुविश्वआतमविश्वमूरतिद्वारकाजोजाइये । तोपांडवनअरुयदुनमेंममनेहपाशछुडाइये ॥ ४१ ॥
यहविनयसुनियेनाथमेरीप्रीतितिताजिसंसारही । तुवचरणमेंअविचलरहेजिमिगंगपारावारही ॥ ४२ ॥
जयकृष्णअर्जुनसखायदुपतिदहनखलनृपवंशके । अतिवीरश्रीगोविंदगोद्विजसुरनपीडाध्वंसके ॥
दोहा—हरणहेतुभूभारके, लेहुनाथअवतार । योगेश्वरहेअखिलगुरु, तुम्हैनमहुँबहुवार ॥ ४३ ॥
(सू.उ.)-यहिविधिकहीमनोहरवानी।प्रस्तुतिकरीजबहिंसुखमानी।।तबतेहिमोहतअसयदुराई।कुंतीसोंबोलेमुसक्याई॥
तेरीप्रीतिप्रतीतिविचारी । जावद्वारकेनहिंमतिवारी ॥ धर्मभूपहूतहँसुखछाई । जातजानियदुपुरयदुराई ॥४४॥
प्रेमसहिततहँकियोनिवारन।तबहेमोदितहरिजगकारन॥पृथाआदिनारिनसमुझाई । प्रविशिहस्तिनापुरहिकन्हाई ॥
कछुककालकीन्ह्योंतहँवासा । सहितपांडवनरमानिवासा ॥४५॥ तहँस्त्रीचरित्रजेजाने।व्यासादिकमुनिपरमसयाने॥
दोहा—तिनहूंते अरु कृष्णमधि, यदपि युक्तइतिहास । समुझायेंगे धर्मसुत, भयोन शोचविनाश ॥४६ ॥
प्राकृतमनते कौरवराजा । शोचवंधवांधवनसमाजा ॥ हे द्विजनेह मोहवशह्वैके । बोलेसकलसभासुखज्वैके ॥ ४७ ॥
इहांलखो अज्ञानहमारो । मेरेहियमें कियोअगारो ॥ गृध्र काग भक्षकयहदेहा । ताकेहितसबको तजिनेहा ॥
मेंदुरात्मनहिं धर्म विचारी । अक्षौहिणी अनेकनमारी ॥ ४८ ॥ बालविप्रसंबन्धहुमित्रे । पितावंधुगुरुभ्रातपवित्रे ॥
इनकोद्रोह कियोवरजोरा । तातेनरकपरहुँगोघोरा ॥ यदपिजातवहुवर्ष हजारा । तदपिननरकहुते उद्धारा ॥४९ ॥
दोहा—यदपिनृपतियुत धर्ममें, नृपवधदूपत नांहि । हे यह हरिशासनतदपि, नहिंआवत मनमांहि ॥ ५० ॥
जिनके सुतपतिहमहने, तिनतिय दोहन दोप । यज्ञादिककरि मिटहिंगे, यह न होत संतोप ॥५१॥
कीचछुटे नहिं कीचते, जिमि मदते मदनांहि । येकहुजियवधदोप तिमि, जातन जागनमांहिं ॥५२॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बांधवेश विश्वनाथसिंहात्मज सिद्धि श्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्र कृपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव
कृतेआनंदांबुनिधौ प्रथमस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

सूत उवाच ।

दोहा—बंधुवधवअपते त्रसित, जाननको सवधर्म । परेभीष्मकुरुक्षेत्रतहँ,तहँ गमनेनृपधर्म ॥१॥
तबतिनकेवरचारिउभाई । कनककलितस्यंदनन मँगाई॥ तरलतुरंगनतुरतहिधाई । चढिनृपसँगगमनेछविछाई ॥
व्यासधौम्यआदिकमुनिराजू।चलेसकल निजसहितसमाजू॥२॥अर्जुनसंगचढेवरस्यंदन।गमनकियेहरिपतयदुनंदन ॥
तिनयुतधर्मराज अतिराजे । जिमिकुबेरमधियक्षसमाजे ॥३॥यहिविधिसकल समाजसुहाई । पहुँचीकुरुक्षेत्रमहँजाई॥
सबेविलोक्यो भीष्मदेवकहँ । दिवितेगिर्योदेवजनुभूमहँ।शरशय्यामहँपर्‌योप्रवीरा । कृष्णसहितपांडवतहँधीरा ॥
दोहा—भीष्मदेवकोकरतभे, सहितसमाजप्रणाम।बैठेतिनकोघेरिके, भोडरआनँदधाम ॥ ४ ॥

कोउकहतअसुरनवधनहितअरुसाधुजनरक्षनहिते । हरिप्रगटभेमथुरापुरीवसुदेवदेवकियांचिते ॥ ३३ ॥
कोउकहैसागरमध्यडूबतिनावजिमिवहुभारते । तिमिदुखितमहिभाराहरनप्रगटेविनयकरतारते॥ ३४ ॥
कोउकहिअजातहिकामकर्महितेदुखितनरदेखिकै । जगश्रवनसुमिरनयोग कर्मनकरनकोचितलेखिकै ॥
प्रगटेत्रिलोकीनाथतुम्हरोसुयशजेवहुवारहे ॥ ३५ ॥ सुखभनतसुमिरतसुनतगावत हर्षलहतअपारहे ॥
जेइवेगिहीभवनाशकरितुवचरणकमलविलोकते । तिहुँलोकमेंमुदथोकलहिविचरहिंसदाविनशोकते ॥३६॥
हमसुहृदअनुचरराविरेतजिचरणऔरनआसहे । हमसकलभूपनकेविरोधीआपविननहुलासहे ॥
अवतेहमैंतुमभक्तहितकरछोंडिचाहतजानहो । तुमहौगरीवनिवाज यदुवरपरमकृपानिधानहो ॥ ३७ ॥
हमनामरूपविख्यातयद्यपितदपितुमविननाथजू।जिमिजीवविनइंद्रीविकलतिमिहमहुँसकलअनाथजू॥३८॥
जिमितुवचरणचिह्नितधरणिअतिहीलसतियहिकालहे । तिमिगमनकीन्हेनाथइततेलसैगोनविलासहे॥३९॥
धनधामपूरणदेशको ओपधितरुनकेजालहे । वनशैलसरितासरितपतितुवलखेहोतनिहालहे ॥ ४० ॥
प्रभुविश्वआतमविश्वमूरतिद्वारकाजोजाइये । तौपांडवनअरुयदुनमेंममनेहपाशछुडाइये ॥ ४१ ॥
यहविनयसुनियेनाथमेरीप्रीतितजिसंसारही । तुवचरणमेंअविचलरहैजिमिगंगपारावारही ॥ ४२ ॥
जयकृष्णअर्जुनसखायदुपतिदहनखलनृपवंशके । अतिवीरश्रीगोविंदगोद्विजसुरनपीडाध्वंसके ॥
दोहा—हरणहेतुभूभारके, लेहुनाथअवतार । योगेश्वरहेअखिलगुरु, तुम्हैंनमहुँवहुवार ॥ ४३ ॥
(सू.उ.)-यहिविधिकहीमनोहरवानी।प्रस्तुतिकरीजवहिंसुखमानी॥तवतेहिमोहतअसयदुराई।कुंतीसोंवोलेमुसक्याई॥
तेरीप्रीतिप्रतीतिविचारी । जावद्वारकेनहिंमतिवारी ॥ धर्मभूपहूतहँसुखछाई । जातजानियदुपुरयदुराई ॥४४॥
प्रेमसहिततहँकियोनिवारन।तवहैमोदितहरिजगकारन॥पृथाआदिनारिनसमुझाई । प्रविशिहस्तिनापुरहिकन्हाई ॥
कछुककालकीन्ह्योंतहँवासा । सहितपांडवनरमानिवासा ॥४५॥ तहँस्त्रीचरित्रजेजाने।व्यासादिकमुनिपरमसयाने॥
दोहा—तिनहूंते अरु कृष्णमधि, यदपि युक्तइतिहास । समुझायेंगे धर्मसुत, भयोन शोचविनाश ॥४६॥
प्राकृतमनते कौरवराजा । शोचवंधवांधवनसमाजा ॥ हे द्विजनेह मोहवशह्वैकै । वोलेसकलसभामुखज्वैकै ॥ ४७ ॥
इहांलखो अज्ञानहमारो । मेरेहियमें कियोअगारो ॥ गृध्र काग भक्षकयहदेहा । ताकेहितसवको तजिनेहा ॥
मैंदुरात्मनहिं धर्म विचारी । अक्षौहिणी अनेकनमारी ॥ ४८ ॥ वालविप्रसंवन्धहुमित्रे । पितावंधुगुरुभ्रातपवित्रे॥
इनकोद्रोह कियोवरजोरा । तातेनरकपरहुँगोघोरा ॥ यदपिजातवहुवर्ष हजारा । तदपिननरकहुतेउद्धारा ॥४९ ॥
दोहा—यदपिनृपतियुत धर्ममें, नृपवधदूषत नाहिं । है यह हरिशासनतदपि, नहिंआवत मनमाहिं ॥ ५० ॥
जिनके सुतपतिहमहने, तिनतिय दोहन दोप । यज्ञादिककरि मिटहिंगे, यह न होत संतोष ॥५१॥
कीचछुटै नहि कीचते, जिमि मदते मदनाहिं । येकहुजियवधदोप तिमि, जातन जागनमाहिं॥५२॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजा वांधवेश विश्वनाथसिंहात्मज सिद्धि श्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्र कृपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव
कृतेआनंदांवुनिधौ प्रथमस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

सूत उवाच ।

दोहा—वंधुवधवअघते त्रसित, जाननको सवधर्म । परेभीष्मकुरुक्षेत्रतहँ,तहँ गमनेनृपधर्म ॥१॥
तवतिनकेवरचारिउभाई । कनककलितस्यंदनन मँगाई॥ तरलतुरंगनतुरतहिधाई । चढिनृपसँगगमनेछविछाई ॥
व्यासधौम्यआदिकमुनिराजू।चलेसकल निजसहितसमाजू॥२॥अर्जुनसंगचढेवरस्यंदन।गमनकियेद्रौपतयदुनंदन ॥
तिनयुतधर्मराज अतिराजे । जिमिकुवेरमधियक्षसमाजे ॥३॥यहिविधिसकल समाजसुहाई । पहुँचीकुरुक्षेत्रमहँजाई॥
सवविलोक्यो भीष्मदेवकहँ । दिवितगिन्योदेवजनुभूमहँ।शरशय्यामहँपर्यो प्रवीग । कृष्णसहितपांडवतहँधीग ॥
दोहा—भीष्मदेवकोकरतभे, सहितसमाजप्रनाम।वैठेतिनकोघेरिकै, भोउरआनँदधाम ॥ ४ ॥

दोहा–सुनिमाधवकीमाधुरी, कथापरमअवदात। शौनकबोलेसूतसों, आनँदउरनसमात॥

शौनकउवाच।

रणहारजेनिजधनकेरे। आततायिमतिमंदघनेरे॥ असदुर्योधनआदिककाहीं। कुरुक्षेत्रमहँहनिरणमाहीं॥
पाइअकंटकराज्यसुहाई। तहांधर्मनृपसंयुतभाई॥ पाल्योसकलप्रजनकेहिभांती। औरौकाहकियोअरिघाती
सुनतसूतअतिआनँदपाई।कथाकहनलागेचितलाई।१(सू०उ०)वंशदवानलतेकुरुवंशा।जान्योजेहियदुकुलअवतंश
तिनकोवंशअंकुरितकीन्ह्यौ। नृपतिपरीक्षितधर्महिदीन्ह्यौ। देसबराजधर्मनृपकाहीं। भवभावनभेमुदिततहांहीं॥
दोहा–धर्मनृपतितहँभीष्मके, अरुहरिकेसुनिबैन। लह्योज्ञाननिर्मलहिये, छूट्योभ्रमदुखऐन॥
कृष्णभक्ततवधर्मभुवाला। भाइनसहितमुदिततेहिकाला। समुद्रांतमहिपाल्योकैसे।देवराजादिविलोकहिजैसे॥
वर्षाहिंमेघकालनिजपाई।भेमहिसकलमनोरथदाई॥ गौवैंश्रवतसुखदबहुक्षीरा। व्रजनिशोचिदीन्हेंजिमिनीरा॥ ४
सरितसरितपतिशैलकतारा।तहँलतिकाओषधिहुअपारा।निजनिजऋतुनपाइतेहिकाला।फूलहिंफलहिंदेहिंमणिमाल
क्लेशव्याधिअरुतीनिहुँतापा।राजयुधिष्ठिरकाहुनव्यापा॥६॥कियोयुधिष्ठिरयहिविधिराजू।भाइनबंधुनसहितसमाजू
दोहा–तहँनिजमित्रविशोकहित, अरुभगिनीप्रियकाज। हस्तिनपुरमेंवसतभे,कछुककालयदुराज॥७॥
तहांद्वारकाजानविचारे। कृष्णचंद्रवसुदेवदुलारे॥ जाइमहीपसमीपमुरारी। तिनसोंमांगिविदासुखकारी।
मिलितिनकोअभिवंदनकीन्हें। औरनसेअभिवंदनलीन्हें॥लहिकेयथाभोगसतकारा।स्यंदनपरभेकृष्णसवारा॥८।
तहाँसुभद्राद्रौपदिरानी। औरउत्तरापृथासयानी॥ गांधारीधृतराष्ट्रमहीशा। औरौकृपाचार्यद्विजईशा।
औयुयुत्सुनकुलौसहदेवा॥९॥भीमसेनधौम्यहुमहिदेवा।सहिनसकेहरिविरहअपारा।व्याकुलभयेसकलयकवारा १०
दोहा–जोसतसंगहिसेतज्यो, असतसंगबुधलोग। सोसुकृतहुहरिसुयशसुनि, तजिनसकैयहयोग॥११॥
सोइकृष्णमेंनेहलगाये। दर्शतपर्शतअतिसुखपाये॥ यकसँगआसनवैठिवताने भोजनशयनकियेसुखसाने॥
ऐसेपांडवश्रीहरिकेरे। सहेकौनविधिविरहघनेरे॥ १२॥ नेहपाशमेंबँधेप्रवीरा। तिनमेंभावकियेगंभीरा॥
अनमिषनिरखहिंनिपटदुखारी।पुनिपुनिघेरहिंजाइमुरारी॥१३॥महलहितेजबकढेमुरारी।तबकुंतीआदिकसबनारी॥
यदपिप्रेमवशआवहिंआंसू। तदपिअशुभगुणिरोकहिंआंसू॥ तहांहोतिभैभीरघनेरी।बालवृद्धनरनारिनकेरी॥१४॥
दोहा–भेरीशंखमृदंगबहु, बीणढोलकरताल। घंटाझांझनिशानहूं, बाजेबजेविशाल॥१५॥
हरिदर्शनहितकुरुपुरनारी। चढींवेगहींविपुलअटारी॥ वर्षहिंसुमनवृंदचहुँओरा। जहँजहँगमनहिंनंदकिशोरा॥
प्रेमलाजयुततियमुसक्याई। कृष्णहिंदेखहिंनैनलगाई॥१६॥तहांछपाकरसरिसप्रकासा।मुकुतझालरकरहिंविलासा
जटितनवाहिरदंडसुहावन।ऐसोकृष्णछत्र छविछावन॥१७॥सो अर्जुनलीन्हेनिजहाथा।गमनकियेसँगप्रिययदुनाथा॥
सात्यकिउद्धवसरसिपियारे।चमरचारुनिजनिजकरधारे॥ पुष्पनपूरितकृष्णतहांही।शोभितभयेराजपथमाहीं॥१८॥
दोहा–जिनकेप्राकृतगुणनहीं, दिव्यगुणनयुतनाथ। तेगमनत जहँतहँसुनत, द्विजआशिषसुखगाथ॥
तदपिसत्यद्विजआशिषवादा।पिनयोग्यजेहिनितअहलादा॥पैअतिप्रेमसहितद्विजकहहीं।तातेहरिअनुरूपहिअहहीं १९
तहँहस्तिनपुरकीसबनारी।कृष्णप्रेममनिनहरिमहँभागी॥कहहिंपरस्परवचनपियारे। देखिदेखिवसुदेव दुलारे॥२०॥
(त्रिपञ्चु:)॥प्रलयसमजोसृष्टिहिआगू।रहितजोनामादिरूपविभागू॥जगदातमईश्वरप्रभुसोई।रहितसृष्टिसंकल्पहिहोई
तानशक्तिजननयकीनो।ग्योजीनवहियकमुदभीनो॥निमितउपादानहुजगकेरो। सोइयदुवरयदसुखदघनेरो॥२१॥
दोहा–श्रीगनानिजसंकल्पने, निजअर्थानजोजीव। जेहिमृंदनधारैसदा, मायाप्रबलअतीव
सोमायाप्रभोगिरजनकाहीं। टाँदितभइनचहगिनिहिमाहीं॥ प्रविशिअनामअरूपजीवको। कियोनामरूपुमोदसीवको॥
सकल मायने गिरजनवारे। तेई ये वसुदेवदुलारे॥२२॥ जे योगी इंद्रीनिनपूरे। जीति भानवायुनगकरे॥
भोनमहिनानिनं मनकांकि।नाकोपदसोहिमुदभांके॥२३॥ सोइयेदेवकीदुलारे। निर्मलहिरदेकहँदमारे॥
जासुवेदवदांत पुरानन।नारदिकथा सो मुनिनगुनगनन॥ जो निजलीला करिजगकाही॥उत्पतिपालनप्रलैकराही॥

दोहा–जगतदोषजेहिनाहिंलगत, सोइईशयहयेक । यदुकुलमें प्रभुप्रगटह्वै, लीलाकरत अनेक ॥ २४ ॥

तामसीभुवाला । जगमहँकरत अधर्मकराला ॥ तवयुगयुगजगमंगलहेतू । धरहिंसत्त्वपुरमानिकेतू ॥
हुदयासुयशको । धारहिंयुतऐश्वर्यसरसको॥२५॥धन्यधन्ययदुकुलसखिलोगू।सवविधिसवैंसराहनयोगू॥
प्रगटेहरिअसुरनघालक। रमानाथत्रिभुवनके पालक॥धन्यधन्यमधुपुरी सुहावनि।परमपुण्यप्रदत्रिभुवनपावनि॥
जहँविहरेवहुभांतिमुरारी।मल्लकंसआदिकखलमारी॥२६॥स्वर्गहुसुयशअनादरकरनी।धरनीमहँशुचिकीरतिभरनी॥

दोहा–धन्यधन्यद्वारावती, जहां वसत यदुनाथ । जेहिहरिकीविहँसनसहित, निरखतहैंसुदगाथ ॥

सोनिजनाथकृष्णकोतितहीं।सादरप्रजाविलोकहिंनितहीं ॥२७॥ हेसखियेयदुवरपटरानी।सतिपूरवजन्महितपठानी॥
व्रतमज्जन होमादिककरिकै । पूज्योहरिको प्रेमहिभरिकै ॥ जेयदुवरअधरामृतकाहीं । वारवारपीवहिंसुदमाहीं ॥
करिकैजासुपानव्रजवामा । मोहितभईन पूजेहुकामा॥२८॥दैनिजविक्रममोलमुरारी । शिशुपालादिकगर्वहिगारी॥
हरयोस्वयंवरमहँगिरिधारी । जेप्रद्युम्नआदिमहतारी ॥ औरहुभौमासुरकहँमारी । ल्यायेसोरहसहसजेनारी ॥ २९ ॥

दोहा–यदपिनारिअतिशयअशुचि, सदाकठोरसुभाउ । करतभईशोभिततेऊ, करिहरिमेंवहुभाउ ॥

नितहीबोलिमनोहरवानी । देतसदासुखशारँगपानी ॥ जेरानिनकेमहलनकाहीं । त्यागिनकृष्णकवहुँकहुँजाहीं ॥
तिनकीभाग्यकौनविधिकहहीं।जिननायकयदुनायकअहहीं(सू.उ.)यहिविधिहरिपुरनारिनकेरी।प्रीतिमईसुनिवाणिघनेरी
तिनकोकरिकटाक्षमुसक्याई । गमनकियेदैमोदमहाई ॥ ३१ ॥ धर्मनृपतिअतिनेहहिभीने । शत्रुनकीशंकामनकीने
यदुनंदनकेरक्षनकाहीं । दियचतुरंगसेनसँगमाहीं ॥ ३२ ॥ कौरवकृष्णविरहउरछाये । वहुतदूरिपहुँचावनआये ॥

दोहा–तिनहिंवुझाइविदाकियो, रहेजेप्राणनप्यार । सखनसंगगमनेपुरी, श्रीवसुदेवकुमार ॥ ३३ ॥
कुरुजांगलपांचालअरु, जामुनमाथुरदेश । कुरुक्षेत्रब्रह्मावरत, मत्स्यसारस्वतवेश ॥ ३४ ॥
मरुधनुऔसौवीरअरु, आभीरादिकनाकि । गयेदेशआनर्तको, गेकछुवाहनथाकि ॥ ३५ ॥
यात्रातीरथकोकरत, जहँतहँवसियदुराइ । तहँतहँकेसवजननते, वहुविधिपूजनपाइ ॥
इतद्वारावतिकोगये, सांझसमैयदुनाथ । उतपश्चिमसागरजले, कियप्रवेशदिननाथ ॥ ३६ ॥

इतिसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीराजामहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनि
धौप्रथमस्कंधेदशमस्तरंगः ॥ १० ॥

सूतउवाच ।

दोहा–पूरणसवधनधान्यते, निजआनर्तहिदेश । पहुँचिवजायोशंखहरि, मेटतप्रजनकलेश ॥ १ ॥

कृष्णअधरलालिमालहेते । अरुकरकंजनमंजुगहेते ॥ जोदरश्वेतरह्योछविछायो । सोतहँअरुणस्वरूपसोहायो ॥
जैसेअरुणकमलमधिमाहीं । वोलतहंससुहातसदाहीं ॥ २ ॥ भुवनभीतिदायकभयकारी । ऐसोशंखशोरअतिभारी ॥
सुनिद्वारकाप्रजासुखपाये । हरिदर्शनअभिलापितधाये ॥ ३ ॥ सादरलैभेटसमीपा । मनहुँदेतरविकहँदीपा ॥
जानिजलाभदिपूरणकामा । यदुनंदनहैंआतमरामा ॥४॥ निजनाथहिपेरचहुँओरे । निमिनिर्जपतहिप्रीतियुतछोरे॥

दोहा–अतिप्रसन्नसवकेवदन, नाहिंसमातहियचैन । सजलनैनगदगदगिरा, वोलतभेमृदुवैन ॥ ५ ॥

प्रजाऊचुः ।

वंदेंचरणकमलतुवनाथा । जेहिध्यावैंविधिमुनिसुरनाथा ॥ चाहतजेजगमेंकल्याना । तिनरक्षकतुवपदनहिंआना ॥
जोनकालशिवविधिवशकरतो । सोऊतुवचरणनकोडरतो॥६॥तुमहीमातापितादमारे । वंधुस्वामिगुरुसखापियारे ॥
इष्टदेवतुमहीजगभावन । हमकोकरहुकृपाकरिपावन ॥ कारणवरनाथमेचकाई । भयेकृनारथदमजगआई ॥ ७ ॥
प्रेमसहितमाधुरमुसकानी । तेहियुतचितवनिअनिसुररसानी ॥ वदनगवरोजनमुखछावन ।ऐसोरूपअनूपसोहावन ॥

दोहा–सोनिरखहिंनिजनैनते, दुर्लभदेवनकाहि । तातेहेयदुनाथअब, अहेसनाथसदाहि ॥ ८॥
कमलनैननिजमित्रनदेखन।जाहुजबहिंकुरुमाथुरदेशन॥कोटिवर्षसमतवक्षणजाहीं । [illegible]
यहिविधिपुरवासिनकीवानी । श्रवनकरततहँसारँगपानी ॥ कृपादृष्टिकरिआनंदवर्षंत । [illegible]
जेद्वारकापरमसुखछावनि।विबुधनवृंदनमोदवढावनि ॥१०॥ [illegible]
बलप्रद्युम्नवीरअनिरुद्ध।सांबगदादिशुद्धजितक्रुद्ध॥निजसमवीरनभुजबलपालित । [illegible]
पटऋतुकेतरुलताविशाला । फूलहिंफलहिंजहाँसबकाला ॥ ११ ॥

दोहा–गृहवाटिकाविशालअति, अरुउपवनवरबाग । लतावितानततेतने, सोहहिंसहितविभाग ॥
सोहहिंकमलनसहिततडागा।गुंजहिंमधुकररँगितपरागा॥१२॥अतिउतंगपुरकेदरवाजे । [illegible]
औरहुराजमार्गकेद्वारा । लसहिंद्वारकापुरीमँझारा॥ बहुविचित्रबहुध्वजापताके । जेनिजछायानजरनढांके ॥१३
गलीराजपथचौकबजारा । झारिगयेतहँएकहिवारा ॥ सलिलसुगंधितसींचिगयेहैं । अक्षतअंकुरसुमनछयेहैं ॥ १४
दधिफलअक्षतइक्षुरसाला । धूपदीपवलिकुंभविशाला ॥ यदुनगरीमहँद्वारहिद्वारा । हरिआगमगुणधरेअपारा

दोहा–यदुनगरीयदुराजप्रिय,अवशिहिआवतराज ॥ १५ ॥ यहसुनियदुवंशीसकल, हर्षसहितसमाज ॥
आनकदुंदुभिऔअक्रूरा । उग्रसेनबलरामहुशूरा ॥ १६ ॥ चारुदेष्णप्रद्युम्नप्रवीरा । जांबवतीसुतसांबहुधीरा
तजेअशनआसनअरुशैना । बच्योमोदउरकहतबनैना ॥ १७॥ आगेकरिभूपितवरवारन । पढतवेदवरविप्रहजारन
दधिदूर्वातंदुलयुतथारा । पाणिपुरोहितलियेउदारा ॥ बजवावतबहुशंखनगारे । रथचढिमोदितयदुकुलवारे
सादरमणिनलुटावतदानी । हरिकीलेनचलेअगुवानी ॥ प्रेमपरमतनुसुरतिविसारे । कसमसपरतकढतनृपद्वारे॥१८

दोहा–कुंडललोलकपोलमधि, विधुवदनीछविवारि । हरिदर्शनलालचभरीं, वारवधूसुकुमारि ॥
चढिचढियाननचलींअपारा । गावतमंगलगीतउदारा ॥ १९ ॥ मागधवंदीसूतसुजाना । नटनर्तकगंधर्वअमाना
हरिचरित्रअतिअद्भुतगावत।चलेजातनृपसँगसुखछावत२० यहिविधिहरिसमीपमहँजाई।मिलेयथायोग्यहिसुखपाई ॥
तहां आपनेबंधुनकाहीं । औरोपुरवासिन सुखमाहीं॥यथायोग्य सबकरसतकारा।कीन्ह्योतहँवसुदेवकुमारा ॥ २१॥
उग्रसेनअरु पितुअरुरामै । बारबारतहँ कियोप्रणामै ॥ गुरुजनअक्रूरादिककाहीं । कियअभिवंदनकृष्णतहाँहीं ॥

दोहा–अरुमित्रनकोकरपरशि, मिलतभयेयदुनाथ । मंदहसनियुतजोहिकै, पुरजनकिये सनाथ ॥
नीचहुजनतहँरहेजेठाढे।हरिदर्शनलालचअतिबाढे ॥ तिनकीअभिलाषाकरिपूरी।पूंछिकुशलदीन्ह्योंमुदभूरी॥ २२ ॥
तहँगुरुविप्रवृद्धयुतदारा । हरिकहँआशिषदईअपारा॥ वंदीजनवंदनबहुलैकै । कियप्रवेशपुरअतिमुददैकै ॥ २३ ॥
द्वारावतीराजपथपाहीं । जबपहुँचेहरिआनँदमाहीं ॥ तबपुरनारिलखनके हेतू । चढींअटारिनमोदसमेतू ॥ २४ ॥
छनछननिरखहिंरमानिवासा।तदपिनपूजहिदर्शनआसा२५जेहिउरमहँकमलाकरवासा।नितही सोहतिकरतिविलासा

दोहा–दृगवारेनकोजासुमुख, पानिपपीवनयोग । लोकपाल पालक भुजा, जिनपदमुनिसुखभोग ॥ २६ ॥
चामरचलत लसतदुहुँओरा।छत्रप्रकाशित जनचितचोरा ॥ पीतांबरवनमालविराजे । मुकुटमौलिकुंडलश्रुतिछाजे॥
वर्षहिंसुमनचहूँकितनारी । वारवारआरतीउतारी ॥ जेरविशशिसुरधनुअरुतारा । दामिनियुतघनमधियकवारा ॥
[illegible]॥२७॥यहिविधिसोहतपथलोकेशा । मातुपितागृहकियेप्रवेशा॥
तहांदेवकीआदिकरानी।हरिकोमिलींपरमसुखसानी॥निजजननिनवसुदेवकुमारा।शिरसोंकियप्रणामबहुवारा॥ २८॥

दोहा–तेजननीनिजअंकमें, प्रीतिसहितबैठाइ । निजनैननआनँद सलिल, सींच्योहरिहिन्हवाइ ॥
आनँदसिंधुमगनमहतारी।श्रवहिपयोधरप्रेमहिभारी॥२९॥पुनियदुवरनिजमंदिरकाहीं।कियप्रवेशअतिआनँदमाहीं॥
परमअनूपमसकलविभूती।जेहिलखिलाजतविधिकरतूती॥हरिरानिनकेअतिछविछाजत।सोरहसहसमहलजहँराजत।
[illegible]पागा॥३०॥वसिविदेशबहुदिनमनभावन । कियोआपनेगृहआवन॥
[illegible] ३१॥

दोहा—तजिनिजनिजपर्यंकको, अतिआतुरतियधाइ। मिलतभईनिजपीतमें, आनँदअंबुबहाइ ॥

[illegible]। सोनसमातआशुमिसिवाढो ॥ लज्जातेरोंकहिंहगनीरा । पैपियमिलतरह्योनहिंधीरा ॥
[illegible]। पुनिपुनिभेंटहिंवदननिहारी ॥ पुनिपीतमकहँऐनलेआई । निजनिजपर्यंकनिवेठाई ॥
[illegible]॥अनमिपनिरखहिंमुखसुखसानी॥३२॥यद्यपिपियपदअंकहिधरिकै। पद्मपाणिपरसहिंमुदभरिकै
[illegible]। जाकोलखिनहिंदीठिअघाती॥ कौननारिजोहरिपददेखी॥छनछनछकितनहोतिविशेषी॥

दोहा—यद्यपिकमलाचंचला, थिरनरहतिइकठाम । तद्यपिहरिपदछविछकित, तजतिनएकोयाम ॥ ३३ ॥

[illegible]। अक्षौहिणिअतिओजअनूपा ॥ तिनहिपरस्परवैरकराये । आपनिरायुधसवहिंजुझाये ॥
[illegible]। जिमिमारुतसववनहिजरावत ३४ सोइहरिकरिभक्तनपरदाया।जगतप्रगटनिजरूपदेखाया
[illegible]। नरसमकियेविहारसदाहीं॥ ३५॥ जिनतियअमलमनोहरहासा।करतभावगंभीरप्रकासा ॥
[illegible] ॥

दोहा—जगतअसंगीजेमनुज, लीलाकरहिंमहान । तिनहरिकोसंगीगुणत, निजसमजनअज्ञान ॥ ३७ ॥
यदपिआपकोप्रकृतिमें,तेहिगुणपरसतनाहिं । जिमिआतमकेगुणसवै, आवतनहिंवुधमाहिं ॥
यहीईशकीईशता, तिन्हैंमंदमतिनारि । वंसियकांतअसकांतको, निजवशगुणैंनिहारि ॥ ३८ ॥
नहिंजानहिंनिजनाथको,अनुपमपरमप्रभाव । जिमिप्राकृतमतिईशकहि,निजवशगुणहिंसचाव ॥ ३९ ॥

इतिसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बु
निधौप्रथमस्कंधेएकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

दोहा—परममनोहरसुनिकथा, शौनकमतिमनलाइ । प्रेमभरेपुनिसूतसों, कह्योवचनहर्षाइ ॥

शौनकउवाच।

तज्योद्रोणसुतअतिवलवाना। अस्त्रब्रह्मशरतेजमहाना ॥गर्भविराटसुताकोलायो । ताकोश्रीहरिफेरिजियायो ॥ १ ॥
सोमहातमाकेमतिवारे । जन्मकर्मजेपरमपियारे ॥ ताकोनिधनभयोजेहिभांती । लहीजौनगतिनृपअहिघाती ॥
अनशनव्रतभूपतिजोकीन्ह्यो । श्रीशुकदेवज्ञानजेहिदीन्ह्यो॥२॥सुननचहेंसोकथासुखारी।हमसवकीश्रद्धाअतिभारी॥
कहनयोगजोहोइसुजाना । तौविस्तरतेकरहुवखाना ॥३॥ सुनिशौनककेवचनसोहाये । लगेसूतकहनचितचाये ॥

सूतउवाच।

दोहा—धर्मराजमुदेदेप्रजा, पाल्योपुत्रसमान । तजीआशसवकामकी, कृष्णचरणधरिध्यान ॥ ४ ॥

धनधरणीमखजनतियभाई । जंबूद्वीपहुकीठकुराई ॥ निर्मलसुयशस्वर्गलोंछायो । सुरदुर्लभपैश्वर्यसोहायो ॥ ५ ॥
एसवतनकमोदनहिंदेने । धर्मनृपतिमुकुंदरसभीने ॥ जैसेअतिभूखेनरकाहीं । भूपनवसनदेतसुखनाहीं ॥ ६ ॥
रह्योउत्तरागर्भहिजोई । हेभृगुनंदवीरतहँसोई ॥ जरनलग्योजवअस्त्रहितेरे । देख्योएकपुरुपतवनेरे ॥ ७ ॥
रूपअँगुष्टप्रमाणसोहायो । कनकमुकुटशिरमेंछविछायो ॥अमलअनूपरूपवरजाको।लजहिंश्यामघनलिखततातको॥

दोहा—पीतांवरअतिलसतवपु, निजजनपरमदयाल ॥ ८ ॥ कंचनकुंडलकानमें, चारिसुवाहुविशाल ॥

अरुणनैनदीरघअतिभावत । लूकसमानहिगदाभवांवत॥९॥अपनेचहुँकितनंदकुमारा । रक्षनचाहनगर्भहिंवारा ॥
अस्त्रतेजहतकरतगदाते।जिमिहिमिनाशततरणिप्रभाते॥मिलतनिकटकृष्णकहँवालक।कियविचारयहकोममपालक
तहँविभुधर्मपालभगवाना । कियोनाशसोअस्त्रमहाना॥दशमासिकवालककेदेखत। नहेंअंतरहितभोप्रियलेखत ॥११॥
पुनिजवकालभयोमुदमूला।तवमदउदभयेअनुकूला ॥ तवहिंपांडुकोवंशउदियारी । पांडुसमानतेजअतिभारी॥१२॥

दोहा—भयोपरीक्षितभूपको, जन्मजगतसुखदानि । देखियुधिष्ठिरमुदितभे, परमोत्सवउरआनि ॥
धौम्यकृपादिकविप्रवोलाई । धर्मभूपमंगलपढवाई ॥ जातकर्मनिजनातिकेरो । करवायोनृपधर्मघनेरो ॥ १३
गौवैकनकधरणिबहुग्रामा । हयगयवररथअन्नललामा ॥ पौत्रपरीक्षितजन्महिमाहीं । दियोधर्मनृपविप्रनकाहीं ॥ १४
नृपविनीतसोंद्विजवरबोले । ह्वैसंतोपितवचन अमोले ॥ हेकुरुवंशबढावनहारे । सुनियेचितदैवचनहमारे ॥ १५
द्रोणअस्त्रतेनशतपेपी । करिअनुकंपाविष्णुविशेषी ॥ रक्षणकियसबविधिसुखधामा । तातेविष्णुरातहै नामा ॥ १६

दोहा—नृपतुम्हरेसुतकोसवन, परमयशीजगमाहिं । महाभागवत होइगो, यामें संशयनाहिं ॥ १७ ॥
धौम्यकृपाचार्यहुकेबैना । सुनिबोलेनृपधर्मसचैना ॥ (युधिष्ठिरउवाच) [illegible] ॥ जेममकुलमें [illegible]
तिनकेसमकरिसुयशकुमारा । ह्वैहैकीनहिंकहौउदारा ॥ सुनतनृपतिकेवैनसुहाये । बोलेसबद्विजवरसुखछाये ॥ १८
(ब्रा०उ०) सुनहुयुधिष्ठिरभू [illegible] जन [illegible] ॥ जिनिमनुसुतइक्ष्वाकुनरे ।
सत्यसंधब्रह्मण्यमहाना । ह्वैहैजगरघुनाथसमाना ॥ १९ ॥ शरणागतपालकअरुदाता । ह्वैहैशिविनृपसरिसविख्याता

दोहा—याज्ञकज्ञातिनकोसुयश, वर्धकभरतसमान ॥ २० ॥ अर्जुनअर्जुनसहसभुज, समधनुधरबलवान ॥
दुराधर्षपावकसमहोई । दुस्तरसागरसमजगजोई । गमनकरैजोसिंहसमाना । सेवनयोगसरिसहिमवाना
क्षमावानछोनीसमह्वैहै । जननिजनकसमचूकनज्वैहै ॥ २२ ॥ सरिसपितामहहँसमतामाहीं । शंकरसमप्रसन्नतापाहीं ।
हरिसमसबभूतनकोपालक । कृष्णदासह्वैहैयहबालक ॥ २३ ॥ ह्वैहैसबगुणवंतकुमारा । रंतिदेवसमपरमउदारा ॥
धार्मिकनृपययातिसमहोई ॥ २४ ॥ बलिसमधीरजमानहुँसोई ॥ प्रह्लादहिसमभक्तिहिधारक । ह्वैहैसज्जनसंग्रहकारक ॥

दोहा—अश्वमेधकरिहै अमित, वृद्धनसेवापेश ॥ २५ ॥ रचिहैबहुराजर्षिमहि, देहैशठनकलेश ॥
धरणीअरुधर्महिकेकारण । कलिदारुणमदकरिहिविदारण २६ द्विजसुतशापहितक्षकतेरे । आपनिमृत्युजानिअतिनेरे ॥
देहादिकममतासबत्यागी । ह्वैहैश्रीहरिपदअनुरागी ॥ २७ ॥ व्यासतनयतेज्ञानहिंपाई । गंगातटमनतजिकुरुराई ॥
करिहैश्रीहरिलोकपयाना । यामेंकछूनह्वैहैआना (सू०उ०) यहिविधिधर्मभूपसोंकहिकै । ज्योतिषकोविदमुनिमतलहिकै
नृपसोंलहिपूजनसतकारा । गमनेमुनिनिजनिजहिअगारा ॥ गर्भवासमहँजिनकोहेर्‍यो । जनमधितिनहिंध्यानकरिहेर्‍यो ॥

दोहा—तातेनामपरीक्षितै, लह्योउत्तरानंद । अरिबालकपालकप्रजन, दायकप्रजनअनंद ॥ ३० ॥
गुरुजनपालितबढ्योकुमारा । शुक्लपक्षजिमिशशिसुखसारा ३१ । तहांधर्मनृपमनहिंविचार्‍यो । राज्यहेतुमैंज्ञातिसँहार्‍यो
विनावाजिमखसोंयहपापा । छूटिनसकहिकिरेसंतापा ॥ सोमखविनधनह्वैहैनाहीं । लगेराज्यधनखर्चहिमाहीं ॥
केहिविधिलैऔरौधनभूरी । जातेहोइवाजिमखपूरी ॥ ३२ ॥ यहिविधिकरिमनमेंअंदेशा । बोलिपठायोहरिहिनरेशा ॥
कह्योसकलआपनोविचारा । सोसुनिकैवसुदेवकुमारा ॥ अर्जुनादिनृपभायनपाहीं । दियरजाइधनल्यावनकाहीं ॥

दोहा—उत्तरदिशिमेंमरुतनृप, कीन्हीयज्ञउदार । दानदियेतेजोबच्यो, तहँधनरह्योअपार ॥
तहांजाइनृपचारिहुभाई । ल्यायेसोधनअतिसुखपाई ॥ ३३ ॥ सोधनकरिकैमखसंभारा । अश्वमेधकरिकैत्रयवारा ॥
कृष्णचंद्रकोपूजनकीन्ह्यो । बहुविधिदानद्विजनकहँदीन्ह्यो ॥ नृपकीसकलकामनापूरी । पातकभीतिभईसबदूरी ॥ ३४ ॥
यदुवरनृपहियज्ञकरवाई । करिमित्रनपैप्रीतिमहाई ॥ कछुककालतहँकियोनिवासा । सुखसोंबीतिगयेबहुमासा ॥ ३५ ॥
पुनिनृपसोंह्वैविदाविहारी । पांचालीसोंकहिसुखकारी ॥ बंधुनमिलिअतिआनँददैके । अपनेसँगअर्जुनकहँलैके ॥

दोहा—यदुवंशिनसबसँगलै, श्रीवसुदेवकुमार । कियोद्वारकाकोगमन, हेशौनकमतिवार ॥ ३६ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ प्रथमस्कंधेद्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

सूतउवाच ।

दोहा-मित्रासुततेज्ञानलहि, जाननलायकजानि । हस्तिनपुरआयेविदुर, करितीरथसुखदानि ॥ १ ॥
प्रश्नविदुरबुधजेते । मित्रासुतउत्तरदियतेते ॥ लहीभक्तिगोविंदहिमाहीं । पूँछनआशरहीपुनिनाहीं ॥ २ ॥
स्तिननगरविदुरजबआये । तिनहिंदेखिअतिआनँदछाये ॥ तहाँधर्मनृपसंयुतभाई । संजयनृपयुयुत्सुकुरुराई ॥३॥
सुतागांधारी । औअश्वत्थामामहतारी ॥ अरुउत्तरासुभद्रादोऊ । औरौकुरुकुलकीतियसोऊ ॥ ४ ॥
धुसुतनयुतपुरनरनारी । चलेलेनअगुवानसुखारी ॥४॥ यथायोगमिलिविदुरहिदेखी।कियअभिवंदनसकलविशेषी॥
दोहा-विगतप्राणजैसेसकल,इंद्रियगणकुम्हिलान । पुनिप्राणनकोपायके, पावतमोदमहान ॥ ५ ॥
नँदलहिआनँदजलढारहिं । अतिउत्कंठिततनुनसम्हारहिं॥विदुरहिवरआंगनबैठाई।कियपूजनराजासुखछाई॥६॥
ाँतिजेउनारजेवाई । सकलमार्गकोश्रमहिमिटाई ॥ नम्रिततहांधर्मनृपराई । कह्योवैनसबजननसुनाई ॥ ७ ॥
०उ०)तुम्हरेहिबाहुपक्षकीछाया॥मातुसहितकरिअभयवढाया॥नातेअग्निविपादिकतेरे।रक्षकतुमहिंरहेयकमेरे ८
तिसुनहुककासुखकारी । करहुकवहुँकहुँसुरतिहमारी॥ विचरतयहिमहिमंडलपाहीं । रहेआपकेहिवृत्तिहिमाहीं॥
दोहा-पुण्यक्षेत्रअरुतीर्थवर, कौनकौनमहिमाहिं । सेवनकीन्ह्योआपभल, जेसुखदानिसदाहिं ॥ ९ ॥
मसमजेभागवतउदारा।अहैंआपहीतीर्थअपारा॥करहिंतीर्थउनकोअतिपावन।सुमिरतहिययदुवरमनभावन ॥ १०॥
नकेअहैंनाथयदुनाथा । प्रियममबांधवसुहृदसुनाथा ॥ ऐसेयदुवंशिनकहँताता । देखेकवहुँबुद्धिविख्याता ॥
हिंद्वारकामहँसुखमाहीं।ऐसहुसुन्योकहूँकोहुपाहीं॥११॥जबयहिविधिपूँछ्योनृपराई।तबहिंविदुरअतिआनँदपाई॥
ख्योसुन्योकियोपरकाशा।पैनकह्योयदुकुलकोनाशा।१२॥जोअतिअप्रियदुसहनरनको।विनकारणभोशोकभरनको
दोहा-जाहिसुनतपांडवसकल, ह्वैहैंअवशिअधीर । करुणावानविचारियह, कहिनसकेमतिधीर ॥ १३ ॥
छबंधुधृतराष्ट्रहिकेरो । चाहतउरकल्याणघनेरो ॥ सबसोंप्रीतिकरतमतिवारो । देवसमानलहतसत्कारो ॥
एसेविदुरप्रमोदसमेतू । वस्योकछुकदिननृपतिनिकेतू॥१४॥विदुरअहैयमकोअवतारा।सुनुशौनकयहकथाप्रकारा॥
एकसमैभटभूपतिकेरे । तस्करगोलनिविडमहँघेरे ॥ रपटेचोरनकोगहिल्याये ॥ कोपितनरपतिकहँदर्शाये ।
भूपतिहुकुमदियोअनखाई । सबकहँशूलदेहुचढाई ॥
दोहा-तबभटचोरनमुनिसहित, शूलीदियोचढाइ । मुनिकेगड़ीननेकहू, चोरमरेदुखपाइ ॥
लखिकौतुकनृपमनहिंविचाऱ्यो।शूलतेमुनिकाहँउताऱ्यो॥त्राहित्राहिकरिमुनिपदमाहीं।गिऱ्योभूपकहचीन्ह्योनाहीं॥
मुनिकहभूपतिसोंतजिरोषू । यहिमहँहैतुम्हारनहिंदोषू॥ यहकहिमुनियमसदनसिधाये । यमसोंकह्योकोपउरछाये ॥
रेयममोरकौनअपराधा । जातेमोहिंभईयहबाधा ॥ तबयमकह्योसुनहुमुनिराई । जबतुमबालकरहेयनाई ॥
तबइकयेर्डकिगुदमाहीं । वेधिसींकछोड़्योनभकाहीं ॥ सोइपापकोयहफलपायो । हमनाहिंतुमकोकष्टसतायो ॥
दोहा-तबमुनिकोपितह्वैकह्यो, बालकहोतअजान । लघुअपराधहिमेंदियो, हमकोदंडमहान ॥
तातेसौवर्षहियमराई । शूद्रहोहुतुममहिमेंजाई ॥ सोइविदुरभयोमननिमाना । भक्तिवानभागवतप्रधाना ॥
जबलगिशूद्ररहेयमराजा । तबलगिदंडदियोदिनराजा॥१५॥राज्यपाइनृपधर्मविशेषी।कुलधारकनिजजनतिहिलेखी॥
लोकपालसमसंयुतभाई।आनँदलह्योभूतिभलिपाई।१६।यहिविधितिनहिंयमनगृहमाहीं।आसनमहिअनरजेतहिनाहीं
छतिसवपंकियोनृपराजू।भायनबंधुनसहितसमाजू॥बीतिगयोअतिदुस्तरकाला । मुदबशजान्योमाहिंभुवाला॥१७॥
दोहा-विदुरसमैतबजानिकै, कहधृतराष्ट्रहिपाहि । महाराजनिकसोइहांनहि, देखहुयहभयकाहि॥ १८ ॥
कबहूँकोनेहुकियेउपाई।काहूकीनकालभयजाई॥सोप्रभुप्रेरितकालकराला । आयोहमसबकोभयहाला ॥ १९ ॥
जोनकालवलहिजगप्रानी।त्यागहिंतुनरतुरतसुखसानी॥जासुप्रभावजिपहतदटिनाना। जहँमुनाविनानिपर्कनिकपाना
पितुभातासुतसुहृदतुम्हारे । गयेसकलसंगमहारे ॥ हर्मागिनगनिजगअवजाई । येनहुपरमभनाहिंजाई ॥

दोहा-जौलौंयदुवरधरणिमहँ, विचरहिंअतिसुखपाइ । तौलौंतुमहूंधर्मयुत, शासनकरोवनाइ ॥ ४९ ॥
धृतराष्ट्रविदुरगांधारी।गयेहिमालयज्ञानहिंधारी॥हिमिगिरिदक्षिणवरमुनिआश्रम। कियेनिवासतहांतजिभवभ्रम॥
हाँकरनप्रियक्रपिनउदारा।भईसप्तविधिसुरसरिधारा॥तातेसप्तश्रोतयहनामा। तेहिआश्रमकोभयोललामा॥५१॥
हँमज्जनकरिकैतिहुँकाला।होमहुँकरिविधिसहितभुवाला।जलभपितज्योविपयसमुदाई।जितआसनजितश्वासबनाई
पांचोंइंद्रिनयुतमनजीत्यो।हरिरतिकरिसतरजतमरीत्यो॥५३॥विज्ञानातमजीवहिमाहीं।करिसेयोजितइंद्रिनकाहीं॥
दोहा-परब्रह्ममेंजीवको, दीन्ह्योभूपलगाइ। घटाकाशघटहतभये, जिमिनभमिलोदेखाय ॥ ५४ ॥
क्रोधलोभमदमोहनशाई। पटइंद्रिनहरिमाहँलगाई॥सलिलहुकोतजिदियोअहारा। निवसतजडसमभूपउदारा॥५५॥
तेनहिनअवतुमपुनिगृहलवो। तज्योकर्मतिनगतिननशावो॥अवतेपचयेंदिनमहराजा।तजिहैंकुरुपतितनुदुखसाजा॥
योगानलकरिकैतनुजरिहै५६गांधारिहुतेहिमहँजरिमरिहै।यहकौतुकलखिविदुरसुजाना।हर्पशोकदोउपाइसमाना५७
तीर्थकरनकोगमनकरैगो। हरिहरभक्तिप्रमोदभरैगो॥५८॥नारदयहिविधिनृपहिबुझायो।तुंवुरुयुतसुरलोकसिधायो॥
दोहा-धर्मराजनारदवचन, उरधरिशोचगमाइ। राज्यकरनलागेसुखी, हरिपदमनहिंलगाइ ॥ ५९ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदांबुनिधौ प्रथमस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

सूतउवाच।

दोहा-कृष्णचरितजाननलिये, यदुनलखनकेहेत। अर्जुनगमनेद्वारका, जहँश्रीरमानिकेत ॥ १ ॥
सातमासवीते सुखछाये। विजयद्वारकातेनहिंआये॥ तवहिंधर्मनृपशत्रुअजाता। लखतभयेतहँवहुउत्पाता ॥ २ ॥
ऋतुविपरीतधर्मजेहिमाहीं। ऐसेकालभीमगतिकाहीं॥क्रोधलोभमिथ्यामनलागे। पापजीविकाजनअनुरागे॥ ३ ॥
भयोप्रचारकपटव्यवहारा। स्वारथरतमित्रताअपारा॥ पितुअरुमातुसुहृदअरुभाई। दंपतिहुनमहँहोतलराई॥४॥
वेचनलगेपितादुहिताको। पुत्रनपालहिंमातुपिताको॥ वेदविमुखब्राह्मणबहुतेरे। पढ़हिंवेदमहिशूद्रघनेरे ॥
दोहा-ऐसेअतिउत्पातलखि, सूचकअशुभअपार। भीमसेनसोंधर्मनृप, बोलेकरताविचार ॥ ५ ॥
(युधिष्ठिरउवाच)जवतेविजयद्वारकापाहीं।पठयोयदुनविलोकनकाहीं॥हरिचरित्रजाननकेहेतू।सोगमनेजहँरमानिकेतू
सातमासउतवसतविताये। अवहुँभीमतुवअनुजनआये॥तासुहेतुहमजानतनाहीं। शंकाहोतिपरममनमाहीं॥ ७ ॥
नारदमुनिजोकालहिंगायो। सोधौंपरमभयावनआयो ॥ प्राणहुप्रियजेहिमहँयदुराई। जेहिंद्वारावतीविहाई ॥ ८ ॥
जिनहरितेसंपतिअरुराजू। दाराप्राणसकलसुखसाजू॥ जासुकृपाममकुलपरिवारा। लह्योसुतनयुतमोदअगारा ॥
दोहा-जासुकृपालहिरिपुनसों, पाईविजयमहान॥ जासुकृपासबलोकमें, पूजनलह्योअमान ॥ ९ ॥
देखहुभीमभीमउत्पाता।नभतेभूतेतनतेजाता॥ विविधअमंगलविविधजनावत। निरखतजाहिमोदमनभावत ॥१०॥
वामअंगपुनिपुनिफरकाहीं। कंपनहोतअमितउरमाहीं॥तातेजानिपरतअसभाई। एसवअशुभआशुदुखदाई ॥११॥
वमतअनलपरभातशृगाली।रविसन्मुखबोलतविकराली॥निर्भयरोवतसन्मुखश्वाना॥१२॥करहिंगवादिकवामपयाना
खरमहिपादिकदक्षिणदोरे। रोवतलखेपरेंजगघोरे ॥ १३ ॥ भयदर्शायकपोतउलूका। निद्रातजिकरतेकुलिकूका॥
दोहा-मृत्युदूतइनकोगुनों, करनचहहिंगृहसून ॥ १४ ॥ धूमिलदिशादिखातिहैं, रविपरमंडलदून॥
कंपैधरणिधरणिधरसंगा। वज्रपातवहुहोइअभंगा ॥ घहरहिंगगनमाहँघनघोरा ॥ १५ ॥ पवनप्रचंडचलतचहुँओरा॥
छाईरेणुभयोअँधियारा। वर्पहिंवारिदशोणितधारा॥१६ ॥भयोमंदनभभानुप्रकाशा।करहिंयुद्धग्रहलखहुअकाशा॥
प्रेतपिशाचनकेगणधावैं। मनहुँगगनमहिआशुजरावैं ॥ १७॥ सरगुनओमानससबकेरो। क्षोभितलगनपरतदेहेरो॥
त्योहींनदनहोंहिंसमुदाई। क्षोभितसकलठौरदशांई ॥ याज्ञकगुणद्विजयज्ञनिमाहीं। होमदेतहँअग्निदिपाहीं ॥

वसहुपरायेगृहमहँभाई। अबहुँजियनकीआशमहाई॥२१॥जौनआशतेआपभुवाला। [illegible]

दोहा–जौन तुम्हारेसुतहन्यो, भीमसेन बलवान। आदरविनताको दियो, खातअहोसमश्वान॥२२॥

जिनहिलाखके भवनजराये।विप्रभोजनजिनको करवाये॥जिनकेतियकोकेशहिकर्ष्यो। जिनको धन [illegible]

तिन्नतेअबजीवननहिनीको। तबहूंजीवनदियमनठीको॥२३॥यद्यपिचहैनतजनशरीरा। [illegible]

वसनपुरानसरिसयहजैहै। अंतसमैयहिकोउनबचैहै॥२४॥जोविरक्तह्वैतजिभवबंधन। निर्जनजाइरहितस्वारथतन

छाँडतहैहरिपदमनलाई। सोइमतिवाननसकलश्रुतिगाई॥२५॥ जोनिजतेअथवापरतेरे। [illegible]

दोहा–हरिकोंहियमेंध्यानधरि, करतजोकाननगौन। सोइनरवरज्ञानीमहा, सुनहुनृपतिमतिभौन॥२६॥

यातेजामेंकोउनहिजाने। करहुआपउत्तरहिपयाने॥ अबआवत हैकालकराला। पुरुषनकेगुणनाशनवाला॥२७

यहिविधिअनुजविदुरजबकहेऊ।अंधनृपतितबबोधहिलहेऊ॥नेहपाशदृढतजिकुलकेरी। विदुरआँगुरीगहिविनदेरी

निकसिचलेउत्तरकुरुराई।विदुरदियेतेहिराहबताई।२८ [illegible]

[illegible]

दोहा–अर्धरात्रिमेंविदुरलै, निकसेदंपतिकाहि। हस्तिनपुरकेलोगकोउ, नेकहुजानतनाहिं॥२९॥

पुनिजबभयोविमलपरभाता। तबहियुधिष्ठिरशत्रुअजाता॥ संध्याबंदनकियोनहाई। होमकियोविधियुतमनलाई

तिलगोधूमकनकमणिधामा। दै विप्रनकहँकियोप्रणामा॥ वृद्धभूपगुरुवंदनहेतू। गयेभूपधृतराष्ट्रनिकेतू॥

गांधारीधृतराष्ट्रहिकाहीं। विदुरहुकहँतहँदेखेनाहीं॥ ३०॥ तहँसंजयकोलखिनृपराई। पूंछनलगेबहुतविलखाई।

संजयअंधवृद्धगुरुमेरे। कहाँगयेकिमिसिलहिनहेरे॥ ३१॥ जाकेपुत्रनभयोविनासा। गांधारीकहँकियोनिवासा।

दोहा–चचासुहृदमसविदुरप्रिय,कहाँगयेमतिधाम। संजयवेगिबतावहू,गमनकियोकेहिकाम॥३२॥

धौंमोहिंअतिअविवेकीजानी। पुत्रनकोउरशोकहिआनी॥ निंदितमोहिंलहिनहिंदुखभंगा। गंगामहँडूबेतियसंगा॥

पितापांडुजबगेसुरलोके।तबहमसबशिशुरहेसशोके॥बहुदुखनाशिमोदजिनदीन्ह्यो।तेदोउआजुगमनकहँकीन्ह्यो ३३

(सू.उ.)संजयसुनतधर्मनृपबैना।भयेविकलछूट्योसबचैना॥सोगृहसोनिजनाथनदेखी।कहिनसक्योदुखभयोविशेषी३४

पुनिनिजपाणिपोंछिदृगआंसू।धरिधीरजउरविगतहुलासू॥संजयसुमिरिनाथपदकाहीं।बोलतभयेधर्मनृपपाहीं॥३५॥

संजयउवाच।

दोहा–गांधारीअरुविदुरयुत, ताततुम्हारेतात। हमहूंकोछलिकहँगयो, नहियहजानैंबात॥ ३६॥

तहँनारदतुंबुरुयुतआये।देखियुधिष्ठिरअतिसुखपाये॥करिप्रणामआसनबैठाई।अतिआदरयुतविनैसुनाई॥३७॥(यु.उ.)

मुनिममपितुकेभ्रातादोऊ। गांधारीसुतशोकितसोऊ॥ कहाँगयेप्रभुवेगिबतावो। दुखसमुद्रकेपारलगावो॥ ३८॥

तबमुनिधर्मनृपसिबोले। सकलजगतव्यवहारहिखोले॥३९॥कोहुनशोचहुतुममहराजा। ईश्वरकेवशहैजगकाजा॥

सिगरेलोकपालयुतलोका। यदिहरिकहँबलिदेहिंविशोका॥४०॥सोइभूतनकोभगवाना। करतसँयोगवियोगमहाना॥

दोहा–जिमिमिथेवृषभ, करहिंस्वामिकोकाम। तिमिअर्पहिंबलिईशको, जनबांधेश्रुतिदाम॥ ४१॥

मृन्मयपुरुषना।जिमिबालकायोगवियोगकरतअरिबालक॥तिमिजगमेंसंयोगवियोगू।खेलतईशकरतसुखभोगू४२॥

नित्यलोककोजोतुममानो। तोकाहेपुनिशोचहिठानो॥ जोअनित्यमानोयहिलोके। तोविनहेतुकरहुकिमिशोके॥

नित्यानित्यदोउसंसारा।यहैअसंभवपांडुकुमारा॥४३॥तातेनहिकोउशोचनलायक। शोचअज्ञानदितकरुनायक॥

तातेमोरिविनैकिमिररहै। जीवतकिमिकलेशबहुसहिहैं॥ यहअज्ञानजनितविकलाई।छोडिदेहुआशुनिनृपराई४४

दोहा–मृन्मयदेहगुण, कालकर्मआधीन। सोकिमिरक्षणकरिसकै, औरनकोबलहीन॥

निमि [illegible]। औरकोनहिसकनबचाई४५।जिनककरतमृगहतिखाते।मृगबनतृणचरिअवशिअघाते

यहमीनलघुमीननखाहीं। औवनजीवनजीवनमाहीं॥ ४६॥

भौनरवाल [illegible]। स्वयंकाहअनादिदिसाई॥ [illegible]

[illegible]

सूतउवाच।

दोहा–कृष्णसखानिजबंधुको, बहुशंकामनलाइ। जबयहिविधिपूंछतभये, धर्मनृपतिअकुलाइ॥ १॥

[illegible]विरहदुखसानो। हृदयकमलअरुवदनसुखानो॥प्रभामंदतनुशोकहिछायो।यदुवरसुमिरतबोलिनआयो २
[illegible]जधारी। दोउकरपोंछिविलोचनवारी॥यदपिप्रत्यक्षनअहैमुरारी।तदपिप्रेमव्याकुलधनुधारी ॥३॥
[illegible]दुवरकोअ[illegible]अठौरवि[illegible]वो॥ हरिकोनिजसारथिकोह्वैवो। प्रबलरिपुनसोंआसुजितैवो॥
यहसबसुमिरतगरभरिआयो।अग्रजसोंअर्जुनयहगायो४।(अ०उ०)महाराजबहछलीमुरारी।गमन्योकरिमोसोंछलभारी

दोहा–देवनकोविस्मय दियो, ऐसोजोममतेज। सोहरिमोउरदुःखभरि, गमन्योटोरिकरेज॥ ५॥

जिनतेयकक्षणहोतवियोगू। प्रियनहिंलागतजतसंयोगू॥ होतौप्राणहीनजगजैसे। हरिविनहोतभयेहमतैसे॥ ६॥
जिनकेबलतेद्रुपदनिकेतू। नृपबहुजुरेस्वयंवरहेतू॥ तिनदुर्मदमदमर्दनकीनो। धनुचढाइवेध्योहममीनो॥
लहीसभामधिद्रुपदकुमारी। सोहरिमोहितजिगयेपधारी॥७॥ जिनकेबलखांडववनभायो।सुरनजीतिमैंअग्निचरायो॥
मयकृतसभाजासुबलपाई।जोत्रिभुवनमहँअनुपमगाई॥ जेहिबलमखनृपदियबलिमारी।सोहरिमोहितजिगयेपधारी ८

दोहा–नृपनशिरनजाकोचरण, दशहजारगजजोर। वीससहसनृपकैदकिय, जाहरजयेकिशोर॥

ताकोभीमजासुबलमारो। सकलनृपनकोकियोउधारो॥ जरासंधशिवकेमखहेतू। धनसंचितकियनिजहिनिकेतू॥
जेहिबलसोंधनलह्योसुखारी। सोहरिमोहितजिगयेपधारी॥९॥ राजसूयअभिपेचितकेशा।द्रुपदसुताकीसुनहुनरेशा॥
ताकोदुःशासनअपकारी। गहिल्यायोतेहिसभामँझारी॥ पांचालीतहँरोवनलागी। यदुवरचरणचित्तअनुरागी॥
जेहिबलभीमतासुउरफारी।पियोरुधिररणमध्यप्रचारी॥जेहिबलरोवहिंसबरिपुनारी।सोहरिमोहितजिगयेपधारी १०॥

दोहा–दुर्योधनकेभवनमें, दुर्वासाऋषिराज। दशहजारमुनिसंगले, आयेभोजनकाज॥

दुर्योधनतहँकरिसत्कारा। भोजनदियोअनेकप्रकारा॥ भेप्रसन्नमुनिभोजनकरिकै। दुर्योधनसोंकहिमुदभरिकै॥
माँगुमाँगुकुरुपतिवरदाना। कीन्ह्योममसत्कारमहाना॥ कह्योसुयोधनतबकरजोरी। सुनहुनाथविनतीयहमोरी॥
जोप्रसन्नअतिभयेकृपाला। तौवरदानदेहुयहहाला॥ वनमहँजहाँयुधिष्ठिरराजा। तहँ ऐसेमुनिजोरिसमाजा॥
जबकरिअशनउठैपांचाली। जाकीद्युतितिहुँलोकविशाली॥ तबतुमतहांजाहुमुनिराई। यहवरदेहुमोहिंहर्पाई॥

दोहा–तबदुर्वासाहर्पिकै, कह्योतथास्तुनरेश। योंकहिमुनिनसमाजलै, गमनतभेवहिदेश॥

वरतनमांजिकुटीमहँ पैठी। जबद्रुपदीकरिभोजनबैठी॥ तबदुर्वासापहुँचेजाई। जहँतुमरहेसकलयुतभाई॥
लखितुमकियप्रणामयुतनेहू। पुनिकहआशुहिभोजनदेहू॥ तबतुमयहमनमाहँविचारी। हमसबकोह्वैहैसंहारी॥
जोमोहिंवासनदियदिनराऊ। ताकोरह्योयहीपरभाऊ॥ करैनद्रुपदीजबलोंभोजन। तबलोंअशनकढैनहितियवन॥
द्रुपदसुताकरिभोजनलीन्ह्यो। ताकोधोइकुटीधरिदीन्ह्यो॥ अबकिनभोजनइन्हेंकरैहैं। विनभोजनहठिशापहिदैहैं॥

दोहा–योंगुणिमुनिसोंतुमकह्यो, परमकलेशहिपाइ। मज्जनकरिआवोसरित, भोजनकरोबनाइ॥

दशहजारमुनिलैसँगमाहीं। मुनिगमनेसरिमज्जनकाहीं॥ इतहमपांचोबंधुदुखारी। द्रुपदसुतासोंगिराउचारी॥
मुनिभोजनहितकरहुउपाई। तबद्रुपदीसुमिर्‍योयदुराई॥ रक्षहुयदिअवसरमहँनाथा। तुमहीनिमंअहोंसनाथा॥
तहांकृष्णतात्क्षणआये। द्रुपदीसोंबोलेचितचाये॥ भोजनदेहुभूखअतिलागी। तबद्रुपदीबोलीदुखपागी॥
धोइचुकीसूरजप्रदवासन। कोहविधिकरोंआपअनुशासन॥ तबहरिकह्योभांडइतल्याई। द्रुपदीसोकोदेहिदिखाई॥
भांडल्याइद्रुपदीनिदिदीन्ह्यो। शाकपातनेहिमहँलखिलीन्ह्यो॥

दोहा–दुर्वासादशसहसमुनि, सहितहितेगिअपाहिं। योंकहिभक्षनकोगये, अंतर्यामिनताहिं॥

दुर्वासाविनअशनअपाने। लखिनीअप्पनसहितनपगाने॥जोइनदुःखनदियोनिदागी।सोहरिमोहितजिगयेपधारी॥११॥
जिनकेबलशिवकहँरणमाहीं। तुष्टकियेपकोपुटहिकाहीं॥ पाशुपतास्त्रदियोत्रिपुरारी।सोहरिमोहितजिगयेपधारी॥

दोहा–आहुतिलहिशिखिकुंडमें, ज्वलतिनहींयहिकाल । जानिपरतकछुहैनहीं, कहाकरैधौंकाल ॥ १८॥
बछरापयकोपाननकरहीं । गौवैंथनतेक्षीरनटरहीं ॥ गौवैंरोवहिंडारहिंआंसू । व्रजमेंवृषभनलहतहुलासू ॥ १९ ॥
देवनकीप्रतिमापसिनाहीं।गमनतरोवतसरिसलखाहीं॥देशग्रामपुरआश्रमआकर।मुदश्रीहतप्रदअशुभमहाकर२०॥
इनउत्पातनतेयहमानों।तजिधरणीहरिकियोपयानो॥२१॥यहिविधिअशुभनिरखिनृपराई।चिंताकरतचित्तअकुलाई ॥
विजैद्वारकातेदुखछाये।। लौटिधर्मभूपतिढिगआये ॥ २२ ॥गिरतभयोपदमहँअतिआरत।वारवारनैननजलढारत ॥

दोहा–नीचेकोकरिवदननिज, वोलतनहिंकछुवेन ॥ बैठ्योनृपतिसमीपमहँ, हतशोभासबचैन ॥ २३ ॥
ताहिविलोकिभूपअकुलाई । सुमिरिवातनारदकीगाई ॥ सभामध्यअर्जुनसोंराजा ।पूँछतभयोछोंडिसबकाजा॥२४॥
(यु.उ.)कहहुद्वारकामहँधनुधारी।यदुवंशीसबअहेंसुखारी॥अंधकसात्वतयदुमधुभोजा।अरुदशार्हवंशीयुतओजा २५
जेमेरेप्राणनतेप्यारे । सकलशत्रुकुलनाशनवारे ॥ शूरनाममातामहमेरे । अर्जुनहेंयुतक्षेमघनेरे ॥
अनुजसहितमातुलवसुदेवा।वसतसुखीलहिपुत्रनसेवा२६॥ममममातुलिनसाततियताकी।वसहिंतहाँसुतयुतसुखछाकी

दोहा–पुत्रवधूयुतदेवकी, सुखीअहैसबभांति ॥२७॥ उग्रसेननृपजियतहै, जासुपुत्रकुलघाति ॥
देवकतिनकेअनुजपियारे । अहेंकुशलसबसुहृदहमारे ॥ सुतसुफल्कअक्रूरप्रवीरा । अहेंसकलविधिकुशलशरीरा।
गदजयंतसारनरिपुघाती । पारथकहौकुशलसबभांती२८यदुवंशिनकेप्रभुबलरामा।कुशलअहेंसबविधिबलधामा २९
महारथीयदुवंशिनमाहीं । जगमेंजेहिसमानकोउनाहीं ॥ सोप्रद्युम्नपराक्रमभारी । सुखीवसतद्वारकामँझारी ।
अरुअनिरुद्धधनुर्द्धरधीरा । सुखीअहैजेहिवेगगँभीरी ॥ ३० ॥जाम्बवतीकोसांबकुमारा।चारुदेष्णऋषभादिउदारा ।

दोहा–अरुसुखेनआदिकसकल, जेप्रधानयदुवीर । कुशलअहेंसबभांतिसों, कहहुपार्थमतिधीर ॥३१॥
श्रीयदुवरकेसखापियारे । उद्धवशुद्धबुद्धिवलवारे ॥ श्रुतिदेवादिकअरुहरिअनुचर । सुखीद्वारकानिवसहिंनिजघर ॥
नंदसुनंदआदियदुवंशी।सुखीअहैंअर्जुनअरिध्वंशी॥३२॥सिगरेरामकृष्णभुजपालित।कुशस्थलीकुशलीप्रभुलालित॥
कबहुँसुरतिवेकरहिंहमारी।जिनसोंनेहवँध्योअतिभारी ॥ ३३॥ अरुगोविंदब्रह्मण्यमहाना।भक्तनप[illegible]कजेभगवाना ॥
सुहृदनसहितसुखीपुरपाहीं।राजहिंसभासुधर्मामाहीं ॥३४॥सबलोकनकेमंगलहेतू । यदुकुलनिवसहिंखगकुलकेतू ॥

दोहा–जासुसहायकहैंसदा,श्रीबलदेवप्रवीर । यदुकुलसागरचंद्रमा, जिनकोश्यामशरीर ॥ ३५ ॥
पालितजासुमहाभुजदंडा।लसहिद्वारकाप्रभाअखंडा॥हरिसन्मानितजहँयदुवंशी।विहरहिंसुरसमशत्रुविध्वंसी ॥३६॥
करिसेवनजेहिचरणउदारा । सोरहसहसपरमप्रियदारा ॥ इंद्रानिहुदुर्लभसुखकरहीं । नितनवकृष्णमोदउरभरहीं ॥
जिनकीप्रीतिहेतुहरिचाये । जीतिपारिजातादिकल्याये ॥ ३७ ॥ जेहरिबाहुदंडबलतेरे । यदुवंशीहैंअभयघनेरे ॥
शुक्रहिजीतिसुधर्माल्याई । जामेंविहरहिआनँदछाई ॥ऐसेकृष्णकुशलसबभांती।कहहुवेगिअर्जुनअरिघाती ॥ ३८ ॥

दोहा–तुमहुकहहुनिजकुशलसब, कततुवबदनमलान । किधौंबहुतदिनवसतते, पायोतहँअपमान ॥ ३९ ॥
किधौंकह्योकोउवचनकठोरा।प्रगटकहौसबपांडुकिशोरा॥दानदेनकहिधौंनहिंदीन्ह्यो।धौंशरणागतत्यागहिकीन्ह्यो४०॥
वालवृद्धरोगीअरुनारी । गोब्राह्मणरक्षानहिंधारी॥नारिअगम्यगमनमनल्याये ॥४१॥ किधौंगम्यतियतजिइतआये ॥
कैधौंमारगमहँधनुधारे।निजसमऔलघुजनतेहारे॥४२॥वालवृद्धतजिभोजनकीन्ह्यो।निंदितकर्महिधौंमनदीन्ह्यो४३॥
पारथजानिपरतअबऐसो । कहौबुझाइसुनोतुमतैसो ॥ श्रीयदुनंदनप्राणपियारे । परममित्रअरुनाथहमारे ॥

दोहा–तिनअरुतुमतेह्वैगयो, दारुणदुसहवियोग । यहीमानदुःखितभये,और नहै कछुरोग ॥ ४४ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदांबुनिधौ
प्रथमस्कंधे चतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

न्मराहितगुणिभयोविशोकू। जीवनमुक्तलह्योमुदथोकू॥३१॥भूपगमनसुनिरमानिवाशा।अरुसबयदुवंशिनकोनाशा॥
दोहा-करियकाग्रमनकोतहाँ, धर्मनृपतिदुखछाइ। गमनमहापथकरनको, निजचितदियोलगाइ ॥ ३२ ॥
रियात्रायदुकुलसंहारा। सुखते अर्जुनजबहिंउचारा॥सुनिकुंतीहरिपदमनदीन्ह्यो।तजिशरीरहरिलोकहिकीन्ह्यो३३
हियादवतनुकरिभूभारा। हन्योसकलवसुदेवकुमारा ॥ सोयदुकुलतनुतज्योमुरारी। जिमिकंटकतेकाँटनिकारी॥
जैदुहुँनकोपुरुषसुजाना।तैसहिंईशहिंदोउसमाना॥३४॥ जिमिनटनिजबहुरूपदेखावै।सभामध्यपुनिताहिछिपावै॥
मिमत्स्यादिकरूपहिधारी। अंतर्द्धानहिंकरहिंमुरारी ॥ हन्योजोतनुतेभारमहाना। सोतनुहरिकियअंतर्द्धाना३५
दोहा-सुननयोगजिनकीकथा, यदुवरदीनदयाल। तजीमहीजेहिदिनहिंते, दिनप्रगट्योकलिकाल ॥
अविवेकिनअतिदुखदायक।जेहिहरिनामहिंसुमिरनलायक३६तहँनृपनिजजनगृहपुरराजू।लख्योकलितकलिसकलसमाजू
हसालोभअसत्यअधर्मा। व्यापितमहीदेखिनृपधर्मा॥बदरीवनकहँगमनविचारी। लगेकरनतेहिहेतुतयारी ॥३७॥
तिनिपुणनातीनिजनिजसम। परमशूरजाकेनहिंकछुभ्रम॥तेहिहस्तिनपुरकरिअभिषेकू।दियोराज्यदैसीखअनेकू॥
कयोनाथमहिसिंधुमालिनी।दईसैन्यनिजशत्रुशालिनी॥३८॥अनिरुधनंदनवज्रहिकाहीं।अभिषेकहिकियमथुरामाहीं
दोहा-प्राजापत्यहिइष्टकरि, पावकआत्मनिधाय ॥३९॥ भूपणवसनहुतजिदियो, हरिपदमनहिंलगाइ ॥
मताअहंकारतजिदीन्ह्यो। भवबंधनकोनाशहिकीन्ह्यो॥४०॥ मनमहँइंद्रिनवृत्तिलगाई। मनकोप्राणहिदियोबसाई॥
णहुकीलयकियोअपानै।वृत्तिसहिततेहिदियोअमानै॥कारणपवनसमानहिंकाहीं।दियमिलाइनृपधर्मतहाहीं ॥४१॥
चभूतयुतइंद्रियगनको। त्रिविधअहंकारहिमहँतिनको ॥ मेल्योजिनमहँवायुसमेतू। धर्मनृपतिह्वैमोदनिकेतू ॥
हत्तत्वमहँअहंकारकहँ। महत्तत्वकोमूलप्रकृतिमहँ॥इनसबकहँजीवात्मामाहीं। जियेसमर्प्योब्रह्महिपाहीं॥४२॥
दोहा-चीरवसनधरिमौनह्वै, छांड्योसकलअहार। खुलेकेशजडमत्तसम, ह्वैकैनृपतिउदार ॥ ४३ ॥
देखतसुनतनकुरुकुलसाईं। ह्वैकेअंधबधिरकीनाईं ॥ हरिध्यावतउत्तरनृपराई। गमनेजहँनहिंआवतजाई ॥ ४४ ॥
अंतकालजहँसंतसिधारी। तनुतजिनिवसतलोकमुरारी ॥ महिमहँलखिकलिकालबनाई। तिनकेपीछेबिचर्योभाई॥
निकसिचलेतजिकुलपरिवारा।तज्योमोहधनधामअपारा४५मरणठीककरिहरिपदमाहीं। दीन्ह्योसोलगाइमनकाहीं ॥
हरिध्यावतगैभक्तिअमानी।ताकरिबुद्धिविशुद्धिमहानी॥तिनहरिमेंइकांतमतिजिनकी।सकलवासनाछूटींतिनकी ४७
दोहा-ऐसेपांडवगतिलही, दुष्टनदुर्लभजौन। कियोवासआनंदमय, श्रीनिवासकेभौन ॥ ४८ ॥
विदुरप्रभासक्षेत्रमहँजाई।कृष्णचरणमहँमनहिंलगाई॥तजिशरीरनिजलोकसिधारो।पितरनसहितमहामतिवारो॥४९॥
पतिनगमनलखिद्रुपदकुमारी।सुमिरतचरणकमलगिरिधारी॥छोंडिशरीरमहामतिवारी।वासुदेवकेलोकसिधारी॥५०
येपांडवअतिप्रियहरिकेरे। धर्मवानजगविदितघनेरे ॥ तिनकोयहपयानमुनिराई। मैंविस्तारसहितदियगाई ॥
अतिशयकरकारककल्याना। परमपवित्रविचित्रमहाना॥जोकोउश्रद्धायुतजगमाहीं।करतश्रवणनिजश्रवणसदाहीं॥
दोहा-सोजनभक्तिहिपायकै, ह्वैहरिकोअतिप्यार। निवसतनारायणनगर, ह्वैआनंदअगार ॥ ५१ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबांधवेश विश्वनाथसिंहात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदांबुनिधौप्रथमस्कंधेपंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

सूत उवाच।

दोहा-जबपांडवद्रौपदिसहित, कीन्ह्योमहापयान॥ तबहिंमहाभागवतनृप, परीक्षितगुणननिधान ॥
विप्रवर्यसोंसीखहिलीन्ही॥धर्मसहितशासितमहिकीन्ही॥जेहिदिनज्योतिपजाननवारे। जन्मदिनेगुणिवचनउचारे॥
तैसहिगुणयुतभयोअनूपा। अर्जुननंदननंदनभूपा ॥ १ ॥ उत्तरसुतविराटनृपकेरी ॥ जोमृत्योरणमध्यघनेरो ॥

जिनकेवलऔरहुअसुरारी। देतभयेमोहिंअस्त्रनिभारी॥ जिनकेवलमहेंद्रकेमहलनि। इंद्रअर्द्धआसनमहँसुखसानि॥
बैठेयहीकलेवरधारी। सोहरिमोहिंतजिगयेपधारी॥ १२॥ देवलोकमहँविहरतभूपा। सुरनसहितसुरनाथअनूपा॥

दोहा–जासुकृपावलवलितमम, सधनुयुगलभुजदंड। जिनकीकीन्हींआशसव, हतनअरिनवरिखंड॥ १३॥

जासुकृपालहिरणहिप्रचारी। हन्योनिवातकवचअरिभारी॥ रह्योस्वर्गमहँयशविस्तारी।सोहरिमोहिंतजिगयेपधारी॥
जिनकेवलविराटपुरमाहीं।कुरुदलसिंधुअगमअतिकाहीं॥विनप्रयासउतर्‍योद्रुतपारा। रिपुशिरमणिधनहर्‍योअपारा॥
लह्योअकेलेविजयप्रचारी। सोहरिमोहिंतजिगयेपधारी॥१४॥भीष्मकर्णगुरुशल्यप्रवीरा।औरहुभूपतिअतिरणधीरा॥
तिनसैननिकेमधियदुराई। मेरोसारथिह्वैसुखछाई॥ हर्‍योरिपुनकेओजानिहारी।सोहरिमोहिंतजिगयेपधारी॥ १५॥

दोहा–द्रोणद्रोणसुतकर्णअरु, भीष्मजयद्रथवीर। शल्यसुशर्माआदिभट, वाह्लीकरणधीर॥

येसवअस्त्रअमोघअपारे। मोपैएकहिवारपँवारे॥ जेहिभुजवलतेमोतनुकाहीं। कियेपरशतेनेकहुनाहीं॥
जिमिप्रह्लादहिअसुरारी।सोहरिमोहिंतजिगयेपधारी १६ जासुकमलपदमुक्तिहिहेतू।भजहिंसंतनिजत्यागिनिकेतू॥
हाइकुमतिमैंसोहरिकाहीं। सारथिकरिराख्योरणमाहीं॥ जवहिंजयद्रथमारनहेतू। मैंगमन्योरथचढिकपिकेतू॥
मध्यदिवशमधिसैनहिमाहीं। थाकेअश्वचलेकछुनाहीं॥ तवमैंउतरिपर्‍योरथतेरे। तहां शत्रुसमरहेघनेरे॥

दोहा–जेहियदुवरपरभाउते, मोहितसकेनमारि। सोहरिहाइविहाइमोहिं, अवकहँगयेपधारि॥ १७॥

विहँसिकरणहांसीहरिकेरी। औरउचितवनचारुघनेरी॥ हेपारथअर्जुनकुरुनंदन। आवहुइतैसखाअरिकंदन॥
असकहिमाधवकीमृदुहावनि।सुरतकरतदुखकरतसुहावनि॥१८॥भोजनशैनकियोइकसंगा।रथचढिविहरेसहितउमंगा
वहुविधिवचनरचनकरिवोले। निजनिजहियकोआशैखोले॥ तुमहिसत्यवादीजगमाहीं।तुमसमछलीअहैजगनाहीं॥
ऐसेहमरेवचनकठोरा। सह्योनेहवशनंदकिशोरा॥ जैसेसखासखाकीसहतो। सुतकटुवचनपितामुदलहतो॥ १९॥

दोहा–सोहमयेनरपतिसुनो, जवयदुपतिममभित्र। गमनकियेनिजधामको, करिकैकलाविचित्र॥

तवहमलैकेतिनवहुनारी। हस्तिनपुरकहँचलेदुखारी॥ तहाँमहतलघुगोपअपारा।मोहिंजीतिहरिलीन्हींदारा॥२०॥
सोइभूपगांडीवकोदंडा। सोईरथतेइवाणप्रचंडा॥ सोइतुरंगसोइमहारथीहम। त्रिभुवनमेंभटविदितनमोहिंसम॥
सोसवविनयदुपतिनृपराई। इकक्षणमहँममगयेविलाई॥ जिमिकुपात्रमहँनिःफलदाना। ऊसरवोवहिवृथाकिसाना॥
वृथाहोमतिमिभस्महिमाहीं।तिमिहरिविनममसकलवृथाहीं।पूछ्योकुशलजासुमहराजा।तिनकोकुशलसुनोदुखसाजा

दोहा–रहेद्वारकामसतसव, तहँसांवादिकुमार। मुनिआश्रमगमनतभये, करिमनकपटअपार॥

करीऋपीशनतेरुठिहांसी। दईशापऋपिकोपप्रकासी॥ तातेप्रेरितसवयदुवंशी। करिवारुणीपानमतिध्वंसी॥
तातेमत्तसकलयदुवीरा। क्षेत्रप्रभासहिसागरतीरा॥ लरेपरस्परसकलप्रचारी। शस्त्रनजष्टिनमुष्टिनमारी॥ २२॥
भयेअजानसमानसुजाना। लरिलरिसवतजिदीन्हेप्राना॥ भयोहाइयदुकुलकोनाश।केहिविधिवरणौंशोकप्रकाशा॥
चारिपांचयादवतिनमाहीं। वज्रआदिवचिगयेतहाहीं॥२३॥ जगजनसदापरस्परलरहीं।फेरिपरस्परप्रीतिहुकरहीं॥

दोहा–सोयहचरितविचित्रअति, ईश्वरकेरनिदेश। हानिलाभजीवनमरण, यशअपयशहुनरेश॥ २४॥

जिमियेजीवजवरजलमाहीं।तेल्घुजीवनकहँहटिखाहीं॥अरुजिमिजेजल्महँवलवारे।लघुनमारिसमलरहिंप्रचारे॥२५॥
तिमिजेयदुवरअतिवलवाना। तिनकेकरतेअर्थभगवाना॥ महीमहीशननाशकरायो। भूकोपरमभारउतरायो॥
पुनियदुवंशरूपभूभारा। नाशिपरस्परताहिउतारा॥ २६॥ देशकालकेअनुसारा। अर्थभरेहरिवचनउदारा॥
काननपरतलापहरिलेहीं।सोसुधिकरतदुसहदुखदेहीं२७ (मृ.उ.)यहिविधिअर्जुनतेनहवराये।कृष्णकमलपदनितलगाये

दोहा–बुद्धिभईअतिविमलतेहि, गयोछूटिसवमोह॥ मनप्रसन्नअतिहीभयो, रह्योनकामहुकोह॥ २८॥

[illegible] । यादीआशुभक्तिमनरंजनि॥ नानेमकल्याणनाष्टो। [illegible] ॥
[illegible] । यदुवरगायेगीतामोई॥ कालकर्मनमवशनाभूल्यो। मोहअर्जुनकहँभयोअनूल्यो॥ २९॥
[illegible] ॥ [illegible] ०॥ म्युत्सृष्टमनतुर्गहनाहिमान्यो।अपनेकहेत्रिगुनतिनमान्यो

न्मरहितगुणिभयोविशोकू। जीवनमुक्तलह्योमुदथोकू॥३१॥भूपगमनसुनिरमानिवाशा।अरुसवयदुवंशिनकोनाशा॥
दोहा-करियकाग्रमनकोतहाँ, धर्मनृपतिदुखछाइ। गमनमहापथकरनको, निजचितदियोलगाइ ॥ ३२ ॥
रियात्रायदुकुलसंहारा। सुखते अर्जुनजवहिंउचारा॥सुनिकुंतीहरिपदमनदीन्ह्यो।तजिशरीरहरिलोकहिकीन्ह्यो३३
हियादवतनुकरिभूभारा। हन्योसकलवसुदेवकुमारा॥ सोयदुकुलतनुतज्योमुरारी। जिमिकंटकतेकाँटनिकारी॥
जैदुहुँनकोपुरुपसुजाना।तैसाहिंईशहिंदोउसमाना॥३४॥ जिमिनटनिजवहुरूपदेखावै।सभामध्यपुनिताहिछिपावै॥
मिमत्स्यादिकरूपहिधारी। अंतर्द्धानहिंकरहिंमुरारी॥ हन्योजोतनुतेभारमहाना। सोतनुहरिकियअंतर्द्धाना३५
दोहा-सुननयोगजिनकीकथा, यदुवरदीनदयाल। तजीमहीजेहिदिनहिंते, दिनप्रगट्योकलिकाल॥
ोअविवेकिनअतिदुखदायक।जेहिहरिनामहिंसुमिरनलायक३६तहँनृपनिजजनगृहपुरराजू।लख्योकलितकलिसकलसमाजू
हसालोभअसत्यअधर्मा। व्यापितमहीदेखिनृपधर्मा॥ बदरीवनकहँगमनविचारी। लगेकरनतेहिहेतुतयारी॥३७॥
ीतिनिपुणनातीनिजनिजसम। परमशूरजाकेनहिंकछुभ्रम॥तेहिहस्तिनपुरकरिअभिपेकू।दियोराज्यदैसीखअनेकू॥
केयोनाथमहिसिंधुमालिनी।दईसैन्यनिजशत्रुशालिनी॥३८॥अनिरुधनंदनवज्रहिकाहीं।अभिपेकहिकियमथुरामाहीं
दोहा-प्राजापत्यहिइष्टकरि, पावकआत्मनिधाय॥३९॥ भूपणवसनहुतजिदियो, हरिपदमनहिंलगाइ॥
मताअहंकारतजिदीन्ह्यो। भवबंधनकोनाशहिकीन्ह्यो॥४०॥ मनमहँइंद्रिनवृत्तिलगाई। मनकोप्राणहिंदियोवसाई॥
ाणहुकीलयकियोअपानै।वृत्तिसहिततेहिदियोअमानै॥कारणपवनसमानहिंकाहीं।दियमिलाइनृपधर्मतहाहीं॥४१॥
चभूतयुतइंद्रियगनको। त्रिविधअहंकारहिमहँतिनको॥ मेल्योजिनमहँवायुसमेतू। धर्मनृपतिह्वैमोदनिकेतू॥
हत्तत्वमहँअहंकारकहँ। महत्तत्वकोमूलप्रकृतिमहँ॥इनसबकहँजीवात्मामाहीं। जियेसमर्प्योब्रह्महिपाहीं॥४२॥
दोहा-चीरवसनधरिमौनह्वै, छांड्योसकलअहार। खुलेकेशजडमत्तसम, ह्वैकैनृपतिउदार॥४३॥
देवतसुनतनकुरुकुलसाईं। ह्वैकेअंधवधिरकीनाईं॥ हरिध्यावतउत्तरनृपराई। गमनेजहँनहिंआवतजाई॥४४॥
अंतकालजहँसंतसिधारी। तनुतजिनिवसतलोकमुरारी॥ महिमहँलखिकलिकालवनाई। तिनकेपीछेविचर्‍योभाई॥
निकसिचलेतजिकुलपरिवारा।तज्योमोहधनधामअपारा४५ मरणठीककरिहरिपदमाहीं। दीन्ह्योसोलगाइमनकाहीं॥
हरिध्यावतगैभक्तिअमानी।ताकरिबुद्धिविशुद्धिमहानी॥तिनहरिमेंइकांतमतिजिनकी।सकलवासनाछूटीतिनकी ४७
दोहा-ऐसेपांडवगतिलही, दुष्टनदुर्लभजौन। कियोवासआनंदमय, श्रीनिवासकेभौन॥४८॥
विदुरप्रभासक्षेत्रमहँजाई।कृष्णचरणमहँमनहिंलगाई॥तजिशरीरनिजलोकसिधारो।पितरनसहितमहामतिवारो॥४९॥
पतिनगमनलखिद्रुपदकुमारी।सुमिरतचरणकमलगिरिधारी॥छोंडिशरीरमहामतिवारी।वासुदेवकेलोकसिधारी॥५०
येपांडवअतिप्रियहरिकेरे। धर्मवानजगविदितघनेरे॥ तिनकोयहपयानमुनिराई। मैंविस्तारसहितदियगाई॥
अतिशयकरकारककल्याना। परमपवित्रविचित्रमहाना॥जोकोउश्रद्धायुतजगमाहीं।करतश्रवणनिजश्रवणसदाहीं॥
दोहा-सोजनभक्तिहिपायकै, ह्वैहरिकोअतिप्यार। निवसतनारायणनगर, ह्वैआनंदअगार॥५१॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबांधवेश विश्वनाथसिंहात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदांबुनिधौप्रथमस्कंधेपंचदशस्तरंगः॥१५॥

सूत उवाच।

दोहा-जवपांडवद्रौपदिसहित, कीन्ह्योमहापयान॥ तबहिंमहाभागवतनृप, परिक्षितगुणननिधान॥
विप्रवर्यसोंसीखहिलीन्ही॥धर्मसहितशासितमहिकीन्ही॥ जेहिदिनन्योंनिपजाननवारे। जन्मदिनैगुणिवचनउचारे॥
तेसहिगुणयुतभयोअनूपा। अर्जुननंदननंदनभूपा॥१॥ उत्तरसुतविराटनृपकेरो॥ ॥

[illegible] । धौंतिनहीकोकियोखँभारा ॥ २२ ॥ किधौंक्षुद्रक्षत्रियकलिकेरे । करहिंउपद्रवदेशघनेरे ॥
[illegible] ॥शोचहुजगकहँताहिलोभाना॥२३॥
दोहा–धौंतुवभारहिहरिहरी,अबभेअंतर्द्धान । गतिप्रदतिनकर्महिंसुमिरि, शोकहिकरौमहान ॥ २४ ॥
[illegible] । जेहितेपरमकृशिततुमअहहू ॥ कैधौंकालपरमबलवाना । हरिलियतुवसौंदर्यमहाना ॥
[illegible] ।बोलीमहीमहामुदसानी॥२५॥(ध.उ.)जोपूँछेहुसुतधर्मपियारे। सोतुमजानहुसबमतिवारे॥
[illegible] ।केहिकारणअबइकपदलहेऊ॥ सोइकारणतेपूतपियारे । होतभयेदुखहियेहमारे ॥२६॥
[illegible] । क्षमात्यागसरलताअमाया ॥शमदमतपसमताअरुसहिबो।यथालाभतेआनंदलहिबो२७॥
दोहा–शास्त्रयथारथजानिवो, ज्ञानविज्ञानविभूत । तेजशूरतास्मृतिहुबल, अरुअद्भुतकरतूत ॥
[illegible] ॥विजैशीलअरुओजढिठाई।अस्तिकताअरुकीर्तिमहाई
[illegible] । थिरतीमानदानयुतहर्षा ॥ निरहंकारआदिगुणजेते ॥ २९ ॥ यदुवरमहँवसतेनिततेते ॥
[illegible] । पैनलहतउरहतउमाहैं ॥ ३० ॥ ऐसेश्रीनिवासगुणधामा । तिनविनभईपुत्रमैंक्षामा ॥
[illegible] यहीशोचमैंभईअचाऊ॥सुरनमुनिनपितरनअरुसंतन।वर्णआश्रमननरनअनंतन३१॥
दोहा–अपनेकोअरुआपको, शोचहुँसुरवरधर्म । कैसेलहिहैंपरमगति, जनकलिमहँकरिकर्म ॥ ३२ ॥
[illegible] । बहुतपकियविधिसुरनसमेतू॥सोउकमलावनकमलविहाई।हरिचरणनमेंरहींलोभाई॥३३॥
कमलकुलिशअंकुशयुतकेतू । ऐसेहरिपदमोदनिकेतू॥तिनचरणांकनअचरजभयऊ।त्रिभुवनमहँशोभाअतिलहेऊ॥
गर्ववतीगुणिकैयदुराई । करिकारजमोहिंगयोविहाई ॥ ३४ ॥ मोपरअसुरवेशमहिपाला । कियेपापकेकर्मकराला॥
सैनाअक्षौहिणीअपारा । विचरतमोपैभोअतिभारा ॥ सोकरिकृपामुकुंदखरारी । हन्योभारमेरोअतिभारी ॥
दोहा–धर्मपूतत्रैपदसहित, देखिकलेशतुम्हार। चारिचरणकरिवेहिते, यदुकुललियअवतार ॥ ३५ ॥
रुचिरचितैहँसिप्रेमयुत, मृदुवानी वतराइ । मानसहित मनजोहर्‍यो, मधुमानिनीलोभाइ ॥
तिनकेचरणनकोपरसि, भयोरोमांचहिमोहिं । तिनयदुवरकोको सहै, विरहमहाविनजोहि ॥ ३६ ॥
(सूत०उ०) यहिविधिधरणीधर्मके, भनतवैनसुखसाज । तीर्थप्रभासहिकोगये, पृथितपरीक्षितराज ॥ ३७ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारी
श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदांबुनिधौप्रथमस्कंधेषोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

सूतउवाच ।

दोहा–तहाँभूपकोरूपधरि, शूद्रदंडलेहाथ । गोवृषहनतअनाथसम, लख्योजाइनरनाथ ॥ १ ॥
वृषमृणालसमसेतदुखारी । मेहकरतडरपतअतिभारी ॥ कांपतएकचरणसोंठाढो । ताडनकरतशूद्रतेहिगाढो ॥ २ ॥
गऊधर्मप्रथवनीदीनी । रोवतकृशितक्षुधितदुखभीनी ॥ विनवछरानहिंकोउरखवारो।करतशूद्रतेहिचरणप्रहारो ॥३॥
चढेकनकभूपितरथराजा । दोर्दंडकोदंडविराजा ॥ वचनगँभीरगिराकुरुराई । पूछनलगेकोपअतिछाई ॥ ४

परीक्षित उवाच ।

रेतैंकौनराज्यममाहीं । हनैवलीह्वैनिर्बलकाहीं ॥ हनहिंनृपनृपनकल्वनाये । निंदितशूद्रकर्ममनलाये ॥ ५
दोहा–विजैधनुर्धरकृष्णविन, हनैजोनिरअपराध । तातेतूवधयोग्यहै, शोचनयोग्यअगाध ॥ ६ ॥
हेनृपसेतुमृणालसमाने । त्रयपदहनयकपददुखसाने ॥ करतमोहिंखेदअतिभारी । विचरहुँइतढारतदृगवारी ॥ ७
पालितकौरवेंद्रभुजदंडा।तुमविनदुखीनकौनवखंडा ॥८॥ शोकनकरहुवृषभदुखजोई । अवशिशूद्रकृतभीतिनहोइ
मेंखलशासकशासहुँधरणी।रोवहिनहिंसुखलहुपयश्रवणी॥९॥जाकोराज्यप्रजानहुलासा । वसिपावहिंचोरनतेत्रासा
सोशठकीगतिआयुविभूती।नाशहोतिकीरतिकरतूती ॥ १० ॥ परमधर्मयहराजनकेरो।दुखिनदुःसहहरिलेहिंघनेरो ॥
दोहा–तातेअवयहिशूद्रको, मारहिंगेसुनुधेनु । करतद्रोहसबजीवको, हरतसकलहठिचैनु ॥ ११ ॥

काटेहुतीनिचरणकोतेरो । कोअपराधकियोअतिमेरो ॥ कृष्णभक्तराजनकेराजे । तुमसमकोउनलहैदुखसाजे ॥१२॥
सोहैंपरमसाधुअपकारी । पारथभूपनकीरतिहारी ॥ जोकाव्योपदतीनितिहारे । ताहिवतावहुधेनुदुलारे ॥
विनअपराधनजोदुखदेतो । ताकोमैंसर्वसहरिलेतो ॥ १३ ॥ दुष्टनदंडदियेजगमाहीं।साधुनमंगलहोतसदाहीं॥१४॥
जोदीननदुखदेतवृथाहीं । नीतिरीतितजिभीतिहुकाहीं ॥ अंगदसहितभुजातेहिकाटों।देवहुहोइतवहुँनहिंनाटों॥१५॥

दोहा–जोसुधर्ममेंरतरहै, यथालाभसंतोष । तिनकोपालननृपनको, परमहेतुहैचोष ॥

विनविपत्तिजेजनयुतशर्मा । करहिंअधर्मछोंडिनिजधर्मा ॥ तिनकोशास्त्ररीतिसोंशासन ।करिभूपतिपावहिंइंद्रासन॥
देवरातनृपकेसुनिवैना।कह्योधर्मलहिआनँदऐना॥१६॥(ध.उ.)वचनकहेजेतुमकुरुनायक।आरतअभयदेनकेलायक॥
पांडववंशीभूपनकाहीं । वचनआपकेउचितसदाहीं॥जिनपांडवनगुणनसमुदाई।लखिकीन्हेउयदुवरसेवकाई ॥१७॥
जातेहोइकष्टकोकारन । तेहिपुरुषहिहैदुःखनिवारन॥हमजानहींभेदकुरुराई । अमितवचनसुनिमतिनथिराई॥१८॥

दोहा–कोऊअपनेआतमै, कहतदुःखकोमूल । कर्मस्वभावहिभाग्यको, कोईईशअतूल ॥ १९ ॥

कोइकहतजोनहिंमनआवै । वचनअगोचरतेहिश्रुतिगावै ॥ सोइकलेशकोकारणभारी । निश्चितहोतिनवुद्धिहमारी॥
इनसबमेंदुखकारणजोई।लेहुविचारिबुद्धितेसोई॥२०(सू.उ.)धर्मकह्योजबमुनियहिभांती।तबहिंपरीक्षितनृपअरिघाती
सावधानमनसहितहुलासै । जानिधर्मकीभूपतिआसै ॥ भूपधर्मसोंवचनउचारे । हेधर्मज्ञवृषभतनुधारे ॥ २१ ॥
(प.उ.) अहोधर्मतुवधर्महिकहहू।धर्मसूक्ष्मगतिजानतअहहू॥जोकोइपापनशूचनकरतो।सोउसंसर्गपापउरभरतो॥२२

दोहा–अथवाहरिसंकल्पकी, गतिसुनियेमतिवान । भूतनकेमनवचनको, अहैअगोचरजान ॥ २३ ॥

तपअरुशौचसत्यअरुदाया । धर्मचरणयेचारिगनाया ॥ अतिअधर्मतेतीनिचरणको । भयोनाशयहविदितनरनको ॥
गर्वहितेतपकीभैहानी । संगकियेशौचतापरानी ॥ मददायककोकियोविनाशा । छूटिगईसबधर्मनिआशा ॥ २४ ॥
सत्यचरणचौथारहिगयऊ । जातेतुवआतमथिरभयऊ ॥ ताहूकोअसत्यकरिहाला।नाशनचाहततैकलिकाला॥२५॥
धरणिधेनुकोधर्‌योस्वरूपा।हरियहिभाररहर्‌योदुखरूपा॥श्रीयुतचरणविचारिसबठोरा। मोदितकियवसुदेवकिशोरा॥२६

दोहा–अवयदुनंदनधरणिको,तजिकैगयेपधारि । महिअभागिनीसीभई, यहकलिकालनिहारि ॥

शूद्रसमाननृपतिद्विजद्रोही । पापनिरतभोगहिंहैमोही ॥ यहीहेतुतेधरणीसोचति । वारवारनैननजलमोचति ॥२७॥
(सू. उ.) यहिविधिधरणिधर्मकोराजा।बहुसमुझाइभूपशिरताजा॥करिकैकलिपैकोपकराला।धर्महिरक्षणहेतुभुवाला॥
कंमरतेकरकैकरवाला। कलिकाटनकोलैजेहिकाला॥२८॥तवकलियुगनिजवधजियजानी।भूपवेपतजिकैअभिमानी॥
नृपतिचरणमहँशीशलगाई।गिर्‌योभूमिमहँअतिहिडेराई॥२९॥कलिकहँपर्‌योचरणमहँदेखी।दीनदयालुदीनतेहिलेखी

दोहा–महावीरयशवंतनृप, दियकरिकृपावचाइ । शरणागतपालककह्यो, कलिसोंयहमुसक्याइ ॥ ३० ॥

(रा. उ.) गुणाकेशयशवर्द्धनहारे । अहैंभूपहमजगतउदारे ॥ तिनकेशरणागतकरजोरी । आयोतैंअबभयनहिंमोरी॥
पैतुममित्रअधर्महिकेरे । तातेरहहुराज्यनहिंमेरे ॥ ३१ ॥ जबतेतुमभूपनतनुआयो । तबतेपापसकलजगछायो ॥
लोभअसत्यदंभअरुचोरी । कलहकपटशठतानहिंथोरी ॥ दारिद्रीतवहोवनलागे । सकलधर्मकेकर्मनत्यागे ॥ ३२ ॥
कलियुगसुनुअधर्मकेभाई । ब्रह्मावर्त्तक्षेत्रसुखदाई ॥ तहाँयज्ञकेजाननवारे । करहिंयज्ञमुनिविपुलप्रकारे ॥

दोहा–यज्ञेश्वरभगवानको, पूजहियुतअनुराग।तहाँवसनकीवासना, करहुवेगितुमत्याग ॥ ३३ ॥

सत्यधर्मकरसोअस्थाना । वसिवेलायकदिव्यमहाना ॥ जोनेब्रह्मावर्त्तहिमाहीं । पूजनकीन्हेंकृष्णसदाहीं ॥
मंगलदेतमनोरथपूरत ।जेसबजगमहँमारुतसमगत (मू.उ.) कलिकरालकरवालहिधारे।जबनृपयहिविधिवचनउचारे॥
तबकलिनृपकहँयमसमदेखी।कांपतवोल्योवचनविशेखी(क.उ०)मुनियेसार्वभौममहराज।जहँशासनदीजेमोहिंआज।
[illegible] । तुमहिंलखोंसरचपलधनुधारी ॥३६॥ तातेसोथलदेहुवताई । जहँतुमपरहुनमोहिंलखाई ॥

दोहा–जहाँतुम्हारेमानिकै, शासनवसहुँनरेश । धर्मधुरंधरनरनृपति, दीजैमोहिंनिदेश ॥ ३७ ॥

..उ.)यहिविधिजवकलिविवसनकाहीं।मांग्योठौरपरीक्षितपाहीं।तवकलिकोनृपकहस्थान।।नारियुवाहिंसामदपाना।

[illegible] । तहाँजाइकेकरौनिवासू ॥ ३८ ॥ तबकलिकह्योसुनहुनृपराई । दीजैमोहिंसदनसुखदाई ॥
[illegible] यो । पांचौपापमूलजोजायो ॥ क्रोधअसत्यवैरमदकामा । इनहूंमेंकलियुगकरधामा ॥ ३९ ॥
[illegible] ॥ ४०
दोहा—तातेजोमंगलचहै, कोउजनयहिसंसार । तौइनकोसेवैनहीं, हैंयेकलिआगार ॥
[illegible] । धर्मशीलगुणपरिजनपाला ॥ ४१ ॥ पुनिनृपशौचदयातपतीनो । चरणधर्मकेपूरणकीनो ॥
[illegible] ॥४२॥ सोइपरीक्षितयहमहराजा।अवनृपआसनमध्यविराजा॥
[illegible] ॥ ४३ ॥ तामेंबैठिधर्मधुरधारत । शासनधरणीसुयशपसारत ॥
[illegible] । निरखतजाहिमहेंद्रलजानो ॥ महिमंडलमालिकबडभागा।अहैराजऋषिसहितविरागा४४॥
दोहा—हस्तिनपुरमेंवसतहै, यहिविधिजासुप्रभाव । जेहिपालतमहिकरतहैं, यज्ञसुखीमुनिराव ॥ ४५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौप्रथमस्कंधेसप्तदशस्तरंगः॥१७॥

दोहा—बहुरिशौनकादिकनसों, सूतसुबुद्धिविशाल । कथापरीक्षितभूपकी, लागेकहनरसाल ॥
सूतउवाच ॥ मातुउदरमेंजोनृपति, कृष्णकथाकोपाइ । अश्वत्थामाअस्त्रते, मरचोनअतिदुखपाइ ॥ १ ॥
सोइपरीक्षितकोद्विजशापा । तक्षकडसिकीन्ह्योसंतापा ॥ यदपिगुण्योनिजप्राणवियोगू।तदपिभयोनहिंमोहसँयोगू २
यदुपतिपदपंकजमनलायो । प्राणजानकोकछुनदुरायो ॥ भगवतभक्ततज्योसबसंगा । बैठ्योजाइभूपतटगंगा ॥
श्रीशुकदेवहिगुरुकरिलीन्ह्यो।मुदितकलेवरनिजतजिदीन्ह्यो३जेजगयदुनंदनकेदासा । पियहिंकथामृतसहितहुलासा
तिनकोमरनकालहूमाहीं । हरिपदसुमिरतकछुभ्रमनाहीं ४ तबलौंकियोपरीक्षितराजू । धर्मसहितयुतसकलसमाजू॥
दोहा—तबलौंयहजनलोकमें, महाघोरकलिकाल । काहूकोव्याप्योनहीं, चल्योनकोउकुचाल ॥ ५ ॥
जादिनहरिगमनतभये, तजिपुहुमीनिजलोक । ताहीदिनतेजगतमें, कलिप्रविश्योअघओक ॥ ६ ॥
सार्वभौमअभिमन्युसुत, कलिसोंकियोनवैर । सारग्राहीभ्रमरसम, धर्योकुपथनहिंपैर ॥
संकल्पहितेजेहिकलिमाहीं । सिद्धहोहिंशुभकर्मसदाहीं॥लगहिनपापमनहिंगुणिलीन्हे।लागतपापपापकेकीन्हे॥७॥
यहकलिमूढनकोहैशूरो । भीरुअहैधीरनतेपूरो ॥ वृकसमहरिविमुखनकहँसाँचो । ताहिनकछुजोहरिरँगराचो ॥८॥
जोपूछीशौनकचितलाई । पुण्यपरीक्षितकथासुहाई ॥ सोमेंकृष्णकथासुदमाहीं । सबवर्णनकीन्ह्योतुमपाहीं ॥ ९ ॥
जोइजोइकृष्णकथाअतिपावनि।सुखदचरित्रविचित्रजनावनि।सोइसोइतिनकेसेवनलायक। जेजनमोक्षचहैंमुनिनायक
दोहा—सुनतसूतकेवचनवर, सबमुनिएकहिवार । हर्षितह्वैभाषतभये, आशिषदेतअपार ॥ १० ॥
(ऋ.ऊ.)बहुतवर्षजीवहुतुमसूता। जोतुमकहहुकृष्णयशपूता॥कृष्णचंद्रकोसुयशमहाना। हमजगजीवनसुधासमाना।
धूमधूसरेवदनहमारे । करहियज्ञकेकर्मअपारे ॥ इनकर्मनमहँनहिंविश्वासा । सोइसुफलकीवृथाप्रयासा ॥
तिनहमकोहरिपदअरविंदा। पानकरावहुतुममकरंदा ॥१२॥स्वर्गमोक्षसुखतूलहिनाहीं । सज्जनसंगतिलेशहुकाहीं॥
जगतविभवहैकेतिकबाता। जानहुसत्यसूतसबज्ञाता॥१३॥सुनतसुखदहरिसुयशअपारो। कोअघातरसजाननवारो॥
दोहा—गिराकांतत्रिपुरांतहू, लहैंनातिनगुणअंत । तेएकांतिनसंतके, मेटतदुःखअनंत ॥ १४ ॥
हममधितुमभागवतप्रधाना। हरियशहमसोंकरहुबखाना॥ननुविशुद्धकरपरमउदारा। जाहिसुनतछूटतसंसारा॥१५॥
सोभागवतपरीक्षितराजा।महाबुद्धिमधिमुनिनसमाजा॥व्याससुवनसोंलहिविज्ञाना।कियोकृष्णपदनिकटपयाना। १६
सोविस्तारसहितअतिपावन । भगवतभक्तयोगसुखछावन॥कहियेअर्थापतिचरित्रसमेत्। जोहसंतनमोदनिकेतू॥१७॥
सुनिशौनककेवचनसुहाये । बोलेसूतहृदयसुखछाये॥(सू.उ.)हमयद्यपिविलोमकुलजाये । तदपिवृद्धसेवानितलाये॥
दोहा—तातेमेरोजन्मभव, सफलभयोसबभांति । लघुकुलहोवव्यथाहरत,संतसभागुनिपांति ॥ १८ ॥

सुजनपांतिकेसुंदरनामा । अचरजकौनहरैदुखग्रामा ॥ शक्तिअनंतअनंतहुआपू । गुणअनंतनहिंअंतप्रतापू ॥
तातेमुनिअनंदतेहिगावैं । हरिलीलाकोपारनपावैं ॥ १९ ॥ जाकेअधिकसमहुँकोउनाहीं । यहहिहेतुनिहचैमनमाहीं ॥
यद्यपिलक्ष्मीकोनहिंचाहैं।तद्यपिउरकरिअमितउमाहैं । जाकेपदरतिरमालोभानी।तजिअजशिववितनीसहसानी २०
जोहरिजववामनवपुधाऱ्यो।वलिछलित्रिभुवनपांयपसाऱ्यो।जवपूजनकरिविधिपगधोयो। परमभाग्यआपनकरिजोयो
दोहा—सोजलशंकरसहितसव, जगकोकरतपुनीत । तातेकृष्णहिमेंसही, भगवतनामपुनीत ॥ २१ ॥
जिनकेकैसज्जनअनुरागी । जगतमोहममतासवत्यागी ॥ परमहंसपदवीकहँपावे । पुनिनहिंयहिसंसारहिआवे ॥२
तौनमहँभावहिंमुनिशर्मा । सत्यअहिंसाहैनिजधर्मा ॥ हेमुनिजोपूंछेहुमोंहिपाहीं । यथाशक्तिकहिहौंसुखमाहीं
यथाशक्तिजिमिखगनभजावे । नहिंअकासकोअंतहिपावै ॥ जैसेयथाबुद्धिहरिलीला । गावैलहैनपारसुशीला ॥२
एकसमैअभिमन्युकुमारा । हयचढिधनुलैगयोशिकारा ॥ तहँमृगलखिनृपअश्वधवायो । गयोदूरिताकोनहिंपा
दोहा—मध्यदिवशतहँहैगयो, करिनृपअमितप्रयास । थकिबैठयकतरुतरे, लगीभूखबहुप्यास ॥ २४ ॥
भूपपरीक्षितप्यासहिपागे । तवहिंजलाशयखोजनलागे ॥ देख्योयकआश्रममुनिकेरो । अतिपुनीतरमणीयघ
वैठोमुनिदेखेउनृपराऊ । मुद्रितलोचनशांतस्वभाऊ ॥२५॥ मनवुधिइंद्रियप्राणहिंरोके ॥ तुरीअवस्थाप्राप्तवि
अहैब्रह्ममेंरहितविकारे ॥ २६ ॥ खुलीजटामृगचर्महिधारे ॥ ऐसेमुनिसोंनृपजलमांग्यो । तालुतृपातेसूखनल
नृपतिवचनसुनिश्रवणनआयो२७आसनआदरअंबुनपायो।जानिअनादरनृपअतिकोपे।कवहुँनक्रोधचित्तअस
दोहा—गुणनलेगमनमेंनृपति, जोयहमूंदेनैन । सोधौंसत्यसमाधिहै, किधौंकपटकोऐन ॥ २९ ॥
यौंगुणिचलतसमैनृपराई । मृतकसर्पधनुकोरउठाई ॥ मुनिकांधमहँकोपितडारी । गयेहस्तिनापुरहिमँझार
तासुतनयअतितेजअगारा।करतरह्योशिशुसंगविहारा॥तासोंजाइकह्योकोउबालक।तुवपितुकंधमाहँमहिप
यकभुजंगधरिगयोपराई।अतिअनुचितकीन्ह्योनृपराई॥सुनतनृपतिकेकर्मकठोरा।कोपितबोल्योविप्रकिशो
अहोमहीपअधर्ममहाना । दुष्टपुष्टहैकागसमाना ॥ करैदासस्वामीअपकारा । सोहैश्वानसरिसभूभार
दोहा—निजरक्षाहितक्षत्रियन, दीन्ह्योंविप्रनियोग । तिनक्षत्रिनद्विजपात्रमें, भोजनकरवअयोग ॥
खलशासकजवतेभगवाना । अपनेपुरकोकियोपयाना ॥ तवतेधराअधर्मघनेरे । धराधीशधारतवहुते
तिनदुष्टनमेंदंडहिदेहों।अवअपनोतपबलहिदिखैहों॥३५॥यहिविधिविप्रसुतनसोंभाखी।कालसमानलाल
करिआचमनकौशिकीनीरा । वचनवज्रबोल्यौताजिधीरा॥३६॥जोनृपतज्योधर्ममर्याद।सोकुलकोनाश
ममप्रेरितपितुरिपुतेहिकाहीं । डसैसर्पसतयेंदिनमाहीं॥३७॥इमिदैशापनृपहिकहँघोरा। आश्रमआयो
दोहा—मृतकसर्पपितुकेगरे,बालकतहाँनिहारि । रोवनलाग्योदुखितअति,दुखितपुकारिपुकारि
मुनिसमीपसुनिपुत्रविलापा।खोल्योनैनजानिसंतापा॥लख्योकंधनिजमृतकभुजंगा॥३९॥ताहिदूरिकी
पूंछोनिजसुतसोंअकुलाई । रोवहुकिमिबालकदुखछाई ॥ कौनकियोअपराधतिहारो । तवबालक
जनकअधर्मीनृपयकआयो । मृतकभुजंगकंधलपटायो ॥ ताहिदईहमशापमहाई।सतयेंदिनअहिडं
सुनिसुतशापनृपतिपघोरा । मुनिकेखेदभयोनहिंथोरा ॥ सुतसोंकह्योमुनीशरिसाई । शापयो
दोहा—अरेअबुधबालककियो, यहतुमपापमहान । लघुअपराधहिमेंदियो, वडोदंडविनज्ञान
अरेकुमतिईश्वरनरनायक । नहींनरनसममाननलायक ॥ रक्षितप्रजाजासुपरतापा । मंगलल
राजाहयहरूपमुरारी । प्रजाताहिविनहोहिदुखारी ॥४२॥विनभूपतिमहिप्रगटहिचोरा । नाशकरी
मेपयथविनबालकजैसे । भक्षहिवृकजानहुसुततैसे ॥ ४३ ॥ सोदुष्टनतेपापमहानो । मोहिम
धनचोराहनहिंहगहिकहिवचनकठोरा॥४४॥नदविदितवर्णाश्रमधर्मा।लोपहो
दोहा—अर्थकामआशक्तनन, पायअधर्ममहान । होहिवर्णसंकरसवै, वानरश्वानसमा
।परमयशोनिजआकुलबालक ॥ देखानपिभागवतनपर्ग । नृपतिप
।देगनदुनाहिदीनदुरदत्तां॥ सोनृपशुधातृपाश्रमवाधित।शापयोगनहि

[illegible] नृपतिअपापै। कियोपापदीन्हींजोशापै॥सोनिजदासजानिभगवाना। क्षमहिंबालअपराधमहाना॥४७॥
[illegible] । निंदनताडनआदिअपारा॥ लहिसज्जनबदलोनाहिंलेहीं। यदपिईशसामर्थहुदेहीं ॥४८॥
दोहा—यहिविधिसुतअपराधगुणि, बारबारपछितान। राजाकोअपकारकछु, गुण्योनमुनिमतिमान ॥ ४९ ॥
बहुधासज्जननरनते, सुखदुखजोतिततहोइ। नाहिंबिलखतहर्षतनहीं, गुणिनआतमैसोइ ॥ ५० ॥

इतिसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदअंबुनिधौअष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

सूतउवाच।

दोहा—उतभूपतिअहिमृतकको, मुनिके गलमें डारि। लौटिचले निजनगरको, जब रथचढ़ि धनुधारि ॥
तब मारग महँनिजकृत करनी।अतिनिंदित उरमहँ दुखभरनी॥भूपदुखितभेताहिविचारी।कियोकर्ममैंअनुचितभारी॥
जोमुनिगलमें बिनअपराधा। मृतकसर्पमें धरिकियबाधा॥१॥तातेमुनिअपराधहिकेरो। लहिहौं फलमैंअवशिघनेरो॥
कछुकालहिमें दुःखमहानो।म्वहिं ह्वैहै विचारनहिं आनो॥प्रायश्चित्त सोइमम होवै।जामें पुनिअस नहिंजियजोवै ॥ २ ॥
अतुलसैन बलकोपहु राजू। ब्राह्मणको पदहै ममआजू॥जामें पुनिमेरीमति पापिनि। होइ न गोद्विजसुरसंतापिनि॥३॥
दोहा—यहिविधि नरपति नगरमहँ,आये करत विचार। तहँआयोइकविप्र नृप, द्वारहि कियो पुकार ॥
जेहिमुनिगलअहिमृतकहिडार्यो।ताकोसुतअसवचनउचार्यो।तक्षकरूपकालयहिडसिहै।सतयेंदिननिश्चयकरिनशिहै
सोसुनिभूपमोदअतिपायो।यहविरागकारणचितलायो४स्वर्गहुँलोकतुच्छगनिलीन्ह्यो।कृष्णचरणकमलनचितदीन्ह्यो
सबतजिअनशनव्रतमनलाई।गंगातट बैठ्यो नृपराई ॥५॥नवतुलसीदल युतअतिपावनि।कृष्णकमलपदरेणुवहावनि॥
शिवयुत त्रिभुवन पावनकरनी। घोर अघनि ओघनि संहरनी॥ऐसीगंगाको जगमाहीं।मरणजानि सेवै को नाहीं॥६॥
दोहा—असविचारिराजर्षि नृप, विष्णुपदी तटमाहिं। करि यकाग्रमन मुनिसरिस, तजिदीन्ह्यो सबकाहिं ॥
धर्योमुकुंदकंजपदध्याना।यहगुणिम्वहिं तारकभगवाना॥७॥तहँ आयेमुनीशअतिपावन।जेत्रिभुवनकेपापनशावन॥
शिष्यनसहित महापरभाऊ। बैठे जहाँपरीक्षितराऊ॥ मज्जनव्याज जाइ मुनिराई। तीरथपातकदेहिं नशाई॥८॥
अत्रि वशिष्ठच्यवनकृपभृगुवर। अरुअरिष्टनेमिहु अंगिरपर॥विश्वामित्र पराशरज्ञानी। परशुरामतनु प्रभा अमानी॥
इंद्रप्रमदअरु इंधमवाहू।मेधातिथि उतथ्यमुनिनाहू ॥ ९ ॥ भरद्वाज गौतम अरुदेवल। पिप्पलाद मैत्रेयऔर्वभल ॥
दोहा—आर्ष्टिषेणअरु कवषमुनि, कुंभयोनिअरुव्यास॥१०॥नारदअरुणादिकसबै, आयेसहित हुलास ॥
तहँब्रह्मर्षिसुरर्षिहूँ, राजऋषिहुँ सुखधाम। ऋषिसमाजलखिपूजिनृप, शिरसों कियोप्रणाम ॥ ११ ॥
चारिउओरतहाँमुनिराई। नृपसमीपबैठेसुखछाई॥ तबपुनिकरिप्रणामकरजोरी।नृपकहविनयसुनौसबमोरी ॥१२॥

परीक्षित उवाच।

निंदितनृपकुलअतिहिअपावन।दूरिरहतद्विजपदजलपावन॥मोपरकृपाकरीतुमभारी।धन्यधन्यहमनृपनमँझारी १३॥
मैंगृहतियअधीनबहुभाँती।जाकोश्रीयदुवरअघघाती॥विप्रशापमिसदियोविरागा।भयोंअभयअबमैंसुखपागा ॥१४॥
हेमुनिवरअरुसुरसरिदेवी।शरणहोहुँमैंहरिपदसेवी॥गावहुहरियशमुनिममपाहीं। तक्षकडसैमोहिंसुखमाहीं ॥ १५ ॥
दोहा—साधुसंगहरिचरणरति, जगजनप्रियसबकोय।करिप्रणाम विनतीकरों, जन्मजन्ममममहोय ॥ १६ ॥
असकहिपूर्वअग्रकुशआसन।सौंपिपुत्रकोक्षितिअनुशासन॥भूपतिदक्षिणगंगातीरा। बैठ्योउत्तरमुखअतिधीरा॥१७॥
ऐसोव्रतनरपतिहिनिहारी। गगनआय सिगरेअसुरारी॥ नृपहिंसराहिसुमनबहुवर्षहिं। बारबारदुंदुभिहि हर्षहिं ॥१८॥
अनुमतिदैमुनिकरिप्रशंसा। हरिगुणगावनलागेहंसा॥ कह्योसबमुनिवरनृपपाहीं॥१९॥ यहअचरजतुममेंकछुनाहीं॥
तुमहोनृपअनन्यहरिदासा।कृष्णभक्तिउरकरतिविलासा॥नृपतिनसेविततजिसिंहासन।कियअभिलाषमिलनगरुडासन

श्रीगणेशायनमः ।

अथ श्रीमद्भागवतआनन्दाम्बुनिधि ।

द्वितीयस्कन्ध प्रारम्भः ।

सोरठा—जैजैजैयदुनाथ, गुणआगरसागरकृपा । नटनागरमुदगाथ, कीजैमोहिंसनाथप्रभु ॥
दोहा—जैवाणीजैगजवदन, जैहरिगुरुपदकंज । जैशुकजैश्रीव्यासमुनि, जैपितुपदमनरंज ॥
विरचहुँआनँदअंबुनिधि, दूजो यहस्कंधु । विघ्नरहितपूरणकरौं, हेहरिदायासिंधु ॥
सोरठा—सुनिकुरुपतिकेवैन, व्याससुवनशुकदेवमुनि । लह्योपरमचितचैन, तेहिसराहिबोलेवचन ॥
व नरपतिउत्तमप्रश्नतुम्हारे।लोकनमंगलप्रगटनहारे॥ज्ञानिनकरसम्मतसबभाँती।कहतमोरिमतिअतिअधिकाती
छ ... यहनृपनायक । सुनबेमहँकासुनबेलायक ॥ जेनहिंआत्मतत्त्वकोजानैं। सदाग्रहणविषयनसुखसानैं॥१॥
... दुखक ... । हैंनरेंद्रजगकथाहजारन ॥ २ ॥ दिनमेंधनहितबहुथलधावैं ।निजकुटुंबपालनमनलावैं॥
... ... रचितावैं॥३॥असतदेहतियसुतदलकाहीं।नशतनिरखिनिरखतशठनाहीं
दोहा—तातेभारतजोचहै, यहिजगमेंकल्यान । नामसुयशवपुकृष्णके, कहैसुनैधरिध्यान ॥ ५ ॥
... ... । सकलसुकृतनृपयहीघनेरो ॥६॥विधिनिषेधतेरहितहुहोवैं।दिव्यगुणनयुतहरिवपुजोवैं ॥
... हरिगु ... । कहतसुनतमुनिरहतसदाहीं ॥ ७ ॥ यहभागवतपुराणप्रधाना । परममनोहरवेदसमाना ॥
... आदिव्यासपितुपाहीं। पढ्योपरीक्षितमैंमुदमाहीं८यदपिदिव्यगुणहरिवपुध्यायों।तदपिकृष्णलीलाचितल्यायों
भूपशिरोमणियदुवरलीला । हरिलीन्ह्योमोमनशुभशीला ॥ ९ ॥तातेसोभागवतपुराना । पढ्योंजोनमेंसुधासमाना॥
दोहा—तुमकोसकलसुनायहौं, तुमसमभक्तनकोय । जाहिसुनतश्रद्धाकरत, मतिमुकुंदरतिहोय ॥ १० ॥
योगीअरुपरगतिजेचाहैं । तिनकोयहीउपायसदाहैं ॥ करैंदिवसनिशिहरिगुणगाना ।उधरनकोउतयोगनआना ११॥
विनाभजनबहुवर्षवृथाहीं ।घटिकावरहरिभजनहिमाहीं॥१२॥स्वर्गजाइखट्वांगभुवाला।इकमुहूर्तमहँगुणिनिजकाला॥
आइधरणिसबतजिहरिध्यायो।तासुप्रभावकृष्णपदपायो१३सातदिवसनृपअवधितुम्हारी।ध्यायकृष्णकहँलेहुसुधारी॥
अंतकालमहँजनतजिभीती । नरपतिकरैअवशियहरीती॥अशिअसंगलैकाटैआशा।सुतधनतियसुखभोगविलाशा१५
दोहा—धीरकरैगृहतेगमन,तीरथजाइनहाय । शुचियकांतथलबैठिकै,आसनदेइलगाय ॥ १६ ॥
शुद्धप्रणवपरकोअभ्यासू । मनतेकरैसदाहरिदासू ॥ सुमिरतब्रह्मबीजजितश्वासू । मनकोस्ववशकरैसहुलासू॥१७॥
विषयनँधेइन्द्रिनगुणकाहीं । निजमनतेऐंचैश्रममाहीं ॥ कर्मवलितमनकोहरिरूप । अचलकरैबुधबोधअनूप ॥१८॥
करियकाग्रमनकोशुचिसंगा।ध्यानकरैहरिइकइकअंगा॥ विषयविगतमनकृष्णलगाई।करैनपुनिकछुऔरउपाई॥१९॥
होतप्रसन्नजाहिमनध्यावत।सोहरिरूपपरममुनिगावत ॥ रजतममोहितजोमनहोवै । तौतेहिधारणतेमलधोवै ॥२०॥
दोहा—यहिउपायतेहोतहै,भक्तियोगसिधिआसु । तातेयोगीअवशिकै, ध्यावैरमानिवासु ॥ २१ ॥
यहसुनिबोलेकुरुकुलराऊ ।मोसोंयहवर्णहुमुनिराऊ ॥ जेहिविधिसोंधारणामहाई । जेहिहरिवपुमहँलागैनाई ॥
दूरकरैमनमलजेहिभाँती । सोमुनिकहहुसकलसुखपाँती ॥२२॥नरपतिवचनसुनतहर्पाई । वर्णनकरनलगेमुनिराई ॥

श्रीशुकउवाच ।

आसनजीतिजीतिपुनिश्वासै । जीतिसँगइंद्रियनविलासै ॥ भगवतरूपस्थूलमनकाहीं।मतिसोंधारणकरैसदाहीं॥२३॥
स्थूलनमेंअतिस्थूलविराटा । भगवतरूपअहैनृपराटा॥दरिसपरैजेहिवपुजगमागे । भयादितअरुहोवनहारो ॥२४॥
दोहा—यहशरीरब्रह्मांडमें, सतावर्णसमेत । तामेंबसतविराटप्रभु, सोइधारणानिकेत ॥ २५ ॥

छंदगीतिका ।

हरिपादमूलपतालहैएडीरसातलजानियो । युगगुल्फगुल्फहुँमहातलजंघावटानलमानियो ॥ २६ ॥

युगजानुनीसुतलैउरूद्वैअतलवितलवखानहीं । अरुहैमहीतलजंघप्रभुकोनाभिनभअनुमानहीं ॥ २७ ॥
उरउड्गुनौग्रीवासोप्रभुकोमहरलोकविचारहीं । जनलोकवदनललाटतपशिरब्रह्मलोकउचारहीं ॥ २८॥
इंद्रादिसुरहैंबाहुश्रुतिश्रोत्रैद्रिशब्दगनावहीं । अश्विनिकुमारसोनासिकाघ्राणेंद्रिगंधहिध्यावहीं ॥२९ ॥
मुखअग्निस्वर्गसोनेत्रदृगद्युतिभानुपलकदिवानिसो।विधिसदनभ्रुकुटिविलासजलप्रभुतालरसनाहैरसो३०
है ब्रह्मरंध्रहुवेदहै यम डाढ़ नेहकला रदै । है हासमायासृष्टिअद्भुतप्रभुकटाक्षगुणौसदै ॥ ३१ ॥
ऊरधअधरलज्जागुणौ अधअधरलोभवखानहीं । है धर्मस्तनपृष्ठअधरममेढ्रब्रह्मामानहीं ॥
मित्रावरुणद्वैवृषणकुक्षिसमुद्रअस्थिगिरींद्रहै ॥३२॥ हैसहीनाड़ीवृक्षरोमाश्वासवायुमहींद्रहै ॥
प्रभुकोगमनहैकाल अरुसंसारयहतोखेलहै॥३३॥हैं वारवारिदवसनसंध्याप्रकृतिहृदयअकेल है ॥
मनचंद्रमामहतत्त्वजासु विज्ञान शक्तिमहानहै ॥ ३४ ॥ उरअहंकारविचारियो तुमभूपसतिईशानहै ॥
गजऊंटखच्चरवाजिनखमृगआदिपशुकटिदेशहैं॥३५॥प्रभुबोलखगगणसुमतिमनुथितिमनुजग्गुणहुँनरेशहैं
गंधर्वविद्याधरहुचारणअप्सरासुरसात हैं ॥ ३६ ॥ सबदैत्यविक्रमविप्रआननभुजाक्षत्रियख्यातहैं ॥
प्रभुवैश्यऊरूशूद्रपदअरुयज्ञभगवतकर्महै॥ऐसोविराट्स्वरूपहरिकोकह्योमैंसुखपर्महै ॥ ३७ ॥
यहिमेंसुमतिसोंमनधरैयहितेअधिकनहिंआनहै । यहिभाँतिसकलऋषीशनरपतिईशकरतवखानहै॥३८॥

दोहा—सकलबुद्धिकी वृत्तितें, सोइपरात्माएक । सकलवस्तुकोकरत है, अनुभवसहितविवेक ॥
जिमिजीवात्मास्वप्नमें, तजिइंद्रिनव्यापार । जगकेदुखसुखआदिसव, अनुभवकरतअपार ॥
कृष्णसत्यआनंदनिधि, तिनहिंभजैसबकोय । जननमरणजेहितें मिलै, तेहिआसक्तनहोय ॥ ३९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज-
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदांबुनिधौद्वितीयस्कंधेप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

श्रीशुकउवाच ।

दोहा—धारणतें संतुष्टहरि, तिनसों यहिविधिज्ञान । लहिविरंचिविरच्योजगत, जेहिविधिरह्योमहान ॥ १ ॥
करिमखस्वर्गअनित्यहिजाहीं । कर्ममार्गकहवेदसदाहीं॥स्वारथहोततहाँकछुनाहीं । भूलोभ्रमतसोमायामाहीं ॥ २ ॥
यातेसावधानह्वैज्ञानी । भोगैमहँअर्थहिअनुमानी ॥ करैसकलअर्थनकोभोगू । जेतनोहोयआपनोयोगू ॥
होइजोतनुनिवाहअनयासा । तौपुनिक्योंनरकरैप्रयासा॥३॥महीवनीशय्यानहिकामा । तकियाकोजहँबाहुललामा॥
अंजलिजहँतहँपात्रनयोगू । जहँवल्कलतहँ किमिपटभोगू॥४॥चिरकुटचीरकहामगनाहीं।कहानतरुफलदेतसदाहीं॥
दोहा—शैलगुहानिवसनलिये, रोकीकहाअनेक । पानहेतुबहुसरितमहँ, काहभयोजलनेक ॥
जोपहकहौंनपेऊत्ररिहं । तौदासनहरिरक्षैकरिहं ॥ तातेभजसंतकेहिकारन । जगमेंधनमदअंधगँवारन ॥ ५ ॥
परमअर्थअतिपरमापियारे।गुणअनंतयुतपरमउदारे॥भजतिन्हेंसबताजिसुखलेखी । जातेभवनिधितरविशेषी ॥ ६ ॥
येतर्णोसमयहसंसारा । परेपुरुपतेहिदुखितअपारा ॥ तिनहिंनिरखिअसकोजगमाहीं । भगवतभक्तिकरैनसदाहीं ॥
भजैऔरजेयदुपतिछोंड़ी । पशुहुनतें तिनबुधिहैथोड़ी॥७॥कोईजननिजहृदयअकासा। निवसैजहँश्रीजगतनिवासा ॥
दोहा—द्वादशअंगुलरूपतेहि, अतिअनुपमछविवान । भजैभक्तभगवानको, ताको ऐसोध्यान ॥ ८॥

छंदहरिगीतिका ।

युगयुगलबाहुरथांगशंख, गदासुअंबुजराजहीं । प्रसन्नवदनसुकंजदृग, पटपीतअनुपमभ्राजहीं ॥
[illegible]भितरतनयुतकनकअंगद,चारुकुंडलकानमें।कुलिकांनकटितांकिंकिणिशिगपद,मुनिहृदयकमलानमें ॥९॥
[illegible] , लसनवरवनमालहै॥१०॥कटिमेंसलौगुलिअंगुलीयक,उरअनूपविशालहै ॥

नूपुरचरणकंकणकरनमुख, मधुरहँसनिसलीलहै॥११॥अतिअमलकुंचितचारुकुंतल,वदनविलसितनीलहै॥
करुणाकटाक्षनसहित,परमहुलास भ्रुकुटिविलासते। जेदासको अनयासकरत, निराशयहिजगवासते॥१२॥
ऐसोगोविंदअनंदकंदहि, छोंड़िसबदुखद्वंदको। जबलोंरहै विधिधारणामें, भजैकृपाअमंदको॥

दोहा—पदतेलैअरुशीशलों, श्रीहरिअंगअनूप। ध्यानकरैएकाग्रह्वै, पृथक्पृथक्सुनुभूप॥

[illegible] ध्यानमहँअ [illegible] हिछोंडि [illegible] चितलावै॥१३॥ज्योंज्योंबढतजाइहरिप्रीती। त्योंत्योंध्यानकरैयहिरीती॥
[illegible] हिंपूरो। होइकृष्णजगपतिमहँरूरो॥तौलौंनित्यक्रियाकरिज्ञानी। स्थूलरूपध्यावैसुदमानी॥१५॥
यतीजबहिंतनुछोड़नचाहै। तबसुखआसनबैठिउछाहै॥ थिरह्वैइंद्रिनकीगतिबोड़ी। उत्तमदेशकालमतिछोड़ी॥
रोंकैप्राणऔरसबश्वासू। विमलबुद्धितेमनहिं विलासू॥ सोइमतिपुनिआत्मामहँलावै। सोइआत्माहरिमाहिंलगावै॥

दोहा—परमशांतह्वैकर्मसब, छोंड़ैयतीविशेपि। श्रीपतिमेंनहिंकालगति, यहज्ञानीचितलेखि॥ १६॥

महाकालजहँसंचरनाहीं। औरदेवगतिकातिनमाहीं॥ जहँनहिंसतरजतमगुणएको। अहंकारमहँतत्त्वननेको॥
जिनमेंकरतिनप्रकृतिनिवासू। तिनहिंभजैसबकीतजिआसू॥१७॥सोइपरमपदवैष्णवजानै।नेतिनेतिजेहिवेदबखानै॥
ताहीकोअनन्यहरिदासा।भजेहियेधरितजिसबआसा॥१८॥यहिविधिजगततजैविज्ञानी।जाकीमतिहरिभक्तिलोभानी
येंडीतेगुदपीड़नकरिकै। ऊरधपवनचढ़ावैभरिकै॥ १९॥ मूलाधारहितेपुनिपवनहिं। नाभीचक्रकरावहिगवनहिं॥

दोहा—मणिपूरकतेवायुको, ल्यावैहियेमँझार। पुनिउदानगतितेपवन, करैकंठआधार॥

तालुमूलराखै पुनिप्राना॥२०॥ सावधानह्वैयतीसुजाना॥ श्रुतिचषनसमुखसातहुद्वारा।रोंकिकरैभ्रूमधिआधारा॥
भ्रूविचअर्धमुहूरतराखी। पुनिमुकुंदकोपदअभिलाषी॥ ब्रह्मरंध्रतेप्राणनिकासै। तजैसकलइंद्रिनअवकासै॥ २१॥
ब्रह्मलोकजोचहैविहारू। जहँआठोंनिधिकरविस्तारू॥ तौइंद्रियमनतेयुतगमनै।करैभोगसुरलोकहिभवनै॥ २२॥
ब्रह्मांडहिब्रह्मांडहुताके। योगीविचरतनेकुनथाके॥ ज्ञानीतपीभक्तिकैयोगी। लहैजोनगतिकोसुखभोगी॥

दोहा—सोगतिकोनहिंपावहीं यज्ञादिकजेकर्म। करहिंसदायहिजगत्में, औरअनेकनधर्म॥ २३॥

नाडिसुषुम्नातेसहुलासै। ब्रह्मरंध्रजोप्राणनिकासै॥ अग्निलोकसोप्रथमहिंजावै। निर्मलह्वैसत्कारहिपावै॥
सूरजउपरचक्रशिशुमारा॥ २४॥ तहँगमनैपुनियतीउदारा॥विश्वनाभिताजिलिंगस्वरूपा। पुण्यपापसंयुतनहिंभूपा
पुनिजनलोकयतीजनजातो।कल्पायुपजहँसुरगणभातो॥२५॥पुनिअनंतज्वालानलमाहीं॥जरतदेखियहविश्वहिकाहीं
ब्रह्मलोककोकरतपयानो। द्वैपरार्धजहँअवधिबखानो॥ २६॥ जहँनशोकनहिंमृत्युचढ़ाई। नहिंउद्वेगनपीड़ापाई॥

दोहा—पैजेभगवतरूपको, जानतनाहिंकछुभाव। तिन्हैंतहाँमानसव्यथा, करतीनिजपरभाव॥ २७॥

पुनिधरणीआवरणहिजावै। धरणिरूपह्वैभीतिनलावै॥ पुनिजलमंडलजलवपुधरिकै। योगीजायत्वरानहिंकरिकै॥
पावकमंडलपावकरूपा। वायुआवरणवायुस्वरूपा॥ पुनिनभमंडलनभवपुधारी। योगीगमनकरैसुखकारी॥२८॥
गंधघ्राणतेरसरसनाते। रूपदृष्टितेपरसत्वचाते॥ शब्दश्रोत्रतेनाकिइनहिंते। अभिप्रायअंतःकर्णहिंते॥ २९॥
पुनितामसराजसस।त्विकगुन।नाँघिमहत्तत्त्वहिगमनैपुन॥मूलप्रकृतिगमनैपुनियोगी॥३०॥तबह्वैदिव्यरूपकोभोगी॥

दोहा—तेहिवपुतेआनंदमय, शांतरूपहरिधाम। तहँगमनैभागवतवर, सबविधिपूरणकाम॥

यहिविधिसोंजोहरिपुरजावै।सोपुनिनहिंसंसारहिआवै॥३१॥अर्चिरादिअरुधूमहुँमारग। जोपूँछेहुनृपमोहिंश्रुतिपारग॥
सोसबभूपतुम्हेंसमुझायो।जेविधिहरिब्रह्मासोंगायो॥ ३२॥ यहसंसारआपअपवानी। औरनमंगलगहदसानी॥
तातेवासुदेवमहँभूपा। करैभक्तिसबभाँतिअनूपा॥ ३३॥ यहविरंचित्रिवारविचारयो। ठीकआपनेमननिरधारयो॥
करैभक्तिभगवानहिंमाहीं। जातेमंगलहोयसदाहीं॥ ३४॥ भूतनमेंबुधिमोभगवाने। अंतर्यामीमम्जननाने॥ ३५॥

दोहा—तातेनृपसबभाँतिते, सर्वकालसबठोर। श्रवणकीर्त्तनस्मरण, लायकनंदकिशोर॥ ३६॥

सवैया—नँदनंदनआनँदकंदसदा,करुणाकरदासनकेपतिहैं। तिनकीकथारूपसुधाकोमदा,कर्णाजलिदैजोपियैंअतिहैं॥

)

नतेविपर्ययवासनादूरिकरैं,रघुराजकरैतिनकीनतिहैं।कमलापतिकेपुरकोगमनैं,ह्वैपुनीतरँगेहरिकीरतिहैं ॥२७॥

इतिसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबाँधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा

धिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते

आनंदांबुनिधौद्वितीयस्कंधेद्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

श्रीशुकउवाच ।

दोहा—मरणसमैकानरनको, करनयोगहैभूप । जोमोहिंपूँछ्योसोकह्यों, सकलकथासुखरूप ॥ १ ॥

तिजजोचाहैकोई । भजैविरंचिहितैसुखहोई ॥ इंद्रिनकीसामर्थ्यजोचाहै । भजैशक्रकोसहितउछाहै ॥

जोकोइजनसंततिआसा । प्रजापतिनध्यावैसहुलासा ॥ २ ॥ चहैजोकोइऐश्वर्य्यअरामा । तोदुर्गाकोकरैप्रणामा॥

जचहैतोपावकध्यावै । वसुनभजैजोधनमनलावै ॥ रुद्रनभजैवीर्यअभिलापी ॥३ ॥ अदितिहिभजैअन्नचितराखी ॥

वनभजैस्वर्गकेआसी । विश्वेदेवनराज्यहुलासी ॥ प्रजनचहैजोनिजआधीना । भजैसाध्य देवनलवलीना ॥ ४ ॥

दोहा—आयुर्बलकोजोचहै, सोअश्विनीकुमार । पुष्टिकामनाजोकरै, भजैतोभूमिउदार ॥

चहैप्रतिष्ठाजोजनकोई । भजैरोदसीमातनसोई ॥ ५ ॥ रूपकामगंधर्वनकाहीं । नारिकामउर्वशीसदाहीं ॥

अधिपतिहोनचहैसबकेरो । तोपरमेष्ठीभजैनिबेरो ॥ ६ ॥ भजैयज्ञकोकरियशकामा । कोपकामवरुणैसुखधामा ॥

विद्याकामशंभुकहँध्यावै । दंपतिप्रीतिउमाउरल्यावै ॥ ७ ॥ धर्महेतुउत्तमश्लोकै । वंशहेतुपितरनमुदथोकै ॥

पुण्यजननरक्षाकेहेतू । बलहितमरुतगणहिंमतिसेतू॥ ८॥मनुहिंभजैनृपपदलहिवेको।निर्ऋतिहिभजैशत्रुदहिवेको ॥

दोहा—कामभोगजोचाहतो, भजैसोमकोसोइ । परमपुरुपकोसोभजै, जोअकामजनहोइ ॥ ९ ॥

जोइनसबकामनकोचाहै । अथवापुरुपअकामसदाहै ॥ मुक्तहोनकोजोअभिलापै । ताकोभेदवेदअसभाषै ॥

भक्तियोगकरितीव्रसदाहीं । ध्यावैश्रीयदुनंदनकाहीं ॥ १० ॥ यहीउदयकल्याणहिंकेरी । होइकृष्णमेंभक्तिघनेरी ॥

करैसदासंतनकरसंगा । यहीकरनसंसारहिभंगा ॥ ११ ॥ जातेहोतपरमविज्ञाना । जेहितेरागहुरोपनशाना ॥

उभयलोकमहँहोतविरागा । मनप्रसन्नहरिपदअनुरागा ॥ ऐसीयदुवरकथासुहाई । कोनसुनैजनकानलगाई ॥१२॥

(शौनकउवाच)दोहा—भरतवंशअवतंसनृप, यहसबसुनिकेसूत । औरकहापूंछतभये, ऋपिकविव्यासहिपूत ॥१३॥

हमसबसुननेहतअभिलापे । तुमतोसकलभक्तिरसचाखे ॥ संतसमाजमाहँसुखदाई । होइकृष्णकीकथासदाई॥१४॥

पांडवपात्रपरीक्षितराजा । रह्योबालजबसहितसमाजा॥ खेलैहरिचरित्रकरखेला । भयोभागवतभूमिअकेला ॥ १५ ॥

तेसकृष्णभक्तशुकदेवा । करतजोनितहरिचरणनसेवा ॥ तातेसंतसमागमयोगू । ह्वैहेकृष्णकथासुखभोगू ॥ १६ ॥

आयुपकृष्णकथाविमुखनकी।हरतउवतअथवतरविनिनकी॥जोनितकरहिंकथारसपानू।तिनकीआयुपहरहिंनभानू ॥

दोहा—तरुगणकानहिंजीवहीं, भस्त्राल्हिंनश्वास । खातनमैथुनकरतका, पशुजिमिग्रामनिवास ॥ १८ ॥

छंद हरिगीतिका ।

निनकेश्रवणमहँपरनकबहूँनकृष्णचंद्रसुधाकथा । तेइश्वानशूकरउष्ट्रखरतेअधिकपशुजीवतवृथा ॥

पदुमंशमनिकेचरितनसुंदरपरननाहिंजिनकानहैं॥ १९ ॥नइकर्णनिजलभृभुजंगनिकेबिलानिसमानहैं ॥

ललनानतेहीपशब्दादुरसमाहिंनिकानहीं ॥ २० ॥ जेशिरनवननाहिंहरिचरणगामुकुटयुतभारहिसहीं ॥

नेकरकरननाहिंकृष्णकोकरयुक्तनीनिगाथहैं । युनकांचनकंकणहुंतेपनेइमृतककेहाथहैं ॥ २१ ॥

जेननकननकृष्णटीननइमपृर्गहिपुञ्जके । जेपदनगमननकृष्णपटनइवृक्षहैंनकगुञ्जके ॥ २२ ॥

जेपुरुपननतेगुपदआदरमाहिंननाहिंशिरल्यये । हरिचरणतुलसीनमृदुहीनिभूतकर्णाजिनहेगये ॥ २३ ॥

जिनपुरुपनहिंपदपदुमलमानेनाभल्यनटानहैं । पुरुकानहीनहरगमेंनाहिंननाहिंहथनहैं ॥

निनकोहृदयपापाणहुतेअतिकठोरहिजानियो । निनकर्मपंकजयोगजपतपपृथापाटोकाटजानियो ॥ २४ ॥

दोहा-हौभागवतप्रधानतुम,भापहुअतिप्रियज्ञान । शुकजोनृपसोंकहतभे,ताकोकरहुवखान ॥ २६ ॥
इतिसिद्धिश्रीमन्महाराजाश्रीमहाराजबाँधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृतेश्रीभागवतेआनंदांबुनिधौद्वितीयस्कंधेतृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

श्रीसूतउवाच ।

दोहा-आत्मतत्त्वनिश्चयकरत, सुनिशुकवचनउदार । सतिमतिकीन्हींकृष्णमें, नृपउत्तराकुमार ॥ १ ॥
[illegible] । धनपशुसकलराज्यकोभारा ॥ इनकीममतातजीनरेशा।छूटतिनहिंजोकियहुकलेशा ॥२॥
कृष्णकथाकोश्रवणहुलासा । कीन्होनृपउरपरमप्रकासा ॥ यहीप्रश्नपूँछ्योशुकपाहीं।जोतुमपूंछतहौमोहिंकाहीं॥३॥
अर्थधर्मअरुकामप्रकासा । ऐसीछोड़िकर्मकीआसा ॥ भूपतिनिकटमृत्युनिजतोले । करिदृढ़भावकृष्णमहँबोले॥४॥
(श्री०रा०उ०)कृष्णकथाकोकरतखाना।नाशहोतमेरोअज्ञाना॥हौसर्वज्ञनाथसबभाँती।होतवचनसुनिशीतलछाती ५
दोहा-जेहिविधिसिरजैविश्वको, मायाकरिभगवान । जेहिब्रह्मादिनजानहीं,सुनोचहौंसोकान ॥ ६ ॥
जोजोशक्तिधारिभगवाना । पालहिनाशहिजगतमहाना॥आपुहिखेलखेलावतखेलत।प्रगटतहरतआपहीदेखत ॥७॥
अद्भुतकर्मकृष्णकीलीला। जानहिँनहिंविधिशिवशुभशीला॥८॥प्रकृतिगुणनधौंएकहिवारा।धौंक्रमसोंवसुदेवकुमारा॥
धारणकरिबहुधरिअवतारा । करहिँचरितसोकहहुउदारा॥९॥यहसंशयममभेटहुनाथा । तुमकोविदितवेदकीगाथा॥
परब्रह्मकोसबविधिजानहुँ।मोपरमुनिकरिकृपावखानहुँ १०सू.उ.यहिविधिजबपूंछ्योनरनाह।कृष्णकथाकोबढ्योउछाह
दोहा-तबहरिकोस्मर्णकरि, श्रीशुकदेवसुजान । सुखदमंगलाचरणपुनि,लागेकरनमहान ॥ ११ ॥

(श्रीशुकउवाच) छंदहरिगीतिका ।

जेजगतव्यापकपरहुतेपरदिव्यमंगलगुणभरे । जगसृजतपालतहरतलीलाकरतहितत्रयगुणधरे ॥
देहीनअंतर्यामिजोदुर्लभहुजासुउपासना । तेकृष्णकोवंदनकरहुँजेहरहिँसबभववासना ॥ १२ ॥
संतनसुखददुष्टनदुखदसतमयीमूरतिमाधुरी । अभिलापपूरणपरमहंसनकरनधरनसुबाँसुरी ॥ १३ ॥
यदुवंशकेअवतंसदंभिनदूरजासुनिवासहै । समअधिकरहितप्रकाशयुतनिजरूपब्रह्मविलासहै ॥ १४॥
स्मरणकीर्तनदर्शवंदनश्रवणअर्चननाथके । ध्रुवधुनतकल्मषकोटिकलिकेसुयशप्रदमुदगाथके ॥ १५॥
जिनचरणभजनप्रभावतेदुहुँलोककेजेसंगको । निजमनहिंततजिवरविवेकीकरिपरिश्रमभंगको ॥
अतिअगमसूक्ष्मपरहुतेपरब्रह्मगतिअतिपावनी । तेलहतअवशिअनंदवपुहोइभवकलेशनशावनी ॥
जिनकोसुयशवर्णतसुनतनाशतअमंगलमूलको । तिनकेचरणवंदनकरहुँबहुबारमैंतेहितूलको ॥ १६ ॥
तपसीसुदानीयशीयोगीमंत्रजाननवारहै । अरुसदाचारीनिरविकारीधनीजेबड़वारहै ॥
तेबिनाअर्पणकियेजाकेलहतकर्मनफलनहीं । तिनकोनमामिनमामिहैजिनसुयशमंगलमयसही ॥ १७ ॥
आभीरकंकपुलिंदपुल्कसयमनखसहुकिरातजे । अरुहूनऔरहुमहापापीकरतपापअघातजे ॥
तेजासुपदसेवकनिकेपदसेइहोवहिंपावने । प्रभुनंदनंदनतासुपदवंदनकरहुँसुखछावने॥ १८॥
योगीनजीवनवेदमयअरुधर्ममयतपमयसही । परमात्माश्रीकृष्णकोगनिविधिशिवहुजानैनहीं ॥
दासनदुरितदाहकद्भुतेसबदिव्यगुणसंपन्नहैं । येदेवकीनंदनसोइमोहिंहोहिंआसुप्रसन्नहैं ॥ १९ ॥
श्रीपतिसुमखपतिप्रजापतिमतिपतिसोपतिसबलोकके । प्रभुधरापतिगतिपतिअहोयदुवंशसम्मनयोकके ॥
कलिकालकठिनकरालनाशकअमितजाकेनामहैं । सोकृष्णचंद्रप्रसन्नमोपरहोहिंआनँदधामहैं ॥ २० ॥
जिनचरणकमलनध्यानकरिशुचिबुद्धिसोंयोगीसदा । अनिमृदुसुदुर्गमआत्मतत्त्वहिंदेखहींजगसर्वदा ॥
यदुवंशमणिकरूपछबिछकियथारुचिगावतरहैं । सोकृष्णचंद्रप्रसन्नमोपरहोहिंमंननगुणदहैं ॥ २१ ॥

जोपूर्वकल्पहिश्रुतिस्मृतिविधिहियेविस्तारतहरी । यहविश्वकेउत्पत्तिहितजिनसरस्वतिप्रेरनकरी ॥
सोइभारतीविधिवदनतेलक्षणसहितप्रगटतभई । सोऋषिऋषभश्रीकृष्णहोहिप्रसन्नदृगदायाठई ॥ २२ ॥
जेमहाभूतनतेविरचियेवपुनअंतर्यामिहैं । सोवतसोपोडशआत्महैपोडशगुणनभोगतअहैं ॥
सोकृष्णविष्णुप्रधानजिष्णुसखाअवशिआनँदभरैं । यहसमयमेंप्रतिपाद्यह्वैममवचनकोभूपितकरैं ॥ २३ ॥

दोहा—वंदौंपितुसर्वज्ञजो, व्यासदेवभगवान । जिनमुखनिर्गतज्ञानमधु, करहिंसंतसबपान ॥
यहमंगलशुकदेवकृत, करैजोकथाअरंभ । ताहिविघ्नव्यापैनहीं, दूरिहोइदिलदंभ ॥ २४ ॥
पुनिकुरुपतिसोंमुदितह्वै, बोलेश्रीशुकदेव । मोसोंजोतुमयहकियो, प्रश्नसुखदनरदेव ॥
सोइहरिब्रह्मासोंकह्यो, ब्रह्मानारदपाहिं । वर्णनसोकरिहौंविशद, सुनहुभूपमुदमाहिं ॥ २५ ॥

इतिसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबाँधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजी
देवकृतेश्रीभागवतेद्वितीयस्कंधेआनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

दोहा—एकसमयनारदहरपि, ब्रह्माकेढिगजाइ । वंदनकरिकरजोरिकै, कियोप्रश्नचितलाइ ॥

श्रीनारदउवाच ।

देवदेवपूर्वजमतिपावन । सकलजगतकेभूतनभावन ॥ १ ॥ आतमतत्त्वबोधकरज्ञाना । मोसोंकरियेतातवखाना॥१॥
जौनरूपअरुजौनअधारा । होतजहँतेयहसंसारा ॥ जेहिअधीनहोतोजेहिलीना । औउपकरनहुकहोप्रवीना ॥ २ ॥
वर्त्तमानभावीअरुभूता । सबजानहुसबकरहुप्रसूता ॥ निजकरमेंआमलकसमाना । यहसंसारआपकोजाना ॥ ३ ॥
जातेलह्योआपविज्ञाना । जोअधारतुम्हरोभगवाना ॥ जाकेरहौअधीनसदाहीं । जोअंतर्यामीतुममाहीं ॥

दोहा—एकआपसंकल्पते, पंचभूतते नाथ । रचहुअनेकनभूतको, लेउनकाहूसाथ ॥ ४ ॥

उत्पतिपालनअरुसंहारा । विनश्रमकरहुतुमहिंकरतारा ॥विनप्रयासनिजशक्तिहिधारी । जिनअमोघवांछाविस्तारी॥
करहुसकलतुमजगतकृपाला।जिमिमकरीसिरजैबहुजाला॥५॥उत्तममध्यमअधमनिदाना।नामरूपगुणसहितजहाना॥
ताकेकरतातुमनहिंआना । असमेरेनिश्चयभगवाना॥६॥ सोतुमकरहुसविधितपघोरा । यहलखिशंकितहैमनमोरा॥
औरहुनाथअहैकहुँकोई । करहुजासुहिततपश्रममोई ॥ ७ ॥ तुमसर्वज्ञईशसबकेरे । तातेप्रश्नकियेबहुतेरे ॥

दोहा—करिकेकृपाविरंचिमोहिं, सिगरोकहौबुझाय । जामेंमेरोसकलभ्रम, द्रुतहिदूरिह्वैजाइ ॥

नारदकीसुनिगिरासुहाई।बोलेचतुराननसुखपाई॥८॥(ब्रह्मो.)कियोवत्सतुमप्रश्नअनूपा।वर्णनहितहरियशश्रुतिरूपा॥
करुणामयभागवतप्रधाना । होनारदतुमसतिहमजाना॥अहशक्तिममजासुप्रभावा॥९॥तेहिनजानजोतुमसबगावा॥
सोऊनहिंअसत्यमुनिराई । पैतुमसोंमैंकहौंबुझाई ॥ १० ॥ जासुदीप्तिदीपितसंसारा । ताकोमैंकरतोविस्तारा ॥
जिमिरविशशिशिखिग्रहउडुआशा।हरिप्रकाशलैकरहिंप्रकाशा॥११॥जेहिदुर्जयमायावशज्ञानी।मोहिंजगतगुरुकहैंबखानी

दोहा—वासुदेवभगवानसोइ, तिनकोकरिचितध्यान । चरणकमलवंदनकरहुँ, जोदायकविज्ञान ॥

जिनकेदृगपथमहँपदमाया । रहतिहोनिलाजनिमुनिराया॥नातेमोहितकुमतिघनेरे । आपहिंमैंसुततियधनमेरे॥१२॥
द्रव्यकर्मऔकालस्वभावा । जीवआदिकारणजेगावा ॥ वासुदेवतेपरकोउनाहीं । यहयथार्थजानहुमनमाहीं ॥ १४ ॥
नारायणकारणवेदनके । नारायणकारणदेवनके ॥ नारायणकारणलोकनके । नारायणकारणयज्ञनके ॥ १५ ॥
नारायणकारणयोगनके । नारायणकारणतपगनके ॥ ज्ञानहुँकेनारायणकारन । नारायणकारणजगतारन ॥ १६ ॥

दोहा—अखिलात्माअविकारप्रभु, नारायणसर्वज्ञ । तेसंकल्पहिंतेकियो, मोहिंउत्पतिनिरपुषज्ञ ॥ १७ ॥

तिनकेप्रेरितमुनिराई । [illegible] ॥ थितिउत्पत्तिनिनाशनकेहेतू । निजमायानरूपानिकेतू ॥ १८ ॥
[illegible] । हैंअप्राकृतगुनगनभौनि ॥ सोइप्रकाशअरुशक्तिसुभावा । [illegible]गावा

... केहेतू । नित्यमुक्तहूजीवसचेतू ॥ ताकोमायामोहितजानी । बंधनकरहिंत्रिगुणमुनिज्ञानी ॥ १९ ॥
... । करणअगोचरसबजगस्वामी ॥ २० ॥ सोईमायापतिमुनिराई विपुलहोनइच्छाकरिभाई॥

दोहा–आकस्मातहि प्राप्तजे, कालहुकर्मस्वभाउ । तिनकोअंगीकारकिय, सुनहुमुदितमुनिराउ ॥
तहाँ कियोपरमात्मा, बहुह्वैबेकीचाह । भयोप्रथमसोकहतहौं, जोपूंछेहुसउछाह ॥ २१ ॥

... । प्रथमकरतहौंवर्णनसोई ॥ कियोकालतेक्षोभतहाहीं । सतरजतमतीनोगुणकाहीं ॥ २२ ॥
... । तेहितेजियकेकर्महिठयऊ ॥ ताहीतेपरमातमजोहै । तासुअधारप्रकृतिजोसोहै ॥
प्रगट्योमहत्तत्त्वतेहितेजब । सोसतरजतेबढतभयोतब ॥ सोमहतत्त्वभयोसविकारा । तबभोतमप्रधानअवतारा ॥
मोहनकरनप्रकाशनहारो । धर्मप्रवर्त्तनताहिविचारो ॥२३॥सोजगअहंकारकहिगयऊ। सतरजतमत्रयवपुसोभयऊ॥

दोहा–पंचभूतउपजावने, अरुसात्विकअहँकार । तेहिसहायकेकरनमें, तिनकीशक्तिअपार ॥

पांचविषयशब्दादिकज्ञाने । साधनजेइंद्रियबलवाने ॥ तिनकेप्रेरणकरिवेमाहीं । तिनकीशक्तिप्रगटदरशाहीं ॥
भूतनप्रथमभयोसविकारा । अहंकारतामसहुअपारा ॥२४॥ तातेशब्दद्वारआकाशा । उत्पतिहोतभयोअनयाशा॥
तेहिनभकोभोसूक्ष्मस्वरूपा । गुणजगव्यापकशब्दअनूपा॥जौनशब्दजोदेखनवारो । तेहिपदार्थकोबोधनहारो॥२५॥
पुनिसविकारव्योमजबभयऊ । तेहिस्पर्शपवननिर्मयऊ ॥ ताकोगुणस्पर्शसुहायो । मुनिवरमैंतुमसोंयहगायो ॥

दोहा–भोअकाशसम्बन्धते, शब्दहिकोपरमान । प्राणबोजबलसहअहै, ताकोरूपमहान ॥ २६ ॥

कालस्वभावकर्मसँगपाई । भयोवायुसविकारमहाई ॥ ताहूतेरूपहिकेद्वारा । होतभयोहैतेजअपारा ॥ २७ ॥
रूपमानस्पर्शहुमाना । शब्दमानसोइतेजबखाना ॥ भयेविकाशरहिततेहुकाहीं । तेहितेरसद्वाराजगमाहीं ॥
रसगुणहैजामेंइमिवारी । प्रगटतभयोजननसुखकारी ॥ व्योमआदित्रयतत्त्वजुगायो । तेहिसम्बन्धहितेजलभायो ॥
रूपस्पर्शशब्दहूमाना । होतभयोसोविदितजहाना ॥ २८ ॥ सोजलभोविकारयुतजबहीं । तेहितेगंधहिद्वारातबहीं ॥

दोहा–होतभईउत्पन्नक्षिति, गंधअहैगुणजासु । तत्त्वचारिनभआदिजे, तिनकोतामेंवासु ।

शब्दस्पर्शरूपरसजोहै । तेहितेसहितभईक्षितिसोहै ॥ २९ ॥ अहंकारसात्विकसविकारे । तेहितेमनउपज्योसंसारे ॥
सतअहमितकेमारगकाहीं । होनहेतथिरइंद्रिनमाहीं ॥ दिशावायुरविइंद्रप्रचेता । शिपअश्विनीकुमारसचेता ॥
मित्रउपेंद्रदेवदशजेहैं । उत्पतिहोतभयेद्रुततेहैं ॥ ३० ॥ राजसअहंकारहैजोई । भयोविकारसहितजबसोई ॥
तातेजेदशइन्द्रियअहहीं । प्रगटभईतिनकोहमकहहीं ॥ श्रुतित्वचघ्राणदृष्टिरसनाहू । वाणीमेढ्रअंघ्रिगुदबाहू ॥

दोहा–ज्ञानशक्तिजोबुद्धिअरु, क्रियाशक्तिजोप्रान । राजसअहमितकार्यहित, येदोउभयेमहान ॥ ३१ ॥

भूतेंद्रियमनगुणमुनिभूपा । पृथक्पृथक्इनरहेसुरूपा ॥ याहीतेहरितनुजगकाहीं । समरथभयेनविरचनमाहीं॥३२॥
तबभगवततेप्रेरितह्वैकरि । तेसबपरस्परमिलिसुखभरि ॥ सूक्षमथूलअहंजेभावा । कालकर्मअरुत्योंहिसुभावा ॥
इनकोकरिकेअंगीकारे । विरच्योयहब्रह्मांडअपारे ॥ ३३ ॥ वर्षहजारनजलमेंसोई । परोरह्योतेहिनयननजोई ॥
ममअंतर्यामीभगवाना । कालहिकर्मस्वभावप्रधाना ॥ करिकेग्रहणअचेतनअंडे । चेतनकरतभयेबरबंडे ॥ ३४ ॥

दोहा–कढिआयोपरमात्मा, सोब्रह्मांडहिफोरि । ताकोहौंवर्णनकरौं, जैसीमतिहैमोरि ॥

ममउरकेहरिजाननवारे । सहसनऊरुचरणभुजधारे ॥ नैनहजारनआननशीपा । तिनकेमेंइनआसिनदीसा ॥ ३५ ॥
जेहिपरेशकेअंगनितेरे । वर्णज्ञानीलोकपनेरे ॥ सातलोकहरिकटिकेनीचे । सातलोकदेकटिकेऊँचे ॥ ३६ ॥
मुखतेद्विजक्षत्रियभुजभयऊ।ऊरूवैश्यशूद्रपदजयऊ॥३७॥तिमियदुपतिपदतेभूलोका।नाभितेभुवर्लोकसुदयोका ॥
हृदयहितेसुर्लोकजयोहै । उरतेमहरहुलोकभयोहै ॥ ३८ ॥ ग्रीवातेजनलोकदिनानो । आननतेतपलोकमहानो ॥

दोहा–अथवाश्रीपतिवोठते, होतभयोतपलोक । ब्रह्मलोकहरिशीपते, प्रगट्योकरनअशोक ॥ ३९ ॥

वैकुंठहिमानिदे ...नातन । व्यापकजेभगवतजड़चेतन ॥ तिनकेकटितेअतलबखानो । ऊरूनतेवितलहुकहँजानो ॥

उभयजानुतेशुद्धसुतलभो । तलातलहुजंघनतेभलभो ॥ ४० ॥दूनौगुल्फजेहैंहरिकेरे । लोकमहातलभोतिन
अग्रभागजोप्रभुपदकेरो । तेहितेहोतरसातलहेरो ॥ कृष्णचरणतेत्योंहिउँताले । प्रगटतभयोलोकपाताले ॥ ४
सकललोकमयअसुरअराती । अहैमुनीशईशयहिभाँती ॥ अथवाहरिपगतेभूलोके । भुवर्लोकभोनाभिअशोके

दोहा—होतभयोहैशीशते, स्वर्लोकहुविख्यात । रचनायहसबलोककी,जानहुमुनिअवदात ॥
कल्पकल्पकीकल्पना, हैइनलोकनकेरि । सबकेजाननयोग्यसो, तुमसोंकहीनिवेरि ॥ ४२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीमद्भागवतेद्वितीयस्कंधेआनन्दाम्बुनिधौपंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

श्रीब्रह्मोवाच ।

दोहा—बोलेबहुरिविरंचियह, सुनहुमुनीशसुजान । वाक्वह्निउत्पत्तिको, हरिमुखहैस्थान ॥

गायत्रीआदिकजेअहहीं । सातछंदउत्पतिथलकहहीं ॥ हरित्वचआदिधातुजेसाते । तेईहैंप्रभुधर्मविख्याते
हव्यकव्यदेवनपितरनको । अन्नदुहुँनकोशेपनरनको ॥ अरुसबरसइनउत्पतिथाने । भगवानैकीजीभबखाने ॥
सबकेप्राणपवनजेदेवा । तिनउत्पतिस्थानहिंसेवा ॥ कहौंपरेसनासिकाकेरे । छिद्रअहैंजानहुँसुतमेरे
सबओषधिअश्विनीकुमारा । मुदप्रमोदजोअहैअपारा ॥ इनकीउत्पतिथलहिबखानो। घनश्यामहिघ्राणेंद्रियजा

दोहा—रूपप्रकाशकतेजअरु, शुक्लादिकजेरूप । इनउत्पतिस्थानहैं, हरिकेनयनअनूप ॥

अंतरिक्षरविउत्पतिठौरे । दृगगोलकहैनंदकिशोरे ॥ दिशितीरथउत्पतिस्थाना । विलसतकर्णरंध्रभगवाना ॥ २
शब्दअकाशकेरउत्पतिथल । श्रीपतिकीश्रोत्रेंद्रियहैकल॥ सकलवस्तुकोसारजोअहई । अरुसौभाग्यवेदजोकहई
इनकोहैउत्पतिथलभारी । हरिशरीरमेंकहहुँविचारी ॥ ३ ॥ पर्शऔरबाहरजोपवनू । औसबमखजेहैंअघदवनू
तिनउत्पतिथलकहहुँनिवेरी । त्वचाअहैभगवानहिंकेरी॥जिनकरिकेमखहोइसदाई । असत हुतरुससुदाइ

दोहा—तिनकेउत्पतिकेथले,हरिकेरोमाबेष ॥ वनउत्पतिस्थानत्यों, श्रीपतिसुंदरकेश ॥

चपलाउत्पतिकेस्थाना । हरिअस्मश्रुकरौमेंगाना ॥ उत्पतिथलहैउपलहिकेरे । प्रभुकेपगनखसोभघनेरे ॥
आयसउत्पतिथलहिबखानो । श्रीपतिकेकरकेनखजानो ॥ सबलोकनकेपालनवारे । इंद्रादिकसुरजेसुखकारे
तिनकोउत्पतिथलहरिबाहू । जानहुँनिजमनतेमुनिनाहू॥५॥भुवर्लोकभूलोकमहाना । स्वर्गलोकउत्पतिस्थाना ॥
श्रीपतिकेजेचरणसुहाये । तिनकोगवनवेदगणगाये ॥ रक्षाक्षेमशरणइनकेरो । उत्पतिथलहरिचरणहिहेरो ॥ ६

दोहा—वारिवीर्यअरुसृष्टिऊ, अरुपर्जन्यप्रजेश । इनउत्पतिथलहरिहिके, राजतशिश्नविशेष ॥

संततिहेतभोगजोहोई । तेहितेतापहानिजोजोई ॥ तिनकेउत्पतिकेरनिवासे । हरिउपस्थइन्द्रियअतिभासे ॥ ७
सुनहुवचननारदबडभागा । यमअरुमित्रदेवमलत्यागा ॥ इनउत्पतिथलकहहुँनिवेरी । अहैपायुइन्द्रियहरिकेरी
हिंसाऔरदरिद्राजोहै । मृत्युऔरनरकहुजोसोहै ॥ इनकीउत्पतिथलहिबखानो । गुदभगवानकेरतुमजानो
अहैपायुइन्द्रियकोसोई । अधिष्ठानवर्णोमुदमोई ॥ ८ ॥ तिरस्कारअधरमअज्ञाना । उत्पतिथलहरिपृष्ठमहाना

दोहा—नदनदीनउत्पतिथले, भगवतनाडीजानु । हरिकेअस्थिसमूहत्यों, गिरिउत्पतिथलमानु ॥ ९ ॥

प्रकृतिअन्नआदिककोसारा । अरुसमुद्रजेसातअपारा ॥ भूतनलयइनउत्पतिठामा । हरिउदरैप्रसिद्धअभिरामा
मानसउत्पतिकोशुभठौरा।राजतहैहियनंदकिशोरा ॥ १० ॥ धर्मचतुर्मुखमैंईशाना । तुम्हरोसनकादिकविज्ञाना
औरसतोगुणइनउत्पतिथल।हरिकोअंतःकरणअहैभल॥११॥हमतुमअरुसनकादिमुनीशा॥सुरनरअसुरनागओईशा
[illegible] ॥ १२ ॥ अप्सरयक्षराक्षसहुसर्वा॥सर्पभूतगणअरुपशुजाती । पितरसिद्धविद्याधरपांती ॥

ाभिनभनिजजानतनाहिअंता॥तामिनिजमायाकाभगवंता॥अंतकचहुनहिजानतअदही।नानिऔरकहायकरहीं॥२४॥
दोहा–हमतुमशिवऔऔरऊ, जिनगतिजानिसकेन। औरनजानिताकहा, कहिकोयहवैन॥
ीपतिमायाकीगतिमहई।हमसबमतिअतिमोहितरहई॥निजदेहहिआतमअनुमानै।छूटतनाहिअज्ञानअमानै॥२५॥
नेकेअवतारनकीलीला। निशिदिनगावहिमशुभशीला॥ तानहिकरिकैजिनहिंनजानै। तेहाकोप्रणामबखुटानै॥
ादिअजन्मासोइभगवाना।आपहितेआपहीसुजाना॥आपहिकरिकैआपहिकाहीं। उत्पतिथितिलयकरतसदाहीं२७
ानस्वरूपएकहीराजै। सत्यविशुद्धनित्यछविछाजै॥ निजहितनिजहिप्रकाशितरहहीं। दूजेकीनअपेक्षागहहीं॥
दोहा–पूर्णआदिअरुअंतविन, प्राकृतगुणतेहीन। अहसमाधिकतेरहित, सुनहुमुनीशप्रवीन॥ २८॥
नअरुसकलइंद्रियनजीते। छोड़िअखिलवासनाहीते॥ ऐसेजेमुनिज्ञाननिधानै। तेजबपरमातमकोजानै॥
वहींअसततर्कतेजोई। हैविरोधसोनाशहिहोई॥ २९॥ जोनविराटपुरुषसंसारा। सोहरिकेरप्रथमअवतारा॥
तअसतहुमनकालस्वभावहु।द्रव्यविकारकरनगुणजानहु॥अंतरिक्षअरुस्वर्गहुलोका। हरिविभूतिजड़चेतनथोका॥
मशिवविष्णुऔरदक्षादिक। तुमहिंआदिदसबसनकादिक॥स्वर्गअकाशमनुजतललोका।इनपालकजेअहंअशोका
दोहा–विद्याधरगंधर्वअरु, चारणकेजेईश। यक्षराक्षसहुउरगसब, अरुजेअहंअहीश॥
षिगणपितरनमेंजेवरहं। दैत्येश्वरअरुसिद्धेश्वरहं॥ प्रेतहुभूत पिशाचहुजेते। कूष्मांडबालग्रहकेते॥
नवेंद्रजलजीवनिकाया। मृगपक्षिनअधिशयदुराया॥ ४२॥ युतऐश्वर्यतेजउत्साहे। वेगक्षमाबलयुतलज्जाहे॥
स्तुविभूतिबुद्धियुतजेती। अद्भुतशब्दवाचयुतकेती॥ येसबअहंवस्तुत्रैलोका। तेभगवतिभूपतिमुदथोका॥४३॥
गलरूपदिव्यहरिजेई। व्यापकपरमपुरुषहेतेई॥ तिनकीलीलापरममनोहर। अवतारनकीकहहिंजेमुनिवर॥
दोहा–तिनकोहमतुमसोंकहब, क्रमतेहेमुनिनाथ। जेसुनिहैतिनश्रुतिदुरित, दरिदैहैंमुदगाथ॥ ४४॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदा-
म्बुनिधौश्रीमद्भागवतेद्वितीयस्कंधेषष्ठस्तरंगः॥ ६॥

दोहा–पुनिनारदमुनिसोंतहाँ, विधिबोलेहर्षाइ। हरिअवतारनकीकथा,सुनहुतातमनलाइ॥
रनहेतधरणीउद्धारा। धर्योयज्ञशूकरअवतारा॥ हिरण्याक्षजोदैत्यमहाना। आयोउदधिमध्यबलवाना॥
रितेहिउदरडाढसेफार्यो। जिमिवासवपवितेगिरिदार्यो॥१॥ रुचिसंबंधहितेमुनिराई। आकूतीकेउदरहिंआई॥
गटतभयेसुयज्ञनामके। भयेकांतदक्षिणावामके॥ तातियसोंजगसुरउपजाये। लोकनकीवेदनामिटाये॥
बस्वायंभुवमनुतहँआये। प्रभुहियज्ञहरिनामधराये॥ २॥ देवहुतीकर्दमआगारा।नौभगिनिनयुतलियअवतारा॥
दोहा–कपिलदेवअसनामभो, निजजननीलखिदीन। सांख्यशास्त्रउपदेशकरि, ताकोनिजगतिदीन॥ ३॥
त्रिऋषीशपुत्रअभिलाषी। ताकोतवसुतह्वैहौंभाषी॥ दत्तात्रयलीन्ह्योअवतारा। अमरबजायेअमितनगारा॥
हिपदपदुमपरागपवित्रा। यदुहयहयआदिकनृपचित्रा॥४॥भुक्तिमुक्तिनहिंसुलभघनेरी। विनप्रयासपाईमनकेरी॥
थमहिजगतसृजनकेहेतू। मैंकीन्ह्योबहुतपमुनिकेतू॥ तासुप्रभावकृपाहरिकीन्हे। सनकादिकअवतारहिलीन्हे॥
रबकल्पविनाशितज्ञाना।ताकोबहुविधिकियोबखाना॥जेहिकरिकैमुनिनिजहियमाहीं।आतमतत्त्वहिलखतसदाहीं
दोहा–दक्षसुताजोधर्मतिय, मूर्तिनामविख्यात। नरनारायणहोतभे, ताकेतपअवदात॥
तिनकेतपखंडनकेहेतू। मैनसैनसुरतियछविसेतू॥ निकटजाइबहुकरीउपाई। तबनारायणतियप्रगटाई॥
ासुरूपलखिगयेगुमाना। करिनसकीतपभंगमहाना॥६॥कामहिंकुपितदह्योत्रिपुरारी। हियतेसकेनक्रोधनिकारी॥
ोहरिउरप्रविशतमहँरोपू। अतिडेरातकिमिप्रगटेदोपू॥ऐसीजहाँकोपकीमतिहै। तहाँकौनविधिमनसिजगतिहै ७॥
मउत्तानपादगृहपाहीं। पुनिध्रुवभयेनाथसुखमाहीं॥ एकरह्योपितुअंककुमारा। बैठनकहँजबकियोविचारा॥

दोहा—चारणतरुजलथलनभहु, वासीजीवनिकाय । ग्रहनक्षत्रघनबीजुरी, केतुनखतसमुदाय ॥१४॥
भूतभविष्यबखानिये, वर्तमानजुपदार्थ । अंतर्यामीरूपहै, जिनमेंयदुपयथार्थ ॥
[illegible] ीताभरहैअधिकहिताते ॥ १५ ॥
[illegible] । बाहेरहूवरतेजहिभासत ॥ तैसेपरमपुरुषभगवाना । व्यष्टिसमष्टिप्रपंचमहाना ॥
[illegible] ॥सोइहरिअभयमोक्षकेदाता।कर्मशुभाशुभविनविख्याता॥१६॥
[illegible] ोकव्यापकअसुरारी॥तिनकेअंशलोकजेअहहीं। तहँसबभूतवसतमुनिकहहीं॥
दोहा—मंडलप्रकृतित्रिमूर्धजो, ताकेमूर्धामाहिं । लसततहांवैकुंठहै, नित्यस्वरूपसदाहिं ॥
[illegible] ॥ सदासत्यसंकलपसोहावा ॥अघशोकादिशून्यतामहई । यहसिगरोनितथापितरहई॥१८॥
[illegible] । परवैकुंठपरतहगहेरे ॥ एकपादमेंअंडविराजे । तीनिपादवैकुंठहुछाजे ॥
[illegible] । सोपुरपावतहैध्रुवसोई ॥ तीनिलोककेभीतरमाहीं । एकपादजोलसतसदाहीं ॥
तहँजेजियविकुंठतेआवें । निजइच्छातेपुनितहँजावें ॥ सोइकपादअहंममघरहै । कर्मैतेपावततेहिनरहै ॥ १९ ॥
दोहा—अहैजीवक्षेत्रज्ञजो, सोद्वैमारगमाहँ । चलतसदामुनिवरसुनो, कहतअहौं तिनकाहँ ॥
साधनधूमादिकमगकेरो । कर्महिकोश्रुतिकियेनिवेरो ॥ अर्चिरादिमारगकोसाधन । प्रीतिसहितयदुपतिआराधन॥
अहैजीवदोहुनअधिकारी।मुनिवरतुमसोंकहौंविचारी॥२०॥ब्रह्मजोसूक्षमचिदचिदतनहै।तेहितेअंडभयोअतिघनहै ॥
तेहिब्रह्मांडकेरजोकारन । उपजोब्रह्मथूलचिदचिदतन ॥ सोइविराट्कोकरोबखानै । भूतेंद्रीगुणात्मकहिजानै ॥
तेहिअंडहिकेबाहेरभीतर । व्यापकहैपरेशसुखमाघर ॥ जैसेनिजकरतरणिसदाहीं।व्यापकअहैसकलथलमाहीं॥२१॥
दोहा—जबहरिनाभिसरोजते, हमउपजेजलमाहिं । पुरुषअंगतजितवलखी, मखसामग्री नाहिं ॥ २२ ॥
वनओषधिनसहितकुशपांती।देवयजनमखभूमिसोहाती॥गुणअनंतयुतजेहैंकाला।ऋतुवसंतआदिकौ विशाला॥२३॥
वस्तुपुरोडासादिकजेते । औरवस्तुपात्रादिककेते ॥ ओषधिजेयवादिकैअहहीं । नेहघृतादिकजेश्रुतिकहहीं ॥
रससोमादिहेमादिकलोहा।वारिमृत्तिकाअतिजोसोहा ॥ ऋगयजुसामवेदमुनिधर्मा । चारिहोतहुनकेजेकर्मा ॥ २४ ॥
ज्योतिष्टोमादिकजेनामा । स्वाहादिकजेमंत्रललामा ॥ पयभक्षणआदिव्रतवेसा । दक्षिणाआहुतिसुरनउदेसा ॥
दोहा—विधिप्रयोगसंकलपफल, अनुष्ठानपरकार ॥ २५ ॥ प्रायश्चित्तउपासना, अरुनिजकर्मअपार ॥
भगवतकोअर्पणकरब, इत्यादिकसबसाजु । संच्योंमैंहरिअंगते, सुनहुसत्यमुनिराजु ॥ २६ ॥
पुनिमखरूपपुरुषहरिकाहीं।यजननकियेमैंयज्ञहिमाहीं॥२७॥फेरिअहैंजेमुनितुवभ्राता।नौमरीचिआदिकविख्याता ॥
सावधानह्वैतेइमजेसै । व्यक्तरूपइंद्रादिकवैसे ॥ अरुअव्यक्तस्वरूपपरेसै । पूज्योभरिउरमोदनिवेसै ॥
तेहिउपरांतपितरऋषिसुरनर।वैवस्वतआदिकमनुजेवर॥असुरऔरसबनिजनिजकालै।मखतपूज्योदीनदयालै ॥२८॥
यहजोअहैसकलसंसारा । भगवानहिंमेंटिकोअपारा ॥ हमजोजीवचतुर्मुखअहहीं । सत्वादिकगुणरहितेरहहीं ॥
दोहा—तउप्रकृतिसंबंधते, सत्वादिकगुणकाहँ ॥ २९ ॥ ग्रहणकियेसृष्टिहिकरे, हरिप्रेरितसुखमाहँ ॥
तिनआधीनअहैशिवजेऊ । करनविश्वसंहारहितेऊ ॥ उत्पतिस्थितिलयशक्तिमहाना । धारणकियेतिन्हंभगवाना ॥
विष्णुरूपतेविश्वसुहाहीं । पालनकरतअहैंमुदमाहीं ॥ ३० ॥ हेसुतविश्वकरत्तहैजोई । तोहिपूंछ्योभाष्योंमेंसोई ॥
चेतनऔरअचेतनरूपा । जगहरितेनहिंभिन्नस्वरूपा॥यहभगवानसबनकेलायक । हैसबलोकनकेमुनिनायक॥३१॥
मुनिममवाणीकीअनुपमगति।मृषानहोतिकबहुँमानहुसति॥ममइंद्रीमगअसताहिमाहीं।कौनेहुसमयकबहुँनहिंजाहीं ॥
दोहा—अतिउत्कंठातेसहित, तेहितेमैंहरिकाहिं । रहहुँआपनेहृदयमें, धारणकियेसदाहिं ॥ ३२ ॥
हमश्रुतितपमयअहैमुनीशा । जेमरीचिआदिकप्रजईशा ॥ तऊहमकोशशिनवावें । तिनसबकेस्वामीहमभावें ॥
विघ्नरहितकरियोगअपारा । कियेएकाग्रचित्तबहुवारा ॥ तऊजन्मतातेममभयऊ।सोनिश्चितकरिजानिनगयऊ॥३३॥
यातेतेहिपदकरहुमणामा । जोप्रपन्नरक्षकसुखधामा ॥ सबहिसुसेव्यचरणहैसोई । तहितेसिद्धकार्यसबहोई॥

तमिनभनिजजानतनाहिअंत॥तमिनिजमायाकोभगवंता॥अंतकबहुंनहिजानतअहहीं।जानिआरकहायहकहहीं२४॥
दोहा—हमतुमशिवऔऔरऊ, जिनगतिजानिसकेन । औरनजानैतोकहा, कहिहैकोयहवेन ॥
ीपतिमायाकीगतिमहई। हमसबमतिअतिमोहितरहई॥निजदेहहिंआतमअनुमानै।छूटतनहिंअज्ञानअमानै॥२५॥
नेनकेअवतारनकीलीला । निशिदिनगावेंहमशुभशीला ॥ तावहिकरिकेंजिनहिंनजाने । तेहीकोप्रणामबहुठाने ॥
ादिअजन्मासोइभगवाना।आपहितेआपहीसुजाना॥आपहिकरिकेंआपहिकाहीं। उत्पतिथितिलयकरतसदाहीं२७
ानस्वरूपएकहीराजे । सत्यविशुद्धनित्यछविछाजे ॥ निजहितनिजहिप्रकाशितरहहीं । दूजेकीनअपेक्षागहहीं ॥
दोहा—पूर्णआदिअरुअंतविन, प्राकृतगुणतेहीन । अहैसमाधिकतेरहित, सुनहुमुनीशप्रवीन ॥ २८ ॥
नअरुसकलइंद्रियनजीते । छोड़िअखिलवासनाहीते ॥ ऐसेजेमुनिज्ञाननिधाने । तेजबपरमातमकोजाने ॥
वहींअसततर्केतेजोई । हैविरोधसोनाशहिहोई ॥ ३९ ॥ जौनविराटपुरुषसंसारा । सोहरिकेरप्रथमअवतारा ॥
तअसतहुमनकालस्वभावहु।द्रव्यविकारकरनगुणजानहु॥अंतरिक्षअरुस्वर्गहुलोका। हरिविभूतिजड़चेतनथोका॥
मशिवविष्णुऔरदक्षादिक । तुमहिंआदिदैसबसनकादिक॥स्वर्गअकाशमनुजतलल्लोका ।इनपालकजेअहैंअशोका
दोहा—विद्याधरगंधर्वअरु, चारणकेजेईश । यक्षराक्षसहुउरगसब, अरुजेअहैंअहीश ॥
ऋषिगणपितरनमेंजेवरहैं । दैत्येश्वरअरुसिद्धेश्वरहैं ॥ प्रेतहुभूत पिशाचहुजेते । कूष्मांडबालग्रहकेते ॥
ानवेंद्रजलजीवनिकाया । मृगपक्षिनअधीशयदुराया ॥ ४२ ॥ युतऐश्वर्यतेजउत्साहै । वेगक्षमाबलयुतलज्जाहै ॥
स्तुविभूतिबुद्धियुतजेती । अद्भुतशब्दवाचयुतकेती ॥ येसबअहैंवस्तुत्रैलोका । तेभगवतिभूपतिमुदथोका ॥४३॥
गलरूपदिव्यहरिजेई । व्यापकपरमपुरुषहैंतेई ॥ तिनकीलीलापरममनोहर । अवतारनकीकहैंजेमुनिवर ॥
दोहा—तिनकोहमतुमसोंकहब, क्रमतेहेमुनिनाथ । जेसुनिहैंतिनश्रुतिदुरित, दरिदैहैंमुदगाथ ॥ ४४ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदा-
म्बुनिधौश्रीमद्भागवतेद्वितीयस्कंधेषष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

दोहा—पुनिनारदमुनिसोंतहाँ, विधिबोलेहर्षाइ । हरिअवतारनकीकथा, सुनहुतातमनलाइ ॥
रनहेतधरणीउद्धारा । धर्योयज्ञशूकरअवतारा ॥ हिरण्याक्षजोदैत्यमहाना । आयोउदधिमध्यबलवाना ॥
रितेहिउदरडाढसेफार्यो । जिमिवासवपवितेगिरिदार्यो॥१॥ रुचिसंबंधहितेमुनिराई । आकूतीकेउदरहिंआई ॥
गटतभयेसुयज्ञनामके । भयेकांतदक्षिणावामके ॥ तातियसोंजगसुरउपजाये । लोकनकीवेदनामिटाये ॥
बस्वायंभुवमनुतहँआये । प्रभुहियज्ञहरिनामधराये ॥ २ ॥ देवहुतीकर्दमआगारा।नौभगिनिनयुतलियअवतारा॥
दोहा—कपिलदेवअसनामभो, निजजननीलखिदीन । सांख्यशास्त्रउपदेशकरि, ताकोनिजगतिदीन ॥ ३ ॥
त्रिऋषीशपुत्रअभिलाषी । ताकोतबसुतह्वैहौंभाषी ॥ दत्तात्रयलीन्ह्योअवतारा । अमरबजायेअमितनगारा ॥
ेहिपदपदुमपरागपवित्रा । यदुहयहयआदिकनृपचित्रा॥४॥भुक्तिमुक्तिनहिंसुलभघनेरी । विनप्रयासपाईमनकेरी॥
थमहिजगतसृजनकेहेतू । मैंकीन्ह्योबहुतपमुनिकेतू ॥ तासुप्रभावकृपाहरिकीन्हे । सनकादिकअवतारहिलीन्हे॥
खकल्पविनाशितज्ञाना।ताकोबहुविधिकियोबखाना॥जेहिकरिकैमुनिनिजहियमाहीं ।आतमतत्त्वहिलखतसदाहीं
दोहा—दक्षसुताजोधर्मतिय, मूर्तिनामविख्यात । नरनारायणहोतभे, ताकेतपअवदात ॥
तिनकेतपखंडनकेहेतू । मैनसैनसुरतियछविसेतू ॥ निकटजाइबहुकरीउपाई । तवनारायणतियप्रगटाई ॥
ासुरूपलखिगयेगुमाना । करिनसकीतपभंगमहाना॥६॥कामहिंकुपितदह्योत्रिपुरारी । हियतेसकेनक्रोधनिकारी॥
ोहरिउरप्रविशतमहँरोपू । अतिडेरातकिमिप्रगटेदोपू॥ऐसीजहाँकोपकीमतिहै । तहाँकौनविधिमनसिजगतिहै ७॥
उत्तानपादगृहपाहीं । पुनिध्रुवभयेनाथसुखमाहीं ॥ एकरह्योपितुअंककुमारा । बैठनकहँजबकियोविचारा ॥

योगनिलयवेधरणिरज, एकवारमतिमान । सोऊतिनहरिकेचरित, करिनहिंसकतबखान ॥ ४० ॥
हमऔतुमसनकादिकध्यावें । हरिचरित्रकोअंतनपावें ॥ गावतरहतसहसमुखशेपा । तेउनहिंलहतगुणनकोलेपा ॥
तौकिमिलहैअंतकोउआना। अद्भुतगुणचरित्रभगवाना ॥ ४१ ॥ करहिंदयाजापरयदुराई । ताकेहरिपदभक्तिमहाई॥
हमहमारजिनकेमतिनाहीं।श्वानशृगालभक्षतनमहीं ॥ तेदुस्तरमायाहरिकेरी। तरततुरतलागतिनहिंदेरी ॥ ४२ ॥
जेजेजानहिंहरिकीमाया । तिनकेनामकहहुँमुनिराया ॥ हमऔतुमऔशिवभगवाना । सनकादिकप्रहलादमहाना ॥
दोहा-मनुअरुसतरूपासती, प्रियव्रतभूपप्रवीन । अरुउत्तानहुपादनृप, अरुवर्हीप्राचीन ॥
रिभुअरुअंगहुध्रुवमहिपाला॥४३॥नृपइक्ष्वाकुपैलअरिकाला । अंबरीपरघुसगरययाती । गयमुचुकुंदगाधिअघघाती
मांधाताअलर्कमिथिलेशू । रंतिदेवशतधन्वनरेशू ॥ अरुभटभीपमदेवमहीपा । वलिअमूर्त्तरयभूपदिलीपा ॥ ४४ ॥
सौभरिशिविउतंकऋपिराजू । देवलपिप्पलादतपभ्राजू ॥ कृपउद्धवहुपराशरसंता । भूपविभीपणऔहनुमंता ॥
भूरिषेणऔश्रीशुकदेवा । पांडवविदुरभूपश्रुतिदेवा॥ आर्ष्टिपेणशौनकअरुव्यासा । पुंडरीकआदिकहरिदासा॥४५॥
दोहा-येहरिमायाजानहीं, तरहिंसिंधुसंसार । हरिपदरतिनिर्मलहिये, जानहिंसारासार ॥
नारिशूद्रऔयमनसँतापी । भिल्लव्याधपामरअतिपापी ॥ हरिदासनकोलहिउपदेशा । येऊहरिपुरकरहिंप्रवेशा ॥
तौजहँयोगमनहिंमुनिज्ञानी।तामेंअचरजकहाबखानी॥४६॥सदाशांतअरुअभयप्रदाता।ज्ञानस्वरूपशुद्धविख्याता॥
समदर्शीचिदचिदपरजोई । परमात्माकोतत्त्वहिसोई ॥ कारकक्रियाअर्थबहुतेरे । कारनसकेंजेहिवेदनिवेरे ॥
जाकेसन्मुखमेंमुनिराई । ठाढ़होतमायहुडरपाई ॥ ४७ ॥ सोईपरमपुरुपपदजानै । जाकोमुनिजनब्रह्मवखानै ॥
दोहा-सोइविशोकसोइनित्यसुख, जानैयतीसुजान । मनलगाइस्वर्गादिके, साधनतजेंमहान ॥
जिमिजलदायकनायककाहीं। कूपखनेकारजकछुनाहीं ॥४८॥ जासुकृपाकर्ममफलहोई।सकलसुमंगलप्रदहरिसोई ॥
व्योमसरिसव्यापकप्रभुरहहीं।जियवपुदोपनेकनहिंगहहीं॥४९॥ ऐसेभवभावनभगवाना । तातकियोसंक्षेपवखाना ॥
जड़चेतनपदार्थजगजेते । हरिशरीरजानहुसवतेते ॥ ५० ॥ यहभागवतमहासुखछायो । हरिविभूतिकोसंग्रहगायो ॥
यहमोसोंवर्ण्योजगदीशा । सोविस्तरअवकरहुँमुनीशा॥५१॥सर्वात्माजगअखिलअधारा । जाकोहमशिवलहैंनपारा॥
दोहा-ऐसेश्रीपतिचरणमें, जेहिविधिजनसुखधारि । करहिंभक्तिअतिपावनी, वर्णहुँसोइविचारि ॥
श्रद्धायुतहरिचरितको, सुनतसराहतमाहिं । वर्णतजोजनतासुमन, मायामोहितनाहिं ॥
पायमनुजतनुजगतमें, नहिंध्यायोयदुनाथ । धर्मअर्थअरुकामते, लग्योनफलकछुहाथ ॥
भईनयदुपतिपद्मपद, प्रीतिप्रतीतिपुनीति । वर्णाश्रमसवधर्मतप, कहाकियेवहुनीति ॥ ५३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा-
राजाधिराजश्रीमहाराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृतेश्रीमद्भागवतेद्वितीयस्कंधेआनंदांबुनिधौसप्तमस्तरंगः ॥

दोहा-ब्रह्मानारदकोसुनत, अतिअनुपमसंवाद । देवरातशुकदेवसों, पूँछ्योयुतअहलाद ॥

श्रीराजोवाच ।

जोब्रह्मानारदसोंगाये । दिव्यगुणीहरिकेगुणभाये ॥ सोनारदहरिदर्शप्रवीने । जेहिजेहिकह्योयथामुदभीने ॥ १ ॥
सोइजाननकोमेंअभिलापी । वेदविदांवरसोसवभापी ॥ कृष्णकथाअघगणसंहरणी । सकललोककीमंगलकरणी॥२॥
वर्णहुव्यासपुत्रवड़भागी । सोसुनिहमह्वैपरमविरागी ॥ कृष्णचंद्रमेंमनहिलगाई । छोड़हुँयहशरीरदुरदाई ॥ ३ ॥
कहतसुनतनिजकथासनेहू । तेहिहियकरततुरतहरिगेहू ॥ निजदासनसंगजउरमाहीं।कर्णरंध्रह्वैप्रविशिसदाहीं ॥ ४ ॥
दोहा-नाशिसकलअज्ञानहरि, प्रगटतज्ञानसमच्छ । जिमिवर्पामलमोचिके, शरदकरतजलस्वच्छ ॥ ५ ॥
जाकोमननिर्मलह्वैजाई । सोहरिपदनतजतऋपिराई॥जिमिप्रोपितनहितजतनिवेशू।छूटिजाततेहिसकलकलेशू ॥ ६ ॥

ालपणसंगसुखछाये। पितुनिदेशलहिवनहिंसिधाये॥ तिनसोंकरिविरोधलंकेशा। सकुलविपुलदललह्योकलेशा२३॥
समअरिपुरलावनवारे। निजदासनपरदयापसारे ॥ लखतउदधिदृगकंजविशाला। सीताविरहरोपभेलाला ॥
क्षणतेजतापतहँपाई। तपनलग्योसागरमुनिराई॥ मकरमहोरगनक्रसमूहा। अतिआकुलितकियोकुलिकूहा॥२४॥
दोहा—तवनरवपुधरिसिंधुतहँ, रघुपतिपदशिरनाइ। राखिभेंटकरिवहुविनय, दियोमार्गभयपाइ ॥
हेरावणउरमहँअतिजोरा। लागतऐरावतरदघोरा॥ टूटिटूकादिशिकियेप्रकासा। सोलखिकियेगर्वयुतहासा ॥
दशमुखकोरणधावत। वाणनवर्पतसन्मुखआवत ॥ चापटँकोरिरामरणतासू। येकवाणहनिकियोविनाशू॥२५॥
सुररूपभूपनतेभारी। भूकोभारभयोदुखकारी ॥ ताकेनाशकरनकेहेतू। रामकृष्णप्रगटेकुलकेतू ॥
योचरित्रविचित्रअपारो। निजमहिमाकोप्रगटनहारो ॥ सुनहुभक्तवशश्रीहरिकेरी। गतिजानहिंसवसंतनिवेरी ॥
दोहा—सोइममप्रभुवसुदेवगृह, प्रगटिसुदियोनिदेश। यहिनिशीथमेंमोहिंतू, लैचलुनंदनिवेश ॥
सुदेवहुतेहिआशुछिपाई। दीन्ह्योनंदभवनपहुँचाई॥२६॥ तहाँपूतनाप्राणनिकारचो। त्रयमासिकशकटहिसंहारचो॥
मोदरविचरतव्रजमाहीं। दियउखारियमलार्जुनकाहीं॥२७॥ कालीविपदूपितसरिनीरा। ताकोपानकरततेहितीरा॥
गोपालनकालसतायो। कृपादृष्टिकरिकृष्णजिआयो ॥ करनशुद्धयमुनाजलकाहीं। कालिकम्मरकूदेदहमाहीं ॥
लीफणमहँनर्त्तनकीन्ह्यो। रमणकद्वीपवासतेहिदीन्ह्यो॥२८॥ ताहीनिशिदावानलभारी। काननदहनलग्योदुखकारी।
दोहा—गोपनगैयनजरतलखि, हरियुतवलवलवान। सवकेनैनमुदाइकै, कियदावानलपान ॥ २९ ॥
ननिमथतदधिगहीमथानी। माखनकपिनदियोलैपानी ॥ तवसुतपैयशुदाअतिकोपी। वंधनकरनहेतुकरचोपी ॥
रुऊनभेतवलियदूजी। ऐसेगृहकीदामनपूजी ॥ कौनहुँसमैवालकोउजाई। यशुदासोंअसकह्योवुझाई ॥
सुतआजमृत्तिकाखाई। वरजेहुमान्योनहींकन्हाई ॥ तवयशुदाहरिसोंअसपूँछयो। मृदुखायोकैहैमुखछूँछयो ॥
मुखखोलिविश्वदर्शायो। सभयजननिकहँविभवजनायो३०वरुणपाशभयपितहिंछोडायो। व्योमासुरतेसखनबचायो
दोहा—दिवसश्रमितसोवतरजनि, गोकुलवासिनकाहिं। दियदेखाइवैकुंठतो, आनँदसिंधुसदाहिं ॥ ३१ ॥
क्रनिहतनिजसत्रविचारी। कीन्हीवारिवृष्टिव्रजभारी ॥ पीडितगोपनगोअनजानी। रक्षणहितकरिदयामहानी ॥
तवर्पकेनंददुलारे। छत्रकसमयककरगिरिधारे ॥ रहेसातदिनलोंयहिभाँती। रक्ष्योगौअनगोपजमाती ॥ ३२ ॥
जुमयंकमयूपनिछाई। शरदशर्वरीनिरखिकन्हाई ॥ व्रजतियमनसिजतापनशावत। रासरचतकलवेणुवजावत ॥
खिन्हूडतहँगोपिनकाहीं। हरणकियोनहिंडरचोतहाहीं ॥ ताकोआशुमारियदुराई। मणिदियरामहिंसखिनदेखाई॥
दोहा—खरप्रलंववककेशिवृप, मल्लमतंगहुकंस। कालयमनपौंड्रकनरक, शाल्वद्विविददनुजंस ॥
दंतवक्रवल्वलवली, रुक्मविदूरथवीर। हरिकरपर्शप्रभावते, पायेदिव्यशरीर ॥ ३४ ॥
वधपुरीमहँयदुपतिजाई। सप्तवृपभदमिकन्यापाई ॥ कुरुकेकयसृंजयकांबोजा। मगधमत्स्यकेनृपवरओजा ॥
नकोभीमपार्थवलहाथा। वधकराइदियगतियदुनाथा३५॥ कुमतिअल्पआयुपजनजानी। वेदअगमतिनकोअनुमानी
त्यवतीकेव्यासस्वरूपा। प्रगटभयेहरिसुनुमुनिभूपा॥ वेदवृक्षकोशाखविभागा। कियोद्विजनपैकरिअनुरागा ॥३६॥
दमार्गरततजिपाखंडा। होतभयेजवअसुरप्रचंडा ॥ अतिजवमयनिर्मितपुरतीने। तामेंवसिलोकनदुखदीने ॥
दोहा—तिनकोमनलोभनकरन, मतिमोहनकेकाज। श्रुतिविरुद्धमतप्रगटकिय, वुद्धरूपयदुराज ॥ ३७ ॥
वसज्जनआश्रमहुनमाहीं। कृष्णकथावर्णीकोउनाहीं ॥ शूद्रजातिराजाजवह्वैहें। द्विजपाखंडवेपह्वैजैहें ॥
वपितरपूजननहिंकरिहैं। पशुसमजनआचरणहिंधरिहैं॥ लैकरितवकल्कीअवतारा। हरिहैंहरिकलिपापअपारा ॥३८॥
सृष्टिसमैमहँसुनुमुनिराई। तवहमव्रह्मपिमनेशसमुदाई ॥ त्योंहीपालनसमयहमाहीं। धर्मयज्ञमनुसुरनृपकाहीं ॥
तसमैतामिकरहुविचारा। हरअधर्मअहिनसुरअपारा ॥ [illegible] ॥ ३९ ॥
दोहा—नोहिहरिपदनवलोहिकंप्यो, व्रह्मलोकअवदा [illegible] त ॥

सोसुनिचक्रितह्वैचतुरानन । तुरतचितैचारिहूदिशानन ॥ कहुँकाहूकोनिरख्योनाहीं । तवह्वैआश्रितआसनमाहीं ॥
सोइवाणीहितमनहिंविचारी।लग्योकरनतपपरमसुखारी॥ ७॥ उभयेंद्रीनिजमनअरुपवनै।ज्ञानशक्तितेकीन्ह्योदवनै ॥

दोहा-सवलोकनकोभासकर,तापिनश्रेष्ठतपलीन । दिव्यवर्पसाहस्रलौं, सोब्रह्मातपकीन ॥ ८ ॥

तवप्रसन्नह्वैकृष्णदेखायो । लोकआपनोअतिछविछायो ॥ जातेपरेऔरनहिंलोकू । जहँनकलेशमोहभयशोकू ॥
नित्यमुक्तकरनित्यनिवासू।नित्यमोदप्रदनित्यप्रकाशू ॥९॥ रजतमकोप्रकाशजहँनाहीं । शुद्धसत्वसोहतोसदाहीं ॥
जहाँकरैनहिंकालप्रवेशा । मायाकोनहिंनेकनिवेशा ॥ सुरअसुरनवंदितअतिपावन । जहाँवसैहरिभक्तसुहावन॥ १०॥
कमलनेत्रअतिसुंदरश्यामा.। पीतांवरधारेद्युतिधामा ॥ सिगरेचारिवाहुसुकुमारा । मणिनजटितभूपणउरहारा ॥

दोहा-कोउप्रवालद्युतिसोहहीं, कोउवैडूर्यमृणाल । भ्राजमानमाथेमहा, मुकुटमणिनकीमाल ॥ ११ ॥

प्रभामानसिद्धनकीनाना।राजिरहींजहँराजिविमाना।उत्तमनारिप्रकाशप्रकाशित।जिमिघनदामिनिघननभभासित १२
रूपवतीजहँरमासुहाई । भू लीलादिसंगसुखदाई ॥ झूलतसुखदहिंडोलनमाहीं । गावतयेरिभवँरचहुँघाहीं ॥
कमलकरनकमलासुखभरती।कृष्णकमलपदसेवनकरती॥ऐसोजोवैकुंठसोहायो ।ताकेमध्यमहाछविछायो ॥ १३ ॥
सवसंतनकोरक्षकजोई । रमायज्ञजगनायकसोई ॥ ऐसेकृपासिंधुगोविंदै । ब्रह्मानिरख्योसहितअनंदै ॥

दोहा-कुमुदप्रवलअरिहनअमल, नंद सुनंदप्रचंड । निजपार्पदसेवितसदा, विक्रमजासुअखंड ॥ १४ ॥

करहिंदासपैसदाप्रसादा । जिनकटाक्षनिवसतअहलादा॥मृदुमुसक्यानिनैनकछुलाला।विलसैवदनविलासविशाला॥
कुंडलकीटहुकटकविराजै । पीतांवरभुजचारिहुराजै ॥ लक्ष्मीलञ्छितवक्षससोहै ॥१५॥ वरआसनआसितमनमोहै ॥
शक्तिपचीसलसैंचहुँओरा । विभवसहितजेऔरनठोरा ॥ ऐसेश्रीवैकुंठविहारी ॥ १६ ॥ चतुराननमुदसहितनिहारी ॥
आनँदसिंधुमगनह्वैगयऊ । प्रेमआशुरोमांचहुभयऊ ॥ ब्रह्मानाथआपनोचीन्ह्यो । चरणकमलकोवंदनकीन्ह्यो ॥

दोहा-जोप्रभुदुर्लभहैसदा, कीन्हेआनउपाइ । प्रेमाभक्तिहिकरतउर, सहजहिआवतधाइ ॥ १७ ॥

हरिलखिप्रीतिवंतकमलासन । विश्वकरनहितचाहतशासन॥विधिकोकरगहिमृदुमुसकाई।मधुरगिराबोलेयदुराई१८

श्रीभगवानुवाच ।

जगसिरजनइच्छाकरिधाता । सहसवर्पतपकियअवदाता॥मोहितोपितकीन्ह्योसुखमाहीं।जोमेंदुर्लभदंभिनकाहीं १९
माँगहुविधिवांछितवरदाना । होइतुम्हारआशुकल्याना॥जोजनमंगलसाधनराचो । तेहिममदर्शअवधिहैसांचो॥२०॥
जोतपतपमेंकियउपदेशू । सोईसुनिकियपरमकलेशू ॥ मेरोलोकदर्शप्रजराऊ । सोमेरोसंकल्पप्रभाऊ ॥ २१ ॥

दोहा-प्रजासृजनमेंमोहयुत, तुमकोलख्योविरंचि । तवमेंतपउपदेशाकिय, जोराख्योउर्शंचि ॥

हैविशेपितपहृदयहमारो । तपआतमाममवेदउचारो॥२२॥तपसोंजगहमसिरजनकरहीं । तपसोंपुनिसिगरोसंहरहीं॥
तपसोंपालनतुमउरआनो । दुस्तरतपप्रभावममजानो ॥ २३ ॥ सुनिमधुसूदनवैनसुहाये । वोलेब्रह्माआनँदछाये ॥

श्रीब्रह्मोवाच ।

सकलभूतउरगृहभगवाना । जानहुँसवअविहितविज्ञाना ॥२४॥ तद्यपिसुनहुविनयप्रभुमेरी।सवइच्छापूरहुहियकेरी ॥
दीजैमतिमोहिनाथअनूपा । जातेजानहुँराउररूपा॥२५॥आत्मरूपयहजगतसुहायो । निजसंकल्पहिताहिवढ़ायो ॥

दोहा-सिरजतपालतहरतहो, आपहियहसंसार ॥ २६ ॥ सतिसंकल्पकरहुसदा, मकरीसारिसविहार ॥

तैसहिवुद्धिसृष्टिकीकरनी । माधोमोहिंदीजैभवतरनी॥२७॥तुवशासनआलसतजिनाथा।करहुँसदाजेहिविधिमुदगाथा
मोपरकृपाकरहुहरिसोई । प्रजासृजतवंधननहिंहोई॥२८॥करगहिमोहिसखाकरिलीन्ह्यो । मोपरपरमअनुग्रहकीन्ह्यो
उत्तममध्यमअधमप्रजनको।सृजतहोइअभिमानननतनको २९ यहसुनिकृष्णमोदउरछावत।चतुरश्लोकीकह्योभागवत
जाकोहैअपारविस्तारा । वर्ण्योंअष्टादशहिहजारा ॥ जाहिसुनतज्ञानिहुँअज्ञानी । होतसदाहरिचरणनध्यानी ॥

दोहा-दशलक्षणतेयुक्तजो, सोईमहापुरान । चतुरश्लोकीमेंलसो, लक्षणसोइमहान ॥

निर्दोंपीहैजीवस्वरूपा। ताकोपंचभूतकृतरूपा॥ सोधौंस्वतःहोतमुनिराई। कैधौंकौनौकारणपाई॥
आपयथारथजानहुस्वामी। मोसोंकहियजानिअनुगामी॥ ७॥जाकेनाभिसरोरुहजायो।सकललोकआधारसोहायो
सोपरमात्माजीवसमाना। हैहैंतनुधारीमतिमाना॥ जीवईशमहँकौनविशेषू। कहौबुझाइनराखहुशेषू॥ ८
दोहा—अजसिरजतभूतनविपुल, जासुअनुग्रहपाइ। नाभिपद्मथितह्वैलख्यो,जाकोरूपवनाइ॥९॥
जगउत्पतिपालनसंहारा। करतरहतजोवारहिंवारा॥ मायापतिमायाअलगाई। सोकहँसोवतहैमुनिराई॥ १०
पुरुषावयवलोकयुतपाला। कल्पितहैअससुन्योकृपाला॥ लोकपालयुतलोकनतेरे।पुरुषअंगहैरचितघनेरे॥ ११
कहियेकल्पविकल्पप्रमाना।भूतभविषअरुवर्तहुमाना॥१२॥सूक्ष्मथूलकालहुगतिकाहीं।जेजैसेफलकर्मनिमाहीं१३
जौनदेशमेंजाकोजोफल। होतसोजौनकर्मकीन्हेंभल॥ १४॥
दोहा—भुवपतालदिशिदीपनभ, गिरिग्रहसरिउडुसिंधु। इनकोइनवासिनजनम, वर्णहुकरुणासिंधु॥ १५॥
वहिरंतरब्रह्मांडप्रमाना। चरितसकलभागवतमहाना॥ वर्णाश्रमनिर्णयकहिदेहू॥१६॥ हरिअवतारचरितयुतनेहू
युगनस्वरूपयुगनपरिमाना।युगनधर्मकोकरहुवखाना॥१७॥वर्णहुमनुजधर्मसाधारण।अरुविशेषिसवकरहुउचारण
व्यौहारिनराजर्षिनकर्म। औरकहौसवआपदधर्मं॥ १८॥ वर्णहुसंख्यातत्त्वनकेरी। तिनतिनकारणरूपनिवेरी
हरिपूजनकोकहौप्रकारा। आत्मयोगहूव्यासकुमारा॥१९॥योगिनकेऐश्वर्यप्रकाशा। तिनकोसूक्ष्मशरीरविनाशा
दोहा—वेदऔरउपवेदसव, औइतिहासपुरान। धर्मशास्त्रआदिकनके, लक्षणकरौवखान॥ २०॥
भूतनउत्पतिथितिसंहारा। अर्थधर्मअरुकामप्रकारा॥ यज्ञतड़ागादिककोधर्मा।औरहुसकलकामनाकर्मा॥ २१।
कर्मशेषयुतजीवनकेरे। कहियेतिनकेजन्मनिवेरे॥ अरुपाखंडिनधर्मवखानो। जीवनवंधमोक्षसवगानो॥
मोक्षदशाजसजीवस्वरूपा। वर्णहुसोकरिकृपाअनूपा॥२२॥जोस्वतंत्रवसुदेवकुमारा। मायाकरिवहुकरतविहारा।
प्रलयसमैमहँजिमितजिमाया।साक्षीसमसोहतयदुराया॥२३॥येप्रश्नकेउत्तरजेते। शरणागतगुणिवर्णहुतेते॥२४॥
दोहा—येसवप्रश्ननकेअहो, ज्ञाताविधिसमआप। तातेसववर्णनकरहु, मेटहुसंशयताप॥
पूर्वपुरुपनकेपथमाहीं। चलतइतरजनरहतसदाहीं॥ २५॥ ब्रह्मशापलहिदुसहघनेरी। अवधिसातदिनकीहैमेरी॥
भोजनतजे नजैहैंप्राना।करतकृष्णचरितामृतपाना२६ (सू.उ.)॥यहिविधिजवपूँछ्योनृपराई।कृष्णकथमेंप्रीतिलगाई
ब्रह्मराततवअतिहर्षाई। सभामध्यशौनकमुनिराई॥२७॥ कह्योमहाभागवतपुराना। अतिअनुपमजोवेदसमाना॥
ब्रह्मकल्पमहँश्रीभगवाना॥ कीन्ह्योविविधसोजासुवखाना॥२८॥जौनजौनपांडवकुलकेतू।पूँछ्योश्रीशुकतेमतिसेतू॥
दोहा—सोसोउत्तरक्रमहिंते, श्रीशुकदेवसुजान। मुनिमंडलमधिमुदितह्वै, लागेकरनवखान॥ २९॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृते श्रीमद्भागवतेआनंदांबुनिधौद्वितीयस्कंधेअष्टमस्तरंगः॥ ८॥

दोहा—ज्ञानरूपतनभिन्नजिय, हरिमायाविनपाइ। भोगनकोसमरथनहीं, अर्थनकोललचाइ॥
जैसेसोवतपुरुपनकाहीं। होतस्वप्नमायाविननाहीं॥ १॥ वहुरूपामायातेभूपा। देखिपरतजियहैवहुरूपा॥
मायात्रिगुणरमतवहुकाल।।हमहमारजनकहतभुआला।२।मायाकालविगतनिजमहिमा।रमतअमोहजीवजनतेहिमा
तवहिंकालअरुमायाफंदा। छोडिअहंममहोतअनंदा॥३॥विधिव्रतलखिनिष्कपटमुरारी। ह्वैप्रसन्नजगमंगलकारी॥
विधिकोनिजस्वरूपदर्शावत।कह्योजोवचनसत्यमनभावत४सोहमतुमसोंयहिक्षणमाहीं।कहिहंसवसंशयकछुनाहीं।
दोहा—नारायणकेनाभिते, प्रगटभयोअरविंद। तातेचतुराननभये, जोगुरुसुरमुनिवृंद॥
आदिदेवनिजआसनमाहीं।कियविचारजगउत्पतिकाहीं॥ यहप्रपंचविधिनेहिविधिहोई।लहीविरंचिबुद्धिनहिंसोई॥५॥
...चतुराननगुणतसुन्योतपनपनिजकानन॥ जोतपनिप्रनकोधनगायो।जाकोकरिअमुरनजयपायो॥६॥

श्रीभगवानुवाच।

दोहा–जोअतिगोपितज्ञानमम, अंगसहितविज्ञान। भक्तिसहितमेंदेतहौं, लीजैविधिमतिमान॥ ३०॥
जोमोमेंजसभावमम, जसगुणकर्महुरूप। होइतत्त्वविज्ञानतस, लहिममकृपाअनूप॥ ३१॥
सृष्टिपूर्वचिदअचिदवपु, रहेहमहिंनहिंआन। मध्यहुहमऔअंतमें, बच्योसोहमहिंसुजान॥ ३२॥
चेतनमेंजानोपरे, हैनहिंचेतनवास। सोममायाजानियो, जसतमजसआभास॥ ३३॥
महाभूतजिमिभूतमें, अहैंनहैकरतार। तैसेलघुवड़जगतमें, जानहुवासहमार॥ ३४॥
मोरतत्त्वजानोचहै, आतमतत्त्वसोजान। औरतत्त्वजानैनहीं, दोउतेममविभुज्ञान॥ ३५॥
हैइकाग्रयहमोरमत, धारहुविधिकरिछोह। कल्पविकल्पहुमेंकवहुँ, तुमहिंनह्वैहैमोह॥ ३६॥
श्रीभगवानुवाच। ज्ञानंपरमगुह्यंमेयद्विज्ञानसमन्वितम्। सरहस्यंतदंगंचगृहाणगदितंमया॥
यावानहंयथाभावोयद्रूपगुणकर्मकः। तथैवतत्त्वविज्ञानमस्तुतेमदनुग्रहात्॥
अहमेवासमेवाग्रेनान्यद्यत्सदसत्परम्। पश्चादहंयदेतच्चयोवशिष्येतसोस्म्यहम्॥
ऋतेर्थंयत्प्रतीयेतनप्रतीयेतचात्मनि। तद्विद्यादात्मनोमायांयथाभासोयथातमः॥
यथामहांतिभूतानिभूतेषूच्चावचेष्वनु। प्रविष्टान्यप्रविष्टानितथातेषुनतेष्वहम्॥
एतावदेवजिज्ञास्यंतत्त्वजिज्ञासुनात्मनः। अन्वयव्यतिरेकाभ्यांयत्स्यात्सर्वत्रसर्वदा॥
एतन्मतंसमातिष्ठपरमेणसमाधिना। भवान्कल्पविकल्पेपुनविमुह्यतिकर्हिचित्॥

श्रीशुकउवाच।

दोहा–यहिविधिविधिउपदेशकरि, सोअनादिभगवान। ताकेदेखतरूपनिज, कीन्ह्योअंतर्धान॥ ३७॥
भेअदृश्यजवशारंगपानी।तवहिंविरंचिजोरियुगपानी॥करिकैहरिकोअमितप्रणामा।सृज्योपूर्ववतजगजनधामा॥३८॥
एकसमैधर्मज्ञप्रजेशा। चाहतजनमंगलहिनरेशा॥ स्वारथसिद्धहेतहपांई। करतभयेयमनियममहाई॥ ३९॥
तिनकेसवपुत्रनमेंप्यारे। शीलविनयसमदमहिअगारे॥४०॥महाभागवतनारदजाई। पितुकहँतोष्योकरिसेवकाई॥
मायापतिहरिकीजोमाया।सोजाननकीकरीउपाया॥४१॥अतिप्रसन्ननिजजनकहिजानी।हरिचरित्रसुनिबोचितठानी॥
दोहा–जोतुमपूँछ्योमोहिंनृप, सोइनारदविधिपाहिं। पूंछ्योपरमहुलाससों, करिश्रद्धामनमाहिं॥ ४२॥
दशलक्षणलक्षितसुखद, श्रीभागवतपुरान। नारदसोंवर्ण्योयही, ब्रह्मापरमसुजान॥ ४३॥
जगकरनिजसुतब्रह्मको, हरिदिययहीनिदेश। नारदसोसरस्वतितटे, व्यासहिकियउपदेश॥ ४४॥
कैसेभयोविराटसो, यहजोपूँछ्योभूप। ताकोअरुसवप्रश्नको, उत्तरसुनोअनूप॥ ४५॥

इतिसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीमद्भा
गवतेद्वितीयस्कंधेआनंदांबुनिधौनवमस्तरंगः॥ ९॥

दोहा–तहँशुकदेवप्रमोदभरि,लक्षणदशहुपुरान। भूपपरीक्षितसोंकह्यो, संयुतअर्थमहान॥

श्रीशुकउवाच।

सर्गविसर्गथानअरुपोषण। ऊतिमन्वंतरईशकथागण॥ अरुनिरोधअरुमुक्तिआश्रयहु॥१॥एदशलक्षणमहापुराणहु॥
दशमह्यानादितनवकेलक्षण।मुदितयथाश्रुतकह्योविचक्षण॥२॥ नभमहिजलतेजहुवहगंधू।शब्दस्पर्शरूपरसगंधू॥
पायुउपस्थवाकपदपानी। कर्मेंद्रियपांचवखानी॥ घ्राणश्रोत्ररसनात्वचनैना। ज्ञानेंद्रियकह्यासचैना॥
अहंकारमनबुधिचितनेंहूं। अंतःकरणचतुष्टयतेंहूं॥ इनकोसवकोउतपतिनांहूं। भूपतिसर्गकहावतसांहूं॥

वपुथूलसूक्ष्मउभयहरिकेसदाकृष्णअधीनहैं। तेहितेनताहिउपासहींजेपुरुषपरमप्रवीनहैं॥ ३५॥
हरिवाच्यवाचककोशरीरीविविधवपुपकोसोइधरै। नहिंकर्मवशसंकल्पसिधिजगनामरूपक्रियाकरै ॥ ३६
मनुप्रजापतिअरुदेवऋषिपितिमिपितरचारणसिद्धजे। गंधर्वविद्याधरअसुरगुह्यकहुस्वर्गप्रसिद्धजे॥ ३७।
अपसराकिन्नरनागसर्पहुउरगअरुकिंपुरुषहैं। अरुभूतप्रेतपिशाचराक्षसमात्रिगणकूष्मांडहैं॥ ३८॥
उन्मादऔरविनायकहुग्रहयातुधानवितालहैं। खगमृगहुनगपशुवृक्षत्यौंहींसरीसृपहुकरालहैं॥ ३९॥
अस्थावरहुजंगमहुविधिजेतेइचतुर्विधिजगलसैं। उद्भिजजरायुजश्वेदअंडजजलथलौनभजेवसैं॥
उत्तमहुमध्यमअधमकर्मनकेअमितफलजेसबै। तिनकोसृज्योकरतारअंतर्यामिहैप्रभुकेसबै॥ ४०॥
तहँसकलगुणतेदेवरजतेमनुजतमतेनारकी। तेहुमाहँसुनियेनृपतित्रयत्रयअहैविधिविस्तारकी॥ ४१॥
सुरमेंत्रिगुणनरमेंत्रिगुणनारकिहुमेंगुणतीनहैं। रचनाविचित्रहिविश्वकीइमिरचीकृष्णप्रवीनहैं॥
सोइजगतकारकधर्मवपुधरविविधविधतनुधरिलहीं॥४२॥ कालाग्निहरहियजामिहैभगवानयहजगघालहं

दोहा—जिमिरविकरसोंतमनशै, जिमिवनपवनहिंपाइ। रुद्ररूपसोंकृष्णत्यों, यहजगदेहिंनशाइ॥ ४३॥

त्रिगुणरूपतेश्रीभगवाना। उत्पतिथितिलयकरहिंमहाना॥ लगैनतिनकोत्रिविधविकारा। यहिविधिजानैंसंतउदारा ४
जैसेजनजन्मादिघनेरे। तैसेनहिंपरमातमकेरे॥ ईशअधीननगुणिजगलोगू। करतकर्मभोगहिंदुखभोगू॥
तासुनिवारनहेतुउधारन। हरिकरिकृपालेहिंअवतारन ४५ ब्रह्मकल्पसविकल्पकह्योंयह। सिरजनविधिइमिसबकल्पन
कालस्थूलसूक्ष्मपरिमाना। कल्पनलक्षणरूपविधाना॥ आगेसबकहिहौंनृपराई। पाद्मकल्पअबसुनहुबनाई॥ ४६

दोहा—परिक्षितशुकसंवादसुनि, शौंनकआनँदपाइ। बहुरिकह्योतहँसूतसों, यहमोहिंदेहुसुनाइ॥

शौंनकउवाच।

दुस्त्यजतजिबंधुनपरिवारा। करतधरणिकेतीर्थअपारा॥ विदुरसोइभागवतप्रधाना। मैत्रेयसोंप्रश्नजुठाना॥ ४८
सोमित्रासुतआनँदछायो। जौनविदुरकोसकलसुनायो॥ कहसंवादभयोतिनकेरो। सोकहिमुदम्बहिंदेहुघनेरो॥४९
धर्मद्वविदुरत्यागिसोदावन। कारणकौनतज्योकुलपावन॥ कौनहेतुतेपुनिगृहआयो। उद्धवकोकोनिथलपायो॥५
पदसरसिजमधुमृतपुजाना। सुनतहोतमोहिंमोदमहाना॥ शौंनकवचनसुनततहपांई। वोलेसूतप्रीतिउरछाई॥

श्रीसूतउवाच।

दोहा—भूपपरीक्षितसोंकह्यो, जोशुकदेवसुजान। सोप्रश्नअनुसारते, सुनियेकरहुँबखान॥
समुनभनिविदुरहिमैत्रेय, भापकृष्णगतिचार। द्वादशिआनंदसिंधुमो, द्वितियस्कंधतयार॥ ५१॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृत श्रीमद्भागवतमाहात्म्येआनंदांबुनिधौदशमस्तरंगः॥ १०॥

दशमतरंगसमाप्त, भाषाद्वितियस्कंध। पदमसमानसुदितभयो, संयुतछंदप्रबंध॥
श्री द्वितीयस्कंधसमाप्त २.

तृतीय स्कन्ध
परीक्षित्
शुक
विदुर
मैत्रेय
शेष
सनत्कुमार
ब्रम्हा
शेषशायी
लक्ष्मी
शतरूपा
कश्यप
दिति
जयविजय
सनत्कुमार
वराह
कपिल
देवहूती
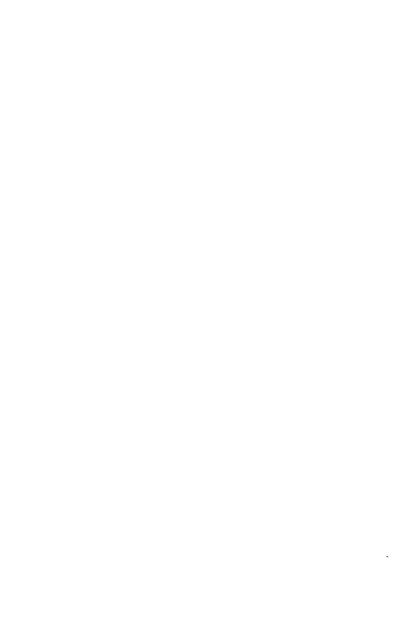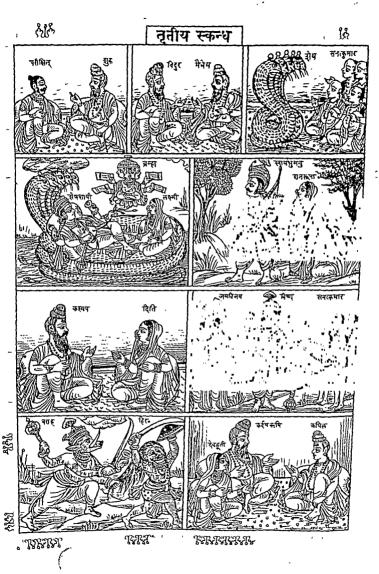
श्रीगणेशायनमः ।

अथ श्रीमद्भागवतआनन्दाम्बुनिधि ।

तृतीयस्कन्धप्रारम्भः ।

सोरठा–जयद्वारकाअधीश, चारिबाहुरुक्मिणिरमण । तुवपदनावहुँशीश, रचियेअस्कंधहितृतिय ॥ १ ॥
जयगजवदनगणेश, विघ्नकदनप्रदसुखसदन । एकरदनसमवेश, मदनकदनकेवरनँदन ॥ २ ॥
श्रीहरिगुरूमुकुंद, मोसमपापिनपूतकर । तासुचरणअरविन्द, जगवंदितवंदनकरौं ॥ ३ ॥
अष्टादशहुपुराण, जिनकेमुखतेप्रगटभे । व्यासरूपभगवान, तासुचरणमेंशिरधरौं ॥ ४ ॥
कृष्णकथामृतधार, जेहिआननिकसतसदा । ऐसेव्यासकुमार, शुकाचार्यपदशिरधरौं ॥ ५ ॥
बांधवेशमहराज, विश्वनाथपदनतिकरौं । रामभक्त शिरताज, जनकजनकसमजगजगत ॥ ६ ॥
दोहा–कहिदूसरअस्कंधशुक, कुरुपतिसोंमुदमान । पुनितीजेअस्कंधशुक, लागेकरनबखान ॥

श्रीशुकउवाच ।

यसंपतिपूरणनिजगेहू । ताहिछोंडिहरिपदकरिनेहू ॥ विदुरमहामतिवनहिंसिधारे । मैत्रेयहुतहँमिलेउदारे ॥
नसोंयहीप्रश्नतिनकीने । जोतुमपूँछ्योनृपतिप्रवीने ॥ १ ॥ जेपांडवकेसदासलाही। श्रीभगवान्कृष्णअरिदाही॥
सवगृहसमकुरुपतिगेहू । जेहिताजिकियोविदुरगृहनेहू ॥ कुरुपतिकेबहुविधिपकवाना।तिनकोमानितुच्छभगवाना॥
दुरभवनअपनोगनिआये।फलहुछोंडिछिलकाप्रभुखाये२सुनिशुकदेवगिराअतिनीकी। कुरुपतिकहीफेरनिजजीकी

राजोवाच ।

दोहा–कहाँविदुरमैत्रेयको, भयोसमागमनाथ । होतभयोसंवादकव, यहकहिकरहु सनाथ ॥ ३ ॥
दुरप्रश्नकोअर्थनथोरा । भरोवेदअर्थहिसवठोरा ॥ साधुनसवहिंसराहनलायक । मित्रासुतकेअतिमुददायक ॥४॥

सूतउवाच ।

हिविधिजवनरपतिशुकपाहीं । पूँछतभेमोदितमनमाहीं ॥ तवकरिपरमप्रीतिसुखपागे । श्रीशुकदेवकहनतवलागे ॥

श्रीशुकउवाच ।

श्रवणकरहुभूपतिमतिमाना । अवमैंसिगरोकरहुँबखाना॥५॥जवधृतराष्ट्रअंधमहिपाला।वसतहस्तिनापुरहिउताला॥
निजसुतदुर्योधनआदिनको । कुमतीअधरममर्यादिनको ॥ निजपुत्रनपरप्रीतिघनेरी । करनलग्योनृपर्नातिनहेरी ॥
दोहा–दैप्रतीतिअनरीतिकरि, लाक्षाभवनवनाइ । पृथासहितपांडवनको, दियोटिकायजराइ ॥ ६ ॥
ताहीदिनतहँएकनिपादी । पंचसुतनयुतअतिअहलादी ॥ लाखभवनमहँआयवसतभे । सुतनसहितसोतहाँजरतिभे॥
पांडुसुतनकहँविदुरसुजाना । दियोनिकासिलोगनहिंजाना॥मातसहितपांडववनवासिके।पायोअमितकलेशनिदरिके॥
द्रुपदनगरमहँपुनिसवजाई । वेध्योमत्स्यविजयसुखछाई ॥ द्रुपदसुताकहँव्याहितहाहीं । आयेपुनिहस्तिनपुरकाहीं॥
यदुपतिकृपाविभवअतिबाढो । दुर्योधनउरभोदुखगाढो ॥ तवशकुनिहिंदुःशासनकरनै । कियोमंत्रकुरुपतिछलकरनै ॥
दोहा–सभायुधिष्ठिरराजको, भाइनसहितवोलाइ । शकुनिसंगमेंछलसहित, जुवायुद्धकराइ ॥
कोपराज्यतिपलीन्हयोजीती॥पुनिकीन्हयोअतिशयअनरीती॥द्रुपदसुताकहँसभामँझारी ।गहिकचदुःशासनभटभारी
ल्यावतभयोधर्मनहिंचीन्हयो॥अंधभूपवारणनहिंकीन्हयो॥रजस्वलाद्रौपदिअतिगेवाने । हगनलनेकुचकुंकुमधोवति
धर्मभूपलेतियअरुभाई । काननकोनिकसेदुखछाई ॥ वारहवर्षहुवनमाहीं । कीन्हेंवहुविधिचरितनदाँहीं॥

दोहा-भाइनसहितसुयोधनै, भाइनयुतनृपधर्म । मारिविजयलीन्ह्योंतुरत, कियोअपूरवकर्म ॥

[illegible] नरेशा । फैल्योसातहुद्वीपनिदेशा ॥ श्रीयदुपतिकीपायसहाई । भयेअजातशत्रुनृपराई ॥ २० ॥

[illegible] । तवद्विजभारतयुद्धसुनाये ॥ जिमिमारुतवशवंशनमाहीं । पावकप्रगटदहततिनकाहीं ॥

[illegible]

[illegible] । नृपपृथुमनुअसिताग्निहुकेरो ॥ स्वामिकार्तिकवायुस्वदासू । नंदीश्वरकोविमलनिवासू ॥

दोहा-श्राद्धदेवआदिकनके, ॥ २२ ॥ औरहुसुरमुनिकेर । आश्रमसोहहिंअतिविमल, हरिमंदिरचहुँ फेर ॥

[illegible] । लिखेसुदर्शनचक्रअघोरा ॥ जिनकेदृगमेंदेखतराजा । सुमिरिपरैमनमेंयदुराजा ॥ २३ ॥

[illegible] । चलेविदुरतहँतेअतिसुखभरि ॥ जांगलमत्स्यऔरकुरुदेशन । अरुसौवीरसुराष्ट्रसुवेशन ॥

[illegible] मथुराकोपुनिकियोपयाना ॥ तहँभागवतउद्धवहिदेख्यो । आनँदअवधआशुउरलेख्यो ॥

[illegible] । शिष्यवृहस्पतिनीतिअगारो ॥ मिलेविदुरउद्धवकहँधाई । आनँदांबुधिआंसुन्हाई ॥

दोहा-पूँछिकुशलअतिप्रीतिसों, आदरकरिवैठाय । हरिदासनकीकुशलपुनि, पूँछीहर्षवढाय ॥ २५ ॥

सुनिविधिविनयहरनभूभारा । पुरुषप्रधानलियेअवतारा ॥ तेहरिभूकरभारअपारा । कुशलदोउवसुदेवकुमारा ॥
मोदितवसहिंशौरिकेगेहू । निजदासनपरकरतसनेहू ॥ २६ ॥ कुरवंशिनकेजेवहनोई । हैंवसुदेवकुशलमुदमोई ॥
जेभगनिनकोकियोविवाहू । वहुदाइजदीन्ह्योसउछाहू ॥ २७ ॥ जोयदुवंशिनकटकअधीशा । हैप्रद्युम्नमहारथिईशा ॥
यदुपतिकोपाटवीकुमारा । एकहित्रिभुवनजीतनहारा ॥ रुक्मिणिजेहिविप्रनपदपूजी । पायोपुत्रआशसवपूजी ॥

दोहा-जेहिसन्मुखसुरअसुरनृप, महारथीवरजोर । वाणधारधावतधुवै, धधकजरैचहुँओर ॥

सोकुशलीहैकृष्णकुमारा । मोसनउद्धवकरहुउचारा ॥ २८ ॥ भोजदशार्हवृष्णि यदुवंशी । तिनकोनायकजगतप्रशंसी ॥
जाहिकृष्णअभिषेकहिकीन्हें । देवराजजाकोवलदीन्हें ॥ ऐसोउग्रसेनमहराजा । कुशलअहैसवसहितसमाजा ॥ २९ ॥
अवकहुजाम्बवतीसुतकेरी । जापरमेरीप्रीतिघनेरी ॥ स्वामिकार्तिककोअवतारा । जेहिसमसुंदरमैंननिहारा ॥
सांवनामजाकोजगमाहीं । महारथिनमहँश्रेष्ठसदाहीं ॥ ३० ॥ अवकहुकुशलसात्यकीकेरी । जाहिकृष्णपरप्रीतिघनेरी ॥

दोहा-धनुविद्याजोपार्थसों, पढ्योमहारणधीर । वडोमुसाहिवकृष्णको, दायकअरिउरपीर ॥

सदाकरैयदुपतिसेवकाई । योगिनदुर्लभसोगतिपाई ॥ ३१ ॥ अवकहुकुशलश्वफल्कतनयकी । नामअक्रूरजासुमतिनयकी
हरिपदचिह्नितजोसुखभरणी । लोट्योलाजछोंडिव्रजधरणी ॥ कृष्णप्रेमरसमगनमहाना । रह्योनजाकोतनमनभाना ३२ ॥
अवकहुकुशलदेवकीकेरी । जेहिसमद्वितियभागनहिंहेरी ॥ परब्रह्मजोजन्योकुमारा । वेदत्रयिजेहिमखविस्तारा ॥ ३३ ॥
अवअनिरुद्धकुशलकहुप्यारे । यदुवंशिनमहँजेवलवारे ॥ जेशास्त्रनकेकारणअहहीं । मनकेनायकजेहिश्रुतिकहहीं ॥ ३४ ॥

दोहा-चारुदेष्णगदआदिकी, उद्धवकुशलवखान । जिनकोअतिप्यारेसदा, रहहिंकृष्णभगवान ॥ ३५ ॥

अवकहुधर्मराजकुशलाई । विजयजुहरिप्रतापतेपाई ॥ अर्जुनभुजवलरहतनिशंका । लोकनमेंजेहिओजअतंका ॥
पालतसदाधर्ममर्यादा । देतसाधुविप्रनअह्लादा ॥ दुर्योधनजेहिसभानिहारी । भूल्योभूपतिभोभ्रमभारी ॥
सातहुद्वीपजासुभोशासन । सुरउअसुरकरसकेविनाशन ॥ ३६ ॥ अवकहुभीमसेनकुशलाता । जोसवबंधुकुरुपतिदिनिपाता
गदागहेविचरतरणमाहीं । चरणघातमहिसकिलतजाहीं ॥ ३७ ॥ अवभाषहुअर्जुनकुशलाता । धनुगांडीवजासुविख्याता ॥

दोहा-दीन्ह्योशत्रुनमुंडसों, खंडखंडमहिछाय । शिवजाकेशरजालछपि, तोषितभयेवनाय ॥ ३८ ॥
नकुलऔरसहदेवको, उद्धवभाषहुक्षेम । जिनपैनिजसुततेअधिक, कुंतीकीन्हींप्रेम ॥

धर्मभूपअर्जुनअरुभीमा । तिनपैकरींहैनेहकीसीमा ॥ जैसेपलकनिरंतरपारिकै । राखहिंअक्षनरक्षणकरिकै ॥
जोकरियुद्धसुयोधनपाहीं । लियेभागयशयुतजगमाहीं ॥ जिमिखगेशवासवमदमोरी । लीन्ह्योसुधाकलशवरजोरी ॥ ३९ ॥
अवकहुउद्धवपृथाभलाई । निजपतिसुतहितजीवतमाई ॥ जाकोकंतपांडुमहराजा । छांडिसकलनिजर्वगसमाजा ॥
आपुअकेलद्वितियधनुकरलै । जीतिचारिदिशिकियरिपुपरलै ४० जेठबंधुनृपअंधहमारा । जोनिजपुरतेदमदिनिकारा

पुनिविराट्पुरमहँयकवर्षा । गोप्यरूपनिवसेयुतहर्षा ॥ वर्षचौदहेंधर्मभुवाला । प्रगटतभेसवन्धुतेहिकाला

दोहा–तवपांचालपुरोहितै, पठयोकुरुपतिपास । हिस्सामाँगनहेतनिज, मेटनहितकुलनाश ॥

दुर्योधनहितजायद्विजेशा । धर्मभूपकोंकह्योनिदेशा ॥ कुरुपतिहिस्सादेहुहमारा । नातरुहोईकुलसंहारा
हरीराज्यकरिकपटहमारी । नीतिरीतिनहिंनेकविचारी ॥ यहिविधिधर्मभूपकीवानी । कह्योवुझायपुरोहितज्ञानी
पैदुर्योधननेकनमान्यो । कोहमोहममतालपटान्यो ॥ कह्योपुरोहितसेअसवानी । भवनजाहुपंडितअभिमानी
हमनहिंमानाहिंकहारावरो । पुनिपुनिकाहिजनिहोहिवावरो ॥ सुनिअसतहँदुर्योधनवैना । पंडितपलटिगयोनृपऐना

दोहा–धर्मभूपसोंकहतभो, दुर्योधनकीवाणि । तवकोपितह्वैकहतभे, नृपसोंशारँगपाणि ॥

हमहुँजावअवहेतुतुम्हारे । दुर्योधनकेआशुअगारे ॥ धर्मभूपयहसम्मतकीन्ह्यो । यदुपतिकोपठयोसुदभीन्यो
हस्तिनपुरमहँगेयदुराई । दुर्योधनलीन्ह्योंअगवाई ॥ सभामध्यप्रभुकोवैठाई । बहुविधितहँसत्कारकराई
कुशलप्रश्नयदुपातिहिसुनाये । कहौकौनकारणप्रभुआये ॥ तवयदुपतिकुरुपतिसोंबोले । अपनेउरकोआशयखोले
हिस्सदेवपांडवनकाहीं । तुमकोउचितअहैजगमाहीं ॥ नातौइतपैहौअपवादा । ह्वैहैपरलोकहूविपादा ॥

दोहा–आपुसमहँवढिकैकलह, होइहिकुलसंहार । तातेकुरुपतिमानिये, इतनोकह्योहमार ॥

सुनियदुनंदनकीमृदुवानी । बोल्योवचनमहाअभिमानी ॥ सूजीअग्रभागमहिजेती । विनरणदेहौंतिनहिंनतेती
ऐसोकहिउठिकियोपयानो । यदुपतिकह्योनेकनहिंमानो ॥ ताकोरहतज्ञाननहिंलेशू । होनहारजेहिहोतकलेशू
यदुपतिफिरिविराट्पुरआये । धर्मभूपकोसकलसुनाये ॥ ९ ॥ उतैविदुरकहँअंधनरेशा । बुलवायेमनमानिअँदेशा
कह्योविदुरअवमंत्रवतावहु । कौरवकुलकोकलहमिटावहु ॥ सुनतविदुरभूपतिकैवानी ।कह्योजुमंत्रसुखदगुणखानी

दोहा–विदुरप्रजापतिसोसकल, कहवावतजगमाहिं । नीतिरीतिकछुनहिंवची, कह्योविदुरनृपपाहिं ॥ १० ॥

देहुअजातशत्रुकहँहाँसे । तुमकोहियतेनहिंकछुदीसे ॥ करिजोतुमपांडवकीवाधा । तिनसहिलियोसकलअपराधा
कोपितभीमभुजंगभयावन । श्वासलेतचाहतइतआवन ॥ डासिहैंतुवशतपुत्रनकाहीं ।डरतरहौतुमजाहिसदाहीं ॥ ११
भीपमद्रोणकर्णकृपचोखे । रहहुननृपइनकेअवधोखे ॥ कारकपांडवपरमसहाई । वसतद्वारकामहँयदुराई
जहँयदुपतितहँरामहुह्वैहैं । यदुवंशीतुवओरनजैहैं ॥ जहाँधर्मतहँरहतमुरारी । जहँमुरारितहँविजयविचारी ।

दोहा–देवअसुरनरदेवके, जीतनहारमुकुंद । वैरकरहुतिनसोंवृथा, बूझहुनहिंमतिकुंद ॥ १२ ॥

हैदुर्योधनयदुपतिद्रोही । ताकेहोहुनाहितुमछोही ॥ दोपरूपनिवसैगृहमाहीं । निजसुतजानहुतुमतिहिकाहीं
याकोगृहतेदेहुनिकारी । यहसम्मतितौअहैहमारी ॥ एकतजेजोकुलवचिजावै । तौतेहितजतविलंवनलावै ॥ १३ ।
सोसुनिदुर्योधनअतिमाख्यो ।डसतओंठअधरनअतिचाप्यो । पिताविदुरयहकुमतिप्रधाना ।कायरकुटिलकुशीलमहान
खायहमारोजूँठमोटाई । हमहींसोंअवकरतखोटाई ॥ १४ ॥ दासीसुताहिकौनइतआन्यो ।कौनकुमतियहिबुधवरमान्यो ॥

दोहा–जिनकोखायउधनसदा, जियोजासुगृहमाहिं । तिनसोंराखतवैरनित, प्रीतितिनहिंरिपुपाहिं ॥

दासीसुतकहवचनकठोरा । तातेजियचाहतअसमोरा ॥ सभामध्यमारहुँतरवारी । पैपुनिअसजियलेहुँविचारी ।
जनकवंधुउपज्योकुलदूपण । ममढिगकरतशत्रुगुणभूपण ॥ तातेजीताहिदेहुनिकारी । शत्रुपक्षरतयाहिविचारी ।
कर्णशकुनिदुर्मतिअतिदोऊ ।कहनलगेतेसहितहँसोऊ ॥ शकुनिकर्णदुर्योधनवानी ॥ १५ ॥ सुनिभ्राताढिगविदुरविज्ञानी
हरिमायागुणिव्यथानलायो ।उच्योआशुआनँदउरछायो ॥ कुरुपतिद्वारधनुपधरिदीन्ह्यो ।तीरथकरनगमनद्रुतकीन्ह्यो ॥

दोहा–हस्तिनपुर [illegible] । [illegible] कीन्होंकठलपयान ॥

[illegible] ॥ १७ ॥

[illegible]

यहिविधिवीतेनिगमकछुकाला । विचरतभारतखंडविशाला ॥ तवलोंभारतयुद्धघनग । हातभयाकु [illegible]

दोहा-भाइनसहितसुयोधनै, भाइनयुतनृपधर्म । मारिविजयलीन्ह्योंतुरत, कियोअपूरवकर्म ॥
...। फैल्योसातहुद्वीपनिदेशा ॥ श्रीयदुपतिकीपायसहाई । भयेअजातशत्रुनृपराई ॥ २० ॥
विदुर ... । तवद्विजभारतयुद्धसुनाये ॥ जिमिमारुतवशवंशनमाहीं । पावकप्रगटदहततिनकाहीं ॥
...तसहिकुरुकुलमहँ ...
...श्रमहेरो । नृपपृथुमनुअसिताग्निहुकेरो ॥ स्वामिकार्तिकवायुस्वदासू । नंदीश्वरकोविमलनिवासू ॥
दोहा-श्राद्धदेवआदिकनके, ॥ २२ ॥ औरहुसुरमुनिकेर । आश्रमसोहहिंअतिविमल, हरिमंदिरचहुँफेर ॥
...हँचहुँओर । लिखेसुदर्शनचक्रअघोरा ॥ जिनकेदृगमेंदेखतराजा । सुमिरिपरैमनमेंयदुराजा ॥ २३ ॥
...निमज्जनवंदनकरि । चलेविदुरतहँतेअतिसुखभरि ॥ जांगलमत्स्यऔरकुरुदेशन । अरुसौवीरसुराष्ट्रसुवेशन ॥
...तविचरतविदुरजू ... । मथुराकोपुनिकियोपयाना ॥ तहँभागवतउद्धवहिदेख्यो । आनँदअवधआशुउरलेख्यो ॥
...प्यारे । शिष्यवृहस्पतिनीतिअगारो ॥ मिलेविदुरउद्धवकहँधाई । आनँदांबुधिआंसुबहाई ॥
दोहा-पूँछिकुशलअतिप्रीतिसों, आदरकरिबैठाय । हरिदासनकीकुशलपुनि, पूँछीहर्षबढाय ॥ २५ ॥
सुनिविधिविनयहरनभूभारा । पुरुपप्रधानलियेअवतारा ॥ तेहरिभूकरभारअपारा । कुशलदोउवसुदेवकुमारा ॥
मोदितवसहिंशौरिकेगेहू । निजदासनपरकरतसनेहू ॥ २६ ॥ कुरुवंशिनकेजेवहनोई । हैंवसुदेवकुशलसुदमोई ॥
जेभगनिनकोकियोविवाहू । वहुदाइजदीन्ह्योसउछाहू ॥ २७ ॥ जोयदुवंशिनकटकअधीशा । हैप्रद्युम्नमहारथिईशा ॥
यदुपतिकोपाटवीकुमारा । एकहित्रिभुवनजीतनहारा ॥ रुक्मिणिजेहिविप्रनपदपूजी । पायोपुत्रआशसवपूजी ॥
दोहा-जेहिसन्मुखसुरअसुरनृप, महारथीवरजोर । वाणधारधावतधुवै, धधकजरैचहुँओर ॥
सोकुशलीहैकृष्णकुमारा । मोसनउद्धवकरहुउचारा ॥ २८ ॥ भोजदशार्हवृष्णि यदुवंशी । तिनकोनायकजगतप्रशंसी ॥
जाहिकृष्णअभिषेकहिकीन्हें । देवराजजाकोबलदीन्हें ॥ ऐसोउग्रसेनमहराजा । कुशलअहैसवसहितसमाजा ॥ २९ ॥
अवकहुजाम्बवतीसुतकेरी । जापरमेरीप्रीतिघनेरी ॥ स्वामिकार्तिककोअवतारा । जेहिसमसुंदरमैंननिहारा ॥
सांवनामजाकोजगमाहीं । महारथिनमहँश्रेष्ठसदाहीं ॥ ३० ॥ अवकहुकुशलसात्यकीकेरी । जाहिकृष्णपरप्रीतिघनेरी ॥
दोहा-धनुविद्याजोपार्थसों, पढ्योमहारणधीर । वडोमुसाहिवकृष्णको, दायकअरिउरपीर ॥
सदाकरैयदुपतिसेवकाई । योगिनदुर्लभसोगतिपाई ॥ ३१ ॥ अवकहुकुशलश्वफल्कतनयकी । नामअक्रूरजासुमतिनयकी
हरिपदचिह्नितजोसुखभरणी । लोट्योलाजछोंडिव्रजधरणी ॥ कृष्णप्रेमरससमगनमहाना । रह्योनजाकोतनमनभाना ३२ ॥
अवकहुकुशलदेवकीकेरी । जेहिसमद्वितियभागनहिंहेरी ॥ परब्रह्मजोजन्योकुमारा । वेदत्रयिजेहिमखविस्तारा ॥ ३३ ॥
अवअनिरुद्धकुशलकहुप्यारे । यदुवंशिनमहँजेवलवारे ॥ जेशास्त्रनकेकारणअहहीं । मनकेनायकजेहिश्रुतिकहहीं ॥ ३४ ॥
दोहा-चारुदेष्णगदआदिकी, उद्धवकुशलवखान । जिनकोअतिप्यारेसदा, रहहिंकृष्णभगवान ॥ ३५ ॥
अवकहुधर्मराजकुशलाई । विजयजुहरिप्रतापतेपाई ॥ अर्जुनभुजवलरहतनिशंका । लोकनमेंजेहिओजअतंका ॥
पालतसदाधर्ममर्यादा । देतसाधुविप्रनअह्लादा ॥ दुर्योधनजेहिसभानिहारी । भूल्योभूपतिभोभ्रमभारी ॥
सातहुद्वीपजासुभोशासन । सुरउअसुरकरसकेविनाशन ॥ ३६ ॥ अवकहुभीमसेनकुशलाता । जोसवंधुकुरुपतिहिनिपाता
गदागहेविचरतरणमाहीं । चरणघातमहिसकिलतजाहीं ॥ ३७ ॥ अवभापहुअर्जुनकुशलाता । धनुगांडीवजासुविख्याता ॥
दोहा-दीन्ह्योशत्रुनमुंडसों, खंडखंडमहिछाय । शिवजाकेशरजालछपि, तोपितभयेवनाय ॥ ३८ ॥
नकुलऔरसहदेवको, उद्धवभापहुक्षेम । जिनपैनिजसुततेअधिक, कुंतीकीन्होंप्रेम ॥
धर्मभूपअर्जुनअरुभीमा । तिनपैकरौहैनेहकीसीमा ॥ जैसेपलकनिरंतरपांके । राखहिंअखनर[illegible] ॥
जोकरियुद्धसुयोधनपाहीं । लियेभागयशयुतजगमाहीं ॥ जिमिखगेशवासवमदमारी । लीन्ह्योसुधा[illegible]री ॥ ३९ ॥
अवकहुउद्धवपृथाभलाई । निजपतिसुतहितजीवतमाई ॥ जाकोकंतपांडुमहराजा । छोंडिसु[illegible]समाजा ॥
आपुअकेलद्वितियधनुकरले । जीतिचारिदिशिकियरिपुपरले ४० जेठवंधुनृपअंधदृग...

दोहा—पांडुसुतनसोंद्रोहकरि, निजपापिनसुतनेह। अवशिनरकमहँसोगिरत, यहम्वहिंअधिकसँदेह॥ ४१॥
मनुजसरिसलीलाहरिकरहीं। मूढनकेमनमेंभ्रमभरहीं॥ हमउद्धवलहितासुप्रसादा। विचरहिंवसुधाविगतविपादा॥
पैनहिंजानतहमकहँकोई। रूपछिपायेरहवभलोई॥ ४२॥ धनअरुविद्याकुलमदवारे। जेधरणीकेनृपतिअपारे॥
तिनकोहठहिहटावनहेतू। यदुपतिकीन्हयोसंगरनेतू॥ जवहस्तिनपुरमहँप्रभुआये। दुर्योधनहिंवहुतसमुझाये॥
शकुनिदुशासनकर्णहुसंगा। दुर्योधनकियमंत्रप्रसंगा॥ कृष्णचहहिंकुरुकुलकरनासा। देहिंपांडवनकहँविश्वासा॥
दोहा—इनहींकेवशपांडुसुत, कह्योमानइनकेर। हमसोंकरतविरोधवहु, राखतगर्वघनेर॥
तातेभलेकृष्णइतआये। दैवसवैविधियोगलगाये॥ जोअवआजकृष्णइतआवें। तौअवकेसहुजाननपावें॥
कैदकोठरीमहँकरिदेहू। तौअवमिटहिसकलसंदेहू॥ दुर्योधनअसग्रुणिसुखपायो। यदुपतिकहँनिजसभावोलायो॥
यहअनुसरसात्यकिकछुपायो। तवकृतवर्महिंवचनसुनायो॥कर्णादिकनजोरिकुरुनाहा। आशुकरीअसवैठिसलाहा॥
वेगिवोलायकृष्णकहँलेहू। कैदकोठरीमहँकरिदेहू॥ तातेचलहुसजगसुनिआजू। रहेंजहँरहैंयदुराजू॥
दोहा—कुरुपतिकोशासनसुनत, रथचढिवेगिगोविंद॥चलतभयेदरवारको, आनँदपूरणइंद॥
जवप्रभुगयेनिकटदरवाजा। कहीसवैद्वारपनसमाजा॥ आज्ञुमंत्रएकांतहिहोई। जाहिंकृष्णतहँऔरनकोई॥
द्वारपवचनसुनतगिरिधारी। चलेअकेलेधनुशरधारी॥ तहँकृतवर्मासात्यकिदोऊ। चलेसकलयदुपतिसँगसोऊ॥
द्वारपतिनकोरोंकनलागे। तवद्वउपेलिभयेवढिआगे॥तवप्रभुसात्यकिकरगहिलीन्हो।कुरुपतिसभागमनद्रुतकीन्हो॥
शकुनिसुयोधनकर्णदुशासन। वैठेसवरेभरेहुलासन॥ उठिप्रभुकहँदियशासनआई। तवसात्यकिदियहरिहिसुनाई॥
दोहा—आज्ञुरावरेकोइहाँ, कैदकरनकेहेत। कियेसुयोधननेतहै, भाइनसचिवसमेत॥
तवगोविंदमंदमुसकाई। कह्योनयहडरमोउरआई॥ हैकौरवनजोरअसनाहीं। मोहिंपकरिराखहिंगृहमाहीं॥
पुनिवोलेयदुपतिकुरुपतिसों। कहहुमंत्रसवनिजानिजमतिसों॥होविचारसोसवकरिलीजै।अवविलंवकेहिकारणकीजै॥
हौंसाउचितपांडवनदीजै। जामेंकौरवकुलनहिंछीजै॥ दीन्हेअनदीन्हेहठिलैहैं। पांडवतुमहिंननैकुडेरहैं॥
परयोजोहमकहँउचितनिहारी।कहहिंसोकुरुकुलकुशलविचारी॥यहिविधिवहुविधियदुपतिभाषे।सुनिदुर्योधनमनअतिमाषे
दोहा—विश्वभरणकेधरणकी, कीन्हींकुमतिउपाय। सभामध्यतवकृष्णदिय, वपुविराटदरशाय॥
लखिदुर्योधनहँस्योठठाई। कह्योइंद्रजालीयदुराई॥ चहतजुप्रभुतौतेहिक्षणमाहीं। नाशतकुरुकुलसंशयनाहीं॥
पैतेहिक्षणकुरुकुलकेमारे। वचतऔरनृपशूद्रअपारे॥ तातेतहँते उठिगिरिधारी। गेविराटपुरयहीविचारी॥ ४३॥
करनसकलदुष्टनसंहारा। लेहिंअजन्महुँहरिअवतारा॥ सवलोकनकेशिक्षणहेतू। करहिंकर्मसवधर्मनिकेतू॥४४॥
निजशरणागतलोकनपालन। करिकैकृपाकरहिंप्रभुपालन॥ ऐसेश्रीवसुदेवलालकी। सखाकथाकहुमोदमालकी॥
दोहा—कोटिनतीरथकीसरिस, जाकीकीरतिगाय। पामरपावनहोतहठि, अतिअघओघजराय॥ ४॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवाँधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा-
राजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दा-
म्बुनिधौतृतीयस्कंधेप्रथमस्तरंगः॥ १॥

[illegible] नेहलगाई । देतरहेभोजनविसराई ॥ २ ॥ सोउद्धवकरिहरिसेवकाई । हरिसंगहिमहँगयोवुढ़ाई ॥
दोहा—अतिप्यारेजिनकेसखा, रहेएकगृहमाहिं । तिनविनतिनकीवातसुनि, कैसेनहिंविलखाहिं ॥ ३ ॥
[illegible] । रह्योमौनहरिरतिमतिमोई ॥ ४ ॥ पुनिजसतसकेधीरजधारी ॥ पुलकितअंगवारिदृगढारी ॥ ५ ॥
[illegible] । आँखिपोंछिअसगिराउचारी ॥ ६ ॥

उद्धवउवाच ।

[illegible] ॥ तिनकीकुशलकौनहमकहहीं ॥ वारवारमनशोचतअहहीं
[illegible] ॥ ८ ॥
[illegible] । यद्यपिजानहिंहेकुरुराऊ ॥
दोहा—एकसंगनिवसतरहे, लखेविचित्रचरित्र । परब्रह्मनहिंगुणतभे, मानिसखाअहामित्र ॥ ९ ॥
[illegible] । कोऊकहेनभ्रमउरआने ॥ १० ॥ कियेपूर्वहमसवतपथोरा । लखेनदृगभरिनंदकिशोरा ॥
[illegible] । लियेगयेनिजसंगमुरारी ॥ यदपिजन्मभरिकृष्णदिखाने ॥ दर्शकरतनहिंनेकुअघाने ॥ ११ ॥
[illegible] । भूषणभूषितअंगअनूपा ॥ ऐसोनिजवपुजगप्रगटाई । निजमायावलदियोदिखाई ॥
[illegible] । मोहितरहेविलोकिविशेखी ॥ ऐसोवपुजाकेदृगआवे । कहोनयहतेहिमोहवढ़ावे ॥ १२ ॥
दोहा—राजसूयनृपधर्मकी, होतभईजेहिकाल । तवत्रिभुवनवासीसकल, आयेरूपरसाल ॥
[illegible] । कहतभयेधनिधनिहमजगमें ॥ जेतीधाताकीनिपुणाई ॥ हरिअँगमेंइकथलहिदेखाई ॥ १३ ॥
[illegible] । वोलनिसुधासरिससुखसारू
पुनिकरिहरिव्रजरासविलासू । जिनहिंमानदियसहितहुलासू ॥ ऐसेप्रेमभरीव्रजनारी । व्रजतेहरिकोचलतनिहारी ।
हरिकेसँगदृगपठैदुखारी ॥ ठगीरहींसुधिवुधिहुविसारी ॥ १४ ॥ दुष्टनतेलहिदुखनिजदासन ॥ करिकैकृपाकृष्णअरिनाशन ।
दोहा—यदिअजहैंपैजननहित, लियोजन्मजगदीश । खेलखुशीसिखूवखुलि, कियेअखिलखलखीश ॥ १५ ॥
समुझिमनहिंयहआवतहांसी । जेकोटिनब्रह्मांडविलासी ॥ तेप्रभुश्रीवसुदेवअगारा । मनुजसरिसलीन्हेंअवतारा ॥
व्रजमेंवसिकियविविधविहारा ॥ कियोअनेकनखलनसँहारा ॥ सोजनुकालयमनभयपाई ॥ नरसमवसेद्वारकहिजाई ॥ १६ ॥
पुनियहनिरखिमोहिंदुखलागा । सोअवसुनहुविदुरवड़भागा ॥ कंसहिमारिमातुपितुनेरे । आयजोरिकरअसप्रभुटेरे ॥
क्षमहुजनकजननीअपराधा । हमपैकंसकरीअतिवाधा ॥ तातेआपनिकटनहिंआये । असकहिवारवारशिरनाये ॥ १७ ॥
दोहा—जोप्रभुभ्रुकुटिविलासते, हर्‍योभूमिकरभार । तेहिप्रभुपदपंकजरजहि, कोभूलैमतिवार ॥ १८ ॥
धर्मराजकेराजसूयमहँ । आपहुलख्योपरमकौतुकतहँ ॥ कियोजन्मभरिवैरविशाला । ऐसोदुष्टभूपशिशुपाला ॥
ताहिमारिगतिदियोमुरारी । योगिनदुर्लभपरतनिहारी ॥ ऐसेप्रभुविनयहिजगमाहीं । हायजियनकाअनुचितनाहीं ॥
सहैकौनहरिविरहविशाला । पावनहितजगकोजंजाला ॥ १९ ॥ भारतसंगरमहँमतिवाना ॥ यदुपतिमुखसुखमाकरिपाना ॥
भीष्मादिकभागवतप्रधाना ॥ हरिपुरगेलगिपारथवाना ॥ मृपाभयेहमहरिअनुरागी ॥ हरिविछुरततनुदियेनत्यागी ॥ २० ॥
दोहा—जाकेसमनहिंअधिककहुँ, निजपरिपूरणकाम । शिवविरंचिशक्रादिसुर, भेंटदेहिंचलिधाम ॥
निजशिरलहिप्रभुपदनखजोती ॥ मुकुटमणिनद्युतिकरहिंउदोती ॥ हाजिररहहिंहजूरहिमाहीं ॥ प्रभुभ्रुकुटीलखरासिमदाहीं
तेप्रभुसभासुधर्मामाहीं । उग्रसेनढिगखड़ेसदाहीं ॥ कहहिंवचनअसमध्यसमाना । सुनियेउग्रसेनमहराना ॥
देवराजतुवदर्शनहेतू । आयोनलिलेआपनिकेतू ॥ तापरनाथकृपाअवकीजे । नेकुनिहारिमाननदुदीजे ॥ २२ ॥
अपनेप्रभुकोआनँदराशी । यहचरित्रलखिआवतहांसी ॥ यदपिज्ञानप्रभुदियनहिंऊनो । तद्यपितिनविनजगमोहिंसूनो ॥
दोहा—यहअचरजदेखहुविदुर, कालकूटकुचधारि । पयप्यावनमिसिपूतना, वनिकैसुंदरनारि ॥
श्रीनँदनंदनिकंदनहेतू । गेअनंदभरनंदनिकेतू ॥ पययुततासुप्राणकरिपाना । दईमातुगतिकृपानिधाना ॥

...निनकेमतिमान । भेदशदशसुतरथीप्रधाना ॥९॥ कालयवनमागधअरुशाल्‌ । दंतवक्रआदिकमहिपालू ॥
...द्विविदु ...न । मुरनिकुंभदानवबलवाना ॥ हरिसोंकीन्हेवैरघनेरो । कोउकबहुँकियदुपुरघेरो ॥
...निज... ...यसँहारयो ॥१०॥ बहुकहँरामप्रद्युम्नपार्थकर। हतवायेवैरिनकहँयदुवर ॥
... ...हीं । तिनदलचलतशैलखसिजाहीं ॥ तेसबकुरुक्षेत्रमहँजाई । कियकौरवपांडवनसहाई ॥११॥

दोहा-तिनसबहीकोनाशकिय, प्रगटप्रभावअपार । पारथसारथिह्वैहरी, हरयोभूमिकोभार ॥ १२ ॥

...दुःशासनमं... ...। भयोसुयोधनआयुपहीना ॥ भीमगदामारीतेहिघोरा । कुरुपतिजानुयुद्धमहँतोरा ॥
...पिजठारह... ...ग्वाईनाहिं... १३॥ भीषमभीमपार्थद्विजद्रोनू । कर्णयुधिष्ठिरादिबलभोनू ॥
...करिबहु ... ...जानियदुकुल... ...भारा॥१४॥ तिनकोइहिविधिनाशविचारो। मदपानहितेकरविस्तारो
...नकोउदन... ...हँमधु ... ...१५॥ असविचारियदुपतिनृपधर्मे । दियोराजसंयुतनृपधर्मे

दोहा-संतरीतिदर्शायप्रभु, सुहृदनआनँददीन ॥१६॥ द्रौणिअस्त्रतेउत्तरा, गर्भोहिरक्षणकीन ॥ १७ ॥

...पुनि यदुराई । तीनअश्वमखदियोकराई ॥ सोऊहरिपदअतिअनुरागा। पाल्योप्रजनभूपबड़भागा॥१८
...द्वारके... ...२ । बसतभयेदासनसुखदाई ॥ सकललोककेशिक्षनहेतू । धर्मकर्मकियकृपानिकेतू ॥ १९
...रिस बोलतमृदुवानी । करिकटाक्षअतिशयसुखदानी॥ दरशावतनिजरूपसोहावन। करतचरितपावनजगपाव
...मयलोककहँअ... ...। जगसहयदुकुलकहँवरदीन्ह्यो ॥ सोरहसहससुंदरीनारी । तिनमहँयकसँगरमेविहारी

दोहा-पैअतिअनुरतनहिंभये, सबमेंसमभगवान । यहिविधिबीत्योकालबहु, तबविरागअधिकान ॥ २२ ॥

...केहु ... ...। अहैंस्वतंत्रसदासुखभीने ॥ तिनहरिकहँभोगतसुखभोगू । भयोविरागकेरसंयोगू ॥
...मुनिका... ...। तजेंविविधविधिभोगविलासा ॥२३॥ एकसमययदुनगरीमाहीं । खेलतरहेकुमारतहाँहीं
...मुनिनसोंहासी २४
...कछु ... ...दुवंसी । गयेप्रभासक्षेत्रअरिध्वंसी॥२५॥ तहँमज्जनकरिपितरनतरपे। देवनकहँबहुविधिबलिअरपे

दोहा-विप्रनदीन्हींगायबहु, शीलस्वरूपसुधारि ॥ २६ ॥ हेमरजतशय्यावसन, अरुकन्यासुकुमारि ॥
रथमातंगतुरंगबहु, धराजीविकाहेत ॥ २७ ॥ अन्नस्वादयुतचारिविधि, दियोद्विजनसुखदेत ॥
कृष्णप्रसन्नहिहोनहित, दियोदानसुखधाम । पुनियदुवंशीकरतभे, गोविप्रनपरणाम ॥ २८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेतृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

उद्धव उवाच।

दोहा-पुनिअज्ञालेद्विजनसों, यदुवंशीबलवान । बहुविधिभोजनकरिसबे, कियेवारुणीपान ॥

सकलसमाजसिंधुतटजाई । बैठतहँदरबारलगाई ॥ तहँनर्तकनाचनबहुलागे । गायकगावतभेअनुरागे ॥
यहिविधिलागिगयोदरबारा । बैठसबयदुवंशकुमारा ॥ यहिविधितेनयामनिशिबीती । करतहासंयुतनृपप्रीती ॥
ज्येष्ठनिकीन्हेआसवपाना । अनुचितउचितनमोहिंलखाना ॥ उठेसकलतहँमज्जनहेतू । चलेसमिटिसबकरुणानिकेतू ॥
तहँजलकेलिकरनपुनिलागे । वीरपरस्परअतिअनुरागे॥ तहँकृतवर्मासात्यकिओरा । सींचिसलिलकरतकठोरा ॥

दोहा-दगादारतेंसात्यकी, कायरकपटीक्रूर । भूरिश्रवकोयुद्धमें, मारयोकरिछल ॥

रह्योसोध्यानकरतजगदीशा। तबतेंकाटिलियोतेहिशीशा॥ तबसात्यकिकहकोपितवानी। रेकृतवर्माअभिमानी
शूरधर्म तेंजानतनाहीं । महाअधर्मकियोनिशिमाहीं ॥ सोवतपांडवपुत्रनकाहीं ।

गी।हौंमैंचारिपदारथत्यागी ॥ १५ ॥ तुवअजन्मकरिजन्मनहारे। अरुअकर्मकृतकर्मअपारे॥
तिभागव। आत्मारामहिंतियरसरागव ॥
इचरित्रलखिरावरो, हेयदुपतिजगदीश। मनमेंअतिशयभरिभ्रमै, कौतुकगनहिंमुनीश ॥ १६ ॥
र्यामी। जनकारणयदुपतिबहुनामी ॥ ह्वैअजानसेमोहिंबोलाई।पूछिमंत्रमोहिंदियोबड़ाई ॥ १७ ॥
ज्ञाना। सोपुनिमोसोंकरहुबखाना ॥ जातेमोकहँकबहुँनभूलै। लहौंनभवनिधिशोकअतूलै ॥१८॥
।तबहरिकमलनयनअघघाती॥मोकहँपुनिकैज्ञानबखान्यो॥ अपनोदीनदासमोहिंजान्यो ॥
प्रभुध्याई।भगवतभक्तिप्रमोदहिपाई ॥ यदुपतिपदपंकजशिरनाई।तुमहिंलख्योंमेंअबइतआई॥२०॥
रिजगमाहीं। यदुपतिविरहजातसहिनाहीं ॥
दरीवनजातहौं ॥ २१ ॥ नरनारायणयत्र। करततपस्याजगतके, मंगलहितएकत्र ॥ २२ ॥

श्रीशुकउवाच।

वमुखतेसुनिविदुर, निजबंधुनकोनाश। भयोशोकमेंत्योंतुरत, करिकैज्ञानप्रकाश ॥ २३ ॥
वहिकाहीं।गवनतदेखिपरेहरिनाहीं ॥ बोलेवचनआनिविश्वासू। सुनियेउद्धवयदुपतिदासू ॥ २४ ।

विदुरउवाच।

हरिदीन्ह्यो।औरनसोंप्रकाशनहिंकीन्ह्यो॥सोतुमसिगरोमोहिंसुनावहु। मोहिंकृतारथअबशिबनावहु।
तहरिदासा। विचरहिंजगमहँदेतहुलासा॥ २५ ॥ उद्धवसुनतविदुरकीवानी।छत्तासोंबोलेविज्ञानी।

उद्धवउवाच।

कोअवकाशा।विदुरसुनहुविनरमानिवाशा ॥ कोअबसुनहिसुनावहितात।म्वहिंशरीरकरभारअघात।
ा-पैहरिजबमोकोंदियो, अनुपमयहउपदेश। तबमित्रासुतमुनिरहे, कृष्णनिकटतिहिंदेश ॥
कह्योरमेशा। दियहुविदुरकहँतुमउपदेशा ॥ तातेमित्रासुतढिगजाई।विदुरज्ञानसुनियेसुखदाई॥२६॥

श्रीशुकउवाच।

कृष्णगुणगाथा। पावतमोदविदुरकेसाथा ॥ यामिनिजातलगीनहिंबारा। बोलेविहँगभयोभिनुसारा॥
वमतिमाना।कालिंदीमहँकरिअस्नाना॥बदरीवनकहँतुरतसिधारयो।तहँतेपुनिहरिधामपधारयो ॥२७॥
थासुनिराजा। कहशुकसोंमधिमुनिनसमाजा ॥

राजोवाच।

ोभयोविनाशा। गयेधामनिजरमानिवासा ॥
दोहा-तबयदुकुलकोकेतुसम, यूथपकोसरदार। मंत्रीहरिकोप्रियसखा, मंत्रीबुद्धिउदार ॥
हिंअचरजलाग्यो।उद्धवकाहेतनुनहिंत्याग्यो। २८ सुनतपरीक्षितवचनसोहावन।बोलेव्याससुवनजगपावन।

श्रीशुकउवाच।

तेजबयदुराई। यदुकुलकोदियनाशकराई॥जानचहेतबनिजपुरकाहीं।तबविचारयहकियमनमाहीं॥२९॥
ामज्ञाना। होतजोसुनिभागवतपुराना ॥ ताकोयकउद्धवअधिकारी।दूजोनहिंमोहिंप्रतनिहारी॥३०॥
हेमोहिंसमाना। इंद्रियजितनहिंविषयलोभाना॥ इनसोंकबहुँआपनोज्ञाना। सोकहिदेहु[illegible]ना।
-मेरेपाछेजगतमें, उद्धवरहिकछुकाल। तारहिजगजीवनअगम, करिउपदेशविशाल ॥ ३१ ॥
यदुपतिभगवाना। उद्धवसोंनिजज्ञानबखाना ॥ पैहरिजबनिजधामसिधारे। तब[illegible]पियारे ॥
रीवनकाहीं। यदुपतिविरहगयोसहिनाहीं ॥ रहतभेनजलहीननराजा। रहत[illegible]सुखसाजा ॥

...। धरहिंरूपबहुकृपानिकेतू ॥ करहिंचरित्रविचित्रअपारा । सोअबकहहुसहितविस्तारा ॥

श्रीशुकउवाच ।

...॥तबमित्रासुततिनहिंसराहत । बोलेमोदउदधिअवगाहत

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–सबजगजीवनभद्रहित, विदुरप्रश्नयहकीन । निजकीरतिविस्तारकर, यदुपतिपदमनदीन ॥ १८ ॥

...। हैहमारतुमपरअनुरागा ॥ अहोबादरायणकेनंदन । कियोभक्तिकरवशयदुनंदन॥१९॥
...। प्रगट्योकुरुकुलमहँयमराई ॥२०॥ सोईतुमहौविदुरसुजाना । सत्यअनन्यभक्तभगवाना॥
...। मोहिंकहिहरिगेनिजहिंनिकेतू॥२१॥तातेमैंसिगरीहरिलीला।वर्णहुँसुनहुँगुणहुँशुभशीला२२।
...३॥सूक्षमचितअचितहुविस्तारी।अपनोरूपअकेलविचारी२४

दोहा–सर्वशक्तिधारणकरन, जेहिसंकुचितनज्ञान । निजमायाविरचीहरी, जेहितेजगनिर्मान ॥ २५ ॥

...६॥प्रगट्योमहत्तत्त्वपुनितातें।उपजतविदुरजगतयहजातें२७
...। क्षोभितभयोसुनहुमतिसेतू ॥ २८ ॥ महत्तत्त्वतेंअहंकारभो । जोकारणकारजअधारभो॥
इंद्रियभूतमनोमयजोई ॥ २९ ॥ सात्विकराजसतामससोई । सात्विकअहंकारतेसुनिये । मनऔसरउपजेयहगुनिये॥
जिनतेभोशब्दादिप्रकासा ॥ ३० ॥ राजसअहंकारपुनिभासा । ज्ञानेंद्रीकर्मेंद्रीदोऊ ॥ प्रगटभईतातेपुनिसोऊ ।

दोहा–अहंकारपुनितामसे, सिरज्योमात्रानाद । जातेंभयोअकाशयह, रूपब्रह्मअहलाद ॥३१॥

पुनिअकाशअस्पर्शहिजायो । ताकेमारुतहूप्रगटायो॥३२॥मारुततेप्रगट्योपुनिरूपा।रूपहितेपुनितेजअनूपा॥३३॥
भयोतेजतेरसगंभीरा । तातेहूप्रगट्योपुनिनीरा ॥ ३४ ॥ जलतेंगंधगंधतेधरणी । जोभूतनकीआनँदभरणी ॥३५॥
नभआदिकयेभूतनमाहीं । एकएकतेगुणअधिकाहीं ॥३६॥ येदेवताकृष्णकेअंसा।तेहरिकीअसकरहिंप्रशंसा ॥३७॥

देवाऊचुः ।

प्रभुपदपंकजकरहिंप्रणामा । दासनहरणतापदुखधामा ॥ जाकेवंदतसंतउदारा । छोंडहिंअनायाससंसारा ॥ ३८ ॥

दोहा–आपचरणतेजेविमुख, तेनितलहहिंकलेश । तातेतुवपदकमलकी, छायाचहहिंहमेश ॥ ३९ ॥

पढिपढिवेदयकांतहिबैठी । भक्तिसुधासागरमहँपैठी ॥ ऋषिखोजहिंतुवचरणअभंगा । जिनतेप्रगटभईयहगंगा ॥
जेगंगातटकरहिंनिवासा । तेतुवपदढिगकरहिंविलासा ॥४०॥प्रीतिसहितजेतुवपदध्यावें । ज्ञानविरागभक्तिसोपावें॥
तुवपदकमलनिकटमतिधीरा । वसेसदानहिंपावहिपीरा ॥ हमतुवपदशरणागतहावें । पदगवरेदीनदुखखोवें ॥४१ ॥
जगउत्पतिपालनसंहारा । यहिकेहेतआपअवतारा ॥ हमशरणागतवारहिंवारा । कारियेनाथवेगिउद्धारा ॥ ४२ ॥

दोहा–असतदेहअरुगेहमें, जिनकीमतिलवलीन । कुटिलकुमतितेरहतहैं, तुवपदभक्तिविहीन ॥ ४३ ॥

क्रूरकुमतिकपटीअज्ञानी । जिनकीमतितुवपदनलुभानी ॥ तेतुवदासनचीन्हतनाहीं । आपदासनिनदृगसदाहीं४४॥
जेजनकरहिंकथामृतपाना।लहहिंअवशितेभक्तिविज्ञाना॥तजिसंसारदिविनहिंप्रयामा।करहिंविशेषिवैकुंठविलासा॥
योगीशारिसमाधिहिकोऊ । उतरहिंमहामहोदधिसोऊ ॥ प्रथमपायतेअमितभयामा । पुनिपावहिंतुवधामनिरामा ॥
जेतुवप्रेमपयोधिहिपूरे । तिनकोविनश्रमतुमनहिदूरे॥४६॥सिरज्योआपत्रिगुणनहिमाहीं।पमभग्यनहिंजगनमृजाहीं॥

दोहा–भिन्नभिन्नहमहंसवे, सृजनशक्तिहैनाहिं । नानंदहुमिलायप्रभु, कीन्हायादमपाहि ॥ ४७ ॥
जगसिरजनकीशक्तिजो, हमहिंदेवयदुराज । तुवब्रह्मांडविराटघट, रचहिंभोगकीसाज ॥ ४८ ॥
तुमकारणहोमुरनके, समरथपुरुषपुराण । मायातेप्रथमहिदियो, ज्ञानजगतनिर्मान ॥ ४९ ॥

जगपालनउत्पतिहेतू । धरहिंरूपबहुकृपानिकेतू ॥ करहिंचरित्रविचित्रअपारा । सोअबकहहुसहितविस्तारा ॥

श्रीशुकउवाच ।

हिविधिजबैविदुरमतिमाना।मुनिसोंकहहरिकथालोभाना॥तबमित्रासुततिनहिंसराहत । बोलेमोदउदधिअवगाहत

मैत्रेयउवाच ।

दोहा-सबजगजीवनभद्रहित, विदुरप्रश्नयहकीन । निजकीरतिविस्तारकर, यदुपतिपदमनदीन ॥ १८ ॥

चरजलागा । हैहमारतुमपरअनुरागा ॥ अहोबादरायणकेनंदन । कियोभक्तिकरवशयदुनंदन॥१९॥
। प्रगट्योकुरुकुलमहँयमराई ॥२०॥ सोईतुमहौविदुरसुजाना । सत्यअनन्यभक्तभगवाना॥
तू । मोहिंकहिहरिगेनिजाहिंनिकेतू॥२१॥तातेमैंसिगरीहरिलीला।वर्णहुँसुनहुँगुणहुँशुभशीला२२।
हिंरहेएकश्रीधाम॥जिनकेअहेंविपुलवपुनामा॥२३॥सूक्षमाचितअचितहुविस्तारी।अपनोरूपअकेलविचारी२४

दोहा-सर्वशक्तिधारणकरन, जेहिसंकुचितनज्ञान । निजमायाविरचीहरी, जेहितेजगनिर्मान ॥२५॥

मायाजोगुणमयीमहानी।धरचोबीजजेहिशारँगपानी॥२६॥प्रगट्योमहत्तत्त्वपुनिताते।उपजतविदुरजगतयहजाते२७
महत्तत्त्वजगसिरजनहेतू । क्षोभितभयोसुनहुमतिसेतू ॥ २८ ॥ महत्तत्त्वतेअहंकारभो । जोकारणकारजअधारभो॥
इंद्रियभूतमनोमयजोई ॥ २९ ॥ सात्विकराजसतामससोई । सात्विकअहंकारतेसुनिये । मनऔसरउपजेयहगुनिये॥
जिनतेभोशब्दादिप्रकासा ॥ ३० ॥ राजसअहंकारपुनिभासा । ज्ञानेंद्रीकर्मेंद्रीदोऊ ॥ प्रगटभईतातेपुनिसोऊ ।

दोहा-अहंकारपुनितामसे, सिरज्योमात्रानाद । जातेभयोअकाशयह, रूपब्रह्मअहलाद ॥३१॥

पुनिअकाशअरुस्पर्शहिजायो । तातेमारुतहूप्रगटायो॥३२॥मारुततेप्रगट्योपुनिरूपा।रूपहितेपुनितेजअनूपा॥३३॥
भयोतेजतेरसगंभीरा । तातेहूप्रगट्योपुनिनीरा ॥ ३४ ॥ जलतेगंधगंधतेधरणी । जोभूतनकीआनँदभरणी ॥३५॥
नभआदिकयेभूतनमाहीं । एकएकतेगुणअधिकाहीं ॥३६॥ येदेवताकृष्णकेअंसा।तेहरिकीअसकरहिंप्रशंसा ॥३७॥

देवाऊचुः ।

प्रभुपदपंकजकरहिंप्रणामा । दासनहरणतापदुखधामा ॥ जाकेवंदतसंतउदारा । छोंडहिंअनायाससंसारा ॥ ३८ ॥

दोहा-आपचरणतेजेविमुख, तेनितलहहिंकलेश । तातेतुवपदकमलकी, छायाचहहिंहमेश ॥ ३९ ॥

पढिपढिवेदयकांतहिबैठी । भक्तिसुधासागरमहँपैठी ॥ ऋषिखोजाहिंतुवचरणअभंगा । जिनतेप्रगटभईयहगंगा ॥
जेगंगातटकरहिंनिवासा । तेतुवपदढिगकरहिंविलासा ॥४०॥प्रीतिसहितजोतुवपदध्यावै । ज्ञानविरागभक्तिसोपावै॥
तुवपदकमलनिकटमतिधीरा । बसैसदानहिंपावहिपीरा ॥ हमतुवपदशरणागतहोवै । पदरावरेदीनदुखखोवै ॥४१॥
जगउत्पतिपालनसंहारा । यहिकेहेतआपअवतारा ॥ हमशरणागतबारहिंवारा । करियेनाथवेगिउद्धारा ॥ ४२ ॥

दोहा-असतदेहअरुगेहमें, जिनकीमतिलवलीन । कुटिलकुमतितेरहतहैं, तुवपदभक्तिविहीन ॥ ४३ ॥

क्रूरकुमतिकपटीअज्ञानी । जिनकीमतितुवपदनलुभानी ॥ तेतुवदासनचीन्हतनाहीं । आपदासतिनदूरसदाहीं४४॥
जेजनकरहिंकथामृतपाना।लहहिंअवशितेभक्तिविज्ञाना॥तजिसंसारहिविनहिप्रयासा।करहिंविशेषिविकुंठविलासा ॥
योगाधारिसमाधिहिकोऊ । उतरहिमहामहोदधिसोऊ ॥ प्रथमपायतेअमितप्रयासा । पुनिपावहिंतुवधामनिवासा ॥
जेतुवप्रेमपयोधिहिपूरे । तिनकोविनश्रमतुमनहिदूरे॥४६॥सिरज्योआपत्रिगुणतेहिमाहीं।पैसमरथनहिंजगतसृजाहीं॥

दोहा-भिन्नभिन्नहमहैंसबै, सृजनशक्तिहैनाहिं । तातेदेहुमिलायप्रभु, करिदायाहमपाहिं ॥ ४७ ॥
जगसिरजनकीशक्तिजो, हमहिंदेवयदुराज । तुवब्रह्मांडविहारथल, रचहिंभोगकीसाज ॥ ४८ ॥
तुमकारणहौसुरनके, समरथपुरुषपुराण । मायामेंप्रथमहिदियो, शक्तिजगतनिर्माण ॥ ४९ ॥

रचनहेतब्रह्मांडके, हमकोसिरजनकीन । ज्ञानशक्तिअबदीजिये, हमतुम्हरेआधीन ॥ ५० ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीभागवते आनंदांबुनिधौ तृतीयस्कंधे पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

श्रीशुकउवाच ।

दोहा—यहिविधिदेवनकीविनय, सुनिकैशारँगपानि । कालशक्तिधारेहरी, सोवतलोकनजानि ॥ १ ॥

तेइसतत्त्वप्रगटजेहिकीन्हे।तिनहिमिलायपरस्परदीन्हे२तिनमहँअंशहिकियोप्रवेशा। जिमिसबथलमहँकिरणिदिने
रह्योभिन्नतेहियोजितकीन्हो । कर्मजगायजीवकहँदीन्हो॥३॥तबतेतेइसतत्त्वसुजाना।उत्पतिकियब्रह्मांडमहाना॥४
जामेंसूक्षमरूपअतीवा । रहतचराचरसिगरेजीवा ॥ ५ ॥ सोब्रह्मांडरूपहरिकेरो । सहसवर्पजलकियोबसेरो ॥ ६
सोब्रह्मांडहुभयोएकधा । त्रिधाफेरप्रगट्योपुनिदशधा॥७॥यहहैपुरुपप्रथमअवतारा। सिगरेव्यष्टिस्वरूपअधारा॥८

दोहा—आधिभूतअध्यात्मअरु, साधिदैवविधितीन । जीवएकधाप्राणदश, असविभागतेहिकीन ॥ ९ ॥
सुमिरतमहदादिकविनय, जोकियपूर्वअपार । वर्धनहितब्रह्मांडके, श्रीपतिकियोविचार ॥ १० ॥

हरिहिगुणततेभेअस्थान॥सुनहुतिन्हैंमैंकरहुँबखाना।११।प्रगट्योमुखपावकअरुबानी।ताकेविपयशब्दपहिचानी १
रसनाताळुवरुणसुरभयऊ । तातेजीवविपयसुरलयऊ॥१३॥नासासुरअश्विनीकुमारा।घ्राणविपयभोगंधअपारा १४
देवदिनेशविपयतेहिरूपा।यहिविधिप्रगटेनयनअनूपा॥१५॥भईत्वचामारुतयुतजाको।विपयपरशजानैबुधताको १
भयेश्रोत्रताकेदिशिदेवा ।विपयशब्दजानहुयहभेवा॥१७॥भयेरोमऔपधसुरतिनके।कंडूविपयजानियेजिनके॥१८

दोहा—भयोमेढ्रताकेभये, विदुरप्रजापतिईश । आनँदताकोहैविपय, वर्णहिंमुदितमुनीश ॥ १९ ॥

भयोफेरगुदमित्रजासुसुर ।विपयविसर्गतासुजानहुँधुर॥२०॥प्रगट्योहाथशक्रसुरजाको।विपयग्रहणकरिबेहैताको२
प्रगटेपादभानुसुरठयऊ।विपयतासुकोगमनतभयऊ॥२२॥भईबुद्धितेहिसुरवागीशा।ताकोविपयबूझयहदीशा॥२३
भयोहृदयसुरतेहिसितभानू।विपयतासुसंकलपबखानू।२४।भोपुनिअहंकारशिवईशा।वर्णहिंकरतवविपयमुनीशा२
भयोचित्ततेहिसुरसुनिजानो।तासुविपयविज्ञानबखानो ॥ २६ ॥ भयोस्वर्गहरिकेशिरतेरे । नाभीतेसुरमुनिननिवेरे ।

दोहा—पदतेपुहुमीप्रगटभै, भेसुरनरजिनमाँह ॥ २७ ॥ लहेस्वर्गसुरसतगुणी, रजगुणनरमहिकाँह ॥

रहेगवादिकपशुपुहुमीमें॥२८॥अवसुनियोगतितमोगुणीमें॥शंकरकेगणप्रेतपिशाचा ।बसहिंअकाशभेदयहसाचा२
प्रगटेहरिमुखवेदउचारी । तासुवृत्तिहितविप्रसुखारी ॥ ३० ॥ क्षत्रधर्मभोहरिभुजतेरे । तेहिधारकक्षत्रिहूचनेरे ।
जोक्षत्रीविप्रनकोपालक ।चोरनचंडालनकोघालक ॥ ३१ ॥हरिऊरूतेवैश्यवृत्तिभै । तेहिधारकभेवैश्यहुनिरभै ।
जेजनजगजीविकाचलावैं । धर्मकर्मआपनोबनावें ॥ ३२ ॥ हरिचरणनतेभोसेवकाई । ग्राहकतासुशूद्रसमुदाई ।

दोहा—ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यकी, सेवाकरतजोशुद्र । तापरहोतप्रसन्नहरि, गनहिंनहींतेहिक्षुद्र ॥ ३३ ॥

चारिहुवर्णधर्मनिजधरिधरि।पूजहिंयदुपतिकहँरतिकरिकरि३४मैंवर्ण्योहरिकोवपुजोई।ताहिसकलकहिसकहिंनकोई
पैजोसुन्योरह्योजोजाना । ताहियथामतिकरहुँबखाना ॥ होनहेतअपनीशुचिबानी । विपयबदतजोरहीनशानी ॥
[illegible]रत्नानिरंतरगाऊँ । जन्मजन्मकेपापनशाऊँ॥३६॥रसनाकोफलहरिगुणगाना । श्रुतिफलकृष्णकथारसपाना॥
[illegible]रनहूकतारा । गावतहरियशलहैनपारा ॥ ३८ ॥ मायाविदपुरुपनहरिमाया । मोहनकरतवेदअसगाया ॥
[illegible] ति । ताकिमिजानिसकेकुत्सितमति ॥ ३९ ॥

दोहा—जेहिमहिमाकोमनवचन, कबहुँनपावतपार। विधिरुद्रादिकथकिरहत, तेहिहरिनतिबहुवार॥ ४०॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबाँधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव कृते श्रीभागवते आनंदांबुनिधौतृतीयस्कंधे षष्ठस्तरंगः॥ ६ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—यहिविधिजबमैत्रेयमुनि, कह्योविदुरसोंबैन। तबक्षत्ताकरजोरिकै, विनयकियोभरिचैन॥ १॥

विदुर उवाच।

[illegible]निअविकारी [illegible]ाना। निर्गुणजिनकोकरहुबखाना॥ तिनकीकृपाऔरगुणकैसे। लीलहिहेतुकहहुजोऐसे॥२॥ [illegible]शिशुसमलीलानहियं [illegible]तिम[illegible]॥३॥निजमायाकरिजगतबनावे।पालनकरिपुनिताहिनशावै॥४॥ [illegible]हुतेरे। नशतनज्ञानकबहुँहरिकेरे॥ तेहरिकोमायाकरिसंगा। कैसेहैयहकहहुप्रसंगा॥ ५॥ [illegible]कोहिवि[illegible]॥६॥यहीदेहुसंदेहमिटाई। मेरेहियेज्ञानदुखदाई॥ ७॥

श्रीशुकउवाच।

दोहा—यहिंविधिजबविनतीकरी, विदुरमहामतिमान। तबमित्रासुतविहँसिकै, बोलेवचनप्रमान॥ ८॥

[illegible]हुँविरोधू। सोमायाजानहुँदुबोंधू॥ ईश्वरकोबंधनकहुँनाहीं। तैसहिसबजीवनहुनाहीं॥ ९॥ ज्योंसपनेशिरकटतअसांचे।पैजोलखततेहिलागतसांचे।जिमिजलमहँडोलतशशिछाया।जानिपरतडोलतानिशिराया प्राकृतजोगतिजीवनमाहीं। देखियबंधनपैसातिनाहीं॥११॥सोभ्रमकृष्णकृपाकहँपाई। भक्तियोगतेजातनशाई १२॥ जबइन्द्रियहरिमहँलगिजाहीं। तबहींसिगरेशोकनशाहीं॥जैसेनिर्भयसोवतमाहीं।सुखदुखजानिपरतकछुनाहीं॥१३॥

दोहा—श्रवणकरतहींहरिसुयश, पापनकरतनिपात। तोयदुपतिपदपद्मरति, काकहिवेकीबात॥ १४॥

तबअतिशयउरआनँदपाई। बोलेविदुरसनेहबढाई॥ (वि.उ.) लहिवाणीतरवारतिहारी। संशयसबकटिगइहमारी॥ होतकृष्णगुणगावनप्रीती। बाढ़तकृष्णचरणरतिरीती॥ यहसांचोवर्ण्योमुनिराई। हरिमायावशबंधजनाई॥ जोहरिदासगुणैअपनेको। तौजीवोंहबंधननहियेको॥१६॥अतिज्ञानीअतिमूरुखकाहीं। रहतसदासुखसंशयनाहीं॥ जेकछुमूरुखअरुकछुज्ञानी। तिनहिंसदालैजेदुखजानी॥१७॥ईश्वरमयजोजगतहिजानै।जोनताहिभूलेहुभ्रममानै॥ जोनेशुकभ्रममोउरआई। ताहिनशैहौंकरिसेवकाई॥ १८॥

दोहा—जोसाधुनसेवनकरत, बढ़तकृष्णपदप्रीति। तौपुनिकबहुँनपावतो, जननमरणकीभीति॥ १९॥

सोसाधुनपदकीसेवकाई। दुर्लभमोकोपरतजनाई॥ सदासंतहरिकीरतिगावें। जगजीवनकेपापनशावें॥ २०॥ प्रथमविरंचिमहदादिकईशा॥पुनिप्रगट्योविराटजगदीशा॥तामेंकीन्ह्योफेरिप्रवेशा २२ आदिपुरुषनहुपदशिरवेशा। रहतलोकसिगरेजेहिमाहीं॥ इन्द्रियविषयप्राणदशताहीं। चारिवर्णजोतुमदियगाई॥तेहिविभूतिअबदेहुसुनाई॥२३॥ दुहितासुतसुतनातिहुजाती। गोत्रबांधवहुकेरजमाती॥ जेहिविधिप्रजाविचित्रभयेहैं। जेसबयाहिजगमाहँछयेहैं२४

दोहा—रचेप्रजापतिविधिकित्ते, कहहुसर्गअनुसर्ग। मनुमन्वंतरवर्णिये, देहुमोहिंमुदवर्ग॥ २५॥

तिनकेवंशहुकेजेवंशहु। सहितचरित्रननाथप्रशंसहु॥ २६॥ अधऊरधअवनीकेलोका। वर्णहुमित्रातनयअशोका॥ तिनकोसबनिर्माणप्रमाना। अरुभूलोकदिकरहुबखाना॥ सुरनरपशुपक्षीकृमिजेते। इनकीउत्पतिभाषहुकेते॥२७॥ विधिशिवआदिसुरनकेद्वारा। उत्पतिपालनकरहिंसँहारा॥तियदुपतिकेकहहुचरित्रा। श्रवणसुधासमपरमविचित्रा२८ वर्णहुवर्णाश्रमहुँविभागा। रूपस्वभावशीलअनुरागा॥ [illegible] सबधर्मा॥२९॥

मयऊ।तबनिजनाभीतेभगवाना। विरनचविश्वहेतुविधिनाना॥
।फैलिरह्योजलमहँदशआशा।सोइपंकजकोपरमप्रकाशा १४॥
दोहा—हरिप्रभावतेकमलमें, प्रगटभयोकरतार। जाहिस्वयंभूकहतहैं, सिरजकसबसंसार॥ १५॥
।ही। लखनलगेलोकनचहुँघाहीं॥ परेनहींजबलोकनिहारी। तवप्रगटेतिनकेमुखचारी॥ १६॥
।हिजान्यो। तवविचारऐसोउरआन्यो॥१७॥कोमैंकमलपीठिमहँवैठो। कहँतेकमलभयोयहपैठो॥
। सोकोऊहैपुरुषप्रवीनो॥१८॥असविचारिसरसिजकेनालै। कियप्रवेशचौमुखतेहिकालै॥
।पैनहिंकंजमूलविधिपायो॥१९॥वीतिगयेशतवर्षतहाँहीं।भटकतरहेमहातममाहीं॥ २०॥
दोहा—फेरिकंजकीकर्णिका, फिरिआयेकरतार। धरिसमाधिवैठतभये, श्वासनसाधिअपार॥ २१॥
तहाँविधाताअचलह्वै, धरिशतवर्षहिध्यान। अपनेउरमेंलखतभे,कमलापतिभगवान॥ २२॥
शसरिसप्रकाशजासुफणीशसेजविलासहै।फणसहसछत्रसमानसोहतसलिलजासुअवासहै॥ २३॥
असलख्योसोवतपुरुषयकमर्कतसरिसशुभवेशहै॥ संध्याजलदद्युतिपीतपटनिदरतसुकुंचितकेशहै॥
सुवरनसुशृंगनशैलशोभाहरतमुकुटविराजतो। मणिसहितसुरधुनिधारसमवनमालयुतउरछाजतो॥
वरभुजगसमभुजलसतसुंदरचरणकिशलयचारहै॥ २४॥ त्रयलोकजेहिसोरूपअनुपमलंबअरुविस्तारहै॥
आभरणदिव्यविचित्रवसनहुँलसतहरिभुजमहँलगे॥ २५॥ जेपुरुषप्रभुकोपदपदुमपूजतनखेंदुप्रभाजगे॥
तेलहतअनयासहिहुलासनिरासयमपुरतेसही॥२६॥ मुखमधुरविहसनहरणजनदुखलसतकुंडलकानही.॥
शुकतुंडनासाअधरभासाविंवभासाहरतिहै। अरुअलकवंकहिप्रगटभ्राजतभुजगशिशुछविदुरतिहै॥२७॥
कटिमेखलाअमलाअनूपमहारशोभअपारहै।श्रीवत्सकौस्तुभवक्षथल॥२८॥भुजमणिकेयूरविहारहै॥२९॥
शशिसूरपावकपवनआदिकसुरनतेप्रभुअगमहै३०धनुशंखचक्रगदास्वस्वर्गहुलसतचहुँकितअसमहै ३१॥
यहिविधिलख्योहरिकोचतुरमुखतहँइपुनिअसलखतभो।तेहिनाभिसरसरसिजप्रगटनभपवनजलतहँलखतभो
दोहा—यहिविधिलखिभगवानको, विश्वरचनकरिआस। अस्तुतिकियकरजोरिकै,निरखतरमानिवास॥३२॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबाँधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेअष्टमस्तरंगः॥ ८॥

ब्रह्मोवाच।

दोहा—बहुतदिननमेंआपको, मैंजान्यो यदुनाथ। यहजीवनकोदोषअति, धरबनपदतुवमाथ॥
। सबभूतनकेअन्तर्यामी॥तुमतेभिन्नवस्तुकछुनाहीं। सकलरूपहोतुमहिंसदाहीं॥ १॥
कृपामहाई। रूपनाथयहदियोदिखाई॥ वीजसहसअवतारनकेरो। उत्पतिथानयहीहेमेरो॥ २॥
अवहैकछुनाहीं। हैयहआनँदरूपसदाहीं॥ यहीरूपमेंसेवनकरहूँ। यहीविश्वकारणउचरहूँ॥ ३॥
। सोकरिकृपामोहिंदरशायो॥ नाथभुवनमंगलकेदाता। हैनमामितुवपदजलजाता॥
कारी। तिनहिंनयहवपुपरतनिहारी॥ ४॥
दोहा—जेतुवपदपंकजनिरत, करहिंकथाकोश्रौन। तिनकेहियते नाथतुम, करहुकबहुँनहिंगौन॥ ५॥
।दासरावरोनहिंकहवायो॥ तवहींलोंधनतियसुतकेरो। होतलोभमदमोहघनेरो॥ ६॥
। तेकुमतीअतिअहहिंअभागी॥निरतविषयसुखधावतरहहीं।तिनकोयमकिंकरदहिगहहीं॥
।अनुचितउचितगनतकछुनाहीं।क्षुधातृषाअरुकफपितवाता।कामक्रोधमदमोहअघाता॥

दुखितहोंहिइनतेबहुनारा। निरखिदशामनडरतहमारा॥७॥जबलौंतुवशरीरजगकाहीं। तुममेंदेखतहैजगमाहीं
तबलौंजनकोंहै संसारा। लहतशोकदुखवारहिंवारा ॥ ९ ॥

दोहा–दिनभरकरिव्यापारबहु, श्रमितकरहिंनिशिशैन। विवशविषयसुखउझकिझकि, लहैंकबहुँनहिंचैन
मनमहँकरहिंमनोरथनाना। पूरणहोंहिनतासुविधाना ॥ कबहुँसुनैंनहिंकथातिहारी।तिनकोनरकविशेषविचारी
जेमुनिकथाधरहिंतुवध्याना।तिनहियकंजबसहुभगवाना॥जोइजोइकरैंकामनादासा।सोइसोइवपुतुवकरहुप्रकास
सुरहुबंधेजेआशापाशा। ध्यावततुमहिंनहोतनिराशा॥तिनकोनाथमिलहुतुमनाहीं। बिनादयाजेरहहिंसदाहीं॥
तपव्रतदाननेममखजेते। तुमपूजनपूजहिंनहिंतेते॥ इनकोतुवपदरतहितकरई। सोइजनसंपूरणफललहई ॥ १

दोहा–जेसकुतसहुजोकियो, तुवपदप्रेमहिंपान। जानिपरहुताकोअवशि, तेहिसंसारनशान ॥

जगउत्पतिपालनलयहेतू। लीलाकरहुसदासुखसेतू ॥ हेत्रिभुवनकेसुंदरस्वामी। तुमहिंनमामिनमामिनमामी॥
धन्यनाममहिमामुकुंदकी । दलनसकलकलिमलनफंदकी ॥ प्राणपयानसमयजनजेई। कैसहुकृष्णनाममुखले
तेमनुजनबहुजन्मनपापा । छूटतपुनिनकरतसंतापा ॥ अवशिकृष्णपुरगमनतसोई । यामेंशंककरैजनिकोई
तेहरिकेशरणागतमेंहीं। असप्रभुतजिअनतनहिंजेहीं॥१५॥ जोहरिहरविधित्रयवपुधारी।पालतसिरजतहरतमुरा

दोहा–हमअरुहरअरुविष्णुहूं, जेहितरुकेहैंडार। सोनारायणभुवनद्रुम, रक्षकअहैंहमार ॥ १६ ॥

सदानिरतजनपापकर्ममें। कबहुंनरततुवकथितधर्ममें ॥ तेजनकेजीवनकीआसा । कालरूपतुमकरहुनिरासा
तेमुकुंदकोशिरधरिधरणी। कहहुंप्रणाममहामुदभरणी॥१७॥जासुप्रतापब्रह्मपुरमाहीं। मैंनसितिनकोनरहुंसदाहीं
जेप्रभुकेपदपारनदेतू। मैंकीन्होंजपयज्ञसहेतू ॥ सोगोविंदकेपदअरविंदा । वंदौंसुखदमुनीशमिलिंदा ॥ १८
जयजयदासनपगदिकलेशा। तबतबधरिबहुरूपरमेशा ॥ सदाधर्मकोरक्षणकरहीं । वसुधानिहारिजननउद्धरहीं
तिनप्रभुकोमैंकरहुंप्रनामा। रघुनरपदुवरहैजाहिनामा ॥ १९ ॥

दोहा–यदपिअखियागहिनप्रभ, तदपिउदरजगधारि। शेपसेजसोवतउदधि, निद्रामोदपसारि ॥ २० ॥

नितगाई । मोकहँभजिहिप्रीतिअतिआई॥ तासुमनोरथपूजाहिंआशू ।मैंप्रसन्नह्वैहौंअनयाशू॥४०॥
। औरहुधर्मकर्मविधिनाना ॥ इनकोजेहिपूरणफलहोई । मोपदप्रीतिकरैहठिसोई ॥ ४१ ॥
मैंअहहूँ । प्रियकेप्रियतमसतिमैंकहहूँ ॥ तातेजनतजिकैभवभीती । करैअवशिमोपदमहँप्रीती४२॥
मयभोतेहिज्ञाना । तातेकरहुजगतनिरमाना ॥ जैसेपूर्वजगतयहरहेऊ । तैसहिरचहुजोमोहिंलैभयऊ ॥ ४३ ॥
दोहा–चतुराननप्रतिभापिअस, परमपुरुषभगवान । विधिकेदेखततासुथल, ह्वैगेअंतर्धान ॥ ४४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेनवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

दोहा–विधिअस्तुतिसुनिविदुरतहँ, अतिआनँदउरआनि । पुनिबोलेमैत्रेयसो, जोरिसरोरुहपानि ॥

श्रीविदुरउवाच ।

अंतर्धाना । केतेविधिपरजानिरमाना ॥ रच्योविरंचिदेहतेकेती । कितीमानसीवर्णहुतेती ॥ १ ॥
प्रश्नाकियेतुमपाहीं । तेकहिमेटहुसंशयकाहीं ॥

सूतउवाच ।

जबयहिविधिकीन्ह्यो।कहनलग्योमैत्रेयमुदभीन्यो॥(मै.उ.)कियोवर्षशततपकरतारा।जेहिविधिश्रीभागवतउचारा
६कियोपानदोउकहँविरंचिगहि६ततवअकाशलौंकमलनिहारा।हियमेंविरचिविरंचिविचारी
। पुनिचौदहप्रकाररचिदीन्हचो ॥ ८ ॥
दोहा–इतनोईजियलोकको, जानहुविदुरप्रकार । ब्रह्मलोकनिष्कामको, फलहैकरहुविचार ॥
। बोल्योफेरविदुरविदुराई ॥ वि.उ.।कालरूपहरिलक्षणजोई । हेमैत्रेयसुनावहुसोई॥१०॥
क्षत्ताकेवचनमुनीशा।कहनलगेसुमिरतजगदीशा।(श्री.मै.उ.)जोमहदादिककोपरिणामा।सोईकाललछनमतिधामा
आदिअंतहैनाहीं । लखिनपरतजेहिवपुदगमाहीं॥सोनिमित्तकारणजगकेरो।रच्योजोलहिहरिविश्वघनेरो॥११॥
। तासुप्रकारप्रकाशितमानो ॥ १२ ॥ अबजैसोहैजगतमहाना । जैसेरह्योपूर्वनिर्माना ॥
दोहा–विश्वसृष्टिनवभाँतिहै, प्राकृतवैकृतएक ॥ १३ ॥ तिनहीप्रलयप्रकारहै, कालिकगुणद्रव्येक ॥
तत्त्वकीसृष्टिवखानी । प्रथमविचारहुविदुरविज्ञानी॥१४॥अहंकारकीसृष्टिदूसरी।भूतसूक्ष्मकीसृष्टितीसरी॥१५॥
विचारहु । पचईदेवसृष्टिनिर्धारहु ॥ १६ ॥ छठईतामसृष्टिअपारा । प्राकृतयेषटसर्गउचारा ॥
। ताकोप्रीतिसहिततुमसुनहू ॥१७॥सातोमुख्यसर्गजोअहई । सोवृक्षादिसृष्टिकविकहई ॥
१८वेणुलताद्रुमआदिकजाती १९ अठईतिर्यकसृष्टिहिसुनिये।सोअट्ठाइसविधिचितगुणिये॥
दोहा–गोअजशूकरमहिषमृग,चीतारोरुअनंत । मेषऊंटद्वैखुरनपशु,यहजानहुमतिवंत ॥ २१ ॥
रुचमरी।गोरसरभएकखुरकीसिगरी॥अवपशुपंचनखनकेसुनिये॥२२॥तिनमहँश्वानशृगालहुगुनिये
शशकमार्जारा।शल्यसिंहअरुगजहुअपारा ॥ कच्छमकरआदिकजलजीवा। मर्कटगोधाऋक्षअतीवा॥
बकग्राजहुवासा । सारसहंसमयूरविलासा ॥ चक्रवाकअरुकाकमयूरा । येसवविहँगजातिजगपूरा ॥ २४ ॥
। विदुरसुनोवहएकप्रकारा॥रजोगुणीतिनकोकहज्ञानी । कर्मविवशदुखमेंसुखमानी ॥२५॥
दोहा–वैकृततीनहुसृष्टिमें, कहिदीन्ह्योमतिमान । देवसृष्टिजोसात्त्विकी, सोउवैकृतअनुमान ॥
उभयात्मकजानहुविदुर, जोहैसर्गकुमार ॥ २६ ॥ देवसर्गजोकहिगये, सोईआठप्रकार ॥
अपसरसुरअसुरहुपितर, चारणसिधिगंधर्व । राक्षसयक्षहुकिन्नरहु, औविद्याधरसर्व ॥ २७ ॥

। रचीविरंचिजीविकामनकी ॥ ४३॥ मोक्षधर्मसाधारणधर्मा । राजधर्मअरुअर्थहुकर्मा ॥
। प्रणवसहितजेरच्योविधाता॥४४॥उष्णिकछंदरच्योरोमनते।गायत्रीपुनिरच्योत्वचनते॥
दोहा–पलतेत्रिष्टुपछंदभो, भयोअनुष्टुप्फेरि । हाडनतेजगतीभयो, मज्जापंक्तिनिवेरि॥ ४५ ॥
। यहिविधिसिगरीसृष्टिवतायो ॥ ककारादिजेवर्णपचीशा । शब्दब्रह्मजियकहहिंमुनीशा ॥
॥४६॥शषसहइन्द्रियविनसंदेहा।यरलवबलताकोतुमजानो॥४७॥सातौस्वरविहारतेमानो॥
। परब्रह्मतेहतेपरभायो ॥ ४८॥ पुनितीजोतनुलहिकरतारा । विश्वरचनकोकियोविचारा॥
।तिनकोधर्मनबढोदेखाता॥४९॥तबतिनवंशबढ़नकेहेतू।असमनगुण्योस्वयंभुसचेतू॥५॥
दोहा–प्रजावढ़नकेहेतुमें, बहुविधिकियोउपाय । सोनबढतयहहोतकह,घातकदैवजनाय ॥
॥५१॥भयोरूपद्वयतेहिक्षणमाहीं।एकपुरुषदूजोभयनारी॥तासुकथावर्णोंविस्तारी॥५२॥
। शतरूपातियनामललामा ॥ सोतियस्वायंभूमनुकेरी । रानीहोतिभईछविढेरी ॥ ५३ ॥
। तातेमानववंशकहायो ॥ शतरूपामहँमनुमहराजा।जन्योयुगलसुतबलीदराजा॥५४॥
प्रियव्रतमु । लघुउत्तानपादवररूपा ॥ कन्याफेरतीनिप्रगटाई । तिनकेनामनदेहँसुनाई ॥
दोहा–प्रथमअकूतीदूसरी, देवहुतीछविखानि ॥ फेरप्रसूतीतीसरी, इकतेएकसयानि ॥ ५५ ॥
देवहुतीकरदमहिको,रुचिकोदईअकूति । जासुवंशपूरितजगत, दक्षहिदईप्रसूति ॥ ५६ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेद्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

श्रीशुकउवाच ।

दोहा–मित्रासुतमुखतेसुनत, पुण्यकथामनहारि । बहुरिविदुरबोल्योवचन,हरियशसुनतविचारि ॥ १ ॥

विदुरउवाच ।

स्वायंभूमनुगायो । सोजबप्रियनारीकहँपायो ॥तबपुनिकहाकियोमनुराई । तासुचरितमोहिंदेहुसुनाई॥२॥
। यदुपतिदासनकोशिरताजा ॥ ३ ॥ श्रीपतिकोसुंदरयशजोई । गावतरहैसंतजनसोई ॥
। तासोंभाग्यवंतकोआन॥ तेसेहरिदासनकीगाथा। श्रवणकरतकरिदेतसनाथा॥४॥

श्रीशुकउवाच ।

।तिकरिकैबोल्योवचनविदुरमुदभरिकै ॥तबहरिकथाकहतनिजकाहीं।होतरोमांचसकलतनुमाहीं
दोहा–ऐसेश्रीमैत्रेयमुनि, करिक्षत्तापरप्रीति। कहनलगेश्रीहरिकथा, जिनहिनजगकीभीति ॥ ५ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

। तबविधिसोंकहवचनअनूपा॥६॥तुमसबप्राणिनसिरजनहारे । तिनकीवृत्तिबनावनहारे ॥
। सेवाकरेंसबजनभारी ॥ ७ ॥ तातबताबहुतुमहिप्रणामा । जोकरिसकैंसकलजनकामा ॥
। तनुत्यागिसुरपुरकहँजाहीं ॥ ८ ॥ मुनिस्वायंभूमनुकीबानी । बोलेचतुराननविज्ञानी ॥
। बंदैतुम्हारसुयशअवदाना॥विनाकपटतुमविनयसुनाई।मिलवहुमोहिंअमकह्योवुझाई॥९॥
दोहा–यहीधर्महैसुतनको, यहीसत्यपितुसेव । सदाभक्तिभरशीशपर, पितुशासनधरिलेव ॥
। शासनसादरकरहिंसदाहीं॥१०॥शतरूपामहँनिजहिसमाना। उत्पतिकरहुपुत्रगुनवाना॥
नीतिपालनकरहू । करिमखकृष्णपूजिसुरभरहू॥११॥यहीपरमसेवनममकाई । करनकरहुप्रजाकामनलाई ॥
। जोदेहैपरजनसुरभारी ॥ १२ ॥ जापभुमननदनाही । जन्मकर्म दनातुरपाहीं ॥

ोमुकुंदकेगुणनहिंगावत।सोजनकबहुँसिद्धिनहिंपावत॥ ...
दोहा–तुवशासनकरिहैंअवशि, पैयहदेहुसुनाइ। कहँहमरहिंहैंकहँप्रजा, थलनहिंकतहुँदेखाइ॥ १४॥
सहिंजीवसिगरेजेहिमाहीं। सोमहिमग्नमहोदधिमाहीं॥ तासुउधारणकरहुउपाई। जामेंवसहिंप्रजासमुदाई॥१५

श्रीमैत्रेयउवाच।

मनुकेवचनसुनतकरतारा।लाग्योमनमहँकरनविचारा॥केहिविधिहोयधरणिउद्धारा।वसहिंप्रजाजेहिमाहँअपार॥१६
गईरसातलकोयहधरणी। करहुँकौनउधरणकीकरणी॥ सिरजतहीधरणीजलमाहीं। वूड़िगईदीसतिअवनाहीं
कछुनहिंआवतमनहिंउपाई॥१७॥होयँसहायमोहिंयदुराई।यहिविधिविधिकेकरतविचारा।तेहिकालतेहिनासाद्वारा
दोहा–निकस्योएकवराहको,बालकअँगुठप्रमान॥ १८॥ देखतहीक्षणमेंतहाँ,नभकोकियोपयान।
भयोआशुगजसरिसविशाला।महानलीतेहिडाढ़कराला॥१९ ...
लाग्योकरनविरंचिविचारा। नभलखातवाराहकुमारा॥२०॥अहेकौनयहशूकरव्याजू। निकस्योममनासातेआजू
लागतअतिअचरजमनमाहीं।कारणजानिपरतकछुनाहीं २१ ...
अवतौदीसतशैलसमाना। धौंसतिहैवराहभगवाना॥२२ ...
दोहा–ताहीसमयअकाशमें, अंबुदसरिसकठोर। कियोशोरवाराहप्रभु, भरयोचारहूओर॥ २३॥
ब्रह्माकोअतिमोदितकीन्ह्यो।दशोदिशासबद्युतकरिदीन्ह्यो॥सुनिवराहकाघुरघुरशोरा ...
जनअरुतपसतलोकनिवासी।करिवेदअस्तुतिसुखरासी॥२५ ...
ध्रुवधरणीउद्धारणहेतू। देवनहोनमहासुदसेतू॥ चलेसलिलप्रविशनभगवाना। मनहुँतड़ागमतंगमहाना॥२६
उठीपुच्छऊरधशिरकेशा। महाकठोरश्यामजेहिवेशा॥ कँपतसटाकीछटासोहावनि। ...
दोहा–खनेजातजाकेखुरन, नभजलथरचहुँओर। महाकरालविशालअति, सोहतडाढकठोर॥
श्वेतडाढराजतमुखकैसे। द्वितियाशशीश्यामघनजैसे॥ नयनप्रकाशअकाशहिपूरा। रहेनतबतहँशशिअरुसूरा।
योजनदशलक्षहितनुजाको।जासुप्रभालियछाइदिशाको २८ ...
डाढ़करालननयनकराला। नाशकमुनिनमहादुखजाला॥कूदेसलिलमध्यप्रभुकैसे।गिरयोमहोदधिमंदरजैसे॥२९
प्रभुपैठतसागरकियशोरा। उच्छ्वोतरंगतरलचहुँओरा॥ मानहुभुजाउठायनदीशा।दुखितकहतरक्षहुजगदीशा॥२९
दोहा–अतितीक्षणनिजखुरनते, खनतजलधिजलनाथ। धसतधसतधरणीनिकट, गयेऊँचकरिमाथ॥
देखिधरणिशूकरअवतारा। जोजीवनकीरहीअधारा॥ ३०॥ ताहिडाढ़तेलियोउठाई। रहीरसातलमहँजोजाई॥
विदुरतहाँलैगवनतधरणी। करीनाथयकअद्भुतकरणी॥ आयोयकदानवबलवाना। धरणिहरणहितकुपितमहाना॥
गदाधारिशितछोरनलाग्यो। तहाँकोपप्रभुकोअतिजाग्यो॥३१॥करतखेलअसतहाँमुरारी।दानवशिरमूठीयकमारी
मूठीलगतगिरयोअसुरेशा। मृगपतिकरजिमिमरयोगजेशा॥ उठीदैत्यतनुशोणितधारा।सलिलअरुणह्वैगयोअपारा॥
दोहा–शोणितसंयुतप्रभुवदन, सोहतडाढ़समेत। मनुसंध्यामेंश्यामघन, दुइजइंदुछविदेत॥
कढ़ेधरणिधरिडाढहिमाहीं।मारिअसुरकहँनाथतहाँहीं॥जिमिसरसीमधिमत्तमतंगा।कढ़िआवैपंकितसबअंगा॥ ३२॥
कढ़ेडाढ़धरिधरणिमुरारी। श्यामशरीरदुष्टदुखकारी॥३३॥देखिविरंचिआदिसबदेवा। करननाथकीअनुपमसेवा॥
सकलवेदमयवचनउचारी।अस्तुतिकरनलगेसुखकारी३४(ऋ.उ.)जयजयअजितयज्ञकेभावन।जयकृतज्ञसर्वज्ञसुहावन
जयजयवेदस्वरूपतुम्हारो। देवदुसहदुखनाशनवारो॥ जयजयरोमरूपप्रतियागा। धरणिउधारकजनबड़भागा॥
...यजयशूकररूपमुरारी। असुरनदरनसुरनसुखकारी॥
दोहा–जयदुष्टनदुर्लभदरश, जयमखमयीशरीर। जयत्वचधारकछंदसब,आज्यनयनगंभीर॥
...॥३५॥जयनासिकास्रुवासुखभरना॥जयआननस्रुकरूपतुम्हारो।जयजयउदरइडावनहारो॥

[illegible] श्रुतिजासू । जयविधिभागपात्रसुततासू॥जयग्रहपात्रछिद्रमुखकेरो।चरवनअग्निहोत्रजयतेरो॥३६॥
[illegible] । जयउपसदग्रीवामनराँची ॥ जययुगडाढ़इष्टितुवदोऊ । जयप्रवर्गरसनातुवसोऊ ॥
[illegible]शा । जयचितचैनप्राणजगदीशा।३७।जयजयसोमरेतभगवाना।जेतुवआसनवसनप्रधाना॥

दोहा–जयजयसातहुधातुतुव, सातहुयज्ञस्वरूप । जयशरीरकीसंधितुव, सत्रयागबहुरूप ॥
जयवपुकेबंधनसकल, सत्रमखमयेतुम्हार । यज्ञरूपवाराहयह, यहिविधिवेदउचार ॥ ३८ ॥

[illegible]।त्रिभुवनभूपा[illegible] ॥
जयज्ञानविरागाभक्तिविभागाप्रदबडभागाक्षमाछयेसुखदासदये ॥ ३९ ॥
जयवपुपवराहाखलनरनाहादायकदाहाकृष्णहरेअतिभासभरे ॥
जयधरणिउधारनज्योंवरवारनपदमिनधारनदंतकरेजलतेनिकरे ॥ ४० ॥
तुवडाढ़करालैमहँयहकालैधरणिविशालैविलसिरहीकविसुछविकहीं ॥
जिमिमेघनमालामधिउडपालातापरकालाराहुसहीतेहिग्रसतनहीं ॥
जैधरणीधारीजलधिविहारीसुछवितिहारीनिरखिपरैमनमोदभरै ॥
मनशैलशृंगपरद्वैजचंदवरजलधरतापरप्रभाभैरकवियोंउचरै ॥ ४१ ॥
जयदीनदयालारूपविशालाहरनउतालाशोकसबैहमलखेअबै ॥
जयविधिविधुभालादेवनमालात्रिभुवनपालाचरणनवैकृतमहारवै ॥
जननिवसनहेतूहेखगकेतूमोदनिकेतूधरणिधरोयहकाजकरो ॥
हैतुमहिंप्रणामामहितुववामाहैश्रीधामातेजभरोनिजथानअरो ॥ ४२ ॥
तुवबिनासुरारीहमहिंनिहारीपरैनभारीमहिधरतातेहिउद्धरता ॥
पैअचरजनाहींरचहुसदाहींयहजगकाहींसुखकरतालक्ष्मीभरता ॥ ४३ ॥
तुवकेशनझारेपारावारेविंदुअपारेउछटिगयेसुरलोकछये ॥
विधिलोकनिवासीदर्शनआसीहमशुचिराशीहोतभयेतुवदर्शलये ॥ ४४ ॥
जेचहतमहानातवगुणनानाकोअवसानामूढ़सोईनहिंसकतजोई ॥
तुम्हरीयहमायाजगतनिकायामोहहिछायानाहिंगोईतेहिसमनकोई ॥
जगमंगलकीजैजेहिनहिंछीजैयहयशलीजैजगदीशाधृतक्षितिसीशा ॥
हेकरुणासागरगुणगणनागरओजउजागरमोहिंदीशाप्रभुविधिईशा ॥
जेतुवपदविमुखैमानतससुखैरहततेसदुखैजगतसदानहिंतरतकदा ॥
मरिमरिजिजन्मतयोनिनभरमतएकहुतरसतहोतकदातेउतरतदा ॥
कोटिनजेपापाओरहुशापादुसहसतापाकरिनसकैनियरातजके ॥
जेअतिमनलाईकथासोहाईतिहरीगाईकहिनथकैमतिप्रेमछके ॥
कोउतुमसमनाहींत्रिभुवनमाहींजेहिढिगपाहींहमजाहींस्वारथचाहीं ॥
द्दगनहिदर्शाईतेहिभुजछाहींहमसुखपाहींदुखदाहींअतिविलसाहीं ॥
हेतुमहिगोविंदायदुकुलचंदाआनंदकंदानँदनंदाहरभवफंदा ॥
तुवपदअरविंदानिकटवसिदाहममतिमंदास्वच्छंदातानिजगनिंदा ॥
शूकरवपुधारेनाथहमारेमोदअपारेविस्तारेसुरदुखदारे ॥
मधिपारावारेकरहुविहारेसदासुखारेबहुवारेसंतनप्यारे ॥

...तरुणीलहिदुखजलधि, जनइतरतसहुलास । जिमितरनी लहितरतजन, वारिधविनहिंप्रयास ॥ १७ ॥
...वतिहैअरधंगी । यहलोकहुपरलोकहुसंगी॥जेहिविनसकलधर्मधुरधारी । करहिंनकर्महोतिअसनारी॥१८॥
...गकरिअतिप्रीती॥मेटहिंमुनिजनमनसिजभीती॥जैसेकिलाचेठिमहिपाला॥जीतहिविनश्रमवैरिविशाला॥
...तिउपकारा । जोजनजीवहिवर्षहजारा॥ऐसीतुमहोसुमुखिसयानी॥प्रतिउपकारसकहिनहिठानी२०॥
...मनोरथतेरो । पूरकरनकोहैमनमेरो ॥ एकमुहूरतधीरजधरहू । अबैनरतिकीइच्छाकरहू ॥ २१ ॥
दोहा-संध्यासमयभयावनी, धावहिंभूत पिशाच २२ वैलचढेनिजगणनयुत, विचरहिंशिवमुखपाँच ॥२३॥
...रेतविथुरेवेसा । तड़ितसरिससोहतशिरकेशा ॥ चिताभस्मअंगनिअँगरागा । रजतसरिससोहहिंतनुनागा ॥
...रभगवाना । तीनिनयनतिनकेजगजाना ॥ तेयहिकालकरतसंचारा॥अवशिदेखिहंकरतविहारा ॥ २४ ॥
...मपनपरायेनाहीं । नहिंमानतनिंदतकोहुकाहीं॥छुवतनपदतेजोनविभूती॥सोहमसवशिरधरहिंअकूती ॥२५॥
...चरणअदोपसदाहीं । वर्णतजासुदोपनशिजाहीं ॥ गावतरहतसदामतिमाना । जिनतेअधिकनकोउसमाना ॥
दोहा-सोशंकरसंतनसुखद, यद्यपिहैंभगवान । तद्यपिकरहिंपिशाचको, सवआचरणमहान ॥ २६ ॥
...रितनकाहीं । निंदनकरहिंसदामुखमाहीं ॥ तेजनजगमहँसदाअभागी । होहिंजेज्ञानिहुपरमविरागी ॥
...रणहेतुनहिंजानें । कूकुरकेविकाप्रियमानें ॥ पहिरहिंभूपणवसनअनेका॥कवहुँनतिनकोहोयविवेका ॥२७॥
... । जेहिथापितमर्यादापाले ॥ जगकारणश्रुतिकहइपुरारी । मायाजिनकीशासनकारी ॥
करहिंनप्रभुआचरणपिशाचा । सोसवविधिअतर्कहैसाँचा ॥ २८ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

यहिविधियदपिमुनीशवुझायो । तदपिनदितिकेमनकछुआयो ॥
...कामविवशकश्यपप्रिया, छोड़िसकलतनुलाज । पतिकोपटपकरयोतुरत, गणिकासमरतिकाज ॥ २९ ॥
...निराईईश्वरकोतहँशीशनवाई ॥कियोविहारयकांतहिजाई॥३०॥पुनिसरितामहँजायनहाई॥
...मर्मानहेकीन्ह्यो । गायत्रिहुकोकछुजपिलीन्ह्यो॥३१॥ निंदितकर्ममानिपछिताई॥दितिलज्जितह्वैशीशनवाई॥
... असवोली । अपनेमनकीआशयखोली ॥ ३२ ॥

दितिरुवाच ।

... । सोअपराधभयोमेंजानी ॥ सोअपराधनमनहिंविचारी । नाशहिंनहिंममगर्भपुरारी ॥३३॥
...द्रकोकरहुँप्रणामा॥नाशकसकलदासदुखग्रामा ॥ ३४
दोहा-मोपरहरकीजेकृपा, ममभगिनीकेकंत । नाशिनपरदायाकरत, व्याधहुअतिअघवंत ॥ ३५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

...विधिकहतकँपतदितिगाता । पुत्रलालशातियनअघाता॥संध्याकरिदिनिसोंमुनिगाई॥दीनभयेअसवचनसुनाई३६

कश्यपउवाच ।

...चिरहीपुनिसांझहिधाई । मेरोवचननकछुउरलाई ॥ शंकरहूकोलाजनमानी । तानिमत्यटेहुयदमानी ॥ ३७ ॥
...ग्रपुगलचलवारे । देवनकेदुसदेवनहारे ॥ महाअभद्रभयावनरूपा । त्रिभुवननिनिर्दयुनमुग्भूपा ॥ ३८ ॥
...प्राणिनकोअतिदुखदेहें । परनारिनवरवशपरिलेहें ॥ कोरिहेंहरिदासनअपकारा । जवनेकरिहेंकोपअपारा ॥३९॥
दोहा-तवकोपितह्वैकृष्णप्रभु, अवतिशधारिअवतार । तुवपुत्रनकोमारिहें, जिमिपुरन्दरनपहार ॥ ४० ॥
...वचनसुनतभयमानी॥बोलीदितिअतिमंजुलवानी॥(दि०३०)कृष्णहनेंपुत्रनकहँमेरे॥दोर्यननानगुणितदितेरे४१
...हरिप्रअपकारी । जेप्राणिनकहंकरहिंदुखारी ॥ जोनजीनयोनिनमेंजावें । नरहनरहअवत्रिनिगदपावें ॥
...देमहजेऊ॥करहिंनिरादरतिनकहंतेऊ॥४२॥सुननारिप्रियकेवचनसुहाये । कश्यपमुनिअसवचनसुनाये ॥

तकुमारा । औरसनातननामउचारा ॥ येचारिहुसवदेवनकेरे । हैंपूर्वजहरिभक्तिघनेरे ॥
-विचरतरहतत्रिलोकमें, चलतअकाशअकास । छोंडिकामनासकलमन,श्रीनिवासकेदास ॥ १२ ॥
दिकतेई । विचरतविचरतहरिपदसेई ॥ करिमनमेंहरिदर्शनआसा । गवनकीनवैकुंठनिवासा ॥
प्रणामा।अभिरामनमेंअतिअभिरामा॥१३॥जिनस्वरूपहरिरूपसमाना।वसहिंतहांभागवतप्रधाना
जैंभगवानें । तेविशेषतहँकरहिंपयानें ॥ औरौहरिपार्षदजहँरहहीं । हरिसेवनहितनितमुदलहहीं ॥१४॥
यदुपतिजगदीश॥निगमगम्यवंदितममईशा॥शुद्धतत्त्वमयमूरतिजाकी । हरनिहारहठिमदनप्रभाकी १५
दोहा-जहँकाननसुंदरलसत,निश्रेयसआराम । विलसहिंकोटिनकलपतरु,पटऋतुनितविश्राम ॥
विराजें । मूरतिवंतमुक्तिसमभ्राजें ॥ तालतमालहुसालविशाला । अरुप्रियाल हिंताल रसाला ॥
नीलुरिलहराती । लखतलेखललनाललचाती ॥ फरशनिफूलेफूलनिपुंजा । मंडितमत्तमधुपकलगुंजा ॥
अघमोचनषारे । ऐसेजेहरिजनहरिप्यारे॥ १६ ॥जगजाहिरयदुपतियशगावें । ललनासहितसदासुखपावें ॥
रा । वहतसदानाशकत्रयपीरा ॥ जेवसंतलतिकामनभाई । फूलिरहींसौरभसरसाई ॥
दोहा-हरिपार्षदविचरतरहत, सौरभतिनकीपाइ । गावतहरियशसर्वदा, रहतनतहाँलोभाइ ॥ १७ ॥
का । सारसहंसमयूरवलाका ॥ चातकतीतरऔरचकोरा । हरियशगावहिंकरिकलशोरा ॥
। तेयशगावहिंसदागोविंदा॥सुनिसुनिमोहिपरस्परजाहीं॥पुनिपुनिगावहिंसुखदसदाहीं१८॥
वनसोहहिचहुँपाहीं । थलथलपूरपरागसोहाहीं ॥ कुरवककुदचंपकमंदारा । नागवकुलपुन्नागअपारा ॥
रेप्रकारे॥हरिगलतुलसीमालनिहारे॥धनिधनिधनितुलसीसोंकहहीं॥निजतपलघुगुणिलज्जितरहहीं ॥
दोहा-जेजगमेंकेवलकियो,श्रीपतिकोपरणाम । तिनकेश्रीवैकुंठमें,सोहतअनुपमधाम ॥
। कितकनककेतेजघनेरे ॥ पद्मरागमणिकेवहुसोहें । मरकतमणिमंडितमनमोहें ॥
ललितसोहाहीं॥रतिरंभाजिनलखिलजिजाहीं॥कोटिशशीसमवदनप्रकासा॥फैलतफरशफवतसुखवासा
। विहँसहिंमंदविमोहनकरणी॥पैविकुंठवासीहरिदासा । फँसहिंकवहुँनहिंमनासिजफांसा
नंदकुमारे । नितनितनवसुखलहतअपारे॥हरिमंदिरमहँरमासोहाई॥जोक्षणक्षणछविकीसमुदाई॥२०॥
दोहा-कमलकरनलैकमलयक, फेरहिंलीलाहेत । मनहुँनाइकेनेहहित, झारहिनेहनिकेत ॥
क्षहितू॥करहिंअमिततपविधिवृषकेतू ॥ सोकमलाकृष्णहिपदमाहीं । निजतेरहीलोभाइसदाहीं ॥
भाकोवर्ण । सातहुमणिनसातआवर्ण ॥ दिव्यकनकजांवूनदकेरे । वनेसातद्वारेछविढेरे ॥
२ ॥यकथलनिरखतगतिमतिथाकी२१वहुवापिनमहँविद्रुमघाटा॥जटितसकलहीरनतेवाटा ॥
शुभनीरा । इंद्रनीलसमअतिगंभीरा ॥ तहँतवकहुँभगवाननहाहीं । सखिनसहितकमलासँगजाहीं॥
दोहा-तुलसीदलकरअमललै, जलमधिप्रेमहिछाइ । पतिपदपंकजपूजती, आनँदअंवुवहाइ ॥
अलकसमेतू॥निरखिरमाअतिसुछविनिकेतू॥निजशोभाप्रभुकृपाप्रभाऊ॥असगुणिवढ़तहियेअतिचाऊ
। करतकेलिवहुविधिविलसाहीं॥कहुँविचित्रवनउपवनवागा॥जहँआनँदमयउड़तपरागा ॥
। तीनहुँलोकप्रभाकीभरणी ॥ वहुविधिरतनखचितसवठौरा । होतजहाँविधिहरमनभौरा ॥
तंगकुरंगविहंगा । वैरविहायचरहिंयकसंगा ॥ सवसचिदानंदस्वरूपा । प्रभावंतजेपरमअनूपा ॥
दोहा-हरिकोमनजहँहोतजस, तहँतसहिफलहोत । दिव्यशरीरमूरतविमल, दिव्यप्रकाशउदोत ॥
-सरसैवहुसरसीसुंदरसरसींकंचनफरसीफाविरही॥मणिमंडितघाटाविचविचवाटाकलशनिठाटाशोभसही
रिजलसंचारीमणिउजियारीराजतिहै । मनसिजमनहारीअतिसुखकारीअतिदुतिवारीभ्राजतिहै ॥
अनुरागामुनिजनके । तहँअमिततड़ागालैचहुँभागानीरअदागामज्जनके ॥
स्वअपारूपुतविलसे । तहँवहुनरनारीभूषणधारीनितसंचारीहुलसे ॥

धृतचंदनभालाउरवनमालाबाहुविशालाचारुछजै। पीतांबरधारेश्रीहरिप्यारेमुक्तउदारेनित्यव्रजै॥
तहँमहाउतंगाकृतमणिरंगामहलअभंगासोहिरहे। जिनकोपरकाशाछ्योअकाशाचारिहुआशाप्रभागहे॥
कलशाकलसोहैंजिनकहँजोहैंरविशशिमोहैंप्रभाभरे। बहुध्वजापताकेविविधकिताकेबहुचपलाकेगर्वहरे॥
तहँद्वारेद्वारेकलशअपारेवंदनवारेमुक्तनके। हरिआगमजानीजनविज्ञानीहंसुखखानीतनमनके॥
हरिअस्तुतिगावतखड़ेसोहावतनिजथलछावतक्षणक्षणमें॥निशिदिनहरिध्यावतकहुँनसिधावतहरिढिगआवतपलपलमें॥
मुक्तनमुदभरिताविरजासरिताअमीनिदरिताअंबुढरें। तहँहरिपुरवासीआनँदराशीमज्जनआशीगमनकरें॥
जेजसअभिलाषेंमनमहँराखेंमुखनहिंभाषेंहरिदासा। चलिरमानिवासासहितहुलासापुजवहिंआसाअनयासा॥
जेहिदर्शनहेतूविधिवृषकेतूबहुविधिनेतूकरतरहे। सोश्रीवैकुंठाप्रभाअकुंठाकिमिमतिकुंठावरणिकहे॥
तहँजेजनजावैंअतिसुखछावैंपुनिनहिंआवैंसंसारे। नितहरिहिविलोकैंसदाअशोकैंवसतसुवोकेंसुखसारे॥
ऐसोहरिधामातहँश्रीधामापूरणकामाराजतहैं। शिरकीटरसालाउरवनमालावाहुविशालाभ्राजतहैं॥
पटपीतसोहावनतडितलजावनप्रभावढावनकटिसोहै। वपुअतिअभिरामासुंदरश्यामाकोटिनकामामनमोहै॥
मणिकनकअगाराखम्भहजाराप्रभाअपाराचहुँघाहीं। सिंहासनमाहींप्रभुविलसाहींरमासोहाहींउरमाहीं॥

सोरठा–जोवहुवेदनगूढ़, पारनपावहिंशेषकहि। ताकोंमैंमतिमूढ़, केहिविधिवर्णनकरिसकों॥ २२॥

दोहा–मतिहरणीभरणीदुखै, हरिचरित्रविनजोय। तौनकथाजेसुनहिंशठ, तेनजायँतहँकोय॥

हरियशविनगाथाजेगावैं। तेनररवरवनरकसिधावैं॥२३॥ चहहिंहमहुँमानुपतनुपावैं। तौकरिभक्तिकृष्णपुरजावैं॥
धर्मज्ञाननरतनुमहँहोवै। ताकोपायवृथाजनखोवै॥ ऐसीमनुजयोनिकहँपाई। जेनभजहिंहरिपदरतिलाई॥
तेनरघोरनरकमहँजावैं। कोटिनजन्मकीटतनुपावैं॥ जेजनयदुपतिकथासोहाई। गावतरहतप्रीतिउरछाई॥२४॥
पदपदमहँवाढ़तअनुरागा। ढारतनैननीरखड़भागा॥ क्षणक्षणमहँपुलकावलिहोती। पूरप्रेमरसप्रीतिउदोती॥

दोहा–जेजनहमसबसुरनके,अहैंशिरोमणिसांच। कवहुँनतिनकेतनुलगत, नरकअनलकीआँच॥

श्रीवैकुंठजातजनजेई। होतसदायदुपतिपदसेई॥ देखहिंनितनवयदुपतिलीला। महामोहमंडितशुभशीला॥२५॥
एसोश्रीविकुंठहरिधामा। जाहिकरैंसबलोकप्रणामा॥ लसहिंमुक्तजनविपुलविमाना। फैलरह्योपरकाशअमाना॥
तेहिविकुंठहरिदर्शनहेतू। गेसनकादिकयोगनिकेतू॥ लखिवैकुंठनगरकीशोभा।सनकादिकहुनकरमनलोभा॥२६॥
नांघिगयेजबपटदरवाजे। निरखतसुछविसुनतबहुवाजे॥ पहुँचेजबहिंसातयेंद्वारे। तबद्वैहरिपारपदननिहारे॥

दोहा–वैसबरोवरदुहुँनकी,तनुसुंदरघनश्याम। भुजकेयूरकुंडलश्रवण,शीशकिरीटललाम॥

गहेगदाद्वारेदुहुँओरा। खड़ेजयविजयअतिवरजोरा॥ २७॥ पहिरेउरमंजुलवनमाला। जामेंगुंजिरहेअलिजाला॥
सोहतचारिहुबाहुविशाला। ठाढेदोऊद्वारकृपाला॥ २८॥ खुलेरहेसातहुदरवाजे। जिनकपाटमणिसहितविराजे॥
पटद्वारननँघिगयेअशोके। सनकादिकनकोउनहिंरोंके॥ तैसहितेमुनिसरलस्वभाऊ। सतयोंद्वारचलेकरिचाऊ॥
हरिदासनसोंपूछेउनाहीं।नहिंकछुविषमज्ञानमनमाहीं॥विचरतजसलोकनपरवीने।तैसहिकृष्णपुरहुलखिलीने॥२९॥

दोहा–पंचवर्षवयरहतनित,सनकादिकऋषिचारि। विनपूँछेप्रविशतमहल,तहँजयविजयनिहारि॥

कुटिलभ्रुकुटिहगअरुणविशाला। श्वासलेतकोपितजनुकाला॥हेमदंडदोउपार्षदभारी।रोंक्योद्वारमध्यमुनिचारी॥
जानैंनहिंतेमुनिनप्रभाऊ। हरिइच्छावशरहेउनभाऊ॥ वोलतभेदोउवचनकठोरा। जाहुकहाँतुममुनिनकिशोरा॥
हौतुमपाँचवर्षकेढोटे। पैहमकोदासहुअतिखोटे॥ विनपूँछेहरिमंदिरजाहू। प्रभुदर्शनकोकियेउछाहू॥
खड़ेरहोद्वारेमुनिचारी। करतशयनहैंगिरिधारी॥ मुक्तजननदेखतमुनिचारी। रोंकिगयेतबअतितपधारी॥३०॥

दोहा–सनकादिकत्रयलोकमें,रोंकिजाहिकहुँनाहिं। तिनाहिंविजयजयरोंकदिय,सतयेंद्वारेमाहिं॥

करनहेतुहरिदर्शनआये। हरिसमीपमुनिजाननपाये॥ तबसनकादिककोपितह्वैके। वोलिवचनद्वारपनज्वैके॥३८॥

श्यामपाटपदतलअरुण, नखश्रेणीछविसंत । चरणत्रिवेणीमुनिनदृग, मज्जनकरिसुखलेत ॥ ४४ ॥
कधरिहरिध्याना । [illegible]
नलोभाने । करहिंसप्रीतिप्रेमरसपाने ॥ तिनकेध्यानसदाप्रभुआवें । जिनकोयोगीकहुँकहुँपावें ॥
आजहमारे । देखिपरेप्रभुनरवपुधारे ॥ दुर्लभऔरहुजौनविभूती । सोप्रभुनिकटविनाहिकरतूती ॥
नकादिकचारी । अस्तुतिगावतगिराउचारी ॥ ४५ ॥

सनकादयऊचुः ।

सबेउरमाहीं । तदपिनजानहिंशठतुमकाहीं ॥
ा—तेतुमप्रभुममदृगपथै, भयेकृपाकरिनाथ । कोकृपालुहैतुमसरिस, कीन्होहमहिंसनाथ ॥
पिताहमारे । सुधासरिसकाननमहँडारे ॥ तवतेनिवसहुहियेहमारे।अवप्रत्यक्षलखिभयेसुखारे ॥ ४६ ॥
तत्त्वप्रकासू । त्रिभुवनपूरितप्रगटप्रभासू ॥ रूपमधुरदासनदरशाई । देहुभक्तिनिजउरउपजाई ॥
हईजनकाहीं । तवदेखततुमकहँउरमाहीं ॥छूटतअहंकारममकारा।पुनिनहिंआवतयहसंसारा ॥ ४७ ॥
सुदासा । तेनकरहिंमुक्तिहुकीआसा ॥ तौविधिशिवसुरपतिऐश्वर्या । चाहतनहिंत्तौकारुअचर्या ॥
ा—भ्रुकुटिभंगतुम्हरेकरत, उपजतनशतअनंत । तिनकोनहिंचाहतकवहुँ, तेविरलेजनसंत ॥
णजनआवें । चरितरावरोसुनैंसुनावें ॥ करतप्रेमरसकोनितपाना।तिनकेसमकोत्रिभुवनआना ॥ ४८ ॥
अपराधा । दियोनाथदासनकोवाधा ॥ तातेनरकवसैंहमजाई । पैइतनोदीजैयदुराई ॥
वसेपदकंजा । रसनाकहैचरितमनरंजा ॥ तुलसीसमप्रभुसुरतिहमारी । लगीरहैनिशिदिनसुखकारी ॥
तममकाना । रहैसर्वदाहेभगवाना ॥ ४९ ॥ सुंदरवपुनिजहृदयदेखायो।नयननअमितअनंदहिछायो ॥
-देवनकोदुर्लभअहो, तुमकृपालुश्रीराम । सोहमकोदर्शनदियो, तुमहिंकरहिंपरणाम ॥ ५० ॥
ते सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदे
वकृतेआनंदाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेपंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

ब्रह्मोवाच ।

हेविधिजवअस्तुतिकरी,मुनिनसहितमतिमानि । तवसरसिजलोचनभये, मुनिसोंशारँगपानि ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

जयहमारे । मोरधर्मनहिंनेकविचारे ॥ कियोरावरोअतिअपराधा । तातेलहेशापकीवाधा ॥ २ ॥
इनकहँदीन्हों । यामेंसम्मतहमहूँकीन्हों ॥ जेजनहोतविप्रकेद्रोही । कवहुँनतेप्रियलागहिंमोही ॥ ३ ॥
मोपरभूरी । विप्रचरणमहँममरतिपूरी ॥ इष्टदेवहंविप्रहमारे । तौनधर्मजयविजयविसारे ॥
सममर्कान्दे । सोहमअपनेशिरधरिलीन्हे ॥ ४ ॥ चाकरकरतनूकजोकोई । तौअकीर्तिस्वामीकीहोई ॥
—जैसेइन्द्रियकरतिहें, विषयविनशअपराध । पैताकेसंवंधते, होतजीवकीवाध ॥ ५ ॥
जासुसुधासागरसुयश, अवगाहिइकवार । सपदिश्वपचहूहोतशुचि, पुनिनलहतसंसार ॥
सैनकाई । ऐसीअनुपमकीरतिगाई ॥ तातेभुजहुहोय मम द्रोही । तौतेहिकाटेउँदोहुँनछोही ॥ ६ ॥
[illegible] । ममपदरजपवित्रनापाई ॥ नाशतनगकलिमलभलसाई । धर्यहिशिवादिकशिरसवकाई ॥
[illegible] । मैंपाईपदशोभलहाई ॥ विमनकोकोन्दिसवकाई । धरणिरम्यमधुरधराई सदाई ॥
[illegible] । [illegible] ॥ विमनकोकोन्दिसवकाई । रणमंहारकनहुँनहिंपाई ॥

ब्रह्मोवाच।

तहँसनकादिविकुंठविलोकी।अरुहरिकोकरिदासअशोकी॥ सिगरेसफलनयननिजकरिकै।परममोदअपनेउरभरिकै॥ देहरिकोपरदक्षिणचारी। मंदविहँसिअसगिराउचारी॥बहुविधिकरतविकुंठविधाना।प्रभुशासनलहिकीनपयाना॥२८॥

दोहा—पुनिदोहुनपार्षदनसों, बोले श्रीपतिबैन। होइहिहठिकल्याणतुव, मानहुउरकछुभैन॥

तुम्हरोदेखिपरमसंतापा। सकहुँमेटिमैंयद्यपिशापा॥तद्यपिनाशहुँशापनघोरा। कछुलीलाकरिबोमनमोरा॥२९॥ औरहुवाक्यसुनौचितलाई। शापकलंकनविप्रलगाई॥ भयोयोगनिद्रावशजबहीं। मोढिगरमाआनचह्योतबहीं॥ द्वारपरतरोकीतुमकाहीं। क्रुद्धहोयशापेमनताहीं॥ विप्रनको जनिदेवोदोषू। धीरजधरिनिजनिजमनतोषू॥ ३०॥ ह्वैकेदैत्यराक्षसहुधरणी। जीतिसुरनकरिअद्भुतकरणी॥ पायनिधनतुमहाथहमारे। विप्रशापतेविगतसुखारे॥ थोरेकालमाहँयहिलोकू। ऐहौपुनिपैहौनहिसोकू॥ ३१॥ यहिविधिद्वारपालदोउकाहीं। शासनदैभगवानतहाँहीं॥ अतिसुंदरनिजमंदिरपाहीं।कियप्रवेशलैश्रीसँगमाहीं॥३२॥ तबतहँसुरवरदोउहरिदासा। भयेतुरंतहिहीनप्रकासा॥

दोहा—सनकादिककेशापवश, वैकुंठहितेसोय। गिरतभयेधरणीतलै, सबसुधिवुधिनिजखोय॥ ३३॥

गिरतविकुंठहितेसंसारा। माच्योसुरपुरहाहाकारा॥३४॥तेहरिकेपार्षददोउजाई। दितिकेगर्भहिगयेसमाई॥ ३५॥ तासुतेजतिहुँलोकनव्याप्यो।अंधकारकरितुमहिंसँताप्यो॥सुनहुसुरोतुम्हरोकल्याना।करहिंअवशिसोईभगवाना ३६ जोजगसिरजिपालिपुनिनाशै। हैअनादिजेहिपरमप्रकाशै॥ योगीजासुनजानहिंमाया। सोईप्रभुसबपैकरिदाया॥ देहैंमेटिकलेशननाना। करिहैंमंगलश्रीभगवाना॥ अपनेनहिंकछुअहैविचारा। काहेकीजतवृथाखँभारा॥

दोहा—देवसबैअवगवनकरि, वसहुआपनेधाम। देखहुश्रीपतिकोचरित, हर्षशोकनहिंकाम॥ ३७॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेषोडशस्तरंगः॥ १६॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

दोहा—सुनिब्रह्माकेवचनअस, सकलदेवतजिशंक। गयेभवनमनमहँगुणत, कोमेटहिविधिअंक॥ १॥

दितिशतवर्षगर्भकहँधारी। शंकितपतिकेवचनविचारी॥ जवशतवर्षपूरह्वैगयऊ। तबद्वैपुत्रप्रगटदितिदयऊ॥ २॥ होनलगेतहँअतिउत्पाता। विविधभाँतिकेसुरभयदाता॥३॥धरणीकँपनलगीबहुवारा। भयोदशहुदिशिदाहअपारा॥ उलकागाजगिरनबहुलागी। केतुप्रभाभयदायकजागी॥४॥ वहनलग्योतहँमारुतघोरा। उखरिगयेतरुगणचहुँओरा उठेववंडरबहुतभयावन। अंधकारभोभयउपजावन॥५॥विनपावसमहँअतिदुखजागी।चपलाचहुँकितचमकनलागी॥

दोहा—धूरधूसरितव्योमभो, रहीघटाघनघेरि। सूरजशशितारागणहु, परेनहींदृगहेरि॥ ६॥

कियोभयावनसागरशोरा। तरलतरंगउठीचहुँओरा॥ वापीकूपसरितसरनीरा। सूखनलाग्योपरमगँभीरा॥ सरितनसरनसरोजसुखाने॥७॥रविशशिमहँमंडलदरशाने।ग्रस्योराहुरविशशिविनकाला॥विनवारिधभोशोरकराला। तैसहिगिरिनगुहारवभयऊ।अग्नितेजमंदहिपरिगयऊ॥८॥मुखतेवमतअग्निकीज्वाला।ग्रामनघुसिबोलतेशृगाला॥ काकउलूककरैनादिनमाहीं।करहिंभयावनशोरतहांहीं॥९॥नयनमूँदिअरुकंठउठाई।बोलहिंश्वानभानुमुहँलाई॥ १०॥

दोहा—खुरखुरतेखोदतमही,करतभयंकरशोर। यूथबांधिकैधरणिमहँ,धावतहैंचहुँओर॥ ११॥

रोदनकरतसवैयकसंगा। विपुलवृक्षतेगिरहिंविहंगा॥ पुरनपहारनमहँपशुजेते। करहिंमूत्रमलक्षणक्षणतेते॥ १२॥ रुधिरश्रवतगौवनथनमाहीं। पीकपयोधरवर्षतजाहीं॥सुरमूरतबहुरोदनकरहीं। विनापवनतरुगणगिरिपरहीं॥१३॥ शुभग्रहकाहँपापग्रहघेरे। वक्रीह्वैयुधकरहिंघनेरे॥१४॥यहिविधिकरतअमितउत्पाता। भयेकलेशितप्रजाअपाता॥ एकोउमर्मनेकुनाहिजाने। सनकोनाशआशुउरआने॥विनसनकादिकसबजगलोगू।मानिप्रलयकीन्हेसवशोगू॥ १५॥

रुणतुमहिंहमकरहिंप्रणामा। देहुआजुहमकहँसंग्रामा॥ २७॥ लोकपालहौयशीघनेरे। मारेमदभटमानिनकेरे॥
थमहिंदैत्यदानवनजीती। राजसूयमखकियेअभीती॥तातेआयहोंहमसेअब। अपनोबलदेखाइहोपुनिकब॥२८॥
हेरण्याक्षजवयहिविधिभाष्यो। तवजलेशतापरअतिमाष्यो॥पैवरिहिवलपानविचारी। रोकिकोपअसगिराउचारी॥
दोहा—युद्धकरनजानिनहीं, हमतेहिंजलनाथ। प्रथमहिंतुमगुणिआगवन, भगेइंद्रकेसाथ॥ २९॥
तुमकहँयुद्धदेहिंजगमाहीं। हरिहिछोंडिअसदूसरनाहीं॥ तुमतोरणविधिजाननहारे। सुरपतियुतलुमसोंहमहारे॥
असजानिपरेमनमाहीं। देहैहरिहठियुधतुमकाहीं॥ हरिकहँतुमसेवीरअनेका। रहहिंसराहतसहितविवेका॥ ३०॥
करिहौयुद्धजवेप्रभुसाथा। तबजानिहौदानवनाथा॥ महागर्वनहिंरहहितिहारा। हैहौस्वानशृगालअहारा॥
करिहौशयनभूमितलमाहीं। यामेंहैकछुसंशयनाहीं॥ जवलौंमिलहिंनकमलानाहू। तवलोंसवसतिजौनवताहू॥
दोहा—तुमहाँऐसेखलनको, खंडनहेतुखरारि। नानातनुधारतरहत, धराधर्मधुरधारि॥ ३१॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेसप्तदशस्तरंगः॥ १७॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

दोहा—वरुणवचनसुनिअसुरपति, ताकोदीनविचारि। हेरनहरिकेहेतुहठि, हरवरचल्योसिधारि॥
मारगमहँनारदमुनिराई। मिलेहिरण्याक्षहिकहुँआई॥ तिनसोंअसुरकहनअसलाग्यो। वसतकहाँहरिजोडरिभाग्यो॥
तवनारदबोलेमुसुकाई। जाहुरसातलदानवराई॥ हेरहुजाइवसततहँसोई। जाहिकहतयदुपतिसवकोई॥
अवशितासुसँगसंगरकीजे। जीतिताहिजगमेंयशलीजे॥ हिरण्याक्षसुनिनारदवानी। कृष्णखवरलहिअतिसुखमानी॥
गहिगरुगदातहाँअसुरेशा। कियोरसातलआशुप्रवेशा॥ १॥ देख्योजायतहाँभगवानै। धारेशूकररूपमहानै॥
दोहा—एकडाढधरणीधरी, मनुगजदंतसरोज। छायोप्रभुपरकाशवर, अतिहिअपूरवओज॥

तोमरछंद।

लखिप्रभुवराहशरीर। हिरण्याक्षबलगंभीर॥ विहँस्योठठाइअपार। पुनिमनहिकीनविचार॥
मैंफिरयोत्रिभुवनमाहिं। असलख्योशूकरनाहिं॥ अतिलगतअचरजमोहि। अनुपमवराहैजोहि॥
यहिभाँतिअसुरविचारि। असदियोवचनउचारि॥ २॥ रेअधमशूकरधृष्ट। सुनिवचनमेरेदुष्ट॥
तजिदेइधरणिहमारि। नहिंडारिहौंतोहिंमारि॥ मोकोदियोकरतार। मैंहौंधरणिआधार॥
जोचहौअपनेप्रान। तौछोंडिशठअभिमान॥ ममलखतदुष्टइहाँहिं। लैधरणिजैहैनाहिं॥ ३॥
मोहिंलखतइंद्रडेराय। गेसैनसहितपराय॥ नहिंकीन्हयुधयमराज। जेहिजगतमारनसाज॥
तजिदीन्हदेशधनेश। जलदुरयोजायजलेश॥ मोहिंसकलदेवडेराय। भजिगयेसहितसहाय॥
तोहिंदियोइतहिपठाय। मोसोंलरनहितआय॥ तैंखडोधरणीधारि। मैंलियोसकलविचारि॥
तैंकपटकरिकैनित्य। मारेमहानदइत्य॥ नहिंभिरहिसन्मुखआय। रणजुरतजाहिपराय॥
छलयुद्धकोतुवजोर। बलहैशरीरहिथोर॥ हतितोहिंशूकरराज। हैहौंउऋणमेंआज॥ ४॥
दोहा—मोरिगदापरचंडयह, ममभुजकोवलपाय। अवशितोरशिरफोरिहौं, अवनाहिंविलमदेखाय॥

छंदभुजंगप्रयात।

जवैफूटिजैहैबड़ोशीशतेरो। तवैहोयगोमोदमेरोघनेरो॥ सबैदेवतादासजेमूढतेरे। विनाहीहतेतेहतेसेघनेरे॥
तुहीसर्वदेवानकोहैअधारा।यहीतेतुहीकोचहौंआशुमारा॥५॥सुनैसोहिरण्याक्षकीक्रूरवानी।धरीनाथडाढौंधराभाँतिमानी

यहिभाँतिगदायुधहोनलाग। हरिहिरण्याक्षकोकोपजाग॥दोउहनैंवरावरगदाघाय।दोउलेतगदादोउनबचाय॥१८॥
दोउवीरअहैंकोपितसमान। दोउगदायुद्धमेंअतिसमान॥ दोउचहतआपनीविजयभूरि। दोउकियेअंगतेशंकदूरि॥
दोउकरहिंपरस्परसिंहनाद। दोउकरहिंपरस्परवीरवाद॥दोउजातकहूँउड़िकेअकास।दोउकरतकहूँजगतीविलास॥
दोउलगतगदाअंगनिप्रहार। दोउतनैंबहतशोणितैधार॥ ह्वैगयोसिंधुकोसलिलशौन। दोउहोतक्षणक्षणकोपभौन॥
जबहिरण्याक्षह्वैजातवाम। तबगहहिंनाथदाहिनोठाम॥जबहिरण्याक्षदक्षिणहिजात। तबवामदिशाश्रीपतिलखात॥
जिमिलरहिंवृषभद्वैसुरभिहेत।तिमिधरणिहेतदोउबलनिकेत१९हरिहिरण्याक्षयुधहोतजानि। ऋषियुतस्वयंभुअतिमोदमानि॥
आयेअकाशमहँचढ़िविमान।वर्षप्रसूनहरिपैअमान॥२०॥हरिहिरण्याक्षपदघायघात। [illegible]
भीजतविमानवासिनशरीर। उठतीअभंगजलभंगभीर॥बहुमच्छकच्छपदपिसेजाहिं। [illegible]
चटचटाशोरह्वैरह्योघोर। भरिरह्योभुवनमेंचहूँओर॥ हरिहिरण्याक्षकोयुद्धदेखि। सबदेवडरेमनमहँविशेषि॥

दोहा—ऋषिनसहितकरतारतहँ, जानिअनर्थमहान। बोलेवचनवराहसों, देखिदैत्यबलवान॥

ब्रह्मोवाच।

नाथरावरेदासनकाहीं। देतकलेशरह्योबहुधाहीं॥ यहशठविप्रनकोभयकारी। विनअपराधदेतदुखभारी॥
जगजीवनभक्षणहठिकरतो। जानिकालयहिकोउनहिंलरतो॥२२॥मोतेयहपायोवरदाना।तातेभयोमहाबलवाना॥
बागतलरनहेतसबलोकन। ढूंढ़तसकलदेवकेथोकन॥ सिगरोसुरसमाजकहँजोरी। चढ़िऐरावतकरिबरजोरी॥
लकरबज्रबज्रधरआयो। हिरण्याक्षकेअंगचलायो॥ औरहुदेवसबैइकवारा। निजनिजआयुधहनेअपारा॥
[illegible]। तबदेवनलैदेवपति, भाग्योअतिभयपागि॥
तबतेलरहिं[illegible] २३
मायावीअतिभरोघमंडा। महानिरंकुशहैबरिबंडा॥ [illegible]आवो॥
सांपखेलावनहोतनयोगू। बचेअसुरदेहैसुरशोगू॥ २[illegible]
तातेजबलोंसाँझनआवै। तबलोंनाशअसुरयहपावै॥ [illegible]

दोहा—संध्यासमैभयावनी, दैत्यनदेनहुलास। आवतिहैअबआशुही,दायकलोकनत्रास॥
हेदेवनदायकविभव, दीनोद्धरसुखधाम॥ २६॥ शठवधहेतमुहूरतो, आयोअभिजितनाम।
सबमित्रनमंगलकरन, पुजवहुममनकाम। शांतकरोहनिअसुरको, यहदुस्तरसंग्राम॥ २७॥
भलीबातप्रभुयहभई, लर्योजोतुमतेआय। असविश्वासआयोहिये, बचिहैनाहिंपराय॥
कियेभूलिविक्रमगये, यहशठकेतिकबात। देहुमोदसबजगतको, करिरणमेंरिपुघात॥ २८॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ तृतीयस्कंधे अष्टादशस्तरंगः॥ १८॥

श्रीशुकउवाच।

दोहा—मुनिविरंचिकेवचनप्रभु, नेमुकहाँमुसक्याय। नैनसैनकरिआपनो, दियमानिबोजनाय॥ १॥
[illegible]—पुनिलख्योसन्मुखहिरण्याक्षहिफिरतदैचहुँओर। गुरवीगदानिजकंधधरिकरतशोरकठोर॥
हेपरम निर्भय देवभयप्रद महाभूधर रूप। [illegible]
ऐसोहिरण्याक्षहिनिकटद्रुतकहिश्रीभगवान। [illegible]
तहहाँगदापैअसुरअपनीगदाआशुचलाय। हरिहाथतेकौमोदकीकोदियोभूमिगिराय॥ २॥

जबभ्रमतभूतलमेंगिरीकौमोदकीदुतछाय । तबगुनिनिरायुधनाथकोनहिंसक्योशस्त्रचलाय ॥
अवलोकि अचरज अमरसब अतिशंक मनमेंधारि । चहुँओर हाहाकारकीन्हे असुर विकलविचारि ॥
तब हिरण्याक्षहि हरिसराहि प्रचंड करिकैकोप । स्मरणकीन्ह्यो चक्रको करिअसुरबधकी चोप ॥ ५ ॥
चक्रहिगहे हरिको निरखि हिरण्याक्ष अतिहिरिसाइ । गहिगदासन्मुखचलतभो गुणिमनहिवचिनहिंजाइ ॥
आवतनिरखिहिरण्याक्षको आतुरअमरअवलोकि । हरिहिरण्याक्षहिहनहुअब असकहतभेसबशोकि ॥६॥
सुनिसुरनकी वाणी असुरअति अचलप्रभुहिं निहारि।अतिकुपित दंतन दरतअधरनगदानिजकरधारि ॥७॥
विकरालकालसमानहगते असुरअति बलवान । पुनिपुनितकत हिरण्याक्ष हरिपै दहत मनहुँ दिशान ॥
मुखमध्यडाढ़ी अतिहिबाढ़ी दुखदगाढ़ी डाढ़ । अतिनदतसों हिरण्याक्षधायो मनहुँ जलदअसाढ ॥
अबनहिंबचत अस वचन कहि चपला समान चमंकि । हरिकेहन्यो उरमें गदाशठबारबारहिंहंकि ॥ ८ ॥
कमलाक्ष तब हिरण्याक्षको कियबामचरणप्रहार । सबकेलखत गिरिगैगदा शठ गिरयोखायपछार ॥
सबदेवलगेहिरण्याक्षहिदेखिहँसनठठाय ॥ ९ ॥ पुनिकरयोमंदाहिमंदवचनमुकुंदमृदुमुसुकाय ॥
रेअसुरनिर्बलचरणलागेगयोगिरिमहिमाहिं । प्रथमहिंरह्योबहुवचनबलगतसुरतिहैतोहिंनाहिं ॥
गहुगदाउठिकरियुद्धजीतहिमोहिंमधिसंग्राम । हमतोअवलवनकेमृगातुमअसुरपतिबलधाम ॥
असवचनप्रभुकेसुनतकोपितउठ्योपुनिअसुरेश । गहिगदाधायोकृष्णसन्मुखमहाभीषमभेश ॥
शठदूरतेगरुईगदादियफेंकि॥१०॥हरिपैझोंकि।जिमिविहँगपतिअहिकोगहततिमिलियोप्रभुतिहिंलोकि ११
पुनिकह्योहरिलेगदाअपनीफेरमोकहँमारु । तैंबचैगोनहिंकह्योअसजोवचनसोनबिसारु ॥
कहिअसवचनप्रभुफेंकिदीन्हींगदाअसुरहिओर । हिरण्याक्षसोनगहीगदालज्जितभयोतिहिंठोर ॥
निजविफलविक्रमदेखिदितिसुतभयोतेजविहीन ॥ १२ ॥ पुनिसाठिसहसहिभारआयसशूललीन्ह्योपीन ॥
दामिनिसमानप्रकाशजासुअकाशमेंरहछाय । मनुप्रलयपावककीशिखात्रयरहीसमरसोहाय ॥
मनुग्रसनचहतत्रिलोकयुतसुरथोकताकोनोक । मनुकालथोकअरोकअतिसुरसदादायकशोक ॥
ऐसोत्रिशूलअतूलहरिपैदैत्यदीनचलाय । जिमिकुमतिकरहिप्रयोगमारनसाधुकोअघलाय ॥ १३ ॥
आवतत्रिशूलदिशानलावतकरतपरमप्रकास । तिहिंदेखिकैछांड्योसुदर्शनआशुरमानिवास ॥
हरिचक्रवक्रत्रिशूलकोकियतुरतखंडहिखंड । जिमिगरुडत्यागतपक्षकोखंड्योकुलिशपरचंड ॥ १४ ॥
लखिकैत्रिशूलछटूकशठनिजकोनिरायुधजानि । करिअट्टहासदशासछायोकियननेकगलानि ॥
अतिधृष्टहेदितिपुत्रपुष्टसुमुष्टिबाँधिप्रचंड । हरिवक्षमेंमारयोप्रतक्षहिमाक्षअतिबरबंड ॥ १५ ॥
यद्यपिकठोरहुकुलिशतेशठमुष्टिहरिउरलागि । पैटरेनहिंजिमिसुमनमारेजातनागनभागि ॥ १६ ॥
बाराहसोंसन्मुखलरतमेंजानिजीतबनाहिं । ह्वैगयोअंतर्धानसुवरणअक्षतेहिथलमाहिं ॥
लखिकेहिरण्याक्षहिसमरमधिहोतअंतर्धान । निजहतनकोकरिशंकमनतेभगेदेवविमान ॥ १६ ॥
दोहा–सकलदेवमायाअधिप, जेवराहभगवान । तिनसोंमायाकरतभो, दानवपतिअज्ञान ॥
महाघोरमायानिरसि, सकलजगतकेलोग । किमिमिटिहैअसमानिकै, मानतभेअतिशोग ॥ १७ ॥
१५।७।–तबबह्योमारुतजोरसोंअतिघोरचारहुओर । नभठौरठौरहिदौरतेघनघोरकरिकरिशोर ॥
सबधरणिमेंअतिधूरसेंह्वैगयोधुंधाकार । जिमिभाद्रमेंनिभयावनीनदिमूझहाथपसार ॥
मनुकोटिदानवव्योमतेइकबारकरहिंप्रहार । तिमिगिरहिदिवितेदीहद्रुतपापाणअसनिअपार ॥
नहिंलखिपरहिंशशिसूरतारानीरधाराभूरि । चहुँओरतेचपलाचमकिपुहमीप्रकाशहिपूरि ॥ १८ ॥
आकाशतेकरिकैअवाजसुहोतगाजनिपात । सबदेवजानतह्वैगयोतिहुँलोककरनिपात ॥
पुनिवर्षपीवहिपुहुमिपूरयोभयमहादुरगंधि । पुनिकोपिकेशअसेशनरप्योरहीनहिंकहुँसंधि ॥

पुनिरुधिरवरष्योअसुरअतिह्वैगयोनीराधिलाल। पुनिहाड़अरुपदकंधकरनभतेगिरेतेहिकाल॥
पुनिमूत्रमलअरुमांसमज्जामेदवरपनलागि। तवकरतहाहाकारसिगरेदेवऊरधभागि॥ १९॥
पुनिप्रगटभेचहुँओरतेवहउच्चअमितपहार। तेकरतशोरकठोरछोंडतदरिनतेहथियार॥
प्रगटींपिशाचीनगिनपुनिवहुहाथलीन्हेशूल। शिरकेशखोलेधरणिधावहित्यौंपिशाचअतूल॥ २०॥
पुनिरथतुरंगमतंगपैदरप्रगटदलचतुरंग। हरिकोचहूँदिशिघेरिलीन्ह्योसहितजंगउमंग॥
वहुयक्षराक्षसभूतभैरवभलभयंकररूप। धरुमारुकाटपछारबोलहिंवचननिजअनुरूप॥ २१॥
यहिभाँतिऔरहुकरीमायाहिरण्याक्षमवान। तवभयोकोपितसमरमहँवाराहश्रीभगवान॥
जेहिभानुकोटिप्रकाशभास्योलैसुदरशनचक्र। हरिअसुरमायातकितज्योनाशतजुशत्रुनवक्र॥
चलतेसुदर्शनकेतहाँमिटिगयोअतिअँधियार। हिरण्याक्षकीमायासकलछनमेंभईजरिछार॥ २२॥
दितिउरलग्योकंपनतवैकुचवहीशोणितधार। सुधिभईतवतेहिवचनकीजोकह्योकंतउदार॥
हरिहाथतेनिजपुत्रकोवधजानिकश्यपनारि। अतिमुदितह्वैवैठीभवननिजसकलशोकनिवारि॥२३॥
निजसकलमायानाशलखिकनकाक्षअतिरणदक्ष। हरिकेसमक्षततक्षधायोकरतमानहुभक्ष॥
दोउभुजपसारिसुरारिपैगहिलेतभोवलवान। पैतासुभुजमंडलहिंवाहिरलखिपरेभगवान॥ २४॥
तवचकितह्वैपुनिकुपितह्वैकरिपुष्टवज्रसमान। हरिओरधायोतुरततरकततराकिरिपुवलवान॥
दोउमुष्टिमारतरुष्टह्वैअतिपुष्टहरिकेगात। अववचतनाहिंअसवारवारहिंवचनवोलतजात॥
तवकोपिश्रीवाराहप्रभुकरितासुहतनउछाह। निजकरहन्योतेहिकानमूलहिवृत्तज्योंतुरनाह॥२५।
कोटिनकुलिशसमकृष्णकरलहिहिरण्याक्षसुरारि। वहुभमतभमतहिरुधिरवमतहियुगलआँखिनिकारि
करचरणनिजपसरायकैगिरिगोअसुरमुँहनाइ। खुलिगयेशिरकेवारभूपणभूमिगेविथिराइ॥
जिमिपवनजोरकठोरलहितरुटूटिगिरतमहान। तिमिकृष्णकरलागतगिरयोहिरण्याक्षमाहिविनमान२
दंतनअधरदाबेदुरासददीहदेहकराल। धरणीपरयोसोवतसरिसतेहिदेवलखिततकाल॥
गतिदेखिताकीअतिविचित्रसुप्रीतिहियमेंधारि। हरिकोसराहनलगेसिगरेजयतिजयतिउचारि॥२७।
जेहियोगिजनध्यावतरहतएकांतवनमहँजाय। वहुकरिपरिश्रमकवहुँनिरखहिंअमितकालविताय॥
तवहोतजगतेमुक्तजेजनमुक्तजनमिलिजाहिं। सोनाथवपुपदशीशलोंनिरखतनयनानिजमाहिं॥
यहअसुरछोंड्योयहीक्षणतनुकरिमहासंग्राम। धनिधनिअहैदितिनंदजगमेंसवसुकृतकोधाम॥२८।
कोउकहहिंयेदोउकृष्णपार्षदविप्रशापहिपाय। त्रयजन्मधरिजगअसुरतनुउतवसहिंगेपुनिजाय॥
असकहतहरपहिंसुमनवरपहिंदुंदुभीनवजाय। अंवरअमरगणचढ़िविमाननउरनमोदसमाय॥२९।

देवाऊचुः।

कवित्त–जैजैयज्ञरूपजैजैनाशिभवकूपजैजैसतोगुणधारीजैजैसदासुखकारीकी।
जैजैहिरण्याक्षहंतजैजैकमलाकेकंतजैजैश्रीअनंतजैजैअधमउधारीकी॥
जैजैश्रीवराहजैजैदायकउछाहअतिजैजैचक्रधारीजैजैदासहितकारीकी।
रघुकुलराजजैजैयदुकुलराजजैजैवासुदेवराजजैजैद्वारकाविहारीकी॥ ३०॥

श्रीमैत्रेय उवाच।

छप्पय–हिरण्याक्षरणदक्षभक्षकरत्रिभुवनहेरो। तेहिसमक्षकमलाक्षतुच्छसमहनियशफेरो॥
देवदुसहदुसदंसिपायपरशंसतहारी। सहसवर्षकरियुद्धकोटिकरिसागरमाही॥
तदंश्रभुप्रकरवपुधरिमहागवनकियोनिजलोकको।सुरसकलजायनिजनिजसदनवसतभयेतजिशोकको
सुन्योनानाविधिविदुरस्वयंभूमुखतेकाना। श्रीवराहअरुहिरण्याक्षकोयुद्धमहाना॥

विदुरउवाच।

उत्पतिप्रजनहेतपरजापति।प्रजापतिनकीकरिकैउत्पति॥कौनकर्मकीन्ह्योचतुरानन।सोमैंसुननचहौंनिजकानन॥९॥
मुनिमरीचिआदिकतुमगाये।स्वायंभुवमनुचरितसुनाये॥तेसिगरेविधिशासनपाई।केहिविधिरचीप्रजासमुदाई॥१०॥
धोंअकेलधौलैसँगनारी।कियोअलगधौंमिलितपधारी॥ केहिविधिसकलसृष्टिविस्तारी।सोवर्णहुमुनिनाथविचारी ११
सुनिमैत्रेयविदुरकीवानी। वर्णनलगेकथामृतसानी॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

दोहा–प्रथमप्रकृतितेकालवश, महत्तत्त्वप्रगटान॥ १२ ॥अहंकारतातेभयो, ताकोत्रिविधबयान॥
सात्विकराजसतामसभेदा। अहंकारत्रयविधकहवेदा॥ तामसअहंकारमतिमाना। पंचभूतकोकियननिर्माना ॥१३॥
महदादिकजेतत्त्वअनेकू। सृजनसमर्थएकतेएकू॥ तवहरिदीन्होसकलमिलाई। तहँब्रह्मांडशून्यसुखदाई॥ १४।
सहसवर्षलौंसोब्रह्मंडा। परोरह्योमधिसलिलअखंडा ॥ तवतामेंहरिकियोप्रवेशा। तवतेचेतनभयोहमेशा॥ १५।
प्रभुकीनाभिकंजयकजायो। कोटिभानुसमभासदेखायो॥ तातेजगकोसिरजनहारा।चतुराननलीन्होंअवतारा॥१६।
दोहा–कृष्णप्रभावविरंचिलहि, रह्योपूर्वजेहिभाँति॥ यहिविधिजगकोरचतभो, बहुविधिजीवनजाति॥ १७॥
छायातेअज्ञानजनमायो। सोअज्ञानविधिपाँचकहायो॥ मोहमहातमआदिकजेते। भयेभयंकररूपहितेते॥ १८।
जानततेविरंचिभगवाना। सोतनुकोविधितज्योनिदाना॥तातनुकोराक्षसअरुयक्षा।ग्रहणकियोयुततृपाबुभुक्षा॥१९।
राक्षसयक्षपरस्परभाषे। कोउकहभक्षहुकोउकहराखे॥ २०॥ तबदूजोतनुधरिकरतारा।तिनसोंऐसोवचनउचारा।
जेभक्षणकहहोउतेयक्षा। जेरक्षणकहहोउतेरक्षा॥ २१॥ निजतनुप्रभाफेरविधिदेवन। विरचतभयोतहाँदुखभेवन।
दियोत्यागितहँविधिनिजदेहू। ग्रहणकियेसुरसहितसनेहू॥ २२॥

दोहा–पुनितीसरतनुधारिविधि, निजजंघनतेजोइ। असुरनकोउत्पतकियो, तेकामीसवकोइ॥
मैथुनकरनहेतविधिकाहीं।तेनिलज्जधायेचहुँघाहीं॥तिनहिंनिरखिविधिविहँसनलागे।कुपितभीतिभरपुनिअनुरागे २
असुरधरनहितपीछेधाये। पैविरंचिकहँधरननपाये॥२४॥ औरठौरविधिचव न जानी। गयेतुरतप्रभुशारँगपानी।
जेहरिदीननकेदुखहारी। दुष्टदुरासदकेसंहारी ॥ २५॥ विधिवोलतहँवचनविचारी। राखहुप्रभुमर्यादहमारी।
असुरमोहिंमैथुनकेहेतू। धरनचहतहंकारिवहुनेतू॥ २६॥ तुमहिंएककहोसदारमेशा। हरणदासकुलकठिनकलेशा।

दोहा–दुष्टनदातादाहदुख, तुमहिएककहोनाथ। सुखदायकहो दासके, करनअनाथसनाथ॥ २७॥
दीनवचनसुनिकेविधिकेरे। विहँसिवचनऐसेप्रभुटेरे॥त्यागहुयहतनुतुमकरतारा। यहशरीरहैअघीअपारा॥
सुनिऐसीश्रीपतिकीवानी।सोतनुतज्योविरंचिविज्ञानी २८॥सोतनुह्वैगोसन्ध्यानारी। जासुसुछविअसकह्योउचारी।
पगनहोतिनूपुरझनकारी। घूमहिंआँखिंमदमतवारी॥ वाजतिकटिकिंकिनिमनहारी। लसतदुकूलजासुछविभारी।
पीनपयोधरजनसुखकारी। विहँसनिजासुविज्जुअनुहारी॥

दोहा–विवशकरतिसवअसुरको, लोनीजासुकटाक्ष॥ ३०॥ वारवारगोवतिरहति, पटसोंवदनमृगाक्ष॥
जासुअलकअहिशावकलोला। करदिकलाआरसीकपोला॥ असुरअनूपमलखिअसनारी।मोहिगयेअसवचनउचा
अहोरूपनिरख्योअसनाहीं। याकोधीरवडोमनमाहीं॥ सुंदरनवयोवनमदमाती।शीतलकरतसघनकीछाती॥३१
हमेरसघकामिकेवांचे। फिरतअकामकामरससांचे॥३२॥यहिविधिनारिरूपसंध्याको।करततर्कअसुरनमनछाको
पुनिताकोवहुविधिसतकारे। असुरसबेअसवचनउचारे ३३अहोकौनतुमकासुकुमारी।कौनहेतइतसुपार सिधारी
दोहा–स्वागतेरोसुछविपद, सुथिवुधिहरतिहमारि। अपनोसवबृत्तांतयह, हमसोंकहोउचारि॥ ३४॥
वडेभागहमनिजगुणिलीन्हे। जोहमकोतुमदर्शनदीन्हे॥ सेहिगेंहविचरहुमनभाई।हमसवकोचितलियोचुराई ३
सुंदरिकरहुनअसंचारा। अतिकोमलहैचरणतुम्हारा॥ ह्वैहैकहूँचरणमहँपीरा। यहगुणिममनहोतअधीरा।

रकंदुकनहिंप्यारी । ह्वैहैअवशिवेदनाभारी ॥ लहिउरोजभारहिविनदेरी । लचिलचिजातिलंकतियतेरो ॥
।अलकनिलेहुसम्हारी।स्वेदविंदुपोंछहुमुखप्यारी॥हमतननिरखहुवारहिंवारा।हरहुसकलमनसिजदुखभारा ३६
दोहा–यहिविधिसंध्यानारिकहँ, गहेअसुरसवधाइ । जान्योताकोभेदनहिं, तेछविरहेलुभाइ ॥ ३७ ॥
तुकलखिहँसेविधाता । लगेसृष्टिकरनअवदाता ॥ निजदुतितेगंधर्वनकाहीं।औरअप्सरनरचेतहाँहीं ॥ ३८ ॥
शरीरतजिदीन्हो । विश्वावसुशरीरगहिलीन्हो ॥३९॥ पुनिधरितनुनिजआलसतेरे।रचेपिशाचनप्रेतघनेरे॥
पटछोरेनिजवारा । गुणिदृगभयमूंदेकरतारा ॥ ४० ॥ पुनिसोऊनिजतजेशरीरा । सोईनिद्राभयगंभीरा ॥
तातेउन्मादा । अशुचिरहेजेदेतविपादा॥४१॥पुनिशरीरधरिकमलनिवासी।रचेसाध्यपितरनगणभासी४२॥
दोहा–सोऊतनुविधितजतभे,सोपितरनगहिलीन । श्राद्धभागअधिकारसव, ब्रह्मातिनकहँदीन ॥ ४३ ॥
नुधरचोविधाता।रचिविद्याधरसवविख्याता॥सोतनुछोडितिनहिंकहँदीन्हे।अंतर्धानशक्तितिनकीन्हे॥४४॥
नुधरिकरतारा । रचेकिन्नरनआदिअपारा ॥ ४५ ॥ सोऊतनुतजिदियेविधाता । तेकिन्नरलीन्हेअवदाता ॥
लिमिलिअतिसुखपावैं।विधिकोसुयशभोरनितगावैं॥यहिविधितनुसोऊतजिदीन्हचो।महाशरीरफेरधरिलीन्हो
ष्टिवढीतेहिकाला । तवविधिकेभोशोचविशाला॥पदपसारिसोवनतहँलाग्यो ।जागिकुपितसोऊतनुत्याग्यो॥
दोहा–सोशरीरकेकेशते,प्रगटेविविधभुजंग । जिनकेअतिशयवृहदतनु,अतिविपकारेअंग ॥ ४८ ॥
औरहुतनुधारा । देखिसृष्टिभोमुदितअपारा॥सिरज्योपुनिचौदहमनुकाहीं।तेसिरजेवहुपरजनकाहीं ४९॥
नुदियोमनुहिकहँधाता।औरधरचोनिजवपुविख्याता॥लखिविधिचरितअतिहिअनुरागे ।पूरवप्रजाप्रशंसनलागे
सृष्टिविरचीकरतारा । यातेहैउपकारहमारा ॥ करिवैपरजायज्ञनकाहीं । पैहैंहमसवभागसदाहीं ॥ ५१ ॥
५ ।ज्ञानविरागयोगगंभीरा॥पुनिमुनिगणकीउत्पतिकीनी ।जिनकीकीरतिसदानवीनी ५२
दोहा–विद्यायोगसमाधितप, भक्तिहुज्ञानविराग । यकयकअंशहिदेतभे, ब्रह्मासहितविभाग ॥ ५३ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दां
वुनिधौतृतीयस्कंधेविंशतितमस्तरंगः ॥ २० ॥

दोहा–सुनिब्रह्माकीसृष्टियह, विदुरपरममुदपाय । जोरिकंजकरफेरअस, दीन्हींविनयसुनाय ॥ १ ॥

विदुर उवाच ।

जोवंसा । ताहिकहहुद्विजकुलअवतंसा॥१॥स्वायंभुवमनुकेसुतदोई । प्रियव्रतजेठकरचोतुमसोई॥
।नपादमहिपाला । जिनकोयशतिहुँलोकविशाला ॥ ध्रुवधर्मधुरधारणवारे । सातद्वीपधरणीरखवारे ॥
। मोहिंकृपाकरिदेहुसुनाई ॥२॥ स्वायंभुवमनुकीयककन्या । नामदेवहूतीजगधन्या ॥
।कहँलगिताकीसुछविसराहीं॥३॥कर्दममुनिसोनिजतियमाहीं। सिरज्योकेतपुत्रनकाहीं॥
दोहा–ब्रह्मपुत्रभोदक्षअरु, रुचिपरजापतिजोइ । लहिमनुदुहितांद्वैदोऊ, कर्योसृष्टियशहोइ ॥
देहुसुनाई । सोसुनिकहनलगेमुनिराई ॥ ५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

। कह्योसृष्टितुमकरहुअपारा ॥ तवसरस्वतिसरिकेतटमाहीं ।कर्दमकरन[illegible] ॥
नितपकरतअपारा।वीतिगयेदशवर्षहजारा ॥ ६ ॥ सतयुगमहँमुनिअतिअनुरागे।भक्तिमहि[illegible] ॥
श्रीभगवाना । जेदायकनानावरदाना॥७॥ गरुड़चढ़ेत्रिभुवनरखवारे । कर्दमकेआश्र[illegible] ॥ ८ ॥
सूर्यसमवदनप्रकाशा । निरखेकर्दमतिनहिंअवाशा ॥

आनन्दाम्बुनिधि ।

दोहा–नीलअलकझलकैंझलक, छलकिछलकिछविजाहि।ललकिललकिजिनकोअमर, ललनालखतलोभाहि ॥९॥
सोहतउरइंदीवरमाला । पीतांवरसुंदरछविजाला ॥ कोटिनविधुसमवदनविराजै । मुकुटमणीनजटितशिरभ्राजे ॥
कुंडलमंडितश्रौनसोहावन । श्वेतकंजकरअतिमनभावन॥ शंखचक्रकरगदाविशाला । सोहतआयुधअरिनकराला॥
नलिननयनअतिआनँदपाई॥१०॥कौस्तुभकंठरमाउरछाई।लखिकर्दमऐसेश्रीधामै॥११॥कियेदंडसमभूमिप्रणामै ॥
मनकोसकलमनोरथपाये । जोरिपाणिअसवचनसुनाये ॥ १२ ॥

कर्दमोवाच ।

आजसफलभेनयनहमारे । पायअनूपमदर्शतिहारे ॥
दोहा–जौनतुम्हारेदर्शको, योगीजनललचाहिं । कोटिजन्ममहँकरियतन, पावतकोऊनाहिं ॥ १३ ॥
तुवमायावशजेमतिमंदा । जगतारणतवपदअरविंदा ॥ सेवहिंविषयविनोदहिहेतू । तेजनशूकरसहितअचेतू ॥ १४॥
तैसहिंमैंमतिमंदमहाना । तुमहिंपायकैश्रीभगवाना ॥ चहहुँआपनोकरनविवाहू । दारादेतदुसहदुखदाहू ॥ १५ ॥
वेदरूपजोवचनतुम्हारा । जेहिमहँवँध्योसकलसंसारा ॥ वँधेहमहुँतैसहितेहिफांसी।तुमपदपूजहिंआनँदरासी ॥१६॥
लोकलोकजनपशुसमत्यागी । जेतुवपदछायाअनुरागी ॥ कथारावरीसुधासमाना । करहिंपरस्परकाननपाना ॥
दोहा–रँगेरहैंतेहिरंगमें, मानहुमत्तमहान । जननमरणकेभीतिको, तिनकोहोतिनभान ॥ १७ ॥
ऋतुदिनमासजासुसवअंगा । कालचक्रयहपरमअभंगा ॥छीनतिसवकीआयुदाई।पैनहिंतुवदासनढिगजाई ॥ १८॥
आपएकहीयहसंसारा।निजमायाकोकरिविस्तारा॥पालहुसृजहुहरहुसवकाला।सृजतिहरतिमकरीजिमिजाला १९॥
जौनविषयसुखमोमनचाहै । सोनहिंप्रभुतुम्हरेमनमाहै ॥ तद्यपिगुणिअभिलापहमारी । पूरहुनाथकृपाकरिभारी ॥
भुक्तिमुक्तिकेहौतुमदाता । सवविधिपूरतहौजगत्राता॥विचरहुनिजसंकलपजगतको।पुजवहुसवअभिलापभगतको॥
दोहा–जयतुलसीवनकेअधिप, धृततुलसीवनमाल ॥ २० ॥ तुम्हरेचरणसरोजको, हैप्रणामसवकाल ॥ २१ ॥

मैत्रेयउवाच ।

ऐसीसुनिकर्दमकीवानी । चढ़ेपक्षिपतिशारँगपानी ॥ करिअतिकृपामंदमुसुकाई।सुधासरिसयहगिरासुनाई॥ २२ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

जौनहेतुतपकरिमुनिराई । मोकहँतुमपूजेउचितलाई ॥ ताकोमैंकरिअमितउपाई ।प्रथमहिराख्योयोगलगाई॥२३॥
मृपानपूजनममतिमाना । तोपुनिकाजेतुमहिंसमाना ॥२४॥ब्रह्मावर्त्तहिक्षेत्रविशाला।मनुमहराजवसतसवकाला ॥
सातद्वीपधरणीकरभूपा॥ ताकीप्रियनारीशतरूपा॥२५॥सोनिजनारिसहितमहिपाला।आपदर्शहितअतिहितताला ॥
दोहा–ऐहतुम्हरेआश्रमे, परसोंकेदिनसोइ । देवहुतीनिजपुत्रिका, संगलियेमुदमोइ ॥ २६ ॥
सोपतिचाहतिहैसुकुमारी। ताकीमनअभिलापविचारी॥निजदुहितातुमकोनृपदैहै।जगतीपतिजगतीयशलैहै ॥२७॥
देवहुतीअतिप्रीतिवढाई । करिहैअवशिआपसेवकाई॥२८॥देवहुतीलहितुवसँगधन्या । करिहैप्रगटआशुनवकन्या॥
होइतिनकरविपिनविवाहा । रचिहैंसृष्टितेइंमुनिनाहा ॥२९॥ तुमममशासनसत्यविचारी । वसोइतैहवपरमसुखारी ॥
मोहिंअर्पिसिगरेनिजकर्मा ॥३०॥करिजीवनपदयासुधर्मा । मेरेचरणनप्रीतिलगाई॥ ऐहोममपुरतुममुनिराई ॥३१॥
दोहा–देवहुतीकेआयहम, जन्मलेहिंगेआशु । कपिलनामअसकरहिंगे, सांख्यशास्त्रपरकाशु ॥ ३२ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

[illegible] । श्रीविकुंठकहँकीनपयाना ॥ ३३ ॥ पक्षिराजकेपक्षनतेरे । सामवेदस्वरकढ़ेघनेरे॥
अस्तुतिकरहिंसिद्धगंधर्वा।चलेनाहिंहरिकेसँगसर्वा॥३४॥यहिविधिगवनेजवहिमुरारी।तवमुनिश्रीपतिवचनविचारी॥
सोइविंदुसरसरत्निनतीरा।रसनभयेकर्दममनिधीरा ॥३५॥एकसमयतहँमनुमहराजा । चढिकनकस्यंदनछविछाजा॥

...। अरुनिजकन्याजोछविखानी॥करतपुहुमिपर्यटननरेशा।चलतभयेदेखतवहुदेशा ॥३६॥
...दिनकोमुनिसोंकह्यो, मुनिआगमभगवान । ताहीदिनकर्दमभवन, आयेमुनिमतिमान ॥ ३७ ॥
...। कर्दमपरकरिकृपातहाँहीं ॥ ढारचोनयननआनँदनीरा ॥ ३८ ॥ विंदुसरोवरभयोगँभीरा ॥
...। चहुँकितरहीपरमछविछाई ॥ मणिसमसोहतनिर्मलनीरा । परमपुण्यप्रदअतिगंभीरा ॥
...
...॥चहुँकितमंजुलवंजुलराजी ।कूजहिंकोकिलकेलिनकाजी
दोहा-गुंजहिंकुंजनकुंजमहँ, मनरंजनअलिवृंद, । सुखपुंजनपीवतरहें,कंजनकंजमरंद ॥
...। गानकरहिंकोइलसुरपूरी ॥४१॥ चंपकदंवअशोककरंजा।वकुलअशनकुरुवकमनरंजा ॥
...। शाखानमितफूलफलभारा॥औरहुवृक्षअनेकनजाती । कोवर्णैचहुँकितवहुभांती ॥ ४२ ॥
...। सारसहंसचक्रयुतवंसा॥चहुँकितकरहिंमनोहरशोरा । विचरहिंचहुँकितचारुचकोरा ॥४३॥
...। कस्तूरीमृगसहितसमाजा ॥ सिंहवाघवाँदरगोपुच्छा । नकुलआदिवहुजीवअतुच्छा ॥
दोहा-ऐसेकर्दमआश्रममहि, मनुनरेशतहँजाय । कियेहोमवैठशुचित,मुदितलखेमुनिराय ॥ ४५ ॥
...। तपकेतूलतेजयुतआनन ॥ यद्यपितपतेकुशव्रतधारी । तदपिथूलभेहरिहिनिहारी ॥
...। कर्दमभेतेहिकालनिहाला॥४६॥कमलनयनहेलंवशरीरा।जटाशीशतनुवल्कलचीरा ॥
...॥आवतआश्रममनुमहराजे।निरख्योकर्दमसहितसमाजे॥
... ४८
दोहा-प्रीतिसहितनृपकोकियो, सकलअतिथिसत्कार । सुमिरिवैनश्रीऐनके, वोलेवैनउदार ॥ ४९ ॥
...। वसुधाधिपवसुधावलसेतू ॥ पुहुमिपालपुहुमीप्रतिपालौ । हैप्रणामतेहिनाथकृपालौ ॥
... दीननदायकनितअनंदके॥५०॥रविशशिअनलअनिलयमशक्रा।वरुणधर्मआदिकसुरचक्रा॥
... ॥कनककलितमणिजटितसुयाना।तामेंचढिप्रभुकरहुपयाना
...। धरिधावहुधरणीवरिखंडा ॥ करहुमलीनअधीनविनाशा । धूरधारधावहुआकाशा ॥ ५२ ॥
दोहा-महासैनलेसंगमें, विचरहुवसुधामाहिं । श्रीपमभीपमभौनसम, तुमहितकहिंरिपुनाहिं ॥ ५३ ॥
जोनकरहुअससैनले, देशनदेशपयान । सकलधर्ममर्यादतो, नाशहिंचोरमहान ॥ ५४ ॥
अहेंनिरंकुशदुष्टजे, तेअघदेहिंवढाय । करतशयनतुम्हरेधरणि, धर्मधाकधँसिजाय ॥ ५५ ॥
पैहमपूछहिंआपसे, ममआश्रमजेहिहेतु । कियोआगमनसोकहहु,सोहमसाधहिंहेतु ॥ ५६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचं-
द्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदांवु
निधौतृतीयस्कंधेएकविंशस्तरंगः ॥ २१ ॥

मैत्रेय उवाच।

दोहा-यहिविधिमनुमहराजसों, जवकर्दममुनिराय । वोलेवचनविनोदभरि, अतिशयमोदवढ़ाय ॥
... वोलेमुनि...॥१॥ (म०रु०) तुमकोअपनेरक्षणहेतू । विधिप्रगटायोमतिनिकेतू ॥
...। तुममेंसवनविषयकरभोगू ॥ २ ॥ विप्रनरक्षणहितजगमाहीं । सिरज्योश्रीअनंदमकाहीं ॥
... मुनिव... ॥करहिंपरस्पररक्षसदाहू॥४ ॥आपदरशममिटेकलेशा । धर्मरूपतुमकरेसेशा ॥५॥
...भाग्यहमदर्शनपाये । दुष्टनकोनहिंपरहुदेखाये॥आपचरणरजमेंशिरधारयो।निजजीवतजगसफलविचारयो॥
दोहा-सुधासरिसकारिकैकृपा, दीन्हयोवचनसुनाइ । श्रवणसफलममआजभे, भाग्यकह्योनहिंजाइ ॥ ७

मोकोयहदुहिताअतिप्यारी।सुनहुनाथयहविनयहमारी॥८॥प्रियव्रतअरुउत्तानपादकी।हैभगिनीयहविनप्रमादकी ॥
शीलरूपगुणनिजसमजोई । यहदुहितावरचाहतसोई ॥९॥ जवतेयाकोनारदआई । दीन्ह्योतुमगुणरूपसुनाई ॥
तवतेयहअपनेमनमाहीं।तुमहिंचहतिपतिऔरननाहीं॥१०॥तातेयहकन्याकहँलीजे।गृहकारजहितदासीकीजे॥११॥
वस्तुजोअपनेतेमिलिजाई । उचितननतेहित्यागवमुनिराई।हैविरागवंतहुयहधर्मा।तौपुनिकाजुरलिग्रहकर्मा ॥ १२ ॥

दोहा—वस्तुजुअपनेतेमिलै, ताहित्यागजोकोय । पुनिपरघरमाँगतफिरै, तासुहँसीहठिहोय ॥

औरनसोंमाँगतभुवमाहीं । तनुतेमानसुयशकढिजाहीं॥१३॥हमसवकानसुन्योमुनिनाहा।तुमचाहहुआपनोविवाहा॥
तातेदेवहुतीमैंदेहू । करिकेकृपानाथअवलेहू ॥ १४ ॥ मनुमहराजवचनमुदअपना । सुनिबोलेकर्दमअसवचना ॥

कर्दमोवाच ।

मैंकुमारयहसुताकुमारी । तुमविवाहयदरच्योविचारी ॥ यहिकन्याकेसँगनरनाहा।जन्मजन्ममभयोविवाहा ॥१५॥
वेदविधानवेदयहहोई।हमकोतुमकोअतिमुदमोई ॥ भूषणभूपितजेहिछविकरती । सोतुवसुतानकेहिहियहरती १६

दोहा—एकसमयऊँचीअटा, नूपुरपगनवजाय । कंदुकखेलतयहरही, मंदमंदमुसुक्याय ॥

विश्वावसुगंधर्वसुजाना । नभमहँगमनतचढ़ोविमाना ॥ मतागवरीकोतहँज्वेकै।गिरयोविउवावसमोहितह्वैकै ॥१७॥
[illegible]
[illegible]
याकेजवलौंपुत्रनह्वैहै । तवलौंअंगसंगममपैहै ॥ पुनिहमपरमहंसह्वैजैहैं । वासविलासआशुतजिदैहैं ॥ १९ ॥

दोहा—जेप्रभुजगसिरजतहरत, पालतरहतसदाहिं । प्रजापतिनकेपतिसोई, उपदेश्योहमकाहिं ॥ २० ॥

मैत्रेयउवाच ।

असकहिमौनभयेमुनिराई । श्रीपतिपदपद्मनमनलाई ॥ मंदहँसनिकर्दमकीदेखी । देवहुतीगैलोभविशेषी ॥ २१ ॥
शतरूपाकोमनुअनुमानी । मनुमहराजमहामतिखानी ॥ देवहुतीकर्दमकोव्याही ।भयोमहामनमाहँउछाही ॥२२॥
पुनिशतरूपामुनिपटनाना । दायजदियोअनेकविधाना२३पुनिदुहितादुखदुखितनरेशा ।भुजभरिमिलेताहितेहिदेशा
सुतावियोगजातसहिनाहीं । नयननसोंजलढारतजाहीं ॥ वारवारउरलायकुमारी । रोदनकियेमहीपतिभारी ॥
[illegible]
तातमातकहिवारहिवारा । तेहिक्षणरोदनकियोअपारा२५पुनिभूपतिलैनिजसँगरानी।माँगिविदामुनिसोंमतिखानी॥
चढ़िरथसैनसहितगहिडगरे।चलतभयेभूपतिनिजनगरे॥सरस्वतितीरलखतमुनिभीरा।तिनहिंप्रणामकरतमतिधीरा॥
आयेब्रह्मावर्तहिकाँहीं । नृपआगमसुनिप्रजातहाँहीं ॥ गावतवाजवजावतधाये । मोदितमहलमहीपहिल्याये ॥२८॥

दोहा—वर्हिषमतीपुरीरही, सवसंपदासमेत । झारयोयज्ञवराहजहँ, अंगनलोंमनिसेत ॥ २९ ॥

तेईभयेकुशाअरुकाशा । जिनकेसुंदरहरितप्रकाशा ॥ जिनकोलैऋषिठानतयागा । ढारतनयननीरवड़भागा ॥३०॥
मनुमहराजआयनिजनगरी।कुशविछायकरिकेविधिसिगरी॥ठानियज्ञपूज्योभगवाने।प्रेमपयोदधिमगनमहाने ॥३१॥
वसेनगरमहँमनुमहराजा । भाइनभृत्यनसहितसमाजा ॥ पाल्योप्रजनधर्ममर्यादा । वसेवामयुतविगतविषादा ॥
... । अतिसुंदरफैलतपरकासा ॥ तीनहुतापविनाशनहारा । वसहिंमहीपतिसहितकुमारा ॥

दोहा—भोगैंभोगसुरेशसम, भूमेभूपतिभूरि । तीनहुँलोकनमेंरही, जिनकीकीरतिपूरि ॥ ३२ ॥

... । भूपतिद्वारेआयप्रभाता ॥ करतरहेंजिनकोगुणगाना । पावहिंनितनवमोदमहाना ॥
मनुनितसुनतकृष्णगुणगाथा।मानतअपनेकाहिसनाथा ॥ ३३ ॥ भोगियद्यपिभोगअनेका।पैनहिंछूट्योनेकविवेका ॥
मनुभूपतिकोपरमप्रवीने । भोयदुपतिपदपद्ममलीने ॥ ३४ ॥ दुर्लभदेवपायप्रभुताई । भूपतिनहिंभूल्योयदुराई ॥

...नाथा। दियेविनायकाल्हनरनाथा॥ गयेनृपथार्नाहिपककुयामा॥मुनिमिलनमद्योजानकीगमा॥३५॥
दोहा–...ग्याकिय, नामुदेवकेदाम। जाथनन्दिप्रमुमुनिमर्ड, मुमिग्नग्मानिनाम॥ ३६॥
...कमानामक, ...नाप। ...नकरई, कियेकृष्णकोजाप॥ ३७॥
वर्णाश्रमआदिकसकल, धर्मअनेकप्रकार। मनुसोंपूछ्योजोनमुनि, सोमत्रकियोविचार॥ ३८॥
आदिराजमनुकीकथा, मैंसबयहकहिदीन। ...केवंशअब, मुनियेपरमप्रवीन॥ ३९॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतआनंदांबुनिधौ
तृतीयस्कंधेद्वाविंशतितमस्तरंगः॥ २२॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

दोहा–मातपिताजबगवनकिय, देवहूतीतबसोय। निजपतिकीसेवाकरी, जिमिगौरीहरजोय॥ १॥
...विश्वासबढ़ाये॥निर्जनिजमुखपतिकोयशगाये॥ बोलतरहीमधुरमुखबानी।कर्मकर्मपतिकीरुखजानी॥ २॥
...दियोकंतकोतापमहाई॥ ३॥ यहिविधिकरीकंतसेवकाई।निजशरीरसुधिसकलभुलाई॥४॥
...सबताके। पेपतिसेवनकरतनथाके॥ यहिविधिदेवहूतीकीसेवा। निरखिकृपाकरिकर्दमदेवा॥
...॥ ५॥ अतिशयसेवाकरीहमारी। मेंप्रसन्नतुवकर्मनिहारी॥
दोहा–जोसबदेहीकोपरमप्रिय, तातनुसुरतिविसारि। सकलभाँतिसेवाकियो, निशिवासरहुहमारि॥ ६॥
...॥ पायोमेंशत्रुनअह्लादा॥ सोसुरदुर्लभभोगअपारा। मेंतोहिंदेहुंप्रियासुखसारा॥
...देहुजातेसकललोकलखिलेहू॥७॥ औरभोगसिगरेनशिजाहीं।हरिप्रभावतेसोनविलाहीं॥ ८॥
...दिवहूतीतबअसकहवानी॥ करतकटाक्षमंदमुसुकाई। बोलीलज्जितनयननवाई॥ ९॥

देवहूतिरुवाच।

...। तेसिगरेमोहिंसत्यजनाई॥ अहैमनोरथनाथहमारा। आपहुप्रथमहिवैनउचारा॥
दोहा–कछुककाललौंआपसँग, मोदितकरहिंविहार। जबलोंहोयनगर्भमोहिं, यहवरदेहुउदार॥ १०॥
...। सोशासनदेनिमुनिनायक॥ करतआपनीपदसेवकाई। मेंतनुकीकृशताअतिपाई॥
...सोकरिकृपाकरहुमतिधीरा॥कलिसाजसाजहुसुखमाहीं।जेहिअवलोकतअमरसिहाहीं॥११॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

...। कर्दमएकविमानबनाये॥ तपप्रभावतेतोनविमाना। भयोमनोरथदायकनाना॥ १२॥
...अनेकनसं...। सुमनश्वेतशोभितचहुँपाहीं
दोहा–ग्रीपमपावसशिशिरअरु,शरदहेमंतवसंत। निजप्रभावप्रगटतनिपट, पटऋतुसदालसंत॥
...विमानअमानकिताके॥१४॥मंडितसुमनसुमंजुलमाला।गुंजहिंमत्तमधुपसबकाला
...तिअमोलबहुवसनविराजें॥१५॥परम्परामहलनकीछाजें।आसनचमरव्यजनपरयंका।१६सोहहिंभवनभवनहरशंका
...। मर्कतमणिकीभूमिविचारी॥ माणिककीवेदीछविदेही॥ १७॥ द्वारदेहलीविद्रुमकेही॥
...किवार। इंद्रनीलमणिशिखरअपारा॥ कनककलशकलशाकुलसोहैं। पद्मरागभीतीमनमोहैं॥
दोहा–चामीकरतोरणअमित, तनेविचित्रवितान॥ १९॥ माणिकपोतहंसनिनिरखि, हंसकपोतलोभान॥
...। करहिंमनोहरचहुँकितशोरा॥२०॥शोभितअटाउच्चशशिशाला। सकलसैनकेऐनविशाला॥
...नीचारू। यथायोगतिनकोविस्तारू॥ विमलवापिकाकूपतडागा। मंजुलकुंजपुंजतरुबागा॥२१॥

देवहुतीलखिसुपदविमाना।पतिसेवालखिचित्तलुभाना॥तवताकेमनकेमुनिज्ञाता।बोलेकर्दमवचनविख्याता॥२२
मज्जनकरहुबिंदुसरमाहीं। रच्योजनार्दनयहिसरकाहीं॥ सकलमनोरथदायकसाँचो। अतिशयमनमेरोयहराँचो
दोहा—चढिविमानप्यारीसुभग, बिंदुतडागनहाय। देवहुतीसुनिपतिवचन, अतिशयआनँदपाय॥ २३॥
मलिनवसनअंगहुमलिन, बँधिगेकेशमलीन। सेवतपतिपदपद्मनित, भरीकृशितबलछीन॥ २४॥
देवहुतीसरस्वतिसरिमाहीं। धोवनलागीअंगनकाहीं॥ प्रगटींतहांसहसवरदासी। नवयौवनअमलाचपलासी॥२६
देवहुतीतेतेकरजोरी। बोलींवाणिप्रीतिरसबोरी॥ हैंदासीहमस्वामिनितेरी। सेवकाईकरिहैंबहुतेरी
करहिंकौनसिगरीहमकामा।कहहुनकतकर्दमकीवामा॥२७॥असकहितेहिमज्जनकरवाई।नवदुकूलअंगनपहिराई
पुनिभूपणतेभूपितकीनी। बहुविधिभोजनदियोप्रवीनी॥सुधासरिसआसवतहँल्याई। देवहुतीकहँपानकराई॥२९
दोहा—लायआरसीविमलअति, स्वामिनिसन्मुखराखि। तासुरूपनिजनयनलखि, मुदितभईछविचाखि॥ ३०॥
देवहुतीयहिविधिकरिमज्जन। पहिरचोवसनविमलमनरञ्जन॥पहिरचोहीरनकोहियहारा।वलेविराजतकरसुकुमारा।
नूपुरकरहिंचरणमहँशोरा३१कटिकिंकिणिविलसितचितचोरा३२सुंदररदभ्रुकुटीयुगबाँकी।हरतिहियोनिजनयननताक
आननपूरणशशीसमाना।ताछविकोकरिसककहिबखाना॥३३॥देवहुतीकरिसकलशृँगारा।मिलन
गईसहस्रसखीयुततहँवां। रहेप्रजापतिकर्दमजहँवां॥३४॥निरखियोगमायामुनिकेरी।देवहुतीभैचकितघनेरी॥३५।
दोहा—मज्जनकरिशृंगारधृत, सहससखीयुतताहि। मुनिवरलखिकर्दमतहां, मुदितभयेमनमाहि॥ ३६॥
करिनवयौवनसुंदररूपा। भूपणवसनहुपहिरअनूपा॥ देवहुतीकरकंजपकरिकै। चढेविमानमहामुदभरिकै॥३७।
चढींसंगमहँसखीहजारा। कियेअंगपोडशहुशृँगारा॥ सेवनकरनहेतुतहँआईं। सुरसुंदरीसकलछविछाई।
लख्योसखिनमधिमुदितमुनीशा।मनहुँव्योमउडुमाधिउडुईशा३८शीतलमंदसुगंधसमीरा।चहतसुखदनाशकरतिपीर
मेरुकंदरनचढेविमाना।विहरनहितमुनिकियेपयाना॥तहँकर्दमकियविविधविहारा।जहाँवहतिसुरसरिकीधारा॥३९।
दोहा—विश्रंभकनंदनविपिन, पुष्पभद्रवनजौन। मानसरोवरचैत्ररथ,हरचोमुनिनकरिगौन॥
कर्दमकेलिकुतूहलकरहीं।सुरललनालालचलखिभरहीं ४० चढिविमानसवसुरननिवासू।कर्दमकीन्हेंविपुलविलासू॥
दुर्लभतिनत्रिभुवनकछुनाहीं।जेयदुपतिपदपद्मलुभाहीं ४२पुनिभूमंडलविचरनकीन्ह्यो।देवहुतिहिंअतिआनँददीन्ह्यो।
यहिविधिमुनिकरिविपुलविहारा।पुनिनिजआश्रमकहँपगुधारा४३देवहुतीसँगवर्पहजारन।बीतेक्षणसमकरतविहारन॥
जान्योनहिंवीततकछुकाला।एकसेजसोवतसुखजाला॥४५॥ दिव्यवर्पवीतेशतजवहीं।मानहुँभोरभयेहैअवहीं॥४६॥
दोहा—तवकर्दममुनिजानिकै, देवहुतीमनआस। कियोगर्भआधानतिहि, नवविधिसहितहुलास॥४७॥
देवहुतीएकहिदिनमाहीं। प्रगटकरीनवदुहितनकाहीं॥सिगरीअतिसुंदरमनहारी।मनहुकामानिजकरनसँवारी॥४८॥
पुनिपतिकोवनगवनविचारी। देवहुतीभइपरमदुखारी॥ खोदतपदनखतेमहिकाहीं। अंवकअंबुवहुतवहजाहीं॥
कंपतगातनीचमुखकरिकै।पियसोंकह्योवैनमुदभरिकै॥ जौनकह्योसोपूरणकीन्ह्यो। मोकहँअतिआनँदप्रभुदीन्ह्यो॥
पैअवविनयकरौंयहथोरी। करिकैकृपापूरियेमोरी॥ तारहुमोहिंसागरसंसारा। यहमेरेअतिहियेखँभारा॥ ५१॥
दोहा—नवदुहितनकेसरिसपति, खोजदेहुमुनिनाथ। दैसुतमोहिंपुनिजाहुवन, कहौंजोरियुगहाथ॥ ५२॥
विवशविपयसुखवीतवासर।अवनहिंनाथतासुहेअवसर।५३॥सोनहिंगुनहुमोरअपराधा।मेटहुनाथसकलयहवाधा५४
कामिनिसंगकरतजसरीती। तैसहिहोयजोहरिपदप्रीती॥तौताकीतुरतहिवनिजावे।पुनिसंसारभीतिनहिंपावे॥५५॥
जासुकर्मनहिंधर्मसमेतू।भयोनपुनिविरागकरहेतू॥हरिपदपद्मनअलिमनभयऊ॥ सोजनजगजीवनमरिगयऊ॥५६॥
सोहमहरिकीमोहितमाया।विपयविनोदहिकालगमाया॥ तुमसोंलह्योनभक्तिविरागा। हरिपदमेंममननहिंलागा॥
दोहा—तुमसमसमरथपायकै, लियोमोक्षनहिंमाँगि।जानिलियोसोसकलविधि, मेरीअहैअभागि॥ ५७॥

इतिसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृतेआनंदाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेत्रयोविंशस्तरंगः॥ २३॥

सांख्यज्ञानकोभयोविनाशा।तवहमकियहपुरुपप्रकाशा॥जाहुसुखीध्यावहुहमकाहीं।मृत्युजीतिविचरहुजगमाहीं।
पैहौकहुँनशोकमुनिराई।त्रिभुवनपतिपदमोंचितलाई॥३९॥ सांख्यशास्त्रअज्ञानप्रकाशी।मेंमातहिदेहौंसुदराशी ४०

श्रीमैत्रेयउवाच ।

दोहा—कपिलदेवजवअसकह्यो, तवकर्दमसुखपाइ । करिप्रदक्षिणानाथकी, निवसेकाननजाइ ॥ ४१ ॥
तजिजगसंगमौनव्रतधारी।विचरतभेसंसारसुखारी ॥४२॥पारब्रह्ममहँमनहिंलगाई।करनलगेहरिभक्तिमहाई ॥ ४३॥
सुखदुखशोकमोहतजिदीन्यो।समदरशीप्रशांतसुखभीन्यो४४यहिविधिहरिपदभक्तिवढ़ाई।जगतभीतिकर्दमनहिंपा
जड़चेतनमहँनिरखेंईशै । ईशहुमहँजड़चेतनदीशै ॥ ४६ ॥ तज्योईर्पाइच्छासिगरी । धरचोधीरमतिकवहुँनविगरी।
भगवतभक्तियुक्तमुनिराई । दुर्लभमोक्षकहँपरतजनाई ॥ चितअरुअचितविलक्षणजोई । त्रिगुणप्रकाशजहाँनहिंहोई
दोहा—ऐसोश्रीपतिधामजो, तहँकर्दममुनिजाय । वसतभयेप्रमुदिततहाँ, हरिसेवतचितलाय ॥ ४७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दा
म्बुनिधौतृतीयस्कंधेचतुर्विंशस्तरंगः ॥ २४ ॥

दोहा—तहँशौनककरजोरिकै, अतिशयप्रीतिबढ़ाय । कपिलकथाकेसुननहित, कह्योपरमचितचाय ॥

शौनकउवाच ।

सांख्यशास्त्रकोप्रगटनहारा।उपदेशनहितालियअवतारा१सवयोगिनकेअहहिंशिरोमनि।तासुकथासुनिकैहमभेधनि
कपिलकथासुनिजियनअघाता।कियोजौनप्रभुचरितविख्याता॥ [illegible]
सुनतसूतशौनककीवानी । वोलेवचनमोदरससानी ॥

श्रीसूतउवाच ।

व्यासकथामैत्रेयमुनीशा । विदुरहिंकहेउसुमिरिजगदीशा ॥ ४ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

तवकर्दमलीन्ह्योवनवासा।कियोविंदुसरकपिलनिवासा ॥५॥एकसमयसुतकेढिगजाई।कपिलमातुअसगिरासुनाई

देवहूतिरुवाच ।

दोहा—विपयविवशसुततेहमें, उपज्योअतिअज्ञान । सोहमतजिदीन्ह्योसकल, पायपुत्रभगवान ॥ ६ ॥ [illegible]
यहअपारसागरअज्ञाना।पारकरहुहेपुत्रसुजाना॥८॥उयेभानुजिमितमनशिजाई।मिलेतुमहिंतिमिकुमतिनशाई॥
तुवमायावशभोअज्ञाना।ताहिवेगिनाशहुभगवाना ॥ १०॥ तुमभवतरुकेकठिनकुठारे । [illegible]
प्रकृतिपुरुपकेजाननहेतू । तुमहिंप्रणामकरहिंकुलकेतू ॥ ११ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

सुनिजननीकीसुंदरवानी । विहँसिकपिलअसकहेउवखानी ॥ १२ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

भक्तिज्ञानजनमंगलमूला।नाशकनियसुखदुखप्रतिकूला १३ प्रथममुनिनसोंजोहमगाये।सोहमतुमसोंदेतसुनाये
दोहा—जानहिंजननीसत्यदम, मोक्षवंधकोहेत । प्रभुपदरतमनमोक्षप्रद, विपयनिरतसुखदेत ॥ १५ ॥
मोहादिककिनमनशुचिजोई।सुखदुखतादिकवहुँनहिंहोई॥जवहेगयोशुद्धमनमाता।होतविरागज्ञानअवदाता ॥१
आतमज्ञानभयोनवभूगे । पावनकृष्णप्रेमनतवरूगे ॥१७॥ ज्ञानविरागयोगतपनाना।येसवहैंनहिंभक्तिसमाना॥
इंचदाधकोएकहोपुकारी।विनाभक्तिनहिंमिलहिंमुरारी ॥ १९ ॥ अहैसंगमनकोदृढफांसी ।अहैसंगप्रदआनँदरासी

... । उत्पतिहोतभयेजगतेहैं ॥ ३८ ॥ दीवोजोद्रव्यहिआकारा । द्रव्यहिमेंगुणरूपप्रकारा ॥
... । लक्षणकह्योरूपकोसोहै ॥ ३९ ॥ पाचनऔरप्रकाशनपाना । शीतनिवारणभोजननाना ॥
... । लक्षणतेजकेरश्रुतिवरना॥४०॥तिजतेरसरसतेभोपानी।तेहिग्राहकरसनाभेजानी॥४१॥
... अम्लकषायसमेत ॥ ४२ ॥ रसउत्पतिजगहोतभे, वर्णहिंबुद्धिनिकेत ॥
भिजवनअरुपिंडीकरन, तोपजियावनकर्म । तृपातापहरमृदुकरन, बढ़वनजलकोधर्म ॥ ४३ ॥
... ॥ ४४ ॥अरुसुगंधदुर्गंधअपारा । मिश्रगंधबहुगंधप्रकारा ॥ ४५ ॥
... । धारणछिद्रदेवहूजाना ॥ उपजावनसबप्राणिनकेरो । लक्षणमहिकोकियोनिवेरो ॥ ४६॥
... ॥४७॥
... ॥ जलकोगुणरसतेहिग्रहणेकर । रसनाकोलक्षणभाप्योवर॥
... ग्रहणकरबजोतासु । लक्षणलेनोघ्राणको, श्रुतिगणकियोप्रकासु ॥ ४८ ॥
... । वायुआदितेपरेलखाई ॥ तातेमहिसबकेगुणकाहीं । धारणकरतीअहेसदाहीं ॥ ४९ ॥
... । इनसबमेंहरिकियोप्रवेशा॥५०॥तबयेसिगरेमिलेअचेतन।अंडरह्योउत्पतिह्वैश्रुतिमन ॥
... । उत्पतिभोजोरहतिसदाहीं ॥ ५१ ॥ एकतेएकदशगुणोजोई । आवरणितजलादितेसोई ॥
... । सोब्रह्मांडअहैअतिशोभित॥ताहीमेंभगवतकोरूपा।सकललोकविस्तारअनूपा॥५२॥
... सलिलमेंकनकमय, यहब्रह्मांडजोवेश । कियोअनेकनछिद्रको, करिहरितहांप्रवेश ॥ ५३ ॥
प्रथमभयोमुखपुनिवचन, अग्निदेवतातासु । फेरनासिकाप्रगटभये ॥ ५४ ॥ पुनिभोनयनविलासु ॥
...५॥पुनित्वचाभईहै।फिरलोमतजितनेछई है।भयोशिश्न॥५६॥पुनिगुदप्रगटानी।मृत्युदेवतातासुबखानी
...८॥नाड़ीपुनिजाई।फिरउदरा॥५९॥उरभोसुखदाई६० यद्यपियेइन्द्रिययुतदेवा।होतभईविराटहितसेवा॥
... ६२अग्निप्रवेशकियोमुखमाहीं।उठ्योविराटपुरुपतबनाहीं ॥
... ॥ उठ्योविराटवपुपतबनाहीं॥६३॥ पुनिसूरजप्रविशेदृगमाहीं।उठ्योविराटवपुपतबनाहीं ॥
दोहा-कियप्रवेशश्रुतिमेंदिशा, तबहुँनउठ्योविराट ॥ पुनिप्रविशीओपधित्वचा, तबहुँनउठ्योविराट ॥
... ।उठ्योविराटवपुपतबनाहीं ६५॥मृत्युप्रवेशकियोगुदमाहीं।उठ्योविराटवपुपतबनाहीं
... । उठ्योविराटवपुपतबनाहीं ॥ ६६ ॥ वरुणप्रवेशकियोपदमाहीं।उठ्योविराटवपुपतबनाहीं ॥
... । उठ्योविराटवपुपतबनाहीं॥६७॥प्रविश्योसागरउदरहिमाहीं।उठ्योविराटवपुपतबनाहीं॥
... ॥पुनिब्रह्माप्रविश्योबुधिमाहीं।उठ्योविराटवपुपतबनाहीं ॥
... । उठ्योविराटवपुपतबनाहीं ॥ ६९ ॥
... जबप्रविशेहियमाहिं । तबविराटवपुसलिलते, उठ्योतुरंततहाँहि ॥ ७० ॥
जैसेसोवतपुरुपको, कोउनहिंसकहिजगाय । जैसेजियपतिकृष्णविन, कोतनुसकेउठाय ॥
सोरठा-तातेतनुतेभिन्न, भक्तिसहितहरिकोगुनै । तौनहोयमतिखिन्न, भवबंधनमेंपरतनहिं ॥ ७२ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतआनन्दाम्बुनिधौ
तृतीयस्कंधेपड्विंशतितमस्तरंगः ॥ २६ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा-जीवअकरताहैजननि, अगुणऔरअविकार । रहतप्रकृतिमधिपदापिसो, रहततनतदपिविकार ॥

दोहा—अबलक्षणसबतत्त्वके, तोकोदेहुँसुनाँइ। जाकेजानेपुरुषके,प्राकृतगुणमिटिजाँइ॥ १॥
जौनज्ञानहियग्रंथिमिटावे। परमपुरुषप्रत्यक्षकहावे॥ जातेलहतजीवकल्याना। सोहमप्रथमहिंकरहिंबखाना॥२
आत्माहैअनादिअविनाशी।अगुणप्रकृतिपरविश्वप्रकाशी ३ सूक्षमप्रकृतिगुणमयीजोई।हरिलीलाहितलहजियसो।
प्रजात्रिगुणमयसिरजतिमाया।मोहततासोंजीवनिकाया॥५॥भयोजबहिंजीवहिअज्ञाना।तबकरताअपनेकहँमाना६
तातेजीवलहतसंसारा। पावतयोनिकर्मअनुसारा॥ जबकरतानिजकहनहिंमाने। तबछूटतजगबंधमहाने॥७
दोहा—करताकारजकारणहु, इनकोप्रकृतिहिहेतु। सुखदुखभोगहुमेंअहै, जीवहेतुमतिसेतु॥ ८॥
सुनिकैकपिलदेवकीवानी।देवहुतीबोलीमतिखानी॥(दे०हू०)प्रकृतिपुरुषकेलक्षणजोई।जगकारणभापहुतुमसोई९
सुनिकैमातुगिरामनभाई। बोलेकपिलदेवहरषाई॥

श्रीभगवानुवाच।

प्राकृतसोइजेहिकहतप्रधाना।त्रिगुणनित्यसतअसतमहाना॥चौबिसतत्त्वसकलकबिकहहीं।तासुभेदयहिविधिकबिगह
अनिलअनलअपअवनिअकाशा।अरुशब्दादिकपंचप्रकाशा॥ ज्ञानकर्मइन्द्रियदशन्यारी।मनबुधिअहंकारचितभा
चौबिसतत्त्वहोयँयहिभाती। सगुणब्रह्मयहहैअघघाती॥ प्रकृतिअवस्थारूपविशाला।सोईतत्त्वपचीसोकाला॥१
दोहा—सोइकृष्णप्रभावको, करतकालमतिमान। तौनकालकोप्रकृतिवश, जियकीभीतिमहान॥ १६॥
जामेंसमतात्रिगुणकी, प्रकृतिक्रियावशजोय। जातेहोयकहैकोई, कालअहैहरिसोय॥ १७॥
जोभगवानपुरुषकोरूपा। भीतरसोइहैकालस्वरूपा॥निजसंकल्पवसतजगमाहीं।संतसुखदकरभरणसदाहीं॥१८
सोईस्ववशदेवहितक्षोभित।निजचितशक्तिप्रकृतिकिययोजित॥प्रकृतिसुमहत्तत्त्वप्रगटायो।अतिप्रकाशमयजगतसोहा
सोहमतत्त्वजगतकोकारण। निजविकारकीन्हेजोधारण॥ सूक्ष्मरूपयहजगहैसोई। प्रगटकरतताकोमुदमोई॥
संकोचकजोजियकेज्ञाने। तेहितनुकोनिजदुतिकियपाने॥ २०॥ परमातमअरुज्ञानिहुकेरे।साधनयेजेश्रुतिननिबेरे
दोहा—मनबुधचितअहँकारको, दीन्होजगप्रगटाय। वासुदेवकेचित्तमें, दियोउपास्यजनाय॥
अहमितमेंसंकर्षणकाहीं।कहउपास्यअनिरुधमनमाहीं॥बुधिमेंदियप्रद्युम्नउचारी॥२१॥शांतस्वरूपस्वच्छअविक
महत्तत्त्वकेक्षोभहितेरे। क्रियाशक्तिअहँकारनिबेरे॥ २३॥ सात्विकराजसतामसजेहैं। उत्पतिहोतभयेजगतें
सात्विकअहंकारतेभोमन।राजसअहमिततेइन्द्रियगन।तामसअहमिततेमहिआदिक।पंचमहाभूतहुअहलादिक २
शेषसहस्रशीशतिनभाये। तेतातेउपास्यकहवाये॥ अथवासुरइन्द्रियपँचभूता। इनउपासनातेमजबूता॥ २५
दोहा—अथवाशांतहियोरअति, मूढ़रूपअहँकार। शेषउपासनथलइनहु, कहदियवेदउचार॥ २६॥
सात्विकअहमिततेमनजायो।जोसंकल्पविकल्पबढ़ायो॥ जिनतेसकलकामनाकेरी।उत्पतिमेंकहश्रुतिननिबेरी॥२७
शरदेंदीवरसरिसशरीरा। ध्यावतजाहियोगिजनधीरा॥ तेअनिरुद्धदेवजेअहहीं। तिनउपासनाथलमनकहहीं॥२८
बुद्धिभईराजसअहँकारे। जातेज्ञानअर्थकोधारे॥ तबहींसकलइंद्रियनकेरी। भैसहायतासुखप्रदढेरी॥ २९
संशयऔरविपर्ययनिद्रे। निद्रासुधिबुधकर्मेंद्रियचे॥ ३०॥ ज्ञानेंद्रिहुकीउत्पतिभाई। राजसअहंकारतेगाई
दोहा—क्रियाशक्तिजोप्राणकी, ज्ञानशक्तिबुधिकेरि। सोउराजसतेहोतिभे, वेदनकह्योनिबेरि॥ ३१॥
तामसअहंकारहिनेमानो। होतशब्दतनुमात्रबखानो॥ तातेहोतभयोआकाशा। शब्दग्राहीश्रवणप्रकाशा॥ ३२
शब्दअर्थकोवाचकजोहै। वक्ताकोबोधकनभसोहै॥ ताकोसूक्ष्मरूपहैजोई। लक्षणशब्दहुकेरहैसोई॥ ३३
भीतरबाहरभूतनकाहीं। देतोअवकाशसदाहीं॥ इन्द्रियमनकोहोतअधारा। मनकोलक्षणकियउचारा॥ ३४
नभतेभोअस्पर्शनोहापो।अस्पर्शहिनेपवनहिजायो॥गाहकपरसत्वचाविख्याता॥३५॥कोमलकठिनशीतअरुना
दोहा—सूक्ष्मरूपजोपवनको, लक्षनपरसोआप॥ ३६॥ चालनमेलनमापनो, करिबोकरनसहाय॥
रूपोरसनकोलजनयनो। औरहुकहनअहैहैनैनो॥ ३७॥ वायुतेहोतभयोहिरूपा। रूपहितेभौतनअरूपा

...विपिनमहँ... । सहजेजहँकोउसकहिनजाई ॥३॥ सत्यअहिंसाऔरअचोरी । करैअर्थभरसंचयथोरी ॥
...स्वाध्या... । हरिपूजन॥४॥मौनतानामजप॥ आसनजीतिप्राणपुनिजीती॥मनकीकरैअचंचलरीती॥

दोहा-इंद्रिनकोएकाग्रकरि, नाशैविषयमहान ॥ ५ ॥ मूलाधारादिकनमें, मनतेलावैप्रान ॥

...वै । यदुपतिकेपदमेंमनलावै॥ ६ ॥ निजमनकहँऐसीकरिरीतै । क्रमक्रमसेबुधिसोंबुधजीतै ॥
...हँज... सातिहि... अजिनअजिनपरचीरा। असआसनशुचिथलरविधीरा
...हँवठै ।सूधकायकरिपुनिनहिंऐंठै॥८॥पूरककुंभकरेचककरिकै।अथवातेहिविपरीतहिधरिकै॥
...करे... ॥ तवमनअचलहोयअनयासा॥९॥यहिविधिसाधनकरैजोकोई।जाकोअचलशुद्धमनहोई॥

दोहा-जैसेकनकतपायकै, अमलकरैमतिमान । तिमिसाधनतेहोतहै,मानसअमलमहान ॥ १० ॥

...हैकरि... । धारिधरणिध्वंसैअघग्रामा॥इंद्रिनजीतिविषयतजिनाना। कामादिकजीतैधरिध्याना ॥११॥
...होयअचंचलजबहीं... १२ ध्यानकरहियदुपतिकररूपा।जोत्रिभुवनमहँपरमअनूपा
... । गदाचक्रदरधरअरविंदा ॥ इंदीवरसमश्यामशरीरा ॥१३॥ सरसिजकेसरिकेशिरचीरा ।
...श्रीवत्स... । कौस्तुभमणिकंधरमहँराजे ॥ गुंजतमधुपलसतवनमाला । उरअमोलमणिहारविशाला॥

दोहा-पदनूपुरअंगदभुजनि, करवरवलयविलाश । कोटिसूर्य्यसमशीशमें, राजतकीटप्रकाश ॥ १५ ॥

...पीक... । दृगमुददायकतनुरमनीया॥१६॥सदारहतप्रभुवैसाकिशोरा। त्रिभुवनवंदितनंदकिशोरा
... ॥१७॥कहतनामजेहिपापनशाहीं ।शरणागतपालकभगवाना॥यहिविधिकरैकृष्णकोध्याना
... । सवविधिधरैकृष्णकोध्याना ॥राखैशुद्धभावहरिमाहीं । सुनैश्रवणहरिसुयशसदाहीं॥१९॥
...आवै। पृथकपृथकहरिअँगतवध्यावै ॥पुनियहिविधिहरिकोपदकंजा । ध्यानकरैमंजुलमनरंजा ॥

दोहा-ध्वजअंकुशयववज्रअरु, सरसिजचिह्नयुक्त । अंधकारअज्ञानको, करनहारहैमुक्त ॥

... मंडलतासुलसैसुखदाई ॥२१॥ जेहिपदपद्मपखारननीरा।होनहेतुशुचिसकलशरीरा ॥
... । तवतेपायोशंकरनामा ॥ सेवकमनअज्ञानपहारा । ताहिवज्रसमफोरनहारा ॥
...ध्यावै । तोजनकवहुँकलेशनपावै ॥ २२ ॥ जंघाजानुयुगलहरिकेरी ।धरैध्यानकरिप्रीतिघनेरी॥
... । विधिशिवसुरवंदितनितहोई॥सोकमलानिजकरनलगाई।धारिअंकमरदतमनलाई॥२३॥

दोहा-पुनिऊरूहरिकेयुगल, ध्यानकरैमनलाय । अतसीकुसुमसमानदुति, लसहिंकंधखगराय ॥

... । निरखतजेहिहरिगर्वनशाई॥कांचीकरैविलासतहाहीं । अंवरपीतलंवतिनमाहीं ॥२४ ॥
...नाभि... विश्वअधारउदरमधिभावै॥जोनाभीतसरसिजजायो ।सोइसरसिजविधिकोप्रगटायो २५॥
... । मनुमरकतमणियुगलकेवारा॥छाजतिछटाछहरितहँद्वारा।मनहुनीलगिरिसुरसरिधारा॥
...निवासवक्षस्थलभ्राजे । भक्तनयनउरआनँदछाजे॥पुनिवैकुंठपतिकंठहिध्यावै।जहँकौस्तुभमणिसुसमापावै॥२६॥

दोहा-ध्यावैवाहुविशालपुनि, जिनवाहुनकीछाहँ । वसहिंविशोकीदेवगण, मंथकर्त्तारधिकाहँ ॥

...आरचक्रहिपुनिध्यावै । जासुतेजत्रिभुवनमहँछावै॥पांचजन्यशंखहिपुनिध्यावै ।प्रभुकरकंजहंससमभावै॥२७॥
... । ध्यानकरैउरप्रीतिहिधारी ॥ सवलितशत्रुनशोणितजोई । दहतदीहदासनदुखसोई ॥
...प्रभुकीवनमाला। गुंजहिजामेंमधुकरजाला॥कौस्तुभलसिजीवहिअभिमानी।पसरतिजाकीप्रभाअमानी ॥
... । संतसकलसंतापनशावै ॥ २८ ॥
...मकराकृतकुंडललोल॥...भाकोहरणी॥ ...अतिसुखकरणी ॥

दोहा-युगझपअजिअवटीसहित, पुनिइंदिरानिकेत । असकंजहुनीदलदतछवि, हरिमुखसुसमासेत ॥

... ॥मनहुकुंडलितसर्पकुमारा॥नयनउपरयुगभ्रुकुटिविलाशा। मनुअलिअवलिकंजमधुआशा

जिमिजलअंतरभानुदेखाहीं।पैजलतिनकोपरसतनाहीं॥१॥जबमायासबलितजियहोवै।तबअपनेकहँकरताजोवै॥२
हैसंसारहेतुसतिसोई। निजकृतकर्मअवशिफलहोई॥ करिकैकर्मचहतजियस्वर्गा। नाहिंचाहतकबहूँअपवर्गा॥ ३
तेसबकालपायनशिजाहीं। जैसेजगेसपनभ्रमजाहीं ॥४॥ स्वर्गहेतुजनकरतउपाई। जातेसकतनजगहिविहाई।
तातेक्रमक्रमचंचलचित्ते। राखैसतपथमहँजननित्ते ॥५॥ करिविरागअतिभक्तिहुकाहीं। राखैमनअपनेवशमाहीं।
दोहा—साधनकरिश्रद्धासहित, करैकृष्णमहँभाउ । सुनैकृष्णकीनितकथा, अतिहियबढायउछाउ ॥ ६ ॥
सिगरोजगतमित्रसमदेखै। ब्रह्मचर्यजनकरैविशेषै ॥ ७ ॥ रहैमौननिजधर्महिधारै। मिलैजोनसोकरैअहारै ॥
शांतकरैएकांतनिवासू। जितइन्द्रियकरुणापरकासू ॥८॥ सुततीयनमहँकरैनभोगू। ज्ञानधारिमेटहिभवशोगू॥९।
निजमतितेआतमकहँजानै।जिमिदेखतदृगतेजनभानै॥१०॥बुद्धिभेदजबनहिंरहिजातो।तबयहितनुआतमादेखातो।
सोआत्मानहिंअहैविकारी। सबतनुकोप्रकाशविस्तारी॥ ११॥ जलमहँपरैभानुपरछाहीं।भौनप्रकाशहोतचहुँघाहीं।
दोहा—तातेजलमहँभानुको, जोप्रतिबिंबदेखाय। सोप्रतिबिंबविलोकतै, रविकोरूपदेखाय ॥ १२ ॥
यहिविधिभयउज्ञानजेहिजबहीं।आतमवपुदेखानतेहितबहीं॥ आतमरूपजबपरचोनिहारी।शुद्धातमतबलेतविचारी।
जबहिंसुषुप्तिअवस्थाआई। बुधिइन्द्रियथिरताकहँपाई ॥१४॥ तबअनुभवभोआत्मस्वरूपै। टूटतअहंकारकोजूपै।
सोसुषुप्तिजबपुनिमिटिजावै। तबजनकेसुखदुखउरआवै ॥१५॥ देहीदेहभेदअसमानै।तनुपरतंत्रजीवकोजानै॥१६।
सुनिकैकपिलदेवकीवानी। देवहुतीअसगिरावखानी ॥

देवहूतिरुवाच।

छोड़ैप्रकृतिपुरुषकहँनाहीं। तैसहिप्रकृतिपुरुषहूकाहीं ॥ १७ ॥
दोहा—जैसेमहिमहँहोतिहै, सकलभाँतिकीगंध । अहैपरस्परतैसही, प्रकृतिपुरुषसनबंध ॥ १८ ॥
कर्मबंधतेजियहिघनेरे। तेत्रयगुणसंबंधहितेरे ॥ कर्मबंधतातेनहिंछूटै। कैसेमोक्षमोदसुखलूटै ॥ १९ ॥
तत्त्वविचारकियेभ्रमजाई। पैनवासनामिटतमिटाई ॥ तातेहोतफेरअज्ञाना। यहसंशयमेटहुभगवाना ॥ २० ।
सुनिकैजननिगिरासुखदाई।बोलेकपिलदेवहरषाई॥(कपि०उ०)करैअकामसुधर्मसदाहीं।श्रीहरिकथाकहैश्रुतिमाहीं।
ज्ञानदृष्टितेतत्त्वहिदेखै। धरैबलीवैरागविशेषै ॥ योगसमाधिसहिततपठानै । करैकृष्णगुणगाथागानै ॥ २२ ।
दोहा—यहिविधिजबसाधनकरै, तबअज्ञाननशिजाय। जैसेअरणीअग्निमहँ, क्रमक्रमसोंजरिजाय ॥ २३ ॥
मायाविभवभोगसबभोगी। तज्योदोषलखिभोजनयोगी ॥ तबमायाबंधननहिंपरई। परमातमकोदेखतरहई ॥२४।
जैसेसपनमाहँदुखभोगै। जागेवृथाहोतनहिंलोगै॥ २५ ॥ ऐसहितत्त्वज्ञानजोपायो। कृष्णचरणमहँमनहिलगायो।
तबहरिमायाकरतिनबाधा।मगनरहतसुखउदधिअगाधा२६बहुदिनमहँअसभयोविरागा।ब्रह्मलोकलगिलैमनलागा।
तबहरिप्रेमपयोधहिपाई।बसतकृष्णपुरमोदितजाई ॥ सोनहिंपुनिआवतसंसारा। रहतसंगवसुदेवकुमारा ॥ २९ ।
दोहा—योगीकरिकैयोगबहु, योगसिद्धिसबपाय। तिनतनतनकोतकतनहिं, तबनकालढिगजाय ॥ ३० ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ तृतीयस्कंधेसप्तविंशतितमस्तरंगः ॥ २७ ॥

श्रीभगवानुवाच

दोहा—बीजसहितअबयोगको, लक्षणदेहुँबताय। जेहिकीन्हेमनअमलह्वै, सतपथमेंलगिजाय ॥ १ ॥
करैआचरणसदास्वधर्मा । छोंडसबअधर्मकेकर्मा ॥ दैवयोगतेजोमिलिजाई । तातेराखैतोपसदाई ॥
हरिदासनकेपदशिरनावै॥२॥लौकिकधर्ममनाहिननहिंआवै॥मोक्षधर्ममहँराखहिप्रीती।नितनितअशनकरहिशुचिरीती

वसहिइकांतविपिनमहँजाई । सहजैजहँकोउसकहिनजाई ॥३॥ सत्यअहिंसाऔरअचोरी । करैअर्थभरसंचयथोरी।
ब्रह्मचर्यस्वाध्यायशौचतप । हरिपूजन॥४॥मौनतानामजप॥ आसनजीतिप्राणपुनिजीती।मनकीकरैअचंचलरीती॥

दोहा-इंद्रिनकोएकाग्रकरि, नाशैविषयमहान ॥ ५ ॥ मूलाधारादिकनमें, मनतेलावैप्रान ॥

यदुपतिकीलीलानितगावै । यदुपतिकेपदमेंमनलावै॥ ६ ॥ निजमनकहँऐसीकरिरीतै । क्रमक्रमसेबुधिसोंबुधजीतै ।
असतपंथमहँजाननपावै।तजिआलसतिहिनिजवशलावै७कुशपरअजिनअजिनपरचीरा। असआसनशुचिथलरचिधीर
स्वस्तिकआसनकरितहँबैठै ।सूधकायकरिपुनिनहिंऐंठै॥८॥पूरककुंभकरेचककरिकै।अथवातेहिविपरीतहिधरिकै।
यहिविधिकरैप्राणअभ्यासा। तबमनअचलहोयअनयासा॥९॥यहिविधिसाधनकरैजोकोई।जाकोअचलशुद्धमनहोई॥

दोहा-जैसेकनकतपायकै, अमलकरैमतिमान । तिमिसाधनतेहोतहै,मानसअमलमहान ॥ १० ॥

रोगदहैकरिप्राणायामा । धारिधरणिध्वंसैअघग्रामा॥इंद्रिनजीतिविषयतजिनाना। कामादिकजीतैधरिध्याना॥११॥
निजमनहोयअचंचलजबहीं॥अवलोकतनासाग्रहितबहीं १२ ध्यानकरहियदुपतिकररूपा।जोत्रिभुवनमहँपरमअनूपा
मुखअरविंदनयनअरविंदा । गदाचक्रदरधरअरविंदा ॥ इंदीवरसमश्यामशरीरा ॥१३॥ सरसिजकेसरिकेशिरचीरा ।
वक्षसमहँश्रीवत्सविराजे । कौस्तुभमणिकंधरमहँराजे ॥ गुंजतमधुपलसतवनमाला । उरअमोलमणिहारविशाला॥

दोहा-पदनूपुरअंगदभुजनि, करवरवलयविलाश । कोटिसूर्य्यसमशीशमें, राजतकीटप्रकाश ॥ १५ ॥

कटिकांचीकलापकमनीया । दृगमुददायकतनुरमनीया॥१६॥सदारहतप्रभुवैसकिशोरा। त्रिभुवनवंदितनंदकिशोरा
वसतसदाभक्तनउरमाहीं॥१७॥कहतनामजेहिपापनशाहीं ।शरणागतपालकभगवाना॥यहिविधिकरैकृष्णकोध्याना
बैठतसोवतकरतपयाना । सबविधिधरैकृष्णकोध्याना ॥राखैशुद्धभावहरिमाहीं । सुनैश्रवणहरिसुयशसदाहीं॥१९॥
रूपसमग्रजबहिंउरआवै। पृथकपृथकहरिअँगतबध्यावै ॥पुनियहिविधिहरिकोपदकंजा । ध्यानकरैमंजुलमनरंजा ॥

दोहा-ध्वजअंकुशयववज्रअरु, सरसिजचिह्नयुक्त । अंधकारअज्ञानको, करनहारहैमुक्त ॥

यकयकनखशकोटिजुन्हाई। मंडलतासुलसैसुखदाई ॥२१॥ जेहिपदपद्मपखारननीरा।होनहेतुशुचिसकलशरीरा ॥
धरयोशीशशंकरमतिधामा । तबतेपायोशंकरनामा ॥ सेवकमनअज्ञानपहारा । ताहिवज्रसमफोरनहारा ॥
प्रभुचरणारविंदअसध्यावै । तोजनकबहुँकलेशनपावै ॥ २२ ॥ जंघाजानुयुगलहरिकेरी ।धरैध्यानकरिप्रीतिघनेरी॥
जलजाक्षीजननीजगजोई । विधिशिवसुखंदितनितहोई॥सोकमलानिजकरनलगाई।धारिअंकमरदतमनलाई॥२३॥

दोहा-पुनिऊरूहरिकेयुगल, ध्यानकरैमनलाय । अतसीकुसुमसमानदुति, लसहिकंधखगराय ॥

पुनिहरिकटिध्यावैमनलाई । निरखतजेहिहरिगर्वनशाई॥कांचीकरैविलासतहाहीं । अंबरपीतलंबतिनमाहीं ॥२४ ॥
पद्मनाभनाभीपुनिध्यावै। विश्वअधारउदरमधिभावै॥जोनाभीतिसरसिजजायो ।सोइसरसिजविधिकोप्रगटायो २५॥
पुनिध्यावैउरअतिसुकुमारा । मनुमरकतमणियुगलकेवारा॥छाजतिछटाछहरितहँद्वारा।मनहुनीलगिरिसुरसरिधारा॥
रमानिवासवक्षथलभ्राजै । भक्तनयनउरआनँदछाजै॥पुनिवैकुंठपतिकंठहिध्यावै।जहँकौस्तुभमणिसुखमापावै॥२६॥

दोहा-ध्यावैबाहुविशालपुनि, जिनबाहुनकीछाहँ । बसहिंविशोकीदेवगण, मंथकक्षीरधिकाहँ ॥

सहसआरचक्रहिपुनिध्यावै । जासुतेजत्रिभुवनमहँछावै॥पांचजन्यशंखहिपुनिध्यावै ।प्रभुकरकंजहंससमभावै॥२७॥
कौमोदकीगदाहरिप्यारी । ध्यानकरैउरप्रीतिहिधारी ॥ सवलितशत्रुनशोणितजोई । दहतदीहदासनदुखसोई ॥
पुनिध्यावैप्रभुकीवनमाला। गुंजहिजामेंमधुकरजाला॥कौस्तुभलखिजीवहिअभिमानी।पसरतिजाकीप्रभाअमानी ॥
वारिजवदनविष्णुकोध्यावै । संतसकलसंतापनशावै ॥ २८ ॥
विलसहिअमलकपोलहुगोला।जहँमकराकृतकुंडललोला॥शुकतुंडादिशोभाकीदरणी। [illegible] ॥

दोहा-युगझपअजिअवलीसहित, पुनिइंदिरानिकेत । अलकंजहुनर्दिलदनछवि, [illegible] ॥

कुंतलकुटिललसहिसुकुमारे।मनहुकुंडलितसपंकुमारे॥नयनउपरयुगभ्रुकुटिविलासा। [illegible]

पुनिहरिकृपाकटाक्षहिध्यावै।जोजीवनत्रयतापनशावै॥सोहतसहितमंजुमुसक्यानी।जासुछटाछहरतिछविखानी ३
पुनिध्यावैश्रीपतिकोहासा। शोषतशोकसिंधुअनयासा॥श्रीमुकुंदभ्रुकुटीयुगसोहैं।मुनिमोहकमदनहुमनमोहैं॥ ३२
पुनिप्रहासप्रभुकोमनध्यावै। दंतनअधरअरुणिभाध्यावै॥ जेहिविधिहरिअंगनमहँजाई। करैनपावैमनचपलाई।
दोहा–यहिविधिश्रीयदुनाथको, करैभक्तजनध्यान। नितप्रतितेहिचिंततरहै, हठिभुलायतनुभान॥ ३३॥
यहिविधिकरतकरतहरिध्याना। भयोभावहरिमाहँप्रमाना॥द्रवितहोतहियतनुपुलकाई।गदगदगरनगिराकहिजाई।
नयनतनवहतिनीरकीधारा। रहतनतनुकरतनकसम्हारा॥मगनप्रेमसागरमहँरहतो।हरिकोविरहनक्षणभरिचहतो॥ ३
जवअसिभईदशाजनकेरी। ताहिमिलैहरिअसमतिमेरी। हरिपदछोंडिनकहुँमतिजाती।विषयतापतेतपतिनछाती
शांतरहतछूटतव्यापारा।धूमरहतजिमिअग्निमँझारा॥पुनिप्रभुसोंअन्तरनहिंरहतो।नितनितनवछविसुखलहतो
दोहा–छूटगयोव्यापारजव, निरख्योआत्मस्वरूप [illegible] यहहैज्ञानअनूप॥ ३६॥
भागवचैठवअरुउठव, यहतनुकोजोहोय। [illegible] नदांधजमकोय॥ ३७॥
यहिविधिजोलोंरहतशरीरा। जोकछुहोतदेववशपीरा॥ [illegible] महमारसुधिनहिंतनुमाहीं॥
जिमिनिजसुतनिजधननहिंमानै।पैहौविलगकियेयहज्ञानै॥तैसहिदेहआतमाभेदू।जानहुजननकहतअसवेदू ३९॥४
जिमिइंद्रिनतेजीवनिवेरा। तिमआतमपरमातमकेरा॥४१॥ कृष्णअहैजगअंतर्यामी। सवभूतनअधारखगगामी
पंचभूतमयचारजातिजिमि।अहैकृष्णमयसकलविश्वतिमि॥जिमिजसतहँतसअमिदेखातो। तिमिगुणविवशजी
दोहा–कारजकारणरूपयह, हैहरिमायाजोय। ताहित्यागिनिजरूपको, लखतरहैबुधसोय॥ ४४॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीः
महाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेअष्टाविंशतितमस्तरंगः॥ २८॥

दोहा–कपिलदेवकेवचनसुनि, देवहुतीसुखपाय। जोरिकंजकरपुत्रसों, वोलीप्रीतिवढ़ाय॥
प्रकृतिपुरुषमहदादिके,लक्षणदेहुसुनाय। रूपपारमार्थिकसकल, जातेजानोजाय॥१॥
भक्तियोगकेसकलप्रकारा।भाषहुतातसहितविस्तारा॥२॥विविधदशादुखमयजगकेरी।लहतजीवजिमियोनिघनेरी
जोनसुनेउपजतवैरागा। कहोसकलसोसहितविभागा॥ ३॥ कहोकालकोरूपप्रमाना। जोहैसत्यरूपभगवाना
जोनकालकोजनभयपाई। पुण्यकर्मकरतोअतुराई॥ ४॥ जेजगअनितदेहअभिमानी। मोहनिशासोवतअज्ञानी
जगतकर्ममेंअतिउवलीनो। परमारथमेंहैनप्रवीनो॥ अंधकारतिनकोअज्ञानू। तासुनाशहिततुमहोभानू॥ ५

श्रीमैत्रेयउवाच।

दोहा–मुनिमाताकेवचनअस, कपिलसराहिसुजान। कहनलगेअतिप्रीतिसों, करुणाकरभगवान॥ ६॥

कपिलउवाच।

भक्तियोगहैविविधप्रकारा। त्रिगुणवलितसुनुतिहिविस्तारा॥७॥ सनतेअधिकहोनकेहेतू।औरमहापाखंडसमेतू
ओकाहूकेमारनकाहीं। कृष्णभक्तिजोकरैसदाहीं॥ तेनतामसीभक्तिकहावै। वहुतकालमहँहरिकहँपावै॥ ८
विषयभोगसुतयशधनहेतू। औरमहापाखंडसमेतू॥ तेनराजसीभक्तिकहावै। वहुतकालमहँहरिकहँपावै॥ ९
जोनिजपापविनाशनकाजा। ध्यावतरहैसदायदुराजा॥ करैकर्मयदुपतिहितप्रीती। राखैस्वामीसेवकरीती
तेनसात्त्विकीभक्तिकहावै। यदुपतितेहितुरंतमिलिजावै॥
दोहा–उत्तममध्यमअधममें, इकमेंत्रयत्रयभेद। यहिविधिश्रवणादिकनमें, यकयकनवनवभेद॥
–वनिमिलिभेदनकारएकाशी। सगुनभक्तिभेदसुखराशी॥११॥अवनिरगुणाभक्तिमैंभाषौं। ताकोएकभेदकहिराखौं

गकथासुनतेमनलाई । लगेनिरंतरपदयदुराई ॥ जिमिसागरसुरसरिकीधारा । नहिंलौटतिकौनिहूप्रकारा ॥११॥
पदप्रीतिकरहिविनहेतू । कहहिनिर्गुणातेहिमतिसेतू ॥ सबमेंदेखहिश्रीपतिकाहीं । करैकौनिहूआशानाहीं ॥
निरगुणभक्तिकहावे । जेहिकीन्हेहरिसहजहिपावै॥१२॥साष्टिसमीपऔरसालोकू । अरुसमीपसायुजसुखवोकू ॥
दोहा–निजभक्तनकीमुक्तिहरि,देतेपंचप्रकार । पैहरिपदकेकार्यतजि, लेतनप्रेमअधार॥ १३ ॥
अधिकभक्तिहैनाहीं । यहीकहतपहुँचतहरिपाहीं॥ १४॥तीनभक्तिकीकहीउपाई । सोजननीसुनियेचितलाई ॥
दासहितकरैनिजधर्मा । करैकामनानहिफलकर्मा ॥ पंचरात्रिकोकह्योप्रकारा । तातेपूजनकरैउदारा ॥
सकलजीवनमहँरापे । कबहूँकाहूपैनहिंमापै ॥ १५ ॥ सदाकृष्णमंदिरमहँजाई । हरिमूरतिकेपदशिरनाई ॥
नकरिहरिकेगुणगावै । भूतनमहँराखेहरिभावै ॥ रहैधीरधारेमतिधीरा । गनैनलोभप्रमोदहुपीरा ॥ १६ ॥
करैसंतनसतकारा । करैनकाहूकोअपकारा ॥
दोहा–जोअपनेसमहोहिंजन, तिनसोंराखैनेह । यमअरुनेमसदाधरै, गनैअनितयहदेह ॥ १७ ॥
रतभागवतौरामायण । श्रवणकरनमेंअहैपरायण ॥ निशिदिनजपैकृष्णकोनामा । मनवचकर्मएकमतिधामा ॥
अभिमानकरैसतसंगा॥१८॥यहिविधिरँगेकृष्णकेरंगा । तेहियदुपतिअपनेतेआई।मिलहिंदूरतेदेखतधाई॥१९॥
मिसुगंधमारुतवशआई । मिलतनासिकामेंसुखदाई॥२०॥सबभूतनव्यापीभगवाना।ऐसोमनकरिनहिंअनुमाना॥
भूतनकोकरिअपमानै । केवलप्रतिमहिमहँहरिमानै ॥जगव्यापीहरिप्रतिमनमाहीं। पूजतपैअसजानतनाहीं २१॥
दोहा–ताकोपूजननकलसब, पावतसोफलनाहिं । होमकियेजिमिभस्ममें, सकलवृथाह्वैजाहिं ॥ २२ ॥
करतसबप्राणिनमाहीं । मानहिसमदरशीनाहीं ॥ तोजनवैरकियोहरितेरे । तेहिनारकीकहहिंश्रुतिटेरे ॥ २३ ॥
जीवनकोकरिअपमाना । हरिकोपूजैसहितविधाना ॥ताकोप्रभुपूजननहिंलेहीं॥२४॥जोनहिंजीवनकरहिसनेही॥
वलौंहरिहिनसबथलदेखै । तबलौंपूजनकरहिविशेषै॥२५॥पूजनकरतकरततेहिमाता।निजमहँसबमहँकृष्णदेखाता
रिरूपनमहँलखहिजोभेदा । सोकुमतीपावतहठिखेदा॥२६॥जानिसकलथलमेंयदुराई । सबजीवनसोंकरैमिताई ॥
बसोंकरैदानसनमाना । जाकोजसोउचितमहाना ॥ २७ ॥
दोहा–पाहनततरुश्रेष्ठहैं, तरुतेपशुखगजान ॥२८॥२९॥३०॥ तेहितेनरनरमेंसुद्विज, द्विजमेंजेहिश्रुतिज्ञान॥
मेंश्रेष्ठजोअर्थविचारै॥३१॥तातेपुनिजोशंकनिवारै । तिनमेंजेआचरणनिवाहैं। तिनतेवरजेफलहुनचाहैं ॥ ३२ ॥
तिनमेंश्रेष्ठअहैसतिसोई । अर्पैहरिहिकर्मफलजोई ॥ उनसेअधिकअहैकोउनाहीं । समदरशीजेसाधुसदाहीं॥ ३३ ॥
कअंशतेजीवनमाहीं । रमेरमापतिरहहिंसदाहीं ॥ यहिविधिसबथलमेंगुणिरामै ।मनतेसबकोकरहिप्रणामै ॥३४ ॥
सोभक्तियोगअरुभोगू । मैंवर्ण्योमंगलप्रदशोगू ॥ यहिमेंएकहुकरैजोकोई । गमनकरैहरिपुरकहँसोई ॥ ३५ ॥
दोहा–परमपुरुषकोरूपजग, ताकोकारणकाल । तौनकालतेअबुधको, होतीभीतिकराल॥ ३६ ॥
कालरूपपरमात्मप्रतक्षे । भूतनमेंभूतनकोभक्षै॥३७॥सोईकृष्णईशकरईशा । यज्ञरूपयदुपतिजगदीशा ॥ ३८ ॥
शत्रुमित्रताकोनहिकोई । अहैसकलथलव्यापकसोई ॥३९॥मारुतबहतजासुभयपाई । तपहिदिवाकरजाहिडेराई॥
बर्षहिमेघभीतितेजाकी।भासहिताराराणभयताकी॥४० जासुभीतिलहिनिजनिजकाला।फूलहिंफरहिंसदातरुजाला॥
जासुभीतिसरिबहहिंसदाहीं । सिंधुतजतमर्यादानाहीं ॥ जासुभीतिअवकाशअकाशै।जासुभीतितेअनलप्रकाशै ॥
जासुभीतिबूडनहिधरणी । असउदंडजाकीजगकरणी ॥ ४२ ॥
दोहा–जाकीभयअतिपायकै, जोहैतत्त्वमहान। सतावरणदिसादितकिय ब्रह्मांडहिनिर्मान ॥ ४३ ॥
गुणअभिमानीदेवसब, जाकेभयकहँपाय । विचरहिपालहिंसंहरहिं, जगजीवनसमुदाय ॥ ४४ ॥
सोउकालहुकोकालहरि, अहैअनादिअनंत । पितरूपनेसुतरचहि, करहिमृत्युतेअंत ॥ ४५ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृत
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेएकोनत्रिंशतितमस्तरंगः ॥ २९ ॥

कपिलउवाच।

दोहा–कालबलीकेवेगको, प्राणीजानतनाहिं। जिमिजनायनहिंपरतहै, मारुतवनचलकाहिं ॥ १ ॥
जौनजौनजननिजसुखहेतू। बांधतरहतरैनदिननेतू ॥ तौनतौननाशहिभगवाना॥तिहितिहिउपजतशोकमहाना॥
हैअनित्यतनुधनअरुगेहू। नित्यमानशठकरतसनेहू ॥ ३ ॥ जौनजौनयोनिनिजियजावै।तौनतौनमहँअतिसुख
होतनताकोकबहुँविरागा। पुनिपुनिजन्मतमरतअभागा॥४॥शूकरकूकरयोनिहुमाहीं। मानतआनँदजीवसदाहीं
तजनचहततौनहुतनुनाहीं।मोहितहरिकीमायामाहीं॥५॥सुततियतनुधनगृहगजवाजी।कुलपरिवारमाहँअतिराज
दोहा–पालनहितपरिवारके, फरतरहतनितपाप। मानतनहिंकैसेहुकहे, यदपिलहतसंताप ॥ ७॥
सुनतशिशुनकीतोतरिबानी।तामेंमतिनितरहतिलुभानी ॥करतनेहनारिनसोंधाई। तिनकोमुखलखिरहतलुभाई
कुलटानारिकहैजोबानी। करतसोईनिजसर्वसमानी ॥ यदपिसकलधनतियहरिलेही। तद्यपिप्रकटछोंड़िसबदेही
खर्चहिधर्महेतुनहिंनेकू। अधरममहँदैदेहिअनेकू ॥ विप्रसाधुमांगेमुखफेरै। गणिकहिदेतकरतनहिंदेरै ॥ ८
धर्मकर्ममहँआलसकरहीं। पापकर्मतुरतैअनुसरहीं॥करहिंसकलदुखआपहिकर्मा॥मानतमोदकरहिंहमधर्मा ॥ ९
दोहा–मारगलगिहानिपथिकबहु, करिचोरीनिशिमाहिं। छलछिद्रनकरिजननसों, ल्यावहिंबहुधनकाहिं ॥
ल्यायल्यायसुतनारिखवावैं। तिनकोजूंठआपहूखावैं ॥ औरनकेहितकरहिंअधर्मा। करहिंसकलऔरनहितकर्मा
लहहिंआपनेतनुसुधिनाहीं।कामीकुमतिनरकहठिजाहीं॥१०॥ मिल्योनजबधनकियोउपाई।लेनलग्योतबवस्तुचु
कोहूकेघरपकरिकूटिगो। पूरवजीवनसोउछूटिगो ॥ ११ ॥ अरुपरिवारबढ्योघरमाहीं। उद्यमसबह्वैगयेवृथाहीं
जबनमिल्योधनचोरिहुकीन्हे।तबबैठ्योअपसोसहिलीन्हे ॥जबनसक्योपरिवारहिपाली।महाअभागीकृपिनकुचाली
दोहा–तियसुतताकोनिदरिकै, देहिंनभोजनभूरि। जैसेबूढेबैलको, देतनघासहुझूर ॥ १३ ॥
लहतअनादरविविधप्रकारा।तेहितनकोउनचहतनिहारा॥यहिविधिशिथिलजबैह्वैगयऊ।तबहूंतेहिविरागन
प्रथमहिंजेजनपालितरहहीं। तेकटुवचनविलोकतकहहीं ॥ यहिविधिआईतासुबुढ़ाई। महाकुरूपशरीरदेखाई
गृहमहँवसतमरणनियरान्यो॥तदपिनकछुगलानिमनआन्यो१४ जिनकेचुकेसकलगृहभोजन।सूखरूखदेतेतेहिर
श्वानसरिसटूकातेहिदेहीं। तद्यपिघरकोरहैसनेहीं ॥ बैठोरहैद्वारकोताके। शिशुनितहनहिंशीशमहँताके॥
दोहा–पुनिजबरोगीह्वैगयो, दीठक्षुधाभैमंद। परोरहतनहिंचलतकहुँ, चलतनयेकोफंद ॥
मुखमच्छिकाउड़ैनउडाये। बधिरभयोनहिंसुनैसुनाये॥१६ ॥ आयोमरणकालजबतासू। निकसैंनयनदौंबहुआं
कफबाढ्योआवतबहुखांसी॥लखिकुटुंबकेकरतेहांसी॥बढ्योश्वासअतिशयदुखपाग्यो॥घुरघुरकंठहोनतबलाग्यो १
मरणजानिताकिसबप्रानी। डारहितिहिमुखसुरसरिपानी ॥ बैठहिंताकोचहुँदिशिघेरी। करहिंशोकताकोतनुहेरी
कहहिंबतायदेहुधनगाड़ो। जानौंहोइसराउरहाड़ो ॥ असकहिचहुँदिशितेगुहरावें। भाँतिअनेकताहिसमुझावें
दोहा–कालपाशवशतासुमुख, कहिआवैनहिंबात। रोवहिंसबपरिवारके, हायहायपितुमात ॥ १७ ॥
तदपिसुमिरिनहिंआवतरामा।चाहतकरनतउगृहकामा॥पुनिजबउदरपीरभयभारी।तबमरिगोशठआंखनिकारी १
महाभयंकरद्वैयमदूता। ग्रहणकरणआयेमजबूता ॥ महाभयंकरनयनदेखावें। लियेहाथफांसीडेरवावें ॥
तिनहिंलखतमलमूत्रकरतेहै।वारवारहियभीतिभरतेहै॥१९॥बरवशपकरिडारिगलफांसी।देयातनादेहिंतेहिसांस
लेगवनहियमपुरयमदूता। अपराधीकोजिमिनृपदूता ॥ २० ॥ योजननिन्यानबेहजारा। हैमहितियमराजअगारा
दोहा–तहँकोजबयमराजभट, बरवशतेहिलैजात। तबमारगमहँश्वानबहु, चोंथिचोंथितेहिखात ॥
...अंगा। हनहिंकसायमभटइकसंगा॥करतचीतकारहिंबहुबारा।सुमिरतअपनोपापअपारा॥२१
...। भोजनमिलतताहिकहुँनाहीं ॥ बारूतपतविछौपगपरते। भालवाप्रतापरविजरते
...विकज्वाला२२गिरतउठतपुनिभ्रमतविहाला।पुनिपुनिताडहिंतातनुताके।जीवलहतपुनिपुनिमुर्छा

तनकहूँमार्गमहँपानी । हायहायनिकसतमुखवानी॥चलिनसकतयमभटविसलावें । गिरतउठावहिंफेरिगिरावें॥
दोहा–यद्यपिपापीलहतहै, बहुकलेशकीसींव । तद्यपिताकोकढतनहिं, तेहितनुतेतहँजीव ॥ २३ ॥
विधितेयमभटचखंडा । पहुँचावहिंयमभटपटदंडा ॥ तहाँयातनाबहुविधिहोई । रक्षाकरैतासुनहिंकोई ॥ २४ ॥
लपेटितेहितनुहिजरावें।तासुमांसतेहिकाटिखवावें॥श्वानगीधअरुकाकभयावन।आवहिंतेहितनुचोंचचलावन ॥
हिताकोउदरहिफारी । भक्षहिंताकीआंतनिकारी ॥ आंखिनमेंबीछीबहुमारैं । विषज्वालातेतनुअहिजारैं॥
जीवइतैजनमारैं । तेतेतिनतनुउतेविदारैं ॥ २६॥ पृथकपृथकअँगयमभटकाटैं।पुनिपुनिजोरहिंपुनिपुनिछाटैं॥
दोहा–दंतीदंतनसोंदरत, पीसहिंपाँयचलाय । पाँयपकरिपटकैंपुहुमि, पुनिपुनिताहिभ्रमाय ॥
शैलतेदेहिंगिराई । अंगअंगचूरणहोइजाई ॥ करपगबाँधिवारिमहँडारैं । बहुतकाललौंतेहिननिकारैं ॥
दिगरतगाडैंधरणीमें । लावहिंजियतताहिअरणीमें ॥२७॥अंधतामिश्रतमिश्रहुरौरव।कुंभीपाकआदिनरकनसव॥
नारिनयमभटलैजाई । देहिंयातनातिनहिमहाई ॥ २८ ॥ यहैलोकमहँस्वर्गनर्कहै । करदेखसितेंमातुतर्कहै ॥
यात्मनकोआनँददेतो।पापिनकोअतिशोकउदेतो ॥ पैनहिंसमुझतदुखशठकोई।जननीअचरजअहैबड़ोई ॥२९॥
दोहा–अपनहिंउदरहिहेतुअरु, अपनेकुलकेहेतु । भोगहिंयहिविधियातना, चेतहिंनाहिंअचेतु ॥ ३० ॥
परिवारसंगनहिंजाहीं । जाकेहितबहुयत्नकराहीं ॥ मरेनपुनिकोउयत्नकरैया।पापपुण्यहैसंगजवैया ॥ ३१ ॥
किियेनरकहिहठिजावै । पुण्यकियेसुरसदनसिधावै ॥ ३२ ॥ पैअधर्मसोंजोकुलपालै । ताहियातनायमपुरहालै ॥
पालैकुलधर्मसमेतू । ताहिनदुखयमराजनिकेतू ॥ ३३ ॥ जोजसपापकरैयहलोके । सोतसदुखपावतयमवोके ॥
नसोंसवनरकनकरिभोगू । शुचिह्वैयोनिलहतपुनिलोगू ॥ जियेइतैसबवर्षहिमाई । पापपुण्यजोकरहिमहाई ॥
उतलाखनवर्षनभोगै । तदपिनचेततमूरुखलोगै ॥
दोहा–यहअचरजअतिशयजननि, बंधेउबोधनहोय । जोउपदेशहिताहिशठ, शठभापहिंसबकोय ॥ ३४ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेत्रिंशतितमस्तरंगः ॥ ३० ॥

कपिलउवाच ।

दोहा–ईशविवशनिजभागते, पुरुषबीजमहँआय । देहहेतनारीउदर, करिप्रवेशजियजाय ॥ १ ॥
शोणितशुक्रअमिपजबजावे ।कललनामताकोकहवावै॥कललहोतसोएकरातिमहँ।पंचरातिमहँबुदबुदभोतहँ ॥२ ॥
शदिनमहँबदरीसमभयऊ । ताकेउपरअंडह्वैगयऊ ॥ एकमासमहँप्रगटेउमाथा । उभयमासमहँभपदहाथा ॥
तीनिमासमहँगर्भहिमाहीं । लोमअस्थिनखछिद्रतहांहीं ॥ ३ ॥ चारिमासमहँसातहुधातू।पँचयेंक्षुधातृषाउपजातू ॥
छठयेंमासहिझिल्लिहिपरिकै । भ्रमहिदाहनिहिकुक्षिहिपरिकै॥४॥पूरबकर्मसातयेंमासा।करतजीवसुधिविगतहुलासा॥
दोहा–खानपानतेजननिके, दिनप्रतिबाढतजात । मलमूत्रहिकेकुंडमें, पर्योरहतविलखात ॥ ५ ॥
अतिसुकुमारअंगमहँताके।काटहिंकृमिक्षणक्षणहितहांके॥होतिमूरछाछहतकलेशा।मिटतनक्षुधापियासदमेशा॥६॥
लवणतिक्तकटुजननिजोपावै । सोअंगनिलगिदुखउपजावै ॥ ७ ॥ बंधनतासुजरायुहिकेरो ।आंतनबंधनउपरघनेरो ॥
शिरझुकायजननीकेकुक्षे । परोमूत्रमलमेंतहँभुक्षे ॥ निमिषविहंगपिंजरमहँरहई । हलिसंकेतमहादुखसहई ॥
सकेनपदकरनेकचलाई। जिमिजियननिउदरदुखदाई॥८॥पुनिजबआयोसातवँमासा।तबजियकोभोज्ञानप्रकासा ॥
दोहा–होतिसुरतिसोजन्मकी, देखिपरहिकृतकर्म । तिनहिंविचारतदुखितह्वै, कबहुँनपावतशर्म ॥

तबगलानिउरआनिकै, संथुतविमलविज्ञान । गर्भवासनहिंहोयपुनि, ध्यावतश्रीभगवान ॥९॥१०
ह्वैविनीतकरजोरिकै, दियोजोगर्भहिवास । तेप्रभुकीअस्तुति करत, मानिहियेअतित्रास ॥ ११

जीवउवाच । छंद ।

तेहिकृष्णकेचरणारविंदहिशरणमेंअबहोतहौं । जेदासहितबहुरूपधारतमैंपरचोदुखसोतहौं ॥ १२ ॥
मायाविवशसेकर्मबँधनबँध्योगर्भहिमेंपरो । अविकारशुद्धअखंडबोधमुरारिदुखमेरोहरो ॥ १३ ॥
मैंहौंअसंगहिपैवृथाहीबँध्योपंचहिभूतमें । इन्द्रियविषयआसक्तह्वैमैंबढ्योमायासंचमें ॥ १४ ॥
दुखरूपयहसंसारमेंजेहिविवशजीवसिधावतो । नहिंकटतजाकीकृपाविनतेहिनाथकोगोहरावतो॥ १५ ॥
यहज्ञानदायकनाथसोइजोसकलजगव्यापितरहै । ममतीनज्ञानविनाशहितअबनाथसोइदायागहै ॥ १६ ॥
मलमूत्रशोणितकूपमेंजननीजठरज्वालानलै । तनुदहतमासनकोगनतउद्धारकरिहौंकबभलै ॥ १७ ॥
दशमासबालकमोहिंजोयहज्ञानदियसुखगाथहै । जोकरननिरहेतुककृपासोसत्यदीनननाथहै ॥ १८ ॥
प्रभुकोननिरखतपशुखगादिकनिजसुखदुखभोगते । मैंतौलखहुँतुमकोसकलथलआपज्ञानसंयोगते ॥ १९
पैमेंनइततेकढनचाहहुँसहहुँयदपिकलेशहै । निकसेग्रसेतुवप्रबलमायायहविशेषअशेषहै ॥ २० ॥
यहगर्भहीसेभक्तिकरिसंसारसागरतरहुँगो । तुवकृपावशवैकुंठवसिनहिंविश्वब्यालहिडरहुँगो ॥ २१ ॥

कपिलउवाच ।

दोहा—पूजिगयोनवमासजब, लाग्योदशयोंमास । प्रसववायुतेहिजननहित, कियप्रेरणाप्रकास ॥ २२ ॥
तबनीचेकोशिरह्वैगयऊ । अतिकलेशतहँपावतभयऊ ॥२३॥ गिरतभयोधरणीमहँसोई । तबहींज्ञानगयोसबखोई
कहाँकहाँअसरोवनलागा।मनहुँकहतकहँज्ञानविरागा ॥ रुधिरमूत्रमहँलोटनलाग्यो।तिमिमलकृमिअतिशयदुखपा
कहिनसकैकछुक्षुधापियासे । जननिजनकजामेंनहिंभासे॥भयेअजीरणदूधपिआवत।क्षुधालगेपरडीठझरावत॥२५
अशुचिसेजमहँसोवतरहतो।कृमिकाटहिंअतिशयदुखसहतो॥उठिनहिंसकतदेहखजुआती।दुखमयव्यथासहीनहिंजा
दोहा—कोमलबालककायमें, काटहिंमशकअनेक । सोदुखलहिरोवतरहत, कुलकेगनहिननेक ॥ २७ ॥
यहिविधिशिशुपनभोगिभवनमें । भोसमरथजबकरनगवनमें ॥ तबबाहेरकढिखेलनधूरी । रहतजनकजननीतिदूरी
पुनिदशवर्षकेरजबभयऊ।तबविद्यामहँमननहिंदयऊ॥खेलतखेलतउमिरिवितायो।कबहुँनकृष्णचरणमनलायो २८
जबपुनिआईतासुजवानी । तबअतिभयोदेहअभिमानी॥ अपनेसमकोहुकोनहिंमानै । गलीचलतझगरोनितठानै ।
कियेनिहपरनारिनमाहीं।धरकोधनदीन्हेउतिनकाहीं॥२९॥चाह्योअहंकारममकारा।चल्योकुमारगयहसंसारा॥३०।
दोहा—करतकर्मतेहिहेतुहठि, जामेंनरकहिजाय । सहिकलेशपुनिआपतो, सकैनजगतविहाय ॥ ३१ ॥
करतसदाकुमतिनकोसंगा । कबहुँनलागतज्ञानप्रसंगा ॥ शिश्नउदरकेआनँदहेतू । करतरहतनितनितनवनेतू ।
सोइकर्मबशनरकहिजावै । कह्योजोप्रथमदंडसोपावै॥३२॥श्रीयशक्षमाबुद्धिअरुलाजू । सत्यअकारदयाशुभकाजू।
शमदमनेमविभूतिबड़ाई । कुमतिसंगनाहिनशाई॥३३॥जातिकुमतिनकामिनिकेरी । करियनसंगतिकबहुँपनेरी।
जेअसाधुहैंनारिअधीना।कामकलामहँपरमप्रवीना ॥ तियवशमर्कटमृगसमनाचें । कबहुँनहरिचरणनरातिरांचें।
दोहा—कबहुँनतिनकोसंगकरे, चहैजोनिजकल्यान । ज्ञानिहुकेउरमेंअवशि, तेभरिदेतअज्ञान ॥ ३४ ॥
तियसंगीसंगअरुतियसंगा । अहैदुखदसमउभयप्रसंगा ॥ येदोउसमहैदुखदनआना । भापतवेदपुराना ॥ ३५।
ब्रह्मानिजदुहिताकहँदेख्यो।पशुसमकामहिविवशविशेख्यो॥लाजविहायताहिपरधायो।अनुचितउचितनकछुमनलाय।
[illegible]नागपनकोजगमाहीं । नारिनिवडदोनोंनोनाहीं ॥३७॥ तियरूपीमायाहरिकेरी । गनतज्ञानिहुनिजवशप्रेरी।
[illegible]निजनकाहीं।[illegible]नदाहीं।३८।जोकोउचहैकृष्णपदप्रीती ।मानिदिसदाकालकीभांति
दोहा—उत्तमभक्तजगतयदि, चहैनरकनहिंजान । तौकबहुँनाहिंनारिकै, नहैकमतिमान ॥ ३९ ॥

नहितआवहिजोनारी।महामीचतेहिलेहिविचारी॥नारिशृँगारविलोकिअनूपा।गिरहिनतृणछिपानतृणकूपा॥४०॥
गमहँचहैमुक्तिजोनारी। तासुरीतिमैंकहौंउचारी॥ पुरुषसरिसमायाहरिकेरी। तामेंरहतिलोभानिघनेरी॥
ानतिमोहिधनसुतपतिदेहैं।मोकोछोंडिकतहुँनहिंजैहैं॥ऐसीरीतिकवहुँनहिंराखे।जोतियमुक्तिमनहिअभिलाषे ४१॥
तहोहिजोश्रीपतिदासा। तौतेहिसेवहिसहितहुलासा॥जोहरिविमुखीनिजपतिहोवै। ताकीदिशिकवहूँनहिंजोवे॥
दोहा–जिमिहरिणीकोहनतवन, व्याधारागसुनाय। तैसेहरिविमुखीपतिहि, नारीअवशिडेराय॥ ४२॥
हतनुतजिलहियोनिअनेका।भोगतनिजकृतकर्महिएका॥तहाँकरतजसपुण्यपापहै।तैसहिसुखदुखलहतआपहै ४३
क्षमअरुअस्थूलहुकाया। करिनसकैजवकर्मनिकाया॥ मरणजीवसोईबुधगावै।जन्मतासुतनुलहबकहावै॥ ४४॥
वहगतेकछुपरहिंनदेखी।तवजियभोमनअंधविशेखी॥तिमिजनयोगवियोगहुजीको।जन्ममरणकहवावतठीको ४५॥
ीवात्महिनहिंजननमरनहै।यहतौसवभ्रममात्रनरनहै॥४६॥ यहविचारतजिकुमतिनसंगा।पानकरहिकरिप्रेमअभंगा
दोहा–योगविरागहुज्ञानको, वुद्धिविशेषविचारि। यहतनुकीसुधितजिजगत, विचरैअतिसुखधारि॥ ४८॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेएकत्रिंशतितमस्तरंगः॥ ३१॥

कपिलउवाच।

दोहा–गृहनिवसतकर्मनिकरत, अर्थधर्मप्रदकाम। तेश्रीपतितेविमुखह्वै, लहैंनश्रीपतिधाम॥
भूतपितरवहुदेवनकाहीं। पूजतवंदतरहतसदाहीं॥ १॥तिनहिनमेंराखतअतिप्रीती।मानतनहिंनेकहुजगभीती॥
तेजनचंद्रलोकलौंजावें। सोमपानकरिकेफिरिआवें॥ ३॥ शेषसेजसोवहिंभगवाना। प्रलयहोततवजगतमहान
तवहींगृहमेधिनकरजीवा।हरिमहँलीनहोतसुखसींवा॥४॥करहिंकर्मजेतजिफलआसा। कुमतिसंगनहिंकरहिंविल
सकलकर्मश्रीकृष्णहिअरपें।शांतशुद्धचितजगहिनडरपें॥राखहिमोक्षधर्ममहँप्रीती।निरअभिमानीविगतअनीती॥
दोहा–सूर्यमंडलहिभेदते, रामधामकहँजाहि। पुनिनहिंआवहिजगतमहँ, तेविरलेदरशाहि॥ ७॥
जेब्रह्माकहँईश्वरमानें। योगजापतिहिहितनितठानें॥ तेजनजवलौंब्रह्मारहहीं। तवलौंविधिपुरसुखितनिवसहीं॥
अनिलअनलअपअवनिअकाशा।इनआवृतब्रह्मांडविलाशा॥जवविधिभेआयुपतेछीना।तवतेअंडसहितभेलीना॥
तवविधिसेवकविधिकेसंगे। लीनहोतहरिमाहँअभंगे॥१०॥औरउपासकयहिविधिनाहीं।पहहिरसिकरीतियहनाहीं
तातेजननिभजहुयदुराई। जेसवकेहियवसतसदाई॥
दोहा–शरणागतपालकजगत, तिनसमदूजोनाहिं। जासुचरितश्रवणनपरत, कालिमलहरतसदाहिं॥ ११॥
सवकोजोसिरजककरतारा। सोसंयुतवहुरूपनिउदारा॥१२॥ हरिरूपनमहँभेदविचारे। तौलयह्वैपुनिजनम[illegible]
जोनहिंभेददृष्टिउरलावे। सोपुनियहसंसारनआवे॥ भेददृष्टिब्रह्महुफिरिआवे। तोऔरनकीकौनचलावे॥१३॥
विविधभाँतिहैकाम्यकर्मफल।कर्मकियोताकोभोगहिभल॥१६॥धर्मकर्ममहँजिनकीप्रीती। धारहिंमन[illegible]
श्रद्धासहितकरहिंसोइकर्मा। जानहिंकवहुँनभगवतधर्मा॥ चंचलमनइन्द्रियजितनाहीं। पूजहिंदेवन[illegible]
दोहा–करहिंगेहमेंनेहनित, वहुआशामनलाग। तिनकेकहूँनहोतहै, यदुपतिपदअनुराग॥ १७॥
सुनेंपढ़ेंवहुग्रंथनकाहीं। तातेभेदवुद्धिहैनाहीं॥ हरिविमुखनिंईजनअहहीं। कवहुँनहरिपुर[illegible]॥१८॥
कृष्णकथामतछोडिअभागी। होतजेऔरग्रंथअनुरागी॥तेतनिअमृतछोडिमलखायो।नाहक[illegible]
धर्मकर्ममहँअनुरागी। तिनकोमतिमुनिपेवड़भागी॥ दक्षिणमार्गपितरपुरजावें। भोग[illegible]आवे
निजपुत्रनकेसुतहहोहीं। रहहिंसदानिजकुलकेमाहीं॥गर्भहिनेअरुजन्मदना॥कहि[illegible]॥२
दोहा–देवलोकमेंजायकै, पुनिआवहिंसंसार। याहीविधिआवतजात[illegible] ॥

तातेजननीतैंमनलाई। भजहिकमलपदश्रीयदुराई॥ करहिकृष्णकीभक्तिसदाहीं।औरउपायनदृगनदेखाहीं ॥२३॥
भक्तियोगजवहरिमहँलागा।तवद्रुतउपजतज्ञानविरागा॥इंद्रिनदुखसुखरहैनभाना। तवउपजैउरआतमज्ञाना ॥२४॥
आतमज्ञानहिभयेउदोतो। पुनिपरमातमज्ञानहिहोतो॥२५॥जोचितअचितहुअहैविलक्षण।परब्रह्मकरताजगरक्षण॥
कवहूँविपयविनोदनरांचै। यहीसकलयोगनफलसांचै ॥२७॥ जीवब्रह्मयेउभैअरूपा।ज्ञानगुणकदोउज्ञानस्वरूपा ॥
दोहा—पैअज्ञानजियकोलगै, तातेभ्रमहैजात। ब्रह्महिकहुँअज्ञाननाहिं, तोतेभ्रमनदेखात॥२८॥
महदादिकजिमिकृष्णशरीरा।तैसेजगहुकहहिंमतिधीरा॥२९॥भक्तिज्ञानकरियोगविरागा।परब्रह्मजानैवड़भागा॥३०॥
जननीमैंजोज्ञानवखाना।यातेप्रकृतईशजियभाना॥३१॥श्रीहरिभक्तिऔरहरिज्ञाना।इनकोफलदर्शनभगवाना॥३२॥
जिमिनानाइंद्रिनसुखयेकू। तिमिरुरियेकउपायअनेकू ॥ ३३ ॥ यज्ञदानतपवेदविचारा।इंद्रिनजीतनआदिअपारा ॥
औरसकलकर्मनफलत्यागा॥३४॥विविधयोगसंन्यासविरागा॥ औरहुआत्मतत्त्वकरवोधू।अरुयमनेमव्रतनकरशोधू॥
दोहा—प्रवृतनिवृतकेधर्मसव, सकलधर्म हैंसोय। इनसवतेश्रीकृष्णपद, जनकहँप्रापतिहोय ॥ ३५ ॥ ३६ ॥
भक्तिकह्योमैंचारिप्रकारा।अरुअलक्षगतिकालउचारा॥३७जीवनघातअज्ञानकुयोनी।लहिकुयोनिजियकीअनहोनी ॥
यहमैंसवतोहिंदियोसुनाई।जोपूंछ्योमातामनलाई॥३८॥जोखलअरुकुशीलजोहोई।अरुगरवीपाखंडीजोई ॥ ३९ ॥
दुराचारलोभीअरुकामी। अरुजोकैद्रोहखगगामी ॥ अरुद्रोहीहरिदासनकेरो। जेहिउपदेशनभयउवनेरो ॥
अतिआसक्तजौनगृहमाहीं।प्रीतिजासुसुनिवेकीनाहीं॥इनसवसोंयहभणितहमारी।कवहुँनकोविदकरहिंउचारी ४०
दोहा—सुनिवेकीश्रद्धाजिनहिं, शीलमानहरिदास। जिनकेहियइर्पानहीं, जीवनदयाप्रकास ॥
जेनिंदहिंनहिंदेवगुरु॥४१॥ जिनजगविपयविराग। मदमत्सररतेरहितजे, जिनहरिपदअनुराग ॥
तिनकोयहमेरोकह्यो, कहिवोउचितविशेपि। तिनहींकेदीन्हेसफल, जन्मलेहिंमनलेपि ॥ ४२ ॥
मोरकथितश्रद्धासहित, सुनतजोएकोवार। कहतप्रीतियुतसोअवशि, गमनतकृष्णअगार ॥ ४३ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेद्वात्रिंशतितमस्तरंगः ॥ ३२ ॥

मैत्रेयउवाच।

दोहा—कपिलवचनसुनिकैतवहिं, कपिलजननिसुखमानि।विगतमोहकरिनतिअमित, अस्तुतिकरिवखानि॥

देवहूतिरुवाच।

सोवहुक्षीरधिमहँभगवाना।करहिंविरंचिसदातवध्याना॥१॥ ध्यानहिमहँ देखततुमकाहीं।सकलभाँतिजानतहैंनाहीं॥
तुमहिरचहुनिजशक्तिनद्वारा। जीवनभोगहेतुसंसारा ॥ अहौसत्यसंकलपमुरारी । दिव्यगुणीवहुशक्तिनधारी ॥
सकलविश्वजेहिउदरनिवासा।सोकसकियममगर्भहिवासा॥प्रलयसलिलमहँवटदलमाहीं।पानकरतपदअँगुठाकाहीं॥
विहरतसोवहुसदामुरारी। सोवहमायाअहैतिहारी ॥ ४ ॥ निजभक्तनकेरक्षणहेतू। खलखंडनहितकृपानिकेतू ॥
दोहा—मीनकमठकोलादिसव, जैसेसवअवतार । तैसेमोहिंउपदेशहित, मेरेभयेकुमार ॥ ५ ॥
कवित्त—जाकोनामएकोवारमुखतेउचारकीन्हे, जाकोनामएकवारसुनेश्रुतलायके ।
जाकेगुणगायेएकोवारमनलायेजाकी, सेवाशुश्रूपाहूकीन्हींहियनायके ॥
भनेरघुराजहपतिततेपतितसोऊ, होतसाधुसोऊसोहिरमापुरजायके ।
तानकृष्णरूपकोविलोकेकहाकहिवेको, पावेजोपरमपदजगतविहायके ॥ ६ ॥
सोईकचुक्योहैजपसोईकेचुक्योहैतप,सोईसवतीरथकेनीरमेंनहातभो ।
सोईपढ्योचारवेदहोमकचुक्योअखेद, सोईकोसिगरोकलिकलुपनिपातभो ॥

कहैरघुराजसोईश्वपचहूसाधुसांचो, संतनसमाजमध्यशुठिकैनहातभो ।
जाकेरसनामेंकैसहूकैकृष्णनामआयो, ताकेसमदूजोदुनियामेंनदेखातभो ॥ ७ ॥
दोहा–परब्रह्मश्रीविष्णुतुम, कपिलतेजतपधाम । वेदगर्भमुनिवंदिपद, तुमकोकरहुँप्रणाम ॥ ८ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

सुनतमातुअस्तुतिसुखसानी । बोलेकपिलदेवमृदुबानी ॥ ९ ॥

कपिलउवाच ।

जोममभाषितसेवनकरिहै । तौलहिआशुमुक्तिसुखभरिहै ॥१०॥ मुनिसंमतहैयहमतमेरो ।यहजानेसुखहोतघनेरो॥
जेयहजानतहैंजननाहीं । रहतजेजन्मतमरतसदाहीं ॥ ११ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

असकरिभक्तिज्ञानउपदेशा । लहिजननीकोतुरतनिदेशा । चलेकपिलकरिकैअतुराई।गंगासागरनिवसेजाई॥ १२ ॥
देवहुतीलहिविमलविज्ञाना। आपहुयोगकरतसविधाना॥सरस्वतितटनिजआश्रममाहीं।निवसतभईदुखितचितनाहीं
दोहा–तीनिकालमज्जनकरत, भयेशिरोरुहपीत । पहिरचीरकियउग्रतप, मान्योसबजगभीत ॥ १४ ॥
सुरदुर्लभजोविभवमहाना । कर्दमतपप्रभावप्रगटाना॥१५॥ गोरसफेनसरिससुखसेजू।दंतनहेमखचितअतितेजू ॥
अतिकोमलजहँबिछेबिछौना।औरसाजसिगरोछविभौना॥स्वच्छफटिककीबनीदिवाला ।मरकतमणिकीभूमिविशाला
होतजहांमणिकीउजियारी । सखीसहसशृंगारसँवारी॥१७॥कुसुमितगृहवाटिकाविराजै ।थलथलथोककल्पद्रुमराजै
कूजिरहेजहँविपुलविहंगा । गुंजहिंमधुपमत्तयकसंगा॥१८॥फूलेसरवापिनअरविंदा । झरतमधुरमुदकरमकरंदा ॥
दोहा–हरिपूजनहितकुसुमको, देवहुतीनितजात । तबगावतगंधर्वगण, कीरतितासुविभात ॥ १९ ॥
सचिहुजाहिललचैंमनमाहीं।ऐसोविभवविहायतहांहीं।सुतवियोगमुखनेकुमलाना ॥२०॥ यद्यपिसुन्योतासुमुखज्ञाना
कपिलचरणमहँमनहिलगाई।तजीकामनासबदुखदाई।जेहिविधिकह्योकपिलहरिरूपा।तेहिविधिकरिप्रभुध्यानअनूपा
करिकैभक्तियोगवैराग् । ब्रह्महेतुलहिज्ञानअदाग्॥२४॥ तातेशुचिमनआत्महिदेखी।मायागुणसबतज्योविशेषी २५
अचलचित्तहरिचरणलगाई।ब्रह्मलोकलगिविभवविहाई।स्वप्नसरिससुखसकलविचारी ।करिसमाधिसुधिसकलविसारी
दोहा–देवहुतीबैठीअचल, भोजनपानविहाय । सेवकाईसखियांकरैं, पैतेहिकछुनजनाय॥२८॥
भयोमलिनतहँतासुशरीरा।छूटेकेशशिथिलअँगचीरा॥लग्योनिरंतरहरिपदध्याना।छूटततेहितनुभयोनभाना॥२९॥
यहिविधिकपिलभणितलहिज्ञाना।कियोपरमपदतुरतपयाना।आश्रमतासुसिद्धपदनामा ।भयोपुण्यप्रदत्रिभुवनआमा
तासुशरीरसरितह्वैगयऊ।नामसिद्धदाताकरभयऊ॥सेवतताहिसिद्धवसितीरा । मज्जनकरतनशतअघभीरा ॥ ३२॥
गंगासागरकपिलसिधारी।मांगिसिंधुसोंआश्रमभारी३३बसतभयेयदुपतिपदध्यावत।जासुसुयशसिधिचारणगावत ॥
दोहा–कपिलदेवकोसिंधुहू, पूजनकियोसप्रेम३४सांख्यशास्त्रआचार्यप्रभु, दायकत्रिभुवनक्षेम ॥ ३५ ॥
देवहुतीअरुकपिलको, जोनभयोसंवाद । विदुरकह्योतुमसोंसकल, नाशकजगतविपाद ॥ ३६ ॥
कपिलभणितयहप्रीतियुत, कहैसुनैसविधान । सोखगपतिपतिनगरको, डगरगहतमतिमान ॥
दिशिनिधिशशिसंवतसुखद, श्रावणपूरणमास । आनँदअंबुधितासरो, भोअस्कंधप्रकास ॥ ३७ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेत्रयस्त्रिंशस्तरंगः ॥ ३३ ॥ शुभमस्तु ॥

दोहा–महाराजरघुराजकृत, भाषातृतीयस्कंध । यदसमातमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध ॥

कहेरघुराजसोईश्वपचहूसाधुसांचो, संतनसमाजमध्यशुठिकैनहातभो ।
जाकेरसनामेंकैसहूकैकृष्णनामआयो, ताकेसमदूजोदुनियामेंनदेखातभो ॥ ७ ॥
दोहा-परब्रह्मश्रीविष्णुतुम, कपिलतेजतपधाम । वेदगर्भमुनिवंदिपद, तुमकोकरहुँप्रणाम ॥ ८ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

सुनतमातुअस्तुतिसुखसानी । बोलेकपिलदेवमृदुवानी ॥ ९ ॥

कपिलउवाच ।

जोममभाषितसेवनकरिहै । तौलहिआशुमुक्तिसुखभरिहै ॥१०॥ मुनिसंमतहैयहमतमेरो ।यहजानेसुखहोतघनेरो॥
जेयहजानतहैंजननाहीं । रहतजेजन्मतमरतसदाहीं ॥ ११ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

असकरिभक्तिज्ञानउपदेशा । लहिजननीकोतुरतनिदेशा । चलेकपिलकरिकैअतुराई।गंगासागरनिवसेजाई॥ १२ ॥
देवहुतीलहिविमलविज्ञाना। आपहुयोगकरतसविधाना॥सरस्वतितटनिजआश्रममाहीं।निवसतभईदुखितचितनाहीं
दोहा-तीनिकालमज्जनकरत, भयेशिरोरुहपीत । पहिरचीरकियउग्रतप, मान्योसबजगभीत ॥ १४ ॥
सुरदुर्लभजोविभवमहाना । कर्दमतपप्रभावप्रगटाना॥१५॥ गोरसफेनसरिससुखसेजू।दंतनहेमखचितअतितेजू ॥
अतिकोमलजहँबिछेबिछौना॥औरसाजसिगरोछविभौना॥स्वच्छफटिककीचनीदिवाला ।मरकतमणिकीभूमिविशाला
होतजहांमणिकीउजियारी । सखीसहसशृंगारसँवारी॥१७॥कुसुमितगृहवाटिकाविराजै ।थलथलथोककल्पद्रुमराजै
कूजिरहेजहँविपुलविहंगा । गुंजहिमधुपमत्तयकसंगा॥१८॥फूलेसरवापिनअरविंदा । झरतमधुरसुदकरमकरंदा ॥
दोहा-हरिपूजनहितकुसुमको, देवहुतीनितजात । तवगावतगंधर्वगण, कीरतितासुविभात ॥ १९ ॥
सचिहुजाहिललचैंमनमाहीं।ऐसोविभवविहायतहांहीं।सुतवियोगसुखनेकुमलाना ॥२०॥ यद्यपिसुन्योतासुमुखज्ञाना
कपिलचरणमहँमनहिलगाई।तजीकामनासबदुखदाई॥जेहिविधिकह्योकपिलहरिरूपा।तेहिविधिकरिप्रभुध्यानअनूपा
करिकैभक्तियोगवैराग् । ब्रह्महेतुलहिज्ञानअदागू॥२४॥ तातेशुचिमनआत्महिदेखी।मायागुणसबतज्योविशेषी २५
अचलचित्तहरिचरणलगाई।ब्रह्मलोकलगिविभवविहाई।स्वप्नसरिससुखसकलविचारी ।करिसमाधिसुधिसकलविसारी
दोहा-देवहुतीबैठीअचल, भोजनपानविहाय । सेवकाईसखियांकरैं, पैतेहिकछुनजनाय॥२८॥
भयोमलिनतहँतासुशरीरा।छूटेकेशशिथिलअँगचीरा॥लग्योनिरंतरहरिपदध्याना।छूटततेहितनुभयोनभाना॥२९॥
यहिविधिकपिलभणितलहिज्ञाना।कियोपरमपदतुरतपयाना।आश्रमतासुसिद्धपदनामा ।भयोपुण्यप्रदत्रिभुवनआमा
तासुशरीरसरितह्वैगयऊ।नामसिद्धदाताकरभयऊ॥सेवततातिहिसिद्धवसितीरा । मज्जनकरतनशतअघभीरा ॥ ३२॥
गंगासागरकपिलसिधारी।मांगिसिंधुसोंआश्रमभारी३३बसतभयेयदुपतिपदध्यावत।जासुसुयशसिधिचारणगावत ॥
दोहा-कपिलदेवकोसिंधुहू, पूजनकियोसप्रेम३४सांख्यशास्त्रआचार्यप्रभु, दायकत्रिभुवनक्षेम ॥ ३५ ॥
देवहुतीअरुकपिलको, जौनभयोसंवाद । विदुरकह्योतुमसोंसकल, नाशकजगतविषाद ॥ ३६ ॥
कपिलभणितयहप्रीतियुत, कहैसुनैसविधान । सोखगपतिपतिनगरकी, डगरगहतमतिमान ॥
दिशिनिधिशशिसंवतसुखद, श्रावणपूरणमास । आनँदअंबुधितीसरो, भोअस्कंधप्रकास ॥ ३७ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेत्रयस्त्रिंशस्तरंगः ॥ ३३ ॥ शुभमस्तु ॥

दोहा-महाराजरघुराजकृत, भाषातृतीयस्कंध । यहसमाप्तमुद्रितभयो. मंगलकंदप्रबंध ॥

इति

श्रीमद्भागवत-आनंदाम्बुनिधि

तृतीयस्कंध समाप्त ३.

श्रीगणेशायनमः।

अथ श्रीमद्भागवत-आनन्दाम्बुनिधि।

चतुर्थस्कंधप्रारंभः।

सोरठा—जयद्वारकाअधीश, यदुकुलसागरचंद्रमा। रमाकंतजगदीश, शरणागतपालकप्रबल॥
दोहा—पटआननभ्रातासुखद, पंचाननसुतजोय। चतुराननकेनातिप्रभु, नौमिगजाननसोय॥
मतिकरणीहरणीकुमति, सुखभरणीसबकाल। दुखदरनीजयशारदा, उद्धरणीभ्रमजाल॥
सत्यवतीसुतवंदिकै, वंदौंशुकमुदगाथ। श्रीमुकुंदहरिगुरुचरण, मैंनाऊँनिजमाथ॥
बान्धवेशविश्वनाथपद, वंदौंवारहिंवार। यहचौथोअस्कंधमैं, भाषाकरहुँप्रचार॥

मैत्रेयउवाच।

दोहा—मनुतियशतरूपाजनी, तीनिसुतासुकुमारि। देवहुतीआकूतिहू, अरुप्रसूतिछविवारि॥ १॥
शतरूपासंवतमनुजानी। रुचिकहँदियअकूतिछविखानी॥२॥आकूतीमहँरुचिमुनिराई।कन्यापुत्रदियोजनमाई॥३॥
यज्ञनामसुतभयेसुरारी। रमाअंशदक्षिणाकुमारी॥४॥यज्ञनामसुतमनुघरआन्यो।सुताराखिरुचिगृहमुदमान्यो॥५॥
सुतारमासुतयज्ञसुरारी। भयोव्याहयहहेतुविचारी॥ द्वादशपुत्रभयेतिनकेरे। तिनकेनामनकहौंनिवेरे॥ ६॥
भद्रशांतइड़पतिसंतोषू। कविविभुपन्हसुदेवप्रतोषू॥ रोचनईधमतोपसुजाना॥ ७॥ तुषितनामतेदेवबखाना॥
दोहा—स्वायंभुवमन्वंतरै, द्वादशदेवहिजान। मुनिमरीचिआदिकभये, इंद्रयज्ञभगवान॥ ८॥
मनुसुतजेठोप्रियव्रतभयऊ। अरुउत्तानपादलघुठयऊ॥ जासुपुत्रअरुपौत्रअपारा। प्रगटभयेपूरोसंसारा॥ ९॥
व्याह्योकर्दमदेवहुतीकहँ। कह्योंतासुसंततिमैंतुमपहँ॥ १०॥ मनुदुहिताप्रसूतिरहजोई। व्याहीदक्षप्रजापतिसोई॥
तासुप्रसिद्धवंशजगमाहीं॥ ११॥ अवसुनुकर्दमकन्यनकाहीं। कर्दमकीनवसुतासोहाई।नवब्रह्मर्षिलियोसुखपाई॥
तिनकोवंशविदुरअवसुनिये।हरिमायाअचरजनहिंगुनिये॥१२॥ लियमरीचिजोकलाकुमारी।तातेभेद्वैसुततपधारी॥
कश्यपऔरपूर्णिमानामा। जासुवंशपूरितत्रयधामा॥ १३॥
दोहा—भयेपूर्णिमासुतउभय, विरजविश्वगहुनाम। औरएकदुहिताभई, सुरकुल्याछविधाम॥
जोहरिपदधोयेदिविमाहीं। सुरसरिताभैसुखदसदाहीं॥सोइसुरकुल्याअभिरामा। जाकीकीरतिजगतललामा॥१४॥
अनसुइयाभैअत्रिहिनारी। जाकेसुतउपजेयशकारी॥ दत्तात्रेयऔरदुर्वासा। तीजोभोशशिनामप्रकासा॥
हरिहरविधिकेजानहुअंसा।होतभयेजगपरमप्रशंसा१५ वि.उ.यहसुनिकह्योविदुरकरजोरी।सुननहेतुयहमुनिमतिमोरी।
अत्रिभवनहरिहरविधितीनि।जन्मलियेकेहिहेतुप्रवीनि१६विदुरवचनसुनिमुनिमतिमाना। करनलग्योयहिभाँतिबखाना।

मैत्रेयउवाच।

एकसमयअत्रिहिकरतारा। दियशासनसिरजनसंसारा॥
दोहा—सुनिविधिशासनअत्रिमुनि, लैनिजनारिसंग। गयेऋक्षपर्वततुरत, तपहितभरेउमंग॥ १७॥
सोहतजहाँअशोकपलासा।फूलेफूलवनहिचहुँपासा॥ बहनिर्झिरसरितसुहावनि।निर्विन्ध्यानामकअतिपावनि १८
तहँअत्रिमुनिजायसुखारी। प्राणायामवर्षशतधारी॥ खड़ेएकपदसोमुनिराई। कियोपवनभक्षणसुखपाई॥
सह्योशीतआतपअतिघोरा।१९। निजमनसोंअसहारिहिनिहोरा॥निजसमदेहुपुत्रप्रभुमोहीं।हमतुम्हरेशरणागतदोहीं।
असतपकरतगयोबहुकाला।तवशिरतेनिकसीशिरिज्वाला॥जरनलगेतवतीनिहुँलोका।देवनकेउरभोअतिशोका २१
दोहा—तवहरिहरविधिआगमन, कीन्हयोमुनिअस्थान। विद्याधरगंधर्वसिधि, करहिंसंगपद्मगान॥ २२॥

दोहा–सोनरनारायणचरण, हमसवकरहिंप्रणाम । करहिंनाथहमपरकृपा, देहिंसदासुखधाम ॥ ५६ ॥
जासुनयनलखिलाजतकंजा।जोलक्ष्मीनिवाससुखपुंजा॥ शास्त्रगम्यहैनरनारायन।जगहितसुरसिरजेसत्वायन॥५७॥
अस्तुतिकियोजवहिंअसुरारी । कृपादृष्टिप्रभुतिनहिंनिहारी ॥ सवदेवनतेपूजनपाई । गयेगंधमादनहरषाई ॥ ५८ ॥
नरनारायणतपवहुकीन्हे । यदुकुरुकुलअवतारहिलीन्हे ॥ हैनरकोअर्जुनअवतारा । नारायणवसुदेवकुमारा ॥
रथीरारथीह्वैदोउवीरा । हरयोअवनिभारामतिधीरा ॥५९॥ अग्निनारिस्वाहाजेहिनामा।भयेतासुत्रयसुततपधामा॥
दोहा–शुचिपावकपवमानहू, ॥ ६० ॥ तिनसुतपैंतालीस । येसवमिलिउंचासभे, कृपापात्रजगदीस ॥ ६१ ॥
तिनकेलैलैनामद्विज, करहियज्ञजगमाहिं ॥ ६२ ॥ पितरवंशसुनियेविदुर, जगपूजतजिनकाहिं ॥
सौमिवर्हिपदआज्यपहु, चौथोअग्निष्वात । कोऊहविलेतेअगिनि, कोउजलादिविख्यात ॥
तासुसुधातिय ॥ ६३ ॥ ताहिके, दुहिताप्रगटीदोय । वयुनाधारिणनामकी, वेदज्ञानरसमोय ॥ ६४ ॥
शंकरकीनारीसती, निजसमलह्योनपूत ॥ ६५ ॥ दक्षद्रोहत्याग्योतनुहि, करिकैयोगअकूत ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

दोहा–सुनिमित्रासुतकेवचन, विदुरविनोदहिपाय । जोरियुगलकरकंजपुनि, दीन्होविनयसुनाय ॥

विदुरउवाच ।

शीलसिंधुशिवसोमतिसेतू।दक्षविरोधकियोकेहिहेतू॥ करतरह्योदुहिताकोआदर।केहिकारणअतिकियोअनादर॥१॥
शांतचराचरगुरुत्रिपुरारी।दक्षवैरकियकहाविचारी॥२॥श्वशुरजमातविचारिविरोधू । सतीतज्योतनुकरिअतिक्रोधू॥
कारणतासुसकलमुनिराई । देहुकृपाकरिमोहिंसुनाई ॥३॥ सुनिमित्रासुतविदुरसुवानी । कहनलगेसोकथावखानी ॥

मैत्रेयउवाच ।

पूरवमुनिमरीचिकीयागा । होतभईतहँसवबडभागा ॥ देवऋषीशमुनीशहुआये । औरहुसिद्धप्रसिद्धसुहाये ॥ ४ ॥
दोहा–लागिगईसुंदरिसभा, दक्षप्रजापतितत्र । आवतभोपरकाशनिज, फैलावतसर्वत्र ॥ ५ ॥
देखिदक्षपरजापतिकाहीं । सिगरोउव्योसमाजतहांहीं ॥ पैनउठेविरंचित्रिपुरारी । अपनेतेतेहिछोटविचारी ॥ ६ ॥
सुरमुनिसिद्धहुविप्रउदारा । दक्षहिसकलकियेसत्कारा॥दक्षविधाताकहँशिरनाई । वैठ्योनिकटनिदेशहिपाई ॥ ७ ॥
शंकरउठेनदक्षनिहारी । कीन्ह्योकोपदक्षतवभारी ॥ शिवकहँजारतअसदृगहेरे । कह्योदक्षवहुवचनकेरेरे ॥ ८ ॥
सुनहुसकलब्रह्मर्पिसुजाना । औरसवैजेदेवमहाना ॥ मैंनहिंकछुपमंडतभाषों । अरुअज्ञानतेनहिंमनमापों ॥ ९ ॥
दोहा–यहशंकरनिर्लज्जअति, सुरयशकियोविनाश । सतमारगतेहीनहै, करतकुपंथप्रकाश ॥ १० ॥
सावित्रीसमगौरिकुमारी।लीन्ह्योअग्निसाखिदैभारी ॥ तवतेमोरशिष्यह्वैगयऊ । सुतसमानमैंमानतभयऊ ॥ ११ ॥
जवतेव्याह्योसुताहमारी।तवतेगर्वनजातसँभारी ॥ मोहिंदखिउठवउचितयहिरहेऊ।सोमोहिंलखिवातहुनहिंकहेऊ ॥
यहमरकटलोचनपाखंडी । वैठोमानहुशांतत्रिदंडी ॥ १२ ॥ अशुचिअनाचारीअभिमानी ।अमर्यादकारीअज्ञानी॥
विनचाहेदियसुतासुहाई।यथाशूद्रकहँवेदपढ़ाई ॥ १३ ॥ श्मशानमहँपदकृतनिवासा । भूतप्रेतयुतकरतनिवासा ॥
दोहा–नग्नरहतरोवतहँसत, खोलेशिरकेवार । वैकलसमवागनरहत, श्मशानरहवार ॥ १४ ॥
चिताभस्मनितअंगलगावै । मनुजमुंडमालाउरभावै ॥ अंहैमतनवनवागनपागे । सदाअशिवशिवनामहिंपागे ॥
तामसभूतपिशाचननाथा।सज्जनयादिननावहिंमाथा ॥ १५ ॥ हायविरंचिनिदेशविचारी । वन्योनमोसोदिनकुमारी ॥

दोहा-सोनरनारायणचरण, हमसबकरहिंप्रणाम । करहिंनाथहमपरकृपा, देहिंसदासुखधाम ॥ ५६ ॥
जासुनयनलखिलाज्ञतकंजा।जोलक्ष्मीनिवाससुखपुंजा॥ शास्त्रगम्यहैनरनारायन।जगहितसुरसिरजेसत्वायन॥५७॥
अस्तुतिकियोजबहिंअसुरारी । कृपादृष्टिप्रभुतिनहिंनिहारी ॥ सबदेवनतेपूजनपाई । गयेगंधमादनहर्षाई ॥ ५८ ॥
रनारायणतपबहुकीन्हे । यदुकुरुकुलअवतारहिलीन्हे ॥ हैनरकोअर्जुनअवतारा । नारायणवसुदेवकुमारा ॥
धीरारथीह्वैदोउवीरा । हरयोअवनिभारामतिधीरा ॥५९॥ अग्निनारिस्वाहाजेहिनामा।भयेतासुत्रयसुततपधामा॥
दोहा-शुचिपावकपवमानहू, ॥ ६० ॥ तिनसुतपैंतालीस । येसबमिलिउंचासभे, कृपापात्रजगदीस ॥ ६१ ॥
तिनकेलैनामद्विज, करहियज्ञजगमाहिं ॥ ६२ ॥ पितरवंशसुनियेविदुर, जगपूजतजिनकाहिं ॥
सोमिवर्हिपदआज्यपहु, चौथोअग्निष्वात । कोऊहविलेतेअगिनि, कोउजलादिविख्यात ॥
तासुसुधातिय ॥ ६३ ॥ ताहिके, दुहिताप्रगटीदोय । वयुनाधारिणनामकी, वेदज्ञानरसमोय ॥ ६४ ॥
शंकरकीनारीसती, निजसमलह्योनपूत ॥ ६५ ॥ दक्षद्रोहत्याग्योतनुहि, करिकैयोगअकूत ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजासिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

दोहा-सुनिमित्रासुतकेवचन, विदुरविनोदहिपाय । जोरियुगलकरकंजपुनि, दीन्होविनयसुनाय ॥

विदुरउवाच ।

धुशिवसोमतिसेतू।दक्षविरोधकियोकेहिहेतू॥ करतरह्योदुहिताकोआदर।केहिकारणअतिकियोअनादर॥१॥
चरगुरुत्रिपुरारी।दक्षवैरकियकहाविचारी॥२॥श्वशुरजमातविचारिविरोध । सतीतज्योतनुकरिअतिक्रोध॥
सुसकलमुनिराई । देहुकृपाकरिमोहिंसुनाई ॥३॥ सुनिमित्रासुतविदुरसुबानी । कहनलगेसोकथाबखानी ॥

मैत्रेयउवाच ।

मरीचिकीयागा । होतभईतहँसबबडभागा ॥ देवऋषीशमुनीशहुआये । औरहुसिद्धप्रसिद्धसुहाये ॥ ४ ॥
हा-त्यागिगईसुंदरिसभा, दक्षप्रजापतितत्र । आवतभोपरकाशनिज, फैलावतसर्वत्र ॥ ५ ॥
रजापतिकाहीं । सिगरेउठ्योसमाजतहांहीं ॥ पैनउठेविरंचित्रिपुरारी । अपनेतेहिछोटविचारी ॥ ६ ॥
ह्नहुविप्रउदारा । दक्षहिसकलकियेसत्कारा॥दक्षविधाताकहँशिरनाई । बैठ्योनिकटनिदेशहिपाई ॥ ७ ॥
द्रक्षनिहारी । कीन्ह्योकोपदक्षतबभारी ॥ शिवकहँनारतअसहगहेरे । कह्योदक्षबहुवचनकरेरे ॥ ८ ॥
ब्रह्मर्षिसुजाना । औरसबैजेदेवमहाना ॥ मैंनहिंकछुपनंडनेभाषों । अरुअज्ञाननेनहिंमनमाषों ॥ ९ ॥
-पदशंकरनिर्लज्जअति, सुरयशकियोविनाश । सतनारगनेहीनहै, करतकुपंथप्रकाश ॥ १० ॥
रिकुमारी।लीन्ह्योअग्निसाखिदेभारी ॥ तबतेमोगिशिष्यह्वैगयऊ । मुनसमानसँमाननभयऊ ॥ ११ ॥
सुनादमारी।तबतेनबंनजानसँभारी॥मोहिंदेखिउठ्यउचितनाहिंदेऊ।मोमोहिदेखिबानहुनाहिंकेऊ ॥
वनपाखंडी । बैठोमानहुज्ञानत्रिदंडी ॥ १२ ॥ अशुचिअनाचारीअभिमानी ।अमर्यादकारीअज्ञानी॥
नामुदाई।पधाशूद्रकहँवेदपढ़ाई ॥ १३ ॥ इनश्मशानहँपहकुनिवासा । भूतप्रेतयुनकरतनिवासा ॥
नभरहतरोवतहँसन, सोलेशिरकेबार । बैकल्लनतवागनरहन, इमशानरहुवार ॥ १४ ॥
अंगलगावे । मनुजमुंडमालाउरभावे ॥ अदेननननत्राग्नष्पागे । महाअशिवशिवनामहिधारे ॥
चननाथा।नबनपाहिननाथहिनाथा ॥१५॥ दापदिरहिनिनिरअविचारी । कन्यानमोनोहेनकुमारी ॥

मैत्रेयउवाच।

...। देनशापनहघोरघनेरी॥दक्षआनमनकरितिदिठोरा।दियोशंभुकहँशापकठोरा॥ १७॥
द्रसंगत्रिपुरारी। होयनयज्ञभागअधिकारी॥ अंदअधमयहदंगनमाहीं। तातेअसतवचनममनाहीं ॥ १८॥
दोहा–यदपिदेनवारणकियो, तदपिदक्षदरकाहिं। शापदिदेरवारित, गयोकुपितगृहमाहिं ॥ १९ ॥
ापशिवकोसुनिघोरा। वोल्योनंदीकुपितकठोरा॥ जेदक्षहुकहँदहसराहत। तिनहूँकेउरअतिशयदाहत॥
श्वरदियदक्षहिशापा। फलायोनिजपरमप्रतापा॥२०॥समदर्शीशंकरभगवाना। करतद्रोहजेहिसुन्योनकाना॥
प्रभुहिजेभरिअभिमाना। करहिंद्रोहतेकुमतिमहाना॥ तिनकोसोयजायपरलोका। जाहिंरनदिनसंयुतशोका॥
गृहविपयलोभलवलीना। कपटकर्ममेंपरमप्रवीना॥ सुखकेहेतुरनदिनधावें। वृथाविदवादीकहवावें ॥ २२॥
दोहा–आतमज्ञानभुलायदिय, करतजननअपमान। नारिअधीनसदारहैं, दक्षपशूनसमान॥
क्षदुष्टहोंविमुखछागे। मोवचननमेंवारनलागे॥ २३ ॥ मानतनाहिंअज्ञानहिज्ञाना। दक्षजड़नमहँअहैप्रधाना ॥
तातेपरोरहेसंसारा। तहँतेकवहुँनहोयउवारा ॥ अरुजेदक्षहिदुष्टसराहैं । तिनहुँनजानहुनरकाहिमाहैं ॥ २४ ॥
शंकरनिंदरविदवहुमाने। करिहंतेहठिनरकपयाने ॥ २५ ॥ होहिंसवंभक्षीशठतेई । जेजीविकाहेतुतपसेई ॥
देहगेहधनमहँजिनप्रीती। तेपावहिंभिक्षुककीरीती ॥ २६ ॥ ऐसोसुनिनंदीकोशापा। भृगुमुनिपायपरमसंतापा॥
दोहा–दुसहशापभृगुहूदयो, जोनहिंवारणहोय। जाहिसुनतसिगरेअमर,रहेमहादुखमोय ॥ २७ ॥
जेशठशिवकोपंथचलावें। अोशंकरकेभक्तकहावें॥ तेपाखंडीहोयँविशेषी। शुभशास्त्रनतेविमुखहिलेषी ॥ २८॥
जटाभस्महाड़नजेधारें । महामूढमतितजेअचारें ॥ शिवकेमतमेंनिरतसदाहीं । तेनरघोरनरकमहँजाहीं ॥
जेशिवकेमतरहेंलोभाने। तिनकीहोयप्रीतिमदपाने ॥ २९ ॥ विप्रवेदनिंद्योतेनंदी। धारकजगमर्यादअनंदी ॥
तातेजेसवशिवगणअहहीं। तिनकोबुधपाखंडीकहहीं॥३०॥वेदमार्गदायककल्याणा। जासुजनार्दनअहैप्रमाणा॥३१
दोहा–चहुब्रह्मर्षिसुरर्षिसव, चलहिंजोनसतपंथ। ताकीतेंनिंदाकरी, धरिपगमहाकुपंथ ॥
तातेहोहुसकलपाखंडी।भयेअदंडिनकेतुमदंडी॥३२॥(मै.उ.)ऐसोसुनिभृगुमुनिकोशापा॥महादेवलहिअतिसंतापा॥
उठेसभातेमौनइशाना। विमनकियोकैलासपयाना ॥ ३३ ॥ तवपुनिरहेप्रजापतिजेते । करनयज्ञलागेतहँतेते ॥
जहँसंगमगंगायमुनाको। पातकनाशकजासुपताको ॥ सोईतीरथराजप्रयागा । तहांप्रजापतिकीन्हेयागा ॥
जाकेनाथअहैंयदुनाथा। नाशतकोटिपापयकसाथा॥३४॥ऐसेतीरथमहँमखकरिकै। न्हायत्रिवेणीअतिमुदभरिकै॥
दोहा–विमलतेजततनुपायकै, सिगरेसुखितप्रजेश। विधिशासनधरिशीशमें, निजनिजगयेनिवेश ॥ ३५ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्री
राजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेद्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

मैत्रेय उवाच।

दोहा–शंकरदक्षविरोधमहँ, वीतेवर्षहजार ॥ १ ॥ पुनिदक्षहिविधिदेतभे, प्रजनपालअधिकार ॥
भयोदक्षकेगर्वमहानो। तवपुनिवाजपेयमखठानो ॥ २ ॥ वाजपेयकरिदक्षसुखारी । फेरिवृहस्पतिसवमखभारी ॥
दक्षकरनलाग्योतेहिकाला ॥ ३ ॥ तहँसुरर्षिब्रह्मर्षिविशाला ॥ औरहुवेदपितरसवआये।नितनिजनारिनसंगलेवाये
...। भूपणवसनज्योतिसोजागे ॥ ४ ॥ औरहुविद्याधरगंधर्वा । चारणकिन्नरआदिकसर्वा
...। गवनेकैलासहिनियराई ॥ असमुनिसुरनसुरिनकेवैना । भयोसतीउरआनँदऐना ॥ ५ ॥
दोहा–भूपणवसनसँवारिकैं, निजनिजचढ़ेविमान। दक्षयज्ञउत्सवमहा, पेखनकरहिंपयान ॥६ ॥

असससुरसुरसुंदरीनिहारी।सतीशंभुसोंगिराउचारी ॥७॥ (स.उ.)दक्षप्रजापतिआपसयाने । करनयज्ञआरंभहिठाने ॥
तहांदेवसबकरहिंपयानै।मोहिंयुतचलियजोप्रभुमनमानै८ममभगिनीनिजपतियुतजैहैं ।इकइकसोंमिलिअतिसुखपैहैं
तातेमोरिहुअसअभिलाषा।करौंजायतहँकछुयशशाखा ॥ देहैंपितामोहिंबहुभूषण । तहाँगयेनहिंहैकछुदूषण ॥ ९ ॥
लखिहौंमातुमातुभगिनीको।निजभगिनिनमिलिहौंयहठीको॥लख्योनपितुकहँबहुदिनबीते ।पुनिकबजैहैंयज्ञव्यतीते
दोहा-अबक्रुपिनयुतजनकमम, करतबृहस्पतियाग । उचितगवनयहिकालगुणि, हियेहोतअनुराग ॥ १० ॥
यद्यपिजगतअहैतुममाहीं ।सोकछुतुमकोअचरजनाहीं॥नारिस्वभावनमोहिंकछुचेतू।देखनचाहौंजनमनिकेतू॥११॥
लखहुचढींसुरनारिविमाना ।ममपितुगृहकहँकरहिंपयाना ॥ अलंकारकीन्हेसबअंगा ।चलींजाहिंनिजनिजपतिसंगा ॥
अगनविमानगगनमहँराजैं।सोहतजनुकलहंससमाजैं॥तातेहोतिहमारिहुआशा।लखहुँजायपितुयज्ञतमाशा ॥ १२ ॥
पितुकोमखउछाहसुनिकाना।किमिहमसोंरहिजायइशाना॥यद्यपिपिताबुलायोनाहीं । तद्यपिउचितपरतमनमाहीं ॥
दोहा-पतिपितुसुहृदहुगुरुसदन, विनहिबोलायेजाव । मोहिंउचितलखिपरतप्रभु, कसनहिंदेहुजवाव ॥ १३ ॥
नाथकरहुमोपरकृपा, पूरिकरहुअभिलाप । मोहिंअर्द्धंगीकरिलियो, कियोकबहुँनहिंमाप ॥
जोरिपाणिविनतीकरौं, सुनियेकंतमहेश । पिताभवनकेगवनको, मोकोदेहुनिदेश ॥ १४ ॥

मैत्रेयउवाच ।

छंद-सुनिसतीकेअसवचनशंकरनेकुमुखमुसुक्याय । तहँदक्षकेकटुबैनसुमिरतदियोजोहियलाय ॥
तबकह्योशंकरसतीसोंअसविविधविधसमुझाय॥१५॥यहभनीतैंनीकीगिरामोहुकाहिंउचितजनाय ॥
पतिपितुसुहृदगुरुगृहगवनविनवोलेहूसतिधर्म । पैजोकियेनहिंहोहिनिजपरदोपदृष्टिअशर्म ॥ १६ ॥
तपवित्तवयविद्याकुलहुवपुसंतपटगुणजातु । येपटजोहोहिंअसंतकेतोकरहिंदोपमहातु ॥
सबसुरतिताकीभूलिजातीहोतअतिअभिमान । सोकरतनिंदासंतजनकीरहततेहिनहिंज्ञान ॥ १७ ॥
ऐसेजननकोसुजनगुणिनहिंजायतिनकेगेह । जोजायहठितोकुटिलभ्रुकुटीतकहिंतजितेहिनेह ॥ १८ ॥
तसवैरिविशिखनदुखनहोतजेफोरितनुकढ़िजाहिं।जसदहतनिशिदिनबंधुकेकटुवचनजननहिंकाहिं १९॥
यद्यपिसतीतुमतासुदुहितातदपिममतियलेपि । वहदक्षअवशिअज्ञानवशअपमानकरहिविशेपि ॥२०॥
शठहठकरतसज्जनविरोधविलोकिसंतविभूति। जिमिदैत्यहरिसोंबैरकरहिंनचलतिकछुकरतूति ॥
नहिंहोहितिनसमजरतनिशिदिनभरतदुखउरभूरि।तिनकुमतिजनकीकामनानहिंहोतिकोनिहुपूरि २१॥
चलिलेवआगूकरववंदनकरहिंजेबुधजोन । तेमानिअंतर्यामिसबथलकरहिंमनतेतौन ॥
नहिंदेहअभिमानहिकरहिंगुणिलोककोव्यवहार॥२२॥हमकियेमनतेतिहिंप्रणतिजेहिहियेनंदकुमार २३
हेपितातेरोमोरद्रोहीकहंतातेतोहि । नहिंलखवताकीओरतोकोउचितपरतोजोहि ॥
मखिसकलदेवसमाजकेमोहिकह्योकटुबहुबैन । मैंकियोकछुअपराधनहिंजानहिसकलसुरसैन ॥ २४॥
दोहा-मानिनमेरोवचनजो, हठिजैहौपितुगेह । देखिअनादरमोरतो, तैंतजिदेहैदेह ॥
बंधुनकेमधिमैंलहै, जोसम्मनअपमान । तोअतिशयदुखलेसिकै, तजततुरततनप्रान ॥२५॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृतेआनंदाम्बुनिधौ चतुर्थस्कंधे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा-भाषिसतीसोंवचनअस, ह्वैगेमौनमहेश । लागेकरनविचारमन, पायोपरमकलेश ॥
छंद-सुनिसतीशंकरकेवचननहिंसकतिगवनपितागृहै । जोहनजनककोयागउरअभिलाषमनहिंरहै ॥

कहुँजातिकहुँपुनिलौटिआवतिफेरिगवनतिद्वारलौं । पुनिलौटिशिवकोवदनताकतिरहतिठगिबहुवारलौं ॥१॥
कहुँरुदनकरिअतिकोपभरिशिवकोतकतिदृगवंकते।यहिभाँतिह्वैपुनिविकलअतिनहिंकहिसकतिकछुशंकते॥
पुनिवारवारहिंश्वासलैअतिशोकरोपहितेपगी । निजकंतकोनहिंवचनगुणिपितुप्रीतिकेरंगहिरँगी ॥
गवनीसतीपितुयागदेखनत्यागिशिवअर्द्धंगको ॥ ३ ॥ तहँशंभुकेगणद्रुतहजारनचलेगहितेहिसंगको ॥
अतिचपलमहिमहँधरतपदनहिंसंगशिवगणपावहीं । मणिमानमदआदिकसुभटनंदीश्वरहिलैधावहीं ॥
चलिवेगसोंबहुदूरमेंपहुँचेसतीढिगजायकै ॥ ४ ॥ बहुविनयकरितेहिवृषभपहँलैचलेद्रुतहिचढ़ायकै ॥
कोउलियेकंदुककंजकोकोउसारिकाकोउआरसी । कोइछत्रकोईचमरकोईमालसुरधुनिधारसी ॥
कोइवेणुकोईशंखकोईदुंदुभीनवजावहीं । कोइगानकैबहुतानलैकलरवदिशाननछावहीं ॥ ५ ॥
यहिभाँतिसंयुतगणनतेपहुँचीसतीपितुयागमें । जहँवेदपढ़िपढ़िकरतहिंसाविप्रअतिअनुरागमें ॥
बहुदेवअरुबहुविप्रअरुबहुसिद्धचारणसोहहीं । मृददारुकंचनलोहकुशकेपात्रतहँमनमोहहीं ॥
किययज्ञशालाकेप्रदेशप्रवेशअतिमोदितसती ॥६॥तहँजननिअरुतेहिभगिनिउठिउठिमिलींकरिआदरअती ॥
पैऔरदक्षसमाजकेकोउदेवमुनिनहिंतकतभे । नहिंनेकुपूछेहुकुशलप्रश्नहुदक्षकोअतिजकतभे ॥ ७ ॥
यद्यपिजननिअरुभगिनिसादरताहिआसनदेतिभै । पैजनकतेअतिलहिअनादरसतीश्वासहिलेतिभै ॥ ८ ॥
तहँरुद्रकोनहिंभागलखिपितुकृतअनादरलेखिकै । लोकनजरावतइवकियोतहँसतीकोपविशेषिकै ॥ ९ ॥
सबसुरसमाजसुनाइकैबोलीगिराअप्रियअती । मखकर्मरतनिजजनककीनिंदाकरनलागीसती ॥ १० ॥

सतिरुवाच ।

जाकोनकोउप्रियअप्रियजेहिचरणरजजगशिरधरै । तेशंभुकोतुमहींविनापितुकोअनादरअसकरै ॥ ११ ॥
परदोषकोसज्जनगुणतगुणतुमहिंसमशठजेनहीं । लघुगुणहुकोबहुतैविचारहिंजेविवेकीहिंसहीं ॥ १२ ॥
जेभरेतनुअभिमानअतितेहरहिजोनिंदनकरैं । तौअहैअचरजनाहिंकछुतेसुकृतहततनरकहिंपरैं ॥ १३ ॥
जेहिनामशिवइकवारकहतहिनशतद्रुतअघओघहैं । तिनकेभयेपितुहायद्रोहीजासुशस्त्रअमोघहैं ॥
कैलासपतिकीरतिविमलशासनसबैसुरमानहीं ॥ १४ ॥ पदकमलरजशिरमेंधरहिंअरुकरहिंगुणगणगानहीं ॥
जेचहतब्रह्मानंदतेजनकरतभक्तिमहेशकी । तिहुँलोककेपूरणमनोरथवानिजासुमहेशकी ॥
तिनकोविरोधीहोतकतपितुतोहिंकछुसूझैनहीं । अतिशंकहरशंकरसुशंकरशंकरारतिंसही ॥ १५ ॥
जोकहैतेशिवकोअशिवसोविधिनजानहितेहिकहा । अंगनविभूतिकपालमालमशानवाससदामहा ॥
पैचरणरजकोशीशधारहिमोदमंगलहनको । यहविदितसबजगवाततातउचितनहितोहिकहनको ॥ १६ ॥
जोकहहिंदशइमुखसनापनिंदनतासुरसनाकाटिये । चलहोयजोनहितौतुरततहँशीशअपनोछाँटिये ॥
अपमानपैनहिंसुनेकनाथननर्मृदिपराइये । यहहैसनातनधर्मसांचोपैसहौचितलाइये ॥ १७ ॥
तातेननिनजोमारनतुअवअशुचिमैनाहिंगासहौं । कर्किमहाविपचलितभोजनवमनकेसमनासिहौं ॥ १८ ॥
जेमगनआत्मानंदमहँतेविधिनिषेधनमानहीं । जेप्रवृत्तिमारगनिरततेनहिंनिवृत्तिमारगजानहीं ॥
पररंगगेनहिंलखदोउनिनिंदितसानुपभिन्नहैं । जेकरतनिंदनहँपरस्परतेसदामनिछिन्नहैं ॥ १९ ॥
हैंनिगमागमनिगमहंकर्मकर्मभवकहुनहीं । तिनकोकर्गनेजनकोनिंदाकुमतिउरआनीसहीं ॥ २० ॥
[illegible] । [illegible]ननिनकोभोगहैं ॥
[illegible] । [illegible] ॥ २१ ॥
[illegible] । [illegible] ॥ २२ ॥
[illegible] । [illegible] ॥ २३ ॥

मैत्रेयउवाच ।

असकहिसतीउत्तरवदनआचमनकरिबैठतभई । पटपीतधारेमूँदियुगदृगयोगमारगगतिलई ॥ २४ ॥
तहँप्राणऔरअपानपवनहिंकरिसमानउदानको । पुनिनाभिचक्रहितेउठाइसुराखिहियेमहानको ॥
तहँकंठमारगतेभ्रुकुटिमधिल्यायथापनतेहिकियो२५शंकरप्रियानिजतनुतजनहितप्रगटियोगानललियो २६॥
शंकरचरणधरिसतीध्यानहिभस्मतनुकरिदेतिभे ॥ २७ ॥ तहँमच्योहाहाकारनभमहिसुरसमाजअचेतिभे ॥
असकहहिसवशंकरप्रियाकरिकोपदक्षहिंपैमहा । सुनिनाथनिंदनश्रवणनिजतनुतजिदियेवेदीजहाँ ॥ २८ ॥
देखोसवैसुतजेहिचराचरदक्षसोंकुमतीखरो । अतिमानलायकनिजसुताअपमानताकोअतिकरो ॥
निजपिताकेअपराधतेनिजतनुसतीतजिदेतिभे । सवसुरनकेदेखतइतेजगयशउजागरलेतिभे ॥ २९ ॥
यहदुष्टअतिशयदक्षदुहितामरतनहिंवारणकियो । अपनेकरमअपनीअकीरतिआपहीतेलैलियो ॥ ३० ॥
अससुनतदेवनकेवचनलखिकैसतीतनुत्यागको । लैशस्त्रधायेशंभुकेगणहननदक्षअभागको ॥ ३१ ॥
लखितिनहिंआवतदेखिभृगुकियअग्निहोमसुमंत्रते ॥ ३२ ॥ तातेभयेरिभुसुरप्रगटवलवानवेदीयंत्रते ॥ ३२ ॥
तहँतुरततेगहिकरलुवाठनशोरकरिधावतभये ॥ हनिशंभुकेअनुचरनतेहिक्षणतनुजरायेरिसछये ॥ ३३ ॥
दोहा—रिभुदेवनकेलूककी, मारपायअतिघोर । शंकरगणगुह्यकप्रथम, भागिगयेचहुँओर ॥ ३४ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेचतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा—शंकरकेगणभागिकै, गयेदुखितकैलाश । सतीमरणभरिभीतिहिय, कारिनाँहसकेप्रकाश ॥
छंदहरिगीतिः—तवजायनारदशंभुकेढिगकहीऐसीवानि । तुमकहाबैठसुचितशंकरपरनहिंकछुजानि ॥
उतदक्षकेमखमेंसतीलखिकैनभागतुम्हार । अरुपायकेअपमानपितुसोंह्वैप्रकोपअगार ॥
उत्पन्नकरियोगाग्निनिजतनुभस्मकियतेहिठौर । तवआपकेगणदक्षकहँधायेहननकरिशोर ॥
तवभृगुअनलमहँहोमकरिरिभुदेवतहँप्रगटाय । तिनरावरेगणकोलुआठनमारिदीनभगाय ॥
सुनिकैसतीकोनिधनशंकरकोपकीनकठोर ॥ १ ॥ दंतनविकटकटकटकरतचटपटनटाकितीहिठौर॥
अपरनडसतधुरजटिजटानिजझटकितडितसमान । पुहुमीपटाकिपावकसटासींकियोनादमहान॥२॥
पटकतधराणिधुरजटिजटायकपुरुषप्रगट्योघोर । सोयोजनहिकोवपुपअतिडरदंडपनसमशोर ॥
भूरजसारिसत्रयदृगभयंकरदोरदंडहजार । जेहिडाढ़कालहुतेकगलपतालमुखविस्तार ॥
बहुज्वलनज्वालामालसेविकरालशिरकेवाल । सवकरनअस्त्रनशस्त्रधारिगलेकपालहिमाल ॥
हनामजाकोवीरभद्रअभद्रशिवअरिदानि । करजोरिकैतनुरसडोशिवसोंकहीअभिमानि ॥
मैंअहौंकिंकरआपशंकरकरौहुकुमजोहोय । तवविदलिदरसौटिननदनुदक्षकोसमगोय ॥
हैदमारभटनकोसैनाअपिपवत्वान । अवकरविटनविदापदआदिदननदनुपयान ॥ ४ ॥
असपापशासनशंभुकोनदवीरभद्रप्रकोपि । शिवकोपदगिनिदनस्पोदआदिदलनानिननोपि ॥
करवेगपरमप्रचंडयोंकतदोरदंडअखंड । जनुमंडलंडादिकगनमंडादिसंनुकनरगिंद ॥ ५ ॥
शंकरदुकोकिंकरभयंकरचटनाकेसंग । अंतकनगिनइंगननमुअनिर्कअंगभंग ॥
गादवीरभद्रअनूटपानिनिभूटनाडननान । धावोटदाननगनगनकमवरगननरत ॥
तनुनोटपोहरोविविपनूपलनाडननुननस्थान । [illegible] ॥ ६ ॥

जबदक्षकोमखरह्यचोयोजनपांचसातप्रमान । तबसदसिअरुयजमानऋत्विजऔरसुरहुमहान ॥
उत्तरदिशादेखतभयेधुवधूरिधुंधाकार । सबकहहिंसुरमुनिनिजपरस्परविरचिविविधविचार ॥ ७ ॥
भोधूमधूसरव्योमउत्तरहेतुकछुनजनात । नहिंवहतमारुतनहिंतपतरविअहैकछुउत्पात ॥
अवहींजियतप्राचीनवर्हीउग्रजाकोदंड । नहिंचोरहैंतातेकहूकतधूरिधारअखंड ॥
नहिंगऊवेढतवोययातेगुणहुँपरलैआज । अतिशयचकितचहुँओरचितवतकहतदेवसमाज ॥ ८ ॥
तबकहप्रसूतीआदिनारीलेहुफलअवसोय । अपराधविनजोसतीकोअपमानकियसबकोय ॥
सबकेलखतअपमानलहिदीन्ह्योसतीतनुत्यागि ॥ ह्वैहैनहींकल्याणकवहूँदक्षपरमअभागि ॥ ९ ॥
जेहरप्रलयकेकालछेदित्रिशूलदिग्गजगात । फटकारिकेशपसारिभुजकरिशोरसमरनिपात ॥
निरततसदाजिनशंभुकोहैदुसहकोपप्रचंड ॥ १० ॥ भ्रुकुटीकुटिलकेकरतनशतअखंडयहब्रह्मंड ।
हैजासुडाढ़करालललाटविशाललोचनतीन । तेशंभुकोअपराधकरिकोभयोनहिंसुखहीन ॥
चतुराननौजाकीरुखैराखतरहैंदिनरैन । तेहिशंभुकोअपराधकरिशठदक्षचाहतचैन ॥ ११ ॥
असकहतनारिनकेवचनतहँहोतभेउतपात । हतरक्षमरणअदक्षदक्षहितहँप्रत्यक्षलखात ॥ १२ ॥
तेहिसमयशंकरसकलकिंकरअतिभयंकरधाय । शठदक्षकेमखठोरकोचहुँओरघेरयोआय ॥
आयुधविविधआननविविधवाहनविविधसबकेर । वर्णहुविविधवोलनविविधडोलनिविविधचहुँफेर ॥
तहँदौरिशंकरकेसुभटघुसियज्ञशालामाहिं । करिपानलियघटअंभतोरेखंभरंभनकाहिं ॥
कोउप्रविशिपतिनीशालमहँकोउअग्निशालाजाय । तोरेसुतोरणसकलफोरेकलशमोरेधाय ॥
कोउघुसेपुनियजमानगृहतहँकियउपद्रवघोर । वहुवसनफारेगृहविदारेकरिभयावनशोर ॥ १४ ॥
सवयज्ञपात्रनभंजिडारेअग्निदीनवुझाय । करिमूत्रमलदियकुंडमहँमेखलादीनगिराय ॥
वहुफोरिवेदीघोरिरुधिरकरोरिकुंभनमाहिं । मखदक्षकीविध्वंसकरिशिवगणप्रकोपितहाहिं ॥ १५ ॥
कोउमुनिनकोतहँपकरिलीन्हेदुर्दशावहुकीन । पुनिदौरिदारनकोदपटिदारुणदुसहदुखदीन ॥
पुनिदक्षपक्षीसुरनकोशिवसुभटदक्षप्रतक्ष । गहिगहिहननलगेकसाफोरततक्षहिअक्ष ॥
तबकरतहाहाकारसुरमुनिभगेचारिहुँओर । तिनकोसपटिकैरपटिशिवगणकियप्रहारकठोर ॥ १६ ॥
दोउवाहुवंधनकठिनतेवांधिभृगुहिमतिमान । दक्षप्रजापतिकोपकरिलियवीरभद्रप्रधान ॥
धरिधायपूषादेवकोमारयोचरणचंडीश । भगदेवभाग्योभभरितहँपकरयोतुरंतनदीश ॥ १७ ॥
ऋत्विजसदसिद्विजवेदमुनिभजिकरतहाहाकार । तिनकोकरहिंशिवपारपदअतिशयपपाणप्रहार ॥
शंकरसुकिंकरपकरितिनमुखमेलिकंकरदीन।कोहुकोपुहुमिमहँपटकिचटपटचरणशिरमहँकीन१८॥
जोमुच्छफरकावतहँस्योभृगुसभाशिवहिनिहारि।तेहितुच्छकीलियरुच्छमुच्छहिगुच्छआशुउखारि॥
भृगुतहँधारेकरस्रुवाकरतोरहेअतिहोम । तेहिशठहिपुहुमीपारिपुनिशिरवारखींच्योतोम ॥ १९ ॥
भगदियइशारादक्षकहँनिजननकोमटकाय । लियतासुआँखिनिकारितुरतहिवीरभद्रगिराय ॥ २० ॥
जोहँस्योदंतनिकारिपूषाताहितहँचंडीस । हनिमुष्टिताकेमुखहिमहँझारयोरदनबत्तीस ॥
वासवहुपूपासंगविहँस्योहरहिदंतप्रकासि । तातेतहूकोमारिमुठिकानिलियोदंतनिकासि ॥
जेसेसभामधिरामकोनिदँस्योकलिंगढठाय । तेहिपकरिकलहनिमुष्टिमुखमहँदियोदंतगिराय ॥२१॥
पुनिदक्षकोमहिपटकिकैकिरवानपरमकठोर । शिरलग्योकाटनवीरभद्रउचारिशठशठशोर ॥
पकरयोनहिंकिरवानतेशिरकियोकोटिउपाय ॥२२॥ तबलग्योकरननिचारमनमेंउरहिअतिदुखछाय॥
यहशस्त्रतेंअवधकटिहशस्त्रमेंशिरनाहिं । निजहाथतेमंशिरउखारोदक्षदुष्टहिकाहिं ॥ २३ ॥

असकहिकरनतेऍठिंग्रीवालियोशीशउखारि । पशुशीशसमपूर्णहुतैगुणिदियोकुंडहिडारि ॥ २४ ॥
तबवीरभद्रहिकीप्रशंसाकरीभूतपिशाच । द्विजदक्षपक्षीकियेहाहाकारदुखगुणिसाच ॥ २५ ॥
दोहा–दक्षशीशकोलायकै, मखशालाकोजारि । पूपाकेरदतोरिकै, भृगुकीमूँछउखारि ॥
दक्षयज्ञविध्वंसकरि, वीरभद्रयहिभांति । कियोगमनकैलाशको, लैआपनीजमाति ॥ २६ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेपंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–दक्षप्रजापतियागमें, ह्वैहैविघ्नविशेषि । हरिविरंचिततितहाँ, गयेनयहमनलेषि ॥ १ ॥
छिन्नभिन्नभेसबकेअंगा । भगेभभरितजिइकइकसंगा ॥ विधिकेनिकटजायअसुरारी । कहेसकलवृत्तांतपुकारी॥२॥
दोहा–देवदक्षपक्षीसबै, गेशिवगणतेहारि । शूलगदामुद्गरपरिघ, गयेशस्त्रतेमारि ॥ ३ ॥
तहांदक्षकेपितुकरतारा । सुनिकैपुत्रयज्ञसंहारा ॥ कहेवचनसबसुरनसुनावत । साधुविरोधमोदकोपावत ॥ ४ ॥
हरकोकियोमहाअपराधा । तातेतुमपाइयहबाधा ॥ रहेशंभुमखभागहियोगू । तिनहिंनदैलीन्हचोदुखभोगू ॥
छोंडिकपटकैलासहिजाई । शंकरकेपदमेंशिरनाई ॥ पाहिपाहिकहिक्षमाकरैहौ । तबअपनोमनवांछितपैहौ ॥
दोहा–कोकृपालुशंकरसरिस, दूजोत्रिभुवनमाहिं । अतिअपराधिहुदीनलखि, करहिंकृपातेहिपाहिं ॥ ५ ॥
हैअमोघसुरशंकरकोपू । करतलोकलोकपकरलोपू ॥ शंकरकोपयज्ञभैछारा । गयोदक्षसेवकयुतमारा ॥
चाहौसिद्धिदक्षमखकेरी । जाहुशंभुपहँकरहुनदेरी ॥ निजअपराधक्षमाकरवावो । शिवाविहीनशिवहिशिरनावो ॥
दक्षवचनसायकउरलागे । शंकरअहेकोपमहँपागे ॥ हमअरुविष्णुतुमहुँसबजेते । हरमनगतिजानहिंनहितेते ॥
तातेकौनउपायबतावें । जातेसकलदेवसुखपावें ॥ ऐसेसुनिविरंचिकेबैना ॥ मानेसुरअतिशयउरचैना ॥ ७ ॥
दोहा–पुनिपितरनअरुसबसुरन, अपनेसंगलेवाय । गेविरंचिकैलासकहँ, जहँनिवसतगिरिराय ॥ ८ ॥
जहँओपधिमंत्रनसिधिरहती । सरितसुहावनिपावनिबहती ॥ सिद्धियक्षचारणगंधर्वा । बसहिंअप्सरनसंयुतसर्वा ॥९॥
सोहतजहँमणिशृंगहुनाना । धातुअनेकविचित्रविधाना॥लताकुंजद्रुमसुमनसुहाये।डोलहिंमृगगणअतिसुखछाये१०
निरझरझरहिंनीरबहुभांती।विविधभांतिकंदरासोहाती॥रमणनयुतसिद्धनकीरमनी।करहिंविहारमुदितगजगवनी ११
मदमातेमयूरचहुँओरा। करहिंमयूरिनयुतकलशोरा॥चक्रवाकचातकहुचकोरा।करहिंशोरचहुँकितचितचोरा॥१२॥
दोहा–शाखाडोलहिंपवनलहि, मनहुदेनफलहेत । विपुलविहंगबोलावहीं, तेनिजनिजहिनिकेत ॥
मंदमंदतहँचलहिंमतंगा । मानहुँगमनतशैलउतंगा ॥ निरझरशोरचहूँदिशिछावत।मनहुँवेदध्वनिशैलसुनावत॥१३॥
पारिजातसरलहुमंदारा । कोविदारअर्जुनसुखसारा ॥ असनतमालतालहिताला ॥ १४ ॥ नीपकदंबरसालहुशाला ॥
चंपकनागओरपुन्नागा । वंशनकेबहुभाँतिविभागा ॥ कुरवकबकुलअशोकहुकुंदा॥१५॥स्वर्णअर्णशतदलमुचुकुंदा॥
मधुरमाधवीमृदुलमल्लिका । औरहुफूलींविविधवल्लिका ॥ पीपरपाकरपनसपलासा। हिंगुउदुंबरवटचहुँपासा ॥१६॥
दोहा–राजपूगअरुपूगतरु, भोजपत्रअरुजंब । नारिकेलसरजूरबहु, धात्रीवृक्षकदंब ॥
इंगुदमधुकप्रियालसुहावन।ओपधिअमितविटपमनभावन॥उत्पलओरकुमुदकल्हारा॥नलिननसोहत[illegible] ॥
गुंजिरहेतहँमत्तमिलिंदा । कलरवकरहिंविपुलखगवृंदा॥१९॥मृगशाखामृगचापनराहा। शल्यक[illegible] ॥
गवैऔरकस्तुरीकुरंगा॥महिपनसहितचरहिंइकसंगा॥सरसिनपुलिनकदलिकुलरानें २०॥२१॥नद[illegible]
यहिविधिदेवदेखिकैलासे । पायोअतिशयहियेहुलासे ॥२२॥ निरखेअलकानामकनगरी । शोभा[illegible]

दोहा–सौगंधिककाननलसे, सौगंधिकजहँकंजु ॥ २३ ॥ नंदालकनंदानदी, सोहिरहीतहँमंजु ॥
श्रीपतिचरणरेणुलहिसरिता।भईपापहरणीसुखभरिता॥अलकापुरीदुहूँदिशिवहती।सुरसरिसूरसुताछविलहती
दोउसरितनमहँवहुसुरनारी।उतरिविमाननतेसुखधारी॥मज्जिसुरतिश्रमलेहिंनेवारी।सकलकरहिंजलकेलिसुखा
छूट्योकुचकुंकुमसरिमाहीं।भयोसलिलसुरभितचहुँवाहीं॥तहांआयगजविनहिपियासे।पानकरावहिंगजिनहुला
सोहतिअलकापुरीविशाला । रजतकनकमणिमहलरसाला॥मुकतनझालरिझलकतझूले । मेघमध्यवकपांतिन
दोहा–पुण्यजननकीनारिवहु, मोदितकरहिंनिवास । फैलिरहीचहुँपासतहँ, तिनमुखसुखदसुवास ॥ २७
दक्षपुरीअसलखिसुखपागे । ताहिनाँघिसवसुरगेआगे ॥ तबसौगंधिकवनकीशोभा । देखिसकलदेवनमनलो
जहाँकलपद्रुमलसहिंहजारा।सौगंधिकसरसिजसुखसारा॥फरेसुफलफूलेफविफूला।नवकोमलदलसुखकरमूला।
करहिंकोलाहलकोकिलकुंजन।सोहिरह्योवनअतिअलिगुंजन॥कलहंसादिकनीरविहंगा।वोलतविचरहिंनिर्ज
सरससरससरसारससोहैं ॥ २९ ॥सुरसुंदरीसरिससुखजोहैं ॥ मंदमंदमातंगमहाना । गमनतविविधभांतिवल
दोहा–हरिचंदनगजदानछै, चलतपवनगतिमंद । पुण्यजननारिनसुमन, हरतबढ़ायअनंद ॥ ३० ॥
वारिजवलितवापिकाराजैं । वयडूरजसुपानछविछाजैं ॥ करहितहाँकिंपुरुषविहारा । वरणिनजायअनूप
ऐसोसौगंधिकवनदेखी । गेआगूसुरअतिसुखलेखी ॥ तहाँलख्योवटवृक्षसुहावन ॥३१॥ सौयोजनउतंगअतिप
पचहत्तरयोजनविस्तारा । शाखाचहुँदिशिलसैंअपारा ॥ अचलसकलथलछायारहती । देखतहीदारुणदुखद
रचैंनतेहिवटनीडविहंगा । करहिंसकलकलरवइकसंगा ॥ सोवटहैमुमुक्षुसुखदाई । छायासकलयोगमयभाई
दोहा–तेहिवटकेनीचेलखे, देवशंभुकोजाय । मानहुँअंतककोपतजि, वैठ्योशांतस्वभाय ॥ ३३ ॥
सनकादिकअरुसिद्धअपारा । वैठेशांतरूपसुखसारा ॥ यक्षराक्षसनगुह्यकनाथा । सखाकुवेरनवायेमाथा ॥
वैठेमहादेवमुखताकत । ज्ञानविज्ञानमोदरसछाकत ॥ ३४ ॥ विद्यातपयोगहुपथधर्ता । सकललोककेमंगल
सकलजगतकेहैंहितकारी । राजतमधिसमाजत्रिपुरारी ॥ शंभुवेपतापसमनभावन । शीशजटामृगचर्मसु
भस्मअंगदंडहिकरधारे । संध्यामेघसरिससुखकारे ॥
दोहा–कुशआसनआसीनप्रभु, लसतभाल विधुबाल । जेहिदरशतसवजननके, मिटतअमंगलमाल ॥ ३
नारदपूंछतज्ञानविरागा । तिनसोंशंभुसहितअनुरागा ॥ सवसंतनकोतहांसुनाई । भावहिंभवभलभेदवुझाई ।
दक्षिणउरूवामपदकरिके । वाईजानुपाणिनिजधरिके ॥ अक्षमालदहिनेकरधारी । कियेतर्कमुद्रात्रिपुरारी ॥
ब्रह्मसमाधिसमाधितईशा । लोकपालजेहिनावहिंशीशा ॥ योगपट्टकटिजानुहिवांधे । योगमार्गआर्छोविधि
ऐसेशिवहिनिरखिअसुरारी । कियप्रणाममहिपाणिपसारी॥३९॥देवनयुतविरंचिकहँदेखी॥अतिआनंदाहियेम
दोहा–सुरासुरनतेजासुपद, वंदितहँवसुयाम । सोहरसज्जनरीतिगुणि, उठिकेकियोप्रणाम ॥
जिमिवामनकश्यपकहँवंदे।तिमिस्वयंभुकहँशंभुअनंदे४०औरहुसवविधिकहँशिरनाये।विबुधनयुतविनोदवि
तहँहँसिकेशशिशेखरपाहीं । कह्योविरंचिवचनमुदमाहीं ॥

ब्रह्मोवाच ।

यदपिआपुमोहिकियोप्रणामा।तदपिअहौतुमप्रभुत्रयधामा॥प्रकृतिपुरुषकेईशमहेशा।ब्रह्मरूपतुमअहौमहेशा
युगउत्पतिपालनसंहारा । तुवकरधारकसुरधुनिधारा । जगविस्तारिहरहुशशिभाला । करेहरमकरीजिमिज
शास्त्रमार्गसवमसफलाये । धर्महेतुवर्णाश्रमजाये ॥
दोहा–जोमर्यादाधारिद्विज, सदाचर्हिंसतपंथ ॥ ४४ ॥ देहुभद्रसुकृतीजनन, मेटहुसकलकुपंथ ॥
नरकवासपापिनकहँदेहू । दीननपैअतिकरहुसनेहू ॥ ४५ ॥ जेतुम्हरेपदकोअपराधे । तिनकोकवहुँकोपनाहिं
तौतुमकोनेकरहिंमकोपी । तेजनअवशिनिरयकेचोपी॥४६॥जेजनदेखिपरायविभूती । जरतरहेंनलतिक

कटुविशिखसमाना। भेदहिमर्मदेहिंदुखनाना॥तिजननिजकर्महिगेमारे।हनहिंनतिनकहँसरिसतुम्हारे४७॥
हितअभिमानी।संतविरोधकरहिंजेप्रानी॥तिनपरसंतकरहिंनहिंरोपा।मानहिंनिजकर्महिकरदोपा॥४८॥
दोहा-हरिमायादुस्तरअतिहि, लगेनसोतुमकाहिं॥ हरिदासनवरविश्वगुरु, दायासिंधुसदाहि॥
। जिनकोमोहकियोहरिमाया॥४९॥तुमहिंनदियोदक्षमखभागा। तातेभैपूरणनहियागा॥
णहाथा। ताहिकृपाकरिकरहुसनाथा॥५०॥जियेदक्षभगदगनिजपावैं।भृगुकेमुखमूछहुजमिआवैं॥
रण॥ ५१॥ अंगलहंसुरजिनभेचूरण॥ लगिपपाणजिनद्विजशिरफूटे। तिनकेहोहिंपूर्वजसजूटे॥
वै। दक्षनफिरिऐसोदुखजोवै॥ ५२॥ जोकछुबच्योयज्ञकरशेशा। सोतुम्हारहैभागमहेशा॥
दोहा-सवयज्ञनकोभागजब, लहौआपत्रिपुरारि। तबसंपूरणहोइमख, ऐसीउक्तिहमारि॥ ५३॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेपष्ठस्तरंगः॥ ६॥

मैत्रेयउवाच।

दोहा-यहिविधिजबश्रीशंभुसों, कह्योस्वयंभुवखानि। तबहिंहँसतहरकहतभे, सुनहुकमंडलुपानि॥ १॥

महादेवउवाच।

अपकारा। हमकबहूँमुखकरहिंउचारा॥नहिंमनमेंकबहूँगुणिलेहीं।उचितदंडभरितिनकहँदेहीं॥२॥
आननतासुछागकोहोई॥ भगनिजभागमित्रदृगदेखी। औरनकछुलखिपरीविशेपी॥ ३॥
। पूपायजमानहिंमुखखेहैं॥ अथवापीठीभोजनकरिहै। पैनिजवदनरदननहिंधरिहै॥
। कटेअंगतेरहहिंअभागा॥ ४॥ औरहुरहेजेभूसुरनाहू। तेअश्विनिकुमारकेबाहू॥
दोहा-बाहुमानह्वैहसही, पूपाकरकरवान। मेपपूंछकोमूछमुख, पैहभृगुहुनिदान॥ ५॥

मैत्रेयउवाच।

निशंकरकीऐसीबानी। सुरमुनिसवेपरमसुखमानी॥हरकहँबहुविधिलगेसराहन।लहेतोपसवसहितउछाहन॥ ६॥
निशंकरसोंगिराउचारी।आपुवहांचलियेत्रिपुरारी॥असकहिशिवकहँसंगलेवाई। यज्ञभूमिविधिगेसुखपाई॥ ७॥
बहिकियोशिववचनप्रमाना।दक्षजियतअसरच्योविधाना॥छागशीशताकेधरसाजी॥८॥ देख्योताहिशंभुह्वैराजी॥
ठयोदक्षसोवतअसजाग्यो।शंभुहिनिरखिअतिहिअनुराग्यो९रह्योजोपरवशंभुविरोधी।भयोअकलमपआशुअक्रोधी
दोहा-शरदचंद्रसोंअमलभो॥ १०॥ अस्तुतिकोमनकीन। सतीमरणशिववैरगुणि, बोलिनसक्योप्रवीन
जसतसकैपुनिरोकिमन, विकलशंभुअनुराग। अस्तुतिलाग्योकरनतहँ, दक्षदक्षबड़भाग॥ १२॥

दक्षउवाच।

दपिवैरतुमसोंमैंकीन्ह्यो। तद्यपिमोहिंसनाथकरिदीन्ह्यो॥ नामहुँकेजेब्राह्मणहोही। तिनहूँकेतुमहोवहुछोही॥
गोपुनिकहाजेतपव्रतधारी। करहुकृपातिनपरत्रिपुरारी॥१३॥तुमपूरबचतुराननह्वैके। कृपादृष्टिदनकहँज्वैके॥
तबव्रतधारकद्विजउपजायो। तिनद्वाराश्रुतिपंथचलायो॥तिनकोरक्षणकरहुसदाहीं।जैसेपशुपालकपशुकाहीं॥१४॥
तुमकोमैंसुरसभामझारी। दियोवचनकटुसायकमारी॥ तेहिअपराधनिरयहमजाते। कियोकृपाकरिरक्षणताते॥
कोकृपालुतुवसरिसदूसरो। मोहिंभृगुसमनहिंअघमतासरो॥ १५॥

मैत्रेयउवाच।

दोहा-यहिविधिनिजअपराधतहँ, हरसोंक्षमाकराय। उपाध्यायऋत्विजसहित, मखआरंभकियजाय॥ १६॥
प्रेतपरसतेअशुचिगुणि, लेपात्रहिविकपाल। शुद्धहेतुमंत्रनसहित, होमकियोतिहिकाल॥ १७॥

दक्षउवाच ।

कवित्त-शुद्धज्ञानरूपआपइंद्रिनअधीननाहिं, एकतुमअभैनहिंमायामोहव्यापैहै ।
आपहीस्वतंत्र परतंत्रसबआपहीके, लीलालखिलोनीजनजीवसमथापैहै ॥
कहैरघुराजप्रेमरसरावरेकोजाके, बाढ़तरहतरोजरुचिरअमापैहै ।
ताकोतीनौकालअतितीक्षणतरणिहूते, तरणितनैकोतापतनकोनतापैहै ॥
दोहा-पुनिऋत्विजअरुदेवद्विज, पृथकपृथककरजोरि । लगेकरनअस्तुतिसबै, बहुविधिहरिहिनिहोरि ॥ २६ ॥

ऋत्विजऊचुः ।

सवैया-शंकरशापनशैकुमतीहम, आपनिरंजनकोनहिंमानें । स्वर्गकेदायककर्मअधीनहै, वासवपूजनयज्ञहिठानें ॥
जाहिरहैजगमेंरघुराज, नजानतहैंयहबातअजानेंतेयमकेजकरेहैंजँजीरन, जेजनजानकीजाननजानें ॥२७॥

सदस्यऊचुः ।

कवित्त-उतपतिमारगयाकठिनसंसारसाँचो, कहूँनाअरामयामेंघोरकालव्यालहै ।
अतिशैकरालनदीनालसुखदुखहीके, शोकदावाज्वालखलखलमृगमालहै ॥
विषयमृगतृष्णावशसाथीअज्ञानलीन्हे, धरिश्रमभारजनचलतउतालहै ।
कामनाकलेशितहैचलिकैकुपंथनाथ, पैहैकबरावरेकोमंदिररसालहै ॥ २८ ॥

रुद्रउवाच ।

सवैया-शारदजाहिअकामसुनीश, सदाकरिपूजनशीशनवामै । तेपदपंकजरावरेके, रघुराजभजेअरुभक्तकहामै ॥
जेतुवदासनमोहिंगनैंशठ, तेहठियोरनिरैकहँजामै । मोपररावरेदासदयाकरै, रोजहमोरयहीमनकामै ॥२९॥

भृगुरुवाच ।

छप्पय-जिनमायाहरिलीनज्ञानब्रह्मादिककेरो । सबकेअंतर्यामिआपकहँकबहुँनहेरो ॥
करुणासागरपुण्यसुयशअतिदीनदयाला । भवसागरकोपारकरहुप्रभुतुमहिंउताला ॥
शरणागतपालनमेंप्रबलनिरबलकेबलतुमहिंभल।सबथलखलदलखलभलकरोअचलसचलसचलहिअचल३०॥

ब्रह्मउवाच ।

छंदभुजंगप्रयात-नइंद्रीविषैआपकोरूपसाँचो । जोइंद्रीविषैदेखतोसोअसाँचो ॥
विज्ञानार्थकेआपहीहोअधारा । नलागैतुम्हैनाथमायाविकारा ॥ ३१ ॥

इंद्रउवाच ।

छंदतोटक-तुवरूपहरेभवभावनहै।मननयननमोदबढ़ावनहै॥युतआठभुजाछविछावनहै।सुरशत्रुसमूहनशावनहै ॥
द्रुतदासनकेहितधावनहै।वरआयुधयुक्तसोहावनहै॥परपामरकोकरपावनहै।रघुराजहिदासबनावनहै ३२

पत्नीऊचुः ।

छंदनाराच-रमेशआपअर्चनेरच्योसुदक्षयज्ञको । महेशकोपकेकियोविनाशमारिअज्ञको ॥
चितैसरोजनाभकेकृपासँपूर्णकीजिये । पवित्रताविधानकेयशैअनूपलीजिये ॥ ३३ ॥

ऋषयऊचुः-छंद भुजंगप्रयात ।

कोईआपकामर्मजानैनहीं।करोकर्मसबैनलिप्तैसही ॥ भजेजोश्रियेदेवहूश्रीहिते । तुम्हैसोभजेतूचहौनाचितै ॥ ३४ ॥

सिद्धाऊचुः-छंद द्रुतविलंबित ।

भवदवारिजरोमनवारनो । तवकथामृतसिंधुधसोयदा ॥ चहतहैतहँतैनउवारनो । तृषितभूलगयोजगमेंसदा ॥

करतनासुधिसोभवभारिकी । पियतकीर्तिसुधासुगुगारिकी॥मगनब्रह्ममुदेगससजीवहै।लहततत्रतसेसुखसीवहै॥३५॥

(प्रसूतिउवाच) छंदवसंततिलका—श्रीनाथआगमभलेक्रियंयज्ञमार्हा । शोभाविनातुवरहीयहटोरनाहीं ॥

जैसेविनाशिरशरीरनशोभमाना । आपअहौसकलकर्महरमधाना ॥ ३६ ॥

लोकपालाऊचुः ।

छंदहरिगीतिका—इंद्रीविषैग्राहीनतेकाहमहिंप्रभुतुमलखिपरो । विज्ञानरूपीज्ञानगुणकोजगप्रकाशकसुखभरो ॥

यहपंचभूतात्मकशरीरहिजीवसमछठयोलसो। यहअहंमायारावरीजामेंजगतअतिशयफँसो॥ ३७॥

(योगे.ऊ.)छंदशिखरणी—कहाकीन्हेज्ञानानमिलभगवानातुमसही । कियेनाधाभक्तीजगजननमुक्तिप्रदमही ॥

चराचकेस्वामीसुखदखगगामीयदुवरे । सदाप्रेमाधारेजनतुमहिंप्यारेसुखकरे ॥ ३८ ॥

छंदत्रिभंगी-जगउत्पतिपालनअरुसंहारनदेवकिलालनजबकरहू।तबनिजमायाकरिभेदनकोभरिबहुरूपनधरिसंचरहू

देआतमज्ञानागुणभ्रमनानाहेभगवानादूरिकरो।हेतुमहिंप्रणामाबहुश्रीधामाजलप्रदकामाशोकहरो३९॥

वेदउवाच ।

छंदवरवै—धर्मनिप्रगटौसतगुणधारोआप । प्राकृतगुणतेरहितेपरमप्रताप ॥

आपतत्त्वकोहमअरुसिगरेदेव । जाननचाहैंपैनाहिंपावहिंभेव ॥

जयगोविंदमुरारीकमलाकंत । तुम्हरेचरणप्रणामहिकराहिंअनंत ॥ ४० ॥

अग्निरुवाच ।

कुंडलिया—हरसबपापनकोहरे, आपप्रतापहिपाय । घृतयुतहविहमभक्षहीं, महिमावरणिनजाय ॥

महिमावरणिनजायकरैकोउकोटिउपाई । विनारावरेभक्तिकियेजननहिंहपाई ॥

खांईकलिकीकठिननघैनहिंकैसेहुबुधिवर । विनतुवपदरजपायजाहिशिरधारैंविधिहर ॥ ४१ ॥

देवाऊचुः ।

छंदझूलना—प्रभुकल्पकेअंतमहँविश्वनिजउदरभरिशेषकीसेजमधिसालिलसोये ।

जेहिज्ञानसबसिद्धिनिजबुद्धिदेखतनितैऋद्धिअरुसिद्धिपरसिद्धिखोये ॥

सोइकृपाकरिकृष्णयदुराजसबसुरनपैनयनपथआयअतिमुदहिमोये ॥

सबपूर्णमनकामभोपूतयहधामभोआजुनिजभागहमधन्यजोये ॥ ४२ ॥

गंधर्वाऊचुः ।

छंदवामन—ब्रह्मेंद्रसुरसनकादि । शिवमुनिमरीचिहुआदि ॥ हैंअंशवंशतुम्हार । तुवखेलधरसंसार ॥

तुवचरणकरहिंप्रणाम । जेअखिललोकअराम ॥ तेईलहैंसुखधाम । सबहोतपूरणकाम ॥ ४३ ॥

विद्याधराऊचुः ।

छंदमालिनी—जियनरतनुपाई । देतआपैभुलाई ॥ जगअतिदुखदाई । तेगिरैआशुआई ॥

नहिंलहतउधारा । वेसुनेमोदसारा ॥ तुवचरितउदारा । देवकीकेकुमारा ॥ ४४ ॥

ब्राह्मणाऊचुः ।

छंदजयकरी—तुमहव्यहुतासहुमंत्रअहौजू । समिधौअरुदर्भहुयज्ञमहौजू ॥

पशुआज्यस्वधाअरुसोमसहीजू । सदसौअरुऋत्विजहोतुमहींजू ॥

शिखिहोत्रसुरौयजमानहुहौजू । अरुआपहियज्ञवितानहुहौजू ॥ ४५ ॥

तुमहींधरिशूकररूपहरेजू । धरणीधरिडाढ़उधारकरेजू ॥

नलिनीजिमिदंतगयंददधरेजू । नहिंनेकुपरिश्रमताहिपरेजू ॥

श्रुतिमूरतियज्ञवराहविभोजू । यशगावहिंयोगिनयूहप्रभोजू ॥ ४६ ॥
यकवारहुजेतुवनामलियेजू । मखविघ्नविनाशहिआशुकियेजू ॥
तुवदेखनकीअभिलापरहीजू । करिनाथकृपाकियपूरसहीजू ॥
हतकर्मसबैहमशोकभरेजू । तुमकोवहुवारप्रणामकरेजू ॥
तुमत्राहतेगैयरवारिलयेजू । तेहिकोपुनिपूरणधामदयेजू ॥ ४७ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा—यहिविधिसिगरेदेवमुनि, हरिकीअस्तुतिकीन । दक्षअनंदितह्वैतहां, मखअरंभकरिदीन ॥ ४८ ॥
लैनिजभागतहाँभगवाना।कह्योदक्षसोंवचनप्रमाना॥भ.उ.जगकारणमोहिंलेहुविचारी।ममवपुजानहुविधित्रिपुरारी।
आत्मासाक्षीस्वयंप्रकाशा । मोतेउत्पतिपालननाशा ॥ ब्रह्मरूपधरिरचहुसदाहीं । विष्णुरूपपालहुजगकाहीं ॥
रुद्ररूपनाशहुसंसारा । तातेकरहुनभेदविचारा ॥ ५१ ॥ ज्ञानवंतजानहिंजेवेदा । तेकवहूँनहिंमानहिंभेदा ॥ ५२ ॥
जिमिप्राणीनिजअंगनकाहीं । मानतनिजोऔरकेनाहीं ॥ यहिविधिसवभूतनकहँज्ञानी।मेरोरूपलेतमनमानी॥५३ ॥
दोहा—विधिहरिहरमहँभेदनहिं, देखतजोमतिवान । लहतशांतिसोदहतदुख, गहतमहतकल्यान ॥ ५४ ॥

मैत्रेयउवाच ।

यहिविधिदक्षसुन्योहरिवैना।मान्योअतिउरआनँदऐना॥पूजनकियोसविधिहरिकाहीं।यथायोगसवसुरनतहांहीं॥५५॥
शिवकोदियोतहाँमखभागा। यहिविधिकियोसमापतियागा॥निजनिजभागपायअसुरारी।भयेसकलमनमाहँसुखारी॥
पुनिअवभृथकीन्हचोअस्नान।सादरदियोद्विजनवहुदाना॥५६॥दक्षहिधर्मबुद्धितहँदैकै।गेनिजनिजगृहसुरसुखलैकै॥
यहिविधिविदुरसतीतनुत्यागी।भैहिमवानसुतावड़भागी॥५८॥पुनिशिवकेसँगभयोविवाहा।पायोशंकरपरमउछाह॥
दोहा—यहिविधिशंकरयज्ञयुत, कियोदक्षकोनास । जीवशिष्यउद्धववदन, मैंसुनिलह्योहुलास ॥ ६० ॥
यहपुनीतशिवचरितयश, आयुपवरधनहार । भावभक्तियुतसुनिभनत, तेहिअघनशतअपार ॥ ६१ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेसप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा—नारदरिभुअरुअरुनयुत, सनकादिकअरुहंस । येगृहमेंनहिंवसतभे, तातेभयोनवंस ॥ १ ॥
विधिसुतजोअधरमवलवाना ।ताकोवंशसुनहुमतिवाना ॥ मृपाभईअधरमकीनारी । जन्योसोइकसुतएककुमारी ॥
मायासुतादंभसुतनामा । तिनकोलियोनिऋतिसुतकामा ॥ २ ॥ मायादंभसँयोगहिपाई । एकपुत्रइककन्याजाई ॥
शठतादुहितालोभकुमारा ।तिनसँयोगपुनिभयोअपारा॥हिंसासुताक्रोधसुततिनके । जादिरजगप्रभावहैजिनके ॥
ताकेसुतकलिनामकभयऊ । सुतादुरुक्तिनामअसठयऊ ३ भेदुरुक्तिकेपुत्रकुमारी । नाममृत्युभयजिनद्विउचारी ॥
दोहा—भयअरुमृत्युसंयोगते, भैयातनाकुमारि । नरकनामकोपुत्रभो, जोगृहविमुखमुरारि ॥ ४ ॥
यहअधर्मकोवंशमहाना । मैंकीन्ह्योसंक्षेपवखाना ॥ कहिसुनैजोयहित्रिवारा । होयपुण्यअघनशैअपारा ॥ ५ ॥
अवमैंमनुसुतवंशप्रचारों । जाहिकृष्णकोअंशविचारों ॥ जाकेकहेपुण्यअतिवाढ़ै। नशतआशुपातकअतिगाढ़े ॥६॥
मनुसुतजेठोप्रियव्रतभयऊ । लघुउत्तानपादजगठयऊ।पिदोउवासुदेवकेअंसा । पाल्योजगकहँलहतप्रशंसा ॥ ७ ॥
द्वैउत्तानपादकीरानी । सुरुचिसुनीतिनामछविसानी ॥ जैसीसुरुचिभईपतिप्यारी । तसीप्रियसुनीतिनाहिंनारी ॥
दोहा—भोसुनीतिकेध्रुवसुवन, धराधर्मआधार । उत्तमसुतभोसुरुचिके, जोपितुकोअतिप्यार ॥ ८ ॥

नृपउत्तानपादयककाला। बैठिरहचोमधिसभाविशाला॥सुरुचिपुत्रउत्तमतहँआयो।
सादरभूपतिताहिबोलाई। अपनेअंकलियेबैठाई॥ उत्तमकोनृपलग्योखेलावन। चूमतमुखलाग्योबतरावन
ध्रुवजननीहुतध्रुवहिबोलाई॥ विविधवसनभूषणपहिराई। लघुकृपाणलघुचर्मबँधाई॥
पुत्रजाहुपितुकेदरबारा। जहँबैठेसबबीरउदारा॥ध्रुवसुनिकैजननीकीवानी। चटपटचल्योपरमसुखमानी॥

दोहा—गयोभूपदरबारमधि, ध्रुवबालकमतिधाम। जोहिजनककहँजोरिकर, पगपरिकियोप्रणाम॥

उत्तमकहँपितुअंकहिपाहीं। निरखिध्रुवहुमोदितमनमाहीं॥ पितुअंकहिमहँबैठनहेतू।
बैठतध्रुवहिअंकनिजजान्यो। नहिंउत्तानपादसुखमान्यो॥
निजसुतसमध्रुवबैठतज्वैकै। गर्वभरीईर्षावशह्वैकै॥ राजहुकीरुखलखतहाँविचारी। सुरुचिगाजसमगिराउचारी

सुरुचिरुवाच।

सुनोबालध्रुववचनहमारे। बैठहुधरणीमहँसुखधारे॥ भूपअंकबैठनकेयोगू। तुम्हैंनकहतसकललुधलोगू॥

दोहा—भयेनमेरेगर्भते, अहोसुनीतिकुमार। मेरोसुतनृपअंकमें, बैठनयोगउदार॥

पुनिवहहैजेठोतुवभाई।उचितउहैताकीसमताई॥ अनुचितउचितनतुमकछुजानो।अपनेकोममसुतसममानो
जोममसुतसमबैठनचहहू। तौममवचनहृदयदृढगहहू॥
यहतनुतजिममगर्भहिऐहौ। तौनृपआसनबैठनपैहौ॥ १२॥

मैत्रेयउवाच।

ध्रुवहिविमातावचनकठोरा। लाग्योहृदयवज्रसमघोरा॥ डंडलगेजसकुपितभुजंगा। तैसहिफरकउठेसबअंगा
श्वासलेतमुखबारहिंबारा। रुदनकरतह्वैदुखितअपारा॥

दोहा—लौटिचल्योध्रुवतहँतुरत, दुसगुणिमरणसमान। मींजतदोउकरकरनसों, गोजननीअस्थान॥ १४॥

विदुरमानुजनिबालकदोषू। होतकठिनक्षत्रीकररोषू॥ देखिदशाभूपतिध्रुवकेरी। रह्योमौनआन्योनहिंटेरी॥
फरकतअधरलेतमुखश्वासू। युगलविलोचनढारतआँसू॥
पोंछिवदनपूछ्योकसरोवहु।
तबध्रुवसंगरहेजेबारे। तेसुनीतिसोंवचनउचारे॥ भूपअंकमहँबालकतेरो। बैठनहेतुजातभोनेरो
दोहा—तबबरज्योरानीसुरुचि, कहिकैवचनकठोर। भूपअंकनहियोगतुम, ध्रुवहोकासुतमोर॥ १५॥
सुतपैसुनतसवतिकीवानी।भार्नीमनहिंसुनीतिगलानी॥पुनितजिधीरजलहिसंतापा।

श्वासलेतिमुखबारहिबारा। शोकसिंधुकोलहतिनपारा॥ पुनिसुनीतिरानीधरिधीरा।
परकृतदोषगुणहुजनिताता।होतसोइजोलिख्योविधाता॥देतजुहैदुखऔरनकाहीं।सोइभोगतदुखअवशिसदाहीं

दोहा—सुरुचिकह्योसतिवचनयह, तुमननृपासनयोग। ममअभागिनीगर्भवश, तुमहुँसह्योदुखभोग

तुमहिंनोनिजपयपानकरायो।तासुदोषविधिमोहिंदेसायो॥
तानिसुरुचिजोगिराउचारी। सोइपुत्रहितलहुविचारी॥ चहहुजोनृपआसनमहँबैठन।
तौकरहुतुकाननमर्दनाई।
योगाननजाकोपदध्याव।

दोहा—योगिपिनामहमनुहे, नेकानिकयहुयाग। देविप्रनकोदक्षिणा, करिहरिपदअनुराग॥

भोगिभोगसुरदुर्लभजोई। अंतकालमोहरिपुरमोहीं॥२०॥ दयद्रुपनिसतिदीनदयाला।
योगाननजोदपदअरविंदा॥

मलाकृपाकटाक्षहिहेतू । करहिउपायअमितसुरकेतू॥सोकमलाजेहिमाधवकाहीं । खोजतिलियेकमलकरमाहीं ॥
लैनप्रभुजेहिविनबालक । द्वितियनदेखिपरैदुखघालक ॥ २३ ॥

मैत्रेयउवाच ।

नकामनापूरकीकरनी । जननिबानिसुनिकैसुखभरनी ॥

दोहा—धारिधीरमतिधीरध्रुव, जननीढिगतेआसु । उठ्योतुरंतहितमकिकै, ध्यावतरमानिवासु ॥

नेजायकीतजोंशरीरा । कीप्रसन्नकरिहौंयदुवीरा ॥ द्वितियबाततेतृतियनहोई । ऐसोकरिविचारमनसोई ॥
ोंड़िसंगबालकखेलवारी।निकस्योपितुपुरतेप्रणधारी॥चल्योअकेलहिकाननओरा।नारायणपदप्रेमनथोरा ॥ २४ ॥
वकेमनकीगतितहँजानी।नारदमुनिअतिशयसुखमानी ॥मिलेकुमारहिमारगआई ।निरखिताहिविस्मितमुनिराई॥
ाघहरपाणिपरसिध्रुवशीशा । बोलेवचनविचारिमुनीशा ॥ २५ ॥

नारदउवाच ।

क्षत्रियजातिस्वभावकठोरा । सहहिनमानभंगलघुछोरा ॥

दोहा—वचनविमाताकेअसत, पवितेलगेकठोर । तेंकढिआयोसकलतजि, जननिजनकनिजठोर ॥ २६ ॥

मानवमानहुअरुअपमाना।अबैनतुवमोहिंउचितदेखाना ॥ अबबालतेखेलनजानै । जानैकहामानअपमानै ॥ २७ ॥
मोहमानअपमानहिकारन । होतसोमोहकर्मअनुसारन॥ २८॥भाग्यविवशजोईमिलिजावै । ताहीमेंसंतोषहिलावै ॥
देवहाथहैसुखदुखप्यारे । तातेकरनकबहुँखँभारे ॥ २९ ॥ अथबालहिजननीउपदेशा । ध्यावनचाहहुजोनरमेशा ॥
सोमनुजनदुर्लभभगवाना। मिलतनकियेकलेशननाना॥३०॥जन्मअनेकसमाधिलगावें।तदपिनमुनिश्रीपतिकहँपावें
जापरकृपाकरैयदुराई । ताहिमिलैअपनेतेधाई ॥ ३१ ॥

दोहा—तातेतेरोवनगवन, मोकोवृथाजनाय । लौटिजाहुबालकघरै, यहहठवेगिविहाय ॥

ऐहजबतासरपनतेरो । तबतपकरिलीजियोपनेरो ॥ ३२ ॥ जाहिदेवसुखदुखजसदेई । ताहीमेंसंतोषकरलेई ॥
सोइभवसागरपावतपारा । यामेंहैनहिंऔरविचारा ॥ ३३ ॥ निजतेहोयअधिकगुणजाके । रहैविशेषिसंगबुधताके ॥
होयजोअपनेतेगुणहीना । करैकृपातापरपरवीना ॥ जेहिसमानगुणपरैलखाई । तातेकरैविशेषिमिताई ॥
राखतजोअपनीअसरीती । ताकोहोतिकबहुँनहिंभीती॥असतोबालकमनोहमारा।पुनिनिरोगजसहोयविचारा ॥ ३४॥

दोहा—मुनिनारदकेवचनअस, सोध्रुवध्रुवमतिधीर । जोरिपाणिशिरनायपग, बोल्योगिरागंभीर ॥

ध्रुवउवाच ।

जोनकृपाकरिमोहिंमुनिराई।सकलशांतिविधिदियोबताई॥सोहमसेमतिमंदनकाहीं।कठिनकरबसबभांतिसदाहीं३५॥
अहौंध्रुवक्षत्रियमनाथा । अतिअविनीतनहैकोउसाधा ॥ कुरुचिवचनउरभयोदुशाला । उठतनिगेमगेमनतेज्वाला ॥
क्षत्रिजातिकरकोपकठोरा । गहतनआपवचनमनमोरा॥३६॥त्रिभुवनमहँउत्तमपदजोई।जाहिनपायसकनजनकोई॥
पितापितामहजितहमारे।सपनेहुनहिंजेहिलोकसिधारे।मैंभनिर्थयदुपतिपदकंजन।सोपदलेहौंकारिदुखभंजन॥३७॥

दोहा—जेहिउपायतेतोनपद, म्वहिंसहजहिमिलिजाय । देविरंचिनंदनसोइ, दीजेआपबताय ॥

लैवीणाकरजगहितदेनू । गावतयशश्रीरमानिकेनू ॥ विचरहुनारदनुमचहुँओरा । जैसेरविप्रकाशसमटोरा ॥ ३८ ॥
ऐसीसुनिनारदध्रुववानी । मनमहँअतिशयआनँदमानी ॥ करिकेबालकपेअनिनेहू । बोलेहरनमकल्मषमेहू ॥ ३९ ॥

नारदउवाच ।

साधुसाधुबालकमतिमाना । नेंतोभयोभक्तभगवाना ॥ जोनंकृष्णभक्तिमनलायो । तोनेंहिजननीनेनिरनायो ॥
सोइमारगमंगलप्रदतोरा । असबालकनिदेशहरिमोरा ॥ करहुपुत्रपदुपतिपदशीर्ना।द्वैदेनुनहिंकबहुँनहिंभीनी ॥ ४०॥

दोहा—धर्मअर्थअरुकामहू, मोक्षपदारथचारि । इनकोजोचाहैपुरुष, सोपदभजेनुरारि ॥ ४१ ॥

नारदउवाच ।

हिंधरणिअधीशा।तुवसतकोरक्षकजगदीशा ॥ वालककोप्रभावनहिंजानो।तातेअतिशयदुखउरआनो ॥
दोहा-जगमेंअनुपमयशभरो, तेरोयहुध्रुवलाल ॥ ६८ ॥ कठिनकर्मकरिहैजवन, करैनलोकहुपाल ॥
रेकालहिमहँमहिपाला । द्रुतऐहैसुतवुद्धिविशाला ॥आपहुकोवहसुयशवढ़ाई । ताकीकोउसमतानहिंपाई॥६९॥

मैत्रेयउवाच ।

निदेवर्षिवचननृपराई । शोचनलगेसुतहिदुखछाई॥राजविभूतिदियोविसराई ।शोचतसकलरैनिदिनजाई ॥ ७० ॥
तेगयोध्रुवमधुवनकाहीं । वस्योनिशायमुनातटमाहीं ॥ भोरभयेशुचिह्वैमतिधीरा । वैठ्योनेमठानितजिपीरा ॥
हिविधिनारदकियउपदेशै । तेहिविधिपूजतभयोरमेशै॥७१॥तीनितीनिदिनमाहँउदारा ।वदरीकैथाकियोअहारा॥
दोहा-ऐसीविधिकरिकैतहाँ, दियइकमासविताय । यदुपतिपदपंकजयुगल, पूज्योप्रीतिवढ़ाय ॥७२ ॥
छठयेंदिनमाहीं । भक्षणकरितृणपत्तनकाहीं॥यहिविधिदूजोमासवितायो।हरिपदपूजनप्रेमवढ़ायो ॥७३॥
निशिवासर।पियोपाथपूज्योकरुणाकर॥यहिविधिवीत्योतिसरोमासा।ध्रुवकीन्हयोहरिहेतुप्रयासा ७४
पुनिजवचौथमासतहँलाग्यो । नृपकुमारतवअतिअनुराग्यो॥द्वादशद्वादशयोसनवीते।कीन्हयोभोजनपवनसप्रीते॥
यहिविधिचौथमासनँविगयऊ ७५ मासपांचयोंआवतभयऊ॥रोंकिश्वासइंद्रिनमनकाहीं॥दियोलगायकृष्णपदमाहीं॥
रहयोएकपगसोध्रुवठाढ़ो । अचलसूखतरुसोंमुदवाढ़ो ॥ ७६ ॥
दोहा-केवलकृष्णस्वरूपको, देखतभयोकुमार । परयोनलखिताकेह्गन, औरकछूसंसार ॥ ७७ ॥
जोअधारमहदादिककेरो । मायाईशवेदजेहिटेरो ॥ सोईपरब्रह्मयदुराई । तामेंजवध्रुवध्यानलगाई ॥ ७८ ॥
यकपदअँगुठादाविधरापै । खड़ोपाँचयेंमाससजापै ॥ ध्रुवपदकोधरणीलहिजोरा । धसकिगईआधीयकओरा ॥
जिमितरणीगैयरपदपाई । लहिभाराआशुहिंनैजाई ॥७९॥ ध्रुवतपतेजकँपेत्रयलोका । देवनउरवाढ़योअतिशोका॥
हरिकोउरधरिश्वासहिरोकी । ध्यानमगनहरिवपुपविलोकी ॥रुकीसकलदेवनकीश्वासू ।सवकेउरउपज्योउसवासू ॥
दोहा-लोकपालअतिशयदुखित, जाननताकोहेत । गिरेजायहरिशरणमें, वोलेवचनअचेत ॥ ८० ॥

देवाऊचुः ।

हेहरिहमजानतनहीं, कियोकौनधौंक्रोध । त्रिभुवनकोयकवारहीं, भयोश्वासअवरोध ॥
केशवकठिनकलेशते, दीजैवेगिछोड़ाय । शरणागतकेपालतुम, शरणपरेहमआय ॥ ८१ ॥
आरतवाणीसुरनकी, सुनिश्रीपतिमुसुक्याय । मधुरवचनवोलतभये, श्रवणसुधासमप्याय ।

श्रीभगवानुवाच ।

जाहुसवैनिजनिजसदन, मतिभयमानहुदेव । यहश्वासाअवरोधको, मैंसवजानहुँभेव ॥
सवैया-भूपउतानहिपादकोलाड़िलो,हध्रुवनामप्रसिद्धधरामें । सोनिकस्योतुरंतपुरते,भिदवैनविमातनवत्रसभामें ॥
मोपदपंकजपावनहेतुकियोतपघोरतपेतुमतामें। मैंमिलिहौंध्रुवधायध्रुवैध्रुव,देहौंसुनोंध्रुवकोध्रुवधामें॥८२॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ चतुर्थस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा-सुनिकैश्रीपतिकेवचन, सिगरोशोकविहाय । करिप्रणामगवनेभवन, अतिशयआनंदपाय ॥
मधुसूदनहगरुडसवारे । दासलखनमधुवनपगुधारे ॥ आयेगरुडचढ़प्रभुनेरे । ध्यानमगनध्रुवतिनहिंनहेरे ॥ १ ॥

तवध्यानहिकोवपुयदुराई।दामिनिसमद्भुतदियोदुराई॥उव्योचौंकिचितयोचहुँओरा । लख्योनिकटवसुदेवकिशोर
रह्योध्यानधारेजसमनमें । तैसहिरूपलख्योनयननमें ॥ २ ॥ हरिदर्शनलहिदुखभोदूरी । मनकीअभिलाषाभैपूरं
तहँतनुमनकीसुरतिविसारी । गिरयोदंडसमधरणिमँझारी॥पुनिउठिभयोजोरिकरठाढ़ो।कहँकौनजसध्रुवमुदवा
दोहा—मनप्रभुछविदृगतेपियत, मिलतोभुजनपसारि । मनुमुखतेचूमतवदन, ध्रुवअसपरयोनिहारि ॥ ३ ॥
अस्तुतिकरनचहतमुखमाहीं ।बालस्वभाववनतकछुनाहीं॥ध्रुवकीमनगतिजानिमुरारी । करिकैकृपादासपरभा
पांचजन्यनिजशङ्खअमोला । दियछुआयप्रभुबालकपोला॥४॥परसतशंखहितेहिउरनाना॥धसेवेदअरुशास्त्रपुरान
ध्रुवतहँपायज्ञानविज्ञाना । भक्तिभावयुतप्रेममहाना ॥ जोरिपाणिहरिआननदेखत । अपनेसमदूजोनहिंलेखत
मंदमंदधरिकैध्रुवधीरा । कोमलपदरचिअर्थगँभीरा॥ अवहरणीकीरतिहैजाकी । अस्तुतिकरनलग्योध्रुवताकी॥

ध्रुवउवाच ।

दोहा—अखिलशक्तिधारकरहे, मेरेहियमेंआय । मेरीवाणीकरिकृपा, सोवतदियोजगाय ॥
इंद्रीकरनचरणश्रवणादी । तिनकोचेतनकरहुअनादी॥पुरुषपुराणनाथश्रीधामा । आपपगनकोकरहुँप्रणामा ॥ ६
एकहितुममायाविस्तरिकै।रचिकैजगप्रवेशतेहिकरिकै।देखिपरहुबहुवपुभगवाना॥विविधदारुजिमिपावकनाना॥
करतारहुहैशरणतिहारे। ज्ञानशक्तिलहिजगविस्तारे॥कहयोनश्रमसोवतसमजाग्यो।जगतविकारताहिनहिंलाग्यो
ऐसेआपचरणभगवाना । कोकृतज्ञजोधरैनध्याना ॥ ८ ॥ जननमरणकेनाशनहारे । दासनकेदुखदारनवारे
दोहा—ऐसेतुमकोजेकुमति, भजैंविषयसुखहेत । तेजनुसुरद्रुमनिकटचलि, मांगिवराटकलेत ॥
शूकरकूकरयोनिहुनाना । होतविषयसुखमनुजसमाना॥मनुजजन्मलहितुमहिंनध्यायो।सोइशूकरकूकरकहवायो
जोसुखआपकथामहँनाथा । सुनेआपदासनकीगाथा ॥ सोसुखब्रह्मज्ञानमहँनाहीं । तौसुरसुखकेहिलेखेमाहीं
कठिनकालकरवालहिलागै।कटैस्वर्गसुखतरुजेहिमांगै॥ १० ॥ भक्तिमानजेसाधुतुम्हारे।निर्मलमनदायकउरधारे
नाथदेहुमोहिंतिनकरसंगा।अघगणहरणहारजिमिगंगा ॥ यहभवसागरघोरअपारा । यहिविधिसहजहिलंगिहोंपारा
दोहा—आपकथाआसवपियत, तासुनशांतनछाय । मैंफिरिहौंअतिशयअभय, दुखसुखसवविसराय ॥ ११ ॥
जेतुवपदपंकजसुरभि, घ्राणकरतलवलीन । तिनकोसँगजेकरहिंजन, तेईपरमप्रवीन ॥
तनुसुतसुहृददारगृहमाहीं । तेकवहूँसुधिराखतनाहीं॥१२॥ यहब्रह्मांडस्वरूपतुम्हारा । स्थूलरूपजेहिवेदउच
अहचराचरकेरनिवासा । सतअरुअसतहुजासुप्रकासा ॥ आपरूपहमजानहिंसोई । ब्रह्मरूपपरतोनहिंजोई
ब्रह्मरूपमहँहैवहुवादा । होतविवादहिकियेविषादा ॥१३॥ प्रलयसमयधरिउरजगकाहीं । सोवहुशेषसेजसुखमा
प्रगटतनाथनाभिजलजाता । तातेप्रगटतसदाविधाता ॥ जाकेहैंफणवृहददहजारे । शेषसखातेनाथतिहारे
दोहा—ऐसेयदुवरआपको, हमसवकरहिंप्रणाम । कोटिजन्मअघनशतद्रुत, लेततिहारोनाम ॥ १४ ॥
तुमहौनित्यमुक्तभगवाना । ज्ञानरूपहौशुद्धसुजाना ॥ आदिपुरुषहोअंतर्यामी । अविकारीहौत्रिभुवनस्वामी ।
अहौजगतकेपालनकरता।जगतविलक्षणजनसुखभरता१५ विविधशक्तिहैयदपिविरुद्धा।रहहितदपितुवमहँअविरु
एकअनेकआदिजगकारा।आनँदरूपीसदाविकारा ॥सोप्रभुकेशरणागतहोहूं। तारहुअगनअघीसममोहूं ॥१६॥
केवलकेशवपदअरविंदा । भजहिंजेजनतेनहिंमतिमंदा॥ त्रिभुवनविभवभोगसवजेते । तिनहिंतुच्छलागतसवतेते
दोहा—पूरणफलतिनकोअहै, सेवततुवपदकंज । तदपिदीनममदासको, करहुनाथभवभंज ॥
जिमिजननीनिजवालके, गनतनकछुअपराध । तिमिक्षमियोअपराधमम, केशवकृपाअगाध ॥
छंदमनोहरा—जयजयअविकारीअघमउधारीजगनिस्तारीभुजचारीपतित्रिपुरारी ।
जयजयकंसारीजयतिमुरारीजयतिखरारीयशकारीभर्णाधारी ॥
जयजयधनिदारीसदामुरारीसरदलदारीअनिभारीसायकमारी ।
मनसिजमदगारीमनहरनारीत्रनसंचारीगिरिधारीभवभयहारी ॥

वृंदावनवासीनित्यविलासीरोचकरासीरुचिरासीदानवनासी ।
घटघटकेवासीजगतप्रकासीरमानिवासीभवफांसीनाशकभासी ॥
तुवपदसमकाशीगतिप्रदखासीदासनआसीअनयासीपूरणआसी ।
कीरातिशशिभासीजन्हुसुतासीश्रवणसुधासीहैजासीमुक्तिहुदासी ॥
जयमीनस्वरूपारक्षकभूपाकमठअनूपाविबुधवरेमंदरहिधरे ।
जययज्ञवराहासहितउछाहादानवनाहाघातकरेअवनीउधरे ॥
जयनरहरिघोराकृतचहुओराअरिवरजोरानखनिदरेसुरत्रासहरे ।
जयजयवटुवामनपरमसोहावनवलियशछावनपगपसरेब्रह्मांडभरे ॥
जयजयभृगुनंदनभृगुकुलचंदनक्षत्रिनवृंदनसंहरियकइसवारे ।
जयरघुकुलमंडनहरधनुखंडनखलदलदंडनधनुधारेद्विजमदगारे ॥
जयजनकललीशाअवधअधीशाजयजगदीशाप्रणधारेवनपगुधारे ।
मदहरनजयंताजयखरहंतासुखकरसंतामृगमारेखगउद्धारे ॥
जयदलनकबंधूदीननबंधूधृतधनुकंधूअनियारेशबरीप्यारे ।
जयमित्रकपिंदावालिनिकंदावासिगिरिंदाकपिद्वारेलंकाजारे ॥
जयउदधिमँझारीसेतुहिकारीपादपधारीयुतवारेदशशिरमारे ।
जयसियासमेतूरघुकुलकेतूआयनिकेतूसुखसारेजनविस्तारे ॥
जयदेवकिनंदनजयनँदनंदनशकटनिकंदनककमारीअघसंहारी ।
जयकालियदमनंराधारमनंव्रजदुखशमनंगिरिधारीरक्षणकारी ॥
वृंदावनवासीरासविलासीहियोहुलासीव्रजनारीमंडलधारी ।
कटिपीतदुकूलातियअनुकूलायमुनाकूलासंचारीसुरमनहारी ॥
धुपुरवासीआनँदराशीधनुधत्ताकुवरीभर्त्ता ॥
मल्लजमातीआशुनिपातीअघकर्ताकंसहिहर्त्ता ।
तुदुखारीमनहिविचारीभयेमुरारीसुखभर्त्तादुखउद्धर्त्ता ॥
हितसनेहूशास्त्रअछेहूसंधर्तासुतआहर्त्ता ।
रेजराकुमारेदलसंहारेजैचाहीयमनहिदाही ॥
रहिसुखकारीसउछाहीरुक्मिणिव्याही ।
मणिद्रुतल्यायेदुहितनपायेनरनाहीभौमहिगाही ॥
पमनरज्योपौंड्रकगंज्योरणपाहीचक्रहिमाही ॥
विभभवदेखायापुनिहतवायाभीमकरेमगदेशवरे ।
हनिशिशुपालेअवनिकरेदियमोदघरे ॥
दुरथदारच्योआशुहिटारच्योभूमिभरेनहिशस्त्रकरे ।
रितविचित्रासीरसनरेजगकहिउधरे ॥
आनँददाईभेवसिकेप्रीतिहिफँसिके ।
सूदियोहल्लामूपरभेसिकेहरच्योहँसिके ॥
रिरथलसिकेआयुधकसिके ।
रालेसंगदारादुसनशिकेरतिरसचसिके ॥

[illegible] ॥ उव्योचोंकिचितयोचहुँओरा । लख्योनिकटवसुदेवकिशोरा ॥
रह्योध्यानधरेजसमनमें । तैसहिरूपलख्योनयननमें ॥ २ ॥ हरिदर्शनलहिदुखभोदूरी । मनकीअभिलापाभेपूरी ॥
तहँतनुमनकीसुरतिविसारी । गिरयोदंडसमधरणिमँझारी ॥ पुनिउठिभयोजोरिकरठाढ़ो । कहैकौनजसध्रुवमुदबाढ़ो ॥
दोहा—मनप्रभुछविदृगतेपियत, मिलतोभुजनपसारि । मनुमुखतेचूमतवदन, ध्रुवअसपरयोनिहारि ॥ ३ ॥
अस्तुतिकरनचहतमुखमाहीं । बालस्वभाववचनतकछुनाहीं ॥ ध्रुवकीमनगतिजानिमुरारी । करिकेकृपादासपरभारी ॥
पांचजन्यनिजशङ्खअमोला । दियछुआयप्रभुबालकपोला ॥ ४ ॥ परसतशंखहितेहिउरनाना ॥ धसेवेदअरुशास्त्रपुराना ॥
ध्रुवतहँपायज्ञानविज्ञाना । भक्तिभावयुतप्रेममहाना ॥ जोरिपाणिहरिआननदेखत । अपनेसमदूजोनहिंलेखत ॥
मंदमंदधरिकैध्रुवधीरा । कोमलपदरचिअर्थगँभीरा ॥ अघहरणीकीरतिहैजाकी । अस्तुतिकरनलग्योध्रुवताकी ॥ ५ ॥

ध्रुवउवाच ।

दोहा—अखिलशक्तिधारकरहे, मेरेहियमेंआय । मेरीवाणीकरिकृपा, सोवतदियोजगाय ॥
इंद्रीकरनचरणश्रवणादी । तिनकोचेतनकरहुअनादी ॥ पुरुषपुराणनाथश्रीधामा । आपपगनकोकरहुँप्रणामा ॥ ६ ॥
एकहितुममायाविस्तरिकै । रचिकैजगप्रवेशतेहिकरिकै ॥ देखिपरहुवहुवपुभगवाना । विविधदारुजिमिपावकनाना ॥ ७ ॥
करतारहुहैशरणतिहारे । ज्ञानशक्तिलहिजगविस्तारे ॥ कहयोनश्रमसोवतसमजाग्यो । जगतविकारताहिनहिंलाग्यो ॥
ऐसेआपचरणभगवाना । कोकृतज्ञजोधरैनध्याना ॥ ८ ॥ जननमरणकेनाशनहारे । दासनकेदुखदारनवारे ॥
दोहा—ऐसेतुमकोजेकुमति, भजैंविपयसुखहेत । तेजनुसुरद्रुमनिकटचलि, मांगिवराटकलेत ॥
शूकरकूकरयोनिहुनाना । होतविपयसुखमनुजसमाना ॥ मनुजजन्मलहितुमहिंनध्यायो । सोइशूकरकूकरकहवायो ९ ॥
जोसुखआपकथामहँनाथा । सुनेआपदासनकीगाथा ॥ सोसुखब्रह्मज्ञानमहँनाहीं । तौसुरसुखकेहिलेखेमाहीं ॥
कठिनकालकरवालहिलागै । कटैस्वर्गसुखतरुजेहिमांगै ॥ १० ॥ भक्तिमानजेसाधुतुम्हारे । निर्मलमनदायकउरधारे ॥
नाथदेहुमोहिंतिनकरसंगा । अघगणहरणहारजिमिगंगा ॥ यहभवसागरघोरअपारा । यहिविधिसहजहिलगिहौंपारा ॥
दोहा—आपकथाआसवपियत, तासुनशांतनछाय । मैंफिरिहौंअतिशयअभय, दुखसुखसबविसराय ॥ ११ ॥
जेतुवपदपंकजसुरभि, घ्राणकरतलवलीन । तिनकोसँगजेकरहिंजन, तेईपरमप्रवीन ॥
तनुसुतसुहृददारगृहमाहीं । तेकवहूँसुधिराखतनाहीं ॥ १२ ॥ यहब्रह्मांडस्वरूपतुम्हारा । स्थूलरूपजेहिवेदउचारा ॥
अहैचराचरकेरनिवासा । सतअरुअसतहुजासुप्रकासा ॥ आपरूपहमजानहिंसोई । ब्रह्मरूपपरतोनहिंजोई ॥
ब्रह्मरूपमहँहैबहुवादा । होतविवादहिकियेविपादा ॥ १३ ॥ प्रलयसमयधरिउरजगकाहीं । सोवहुशेषसेजसुखमाहीं ॥
प्रगटतनाथनाभिजलजाता । तातेप्रगटतसदाविधाता ॥ जाकेहैंफणवृहददहजारे । शेषसखातेनाथतिहारे ॥
दोहा—ऐसेयदुवरआपको, हमसबकरहिंप्रणाम । कोटिजन्मअघनशतद्रुत, लेततिहारोनाम ॥ १४ ॥
तुमहौनित्यमुक्तभगवाना । ज्ञानरूपहौशुद्धसुजाना ॥ आदिपुरुषहौअंतर्यामी । अविकारीहौत्रिभुवनस्वामी ॥
अहौजगतकेपालनकरता । जगतविलक्षणजनसुखभरता १५ विविधशक्तिहैयदपिविरुद्धा । रहहितदपितुवमहँअविरुद्धा
एकअनेकआदिजगकारा । आनँदरूपीसदाविकारा ॥ सोप्रभुकेशरणागतहोहूं । तारहुअगनअघीसममोहूं ॥ १६ ॥
केवलकेशवपदअरविंदा । भजहिंजेजनतेनहिंमतिमंदा ॥ त्रिभुवनविभवभोगसबजेते । तिनहिंतुच्छलागतसबतेते ॥
दोहा—पूरणफलतिनकोअहै, सेवततुवपदकंज । तदपिदीनममदासको, करहुनाथभवभंज ॥
जिमिजननीनिजबालके, गनतनकछुअपराध । तिमिक्षमियोअपराधमम, केशवकृपाअगाध ॥
छंदमनोहरा—जयजयअविकारीअधमउधारीजगविस्तारीभुजचारीपतित्रिपुरारी ।
जयजयकंसारीजयतिमुरारीजयतिखरारीयशकारीधरणीधारी ॥
जयअवधविहारीसदासुखारीखलदलहारीअतिभारीसायकमारी ।
मनसिजमदगारीमनहरनारीव्रजसंचारीगिरिधारीभवभयहारी ॥

वृंदावनवासीनित्यविलासीरोचकरासीरुचिरासीदानवनासी ।
घटघटकेवासीजगतप्रकासीरमानिवासीभवफांसीनाशकभासी ॥
तुवपदसमकाशीगतिप्रदखासीदासनआसीअनयासीपूरणआसी ।
कीरतिशशिभासीजन्हुसुतासीश्रवणसुधासीहैजासीमुक्तिहुदासी ॥
जयमीनस्वरूपारक्षकभूपाकमठअनूपाविबुधवरेमंदरहिधरे ।
जययज्ञवराहासहितउछाहादानवनाहाघातकरेअवनीउधरे ॥
जयनरहरिघोराकृतबहुशोराअरिवरजोरानखनिदरेसुरत्रासहरे ।
जयजयवटुवामनपरमसोहावनबलियशछावनपगपसरेब्रह्मांडभरे ॥
जयजयभृगुनंदनभृगुकुलचंदनक्षत्रिनवृंदनसंहरियकइसवारे ।
जयरघुकुलमंडनहरधनुखंडनखलदलदंडनधनुधारेद्विजमदगारे ॥
जयजनकललीशाअवधअधीशाजयजगदीशाप्रणधारेवनपगुधारे ।
मदहरनजयंताजयखरहंतासुखकरसंतामृगमारेखगउद्धारे ॥
जयदलनकवंधूदीननवंधूधृतधनुकंधूअनियारेशबरीप्यारे ।
जयमित्रकीपदावालिनिकंदावासिगिरिंदाकपिद्वारेलंकाजारे ॥
जयउदधिमँझारीसेतुहिकारीपादपधारीयुतवारेदशशिरमारे ।
जयसियासमेतूरघुकुलकेतूआयनिकेतूसुखसारेजनविस्तारे ॥
जयदेवकिनंदनजयनँदनंदनशकटनिकंदनककमारीअघसंहारी ।
जयकालियदमनंराधारमनंब्रजदुखशमनंगिरिधारीरक्षणकारी ॥
वृंदावनवासीरासविलासीहियोहुलासीब्रजनारीमंडलधारी ।
कटिपीतदुकूलातियअनुकूलायमुनाकूलासंचारीसुरमनहारी ॥
जयकेशिविनाशीमधुपुरवासीआनँदराशीधनुधर्त्ताकुबरीभर्त्ता ॥
जयगेयरघातीमल्लजमातीआशुनिपातीअघकर्त्ताकंसहिहर्त्ता ।
पितुमातुदुखारीमनहिविचारीभयेमुरारीसुखभर्त्तादुखउद्धर्त्ता ॥
सांदीपिनिगेहूसहितसनेहूशास्त्रअछेहूसंपतांसुतआहर्त्ता ।
वसुदेवदुलारेजराकुमारेदलसंहारेजेचाहीयमनहिदाही ॥
यदुनगरविहारीयदुकुलभारीह्वैसुखकारीसउछाहीरुक्मिणिव्याही ।
मन्मथसुतजायेमणिद्युतल्यायेदुहितनपायेनरनाहीभौमहिगाही ॥
बलिसुतभुजभंज्योनृपमनरंज्योपौंड्रकगंज्योरणपाहीचक्रहिमाही ॥
मुनिपतिकहँमायाविभवदेखायापुनिहतवायाभीमकरेमगधेश्वर ।
पुनिधर्मभुवालैयागविशालैहतिशिशुपालैअपनिकेदियमोदघर ॥
नृपशाल्वहिमारयोविदुरथदारयोआशुहिटारयोभूमिभर्नहिंशस्त्रकर ।
हेजगतपवित्राब्राह्मणमित्राचरितविचित्रासारसनेगजगकहिउर्धर ॥
कुरुक्षेत्रहिआईश्रीयदुराईआनँददाईभेंवामिकेश्रीनिहिफलिके ।
गुणिकेनिजदामूनृपबहुलामृदिपोहुलामूपरधामिकेहरचोदामिके ॥
हरिसंकटटारेपांडुकुमारेकामदगारेगम्यन्त्रमिकेआयुधकानिके ।
पुनिविविधविहाराकियोविचारेलेंगदागदुवनमिकेगनिम्नचालिके ॥

हेदेवननाथातुवयशगाथामुनिश्रुतिसाथागावतहैंसुखछावतहैं ।
तुवचरणकृपालाविधिविधुभालनेहविशालाल्यावतहैंमुदपावतहैं ॥
तुवपदजलगंगातरलतरंगाअघनिअभंगालावतहैंजोइम्हावतहैं ।
तुवपदअरविंदाकरमकरंदामुनिअलिवृंदाभावतहैंयशछावतहैं ॥
जयजयबलरामाजयबलधामातुवव्रजठामावत्सहन्योलहुकोपसन्यो ।
जयहननप्रलंबावपुजेहिलंबादुप्पकदंबाजौनतन्योसुरकुछनगन्यो ॥
रासभअतिभारीतेहिहलधारीदियोविदारीजौनखनोवनतालघनो ।
पुनिकंससभामधिमुष्टिककोवधिकंकादिकवधिपरिचवनोकियद्रुतनिधनो ॥
जयरेवतिरमनंद्विविदहिदमनंपुनिव्रजगमनंसहुलासैहेताहिरासै ।
कृतवारुणिपानंकरिवनजानंकियअह्वानंनिजपासैगोपिनआसै ॥
जयआनँदअयनंघूमतनयनंअहिकृतशयनंसविलौसउरअतिश्वासै ।
कुंडलइककरनंखसतअभरनंकुंजविहरनंकृतहासैशशिसमभासै ॥
जययमुनाऽहरनंकुरुपुरदरनंजगयशभरनंसितवरनंजनकृतशरनं ।
बल्वलंजियहरनंमुनिमुदकरनंबहुखलछरनंहलधरनंपंकजकरनं ॥
अधमनउद्धरनंधरणीधरनंप्रेमहिढरनंनिजनरनंभ्रमनिस्तरनं ।
जयधर्माचरनंनितअनुशरनंजननहुभरनंजनटरनंशिरसैकरनं ॥
कलियुगअतिघोराधर्मनिचोरासत्पथफोरासंतापीअतिशयपापी ।
वसुदेवकुमारापरमउदारालियअवतारापरतापीप्रभुपरतापी ॥
जेहिनामकलंकीपैनकलंकीपरमअशंकीमुनिजापीमहिमहथापी ।
कियपापिननाशाधर्मप्रकाशाजगचहुँआशाजयव्यापीमधुरालापी ॥
जयबहुवपुनामंजयबहुधामंजयगुणग्रामंअभिरामंजनप्रदकामं ।
जयजयश्रीरामंजयघनश्यामंजयश्रीधामंकृतछामंद्विजदुतिकामं ॥
जनहितव्यायामंकृतवसुयामंरूपललामंवरधामंपतिरिपुकामं ।
दासनरतिदामंबँधेप्रकामंआपुमुदामंसबठामंप्रियनिःकामं ॥ १७ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा—यहिविधिजबअस्तुतिकियो,बालकअतिमतिमान । तबसराहिध्रुवदासको,बोलेश्रीभगवान ॥ १८ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

सुनउत्तानपादकेबालक । लंप्रगटेसिगरोजगपालक ॥ मनकामनातोरिमैंजान्यो । जाकेहेतुमहातपठान्यो ॥
यद्यपिदुर्लभहैसबकाहीं।तदपितोहिदैहौंसुखमाहीं॥१९।अवलौंकोउनहिंजेहिअस्थाना।कियोनिवासप्रकाशमहाना॥
जाकोअचलवासकहवेदा । हैनहिंजननमरणकरखेदा ॥ सोइथलनिवासतोहिदैहौं । प्रेमसुधानिजनितपियैहौं ॥
ग्रहनक्षत्रऔरसबतारा । अहैजोचक्रनामशिशुमारा ॥ तासुपुच्छतेरेकररैहैं । चक्रअधारतुहींहाठिहैहैं ॥
दोहा—गृहनक्षत्रतारासबै, दक्षिणदैध्रुवताहि । फिरिहैंसकलअकाशमें, निजअवलंवनजाहि ॥ २० ॥
जैसेमेढीचक्रहिमाहीं । फिरतचहूँदिशिगोगणजाहीं ॥ सबकेऊपरअहैसोलोका । रहिहौतहँतुमनितहिअशोका ॥

[illegible]

[illegible] । पलिहौभाइनसहितसमाजा ॥२२॥ जोतुवउत्तमजेठोभ्राता । जहैमृगयाहितवनताता ॥

दोहा-तेहिकाननमेंउत्तमहि, यक्षडारिहैमारि । सुतखोजतताकी जननि,जरिहैजायदवारि ॥ २३ ॥
हाचक्रवर्ती तैंह्वैहै । मखकरिद्विजनदक्षिणादैहै ॥ शक्रहुतेलहिअधिकविभूती । करिजगमें अनुपमकरतूती ॥
अंतकालमोहिंसुमिरणकरिहै।२४॥सुनध्रुवतैंध्रुवधामसिधरिहै।सकललोकलोकपजेहिधामै।करहिंप्रातउठिकैपरणामै
ायेजहाँफिरिअवनिनआवत । तहँतैंरहिहैममयशगावत ॥ सुरहुअसुरऋषिमुनिनरनाना । सबतैंह्वैहैतुहींप्रधाना ॥
ाहिहैअचलनरेशकुमारे । गृहतारणगतिनिजकरधारे ॥ २५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

यहिविधिकहिध्रुवतेयदुराई । ध्रुवकरपंकजपूजनपाई ॥
दोहा-ध्रुवकेदेखततहँतुरत, गरुड़चढ़ेभगवान । रमापारपदसहितप्रभु, निजपुरकियोपयान ॥ २६ ॥
ध्रुवअभिलापपूरनिजजानी।हरिपदसेवनफलअनुमानी॥श्रीपतिदरशवियोगविचारी।चल्योनगरकहँपरमदुखारी २७
तहँपुनिकह्योविदुरकरजोरी । सुनहुमुनीशविनययहमोरी ॥

विदुरउवाच ।

जोदुर्लभसकामजनकाहीं।सोहरिपदइकजनमहिमाहीं॥हरिपदसेवनकरितेहिपाई।कतप्रसन्ननहिंभोमुनिराई॥ २८॥
सुनिक्षत्ताकेवचनसुहाये।बोलेमित्रासुतसुखछाये॥ (मै.उ.) वचनविमातवज्रसमलागे । तातेध्रुवअतिकोपहिपागे ॥
पायरमापतिमुक्तिनमागे । राजकरनकोतहँअनुरागे ॥
दोहा-राज्यलह्योताते प्रथम, करिसुरदुर्लभभोग । अंतसमैहरिधामको, जैहैतजिसबशोग ॥
प्रथमहिवासविकुंठनपायो।तातेध्रुवमनमेंदुखछायो॥ चल्योनगरकहँध्रुवपछिताता।वारहिवारपदतअसबाता ॥२९॥

ध्रुवउवाच ।

जन्मअनेकसमाधिनकरिकै।सनकादिकजेहिपदचितधरिकै॥जानहिंकबहुँपरमपदजाको।सोइत्रिभुवनपतिनाथरमाको
षटमासहिंभरिमैंतपकीन्ह्यो।करुणानिधिदर्शनमोहिंदीन्ह्यो॥ ऐसेकरुणानिधिकहँपाई।माँगिलियेनहिंमुक्तिसोहाई ॥
हायकोपवशभयोअभागी । ममशठतामोकहँनहिंत्यागी ॥ करनहारजेभवनिधिपारा।ताकोपायरह्योसंसारा ॥ ३१॥
दोहा-देवसबैकरिदेतभे, मेरीमतिकोभंग । जोहरिसोंयाँचतभयो, दुखप्रदराज्यप्रसंग ॥
हायजोनभाप्योमुनिराई । सोउनमान्योबुद्धिगमाई॥३२॥अहैनकोउजगमोरविरोधी।वृथाभयोभ्रातापरक्रोधी॥३३॥
स्वप्नसरिसयहजगसुखसाँचो।वृथाकुमतिमैंहरिसोंयाँचो ॥ भयोछिन्नजिमिआयुर्दाई।करवैयतेहिवृथाउपाई ॥ ३४ ॥
पायप्रगटवसुदेवकुमारा । हायहायमाँग्योसंसारा ॥ निजसमकरनहारयदुराई । तिनसोंमाँग्योलोकबड़ाई ॥
यथाचक्रवर्तीढिगजाई । करिसेवापरसन्नकराई ॥ माँगेतृणजोविनयसुनाई । ताकीप्रगटसत्यशठताई ॥ ३५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा-ध्रुवकोपछितेयोविदुर, उचितहिपरयोनिहारि । तनिहारिनिभुवननांहिचहत, तुमसमदाससुरारि ॥ ३६ ॥
नगरनगीचजबध्रुवआयो । नृपहिदूतयककहरिजनायो ॥ आपपुत्रलघुजोकढिगयऊ । नायफेरिसोआवतभयऊ ॥
भूपसुनतविश्वासनमान्यो।मृतकनआवतअसअनुमान्यो।पुनिसुधिकरिनारदकीबानी।नृपसुतआगमसतिनियजानी॥
सुतआगमसुनिनृपसुखभान्यो।दूतहिदुतदिमालमणिदीन्यो॥३८॥नाथस्यंदनतरलतुरंगा।चामीकरभूषितसबअंगा।
चढिउत्तानपादमहराजा । लैब्राह्मणअरुवृद्धसमाजा॥सचिवसखासुहृदहुसरदारा । लैसंगपुरतेनुरतसिधारा ॥ ३९ ॥
दोहा-शंखदुंदुभीवेणुडफ, बाजेबजेअपार । पढतवेदबहुविप्रगण, आगेचलेउदार ॥ १ ॥
कनककलशशिरधरिपुरनारी । दधितंदुलदुर्वाभरिथारी॥चलींकरतकलमंगलगाना । साजिसाजि-शृंगारननाना ४०॥
सुरुचिसुनीतिउभयमहरानी। भूषणवसनपहिरिछविसानी॥चढिशिबिकनमदंअनिदपानी।चलिंलेनध्रुवकोअगवानी॥
चल्योसंगउत्तमहुकुमारा । अनुजलखनआनंदअपारा॥ यहिविधिकह्योनगरनेराजा । सुनभागवतभेटकेकाज४१॥

नगरनिकटशीतलअमराई । तहँजवगयेसदलनृपराई॥ तवध्रुवकहँआवतनृपदेख्यो । सुतकोपुनर्जन्मचितलेख्यो ॥
दोहा–प्रेमविकलरथतेउतरि, आशुभूपतहँधाय ॥४२ ॥ अतिउत्कंठितभुजनभरि, लीन्हयोध्रुवहिउठाय ॥
श्रीपतिचरणपरसलहिजासू । जरेअखिलअघविमलविकासू॥४३॥ऐसेसुतहिअंकवैठाई। निजनयननतनीरहिनहवाई॥
सूँघतशीशहिवारहिंवारा।गुण्योमनोरथपूरहमारा४४पुनिपितुपदप्रणामध्रुवकीन्हयो ।आशिर्वादहर्षिसोदीन्हयो ॥
पुनिकरिमातुननिकटपयाना।कियप्रणामभागवतप्रधाना४५परोचरणसुतसुरुचिनिहारी।लियोउठायभयोसुखभारी।
गदगदगिरामिलतवहुवारा ।कहयोजियहुवहुकालकुमारा॥४६॥विदुरमित्रतागुणनिनिहारी।जोपैहोयप्रसन्नमुरारी॥
दोहा–तेहिअपनेतेजीवसव, निरखतकरहिंप्रणाम । जिमिअपनेतेजातजल, होतनीचजोठाम ॥ ४७ ॥
पुनिउत्तमअरुध्रुवदोउभ्राता । मिलेपरस्परसुखनसमाता । दोहुनअँगपुलकावलिछाई ॥ दोउअनदजलदृगनवहाई॥
घरीएकभ्रातामिलिजूटे।जननछोडायहुपरनहिंछूटे॥४८॥पुनिसुनीतिजननीध्रुवकेरी।प्राणहुतेप्रियनिजसुतहेरी ॥
लियोहृदयमहँललकिलगाई ।दुसहविपादविशेपिविहाई ॥४९॥ श्रवीपयोधरतेपयधारा। तैसहिनयननतनीरअपारा॥
सींचतपयधारनध्रुवकाहीं । वीरजननिकहँजोहितहाँहीं॥५०॥लगेसुनीतिसराहनलोगू।लहयोफेरियहसुतसुखभोगू॥
दोहा–निकरिगयोजोनगरते, पांचहिवर्षकुमार । ह्वैआयोलहिहरिकृपा, धराधर्मआधार ॥ ५१ ॥
ध्रुवतेंसतिहरिपदसेवकाई । भलीकरीअतिप्रीतिवढाई॥जासुध्यानकरिकेमतिधीरा।जीततअजयजगतकीपीरा॥५२॥
यहिविधिजनकहलोगसराहैं। निरखतध्रुवमुखसहितउछाहैं॥तहँनृपध्रुवअरुउत्तमकाहीं।लियचढ़ायइककरिनीमाहीं॥
श्रवणकरतविरदावलिराजा । चल्योनगरकहँसहितसमाजा ॥ तहँवाजेवजवावतभूपा । देतदानदीननअनुरूपा ॥
कीन्हयोनगरप्रवेशनरेशा । निरखतसुखमासकलप्रदेशा॥५३॥ठोरनठोरनमरकततोरन । भरेचारुताकेचितचोरन॥
दोहा–लघुपूगनअरुरंभके, खंभद्वारप्रतिद्वार ॥५४ ॥ नवरसालपल्लवनके, वांधेवंदनवार ॥
मुक्तझालरेंझलकहिंनाना । विभावंतवहुतनेविताना ॥थलथलमुक्तमालकेसाजे । कनककलशयुतदीपविराजे॥५५॥
शहरपनाहनगरदरवाजे । चामीकरकेचारुविराजे ॥ अतिउतंगमंदिरचहुँघाहीं । निरखतमंदरशृंगलजाहीं ॥
रचितरतनतेकनकअगारे । सकलसाजतेसकलसँवारे॥५६॥चंदनचरचितगलीवजारा।उडतसुरभिचहुँओरअपारा॥
लाजाअक्षतअरुफलफूला।लियेखडींपुरनारिअतूला॥५७॥नगरमध्यजहँजहँध्रुवआवें। तहँतियलाजसुमनझरिलावें॥
दोहा–दधिदुर्वासरसोंअछत, फूलहुफलभरिथार ॥ ५८ ॥ धायधायपुरनारिसव, ध्रुवेमिलेंयकवार ॥
देहिंविविधविधिआशिर्वादा।पावेंध्रुवअतिशयअहलादा॥यहिविधिसुनतमनोहरवानी।पिताभवनगेध्रुवसुखमानी ५९
तेहिउत्तममणिमंदिरमाहीं । वसतभयोध्रुवमुदिततहाँहीं॥तहँउत्तानपादनृपकाहीं। ध्रुवहिखेलावतनिशिदिनगाहीं ॥
वस्योसुवनयुततहँमहराजा॥जिमिकश्यपसंयुतसुरराजा॥६० ॥ क्षीरफेनसमसेजसोहावे । पलँगदंतिदंतनकेभावे ॥
संचितकनकमणिरचितअपारे।मानहुनिजकरमारसँवारे।आसनअनुपमअमलअमोला।कनकउपकरनअतिहिअतोला
दोहा–फटिकफरशमरकतमहल, मणिकेदीपतदीप । ज्योतिजगीयुवतीजहां, जिनमुखसमरजनीप ॥ ६२ ॥
वनउपवनवाटिकासुवागा । अवलोकतउपजतअनुरागा॥अतिरमणीयलताद्रुमजाला । कल्पवृक्षकेसरिसरसाला ॥
कूजहिंकलअनिमत्तविहंगा।गुंजहिंकुंजनिकुंजनिभृंगा॥६३ ॥कनकमयीवापिकाविराजें। वद्धरजसुपानछविछाजें ॥
पद्मकंजउत्पलकल्हारा । फूलसरसिजनानाप्रकारा ॥ सरसरसीसोहतसोहावन। चहुँदिशिकुमुदनगणमनभावन ॥
चक्रवाककारंडवहंसा । करेंशोरसवशोकविध्वंसा ॥ नर्तनहंदंपतिसारससोहैं । डोलिडोलिमृगगणमनमोहैं ॥
दोहा–जोसुरेंद्रनागेंद्रके, औरनरेंद्रनजौन । विभवविशेपसोतादिन, ध्रुवनगरहिमहँतौन ॥
नागरिभवकोकरैवखाना । करैकृपाजापरभगवाना॥दिनदिनवढ़नघटनकछुनाहीं । विभवनिरंगनिगुरपनिलकनाहीं॥
भूपहिंसननेदिननगरिशाला।विदुरव्यतीतभयोकछुकाला॥ नहँउत्तानपादक्षीणगात।ध्रुवसभावल्योनिगदितममान
औरहुमन्त्रीकलपदकानन।कियप्रसन्नदोकोग्निपरुानन॥ध्रुवहिंजानिध्रुवपदुपनिदाना।भूपउत्तानपादगहुलाना ॥
[illegible] ।कहयोतातपदभूपअमोली ॥यद्यपिउत्तमनेठकुमारा। नयपिअगमनहीनविनारा ॥

दोहा–रूपवानगुणवानअति, शीलवानमतिवान । भटप्रधानछोटोकुँवर, भयोभक्तभगवान ॥
होइजो सम्मतअससवहीको । करौंतोधरणिअधिपध्रुवहीको॥ नृपतिवचनसुनिसचिवसुखारी।एकवारसवगिराउचारी
कियोनाथतुमनीकविवेकू । कीजे ध्रुवहिराजअभिषेकू॥ध्रुवगुणगुन मे वँधेसकलजन।निरखतमुखहर्षतमनछनछन॥
संमतसचिवविचारिभुवाला।राज्यतिलककियध्रुवहिउताला।भूपजठरपनआपनजानी ।उचितकरवतपअसअनुमानी
ह्वैविरक्तवनकियोपयाना । भज्योप्रीतियुतश्रीभगवाना ॥ कछुककालकरितपअतिघोरा।योगमार्गतेपुनितेहिठोरा ॥
दोहा–भूपतिसोउत्तानपद, तुरतहितज्योशरीर । भक्तिभावपरभावते, गयोधामयदुवीर ॥ ६७ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ
चतुर्थस्कंधे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–रह्योप्रजापतिएकजो, जासुनामशिशुमार । भ्रमीनामताकीसुता,सुखमाशीलअगार ॥
निजअनुरूपजानिनरनाहा । तासुसंगध्रुवकियोविवाहा ॥ ताकेदुइसुतभेवलधामा।कलपऔरवत्सरनिजनामा ॥ १॥
इलानामकीवायुकुमारी । सोध्रुवकीदूसरिभैनारी ॥ उत्कलनामतासुसुतभयऊ । कन्याएकजन्मपुनिलयऊ ॥
जाकोकहैंसकलमतिधारी । सकलकुमारिनमेंसुकुमारी॥२॥उत्तमजौनजेठध्रुवभ्राता। सोनिजव्याहकियोनहिंताता॥
एकसमैचढ़ितरलतुरंगा । कियोगमनवनसघनअभंगा ॥ खेलनलाग्योतहाँशिकारा । करतअनेकनविपिनविहारा ॥
दोहा–तहँकोऊआवतभयो, यक्षएकवलवान । काटिगिरायोतासुशिर, मारिपैनयकवान ॥
गेदशपाँचदिवसजववीती । सुरुचिमानिअतिशयतवभीती॥खोजनगईवनहिसुतकाहीं ।भेंटयोनहिंपुत्रहिवनमाहीं ॥
लगीरहीतहँघोरदमारी । तातेसुरुचिभईजरिछारी ॥३॥ पुनिजववीतिगयोकछुकाला।तवनारदमुनिवुद्धिविशाला॥
ध्रुवमहराजनिकटद्रुतआये । सभामध्यअसवचनसुनाये ॥ उत्तमभ्राताजेठतुम्हारो । गयोयक्षकरवनमहँमारो ॥
वैठेआपकहाघरमाहीं । लेहुवैरभ्राताकसनाहीं ॥ मुनिकेवचनभूपकेकाना । सुनतेलागेवज्रसमाना ॥
दोहा–प्रथमवंधुवधशोकभो, पुनियक्षनपरकोप । सिंहासनतेउठतभो, शत्रुवधनकरिचोप ॥
सचिवसर्वेवोलेकरजोरी । सैनआपकेनाथनथोरी ॥ लैचतुरंगविजयरिपुकीजे । सैनसजावनशासनदीजे ॥
कह्योवचनतवध्रुवमहराजा । रहैइतैसवसचिवसमाजा ॥ मैंअकेलअलकापुरजैहौं । हरिप्रतापतेभयनहिंपैहौं ॥
असकहिपहिरेउकवचप्रकासी।कटितूणीरकस्योशररासी ॥करकोदंडचर्मअसिखासी।यहिविधिसज्योभूपअरिनासी॥
सुवरणस्यंदनतुरतमँगायो । मुनिमुखअभिमंत्रितकरवायो ॥
दोहा–हरिपदचिह्नितचारुरथ, सोहतविमलपताक । श्वेतवर्णवाजीतरल, जिनजवकीजगधाक ॥
चढ्योसुरथध्रुवधरणिअधीशा । सुमिरिजलजयुगपदजगदीशा॥सारथिसोंअसगिरासुनाई।अलकापुरीदेहुपहुँचाई ॥
सुनतसूतकरगहितवताजिन । हूँकीदेतहन्योतहँवाजिन ॥ लागतताजनतरलतुरंगा । चलेचपलमनमारुतसंगा॥
प्रथममचीकिंकिणिझनकारी।भयोशोरपुनिघरघरभारी॥४॥उत्तरदिशासहस्रनयोजन ।चलोगयोनृपमानिप्रयोजन॥
पहुँच्योजवहिंनिकटहिमवाना।लख्योकंदराभूपप्रधाना ॥ सोइदरीमहँअलकानगरी । लखीभूपछविमयजोसिंगरी ॥
दोहा–जहँकोटिनहरिगणवसहिं, कोटिनगुह्यकवीर । कोटिनराक्षसयक्षतिमि, अरुगंधर्वनभीर ॥
वसतरहयोजहँसुचितधनेशा।राखेसवपरनिजहिनिदेशा ५ नगरनिकटभूपतिजवआयो ।पाञ्चजन्यसमशङ्खवजायो॥
छायरह्योदशआसनशोरा । वज्रपातभोमनहुकठोरा ॥ गुह्यकराक्षसगंधर्वनाना । सुनेशङ्खकोशोरमहाना ॥
प्रथमपुहुमिगिरिगेयकवारा ।पुनिमानेडरभीतिअपारा ॥ ६ ॥ पुनिधरिधीरजवैनउचारे । आयोकोनवीरदरद्वारे ॥

सुनतशङ्खध्वनिकुपितधनेशा।दियोभटनकहँतुरतनिदेशा ॥ जोयहयुद्धहेतुभटआयो । ... ॥

दोहा—ताहिमारियमलोकको, दीजोतुरतपठाय । तासुमाथनिजहाथगहि, मोकोंदहुदेखाय ॥

सुनतसुभटधनपतिकीवाणी।चलेसकलगहिआयुधपाणी ॥कोउतुरँगकोउचढेमतंगा । कोउस्यं... ॥
औरोविविधभाँतिकेवाहन।विविधभाँतिआयुधअरिदाहन॥विविधभाँतिकरिशोरकठोरा।वि...भाँतिकेआनन ॥
हरअनुचरगंधर्वबहुनाना । अरुगुह्यकअतिशयबलवाना ॥ विद्याधरचारणअरुयक्षा । ... ॥
निकरेसकलनगरतेजबहीं । लखेअकेलेध्रुवकहँतबहीं ॥ लम्बबाहुइंदुसमआनन । मानहुखड़ोकुपितपंचानन ॥

दोहा—निपटनिडरनोखोनवल, नागरनिपुणनरेश । नीतिनिलयनिष्कपटनित, नरनंदकनिरदेश ॥
निर्णयवारणनरनके, निरवाहकनिश्शेष । नारायणनिरखतनितहि, नयननतजेनिमेष ॥

छंदतोमर—गंधर्वगुह्यकसर्व । राक्षसपिशाचअखर्व ॥ कढ़िकेनगरतेवीर । लखिध्रुवहिध्रुवधुरधीर ॥
कोइकाढ़िकरकरवाल । निजअंगढाँपेढाल ॥ कोउलियेशूलअतूल । धायेचलावनहूल ॥
कोउपरिघपरमप्रचंड । कोउदेदंडनदंड ॥ कोइलियेचक्रनवक्र । कोउधनुपबाणनचक्र ॥
कोइतोमरानिअतूल । जेकरनअरिनिर्मूल ॥ कोइभिंदिपालकराल । कोइगदापरमविशाल ॥
कोउलियेमूशलघोर । कोइपाशलैवरजोर ॥ कोइलियेवृक्षनहाथ । कोउसैलधरिनिजमाथ ॥
कोउलियेपीनपपान । कोउयमतवदनकृशान ॥ कोउनखनिकासेपैन । कोइतकतटेढ़नैन ॥
कोइगहेपरशुमहान । कोइशक्तिभटबलवान ॥ कोइलियभुशुंडीशूर । कोइलियशतघ्नीकूर ॥
कोइलियेमल्लतवल्ल । कोइसूधकीन्हेभल्ल ॥ धायेसबैतेहिओर । जहँरह्योभूपकिशोर ॥
कोउमकरआननघोर । कोउगजवदनवरजोर ॥ कोउखलखराननफारि । कोइगिद्धकीअनुहारि ॥
कोउवीरयदनवराह । कोइमृगनमुखसउछाह ॥ कोउसकलअंगनिनंग । धायेकरनहठिजंग ॥
बहुयोगिनीनजमाति । पसरायकेशनपाँति ॥ अतिकृशितलम्बशरीर । दृगकूपसरिसगँभीर ॥
धरुमारुधरुधरुमारु । बहुवारकरहिंपुकारु ॥ कोउतहँपिशाचिनकूरि । दोउहाथमेलैधूरि ॥
कोउकरहिंकटकटदंत । कोऊठठायहसंत ॥ कोउकरहिंखरसमशोर । कोउधावतीचहुँओर ॥
कोउचलहिंगतिअतिवंक । किलकारकरहिंनिशंक ॥ कोउखड्गखप्परधारि । ...॥
यहिभाँतियोगिनयूह । धाईकरतअतिकूह ॥ तहँभयोधुंधाकार । रविछप्योतेजअपार ॥
रिपुदलभयोउतपात । ध्रुवकोसोसगुनलखात ॥ ७ ॥

दोहा—धावतआवतरिपुनलखि, घोरमचावतशोर । अतिनिशंकभूपतिसुवन, तिलभरतज्योनठोर ॥

छं.तो.-ध्रुवहूपरचंडकोदंडगह्यो । तहँ... ...स्यंदन...
ध्रुववैनसुनेतहँसूतसुखी । कियस्यंदनकोअरिसैनमुखी॥हनितीक्षणताजनवाजिनको। ...
रणमेंअतिवेगधवायरथै । पहुँच्योजहँप्रेतपिशाचगथै ॥ धनुकीध्रुवहूध्वनिकीनतहाँ ।
शरधारअपारतजीछनमें । मनुदामिनिदौरिरहीघनमें ॥ अँधियारतहाँअतिछायगयो। ...
इकएकहितीनहितीनशरै ।ध्रुवमारतभेतहियुद्धभरै ॥ ८ ॥ भटभालनमेंशरलागतभे ।
निजमानिपराजयलेतभये । ध्रुवकोपरशंसिप्रकोपछये ॥ ९ ॥.जिमिपायप्रहारभुजंगपदै
... ...धकोअति ... ...
अतिपैनपरस्वधपासहने।परिघोविशिखोंदियमारिघने।११।...
पुनिकोटिनराक्षसधावतभे । ध्रुवपैबहुशस्त्रचलावतभे ॥ पुनिलक्षणयक्षततच्छनमें ।
... ... १२॥ ...

जिमिशैलछिपैघनधारनसों। तिमिभूपछिप्योशरधारनसों॥१३॥ध्रुवकीयहदेखिदशारनमें।नभमेंसबसिद्धदुखीमनमें॥
ध्रुवकोगुणिनाशहिताहिछनें। भरिशोकसबैयहवैनभनें॥ मनुवंशविभाकरअस्तभयो। यहसंततिकोअबअंतठयो॥
ध्रुवयक्षमहार्णवबूड़िगयो।चलिकैवशकालहियुद्धलयो॥१४॥उतयक्षनजीतिनिशानबजे। सबराक्षसएकहिबारगजे॥
बहुयोगिनिनाचनआशुलगीं। गुणिअपनजयअनुरागरँगीं॥भटभार्षाहिआपुसमेंसिगरे। अबआशुचलोअपनेनगरे॥
जिमिपावकमाँहपतंगपरचो।तिमिगर्वभरचोनृपआयलरचो।यकबालककोहनिजीतिलहे।पछितातसबैयहिभाँतिरहे।

दोहा-सिगरेमुनिगुणिध्रुवमरम, रह्योजोधर्मअधार। एकवारसबव्योमते, कीन्हेहाहाकार॥ १ ॥

छं.प.-तहँमुनिनकेरहाहापुकार।तिमिशत्रुदुंदुभीकीधुकार॥ जयवंतवचनरिपुकेमहान।ध्रुवसुन्योसमरआपनेकान॥
अरिअस्त्रवृंदनिजरथकृपान। यहनिरखिभयोध्रुवकोपवान॥ कोदंडकियोटंकोरघोर। श्रुतिफोरभयोरवचहूँओर॥
पुनितजीविशिपकीध्रुवबहुधार। अरिअस्त्रभयेतिलतिलअपार।निकस्योतुरंतधरणीअधीश।मनुयक्षकालहैविश्वबीश॥
जिमिमूँदिजाहिंरविअतिनिहार।पुनिनिकसितेजकरतेअपार॥तिमिध्रुवबहुधनुपधरिधीरधारि।कियवाणवृष्टिमनधूरिधारि
चहुँओरचपलचमकैतुरंग। निजटापकैंअरिअंगभंग ॥ शरतजतलेतखैंचतनिपंग। लखिसकैंनाहिंतेहियक्षसंग॥
लहिवाणवेगयक्षनसमाज।उडिकैंदिशनआरतअवाज॥जिमिपायपवननभमेघमाल।फटिफूटिजाहिंथलतजिउताल॥
शरलगतकटतराक्षसनगात।जिमिवज्रलगेगिरिफाटिजात।यकबाणकटैदशपांचफोरि।यहिभाँतितजेध्रुवशरकरोरि१७
कहुँकटहिंउरूकटिचरणहाथ।कहुँकटहिंउदरउरबाहुमाथ॥ध्रुवभटप्रबलछतजिवाणभल्ल।कियछिन्नभिन्नबहुयक्षमल्ल॥
कहुँकटेपरेकुंडलअनंत। कहुँहारपरेरणमहँलसंत॥कहुँकनककटकसकलैसोहाहिं। कहुँमुकुटमाथयुतमहिगिराहिं॥
कहुँपरेपागफटेअपार। मनुकियोअवनिअंगनिशृंगार॥कहुँभगेयोगिनीकरिचिकार।भ्रमिभूमिगिराहिंतनुनहिसँभार॥
कोउभईशीशतेकेशहीन। खरचढीभगींकुचकटेपीन ॥ कोउविनहिनासिकाविनहिदंत। लैभजींआपनेसंगकंत॥
रणमध्यमच्योहाहापुकार। धसिसकेनरिपुध्रुववाणधार॥ दृगफूटिगयेकोउकटेकर्ण।कोउविननितंबकोउविनहिचर्ण॥
कहुँचूरचारुरथचक्रहोत । नहिंलहतएकक्षणयक्षवोत ॥ कहुँअंगभंगभेबहुतरंग। मंदरसमानमरिगेमतंग॥
नहिंसकतकोऊसायकचलाय। कोसकैवीरध्रुवनिकटआय॥जहँलखतयक्षकीयुत्थघोर।तहँधसतधुनतधनुध्रुवकठोर
इकबारगिराहिंध्रुवपैपिशाच।प्रविशैपतंगजिमिअनलआच॥नहिंबचतएकभजिजाहिंजौन।लखिअपरवीररहिगयेमौन॥
भोध्रुवकोदंडमंडलाकार। चहुँओरझरतसायकअपार ॥ ध्रुववेगसिंधुराक्षससमस्त। असदेखिपरेह्वैगयेअस्त ॥

दोहा-गिरतउठतझूमतझुकत, डहरतडहरतयक्ष। पुनिपुनिधावतओरध्रुव, भिरतप्रचारिप्रत्यक्ष॥.

छंदकिरवान-जहाँलक्षणप्रत्यक्षयक्षआयुधमेंदक्षधायेवोलिभक्षभक्षपक्षवानसेदिखान।
कोइमच्छपैसवारकोइकच्छपैसवारकोइअक्षविकरारवीरराक्षसमहान॥
कोऊकहेगच्छगच्छकोऊकहैरक्षरक्षतेगकाढिस्वच्छस्वच्छकियेलक्षनृपजान।
तहाँतिजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानवाणझारच्योविप्रमान॥
जहाँमुंडनकेझुंडपरेशोणितकेकुंडभरेरुंडखंडखंडखंडखंडदरशान।
जहाँआयुधउदंडहनेवीरखरिखंडभरेभारीहयमंडपरचंडशोरवान॥
जहाँठाकेदीरदंडदंडपायकअदंडधुंधकारभोअखंडमारतंडढुछपान।
तहाँतिजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानवाणझारच्योविप्रमान॥
जहाँकुंभिनकरारघाटवाजीविसु। मारवीरवारकेसेवारमुंडपुंडरिकभान॥
जहाँरतनकतारअहंककरअपारमीनतगओकटारनकचक्रहैमहान।
जहाँशोणितकीधारभुजभुजगविहारढालकच्छअनुहारशिशुमारस्यंदनान॥
तहाँतिजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानवाणझारच्योविप्रमान।
जहाँगिद्धहरपानलगमासमैदेखानकहूँआँतिलैउडानकाककंकदरशान॥
जहाँशोणितकोपानकारिजंबुकअपानकरेभूतगणगानतुरीयोगिनीनवान।

जहँकंधधैकृपानतेकबंधवेगवानधावैंमध्यमयदानमच्योघोरघमसान ॥
तहँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानवाणझारच्योवेप्रमान।
जहँभूतऔबेतालरूपधारिविकरालशोरकरतकरालदेखिपरैचहुँघान ॥
जहँलैलैकरवालरोकिवाणनकोढालपिलेजातहैंउतालनैनलालकोपवान।
जहँवीरताविशालवदैंफूलिफूलिंगालहटैनेककहूनहालमरेभेदिजातभान ॥
तहँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानवाणझारच्योवेप्रमान।
जहँकोईकहैआवआवकोईकहैजावजावकोईकहैखावखाववैरीवलवान ॥
जहांकोईकहैधावधावकोईकहैलावलावकोईकहैमारुघावयक्षओजवान।
जहँवाव्योहैउछावदेहिंमोछनमेंतावभूल्योशत्रुमित्रभावदेखेदावदर्पवान ॥
तहँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानवाणझारच्योवेप्रमान।
जहँशीशनट्टवट्टसेअनेकफट्टफट्टफूटैंभट्टभट्टभट्टागिरैंभूमिभासवान ॥
जहँउठेझट्टझट्टपिलेवीरठट्टठट्टगदाचलैचट्टचट्टचट्टपट्टपट्टवान।
जहँरक्तसरिघट्टघटशोणितकोघट्टघट्टयोगिनीगरट्टकरैघट्टघट्टपान ॥
तहँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानवाणझारच्योवेप्रमान।
जहँमध्यजंगआयवीरमुंडनवेरायलेहिमालनबनायसुखछायकैइशान ॥
जहँवीरनाभगायकोईभाग्योनवचायकोईलोथिनलुकायरहेमृतकसमान।
जहँयक्षसमुदायमध्यमच्योहायहायप्रलैहोतसीदेखायभयोशोचदेवतान ॥
तहँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानवाणझारच्योवेप्रमान ॥ १९ ॥

दोहा—ध्रुवधरेशशरधारते, विकलयक्षसरदार। भागतभेमधिसमरते, करिकरिहाहाकार ॥
जैसेगैयरयूथको, मृगपतिदेतभगाय। तैसेराक्षसयक्षदल, ध्रुवदीन्ह्योविचलाय ॥ २० ॥
जबसन्मुखनहिंलखिपरे, एकहुराक्षसयक्ष। तबअलकापुरधसनको, कियविचारध्रुवदक्ष ॥
नगरधसतकरिहैंअवशि, मायागुह्यकवीर ॥२१॥असगुणिपुनिबोलतभयो, सारथिसोंध्रुवधीर ॥
हेसारथिअसहोतमन, अबकरिनगरप्रवेश ॥ धीरधारिकैधाममें, धसियेधौरिधनेश ॥
पैप्रविशतअलकापुरी, राक्षसयक्षप्रचंड। मायाकरिहैंअवशिये, मायावीवरिवंड॥
तबसारथिकरजोरिकै, बोल्योध्रुवसोंवैन। नाथनगरनहिंजाइये,येगुह्यकछलऐन ॥
आगूपाछूऔरलुकि, करैंजोछलकरिघात। तौजीतीबाजीअवशि, हारिजाहिसुनुतात ॥
उतैयक्षगुह्यकध्रुवै, ध्रुवैमानिबलधाम। मायाकरिचहुँओरते, चहेजीतिसंग्राम ॥
गंधर्वीअरुराक्षसी, देवीआदिअपार। चहुँकिततेछिपिव्योममें, कियमायायकवार ॥

छंद नाराच।

बतात बात ऐसही ध्रुवै सुसूत संगमें। महानशोर होतभो दिशान मध्य जंगमें ॥
मनो प्रलय पयोधिएकवारके गराजको। दशोदिशान पूरिदेतभे महा अवाजको ॥
चलेप्रचंड पौन वोनचास एकबारही। मनो सभूधरे धरै समूलते उखारही ॥
दिशानमें भयो महान धूरिधुंधकारहै। रह्यो तहाँ न नेकहू सुदीठिकोपसारहै ॥ २२ ॥
उठे चहूँ दिशानते जलभ्र घोर श्यामहै। कियो अकाश छाय अंधकार ठाम ठामहै ॥
दिशानमें दमंकती अनेकभाँति दामिनी। मनोमहाभयावनी प्रत्यक्षकाल यामिनी ॥

त्रिलोक त्रास छैगई मनो महा प्रलै भई । ऋपीश सिद्धि चारणौ पुकारते दई दई ॥
अघात वज्रव्रातको निपात एकवारभो । मनो प्रजा समेत या संसारको सँहारभो ॥ २३ ॥
भई महानवृष्टिएकओररक्तधारकी । पुरीप पीव मूत्र मेद माँस मद्य वारकी ॥
धराअधीश जान अग्र में तुरंतही तवै । कृपाणकंधमें धरे गिरे कवंधमें खवै ॥ २४ ॥
तहाँ परयो लखाय एक शैल आसमानमें । तन्यो वितानसो महान चारिहू दिशानमें ॥
करीपपाणवृष्टिसो गजानकेसमानहै । अखंड वृक्षवृष्टि फेरिभैभरीकृशानहै ॥
गदा कृपाण मूशली कठोरजेकुठारहै । गिरैनरेशशीशमेअनेकवारवार है ॥ २५ ॥
फणीशफेरिफूतकारज्वालकोवमंतही । करोरिधावतेभयेमनो ध्रुवैडसंतही ॥
तहां सनाद नाग एकओर मत्त धावहीं । मनो लपेटि शुंडते ध्रुवै नभै उड़ावहीं ॥
वराह वाघ ऋक्ष श्वान सिंहशल्यखर्गहै । चलेनरेशकोग्रसै अनेकजीववर्गहै ॥
द्विमुंडके त्रिमुंडके द्विवाहुचारिवाहुके । द्विपादकेत्रिपादके अनेकपादकाहुके ॥
अनेक भांतिके वेताल धावते प्रचारिकै । नगीचमें न आवते विरावते निहारिकै ॥
तहँदेखातभै पुरी मनोहरी नगीचहीं । सुहाट वाट घाट आट ठाट मंजु वीचहीं ॥
लसैसुहावनी नदी नरौ सुनारिमज्जहीं । विशालहै निशानहू निशान डफ्फवज्जहीं ॥ २६ ॥
तहां महान नादके समुद्रवेल त्यागिकै । चल्यो दशौदिशानते तरंग तुंगजागिकै ॥
मनो डुवायदेतभो धरामहाभयावनो । लग्यो मुनीश सिद्धको समूहस्वस्ति गावनो ॥
कहूँनिशादेखातिहै कहूँसोघोशहोतहै । तहैंकहूँनिशीथमें दिनेशको उदोत है ॥
कहूँ उतानपादको स्वरूप धारि आवते । अनेकभांतिवैनभापिकै ध्रुवैवुझावते ॥ २७ ॥
यहीविधे अनेकमायकी उपायको किये । अनेकयक्षरक्षमान जीतिआपनी लिये ॥
तज्यो ध्रुवौतिलौभरौमहीनहीं रही खडो । अनेकवाणवृंदको चलावतोतहैंअडो ॥ २८ ॥
विलोकिकै महाउपद्रवै ध्रुवै विनाशको । ऋपीशऔमुनीशमानिकै महानत्रासको ॥
अनन्यकृष्णभक्तजंगमें ध्रुवै निहारिकै । भनेअकाशते सुवैन आशुही पुकारिकै ॥ २९ ॥

मुनय ऊचुः ।

उतानपादके कुमार शंकनाहिं कीजिये । गोविंदकेपदारविंदमें सुचित्तदीजिये ॥
सोई हरीअरीन आपके विनाशिदेयँगे । निजै प्रतापते निजै सुदास रक्षिलेयँगे ॥
दोहा-जासुनामकहिसुनिपुरुप, यहसागरसंसार । विनउपायविनश्रमकिये, सहजहिलागतपार ॥ ३० ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ चतुर्थस्कंधे दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

मैत्रेय उवाच ।

दोहा-सुनतमुनिनकेवचनअस, ध्रुवअतिशयहरपान । कियोआचमनशुचिसलिल, धरिश्रीहरिकोध्यान ॥
कियनारायणअस्त्रको, ध्रुवद्रुधनुपसंधान । त्रिभुवनमेंदूजोविदुर, ह्वैनहिंआपसमान ॥ १ ॥

छंद भुजंगप्रयात ।

तज्यो विष्णवास्त्र जवैकोपिराजा । उठीज्वालमालाकरालादराजा ॥

चहूँओरधावैकरै जोरशोरा । प्रलयकालकीवह्निज्यों हैकठोरा ॥
महागुह्यकौराक्षसौ औपिशाचा । तजैंशूलसाँगैं कृपाणैनराचा ॥२॥
इतै केशवास्त्रै वर्म्योवाणजाला । चलीचारिहूँओरते अग्निज्वाला ॥
जड़े रत्न जांबूनदै पंखवारे । लगे हंसके पंखकेरेकतारे ॥
यही भाँतिके वाण छाये अकासै । दिशानै दशौमें भयो भूरि भासै ॥
महातीखते भीषणे शत्रुकेरे । कढेकालसे कोटिकोटीकेरेरे ॥
जहाँ गुह्यको यक्षरक्षौमहाना । रहे रुद्रके वैगनौ भीम नाना ॥
तहाँतेसुपर्वैअखर्वैनिखर्वै । भिदेजायवैरीनकेअंगसवै ॥
रहीराक्षसौयक्षकोटीनसैना । सुमायावलैमानतेनेकुभैना ॥
महावाणधारैसवैएकवारै । गयेछायआकाशमेंशत्रुभारै ॥
धसैसैनमेंशोरकैवाणकैसे । महाकाननेपैघुसैमोरजैसे ॥ ३ ॥
कटेयक्षकेतेगिरेभूमिमाहीं । हटेवीरकेतेसहैवाणनाहीं ॥
तहाँजेरहेसैनमेंवीरभारी । सवैआपनीसैनभागीनिहारी ॥
सवैसैनकोएकवारैसमेटी । चलेभूपकेपुत्रकोतुच्छसेटी ॥
लियेशस्त्रभारीकियेकोपघोरा । ध्रुवैधायघेरेकरैदीहशोरा ॥
यथाकोपकैकैफणीभूरिभारी । गरुत्मानकोघेरिलेहींप्रचारी ॥ ४ ॥
कटेजाहिंवाहूउरूजंघशीशा । यथावज्रतेखंडहोतेगिरीशा ॥
जरेजाहिंकेतेमरेजाहिंकेते । धसैसन्मुखैजेवचैंनाहिंतेते ॥
मरेसूरकोमंडलैभेदिजाते । जहाँऊर्द्धरेताभहामोदमाते ॥
गिरैंऔउठैंऔभ्रमैंभूमिपाहीं । टरैंनाहिंटारैरँगेजंगमाहीं ॥
इकैएकयक्षैशरैलक्षलागे । कटैधूरिसेह्वैउड़ैजंगजागे ॥
हनैशस्त्रजेतेध्रुवैओरकाँही । लगैवैष्णवास्त्रैरजैह्वैउड़ाही ॥
चलैनकहूयक्षकोनाहिंजोरा । महानाशहोतोदलैचारिओरा ॥
पटीलोथिसोंभूमिवाकीनथोरी । घटीहीघटीहीघटेवीरदोरी ॥
सहीनागईअस्त्रकीवाणधारा । दुखीदेवकीन्हेंहहाकोपुकारा ॥
जरेयक्षरक्षौअनंतेतुरंते । वचेथोरजेतेदुरेतेदिगंते ॥
भजेआतजेशस्त्रजेजंगमांहीं । तिन्हेंवैष्णवास्त्रोनजारयोतहांहीं ॥
महाविक्रमैभूपकोसिद्धदेपी । लगेहैप्रशंसैसमोदैविशेषी ॥

सोरठा—वरपहिफरपरफूल, देहिदुंदुभीव्योममें । कहहिंवचनअनुकूल, धन्यधन्यध्रुवधरनिधनि ॥ ५ ॥

दोहा—जगयक्षनविनशोतगुनि, संयुतमुनिनसमाज । आयसमरध्रुवसोंकह्यो, आशुहिमनुमहराज ॥ ६ ॥

मनुरुवाच ।

वृथारोसकीजनकतनाती । गेपनरकदायकसवभाँती ॥ यक्षपुण्यजनअहैंविचारे । हनेविनाअपराधविचारे ॥ ७ ॥
यहहमरेकुलकीनहिंरीती । निदहिसंनकगदिनाहिंप्रीती ॥ येउपदेववापुरेदीना । तेरोकुछअपराधनकीना ॥
रवोतानिपरमा । तोहिनउचितकरबअनकम्मा ॥८॥ कियोएकतेरोअपराधा । करीअनेकनकोतेंबाधा ॥
पवित्रोकिनेनतो।भयोमकन्टयक्षनकुलयानी॥९॥यहहरिद्रामनमारगनाहीं।पशुसमहिंसाकरवसदाहीं॥१०॥

दोहा-यहतुमसाँचोजानहू, अहैदेहअभिमान। हिंसामेकवहूनहीं, रीझतहैभगवान ॥ १० ॥
सकलभाँतितेंहरिकहँध्यायो।हरिहिसकलथलभलतेंभायो॥हरिप्रसाददुर्लभपदपायो ११ हरिदासनमहँश्रेष्ठकहायो
असतैंह्वैकसकियअसकर्मा। जानिहुसकलभागवतधर्मा॥१२॥दयाक्षमासवजीवमिताई।सहनशीलसबमहसमताई
जाकेयेगुणहोंहिमहाना। तापैकृपाकरहिंभगवाना ॥ १३ ॥ जवप्रसन्नभेहरिजेहिपाहीं।ताकेप्राकृतगुणनशिजाहीं
जीवमुक्तसोहोतविशेषे। लहतमोदसोसदाअलेषे ॥१४॥पंचभूतमयहैनरनारी। जिनसँयोगतिनसृष्टिविचारी॥१५
दोहा-यहीभाँतिपालनहरन, हरिमायाकृतहोत॥१६॥हरिनिमित्तमात्रहिगुणौ, गुणउनमहतहदोत ॥ १ ॥
हरिप्रभाववशयहसंसारा।उपजतपलतनशतवहुवारा॥हरिकोकछुकहोतनहिंमोहा।जिमिचुंवकवशडोलतलोहा१७
कालशक्तिकृतगुणविपमाई।महदादिकदेशक्तिमहाई ॥ करहिजगतयद्यपिनहिंकरता।हरहिंजगतयद्यपिनहिंहरता
हरिचरित्रकोजाननहारा।कहाकरतकहँकरतविचारा॥१८॥सबकेआदिअनादिअनासी। जगअंतकअनंतसुदराशी
जनतेजनतजननसमुदाई। मारतमीचुद्वारयदुराई ॥ १९ ॥ अहैनतेहिआपनोपराऊ । सबमेंसदासमानहिभाऊ
दोहा-प्रभुप्रेरितनिजकर्मवश, जियजगआवतजात। जैसेमारुतसंगमें, रजकणअमितउड़ात ॥ २० ॥
जियआयुपवरधेअरुनासे। तिनकीकबहुँवृद्धिनहिंहासे ॥ ईश्वरअहैसदास्वाधीना।जानहुजीवहिकर्मअधीना ॥२१
सोप्रभुकोकोइकर्मविचारै। कोइस्वभावपुनिताहिउचारै ॥ कोईकहतकालतेहिकाहीं। कोईकहतदैवसुखमाहीं ॥
कोईकहतताहिपुनिकामा। हैसबरूपसोइश्रीरामा॥२२॥अप्रमेयअव्यक्तशक्तिधर।कोउजानतकर्तव्यनताकर॥२३
हनेयक्षभ्रातातुवनाहीं। कारणईशअहैसबमाहीं॥२४॥ सोसिरजतपालतसंहरता।निजमायाशक्तिनविस्तरता॥२५
दोहा-सोइअभक्तकोमृत्युहै, अमृतभक्तकोनित्त। होहुतासुवालकशरण, ठानिअचंचलचित्त ॥
जाहिसकलसुरपतिवलिदेही। ताकेवशमहँहैसबदेही ॥ जैसेनाथेवृपभघनेरे। रहहिंसदावशपालककेरे ॥ २७ ॥
रहेपंचवर्पहितुमजवहीं। वैनविमातुदुसहसुनितवहीं ॥ तज्योभवनवनगमनकियोतें । दुसहतपस्याठानिलियोतें।
लहिप्रत्यक्षदर्शनयदुराई। त्रिभुवनशिरदुर्लभपदपाई ॥ भयोचक्रवर्तीमहिपालक। हेउत्तानपादकेवालक ॥ २८
विगतवैरआत्माकोकरिकै। तेहिमहँहरिहिदेखुचितथिरकै ॥प्राकृतगुणजिनमेंनहिंएकू।जोअक्षरहैरूपअनेकू॥२९
दोहा-अंतर्यामीजगतके, जिनमेंकवहुँनभेद। नित्यानंदस्वरूपहै, वर्णहिंचारिहुवेद ॥
सकलशक्तिधरश्रीभगवाना। तिनमेंकरिकैप्रेममहाना॥ छोड़हुअहंकारममकारा। अबनहितजहुधनुपशरधारा३०
हृदविचारकरिलोपहुकोपू। कोपकरतसबमंगललोपू ॥ जैसेओपधिनाशतिरोगू। तिमिविचारकरिकोधहिलोगू ३१
क्रोधीजनतेजनदुखपावैं। क्रोधीहठिचंडालकहावैं॥ भीतिविनाशनचहहियेकी। क्रोधविवशनहिंहोयविवेकी॥३२
शंकरसखाधनदअपमाना। तेंकीन्ह्योवधयक्षननाना ॥ हन्योयक्षउत्तममम भ्राता। यहविचारभलकियोनताता।
कोपविवशचलिअलकानगरी। हन्योयक्षसेनाशिशुसिगरी ॥ ३३ ॥
दोहा-यदपिसमरधनुधरिधनद, तोहिदेसकैनताप। तदपिसुभटवधगुणिमनहि, अवशिदेहिंगेशाप ॥
तातेजवलौंशापतोहि, धनददेहिनहिंआय। तबलौंकहिमंजुलवचन, लहुप्रसन्नकराय ॥
महतपुरुपकोकरतजो, कैसेहुकेअपमान। जरतसपदिसोसकुलशठ, यद्यपिहोयमहान ॥ ३ ॥
असकहिध्रुवसोंमुनिसहित, ध्रुवसोंवंदनपाय। गमनकियोमनुनिजभवन, रमारमणपदध्याय ॥ ५ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ चतुर्थस्कंधे एकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

मैत्रेयउवाच।

दोहा-सुनतपितामहवचनध्रुव, वाणतजनकियवंद। अड़ोअकेलोसमरमहँ, सड़ोरह्योनृपनंद ॥

विगतकोपगुणिध्रुवहिधनेशा।चढ़िशिबिकाआयोतेहिदेशा।।चारणकिन्नरयक्षहुनाना।करहिंचहूँकित
हेरिकुबेरहिध्रुवबलधामा।जोरियुगलकरकियोप्रणामा।।ध्रुवहिधनददियआशिरवादा।बोलेवचनसहितअहलादा।

कुवेरउवाच ।

हमप्रसन्नहैंतोपरराजा । कियोसमरमहँअद्भुतकाजा ॥ पायपितामहकेरनिदेशा । त्यागेहुदारुणद्रोहनरेशा ॥
आपभ्रातकहँ यक्षनमारयो।आपहुनहिंयक्षनसंहारयो ॥ जननमरणकोकारणकाला।यहतुमजानहुसत्यभुवाला॥
दोहा–हमहमारियहकुमतिजो, सोअज्ञानतेहोति । स्वप्नसरिससबहैमृषा, अतिदुखकरतिउदोति ॥ ४
तातेजाहुभवनमहराजा । भजहुभूतभावनयदुराजा ॥५॥ भवनाशनहरिपदअरविंदा । रहीं
गुणमयमायारहितमुरारी । ताहिभजेसबहोतसुखारी ॥ ६ ॥ मांगुमांगुभूपतिवरदाना । होयजोतेरोमनहुलसाना
हौंवरदानदेनकेलायक । सदासमीपकमलानायक ॥ असमैंसुन्योआपनेकाना । ध्रुवसमकृष्णभक्तनहिंआना ॥

मैत्रेयउवाच ।

यहिविधिकहजबवचनधनेशा।।तवबोल्योकरजोरिनरेशा।।हमतोकोउतेमाँगतनाहैं।केवलकृष्णभक्तिउरचाहैं ॥
दोहा–जौनिभक्तितेअतिदुखद, यहअपारसंसार । सहजहिमेंउतरतपुरुप, नेकुनलागतिवार ॥ ८ ॥
सुनिभूपतिकेवचनकुवेरा । कहतभयोलहिमोदघनेरा।।कृष्णभक्तिकेतुमअधिकारी । कृष्णचरणरतिहोयतुम्हारी ।
देध्रुवकहँयहिविधिवरदाना । भोधनेशतहँअंतरधाना।। कियोशंखधुनिधराअधीशा । पायोविजयकृपाजगदीशा ॥
चल्योलौटिनिजनगरनरेशा।छावतकीरतिदेशनदेशा ॥ आयोजवनिजघरध्रुवराजा । तहांसचिवसवसहितसमाजा
गाव्रतवजवावतअनुरागे । लीन्हेअगवानीचलिआगे ॥ ध्रुवहिल्यायमणिमंदिरमाहीं । दियलुटायधनदीननकाहीं ।
दोहा–यहिविधियक्षनजीतिध्रुव, त्रिभुवनमेंयशछाय । आयनगरनिजवसतभो, प्रजजनअनँदबढ़ाय ॥ ९ ।
वाजपेयआदिककरियागा । प्रभुकहँपूज्योयुतअनुरागा ॥ दियोदक्षिणाजोदुजमाँगे । क्षुधितनअन्नवसनजननागे ।
दिव्यक्रियाफलकर्मदेवता । सकलकृष्णहैंविनाभेवता ॥१० ॥ असअंतर्यामीभगवानै । करतभयोध्रुवप्रेममहानै ।
निजउरअस्थितजोगिरिधारो । तिनहीमयजगलियोनिहारी११शीलसिंधुब्रह्मांडविख्याता।दयावंतदीननकोत्राता ।
रक्षकसकलधर्ममर्यादा । ज्ञातासकलशास्त्रश्रुतिवादा ॥ ऐसेध्रुवकहँप्रजासुखारी । मान्योपितासरिसहितकारी १२
दोहा–छत्तिसवर्षहजारनृप, महिमंडलवशकीन । पुण्यभोगकरिक्षयकियो, नहिंपापहिमनकीन ॥ १३ ॥
यहिविधिदियवितायवहुकाला । इंद्रियजितश्रीध्रुवमहिपाला।।नृपकोजवहिंजरठपनआयो।तवनिजजेठोपुत्रबोलायो
राज़तिलकताकोकरिदीन्ह्यो।वहुविधिनीतिसिखापनदीन्ह्यो।।सुततियसुहृदकोपगृहराजू। औरहुसकलविहारसमाजू
जलधिमेखलासकलमेदिनी।जोविज्ञानिनपरमखेदिनी।।सोसवविभवजानिकृतमाया।स्वप्नसरिसगुणिनहिंमनलाया॥
सकलत्यागिबदरीवनजाई।।१५।।१६।।ध्रुवगंगामहँतुरतनहाई।आसनजीतिश्वासपुनिजीती।।बैठेध्रुवकरिहरिपदप्रीती
दोहा–प्रथमथूलवपुकृष्णको, ध्यावतभयोसुजान । पुनिसूक्षमवपुनाथको, धरिसमाधिकियध्यान ॥ १७ ॥
ध्यानहिमहँलखिश्रीहरिरूपा । प्रेममगनमोदितभोभूपा ॥ बहीदृगनआनँदजलधारा । पुलकावलितनुभईअपारा ॥
गईभूलिसबसुधिजगकेरी।।विनहरिऔरपरयोनहिंहेरी ॥१८॥ तहांअनूपमएकविमाना । नभतेउतरततुरतदेखाना ॥
दशहूदिशिप्रकाशभोताका । मनहुँउदितपूरवशशिराका।।१९।।तामेंचढ़ेयुगलहरिदासा। नंदसुनंदनामसहुलासा ॥
चारिवाहुसुंदरतनुश्यामा । अंबुजअरुणनयनछविधामा ॥ शिरकिरीटउरसोहतहारे । भुजअंगदकुंडलश्रुतिधारे ॥
दोहा–पीतवसनयुगयुगगदा, युगयुगवयसकिशोर । आननसदाप्रसन्नजिन, सुरनारिनचितचोर ॥ २० ॥
जवदोउध्रुवकेनिकटसिधारे । हरिपार्षदनृपतिनहिंविचारे।।उठ्योआशुकरिदंडप्रणामा।पूजनकरनलग्योमतिधामा ॥
प्रेमविवशहैकेविपरीती । कोकहिसकेभूपकीप्रीती।।जयहरिजयहरिजयहरिभापत । खड़ोरह्योध्रुवसुखरसचाखत॥
।हरिपार्षदचरणनाचितलायेर२१ऐसोध्रुवहिनिरखिहरिदासा ।कियेप्रीतियुतवचनप्रकासा २२

सुनंदनंदावूचतुः।

हाराजध्रुवधर्मअधारे ॥ सुनियेसुंदरवचनहमारे ॥ पाँचवर्षकोजिनकोध्यायो । जासुप्रसादअचलपदपायो॥२३॥

दोहा-श्रीपतिश्रीत्रिभुवनधनी, हैंतिनकेहमदास । तुमहिंलेवावनहेतुहम, अयेतुम्हरेपास ॥ २४ ॥

निजपुरकोप्रभुतुमहिंबुलायो । हमकोयाहीहेतुपठायो ॥ दुर्लभपरमविष्णुपदजोई । मुक्तनकोनिवससतिसोई ॥
निरखहिंसप्तऋषीनितजाको । पैकवहूँनहिंपावहिंताको॥सोध्रुवपदमहँसहितहुलासा । करिहौध्रुवतुमसदानिवासा ॥
सूर्यशशीतारागणजेते।करिहेंतुमहिंप्रदक्षिणतेते ॥ २५ ॥ पितापितामहजितेतुम्हारे । कवहुँनतेतेहिपदहिसिधारे॥
तीनविष्णुपदमहँनृपनंदन ।चलहुअचलबैठहुजगवंदन॥ २६ ॥ यहविमानश्रीकंतपठाये । तुम्हरेचढनहेतुलैआये ॥

दोहा-चढिविमानध्रुवधरणिधनि,संयुतयहीशरीर । चलहुकृष्णपुरकोचपल, धराधीशमतिधीर ॥ २७ ॥

मैत्रेयउवाच।

नंदसुनंदनकीयहवानी । प्रेमअमीरसमेंलपटानी ॥ सुनिकेध्रुवअतिआनँदपायो । धन्यधन्यनिजजन्मगनायो ॥
करिमज्जनसुरधुनिमहँभूपा । पहिरच्योभूषणवसनअनूपा॥वदरीवनवासिनमुनिकाहीं । वंद्योशिरभरिसुखदतहांहीं ॥
लैतिनसोंवहुआशिर्वादा।गोविमानढिगयुतअहलादा।२८।करिपूजनप्रदक्षिणादीन्ह्यो।हरिदासनकहँवंदनकीन्ह्यो॥
सुवर्णवर्णभयोध्रुवकेरो।छायोदिशनप्रकाशघनेरो॥२९॥हरिदासनकोकरगहिभूप।चढ्योविमानहिंचपलअनूपा ३०

दोहा-तहांशङ्खअरुदुंदुभी, वाजेविपुलमृदंग । गावनलागींअप्सरा, गंधर्वनकेसंग ॥

सुरहर्षितवर्षहिंवहुफूला।गावहिंध्रुवकोसुयशअतूला ॥३१॥ गहिविकुंठमारगद्युतिमाना।चल्योपवनकेसंगविमाना ॥
कछुकदुरचलिनृपविख्याता।सुधिकीन्ह्योसुनीतिनिजमाता॥मैंजननीतजिजोअवजैहौं ।तौअतिअयशभुवनमहँपैहौं
जोममसंगगईनहिंमाई । तौकोतेहिहरिपुरपहुँचाई ॥ ३२ ॥ ध्रुवविचारहरिपार्षदजानी । वोलेविहँसिमंदयहवानी ॥
आगूतोदेखहुमहिपाला । जातयानजोतेजविशाला ॥ तामेंजननीचढीतिहारी । हरिपुरकोगवनतिछविभारी ॥

दोहा-जहांहोतहरिभक्तसो, कुलपवित्रह्वैजात । जाकेतुमसेसुतभये, तासुकौनपुनिवात ॥

तवध्रुवदेख्योनयनउठाई । आगूचलीजातिनिजमाई ॥ वर्षहिंसुमनशीशसुरताके । फहरहिंताकेपुण्यपताके ॥
तवतजिजननीशोचमहाना।कियोगवनहरिभवनसुजाना॥रविशशिमंडलऔरनक्षत्रा।लखतचल्योसुरसदनविचित्रा॥
जेहिजेहिलोकनगमनतराजा।तहँतहँकेसुरसहितसमाजा॥आगूचलिपूजनतेहिकरहीं।वारवारध्रुवपदशिरधरहीं३४ ॥
इंद्रलोकजवगयोनरेशा । चलिआगूतेहिलियोसुरेशा ॥ कह्योवसहुध्रुवतुमयहिधामा । मैंसेवककरिहौंसवकामा ॥

दोहा-ध्रुवसुनिवासववचनगुनि,त्रिभुवनतुच्छविभूति । दियोवढ़ायविमानको, अद्भुतजेहिकरतूति ॥

पहुँच्योब्रह्मलोकमहँजवहीं।विधिआगूचलिलीन्ह्योतवहीं॥ब्रह्मलोकमहँवसनकहतभो।पैध्रुवक्षणभरिनहिंनरहतभो॥
पुनिसप्तर्षिनमंडलडांक्यो ।पुनिब्रह्मांडनकोसुरछाक्यो॥पहुँच्योध्रुवध्रुवहरिपुरमाहीं ३५जहांकुमतिकवहूँनाहिंजाहीं
करहिंजेहरिपदप्रेमहिपाना।तेविशेपितहँकरहिंपयाना॥निजहिंप्रकाशप्रकाशितपूरो।सवलोकनमेंजोअतिरूरो॥३६॥
समदरशीशुचिशांतउदारा । जीवनपरजिनदयाअपारा ॥ तिनकेवनेनिकेतदअगारे । प्राणहुतेयदुपतिकहँप्यारे ॥

दोहा-तहँपहुँच्योजवभूपध्रुव, तवप्रभुनिकटवोलाय । दियोनाहिंअनिअचलपद, निजमहिमादरशाय॥ ३७ ॥

ध्रुवत्रिभुवनचूड़ामणिभयऊ।अमलसुयशत्रिभुवनमहँछयऊ॥गहेपुच्छचक्रहिशिशुमारा।नितमतिअचलसुनोकिमारा
सूर्य्यचंद्रनक्षत्रहुतारा । ताहिप्रदक्षिणदेतअपारा ॥ भ्रमनादिकनिगिरिध्रुवहिअधारा । अवटौंनिरसिपरतध्रुवतारा॥
उत्तरदिशिनभसोहतसोई । अरुउत्तानपादनृपजोई ॥ सुनमभावनेदेवन्दकरूपा । देनबदलिनसुनादिअनूपा ॥
ताकेनिरखिपरतसुगतारे । पहज्योतिषविदकहहिंविचारे॥नैपआदिब्रादन्नहगर्शी।ध्रुवउत्तानेदेहिप्रकाशी॥३९॥

दोहा-महिमाध्रुवकोनिरखिकै, आपप्रचेननपान । वीनानादिनारदमुनि, नारदपुनअनुगान ॥ ३० ॥

नारदउवाच ।

कवित्त–पतिव्रतारानीजोउत्तानपादकीसुनीति, ताकोध्रुवधरमधुरंधरधराभयो ।
खायफलफूलत्योंहीन्हाययमुनामेंमन, लायकैसुकुंदतपकठिनतराठयो ॥
तपकठिनाईअरुहरिसेवकाईताकी, देखिवेदवादिनमुनीशनगरागयो ।
कहैरघुराजदूजोभूपतिसमानकौन, जाकीवाणधारतेंधनेशकंधरानयो ॥ ४१ ॥
पाँचवर्षहीमेंजौनवचनविमातावाण, उरमेंदुसालामानिवनकोचलोगयो ।
मेरोलैनिदेशमधुवनमेंप्रवेशकरि, पांचमासलौंकलेशसहतभलोभयो ॥
भनैरघुराजभयोह्वैहैभूपहैनकोई, ध्रुवकेसमानयक्षवदलोभलेदयो ।
देवनअदेवनतेदेवजोनजीत्योजात, ताकोसेवाजोरजीतिपदअचलोलयो ॥ ४२ ॥
कोटिनजनमवीतेंकोटिनवरपवीतें, क्षत्रीकोटिकनहुँनऐसोपदपावैंगे ।
पँचमासहीमेंउभैलोककोसुधारिलीन्ह्यो, जाकोयशकोटिनकलपकविगावैंगे ॥
भनैरघुराजधन्यधरणीअधीशध्रुव, जाकोधरोधर्मधराधरमचिलावैंगे ।
धीरधुरधारीध्रुवभूपैध्रुवधामदीन्हे, ध्रुवपददाताध्रुवकेसवकहावैंगे ॥ ४३ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

दोहा–जोतुमपूछ्योमोहिंविदुर, ध्रुवधरेशआख्यान । सोमैंतुमसोंकहिदियो, विस्तरसहितवखान ॥
ध्रुवचरित्रसंतनसुखदाई ॥४४॥धनयशआयुपदेतवड़ाई ॥ दायकसकलपुण्यकल्याना।सुनतअचलथलदेतमहाना॥
कोटिनपापनशावनवारो । मनप्रसन्नतावर्द्धनहारो ॥ ४५ ॥ प्रीतिसहितजोजनवहुवारा । ध्रुवचरित्रकोसुनेउदारा ॥
लहैभक्तिसोहठिहरिकेरी । जोनाशतिकलेशकीढेरी ॥ ४६ ॥ जोचाहैआपनीवड़ाई । ताकोअवशिवड़प्पनदाई ॥
चहैजोशीलादिकगुणनाना । लहैसकलगुणसुनतहिकाना ॥

दोहा–सुंदरताअरुसुमतिता, औरहुतेजप्रताप । जोचाहैतोहठिसुनै, ध्रुवकोचरितअमाप ॥ ४७ ॥
द्विजसमाजमेंसांझसवेरे । ह्वैपवित्रध्रुवचरितघनेरे ॥ कहैंसुनैजेपुरुषसदाहीं । तिनअघओघअवशिनशिजाहीं॥४८॥
कुहूद्वादशीपूरणमासी । जेहिदिनजाहिअर्ककोउरासी ॥ अथवाव्यतीपातजवआवै । अथवाश्रवणनखतशशिपावै ॥
अथवातिथिक्षयअरुरवितारा ॥४९ ॥ इनमहँजोध्रुवचरितउदारा॥श्रद्धावंतनजननसुनावै।अथवाअपनेमुखतेगावै ॥
सोमनकोवांछितफलपावै । जोअकामतेहरिपुरजावै॥५०॥देतजोअज्ञानिनयहज्ञाना।सतपंथिनसातिसुधासमाना ॥
सोइकहवावतदीनदयाला । ताकोसनमानतदिगपाला ॥ ५१ ॥

दोहा–ध्रुवचरित्रमाहात्म्यमें, दीन्हौंविदुरसुनाइ । सोगृहजननीसंलतजि,भज्योहरिहितवनजाइ ॥ ५२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेद्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

सूतउवाच ।

दोहा–मित्रासुतमुखतेंसुन्यो, ध्रुवकोहरिपुरगौन । हरिमेंप्रीतिबढ़ायपुनि, विदुरकह्योमतिभौन ॥ १ ॥

विदुरउवाच ।

कहुनरकोनीदिकसलनाना । कौनवंशमें हरिजनधाना ॥ कहिमुनिकौन्हे जोऋतुयागा । वर्नहुमोपनगोपरुभागा ॥ २ ॥
महाभागवतसन्तसदीशा । सोहरतागिअदिनजनदीशा ॥ दंवगात्रि भयोमुनिसंघा । नामिदहांपूजनसंघा ॥ ३ ॥

शीलजनजेसबकोई। तिनतेजोपूजितप्रभुहोई॥ सोहरिकीप्रस्तुतिमुखगाई। महाभागनारदमुनिराई॥ ४॥
ह्योप्रचेतनसोमखमाहीं।सोसबकथाकहोम्वहिंपाहीं॥सुनिकेविदुरवचनसुखमानी।कहनलगेमित्रासुतज्ञानी॥५॥

मैत्रेयउवाच।

दोहा-ध्रुवकोसुतउत्कलभयो, पितुवनगमननिहारि। नृपआसनवैठ्योनहीं, जगतअनित्यविचारि॥
तहुद्वीपधरणिप्रभुताई।तज्योगरलसमसोनृपराई॥६॥जन्महितेसज्जनसंगकीन्ह्यो।सबकोयकसमानलखिलीन्ह्यो
तमलोकलोकमहँआतम।निरख्योसकलहृदैपरमातम॥७॥करतविचारब्रह्मनिरवाना।भूल्योसकलशरीरहिभाना।
आनंदमगनसबकाला। जरेपापयोगानलज्वाला॥ ब्रह्मछोडिदेख्योनहिंदूजो। कृष्णछोडिदूजोनहिंपूजो॥ ९॥
तैपुरतेकियोपयाना। छिपीभस्ममनुअनलमहाना॥ तिनहिंपंथपुरबालकदेखे।बधिरअंधजडमूकहिलेखे॥१०॥
दोहा-सचिवऔरकुलवृद्धगुणि, उत्कलकोउनमत्त। भ्रमिसुतवत्सरकोकियो, भूपतिजानिसुवृत्त॥ ११॥
रवीथीजेठीतेहिरानी। ताकेभेषटसुतबलखानी॥ पुष्पारनअरुतिग्मकेतुवर। इषऊर्जवसुजयअतिधनुधर॥१२॥
प्पारनकीतहँद्वयरानी। दोषाप्रभानामछविखानी॥ प्रातमध्यदिनसायंकाला। प्रभापुत्रयेतीनिविशाला॥ १३॥
पनिशीथहुऔरप्रदोषा। जन्योपुत्रयेतीनिहुदोषा॥ पुहकरनीऊपाकीनारी। सर्वतेजसुतजन्योसुखारी॥ १४॥
द्वितियअकूतिनारिजोताके। जन्योचक्षुमनुपरमप्रभाके॥ सोमनुनारिनड्वलानाम। द्वादशसुतजनमेबलधामा१५॥
दोहा-सबव्रतऋतुव्रतकुत्सपुरु, त्रितसिउल्मुकद्युम्न। जानहुअग्निष्टोमहू, अतिरात्रहुप्रद्युम्न॥ १६॥
ल्मुककीपुहकरनीनारी। ताकेषटसुतभेबलभारी॥ जेठोअंगसुमनअरुख्याती।क्रतुअंगिरागयहुविख्याती॥१७॥
ामसुनीथअंगनृपनारी। वेनहिंजन्योघोरअघकारी॥ जासुअधर्मस्वभावविलोकी। अंगराजऋपिह्वैअतिशोकी॥
रतेकढिकाननमहँजाई। करितपदियोशरीरविहाई॥१८॥मुनिजननिरखिवेनकरपापा।दीन्ह्योताहिवज्रसमशापा॥
रव्योवेननृपजबदुखदाई। तबमहिरह्योनकोउमहिराई॥ कियेचोरतबअतिउत्पाता। भयेप्रजातहँदुखितअघाता॥
दोहा-दक्षिणकरतबवेनको, मंथनकरिमुनिराय। आदिराजपृथुप्रगटकिय, भयोअंशयदुराय॥ १९॥ २०॥
सिसुनिमित्रासुतवैना।बोल्योविदुरवचनभरिचैना(विदुरउ०)अंगभूपब्रह्मण्यमहाना।शीलसिंधुशुचिसाधुसुजाना॥
ासुपुत्रभोकिमिअपकारी।गयोविपिननृपजाहिनिहारी२१ कोनवेनकोलखिबड़पापा।दईमुनीशनघोरशरापा॥२२॥
जापालनृपपापिहुहोई। तासुअनादरकरैनकोई॥ आठहुलोकपालकरअंसे। होतभूपयहवेदप्रशंसे॥ २३॥
कहौवेनकेचरितमुनीशा। हमतुम्हरेपदनावहिंशीशा॥ वर्त्तमानभावीअरुभूता। तुमजानहुमित्राकेपूता॥ २४॥
दोहा-विदुरवचनसुनिकेतहां, मित्रासुतहरषान। वेनचरितमिसिपृथुचरित, लागेकरनबखान॥

मैत्रेयउवाच।

ाजऋपीशअंगमहिपाला। अश्वमेधकियपज्ञविशाला॥ भागलेनदेवनानआये। यदपिविदपद्विप्रबोलाये॥२५॥
तबऋत्विजकहनृपयजमाने। तातहोतआश्चर्यमहाने॥ सविधिहोमहविदमकरिदेहीं।निजनिजभागदेवनहिंलेहीं२६
श्रद्धासहितवेदकेमंत्रा। पढ़ैसवैहमविप्रसुतंत्रा॥ भयेनमंत्रनजेनहीना। देवअनादरकेनहुँनकीना॥ २७॥
देवकर्मसाक्षीसवजेवैं।कारनकौनभागनहिंलेवैं २८मैत्रेयउ०विप्रवचनसुनिनृपयजमाना।कह्योद्विजनसोंदुखितमहाना
दोहा-भागलेनहितदेवनहिं, आयकारणकौन। सोहमसोंद्विजकहहुअब, भयोव्यतिक्रमभौन॥ ३०॥
सुनिनृपवचनसभासदबोले,अपनेउरकोआशयखोले।नहिंन्याउनृपमहापापहिजन्महिमाहीं।पूर्वजन्मकोकछुअघनाहीं
पूर्वजन्मकोकछुअपचारा। नातेलहेनआपकुमारा॥३१॥तोहिमायनहिंसुतहोताा। नामपुत्रहितनराहाा॥ ३२॥
पुत्रपायकरिहोतजपयागा। तबसबदेवलेहिंगेभागा॥ ३३॥तौनकाननाकरिहरिपूजे।तोकामनातासुदरिपूजे॥ ३४॥
पुत्रइष्टितबकियोनरेशा॥३५॥ दियोअग्निमहँभागरमेशा॥पायनभरिनवकंचनभागे।कन्योपुरुषइकअग्निमझारी॥
दोहा-कंचनमालालसतउर, अंबरअमलअनूप। निजकरमोपायसलदियो- नृपनभदअनोदिनूप॥३६॥

जनपायसनृपलीन्ह्यो।सूँघिसुनीथारानिहिदीन्ह्यो३७पायसखायपुत्रप्रदरानी।धरचोगर्भअतिशयसुखमानी
यसोजन्योकुमारा । महाअधर्मीपापअगारा ॥ रहीसुनीथामृत्युकुमारी । तातेभयोपुत्रअघकारी
तेमातामहरीती । गहीसुवनमानीनहिंभीती ॥ भेउतपातजनमकेकाला । नामवेनभोरूपकराला
इतेधावनलाग्यो । तवहींतेपापहिअनुराग्यो ॥ ३९ ॥ धारिधनुपकरवनमहँजाई । मारेदीनमृगनसमुदाई
वआगेपरिजावै । ताहिवेननहिंकवहुँवचावै ॥
दोहा–पशुपक्षीजलजीववहु, औरहुकीटपतंग । विनावधेछांडैनहीं, सहसनकोइकसंग ॥ ४० ॥
कारभौनजवआवै । तवपुरजनवालकनवुलावै ॥ पकरिपकरिवालनतहँवाँधी । राखैअंधकोठरीधाँधी
नकोमुठिकनसोंमारी । लेतप्राणदैदैवहुगारी ॥ वेनहिनिरखितप्रजाअपारा । भागतहैंकरिहाहाकारा
रमेंआगिलगावै । केहुगहिगहिरेकूपगिरावै ॥ केहुकीवरवशपकरतनारी । केहुकोसकुलडारतोमारी
रगहैवेनासिधारै । तहाँपरतपुरहाहाकारै ॥ प्रजानिरखिअसभापतवेना । भागहुभागहुआवतवेना ॥ ४१
दोहा–ऐसेखलनिजपुत्रलखि, अंगसमीपवोलाय । नृपकुलउचितहिधर्मवहु, वेनहिकह्योवुझाय ॥ १ ॥
एकौपितुकीवानी । वेनअधमअतिशयअभिमानी ॥ तवपितुलग्योनिकारनताही।पैनहिंनिकरचोवेनकुराही
दुखितभयोमहिपाला । उरमहँकियोविचारविशाला॥ जिनकेसुतनहिंतेइसुखारी।तिनहींपैप्रसन्नगिरिधारी।
हेतुकैश्रमभारी । सोसुतलहिपुनिहोतदुखारी ॥ पापीपुत्रभयोजोअपने । तौसुखपावतकवहुँनसपने ॥४३
दोहा–पापीसुततेलहतहै, पुरुपअमितदुखभोग । पापीसुतकेयोगते, होतरोगअरुशोग ॥
रिपुदूजोजगनाहीं । सुत[illegible]॥कुत्सितसुतवशमोदनपावै४४
मातिसुततेसुखजानै । [illegible]
सुतमोहिंप्रियलागै । [illegible]
चारकरिकेतेहिकाला । लह्योनरैननींदमहिपाला ॥ शक्रसरिसतजिविभवमहाना।अधरात्रिउठिभूपसुजान। ।
दोहा–रहीसुनीथासोवती, पुरजनसोवतसर्व । गयोभूपकढ़िकानने, साधनमुक्तिअखर्व ॥ ४७ ॥
रपुरजनसवजागे । गयेभूपदर्शनसुखपागे ॥ निरखेतहँनरेशकोनाहीं । अतिशयदुःखितभेमनमाहीं ॥
पुरोहितसुहृददुखारे । भूपहिहेरनसकलसिधारे ॥ गृहगृहवनवनपुरजनहेरे । अंगभूपकहँकतहुनहेरे ॥
धरणिखोजितिनडारे । अपनोनाथकहूँननिहारे॥जिमिविपयीजनश्रीहरिकाहीं।वहुविधिखोजेहुपावतनाहीं४८
तिकहँकतहुँनपाये । तवशोकितसिगरेफिरिआये ॥ नगरआयकैढारतआँसू । गयेऋपिनढिगलेतउसाँसू ॥
दोहा–वंदनकरिकरजोरिकै, कहैंऋपिनसोंवैन । अंगभूपकहुँकढ़िगयो, खोजेहुहमेंमिलैन ॥ ४९ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौच०स्कं०त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–जगतक्षेमचिंतकसकल, भृगुआदिकमुनिराज । विनानाथधरणीनिरखि, लगेविचारनकाज ॥ १ ॥
रस्परपशुसमलरहीं । नि[illegible]भक्ताँ।
चारिकरिसवमुनिराई । [illegible]
तनमहँतेहिवैठाई । शुभअभिषेककियेमुनिराई ॥ २ ॥ फिरिधरणिमहँवेनदोहाई।वरणिनजायतासुप्रभुताई ॥
ग्रशासनमुनिकानन।चोरपरायलुकेदुतकानन॥जैसेपायभुजंगमत्रासा । भागहिआखुछोड़िनिजवासा ॥ ३ ॥
दोहा–वासवसमऋद्धिकेविभव, राजासनमहँवैठि । कुलकीमर्यादातजी, कोपासिधुमहँपैठि ॥

वृद्धसचिवसुहृदहुसरदारा ।जिनहिंअंगनृपदियअधिकारा ॥ तिनहिंबोलिकैसभामँझारी । दैदैगारीदियोनिकारी ।
जेजनसदासराहतरहहीं । अनुचितउचितकबहुँनाहिंकहहीं ॥ वेनभूपकीरुखकहँराखे । पापकरनकोवेनहिभाखे।
तेकुमतिनकीजोरिसमाजा ।राजकरनलाग्योमहराजा ॥ अपनेमनदूजोनहिंमान्यो । कबहुँननीतिरीतिउरआन्यो ।
सदाशराबपानकरिराजा । गणिकनकीबहुजोरिसमाजा ॥ परोरहैअतिशयसुखभीनो । कोकशास्त्रमेंपरमप्रवीनो ।

दोहा–महानिरंकुशअघनिपुण,जिमिमतंगमतवार । वेनअनूपमअवनिमें, भयोअधर्मअधार ॥ ४ ॥

कहुँकहुँरथचढ़िसैनसजाई । चलतदेशदेखननृपराई ॥ सैनभारकंपतिहैधरणी । चढ़ेमतंगहिजिमिलघुतरणी ॥ ५ ।
बहुगजमहँदुंदुभीधराई । दियोअवनियहिविधिगोहराई ॥ जोकोउयज्ञकरिहिअबभाई । ताकोसकुलनाशह्वैजाई ।
जोकोउद्विजनदेइगोदाना। तासुशीशकटिहैकिरपाना ॥ जोकोउहोमअग्निमहँकरिहै । सोशठसकुलकूपमहँपरिहै ।
जोकोउकरिहैपरउपकारा । तासुअवशिहोइहिसंहारा ॥ तीरथगमनकरिहिजोकोऊ । काटिजायँगेतेहिपददोऊ ।

दोहा–जोकोउलैहैनामहरि, जरिजैहैतेहिजीह । जोकोउप्रतिमापूजिहै, सोपैहैदुखदीह ॥ ।

जोकोउतपकरिहैमनलाई । ताहिहोयगीवेगिसजाई ॥ जोकोउव्रतकरिहैचितचाई । सोनासिकाविगतह्वैजाई ।
जोकरिहैसुरभीसेवकाई । ताकेकरकटिजैहैंभाई ॥ माधवमारगमापनहेहैं । सोनरगृहमेंरहननपैहैं ।
जोमातापितुगुरुकहँमानी । अवशिसोवधआपनजनजानी ॥ जौनखनैहैकूपतड़ागा। सोलुटिजैहैअवशिअभागा ।
जोशरणागतजनकोपाली । ताकीखींचिजायगीखाली ॥ जोकोउपितरनकरीसराधा । सोपैहैमतेहठिबाधा ।

दोहा–हिंसाजोकरिहैनहीं, जोनगहीपरदार । जोवृद्धनकोपूजिहै, होईतासुसँहार ॥

मोकोजोपरमेश्वरमानी । मेरेहीहिततपजपठानी ॥ मोकोयज्ञभागजोदेहैं । मेरोनामरैनदिनलैहैं ॥
मेरेहितकरिहैंव्रतभारी ।मेरोपदजलशिरमहँधारी ॥ ताकोसबविधिमैंसुखदैहौं । अपनोभक्तताहिकरिलैहौं ।
जोविश्वासघातनहिंकरिहै । पीलपायसोंसोचपिमरिहै ॥ जोवैरागिनीब्राह्मणकाहीं । नहिहनिहैतेहिजीवननाहीं ।
जोधनदेगणिकानहिराखी । जोनहिंमदमांसहिमुखचाखी॥जोनहिव्याधहिकोसनमानी। जानहुतासुमीचनियरानी॥

दोहा–मोकोतजिजोदूसरो, मानहिगोजगईश । ताकोकरिप्रणमेंकहौं, अवशिकाटिहौंशीश ॥

लैहैजोनधर्ममुखनामा । ताकोलुटिजैहैधनधामा ॥ जोअधर्मकरिहैमनलाई । ताकोसबविधितेबनिजाई ॥
जोकरिहैबहुश्रवणपुराना । शीशपियायजायगोकाना ॥ जोकोउकुमतिवेदकोपढ़िहैं । तिनकीभटरसनागहिकढ़िहैं॥
जोखेलिहैंजुवाजननाहीं । सोफांसीबाँधिमरिहिसदाहीं ॥ जौनदेवमंदिरबनवाई । ताकोगृहयुतजायगिराई ॥
जोजनमिथ्याकबहुनबोली । सोजनझोंकिजायगोहोली ॥ जोजनजीवनदयापसारी । सोजनजैहैसकुलसँहारी ॥

दोहा–जोमेरोशासनप्रबल, मानहिजननहिंकोय । नरकयातनासबलही, यहीलोकमहँसोय ॥ ६ ॥

ऐसोवेनभूपकोशासन ।धराधर्मधुरध्रुवेविनासन ॥ सुनिकैप्रजासकलभयपागे । महाअधर्मकरनसबलागे ॥
रह्योनधरणीमहँकहुँधर्मा । छायोजगमहँअतिहिअधर्मा ॥ तहँअतिशोकितभेमुनिराई । देखिवेनकोपापमहाई ॥
रहेकरतजेछिपिछिपियागे।तेमिलिकहेवचनदुखपागे॥ ७॥हायउभयविधिगयोनशाई । कहाकहंकछुकहिनाहिंजाई ॥
बिननृपचोरप्रजनदुखदेहीं ।भयेदुखितअबनृपह्वकियेहीं ॥ जैसेदारुउभयदिशिजरई।मध्यपिपीलककहाँकरई॥८॥

दोहा–अंगभूपजबबनगये, शासकरह्योनकोय । तबवेनहिनरपतिकियो, भयोअधर्मीसोय॥

कहोहोयकेहिविधिकल्याना।छायोजगतअधर्ममहाना॥९॥जिमिभुजंगकहँपयकरपाना । बाढ़तगरलकोंकिमाना॥
जेअहिकहँपालनगृहकरहीं।तिनहूँकोडसिप्राणदिहरहीं॥ महाक्रूरयहअघीअपारा । भयोसुनीथागर्भ[illegible] ॥
प्रजापालहितहमनृपकीन्हो । सोईलोटिप्रजनदुखदीन्हो ॥ पैअबहमकहँउचितननाई । समुद्र[illegible]
तातेलगनहमकहँपापा । मिटेवेनकृतप्रजासंतापा ॥ ११ ॥ अबहमारोभूपबनायो । सोअधर्म[illegible] ॥

दोहा–जोमानीनहिंकेसहू, यहउपदेशहमार ॥ १२ ॥ तौताकोनिजतेजते, जारि[illegible] ॥

असविचारिकैसबमुनिपावन । [illegible] ॥८॥

मुनयऊचुः।

नृपवरसुनियेवचनहमारे। जाकेहितहमइतैसिधारे॥ आयुपवलकीरतिश्रीदाता। जेहिसुनिहोतनृपतिविख्याता
पुरुपजोतनमनवचनहुतेरे। करैधर्मआचरणघनेरे॥ सोविशोकलोकनकहँपावै। जगमेंसुयशअनूपमछावै
जोअकामह्वैकरैसोधर्मा। लहतमुक्तिसोपुरुपसुकर्मा॥१५॥रहैधर्मजेहिभांतितुम्हारा। सोउपायकरुनृपतिउदार

दोहा—धर्मनाशकेहोतहीविभौनाशह्वैजात। धर्मप्रकासतहीनृपतिविभौप्रकाशविख्यात॥ १६॥

दुष्टसचिवअरुचोरनतेरे। जोरक्षतनृपप्रजनघनेरे॥ लेतयथोचितभागसदाही। ताकोसुखदोउलोकनमाही॥१७
जासुराजपुरमहँभगवाना। पूजितहोहियज्ञतेनाना॥ चारिहुवरनकरैंनिजधर्मा। कहुप्रचारनहिंहोयअधर्मा॥१८
अरुसधर्मनिजशासनधारी। तापरहोहिप्रसन्नमुरारी॥ १९॥ भेप्रसन्नगिरिधरजेहिपाहीं। ताकोदुरलभहैकछुनाहीं
लोकपालसवताहिडराई। अरपहिंवलिसादरशिरनाई॥ सकललोककेश्रीहरिस्वामी। सकललोककेअंतरयामी

दोहा—सकलयज्ञमयवेदमय, सवतपमयभगवान। तिनकोपूजहिसवप्रजा, संयुतसकलविधान॥

तिनपरजनकोदुखनहिंदेहू। तिनपैभूपतिकरहुसनेहू॥ २१॥ कियेयज्ञसुरहोतसुखारी। जेहैसकलसत्यगिरिधारी
यागभागअपनोसुरपाई। होहिसकलमनवांछितदाई॥ तातेयज्ञभूपकरवावहु। विविधभांतिकेधर्मचलावहु
करौनतुमसवधर्मविनाशा। नतह्वैहैतुम्हारहठिनाशा॥ प्रथमहिमुनिजुवसभासिधारे। तिनकीओरनवेननिहारे
वंदनपूजनअरुसन्तकारा। तहँकिमिलहहिमुनीशउदारा॥ पैताकरहितगुनिमुनिराई। दियेधर्मउपदेशसुनाई
सुनिमुनिवचनवेनमनभाप्यो। करिकैअरुणनैनअसभाप्यो॥

वेनउवाच।

दोहा—रेमूरुखमुनिजनसवै, आयेइतकेहिहेत। अपनेकोधरमीगुनौ, अहौअधर्मनिकेत॥

हमईश्वरहैंसत्यतिहारे। सकलवृत्तिकेचलशनहारे॥ मोहिसमप्रभुतजिकेमतिमंदा। ध्यावहुदूसरईशगोविंदा।
जिमिपरकीयातजिकुलभीती। पतितजिकरेयारसोंप्रीती। तैसेतुमहौमुनिजनसिगरे। साँचेहुधर्मतुम्हारेविगरे॥२३।
प्रगटईशमोहितजिरेमूढा। धरहुध्यानकोनकरगूढा॥ औरईशजेनृपतजिध्यावै। तेनिजकरदोउलोकनशावै॥२४।
कोनकृष्णदईईशतुम्हारा। जाकीकीजतभक्तिअपारा॥ भूपसनेहछोडावनहारी। कुलहिसमूलजरावनवारी॥
कियोजोतुमहरिपदमहँप्रीती। सोसतिकुलटानारिनरीती॥ २५॥

दोहा—विष्णुविरञ्चिमहेशयम, धनदवायुघनभान। क्षितिपावकवरुणहुशशी, औरहुदेवमहान॥ २६॥

समरथशापअनुमहमाहीं। नृपकेतनयेवसहिंसदाहीं॥ सवंदेवमयनृपकहँजानो॥२७॥तातेनिजस्वामीमोहिमानो॥
तातेगर्वछोड़िकरियागा। देहुसकलमुनिमोकहँभागा॥ जपतपकरहुसकलममहेतू। ममप्रसन्नहितवांधहुनवू॥
मोहिप्रसन्नविनभयेमुनीशा॥जपतपसकलविफलतुवदीसा॥उठिप्रभातमोहिनावहुमाथा॥मोतेअधिकनदूसरनाथा २८

मैत्रेयउवाच।

यदिविधिकुमतिकुपंथीपापी॥मंगलहीनसंतपरतापी॥मुनिउपदेशनरेशनमान्यो॥कह्योकठोरवचनरिसिसान्यो॥२९॥

दोहा—गर्वसंन नृप वेनते, पाय अनादर घोर। निज उपदेश विनाश लखि, कीन्हि कोप कठोर॥ ३०॥

कुपितवेनपैमुनिनपधारी। एकवारअसगिराउचारी॥ मारहुमारहुभूपतिकाहीं। यहपापीदारुणजगमाहीं॥
निपटगलतपदआशिजराई। यहाअधर्मकुपंथचलाई॥ ३१॥ यहनहिंहैनृपआसनयोगू। यातेदुसपावतसवलोगू॥
यहनिंदनहरिगोविंदनकीन्ह्यो॥धरापधर्मपंथनहिंचीन्ह्यो॥३२॥जासुकृपालहिविभवलहाई॥पायोयहहरिपदनाहिंभुलाई॥
वेनछोडिअनकोनअरहाजो॥निनमुनहरिगोविंदनकहई३३यहिविधिकुपितकरिपापअपार॥नवेनाहिंअगणवचनउचार॥

दोहा—मुनिकहि वेन कर्पाविक, वेन दर्कोपि महान। मुनि मारन कोउद्यमभा, गुन्नहि कारि कृपान॥

सुनि भत कहि सुदाग। नरवेनिनछापोनिहिंदाग॥ हरिनिंदनमेंग्रसोपृन हममानुनिमिलिमर्योतिनपुहाल॥

वेनहिनिजहुंकारहिमारी । निजआश्रमसुनिगयेसिधारी॥मातुसुनीथातहँपुनिआई॥सुतहिमृतकलखिअतिदुखपाई॥
मंत्रनकेबलसोधरधीरा । धरिराख्योनिजपुत्रशरीरा ॥ तबधरणीमहँबिनमहिपाला । विदुरब्यतीतभयोकछुकाला ॥
तेहिधरणीमहँशठकरुचोरा।दियोप्रजनकहँअतिदुखघोरा॥एकसमैसरस्वातितटमाहीं॥मुनिमज्जनकरिसुखिततहाँहीं॥
दोहा-कियोहोमबैठेसुचित, वरणतकृष्णचरित्र । तहँनिरखेउतपातअति, नाशकप्रजनविचित्र ॥
सकललोकभयवोकविलोके।अरुचोरनतेप्रजनसशोके ॥ विनानाथकीधरणिविचारी । आपुसमेंअसगिराउचारी ॥
देखहुचोरचपलचहुँओरा॥बाढ़तभयेअतिहिवरजोरा॥३७॥धावतउडतिधूरिधरणीमें॥लोगदुखितअतिनिजकरणीमें॥
रह्योनकोउअबधरणिअधीशा । पालैप्रजनकाटिशठशीशा ॥ करहिपरस्परप्रजाविरोधू।तिनकोअबकोकरैप्रबोधू ॥
महाउपद्रवजगमहँमाच्यो । काहूकोकछुकहूँनबाच्यो॥चोरहुआपुसमहँसबलरहीं॥यकएकनधनहितसंहरहीं ॥ ३९॥
दोहा-हीन तेज यह जगतमें, चोरमयीभैराजि । कहा कहैं कैसो करैं, कहां जाहिं अब भाजि ॥
असकहिमुनिसबभयेदुखारी । यदपिसमर्थरहैतपधारी॥रक्षणप्रजनकरनकेलायक।निजअधिकारनगुनिमणिनायक॥
दोषहुदेखिनरक्षणकीने । समदरशीमुनिहरिरतिभीने ॥ ४० ॥ यद्यपिसंतसुशीलउदारा । विप्रहोयजोधर्मअधारा॥
दीननदुखितदेखिनहिंरक्षै। तासुधर्मनशिजायप्रतक्षै ॥ जैसेफूटेभाजनमाहीं । श्रवैनीररहिजातोनाहीं ॥ ४१ ॥
पुनिकीन्हेअसमनहिविचारा॥विननृपनहिंमहिदक्षनहारा॥है यह वंशजगतमहँपावन । कीजैतासुउपायचलावन ॥
दोहा-धर्मात्मा यहिवंशमें, भये भूप हरिदास । ताते भूपति रचहु कोउ करै जो धर्म प्रकास ॥ ४२ ॥
असविचारिसिगरेमुनिराई । वेननगरमहँपुनिद्रुतआई ॥ मृतकशरीरवेनकरमांगे । मंत्रनतेतेहिमंथनलागे ॥
मथ्योवेनकीऊरूजवहीं॥प्रगटयोछोटपुरुषयकतवहीं॥४३॥काकसरिसकारोतनजाको।अतिलघुबाहुचरणशिरताको
चपटीनाकनैनअरुणारे।तैसहिअरुणशीशकेबारे॥४४॥ पुरुषसुप्रगटयेयुगलकरजोरी । करीमुनिनसोंविनयनिहोरी॥
मैंकिंकरअतिदीनतुम्हारा॥कहाँजाउँकहँकरहुँअगारा॥ मुनिकहतेनिषीदयहिठामा ।तातेभोनिषादतेहिनामा॥४५॥
दोहा-दक्षिणदिशिसोजायकै, गिरिकाननकियवास । वंशआपनोकरतभो, बहुविधिजगतप्रकाश ॥
गोंडभिल्लअरुपावहू, औरनिषादकराल । वारिव्याधतैलकरजक, कोलकहारकुम्हार ॥
वेनभूपपातककियो, जगतीतलमहँजोय । पापपुरुषमिसिप्रगटभो, नीचजातकरसोय ॥ ४६ ॥
इति श्री भाग० सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धि श्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कन्धेचतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा-पुनिअपुत्रनृपवेनको, सुतउतपतिकेहेत । युगलबाहुमंथनकियो, सबमुनिवरमतिसेत ॥
बाहुमथतभेपुत्रकुमारी । भेसंतुष्टनिरखितपधारी॥१॥जानिकलाहरिकीतिनकाहीं।कहतभयेअसवचनतहाहीं ॥२॥

ऋषयऊचुः ।

यहकमलाकीकलाकुमारी।जोश्रीहरिकहँअतिशयप्यारी॥कृष्णकलातेयहजगपावन।प्रगट्योपुत्रप्रजनसुखछावन ३॥
आदिराजयहजगयशछैहै । पृथुमहराजनामअसपैहै ॥ ४ ॥ यहदेवीसुंदरदवारी । गुणअरुभूषणभूषणकारी ॥
अर्चिनामछविकीछविकरनी।मैहैप्रभुभूपतिकी घरनी॥५॥पृथुसाक्षातकृष्णकोअंसा।प्रगट्योजगदुखकरनविध्वंसा ॥
दोहा-जगरक्षणकरिहैअवशि, यामेंसंशैनाहिं । यहरानीपृथुरानकी, कमलाअंशसदाहिं ॥
सुनिमुनिवचनमहासुखपागे।तहँगंधर्वगुणगावनलागे ॥ करहिंप्रशंसनद्विजगणनाना । वरपिरहेसुमसिद्धसुजाना ॥
नाचहिंसुरसुंदरी सुहावनि । पृथुनृपजनमपरमिभेपावनि ॥ ७ ॥ दियेदेवदुंदुभीधुकारे । बाजेमंजु मृदंग अपारे ॥
बहुकितशंखधरनिधुनिछाई॥बाजिरहीतुरईसहनाई॥ पृथुमहाराजजन्मसुनिकाना । पितरदेवऋषिचारणनाना॥८॥

औरहुसबलैलोकनपाला।ब्रह्माशिषआयेतेहिकाला ॥ पृथुनृपकेदक्षिणकरमाँही । चितैचक्रकोचिह्नतदाँही ॥ ९
। मानेपृथुमहराजको, श्रीहरिकलाविशेखि ॥
चक्ररेख ... १० ॥ तहँब्रह्माअतिआनँदपाई । वेदवादिब्राह्मणनबुलाई
पृथुमहराजकेरअभिषेका । करनचह्योब्रह्मासविवेका ॥ तहँअभिषेककेरसंभारा । लायेपुरजनसुखीअपारा
पृथुकहँसिंहासनवैठायो।कियअभिषेकविरंचिसुहायो११भूषणवसनपहिरिछविछाजा।लहिअभिषेकहिपृथुमहराजा
... ॥ तैसहिभूषणवसनसवारी । रानीअर्चिपआनँदधारी ॥
दोहा— ... १२ ॥ जाकीछविछनछननिरखि,लाजतिमनसिजवाम ॥
... री
... १
पवनदीनियुगचमरविशाला । धर्मदईकीरतिकीमाला ॥ इंद्रकिरीटदियोरविभासी। दियोदण्डयमदुष्टविनासी ॥१५
कवचवेदमयदियकरतारा । उत्तमदीनभारतीहारा ॥ दियोचक्रधरचक्रसुदर्शन । लक्ष्मीदईविभूतिताहिघन ॥१६
दोहा—नामजासुदशचंद्रहै,रुद्रदईकरवाल । नामजासुशतचंद्रहै, दईअंबिकाढाल ॥
चंद्रचारुदियअमरतुरंगा।त्वष्टादियसुंदरशतअंगा॥१७॥अगिनिदियोअखंडतेहिचापा।दियशरसूरजरिपुप्रदतपा
भूपादुकायोगमयदीन्ही । सुमवरपानितनवनभकीन्ही ॥ १८॥ विद्याधरचारणगंधर्वा । दईगानवादनविधिसर्वा ॥
अंतरध्यानहोनकीशक्ती । खेचरदियव्रतायसबयुक्ती॥ऋषिमुनीशदियआशिरवादा।दियोसमुद्रशंखकलनादा॥१९
रथपथनदीनगेंद्रहुदीन्हे । मागधवंदीप्रस्तुतिकीन्हे ॥२०॥ मागधवंदीसूतनकाही । प्रस्तुतिकरतजानिढिगमाही ॥
दोहा—महाप्रतापीप्रथितजश, पृथिवीपृथुमहराज । घनरवसमबोल्योवचनविहँसतमाहिसमाज ॥ २१ ॥

पृथुरुवाच ।

... । अवैनतसममगुणदरशाही ॥
... तवप्रस्तुतिकरियोकविनायक॥
... वैं । कवहुनतेनिजसुयशगवावैं॥
... तेअपनहुगुणदेयँगमाई॥२४॥
दोहा—जेसमर्थजाहिरजगत, कीरतिवंतसुजान । तेलज्जितहोतैअवशि, निजयशसुनिनिजकान ॥
जैसेब्राह्मणविक्रमी, ताहिहनैभटकोय । कौनसुयशनिंदासरिस, सुनिसोलज्जितहोय ॥ २५ ॥
... ॥२६॥

...
श्रीमहाराजाधिराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू-
देवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेपंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

दोहा—वंदीसूतनकोजवै, यहिविधिकह्योनरेश । वचनसुधारसपानकरि, तेसुखलहेअशेश ॥ १ ॥
जहँ वंदीसूतनसमुदाई । मुनिवरबोलेवचनबुझाई ॥ मागधवंदीसूतसुहावन । गावहुपृथुयशपुहमीपावन ॥
गायकसुनिमुनिवचनसुखारी । गावतभेपृथुयशमनहारी ॥

गायकाऊचुः ।

सकेवरणिकोआपप्रभाऊ । सदारावरोशीलस्वभाऊ ॥ निजसंकल्पदिसदितउदारा । वेनअंगतजिलियअवतारा ॥
... । ब्रह्मशिवादिकहूथाकिजाहीं॥२॥पेहरिअंशजोपृथुमहराजा।जाकोयशजगमाहिंदराजा॥
... । कहतसुनतअतिशयसुखदायक ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा—यहिविधिवंदीसूतजब, बहुयशकियोबखान । धनदेतिनहिंसराहिके, पृथुकीन्हचोसनमा
चारिवरणविप्रादिकजेते, प्रकृतिपुरोहितपुरजनकेते । सचिवसुभटसिगरेसरहारे, स्वामीसदनहिंस
यथाउचिताँतिनकोदैकाजा । राजकरनलागेमहाराजा॥२॥पृथुकोचरितसुनतसुखपाई । बोलेविदुरमुनि

विदुरउवाच ।

धरणीधेनुदेहकिमिधारी । जाकोदुह्योभूपयशकारी ॥ कोदोहनीवत्सकोभयऊ । विषमधरणिकिमिपृथुर
शकहरच्योकेहिहितमखवाजी।सोवरणहुमुनिह्वैअतिराजी॥४॥सनत्कुमारहितेलहिज्ञाना।कौनलोकपृथुवि
दोहा—औरहुपृथुकेचरितसब, सकलपुण्यप्रदजोय ॥ ६ ॥ भक्तकथाअनुरक्तमोहिं, मुनिसुनाइये
कौतुकलगतमोहिमुनिनाथा । दुह्योधरणिपृथुकिमिनिजहाथा ॥ ७ ॥

श्रीसूतउवाच ।

कह्योविदुरजबदोउकरजोरी । कथासुननमेंप्रीतिनथोरी ॥ तवप्रसन्नह्वैताहिसराही । बोलेमित्रातनयउछा

मैत्रेयउवाच ।

जबपृथुराजतिलकविधिकरिके । सुरयुतगयेभवनमुदभरिके ॥ तबबोलेसिगरेमुनिराजा।पालहुपृथिवीपृथु
तहाँप्रजासिगरेजुरिआये।क्षुधाक्षामअसवचनसुनाये ॥९॥ नाथहमैअतिक्षुधासतावे।जिमितरुकोटरअगिनि
हमतुम्हरेशरणागतआये । रक्षहुमरहिंबिनाकछुखाये ॥

दोहा—हमरेपालनहेतमुनि, तुमकोदियोनिदेश । जीवनहोयहमारजिमि, सोअबकरहुनरेश ॥ १०
परयोधरणिदुरभिक्षमहाना । जबलौंगमनकरेनहिंप्राना ॥ तबलौंअन्नदेहुहमकाही । क्षुधाकलेशसहेनहिंजा
तुमनृपपालकअहौहमारे । तुम्हहिकहहिंमुनिहरिअवतारे ॥ ११ ॥

मैत्रेयउवाच ।

करुणवचनमुनिपरजनकेरो । कियविचारपृथुराजघनेरो ॥ धरणिनदेतिअन्नउपजाई । यहकारणमोहिंपरत
ठीकठानिअसपृथुमहराजा । कियोधरणिपैकोपदराजा ॥ धारयोदोरदंडकोदंडा । लियेबाणयकपरमप्र
कोपितकालहिसरिससुहायो । धरणीभस्मकरनचितचायो ॥ १३ ॥

दोहा—भस्मकरतयकवाणसों, आपनकहँपहिचानि । धेनुरूपधरिधरणितव, भागीपृथुभयमानि ॥
जैसेमृगीवधिककहँदेखी।भागतिहैभयमानिविशेखी॥१४॥भागतिभूकहँभूपविलोकी।रथचढिधायोकुपितअश
अरुणनयनधारेशरचापा ॥ १५ ॥ चल्योवेगसोपरमप्रतापा॥भूमिभरीभयजहँजहँभागै ॥ भूपतिजानजातसँ
विदिशनदिशनअवनिआकासा।नरपुरनाकहुनागनिवासा॥जहँजहँजातिभूमिभयपाई।लौटिलखतितहँतहँनृप
उद्यतधनुकीन्हेशरसाजे । धावतआवतममवधकाजे ॥ १६ ॥ सिगरेलोकपालकेलोकू । अवनीगवनीसंयुतश

दोहा—इंद्रवरुणअरुधनदयम, गुनिपृथुद्रोहीताहि । राखिसकेनहिंनिजभवन, अतिशंकितमनमाहिं ॥
ब्रह्मलोकलोमहिफिरिआई।कहुँनहिंजबनिजरक्षापाई।१७।तबकरजोरिभूपकेसन्मुख।आयवचनअसकह्योसहित
धर्मधुरंधरपृथुमहराजा । शरणागतपालकतवकाजा ॥ रक्षणकरहुनाथअबमोरा । तुमसमनहिंकोउजगवरजो
महिपालनहितप्रगटेआपू ॥ १८ ॥ सोकिमिदेहमोहिंसंतापू । मैंनकियोअपराधतिहारो॥मोहिंअनाथकेनाथउब
हैधर्मज्ञहनहुकसनारी । धर्मात्मनामतलेहुविचारी ॥१९॥ करहिंयदपिनारिअपराधा । तदपिनर्यांरकरहिंतेहिंवा
दोहा—शरणागतपालकप्रबल, तुमसमकरुणामान । कबहुंननारीवधकरहिं, भाखतवेदपुरान ॥ २० ॥
मैंहौंजगतजननकीतरनी । सकलप्रजनकीअतिसुखभरनी ॥ मोमहँवसहिंजीवसमुदाई । करहिंधर्मकर्मनिमुसदा

। किमिरविहोजीवनजलमाहीं ॥ मोहिंहनेजलभरिरहिजेहे । कहँनिवासपुनिराउरहेहे ॥
वचनसुनतभूपाला । बोल्योकरिकेकोपकराला ॥

पृथु उवाच।

वधकरिहोंतेरो । तेंशासनमानातिनाहिंमेरो ॥ भागलेहिसवयज्ञनमाहीं । पैअनाजउपजावसिनाहीं ॥ २२ ।
वहुखायदूधनहिंदेवे । तानधेनुकसदंडनलेवे ॥ २३ ॥

दोहा–बीजऔषधीअन्नसव, तुममेंधर्योविरंचि । सोअवतुमप्रगस्योनहीं, मोहिंपृथुनृपकहवंचि ॥

रणीकुमतीदुखदाई । नहिंजानसिमेरीप्रभुताई ॥ २४ ॥ क्षुधाविवशसवप्रजाहमारे । होहिंदिनैदिनदूनदुखारे ।
नकेआरतवचनअपारे । लगेकुलिशसमश्रवणहमारे॥निजशरतोहिभस्मकरिआजू।करिहोंप्रमुदितप्रजासमाजू२५
रुपनपुंसकनारिहुहोइ । प्रजनकलेशदेतहठिजोइ ॥ जाकेदयालेशउरनाहीं । करेसाधुसोंद्रोहसदाहीं ॥
केवधेजगतयशजागे।कवहुँभूपकहँपापनलागे२६गर्वभरीतेअवनिकुमतिअति।तिलसमकरितोहिहतिवाणनतति।

दोहा–अनुपमअपनेयोगवल, राखिहोंप्रजनसदाहि । धेनुरूपधरितेछलसि, जानासिकसमोहिंनाहिं ॥ २७ ॥
पृथुकोकालकरालवपु, निरखिकँपतकरजोरि । धरणिकरनप्रस्तुतिलगी, वारहिंवारनिहोरि ॥ २८ ॥

छंदगीतिका । धरोउवाच ।

जयपरपुरुपपृथ्वीशपृथुपृथुणप्रथितपृथिवीसवे । जेअपनेसंकल्पतेवहुरूपधारकनितनवे ॥
जयदिव्यगनसंयुक्तनहिंअहंकारममकारहू ॥ २९॥ जयसकलजगकारणविकारणदियोममअवतारहू ।
मैंसकलजियआधारहोंमेरोअधाररमेशहैं ॥ सोइनाथसरसोदहतमोहिजोहिंकृपानसतकलेसहैं ॥ ३० ॥
जोरच्योमायातेचराचरजगतकोप्रभुआदिहै । रक्षकचराचरजगतकोअव्ययअनंतअनादिहै ॥
सोइहनतमोकोकहोसरनैजाउंअवमैंकौनकी । ममवचनआशावाँधिरहियेनाथकृपाचितोनकी ॥ ३१ ॥
नहिंकुमतिजानहिंईशमायाविवशईशचरित्रको । जोविरँचिब्रह्माकोरच्योजगमोददायकमित्रको ॥ ३२॥
निजशक्तिवेजगसृजहुपालहुहरहुआपहिसर्वदा । मैंतुर्माहिकरहुनमामिवारहिंवारहोतुमशर्मदा ॥ ३३ ॥
जोजीवनिवशनहेतमोपरधारिसूकररूपको । परलैसलिलतेकियउधारसँहारिअसुरअनूपको ॥
कनकाक्षमार्योजलउधार्योमोहिंधार्योडाढमें । सोनाथनासुतमोहिंकसहैविवशकोपहिगाढमें ॥ ३५ ॥
नहिंजानिपरतोमोहिंकछूनहिंलखिपरतकोउनाथहै । जोकरहियहदुखसिंधुतेउद्धारममगहिहाथहै ॥
दोहा–त्राहित्राहिआरतहरन, पृथुस्वरूपभगवान । मोहिंअनाथकोनाथतुम, रक्षहुकृपानिधान ॥ ३६ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौ
चतुर्थस्कंधेसप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

दोहा–यहिविधिप्रस्तुतिकरिधरणि, मुनिअतिधीरजधारि । कँपतअधरनृपकोनिरखि,वोलीवचनविचारि॥ १ ॥

धराउवाच ।

देहुनाथमोहिंअभयप्रदाना । मेरेवचनकरहुप्रभुकाना ॥जिमिअलिलेतसकलसुमसारा।तिमिछोटिवचनमतिवारा॥२॥
उभयलोकमहँसुखकेहेतू । कहेउपायजेसवमतिसेतू॥३॥तौनउपायकियेमहराजा । होतासिद्धमनुजनकेकाजा ॥ ४॥
जौनउपायकहेमतिमाना । करैजोतेहिनहिंपुरुपअयाना ॥ जिनमनतेरचिकरेउपाई । ताकोपुनिपुनिजातनशाई५॥
प्रथमजेऔषधिरचीविधाता । तेहिभोजनकियअघीअघाता॥६॥तातेसवमैंलियोलुकाई । पर्योअकालमहादुखदाई

दोहा—कुमतीनृपपाल्योनमोहिं, कियोनधर्महियाग । चोरचारिहूओरचलि, लोगनलूटनलाग ॥
येऔषधिनहिंपापिनयोगू । तिनकोकियोअधीहठिभोगू ॥ जोऔषधिपापीभखिलेहै । तौपुनिमुनिमख
ल्यिोभखिमेंअन्नघनेरो । यहकारणदुरभिक्षहिकेरो ॥ ७ ॥ पचीऔषधीलहिबहुकाला । बोवनबीजरह्योन
तातेअसअवकरहुउपाई । जामेंतुमकोदेहुँबताई ॥ ८ ॥ उचितवस्तुदोहनीवनाई । मोहिंदुहिलिहौजौन
तौदुरभिक्षमिटीदुखदाई।लहिहैप्रजाप्रमोदमहाई॥९॥औरहुजौनजौनजेहिचाहिहै।तेसबमोहिंदुहिकेफलल
दोहा—मोहिंसमकरिदीजैनृपति, सकलशैलकोटारि । भरोरहैजामेंसदाबहुवरपाकोवारि ॥ ११ ॥
ऐसीसुनतधरणिकीवानी । पृथुमहराजमहासुदमानी ॥ मनकोवच्छराकरितेहिकाला । अरुनिजकरदोहनि
दुह्योधेनुधरणीसोअन्ना॥१२॥भयेप्रजातवपरमप्रसन्ना ॥ पृथुकोदुहतधेनुधरणीको । सुरमुनिलखिअद्भुत
दुहनधेनुधरणीकहँआये । जोजोअपनेमनमेंभाये ॥ १३॥ ऋपिवच्छराकारिसुरगुरुकाहीं । दुह्योवेददोहनि
वच्छरासुरपतिकहँसुरकारिकै । कनकदोहनीनिजकरधरिकै॥सुधारूपदूधहिदुहिलीन्हे।जाकेपियतमरणक्षय
दोहा—करिवच्छराप्रहलादको, दानवदैत्यमहान । विरचिदोहनीलोहकी, आसवदुहिहरपान ॥ १६
अप्सरअरुगंधर्वहुआई।विश्वावसुकहँवत्सबनाई ॥ कमलदोहनीमेंमनलाई । दुहेगानविद्यासुखदाई ॥ १७ ।
पितरअर्यमावत्सविरचिकै । काचोघटमाटीकोरचिकै ॥ पिंडदानदुहिलियेतहाँहीं।जाकोपायसदाहरषाहीं
विद्याधरअरुसिद्धसुजाना।कपिलहिकरिकैवच्छमहाना॥दुहतभयेसबसिद्धिनकाँहीं । जिनतेउड़िअकाशम
औरहुमायाविबहुजेते । दुहिलीन्हेमायासबतेते ॥ २० ॥ राक्षसयक्षहुऔरपिशाचे । औरहुआमिषभो
दोहा—करिकपालकोदोहनी, हरकोवच्छबनाय । दुहेरुधिररूपीसुरा, पानकियेहरषाय ॥ २१ ॥
बिछौसाँपहुआयअपारा । तक्षककोकरिवच्छउदारा ॥ दुहेमहाविषतेमुखमाहीं । जिनकेडसेमनुजमरिजाह
औरहुपशुसबआयततक्षण । नंदीकोकरिवच्छविलक्षण ॥ वनरूपीदोहनतहँकीन्हें । विविधभाँतिकेतृणदु
औरहुमाँसाशीजेजीवा । सिंहवच्छकरिसुखितअतीवा ॥ २३ ॥ तनदोहानिकरिकैतहँनेतू । दुहेमांसभक्षण
पुनःविहंगसिगरेजुरिआये । विहँगराजकहँवच्छबनाये ॥दुहतभयेतहँफलबहुभाँती।निजभक्षणहितकृमिवर
दोहा—पुनिवटकोवच्छराविरचि, सकलवृक्षतहँआय । विविधभाँतिकेरसदुहे, अतिशयआनँदछाय ।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
धनुषपनौंकतेशैलमहाना । सहजहिटारतभोमलवाना ॥ टारतगिरिनशोरभोभारी । दक्षिणउत्तरदियोपथ
दोहा—धनुषकोरकोजोरलहि, चूरणभयेगिरिंद । जिमिगयंदकोशुंडलहि, पीसिजातअरविंद ॥
भूमंडलपृथुसमकरिदीन्ह्यो।सुयशअखंडलजगमहँलीन्ह्यो॥पुनिमनुजनकेनिवसनहेतू।पृथुमहराजकियो
नगरग्रामपत्तनपुरपोषू । आकरखरवटखेटअनोषू॥ इनकोरचतभयेनृपराई । तिनमेंबसीप्रजासमुदाई ॥
पुनिनिज[illegible]वनकेकाना॥मनकोविरच्योपृथुमहराजा॥किल्लागढ़पुनिरच्योअनेकू । [illegible]
पुनिनिजवसनहितनृपनायिदेशू । वसनभवनवहुरचेनरेशू ॥[illegible]
दोहा—प्रथमहिपिकधुनहिदिंद, विरच्योपृथुमहराज । असपत्तनपुरग्रामबसि, जनसुखहिंदिनराज ॥
इति [illegible] आनंदाम्बुनिधौ [illegible] अष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा-ब्रह्मावर्त्तसुक्षेत्रमें, जहँमनुकोसुस्थान । जहँप्राचीसरस्वतिवही, हरणीपापमहान ॥

[illegible] । भाइनभृत्यनसहितसमाजा ॥ अश्वमेधशतकरनहिहेतू । कियसंकलपमहामतिकेतू ॥ १ ॥
[illegible] । इंद्रभयोमनमेंअतिशोको ॥ आयोनहिंपृथुभूपतिजागा । वैठचोथरमहँकोपाहिपागा ॥ २ ॥
[illegible] । पृथुभूपतिकोयज्ञनिहारी ॥ चढिविहंगपतिमहँतहँदेपी ॥ ३ ॥ विधिशंकरमुदमानिविशेपी ॥

दोहा-निजनिजवाहनमेंचढे, निजनिजगणलैसाथ । आवतभेतुरतैतहँ, जहँश्रीपृथुनरनाथ ॥

यमअरुवरुणकुवेरहुआये । निजनिजसेवकसंगलेवाये ॥ हरियशगानकरतगंधर्वा । आयेचारनसहितअखर्वा ॥ ४ ॥
विद्याधरअरुसिद्धसुजाना । गुह्यकदानवदैत्यमहाना ॥ हरिसेवकसुनंदनंदादिक । आवतभेअतिशैअँहलादिक ॥ ५ ॥
नारदकपिलआदिमुनिराई । आवतप्रतिआनंदउछाई ॥ आयेसनकादिकयोगीशा । औरहुदाससवैजगदीशा ॥
महीमहीपतिसवजुरिआये । औरहुद्विजवरआयसुहाये ॥ विनाइंद्रयहत्रिभुवनमाहीं । असकोउनहिंजोआयोनाहीं ॥

दोहा-यथाउचितसवकोतहां, पृथुकीन्हचोसत्कार । रह्योनकोउअसयज्ञमें, जेहिमुदभोनअपार ॥ ६ ॥

जोनजोनजाकेमनभावे । सोसोसकलधरणिसोपावे ॥ जोनवस्तुचाहैनृपराई । प्रगटतोनतुरतेतँहजाई ॥
कोटिकलपतरुसमभेधरणी । पायअपूरवपृथुकीकरणी ॥ ७ ॥ नदिनवह्योदधिघृतमधुक्षीरा । औरहुविविधभाँतिरसनीरा ॥
भूपणवसनसेजसुखदाई । लगेझूरनतरुवरसमुदाई ॥ ८ ॥ सातासिंधुधरिमनुजस्वरूपा । भरिथारनवहुरत्नअनूपा ॥
संयुतनदअरुनदिनसमाजे । आयनजरदीन्हेपृथुराजे ॥ धनदवरुणयमआदिकदेवा । देदेनजरकरेंपृथुसेवा ॥

दोहा-पृथुभूपतिदरवारमें, रह्योनसुरनरभान । सुरसमाननरकेभये, नरभेसुरनसमान ॥ ९ ॥

पृथुकोअतिऐश्वर्यनिहारी । इंद्रभयोमनमाँहदुखारी ॥ सकलभुवनमहँसिधिमुनिजेते । पृथुकोयशगावहिंसुखतेते ॥
पृथुमखलखिजेसुरपुरजाहीं । इंद्रसभामहँअसवतराहीं ॥ पृथुमहराजविभवलखिनीको । इंद्रविभवअवलागतफीको ॥
त्रिभुवनपतिहैपृथुमहराजा । सेवकसमलागतसुरराजा ॥ वृथाघमंडकियेमनमाहीं । पृथुकोडरिगवनततइंनाहीं ॥
ऐसीसुनतऋपिनकीवानी । भयोकुपितवासवअभिमानी ॥ लैकरकुलिशकुटिलकरिनैना । वोल्योसभामध्यअसवैना ॥

दोहा-पृथिवीपतिहैकौनपृथु, जाकीकरहुप्रशंस । मैंहिएकत्रिभुवनधनी, कश्यपकुलअवतंस ॥ १ ॥

अतिशयअमलसुयशहैमेरो । वलीकौनमोहिंसरिसघनेरो ॥ अहैक्षुद्रक्षत्रीक्षितिमाहीं । कहहुभूपपृथुतमजेहिकाहीं ॥
अतिपापीनृपवेनकुमारा । भयोमृतकतेजेहिअवतारा ॥ थोरोधनथोरीप्रभुताई । पृथुकोगर्वसहोनहिंजाई ॥
पृथुसँगउपजीएककुमारी । ताकोकुमतिकियोनिजनारी ॥ देकिरीटदियभूपवनाई । सोपृथुचहतमोरसमताई ॥
अवमेंयज्ञविध्वंसनकरिहों । यहिमिसिपृथुकहंकुलसंहरिहों ॥ देखतहोंपृथुकोमनुसाई । कुलिशघातकसकेवचिजाई ॥

दोहा-असकहिवज्रौवज्रगहि, चढिऐरावतमाहि । चल्योकोपिपृथुभूपपेयज्ञविध्वंसनकाहि ॥ १० ॥
गईपूजिनिन्यानवे, पृथुकीवाजीमेध । शतयेमखकेकरतमें, पहुंच्योइंद्रकुमेध ॥

पृथुकोनिरखियज्ञसंभारा । कियोइंद्रमनमाहिंविचारा ॥ जोविध्वंसिहोंसन्मुखयागा । तोइतजुरेसवैखङ्भागा ॥
करिकेपृथुकीअवशिसहाई । करिहैमोसेयुद्धमहाई ॥ पृथुकोहरहुँमेंयज्ञतुरंगा । होइहितवेनानिमखभंगा ॥
निरखिभंगमखहारित्रिपुरारी । जैहेंअपनेधामसिधारी ॥ तवपृथुभूपतिकोवधकरिहौं । अपनोयशजगमेंविस्तरिहौं ॥
असगुनिगजतेउतरिसुरेशा । अंतरध्यानभयोतेहिदेशा ॥ हरिकेपृथुमखनरलतुरंगा । चल्योव्योममहँमाकनसंगा ॥ ११ ॥

दोहा-लैगोलैगोतुरंगकोउ, भयोतहांअसशोर । चकितनृपनचिनसनलगे, मुनिवरचारिहुँओर ॥ १२ ॥

हयकोहरतहेरिहरिकाही । कह्योअत्रिमुनिवचनतहांही ॥ पृथुनदानइंद्रछलनारो । लियजातहैअश्वतिहारो ॥
देवराजहैअतिपाखंडी । चाहतआपयज्ञकोखंडी । रह्योतहांपृथुप्रवलकुमारा । नामनामुनिविनिनाश्वउचारा ॥
ताकोकह्योअत्रिमुनिवानी । तुमकाकरतअहोवलखानी ॥ तेरपितुमखकोहयजानी । लीन्हेजातपुरंदरपानी ॥

दीक्षामहंबैठेमहराजा। जैहैनहिंनाशनसुरराजा॥ धावहुधावहुतुमविजितासू। मखतुरंगलैआवहुआसू॥

दोहा–सुनतअत्रिमुनिकेवचन, धारिधनुपशरवीर। दौऱ्योद्रुतविजिताश्वतहँ, कियेकोपगंभीर॥

बहुतदूरलगिजाननपायो। वासवकहँकुमारगोहरायो॥ रेशठचोरमहाअभिमानी। देवराजअतिशयअ

जैहैकहँतुरंगलैमेरो। लैहौंकाटिशीशअबतेरो॥ करिकैविघ्नपिताकीयागा। हरितुरंगजातोकत

रहोठाढ़अबठाढ़रहोइत। देवराजबाचिहोभागकित॥सुनिविजिताश्ववचनदनुजारी। फेरिशीशतेहिनिकट

लख्योकुमारहिकालसमाना। धावतआवतअतिबलवाना॥ साजेधनुमहँबाणकराला। निकसैजातेकोटिन

दोहा–वज्रचलावनभूलिगो, वासवअतिहिडराय। मानीमीचनगीचनिज, चितयोचितचौआय॥

वासवसोंकछुबन्योनकरतो। भाग्योपृथुकुमारकहँडरतो॥पीछूचल्योकुपितविजिताशू।शरतेकरणसुरेशविन

मांग्योवासववचतनदेखा। तबकरिलियतापसकरभेखा॥सकलअंगमहँभसमलगायो। जटाजूटनिजशीश

लैचिमटातुंबीकरमाहीं। चल्योतुरंगछिपायतहाहीं॥ तबविजिताश्वजानिसंन्यासी। तज्योनशरवासवक

पूछततहाँताहिसोभयऊ। लैतुरंगवासवकितगयऊ॥ संन्यासीकहमैंननिहारयों। कहँतुरंगलैशक्रसिधारच

दोहा–तबवासवकेवधनते, ह्वैकैतुरतनिराशु। लौटतभोनिजभवनको, महाबलीविजिताशु॥

लौटतदेखिअत्रिमुनिराई। बोलेविजिताश्वहिगोहराई॥ हनहुसुराधमशक्रहिकाहीं। नृपसुतयहसंन्यास

यहहैमघवाभूपकिशोरा। चोरचोरायेमखकरघोरा॥१५॥सुनिविजिताश्वअत्रिकीवानी। लौट्योधनुसायक

चल्योकुपितह्वैमनपछिताई। धोखाह्वैगोमोहिंमहाई॥ अबवचिहैकौनेहुविधिनाहीं। जहँचाहैतहँशक्र

पुनिविजिताश्वहिआवतदेखी।उड्योतुरंगलैडरयोविशेखी॥देखिपुरंदरजातअकाशू।चल्योअकाशपंथविं

दोहा–वासवढिगअतिवेगसों, आयोभूपकुमार। जैसेरावणपैगयो, गृद्धराजबलवार॥ १६॥

वासववचनआपनजानी।तुरंगछोड़िभाग्योभयमानी॥ तदपिरुक्योनहिंकुपितकुमारा। करनचह्योसुरपति

ऐंचिकानलौंकठिनकोदंडा। छोड़नचह्योबाणपरचंडा॥ तबवासवह्वैअंतरधाना। तहँतेतुरतैसभयप

भूपकिशोरशक्रनहिंहेऱ्यो। तेहिथलमेंताकोबहुहेऱ्यो॥ मिल्योनदेवराजजबचोरा। तबलौट्योपृथुराजा

लैकेतुरँगयागगृहआयो।करिप्रणामनिजपितुहिदेखायो॥१७॥अद्भुतविक्रमतासुनिहारी। सबैमहीपमुदित

दोहा–पृथुकेजेठेपुत्रको, दियोनामविजिताशु। जोवासवकोजीतिके, कीह्न्योसुयशप्रकाशु॥ १८॥

पुनिपृथुकोमुनिवरजगपावन। लगेयज्ञकीकृत्यकरावन॥ तहाँपुरंदरपुनिकेआयो। तुरँगहरनकोचित्तर

अंधकारभारीकरिदीह्न्यो। जामेंकोउकाहूनहिंचीह्न्यो॥ बँधोयज्ञकेखंभतुरंगा। लगिकनकशृंखला

तेहितमतेतुरंगहिढिगआई।बंधनकाटिकृपाणचलाई॥लैभाग्योवासवपुनिवाजी॥जान्योनहिंपृथुभूपजिजाजी

जबलैगयोवाजिकछुदूरी।तबमिटिगयोतहाँतमभूरी॥ सहिततुरंगजातनभमाहीं। लख्योअत्रिमुनिवास

दोहा–पुनिबोल्योविजिताश्वसे, हेपृथुराजकिशोर। हन्योचोरजोप्रथमही, सोईहन्योपुनिचोर॥

अबकीवासववचननपावे। करनउपद्रवपुनिनहिंआवे॥ धावहुधावहुनृपसुतन्यारे। छोड़हुतापरतुमशरधारे

सुनिविजिताश्वअत्रिकीवानी। धायोपुनिधनुशरसंधानी॥ बोलतपुनिपुनिवचनकठोरा। रेरेदेवराजतंचोरा

कहँजैहैहरिकैमुखघोरा। अबकीशीशकाटिहौंतोरा॥ असभापतइंद्रहिनगिचान्यो। सोऊनिजवधमनअनुम

कालहुतेकरालविजिताशू। मानिमहामनमेंतहँत्राशू॥ निजमायातेतुरंगछिपाई। धरयोअघोरीवपुसुरराई

दोहा–माथेमनुजकपालयक, हाथेमृतकशरीर। नाथेनृपकोचलतभो, सुनाशीरभयभीर॥

जानिअघोरीतेहिविजिताशू। तज्योनशरजेहिपरमप्रकाशू॥ तेहितेपूछ्योफेरिकुमारा।तुमदमरोकहुँतुरंगा

शिरडोलायकीन्ह्योसोनाहीं॥लखेनहमतुवतुरंगइहाहीं॥पुनिविजिताश्वअ[illegible]हिपछिताई।लौटिचल्योमखको

अत्रिमुनि[illegible]पुकारो। यादिअघोरीतुमनविचारो॥ यहहैदेवराजशठचोरा। लियेजाततुवपितुमखघो

। तेनहिंजीवनदेतकलेशा ॥ वैरकरतकाहूसोनाहीं । शत्रुमित्रसमगुनतसदाहीं ॥ ३ ॥
। तेमतिवंतनमाहप्रधाना ॥ तुमसमपुरुषकोपवशह्वैके।करैजोअनुचितउचितनज्वैके॥
दोहा–तौसंतनकोसंगअरु, श्रवणशास्त्रसमुदाय । अरुवृद्धनसेवनसकल, मोकोवृथाजनाय ॥ ४ ॥
भयोनजोशरीरकोछोहा।तोकहपुनिसुतनियधनमोहा॥६।
। साक्षीस्वयंज्योतिससविवेकू ॥ ७ ॥ देहभिन्नहैदेहप्रकाशी । प्रभुपरतंत्रमहासुदराशी ॥
। तेहिनकबहुँउपजतअभिमाने॥८॥जोयुतप्रीतिछोडिसबआसा।भजैसधर्ममोहिंसहुलासा ।
। निर्मलमनह्वैजातबनाई ॥ ९ ॥ जनकोजबनिर्मलमनभयऊ । गुणसंसर्गछूटितबगयऊ ॥
दोहा–मनमेंउपजीशांतिअति, पुण्यपापमेंक्षीन । लहतमनुजतबमोक्षको, ममपायातेहीन ॥ १० ॥
। तनधनतियनिजसुतनहिंलेखे ॥ गुनैजीवअपनेअविकारी।लहतमोक्षसोइजनसुखकारी॥
। यहदेहहिकोअहैविकारा ॥ तातेसम्पतिविपतिसमाना । मानतसर्वकालमतिमाना ॥
। विचरतअभयसंतबडभागा॥१२॥उत्तममध्यमअधमसमैगुनि । इंद्रीजीतिदुखैसुखसबधुनि॥
१३पालतप्रजनजौनमहिपाला ।सोइपावतकल्याणविशाला
दोहा–प्रजापापअरुपुण्यहू, करैजौनभरिकोय । ताकोछठयेंअंशपृथु, नृपपावतहैसोय ॥
ोपालैनहिंप्रजनसमाजन । सोहठिहोतप्रजाअघभाजन १४यहिविधिपालतप्रजनसमाजा।धारतधरणिधर्ममहराजा॥
हिकछुककालजबबीती । पुहमीमेंप्रगटतसतरीती ॥ तबऐहैतुम्हरेगृहमाहीं । सनकादिकजिननामसदाहीं ॥१५॥
ाँगहुवरहेपृथुमहराजू । हौंप्रसन्नतोपरमैंआजू ॥ जोमैंयोगयागतपतेरे । कबहुनआवहुँकैसेहुनेरे ॥
ामेंबंध्योप्रीतितुवडोरी । यदपिरीतिसमदरशीमोरी ॥ १६ ॥

मैत्रेयउवाच ।

यहिविधिसुनियदुपतिकीवानी।धन्यधन्यनिजकहँपृथुमानी॥हरिदासनशिरमेंधरिलीन्ह्यो।प्रभुपदपंकजवंदनकीन्ह्यो
दोहा–यदपिविश्वविजयीरह्यो, पुहुमीपतिपृथुराज । तदपिकर्मनिजछोट्गुनि, मानीउरमेंलाज ॥
इंद्रहिमिल्योभूपमतिमाना । दियोताहिपुनिअभयप्रदाना ॥१८॥ पुनिपूज्योहरिकोपृथुराई।वारवारपदमेंशिरनाई ॥
पृथुपूजनलहिश्रीभगवाना । चहेविकुंठहिकरनपयाना ॥ गवनकरतगुनिकेगिरिधारी ।पृथुभूपतिअतिभयोदुखारी॥
दौरिधरयोप्रभुपदअरविंदा । ढारतआँखिनआँसुनवृंदा ॥ १९ ॥ लखिपरेसपृथुप्रेममहाना।सकेनकरिवैकुंठपयाना॥
ठाढरहेमहासुदछाये । वारवारदृगवारिबहाये ॥ २० ॥ पुनिमहराजयुगलकरजोरी।खड़ेभयेकरिप्रीतिअथोरी ॥
निरखनलग्योकृष्णकोरूपा । उपज्योआनँदउदधिअनूपा ॥
दोहा–भरेविलोचनवारिते, कढिनसकनमुखबैन । ध्यानहिमेंमिलिनाथको, मूंदिलियोनिजनैन ॥२१॥
पुनिआँखिनकोपोंछिनरेशा । नाहिअघातनिरखतहरिवेशा॥ धरेगरुडकंधहिइकहाथा । चडेधरतिमहँश्रीयदुनाथा ॥
जसतसकेधरिकैउरधीरा । बोल्योवचनभूपगंभीरा ॥ २२ ॥

पृथुरुवाच ।

तुमहोवरदातनकेस्वामी । जगतचराचरअंतरयामी ॥ ऐसेतुमहिपायकेसन्मुख । कोवुधजांचितुच्छविषेसुख ॥
जाकोकुमतीचहैसदाहीं । तोनविषेसुखनरकहुमाहीं ॥ ब्रह्मलोकलौविभौबड़ाई । मैंनहिचहौंलैनयदुराई ॥ २३ ॥
जहाँनआपुपदकंजमरंदा । चहौंनऐसोब्रह्मानंदा ॥
दोहा–येआशामनमेंअहै, सोदीजैवरदान । मेरेतनमेंहोयप्रभु, दशहजारअवकान ॥
संतकथिततुवचरितसुहावन । सुनौंनितदिनत्रिभुवनपावन ॥पियतकथारसअतिसुखपाऊँ।पुगुलश्रवणतेमनअघाऊँ॥
कथासुधासंतनमुखढारी । तासुबिंदुलैवहतबयारी ॥ सोबयारिपरसतबहुपापी । होतआशुअतिअमलअतापी ॥
तातेराउरदाससदाहीं । तुवयशतजिकछुचाहतनाहीं ॥ २६ ॥ सुयशरावरेमंगलमूला ।

नतेएकहुवारा। सुनहिकथाजोरसिकउदारा॥ सोनअघातबढ़तनितप्रीती। करतसदा
कथासुनतशठनाहीं।सत्यसत्यपशुतेजगमाहीं।।होनहेतत्रिभुवनठकुराइनि।सन्योसुयशतुवर

दोहा--गुणआगरनागरनिपट, भक्तनभयकेभंज। रमासरिसहमआपके, सेवहिंगेपदकंज॥

गसोंहमसोंगिरिधारी। ह्वैहैकहाकलहनहिंभारी॥ जोअसकहहुनाथहमपाहीं। सेवहुँसमेस
कीविरहनहिंसहिजैहे। नाथसमैभरिकोपहुँचैहे॥ २७॥ तुवपदसेवतमाहिंमुरारी। बरुकहोयलद
नहिंकछुशंकामोहिंलागै। तुवगुणनिरखिबढतअनुरागै॥ जैसेवासववातघटाई। मोरिवातराखी
हिलक्ष्मीतेमोहिनाथा। अधिककरोगेअवशिसनाथा॥ रमाशेपहूतेप्रियलेपी। दीनदासपरद्रवहुवि

दोहा--यहीराखिविश्वासदृढ़, छोड़िसकलजंजाल॥ संतभजहिंपदरावरो, नाशहिकलिविकराल।

डिकमलपदनाथतिहारो। परैनसेतनऔरनिहारो॥२९॥जौनकह्योमाँगहुवरदाना। तौनलोभावनहे
जगतसवतुवगुनवानी।मायामोहितह्वैअभिमानी।।यातेकरतकर्मजवनाना। कवहुँनलहततुम्हैंभगवा
मायाजनमतिहरिलेती। आपचरणरतिहोननदेती॥ मायावशजनतुमहिंभुलाई। चाहतविश्वविभू
तेजिमिपितवालककाहीं।मेटिकुपंथसुपंथसिखाहीं।।तैसेहितुममोहिकरिवरजोरी। देहुभक्तिआपनीअथ

मैत्रेयउवाच।

दोहा-ऐसीसुनिपृथुराजकी, सुधासरिसमृदुवाणि। बोलेवचनविनोदभरि, विहँसतशारँगपाणि॥

मोपरअतिशयप्रीतितिहारी। होयभक्तितेहिभूपहमारी॥ जौनभक्तितेसहजहिमाहीं। तुरतमनुजममम
सावधानह्वैपृथुमहराजा। ममनिदेशकरुसहितसमाजा॥ ममनिदेशजोकरतोकोई। ताकोसबथलमंगलहै

मैत्रेयउवाच।

असकहिपृथुसोशारँगपानी। वारवारहीताहिवखानी॥ पृथुसोंसादरपूजनपाई। चलेविकुंठयानयदुराई॥
तहँदेवर्षिपितरगंधर्वा। सिद्धअपसराचारणसर्वा॥ पन्नगनरपक्षीपशुनाना। औरहुहरिपार्षदहुसजाना॥

दोहा--औरहुजोनिजयागमें, आयेजीवअपार। तिनसबकोहरिरूपही, मान्योपृथुमतिवार॥
जोरिजोरिकरसवनसों, कहिकहिमंजुलवैन। करिआदरकीन्होविदा, गेसवनिजनिजऐन।
राजऋपीशनरेशको, औरमणिनगनकेर। हरिकेमनहरिगवनकिय, आपनभवनअदेर॥-
पुनिप्रभुकोपरनामकरि, लैनिजसकलसमाज। गवनकियोनिजनगरको, मोदितपृथुमहरा
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधे विंशस्तरंगः॥ २०॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

दोहा--गंगायमुनाबीचमें, पृथुकोनगरप्रयाग। सोनसहितआवतभयो, जाकोयशजगजाग॥
मुक्तभिलतबहुकुसुमनकेरी। झालरिझूलहिसुछविघनेरी॥ औरहुमुक्तकुसुमकीमाला। भौनभौनमदँर्धा
तनेवितानहुविविधकिताके। फहाररहेअतितुंगपताके॥ लसहिकनकतोरणचहुँओरा। छायोबहुधाजनक
मंडितधूपधूमतेधामा। फटोसारभटामदिठामा॥ १॥ चंदनअगरसुवासितवारी। सींच्योगलिनमार्गनसु
नवाफूलफलअक्षतलाजा। बिछेवनारनमदसुखसाजा॥२॥ कदलीखंभसकटसमद्वारा। डगरडगरमर्दनगर
मंडितनेवितानहुविविधितलोभे। नवदलचंदनवारनबहु, नगरनिकेतनिकेत॥ ३॥

दोहा--पूगखंभफरइनफुले, फूलनफलनसमेत। नवदलचंदनवारनबहु, नगरनिकेतनिकेत॥ ३॥

जासुसुननपृथुराजअवाई। भयेमुदितमनुसरसमुदाई॥ लैनचलेपृथुकोअगवानी। वालवृद्धयुवतिछविसिर
कनककलशसीसरसिजकुमारी।निजनिदीपावलियुनिकारी॥ उदधिदधिअउदउरलभारिधारि। नलीपदारि उरदारि

। चलेंसुयशगावतसुखसारा ॥४॥ बजहिंशङ्खदुंदुभिसहनाई । पढहिंअखेदवेदद्विजराई ॥
। निजनाथहिआँगूचलिलीने ॥ नृपहिनिरखिभयेपूरणकामा।एकवारसवकियेप्रणामा ॥
दोहा–वरनहिंचहुँकिततेसुयश, वंदीचारणसर्व । सोसुनिपृथुमहराजके, भयोननेकोगर्व ॥

। सुधासरिसमृदुवाणिसुनाई ॥ पृथकपृथकपरजाअसजाने । हमहींकोपृथुप्रभुप्रियमाने ॥
। सवप्रजानकेदरशनकाजा ॥ नगरप्रवेशहिकियोनरेशा । मेटतपुरजनदृगनकलेशा ॥
। फैलिरहीजेहिप्रभाअपारू ॥ तहँप्रवेशकरिअतिसुखपाई । वैठ्योसिंहासननृपराई॥५॥६॥
दोहा–बहुतकाललगिभूपपृथु, वसिनिजनगरप्रयाग ॥ पाल्योक्षितिमंडलसकल, करिहरिपदअनुराग ॥
। छावतभयोभूपवरखिंडा ॥ लाखनवर्षभोगिसुखभोगू । गयोफेरिहरिपुरविनशोगू ॥ ७॥

सूतउवाच ।

हाना । जासुकेरगुणवंतवखाना ॥ सुंदरसकलगुणनतेपूरो । सुनतसप्रीतिकरतअवनूरो ॥
। विदुरपायआनंदमहाना॥वोल्योमित्रासुतसोंवानी॥औरहुकथासुननचितआनी॥ ८ ॥

विदुरउवाच ।

। पाल्योपृथिवीसहितविवेका॥वहुतइंद्रसमपायविभूती । जगमेंकरिअद्भुतकरतूती॥
वदेवनतेपूजनपायो । अनुपमकृष्णदासकहवायो ॥
दोहा–दुह्योधरणिवरभुजनवल, धान्योवैष्णवतेज ॥ निजप्रतापतेरिपुनकोदाह्योदुतहिकरेज ॥ ९ ॥
ौरचरितकाकियोमहीशा । सोसुनायमोहिंदेहुमुनीशा॥पृथुयशकोसुनिकेनिजकाना॥कोसुजानजगमाहिंअघाना ॥
ाकेविक्रमकोलहिलेशा । अवलौंभोगतजगतनरेशा ॥ अवलौंपृथुयशआनँदरासी । गावनहैंनितनाकनिवासी १०
ुनिकेविदुरवचनतेहिकाला । कहनलगेमुनिनाथकृपाला ॥

मैत्रेयउवाच ।

ायमुनमधिनगरप्रयाग॥तहँवस्योपृथुनृपवडभागा॥भोग्योविभोभोगविख्याता॥जेहिलखिसुरपतिरह्योसिहाता॥
वपुण्यक्षयहानहिहेतू । भोग्योभोगमहामतिकेतू ॥ ११ ॥
दोहा–कियोचक्रवर्तीनृपति, शासनसातहुद्वीप । कहूँहुकुमनहिंरुकतभयो, कोउनहिंरह्योप्रतीप ॥
देयोदंडसवकोनृपराई । ब्राह्मणअरुहरिदासविहाई ॥ ब्राह्मणअरुहरिदासनकांहीं॥क्षमाकियोअपराधहुमाहीं॥१२॥
एकसमयकीन्ह्योनृपयागा । जुरेसकलभूपतिवडभागा॥वहुब्रह्मर्षिराजऋषिआये । औरहुसकलदेवसुखछाये॥१३॥
सवकोकियोभूपसतकारा । रह्योजासुजेसअधिकारा ॥ लागिगयोसुंदरदरवारा । वैठेपुहमोप्रजाअपारा ॥
मध्यकनकसिंहासनराज्यो । तापरपृथुमहराजविराज्यो ॥ जिमितारनमधिशशीसुहावै ।
तिमिसमाजमधिपृथुछविछावै । पृथुप्रकाशतहँछावतभयऊ ॥ सुरमुनितेजतुरतदविगयऊ ॥ १४ ॥
दोहा–उन्नतसुंदरजासुतन, कोटिकामसुकुमार । युगलपीनआयतभुज, धराधर्मआधार ॥
कोटिशशीसमवदनप्रकासा । कंजनैनजनकरनहुलासा॥शुकचविहरनासिकासुहावनि॥मंजुलवाणिसुधावरसावनि ॥
। रदमदहरनकुंदकलिकाके ॥१५॥ केहरिकटिअतिवक्षविशाला॥त्रिवलीसंयुतउदरविशाला॥
भारमनहुछविवापी॥उरुकदलिमसुर्धभकलापी ॥
उन्नत । अरविंदा । नखश्रेणीसुपमाहरचंदा ॥१६॥ सूक्ष्मकुटिलमृदुलसटकार । केशसर्पशावकसमकार ॥
दोहा–कंबुकंठशोभाहरन, भृकुटीमदनकमान ॥ अर्धचंदसमभालमें, ऊर्द्धपुंड्रदरशान ॥
युगलपीतपटपरमअमोला॥लसहिसुधारससरिसकपोला॥१७॥विनभूपणतनसुंदरगोरा॥फैलतनेहिप्रकाशचहुँओरा ॥
कृष्णाजिनधारणनृपकीन्हे । शोभावंतकुशाकरलीन्हे॥पूरणयज्ञकृत्यसवकरिकै॥ वैठ्योसभामध्यसुखभरिकै॥१८॥

सबपैंफेरिडीठिसुखदाई । उठिकेआसनतेंनृपराई॥निजछबितेसबचित्तचोरावत । सबकेश्रवणसुधाढर
चारुचित्रपदमुनिमनहारे । शीलभरेनृपवचनउचारे ॥ २० ॥

राजोवाच ।

सुनहुसिखापनप्रजाहमारो । ह्वैहैमंगलअवशितुम्हारो ॥ औरहुसुनैसाधुजेआये । मैंशासन

दोहा—जोचाहैसबधर्मको, जाननबुधिवरकोय ॥ तौनिजमनकीसाधुसों, कहैनराखैगोय ॥ २

मोहिंराजाविरच्योभगवाना । दंडदेनमेंकियोप्रधाना ॥ पालनप्रजनदियोअधिकारा । देनजीविका
राखनधर्मनकीमरयादा॥कह्योननिजसुनिबोअपवादा२२येसबकर्मकियोजोलोका । ह्वोतसोमोहिमुनि
जोपालतनृपपरजनकाहीं । तापरकृष्णप्रसन्नसदाहीं ॥ २३ ॥ जोकरलेतनधर्मसिखावै । सोनृपप्रज
थोरेकालमाहँनृपराई । विभौहीनह्वैजातोभाई ॥ २४ ॥ तातेंप्रजामोहिंप्रभुमानो ।मम

दोहा—तौयदुपतिकेचरणमें, दीजेचित्तलगाय । प्रीतिसहितगोविंदगुण, गावहुगर्वगँवाय ॥

भगवतभक्तिकरहुरेभाई । यहिमेंतिहरोकछुननशाई ॥ २५ ॥ हेदेवर्षिसुरर्षिविज्ञानी । जोमैंकही
देहुसराहितुमहुसहुलासन । जोमैंदेतहोहुँशुभशासन ॥ जोनहोययदुपतिपदसेई । ताकहँउचितासि
जौनसराहतकरतकरावत । मेरेतीनिहुसमफलपावत ॥ २६॥ जेशठकहैंकृष्णहैनाहीं।तिनके
जोयदुपतिप्रत्यक्षनहिंहोते । तौसज्जनअभीतनहिंसोते ॥ शुभअरुअशुभफलनकोदेतो।

दोहा—मनुनरेशउत्तानपद, अरुश्रीध्रुवमहराज । औरप्रियव्रतभूपजो, राजऋपिनशिरताज ।

ममपितुपितुजोअंगनरेशा ॥ २८॥ औरहुधर्मप्रसिद्धधरेशा॥ब्रह्माशंकरअरुप्रह्लादा । अरुबलिधार
येसबश्रीयदुनंदनकाहीं । मानतअपनोनाथसदाहीं ॥ यदुवरसकलकर्मफलदाता । ऐसोकहतवेदवि
कृष्णछोडिदूजोनहिंनाथा । जोयहत्रिभुवनकरैसनाथा ॥ २९॥पैवेनादिकभूपतिपापी । जानैंनां
तेसबविधितेंनिंदनलायक । जेजननहिंजानतयदुनायक ॥ करहिधर्मकेवलमतिमंदा । गावतनहिंगु

दोहा—तेजनधरमीनामके, अहैंअधर्मीचोर । जियतजगतदुखभोगहीं, जातनरकमरिघोर ॥

महिमहँअर्थधर्मअरुकामा । स्वर्गविभौअपवर्गललामा ॥ दूजोदुनीमाहँनहिंदायक । दायक
कृष्णचरणसेवनकीप्रीती । फोरतिकोटिजन्मअघभीती॥जैसेकृष्णचरणजलगंगा।करतिकोटिकलि
करैकोटिवनमहँतपजाई । होयप्रीतिजोनहियदुराई ॥ तौनहिंकतहुँकृष्णपदजोवै । पुनिपुनिप
करेंजेयदुपतिपदमहँप्रीती । राखहिंसाधुनवचनप्रतीती॥तिनकेतुरतअमलमनहोवत । को

दोहा—पहुँचततुरतपरेशपुर, गाहतप्रेमसमुद्र ॥ आवतनहिंतेकबहुँपुनि, यहसंसारहिक्षुद्र ।
तातेमनवचकर्मते, भजहुप्रजायदुनाथ ॥ नातोयहसंसारमें,लागीनहिंकछुहाथ ॥

कपटकुशीलकुसंगविहाई । करिअनुरागभजोयदुराई ॥ ३३ ॥ हैपरेशप्राकृतगणहीना ।
येअनेकअंगनयुतयागा । हैहरिसुनहुप्रजावडभागा ॥ ३४ ॥ हैसबकेप्रभुअंतर्यामी । हैफलरू
जिमिजदारुहिकीअनुहारी।तैसीपावकपरतितिनिहारी३५जेस्वधर्मयुतमहितलमाहीं।
धन्यधन्यतेप्रजाहमारे । मोपरपरमकृपाविस्तारे ॥ यज्ञभागभोगिनकेनाथा ।

—ज्ञानीतपीदयालद्विज, जिनकेहरिकुलदेव । क्षमाशीलकेसदनजे, करतजेसंतनसेव

रुविप्रनको । करैअनादरभूपनतनको ॥ जोइनकोअभिमानदेखावै ।
। तिनपरह्वोहिंसाधुजनछोहीं॥३७॥हरिविप्रनपदपूजनकरिके।लहीरमाको
। लह्योपवित्रसुयशजगभारी ॥ पूजिविप्रपदकोश्रीधामा । लहब्रह्म
ने।भयेब्रह्मशिवसुरनशिरोमनि॥३८॥जेविप्रनपदपूजनकरते।तिनकोअवा

दोहा—तातेमानहुसबप्रजा, ऐसेवचनहमार ॥ प्रीतिधर्मतेसाहितनित, करहुविप्रसतकार ॥

पूजैमनलाई । तितकोचित्तशांतह्वैजाई ॥ विप्रनकेपदपूजतभाई । पावतमनुजमुक्तिअनपाई ॥
तेविप्रनतेजगमाहीं।अधिकजनातमोहिंकोउनाहीं॥४०॥जसब्राह्मणमुखजातअघाई।तसनहिंपावकमहँयदुराई ४१
रैके । धारतविप्रवेदमुदभरिकै ॥ जौनवेदपढ़िकेमतिवाना । लखतधर्मआरसीसमाना ॥४२॥
शिहिमाहीं । धरौंनित्यद्विजपदरजकाहीं ॥ विप्रचरणरजशिरमहँधारे । छूटतक्षणमहँपापअपारे ॥
रणरजशिरधरिलीने । होतआशुसत्वगुणनप्रवीने ॥ ४३ ॥
दोहा–विप्रकरतजापैकृपा, ताकिगुणपरताप । दूनदूनदिनदिनबढ़त, तापतिकबहुँनताप ॥
जाहिविप्रभेकृपामहाई । ताकीबढतिविभवप्रभुताई ॥ तातेविप्रगऊगिरिधारी । मोपरकरहिंकृपानितभारी ॥
सबैवृद्धकोसेवनकरहू । सबैविप्रकोअतिमुदभरहू ॥ सबैमुकुंददासद्दढ़िहोहू । सबैकरहुँदीननपरछोहू ॥
जाहिकरतअसनहिंसुनिलेहौं । ताकोअवशिदंडमेंदेहौं ॥ ४४ ॥

मैत्रेयउवाच ।

ऐसीसुनतभूपकीवानी । देवपितरमुनिनरसुखमानी ॥ एकबारसबभेरेउछाहन । साधुसभामहँलगेसराहन ॥
पुनिपृथुसोंअसवचनबखाने । कौनभूपाभूआपसमाने ॥ ४५ ॥
दोहा–पितुपावतहैपुत्रके,सुकरमवशशुभलोक । यहजोभाषतवेदसब, सोसतिपरोविलोक ॥
तुमसमपायपुत्रजगजेना । निकस्योनरकनतेनृपवेना॥रह्योमहापापीद्विजशापी । आपपुण्यवशभयोअतापी ॥४६॥
जैसेहिरणकशिपबलवाना । पायपुत्रप्रहलादसमाना ॥ यद्यपिकियोनाथकीनिंदा । तदपिभयोवैकुंठवसिंदा ॥ ४७॥
चारिहुयुगजीवहुमहराजा । पालहुसिगरीप्रजासमाजा ॥ तुमसमरामदासनहिंदूजो । कोविप्रनतुमसमजगपूजो४८॥
महुँअवशिहरिदासकहाये । जिहँतेतुमसमानप्रभुपाये ॥ श्रीब्रह्मण्यदेवहरिकेरो । कियोहमहिंउपदेशघनेरो ॥४९॥
दोहा–ऐसोकहिबोआपको, कछुअचरजहैनाहिं । तेऐसाहिसिखवतप्रजन, जिनकरुणाउरमाहिं ॥ ५० ॥
हमअभागवशभवउदधि, भ्रमतरहेभ्रमछाय, तुमचढायवाणीतरनि, दीन्ह्योपारलगाय ॥ ५१ ॥
शुद्धसतोगुणपरपुरुप, पृथुसरूपश्रीधाम । पालतहैंपुहमीप्रजन, शिरसोंताहिप्रणाम ॥ ५२ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधि
कारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेएकविंशस्तरंगः ॥ २१ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–यहिविधितहँसिगरेप्रजा, पृथुकोकियोबखान, मध्यसभासोहतनृपति, मनुतारणसितभान ॥
तहाँचारिहूओरअकाशा । छावतसूरजसरिसप्रकाशा॥ऋषिपुनीतसनकादिकचारी । आयेभूपतिसभासुखारी ॥१॥
नभतेउतरततिमहिंनिहारी ।पृथुमहराजधर्मधुरधारी॥सनकादिकहैंअसजियजानी।हरहिंलोककीसबअघखानी ॥२॥
उठ्योसमाजसहितमहराजा।मान्योसरवसभोममकाजा३कियोधरणिमहँदंडप्रणामा।पुनिकरिविनैमुदितमतिधामा॥
ल्यायोसनकादिकनलेवाई।कनकासनआसीनकराई॥तिनकोविधिवतपूजनकीन्ह्यो।तकरिकृपाग्रहणकरिलीन्ह्यो॥
दोहा–चरणपखारिमुनिनके, शिरसींच्योमहराज । शीलसिंधुप्रमुदितनृपति, कियसनमानदराज ॥ ५ ॥
लसहिपरमऋषिहेमसिंहासन।मनिवेदीविचज्वलितहुताशन।प्रीतिसहितपुनिदोउकरजोरी।बारबारतिनऋषिननिहोरी
शिवकेजेठभ्रातनपाहीं । बोल्योवचनविचारितहाँहीं ॥ ६ ॥

पृथुमहराजउवाच ।

अहोकौनमैंसुकरमकीन्ह्यो । जातेआपदरशमोहिंदीन्ह्यो ॥राउरदरशनमंगलमूला । करतसकलपापननिरमूला॥
योगिनदुर्लभदरशतिहारो ।धन्यधन्यहैजन्महमारो ॥ ७ ॥ जापरविप्रप्रसन्नसदाहीं । उभयलोककछुदुर्लभनाहीं ॥
हाहिंप्रसन्नजाहिंपरविप्रा । तेहिहरिहरप्रसन्नह्वैछिप्रा ॥ ८ ॥
दोहा–यद्यपिविचरहुत्रैभुवन, तदपिननिरखतकोय । जिमिव्यापकपरमातमा, दृगगोचरनहिंहोय ॥ ९ ॥

...। तौनविषैसँगकरैउदारा॥अर्थधर्मअरुमोक्षहुकामा। विषैविवशनशिजाहिंमुदामा॥३४॥
...। मोक्षप्रधानकहैकविटेरे॥ त्रैमहँअहैकालकीभीती। मोक्षमाहँनाहिंभीतिप्रतीती॥ ३५॥

दोहा–अजशंकरआदिकसबै, त्रिगुणवलितसबकाल। तातेकरतविनाशहठि, कालपायकेकाल॥ ३६॥

... जंगमकाहीं। ईशरूपजानहुमनमाहीं॥ अपनेकहँजानहुहरिदासा। राखहुसदाकृष्णकीआसा॥ ३७॥
...। सबकेपालकहैंबहुनामी॥ जिमिभ्रमसोमालाअहिमाने। तिमिनिजकहसुरनरजियजाने॥
...। तबनिजकहँहरिदासनिवेरो॥ हरिस्वामीमैंदाससदाहीं। असनरेशराखहुमनमाहीं२८॥
...। तामेंमनकरिदेहुमलिंदा॥ प्रेमपियूषकियेजसपाना। नशहिकोटिजनमनिअघनाना॥
...। उरकीविविधवासनाजाई॥

दोहा–ज्ञानीयोगीअरुतपी, संन्यासीव्रतवान। प्रेमीकीसमताकबहुँ, लहैनभूपसुजान॥

तातेप्रीतिसहितसबठोरा। भजहुभूपवसुदेवकिशोरा॥ ३९॥ यहदुस्तरसागरसंसारा। कामादिकजहँग्राहअपारा॥
तरनचहैविनहरिरतितरणी। तिनकीदुखकरणीसबकरणी॥तातेभक्तिनावरचिराजा।उतरहुभवनिधिसहितसमाजा॥

मैत्रेयउवाच।

ब्रह्मपुत्रजबसनतकुमारा। यहिविधिपृथुसोंज्ञानउचारा॥ सोसुनिभूपसराहिसुखारी।जोरियुगलकरगिराउचारी४१॥

पृथुरुवाच।

प्रथमहिमोकहँकृपानिधाना। करिकैकृपादियोवरदाना॥ प्रभुकेवचनहोनसतिहेतू।कियोआगमनइतमतिसेतू॥४२॥

दोहा–दयासिंधुसनकादिप्रभु, भाष्योभगवतज्ञान। सोसुनिभयोसनाथमैं, बाढ्योमोदमहान॥

राजकोपदलभूतिघनेरी। हैसबमेरीसाधुनकेरी॥ मैंहूँहौंसाधुनकरदासा। साधुजूँठयहविभवविलासा॥
भोगहुभोगसाधुकोदीन्ह्यो। मोरनसत्वसत्ययहचीन्ह्यो॥ हैनाहिंमोरदेनअधिकारो। यहसिगरोहैनाथतिहारो॥
आपाहिकोआपहिअबलीजे। मोपरनाथअनुग्रहकीजै॥४३॥प्राणदारसुतगृहपरिवारा। राजकोपदलविभवअपारा॥
सनकादिकअरप्योतुमकाहीं। मोकहँचाहकछूअबनाहीं॥४४॥सेनापतिदंडहुकरधारण।अरुपालनपरजनपरिवारन॥

दोहा–सकललोककोअधिपहू, होनयोगसोइहोत। अखिलशास्त्रजाकेसदा, मुखतेकरतउदोत॥ ४५॥

भोगहिवस्तुआपनीआपै। वखशैविप्रद्रवैजवजापै॥ क्षत्रिआदिविप्रनकेदीने। भोगहिभोगनचीनिनवीने॥ ४६॥
जेहरिमिलनपंथदिखराये। ज्ञानविज्ञानविवेकवताये॥ ऐसेगुरुनउऋणकोउनाहीं। उऋणचहैसोशठजगमाहीं॥
करजोरेविनकोसंसारा। सकेकोनकरिगुरुउपकारा॥ ४७॥

मैत्रेयउवाच।

यहिविधिसुनिपृथुकीमुनिवानी। पायोमहामोदकीखानी॥ लहिभूपतिसोंबहुसतकारा। नृपहिसराहतचारहुँद्वारा॥
सबकेदेखतउडेअकासा। सनकादिकगेब्रह्मनिवासा॥ ४८॥

दोहा–धर्मधुरंधरधरधुरा, धरणिधर्मकीधाक। धीरधुरीननकोअधिप, पृथुपरंद्रध्रुवसाक॥

सनकादिकतेलहिविज्ञाना।पूरणकामभयेमतिवाना॥४९॥देशकालधनबलअनुसारी।कियेकामनृपउचितविचारी॥
सकलकर्मअरपैहरिकाहीं। फलकीआशकरतकछुनाहीं॥ अपनेकहकरतानहिजानै। सबतेअलगआपकोमानै५१॥
सावधाननृपरहैसदाहीं। माधवचरितसुनतक्षणजाहीं॥ यदपिरहेगृहमेंमहराजा। महाचक्रवर्तीक्षितिछाजा॥
पैअशक्तविषयनिनहिंभयऊ।अहंकारनहिंतनउँगयऊ॥जिमिरविनिजप्रतपदहतअनिदूरी। पृथुप्रतापपुहुमीनिमिपूरी५२

दोहा–करतकर्मअसज्ञानयुत, पालनपुहुमिसपर्म। पंचपुत्रपृथुकेभये, नगजाहिरनिजकर्म॥ ५३॥

धूम्रकेशहर्यक्षद्रविनवृक। जेठेभोविजितासुप्रबलपक॥ सबलोकनपालनगुणजेते। धार्योंदेकभूपनिपृथुतेते५४
जैसेजहाँआवतेकाला। तसतहँपालतप्रजनभुवाला॥ मननचकरमहुशीलसुभाऊ। रंजनकरनप्रजनपृथुराऊ॥५५॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–जबपृथुबनकोगवनकिय, तबविजितासुउदार । भयोभूपपाल्योप्रजा, छायोसुयशअपार ॥
दिशाबांटिभाइनकोदीन्हो । आपसुतंत्रराजरतिकीन्हो ॥१॥ हरिजक्षहिदियपूरबआसा । धूम्रकेशकहँदक्षि
दियपश्चिमजाकोवृकनामा । उत्तरदिशिद्रविणहिमतिधामा ॥२॥ रानीताकीभैसिखंडनी ।अवनिजासुआभा
ताकेभेत्रयसुतबलवाना ॥३॥ शुचिअरुपावकअरुपवमाना ॥ पूरुबरहेअगिनियेतीनी । कबहुँबसिष्ठशापति
नाकेभेविजितासुकुमारा । शापभोगिभेअगिनिउदारा ॥४॥ अंतर्धानशक्तिकहँपाई । भोविजितासुप्रबल

दोहा–ताकीदूजीनारिजो, नभस्वतीजेहिनाम । हविरधानताकेभयो, पुत्रपरमबलधाम ॥
ताकेमखमेंवासवआयो । करिबहुछलबलबाजिचुरायो ॥ ताकोचोरहुजानिनरेशा । दियोनवासवबधननि
सकलप्रजनतेनिजकरलीबो । दुसहदंडअपराधिनदीबो ॥ निरदैकर्मजानिविजितासू । छोडिराजकीन्ह्योवन
तहँनितध्यायतंसभगवाना । कियबिकुंठविजतासुपयान ॥७॥ हविरधानकीतियहविधानी ।ताकेपटसुतभे
बर्हिपटकृष्णशुक्कगयाजितव्रत ।औरसत्यधारकनेमनव्रत ॥८॥ बर्हिपदभेबड़भागप्रजापति ।क्रियाकांडमेंनिपु

दोहा–बर्हिपटकेमखकरतमहि, पूरिगईकुशमाहिं । विधिनिदेशलहिव्याहकिय, सामुद्रीतियकाहि
जाकोरह्योशतद्रुतिनामा । नवयौवनसुंदरिछविधामा ॥ जैसेसप्तऋपिनतियदेखी । कामविवशभेअगिनि
तैसेनिरखिशतद्रुतिकाहीं । राजहुकोचितचुम्योतहांहीं ११ चलतिचरननूपुरनबजावति ।शशिसरिसआभादि
तबसुरअसुरसिद्धगंधर्बन ।चंचलचितुचोराबतिसबन ॥१२॥ बर्हिपटनृपवरहीप्राचीना । लह्योनामकरिज
नृपप्राचीनबरहिसातिद्रुतिमह । उपजायोवरदशपुत्रनकह ॥ तेसबनामप्रचेतापाये । येकसुभाउधर्मजगछा

दोहा–सृष्टिकरनकेहेतपितु, तिनकहँशासनदीन । दशहजारभरिपंलो, नसिसमुद्रतपकीन ॥ १
मारगमहँशंकरमिले, जोइकीन्ह्योउपदेश । ताकोविधियुतजपतमुख, पूज्योसुसितरमेश
पुनिमित्रासुतकोपदवानी । बोलेविदुरजोरियुगपानी ॥

विदुरउवाच ।

कहिकारनपथमाहिमुनीशा । मिलेप्रचेतनकोहिगिरीशा ॥ कह्योप्रचेतनसोंहरिजोई । मोहिसुनाइदीनिसरक
दुर्लभदर्शनमुनिनासु । हगहिध्याननिनमुनिरजासू ॥ जोडिनगतनेहिमिलहिविज्ञानी ।तशंकरजगमंगल
महानंदमननानिनन्ददा । नहिपिनगनहोमंगलनहदो ॥ नातिशंभुरूपधारिगोग । चलनउतिनराहिनगु ॥
मुनिकोविदुरानन्दअनुराग । मित्रासुतमरागननलाग ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–जबपृथुवनकोगवनकिय, तबविजितासुउदार । भयोभूपपाल्योप्रजा, छायोसुयशअपार ॥
दिशाबांटिभाइनकोदीन्ही । आपसुतंत्रराजरतिकीन्ही ॥१॥ हरिजक्षहिदियपूरवआशा । धूम्रकेशकहँदक्षि
दियपश्चिमजाकोवृकनामा । उत्तरदिशिद्रविणहिमतिधामा ॥२॥ रानीताकीभैसिखंडनी ।अवनिजासुआभा
ताकेभेत्रयसुतवलवाना ॥३॥ शुचिअरुपावकअरुपवमाना ॥ पूरुवरहेअगिनियेतीनी । कबहुँवसिष्ठशापति
जाकेभेविजितासुकुमारा । शापभोगिभेअगिनिउदारा ॥४॥ अंतर्धानशक्तिकहँपाई । भोविजितासुप्रबल
दोहा–ताकीदूजीनारिजो, नभस्वतीजेहिनाम । हविरधानताकेभयो, पुत्रपरमबलधाम ॥
ताकेमखमेंवासवआयो । करिबहुछलबलवाजिचुरायो ॥ ताकोचोरहुजानिनरेशा । दियोनवासववधननि
सकलप्रजनतेनिजकरलीवो । दुसहदंडअपराधिनदीवो ॥ निरदैकर्मजानिविजितासू । छोडिराजकीन्ह्योवन
तहँनितध्यायतंसभगवाना । कियविकुंठविजतासुपयाना ॥७॥ हविरधानकीतियहविधानी ।ताकेपटसुतभेव
वर्हिपटकृष्णशुक्लगयजितव्रत ।औरसत्यधारकनेमनव्रत ॥८॥ वर्हिपदभेवड़भागप्रजापति ।क्रियाकांडमेंनिपुण
दोहा–वर्हिपटकेमखकरतमहि, पूरिगईकुशमाहिं । विधिनिदेशलहिव्याहकिय, सामुद्रीतियकाहि
जाकोरह्योशतद्रुतिनामा । नवयौवनसुंदरिछविधामा ॥ जैसेसप्तऋषिनतियदेखी । कामविवशभेअगिनि
तैसेनिरखिशतद्रुतिकाहीं ।राजहुकोचितचुम्योतहाँहीं ११ चलतिचरननूपुरनवजावति ।शशिसरीसआभादि
तबसुरअसुरसिद्धगंधर्वन ।चंचलचितुचोरावतिसर्वन ॥१२॥ वर्हिपटनृपवरहीप्राचीना । लह्योनामकरिज्ञय
नृपप्राचीनवरहिसातेदुतिमह । उपजायोवरदशपुत्रनकह ॥ तेसबनामप्रचेतापाये । येकसुभाउधर्मजगछाये
दोहा–सृष्टिकरनकेहेतपितु, तिनकहँशासनदीन । दशहजारभरिवर्षलों, वसिसमुद्रतपकीन ॥ १
मारगमहँशंकरमिले, जोइकीन्हचोउपदेश । ताकोविधियुतजयतमुख, पूज्योसुखितरमेश
पुनिमित्रासुतकीयहवानी । वोलेविदुरजोरियुगपानी ॥

विदुरउवाच ।

केहिकारणपथमाहिमुनीशा । मिलेप्रचेतनकाहिगिरीशा ॥ कह्योप्रचेतनसोंहरिजोई । मोहिसुनाइदीजैसबसो
हेदुर्लभदर्शनमुनितासू ।करहिंध्याननितमुनिवरजासू ॥ छोडिजगतजेहिमिलहिविज्ञानी ।तेशंकरजगमंगलदा
ब्रह्मानंदमगननितरहही । तदपिजगतकोमंगलचहही ॥ तातेशंभुरूपधरिघोरा । बैलचढेविचरहिंचहुँवोरा
सुनिकेविदुरवचनअनुरागे । मित्रासुतसबवरननलागे ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–जबनिदेशदीन्ह्योसुतन, नृपवरहीप्राचीन । पितुशासनधरिशीशमें, दशौपुत्रपरवीन ॥
गेपश्चिमदिशितपमनलाई ।पहुँचेसागरतटमहँजाई १९ तहँदेख्योयकसरअभिरामा ।मुनिमनसमअलभरयोल
फूलेवारिजचारिप्रकारा । कच्छपमच्छकरहिंसंचारा ॥ चक्रवाकसारसअरुहंसा । करहिंशोरचहुँकितदुसभं
कुंजनकुंजनगुंजहिंभृंगा । औरहुबोलहिंविपुलविहंगा ॥ लोनीलतालपटितरुलहरे । अतिसिपरीछायाछि
पदुमपरागपवनकेसंगा । उड़तमदालेदिशचहुरंगा ॥ २२ ॥ तहाँनायदशपानकुमारा । सुनेमृदंगगानरगु
दोहा–अचरजकोगानसुनि, महामनोहरजोइ । विस्मितह्वैयहकहतभे, यहिसरमहँकहहोइ ॥ २३ ॥
ताहीछनपवनगेरसनेर । निकसनथोशंकरकहेर ॥ गौरिगणनमहितत्रिपुरारी । वैलचढेअहिअंगनिधारी ॥
चहुँकित्रगानकर्णहिंगंधर्वा । पावननादहिंमंजुलसर्वा ॥२४ ॥नयनहिमसमहहनकामा । नीलकंठत्र्यंबकहानि
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible]

तियत् ॥ तत्त्वंब्रह्मपरंज्योतिराकाशमिवविस्तृतम् ॥ ६० ॥ योमाययेदंपुरुरूपयासृजद्बिभर्तिभूयः
विक्रियः॥यद्भेदबुद्धिःसदिवात्मदुःस्थयातमात्मतंत्रंभगवन्प्रतीमहि ॥ ६१॥ क्रियाकलापैरिदमेवयोगिनः
साधुयजंतिसिद्धये ॥ भूतेंद्रियांतःकरणोपलक्षितंवेदेचतंत्रेचतएवकोविदाः ॥ ६२ ॥
स्तयारजःसत्वतमोविभिद्यते ॥ महानहंखंमरुदाग्निवार्धराःसुरर्षयोभूतगणाइदंयतः ॥ ६३ ॥
प्रविष्टश्चतुर्विधंपुरमात्मांशकेन ॥ अथोविदुस्तंपुरुषंसंतमंतर्भुंक्तेहृषीकैर्मधुसारघंयः ॥ ६४ ॥
चंडवेगोविकर्षसित्वंखलुकालयानः ॥ भूतानिभूतैरनुमेयतत्त्वोघनावलीर्वायुरिवाविषह्यः ॥ ६५ ॥
तिकृत्यचिंतयाप्रवृद्धलोभंविषयेषुलालसम् । त्वमप्रमत्तःसहसाभिपद्यसेक्षुल्लेलिहानोहिरिवाखुमंतकः ॥
कस्त्वत्पदाब्जंविजहातिपंडितोयस्तेऽवमानव्ययमानकेतनः ।
देश ॥ ६७ ॥ अथत्वमसिनोब्रह्मन्परमात्मन्विपाश्चिताम् । विश्वंरुद्रभयध्वस्तमकुतश्चिद्भयागतिः ॥ ६८

दोहा—हेविशुद्धभूपतिसुवन, यहअस्तोत्रसप्रीति । करहुपाठनिजधर्मयुत, राखिकृष्णपरतीति ॥ ६९

सबजगमेंव्यापितभगवाना।जगतनाथसोइकृपानिधाना ७०
योगादेशअहैयहिनामा । जोअस्तोत्रभनैअभिरामा ॥ ताकोपाठकरहुदिनरैना । यहिसमानउत्तमकछुहैना ॥
हमकोअरुभृगुआदिककाहीं।पूरबकालविरंचिकृपाहीं॥सबकोयहअस्तोत्रपढाये॥७२
पढिअस्तोत्रतजेअज्ञाना । जगमहँसृजेप्रजाविधिनाना॥७३ ॥तातेसावधानह्वैतुमहू ।

दोहा—नामकयोगादेशयह, अस्तवकरैजोपाठ॥सोआशुहिपावतप्रमुद, छूटतहियकीगांठ ॥

नारायणपारायणहोवै । कोटिजन्मकेपातकखोवै ॥ ७४ ॥ जेतनेजगमहँहैंकल्याना।तिनमेंजानहुज्ञानप्रधाना
रहैज्ञानतेहियामहँआठा । करैजोयहअस्तोत्रहिपाठा॥चढिकैज्ञानतरणिमतिमाना।भवसागरतरिजातमहाना
हरिअस्तवमेंजोयह
जोन हिआशुत तनको

दोहा—उठिप्रभातकरजोरिकै, प्रीतिसहितजनजोय । पढैसुनैअस्तोत्रयह, तासुजनमनहिंहोय ॥ ७८

यहअस्तवजोमेंकह्यो, तुमसोंराजकुमार । ताहिजपततपअंतमें, पूजिहिकामतुम्हार ॥ ७९ ॥

इति श्रीसिद्धिश्रीम...
बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेचतुर्विंशस्तरंगः

मैत्रेयउवाच।

दोहा—यहिविधिभूपतिसुवनसों, कहिलहिकैसनमान । तिनकेदेखततहँभये, शंकरअंतरधान ॥ १ ॥

हरकृतअस्तवयोगादेशा । पापप्रचेताविनहिकलेशा ॥ जपनकियेतपजलमधिजाई । दशहजारसंवतमनलाई
कर्मनिरतवरहीप्राचीने । नारदमुनिजियजानिप्रवीने॥ जायनरेशनिकटमुनिराई । लहिआदरअसगिरासुनाई
जगमहँकरिकैकर्मअपारा।चहहुकौनकल्याणउदारा॥सुखमिलिबोअरुदुखकीहानी।कहहिंनयहिमंगलविज्ञानी
सुनिनारदकेवचनमहीशा । बोलतभयोनायपदशीशा ॥

राजोवाच।

। जानहिंनहिंविज्ञानबड़भागे ॥

दोहा—परमकृपाकरिनाथमोहिं, दीजैविमलविज्ञान । जातेकर्मनबंधते, छूटिलहौंकल्यान ॥ ५ ॥

। करिसनेहजनवसतअगारे ॥ याहीकोपरमारथमाने । केहिविधिछूटैकुमतिकल्या
। मोक्षमार्गनहिंगुनगँवारा ॥ ६ ॥ सुनिप्राचीनवर्हिकीबानी । बोलेनारदमुनिविज्ञानी

नारदउवाच ।

। तेअववैरीभयेतिहारे ॥ कियोनकछुजीवनपरदाया । हनीहजारनपशुकीकाया ॥ ७ ॥
। चाहहिंआशुतुम्हारोनाशा ॥ जवमरिहौवरहीप्राचीने । तवजेपशुनमारिमखकीने ॥
दोहा–तेवेसहसनपशुतुम्हें, लोहसींगशिरधारि । सवअंगनकोछेदिहैं, पूरववैरविचारि ॥ ८ ॥
। जोसुनिह्वैहैशोकविनासा ॥ चरितपुरंजनकोमैंगाई । आदिअंततेदेतसुनाई ॥ ९ ॥
पुरंजनराजा । जाकोयशजगमाहिंदराजा॥तासुसखानामकअविज्ञाता।जासुकर्मकोहुजानिनजाता ॥ १०॥
हितनृपनगर । ११ यदपिधरणिमहँनगरअपारा।तदपिननिवसनयोगविचारा
पुरंजननाहीं । १२एकसमयगमन्योहिमवाना।तेहिदिशिदक्षिणनगरदेखाना॥
दोहा–लक्षितह्वैलक्षणसकल, जामहैंनवद्वार ॥१३॥ ऊंचअटापरिखागहिर, तोरनतुंगप्रकार ॥
१४॥फूलनफटिकफरशअतिफावै।मरकतमणिमंडितमहभावै॥
भीतनदिवाला । सोहतसुभगसुखदशशिशाला ॥ छाजतछज्जालालनकेरे । हीरनहोदहरैहियहेरे ॥
। जामेंएकोवातनविगरी ॥ १५ ॥ चौहटहाटवाटवहुघाटा । केलिसदनठढ़ेवहुठाटा ॥
[illegible] १६
दोहा–पुरचहुँकितउपवनरुचिर, नवलतिकाद्रुमकुंज । कलरवकरहिंविहंगकुल, मंडितमधुपनपुंज ॥
। औरहुवनेसुखदगृहवागा ॥ १७ ॥ शीतलमंदसुगंधसमीरा । वहतहरततनकीसवपीरा ॥
। पूरीपुहुमिपरागमहाई ॥ सरसीसरससरससरसाहीं । विकसितवारिजवहुदरशाहीं ॥१८॥
जहँतहँकरहिंविहारकुरंगा । ह्वैअभीतविचरहियकसंगा॥कोकिलकूजहिंकुंजनमाहीं । मनहुवलावहिंपथिकनकाहीं॥
एसेपुरमहँभूपपुरंजन । कियोनिवासदेखिमनरंजन । पुरउपवनमहँनृपइकवारा । गयेकरनमनमुदिताविहारा ॥१९॥
दोहा–तहांपुरंजनलखतभो, एकसुंदरीनारि । विचरनहितआईसोऊ, वनरमणीयविचारि ॥
ताकेसँगदासीदशसोहैं । जेवरवसकामिनमनमोहैं॥यकयकतियप्रतिशतशतदासा।चलैचहूँकितसहितहुलासा॥२०॥
पाँचशीशकोएकफणीशा । चोपदारसोइरह्योमहीशा॥ऐसीसोसुंदरिवनमाहीं । निजहितखोजतिवरपतिकाहीं॥२१॥
योवनवतीदंतजेहिचारू । सुभगनासिकामुखसुखसारू॥मनहुआरसीगोलकपोला।तिनमेंहलकतकुंडललोला ॥२२॥
सुवरणवरणवसनछविछावे । अतिसूक्षमकटितासुसुहावे ॥ तामेंकनकचारुचौरासी । सोहतिवालनवलचपलासी ॥
दोहा–रतनजड़ितनूपुरयुगल, चरणकरतकलशोर । मनहुदेवमायामही, चलिआईचितचोर ॥ २३ ॥
कनककलशसमयुगकुचकाहीं।गोवतिपुनिपुनिअंचलमाहीं॥मत्तमतंगनिरखिगतिताकी।लज्जितलहैनसरिसुखमाकी॥
निरखिपुरंजनकाहिलजाई । करतिकटाक्षमंदमुसक्याई ॥ तासुनैनशरनृपउरमाहीं । भेदुशालतेहिकालतहाँहीं ॥
वीरपुरंजनलहिसुखऐना । कह्योवालसोंमंजुलवैना ॥ २५ ॥ अहोकौनतुमपंकजनैनी । काकीदुहिताहोसुखदैनी ॥
केहिकारणयहिवनपगुधारी । कौनकामनासुपरितिहारी ॥ मोसोंकहहुकृपाकरिभारी।तनमनतेतुममोकहँप्यारी२६
दोहा– तेरेसँगयेकौनभट, एकादशसुकुमारि । वेगिवतावहुसुंदरी, कौनिअहैदशनारि ॥
चोपदारजोतोरभुजंगा । तेहिकेसेल्याईनिजसंगा ॥२७॥ किधौरमाहोकिधौभवानी।देखिपरहुतुमसवगुणखानी ॥
किधौलाजमूरतिधरिआई । मोसोंसुंदरिदेहुवताई ॥ मुनिसमविचरिमहावनमाहीं । खोजहुधौंनिजपतिमकाहीं ॥
लहेजेजनतुवपदअरविंदा । तिनहिनकछुचाकीआनंदा॥होतुमरमासत्यमोहिभायो।कहांपाणितपदुमगिरायो॥२८॥
पैतुमरमानहोमनहारी । देवनहोहिधरणिसंचारी ॥ तातेसुनिकैविनयहमारी । मोपैदयादीठिपसारी ॥
दोहा–नवलनगरयहआपनो, नागरिलेहिविचारि । तामेंवसिमोहिसंगले, विहरहुनितसुकुमारि ॥
वासवशचीसरिसहमदोई । करहिंविहारस्वर्गकरजोई॥२९॥मोहकमानतानिदगवाना।मारिकियामहियोगनिशाना॥
देहदहतअवमदनदवारी । [illegible]सुधादेहुनिवारी ॥ मतेरोखेवकह्वैरहिहौं । निशिदिनतुवपदपंकजगहिहौं ॥ ३० ॥

तिपत् ॥ तत्त्वंब्रह्मपरंज्योतिराकाशमिवविस्तृतम् ॥ ६० ॥ योमाययेदंपुरुरूपयासृजद्बिभर्तिभूयःक्षपयत्यविक्रियः।यद्भेदबुद्धिःसदिवात्मदुःस्थयातमात्मतंत्रंभगवन्प्रतीमहि ॥ ६१॥ क्रियाकलापैरिदमेवयोगिनःश्रद्धान्विता साधुयजंतिसिद्धये ॥ भूतेंद्रियांतःकरणोपलक्षितंवेदेचतंत्रेचतएककोविदाः ॥ ६२ ॥ त्वमेकआद्यःपुरुषःसुप्तशक्तिस्तयारजःसत्वतमोविभिद्यते ॥ महानहंखंमरुदग्निवाधराःसुरर्षयोभूतगणाइदंयतः ॥ ६३ ॥ सृष्टंस्वशक्त्येदमनुप्रविष्टश्चतुर्विधंपुरमात्मांशकेन ॥ अथोविदुस्तंपुरुषंसंतमंतर्भुक्तेहृषीकैर्मधुसारघंयः ॥ ६४ ॥ सएषलोकानतिचंडवेगोविकर्षसित्वंखलुकालयानः ॥ भूतानिभूतैरनुमेयतत्त्वोघनावलीर्वायुरिवाविषह्यः ॥ ६५ ॥ प्रमत्तमुच्चैरितिकृत्यचिंतयाप्रवृद्धलोभंविषयेषुलालसम् । त्वमप्रमत्तःसहसाभिपद्यसेक्षुल्लेलिहानोहिरिवाखुमंतकः ॥ ६६॥ कस्त्वत्पदाब्जंविजहातिपंडितोयस्तेऽवमानव्ययमानकेतनः । विशंकयास्मद्गुरुरर्चतिस्मयद्विनोपपत्तिंमनवश्चतुर्दश ॥ ६७ ॥ अथत्वमसिनोब्रह्मन्परमात्मन्विपश्चिताम् । विश्वंरुद्रभयध्वस्तमकुतश्चिद्भयागतिः ॥ ६८ ॥

दोहा–हेविशुद्धभूपतिसुवन, यहअस्तोत्रसप्रीति । करहुपाठनिजधर्मयुत, राखिकृष्णपरतीति ॥ ६९ ॥

सवजगमेंव्यापितभगवाना।जगतनाथसोइकृपानिधाना ७० पूजहुतिनहिंधारिहियध्याना।कृपाकरहिंगेकृपानिधाना॥ योगादेशअहैयहिनामा । जोअस्तोत्रभनेंअभिरामा ॥ ताकोपाठकरहुदिनरैना । यहिसमानउत्तमकछुहैना ॥ ७१॥ हमकोअरुभृगुआदिककाहीं।पूरवकालविरंचिकृपाहीं॥सवकोयहअस्तोत्रपढाये॥७२॥तवहमप्रजनसृजनमनलाये॥ पढिअस्तोत्रतजेअज्ञाना । जगमहँसृजेप्रजाविधिनाना॥७३ ॥तातेसावधानह्वतुमहू । पाठकरहुयुतनेमहुयमहू ॥

दोहा–नामकयोगादेशयह, अस्तवकरेंजोपाठ॥सोआशुहिपावतप्रमुद, छूटतहियकीगांठ ॥

नारायणपारायणहोवे । कोटिजन्मकेपातकखोवे ॥ ७४ ॥ जेतनेजगमहँहैंकल्याना।तिनमेंजानहुज्ञानप्रधाना ॥ रहैज्ञानतेहियामहँआठा । करैजोयहअस्तोत्रहिपाठा॥चढिकैज्ञानतरणिमतिमाना।भवसागरतरिजातमहाना॥७५॥ हरिअस्तवमेंजोयहभाष्यो।जोजनअपनेमुखनितराख्यो॥सोजनसकलपुण्यफलपायो।सवविधितेयदुपतिपदध्यायो॥ करैजौनजौनहिमनआसा।देहिआशुतेहिरमानिवासा॥ममभाषितअस्तोत्रसुहावन।पतितनकोकारकअतिपावन ७७

दोहा–उठिप्रभातकरजोरिकै, प्रीतिसहितजनजोय । पढ़ैसुनैअस्तोत्रयह, तासुजनमनहिंहोय ॥ ७८ ॥

यहअस्तवजोमैंकह्यो, तुमसोंराजकुमार । ताहिजपततपअंतमें, पूजिहिकामतुम्हार ॥ ७९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेचतुर्विंशस्तरंगः ॥२४॥

मैत्रेयउवाच।

दोहा–यहिविधिभूपतिसुवनसों, कहिलहिकैसनमान । तिनकेदेखततहँभये, शंकरअंतरधान ॥ १ ॥

हरकृतअस्तवयोगादेशा । पापप्रचेताविनहिकलेशा ॥ जपनकियेतपजलमधिजाई । दशहजारसंवतमनलाई ॥२॥ कर्मनिरतवरहीप्राचीनै । नारदमुनिजियजानिप्रवीनै॥ जायनरेशनिकटमुनिराई । लहिआदरअसगिरासुनाई॥ ३॥ जगमहँकरिकैकर्मअपारा।चहहुकौनकल्याणउदारा॥सुखमिलिवोअरुदुखकीहानी।कहहिंनयहिमंगलविज्ञानी ॥४॥ सुनिनारदकेवचनमहीशा । बोलतभयोनायपदशीशा ॥

राजोवाच।

हमकर्मअशक्तअभागे । जानहिंनहिंविज्ञानबडभागे ॥

दोहा–परमकृपाकरिनाथमोहिं, दीजेविमलविज्ञान । जातेकर्मनवंधते, छूटिलहौंकल्यान ॥ ५ ॥

[illegible] । करिसनेहजनवसतअगारे ॥ याहीकोपरमारथमाने । केहिविधिलहैकुमतिकल्याने ॥ [illegible] । मोक्षमार्गनहिंगुनैगँवारा ॥ ६ ॥ सुनिप्राचीनवर्हिककीवानी । बोलेनारदमुनिविज्ञानी ॥

नारदउवाच ।

जेपशुतुममखमहँमारे । तेअबवैरीभयेतिहारे ॥ कियोनकछुजीवनपरदाया । हनीहजारनपशुकीकाया ॥ ७ ॥
खहुखड़ेअकाशा । चाहहिंआशुतुम्हारोनाशा ॥ जबमरिहौवरहीप्राचीने । तबजेपशुनमारिमखकीने ॥
दोहा--तेवेसहसनपशुतुम्हें, लोहसींगशिरधारि । सबअंगनकोछेदिहैं, पूरववैरविचारि ॥ ८ ॥
हौंयेकइतिहासा । जोसुनिह्वैहैशोकविनासा ॥ चरितपुरंजनकोमैंगाई । आदिअंततेदेतसुनाई ॥ ९ ॥
पुरंजनराजा । जाकोयशजगमाहिंदराजा॥तासुसखानामकअविज्ञाता।जासुकर्मकोहुजानिनजाता ॥ १०॥
सनहेतनृपनगरनपायो।खोजतसकलपुहुमिफिरिआयो११ यदपिधरणिमहँनगरअपारा।तदपिननिवसनयोगविचारा
पुरलह्योपुरंजननाहीं।भयोदुखिततबअतिमनमाहीं१२एकसमयगमन्योहिमवाना।तेहिदिशिदक्षिणनगरदेखाना॥
दोहा--लक्षितह्वैलक्षणसकल, जामेंहैनवद्वार ॥१३॥ ऊँचअटापरिखागहिर, तोरनतुंगप्रकार ॥
करजतकेलसेंझरोखे।ऊंचनिवासविलासनचोखे॥१४॥फूलनफटिकफरशअतिफावे।मरकतमणिमंडितमहभावै॥
विनीदेवाला । सोहतसुभगसुखदशशिशाला ॥ छाजतछज्जालालनकेरे । हीरनहौदहरैहियहेरे ॥
भोगवतीसमसोहतिनगरी । जामेंएकोबातनबिगरी ॥ १५ ॥ चौहटहाटबाटबहुघाटा । केलिसदनठाढ़ेबहुठाटा ॥
फविफविफहरतविमलपताके।मानहुछुवतभानुरथचाके॥रतनचौतरेचहुँकितचारू।विविधवस्तुतेवलितबजारू १६
दोहा--पुरचहुँकितउपवनरुचिर, नवलतिकाद्रुमकुंज । कलरवकरहिंविहंगकुल, मंडितमधुपनपुंज ॥
सोहतनिर्मलनीरतडागा । औरहुबनेसुखदगृहबागा ॥ १७ ॥ शीतलमंदसुगंधसमीरा । वहतहरततनकीसवपीरा ॥
रहतवसंतसदाऋतुछाई । पूरीपुहुमिपरागमहाई ॥ सरसीसरससरससरसाहीं । विकसितवारिजबहुदरशाहीं ॥१८॥
जहँतहँकरहिंविहारकुरंगा । ह्वैअभीतविचरहिंयकसंगा॥कोकिलकूजहिंकुंजनमाहीं । मनहुबलावहिंपथिकनकाहीं॥
ऐसेपुरमहँभूपपुरंजन । कियोनिवासदेखिमनरंजन । पुरउपवनमहँनृपइकबारा । गयेकरनमनमुदितविहारा ॥१९॥
दोहा--तहांपुरंजनलखतभो, एकसुंदरीनारि । विचरनहितआईसोऊ, वनरमणीयविचारि ॥
ताकेसँगदासीदशसोहैं । जेवरवसकामिनमनमोहैं॥यकयकतियप्रतिशतशतदासा।चलैंचहूँकितसहितहुलासा॥२०॥
पाँचशीशकोएकफणीशा । चोपदारसोइरह्योमहीशा॥ऐसीसोसुंदरिबनमाहीं । निजहितखोजतिवरपतिकाहीं॥२१॥
यौवनवतीदंतजेहिचारू । सुभगनासिकामुखसुखसारू॥मनहुआरसीगोलकपोला।तिनमेंझलकतकुंडललोला॥२२॥
सुवरणवरणवसनछविछावे । अतिसूक्षमकटितासुसुहावे ॥ तामेंकनकचारुचौरासी । सोहतिबालनवलचपलासी ॥
दोहा--रतनजड़ितनूपुरयुगल, चरणकरतकलशोर । मनहुदेवमायामही, चलिआईचितचोर ॥ २३ ॥
कनककलशसमयुगकुचकाहीं।गोवतिपुनिपुनिअंचलमाहीं॥मत्तमतंगनिरखिगतिताकी।लज्जितलैहैनसरिसुखमाकी।
निरखिपुरंजनकाहिलजाई । करतिकटाक्षमंदमुसक्याई ॥ तासुनैनशरनृपउरमाहीं । भेदुशालतेहिकालतहाँहीं ॥
वीरपुरंजनलहिसुखऐना । कह्योबालसोंमंजुलबैना ॥ २५ ॥ अहोकौनतुमपंकजनैनी । काकीदुहिताहोसुखदैनी ॥
केहिकारणयहिबनपगुधारी । कौनकामनासुपरितिहारी ॥ मोसोंकहहुकृपाकरिभारी।तनमनतेतुममोकहँप्यारी२६
दोहा-- तेरेसँगयेकौनभट, एकादशसुकुमारि । वेगिबतावहुसुंदरी, कोनिअहैदशनारि ॥
चोपदारजोतोरभुजंगा । तेहिकेसेल्याईनिजसंगा ॥२७॥ किधौंरमाहोकिधौंभवानी।देखिपरहुतुमसबगुणखानी ॥
किधौंलाजमूरतिधरिआई । मोसोंसुंदरिदेहुबताई ॥ मुनिसमविचरिमहावनमाहीं । खोजहुधौंनिजपीतमकाहीं ॥
लहेजेजनतुवपदअरविंदा । तिनहिनकछुबाकोआनंदा॥होतुमरमासत्यमोहिभायो।कहांपाणितेपदुमगिरायो॥२८॥
पैतुमरमानहोमनहारी । देवनहोहिधरणिसंचारी ॥ तातेसुनिकैविनयहमारी । मोपैदयादीठिपसारी ॥
दोहा--नवलनगरयहआपनो, नागरिलेहिविचारि । तामेंवसिमोहिसंगलै, विहरहुनितसुकुमारि ॥
वासवशचीसरिसहमदोई । करहिंविहारस्वर्गकरजोई॥२९॥मोहकमानतानिद्दगबाना।मारिकियोमहियोगनिशाना॥
देहदहतअबमदनदवारी । ????सुधादेदेहुनिवारी ॥ मैतेरोसेवककह्वैरहिहौं । निशिदिनतुवपदपंकजगहिहौं ॥ ३० ॥

... दृगसंजनखिपरहिनपलकें।धुकुटिक्रधुसरश्रवतसुधादे।शशिसमसुखछविछईवसुधाहे ... । मोहिदेसाउदुराउनप्यारी ॥ ... हाई ॥ ३१ ॥

दोहा—सुनतपुरंजनकेवचन, प्रेमभरेअतिदीन । ...

... अवपिआनँददरशाई३२जोमोहिजन्योनमैंतेहिजानै।नामजातिकरमोहिनभानो ३३॥ कहँतेकोहिहितमैंइतआई । कोयहसुंदरपुरीवनाई ॥ कौनअहौतुमकाकेभाई । नहिकछुमोकहँपरजनाई ॥ ३४ ॥ यसवसखासखीहिमेरे । रक्षतमोहिभुजँगवसिनेरे ॥ जवमैंसोइहोंतवयहजागी । मेरीपुरीक्षणहुनहित्यागी ॥ ३५ ॥ भूपतिआपभलेइतआये । मेरेउरआनँदअतिछाये ॥ जोनआपकीन्हेमनकामा । सोहमपूरहिंगवसुयामा ॥ साखिनसखासँगनिकटतिहारे । रहिहहिंमहलहिंमोदअपारे ॥ ३६ ॥

दोहा—यहनगरीनवद्वारयुत, प्रमुदितवसहुनरेश । मेरेसँगवहुवर्पलों, भोगहुभोगअशेश ॥ ३७ ॥

होतुमरसिकशिरोमणिभूपा।तुमहिछोड़िकोभजेकुरूपा॥जेपरलोकमृपाजियजानै।तिनकोजानहुपशुनसमानै॥३८॥ अर्थधर्मअरुकामअबाधक।सुतसुखअमलसुयशकोसाधक॥असगृहस्थआश्रमकोजानो।सुखदलोकप्रदताकहमानो॥ सोगृहस्थआश्रमसुखकाही । संन्यासीजानेकछुनाही ॥३९॥ देवपितरऋषिभूतहुनाना । पायगृहस्थनतेसनमाना ॥ करहिंसदातिनकोकल्याना।यहीसरिसआश्रमनहिंआना॥४०॥नागरगुणआगरसुखदाई।तुमसमप्रियपीतमकहँपाई॥ मोसमरूपवतीकोनारी । वरैनतुमकहँयोगविचारी ॥ ४१ ॥

दोहा—भुजँगभोगभुजरावरे, केहिमनहरिनहिंलेहु । विचरिअनाथनविहँसितकि, सुखसागरतुमदेहु ॥ ४२ ॥

नारदउवाच ।

यहिविधिदोउप्रणकरितहँभारी । दंपतिप्रीतिप्रतीतिपसारी ॥ गहिपुरंजनीकोतहँहाथा । गयोपुरंजनपुरलेसाथा ॥ तहाँवसेदंपतिशतवर्षा । केलिकुतूहलकरतसहर्षा ॥ ४३ ॥ करहितहाँगायकगणगाना । सोहिरहीनारीसइसाना ॥ मध्यपुरंजनअरुपुरंजनी।करहिकेलिसवशोकगंजनी॥सरासिनगमनहिग्रीषममाहीं।विविधकरहिजलकेलितहाहीं ४४॥ पुरमहँसातउपरकेद्वारा । द्वैनीचेकेनृपतिउदारा ॥ तिनद्वारनह्वैदेशननाना । सदापुरंजनकरैपयाना ॥ रह्योनगरकोनायकजोई । ताकोतहँजान्योनहिकोई ॥ ४५ ॥

दोहा—यकदक्षिणयकउत्तरै, पूरुवद्वारेपांच । पश्चिममेंद्वैजानिये, नामसुनोतेहिसांच ॥ ४६ ॥

आविर्मुखीऔरखद्योता । द्वौयकथलपूरवसुखसोता ॥ तिनह्वैरूपदेशकहँदेखन । जातपुरंजनमुदितअलेखन ॥ द्युमतनामलैसखासंगमें । करतसैरनृपसुखउमंगमें ॥ ४७ ॥ नलिननालिनीद्वैदरवाजे । येऊयकथलपूरवभ्राजे ॥ तिनह्वैसौरभदेशहिकाहीं । लैअवधूतसखासँगमाहीं ॥ जातपुरंजनकरनविहारा । संगसकलसोहहिंसरदारा ॥४८॥ पँचयोपूरवमुखदरवाजा ॥ तहँह्वैनिकासिपुरंजनराजा ॥ आपनऔरवहूदनदेसै । जातकरनवहुसैरहमेसै ॥

दोहा—तवरसज्ञअरुविपिनद्वै, सखालियेनिजसंग । विहरतदोऊदेशमें, रँगेप्रीतिकेरंग ॥ ४९ ॥

दक्षिणद्वारपितृहूनामा ...
नामदेवहूउत्तरद्वारा । ...
पश्चिमद्वारआसुरीनामा । तहँ ...
निरितिनामपश्चिमदरवाजा । ...

दोहा—पेससकतानिरवाकद्वे, रहतअंधपुरमाहिं । यकलैसँगकारजकरत, यकलैजातसदाहिं ॥ ४५ ॥

... । गमनततेहिअंतहपुरकाहीं ॥ विपूचीनसँगसखाप्रवीना । जातसंगताकेरसभीना ॥ ... । हरपतमोहतवारहिवारा ॥ कहूपुरंजनहोतप्रसन्ना । भोपुरंजनीकेरप्रपन्ना ॥ ५५ ॥ ... । सदाकामरसमलवलीना ॥ जोइजोइकरैपुरंजनरानी । सोइपुरंजनकरैअज्ञानी ॥५६॥ ... । तवसोउमदरसरहेलोभाना ॥ दोउविसंगह्वैयकसँगसोवैं । तनमनकीसवसुधिबुधिखोवैं ॥

दोहा-जवपुरंजनीखातिहै, तवहिपुरंजनखात। जवजलपियेपुरंजनी, तवसोउजलहिअघात ॥ ५७ ॥
जवपुरंजनीगीतनगावै। तवसोऊगावतसुखपावै ॥ जवपुरंजनीरोदनकरई। तवसोउरोदनकरिदुखभरई ॥
जवपुरंजनीहँसैठठाई। तवसोउहँसैमहासुखपाई ॥ जवपुरंजनीवैनानिवोलै। तवहिपुरंजननिजमुखखोलै ॥ ५८ ॥
जवपुरंजनीगमनैधाई। तवआपहुधावतपछिआई ॥ जवथकिठाढ़िहोतिनिजप्यारी। ठाढ़होततवभूपसुखारी ॥
जहँसोवतितहँसोवतसोऊ। जहँवैठतितहँवैठतवोऊ ॥ ५९ ॥ जोपुरंजनीसुनैश्रवणमें। सुनैपुरंजनसोतेहिक्षणमें ॥
दोहा-जोपुरंजनीदेखती, लखैपुरंजनसोय। जोसूँघैसोसूँघतो, वाहीकोमुखजोय ॥
जोइपरसैसोइपरसतो ॥ ६० ॥ शोचतशोचतसोय। दीनहोतलखिदीनसोउ,सुखीसुखीलहिहोय ॥ ६१ ॥
याहिविधिनारीकेविवश, भयोपुरंजनराज। यंत्रीवशजिमिदारुमृग, नाचतमध्यसमाज ॥ ६२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज
सिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कन्धेपंचविंशस्तरंगः ॥ २५ ॥

नारदउवाच।

दोहा-एकसमैसोधनुपधरि, मुदितपुरंजनराज। स्यंदनमेंद्रुतचढतभो, मृगयाखेलनकाज ॥
नाधेरथमेंपंचतुरंगा। उभैदंडदुइचक्रअभंगा ॥ एकजुवाहैतीनपताके। वंधुरपंचहुपरमप्रभाके ॥ १ ॥
रज्जुएकसारथियकजाको। कूवरद्वयकवैठकताको ॥ आयुपपंचमसप्तआवर्णा। औरसाजसववलितसवर्णा ॥
रथगतिजानहुपाँचप्रकारा ॥ २ ॥ कनककवचनृपपहिरिउदारा ॥ अछैतूणकसिकंधनरेशा ॥ रथचढिचल्योलखनसवदेशा ॥
दशअक्षोहिणीहैसँगजाके। ग्यारहोचारुचमूपतिताके ॥ पंचश्रृंगरहजेहिवनमाहीं। तुरतपुरंजनगयोतहांहीं ॥
गोपुरंजनीकोपररापी ॥ ३ ॥ नृपखेलनशिकारअभिलापी ॥
दोहा-लैधनुशरकरविपिनमें, खेलनलग्योशिकार ॥ ४ ॥ गहेअसुरीवृत्तिको, तजिदायतेहिवार ॥
शरसोंवहुवनजीवनमारचो। धर्मअधर्मननेकुविचारचो ॥ ५ ॥ लिख्योशास्त्रमेंअसनृपराई। यज्ञहेतभूपतिवनजाई ॥
मारैमृगनप्रयोजनहेतू। अधिकहनैसोपापनिकेतू ॥ ६ ॥ हिंसाकरैजोऐसोजानी। ताहिनपापीकवहुँवखानी ॥ ७ ॥
जोसवदिनजीवनकोमारै। भोजनहितनहिंधर्मविचारै ॥ ८ ॥ सोजनजातनरककोघोरा। लहततहांयमदंडकठोरा ॥
जवहिपुरंजनवाणपवारचो। काननमेंवहुजीवनमारचो ॥ भयेवहुतवनजीवननासा। वचेभगेतेछोड़िनिवासा ॥ ९ ॥
दोहा-महिपाशशसामरगवै, सल्लकभालुवराह। चाहेअनचाहेवहुत, हतेजीवनरनाह ॥ १० ॥
खेलिशिकारमहाश्रमपायो। क्षुधापिपासाताहिसतायो ॥ आयोलौटिपुरंजनगेहू। धोईसुरभिसलिलनिजदेहू ॥
भोजनकरिसवथाकनिवारी ११ भूपणवसनपहिरिछविकारी ॥ लेपिसकलअँगमेंअँगरागा। पहिरचोसुमनमालवडभागा।
प्रविश्योमहलसकलसुखकारी। करिपुरंजनीपरतिभारी १२ मदनमथितमननृपगृहमाहीं। देख्योनहींपुरंजननीकाहीं १३
तहँसखियनसोंपूछनलाग्यो। नृपतिपुरंजनअतिदुखपाग्यो ॥ अहेकुशलसुंदरीतिहारो। निजठकुराइनकुशलउचारो १४
दोहा-जेहिविनयहगृहल्सतनहिं, वृथोविभूतिलखाति। जेहिपरजननीअरुतिया, नहिंसोघरदुखपाति ॥
वसवसखीऐसेगृहमाहीं। चढ़िवोस्यंदनचक्रविनाहीं ॥ १५ ॥ कहाँगईललनावरमेरी। जोमोहिसुखदायिनीघनेरी ॥
वूडतमोहिंदुखसागरमाहीं। जोनउवारतरहीसदाहीं ॥ पदपदमहमोकहसुखदेती। दुसहविरहदुखसवहरिलेती ॥ १६ ॥
सुनतपुरंजनकीअसिवानी। वोलीसकलसखीछविखानी ॥ महाराजजोप्रियातिहारी। ताकीगतिनहिंपरैविचारी ॥
परीपुहुमिविनसेजदुखारी। कसनलेहुचलिनाथनिहारी ॥ १७ ॥ सुनतसखिनवचननरपाला। गोपुरंजनीढिगततकाला ॥
दोहा-पुहमीपरीपुरंजनी, विधुरितचिकुरकुरूप। ताकोनिरखिपुरंजनो, भयोतुरतदुखरूप ॥ १८ ॥
धरिधीरजअतिशैभयपाग्यो। मधुरवचनमनावनलाग्यो ॥ पैपुरंजनीनेकुनमानी। कियोनकछुकटाक्षसुखसानी ॥ १९ ॥

मंदहिमंदपुरंजनताके। गह्योचरणयुगप्रियरसछाके॥ लीन्ह्योनिजअंकहिवैठाई। करनलग्योअतिताासुवड़ाई॥२०॥
जेअपराधकरैजगमाहीं। प्रभुसोलहतदंडपुनिनाहीं॥ तेपूरुवकछुपुण्यनकीने। रहतनिरंतरदुखमहभीने॥ २१॥
दियोदंडदासहिप्रभुजोई। परमअनुग्रहताकहसोई॥ जोयहकृपादासनहिंजानै। ताकोप्रियामूढहममानै॥ २२॥

दोहा–मंदहँसनिलाजहिललित, विरंचिभौंहवरवंक। मोपेकरिअनुरागअति, लखुलखुललीनिशंक॥

अलकैहलकिहलकिछविछलकैं। तुवमुखदेखतपरैनपलकैं॥सुभगनासिकाकीदुतिदेपी।सुखससुद्रमनमगनविशेपी॥
कसनहिंघूँघुटकोपटटारी। वदनदेखावहुमोकहँप्यारी॥ कसनहिंसुधासरिसमृदुवानी। मोहिंसुनाइदेहुठकुरानी २३
कियोजोतेरोकोउअपराधा। ताकोअबहिंदेहुँमेंबाधा॥ असकोउहैनहिंत्रिभुवनमाहीं। तवअपराधभीतिजेहिनाहीं॥
पैजोविप्रऔरहरिदासा। ताकोंदेसकिहौंनहित्रासा॥२४॥विनचंदनतववदननदेख्यो।कवहुँमलिनताहियनहिंलेख्यो॥

दोहा–कवहुँलख्योनहिंविरहरप, कवहुँनविनअँगराग। कवहुँनलख्योसकोपतोहिं, कवहुँनविनअनुराग॥
कवहुँउरोजनलगिलली, आयेनहिंदुखआंसु। कवहुँनवीरोविनलख्यो, तेरोवदनविलासु॥ २५॥
विनतेरेपूछेगयो, खेलनविपिनशिकार। चतुरिकृपाकरिसोक्षमहु, यहअपराधहमार॥
व्यथितमदनशरकंतनिज, परैआपनेआय। कौनकामिनीकुटिलअस, लेइनकंठलगाय॥ २६॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कन्धेषड्विंशस्तरंगः॥ २६॥

नारदउवाच।

दोहा–सुनतपुरंजनकेवचन, पुरंजनीवशजानि। उठिपीतमकोमिलिकियो, बहुविहारसुखमानि॥ १॥

भूपपुरंजनअतिसुखपायो। केलिभवनकोतेहिसँगआयो॥ पुरंजनीकरिकैअस्नाना। पहिरिवसनभूपणविधिनाना॥
करिकैसकलशृंगारविताना। पतिप्रसन्नहितकियोपयाना॥२॥ मिल्योपुरंजनपुनितेहिधाई।रहेपरस्परदोउलपटाई॥
बैठेदोउपरयंकहिआई। भरहिंमोदरसवातवताई॥ रैनदिवसदम्पतिसुखसाने। बीततकालनेकुनहिंजाने॥
रह्योनकछुविवेकलवलेशा। भयोनारिवशसदानरेशा॥ ३॥ सेजअमोलकनकमणिखाँची।तामेंशेनकरतरतिराची॥
धरिपुरंजनीभुजपरशीशा। सुखलूटतदिनरातिमहीशा॥

दोहा–औरनकछुजानतभयो, मैंकोकहसंसार। सबतेअधिकपुरंजनी, असकियठीकविचार॥ ४॥

यहिविधितासँगकरतविहारा।कामविवशगेदिवसअपारा॥बीतीतिनकीसकलजमानी।परयोतिन्हैआधोछिनजानी ५॥
भयेपुत्रपुनिपुरंजनीके। एकादशशतअतिशयनीके॥६॥भईएकसोदशेकुमारी। जननीजनकजगतयशकारी॥
शीलसुभाउसकलगुणखानी। रूपवतीअतिकोमलवानी॥७॥ नृपतिपुरंजनपुरंजनीको। बीतीआयुपआधीनीको॥
पुनिदुहितनवरखोजिवियाही। व्याह्योपुत्रनवंशहिचाही॥८॥ भेइकइकसुतकेशतशतसुत।पूरिरह्योपंचालदेशजुत ९

दोहा–पुत्रपौत्रमहँप्रीतिकरि, ग्रहधनवाढिमहीश। वसतभयोतहँमोहबँधि, जैसेकीरकपीश॥ १०॥

पशुमारककीन्ह्योबहुयागा। जैसेआपभूपवडभागा॥ ११॥ ऐसेनेहनहेपरिवारा। अपनोहितनहिंकवहुँविचारा॥
पुनिआयोवहकालभयावन।जोविपइनकोदुखउपजावन॥१२॥चंडवेगगंधर्वअधीशा।त्रिशतसाठिभटजासुमहीशा १३
तेतनीगंधर्वीतहँजानो। कोउश्यामकोउसेतहिमानो॥ तेसवपुरीपुरंजनकेरी। लूटनलगेचहूँकितवेरी॥ १४॥
[illegible]॥१५॥ वीशसातसेगंधर्वनसो।लरयोवर्पसंतअहिशर्वनसो॥१६॥

दोहा–लरतलरतजवव्यथकिगयो, अहिपुरपालकजोय। तवहिपुरंजनदुखितभा, प्रबलरिपुनकहजोय॥१७॥

[illegible]औरपुरबंधुनमाहीं। विगरबचनवगन्योकछुनाहीं॥१८॥ कालसुतायकभईसयानी।अपनेकोपतियोगहिजानी॥
निजपतिसोजातित्रिभुवनमाहीं।फिरीचहूँकिततोयकोउनाहीं।नामदुर्भगामहाअभागिनि।मरनशीलकोअतिअनुरागिनि॥

...लियोदु ... २०

दोहा–ब्रह्मालोकतेआवतो, महूँरह्योयकवार । कालसुतासोमोहिनिरखि, भईतुरतवशमार ॥

...जानी।तदपिमो... २१॥जवमैंनाहींताकहकीन्ही।तवमोहिकुपिनशापअसदीन्ही।
...रो। तातेयकथलवासनतेरो ॥ २२ ॥ तवनिराशह्वैकालकुमारी । मानिसीखसवभूपहमारी ॥
भैनामकयमनेशहिकाहीं । गईकरनपतितुरततहाँहीं॥२३॥ वोलीयमनेसहिकरजोरी । होहुकंतविनतीयहमोरी ॥
जोतुमसोमाँगतहैआई।सोनिराशकवहूँनहिंजाई॥२४॥उचितनदेतउचितनहिंलेतो।वुधजनतिनकोगनतअचेतो २५॥

दोहा–तातेमोपरकरिकृपा, करहुमोहिंनिजनारि । यहीपुरुषकोधर्महै, परदुखदेवनिवारि ॥ २६ ॥

कालसुताकीसुनिअसवानी।वोल्योयमनविहँसिसुखमानी२७कारकैमनमेंविमलविचारा।राख्योमैंपतिखोजातिहारा ॥
तुमहोमहाअमंगलरूपा । वरिहैकोउनरंकअरुभूपा ॥ २८ ॥ तातेलेममसेनमहाई । जाहुजगतमहँरूपछिपाई ॥
छिपिछिपिवरहुसकलजगमाहीं।मारिमारिवदलहुपतिकाहीं॥तुमकोजीतिसकीनहिंकोई।तुम्हरेवशसकलजगहोई॥
तुमहमारिभगिनीह्वैजाहू । जरममभ्राताओजअथाहू॥हमतीनिहुँमिलिकैसंसारा । जीतवक्षणमहँलगीनवारा ॥

दोहा–एकहुकोयहिलोकमें, अहैजितैयाकौन । जवतीनिहुँमिलिचलहिंगे, असकोजुरिहैजौन ॥ ३० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदे
वकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कन्धेसप्तविंशस्तरंगः ॥ २७ ॥

नारदउवाच ।

दोहा–भैनामकयमनेशकी, लैसँगसेनविशाल । अरुज्वरकोनिजसंगलै, कालसुताविकराल ॥ १ ॥

फिरनलगीसिगरेजगमाहीं । व्याहिलियोसिगरेजगकाहीं॥१॥करतकरतसवजगमहँफेरा । जायपुरंजनपुरकहँघेरा ॥
सकलसंपदायुतमनहारी । पन्नगकरतपुरीरखवारी ॥ २ ॥ कालसुताभटघुसिसवधारन । लगेपुरंजनपुरीउजारन ॥
पीडितपुरीपुरंजनदेखी । ममताजामेकियेविशेखी ॥ कालसुताकोलहिवलभारी । भयोकुरूपनगरछविकारी ॥
ह्वैगोदीनपुरंजनराजा । करतरह्योजोऐशदराजा ॥ ३ ॥ यमनऔरगँधरववलवाना । हरचोपुरंजनविभौमहाना॥४॥
भूपदियोवुधिवलसवखोई । वितयोआठहुयामनिरोई ॥ ५ ॥

दोहा–कालसुतानास्योनगर, करिकैकोपकराल । यमनऔरगंधर्वमिलि, हरचोदेशपंचाल ॥ ६ ॥

पुरीदेशकोनाशविलोकी।भयेपुरंजनअतिशयशोकी॥सुततियसचिवसकलपरिवारा।करनलगेअपमानअपारा ॥ ७॥
कालसुतावशनिजकहँजानी । औरउपायकछूनदेखानी॥चितचिंताउपजीअतिभारी।तदपिनआशतजीपुरधारी ॥८॥
यदपिनसुततियताकहमानें । तदपिपुरंजनतिन्हेंलोभानें॥नितनातीसुतरहतखेलावत।कहँजेहंममनाहिनआवत ९
जवगंधर्वयमनवरुजेरा । कियेउपद्रवपुरअतिघेरा॥तवनगरीकहँछोडनचाहा । भयेपुरंजनविगतउछाहा ॥ १० ॥

दोहा–तवभैअग्रजजोनज्वर, सोनगरीमहँआय । भाईकेहिततेहततेहि, दीन्हीपुरीजराय ॥ ११ ॥

जरनलग्योजवनगरअनूपा।तवकुलसहितपुरंजनभूपा॥अतिशयतापितभोतेहिकाला।सुततियमंत्रीभयेविहाला १२॥
यमनकालकन्यागंधर्वा । घेरचोदोरिपुरंजनसर्वा ॥ अरुपुरपालकजोअहिरहऊ॥ताकोभवननमनदरिलयऊ॥ १३ ॥
सक्योनरक्षणकरिपुरकाहीं । भागनचह्योऔरथलमाहीं॥जैसतरुमहँपावकलागे॥भागतभुजंगमहाभयपागे॥ १४ ॥
पुरपालककीदशादेखियह।रक्षकरह्योनकोउअपनेकह॥तवहिपुरंजनरोवनलाग्यो १५सुततियनातिसचिवरतिपाग्यो॥
दोहा–राजविभोधनधामसव॥१६॥अपनोकुमतिविचारि । करनलग्योवहुभाँतिदुख, तासुवियोगनिहारि॥१७॥
जवमैंजैहौंऔरहिठौरा । किमिरहैयहतियपुतछोरा ॥१८॥ खायोनहिंविनमोहिंखवाई । न्हायोनहिंविननेहिन्हाई ॥
कोपतमोहिडरतसवकाला।मोमहँनेहकियोअतिपाला॥मोहिंत्रमभयरहिसमुझातनि।मोहिविदेशलखिसअडुस ...

सोमोहिंबिनइतकैसेरहिहै । केहिविधिदुसहविरहदुखसहिहै२०नातीपुत्रसंहितपरिवारा । किमिपुरंजनीरहीअगारा॥
जिमितरनीसमुद्रमहँदोई । भिन्नभयेपुनिएकनहोई ॥ मोहिंविनयहपुरंजनीप्यारी । जरिहैविरहदवानलभारी॥२१॥
दोहा—यहिविधिकरतपुरंजनै, वहुविधिशोचविचार । धरनहेततेहियमनपति, आवतभोवलवार ॥ २२॥
पकरयोयमनपुरंजनकाहीं । द्रुतलैचल्योभोननिजपाहीं ॥ तहाँपुरंजनकेसरदारा । भागतभेकरिहाहाकारा॥२३॥
गयोभुजंगहुतुरतपराई । चलीनताकीकछूउपाई ॥ जवगेनृपअरुअहितेहित्यागी । तवजहँकीनगरीतहँलागी॥२४॥
वाँधिपुरंजनकहवरजोरी । यमनचलेलैताहिकढोरी ॥ रह्योसुहृदइकनामअज्ञाता।तेहिसुधिकरततोनहिंदुखपाता॥
पैअज्ञानवशसुधिनहिंकीन्ही । तातेयमनताड़नादीन्ही ॥२५ ॥ जौनपुरंजनमखपशुमारे।तेसवआयपरशुकरधारे॥
दोहा—काटनलागेअंगसव, भूपपुरंजनकेर । करतकुठारप्रहारवहु, समझिपाछिलोवैर ॥ २६ ॥
पुनिजवनेशपुरंजनकाही । डारयोअंधकूपयकमाही ॥ परोरह्योतहँवर्षहजारा । भूलीसुधिदुखलह्योअपारा॥२७॥
पैजमनेसहिपकरतमाही । सुधिकीन्ह्योपुरंजनीकाँही ॥ तातेभूपविदर्भअगारा । दुहिताभैसुंदरीअपारा ॥ २८॥
तहँमलयध्वजकोउमहिपाला । नाशकशत्रुनबुद्धिविशाला ॥ वैदर्भीकेव्याहनकाजा । गयोस्वयंवरमहँसोराजा॥
जीतिसकलराजनजसछायो । वैदर्भीविवाहिघरल्यायो ॥ २९ ॥ वैदर्भीदुहितायकजाई।जेहितेकृपाकरैयदुराई॥
दोहा—पुनिभेताकेसातसुत, द्रविडनरेससुपूत ॥ ३० ॥ एकएककेतहँहोतभे, अरवुदअरवुदपूत ॥
जासुवंशपूरितयहधरणी । लहेविभूतिसवैसुखभरणी ॥ ३१ ॥ जाकेरहेसातयेभाई । तेहिव्याह्योअगस्तिमुनिराई॥
भयोदृढाच्युततासुकुमारा । तासुतइधमवाहवलवारा॥३२॥मलयध्वजनिजपुत्रनकाही।दियोवाँटिसवराज्यतहाँही॥
करनभजनहितगयोकुलाचल३३तजिगृहसुतदाराभोगनभल॥ विनपतिसकलविदर्भिहुत्यागी।शशिमरीचिसमपतिसँगलागी
नदीताम्रपरनीछविछाई।चंद्रवसावटोदकाभाई ॥ पुण्यसलिलतिनमहँकरिमज्जन।दंपतिकियोसकलमलभंजन॥३५॥
दोहा—कंदमूलफलदलसलिल, भोजनकरिकियवास । करिकलेशअतितपकियो, ध्यावतरमानिवास॥३६॥
शीतघामअरुभूँखपियासा।सुखदुखजीत्यौकरतप्रयासा ॥३७॥ नेमजमादिकियेअतिभारी।जीतेइंद्रिनप्राणसुखारी॥
हरिकोकरतनिरंतरध्याना।खडेवर्षशतसरिसपखाना ॥३९॥ तिनकोतनकोतनकनभाना । तवपायोतेआतमज्ञाना॥
स्वप्नसरिससवजगतहिजाने।ताकोआपनकवहुनमाने॥४०॥जौनरीतिहरिगुरूवताई।तेहिविधितेजगदियोविहाई ४१
मान्योस्वामीरमानिवासा । अपनेकोजान्योहरिदासा ॥४२॥वैदर्भीमलयध्वजकेरी । सेवाकरीसप्रीतिघनेरी ॥
दोहा—जटिलकेशवलकलवसन, व्रतसोंकृशितशरीर।पतिसमीपशोभितभई, जनुशिखिज्वालगँभीर ॥४४॥
जादिनमलयध्वजमरिगयऊ । हरिध्यावतवैठेतसरहेऊ॥तेहुदिनगेपतिढिगमहरानी।करनचरनसेवनसुखसानी॥४[illegible]
परसतपदतेहिगरमनलाग्यो।तवताकोमनअतिदुखपाग्यो॥विननायकजिमिमृगीदुखारी।तैसेढारयोदुखदृगवारी[illegible]
शोचकरनरोवनहुलागी । भापतवचनमहादुखपागी॥४७॥उठहुकंतकजिवलकरणी । चोरनसोंरक्षहुयधरणी॥४८॥
यहिविधिकिपवहु [illegible]
दोहा—जरनलगीजवअगिनिमें, तवयकविप्रसुजान । आयवचनभापतभयो, प्रथमसखामतिमान ॥ ५१॥
अहोकौनतुमकौनकुमारी । कोहैयहजेहिशोचहुभारी ॥ जानहुहमहिंसखाकीनाहीं । रहीपूर्वजेहिसंगहिमाहीं॥
रह्योसखाहमरेअविज्ञाता । तुमहिजनातकिनाहिंजनाता ॥ मोपदछोड़िभूमिमहँआई।विषैलालसाविपुलवढाई५३॥
हमतुममानसरोवरवासी । अहोहंसनितआनँदरासी ॥ इकसँगवसेहजारनवर्षा । भरेचित्तमेंअतिशयहर्षा ॥५४॥
तहँविचरततियकृतपुरएका । निरख्योजामेंविभोअनेका॥५५॥पंचअरामद्वारनवजामें। [illegible]
दोहा—पंचहाटदेवणिकपट, पाँचेउतपातिहेत । नारीपुरकीस्वामिनी, असभापहिंमतिसेत ॥ ५६ ॥
पांचहुइंद्रीविषैअरामा । नवोछिद्रनवद्वारललामा ॥ अवनिअनलजलकोठातीना । ज्ञानेंद्रीमनवणिकप्रवीना ॥५७॥
करमेंद्रीहतहाटवजारा । पंचभूतकारणअवतारा ॥ स्वामिनितासुबुद्धिहैनारी । पुरशरीरजियपुरुपविचारी
बुद्धिविवशहैजीवअनूपा । तेहिपुरवसिभूल्यतनिजरूपा॥५८॥तामेंतुमहूवसिकैप्यारी।सिगरीअपनीसुरतिविसारी

।हितेदशादुखारी॥५९॥नहिंविदर्भदुहितातुमप्यारी।नहिंयहतेरोसुहृदसुजाना।नहिंपुरंजनीपतिमतिमाना॥६०॥

दोहा–ममसिरजितमायामहा, तेहिवशजानहुसर्व । हमतुमदोऊहंसहैं, जानितनहुसवगर्व ॥ ६१ ॥
हमतुमभिन्नहुएकनहिं, यहविचारमनमाहिं । कहहिनेकुहीभिन्नता, कविहमअरुतुमकाहिं ॥
आनंदादिकसकलगुण, हमतुममहँजोएक । तेहिवुधजनलघुवडगुनहि, करिकैविमलविवेक ॥ ६२॥
जिमिलघुवडआदर्शमहँ, एकवस्तुहीजोय । लघुमेलघुवडमेंवडी, देखैयकजनसोय ॥ ६३ ॥
यहिविधिसखाअज्ञातजव, भाप्योताहिवुझाइ । बहुदिनकीभूलीसुरति, तुरतगईतेहिआइ ॥ ६४ ॥
हेप्रचीनवरहीनृपति, यहअध्यातमज्ञान । कह्योकथामिसिमैंसकल, यहप्रियअतिभगवान॥ ६५ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेअष्टविंशस्तरंगः ॥ २८ ॥

दोहा–सुनिनारदमुनिकेवचन, कथाललितविज्ञान । नृपप्रचीनवरहीवहुरि, वोल्योमुदितमहान ॥

प्राचीनवर्हिरुवाच ।

दोहा–भलीभांतिमुनिवचनतुव, परेमोहिनहिंजानि । वुधजानेवुधकेवचन, गुनैनकर्मलोभानि ॥ १ ॥
सुनिभूपतिकेवचनअस, तहँनारदमुनिराय । विस्तरतेसवकरतभे, कथाप्रसंगवुझाय ॥

नारदउवाच ।

पुरुषपुरंजनजीवहिजानों । ताकोमैंवहुभाँतिवखानों ॥ यकद्वित्रयचौचरणहिवारे । औरहुविपुलचरणकहँधारे ॥
ऐसेजेशरीरजमाहीं । तेईतासुपुरलसतसदाहीं ॥ तिनकोनिजकर्मनिवशपावै । यातेवेदपुरंजनगावै ॥ २ ॥
परमातमासखाअविज्ञातै । अहैजीवकोजगविख्यातै ॥ नामत्रियाणनतेहरिकाहीं । अनुगुणादितेजानतनाहीं ॥
सोजियभ्रमतशरीरअनेकू। तहांनहींसुखपावतनेकू । जवमानुपशरीरकोपावै । तवसुखसरसमानिजगभावै ॥३॥
दोहा–अरुपुरंजनीवुद्धिहै, जेहिसंवंधहिजीव । अहंकारममकारते, संयुतहोतअतीव ॥ ४ ॥
ताहिवुद्धिकोपाइसँयोगे । इंद्रिनविषेभोगजियभोगे॥५॥ ज्ञानकर्मइंद्रीदशजेहैं । तेईसखापुरंजनिकेहैं ॥
इंद्रिनकीजिवृत्तिपनेरी । तेईताकीसखीनिवेरी ॥ प्राणअपानसमानउदाना । व्यानपंचविधिकोजोप्राना ॥
सोईसर्पपंचमुखकोहै । पुररक्षामेंरहतवनोहै ॥ ६॥ सेनवुद्धिकीइंद्रिनकीतांति । तिनसवकोविशेषिहैमनपति ॥
शब्दस्पर्शरूपरसगंधा । यहजोपंचविषेसनवंधा ॥ सोइपंचालनामकोदेशा । भाषनअहैवदमुनिशेशा ॥ ७ ॥
दोहा–दृगमुखनासाकर्णगुद, लिंगनवोपरद्वार । तिनमेंदृगनासाकरण, यकथलद्वैद्वार ॥
इंद्रीजेतिनद्वारनमाहीं । तिनकेसंगहुसपदिसदाहीं ॥ तिनतिनइंद्रिनाविषेभोगको । निनतिनद्वारनहैअभोगको ॥
जीवसोइआदिरसुरमानी । निकसतअहैकहतमुनिज्ञानी ॥ ८ ॥ दृगनासिकावदनयेपाँचा । पूरवद्वारनाहिंसाँचा ॥
दक्षिणकर्णदक्षिणकेद्वारा । उत्तरकर्णउत्तरकोवारा ॥ ९ ॥ शिश्नऔरगुदयदयुगजोहै । पश्चिमकोदुखानासोहै ॥
दक्षिणदृगआविमुखद्वारा । नामसद्योतवामदृगवारा॥ ससाचक्षुइंद्रीलैसाथ । रूपदेशलैविदानमनाथ ॥ १० ॥
दोहा–दक्षिणनासाछिद्रसो, द्वारनालिनीनाम । नलिनीनामकद्वारत्यों, छिद्रनासिकावाम ॥
तेइंद्वारनसोसदा, प्राणेंद्रीलैसंग । नृपतअहैसुगंधनाद, जैवोंजोरभ्देश ॥
पुरकोमुख्यमसेंदरवाजो । तामेंवाकऔररसनाजो ॥ देहोइइंद्रीनिगानंगलहि ॥११॥ अपनोवननरूपनोहेमाहि ॥
अन्नरूपजोविविषदेसहै । करततहांकोद्रुनमसेरहै ॥ सोसोटिकोनहेनाहिंकगे । अन्नोननकोकरतनिरो ॥
दक्षिणकर्णपितरहआनो । उत्तरकर्णदेवहूनानो ॥ १२ ॥ प्रवृत्तिनिवृत्तशास्त्रजोअहर्इ । सोसनालेश्रुतिकहर्इ ॥

तिहियेममसोंगे । करैऔरऔरैकोउभोंगे ॥ कियकर्मयागादिकजेइं । नाशभयेतुरतहिइततेइं ॥
दोहा-तवपावतकेहिभाँतिफल, यहोंवड़ोसंदेह । सोभ्रममेटहुसकलमुनि, करिमोपरअतिनेह ॥ ५९ ॥
भूपतिकेवचनमुनीशा । वोलेवचनसुनोअवनीशा ॥

नारदउवाच ।

प्रधानजोलिंगशरीरा । करतकर्मजातेमतिधीरा ॥ लिंगशरीरनशतनहिंसोइं, ताकोदुखसुखभोगहुहोइं ॥ ६० ॥
मिसपनेयहदेहविहाइं।भोगतदुखसुखअनतहिजाइं॥६१॥हमहमारजोजोमनआवै।सोसोपरलोकहुमहँपावै ॥६२॥
नींकीकरणीजगकरई । पूवरपुण्यतासुलखिपरई ॥ अनुचितकर्मकरैजोप्रानी । तेहिपूरुवपापीअनुमानी ॥ ६३॥
खीदुखीनिरधनधनवाना । पूरवकर्महिहेतप्रमाना ॥ जोनहिंसुन्योनदेख्योकवहूं । सोऊआवतमनमहँअवहूं ॥
सिवपूरवकर्मप्रभाऊ ॥ यहजानहुवरहीनृपराऊ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥
दोहा-स्वप्नअसंभवलखिपरै, सोहैचित्तविकार । रोगविवशजिमिदृगनमें, द्वयशशिपरैनिहार ॥ ६८ ॥
जोमनयदुपतिपदलगिजाई । पूर्वकर्मतेहिसकलदेखाई॥पैकरिसकैनकछूविकारा।जिमिशशिमधिनराहुअँधियारा६९
रहतजवैलगिलिंगशरीरा । तवलगिमैंममहैमतिधीरा॥ ७० ॥जोसुपुतिअरुमूर्छेहुमाहीं।अरुजवमित्रामित्रविलगाहीं॥
तवहुँयदपिरहतोअहँकारा । इंद्रीनहिंतेहितनप्रचारा ॥७१॥ गर्भहुमहँअरुवालहुपनमें । इंद्रीपुष्टिरहतिनहिंतनमें ॥
तातेअहंकारनहिंसरसै । जैसेकुहूचंद्रनहिंदरसै ॥ ७२ ॥ यदपिननितसुतधनकुलदारा । तद्यपितदुखदेतअपारा ॥
दोहा-जिमिसोवतअरिदेतदुख, जागेसवमिटिजाय । तिमिजानेजगदीशके, यहसंसारविलाय ॥ ७३ ॥
दशइंद्रीअरुपंचहुप्राना । मनअरुबुद्धिउभैमतिवाना ॥ येसत्राहियुतलिंगशरीरा । यहिजीवाहिजानहुमतिधीरा ॥
येकवहूँनहिंहैभगवानै । ऐसोचारिहुवेदवखानै ॥ ७४ ॥ यहीलिंगतनतेयहजीवा । धरततजततनथूलअतीवा ॥
दुखसुखशोकभीतितेहितेरे।पावतहैयहजीवघनेरे॥७५ ॥तनतजतहुभरजियतनमाहीं । ममतात्यागतकैसेहुनाहीं ॥
जवदूजोतनसवविधिपावै । तवयाकोअभिमानभुलावै ॥ जिमिजलौकआगेतृणगहिकै।तजैपीछिलोतृणसुखलहिकै॥
दोहा-मनहीकोकारणगुनौ, वंधमोक्षकोभूप । जसिमनमेंभैवासना, तैसोपावतरूप ॥ ७६ ॥ ७७ ॥
पायअविद्याकरसंवंधा । वारहिवारलहतजियवंधा ॥७८॥ तौनअविद्यानाशनहेतू । भजहुसकलविधिरमानिकेतू ॥
जगउत्पतिपालनसंहारा । व्यापकहरितेकरहुविचारा ॥ ७९ ॥

मैत्रेय उवाच ।

यहिविधिनृपसोतहँमुनिराई।ईशअनीशहुकीगतिगाई॥वहुसराहिवरहीप्राचीनै । मुनिगेसिद्धलोकसुखभीनै ॥ ८० ॥
तववरहीप्राचीननरेशा ।प्रजासृजनदैसुतहिनिदेशा॥आपकरनतपअतिचितलाई।वसेकपिलआश्रममहँजाई ॥८१॥
तहँएकाग्रमनकरितजिसंगा । रँग्योगोविंदचरणरसरंगा ॥
दोहा-भक्तिरीतिसवभाँतिकरि, प्रेममगनमतिवान । यहतनतजिकछुकालमें, हरिपुरकियोपयान ॥ ८२ ॥
मुनिवरनितअध्यात्मयह, ज्ञानगुप्तजोकोइ । सुनैसुनावैप्रीतियुत, ताहिज्ञानहठिहोइ ॥ ८३ ॥
त्रिभुवनशुचिकरकृष्णयश, मुनिवरवरणितजौन।तेहिसुनिगुनिपरपुरलहत, पुनिनभ्रमतहेतौन॥८४॥
यहअध्यातमज्ञानवर, विदुरहमहुँसुनिलीन । तेहिप्रभावदुहुँलोकके, सवसंशयतजिदीन ॥ ८५ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ चतुर्थस्कंधे एकोनत्रिंशस्तरंगः ॥ २९ ॥

दोहा-यहसुनिकैवोलेविदुर, युगलकंजकरजोरि । सुननकथाभगवानकी, मित्रासुतहिनिहोरि ॥

विदुर उवाच।

[illegible] । मोसोंतुमसुनिनाथउचारा ॥ तेकरिरुद्रगीतकोगाना । कौनसिद्धिपायेमतिमाना ॥ १ ॥
[illegible] । तेहरिकोशंकरअतिप्यारे ॥ सोशिवकोकरिदरशप्रचेता।वसियहिलोककियोकहनेता ॥२॥
[illegible] । मित्रासुतगाथासबगाये ॥

मैत्रेय उवाच।

[illegible] हिसमुद्रमहँपरमसचेता ॥ रुद्रगीतमुखजपततहाँहीं । तोपतभयेरमापतिकाँहीं ॥३॥
[illegible] । खड़ेरहेजलमध्यकुमारा ॥

दोहा–तेहिक्षणतहँप्रगटतभये, श्रीहरिपुरुपपुरान । निजद्युतिसोनृपसुतनको, नाशतशोकमहान ॥ ४ ॥

छंद मनोहरा–प्रभुगरुडसवारेभासपसारेजिमिघनकोरेगिरिसोहे । जनमनमोहे ॥
पटपीतललामामनअभिरामादिशितमधामाछवियोहै । दासनछोहै ॥ ५ ॥
अतिगोलकपोलाकुंडललोलालसहिअतोलाअरुणोहै । दृगधनुमोहै ॥
सुरसिद्धअपारेसंगसिधारेसुयशउचारेमुखजोहै । सुखअवरोहै ॥
वसुआयुधभासीदुवनविनाशीक्रीटप्रकाशीशिरराजै । दिनकरलाजै ॥ ६ ॥
उरमहँवनमालाहारविशालारमारसालाउरभ्राजै । सबसुखसाजै ॥
करुणाकेसागरसबगुणआगरसुयशउजागरक्षितिछाजै । जनसुखकाजै ॥
असरमानिकेतानिरखिप्रचेतालहिसुखसेतासतसमाजै । धनिभेआजै ॥

दोहा–तिनपरकरुणाकरतहां, करुणामहापसारि । बोलेघनरवसमवचन, आपनदासविचारि ॥ ७ ॥

भगवानउवाच।

नृपकुमारमाँगहुवरदाना । हमप्रसन्नतुमपरमतिवाना ॥ परमअनूपमप्रीतितिहारी । मैंअपनेमहँलियोविचारी ॥
सबभ्रातनसमानहैधर्मा।कियोउदधिमधिअनुपमकर्मा ॥८ ॥ साँझप्रातजोजनतुमकाहीं।सुमिरणकरैसप्रीतिसदाहीं॥
बढैतासुभ्रातनमहँप्रीती । प्राणिनसोंनकरैअनरीती ॥ ९ ॥ रुद्रगीतपठिसाँझसवेरे । जोमोहिंध्यावतप्रेमघनेरे ॥
ताकोमनवांछितमैंदेहूँ । युतअज्ञानकुमतिहरिलेहूँ ॥ होइताहिममचरणप्रतीती । बाढ़ैसुमतिसंतपदप्रीती ॥ १० ॥

दोहा–पितुनिदेशधरिशीशमें, तुमतपकियसुतहर्प । ताततेतुम्हरोजगतमें, यशह्वैहैउतकर्प ॥ ११ ॥

ह्वैहैतिहरेएककुमारा । सोविरंचिसमगुणनिअगारा ॥ पूरीत्रिभुवनतेहिसंताना । औरहुवचनसुनहुमतिवाना ॥१२॥
कंडुकरतहेंवनतपभारी । करनविघनतेहिशक्रविचारी ॥ प्रमलोचाअपसरापठाई । कंडुसंगनिवसीसोआई ॥
ताकेजनमीएककुमारी । गईस्वर्गतेहितरुमहँडारी ॥ ताकोवृक्षग्रहणकरिलीने॥१३॥शशिललिशुधितदयारसभीने॥
अंगुलितर्जिनिसुधादायिनी।तेहिमुखडारीदुखविहायिनी॥तरुकीसुतासुधाकरिपाना।लह्योमोदतेहिकालमहाना १४

दोहा–तुमहिंसृष्टिविरचनहिते, दीन्ह्योपितानिदेश । तातकन्याव्याहिके, वसियेनिजहिनिवेश ॥ १५ ॥

दशहुजाइह्वैहपतिताके । रहिहौतेहिछविमहँसबछाके ॥ सोकरिहैसबमहँसमप्रीती । कबहूँकरिहैनहिंअनरीती ॥
तुमकोकछुकदोपनहिंलागी।ह्वैहैसबजगमहँबडभागी॥१६॥तुमसबदिव्यदनारनवर्पा।भूमिभोगभोगहुयुतहर्पा॥१७॥
अपनेपरमकृपाविचारी । भक्तिमेरिनितहीउरधारी ॥ छोडिनरकसमजगदुखधामा।अंतकालऐहौममधामा ॥ १८॥
जेजनसदागृहहुमहँरहहीं । मेरीकथारैनदिनकहहीं ॥ गृहबंधनतिनकोनहिंहोई । तेदिसजनजानदिसबकोई ॥ १९॥

दोहा–जेजनमेरोसर्वदा, धरेहियेमहँध्यान । तेहर्पतशोचतनहीं, मोदतनहिंमतिवान ॥ २० ॥

मैत्रेय उवाच।

दोहा–ऐसेसुनिहरिकेवचन, लहिमुदपरमप्रचेत । गदगदगरजोरेकरन, बोलेसुमतिनिकेत ॥ २१ ॥

प्रचेतसऊचुः ।

छंद–जयशोकनासनगणविभासननामतुवअघध्वंस। मनवचनपररघुवंशअरुयदुवंशकेअवतंस ॥ २२ ॥
जयशुद्धशांतसरूपनित्यअहेतुकरुणउदार । जयसजनपालनहरनजगधारनअमितअवतार ॥ २३ ॥
यदुवंशचंदननंदनंदनदुष्टदंदननाथ । अज्ञानखंडनधरणिमंडनहरनभवदुखगाथ ॥ २४ ॥
जयकंजपदजयकंजकरजयकंजदृगमुखकंज । जयकंजनाभसुआभजयजयकंजमालामंज ॥ २५ ॥
जयकंजकेसरसरिसपटसबभूतअंतरयामि । जयजगतसाक्षीदीनपक्षीपापहरबहुनामि ॥ २६ ॥
सबदुखविदारनरूपआपनदियोहमहिंदेखाय [illegible] २७ ॥
हेभद्रदायकभुवननायकप्रभुहिऐसहियोग । [illegible] ॥ २८ ॥
अस्मरणकीन्हेतुवचरणनहिंरहताहियअज्ञान । सबउरबसहुजानहुमनोरथकरहिकोनबखान ॥ २९ ॥
तुवकृपाचाहतहमरहेसोलहीआजअपार । तुमहींअहौयकमोक्षदायकदयापारावार ॥ ३० ॥
जेवरअनंतनिजगतमेंतिनतुमहिंवखशनहार । तातेअनंतकहावतेअसकरहिंसुकविविचार ॥ ३१ ॥
जिमिभागवंशकहुँपारिजातकपुहुपमधुकरपाइ । नहिंचहतदूजोपुहुपरसतेहिमाहँरहतअघाइ ॥
तिमिरावरोपदकमललहिब्रह्मादिवंदितजोइ । वरदानकाहममांगहींनहिंपरतदूसरजोइ॥ ३२ ॥
अबदेहुयहवरदानहमकोकृपाकरिभगवान । तुवपदपदुमरसपानपरिहरिचहैंनहिंकछुआन ॥
प्रभुविवशमायारावरीहमभ्रमैंजेहिजेहियोनि । तहँतहँलहैंसतसंगसंततस्ववशविचरैंछोनि ॥ ३३ ॥
दोहा–स्वर्गऔरअपवर्गसुख, एकओरधरिदोइ । संतसंगलवमात्रकी, तऊनसमताहोइ ॥ ३४ ॥
संतसंगमहँवारहिवारा । कृष्णकथासुनिबोसुखसारा ॥ संतसंगतृष्णानहिंआवै । संतसंगकोहुवैरनभावै ॥
संतसंगमहँभयनहिहोई । संतसंगमेंभ्रमनहिंकोई ॥ संतसंगमहँदुखनहिआवै । संतसंगतुवनगरपठावै ॥
संतसंगमहँनहिंसंसारा । संतसंगमहँविमलविचारा ॥ संतसंगअनुपमआनंदा । संतसंगतेमिलतगोविंदा ॥
संतसंगदुर्लभकछुनाहीं । संतसंगदुर्लभजगमाहीं ॥ संतसंगकहँसुरललचाहीं । संतसंगविनजनमवृथाहीं ॥
दोहा–जोपावनहरिकोचहै, तौयहसरलउपाय ॥ करैअवशिसतसंगजन, कारजकोटिविहाय ॥ ३५ ॥
स [illegible]
स [illegible]
आपदासशंकरकरसंगा । हमहिभयोक्षणमात्रअभंगा ॥ तेहिप्रभावतुवदरशनपाये । विनप्रयाससंसारनशाये ॥
रोगरूपयहभवसुखघाती । ताकेवैद्यआपसबभाँती ॥३८॥ जोहमवेदपढ्योप्रभुचारो । कियोगुरुनकोबहुसतकारो
दोहा–विप्रनकीसेवाकरी, वृद्धनकोसनमान ॥ अरुसाधुनमेंप्रीतिकरि, सबकोगुनेसमान ॥ ३९ ॥
अरुजोकियेसलिलतपभारी । भयेनपवनहूकेरअहारी॥इनसबकोफलयहहममाँगें । सदाआपचरणनअनुरागें॥
मनुस्वयंभुऔशंभुसुरेशा । [illegible]
जयसमशुद्धपुरुषपरस्वामी । [illegible]

मैत्रेय उवाच ।

यहिविधिअस्तुतिकरीप्रचेता।ह्वैप्रसन्नतबरमानिकेता॥कहच्योलहोतुमभक्तिहमारी।असकहिगेप्रभुसदनसिधारी॥
दोहा–तहांप्रचेतासलिलते, आशुहिवाहिरआय । तरुतेपूरितपुहुमिलखि, कोपितभयेरनाय ॥
म[illegible]हुछुअतस्वर्गतरुगणहो।तिनहिजरावनकीन्हेंमनहू४४विनतरुधरणिकरनतेहिकाल॥निजनिजमुखतेप्रग[illegible]
कोपप्रचेतनकरविधिदेखी॥विनतरुधरणिकरतअसलेखी॥आइप्रचेतनकहच्योबुझाई ॥४६॥ याकीवृक्षनदियो[illegible]
पुनिवृक्षनसोंकहँसुखचारी ।देहुप्रचेतनव्याहिकुमारी ॥४७॥ तबतरुसुताप्रचेतनव्याही । भयेप्रचेतापरमउछाही

... ॥ विधिसुतरह्योप्रथमसेदक्षा । लहिमखमहँशिवकोपप्रत्यक्षा ॥
दोहा–क्षत्रिवंशमेंहोतभो, पुत्रप्रचेतनकेर ॥ ४८ ॥ चाक्षुपमन्वंतरहिमें, रच्योजोप्रजनघनेर ॥ ४९ ॥
वहुदेवनकेतेजको, कियोपराभवजौन । करीदक्षताताहिते, दक्षनामलहतौन ॥ ५० ॥
सोइप्रचेतनपुत्रको, सृष्टिरचनकेहेत । तिलककियोकरतारतहँ, भयोसुवुद्धिनिकेत ॥ ५१ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेत्रिंशस्तरंगः ॥ ३० ॥

श्रीमैत्रेय उवाच ।

दोहा–दक्षसृज्योजववहुप्रजन, सकलप्रचेतादेखि । भगवतभाषितज्ञानगहि, सवजगतुच्छपरेखि ॥
॥१॥-सवपश्चिमकाहीं।निवसेसागरकेतटमाहीं॥जहँप्रथमजाजलिमुनिराई।तपकीसकलसिद्धितापाई॥२॥
... ॥इंद्रीजीतिप्राणपुनिजीते।आसनजितविषयिनसुखरीते।
परब्रह्ममहँमनहिलगाये । यहिविधितहँकछुकालविताये॥तहँआयेनारदमुनिनाथा।जेहिनावहिंसुरअसुरहुमाथा॥३॥
तिनहिंनिरखिसवउठेप्रचेतू । वंदनपूजनकियमतिसेतू ॥ जववैठेनारदमुनिराई । कहेप्रचेताअतिसुखपाई ॥ ४ ॥

प्रचेतस ऊचुः ।

दोहा–आजुलहेमुनिदरसतुव, धनिधनिभागहमारि । तुवविचरनजनअभयहित, जैसेसदातमारि ॥ ५ ॥
हमहिंजोकह्योशंभुगिरिधारी।सोहमग्रहवसिसकलविसारी॥६॥मुनिसोंपुनिअवहमहिंवुझाई।तत्त्वज्ञानसवदेहुवताई
जातेहमदुस्तरभवसागर । सहजहिंउतरहिंहेगुनआगर ॥ ७ ॥

मैत्रेय उवाच ।

यहिविधिसुनतप्रचेतनवानी।नारदमुनिअतिआँनदमानी ॥ जानिसंततिनकोमनमाहीं । वोलेवचनप्रचेतनपाहीं॥८॥

नारद उवाच ।

तौनजन्मश्रुतिसुफलगनावे । जोयदुपतिचरणनचितलावे ॥ सफलकर्महैजगमहँसोई । जोयदुनंदनकेहितहोई ॥
सफलतौनआयुपावखानी । वीतिभजतजोशारँगपानी ॥
दोहा–सोइमनहैजोकृष्णपद, छोडिअनतनहिजाय । वचनसफलसोइसदा, जिनमेंजसयदुराय ॥ ९ ॥
कहाभयोवडेकुलभयऊ । जेहरिचरणहिंशिरनयऊ ॥ कहाभयोव्रतवंधहुपायो । जोहरिचरणचित्तनहिल्यायो ॥
कहाभयोवहुयज्ञनकीने । जोनहिंकृष्णप्रेमरसभीने ॥ कहाभयोवहुवेदनपढिके । भग्योनयदुपतिजोगृहकढिके ॥
कहाभयोसुरआयुपपाये । जेहरिप्रेमपयोधिनन्हाये ॥१०॥ कहाभयोवहुसुनेपुराना । जोसवतजिनभजेभगवाना ॥
कहाभयोतपकियेकठोरा । जोछविछक्योननंदकिशोरा ॥ कहाभयोवहुवचनवखाने । हरिचरित्रजोमुखनहिंगाने ॥
दोहा–सवइंद्रिनकेरोकिके, कहाकियोजनसोइ । जोयदुपतिजससुनतश्रुति, हुलसिदियोनहिंरोइ ॥
कहाभयोतीक्षणवुधिपाये । जामेंकृष्णचंद्रनहिभाये ॥ कहाभयोजेभोवलवाना । जोहरितीरथकियनपयाना ॥
कहाभयोसुंदरकरपाये । जोनसंतसेवनमहँआये ॥ ११ ॥ कहाभयोलहियोगविरागा । जोनभयोहरिपदअनुरागा॥
कहाभयोसीखेवहुज्ञाना । जोनकृष्णकीकथालोभाना॥ कहाभयोजेभोसंन्यासी । जोनभज्योव्रजवधूविलासी ॥
कहाभयोविद्याअभ्यासा । जोनकहायोजगहरिदासा ॥ कहाभयोकैवल्यहुपाये । जोहरिसेवनसुखनहिछाये ॥
दोहा–वहुमंगललहिकाभयो, कहाभयोसवपाय । जोजान्योयदुनाथनहिं, तामुव्रथासवआय ॥ १२ ॥
प्रीतिकरवहरिचरणमें, सवमंगलकोमूल । सवभूतनचेतन्यकर, ईशभुजनअनुकूल ॥ १३ ॥
जिमिसींचेतरुमूलके, शाखासवहरिआय । तिमिपूजेयदुनाथके, पूजिसकलसुरजाय ॥

तिमियदुपतिकीभक्तिते, होतदेवसबतुष्ट ॥ १४ ॥
जिमिमुखसोभोजनकिये, होतसकलअँगपुष्ट । लीनहोहितेहिमाहबनेरे ॥
जिमिरवितेप्रगटैबहुनीरा । लीनहोततेहिमहँमतिधीरा ॥ जिमिघटादिप्रगटहिमहितेरे । तिमिमायागुणरमानिवासा॥
तिमिहरितनतेयहसंसारा।प्रगटतमिलतरहतबहुवारा १५ जिमिदूखैनहिंरविहिप्रकाशा। औरेनमोहैतहँनहिंजाई ॥
जिमिइंद्रीजियबललहिजागै । तिनकेदोपजियहिनहिंलागै ॥ तिमिप्रकृतिहुहोरसत्तापाई । कहुँप्रगटतकहुँहोतविनाशा॥
अहंकारकृतभेदअपारा।श्रीहरिभजतहोतजरिछारा॥१६॥जिमिनभमहँघनतमहुप्रकाशा।
दोहा–पैअकाशमेंनहिंलगत, तिनकोतनकविकार । तैसेत्रैगुणईशमहँ, करतनहींसंचार ॥ १७ ॥
रहितअधिकसमहैभगवाना । सबथलव्यापकपुरुषप्रधाना ॥ उतपतिलयपालनकेकर्ता।निजप्रभावदासनदुखहर्ता॥
ऐसेप्रभुहैंश्रीयदुराई । तिनकोभजहुभूपचितलाई ॥ १८ ॥ सबभूतनपरदयापसारे । यथालाभसंतोपहिधारे ॥
सबइंद्रिनकोनिग्रहकीन्हें । संतनकेसेवनमनदीन्हे ॥ होतप्रसन्नआशुयदुराई । यहमेंसंशयकरहुनभाई ॥ १९ ॥
जोकामनादियोसबत्यागी । भयोअनन्यकृष्णअनुरागी ॥ तासुनेहगुणबँधेमुरारी । तेहिउरनिवसहिआशुसिधारी॥
दोहा–कबहुनताकोपुनितजत, गनतनतेहिअपराध । सुरदुर्लभनिजप्रेमदे, पुजवतमनकीसाध ॥ २० ॥
स०–पढ़िकैबहुशास्त्रघमंडभरेहरिकेयशकाननमेंनसुनै । करिसंतनकोसुखतेअतिनिंदनऔतिनकोउपदेशधुनै॥
रघुराजकहैतिनकोनितहीहरिआपनोवैरिविशेषिगुनै । जनतेमरिभोगिकैनर्कमहाखरसूकरकूकरहोतपुनै॥
दोहा–धनकुलविद्याकर्मको, जिनकेअतिअभिमान । तिनकोपूजनलेतनहिं, कबहूंकृपानिधान ॥ २१ ॥
स०–शेशमहेशप्रजेशखगेशनदासनतेजिनकोअतिप्यारे । भक्तनकाजलगेयदुराजरमातनहूतनकोनिहारे ॥
कोसुमतीअसहैजगमेंरघुराजप्रभूकोसुभावविचारे।जोनभजैअसनाथहिप्रीतिसोकालसमैजगजालविसारे॥

मैत्रेय उवाच ।

दोहा–यहिविधिनारदहरिकथा, भूपतिसुतनसुनाइ । ब्रह्मलोककोगवनकिय, बीनाविमलबजाइ ॥ २३ ॥
नारदमुखतेहरियशपावन । सुनतप्रचेतापरमसुहावन ॥ हरिपदध्यावतहरिरसभीने।हरिपुरकोपयानदुतकीने॥२४॥
यहजोपूछ्योविदुरसुजाना । सोमैंसिगरोकियोबखाना॥नारदअरुप्रचेतसंवादा । हरिचरित्रदायकअहलादा ॥२५॥

शुक उवाच ।

यहउत्तानपादकरवंसा । महाराजमैंकियोप्रसंसा ॥ अबसुनुवंशप्रियव्रतकेरो ॥२६॥ जेहिदियनारदज्ञानघनेरो ॥
पुनिकियभूमिभोगभूपाला । देइसुतनकहराजविशाला॥फेरिपरमपदजसपगुधारा।सोसबसुनहुसहितविस्तारा॥२७॥
दोहा–मित्रासुततेहरिकथा, मुनिसत्तामतिवान । पुलकिततनगदगदगरो, बाढ्योप्रेममहान ॥
शिरसोकियमुनिपतिहिप्रणामा।ध्यावतरूपकृष्णघनश्यामा॥२८॥जोरियुगुलकरअतिहिनिहोरी।भाखीगिराप्रीतिरसबोरी॥

विदुर उवाच ।

करुणाकरकरिकृपामहाई । हरिचरित्रमोहिदियोसुनाई ॥ दियलगाइभवसागरपारा।ढारीश्रवणसुधाकीधारा ॥२९॥

शुक उवाच ।

असकहिविदुरपाइसुखधामा।करिमित्रासुतचरणप्रणामा॥नृपतियुधिष्ठिरदर्शनहेतू।गयोहस्तिनापुरमतिसेतू॥३०॥
यदहरिभक्तनराजनकेरो । चरितविचित्रपवित्रघनेरो ॥ मित्रोसुतमखबरणतगाथा । सुनैजोप्रीतिसहितनृपनाथा ॥
दोहा–ताकीआयुपधनसुयश, विभवबढतजगमाहिं । अंतकालजनत्यागिके, गवनतहरिपुरकाहिं ॥ ३१ ॥
दिशिनिधिशशिसंवतसुभग, ऊर्जअशितकविवार । यहचतुर्थऽस्कंधभो, एकादशीप्रचार ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशश्रीमहाराजविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा-
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज
सिंहजूदेवकृतआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेएकत्रिंशत्तरंगः ॥ ३१ ॥
इति चतुर्थस्कंधः ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीमद्भागवत–आनन्दाम्बुनिधि ।

पंचमस्कंधप्रारंभः ।

सोरठा–जययदुकुलदिनराज, पालकभक्तसमाजके । चरणपरतरघुराज, राखहुनिजजनलाजप्रभु ॥
जयगजवदनगणेश, एकरदनगौरीसुवन । नाशकविघनअशेष, प्रणतपालसुमतीनके ॥
जयवानीसुखरूप, दयासिंधुआरतिहरनि । दाइनिबुद्धिअनूप, सुतसमदासनरक्षिनी ॥
दोहा–जयजयसत्यवतीसुवन, तासुतपदसुखसिंधु । तेहिनतिकरिभापारचहुं, यहपंचमअसकंध ॥
श्रीमुकुंदहरिगुरुचरण, वंदौंसिधिकरकाज । पुनिवंदौचारिजचरन, विश्वनाथमहराज ॥
सुनिचौथेअसकंधकी, कथापरीक्षितराज । पुनिपूछ्योसुकदेवसों, मध्यमुनीनसमाज ॥

राजोवाच ।

प्रियव्रतकोनारददियज्ञाना । ऐसोमुनितुमकियोबखाना॥ सोलहिज्ञानफेरकेहिकाजू। बस्योभवनमहँअतिदुखसाजू॥
एसेज्ञानिनकोमुनिराई । बसबभवननहिंउचितदेखाई ॥२॥जेकियहरिप्रेमहिरसपाना।तिनकुटुंबरमहिंमतिमाना॥३॥
सोप्रियव्रतकेसुतातियनेही । लहीसिद्धिजगमहँविधिकेही॥भयोकृष्णकोअतिअनुरागी।जाकीकीर्तिजगतमहँजागी॥
यहसंशयममहियेमहाई । नाथकृपाकरिदेहुमिटाई ॥४॥ सुनिकेकुरुपतिकेअसबानी । बोलेवचनविहँसिमुनिज्ञानी॥

शुक उवाच ।

दोहा–भलोप्रश्नकुरुपतिकियो, ताकोउतविस्तार । मैंउत्तरअबकहतहों, सुनियेबुद्धिउदार ॥
श्रीयदुनाथचरणअरविंदा । तामेंजेहिमनभयोमिलिंदा ॥ कृष्णकथासुनतोदिनराती।जासुसुमतिनहिंकबहुँअघाती॥
परमहंसभागवतोसोई । तेहिहरिभजतविघनयदिहोई । तदपितजहिनहिंअपनीरीती।करहिफेरहरिपदमहँप्रीती॥५॥
मनुमहाराजपुत्रअतिप्यारो । नामप्रियव्रतअवनिउदारो ॥ नारदचरणकरतसेवकाई । सहजहिलह्योज्ञानसुखदाई ॥
महाभागवतधारकधर्मा । करतासबपरमारथकर्मा ॥ एकसमयतहँमनुमहराजा । भजनचह्योप्रभुतजिनिजकाजा ॥
दोहा–प्रियव्रतमेंसबगुणनिरखि, जगरक्षणकेकाज । तेढिगजाइनिदेशदिय, नीतिसहितमनुराज ॥
रह्योकृष्णपदअतिलवलीना।हरिमहँकर्मअरपिसबदीन्हा॥तातेपितुशासननहिंमान्यो।राजकरनकोचितनहिंआन्यो॥
यद्यपिपितुशासनशिरमाहीं ।धरैपुत्रयहधर्मसदाहीं॥तद्यपिराजकरनपितुशासन । प्रियव्रतमान्योधर्मविनाशन॥६॥
तबब्रह्माजगपालनहेतू । कियोविचारमहामतिसेतू ॥ प्रियव्रतकोमनमेंसुखचारी । जानिजगतरक्षणअविकारी ॥
निजपितुकोनिदेशनहिंमान्यो।कृष्णचंदपदप्रेमलुभान्यो॥प्रियव्रतकेसमुझावनकाजा। चल्योचतुरमुखसहितसमाजा
दोहा–चढ्योहंसलैवेदसँग, निजपुरतेकरतार । उतरघोनभमेंलसतभो, मानहुअत्रिकुमार ॥ ७ ॥
लसहिसंगमहँविविधविमाना । मनहुव्योमतारागणनाना॥जेहिजेहिलोकजातकरतारा । तहँतहँकरहिंदेवसतकारा॥
विद्याधरचारणगंधर्वा । किन्नरअरुमुनिगणऋपिसर्वा ॥ करहिंविरंचिसुयशकरगाना । पावहिंमारगमोदमहाना ॥
शैलगंधमादनमहँराजा । नारदरहेऋपिनशिरताजा ॥ तहांप्रियव्रतनिवसतभयऊ । मनुमहराजबुझावनगयऊ ॥
रहेतीनहूतहँतेहिकाला । गयोविरंचिहुतेजविशाला ॥ करतप्रकाशकंदरामाहीं । गयोविरंचितीनहूपाहीं ॥ ८ ॥
दोहा–मनुप्रियव्रतयुतदेवऋपि, चतुराननकहँदेपि । उठिआगूचलिलेतभे, लह्योप्रमोदविशेपि ॥
तीनहुभक्तिभावनहिंथोरे । खड़ेभयेआगूकरजोरे ॥ पुनिकीन्ह्योपूजनविधिकेरो । कीन्ह्योकुशलप्रश्नबहुतेरो ॥ ९॥
तिनकोलहिपूजनसुखचारी । दयादीठतिनओरनिहारी॥मंदमंदविहँसतकरतारा।प्रियव्रतसोंअसवचनउचारा ॥१०॥

ब्रह्मोवाच ।

कछुकारजहितहमहुँसिधारे । सुनहुप्रियव्रतवचनहमारे ॥ करिकेराजकरहुमखनाना । देवनकोनकरहुअपमाना ॥
हमशिवतुवपितुऋषिमुनिजेते । हरिअधीनजानहुसबतेते ॥ जेहिशासनहमसबनाशिरधरहीं । सासारतिनचरणनपरहीं ॥
दोहा—जोहमतुमसोंकहतहैं, सोहरिशासनजानु । अंतरयामीसर्वदा, सबकेहैंभगवान ॥ ११ ॥
तपविद्याअरुबुधिबलयोगू । अर्थधर्मकरमहुउतयोगू ॥ इनसबतेयद्यपिबलभारी । पैनसकेहरिशासनटारी ॥
लेहियदपिबहुबलीसुहाई । सकैनहरिशासनबिसराई ॥ १२ ॥ सुखदुखशोकमोहभयनासा । जनमकर्मअरुविविधविलासा ॥
इनकेहेतकृष्णतनदेही । जेहिजसकरहिहोततसतेही ॥ १३ ॥ कृष्णचरणश्रुतिगणमहँबांधे । हमसबकर्मशकटमहँनाधे ॥
हरिशासनसबविधिअनुसरहीं । पालकवशपशुसमसंचरहीं ॥ १४ ॥ हमसबकेकर्महिअनुसारा । दुखसुखजोहरिदेतअपारा
सोहमसबविधिभोगहिंभोगू । सदाचलहिंवशईशनियोगू ॥
दोहा—जैसेअंधनपथकुपथ, चक्षुमानलेजात । तसहिसबकहँकृष्णप्रभु, सुखदुखदायकजात ॥ १५ ॥
ज्ञानिहुप्रारब्धहिभोगनहित । राखहिदेहनयदपिचारुचित ॥ पैनतनकतनमेंअभिमाना । जागेजिमिनस्वप्नअभिमाना ॥
अज्ञानीआवनसंसारा । ज्ञानीजन्मनलेतदुवारा ॥ १६ ॥ क्रोधादिकजिमितनमहँरहहीं । वनहुरहेतेसुखनहिलहहीं ॥
जेइंद्रीजितगृहोवसतहैं । तेअनुपमसुखपाइलसतहैं ॥ १७ ॥ कामलोभमदमत्सरकोहू । अरुछठयोरिपुजानहुमोहू ॥
चहैजोजीवनपटरिपुकाहीं । वसैकिलागृहआश्रममाहीं ॥ विनगृहस्थआश्रममतिधीरा । जीतनजाहिकबहुँमतिधीरा ॥
दोहा—तेईपटशत्रुनजबै, जीतलेहिंमतिमान । तबजहँचाहैतहँवसे, गृहवनएकसमान ॥ १८ ॥
तुमतोपटरिपुजीतिलिय, हरिपदगढ़गहिगूढ़ । भोगहुभोगजेहरिकहे, राजधर्मआरूढ़ ॥
प्रजापालधरणीधरम, धराधारिध्रुवधीर । पुनितजिकेसबसंगको, जैयोवनगंभीर ॥ १९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिजबजगगुरूविधाता । प्रियव्रतसोंकहवचनविख्याता ॥ तबसुखपाइप्रियव्रतज्ञानी । पदशिरधरिशासनलियमानी
पुनिविरंचिमनुनारदकेरो । प्रियव्रतकरिसतकारघनेरो ॥ सादरलैअतिप्रीतिपसारी । तीनिहुकासमप्रीतनिहारी ॥
वाकमनसिगोचरजोनाहीं । हरिउपदेशदियोतिनकाहीं ॥ पुनिविधिब्रह्मलोकपगुधारा । तिनहिंसराहतवारहिंवारा ॥ २१ ॥
मनुभूपतिसुनिविधिमुखज्ञाना । मान्योपूरमनोरथनाना ॥ नारदकोशासनतहँलैकै । धराधीशप्रियव्रतकहँकैकै ॥
दोहा—विषयभोगगृहत्यागिकै, हरिपदचित्तलगाइ । करनकठिनतपमनुनृपति, वस्योविपिनमहँजाइ ॥ २२ ॥
संपूरणधरणीकोराजू । पाइसुमतिप्रियव्रतमहँराजू ॥ हरिवशोगुणनिजअधिकारा । अतिअशक्तनाहिंविषयअपारा ॥
जगबंधनध्वंसनहरिचरणा । ध्यायोरैनदिवसभयहरणा ॥ जेहिप्रभावनिर्मलमनभयऊ । अहंकारउरनेकनठयऊ ॥
प्रियव्रतचक्रवर्तिमहराजा । पाल्योपहुमीसहितसमाजा ॥ २३ ॥ विश्वकर्माकीरहिकुमारी । बरहिपमतीनामछविवारी ॥
ताकरकियोप्रियव्रतब्याहा । वेदविदितविधिसहितउछाहा ॥ ताकेभेदशप्रबलकुमारा । सुताएकसबगुणनिअगारा ॥ २४ ॥
दोहा—जेठोभोअग्निध्रसुत, इध्माजिह्वज्ञयबाहु । महावीरघृतपृष्ठअरु, मेधातिथिकविनाहु ॥
सवनकनकरेताबलवाना । वीतिहोत्रभोपरमसुजाना एदशराजकुँवरसुखदाई । दुहिताऊरजसुतीसोहाई ॥ २५ ॥
महावीरअरुसवनकवीशा । ऊरधरेताभयेऋपीशा ॥ बालहितेतेहिआतमज्ञाना । परमहंसभेपरमसुजाना ॥ २६ ॥
याशीलसागरसमदरशी । साधुनप्रीतिसहितपगपरशी ॥ जगभैहरिहरपदअरविंदा । तामेंमनकरिदियेमलिंदा ॥
कृष्णचरणनृपराऊ । भक्तियोगकरबढ्योप्रभाऊ ॥ भयोअमलमननशेविकारा । मगनप्रेमरसपारावारा ॥
दोहा—बहुतकालयहिभाँतिते, सुखितरहतमनमाहिं । अंतकालहरिपुरगये, जहँयोगीजनजाहिं ॥ २७ ॥
प्रियव्रतकीजोदूजीरानी । तातेत्रयसुतभेबलखानी ॥ रैवततामसउत्तमनामा । भेमन्वंतरअधिपललामा ॥ २८ ॥
ऐसेतरहपुत्रनपाई । लह्योप्रियव्रतमोदमहाई ॥ ग्यारहअर्बुदसंमतराजा । कियोराजभलसहितसमाजा ॥

दोरदंडअतिजासुउदंडा । तामेंगहतजवहिंकोदंडा ॥ तासुधनुपधुनिसुनिभयपाई । विनासमयगेशत्रुपराई ॥
बर्हिष्मतीसहितदिनराती । प्रियव्रतलह्योमोदसवभाँती॥मंदहँसनिचितवनयुतलाजू।औरहुकेलिकरनकुलिकाजू॥
करिकरिपतिकोआनँददेती । वर्हिष्मतीपरमसुखलेती ॥

दोहा-अबुधसरिसविहरतभये, सोप्रियव्रतमहराज । मानतभेयहहैसकल, रघुपतिहीकोराज ॥ २९ ॥

करहिंसुमेरुप्रदक्षिणभानू । कहुँसंध्याकहुँहोतविहानू ॥ जवसुमेरुदक्षिणरविजाहीं । होतरैनउत्तरदिशिमाहीं ॥
जवउत्तरदिशिरविरथआवै । तवदक्षिणरजनीकेजावे ॥ प्रियव्रतभूपदशायहदेखी । अंधकारदुखदायकलेखी ॥
सभामध्यअसवचनउचारा । अंधकारकसहोतअपारा ॥ तहांसचिवअसवचनसुनाये । दिनरजनीदिननाथवनाये ॥
अवउत्तरदिशिगयेतमारी । तातेअंधकारभोभारी ॥ तवबोल्योप्रियव्रतमहराजा । करैभानुअनुचितयहकाजा ॥

दोहा-लागतमोकोनीकनहिं, अंधकारममराज । कहहुजाइअसभानुसों, करहिहमारोकाज ॥

करहिनअवनिमाहँअँधियारा । मानहिशासनअवशिहमारा॥कहैसचिवसवविहँसिसभर्मा।नाथअहैयहादिनकरकर्मा॥
भन्योभूपतवकोपहिधारो । रविअधीननहिंराजहमारो ॥ तमलहिदुखितप्रजासवहोंहीं । जानहिंरविसोनिर्बलमोहीं ॥
भानुसमानहियानवनाई । देहौंअवमैंनिशानशाई ॥ असकहिविशुकरमाहिंबुलवायो । भानुसमानहियानवनायो ॥
तापैचढ़िप्रियव्रतमहराज।।चल्योमनहुदूजोदिनराजा॥जवदिनकरदिशिपश्चिमलयऊ।तवप्रियव्रतपूरवदिशिगयऊ॥

दोहा-जवलोंउत्तरतेफिरत, पूरवआवैभानु । तवलोंदक्षिणतेफिरत, पश्चिमगयोसुजानु ॥

प्रियव्रतभूपतिजानुप्रकाशा।छायगयोअतिअवनिअकाशा॥कोउकहभयोननिशिकरभानू।प्रजागुन्योदूजोतेहिभानू॥
जहँजहँदिनकरकरहिंअँधेरो।तहँतहँप्रियव्रतकरहिउजेरो॥यहिविधिसातदिवसलगिराजा।मेटिनिशाकियदिनकरकाजा॥
निशाविनाशविरंचिविचारी।प्रियव्रतकोलखिद्धितियतमारी॥नृपतिनिकटद्रुतआयविधाता।बोल्योवचनमृदुलसुनुताता।
करवदिवसमेटवअँधियारा।यहनअहैराउरअधिकारा॥विधिकेवचनमानिमहराजा।वंदिकियेनिशिनाशनकाजा ३०॥

दोहा-प्रियव्रतरथकोचक्रजो, फिर्योसातहवार । ताकेसातहिहोतभे, महिमहपारावार ॥

रह्योधरणिजोतिनमधिमाहीं।सातद्वीपजानहुतिनकाहीं ॥३१॥ जंबूद्वीपमध्ययहभयऊ।लक्षशाल्मलिपुनकुसठयऊ॥
क्रौंचसाकपुष्करपुनिजानो । यहिविधिद्वीपननामवखानो ॥ यकयकतेदूनेविस्तारा।भयेद्वीपकुरुनाथउदारा॥३२॥
लवणसमुद्रप्रथमअनुमानो । ऊपरसहिकोदूजोजानो ॥ तीजोसुराचौथघृतकेरो । पँचयोक्षीरछठोदधिहेरो ॥
सतयोंशुद्धनीरकोसागर । यहिविधिसातहुसिंधुउजागर ॥ द्वीपनपरिखापारावारा । यकतेएकदुनेविस्तारा ॥

दोहा-प्रियव्रतसातहुपुत्रको, दीन्हेसातहुद्वीप । तिनकेवरणतनाममें, सुनियेकुरुकुलदीप ॥

आग्नीध्रहिदियजंबूद्वीपा । इध्मजिह्वकहप्लक्षअनूपा ॥ यज्ञबाहुकहशाल्मलदीनो । कुशहिरण्यरेतहिसुखभीनो ॥
क्रौंचद्वीपघृतपृष्ठहिदयऊ।मेधातिथिहिशाकमहँठयऊ॥वीतिहोत्रकहपुष्करदीना।इमिकियसुननविभागप्रवीना ३३
ऊर्जसुतीदुहितासउछाहीं।शुक्राचारजउहनृपब्याहीं॥सुतादेवजानिभयताकी।त्रिभुवनमहँअनुपमछविजाकी॥३४॥
असअनुपमप्रभावमहिमाहीं । हरिदासनकछुअचरजनाहीं ॥ कामक्रोधमदमत्सरकोहू । छठयोशत्रुवलीअतिमोहू॥

दोहा-येषटरिपुअतिशयवली, डारहिनरकनघोर । हरिपदरनधारतसदन, भजतसभयनहँओर ॥

हरिकोनामलेतइकवारा।पतितहुतुरततजतसंसारा॥३५॥महावलीसोनृपइककाला।कियविचारअसबुद्धिविशाला॥
लहिनारदकोचरणप्रसादा । पायोज्ञानकेरमरयादा ॥ भोगिभोगसोंमैंवितगयो । वनोजन्मसंसकलनशायो॥ ३६॥
गिरयोविषयसुरअंधहिकूपा।कहाकियोमैंहरिभूपा॥इंद्रीसुखमहंफिरयोभुलाना।आपनमनवनमनहिमाना ३७॥
नारिनमहँनारिनसँगराच्यो । तिनवशनरकटसमजगनाच्यो॥हृथिकदर्पिकदधिकमोदो। भयोनकृष्णनरकमोदो॥
यहिविधिकरिअपनोनृपनिंदा । होनचह्योवैकुंठवासिंदा ॥

दोहा-पुत्रनकोकरिदेतभे, नानांद्वीपविभाग । आपुकरतभोविपिनवनि, हरिचरणनअनुराग ॥

हरिप्रभाववशपायविज्ञान।यदुपतिरूपकरतचितध्याना॥मंदरकंदरअंदरगयऊ।नंदनंदपकोदासगयऊ॥

प्रियव्रतमहाराजकीकीरति।यहिविधिगावहिंसुकविनकीतति।प्रियव्रतसरिसकरिहिकोकर्म।विनईश्वरअसकोकृतव
निजरथचक्रउदधिरचिसाता२९कीन्ह्योद्वीपविभागविख्याता।सातदिवसलौंनिशानशाई । धरणीकीमरयादवन
गिरिअरुसरितऔरवनरापी । देशनकीसीमानृपभापी ॥ जातेकलहकरैंनहिंकोई । वसहिंदेशमहँजनमुदमोई॥४
दोहा–नागनाकनरलोकसुख, जान्योनरकसमान ॥ यदुपतिकीरतिमेंविमल, कीरतिकीन्ह्योगान ॥४
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

शुक उवाच ।

दोहा–भूपप्रियव्रतजवगयो, काननतपमनलाइ । भयोभूपआग्नीध्रतव, राजतिलककहँपाइ ॥
जेहिविधिप्रियव्रतपाल्योपरिजन।तिमिआग्नीध्रहुसुतसमसजन।राजधर्मधार्‍योधरणीमें।कोउनलह्योदुखनृपकरनी
एकसमयअग्नीध्रनरेशा । सुतविनकरिअतिशयअंदेशा ॥ गयोमंदराचलतपहेतू । पुत्रलहनहितकियअतिनेतू
[illegible] तहँजायआग्नीध्रभुवाला। विधिप्रियहिततपकियोविशाला
[illegible] ॥ पूर्वचित्तीअपसरासोहाई । गावतरहीसभासुखदाई
तेहिपठयोआग्नीध्रसमीपा ॥ २ ॥ सोआईजहँरह्योमहीपा ॥
दोहा–तेहिआश्रमकेनिकटमें, उपवनअतिकमनीय । तहँसुंदरिविचरनलगी, करिकरिगतिकमनीय ॥
सघनविटपजहँवहुतसोहाहीं।तिनमहँललितलतालहराहीं॥शुककपोतचातकअरुमोरा।विपुलविहंगकरहिंकलशोरा
लसहिंमनोहरविविधतडागा । विकसितवारिजउडतपरागा॥चक्रवाकवकसारसहंसा।करहिंसोरचहुँकितदुखध्वंसा
मरकतमणिसमनिर्मलनीरा।वहतसुहावनत्रिविधसमीरा॥ पूर्वचित्तीअपसरछविपागी । ऐसेवनमहँविचरनलागी॥४
तासुललितजगचरणविलासू । काकेउरनहिंकरतहुलासू ॥ ललितचरणनूपुरझनकारी । छाइरहीवनमहँमनहारी
दोहा–हुतोसमाधअगाधगहि, सोनरदेवकुमार । ताकेकाननमेंपरी, मनहुसुधाकीधार ॥
नलिननयनमूंदेनृपरहेऊ । पैनतासुधीरजउररहेऊ ॥ नैसुकनैननृपतिउघारी । पूर्वचित्तीकहनिकटनिहारी ॥५॥
भमरीसनलतिकमलतिकनमें । तोरतकुसुमरमतछनछनमें॥सलजकटाक्षमृगाक्षणकरनी।हेरतहींसुरनरहियहरनी॥
गावतमंदमंदगजगामिनि । मानहुदुतियकामकीकामिनि ॥कोअसपूर्वचित्तीकहदेपी । जोनमदनवशहोयविशेपी॥
आननपूरनशशीउदोतो । मुखसुवासवनवासितहोतो।भौंरभीरघेरहिंतहँआई । तातेचलतचपलमनभाई ॥
दोहा–कनककलशसमकपलजेहि, युगउरोजयुतहार।लफिलफिलचकतलंकलघु, लहिलहिकुचकचभार ॥
ताहिनिरखिआग्नीध्रनृप, कामविवशह्वैआशु, वोल्योमंजुलवचनअति, जडसमचलिढिगतासु ॥ ६ ॥
स०–कौनहौकौनकीवेटीअहौकेहिहेतफिरौवनमेंमनहारी। आइइतैरघुराजकहैकिधौंईशकीमायातियातनधारी॥
जौनकेहेतविनागुनकेयुगचापगहेशरपैनपवारी।मोसेकुरंगनकामिनकेहियमोहनकोजियमाहँविचारी ॥७॥
दोहा–विनगासैकिवाणये, केहिहनिहहुसुकुमारि । अतितीक्षणलखिकँपतहिय, रक्षाकरहुहमारि ॥८॥
तुववेनीविगलितकुसुम, लपटिमुखितभलभोर । करतगानतेरोसुयश, सुकविसरिसचहुँओर ॥९॥
स०–पदपंकजपंजरमेंटलना यहतीतुरीनूपुरशोरकरै । ममकाननधारसुधासीढरै नहिनैननमेंकछुमोदटरै॥
[illegible] कदंवप्रभापटकाहेधरै । यहिहेतकसीकलकिंकिनतू कटिमेरीकहूंनहिंटूटिपरै ॥१०॥
[illegible]गिके युगशैलधरेतुमकाहविचारी । यद्यपिताकोसुवासतेवासित वेस[illegible]कुटीटूटीहमारी
[illegible]नअतिशैटरपौर कहाकहियेकाहेजातनप्यारी । भूधरभागहिभूरिलहै करकेगोलोकटिसोनतिहारी ॥११॥
दोहा–कामिनकीकरनीकतल, मुखपियूषरसधारि ॥ अपनोदेशवताउवालि, जहँउपजैअसनारि ॥

कैसोथलवहजहँहरी, तियप्रभावअसदेहि ॥ धरिअनुपमयुगकुंभउर, वरवशवशकारिलेहि ॥ १२ ॥
नैनमीनअलकैंअली, कुंडलमकरअदाग ॥ सुभगदंततुवमुखलसत, मानहुसुधातडाग ॥
प्यारीकाभोजनकरहु, सोमोहिंदेहुवताइ ॥ जेहिप्रभावमुखतेनिकासि, रहीवासवनछाइ ॥ १३ ॥
प्यारीपंकनेपानिते, गलितमनोहरगंद ॥ जसभूमहँवहभ्रमततस, मोमनभ्रमतसखेद ॥
छूटीअलकसम्हारले, हेसुंदरिसुखरासि ॥ क्योंडारतवरवशअली, मेरेगलमेंफाँसि ॥
देतदुसहदुखपवनमोहि, अंचलचारुउडाय ॥ कसकामिनिकरिकैकृपा, औदियसुधिविसराय ॥ १४ ॥
यहकाननमेंकरनतप, आईमनहिंविचारि ॥ जपिनतपहिनाशनवपुप, केहितपलस्योखरारि ॥
वनमेंमोसँगकरहुतप, अवनअनतकहुँजाहुँ ॥ मैंप्रसन्नजान्योभयो, मोसोविधिसुरनाहु ॥ १५ ॥
मैंअवतजिहौंनहिंतुमहिं, हमहिंदियोकरतार ॥ तुमहिंनिरखिनहिंचहततहे, चखचितचपलहमार ॥
सो०-तेरोरूपअनूप, मेरोमनवशकरनहे, तेंमेरेअनुरूप, तातेमोहिवशकियचहत, जोतेंतजिहैमोहिं,
तौभक्षणकरिहैसिवा, होईअतिअघतोहि, तातेअवनहिंत्यागिये ॥ १६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-रमणिरिझावनमेंचतुर, जबआग्नीध्रनरेश । पूर्वचित्तिसोंकियविनय, निजदरशायकलेश ॥ १७ ॥
रसिकशिरोमणितिहि जियजानी । पूर्वचित्तिचितमेंसुखमानी॥रूपशीलवपुबुद्धिसुभाऊ।अपनेसमगनितेनृपराऊ ॥
मोहिगईअपसरासोहाई । नृपतिनिकटनिवसीद्रुतआई ॥ पूर्वचित्तिसँगनृपतिउदारा । लाखनवरपनकियोविहारा ॥
सुरसमभोगेभूमहँभोगू । सहिनसकेक्षणतासुवियोगू ॥ १८ ॥ भूपतिकोसयोगसुखपाये । पूर्वचित्तिकेनवसुतजाये ॥
प्रथमनाभिकिंपुरुपद्वितीयो । फेरभयोहरिवर्पतृतीयो ॥ चौथइलावृतरम्यकपाँचों । छठोंहिरण्मयसज्जनसाँचों ॥
दोहा-सतयोकुरुभद्राश्वपुनि, आठोंभयोकुमार । केतुमालनवमोभयो, जाकोसुयशअपार ॥ १९ ॥
नवसुतकोगृहमाँहविहाई । पूर्वचित्तिविधिधामसिधाई ॥ २० ॥ नवआग्नीध्रनरेशकुमारे । मातुकृपाल्हिभेवलवारे॥
तहँआग्नीध्रभूपवड़भागा । जंवूद्वीपहिकरिनवभागा॥यथायोगनवपुत्रनदीन्हे।निजनिजनामखंडतिनकीन्हे ॥ २१ ॥
नृपआग्नीध्रकरतसुखभोगू। कियोनकछुसंतोपप्रयोगू ॥ निशिदिनपूर्वचित्तिकहँध्यावै।तासुविरहवशअतिदुखपावै॥
तासुमिलनहितकरिवहुयाग।तासुधामगेतेहिअनुरागा॥निवसहिमोदितपितरनगनजहँ।पूर्वचित्तिसँगनृपतिवसेतहँ॥
दोहा-जवपितुगवनेसुरसदन, तवनवनृपतिकुमार । मेरुसुतनिव्याहतभये, शोभाशीलअगार॥ २२ ॥
नाभिमेरुदेवीकहँव्याही । प्रतिरूपाकिंपुरुपउछाही ॥ उग्रदंतिव्याहीहरिवरपा । लताइलावृतलईसहरपा ॥
रम्यारम्यकलईललामा । गहीहिरण्यकवामाश्यामा ॥ नारीसँगकीन्हेकुरुकाजा । भद्राभद्रअश्वमदराजा ॥
केतुमालिलियदेववीतिको । दीन्हीसिगरीप्रीतिरीतिको ॥ यहिविधिनवआग्नीध्रकुमारा।व्याहिमेरुदुहितासुखसारा॥
निजनिजखंडनकियेनिवासा । पाल्योपरिजनसहितहुलासा ॥ नीतिरीतिमहँमाहचलाई । अपनीअपनीफेरिदुहाई ॥
दोहा-धीरधारिअरिध्वंसके, धरनीधरमचलाइ । पृथक्पृथक्निजनिजसुयश, दीन्हेत्रिभुवनछाइ ॥ २३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

शुक उवाच ।

दोहा-जेठोनाभिनरेशजो, भयोपुत्रतिहिंनाहि । तवहि यज्ञभगवानको, पूज्योतियसँगमाहि ॥ १ ॥
शुद्धभावकरिकैअतिप्रीती । करीसकलमखकेनृपरीती ॥ देशकालऋत्विजअरुमंत्रा । द्रव्यदक्षिणाअरुतंत्रा ॥

नाभिनरेशहिकेप्रियकाजू । दरशावनहितधर्मदराजू ॥ राखनहितऋषीनमर्यादा । जेवादकवेदनकरवादा ॥
दोहा–गर्भमेरुदेवीनिवसि, श्रीवसुदेवकुमार ॥ ऋषभदेवह्वैनाभिगृह, लेतभयेअवतार ॥ २० ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

शुक उवाच ।

दोहा–हरिलक्षणलक्षितसकल, ज्ञानविरागप्रभाव ॥ बाढतभोबालकसुभग, समदरशित्वस्वभाव ॥
[illegible] । करतभयेबालककीसेवा ॥ कहतभयेमनमहँयहकाजा । पालैप्रजनहोयमहराजा ॥१॥
[illegible] । जासुसुयशगावैंकविधीरा ॥ प्रभावंतअतिशयबलवाना । शौर्य्यवीर्य्यतपबुद्धिनिधाना॥
[illegible] ॥२ऋषभदेवकोनिरखिप्रभाऊ।अतिशयतपितभयोसुरराऊ ॥
[illegible] । भोदुरभिक्षप्रजनप्रदपीरा ॥ ऋषभदेवलखिप्रजादुखारी । तुरतयोगमायाविस्तारी ॥
दोहा–तातेप्रगटेघोरघन, बरषिधराजलधार । कीन्होंप्रगटसुभिक्षबहु, लहेप्रजासुखसार ॥ ३ ॥
[illegible] ।प्रेमविवशगद्गदगरभयऊ । ऋषभपुत्रढिगआशुहिंगयऊ ॥
[illegible] । त्रिभुवनमहँनिजसुयशपसारे ॥ पुरुषपुराणेश्रीभगवाने । मायाविवशभूपसुतजाने ॥
[illegible] । अहोपुत्रप्यारेबड़भागा ॥ असकहिलीन्ह्योअंकउठाई । नयननीरनृपनाभिबहाई ॥
[illegible] । दह्योदुसहदीरघदुखद्वंदा॥४॥ऋषभदेवमहँपरजनप्रीती ।नाभिनिरखिऋषभहुप्रियप्रीती ॥
दोहा–जानिजरठपनआपनो, प्रजासमाजबोलाइ ॥ ऋषभदेवकोकरतभे, राजतिलकहरषाइ ॥
विप्रनसौंपिदियोसुतकाहीं । मेरुदेविलैनिजसँगमाहीं ॥ करनमहातपनिजमनलाई । बदरीवनहिंगयेनृपराई ॥
तहँकरिकठिनसुतपकछुकाला।सहितमेरुदेवीमहिपाला॥योगरीतिसोंतनुतजिदयऊ।नरनारायणमहँमिलिगयऊ ५॥
हेअभिमन्युकुमारसुजाना। करहिंनाभिजसअसकविगाना ॥ करैकर्मकोनाभिसमाना । जाकेपुत्रभयेभगवाना ॥६॥
विप्रभक्तभोनाहिंअसदूजो । जेहिमखद्विजप्रत्यक्षहरिपूजो॥७॥नाभिगयोजबकाननमाहीं।भयोभूपतबऋषभतहाँहीं ॥
दोहा–जंबूद्वीपहिगनतभो, कर्मक्षेत्रमतिमान ॥ पढनहेतविद्याविपुल, गुरुगृहकियेपयान ॥
पढिविद्यासिगरीगुरुगेहू । लैगुरुशासनसहितसनेहू ॥ गृहमेंआइऋषभमहराजा । कियेगृहस्थनकेसबकाजा ॥
श्रुतिअरुस्मृतिकर्मनिसबकीन्हों।लोकनकोशुभशिक्षणदीन्हों ॥ तिनकेरहीजयंतीरानी । ताकेशतसुतभेविज्ञानी॥८॥
तिनमेंजेठभरतभेभूपा।सबगुणपितुसमओजअनूपा॥भरतभूपकोजगयशछायो । जिनतेंभारतखण्डकहायो ॥ ९ ॥
भरतभूपनवबंधुसुजाना । तेनवहूतहँभयेप्रधाना ॥ कुशावर्तअरुब्रह्मावरता । इलावर्त्तजगयशविस्तरता ॥
दोहा–भद्रसेनअहकेतुहू, मलयविदर्भसुजान ॥ इंद्रपरशुअरुकीकटो, येनवअतिबलवान ॥ १० ॥
येनवभयेपरमविज्ञानी । तिनकेनामनिकहौंबखानी ॥ कविहरिअंतरिक्षकरभाजन । चमसपिप्पलायनसुखसाजन ॥
आविरहोत्रप्रबुद्धद्रुमिलवर ॥११॥ भयेमहायेनवयोगेश्वर ॥ इनकोचरितपरीक्षितभूपा ॥ आगेवरणनकरबअनूपा ॥
नारदवसुदेवहिसंवादा । एकादशमहँहरनविषादा ॥ १२ ॥ अनुजरहेजेऔरइकासी । धारकवेदशीलसुखरासी ॥
यज्ञकरतमहपरमप्रवीने।पितुआज्ञापालनअतिकीने ॥ कियेविशुद्धकर्मविधिनाना । तेसबब्राह्मणभयेसुजाना॥१३॥
दोहा–ऋषभदेवयद्यपिरहे, परमस्वतंत्रनरेश ॥ नाशकसकलअनर्थके, आनँदरूपहमेश ॥
तद्यपिमूढनसिखवनहेतू । धर्माचरणकियेमतिसेतू ॥ समदरशीसबमेंनृपरहेऊ । सबसोंपरममित्रतागहेऊ ॥
करुणाकरगुणआगरशूरा । दियोप्रजनकहँआनँदपूरा ॥ धर्मअर्थअरुसुयशबढायो । सबकोमुक्तिमार्गदरशायो ॥
बसिकेऋषभदेवमहिमाहीं । धर्मकर्मबहुकियेतहांही १४ रीतिसनातनयहकुरुराई । बड़नचाललघुचलहिंसदाई१५

यद्यपिसकलधर्मकेज्ञाता । ऋषभदेवजगमेंविख्याता । तद्यपिपूछिविप्रनसोंराजा । ठानहिंसकलराजकेकाजा॥
दोहा–ऋषभदेवमहँराजसों, इहिविधिधर्मचलाइ ॥ पाल्योपुहुमीप्रजनयुत, परमप्रीतिप्रगटाइ ॥ १६ ॥
द्रव्यदेशअरुकालहुकारिके।प्रीतिसहितअतिशयमुदभरिके।इकइकमखशतशतधाकीन्ह्यो।विप्रनअमितदक्षिणादीन्ह्यो॥
ऋषभदेवमखमहँलहिभागा । भयेसुखितसुरकियअनुरागा॥१७॥ऋषभदेवरक्षितसबलोगू।तोपितभयेपाइसबभोगू॥
सबकेसकलमनोरथपूजे । प्रीतिसहितसबश्रीपतिपूजे॥ रहीनपरधनजांचनआसा। निजनिजगृहसबकरहिंविलासा॥
नितनितहोंहिंनृपतिअनुरागी ।प्रजाऔरआशासबत्यागी।१८एकसमयसोनृपतिसुजाना।चल्योदेशदेखनचढ़ियाना॥
दोहा–देखतदेखतदेशसब, ब्रह्मावर्त्तहिंआय । लखिब्रह्मर्षिसमाजतहँ, बैठतभोशिरनाय ॥
तहँनिजसुतनबोलायके, विप्रनप्रजनसुनाइ ॥ ऋषभदेवबोलेवचन, ज्ञानविरागबुझाइ ॥ १९ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंह
जूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधेचतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

ऋषभ उवाच ।

दोहा–सुनहुपुत्रनरदेहयह, विषयभोगनहियोग । कूकरशूकरहूलहत, सबयहविषयसँयोग ॥
तपकेयोगअहैनरदेहू । करहुकृष्णपदसहजसनेहू ॥ तपकीन्हेंमननिर्मलहोई । तातेमुक्तिलहतसबकोई ॥ १ ॥
सज्जनसंगमुक्तिकोद्वारा । कामीसंगनरकआगारा ॥ पैसज्जनतेईकहवावै । जेसबमेंसमतादरशावै ॥
शांतचित्तनहिंकोपहिलेशू । केहकरचहतनकबहुँकलेशू ॥ २ ॥ छकैरैनदिनहरिकेप्रेमा । हरिकेहेतकरहिंसबनेमा ॥
तनधनगृहवनितासुतमाहीं । हरितजिकरैंप्रीतिबुधनाहीं ॥ विषयिनकेंबैठेनहिंनेरे । सुनेसुयशनितयदुपतिकेरे ॥
दोहा–देहप्रयोजनमात्रभरि, राखहिवस्तुसदाहिं । होहिंप्रयोजनतेअधिक, ताकोराखहिनाहिं ॥ ३ ॥
करिहैकर्मजोइंद्रिनप्रीती । सोकरिहैहठिकैअनरीती ॥ कर्मकियेजोपुनितनपावै । सोइकर्मनपुनिपुनिमनलावै ।
तातेपुनिपुनिलहतविषादू । यहनसाधुसंमतसंवादू॥ ४ ॥ तबलोंलहतजीवसंसारा । जबलोंलहतनआतमविचारा॥
कैर्कर्मजेजीवसदाही । रहैतासुमनकर्महिमाही ॥ ताहीमनतेहोतशरीरा । लहतजगतनानाविधिपीरा ॥ ५ ॥
जबलोंमनमेंरहतअज्ञाना । तबलोंजीवकर्मवशनाना ॥ जबलोंहोतनहरिपदप्रीती । तबलोंछूटतनहिंभवभीती ॥६॥
दोहा–जबलोंमिथ्याविषयसुख, नहिंजानतोअजान । तबलोंतिययुतबसिभवन, पावततापमहान ॥ ७ ॥
नेहविवशनारीनरजूटै । यहीगाँठिहियकीनहिंछूटै ॥ यहितेमानतसकलहमारा । तनधनधामसुजनसुतदारा ॥ ८ ॥
सोहियगाँठजबैखुलिजावै । विषयभोगतबकछुनहिंभावै ॥ छूटततबहिअहंममकारा । तबगवनतगोविंदअगारा॥९॥
श्रीगुरुचरणमाहँकरिप्रीती । सेवाकरैदासकीरीती ॥ सुखदुखतजैतजैसबआसा । स्वर्गहुकोजानैदुखवासा ।
आतमज्ञानगुनतनितरहई।तबकरियोगजुगतिसबचहई॥करहिनकबहूँकर्मसकामा।१०॥करैकर्महरिहितअभिरामा॥
दोहा–सुनतकृष्णलीलाकथा, बीतिरैनदिनजाइ । हरिदासनकोखोजिके, करैकर्ममनलाइ ॥
जपैरैनदिनयदुपतिनामा । करैनबेरकबहुँमतिधामा ॥ रहैसदासबमेंसमदरसी । करैअचंचलबुधिगिरिवरसी ।
देहगेहमेंनेहनराखे ॥ ११ ॥ वेदवेदांतसदामुखभाखे ॥ बसैएकांतइंद्रियनजीती । धारैब्रह्मचर्य्यकीरीती ।
नित्यकर्मश्रद्धायुतकरई । वृथावचननहिंमुखउच्चरई॥१२॥राखैसबथलकृष्णभावना । करैध्यानहरिछोड़िकामना।
मिटनपदुवारा । सहितविवेकधरैउरधीरा ॥ इतनेकर्मकरैजोकोई । आवागमनरहितसोहोई ।
दोहा–जबलोंहियकीगाँठदृढ़, सकलछूटिनहिंजाय । तबलोंताकछुटनकी, येसबकरहिउपाय ॥ १३ ॥
गुरुमुखज्ञानगाँठनहिंछूटै । तबनितकृष्णभक्तिसुखलूटै ॥यदुपतिप्रेममृगनजगबागै । पुनिनहिंजियउपायअनुरागै।
चंदकृष्णपुरजोजननाहूं । कृष्णकृष्णजोचंदमदाहूं ॥ तायदमास्कथितवरज्ञाना । सबकोउपदेशोमतिमाना ॥१४॥

...भजन... ॥प्रजाशिष्यसुतजोनहिंमाने । तौतिनकेपरकोपनठाने ॥
...७॥ । विषयकर्मसबदेहिछुडाई ॥ विषयकर्मजेजननलगावें । तेजनकहाजगतमेंपावें ॥

दोहा–अंधकूपमेंअंधकहु, जिमिदियकोउगिराइ । तौताकोकछुमिलतनहिं असमोहिंपरतजनाइ ॥ १५ ॥

कवित्त–तियकेसनेहीसबदेहीसदागेहीसुख जानैनहिंकौनोभाँतिआपनोकल्यानहै ।
थोरेविभौभूमिहेतकरिकेअनेकनेत लरिकेअचेतखोइडारैनिजमानहै ॥
कहैरघुराजसुखलेशहीकेलैनाहित जानतनअंतकेकलेशजेमहानहैं ॥ १६ ॥
ऐसेसंसारिनमतिमंदनकीदशादेखि कबहूँनाकुपथसिखावतसुजानहैं ॥ १७॥
सोहैनहिंमातासोहैगुरुनहींत्रातासोहै भूपतहिज्ञातासबसुखनिसमाजको।
सोहैनहिंभ्राताझूठौसाकरेकीनाताअरु सोहैनाहिंताताजोरखैयालोकलाजको ॥
सोहैनहिंमित्रत्रातासोहैनाविधाताकछू सोहैनाहिंजातिअरुनातासर्वकाजको ।
कहैरघुराजसोविख्यातावैरीविश्वमेंजो पदजलजातानगहायोयदुराजको ॥ १८ ॥

... । शुद्धधर्ममहिकियेअपारा ॥ मेरेनिकटअधर्मनआवै । ऋषभनामतातेजगगावै ॥ १९ ॥
मेरेतनतेतुमप्रगटाने । तुमसबमेंहैभरतसयाने ॥ तातेकरहुभरतसेवकाई । प्रीतिसहितसबकपटविहाई ॥
सेवाभरतकेरिजोकरिहौ । तौतोहिसहितप्रजासुखभरिहौ ॥२०॥ हैपपाणतेविटपप्रधाने । तिनतेवरसर्पादिकजानै ॥
तिनतेश्रेष्ठपशुनकविकहहीं । मनुजश्रेष्ठतिनहूतेअहहीं ॥ मनुजनतेवरवृत्तपिशाचे । तिनतेवरगंधर्वहुसाँचे ॥
गंधर्वहुतेउत्तमसिद्धा । तिनतेकिन्नरश्रेष्ठप्रसिद्धा ॥

दोहा–किन्नरतेहैवरअसुर, ॥ २१ ॥ असुरनतेसुरवेश । सुरसमाजमेंजानिये, अहैप्रधानसुरेश ॥

हैसुरपतितेदक्षादिकवर । तिनतेशंकरशिरसुरसरिधर ॥ शंकरतेब्रह्मापरधाना । ब्रह्मातेप्रधानभगवाना ॥
सोश्रीपतिपूजेद्विजकाहीं । तिनहूँतेद्विजश्रेष्टसदाहीं ॥ २२ ॥ हैकोऊनहिंविप्रसमाना । तौकिमितिनतेहोइमहाना ॥
जसद्विजमुखहरिजाहिअघाई।तसनहिंपावकहोमहिपाई२३शमदमसत्यआदिगुणजेते। रहहिंविप्रमहँनिशिदिनतेते ॥
हरिवपुवेपविप्रनितधारे । तातेतिनतेअधिकउचारे ॥ स्वर्गहुओअपवर्गनदाता । हैकेशवसबतेपरताता ॥

दोहा–ऐसेहरिपदविप्रसब, सेवनकरहिंसदाहि । रहतप्रेमतेनितमगन, माँगतहैकछुनाहिं ॥ २४ ॥

चहतनकछुहरिहूसोलहिबो । तौऔरनसोंकापुनिकहिबो॥तातेकरहुविप्रसेवकाई । जातेउभयलोकवनिजाई ॥२५॥
व्यापकचरअचरहुभगवाना।तातेसकलकरहुसनमाना॥कोउसोंकबहुँकपटनहिंकीजे।यहीपरमपूजनगुनिलीजे॥२६॥
कायिकवाचिकमानसकरमा।हरिमहँअरपेसबशुभधरमा॥विनाधर्मअरपेहरिमाहीं।कबहुँकालभयछूटतनाहीं ॥ २७॥
यहिविधिपुत्रनशासनदेके । तिनकोसकलगुणनयुतज्वेके ॥ जगतमित्रसोपरमप्रभाऊ।बोलिभरतनिजसुतनृपराऊ ॥

दोहा–राजतिलकताकोकियो, जगपालनकेहेतु । आपकियोवनकोगवन, सकलधर्मकेसेत ॥

ब्रह्मावर्तहितेनृपराई । काननगेगृहसुधिविसराई ॥ परमहंसकोधर्मसोहावन । ज्ञानविरागभक्तियुतपावन ॥
वनमहँमुनिनसिखावनलागे । पुनिनहिंराजकोपतियपागे ॥ केवलनिजतनहैनिनसंगा । नभपटऋषभदेवकेअंगा ॥
खुलेकेशउन्मत्तसमाना।विचरहिंवनहिऋषभभगवाना॥अग्निहोत्रआदिकजेकर्मा ।तनहिलीनकरिलीनसुधर्मा॥२८॥
बधिरमूकजोअंधसरिसतहँ । विचरहिंधरिअवधूतवेषकहँ ॥ धरेमौनव्रतजगतविदेही । पूछेउतरनहिंउत्तरदेही॥२९॥

दोहा–गिरिवनमुनिआश्रमनमें, शिबिरनगरव्रजग्राम । ऋषभदेवविचरहिंधरणि, सबथलपूरणकाम ॥

कोशठतिनकोताडनकरहीं।कोउतिनकेमुसमहँरजभरहीं।कोउमलमूत्रकरहिकोउथूकैं।कोउपपाणमारहिकरिकूकैं॥
कोउदेहिताकोबहुगारी । कोउपछियाइलेहिदेतारी ॥ पर्नाहिऋषभगनेमनमाहीं । ज्योंमाखिकागजहिपांउ्याहीं ॥
ऋषभनरह्योतनकअभिमाना, परचोनतातेतेहिकछुनाना ॥ ब्रह्मानंदसिंधुमहँभीने । चंचलचित्तअचंचलकीने ॥
तिनकेसंगरह्योकोउनाहीं।विचरतऋषभदेवमहिमाहीं३०अतिसुकुमारचरणकरकंजा।भुजनिशालउरअतिमनरंजा॥

दोहा–अतिसुंदरवारिजवदन, कुंदरदनमृदुहास ॥ नवलनलिनदलयुगलदृग, हेरतहरतहरास ॥
सुंदरगोलकपोलअतूला।सुभगकंठनासाछविमूला ॥ सुखमुसक्याननिरखिपुरनारी । जहँतहँहोहिंमैनमतवारी
कोमलकुटिलश्यामसटकारे । शीशकेशमहिलगिछटकारे॥धूरधूसरितयदपिदेखाहीं।तदपिछिपांतिप्रभातिननाहीं
यद्यपिज्ञाताज्ञानविज्ञाना।देखिपरहिंउन्मत्तसमाना२१जगहिजानिअतिशयदुखकारी।अजगरवृत्तिऋषभऋषिधा
पुहुमिपरेभोजनअरुपाना।करहिंऋषभनहिंकतहुँपयाना॥मलमूत्रहुताहीथलत्यागै।रोवहिहँसहिनसुखदुखपागे २२
दोहा–तिनकेमलकीशुभसुरभि, दशयोजनलौंछाय । करतसुगंधितपुहुमिको, अनुपमगतिदरशाय ॥ २३
कहुँपशुपक्षिनकीगहिराती।बैठतवागतपरमअभीती॥तजहिमूत्रमलपशुहिसमाना।तिनकोतनकरतनकनभाना २४
यहिविधिकरतयोगपथनाना । महाप्रभावऋषभभगवाना ॥ हरिकेप्रेमछकेऋषिराई । सँगसँगफिरहींसिद्धिसमुदा
तनकोतकहिनसिद्धिनवोरा।जिमिशिशुचहैनकनककटोरा॥अणिमामहिमाप्रापतिगरिमा।वशीकरनईसितासुलघि
अरुअकाम्यथेआठहुसिद्धी । जगमेंहैंतेपरमप्रसिद्धी ॥ यद्यपिदुर्लभयोगिनकाहीं । तदपिनऋषभतकेतिनपाहीं
दोहा–रहेजेजानतऋषभको, तेजनकियेप्रणाम । जानतभेउनमत्तसम, जेकुबुद्धिकेधाम ॥ २५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधेपंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

दोहा–ऋषभदेवकोचरितसुनि, कुरुकुलकमलदिनेश । बोल्योश्रीशुकदेवसों, ध्यावतधीररमेश ॥

राजोवाच ।

इंद्रीजितअरुनिरअभिमाना । जरेमोहादिकयोगकृशाना ॥ ऐसेहरिदासनमुनिराई । होहिनकवहुँसिद्धिदुखदाई ॥
विनमाँगेहरिकीसवदीन्ही।ऋषभदेवकससिद्धिनलीन्ही ॥१॥ सुनिकैकुरुकुलमणिकीवानी।बोलेश्रीशुकदेवविज्ञानी॥

श्रीशुक उवाच ।

कह्योसत्यसवतुमकुरुराई । याकोकारणकहोंवुझाई ॥ चंचलचित्तयदपिवशहोई । तदपिविश्वासैनहिंवुधकोई ॥
जिमिमृगपतिकेतोवशरहतो । पैपालकविश्वासनहिंगहतो ॥ ऐसोभापहिंवेदपुराना । सोमैंतुमसोंकरहुँवखाना॥२॥
दोहा–यहचंचलमनकोकवहुँ, करैनवुधविश्वास । करैकवहुँविश्वासजो, होयअवशितपनास ॥
हरहुनिरखिहरिमोहनिरूपा । सोइदियोमरयादअनूपा॥३॥जोविश्वासमनकोवुधमाने।तौमनअवशिकाममहँआ
क्रोधादिकसवकामहिसाथी।योगिनयोगनहोहिप्रमाथी॥कुलटानारिआनिजिमिजारै।करवावतनिजपतिसंहारे॥
कामक्रोधमदमत्सरमोहू । डारहिसंसारहिकरकोहू ॥ तेसवरहहिंमनहिकेसंगा । तातेवुधनरँगहिमनरंगा ॥ ५
कुरुपतितहँऋषभभगवाना । करतमूकजडसरिसपयाना ॥ वोलतबहुप्रमत्तसमवानी।परतनतिनप्रभावपहिचा
दोहा–मरणरीतियोगीजनन, सिखवनहितऋषिराय । चल्योकलेवरतजननिज, तनअभिमानविहाय ॥
दीन्हीअचलसमाधिलगाई । दियोब्रह्मआतमामिलाई॥६॥कर्मवासनाविवशशरीरा । भ्रमतरह्योसुखदुखनहिंपीरा
जिमिकुलालकोचक्रजोरवस । भ्रमतरह्योतनऋषभदेवतस ॥ कोंकवेंकदक्षिणकरनाटा।औरकटकदेशनसिरराय
विचरयोनिजइच्छावशनहँतहँ।पुनिगवनतभेकुटकाचलमहँ॥खुलेकेशउनमत्तसमाना।मोटलियोमुखतहँपपान
तेहिवनमहँनदपैसवयारी । वंशविघर्षणलगीदवारी॥तेहिदवारिमहँतनजरिगयऊ। ऋषभविष्णुपुरपावतभयऊ ॥
दोहा–कोंकवेंकदेशनजवे, गयोहतोऋषिराइ ॥ कारिनिजबहुआचरणको, दियोदवातलुलाइ ॥ ९ ॥
[illegible]मुद्रापविरागी । नजिअचारअस्नानअभागी ॥ सवजातिनर्हुभोजनकरिहैं । शुद्धअशुद्धनमनहितिनारी
कलिमहँनामदिंकरगगी । वेदपनहिनमुननियत्यागी ॥ निनकदमानिमदात्मापूर । ब्राह्मणपालंडाह
वेदाप्रकानिदाकरिहै । पनाहिनवपअनेकनगरिहै ॥ १० ॥ वेदविरुद्धकर्मपदभूपा । करिहैंशठविश्वासअनूप

११लियोजोकृष्णऋषभअवतारा।ताकोनृपअसकरहुविचारा॥
दोहा-मोक्षमार्गसिखवनहितै, रजोगुणीजनकाहि। भयोऋषभअवतारयह, पाखंडिनहितराहि॥
१२॥नवहुखंडअरुद्वीपहुसाता।येधरणीमहँहैंविख्याता॥
निहै।जहँगावहिंहरियशसुखसनिहै॥ऋषभादिकअवतारनकेरे।सुयशकविनप्रदमोदघनेरे१३
। लियअवतारजहाँहरिअंशा॥मोक्षधर्मप्रगट्योजगमाहीं। ताकोशठजान्योकोउनाहीं १४॥
। ब्रह्मनिष्ठपरपंचवियोगी॥जिनसिद्धिनहितयोगिहमेशा। करहिंकठिनकुलिकायकलेशा॥
दोहा-ऋषभनिकटतेसिद्धिसब, रहैंसदाआधीन॥ पैतिनमेंनेकहुकबहुँ, चितचाहनानदीन॥ १५॥
विप्रवेदकेगुरुऋषभ, तिनकोचरितउदार॥ दायकमंगलमोदनित, करतपापसबक्षार॥
ऋषभचरितयहप्रीतियुत, सुनैसुनावैजोय॥ श्रीवसुदेवकुमारमें, तासुप्रीतिहठिहोय॥ १६॥
जेयदुपतिपदपदुमको, रसिकसुकविजगमाहिं॥ तेहरिभक्तसमुद्रमें, नहवावतजगकाहिं॥
यहजगतापहितेतप्यो, जियाहिउपायनआन॥ कृष्णभक्तिरसउदधिमें, नितमज्जैमतिमान॥
सोईभक्तिआनंदते, श्रीहरिदाससदाहिं॥ पंचप्रकारहुमोक्षको, दीन्हेलेतेनाहिं॥
त्रिभुवनमेंश्रीकृष्णके, चरणदासलहिनाम॥ सबपुरुषारथपावते, हैंपरिपूरणकाम॥ १७॥
कवित-कुरुनृपवंशअवतंसमहाराजसुनो, पांडुयदुवंशस्वामीसोईखगकेतुहैं।
इष्टदेवहूहैंप्राणप्यारेहैंगुरूहैंसत्य, दूतभयेसूतभयेकृपाकेनिकेतहैं॥
कहैंरघुराजहोतुम्हारएकबारवंश, भापतहीद्रुतदुखहरहरलेतहैं।
ऐसेश्रीमुकुंदभजेदेतपंचमुक्तिहूको, पैनप्रेमभक्तिसबमुक्तनकोदेतहैं॥ १८॥
दोहा-ब्रह्मानंदहिपायके, कियतृष्णाकोनाश॥ अज्ञानिनकेमोक्षहित, कीन्होज्ञानप्रकाश॥
दुजोअसकोउनहिंभयो, जगमहँकरुणाधाम॥ ऋषभदेवभगवानको, वारहिंवारप्रणाम॥ १९॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि रघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कन्धे षष्ठस्तरंगः॥ ६ ॥

दोहा-जबहिंऋषभप्रभुवनगये, जेठसुतहिदेराज॥ तबधरणीपालतभये, मुदितभरतमहराज॥ १॥
विश्वरूपकीसुतासयानी। पंचजनीव्याहीछविखानी॥१॥ ताकेभेतहँपाँचकुमारा। सुताएकसबगुणनिअगारा॥२॥
सुमतिराष्ट्रभृतऔरसुदर्शन। धूम्रकेतुआवरणमहामन॥ अजनाभकयहखंडसोहायो।भरततेभारतखंडकहायो॥३॥
भरतभूपअतिशयसुखदाई। पितापितामहराजहिपाई॥पितापितामहसरिसप्रजनको।पालतभयोविनाशिव्रजनको॥
निजनिजकर्मनिजननलगाये। धरमधुरंधरधरनकहाये॥४॥ कर्मिकमखपूज्योभगवाने। कियसप्रीतिविप्रनसनमाने॥
दोहा-अग्निहोत्रपशुसोमअरु, दरशहुपूरणमास॥ करीयज्ञप्रकृतिहिविकृत, औरहुचातुरमास॥ ५॥
ऋत्विजकरहिंयज्ञकेकर्मा। बैठोभरतभूपयुतधर्मा॥ यज्ञफलनहरिमहँनृपअरपे। इमिलिभवकहँनेकुनदरपे॥
हरिअंगनसबदेवनध्यावै।हरितेपृथकनकछुमनलावै॥६॥इहिविधिकर्मविशुद्धिकरिके।भोमनअमलवासनाहरिके॥
परब्रह्मयदुपतिपदमाहीं। भईभक्तजोअचलसदाहीं॥ हियमेंहरिकोध्यावनलाग्यो। ध्यानहिनिरसिरूपअनुराग्यो॥
उरश्रीवत्सलसतवनमाला। चक्रादिकयुतबाहुविशाला॥ नवनीरदसमश्यामशरीरा। पीतांबरकीछविगंभीरा॥
निजभक्तनहितनिश्चलवासी। सकलविश्वकेएकप्रकासी॥
दोहा-ऐसेहरिकोहेरिहिय, नितानितबढ्योहुलास॥ प्रगटीप्रीतिप्रवीनअति, चरणनमोनिवास॥ ७॥
शासनवपैराज्यनृपकीन्ह्यो। प्रजनसधर्मपालनुददीन्ह्यो॥ सौंप्योसुतहिराजकोभारा। जानिजरठपनभरतउदारा॥

औरहुसुतनबाँटदियहोसा। आपुचरणध्यावतजगदीसा॥घरतेनिकस्योभरतनरेशा। मुक्तक्षेत्रगमन्योमतिवेशा॥८॥
हैविद्याधरकुंडतहाँहीं। निवसहिंजहँहरिदाससदाहीं॥ दासनप्रीतिहेतभगवाना। रहतप्रगटनिततिहिंअस्थाना॥९॥
शालिग्रामीसरितसोहावनी।वहतअमलजलपतितपावनी॥जहँप्रगटहिंप्रभुशालिग्रामा।विविधभाँतियुतचक्रललाम

दोहा—तहाँअकेलेनिकसिके, भरतभूपमतिमान॥ लग्योकरनतपअतिकठिन, ध्यावतश्रीभगवान॥

तुलसीदलअनुफलअरुफूला। नितनवअंकुरकंदहुमूला॥ निजकरसोंवनतेलेआवें। भावभक्तियुतहरिहिंचढ़ावें
नितनिजकरभरिसुंदरनीरा। हरिकहँनहवावतमतिधीरा॥ यहिविधिवसतइकांतहिमाहीं। नृपमनरहीवासनानाहीं
प्रेमभगनभोभरतनरेशा। छूटेजगकेसकलकलेशा॥ ११॥ नितनववढ़ीकृष्णपदप्रीती। गहीअनन्यभक्तकीरीती
ध्यानहिमहँहरिकहँनृपदेखे। पुलकतकुलकतरहतअलेखे॥ नैननिबहतिनीरकीधारा।रह्योनतनकरतनकसम्हारा

दोहा—श्रीमुकुंदअरविंदपद, ताकोमधुरमरंद॥ मनमालिंदनितपानकरि, पावतपरमअनंद॥

प्रेमपयोधिमगननृपराई। दियोकृष्णपूजनहुभुलाई॥१२॥ धारणकियेरहतमृगछाला। मज्जनकरतत्रिकालभुवाला।
शालिग्रामीजलतेताके। भीजजटाशिरपीतप्रभाके॥ उदितहोइजवपूरवभानू। सरिमज्जनकरिभरतसुजानू।
सनमुखवह्योभरतकेभूपा। तेहिमंडलमहँयदुपतिरूपा॥ ध्यानकरैयुगनयनलगाई। तनमनअरपिमहासुखछाई।
गायत्रीअर्थहिजेहिमाहीं। पढ़तभयेइहिमंत्रहिकाहीं॥१३॥ मंत्रजानिमैंकियोनभाषा। मंत्रहियहग्रंथहिलिखिराषा॥

दोहा—गायत्रीकोअर्थहै, यहश्लोकहिमाँहि॥ जाहिवेदअधिकारनहिं, पढ़ैतेयाकोनाहिं॥

श्लोक-परोरजः सवितुर्जातवेदो देवस्य भर्गो मनसेदं जजान॥सुरेतसाऽदः पुनराविश्य चष्टे हंसं गृध्राणं नृपद्रिंगिरामिमः

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ
पंचमस्कन्धे सप्तमस्तरंगः॥ ७॥

शुक उवाच।

दोहा—एकसमयतहँभरतनृप, शालिग्रामीतीर। मज्जनहितगमनतभयो, प्रातसमयमतिधीर॥

तहँमज्जनकरिभरतनरेशा। नित्यकर्मकरिवंदिदिनेशा॥ जापकरनगायत्रीलाग्यो। हरिकोध्यानकरतसुखपाग्यो
तीनमहूरतलगिमतिधीरा।बैठ्योनदीगंडकीतीरा॥ १॥ गर्भवतीहरिनीयकराजा। आईतहँजलपीवनकाजा॥ २
पियनलगीजबजलजेहिठोरा।गरज्योनिकटसिंहयकघोरा॥३॥सोसुनिमृगीभयंकरनादा।अतिशयउरमेंमानिविषादा
चौंकिचहुँकिजबचितवनलागी।प्यासीजलतटतेद्रुतभागी॥अतिउतंगकूदीकरिजोरा।भयवशताहिभयोअतिभोरा॥

दोहा—हरिनीकिकूदततहां, महावेगकोपाय। तासुगर्भद्रुतउदरते, गिरयोसरितमहँआय॥ ५॥

प्रसवपीरमृगपतिभयभारी।संगनकोउहरिनीसहकारी॥मृगीगिरीगिरिकंदरभागी।प्रसवपीरवशदियतनत्यागी॥ ६
यहसवचरितराजऋषिदेखी।वहतिधारमृगसावकलेखी॥ मृगसावककहँजानिअनाथा। करिकैकृपाभरतनरनाथा
अतिआतुरमृगशिशुढिगजाई।लियेवंधुसमताहिउठाई॥लैमृगबालकआश्रमआये॥७॥ तेहिसेवनमहँअतिमनलाये।
तेहिहितनितवनतेतृणल्यावैं। तोडितोडिनिजहाथखवावैं॥ वाघविगातेरक्षनकरहीं। गलखजुवाइताहिसुखभरहीं

दोहा—कहुँमुखचूमततासुनृप, बैठावतनिजगोद। ताहिखिलावतरैनादिन, पावतपरमप्रमोद॥

मृगशिशुमेंअतिनेहलगायो।क्रमक्रमयमअरुनेमभुलायो॥ छूटिगयोहरिपूजनकरिबो। मज्जनभोजनपानहुकरिबो॥
[illegible] हिवि[illegible]। हैमृगसावकदीनअपारा॥ नहिंभ्रातानहिंहैकोउत्राता। हमहींहैंयाकेपितुमाता॥
[illegible] ॥अहैनमोकहँत्यागवयोगू।त्यागेनिरदयकहिहैंलोगू॥
पालनपोपनलालनयाको।मैंकरिहौंकरिहियेदयाको॥९॥निजकारजतजिसंतसुजाना।शरणागतपालहिंभगवाना॥१०॥

दोहा—असविचारकरिभरतनृप, मृगसुतमहँकरिनेह। ताकोनितसेवनलगे, दियभुलायसुधिदेह॥

सुतकोनितलैसँगसोवें । तेहिवैठेवैठेसुखजोवैं ॥ तेहिनहवावतआपुनहाहीं । ताहिखवावतआपहुखाहीं ॥
हुँजाहिंतहँसँगलैजाहीं ।एकहुक्षणछोड़हिंतेहिनाहीं॥ ११ ॥खननहेतुवहुकंदहुमूला । तोरनहेतुफलहुअरुफूला ॥
रतभूपजवकाननजाहीं । तवमनमेंअसअमितडेराहीं ॥ जोहमआश्रममहँताजिजैहें । तौयहिवाघविगाधरिखैहें ॥
तेजातजहांनृपराई । ताकोसंगहिजातलेवाई ॥१२॥ जोकहुँचरणलगततृणकाहीं । अथवाचलतथकतपथमाहीं॥
ताकोनिजकंधचढ़ाई । विचरहिंवनमहँप्रीतिवढ़ाई ॥

दोहा–कवहुँशीशकहुँअंकमें, कवहुँकंधधरताहि । मृगशिशुनितहिखेलावहीं, परममुदितमनमाहि ॥ १३ ॥

वकहुँध्यानकरहिंनृपराई । मृगशावकआवततहँधाई ॥ कहुँसूंघैमुखकहुँकरमाहीं । तवनृपनयनतुरतखुलिजाहीं॥
हिंअशीसताहिपुचकारी।मृगसुतआयुपवढ़ैतुम्हारी१४केहुक्षणजवतेहिदेखहिंनाहीं।तवनृपवहुतविकलहोइजाहीं ॥
सेकृपणगयोधनखोई । ताकेहितचितवतदिनरोई ॥ जोकहुँचरणदूरकढ़िजाई । तौविलपतभापहिनृपराई ॥१५॥
रिणीसुवनजातकहँभयऊ । हायमहूंतेहिसंगनगयऊ ॥ मैंनिर्दयशठव्याधसमाना । मंदभागमोहिंसमकोआना ॥

दोहा–ममअपराधविसारिके, मृतहरिणीकोवाल । सुजनसरसकाआइहै, करिविश्वासविशाल ॥ १६ ॥

क्षितदेवनतेमृगशावक।चरतनवीनतृणहिमनभावक।देखवकवनिजआश्रममाहीं।जेहितेंप्रियदूजोमोहिंनाहीं ॥१७॥
कवाघनतेवचोजोहोई । तौइतआयमोहिमुददेई॥१८॥अथवनचहतभानुयहिकाला । अवलौंनहिंआयोमृगवाला॥
पोमृगीमोहिंनिजथाती।तेहिविनशीतलहोतिनछाती१९हायहरिणसुतकवइतऐहै।कवकरिकेलिमोहिमुददैहै २०
वहमवैठहिंध्यानलगाई । मृदुशृंगनखजुवावहिआई ॥२१॥ होमकरनकहँजवहमवैठे । तवमृगसुवनकुटीहठिपैठे ॥

दोहा–होमसाजलागतचरन, जवहमहांकहिंताहि । तवमुनिसुतसमचुपरहत, परममुदितमनमाहि ॥२२॥

न्यधन्यहैधनियहधरणी । करीअपूरवपूरवकरणी ॥ रजमेंमृगसुतचरणदेखाहीं । तातेतासुखोजहमपाहीं ॥
जिमिचोरीकीदर्सामिलतहै।तिमिपदलखिममनललकतहै॥श्यामकुरंगरहतजेहिदेशा।यागयोगसोभूमिहमेशा२३॥
यहिविधिकहतनिशाजवआई । तवशशिलखिबोलेनृपराई ॥ ममआश्रमतेवाहिरपाई । मेरेमृगकीदेखिलुनाई ॥
मृगकोमृगपतिकोभयजानी।यहनिशिनाथदयाउरआनी।।राख्योकोउनिजअंकछिपाई।ऐसीहमकहँपरतजनाई॥२४॥

दोहा–मोहिंमृगविरहानलजरत, जानिकृपाकरिचंद । सुखदमयूषपियूषतें, सींचतदेतअनंद ॥ २५ ॥

शुक उवाच ।

यहिविधिकरतविलापननाना।विनमृगभरतभूपमतिमाना।भोरभयोमृगआश्रमआयो।तेहिलखिनृपतिमोदअतिपायो।
जैसेधननिनष्टधनपावै । धनिधनिअपनोभागगनावै ॥ कर्मविवशमृगमहँकरिनेहू । भरतभूपभूल्योनिजदेहू ॥
भूल्योजपतपहरिसेवकाई । जेहिहितनिजकुलराजविहाई।जोनअभागिभरतकोहोती।तौनमृगहिंअसप्रीतिउदोती ॥
मृगलालतपालतमहिपाला।यहिविधिवितेदियोवहुकाला॥कियेनकछुविचारमतिमाना।मरणकालताकोनियराना ॥
मीचनगीचभरतकेआई । जिमिमूषकविलव्यालहिजाई ॥ २६ ॥

दोहा–तवमृगसुतसुतकेसरिस, नृपढिगरोवनलाग ॥ तेहिविलोकिभरतहुकियो, तामेंअतिअनुराग ॥

मृगमहँमनदेतज्योशरीरा । तातेमृगाहिभयोमतिधीरा॥२७॥भूल्योभाननभजनप्रभाऊ । शोचकरनलाग्योनृपराऊ॥
महामोहमेंमृगमहँकीन्हो।तातेमोहिंमृगतनविधिदीन्हो॥उपज्योकालंजरगिरिआई ॥२८॥ हायसकलमैंदियोनशाई॥
योगमार्गतेभ्रष्टभयोमें । जेहितेनिजकुलछोड़िदियोमें ॥ वस्योगंडकीकेतटजाई । यदुपतिभक्तिकरीमनलाई ॥
श्रवणकीरतनअरुअस्मरणा । करिहठनेमभज्योहरिचरणा॥त्याग्येसकलजगतजंजाला।खोयोवृथानकोनहुकाला॥

दोहा–जोमनतेंमैंहरिभज्यो, सोमनमृगहिलगाइ । भजनकमाईहायमैं, सिगरीदईगमाइ ॥ २९ ॥

यहिविधिकरिविचारविलखाता।भरतत्यागिअशुहिनिजमाता।कालिंजरतेतुरतहिधायो।मुक्तिनायकहअातुरआयो॥
शालिग्रामीसरितनहाई । सूखेतृणपत्रनकहँखाई ॥ मृगनमध्यमहँरहनभयऊ । यहिविधिकछुककालचलिगयऊ॥
पूरवसुधिरहिमतिधीरा । चाहततजनतुरंतशरीरा ॥ करतविनययहिविधिहरिपाहीं । होहुकबहुँमोहिंअससंगनाहीं ॥

। तबसरितागंडकीनहायो ॥ तेहिजलमधिहरिमहँमनलाई।दियोमृगातनतुरतविहाई।
दोहा-धनिहरिभजनप्रभावहै, कुरुपतियहजगमाहिं । तीनजन्मभरिभरतनृप, भूल्योनिजसुधिनाहिं ॥२१॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधेअष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

दोहा-विप्रअंगिरसगोत्रको, कोउइकरह्योसुजान । शमदमतपश्रुतित्यागव्रत, क्षमातोपविज्ञान ॥ १ ॥
पैसिगरेगुणतेहिद्विजकाहीं । अभिमानहुताकेतननाहीं ॥ रहीतासुद्विजकेद्वैनारी । जेठीकेनवसुततपधारी
शीलअचारउदारसुभाऊ । भयेनवौंसुतपरमप्रभाऊ ॥ रहीकनिष्ठतासुजोनारी । भयेभरतअरुएककुमारी
जड़समरह्योकृष्णपदध्यायो।जातेजगजडभरतकहायो।२।तहौंभीतिकुलगृहकैमानी।तज्योसंगभोनिरअभिमानी
भवनिधिनाशनहरिअस्मरना । कथाश्रवणगुणवरणनकरना॥हरिचरणारविंदमहँप्रीती।गहतभयोअतिदृढ़परतीती
दोहा-श्रीहरिभजनप्रभावते, सोजड़भरतहिकाहिं । पूरवजन्मनकीसुरत, नेकहुभूलीनाहिं ॥
तातेअतिशयजगहिडेराई । मत्तसरिसनिजरीतिदेखाई ॥ अंधवधिरजड़मत्तसमाना । विचरतबैठतबोलतनाना
यदपिप्रमत्तताहिसवजाना ॥ ३ ॥ पैतेहिपितानेहसोसाना॥कीन्हेव्रतबंधादिककरमा॥सिखयोताकहँनिजकुलधर्मा
पैजड़भरतहिनीकनलाग्यो।सोतोहरिचरणनअनुराग्यो॥जसचाहतसनिजसुतहोई।पितहिउचितसिखउनसबसोई ४
पितुकोशिक्षणपुत्रनमानै । एकोकुलकेकर्मनठानै ॥ करतरहैअसभरतउपाई । जामेंपितुमोहिंदेइविहाई
चारमासपितुथक्योपढाई । पैगायत्रिहुताहिनआई ॥
दोहा-औरवेदविद्याविदित, पढिवेकीकहवात । पैनिजउचितविचारिकै, सकलसिखायोतात ॥ ५ ॥
सिखवतकालगयोबहुबीती । पैजड़भरतगहीनहिंरीती॥मरयोपिताकछुकालहिपाई॥६॥तबतेहिमातमहादुखछाई
सौंपिसवतिकहँपुत्रकुमारी । भईसतीपतिसंगसिधारी॥७॥तबजडभरतकेरसबभ्राता । सिखवनलगेधर्मविख्याता
तेसबकरमहिकांडप्रवीने । रहेनयदुपतिपदलवलीने॥निजभ्रातहिबहुभाँतिसिखायो । पैनहिंताहिधर्म्मकछुआयो
जानिमहाजड़ताकहँत्यागे । पुनिनहिंतासुओरअनुरागे ॥ ८ ॥ भागनलगेभरतपुरमाहीं॥सुनैजौनसोमुखवतराहीं
दोहा-बैठोतिहिंबैठोकहै, कहैजाउतिहिंजाउ ॥ आवोतिहिंआवोकहै, ल्यावकहैंतिहिंल्याव ॥
इहिविधिवचनअसंगतबोलै । वधिरमूकजडसमपुरडोलै॥नहवावहिकोउजबहिनहाहीं । जबहिंखवावैकोउतबखाई
करवावैजोकोउमजूरी । अथवापकरिजाहिलैदूरी ॥ कामहुभयेकरतसोरहही । विनवरजेतहँतेनहिंटरही ॥
नीकनिषिद्धअन्नजोपावै । भोजनकरैनसुखदुखल्यावै॥ मानहिनहिंमानहुअपमाना । तिनकोतनकोतिनाहिनभान
इंद्रीप्रीतकामनहिंकरही । ध्यावतकृष्णनिरंतररहही ॥ ९॥ शीतघामवरपासवसहही॥छायावसतिहुकवहुँनगहही
दोहा-मत्तवृषभसमचलतमग, परमपुष्टसबअंग ॥ धूरधूसरिततनरहत, त्यागेसबकोसंग ॥
रहतअनलजिमिभसमछिपाना॥तिमिजड़भरतप्रभावनजाना॥कटिचिरकुटकीलगीलँगोटी॥शिरकचसमिटभईइकचे
अतिमलीनएकतनहिजनेऊ । तातेजानिपरताद्विजभेऊ ॥ देखतदूरदूरशठकहहीं । दूरदूरतातेसबरहहीं ॥ १०
करिकैऔरनकेरमजूरी । भोजनकरहिउदरभरिपूरी ॥ ऐसोलखिताकोसबभ्राता । सिखवनलगेधर्मविख्याता ॥
ताकेपीनअंगसबदेपी । ताहिमानिमनवलीविशेषी ॥ खेतखनावनहेतुबोलाई । कृषीकर्ममहँदियोलगाई ॥
दोहा-खननलगेतौखनतहीं, देतेकूपबनाइ ॥ कहूँऊँचकरिदेतअति, जातखेतनशाइ ॥
। पशुनचरतकबहूँनहिंडाटै ॥ कनाखरीभूसीजोदेहीं । अमृतसमानखायसोलेहीं ॥ ११
।न। हरिरसमगननतनकरभाना॥तहँएकशूद्रराजकोउरहेऊ । भक्तिभद्रकालीकीगहेऊ
रह्योपुत्रताकेकोउनाहीं । सोचलिदेवीमंदिरमाहीं ॥ कह्योमातजोसुतहमपैहैं । तौतुमकोहमनरबलिदैहैं ॥ १२

[illegible] ॥
दोहा-द्रुतदूतनअसकहतभो, ल्यावहुनरवलिआसु । दूतदौरिगृहआयकै, शोरनकरचोहुलासु ॥
[illegible] । सोभाग्योकरिकैवरजोरी ॥ तेहिपीछेदौरेसवकोई । पैतममहापरचोनहिंजोई ॥
[illegible] । वहुतदूरलौंअतिदुखपागे । मिल्योनसोनरअतिअँधियारे । दूतफिरतजडभरतनिहारे ॥
[illegible] । मनमहँकृष्णरूपकहँध्यावत ॥ ताकेनिरखिपुष्टसवअंगा । दूतसकलजुरिकैइकसंगा ॥
[illegible] । सोनरतोमिलनोअवनाहीं ॥ याकोंहैनहिंकोइरखवारो । वैकलकेसमपरतनिहारो ॥
दोहा-अहैअंगमोटेसकल, वलिलायकयहनीक ॥ तातेधरिलैचलहुअव, यहविचारहैठीक ॥ १३ ॥
[illegible] । पकरिजकरिलैचलेतहांहीं ॥ देवीमंदिरतुरतहिंआये । दूतसकलअतिआनँदपाये ॥
[illegible] । जोरिपाणिअसविनयसुनाई ॥ सोनरमिल्योनहमकहँहेरे । खोजेनिशिअँधियारघनेरे ॥
[illegible] । अतिमोटोनाहिंतनकछुरोगू ॥ याकोभक्षतदेवीमाई । आशुहिजैहैनाथअघाई ॥
[illegible] । दूतनकह्योकियोतुमवेश ॥१४॥ पुनिताकोमज्जनकरवायो।अंगनिअंगरागलगवायो॥
दोहा-अरुणवसनपहिरायकै, भूषणभूपितकीन ॥ रक्तचंदनहिभालमें, तिलकललितकरिदीन ॥
[illegible] ॥ लाजाअंकुरपत्रचढायो । धूपदीपविधिविदितदेखायो ॥
[illegible] । कीन्हेवलिकेसकलविधाना ॥ पणवमृदंगतूरसहनाई । औरहुसिंगरेवाजवजाई ॥
भूपभद्रकालीढिगलाई । जड़भरतहिसनमुखवैठाई ॥ १५ ॥ नरशोणिततेपूजनकीवो । देवीकोप्रसन्नकरिलीवो ॥
ऐसोचितदैशूद्रभुवाला । अभिमंत्रितकरिकैकरवाला ॥ दियोपुरोहितकेकरमाहीं । कह्योदेहुवलिदेवीकाहीं ॥१६॥
दोहा-शूद्रराजऔतासुभट, घेरिखड़ेचहुँओर ॥ करहिंभद्रकालीनिरखि, वारहिंवारनिहोर ॥
धनमदगर्वितअतिशयपापी । व्राह्मणवैष्णवकेसंतापी ॥ महानिरंकुशहिंसाकारी । अतिदारुणस्वभावअविकारी ॥
ऐसोसिगरोशूद्रसमाजा ॥ मोहितखड़ोरहोकुरुराजा ॥ जहँजड़भरतकृष्णकोदासा । समदर्शीनहिंकछुमनत्रासा ॥
कोहुकोमित्रनकोहुकोवैरी । सदाकृष्णआनँदसैरी ॥ तासुतेजप्रगट्योअतिघोरा । छाइरह्योमंदिरचहुँकोरा ॥
देवीमूरतिउचटतुरंते । परतभईतेहिथलतेअंते ॥ व्रह्मतेजतेअतिदुखपागी । जरनभद्रकालीतहँलागी ॥
दोहा-लखिशूद्रनदारुणकरम, विप्रघातअतिघोर । करिकरालकालीवपुप, प्रगटतभैतेहिठोर ॥ १७ ॥
भृकुटीवंकलंकअतिखीनी । कुटिलदंतरसनावड़वीनी ॥ अरुणनयनअरुवदनभयावन।मानहुचहतजगतकहलावन॥
करिकैअट्टहासअतिघोरा । कूदतभइकरिकोपकठोरा ॥ उपरोहितकरआशुमुरेरी । लीन्हछुडायकृपाणकरेरी ॥
प्रथमपुरोहितकोशिरकाट्यो।शूद्रराजकापुनिशिरछाँट्यो॥तेहिकृपाणसवशूद्रनशीशा। काटिलियोकालीअवनीशा॥
सगणसद्यशोणितकरिपाना । नाचनलगीकरतकलगाना ॥ कंदुकतिनकेशीशवनाई । खेलतकालीतहँमनभाई ॥
दोहा-वचेनएकहुशूद्रतहँ, कालीकियसंहार ॥ तिनपापिनकोकरतिभै, शोणितमांसअहार ॥ १८ ॥
हेकुरुपतिजोकरतहै, हरिजनकोअपराध ॥ ताहीकोपुनिहोतहै, सकुलजीवकोवाध ॥ १९ ॥
जनिअचरजमानहुकुरुराई । वेहैंप्रेमरासिकयदुराई ॥ यहीसत्यसंतनकीरीती । भईनजड़भरतहिंकछुभीती ॥
तिनकीहृदयग्रंथिसवछूटी । सवइंद्रीहरिपदमहँजूटी ॥ तजिवैरजगमित्रउदारा । मिलनचहेवसुदेवकुमारा ॥
इमिअनन्यदासनरघुनाथा । रक्षाकरहिंआपनेहाथा ॥ तिनहिंभीतिदैसकहिनकोई । कालहुतिनकोरक्षकहोई ॥
परमहंसजेमहाभागवत । कृष्णचरणअरविंदनमेंरत ॥ तिनकेसमजगमहँकोआना । सतिजानहुकुरुनाथसुजाना ॥
दोहा-कोकृपालुयदुनाथसम, निजदासनकेहेत ॥ धारिअनेकनरूपप्रभु, रक्षणकरिसुखदेत ॥ २० ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपञ्चमस्कन्धेनवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

-पश्चिममेंइकदेशहै, नामसिंधुसौवीर ॥ नामरहूगणतिहिरह्यो, तहँकोनृपमतिधीर ॥
ानविज्ञाना । कपिलदेवढिगकियेपयाना ॥ ह्वैसवारयकसुभगपालकी । लगीझालरमुक्ताजालकी ॥
ताकेतीरा । आयोभूपसिंधुसौवीरा ॥ तहँयकवाहककोउथकिगयऊ । लैशिविकाचलिसकतनभयऊ ॥
जिदियेकहारा । वाहकपतिसोंवचनउचारा ॥ यकचारकथकिगयोइहाँही । प्रभुशिविकालैचलतोनाहीं ॥
ोजिकहुँलेहू । जाकोहोयअरोगितदेहू ॥ तबवाहकपतिदूतपठायो । वाहकहिततहँखोजकरायो ॥
ोहा—दूतदौरितेहिदेशमें, खोजतभेचहुँओर ॥ देखतभेयकदेशमें, द्विजअंगिरसकिशोर ॥
पीनअंगसवताके । अहैनरोगशरीरहिजाके ॥ दूतकियेअसमनहिविचारा । अवतोइतनहिंमिलतकहारा ॥
ोअतिवलीदेखातो । हमहिंदेखिकछुनाहिंडेरातो ॥ अहैसूधनहिंदरशतबाँको । नाकिलेचलिहैशिविकाको ॥
चारिजड़भरतहुकाहीं । गहिल्यायेनिजमालिकपाहीं ॥ वाहकपतिद्रुतनृपशिविकामें । लियोलगायतुरतमतिथामें ॥
आगूताहिलगाई । चल्योआशुशिविकाउठवाई ॥ परमहंसश्रीभरतसुजाना । लैशिविकाकहँकियेपयाना ॥१॥
दोहा—लखिआगूयकवाणभर, भरतधरतमगपाइ ॥ निजपायनतेजीवकोउ, जातकचरनजाइ ॥
मंदमंदगतिचलही । ऊँचोनीचोलखहिनथलही ॥ तबपालकीविषमह्वैजाती । धक्कालगतभूपकीछाती ॥
रहूगणकछुदुखछाये । सकलवाहकनवचनसुनाये ॥ शिविकाटेढ़ीह्वैकसजाती । अतिशयदुखहोतोममछाती ॥
लहुसुगमगतिसकलकहारा । पहुँचावहुद्रुतकपिलअगारा ॥ नातोताड़नतुमकहँकरिहैं । तुम्हरोवेतनहमसवहरिहैं ॥२॥
ुनिभूपतिकेवचनकठोरा । डरिवाहकअतिकरतनिहोरा ॥ कहीरहूगणतेअसवानी ॥३॥ हमतौराउरशासनमानी ॥
दोहा—चलहिविषमगतिमगनहीं, अतिहिवेगगतिधारि ॥ शिविकागतिसीखेसदा, हैंनहिंचूकहमारि ॥
यहनवीनवाहकजोआयो । वाहकपतिपालकीलगायो ॥ चलतमंदगतियहमगमाहीं । ऊँचनीचथलदेखतनाहीं ॥
तातेप्रभुधक्कालगिजाहीं । चलिनसकतयहिसममगमाहीं ॥ हैयद्यपिसवतेयहमोटो । यौगतिजानतनहिंअतिखोटो ॥४॥
तवद्रुकिजड़भरतहिंनृपहेरो । कियोविचारविषमगतिकेरो ॥ कियअपराधएकमगमाहीं । संगदोषलाग्योसवकाहीं ॥
यदपिरहूगणरह्योसुज्ञानी । तदपिरजोगुणकीमतिआनी ॥ रजहिछापितजिमिरतनमहाना । तिमिजड़भरतप्रभावनजाना ॥
तिनपैकछुकोपितह्वैराजा । बोलेवचनविगतनिजकाजा ॥ ५ ॥
दोहा—हैनवीनवाहकसुनो, तुमबहुलह्योकलेश ॥ धरतैलैममपालकी, आयेदूरविदेश ॥
दुर्वलअहौथकेतुमभाई । तुमअकेलपालकीउठाई ॥ दूजेकाकोउलगेकहारा । तुम्हरेहिएककंधपरभारा ॥
अतिशयवूढ़परहुतुमजानी । तातेविषमचालमगठानी ॥ सिगरेबलीतुम्हींबलहीने । क्षुधापिपासातेअतिक्षीने ॥
यहिविधिउलटेवचनभुवाला । जड़भरतहिभाषेउतेहिकाला ॥ पैतिनकेनतनकअभिमाना । नृपतिवचनकछुकियेनकाना ॥
मौनचलेलैशिविकाकाहीं । ध्यानधरेहरिचरणनमाहीं ॥ ६ ॥ पुनिटेढ़ीह्वैगईपालकी । दुखभोछातीमहीपालकी ॥
दोहा—तवहिरहूगणकुपितह्वै, अतिहिअरुणकरिनयन ॥ देखिदशाजडभरतकी, बोलतभोअसवयन ॥
कसरेवाहकदुष्टनवीनो । शासनमेरोकाननकीनो ॥ जीवतहोतैंमृतकसमाना । मोकोनेकहुतैंनडेराना ॥
तातेमैंतोहिंदेहौंदंडा । जिमियमजीवनदेतअखंडा ॥ तवतैंगतिसीधीगहिचलिहै । तातेपुनिनपालकीहलिहै ॥७॥
यहिविधिजवभूपअभिमानी । कहीकुटिलभरतहिबहुबानी ॥ रह्योनपंडितपंडितमानी । रजतमतेतेहिमतिलपटानी ॥
भरतप्रभावनेकनहिंजाना । जौनअनन्यदासभगवाना ॥ जवजगमित्रभरतमतिमाना । मगनकृष्णपदप्रेमलुभाना ॥
दोहा—सुनतरहूगणकेवचन, नैसुकमुखमुसकाय ॥ मंदमंदऐसेवचन, बोलेसरलसुभाय ॥ ८ ॥

जडभरत उवाच ।

व्यंगवचनजेभूपउचारे ॥ तेहिंसिगरेसत्यतिहारे ॥ पैकछुवस्तुहोतजोभारा । तौदुखतनहिंचलावनहारा ॥
तनसंबंधजीवकोहोतो । तौसुखदुखकोहोतउदोतो ॥ तनसंबंधहमेंकछुनाहीं । तातेनहिंदुखकछुमनमाहीं ॥

। अरुजोपंथपरतकहुँजोई ॥ तबगवनतबनतोनृपराई । पंथहुदेशनकहुँदरशाई ॥ ९ ॥
। दूबरमोटपरततनजोई ॥ आधिव्याधिदूबरीमुटाई । क्षुधातृपाभयनींदबुढ़ाई ॥
। इनसबकोशरीरहैओकू ॥

दोहा-जिनकोतनअभिमाननहिं, तिनहिंपरतनहिंजानि ॥ हमहिंनतनसंबंधकछु, तातेसुखनगलानि ॥ १० ॥

। सेवककबहुँलहतठकुराई॥११॥सेवकअरुस्वामीकरभाऊ । यहव्यवहाररहिभरिनरराऊ ॥
नहिंस्वामीकोउसेवकनाहीं । यहजोगर्वतुम्हरेमनमाहीं ॥ तौजोकहहुकरैंहमसोई । हानिलाभनहिंहमकोहोई ॥१२॥
शिक्षाहेतदंडतोदैहौ । तोतुमभूपकौनफलपैहौ ॥ प्रथमहिसकलशीखहमलयऊ । पुनियहमारगमहँमनदयऊ ॥

दोहा-जोप्रमत्तमानोहमहि, शीखदेतकेहिकाज ॥ कौनहेतऐसेवचन, कहतरहूगणराज ॥ १३ ॥

शुक उवाच ।

असकहिमुनिवरशांतसुशीला । भयोमौनध्यावतहरिलीला॥निजप्रारब्धकर्म्मकरिभोगू।क्षयकरिवेकोकियोप्रयोगू ॥
लैशिविकाध्यावतजगदीशा।विमलचालपुनिचल्योमुनीशा १४ तहांसिंधुसौवीरभुवाला।लहनहेतविज्ञानविशाला ॥
जातरह्योमुनिकपिलसमीपा । सुनेउभरतकेवचनमहीपा ॥ हृदयग्रंथिकेछोरनवारे । योगमार्गदरशावनहारे ॥
तबशिविकातेउतरिमहीशा।तुरतभरतपदनायोशीशा।अतिपछिताइभूपभयपाग्यो।निजअभिमानतुरतनृपत्याग्यो॥

दोहा-नृपतिरहूगणजोरिकर, क्षमाकरावतभूल ॥ कहतभयोजडभरतसों, गुनिअपराधअतूल ॥ १५ ॥

रहूगण उवाच ।

अहोकोनतुमवेपछिपाये । विचरहुधरणिमहासुखछाये ॥ कोहौतुमधरेउपवीता । कीक्षत्रीकीविप्रपुनीता ॥
काकेसुतकेहिहितइतआये । निजनिवेशकेहिदेशवनाये ॥ कीधौंतुमहौदत्तात्रेऊ । किधौंकपिलहुवरणहुभेऊ ॥
मोपरकृपाकरनकेहेतू । दरशनदीन्होज्ञाननिकेतू ॥ १६ ॥ वज्रीवज्रशूलधरशूला । यमकोजेयमदंडअतूला ॥
अर्कअग्निअरुसोमहुअस्त्रा । पवनहुऔरकुबेरहुशस्त्रा ॥ तसइनभयतेमननहिंभागे।जसद्विजअपमानहिडरलागे॥१७॥

दोहा-अवनछिपावहुकरिकृपा, दीजैमोहिंवताय । विचरहुजडसमजगतमहँ, ज्ञानप्रभावछिपाय ॥

महिमाअहेअपारतिहारी।जाननकीगतिनाहिंहमारी॥आपवचनकोअर्थगँभीरा।जानिनसकहियदपिमतिधीरा॥१८॥
जेगुरुहैंज्ञानिनमुनिकेरे । कपिलदेवहरिकलानिवेरे ॥ कोरक्षकहैयहजगमाहीं । जातरह्योपूछनतिनकाहीं ॥ १९ ॥
सोइकपिलस्वरूपछिपाये । मोपरकृपाकरनइतआये ॥ योगेश्वरनकेरिगतिजोई । मंदबुद्धिजानैकिमिसोई ॥ २० ॥
कह्योजोआपदहमेंश्रमनाहीं । सोसुनिभइशंकामनमाहीं ॥ कर्मकियेश्रमहोतसदाहीं । सोहमकोअनभोरनमाहीं ॥

दोहा-यहप्रपंचहैसत्यनहिं, यहजोकह्योमुनिराय । सोसिगरोपरपंचयह, हमकोसत्यजनाय ॥ १२ ॥

जोप्रपंचयहसत्यनहोई । घटभरजलआनेकिमिकोई ॥ नहिंशरीरसंबंधहमारे । यहजोमुनिवरवचनउचारे ॥
सोसंबंधसत्यहैनाथा । तनसँयोगतेसुखदुखगाथा ॥ २१ ॥ जिमिपावकथारीधरिदीजे । तामेंक्षीरतंदुलौकीजे ॥
धारतपततेतपतक्षीरहै । तेहितपितंदुलहोतखीरहै ॥ जैसेप्रथमतापतपतोतन । ताहितपेपुनिप्राणफेरमन ॥
मनकेतपेतपतहैजीवा । तातेसतिसंबंधअतीवा ॥२२॥ नहिंस्वामीनहिंसेवकभाष्यो ॥ तासुभेदपूछनअभिलाष्यो ॥

दोहा-भूपतिपालतप्रजनको, देतदंडलखिभूल ॥ पावहिसेवकसकलफल, निजसेवाअनुकूल ॥

जैसेजेहरिभजतसदाहीं । यथायोगपावतफलकाहीं ॥ तातेनृपानसेवकस्वामी । सेवाहिकियेमिटैअयगामी ॥ २३ ॥
क्षमहुनाथअवममअपराधा । मंदोन्हौतुमकोअतिवाधा ॥ भूपतिगर्वविवशमेंअंधा । शिविकादंडधरयोतुवकंधा ॥
हेमुनिनायकदीनदयाला । देखिदशामेंहोहुँविहाला ॥ यहपातकसमुद्रतेनाथा । मोहिंनिकारोप्रभुगहिहाथा ॥२४॥
कहाजोतुमनकियोअपराधा । विनजानेदीन्ह्योमोहिंबाधा ॥ तौजानेविनजानेजोई । करतसंतअपराधकोई ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–पश्चिममेंइकदेशहै, नामसिंधुसौवीर ॥ नामरहूगणतिहिरह्यो, तहँकोनृपमतिधीर ॥
। कपिलदेवढिगकियेपयाना ॥ ह्वैसवारयकसुभगपालकी । लगींझालरैंमुक्तजालकी ॥
। आयोभूपसिंधुसौवीरा ॥ तहँयकवाहककोउथकिगयऊ । लेशिविकाचलिसकतनभयऊ ॥
। वाहकपतिसोंवचनउचारा ॥ यकचारकथकिगयोइहांहीं । प्रभुशिविकालैचलतोनाहीं ॥
दूजोऔरखोजिकहुँलेहू । जाकोहोयअरोगितदेहू ॥ तबवाहकपतिदूतपठायो । वाहकहिततहँखोजकरायो ॥
दोहा–दूतदौरितेहिदेशमें, खोजतभेचहुँओर ॥ देखतभेयकदेशमें, द्विजअंगिरसकिशोर ॥
अतिदृढ़पीनअंगसबताके । अहैनरोगशरीरहिजाके ॥ दूतकियेअसमनहिंविचारा । अबतौइतनहिंमिलतकहारा ॥
यहीभलोअतिबलीदेखातो । हमहिंदेखिकछुनाहिंडेरातो ॥ अहैसूधनहिंदरशतबाँको । नीकेलैचलिहैशिविकाको ॥
असविचारिजड़भरतहुकाहीं।गहिल्यायेनिजमालिकपाहीं॥वाहकपतिद्रुतनृपशिविकामें । लियोलगायतुरतमतिधामें ॥
सबकेआगूताहिलगाई । चल्योआशुशिविकाउठवाई ॥ परमहंसश्रीभरतसुजाना । लैशिविकाकहँकियेपयाना ॥१॥
दोहा–लखिआगूयकबाणभर, भरतधरतमगपाइ ॥ निजपायनतेजीवकोउ, जातेकचरनजाइ ॥
तातेमंदमंदगतिचलही । ऊँचोनीचोलखहिनथलही ॥ तबपालकीविषमह्वैजाती । धक्कालगतभूपकीछाती ॥
तहांरहूगणकछुदुखछाये । सकलवाहकनवचनसुनाये ॥ शिविकाटेढ़ीह्वैकसजाती । अतिशयदुखहोतोममछाती ॥
चलहुसुगमगतिसकलकहारा।पहुँचावहुद्रुतकपिलअगारा॥नातोताड़नतुमकहँकरिहैं।तुम्हरोवेतनहमसवहरिहैं॥२॥
सुनिभूपतिकेवचनकठोरा । डरिवाहकअतिकरतनिहोरा ॥ कहीरहूगणतेअसवानी ॥३॥ हमतौराउरशासनमानी ॥
दोहा–चलहिविषमगतिमगनहीं, अतिहिवेगगतिधारि ॥ शिविकागतिसीखेसदा, हैनहिंचूककहमारि ॥
यहनवीनवाहकजोआयो । वाहकपतिपालकीलगायो ॥ चलतमंदगतियहमगमाहीं । ऊँचनीचथलदेखतनाहीं ॥
तातेप्रभुधक्कालगिजाहीं॥चलिनसकतयहिसममगमाहीं ॥ हैयद्यपिसबतेयहमोटो। यौगतिजानतिनहिंअतिखोटो ॥
तबहुकिजड़भरतहिंनृपहेरो । कियोविचारविषमगतिकेरो ॥ कियअपराधएकमगमाहीं । संगदोपलाग्योसबकाहीं ॥
यदपिरहूगणरह्योसुज्ञानी॥तदपिरजोगुणकीमतिआनी॥रजहिछपितजिमिरतनमहाना॥तिमिजड़भरतप्रभावनजाना॥
तिनपैकछुकोपितह्वैराजा । बोलेवचनविगतनिजकाजा ॥ ५ ॥
दोहा–हेनवीनवाहकसुनो, तुमबहुलह्योकलेश ॥ घरतैंलैममपालकी, आयेदूरविदेश ॥
दुर्बलअहौथकेतुमभाई । तुमअकेलपालकीउठाई ॥ दूजेकाकोउलगेकहारा । तुम्हरेहिएककंधपरभारा ॥
अतिशयवूढ़परहुतुमजानी । तातेविषमचालमगठानी ॥ सिगरेबलीतुम्हींबलहीने । क्षुधापिपासातेअतिक्षीने ॥
यहिविधिउलटेवचनभुवाला॥जड़भरतहिभाषेउतेहिकाला॥पैतिनकेनतनकअभिमाना॥नृपतिवचनकछुकियेनक
मौनचलेलैशिविकाकाहीं । ध्यानधरेहरिचरणनमाहीं ॥ ६ ॥ पुनिटेढ़ीह्वैगइपालकी । दुखभोछातीमहीपालकी ॥
दोहा–तबहिरहूगणकुपितह्वै, अतिहिअरुणकरिनयन ॥ देखिदशाजडभरतकी, बोलतभोअसवयन ॥
कसरेवाहकदुष्टनवीनो । शासनमेरोकाननकीनो ॥ जीवतहोतेंमृतकसमाना । मोकोनेकहुतैंनडेराना ॥
तातेमैंतोहिंदेहोंदंडा । जिमियमजीवनदेतअखंडा ॥ तबतैंगतिसीधीगहिचलिहै । तातपुनिनपालकीहलिहै ॥ ७ ॥
यहिविधिजबभूपअभिमानी । कहीकुटिलभरतहिंबहुबानी॥रह्योनपंडितपंडितमानी । रजतमतेतेहिमतिलपटानी
भरतप्रभावनकनहिंजाना । जोनअनन्यदासभगवाना ॥ जबजगमित्रभरतमतिमाना । मगनकृष्णपदप्रेमलुभाना
दोहा–सुनतरहूगणकेवचन, नेसुकमुसमुसकाय ॥ मंदमंदऐसेवचन, बोलेसरलसुभाय ॥ ८ ॥

जडभरत उवाच ।

भूपउचारे ॥ तहँसिगरेसत्यातिहारे ॥ पैकछुवस्तुहोतजोभारा । तोदुखतनहिंचलावनहारा
तनसंबंधजीवकोहोतो । तोसुखदुखकोहोतउदोतो ॥ तनसंबंधहमेंकछुनाहीं । तातेनहिंदुखकछुमनमाहीं

कोकहुँथलहोई । अरुजोपंथपरतकहुँजोई ॥ तबगवनतबनतोनृपराई । पंथहुदेशनकहुँदरशाई ॥ ९ ॥
नमोटदूबरोहोई । दूबरमोटपरततनजोई ॥ आधिव्याधिद्वरीमुटाई । क्षुधातृपाभयनींदचुढाई ॥
लहकोपमदप्रीतिहुशोकू । इनसबकोशरीरहैओकू ॥

दोहा–जिनकोतनअभिमाननहिं, तिनहिंपरतनाहिंजानि ॥ हमहिंनतनसंबंधकछु, तातेसुखनगलानि ॥ १० ॥

महिंनजियतमृतकसमअहहीं।जियतमरतसबजगजनरहहीं॥कोउस्वामीकोउसेवकहोई।तौतिहिशासनमानतसोई॥
बहुँस्वामिसेवकह्वैजाई । सेवककबहुँलहतठकुराई॥११॥सेवकअरुस्वामीकरभाऊ । यहव्यवहारहिभरिनरराऊ ॥
हिंस्वामीकोउसेवकनाहीं । यहजोगवंतुम्हरेमनमाहीं ॥ तौजोकहहुकरैंहमसोई । हानिलाभनहिंहमकोहोई ॥१२॥
शिक्षाहेतदंडतोदेहौ । तोतुमभूपकौनफलपैहौ ॥ प्रथमहिसकलशीखहमलयऊ । पुनियहमारगमहँमनदयऊ ॥

दोहा–जोप्रमत्तमानोहमहि, शीखदेतकेहिकाज ॥ कौनहेतऐसेवचन, कहतरहूगणराज ॥ १३ ॥

शुक उवाच ।

असकहिमुनिवरशांतसुशीला । भयोमौनध्यावतहरिलीला॥निजप्रारब्धकर्म्मकरिभोगू।क्षयकरिवेकोकियोप्रयोगू ॥
ऐशिविकाध्यावतजगदीशा।विमलचालपुनिचलयोमुनीशा १४ तहांसिंधुसौवीरभुवाला।लहनहेतविज्ञानविशाला ॥
जातरह्योमुनिकपिलसमीपा । सुनेउभरतकेवचनमहीपा ॥ हृदयग्रंथिकेछोरनवारे । योगमार्गदरशावनहारे ॥
तबशिबिकातेउतरिमहीशा।तुरतभरतपदनायोशीशा।अतिपछिताइभूपभयपाग्यो।निजअभिमानतुरतनृपत्याग्यो॥

दोहा–नृपतिरहूगणजोरिकर, क्षमाकरावतभूल ॥ कहतभयोजडभरतसों, गुनिअपराधअतूल ॥ १५ ॥

रहूगण उवाच ।

अहोकौनतुमवेपछिपाये । विचरहुधरणिमहासुखछाये ॥ कोहौतुमधारेउपवीता । कीक्षत्रीकीविप्रपुनीता ॥
काकेसुतकेहिहितइतआये । निजनिवेशकेहिदेशबनाये ॥ कीधौंतुमहौदत्तात्रेऊ । किधौंकपिलहुवरणहुभेऊ ॥
मोपरकृपाकरनकेहेतू । दरशनदीन्होज्ञाननिकेतू ॥ १६ ॥ वज्रीवज्रशूलधरशूला । यमकोजोयमदंडअतूला ॥
अर्कअग्निअरुसोमहुअस्त्रा । पवनहुऔरकुवेरहुशस्त्रा ॥ तसइनभयतेमननहिंभागे।जसद्विजअपमानहिडरलागे॥१७॥

दोहा–अबनाछिपावहुकरिकृपा, दीजैमोहिंबताय । विचरहुजडसमजगतमहँ, ज्ञानप्रभावछिपाय ॥

महिमाअहैअपारतिहारी।जाननकोगतिनाहिंहमारी॥आपवचनकोअर्थगँभीरा।जानिनसकहियदपिमतिधीरा॥१८॥
जेगुरुहंज्ञानिनमुनिकेरे । कपिलदेवहरिकलानिवेरे ॥ कोरक्षकहैयहजगमाहीं । जातरह्योपूछनतिनकाहीं ॥ १९ ॥
सोईकपिलस्वरूपछिपाये । मोपरकृपाकरनइतआये ॥ योगेश्वरनकेरिगतिजोई । मंदबुद्धिजानैकिमिसोई ॥ २० ॥
कह्योजोआपहमेंश्रमनाहीं । सोसुनिभइशंकामनमाहीं ॥ कर्मकियेश्रमहोतसदाहीं । सोहमकोअनभोरनमाहीं ॥

दोहा–यहप्रपंचहैसत्यनहिं, यहजोकह्योमुनिराय । सोसिगरोपरपंचयह, हमकोसत्यजनाय ॥ १२ ॥

जोप्रपंचयहसत्यनहोई । पटभरजलआनैकिमिकोई ॥ नाहिशरीरसंबंधहमारे । यहजोमुनिवरवचनउचारे ॥
सोसंबंधसत्यहैनाथा । तनसँयोगतेसुखदुखगाथा ॥ २१ ॥ जिमिपावकथारीधरिदीजै । तामेंशीरतंदुलौकीजै ॥
धारतपततेतपतक्षीरहै । तेहितपितंदुलहोतसीरहै ॥ जैसेप्रथमतापतपतोतन । ताहितपेपुनिप्राणफेरमन ॥
मनकेतपेतपतहैजीवा । तातेसतिसंबंधअतीवा ॥२२॥ नहिंस्वामीनाहिंसेवकभाष्यो ॥ तासुभेदपूछनअभिलाष्यो ॥

दोहा–भूपतिपालतभजनको, देतदंडखलसिभूल ॥ पावहिंसेवकसकलफल, निजसेवाअनुकूल ॥

जैसेजेहरिभजतसदाहीं । यथायोगपावतफलकाहीं ॥ तातेनृपानसेवकस्वामी । सेवाहिकियेमिलैअघगामी ॥ २३ ॥
क्षमहुनाथअवममअपराधा । मंदौन्हौतुमकोअतिबाधा ॥ भूपतिगर्वविवशमेंअंधा । शिबिकादंडधरयोतुवकंधा ॥
हेमुनिनाथकदीनदयाला । देखिदशामेंहौंदुखिहाला ॥ यदपातकसमुद्रननाथा । मोहिनिकासप्रभुगहिहाथा ॥२४॥
कहौजोतुमनाकियोअपराधा । बिनजानेदीन्ह्योमोहिबाधा ॥ तौजानेबिनजानेजोई । करनसंतअपराधकोई ॥

दोहा–यदपिहोहिहरशूलधर, तदपिलहहिविनास ॥ कोसाधुनअपराधकरि, पावहिजगतसुपास ॥
अहौजगतकेसुहृदतुम, समदरशीमुनिराव ॥ नेकअहैअभिमाननहिं, सरलसुशीलस्वभाव ॥ २

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कन्धेदशमस्तरंगः ॥ १० ॥

दोहा–सुनतरहूगणकेवचन, श्रीजड़भरतसुजान ॥ समाधानगुनितासुसब, बोलेवचनप्रमान ॥

ब्राह्मण उवाच ।

दोहा–अहोअकोविदभूपतुम, वदहुसुकोविदवाद ॥ तुमजानहुनेकहुनहीं, ज्ञानिनकीमरयाद ॥
लौकिकसेवकस्वामीभाऊ । परमारथभापहुनृपराऊ ॥ जेमुनिजानहिंज्ञानविज्ञाना । तेअसकबहुँनकरहिंबखाना
स्वर्गादिकहितजेमखकाजा । कह्योवेदमयजोमहराजा ॥ सोपरमारथसाधकनाहीं । जोनकर्मअरपैहरिमाहीं ॥ २ ॥
स्वप्नसरिसजबलौंसंसारा । मानतनाहिंकरितत्वविचारा ॥ जबलौंतेहिवेदांततेज्ञाना । होइकबहुँनहिंसुखदमहाना॥३॥
जबलौंत्रिगुणवलितमनरहई । तबलौंरीतिनिरंकुशगहई ॥ तबलौंधर्महुऔरअधर्मा । करवावहिमनजियसोकर्मा॥४॥
दोहा–विषयवासनायुतसदा, रहतविषयलपटान ॥ गुणप्रवाहमेंबहतमन, सकैनरोकिसुजान ॥ ५ ॥
इंद्रिएकादशभूतहुपांचा । इनमेंहैप्रधानमनसांचा ॥ जबगुणवशमनलह्योविकारा । देतजियहिंतबयोनिअपारा॥६
मनहींकेवशजियसुखदुखलहि।सदामोहमंदिरमहँनिवसहि॥संसृतिकारणकारजमाहीं॥मनहिफिरावतजियहिसदा
गुणयुतमनजियबंधनकारण । सोइनिर्गुणजियबंधनिवारण ॥ जबलौंरहततेलअरुबाती । दीपाशिखासधूमदरश
नशैतेलबातीकेसोई । आपुहिआपशांतसोहोई ॥ तैसहिमनजबलौंगुणवशहै ॥ जियहिचखावतविषयनतर
जबमनगुणविकारतजिदेई । जियहिकरततबहरिपदसेई ॥ ८ ॥
दोहा–ज्ञानेंद्रीकीपांचहैं, कर्मेंद्रीकीपांच ॥ अरुअपमानहुमनहिकी, वृत्तिएकादशसांच ॥
शब्दस्पर्शरूपरसगंधू । विषयज्ञानइंद्रीमतिसिंधू ॥ ग्रहनगवनरतिवचनविसर्गा । येकर्मेंद्रीविषयनवर्गा ॥
अरुअभिमानविषयतनजानो।यहिविधिताकोभेदबखानो॥ज्ञानीतनहिभिन्नजयमाने।अज्ञानीअभिन्नकरिजाने॥१०
द्रव्यस्वभावकर्मअरुकाला । औरपूर्ववासनाभुवाला ॥ इनतेइकइकवृत्तिनतेरे । लाखनकोटिनभेदनिवेरे ॥
वृत्तिभेदकृतहरिसबहोई । दूजोकरताअहैनकोई ॥११॥ त्रिगुणवलितजबमनहिनहोतो । तत्वज्ञानतबहोतउदोतो
दोहा–मायावशगोपितप्रगट, करतजेकर्मअनीश । अरुजोभोगतभोगबहु, सोसबदेखतईश ॥ १२ ॥
सोइआत्माहैपुरुषपुराना । नारायणयदुपतिभगवाना ॥ स्वयंप्रकाशअनादिअनंता॥जगसाक्षीविधिशिवहुनियं
हसबजीवनअंतरयामी॥रघुनायकयदुनायकनामी॥१३॥यथापवनसबथलसंचारी॥तैसहिव्यापकजगतमुरारी ॥
ज्ञानपाययहदुस्तरमाया । जौलौंनहिंछूटतनृपराया ॥ तौलौंनहिंछूटतजगसंगा ॥ जौलौंपटरिपुहोतनभंगा
जौलौंआत्मतत्वनहिंजानै।भ्रमतरहतयहजगतमहानै॥१५॥जगततापदायकयहसाँचो।शोकमोहअरुलोभहि
दोहा–रागद्वेषभयवैरअरु, ममताकोसम्बन्ध ॥ कतिचंचलसबविषयके, बांधतविविधप्रबंध ॥
तबलौंअसमनकोरहत, जानतहैबुधनाहिं । तबलौंअतिशयलहतदुख, भ्रमतरमतहनमाहिं ॥
सहजशत्रुअतिशयबली, ज्ञानचुरावनहार । जोसहजहिमानहुयही, करैअवशिअपकार ॥
हरिगुरुचरणउपासना, तिहिकरिकठिनकृपान । सावधानह्वैशत्रुमन, मारहुभूपसुजान ॥ १

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहार
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
निधौपंचमस्कंधेएकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

दोहा-सुनतभरतवाणीसुखद, चरणनमेंशिरनाइ । कह्योरहूगणजोरिकर, अतिशयआनँदपाइ ॥

रहूगण उवाच ।

[illegible] उनिरू [illegible] । तुच्छीकृतविग्रहसंयूपम् ॥ धृतावधूतवेपपरमंशम् । आत्मानंदस्वचिह्नप्रशंसम् ॥
[illegible] न् । वेदवादरतनित्यमकामिन् ॥ नमोनमोद्विजचिह्ववेपधर।उत्तमनिजमहिमागोपनकर ॥
[illegible] ावम् । प्रगटतधरणीपरमप्रभावम् ॥ रक्षकृपालोकृतापराधम् । शिविकाहेतदत्तबहुबाधम् ॥
[illegible] ागरसहत [illegible] दासा । जोहरिप्रेमानंदप्रकासा ॥ पाहिपाहिपरमार्तविनाशिन् । निजसेवकपरतंत्रप्रकाशिन् ॥
दोहा-हेकरुणाकरममशिरसि, चरणाम्बुजंनिधेहि ॥ संसाराब्धिनिमग्नमति, दीनंमामवधेहि ॥ १ ॥
सज्वरपीडिततनकाहीं । जिमिऔपधिसुखदेतसदाहीं ॥ तृपातापितजिमिसुरसरिनीरा।तिमितववचनमाहगंभीरा॥
हिकुदेहमेंअहिअभिमाना । डसिकेहरच्योप्राणसमज्ञाना॥ गिरागारुडीरावरपाई । सोविपउतरगयोदुखदाई ॥ २ ॥
जसंशयपुछिहोंमेंपाछे । पैजोवचनकह्योमुनिआछे ॥ तिनकोअर्थपरयोनहिजानी । तातेसुननसोमतिललचानी॥
करुणाकरदेहुबताई । जातेसंशयसबामिटिजाई ॥३॥ कह्योआपजोजगव्यवहारा । हैनवस्तुकछुकियेविचारा ॥
ासबसत्यपरेहगदेखी । तेहिअसत्यकेसप्रभुलेखी ॥ ४ ॥
दोहा-सुनतरहूगणकेवचन, कहमुनिवरमुसकाइ । बोल्योवचनविज्ञानप्रद, जेहिनृपसंशयजाई ॥

जडभरत उवाच ।

भूविकारजिमिअहैपपाना । भूविकारतिमितनहुबखाना॥ जोपपानकहभारनपीरा । तौकैसेदुखभारशरीरा ॥
कौनहुहेतचलततनजानो । अचलपपानभेदयहमानो ॥ अंगीभिन्नअंगतेनाहीं । कहोभारभूपतिकेहिकाहीं ॥
जोअँगभारअंगकहकहहू । तौविवेकअसकसनहिंगहहू ॥ पगपरगुलफगुलफपरजानू । जानूपरऊरूकहँमानू ॥
ऊरूपरकटिकटिपरछाती । छातीउपरकंधरिपुघाती ॥ कंधनपैग्रीवापुनिशीशा । कहोभारकेहिकाहमहीशा ॥ ५ ॥
दोहा-कंधनपैशिविकाधरी, तापरतुमअसवार । होहिजोशिविकहिभारतो, होइतनहुकोभार ॥
होमदांधतुमसिंधुनरेशा । तातेतुमकहँहोतअँदेशा ॥६॥ कहतअहोहमपालहिराजू । भापतअसलागतनहिलाजू ॥
धरिवापुरेकहारनकाहीं । दीजतदुखकिमिशिविकामाहीं॥७॥ स्थावरजंगमजोनलखाहीं।महितेभयेमहीमिलिजाहीं॥
महीभिन्नकछुनाहिनृपराई । नामरूपभरभेदलखाई ॥ ८ ॥ महीहोतपरमाणुस्वरूपा । यातेसोउनित्यनाहिभूपा ॥
प्रकृतिरूपपरमाणुहुअहही । तातेकविजनानित्यनकहही ॥ ९ ॥
दोहा-दूबरमोटोवृहदलघु, कारणकारजजोइ । सोसबमायाकृतअहै, यहजानेसबकोइ ॥
द्रव्यस्वभावकर्मअरुकाला । मायानामजानमहिपाला ॥१०॥ अंतररहितएकसबमाहीं । सत्यब्रह्मपरमार्थसदाहीं॥
शुद्धशांतहैस्वयंप्रकासा । भगवतशब्दजाहिमहँभासा ॥ सिगरेकविअसकरहिउचारा । ऐसोहैवसुदेवकुमारा ॥
बिनतेहिकछुकारजनाहिंहोई । मायाईशसदाहैसोई ॥ ११ ॥ यहजोतुमसोंज्ञानबखाना।सोनहिमिलताकियेतपदाना॥
यज्ञकियेअरुपढ़ेवेदहु । मिलैनकीन्हेव्रतससेदहु ॥ वर्षासहेकियेजलशयना । तापपंचहुअगिनामिलैना ॥
दोहा-बिनधारेनिजशीशमें, संतचरणरजकाहि । भक्तिज्ञानरघुनाथको, मिलहिरहूगणनाहिं ॥ १२ ॥
कृष्णकथासंतनमुखगाई । विपयकथारुचिदेतनशाई॥तिहिनिशिवासरसुनहिजोकोई । तासुप्रीतियदुपतिपदहोई ॥
प्रीतिजोभेयदुपतिपदराजा।पुनिनकरनकोकेनिहुकाजा॥निगराहियदापिकुसंगहुपाई।कृष्णकथापुनिहेतबनाई ॥१३॥
पूरवरहेभरतमहराजा । तजेसंगसबदुखसदराजा ॥ यदुपतिपूजनमेंमनलाई । बस्योविपिनमहँभवनबनाई ॥
पैजभागवशएकमृगमाहीं । लग्योनहछूट्योपुनिनाहीं ॥ छूटिगयोहरिपूजनसिगरो । यनेकाममेरोसबबिगरो ॥
दोहा-मुक्तिनाथमेंमेंमरयो, मृगहीमेंमनलाइ । तानेमैंमृगहोभयो, कालिंजरमोंजाइ ॥ १४ ॥
हरिपूजनप्रभावअतिपाई । पूरबजन्मसकलसुधिआई ॥ तबमैंमुक्तिनाथमेंजाई । दियोमृगातनतुरतविहाई ॥

लह्योजन्मब्राह्मणकेगेहू । केहुसोकियोंनफेरसनेहू ॥ हरिपूजाप्रभावतेमेरी । भूलीनहिंसुधिपूरवकेरी ॥
तातेमेंजगकाहिडेराई । फिरहुँअकेलेहरिमनलाई ॥ १५ ॥ सुनहुरहूगणतुमहुसुजाना । संतसंगगहिज्ञानकृपाना॥
काटहुसकलमोहकीफांसी । होहुआशुअबआनँदरासी ॥ कृष्णकथासुनियेदिनराती । भवनिधिपारहोहुसबभाँती॥
दोहा—कृष्णकथासुनिकेसदा, कृष्णप्रीतिअतिठानि ॥ उतरेसज्जनभवजलधि, पावतभेसुखखानि ॥ १६॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधेद्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

दोहा—फेरिरहूगणनृपतिपै, भरतकृपाअतिकीन ॥ ताकेअतिसंबोधहित, भवाटवीकहिदीन ॥

ब्राह्मण उवाच ।

जगमोहनीजौनहरिमाया । प्रवृतिमार्गसोजियहिलखाया ॥ सोईजीवबनिकजगमाहीं । रजसततमकेकर्मकराहीं॥
करतेधनसुखहितव्यापारा । भवाटवीमेंभ्रमतअपारा ॥ भावनभ्रमतलह्योसुखनाहीं ॥१॥लूटच्योतेहिपटचोरतहाँहीं॥
रह्योतासुगाफिलरखवारा । तातेलूटगयोधनसारा ॥ सोवततेहिसियारघसिलावै । जैसेवृकामेपधरिलावै ॥ २ ॥
बझेलतातरुवनवनमाहीं । मशकदंशदंशहितनकाहीं ॥ कहुँगंधर्वनगरमहँजाई। तामेंजातभुलायलुभाई ॥

[illegible]

अतिशयक्षुधितनतनसंभारा । चहहिपरसपरलेनअहारा ॥
दोहा—कहुँदमारिमहँजरतहै, लूटहिंधनकहुँयक्ष ॥ ६ ॥ डांडलेतकहुँशूलधर, पावतशोकप्रत्यक्ष ॥
कहुँगंधर्वनगरपुनिआवै । तहांमुहूरतभरसुखपावै ॥ ७ ॥ कहुँकंटककंकरमगगडई । छीलतपगपावतदुखबड़ई॥
शैलउतंगचढनसोंचाहै । चढिनहिंजातघोरपगमाहै ॥ कहँकेशमहँलागतआगी । [illegible] ॥ ८ ॥
कहुँबोलतअजगरमुँहबाई । [illegible]
कहुँमधुहेरनजातोधाई । का[illegible]
दोहा—वर्षाआतपशीतहू, सहतसकैनबचाइ ॥ लेनदेनकेकरतमें, ठगतवैरबढिजाइ ॥ ११ ॥
[illegible]
[illegible]
कबहुँननिकसततेहिवनतेरे । भ्रमतरहहदुसलहतघनेरे ॥१४॥तेहिवनमहँक्षत्रीकहुँरहहीं। तेदिग्गजनजीतियशलहई
दोहा—तेउपरस्परवैरकरि, निजधरणीकेहेत ॥ लरहिंमरहिंसंग्राममहँ, तजहिंनविपिननिकेत ॥ १५ ॥
तेहिकाननमहँसदाभ्रमतहैं । कहुँलतागहिलोभिरमतहैं ॥ लताउपरजेबैठिविहंगा । तिनहिंगहनहितकरतउमंगा
बापासिंहदेसाहिवनमाहीं । तिनकोअतिशयवनिकडेराहीं॥काककंकबककेढिगजाई।बचनहेतबहुकरतमिताई॥१६
काककंकतिनकोठगिलेहीं । निजमहतेनिकारडुतदेहीं ॥ तबपुनिजातहंसकेपासा । तहँपुनिअपनोलख्योसुपासा
[illegible] । रम्योबापकीभीतिभुलाई ॥ लखिमर्कटकीचंचलताई।आपउसेलहितहँसुखपाई ॥ १७
दोहा—सुतदारनतेसहितसों, सीरोग्रसनुधाई ॥ चेटतविहरतरैनदिन, परममुदितमनमाहँ ॥
तहांबापपरँच्योजबनाई । तबतरुमहँचढिगयोडेराई ॥ कूप्योजबहिकंदरामाहीं । नीचेलख्योमत्तगजकाहीं॥

८॥कैसहुछूटगयोतहँतेजव।सकलकर्मसोइकरनलग्योतव॥
हैसोइ। भ्रमतरहततेहिपारनहोई॥ निकसनकीउपायनहिंजाने। लोभीरहतलोभलपटाने१९॥
। छोड़िसकलसंसारिककाजा॥ सकलजगतसोंवैरविहाई। होहुसुहृदप्राणिनसुखदाई॥
दोहा—हरिपदप्रीतिकुठारगहि, भवकाननकहँकाटि॥ करिमारगकढ़िजाहुद्रुत, उरअनंदअतिपाटि॥२०॥
। भूपरहूगणनिजमनगुनिकै॥ नायभरतचरणनमहँशीशा। भन्योवचनअसकुरुकुलईशा॥

रहूगण उवाच।

सुधरयोद्रुतसकलप्रसंग २१
। होयभक्तितेहिअचरजनाहीं॥ एकमहूरततुवसँगपाई। गयोमहाअविवेकनशाई॥ २२॥
दोहा—युवाबालवटुवृद्धजे, विप्रदासश्रीधाम॥ विचरहिंधरिअवधूततन, पुनिपुनितिनहिंप्रणाम॥
। पावहिंमंगलज्ञानप्रदीपा॥ २३॥

श्रीशुक उवाच।

। भरतब्रह्मऋषिपरमउदारा॥ नृपतिरहूगणकहँविधिनाना। ज्ञानविरागहुकृपानिधाना॥
मुनिमनभाऊ। जेहिदुर्लभभापहिनृपराऊ॥ पुनिजडभरतचरणमहँशीशा। नायरहूगणमुदितमहीशा॥
मुनिसोंनिजअपराधक्षमायो।सोअपराधनहिंमनलायो॥पुनिजडभरतमुदितमुनिराई।विचरनलग्योधरणिसुखछाई२४
कपिलनिकटसोनृपतिसुजाना। जातरह्योसीखनवरज्ञाना॥
दोहा—सोवीचहिजडभरतसों, पायोज्ञानविज्ञान॥ धन्यधन्यनिजभागगुनि, घरकोकियोपयान॥
देहगेहछोड्योममकारा। अहंकारहूतज्योउदारा। सुतकहँराजसौंपिमतिमाना। विचरनलाग्योभरतसमाना॥
हेकुरुपतिहरिदासनकेरो। देखोयहपरभावघनेरो॥क्षणहुजेहरिसँगसेवनकरहीं। तिनहिंसंतयहिविधिउद्धरहीं॥२५॥
मुनिशुककेअसवचनउदारा। बोलतभोअभिमन्युकुमारा॥

राजोवाच।

भरतभवाटविजोयहगाई। सोमोहितुमसवदियोसुनाई॥ ताकोअर्थपरयोनहिंजानी। गुप्तवचनजानहिंमुनिज्ञानी॥
तातेनाथसहितविस्तारा। भवाटवीजोकहीअपारा॥
दोहा—सुगमअर्थसवप्रगटअव, करिकेकृपामुनीश। मोकोदेहुसुनाइसव, मैंपदनावहुँशीश॥ २६॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधेत्रयोदशस्तरंगः॥ १३॥

दोहा—सुनतपरीक्षितकेवचन, श्रीशुकदेवसुजान॥ महामोदमनमानिकै, लागेकरनवखान॥

श्रीशुक उवाच।

अहंवनिकजेजीवनरेशा। मायावशभववनहिंहमेशा॥ फिरतरहहिंकरिधर्मअधर्मा। पावहिंसदाअशर्महुशर्मा॥
अतिशयदुस्तरमलिनअपारा। जनुतमरजयहिमहँवहुवारा॥ कियेविनाहरिगुरुसेवकाई। कोऊपुरुषपारनहिंपाई॥
पंचज्ञानइंद्रीअरुइकमन। येपटचोरप्रबलनृपछनछन॥१॥कृष्णभजनधनहरेंविशेषी। साँच्योजोश्रमकरिशुभलेखी॥
वरवशजियकहविपयलगाई। कृष्णभक्तिद्रुतदेहिंनशाई॥ रक्षकवृद्धिहोतितहँभोरी। तापरचोरकरहिंद्रुतचोरी॥२॥
दोहा—सुतदारादिकुटुंबजे, तहँईअहँशृगाल। चहुँकिततेनिशिवासरहु, धनहितसंचहिलाल॥ ३॥
जबलौंहियवासनानजाई। तवलौंअमिनमिटहिंवनाई॥ तिमिजवलगिनवीजगलिजाहीं। तवलगिजामहिंखेतनमाहीं॥

जिमिभाजनतेगिरेकपूरा। सौरभतदपिरहतपरिपूरा ॥ ऐसेभवनतजेमहिपाला । गृहवासनानजातविशाला ॥
पुनिवासनाकर्म्मउपजावै। बढिभवविपिनवृक्षसमभावै ॥ भाजनतपेगंधक्षयहोवै। तिमिज्ञानाग्निवासनाखोवै ॥४॥
शलभविहँगमूपकठगचोरा। रहहिंप्राणसमधनचहुँओरा ॥ फिरतरहतजनयहिसंसारा। बडेविरागनहींममकारा ॥

दोहा—हैअनित्ययहजगतनृप, परतनित्यसमदेखि ॥ मृगतृष्णासमलखिविषय, धावतजनसुखलेखि ॥५॥

मैथुनभोजनऔरहुपाना। याहीमेंजनरहतभुलाना ॥ ६ ॥ प्रेतवदनजोभाप्योज्वाला। सोसुवर्णजानोमहिपाला॥७॥
तासुहेतधावतजनरहतो। कबहुँनउरसंतोषहिगहतो ॥ ताकेहितकहुँवधह्वैजावै। कहुँअपमानअनेकनपावै ॥
करनहेतजीविकामहाई। भ्रमतरहतकरिजतनउपाई ॥८॥ अहैववंडररूपीनारी। तेहिवशभ्रमतरहतव्यभिचारी ॥
तिहिमुखनिरखिपरमसुखमानै। रहतोतेहिसनेहलपटानै ॥ दिगपालनकोजानतनाहीं।कर्मसाक्षिजेकहहिंसदाहीं ९॥

दोहा—मृषाविषयजान्योयदपि, तदपिनछोडतताहि ॥ मूलअहैतिहिवासना, तजतकबहुँहियनाहि ॥१०॥

कोउप्रत्यक्षकरहिबहुनिंदा। कोउपरोक्षमहँनगरवासिंदा ॥ जिनकेवचनशूलश्रवणनके।तेउलूकझिल्लीभववनके॥११॥
अहैंकृपणधृतवेपउदारा। तेहैंजगतकुवृक्षअपारा ॥ तिनढिगजातनकछुधनपावै। तेदोउजीवनमृतककहावै ॥१२॥
सूखीसरितासमपाखंडी।तिनसँगउभयलोकसुखखंडी॥करहिजोपाखंडिनसँगजाई।उभयलोकातिहिंजातनशाई॥१३॥
जबधनकछुनघरहिरहिजावै।तबकुटुंबकोधनलैखावै॥१४॥घरहैदुखदायकयहभारी।जरततासुवशशोकदवारी॥१५॥

दोहा—कह्योयक्षजेविपिनमें, सोईजानहुभूप ॥ लखिकेकहुँअपराधनिज, लेतलूटधनरूप ॥

मत्तसरिसतहँरहतदुखारी।सोचकरतबीततनिशिसारी ॥१६॥ कुलगंधर्वहिनगरसमाना।तिनतेकबहुँलह्योसनमाना ॥
तोक्षणभरकोउअतिसुखमानै।हैअनित्ययहकुमतिनजानै १७कह्योजोप्रथमचढनगिरिचहतो।लगिकंटककंकरमगगहतो॥
तेइगृहगिरिकारजभारी। कंकरकंटकविघनविचारी ॥ करनलग्योगृहकारजकोई।सिद्धिनहोतदुखीतबहोई ॥ १८॥
क्षुधाअनलजारतनिशिवासर। पुनिपुनिकोपतनिजकुटुंबपर ॥ १९ ॥

दोहा—निद्राअजगरसांपिनी, लीलिलेतिजनकाहिं ॥ तबजनकेतनमेंनृपति, सुधिबुधिरहतीनाहिं ॥ २० ॥

श्यामसर्पदुर्जनहैंनाना। तिनतेजनपावतअपमाना ॥ तामेंव्यथितरैनदिनरहतो। कबहुँननयननींदनिशिलहतो ॥
अंधकूपहैयहसंसारा। तामेंगिरतभरोदुखभारा ॥ २१ ॥ हैमधुसमपरधनपरदारा। करतमिलनहितयत्नहजारा ॥
मधुमाखीहैभूपतिदूता। देखिहरतपरधनमजबूता ॥ मारहिधरिबंधनमहँबांधी। राखहिकैदकोठरीधांधी ॥
जियतभोगियहिविधिदुखनाना।मरेपरतहैनरकनिदाना॥२२॥ प्रवृतिकर्मजगजन्महिहेतू।निवृतकर्मसुदमोदनिकेतू॥
परधनहरतलियोकोउदेषी। जीवघाततबकरैविशेषी ॥ २३ ॥

दोहा—अथवाभूपतिभटसकल, धनसबलेहिंछुटाइ ॥ कशामारिद्रैपीठपर, जीवहिदेहिंबचाइ ॥ २४ ॥

शीतवातआतपबहुअपारा। अरुत्रितापनरेशउदारा ॥ सहतरहतनहिंसकतनिवारी। यहिविधिदुखीजीवसंसारी२५॥
कौडिहुहेतपरस्परलरहीं।सुतपितुकोपितुसुतसंहरहीं॥२६॥सुखदुखरागद्वेषअभिमाना॥शोकलोभमदमोहमहाना॥
भयईर्षामत्सरअपमाना। क्षुधापिपासाव्याधिविधिनाना॥जननमरणअरुभूखबुढाई।येउपाधिजगमहँदुखदाई ॥२७॥
देवहुमोहकरावनहारी। ऐसीहोतिकठिनयहनारी ॥ सोनारीभुजलतापसारी। लपटीजबतनक्षणसुखकारी ॥

दोहा—ताहीक्षणभूल्योसकल, धर्मविवेकविज्ञान ॥ विहरनहितविचरनलग्यो, नितनितनयेमकान ॥

श्रमकरिजोधनलियोकमाई। सोतियकोदीन्ह्योबरियाई ॥ भयेसुतासुतजबघरमाहीं। प्रमुदितहोततासुकितिनपाहीं॥
जिनमेंनिशिदिनरहतभुलाना।कबहूँनहिंसुमिरतभगवाना॥जियतहिसहतकलेशकठोरा।मरेनरकपावतअतिघोरा२८
[illegible]। काटचक्रभापहिमतिवंता ॥ भ्रमतरहतकरिवेगघनेरो। इहपरतंत्रकृष्णहीकेरो ॥
[illegible] जोविधिताई। प्राणिननाशतहैवरियाई ॥ तानकालकहँडरिसत्रमानी। यदुपतिशरणछाडिअभिमानी॥

दोहा—काककंकवकगीधअरु, क्षुद्रदेवतनकाहिं ॥ भजतरहैमतिमंदानित, बचहिंकालतेनाहिं ॥ २९ ॥

भैरवभूतपरेतभवानी। जबइनतेरक्षानहिजानी। हंसरूपजेसाधुसुजाना। तिनकेढिगसोकियोपयाना ॥

। नेकहुलग्योनीकतिहिनाहीं ॥ तवपुनिवानरसरिसशूद्रकुल । आयोपुरुपपायदुखसंकुल॥
। पालनलग्योकरतव्यापारा ॥३०॥ रह्योनतहँउपदेशककोई।जसइच्छातसविहरतसोई ॥
दोहा–जिमिकपिद्रुममहँखेलवहु, खेलतरहतसदाहिं । तिमिविहरतसवतियनहम, वसतगृहीगृहमाहिं॥३२॥
जिमिवानरमृगपतिभयपाई।कूदतगिरयोकंदराजाई॥तैसहिमीचभीतिवशजीवा।रोगदरीमहँदुखितअतीवा ॥ ३३॥
।३४तवधनविभवऔरपरिवारा।ताकेसंगनकोउसिधारा३५
। विविधभाँतियातनापसारी॥अथवापुण्यकर्मवशसोई।वस्योजाइस्वर्गहिमुदमोई ॥३६॥
३७जनमिफेरकरतोसोइकर्मा।करतकतहुँनहिंभगवतधर्मा॥
। जेरहिगयेतिनहिंमनलायो ॥
दोहा–कोहतसोहतसोचतो, रोदतमोदतकुत्र । कवहुँनध्यावतकृष्णपद, निरतनारिअरुपुत्र ॥
कृष्णभजनविनसुनुकुरुराई।जननमरनकेसहुनहिंजाई॥३८॥ जेमुनिशांतसुशीलसुभाऊ।तेजानहियदुनाथप्रभाऊ ॥
कुमतिपुरुपसज्जनपथमाहीं।तेअभागवशगमनतनाहीं॥३९॥दिग्गजविजयीनृपवलवाना।जिनकोपूरुवकियेवखाना॥
तेसवमरिकेहेमहिपाला । पुहमिहेतकरिवैरविशाला ॥ यामेंइतनीअहेहमारी । ऐसीवातैंविविधउचारी ॥
सैनजोरिकेकरैलराई । धरणीहितजियदेहिगमाई ॥४०॥ जहँयोगीजनसुखितसिधारे । तहँकोकछुनहिंकरतविचारे॥
दोहा–जोनरहूगणकोभरत, भवाटवीकहिदीन । ताकोसिगरोअर्थमैं, तुमकोवरणनकीन ॥ ४१ ॥
भरतभूपकरसुयशअपारा।ऐसोजगकविकरहिउचारा ॥ ऋपभदेवसुतकीममताई । मनहुँतेकोउनमहीपतिपाई ॥
जिमिमक्षिकागरुड़प्रभुताई।पावहिनहिंकरिकोटिउपाई॥दुस्त्यजसुहृदराजसुतदारा।मलसमत्याग्योऋपभकुमारा ॥
ज्ञानीमहँविभूतिसवत्यागी।वनवासिभयोकृष्णअनुरागी॥४३॥वासवतेवरविभववड़ाई।तियसुतसुहृदराजप्रियभाई ॥
त्यागवतिनहितअनुचितराजा।प्रेममगनहेजेयदुराजा॥हरिप्रेमिनमोक्षहुलघुलागे।सेवतहरिनिशिदिनवड़भागे ॥४४॥
दोहा–धर्मसांख्यमखयोगपति, नारायणहिप्रणाम । मृगहूतनमेंयहकहत, गयोजुप्रभुकेधाम ॥
हरिकेभजनप्रभावते, भरतभूपकहभूप । सवजन्मनिकीसुधिरही, पायोजानअनूप ॥ ४५ ॥
भरतभूपकोसुयशयह, प्रीतिसहितजोकोइ । सवैंसराहैंमुखकहैं, तासुमुक्तिहठिहोइ ॥
धनयशआयुपमोदवहु, होयजोनिजमनकाम । सविधिहरिहिपूजहिसकल, नँदनंदनघनश्याम ॥४६॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधेचतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

शुक उवाच ।

दोहा–भरतभूपकोसुतसुमति, कह्योजोमैंनरनाह । ऋपभदेवकीरीतिगहि, विचरयोसोमहिमाँह ॥
पाखंडीसिगरेतिनकाहीं । मान्योवोधदेवतिनकाहीं॥१॥ रहीवृद्धसेनातिहिनारी । तासुदेवजितसुतयशकारी ॥ २ ॥
ताकीभईआसुरीवामा । देवगुप्तताकेवलधामा ॥ धेनुमतीताकीमहरानी । परमेष्ठीसुततेहिवखानी ॥
परमेष्ठीतियभइसुवर्चला । तासुपुत्रप्रतीहजितकला ॥३॥ भयोव्रह्मज्ञानीसोराजा । ज्ञानसिखायोप्रजनसमाजा ॥
आपहुध्यानकियेहरिकेरो।करयोभूपआनंदघनेरो ॥४॥ ताहूकोसुवर्चलावामा । कुरुपतिरहीअनूपमवामा ॥
दोहा–ताकेतीनकुमारभे, मखकरताविख्यात ॥ प्रतिहर्ताप्रस्तोतऊ, अरुतीजोउद्गात ॥
प्रतिहर्ताकीअस्तुतिनारी । ताकेद्वैसुतभेमतिधारी ॥ जेठोअजभूमाल्घुभाई ॥ ५ ॥ भूमातियऋपिकुल्याभाई ॥
भूमाकेउद्गीथकुमारा । रहीदेवकुल्यातेहिदारा ॥ ताकेभयोपुत्रप्रस्तावा । जाकोयशजगतीतलछावा ॥

...निधु... । ताकेविभुभोसुतयशकारी ॥ विभुभूपतिकीरतिमंहरानी । सोपृथुसेनजन्योवलखानी ॥
तासुअकूतीनारिललामा । ताकेनक्तपुत्रबलधामा ॥ रहीनक्तकीदुतिजोरानी । ताकोभयोपुत्रविज्ञानी ॥
दोहा--जगमेंजाहिरहोतिभो, गयनामकमहराज । उज्ज्वलयशजाग्योजगत, दानिनकोसिरताज ॥
कृष्णकलाभेगयमहराजा । प्रगट्योपुहमीपालनकाजा॥६॥सहितधर्मनिजपुरजनकाहीं । लालनपालनकियोसदाहीं॥
यथायोगदंडहिनृपदीन्ह्यो । करिबहुमखहरिअर्पणकीन्ह्यो ॥ करतरह्योसंतनसेवकाई।तातेकृष्णभक्तिकहँपाई ॥
भयोअमलमनशीलअपारा । छूट्योअहंकारममकारा ॥ हरिअनुभवयद्यपिह्वैगयऊ । पैनृपकेअभिमाननभयऊ
पाल्योपुहुमिभूपबहुकाला॥७॥गावहिंकवियशसुयशविशाला॥८॥कौनभूपगयभूपसमाना।भयोजोबिनाकलाभगवान
दोहा--कर्तासिगरेयज्ञको, पालकधर्मम्रयाद ॥ धनमेंधनदसमाननृप, ज्ञानिनजिमिप्रहलाद ॥
कियोसदासंतनसेवकाई । बुधसमाजमहँलहीबडाई ॥ ९ ॥ दक्षराजकीसुतासोहाई । श्रद्धासत्यहुदयामिताई ॥
येसबगयकोकियअभिषेका।सुरसरिजललैसाहितविवेका॥महिपूरच्योपरिजनमनकामा।शशिकलखिगयनृपबलधामा
यद्यपिनृपकामनानकीन्हे । तद्यपिवेदकर्मफलदीन्हे ॥ रणशरपूजितशत्रुसमाजा । दीन्हेबलिनिजजीवनकाजा ।
छठयोअंशयज्ञकोविप्रा । दीन्ह्योलहिसतकारहिक्षिप्रा ॥११॥ गयकेमखमहँवासवआई । सोमपानकरिगयोअघाई ।
दोहा--श्रद्धायुतमयफलसकल, नृपहरिअर्पणकीन्ह ॥ प्रभुप्रसन्नह्वैप्रगटके, निजकरतेलयलीन ॥ १२ ॥
देवदनुजतिरयकहुअनंता।तृणतेलेविरंचिपरयंता ॥ जिनतोपेसबतोपितहोहीं । तेहरिकह्योतोपभोमोहीं ॥ १३ ॥
गयकीरहीजयंतीरानी । ताकेतीनसुवनबलखानी ॥ जेठचित्ररथसुबुधिप्रबोधन । दूजोसुगतितृतियअवरोधन ॥
ऊर्णाचित्ररथहिकीनारी । भोसंम्राटतासुबलभारी ॥ १४ ॥ ताकेरहीउत्कलारानी । ताकेभोमरीचिबलखानी ॥
बिंदुमतीमरीचिकीदारा । बिंदुदमानभोतासुकुमारा ॥ बिंदुमानकीसरघाप्यारी । ताकोसुतमधुभोयशकारी ॥
दोहा--सुमनसताकीतियरही, भयोवीरव्रततासु ॥ भोजातियताकीभई, मंथुप्रमंथूजासु ॥
मंथुनारिसत्याभई, भौवनतासुकुमार ॥ १५ ॥ भौवनकीतियदूषना, त्वष्टानामउदार ॥
त्वष्टानारिविरोचना, ताकेविरजसपूत ॥ नामविषूचीतासुतिय, ताकेशतसुतपूत ॥
अरुदुहितातातकेभई, सुंदरगुणनिअगार ॥ शतसुतमेंजेठोभयो, शतजितनामकुमार ॥
चल्योप्रियव्रतवंशवर, विरजहिलौंजगमाहिं ॥ भयोविभूषणवंशको, जिमिहरिसुरगणकाहि ॥१६

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ पंचमस्कंधे पंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

दोहा--सुनिप्रियव्रतकोवंशसब, तहांपरीक्षितराज ॥ कह्योफेरशुकदेवसों, मध्यमुनीनसमाज ॥

राजोवाच ।

प्रथमहिहेशुकदेवसुजाना । भूमंडलसंक्षेपबखाना ॥ जहँलौंदिनकरकेकरजाहीं । जहँलौंचंद्रतारदरशाहीं ॥
सोऊतुमसंक्षेपबखान्यो । नहिंविस्तारपरच्योमोहिंजान्यो॥१॥प्रियव्रतरथकोचक्रप्रचंडा । कियोसातहूंसिंधुअखंडा
सातसिंधुतेसातहुद्वीपा । होतभयेतहँमुनिकुलदीपा ॥ यहाँकियोसंक्षेपउचारा । अबऐसोमनभयोहमारा ॥
भूप्रमाणअरुद्वीपहुलक्षण । कहियेयुतविस्तारविलक्षण॥२॥प्रथमथूलमहँमनाहिलगावे।पुनिहरिकोसूक्षमवपुध्यावे।
दोहा--तातेप्रथमहिस्थूलवपु, जाननचहौंमुनीश ॥ याकेपाछेपूछिहौं, उत्तमवपुजगदीश ॥
...मंडलयुतविस्तारा । वरणहुअबहब्यासकुमारा॥३॥कुरुपतिमहाराजकीबानी । मुनिबोलेशुकअतिसुखमानी॥

श्रीशुक उवाच ।

...अभिमन्युकुमारा । हरिमायागुनकोविस्तारा ॥ देवविधिहुकीआयुदाई । तबहुँनसकलसकतननगाई॥

[illegible] । ताकोंमेंअबकरहुँबखाना ॥ ४ ॥ अहैलक्षयोजनविस्तारा । सुभगपद्मिनीपत्रअकारा ॥
[illegible]सनहि[illegible] । मध्यकोशहैजंबूद्वीपा ॥ ५ ॥ जंबूद्वीपमाहँनवखंडा । तिनकीविस्तरकहौंअखंडा ॥

दोहा--नवनवयोजनसहसनृप, यकयकखंडप्रमान ॥ मर्यादानवखंडकी, हैगिरिआठमहान ॥ ६ ॥

[illegible]धिमाहीं । जानहुखंडइलावृतकाहीं ॥ खंडइलावृतकेमधिभूपा । कनकाचलहैपरमअनूपा ॥
सकलधराधरकेरअधीशा । योजनलक्षहिऊँचमहीशा॥जिमिकार्निकाकमलमधिभावै।तिमिधुरनीमधिमेरुसोहावै ७॥
नृपबत्तिसयोजनहिहजारा । मेरुउपरकोहैविस्तारा ॥ योजनषोडशसहससुमेरा । गडोधरणिमहँनिगमनिवेरा ॥
भूपसहसयोजनचौरासी । खुलोमेरुहैपरमप्रकासी ॥ खंडइलावृतउत्तरमाहीं । औरहुतीनगिरीशसोहाहीं ॥

दोहा--नीलसेतअरुशृंगवत, एकतेउत्तरएक ॥ रम्यकऔरहिरण्यकुरु, खंडत्रयादविवेक ॥

पूर्वतुंगतीनहुगिरिजानो । पश्चिमपूर्वसिंधुलगिमानो ॥ तेतीनहुगिरिकीचौडाई । द्वैद्वैयोजनसहसगनाई ॥
तीनहुगिरिकीनृपलंबाई । यकयकतेदशांशकमिआई॥८॥खंडइलावृतदक्षिणओरा । तीनशैलअभिमन्युकिशोरा ॥
निषधहिरण्यकूटहिमवाना । ऊंचाईनीलादिसमाना ॥ दशसहस्रयोजनकेतुंगा । कहहुखंडमरयादप्रसंगा ॥
प्रथमअहैहरिवर्षउदंडा ॥ पुनिकिंपुरुषसोभारतखंडा ॥ तीनहुखंडनकीमरयादा । तीनहुगिरिहैंयहश्रुतिवादा ॥९॥

दोहा--इलावर्त्तकेपश्चिमे, माल्यचारगिरिजान ॥ इलावर्त्तकेपूर्वमें, गंधमादनैमान ॥

द्वैहजारयोजनचौडाई । दोउगिरिकोजानहुकुरुराई ॥ दक्षिणनिषधगिरिउत्तरनीला । दोउगिरिलंबेनृपशुभशीला ॥
केतुमालभद्राश्वखंडके । दोउगिरिहैंसीमाअखंडके ॥ १० ॥ मेरुरूपहैसरिसनिहाई । चारशैलचहुँदिशिनृपराई ॥
दशदशयोजनसहसउदारा । चारिहुकोजानहुविस्तारा ॥ तैसहिचारिहुअहैंउतंगा । रोकिमेरुकहँखडेअभंगा ॥
मंदरमेरुमंदरोहोई । इकसुपार्श्वइककुमदोसोई ॥ ११ ॥ चारवृक्षचारेहुगिरिमाहीं । तिनकेनामकहौंतुमपाहीं ॥

दोहा--हैमंदरहिरसालतरु, मेरुमंदरहिजंब ॥ कुमुदमाहँवटवृक्षहै, अहैसुपार्श्वकदंब ॥

ग्यारहसैयोजनतरुचारो । हैंउतंगकहनाथविचारो ॥ शतशतयोजनकीचौड़ाई । तिनकीछायाअतिसुखदाई ॥
शैलशीशमहँवृक्षप्रभाके । मानहुफहराहिंशैलपताके ॥ १२ ॥ मंदरमेंयकक्षीरसरोवर । मेरुमंदरहिमधुकोहैसर ॥
अहैइक्षुसरिगिरिसुपार्श्वमहँ। शुद्धनीरसरकुमुदशैलपहँ॥ जोकोउतिनसरसलिलनहावै । योगेश्वरऐश्वर्यसोपावै॥१३॥
चारहुगिरिमहँचारिअरामा । तिनकेकहौंभूपमैंनामा ॥ नंदनवनहैनृपतिमंदरे । अहैचैत्ररथमेरुमंदरे ॥

दोहा--हैसुपार्श्वगिरिशिखरमें, वैभ्राजकआराम । नृपतिसर्वतोभद्रवन, कुमुदमाहँअभिराम ॥ १४ ॥

तहँसुरललनासुरहुललामा॥करहिविहारविविधवसुयामा॥तहँगंधर्वकरहिंकलगाना॥सजीअपसरानाचहिंनाना ॥१५॥
मंदरमेरुसालतरुजोई । शैलशृंगसमतेहिफलहोई ॥ ग्यारहसौयोजनउतुंगते । गिरहिसुफलमारुतप्रसंगते ॥ १६ ॥
परतप्रमाणफूटतेजाहीं । मधुरसुरभिफैलतिचहुँघाहीं ॥ अमृतसरिसतेफलनृपराई । निकसतअरुणसुरससुखदाई ॥
तिनतेभईनदीअरुणोदा । सुरसमाजकीदाइनमोदा ॥ मंदरकेकंदरतेढरती । इलावर्त्तमेंपूर्वपसरती ॥ १७ ॥

दोहा--उमाअनुचरीकिन्नरी, औरदानवीजोइ । तेहिसरिताकेसलिलमें, मज्जहिंनितमुदमोइ ॥

सरिप्रभावभूपतिअसतासू ।दशयोजनतनजातसुवासू ॥१८॥ मेरुमंदिरहिजोतसजंबू । गिरहिजासुफलशैलनितंबू॥
एकादशहजारयोजनते । फूटहितेपपानयोगनते ॥ अतिसूक्ष्मबीजातिनमाहीं । गजसमानजवफलफटिजाहीं ॥
तबतिनकेरसतेतहँभूपा । जंबूसरितावहीअनूपा ॥ इलावर्त्तमेंदक्षिणओरा । वहतिनदीप्रवाहकरिजोरा ॥ १९ ॥
दोउकूलनकोकरदमताको॥लहिमारुतअरुसूर्य्यप्रभाको ॥होतहेमजांबूनदनामा । तामेंहोतसुगंधललामा ॥ २० ॥
ताकोकटकमुकुटचौरासी । धारहिंसुरसुरतियसुखरासी ॥ २१ ॥

दोहा--गिरिसुपार्श्वमेंजोकह्यो, तरुकदंबकोसांच । ताकेकोटरतेकढहिं, मधुधारानृपपांच ॥

मोटीअहैपंचअकवारा॥वहहिइलावृतपश्चिमधारा॥२२॥जोकोउतिनकोसेवनकरही॥शतयोजनमुखसुरभिपसरही२३
कुमुदशैलपरजोवटवृक्षा । कुरुपतितासुप्रभावप्रत्यक्षा ॥ तेहिशाखातेदधिमधुक्षीरा । गुड़घृतऔरअन्नबहुनीरा ॥

...कोधारा । माल्यवानगिरिह्वैसुखसारा । केतुमालखंडहिकरिपावनि । पश्चिमसागरमिलीसोहावनि ॥७॥
... कियेकुमदगिरिशिखरविलासू ॥ तहँतेनीलाचलपैआई । संतशैलपैफेरसिधाई ॥
... । तहँतेकुरुखंडहिंगेगंगा ॥ कुरुखंडहिकोपावनकरती । उत्तरसागरमेंअघहरती ॥ ८ ॥
... । दक्षिणगिरिमेरुतेपावनि ॥ बहुगिरिकूटनफोरतधारा । परसतमस्तकनिषधपहारा ॥

दोहा–हेमकूटकोफोरिके, पुनिआईहिमवान । निकसिहिमालयतेकियो, भारतखंडपयान ॥

... । अतिसवेगधावतवसुधामे ॥ दक्षिणसागरमेंयहगंगा । मिलीकरतजगपातकभंगा ॥
... । करतपयानजोकोउमतिसेतू ॥ राजसूयहयमखआदिकफल। पगपगमहँतिहिहोतभूपभल ॥
... । जेहरिपदतेप्रगटसिधाई ॥ ९ ॥ औरअनेकनदीनदभूपा । खंडखंडमहँअहइअनूपा ॥ १० ॥
...भूमिहैभारतखंडा । भोगिभूमिहैआठहुखंडा ॥ थोरीपुण्यरहेनृपराई । तबतेजीवसर्गतेआई ॥
...हुखंडनमहँ... । भयेपुण्यक्षययोनिसयोगे ॥ ११ ॥

दोहा–आठोखंडनमहँनृपति, मनुजदेवसमहोत । दशहजारसंमतहिकी, आयुपहोतउदोत ॥

तिनकेदशहजारगजजोरा । वज्रसरिसतनहोतकठोरा ॥ महामुदिततेकरहिंविहारन । नलिनीपुलिनीपुरनपहारन ॥
एकवर्षआयुपजबरहती । तबतिनकीतियगर्भहिगहती ॥ कोउकुमारकोउजनैकुमारी । जनतहियुवाहोहिवलभारी ॥
सुतअरुसुताप्रगटपितुमाता । भरततुरतपुनितियजनताता ॥ तहँनृपत्रेतायुगकीनाई । रहतकालवशखंडसदाई ॥१२॥
तहांसकलसुवरणकोजूहा । लैसँगनिजसुंदरीसमूहा ॥ विचरहिवनगिरिकंदरमाहीं । जहांसकलऋतुरहहिसदाहीं ॥

दोहा–फूलेकुंजनसुमनबहु, बहुकिसलयफलगुच्छ ॥ नयेनयेवीरुधविटप, कहुँदरशहिंनहिंतुच्छ ॥

गिरिकंदरतहँसुंदरकानन । खगरवलगतमधुरअतिकानन ॥ सरसीसरससरोवरसोहै । विकसितवारिजवनमनमोहे ॥
वतकारंडवसारसहंसा । चक्रवाकवककुक्कुटवंसा ॥ करहिंचहूँकितमंजुलशोरा । गुंजहिंकुंजनकुंजनभौरा ॥
नाचहिंतहांनर्तकीनाना । विचरहिंविविधविलासविधाना ॥ करहिंसकलजलमहँबहुलीला । सुंदरसुरसुंदरीसुशीला ॥
हावभावनानाविधिकरहीं । तियगणहँसिपियगणमनहरहीं ॥ यहिविधिकरहिंअनेकविहारा । मुदितदेवदेवनकीदारा १३॥

दोहा–नवहुखंडमेंसुनहुनृप, जननअनुग्रहहेत । नारायणनवरूपते, मनवांछितफलदेत ॥ १४ ॥

प्रथमहिसुतहुइलाव्रतमाहीं । जोपूजकअरुपूज्यसदाहीं ॥ सहसशीशसंकर्षणस्वामी । जेशकरकेअंतरयामी ॥
इलावर्तमहँठाकुरतेई । हैशंकरपूजकपदसेई ॥ तहाँपुरुषदूजोकोउनाहीं । पुरुषहुगयेनारिह्वैजाहीं ॥
आगेतासुकथाविस्तरिहों । जबहिंनवमअस्कंधउचरिहें ॥१५॥ तहँराजाअर्बुदलैनारी । सहितउमानिशिदिनत्रिपुरारी ॥
यहीमंत्रजपिशंभुसुजाना । पूजहिशेषशचरणसविधाना ॥ इलावर्त्तखंडहिकीवामा । सेवहिउमाशंभुसुखधामा ॥ १६ ॥

अथ श्रीसंकर्षणमंत्रः ।

ॐनमोभगवतेमहापुरुषाय सर्वगुणसंख्यानायानंतायाव्यक्तायनमः ॥ १७ ॥

दोहा–प्रेमभरेअतिशंभुपुनि, जलजयुगुलकरजोरि । पाठकरहिंअस्तोत्रयह, वारहिंवारनिहोरि ॥

श्रीभगवानुवाच ।

छंद–सुज्ञानादिऐश्वर्य्यतेयुक्तजोई । सबैविश्वकोकारणैसत्यसोई ॥
सदाभक्तकीकामनापूरकर्ता । महाघोरसंसारकीभीतिहर्ता ॥
उमेनाथपादारविंदोतिहारे । सदाविश्वकेरक्षनैकनहारे ॥
भजोभावसोंआपकोमैंसदाहीं । रहोंध्यानधारेसदाचित्तमाहीं ॥ १८ ॥
अहोतूनियंतासबैविश्वकेरे । नमायागनोआवतेआपनेरे ॥
हमोंकोविषैवासनानाहिंत्यागे । सदामोदकोहादिमेंचित्तपागे ॥

अहैकोमुमुक्षतुम्हैंजोनध्यावै । अहैकोजुध्यावैनहींमोक्षपावै ॥ १९ ॥
अज्ञानीकुबुद्धीजेमायाविमोहे । तुम्हारेसबैरक्तनयनानिजोहे ॥
तुम्हैंभावहीआसवैपानमत्ते । अहैविश्वमेंसत्यतेइप्रमत्ते ॥
तुम्हैंअर्चनेहेतजोनागकन्या । नितैआवतीपावतीमोदधन्या ॥
गहैकोमलेपादकंजैतिहारे । लहैक्षोभतेपन्नगीलाजधारे ॥
सकैचंदनैफूलकोनाचढाई । गडैगेविशेषैयहीचित्तलाई ॥ २० ॥
सृजौपालहूसंहरौविश्वबाही । तुम्हैंहोतयेलीलऊनाथनाही ॥
कहेसर्वदाशेषस्वामीअनंता । कहैवेदऔसंतजेबुद्धिमंता ॥
फणौजेसहस्रौतिहारेप्रकासी । धरीहैधराएकमेंसर्ववासी ॥ २१ ॥
महत्तत्वकोपूर्वहींआपजायो । अधिष्ठानसोईहरीकोगनायो ॥
कहैताहिब्रह्माभयेमैंतेईंते । भयेभूतइंद्रीसुरौहैजिहीते ॥ २२ ॥
हमौऔरजेतेसुरौहैंअपारे । सबैजानियेशासनैमैंतिहारे ॥
बँधेदामज्योंकीटऔरौविहंगा । रचैंखेलकोऔनचैंएकसंगा ॥
तेहीभाँतितेआपुहीकोनिदेशै । सबैविश्वकोविश्वकर्त्ताहमेशै ॥ २३ ॥
दोहा–तुवमायाजानहिसबै, जाकोयहविस्ताराशेषसहसमुखआपको, हैप्रणामबहुवार ॥ २४ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कंधेसप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–भूपखंडभद्राश्ववमें, हयग्रीवभगवान। धर्ममयीमूरतिधरे, ठाकुरकृपानिधान ॥
भद्रश्रवाजोधर्मसुत, निजसेवकसुतसोय । यहीमंत्रजपिनाथको, पूजतहैमुदमोय ॥ १ ॥

श्रीहयग्रीवभगवतोमंत्रः ।

ॐनमो भगवते धर्मायात्मविशोधनाय नम इति ।

दोहा–हयग्रीवभगवानको, भद्रश्रवासुतधर्म । सन्मुखयहअस्तुतिकरत, जोरिपाणियुतशर्म ॥

भद्रश्रव उवाच ।

छंद–यहहैविचित्रविशेषमायाकर्मनाथतुम्हार । सबकोविनाशतकर्मपैनहिंजानतोसंसार ॥
प्रत्यक्षपितुनिजपुत्रकोमरघटजरावननाइ । अभिलाषराखहिआपनीपुनिजियनकीधरनाइ ॥
कारिकेकुसंगअनेकपापनकर्ममेंलवलीन।नहिंभजतयदुपतिपदपदुमशठसकलविधिबुधहीन ॥२॥
कहिओग्यानीशास्त्रलैसत्यसहहगनोहिं । यहजगतकहतअनित्यपैनितरहतमायामांहिं ॥
यहरावरीरचनाविठोकतजगतकौतुकनाथ । तातेंधरहिंहमरावरेकेचरणमेंनिजमाथ ॥ ४ ॥
जगसृजनपालननंहरनतुमहीकरहुभगवान । तद्यपिअकर्ताकहततुमकोसकलवेदपुरान ॥
यहहोनतुमसंकल्पतेंअग्यानकौतुकसोइ । नियकर्मकेअनुसारफलदानीपरहुतुमनोइ ॥
अरुहत्यनागैंहकौलालिंगयोपुनअंन । तबहयग्रीवशरीरधरितुमहींदियोमधुकंन ॥
हनिदैत्यदोउपैनारिवेदनसौंप्रभुसुपनाट । विधिकोदियोकोआपसमतिहुजोकमादकृपाउ ॥

भूरुवाच।

...मंत्रतत्त्वलिंगाय यज्ञकृतये महाध्वरावयवाय महापुरुषाय नमः कर्म्मशुक्लाय त्रियुगाय नमस्ते२५

सोरठा–यज्ञादिककरिकर्म, लखिनपरततवरूपप्रभु। तातेमुनितजिभर्म, लखतरावरेरूपको॥
इंद्रिनकुंभवनाय, मनकोमंथानोविरचि। मथनकरैसुखछाय, पावहिमाखनरूपतुव॥ २६॥
द्रव्यदेशकालादि, येसबमायागुणअहैं। असभापहिश्रुतिवादि, इनकेकारणआपहैं॥
जेकरिविमलविचार, निश्चलमतितुममेंकरें। तिनकोनहिसंसार, ऐसेप्रभुहिप्रणामबहु॥ २७॥
तुवसंकलपसहाय, मायाविरचितजगतको। तिमिचुंबककहँपाय, फिरतलोहहूजडयदपि॥
जगसाक्षीहौआप, जगव्यापीहौसर्वदा। प्रगटहुपरमप्रताप, दासनदुखदंरताहुतहिं॥ २८॥

...–बूडिविलोकिप्रलैजलमेंमोहिंधारिवराहकोरूपमेंपावन।मारितुरंतहिशोकनकाक्षहिजोतिहुँलोकनमेंदुखछावन
विश्वअधारतहैंनिजडाढ़मेंधारिकैमोहिंउधारयोहैपावन। वारहिंवारप्रणामकरौंरघुराजतहींसबशोकनशावन॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधेअष्टादशस्तरंगः॥ १८॥

दोहा–भूपखंडकिंपुरुपमें, सीतापतिश्रीराम॥ लछिमनयुतठाकुरअहैं, त्रिभुवनपतिअभिराम॥
... ...। हनूमानजेहिनामउचारा॥ तेकिंपुरुपखंडकेवासी। प्रेमभक्तिसोंआनँदरासी॥
...। पूजनकरतमुदितमनरोजू॥१॥ अर्ष्टिषेणगंधर्वअधीशा। वसतनेहकरिनिकटकपीशा॥
...। परमप्रेमसोरामपरायण॥ मारुतसुताढ़िगनितसोगावै। वीनमृदंगसहितसुरछावै॥
...। साधनजननीकलुपकसायन॥सुनतपवनसुतसहितहुलासू। ढारतआँखिनआनँदआंसू॥

दोहा–यहीमंत्रजपिरामको, पूजनकरतकपीश॥ पुनियहअस्तुतिनिजवदन, गावतरहतमहीश॥ २॥

ॐनमो भगवते उत्तमश्लोकाय नमः आर्य्यलक्षणशीलव्रतायनमउपशिक्षितात्मनेउपासितलोकायनमःसाधुवाद-निकषणायनमोब्रह्मण्यदेवायमहापुरुषायमहाराजायनमः॥ ३॥

कवित्त–जाकोशुद्धहियोताकोअनुभौतिहारोहोतनाथनिजतेजहीतेमायागुणनासीहै।
जगतकेव्यापीनिजजापीकोअतापीकरोनामरूपआपकेअनंतदिव्यभासीहै॥
आपकेसमाननाहिंअधिककहांतेहोयअहंकारक्षारहोतध्यायेमुदरासीहै।
कालत्रासनाशिततकालकेनिहालदेत राजेरघुराजऐसेअवधविलासीहै॥ ४॥
नरअवतारनहिकेवलदनुजकुलनाशनकेहेतयहपरतविचारहै।
जननसिखायवेकोओरहूदेखायवेकोनारिकेअधीनजेसेहोतदुखभारहै॥
अवधनिवासीसीतासंगहीविलासीनितजगतप्रकासीकोनउचितखभारहै।
तजिकेनिवेसजाइकाननकलेशसह्योधनसोधरामेंअवधेशकोकुमारहै॥ ५॥
कालमुनिरूपकीन्ह्योमंत्रअसप्रणकरिआवैगोइतेजोसोईहैवेवशकालके।
द्वारदुरवासाआयेकोपितलपणलख्योजाइकह्योनाथसोईलालमुनिपालके॥
सबकेनियंतासबलोकनकेनाथसोई साँचेइशशक्रकरतारशशिभालके।
प्रणपालिवेकोप्राणप्यारोबंधुत्यागिकीन्ह्योस्वामीको समानहैदशरथलालके॥ ६॥
कुलकीबड़ाईनाहिंधनप्रभुताईनाहिंजातिकीनिचाईसबभाँतिअधिकाईहै।
बुद्धिहीनताईभूरिचितमहँचंचलाईफलफूलखाईबसेवनमेंसदाईहै॥

नभक्तिविनकारिसतसंगा । मिलतनहींयहसत्यप्रसंगा ॥ कृष्णभक्तिजाकेउरआई । जगतवासनादेतनशाई ॥
ष्णभक्तिहीमुक्तिकहावे । जाकोलहिपरमानँदपावे ॥ भरतखंडहीमेंसोहोती । औरखंडमहँनाहिंउदोती ॥ २० ॥

दोहा–तातेभारतखंडकी, भारतकुलअवतंस ॥ करहिंप्रशंसाअसतवै, देवसिद्धमुनिहंस ॥

सवैया–जेजनपूरवजन्ममेंजोनकियेतपउत्तमधौतपरासी । धौंअपनेतेप्रसन्नभयेइनपैरघुराजविकुंठविलासी ॥
श्रीहरिकेपदसेवनयोगलहेनरकोतनप्रेमप्रकासी । जाहिसदाहमहूँतरसेंधनिहैंधनिभारतखंडकेवासी ॥ २१ ॥
काहभयोबहुयागकियेअरुकाहभयोव्रतओकरिदानो।काहभयोकठिनोतपकेकियेकाहभयोकियोस्वर्गपयानो
काहभयोविभोभोगलहेरघुराजसुनोसबैतुच्छनिदानो।काहजियेजगमेंजेहिकोरघुनाथकेहाथनमाथविकानो॥

दोहा–हरिकोभूलतस्वर्गमें, लखिकेभोगअखंड ॥ तहँकेजनभूलतनहीं, धनिधनिभारतखंड ॥ २२ ॥

वैया–पुण्यअनेकनकोकरिस्वर्गमेंलाखनवर्षकीआयुषपावे । तासोंक्षणभरकीजनआयुषभारतखंडकीउत्तमभावे॥
लाखनवर्षहूँमेंहमकोयदजोनकहूँसपनेनहिंआवे । सोक्षणमेंरघुनाथपदैमनदैरघुनाथपदैजनजावे ॥ २३ ॥
कृष्णकेउत्सवमोदविनोदजहांनहिंनैननमेंलखिलीजे । श्रीरघुराजजहांनहिंसंतनकेपदकेजललेमहिभीजे ॥
कृष्णकथासुधाधारितहाँनहिंकाननकीकरिअंजलपीजे।ऐसोनरेशसुरेशमहेशप्रजेशनिवेशप्रवेशनकीजे २४॥
यहदेवनदुर्लभभारतखंडमेंजेनरदेहकोपावतहैं । लहिकेधनकोकरिकेमखकोजगमेंबड़ज्ञानीकहावतहैं ॥
जगयेतीबड़ाईकहेरघुराजनजेरघुराजकोध्यावतहैं । कड़िफंदहितेफँदतेखगसेजगजन्मवृथाहिंवितावतहैं२५॥

दोहा–प्रीतिसहितजेमखकरत, भारतखंडहिमाहिं ॥ सुरननाथनिजहाथहरि, लेतेभागनकाहिं ॥ २६ ॥

स०-जगजेजनश्रीरघुनायककोभजैकोनिहूकामनाकोकरिकै । तिनकोप्रभुदेनचहैजितनोनहिंपूरणकामकरैआरिकै ॥
रघुराजतेरामअकामभजैतिनकेउरमेंपदकोधरिकै।विनकामहुकामनापूरककैदयासिंधुदयादिलमेंधरिकै ॥२७॥
जोजपकीतपकीमखकीकछुपुण्यरहीवचिहोयहमारी । तौदयादीठिपसारिहुतैअवऐसोविनैसुनोओधविहारी ॥
भारतखंडमेंहोयहमारोकहूँनरजन्मवृथासुखकारी।जातेलहैंअवमुक्तिविशेषिकेगायकेकीरतिरामतिहारी॥२८॥

श्रीशुकउवाच ।

दोहा–चहुँदिशिजंबूद्वीपके, आठअहैंउपदीप ॥ तेजेहिविधिउतपतिभये, सोअवसुनहुमहीप ॥
वाजीखोजतखनतमहि, सगरसुवनवलधाम ॥ धरणीजोनवचाइदिय, सोउपद्वीपललाम ॥ २९ ॥
स्वर्णप्रस्थआवर्तनहु, रमणकचंद्रमहपि ॥ पांचजन्यमंदरहरिन, लंकासिंहलद्वीप ॥ ३० ॥
जंबूद्वीपविवर्नयह, मैंभाष्योंसमुझाय । जामेंभारतखंडयह, अतिउत्तमदरशाय ॥ ३१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधे एकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥

दोहा–अवप्लक्षादिकद्वीपके, लक्षणऔरप्रमान । अरुविभागतिनकेसकल, तुमसोंकरहुबखान ॥ १ ॥

जंबूद्वीपभूपचहुँओरा । लवणसमुद्रअहैअतिघोरा ॥ अहैलक्षयोजनविस्तारा । प्लक्षद्वीपअवसुनहुउदारा ॥
लवणसमुद्रहुकेचहुँओरा । लक्षद्वीपअभिमन्युकिशोरा ॥ योजनयुगुललाखविस्तारा । महाकनकतरुप्लक्षउदारा
अग्निदेवतहँकरहिंनिवासा । सप्तजीभजेहिनामप्रकासा ॥ इध्मजिह्वसुतप्रियव्रतकेरो । अधिपतहाँकोतेजघनेरो ॥२
शिवअरुमवयसशांतहुक्षेमा । अमृतसमुद्रअभययुतनेमा ॥

दोहा–येनृपसातहुसुतनके, नामहितेतहँद्वीप । सातखंडह्वैजातभे, कियेविभागमहीप ॥

सातखंडसीमागिरिसाता । तिनकेनामकहौंअवदाता ॥ २ ॥ इंद्रसेनअरुयज्ञबहुरूपा । जोतिपमतिसुपर्णमणिकूटा ॥
हिरनष्ठीवऔरघनमाला । येसातहुनृपशैलविशाला ॥ अरुणानृम्णाअरुसुप्रभाता । अंगिरसीसावित्रीख्याता ॥
ऋतंभराअरुसत्यभराही । सातनदीतिहिंद्वीपहिमाहीं ॥ तिनकोजलसवपातकनासी । तिनमेंमज्जततहँकेवासी ॥
हंसपतंगऔरऊर्द्धायन । अरुसत्यांगहुधर्मपरायन ॥ तहँकेवरणचारयेजानो । सहसवर्षकीआयुपमानो ॥

दोहा—तहँकेवासीदेवसम, जपियहमंत्रसदाहिं । धर्मकर्मनिष्ठासहित, पूजहिंदिनकरकाहिं ॥ ४ ॥

मंत्र—प्रत्नस्यविष्णोरूपंचसत्यस्यर्तस्यब्रह्मणः । अमृतस्यचमृत्योश्चसूर्य्यमात्मानमीमहि ॥ ५ ॥

ताकेउतैशालमलिदीपा । चारलक्षयोजनहिमहीपा ॥ सुरासिंधुताकेचहुँफेरा । चारिलक्षयोजनकोघेरा ॥ ६ ॥ ७ ॥
तहँवसतहैविहँगअधीशा । जहँशालमलिवृक्षमहीशा ॥ ८ ॥ यज्ञबाहुसुतप्रियव्रतकेरो । तहँकोभूपप्रतापघनेरो ॥
ताकेसातपुत्रखडभागा । तिनकोपितुकरिदियोविभागा ॥ तिनकेनामहितेतहँभूपा । सातखंडह्वैगयेअनूपा ॥
देववर्षरमणकहुसुरोचम । सुमनसदारभद्रअप्यायन॥सतवाँखंडअहैअविज्ञात॥यहिविधिहोयविभागविख्याता ॥९॥

दोहा—वामदेवकुंदहुकुमुद, स्वरसऔरशतशृंग ॥ पुष्पवर्षअरुसहसश्रुति । येगिरिसातउतंग ॥

कुहूसिनीवालीअरुअनुमति।नंदाराकारजनिसरस्वति॥सातहुनदीतहाँकीजानो ॥१०॥ चारवरणअवकरहुँबखानो॥
श्रुतधरवीरजधरहुवसुंदर । इषुधरचारहुवरणधर्मंधर ॥ जपियहमंत्रतहाँकेवासी । ध्यावहिंचंद्रदेवसुदराशी ॥ ११॥

मंत्र—स्वगोभिःपितृदेवेभ्योविभजन्कृष्णशुक्लयोः प्रजानांसर्वासांराजांऽधः सोमोनआस्त्विति ॥ १२ ॥

सुरासिंधुकेउतैमहीपा । आठलक्षयोजनकुशदीपा ॥ ताकेचहुँकितघृतकोसागर । योजनआठहिलक्षउजागर ॥
हिरण्यरेतप्रियव्रतसुतजोई । तौनद्वीपकोभूपतिसोई ॥ तहँकुशकोइकवृक्षअनूपा । परमप्रकाशितजानहुभूपा॥१३॥
जानहुनृपकेसातकुमारा । तिनकेनामनिकरौंउचारा ॥

दोहा—नाभिगुप्तअस्तुतिवृतौ, देवविविक्तहुनाम । वसुवसुदानहुजानिये, सातखंडअभिराम ॥

सातसीमसातहुगिरिसरिता । तिनकेनामकहहुँमुदभरिता ॥ कपिलचक्रअरुचारहुशृंगा । चित्रकूटहैचौथउतंगा ॥
ऊर्द्धरोमअरुदेवानीका । द्रविणसातयोगिरिअतिठीका ॥ श्रुतविंदाऔरहुमधुकुल्या । औरामित्रविंदामधुकुल्या ॥
सुरगर्भाअरुमंत्रहुमाला॥१४॥१५॥घृतच्युतासरिसातविशाला॥तिनकेजलतेतहँकेवासी॥होतसर्वेअघओधविनाशी॥
कुशलकोविदोशुभआचरणा।अभिजिककुलकचारयेवरणा॥अगिनदेवध्यावहिंतहँकेजन।पढ़ियहमंत्रसदाप्रमुदितमन

मंत्र—परस्यब्रह्मणःसाक्षाज्जातवेदोऽसिहव्यवाट्देवानांपुरुषांगानां यज्ञेनपुरुषंयजेति ॥ १७ ॥

दोहा—घृतससुद्रकेनृपउतै, क्रौंचद्वीपचहुँओर । योजनसोरहलक्षको, तहँहैमोदनथोर ॥

ताकेचहुँकितसागरक्षीरा । योजनसोरहलक्षगँभीरा ॥ क्रौंचनामतहँशैलउतंगा । तातेतासुभयोदुखभंगा ॥ १८॥
हन्योस्वामिकार्तिकतिहिशूला । भयोदुसालशैलतेहिहूला ॥ क्षीरसिंधुकेलगेतरंगा । तातेतासुभयोदुखभंगा ॥
वरुणसदातेहिरक्षतरहई । तातेअभयशैलसोअहई ॥ प्रियव्रतकोघृतपृष्ठकुमारा । जासुसातसुतपरमउदारा ॥
सातखंडकरिद्वीपहिकाँही।पुत्रनबांटिदियेतिहिठाँही ॥१९॥ आपुगयोहरिचरणनशरणा।जेहैंजनकल्याणहिकरना॥

दोहा—मेघपृष्ठभ्राजिष्टअरु, लोहितस्वर्णसुधाम । आमवनस्पतिमधुरहो, सुनहुखंडकेनाम ॥२०॥

वर्द्धमानउपबर्हणनंदन । सुक्तसरवतोभद्रहुभोजन ॥ अहयकनंदसीमगिरिसाता ॥२१॥ अबमैंनदीकहौंविख्याता॥
तीर्थवतीअरुरूपवतीहू । सुकलाऔरपवित्रवतीहू ॥ अभयाअरुअमृतौघाजोई । सतईअहैआर्यकासोई ॥
तिनसरिमहँतेहिद्वीपनिवासी।मज्जनपानकरतमुदरासी॥ चारिवरणजानहुहरिसेवक।पुरुषऋषभअरुद्रविणहुदेवक॥
पढ़ियहमंत्रतहाँकेवासी । पूजहिंजलमहँअवधविलासी ॥ २२ ॥

मंत्र—आपःपुरुषवीर्यास्स्यपुनंतीभूर्भुवःसुवतानः पुनीतामीवघ्निः स्पृशतामात्मनाभुवः ॥ २३ ॥

क्षीरसि [illegible] मकोजानहुद्वीपा ॥
[illegible] ो, तहँकोहैविस्तार । ताकेचहुँकितजानिये, दधिकोउदधिअपार ॥

ऊयोजनबात्तिसलाखे । शाकद्वीपमधिअसकविभाखे ॥ शाकवृक्षइकअतिहिंउतंगा । दीपनामभोताहिप्रसंगा ॥
रभिदीपमधिछावे । कोमलकठिनतासुदलभावे॥२४॥प्रियव्रतसुतमेधातिथिसोई । तौनद्वीपकोभूपतिसोई॥
ातपुत्रबडभागा । करिकेद्वीपहिसातविभागा ॥ देकैसुतनगयेहरिधामा । तिनसुतनामहिखंडहुनामा ॥
त्रेफबहुरूपमनोजव । विश्वधारपवमानपुरोजव ॥ धूम्रानीकजानियेसाता । येपुत्रनकेनामविख्याता ॥ २५ ॥

दोहा-सहसस्रोतउरुशृंगअरु, सतकेसरईसान । देवपालबलभद्रअरु, महानसोनृपजान ॥

ातशैलतेहिद्वीपहिमाहीं । अववरणहुमेंसरितनकाहीं । अनघाआयुर्दाअपराजित । उभयसृष्टिपंचपदनिजधृत ॥
रसहसश्रुतिसरितामाता २६ चारिहुवरणकहोअवदाता॥ऋतव्रतसतिव्रतऔरदानव्रत।चौथोजानहुऔरअनुव्रत॥
पढ़ितहँकेवासी । पूजहिंपवनदेवसुखरासी ॥ २७ ॥

अथमंत्रः ।

अन्तःप्रविश्यभूतानियोविभर्त्यात्मकेतुभिः । अंतर्य्यामीश्वरःसाक्षात्पातुनोयद्वशेस्फुटम् ॥ २८ ॥

द्धिसागरकेउतैनरेशा । पुहकरद्वीपजानिमतिवेशा ॥ योजनचौंसठलक्षप्रमाना । ताकेचहुँकितभूपसुजाना ॥
शुद्धनीरसागरसुखसारा । योजनचौंसठलखविस्तारा ॥

दोहा-पुहकरद्वीपहिमेंनृपति, पुहकरपुरटहिकेर ॥ लावनदलतामेंलसै, दैप्रकाशचहुँफेर ॥

जामेंकरहिंवासकरतारा॥२९॥खंडयुगलतेहिद्वीपउदारा ॥ शैलमानसोत्तरअसनामा । तौनद्वीपमधिअहेललामा ॥
करतद्वीपकरयुगलविभागा । महाप्रकाशतासुबड़भागा ॥ दशहजारयोजनचौड़ाई । तितनीहीहैतासुउँचाई ॥
इंद्रवरुणयमधनदहुकेरी । गिरिपरपुरीचारुचहुँफेरी ॥ दिनकरमानसउतरहिमाहीं । दक्षिणउत्तरसदाफिराहीं ॥
उतकोदिनजबलौंनितजावे । इतकोउत्तरअयनकहावै ॥ उतकीजबलौंनिशासिरावै । इतकीदक्षिणअयनकहावै ॥

दोहा-तातेसुरकोदिवसनिशि, मानुपसंवतएक ॥ सुरअरुमानुपदिवसनिशि, ऐसोअहइविवेक ॥ ३० ॥
वीतिहोत्रप्रियव्रतसुवन, ताकोअधिपललाम ॥ ताकेद्वैसुतहोतभे, धातकिरमणकनाम ॥

दोउपुत्रनकरिद्वीपविभागा । हरिपुरगोभूपतिबड़भागा॥३१॥तौनद्वीपकेप्रजाअपारा । जपियहमंत्रसदासुखसारा ॥
ब्रह्मरूपकृष्णकोध्यावे । तनतजिब्रह्मलोककहँजावे ॥ ३२ ॥

अथमंत्रः ।

यत्तत्कर्ममयंलिंगंब्रह्मलिंगंजनोर्चयेत् । एकांतमद्वयंशान्तंतस्मैभगवतेनमः ॥ ३३ ॥

शुक उवाच ।

ताकेउतैनरेशउदारा । जानहुलोकालोकपहारा ॥ ३४ ॥

ताकेउतैमहाअँधियारा । करतनदिनकरतेजपसारा ॥ मेरुमानसोत्तरगिरिकेरो । बीजजोनसोकियोनिबेरो ॥
एककोटिसत्तावनलाखे । योजनसहसपचासहुभाषे ॥ शुद्धोदकसमुद्रकेउत्तर । इतनोइहैधरणीविस्तर ॥

दोहा-तामेंप्राणीवसतकोउ, वरणजातअरुनाम ॥ नहिंविख्यातजानोपरे, असजानहुमतिधाम ॥

ताकेउतैनिगमअसभाषे । आठकोटिउन्तालिसलाखे ॥ योजनसुवरणधरणीजानो । निरमलमुकुरसरिसतेहिमानो ॥
तामेंकोउनहिंनिवसतप्रानी।गिरीवस्तुपरतीनहिंजानी।तहँदेवअरुदेवनदारा।निशिदिनप्रमुदितकरहिंविहारा३५.३६
पुरटधरनिकेउतैउदारा । जानहुँलोकालोकपहारा ॥ ताकेउतैनरेशउदारा । कर्दमसरिसगाढअँधियारा ॥
दिनकरतेजतहांनहिंजातो । लोकालोकइनेरहिजातो ॥ इतलोकअरुउतैअलोका । नामताहितेलोकालोका ॥३७॥

दोहा-साढ़ेचारहिंकोटिनृप, योजनशयलउतंग ॥ सीमातीनहुँलोककी, सोईअहैअभंग ॥

तितनोविस्तरजितनोतुंगा । तामेंजानहुकोटिनशृंगा ॥ ३८ ॥ लोकालोकपकेचहुँओरा । धारेधरणिनागवरजोरा॥
ऋपभओरअपराजितवामन । पुष्करचूडवलीअतिपावन॥तेविरंचिकेयापितकीन्हें । सहैचारगजधरणीलीन्हें॥३९॥
लोकालोकशैलकेऊपर । युतधरमादिकअन्त सिपिवर ॥ लेपार्षदविष्वक्सेनादी । धारेआयुधअतिअहलादी ॥

युतश्रीभगवाना।करनहेतजीवनकल्याना॥४०।४१॥वरण्योंजौनमहाअँधियारा।ताकोसुनहुभूपवि
वारहिकोटी। छाईअँधियारीअतिमोटी॥

हा-भूपमहातमकेउतै, कोटिनयोजनमाँहिं, हैविकुंठयदुपतिनगर, जहँयोगीजनजाहिं॥४२॥
पहब्रह्मांडहिमध्यमें, भ्रमतरहैदिनईश॥ साढ़ेबारहिंकोटिनृप, योजनचहुँकितदीश॥
तातेयहब्रह्मांडहै, योजनकोटिपचास॥४३॥ मारतंडरवियाहिते, मृतअंडहिकरवास॥
हिरण्मयोब्रह्मांडयह, तामधिकरहिंनिवास॥ हिरण्यगर्भतातेभयो, रविकरनामप्रकास॥४४
दिशाव्योमनरकहुस्वरग, असधरणीविभाग॥ अतलादिकअपवर्गहू, रवितेहोतविभाग॥४५
सुरनरतिरयकआदिसब, जेजगकेहैंजीव॥ तिनकेनेत्रअधीशरवि, यहजानहुमतिसीव॥४६।

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधेविंशस्तरंगः॥२०॥

श्रीशुक उवाच।

हा-यहवरणनभूगोलको, मैंसिगरोकहिदीन॥ अबखगोलवरणनकरौं, सुनियेभूपप्रवीन॥
ुटकरवेशा। एकउपरइकतरेनरेशा॥१॥ ऐसेहैभूगोलखगोला। अंतरिक्षजोसोमधिपोला॥२॥
क्षमधिभानू। करहिप्रकाशितदशहुनिशानू॥ अहैतीनगतिदिनकरकेरी। शीघ्रमंदअरुसमहुनिरे
घटतदिनराती। समहुहोतकहुँहैअरिपाती॥३॥ रविजबतुलामेषमहँजावे। तबदिनरातसमानहिभ
धुनकर्कसिंहकन्या। इनमेंजबआवैरविधन्या॥यकयकदंडहियकयकमास॥बाढतवासरलहिनिशिनास
यकदंडहिराती। सुनिभूपतिक्रमतेबढ़िजाती॥४॥

हा-वृश्चिकअरुधनमकरहू, औरकुंभअरुमीन॥ इनकेरविमेंबढ़तनिशि, होतदिवसतिमिछीन॥५।
जबलोंदक्षिनायन।चढ़तदिवसजबलोंउत्तरायन॥६॥ नवकरोरइक्यावनलाखा॥योजनमानसउत्तरभा
हिमाँहअसखंडल। शैलमानसोत्तरकोमंडल। ताकेउपरउपरादिनराई। मेरुप्रदक्षिणकरतसदाई॥
नसागिरिपाहीं। वासवनगरीबसतसदाहीं॥ नामदेवधानीहैताको। तहँनासहैनितमघवाको॥
मानसगिरिपाहीं। संयमनीयमपुरीतहाहीं॥ पश्चिमदिशासोइगिरिऊपर। वरुणपुरीनिम्लोचासुरभ
हा-उत्तरमेरुगिरीशके, मानसउत्तरमाहिं॥ विभावरीधनपालकी, नगरीबसतसदाहिं॥
जिपुरनिआवे। तबदिनरातिसमानाहिभावे॥ जबआवेयमपुरीदिनेशा। मध्यदिवसतबहोतनरेशा॥
. . . धनदपुरीजबजाहिदिवाकर। अर्द्धरातिइतहोतिभूपवर॥
[illegible] ॥ तिनकोनिशाकबहुँनहिहोती॥सदारहततदिनकरकेरी
इचंद्ररवितारा।जानिपरतपश्चिमसंचारा॥८॥ तहँगनिउदयपरदिहगजोही।तेहिसन्मुखपुनिअस्तहुराही
दा-इंद्रपुरीजबरविरहहि, तबयमपुरीप्रभात॥ वरुणपुरीमहँभूपतब, कालनिशीथदेखात॥
ंग्याहिजानो। असविभागऔरहुदिनरातो॥ जौनपुरीऊपररविआवे। नृपतहँमध्यदिवसहैनावे॥
ागविउदितदेखाही।नहप्रभ्वनैदिकदनसदाही॥तिनकोनहींअस्तलखिपरहीं।तेजनपश्चिमताहिउचरही
[illegible] अरुपनदत्तरसदसहुभापा॥ इननेयोजनजाहिदिनेशा। पंद्रहिदंडहिमाहिनरेशा।
पुरिनिनदेखाही।पंद्रहिपंद्रहिदंडहिमाही॥[illegible]॥उदयअस्तलखिपरहिअपार॥११॥
[illegible]॥ जाहिदंडपुनमदंगरिगंजन॥१२॥
हा-[illegible]॥ मोमुनिपोनि[illegible], [illegible]भूपप्रमपान॥

सिगरोरथजानो । संवतसरचक्रहिअनुमानो ॥ द्वादशमासहिद्वादशआरा । पटऋतुहैपटनेमिउदारा ॥
सत्रयमासहुतीना । असजानहुयहभूपप्रवीना । मेरुमानसोत्तरगिरिताकी । धुराजानियेपरमप्रभाकी ॥
रथनृपराई । नभमहँपवनअधाररहिपाई ॥ शैलमानसोत्तरकेऊपर । योजनसहसपचासहुकेपर ॥
रिहुओरा । चलतचक्ररविकोजवजोरा ॥ तौनधुरामेंदियोसुनाई । तासुस्थूलताकहोंवुझाई ॥
दोहा–एककोटिसत्तावने, लक्षसहस्रपचासु ॥ एकओरकीस्थूलता, इतनेयोजनतासु ॥ १३ ॥
साढेसेंतिससहसअरु, लाखहुउन्तालीस ॥ एकओरकोजानिये, ताकोधुरामहीस ॥
धुराध्रुवलोकहिलोहै । मारुतवंधनसकलवँधोहै ॥ १४ ॥ रथकेउपरकेरचौडाई । योजनछत्तिसलाखगनाई ॥
खा । सप्ततुरंगवेदमयभाषा ॥१५॥ अरुणनामसारथीभानुको ॥ ताहिजानियेविनाजानुको॥
रजकेसन्मुख।हाँकतवाजीनिरखतरविमुख॥१६॥वालखिल्यमुनिसाठहजारा।तिनकेहैतिहिदिशाअगारा ॥
अस्तुतिकरतसदाहीं । रविसन्मुखमुखपाछिलतजाहीं॥१७॥ऋषिअप्सराऔरगंधर्वा।नागडाकिनीरक्षसपर्वा ॥
दोहा–येसातहुगणसंगमें, पृथकपृथक्करिनाम ॥ अस्तुतिकरहिंदिनेशकी, गायगायगुणग्राम ॥ १८ ॥
इक्यावनलाखैनृपति, अरुनवकोटिसुजान ॥ शैलमानसोत्तरहिको, मंडलकेरप्रमान ॥ १९ ॥
योजनयुगलहजारअरु, युगलकोशरविजान ॥ एकहिक्षणमहँजातहै, ऐसोअहैप्रमान ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कंधेएकविंशस्तरंगः ॥ २१ ॥

दोहा–सुनिमुनिकेअसवचननृप, अतिशंकाउरआनि । बोलतभोशुकदेवसों, जोरिजलजयुगपानि ॥

राजोवाच ।

स्वयहवरण्योमुनिराई । रविअरुशशितारासमुदाई ॥ मेरुहिध्रुवाहिप्रदक्षिणदेही । तौपूरवगतिभैविधिकेही ॥
हविरुद्धलागतमनमाहीं।काहियकृपाकरिमुनिमोहिपाहीं॥१॥सुनतपरिक्षितकेअसवैना।कहनलगेशुकदेवसचैना ॥
मिकुलालकोचक्रनरेशा । भ्रमतोदक्षिणओरहमेशा॥अरुपिपीलिकाचढितिहिमाहीं।यद्यपिजाहिवामदिशिकाहीं॥
धदिचक्रचलतचहुँघाही । तेहिदिशितेउलखतभ्रमाही ॥ ऐसहिचंद्रसूर्यअरुतारा । यद्यपिगमनहिंपूर्वअपारा ॥
दोहा–तदपिचक्रकेवेगवश, दक्षिणगतिदरशाहि । येद्वादशआदित्यनृप, नारायणअतिआहि ॥
करनेहितलोकनकल्याना । द्वादशरूपभयेभगवाना ॥ वसंतादिपटऋतुकेधर्मा । प्रकटावतजगदायकशर्मा ॥२॥३॥
दविहितविधिजेरविध्यावें।तेजनमंगलआशुहिपावें ॥४॥ भोगहिजवरविद्वादशराशी । सोसंवतभापतमतिराशी ॥
ाईद्वादशमासकहावे । युगलपक्षप्रतिमासहिभावे ॥ नरकोमासपितरदिनएकू । वदिदिनसुदिनिशिकियोविवेकू ॥
नक्षत्रऔरयकचरना । एकमासभोगहितमहरना ॥ युगलमासकीइकऋतुहोई । पटऋतुवर्षकहैसवकोई ॥ ५ ॥
दोहा–अयनएकपटमासकी, द्वैअयनहिकोवर्ष । चंद्रमासअरुमासरवि, येद्वैसुनहुसहर्ष ॥ ६ ॥
चंद्रमासमहँपटादिनघटहीं । सूर्यमासमहँपटादिनवढ़हीं ॥ संवतसरपरिवत्सरजानो । इडवत्सरअरुवत्सरमानो ॥
अरुवत्सरयेपांचहुनामा । संवतकेजानहुमतिधामा ॥ चंद्रमासकेर्ताजेसाला । होतएकअधिमासभुवाला ॥ ७ ॥
हितेयोजनलक्षहिभानू । तेहितेलखयोजनसितभानू ॥ जेतोसंवतमहँरविजाहीं । तितनोशशियकमासहिमाहीं ॥
जाहिभानुयकमासहिजितनो । सवाद्वैदिनामहँशशितितनो॥८॥चंद्रकलासुरगणहरिलेहीं । तेसहिफिरपूराकरिदेही॥
हरयोजबेसोइकृष्णकहावे । पूरकियोसोइशुक्रगनावे ॥ ९ ॥
दोहा–एकनसतशशिभोगतो, साठदंडमहिपाल । सबजीवनजीवनप्रदे, षोडशकलाविशाल ॥
अमृतमयोअन्नहिमयो, मानसमयोमयंक । अहंतादितेसर्वमय, गवनतगगननिशंक ॥ १० ॥

किउपरतीनलखयोजन। नृपअट्ठाइसअहैनखतगन॥ इनकीहैपूरवगतिनाहीं।चक्रहिगतितेचलतसदाहीं॥११॥
तउपरयोजनद्वैलच्छा। असुरपुरोहितराजतस्वच्छा॥शीघ्रसमानऔरगतिमंदा। शुक्रतीनिगतिकहमुनिवृंदा।
शीघ्रगतिमहँजवजावे। तवरविकेआगूदरशावे॥ चलहिअसुरगुरुजवगतिमंदा। तवरविपाछूरहहिविलंदा॥
जवेसमगतिकहँगहही। तवदिनकरकेसंगहिरहही॥ सदारहेजीवनअनुकूला। कोहुकेकवहुँनहीप्रतिकूला॥
दोहा--अतीचारजवशुक्रको, होइवृष्टितवहोइ। वृष्टिविरोधीग्रहणफल, अवशिडारतीखोइ॥ १२॥
सीगतिजानहुबुधकेरी। औरवातकछुकहौनिवेरी। कवितेपरयोजनद्वैलाखा। बुधकोअस्थलमुनिजनभाखा॥
धवहुधाजीवनहितकारी। सदासंचरतसंगतमारी॥ कवहुँजोहोतविलगरवितेरे। रहहितवैरविकहयनघेरे॥
तिप्रचंडतहँवहतनयारी। वृष्टिनहोतसृष्टिसुखकारी॥१३॥युगललक्षयोजनवुधकेपर। जानहुनरवरमंगलकेपर॥
डेढमासभोगतइकरासी॥यदिनवक्रगतिहोतविलासी॥वहुधाकरतअशुभजनकाहीं॥गनतपापग्रहसुमतिसदाहीं॥१४॥
दोहा--मंगलकेऊपरनृपति, द्वैलखयोजनमाहि। अहइवृहस्पतिसुरगुरू, सुखदायकद्विजकाहि॥
यदिनवक्रगतिसुरगुरुभोगै। तौइकमासवर्षभरभोगै॥१५॥ ताकेपरयोजनद्वैलाखा। रहहिंशनैश्चरकविगनभाखा॥
तीसमासभोगतइकराशी। चलतग्रहनपीछेतमराशी॥ सवकोहैदुखदायककोरा। अहैक्रूरग्रहअतिवरजोरा॥१६॥
शनिकेउपरउतरदिशिपाहीं। एकादशयोजनलखमाहीं॥ जानहुनृपसप्तर्षिनिवासा। तेध्यावहिंनितरमानिवासा॥
अचलकृष्णपदअतिअभिरामा। जाकोकहैंसवैशुधिधामा॥ तेहिसप्तर्षिप्रदक्षिणदेही। जामेंसुखपावहिसवदेही॥
दोहा--कश्यपअत्रिवशिष्ठहू, गौतमविश्वामित्र, भरद्वाजजमदग्निअरु, हैसप्तर्षिपवित्र॥ १७॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवान्धवेशश्रीमहाराजविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धि
श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधेद्वाविंशस्तरंगः॥ २२॥

शुक उवाच।

दोहा--सप्तऋषिनकेउपरनृप, योजनतेरहलाख। अहैविष्णुकोअचलपद, ऐसोमुनिजनभाख॥
तहांवसतभागवतउदारा। ध्रुवउत्तानहिपादकुमारा॥ अगिनिइंद्रप्रजापतिधर्मा। अरुकश्यपदायकजगशर्मा॥
नखतरूपतेपरमसनेही। ध्रुवहिसदापरदक्षिणदेही॥ जियहिकलपहूभरजेजीवा। तिनकेध्रुवआधारअतीवा॥
ध्रुवमहराजचरित्रसोहावन। पूरवमेंवरण्योअतिपावन॥१॥रविअरुचंदनखतअरुतारा॥भ्रमतरहैंतेव्योमअपारा॥२॥
जैसेमेढीखंभहिंमाहीं। वँधेवैलचहुँओरफिराहीं॥ ऐसेचक्रगथेसवतारा। भ्रमतरहहिलहिपवनअपारा॥
दोहा--जैसेमेघविहंगवहु, लहिकेपवनअपार। नभमंडलमहँफिरतहै, गिरहिनधरणिमँझार॥ ३॥
कोइतेहिकहहिचक्रशिशुमारा। कालचक्रकोउकहहिउदारा॥४॥ पुच्छउपरनीचमुखताको। रूपजासुहैपरमप्रभाको॥
ध्रुवमहराजहाथतेहिपुच्छा। कुंडलसोहैचक्रप्रतिच्छा॥ पुच्छमध्यमहँसुवसेचारी। ब्रह्माअगिनिपरमपविधारी॥
पुच्छमूलमहँधातविधाता॥कटिमहँहैसप्तर्षिविख्याता॥दक्षिणआवर्तहितिहिकुंडल। तेहितनसकलनखतकरमंडल॥
नखतचतुर्दशदक्षिणऐना। वामअंगमहँहैमतिऐना॥ उत्तरायणकेनखतचतुर्दश। दक्षिणअंगमाँहतेहैंतस॥
दोहा--पवनपंथतेहिपीठमें, अहैउदरनभगंग॥ ५॥ नखतपुनर्वसुपुष्यद्वै, उभयनितंवअभंग॥
आर्द्राअरुआश्लेषादोई। पाछेकेपायनमहँहोई॥ अभिजितऔरउत्तराषाढ़े। अहैनासिकामहँसुदवाढ़े॥
श्रवणपूर्वाषाढ़सुवेशा। दक्षिणवामहिनेत्रनरेशा॥ दक्षिणवामहिकाननमाहीं। रहतधनिष्ठामूलसदाहीं॥
। वायेंपार्श्वरहतनृपतेते॥ पूर्वभाद्रमृगशिरपर्यंता। दक्षिणपार्श्वहिमहँमतिवंता॥
। दक्षिणवामहिकंधदेखाई॥६॥ दक्षिणकपोलहिकुंभजराजे।वामकपोलहिमहँयमसाजे॥
। ककुदवृहस्पतिरविहैउरमहँ॥

दोहा-हियमेंनारायणवसें, मनमेंअहैमयंक ॥ शुक्राचारजनाभिमें, निवसतभूपानिशंक ॥
दोउहस्तअश्विनीकुमारा । प्राणअपानहुवुधौउदारा ॥ ताकेकमरमाँहहैराहू । सकलकेतुअंगननरनाहू ॥
सिगरेरोमनमहँसवतारा ॥ ऐसोहैचक्रवशिशुमारा ॥ ७ ॥ सत्यप्रत्यक्षरूपहरिकेरो । सकलदेवमेंकियोनिवेरो ॥
जोकोउजननितसंध्यामाहीं । शुचिह्वैदरशनकरहिसदाहीं॥पठियहमंत्रहिकरहिप्रणामा॥सोतवहोयआशुमतिधामा ॥
रैनदिवसकेपापनशाहीं । यामेंहैकछुसंशयनाहीं ॥ ग्रहनक्षत्रऔरसवतारा । इनकोहैशिशुमारअधारा ॥
दोहा-धराधीशधनिधनिध्रुवै, त्रिभुवनमेंकुरुनाथ ॥ कृष्णरूपशिशुमारयह, रहतसदाजेहिहाथ ॥
अथमंत्र-नमोज्योतिर्लोकाय कालायननायानिमिषां पतये महापुरुषाय धीमहिति ॥ ८ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा-
राजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कंधेत्रयोविंशस्तरंगः ॥ २३ ॥

शुक उवाच ।

दोहा-अवसुनियेनृपधरणिके, नीचेकोविस्तार ॥ सूरजसोपाताललों, मैंसवकरतउचार ॥
योजनदशहजाररविनीचे । अहैराहुमंडलनभवीचे ॥ कहहिनक्षत्रसरिसकोउताको । कज्जलगिरिसमहैवपुजाको ॥
यद्यपिअसुरअहैनहिंदेवा । कृष्णकृपालहिंसोनरदेवा ॥ भयोदेवग्रहमधिकियवासा । तासुजनमअरुकरमप्रकासा॥
अष्टमअसकंधहिमहँआगे । कहिहोंसकलभूपवडभागे॥१॥दशहजारयोजनरविमंडल।द्वादशसहसमयंकअखंडल ॥
तेरहसहसराहुविस्तारा । ताकीसुनियेकथाउदारा ॥ रूपछिपायराहुसुरमाहीं । चह्योपियनपियूषहिकाहीं ॥
सुधापियतरविशशीवतायो । मारिचक्रहरिशीशगिरायो ॥
दोहा-सोईवैरविचारिकै, पर्वपाइनरनाहु ॥ रविशशिसन्मुखधावतो, अतिरोषितह्वैराहु ॥ २ ॥
लीलतजानिचंदरविकाहीं । करिकैकृपाकृष्णमनमाहीं॥चपलचलावहिचक्रहिघोरा । आवतसोरविशशिढुतठोरा ॥
तासुतेजतपिभागतराहू । लीलिनसकतसुनहुनरनाहू ॥ जवलोंरहतराहुकीछाया । सोईग्रहणअहैनृपराया ॥३॥
शशिरविरिपुनीचेनभपाहीं । नृपयोजनदशसहसमाहीं ॥ विद्याधरसिधिचारणकेरे । अरुगंधर्वननगरघनेरे ॥ ४ ॥
तिनकेनीचेसुनकुरुराई । भूतपिशाचप्रेतसमुदाई ॥ राक्षसयक्षनकरअस्थाना । करहिंविहारतहाँविधिनाना ॥
नौसैयोजनसहसउनासो । येसवविचरहिंअतिसुखरासी ॥
दोहा-जहँलोमारुतवहतअति, जहँलगिजाहिंपयोद ॥ ५ ॥ प्रवहवायुशतयोजनै, नीचेमहिप्रदमोद ॥
प्रवहवायुलगिवारिदजाहीं । पननीचेहंसादिउडाहीं ॥ धरणीतेखगगतिपरयंता । सोभूलोकगनहुमतिवंता ॥ ६ ॥
वरण्योंपुरुषधरणिप्रमाना । अवआगेसुनियेमतिमाना ॥ सातलोकहैभूकेनीचे । दशदशसहसयोजनहिवीचे ॥
तिनकोअससुनियेविस्तारा।जहँलोंअंडकटाहअपारा॥प्रथमअतलपुनिवितलविचारो।सुतललोकपुनिकियोउचारो॥
फेरितलातलफेरमहातल । जानहुभूपतिफेररसातल ॥ ताकेनीचेअहैपताला । सातलोकयेहैमहिपाला ॥ ७ ॥
येसातहुलोकनमहराजा । अहैस्वर्गतेमोददराजा ॥
दोहा-दैत्यदानवहुअरुउरग, सुततियवंधुसमेत ॥ अनुचरअरुसुहृदहुसहित, निजनिजवसतनिकेत ॥ ८ ॥
तहँउपवनवनवागतडागा।क्रीडाअस्थलसहितविभागा ॥ दानवदैत्यहुऔरहुनागा । तहँविचरहिंप्रमुदितवडभागा ॥
ईशकृपातेतिनकरकामा।कोउनाहिंरोकिसकहिमतिधामा ॥ मैदानवविरचितमहराजा।जडितमणिनकेनगरदराजा ॥
सुवरनकेगोपुरप्राकारा। अंगनसभाउतंगअगारा ॥ शुककपोतसारिकासुहावन ॥ करहिंशोरकलअतिमनभावन॥
रतनखचितधरणीअतिराजै।विहरहितहँअहिअसुरसमाजै९अतिसोहहिंसुंदरआरामा।तिनमेंतरुगणविविधललामा ॥
फूलनफलनपत्रकेभारे । परसहिअरुणतरुणकांडारे ॥

दोहा—लपटिलतालहरैलहरैललित, निर्मलनीरतडाग॥जलविहंगबोलहिमधुर, लसहिघाटचहुँभाग॥
...हँकरहिंविहारा। उठहितरंगअभंगअपारा॥ फूलेसरसिजचारिप्रकारे। लसहिकुमुदगणतिनिमनहारे॥
...॥११॥ तहाँदिवसनिशिकीभेनाहीं।अहिशिरमणिनप्रकाशसदाहीं
...। तेनृपहैंसबसुधासमाना॥ आधिव्याधिअरुजरागलानी। स्वेदश्रमहुँअरुदेहमलानी॥
...१३॥यदुपतिचक्रविनातिनकाहीं। कबहूँमरणहोतहैनाहीं॥१४॥

दोहा—जबतिनलोकनमेंनृपति, चक्रसुदर्शनजात॥ तबहीतहँकोतियनको, होतोगर्भनिपात॥१५॥
...। जहँनिवसतमयसुतबलधामा॥
...। तिनमेंकोउककोउजनकोउपाया॥ सोइअबलोंजगमाहिंदेखाहीं। औरसवैताकेढिगमाहीं॥
...। तबत्रयनारिकर्डीमतिमाना॥प्रथमस्वैरिणीदुतियकामिनी। तृतियपुंश्चलीजनलुभावनी॥
अतलमाहिंतिनकेगणराजा॥विचरहिंचहुँकितसहितसमाजा॥जोकोउजीवअतलमहँजाहीं।ताकोनारिघेरिचहुँघाहीं

दोहा—हाटकनामहियेकरस, तिनकोदेहिपियाइ॥ भोगशक्तिअतिप्रबलदै, तिनकोरमहिरसाइ॥
करिकेबहुविधिवचनविलासा। सहितलाजअरुमंदहिहासा॥ आलिंगनकरिबारहिंबारा। तिनकोदेहिअनंदअपार
तेहिरसपानकियेजेजीवा। निजकरमानहिंसिद्धअतीवा॥ दशहजारगजजोरहिपावे। ह्वैमदांधसबसुरतिभुलावे
ऐसोजानहुअतलविधाना॥१६॥अबसुनवितललोकविज्ञाना॥ वितललोकमहँहैत्रिपुरारी। हाटकेश्वरहिनामउचारी
उमासहितनिजगणनसमेतू। रचतप्रजाविलसहिवृषकेतू॥शिवअरुशिवाशुक्रतेपावनि।बहतिहाटकीनदीसोहावनि

दोहा—पवनवेगतेबढ़िअगिनि, पानकरतसोरेत॥ पुनिथूकतसोइहोतहै, हाटकप्रभानिकेत॥
ताकोभूषणअतिछबिकारी। धारहिअसुरअसुरकीनारी॥१७॥ वितललोककेनीचेभूपा।सुतललोकहैपरमअनूपा।
तहांबसहिंश्रीबलिमहराजा। जाकोजगमेंसुयशदराजा॥ लियोजीतिवासवकोराजू। पाल्योत्रिभुवनसहितसमाजू
अदितिपुत्रह्वैवामनरूपा। वासवहितहरियाचनभूपा॥ असुरअधिपढिगकियेपयाना। त्रिपदमहीमाँग्योभगवाना॥
त्रैपदनापेहुतीनहुलोका। सबदेवनकोकियोअशोका॥ करिकेपरमकृपाबलिपाहीं। सुतलनिवासदियोतिनकाहीं॥

दोहा—देवनकोदुर्लभविभो, सोबलिकोप्रभुदीन॥ असुरअधिपअबलोंसुतल, करतनिवासप्रवीन॥
पूजतहरिकोप्रीतिबढाई। कालहुकीसोभीतिविहाई॥ १८॥ आगेकेमन्वंतरमाहीं। पैहैबलिइंद्रासनकाहीं॥
कोउअसकहहिमूढसुखमाहीं। भुवनदानदैवामनकाहीं॥लह्योअसुरपतिसुतलनिवासा।स्वर्गहुतेजहुँअधिकविलासा॥
सोनहिंसत्यअहैकुरुराई। हरिकोदाननअसफलदाई॥ सबजियअंतरयामिमुरारी। तीरथकेप्रभुतीरथकारी॥
मनहुतेजिनकहअर्पणकीने। लहतपरमपदपुरुषप्रवीने॥ तिनहिप्रत्यक्षपायबलिराई। अरप्योसबसंपतिशिरनाई॥
ताकोफलकासुतलनिवासा। ताकोफलवैकुंठविलासा॥

दोहा—जेहिसंसारहितजनाहित, योगीयतनकराहिं॥ नाशहोतसंसारसो, रामकहतमुखमाहिं॥ ...॥

सवैया—...

दोहा ...

रहीवासनाक... ॥२९॥ ...
लह्योउपायनाद्वितियमुरारी। ... । धरणीधीरधर्मधुरधा
...लित्रिभुवनवामनकहदीन्ह्यो। ... हूँबलिअसगिराउचारी
...नंदा। सोवासवसबविधिमतिमंदा॥ पायनाथयदुनाथसमाना। विभोभोगमहँरह्योलुभा
... । चाह्योतुच्छविभूतिहमारी॥

दोहा—एकमन्वंतरमेंनसत, जोयहतुच्छविभूति॥ जचवायोहरिहाथसों, कियोकौनकरतूति॥२४॥

मोरपितामहजोप्रहलादा । मांग्योहरिसोंभक्तिप्रसादा॥हिरण्यकश्यपकहहनिभगवाना । देनलगेतेहिविभवमहाना ॥
पैप्रहलादभक्तिकहत्यागी॥लियोनविभवकृष्णअनुरागी२५तिनकेसमहमकेहिविधिहोवें॥विषयभोगमहँतनमहिखोवें॥
बलिकेवचनसुनतभगवाना॥ताकोदियोसुतलअस्थाना ॥२६॥ तिनकोचरितकहेंगेआगे॥अष्टमअसकंधहिवड़भागे॥
बलिकोछलनगयेभगवाना । आपहुछलिगेकृपानिधाना ॥ गदाहाथगहिबलिकेद्वारे । खडेरहतहैंनजरनिहारे ॥
हरिकेसरिसभूपवड़भागी । कोअसदुतियदासअनुरागी ॥

दोहा–कोदूजोबलिसारिसमहि, भाग्यवानमहिपाल ॥ जाकेत्रिभुवनगुरुहरी, भयेद्वारकेपाल ॥

एकसमयतहँरावणवीरा । जगकीविजयकरतरणधीरा॥ गयोसुतलबलिजीतनकाहीं । प्रविश्योगृहनिरशंकतहांहीं ॥
रहेद्वारमहँवामनठाढे । जेनिजभक्तिप्रीतिमहँगाढे ॥ रावणकोरोंक्योभगवाना । विनपूछेकसकरहुपयाना ॥
वावनआँगुरकोलखिबालक । हँस्योठठायलंककोपालक ॥ कह्योवचनबालकतेछोटो । पैमोहिजानपरतअतिमोटो॥
अपनेतनकोभाननतोहीं । रोकनचहतगदालेमोहीं ॥ सहिहैनहिंअंगुलिहुप्रहारा । पैघमंडनहिंजातसम्हारा ॥

दोहा–असकहिप्रभुकोरेलके, भीतरचाह्योजान ॥ तहँविहँसतबलिद्वारमें, श्रीवामनभगवान ॥

दशशिरकोपदकेअँगुठासों॥फेंक्योतेहिअतिहीलघुतासों॥गिरचोसोचालिससहसकोशमें । भग्योतहांतेविगतरोपमें॥
बलिरक्षतयहिभाँतिसदाहीं । खडेरहतप्रभुद्वारेमाहीं ॥ २७ ॥ सुतललोककेनीचेभूपा । अहैतलातललोकअनूपा ॥
दानवेंद्रजाकोमयनामा । बसततहांसोअतिसुखधामा ॥ पूरवजोरचित्रिपुरनरेशा । दियोजगतकहविपुलकलेशा ॥
तवयकसायकहनित्रिपुरारी॥दियोतुरंतत्रिपुरकहँजारी॥हरिशरणागतजवमयआयो॥करिअस्तुतिचरणनशिरनायो॥

दोहा–ताकोशंकरकरिकृपा, दियोतलातलवास ॥ हरणहेतहरिचक्रभय, आपहुकियोनिवास ॥

मयमायाविनकोआचारज । बसततहाँदनुकुलकोआरज॥२८॥ताकेनीचेअहैमहातल। रहहितहांकद्रुसुतअहिभल॥
जिनकेअहैअनेकनशीशा । तिनमेंयहहैमुख्यफनीशा ॥ कुहकऔरतक्षकअरुकाली। अरुसुखेनजानहुविषशाली॥
महाशरीरजानुनृपतिनके । तेसहिमहाकोपविषजिनके ॥ पायगरुड़कीभीतिमहाई । लेनिजतियसुतकुलसमुदाई ॥
बसेमहातलमेंसवभाई । विहरहिंमत्तमहासुखछाई ॥२९॥ ताकेअधहिरसातललोका । दैत्यदानवहुवसहिविशोका ॥
तहँदानवाहिरण्यपुरवासी । औरनिवासकवचवलरासी ॥

दोहा–अरुकालेयपौलोमहू, निवसहिमोदविचारे ॥ सबैतेजसंतेजसी, अतिसाहसीसुरारि ॥

कुरुपतितिनकेगर्वप्रहारी । अहैएककेवलगिरिधारी ॥ यदुपतिकीतिमानिभीतिभल, वसहिंभुजंगसमानरसातल ॥
एकसमयवासवकीदूती । सरमानामनिपुणकरतूती ॥ इंद्रपठायोताहिरसातल । जानततहँकीखबरभाँतिभल ॥
दूतीसोदानवअसभाषे । करहिंसंधिवासवकसमापे ॥ जबदूतीअसगिराउचारी । वासवतुमहिंडारिहैमारी ॥
तवतेदानवकछुमनमाहीं । सदाडेरातसुरेशहिकाहीं ॥ यदुपतिसखापार्थबलभारी । गयोरसातलधनुशरधारी ॥

दोहा–तहांअकेलेझारिशर, कियोदानवननाश ॥ विजयपायकरिशंखध्वनि, कियपशजगतप्रकाश ॥ ३०॥

ताकेनीचेअहैपताला । तहांवासुकीनागविशाला ॥ औरहुसर्पनकोवहुजाती । तिनकेनामकहौंअरिघाती ॥
महाशंखअरुशंखधनंजय । कुलिकशेतधृतराष्ट्रविगतभय ॥ शंखचूडकंबलहुअश्वतर । देवदत्तआदिकभुजंगवर ॥
महाअमरषीतेउरगेशा । तिनकेवपुअतिवृहदनरेशा ॥ केहुकेपाँचअहैफनभूपा । कोहुकेसातअहैंसुअनूपा ॥
केहुकेदशफनजानहुराजा । केहुकेदशफनअहैदराजा ॥ कोहुकेफनहैफनेदजारा । तहँतिनकेमणिफनिडजियारा॥

दोहा–अंधकारनाशतसकल, दिनसमरहतप्रकाश । एसहिवासुकिआदिअहै, करहिंपतालनिवास ॥ ३१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधेचतुर्विंशस्तरंगः ॥ २४ ॥

शुक उवाच ।

दोहा—ताकेनीचेभूपवर, योजनतीसहजार । कृष्णकलाश्रीशेषहै, जिनकेफनहुहजार ॥
[illegible] । ऐसोजोहंकारसदाहीं ॥ ताकेस्वामीशेषफनीशा । सोहैप्रतिस्वरूपजगदीशा ॥ १ ॥
[illegible] । सरसोंसरिससकलब्रह्मंडा ॥ २ ॥ चहतशेषजबजगसंहारा । करतकोपतेहिकालअपारा ॥
[illegible] । जेहितेप्रकटतरुद्रकराला ॥ एकादशमूरतिकेधारी । त्रयलोचनत्रिशूलकरमारी ॥
[illegible] । सोईकरतजगतकरनाशा ॥ ३ ॥ शेषरूपअत्रसुनहुनरेशा । औरसबैहैनरसमवेशा ॥
दोहा—अहैकंठतेसहसफन, मनहुसहसकैलास । चारिभुजासोहतसुभग, कोटिनशशीप्रकास ॥
[illegible] वासुकिआदिकभुजंगअधीशा ॥ तिननखनितनवनावहिशीशा
[illegible] । सोईकरतजगतकरनाशा ॥ ३ ॥ औरहुभक्तसबैतहँआई । पावहिंसुखशेषहिशिरनाई ॥ ४ ॥
कुंडलद्युतिमंडलतेमंडित ॥ निरखहिनिजमुखप्रभाअखंडित ॥ औरहुभक्तसबैतहँआई । पावहिंसुखशेषहिशिरनाई । विपुलधवलभुजचारिहुचारू ।
सिगरीनागराजकीकन्या । शेषसमीपआइतेधन्या ॥ विलसितवलयविशदविस्तारू । विपुलधवलभुजचारिहुचारू । प्रभुअँगपरसिमहामुदभरहीं ॥
मानहुरजतखंभपरकाशी । तिनमेंनागसुताछविराशी ॥ चंदनकुंकुमलेपनकरहीं । प्रभुअँगपरसिमहामुदभरहीं ॥
दोहा—मदनविवशमंदहिविहँसि, ललनाललितलजाय । अहिपतिवारिजवदनवहु, अवलोकहिंटकलाय ।
प्रदमुदघूमतसरसिजनयना ॥ नैसुकअरुणकरुणकोअयना ॥ नागसुतामुखताकहिनाथा ॥ मंदविहँसकरदेहिसनाथा ॥
हैअनंतगुणसागरसोई । तातेकहअनंतसबकोई ॥ करनेहतलोकनकल्याना । वसहिविरंचिमहितलअस्थाना ॥
आदिदेवहैशांतस्वरूपा । वंदहिसुरअसुरहुतेहिभूपा ॥ विद्याधरअरुसिद्धमुनीशा । किन्नरअरुगंधर्वअहीशा ॥
अस्तुतिकरहिंचहूँदिशिठाढ़े । पुलकिततनआनँदअतिवाढ़े ॥ मदमोहितनैनाअरुणारे । मणिमालाउरमेंप्रभु
दोहा—नीलवसनसोहतसुभग, इककुंडलहैकान । एकहाथमेंहलसत, इककरमुशलमहान ॥
कंचनकीसोहतचौरासी ॥ कनककवचतनपरमप्रकासी ॥ नवकोमलतुलसीदलजामें ॥ विचविचकुसुमकलितकलि...
तिनकेझरतमधुरमकरंदा । करतपानकरिगुंजमिलिंदा ॥ ऐसीसोहतिउरवनमाला । मनुसितघनधनुइंद्रतमाल ॥
निजपापेदनविबुधगणकाही । वचनसुधाकहिविबुधतहाँही ॥ आदरसहितअनंदहिदेही ॥ तनकीतापतुरतहरिलेही ॥ ७ ॥
जोकोउकरहिशेषकरध्याना । ताकेहियकरतुरतपयाना ॥ ताकीनाशवासनानाना । प्रगटहितुरतविमलविज्ञाना ॥
दोहा—नारदमुनितुंबरसहित, ब्रह्मसभामहँजाय । शेषप्रभावहिगायअस, सबकोदेहिंसुनाय ॥ ८ ॥
छंद—जगतउतपतिपालनअरुसंहारननिजप्रेरणतेप्रकृतिकरै । जाकोरूपअनादिअनंतहुरहितसमाधिकनिगमरै ॥
जिनमेंविविधभाँतिजगसिरजतजेसबजगतअधारअहै । ऐसेशेषसहसमुखकीगतिकोसमरथमुखएककहै ॥ ९
शुद्धसतोगुणमयस्वरूपधरिअवधद्वारिकाकरिलीला । कियोउधारअनेकनपापिनगावहिजेहिजनशुभशीला
जासुमंदगतिलहिमृगपतिवनगहतमंदगतिशोभभरी । रेवतिरमणउरमिलारमनंनिशिदिनदायाहगनभरी ॥
वागतजागतागिरतपरतअरुवैठतहँसतउठतदूखैं । शेषियुगुलअक्षरयेजोजनकेहिदूकहूँमुखे ॥
ताकेपापतापसबशापहुरहतनहींलेशहुतनमें । ऐसप्रभुकोतजिमुमुक्षुजनकेहिदूजोध्यावैमनमें ॥ ११ ॥
सोहैसरसोसरिसशीशमेंसिंधुशैलसहभूगोलै । शेषअशेषचरित्रकहैकोउयदिसहस्त्ररसनहुबोलै ॥ १२ ॥
वलदुरंतऐसेअनंतप्रभुहैंअनंतजिनपरभाऊ । सकललोकनीचेनिवसहिधरिशीशसकलजगनृपराऊ ॥ १३
दोहा—यहअहीशअस्तुतिअमल, मुनिअजसहितसमाज । शेषचरणध्यावतरहत, पावतमोददराज ॥ १४ ॥
यहखगोलभूगोलसब, मैंजोवरण्योभूप । इतनेहीमेंलहतफल, पुरुषकर्मअनुरूप ॥ १५
यहजोपूरवप्रश्नकिय, सोमैंदियोसुनाय । काहसुननकीचाहअव, सोकहियेकुरुराय ॥ १६
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कंधेपंचविंशस्तरंगः ॥ २५ ॥

राजोवाच ।

दोहा-हेमहर्षियहलोकको, सुखदुखभोगविचित्र । सोकेहिविधितेहैसकल, कहियोकथापवित्र ॥
सुनिकेकुरुपतिकीअसवानी । बोलेव्याससवनसुखदानी ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच ।

जीवत्रिगुणवलमैंनृपजानो । तातेश्रद्धहुत्रैविधिमानो ॥ जाकीश्रद्धासात्विकिहोई । आनँदपावतहैजगसोई ॥
श्रद्धासोईराजसीजाकी । सुखदुखदशाहोतहैताकी ॥ जाकीहोततामसीश्रद्धा । सोजनरहतसदादुखवृद्धा ॥
यहीविचित्रभोगकोहेतू । जानहुसत्यभूपमतिसेतू ॥ २ ॥ सकलपापभोगनअस्थाना । कीन्होंविधिजैसोनिरमाना ॥
सोमैंविस्तरकरहुँवखाना । सुनियेसकलभूपदैकाना ॥ ३ ॥
दोहा-सुनतव्यासनंदनवचन, अतिमोदितमहिपाल । जोरिपाणिपंकजतुरत, बोलेवचनरसाल ॥

राजोवाच ।

कौनदेशमहँहैमुनिराई । निगमनरकसवदियोगनाई ॥ धौंत्रिभुवनकेभीतररहही । धौंत्रिभुवनकेवाहेरअहही ॥
अंतरिक्षमहँधौंमुनिगाई । किधौंभूमिमहँहैदुखदाई॥४॥सुनिकुरुपतिकेवचनसोहावन । बोलेशुकाचार्यअतिपावन ॥

शुक उवाच ।

त्रिभुवनभीतररहैसदाहीं । नरकसवैदिशिदक्षिणमाहीं ॥ जलकेउपरभूमिकेनीचे । नरकअहैदोहुनकेवीचे ॥
अग्निष्वादिजेपितरअपारा।हैंतिनकेतिहिदिशाअगारा॥निजकुलकोचाहतकल्याना।वसहितहांध्यावतभगवाना॥५॥
दोहा-नरकनिकटयमलोकहै, तहांवसतयमराज ॥ औरहुतहँयमदूतवहु, निवसतसहितसमाज ॥
कराहिपापजेजियजगमाहीं । धरियमदूतघोरतिनकाहीं ॥ तुरतहियमसमीपलैजाहीं । दंडदेतजसपापकराहीं ॥
हैअधिकारकृष्णकोदीना । तातेतिनकेरहतअधीना ॥ ६ ॥ कोइइकइसनरकवखाने । कोईअट्ठाइसअनुमाने ॥
तिनकेनामरूपअरुलक्षण । मैंतुमसोंसवकहौंविलक्षण ॥ हैतामिस्रअंधतामिस्रहु । रौरौऔरोमहारौरवहु ॥
कुंभीपाकहुकालसूत्ररुख । अरुअसिपत्रवनहुशूकरमुख ॥ अंधकूपऔरहुकृमिभोजन । अहसंदंशतप्तसुरभीपन ॥
दोहा-वज्रहिकंटकशाल्मली, वैतरणीजलपीव ॥ प्राणरोधअरुविससुनहु, लालाभक्षअतीव ॥
औरसारमेयादनजोई । अरुअवीचअयपानहुसोई ॥ येइकईसोकियोवखाना । अवसुनसातऔरमतिमाना ॥
कर्दमक्षाररक्षगणभोजन । शूलप्रोतअरुदंदशूकभन ॥ अवटनिरोधनपरजावरतन । सूचीमुखसोतहुँकहमुनिगन ॥
येअट्ठाइसनरकप्रधाना । औरहुलघुअनेकमतिमाना ॥७॥ जोकोउपरधनपरसुतदारा । हरणकरतवरवशसंसारा ॥
तौनजीवकोयमभटघोरा । कालपाशमहँवाँधिकरोरा ॥ तामिस्रहिनरकहिमहँडारे । दंडप्रचंडपीठमहँमारे ॥
दोहा-भोजनपाननदेतकछु, डरवावतवहुभाँति ॥ गिरतकहूंकहुँउठिभगत, कहुँमूर्च्छांह्वैजात ॥
अंधकोठरीमेंवँध्यो, पर्य्योरहतदिनरात ॥ हायहायमुखसोंभनत, कछुनहिंतासुवशात ॥८॥
जोकोउठगिपरधनपरदारा । हरणकरतवरवशसंसारा ॥ नरकअंधतामिस्रहुमाहीं । यमभटगहिडारहिंतिनकाहीं ॥
सुधिवुधिरहतनकछुतनमाहीं । आँखिनतेदरशतकछुनाहीं॥मारहिंलोहदंडतिहिशीशा।करतपुकारसुआरतदीशा॥
कटोमूलतरुसमगिरिपरतो।पुनिपुनिउठतभगतअतिडरतो॥अँधतामिस्रनरकमहँराजा।यहिविधिमहुयातनादराजा॥
जोकोउपुरुपअहैअहँकारी । मानतयहसववस्तुहमारी ॥ करिकैसवसोंद्रोहअपारा । पालतकेवलनिजपरिवारा ॥
दोहा-ताकोयमकेदूतगहि, रौरवनरकहिडारि ॥ तपतलोहकेदंडहनि, देतदेहकोजारि ॥ १० ॥
जेजनइतजीवनकहमारें । यमभटतिनहिंरौरवहिडारें । जेजेजीवनमारतप्रानी । तिनहिंतहाँकृमिह्वैदुखदानी ॥
काटित्वचातनमेंघुसिजाहीं । लासनछिद्रकराहिंतनमाहीं ॥ नाभिलिंगगुदह्वैतप्रविसें । नासानैनकानह्वैनिकसें ॥
मरतनहींअतिशयविलखाता । करतपुकारहायपितुमाता॥यहहैविशिखपराकरनामा । जाकेडसोंजियनहिंनामा ११
जोकोउकेवलनिजतनपाले । ताकेहितवहुप्राणिनघाले ॥ तेहियमदूतपकरिलैजाहीं । डारहिंमहारौरवहिमाहीं ॥
दोहा-तहांमांसभक्षीमहा, रुरुनामकवहुकीट ॥ चोंथिचोंथितनचामको, खायँपलोटपलोट ॥
यहिविधिवपँवीतिवहुजाहीं । परोनरकमहँमग्नोनाहीं ॥ १२ ॥ जोपशुपक्षिनकोचंडाला।नीताहिभूंजतरैमहिपाला॥

)

यकहँदुतयमदूता । डारिगलेफांसीमजबूता ॥ कुंभीपाकनरकलैजाहीं । तपततेलतहँचुरतसदाहीं ॥
महँताकहडारी । भूंजहिलैकरछुलीकलहारी ॥ मरतनहींजियकरतचिकारा। रहतनततनकरतनकसम्हारा॥
ामापशुतनमाहीं । तितनेसहसवर्षवितिजाहीं ॥ १३ ॥ करैनजोपितुकीसेवकाई । करहिंविप्रसौंवैरमहाई ॥
दानिंदाजोकोई । सुनहुयातनाजोतिहिहोई ॥

दोहा—कालसूत्रनामकनरक, योजनदशैहजार ॥ तपिततताम्रधरणीतहां, ज्वालाउठतअपार ॥

मात्रउपररविरहही । तातेतहँअँगारगनझरही ॥ तेहिपापीकहयमभटपकरी । डारहिंतौनभूमिमहँजकरी ॥
ततेहिअतिक्षुधापिपासा॥मिलतनहींभोजनजलवासा॥कहूँगिरतकहुँउठतपुकारत।चटपटातचहुँओरनिहारत ॥
ढ़होतकहुँपुनिकहुँधावै । जरतअंगकहुँजियकढिजावै॥पूरवकरणीकोसुधिआवै।कहाकियोबहुमनपछितावै॥१४॥
नआपतिजोअघअनुरागै । वेदविदितनिजमतिकोत्यागै॥ उदरनिमित्तकरहिपाखंडा । ताकोगहियमदूतप्रचंड॥

दोहा—नरकघोरअसिपत्रवन, जहँअसिसमतरुपत्र ॥ पापीप्राणिनडारिकै, मारहिंताजनतत्र ॥

तरुकेदलकृपाणसमलागै ॥ छिन्नभिन्नकैजातशरीरा । उपजतदुसहदेहमेंपीरा ॥
चीतकारकरिचहुँदिशिभागै । पगपगमहँगिरतोदुखपागै ॥
हायमरयोमैंकहतपुकारी । मुरछितहोतपरतेभारी ॥ पुनिउठिभागतताजनलागे । करहिनिसाफननीतिविचारी ॥
ऐसोनिजमतत्यागनहारा।पावतदुखयमराजअगारा॥१५॥जोभूपतिभूपतिअधिकारी। तिनकोयमभटढुतगहिलेही ॥
देहिअदंडिनदंडउदंडा । देहिनदंडिनकोअतिदंडा ॥ देहदंडविप्रनकोदेही ।
शूकरमुखनरकहिमहँगेरै । उखसरिसताकोतहँपेरै ॥

दोहा—पीसिजातसबअंगहैं, पैनहिंनिकसतजीव ॥ चीतकारकरतोअमित, मुरछितहोतअतीव ॥

विनअपराधिनजसदुखदेतो । तैसहितहँआपहुदुखलेतो॥१६॥माछीमसादंशखटकीरा। चीतरजुवाआदिसबकीरा॥
इनकीवृत्तिरचीभगवाना । करहिमनुजतनशोणितपाना ॥ जानहिनाहिंकक्षुविथापराई । तिनकोजेमारहिनृपराई ॥
तेजीवनयमभटगहिभूपा । डारहिंनरकअंधअतिकूपा ॥ पशुपक्षीकृमिकीटअपारा । जिनकोजीवजानिजगमारा ॥
तेजियअंधकूपमहँतिहिजन । चोंथिचोंथिकेखातछनहिछन ॥ कहूँचेतकहुँहोतअचेतू । कठनकूपतेलहतननेतू ॥
जैसेकुत्सिततनमहँजीवा । लहतअनेककलेशअतीवा ॥ १७ ॥

दोहा—मीठपदारथकोउपुरुष, विनवाटेजोखाय ॥ पंचयज्ञजोनाहिकरत, विनअरपेयदुराय ॥

तेहियमभटकृमिभोजननामा । नरकदेहिजोअतिदुखधामा ॥ शतसहस्रयोजनचौंडाई । हैकीरनकोकुंडमहाई ॥
सोइनिवसतकृमिकुंडहिमाहीं।खातकृमिहिकृमिहूतिहिखाहीं ॥ लक्षवर्षतिहिनरकहुमाहीं।कृमिसमकरतनिवासतहाँहीं॥
जोकोउद्विजकोकनकचुरावै । अथवावरवसधनहरिलावै ॥ अथवाविनाहिविपत्तिपरेही । धनचुरायऔरकरलेही ॥
सोसंदंशनरकमहँजावै । यमभटहाथदंडअसपावै ॥ तपतलोहकेरचिचहुगोला । धरहिसुलेतनपरहिफफोला ॥
चटपटातचहुँओरतहँ, छूटनपावतनाहिं । चीतकारक्षणक्षणकरत, मरतनजरततहाँहिं ॥ १९ ॥

दोहा—जोकोउगमनकरतपरदारा । अथवातियपरपुरुषविहारा ॥ अथवाब्राह्मणवश्याराखे । क्षत्रीविप्रनारिअभिलाखे ॥
ताकोडारिलगमहँफाँसी । लेगमनाहियमभटबलराशी । रचितहँतपितलोहकीनारी । तेहिलपटाइदेहितनजारी ॥
तपितलोहकेपुरुषबनाई । तियतनमेंतसहीलगाई ॥ चटपटातसोछुटननपावै । नाहितनतेजीवहुकढिजावै ॥
चाबुकचारउपरतमारे । मिलहुमिलहुअसवैनउचारे ॥२०॥ जोकोउगवनकरैपशुजोनी ।वरकेनाहिकोनिहुअनहोनी॥
ताकायमभटयमपुरमाहीं । मारतकसाकरेलतजाहीं ॥

दोहा—तहाँलोहकोअतितपित, सेमरवृक्षविशाल । तामेंकाँटाचोखअति, ज्वालाउठतिकराल ॥

तामेंतेहिपापीकहँगारे । सहसनवरपताहिनहिंछोरे ॥ करततहाँअतिआरतशोरा । तापरताडतताजनघोरा॥२१
जोकोउराजाराजकुमारा । अथवातियवओरसरदारा ॥ मेटहिसकलधर्ममरयादा । करहिपखंडपंथप्रतिपादा ॥
... पनवकानाहिमान। भजेभूततजिकेभगवान ॥ हैपरलोकमृपाअसकहहीं । तिनकोयमभटआशुहिगहहीं
पगिरान ...नरनी । तामेंडारहिगुनितिहिकरनी ॥ बहुतपावमलमूत्रहुमेदा । नसअरुहाडकेशप्रदसदा
दोहा—भरासदानाहिसारतमं, फलतिअतिदुखवास । सोपापीतहँबहतानित, सातनकरउरुमास ॥
मलमूत्रहुआपहुनिवसाई।कहुँदहडतकहुँपुनिउतराई॥तहँसुधिकरिकैनिजकृतपापा।बारहिंबारलहतअनुताप

दासीअरुगणिकारापे । जेवरजेतिनपेअतिमापे ॥ छोडतसिगरोधर्मअचारा । करतननेवरनीकविचारा ॥
रनकबहूँकेहुकीलाजा । मातुपितागुरुभ्रातहुराजा ॥ ऐसेपापीजबमरिजाहीं । तबयमभटयमपुरलेजाहीं ॥
ीत्रमूत्रमलरक्तखकारा । याहीकोतहँसिंधुअपारा ॥ तामेंनितपापिनकहँडारें । बोरहिंअरुपुनिताहिनिकारें ॥
ोईखातनिवसततेहिमाहीं । लाखनवरपनरहततहाहीं ॥

दोहा–जोअरुक्षत्रीब्राह्मणहुँ, पालैखलअरुश्वान । सोयमपुरमेंपावतो, इहिविधिदंडमहान ॥ २३ ॥

तरणीनामासरिमाहीं । परोखातमलमूत्रहुकाहीं ॥ वर्षहजारनतहँदुखपाई । होतश्वानगर्दभमहिंआई ॥
जोक्षत्रीअरुविप्रउदारा । वैश्यहुशूद्रहुआदिअपारा ॥ विनायज्ञजपशुवधकरहीं । खेलिशिकारमृगनसंहरहीं ॥
तिनकोयमभटयमपुरमाहीं । बांधिअंगतरुमहँलटकाहीं ॥ लैधनुपऔरासितवाना । छेदहिंतिनहिंवनायनिशाना ॥
लगतवानसोंकरतपुकारा । यहिविधिवीततवर्षहजारा ॥२४॥ जोपाखंडीयहजगमाहीं । काटहिंभैंसनबकरनकाहीं ॥

दोहा–जाहिंरजगमेंहोनहित, ठानहिंऐसोयाग । तिनकोयमपुरमेंसुनहु, जोनदशाबड़भाग ॥

तेपापिनकोगहियमदूता । वेशसनरकडारिमजबूता ॥ तिनकेअंगनतिलतिलकाटैं, पुनिपुनिजोरहिंपुनिपुनिछाटैं ॥
यहिविधिवीततहिवर्षहजारा।कबहुँनतहँतेहोतउवारा२५जोनिजजातियुवतिकहमानी।कामविवशअतिशयसुखमानी।
रेतापियावतहैमुखमाहीं । कोकशास्त्रविधिकरतसदाहीं ॥ सोपापीयमपुरहिसिधाई । लालाभक्षनरकमहँजाई ॥
वीर्यकुंडमहँपरतवागे । वीरजपियतमहादुखपागे । यहिविधिवीतजातवहुकाला । भोगतनिजकृतकर्मकराला२६॥

दोहा–जेजारहिंवहुग्रामघर, पापीआगिलगाइ । देमाहुरमारहिंमनुज, धनसबलेंहिंचुराइ ॥

राजाअरुराजकेचाकर । लूटहिंगांवतियनदेसांकर । यमभटलेतिनपापिनकाहीं । नरकसारमेयादनमाहीं ॥
डारहिंबाधितासुसबअंगा । तहाँसातसेश्वानउतंगा ॥ जिनकेदंतकुलिशसमअहहीं । श्वानसवैतिहिपापिहिगहहीं ॥
फारहिंउदरचामतिहिचावें।तबहूँतिनकेजीवनजावें ॥ घसिलावेंतिनकोचहुँघाहीं । चीतकारतेकरतसदाहीं ॥
यहिविधिसंवतसहसविताहीं।सहतयातनायमपुरमाहीं ॥२७॥ जोनियावमेंसाखीभयऊ । धनलैझूठसाखिकहिदयऊ॥

दोहा–लेनदेनमेंजोकह्यो, धनवहुझूठवताइ । तिनहिंअवीचिनरकविच, यमभटदेहिगिराइ ॥

तहँशतयोजनशैलउतंगा । तिनपापिनयमभटयकसंगा ॥ शैलशृंगपरतिनहिचढाई । नीचेशिरकरिदेहिंगिराई ॥
नीचेकोशिरपरमकठोरा । जानिपरतजलभरोअथोरा ॥ गिरतपरतजवतेहिथलमाहीं । तिलतिलअंगभंगह्वैजाहीं ॥
तदपिनजीवकढततनतेरे । पुनिपुनिजेयमदूतघनेरे ॥ लेशैलतेइतिनहिगिरावें । यहिविधिसहसनवर्षवितावें ॥२८॥
जोब्राह्मणअरुब्राह्मणनारी । करहिंसुरापानहिंअविकारी ॥ क्षत्रीऔरवैश्यअज्ञाना । करहिंयज्ञमहँसोमहिपाना ॥

दोहा–क्षत्रीवैश्यहुशूद्रहू, वैष्णवव्रतरतहोय । अतिप्रमोदसोमदपियै, ताहिदंडअसहोय ॥

यमभटडारिफाँसगलमाहीं । लोहपाननरकहिलेजाहीं ॥ करिकैकसाप्रहारअघाता । तिनकीछातीमहँदैलाता ॥
पावकमहँबहुलोहगलाई । तिनकेमुखमहँदेहिंपियाई ॥ भीतरवाहरतनजरिजाई । कहतनजियऐसेसुखपाई ॥
वारवारप्रतिवारपियावें । यहिविधिवर्षवीतिवहुजावें ॥२९॥ जेकोउतपविद्याद्भुतज्ञानी।तिनहिनवंदेजोअभिमानी ॥
अथवाविद्यागर्भहिभारिके । कहतमनुजसज्जनहिनिदरिके॥तपवरणाश्रमऔरविचारा । इनमेंकरिअभिमानअपारा ॥
पूजेनहिंहरिदासनकाहीं । ताहिहोतअसयमपुरमाहीं ॥

दोहा–ताकोयमभटजातलै, नरकजोकरदमद्वार ॥ काटिअंगभरिलौनबहु, ताजनहनैअपार ॥

पुनिनीचेमुखकरिलटकावें । ताकेनीचेअगिनिलगावें ॥ जरतवदननिकरैनहिंप्राना।जाहिवर्षइहिविधिसहसाना ३०॥
जोकोउभैरवभूतभवानी । देहिमनुजवलिअसजियजानी ॥ अरुनारीजेआमिषखावें । तेजीवनपरदयानलावें ॥
जेपतिकीनिंदामुखगावें । तेयातनामेरअसपावें ॥ ताकोडारहिंद्रुतयमकेगन । नरकनामरक्षोगनभोजन ॥
जगमहँजेजीवनकहमारें । तेईतहँराक्षसतनधारें ॥ श्यामशरीरवदनअतिघोरा । वज्रसरिसनखदंतकठोरा ॥

दोहा–तेराक्षसकरचालते, आशुहिउदरविदारि ॥ पानकरहिंशोणितसुखद, सिगरीआँतनिकारि ॥

गावहिंनाचहिंदैदैतारी।पुनिपुनिखाहितासुतनफारी॥मराहिनसोजियकरतचिकारा । वीतहियाहिविधिवर्षहजारा३१॥
जेवनकेअथवाघरकेरे । पालिपशुनअरुविहँगघनेरे ॥ अथवाछलकरिफंदफँदाई । माराहितिनहिखिलाइखिलाई ॥
जीतहिशूलत्राणमहँछेदे । मनमहँमानततासुनखेदे ॥ मरेतिनहियमभटलैजाहीं । शूलप्रोतहीनरकाहिमाहीं ॥

। तैसहितहँयमभटप्रतिकूला ॥ गुदतेमुखलौंशूलहिडारी । मारहिंताजनकीखलभारी ॥
। तेहैगृध्रकंकअरुकाका ॥
दोहा—वज्रसरिसतिनचोंचहै, अतिलंबेअतिचोप ॥ तेविहंगचहुँओरते, तिनपैकरिअतिरोप ॥
हिआँतनिकारें । तासुमांसकोकरहिअहारे ॥ तदपिनमरतजियतहैपापी । भूखपियासहुतेसंतापी ॥
। लहतमहादुखवर्षहजारा॥३२॥जेप्राणिनकोक्रूरसुभाऊ। राखहिंशीलसकोचनकाऊ॥
। सबप्राणिनकीचुगलीकरही ॥ नरकदंदशूकहिमहजावे । तहँयातनामरेअसपावे ॥
। जिनकेमुखनिकसतविषआँचा ॥ परमउग्रहैवृहदशरीरा । देखतहींउपजतअतिपीरा।
दोहा—जेकोउप्राणिनकूपमें, निरदयदेहिंगिराय ॥ शैलकंदराडारहीं, कुठरीदेहिधँधाय ॥
। कुठरीजहँअँधियारअकूता ॥ तामेंधाँधिदेहिवरियाई । पुनितेहिमहँपावकसुलगाई
तामेंडारिदेहिविषघोरा । धुवाँभरतकुठरीचहुँओरा ॥ तातेनैनफूटियुगजाहीं । होतकलेशपरमतनमाहीं ॥
तऊनतनतेनिकसहिप्राना । धँधेवर्षवीतेसहसाना ॥३४॥जोकोउअतिथिसाधुअभ्यागत।आयेद्वारनतेहिअनुरागत
देखतहींदेखतदृगटेढे । टरहुटरहुमुखतेअसरेढे ॥ गृहमेंधनहैपैनहिंदेही । मानिआपनोरिपुतिहिलेही ॥
मीठेवचनवहुरिनहिंबोले । संचितधनकुठरीकिमिखोले ॥
दोहा—सदासाधुद्रोहीरहै, चितवहिंकवहुँनसीध ॥ तिनकोयमपुरमेंसुनहु, काककंकअरुगीध ॥
निजपंजनसोंपेटहिफारैं । चोंचनचोषनचपननिकारैं ॥ छटपटातछूटतहैनाहीं । गहैवाजजिमितीतरकाहीं ॥
इहिविधिलाखनवरषसिराहीं।तहँतेनिकारिसकतहैनाहीं ॥३५॥जोकोउहोयधनीजगमाहीं । अहंकारमेंभरोसदाहीं
कोहूकोविश्वासनरापै । सवसोंक्रूरवचनमुखभापै ॥ टेढ़ैनैननतकतसदाहीं । धननाशनशंकामनमाहीं ॥
ब्राह्मणतेअथवाऔरनते । देनकह्योधनवचनहुमनते ॥ पुनिजवमाँगनआयोसोई । भयोलोभमनमेंधनजोई ॥
दोहा—सुखसूख्योकांप्योहियो, कहिनसकतकछुवात । देनकह्योपुनिदेतनहिं, धनरक्षतदिनजात ॥
धनवाढनहितवांधतनेवू । धर्मकर्मसवधनकेहेतू ॥ खरचहिजोपैसहुयककवहूं । दृगतेआँशुपरेंगिरितवहूं ॥
ऐसोपापीजवमरिजावे । सूचीमुखनरकहिसोपावे ॥ यमभटतेहिअतिलोभीकेरे । चांधहिअंगनवंधकेरे ॥
हैसूजासहसनकरचोखे । दर्जीसरिससियततनरोखे ॥ चीतकारसोकरतअपारा । यहिविधिवीततवर्षहजारा ॥
यहिविधियमपुरमहँकुरुराई । शतनसहस्त्रननरकमहाई ॥ तिनमेंजाहिअनेकनपापी ।तेजसतसतेहोइसतापी
दोहा—ऐसेस्वर्गहुमेंनृपति, हैंअनेकसुखभौन । जाकीजैसीपुण्यभै, पावहिसुखतेतौन ॥
जवनृपपापरह्योकछुवाकी । लहतकुयोनिविवुधवसुधाकी ॥ तैसहिपुण्यरह्योकछुशेषा । तवसुयोनिपावतसुख
जेहिविधिहोतनपुनिअवतारा । सोप्रकारमेंप्रथमउचारा ॥ यहब्रह्मांडमाहँमतिमाना । लोकचतुर्दशकहैंपुरान
थूलरूपनारायणकेरो । यहसिगरोमेंकियोनिवेरो ॥याविधिवेदपुराणवखानो । प्रथमहिसूक्ष्मरूपकहजानो ॥
जाहिउपनिपदकरतवखाने [illegible] इजेहिप्रीती ॥ जानहिसकलभक्तिकीरीती ॥ ३७ ॥ ३८ ॥
[illegible] निजमनदेहिलगाइ ॥
दोहा—हरिवपुसूक्ष [illegible]
कवित्त-सातहुखंडनद्वीपम [illegible]
श्रीरघुराजदरीकोजहयदथूलसरूपगुनामदिपाली । [illegible]
दोहा—दिशिनिधिशशिसंवतसुभग, पौषकृष्ण [illegible]
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा
श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कन्धे षोड़शस्तरंगः ॥२
दोहा—महाराजरघुराजकृत, शुभपंचमअसकंध । यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रवंध ॥
समाप्तोयं पंचमस्कंधः ५

अजामिल

परीक्षित
शुक
यमदूत
विष्णुदूत
विष्णुदूत
अजामिल
वृत्र
इन्द्र
अंगिरा
चित्रकेतु
मृतपुत्र
शंकर
चित्रकेतु-विमान
इन्द्र
दिति

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीमद्भागवत–आनन्दाम्बुनिधि ।

षष्ठस्कंधप्रारंभः ।

दोहा–जयराधामाधवचरण, हरनकलेशअनंत । मोदभरनसबदुखदरन, पावनकरनलसंत ॥ १ ॥
सदादासप्रदभद्रभल, जयबलभद्रदयाल । रुष्टदुष्टपैसुष्टपै, तुष्टपुष्टततकाल ॥ २ ॥
जयवानीजयगजवदन, जयतिपराशरसूनु । जयशुकदेवसदैवजन, करतज्ञानदिनदूनु ॥ ३ ॥
श्रीमुकुंदहरिगुरुचरण, वंदौवारहिंवार । जयतिजनकविश्वनाथप्रभु, धराधर्मआधार ॥ ४ ॥
सुनिपंचमअसकंधकी, कथापरमकमनीय । फेरिपरीक्षितजोरिकर, वचनकह्योरमनीय ॥ ५ ॥

राजोवाच ।

सोरठा–हेशुकदेवसुजान, ज्ञानवानदायासदन । जीवनकृपानिधान, यहविनतीमेरीसुनो ॥
थमनिवृत्तिमारगसबगायो । अर्चिरादिमारगहुसुनायो॥तेहिमारगह्वैविधिपुरआवै।पुनिविधियुतजियहरिपुरजावै ॥
हूमोहिसवदियोसुनाई ॥१॥ औरप्रवृत्तिमार्गसबगाई॥ जोहैहठिस्वरगादिकदाता । जासुप्रकृतिसंबंधनजाता ॥२॥
ण्योनरकनकोसमुदाई । जोपापिनकहँअतिदुखदाई ॥ स्वायंभुवमन्वंतरभाख्यो।जाकोवेदआदिकहिराख्यो॥३॥
यव्रतअरुउत्तानपादको । वंशचरितवरण्योप्रसादको॥द्वीपखंडसागरसरितनको।परवततरुअरुवनउपवनको॥४॥
दोहा–वरण्योमहिमंडलहिको, लक्षणभागप्रमाण । तैसहिस्वर्गपतालको, जेहिविधिविधिनिरमाण ॥ ५ ॥
अवजेहिविधिअतिशयदुखद, नरकनहींनरजाय । सोमोपरकरिकैकृपा, दीजैनाथसुनाय ॥ ६ ॥
निभूपतिकीमंजुलवानी । कहनलगेशुकदेवविज्ञानी ॥

श्रीशुक उवाच ।

वचकरमहुँबड़लघुपापा।करहिंजेजगमहँजीवअमापा॥तिनकोप्रायश्चितविनकीन्हें।जातनरकजेमैंकहिदीन्हें ॥७॥
तेजेजगमहँमतिमाना । जवलोरहैसमर्थमहाना ॥ तवलोप्रायश्चित्तपापको । करैआशुउरभारिसँतापको ॥
युमहँलघुवड़महँवड़करई । प्रायश्चित्तपापसवदरई ॥ वैद्यजानिजिमिलघुवड़रोगू।करतसुखदऔषधिनप्रयोगू॥८॥
निशुककीवाणीमनभाई । कुरुपतिपुनिअसगिरासुनाई ॥

राजोवाच ।

दोहा–लखतसुनतअतिअहितकर, पापनकोमतिमंद ॥ जनहठिवशपुनिपुनिकरत, किमिछूटैदुखद्वंद ॥९॥
यश्चित्ततासुकिमिहोई । जानाहिनहिजगमहँजनकोई॥एकवारअघशोधनकीन्ह्यो । पुनिशठपापहिमहँमनदीन्ह्यो॥
नकोप्रायश्चित्तमुनीशा।कुंजरमज्जनसममोहिदीशा१०असजवकह्योवचनकुरुराजा।कहशुकमध्यमुनीनसमाजा ॥

श्रीशुक उवाच ।

पतिकियेकर्मअघकरमा । छूटतनहिंसिगरोहरशरमा ॥ जवलोंजातिवासनानाहीं । मिटतनतवलोंअघजगमाहीं॥
रिप्रायश्चितयहअघनाशन । तिनपरढरतनयमकरशासन॥करिकैपुण्यकर्मअभिमाना।यहहितजनजेपापमहाना॥
दोहा–अज्ञानीतिनकोनृपति, तुमउरलेहुविचारि ॥ तातेकेवलहरिभजन, सबअघदेतनिवारि ॥ ११ ॥
मिपथभोजनकरतनरेशा।देनसकतबहुरोगकलेशा॥तिमिजेनेमसहितजगमाहीं।तिनकेक्रमक्रमअघनाशिजाहीं १२
पअरुब्रह्मचर्यअरुशमदम।दानशक्तिआचारनेमयम॥इनकोकरिश्रद्धायुतधीरा॥१३॥
शहिपापनमंगलहारी । जिमिशिखिदेतवेनुवनजारी॥१४

…हि नपापा । यथाभानुनीहारकलापा ॥१५॥ ब्रह्मचर्यशमदमतपनेमा । दानअचारसत्ययमक्षेम

दोहा—इनतेतसनहिंनशतअघ, तसनपवित्रौहोत ॥ जसहरिदासनसंगते, अरुहरिभक्तिउदोत ॥ १६ ॥

…ई । विनहरिभक्तिपुनीतनहोई ॥ जगमहँसकलधर्मकरिलीन्हा । पैहरिचरणचित्तनहिदीन्हा

… । सुराकुंभसरितामहँजैसे ॥१८॥ कृष्णपदारविंदएकहुछन । दियोलगाइप्रीतियुतजेमन

… । सपनेहुजगयमभटनहिंदेपै ॥१९॥ तामेंकहहूँएकइतिहासा । पापिनपापनकरनप्रनाशा

दोहा—विष्णुदूतयमदूतको, भयोयथासंवाद ॥ सोमैंवरणनकरतहौं, सुनहुसहितअहलाद ॥ २० ॥

… । रह्योअजामिलब्राह्मणकोई ॥ सोकरिकोउविपयनकरसंगा । रँग्योकठिनकामहिंकेरंगा

… विलासी २१ वरवसधनिनपकरिगृहधाँधी।लैतरह्योछोंड़ाइधनवांधी।

… चोरी २२यहिविधिकरतविविधव्यभिचारा।पालतरह्योसकलपरिवारा

… । कवहुनल्यायोनिजमनव्रीडा ॥ दशसुतभेतेहिदासीकेरे । घोरकर्मकरिअघीघनेरे ।

दोहा—कवहुनसुधिपरलोककी, सुतनखेलावतताहिं ॥ वितेअठासीवर्षगन, महाराजमाहिमाहिं ॥२३॥

… । भयेतासुसवउद्यमभंगा ॥ तवगृहवैठिकुमतिमहँपाग्यो।निजवालकनखेलावनलाग्यो ॥

… । तापरकियेप्रीतियुतवामा॥२४॥तोतरिवालककीमृदुवानी।सुनिकेसुखितरह्योअघखानी॥

…हिखेलतगृहभूमे।उठिउठिअंकलाइमुखचूमे॥२५॥निजसंगभोजनतेहिकरवावै। पानकरततेहिपानपियावै॥

…धिगयोकालवहुवीती । मान्योनाहिंकालकीभीती॥२६॥मरणकालजवताकोआयो।महाघोरतेहिरोगसतायो॥

दोहा—यमकेदूतभयावने, गहेफांसअतिघोर ॥ खडेरोमटेढेवदन, हरणप्राणवरजोर ॥

…रीरमहामजबूता।देखिपरेतेहित्रययमदूता॥२८॥तबहिअजामिलअतिभयमानी।छोटेसुतकीसुधिउरआनी ॥

…ह्योवालककहँदूरी । तेहिगोहरायोव्याकुलभूरी ॥ २९ ॥ नारायणयेअक्षरचारी । जवैअजामिलकह्योपुकारी ॥

…रततहांमहराजा । कृष्णपारपदवलीदराजा ॥ आयगयेअतिसुंदररूपा । धारेआ…तिहिअनूपा ॥ ३०॥

…जामिलकहँहरिदासा । खैंचतताहिनायगरपासा॥लैगमनत… पुरपाहीं। …दूतनकाहीं ॥३१॥

दोहा—वलसोंरोकिअजामिलै, लीन्होतुरतछुडाय ॥ …

…कौनतुमरोकनवारे । धर्मराजकोशासनटारे ॥ ३२

दोहा-अवि भकर्मजो, जानहुअधरमसोइ । वेदअहैनारायण, यहजानतसबकोइ ॥
हरिकोश्वासअहैसबवेदाहमैंसुन्योंश्रवणमहँभेदा ॥४०॥ नामक्रियागुणवपुयुतजोई।सतरजतममयप्राणिनसोई ॥
यथायोगनिजतनमें आपकरहतसकलमेंसँचिकै॥सलिलअनलअरुअनिलप्रकाशा।दोउसंध्यारविशशिदशआशा।
निशाद्योसधरणीअ क्रे साखीजीवनकृतकर्मा ॥ ४२ ॥ येइअधर्मधर्महुँकहिदेहीं । तबयमराजजानिसबलेहीं ॥
क्रमतेकर्मीदंडहियो दासँयोगअहेसबलोगू ॥४ । तातेसुखदुखसबकोहोई । विनाकर्मकोहैनहिंकोई ॥ ४४॥
दोहा-धर्म नातहै, जितनोजगमेंजोय . तितनोसुखदुखपावतो, परलोकहिमेंसोय ॥ ४५ ॥
जसकोइसुखीदुखीइ सुखदुखमिश्रपरेलखिकोई॥४६॥ताकोतसपरलोकहुजानो।गुणविचित्रतायहअनुमानो॥
औरजन्मइहविधिगुा मेंकछुनकरहुसंदेहू ॥ जिमिपूरबपरगुनऋतुकेरे । वर्तमानतेपरहुनिबेरे ॥
तिमियहिजन्महिको । उभेजन्मगतिपरेपरेखी॥४७॥ईशजानिमनतेजनकर्मा।तेहिअनुगुणकलेशअरुधर्मा॥
देनहेतमनकरौविचारह विश्वआधारा ॥ ४८॥ तसनहिंजानतजीवअज्ञानी । वर्तमानतनकोअभिमानी ॥
दोहा-जिमिरहैजीवसब, निरखतस्वप्नअपार । सोईभरजानतरहैं, पूर्वापरनविचार ॥ ४९ ॥
पंचकर्मइंद्रिनतेजीवा जपांचहुकरतअतीवा ॥ पांचज्ञानइंद्रिनतेसाँचो । जानेजियशब्दादिकपाँचो ॥
मनकरिकेजियसुखदुख। पावतअहेकामअरुकोहू॥५०॥यहषोडशकलसूक्ष्मशरीरा।त्रिगुणकारजगुनहिंसुधीरा॥
सोईस्थूलदेहअवतारे शोकभयप्रदसंसारे ॥ ५१ ॥ इंद्रिनजितेनजेअज्ञानी । जिनकीरहतिबुद्धिअलसानी ॥
विनचाहहुतेकरहिंजो । जानहुसंसकारकृतकरम॥आपहिबँधहिकरमकरकैसे।कुसियारीकोकीटहिजैसे ॥५२॥
दोहा-विनाकर्म हिक्षणहुँ, प्राणीथिरनहिंहोइ । बरबशनिजप्रारब्धवश, करमकरतसबकोइ ॥ ५३ ॥
भाग्यकारनहिंलहिजगमाँ । सूक्षमथूँलधरतवपुकाहीं॥कर्मवासनाकेअनुसारा । लहतपिताजननीअनुहारा॥५४॥
प्रकृतिसंगतेपुरुषनकाहीं होतविपरजैयहजगमाहीं ॥ हरिकीभक्तिकियेदिनराती । मिटैविपरजैसोइहिभाँती ॥
विप्रअजामिलयहशुभशी । रह्योवेदविधिधरमअढीला ॥ गुणआगरव्रतमाहउजागर । मृदुसतिवादीनम्रहिनागर॥
इंद्रीजितपवित्रआचारी ५६ ॥ साधुसकलभूतनहितकारी ॥ वृद्धअतिथिगुरुपावकसेई।अहंकारकामादिकजेई ॥
दोहा-कोहुकीनानहिंकियो, मितभाषीमतिमान ॥ ५७ ॥ एकसमयपितुकेकहे, वनकोकियोपयान ॥
इंधनकुशाफूलफललैके । द्योगृहकोतुरिताकैके ॥ ५८ ॥ देख्योएकशूद्रमगमाहीं । नीचनारिसँगनिरततहाँहीं ॥
कियेपानमदिराअतिमाती घूँमतनैनफिरतअसलाती ॥५९॥ नीवीखुलीखुलेशिरबारा।शूद्रताहिसँगकरतविहारा॥
गावतहँसतछोडितनलाज। भ्रष्टअचारतजेसबकाजा ॥ ६० ॥ भैरभुजनिभामिनमुखचूमे । करैप्रसन्नताहिपरभूमे॥
ऐसेशूद्रहिकरतविहारा।अजामिलतुरतनिहारा।लखितियकामविवशद्रुतभयऊ॥६१॥शास्त्रज्ञानतेरोकनचहेऊ॥
दोहा-पैनहिंमनजिवेगवर, रोकेरुक्योप्रचंड । भयोविकलमनताहिक्षण, भोतपव्रतसबखंड ॥ ६२ ॥
ता ति चतत रह्योधर्मलेशहुतननाहीं ॥ ६३ ॥ सोईशूद्रनारिढिगजाई । तेहिधनदेसंगलियोलेवाई ॥
॥ जेतीपितुकीरहीकमाई । ताकेसँगसोदियोउडाई ॥
६४ कुलवतिनीसुघरीनिजनारी।जुवाउमरिअतिशैसुकुमारी॥
६५॥तासुकपक्षहियेमहँफूटी।धर्मम्रजादशासबछूटी ॥
॥ देतरह्योतेहियहकुमति, याहिविधिबहुधनल्याय॥६६॥
॥ तेहिनारीकोजूँठभापि, मान्योपरमअनंद ॥
॥ व्यभिचारीअधरमकियो, जगमहँपामरपूर ॥
॥ प्रायश्चितातिनकोकबहुँ, एकहुकीन्योनाहिं ॥ ६७ ॥
पापक, होतापूतविशाल ॥ ६८ ॥
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादु
प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

। यथाभानुनीहारकलापा ॥१५॥ ब्रह्मचर्यशमदमतपनेमा । दानअचारसत्ययमक्षेमा ॥
दोहा–इनतेतसनहिंनशतअघ, तसनपवित्रोहोत ॥ जसहरिदासनसंगते, अरुहरिभक्तिउदोत ॥ १६ ॥

कोई । विनहरिभक्तिपुनीतनहोई ॥ जगमहँसकलधर्मकरिलीन्हा । पैहरिचरणचित्तनहिदीन्हा ॥
पुनी तनू । सुराकुंभसरितामहँजैसे ॥१८॥ कृष्णपदारविंदएकहुछन । दियोलगाइप्रीतियुतजेमन ॥
। सपनेहुजगयमभटनहिंदेपै ॥१९॥ तामेंकहहूँएकइतिहासा । पापिनपापनकरनप्रनाशा ॥
दोहा–विष्णुदूतयमदूतको, भयोयथासंवाद ॥ सोमैंवरणनकरतहौं, सुनहुसहितअहलाद ॥ २० ॥
। रह्योअजामिलब्राह्मणकोई ॥ सोकरिकोउविषयनकरसंगा । रँग्योकठिनकामहिकेरंगा ॥
२१ वरवसधनिनपकरिगृहधाँधीलेतरह्योछोड़ाइधनवांधी॥
२२यहिविधिकरतविविधव्यभिचारा।पालतरह्योसकलपरिवारा।
अनेकनमनुज । कवहुनल्यायोनिजमनव्रीडा ॥ दशसुतभेतेहिदासीकेरे । घोरकर्मकरिअघीघनेरे ॥
दोहा–कवहुनसुधिपरलोककी, सुतनखेलावततहिं ॥ वितेअठासीवर्षगन, महाराजमहिमाहिं ॥२३॥
। भयेतासुसवउद्यमभंगा ॥ तवगृहवैठिकुमतिमहँपाग्यो।निजवालकनखेलावनलाग्यो ॥
। तापरकियेप्रीतियुतवामा॥२४॥तोतरिवालककीमृदुवानी।सुनिकेसुखितरह्योअघखानी॥
॥निजसंगभोजनतेहिकरवावै। पानकरततेहिपानपियावै॥
। मान्योनाहिंकालकीभीती॥२६॥मरणकालजवताकोआयो।महाघोरतेहिरोगसतायो॥
दोहा–यमकेदूतभयावने, गहेफांसअतिघोर ॥ खडेरोमटेढेवदन, हरणप्राणवरजोर ॥
॥तवहिअजामिलअतिभयमानी।छोटेसुतकीसुधिउरआनी ॥
। तेहिगोहरायोव्याकुलभूरी ॥ २९ ॥ नारायणयेअक्षरचारी । जवैअजामिलकह्योपुकारी ॥
। कृष्णपारषदवलीदराजा ॥ आयगयेअतिसुंदररूपा । धारेआयुधअतिहिअनूपा ॥ ३०॥
। खैंचतताहिनायगरपासा॥लैगमनततेहियमपुरपाहीं। कृष्णदूतयमदूतनकाहीं ॥३१॥
दोहा–वलसोंरोकिअजामिलै, लीन्होंतुरतछुडाय ॥ तवयमदूतसकोपह्वै, वोलेआंखिदेखाय ॥
अहोकौनतुमरोकनवारे । धर्मराजकोशासनटारे ॥ ३२ ॥ कहँतेआयेकौनपठाये । केहिकारणरोकहुरिसिछाये ॥
अहोसिद्धघोंहोउपदेवा । धौंकिन्नरगंधर्वहुदेवा ॥ ३३ ॥ पदुमपलाशनैनअतिसोहैं । पीतांवरअतिशयमनमोहैं ॥
कुंडलकीटकंजकीमाला॥३४॥नूतनवयभुजचारिविशाला॥धनुनिषंगअसिचक्रगदाधर।श्यामशरीरकंजकरछविवर॥
निजप्रकाशतेदिशनप्रकाशो । धर्मराजकरशासननाशो ॥ ताकोकारणवेगिवतावहु।तवयहपापीकहँलैजावहु॥३६॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–इहिविधिजवयमभटकहे, तवहँसिकेहरिदास ॥ मेघागिरावोलतभये, कियहरिहुकुमप्रकास ॥ ३७॥

विष्णुदूता ऊचुः ।

होहुजोधर्मराजकेदूता । कारकतासुनिदेशअकूता ॥ तौकहिजाउधर्मकेलक्षण । धर्मरूपहूकहहुविलक्षण ॥ ३८ ॥
प्राणिनदेहुकौनाविधिदंडा । दंडयोगकोहोतअसंडा ॥ दंडयोगहैधौं ... वा । दंडयोगधौंमनुजअतीवा ॥
तिनहींमेंघौंसवदमयोगू । धौंकिराहिपापउतलोगू ॥ ... ॥ ३९ ॥
सुनतविष्णुदूतनकीवानी । वोलेयमकेभटअभिमानी ॥

वेदांगदितजोहिमपकर्मा । सो ...

ण्यातमसोपुरुपकहावे । देवनसंगवसतसुखपावे॥३१॥असकहिनारदकियोपयाना।बंधुनपथतेउगहेसुजाना॥३२॥
मुक्तिमगपुनिनाहिंआये।जिमियामिनिदिनकरकरपाये ॥ दक्षलख्योपुनिकेउतपाता।नारदकोसुनिकर्मविख्याता॥
थमसुतनसमसुनिसुतनाशू ॥ ३४ ॥ दक्षकियोपुनिकोपप्रकाशू ॥

दोहा–अमरपतेफरकतअधर, दक्षधरतनहिंधीर ॥ नारदकोनिजनिकटलखि, बोलेवचनगँभीर ॥ ३५ ॥

दक्षप्रजापति उवाच ।

असाधुसाधुनवपुधारी । मोसुतसाधुनकियोभिखारी॥अतिनिंदितकीन्ह्योंयहकरमा । जानततेंनहिनेकहुधरमा३६
ऋैनछूटेतिनऋणतीना । कर्मविचारकछुकनाहिंकीना ॥ ममपुत्रनकोतेंबरियाई । उभैलोकसुखदियोनशाई॥३७॥
लकछलीअबोधअदाया । कैसेतेंहरिदासकहाया॥श्रीहरिकोयशनाशकसांचो । रोनिरलज्जकुमतिमहँरांचो ॥३८॥
रिजनहोहिंसदासदयाला । प्राणिनकेनाशकदुखजाला ॥ पैतोहिंविनमित्रनकेद्रोही । विनवैरहुप्राणिनपरकोही३९

दोहा–धरेवेपअवधूतको, ज्ञानहीनसमकाग ॥ यहिविधिमतिचंचलकिये, होतनजननविराग ॥

तिविनानविरतिप्रगटातिहै।तेहिविनमोहफाँसनकटातिहै॥४०॥विषैभोगकोजोनहिंकीना।तासुवासनाहोतिनछीना॥
वपैछोडिमनल्यायगलानी। छोड्योजगसोइपूरणज्ञानी॥जसगलानिकारिहोतविरागी।तसउपदेशहितेनहिंत्यागी४१॥
धुगृहस्थनसुतनहमारे।जेजगसिरजनमनहिंविचारे॥तिनकोअसहकियोअपकारा।सोहमसहिलीन्ह्योंयकवारा ४२॥
पुनिकैममवंशविनाशी । कियोकर्मतैंसोइअघराशी ॥ तातेमूढ़भ्रमतजगमाहीं । तैंथिरह्वैनिवसैकहुँनाहीं ॥ ४३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–दक्षशापलीन्ह्योंहरपि, मुनिवराकियनविपाद ॥ लक्षणसाधुसमर्थको, सहैकुजनकटुवाद ॥ ४४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजवान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहा-
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंह
जूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ षष्ठस्कन्धे पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–पुनिदक्षैअजआयके, समुझायोबहुभाँति ॥ साठिसुतातबप्रगटकिय, तेहितियमेंवरकाँति ॥ १ ॥

दुहितादशदियधर्महिपाहीं । दीनत्रयोदशकश्यपकाहीं ॥ शशिकहसत्ताइसपुनिदीनी । दियरुद्रहिदुइसुताप्रवीनी॥
दुइअंगिरैकृशासुहिदोई । दियोदानदुहिताकरसोई ॥ बाकीरहींऔरजेचारी । दईकश्यपैफेरिविचारी ॥ २ ॥
तिनकेअरुतिनकेसुतनामा । कहौंसकलसुनियेमतिधामा ॥ तिनहींकिपुत्रनकेथोका । पूरितभयेत्तीनिहुलोका॥३॥
भानुककुभलंबाअरुजामी । विश्वासाध्यामरुत्वातिनामी॥ वसुमुहूर्त्तसंकलपागुनिये।धर्मनारियेतिनसुतसुनिये॥४॥

दोहा–वेदऋपभभेभानुसुत, इंद्रसेनसुततासु ॥ लँबाकेविद्योतमें, वारिधभेपुनिजासु ॥ ५ ॥
ककुभासुतसंकटभये, तेहिसुतकीकटनाम ॥ दुर्गदेवतासुतरही, जामीधरमहिंवाम ॥

लेहिसुतस्वर्गनंदिमाताके ॥ ६ ॥ विश्वेदेवाभेविश्वाके ॥ तेसबअप्रजरहेसदाहीं । इमिभापतऋपिगणतिनकाहीं ॥
साध्यासुवनसाध्यगनजानो । तिनकेअर्थसिद्धसुतमानो॥७॥मरुत्वानअरुदुतियजयंतहु । मरुत्वतीकेपुत्रनजानहु ॥
तहँजयंतहरिअंशसुहायो । नामउपेंद्रजगतकहवायो ॥ ८ ॥ नाममुहूर्तागुणनसुहाये । पुत्रमुहूर्त्तदेवगनजाये ॥
जेनिजनिजकालहिसुखभीने।प्राणिनकानिजनिजफलदीने॥९॥संकलपहिसंकलपाजायो।ताकोतनयकामकहवायो॥

दोहा–वसुवामासुतआठवसु, सुनियेतिनकेनाम ॥१०॥ द्रोणप्राणध्रुवअर्थअरु, अग्निदोपवसुआम ॥

औरविभावसुआठोअहहीं।द्रोणतियाअभिमातिकोकहहीं॥हर्पशोकभयआदिकताके।होतभयेसुतजगअतिबाँके ११
उरजस्वतीप्राणतियतासुत। आयुपुरोजवसहजानोद्भुत॥ध्रुवकीधरनिनारितेहिसुतपर।ग्रामनगरमानहुँअपनेउर १२॥
तियवासनाअर्ककीमानो । तासुततरपादिककोजानो ॥ अग्निवामजानहुँवसुधारा।तासुतनयद्रविणादिउचारा॥१३॥

पटमुसमुवन कृत्तिकाकेरे। भयेविशाखादिकनिनतेरे॥दोषनागनिशितासुकुमारा।हरिकीकलाभयोशिशुमारा॥१४॥
दोहा-वसुतियआंगिरसीभई, विश्वकर्मासुततासु ॥ शिल्पअचारजहोतभो, चाक्षुकमनुभोजासु ॥
मनुसनविश्वेसाध्याजाये॥१५॥तियऊर्जाहिविभावसुपाये॥ व्युष्टरोचिपाआतपतासुत।आतपसुवनदिवसभोअद्भुत॥
जेहिदिनमेंजगिजागिसबप्राणी।निजनिजकर्मकरतसुखमानी॥१६॥भूतिदारभेनामसरूपा।तेहिकोटिनगणरुद्रअनूपा।
प्रगटतभयेनामनिनकेरे। कहतअहौंजेमुख्यनिवेरे॥ रैवतअजभवभीमकहाये। वामहुउग्रवृपाकपिगाये ॥ १७ ॥
औरअजैकपादकोजानो। अहिर्बुध्न्यबहुरूपमहानो॥
दोहा-यएकादशरुद्रभे, अरुऔरोतियमाहि ॥ भूतविनायकआदिबहु, घोरभयेजगमाहि ॥
भयेपारपदतेशिवकेरे। सेवतसदावसेतिननेरे ॥१८॥ अरुअंगिराप्रजापतिभायो। तिहितियस्वधापितरगणजायो॥
सतीतियप्रगट्योगुरुमाहीं । वेदअथर्वागिरसहिकाहीं ॥ १९ ॥ कृशाश्वतियअर्चाहैजोई । धूम्रकेशप्रगटतिभेसोई॥
धिषणानारिवेदशिरदेवल। वयनहुँप्रगटतिभेअतिशयभल॥२०॥कश्यपकीजानहुँयेनारी।विनताकद्रूअतिजसधारी॥
औरपतंगीनामयामिनी। जगतनामिनीअहकामिनी॥ तीयपतंगीयामिनिजेई। पक्षिनशलभनजननीतेई॥ २१ ॥
दोहा-विनताकेसुतहोतभे, गरुडअरुणसुखपूर। गरुडभयेहरिवाहने, अरुणसारथीशूर॥
कद्रूकालीआदिकनागा। जगजनमावनिभेबडभागा॥२२॥ नखतकृत्तिकादिकजेभारी। सत्ताइससेभइशशिनारी॥
दक्षशापतेनिशिकरकेरे।भयेनपुत्रबदसुनिटेरे॥ रोगितभयोयक्ष्मारोगे। पावतभयोअपारहिशोगे॥ २३ ॥
दक्षहिकियेप्रसन्नहिजवहीं।पायोक्षीनकलानिजतवहीं ॥ अवसुनुजेकश्यपकीनारी। तिनकेनामकहौंसुखकारी॥
जिनतेभेसबजगकीउतपति।लोककल्याणकारिकदश्रुतिसति।अदितिऔरदितिदनुकोजानो।काष्ठाऔरअरिष्टामानो
दोहा-सुरसाइला-॥२४॥२५॥-वखानिये, मुनिअनुक्रोधवसाह। सुरभीसरमाताम्रा, तिमियेसहितउछाह॥
सकलजगतकेउतपतिकेरी।जबमनकीन्हीचाहघनेरी॥ तवतिनितेजलजंतुभयेहैं॥ २६॥ सरमातेवनजंतुभयेहैं॥
सुरभीतेसुरभीवृषबहुभे। महिपादिकद्वैपुरजियबहुभे॥ सेनगीधआदिकविहंगवर। भयेताम्राकेजगसुखकर॥
मुनिकेहोतभिइंअपसरा॥२७॥क्रोधवशाकेभयेविषधरा॥ जंतुसर्पआदिकबहुतेरे। जानिअशितनाहिंनामनिवेरे॥
तरुगनहोतेभयेइलाके।यातुधानजनमेंसुरसाके॥ २८ ॥ प्रगटतभयेअरिष्टाकेरे। गाननिपुणगंधर्वघनेरे॥
दोहा-द्वैखुरतेजेअपरहे, पुहुमीजंतुअपार। तेकाष्ठतिप्रगटभे, कोकरिसकेउचार॥
दनुकेयकसठिसुतमतिमाना। तिनमेंवसुदशभयेप्रधाना॥ महाबलीजेजगउजियारे। वासवहूकेजीतनहारे॥
जेहारतजिनऔरसोंहारे। सदासुतलकेनिवसनवारे॥ तिनकेनामनिकरोंबखाना।सुनहुसवैसादरदैकाना ॥ २९ ॥
द्वैमूरधअरिष्टऔशंबर। औरविभावसुहयग्रीववर॥ जानअयोमुखशंकुसिराहू। कपिलपुलोमाअरुणहुराहू॥ ३०॥
वृषपर्वाइकचक्रवखानो। धूम्रकेशअनुतापनमानो॥ विरूपाक्षविप्रचितिहुदुरजै। इनसवकेरवमहँघनलरजै॥ ३१ ॥
दोहा-राहुसुताभैसुप्रजा, तासुनमुचिकियव्याह। वृषपर्वाकेभैसुता, शर्मिष्ठाजगमाँह॥
ताहिययातिभूपलियव्याही। होतभयेमनपरमउछाही ॥३२॥ वैश्वानरदानवकीकन्या।भईचारिजगमेंअतिधन्या॥
उपदानविहयशिरापुलोमा।औकालिकातीनजसतोमा॥३३॥तिनकीकथासुनहुनरनाहा।उपदानविहिरणाक्षविवाहा॥
हयलियव्याहिशिराकोजवहीं।कृशुलहिकेविधिशासनतवहीं।अपनोव्याहपुलोमाकोकिय।कश्यपव्याहिकालिकाकोलिय
भयेपुलोमकालिकाकेरे। तनेनिवातकवचबलढेरे॥३५॥ साठिसहसमखनाशहिकारी। होतभयेखलदुर्मदभारी॥
दोहा-तिनहिंतिहारोपितामह, पार्थइंद्रप्रियहेत। वधकीन्ह्योहनिबाणतजि, रणमेंपरमसचेत॥ ३६ ॥
विप्रचित्तिसिंहिकाविवाहीं। यकसैयकसुतजन्योउछाहीं॥तिनसतजेठराहुविकराला।भेसतकेतहुतेगृहजाला ॥३७॥
अवक्रमसोंवरणौंतुमपाहीं।सुनियेअदितिवंशजेहिमाहीं॥नारायणकरिकृपाअपारा।निजअंशहितेलियअवतारा॥३८॥
विवस्वानअरयमाविख्याता। पूपात्वष्टासविताधाता॥भगवहुविधातावरुणहिंजानो॥शक्रउरुक्रमामित्राहिमानो॥ ३९॥
विवस्वानतियसंज्ञाजोई। श्राद्धदेवमनुप्रगटीसोई॥ सोइतियमअरुयमुनहिंजाई । वडवापुनिजगमेंकहवाई ॥

दोहा-हेरिथक्योवासवगुरुहिं, लग्योनतिनकोओज । तबवेसंतोसुरगणसहित, लख्योनसुखप्रतिरोज॥१७॥
वासवकृतसुनिगुरुअपमाना । उशनासंमतलहिबलवाना॥कियेसुरनपरअसुरचढाई।अतिदुर्मदसिगरेअतताई॥१८॥
भयेसुरासुरसंगरघोरा । सुरनअसुरमिलिहनेकठोरा ॥ अंगभंगसिगरेसुरह्वैगे । चल्योनबलकछुभीतह्वैगे ॥
गयेविरंचिशरणदुखछाई।विनयकियेवासवशिरनाई१९तिनकोदुखितनिरखिकरतारा।करतकृपाअसवचनउचारा ॥

ब्रह्मोवाच ।

सुनहुसकलसुरअरुसुरराजू । कियोअमंगलदायककाजू ॥ शांतदांतवेदांतनवादी । सदाब्रह्मआनँदअहलादी ॥
दोहा-ऐसेनिजगुरुकोकियो, मदवशतुमअपमान ॥ २१ ॥ तातेनिबलरिपुनते; हारिगयेबलवान ॥ २२ ॥
देखहुअसुरशुक्रबलपाये । प्रबलपरेरणतुमहिंहराये ॥ श्रीगुरुकृपाहोतयहिभाँती । सकलसिद्धिदायकअघघाती ॥
गुरुप्रतापबलदानवराजू । चहैतौलेवैममगृहआजू ॥ २३ ॥ हैअमोघअसुरनकेमंत्रा । शुक्रकृपाबलअहैस्वतंत्रा ॥
जोगोविंदगोसेवनकरई । विप्रनकीपदरजशिरधरई ॥ ताकीकबहुँनहोतिपराजै । स्वर्गहुलघुलागततेहिराजै ॥२४॥
तातेविश्वरूपद्विजकाहीं । जोतपसीज्ञानीजगमाहीं ॥ जायतासुचरणनशिरनावो । निजउपरोहितआशुबनावो ॥
दोहा-जोवाकेअपराधसब, क्षमिहैंहेसुरराज । तौतुम्हरोसबभाँतिते, सिद्धिकरैगोकाज ॥ २५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

अससुनिकेविरंचिकीवानी।सिगरेसुरअतिशयसुखमानी॥विश्वरूपकेनिकटसिधारे।करिप्रणाममिलिवचनउचारे २६

देवा ऊचुः ।

हमहैंअतिथआपगृहआये । रहैईशतुवमोदबढाये ॥ समयउचितकरुकाजहमारे । विश्वरूपहमपितरातिहारे ॥२७॥
परमधरमयहपुत्रनकेरो । पितुकोसेवनकरहिंघनेरो ॥ पुत्रनमानहुँकरयहधरमा ॥ २८ ॥ बटुकोतौविशेपयहधरमा॥
अहैवेदमूरतिआचारज । पितुकोजानहुहैसाँचोअज ॥ अहैमरुतपतिमूरतिभ्राता । धरनीमूरतिहैसतिमाता ॥२९॥
दोहा-धर्मरूपहैअतिथसाति, भागिनीदयास्वरूप ॥ अभ्यागतमूर्त्तियअगिनि, जगवपुकृष्णअरूप ॥ ३० ॥
हमहैंदुखितपराजयपाई । सोनिजतपबलदेहुमिटाई ॥ विश्वरूपकीजैममशासन । जामेंहमबैठेंनिजआसन ॥३१॥
हमसबतुमहिंपुरोहितकरहीं।तुवतपबलसहजहिंअरिदरहीं।पितुकहँउचितनसुतहिप्रणामा।करहुनयहशंकामतिधामा
यद्यपिगुरुलघुवैसह्वहोई । ताहिप्रणामकरतसबकोई ॥ पुनिनिजअर्थहेतजगमाहीं । बड़ेनबहिंलघुलोगनकाहीं ॥
यहअनुचितजानहुँनहिंताता । तुमतोतपविद्याविख्याता ॥ ३२ ॥

शुक उवाच ।

जबसुरगणविनतीकियनिजहित । विश्वरूपकहँहोनपुरोहित ॥
दोहा-विश्वरूपतबनिजमनै, करिकेविमलविचार ॥ ह्वैप्रसन्नमंजुलवचन, बोलेसुखितअपार ॥ ३४ ॥

विश्वरूप उवाच ।

यद्यपिउपरोहितीअतिहारी । ब्रह्मतेजकीनाशनिहारी ॥ धर्मशीलसबसंतसुजाने । उपरोहितीनिंद्यबहुमाने ॥
तद्यपितुमप्रभुजाँचनआये । दीनवचनममश्रवणसुनाये ॥ किमिउत्तरतुमकहँअबदेहीं। यहअपयशसकलहें
तातेजोकहिहोसोकरिहों । तुम्हरोशासननिजशिरधरिहों ॥यहस्वारथहैसकलहमारा । यामेंअहनआननिचारा ॥
अहहिंअकिंचनसज्जनजेते । असनकरहिंसीलाबिनतेते ॥ सिगरोकरहिंक्रियातेहिमाहीं । [illegible]
दोहा-पापवृत्तिउपरोहिती, जेअतिलहहिंअनंद ॥ द्वारद्वारडोलतफिरैं, तेअतिमतिमंद ॥ ३६ ॥
तेहितेहमएकरननयोगू । येतुमहमकोदेहुनियोगू ॥ ताते उपरोहितहमह्वैहैं । तुवआज्ञा[illegible]नाहिंनेहैं ॥
जहँलोंचालिहैशक्तिहमारी । तहँलोंकरिहोंसिद्धातिहारी ॥ ३७ ॥

द्वैपायनोभगवानप्रबोधाद्बुद्धस्तुपाखंडगणात्प्रमादात्।कल्किःकलेःकालमलात्प्रपातुधर्मावनायोरुकृतावतारः १९॥
मांकेशवोगदयाप्रातरव्याद्गोविंदआसंगवमात्तवेणुः। नारायणःप्राह्णउदारशक्तिर्मध्यंदिनेविष्णुररींद्रपाणिः ॥ २० ॥
देवोपराह्णेमधुहोग्रधन्वासायंत्रिधामाऽवतुमाधवोमाम्। दोषेहृषीकेशउतार्द्धरात्रेनिशीथएकोवतुपद्मनाभः ॥ २१ ॥
श्रीवत्सधामापररात्रईशःप्रत्यूषईशोसिधरोजनार्दनः।दामोदरोव्यादनुसंध्यंप्रभातेविश्वेश्वरोभगवान्कालमूर्त्तिः २२॥
चक्रंयुगांतानलतिग्मनेमिभ्रमत्समंताद्भगवत्प्रयुक्तम्।दंदग्धिदंदग्ध्यरिसैन्यमाशुकक्षंयथावातसखोहुताशः ॥ २३॥
गदेशनिस्पर्शिनविस्फुलिंगेनिष्पिढिनिष्पिढ्यजितप्रियासि।कूष्मांडवैनायकयक्षरक्षोभूतग्रहांश्चूर्णयचूर्णयारीन् २४॥
त्वंयातुधानप्रमथप्रेतमातृपिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन्। दरेंद्रविद्रावयकृष्णपूरितोभीमस्वनोरेर्हृदयानिकंपयन्॥२५॥
त्वंतिग्मधारासिवरारिसैन्यमीशप्रयुक्तोममछिंधिछिंधि।चक्षूंषिचर्मञ्छतचंद्रछादयद्विषामघोनांहरपापचक्षुषाम्२६॥
यन्नोभयंग्रहेभ्योभूत्केतुभ्योनृभ्यएवच। सरीसृपेभ्योदंष्ट्रिभ्योभूतेभ्योंऽहोभ्यएववा ॥ २७ ॥
सर्वाण्येतानिभगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात्। प्रयांतुसंक्षयंसद्योयेनश्रेयःप्रतीपकाः ॥ २८ ॥
गरुडोभगवान्स्तोत्रस्तोभश्छंदोमयःप्रभुः। रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्योविष्वक्सेनःस्वनामभिः ॥ २९ ॥
सर्वापद्भ्योहरेर्नामरूपयानायुधानिनः। बुद्धींद्रियमनःप्राणान्पांतुपार्षदभूषणाः ॥ ३० ॥
यथाहिभगवानेववस्तुतःसदसच्चयत्। सत्येनानेननःसर्वेयांतुनाशमुपद्रवाः ॥ ३१ ॥
यथैकात्म्यानुभावानांविकल्परहितःस्वयम्। भूषणायुधलिंगाख्याधत्तेशक्तीःस्वमायया ॥ ३२ ॥
तेनैवसत्यमानेनसर्वज्ञोभगवान्हरिः। पातुसर्वैःस्वरूपैर्नः सदासर्वत्रसर्वगः ॥ ३३ ॥
विदिक्षुदिक्षूर्ध्वमधःसमंतादंतर्बहिर्भगवान्नारसिंहः। प्रहापयँल्लोकभयंस्वनेनस्वतेजसाग्रस्तसमस्ततेजाः ॥ ३४ ॥
विश्वरूप उवाच-मघवन्निदमाख्यातंवर्मनारायणात्मकम्। विजेष्यस्यंजसायेनदंशितोऽसुरयूथपान् ॥३५॥
एतद्धारयमाणस्तुयंयंपश्यतिचक्षुषा। तदावासंस्पृशेत्सद्यःसाध्वसात्सविमुच्यते ॥ ३६ ॥
नकुतश्चिद्भयंतस्यविद्यांधारयतोभवेत्। राजदस्युग्रहादिभ्योव्याघ्रादिभ्यश्चकर्हिचित् ॥ ३७ ॥
इमांविद्यांपुराकश्चित्कौशिकोधारयन्द्विजः। योगधारणयास्वांगंजहौसमरुधन्वनि ॥ ३८ ॥
तस्योपरिविमानेनगंधर्वपतिरेकदा। ययौचित्ररथःस्त्रीभिर्वृतोयत्रद्विजक्षयः ॥ ३९ ॥
गगनान्न्यपतत्सद्यःसविमानोह्यवाक्शिराः। सवालखिल्यवचनादस्थीन्यादायविस्मितः ॥ ४० ॥
प्रास्यप्राचीसरस्वत्यांस्नात्वाधामस्वमन्वगात् ॥ ४१ ॥

श्रीशुक उवाच।

यइदंशृणुयात्कालेयोधारयतिचादृतः। तंनमस्यंतिभूतानिमुच्यतेसर्वतोभयात् ॥ ४२ ॥
एतांविद्यामधिगतोविश्वरूपाच्छतक्रतुः। त्रैलोक्यलक्ष्मींबुभुजेविनिर्जित्यमृधेऽसुरान् ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा-
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

दोहा-जोनारायणकवचयह,धारेसुनैसप्रीति। तेहिसुरवंदतअघनशत, लहतकतहुँनहिंभीति ॥

श्रीशुक उवाच।

स्वरूपमुसतोनमहीशा। तिनकोवरणनसुनहुमुनीशा॥यकसोंकरहिंसोमकोपाना।यकसोंसुरापानसविधाना॥
कसोंअन्नहिंभोजनकरहीं। तिनकर्मननामहुँअनुसरहीं॥१॥पितातासुदेवताविख्याता।रहीदैत्यदुहितातिहिमाता॥
स्वरूपसोमसकहटान्यो॥सकलदेवतनबहुसनमान्यो॥मुखतनामसुरनकरल्हीं॥२॥गुप्तभागदैत्यनकहँदेहीं ॥ ३ ॥

[illegible]रित्रजान्योसुरराई । तबअतिशभययाकेछाई ॥ लैकरकुलिशउठ्योतेहिकाल। विश्वरूपकंहन्योउताल ॥

दोहा-विश्वरूपकेर्तीनिहूँ, शीसकाटिसुरराय । तुरतधरणिमहँफेंकिदिय, मनमहँअतिहरपाय ॥ ४ ॥

[illegible] । भेदरहेतिनिहंगबहुतेरे ॥ भयेचटकसगयकशिरतेरे । यकशिरतेतीतरहिंधनेरे ॥ ५ ॥

[illegible] अंजुलिओडी । लियोब्रह्महत्यानहिंथोडी ॥ निजअपवादछोडावनहेतू । आतमशुद्धहेतसुरकेतू ॥

[illegible]गकीन्हें । पुनिमहितियतरुजलकहँदीन्हें ॥ ६ ॥ अवनीमेंऊसरतेहिजानो। तरुमेंगोंदिताहिपहिचानो ॥

[illegible]रजसोई । जलमेंफुफेनहोइसोजोई ॥ लहिद्विजहत्यायेतहँचारी । कह्योवासवहिदुखितपुकारी ॥

दोहा-वासवतिनकोदुखितगुनि, दियोचारिवरदान । पृथकपृथकतिनकोधरम, मंअबकरहुँबखान ॥

महिमहँकहूंखातखनिआवे । पूरिआपहीतेफिरिजावे ॥ जोकोउवृक्षनकाटिहुडारे । तामेंहोइफेरिसुडारे ॥

रतिमहँतुष्टहोयनहिंनारी । यहवरदानहिलियोविचारी । जितनोजलऐंचतजनजावे । झरननसेतितनोबढ़िआवे ॥

यहवरदानचारिहूपायो । तवद्विजहत्यहुलहिसुखछायो ॥ त्वष्टामुनिनिजपुत्रनिपाता । रच्योयज्ञकरिकोपअपाता ॥

चाह्योवासवकेरविनाशा । हवनकियोविधिमहितहुताशा ॥ इंद्रशत्रुइहिकालहिबाढो । मारहुवासवकहँबलगाढो ॥

दोहा-भयोमंत्रसुरहीनयह, तातेभोविपरीति । इंद्रहिताकोशत्रुभो, तेहिदायकअतिभीति ॥ ११ ॥

छंद-तहँहोमकरतहिकुंडतेनिकस्योपुरुपविकरालहै । तिमिप्रलैकालहिमहाकालसुविश्वभक्षकहालहै ॥ १२ ॥

सुरतजेजितनोजातऊरधवढ़तातितनोदिनदिनै । अतिभीमश्यामसरूपजगमहँभरतभेभलछिनछिनै ॥

मनुअग्निभसमितमहीभूधरसाँझकीमनुघनघटा ॥ १३ ॥ मध्यानरविसमउग्रलोचनतपततामहिंसमजटा ॥ १४ ॥

लीन्हेंत्रिशूलप्रचंडमानहुँस्वर्गमाहिछेदतअहै । नाचतनदतअतिनादउन्नतपदकपावतहारहै ॥ १५ ॥

मुखमेरुकंदरसरिसमानहुँपियनचहुतअकासको । अधरानिचाटतजीभसोमनुचढ़तनखतानिवासको ॥

लीलतमनहुँतीनिहुँभुवन-१६-जमुहातवारहिंवारहै । दृढ़परमदीरघदाढदेखतभरतजनभयभारहै ॥ १७ ॥

जेहिनामवृत्रासुरसुरनदारनहुतैदारुणमहा । जाकोस्वरूपअनूपतीनिहुभुवनमेंभरिभलरहा ॥ १८ ॥

लखिवृत्रकहँदिगपासचारिहुसुरनजोरिसमाजहै । यकवारतेहिदिव्यास्त्रनिजनिजहनेजीतनकाजहै ॥ १९ ॥

दिव्यास्त्रएकहिबारवृत्रासुरहुवदनवगारिकै । द्रुतलीललीन्ह्योंविनप्रयासहिहँस्योसुरननिहारिकै ॥

यहदशादेखतअमरगणतेहिक्षणसमरभयभरिभगे । अतिदुखिततहँआरतपुकारतकृष्णकहँध्यावनलगे ॥ २० ॥

देवा ऊचुः ।

दोहा-अनिलअनलआकाशअरु, अवनीअंबुअनादि ॥ इनतेनिरमितलोकत्रै, हमजेसुरब्रह्मादि ॥

छंदहरिगीतिका-भयधारिउरजेहिकालकोवलिदेहिंसोउजाकोडरै । हरिपूर्णसोसवथलहमारोवेगिचलरक्षनकरै ॥ २१ ॥

अहंकारविननिजलाभपूरणकामशांतसमानजो । असनाथश्रीयदुनाथकोतजिभजहिंदेवहिआनजो ॥

गजपूंछतजिसोश्वानपूंछहिगहिउदधिचाहततरो । जहिमीनवपुहरिसुगंधरनीबाँधितरनीसुखभरो ॥ २२ ॥

मनुशोकसागरतेतरयोसोइहरिहमैंसवदासकी । भयहरैवृत्रासुरहितेकरिकृपाआससुपासकी ॥ २३ ॥

लहिपौनगौनप्रचंडउठततरंगअतिहिकरालहै । असप्रलयजलतेकंपितैविधिलखिहरच्योदुखहालहै ॥

सोइहरिहमारोदुखहरैजोईशयकप्रधानहै ॥ २४ ॥ निजमायहीसोहमहिंविरच्योजासुकृपामहानहै ॥

तेहिपाइहमहूविश्वविरचैजोप्रथमहीतेरह्यो । तेहिरूपअंतरयामिकोहमजानिवोमननाचह्यो ॥

मनआपनेकोईशमान्योनिजअज्ञानहितेमहा ॥ २५ ॥ प्रभुधारिजोवहुरूपदैत्यनमारिसुररक्षणचहा ॥ २६ ॥

सोइविश्वरूपप्रधानपुरुपहुइष्टदेवहमारहैं । अतिहीविलक्षणअसमुकुंदहिशरणकरतउदारहैं ॥

ढिगतासुकैरपयानकरिहैत्राणदीनदयालहै । शरणागतैकोपालरूपरसालजोनँदलालहै ॥

दोहा-सोईसुरब्रह्मादितें, हमसबअहैंअपार ॥ करनहारमंगलसदा, तिनकोप्राणआधार ॥ २७ ॥

शुक उवाच ।

महाराजसबसुरनके, करतविनययहिभाँति ॥ पश्चिमदिशितेप्रगटभे, श्रीगोविंदपरकाँति ॥
कवित्त–एककरशंखएककरमेंसुचक्रराजैएककरधनुपगदाहैएकहाथमें ।
विनाश्रीवत्सअरुकौस्तुभसुपोडशविराजैहरिपारपदरूपसमसाथमें ॥ २८ ॥
विकसितशरदसरोजसेसलोनेनैनभौंहकेसमानभ्राजैमुकुटसुमाथमें ।
भापैरघुराजकृपासिंधुश्रीमुकुंदआयोआनँदबढ़ायोहैसबारखगनाथमें ॥ २९ ॥
दोहा–देखिनाथकोदेवसब, मुदजलदृगनबहाय । दंडसरिसधरणीगिरे, अस्तुतिकियसुखपाय ॥ ३० ॥
मंत्ररूपअस्तुतिसुखद, रच्योनभापाताहि । कटैकोटिसंकटकठिन, पाठकरैजोयाहि ॥

देवा ऊचुः ।

नमस्तेयज्ञवीर्यायवयसेउततेनमः नमस्तेह्यस्तचक्रायनमःसुपुरुहूतये ॥ २१ ॥ यत्तेगतीनांतिसृणामीशितु परमंपदंनार्वाचीनोविसर्गस्यधातुर्वेदितुमर्हति ॥ ३२ ॥ ॐनमस्तेस्तुभगवन्नारायणवासुदेवादिपुरुपमहापुरुपमहानुभावपरममंगलपरमकल्याणपरमकारुणिककेवलजगदाधारलोकैकनाथसर्वेश्वरलक्ष्मीनाथपरमहंसपरिव्राजकैः परमेणात्मयोगसमाधिनापरिभावितपरिस्फुटपारमहंस्यधर्मेणोद्घाटिततमः कपाटद्वारेचित्तेऽपावृतआत्मलोकेस्वयमुपलब्धनिजसुखानुभवोभवान् ॥ ३३ ॥ दुरवबोधइवतवायंविहारयोगोयदशरणोऽशरीरइदमनवेक्षितास्मत्समवाय आत्मनैवाविक्रियमाणेनसगुणमगुणःसृजसिपासिहरसि ॥ ३४ ॥ अथतत्रभवान्किंदेवदत्तवदिहगुणविसर्गपतितः पारतंत्र्येणस्वकृतकुशलाकुशलंफलमुपाददाति ॥ अहोस्विदात्मारामउपशमशीलः समंजसदर्शनउदास्तइतिहवावनविदामः ॥ ३५ ॥ नहिविरोधउभयंभगवत्यपरिगणितगुणगणईश्वरेऽनवगाह्यमाहात्म्येअर्वाचीनविकल्पवितर्कविचारप्रमाणाभासकुतर्कशास्त्रकलिलांतः करणाश्रयदुरवग्रहवादिनांविवादानवसरेउपतसमस्तमायामयेकेवलएवात्ममायामंतर्धायकोन्वर्थोदुर्घटइवभवतिस्वरूपद्वयाभावात् ॥ ३६ ॥ समविपममतीनांमतमनुसरसियथारज्जुखंडःसर्पादिधियाम्॥३७॥सएवाहिपुनःसर्ववस्तुनिवस्तुस्वरूपःसर्वेश्वरःसकलजगत्कारणकारणभूतः सर्वप्रत्यगात्मत्वात्सर्वगुणाभासोपलक्षित एकएवपर्यवशेपितः ॥ ३८ ॥ अथहवावतवमहिमामृतरससमुद्रविप्रुपासकृदवलीढयास्वमनसिनिष्पंदमानानवरतसुखेनाविस्मारितदृष्टश्रुतविपयसुखलेशाभासाः परमभागवताएकांतिनोभगवतिसर्वभूतप्रियसुहृदिसर्वात्मनिनितरांनिरंतरंनिर्वृतमनसःकथमुहवाएतेमधुमथनपुनःस्वार्थकुशलाह्यात्मप्रियसुहृदःसाधवस्त्वच्चरणांबुजानुसेवांविसृजंतिनयत्रपुनरयंसंसारपर्यावर्त्तः ॥ ३९ ॥ त्रिभुवनात्मभवनत्रिविक्रमत्रिनयनत्रिलोकमनोहरानुभावतवैवविभूतयोदितिजदनुजादयश्चापितेपामनुपक्रमसमयोयमितिस्वात्ममाययासुरनरमृगमिश्रितजलचराकृतिभिर्यथापराधंदंडंदंडधरदधर्थएवमेनमपिभगवञ्जहित्वाष्ट्रमुतयदिमन्यसे ४०। अस्माकंतावकानांतवनतानांततततामहतवचरणनलिनयुगलध्यानानुबद्धहृदयनिगडानांस्वलिंगविवरणेनात्मसात्कृतानामनुकंपानुरंजितविशदरुचिरशिशिरस्मितावलोकेनविगलितमधुरमुखरसामृतकलयाचांतस्तापमनर्हसिशमयितुम् ॥ ४१ ॥ अथहभगवंस्तवास्माभिरखिलजगदुत्पत्तिस्थितिलयनिमित्तायमानदिव्यमायाविनोदस्यसकलजीवनिकायानामंतर्हृदयेपुबहिरपिचब्रह्मप्रत्यगात्मस्वरूपेणप्रधानरूपेणचयथादेशकालदेहावस्थानविशेपंतदुपादानोपलंभकतयानुभवतःसर्वप्रत्ययसाक्षिणआकाशशरीरस्यसाक्षात्परब्रह्मणःपरमात्मनःकियानिहार्थविशेपोविज्ञापनीयःस्याद्विस्फुलिंगादिभिरिवहिरण्यरेतसः ॥ ४२ ॥ अतएवस्वयंतदुपकल्पयास्माकंभगवतःपरमगुरोस्तवचरणशतपलाशच्छायांविविधवृजिनसंसारपरिश्रमोपशमनीमुपसृतानांवयंयत्कामेनोपसादिताः ॥ ४३ ॥ अथोईशजहित्वाष्ट्रंग्रसन्तंभुवनत्रयंग्रस्तानियेननकृष्णतेजांस्यस्त्रायुधानिच ॥ ४४ ॥ हंसायदह्रनिलयायनिरीक्षकायकृष्णायमृष्टयशसेनिरुपक्रमायसत्संग्रहायभवपांथनिजाश्रमाप्तावंतेपरीष्टगतयेहरयेनमस्ते ॥ ४५

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिअस्तुतिकियअमर, सादरश्रीहरिकेरि ॥ मंदविहँसिबोलेहरपि, नाथकृपादृगहेरि ॥ ४६ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

हम्प्रसन्नहमतुमपरदेवा । कीन्हीभलीहमारीसेवा ॥ अस्तुतिकीन्हीविपुलहमारी । ममपदभक्तिबढ़ावनहारी ॥
जौनभक्तिकीन्हेंजनकोई । आवागमनरहितहठिहोई ॥ ४७ ॥ मैंप्रसन्नहोवहुँजेहिपाहीं । ताकोकछुदुर्लभहैनाहीं ॥
तदपिमोरियकांतीदासा । मोहिंछोड़िकछुकरैनआसा॥४८॥ विषैविवशजेजनअज्ञानी । तेनिजमंगललेहिंनजानी॥
तिनकोजेजनविषैबतावैं । तेऊअंतनरकमहँजावैं ॥ ४९ ॥ जोजानतममभक्तिहमेशा । करतनसोकमंत्रउपदेशा ॥

दोहा–जिमिरोगीमाँगतकुपथ, देतनवैदसुरेश ॥ तिमिसज्जनविषईजनन, देतनविषैनिदेश ॥ ५० ॥

जाहुसुरेशदधीचनगीचा । जोविद्यातपव्रततेसींचा ॥ माँगिलेहुद्रुतनृपतिशरीरा । तबमिटिजाइतिहारीपीरा ॥५१॥
जितनेदोउअश्विनीकुमारा । पढ़ीवेदविद्यासुखसारा ॥ जाकोअहैअश्वशिरनामा । जाहिपढेपावतहरिधामा ॥
द्विजदधीचतिनवेदपढ़ाई । दीनोजीवनमुक्तिबनाई ॥५२॥ सोइदधीचत्वष्टहिसुखभीनो । दीन्ह्योमेरोकवचप्रवीनो॥
नामनरायणकवचअखंडा । जाहिपढ़तहोतोवरिवंडा ॥ त्वष्टाविश्वरूपकहैसोई । दियोकवचममपावनजोई ॥

दोहा–ताकेपढ़तशरीरके, होतपापसबछीन ॥ सोईनारायणकवच, विश्वरूपतोहिंदीन ॥ ५३ ॥
जायदधीचनगीचतुम, युतअश्विनीकुमार॥माँगहुगेतबदेइगो, निजतनगुनिउपकार ॥
तेहिहाड़नकोल्याइविसु, करमाकरबनवाइ ॥ आयुधकुलिशकठोरअति, ममप्रभावमनल्याइ॥५४॥
सोईवज्रतेवृत्रको, काटहुगेतुमशीश ॥ लहिहौतबअपनोविभव, नहिंसंशैदिविईश ॥
मेरोजननहिंपावई, कबहूँकहूँकलेश ॥ यहिमतमेंविश्वासतुम, राखेरहोहमेश ॥ ५५ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–दैसुरेशकोभाँतियहि, वरनिदेशभगवान ॥ देखतहींसबसुरनके, भेतहँअंतरधान ॥ १ ॥

गयोसुरेशदधीचसमीपा । माँग्योहाड़तासुकुलदीपा ॥ तबदधीचहरपितमुसकाई । दियोवासवहिवचनसुनाई ॥
हेवृंदारकजानहुँनाहीं । होतजेदुखजनमरतहिमाहीं॥३॥ जियनचहततिहितनअतिप्यारो।माँगेतननहिंदेतउदा
हरिहुजोमांगिचहतेतेहिलेहीं । तदपिदेहिदेहीनहिंदेहीं ॥ ४ ॥ जबदधीचअसवचनसुनाये। तबसबदेवकहेदुखपाये

देवा ऊचुः ।

जोप्राणिनपरपरमदयाला । परउपकारकरैसबकाला ॥ तिनकोहैअदेयकछुनाहीं । पुनिकाजेतुमसबजगमाहीं ॥

दोहा–परसंकटजानतनहीं, स्वारथरतजनहोइ ॥ जोपरदुखजानतसही, तौमाँगतनहिंकोइ ॥

पैजगमहँसोसत्यउदारा । जोमुखतेननकारनिकारा ॥६॥ सुनिअसदेवनकीमृदुवानी। बोलेऋपिदधीचिद्विजज्ञानी

दधीचि उवाच ।

[illegible] अपमैंसुननकारि [illegible] मैंकीन्ह्योंअसवचनप्रकाशा ॥ तजिहिमोहियहअंतशरीरा।तातेकरिविचारगंभीरा ॥
[illegible] [illegible] । तुवउपकारसाधियशलेहौं ॥ ७ ॥ यहअनित्यतनतेसुरराई । जोनहिंजगयशलेतवनाई ।
[illegible] [illegible] । जडचेतननिंदततेहिकाहीं ॥ ८ ॥ यहीधर्मजानहुअविनासी । जाकेहैयशवंतउपासी ॥

दोहा–जोजीवनकेदुखदुखी, सुखमेंसुखीसदाहि । ताकेसमयाहिजगतमें, तुमजानहुकोउनाहिं ॥ ९ ॥

हायहाययहबड़ोकलेशा। मोकोउपजतअतिअंदेशा॥ क्षणभंगुरयहपायशरीरा। हरयोनतनधनतेपरपीरा॥
अंतशृगालश्वानतनखाहीं।धनकुलसंगजातकोउनाहीं॥ ऐसेहुमहँजोपरउपकारा।कियोनतेहिसमकौनगँवारा॥१०।

शुक उवाच।

असविचारकरिसुमतिदधीचा।दैमनमाधवचरणनवींचा११नैनमूंदिमतिथिरकरिज्ञानी।परमयोगधरिनिरअभिमानी।
तज्योतुरंतदधीचिशरीरा। गन्योनेकुमनमेंनहिपीरा॥ लैदधीचिकेहाडसुरेशा। विश्वकर्माकहँदियोनिदेशा॥

दोहा-यहदधीचिकेअस्थिको, दीजैवज्रबनाय। सोविश्वकर्मातुरतही, रच्योचतुरचितलाय॥ १२॥

सोवज्रीलैवज्रकठोरा। कृष्णप्रभावराखिवरजोरा॥१३॥ लैदेवनकोकटकमहाना। चढ़िऐरावतकियोपयाना॥
अस्तुतिकरतसिद्धगणसंगा। चाल्योरणकोपरमउमंगा॥ देवनदलयुतवासवघोरा॥१४॥चल्योदौरिवृत्रासुरओरा।
जानिपुरंदरकेरिअवाई। वृत्रासुरसैनासजवाई॥ महामहादानवसँगलैके। वासवसनमुखभेरिपुज्वैके॥
लखिवृत्रहिवासवतहँआयो। जिमिअंतकपरशंकरधायो॥१५॥त्रेतायुगमहँतहँमहराजा।भयोसुरासुरसमरदराजा।

दोहा-भयोनर्मदातीरमहँ, देवासुरसंग्राम। अस्त्रशस्त्रबहुविधिचले, नाशकशत्रुनग्राम॥ १६॥

रुद्रअग्निअश्विनीकुमारा। वसुआदित्यपितरबलवारा॥मरुतगणहुअरुविश्वेदेवा। ऋभुअरुसाध्यआदिबहुदेवा।
ऐसेवअसुरनमारनलागे।कबहुँनजेसंगरमहँभागे॥लियेकुलिशकरकठिनकराला। वासववारणचढ्योविशाला॥१७॥
निरखिपुरंदरकहँयहिभाँती।सहिनहिंसकेअसुरअरियाती॥वृत्रासुरकहँआगेकरिकै।कियोयुद्धअतिकोपहिभरिकै १८
शंबरनमुचिऋषभद्वैशीशा॥हयग्रीवअरुशंकुहिशीशा॥विप्रचित्तिअंबरहुअनर्वा।अयमुख-१९-अरुपुलोमवृषपर्वा।

दोहा-हेतिप्रहेतिहुउत्कलौ, दानवदैत्यअपार॥ २०॥ मालिसुमालीराक्षसहु, लैआयुधअनियार॥

छंदचामर-राजहिकनककेवर्म। गहिवीरवीरनधर्म॥ सुरसैनपतिकेओर। करिशोरपरमकठोर॥ २१॥
धायेअसुरबलवान। नहिंनेकुशंकितप्रान॥ शरगदापरिघप्रचंड। अरुपासमुद्गरदंड॥
तोमरकुठार-॥२२॥-त्रिशूल। अरुतोपतुपकअतूल॥चहुँओरशस्त्रचलाय। लियदेवदलकहँछाय॥२३।
नहिंदेवदलतेहिठाम। देखोपरैसंग्राम॥ छायेगगनशरजाल। अँधियारभोविकराल॥
जिमिघननक्षत्रछिपाहिं। तिमिदेवतहिंदरशाहिं॥२४॥तबदेवसंगरकोपि। वधदानवनचितचोपि॥
छांडेसमरशरधार। कियअसुरअस्त्रनछार॥ २५॥ दानवदुरासदधाय। पापाणतरुनचलाय॥
बहुशैलशृंगनमारि। निजविजयलीनविचारि॥ तबदेवदीरघवान। हनिदानवनसहसान॥
तरुशैलकियबहुखंड। पुनिहनेशरपरचंड॥ २६॥ तबसकलदानववीरु। रणमहँभयेभवभीरु॥ २७॥

दोहा-देवनकोलखिमुदितअति, विफलआपनोकर्म॥ दानवअतिडरपेतहां, मानिहियेमहँशर्म॥

भयेमोघअसुरनशरकेसे।दुष्टवचनहरिदासनजैसे॥२८॥ हरिविमुखीदानवभयपागे।वृत्रासुरहिछाँडिसबभागे॥२९।
निजदलविचलतलखिदनुजेशा।अरुणनैनकरिकोपितवेशा३० तिनकोकह्योउचितहँसिवानी।लैलैनामवीररसमानी।
विप्रचित्तिमयनमुचिपुलोमा। शंबरअरुअनर्वबलतोमा॥ मेरेवचनसुनहुँचितलाई। कहाँजाउवीरताविहाई॥३१।
जोजनम्योसोअवशिमरैगो। टारेकेसहुँनाहिटरैगो॥ पैजोमीचुमिलैरणमाहीं। तौतेहिउभयलोकवनिजाहीं॥

दोहा-मरेस्वर्गजगमेंसुयश, मृतकहुजियतसमान॥ ऐसोसंगरकोमरण, कोनचहैमतिमान॥ ३२॥

सवैया-इंद्रिनजीतिकैयोगविधानसोंछोड़िशरीरजोब्रह्मकोध्यावत।
कैरणमेंतनक्षोभकोछोड़िकैप्राणतजैअरिसन्मुखधावत॥
श्रीरघुराजभनैउभैभाँतिसोंजेतनत्यागतमोदबढ़ावत।
तेरविमंडलभेदिकैकृष्णपुरैगमनैजगफेरिनआवत॥ ३३॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा-
बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे दशमस्तरंगः

शुक उवाच ।

दोहा—वृत्रासुरयद्यपिकह्यो, धर्मवचनवहुभाँति ॥ तदपिअतिभयसाभरी, फिरीनभटनजमाति ॥ १ ॥

छंदमोतीदाम—विलोकिदलैभगतोतेहिठाम । विजयलखिदेवनकीचलधाम ॥
हनेभटजातअनाथसमान ॥ २ ॥ हियेनहिंवृत्रहिकोपसमान ॥
भन्योवरवैनतिन्हैंडेरवाय ॥ ३ ॥ तजेकुलकीकतजाहुपराय ॥
वृथाजननीजनम्योतुमकाहि । लगेसरपीठिफिरौकतनाहि ॥
कह्योपुनिदेवनकोअतिकोपि । हनौकतभागतमेंचितचोपि ॥
नशूरवधैरिपुकाहिपरात । वधैविमुखैदोउलोकनसात ॥ ४ ॥
खुशीयदिसंगरकीअतिहोय । लरोहमसोंअवसन्मुखजोय ॥
रहेइतठाढ़क्षणैभरिदेव । चहौजुनफेरिविपैसुखसेव ॥ ५ ॥
सुरानयहींविधिवैनसुनाय । महातनतेअतिशैडेरवाय ॥
कियोकरिजोरकठोरहिशोर । रह्योभरिसोजगमेंचहुँओर ॥ ६ ॥
सुनेसवदेवभयेविनचेत । गिरेमहिमेंनहिंआयुधलेत ॥
दियोपुनिवृत्रदोऊभुजताल । भयोअतिशोरसोऊविकराल ॥
भयेसुरसवपरैजिमिगाजु । वढ्योपुनिवृत्ररणैअतिगाजु ॥
लियेसुरमूँदितहाँसवनैन । भयेअतिआरतत्यागतचैन ॥ ७ ॥
वलीअसुरेशरँग्योरणरंग । दुरासदकोपितकंपितअंग ।
कँपावतपायनसोंमहिकाहिं । त्रिशूलअतूललियेकरमाहिं ॥
दलैपदसोंसुरसैनअपार । दलैजिमिकंजकरीमतवार ॥ ८ ॥
प्रकोपिपुरंदरताहिप्रचारि । दियोतेहिताकिगदायकमारि ॥ ९ ॥
गह्योकरवामगदासोइदुष्ट । हत्योगजवासवकुंभहिरुष्ट ॥
सवैअतिलाघवतातेहिकेरि । सराहतभेअसुरौसुरहेरि ॥ १० ॥

दोहा—लगीगदाअसुरेशकी, मनोगिरीगिरिगाज ॥ भ्रमतवमनशोणितदुरद, सातधनुपलोंभाज ॥ ११ ॥
वारणवासवकोविकल, लखिवृत्रासुरवीर ॥ पुनिनचलायोतेहिगदा, जानिधरमरणधीर ॥
सुधाश्रवतकरतेपरसि, संगरमहँसुरराज ॥ सावधानकरिलेतभो, पुनिअपनोगजराज ॥ १२ ॥
वज्रायुधकहनिरखिरण, सुधिकरिवंधुविनाश ॥ शोकमोहभरिवृत्रतहँ, कीन्ह्योंवचनप्रकाश ॥ १३ ॥

वृत्रोवाच ।

ताद्विजगुरुवधकारी । भलभोजोमोहिंपरच्योनिहारी ॥ तुवपपाणसमहृदयकठोरा । तामेंमारिशूलभरिजोरा ॥
ोहियमपुरकहँदेहों।उऋणगुरुभ्राताहितेह्वैहों॥१४॥अग्रजअनघहुआतमज्ञानी॥निजगुरुदीक्षितनिरअभिमानी॥
विश्वरूपकहँल्याई । स्वर्गअनित्यहेतसुरराई ॥ कीन्हेंवधपशुसमतिनकाहीं । तोसमनिरदैकोजगमाहीं ॥१५॥
ायाकीरतिअरुलाजा । तोमहँनहिंएकोसुरराजा ॥ अपनीकरनीतेसुरनाहू । राक्षसतेमोहिंअधिकजनाहू ॥

दोहा—वेधितमेरेशूलते, तोतनलखिहैसिद्ध ॥ पावकजारनयोगनहिं, खैहैंरणमहँगिद्ध ॥ १६ ॥

[illegible]आई । करनआजशठतोरसहाई ॥ तिनकोहनित्रिशूलगलकाटी । भूतनवलिदेहोंसखपाटी ॥ १७ ॥
[illegible] । तैंकाटिहैमोरअवशीशा ॥ तोनिजतनसवजीवनदैकै । सवतेउऋणजगतमहँह्वैकै ॥
[illegible] । जैहोंजहाँजातयोगीशा॥१८॥हनहुँसुरेशकुलिशकसनाहीं॥मैंतुवनिकटखड़ोरणमाहीं॥
[illegible] ॥ यथासूमपहँयाँचकजाँचे । तासुमनोरथहोतनसाँचे ॥१९॥

दोहा-रक्षकजासुमुकुंदहैं, तासुविजयहठिहोय । हैदधीचितपतीपनै, वज्रतुम्हारोसोय ॥
तातेहनहुमोहिंसुरराई । किमिठाढ़ेअशक्तकीनाई ॥ २० ॥ शेषचरणकमलनमनलाई । वज्रनिहतमैंजुगतविहाई ॥
लखिहौंसंकर्पणपदकंजा । सदाजौनसंतनमनरंजा ॥ २१ ॥ रसारसातलस्वर्गहुकेरी । जानहुँजौनविभूतिघनेरी ॥
सोविभूतिसंतननहिंदेहीं । श्रीमुकुंदहैंसंतसनेही ॥ जातेलोभमोहमदकामा । कलहकलेशवढतवसुयामा ॥ २२ ॥
मेरोप्रभुहरिनिजजनकाहीं । देतधर्मधनकामहुनाहीं ॥ जिनकेरहतिनकछुअभिलाषै । तेप्रभुचरणकमलरसचाषै ॥
दोहा-कृष्णकृपातुमपरनहीं, ताते भोगहुभोग । मैंगमनहुँलहिहरिकृपा, हरिपुरहैविनशोग ॥ २३ ॥
असकहिमूँदिनैनअसुरेशा । हरिसोंकहनलग्योमतिवेशा ॥ तवपदकंजदासकरदासा । होहुँफेरिमैंरमानिवासा ॥
तुवगुणगावतरहहुँसदाहीं । रहैमोरमनतुवपदमाहीं ॥ तुवसेवनममलगैशरीरा । हरहुनाथअबभवकीपीरा ॥ २४ ॥
सुरपतिपदब्रह्महुपदकाहीं । सार्वभौमहैवोमहिमाहीं ॥ अधिपपतालादिककोहोनो । योगसिद्धमुक्तिहुपुनिजोनो ॥
नमहिछोड़िमैंदासतिहारो।इनकोनहिंचाहहुकरिप्यारो२५जिमिअपक्षपक्षीजननीको।चाहतजिमिबछवासुरभीको ॥
दोहा-ज्योंविदेशवासीपतिहि, चहतिस्वकीयानारि । तिमिहमतुम्हरेचरणको, चितवनचहैंमुरारि ॥ २६ ॥
लहौंकरमवशभ्रमतजग, जौनयोनियदुराय । तहौंहोयरतिसंतपद, सुतातियनेहविहाय ॥ २७ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा-
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे एकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-वृत्रासुरयहिभाँतिकहि, धारिशूलविकराल । समरमरणजयतेअधिक, गुनिधायोतेहिकाल ॥
छँदगीतिका-जिमिवीरकैटभनीरमहँमधुसूदनैपहँजातभो।तिमिवृत्रवासवपैकुपितचटविकटनिकटदेखातभो ॥१॥
प्रलयाग्निसमपरचंडशूलअतुलजासुप्रकाशहै । असुरेंद्रभरिभुजदंडछोडिसुरेंद्रपैसहुलासहै ॥
पुनिघोरशोरअथोरकरितेहिठोरबोलतबैनभो । नहिंबचतअबपापीकतहुँतुवगणहटियमएनभो ॥ २ ॥
सुरपतिविलोकित्रिशूलउलकासरिसनभआवतजवै । अतिअभैवज्रचलायशूलहिकियोशतटूकहितवै ॥
पुनिवाहिवज्रीवज्रवृत्रहिवाहुवासुकिसोदल्यो ॥ ३ ॥ तवअसुरएककरकरिपरिघकोपितअमरपतिपैचल्यो॥
हरिकेहन्योहनुमहँपरिघपुनिदुरदकहँमारतभयो॥भोविकलतुरतवितुंडहरिकरतेकुलिशहुगिरिगयो ॥ ४ ॥
लखिअसुरपतिकोकर्मअदभुतलगेसकलसराहने । सुरविकलवासवकोविलोकतकियोहाहारवने ॥ ५ ॥
नहिंतकतलज्जितवज्रधरनहिवज्रवाहुउठावतो । तवविहँसिबोल्योवृत्रवासवलाजकतउरलावतो ॥
गहिवज्रजहिनिजशत्रुकहँलहिविजयअभयनहोतक्यो । यहकालहैनविषादकोयहवृथाशोचउदोतको ॥ ६॥
यकछोडिमाधवकोविजयरणमेंरहतिनहिंएकपै । जिनकेरहतआधीनतीनिहुँलोकतेजअनेकपै ॥ ७ ॥
दोहा-फँसेफाँसमेंविहँगजिमि, चलतकछूबलनाहिं । वासुदेवकेवशजगत, तिमिजानहुँमनमाहिं ॥ ८ ॥
ओजवेगबलमृत्युहुप्राना । इनकेहेतुअहैभगवाना ॥ सोनजानितनमानतहेतू । सोअतिशैअज्ञाननिकेतू ॥ ९ ॥
जिमिमृगनारिदारुकलकेरे । नाचहिनटकेविवशघनेरे।तिमहिंजीवईशपरतंत्रा।विचरहिजगनहिंसुनहुस्वतंत्रा ॥१०॥
जीवप्रकृतिजगसिरजेजेते।विनप्रभुतेजनसमरथतेते ॥११॥ हरिप्रभावजोजियनहिंजानै । सोअपनेकहँईश्वरमानै ॥
भूतनतेभूतनकोसिरजत । भूतनतेभूतनकोनाशत ॥१२॥ आयुपश्रीकीरतिहुविभूती । होतकालहिनहिंकरतूती॥
दोहा-ऐसेदारिददुखभयश, विनचाहेहठिहोत ॥ १३ ॥ तातेसुनहुँसुरेशतुम, ममवाणीसुखसोत ॥
जियबमरबओविजयपराजय।हानिलाभयशअपयशकाजय॥इनमेंसुखदुखगुननकोई।जसहरिइच्छातसहिहोई १४॥
सतरजतममायागुणअहहीं । येआतमगुणकविनहिंकहहीं॥यहजोजानतअहैसदाहीं।भवबंधनबँधतोसोनाहीं ॥१५॥

हमकोलखुभुजआयुधहीना। पैतुवप्राणलेनलवलीना॥ १६॥ संगरजुवादाँवहैप्राना। वाहनगोटीपांशावाना॥ धरणीजानहुँतासुविसाँती। विजयपराजयजानिनजाती॥ १७॥

शुक उवाच।

वासवसुनतवृत्रकीवानी। मनहिसराहिकपटविनजानी॥

दोहा–करिकुलैशकाकुलिशधर, विहँसतविस्मयछोड़ि। बोल्योवचनविचारिकै, छातीसन्मुखओड़ि॥ १८॥

दोनवअहौसिद्धितुमसाँचे। जोऐसीमतिमहँसतिराँचे॥ हरिकेपरमभक्ततुमभयऊ॥ १९॥ अतिदुस्तरमायातरियगऊ॥ असुरभावतजिकैसबभाँती। सज्जनभयेमोहमदघाती॥ २०॥ पैमोकोअचरजअतिलागै। जिनकोमनरजतममहँपागै॥ तेकवहूँहरिभक्तनहोहीं। पैतुमभयेसोकौतुकमोहीं॥ २१॥ जाकीमतिगोविंदपदराची। सोस्वर्गादिकसुखनहिंजाँची॥ जैसेसुधासमुद्रनहाई। कहाकामतेहितुच्छतलाई॥ २२॥

शुक उवाच।

यहिविधिकरतपरस्परवातैं। लरहिंवृत्रवासवकरिघातैं॥ २३॥

दोहा–परिघवामकरलैअसुर, हन्योपुरंदरकाहिं॥ २४॥ सोवज्रीनिजवज्रते, दल्योतुरतरणमाहिं॥

छंदभुजंगप्रयात–तहाँफेरिवज्रीसुवज्रैचलायो। भुजावामताकोतुरंतैगिरायो॥ २५॥

विनावाहुकोदानवींसैननाथा। मनोपक्षतेहीनभोशैलनाथा॥
वहींहैनदीसीउभैरक्तधारा। गिरयोभूमिवृत्रासुरैजोरवारा॥ २६॥
अकाशैयकैओठदीन्ह्योंलगाई। रह्योभूमिमेंएकसोभीतिदाई॥
मनोपानकीवोचहैसोअकासै। महानागसीदुष्टजिह्वानिकासै॥ २७॥
महाकालसीतासुडाढ़ैंविशालै। मनौतीनलोकैग्रसैदुष्टहालै॥
महारूपधारेहरीओरधायो। महाजोरसोभूधरानैउड़ायो॥ २८॥
पदैघातसोभूमिकोमंजिडारैं। डरैंदेवतातेतनैनानिहारैं॥
महाशोरकैशक्रकोभीतिदीन्ह्यों। सऐरावतैवासवैलीलिलीन्ह्यों॥ २९॥
ग्रसेज्योंगजैकाननैसर्पभारी। दशादेवदेवेशकीयोनिहारी॥ ३०॥
कियेशोरहाहाभईभीतिभारी। सबेआपनीमीचुलीन्हेंविचारी॥
सुनासीरगोआसुरीकुक्षमाहीं। जरयोनासुकुंदकृपातेतहाँहीं॥ ३१॥
कढ्योवज्रतेकुक्षिताकीविदारी। महावेगतेवज्रतेवज्रधारी॥
लग्योवृत्रकोकाटनेतत्रशीशा। गयोवीतिसोएकवर्षमहीशा॥ ३२॥
गिरायोजवैभूमिमेंशीशवाको। सोईकालहीमेंरह्योकालताको॥
जवैदेवइंद्रविजैकोनिहारे। बजायेअपारेसुखारेनगारे॥ ३३॥

दोहा–वरपनलागेसुमनसुर, कहेउमहेंद्राहिनाम॥ ३४॥ वृत्रासुरतनतेनिकसि, जीवगयोहरिधाम॥ ३५॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा [illegible] षष्ठस्कंधे आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्तरंगः १२

श्रीशुक उवाच।

दोहा–ठोकपालनिगरेनहीं, वृत्रविनाशनिहारि॥ सुसोभयेयकशक्रविन, यहतुमलेहुविचारि॥ १॥

[illegible]पिदित्यापितरगन। शिवविधिआदिगयेगृहतेहिक्षन॥ मुनिशुकदेववचनसुखपाई। कुरुपतिपुनिअसगिरागुनाई

राजोवाच ।

औरदेवभेमोदनिकेतू । वासवदुखितभयोकेहिहेतू ॥ यहसंशयअबदेहुमिटाई । सुनिशुककहनलगेसुखपाई ॥ ३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

वृत्रासुरबललखिसबदेवा । इंद्रहिकहतभयेकरिसेवा ॥ मारहुवृत्रहिंअबसुरसांई । दाहतदुष्टदहनकीनांई ॥
सुनिदेवनकीआरतवानी।विश्वरूपवधगुनिभयमानी ॥ चह्योनवृत्रासुरकहँमारयो।देवनसोअसवचनउचारयो ॥ ४॥

इंद्र उवाच ।

दोहा–विप्ररूपद्विजवधहिते, जोअबमोकोलाग । सोतियतरुजलभूमिकहँ, मैंकरिदियोविभाग ॥
वृत्रहिवधेपापजोहोई । सोकेहिभाँतिजायगोखोई ॥ ५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

ऋपिइमिसुनिमहेंद्रकीवानी। बोलेवचनयुक्तिउरआनी॥तुमभयमानहुँमतिसुरराई । हमतुमकोहयमेधकराई ॥ ६ ॥
नारायणपूजनकरवेहैं । तातेसकलपापनशिजैहैं ॥ ७ ॥ गोपितुमातुविप्रगुरुघाती । श्वपचकसाइनकीबहुजाती ॥
श्रीहरिनामकहतइकबारा।तिनकेपापहोतजरिछारा८हरिकहितरतकियहुजगघाता । कृतवधखलअघकेतिकबाता॥
उलखंडनतेहोतनपापा । वृथाकरहुकतमनसंतापा ॥ ९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–असमुनिवरकेवचनसुनि, वृत्रहिंहन्योसुरेश । ताहिब्रह्महत्यातुरत, लागीकरनकलेश ॥ १० ॥
पायब्रह्महत्यासुरराई । सहनलग्योतहँतापमहाई ॥ जैसेलाजवंतजनकाहीं । लज्जाहीनहोतसुखनाहीं ॥
तिमिवासवकीविभववडाई । द्विजहत्यावशभैदुखदाई ॥११॥ जराकँपतअँगलंबशरीरा । यक्ष्मारोगसंगप्रदपीरा ॥
रक्तवसन–॥१२॥–छूटेशिरवारा । ठाढरहहुबोलतिवहुवारा ॥ मीनसरिसदुरगंधिमहाई । दईसकलमारगमहँछाई॥
मानहुँअतिकरालचंडालिनि।धावतसन्मुखसबसुखघालिनि॥देखतसहसअक्षमयपाग्यो।नभमगदशौंदिशनमहँभाग्यो॥

दोहा–द्विजहत्याधावतभई, पीछेपीछेतासु । कहुँबचोवासवनहीं, कीन्ह्योंपरमप्रयासु ॥
मानसरोवरकहँपुनिजाई ॥ १४ ॥ कमलनालमहँरह्योलुकाई ॥ तहँबीतिगेवर्षहजारा । कढ्योनहींवासवभयभारा॥
रह्योविचारतयहीउपाई।केहिविधिद्विजहत्यायहजाई॥लह्योनयज्ञभागजलमाहीं । जायसक्योतहँपावकनाहीं॥१५॥
जबैस्वर्गवासवविनभयऊ । तबऋपिगणसुरगणदुखछयऊ ॥ करनलगेतबमनहिंविचारा।कोयहधरैआजुशिरभारा॥
पुनिविचारअसकियेमुनीशा।अहैनहुपजोमहीमहीशा ॥ तपविद्यावलबुधिविज्ञानी । जाकीकीरतिजगतमहानी ॥

दोहा–जबलोंसुरपतिशक्रपद, पावहिनहिंइतआय । तबलोंनहुपनरेशको, वासवपदबैठाय ॥
करवावहुवासवकोकर्मा । जातेहोयजगतकोशर्मा ॥ असविचारिसिगरेमुनिराई । नहुपनृपहिंदिविगयेलेवाई ॥
बैठायोइंद्रासनमाँहीं । पालनलाग्योत्रिभुवनकाहीं ॥ एकसमयतहँनहुपनरेशा । दीन्ह्योंअनुचितशचिहिंनिदेशा ॥
बैसोसुरपतिपदमेंआई । तातेतूंकरुसेवकाई ॥ कह्योशचीतबवातबनाई । रहेबोलावतनहिंसुरराई ॥
ममढिगआवतरहेसदाहीं।मुनिनलगायपालकीमाहीं॥यहिविधिजोतुमहूंइतआवहु । तौमोकोमिलिअतिसुखपावहु॥

दोहा–शचीवचनसुनिनहुपनृप, मुनिनपालकीनाधि । चढितापेआतुरचल्यो, शचीवचनविधिसाधि ॥
मुनिकबहुंशिविकानाहिंलन्हि ।तातेमंदगमनमगकीन्हे ॥ नहुपनरेशविलंबनिहारयो । सर्पसर्पअसवचनउचारयो ॥
तबअगस्तिकहकोपितवानी।सर्पहोहुभूपतिअज्ञानी॥तहँनहुपह्वैअजगरभारी।गिरयोअवनिमहँअमितदुखारी १६॥
तबविरंचिवासवबोलवायो।इरहरिकमलपापछोडायो१७इयमसमुनिवासवहिकरायो।इंद्रासनमहँपुनिबैठाय १८॥१९
छूटिगयोद्विजवधअघघोरा।भानुउदितजिमितमचहुँओरा॥२०॥अश्वमेधकरिकैसुरराई।कृष्णचरणपूज्योचितलाई॥

दोहा–त्रिभुवनपालनकरतभो, बैठिशक्रपदशक्र । सुरमुनिसिगरेसुखितभे, रहेशत्रुनहिंवक्र ॥ २१ ॥

चित्रकेतुरुवाच।

तपज्ञानसमाधिहुपूरे । योगीसकलदुरिततेदूरे ॥ तिनकोविदितकहानहिंहोतो।भूतभविपाहियरहैउदोतो ॥ २३ ॥
नितथापिपूँछ्योमोहिंकाँहीं । तातेमेरेजोमनमाँहीं ॥ सोमेंदेहांतुमहिंसुनाई । कृपासाहितसुनियेमुनिराई ॥ २४ ॥
लोकपालजोचहैंविभूती । सोमैंलीन्ह्योंकरिकरतूती ॥ पैसुतबिननहिंसुखउपजावै । जैसेक्षुधितहिऔरनभावै॥२५॥
तेरक्षहुमोहिंमुनिकेतू।जाहुँनरकनहिंपितरसमेतू॥मोहिइकपुत्रकृपाकरिदीजे।यहअनुपमजगमहँयशलीजे ॥२६॥

शुक उवाच।

दोहा-चित्रकेतुकेवचनसुनि, मुनिअंगिराकृपाल ॥ ताकेसंततिहेततहँ, कीन्ह्योंयज्ञविशाल ॥

त्वष्टादेवहिंपूजनकीन्ह्यों । रचिपायसआहुतिबहुदीन्ह्यों ॥ २७ ॥ शेपभागलैकैकरमाँहीं। गेमुनीशनृपमंदिरकाँहीं॥
रानीजेठिकृतद्युतिनामा । दियोताहिपायससुतकामा ॥२८॥ पुनिनृपसोंबोलेमुनिराई । महाराजसुनियेचितलाई ॥
ह्वैतुम्हरेएककुमारा । हर्षशोककोवरधनहारा ॥ असकहिमुनिअंगिरासुजाना।निजआश्रमकहँकियेपयाना॥२९॥
पायसभोजनकरताहिरानी । गर्भवतीभैसुमुखिसयानी ॥ जैसेअगिनयोगकहँपाई । धरयोगर्भकृत्तिकासोहाई॥३०॥

दोहा-नितप्रतिबाढतगर्भतेहि, सुकुलपक्षजिमिचंद ॥ चित्रकेतुकेतेसहीं, बाढ्योअमितअनंद ॥ ३१ ॥

कालपायभोप्रगटकुमारा।सुनतप्रजनभोमोदअपारा॥३२॥मज्जनमुदितमहीपतिकीन्ह्यों।अलंकारअंगनिरचिलीन्ह्यों
विप्रनसोंलैआशिरबादा।जातकर्मकिययुतअहलादा॥३३॥रजतकनकभूपणअभिरामा।वसनवाजिगजरथअरुग्रामा॥
पटअर्बुदसुरभीयुतबछरन।भूपतिदियोदानबहुविप्रन३४दीननकहँधनसमधनवरप्यो।वारबारसुतकहँलखिहरष्यो ॥
सुतकेआयुपअरुयशहेतू।दियोदानऔरहुचित्रकेतू ३५ करिकलेशसुतकोनृपपायों।निर्धनजिमिधनलहिसुखछायो॥

दोहा-दूनदूनदिनादिनकियो, सुतपेनेहनरेश ॥ ३६ ॥ जननीजनकहुतेअधिक, कीन्हीप्रीतिहमेश ॥

कृतद्युतिकोलखिपुत्रउछाहू।बाढ्योसवतिनकेउरदाहू३७लालनकरहिंबालकहँराजा।सुखवशतजिमुरुजनकीलाजा॥
अधिकसकलरानिनतेप्रीती।कृतिद्युतिपैकियसंयुतनीती।लखिकृतद्युतिकोअधिकसोहागा।सवतिनसकलनीकनहिंलागा
नृपतिनिरादरगुनिसुतहीनी । अपनेकोअतिनिंदाकीनी॥३९॥पुत्रविहीनपापिनीनारी । लहतिअनादरपतितेभारी॥
पुत्रवतीहोतीजोरानी । तैसौतिनदासीअनुमानी ॥ करहिंअनादरबारहिंबारा । अनुचितउचितनकरहिंविचारा४०॥

दोहा-स्वामीसेवामहँनिरत, दासीपावतिमान ॥ हमदासिहुँकीदासिका, अहैंअभागनिदान ॥ ४१ ॥

यहिविधिसिगरीसवतिदुखारी।कृतद्युतिकोसुतहरखिनिहारी॥कियेविरतासोअतिभारी।सिगरीचित्रकेतुकीनारी ४२
जबकृतद्युतिगुनिसोवतसुतको।वागनगईकहूँइतउतको ॥ सूनपायतहँसवतिसिधाई। सुतहिंजहरदीन्ह्योंवरिआई४३
कृतद्युतिदासिचालितहँधाई।सोवतसुतगुनवचनसुनाई॥ल्यावहुसुतकोआशुजगाई ४५धायसुनतसुतनिकटसिधाई॥
लख्योंनैनउलटेसुतकेरे । जान्योमृतकसुतहिकरफेरे ॥ हायहायतहँधायपुकारी।गिरीधरणितनसुरतिबिसारी॥४६॥

दोहा-पुनिलागीउरशिरधुननि, युगलपाणितेरोय ॥ कृतद्युतिसुनिधात्रीरुदन, गयितहँशोकसमोय ॥४७॥

सुतकहँनिरखिमृतकतबरानी । गिरीधरणिमूर्च्छितबिलखानी॥धुनतशीशशिरकेशहुछूटे।भूपणसुमनमालसबटूटे॥
रोवनलगीपुकारपुकारी । हायदशाकाभईहमारी ॥ ४८ ॥ तहँअंतहपुरकेनरनारी । सुनिरोदनमनगुनिदुखभारी ॥
धायधायआयेढिगताके । निरखिमृतकसुतसमदुखछाके ॥ जैसोतिनकीन्ह्योंअपराधा ।तेऊरचितनशोकअगाधा॥
कृतद्युतिढिगचलिरोवनलागीं।मानहुँमहाशोकमहँपागीं॥४९॥चित्रकेतुसुनिमृतककुमारा।गिरतपरतगोतासुअगारा

दोहा-निरखिमृतकसुतअंधसम, गिरयोमूर्च्छिमहिमाहिं ॥ मंत्रीमित्रहुबंधुगण, रहीखबरितननाहिं ॥५०॥

गिरेबालचरणनमहँजाई । खुलेशिरोरुहतनशिथिलाई ॥ वहतिनैनआँसुनकीधारा । दीरघश्वासलेतबहुवारा ॥
सुखिगयोमुखअतिदुखछायो।कहनचहतकछुनहिंकहिआयो।निजपीतमकोदेखिदुखारी।एकपुत्रसोउमृतकनिहारी॥
औरहुजननदुखितदृगदेखी।अतिहिंअभागिनिआपुहिलेखी।कियोकृतद्युतिविपुलविलापा। देखिशत्रुहुनभोसंतापा॥
कुचकुंकुमआंसुनसोंधोवति।नारवारवालकमुखजोवति।कज्जलवहिमुखमलिनदेखातो।प्रसितराहुजिमिविधुनविभातो

दोहा—कुररीसरिसपुकारती, करिकरिआरतशोर। कहतवचनअतिशोककरुण, ...
हायविधातादयानतेरे। मूरखतेंअवभयेघनेरे॥ देमोहिंसंततितिंहरिलीन्हीं। ...

तौपुनिकरमहिजगतप्रधाना। तुमहौवृथापरेअसजाना॥ तोरहुवृथानेहकीडोरी। ...
पुनिसुतसोंअसभापनलागी। रानीमहाशोककसोंपागी॥ हेसुततुममोहिंकियोअनाथा। ...
दोहा—देखहुप्यारेपुत्रतुम, निजपितुशोकसरूप। पितुमातहिंडारहुवृथा, पुत्रशोककेकूप॥
यमकेअयनअकेलनजाहू। लेहुलेवाइहमहुँसवकाहू॥ उठहुतातवालकसवआवत। ...हितुमहिं...
बहुविलंबलगिसोयहुताता।भोजनकरहुउठहुसुखदाता॥५ ...
मंगलहीनभयेहमजानी। लखैनतुवमुखयुतमुसक्यानी॥उठिकैमधुरकहहुनहिंबैना। तह...

श्रीशुक उवाच।

यहिविधितियकरसुनतविलापा।चित्रकेतुलहिअतिसंतापा॥...
दोहा—तहँदंपतिकोदुखितलखि, पुरवासीनरनारि। व्याकुलह्वैरोवनलगे, तनकीसुरतिबिसारि॥ ६
चित्रकेतुदुखउदधिमहँ, पर्योजानिमहिमाँहिं॥ नारदयुतमुनिअंगिरा, आयेतुरततहाँहिं॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे चतुर्दशस्तरंगः॥ १४॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—मृतकबालढिगमृतकसम, शोकितनृपकहँदेखि। नारदमुनिअरुअंगिरा, बोलेवचनविशेषि॥
जेहिशोचहुसोकौनतुम्हारो। यहिकेतुमहौकौनउचारो॥ पूरवपितारहतजोजाको। ...सुत...
जैसेवारिवेगतेवालू। बिछुरतमिलतरहतसवकालू॥ तैसहिदेहिनकोव्यवहारा। जानिलेहुजनिकरहुसँभारा॥
जैसेवीजवोयमहिजाहीं। कौनहुँहोहिकौनहूँनाहीं॥ तैसेसुतकहुँहोहिघनेरे। कहुँनहोहिंहरिमायाप्रेरे॥ ४॥
हमतुमसकलचराचरजेते। एकहिंकालभयेसवतेते॥ जीवनित्ययहरहतसदाहीं। तनअनित्यतिहुँकाल...
दोहा—भूतनतेभूतनसवै, भूतात्माभगवान। पालतघालतसृजतजग, खेलतबालसमान॥ ६॥
मातुपितातनयोगसदाहीं। देहीदेहलहतजगमाहीं॥ जैसेवीजवीजतेहोई। तैसेतनतेतनहुँनोई॥
पंचभूतजिमिनित्यरहतहैं। तिमिआत्महिकविनित्यकहतहैं॥७॥देहीदेहएकजोमाने। ...
देवमनुजआदिकनभेदा। जियकेनाहिंतनकेकहवेदा॥ जैसेशुक्तिरजतकरभानू। तिमितन...

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिदोउमुनिजवसमुझायो।राजहिंकछुकज्ञानतवआयो॥शोकितवदनधोयमुखपानी।बोलेवचनजोरियुग...

राजोवाच।

दोहा—दोउज्ञानीतुमकौनहौ, वेदविदांवरधीर। धारिवेषअवधूतको, आयेगोपिशरीर॥ १०॥
विचरहुमहिहरिजनयहिहेतू।हमतेकुमतिनकरनसचेतू ११ नारदऋभुसनकादिकुमारा। देवलअरुअंगिरा...
...तम...
असुरिपतंजलिदत्तत्रिऊ। जातुकरणमारकंडे ... ॥१२॥ हिरण्यनाभकौशलमुनि...
ऋतुध्वजश्रुतदेवादिकजेते। ... ज्ञानदीपहैं...

दोहा-समरथउभयमुनीशतुम, वेगिउधारहुमोहिं । हौंमलीनदुखमीनमें, दयाहगनतेजोहि ॥ १६ ॥
सुनिकेचित्रकेतुकीवानी । भनेअंगिरामुनिविज्ञानी ॥

अंगिरा उवाच ।

हमहैंतोरपुत्रकेदाता । येनारदहैंपुत्रविधाता ॥ १७ ॥ पुत्रशोकतेशोकिततोको । देखिदयालागीअतिमोको ॥
तोपैकृपाकरनइतआये।तोहिहरिदासनमाँहगनाये॥१८॥जेजगमाहिंभक्तभगवाना।तिनहिंशोकयोगमतिवाना॥१९॥
तवहीतुमहिज्ञानहमदेते । भवजलनिधिपारहिकरलेते ॥ पैसुतआशजानिमैंतेरी । दियोपुत्रकरिप्रीतिघनेरी ॥२०॥
सोअवपुत्रवानकरतापा । चित्रकेतुतुमकहँअतिव्यापा ॥

दोहा-ऐसहिदारागृहविभव, संपतिसैनहुराज ॥ २१ ॥ २२ ॥ जानहुँसवैअनित्यअहै, शूरसेनमहराज ॥
हैसवशोकमोहदुखदाई । इंद्रजालसमपैरलखाई ॥ जानहुइनहिंअनित्यनरेशा । स्वप्नसरिसनहिंरहेहमेशा ॥ २३ ॥
चाहतचितविपर्यासुखजैसो।अनगुनकर्ममिलैतेहितैसो॥२४॥पंचभूतइंद्रियमयदेहू।देहिनकोअतिहीदुखगेहू ॥२५॥
तातेथिरमतिकरिनृपकेतू । आतमरूपजानिसुखहेतू ॥ देहसनेहछोडिसवभाँती ।गहहुविरागजानिभववाती॥२६॥
तहँसुविसुंदरवचनअमोले । चित्रकेतुसोंनारदवोले ॥

नारद उवाच ।

भूपमंत्रयहमंगलदाई । सावधानसुनियेचितलाई ॥

दोहा-जाकोप्रीतिप्रतीतियुत, जपतसातनिशिमाहिं । इमिदुर्लभतुमदेखिहौ, संकर्षणप्रभुकाहिं ॥ २७ ॥
सवैया-जेप्रभुशेपसरोजपदैयुतप्रीतिप्रतीतिसोंपूरणध्यावत । शंकरआदिकज्ञानकोपायतजेभवकेभ्रमजेदुखछावत॥
पायमहत्त्वमहेशभयेरघुराजकहेनितहूंगुणगावत । तासुप्रसादसोआपहूँआशुलहेंगेमहामहिमामनभावत ॥ २८ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते षष्ठस्कंधे आनन्दाम्बुनिधौ पंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-राजसुवनकेजीवको, नारदतेहिंतनल्याय ॥ दुखितनकाहदेखायकै, वोलेवचनसुनाय ॥ १ ॥

नारद उवाच ।

जोहहुजननिजनकहजीवा।तुवहितशोचतवंधुअतीवा ॥२॥ प्रविशिकलेवरमाँहितुरंता। भोगहुशेपआयमतिमंता॥
पितुआसनमहँवैठिसुखारी।विभोभोगभोगहुअतिभारी॥३॥सुनतजीवनारदकीवानी।वोल्योवचनपरमविज्ञानी॥४॥

जीव उवाच ।

कर्मविवशहमवहुतनधारे । कवकेयेपितुमातुहमारे ॥ कहुँतिर्यककहुँमनुजहुदेवा । धरेअमिततनहमसुनिदेवा ॥
शत्रुमित्रजननीयहजाके । होतपरस्परसवसवहीके ॥ ५ ॥ जैसेहाटकहाटनमाहीं । वाटनचाटनविकतसदाहीं ॥

दोहा-तैसेसिगरीयोनिमें, भ्रमतफिरतयहजीव । काकोसुतकाकोपिता, काकोमित्रअतीव ॥ ६ ॥
यद्यपिनित्यजीवयहअहई । तेहिसम्वंधअनित्यहिरहई ॥ जवलोंजाकरजापरनातो । तवलोंतापरनेहदेखातो ॥ ७ ॥
जवलोंरहतजीवतनमाहीं । तवलोंहममतातेहिकाहीं॥८॥इंद्रिनपतिसूक्षमअविनाशी । नित्यजीवपदस्वयंप्रकाशी॥
पूरवजन्मकर्मजसकरई । तेहिअनुसारजन्मजगधरई ॥ ९ ॥ नहिंअप्रियप्रियजियकहँकोई । नहिंआपनोपरायोहोई॥
गुणदोषककारकजेप्रानी । तिनमतिसाक्षीजीवहिजानी॥१०॥कर्मजनितसुखदुखतेहीना।होतनगुणदोषहुमहँलीना॥

दोहा-उदासीनसमदेहमें, रहतसदाआसीन ॥ कारणकारजकोअहै, साक्षीपरमप्रवीन ॥
अहैदेहकोसोइनियंता । स्वामीतासुरमाकरकंता ॥ ११ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिजीवगयोतनत्यागी।लखिसबकीमतिविस्मयपागी॥सिगरेबंधुनेहकीडोरी।तासुवचनसुनितुरताहितोरी॥१२
मृतककर्मकीन्ह्योंपुनिताको।छाँड्योमहामोहममताको॥१३॥गरलदियोजेशिशुकहँरानी।लज्जितभईभईद्युतिहानी।
सिगरीकालिंदीतटजाई। जोविधिउपरोहितनबताई॥तेहिविधिकियोसकलव्रतभारी।शिशुहत्याछूटीदुखकारी॥१४
चित्रकेतुहूसुनिमुनिवानी । ह्वैगोआशुविमलविज्ञानी ॥

दोहा—अंधकूपगृहछोड़िकै, कढ्योतुरंतनरेश ॥ पंकफँस्योगजराजजिमि, निकसतविगतकलेश ॥ १५॥
कालिंदीमहँमज्जनकीन्ह्यों । पितरनदेवनकहँजलदीन्ह्यों ॥ बैठ्योमौनमनहिंथिरकारिकै।शेषचरणकोध्यानहियधरिकै॥
तहांअंगिरानारदआये । गुनिहरिदासमहामुदपाये ॥ चित्रकेतुकियतिनहिंप्रणामा । आसनदियोदुहुँनतेहिठाम॥१६
नारदचित्रकेतुकेकाना । शेषमंत्रयहसुखदबखाना ॥ जाकेजपतसातदिनमाहीं । मनुजलखतसबदेवनकाहीं॥
अवशिमुक्तिताकीनृपहोती । भगसागरउतरतसमसोती ॥ चित्रकेतुकहँदैयहमंत्रा । पुनिनारदमुनिप्रगटिततंत्रा॥

दोहा—सुखदशेषअस्तोत्रयह, गतिदायकभवभंज ॥ चित्रकेतुसोंकहतभे, मुनिनायकमनरंज ॥ १७ ॥
नमस्तुभ्यंभगवते वासुदेवाय धीमहि ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धाय नमः संकर्षणाय च ॥ १८॥ नमोविज्ञानमात्राय परमा
नन्दमूर्त्तये ॥ आत्मारामायशान्तायनिवृत्तद्वैतदृष्टये ॥ १९ ॥ आत्मानन्दानुभूत्यैवन्यस्तशक्त्यूर्मयेनमः॥
हृषीकेशायमहतेनमस्तेविश्वमूर्त्तये ॥ २० ॥ वचस्युपरतेप्राप्ययएकोमनसासह ॥ अनामरूपश्चिन्मात्रः
सोऽव्यान्नः सदसत्परः ॥ २१ ॥ यस्मिन्निदंपतश्चेदंतिष्ठत्यप्येतिजायते ॥ मृन्मयेष्विवमृज्जातिस्तस्मै
ब्रह्मणेनमः ॥ २२ ॥ यन्नस्पृशंतिनविदुर्मनोबुद्धीन्द्रियासवः ॥ अन्तर्बहिश्चविततंव्योमवत्तन्नतोस्म्यहम् ॥ २३॥
देहेन्द्रियप्राणमनोधियोमीयदंशविद्धाः प्रचरन्तिकर्म्मसु॥नैवान्यदालोहमिवाप्रतप्तंस्थानेपुतद्द्रष्टपदेशमेति ॥२४॥
ॐनमो भगवते महापुरुषाय महानुभावाय महाविभूतिपतये सकलसात्वतपरिवृढानिकरकरकमलकुड्मलो-
पलालितचरणारविन्दयुगुल परमेष्ठिन्नमस्ते ॥ २५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—संकर्षणअस्तोत्रयह, पाठकरैजेनित्त ॥ सोभयनहिंपावतकबहुँ, विमलहोतद्रुतचित्त ॥
चित्रकेतुकहँभाँतियहि, नारदकरिउपदेश ॥ गमनअंगिरासहितकिय, वेगिविरंचिनिवेश ॥ २६ ॥
शूरसेनभूपतिविज्ञानी । सातदिवसजलपानहिंठानी ॥ सावधानह्वैशेषचरणमें । चितदैकीन्ह्योंजयमधुवनमें ॥ २७।
सातदिनहिंमहँमंत्रप्रभाऊ । भयोभूपविद्याधरराऊ ॥ जहँमनकरैतहँनृपजावै ॥ देवनसोंसतकारहुपावै ॥ २८।
चित्रकेतुपुनिकछुदिनमाहीं । गयोशेषप्रभुरहेजहाँहीं ॥ लख्योफणीशरूपछविछावत । देखतपापिनपापनशावत ॥
दासनमृदुशत्रुनविकराला।जगमंगलदायकातिहुँकाला ॥ विधिशिवआदिसुरनतेवंदित । रहतसर्वदासुभगअनंदित॥
दोहा—आसनअंबरपादुका, सेजहुछत्रनिवास ॥ तेहिक्षणतेसहिहोतजस, चाहतरमानिवास ॥ २९ ॥

छंदमनोहरा—तनमहाप्रकासामनुकैलासादानिहुलासानिजदासाप्रभुअनयासा ॥
सबभाँतिसुपासाथानविलासारमानिवासाजसुभासाजेहिंचहुँपासा ॥
हलमूशलधारीमनहुँतमारीमुकुटउज्यारीपटभारीसितद्युतिकारी ॥
पातालविहारीजनदुखहारीकुमतिविदारीमहिधारीतेहिवलिहारी ॥
कटिकिंकिणिराजेकंकनभ्राजेअरुणदराजेहगराजेअंबुजलाजे ॥
मधिसिद्धिसमाजेशेषविराजेसबसुखसाजेअहिराजेनिरख्योराजे ॥ ३० ॥
दरशननृपपायोदृगजलआयोप[illegible] ॥ ३१ ॥
[illegible] ॥ ३२ ॥

दोहा—इंद्रिनकीगतिरोकिकै, सावधानह्वैभूप ॥ शास्त्ररूपश्रीशेपकी, अस्तुतिकरीअनूप ॥ ३३ ॥

चित्रकेतुरुवाच ।

छंद—जेआतमजीतेतुमहितेजीतेतिनतुमजीतेह्वैवशमें । तुमअहोअजीतेप्रणतपिरीतेत्रिगुणातीतेहरिरसमें ॥ ३४ ॥
जगउतपतिपालनअरुतेहिघालनहेअरिशालनआपकरैं।अजअरुईशानादक्षमहानाउत्तपतिमानावृथाधरैं ॥३५॥
तवआदिनअंताजगतनियंतानित्यलसंताबलतोमें ॥३६॥ आवरननसातैअंडनव्रातैमोहिदेखातैप्रतिलोमें॥३७॥
जेविपैपियासेनरपशुखासेसुरनउपासेतुमहितजे । जोलहफलकाहींकछुदिनमाँहींसोनशिजाहींविभौसजै ॥ ३८॥
जेतुमहिंसकामैपदशिरनावैंवाँछितपावैसुखधामै । पुनिजगनहिंआवेंजिमिजरिजावैंबीजनजामैंवसुधामै ॥ ३९॥
हेअजितसुकरमावैष्णवधरमाप्रदवरसरमाजोभाष्यो । तातेसबतेरेश्रेष्ठघनेरेवेदनिटेरेगुणराख्यो ॥ ४० ॥
सोइधर्मजेकीन्हेंतेइप्रवीनेगेसुखभीनेतुवधामें । लहिभगवतधरमाकियेजेकरमातेतजिभरमामदपामैं ॥ ४१ ॥
जेवैष्णवधरमातजिकियकरमातेदुखघरमानर्कपरैं । जेएकहुबाराकरिअभिचारामनुजनमारातेउमरैं ॥ ४२ ॥
प्रभुतुवसंकल्पाकौनेहुकल्पाहोतअनल्पाअसतकहूं । जेहितेवैष्णवमतयुगयुगप्रगटतजननहीकरतपयानकहूं ॥
वैष्णवविज्ञानीनिरअभिमानीव्यापकजानीतुमहिंभजै।तेविनहिप्रयासाकरिभवनासाआपअवासाआशुव्रजै॥४३॥
तुवदर्शनतेरेपापघनेरेरहतननेरेतनमाहीं । तुममहँअनुरागैअतिसुखपागैअचरजलागैमोहिनाहीं ॥
जाकेश्रुतिठामाप्रभुतुवनामापरचोलल्लामायकवारैं । सोअघिहुअपारैंतजिसंसारैंआपअगारैंपगुधारैं ॥ ४४ ॥
यहरूपआपकोअतिप्रतापकोलखतपापकोनाशभयो। तुवभक्तसुहायेनारदगायोसोमतिभायेमोदमयो ॥४५॥
तुम्हरोसवजानैंजोजनठानैकहाबखानैजगव्यापी । नहिंसूरजआगैजुगुनूजागैतिमिमोहिंलागैपरतापी ॥ ४६ ॥
प्रभुजगविस्तारीरक्षनकारीअरुसंहारीमहिधारी । तुवप्रेमहिपानाकुमतिनजानाविपयलोभानाजडभारी ॥
हेशुद्धस्वरूपानाथअनूपात्रिभुवनयूपानमोनमो ॥ ४७ ॥ सरसौसमधाराभूतलभारावदनहतारापारतमो ॥
दोहा—श्वासलेतप्रभुआपुके, श्वासदिवादिकलेत । तुवचेतनतातेसकल, होतविश्वकोचेत ॥ ४८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिजबअस्तुतिकियो, चित्रकेतुमतिमान । तबप्रसन्नह्वैभनतभे, सहसवदनभगवान ॥ ४९ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

जोनअंगिरादेवऋपीशा । कह्योज्ञानतोसेअवनीशा ॥ तातेअरुममदर्शनपाये । भयेसिद्धविचरहुसुखछाये ॥ ५० ॥
हमसबभूतनअंतरयामी । अरुतिनकेकारणअरुस्वामी ॥ शब्दब्रह्मअरुपरब्रह्मवर । अहैसनातनमोरकलेवर ॥५१॥
जीवजगतमहँजगजियमाहीं । दोउमहँव्यापकहमहिसदाहीं॥जिमिसपनेनिजआतमकाहीं।देखतजनसिगरेजगमाहीं॥
जागेहोतहियेअसज्ञाना । हमतोरहेएकअस्थाना ॥५३॥ यहिविधिसुरमनुजादिकरूपा । स्वप्नसरिसमायामयभूपा॥
दोहा—अहैविलक्षणजीवयह, मायातेअसजानि । करतरहैसुमिरणसदा, साक्षीतिहिअनुमानि ॥ ५४ ॥
जोपरमात्मप्रभावते, देखतस्वप्नअपार । अरुसुपुतिमेंसुखलहत, सोहैरूपहमार ॥ ५५ ॥
जागतस्वप्नसुपुप्तिहुमाहीं । भिन्नहैतिनतेरहतसदाहीं ॥ ज्ञानस्वरूपजीवहैजोई । परमातमशरीरहैसोई ॥ ५६ ॥
जिनकोऐसोज्ञाननआवत।जननमरनतेपुनिपुनिपावत॥५७॥पायजगतमहँमनुजशरीरा।साधकज्ञानविज्ञानगँभीरा ॥
जान्योनिजसरूपजोनाहीं । ताकोनहिंमंगलजगमाहीं ॥५८॥ तातेमोक्षमार्गमनलाई । जानिप्रवृत्तिमारगदुखदाई ॥
करिफलआशकर्मनहिंकरई । सदाकृष्णपदउरमहँधरई ॥५९॥ सुखपावनदुखनाशनहेतू।करहिंकर्मनरनारिसमेतू॥
दोहा—पैनलहतसुखनेकऊ, होतनशोकविनाश ॥ ६० ॥ जानिमहाविपरीतियह, छोडिसकलमनआश ॥
जागतस्वप्नसुपुतिहुमाहीं।मानिविलक्षतुर्यानिचकाहीं॥६१॥ह्वैअनन्यशुभभक्तहमारा।करैप्रेमरसपानअपारा ॥ ६२॥
निदर्शितवस्तुईशकररूपा। अंतरयामीसोइअनूपा ॥ यहीज्ञानत्मारथसबकेरो। बुद्धिमानकौसंशयनिवेरो ॥ ६३ ॥

तुमहूँश्रद्धासहितनिवेशा। ज्ञानविज्ञानसमेतहमेशा॥ सावधानह्वैममउपदेशा। धारणकरितजिसकलकलेशा॥ सिद्धिहोहुगेतुमततकाला। परिहौनहिंकबहूँजगजाला॥ ६४॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिचित्रकेतुसोंबानी। सहसवदनजगगुरुविज्ञानी॥

दोहा–चित्रकेतुकेदेखते, विश्वात्माभगवान। निजस्वरूपकोतुरतहीं, कीन्होंअंतरधान॥ ६५॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे षोडशस्तरंगः॥ १६॥

दोहा–अंतरहितजबशेषभे, तबकरितिनहिंप्रणाम॥ चित्रकेतुविचरनलगे, नभह्वैपूरितकाम॥ १॥

भयोदिव्यइंद्रिनबलजाको। रुक्योगवनत्रिभुवननहिंताको। चारणसिद्धिमुनीशअनेकन। अस्तुतिकरहिंसंगबालिछनछन नंदनचित्ररथोवनमाहीं। मंदरकंदरअंदरपाँहीं॥ करवावतगोविंदगुणगाना। लीन्हेंसंगकिन्नरिननाना॥ लाखनवर्षनकियोविहारा। चित्रकेतुहरिभक्तउदारा॥ जबजैसोचाहतमनमाहीं। तबतैसोह्वैजाततहाँहीं॥ ३॥ एकसमयअतिविमलप्रकासा। दियविमानजोरमानिवासा॥तामेंचढ्योजातकहुँकाहीं। गयोजबैकैलासहिमाहीं॥४॥

दोहा–मुनिसमाजमधितहँलख्यो, सेवितकिन्नरसिद्ध॥ पारवतीकहँअंकलै, बैठेशम्भुप्रसिद्ध॥

चित्रकेतुशंकरढिगजाई। उमहिंविलोकतहँस्योठठाई॥मनमहँअतिशयकौतुकमानी॥चित्रकेतुबोल्योअसबानी॥५॥

चित्रकेतुरुवाच।

शिक्षकजनकेधर्मघनेरे। अहैगुरूसबलोकनकेरे॥ ६॥ शीशजटाधरवरतपधारी। सकलब्रह्मवादीप्रभुभारी॥ ७॥ ऐसोशम्भुसभामधिआजू। बैठअंकतियधरितजिलाजू॥ प्राकृतपुरुषहोतजोकोऊ। बैठतअसनिरलज्जनसोऊ॥ लैअपनीइकांतमहँनारी। होतविनिधविधिविषैविहारी॥ येतोशंभुमहाव्रतधारी। तजीलाजधौंकहाविचारी॥

दोहा–मुनिसमाजमधिनारियुत, दियोलाजसबखोय॥ अतिअचरजलागतहिये, अतिअनुचितयहजोय॥ ८॥

श्रीशुक उवाच।

सुनिकैचित्रकेतुकीबानी। हँसेमहेशपरमविज्ञानी॥कह्योनकछुकोपहुनहिंकीन्ह्यो॥मुनिहुँमौनव्रततबगहिलीन्ह्यो॥९॥ पैसुनिअमितअशोभनबानी। चित्रकेतुपैकुपितभवानी॥ताकोढीठसगर्वविचारी। सभामध्यअसगिराउचारी॥१०॥

उमोवाच।

हमसेशठनिरलज्जनकेरो। कबतेयहप्रभुभयोघनेरो॥ कबतेगुरुहमारबनिआयो। जोहमकोउपदेशसुनायो॥ ११॥ भृगुविरंचिनारदसनकादिक। अरुसिगरेज्ञानीकपिलादिक॥येसबकहाधर्मनहिंजानें। क्योंनहिंसिखवतअहंहरानें॥

दोहा–जोशंकरप्रभुशास्त्रकी, तजेहोतमरयाद। तोविशेषिवारणकरत, बहुसुनाइश्रुतिवाद॥ १२॥

सुरविरंचिआदिकसबजेते। जिनपदपंकजपूजततेते॥ परमधर्ममूरतिजगस्वामी। तिनकोअधमकुमारगगामी॥ दूननिदरिनिरादरकरई। प्रभुहिंनिलज्जकहतनहिंडरई॥ तातेचित्रकेतुकुलघाती। दंडदेनलायकसबभाँती॥१३॥ यहशठचित्रकेतुनरनायक। नहिंहरिदासहोनकेलायक॥हरिपदसज्जनसेवनयोगू। तिनसेवनयहिअमितअयोगू॥ १४॥ [illegible]चित्रकेतुमतिमंदा। लहैअसुरतनत्यहिदुखद्वंदा॥ जातेकरैनपुनिअपराधू। ईशसरिसमानैसबसाधू॥ १५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–चित्रकेतुकहँजबउमा, दईशापअतिघोर॥ तबविमानतेउतरिकै, करिप्रणामत्तेहिठौर॥

[illegible]। कह्योवचनमधिमुनिनसमाजा॥ १६॥

चित्रकेतु रुवाच ।

मातुशापशिरमैंधरितोरी । लीन्ह्योंसुखितपाणियुगजोरी॥मनुजनजोसुरवचनउचारैं।जानहुसबैभागअनुसारैं ॥१७॥ जोजनसुखदुखजगमहँभोगै । सोसबहोतकरमसंयोगै ॥ १८ ॥अपनेतेपरतेजगमाहीं । सुखदुखभोगतहैकोउनाहीं ॥ ईशजननकरमहिअनुसारा । सुखदुखदेतअहेसंसारा ॥१९॥ शापअनुग्रहनरकहुस्वर्गा॥औरहुसकलसुखौदुखवर्गा ॥ येविचारकीन्हेंकछुनाहीं ॥ २० ॥ रचतएकईशहिजगमाहीं ॥

दोहा-बंधमोक्षसुखदुखसबै, देतसोईभगवान । आपरहतसबतेबिलग, यहजानतमतिमान ॥ २१ ॥

ताकोशत्रुमित्रकोउनाहीं । जातिबंधुनहिंतासुजनाहीं ॥ सबमेंसबनिजपरनहिंताको । रागरोपनहिंहैममताको ॥ सत्यईशहैसदानिरंजन।सकलजगतजनकेमनरंजन२२बंधमोक्षसुखदुखअनहितहित।जननमरनजगजीवनकोनित ॥ पेतिनकेकरमनिअनुसारा । बारहिंबारहोतसंसारा ॥२३॥ मैंजननीनहिंशापछुड़ाऊँ । पैयहविनतीतोहिसुनाऊँ ॥ जोनकह्योमेंवचनकठोरा । सोअपराधक्षमहुअबमोरा ॥ २४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिउमाउमापतिकाहीं । करिकेभूपप्रसन्नतहोंहीं ॥

दोहा-चढ़िकैविमलविमानमें, तहँकोकियोपयान । तासुनम्रतादेखिभे, विसमितउमाइशान ॥ २५ ॥

तहाँसुरनअरुमुनिनसुनावत । कह्योउमासोंशिवसुखछावत ॥ २६ ॥

रुद्रउवाच ।

हरिदासनकेदासनकेरो । देख्योउमाप्रभावघनेरो॥२७॥राखतकबहुँनकोहुकीआसा । मानतकबहुँनकिहुकीत्रासा॥ स्वर्गनर्कअरुमुक्तिसमाना । मानतहैहरिदाससुजाना ॥२८॥निग्रहऔरअनुग्रहजोऊ।जननमरनसुखदुखपुनिसोऊ॥ जीवहिहोतदेहसंयोगू ।करतअनेकभाँतिजगभोगू ॥२९॥ जिनकेहियेहोतनहिंज्ञाना । तिनकोसुखनरआतमभाना ॥ तिनहींकोसुखदुखअरुभासै । यथासीपमहँरजतप्रकासै ॥ ३० ॥

दोहा-भयेभक्तिभगवानकी, होतविरागहुज्ञान । तेकाहूतेकबहुँनहिं, राखहिंआशसुजान ॥ ३१ ॥

मेंविरंचिअरुसनत्कुमारा । अरुनारदमुनिसुरहुअपारा ॥ कृष्णचरितनकहुँनहिजाने । भरेसबैअपनेअभिमाने ॥ हमसबतासुअंशकेअंसा । कहँलोंमुखकीजैपरशंसा ॥३२॥प्रियअप्रियताकोनहिंकोई।सबमेंरहतसमानहिसोई॥३३॥ तिनकोचित्रकेतुयहदासा । महाभागउरज्ञानप्रकासा ॥ सोऊसमदरशीसबमाहीं । रमाकंतकोप्यारसदाहीं ॥३४॥ तातेहरिजनमोहिभवानी । विसमयकरहुनयहउरआनी ॥ ३५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

ऐसीसुनतशंभुकीवानी । विसमयतजिभइमुदितभवानी ॥ ३६ ॥

दोहा-चित्रकेतुयद्यपिरह्यो, शापहुदेनसमर्थ । तदपिउमाकोनहिंदियो, जानिमहानअनर्थ ॥

लीन्ह्योंशापजोरियुगपानी । यहीसाधुकेलक्षणजानी ॥३७॥ उमाशापवशसोईभूपा । वृत्रासुरभोवीरअनूपा ॥ सोसप्रभावज्ञानविज्ञाना।असुरतनहुँमहँतेहिनभुलाना॥३८॥वृत्रजन्मपूछ्योजोराजा।भयोभक्तकिमिअसुरदराज॥ सोमैंतुमकोदियोसुनाई । सबविस्तारसहितकुरुराई ॥३९॥ चित्रकेतुकोयहइतिहासा।दायकसंपतिविविधहुलासा॥ हरिदासनकोकथाप्रसंगा । दायकसुखकारकभवभंगा ॥४०॥ द्विपविप्रननोउद्धिमाता । पढ़ैश्रीतियुतसुंदरज्ञाता॥

दोहा-सुमिरतश्रीयदुनाथपद, समुझतरहतसदाहि । सोजगबंधनतोरिकै, जातकृष्णपुरकाहि ॥ ४१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कन्धे सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

हूसिनीवालीअरुराका । अनुमतिधातातियजिनसाका ॥

किसुतप्रातप्रभासा । अनुमतिसुतभोपूरणमासा ॥३॥

रुणवामचर्पणीसुहाई । तेहिसुतभेपुनिभृगुसुखदाई ॥ ४ ॥ वार्मातैभोद्वितियकुमारा । वाल्मीकियहनामउचारा ॥

दोहा—रामचरितजोभनतभो, अतिपावनसुखमूल । रामायणअसनामजेहिं, ओधदाहकसमतूल ॥

रुणउरवशीसमीपा । धरयोरेतघटमाहँमहीपा ॥ तापटतेभेयुगलकुमारा । नामअगस्तिवसिष्ठउचारा ॥५॥

त्रप्रियारेवतीसोहाई । तिनकेभेत्रयसुतसुखदाई ॥ पिप्पलअरुअरिष्टउतसर्गा । जिनतपकरिसाध्योअपवर्गा ॥६॥

नामकीवासवनारी । ताकेभोजयंतवलभारी ॥ मीढुपऋषभऔरसुतदोऊ । भयेशचीकेजानहुँसोऊ ॥ ७ ॥

त्रिविक्रमवामनरूपा । कीर्त्तिजासुतियनामअनूपा ॥ तिनकेभयेवृहतअश्लोका । तिनकेसौभगआदिकतोका ॥८॥

दोहा—वामनगुणअरुचरितसव, अरुतिनकोअवतार ॥ नृपअठयेंअस्कंधमें, कहिहौंयुतविस्तार ॥ ९ ॥

अवकश्यपदितिवंशवखानो॥वलिप्रहलादजन्मतहँठानो १०दितिकेद्वैसुतभयेप्रचंडा॥कनककशिपहिरण्याक्षउदंडा ॥

हिरण्यकशिपकीनारिकयाधू॥जंभसुतासोसुछविअगाधू॥सोसुतचारिवलोअतिजाये॥क्रमतेतिनकेनामगनाये ॥१२॥

यकसल्हाददुतिआनुल्हादा । तीजोल्हादचौथप्रहलादा । तिनकीभगिनिसिंहिकाजोई॥ विप्रचित्तिदानवतियसोई॥

राहुकुमारभयोपुनिताकरा॥ग्रसतपर्वलहिचंद्रदिवाकर १३पियतपियूपतासुजगदीशा॥चक्रचलायकाटिलियशीशा ॥

दोहा—दाराजोसल्हादकी, जाकोहैकृतिनाम ॥ सोउतपतिकियपंचजन, दानवअतिवलधाम ॥ १४ ॥

ल्हादतियाधमनीजेहिनामा । सोजायोदुइपुत्रललामा॥इल्वलअरुवातापिउदारा॥जिनकोकियअगस्त्यसंहारा १५॥

अरुल्हादहुकीसूर्म्यानारी॥जन्योमहिपवाष्कलवलभारी॥श्रीप्रहलादकुमारविरोचन॥भयोविरोचनकेवलिरोचन १६॥

वलिकीउसनानारिसयानी । वाणासुरतासुतवलखानी ॥ नब्वेअरुनौसुतपुनिताके । होतभयेजगपरमप्रभाके ॥

अठयेंअरुदशयेंअस्कंधा॥ कहिहौंवलिअरुवाणप्रवंधा॥१७॥शंकरकोवाणासुरध्यायो॥शिवगणमध्यमुख्यपदपायो ॥

१९

सुनिशुकदेववचनसुखपागे । पूछतभयेभूपअनुरागे ॥

राजोवाच ।

मरुतछोडि निजआसुरभाऊ । कैसेभयेसरिससुरराऊ ॥ कौनकियोहितवासवकेरो । दियोदेवपदशक्रघनेरो ॥ २० ॥

मुनिनसहितमोहिसुननहुलासा । करहुनाथसोकथाप्रकासा ॥ २१ ॥

श्रीसूत उवाच ।

विष्णुरातकेसुनिअसवैना । देवरातभरिकैअतिचैना ॥ वारवारकुरुपतिहिसराही । कहनलगेशुकदेवउछाही॥२२॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—विष्णुसोंहिवलसुरनते, असुरगयेजवमारि ॥ तवदितिअतिशोकदुखितभे, निजसुतनाशनिहारि ॥

हियेविचारकरनतवलागी । शोकरोपआगीतननागी ॥२३॥ क्रूरमहानिजवंधुविनाशी । कठिनचित्तपापीवटराशी॥

...नकोमैंमारी । कवस्वैहौंसुखपाँयपसारी ॥ २४ ॥ कीतोभसमकिमटकीकीरा । अंतसमयवदहोतशरीरा ॥

... हिकेहेतू । वाँ... । भूतद्रोहतेनरकपयाने ॥ २५ ॥

... हिजानन । ... जेहिवासवनाशकसुतपाऊँ॥२६॥

दोहा–असविचारिअसुरनजननि, कश्यपकेढिगजाय ॥ लगीकरनसेवाअमित, अतिशैप्रीतिबढाय ॥ २७ ॥
पतिकीकरिकैभक्तिमहानी।रुखलहिबोलिबोलिमृदुबानी॥करतकटाक्षमंदमुसकाई।कश्यपमनदितिलियोलोभाई २८
यद्यपिज्ञानीरहेमुनीशा । तद्यपितेहिवशभयेमुनीशा॥कहैजोदितिकश्यपसोइकरहीं।प्यारीरुखलहिअतिमुदभरहीं ।
करहिमुनिहुँकहँनिजवशमाँहीं।नारिनकहँअचरजकछुनाहीं२९पुरुषनप्रथमअसंगनिहारा।बढ़तनदेख्योपुनिसंहारा।
तबअरधंगीबिरच्योनारी।होतभईसोजनमनहारी३०कश्यपलखिदितिकीसेवकाई।कह्योवचनहँसिप्रीतिबढ़ाई ॥३१।

कश्यप उवाच ।

दोहा–होंप्रसन्नमेंतोहिंपर, माँगुप्रियावरदान ॥ कंतकृपातेतियनको, दुर्लभकछुनजहान ॥ ३२ ॥
पतिहीपरमदेवतियकेरो । औरधर्मनहिंनिगमनिवेरो ॥ सबकेउरमहँकरहिविहारा । सबकेपतिवसुदेवकुमारा॥३३॥
सुरवपुतेसबपुरुपनकेरे । यदुपतिपूजनलेतघनेरे ॥ नारिनकोपूजनपतिरूपा । लेतसदायदुराजअनूपा ॥ ३४ ।
तातेपतिव्रताजोनारी । उभैलोकगतिचहैसुधारी ॥ तोपतिमेंअनन्यकरिभाऊ । भजैकृष्णगुनिपरमप्रभाऊ॥ ३५॥
सोतुमतेहमपूजनपायो । तैसबविधिमोहिंमोदबढ़ायो ॥ तातेजोअभिलापतिहारी । सोपुजवनकीआशहमारी॥३६॥
दोहा–सुनतकंतकेवचनअस, दितिअतिशैसुखमानि ॥ अतिविनीतह्वैवचनमृदु, कह्योजोरियुगपानि ॥

दितिउवाच ।

जोमोहिंपरप्रसन्नअतिहोहू । अरुराखहुमेरेउरछोहू ॥ तौवासवहतसुतमोहिंजानी । मोपरकरिकैकृपामहानी ॥
देहुपुत्रमोहिंशक्रविनाशी । यहअभिलापमोरितपराशी॥३७॥सुनतवैनदितिकेमुनिराई ।लगेविचारकरनपछिताई॥
अहोअधर्मअमितमोहिंलाग्यो३८विपैविवशवनितारसपाग्यो॥अबमेंअवशिनरकमहँजैहों।तियवशकरनीकोफलपैहों॥
यहनारिनकोसदासुभाऊ । चाहहिंस्वारथवशनहिंकाऊ॥ तातेमोहिंधिकबारहिंबारा।नारिसुभावनप्रथमविचारा ४०

दोहा–वदनकमलवचननसुधा, हीयछुराकीधार ॥ ऐसीनारिनकोमरम, कोगुणिपावहिपार ॥ ४१ ॥
निजस्वारथकीहोहिंतिय, तिनकहँकोउप्रियनाहिं ॥ स्वारथहिततेमारहीं, पतिसुतभ्राताहिंकाहिं ॥ ४२ ॥
दितिहिवचनमेंहारिदिय, मृपानह्वैहैसोइ ॥ तातेकरहुँउपायजेहिं, बचबइंद्रकोहोइ ॥ ४३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असविचारिकश्यपतहो, दितिपैकछुअनखाय । अपनेकोनिंदतवचन, बोलेताहिसुनाय ॥ ४४ ॥

कश्यप उवाच ।

संवतसरलोंजोव्रतधरिहै । ताकीसकलभाँतिविधिकरिहै ॥ तौवासवनाशकसुतहोई । ब्रह्मंडइश्वरहितकरसोई ॥४५॥
सुनिकश्यपकेवचनसयानी । जोरिपाणिबोलीमृदुबानी ॥

दितिरुवाच ।

हमधारणकरिहैंव्रतसोई । जेहिविधिआपुरजायसुहोई ॥ जेहिविधिव्रतनहिंमोरनशाई।सोउपायप्रभुदेहुबताई ॥४६॥
दितिकेवचनसुनतअतिप्यारे । व्रतपुंसवनमुनीशउचारे ॥

कश्यप उवाच ।

धरैपुंसवनव्रतसुतदाता । करैनकोउजीवनकरघाता ॥ वदैमृपानहिंकरैननिंदा । निशिदिनधावतरहैगोविंदा ॥
दोहा–छुवैनअशुचिपदार्थको, काटैनहिंनखलोम ॥४७॥ जलहिहिलैनहिमज्जनकरहि, करहिनतामसतोम॥
करैनदुर्जनसोंसंभापन । वसनविनापैपैनधरतन ॥ पहिरैपहिरैनहिंसममाला ॥४८॥ भखैआमिपनहिंकोउकाला॥
भूतभद्रकालीकरभोगू । करैनभक्षणव्रतनकरिलोगू ॥ आनिनशूद्रअन्ननहिंखावै । कोहुकोजूठोमुखनलगावै ॥
रजस्वलाडीठिहुजेहिपरई । सोअन्नानहिंभोजनकरई । अंजुलितेनकरैजलपाना॥४९॥अशुचिभयेकीजे-

व्रतकरिवेमेंजोतियसोई । निजतनतेसमरथनहिंहोई ॥ तौसादरपतिहीव्रतठानै । व्रतखंडनन
विप्रनसधवानारिनकाहीं । चंदनमाळाआदिकमाहीं ॥ पूजैनितप्रतिनेमहिंधरई ॥ १९ ॥ आ
दोहा–हरिप्रसादकारैअशनानिज, शुद्धिलियेसिधिकाम ॥ २० ॥ यहीरीतिदिनवरपकरि,
पुनिकार्तिककीपूर्णिमा, कोव्रतकरैमहान ॥ २१ ॥ भोरहिंउठिअस्नानकरि, पू
होमकरैपुनिघृततयुतचीरै । द्वादशआहुतितेंह्वैधरै ॥ वारहनीकेत्राह्मणकाहीं । भोजनकरवा
जळअरुतिलहुपात्रगुड़सहितै । तिनहिंदेइव्रतकारीसहितै॥तिनअशीसनिजशिरमोधारी॥ शिर
पुनितिनकीआशासुखलैकै।भोजनकरैमुदितमनह्वैकै ॥२३॥ वंधुनयुतआचार्यहिंआगू।करिह्वै
निजतियकेसमीपमेंजाई । होयशेषपायससुखछाई ॥ सुतकेहेतदेइतेहिंकाहीं । अशनकरैसोअ
दोहा–विधिपूर्वकयहपुंसवन, व्रतहिंकरैजोकोइ ॥ सकलकामनातासुको, आशुहिपूरणहोइ
छंद–यहव्रतकरैजोनारिलहैसौभाग्यहिंकाँहीं । सुतयशपावैभूरिहोइविधवासीनाहीं ॥ २
यहव्रतकन्याकरैसुलक्षणपतितौपावै । जेहिंपतिपुत्रनहोइकरैव्रतहरिपुरजावै ॥
जेहिसुतजियतनहोयतासुकोसुतजियतौहै । अतिअभागिनीजोइसुभागिनीह्वैसोउ
अतिहिंकुरूपाहोइसोउह्वैजातिसुरूपा । परमरोगिनीजौनिअरोगिनिहोइअनूपा ॥
दोहा–व्रतकर्महिकीपूर्त्तिको, यहैयहीअध्याव ॥ होइपितरसुरतुष्टअति, सकलमनोरथपाव
श्रीलक्ष्मीनारायणहुँ, ताकेउपरसदाहिं । अतिप्रसन्नमनमेंरहत, देतमुक्तितेहिंकाहिं ।
सोरठा–हेकुरुपतिमहराज, मरुतजन्मकीयहकथा ॥ सुनैजोजनजेहिकाज, तासुमनोरथसि
दोहा–दिशिनिधिशशिसंवतआसित, मधुपंचमिकुजवार ॥ छठयोयहअस्कंधवर, रच्योमहा

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीम
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहज
देवकृते पष्टस्कंधेआनंदांबुनिधौ एकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥
दोहा–महाराजरघुराजकृत, शुभछठयोंअसकंध । यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछंद

समाप्तोऽयं षष्ठस्कंधः ६.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–बम्

दोहा–अंबअंघ्रिअभिवंदिकै, अखिलअनिललैवेश । अमरपुरीगोअमरयुत, अमरमानिअमरेश ॥ ७७ ॥
मंगलप्रदमारुतजनम, जोपूछेहुनरनाह । सोवरण्योअबपुनिकहौ, जोसुनिवेकीचाह ॥ ७८ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे अष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

दोहा–सुनिकैश्रीशुकदेवके, वचनकृपारसभीन । फेरिपरीक्षितजोरिकर, विनतीयहिविधिकीन ॥

राजोवाच ।

जोनपुंसवनव्रतकह्यो, जेहिंरीझतजड़राय । ताकीविधिमोसोंकहौ, परमकृपाउरलाय ॥ १ ॥
सुनतपरीक्षितराजके, वचनपरममुदपाय । विधिपुंसवनसुव्रतहिकी, शुकदियताहिसुनाय ॥

श्रीशुक उवाच ।

मार्गअसितप्रतिपदाते, पतिआज्ञालैनारि । प्रारंभहिपुंसवनसुव्रत, ह्वैपवित्रसुखधारि ॥ २ ॥
प्रथममरुतगनकीकथा, श्रवणकरैचितलाय । पुनिआज्ञालैविप्रकी, सरिमेंजायनहाय ॥
वीरीनहिंभोजनकरै, पहिरिओढ़िपटश्वेत । निशिवाकीदुइदंडहरि, पूजैरमासमेत ॥ ३ ॥

पुनिइनमंत्रनतेभगवान्‌कोप्रणामकरै–

अलंतेनिरपेक्षायपूर्णकामनमोस्तुते । महाविभूतिपतयेनमःसकलसिद्धये ॥ ४ ॥
यथात्वंकृपयाभूत्यातेजसामहिनौजसा । जुष्टईशगुणैःसर्वैस्ततोसिभगवान्प्रभुः ॥ ५ ॥
विष्णुपत्नीमहामायेमहापुरुपलक्षणे । प्रियतांमेमहाभागेलोकमातर्नमोस्तुते ॥ ६ ॥
ॐनमो भगवते महापुरुपाय महानुभावाय महाविभूतिपतये सह महाविभूतिभिर्बलिमुपहराणीति ॥
दोहा–नितनितपुनियहमंत्रते, आवाहनभगवान । अर्घ्यपाद्यआचमनअरु, मज्जनकरैसुजान ॥
वस्त्रहुँअरुयज्ञोपवीत, भूपणचंदनफूल । धूपदीपनैवेद्यअरु, अरपैअरुतांबूल ॥
इन्हैंआदिपोडशविधिहि, पूजैनितभगवान । बचैखीरनैवेद्यते, द्वादशवारप्रमान ॥
करैअगिनिमेंहोमको, सादरमंत्रहिंमाहिं । लिखेदेतआगेअहौं, अबतेमंत्रहुँकाहिं ॥ ७ ॥
ॐनमो भगवते महापुरुपाय महाविभूतिपतये स्वाहेति ॥
दोहा–सबसंपतिकीकामना, करैजोमानुपकोय ॥ करैप्रार्थनाभाँतियहिं, हरिलक्ष्मीकोसोय ॥
तुमदोउवेदनविदित, सकलकामनादानि ॥ करहुमनोरथपूरमम, मेरोहियकीजानि ॥ ८ ॥ ९ ॥
करिप्रणामपुनिप्रीतियुत, वासुदेवमनुकाँहिं ॥ जपिदशवारहिंपुनिपढै, यहअस्तोत्रतहाँहिं ॥ १० ॥
अथस्तोत्र–युवांतुविश्वस्यविभू जगतःकारणंपरम् । इयंहिप्रकृतिः सूक्ष्मामायाशक्तिर्दुरत्यया ॥ ११ ॥
तस्याअधीश्वरः साक्षात्त्वमेवपुरुपःपरः । त्वंसर्वयज्ञइज्येयंक्रियेयंफलभुग्भवान् ॥ १२ ॥
गुणव्यक्तिरियंदेवीव्यंजकोगुणभुग्भवान् । त्वंहिसर्वशरीर्यात्माश्रीःशरीरेंद्रियाशयः ॥ १३ ॥
नामरूपेभगवतिप्रत्ययस्त्वमपाश्रयः । यथायुवांत्रिलोकस्यवरदौपरमेष्ठिनौ ॥
तथामनुत्तमश्लोकसंतुसत्या महाशिपः ॥ १४ ॥
दोहा–यहअस्तुतिभगवानकी, करिकैप्रीतिबढ़ाय ॥ सामग्रीपूजाबची, ताहिधरैअलगाय ॥ १ ॥
हरिकोपुनिआचमनकरावै । बचीहोमतेखीरजोपावै ॥ ताकोसादरकरिअघ्राना । पूजनकरै हरिभगवाना ॥ १६ ॥
पुनिहरिरूपजानिपतिकाहीं । पूजैप्रेमसहितसुखमाहीं ॥ पतिकीआज्ञालैपुनिनारी । करैकर्मसि रसुखकारी॥१

व्रतकरिबेमेंजोतियसोई । निजतनतेसमरथनहिंहोई ॥ तौसादरपतिहीव्रतठाने । व्रतखंडननहिंहोयमहाने ॥१८॥
विप्रनसधवानारिनकाहीं । चंदनमालाआदिकमाहीं ॥ पूजेनितप्रतिनेमहिधरई ॥ १९ ॥ आवाहनहुँविसर्जनकरई॥
दोहा—हरिप्रसादकरिअशननिज, शुद्धिलियेसिधिकाम ॥ २० ॥ यहीरीतिदिनवरपकरि, पूजेश्यामाश्याम ॥
पुनिकार्तिककीपूर्णिमा, कोव्रतकरेमहान ॥ २१ ॥ भोरहिंउठिअस्नानकरि, पूजेश्रीभगवान ॥
होमकरैपुनिघृतयुतवीरे । द्वादशआहुतितेहिंधीरे ॥ बारहनीकेब्राह्मणकाहीं । भोजनकरवावेसुखमाहीं ॥ २२ ॥
जलअरुतिलहुपात्रगुड़सहिते । तिनहिंदेइव्रतकारीसहिते॥तिनअशीसनिजशिरमोधारी। शिरसोंकरेप्रणामसुखारी॥
पुनितिनकीआशासुखलैकेभोजनकरैसुदितमनह्वैके ॥२३॥ बंधुनयुतआचार्यहिंआगू।करिह्वैमौनसहितअनुरागू ॥
निजतियकेसमीपमेंजाई । होयशेषपायससुखछाई ॥ सुतकेहेतदेइतेहिंकाहीं । अशनकरैसोअतिमुदमाहीं ॥ २४ ॥
दोहा—विधिपूर्वकयहपुंसवन, व्रतहिंकरैजोकोइ ॥ सकलकामनातासुको, आशुहिपूरणहोइ ॥
छंद—यहव्रतकरैजोनारिलहैसौभाग्यहिंकाँहीं । सुतयशपावैभूरिहोइविधवासीनाहीं ॥ २५ ॥
यहव्रतकन्याकरैसुलक्षणपतितौपावै । जेहिंपतिपुत्रनहोइकरैव्रतहरिपुरजावै ॥
जेहिंसुतजियतनहोयतासुकोसुतजियतोहै । अतिअभागिनिजोइसुभागिनीह्वैसोउसोहै ॥ २६ ॥
अतिहिंकुरूपाहोइसोउह्वैजातिसुरूपा । परमरोगिनीजोनिअरोगिनिहोइअनूपा ॥
दोहा—व्रतकर्महिकीपूर्त्तिको, यहैयहीअध्याव ॥ होइपितरसुरतुष्टअति, सकलमनोरथपाव ॥ २७ ॥
श्रीलक्ष्मीनारायणहुँ, ताकेउपरसदाहिं । अतिप्रसन्नमनमेंरहत, देतमुक्तितेहिंकाहिं ॥
सोरठा—हेकुरुपतिमहराज, मरुतजन्मकीयहकथा ॥ सुनैजोजनजेहिकाज, तासुमनोरथासिद्धिसब ॥ २८ ॥
दोहा—दिशिनिधिशशिसंवतअसित, मधुपंचमिकुजवार ॥ छठयोयहअस्कंधवर, रच्योमहासुखसार ॥ १ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृते षष्ठस्कंधेआनंदांबुनिधौ एकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥
दोहा—महाराजरघुराजकृत, शुभछठयोंअसकंध । यहसमाप्तमुदितभयो, संयुतछंदप्रबंध ॥

समाप्तोऽयं षष्ठस्कंधः ६.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापा

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीमद्भागवत–आनन्दाम्बुनिधि ।

सप्तमस्कंधः ।

दोहा–जयश्रीकृष्णसरोजपद, मुनिमनमधुकरवास । सुमिरतनाशततापत्रय, आशुहिपुजवतआस ॥
जयवानीदानीसुमति, गुणखानीजगमातु । सुखसानीतेरीकृपा, चाहौंनितअवदातु ॥
जयजयगणपतिगजवदन, एकरदनशुभनामि । विघनसदनकेकदनकर, मदनकदनसुतस्वामि ॥
पुत्रपराशरव्यासजय, जयश्रीशुकमुनिनाथ । जयमुकुंदगुरुचरणजय, जयजयपितुजगनाथ ॥
देवनकेहितहरिहत्यौ, वहुदैत्यनवलवान । सोसुनिकुरुपतिजोरिकर, कीन्ह्योंप्रश्नमहान ॥

राजोवाच ।

सवभूतनमेंसमभगवाना।सवकेप्रियअरुसुहृदमहाना॥सोवासवहितदैत्यननाना।किमिमारचोमुनिविपमसमाना॥१॥
सदासच्चिदानंदस्वरूपा । विमलजासुगुणदिव्यअनूपा ॥ वसैनरागद्वेपजिनमाहीं । देवनतेकछुअर्थहुनाहीं ॥
जिनकोनहिंदैत्यनतेंभीती । सोप्रभुकैसेकियोअनीती ॥२॥ नारायणकेगुणनविचारी।शंकितमतिमुनिहोतिहमारी॥
यहिसंशयकोदेउनशाई । तुमसरवज्ञअहोमुनिराई ॥३॥ सुनिकुरुपतिकेवचनसुहाये।पुनिमुनिव्याससुवनसुखपाये॥
दोहा–सुमिरतश्रीयदुवरचरित, श्रीशुकवुद्धिविशाल । सजलनैनगद्गदगिरा, वोलेवचनरसाल ॥

श्रीशुक उवाच ।

भलोप्रश्नकीन्ह्योंमहराजा। हरिचरित्रअद्भुतसुखसाजा॥हरिदासनकोचरितसोहावन।क्षणक्षणभगवतभक्तिवढ़ावन४॥
गावहिंनारदादिऋपिराई । परमपुण्यप्रदअतिसुखछाई ॥ यदुनंदनपदवंदनकरिकै । पिताव्यासपदशीशहिधरिकै ॥
श्रीहरिकथासदासुखदाई । देहोंतुमकोभूपसुनाई॥५॥ यदपिनप्राकृतगुणकविकहहीं।अजअव्यक्तप्रकृतिपरअहहीं॥
तदपिप्रविशिनिजमायामाहीं।वैरमित्रताप्रगटकराहीं६सतरजतमाहिप्रकृतिगुणजानो।प्रभुहिनक्षोभकराहिंयहमानो ॥
दोहा–सतरजतमयेत्रिगुणको, सुनहुभूपहरिदास । कवहुँहोतयककालमें, नहिंसंकोचविकास ॥ ७॥
पैजवजीवकालअनुसारा । ईशकरतसदगुणविस्तारा ॥ देवऋपिनतवभरधनकरहीं । रजगुणउदैअसुरसुखभरहीं ॥
उदैतमोगुणमेंमहिपाला । यक्षरक्षसवकरहिंनिहाला ॥८॥ जैसेपावकदारुहिमाहीं । रहतलहतनहिंतेहिगुणकाहीं ॥
तिमिसवमहँव्यापकप्रभुरहहीं।तिनकोदोपगुणहुनहिंलहहीं ॥विनामथेजिमिदारुहिकाहीं।प्रगटतिपावकनेकहुनाहीं॥
तिमिसवमहँहैकृपानिधाना । जानेजानपराहिंभगवाना ॥९॥ उतपतिप्रजनकरनजवचाहैं।करहिंप्रेरणारजगुणकाहैं॥
दोहा–जवचाहैंपालनकरन, सतगुणप्रेरहिंनाथ ।नाशकरनमेंतमगुनै, निजसंकल्पहिसाथ ॥ १० ॥
निजअधीनप्रभुसिरजतकाला ।लवनिमेपआदिकमहिपाला॥चिदचितनामहिंरूपअयोगू।तिनहिंनामवपुकियसंयोगू।
जवदेवनपालनप्रभुकरहीं । तवअसुरनआशुहिसंहरहीं॥विपमदोपलागतनहिंतिनको।जीवकर्मअनगुणकृतजिनको॥
कहौंतासुमैंइकइतिहासा । जानोनारदकियोप्रकासा ॥ भूपपितामहधर्मआपके। रहेजगतमहँअतिप्रतापके ॥ १२॥
राजसूयकीन्ह्योंजवयागा । कृष्णचंद्रपदकरिअनुरागा ॥ सभामध्यदमघोपकिशोरा । कृष्णहिवोल्योवचनकठोरा ॥
दोहा–तवहिंकृष्णहनिचक्रसों, ताकोकियोविनास । तासुज्योतिप्रभुवदनमें, प्रविशतिभेअनयास ॥ १३ ॥
सोलखिविस्मितधर्मभुवाला।मुनिहिसभामधिवुद्धिविशाला ॥ नारदसोपूछेउहरपाई । सोमैंतुमकोदेहुँसुनाई ॥१४॥

युधिष्टिर उवाच ।

हरिसोंवैरकियोशिशुपाला । सोहरिपदपायोयहिकाला ॥ दुर्लभजोयोगीनहिंपावैं । यहमेरेमनअचरजआवै ॥ १५ ॥
मोपरकृपाकरहुमुनिभारी ।।यहसंशयअवदेहुनिवारी ॥ वेणुभूपकीन्ह्योंहरिनिंदा । ताहिशापदैकेमुनिवृंदा ॥

सप्तमस्कन्ध.
नारद
धर्म
दैत्य
हिक
ब्र
हिक
हिक
नारद
देव

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीमद्भागवत–आनन्दाम्बुनिधि ।

सप्तमस्कंधः ।

दोहा–जयश्रीकृष्णसरोजपद, मुनिमनमधुकरवास । सुमिरतनाशततापत्रय, आशुहिपुजवतआस ॥
जयवानीदानीसुमति, गुणखानीजगमातु । सुखसानीतेरीकृपा, चाहौंनितअवदातु ॥
जयजयगणपतिगजवदन, एकरदनशुभनामि । विघनसदनकेकदनकर, मदनकदनसुतस्वामि ॥
पुत्रपराशरव्यासजय, जयश्रीशुकमुनिनाथ । जयमुकुंदगुरुचरणजय, जयजयपितुजगनाथ ॥
देवनकेहितहरिहत्यौ, वहुदैत्यनवलवान । सोसुनिकुरुपतिजोरिकर, कीन्ह्योंप्रश्नमहान ॥

राजोवाच ।

सवभूतनमेंसमभगवाना।सवकेप्रियअरुसुहृदमहाना॥सोवासवहितदैत्यननाना।किमिमारयोमुनिविपमसमाना॥१॥
सदासच्चिदानंदस्वरूपा । विमलजासुगुणदिव्यअनूपा ॥ वसैनरागद्वेपजिनमाहीं । देवनतेकछुअर्थहुनाहीं ॥
जिनकोनहिंदैत्यनतेभीती । सोप्रभुकैसेकियोअनीती ॥२॥ नारायणकेगुणनविचारी।शंकितमतिमुनिहोतिहमारी॥
यहिसंशयकोदेउनशाई । तुमसरवज्ञअहौमुनिराई ॥३॥ सुनिकुरुपतिकेवचनसुहाये।पुनिमुनिव्याससुवनसुखपाये॥
दोहा–सुमिरतश्रीयदुवरचरित, श्रीशुकवुद्धिविशाल । सजलनैनगद्गदगिरा, वोलेवचनरसाल ॥

श्रीशुक उवाच ।

भलोप्रश्नकीन्ह्योंमहराजा। हरिचरित्रअद्भुतसुखसाजा॥हरिदासनकोचरितसोहावन।क्षणक्षणभगवतभक्तिवढ़ावन४॥
गावहिंनारदादिऋपिराई । परमपुण्यप्रदअतिसुखछाई ॥ यदुनंदनपदवंदनकरिकै । पिताव्यासपदशीशहिधरिकै ॥
श्रीहरिकथासदासुखदाई । देहौंतुमकोभूपसुनाई॥५॥ यदपिनप्राकृतगुणकविकहहीं।अजअव्यक्तप्रकृतिपरअहहीं॥
तदपिप्रविशिनिजमायामाहीं।वैरमित्रताप्रगटकराहीं६सतरजतमहिप्रकृतिगुणजानो।प्रभुहिनक्षोभकराहिंयहमानो ॥
दोहा–सतरजतमयेत्रिगुणको, सुनहुभूपहरिदास । कवहुँहोतयककालमें, नहिंसंकोचविकास ॥७॥
पैजवजीवकालअनुसारा । ईशकरतसदगुणविस्तारा ॥ देवऋपिनतववरधनकरहीं । रजगुणउदेअसुरसुखभरहीं ॥
उदेतमोगुणमेंमहिपाला । यक्षरक्षसवकरहिंनिहाला ॥८॥ जैसेपावकदारुहिमाहीं । रहतलहतनहिंतेहिगुणकाहीं ॥
तिमिसवमहँव्यापकप्रभुरहहीं।तिनकोदोपगुणहुनहिंलहहीं ॥विनामथेजिमिदारुहिकाहीं।प्रगटतिपावकनेकहुनाहीं॥
तिमिसवमहँहैकृपानिधाना । जानेजानपराहिंभगवाना ॥९॥ इतपतिप्रजनकरनजवचाहैं।करहिंप्रेरणारजगुणकाहैं॥
दोहा–जवचाहेंपालनकरन, सतगुणप्रेरहिंनाथ ।नाशकरनमेंतमगुनै, निजसंकल्पहिसाथ ॥ १० ॥
निजअधीनप्रभुसिरजतकाला ।लवनिमेपआदिकमहिपाला॥चिदचितनामहिरूपअयोगू।निनहिनामवपुकियसंयोगू।
जवदेवनपालनप्रभुकरहीं । तवअसुरनआशुहिसंहरहीं॥विपमदोपलागननहिंतिनको।जीवकर्मअनगुणकृतजिनको॥
कहौंतासुमैंइकइतिहासा । जानोनारदकियोप्रकासा ॥ भूपपितामहधर्मअापके। रहेजगतमहँअतिप्रतापके॥ १२॥
राजसूयकीन्ह्योंजवयागा । कृष्णचंद्रपदकरिअनुरागा॥ सभामध्यदमघोपकिलोग । कृष्णहिवोल्योवचनकठोर ॥
दोहा–तवहिंकृष्णहनिचक्रसों, ताकोकियोविनाश । तासुज्योतिप्रभुवदनमें, प्रविशानिभअनयास ॥ १३ ॥
सोलखिविस्मितधर्मभुवाला।मुनिहिसभामधिवुद्धिविशाला ॥नारदसोंपूछेउहरपाई । मोमनभ्रमकोदेहुमिटाई ॥१४॥

युधिष्ठिर उवाच ।

हरिसोवैरकियोशिशुपाला । सोहरिपदपायोयहिकाला ॥ दुर्लभजोयोगिनहिंपावैं । पदमेंमनअनन्यलगावैं ॥ १५ ॥
मोपरकृपाकरहुमुनिभारी । यहसंशयजवदेहुनिवारी ॥ वेनुनृपकीन्ह्योंहरिनिंदा । नाहिंआयदैमुनिवृंदा ॥

सप्तमस्कन्ध.
नारद
धर्म
दैत्य
हि.क.
हि क
हि क
नारद
देव
हिरण्यकशिपु
प्रह्लाद
गुरु

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीमद्भागवत–आनन्दाम्बुनिधि ।

सप्तमस्कंधः ।

दोहा–जयश्रीकृष्णसरोजपद, सुनिमनमधुकरवास । सुमिरतनाशततापत्रय, आशुहिपुजवतआस ॥
जयवानीदानीसुमति, गुणखानीजगमातु । सुखसानीतेरीकृपा, चाहौंनितअवदातु ॥
जयजयगणपतिगजवदन, एकरदनशुभनामि । विघनसदनकेकदनकर, मदनकदनसुतस्वामि ॥
पुत्रपराशरव्यासजय, जयश्रीशुकमुनिनाथ । जयमुकुंदगुरुचरणजय, जयजयपितुजगनाथ ॥
देवनकेहितहरिहत्यौ, बहुदैत्यनबलवान । सोसुनिकुरुपतिजोरिकर, कीन्ह्योंप्रश्नमहान ॥

राजोवाच ।

सबभूतनमेंसमभगवाना।सबकेप्रियअरुसुहृदमहाना॥सोवासवहितदैत्यननाना।किमिमारयोमुनिविषमसमाना॥१॥
सदासच्चिदानंदस्वरूपा । विमलजासुगुणदिव्यअनूपा ॥ बसैंनरागद्वेषजिनमाहीं । देवनतेकछुअर्थहुनाहीं ॥
जिनकोनहिंदैत्यनतेभीती । सोप्रभुकैसेकियोअनीती ॥२॥ नारायणकेगुणनविचारी।शंकितमतिमुनिहोतिहमारी॥
यहिसंशयकोदेउनशाई । तुमसरवज्ञअहौमुनिराई ॥३॥ सुनिकुरुपतिकेवचनसुहाये।पुनिमुनिव्याससुवनसुखपाये॥
दोहा–सुमिरतश्रीयदुवरचरित, श्रीशुकबुद्धिविशाल । सजलनैनगद्गदगिरा, बोलेवचनरसाल ॥

श्रीशुक उवाच ।

भलेप्रश्नकीन्ह्योंमहराजा। हरिचरित्रअद्भुतसुखसाजा॥हरिदासनकोचरितसोहावन।क्षणक्षणभगवतभक्तिबढ़ावन॥४॥
गावहिंनारदादिऋषिराई । परमपुण्यप्रदअतिसुखछाई ॥ यदुनंदनपदवंदनकरिकै । पिताव्यासपदशीशहिधरिकै ॥
श्रीहरिकथासदासुखदाई । देहौंतुमकोभूपसुनाई॥५॥ यदपिनप्राकृतगुणकविकहहीं।अजअव्यक्तप्रकृतिपरअहहीं॥
तदपिप्रविशिनिजमायामाहीं।वैरमित्रताप्रगटकराहीं॥६॥सतरजतमहिप्रकृतिगुणजानो।प्रभुहिनक्षोभकराहिंयहमानो ॥
दोहा–सतरजतमयेत्रिगुणको, सुनहुभूपहरिदास । कबहुँहोतयककालमें, नहिंसंकोचविकास ॥ ७॥
पैजबजीवकालअनुसारा । ईशकरतसदगुणविस्तारा ॥ देवऋषिनतबबरधनकरहीं । रजगुणउदैअसुरसुखभरहीं ॥
उदैतमोगुणमेंमहिपाला । यक्षरक्षसबकरहिंनिहाला ॥८॥ जैसेपावकदारुहिमाहीं । रहतलखतनहिंतेहिगुणकाहीं ॥
तिमिसबमहँव्यापकप्रभुरहहीं।तिनकोदोषगुणहुनहिंलहहीं ॥बिनामथेजिमिदारुहिकाहीं।प्रगटतिपावकनेकहुनाहीं॥
तिमिसबमहँहैकृपानिधाना । जानेजानपराहिंभगवाना ॥९॥ उतपतिप्रजनकरनजबचाहैं।करहिंप्रेरणारजगुणकाहैं॥
दोहा–जबचाहैंपालनकरन, सतगुणप्रेरहिंनाथ ।नाशकरनमेंतमगुनैं, निजसंकल्पहिसाथ ॥ १० ॥
निजअधीनप्रभुसिरजतकाला ।लवनिमेषआदिकमहिपाला॥चिदचितनामहिरूपअयोगू।तिनहिनामवपुकियसंयोगू।
जबदेवनपालनप्रभुकरहीं । तबअसुरनआशुहिसंहरहीं॥विषमदोपलागतनहितिनको।जीवकर्मअनगुणकृतजिनको॥
कहौंतासुमेंइकइतिहासा । जानोनारदकियोप्रकासा ॥ भूपपितामहधर्मअपके। रहेजगतमहँअनिप्रतापके॥ १२॥
राजसूयकीन्ह्योंजबयागा । कृष्णचंद्रपदकरिअनुरागा॥ सभामध्यदमघोषकिशोरा । कृष्णहिबोल्योवचनकठोरा ॥
दोहा–तबहिंकृष्णहनिचक्रसों, ताकोकियोविनास । तासुज्योतिप्रभुबदनमें, प्रविशानिभिअनयास ॥ १३ ॥
सोलखिविस्मितधर्मभुवाला।मुनिहिसभामधिबुद्धिविशाला ॥नारदसोंपूछेउदरपाई । सोमेंतुमकोदेहुँसुनाई ॥१४॥

युधिष्ठिर उवाच ।

हरिसोंवैरकियोशिशुपाला । सोहरिपदपायोयहिकाला ॥ दुर्लभजोयोगीनहिंपावैं । यदमेंमनअनगनआवैं ॥ १५ ॥
मोपरकृपाकरहुमुनिभारी । यहसंशयअबदेहुनिवारी ॥ वेणुनृपकीन्ह्योंहरिनिंदा । नाहिंपायोंकैमुनिवृंदा ॥

करिविनाशतेहिंनरकपठायो।हरिनिंदाकोफलदरशायो॥१६॥येतोदंतवक्रशिशुपाला।रहेस्वभाविकक्रूरकराला१७॥
दोहा–बालहिपनतेकरतभे, हरिनिंदाबहुबार। कृष्णभयोनहिंजभिमें, परेननरकअपार॥ १८॥
सबकेदेखतमेंमुनिराई।किमिनिजलीनकियोयदुराई॥१९॥यहलखिभ्रमतमोरमनमोरा।जिमिदीपकलहिपवनझकोरा॥
याकोवरणहुसकलनिदाना। सबजानहुनारदभगवाना॥ २०॥

श्रीशुक उवाच।

सुनतधर्मभूपतिकेबैना। नारदपायपरमउरचैना॥ सभासदनकहँसबनसुनाई। कथाकहनलागेमुनिराई॥ २१॥

नारद उवाच।

बिनाविवेकईशअरुमाया। लहतजीवयहप्राकृतिकाया॥ सोइतनमाहमानअपमाना।निंदाअस्तुतिहूकोज्ञाना॥२२॥
अभिमानहिमानहुअपमाना। अहंममहिममरहतभुलाना॥ २३॥
दोहा–सोजैसेसबजीवको, रहतसदाअभिमान॥ तैसेनहिंपरमातमहि, जानहुसत्यसुजान॥
श्रीपतिकरहिंदण्डजबजेहीं। ताहिकृपाकरिशिक्षादेहीं॥ ऐसेप्रभुकृपालुभगवाने। हिंसाकरबकहबअज्ञाने॥२४॥
तातेवैरभक्तिअरुभीती। कामहुतेअरुकारिकेप्रीती॥जोकौनिहुविधिमनहिंलगावे। ताहिकृष्णहठिकेअपनावे॥२५॥
हरिसोंवैरकियेद्रुतजैसो। लागतमननभक्तितेतैसो॥ यहमेरीहरिमहँसतिआवे। भीतिहुतेहरिकहँहठिपावै॥ २६॥
भृंगीभीतकीटजिमिभूपा। होतआसुभृंगीकोरूपा॥२७॥ यहिविधिवैरकियेहरिमाहीं। चिततअतिपापीतरिजाहीं॥
दोहा–मनलगाइजिमिभक्तिते, पावहिंसुगतिदुराय॥ तैसेकामहुद्वेषभय, नेहहुतेतजिपाय॥ २८॥
लहीकामतेगतिव्रजनारी। कंसलह्योगतिकरिभयभारी॥चैद्यादिककरिद्वेषकराला।पांडवकरितुवनेहविशाला॥२९॥
यदुवंशीसनबंधहितेरे। हमसबभक्तिहितेहरिहेरे॥ ३०॥ येउपायएकोनहिंकरेऊ। यातेवेणुनरकमहँपरेऊ॥
तातेकरिकौनिहूउपाई। देइकृष्णमहँमनहिंलगाई॥ तौताकोसबविधिबनिजाई। यहमैंसत्यसुनावहुँभाई॥ ३१॥
दंतवक्रअरुनृपशिशुपाला। कृष्णपारपदयेमहिपाला॥ विप्रशापतेमहिंमहँआये। तबमाताभगिनीकेजाये॥३२॥
दोहा–तातेइनकीमुक्तिमें, कौनअहैसंदेह। पापिहुहरिसोंवैरकरि, पावहिंगतितजिदेह॥
धर्मभूपसुनिनारदवाणी। विस्मितकह्योजोरियुगपाणी॥

युधिष्ठिर उवाच।

कैसीअहैकौनकीशापा। जोहरिदासनकियसंतापा॥महिमहँजन्ममुक्तजनकेरो। सुनिकौतुकमानतमनमेरो॥३३॥
येवैकुंठनगरकेवासी। नहिंप्राकृतजनआनँदरासी॥ तिनकोप्राकृततनसंबंधू। कौनयोगतेभोजगबंधू॥
नारदयहतुमकथासुनावहु। मेरोसबसंदेहमिटावहु॥ ३४॥ सुनतअजातशत्रुकीवानी। बोलिउठेनारदमुनिज्ञानी॥

नारद उवाच।

एकसमयकरतारकुमारा। सनकादिकजिननामउदारा॥
दोहा–पूर्वजकेपूर्वजअहैं, पंचवर्पजिमिबाल॥ विचरतलोकनलखनहित, गेवैकुंठविशाल॥ ३५॥
निरखिदिगंबरचारिहुबाला।जयअरुविजयद्वारकेपाला॥रोकिदियोदीन्ह्योनहिंजाना।तबसनकादिककोपिमहाना३६
हरिपार्षदनदियोमुनिशापा। सुनहुँमूढकारकबहुपापा॥ मधुसूदनचरणनढिगमाहीं। रजहुतमोगुणकबहुँनजाहीं॥
तहँतुमनाहिंरहनकेलायक। शुद्धसत्वमेंत्रिभुवननायक॥ तातेआशुआसुरीयोनी। पायमूढतुमाविचरहुछोनी॥३७॥
इमिजबदियसनकादिकशापा [illegible] ॥ गिरनलगेजबहरिपुरतेरे। तबकृपालुसनकादिकटेरे॥
दोहा–तीनिजन्मभरिपाइहौ [illegible] । पुनिएहोवैकुंठपुर, यामेंसंशयनाहिं॥ ३८॥
तब जयवि[illegible]धरनिमहँआये। [illegible] ॥ छोटोहिरण्याक्षजगजाना॥
दैत्यन[illegible] ॥३९॥ जबहरिशूकररूपहिधारी। गतपतालधरनीउद्धारी॥
[illegible] ४०॥हिरणकाशिपुकोसुतप्रहलादा।धारकसकलधर्ममर्यादा।

वमेंसमदरशीमतिमाना । कृपापात्रअतिशयभगवाना॥ तासोंहिरणकशिपअतिघोरा । वैरकियोमतिमंदअथोरा॥
दोहा-सभामध्यप्रहलादपै, करिकैकोपमहान । ठाढ़भयोमारनहितै । काढ़िकरालकृपान ॥
तवश्रीपतिनरहरिवपुधारयो॥निजजनरक्षकनककशिपउरफारयो॥४१पुनिविश्रवाकेशिनीनारी।ताकेजन्मलियोदोउभारी।
रावणकुंभकरणअसनाम।निजबलजीत्योत्रिभुवनधाम॥४३॥ दशरथसुतहरिह्वैरघुराई । मारयोदुहुँनलंकमहँजाई॥
मार्कंडेयकथहुँइतऐहैं । रामचरितसबतुमहिंसुनैहैं ॥ ४४ ॥ पुनिदोउक्षत्रीजनमहिंपाये । तबमाताभगिनीकेजाये ॥
तिनहिंसुदर्शनचक्रहिमारी । सनकादिककीशापनिवारी४५वैरकरतकीन्हेंहरिध्यान॥तातेहरिपुराकियेपयाना॥४६॥
दोहा-नारदमुखसोंसुनिकथा, तहांधर्मसुतभूप ॥ पुनिमुनिसोंकरजोरिकै, कीन्ह्योंप्रश्नअनूप ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

दोहा-दैत्यवंशमहँभागवत, कैसेभेप्रहलाद । प्रियसुतसोंकिमिवैरकिय, पितुतजिकैअहलाद ॥ ४७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

दोहा-सुनतयुधिष्ठिरकेवचन, नारदआनँदपाइ । हिरणकश्यपनरहरिकथा, लगेकहनचितलाय ॥

नारद उवाच ।

धारिवराहरूपभगवाना । हिरण्याक्षकोहन्योमहाना ॥ सोसुनिहिरणकशिपुकुरुराई । शोचनलगेमहादुखछाई ॥१॥
पुनिदानवपतिकोपितह्वैकै ।दाबिदंतअधरनभुजव्वैकै॥लोचनलालकरालविशाला।आशुभयेजनुविमलप्रवाला॥२॥
कुपितदीठिनहिंअतिफारियाती।धूमिलसिगरीदिशादिखाती॥कालडाढसमडाढभयावनि।भृकुटीबंकशंकउपजावनि॥
देखिनसकैजासुमुखकोऊ । जायनसकतनिकटप्रियजोऊ ॥ लैकरमेंइकशूलप्रचंडा । गयोसभादानवबरिबंडा ॥
दोहा-सिंहासनआसीनह्वै, दानवदैत्यबोलाय ॥ यथायोगसतकारकरि, बोल्योवचनरिसाय ॥ ३ ॥
हेदुइशिरत्र्यक्षगसतबाहू । नमुचिपाकइल्वलअरिदाहू ॥ हयग्रीवशंबरबलवाना ॥४॥विप्रचित्तिअरुशकुनप्रधाना॥
अरुपुलोमआदिकभटनाना।मेरेवचनसकलसुनिकाना॥सिगरेकरहुआशुयहकाजा।अबविलमहुँनाहिंदैत्यसमाजा ५॥
येलघुसुरकहिंहरिसेवकाइं । हतवायोतासोममभाई ॥ ६ ॥ रह्योयदपिहरिमहाप्रकासी । समदरशीबैकुंठविलासी ॥
तदपिदेवनसेवनिहारी । धरयोतुच्छशूकरवपुभारी ॥ अतिकपटीचंचलमतिवारो । भयोबंधुहनिशत्रुहमारो ॥७॥
दोहा-ताहरिकोशिरशूललै, काटिरुधिरलैतासु । तरपनकरिहौंबंधुको, तबपूजिहिममआसु ॥ ८ ॥
हरिकेहतेदेवहतिजैहैं । बिनजड़शाखासरिससुखैहैं ॥ सबदेवनकेहैंहरिप्राना । तातेउचिततासुवधजाना ॥ ९ ॥
जबलौंतिहिवधकरहुँउपाई । तबलौंसकलजाहुमहिंधाई ॥ यज्ञदानजपतपव्रतधारिन । मारहुसबपुण्यकेकारिन॥१०॥
द्विजकोकर्मविष्णुकोमूला । सोदेवनधर्मअनुकूला ॥ देवपितरऋषिभूतअपारा । मानहिहरिकोधर्मअधारा ॥११॥
तातेजहँजहँगऊनिवासा । विप्रवेदवादिनकरवासा ॥ औरहुहोहिजहाँबहुयागा । पठ्हिवेदजहँद्विजबड़भागा ॥
दोहा-जहँतहँदानवजायद्रुत, पावकदेहुलगाय । मारहुबाँधहुँतोरहू, द्विजनएकबचिजाय ॥ १२ ॥
हिरणकशिपजबयोंदियशासन । तबसिगरेभटपरमहुलासन ॥माथनवायनायकदवीगे । गयेसकलपुहुमीरणधीरा॥
करनलगेसबप्रजनविनासा । दरमनैकनदयाविलासा ॥१३॥ पुरव्रजपत्तनउपवनग्रामा । आकरखरखटखेटअरामा॥
इनकोलावनलूटनलागे । वचहिनविप्रवनदुमहँभागे ॥ १४ ॥ कतेलैकरविपुलकुदारी । कोटद्वारखनिडारेभारी ॥
कतेलैकरकठिनकुठारा । काटनलागेवृक्षअपारा ॥ केनेदानवलूकलगाई । प्रजनसदितगृहदियोजराई ॥ १५ ॥
दोहा-यहिविधिजबदानवसबै, कियेउपद्रवघोर । तबस्वर्गहिसुरछोड़िकै, छिपेअवनिविनजोर ॥ १६ ॥
प्रेतकर्मकरिभ्राताकेरो।हिरणकशिपहकुपितघनेरो॥लग्योभ्रातपुत्रनसमुझावन।चाह्योतिनकोशोकमिटावन ॥१७॥

शंबरशकुनिभूतसंतापन । व्रतउतकचअरुधृष्टपायमन॥कालनाभअरुमहानाभखल।हरितमूछद्विजदुखदा
येनवभ्रातासुतनवोलाई । लग्योबुझावनदानवराई ॥१८॥ औरहुबंधुवधूअरुमाता । तिनहिबुझावनहितवि
दानवदेशकालकोज्ञाता । बोल्योमधुरमधुरमुखवाता ॥ १९ ॥

हिरण्यकश्यप उवाच ।

हेजननीहेभ्राताानारी । हेसुतअवजनिहोहुदुखारी ॥

दोहा—शूरनकेमनमेंरहत, यहीसदाअभिलाख । मरवसमरमेंसनमुखै, जुपैहोहिरिपुलाख ॥ २० ॥

प्राणिनकोनिवाससंसारा । रहतनसवदिनकरहुविचारा ॥ जैसेपथिकपौसरापाई । मिलियकक्षणहिंजाहिं
तिमिकर्महिअनुरूपहिभोगू।देवहिकरतसँयोगवियोगू२१होतजीवकोकवहुँननासा । विविधयोनिमहँकरता
अज्ञानहिंवशऐसोमानै । अहैदेहयहमोरिमहानै ॥२२॥ जिमिजलधारमाहँतरुछाया । अहैअचलचलसरिस
अरुजवभरिनैननमहँआई।अचलधरनितवचलतदेखाई२३इमिजवविपैविवशमनहोवै।तवहिंजीवदुखसुख

दोहा—यदपिविलक्षणदेहते, जीवकहतसवकोय । तदपिनिजहिअज्ञानवश, सुरनरमानतसोय ॥ २४

अरुअप्रियप्रिययोगवियोगू । जननमरनअविवेकलुशोगू ॥ लह्योभागवशजोउपदेशू । भूलिजातसोरहत
यहीकर्महेतुकसंसारा।जानिलेहुकरिहियेविचारा॥२५।२६॥यामेंसुनहुएकइतिहासा।कहहिंसंतजनसहितहुल
सुंदरएकउसीनरदेशा । तहँकोउरह्योसुयशनरेशा ॥ सोशत्रुनसोंकरिसंग्रामा । जूझिगमनकीन्ह्योंसुरधामा ॥
कुसुममालभूपणसवटूटे । कवचकिरीटअंगतेछूटे ॥ हृदयतासुसायकनविदारा । तनतेवहीरुधिरकीधारा ॥

दोहा—वैठगयेरदहगमुँदे, खुलेशीशकेवार । धूरिधूसरितकमलमुख, कटेहाथहथियार ॥ ३० ॥

यहिविधिमृतकनिरखिपतिकाहीं । रानीताकीआयतहाँहीं ॥ औरहुकुलपरिवारहुकेरे । गिरेआयतेहिपदके
करसोधुनहिशीशउरमाहीं।हायहायवोलहिमुखमाहीं॥३१॥गहिकैचरणतासुप्रियनारी। रोदनकरहिपुकारी
छूटिगयेभूपणअरुचारा । चलहिंनैननतेआँसुनधारा ॥ करैंसवैतहँकरुणालापा । उपजतजिनहिनिरासिसंत
कहहिंवचनवहुभाँतिदयावन।अरिहुउरहिंकरुणाउपजावन॥विधिनिरदईमहादुखदीन्ह्यों।तुमकोनैनअगोचरकी

दोहा—सुखदाताहमसवनके, तुमहिंरच्योविधिजोइ ॥ दुखदातासोकरिदियो, क्रूरविधातासोइ॥ ३२ ॥

तुमविनजीवनहैनहमारा । कहांगयेतुमभूपउदारा ॥ जहांजाहुतहँदेहुवताई । वसवतहांहमहूँहठिजाई ॥ ३
यहिविधिनारीकरहिंविलापा।पतिपदपकरिपायसंतापा॥सांझभईनहिंदाहनदीन्ह्यों।मोहविवशविपादवहुकीन्ह्यों
सुनिरोदनयमराजहुकाहीं। अतिशयदयाभईउरमाहीं॥वालकरूपधारितहँआये।विविधभाँतितिनकोसमुझाये॥

यम उवाच ।

देवहुरेमूढनकीरीती । देखेहुपरनहिंकरहिंप्रतीती ॥ जहँतेआवततहँजनजाहीं । मोहविवशयहजानतनाहीं

दोहा—प्रथमहिकेसवमारिगये, मरिहंआपविशेपि ॥ जेहैंहेमरिहैतेउ, पैशोचहिकालेपि ॥ ३७ ॥

इनतेतोहमदोहिंनीके । अहैनिकोरेपितुजननीके ॥ वनमहँइतेअकेलेआये । हमकोवाघविगानहिखाये ॥
मैंवालकसवभाँतिलचारा । पमनमेंयहाकियेविचारा ॥ जोरक्षतहैगरभहिमाहीं । सोरक्षकहैकृष्णसदाहीं ॥ ३
जोप्रभुनिजइच्छातेशासत । जगसिरजतपालतअरुनाशत ॥ ताकोखेलअहैसंसारा । रेमूरखयहकरहुविचारा ॥
दइंजोनहरिकीसवभाती । मगहुगिरेसोवस्तुनजाती ॥ अरुजोदिहरिहठिहरनचहतहं । सोनहिंजतनहुँकिपारहि

दोहा—इमिजेहिरक्षतकृष्णप्रभु, ताकोकवहुँननाश ॥ कवहुँकहूँनाहिंजियतसो, जेहिहरिकरहिंविनाश ॥ ४

निजनिजकर्मनकेअनुसारा । जोफलहततहैयोनिअपारा ॥ छूट्योजवहिकर्मसम्वंधा । तवहिछूटिगोजगकोधंधा
पैनरमेंजोअंतरयामी । लहतनसोसुखदुखवहुनामी ॥ ४१ ॥ जोवशरीरमांहवशपावै । तनानियमहाभेदहुल
जैसेरहनगृहहिगृहमाहीं । पैगृहगृहीएकहैनाहीं॥जिमिपटपटमलचुक्कनशतहै । तिमितननशहुजीवविलसतहै ॥ ४
जैसेपावकदारुहिमाहीं । निमिशरीरमहैपवनमहाहीं ॥ जैसेमयपतलम्हनअकामा । निमिननमाहँजीवरामा

दोहा—जिमिपावकनभअनलको, देहदारुकोदोप ॥ लागतनहिंतिमिजीवको, लगतनतनगुनचोप ॥ ४३ ॥
जेहिंसुयज्ञकोशोचहुमूढा । शोचतसोप्रत्यक्षनहिंगूढा॥बोलतसुनतरह्योजोतनमें।लख्योनताहिकबहुँनैननमें ॥४४॥
बोलतसुनतश्वासहैनाहीं । करतजीवहैकर्मनकाहीं ॥ अहैभिन्नसोदेहपवनते । किमिशोचहुअवतासुगमनते ॥४५॥
अपनेकर्महिकेअनुसारा । लहततजतजियदेहअपारा ॥४६॥ जबलौंरहतकर्मकीसींवा । तबलौंरहतदेहमेंजीवा ॥
तेहितेहोतदेहअभिमाना । तातेहैकलेशअज्ञाना ॥ ४७ ॥ तातेदेहमाँहपुरुपारथ । सवविधिमानवअहैअकारथ ॥
दोहा—जिमिअनित्यजनस्वप्नके, सकलपदारथहोय । तैसेसिगरेविपैसुख, अहैनित्यनहिंकोय ॥ ४८ ॥
तातेनित्यअनित्यहुज्ञानी।शोचहिनहिंकबहूँजियआनी॥शोचकियेनहिंकछुमिलिजावै।नहिंअनित्यकोनित्यबनावै ॥
तामेंकहहुँएकइतिहासा । ह्वैहैसुनतशोककोनासा॥व्याधाएकविपिनमहँजाई । दियोखगनहितजाललगाई ॥५० ॥
तहँजगरहेकुलिंगविहंगा।विचरहिंचरहिंसुखीयकसंगा॥व्याधकुलिंगहिलियोफँसाई ५१ निरखिकुलिंगमहादुखपाई ॥
रोवनलग्योनसक्योछोडाई॥५२॥हायप्रियामैंवनहिगमाई।रेविधिदियोदुःखजोमोको।तामेंकहामिलैगोतोको ॥५३॥
दोहा—मोहूँकोलैचलहुअव, जहँमेरीहैनारि । विनप्यारीजीवनकहां, लीन्ह्योंहियेविचारि ॥ ५४ ॥
विनपंखनकेबालकनेरे । होतभयेविनजननिकेरे ॥ ऐसीआशकियेवेह्वैहै । मातुपिताभोजनकबलैहैं ॥
तिनकोमैंकरिहोंकिमिपालन।महादीनजननीविनबालन॥यहिविधिकरतकुलिंगविलापा।बैठ्योजालनिकटयुततापा॥
तबछिपिव्याधमारिशरदीन्ह्यों।दोहुनलैगृहगवनहिंकीन्ह्यों ॥ तुमहुविलापकरहुसप्रयासा।जानहुनाहिंआपनोनासा ॥
शतहुवर्पलगिशोचतमाहीं । पैहोकबहुँनिजपतिकाहीं ॥ ५७ ॥

हिरण्यकश्यप उवाच ।

यहिविधिजबबालकसमझायो । तबतिनमनअनित्यतनआयो ॥ ५८ ॥
दोहा—असकहिकेताहीसमय, यमभेअंतरधान । मृतककर्मनृपकोकियो, मिलिसबज्ञातसुजान ॥ ५९ ॥
तातेनहिंशोचहुसबै, अपनेहुआनिहुकाहिं । कोउनपरायोआपनो, मानिलेहुमनमाहिं ॥
यहमेरायहऔरको, यहजोसबकेभान । सोजानहुतुमसत्यकै, यहीमहाअज्ञान ॥ ६० ॥

नारद उवाच ।

हिरणकशिपकेसुनिवचन, दितिसुतवधूसमेत । पुत्रशोकत्याग्योतुरत, भोविवेकमेंचेत ॥ ६१ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा-
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

नारद उवाच ।

दोहा—महाराजसुनियेकथा, कनककशिपबलवान । होनचह्योअजरेअमर, रहैनमोसमआन ॥
फेरहुशासनत्रिभुवनमाहीं । मोकोजीतिसकैकोउनाहीं ॥ असविचारिजियदानवराई । मंदरकेकंदरमहँजाई ॥ १ ॥
तहँकरनदारुणतपलाग्यो । ब्रह्माचरणनमहँअनुराग्यो ॥ ऊरधभुजऊरधदृगकरिकै । पदअँगुठाधरणिमहँधरिकै ॥
भयोमौनइंद्रिनगतिरोकी।रह्योरह्योअतिअचलअशोकी ॥२॥ जटाजूटयुतसोहतकेसे।किरणनसहितप्रलयरविजैसे॥
असुरगयेजपतपकेहेतू । तबसुरनितानिजबसेनिकेतू ॥३॥ करततहितपपरमउदारा । बीतिगयेदशवर्षहजारा ॥
दोहा—ताकेशिरतेधूमयुत, कढीअनलकीज्वाल । तपबलसुरलोकनसबै, लावनिलगीकराल ॥ ४ ॥
लाग्योचुरनसिंधुकोनीरा । शैलसहितमहिडगीमभीरा ॥ ग्रहणसमेतगिरेमहिताग। होनलगीदशहूँदिशिदाग ॥५॥
तपतेतापितदेवदिविवासी । गयेभागिविधिपुरसुरगसी ॥ विधिमोबोलेसवप्रकारी । सुनहुप्रजापतिनिनिंदमारी॥६॥
कनककशिपतपतेजहिपाई।वसिनसकहिंसुरपुरभयछाई ॥जोचाहोलोकनकल्याणा । तौतुरतकरहुउपायनिधाना ॥

जोउपायकरिदोनहिंआशू।तोसयहैदेसकलविनाशू॥७॥यदपितुम्हारसबैप्रभुजाना। तद्यपिहमकछुकरेंबखाना॥८॥

दोहा–हिरणकशिपतुमकोसुन्यो, तपकरिविधिपदलीन।सोइविचारविधिहीनको, इमिकठोरतपकीन॥९॥

जानिनित्यआतमअरुकाला।करतमहातपअसुरकराला॥ औरहुऐसोकिहेविचारा। मैंअवश्यह्वैहैंकरतारा॥१०॥

अधकेलोकनउपरवसैहों। ऊरधलोकअधेलैऐहों॥ वैकुंठादिकलोकनकाहीं। लघुमानतअपनेमनमाहीं॥११॥

ऐसीसुन्योतासुअभिलापा।तुमसोंकह्योगेइनहिंरापा॥तातेकरिकैविमलविचारा।करहुउचितआशुहिउपचारा॥१२॥

हेप्रभुतुमगोद्विजहितकारी।तुमतेरक्षाअहैहमारी॥ तातेऐसीकरहुउपाई। रहैराउरेकीठकुराई॥ १३॥

दोहा–ऐसीसुनिदेवनविनय, चतुराननमुसक्याय। मुनिनसहितगमनतभये, जहँरहदानवराय॥१४॥

हिरणकशिपकहदेख्योनाहीं। लागिविमोटगयोतनमाहीं॥जामिरहेतृणवंशशरीरा।खायोमांसरुधिरबहुकीरा॥१५॥

नैनज्योतिभरिपरतिदेखाई जिमिघनमधिरविज्योतिसुहाई।निजतपतापितनीनिहुँलोका।हिरणकशिपबाल्योविनशोका।

निरखिहंसवाहनइमिताको। ह्वैविस्मितगुनिपात्रकृपाको॥दानवसोंमोदितकरतारा।विहँसतऐसेवचनउचारा॥१६॥

ब्रह्मोवाच।

उठुरेउठुकश्यपकेनंदन। तुवतपसिद्धिभईअरिद्वंदन॥ ह्वैहैआशुतोरकल्याना। आयेहमहुदेनवरदाना॥

दोहा–माँगुमाँगुअबदैत्यपति, जोतेरोमनहोय॥ अन्ननाहिंशंकाकछुकरै, मैंदैहौंतुहिसोय॥ १७॥

तोहिंसमाननहिंधीरजधारी। कीटखायलीन्ह्योंतनभारी॥ रहेप्राणहाड़नमहँजाई। तबहुँतज्योनहिंतपबरियाई १८

दशहजारबर्षहिंविनपानी।जीहैकौनजगतमहँप्रानी॥कियोनकोउकरिहैतपऐसो।हिरणकशिपकीन्ह्योंतुमजैसो॥१९॥

जीतिलियोहमकोतपकरिकै।तोहिदेहौंवरमैंमुदभरिकै॥२०ममदरशननिहफलनहिंहोई।जानहुदैत्यसत्यवहसोई २१

नारद उवाच।

असकहिकृपाकरतकरतारा।कृमिभक्षिततनतासुनिहारा॥छिरक्योदिव्यकमंडलनीरा।तबजसकोतसभयोशरीरा२२

दोहा–भोअखंडवलअसुरके, रविसमानपरताप॥ वज्रसरिससबअंगभे, वयकिशोरविनताप॥

तपतकनकसमवपुपरकाशा।फैलतिप्रभापुंजदशआशा॥वामिहितेआतुरकढिआयो।मनहुदारुपावकप्रगटायो २३॥

निरखिअसुरचतुराननकाहीं। चढेहंसमहँअंबरमाहीं॥ कियोभूमिमहँदंडप्रणामा।लहिदरशनपायोसुखधामा॥२४॥

पुनिउठिअसुरजोरियुगहाथा। निरखतविधिकहनावतमाथा॥ आनँदतेपुलकावलिछाई। वारवारदृगनीरवहाई॥

गद्गदगिराकढतिनहिंवानी।मतिअतिविधिपदप्रेमहिंसानी॥पुनिधारिधीरजदानवराई।अस्तुतिकरनलग्योचितचाई२५

हिरण्यकशिप उवाच।

दोहा–कालशिप्तमवलितजग, कलपांतहिमेंआप॥ उतपातिकियनिजतेजसो, हैतुवपरमप्रताप॥ २६॥

छंद–त्रिगुणतेजगसृजहुपालहुहरहुत्रयगुणमयनमो॥ २७॥ सबतेमहतपरआदिबीजविज्ञानज्ञानतनैनमो॥

मनप्राणइंद्रीबुद्धिरूपविकारह्वैप्रगटतनमो॥२८॥चितअचिताचितमनइंद्रिभूतानिगननिकेतानमो॥ २९॥

त्रयवेदरूपहिधारिकैसवयज्ञकोप्रगटतअहौ। सबजननकेतुमएकआत्मअनादिकविहुकपारहौ॥ ३०॥

तुवकाललवनिमिपादितेआयुपजननकीहरतहौ। परमेष्ठिअजअविकारसाक्षीजीवजीवनलसतहौ॥ ३१॥

चरअचरकारनकार्यतुमसेभिन्ननाहिंदरशातहै। विद्याकलातुवरूपबहुब्रह्मांडगर्भवसातहै॥ ३२॥

जेहिरूपतेजगत्रिगुणकरहुसोरूपनित्यतुम्हारहै। अतिगुप्तपुरुषपुराणनितसतिलोकविपुलविहारहै॥३३॥

दोहा–जोपूरणवपुतेरचहु, यहासिगरोसंसार॥ तावपुयुततुमकोअहै, ममप्रणामवहुवार॥ ३४॥

जोमेरेमनकोवरदीजे। तौऐसीप्रभुकृपाकरीजे॥ जेभरितुवसिरजेवपुधारी। तिनसमृत्युनहोयहमारी॥ ३५॥

होयनमीचरैनादिनमाहीं। गृहभीतरवाहेरहुनाहीं॥ जेजेतुवविरचितहथियारा। लगैनतितनतेकियेप्रहारा॥

मरहुँन ।नहिंनरननहिंमृगसकैसताई॥३६॥जियतमृतकमोहिंसकैनमारी। मरहुँनसुरअसुरनतेभारी॥

[illegible] ! महाना॥ ३७॥ तवप्रभावजेऐश्वर्जपाये। लोकपालसिगरेसुखछाये॥

दोहा—सोऐश्वर्यमोहिंदीजिये, जाकोकबहुँननास ॥ जोप्रभुमानेहुहोयमन, मेरोतपहिप्रयास ॥ ३८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि-
राजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

नारद उवाच ।

दोहा—हिरण्यकशिपयहिभाँतिजब, माँग्योबहुवरदान ॥ तबप्रसन्नह्वैचारिमुख, ऐसोकियोबखान ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच ।

दुर्लभवरमाँग्योतुमताता।तदपिकियोतुमतपविख्याता।तातेतुमहिसकलवरदीन्ह्यों।अनुचितउचितविचारनकीन्ह्यों
असकहिदेअसुरहिवरदाना। ब्रह्मलोककोकियोपयाना॥३॥कनककशिपऐसोवरपाई।तपतकनकसमतनदुतिभाई॥
हिरण्याक्षकोवधसुधिकरिकै।हरिसोंवैराकियोहठिधरिकै ॥४॥ देवअसुरभूपतिगंधर्वा।गरुडउरग-५-सिधिचारणसर्वा॥
विद्याधरऋषिपितरनपतिको।राक्षसयक्षपिशाचनततिको॥औरहुभूतनप्रेतनकाहीं ६ जीतिअसुरकछुकालहिमाहीं ॥

दोहा—दशौदिशनत्रैलोकमें, अपनोहुकुमपसारि ॥ इंद्रवरुणयमधनदको, गृहतेदियोनिकारि ॥ ७ ॥

इंद्रभवनजोपरमसुहावन।सकलसंपदायुतसुखछावन॥कनककशिपकीन्ह्योंतहँवासा।जेहिविश्वकर्माकियोप्रकासा ८॥
विरचितविद्रुमलसेसुपाना। जडीधरणिमरकतमणिनाना ॥ वैडूरजकेखंभविशाला।फबतीफटिकविशालदेवाला॥९॥
बहुविचित्रतहँबनेविताना । पद्मरागमणिआसननाना ॥ गोरसफेनसरिससुखसेजू ।लसहिमुक्तजालहियुततेजू॥१०॥
सुरसुंदरीसाजिशृंगारा । करहिंचलतनूपुरझनकारा ॥ रतनआरसीमहँमुखदेखै । अपनेसमऔरननहिंलेखै ॥११॥

दोहा—लसहिपरमसुखछावनी, गृहवाटिकाअनंत । षटऋतुतहँसोहैंसदा, कूजितविहँगलसन्त ॥ १२ ॥

ऐसेइंद्रभवनमहँराजा । लैआपनदानवीसमाजा ॥ हिरण्यकशिपबहुकियोविहारा । त्रिभुवनधनीनशत्रुनिहारा ॥
वंदनकरततासुपददेवा । करहिंभीतिभरिकैबहुसेवा ॥ बाढ्योअसुरप्रतापप्रचंडा । शासनकियोत्रिलोकअखंडा ॥
रहैमत्तकरिकैमदपाना । घूमतअरुणनैनदुतिमाना ॥ तपबलभयोत्रिलोकअधीशा । नजरदेहिंनिजजायदिगीशा ॥
बिनब्रह्माशंकरभगवाना। हिरणकशिपवशमेंसुरनाना॥१३॥हिरणकशिपइंद्रासनबैठ्यो। परमगर्बभरिनिजभुजऐंठ्यो॥

दोहा—तहँविश्वावसुतुंबरहु, विद्याधरगंधर्व ॥ जायतासुदरबारमें, करहिंगानकलसर्व ॥ १४ ॥

अस्तुतिकरहिंसिद्धिऋषिताकी।नितनाचहिंअप्सराप्रभाकी॥हमहुँगयेनृपअसुरनिवासा।लख्योअपूरबतहाँतमासा ॥
जोकोउकियोजगतमहँयागा।दैदक्षिणासहितअनुरागा॥तिनकोहिरणकशिपलियभागा।देवनकोकहुँसोजनलागा॥१५
धरनीहिरणकशिपभयपागी।बिनजोतेहुबहुउपजनलागी॥पुजवनलगेअकाशहुआशा।कियरत्नाकररतनप्रकाशा॥१६
लवणमद्यमधुदधिघृतक्षीरा।बहनलगेसरितनयुतनीरा॥१७॥ शैलकंदरनमाहँविशाला।फरेविटपकालहुबिनकाला ॥

दोहा—सिगरेलोकनपालको, रह्योजोनभरिकाज ॥ सोएकहिसबकरतभो, आपुहिदानवराज ॥ १८ ॥

यहिविधित्रिभुवनऐश्वर्यपायो।भोगकरतसंतोपनलायो ॥१९॥भयोशास्त्रमरयादविनासी।महामत्तबहुभोगविलासी ॥
हिरणकशिपबलवंतविशाला।कियोराजयहिविधिबहुकाला॥२०॥तासुप्रचंडदंडसुरपाई।सकेनत्रिभुवनमहँठहराई ॥
नहिंरक्षकदूसरोनिहारी । गिरेकृष्णकेशरणपुकारी॥२१॥ हैवैकुंठदिशहिपरनामा । जहँकृष्णनिवसहिंसुमनधामा॥
जहँयोगीजनजांयउदारा।पुनिनहिंआवतयदसंसारा॥२२॥असकहिदेहारिपदमनहिंलगाई।कीन्हीअस्तुतिहियचितलाई॥

दोहा—मारुतभोजनकैसकल, रहेरहेदिनरैन । तन्योनींदनिजनैननमें, ध्यावनकरुणाऐन ॥ २३ ॥

तहँमेघकेशोरसमाने । करतविनादितदशहुदिशाने ॥ साधुनकोअभयनकोदानी । ऐसीभयआकाशहिबानी ॥२४॥
होइहैसकल्याणतुम्हारा।डरहुनसुनहुबचनमुरारा॥मैंकृपाजापरहुसदाई।तासुविपतिआशुहिमिटिजाई॥२५
हिरण्यकशिपकीजोशठताई । मैंजानतहौंसबचतुराई ॥ करिहौंतासुविनाशउपाई ।

जोदेवनअरुवेदनमाहीं । विप्रधर्मगोसाधुनपाहीं ॥ अरुमोमेंजोवैरबढ़ावै । तासुविनाशआशुह्वैजावै ॥ २७ ॥
दोहा–समदरशीअरुशांतिअति, मेरोभक्तउदार । नामजासुप्रहलादहै, धराधर्मआधार ॥
ऐसेनिजसुतसोअसुरेशा । देहैकरिअतिवैरकलेशा ॥ तबमारिहौंताहिशठजानी । यद्यपिहैविरंचिवरदानी ॥ २८

नारद उवाच।

[illegible]
[illegible]
सज्जनसेवकसागरशीला । सत्यसंधइंद्रीजितडीला ॥ अपनेसमसबकोप्रियमानै ॥३१॥ गुरुजनकोनितसेवनठानै
दोहा–निजसमकोभ्राताससरिस, पितुसमदीनदयाल । गुरुमानतभगवानसम, विद्यारूपविशाल ॥
उत्तमकश्यपकोवहनाती।धनमेंधनदसरिससबभाँती।।जाकेतननतनकअभिमाना।कबहुँनजासुचित्तघबराना ॥३२
बसहिनव्यसनकबहुँनमनमाहीं।गुनतअनित्यलोकदोउकाहीं।चंचलमनहिअचंचलकीन्हें।सकलकामनाकोतजिदीन्हें
यद्यपिअहैअसुरप्रहलाद।।तदपिसुरनदायकअहलाद।३३जासुगुणनकविचारहिंवारा।हरिसमअवलोंभनहिंउदारा ३४
साधुनकोजहँहोयबखाना।तहँरिपुसुरहुप्रथमतेहिगाना।।तौतबसरिसजैहैंमतिमाना।काअचरजजोकरहिंबखाना ॥३५
दोहा–गुणअसंख्यप्रहलादहै, दायकजनअहलाद । धारकधर्मम्रजादको, सकैकोकरिअनुवाद ॥
यदुवरपदपदुमनमहँप्रीती।भइस्वाभाविकसहितप्रतीती ३६ बालपनेखेलनतजिदयऊ।हरिध्यावतयदुसमह्वैगयऊ॥
पियोप्रेमआसवदिनराती।जान्योनहिंजगहैकेहिभाँती॥३७॥बैठतबोलतविचरतमाहीं।सोवतखातपियततेहिकाहीं ॥
[illegible]
[illegible]
दोहा–धारिकृष्णकीभावना, लीलाकरतअपार । कृष्णमिलनकीकामना, नितउरकरतविहार ॥ ४० ॥
कहुँयदुपतिपदपरसतध्यानैं।आनँदमगनमौनविनभानैं॥कहुँमूँदतदृगकतहुँउघारत।आनँदमगनदृगनजलढारत४१॥
इमिस्वाभाविकहरिपदप्रेमा । ताकोभयोभूपप्रदक्षेमा॥ऐसीलखिप्रहलादसुरीती।औरहुजनकियहरिपदप्रीती ॥४२॥
ऐसेमहाभागवतपूते । हिरणकशिपकियवैरअकूते ॥ ४३ ॥ धर्मभूपसुनिनारदवानी । बोलेफेरिजोरियुगपानी ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

ऐसोमहाभागवतपूरो । भोप्रहलादजगतमहँरूरो ॥ हिरण्यकशिपतापैमुनिराई । कौनहेतवैरतावढ़ाई ॥ ४४ ॥
दोहा–यदपिहोयसुतशठहुअति, तदपिमातुपितुतासु । सिखवनहिततताडनकरहिं, करहिंनअरिसमनासु ॥४५॥
पितुसेवकप्रहलादसम, जेसुतहोहिंसुजान । तिनसोकबहुँनकरतहै, पितुअतिवैरविधान ॥
यहवरणोविस्तारते, सुननआशहैमोरि । मरचोपितासुतवैरकरि, कियोकौनसुतखोरि ॥ ४६ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

नारद उवाच ।

दोहा–असुरनकौउपरोहिती, लह्योशुक्रमतिमान । तेकौनेहुकारजलिये, कहुँकहुँकियेपयान ॥
तिनकेशंडामर्ककुमार । होनभयेदोउगुणनअगार ॥ निवसहिसदाराजगृहनेरे । हेगुरुदैत्यबालकनकेरे ॥ १ ॥
तिनकेबालकनहँतिनआई । विद्यापढ़हिंअनेकनभाई ॥ दैत्यराजतिनकेढिगमाहीं । पढ़नहेतप्रहलादहुकाहीं ॥
[illegible] । गयप्रहलादहुमानिनिदेशा ॥असुरबालकनकेसँगमाहीं । बोलतभेप्रहलादहुकाहीं ॥
[illegible] । शंडामर्कपढ़ावनलागे ॥ २ ॥ मानिप्रहलादसार[illegible] । पढ़ोपिनकछुमनउर[illegible]

दोहा-नीतिशास्त्रमेंहोतहैं, शत्रुमित्रकोभेद । समदरशीप्रहलादको, सुनतभयोअतिखेद ॥ ३ ॥
एकसमयनृपदानवराई । प्रहलादहिनिजनिकटबोलाई ॥ करिआदरअंकाहिबैठाई । पूछेउमाधुरगिरासुनाई ॥
गुरुसोजोतुमपढ्योकुमारा । करिविचारसोकरहुउचारा॥४॥पितुकोवचनसुनतप्रहलादा।बोल्योसकलधर्ममरयादा॥

प्रह्लाद उवाच ।

सुनहुपितासबजीवनकाही । यामेंमंगलहोतसदाही ॥ अंधकूपतजिगृहपरिवारा । वनमेंजायअकेलउदारा ॥
तहँसदायदुपतिपदध्यावै । याहीमेंसबविधिचनिजावै ॥ नातोमायामोहितजीवा । जातनर्कदुखलहतअतीवा ॥५ ॥

नारद उवाच ।

दोहा-पुत्रवचनपरपक्षके, सुनिकैदानवराय । दैतारीदरबारमें, बिहँस्योबलीठठाय ॥
पुनिबोल्योसबमंत्रिनपाहीं । बालकबुद्धिहोतिथिरनाहीं ॥ जोकोउजैसोआयसिखावै । तबहींतेसोईमनआवै ॥ ६ ॥
तातेसबतुमबालककाहीं । ताकेरहौगुरूगृहमाहीं ॥ जामेंकेसबदूतदुराई । सकैनाशिशुकहऔरसिखाई ॥
मोकोडरश्रीपतिकरिखेदा । करनचहतमेरोघरभेदा॥७॥सचिवसुनतदानवकीवानी । प्रहलादहिगुरुगृहमहँआनी ॥
शंडामरकहिप्रभुकेबैना । कहिकेताकनलगेसचैना ॥ शंडामर्कबोलिप्रहलादै । अतिसराहियशगुणमरयादै ॥
दोहा-पूछ्योमाधुरवचनसों ॥ ८ ॥ हेअसुरेशकुमार ॥ कहहुसत्यतजिकैमृषा, मंगलहोयतुम्हार ॥
यहविपरीतिबुद्धिदुखदाई । येकहितुवउरकहँतेआई ॥९॥ धौंकोउतुमकोआयसिखायो । धौंअपनेतेतुवउपजायो ॥
यहसुनिवेकीचाहहमारी । कुलनंदनभापहुसुखकारी॥१०॥सुनिप्रहलादवचनगुरुकेरे । बोलेविहँसिहरिहिहियहेरे ॥

प्रह्लाद उवाच ।

भेदजुहैआपनोपरायो । जिनकीमायावशजगछायो ॥ सोकेशवकोअहैप्रणामा । दायकभक्तनकोनिजधामा ॥ ११॥
जबहरिकेशरणागतहोवै । निजपरायतबभेदनजोवै॥जिनकेस्वपरभेदकछुनाहीं । तेवरणहिंयहिभाँतिसदाहीं॥१२॥
दोहा-परब्रह्मआत्माहरी, जिनकेचरितअनंत ॥ भलकैजानहिंनहिंजिन्हें, ब्रह्मादिकश्रुतिसंत ॥
सोमुकुंदकरिकृपामहाई।ममउरबसियहदियोसिखाई१३॥जिमिचुंबकऐंचतहठिलोहा।तिमिहरिपदमोमनकरिछोहा॥
ताकोहेतनमैंकछुजानौं । दीनदयालहरिहिअनुमानौं॥१४॥असकहिशंडामरकहिपाहीं । भयोमौनमतिवंततहाँहीं ॥
शंडामर्ककोपअतिछाई । बोलेप्रहलादहिडेरवाई ॥ हिरणकशिपहमकहअनखैहैं । जोसुधेहमयाहिसिखैहैं ॥
सूधेकहेबालनहिंमानै । बारबारविपरीतबखानै ॥ १५ ॥ तातेचाबुकल्यावहुमेरो । मारिसिखैहौंयाहिघनेरो ॥
दोहा-मेरोयशहारीमहा, अपकारीयहबाल ॥ कुलवनदाहकदहनसम, हिरणकशिपकोलाल ॥
सामदामअरुभेदहुतीनों । याकेपठनहेतमैंकीनों ॥ रह्योचतुर्थकरनकोदंडा । सोअबकरिहौंअवशिप्रचंडा ॥ १६ ॥
दैत्यवंशचंदनवनमाहीं । भोबबूरतहँसोहतनाहीं ॥ अहैअसुरतरुकृष्णकुठारा । तासुबेंठप्रहलादकुमारा ॥ १७ ॥
असबहुवचननतेडेरवाई । अरुमारनकीभीतिदेखाई ॥ शंडामर्ककोपअतिछाय ।प्रहलादहिनिजशास्त्रपढ़ाये॥१८॥
असुरशास्त्रसबयहपढिलीन्हों । जान्योभोप्रहलादप्रवीनो ॥ तबजननीगृहताहिपठाई । मज्जनअरुशृंगारकराई ॥
दोहा-शंडामर्कतेहीसमय, सँगमेंलैप्रहलाद ॥ हिरणकशिपदरबारमें, गयेसहितअहलाद ॥ १९ ॥
पितुपदवंदनकियप्रहलाद।हिरणकशिपदियआशिरवादा॥उभयभुजनिभरिसुतकहँराजा।मिलनसपोमुखलह्योदराज॥
आँसुनसींचिसूंघिसुतशीशा।बैठायोअंकहिअवनीशा।विकसितमुखनिजसुतहिनिहारी।हिरणकशिपयहगिराउचारी॥

हिरण्यकशिप उवाच ।

इतनेदिनमेंअतिचितलाई । तुमहिंकहागुरुदियोपढाई ॥ पढ्योकंठजोहोइतिहारे। सोकहिजाहुपुत्रअतिप्यारे॥२२॥
सुनिप्रहलादपिताकीवानी । बोलेगिराभक्तिरससानी ॥

प्रह्लाद उवाच ।

हरिकोसुयशसुनबदैकाना । वरणबयदुपतिनामनिनाना ॥

दोहा-हरिकोपदसेवनकरब, त्योंकरिबोहरिध्यान ॥ हरिपूजनवंदनसदा, रहैदासकोभान ॥
हरिकोसखामानिकरलीबो । हरिकोआतमअरपणकीबो ॥ २३ ॥ येहैंपितुनौभक्तिप्रकारा । सोइंसुंदरपढ्योहमारा॥
सुनिकुमारकेवचनसुहावन।हिरणकशिपकेभेदुखछावन२४अधरकोपवशकंपनलागे।बोल्योवचनमनहुँदुखपागे२५॥
रेशठगुरुसुतकहापढायो । मेरोसुतसवभाँतिनशायो ॥ शत्रुपक्षसवभाँतिसिखायो । मोकुलरीतिननेकुवतायो ॥
मेरीभीतितोहिंनाहिंलागी । तहूँभयोअरिकोअनुरागी॥२६॥शठसाधुनकोरूपवनाये । विचरतजगनिजवेषछिपाये॥
दोहा-अवशिखुलतकपटिनकपट, कछुककालकोपाय ॥ जिमिपापिनकोपापहठि, रोगव्याजदरशाय ॥
सुनिकैदैत्यराजकीवानी । शंडामर्कभनेभयमानी ॥

गुरुपुत्र उवाच ।

जैसोवदतवालमुखमाहीं । तैसोहमसिखयोयहिनाहीं ॥ औरोकोऊनाहिंसिखायो । तुम्हेंडेरायनकोउनियरायो॥
अपनेहीमनतेप्रहलादा । वारवारवादतयहवादा । हमकोनाथदोपजनिदेहू । आछीभाँतिनिरखकरिलेहू ॥
हमपैकरियनकोपवृथाहीं । पुत्ररावरोमानतनाहीं ॥ २८ ॥

नारद उवाच ।

शंडामर्कजवैअसभापे । वोल्योअसुरफेरिमनमापे ॥ रेप्रहलादनगुरूसिखाई । यहविद्याकहँतेंतेंपाई ॥
दोहा-यहविद्यादुखदेइगी, तोहिंमैंदेउँसुनाय ॥ पितावैनप्रहलादसुनि, वोलेआनँदछाय ॥ २९ ॥

प्रह्लाद उवाच ।

जिनकीइंद्रीगईनजीती । छाँड़हिंनाहिंपापकीरीती ॥ भोगिनरकपुनिपुनिजगआई । रहहिंविपैसुखसदालोभाई ॥
ऐसगृहिनवुद्धिहरिमाहीं । होतकहेहुअपनेहुतेनाहीं॥३०॥जेशठमहाभरेअभिमानै । तेनिजपतियदुपतिहिनजानै॥
हरिविमुखीगुरुकरिजगमाहीं । गुरुसमेतनरकमहँजाहीं॥ जिमिआँधरलैआँधरकाहीं। पायकूपदोउगिरिजाहीं॥३१॥
जेशठकुमतिविपैमदमाते । तेहरिपदकोनहिंनियराते ॥ विनामिलेहरिपदअरविंदा । कवहुँनकोहुहिहोतअनंदा॥
दोहा-जवलोंसंतनचरणरज, शीशधरतनहिंकोइ ॥ तवलोंश्रीगोविंदपद, कवहुँनपावतसोइ ॥ ३२ ॥
असकहिश्रीप्रहलादउदारा । पुनिनाहिंनेकहुवचनउचारा ॥सुनिसुतवचनदुखदअसुरेशा॥अशुहिभयोकोपकलेशा॥
सुतहिअंकतेअवनिगिरायो॥लोचनलालकालसमभायो ३३ अमरपवशकहवचनकठोरा।सुनहुसकलदानववरजोरा॥
मारनकेलायकयहवालक । मारहुआशुजातिकुलघालक॥मेरेढिगतेटारहुयाको । क्षणभरिहैनहिंपात्रकृपाको॥३४॥
जोहरिहिरण्याक्षकोनाशी । मानतताहिआदिअविनाशी॥यहशठसुततजिनिजपरिवारा । तेहिपदसेवतवारहिंवारा॥
दोहा-मेरेकाकाकोहन्यो, जानिहुकैमतिमंद ॥ तासुदासयहहोतहठि, गुनिमनपरमअनंद ॥ ३५ ॥
पंचवर्पहेंतियहवालक । तज्यौमातुपितुनेहकुचालक ॥ तौकाकरीभलोहरिकेरो । कियोकालयाकेपरफेरो ॥३६॥
रिपुसुतहोइकरैहितसोई । सवप्रकारतेनिजसुतसोई ॥ जिमिओपधिकंटकतरुफूला । होहिंसदाजनकोअनुकूला ।
सुतहुहोइपैनहिंहितकारी । रोगसमानसोहैदुखकारी ॥ ज्योंभुजंगअँगुरीमहँकाटै । ताकहिआशुछुरितेछांटै ।
जातवांचिविपतेसवअंगा । सुखीशरीरहोतनहिंभंगा॥जिमियकहनेवचैपरिवारा।तौमारियनहिंकरियविचारा ॥३७॥
दोहा-तातेयाकोमारहू, करिकैअमितउपाय । सोवतजागतवैठियो । अथवापिपहिखवाय ॥
[illegible] कलदैत्यअतिघोरा।
[illegible] मारहुकरहुनभोरा॥
असकहिअसुरशूललैघोरा । धायेप्रहलादहिकीओरा॥शिरउरभुजनिमाँहइकसंगा । मार्योप्रहलादहिकेअंगा॥३९॥
ताकोलग्योकृष्णपदध्याना । उदकिगयेसवशूलमहाना ॥ तिलभरतहँतेंदन्योनटारो । कियेनकछुप्रहलादसभारो॥
दोहा-जैसेउद्यमकरहिंवहु, पुरुपभागकेहीन । मिलतनधनतिनकोकछू, रहतदीनकेदीन ॥ ४१ ॥
हिरणकशिपलखिवृथाप्रयासा । ह्वैशंकितकियकोपप्रकासा॥करनलग्योतहँऔरउपाई। जातमरैपुत्रदुखदाई॥

ठाढ़ोकियोमत्तगजआगे । पैप्रहलादेदेखिगजभागे ॥ लपटायेतनमाँहभुजंगा । डसतनभयेनेकुतेहिअंगा ॥
पुनिमारनहितकियेप्रयोगू । करतहिपायोअतिदुखभोगू ॥ पुनिअतिऊँचेशैलचढाई । प्रहलादहिदियदैत्यगिराई ॥
पैधरनीहाथहिमहँलीन्ह्यों।अतिअनन्यहरिभक्तहिचीन्ह्यों॥मायाकरिकियवज्रनिपात।हरिप्रभावतेलग्योनगात॥

दोहा–पुनिनिशिधरणीमहँअसुर, गाड़िदियोखनिखात । पैजसकोतसकढ़तभो, श्रीप्रहलादप्रभात ॥

पुनिशठभोजनमहँविषदीन्ह्यों।पैप्रहलादहिनशानकीन्ह्यों।पुनिकरवायेअमितउपासा।पैकीन्हींनहिंक्षुधाप्रकासा॥
पुनिहिमिमाँहगलावनलागे । परसतहिमिशीतलतात्यागे ॥ पवनप्रचंडहिचहेउड़ाई । पवनहुसक्योनतेहिलैजाई ॥
जारनलगीअगिनकीज्वाला । परसतप्रहलादहिभयमाला॥पुनिशठबोऱ्योसागरमाँहीं।सदनसरिसभोसलिलतहाँहीं॥
पुनिदैमाऱ्योशीशपहारा । लगेनउनभेटूकहजारा ॥ यहिविधिकीन्हेंअमितउपाई । पैप्रहलादहिविथानआई ॥

दोहा–कैनसक्योकोऊकछू, करिकितेकप्रयास । चारिभुजाकेजासुहैं, रक्षकरमानिवास ॥

हिरण्यकशिपकरिकोटिउपाई।सक्योनमारिसुतहिनृपराई॥तबचिंताउपजीमनमाहीं।मरतपुत्रअबकैसहुनाहीं॥४४॥
कह्योयाहिमैंवचनकठोरा।कियेवधनहितजतनकरोरा॥पैनिजतेजहितेयहबालक।बचिबचिजातअधमकुलबालक ॥
मेरेढिगवैठोप्रहलादा।नेकुनमानतभीतिविषादा॥तजतअवहुँनहिंहठमतिकोती।श्वानपुच्छजिमिसूधनहोती ॥४६॥
किधौंअमरह्वैमहाप्रभाऊ । भीतिनमानतबाढ़तवाऊ ॥ धौंयाहीकेकियेविरोधू । ह्वैहैमोरप्राणअवरोधू ॥ ४७ ॥

दोहा–ऐसीकरतअनेकविधि, चिंताअसुरमहान । नीचेहीदृगकरिलियो, मुखपरिगयोमलान ॥

शंडामर्कतवैतहँजाई । लैयकांतमहँकह्योवुझाई ॥ ४८ ॥ एकआपुत्रिभुवनकहँजीते।निरखतभृकुटिहोतसुरभीते ॥
[ऐ]सेतुमत्रिभुवनकेनाथा । चिंताकरहुसमानअनाथा ॥ तुम्हैंनलायकहैयहरीती। शिशुगुणदोषनकरहुप्रतीती॥४९॥
[व]रुणपाशमहँबालकबांधी । राखहुअंधकोठरीधांधी ॥ जातेकतहुँभागिनहिंजावै । जबलौंपिताशुक्रनहिंआवै ॥
[न]ाथआपुकेजबगुरुऐहैं।तबसबविधियहिशठैसिखैहैं॥बालककरिवृद्धनसेवकाई।छोड़िहिसकलकुमतिदुखदाई ॥५०॥

दोहा–शंडामर्कनिदेशसुनि, हिरण्यकशिपवलवान । वरुणपाशतेबाँधिकै, प्रहलादहिधरिजान ॥

[स]ौंपिदियोगुरुपुत्रनकाहीं । कह्योराखियोनिजगृहमाहीं ॥असुरधर्मकरहूउपदेशू । गुरुकुमारममानिनिदेशू॥५१॥
शंडामर्कसुनतप्रभुबैना । लायेप्रहलादहिनिजऐना । सिखवनलगेअसुरकुलधर्मा । औरहुसबैभयानककर्मा ॥५२॥
[प]ुनिप्रहलादनकछुउरआना।भक्तिमार्गतेभिन्नहिजाना॥५३॥जबगुरुसुतकौनहुगृहकाजा।करनलगेतजिबालसमाजा।
तबसिगरेबालकनबोलाई।कहैप्रह्लादमधुरमुसकाई॥बालकसुनहुज्ञानउपदेशा । जाकेसुनतमिटतअँदेशा ॥ ५४ ॥

दोहा–सुनतवचनप्रहलादके, बालकखेलविहाय ॥ घेरिचारिहूओरते, बैठेचित्तलगाय ॥ ५५ ॥
विषवासनातेरहित, जानितिन्हेंप्रहलाद ॥ करनलग्योउपदेशबहु, कृष्णभक्तिमरयाद ॥ ५६ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

प्रह्लाद उवाच ।

दोहा–बालपनेतेकृष्णपद, प्रीतिकरैमतिवान ॥ दुर्लभयहमानुषजनन, रहतनवहुदिनप्रान ॥

जगमहँमनुजयोनिजोपावै । सोजोकरैसोइफलनिआवै ॥ १ ॥ सबविधिमंगललोगनकाहीं । कृष्णचंद्रशरणागतमाहीं॥
सबप्राणिनकोसोइअतिप्यारो।सोइआत्मासोइईशउदारो ॥२॥ होतविषैसुखविनैउपाई।सगमृगनरनकरमगतिपाई ॥
जिमिअभागवशदुखदुसहोते । अनायाससबसुखहठिसोवै ॥३॥ तानेजननकरबमुभ्दन्हू । आयुपवृथानाशकोनेतू ॥
जोसुखदेतकृष्णपदप्रेमा । सोनमिलतजपतपकरिनेमा ॥४॥ तानेकरैकृष्णपदप्रीती।जानिमिटनिसकलभवभीती ॥

दोहा–पंचवर्षतेलैमनुज, जबलौंरहैशरीर ॥ तौलौंयदुपतिचरणकी, भक्तिकरैमतिधीर ॥

वाउमरिजोभक्तिनआई।कहाकरिरहिपुनिपायबुढ़ाई॥८॥शतवरपहिंजनुआयुपहोवै।वर्षपचाससोइनिशिखोवै॥६॥
येवर्पदशबालपनेसे । औरौदशगेयुवाखनैसे ॥ लहेजठरपनवीसगमावै । तामेंकछुनकरतवनिआवै ॥ ७ ॥
रुजेरहेवर्पदशबाकी । तिनमेंकामक्रोधमतिछाकी ॥ ऐसेनाहकजन्मसिराही । जोनलग्योमनहरिपदमाही ॥
तितियमोहपाशकेबाँधे । कोउनछोडाइसकैगृहधाँधे ॥९॥ प्राणहुतेधनअतिप्रियलागै । कैसेतासुललसात्यागै ॥
दोहा–जेहिधनकेकारणवणिक, गमनतदूरविदेश । प्राणआशकोछोडिकै, ल्यावतनिजहिनिवेश ॥
नाहितचाकरकरतचाकरी । प्राणदेतलहिसमैसाँकरी॥धनहितकरतचोरबहुचोरी।राखतप्राणआशनहिंथोरी॥१०॥
जिनजातसुंदरनिजनारी । जातेलग्येनेहअतिभारी ॥ ताजिनजातयेकोतविलासा । प्यारीसंगकरबपरिहासा ॥
जिनजातनिजबालककेरी।बोलिनितोतरिसुखदयनेरी॥११॥तजिनजातअंतहिदुखदाई।मित्रपुत्रदुहिताप्रियभाई॥
जिनजातजनकहुअरुजननी।सासुश्वशुरऔरहुप्रियभगिनी॥तजिनतातसुंदरधनधामा।गजतुरंगचाकरकृतकामा॥
दोहा–तजिनजातकुलवृत्तिहू, ताजिनजातगृहकाज ॥ १२ ॥ तजिनजातहैलोभयह, तजिनजातसुखसाज ॥
तामिगृहरचतकीटकुसियारी।निकसनहितनहिंराखतद्वारी।तिमिजनकरतकरमसंसारा।निकसनहितनहिंराखतद्वारा॥
कबहूँसंतोपनपावै । बारबारतृष्णावशधावै ॥ मैथुनभोजनसुखअतिमानी । कैसेमोहतजैअज्ञानी ॥ १३ ॥
लतनिजकुटुंबकीनाई । वृथाअवरदादेहिगँमाई ॥ जातेहोतपरमकल्याना । सोनहिंजानतजातनशाना ॥
दपितापत्रैतापितहोही । तदपिरहैपरिवारहिमोही ॥ १४ ॥ यद्यपिजानतपरधनलीन्हें । दोऊलोकखोयहमदीन्हें॥
दोहा–तदपिकुमतिअतिमोहवश, निजकुटुंबकेहेत । परधनकेहेरनहितै, नितउठिबांधतनेत ॥ १५ ॥
डितरहँवशमोहमहाना । पालतहपरिवारलोभाना ॥ अपनोकरिअरुभेदविरानो।करतझूठसमनरकपपानो॥१६॥
कबहूँकहूँकैसेहूकामी । जानतनहिंनिजअंतरयामी ॥ मोहपाशनहिंसकतछोडाई । तरुणिनमहँनितरह्योलोभाई॥
तियमरकटसमतिनाहिनचावैं।सुतसनेहवेडीपारिजावैं ॥१७॥तातेहेदैत्यनकेबालक । तजहुसंगविपयनकुलघालक॥
ादिदेवयदुनंदनकाही।भजउभजहिजेहिसंतसदाही१८हरिसेवतनहिंहोतप्रयासा।अतिकरुणाकररमानिवासा१९॥
दोहा–जेतेलघुवडजीवजग, ब्रह्मपिपीलप्रयंत । थावरजंगममेंसबै, निवसतकमलाकंत ॥ २० ॥
दासचिदानंदसुभाऊ।कुमतिनजानहितासुप्रभाऊ।कीन्हेंविनासंतसतसंगा।जानिपरतनहिंईशअभंगा २१-२२-२३
रहुसबैजीवनमहँप्रीती । छोडिदेहुअसुरनकीरीती ॥ जातेहोहिंप्रसन्नमुकुंदा । देहिसदानिरवधिकअनंदा ॥ २४॥
पप्रसन्नभेरमानिवासा । ताहीक्षणपूजीसबआसा ॥ धरमादिकतेरहतनकामा । पानकरतहरिप्रेमउलासा ॥ २५॥
मेंअर्थअरुकामउपाई ! औरहुपढबवेदसमुदाई ॥ जानबसिगरेशास्त्रनिदाना । करबसबैजपयोगमहाना ॥
दोहा–ओहरिपदअनुरागभो, तोसबसफलजनाहि । जोहरिकोअनुरागनहिं, तोनिरफलसबजाहि ॥ २६ ॥
ारायणनारदसोज्ञाना । जेमेंकहसोकियोबखाना ॥ सोसंतनचरणनरजपाई । होतज्ञाननहिंऔरउपाई ॥
ुद्धभागवतधर्ममहाना । यहअतिसुंदरज्ञानविज्ञाना ॥ प्रथमसुन्योमेंनारदमुखते । तबतेछूटिगयोसबदुखते॥२८॥
ुनिप्रहलादवचनसबधारे । अचरजगुनिअसवचनउचारे ॥

वालका ऊचुः ।

प्रहलादहमारतुम्हारो । देगुरुशंडामर्कउदारो ॥ तिनसोंपढ्योहमहितुमसंगे । तुमकहँपायोज्ञानअभंगे ॥ २९॥
नबतुमरह्योननिगृहमाहीं । जातरहेसजननतहँनाहीं ॥
दोहा–जानेजानेतुमलह्यो, यहअतिसुंदरज्ञान । यहसंशयमेटनहितै, हमसोंकरहुबखान ॥ ३० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजावान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ सप्तमस्कन्धे षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

नारद उवाच।

दोहा-असुरबालइहिविधिजबै, पूछ्यौसुतअहलाद। तबमेरोभापितसुमिरि, बिहँसिभन्योप्रहलाद ॥ १ ॥

प्रह्लाद उवाच।

ममपितुजबतपहितबलवाना।कियोमंदराचलहिपयाना॥विनप्रभुकेलखिअसुरसमाजा।चढ़िआयोसुरलैसुरराजा॥२॥
विभौमानिसबचितमहँपागे।तहाँदेवअसभापनलागे॥जिमिपिपीलिकाअहिकहखाही।तिमितेहिपापविनाश्योताही ३
देवराजकीजानअँवाई। विनप्रभुबलीअसुरसमुदाई॥ गयेभागिदशादिशनिडेराई। कछुकसुरनमारेद्रुतधाई ॥ ४ ॥
सुततियगृहसम्पतितजिनाना।प्राणबचावनकियेपयाना॥पुनिनहिंमुरुकिअसुरकहेदेखैं।मीचुआपनीसबविधिलेखैं ॥
दोहा-असुरनकोभागतनिरखि, देवपसरकरिदीन। राजमहलसम्पतिविविध, पैठिलूटिसबलीन ॥
इंद्रधरयोममजननीकाहीं ॥ ६ ॥ लैगमन्योअपनेघरमाहीं ॥ जननीरोवनलगीडेराई। जिमिकुररव्याधाकरिआई ॥
विचरतनारदआयतहाहीं। मिलेमहेंद्रहिमारगमाहीं ॥ ७ ॥ मोंजननीकहँदीननिहारी। वासवसोंअसगिराउचारी ॥

श्रीनारद उवाच।

सतीदीनयहतियअतुललाजा। छोड़हुछोड़हुसुरमहँराजा॥ग्रहणकियोसुरपतिपरदारा। होतपापअतिवेदउचारा॥८॥
सुनिसुरपतिनारदकीवानी।कीन्ह्योंविनैजोरियुगपानी ॥

इंद्र उवाच।

याकेउदरशत्रुहैमेरो। प्रगटभयेदुखदईयनेरो ॥
दोहा-तातेजबवहहोइगो, तबतेहिमारिविशेखि। याकोंदैहौंछोडिमैं, परमदीनतादेखि ॥ ९ ॥
सुनिवासवकेअनुचितवैना। बोलेमुनिभरिआयेनैना ॥

नारद उवाच।

याकेउदरअपापप्रतापी। महाभागवतहैहरिजापी॥ हैमुकुंदयाकोरखवारो। मरिहैनाहिरावरोमारो ॥ १० ॥
नारदवचनइंद्रतहँमानी। तज्योजननिकहउरभैमानी॥ भगवतभक्तजानिसुरराई। दैपरदक्षिणगयोसिधाई ॥ ११॥
तबममजननीकहऋषिराई।अपनेआश्रमआशुहिल्याई।बसहुइहाँअसकह्योंबुझावत।जबलौंतुवनायकनहिंआवत १२
मुनिकेवचनमानिमहतारी। निवसीतहाँभीतितजिभारी ॥
दोहा-जबलौंवनतेघोरतप, करिकैपितुबलवान॥ नहिंआयोतबलौंरही, मुनिआश्रमहिमहान ॥ १३ ॥
निजगर्भहिकेमंगलहेतू। जामेंहोयपुत्रमतिसेतू ॥ असविचारिमेरीमहतारी। नारदकीसेवाकियभारी ॥ १४ ॥
ममजननीकोलखिसेवकाई। नारदकरिकैकृपामहाई ॥ भगवतधर्महिकियउपदेशू। औरहुज्ञानविज्ञानहिवेशू १५॥
नारिस्वभाउकाल्बहुपाई। जननीदियोज्ञानबिसराई॥कियनारदमोहिकृपाअतूली।तातेसुधिमोकोनहिंभूली ॥१६॥
मानहुवचनमोरयदिबालका।तौदुखलहहुनजोकुलपालका॥होवहुआशुदमहिसमज्ञानी।रहिहौपुनिनदेहअभिमानी ॥
दोहा-होबवढ़बबदलबरहब, पटवनसवपटभाव ॥ यतदेहीकेहोतहैं, अहैनजीवस्वभाव ॥ १७॥
जिमितरुहतखड़ोवनमाहीं।फललगिवढ़तपकतनशिजाहीं॥आतमासिद्धयेकअविनाशी।ज्ञानस्वरूपशरीरप्रकाशी॥
ईशसदाव्यापकअविकारी। यकसमनहिंमायासंचारी॥१८॥ ज्ञानगुणकदेसदाअसंगी। मानैसबशरीरकोअंगी॥१९॥
येद्वादशलक्षणगुनज्ञानी। होयनकबहुँदेहअभिमानी॥ जैसेचतुरमृत्तिकापाई। लैतआगिनिधरिकनककनाई ॥२०॥
जिमिज्ञानीनिजजीवविशेखै। ज्ञानदृष्टितेईशहिदेखै ॥ २१॥ आठप्रकृतित्रिगुणतेहिकेरे। औविकारषोडशहुघनेरे॥
दोहा-एकआतमाकोरहत, इनसबमहँसम्बंधु॥ ऐसोकहतविचारिकै, जेज्ञानीमतिसिंधु ॥ २२ ॥
इनसबकोमिलिहोतशरीरा। जडचेतनदुभेदगँभीरा॥ मनवचकर्मपरेजोहोवै। तेहिभूपपरमपुरुषनिनजोवै ॥२३॥
सोइसबतेबाहेरसबमाहीं। सिरजतपालतरहतसदाहीं॥२४॥तीनिअवस्थाबुद्धिहिकेरी। जाग्रतस्वप्नसुषुप्तितिकेरी

सोसबकरतजीवनितभोगू।नहिंपरमात्माकोसंयोगू॥२५॥तेहिअनुभौकारकजियमाने।जिमिसुगंधतेधरनीजाने २६॥
यहीअज्ञानमूलसंसारा । हैनहिंपैजनकहतहमारा ॥ जैसेसपनमाँहधनपाई । जनकरिलोभलेहिअपनाई ॥ २७॥

दोहा—तातेतीनिहुँगुणनके, कर्मतजहुसबकोइ ॥ विषैवासनाछोड़िकै, बुद्धिविमलजबहोइ ॥ २८ ॥

सोईउपायहजारनमाहीं । भलीअहैमुनिकहतसदाहीं ॥ जोउपायकीन्हेंअतिआसू । लागैमनपदरमानिवासू ॥२९॥
भक्तिसहितगुरुसेवनकीन्हें । निजसर्वसनिजप्रभुकहँदीन्हें॥ कीन्हेंसंतजननसतसंगा।भजेईशकहतजिजगसंगा ३०॥
कृष्णकथामहँश्रवणलगाये। सुंदरकृष्णचरितमुखगाये॥कियेध्यानहरिपदमनभावन । देखेकृष्णस्वरूपसोहावन३१
देखिपरैहरिसबथलमाहीं । जियकीसबसंशयमिटिजाहीं॥३२॥तबहरिचरणपरमरतिहोवै।कोटिजन्मकोपातकखोवै॥

दोहा—श्रीमुकुंदलीलासुखद, जासमऔरनकोय ॥ ताहिसुनतसमुझतकहत, तनपुलकावलिहोय ॥

हरपितगद्गदगरह्वैजावै । आनँदनीरदृगनझरिलावै ॥ करैभावनाअसमनमाहीं । कृष्णसंगहमअहैंसदाहीं ॥
करैनित्यनदनंदनरासा । तहँगावतहैंसहितहुलासा॥ सखिनस्वरूपसखिनकेसंगा।नाचहिसाजिशृँगारनअंगा ॥ ३४॥
मनमोहनकोभयोवियोगू । रोदनकराहिधारिबहुशोगू ॥ कहूँहँसैहरिसँगकरिहाँसी । कहुँगोहरावतआनँदरासी ॥
कहुँधरिध्यानपाइपुनिपरसै । बारबारश्वासानिपुनिहरसै ॥ हेनारायणहरेकृपाला । कहांगयेतजिदीनदयाल॥

दोहा—जोभावनाकरैउहा, सोईतनप्रगटाहिं ॥ वसुधामेंवैकलसरिस, गुनैमूढ़तेहिकाहिं ॥

अथवाअसभावनानहोवै । मनचंचलताकरिहारिखोवै ॥ तौजनकरैभक्तियहिभाती । हरिकीकथासुनैदिनराती॥
कथाशोकहरपहुकीआवै । आनँदशोकहुतबउरध्यावै ॥ हरिमूरतिसन्मुखनितगावै । लाजछोड़िबहुभावबतावै॥
हरिढिगनाचतगावतमाहीं । कोटिजन्मकेअघनशिजाहीं ॥ करिअनुरागनैनजलढारै । पुलकावलितनबारहिंबारै॥
जबअसकरहिकथामहँप्रीती । जानततबैप्रेमकीरीती॥तबजगछूटतविनाहिप्रयासा।करतिनमनपुनिकुमतिनिवासा॥

दोहा—पुण्यपापमिटिजातसब, तुच्छलगतत्रयलोक ॥ प्रेममगननितहीरहत, होतकबहुँनहिंशोक ॥३५॥३६॥

जेऐसेजनहैंजगमाहीं । तिनहींहाठिमाधवमिलिजाहीं ॥ हरिपदप्रीतिजोसुखउपजावै । ताकोब्रह्मानंदनपावै॥
मगनजेहरिपदप्रेमहिपाना।विज्ञानिहुनहिंतिनहिसमाना॥तातेकरिविचारदुखगंजा।बालकभजहुकृष्णपदकंजा ३७॥
भजतकृष्णकहकौनप्रयासा । जोव्यापकहैसरिसअकासा॥यकक्षणकियेकृष्णपदप्रीती।सखासरिसमानहिप्रभुरीती॥
तातेऐसेछोड़िकृपालै। कौनपरेशठजगजंजालै ॥ ३८ ॥ सुततियधनधरनीगजवाजी । नहिंस्वारथपरमारथकाजी॥

दोहा—नहिंविभूतिकहुँरहतितिन, चलैननिजकरतूति ॥ अंतसमैसुततियकरैं, तनकहजारिविभूति ॥ ३९ ॥

जेसेऐहिकविभौनशाहीं । तैसेस्वर्गादिकनशिजाहीं ॥ जबलौंरहतस्वर्गमहँजाई । तबहुँनतृष्णामिटतिमिटाई॥
सोइतृष्णासबदुखकरमूला।मिटतसोभयेकृष्णअनुकूला॥तातेदोउलोकनकीआसा।छोड़िभजहुपदरमानिवासा४०॥
जोनकर्मवशिकरिअभिमानै। अपनेकहँबड़पंडितमानै ॥४१॥ सुखहितकरतकर्मबहुवारा।सोअंतहिदुखहेतअपारा॥
तातेतृष्णातजैनजबलौं । कहोंनसुखपावतजनतबलौं ॥४२॥जेहितनसुखहितकरैउपाई।सोतनअंतलेहिक्रमिताई॥

दोहा—कीपावककेज्वालमहँ, जरिकैहोतोछार ॥ कीशृगालकीश्वानकी, शूकरकरैअहार ॥

[illegible]निपरतनहिंकबनाशिजैहै । लिखोकरमकोकहकहह्वैहै॥४३॥जोअपनीदेहहुहैनाहीं । तौसुततियकोहिलेखेमाहीं॥
धनधरनीधामहुपरिवारा । सुभटतुरंगमतुंगहजारा ॥ मंत्रीमित्रआदिसबजेते । इंद्रजालजानहुसबतेते ॥ ४४॥
येसबअहैंअनर्थहिकारी । जानतअर्थमोहबशभारी ॥ जेहरिप्रेमसुधारसपागे । तिनहिनेकुयेनीकनलागे ॥ ४५॥
गर्भहितेलैमरणप्रयंता । लहतदुसहदुखजीवअनंता॥विनहरिभजनहोतसुखनाहीं॥बालकलेहुशोचिमनमाहीं॥४६॥

दोहा—करतदेहतेकर्मबहु, लहतकर्मवशदेह । यहसिगरोअविवेकहै, रचितकृष्णपदनेह ॥ ४७॥

अर्थकर्मकामहुनिरवाना । तिनकेदायककेभगवाना॥तातेसकलकामनाछोड़ी । भजरुकुमिनीमाधवजोड़ी ॥४८॥
[illegible]अंतरजामी । सोइआतमाईश्वरप्रियस्वामी॥४९॥सुरऔअसुरमनुजमुनिसर्वा।चारणयक्षसिद्धगंधर्वा॥
इनमहँ[illegible]भजनमुकुंदै।मे[illegible]समपावतआनंदै॥५०॥भयेविमलहुपद्धिलीन्हें।सुरसुरपतिहुभयेसुरभीतै५१

कीन्हेंधर्मभयेबड़ज्ञानी । कीन्हेंतपहुभयेजगदानी ॥ कियेयज्ञऔकियेअचारा । कियेप्रेमयुतव्रतहुहजारा ॥
दोहा-रीझतनंदकुमारनहिं, बिनाभक्तियुतप्रीति । औरसबैएकनलहै, असमनकरहुप्रतीति ॥ ५२ ॥
तातेहेअसुरनकेबालक । हैमुकुंदशरणागतपालक ॥ करहुभक्तितिनकीसुखदाई । राखहुसबथलमहँसमताई ॥
जामेंलेहिनाथअपनाई । तबसबविधितुम्हरीबनिआई ॥५३॥ दैत्ययक्षराक्षसअतिघोरा । नारिशूद्रऔनीचकरोरा ॥
खगमृगऔरहुजेअतिपापी । रहेजगतमहँअतिसंतापी ॥ तेऊहरिपदनेहलगाई । वासकियेवैकुंठहिजाई ॥
कोअसदूसरदीनदयाला।सुमिरतहीकरिदेतनिहाला॥भजहिऔरजेअसप्रभुछोडी।तिनकीमतिसबभाँतिनगोडी ५४
दोहा-यहपरमारथजगतमें, भापतवेदपुरान । भक्तिकरबगोविंदकी, सबथलतिनकोभान ॥ ५५ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशाविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

नारद उवाच ।

दोहा-ऐसेसुनिप्रहलादके, वचनप्रेमरसभीन । असुरबालहरिभजतभे, गुरुशिक्षिततजिदीन ॥ १ ॥
शंडामर्कहुँकरिगृहकाजा । आवतभेजहँबालसमाजा ॥ सबबालककहभक्तिविज्ञाना । दियपढायप्रहलादप्रधाना ॥
शंडामर्कदशायहदेखी । कोपितभेमनमहँअसलेखी ॥ बह्योआपबालकनबहायो । कहतेयाकुपूतकुलजायो ॥
नहिंसमुझिहैपूतगुणदोपू । हमहींपरकरिहैनृपरोपू ॥ असगुनिमनमहँनृपहिडेराई । जातभयेजहँदानवराई ॥
शंडामर्कजोरियुगहाथा । कह्योसुनोविनतीयहनाथा ॥ वहसुतशठप्रहलादतिहारो । मानतनाहिंकछुकह्योहमारो ॥
दोहा-सबबालकनबोलाइकै, सिखयोअपनीरीति । तुमहूंहमरेवचनमहँ, नेकुनकियोप्रतीति ॥
तातेउऋणहोनहमआये । जातसभामधियहगोहराये ॥ अबनपढ़ैहैहमप्रहलादै । वृथानलेहैंयहअपवादै ॥ २ ॥
शंडामर्कवचनसुनिराजा । सभामध्यकरिकोपदराजा ॥ सुनिदनुसुतनपढ़ाउबज्ञाना । लाग्योतातततेलसमकाना ॥
भयोकुपितकाँपेसबअंगा।दाबिअधरभ्रुकुटीकरभंगा॥प्रहलादहिमनवधनविचारी॥३॥हिरणकशिपअसगिराउचारी॥
भोसुतमोहिंदुसहदुखदाता । अबतोनहिंउरकोपसमाता ॥ सिखयहुपैछोड्योकुलरीती । बालकसदाकरतअनरीती॥
दोहा-तातेप्रहलादहितुरत, धरिल्यावोममपास । वधकरिहोंनिजहाथसों, डारिगरेमहँपास ॥
सुनतसुभटनिजनाथनिदेशा।दौरिगयेद्रुतगुरूनिवेशा॥सभामध्यप्रहलादहिल्याई।हिरण्यकशिपकहदियोदेखाई॥४॥
पितहिनिरखिप्रहलादललामा।हाथजोरियुगकियोप्रणामा॥अतिविनीतभोसन्मुखठाढ़ो।बुधवरकृष्णभक्तिमहँगाढ़ो॥
पुत्रनिरखिभोकोपअपारा । जिमिभुजंगचरणनकोमारा ॥ लेतश्वाससुखबारहिंबारा । तिरछीकरिनैननिहारा ॥
अतिदारुणदानवपतिघोरा। कह्योकुलिशसमवचनकठोरा॥५॥दुर्विनीतहेअधमकुमारा।कुलनाशनमतिमंदगँवारा॥
दोहा-मेरोअरुनिजगुरुको, कियोननेकुनिदेश । तातेतोहिपठाइहों, अबयमराजनिवेश ॥ ६ ॥
जेहिकोपतकाँपतत्रैलोका । उपजतअवशिईशउरशोका॥असमेंताकोकदानमान्यो।काकेबलतेयहबुधिठान्यो ॥७॥
सुनिपितुवचनहरषिप्रहलादा । बोलतभयेननेकुविषादा ॥

प्रह्लाद उवाच ।

जिनकेबलतेमैंअसभारों । मनमेंकछुशंकानहिंरारों ॥ तेतुम्हरोऔरहूबलिनके । अहैपरमबलसुरअबलिनके ॥
लघुबड़थावरजंगममाहीं । अंतरहितसोरहतसदाहीं ॥ शिवविरंचिआदिकहुसुरेशा।निनहींकेबशहैअसुरेशा ॥८॥
सोइईश्वरसोइकालमुरारी । सोईबलइंद्रिनसंचारी ॥
दोहा-त्रिगुणनाथयहविश्वको, निजशक्तिनतेसोइ ॥ सिरजतपालतसंहरन, पिताऔरनहिंकोइ ॥ ९ ॥
पितातजहुयहअसुरस्वभाऊ । राखहुसबजगमहँसमभाऊ ॥ जोसबतेगरिहोसमताई । त [illegible]

विननिजमनसारिपूनहिंआना। सोइकरावतपापनिनाना॥सबकहमानवपितासमाना।यहीपरमपूजनभगवाना॥१०॥
श्रवणनैनरसनाअरुघ्राना। अरुउपस्थचंचलमनजाना। येपटचोररहैंतनमाहीं। सदाचोरावहिंचित्तहिकाहीं॥
पिताविनाजीतेपटचोरा। मानहुजीतिलियोचहुँओरा॥ सोहैयहअज्ञानतुम्हारा। असमहँनहिंछूटीसंसारा॥

दोहा--जेअपनेवशमनकिये, तिन्हैंकहाँहैमोह॥ तेईसमदरशीसुमति, राखतकतहुँनद्रोह॥ ११॥

सुनियहवचनतासुअसुरेशा।भयोकुपितजनुप्रलैमहेशा।।दशतअधररदननबहुवारा।कनककशिपुअसवचनउचारा॥

हिरण्यकशिपुरुवाच।

भयेकालवशरेशठबालक। मैंजान्योसतितैंकुलघालक। मेरेसन्मुखबारहिंबारा। अतिअनुचिततैंवचनउचारा॥
मेरेरिपुकीकरैबड़ाई। मोरभीतितोहिनेकुनआई॥ जाकोमरणकालनियराना। ताकोभूलिजातसबज्ञाना॥
भूलिजातसबकुलकीरीती।भाषतसकलसदाविपरीती१२मोहितजिदूसरईश्वरजान्यो।तबतेकालविवशतोहिंमान्यो॥

दोहा--बारबारजाकोकहत, मोप्रभुअमितप्रभाव। सोतेरेप्रभुहैंकहां, मोकोवेगिबताव॥

तबप्रहलादसभामधिबोले। अपनेउरकेआशयखोले॥

श्रीप्रह्लाद उवाच।

पितामोरप्रभुहैसबठामा। जाकेहैंअनंतगुणनामा॥ मोमेंतोमेंसभासदनमें। जलमेंथलमेंशैलसदनमें॥
पितानहैऐसोकहुँठोरा। जहाँरहतनहिंनंदकिशोरा॥ मोकोदेखिपरतसबमाहीं। तोकोदेखिपरतधौंनाहीं॥
हिरणकशिपुसुनिकेसुतवैना। कालसमानलालकरिनैना॥ ऐंठेउदंडउभैभुजदंडा। कैकरमेंकरवालप्रचंडा॥
मसकियुगलजानुनतेधरनी। करिकैभृकुटिवंकभयकरनी॥

दोहा--हाथफेरिनिजमूछपर, कोपितकाँपतअंग। हिरणकशिपबोल्योवचन, भरिअतिउरादिउमंग॥

हिरण्यकशिपुरुवाच।

छंदतो०--बहुवारकुमारउचारकियो।मनमेंनहिंनेकविचारिलियो।।अपनेप्रभुकोसबठौरकहै।ममशासननेकुनचित्तधरै
शठतैंयहजानतनेकुनहीं। तिहुँलोकनदूसरईशकहीं॥ बहुद्यौसनतोहिंबचाइदियो। यहितेतैंअतिमनगर्बकियो॥
शठमानहिनाहिसिखापनहे। मनकीकरतेहठआपनहे॥ जेहिमाधवकोप्रभुजानततैं।सबठौरहिव्यापकमानततैं॥
डरिसोमोहिछोड़िविकुंठदियो।मिलतोअबलोंनहिंखोजकियो॥भजिधौंकहदुष्टदुरानअहै।जेहिकोशठतैंभगवानकहै
मिलतोकहुँकैसहुँमोहिहरी। बचतोनहिंमोसनएकघरी॥छलकैममभ्रातहिमारिलयो।शठतैंतेहिकोहठिदासभयो॥
तोहिंदेखतबाढ़तदाहहिये। नाहिंहंभलतोहिंबचायदिये॥कहतोजेहिव्यापकविश्वभरे। मनमेंअतिजासुभरोसधरे।
अबजोसतिवातुवरक्षकरे।कसखम्भहिमेंनहिंदेखिपरे१२ यदिखंभहितेवहनाप्रगट्यो।मनतोखलतोरवृथाभटक्यो।
यदिमेंमतितोरलगीसिगरी। प्रगटेबिनजातसबैबिगरी॥ अपनेप्रभुकोकसटेरतना। तोहिमारतमोंकसहेरतना।

दोहा--सुनिकठोरपितुकेवचन, पाइपरमअहलाद। सभामध्यबोलतभयो, विहँसिमंदप्रहलाद॥

श्रीप्रह्लाद उवाच।

सवैया--पितुबावरोतूकछुनानेनहींप्रभुमेरोसबैथलमेंबिचरै। अवनीमेंअकाशमेंशैलहुसिंधुमेंमोमहँतोमहँतेअभी।
रघुराजपदोकरुनाकरसोनिजभक्तनकोप्रणपूरोकरै। यहखंभमेंमोहितोदेखिपरतोहिदेखिपरैपौंनदीलखै।

दोहा--सुनतवचनप्रहलादके, कनककशिपबलवानु। बोलतभोकोपितमनहुँ, मूरतिवंतकृशानु॥

हिरण्यकशिपुरुवाच।

छंद भुजंगप्रयात--अरेमूढपानेभलोबानबोले। सबैनागपासंडहोंदीनमोले॥
नोंनिसम्भेनाकछबोनोगंडशा। नोंमेंकाटिहोंनिगनेनोरशाशा॥
कछबोगंभेनेनोइदोनोगम्नामी। होउसंगनेहीगमैलोकगामी॥

इहाँआपनेईशकोतेबूलावै । सबैआपनोजोरमोकोदेखावै ॥ १४ ॥
महेशौगणेशौदिनेशौसुरेशौ । सकैंतोहिनाराखिशेशौप्रजेशौ ॥
चहैजोबचायोमहाकालआजै । तहूँताहिकींमैंकरौंगोपराजै ॥
अबैलौंनतूमोंहिजान्योकुमारा । कियेभूलफूलेफिरैतैंगवाँरा ॥
सुनोरेसभाकेसबैवीरप्यारे । कहेदेतहौंआजुमैंयोंपुकारे ॥
सुतैजानियाकोअबैलौंबचायो । बड़ोखेदयाकेलियेमोंहिआयो ॥
नदीजोकोईआजुतेदोपमेरो । परचोबालयौंकालकेहालफेरो ॥
महामापियैभापिसिंहासनैते । उव्योदैत्यकोनाथवीरासनैते ॥
करक्केकरीकौंचकीत्योंतरक्के । लखेदैत्यकोवीरसारेसरक्के ॥
तहाँवीरलैहाथमेंखड्गभारी । महाजोरसोंशोरकैभीतिकारी ॥
द्रुतैदौरिकैखम्भमेंमुष्टिमारी । हनैशैलमेंवज्रज्योंवज्रधारी ॥
डग्योभूधरासाधरावारवारा । तजैंहकरारामहापारवारा ॥
छंदनाराच-विकुष्टदुष्टजोरजुष्टमुष्टखंभमेंहन्यों । अतीवगर्वपुष्टकोपतुष्टचित्तनागन्यो ॥ १५ ॥
तहाँअखंडअंडखंडसोविखंडतैभयो । प्रचंडशोरदैत्यदंडखंभदंडतैठन्यो ॥
धराधराधरौअधारछोडिकैठरक्किगे । सुमेरशृंगतुंगहूतुरंतहीतरक्किगे ॥
विरंचिसंचिवैठिचौंकिचौंकिकैसरक्किगे । सगौरिवैगिरीशहूगिरीशतेखरक्किगे ॥
प्रचंडमारतंडकोउदंडतेजठंडभो । गँभीरनीरथंभसातसिंधुकोअखंडभो ॥
फणीशकानफूटिगेफणौइकट्टगूटिगे । दिशानदिग्गजानकोदिशानशानछूटिगे ॥
सुरेशशंकधारिवारवारहीविचारहीं । कहाँभयोमहानवज्रपातएकवारहीं ॥
विनाशमेंअवैकहांसमस्तकोसँहारभो । सुयोचितैसम्हारकोविसारिवैअधारभो ॥
किधौंप्रलैपयोधएकवारहीगराजहीं । किधौंसबैसुपौनजोरशोरकोविराजहीं ॥
करैविचारऐसहीननेकठीकपावहीं । सबैगऊद्विजानदेवतानिस्वस्तिगावहीं ॥
सुनेसुखंभतेनवैमहाकठोरसोरहे । सुवीरधीरमेंअधीरताकिचारिओरहै ॥
केतानिकर्णफूटिगेकेतानिशस्त्रछूटिगे । महानआसमानतारचंद्रभानगूटिगे ॥
दिशानकेसुरानिमेंअमानशोरजातभो । त्रिलोकमेंतुरंतहीअनंतगर्भपातभो ॥
सनंकविश्वमेंभरीसबैभटेसनंकिभे । अशंकतेसशंकसोजनंककोअनंकिभे ॥
मकानदानवानकेगिरेधराधराकदे । सभाफटीसुवर्णकीबड़ीबनीकराकदे ॥ १६ ॥
निशम्यदैत्यहूंकडीविश्वंभराभराकदे । रम्योसभारिकोपकेप्रवीरसोझराकदे ।
दंडक-आगृतेहिठोरखरजोरअतिघोरवलचोरसुनिरोरदानवअधीशा ॥
चितेचहुँओरकछुमनहिभोभोरजेहिजोरसोसोरभोसोनदीशा ॥
चकृतचितघोरनाहिंचौंकिचितनलग्योकहांघहभयोकाग्योईशा ॥
देखिनहिंपरतकछुश्रवणमहँरवभगतडरतदानवमकरबीसनोशा ॥ १७
गुनतअसहिरण्यकश्यपहिकैसभानिकगर्जिकैफाटिगोगंभभागं ॥
कढीविकरालतरदैकाटनीकाटकोन्याटकोनाटनानिभीनिकागं ॥
जरततहँजसुरघहुधौगडरनाहिंपगतभग्नकज्ञोकसुविघुधिनिसर्गं ॥
फरतनाहिंवनतकछुभजनपकपकडरनाभिग्नपुनिभग्ननागनप्रुकागं ॥

जरतकहुँपागकहुँफेटकहुँकंचुकौरंचकोवंचकौवचतनाहीं ॥
भमरिभागतभ्रमतहहरिहारततुरतदरदिारतदुरतदीनकाही ॥
महाभयभीतिलखिरीतितजिनीतितजिभयेविपरीतदितिसुवनआहीं ।
झटैपटझपटिअतिविकलपिललपटिभटअटपटीलपटलावततहाहीं ॥
कटकघटघटडटीतेहिघटीसटपटीनटीसमनटतशिखिसभामाहीं ॥
सत्यनिजभृत्यप्रहलादकेवचनहिततताहिहिठिवधनहितरचतलीला ।
माधवैमासशितचतुर्दशिवारशनिसमैगोधूरिहरिदयाशीला ॥ १८ ॥
खम्भतेप्रगटिद्रुतझपटिअसुरनदपटिरटिरपटिवहुकपटिहैनाहिठीला ॥
दानवैसिंहसनमुख्यनरसिंहगोसिंहज्यौंजातवनओरपीला ॥
भ्रूकुटिअतिवंकमनुमीचुकोअंकदृगतप्तहेमाभमनुकालकाला ।
शीशकीसटामनुकरतखलदलकटाउड़हिजेहिजोरवाड़िघटाजाला ॥
बृहदविस्तारयुतमहाविकरारमुखकरतसंहारमनुजगतहाला ।
पविहुतेपीनपरपैनपरचंडअतिदुष्टदुतअंतकरदंतमाला ॥
भरतचकचौंधचंचलाचंचलासीचलतचहुँओरअधरानिमाहीं ।
कालकरवालसीभीपणीतीपणीलालरसनालसातिवदनपाहीं ॥
मेरुकेतुंगयुगशृंगसेश्रवणदोउक्षणहिक्षणकोपतेकँपतजाहीं ।
सुंदरैमंदरैकंदरैसारिसजगनासिकारंध्रअतिशैसोहाहीं ॥
परमविकरालपातालमुखसारिसमुखहरतसुखशठनिदुखद्रुताहिदाता ॥
नकततनमनहुसरवृंदकेआयतनग्रीवअतिछोटअतिमोटगाता ॥
वक्षवरविशदमनुवज्रकेपाट्युगखीनकटिमुद्रिकावपुविख्याता ।
सोमकरसरिसतहँतोमतनरोमहैजोमसोंयुक्तमुखमुच्छजाता ॥
परमप्रचंडवरिवंडभुजदंडवहुदैत्यद्रुतखंडकरचंडभासी ।
करजकुलिकठिनकुटिलानकारेजकेनेजसेरेजकरतेजरासी ॥
पुच्छअतिसुच्छलगिकुच्छअरितुच्छकररुच्छनहिंगुच्छछविकीप्रकासी ।
दीर्घदुर्धरधुवैदीनउद्धरसदाक्रुद्धातिरशुद्धभोयुद्धआसी ॥

दोहा-निकस्योनरहरिखम्भते,कोटिनभानुप्रकाश॥देखिपरयोदरवारमधि,करतशत्रुदलनाश॥१९-२०-२१-२२॥

छंदतोमर--तहँहिरण्यकश्यपवीर । लखिनरहरीधरिधीर ॥ सोचनलग्योमनमाहिं । कछुठीकपरतोनाहिं ॥
अधऊर्धसिंहस्वरूप । अधआधनरकोरूप ॥ भारीभयंकरभूरि । दियतेजसत्रयलपूरि ॥
असकहुँनकानसुनान । अवलोंनकहुँदरशान ॥ धोरच्योविधिममभीच । प्रगट्योजोअतिहिंनगीच ॥
धोंकृष्णमायप्रवीन । यहरूपनिजकरिलीन॥मोसोंकरनाहितयुद्ध । आयोदरतरदक्रुद्ध ॥
हैहैजोसत्यमुकुंद । तोचलीनहिंकछुफंद ॥ यहकहाकारिहैमोर । अबलोंदुरयोडरिचोर ॥
मोहिब्रह्मकोवरदान । मोसरिसकोवलवान ॥ ममभीचुहैकहुँनाहिं । जीत्योभुवनत्रैकाहिं ॥
असगुनिमुपुनिधरिधीर । निजभटनमोंकहवीर ॥ निजकुलहिसुधिविसराइ । कतजाहुसकलपराइ॥
नाहिंवीरभागनधर्म । करिवेउचितनिरणकर्म । नरहरिजोयहभेदीन । प्रहलादमायाकीन ॥

दोहा—यदयोसोजोसोमनहि. रोपोरिरणधीर ॥ रूपअनोखेदेखिकै, भागहुनहिंसमभीर ॥

छंदतोमर-सुनिकनककश्यपवैन । भटभीतितजिभरिचैन ॥ सवफिरेएकहिंवार । गहिहाथमेंहथियार ॥
कोइपरिघपरशुकृपान । कोउनिशितवानकमान ॥ कोउमल्लभल्लतवल्ल । कोउभिंडपालप्रवल्ल ॥
कोइमुष्टिजुष्टिनजुष्ट । इमिपुष्टदुष्टहुरुष्ट ॥ नरहरीपैयकवार । आयेअसुरविकरार ॥
जिमिदीपगिरहिंपतंग । नहिंजरबजानविअंग ॥ जिमिमशकनैननमाहिं । निजमरनहितघुसिजाहिं ॥
तिमिनरहरीपरआइ । दियअमितअस्त्रचलाइ ॥ नरसिंहकेचहुँओर । कियघेरिदानवशोर ॥
तहँलगतनरहरिश्वास । वहुउड़ेविनहिंप्रयास ॥ कोउकेशअरुझिप्रवीर । मरिगयेपावतपीर ॥
जहँलगतनखनिकठोर । नशिगयेदैत्यकरोर ॥ वहुगयेचरणचपाइ । वहुपिसेदंतनिथाइ ॥
लगिपुच्छकीफटकार । कटिगयेअसुरअपार ॥ वहुगयेदिशनपराइ । वहुरहेअवनिलुकाइ ॥

दोहा-दोरदंडकोदंडधृत, शठप्रचंडवरिवंड ॥ खंडखंडतनखंडभे, लहिनृसिंहभुजदंड ॥

छंदतोमर-निजसुभटनिरखिविनास । तिमिवढ़तनरहरिभास ॥ कोपितभयोअसुरेंद्र । जिमिपददलितभुजगेंद्र ॥
करकरिगदावरजोर । करिघोरशोरअथोर । नरहरीकेढिगआइ । असवैनदियोसुनाइ ॥
कहँरह्योअवलोंचोर । नहिंखोजपायोतोर ॥ जान्योनहींतवदंभ । लुकिरह्योमेरेखंभ ॥
प्रथमहिजोलेतोजानि । करतोउपायनआनि ॥ यहखम्भकाहविदारि । तोहितवहितुरतनिकारि ॥
रखतोमैवंधनवाँधि । यककोठरीमहँधांधि । पुरजनलखतसवआइ । यहकोतकैचितचाइ ॥
पैअवहुँतैभलकीन । जोदरशमोकोदीन ॥ तोहिदेखिगुनिअपराध । मोहिंवढतक्रोधअगाध ॥
अववचवदुस्तरदुष्ट । हैहेमकश्यपरुष्ट ॥ छलकरिहन्योममभ्रात । सोदुखनमोहिसहिजात ॥
सुतनीकअवगुनिलीन । जोतोहिप्रगटकरिदीन ॥ अवकरुकितेकउपाइ । पैहैनअवकढ़िजाइ ॥ २३ ॥

दोहा-असकहिनरहरिहननको, गिरिगुरुगदाउठाय । जातभयोअतिशैनिकट, कोपितदानवराय ॥

छंदतोटक-असुरेशनृसिंहहिसंगभिरचो । जिमिपावकमाँहपतंगगिरचो ॥
लहिकैनरसिंहप्रकाशमहाँ । नहिंदानवनामदिखानतहाँ ॥
जेहितेजनसातमहातमहैं । तिनकोयहकेतिकवातअहै ॥
तहँदानववीरवडेवलसों । नरकेहरिकेशिरमेंछलसों ॥
द्रुतमारिगदापुनितकिगयो । नरसिंहहुताहिवचायलयो ॥
पुनिदौरिगदामुखमाँहहन्यो । असुरेशअतीवअमर्षसन्यो ॥
लगिदंतगदागुरुचूरभई । असुरेशतहाँइकफाँसलई ॥
नरसिंहगरेमहँडारिदियो । प्रभुताकहट्टूकहिट्टूककियो ॥
शठकुंतहुएककराललयो । यमदंडसमानप्रकाशछयो ॥
करिजोरहन्योहरिकेउरमें । जिमिवालकवाणधराधरमें ॥
ह्वैचूरणधूरणकेकणमें । मिलिगोनहिंदेखिपरचोक्षणमें ॥
करलेसितधारकुठारसवै । चहमारनकोढिगजायजवै ॥
तवहीनरसिंहसराजतभो । करतेछुटिगोअतिलाजतभो ॥
यहिभाँतिअनेकनआयुधको । यकवारपवारिदियोयुधको ॥
नगडेतनमेंसवटूटिगये । कितनीनरकेहरिघूटिगये ॥
लखिकेनिजशस्त्रनव्यर्थसवै । कछुशंकितभोअसुरेशतवै ॥

[दो]हा-वारवारतेहिवारमें, असुरवडोवलवार । कछुकवारलगिवारलगि, कियविचारा[illegible] ॥ २[illegible] ॥

छंदतोटक-नरकेहरिकोवहुशस्त्रहन्यो । यहतोनहिंनेकहुचित्तगन्यो ॥

नरसिंहतहँअतिकोपछाइ।गहिलियोहिरणकश्यपहिधाइ।जिमिगरुडभुजंगहिविनप्रयास।गहिलेतआशुकरिभक्षआसु
करिअसुरतहाँअतिछोटरूप। छुटिगयोनाथसोंधमंभूप ॥ पुनिभीमरूपअसुरेशकीन।द्रुतपुच्छनाथकोपकरिलीन ॥
तयताहिगहनकोफिरेनाथ।तबदूरिकूदिगोगदाहाथ॥प्रभुपानिछुटेलखिअसुरकाहिं।सुरसकलशंकभरिमनहिंमाहिं ॥
हाहापुकारइकबारकीन। आधारछोडिभेशोकभीन॥डरिदैत्यकाहछिपिछननओट। पुनिलखनलगेधरिधीरमोट ॥
नरसिंहकरनतेछुटोजानि। प्रभुकोशठनिरवललियोमानि॥तहँअसुरनाथकरिकैघमंड। धायोप्रचारिकरिरवप्रचंड ॥

दोहा-गदाहन्योहरिशीशमहँ, करिकैजोरअथोर ॥ मारिलियोअसमानिकै, पुनिकीन्ह्योंवहुशोर ॥

छंदरोला-टूकटूकहैगदातेहिछनछितिमहँछहरी। मानहुनभतेएकवारतारावलिझहरी ॥
तबअसुरेशविचारकियोअपनेमनमाहिं। नरहरिमरतउपायकियेकोनोअबनाहिं ॥
तेहितेलैकरढालकठिनकरवालकराले। काटिलेहुगहिकेशशीशनरहरिकोहाले ॥
असविचारितरवारिढालकरधारिप्रचारि। धायोनरहरिओरघोरकरिशोरसुरारि ॥
तबअखंडवलदोरदंडयुगपरमप्रचंडा। निकसेनखकुलिशोकठोरहुतिशतमार्तंडा ॥
भुजऊरधकरितहँनृसिंहधायोविकराला। हन्योहस्तअसुरेशशीशकरिकोपविशाला ॥
रोकिढालहरिहस्तअसुरकछुदूरिकूदिगो। नरहरिकोवरतेजलगततेहितेजमूँदिगो ॥
पुनिनरमृगपतिदौरिकियोतेहितलहिप्रहारा। सोऊगयोबचायरोकिढालैबलवारा ॥
पुनिआकाशमहँआशुअसुरउड़िअतिअनखाई। हनिकृपाणनरसिंहशीशपुनिगयोपराई ॥
तासुसंगनभगेनृसिंहकरिवेगअभंगा। करनलगेरणरँगेउभेआकाशहिजंगा ॥
कहुँधरणीकहुँशैलमध्यकहुँसिंधुनपाहीं। कहुँवनहौंउपवनहिकूदिपुनिभवननमाहीं ॥
करतयुद्धअतिक्रुद्धहोयनरहरिसबठोरा। चकितदेवजानतनभेवचितवतचहुँओरा ॥
रह्योनअसकहुँठौरजहांदोउयुद्धनकीन्हें ॥ जगतहिरणकशिपनृसिंहमेंसुरगुनिलीन्हें ॥
कियेयुद्धनरसिंहदैत्यसुरवर्षहजारा। सुरमुनिकरेंउचारयुद्धअसकहुँननिहारा ॥
पुनिदोउलरतहिलरतआशुअवनीमहँआये। निजपदजोरहिवारबारधरनीदरकाये ॥
होनलगीदिगदाहअवनिहुलूकनिपाता। ग्रस्योराहुशशिरविहिकालविनकेतुदिखाता ॥

दोहा-होतभयेऐसेतहाँ, नभमहिमहँउतपात। मान्योसुरमुनिनरसबै, भोत्रैलोकनिपात ॥ २७ ॥

जानिविनाशैंकालशठकेरो।नरहरिनिजमूछनकरफेरो॥ देखिभीतिअतिसुरनसमाजै। कियनृसिंहतबमहागराजै॥
सुनतकठोरशोरअतिनेरे। मूँदिगयेदृगदानवकेरे ॥ चपलासमतहँचमकिनृसिंहा। गह्योदौरिद्रुतदानवसिंहा ॥२८॥
जिमिंभूखोअहिविनहिंप्रयासा। धरैआखुकहँभक्षणआसा ॥ छूटनहिततहँदानवराई। तड़फडानकियकोटिउपाई॥
पैनछुट्योनरहरिकरतेरे। मान्योअसुरकालतबनेरे ॥ तहँनृसिंहदानवपतिकाहीं। अतिनिशंकधरिअंकहिमाहीं ॥

दोहा-बैठिदेहरीमध्यप्रभु, संध्यासमैविचारि। असुरउदरनिजनखनिते, नरहरिडारयोफारि ॥

जिमिभुजंगकहँगहिभुजगारी।विनप्रयासडारहिद्रुतफारी॥तहँनरहरिकोरूपविशाला।देखिपरयोमनुकालहुकाला ॥
लालविलोचनपरमभयावन।निरखतहीजियकरतपरावन अतिविशालविकसितवरआनन अहैमीचुगृहयहमनुआनन
रसनातेअधरनिवहुवारा। चाटहिमनुजकरहिसंहारा ॥ परीअसुरशोणिततनवूटी। मानहुँशैलमहँवीरबहूटी ॥
पहिरेप्रभुआंतनकरमाल।हेरतंचहुँकितनैनविशाला॥सभामध्यनरसिंहविराजा।मनहुमत्तगजदलिमृगराजा॥ ३०-३१-३२-३३॥

दोहा-गडयोनजातनमेंकुलिश, सोतननखनिविदारि। दलिदुष्टनबैठतभये, सिंहासनैमुरारि ॥

मिल्योनयुद्धहेतकोउयोधा।काँपिउठेत्रिभुवनलखिक्रोधा।त्रिभुवनदुखदायककरनासा लखिसुरमुनिअतिपायहुलासा।
प्रभुकेदरशनहिततहँआये।भीमरूपलखिनहिंनियराये॥वरषनलगीसुमनसुरनारी।विकसेवदनभयेसुखभारी ॥ ३५ ॥
श्रीनरहरिकेदरशनहेतू। आयेनभमहँनाकनिकेतू ॥ जहाँविमानहजारनभाये। वरअकाशमार हँछाये ॥

मनव ऊचुः ।

छंदरोला–हमहैंमनुप्रभुसदारावरेशासनधारी । तिनकोयहदितिनंददियोदुखअतिशैभारी ॥
ताउरकरजनिफारिदर्दहियकीहरिलीनी । कहाकरैंप्रभुकहोआपअज्ञासुखभीनी ॥ ४८ ॥

प्रजापतय ऊचुः ।

कुंडलिया–परजापतिहमकहँरच्यो, जगसिरजनकेहेतु । ताकोसिरजननहिंदियो, खेचरदानवकेतु ॥
खेचरदानवकेतुसरिसकीन्ह्योंउतपाता । ताकोनखनिविदारिप्रगट्यशकियअवदाता ॥
अवदाताहौतुमहिंमोदकेनहिंआचरजा । सत्वमूर्त्तिअवतारकरहुमंगलसबपरजा ॥ ४९ ॥

गंधर्वा ऊचुः ।

छप्पय–नाचतगावतरहेसबैहमतुवदरबारे । निरखिआपकोलहतरहेआनंदअपारे ॥
तिनहमकोकरिनिजअधीनदानवबलवारो । निजहिनचाइगवाइकियोनिजसजितअखारो ॥
यहिदोपहितेयहनाशभोकुशलकिकुपथहिपगदिये । असकहतसर्वगंधर्वगणप्रभुहिदंडवतबहुकिये ॥ ५० ॥

चारणा ऊचुः ।

छंद–पदारविंदरावरोभवार्णवैनकामनो । तेहीसदाहिध्यावहींपुनीतप्रीतिछामनो ॥
कियोविरोधसाधुतेअतीवदानवेशहै । कियोविनाशताहितेदयालतूरमेशहै ॥ ५१ ॥

यक्षा ऊचुः ।

सोरठा–हमतुमअनुचरयक्ष, तिनकोयहवाहककियो । मुनितनतापप्रत्यक्ष, नाश्योधरिनरहरितनै ॥५२॥

किंपुरुपा ऊचुः ।

चौबोला–हमजोपुरुपआपपरपुरुपैयहकुपुरुपभोतीजो । जातेकियोसाधुसबधिगधिगनिजकर्मनतेछीजो ॥
ताकोमारिकोपकरियतअतिआपुहिबडोनवाता । परमातमापरहिहमपायनप्रभुपौरुपविख्याता ॥

वैतालिका ऊचुः ।

छंदझूलना–देवदरबारमधिगायतुवअमलयशकियेसबलोकशुचिअतिसदाहीं ।
ताहितेपाइसतकारजेहिपारनहिंरहीसंसारकीभीतिनाहीं ॥
हमहियहिरणकश्यपदियोदुसहदुखजीतिसबलोकविनशोकमाहीं ॥
धारिनरसिंहवपुतासुवधआपकियदियोकरिदूरिममव्यथाकाहीं ॥ ५४ ॥

किन्नरा ऊचुः ।

छंदत्रिभंगी–हमदासतिहारेपदरतिधारेकिन्नरसारेसुखवारे । तिनकोखलभारीकोपपसारीभोदुखकारीजयधारे ॥
नरहरिजगभासीताहिविनाशीदियसुखराशीहमकाहीं॥यहिभाँतिसदाहींतुवभुजछाहींभैकछुनाहींहमपाहीं ॥५५॥

विष्णुपार्पदा ऊचुः ।

रूपघनाक्षरी–आजहिनिहारेरावरेरूपऐसोनाथकबहूँनदेख्योकहूँअदभुतनिजनैन ।
दीननकेरखवारेसंतनकेअतिप्यारेदयापासवारेदेनवारेविश्वमोदऐन ॥
आयपारपदयहविप्रवरशापहीतेभयोअसुरेशजीत्योलोकनकोलह्योभैन ॥
ताकोवधवोअहैसत्यतपैक्रपाकीवैवरभावनेकहूँतोजानिपरतोहमैन ॥ ५६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदांबुनिधौ सप्तमस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

अतिआनंदभरिदेवहजारा । बारबारनभदेहिंनगारा ॥ तानलेतगंधर्वबहुगावै । नाचिदेवतियमनहिलोभावै ॥ ३६

दोहा—तहँब्रह्माशिवशक्रहू, ऋषिविद्याधरसिद्ध । पितरमहोरग—॥३७॥—मनुप्रजा । पतिगंधर्वप्रसिद्ध ॥
किन्नरचारणकिंपुरुष, अरुबैतालअनंत ॥ ३८ ॥ विष्णुपारषदकुमुदवर, नंदसुनंदअनंत ॥
हाथजोरिधरिशीशमें, येसबअतिसुखछाइ । जानिचहेनरहरिनिकट, अस्तुतिकरणबनाय ॥
पैनरहरिकेतेजसों, सकेनसुरनियराय । तबदूरिहितेकरतभे, एकटकअस्तुतिगाय ॥ ३९ ॥

ब्रह्मोवाच ।

सवैया [illegible]
प्रभुआपचरित्रविचित्रबड़ोहैपवित्रअमित्रनशोकधरो।गुणआगरसागरहौकरुणातुमकोंहैंनमामिप्रमोदभरो ॥४०

रुद्रउवाच ।

दोहा—जगनाशकप्रभुकोपकरि, हन्योअलपअसुरेश । तासुतकोरक्षणकरौ, तजियेकोपरमेश ॥ ४१ ॥

इंद्र उवाच ।

कवित्त घनाक्षरी—असुरप्रचंडवरिबंडकोविनाशकैकै, यज्ञनकोभागआपहमकोदेवायेहौ ॥
[illegible] ताहिकोविध्वंसिमनसुखउपजायेहौ ॥
[illegible]मुक्तिहुकोदानतूतोलघुठहरायेहौ ॥
दीननिजदासनकोदारहुदुरितद्रुत, तातेदयासिंधुयहनामप्रभुपायेहौ ॥ ४२ ॥

ऋषय ऊचुः ।

छंदभुजंगप्रयात—रचैविश्वकोजोहियेधारिधाता । जेहींतेतुम्हारोविभोजानिजाता ॥
पठायेहमेंआपहीवेदसोई । महादुष्टसोदैत्ययादीनखोई ॥
धन्योनारसिंहेस्वरूपैकृपाला । हन्योदुष्टदैत्यैरह्योजोकराला ॥
दियोहेहमेंफेरिकैवेदचार्यो । निजैदासकोआशुहीदुःखटार्यो ॥ ४३ ॥

पितर ऊचुः ।

पद्धरी—सुतपितहिदयोजोपिंडदान । सोलियोखाइयहशठमहान ॥
जोदियोतिलांजुलितीर्थमाहिं । यहदैत्यपानकरिलियोताहिं ॥
निजनखनअसुरकोपेटफारि । सोहमहिदियोनिजजनविचारि ॥
जयजयनृसिंहजयदीनबंधु । जयधर्मपालजयदयासिंधु ॥ ४४ ॥

सिद्धा ऊचुः ।

छंदतो०—अणिमादिकजोगनसिद्धसबै।तपकेबलछीनलियोकितवै।अतिगर्वभरोनहिंकाहुडरो।सबलोकनमेंमयभौंकरो
नरतेतेहिंकाउरफारिहरी।सबलोकनकीअतिभीतिहरी।।तुम्हरेपदकेहमदासअहैं । बलआपसदानिरशंकरहैं ॥४५

विद्याधरा ऊचुः ।

वामनछंद—मबयोगविद्याजोन । यहअसुरहरिलियतौन ॥ गरबीपरमबलवान । जोरह्योमृत्संमहान ॥
पभुसरिसताकोनाथ । रणमेंहन्योनिजहाथ ॥ नरहरितुम्हेंपरणाम । दायकसदासुखधाम ॥ ४६

नागा ऊचुः ।

छंद—चर्चे—ननागेन्द्रोग्रीन्द्र्योदानवमिद । तेहिंउरफारिदियोसबनयनरसिंह ॥ ४७ ॥

मनव ऊचुः ।

छंदरोला-हमहैंमनुप्रभुसदारावरेशासनधारी । तिनकोयहदितिनंददियोदुखअतिशैभारी ॥
ताउरकरजनिफारिदर्देहियकीहरिलीनी । कहाकरैप्रभुकहोआपअज्ञासुखभीनी ॥ ४८ ॥

प्रजापतय ऊचुः ।

कुंडलिया-परजापतिहमकहँरच्यो, जगसिरजनकेहेतु । ताकोसिरजननहिंदियो, खेचरदानवकेतु ॥
खेचरदानवकेतुसरिसकीन्ह्योंउतपाता । ताकोनखनिबिदारिप्रगटयशकियअवदाता ॥
अवदाताहोतुमहिंमोदकेनहिंआचरजा । सत्वमूर्त्तिअवतारकरहुमंगलसबपरजा ॥ ४९ ॥

गंधर्वा ऊचुः ।

छप्पय-नाचतगावतरहेसबैहमतुवदरबारै । निरखिआपकोलहतरहेआनंदअपारै ॥
तिनहमकोकरिनिजअधीनदानववलवारो । निजहिनवाइगवाइकियोनिजसजितअखारो ॥
यहिदोपहितेयहनाशभोकुशलकिकुपथहिपगदिये । असकहतसर्वगंधर्वगणप्रभुहिदंडवतबहुकिये ॥ ५० ॥

चारणा ऊचुः ।

छंद-पदारविंदरावरोभवार्णवैनकामनो । तेहीसदाहिध्यावहींपुनीतप्रीतिछामनो ॥
कियोविरोधसाधुतेअतीवदानवेशहै । कियोविनाशताहितेदयालतूरमेशहै ॥ ५१ ॥

यक्षा ऊचुः ।

सोरठा-हमतुमअनुचरयक्ष, तिनकोयहवाहककियो । सुनितनतापप्रत्यक्ष, नाश्योधरिनरहरितनै ॥५२॥

किंपुरुपा ऊचुः ।

चौबोला-हमजोपुरुपआपपरपुरुपैयहकुपुरुषभोतीजो । जातेकियोसाधुसबधिगधिगनिजकर्मनतेछीजो ॥
ताकोमारिकोपकरियतअतिआपुहिवडीनवाता । परमातमापराहिहमपायनप्रभुपोरुपविख्याता ॥

वैतालिका ऊचुः ।

छंदझूलना-देवदरबारमधिगायतुवअमलयशकियेसनलोकशुचिअतिसदाहीं ।
ताहितेपाइसतकारजेहिपारनहिंरहीसंसारकीभीतिनाहीं ॥
हमहियहिरणकश्यपदियोदुसहदुखजीतिसबलोकविनशोकमाहीं ॥
धारिनरसिंहवपुतासुवधआपकियदियोकरिदूरिममव्यथाकाहीं ॥ ५४ ॥

किन्नरा ऊचुः ।

छंदत्रिभंगी-हमदासतिहारेपदरतिधारेकिन्नरसारेसुरवारे । तिनकोसलभारीकोपपसारीभोदुखकारीजयधारे ॥
नरहरिजगभासीताहिविनाशीदियसुखराशीहमकाहीं।यहिभाँतिसदाहींतुवभुजछाहींभेकछुनाहींहमपाहीं ॥५५॥

विष्णुपार्पदा ऊचुः ।

रूपघनाक्षरी-आजहिनिहारेरावरेरूपऐसोनाथकबहुँनदेख्योकहुँअद्भुतनिजनैन ।
दीननकेरखवारेसंतनकेअतिप्यारेदयापासवारिदेनवारोविश्वमोदऐन ॥
आयपारपदयहविप्रवरशापहोतेभयोअसुरअजीत्योलोकनकोलह्योभैन ॥
ताकोवधवोअहैसत्यतापैकृपाकीनोविग्भावनेकहैंलोनानिपरतोहमैन ॥ ५६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदांबुनिधौ सप्तमस्कंधे ०१५५९० ॥

दोहा—यहिविधिविधिशिवआदिसुर,अस्तुतिकियोअखंड।पैननिकटकोउगमनकिय,लखिप्रभुकोपप्रचंड ॥ १॥
रमानिकटतवसबअसुरारी । जायजोरिकरगिराउचारी ॥ जरतकोपतेलोकादिखाता । ताकोशान्तिजाइकरुमाता ॥
तहँदेवनपैदयामहाई।करिकमलाअतिआशुहिआई॥अतिकरालनिजप्रभुकोआनन ।जोनलख्योदृगसुन्योनकानन ॥
सोकितहूँनसकीढिगजाई । कमलाहूअतिशैभयपाई ॥२॥ तबप्रह्लादहिकह्योविधाता । तुमभागवतमुख्यहोताता ॥
निजपितुपैकोपितप्रभुकाहीं।क्षमाकरावहुयाहिक्षणमाहीं ३ सुनिप्रह्लादचतुर्मुखवानी।कहितथास्तुअतिशैसुखमानी॥
दोहा—अतिअभीतनरहरिनिकट, मंदमंदसोजाइ ॥ जोरिपाणिपरनामकिय, तनपुहुमीपसराइ ॥ ४ ॥
निजपदपरोनिरखिनिजदासू । आयेनरहरिकेदृगआँसू ॥ ताहिउठायकृपाअतिकीन्हें।शिरप्रह्लादपाणिधरिदीन्हें ॥
जोकरपरसकालभयजाती।विनप्रयासमुक्तिहुढिगआती ५ नरहरिपाणिहोतसंयोगू।मिट्योसकलदुखजनितवियोगू ॥
ब्रह्मानंदमगनप्रह्लादा । प्रगट्योपरमप्रेमउनमादा ॥ पुनिधरिधीरजप्रभुपदकंजन । निजउरधरयोमुनिनमनरंजन ॥
वहतविलोचनआनँदधारा।पुलकावलितनवारहिंवारा ॥ गद्गदगरयकाग्रमनकरिकै।अनमिपचखनसुमुखपगपरिकै ॥
दोहा—करनलगेअस्तुतितहाँ, अतिविचित्रप्रह्लाद ॥ श्रवणकरतकविजनसदा, पूरतअतिअह्लाद ॥ ७ ॥

प्रह्लाद उवाच ।

छंदत्रिभंगी—विधिशिवसुरमानीमुनिसिधिज्ञानीसतगुणसानीजिनमतिहै।तेसकैंनगाईतवप्रभुताईपारनपाईतुवगतिहै॥
तौदानवजातीमैंकेहिभातीतोगुणपातीवरणिसकौं । मतिअतिलघुमोरीतापरभोरीअस्तुतितोरीकरतजकौं ॥ ८॥
कुलरूपसोहावनवेदहुगावनतेजहुछावनसबजगमें । वलपौरुषभारीबुद्धिअपारीजवश्रमकारीअँगअँगमें ॥
कौनेहुँजगमाहींहरिइनपाहींतोपतनाहींमैंमानौं । यकभक्तिहिकीनेकरुणाभीनेमिलहिप्रवीनेप्रभुजानौं ॥ ९ ॥
जैश्वपचहुपापीअमितसुरापीतुवजापीहैश्रेष्ठमहा । चहुँवेदविभागीअरुवहुजागीतुवपदत्यागीविप्रकहा ॥
जेहिआपअधारैसोपरिवारैभवनिधितारैआपतरै । जोतुवपदविमुखैसोशठसदुखैरहतनससुखैनरकपरै ॥ १० ॥
प्रभुअनुपमआभाअंबुजनाभापूरणलाभासत्यहरे । जनपूजनपाईकरुणाछाईदेहुमहाईभूतिखरे ॥
जोतुमहिचढ़ावतसोसबपावतभक्तकहावतप्रेमभरे । जिमिदरपनलीन्हेंचंदनदीन्हेंप्रतिमुखचीन्हेंशोभधरे ॥ ११ ॥
तातेगिरिधारीतुवगुणभारीहमहुँउचारीपापदरै । जेहिपापिहुगावतशुभगतिपावतपुनिनहिंआवतशोकधरै ॥ १२॥
तुवभयभरिभारीअजत्रिपुरारीकारजकारीहमहिसमै । प्रभुवहुअवताराधारिविहाराकरहुअपाराजगहितमै ॥ १३॥
यहअसुरहिमारीतापनिवारीदियसुखभारीसुरनरको । यहरूपहिध्यावतरिपुनसतावतजनसुखपावतपुरपरको ॥
अवदयाअगारोकोपनिवारोसुरननिहारोभीतिभरे । वृश्चिकअहिमारेसाधुअपारेहोतसुखारेनहिंनिदरे ॥ १४॥
मुखपरमकरालानैनविशालाप्रगटतज्वालाविसमहै । रसनाभयछावनिभृकुटिभयावनिदाढ़वढ़ावनिभययमहै ॥
शोणितयुतवालाआँतनमालाकरनविशालानखचोखे । सुनिनादमहानादिग्गजनानाकियेपयानालयधोखे ॥ १५॥
असरूपतिहारोआजुनिहारोमननहमारोकछुडरपै । पैलखिसंसाराअतिहिअपाराभौभयभाराजिमिसरपै ॥
मैंवँध्योकर्मतेहीनधर्मतेभरोभर्मतेअतिदीना । अवखवारिहमारीकरहुमुरारीभूलिविसारीलखिहीना ॥ १६ ॥
अप्रियप्रियलोगूयोगवियोगूशोकहिभोगूनित्यकरौं । संसारदमारीतरहुँदुखारीकिमिदुखहारीधीरधरौं ॥
वहुकियेउपाईअतिअधिकाईभ्रमहुसदाईजगजाले । तातेकरिदायानरहरिरायाकहौउपायामोहिंहाले ॥ १७ ॥
तुवकरिसेवकाईविधिशिवगाईकथासुहाईश्रुतिधरिहौं । करिसज्जनसंगाअतिहिअभंगासंसृतिभंगामैकरिहौं ॥ १८॥
नकरैरखवारीपितुमहतारीजाहिमुरारीनहिंरखते । नहिंऔपधलागेमचतनभागेसवजनत्यागेतुमभखते ॥ १९ ॥
प्रभुतुमजगकरतातु ' ' गहरताजगस्व ि तुमजगतअधाराज्ञानअपाराश्रुतिसुखसाराउरजामीर०॥
तुवप्रीत मिनहै । अपारेतुमविनतारेकोजनहै ॥ २१ ॥
निजतजो ति । पालोंदुष्टनवालोनहिंभाते ॥

मैंहोहुँविहालायहजगजालाहरहुदयालायहदुखको । मैंहौंतुवदासारमानिवासापूरहुआशाकरिसुखको ॥ २२ ॥
जेहिसुरसुखकाहींजनजगमाहींकरतसदाहींवहुनेतू । तेअमरहमारेपितुसोंहारेकुटिलनिहारेखलसेतू ॥
तेहिपितुवलवानैतुमभगवानैनखनिकृपानैहतिडारचो।नहिंपरचोप्रयासाकरतहिनाशाबड़ोतमासामैंन्यारचो ॥२३॥
जातेगिरिधारीदिविसुखभारीतुच्छविचारीनहिंचाहों । निजदासनसंगादेहुअभंगातुवरतिगंगाअवगाहों ॥ २४ ॥
यहविषयअनंदाहैदुखद्वंदातेहिमतिमंदाबहुश्रमकै । रुजघरयहजनहितचाहतसोनितपूरणनिजचितबहुभ्रमकै ॥
पैतऊँनपामैनिजमनकामैतदपिघटामैनहिंमनहै । बुधहुनयहिभाँतीबहुदिनरातीबीततजातीभरितनहै ॥ २५ ॥
कहँमैंअतिपापीसंततपापीकुगुणकलापीमुदमाती । कहँप्रभुतवदायानाशकमायाप्रदभुजछायादीनतती ॥ २६ ॥
तवसरिसविशालाकौनकृपालाकरनउतालाअहलादा । विधिशिवहुनपायोरमहुनछायोसोमोहिंआयोपरसादा ॥
प्रभुहौसमदरशीगतिसुरतरुसीजनसुखवरसीजगदीसा । जेइजसतुवध्यावैतेरतिपावैयहश्रुतिगावैविसवीसा ॥ २७ ॥
यहकूपसंसाराअतिअँधियारातामहिमारायजनभयो । तहँविपैभुजंगादस्यौसुअंगाकुमतिनसंगाठानिलयो ॥
पठयोमुनिनाथाजानिअनाथाकरनसनाथामहिनाथा । तातेअवऐसेअनुपमतैसेतजिहौंकैसेसतसाथा ॥ २८ ॥
पितुनाशमहानाममतनत्रानासोअनुमानोमैंध्याई । नारदकीभाखीतुवसतिराखीजवपितुमाखीसुखगाई ॥ २९ ॥
जगआदिहुअंतामधिश्रीकंतातुमहिलसंतासवठोरा । यहजगविस्तारीवसहुमुरारीबहुतनधारीजनभोरा ॥ ३० ॥
जगतुमलक्ष्मीसेभिन्नहिदीसेजियकहँईशेकुमतिकहै । तेहितेजोजावैअरुलैपावैअरुसुखआवैसोइसुअहै ॥ ३१ ॥
गहितुरीदशाकोतजिमरपाकोविनचेष्टाकोसहितकलै।जगनिजमहलैकरिसोवहुसुखभारिबहुकालहिभरिप्रलैजलै ३२
जवनिद्रातजेऊइच्छाकरेऊअंबुजभयऊनाभितवै । वटवीजसमानाजगतमहानानहिंप्रगटानारूपतवै ॥ ३३ ॥
विधिप्रथमहिजायोकछुनदेखायोवाहेरध्यायोतुमनमिले।तवअतिभ्रमिआयोतपमनलायोतुमकहँपायोहियअखिले ॥
शिरमुखकरनासाहगश्रुतिभासासहसविकासारमनीया । आयुधआभरनाबहुसुखभरनाअनुपमवरनाकमनीया ॥
तुममेंसंसारालखिकरतारामोदअपारालहतभयो । तवदोउकरजोरीबहुतनिहोरीविनैअथोरीकियोचयो ॥३४–३६॥
मधुकैटभभारीहयवपुधारीतुम्हींमुरारीकृपाकियो । मूरतिसतप्यारीवेदउधारीअतिसुखकारीविधिहिदियो ॥ ३७॥
प्रभुइमिबहुरूपाधारिअनूपाहनिशठभूपाजगपालै । तवत्रययुगनामाहैप्रदकामानहिंवपुवामाकलिकालै ॥ ३८ ॥
अतिपापहिपूरोकामहिकूरोभैंदुखचूरोमनमेरो । मैंसुनैनपाऊँतुमयशनाऊँकेहिविधिध्याऊँपदतेरो ॥ ३९ ॥
रसनानिजओराहगनिजओराश्रुतिनिजओराऐंचतहै । उदरहुनिजओराकरनिजओरापदनिजओरासैंचतहै ॥
जिमिनिजपतिकाहींसवतिसदाहींनिजानिजपाहींकरनचहै । इंद्रीतिमिमेरीविथापनेरीकरहिनदेरीरतिनिवहै ॥ ४० ॥
इमिभववैतरनीजननहिमरनीभलभयतरनीदुखदाई । तामेंवशकर्मापरेअशर्माजनविनधर्माभ्रमछाई ॥
बूडततिननरहैरिटरकरुणाभरिकारियेधरहरिद्रुतधाई । टीजेअपनाईपारलगाईआनउपाईनहिंभाई ॥ ४१ ॥
जगतारतमाहीहैश्रमनाहींप्रभुतुमकाहींजगहेतू । तुवजनतोपारैपैजलचारेतिनकहँतारेयशसेतू ॥ ४२ ॥
छंदचौपैया–यहभौवैतरनीजनदुखकरनीमैंनहिंताहिडराऊं । परमोदछावनीनित्यपावनीकथागवरीगाऊं ॥
पैजेविमुखीहैंदुखहदुखीहैंइंद्रीसुखनिजकारी । तेकिमितरिजैहैंतुमकहँपैहैंशोचयहीटरभारी ॥ ४३ ॥
उपदेशहिदाताजेमुनिख्याताजेनहिंपरउपकारी । निजमुक्तिहिआशाकरिवनवासातपैसदातपभारी ॥
इनदीननसाथोमैंतजिनाथाचहौंनतूपुरजाना । नहिंपरतनिहारीइनहितधारीतुमविनकोभगवाना ॥ ४४ ॥
सुखज्योंसँगनारीमहाविकारीहोतअंतदुखहेकारू । प्रथमहिसुखनेनीपुनिदुखदेतीसनुआयेजिमिखारू ॥
यद्यपिशठकरहीतोपनभरहीगवनाहिनरकगँभीरा।मनसिजकेवानाकोटिनमहानामदनकोटमनिर्धारा ॥४५॥
व्रततपजपसँयमावेदहुनियमामौनसमाधिहकंता । धनहितभेदंहोनपाखंडीतिनगहिजगतअनंता ॥
विनइंद्रीजीतेनितुवपदप्रीतेसफलनएकोहोने । यसकलअभागीटोभीगणीनागनहूमहैंगोने ॥ ४६
जगकारजकारणकियेविचारनतुवयपुनसश्रुतिगावै । [illegible]

करियोगउपाईमुनिसमुदाईदोउमहँतुमहींदेखे । जिमिदारुहिमाहींशिखीसदाहींमंथनकरिशिखिपेखे ॥४७॥
नभअनलसमीराधरनीनीराइंद्रीमनअरुप्राना । गुणविगुणहुजेतेमनवचनेतेसवमेंतुमभगवाना ॥ ४८ ॥
सुरनरमुनिजेतेविनशहितेतेजनमहिपुनिजगमाहीं । विधिआदिसुरेशाशेषमहेशातुमकोजानतनाहीं ॥
यहमुनिमनसंतावैठिइकंतातजहितुरतसंसारे । करिभक्तिहिरीतीतुवपदप्रीतीतुवपुरआशुसिधारे ॥
यहसरलउपाईअतिसुखदाईकोहुकेमननहिंआवै । तातेजगजीवालहिदुखसीवामंगलकतहुँनपावै ॥ ४९ ॥
प्रभुतुवपदवंदनसबदुखद्वंद्वनअस्तुतितुवसुखदाई । पूजनहुतिहारोअतिअघहारोपदसुधिप्रदशुचिताई ॥
तवकथासुहावनिप्रीतिवढ़ावनिकलिमलमपकीहरनी । भवपारावाराअतिहिअपाराताकीतारनतरनी ॥
दोहा—येपटविधिसेवनविना, कैसेहुभक्तिनहोइ । तातेकीजेमोहिंनिज, दासदुरितसबधोइ ॥ ५० ॥

नारद उवाच ।

भक्तिसहितप्रहलादजव, यहिविधिअस्तुतिकीन । तवनरहरितजिकोपको, वोलेप्रीतिअधीन ॥ ५१॥

श्रीभगवानुवाच ।

मंगलहोइतोरप्रहलादा । तुहींभक्तिधारकमरजादा ॥ तोपैमैंप्रसन्नयहजानै । मनअभिलपितमाँगुवरदानै ॥
अहौमनोरथपूरणवारो । यहमानैअसुरेशकुमारो ॥ ५२ ॥ करतनजोशठभक्तिहमारी । तेहिदुर्लभममदर्शनभारी ॥
मेरोदरशपाइजगमाहीं । लहतकलेशफेरिकहुँनाहीं ॥ ५३ ॥ तातेमोक्षहेतुमतिधीरा । मोहिप्रसन्नकरतेसहिपीरा ॥
हमहैंसवमंगलकेदाता । सज्जनहोहिंमोरगतिज्ञाता ॥ इमहैंसदासाधुआधीना । सदासाधुममपदरतिलीना ॥ ५४ ॥

श्रीनारद उवाच ।

दोहा—यहिविधिवरवरदेनकहि, वहुतलोभायोनाथ । भक्तिछोड़िप्रहलादकछु, चह्योनजोरेहाथ ॥ ५५ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

दोहा—भक्तिविघनसबकामना, गुनिप्रहलादसचाइ । नरहरिसोकरजोरिकै, कह्योमंदमुसक्याइ ॥ १ ॥

श्रीप्रह्लाद उवाच ।

सकलकामनाछोड़नहेतू । तुवपदपकर्योकृपानिकेतू ॥२॥ सोईकामनाहितयदुराई । मोकोअवनहिंलेहुलोभाई ॥
पैजान्योअसमनहिंविचारी । लेहुपरीक्षामोरिमुरारी ॥३॥ कहिहौअसउरतैप्रभुनाहीं।भरीदयातुम्हरोहियमाहीं ॥४॥
जे।चाकरठाकुरपहजाई । माँगतहैवहुविनयसुनाई ॥ सोठाकुरकोचाकरनाहीं । साँचोवनियाहैजगमाहीं ॥
जोप्रभुवहुसेवाकरवाई । चाकरकोधनदेतनभाई ॥ सोइठाकुरहैनामहिकेरो । लोभीसततसारथीघनेरो ॥ ४ ॥ ५ ॥
दोहा—तुमअकाममनाथहौ, हमअकामतुवदास ॥ लोभीचाकरस्वामिसम, हमतुमनहिंयुतआस ॥ ६ ॥
यहींदेहुवरदानउदारे । होइनहियकामनाहमारे ॥ ७ ॥ इंद्रीमनमतिधीरजप्राना । सत्यधर्मदुतितेजमहाना ॥
लाजहुसुधिमानहुअपमाना।माँगतहींयेकरहिंपयाना८कवहुँकामनाजोनहिंकरतो।आपुसरिसप्रभुतेहिसुखभरतो९॥
श्लोक—"ॐनमो भगवते तुभ्यं पुरुपाय महात्मने । हरयेद्भुतसिंहाय ब्रह्मणे परमात्मने" ॥
[illegible] ममे ५५७ [illegible] १०सुनिप्रहलादवचनभगवाना।कहैवचनतवकृपानिधाना॥

श्रीनृसिंह उवाच ।

[illegible] रे। चहैनउभैलोकसुखभारे ॥ पैमन्वंतरभरिप्रहलादा । करहुराजसंयुतअह्लादा ॥

दोहा—कथाहमारीनितसुनहु, करहुमोरनितध्यान । करुसबमेंसमभावना, जानिमोहिंनहिंआन ॥ १२ ॥
भक्तियोगकरिमोहिंअनुरागो । क्रमक्रमकामकर्मकोत्यागो ॥ करिकैभोगपुण्यअरुपापा।देहुछोड़िप्रगटहुपरतापा॥
तजिशरीरबहुकालहिपाई । निजकीरतितिहुँलोकनछाई॥यहिविधिसबदीननकहँतारी।आवहुमेरेलोकसिधारी १३॥
तुवकृतजोअस्तुतियहगाई । मोहिंतोहिंध्यानकरिहिमनलाई ॥ ताकोहठिछूटीसंसारा । रहीनकोनौहियेखँभारा ॥
यहमैंजननसिखावनहेतू । कह्योंसकलविस्तारसमेतू ॥ तुमतोहोममभक्तप्रधाना । जीवनमुक्तनमाँहमहाना ॥१४॥
दोहा—सुनिनृसिंहकेवचनतहँ, लहिअनुपमअहलाद ॥ जोरिपाणिशिरनायकै, पुनिबोल्योप्रहलाद ॥

श्रीप्रह्लाद उवाच ।

तुमतौहौप्रभुपावननामी । तातेयहवरदीजेस्वामी ॥ ममपितुनिन्दाकियोतिहारी । बारबारअसगिराउचारी ॥ १५॥
कृष्णाहिममभ्राताकोमारयो । कृष्णहिबहुदैत्यनसंहारयो ॥ अरुप्रभुतुम्हरेभक्तहिमोही । पीडादियोबहुतहैद्रोही ॥
जान्योनहिंकछुआपप्रभाऊ । रह्योसर्वदाक्रूरस्वभाऊ ॥ १६ ॥ सोयहमहापापतेनाथा । करहुपवित्रदेहुसुखगाथा ॥
पितुतोतुवलखतैशुचिभयऊ।पैमैंनिजअज्ञानकहिदयऊ॥१७॥सुनिप्रहलादवचनजगदीशा।बोलेकृपासिंधुअवनीशा

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा—यकइसपुरुतपवित्रभे, जहाँजनमतैंलीन ॥ तेरोबापसपापहै, यहशंकाकोकीन ॥ १८ ॥
बसैंजहाँजहँभक्तहमारे । तेतेदेशपवित्रअपारे ॥ जनिमानहुअचरजप्रहलादा । यहममभक्तनकीमरयादा ॥ १९ ॥
मोरभक्तममप्रेमहिंपूरे । समदरशीहोतेनहिंकूरे ॥ २० ॥ जोकरिहैतुम्हारिसेवकाई । सोऊमोरिभक्तिहठिपाई॥
ममभक्तनमेंअहोप्रधाना । सबउपमालायकमतिमाना॥२१॥निजपितुकोकीजैमृतकर्मा । हैपुत्रनकोयहीसुधर्मा ॥
मेरोअंगपरसिपितुतेरो । तबहींभयोपवित्रघनेरो ॥ जैहैमेरेलोकहिकाहीं । यामेंअबकछुसंशयनाहीं ॥ २२ ॥
दोहा—निजपितुआसनबैठिकै, द्विजकरलहिअभिषेक ॥ मोमैंचित्तलगायकै, भोगहुभोगअनेक ॥ २३ ॥

श्रीनारद उवाच ।

सुनिप्रहलादनाथकीवानी।अपनेकोअतिशयधनिमानी॥क्रियाकर्मकीन्हीपितुकेरी।जेहिविधिशास्त्रनमाँहनिबेरी२४॥
पुनिश्रीनरहरिकेढिगआयो । खड़ोभयोअतिशयसुखछायो।शांतकोपनरहरिकहँदेखी । चतुराननअतिशैमुदलेखी॥
अस्तुतिकियोनाथढिगआई । पुनिदेवनजतगिरासुनाई ॥ २५ ॥

ब्रह्मोवाच ।

देवदेवत्रिभुवनपतिपावन । अहोसनातनभूतनभावन ॥ हन्योअसुरदेवनसंतापी । भलेकियोहैपरमप्रतापी ॥२६॥
मैंदीन्ह्योंअसवरयहिकाहीं । ममसिरजिततेतवधनाहीं ॥
दोहा—तपबलतेअतिशैबढ्यो, कियोत्रिलोकीराज ॥ सबधरमनकोभ्रष्टकिय, देवनकेदुखकाज ॥ २७ ॥
मेरोवचननभोमृषा, हन्योअसुरबलवान ॥ आपसरिसकोनरहरी, दूजोकृपानिधान ॥
महाभागवतअसुरकुमारा । ताकोरक्षणकियोउदारा ॥ एकेनहमसबकोपमिटाई । सोयहदियोक्षमाकरवाई ॥ २८॥
करतरावरोयहवपुध्याना । रहीनकालौकीभयनाना ॥२९॥ सुनिचतुराननकीवरबानी । बोलेश्रीनरहरिसुखदानी ॥

श्रीनृसिंह उवाच ।

ऐसोवरअसुरननहिंदीजे । शासनकमलासनयहलीजे॥इमिअसुरनदीबोवरदाना॥अहैअहिनकहजिमिपयपाना॥३०॥

श्रीनारद उवाच ।

असकहिनृपनरहरिभगवाना।होतभयेतहँअंतरधाना३१पुनिप्रहलादविधिहिंशिरनाये।तिसेशंकरकहँसुखछाये॥३२॥
दोहा—शुक्रादिकमुनिसहिततहँ, कमलासनसुखभीन ॥ दैत्यदानवनकोअधिप, प्रहलादहिकरिदीन ॥ ३३ ॥
पायदेवअतिशैअहलादा । देप्रहलादहिआशिरवादा ॥ असुरअधिपतेपूजनपाई । गेनिजनिजगृहहरिगुणगाई॥३४॥

यहिविधिहरिपार्षददोउगीरा । दितिकेसुतनभयेरणधीरा ॥ येरभावतेहरिकेध्याये । तातेनभइ
विप्रशापतेपुनिहरिदासा।। राक्षसभेत्रिभुवनकियत्रासा।। रावणकुंभकरणअसनामा।।तिनकेनाशहि
आगतबाणकरतहरिध्याना।।रणमहँछोड़िदियोदोउप्राना।।३७।।भेपुनिदंतवक्रशिशुपाला।पढ़ाव

दोहा—राजसूयजगराजरी, भईयुधिष्ठिरराज ॥ तवयदुवरसुतदंतते, मारयोमध्यसमाज ॥

येरभावकरिहरिमनदीन्हें । हरिपुरगमनदोउभटकीन्हें ॥ येरभावकरिऔरहुभूपा । लहेमुनि
यथाकीटभृंगीभयलेखी।।लहततादिसमरूपविशेखी।।जिमिअनन्यकरिभक्तिविज्ञानी।।लहतकृष्ण
तिमिचैद्यादिकवैरहिकरिके।गयेकृष्णपुरअतिसुखभरिके।।जोमोसोपूछेहुकुरुराई।कहिविधिचैदि
सोमैंतुमसोंसकलसुनायो । नरहरिकोचरित्रवरगायो ॥ ४१ ॥ येब्रह्मण्यदेवयदुनाथा । अहंअ

दोहा—कथाकृष्णअवतारकी, जेहिदितिपुत्रननास ॥ परमपुण्यमैंसोकह्यो, तुमसोंसहितहुला

जगउतपतिपालनसंहारा।करहिंकृष्णजेघारहिवारा।।तिनकेगुणचरित्रसुखदाता।अरुजेहिविधितिहि
हरिभक्तनकोधर्ममहाना।।जातेजानिपरतभगवाना।।यहतुमकोमैंसकलसुनायो।।अपनेहुउरआनँदअ
जोयहनरहरिकथासुहावनि । परमपुण्यप्रदहैअतिपावनि ॥ प्रीतिसहितजोसुनैसुनावै।सोपुनिनाहिं
अथवानरहरिकीयहलीला।पाठकरैनितहीशुभशीला।।ताकोजाहिसकलामिटिभीती।अवशिहोतिअ

दोहा—जगमेंतुमहींधन्यहो, हेसतिपांडुकुमार ॥ जहँनिवसहिश्रीकृष्णनित, आवतमुनिहुउद

येप्रभुमातुलपुत्रतुम्हारे । सुहृदसखाप्राणहुतेप्यारे ॥ पूजनीयरमणीयहुपावन । हेतुम्हारगुरुकाज
इनकीमहिमाश्रुतिनितगावे । तद्यपिकबहुँपारनहिंपावे ॥ परमब्रह्महमोक्षप्रदाता।।जिनकोयशअति
विधिशंकरहुनमहिमाजानें । भक्तिसहितनितपूजनठानें ॥ सोमोपरप्रसन्नहरिहोवें । डरअज्ञानमोर
मयदानवजबत्रिपुरबनायो । तातेशंकरसुयशनशायो।।तबशंकरकरात्रिपुरनशाई।दियोकृष्णा

दोहा—सुनिनारदकेबैनतहँ, धर्मभूपसुखपाइ ॥ पूछ्योपुनिकरजोरिके, हरिचरित्रमनलाइ ॥

राजोवाच ।

मयदानवकतत्रिपुरबनायो । कैसेशिवकोसुयशनशायो ॥ कैसेशिवकोयशयदुराई । दियोबढाइक
धर्मभूपकीसुनिसुनिवानी । कहनलगेअतिशैसुखमानी ॥

नारद उवाच ।

जबशंकरसहायसुरपाये । तबअसुरनअतिदुखउपजाये ॥ मयदानवढिगदानवजाई । देवनकृतदुख
मयमायाविनमेंमतिवाना । सुनिकेअसुरनकोदुखकाना ॥ रच्योतीनपुरपरमप्रचंडा । जिनकीगति
एककनकयकरजतहिकेरो । एकलोहकोवेगघनेरो ॥

दोहा—आवतजातनलखिपरत, फैलतपरमप्रकास । युद्धसाजसिगरीभरी, औरहुविविधविलास

तिनमेंचढिदानवबलवाना । सुधिकरपूरववैरमहाना ॥ लियेदेवदलकोद्रुतजीती । छायोतीनिलोक
युद्धकरतनहिंत्रिपुरदेखाने । तातेतजिसुरलोकपराने ॥ ५५ ॥ शंकरशरणगिरेसुरजाई । त्राहित्राहि
त्रिपुरबैठिदानवदुखदीन्हें । बिनप्रयासहमसेजयलीन्हें ॥ कृपाकरहुकैलासविलासी । देहुद्रुतैदेवनदुख
महादेवदेवनदुखदेखी । कह्योवचनकरिदयाविशेखी ॥ नेकहुअबनहिंदेवडराहू ॥ अबहींकरौंअवशि

दोहा—धूरजटीधुरधनुपधारि, लैकरबाणकराल । ताकित्रिपुरतहँमंत्रपढ़ि, तज्योतरलततकाल ॥

ताशरतेशरकटेहजारन।जिमिरविमंडलकिरणअपारन।।ज्वलनसमानज्वलितबहुज्वाला।छायलियेशर
लगतबाणमरिअसुरकराला । गिरतभयेधरणीततकाला ॥ तिनकोमयमायावीवीरा । डारयोसुधाकूप
अमीपरसिसिगरेइकसंगा । उठेअसुरआशुहिवजरंगा ॥ चपलासमचमकतसबबाना । धायेकढिकूपहि
निजसंकल्पशंभुलखिभंगा । भेउदासअनगनगणसंगा ॥ तबआयेयदुपतिभगवाना । ऐसोकियोउपाय

वसैब्रह्मचारीगुरुगेहू। इंद्रीजितगुरुपदकरिनेहू॥ दाससमानकरैसेवकाई गुनिअपनेकहँनीचमहाई॥ १॥
गुरुरविअग्निगुर्विदललामै। साँझप्रातहूकरैप्रणामै॥ संध्याकरैउभैह्वैमौना। गायत्रीजपिकैसुखभौना॥ २॥
जबगुरुनिजढिगलेइबोलाई। पढ़ैवेदमनदैतबजाई॥ करैप्रणामअरंभहिमाहीं। पुनिवंदेअंतहूँसदाहीं॥ ३॥
मंजुमेखलाकटिमहँधारै। मृगचर्महुअरुवसनसँभारै॥ जटाकमंडलदंडजनेऊ। अरुकुशधारनकरैसुभेऊ॥ ४॥
दोहा-साँझप्रभातहिमाँगिकै, भिक्षागुरुहिचढ़ाइ। गुरुशासनतेखाइतेहि, विनशासननहिंखाइ॥ ५॥
थोरोभोजनकरैसुशीला। सावधानअतिरहैनढीला॥ नारिननारिनतेहिनपाहीं। कहैप्रयोजनमात्रसदाहीं॥ ६॥
नारीकथासुनैनहिंकाना। ब्रह्मचर्यव्रतधरैमहाना॥ इंद्रीकठिनहोहिंसबकेरी।योगिहुँकरमनहरैनदेरी॥ ७॥
केशसुधारबतेललगाउब। उबटनअँगमज्जनकरवाउब॥गुरुतिययुवतीतेनकरावै। युवाउमिरिजोनिजतनआवै॥८॥
अग्निसरिसहैजगमेनारी। घृतघटसमनरलेहिविचारी॥दुहितहुढिगअकेलनहिंजावै। औरहुसमैकार्यभरिआवै॥ ९॥
दोहा-करैकर्मतबलौंसबै, जबलौंतनकोभान। छूटिजातसबकर्मतब, जबआवतउरज्ञान॥ १०॥
सीलादिकजेधर्मनिवेरे। तेहैंयतीगृहस्थहुकेरे॥ वसैगृहस्थननितगुरुगेहू। ऋतुकालहिविधिहैतियनेहू॥ ११॥
कछुआमिपकोभोजनकरिवो। अंगरागतबभूपणधरिवो॥ उबटनकरबतेलतनमाहीं। करैकबहुँव्रतधारीनाहीं॥
पढभीतीमहतियतसवीरा।लिखैकबहुँनहिंजोमतिधीरा१२यहिविधिगुरुगृहरहिपढ़िवेदा। देइदक्षिणागुरुहिअखेदा॥
जोकछुहोयदेनकोनाहीं। करिप्रणामआवैगृहमाहीं॥ अथवासंन्यासीह्वैजाई। अथवागुरुकुलवसैसदाई॥ १४॥
दोहा-गुरुगोंनिजमेंअनलमें, अरुसबभूतनमाहिं। यदुपतिकोदेखैसदा, जिनमेंदोपनजाहिं॥ १५॥
यहिविधिचारिहुँआश्रमकेरे।करिआचारतजहिहरिनेरे॥१६॥कहौंवानप्रस्थनकोधर्मा।ऋपिपुरजातकियेजोकर्मा १७
जोतितेअनाजजेजावें। तिनकोवनवासीनहिंखावैं॥ नहिंअकालकेफलमुनिभोजे। स्वतःहोहिखावेतेहिरोजे॥
अग्निपकोकच्चोनहिंखावै।रविकरपकोसुफलमुखलावै॥१८॥वनवस्तुनतेहोमहिकरई।नूतनपाइपुराणहितजई॥१९॥
पावकहितविरचैतृणशाला। अथवागिरिकंदराविशाला॥वरपापवनघामहिमिसहई।ग्रीपमपंचअग्नितहँतपई॥२०॥
दोहा-केशरोमनखमूछमल, तनमेंधरेसदाहि। दंडकमंडलचर्ममृग, वल्कलअग्निहुकाहि॥ २१॥
बारहबर्पवसैवनमाहीं। आठचारिदुइयकअथवाहीं॥ करिवनमहँतपपरमप्रयासा। जामेंबुद्धिनहोइविनासा॥२२॥
जबतनआवैव्याधिबुढ़ाई।क्रियाकरतअसमर्थदेखाई॥ छूटिहिज्ञानविचारगँभीरा।करिअनशनअसतजेशरीरा॥२३॥
तीनिहुअग्निआत्ममहँलाई। अहंकारममकारविहाई॥कारणमहँकारणहिमिलावै।यथायोगकरिअतिसुखपावै॥२४॥
तनकेछिद्रमिलाइअकासा। मारुतमहँपुनिमेलेश्वासा॥ ज्ञानीयूपमतेजेहिमेले। शोणितकफरेतहुजलझेले॥
दोहा-अस्थिमांसमेलेपुहुमि॥ २५॥ वाचापापकमाहिं। करनिपुणाईशक्रमहँ, विष्णुहिमहँपदकाहिं॥
युतउपस्थिरतिब्रह्ममाहीं२६मुदविसर्गयुतमृत्युहिपाहीं।दिशिमहँश्रवणइंद्रियुतसोरा।परससहितत्वचमारुतओरा॥
रुपसहितदृगरविमहँजोतै। रसयुतरसनाजलहिसबोतै॥मिलैगंधसहितमहिघ्रानै॥२८॥मनहिमनोरथयुतसितभानै॥
बुद्धिबोध्ययुतविधिहिउद्रमें। अहंकारयुतकर्मरुद्रमें॥सत्वसहितचितजीवहिमाहीं।अरुजीवहिपरमातमपाहीं॥२९॥
क्षितिजलमहँजलकोपावकमहँ। पावकमारुतमारुतनभमहँ॥अहंकारमहँनभहिमिलावै। महातत्वमहताहिलगावै॥
दोहा-महातत्वकहपुनितहां, प्रकृतिहिमाहँमिलाय। प्रकृतिहिपुनिपरमातमें, योगीदेयलगाय॥ ३०॥
स्वामीहिहरिदासजिय, यहिविधिभेदहिजानि। शांतहोइपावकसरिस, तनमिल्तीसुखखानि॥३१॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे द्वादशस्तरंगः॥ १२॥

तहँयेदोऊक्षत्रीकर्मा । जानिलेहुयहसतिसुतधर्मा ॥ भूपतिधर्मप्रजाकोपालन।विप्रनतजिकरिलेवउतालन ॥
वैश्यधर्मगोरक्षणकरिवो । कृपिवाणिज्यहुकरिधनभरिवो ॥ सदाकरैविप्रनसतकारा । वैश्यधर्मयेचारिउचारा
ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यहुकेरी । सेवाशूद्रहुकरैघनेरी ॥ यहीशूद्रकोधर्मविशाले । प्रभुकीसेवाकरिकुलपाले ॥ १५ ॥
दोहा–वाणिजगोरक्षणकृपी, वृत्तिअयाचनजोइ । नितमाँगेभोजनकरै, संचितकरैनढोइ ॥
अथवासीलावीनिकैखावै । अथवाहाटपरोलैआवै ॥ चारिवृत्तियेविप्रहिजीकी । तिनमेंउत्तरउत्तरनीकी ॥ १
उत्तमवृत्तिनीचनहिंकरई । जवभरिअतिआपतनहिंपरई ॥ सवकेधर्मकरैंसवकोई । जवजनकोअतिआपतहे
पैक्षत्रीकवहूँनहिंमाँगै । औरसवैकरमनमहँलागै ॥१७॥१८॥१९॥ राजाविप्रनीचसेवकाई । करैनकवहूँ
सर्ववेदमयविप्रसमाजा । सर्ववेदमयजानियराजा ॥ २० ॥ इंद्रीजीतवतपआचारा । अरुसंतोपक्षमासुखसारा ।
दोहा–सत्यज्ञानअरुनम्रता, दयाभक्तिभगवान । येदशलक्षणविप्रके, जानहुभूपसुजान ॥ २१ ॥
धीरजक्षमादानरजपूती । तीपनतेजसमरकरतूती ॥ शरणाँगतपालनअतिशीला । ब्राह्मणभक्तिकरसनहिंढील
जीतवइंद्रीगणहुँघनेरे । येदशगुणहैक्षत्रीकेरे ॥ २२ ॥ भगवतभक्तिदेवगुरुपूजन । अर्थधर्मकरहुसंपादन ॥
आस्तिकताअरुअतिनिपुणाई । उद्यमकरवदेशवहुजाई ॥ वैश्यहुकेनौलक्षणजानौ॥२३॥अवमैंशूद्रनलक्षणग
विनाकपटनिजप्रभुसेवकाई । पूजवतीनिहुवरणवनाई ॥ करैनचोरीसत्यउचारै । होइविप्रगोवनरखवारै ॥
दोहा–विनामंत्रउच्चारकरि, करैउचितशुभकर्म ॥ रहैअचारहितेसहित, आठशूद्रकेधर्म ॥ २४ ॥
नारिनकोपतिसेवनधर्मा।पतिअनुमतिकरिवोशुभकर्मा॥औरहुपतिवंधुनसेवकाई।पतिकोव्रतधारणमनलाई ॥ २
होहिंसकलगृहकारजजेते । नारीकरैआपुहीतेते ॥ भूपणवसनसाजिशृंगारा । निजपतिसेवनकरैअपारा ॥ २६
अपनेगृहतेकहूँनजावै । परपुरुपनपरनहिंमनलावै ॥ कोमलअतिनम्रतारचनते । प्रीतिप्रेमसतिभरेवचनते ॥
कालकालमेंपतिपहँजाई । करैसदाचितदैसेवकाई ॥ २७ ॥ राखैमनसंतोपसदाहीं । कवहूँलोभकरैकछुनाहीं ॥
दोहा–जानैनारीधर्मको, वदैसदैसतिवात ॥ सावधानअतिशुचिरहै, मृदुलस्वभावअघात ॥
कृष्णविमुखजोनिजपतिहोवै।ताकीओरकवहुँनहिंजोवै॥२८॥करिहरिभावनजोपतिपूजै।तातियकेसमजननहिंदूजै
लक्ष्मीसरिसपरमसुखपाई । पतियुतवसैकृष्णपुरजाई॥२९॥निजनिजकुलमेंजोचलिआई। शंकरजातीवृत्तिसोगाई
पैचोरीअरुपापविहाई । सिगरेकर्मकरैसुखदाई ॥ भिन्नचारिहूवरणहितेरे । तेईअंत्यजअहैघनेरे ॥
नटवेड़ीअरुरजकचमारा । केवटगोंडहुकोलकुम्हारा ॥ येआठोहैंडोमसमाना । परसतइनकहँपापमहाना ॥ ३
दोहा–जौनधर्मजाकोअहै, सोतेहिप्रदकल्यान । नीचहुतजिनिजधर्मको, करैनकर्ममहान ॥
वेदविदावहुवचनउचारे । इमियुगनिजधरमहिंनिरधारे॥भूपतिकियेआपनोधरमा । दोहुँलोकनहोतेप्रदशरमा॥
निजनिजवृत्तिकरतसवकाला । क्रमक्रमसोंतेहिछोडिभुवाला॥भगवद्भक्तिकरैमनलाई । लोभमोहअरुकोहुमि
विनवहुभोगकियेजगमाहीं । होतविरागकैसहूनाहीं॥३२॥जवकरिभोगतुष्टचितहोतो। तवविरागउपजतसुख
जिमिवहुवारवयेमहिमाहीं।अंतकालउपजतकछुनाहीं॥३३॥ऐसहिकरतकरतसुखभोगू।स्वःतविरागलहतव
दोहा–जैसेडारेवहुतघृत, बुझतअग्निकीज्वाल ॥ नेसुकघृतलहिवढ़ताशिखि, तिमिकामहुँसवकाल ॥ ३
जौनवृत्तिजेहिहोतिहै, ताअनुगुनतेहिनाम ॥ लहतनामहैकर्मकरि, जातिनआवैकाम ॥ ३५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि
राजश्रीमहाराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे एकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

नारद उवाच ।

दोहा–वरणधर्मसवकहिचुक्यो, अवमैंआश्रमधर्म ॥ कहतअहौंसुनिलीजिये, सावधाननृपधर्म ॥

॥ दाससमानकरैसेवकाई गुनिअपनेकहँनीचमहाई ॥ १ ॥
तेब्रह्मचारीगुरुगेहू । इंद्रीजितगुरुपदकरिनेहू ॥ संध्याकरैउभैह्वैमौना । गायत्रीजपिकैसुखभौना ॥ २ ॥
रुरविअग्निगुविंदललामै । साँझप्रातहूकरैप्रणामै ॥ करैप्रणामअरंभहिमाहीं । पुनिवेदअंतहूँसदाहीं ॥ ३ ॥
वगुरुनिजढिगलेइबोलाई । पढ़ैवेदमनदेतबजाई ॥ जटाकमंडलदंडजनेऊ । अरुकुशधारनकरेसुभेऊ ॥ ४ ॥
ञ्जमेखलाकटिमहँधारे । मृगचर्महुअरुवसनसँभारे ॥ जटाकमंडलदंडजनेऊ । अरुकुशधारनकरेसुभेऊ ॥ ४ ॥
दोहा-साँझप्रभातहिमाँगिकै, भिक्षागुरुहिचढ़ाइ । गुरुशासनतेखाइतेहि, विनशासननहिंखाइ ॥ ५ ॥
थोरौभोजनकरैसुशीला । सावधानअतिरहैनढीला ॥ नारिननारिनतेहिनपाहीं । कहैप्रयोजनमात्रसदाहीं ॥ ६ ॥
नारिकथासुनैनहिंकाना । ब्रह्मचर्यव्रतधरैमहाना ॥ इंद्रीकठिनहोहिंसवकेरी।योगिहुँकरमनहरैनदेरी ॥ ७ ॥
केशसुधारवतेललगाउव । उवटनअँगमज्जनकरवाउव॥गुरुतिययुवतीतेनकरावे । युवाउमिरिजोनिजतनआवे ॥८॥
अग्निसरिसहैजगमेनारी । घृतघटसमनरलेहिविचारी॥दुहितहुढिगअकेलनहिंजावे । औरहुसमैकार्यभरिआवे ॥ ९ ॥
दोहा-करैकर्मतवलौंसवै, जवलौंतनकोभान । छूटिजातसवकर्मतव, जवआवतउरज्ञान ॥ १० ॥
सीलादिकजेधर्मनिवेरे । तेहैंयतीगृहस्थहुकेरे ॥ वसैगृहस्थननितगुरुगेहू । ऋतुकालहिविधिहेतियनेहू ॥ ११ ॥
कछुआमिषकोभोजनकरिवो । अंगरागतवभूषणधरिवो ॥ उवटनकरवतेलतनमाहीं । करैकवहुँव्रतधारीनाहीं ॥
पढभीतीमहतियतसवीरा।लिखैकवहुँनहिंजोमतिधीरा१२यहिविधिगुरुगृहरहिपढ़िवेदा । देइदक्षिणागुरुहिअखेदा॥
जोकछुहोयदेनकोनाहीं । करिप्रणामआवैगृहमाहीं ॥ अथवासंन्यासीह्वैजाई । अथवागुरुकुलवसैसदाई ॥ १४ ॥
दोहा-गुरुगोंनिजमेंअनलमें, अरुसवभूतनमाँहि । यदुपतिकोदेखैसदा, जिनमेंदोषनजाहिं ॥ १५ ॥
यहिविधिचारिहुँआश्रमकेरे।करिआचारतजहिहरिनेरे॥१६॥कहौंवानप्रस्थनकोधर्मा।ऋषिपुरजातकियेजोकर्मा १७
जेतितेअनाजजेजावें । तिनकोवनवासीनहिंखावें ॥ नहिंअकालकेफलमुनिभोजे । स्वतःहोहिखावेतेहिरोजे ॥
अग्निपकोकच्चोनहिंखावे।रविकरपकोसुफलसुखलावै॥१८॥वनवस्तुनतेहोमहिकरई।नूतनपाइपुराणहितजई॥१९॥
पावकहितविरचैतृणशाला । अथवागिरिकंदराविशाला॥वरपापवनघामहिमिसहई।ग्रीषमपंचअग्नितहँतपई ॥२०॥
दोहा-केशरोमनखमूछमल, तनमेंधरेसदाहि । दंडकमंडलचर्ममृग, वलकलअग्निहुकाहि ॥ २१ ॥
वारहवर्षवसैवनमाहीं । आठचारिदुइयकअथवाहीं ॥ करिवनमहँतपपरमप्रयासा । जामेंबुद्धिनहोइविनासा ॥२२॥
जवतनआवैव्याधिवुढ़ाई।क्रियाकरतअसमर्थदेखाई॥ छूटिहिज्ञानविचारगँभीरा।करिअनशनअसतजेशरीरा ॥२३॥
तीनिहुअग्निआतममहँलाई । अहंकारममकारविहाई॥कारणमहँकारणहिमिलावै।यथायोगकरिअतिसुखपावै ॥२४॥
तनकेछिद्रमिलाइअकासा । मारुतमहँपुनिमेलैश्वासा ॥ ज्ञानीयूपमतेजहिमेलै । शोणितकफरेतहुजलझेलै ॥
दोहा-अस्थिमांसमेलैपुहुमि ॥ २५ ॥ वाचापापकमाहिं । करनिपुणाईशक्रमहँ, विष्णुहिमहँपदकाहिं ॥
गुत्तउपस्थिरतिब्रह्मामाहीं२६मुदविसर्गयुतमृत्युहिपाहीं।दिशिमहँश्रवणइंद्रियुतसोरा।परससहितत्वचमारुतओरा।
रूपसहितदृगरविमहँजोतै । रसयुतरसनाजलहिसवोतै।मेलैगंधसहितमहिमानै ॥२८॥ मनहिमनोरथयुतसितभानै।
वुद्धिवोध्ययुतविधिहिउद्रमें । अहंकारयुतकर्मरुद्रमें॥सत्वसहितवितजीवहिमाहीं।अरुजीवहिपरमातमपाहीं ॥२९॥
क्षितिजलमहँजलकोपावकमहँ । पावकमारुतमारुतनभमहँ॥अहंकारमहँनभहिमिलावे । महातत्त्वमहताहिलगावे।
दोहा-महातत्त्वकहपुनितहाँ, प्रकृतिहिमाहँमिलाय । प्रकृतिहिपुनिपरमातमै, योगीदेयलगाय ॥ ३० ॥
स्वामीहिहरिदासजिय, यहिविधिभेदहिजानि । शांतहोइपावकसरिस, तनमिलतीसुखखानि ॥३१॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

नारद उवाच ।

दोहा–वानप्रस्थअसमर्थकी, देहत्यागिविधिमापि । अवसमरथकीविधिकहौं, तुमसेनहिंकछुराखि ॥
जोहोवैसमरथवनवासी । तौसवहोइत्यागिसंन्यासी ॥ वसैएकरजनीइकग्रामा । विनइच्छाविचरैसवठामा ॥ १ ॥
जोपटधारणचहैप्रवीना । तौपथपटलैरचैकुपीना ॥ जटीकमंडलुदंडहुधारै । विनआपतऐसेनिरधारै ॥ २ ॥
विचरिअकेलेभिक्षामाँगै । काहूकेनसंगअनुरागै ॥ दयादीठिभूतनसवजोवै । नारायणपारायणहोवै ॥ ३ ॥
मायाजीवविलक्षणईसै । तिनमहँसकलजगतकहँदीसै ॥ परमात्माव्यापकसवमाहीं । ऐसोकरैविचारसदाहीं ॥ ४
दोहा–जागवसोउवसंधिमें, त्रयजगलखैसुजान । वंधमोक्षमायाअहै, राखैनितयहभान ॥ ५ ॥
जननमरनहितकरैनशंका । गुनैकालवशजगनिरतंका ॥६॥ असतशास्त्रमेंकरैनप्रीती । करैजीविकाकीनहिंरीती
करैकवहुँनहिंवादविवादा । धारैसदाधर्ममरयादा ॥ पक्षपातकवहुँनहिंकरई । सत्यशास्त्रअरथहिनिरधरई ॥ ७ ॥
करिशिष्यनहितकरिधनआसा । करैनवहुग्रंथनअभ्यासा ॥ रचैननिजवसिवेहितगेहू । लौकिककर्मकरैनहिंनेहू ॥८।
नहिंसंन्यासधर्मकेहेतू । अहैज्ञानहितकुरुकुलकेतू ॥ समदरशीजेशांतसुकर्मा । चहैकरैनकरैकछुधर्मा ॥ ९
दोहा–निजप्रभावप्रगटैनहीं, विचरैवालसमान ॥ जननदेखावैमूकता, यद्यपिकविहुसुजान ॥ १० ॥
तहँमुनिजनइतिहासवखाना । अतिसुंदरहैपरमपुराना ॥ दक्षिणकावेरीसरितीरा । सह्यशैलयकहैमतिधीरा ॥ ११
तहँधारिअजगरकीरीती । रहैएकमुनितजिभवभीती॥१२॥ एकसमयविचरतप्रहलादा । जाननहेतलोकमर्यादा।
मंत्रिनसहितगयेतेहिठामा । देख्योअजगरमुनिहिअकामा ॥ परेपुहुमिमेंधूरिधूसर । तेजवंतजनुभानुदूसर ॥ १३।
वरणाश्रमजेहिजातनजानो । ब्रह्मानंदसदामनसानो॥१४॥तेहिपदशिरधरिकियाप्रणामा।कृष्णभक्तप्रहलादललामा॥
दोहा–तिनकेमुखतेसुननहित, ज्ञानविरागहुजोय ॥ पूछतभोकरजोरिकै, महाभागवतसोय ॥ १५ ॥
होतनविनभोजनतनपीना । मिलैनभोजनजोधनहीना ॥ सोधनविनउद्यमनहिंहोई।विनगमनेउद्यमनहिंकोई ॥१६॥
सोतुममेंएकौनदेखाहीं । रहौमोटकसतातसदाहीं ॥ सुननयोगजोहोइहमारे । कहहुकृपाकरितौहरिप्यारे ॥ १७॥
तुमहौकविसमरथसवभाती।निपुणअहौसवसंशयघाती॥सवकहहकर्मकरतमुनिदेखी।करहुनकाहेकर्मविशेखी ॥१८।

नारद उवाच ।

जवअसमुनिसोंश्रीप्रहलादा । प्रश्नकियोसंयुतअहलादा ॥ सुधासमानवचनमुनिकाना।वोलेविहँसिमुनीशसुजाना।

ब्राह्मण उवाच ।

दोहा–हमजानहिंपरअसुरपति, तुमकियवहुसतसंग ॥ प्रवृतनिवृतफलजानहू, अनंगगर्वहिंग ॥ १९ ॥ २
जाकेहियमहँरमानिवासा । भक्तिविवशनितकरहिंनिवासा ॥ नाशकरहिताकोअज्ञाना। जेमअंधकारकोभाना ।
यद्यपिजानहुसवअसुरेशा । पमोसोंकियप्रश्नहिवेशा ॥ तातेजोकियश्रवणपुराना । मानुममोंमैंकरहुँवखाना ॥
महाराजकरिसंगतुम्हारा । होइहिशुद्धशरीरहमारा ॥ पूरवजन्मनितृष्णाकारकें । क्रियाकर्ममैंवहुश्रमभ
तदपिकामनामममनहिंपूरी । वाढ़तभईनितनितभूरी। ताकेविवशजनमवहुपायो॥२३॥भ्रमनभ्रमनअवयहजनन
दोहा–स्वर्गनर्कअपवर्गको, दातामनुजशरीर ॥ करकर्मतसफललहै, यहिननंनमानिर्धार ॥ २४ ॥
करतकर्मजोसुखकेहेतू । अंतहोतसोदुःखनिकेतू ॥ तातेकर्मतजेहमराजा । करनहींकछुहमसुखकाजा ।
सुखस्वरूपहैजीवसदाहीं । पतृष्णाविनछोडेनाहीं । तातेतजितृष्णासवभाँती । ममावहुँसुखसोदिनराती ।
सुखहितनानिपमृहटपाई । भ्रमहिजगनमहँवहुदुखपाई॥२७॥मुद्रितजलगहेतृणकाई।निकटजननननहिंपग
ताकोठोहिमृदवहुपावै । मृगतृष्णानलकवहुँनपावै॥जिमिविज्ञानजनितसुखछाई । भ्रमनभटकंबुद्धिनिर
दोहा–दुवनर्पानगर्वपद, नामवादनदर्प ॥ अमलक्लेशनाशनचहै, वृथाकर्मवहुनपं ॥ २[illegible] ॥
।अमलविनापदुखनोहिनाहिगयऊ॥ताताकर्मसअहैदृथाहीं।नहिंसुखसदननर्गर्गि

लोभिनधनीदुःखबहुदेखे । नहिंसोवतनिशिप्रियधनलेखे॥३१॥भूपबंधुअरुखगमृगचोरा।औरजगतयाचकबहुकरोरा॥
इनतेंअपनेहुतेधनभीती । रहतसदाकोहुकीनप्रीती॥ तातेमिटतनहींदुखघोरा । प्राणसमानगनतधनभोरा ॥ ३२ ॥
शोकरागश्रमभीतिहुकोहू । जातेबढ़तकलेशहुमोहू ॥ ऐसीदुखदअहैधनआसा । ताहितजेबुधलहैंहुलासा ॥ ३३ ॥
दोहा–मधुमाखीमधुकहँरचहिं, लघुलघुरसकहजोरि ॥ मधुलोभीतिनजारियक, बाराहिलेतानिचोरि ॥
तिमिजोरतधनऔरहिकोई । औरेखातउड़ावतसोई ॥ परोरहतअजगरइकठोरा । मिल्योजोखाइलियोबहुथोरा ॥
तातेमधुकरअजगरदोऊ।ममगुरुहैंयहजानतकोऊ३४–३६कहूँअलपकहुँबहुतकखायो।कहूँस्वादकहुँस्वादनपायो॥
कहूँमानतेकहुँअपमानै । कहूँदिवसकहुँनिशामहानै ॥ कहुँयकवारकहूंद्वैवारे । कहुँउपासकहुँसलिलअधारे ॥३८॥
कहुँकमरीकहुँमिलैदुशाला।कहुँवलकलकबहूँमृगछाला ॥ जोईमिल्योओढिसोइलीन्ह्यों।अपनेमनसंतोपहिकीन्ह्यों॥
दोहा–कहुँमहिमैंकबहूंतृणे, कबहुंपरेपरयंक ॥ कहुँपपाणकहुँभसममें, कहुँगृहमेंनिश्शंक ॥ ४० ॥
कहुँमज्जनसंयुतअँगरागा । कबहुँमालकबहूँशिरपागा ॥ कहुँस्यंदनतुरंगमातंगा । कबहुँदिगंबरकोऊनसंगा ॥
हमकोमिलैईशकृतजोई । ताहीमेंसंतोपहिहोई ॥४१॥ नहिंनिंदेनहिंकरैप्रशंसा । सबकोचहैअमंगलध्वंसा ॥
सबकेहोइभक्तिभगवाना । सबकोकृष्णकरैकल्याना ॥४२॥ जातिभेदमनवृत्तिहिकरई । मनवृत्तिहिकोमनमेंभरई॥
मनकोअहंकारमेंलोपै । अहंकारमायामेंगोपै ॥ ४३ ॥ मायाआतममेंकरलीनै । आतमपरमातमरसभीनै ॥
दोहा–यहिविधिअनुसंधानजो, करैछोड़िव्यापार ॥ मुक्तहोतसोअसुरपति, ऐसेवेदउचार ॥ ४४ ॥
जोपूछ्योसोमैंकह्यो, परमगुप्तहूशुद्ध ॥ मूढ़नलोकहुशास्त्रते, जानोपरतविरुद्ध ॥
असुरनाथयदुनाथके, तुमहौपरमपियार ॥ तातेमैंभाष्योसकल, संयुतयहविस्तार ॥ ४५ ॥

नारद उवाच ।

परमहंसकोधर्मयह, सुनिकैअसुरअधीश ॥ गमनकियोतहँभवनको, नाइमुनीशहिशीश ॥ ४६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधेत्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

दोहा–सुनिनारदमुनिकेवचन, धर्मभूपहरपाइ ॥ बोलेपुनिकरजोरिकै, कथासुननचितलाइ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

संन्यासीजोलहतहैं, पदवीपरमपुनीति ॥ सोगृहस्थमोसमकुमति, किमिपावतकरनीति ॥ १ ॥
सुनतयुधिष्ठिरगिरासोहाई । कहनलगेनारदमुनिराई ॥

नारद उवाच ।

धरैगृहस्थधर्मयहकाजा । गृहकोउचितकरैमहराजा ॥ सकलकर्मअरपैहरिमाहीं । सज्जनपूजनकरैसदाहीं ॥ २ ॥
यदुवरसुधाकथाअवतारा । श्रद्धासहितसुनैबहुवारा ॥ चंचलचित्तअचंचलकरई । साधुसमाजबैठिसुखभरई ॥ ३ ॥
सुतदारादेहौपरिवारा । स्वप्नसरिससुरकरैविचारा ॥ तेनहिंअंतकरहिंअनुरागे । तिनकहकसपहिलेनहिंत्यागै ॥
निजपरिवारनेहकीडोरी । क्रमक्रमतजनबँधेबहोरी ॥ ४ ॥
दोहा–देहगेहमेंअर्थभरि, पंडितरासंप्रीति । आत्मपदेअनुरक्तसम, रहैविरक्ताहिरीति ॥ ५ ॥
यहिविधिसिगरोजन्मवितावें । ब्राह्मणवैष्णवपदशिरनावें ॥ पुत्रमित्रअरुजनकहुमाता।ज्ञातिनातगुरुहदोमरुभ्राता॥
तिनकेवचनउचितसबमानै । तिनमेंमहामोहनहिंठानै॥६॥सकलभोगदीन्ह्योभगवाना।ऐसोसदाकरैअनुमाना ॥७॥
दवरभरेजितनेधनमाहीं । तितनोनिजजानेबहुनाहीं ॥ अधिकगुनैअपनोजोकोई ।

नारद उवाच ।

दोहा–वानप्रस्थअसमर्थकी, देहत्यागिविधिभापि । अवसमरथकीविधिकहौं, तुमसेनाहिंकछुराखि ॥
जोहोवैसमरथवनवासी । तौसवहोइत्यागिसंन्यासी ॥ वसैएकरजनीइकग्रामा । विनइच्छाविचरैसवठामा ॥ १ ॥
जोपटधारणचहैप्रवीना । तौपथपटलैरचैकुपीना ॥ जटीकमंडलुदंडहुधारै । विनआपतऐसेनिरधारै ॥ २ ॥
विचरिअकेलेभिक्षामाँगै । काहूकेनसंगअनुरागै ॥ दयादीठिभूतनसवजोवै । नारायणपारायणहोवै ॥ ३ ॥
मायाजीवविलक्षणईसै । तिनमहँसकलजगतक्रहँदीसै ॥ परमात्माव्यापकसवमाहीं । ऐसोकरैविचारसदाहीं ॥ ४
दोहा–जागवसोउवसंधिमें, त्रयजगलखेसुजान । वंधमोक्षमायाअहै, राखैनितयहभान ॥ ५ ॥
जननमरनहितकरैनशंका । गुनैकालवशजगनिरतंका ॥६॥ असतशास्त्रमेंकरैनप्रीती । करैजीविकाकीनहिंरीती
करैकवहुँनहिंवादविवादा । धारैसदाधर्ममरयादा ॥ पक्षपातकवहुँनहिंकरई । सत्यशास्त्रअरथहिनिरधरई ॥ ७ ॥
करिशिष्यनहितकरिधनआसा । करैनवहुग्रंथनअभ्यासा ॥ रचैननिजवसिवेहितगेहू । लौकिकर्मकरैनहिंनेहू ॥८॥
नहिंसंन्यासधर्मकेहेतू । अहैज्ञानहितकुरुकुलकेतू ॥ समदरशीजेशांतसुकर्मा । चहैंकरैनकरैकछुधर्मा ॥ ९
दोहा–निजप्रभावप्रगटैनहीं, विचरैवालसमान ॥ जननदेखावैमूकता, यद्यपिकविहुसुजान ॥ १० ॥
तहँमुनिजनइतिहासवखाना । अतिसुंदरहैपरमपुराना ॥ दक्षिणकावेरीसरितीरा । सह्यशैलयकहैमतिधीरा ॥ ११
तहँाधारिअजगरकीरीती । रहैएकमुनितजिभवभीती॥१२॥ एकसमयविचरतप्रहलादा । जाननहेतलोकमर्यादा
मंत्रिनसहितगयेतेहिठामा । देख्योअजगरमुनिहिअकामा ॥ परेपुहुमिमेंधूरिधूसरे । तेजवंतजनुभानुदूसरे ॥ १
वरणाश्रमजेहिजातनजानो । ब्रह्मानंदसदामनसानो॥१४॥तेहिपदशिरधरिकियोप्रणामा।कृष्णभक्तप्रहलादलला
दोहा–तिनकेमुखतेसुननहित, ज्ञानविरागहुजोय ॥ पूछतभोकरजोरिकै, महाभागवतसोय ॥ १५ ॥
होतनविनभोजनतनपीना । मिलैनभोजनजोधनहीना ॥ सोधनविनउद्यमनहिंहोई।विनगमनेउद्यमनहिंकोई ॥
सोतुममेंएकौनदेखाहीं । रहौमोटकसताततसदाहीं ॥ सुननयोगजोहोइहमारे । कहहुकृपाकरितौहरिप्यारे ॥
तुमहौकविसमरथसवभाती।निपुणअहौसवसंशयघाती॥सवकहकर्मकरतमुनिदेखी।करहुनकाहेकर्मविशेखी ।

नारद उवाच ।

जवअसमुनिसोंश्रीप्रहलादा । प्रश्नकियोसंयुतअहलादा ॥ सुधासमानवचनसुनिकाना।वोलेविहँसिमुनीशसु

ब्राह्मण उवाच ।

दोहा–हमजानाहिंपरअसुरपति, तुमकियवहुसतसंग ॥ प्रवृतनिवृतफलजानहू, अंतरंगवहिरंग ॥ १९
जाकेहियमहँरमानिवासा । भक्तिविवशनितकरहिंनिवासा ॥ नाशकरहिताकोअज्ञाना। जैसेअंधकारकोभ
यद्यपिजानहुसवअसुरेशा । पैमोसोंकियप्रश्नहिवेशा ॥ तातेजोकियश्रवणपुराना । सोतुमसोंमैंकरहुँवख
महाराजकरिसंगतुम्हारा । होइहिशुद्धशरीरहमारा ॥ पूरवजन्मनितृष्णाकरिकै । कियोकर्ममेंवहुश्र
तदपिकामनामनहिंपूरी । वाढ़तभईनितैनितभूरी। ताकेविवशजनमवहुपायो॥२३॥भ्रमतभ्रमतअवय
दोहा–स्वर्गनर्कअपवर्गको, दातामनुजशरीर ॥ करैकर्मतसफलहै, यहितनतेमतिधीर ॥ २४ ॥
करतकर्मजोसुखकेहेतू । अंतहोतसोदुःखनिकेतू ॥ तातेकर्मतजेहमराजा । करैनहींकछुदुखसुखका
सुखस्वरूपहैजीवसदाहीं । पैतृष्णाविनछोडेनाहीं । तातेतजितृष्णासवभाँती । मैंसोवहुँसुखसोंदिनर
सुखहितताजियमूढ़उपाई । भ्रमहिजगतमहँवहुदुखपाई॥२७॥मुद्रितजलजैसेतृणकाई।निकटजननन
ताकोछोड़िमूढ़वहुधावै । मृगतृष्णाजलकवहुँनपावै॥जिमिविज्ञानजनितसुखछोरी । भ्रमतेभटकैदुखि
दोहा–देवअधीनशरीरयह, जामेंवाहतदर्प ॥ अरुकलेशनाशनचहै, वृथाकर्मवहुदर्प ॥ २९ ॥
पैकवहुँकर्मसिधिभयऊ।अरुत्रितापदुखजोहिनहिंगयऊ॥तौताकेमखअहैवृथाहीं।नहिंसुखरहतन

लोभिनधनीदुःखबहुदेखे । नहिंसोवतनिशिप्रियधनलेखे ॥३१॥ भूपचंधुअरुखगमृगचोरा । औरजगतयाचककहुकरोरा ॥
इनतेअपनेहुतेधनभीती । रहतसदाकोहुकीनप्रीती ॥ तातेमिटतनहींदुखघोरा । प्राणसमानगनतधनभोरा ॥ ३२ ॥
शोकरागश्रमभीतिहुकोहू । जातेबढ़तकलेशहुमोहू ॥ ऐसीदुखदअहेधनआसा । ताहितजेबुधलहैंहुलासा ॥ ३३ ॥
दोहा–मधुमाखीमधुकहँरचहिं, लघुलघुरसकहजोरि ॥ मधुलोभीतिनजारियक, बारहिलेतानिचोरि ॥
तिमिजोरतधनऔरहिकोई । औरेखातउड़ावतसोई ॥ परोरहतअजगरइककठोरा । मिल्योजोखाइलियोबहुथोरा ॥
तातेमधुकरअजगरदोऊ । ममगुरुहेंयहजानतकोऊ ॥३४-३६॥ कहूँअल्पकहुँबहुतकखायो । कहूँस्वादकहुँस्वादनपायो ॥
कहुँमानतेकहुँअपमाने । कहूँदिवसकहुँनिशामहाने ॥ कहुँयकवारकहूँद्वैवारे । कहुँउपासकहुँसलिलअधारे ॥३८॥
कहुँकमरीकहुँमिलैदुशाला । कहुँवलकलकबहूँमृगछाला ॥ जोईमिल्योओढिसोइलीन्ह्यो । अपनेमनसंतोषहिकीन्ह्यो ॥
दोहा–कहुँमहिमेंकबहूंतृणे, कबहुंपरेपर्यंक ॥ कहुँपपाणकहुँभसममें, कहुँगृहमेंनिश्शंक ॥ ४० ॥
कहुँमज्जनसंयुतअँगरागा । कबहुँमालकबहूँशिरपागा ॥ कहुँस्यंदनतुरंगमातंगा । कबहुँदिगंबरकोऊनसंगा ॥
हमकोमिलैईशकृतजोई । ताहींमेंसंतोषहिहोई ॥४१॥ नहिंनिंदेनहिकरैप्रशंसा । सबकोचहैअमंगलध्वंसा ॥
सबकेहोइभक्तिभगवाना । सबकोकृष्णकरैकल्याना ॥४२॥ जातिभेदमनवृत्तिहिकरई । मनवृत्तिहिकोमनमेंभरई ॥
मनकोअहंकारमेंलोपे । अहंकारमायामेंगोपे ॥ ४३ ॥ मायाआतममेंकरलीने । आतमपरमातमरसभीने ॥
दोहा–यहिविधिअनुसंधानजो, करैछोड़िव्यापार ॥ मुक्तहोतसोअसुरपति, ऐसेवेदउचार ॥ ४४ ॥
जोपूछ्योसोमेंकह्यो, परमगुप्तहूशुद्ध ॥ मूढ़नलोकहुशास्त्रते, जानोपरतविरुद्ध ॥
असुरनाथयदुनाथके, तुमहोपरमपियार ॥ तातेमेंभाष्योसकल, संयुतयहविस्तार ॥ ४५ ॥

नारद उवाच ।

परमहंसकोधर्मयह, मुनिकेअसुरअधीश ॥ गमनकियोतहँभवनको, नारदमुनीशहिशीश ॥ ४६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधेत्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

दोहा–सुनिनारदमुनिकेवचन, धर्मभूपहरषाइ ॥ बोलेपुनिकरजोरिके, कथासुननचितलाइ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

संन्यासीजोलहततेंह, पदवीपरमपुनीति ॥ सोगृहस्थमोसमकुमति, किमिपावतकरनीति ॥ १ ॥
सुनतयुधिष्ठिरगिरासोहाई । कहनलगेनारदमुनिराई ॥

नारद उवाच ।

धरेगृहस्थधर्मयहराजा । गृहकोउचितकरैमहराजा ॥ सकलकर्मअरपैहरिमाहीं । मज्जनपूजनकरैसदाहीं ॥ २ ॥
यदुवरसुधाकथाअवतारा । श्रद्धासहितसुनैबहुवारा ॥ चंचलचित्तअचंचलकरई । साधुसमाजबैठिसुखभरई ॥ ३ ॥
सुतदारादिहौपरिवारा । स्वप्नसरिससुखकरैविचारा ॥ तेनहिंअंनकरहिअनुरागे । तिनकहककमपदिहिनाहिंत्यागै ॥
निजपरिवारनेहकीडोरी । क्रमक्रमतजनवँधेबरजोरी ॥ ५ ॥
दोहा–देहगेहमेंअर्थभरि, पंडितराखैप्रीति । आत्मपदेअनुरक्तमन, रहैविरक्तादिरीति ॥ ६ ॥
यहिविधिसिगरोजन्मवितावै । आत्मनंदनवपदहिरलावै ॥ पुत्रमित्रजनकहुमाना । ज्ञानिनात[illegible]॥
तिनकेवचनउचितसबमाने । तिनमेंममतानाहिनठाने ॥६॥ [illegible] ॥७॥
दरभरेजितनेधनमाहीं । तितनोनिजजानिरहुनाहीं ॥ [illegible] । [illegible] ॥

त्रेतातेसवजनकरुराई । हरिपूजनलागेमनलाई ॥ जननद्रोहतजिजोहरिपूजै । सोफललहतनतेहिंसमदूजै ॥ ४० ॥

दोहा-तपविद्यासंतोषयुत, पढ़ैजोहरितनवेद । सोब्राह्मणसतपात्रहै, जानहुँभूपअखेद ॥ ४१ ॥

जेद्विजवरनिजपदरजहि, करतत्रिलोकपुनीत ॥ इष्टदेवतेकृष्णके, मानहुसत्यप्रतीत ॥ ४२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि राजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे चतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

नारद उवाच ।

दोहा-कर्मनिष्ठकोउनिष्ठतप, कोऊनिष्ठस्वाध्याइ । यागयोगकोउनिष्ठद्विज, कोऊध्यानचितलाइ ॥ १ ॥

देवपितरकरमनचितलाई । ज्ञानिनभोजनदेइबुलाई ॥ जोनहिंमिलैविप्रवरज्ञानी । यथायोग्यदीजेद्विजजानी ॥२॥ देवकर्मद्वैद्विजनखवावै । पितरकर्ममेंतीनिबोलावै ॥ अथवाएकएकहोउकरमें । भोजनकरवावैयुतधरमें ॥ यद्यपिधनहुहोइअधिकाई । तदपिश्राद्धद्विजबहुनखवाई ॥ जेसीविधिथोरेमहँहोई। विशदकियेतसलहतनकोई ३॥ श्रद्धाविधियुतदेशहुकाला।पात्रहिदानदियेफलहाला॥४॥सबमहँहरिकहँगुनिमहिपाला।क्षुधितहिअन्नदेयततकाला। दोहा-देवनपितरनऋपिनको, देयअन्नजलदान ॥ हरिअर्पणकरिसुजनयुत, भोजनकरैसुजान ॥ ५॥ ६ ॥

आमिषश्राद्धमाहँनहिंदीजै । आपहुभोजनकबहुँनकीजै ॥ जेतोअन्नदेतसुखभारी । तेतोआमिषदेदुखकारी ॥ ७ ॥ भूपतिहिंसातजबसमाना । अहैनधर्मजगतमहँआना॥८॥कोउज्ञानीसबयज्ञनतेरे।गुनहिज्ञानकहँअधिकनिबेरे ॥ ९॥ यज्ञनिकरतछागबलिदेखी । डरहिंजीवसबनिर्दयलेखी ॥१०॥ तातेअन्नहिजेसबकाजा । श्रद्धासहितकरैमहराज॥ उपमाछलआभासविधर्मा । येचारहुँपाँचोपरधर्मा॥११॥येअधर्मकेशाखाजानै । इनकोकबहुँचित्तनहिंआनै ॥ १२॥ दोहा-हैविधर्मछोड़बधरम, परासिखयोपरधर्म ॥ करिपखंडजोकरतहै, सोउपमानृपधर्म ॥ १३ ॥

श्रुतिकोअर्थफेरिखोजोई । कहतसुकविसबछलहैसोई ॥ करैजोनिजमनकरिअनुमाना । जानहुँसोआभासमहाना ॥ वेदविहितजोनिजनिजधर्मा । करैदेतकाकोनहिंशर्मा ॥१४॥ धर्महेतअरुहितानिरबाहू । होइनअपनेधनजेहिकाहू॥ सोनिरबाहधर्मकेहेतू । करैनकबहूँधनकोनेतू ॥ अजगरसरिसरहैहरिध्यावै । कृपासिंधुतेहिसकलबनावै ॥ १५ ॥ जोसुखहोततोषउरलाये । सोनहिंमिलतलोभवशधाये॥१६॥होततोपकरिअभैमहाना ।लगैनकंटकरहैउपाना।१७॥ दोहा-जोछोड्योसंतोपको, कीन्ह्योलोभमहान ॥ द्वारद्वारसोनागतो, भूसोश्वानसमान ॥ १८ ॥

जोसंतोषसदाउरलावै । ताकोशत्रुनकहूँदरावै ॥ विप्रअसंतोपीजोहोई । तपविद्यायशद्वारतसोई ॥ १९ ॥ ताकोमनकरिचंचलताई । ज्ञानयोगसबदेतनशाई ॥ भोजनकीन्हेंभूखनशाई । पानकियेतिमिप्यासहुजाई ॥ २० ॥ क्षुधातृपातेकामनशाई । क्रोधानलरिपुमारिबुझाई ॥ जीतेहुदशदिशिभोगेहुभोगू । पैनहिमिटनलोभप्रदसोगू ॥ अमितशास्त्रकेजाननवारे । संशयसकलविध्वंसनहारे ॥ पंडितश्रेष्ठसभासदमाहीं । असंतोषतेनरकहिजाहीं ॥२१॥ दोहा-कामहिजीतेजीतिमन, कामछोड़िपुनिक्रोप ॥ लोभहिकरिसंतोपको, भयजीतेकरिबोध ॥ २२ ॥

शोकमोहकोधारिविवेकू । मौनहिलौकिकध्यानअनेकू ॥ हिंसाजीतदयामहाई । दंभहिकरिमननसबकाई ॥ २३ ॥ दुखजीतेसबतेहदीना । कर्महिजितसमाधिहलीना ॥ जीतिलेइकारियोगप्रसंगा। लघुभोजनकरिनिंदगेभागा॥२४॥ सद्गुणतेरजतमकहँजीतै । उपशमतेसत्वनपुनिरीतै ॥ गुरुकीभक्तिकियेमनलाई । यमत्रअनयासहिदिटिजाई ॥२५॥ गुरुभगवानज्ञानकोदाता । सोगुरुनरसमजोहिदेखाता ॥ ताकोपढ़बधर्मनरज्ञाना।कुंजरमज्जनसरिसदेखाना॥२६॥ दोहा-प्रकृतिपुरुषकेनाथहैं, यमदुपतिभगवान ॥ इनकेपदहरिदनगहै, योगीनिनधरिध्यान ॥ २७ ॥

तिनकोनरसबनरसमजानै । कोउनिजकोइमृतुबखानै ॥ क्रियाधर्महनिबलसन्दो । लोभमोहमयनानेरास्यो॥२८॥

खगमृगनरजगजीवनकाहीं । पुत्रसरिसमनैमनमाहीं ॥९॥ करैअर्थअरुधर्महुकामा । [illegible]तिपाप ॥

दोहा–देशकालअनुगुनकरै, विभवभोगप्रभुदीन ॥१०॥ श्वानपतितचंडालहुन, भोजनदेइप्रवीन ॥

यद्यपिहोइएकहूनारी । तद्यपितजैसनेहविचारी ॥ ११ ॥ जगमहँजोनारीकेहेतू । हनैमातुपितुगुरुअघकेतू ॥ आतमघातकरैजेहिकाजू । छोडिदेहिनिजकुलकीलाजू ॥ जोछोडतजगमेंअसनारी।सोअपनेवशकरतमुरारी॥ कहँकृमिभसमसमलयहदेहू।कहँतियकहँआतमसुखगेहू॥असविचारिछाँड़ैअनुरागा।करैभक्तिहरिकीबड़भागा॥ बचैअन्नजोयज्ञकियेते।सोइखावैसुखमानिहियेते॥ १४ ॥सुरनरमुनिभूतनपितरनको । पूजेकरि [illegible]तसुमिरनको

दोहा–जोधनपावैधर्मते, ताहीतेमहिपाल । यथाशक्तिसतकारकरि, सेवैबुद्धिविशाल ॥ १५ ॥

होइजोयज्ञकरनअधिकारा । तौहरिकेहितकरैउदारा १६जसप्रसन्नहरिद्विजसुखहोवै।तसनहिंपावकमुखमुदमोवै तातेप्रथमविप्रपदपूजी । पूजाकरैदेवकीदूजी ॥१८॥ गुरुपितुमातुबंधुकीस्वक्षै । करैश्राद्धअश्विनवदिपक्षै ॥ १९ वरणहुँपुण्यकालअवराजा । सुनहुँसकलतुमसहितसमाजा ॥ उभैऐनजेदिनफिरिजाहीं ।दक्षिणउत्तररविचलिआह जेहिदिनतुलामेषसंक्रमना।जादिनव्यतीपातअघदमना ॥ जादिनग्रहणहोइशशिभानू।[illegible]

दोहा–श्रावणद्वादशभाद्रसित, ॥ २० ॥ अक्षैतृतीयासोइ । नवमीकार्तिकशुक्लकी, चारिअष्टकाहोइ ॥ २१

माघशुक्लसप्तमीसोहावनि । माघपूर्णिमासीअतिपावनि ॥ औरहुसकलपुण्यमाजेई । मासनक्षत्रपवित्रहितेई ॥ त्रयउत्तराश्रवणअनुराधा । होवैजबद्वादशिसुखसाधा ॥ अथवाएकादशिमहँभूपा । येसबहोहिंनक्षत्रअनूपा ॥ अथवाहोइजन्मनक्षत्रा । अथवाश्रवणहुहोइपवित्रा ॥ २३ ॥ येसबयोगपर्वकहवावैं । मनुजनकोकल्याणबढ़ावैं॥ इनपरबनमहँकियेसुकर्मा । सफलहोइआयुषयुतधर्मा ॥२४॥ देवविप्रपूजनअस्नाना । जपव्रतश्राद्धऔरसबदाना

दोहा–इनपरबनमहँजोकरै, श्रद्धासहितसुजान । सोसबअक्षैहोतहै, पावतफलहिमहान ॥ २५ ॥

औरहुपुण्यकालमैंकहहूं । तुम्हरेमंगलमेंअतिचहहूं ॥ नारिकोअपनेसुतकेरो । संस्कारजबहोइघनेरो ॥ जन्महोइजेहिदिवसकुमारा । सोऊपुण्यकालसुखसारा ॥ अरुजबहोवैपितरछयाहू । सोऊपुण्यकालअघदाहू ॥ अबमैंपुण्यदेशसबगाई । महापापहरदेहुसुनाई ॥ सोईपरमपुण्यहैदेशू ॥ जहाँमिलैसत्पात्रनरेशू ॥ २७ ॥ जहँयदुवरकीमूर्त्तिसुहाई । सोऊथलभलसबफलदाई ॥

दोहा–विद्यादयाविवेकयुत, जहँब्राह्मणकुलहोइ । तीरथसरिसपुनीतअति, सकलसुफलप्रदसोइ ॥ २८ ॥

जहँजहँहोइकृष्णकीपूजा।तेहियलसमहैऔरनदूजा॥गंगादिकसरिप्रथितपुराना।गमनतवसतनसतअघनाना॥२९ पुष्करादिजेपुण्यतड़ागा ॥ होततहाँगमनतबड़भागा ॥ जहाँसाधुजनवसतसदाहीं । तासमतीर्थऔरकहुँनाहीं॥ कुरुक्षेत्रअरुगयाप्रयागा । हरिहरक्षेत्रपुण्यअतिपागा ॥ ३० ॥ फाल्गुनसेतुबंधयमआसा । नैमिषारअरुक्षेत्रप्रभास॥ द्वारावतिमथुराअरुकासी । बिंदुसरपंपासरभासी ॥३१॥ जहाँअलकनंदाअतिभाई । ऐसोबदरीवनसुखदाई ॥

दोहा–चित्रकूटआदिकसबै, सीयरामकेधाम । मलयमहेंद्रकुलादिगिरि, येसबपूरणकाम ॥३२॥

सकलदेशयेअतिहिंपावन । गमनतनिवसतपापनशावन ॥ जोकोउचाहैनिजकल्याना । बसैसदाकीकरैपयाना ॥ करैधर्मजोइनमहँकोई । सोसबअविशिष्टहसगुनहोई ॥३३॥ पूजनदानपात्रकविगाये।जेजगमहँहरिदासकहाये॥३४ देवर्षिदुमसर्पिदुजेते । आपेआपयज्ञमहँतेते ॥ ब्रह्माशिवादिकहुसबआये । पैनअग्रपूजनकोउपाये ॥ [illegible]अग्रपूजनपदुगाई । तेहिदिनसबजगपूजापाई ॥ कृष्णकृष्णकेदासनमाहीं । भूपभेदकछुजानहुँनाहीं ॥ ३५ ॥

दोहा–सकलचराचरजेअहैं, नरब्रह्मांडहिमाहिं । कृष्णमूलकोसिंचनै, आपहितदासयाहिं ॥३६॥

[illegible]पिदुजेते । कृष्णविदासपानदेनेते ॥३७॥ तारतम्यकांगसबजगमाहीं । [illegible]

[illegible] ॥३८॥ [illegible]

[illegible] । [illegible] ॥ ३९ ॥

त्रेताते सबजनकरुराई । हरिपूजनलगेमनलाई ॥ जननद्रोहतजिजोहरिपूजै । सोफललहतनतोहिंसमदूजे ॥ ४० ॥

दोहा—तपविद्यासंतोषयुत, पढ़ैजोहरितनवेद । सोब्राह्मणसतपात्रहै, जानहुँभूपअखेद ॥ ४१ ॥
जेद्विजवरनिजपदरजहि, करतत्रिलोकपुनीत ॥ इष्टदेवतेकृष्णके, मानहुसत्यप्रतीत ॥ ४२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि
राजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे चतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

नारद उवाच ।

दोहा—कर्मनिष्ठकोउनिष्ठतप, कोऊनिष्ठस्वाध्याइ । यागयोगकोउनिष्ठद्विज, कोऊध्यानचितलाइ ॥ १ ॥

देवपितरकरमनचितलाई । ज्ञानिनभोजनदेइबुलाई ॥ जोनहिंमिलैविप्रवरज्ञानी । यथायोग्यदीजैद्विजजानी ॥२॥
देवकर्मद्वैद्विजनखवावै । पितरकर्ममेंतीनिबोलावै ॥ अथवाएकएकहोउकरमें । भोजनकरवावैयुतधरमें ॥
यद्यपिधनहुहोइअधिकाई । तदपिश्राद्धद्विजबहुनखवाई ॥ जैसीविधिथोरेमहँहोई।विशदकियेतसलहतनकोई ३॥
श्रद्धाविधियुतदेशहुकाला।पात्रहिदानदियेफलहाला॥४॥सबमहँहरिकहँगुनिमाहिपाला।क्षुधितहिअन्नदेयततकाला।
दोहा—देवनपितरनऋषिनको, देयअन्नजलदान ॥ हरिअर्पणकरिसुजनयुत, भोजनकरैसुजान ॥ ५॥ ६ ॥
आमिषश्राद्धमाहँनहिंदीजै । आपहुभोजनकबहुँनकीजै ॥ जेतोअन्नदेतसुखभारी । तेतोआमिषहैदुखकारी ॥ ७ ॥
भूपतिहिंसातजबसमाना । अहैनधर्मजगतमहँआना॥८॥कोउज्ञानीसबयज्ञनतेरो।गुनहिज्ञानकहँअधिकनिबेरे ॥९॥
यज्ञनिकरतछागबलिदेखी । डरहिंजीवसबनिर्दयलेखी ॥१०॥ तातेअन्नहिजेसबकाजा । श्रद्धासहितकरैमहराज॥
उपमाछलआभासविधर्मा । येचारहुँपाँचौपरधर्मा॥११॥येअधर्मकेशाखाजानै । इनकोकबहुँचित्तनहिंआनै ॥ १२॥
दोहा—हैविधर्मछोड़बधरम, परसिखयोपरधर्म ॥ करिपखंडजोकरतहै, सोउपमानृपधर्म ॥ १३ ॥
श्रुतिकोअर्थफेरिवोजोई । कहतसुकविसबछलहैसोई ॥ करैजोनिजमनकरिअनुमाना । जानहुँसोआभासमहाना ।
वेदविहितजोनिजनिजधर्मा । कहोदेतकाकोनहिंशर्मा ॥१४॥ धर्महेतअरुहितनिरवाहू । होइनअपनेधनजेहिकाहू॥
सोनिरवाहधर्मकेहेतू । करैनकबहूँधनकोनेतू ॥ अजगरसरिसरहैहरिध्यावै । कृपासिंधुतेहिसकलखवावै ॥ १५ ॥
जोसुखहोततोषउरलाये । सोनहिंमिलतलोभवशधाये॥१६॥होततोषकरिअभैमहाना ।लगैनकंटकरहैउपाना१७॥
दोहा—जोछोड्योसंतोषको, कीन्ह्योलोभमहान ॥ द्वारद्वारसोजागतो, भूखोश्वानसमान ॥ १८ ॥
जोसंतोषसदाउरल्यावै । ताकोशत्रुनकहूँदेखावै ॥ विप्रअसंतोषीजोहोई । तपविद्यायशडारतसोई ॥ १९ ॥
ताकोमनकरिचंचलताई । ज्ञानयोगसबदेतनशाई ॥ भोजनकीन्हेंभूखनशाई । पानकियेतिमिप्यासहुजाई ॥ २० ॥
क्षुधातृषातेकामनशाई । क्रोधानलरिपुमारिबुझाई ॥ जोतेहुदशदिशिभोगेहुभोगू । पैनहिंमिटतलोभप्रदसोगू ॥
अमितशास्त्रकेजाननवारे । संशयसकलविध्वंसनहारे ॥ पंडितश्रेष्ठसभासदमाहीं । असंतोषतेनरकहिजाहीं ॥२१॥
दोहा—कामहिजीतैजीतिमन, कामछोड़िपुनिक्रोध ॥ लोभहिकरिसंतोषको, भयजीतैकरिबोध ॥ २२ ॥
शोकमोहकोधारिविवेकू । मौनहिलौकिकबातअनेकू ॥ हिंसाजीतैदयामहाई । दंभहिकरिसज्जनसेवकाई ॥ २३ ॥
दुखजीतैसबतेंह्वैदीना । कर्महिजितैसमाधिहिलीना ॥ जीतिलेइकरियोगशरीरा। लघुभोजनकरिनींदगँभीरा॥२४॥
सद्गुणतेरजतमकहँजीतै । उपसमतेसततेपुनिरीतै ॥ गुरुकीभक्तिकियेमनलाई । येसबअनयासहिजितिजाई ॥२५॥
गुरुभगवानज्ञानकोदाता । सोगुरुनरसमजानिदेखाता ॥ ताकोपढ़बधर्मअरुज्ञाना।कुंजरमज्जनसरिसदेखाना ॥२६॥
दोहा—प्रकृतिपुरुषकेनाथहैं, येयदुपतिभगवान ॥ इनकेपदद्वैतरहैं, योगीनितधरिध्यान ॥ २७ ॥
तिनकोनरसबनरसमजानै । कोऊमित्रकोउशत्रुबखानै ॥ क्रियाधर्मइंद्रीसबजीत्यो । लोभमोह

रीरमिलेदरशाहीं । तातेकरैंमूढभ्रमकाहीं ॥ जिनकोहैनहिंआतमज्ञाना । तिनकोभ्रमज्ञानहुँअज्ञाना ॥ ६
महिंजागवसोउब । अहैसकलभ्रमदुखसुखजोउब ॥ भावद्वैतक्रियाअद्वैता । अरुमनकरनद्रव्यअ ॥
गुनततीनिभ्रमजाहीं । ब्रह्मरूपजियगुनैसदाहीं ॥ कारणकारजजोयकभावै । सोईभावअद्वैतकहा ॥

हा-मनवचतनकेकर्मसब, देहिजोप्रभुहिचढ़ाय ॥ सोइक्रियाअद्वैतहै, यहजानहुँनृपराय ॥ ६४ ॥

ड्रिसब्जनसममानै । तेहिबुधद्रव्याद्वैतबखानै ॥ ६५॥ जातेजोअद्वैतबतायो । तेहिगुनिकरैकर्मचितचाय
गेईऔरवपाई । जामेंयहसंसृतिरहिजाई ॥ ६६ ॥ यहजोमैंसिगरीविधिगाई ! औरहुवेदविहितविधिभा
हस्थवसतगृहमाहीं । होइभक्तिसंशयकछुनाहीं ॥अवशिछूटिजातोसंसारा ।वसिवैकुंठलहतसुखसारा ॥६
दुपतिपदकरिसेवकाई । दुसहविपतितुमदियोनसाई॥करिदिग्विजयभूपबड़भागा।कीन्ह्योराजसूयबडयागा

हा-तेहियदुपतिपदकमलके, सेवनतेकुरुराइ ॥ यहअपारसंसारते, पैहौपारसुभाइ ॥ ६८ ॥

ळयकेअंतहिकाला । हमगंधर्वभयेमहिपाला ॥ रह्योमोरउपबर्हणनामा । सबगंधर्वनमेंशिरनामा ॥ ६९
दरसुखमाधुरबैना । देतरह्योंसबनारिनचैना॥फैलतरहीश्वासशुभवासा । लंपटअतिशयनिरतविलासा ॥७
मयवासवकेयागा।हरियशगावनहितबडभागा॥सकलप्रजापतिमोहिंबुलाये।सोसुनिमैंअतिशयसुखपाये ॥७
वसुंदरीसमाजा । चल्योनचनगावनसजिसाजा । यहिविधिजबपहुँच्योतहँजाई।तबहिंप्रजापतिकोपाहिछाई

हा-मोहिंमहामदमत्तगुनि, दियोशापअतिघोर ॥ शूद्रहोहुसोभारहित, मानभंगकियमोर ॥ ७२ ॥

वेप्रनकेगृहमाहीं । दासीपुत्रभयोसुखनाहीं ॥ पैकरिसज्जनकेसतसंगा । भयोब्रह्मकोपुत्रअभंगा ॥ ७३ ॥
योंतुमसोंयहपावन । धर्मगृहस्थनपापनशावन ॥ करिगृहस्थयेधर्मसदाहीं । योगीसमहरिपुरकहँजाहीं॥७४
हौजगमेंबडभागी।आवतजिनकेभौनाविरागी॥जिनगृहानितनिवसहिंयदुराई।जिनकीभागवराणिकिमिजाई७५
निरवारप्रदाता । सोजहिंजासुचरणमुनित्राता ॥ सोमातुलसुतअहैतुम्हारे । सखामित्रगुरुप्राणपियां

हा-धन्यधन्यहौधन्यतुम, पांचहुपांडुकुमार ॥ जिनकेसँगविचरतरहैं, नितप्रतिनंदकुमार ॥ ७६ ॥

गकैलासीकरतारा । कहिनसकहिंजोहिरूपअपारा ॥ करिकेभक्तिकरैपदवंदन । तबप्रसन्नहोवैंयदुनंदन ॥७७

श्रीशुक उवाच ।

नारदकेवचनसुहाये । धर्मभूपअतिआनँदपाये ॥ नारदकोपूजननृपकीन्ह्यों । चरणपखारिसलिलशिरलीन्ह्यों
यदुपतिकोपूजनकरिकै । विह्वलभयेप्रेमउरभरिकै ॥७८॥ धर्मभूपसोंपूजनपाई । नारदतिनसोंमाँगिविदाई
दनकोकरिपरणामा।मुनिमोदितगमनेनिजधामा॥परब्रह्मसुनिकृष्णाहिकाहीं।विस्मितभेभूपतिमनमाहीं ॥

दोहा-वंशपृथकदाक्षायणी, मैंवरण्योकुरुराय । देवअसुरमनुजादिगण, यहिमेंप्रकटतजाय ॥
निधिनभनिधिशशिसंवतै, भाद्रमासरविवार । सतयोंयहअसकंधको, सितछठिभोअवतार ॥ ८० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे पंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

दोहा-महाराजरघुराजकृत, शुभसतमअसकंध । यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध ॥

समाप्तोऽयं सप्तमस्कंधः ७.

इति

श्रीमद्भागवत–आनन्दाम्बुनिधि

सप्तमस्कन्ध समाप्त ७.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–बम्बई.

अष्टम स्कन्ध.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीमद्भागवत-आनन्दाम्बुनिधि ।

अष्टमस्कंधः ।

दोहा-जययदुवरजयरुक्मिणी, जयराधाव्रजचंद ॥ शरणागतपालकप्रबल, जयसीतारघुनंद ॥
जयमुकुंदहरिगुरुचरण, जयसरस्वतिगणनाथ ॥ जयतिव्यासशुकदेवजय, जयश्रीपितुविश्वनाथ ॥
भाषाआनँदअंबुनिधि, यहअष्टमअसकंध ॥ रचहुँयथामतिमेंसुखद, श्रीभागवतप्रबंध ॥
सुनिनृसिंहकोचरितवर, अरुवर्णाश्रमधर्म ॥ फेरिप्रश्नकीन्ह्योनृपति, जोदायकअतिशर्म ॥

राजोवाच ।

दोहा-स्वायंभूमनुवंशको, सुन्योसहितविस्तार ॥ हैमरीचिआदिकनको, जामेंवंशप्रचार ॥
अबऔरहुमन्वंतरगावो । मोहिंकरणहैअमीपियावो ॥१॥ जेहिंजेहिंमन्वंतरमहँनाथा । होहिंजन्मकर्महुयदुना
जिनकोकविकोविदनितगामैं । तिनकोवरानिदेहुमुदधामै॥२॥जेहिंमन्वंतरजोशुभकर्मा । कियोकरतकरिहैंजे
पृथकपृथकतिनकोमुनिराई । मोकोतुमसबदेहुसुनाई॥३॥सुनतपरीक्षितवचनसुहाये।कहनलगेश्रीशुकसुखध

श्रीशुक उवाच ।

यहिकल्पहिमहँसुनुनृपराई । षटमन्वंतरगयेसिराई ॥ इनमेंआदिकह्योतुमपाहीं । स्वायंभूमन्वंतरकाहीं ॥
दोहा-तेहिमन्वंतरमेंसकल, देवादिकउत्पत्ति ॥ तुमसोंमैंवरणनकियो, संयुतसबवितपत्ति ॥ ४ ॥
स्वायंभूमनुकेद्वैकन्या । होतभईत्रिभुवनमेंधन्या ॥ भेअकूतिकेयज्ञमुरारी । देवहुतीकेकपिलसुखारी ॥
यज्ञकियोधर्महिउपदेशू।कपिलकियोवरज्ञाननिदेशू॥५॥कपिलचरितपहिलेमैंगायो।सुनहुयज्ञकोचरितसुहायो
शतरूपापतिस्वायंभूमनु । राजछोडिनारीयुतगेवनु ॥७॥ जायअलकनंदातटमाहीं । यकपदपरसितहाँमहिका
शतवरपहिलोंमनुतपकीन्ह्यों । श्रीपतिकीयहअस्तुतिकीन्ह्यों ॥ ८ ॥

मनुरुवाच ।

जौनविश्वकोचेतनकरतो । जेहिंनविश्वचेतनताभरतो ॥
दोहा-जोयहजगकेसोवतहुँ, जागतरहैसदाहिं । सोयहजगकोजानतो, तेहिंजगजानतनाहिं ॥ ९ ॥
यहजगकेजड़चेतनमाहीं । परमात्माव्यापितसबपाहीं॥जेहिपरतंत्रसकलजगअहई।जाहिस्वतंत्रवेदसबकहई ॥१
निरखतसोतेहिंलखतनकोई । जाकोज्ञाननाशनहिंहोई ॥ सर्वभूतकोअहैअधारा । सोहरिदेवसत्यसुखसारा॥ १
जासुआदिमधिअंतहुनाहीं । जोसमरहतमहतत्त्वघुमाहीं॥जाकोहैनहिंबाहरभीतर।उतपतिथितिलयजातेजगक
उपादानओहैअविकारी । सोइमहानवरगुणीमुरारी ॥ १२ ॥ सर्वशब्दजामेंलगिजावें । विश्वरूपहैइशकहो
दोहा-सत्यस्वयंपरकाशअज, यदुपतिपुरुपपुरान । मायाशक्तिहितेकरें, जगजन्मादिमहान ॥
ज्ञानशक्तितेतजिसोमाया।रहैंजीवइवनहिंयदुराया॥१३॥प्रथमकरेंसुखहितऋपिकर्मा।कर्महिकरतहोतहतकर्मा
हरिकरिकर्मलिप्तनहिंहोवें । आत्मलाभपूरणनिजजोवें॥१५॥ऐसेहरिकोजोनितवंदत । ताकोयमकबहूँनहिंदंड
जनप्रेरककर्महिअनुसारा । सर्वज्ञहुअरुनिरहंकारा ॥ पूर्णस्वतंत्रनहैकछुआसा । निजदासनकोदेतहुलासा
दीननअहैउधारनरीती । पालकसकलधर्मपरतीती ॥ ऐसेकृष्णचंद्रसुखदाई । तिनकेपदवंदौंशिरनाई ॥ १६

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-तिययुतमनुमहराजको, भनतमंत्रयहदेखि । असुरसबैतेहिखानको, दौरेक्षुधितविशेखि ॥ १७ ॥
तिनहिंविलोकियज्ञभगवाना।लैसँगजामसुरनबलवाना॥आशुहिमारिअसुरअतिघोरा।स्वर्गलोकपाल्योचहुँओरा

दुसरोमनुस्वारोचिषजानो।अग्नितनयताकोअनुमानो॥रोचिष्मतअरुद्युमतसुषेना।नृपतिनसुतनमाहिंवलऐना॥१९॥
तेहिमन्वंतरमहँनृपराई । रोचनइंद्रभयेसुरराई ॥ तुषितआदितहँभेअसुरारी । तहाँसप्तऋषिब्रह्मविचारी ॥
ऊर्जस्तंभादिकभेतेई । ज्ञानीविज्ञानीहरिसेई ॥२०॥ वेदशिराऋषिकेसुखकारी । तुषितानामभईवरनारी ॥

दोहा—ताकेभेश्रीकृष्णसुत, विभुयहजाहिरनाम ॥२१॥ तेहिव्रतअट्ठासीसहस, मुनिसीख्योव्रतधाम॥२२॥

तिसरोमनुप्रियव्रतसुतजोई । उत्तमनामकहायोसोई॥यज्ञहोत्रसृंजयपवनादिक । तिनकेसुतपेभेअहलादिक ॥२३॥
तहँसत्तापवसिष्ठकुमारा । भेप्रमदादिकपरमउदारा ॥ सत्यवेदश्रुतभद्रादेवा । भयेसत्याजितइंद्रसुभेवा ॥ २४ ॥
धर्मतियासूनृतासोहाई । ताकेसत्यसेनयदुराई ॥ भयेसत्यव्रतदेवनसंगे । वासवकेहँसखाअभंगे ॥ २५ ॥
तेअसत्यवादिनदुःशीलन । करतरहेजेप्राणिद्रोहपन ॥ ऐसेयक्षराक्षसनघोरा । औरहुभूतनहन्योकरोरा ॥ २६ ॥

दोहा—चौथोउत्तमअनुजमनु, तामसजाकोनाम । पृथुनरख्यातिहुआदितेहिं, दशसुतभेअभिराम ॥ २७ ॥

तहँसुरवीरसत्यहरिनामा।त्रिशिखइंद्रभोगुणअभिरामा॥ज्योतिधर्मआदिकहुतहाँहीं।भयेसप्तऋषितामसमाहीं २८॥
भयेविधृतसुतवैधृतनामा।नष्टवेदउद्धर्‍योललामा ॥२९॥ तेहिंमन्वंतरमहँहरिमेधा । भयोप्रजापतिअतिशुभमेधा ॥
ताकेहरिनीनामकनारी । तातेप्रगटेहरिगिरिधारी॥ग्राहग्रसितजोगजहिछोड़ायो। अतिकरुणाकरविरुदबढ़ायो३०॥
यहसुनिकुरुपतिअतिहरपाई । बोलेमुनिपतिसोंमनलाई ॥

राजोवाच ।

सुनहुवादरायणमुनिनाथा । मोहिंसुनावहुयहहरिगाथा ॥

दोहा—जेहिविधिग्राहग्रस्योगजहिं, सुनिगजगिरागोविंद । चक्रनकहनिचक्रसों, तुरतहिंकाट्योफंद ॥ ३१ ॥
सोईधन्यसोइपुण्यप्रद, सोईशुभसुखधाम । जासुकथामहँहरिचरित, वर्णनहोइललाम ॥ ३२ ॥

सूत उवाच ।

शुक [illegible] कहनलग्योमतिधीर ॥ ३३ ॥

इति [illegible]

श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृत

अष्टमस्कंधे आनंदांबुनिधौ प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

शुक उवाच ।

दोहा—गिरिवररह्योत्रिकूटइक, क्षीरसिंधुकेबीच । चालिससहसकोसको, उन्नतगगननगीच ॥ १ ॥

रहौतासुतेतौचौड़ाई । तीनिशृंगतहँरहेसोहाई ॥ कनकरजतआयसकेभावत । दिशनक्षीरनिधिनभछविछावत॥२॥
औरहुरत्नधातुकेशृंगा । अतिविचित्रसोहतेअभंगा ॥ लतागुल्मद्रुमसोहतनाना । झरननकोतहँशोरमहाना ॥ ३ ॥
पनिधितरटतरंगहजारन । तासुचरणसींचहिंबहुवारन॥हरितमणिनकीछविछहराई।करतभूमिकोश्यामवनाई ॥४॥
विद्याधरचारणगंधर्वा । सिद्धमहोरगकिन्नरसर्वा ॥ सहितअप्सरनसजेशृंगारा । तासुकंदरनकरहिंविहारा ॥ ५ ॥

दोहा—नादसुनतसंगीतको, गुनिगजंनिमृगराज । अतिअमर्षसोंयुद्ध [illegible] हसिहसमान ॥ ६ ॥

[illegible] हिविहंगललापा ॥७॥
तहँअरण्यपशुसोहतनाना । श्रोणिनयुतगिरिलसमहाना॥ [illegible] न [illegible] हतहाँसुरनारी ॥
सरितसरोवरनिर्मलनीरा । मणिवालुकसोहहितिनतीरा [illegible] नि ॥
सुरभितासुमिलिमंदसमीरा॥८ [illegible] ससारा १०
सुरवानितातहँकरहिंविहारा॥९॥ [illegible] ॥
दोहा—पनसाम्रियालरसालबहु, अरुणा [illegible] ती॥१२॥
रुशालतमालहुताला । विनसारन [illegible]

कोविदारसरलोपिचुमंदा । देवदारुअरुदाखअमंदा ॥ इक्षुजंबुरंभाबदरीतहँ । अक्षहरीतभगवा
बिल्वकपित्थऔरजंभीरा । भल्लातकआदिकद्रुमभीरा ॥ जाकोरजतशृंगइकजोईयी
दूजोकनकशृंगपरभाको । सेवनकरहिंदिवाकरताको ॥ तीजेशृंगमाँहनृपराई । त्र
दोहा–क्रूरकृतघ्नोनास्तिको, अरुपापीतपहीन ॥ तिनकोगिरिनहिंलखिपरे, जेदु
तामेंयकसररह्योअनूपा । कनककमलफूलतसुनुभूपा॥१४॥उत्पलकुमुदऔरकहल
मत्तमलिंदभरहिंगुंजारा । कलरवकरहिंविहंगअपारा ॥ १५ ॥ सारसचक्रवाकअरुहंस
औरहुजलविहंगचहुँओरा।करहिंमनोहरमोदितशोरा॥१६॥करहिंमच्छकच्छपसंचारा
वेत्रकदंबपनसअरुनीपा । वंजुलकुंदकुरवअवनीपा॥१७॥इंगुदकुटजासिरीपअशोका । कु
दोहा–सतपत्रकअरुमल्लिका, जातिनागपुन्नाग ॥ १८ ॥ लतामाधवीजालिका, सोहहिंस
षटऋतुतहँनितकरहिंनिवासा।लसैसरोवरपरमप्रकासा१९एकसमयतहँसहितसमाजा । गजनस ॥
कंटकवसनवेत्रउखारत । विहरतवनबहुविटपविदारत ॥ २० ॥ जाकेमदकोगंधहिपाई । दूरिभ्रुासुखदव
सिंहगजेंद्रव्याघ्रअरुव्याला।मृगामहोरगशरभकराला॥खड्गचमरीअसितहुगोरा॥२१॥वृकवराहमहिषपहिपीरा
शालावृकमर्कटगोपुच्छा । औरहुशशशल्लकअरुऋच्छा॥जासुकृपालहिवसैतहाँई।जासुकोपलहिजाय
दोहा–सोगजपतिविहरततहाँ, लहिग्रीषमकोघाम ॥ कारिणीकलभनसहितअति, तृषितभयोतेहिठाम
अतिआतुरसरवरकोधायो । धरतडगनिमहिशैलकँपायो॥गुंजतभृंगसंगतेहिंलागे।करिणीकलभचलेअनुरागे
कंजपरागसुगंधसमीरा । ताकोलहतगयोसरतीरा॥निजसमाजयुतपरमपियासो । मदघूमितदृगसहितप्रयासो
हिल्योसरोवरमहँगजराजा।जहँविकसितअंबुजगणभ्राजा॥कंजसुगंधितनिर्मलनीरा।पानकियोमेटयोश्रमपीरा
लैशीतलजलशुंडहिमाहीं । मज्जनकीन्ह्योमुदिततहाँहीं॥निजसुतवनितनकहँनहवायो । जिमिगृहस्थगंगामेंअ
दोहा–सबकोपानकराइजल, कीन्ह्योविपुलविहार ॥ गुन्योनहरिमायावशै, निजदुखहोवनहार ॥ २६ ॥
तहँदैववशहेमहराजा । आयोएकग्राहबलभ्राजा ॥ ग्रस्योचरणगजराजहिकेरो । कियोजोरकरिकोपघनेरो ॥
गजहुजानिनिजकालकराला।कियोछुटनकोजोरविशाला।ग्राहग्रसितगजराजविलोकी।भयेकलभकरिणीअति
सकेनतेहिंछोडाइकरिजोरा।करनलगेतवआरतशोरा २७-२८ खैंचततहांग्राहगजराजै।गजहुताहिखैंचतअति
गजग्राहहिलैआवततीरा । ग्राहहुगजहिंनीरगंभीरा ॥ युद्धकरतगेवर्षहजारा । सुरसवपरमआचर्जविचारा ॥
दोहा–महायुद्धकरियोंतहाँ, थाकिगयोगजराज ॥ ग्राहखैंचिकैलैचल्यो, करिबलभक्षणकाज ॥ ३० ॥
यहिविधिगजकोजवपरयो, संकटपरमकठोर ॥ तबयहमतिकीन्ह्योविमल, जबनचल्योकछुजोर ॥
येगजगजीनमोहिंअव, दुखसोसकैंछोडाइ ॥ प्रबलग्राहमोकोग्रस्यो, रक्षकप्रभुदरशाइ ॥
तातेमैंअवअवशिकै, सुमिरहुँजोजगनाथ ॥ दीनबंधुगोविंदवै, हैंअनाथकेनाथ ॥ ३२ ॥
धावतकालकरालते, जेरक्षतनिजदास ॥ जेहिंडरमृत्युग्रसैसवै, करहुताहिकीआस ॥ ३३ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहत्मजासिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिमनहिविचारिकै, हियधरिहरिकोध्यान ॥ कियअस्तुतिश्रीकृष्णकी, भयोपूर्वकोभान ॥

गजेंद्र उवाच ।

छंदगीतिका–प्रणमामितेहिंभगवानकोजेहितेचिदात्मकजगतहै।प्रभुआदिकारणपुरुषईशहुईशजोदुखदरतहै
जेहिमेंजगतयहलीनजातेहोतजातपलतहै । जोजगवपुपजडजीवपरजोहिस्वतंत्रहिचलतहै ॥ २ ॥

गिरिनजाहि नेकोजानआ ककारणसहि नातमुक्तिप ग्रानहिंजाहि

आनन्दाम्बुनिधि।

दुसरोमनुस्वारोचिपजानो।

तेहिमन्वंतरमहँनृपराई । रेमैंलयकरहिंगोपितप्रगटऊ । जगकार्य्यकारणरूपयोतेहिलसतसाक्षीनिपटऊ ॥
उर्जस्तंभादिकभेतेई । ज्ञानीविशुहिआत्मकारणविमलहें ॥ ४ ॥ जेपरहुतेपरहोहिरक्षणकरहिंतिनपदकमलहें ॥

दोहा—ताकेभेश्रीकृष्णसुसबलोकलोकपनाशभे । तबगहनअतिगंभीरतमरहिगयोकोउनप्रकाशभे ॥

तिसरोमनुप्रियव्रतसुतजोई । उररहतसहितविकाशहे । ऐसेसमयविभुताहिकोसबभाँतितेमोहिआशहे ॥ ५ ॥
तहँसप्तपिंवसिष्ठकुमारा । भेप्रारूपहिऔरकेहिविधिजानई । नटइवभुलावतसकलजगसोइमोररक्षणठानई ॥ ६ ॥
धर्मतियासूनृतासोहाई । ताकोतजिसाधुसबजगसंगको । समसुहृदवनवसिजेहिकेररतिसोकरैदुखभंगको ॥ ७ ॥
तेअसत्यवादिनदुःशीलन । तमहुगुणहुनामहुधामहे । पेभक्तरक्षणहेतप्रगटतकृपाकरिप्रदकामहें ॥ ८ ॥

दोहा—चौथेउत्तमशजयतिअनंतशक्तिकृपालजे । जयदिव्यमंगलरूपजयबहुरूपकर्मविशालजे ॥ ९ ॥

तहँशुरवीरसत्यहरिनामदीपजयजगसाक्षिलोकनपालजे।मनवचनाचित्तअगम्य-॥१०॥-जयपरभक्तिलभ्यउतालजे ।
भयेविधृतसुतवैधृत्स्वरूपजयकैवल्यनाथउदारजे ॥ ११ ॥ जयत्रिगुणआश्रयनिर्विशेषविज्ञानकेअगारजे ॥ १२ ।
ताकेहरिनीनामतिवपुक्षेत्रज्ञसर्वअधीशसाक्षीलोकके । जयमूलप्रकृतिसुपुरुपआतममूलप्रभुसरथोकके ॥ १३ ॥
यहसुनिकुरुपालिकइंद्रियनकेजयहेतवरविज्ञानके । जयवासनातेरहितसहितप्रकाशजयसतध्यानके ॥ १४ ॥

अखिलकारणरहितकारणअदभुतैकारणहुजे । जयशास्त्रश्रुतिगणरत्नसागरमोक्षेककारणहुजे ॥

सुनहुवादनकुंठपतिजे-॥१५॥-प्रकृतियुतजीवनहिंकेधारकनमो।चेतनहुजडक्षोभनसमैभासितसुसंकल्पहिनमो॥१६।

दोहा पशुपासमोसमदासकोअनयासमोचकप्रभुनमो । विभुविकृतिपरकरुणायतनअविनाशिव्यापकसतिनमो ।
निजअंशजीवांतरबसतभोसितसदाभगवतनमो ॥ १७ ॥ सुतबंधुतियगृहवित्तअनुरतजननकोंदुर्लभनमो।
शब्दादिगुणआसक्तनहिंसज्जनहृदयभावितनमो । ज्ञानात्मश्रीभगवानईश्वरपुरुपपरिपूरणनमो ॥
विरचतहरतपालतजगतअनुरतनतेहिविलसतनमो।अघहरतनिजजनदुखदरतबहुवपुधरतनिजरतनमो १
गतिधर्मअर्थनिकामहितजेभजतपावतआशुते ॥१९
जेहिचरितगावतपरमपावनमोदसागरमगनहै ।२०॥
सोइब्रह्मपरपरईशनित्यअगम्यसूक्ष्मआदिहैं । २१ ॥
लघुअंशजेहिंब्रह्मादिसुरअरुवेदलोकचराचरे ।
जिमिअगिनिरवितेतेजनिकसिविलाततेहिंबहुबारहे । तिमिविश्वजातेप्रगटितेहिंमहँदुरतजगतअधारहै२३
सोनहिंअसुरसुरनरहुतिर्यकनारिक्कीबनकर्महे । नाहिंगुणहुजीवहुजडहुहैसोशेपमयसबधर्महे ॥ २४ ॥
मैंजियनकोनहिंचाहतोयहनागयोनिअपावनी । अभिलापमेरेमुक्तिकीजोजननमरननशावनी ॥ २५ ॥
प्रभुविश्वकरविश्वहिविलक्षणविश्वपतिविश्वातमा । अजपरब्रह्महिपरमपदप्रणमामिमैंहेनिधिक्षमा ॥ २६
वरयोगनिर्मलचित्तयोगीजाहिनिजहियदेखहीं । योगेशतिनकेचरणकोप्रणमामिवारअलेखहीं ॥ २७ ॥
जिनकीअनंतनशक्तिअविहतअखिलमतिप्रेरकअहे । विपयीनदुर्लभदासपालकआशुमोउधरनचहे ॥२८

दोहा—अहंबुद्धिजेहिशक्तिते, आत्महिलखेनकोय । महिमाजासुअपारहै, सोरक्षकममहोय ॥ २९ ॥

उवाच ।

दोहा—सोरक्ष ... , जोयहिविधि ... निर्व्विनिपुकारिके, जबयहिविधिगजरोय ॥

॥तबप्रभुदयासिंधुगिरिधारी।नाममणितगुणनिजहिविच
तहँवि ... दुखदीनदयाला।प्रगटभयेतहँअतिहिउताला॥३०
सकल ... मनअथोरा । अस्तुतिकरहिंविरचिहुँओरा ॥
गजपरमदुखारी।निरखिनाथनभआयुधधारी

दोहा–लैअंबुजकरऊँचकरि, तबकरिकह्योपुकारि ॥ जयनारायणअखिलगुरु, जयभगवा
देखिदुखीनिजदासको, उतरिगरुड़तेनाथ ॥ ऐंचिलियोजलतेद्रुते, गहिहाथी
गहेतासुपदग्राहहू, जलतेकढ्योकराल ॥ गजाहिछोड़ायोचक्रते, फारिग्रा
निरखिसबैसुरहरषिकै, वर्षेसुमनअपार ॥ कह्योसबैकोतुमहिसम,
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावान्धवेशविश्वनाथ
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपा
आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कन्धे

हरिनिजकै ... ज्ञानजो ... अज्ञानहिजासु ... कारणताहि ... मानवन्धतेपरे ... जन्मब ... ज्योतिपरे

श्रीशु

दोहा–तहँब्रह्माशिवआदिसुर, अरुसुरपिगंध ... बहु, वरणहिंहरियशसर्व ॥
बाजहिंनभमहँदिव्यनगारे । गानकरहिंगंधर्व ... अप्सरासुहाई । ...
ऋषिचारणअरुसिद्धसुरेशा।हरिकीअस्तु ...
हरिकोकरिबहुवारप्रणामा । गावत ... हिद
करिप्रदक्षिणापुनिपरणामा । ...धामा ॥ ५ ॥ रह्योप्रथमहूहूगंधर्वा । ...
दोहा–तातेपायोग्राहतन, हरिताकोवधकीन । तातेविमलस्वरूपलहि, सुरनलखतगतिलीन ॥
हरिकरपरसलहतगजराजू । भोविनाशअज्ञानसमाजू ॥ भगवतरूपपीतपटधारी । चारिभु ...
केशवधामगयोअतिआसू । कियोकृपाअतिरमानिवासू ॥ ६ ॥ पूर्वजन्मकीसुनहुनरेशा । ...
इन्द्रद्युम्नरह्योयहनामा । केशवव्रतधारकछविधामा ॥ रहैकरतपूजनइककाला । ...
तपसवेिपजटाशिरसोहै । मज्जनकियेछोड़िमदमोहै ॥७॥ ... पूजनकरतरह्य ...
दोहा–मुनिअगस्त्यतहँऔचकै, आयेशिष्यसमेतु । तिनहिंनिरखिनहिंउठतभो, मौनरह्योनृपकेतु ॥
बैठइकांतभूपमुनिदेखी । कीन्ह्योपरमकोपशठलेखी ॥९॥ अहैअसाधुदुष्टमतिक्रूरा । ...
गजसमबैठिरह्योथिरछोनी । तातेलहैगजहिकीयोनी ॥ १० ॥

शुक उवाच ।

...
गजकीयोनिलह्योदुखदाई।हरिप्रभावसुधिरहीबनाई१२यहिविधिहरिगजराजउधार्यो । ...
सिद्धगंधर्वविबुधयशगाये । हरिकेचरणनचित्तलगाये ॥
दोहा–गजअरुग्राहउधारकरि, यहिविधिश्रीगोविंद । गमनकियेबैकुंठको, देतसुरनमुदवृंद ॥ १३ ॥
...
जोकोउसुनतभूपचितलाई । ताकोकलिकल्मषनशिजाई ॥ जियतमाहँजगमेंयशछावै । ...
अशुभस्वप्नकोफलनहिंहोवै ...
पाठगजेंद्रमोक्षसुखगावै।ताकोअशुभस्वप्ननशिजावै॥१६॥सबकेसुनतभूपचितचायो।असगजेंद्रसोमाधवगायो

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा–जोमोहितोहियहशैलसर, कंदरकाननकुंज । वेतवंशगिरिशृंगसब, सुरपादपमनरंज ॥ १७ ॥
ब्रह्मशम्भुममअयनललामा।क्षीरसमुद्रमोरप्रियधामा॥श्वेतद्वीपवरविमलविकाशा१...
मालाकौमोदकीगदाको । चक्रसुदर्शनमोरसहाको ॥ पांचजन्यगरुडहिसगराई ॥१९॥
ब्रह्मानारदभदअहलादा।अरुममभक्तशम्भुप्रहलादा॥२०...

सोलघुमानिशक्रमदछायो । ऐरावतकुंभनिपहिरायो ॥ ऐरावतलैशुंडहिधारी । चरणचापिचूरणकैडारी ॥
देखतमुनिकोभयोप्रकोपा । ज्वलितहुताशनमनुघृततोपा ॥ दीन्ह्योशापजबैदुर्वासा । तुवत्रिलोकश्रीहोइविन
दोहा–वासवत्रिभुवनसहिततब, भयेविभूतिविहीन ॥ यज्ञादिकसिगरीक्रिया, आशुहिभईविलीन ॥ १६ ॥
सोलखिइंद्रादिकदुखपागे । ज्ञुरिसबमंत्रकरनतहँलागे ॥ पाईनहिंश्रीलाभउपाई । तबसिगरेसुरअतिदुखछाई ॥
शिरसुमेरब्रह्माढिगजाई।करिनतिविधिकोविनयसुनाई१८विनातेजविनबलातिनदेखी।बलप्रतापयुतअसुरनलेखी
करिएकाग्रमनकृष्णहिंध्याई।कह्योसुरनसोंविधिहरपाई२०हमतुमशिवअरुसबअसुरारी।नरतिर्यकतरुजेजिय
जेहिंअवतारकलानिअंशते।उत्पतिहैंश्रुतिगनप्रशंसते॥तिनकेशरणहोवअबलायक।रक्षणकरिहैंत्रिभुवननायक
दोहा–यदपिनातिनकोवध्यकोउ, नहिंरक्षणकेयोग ॥ त्यागनयोगनआदरैं, योगसुनहुँसुरलोग ॥
तदपिनाशसृजपालनहेतू।त्रिगुणधरतश्रीरमानिकेतू॥२२॥तिनकोपालनकोयहकाला।जानहुसत्यसकलदिगपा
तातेहरिकेशरणसिधारी । लेहुआपनोसकलसुधारी ॥ जगन्नाथहैदेवनप्यारे । देहिनकेदुखनाशनहारे ॥
यहिविधिकहिविधिदेवनकाहीं।लैतिनकोअपनेसँगमाहीं॥गयेअजितकृष्णहिकेधामा।जोप्रकृतिहिपरअतिअभि
धर्‍योअजितअवतारमुरारी । प्रथमसुन्योयहसबअसुरारी ॥ लख्योनताकोरूपअनूपा । करिइंद्रीनिश्चलसुनु
दोहा–करनलगेअस्तुतितहाँ, ब्रह्मासुरनसमेत ॥ अमलउपनिषदवाणिते, प्रगटनकृपानिकेत ॥ २४ ॥

ब्रह्मोवाच ।

गीतिकाछंद–अविकारसत्यअनंतआदिहुसकलअंतरगतअहै । प्राकृतशरीरहिरहितमनवचनैअगोचरदुखदहै
नहितर्कणाकेयोग्यसुरगणश्रेष्ठसबजनचाहके । ऐसेसुहरिकेचरणवंदनकरहुलोकपनाहके ॥ २६
बुधिप्राणआतमइंद्रियनकेसाक्षिशक्तिनसहितजो । अरुविषयइंद्रिनकेप्रकाशकत्रयअवस्थारहित
कहुँरागद्वेषनपुरुषज्ञानअज्ञानपक्षनजासुमें । व्यापितगगनसमषट्गुणनयुतकरहुँवंदनतासुमें ॥
जेहिपंचप्राणदशेंद्रिआरात्रिगुणनाभिविराजहीं । अरुपंचभूतहुप्रकृतिमहदहंकारधारसुभ्राजहीं ॥
भवचक्रइमिचंचलमनोमयईशमायारचितजो।तेहिंअक्षप्रभुकीशरणनमेंनहिंविवशमायाअचित
जोएकरूपहितमसपराविपयिनविलोकनदुर्लभै । रागादिदोषनरहितनिरुपमधाममुक्तबसैअभै ॥
असधाममेंजोलसतनितजेहिंयोगियोगनध्यावहीं।तेहिसत्यपरमप्रकाशचरणनसुरनयुतशिरनाव
नहिंतरतकोऊजासुमायाकरतिहैमोहितजनै । परमार्थपुरुषनजानतोसोउजितेजोजियजडगुनै ।
सबभूतविचरतसमयजोअजईशकोजोईशहै । तेहिंवारवारप्रणाममैंकरतोचरणपरिशीशहै ॥ ३०
येहमसकलसुरऋषिसकलजेहिंसत्त्वप्रियतनतेभये । अंतरबाहिरकोज्ञानजिनकोज्ञानविज्ञानहिम
तेउजासुसूक्षमगतिनजानहिंकृपाजाकीचाहहीं । तेहिपरब्रह्मप्रकाशहरिपदप्रणतिकरहिंउछाहहीं
दोहा–जिनकोसुरछुनजानहीं, मायाहिरहतभुलान ॥ असुरादिककिमिजानहीं, जेरजतमहिंप्रधान ॥ ३१
गीतिकाछंद–जामेंचतुर्विधिभूतनिजकृतधरणिजाकोचरनहै । सोमहापुरुषविज्ञानमयपरतंत्रनहिजगभरनहै ।
करुणाअपारउदारअतिनिजदासकरतटपारहै । सोब्रह्मपरमविभूतिदोषप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ३२
सबलोकलोकनपालजेहितेजनतजीवतबढ़तहैं । सोअंशुमालिजवानजाकोशंप्यमुनिगणपढ़तहैं ॥
जाकेचरणकोध्याइजगजनलहतमोदनगारहै । सोब्रह्मपरमविभूतिदोषप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ३३
सबभजनकोजोधृद्धिकारकतरुनकोजोईशहै । सबसुरनकोबलअन्नआयुपमंदारजनीशहै ॥
सोचंद्रजाकोजहैमानसतनसतगुनउदारहै । सोब्रह्मपरमविभूतिदोषप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ३४ ॥
जोकर्मकांडनिमित्तप्रगटयोजन्योजातेकनकहै । सोउदरमपितामिकरनअन्नादिपचनआनंदजनक
सोअनलजाकोअहैआननआतुतेजनपारहै । सोब्रह्मपरमविभूतिदोषप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ३५ ।
सबजनमनमननहारिखदनजोमुक्तिकोदरवारहै । . . . धनिमयब्रह्मकोआगारहै ॥

लियोजीतिजोत्रिभुवनकाहीं।जाकोयशफैल्योजगमाहीं२९मधुरमहेंद्रवचनमुखगाये।जेहिंविधि
सुरअरुअसुरअहैंदोउभाई । उचितनतिनकेबीचलड़ाई ॥ तातेअसमोहिंउचितदेखावै ।
दोउपैनिधिमथिसुधानिकासी । करहिंपानहोवैसुखरासी ॥ दानवदेवअमरजबह्वैहैं । तबकोऊसेभीतिनपैहैं ॥

दोहा—यहिविधिसुनिवासववचन, दैत्यराजहरषाय । कह्योविचारकियोभले, तुमसुजानसुरराय ॥

शंबरआदिकदैत्यमहाने । वासववचनसुनतहरषाने ॥ ३१ ॥ तहांदेवदानवसुखछाई । आपुसमें
उदधिमथनकोसमयविचारी । अमृतहेतदोउकियेतयारी॥३२॥बाहुदंडसोंसुरहुसुरारी । लियो
पैनिधिगमनेयुतअहलादा । बारहिंबारकरतदोउनादा ॥३३॥ जबमंदरहिदूरिलैआये । तबसुरअसुरमहा
सकेनलैचलिमंदरभारी।व्यथितदियोमारगमहँडारी॥३४॥गिरतमंदराचलखछायो।सबदेवनदानवनचपायो ॥३

दोहा—कंधबाहुकटिसबनके, टूटेलहिगिरिभार । जेकछुबाँचेअसुरसुर, तेकियहाहाकार ॥

तिनकोजानिमनोरथभंगा । ह्वैसवारहरिनाथविहंगा ॥ अतिआतुरआयेतेहिंठोरा । करुणाकरदेवकीकिशोरा॥३
गिरित्तेमरेनिरखियदुराई । दियेदेवदानवनजियाई ॥ उठेसकलसोवतसेजागे । मानहुकोहुतनकछुनाहिंलागे॥३
तहांमंदराचलकहनाथा । विनप्रयासगहिएकहिहाथा ॥ गरुड़पीठिधरिचढिभगवाना । कियोक्षीरसागर
चलेसुरासुरदौरतसंगा । प्रभुकीअस्तुतिकरतअभंगा ॥ पहुँचेजबैक्षीरनिधितीरा । सुरअसुरनसमेतयदुवीरा॥३

दोहा—तबसागरकेतीरधरि, मंदरगरुड़उतारि । हरिशासनलहिगमनकिय, वासुकिभीतिविचारि ॥ ३

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—सुधाभागकहिदेनसुर, वासुकिनागबोलाइ । ताकोमंदरमध्यमें, गुनसमदियलपटाइ ॥ १ ॥

मोदितअमृतहेतमनदीन्हें।सागरमथनअरंभहिकीन्हें।।प्रथमगह्योहरिवासुकिआनन।अहिमुखअसुरनग्रहणकराव
हरिपाछेदेवहुगहिलीन्हें।२।देखतअसुरतकैमनकीन्हें।शुभमुखदेवनग्रहणकराये।अशुभपुच्छहरिहमहिंबतायो
ऐसोदानवमनहिंविचारी । माधवसोंसबगिराउचारी।शुभअरुअशुभहमहुँहरिजानें।अशुभपुच्छकिमिग्रहण
असकहिमौनरहेअतिनिडरे।जानिअमंगलपुच्छनपकरे॥४॥असुरमौनलखिहरिमुसक्याई।सुरयुतगहेपु-

दोहा—तहँसुरासुरवासुकिहि, पकरिसुनिजनिजभाग ॥५॥ अमृतहेतपयसिंधुको, मोदितमंथनलाग ॥

लह्योनमंदरमथतअधारा । नीचेकोधसिचल्योअपारा॥६॥यदपिसुरासुररोकतजाहीं । चलोजातअधउमगतनाई
देखिसकलतहँभयेदुखारी । निजप्रयाससबवृथाविचारी ॥ सूखिगयेमुखदोहुनकेरे । मानेसबअभाग्यकेफेरे ॥ ७
विघनविलोकिचलीभगवाना।जिनकोबलत्रिभुवनकोजाना॥तहँधरिकच्छपरूपविशाला।क्षीरसिंधुमहँपैठिकृपाला
मंदरकोनिजपीठिहिधार्‍यो।अधतेऊरधतुरतउबार्‍यो॥८॥निकस्योनिरखिशैलदोउवीरा।मथनलगेपुनिकेधरिधीरा

दोहा—लाखयोजनहिपीठिकरि, मंदरधार्‍योनाय । शोभितहोतभयेतहाँ, मनहुदीपनिधिपाथ ॥ ९ ॥

तहँसुरासुरअतिसुखपागे।अतिबलसोंगिरिऐंचनलागे।निजपीठिहिमहँशैलभमावत।हरिमानतमोहिंकोउखजुआच
देवनदैत्यनवासुकिमाहीं । धर्‍योतेजनिजभोश्रमनाहीं॥११॥मंदरउपरबैठिभगवाना । सहसबाहुसोधर्‍योमहाना
नहुशैलपरशैलविराजा।कियअस्तुतिविधिशम्भुसमाजा॥बरषनलगेसुमनचहुँओरा। सुरसुंदरीकियोकलशोरा१
।मथतसमयकोउदुसनहिंपायो॥क्षीरधिमथनलगेबलवारो।मकरमीनभेदुखितअपारे१२

—सुरअसुरनऐंचततहाँ, ॥ सहसवदनअरुदृगनसों, वम्योज्वालविषघोर ॥

। ज्योंदवारिबनवृक्षविशाल।

गहेपूछिनाँहिअबपछिताने । माधवकृतयहछलसबजाने ॥१४॥ दहनदपटदेवनढिगजागी।पागवागदाह
धूमधूसरितवदनभयेहैं । सकलदेवव्हैव्यथितगयेहैं ॥ तबहरिप्रेरितमेघअपारा । छोडनलगेअंबुकीधारा
मारुतशीतलबहितेहिठोरा।कियोशांतवासुकिविषघोरा॥१८॥मथतसुरासुरकेयहिभाँती।बीतिगयेसहस
दोहा–कढ्योअमृतनहिंजबअसुर, सुरहुथकेबड़भाग ॥ अजितछोडाइतिन्हेंतबै, आपहिमंथनलाग
छंदमनोहरा–पटपीतललामातनघनश्यामाअतिअभिरामाप्रदकामा, कटिभ्रतिक्षामा ।
मधिअमलकपोलाकुंडललोलापरमअमोलाछविधामा, क्षणदुतिवामा ॥
चलकचघुँघुवारेअहिसमकारेसबसटकारेसुकुमारे, मुनिमनहारे ।
विलसतिवनमालानैनविशालापरमरसालाअनियारे, कछुअरुणारे ॥
निजभुजजैकारीजगभैहारीवासुकिधारीगिरिधारी, जनसुखकारी ।
तहँमथतमुरारीक्षीरधिभारीकरनपसारीछविधारी, मनुमहिधारी ॥
शिरमुकुटप्रकासीकौस्तुभभासीह्रदयविलासीदुतिखासी, आनँदरासी ।
पदकंजनिआसीमुनिमनवासीनाशकफाँसीसमकासी, जगपरकासी ॥ १७ ॥
दोहा–मच्छकच्छसबविकलभे, कीन्ह्योआरतशोर ॥ मथतउदधिप्रथमहिकढ्यो, हालाहलविषघ
दिशिविदिशनमहँविषकीज्वाला । छाइरहीअतिअसहकराला ॥ जरनलगेसुरअसुरकतारे। भागि
सक्योनकोईतिन्हेंबचाई । गिरेसदाशिवशरणहिजाई॥१९॥जोचाहततिभुवनकल्याना । गौरीसहितध
गिरिकैलासबैठिवृषकेतू।करतमहातपजनगतिहेतू॥निरखिशिवैसिगरेदुखधामा॥

प्रजापतय ऊचुः ।

महादेवदेवनप्रभुपावन । भूतात्मासबभूतनभावन॥हमैंदहतविषत्रिभुवनजारक।तुमबिननाहिंदेखातउध
दोहा–बंधमोक्षप्रदजगतके, तुम्हीएकहौईश ॥ यातेज्ञानीतुमहिंको, भजनकरैंगौरीश ॥ २२ ॥
छंदगीतिका–उतपतिपालनप्रलयजगकीकरनजबइच्छाकरो । निजशक्तितेतबब्रह्माविष्णुमहेशये-
तुमपरब्रह्मसुपरमगुप्तहुचितअचितसिरजकअहो ॥ २४ ॥ जाआदिजगतनिवासजगवपुजगतपतिज
तुमवेदवर्णितसकलआत्माकालक्रतुसतिधर्महो । गुणद्रव्यइंद्रीप्राणआपस्वभावसबशुभकर्महो ॥
तुमप्रणवप्रतिपादित-॥२५॥-अखिलसुरमेंअनलतुववदनहै।पदकंजपुहुमीकालगतिदिशिकरनवरुण
नभनाभिमारुतश्वाससूरजनैनजलतुवरेतहै । आतमाजननआधारशशिमनशशिदेवनिकेतहै ॥ २७ ।
दोउकुक्षसागरअस्थिगिरितरुलताओषधिरोमहै । हैधातुतुवयेछंदसातोह्रदयधर्महुहोमहै ॥ २८ ॥
मुखपंचश्रुतितिहिरोअहैजेहिअष्टत्रिंशतमंत्रहै । परमार्थतत्त्वशिवाख्यज्योतिस्वरूपआपस्वतंत्रहै ॥ २
आघृतनआपअधर्ममेंजगबीजत्रिगुणत्रिनैनहै । प्रगटतनिगमसरवज्ञवेदहुलसनिछंदहिपैनहै ॥ ३० ॥
विधिहरिनजानहिंरावरीगतिअखिललोकनपालहो ॥ ३१ ॥ तुवज्योतित्रैगुणहीनब्रह्मस्वरूपसमाधिकृपा
मनसिजत्रिपुरअरुदक्षआदिविनाशनहितुवअल्पनो । निजकृतजगतनिजदृगअनलकनशिखानाशतनहिं
मुनिमनविचिंतितचरणजिनयुतउमातपकरिरक्षके । निरलज्जशठतिनकोकहतरतअशमशानहिहिंसके
चिदचिदहुपरव्यापकतुम्हैंब्रह्मादिसुरनहिजानहीं । तोकौनविधिअस्तुतिकरनहमरावरीअनुमानहीं ॥
दोहा–हमकेवलयहजानहीं, तुमतेपरनहिंकोइ ॥ जीवनकेमंगलहितै, रूपप्रगटतुवहोइ ॥ ३५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–निरखिप्रजनकोदुःखअति, करिकैकृपामहेश ॥ गौरीसोंबोलेतहाँ, भूतमित्रभूतेश ॥ ३६ ॥

महादेव उवाच ।

मथ्योसुरासुरक्षीरधिकाहीं । निकस्योहालाहलतेहिमाहीं॥तातेजरेजातसबप्रानी॥

लियोजीतिजोत्रिभुवनकाहीं।जाकोयशफैल्योजगमाहीं२९मधुरमहेंद्रवचनमुखगाये।जेहिविधियदुवरतिन्हंसिख
सुरअरुअसुरअहैंदोउभाई । उचितनतिनकेबीचलड़ाई ॥ तातेअसमोहिंउचितदेखावे । जोतुम्हरेहुमनमेंपरिजा
दोउपैनिधिमथिसुधानिकासी । कराँहिपानहोवैसुखरासी ॥ दानवदेवअमरजबह्वैहैं । तबकोउसेभीतिनपैहैं ॥ ३

दोहा—यहिविधिसुनिवासववचन, दैत्यराजहरषाय । कह्योविचारकियोभले, तुमसुजानसुरराय ॥

शंबरआदिकदैत्यमहाने । वासववचनसुनतहरषाने ॥ ३१ ॥ तहांदेवदानवसुखछाई । आपुसमेंकरिसबैमिताई
उदधिमथनकोसमयविचारी । अमृतहेतदोउकियेतयारी॥३२॥बाहुदंडसोंसुरहुसुरारी । लियोमंदराचलहिउखारि
पैनिधिगमनेयुतअहलादा । बारहिंबारकरतदोउनादा ॥३३॥ जबमंदरहिदूरिलैआये । तबसुरअसुरमहाश्रमपाये
सकेनलैचलिमंदरभारी।व्यथितदियोमारगमहँडारी॥३४॥गिरतमंदराचलरवछायो।सबदेवनदानवनचपायो ॥३५

दोहा—कंधबाहुकटिसबनके, टूटेलहिगिरिभार । जेकछुबाँचेअसुरसुर, तेकियहाहाकार ॥

तिनकोजानिमनोरथभंगा । ह्वैसवारहरिनाथविहंगा ॥ अतिआतुरआयेतेहिठोरा । करुणाकरदेवकीकिशोरा॥३६
गिरितेमरेनिरखियदुराई । दियेदेवदानवनजियाई ॥ उठेसकलसोवतसेजागे । मानहुकोहुतनकछुनाहिंलागे ॥३७
तहांमंदराचलकहनाथा । विनप्रयासगहिएकहिहाथा ॥ गरुड़पीठिधरिचढिभगवाना । कियोक्षीरसागरहिपयाना।
चलेसुरासुरदौरतसंगा । प्रभुकीअस्तुतिकरतअभंगा ॥ पहुँचेजबैक्षीरनिधितीरा । सुरअसुरनसमेतयदुवीरा॥३८।

दोहा—तबसागरकेतीरधरि, मंदरगरुड़उतारि । हरिशासनलहिगमनकिय, वासुकिभाँतिविचारि ॥ ३९ ।

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—सुधाभागकहिदेनसुर, वासुकिनागबोलाइ । ताकोमंदरमध्यमें, गुनसमादियलपटाइ ॥ १ ॥

मोदितअमृतहेतमनदीन्हें।सागरमथनअरंभहिकीन्हें॥प्रथमगह्योहरिवासुकिआनन।अहिमुखअसुरनग्रहणकरावन।
हरिपाछेदेवहुगहिलीन्हें॥२॥देखतअसुरतर्कमनकीन्हें॥शुभमुखदेवनग्रहणकरायो।अशुभपुच्छहरिहमहिंबतायो
ऐसोदानवमनहिंविचारी । माधवसोंसबगिराउचारी॥शुभअरुअशुभहमहुँहरिजानैं।अशुभपुच्छकिमिग्रहणहिठानैं।
असकहिमौनरहेअतिनिडरे।जानिअमंगलपुच्छनपकरे॥४॥असुरमौनलखिहरिमुसक्याई।सुरयुतगहेपुच्छसुखदाई।

दोहा—तहँसुरासुरवासुकिहि, पकरिसुनिजनिजभाग ॥५॥ अमृतहेतपयसिंधुको, मोदितमंथनलाग ॥

लह्योनमंदरमथतअधारा । नीचेकोधसिचल्योअपारा॥६॥यदपिसुरासुररोकतजाहीं । चलोजातअधउमगतनाहीं।
देखिसकलतहँभयेदुखारी । निजप्रयाससबवृथाविचारी ॥ सूखिगयेमुखदोहुनकेरे । मानेसबअभाग्यकेफेरे ॥ ७ ।
विघनविलोकिबलीभगवाना।जिनकोबलत्रिभुवनकोजाना॥तहँधरिकच्छपरूपविशाला।क्षीरसिंधुमहँपैठिकृपाला ।
मंदरकोनिजपीठिहिधार्‍यो।अधतेऊरधतुरतउबार्‍यो॥८॥निकस्योनिरखिशैलदोउवीरा।मथनलगेपुनिकैधरिधीरा ।

दोहा—लाखयोजनहिपीठिकरि, मंदरधार्‍योनाथ । शोभितहोतभयेतहाँ, मनहुदीपनिधिपाथ ॥ ९ ॥

तहँसुरासुरअतिसुखपागे।अतिबलसोंगिरिऐंचनलागे।निजपीठिहिमहँशैलभमावत।हरिमानतमोहिंकोउखजुआच
देवनदैत्यनवासुकिमाहीं । धर्‍योतेजनिजभोश्रमनाहीं॥११॥मंदरउपरबैठिभगवाना । सहसबाहुसोधर्‍योमहाना ।
मनहुशैलपरशैलविराजा।कियअस्तुतिविधिशम्भुसमाजा॥वरषनलगेसुमनचहुँओरा। सुरसुंदरीकियोकलशोर१
।मथतसमयकोउदुखनहिंपायो॥क्षीरधिमथनलगेबलवारे।मकरमीनभेदुखितअपारे१३।

दोहा—सुरअसुरनऐंचततहाँ, पर्‍योवासुकिहिजोर ॥ सहसवदनअरुदृगनसों, वम्योज्वालविषघोर ॥

। पौलोमहुकालेयमहाना ॥ जरेसकलळागतविषज्वाला । ज्योंदवारिबनवृक्षविशाला!

तिनकोअभयप्राणकोदाना।सकलभाँतिमोहिंउचितलखाना॥अहैप्रभुनकीयहप्रभुताई।दीननपालनकरबवनाई
साधुप्राणदैप्राणिनपाले । सुरतिकरतनहिंवैरविशाले ॥३९॥ देतहिंजीवनजीवनदाना । आशुप्रसन्नहोतभगवाना
हरिप्रसन्नजेहिंहोतभवानी । तबहमसवप्रसन्नतेहिप्रानी॥तातेमैंसवहितकल्याना।करिहौंअवशिहलाहलपाना॥
दोहा—जवशंकरयहिविधिकह्यो, तवगौरीहरपाइ । गुनिप्रभावनिजनाथको, अनुमतिदियोसुनाइ ॥
करनहेतहालाहलपाना।गयेक्षीरनिधितीरइशाना॥४१॥हरसमेटिधरिकरतलमाहीं।कियेपानहालाहलकाहीं।
सोऊअपनोवलहिदेखायो।नीलकंठशिवकाहँवनायो ॥ सोभूपितकीन्ह्योगलकाहीं ॥४३॥ हरकेविथाभईकछुनाहीं
ह्वैवोपरदुखमाहँदुखारी । सोइआराधनहरिकोभारी॥४४॥निरखिशंभुकोकर्ममहाना । तहँविरंचिहरिकियेवखाना
प्रजासमूहमोदअतिपायो । उमानैनआनँदजलआयो ॥ देदुंदुभिवरषेसुरफूला । कह्योकौनप्रभुशंकरतूला ॥
दोहा—पियतगिर्‌योकरतेजोकछु, विपतेहिंतुरतहिधाइ । विषीजंतुअहिआदिसव, पानकियेहरपाइ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते अष्टमस्कंधे सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—हालाहलकोपानकिय, जवशंकरहरपाइ । तवहिंसुरासुरक्षीरनिधि, मथनलगेमनलाइ ॥
सुरभीतवनिकसीसुखदाई ॥१॥ जाकोऋषिलीन्ह्योंतहँधाई।सविधियज्ञकरिजाकेक्षीरा।गमनहिंब्रह्मलोकमुनिधीरा
पुनिउच्चैश्रवातहँवाजी।निकस्योशशिसमानछविराजी॥लीन्ह्योवलिअतिचाहततोको।हरिसिखयेहरि लियोनवाको
निकस्योपुनिऐरावतनागा।चारिदंतसुंदरसवभागा ॥ श्वेतवरणतनपरमप्रकाशा।जाकोलखिलाजतकैलाशा ॥३॥
पारिजातपुनिकढ्योसोहावन । जोसुरलोकनकोछविछावन ॥ देतकामनापूरिअरामै। जैसेकुरुपतिआपधरामै॥
दोहा—पुनिकौस्तुभमणिकढतभो, अरुणवरणसुखकंद । उरधारणहितआशुहीं, लीन्ह्योताहिमुकुंद ॥ ६
पुनिअप्सरासजीशृंगारा । निकसीतहँसुषमाआगारा ॥ करहिकटाक्षमंदमुसक्याईं।दिविवासिनकहँजेसुखदाईं ॥७
पुनिप्रगटीश्रीरमासोहाई । जाकीछविदशदिशिमहँछाई॥चपलासमसवकेचखमाहीं।चौंधिपर्‌योचकिरहेतहाँहीं ॥
निरखितासुवयगुणवररूपा । सवकोमनहरिगोसुनुभूपा ॥ लेनचहेसुरअसुरहुताको।जान्योनाहिंमनोरथवाको ॥९
दीन्योंतेहिआसनसुरसाईं।तनधरिपटभरिसरिजललाईं॥ओषधिअवनिउचितअभिषेका।ल्याइदईंअतिआशुअनेका
दोहा—पंचगव्यगोवनदई । सुमनदियोऋतुराज ॥१०॥११॥ कमलाकोअभिषेकविधि।विरच्योमुनिनसमाज
तहँगंधर्वकियेकलगाना । नाचनलगींअप्सरानाना ॥ १२ ॥ शंखवेणुअरुवीणमृदंगा । गोमुखमुरजढोलइकसंगा
मेघमूर्तिधरिलोगवजावन।भयोशोरतहँअतिसुखछावन॥१३॥लैदिग्गजकलशननिजशुंडा।करवायोअस्नानअखंडा
द्विजवरवेदपढ़नतहँलागे । रमाचरणमहँअतिअनुरागे ॥१४॥ युगलपीतपटअतिशुभविशाला।दियोवरुणवैजंतीमाला
जाकोकरिपानहिमकंदा । [illegible] ॥१५॥ [illegible]
दोहा—नागदियोकुंडलसुभग, दियोसरस्वतिहार ॥ कमलाकोदीन्योंकमल, कमलासनसुखसार ॥ १६ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] १८
दोहा—[illegible] ॥ १९ ॥
[illegible] ॥२०॥

तिनकोअभयप्राणकोदाना।सकलभाँतिमोहिंउचितलखाना॥अहेप्रभुनकीयहप्रभुताई।दीननपालनकरबवनाई
साधुप्राणदेप्राणिनपाले । सुरतिकरतनहिंवैरविशाले ॥३९॥ देतहिंजीवनजीवनदाना । आशुप्रसन्नहोतभगव
हरिप्रसन्नजेहिहोतभवानी । तबहमसबप्रसन्नतेहिप्रानी॥तातेंमेंसबहितकल्याना।करिहौंअबशिहलाहलपाना ॥४
दोहा–जबशंकरयहिविधिकह्यो, तबगौरीहरपाइ । गुनिप्रभावनिजनाथको, अनुमतिदियोसुनाइ ॥
करनहेतहालाहलपाना।गयेक्षीरनिधितीरइशाना॥४१॥हरसमेटिधरिकरतलमाहीं।कियोपानहालाहलकाहीं ॥४
सोऊअपनोबलहिदेखायो।नीलकंठशिवकाहँबनायो ॥ सोभूपितकीन्ह्योगलकाहीं ॥४३॥ हरकेविथ
ह्वैवोपरदुखमाहँदुखारी । सोइआराधनहरिकोभारी॥४४॥निरखिशंभुकोकर्ममहाना । तहँविरंचिहरिकियेब
प्रजासमूहमोदअतिपायो । उमानैनआनँदजलआयो ॥ देदुंदुभिबरपेसुरफूला । कह्योकौनप्रभुशंकरतूला ॥ ४
दोहा–पियतगिन्योकरतेजोकछु, विपतेहिंतुरतहिधाइ । विषीजंतुअहिआदिसब, पानकियेहरपाइ ॥ ४

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते अष्टमस्कंधे सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–हालाहलकोपानकिय, जबशंकरहरपाइ । तबहिंसुरासुरक्षीरनिधि, मथनलगेमनलाइ ॥
सुरभीतबनिकसीसुखदाई ॥१॥ जाकोऋपिलीन्ह्योंतहँधाई॥सविधियज्ञकरिजाकेक्षीरा।गमनहिंब्रह्मलोकमुनिधी
पुनिउच्चैश्रवातहँबाजी।निकस्योशशिसमानछविराजी॥लीन्ह्योबलिअतिचाहतताको।हरिसिखयेहरिलियोनवाको
निकस्योपुनिऐरावतनागा।चारिदंतसुंदरसबभागा ॥ श्वेतवरणतनपरमप्रकाशा।जाकोलखिलाजतकैलाशा ॥२-
पारिजातपुनिकढ्योसोहावन । जोसुरलोकनकोछविछावन ॥ देतकामनापूरिअरामैं। जैसेकुरुपतिआपघरामैं॥
दोहा–पुनिकौस्तुभमणिकढतभो, अरुणवरणसुखकंद । उरधारणहितआशुहीं, लीन्ह्योताहिमुकुंद ॥ ६
पुनिअप्सरासजीशृंगारा । निकसीतहँसुपमाआगारा ॥ करहिकटाक्षमंदमुसक्याई।दिविवासिनकहँजेसुखदाई ॥ ७
पुनिप्रगटीश्रीरमासोहाई । जाकीछविदशदिशिमहँछाई॥चपलासमसबकेचखमाहीं।चौंधिपर्‍योचकिरहेतहाँहीं ॥८
निरखितासुवयगुणवररूपा । सबकोमनहरिगोसुनुभूपा ॥ लेनचहेसुरअसुरहुताको।जान्योनाहिंमनोरथवाको ॥९
दीन्ह्योतेहिआसनसुरसाई।तनधरिघटभरिसरिजलल्याई॥औषधिअवनिउचितअभिषेकू।ल्याइदईअतिआशुअनेकू
दोहा–पंचगव्यगौवनदई । सुमनदियोऋतुराज ॥१०॥११॥ कमलाकोअभिषेकविधि।विरच्योमुनिनसमाज ।
तहँगंधर्वकियेकलगाना । नाचनलगींअप्सरानाना ॥ १२ ॥ शंखवेणुअरुवीणमृदंगा । गोमुखमुरजढोलइकसंगा ।
मेघमूर्तिधरिलगेबजावन।भयोशोरतहँअतिसुखछावन॥१३॥लैदिग्गजकलशननिजशुंडा।करवायोअस्नानअखंडा।
द्विजवरवेदपढ़नतहँलागे । रमाचरणमहँअतिअनुरागे ॥१४॥ युगलपीतपटसिंधुविशाला।दियोवरुणवैजंतीमाला।
जाकोकरिपानहिमकरंदा । घेरिरहतनहिंटरतमलिंदा॥१५॥तेहिंदीन्होंभूपणविश्वकर्मा।अतिविचित्रसोहतप्रदशर्मा।
दोहा–नागदियोकुंडलसुभग, दियोसरस्वतिहार ॥ कमलाकोदीन्ह्योकमल, कमलासनसुखसार ॥ १६ ॥
ताहीसमयमलिंदहुलासी। लैकरकमलमालछविरासी॥चलीरमापुहुमीछविछावत।कियस्तुस्तवनाद्विजनश्रुतिगावत ।
कुंडलदियेकपोलनिमाहीं।मनहुशोभसरहंससोहाहीं॥जेहिंमुखलखिपूरणशशिलाजै।लाजसहितमुसकानिविराजै १
सोहतयुगलउरोजउतंगा । मानहुस्वर्णशैलकेशृंगा ॥ जाकेअंगअनूपमभावत । अंगरागजेहिलगिछविपावत ॥
रा।फैलतप्रभाजासुचहुँओरा॥कनकलताबिरचीरतिराजा।लहरातिमनुसुरअसुरसमाजा १८
सबगुणपूरअवास ॥ १९ ॥
–अचलअदूषितरहनहित, हेरनलगीनिवास ॥ सुरअसुरनमधिनहिंलख्यो, सबगुणपूरअवास ॥ १९ ॥
पपैयुतकोपू । कोहुमहँज्ञानविपैनहिंलोपू॥कोउमहानपैकामहिलीना । कोउसमरथपैपरआधीना॥२०॥

त्यागवानकोउपैयुतमाया ॥ बलीकोऊपैकालडेराने । परमहंसकोउपैगुणसाने ॥ २१ ॥
। शीलवानकोउआयुपढीला॥ कहुँदोउहैंपैमंगलहीना॥कोहुमंगलपैनहिंममलीना ॥२२॥
। सबगुणसहितनिरखियदुराई॥अपनेलायकतेहिंवरचीन्हौ॥रमामुकुंदहिकोवरिलीन्ही ॥
, गुणहुकरतनितचाह ॥ तिनकोतजिकैसेवरैं, औरनकोनरनाह ॥ २३ ॥
डारिकृष्णकेकंठविशाला॥निजनिवासहरिउरसुखदाई । निरखतलाजसहितमुसकाई॥
। करिकटाक्षत्रैलोकवढाया ॥ बजेमृदंगशंखअरुभेरी । करीअप्सरानृत्यघनेरी॥२४॥२५।
पृथकपृथकसुरसवनभछाये ॥ सकलप्रजापतिब्रह्मगिरीशा । औरहुसवैसुरेशमुनीशा॥२६।
. निरखतश्रीभगवान ॥ वेदमंत्रवरवदनसों, अस्तुतिकियेसुजान ॥ २७ ॥
। प्रजाप्रजापतिसुरसुरराई ॥ शीलादिकगुणलहेअपारा । भयेआशुआनंदअगारा ॥२८।
। भेनिरलज्जअवलशठचोरा ॥२९॥पुनिक्षीरधिमंथततनृपराई । कमलनैनवारुणीसोहाई।
। माधवतिनहिंलेनकहिदीन्ह्यो ॥ मथतफेरिसुरअसुरनकेरे।अमृतहेतकरिश्रमहिंघनेरे।
। निकस्योप्रभावंतजेहिरूपा॥३०॥समभुजंगजाकेभुजदंडा । कंबुकंठजेहिंज्ञानअखंडा।
, उरसोहतवनमाल ॥ पीनवक्षपटपीतमणि, कुंडलकरनरसाल ॥ ३१॥ ३२ ।
। सिंहगवनअतिसुंदरवेशा ॥३३॥ कडेकरनमहँकांतिभरेहैं । अमृतपूरककलशधरेहैं।
। धन्वंतरिजेहिनामवखाना ॥ कर्तावैद्यशास्त्रकोसोई । भोक्तायज्ञभागकोजोई॥३४॥३५
। धायेअतिआतुरवलवान॥सवैवस्तुहमलेवछुड़ाई । असविचारिअतिकोपहिछाई
। सुधाकलशकोटियोछँडाई ॥ हरतअमीघटअसुरनकाहीं । देखिदेवह्वैदुखिततहाँहीं॥३६
हरिकेपासपुकार ॥ सुधाकुंभदानवहरयो, अवतुमहीरखवार ॥ ३७ ॥
। कह्योनाथकरिकृपाघनेरी ॥ धीरजधारहुसुरनसमाजा । साधिहौंगोमैंसवकाजा ॥ ३८
। आपसमहँवोलेसवयोधा ॥ हमहींप्रथमकरिगेपाना । तुमनपाइहोहमवलवाना
। तेवोलेअसलायकनाहीं ॥ देवहुकियेप्रयाससमाना । तातेसुधाभागकोदाना ॥ ३९
। अनुचितहैआपुहिसवलेवो ॥ सत्रयागजिमिवहुयजमाना । पावतहैंफलसवैसमाना।
, प्रवलनकोवहुवार ॥ पपिपूपकेकलशको, दियोनवैमदवार ॥ ४० ॥
। जानतउपायअशेश ॥ ह्वैगेअनूपमनारि । सुरकाजकरनविचारि ॥ ४१ ॥
। निरखतदृगनआराम ॥ सुंदरसकलवरअंग । श्रुतिसमविकाशअभंग ॥
। कुंडललसततेहिलोल ॥ नासाअनूपउतंग । यौवनजागितनवअंग ॥ ४२ ॥
। कटिरहिनितंबरुकांति ॥ मुखसुरभिपायमलिंद । गुंजतचहूँकिलवृंद ॥
। लखिजिनहिलाजतकंज ॥ माल्लिकाविकसितफूल । युतलसतकेशअतूल ॥
। तनकरतपरमप्रकाशु ॥ अतिलसतअंगदबाहु । जेहिलसतवहुतउछाहु ॥ ४३ ॥
। जेहिलखिननैनअघात ॥ सोहतनितंबसुपीन । लियदीपकीछविछीन ॥ ४४ ॥
। कलहंसरवकोचोर ॥ नूपुरलसतपदकंज । वाजतचलतमनरंज ॥ ४५ ॥
। सरसातिआनँदसाने ॥ भ्रूवंककामकमान । तेहिमारिनैननवान ॥
, ऐसोकृष्णअनूप ॥ देवनकेकारजलिये, धरयोमोहिनीरूप ॥ ४६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

(तिन साधु हरि करु सोच ह्वैवो प्रज

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—तहँबलीदानवसबै, छोड़िमित्रताकोपि ॥ सुधाकुंभकोपरस्पर, रहेछोडावतचोपि ॥
आपुसमहँदेवैंबहुगारी । अबलनबलीदेहिंकहुँमारी ॥ कहूँचोराइकलशधरिराखैं । पूँछेंहमनजानहा
यहिविधिकरतविरोधघनेरो । लख्योमोहिनीवपुहरिकेरो ॥१॥आवतिनलीनिकटछविछाई।दौरेसबत
आपसमहँबोलेअभिमानी । ऐसीनारिनकबहुँलखानी ॥ लखीनऐसीसुंदरताई । जसयहनारिविरंचि-
यौवनभरीमत्तगजगामिनि।लखहुलखहुयहसुंदरिकामिनि॥असकहिघेरिलियोचहुँओरा।सबकोमनसि-
दोहा—पूछँनलगेअसुरसब,—॥ २ ॥—कमलनैनसुकुमारि ॥ कौनहेतआईइतै, होकाकीतुमनारि ॥
सुंदरिकहाकरनकोचाहो । अहोकौनअसुरनमनदाहो ॥ ३ ॥ लह्योनतुम्हैंसिद्धगंधर्वा । अमरदैत्यअरु
मनुजनकोअबकौनबखानी । ऐसोठीककियोअनुमानी॥४॥धौंहमपैकरिकृपाविधाता । करनकृतार
पठयोतुमकोनिकटहमारे । बोलहुकसनहिंमौनहिंधारे ॥५॥ सुधाहेतइतमच्योविरोधा । करनपान
तातेअबयहउचितलखाना । बाँटहुसबकोतुमहिंसमाना॥सुधापाइहमसबसुखपैहैं । तुम्हरोसुयश
दोहा—हमहैंकश्यपकेतनय, यहजानतसबकोय । जामेंभाइनबीचमें, कोहुअपमाननहोय ॥
बहुप्रयासकरिसुधानिकास्यो।मथतअमितजलजंतुननास्यो॥तुमसोंकरिहैनहिंकोउरारी।तुम्हरेबशहैं
कह्योअसुरजबअसतहँभूपा । मोहितमोहिनिहरिकेरूपा॥तबकटाक्षकरिविहँसिमुरारी।बोलेअसुरन

श्रीभगवानुवाच ।

हेकश्यपनंदनबड़भागे । मोहिंकुलटामहँकसअनुरागे ॥ नारिस्वैरिणीभाँतिहुकेहू । पंडितलोगनकरैं
श्वानस्वैरिणीएकस्वभाऊ । नवनवनितहेरहिकरिचाऊ॥राखतनाहिंएकरसप्रीती । मानतनहिंकबहूँ

सुर पुनि निव पारि पुनि पुनि निर दीन तहँ

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—तहँमोहिनीनारिके, सुनिमनमोहनबैन । विहँसतभेदानवसबै, इकटकनिरखतनैन ॥
भेविश्वासितअसुरप्रवीरा । मान्योनारिभावगंभीरा॥दियेपियूपकलशतेहिकाहीं।गुनिबड़भाग्यआ
तबलैकलशमंदमुसिक्याई । कहीमोहिनीगिरासोहाई ॥ दानवसकलसुनहुममबैना । तुमहिंउचित
तुममिलिकियेसुरहुश्रमभारी । लियोनिकासिसुधासुखकारी ॥ तातेदेवनहूँकोदेहू । मेरोकह्योम
जोनमानिहौंकह्योहमारो । तौनबाँटिहैंसुधातिहारो ॥ १२ ॥ सुनतमनोहरबैनअपारा । बोलिउठेसब
दोहा—जोमनआवैसोकरो, हमकछुकहिहैंनाहिं । लखतरहोहमरेतरफ, यहीविजयतुमपाहिं ॥
असकहिमान्योअसुरउराऊ।जानतनहिंकछुनारिप्रभाऊ॥१३॥तबसुंदरिबोलीमृदुबानी।बैठोसकलपं
देवहुबैठेपाँतिलगाई । हमबाँटिहैंसुधासुखदाई ॥ सुनतमुदितभेसकलसुरारी । अमृत
प्रथमदिवसमेंसबउपवासी । दूजेदिनसुरअसुरहुलासी ॥ करिमज्जनकियहोमहुतासा । दियोद्वि
भूतनकोकीन्ह्योबलिदाना । पढ़योविप्रस्वस्तैनसुजाना ॥१४॥ धार्योनूतनअंबरअंगा ।
दोहा—पूर्वाग्रेकुशआसन,—॥१५॥—मुखकरिपूरुबओर ॥ आगेदानवबैठितिन, पाछेदेवअथोर
भिफैलतिजेहिशाला।दीपप्रकाशितबनीविशाला १६ तहँबैठीजबदोहुँनसमाजा।तबमोहनी
रुछविछावत। नूपुरनिबजावत॥कनककुंभकुचकटिअतिखीनी।सारीछि-
नअनियारो रअसुरकतारे॥कुंडलकनकलसतवरकानन।शशिसमचारुप्रक
सा। जप्रकासा॥मंदमंदगमनतवरनारी।करनकलशलैसभ
क्याइ । सुरसमाजमेंमोहिनी, अंचलदियोउड़ाइ ॥
। ॥ सुधापानकीसुरतिबिसारी ।

।त्रिभुवनस्वामिनिसिंधुक्षमाको१८मनमेंकियअसठीकप्रयोगू।सुधापाननहिंअसुरनयोगू ॥
रपियाउवाजानसर्वथाविपहिवद्राउन ॥ सहजहिअसुरक्रूरबलवारे । पुनिकोजीतिहिइननहिंअपारे ॥
हिहेतू । जाइदुहुनमधिकृपानिकेतू ॥ १९ ॥ असुरनतेबोलेयदुराई।सुनहुसबैयहमोरिउपाई ॥
सुरनदूरिबैठाइके, तिनकोतनकपियाय । पुनिसिगरोमैंप्याइहौं, सुधातुम्हैंसुखछाय ॥ २० ॥
ई । तहँतेअसुरननाहिंउठाई ॥ सुरनपंक्तिप्रथमहिभगवाना । लगेसुधाकरावनपाना ॥२१॥
नसुरारी । कह्योनकछुअसमनहिंविचारी॥२२॥हमेबोलतयहिक्षणमाहीं।मोहमोहिनीकोरहैनाहीं॥
तियसंगविवादा।तजवनयोगवचनमरयादा॥मोहिमोहिनीरूपहिभोले।सुरनपियावतअसुरनबोले २३॥
।तुरतहिदेवरूपनिजठानी ॥ बैठ्योदेवपाँतिमहँजाई । धोखेतेहिहरिदियोपियाई ॥
।नपियूपहिकरतहीं, रविशशिदियोबताइ ॥ दैत्यदेवकोरूपधरि, यहिमधिबैठ्योआइ ॥ २४ ॥
चक्रनिकारी । काट्योराहुकंठगिरिधारी ॥ कियोकंठलोंपानसुधाको । तातेशशिअमरभोताको॥२५॥
योरुंडनृपराई । विधिशिरकोग्रहदियोबनाई ॥ सोइँवैरसुमिरिनृपराई । ग्रसतसूरशशिपर्वहिपाई॥२६॥
सुधाभगवाना । प्रगटकियोनिजरूपमहाना ॥ शंखचक्रआयुधकरधारे । चारिबाहुपटपीतसुधारे ॥
हाँहीं । हरिचरित्रजान्योकछुनाहीं ॥ यदपिदेवदानवबलवाना । सबप्रकारतेरहेसमाना २७॥
तदपिदेवयदुवरचरण, कमलरहेलवलीन ॥ तातेसुरनसुधालह्यो, असुरनहरिरतिहीन ॥ २८ ॥
तनमनधनवचहरिनिरत, सफलसोइसबहोइ ॥ तेइनिष्फलहरिविमुख, यहजानहुसबकोइ ॥
जैसेतरुवरपातको, सींचनवृथादेखात ॥ सलिलमूलकेडारते, डारपातहरियात ॥ २९ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

-यदपिमथतमेंश्रमकियो, असुरसबैबलवान ॥ कुरुपतियदुपतिविमुखते, लहेनअमृतपान ॥ १ ॥
मथिप्रभुसुधानिकासी । पानकराइसुरननिजआसी॥ ह्वैसवारगरुडहिभगवाना। सबकेनिरखतकियोपयाना॥
भूतिविलोकिसुरारी । सहिनसकेकरिकोपदिभारी ॥२॥ लैलैआयुधपरमप्रचंडा । देवनपैधायेबरिबंडा ॥३॥
पियूषपियेबलवाना । आवतनिरखिदानवननाना ॥ हरिपदसुमिरिसबैमनमाहीं । लैआयुधधायेतिनपाहीं॥४॥
भयेतेढिठामा । तहँभोदेवासुरसंग्रामा ॥ तुमुलरोमहर्षणदुखछावन । क्षीरधिकेतटपरमभयावन॥५॥
हा-तहाँपरसपरसुरअसुर, करिकरिकोपमहान ॥ लड़नलगेनिजशक्तिभर, हनिहनिशस्त्रमहान ॥
टक-करवालकरालविशालहनें।कोउमारहिंबाणमहानघनें।कोउतोमरभल्लनबल्लनहीं।कोउभिंदहिपालकगल्लमहीं ६
मृदंगहुओतुरहीं । डमरूवरदुंदुभिवेनुसही । तहँबाजनयेमबबाजनभे ॥ गजवाजिभटोंग्यगाजतभे ॥७॥
सोरधिपत्तिनपत्तिलरें । असवारनसोंअसवारभिरें ॥ गजसोंगजसोंरिसुजग्रहरैं । [illegible] ॥ ८॥
उदानवउंटसवारभये । गजगदंभपैकोउकै चढ़ये । [illegible] ॥९॥
उर्धालदनेकोउगिदनपै । [illegible] ॥१०॥
उमृगनऔरशृगालनपै । [illegible] ॥११॥
उवाँरतिमिंगिलउगनपै । [illegible] ॥
लदानवनेनिकसेशुभटे । सुरसैनहिसन्मुखरपेटपटे ॥ [illegible] ॥
दोहा-भयोभयावनयुद्धतहँ, सुरअसुरनकोभूप ॥ [illegible] ॥ १२ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-तहाँबलीदानवसबै, छोड़िमित्रताकोपि॥ सुधाकुंभकोपरस्पर, रहेछोडावतचोपि॥
आपुसमहँदेवैंबहुगारी। अबलनबलीदेहिकहुँमारी॥ कहूँचोराइकलशधरिराखें। पूँछेहमनजानहँ
यहिविधिकरतविरोधघनेरो। लख्योमोहिनीवपुहरिकेरो॥१॥आवतिचलीनिकटछविछाई।देरिसवतनसु
आपसमहँबोलेअभिमानी। ऐसीनारिनकबहुँलखानी॥ लखीनऐसीसुंदरताई। जसयहनारिविरंचिब
यौवनभरीमत्तगजगामिनि।लखहुलखहुयहसुंदरिकामिनि॥असकहिघेरिलियोचहुँओरा।सबकोमनसिज
दोहा-पूछँनलागेअसुरसब,-॥ २ ॥-कमलनैनसुकुमारि॥ कौनहेतआईइतै, होकाकीतुमनारि॥
सुंदरिकहाकरनकोचाहो। अहोकौनअसुरनमनदाहो॥ ३ ॥ ह्योनतुम्हेंसिद्धगंधर्वा। अमरदैत्य
मनुजनकोअबकौनबखानी। ऐसोठीककियोअनुमानी॥४॥धौंहमपैकरिकृपाविधाता। करनकृतारथइं
पठयोतुमकोनिकटहमारे। बोलहुकसनहिंमौनहिधारे॥५॥ सुधाहेतइतमच्योविरोधा। करनपान
तातेअबयहउचितलखाना। बाँटहुसबकोतुमहिंसमाना॥सुधापाइहमसबसुखपैहें। तुम्हरोसुयशजिय
दोहा-हमहैंकश्यपकेतनय, यहजानतसबकोय। जामेंभाइनबीचमें, कोहुअपमाननहोय॥
बहुप्रयासकरिसुधानिकास्यो।मथतअमितजलजंतुननास्यो॥तुमसोंकरिहैनहिंकोउरारी।तुम्हरेबशहैं
कह्योअसुरजबअसतहँभूपा। मोहितमोहिनिहरिकेरूपा॥तबकटाक्षकरिविहँसिमुरारी।बोलेअसुरनकेम

श्रीभगवानुवाच।

हेकश्यपनंदनबड़भागे। मोहिंकुलटामहँकसअनुरागे॥ नारिस्वैरिणीभाँतिहुकेहू। पंडितलोगनक
श्वानस्वैरिणीएकस्वभाऊ। नवनवनितहेरहिकरिचाऊ॥राखतनाहिंएकरसप्रीती। मानतनहिंकबहूँ

श्रीशुक उवाच।

दोहा-तहाँमोहिनीनारिके, सुनिमनमोहनबैन। विहँसतभेदानवसबै, इकटकनिरखतनैन॥
भेविश्वासितअसुरप्रवीरा। मान्योनारिभावगंभीरा॥दियेपियूषकलशतेहिकाहीं।गुनिबड़भाग्यआपम
तबलैकलशमंदमुसिक्याई। कहीमोहिनीगिरासोहाई॥ दानवसकलसुनहुममबैना। तुमहिंउचितअ
तुममिलिकियेसुरहुश्रमभारी। लियोनिकासिसुधासुखकारी॥ तातेदेवनहूँकोदेहू। मेरोकह्योमा
जोनमानिहौकह्योहमारो। तौनबाँटिहैंसुधातिहारो॥ १२॥ सुनतमनोहरबैनअपारा। बोलिउठेसबए
दोहा-जोमनआवैसोकरो, हमकछुकहिहैंनाहिं। लखतरहोहमरेतरफ, यहीविजयतुमपाहिं॥
असकहिमान्योअसुरउराऊ।जानतनहिंकछुनारिप्रभाऊ॥१३॥तबसुंदरिबोलीमृदुबानी।बैठोसकलपंक्ति
देवहुबैठेपाँतिलगाई। हमबाँटिहैंसुधासुखदाई॥ सुनतमुदितभेसकलसुरारी। अमृतपानकीकर
प्रथमदिवसमेंसबउपवासी। दूजेदिनसुरअसुरहुलासी॥ करिमज्जनकियहोमहुतासा। दियोद्विजनगे
भूतनकोकीन्ह्योबलिदाना। पढ़्योविप्रस्वस्तैनसुजाना॥१४॥ धार्योनूतनअंबरअंगा। भू
दोहा-पूर्वाग्रकुशआसन,-॥१५॥-सुखकारिपूरुबओर॥ आगेदानवबैठितिन, पाछेदेवअथोर॥
धूपसुरभिफैलतिजेहिशाला।दीपप्रकाशितबनीविशाला १६ तहँबैठेजबदोहुँनसमाजा।तबमोहनी
करभसमानउरूछबिछावत।चरणकनकनूपुरनिबजावत॥कनककुंभकुचकटिअतिखीनी।सारीछबिछाई
मदघूमतलोचनअनियारे।कतलकरतसुरअसुरकतारे॥कुंडलकनकलसतवरकानन।शशिसमचारुप्रकाशि
सोहतअमलकपोलसुनासा। फैलतचहुँकितपुंजप्रकासा॥मंदमंदगमनतवरनारी।करनकलशलैसभासिध
दोहा-तिरछोहैनैननिरखि, मंदमंदमुसक्याइ। सुरसमाजमेंमोहिनी, अंचलदियोउड़ाइ॥
निरखिमोहिनिहिदानवदेवा। मोहिगयेजान्योनहिंभेवा॥ सुधापानकीसुरतिविसारी। यकटकआननरहे

रमाकी।त्रिभुवनस्वामिनिसिंधुक्षमाकी१८मनमेंकियअसठीकप्रयोगू।सुधापाननहिंअसुरनयोगू ॥
पेयाउवाजानसर्वथाविपहिवढ़ाउव ॥ सहजहिंअसुरक्रूरबलवारे। पुनिकोजीतिहिइनहिंअपारे ॥
मीयहिहेतू। जाइदुहुनमधिकृपानिकेतू ॥ १९ ॥ असुरनतेबोलेयदुराई।सुनहुसवैयहमोरिउपाई ॥
सुरनदूरिबैठाइकै, तिनकोतनकपियाय। पुनिसिगरोमैंप्याइहौं, सुधातुम्हेंसुखछाय ॥ २० ॥
ठाई। तहँतेअसुरननाहिंउठाई ॥ सुरनपंक्तिप्रथमहिभगवाना। लागेसुधाकरावनपाना ॥२१॥
निसुरारी। कह्योनकछुअसमनहिंविचारी॥२२॥हमरेबोलतयहिक्षणमाहीं।मोहमोहिनीकरिहैनाहीं॥
तियसंगविवादा।तजवनयोगवचनमरयादा॥मोहिंमोहिनीरूपहिभोले।सुरनपियावतअसुरनबोले २३॥
तछलजानी। तुरतहिदेवरूपनिजठानी ॥ बैठ्योदेवपाँतिमहँजाई। धोखेतेहिहरिदियोपियाई ॥
नपियूपहिकरतहीं, रविशशिदियोवताइ ॥ दैत्यदेवकोरूपधरि, यहिमधिबैठ्योआइ ॥ २४ ॥
क्रनिकारी। काट्योराहुकंठगिरिधारी ॥ कियोकंठलौंपानसुधाको। तातेशीशअमरभोताको॥२५॥
योरुंडनृपराई। विधिशिरकोगृहदियोवनाई ॥ सोईवैरसुमिरिनृपराई। ग्रसतसूरशशिपर्वहिपाई॥२६॥
सुधाभगवाना। प्रगटकियोनिजरूपमहाना ॥ शंखचक्रआयुधकरधारे। चारिवाहुपटपीतसुधारे ॥
जकिरहेतहाँहीं। हरिचरित्रजान्योकछुनाहीं ॥ यदपिदेवदानवबलवाना। सबप्रकारतेरहेसमाना २७॥
तदपिदेवयदुवरचरण, कमलरहेलवलीन ॥ तातेसुरनसुधालह्यो, असुरनहरिरतिहीन ॥ २८ ॥
नमनधनवचहरिनिरत, सफलसोईसवहोइ ॥ तेईनिष्फलहरिविमुख, यहजानहुसवकोइ ॥
जैसेतरुवरपातको, सींचनवृथादेखात ॥ सलिलमूलकेडारते, डारपातहरियात ॥ २९ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

श्रीशुक उवाच।

।-यदपिमथतमेंश्रमकियो, असुरसवैबलवान ॥ कुरुपतियदुपतिविमुखते, लहेनअमृतपान ॥ १ ॥
थिप्रभुसुधानिकासी। पानकराइसुरननिजआसी॥ ह्वसवारगरुडहिभगवाना। सबकेनिरखतकियोपयाना॥
वैभूतिविलोकिसुरारी। सहिनसकेकरिकोपहिभारी ॥२॥ लैलैआयुधपरमप्रचंडा। देवनपैधायेवरिवंडा ॥३॥
पियूपपियेबलवाना। आवतनिरखिदानवननाना ॥ हरिपदसुमिरिसवैमनमाहीं। लैआयुधधायेतिनपाहीं॥४॥
भरतभयेतेहिठामा। तहँभोदेवासुरसंग्रामा ॥ तुमुलरोमहर्षणदुखछावन। क्षीरधिकेतटपरमभयावन॥५॥
।-तहाँपरसपरसुरअसुर, करिकरिकोपमहान ॥ लड़नलगेनिजशक्तिभर, हनिशस्त्रनसहसान ॥
टक-करवालकरालविशालहनें।कोउमारहिंवाणमहानघनें॥कोउतोमरभल्लतवल्लतहाँ।कोउभिंडहिपालकरालमहाँ ६
मृदंगहुओतुरही। डमरूवरदुंदुभिवेनुसही। तहँबाजनयेसबबाजतभे ॥ गजवाजिभटारथगाजतभे ॥७॥
रथिपत्तिनपत्तिलरें। असवारनसोंअसवारभिरें ॥ गजलोंगजजोरिसुअग्रहनें। सुरदानवद्वारिचहैंननें ॥ ८॥
उदानवऊँटसवारभये। गजगर्दभपैकोउरक्षचये ॥ कोउऋक्षमृगकोउसिंहचढ़े। कोउगाँदरपैचढ़िकैगवढ़े ॥९॥
उर्वोल्हनपैकोउगिद्धनपै। बकपैकोउभासनवाजनपै ॥ घृकचीनगरोझनपैनिरभे।महिषापरकोउचढ़ेहरभे॥१०॥
उमूपनओरशृगालनपै। नरपैशशपैकृकलासनपै ॥ कोउहंसनसर्पनमूकरपै। कोउश्यामपमृगनकुक्कुरपै॥११॥
उवीरतिमिंगिलछागनपै। चढ़िकैकोउगैंडनकागनपै ॥ चढ़िवाजलोयलपाक्षिसवै। [illegible] ॥
लदानवतेनिकसेसुभटे। सुरसेनाहिसन्मुखसकोझपटे ॥ मुखवीरहशस्त्रनधारनके। [illegible] ॥
दोहा-भयोभयावनयुद्धतहँ, सुरअसुरनकोभूप ॥ युगलदलदपिमयाँदताब,

छंदभुजंगप्रयात–किताकेपताकेप्रभाकेसोहावें । महाछत्रनाथेछपाकेलजावें ॥
जड़ेदंडहीरालसैंचारुचोरें । कितेमोरपिच्छानिकेचारिओरें ॥ १३ ॥
लहेपौनकोपागफेंटाउड़ाहीं । अरूझेंजडेभूपणेवर्ममाहीं ॥
चमंकैमहाशस्त्रआकाशकेसे । प्रचंडेप्रचंडांशुकीरश्मिजैसे ॥ १४ ॥
तहाँदेवदैत्यानिकीभीरभारी । विराजीसुयुक्तेभटैशस्त्रधारी ॥
चहूँओरतेशस्त्रकेसंप्रहारा । करैदेवदैत्यौघरेकोपभारा ॥ १५ ॥
तहाँदैत्यराजावलीवोजवाना । चढ्योआशुवैहाइसैनामजाना ॥
रचोजोमयैदैत्यकोकामचारी ॥ १६ ॥ भरेयुद्धकेयोग्यहैंशस्त्रभारी ॥
कहूँतोदेखातोकहूँनादेखातो । अजेहैनहींवेगजाकोजनातो ॥ १७ ॥
चढ्योयोविमानैबलीवीरसाथै । लसैचौंरछत्रैमनोरैनिनाथै ॥ १८ ॥
चहूँओरतेयूथपैघेरिताको । रुकैनाहिकोन्योथलैवेगजाको ॥
करैदानवाशोरघोराकठोरा । लियेशस्त्रमारीरणैठोरठोरा ॥
कोऊदैत्यमूँछानपैहाथफेरै । कोऊदेवकीओरआँखेंतरेरै ॥
कोऊजयपुकारैकोऊत्यौंप्रचारैं । कोऊनाहिहारैकोऊमारिडारै ॥
दुहूँओरकेशस्त्रछायेअकासै । गयोमूँदिमार्तंडकोभूरिभासै ॥
लड़ैदेवदैत्योमहाजोरकैकै । करैवीरतावैकियेआसजैकै ॥

दोहा–बलिविमानकोघेरिकै, परमवीरताछाइ ॥ असुरयूथपतिसुरनपै, आतुरआयेधाइ ॥

शंबरनमुचिबानवरवीरा।विप्रचित्तिअयमुखरनधीरा॥१९॥कालनाभद्वैसिरजनतापी।हेतिप्रहेतिशकुनि
वज्रदंष्ट्रइल्वलपरचंडा ॥२०॥ शंकुशिराहयग्रीवउदंडा ॥ कपिलमेघदुंदुभिअरुतारक ।
शुम्भनिशुम्भजंभरतदम्भा॥२१॥त्रिपुरनाथअरुमयरणखम्भा॥अरुअरिष्टअरुनेमिअरिष्टा।जाकोअहैप
औरहुकालयेहुपौलोमा । बलीनेवातकौंचवलतोमा ॥ अरुवृषपर्वविरोचनवीरा । येतेसबदौरेरणधी

दोहा–लह्योअमृतदानवनहीं, केवललह्योकलेश ॥ प्रथमअनेकनबारहीं, जीतेसुरनअशेश ॥ २३ ।
गर्जततर्जतसुरनकों, भर्जतमनहुक्रुशान ॥ करतशंखध्वनिधीरधरि, धावतभयेमहान ॥

निरखिदानवनतहँअमरेशा२४चढ्योऐरावतकोपितवेशा॥झरननझरतउदैगिरिमाहीं।युतप्रकाशजिमिभ
ताकेचहुँकितसुरबलवाना । ह्वैसवारवाहनविधिनाना ॥ अस्त्रशस्त्रगहिलोकनपाला । लैलैनिजनिज
अगिनिवरुणआदिकवरयोधा२५॥२६आगेबढितहँअसुरनरोधा॥सबैपरस्परनामपुकारी।कहिदुर्व
एकएककोबोलिप्रवीरा । पैठिपैठिरणमधिरणधीरा ॥ द्वन्द्वयुद्धकीन्हेतोहिठोरा।उतदितिसुतइतअदिति

दोहा–वासवतेबलिलडतभे, वरुणहेतिसोंधाय । कार्तिकेयतारकजुरे, मित्रप्रहेतिसचाय ॥ २८

यमअरुकालनाभयुधकीने । विश्वकर्माअरुमयरणभीने॥त्वष्टाअरुशंबररणचोपी।वीरविरोचनसविताकोप
अपराजितअरुनमुचिउदारा । वृषपर्वाअश्विनीकुमारा॥बलिसुतबानसंगसतभाई।भिन्योदिवाकरसोंश
भिन्योराहुरणमेंसँगसोमा । अनिलजंगकियसंगपुलोमा॥शुम्भनिशुम्भसंगदोउभाई।भिरेभद्रकालीसोंजाइं
लन्योशम्भुसोंजम्भप्रवीरा । महिषासुरसोंपावकधीरा॥इल्वलअरुवातापिमदाना । ब्रह्म

दोहा–कामदेवसोंलडइतभो, भटदुर्मपंमहान । सप्तमातरनिसंगमें, उत्कलकियपमसान ॥

सुरगुरुभिरेअसुरगुरुतेरे । शनिनरकासुरकोरणटेरे ॥३३॥ मरुतनेवातकवचयुधकीने ।अरुकालेयवस
विश्वेदेवासोंपौलोमा । रुद्रएकादशसोंअदितोमा ॥३४॥ यहिविधिभिलेपरस्परवीरा । तीखनतोमर

यशूलकराला। घंटाबद्धहेममणिजाला ॥ मारिडारिहौंतोहिसुरेशा । असकहिधाइकोपिअसुरेशा ॥
महेंद्रहियुतअहलादा।सिंहसमानकरतरणनादा॥३०॥आवतशूलअकाशप्रकासी।वासवलखिशरतूणनिकासी॥
शूलकोटूकहजारा।गिरचोभूमिमहँजनुबहुतारा॥नमुचिशीशकाटनमनकरिकै।हन्योकंधकुलिशहिवलभरिकै।
रिगड्योननमुचिशरीरा।उदकिकिरच्योमहिवज्रगँभीरा।निरखिकुलिशनिःफलसुरराई।करनलग्योविचारभयछाई
दोहा-वज्रहन्योहमजोरसों, गड्योनयाकेचाम। वज्रहिलगिआयुधअवधि, किमिजितिहैंसंग्राम ॥
देवगतिहोवनवारी। धौंनहिंह्वैहैविजयहमारी॥३३॥ प्रथमहिमहिगिरिगिरिजनपाटे।तिनकेपरजेंहिपवितेकाटे॥
तेवृत्रासुरशिरकाट्यो।औरहुअछतअरिनशिरछाँट्यो॥सोइपवितुच्छनमुचितनमाहीं।लगतचामभरिकाट्योनाहीं।
दसरिसअवपविह्वैगयऊ। ब्रह्महुतेजअकारथभयऊ॥ अबनहिंगहौंकुलिशकरमाहीं।याकोअहैभरोसवृथाहीं॥
वेचारिवासवभयपायो।नमुचिहिअजयशत्रुठहरायो३६यहिविधिइंद्रदुखितरणजानी।आशुहिभैअकाशकीवानी।
दोहा-वासवतुमजानहुनहीं, मैंदीन्ह्योंवरदान। वोदझूरतेनहिंमरै, यहदानवबलवान ॥
औरउपायविचारो। जातेनमुचिशत्रुसंहारो॥३७॥३८॥सुनिअकाशवाणीसुरराई। कियोविचारतहाँमनलाई॥
नहोइवोदनहिंझूरो। यहिवधकोविधानयहपूरो ॥३९॥ असकहिलैकरफेनसुरेशा॥अभिमंत्रितकरिह्वैशुचिवेशा॥
ोनमुचिकोफेनप्रवीरा।गयोशीशकटिगिरचोशरीरा निरखिनमुचिवधमुनिमुदछाई।करिअस्तुतिसुमननिझरिलाई
ायकगावनतहँलागे। दियोदेवदुंदुभिमुदपागे॥ नाचनलगींनर्तकीनाना। सुरदलभोजयशोरमहाना ॥ ४१ ॥
दोहा-अनलअनिलवरुणादिसुर, असुरनहन्योअनंत॥ जिमिकेहरिकाननमृगन, मारतनिरभयवंत ॥ ४२ ॥
ुरनक्षयलखिब्रह्मपठाये। आशुसमरमहँनारदआये॥कियोनिवारणदेवनरणमें।दुखीविचारिदानवनमनमें ॥४३॥

नारद उवाच ।

पतिभुजसहायतुमपाई। लह्योसुधाविभूतिसुखदाई॥ हनहुवृथाकसदैत्यनकाहीं। जाहुआपनेऐनेनम:हीं॥४४॥

श्रीशुक उवाच ।

ानसुनिनारदकीवानी।तज्योकोपसुनिवचनहिमानी॥विजयसुनतनिजगायकमुखते।गयेस्वर्गसुरसिगरेसुखते ४५॥
यचेजेकछुअतित्रासन।तेनारदकोलहिअनुशासन॥वलिहिविकललैसकलदुखारी।गयेअस्तगिरिअसुरपधारी४६
दोहा-मरेकटेजिनअंगनहिं, तिनकोशुक्राचार्य॥ दैत्यनदियोजियाइकरि, विद्याजीवनआर्य ॥ ४७ ॥
शुक्रपरसतेबलिउठ्यो, ह्वैगोपूर्वसमान॥ पाइपराजयभोनहीं, नेकहुदुखीसुजान ॥ ४८ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे एकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-शम्भुसुन्योहरिमोहिनी, वपुधरिअसुरनमोहि॥ सुधापियायोसुरनको, अतिदायादृगजोहि॥ १॥
ातिअचरजनिजमनहिंविचारी। देखनअभिलाषेत्रिपुरारी॥रूपमोहिनीश्रीभगवाना। धरयोकौनविधिसुभगमहाना॥
रोंअवशिवैकुंठहिजाई। कियोकौनकौतुकयदुराई॥ असविचारिकैलासनिवासी। उमासहितचढ़िवृषभहुलासी॥
ूतनकेगणलैसंगमाहीं। गयेवसतश्रीकंतजहाहीं॥ माधवनिरखिलियेचलिआगू। कह्योशम्भुसोंकियबडभागू॥
उमासहितहरकोसतकारा। कीन्ह्योमाधवपरमउदारा॥ २॥ जबहरिहरबैठेसुखछाई। तबहरहरिसोंकहमुसकाई३

श्रीमहादेव उवाच ।

दोहा-तुमसोंदीनदयालनहिं, त्रिभुवनरमानिवास॥ भक्तनकोरक्षनरहो, करिकरिअमितप्रयास॥
छंदभुजंगप्रयात-अहोदेवशम्भोलोकव्यापी। जगत्रापनमवयजगन्मयप्रतापी॥

सबैभावकेहेतुआत्मानियंता ॥ ४ ॥ अहौविश्वतेभिन्नना
अहौसच्चिदानंदरूपीपरेशा । तुम्हींविश्वकेहौशरीरीरमेश।
कियेमोक्षइच्छाफलेच्छाविहाई । उभैसंगछोडेमनैकोलगा
भजैसंतपादारविंदैतिहारे । बसैतेसदाचित्तहीमेंहमारे ॥ ६
तुम्हींपूर्णब्रह्मामृतंशोकहीने । प्रमोदस्वरूपीगुणैदिव्यभीने
सदानिर्विकारीअहौविश्वकारी । अहौईशजीवादिपरमोप
तुहींएककार्यैतुहींकारणेहै । यथाएकईश्वर्नऔभूपणेहै ॥
कहैमूढ़अज्ञानतेभेदतामैं । तुम्हींतेगुणैकोअहैपारिनामै ॥
कहैब्रह्मवादीतुम्हैब्रह्मपूरो । कहैकर्मवादीतुम्हैधर्मरूरो ॥
असत्सत्परैसांख्यवादीबखानै । युतैशक्तिनोपांचरात्रीसुग
स्वतंत्रैमहापुर्षयोगीउचारैं । तुम्हैनिर्विकारैविचारैंअपारैं ॥
नमैजेविधातामरीच्यादिज्ञानी । नजानैंतुम्हारोप्रपंचैप्रमानै
तौकैसेतुम्हैंआपनेचित्तआनैं । सबैरावरीनाथमायाभुलानैं ।
जोपैसत्त्वकीवृत्तिवारेनजानैं । तौक्योंराजसीतामसीठीकठा
रच्योआपनोविश्वमेंव्याप्तआपै । यथाएकसर्वत्रहींवायुव्यापै
अहोशास्त्रतेजानिवेयोगनाथा । तुम्हींजानहूविश्वजन्मादिग
सुनौप्रार्थनाश्रीहरेयाहमारी । सुदीजैपदैभक्तिजोसंतप्यारी ।

दोहा—लख्योअमितअवतारतव, करतविहारअपार ॥ लखनचहोंअबजोधरचो, ।
जौनमोहिनीरूपहितेरे । मोहितकीन्हेअसुरपनेरे ॥ सुरनपियायोसुधासुखारी । सोईल
मोमनभोअचरजयहभारी । कैसेभयेकृष्णवरनारी ॥ १३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिकियोविनयत्रिपुरारी । तबमुकुंदहँसिगिराउचारी ॥ १४ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

सुरहितदैत्यविमोहनहेतू । जोतियरूपधरयोवृषकेतू॥१५॥सोमैंतुमकोअबशिदेखैहौं।
सोवपुकामिनकोअतिप्यारो । मनसिजकोउद्दीपनवारो ॥ १६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिभेहरिअंतरधाना । उमासहिततेंहिठौरइशाना ॥

दोहा—कोहिविधिमोहिनिवपुधरत, हरियहकरतविचार ॥ निरखतचारिहुँओरतहँ, उ
तहाँप्रगटभोसुंदरबागा । झरतकुसुमबहुउडतपरागा ॥ नवपल्लवअरुनितचहुँओरा । क
मत्तमलिंदनकोझनकारी । बहतमंदमारुतमनहारी ॥ तहँयककमीहिनिनारिसुहाई ।
मनुसमे [illegible] ।श्रमकरिरचीतिरंगितिविचारी।कलकिंकिणीकलितकटिसोनी
[illegible] ॥१८॥ फेंकतलोकतगेंदलोकावत ।
[illegible] । मंदमंदकिसलयचरण, जहँतहँ
[illegible] ॥कुटिलकेशअलकलसतवरफानन।नील
[illegible] । पाँयकरसोंनिनदिसँभारति । द

सोंत्रिभुवनकहँमोहति।बारबारवनविहरतसोहति २१ चितैलजोहैंकछुमुसक्याई।लियोशंभुकोचित्तचोराई॥
हिनीछविकामारी।भयेकामवशसुरतिविसारी॥गईभूलिनिजनिकटभवानी।निजगणहुँनकीसुरतिभुलानी॥

दोहा–गिरोदूरिकंदुककछुक, गईलेनातियधाइ। हरकेहेरतपवनलगि, अंचलदियोउड़ाइ॥ २३॥

धिनिरखिमोहिनीरूपा।शंकरकियोग्रहणमनभूपा॥२४॥उमालखततनलाजविहाई।दौरेशम्भुकामरँगछाई २५
करकोधावतआवत।लज्जितभागीवसनबनावत॥लागीदुरनद्रुमनमहँधाई।मुरिलखिविहँसतिनहिंठहराई॥२६॥
छेपीछेहरधाये। करिनीसंगकरीशसोहाये॥२७॥गह्योबालवेनीशिवधाई। लियोभुजनभरिअंकलगाई॥२८॥
अंककेमोहिनिनारी। छटपटानिलागीसुकुमारी॥ खुलेकेशबंधनतेहिकेरे। चाहतिनहिंरहिबोशिवनेरे॥२९॥

दोहा–जसतसकैतियआपको, शम्भुजानिछोंड़ाइ। करिनीसीकरितेछुटी, आतुरचलीपराइ॥ ३०॥

धायेशंकरतेहिपाछे।भयेकामवशनरइवआछे॥३१॥धावतहींभोवीर्यनिपात।करिनिसंगजिमिगजमदमाता ३२
जहँगिरयोवीर्यईशाना।कनकरजततहँभईखदाना॥३३॥सरिनसरनशैलनवनमाहीं।औरहुऋषिनआश्रमनपाहीं॥
शिवमोहिनिसँगभागे।भूल्योभानकामशरलागे॥३४॥हरकोरेतपातजबभयऊ।तबसँभारितनकीसुधिलयऊ॥
:खितलज्जितफिरिआये।पारवतीकोमुखनदेखाये॥३५॥शंभुकृष्णमहिमाजियजाने।तातेकछुअचरजनहिंमाने

दोहा–सावधानलखिशम्भुको, मधुसूदनढिगआइ। धारिचतुर्भुजरूपनिज, कह्योमंदमुसकाइ॥ ३७॥

श्रीभगवानुवाच।

ोहितईशाना। जोतुमलह्योफेरिनिजभाना॥मोहिनिमोहिमोहतजिहींन्ह्यों। हेशंकरयहअचरजकीन्ह्यों॥
ोधलोभमदमोहहिभरनी। सबजगकेजीवनवशकरनी॥ ऐसीअतिदुस्तरममाया। तुमहिंबिनाकोपारहिपाय॥
ममायातुमकोवृषकेतू। मोहकरीनहिंगननसमेतू॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिहरसोंतहँजगदीशा। कियोवड़ोसतकारमहीशा॥ तवहरिसोंहरबिदाकराई। करिप्रदक्षिणाशीशनवाई॥
नंदीचढ़िलैगणसहुलासा। शंकरगवनकियोकैलासा॥ ४१॥

दोहा–अरधांगीप्यारीपरम, निजअंकहिंबैठाइ॥ पारवतीसोंयहकह्यो, शंकरमुनिनसुनाइ॥ ४२॥

देख्योपरमपुरुषकीमाया। कोउजाकोपारनपाया॥ ईशहुमैंमोह्योपरिजामें। जनमोहेंअचरजकातामें॥ ४३॥
जोतुमपूँछेहुमोहिंभवानी। वर्षहजारमहातपठानी॥ काकोनाथधरहुतुमध्याना। सोमेरेप्रभुयेभगवाना॥ ४४॥
जाकीगतिकालहुनहिंजानै। अरुजामेंप्रवेशनहिंठानै॥ सोईकृष्णयेपुरुषपुराना। जासुप्रभाववेदकियगाना॥

श्रीशुक उवाच।

विक्रमअजितउरुक्रमकेरो। क्षीरसिंधुमथनादिघनेरो॥ मोसोंपूँछ्योजोकुरुराई। सोमैंतुमसोंकह्योबुझाई॥ ४५॥

दोहा–कहतसुनतजोयहकथा, करिश्रद्धाबहुवार॥ ताकेकारजसिद्धिसब, आशुहिहोतअपार॥
अतिविचित्रश्रीकृष्णको, सबचरित्रसुखसार॥ श्रवणकरतगावतगुनत, नाशतपापअपार॥ ४६॥

कवित्त–क्षीरधिमंथनजोकरिकैश्रमहीनाकियोउतपन्नसुधाको।
मोहिनीरूपकैदैत्यनमोहिअमीकोपियायोजोदेवसभाको॥
संतनकोसुलभैविपयिनकोदुर्लभहैपदपंकजजाको।
कामनापूरकसोयदुराजकोयारघुराजहैदाससदाको॥ ४७॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे द्वादशस्तरंगः॥ १२॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–विवस्वानकेमनुभये, श्राद्धदेवमतिधाम ॥ सतयोंमन्वंतरअधिप, तेहिंपुत्रनसुनुनाम ॥ १ ॥
धृष्टनभगइक्ष्वाकुनरेशा । नरिष्यंतनाभागसुवेशा ॥ औरदिष्टकरुपहुसरजाती । अहप्रसिद्धवसुमानुवि
सुतदशमनुवैवस्वतकेरे ,। भयेपरीक्षितबलीबडेरे ॥३॥ मरुतरुद्रवसुअरुआदित्या ।ऋभुअश्विनीकुमार
विश्वेदेवादेवललामा । इंद्रहुभयेपुरंदरनामा ॥ ४ ॥ कश्यपअत्रिवशिष्ठप्रकासी । भरद्वाजगौतमतपरास
कौशिकअरुजमदग्निमुनीशा ।। भयेसप्तऋषितहाँमहीशा॥५॥यहुमन्वंतरमहँभगवाना।लियोजन्मजोवि।
दोहा–कश्यपकेसनबंधते, अदितिगर्भमेंआय ॥ देवनकोभेअनुजप्रभु, वामननामकहाय ॥ ६ ॥
सातहुमन्वंतरमेंगायो । संक्षेपहितेतुमहिंसुनायो । अबभविष्यवरणौंमतिसेतू । मन्वंतरहरिशक्तिस
विशुकरमाकन्याद्वैजेई । भईविवस्वतकीतियतेई ॥ जिनहिंनामसंज्ञाअरुछाया । कुरुपतिसोइमेंप्रथमसु
वडवातीसरिनारिनवीनी । तिनमेंसंज्ञाकेसुततीनी ॥ श्राद्धदेवअरुयमसुतदोई । यमुनानामकन्यका
अवछायाकीसंततिसुनिये । सुतसावरणिशनैश्चरगुनिये ॥ अरुतपतीकन्यासुकुमारी । सोसंवरणहिकं
दोहा–वडवाकेवरसुतभये, द्वैअश्विनीकुमार ॥ अठयेंमन्वंतरहिमें, सुनियेंभूपउदार ॥ १० ॥
ह्वैहैंसावरणीमनुयशयुत । ह्वैहैंविरजसकादिकतिनसुत ॥ सुतपविरजअमृतप्रजजेई । ह्वैहैंमन्वंतरसुरते
तहाँविरोचनपुत्रसुजाना । ह्वैहैंबलिसुरेंद्रबलवाना ॥ धरिहरिवपुवामनबलिपाहीं। माँग्योजायत्रिपदमहिक
नाँपिलेहुतबबलिकहिदीन्ह्यो । वामनत्रिभुवनत्रैपदकीन्ह्यो॥श्रीपतितेबलिबंधनपायो।तऊनखेदकछूउरल
हरिशासनलेतहँबलिराजा । गयोसुतलकहँसहितसमाजा॥अबलोंतहाँसरिससुरराई । निवसतत्रिभुवनवि
दोहा–यहिविधिवामनकोदियो, बलित्रिभुवनकोदान ॥ ताकोफलपैहैंनृपति, ह्वैहैंइंद्रमहान ॥ १४ ॥
गालवदीप्तिमानभृगुरामा । कृपाचार्यऔअश्वत्थामा ॥ शृंगीऋषिअरुपिताहमारे । व्यासदेवजेवेदउधारे
ह्वैहैंयेसप्तर्षितहाँहीं । अबहैंनिजनिजआश्रममाहीं ॥ देवगुह्यकीसरस्वतिनारी । सार्वभौमतेहिंप्रगटिमुरार
वासवसोंलैत्रिभुवनराजू । बलिकोदैहैंसबसुखसाजू ॥ पुनिनवयेंमन्वंतरमाहीं । सुमनुदक्षसावरणितहाँहीं
ह्वैहैंवरुणपुत्रकुरुराई । ताकोविवरणदेहुँसुनाई ॥ भूतकेतुआदिकसुतताके । ह्वैहैंनरपतिपरमप्रभाके ॥
दोहा–पारादिकसुरहोहिंगे, सुतमहेंद्रजेहिंनाम ॥ द्युतिमतादिसप्तर्षितहँ, ह्वैहैंअतितपधाम ॥ १९ ॥
आयुषमतकीतियजलधारा।तामेंऋषभविष्णुअवतारा॥तेहिंभुजबलश्रुतइंद्रात्रिलोके।पालनकरिहैंलहिमुद
दशोंब्रह्मसावरणिसुजाना । ह्वैहैंमनुकुरुपतिबलवाना ॥ भूरिसेनआदिकसुतह्वैहैं ।हविषमतादिसप्तऋ
तहाँप्रजापतिकेगृहमाहीं । भूपअवशिकेशवप्रगटाहीं ॥ नामअमूर्त्तिजासुमुनिधरिहैं। करुणानिधिजगपाल
विरुधसुवासनआदिकदेवा । शंभुइंद्रकीकरिहैंसेवा॥एकादशमधर्मसावरणी । ह्वैहैंजासुशक्तिअरिदरणी॥२
दोहा–धरमादिकसुतहोहिंगे, निरवातादिकदेव ॥ वैधृतइंद्रहुहोइगो, अरुणादिकऋषिभेव ॥ २४ ॥
नारिवैधृताआर्यककेरे । धर्मसेनहरिदयापनेरे ॥ प्रगटकृष्णअतिआनँदभरिहैं। त्रिभुवननिजबलधारणकरि
फेरिरुद्रसावरणीराजा । ह्वैद्वादशमनुजगभ्राजा ॥ देववानआदिकसुतह्वैहैं । हरित्तादिकतहँदेवकहैहैं
तहँशर्मायकादिऋषिख्याता।ऋतधामासुरेशविख्याता ॥२८॥ सूनृतशक्तिसदाकीवामा॥तिनकेह्वैहैं ।
मनुकारजसबसाधनकरिहैं।अनुपमयशत्रिलोकविस्तरिहैं॥सुमनुदेवसावरणित्रयोदश।चित्रसेनआदिकसुत
दोहा–सुत्रामादिकदेवनहैं, इंद्रदिवस्पतिनाम ॥ निर्मोकादिकसप्तऋषि, ह्वैहैंतहाँललाम ॥ २९॥ २
बृहतीदेवहोत्रकीनारी । योगेश्वरह्वैहैंमुनिगिरिधारी ॥ ह्वैहैंवासवकेरसदायक । करुणानिधिसुंदरयदुनायक
मनुचौदहौंइंद्रसावरणी । ह्वैहैंमुनीश्चयाशुभकरणी ॥ उरगंभीरआदिसुतताके । पवित्रादिसुरपरमप्रभाके ।
ह्वैहैंइंद्रतहाँशुचिनामा । अग्निआदिमुनिपरसिधामा ॥ सत्रायनकीनारिविताना । जनमीबृहद्भानुभगवाना ।
करिहैंमनुकुलपालनयामा । ऊर्ध्वरूपकिरमंगमाना ॥ यचौदहौंमनुमन्नृपगाये । तिनकेऋषिसुरइंद्रसुनाये

दोहा-मन्वंतरचौदहिंबिते, ब्रह्माकोदिनहोइ ॥ सहसचतुर्युगजाहिंजब, एककल्पकहिसोय ॥ ३६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

दोहा-मन्वंतरकीसुनिकथा, मुदितपरीक्षितराय ॥ कियोप्रश्नशुकदेवसों, पाणिजोरिशिरनाय ॥ १ ॥

राजोवाच ।

मन्वंतरिनमाहँऋपिराई । अहैंजेमनुअरुसुरराई ॥ जेजेजेहिजेहिकर्मनमाहीं । जेहितेअहैंनिरुक्तसदाहीं ॥ २ ॥ ... कहुसोभागव ... यान। । सुनिवेकोममनहुलसाना ॥ सुनतनृपतिकेमाधुरवैना । वरणनलागेशुकमतिऐना

शुक उवाच ।

मनुमनुसुतसतर्पिनरेशा । औरहुसुरगणसहितसुरेशा ॥ कृष्णचंद्रकेशासनमाहीं । सिगरेअविचलरहतसदाहीं यज्ञादिकजेहरिअवतारा । तिनप्रेरितमन्वादिउदारा ॥ थितहैंनिजहिनिजहिअधिकारा । करतरहतपालनसंसार

दोहा-मन्वंतरकेअंतमहँ, लोपहोहिंजबवेद ॥ तबनिजतपबलसप्तऋषि, करहिंप्रचारअखेद ॥ ३ ॥

जिनवेदनतेधर्मसनातन।प्रगटतउभयलोकसुखसाधन॥४॥चारिचरणतेहिंधरमहिकाहीं।भगवतप्रेरितमनुमहिमा युगअनुरूपहिकरतप्रचारा । सावधानह्वैभूपउदारा ॥५॥ मनुकेपुत्रपौत्रधरमहिंधरि । पालतमन्वंतरअंतनभरि मन्वंतरनमाहँजेदेवा । यज्ञभागलेवेयुतसेवा ॥ ६ ॥ त्रिभुवनविभवदियोहरिकेरो । इंद्रकरतहैंभोगघनेरो वरपिअन्नउत्पन्नहिकरती।यहिविधितेसिगरोजगभरती॥७॥युगयुगसनकादिकहरिरूपा।कथतज्ञानविज्ञानअनूप

दोहा-याज्ञवल्क्यआदिककरहिं, युगयुगकर्मवखान । दत्तात्रेयादिकसवै, वरणहियोगविधान ॥ ८ ॥
प्रजापतिनकोरूपधरि, सृजतप्रजाभगवान । राजरूपपालनकरत, हरिपापिनकेप्रान ॥
कालरूपतेकरतहैं, श्रीहरिजगसंहार । गुणनलिप्तनहिंआपहैं, प्रेरकगुणनअपार ॥ ९ ॥
मायामोहितजननते, अस्तुतिकैनिजात, तद्यपिहरिऐसेअहैं, यहनहिंठीकजनात ॥ १० ॥
ऐसोकल्पविकल्पको, वरण्योभूपप्रमान । जेहिमेंचौदहिमनुअहैं, सोइविधिइकदिनजान ॥ ११ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे चतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

दोहा-सुनिमन्वंतरकीकथा, कुरुपतिआनँदपाय । बहुरिकह्योशुकदेवसों, मुनियहदेहुसुनाय ॥

राजोवाच ।

तीनचरणधरणीमुनिईशा । बलिसोंकिमियाच्योजगदीशा॥लोभीसमनिजअर्थहुलीन्हे।पुनिकसबलिकोबंधनकीन्हे यहमोकोंअतिअचरजलागा । सुननचित्तचाहतबड़भागा॥दैत्यराजकोबिनअपराधा।यज्ञेश्वरकियबंधनबाधा ॥ देखिभूपकोअतिअनुरागे । बामनकथाकथनमुनिलागे ॥

श्रीशुक उवाच ।

भूपतिदेवासुररणमाहीं । लियोजीतिवासवबलिकाहीं ॥ हरयोप्राणऔरहुधनधामा ।।असुरबलिहिलैगेनिजठामा शुक्राचारजताहिजियाई । दियोजियाइनसुरसमुदाई ॥

आनन्दाम्बुनिधि।

श्रीशुक उवाच।

दोहा–विवस्वानकेमनुभये, श्राद्धदेवमतिधाम ॥ सतयोंमन्वंतरअधिप, तेहिंपुत्रनसुनुनाम ॥ १
धृष्टनभगइक्ष्वाकुनरेशा। नरिष्यंतनाभागसुवेशा ॥ औरदिष्टकरुषहुसरजाती।
सुतदशमनुवैवस्वतकेरे। भयेपरीक्षितवलीवडेरे ॥२॥
विश्वेदेवादेवललामा। इंद्रहुभयेपुरंदरनामा ॥ ४ ॥ कश्यपअत्रिवशिष्ठप्रकासी।
कौशिकअरुजमदग्निमुनीशा। भयेसप्तऋषितहाँमहीशा॥८
दोहा–कश्यपकेसनबंधते, आदितिगर्भमेंआय ॥ देवनकोभेअनुजप्रभु, वामननामकहाय ॥ ६ ॥
सातहुमन्वंतरमेंगायो। संक्षेपहितेतुमहिंसुनायो। अबभविष्यवरणोंमतिसेतू।
विशुकरमाकन्याद्वैजेई। भईविवस्वतकीतियतेई ॥ जिनहिंनामसंज्ञाअरुछाया।
वडवातीसरिनारिनवीनी। तिनमेंसंज्ञाकेसुततीनी ॥ श्राद्धदेवअरुयमसुतदोई।
अवछायाकीसंततिसुनिये। सुतसावरणिशनैश्चरगुनिये ॥ अरुतपतीकन्यासुकुमारी।
दोहा–वडवाकेवरसुतभये, द्वैअश्विनीकुमार ॥ अठयेंमन्वंतरहिमें, सुनियेंभूपउदार ॥ १० ॥
ह्वैहैंसावरणीमनुयशयुत। ह्वैहैंविरजसकादिकतिनसुत ॥ सुतपविरजअमृतप्रजजेई।
तहाँविरोचनपुत्रसुजाना। ह्वैहैंबलिसुरेंद्रबलवाना ॥ धरिहरिवपुवामनबलिपाहीं।
नाँपिलेहुतबबलिकहिदीन्ह्यो।
हरिशासनलैतहँबलिराजा। गयोसुतलकहँसहितसमाजा॥अबलौंतहाँसरिससुरराई।
दोहा–यहिविधिवामनकोदियो, बलित्रिभुवनकोदान ॥ ताकोफलपैहैंनृपति, ह्वैहैंइंद्रमहान ॥ १४
गालवदीतिमानभृगुरामा। कृपाचार्यऔअश्वत्थामा ॥ शृंगीऋषिअरुपिताहमारे।
ह्वैहैंयेसप्तर्षितहाँहीं। अवहैंनिजनिजआश्रममाहीं ॥ देवगुह्यकीसरस्वतिनारी।
वासवसोंलैत्रिभुवनराजू। बलिकोंदैहैंसबसुखसाजू ॥ पुनिनवयेंमन्वंतरमाहीं।
ह्वैहैंवरुणपुत्रकुरुराई। ताकोविवरणदेहुँसुनाई ॥ भूतकेतुआदिकसुतताके। ह्वैहैंनरपतिपरमप्रभाके ॥
दोहा–पारादिकसुरहोहिंगे, सुतमहेंद्रजेहिंनाम ॥ द्युतिमतादिसप्तर्षितहँ, ह्वैहैंअतितपधाम ॥ १९
दशौब्रह्मसावरणिसुजाना। ह्वैहैंमनुकुरुपतिबलवाना ॥ भूरिसेनआदिकसुतह्वैहैं
तहाँप्रजापतिकेगृहमाहीं। भूपअवशिकेशवप्रगटाहीं ॥ नामअमूर्तिजासुमुनिधरिहैं।
विरुधसुवासनआदिकदेवा। शंभुइंद्रकीकरिहैंसेवा॥एकादशमधर्मसावरणी। ह्वैहैजासुशक्तिअरिदरणी
दोहा–धरमादिकसुतहोहिंगे, निरवातादिकदेव ॥ वैधृतइंद्रहुहोइगो, अरुणादिकऋषिभेव ॥ २४ ॥
नारिवैधृताआर्जककेरे। धर्मसेनहरिदयापनेरे ॥ प्रगटकृष्णअतिआनँदभरिहैं।
फेरिरुद्रसावरणीराजा। ह्वैहैद्वादशमनुजगभ्राजा ॥ देववानआदिकसुतह्वैहैं। हरितादिकतहँदेवकहैहैं
तहँआग्नीध्रकादिऋषिसाता।ऋतधामासुरेशविख्याता ॥२८॥
मनुकारजसबसाधनकरिहैं।अनुपमयशत्रिलो–
दोहा–सुत्रामादिकदेवतहँ, इंद्रदिवसपतिनाम ॥ निरमोकादिकसप्तऋषि, ह्वैहैंतहाँललाम ॥ २९॥ ३
बृहतीदेवहोत्रकीनारी। योगेश्वरतेहिंसुतगिरिधारी ॥ ह्वैहैंवासवकेरसहायक।
ह्वैहंसुनोकथाशुभकरणी ॥ उरगंभीरआदिसुतताके। पवित्रादिसुरपरमप्रभाके
अग्निआदिसप्तर्षिललामा ॥ सत्रायनकीनारिविताना। जनमीबृहद्भानुभगवाना
प्रगटकरेंगेकर्मसमाजा ॥ येचौदहिंमनुमेंनृपगाये।

दोहा-मन्वंतरचौदहिंबिते, ब्रह्माकोदिनहोइ ॥ सहसचतुर्युगजाहिंजब, एककल्पकहिसोय ॥ ३६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

दोहा-मन्वंतरकीसुनिकथा, मुदितपरीक्षितराय ॥ कियोप्रश्नशुकदेवसों, पाणिजोरिशिरनाय ॥ १ ॥

राजोवाच ।

मन्वंतरनिमाहँऋपिराई । अहैंजेमनुअरुसुरराई ॥ जेजेजेहिजेहिकर्मनमाहीं । जेहितेअहैंनिरुक्तसदाहीं ॥ २ ॥
वरुणहुसोभागवतप्रधाना । सुनिवेकोममनहुलसाना ॥ सुनतनृपतिकेमाधुरवैना । वरणनलागेशुकमतिऐना ॥

शुक उवाच ।

मनुमनुसुतसप्तर्पिनरेशा । औरहुसुरगणसहितसुरेशा ॥ कृष्णचंद्रकेशासनमाहीं । सिगरेअविचलरहतसदाहीं ॥
यज्ञादिकजेहरिअवतारा । तिनप्रेरितमन्वादिउदारा ॥ थितह्वैनिजनिजहिअधिकारा । करतरहतपालनसंसारा ॥

दोहा-मन्वंतरकेअंतमहँ, लोपहोहिंजबवेद ॥ तबनिजतपबलसप्तऋषि, करहिंप्रचारअखेद ॥ ३ ॥

जिनवेदनतेधर्मसनातन।प्रगटतउभयलोकसुखसाधन॥४॥चारिचरणतेहिंधरमहिकाहीं।भगवतप्रेरितगनुमहिमाहीं।
युगअनुरूपहिकरतप्रचारा । सावधानह्वैभूपउदारा ॥५॥ मनुकेपुत्रपौत्रधरमहिंधरि । पालतमन्वंतरअंतनभरि ॥
मन्वंतरनमाहँजेदेवा । यज्ञभागलेवेयुतसेवा ॥ ६ ॥ त्रिभुवनविभवदियोहरिकेरो । इंद्रकरतहैंभोगघनेरो ॥
वरपिअन्नउत्पन्नहिकरती।यहिविधितेसिगरोजगभरती॥७॥युगयुगसनकादिकहरिरूपा।कथतज्ञानविज्ञानअनूपा ॥

दोहा-याज्ञवल्क्यआदिककरहिं, युगयुगकर्मबखान । दत्तात्रेयादिकसवै, वरणहिंयोगविधान ॥ ८ ॥
प्रजापतिनकोरूपधरि, सृजतप्रजाभगवान । राजरूपपालनकरत, हरिपापिनकेप्रान ॥
कालरूपतेकरतहैं, श्रीहरिजगसंहार । गुणनलिप्तनहिंआपहैं, प्रेरकगुणनअपार ॥ ९ ॥
मायामोहितजननते, अस्तुतिकीनेजात, तद्यपिहरिऐसेअहैं, यहनहिंठीकजनात ॥ १० ॥
ऐसोकल्पविकल्पको, वरण्योभूपप्रमान । जेहिमेंचौदहिमनुअहैं, सोइविधिइकदिनजान ॥ ११ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे चतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

दोहा-सुनिमन्वंतरकीकथा, कुरुपतिआनँदपाय । बहुरिकह्योशुकदेवसों, मुनियददेहुसुनाय ॥

राजोवाच ।

तीनचरणधरणीमुनिईशा । वलिसोंकिमियाच्योजगदीशा॥लोभीसमनिजअर्थहुलीन्हे।पुनिकसवलिकोबंधनकीन्हे॥
यहमोकोंअतिअचरजलागा । सुननचित्तचाहतवड़भागा॥दैत्यराजकोबिनअपराधा।यज्ञेश्वरकियबंधनबाधा ॥२॥
देखिभूपकोअतिअनुरागे । वामनकथाकथनमुनिलागे ॥

श्रीशुक उवाच ।

भूपतिदेवासुररणमाहीं । लियोजीतिवासववलिकाहीं ॥ हरयोप्राणऔरहुधनधामा ॥ असुरवलिहिलैगेनिजठामा ॥
शुक्राचारजताहिजियाई । दियोजियाइअसुरसमुदाई ॥

दोहा—देधनबहुसबभाँतिसों, शुक्रहिबलिमतिमान। पुनितिनकहँआधीनह्वै, पूज्योसहितविध
जानिस्वर्गजीतनकीआशा। शुक्राचारजपरमप्रकाशा॥ अतिप्रसन्नबलिपेकरिदाया।सविधिविश्व
शुक्रसहितवरविप्रअनेकू। बलिकोकियोमहाअभिषेकू॥४॥होमप्रकाशिततहँहुतासा।प्रगटकियोरथ
कंचनकलितकिंकिणीमाला।हरितवर्णबहुबाजिविशाला॥ ध्वजाधवलअंकितमृगराजा।शारदवारिदसा
चामीकरकोचापसुहायो।अक्षयतूणकवचछविछायो॥दियप्रह्लादबलिहिशुभमाला।शुक्रदियोतेहिशं
दोहा—यहिविधिरणकीसाजसब, देद्विजवरबलिकाहि। आशिरवादहुदेतभे, लहौविजययुधमाहि
बलिविप्रनपरदक्षिणदीन्ह्यो। दंडप्रणामपुहुमिपरकीन्ह्यो॥अञ्जलिप्रहलादहुकेरी।कियोप्रणतिप्रमुदितव
दियोजोस्यंदनशुक्रसुहावन।तापरचढ्योदैत्यपतिपावन॥सुंदरसुमनमालउरसोहत।कवचकरालल्ग
शरपूरिततूणीरविशाला। दिव्यचापकरवालकराला॥८॥अंगदकनकबाहुमहँजाके। मकराकृतकुंडल
बलिस्यंदनपरसोहतकैसे। कनकशैलपरपावकजैसे॥९॥यूथपसबबलिसमबलवाना। विभौ
दोहा—निजनिजसैनासाजिसब, रथमातंगतुरंग। गरजतवारहिंवारसब, चलेदैत्यपतिसंग॥१०
यहिविधिअसुरसैनलैभारी। चढ्योपुरंदरपुरहिसुरारी॥ कियेलेतमानहुनभयानू। दिशनदहतमनुदृग
अंबरजवनिकँपावतधाये।यहिविधिअमरावतिनियराये११अमरावतिनिरख्योबलिराजा।जहँमने ९
परमरम्यउपवनउद्याना। नंदनादिघनसोहतनाना॥ कूजहिंयुगलविहंगसुहावन।मत्तम
पछ५फूलसुमनकेभारा। झुकिदेवतरुशाखअपारा॥ चक्रवाकसारसअरुहंसा। कारंडवक
दोहा—करहिंमनोहरशोरअति, सरसिनमेंसुखपाय। तहाँखेलखेलतरहैं, सुरसुंदरीनहाय॥१३॥
परिखागगनगंगहैजामें। पुरटकोटपावकसमतामें॥ उन्नतअटाअनूपमराजे॥१४॥
फबैफटिकमणिकेपुरद्वारा॥१५॥लसतराजपथयुतविस्तारा॥गलीसभाचौहटचहुँओरा।विलसहिंमहाविम
मणिमयवणिकदुकानअखेदी। बलितवज्रविद्रुमवरवेदी॥१६॥नितनवयौवनवतीरसाला।विमलवसनधारे
जहँतहँविचरहिंदीपशिखासी।करहिंइंद्रनगरीपरकासी॥१७॥सुरतियविगलितकेशप्रसूना।ताकेसे
दोहा—जाकेमारगमेंबहत, मारुतमंदसदाहि॥१८॥ धूपधूमसुरभितकढत, कनकगवाक्षनमाहिं
धवलअमलपथबिछेबिछौना।तापरकरहिंनारिनितगौना॥१९॥मुक्तनयुक्तिवितानकिताके।तनेचंदचाँदनि
हेमदंडयुतध्वजापताका। लसहिंमनहुदामिनिसबलाका॥ छबिछायेछज्जाअतिछाजें।
चहुँकितउपजावनअहलादा।मत्तमलिंदकरतकलनादा।बैठिमनोहरमुदितमकाना। सुरतियकरहिंसुमंगल
वीनवेणुअरुमुरजमृदंगा। दुंदुभितालशङ्खसुरसंगा॥ थलथलमहँगंधर्वबजावत। नाच
दोहा—अतिविचित्ररमणीयअति, अमरावतीअनूप। जाकीप्रभालजावती, जगतप्रभाकहँभूप॥
विश्वकरमाकीरचितसुहावनि।स्वर्गलोकवासिनसुखछावनि २१ लोभीकामीशठखलमानी।औरअधर्म
येनहिजानकबहुँतहँपावैं। इनतेभिन्नतेईजनजावैं॥२२॥ कुरुपतिइमिअमरावतिकाहीं। बलिलेअसुरसैनसँ
बाहरतेघेरयोचहुँओरा।शुक्रदत्तशङ्खहिकियशोरा॥सुनतशंखकीध्वनिदुखदानी।भययुतभईशक्रकीरानी
इंद्रजानिबलिराजचढ़ाई। लैदेवनकोसँगअकुलाई॥ गयोबृहस्पतिपाससुरेशा॥चरणवंदिनिजकह्योअँ
दोहा—प्रथमहिदेवासुरसमर, मैंबलिवज्रहिमारि। रणगिराइदियआसुरी, सिगरीसैनबिडारि॥
सोइपुनिबलिलैदलघोरा। चढिआयोमोपरवरजोरा॥कौनतेजदीन्ह्योअबयाको। हमसोंसनमुखज
कोउदेखातनहिंरोकनहारा। मनुमुखसोंपीवतसंसारा॥ मानहुँचाटनचहतदिशानन। दाहतमानहुँदृगन
उड्योमनहुँप्रलयानलघोरा।जारनसुरनचहतचहुँओरा॥२६॥याकोकारणगुरुभगवाना।करहुकृपाक
ओजतेजबलअसकहँपायो।जातेमोहिंजीतनचढ़िआयो॥२७॥सुरगुरुसुनिसुरपतिकीबानी।कहन

गुरुरुवाच।

दोहा–बलिकोपुनिचढ़िआवनो, ताकोकारणजोय। ताकोमेंजानतअहौं, सुनोदेवपतिसोय॥
...जितयज्ञ... । तातेबलिऐसोबलपायो॥२८॥तुमहुँऔरजोतुमसमकोई। आजनबलिसनमुखहिरहोई॥
... । खड़ेनहोतकालकेआगे॥ बलिकेजीतनमहँसुरराई। समरथअहैंएकयदुराई॥२९॥
तातेतजिनिजस्वर्गनिवासा। भागिजाहुसबसुरदशआसा॥ कालविपर्ययरिपुकरजोई। परखेरहोसबैसुरसोई॥३०॥
यहद्विजबलतेअबैप्रचंडा।चढिआयोइतबलिबरिबंडा॥जबकरिहैगुरुकोअपमाना।नशिजैहैतबविभवमहाना॥३१॥
दोहा–इमिसुनिसुरगुरुकेवचन, सुरसुरपतिसतिमानि। गमनकियेतजिस्वर्गको, नानारूपनिठानि॥३२॥
शनदेवदुरिगेसबजबहीं।पुत्रविरोचनकोबलितबहीं॥अमरावतीथानकरिराजा।त्रिभुवनवशकियसहितसमाजा ३३
जशिष्यहित्रिलोकपतिकाहीं।कियेशुक्रगुरुकृपातहाँहीं॥अश्वमेधशततातिकरायो।धरमिनमहँतेहिश्रेष्ठगनायो॥
सुप्रभावकविनकीगाई। रहीकीर्तित्रिभुवनमहँछाई॥इंद्रासनबलिबैठिविराजा। मनहुँपूर्णिमाकोउडुराजा॥३५॥
कृदत्तत्रिभुवनकीराजू। बिनप्रयासलहिकैबलिराजू॥ अपनेकाहिकृतारथमान्यों। नित्यनित्यनवमंगलठान्यों॥
दोहा–यहिविधिशुक्राचार्यबल, बलित्रिभुवनकोराज। अनयासहिपावतभये, संयुतअसुरसमाज॥३६॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे पंचदशस्तरंगः॥१५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–यहिविधिशुक्रप्रभावते, बलिपाईसुरराजि। तबअधीरदेवनसहित, गयेदेवपतिभाजि॥
हिविधिलखिसुतविभौविनासा।अरुदैत्यनहितस्वर्गमवासा॥अदितिदेवजननीअकुलाई।दुखितभईअनाथकीनाई॥
कसमयतेहिंथलसुखछायो।तजिसमाधिकश्यपमुनिआयो॥लख्योतासुआश्रमसुखहीना।रहितसकलउत्सवअतिदीना॥
नेरखिअदितिआसनतेहिंदीन्हा।विधिवतपतिकोपूजनकीन्हा॥मुखमलीननिजतियकोदेखी।कश्यपपूछ्योअतिदुखलेखी
केधौंअमंगलविप्रनकेरो। आवतभयोकरालघनेरो॥ कालविवशधौंहैकल्यानी। लोकधर्मकोनाशहिजानी॥३॥४॥
तेहिगृहमाहँअयोगिनकाहीं। अर्थधर्मफलकामसदाहीं॥
दोहा–तेहिगृहकीधौंकुशलनहिं, दीजैमोहिंबताय॥ तेरोबदनमलीनअति, आनँदरहितदेखाय॥५॥
किधौंअतिथिजबतुवगृहआयो।तबतुमनिजकुटुंबमनलायो॥उठिताकोआसननहिंदीन्ह्यो।बिनपूजितपयानसोकीन्ह्यो
अतिथिआयजाकेगृहमाहीं।सलिलहुजेबिनपूजितजाहीं॥तिनपापिनकेभवनविशाला।अहैसमानहिंसदनशृगाला ७॥
कीधौंमेरेभयेप्रवासी। समयपायसुषमाकीरासी॥ रहीतोरिमतिअस्थिरनाहीं। कियोहोमनहिंपावकमाहीं॥८॥
ब्राह्मणपावकपूजनकीने। गवनतपुरुपस्वर्गसुखभीने॥
दोहा–येदोनोंद्विजअरुअनल, जानहुँसत्यसुजानि॥ सर्वदेवमयविष्णुके, बदनअहैंसुखदानि॥
कहिद्विजकोनदियोपुनिदाना। कैधौंतातेबदनमलाना॥ अहैंपुत्रसबकुशलतुम्हारे। जानिपरतदुखतुमहिंनिहारे॥
अदितिसुनतपतिकीप्रियवाणी। बोलीदुखितजोरियुगपाणी॥९॥१०॥

अदितिरुवाच।

गोद्विजधर्मऔरजनकेरो। इनकरमंगलअहैघनेरो॥ अर्थधर्मकामहुँकरहेतू। ऐसोममहैकुशलनिकेतू॥११॥
याचकयतीअतिथिबहुतेरे।गयेविमुखनहिंमोगृहतेरे॥सविधिहोमपावकहमकीन्ह्यो।आपकृपातेसबसुखलीन्ह्यो १२॥
कौनकामनहिंहोहिहमारे। जिनकेतुमउपदेशनवारे॥१३॥

दोहा—दैधनबहुसबभाँतिसों, शुक्रहिबलिमतिमान । पुनितिनकहँआधीनह्वै, पूज्योसहितविधान ॥ ३ ॥

जानिस्वर्गजीतनकीआशा । शुक्राचारजपरमप्रकाशा ॥ अतिप्रसन्नबलिपैकरिदाया।सविधिविश्वजितयज्ञकराय
शुक्रसहितवरविप्रअनेकू । बलिकोकियोमहाअभिषेकू॥४॥होमप्रकाशिततहाँहुतासा।प्रगटकियोरथपरमप्रकासा
कंचनकलितकिंकिंणीमाला।हरितवर्णबहुवाजिविशाला ॥ ध्वजाधवलअंकितमृगराजा।शारदवारिदसरिसविराजा
चामीकरकोचापसुहायो।अक्षयतूणकवचछविछायो॥दियप्रहलादबलिहिशुभमाला।शुक्रदियोतेहिंशंखविशाला ६

दोहा—यहिविधिरणकीसाजसब, देद्विजवरबलिकाहिं । आशिरवादहुदेतभे, लहौविजययुधमाहिं ॥

बलिविप्रनपरदक्षिणदीन्ह्यो । दंडप्रणामपुहुमिपरिकीन्ह्यो॥अज्ञालैप्रहलादहुकेरी।कियोप्रणतिप्रमुदितबहुतेरी॥७
दियोजोस्यंदनशुक्रसुहावन।तापरचढ्योदैत्यपतिपावन॥सुंदरसुमनमालउरसोहत।कवचकराललगतिभयजोहत।
शरपूरिततूणीरविशाला । दिव्यचापकरवालकराला॥८॥अंगदकनकबाहुमहँजाके । मकराकृतकुंडलश्रुतिभाके।
बलिस्यंदनपरसोहतकैसे । कनकशैलपरपावकजैसे॥९॥यूथपसबबलिसमबलवाना । विभौविभामहँसबैसमाना।

दोहा—निजनिजसैनासाजिसब, रथमातंगतुरंग । गरजतवारहिंवारसब, चलेदैत्यपतिसंग ॥ १० ॥

यहिविधिअसुरसैनलैभारी । चढ्योपुरंदरपुरहिसुरारी ॥ कियेलेतमानहुनभयानू । दिशनदहतमनुद्दगनकृशानू॥
अंबरजवनिकँपावतधाये।यहिविधिअमरावतिनियराये११अमरावतिनिरख्योबलिराजा।जहाँमनोहरसबसुखसाजा॥
परमरम्यउपवनउद्याना । नंदनादिघनसोहतनाना ॥ कूजहिंयुगलविहंगसुहावन।मत्तमधुपगुंजहिंमनभावन ॥१२॥
पल्लव फूलसुमनकेभारा । झुकिंदेवतरुशाखअपारा ॥ चक्रवाकसारसअरुहंसा । कारंडवकोकिलकलहंसा ॥

दोहा—करहिंमनोहरशोरअति, सरसिनमेंसुखपाय । तहाँखेलखेलतरहैं, सुरसुंदरीनहाय ॥ १३ ॥

परिखागगनगंगहैजामें । पुरटकोटपावकसमतामें ॥ उन्नतअटाअनूपमराजै ॥ १४ ॥ द्वारनकनककपाटविराजै॥
फबैफटिकमणिकेपुरद्वारा॥१५॥लसतराजपथयुतविस्तारा॥गलीसभाचौहटचहुँओरा।विलसहिंमहाविमानकरोरा॥
मणिमयवणिकदुकानअखेदी । बलितवज्रविद्रुमवरवेदी॥१६॥नितनवयौवनवतीरसाला।विमलवसनधारेवरमाला॥
जहँतहँविचरहिंदीपशिखासी।करहिंइंद्रनगरीपरकासी॥१७॥सुरतियविगलितकेशप्रसूना।ताकेसौरभयुतसबजूना॥

दोहा—जाकेमारगमेंबहत, मारुतमंदसदाहिं ॥ १८ ॥ धूपधूमसुरभितकढत, कनकगवाक्षनमाहिं ॥

धवलअमलपथबिछेबिछौना।तापरकरहिंनारिनितगौना॥१९॥मुक्तनयुक्तिवितानकिताके।तनेचंदचाँदनिसमताके॥
हेमदंडयुतध्वजापताका । लसहिंमनहुदामिनिसबलाका ॥ छविछायेछज्जाअतिछाजैं । तिनपरमोरकपोतविराजैं॥
चहुँकितउपजावनअहलादा।मत्तमलिंदकरतकलनादा॥बैठिमनोहरमुदितमकाना।सुरतियकरहिंसुमंगलगाना२०
वीनवेणुअरुमुरजमृदंगा । दुंदुभितालशङ्खसुरसंगा ॥ थलथलमहँगंधर्वबजावत । नाचतगावतभावबतावत ॥

दोहा—अतिविचित्ररमणीयअति, अमरावतीअनूप । जाकीप्रभालजावती, जगतप्रभाकहँभूप ॥

विशुकरमाकीरचितसुहावनि।स्वर्गलोकवासिनसुखछावनि २१ लोभीकामीशठखलमानी।औरअधर्मीबाधकप्रानी॥
येनहिंजानंकबहुँतहँपावें । इनतेभिन्नतेईजनजावें॥२२॥कुरुपतिइमिअमरावतिकाहीं । बलिलेअसुरसैनसँगमाहीं॥
बाहरतेघेर्योचहुँओरा।शुक्रदत्तशङ्खहिकियशोरा॥सुनतशंखकीध्वनिदुखदानी।भययुतभईशक्रकीरानी ॥२३॥
इंद्रजानिबलिराजचढ़ाई । लैदेवनकोसँगअकुलाई ॥ गयोबृहस्पतिपाससुरेशा ॥चरणबंदिनिजकह्योअँदेशा॥२४॥

दोहा—प्रथमहिदेवासुरसमर, मैंबलिवज्रहिमारि । रणगिराइदियआसुरी, सिगरीसैनविडारि ॥

सोइपुनिबलिलैदलघोरा । चढिआयोमोपरबरजोरा॥कौनतेजदीन्ह्योअबयाको । हमसोंसनमुखजातनताको॥२५॥
कोउदेखातनहिंरोकनहारा । मनुमुखसोंपीवतसंसारा ॥ मानहुँचाटनचहतदिशानन। दाहतमानहुँदृगनकृशानन॥
उञ्मोमनहुँप्रलयानलघोरा।जारनसुरनचहतचहुँओरा॥२६॥याकोकारणगुरुभगवाना।करहुकृपाकरिसकलबखाना॥
जेजितनबलअसकहँपायो।जातेमोहिंजीतनचढिआयो॥२७॥सुरगुरुसुनिसुरपतिकीबानी॥कहनलगेकारणविज्ञानी॥

। सोहरिभक्तहिदेइसुहायो ॥ कीआपहितेहिंभोगलगावै । अनअधिकारिहिंनाहिंखवावै ॥
दोहा–पुनिनिवेदकेअंतमें, आचमनैकरवाय । मोदमूलताम्बूलको, देइसुभोगलगाय ॥ ४१ ॥
। द्वादशाक्षरहिमंत्रउदारा ॥ विपुलअस्तवनकरिहरिकेरी । सादरअस्तुतिठानैफेरी ॥
प्रदक्षिणाचारिललामा । करैमुदितदंडवतप्रणामा॥४२॥पुनिशिरहरिनिर्माल्यचढाई।करैविसर्जनसुखसरसाई ॥
। दैवीरादक्षिणशिरनावै ॥ ४३ ॥ लैतिनकीआज्ञापुनिसोई । शेपअन्नजोवाँचोहोई ॥
। सावधानह्वैआपहुँखावै ॥ विनतियरैनसैनसहिठानै । प्रातहिंउठिसोपुरुपसुजानै ॥४४॥
दोहा–फागुनसुदिप्रतिपदाको, शुचिह्वैकरिअस्नान । सावधानह्वैमुदितमन, दूधहिलैसविधान ॥
। पूजनठानैभाववढ़ाई ॥ पूजाकरैकुहूदिनजैसी । बारहौंदिनमेंठानैतैसी ॥ ४५ ॥
होमकरैअरुद्विजहिजेंवावै । हरिपूजनआदरहिवढ़ावै ॥४६॥ द्वादशदिवसकरैपयपाना । ब्रह्मचर्ययुतव्रतीसुजाना ॥
करिमहिशयनत्रिकालनहाई॥४७॥४८॥काहूसोंनअसत्यरताई॥दुष्टनतेभापणनहिंकरई॥वासुदेवपदनितरतिधरई ॥
द्वादशदिनद्वादशीप्रयंता । यहिविधिरहैव्रतीसोसंता॥४९॥जवफागुनसुदितेरसिआवै । तवविधिज्ञविप्रहिवोलवावै॥
दोहा–तासोंशास्त्रविधानते, पंचामृतअस्नान । करवावैभगवानको, भरिउरमोदमहान ॥ ५० ॥
हरिकीपूजावडीकरावै । वित्तशाठ्यनकवहुँमनलावै ॥ पुनिपायसहरिहेतबनाई ॥५१॥ पुरुपसूक्तकीऋचासुहाई॥
सोरहतिनतेमनथिरकैकै । होमैअगिनिमोदितैह्वैकै ॥ पटरसहरिहिनिवेदलगावै॥जेहितेश्रीपतिअतिसुखपावै ॥५२॥
आचार्य्यहितोपैमतिधामा । देगोभूपणवस्त्रललामा । ताहीविधिऋत्विजहुँनकेरी । पूजाकरैप्रीतिकरिढेरी ॥
इनसवकीपूजाजोठानै । तौभगवानआपनीमानै॥५३॥पुनितियसोंभापैहेप्यारी । ऋत्विजनआचार्य्यनसुखकारी ॥
दोहा–आछोअन्नजेंवावहू, आयेऔरजेविप्र । यथाशक्तिभोजनतिनहुँ, देहुमुदितह्वैछिप्र ॥ ५४ ॥
अरुआचार्य्यऋत्विजनकाहीं । उचितदक्षिणादेइउछाहीं ॥ आयेहोंइनीचजनजेई । अन्नमात्रतिनहूँकोदेई ॥ ५५॥
अंधकृपिणदीनहुँदेभोजन।करैसवंधुअशनआपहुजन॥५६॥ हरिप्रसन्नहितनिततिनआगे।गानसुनावैअतिअनुरागे॥
नृत्यकरायबाजवजवावै । करिअस्तुतिहरिअतिसुखपावै ॥ हरिसन्मुखहरिकथासुहाई । कहवावैसादरचितलाई ॥
याहीरीतिअमादिनतेरे । तेरसिलोंयुतनेहघनेरे ॥ सादरपूजैश्रीपतिकाहीं । पूजैकामतासुशकनाहीं ॥ ५७ ॥
दोहा–यहहरिआराधनपरम, पैव्रतहैसुकुमारि, मोसोंब्रह्माजोकह्यो, सोमैंदियोउचारि ॥ ५८ ॥
तुहूँयहीव्रतकरिभगवानै । शुद्धभावकरिभजनैठानै ॥ ५९ ॥ सर्वयज्ञमययहव्रतजानो । सर्वव्रतनमहँउत्तममानो ॥
यहव्रतसर्वदानतपसारा । अहैतुष्टिकरनंदकुमारा ॥ ६० ॥ सोईमुख्यसंयमअरुनेमा । सोइदानतपव्रतप्रदक्षेमा ॥
सोईयज्ञसुंदरहैभारी । जामेंहोयँप्रसन्नमुरारी ॥ ६१ ॥ तातेयहव्रतकरहुसनेमा । श्रीपतिपदलगायअतिप्रेमा ॥
ह्वैआशुहिप्रसन्नभगवाना । देहैंतवअभीप्टवरदाना ॥ पैव्रतकोकरतोजोकोई । सावधानह्वैहरिपदजोई ॥
दोहा–ताकेवामनसरिससुत, आशुअवश्यहिहोइ । सवकलुपनकोकूटिकै, हरिपुरगमनतसोइ ॥ ६२ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टस्कंधे षोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिजवकश्यपकह्यो, तवहिंअदितिमहराज ॥ निरालस्यलागीकरन, पैव्रततजिसवकाज ॥ १ ॥
बुद्धिएकाग्रहिकोदृढधरिकै । चंचलमनहिंअचंचलकरिकै ॥ इंद्रीअश्वनदुष्टनकाहीं । मनगुनसोंमतिसूततदाहीं ॥
निजवशकरितहँअदितिसयानी।कियोचिंतवनसारँगपानी॥निश्चलमनहरिचरणलगाई।कियोपयोव्रतअतिसुखछाई २
व्रतप्रभावतेतहँकुरुराई । प्रगटेतेहिमुकुंदयदुराई ॥ चारिवाहुपीतांवरधारे । शंखचक्रकरगदासँवारे ॥ ३ ॥ ४ ॥

दोहा–पैप्रभुविनतीमोरियह, सोसुनियेचितलाय ॥ जातेमेरेमनहिको, सबकलेशकटिजाय ॥ १४ ॥
देवदैत्यतवसुतवलवाना। मानहुँप्रभुतुमतिनहिंसमाना ॥ ८ [illegible]
असविचारिमोहिंनिजगुनिदासी।होयमोदअसिकृपाप्रकासी॥ [illegible]
सवतिसुतनतेरक्षहुनाथा।मोसुतह्वैगेसकलअनाथा॥१५ [illegible]
करहुकृपाअबअससुनिराजू। जामेममसुतपावहिंराजू ॥ १६ ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच।

असजबअदितिकह्योसमुझाई। तबकश्यपबोलेमुसुकाई ॥
दोहा–अहोधन्यहैविष्णुको, मायावलविस्तार ॥ बध्योमोहतेहैसही, यहासिगरोसंसार ॥ १८॥
कहाँपंचभौतिकीशरीरा। कहाँजीवप्रकृतिहुंपरधीरा॥कोकाकोसुतकोपतिकाको। अहैमोहकारणसबयाको।
प्रियाभजहुतुमश्रीभगवानै। जगतगुरूपरपुरुपपुरानै ॥ २०॥सोईमनोरथपूरणकरिहैं। दुखतेतोहिंआशुउद्धरिहैं।
औरदेवकीभक्तिसमानै। भगवतभक्तिविफलनहिंजानै ॥ ऐसोमैंसतिलियोविचारी। ऐसेतहूँमानिसतिप्यारी॥
अदितिसुनतपतिकेप्रियवैना। बोलीपाणिजोरिभरिनैना ॥

अदितिरुवाच।

केहिविधितेहरिकहँमैंध्याऊँ। जातेसकलमनोरथपाऊँ ॥ २२ ॥ २३ ॥
दोहा–तबकश्यपबोलेहरपि, सुनुसुंदरिचितलाय ॥ पैव्रतमाधवतोपकर, मैंतोहिंदेहुँवताय ॥ २४ ॥
पुत्रहीनकेहेतही, ब्रह्मासोंशिरनाय ॥ मैंपूछ्योसोविधिसहित, दीन्ह्योमोहिंवताय ॥

अथ प्रयोव्रतकी विधि।

दोहा–फागुनसितमेंप्रयोव्रत, बारहिदिनकोजानु। भक्तिसहिततामेंसविधि, पूजैश्रीभगवानु ॥ २५ ॥
दिवसअमावसप्रातउठि, खोदीविपिनिवराह। लाइमृत्तिकालाइतन, मज्जैसरिसउछाह ॥ २६ ॥
अथमृत्तिकालेपनकोमंत्र–त्वं देव्यादिवराहेण रसायाःस्थानमिच्छता।उद्धृतासि नमस्तुभ्यं पाप्मानं मे प्रणाशय
दोहा–संध्योपासनआदिजे, नित्यकर्मविख्यात। सावधानतिनकोकरे, करिमनअतिअवदात ॥
पुनिप्रतिमाकीवेदिमें, कीजलकीरविमाहिं। कीगुरुमेंआवाहनै, करिपूजैहरिकाहिं ॥ २८॥
अथावाहनमंत्राः–नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महीयसे ॥ सर्वभूतनिवासाय वासुदेवाय साक्षिणे ॥ २९ ॥
नमो व्यक्ताय सूक्ष्माय प्रधानपुरुषाय च ॥ चतुर्विंशद्गुणज्ञाय गुणसंख्यानहेतवे ॥ ३० ॥
नमो द्विशीर्ष्णत्रिपदे चतुःशृंगाय तंतवे ॥ सप्तहस्ताय यज्ञाय त्रयीविद्यात्मने नमः ॥ ३१ ॥
नमः शिवाय रुद्राय नमः शक्तिधराय च ॥ सर्वविद्याधिपतये भूतानां पतये नमः ॥ ३२ ॥
नमोहिरण्यगर्भाय प्राणाय जगदात्मने ॥ योगैश्वर्यशरीराय नमस्ते योगहेतवे ॥ ३३ ॥
नमस्त आदिदेवाय साक्षिभूताय ते नमः ॥ नारायणाय ऋषये नराय हरये नमः ॥ ३४ ॥
नमो मरकतश्यामवपुषेधिगतश्रिये ॥ केशवाय नमस्तुभ्यं नमस्ते पीतवाससे ॥ ३५ ॥
त्वं सर्ववरदः पुंसां वरेण्य वरदर्षभ ॥ अतस्ते श्रेयसे धीराः पादरेणुमुपासते ॥ ३६ ॥
अन्ववर्तंत यं देवा श्रीश्च तत्पादपद्मयोः ॥ स्पृहयंत इवामोदं भगवान्मे प्रसीदताम् ॥ ३७ ॥
दोहा–इनमनुतेभगवानको, श्रद्धायुतआवाहि। अर्घ्यपाद्यआचमनको, देइप्रथमसुखचाहि ॥ ३८ ॥
पुनिद्वादशअक्षरमनुमाहीं। चंदनफूलअक्षतहुकाहीं ॥ देयचढ़ाइधूपपुनिदेवै। देपुनिदीपभाँतिबहुसेवै ॥ ३९ ॥
पुनिलेपायससंयुतभावै। अरुघृतगुड़कोभोगलगावै ॥ होइजोअपनेविभौअपारे। तौरचिव्यंजनविविधप्रकारे ॥
सादरहरिहिनिवेदनकरई। परमानंदहियेनिजभरई ॥ द्वादशवरणमंत्रपढ़िफेरी। हवनकरैयुतप्रीतिघनेरी ॥ ४० ॥

। सोहरिभक्तहिदेइसुहायो ॥ कीआपहितेंहिंभोगलगावै । अनअधिकारिहिंनाहिंखवावै ॥
दोहा—पुनिनिवेदकेअंतमें, आचमनैकरवाय । मोदमूलताम्बूलको, देइसुभोगलगाय ॥ ४१ ॥
। द्वादशाक्षरहिमंत्रउदारा ॥ विपुलअस्तवनकरिहरिकेरी । सादरअस्तुतिठानैफेरी ॥
प्रदक्षिणाचारिललामा । करैमुदितदंडवतप्रणामा॥४२॥पुनिशिरहरिनिर्माल्यचढाई।करैविसर्जनसुखसरसाई ॥
। दैवीरादक्षिणशिरनावै ॥ ४३ ॥ लैतिनकीआज्ञापुनिसोई । शेषअन्नजोवाँचोहोई ॥
। सावधानह्वैआपहुँखावै ॥ विनतियरैनसैनसहिठानै । प्रातहिंउठिसोपुरुषसुजानै ॥४४॥
दोहा—फागुनसुदिप्रतिपदाको, शुचिह्वैकरिअस्नान । सावधानह्वैमुदितमन, दूधहिलैसविधान ॥
। पूजनठानैभाववढ़ाई ॥ पूजाकरैकुहूदिनजैसी । बारहोंदिनमेंठानैतैसी ॥ ४५ ॥
होमकरैअरुद्विजहिजेंवावै । हरिपूजनआदरहिवढ़ावै ॥४६॥ द्वादशदिवसकरैपयपाना । ब्रह्मचर्ययुतव्रतीसुजाना ॥
करिमहिशयनत्रिकालनहाई॥४७॥४८॥काहूसोंनअसत्यगताई॥दुष्टनतेभाषणनहिंकरई॥वासुदेवपदनितरतिधरई ॥
द्वादशदिनद्वादशीप्रयंता । यहिविधिरहैव्रतीसोसंता॥४९॥जबफागुनसुदितेरसिआवै । तबविधिज्ञविप्रहियोलवावै॥
दोहा—तासोंशास्त्रविधानते, पंचामृतअस्नान । करवावैभगवानको, भरिउरमोदमहान ॥ ५० ॥
हरिकीपूजावडीकरावै । वित्तशाठ्यनकवहुँमनलावै ॥ पुनिपायसहरिहेतबनाई ॥५१॥ पुरुषसूक्तकीऋचासुहाई॥
सोरहतिनतेमनथिरकैकै । होमअगिनिमेंदितेह्वैकै ॥ पटरसहरिहिनिवेदलगावै।जेहितेश्रीपतिअतिसुखपावै ॥५२॥
आचार्य्यहितोपमतिधामा । देगोभूषणवस्त्रललामा । ताहीविधिऋत्विजहुँनकेरी । पूजाकरैप्रीतिकरिढेरी ॥
इनसबकीपूजाजोठानै । तौभगवानआपनीमानै॥५३॥पुनितियसोंभाषैहेप्यारी । ऋत्विजनआचार्य्यनसुखकारी ॥
दोहा—आछोअन्नजेंवावहू, आयेऔरजेविप्र । यथाशक्तिभोजनतिनहुँ, देहुमुदितह्वैछिप्र ॥ ५४ ॥
अरुआचार्य्यऋत्विजनकाहीं । उचितदक्षिणादेइउछाहीं ॥ आयेहोंइनीचजनजेई । अन्नमात्रतिनहूँकोदेई ॥ ५५॥
अंधकृपिणदीनहुँदेभोजन।करैसबंधुअशनआपहुजन॥५६॥ हरिप्रसन्नहितनिततिनआगे।गानसुनावैअतिअनुरागे॥
नृत्यकरायबाजबजवावै । करिअस्तुतिहरिअतिसुखपावै ॥ हरिसन्मुखहरिकथासुहाई । कहवावैसादरचितलाई ॥
याहीरीतिअमादिनतेरे । तेरसिलोंयुतनेहघनेरे ॥ सादरपूजैश्रीपतिकाहीं । पूजैकामतासुशकनाहीं ॥ ५७ ॥
दोहा—यहहरिआराधनपरम, पैव्रतहैसुकुमारि, मोसोंब्रह्माजोकह्यो, सोमैंदियोउचारि ॥ ५८ ॥
तुहूँयहीव्रतकरिभगवानै । शुद्धभावकरिभजनैठानै ॥ ५९ ॥ सर्वयज्ञमययहव्रतजानो । सर्वव्रतनमहँउत्तममानो ॥
यहव्रतसर्वदानतपसारा । अहैतुष्टिकरनंदकुमारा ॥ ६० ॥ सोइमुख्यसंयमअरुनेमा । सोइदानतपव्रतप्रदक्षेमा ॥
सोइयज्ञसुंदरदेभारी । जामेंहोयप्रसन्नमुरारी ॥ ६१ ॥ तातेयहव्रतकरहुसनेमा । श्रीपतिपदलगायअतिप्रेमा ॥
ह्वैआशुहिप्रसन्नभगवाना । दैहैतवअभीष्टवरदाना ॥ पैव्रतकोकरतोजोकोई । सावधानह्वैहरिपदजोई ॥
दोहा—ताकेकामनसरिससुत, आशुअवश्यहिहोइ । सबकलुषनकोकाटिकै, हरिपुरगमननसोइ ॥ ६२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टस्कंधे षोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—यहिविधिजबकश्यपकह्यो, तबतेंअदितिमहरान ॥ निगमउक्तत्रतिकरन, पैव्रतनानिमनकान ॥ १ ॥
बुद्धिएकामहिकोउडधारिकै । चंचलमनतेअसंचलकारिकै ॥ इंद्रियअश्वनदुष्टनकाही । मनगुनमेंनानिसुननदाँही ॥
निजवशकरितहँअदितिसयानी।कियोव्रतमनतोरहतानी॥निश्चलमनहरिमेंलगाई।कियोहरिव्रतनिमुसदाई २
मतमभावतेतहँकुरुराई । प्रगटेतेहिसुंदरदुराई ॥ [illegible] ॥ ३ ॥

निरखिनैनगोचरभगवाने। सादरउठीअदितिसुखमाने॥ प्रीतिविवशह्वैअतितेहिठामा। कीनभूमिमहँदंडप्रणामा॥५॥
पुनिउठिअदितिजोरियुगपाणी । अस्तुतिकरनचहीमृदुवाणी ॥
दोहा–पेगद्गदगरह्वैगयो, भरिआयोजलनैन ॥ कँप्योगातपुलकितवदन, कहिनसकीकछुबैन ॥ ६॥
पुनिजसतसकरिधीरजधारी। मंदमंदतहँकश्यपनारी॥हरिसुपमाहगकरतिपानसो।अस्तुतिकरनलगीप्रमानसो ॥७॥

अदितिरुवाच ।

यज्ञपुरुषअच्युतयज्ञेशा । तीर्थचरणतीरथजसवेशा ॥ श्रवणसुमंगलनामतुम्हारे । दासनदुखनाशकअवतारे ॥८॥
अबकरियोप्रभुमोहिंसनाथा । होतुमसत्यदीनकेनाथा ॥ विश्वरूपविश्वहिकेभावन । विश्वप्रगटकरविश्वनशावन॥
निजशक्तिहिसोंत्रिगुणहिंधारी । अहोविश्वव्यापकगिरिधारी ॥ नाथनिरंतरपूरणज्ञाना । जीवनकोनाशहुअज्ञाना॥
दोहा–रहोनिरंतरस्वस्थप्रभु, अविकारीममस्वामि ॥ श्रीहरियदुपतिआपको, सदानमामिनमामि ॥ ९ ॥
विदआयुपशुभवपुधनधामा।त्रिभुवनसुखसवगुणमनकामा॥सकलसिद्धअरुज्ञानविज्ञाना।तुम्हरिहिकृपामिलहिंभगवाना
तोरिपुजीतबकेतिकबाता । तवप्रसन्नताजगविख्याता ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच ।

अदितिकरीअस्तुतियहिभाँती । तबश्रीहरिदासनअरिघाती ॥ सबभूजनकेअंतरयामी । बोलेकमलनैनखगगामी॥

विष्णुरुवाच ।

देवजननिअभिलापातेरी । जानतहौंमैंबहुदिनकेरी॥लीन्ह्योराज्यछोंडाइसुरारी । तेरेपुत्रनदियेनिकारी ॥११॥१२॥
रणदुर्मदतिनअसुरनकाहीं । जीतिलेहिममसुतक्षणमाहीं ॥
दोहा–लहैंराजातिहुँलोककी, मेरेसुतअनयास ॥ आनँदसोंपुत्रनसहित, करहुँस्वर्गमहँवास ॥ १३ ॥
इंद्रजेठनिजसुतकरतेरे । जाहिमारिदानवबहुतेरे ॥ रोवहिंतिनकीनारिदुखारी । अतिआनँदमैंलहौंनिहारी ॥ १४॥
निजपुत्रनऐश्वर्यसमेतू । विहरतदेखौंस्वर्गनिकेतू ॥ श्रीयशसबपुनिकैसुतपावै । पुनिकैदैत्यपतालहिजावैं ॥ १५॥
तुवइच्छाऐसीसुखदाई । जानिलियोमैंसबशुरभाई ॥ ताकोकारणयहसुनिलीजे । युद्धहेतनहिंअनुमतिदीजे ॥१६॥
अबैनअसुरनतेसुरनायक । अदितियुद्धहेजीतनलायक॥अजहुकालउनकहँअनुकूला।देवनकोसबविधिप्रतिकूला॥
दोहा–तातेसुरकरिकैसमर, लहिहहिंसुखनअपार ॥ पैपैव्रततेतुष्टमैंकरिहौंअवशिविचार ॥
विफलनअरचनहोतहमारा।पावतफलश्रद्धाअनुसारा॥सुतरक्षणहितपयव्रतकरिकै।मोहिंकरिलियप्रसन्नसुखभरिकै॥
तातेमैंतेरोसुतह्वैकै । तवपुत्रनपलिहौंमुददैकै ॥ जाहुआपनेपतिढिगमाई । लेहुमोरवपुपतिमैंध्याई ॥ १८ ॥१९॥
काहूतेप्रसंगनहिंकहियो । पूछेहुमोहिंदुरायेरहियो ॥ गोपनकीन्हेसकलप्रसंगा । फलदायकहोवैसुखसंगा ॥ २०॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिहरिभेअंतरधाना।अदितिधन्यअपनेकहँमाना॥दुर्लभकृष्णजन्मनिजमाहीं।जानिअदितिअतिमुदिततहाँहीं॥
दोहा–परमभक्तियुतपतिनिकट, अदितिगईसुखछाय ॥ कश्यपपदसेवनकरन, लागीअतिमनलाय ॥ २१ ॥
कश्यपहूतपबलहिविशेषी । निजमनमहँहरिअंशपरेषी ॥ अदितिहिंगर्भाधानकरायो।पवनदारुजिमिअनलजगायो॥
अदितिगर्भमहँलखिभगवाने । ब्रह्माअस्तुतिलगेबखाने ॥ २२ ॥२३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

ब्रह्म उवाच ।

जैतिउरुक्रमजैउरुगाया । जैब्रह्मण्यदेवयदुराया ॥ त्रिगुणईशजैजैभगवाना ॥ पृश्निगर्भजैवेदनिधाना ॥ २६॥
जैवधात्रिविष्टनाभा । जयतिविष्णुजैअंबुजनाभा ॥ तुहींजगतमधिआदिहुअंता । परमपुरुषअरुशक्तिअनंता ॥
जगतप्रसतंकहोतुमकाला । जैसेफरतजलतृणजाला ॥ २७ ॥

दोहा-तुम्हींचराचरजगतके, स्वामिननंदकुमार ॥ गिरिस्वर्गतेतिनहुँके, तुमहींएकअधार ॥
जैसेबूड़तवारिमें, पोतहोतअवलंब ॥ तिमिडूबतदुखसिंधुसुर, रक्षहुप्रभुअविलंब ॥ २८ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-यहिविधिविविधिअस्तुतिकियो, चारुचरित्रबखानि ॥ तबहिंअदितिकेप्रगटभे, श्रीपतिशारँगपानि ॥
छंदनराच-चतुर्भुजैगदासुशंखचक्रअंबुजैकरे । सुकंजनैनमोदऐनराजतोपितांबरे ॥ १ ॥
पयोदश्यामवर्णकर्णमीनराजकुंडले । निशाकराभआननैलसत्प्रकाशमंडले ॥
स्ववक्षमेंलसैश्रिवत्सअंगदौभुजानमें । किरीटशीशलंककांचिनूपुरौपदानिमें ॥
करैकड़ेसुकांतितेमढ़ेजड़ेमणीनहें ॥ २ ॥ मिलिंदवृंदगुंजयुक्तमालभानवीनहें ॥
विराजमानकंठकौस्तुभैविभाविकाशते । मुनीशऐनअंधकारनाशभोप्रकाशते ॥ ३ ॥
दिशानदीनदीसभूगिरासगोअकाशुही । प्रजाद्विजासुदेवभेऋतौप्रसन्नआशुही ॥ ४ ॥
दोहा-भाद्रशुक्लद्वादशिश्रवण, अभिजितभयोमुहूर्त्त ॥ मध्यदिवसवामनलियो, जन्मविनाशकधूर्त्त ॥
विजयानामकहावती, सोद्वादशीनरेश ॥ ताकोव्रतकरिसंतजन, पावहिंमोदहमेश ॥
ग्रहनक्षत्ररहेअनुकूला । भयेसुयोगयोगप्रतिकूला ॥५॥६॥ जानिदेववामनअवतारा । गगनबजावनलगेनगारा ॥
ढोलशंखऔतूर्य्यमृदंगा॥विपुलबाजबाजेइकसंगा॥७॥करहिंनृत्यअप्सरासुहावनि॥सुरगायकध्वनिकियसुखछावनि॥
सुरमुनिमनुविद्याधरचारन। पितरअग्निअरुसिद्धहजारन॥किन्नरकिंपुरुषहुनागेंद्रा॥राक्षसयक्षहुखगहुखगेंद्रा॥८॥९॥
करहिंप्रशंसनवारहिंवारा । गावतनाचहिंमोदअपारा॥आश्रमअदितिसुमनझरिलाई।अस्तुतिकरतदियोक्षितिछाई॥
दोहा-प्रगटआपनेगर्भते, अदितिविलोकिमुकुंद । अचरजगुनिपावतभई, तेहिक्षणपरमअनंद ॥
कीन्हेंकृपालियोअवतारा।विसमितकश्यपजयतिउचारा११जड़चेतनकेअंतरयामी।आयुधभूषणदुतियुतस्वामी ॥
मातुपितादेखतसुखछावन । सोइस्वरूपतेभेप्रभुवामन॥जिमिनटनिपुणसुवेषछिपाई।औरवेषनिजदेतदेखाई॥१२॥
तिमिमदर्पिलखिवामनरूपा । महामोदपायोमुनुभूपा । कश्यपकेकरतेसुखछाये । जातकर्मविधिसोंकरवाये॥१३॥
कियेमुनिनवामनव्रतबंधा । रविगायत्रीकियसनबंधा ॥ ब्रह्मसूत्रसुरगुरुतेहिदीना । दियकश्यपमेखलानवीना॥१४॥
दोहा-दियोमहीमृगचर्मतिन, दियोचंद्रवरदंड । मातादियकोपीनतिन, छत्रअकाशअखंड ॥ १५ ॥
दियोविरंचिकमंडलुताको।दियेसप्तऋषिसुभगकुशाको।हेकुरुपतिमहराजविशाला।सरस्वतिदईअक्षकीमाला १६
भिक्षापात्रधनदसुखमानी।भिक्षादीनीतिनहिंभवानी॥१७॥युतब्रह्मर्षिसभासुरराशी।निजप्रकाशसोंकियोप्रकाशी ॥
आहिताग्निकेविधियुतवामन।चहुँकितकुशविछाइअतिपावन।पूजितज्वलनदिव्यात्यदाई।समिधनसोंकियहोमबनाई
सुन्योतहाँवामनकुरुराई । करतवाजिमखबलिसुखदाई ॥ शुक्राचारजकृत्यकरावैं । तहाँविप्रवरदलिसयजावैं ॥
दोहा-सोसुनिवामनअतिचले, यज्ञविलोकनकाज । चलेदबावतपुहुमिको, पदपदमहँकुरुराज ॥ २० ॥
तहाँनर्मदाउत्तरतीरा । क्षेत्रनामभृगुकक्षसुनीरा ॥ शुक्रसहिततहँदैत्यअधीशा । करतवाजिमखद्योमहीशा ॥
तहँजबवामनपहुँचेजाई । निरखेनिकटसबैटकलाई ॥ २१ ॥ कैथोंदयेनिकटदिनराजा॥असमानेसिगरेद्विजराजा ॥
किधौंअगिनिधौंसनत्कुमारा॥आवतलखनयज्ञसंभारा॥वामनकोप्रकाशतहँछायो॥बलिविप्रनकोतेजछिपायो ॥ २२॥
करतपरस्परविविधभेदेशा । मखगृहवामनकियेप्रवेशा ॥ सजलकमंडलुछत्रहुदंडा॥मुंजमेखलातेजअखंडा ॥२

दोहा–मृगाचर्मउपवीतसम, लसहिजटायुतशीश। करतप्रकाशितयज्ञथल, श्रीवामनजगदीश॥२१॥

[illegible] आसनत [illegible]

[illegible] विमलसकलविशेषनश [illegible]

परमभक्तिसोंजाहिंगिरीशा। धारयोमुदितआपनेशीशा॥ धर्मधराधारकबलिराजू।धारिसोजलशिरसहितसमाजू।
छविछावनवामनमनभावन। मुनिमानसकोमोदबढ़ावन॥ जैसेवपुतैसेसबअंगा। अहैनकोइतिनकेसंगा।
दोहा–ऐसोलखिकरजोरिबलि, अनुपमनेहबढ़ाय॥भक्तिसहितअतिशयहरषि, बोल्योशीशनवाय॥२६॥२७॥

बलिरुवाच।

हेद्विजबालकमोरप्रणामा। लेहुकृपाकरिकैछविधामा॥ कौनितुम्हारिकरौंसेवकाई। देहुविप्रवरमोहिंसुनाई॥
ब्रह्मर्षिनकोतपवपुठानी। आयोइतैपरतअसजानी॥२९॥ तोपितभयेपितरममआजू। भयोपूतमैंसहितसमाजू।
पूरणभईयज्ञअवमेरी। आयेइतकरिकृपाघनेरी॥ ३०॥ भयोहुताशनहुततेपूरो। जहँआपुधारयोपगरूरो।
मोहिंशुचिकियपदजलद्विजराई।धन्यधरणिभयतवपदपाई॥जानिपरतअसविनहिंवताये।कछुमाँगनहिततुमइतआये
दोहा–तातेमोसोंमाँगिये, जोइच्छामनमाहिं॥ गऊहेमगृहअन्नजल, अरुद्विजकन्याकाहिं॥
ग्रामतुरंगमतंगरथ, विप्रबालअरुजौन॥ आजुमाँगिहोमोहिंपहँ, मैंदेहोंतोहिंतौन॥ ३२॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे अष्टादशस्तरंगः॥ १८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–वैरोचनकेवचनसुनि, धर्मसहितसुनिनाथ॥ तेहिंसराहिपरसन्नह्वै, कह्योऊर्द्धकरिहाथ॥ १॥

श्रीभगवानुवाच।

दैत्यराजयेवचनतुम्हारे। कुलकेउचितधर्मधुरधारे॥ सकलसत्यहैंयशविस्तारी। वैनआपकेममसुखकारी॥
शुक्रधर्मउपदेशकजाके। ऐहिककर्मसफलसबताके॥ जोहिंउपदेशकज्ञानमर्यादा। कुलमेंब्रह्मशांतप्रहलादा॥
ताकोअचरजनहिंअसकहिबो। सदाधर्ममारगमहँरहिबो॥२॥भयेनकोउअसयहिकुलमाहीं।बोलहिंजेयाचकतेनाहीं॥
दानदेनकहिपुनिनहिंदीन्ह्यों।ऐसोनहिंकोउयहिकुलकीन्ह्यों॥माँगेदानकृपानहिंकाहीं।भयेविमुखकोउयहिकुलनाहीं॥
दोहा–पराधीनकोउनहिंभये, औउत्साहविहीन॥ ताकुलकेभूपतिनको, असकहिबोननवीन॥
निरमलयशयुतजहँप्रह्लादा। लसतचंद्रसमप्रदअहलादा॥हिरण्याक्षयाहिवंशहिभयेऊ। लैकरगदाविजयहितगयऊ॥
तिहुँलोकनमेंफिरयोअकेलो। कोउनकियोयुधवीरनवेलो॥८॥जोलपेटिकैसमविमतरणी।द्रुतलेगयोरसातलधरणी॥
करनआशुअवनीउद्धारा। गहरिधरिसूकरअवतारा॥ हिरण्याक्षकोतहाँनिहारयो। ताहिविष्णुजससतसकमारयो॥
विक्रमसुमिरितासुभगवाना।अपनेकोविजयीनहिंमाना॥६॥ हिरणकशिपुताकोवरभ्राता।सुनिकैतासुविष्णुतेघाता॥
दोहा–कियविचारमेंमारिहौं, जोमारयोममभाय॥ गयोविष्णुकेधामको, महाकोपउरछाय॥ ७॥
लियेशूलकरमहाकराला।लस्योमनहुँकालहुकरकाला॥हिरण्यकशिपुकहँआवतदेखी।कीन्ह्योंविष्णुविचारविशेखी॥
जहाँजहाँजहँअवशिपगाई। तहँतहँपैहैदानवराई॥ जैसेजहँजहँभागतप्रानी। तहँतहँमृत्युजातिपछियानी॥
पानेपदिननकरहुँप्रवेशा। तौनसोजपहैअसुरेशा॥९॥ असगुनिविष्णुकालकेज्ञाता। मायाधारिनमहँविख्याता॥
[illegible] असेशर [illegible] जानिपरतमानहुँजात [illegible] ॥१०॥
दोहा–शून्यनिरारिवैकुंठको, कीन्ह्योंनादमदान। हिरण्यकशिपुविचरनलग्यो, पुनिसोजतभगवान॥

...११॥तबऐसोआनँदभरिगायो।
...भुवनसकल... ।
...। अहंकारतेबाढ़तसोतो॥ जियतमात्रभरिवैरहिकीजै। मरेशत्रुकोपहिताजिदीजै॥
...दानवराजू... १३॥नामविरोचनपितातुम्हारे।जोप्रहलादपुत्रअतिप्यारे।

दोहा–विप्रभक्तज्ञानीमहा, दानीसत्यस्वरूप। जिनकेदेखतमृत्युकहुं, जियतरह्योसुनुभूप॥

निरखिविरोचनकोवलभारी। गयेनिकटसुरद्विजतनधारी॥ माँग्योजायविरोचनपाहीं। देहुआयुनिजतुमहमकाहीं॥ देवनकोकपटहुगुनिलीन्ह्यो।याचकगुनिआयुपनिजदीन्ह्यो १४तैसहिआपुहुनिजकुलधर्मा।पालनकरतकरहुसबकर्मा तातेतुमसोंमाँगहुँथोरा। पूरणकरहुमनोरथमोरा॥ देहुतीनिपगपुहुमिप्रतापी। अपनेचरणलेहुँमैंनापी॥ १६॥ औरकछूतुमसोंनहिंचाहों। भूपतिमैंनहिंलोभिनमाहों॥ अर्थहिभरिमाँगहिजोकोई। दानलियेकरपापनहोई॥

दोहा–तुमसमदानीकोउनहीं, त्रिभुवनपतिवलिराय। ताहूपैनिजअर्थभरि, माँगतहोसकुचाय॥ १७॥

सुनतविप्रबालककेवैना। हँसिबोलेवलिभरिउरचैना॥

वलिरुवाच।

अरेविप्रबालकमतिहीना। माँगतमेंविचारिनहिंलीना॥ जननिजनकसोनाहिंजनायो। तीनिचरणमहिमाँगनआयो॥ बोलहुबालकवृद्धसमाने।अर्थआपनोनेकुनजाने॥१८॥मोहियकत्रिभुवनपतिगुनिसाँचे। होतअयाचकयाचकयाँचे॥ तेंद्विजबालआयमोहिपाहीं। माँगेतीनिचरणमेहिकाहीं॥चहोंतोसप्तद्वीपदेरापों। विप्रबालमैंयहसतिभापों॥१९॥ तातेमाँगहुमहीमहाई। जातेतुवकुटुंबपलिजाई॥ २०॥

दोहा–सुनतदैत्यपतिकेवचन, वामनआनँदपाय। मधुरवचनबोलतभये, मंदमंदमुसकाय॥

श्रीभगवानुवाच।

तीनिलोकमहँसंपतिजेती। इकलोभीपूरकनहिंतेती॥२१॥ जोकोउतीनिचरणमहिपाई। अपनेउरसंतोपनलाई॥ सोलहिद्वीपहुतोपनपावै। सप्तद्वीपकीइच्छाआवै॥ २२॥ पृथुअरुगयआदिकमहिईशा। सप्तद्वीपकेरहेअधीशा॥ कियेभोगबहुधनगृहलाये। तद्यपितृष्णाअंतनपाये॥ ऐसोसुन्योआपनेकानन। तातेकहिहौंआननआनन॥२३॥ यथालाभतेजोसंतोपी। सोइसुखीतासुमतिचोपी॥ जोलोभीत्रयलोकहुपावै। दुखीरहैसंतोपनलावै॥ २४॥

दोहा–असंतोपधनभोगको, अहैनरककोहेतु॥ यथालाभसंतोपहै, जननमोक्षकोसेतु॥ २५॥

यथालाभजोद्विजसंतोपी। ताकोतेजवढ़तसुखपोपी॥ असंतोपतेविप्रनमाहीं। तनकोतेजरहततननाहीं॥ जिमिजलदेतबुझायहुताशै। असंतोपतिमितेजहिनाशै॥२६॥तातेचरणतीनिद्वौधरणी।तुमसोंमैंमाँगहुँ... इतनोइमेंमैंसुखभरिहों। धनलैबहुतकाइमेंकरिहों॥ २७॥

श्रीशुक उवाच।

वलितहँसुनिवामनकीवानी। बोल्योविहँसिदानअभिमानी॥ जितनोचहौलेउतितनोई। तुम... असकहिजलभाजनवटिलीन्ह्यो। त्रेपदपुहुमिदानमनकीन्ह्यो॥ २८॥

दोहा–देतदानत्रैपदपुहुमि, वामनकोबलिराय॥ जानिविष्णुकोचरितसब, शुक्रमहादुख...

शिष्यआपनेवलिसोंबोल्यो। विष्णुकपटसिगरोतहँखोल्यो॥ २९॥

...पी॥ ...याको। ...मंदा॥ ...नहुँओरा ...३१॥

श्रीशुक उवाच।

सुनहुविरोचनसुवनसुजाना।इनकोजानहुँतुमभगवाना॥अदितिगर्भकश्यपतेनाये। ... इनकोदनकयोजोदाना। अहैअनर्थतुमहिंनहिंज्ञाना॥ इनकोदानदियेटपुनाई। ... भयोकपटतेविप्रकिशोरा। धामविभवयशतेजहुतोरा॥ लेसिगरोवामनकोदेह ... मूढ़त्रिलोकविष्णुकहँदेके। रहिहैकहाँदानमखकेके॥ ३२॥

दोहा—इकपगपुहुमीनाँपिहै, स्वर्गदूसरेपाय ॥ तनसोंनभकोपूरिहै, तउतृतीयरहिजाय ॥ ३४ ॥

त्रिभुवनदीन्ह्योपैपछितैहै । तौरिप्रतिज्ञापूरिनह्वैहै ॥ तातेपैहैनरकमहाना । तोहिनउचितदेवअसदाना ॥ ३५॥
जातेहोयजीविकाहानी । सोनहिंदानसराहतज्ञानी ॥ जासुजीविकातेधनहोई । यज्ञदानतपकरतोसोई ॥ ३६॥
धर्मकामयशमित्रनहेतू । अरुधनआमदहितकुलकेतू ॥ करैखर्चजोपाँचप्रकारा । लहैसोदोऊलोकसुखसारा॥३७॥
सत्यअसत्यहुकेरविचारा । सुनुजोवेदिककियेउचारा ॥ हाँमीभरबसत्यहैसोई । नाहींकरबअसत्यबड़ोई ॥ ३८॥

दोहा—तनतरुकोसतिफूलहै, असतमूलहैतासु ॥ मूलगयेफलफूलको, होतवेगिहीनासु ॥ ३९ ॥
जौनकहतहैयाचकहि, तोहिंहमयेतोदेव ॥ देतनतेतोहोतहै, निरधनसोनरदेव ॥

तातेकरहिनअंगीकारे । वितमाफिकताकोदेडारे ॥ तातेसत्यअपूरणजानो । औअसत्यहीपूरणमानो ॥ ४०॥४१॥
येजोकरतसर्वथानाहीं । देतनकछुधनहैघरमाहीं ॥ पावतसोनरअयशमहाना । जीवतहीसोमृतकसमाना ॥ ४२॥
नारिनसोंअरुहाँसीमाहीं । अरुविवाहकेकालसदाहीं ॥ अपनीवृत्तिहेतुअसुरेशा । औरपरैजवप्राणकलेशा ॥
औरहुगोब्राह्मणकेकाजा । कोहुकोजातप्राणजवराजा ॥ येसातहुँथलझूँठहुभापे । होतनपापवेदकहिरापे ॥

दोहा—येसबमेरेवचनको, बलिविचारितुमलेहु ॥ वामनकोदैकछुकधन, वेगिविदाकरिदेहु ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे एकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—दैत्यपुरोहितजबकह्यो, यहिविधिबलिहिबुझाय ॥ शोचतइकक्षणचुपरह्यो, बोल्योबलिकुरुराय ॥ १ ॥

बलिरुवाच ।

जोगृहस्थकोधर्मबखाना । अहैसत्यसोगुरुभगवाना ॥ करैधर्मऐसोसबकोई । अर्थकामयशहानिनहोई ॥ २ ॥
करिहमवृत्तिलोभमनमाहीं । करहिंविप्रकोकैसेनाहीं ॥ प्रथमदेनकहिपुनिनहिंदैहैं । तौजगमेंमुखकौनदेखैहैं ॥
हैप्रहलादभूपकेनाती । अनुचितअसकहिबोसबभाँती॥३॥नहिंअसत्यसमऔरअधर्मा।असमैंजानहुँगुरुशुभकर्मा॥
हरिसोंकह्योधरणिअसनाथा । सबकोभारसहोंनिजमाथा ॥ पैअसत्यवादीकोभारा । मोसोंसह्योनजातअपारा ॥४॥

दोहा—नहिंडरपोंमैंनर्कको, नहिंदरिद्रमुनिराय । नहिंडरपोंदुखसिंधुको, राजछूटिबरुजाय ॥

कालहुकीकछुडरनहिंलागै।जसअसत्यतेमोमनभागै॥करनअधर्मसोकछुनहिंराख्यो।जोअसत्यविप्रनसोंभाख्यो॥५॥
मरेसंगपुनिधननहिंजावै । राज्यपुत्रतियकामनआवै ॥ सोकसजीवतहींनहिंदीजै । विप्रकाजकरिजगयशलीजै॥
धनदैविप्रतोपनहिंकीन्ह्यो । तौबहदानवृथासबदीन्ह्यो॥६॥शिविदधीचिआदिकनरराजू । प्राणहुँदानदियोपरकाजू॥
करहिंसाधुप्राणिनकल्याना । तनधनमनवचननतेनाना ॥ तौपुनिधरणिदेनकेहेतू । कौनविचारअहैमुनिकेतू ॥ ७॥

दोहा—ममपुरुपानहिरणभुरे, भोगेभोगअपार । तिनहुँनकोलियकालग्रसि, रहिगोयशसंसार ॥ ८ ॥

सुलभसमरमरिस्वरगहिलेनो । दुर्लभद्विजकहँसरबसदेनो॥९॥देद्विजकोसरबसभोदीना । तऊसराहैताहिप्रवीना ॥
तौपुनिजेतुवसमविज्ञानी । लहैकेसेनहिंप्रियमानी ॥ तातेवामनकोमनकामा । मैंपूरणकरिहौंतपधामा ॥ १० ॥
श्रुतिविधानकेजाननवारे । जेहिपूजहिंकरियज्ञप्रकारे ॥ सोईविष्णुहोइयदिवामन । अथवाशत्रुहुहोइभयामन ॥
तद्यपियहिवांछितमेंदेहौं । अवनदेनकहिगुरुनहिंजैहौं॥यदपिशत्रुतुमयाहिवतायो।तदपिविप्रवेपहिधरिआयो॥११॥

दोहा—लेइबाँधिहूमोहियह, यद्यपिबिनअपराध । विप्रपुत्रकोतदपिमैं, करिहौंनहिंकछुबाध ॥ १२ ॥

... । तौसरबसुलैहैबरियाई ॥ कैसेहमजीतबहरिकाहीं । जानिपरतयहसतिमनमाहीं ॥ १३ ॥

श्रीशुक उवाच।

असकह्योशुक्रसोंराजा।आज्ञाभंगकियोद्विजकाजा॥तवबलिपैकरिकोपकठोरा।दीन्ह्योंशुक्रशापअतिघोरा॥१४॥
अभिमानी । मान्योनहिंममहितकीवानी ॥ तातेजडतेरोअनयासा । होइराजकोवेगिविनासा ॥ १५॥
त्यसंधवलिमहाप्रतापा । दैववशातलह्योगुरुशापा ॥ तदपिसत्यछोंड्योनहिंराजा । गन्योनअपनोनेकुअकाजा ॥
दोहा—वामनचरणपखारिकै, पूज्योसहितविधान । देतभयेबलिराजतहँ, त्रैपगपुहुमीदान ॥ १६ ॥
लिकीजोविंध्यावलिरानी । मुकुतमालिनीसुपमाखानी ॥ आननजाकोचंद्रसमाना । पातिव्रत्यधर्मपरधाना ॥
रेसोलैआई।डारिदियोजलअतिसुखछाई॥१७॥पुनिकैबलियजमानसुखारी।वामनकेपदकमलपखारी।
रच्योशीशसलिलजगपावन। जोत्रिभुवनकोकलुपनशावन॥१८॥तहँविद्याधरअरुगंधर्वा।यक्षसिद्धचारणसुरसर्वा॥
लिकोकर्मसराहनलागे । वरपेफूलसबैमुदपागे ॥ १९ ॥ तहाँहजारनवजेनगारे । किन्नरगावतवचनउचारे ॥
दोहा—कर्मकियोबलिअतिकठिन, लियोशापद्विजकाज । जानिहुकैरिपुवामनै, दीन्ह्योंत्रिभुवनराज ॥ २० ॥
तीनिचरणपुहुमीदियो, वामनकोबलिराज । तववामननाँपनलगे, सोसुनियेकुरुराज ॥

छंद गीतिका।

तहँवढ्योवामनरूपभूपअनूपजगतअधारहे । भूगगनदशदिशिदेवऋपिनरखसतसबसंसारहे ॥ २१ ॥
पातालसातहुँलोकसातहुँसिंधुसातहुँहरितनै । निरख्योद्विजनयुतआपनेकहँदैत्यपतिताहीछनै ॥ २२
निरख्योरसातलचरणतलपदपीठिधरणीतलसही । भूधरनिजंघनिलोंलख्योयुगजानुभरिखगगतिरही
ऊरुनपवनगन—॥२३॥—वसनसंध्यागुह्यप्रजनपतीनको ! हरिजघनअसुरननाभिनभयुगकुक्षनाथनदी
उरनखतमाला—॥२४॥—धर्महियअस्तनहुसतिअरुशीलहै । मनइंदुवक्षसिइंदिराअरविंदजेंहिकरलील
प्रभुकंठमेंसबवेद—॥२५॥—भुजमेंदेवकाननमेंदिशा । शिरस्वर्गकेशनिमेघरविशशिनैनपलकहुदिननि
प्रभुनासिकाहैपवनआननअग्निवाणीछंदहै॥२६॥रसनावरुणभूविधिनिपेधहुभालक्रोधअमंदहै ॥
अधअधरलोभहु—॥२७॥—कामत्वचजलरेतपीठिअधर्महै । प्रभुचरणगतिमखमृत्युछायाहँसनिमा
ओपधीवीरुधरोमना—॥२८॥—ड्डीनदीनखहुपपानहे । बुधिबसतब्रह्माइंद्रियनमेंदेवऋपिहुमहानहै।
सबभूतचरअरुअचरनाथशरीरमेंलखिकैतहाँ । मनहींमनैप्रभुकोकियोपरणामबलिप्रमुदितमहाँ ॥२९॥
दोहा—हरिकेतनमेंनिरखिकै, यहसिगरोसंसार । अतिकलेशपावतभये, तेहिक्षणअसुरअपार ॥
चक्रसुदर्शनतेजअथोरा । शारँगधनुपवज्रसमशोरा॥३०॥पाँचजन्यदरघनधुनिनाशी । कौमो[illegible]
विद्याधरअसिचंद्रप्रकासी । अछेतुणीरबाणकीरासी ॥ येहरिआयुधतेहिक्षणआये।निजनिज[illegible]
हरिपारपदसुनँदनंदादिक । लोकपालयुतअतिअहलादिक ॥ आइगयेसबएकहिबारा। आयु[illegible]
प्रभुकेशिरकिरीटअतिराजे । अंगदमकरकुंडलहुभ्राजे ॥ श्रीवत्सहुउरमेंअतिसोहै । [illegible]
दोहा—कटिमेंसोहैमेखला, अलियुतउरवनमाल । कौस्तुभमणिअनुपमलसे, [illegible]
तहाँउरुक्रमश्रीभगवाना । शोभितभयेशरीरमहाना ॥ इकपदसोंपुहुमीकहँनाँपी । [illegible]
दिशनिपूरिलीन्ह्योंनिजबाहू३२।३२दुसरेपदसोंसहितउछाहू ।स्वर्गहिनाँपिलियोन[illegible]
हरिकोइकपदलगतविशाला । फूटिगयेसातहुपाताला ॥ [illegible]
निरखिसुरासुरअचरजमान्यों।हरिकोचरितकोउनहिंजान्यों॥ ...मलीन
दोहा—निरखिरूपभगवानको, बलिअसलियोविचारि।मेरेयाचकह ...आपनोव
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहारा ...सबकेहि
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृ
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे

दोहा–मैंनाप्योइकपदपुहुमि, स्वर्गदूसरेपाय । तुम्हरेदेखतअसुरपति, तीसरदेहुवताय ॥ ३१ ॥
दानदेनकहिनहिंदियो, तुमकोनरकनिदान । तातेगुरुशापितनृपति, कीजैनरकपयान ॥ ३२ ॥
जोनदेतकहिविप्रको, सोनस्वर्गकोजाय । वृथामनोरथतासुसव, गिरतनरकमहँधाय ॥
दियोनकहिकैदानमोहिं, धनमानीमहिपाल।यहछलकोफललेहुतुम, वसहुनरककछुकाल॥३३॥३४॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे एकविंशस्तरंगः ॥ २१ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिछलकरिराजलै, बाँध्योयदपिमुरारि । तदपिनत्याग्योसत्यवलि, बोल्योवचनविचारि ॥ १ ॥

वलिरुवाच ।

प्रभुमिथ्यामानहुममवाणी । करिहौंसतिमैंशारँगपाणी ॥ तीसरचरणरह्योजोवाकी । ममशिरधरिकरिगाढ़कृपाकी॥
लेहुनाँपिमेरोतननाथा । अवमोहिंकीजेअवशिसनाथा ॥ २ ॥ नरकजानकोमैंनडेराऊँ । राज्यजायनिरधनह्वैजाऊँ ॥
यद्यपिपरेमोहिंदुखघोरा । बाँधहुअंगअंगवरुमोरा ॥ इनतेतसमोहिंभयनविषादा । जसअसत्यवादीअपवादा ॥ ३ ॥
तुम्हरेदंडदियेतेस्वामी । ह्वैहैमोरिनकछुवदनामी ॥ करहुदंडदेहिततुमजैसो । सुखदमातुपितुभ्रातननैसो ॥ ४ ॥
दोहा–असुरनकेतुमगुप्तगुरु, करहुसदाप्रभुनेहु । हमसेश्रीमदअंधको, नाशिमदैदृगदेहु ॥ ५ ॥
जिनसोंकरिकैवैरमुरारी । योगिनसमगतिलियेसुरारी॥६॥तिनकेवँधिराजहरेहूँ । मोकहँव्यथालाजनहिंकेहूँ ॥ ७ ॥
मोरपितामहश्रीप्रहलादा । साधुनमहँजाकीमरयादा ॥ पिताहिरनकश्यपतेसोई । सहेकलेशयदपिवहुतोई ॥
तद्यपितज्योआपकोनाहीं । उनकोयशजाहिरजगमाहीं ॥८॥ तजिहैअंतअवशियहदेहू । तासोंउचितकरवनहिंनेहू॥
धनकेचोरनातसुतबंधू । तिनसोंकाहकियेसंबंधू ॥ संश्रितहेतुअहैयहनारी । तासोंकाहकियेहैयारी ॥
दोहा–गृहबाँधेसवरीतिदुख, वृथाअवरदाजाति ॥ ९ ॥ असविचारिप्रहलादतुव, चरणगह्योसवभाँति ॥
यदपितासुपितुकोवधकीन्ह्यो।तद्यपितुवपदनहिंतजिदीन्ह्यो॥रह्योवोधतेहिपरमअगाधा।संसारीजनकीनहिंवाधा १०
ऐसेमहूँभागवशनाथा । राख्योआपचरणमेंमाथा ॥ जाकेनिकटरहतनितकाला । ऐसीअसतदेहतिहुँकाला ॥
ताकेहितदुरमदजगमाहीं । जोरेधनअरुविभवसदाहीं ॥ धनअरुविभौभयेमतिहीना । होतआशुनहिंतुवपदलीना॥
सोतुममोरसकलहरिलीन्ह्यो।विनप्रयासनिजदासहिकीन्ह्यो॥पूज्योसकलमनोरथमोरा।कियोधन्यमोकोंवरजोरा ११

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिवलिकेकहतहीं, कृष्णभक्तप्रहलाद । आवतभोकुरुपतितहाँ, शशिसमयुतअहलाद ॥ १२ ॥
नलिनैनलंवेदोउवाहू । सुभगश्यामतनसहितउछाहू ॥ पसरतिजासुप्रभाचहुँओरा । ऊंचशरीरलसैनहिंथोरा ॥
ऐसेपितामहैवलिराई । देखतहीअतिशयसकुचाई ॥ १३ ॥ कियोनपूर्वसरिससतकारा । वरुणपाशसोंबँध्योउदारा॥
निरखिपितामहजलदृगआयो । नीचेमुखकरिशीशनवायो॥१४॥प्रहलादहुतहँलखिभगवानै।सेवितनंदसुनंदप्रधानै॥
निकटआयपुलकावलिछाई।कियोप्रणामभूमिशिरनाई॥विह्वलभयोअनंदअपारा।जोरियुगलकरवचनउचारा॥१५॥

प्रह्लाद उवाच ।

दोहा–तुमहिंदियोप्रभुइंद्रपद, औतुमहींहरिलीन । सोकीन्ह्योंअतिशयकृपा, यहौजानिहमलीन ॥
श्रीमदभयेतुम्हैंनहिंजानै । बहुप्रकारकेओगुनठानै ॥ सोबलिकोतुमकियोविनाशा । याकोकियोआपनोदासा॥१६॥
जोधनपायपंडितोमोहै । तोमूरखपूरुषपुनिकोहै ॥ तुमसमनहिंकोऊउपकारी । विनहिंहेतुसबकेहितकारी ॥
तातेअखिललोकगुरुस्वामी । हेनारायणतुमहिंनमामी ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

ऐसोकहतसहितअहलादा।दोउकरजोरिखड़ेप्रहलादा॥तिनहिंसुनावतमोदितगाता।हरिसोंबोलनचहेविधाता॥१८
विंध्यावलिपतिबंधनदेखी । पतिव्रताभैविकलविशेषी ॥
दोहा—नीचेशीशनवायकै, करिकैअमितप्रणाम । जोरिपाणिभगवानसों, कीन्हीविनयललाम ॥ १९ ॥

विंध्यावलिरुवाच ।

यहिजगकोप्रभुकृपानिकेतू । तुम्हींरच्योनिजखेलनहेतू ॥ सोजगकोजिनकेमतिनाहीं । मानहिंस्वामिआपनेकाहीं
तेनिरलज्जतुम्हैंकादेहीं । हैअधीनतुम्हरेसबदेहीं॥२०॥सुनिविनतीविंध्यावलिकेरी । कियोविरंचिविनयपहिंहेरी।

ब्रह्मोवाच ।

जगमयदेवदेवभूतेशा । जगभावनहेकृष्णरमेशा ॥ सरवसुहरिलीन्ह्योंयदुनायक । यहबलिअबनहिंबाँधनलायक।
छोरहुछोरहुयाहिमुरारी । ऐसीरीतिनअहैतुम्हारी॥२१॥करिविक्रमजीत्योत्रैलोका । सोतुमकहँसबदियोविशोका।
दोहा—सरवसुदैतुमकोहरी, दियोतनहुँतुमकाहिं । तऊदुखितयहनहिंभयो, रह्योसुखितमनमाहिं ॥ २२ ॥
जासुचरणमेंकपटविहाई । अंकुरदूबहुसलिलचढ़ाई ॥ पूजनकरहिजोयुतअनुरागा । सोपावतपरगतिबड़भागा।
ताकोदैत्रिभुवनअसुरेशा । कसपावतअसनाथकलेशा॥२३॥सुनिस्वयंभुकेवचनसोहाये।कहतभयेवामनसुखछाये

श्रीभगवानुवाच ।

जापरकृपाकरहुँमैंधाता । ताकेधनकोकरहुँनिपाता ॥ जेहिंधनकेमदतेमतवारो । होतदासनहिंअवशिहमारो।
करतअवशिसाधुनअपमाना । जातअंतसोनरकनिदाना॥२४॥चौरासीलखयोनिमझारी।भ्रमतकर्मवशजीवदुखारी
दोहा—कबहुँकबहुँकहुँजगतमें, कौनिहुँसुकृतवशात । अतिपावनसुखछावनो, लहतमनुजतनतात ॥ २५ ॥
जन्मकर्मवयरूपसोहावन । विद्याविभौधनहुँसुखछावन ॥ येलहिभयोअगर्वितजोई । मेरोकृपापात्रहैसोई ॥ २६ ॥
रूपविभौविद्यातरुणाई । देहिंगर्वअविवेकबढ़ाई ॥ पैजोतनमनमोहिंअवराधा । ताकोकरहिंनयेकछुबाधा ॥ २७ ॥
दैत्यदानवनमाहँप्रधाना । कीरतिकरयहबलिप्रतिमाना॥मायाअजयमोरियहजीती।दुखौपरेनहिंकरीकुरीती ॥२८
याकोसकलभयोधनछीना । भयोत्रिलोकराजतेहीना ॥ निजरिपुसोंयहबंधनपायो।औरहुबड़ोअनादरआयो ॥
दोहा—जातनातयहिछोंडिकै, सिगरेगयेपराय ॥ सकलयातनाह्वैगई, लह्योदुःखसमुदाय ॥ २९ ॥
गुरुकीशापलह्योद्विजकाजा। तदपिनसत्यतज्योबलिराजा॥मैंहूँकियोयदपिछलकर्मा।तदपिनयहछोंड्योसतिधर्मा
कोबलिसमयहजगतउदारो । सत्यधर्मधुरधारणवारो ॥ ३० ॥ तातेयाकोकरिनिजदासा । मैंदेहौंवैकुंठनिवासा।
जोहैदुर्लभदेवनकाहीं । अंतसमययहबसीतहाँहीं ॥ सावरणीमन्वंतरमाहीं । ह्वैहैइंद्ररहीरिपुनाहीं ॥
याकोरक्षकमेंतहँह्वैहौं । पूरणभक्तिआपनीदैहौं ॥ ३१ ॥ तबलोंबसैसुतलमहँजाई । विशुकर्माविरच्योसुखदाई।
दोहा—आधिव्याधिआलस्यहूँ, औरहुदुखलघुघोर ॥ तहाँवसेकछुहोतनहिं, पायअनुग्रहमोर ॥ ३२ ॥
बहुरिकह्योबलिसोंयदुराजा । सुनियेइंद्रसेनमहराजा ॥ जाहुसुतलसंयुतपरिवारा । होयभूपकल्याणतुम्हारा।
जहाँवसनकोदेवसदाहीं । चाहतरहतसेवमनमाहीं ॥ ३३ ॥ इंद्रहुयमअरुवरुणकुवेरा । करिनहिंसकैंअनादरतेरा।
तौऔरनकोकहागनावें । जेतुम्हारभयनिजडरलावें ॥ असुरजोतुववशासननहिंधारी । ताकोचक्रमोरहतिडारी॥३
[illegible] टितोहीं ३५

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे द्वाविंशस्तरंगः ॥ २२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—यहिविधिजबवामनकह्यो, बलिसोंसुंदरबेन ॥ असुरनाथतबविमलमति, पायोआनँदऐन ॥
जोरिपाणिनैननिभरिवारी । गद्गदगरबलिगिराउचारी ॥ १ ॥

बलिरुवाच ।

करनप्रणामा । चाहतमनहूँतेसुखधामा ॥ सकलमनोरथपूरणहोवैं । तासुओरयमकबहुँनजोवैं ॥
। कियोअनुग्रहमोपरसोई ॥ मैंहौंनीचनहौंयहिलायक । पैतुमदीनबंधुयदुनायक ॥ २ ॥

श्रीशुक उवाच ।

निबलिवाणीदीनदयाला । करीदासपैदयाविशाला ॥ गरुडहिशासनदियोउताला । बंधनछोरिदियोततकाला ॥
सत्यसंधतहँदानवनाथा । बारबारधरिहरिपदमाथा ॥
दोहा—विधिशिवकोतहँअसुरपति, करिप्रमुदितपरणाम ॥ गमनकियोअसुरनसहित, सुतलआपनेधाम ॥ ३ ॥
गहिविधिबलिसोंत्रिभुवनलीन्ह्यों।कुरुपतिहरिइंद्रहिपुनिदीन्ह्यों॥कैप्रभुअदितिकामनापूरी।पाल्योजगतदयाभरिभूरी
बलिपायोहरिपरमप्रसादा । राख्योसकलसत्यमरयादा ॥ लखिप्रहलादआपनोनाती। वंशप्रचारकजोसबभाँती॥४॥
बोल्योवचनभक्तिरसछाई । श्रीवामनकोविनयसुनाई ॥ ५ ॥

श्रीप्रह्लाद उवाच ।

पूजतपदविधिशिवहूतेरे । भयेद्वारपालकबलिकेरे ॥ हेप्रभुदासनप्रदअहलादा । जसबलिपैतुमकियोप्रसादा ॥
लह्योनतसशिवरमाविधाता । तहाँकहाँऔरनकीबाता ॥ ६ ॥
दोहा—जाकेपदअरविंदको, करिसेवनमकरंद ॥ ब्रह्मादिकअधिकारसब, पावतसहितअनंद ॥
ऐसेतुमहमनीचकुजाती । तिनपरकृपाकियोयहिभाँती ॥ ताकोहेतुपरचोनहिंजानी । अपनीकरनीकोअनुमानी॥७॥
बड़ोविचित्रचरित्रतुम्हारो । अनयासहिप्रभुजगविस्तारो ॥ सुमदरशीसबअंतरयामी । करहुकृपाभक्तनपरस्वामी॥
सोनविषमतापरैनिहारी । कल्पवृक्षकीरीतितुम्हारी ॥ ८ ॥ सुनिप्रह्लादवचनभगवाना । बोलेवामनकृपानिधाना॥

श्रीभगवानुवाच ।

सुनहुँवचनप्रहलादहमारा । सबविधिहैकल्याणतुम्हारा॥नातिनातनिजज्ञातिनलीने।जाहुसुतलनिवसहुसुखभीने९॥
दोहा—तहाँगदाकरमेंलिये, ठाढ़ेबलिकेद्वार ॥ देखहुगेमोकहँसदा, बंधननाहिंतुम्हार ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच ।

जबअसकह्योकृष्णकुरुराई।तबप्रहलादमहासुखपाई॥प्रभुकीआज्ञाकोधरिशीशा।जोरिपाणिशिरनायमहीशा ॥११॥
आदिपुरुपकोदैपरदक्षिण।लैऔरहुअसुरनअतिदक्षिण॥कीन्ह्योंसुतलप्रवेशसुखारी।जोप्रहलादभक्तगिरिधारी॥१२॥
पुनिहरिनिकटशुक्रकहँदेखी।पग्योद्विजनमधिशोचविशेखी॥कह्योशुक्रसोंहरिमुसकाई १३ मखपूरणकीजैमनलाई॥
होइनयदपियज्ञयजमाना । पूरोहितदपिविप्रमतिमाना ॥ १४ ॥ सुनिवामनकेवचनलजाई । बोलेमंदमंदभृगुराई ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—फलदातासबयज्ञके, जहँपूजितभेआप ॥ तहाँअपूरणयज्ञको, मेरेनाहिंसंताप ॥ १५ ॥
मंत्रतंत्रअरुदेशहुकाला । होतहीनजोकर्मकृपाला ॥ सोलीन्हेंप्रभुनामतुम्हारा । पूरणहोतअवशिसंसारा ॥ १६ ॥
तदपिरावरोशासननाथा।विनाहिंविचारकरबपरिमाथा॥होइसोईजगमंगलकारी।करतजोतुवशासनशिरधारी ॥ १७॥

श्रीशुक उवाच ।

कहिहरिसोंअसशुक्रतहाँहीं । लैविप्रननिजसंगहिमाहीं ॥ बलिकीयज्ञरहीजोबाकी। ताकोपूरकियोसुखछाकी॥१८॥
यहिविधिवामनबलिपैजाई।त्रैपदधरणिमाँगिकुरुराई॥त्रिभुवननाँपिइंद्रकहँदीन्ह्यो।जोबलिवासवसोंहरिलीन्ह्यों।

दोहा–पुनिब्रह्मानारदतहाँ, महादेवसनकादि ॥ दक्षअंगिराभृगुयुते, औरहुऋषिश्रुतिवादि ॥ २० ॥
कश्यपअदितिप्रीतिकेहेतू । होनलोकसबमोदनिकेतू ॥ लोकलोकपनकेकुरुराई । वामनकोपतिदियेबनाई ॥ २१
वेददेवयशधर्महुस्वर्गा । श्रीमंगलव्रतअरुअपवर्गा ॥ समरथइनकेपालनमाहीं ॥ २२ ॥
अरुउपेंद्रयहनामधराये।सुनिकैसकललोकसुखपाये॥२३
लोकपालयुतलैविधिशासन । गयेइंद्रअपनेइंद्रासन॥२४॥वामनभुजबलत्रिभुवनराजू ।
दोहा–इंद्रासनपरबैठिकै, शोभितभयोसुरेश । लहिकैकृपाउपेंद्रकी, रह्योनकतहुँकलेश ॥ २५ ॥
ब्रह्माशिवअरुचारिकुमारा।भृगुआदिकऋषिसबैउदारा॥पितरसिद्धअरुदेवसुखारी॥२६
अदितिहिंसबैसराहतराजा।गेनिजनिजपुरसहितसमाज॥२७॥चरितउरुक्रमकोदुखदंडन।मैंतुमसोंगायोकुरुनंदन
श्रद्धासहितसुनतजोयाको । छूटतमहापापहैताको ॥२८॥ जोमहिरजकणगनैअनंता । लहैत्रिविक्रमविक्रमअंता
भयोजोहैअरुहोवनवारो । लहैकहाहरिमहिमापारो ॥ ऐसोचारिवेदनिरधारे । सोइवशिष्ठआदिकहुउचारे ॥ २९
दोहा–यहवामनअवतारको, चरितसुनैजोकान । सोअनेकसुखभोगिकै, अंतलहैनिर्वान ॥ ३० ॥
सुरनरअरुपितृकर्ममें, पाठकरैजोयाहि । विनाविघ्नपूरहिसबै, होइपूर्णफलताहि ॥ ३१ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे त्रयोविंशस्तरंगः ॥ २३ ॥

दोहा–वामनकीसुनिकैकथा, कुरुपतिअतिसुखपाय । पुनियहश्रीशुकदेवसों, विनतीदियोसुनाय ॥

राजोवाच ।

[illegible] ॥ १ ॥
हैंतोवहत्रैलोक्यगोसाँई । धरहिंशरीरजीवकीनाँई ॥ २ ॥ युतविस्तारकहोमुनिराई । कृष्णचरित्रसबैसुखदाई ॥ ३

सूत उवाच ।

सुनिशुकदेववचनभूपतिके । अतिअनुरागभरेयदुपतिके ॥ मीनरूपकोचरितमहाना।कह्योबादरायणिभगवाना॥
गोद्विजसुरसाधुनश्रुतिगाथा । इनकेईशअहैंयदुनाथा ॥ रक्षणहितधर्मादिककेरे । धरहिंशरीरमुकुंदघनेरे ॥ ५
दोहा–वायुसरिससबमेंबसत, यदपिधरहिंबहुरूप ॥ तदपिछोटबड़होतनहिं, हतमायागुणभूप ॥ ६ ॥
कल्पअंतब्रह्माजबसोवै । तबैप्रलयनैमित्तिकहोवै ॥ तबहिंसिंधुछोंडहिंमरयादा । बोरहिंलोकनअसश्रुतिवादा ॥ ७
सोइकसमयमोहजबधाता । सोवनचहेत्रिलोकविख्याता ॥ हयग्रीवतहँदानवगयऊ । चारिहुँवेदहरतसोभयऊ ॥ ८
दानवकर्मजानिभगवाना । धरयोमीनकोरूपमहाना ॥९॥ तहँराजऋषिइकगुणधामा । रह्योधरणिसत्यव्रतनामा
सलिलपानकरिबहुतपकीन्ह्यो।नारायणचरणनमनदीन्ह्यो॥१०सोईमहाकल्पयहिपाहीं।श्राद्धदेवमनुभोजगमाहीं ॥ ११
दोहा–द्रविडदेशकेभूपसों, एकसमयकुरुराय ॥ कृतमालासरिमेंगयो, तर्पणहितचितचाय ॥
तर्पणकरनलग्योजबराजा।भरिअंजलिजलपितरनकाजा॥तबभूपतिनिजअंजलिमाहीं।लख्योछोटइकमीनतहाँहीं ॥ १२
ताकोदियोनदीमहँडारी ॥१३॥ मीनदीनतबगिराउचारी ॥ करुणावानबड़ेतुमराजा । निर्दयसमकीन्ह्योयहकाजा
जलकेबड़ेमीनमोहिंखैहैं । जातिमानिनहिंनेकुबचैहैं ॥ तातेंमैंडरपहुँसरिमाहीं । लेहुनिकासिभूपमोहिंकाहीं ॥ १४
सुनिनृपदीनमीनकेबैना । रक्षणकरनचह्योभरिनैना ॥ हरिचरित्रभूपतिनहिंजान्यो।ताकोदीनमीनलघुमान्यो॥ १५
दोहा–जलतेताहिनिकासिकै, राखिकमंडलुमाहिं ॥ निजआश्रमकोलैगयो, कियविचारकछुनाहिं ॥ १६ ॥
एकहिरातिमाहँबढ़िगयऊ । सकलकमंडलुभरिसोभयऊ॥नृपसोंबोल्योभयेप्रभाता॥१७॥मैनकमंडलुमाहँसमाता॥
दिन्नरक्सहस्यलदेहुनरेशा । जहँमैंसुखिहोइनकष्टकलेशा॥१८॥तबराजाइकमडवटमाहीं । डारिदियोसोमीनाहिंकाहीं ।

कमुहूरतठाढो । देखतमीनतीनकरबाढ़ो ॥ १९ ॥ कह्योमीनपुनिसुनुनरराई । यामेंहोतिनमोरिसमाई ॥
॥मुहिंबाढ़तलखिनहिंमनभाखौ॥२०॥तबराजाकोअचरजलागा॥डारयोतेहिलैजाइतडागा॥
दोहा-भूपतिकेतबलखतहीं, बाढ्योमीनस्वरूप ॥ भयोसरोवरभरिद्रुतै, नहिंसमाततहँभूप ॥ २१ ॥
नकह्योतबभूपतिपाहीं । सॉकरजानिसरोवरकाहीं ॥ सरसमातनहिंमोरशरीरा॥राखहुमुहिंजहँजलगंभीरा ॥२२॥
वेडकोवासी । द्रुततड़ागतेताहिनिकासी ॥ जसतसकैभूपतिलैगयऊ। सिंधुमाहँतेहिडारतभयऊ॥२३॥
ले । खैहैंमहामकरमुहिंहाले ॥ लागतिदयानतोहिंनरेशा । जोराखहुमुहिंसिंधुप्रदेशा ॥
हैंशरणागततेरे । तुमबिनकोउरक्षकनहिंमेरे ॥२४॥ ऐसेमधुरवचनसुनिराजा । बोल्योवचनजानिनिजकाजा॥
दोहा-बढ़तजाहुलखतैलखत, दीनबैनवतराय ॥ आपकौनहैंमोहिंअब, दीजैबेगिबताय ॥ २५ ॥
निमहाना । लखेहुँननैनसुनेहुँनहिंकाना॥पुनिनरपतिकेदेखतमीना । शतयोजनकोनिजतनकीना॥२६॥
तबभूपतिबोल्योकरजोरी । अबलोंरहीमोरिमतिभोरी ॥ तुमहोनारायणभगवाना । भयेभक्तहितमीनमहाना॥२७॥
उत्पतिपालनलैजगकरहू । हेविश्वम्भरभक्तनभरहू ॥ हौसचिदानंदश्रीधामा । करहुँजोरिकरतुमहिंप्रणामा ॥२८॥
सबतुम्हारलीलाअवतारा । हेजनमंगलहेतअपारा ॥ धरयोमीनकोवपुकेहिकारण । सोकहियेप्रभुदीनउधारण२९॥
दोहा-जसऔरनसुरसेवनो, कहुँफलहोतउदोत ॥ तसपदसेवनरावरो, कबहुँवृथानहिंहोत ॥
तुमहोसबकेसुहृदपियारे । दृगगोचरभोरूपहमारे ॥ ३० ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिविनयनृपतिजबकीनी । सत्यव्रतमतिआनँदभीनी ॥ तबएकांतीजनकेप्यारे । युगछेमेंमीनहिंवपुधारे ॥
प्रलयासिंधुमहँचह्योविहारा । सत्यव्रतसोंवचनउचारा ॥ ३१ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

आजुहिंतेसतयेंदिनमाहीं । तजिहैंवारिधिवेलाकाहीं ॥ भूर्भुवादिलोकनकहँभूपा । बोरिदेइँगेरहीनरूपा ॥ ३२ ॥
जबह्वैजैहैजलचहुँओरा । तबनृपपायअनुग्रहमोरा ॥ तेरेनिकटनावइकऐहै । अतिविशाललखितैंमुदपैहै ॥ ३३ ॥
दोहा-अन्नऔषधिनबीजलै, सप्तऋपिनकेसंग । चढिबोतुमतापैतुरत, लैनिजजनहेअंग ॥ ३४ ॥
चढेनावविचरेहुँचहुँओरा।मिलीनकहुँबिनजलकोठोरा॥रहीऋपिनकोतहाँप्रकासा।करिहैंनहिंसूरजशशिभासा ३५॥
परमप्रचंडपवनकरिशोरा।वहनलगीअतिझोंकिझकोरा ॥ कँपनलगीअतितरणितुम्हारी । तबतुमकोंह्वैहैभयभारी ॥
तबममप्रेरितवासुकिनागा । तुवसमीपऐहैबडभागा ॥ ताकोगुनकरिहितदुखभंगे । नावबाँधिदैजैममशृंगे ॥ ३६ ॥
लैनावहिंतेहिसहितसमाजा । मैंवागिहोंसिंधुमहँराजा॥जबलोंब्रह्मनिशानहिंबीती।तबलोंतुमरहिहोयहिरीती ॥ ३७॥
दोहा-परब्रह्ममहिमाजोमम, तबजानिहोनरेश । अबैनकहींजानहू, लहिममभक्तिनिदेश ॥ ३८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिभूपतिसोंप्रभुमीना॥अंतर्हितअपनोवपुकीना॥जौनकालकमलापतिभाष्यो॥राजासोइसमयचितराख्यो ३९॥
अग्रभागभूपतिकरिप्राची । कुशविस्ताररच्योमनराची ॥ बैठ्योजायसिंधुकेतीरा । करिकैउत्तरमुखमतिधीरा ॥
सुमिरणलग्योकृष्णपदकंजा।जातेहोतमहाभवभंजा४०कुरुपतिजबसतयोंदिनआयो।लख्योचरितजोप्रभुसमगायो ॥
चहुँकिततेकरिकैअतिनादा।दियोसमुद्रछोडिमरयादा ॥ तरलतरंगतुंगअतिघोरा । उठनलगींभूपतिचहुँओरा ॥
दोहा-बरपनलागेघोरघन, बुंदसरिसगजसुंड । लोकनकोबोरचोतुरत, वारिधिबाढिअखंड ॥ ४१ ॥
तबनरपतिकोअतिदुखआयो । बारबारश्रीपतिपदध्यायो ॥ तहँहरिकृपानावसोआई । निरखिमोदपायोनृपराई ॥
अन्नऔषधिहिंबीजाहिलैकै।ऋपिमसहितहरिपदमनदैकै॥चढ्योनावमहँसहितसमाजा॥ज्ञानवानद्राविडकोराजा॥४२॥
तबप्रचंडमारुतचहुँओरा । वहनलग्योदेघोरझकोरा ॥ कंपनलगीतुरततबतरणी । बूडतजानिपरीदुखकरणी ॥

तबराजाकछुकियोविषादा। होतिअसतिअबहरिमरियादा॥ तबसिगरेऋषिनृपसोंबोले। [illegible]

दोहा—महाराजयहिकालमें, करियेहरिकोध्यान। सोईसंकटकाटिहैं, करिहैंमोदमहान॥ ४३॥

तबराजाकियकेशवध्याना। तुमहोकृपासिंधुभगवाना॥ जगतारणदारणदुखदंदा। दीनहजारनदेहुअनंदा॥ मैंतोतुवदासनकोदासा। मोहिरावरीसबविधिआसा॥ यहिविधिअस्तुतिकीन्ह्योंभारी। [illegible] प्रगटभयेतनपरमविशाला। मीनरूपप्रभुदीनदयाला॥ शिरमेंस्वर्णशृंगइकतुंगा। मनहुँमेरुकोशृंगउतंगा॥ चालिसकोशलक्षकोजाको॥कनकवर्णतनपरमप्रभाको॥देहिंसिंधुमहँजबहिंहिलोरा॥मानहुचहहिंब्रह्मपुरओरा॥ [illegible]

दोहा—हरिकोशासनपायतहँ, प्रगट्योवासुकिनाग। एकलक्षयोजनवपुप, हरिसेवकनडभाग॥

निरख्योभूपवासुकिहिंजबही॥ऋषिनसहितमोदितभोतबहीं॥ [illegible] मीनशृंगमेंदियोलगाई। हरिजसआगेकह्योउपाई॥ तबमैंनावमीनभगवाना। विहरनलागेसिंधुमहाना॥ देखिकृष्णकोकौतुकभारी। सत्यव्रतनृपभयोसुखारी॥ जान्योहरिमोहिंलियोबचाई। [illegible] तबउरबाढ्योअमितउछाहा। अस्तुतिकरनलग्योनरनाहा॥ ४५॥

राजोवाच।

जैअनंतजयजयजगदीशा। जयपदवंदिताशिववागीशा॥

दोहा—जयकरुणाआकरनिकर, सद्गुणमंगलरूप। जयदीनोद्धारणप्रबल, जयजयमीनस्वरूप॥

छंदगीतिका।

अज्ञानजौनअनादितातेभयोज्ञानविनाशहै। संसारतापहितेतपितजिनजोगनरकनिवासहै॥
तेमूढ़विनहिंप्रयासजिनकोपावहींगुरुद्वारते। तेपरमगुरुममनाथद्रुतउद्धारकरसंसारते॥ ४६॥
जेपुरुषमूरखदुःखसहिसुखहेतबहुकर्मनिकरैं। नहिंलहतसुखहूनेककर्महिविवशअंतहिदुखभरैं॥
तेजासुपदसेवनकरतपावतसुमतिगतिदायिनी। तेइतुमअहोममपरमगुरुश्रीवसतउरअनपायिनी॥
जिमिअगिनिपरिरजतहुकनकमलरहितहोतविशेषहै।तिमिजासुसेवनकरतनिर्मलहोतजनअसलेखहै॥
जोदेवगुरुहुस्वतंत्रचाहैदेनजनकोफलसही। सोदशसहसकोअंशजासुप्रसादकोतूलैनहीं॥
जोजगतनायकध्यानलायकमोददायकदासको। सोपरमगुरुहैमोरनंदकिशोरपूजनआसको॥ ४९॥
जिमिअंधअंधहिलैचलैतिमिमूढमूढसिखावहीं। तातेजगतमहँरहतयेजनभ्रमतदुखबहुपावहीं॥
तातेतुमहिंसरवज्ञसर्वप्रकाशगुरुमैंवरलियो॥ ५०॥ प्रभुरावरेकेचरणमेंसुखभरनहितमैंमनदियो॥
अपराधअमितविसारिसकलसुधारिज्ञानबतावहू। विनहेतुतुमजनपैकृपाकरिनिजपुरहिपहुँचावहू॥ ५१॥
सबकेपरमप्रियमीतप्रभुगुरुज्ञानप्रदउरबसतहौ। मनकामनादाताविधाताजगतत्रातालसतहौ॥
तद्यपिनयहजनतुम्हेंजान्योविषयकेबंधनबँध्यो। जगमेंवृथासोजन्मलीन्ह्योंतासुअर्थनकछुसध्यो॥
सबदेवकेतुमदेवइशअनीशकेप्रदकामहो। सच्चिदानंदअनंतगुणश्रीकंतआनँदधामहो॥ ५२॥
ऐसेतुम्हारेशरणगतहौंज्ञानपावनहेतमें। उपदेशकरिअज्ञानमेटहुपरचोशोकनिकेतमें॥ ५३॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—ऐसीजबअस्तुतिकरी, सत्यव्रतमतिमान। प्रलयसिंधुविचरततबै, महामीनभगवान॥

राजहिंकियोज्ञानउपदेशा। छूटिगयेउरकेअंदेशा॥५४॥ पुनिभाष्योसोमत्स्यपुराना। [illegible]
मुनिभग्गनगनापिहिकोहीं॥कह्योगोप्यहूसकलतहाँहीं५५नावचढेऋषिसहितसमाजा॥सुन्योसकलहरिभाषितराजा॥
दीन्ह्योदैत्यमुरमहाना। चारिहुवेदनहरिबलवाना॥ रह्योप्रलयसागरमहँजाई॥ताकोकर्मजानियदुराई॥
[illegible] मेरुशृंगबाँध्योहरिनावै। जातकहूँनहींबहिजावै॥
[illegible] ताकेऊपरब्रह्मपुर, सोहतसदाअनूप॥

..वकोमीनमुरारी । हयग्रीवपदँचलेसिधारी ॥ गहिरसहसयोजनजहँनीरा । हयग्रीवतहँरह्योप्रवीरा ॥
..तहाँमीनमग.. । देख्योदानवकोबलवाना ॥ महाभयावनश्यामशरीरा । हयसमआननेनगँभीरा ॥
... । सुवरणवरणसुतनुसुभूपा ॥ चालिसलक्षकोशविस्तारा । मानहुँग्रसनचहतसंसारा ॥
... ॥
दोहा–असविचारिकरलैगदा, कटिकोकसिबलवान ॥ वपुवढ़ायलीन्ह्योंअसुर, मंदरमेरुसमान ॥
... । एकहाथलैगदाकराला ॥ खुलेकेशसनमुखशठधायो । अतिकोपितआशुहिढिगआयो ॥
... । डारचोजालअसुरकुलकेतू ॥ परचोजालहरिपंखनपाहीं । लियोफँदायगुन्योमनमाहीं ॥
..नदियोतबपंखपसारी । टूकटूककियजालहिफारी ॥ लगतमीनकोपंखहलोरा । उछल्योवारिधिजलचहुँओरा॥
..योनीरकोशोरकठोरा । मानहुँगराजिउठेघनघोरा ॥ पुनिहरिदोउपंखचलाई । असुरहिदियसौकोसहटाई ॥
दोहा–तबअतिकोपिततहैअसुर, करिकैशोरकठोर ॥ धावतभोभगवानपै, लियेगदाकरघोर ॥
..नकटजायकैअसुरमहीशा । मारचोगदामीनकेशीशा॥ ताकोनहिंकछुगनिहरिमीना । मुखमेंदाबिअसुरकहँलीना॥
..गतमीनकेदंतअपारा । बह्योअसुरतनरुधिरपनारा ॥ हयग्रीवछूट्योकरिजोरा । पैनहिंसमरनेकुमुखमोरा ॥
..न्योगदाकछुदूरहिजाई । उछलिमीनतहँगयोबचाई ॥ उछलिअंबुउडिगयोअकासा । भीज्योविधिपुरवासिनवासा॥
..ठीतरंगएकहीसंगा । भयोशोरचहुँओरअभंगा ॥ लागततहाँतरंगनजोरा । दानवहूँहठिगोतेहिंठौरा ॥
दोहा–लाखनयोजनपुहुमिको, पंखउपरगोछाय ॥ जिमिलघुसरसीकेलिकरि, देतमतंगमताय ॥
..तबदानवशोकितभारी । लेहुँमीनकेपंखउखारी ॥ असविचारिधायोकरिशोरा ॥ लपटिगयोमीनहिंबरजोरा ॥
..भयपंखगहिउभयहाथसों । रेल्योकरिकेजोरमाथसों ॥ चालिसयोजनदियोहटाई । हरिकोनिजबलदियोदेखाई ॥
..बहरिनिजपंखनिफटकारचो।हयग्रीवकोदूरिपवारचो॥विकलभयोतबकछुकसुरारी।उठचोकोपकरिसुरतिसँभारी॥
..मीनहिंधरनहेतुपुनिधायो।वचनचहतअसमनपछितायो ॥ आवतनिरखिअसुरबलवाना। शृंगसूधकीन्ह्योंभगवाना॥
दोहा–दानवपकरचोशृंगको, दोउकरसोंकरिजोर ॥ पैनतोरिशृंगगहिसक्यो, कीन्ह्योंजतनकरोर ॥
..तबदानवदैशृंगहिघाती । चह्योपछेलनकोसबभाँती ॥ पीनमीनकोशृंगकठोरा । लागतहींदानवउरफोरा ॥
..तहँबहिचलीरुधिरकीधारा । भयोलालजलसिंधुमझारा॥यहिविधिअसुरमारिझिटकारी। ताहिदूरिकरिमीनमुरारी॥
..जहाँनीरकोथंभनकरिकै । रच्योनिवासअसुरसुखभरिकै ॥ राख्योचारिहुँवेदलुकाई । तहाँगयेप्रभुमीनसिधाई ॥
...चारिहुँवेदनमग.. । दियोविधाताहिंकृपानिधाना ॥५७॥सोसत्यव्रतभूपविज्ञानी । हरिकीकृपापायसुखदानी ॥
दोहा–यहमन्वंतरमेंभयो, वैवस्वतमनुभूप ॥ धर्ममानयशमानअति, ज्ञानमाननयरूप ॥ ५८ ॥
सत्यव्रतहरिमीनको, सुनतजोकोउसंवाद ॥ ताकेछूटतकलुपसव, पावतअतिअह्लाद ॥ ५९ ॥
जोगावतजननित्यहीं, कृष्णमीनअवतार ॥ ताकीपूरतिकामना, लहतमोक्षसुखसार ॥ ६० ॥
कवित्त–प्रलैकेसमैमेंभूभुवादिलोकलैमेंनिज नीरकेनिलैमेंसेइजातवेदकोभयो ।
मीनरूपधारिकरिरारिदैत्यकोसँहारि वेदनउधारिकैसुरारिधाताकोदियो ॥
ज्ञानऔविज्ञानकेनिदानकोसुनायनाथ सत्यव्रतभूपतिकोभक्तनिजकैलयो ।
मायागुणहीनदिव्यगुणमेंप्रवीणरघु राजदीनमाधौमीनकेरोदासह्वैगयो ॥
दोहा–संवतसैउनईसनिधि, माघववदिरविवार ॥ अठयोंअस्कंधहुलियो, आठेंकोअवतार ॥ ६१ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि
राजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे चतुर्विंशस्तरंगः ॥ २४ ॥
दोहा–महाराजरघुराजकृत, शुभअष्टमअसकंध । यहसमासमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध ॥
समाप्तोऽयं अष्टमस्कंधः ८.

इति

श्रीमद्भागवत-आनन्दाम्बुनिधि

अष्टमस्कन्धः समाप्तः ८.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-बम्बई.

दोहा–मेरुनिकटउत्तरदिशा, खेलनगयोशिकार॥जहँभवानीसहितहर, नितप्रतिकरहिंविहार॥२३॥२४॥
तेहिंवनमेंजवकियोप्रवेशा । तहँनारीह्वैगयोनरेशा ॥ घोराभयोआशुतहँघोरी॥२६॥भयेसुभटभामिनिअसिंघां
निरखिपरस्परनारिस्वरूपा॥भयेविषादितलज्जितभूपा॥२७॥यहचरित्रसुनिकेंकुरुराई॥श्रीशुकसोंअसविनयसुनां

राजोवाच ।

केसोदेशरह्योवहभारी । गयेहोतजहँनरतेनारी ॥ अतिअचरजमोकोंयहलागा । कहौहेतुताकोवड़भागा ॥२८
सुनतपरीक्षितवैनसुहाये । श्रीशुकदेवकहेचितचाये ॥

श्रीशुक उवाच ।

एकसमयशिवदरशनहेतू । गयेसकलमुनितेजनिकेतू ॥ २९ ॥
दोहा–करतरहेतहँसुखसहित, गौरीशंभुविहार । निरखिभवानीमुनिनको, लज्जितभईअपार ॥
त्यागिकंतकोअंकभवानी॥पहिरचोवसनपरमदुखमानी३०करतकेलिशिवशिवानिहारे॥मुनिहुबद्रिकाश्रमहिंसिधारे
तहँभवानीकेप्रियहेतू । दीन्ह्योंशापकोपिवृषकेतू ॥ अवतेजोयाहिदेशहिआवै । सोनरतेनारीह्वैजावै ॥ ३२ ॥
तवतेपुरुषनजायतहाँहीं । गयेअवशिनारीह्वैजाहीं ॥ सहितसमाजनारिह्वैराजा । विचरनलगेवनहिंधरिलाजा॥३३॥
विचरतवनमहँसुंदरिनारी॥सखिनसहितवुधताहिनिहारी॥भयोकामवशमनअतिताको॥रतिछविहारिहेरितियाको॥
दोहा–दोउशशिकोसुतनिरखि, मोहितकियोविहार । तातेभयेपुरूरवा, जिनकोसुयशअपार ॥ ३५ ॥
भोसुदुम्नयुवतीयहिभाँती॥सुमिरचोगुरुहिदुखिततेहिराती३६गुरुवसिष्ठवृत्तांतहिजानी॥गयेतहाँआशुहिदुखमानी
लखिसुद्युम्नदशामुनिराई॥कोमलहृदयदयाअतिआई॥पुरुषसुद्युम्नवनावनकाहीं॥सादरविनयकियोशिवपाहीं॥३७
हरप्रसन्नह्वैमुनिसोंभापे । अपनोसत्यवचनहूरापे ॥ ३८ ॥

शिव उवाच ।

एकमासरहिहैयहनारी । मासएकपूरुषयशधारी ॥ यहिविधिकैराज्ययहराजा । पालहिदेशनिप्रजनसमाजा॥३९॥

श्रीशुक उवाच ।

गुरुहिकृपातेअसवरपायो । भूपसुद्युम्नदेशनिजआयो ॥
दोहा–पाल्योजगतीजननयुत, सोसुद्युम्नजनेश । तद्यपिताकेप्रजनको, छूट्योनाहिंकलेश ॥ ४० ॥
उत्कलगयऔविमलये, भेताकेसुततीन । दक्षिणदिशिकेनृपतिभे, सवेधर्मलवलीन ॥ ४१ ॥
पुनिसुद्युम्नप्रयागमहँ, पुरूरवहिंवैठाइ । जानिजरठतनआपनो, कीन्ह्योंतपवनजाइ ॥ ४२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
जाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिगेसुद्युम्नवन, श्राद्धदेवतवभूप । यमुनातटमेंतपकियो, सुतकेहेतअनूप ॥ १ ॥
गयेवर्षशततपमनदीन्हें । फेरिपुत्रहितमनुमरवकीन्हें ॥ लहेपुत्रआपनेसमाना । दशइक्ष्वाकुआदिवलवाना ॥२॥
तिनकेनामप्रथममेंगाई । कुरुपतिदीन्ह्योंतुमहिंसुनाई ॥ तिनमेंजोपृषध्रवलवाना । तासोंकह्योवसिष्ठसुजाना ॥
तुमरक्षहुममगोवनकाहीं । जामेंरातिमापनाहिंमाहीं ॥ तवनृपलैकरिकरकरवाला । वीरासनवैठ्योगोशाला ॥
यहिविधिगोवनरक्षनलाग्यो॥दिवसजपनकरिनिशिमहँजाग्यो३एकसमयनिशिमेंघनघोरा॥वरषनलगेगरजिचहुँओरा॥
अंधकारभारीभयो, कछुनाँ । काननतेकढिकेसरी, गोशालेगोपाय ॥

।यगौवैंसबजागी। गोशालामहँभागनलागी ॥४॥ कृदिधरचोनाहरइककाहीं। गऊपुकारकियोनिशिमाँहीं ॥
। धावतभोदुखभयोअपारा ॥५॥ रह्योतहाँअतिशयअँधियारा।तातेनृपनाहिंबाघनिहारा
शोरतकितेगनृपाला। गऊशीशकटिगयोउताला ॥ ६ ॥ कढ्योकानहींकेहरिकेरो।भाजिगयोसोडरपिघनेरो ॥
रुधिरसारगमहँताको७नृपजान्योमैंवधकियवाको॥भयोभोरगोवधलखिराजा।दुखितभयोगुनिकैनिजकाजा॥८॥
दोहा-गोवधनिरखिवसिष्ठहूं, कीन्ह्योंअतिसंताप। विनजानेअपराधभो, तदपिदियोतेहिंशाप ॥
त्रीअधमअहौनरराई। तातेहोहुशूद्रतुमजाई ॥ ९ ॥ गुरुकीशापलियोकरजोरी। भूपहिंभईव्यथानाहिंथोरी ॥
भूपतिव्रतकीन्ह्यों॥१०॥वासुदेवचरणनमनदीन्ह्यों॥भयोभक्तयेकोतीराजा११दियोसंगतजिजननसमाजा॥
१२बधिरअंधसमफिरचोसदाई॥१३॥पुनिकछुकालमाहँवनजाई।दावदहनतनदियोजराई।
छूटिगैताकी।लह्योमुक्तिजोजगअतिबाँकी१४रह्योलहुरभ्राताकविताको।राज्यकरनकोमननहिंजाको ॥
दोहा-चंधुनऔनिजराजतजि, कविकाननमेंजाय। श्रीपतिभजिबालकपनै, लह्योमुक्तिसुखछाय ॥ १५ ॥
मनुकोसुतकरूपनृपजोई। तीनिपुत्रकियउतपतिसोई । तेउत्तरकेभयेभुवाला। ब्रह्मभक्तधर्मनकेपाला ॥ १६ ॥
मनुकोपुत्रधृष्टजोरहेऊ। तासुसधार्ष्टकहावतभयऊ ॥ धृष्टवंशकेसहितसमाजा। विप्रभयेतहँकेसबराजा ॥
अरुनृगकेसुतमतिप्रवीना। भूतज्योतिजिनकेअघहीना॥भूतज्योतिकेसुतवसुप्यारे ॥१७॥ वसुकेभयेप्रतीकउदारे॥
सुतप्रतीककेओघमानभो । ओघमानकेओघमानभो ॥ ओघवतीकन्यापुनिजाई । संगसुदर्शनभईसगाई॥१८॥
दोहा-नरिष्यंतकेहोतभे, चित्रसेनमतिमान ॥ चित्रसेनकेऋक्षभे, तिनकेभेमीढ्वान ॥
मीढवानकेकूर्चकुमारा । इंद्रसेनताकोबलवारा ॥ १९ ॥ ताकेवीतिहोत्रसुतभयऊ । ताकेसत्यश्रवासुखछयऊ ॥
ताकेउरूश्रवामतिधीरा। ताकेदेवदत्तबलवीरा ॥ २० ॥ ताकेअग्निलियोअवतारा । अग्निवेश्ययहनामउचारा ॥
जातूकर्णऔरकानीना। येऊउनकेनामप्रवीना ॥ २१ ॥ तातेभयोब्रह्मकुलभारी । अग्निवेश्ययहगोत्रउचारी ॥
नरिष्यंतकोवंशहिगाई। दिष्टवंशअवदेहुँसुनाई ॥ २२ ॥ भयोदिष्टकेसुतनाभागा । वैश्यकर्ममहँअतिअनुरागा ॥
दोहा-पुत्रभलंदनतासुभो, वत्सप्रीतिसुततासु ॥ २३ ॥ वत्सप्रीतिकेप्रांशुभो, ताकेप्रमितिप्रकासु ॥
भयोप्रमितिभूपतिकोपुत्रा।जाकोजगमेंनामखनित्रा॥सुतखनित्रकोचाक्षुपभयऊ।तासुतनामविविंशतिकहेऊ॥२४॥
रंभविविंशतिकोसुतप्यारो। खनिनेत्रहुताकोयशवारो॥तासुतभयोकरंधमराजा॥२५॥तासुअवीक्षितपुत्रविराजा ॥
मरुतनामभोतेहिसुतकाहीं। भयोचक्रवर्त्तीजगमाहीं ॥ अंगिरसुतसंवर्तमुनीशा। करवायोतेहियज्ञमहीशा ॥२६॥
पुरटपात्रसवरचिमखमाहीं। यज्ञअंतदियविप्रनकाहीं ॥ गयेनजेविप्रनकेठोये। परेरहेकोउतिनहिंनजोये ॥
दोहा-तिनहिंनलैहयमखकियो, आपपितामहभूप ॥ यदुपतिताहिवतायदिय, सोमखभयोअनूप ॥ २७ ॥
इंद्रसोमलहिभयोसुखारी। भेधनाढ्यजेरहेभिखारी ॥ पवनभयोजहँपरुसनवारो । विश्वेदेवासभासुधारो ॥ २८ ॥
मरुतसमानयज्ञजगमाहीं। कोउनकियोकरिहैअवनाहीं ॥ तिनकोसुतभोदमरणधीरा। तासुराज्यवर्धनसुतवीरा ॥
ताकेसुधृतिपुत्रनरतासू ॥ २९ ॥ तासुतकेवलजगयशजासू ॥ ताकेबंधुमानमतिमाना। ताकेवेगवानबलवाना ॥
वेगवानकेबंधुकुमारा। ताकेसुततृणबिंदुउदारा ॥ ३० ॥ सुंदरतृणबिंदुहिवरिलीनी । अलंबुपाअपसरानवीनी ॥
दोहा-नृपतृणबिंदुसँयोगतें, अलंबुपावरनारि ॥ सुताइडविडाप्रगटकिय, अतिसुंदरिसुकुमारि ॥ ३१ ॥
निरखिइडविडासुंदरिनारी। मोदिगयेविश्रवानिहारी ॥ तासँगकियोप्रसंगघनेरा। तातेप्रगटचोपुत्रकुबेरा ॥
पायपरमविद्यापितुपाहीं। धनदभयोदिगपालसदाहीं ॥३२॥ तिनतृणबिंदुपुत्रभेतीना।जगजादिरसवगुणनप्रवीना॥
प्रथमविशालभयेमतिसेतू।शून्यबंधुअरुधूम्रहुकेतू॥नृपविशालरचिपुरीविशाला।वंशचलायोसुयशविशाला ॥३३॥
हेमचंद्रताकेसुतजायो। धूम्रअक्षतेहिपुत्रकहायो ॥ धूम्रअक्षसंयमसुतपायो। तिनकोसुतसहदेवसुहायो ॥
दोहा-सुतकृशासुसहदेवको, ॥३४॥ सोमदत्तसुततासु ॥ वाजिमेधकरितोपिहरि, लह्योविष्णुपुरवासु ॥३५॥
सोमदत्तकेसुमतिभे, जनमेजयसुततासु ॥ येविशालकेवंशके, भूपतिनीतिनिवासु ॥

दोहा–मेरुनिकटउत्तरदिशा, खेलनगयोशिकार॥जहँभवानीसहितहर, नितप्रतिकरहिंविहार॥२३॥२४॥२५
तेहिंवनमेंजबकियोप्रवेशा । तहँनारीह्वैगयोनरेशा ॥ घोराभयोआशुतहँघोरी॥२६॥भयेसुभटभामिनिअसिङ्गों
निरखिपरस्परनारिस्वरूपा।भयेविषादितलज्जितभूपा॥२७॥यहचरित्रसुनिकेकुरुराई।श्रीशुकसोंअसविनयसुनाई

राजोवाच ।

कैसोदेशरह्योवहभारी । गयेहोतजहँनरतेनारी ॥ अतिअचरजमोकोंयहलागा । कहौहेतुताकोबड़भागा ॥२८॥
सुनतपरीक्षितबैनसुहाये । श्रीशुकदेवकहेचितचाये ॥

श्रीशुक उवाच ।

एकसमयशिवदरशनहेतू । गयेसकलमुनितेजनिकेतू ॥ २९ ॥
दोहा–करतरहेतहँसुखसहित, गौरीशंभुविहार । निरखिभवानीमुनिनको, लज्जितभईअपार ॥
त्यागिकंतकोअंकभवानी।पहिरयोवसनपरमदुखमानी३०करतकेलिशिवशिवानिहारे।मुनिहुबद्रिकाश्रमहिंसिधारे
तहँभवानीकेप्रियहेतू । दीन्ह्योंशापकोपिवृषकेतू ॥ अबतेजोयहिंदेशहिआवै । सोनरतेनारीह्वैजावै ॥ ३२ ॥
तबतेपुरुषनजायतहाँहीं । गयेअवशिनारीह्वैजाहीं ॥ सहितसमाजनारिह्वैराजा । विचरनलगेवनहिंधरिलाजा॥३३
विचरतवनमहँसुंदरिनारी।सखिनसहितबुधताहिनिहारी॥भयोकामवशमनअतिताको।रतिछविहारीदेरितियाको
दोहा–दोउशशिकोसुतनिरखि, मोहितकियोविहार । तातेभयेपुरूरवा, जिनकोसुयशअपार ॥ ३५ ॥
भोसुदुम्नयुवतीयहिभाँती।सुमिरयोगुरुहिदुखिततेहिंराती३६गुरुवसिष्ठवृत्तांतहिजानी।गयेतहाँआशुहिदुखमानी
लखिसुद्युम्नदशामुनिराई।कोमलहृदयदयाअतिआई॥पुरुषसुद्युम्नबनावनकाहीं।सादरविनयकियोशिवपाहीं॥३७
हरप्रसन्नह्वैमुनिसोंभाषे । अपनोसत्यवचनहूराखे ॥ ३८ ॥

शिव उवाच ।

एकमासरहिहैयहनारी । मासएकपूरुषयशधारी ॥ यहिविधिकैराज्ययहराजा । पालहिदेशनिप्रजनसमाजा॥३९

श्रीशुक उवाच ।

गुरुहिकृपातेअसवरपायो । भूपसुद्युम्नदेशनिजआयो ॥
दोहा–पाल्योजगतीजननयुत, सोसुद्युम्नजनेश । तद्यपिताकेप्रजनको, छूट्योनाहिंकलेश ॥ ४० ॥
उत्कलगयऔविमलये, भेताकेसुततीन । दक्षिणदिशिकेनृपतिभे, सबैधर्मलवलीन ॥ ४१ ॥
पुनिसुद्युम्नप्रयागमहँ, पुरूरवहिंबैठाइ । जानिजरठतनआपनो, कीन्ह्योंतपवनजाई ॥ ४२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
जाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिगेसुद्युम्नबन, श्राद्धदेवतपभूप । यमुनातटमेंतपकियो, सुतकेहेतअनूप ॥ १ ॥
गयेवर्षशततपमनदीन्हें । फेरिपुत्रहितमनुमखकीन्हें ॥ लहेपुत्रआपनेसमाना । दशइक्ष्वाकुआदिबलवाना ॥२॥
तिनकेनामप्रथममेंगाई । कुरुपतिदीन्ह्योंतुमहिंसुनाई ॥ तिनमेंजोपृषध्रबलवाना । तासोंकह्योवसिष्ठसुजाना ॥
तुमरक्षहुममगोवनकाहीं । जाबगातिबापनाहिंमाहीं ॥ तबनृपलैकरिकरकरवाला । वीरासनबैठ्योगोशाला ॥
यहिविधिगे दिवसऊपनकोगनिनिशिमहँनाग्यो३एकसमयनिशिमेंघनघोरा।बरषनलगेगगनितहुँओरा
दोहा–झंप । काननतेकढिकेसगी, गोशालेगोपाय ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीमद्भागवत-आनन्दाम्बुनिधि ।

नवमस्कंधप्रारंभः ।

सोरठा-जयजयनंदकिशोर, यदुनायकदायकहरष । सिद्धिदेहुसबठोर, सुमिरतहीशरणागतन ॥
दोहा-जयवाणीजयगजवदन, जयशुकजयश्रीव्यास । जयमुकुंदहरिगुरुचरण, जयपितुज्ञानप्रकाश ॥
मुनिकच्छपवामनकथा, महाराजकुरुनाथ । मुदितफेरिशुकदेवसों, कह्योजोरियुगहाथ ॥

राजोवाच ।

तुममन्वंतरसबगायो । मोहिसहितविस्तारसुहायो॥अद्भुतमाधवचरितउचारयो । मेरेश्रवणसुधारसढारयो॥१॥
मैंयहपूछहुँमुनिराई । दायाकरिकेदेहुसुनाई ॥ सत्यव्रतजोद्रविडअधीशा । ज्ञानमानसेवकजगदीशा ॥ २ ॥
यहकल्पहिमहँमनुठयऊ । वैवस्वतअसनामहिभयऊ॥ताकेसुतवरण्योमतिमाना।नृपइक्ष्वाकुआदिबलवाना॥३॥
तिनकेवंशकहहुमुनिराई । सिगरेचरितहुदेहुसुनाई ॥ ४ ॥ भयेभूपजेहोवनवारे । वर्तमानजेजगउजियारे ॥
दोहा-जिनकीकीरतिकेकथत, बाढतपुण्यअपार । तिनकेविक्रमसुननको, हैअभिलाषहमार ॥ ५ ॥

सूत उवाच ।

इहिविधिपूछयोकुरुपतिजबहीं।मुनिनसभामधिश्रीशुकतबहीं॥परमधरमकेजाननवारे।अतिप्रसन्नह्वैवचनउचारे॥६॥

श्रीशुक उवाच ।

सूर्य्यवंशसंयुतविस्तारा । कहतवर्षशतहूँहैनपारा ॥ तातेमैंसंक्षेपहिगैहों । सारवस्तुसबतुमहिंसुनैहों ॥ ७ ॥
थावरजंगमआतमजोई । पुरुषपुरानकहावतसोई ॥ महाप्रलयकेअंतहिमाहीं । एकहिरह्योऔरकोउनाहीं ।
जडचेतनह्वैसूक्ष्मरूपा । रह्योकृष्णमहँसबसुनुभूपा ॥ ८ ॥ शेषसेजसोवतभगवाना । तिनकीनाभीतेछविमाना ।
दोहा-पुरटपद्मप्रगटतभयो, तेहितेभेकरतार ॥ ९ ॥ मनुतेतासुमरीचिभे, कश्यपतासुकुमार ॥
अदितिदक्षकन्यातिननारी । जोदेवनकोहैमहँतारी ॥ ताकेभयेसूर्यमहराजा । जासुतेजत्रिभुवनमहँभ्राजा ॥ १० ॥
संज्ञाछायातियरविकेरी । जिनकीछवितिहुँलोकनिवेरी ॥ श्राद्धदेवसंज्ञासुतभयऊ । तातियश्रद्धानामहिठयऊ ।
श्राद्धदेवसंयोगहिपायो । श्रद्धादशपुत्रनकोजायो ॥११॥ नृगइक्ष्वाकुनभगसरजाती । दिष्टधृष्टकरुषहुअरिघाती॥
कविपृषध्रनारिष्यंतनरेशा । येदशपुत्रभयेशुभवेशा ॥१२॥ मनुकेजबनहिंरहेसुतनाहीं । करवायोवशिष्ठमखकाहीं ।
दोहा-मित्रावरुणहिनामजेहिं, ॥ १३ ॥ तामखमेंनृपनारि ॥ होतासोंयाचीसुता, बंदिपयोव्रतधारि ॥ १४ ॥
अध्वर्युहोतासोंभाषे । फलदुपजहुमसुतमनराखे ॥ १५ ॥ तबरानीअभिलाषहिजानी । होतासुताहोनमनआनी॥
वषट्कारकरिहोमहिदीन्ह्यों । विधिसंयुतमखपूरणकीन्ह्यों ॥ तातेरानीकेइच्छाई । इलानामकन्यानृपजाई ।
मनुकन्यालखिअतिदुखपाई।गुरुवशिष्ठसोंविनयसुनाई१६कर्मविपर्य्ययपहकमभयऊ।कीअन्यथामंत्रह्वैगयऊ१७।
तुमतोतपकरिपापनशावे । मंत्रसबउद्धारकरावे ॥ जसदेवनमहँअसनिनदोहै । तैसेतुमकोउचितसदाहै ॥
दोहा-भयोआपसंकल्पको, फलविपरीतसुजान ॥ मुनकोहिनहममगाकियो, कन्याभईनिदान ॥ १८ ॥
मनुकेवचनसुनतदुखभारे । परमपितामहपूतउदारे॥करिकेध्यानजानिसबलयऊ।श्राद्धदेवसोंअसकहिदयऊ॥१९।
यहिहोताकर्मोंविभिचारा । कन्याहोटहिसोजसवारा ॥ यहुदिनहिंसुतमैंकरिदेहौं।अपनोतपप्रभावदेखैहौं॥२०।
असकहिप्रभुसुदनकोप्यारे॥२१॥कन्याकोदियपुत्रबनाई॥इलाभयोसुद्युम्नकुमारा।नाम्यायशपत्रजपारा॥२२।
सोनृपएकसमयमनराजा । लेसंगुसामकलोतवनजा ॥ कवचपहिरिचढिसिंधुतुरंगा । रह्योनोचंचलजीनतरंगा।

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीमद्भागवत-आनन्दाम्बुनिधि ।

नवमस्कंधप्रारंभः ।

सोरठा-जयजयनंदकिशोर, यदुनायकदायकहरप । सिद्धिदेहुसबठोर, सुमिरतहीशरणागतन ॥
हा-जयवाणीजयगजवदन, जयशुकजयश्रीव्यास । जयमुकुंदहरिगुरुचरण, जयपितुज्ञानप्रकाश ॥
सुनिकच्छपवामनकथा, महाराजकुरुनाथ । मुदितफेरिशुकदेवसों, कह्योजोरियुगहाथ ॥

राजोवाच ।

ममन्वंतरसबगायो । मोहिंसहितविस्तारसुहायो॥अद्भुतमाधवचरितउचारयो । मेरेश्रवणसुधारसढारयो ॥१॥
यहपूछहुँमुनिराई । दायाकरिकैदेहुसुनाई ॥ सत्यव्रतजोद्रविडअधीशा । ज्ञानमानसेवकजगदीशा ॥ २ ॥
कल्पहिमहँमनुठयऊ । वैवस्वतअसनामहिभयऊ॥ताकेसुतवरण्योमतिमाना।नृपइक्ष्वाकुआदिबलवाना॥३॥
वंशकहहुमुनिराई । सिगरेचरितहुदेहुसुनाई ॥ ४ ॥ भयेभूपजेहोवनवारे । वर्तमानजेजगउजियारे ॥
हा-जिनकीकीरतिकेकथत, बाढतपुण्यअपार । तिनकेविक्रमसुननको, हैअभिलापहमार ॥ ५ ॥

सूत उवाच ।

वेधिपूछ्योकुरुपतिजबहीं।मुनिनसभामधिश्रीशुकतबहीं॥परमधरमकेजाननवारे।अतिप्रसन्नह्वैवचनउचारे॥६॥

श्रीशुक उवाच ।

वंशसंयुतविस्तारा । कहतवर्षशतलहैंनपारा ॥ तातेमैंसंक्षेपहिगैहों । सारवस्तुसबतुमहिंसुनैहों ॥ ७ ॥
रजंगमआतमजोई । पुरुषपुरानकहावतसोई ॥ महाप्रलयकेअंतहिमाहीं । एकहिरह्योऔरकोउनाहीं ॥
चेतनह्वैसूक्षमरूपा । रह्योकृष्णमहँसबसुनुभूपा ॥ ८ ॥ शेषसेजसोवतभगवाना । तिनकीनाभीतेछबिमाना ॥
दोहा-पुरटपद्मप्रगटतभयो, तेहितेभेकरतार ॥ ९ ॥ मनुतेतासुमरीचिभे, कश्यपतासुकुमार ॥
तिदक्षकन्यातिननारी । जोदेवनकीहैमहँतारी ॥ ताकेभयेसूर्यमहराजा । जासुतेजत्रिभुवनमहँभ्राजा ॥ १० ॥
छायातियरविकेरी । जिनकीछबिवितिहुँलोकनिवेरी ॥ श्राद्धदेवसंज्ञासुतभयऊ । तातियश्रद्धानामहिंठयऊ ॥
द्रदेवसंयोगहिपायो । श्रद्धादशपुत्रनकोजायो ॥११॥ नृगइक्ष्वाकुनभगसरजाती । दिष्टधृष्टकरुपहुअरिघाती॥
पृषध्रनरिष्यंतनरेशा । येदशपुत्रभयेशुभवेशा ॥१२॥ मनुकेजबहिंरहेसुतनाहीं । करवायोवशिष्टमखकाहीं ॥
दोहा-मैत्रावरुणहिनामजेहिं, ॥ १३ ॥ तामखमेंनृपनारि ॥ होतासोंयाचीसुता, वंदिपयोव्रतधारि ॥ १४ ॥
वर्यूहोतासोंभाषे । करहुयज्ञतुमसुतमनराषे ॥ १५ ॥ तबरानीअभिलापहिजानी । होतासुताहोनमनआनी॥
ट्कारकहिहोमहिदीन्ह्यो । विधिसंयुतमखपूरणकीन्ह्यो ॥ तातेरानीकेछबिछाई । इलानामकन्यानृपजाई ॥
कन्यालखिअतिदुखपाई।गुरुवशिष्टसोंविनयसुनाई१६कर्मविपर्य्ययहकसभयऊ।कीअन्यथामंत्रह्वैगयऊ१७ ॥
तोतपकरिपापनशाये । मंत्रसबैउद्धारकराये ॥ जसदेवनमहँअसातिनहाहे । तैसेतुमकोउचितसहाहे ॥
दोहा-भयोआपसंकल्पको, फलविपरीतसुजान ॥ सुतकेहितहममखकियो, कन्याभईनिदान ॥ १८ ॥
केवचनसुनतदुखवारे । परप्रपितामहभूपहमारे॥करिकैध्यानजानिसबलयऊ।श्राद्धदेवसोंअसकहिदयऊ ॥१९॥
देहोताकर्महिव्यभिचारा । कन्याइलाटियोअवतारा ॥ पैदुहितहिसुतमैंकरिदैहों।अपनोतपपरभावदेखैहों॥२०॥
सकहिमधुसूदनकोध्याई॥२१॥कन्याकोदियपुत्रबनाई॥इलभयोसुद्युम्नकुमारा।बाढ्योयशबलतेजअपारा ॥२२॥
नृपएकसमयमहराजा । लैधनुसायकसहितसमाजा ॥ कवचपहिरिचढ़िसिंधुतुरंगा । रह्योजोचंचलजीतनजंगा ॥

नवमस्कंध

...। गोशालामहँभागनलागी ॥४॥ कूदिधरयोनाहरइककाहीं । गऊपुकारकियोनिशिमाँहीं ॥
...। धावतभोदुखभयोअपारा ॥५॥ रह्योतहाँअतिशयअँधियारा।तातेनृपनहिंबाघनिहारा
...। गऊशीशकटिगयोउताला ॥ ६ ॥ कढ्योकानहींकेहरिकेरो।भाजिगयोसोडरपिघनेरो ॥
... ८॥
ोहा-गोवधनिरखिवसिष्ठहूं, कीन्ह्योंअतिसंताप । बिनजानेअपराधभो, तदपिदियोतेहिंशाप ॥
...। तातेहोहुशूद्रतुमजाई ॥ ९ ॥ गुरुकीशापलियोकरजोरी । भूपहिंभईव्यथानहिंथोरी ॥
... १०॥वासुदेवचरणनमनदीन्ह्यों॥भयोभक्तयेकोतीराजा११दियोसंगतजिजननसमाजा॥
छुमिलेताहिनृपखाई१२बधिरअंधसमफिरयोसदाई॥१३॥पुनिकछुकालमाहँवनजाई।दावदहनतनदियोजराई।
ुरुशापछूटिगैताकी। लह्योमुक्तिजोजगअतिबाँकी१४रह्योलहुरभ्राताकविताको।राज्यकरनकोमननहिंजाको ॥
ोहा-बंधुनऔनिजराजतजि, कविकाननमेंजाय । श्रीपतिभजिबालकपनै, लह्योमुक्तिसुखछाय ॥ १५ ॥
कोसुतकरूपनृपजोई । तीनिपुत्रकियउतपतिसोई । तेउत्तरकेभयेभुवाला । ब्रह्मभक्तधर्मनकेपाला ॥ १६ ॥
कोपुत्रधृष्टजोरहेऊ । तासुसधार्ष्टकहावतभयऊ ॥ धृष्टवंशकेसहितसमाजा । विप्रभयेतहँकेसबराजा ॥
नृगकेसुतमतिप्रवीना । भूतज्योतिजिनकेअघहीना॥भूतज्योतिकेसुतवसुप्यारे॥१७॥ वसुकेभयेप्रतीकउदारे॥
प्रतीककेओघमानभो । ओघमानकेओघमानभो ॥ ओघवतीकन्यापुनिजाई । संगसुदर्शनभईसगाई॥१८॥
दोहा-नरिष्यंतकेहोतभे, चित्रसेनमतिमान ॥ चित्रसेनकेऋक्षभे, तिनकेभेमीढ़ान ॥
वानकेकूर्चकुमारा । इंद्रसेनताकोबलवारा ॥ १९ ॥ ताकेवीतिहोत्रसुतभयऊ । ताकेसत्यश्रवासुखछयऊ ॥
केउरूश्रवामतिधीरा । ताकेदेवदत्तबलवीरा ॥ २० ॥ ताकेअग्निलियोअवतारा । अग्निवेश्ययहनामउचारा ॥
ूकर्णऔरकानीना । येऊउनकेनामप्रवीना ॥ २१ ॥ तातेभयोब्रह्मकुलभारी । अग्निवेश्ययहगोत्रउचारी ॥
ष्यंतकोवंशहिगाई । दिष्टवंशअवदेहुँसुनाई ॥ २२ ॥ भयोदिष्टकेसुतनाभाग । वैश्यकर्ममहँअतिअनुरागा ॥
दोहा-पुत्रभलंदनतासुभो, वत्सप्रीतिसुततासु ॥ २३ ॥ वत्सप्रीतिकेप्रांशुभो, ताकेप्रमितिप्रकासु ॥
ीप्रमितिभूपतिकोपुत्रा।जाकोजगमेंनामखनित्रा॥सुतखनित्रकोचाक्षुपभयऊ।तासुतनामविविंशतिकहेऊ॥२४॥
विविंशतिकोसुतप्यारो । खनिनेत्रहुताकोयशवारो॥तासुतभयोकरंधमराजा॥२५॥तासुअवीक्षितपुत्रविराजा ॥
ुतनामभोतेहिसुतकाहीं । भयोचक्रवर्त्तीजगमाहीं ॥ अंगिरसुतसंवर्तमुनीशा । करवायोतेहियज्ञमहीशा ॥२६॥
टपात्रसबरचिमखमाहीं । यज्ञअंतदियविप्रनकाहीं ॥ गयेनजेविप्रनकेढोये । परेरहेकोउतिनहिंनजोये ॥
दोहा-तिनहिंनलैहयमखकियो, आपपितामहभूप ॥ यदुपतितताहिवतायदिय, सोमसभयोअनूप ॥ २७ ॥
ःसोमलहिभयोसुखारी । भेधनाढ्यजेरहेभिखारी ॥ पवनभयोजहँपरुसनवारो । विश्वेदेवासभासुधारो ॥ २८ ॥
रुतसमानयज्ञजगमाहीं । कोउनकियोकरिहैअवनाहीं ॥ तिनकोसुतभोदमरणधीरा । तासुराज्यवर्धनसुतवीरा ॥
केसुधृतिपुत्रनरतासू ॥ २९ ॥ तासुतकेवलजगयशजासू ॥ ताकेबंधुमानमतिमाना । ताकेवेगवानबलवाना ॥
गवानकेबंधुकुमारा । ताकेसुततृणबिंदुउदारा ॥ ३० ॥ सुंदरतृणबिंदुहिवरिलीनी । अलंबुपाअपसरानवीनी ॥
दोहा-नृपतृणबिंदुसँयोगते, अलंबुषावरनारि ॥ सुताइडविडाप्रगटकिय, अतिसुंदरिसुकुमारि ॥ ३१ ॥
रासिइडविडासुंदरिनारी । मोहिगयेविश्रवानिहारी ॥ तासँगकियोप्रसंगघनेरा । तातेप्रगटयोपुत्रकुबेरा ॥
ायपरमविद्यापितुपाहीं । धनदभयोदिगपालसदाहीं ॥३२॥ तिनतृणबिंदुपुत्रभेतीना।अगजाहिरसबगुणनप्रवीना॥
यमविशालभयेमतिसेतू।शून्यबंधुअरुधूम्रहुकेतू॥नृपविशालरचिपुरीविशाला।वंशचलायोसुयशविशाला ॥३३॥
मचंद्रताकेसुतजायो । धूम्रअक्षतेहिंपुत्रकहायो ॥ धूम्रअक्षसंयमसुतपायो । तिनकोसुतसहदेवसुहायो ॥
दोहा-सुतकृशासुसहदेवको, ॥३४॥ सोमदत्तसुततासु ॥ वाजिमेधकरितोपिहरि, लह्योविष्णुपुरवासु ॥३५॥
सोमदत्तकेसुमतिभे, जनमेजयसुततासु ॥ येविशालकेवंशके, भूपतिनीतिनिवासु ॥

दोहा–मेरुनिकटउत्तरदिशा, खेलनगयोशिकार॥जहँभवानीसहितहर, नितप्रतिकरहिंविहार॥२३॥
तेहिंवनमेंजबकियोप्रवेशा । तहँनारीह्वैगयोनरेशा ॥ घोराभयोआशुतहँघोरी॥२४
निरखिपरस्परनारिस्वरूपा॥भयेविपादितलज्जितभूपा॥२५

राजोवाच ।

कैसोदेशरह्योवहभारी । गयेहोतजहँनरतेनारी ॥ अतिअचरजमोकोंयहलागा । कहौहेतुताकोवड़भागा ॥२८
सुनतपरीक्षितबैनसुहाये । श्रीशुकदेवकहेचितचाये ॥

श्रीशुक उवाच ।

एकसमयशिवदरशनहेतू । गयेसकलमुनितेजनिकेतू ॥ २९ ॥
दोहा–करतरहेतहँसुखसहित, गौरीशंभुविहार । निरखिभवानीमुनिनको, लज्जितभईअपार ॥
त्यागिकंतकोअंकभवानी।पहिरचोवसनपरमदुखमानी३०
तहँभवानीकेप्रियहेतू । दीन्ह्योंशापकोपिवृषकेतू ॥ अबतेजोयहिदेशहिआवै । सोनरतेनारीह्वैजावै ॥ ३२॥
तबतेपुरुपनजायतहाँहीं । गयेअवशिनारीह्वैजाहीं ॥ सहितसमाजनारिह्वैराजा । विचरनलगेवनहिंधरिलाजा॥३
दोहा–दोउशशिकोसुतनिरखि, मोहितकियोविहार । तातेभयेपुरूरवा, जिनकोसुयशअपार ॥ ३५॥
भोसुद्युम्नयुवतीयहिभाँती।सुमिरचोगुरुहिदुखिततेहिंराती३६गुरुवसिष्ठवृत्तांतहिजानी।गयेतहाँआशुहिदुखमानी
लखिसुद्युम्नदशामुनिराई।कोमलहृदयदयाअतिआई॥पुरुषसुद्युम्नबनावनकाहीं।सादरविनयकियोशिवपाहीं॥
हरप्रसन्नह्वैमुनिसोंभाषे । अपनोसत्यवचनहूराषे ॥ ३८ ॥

शिव उवाच ।

एकमासरहिहैयहनारी । मासएकपूरुपयशधारी ॥ यहिविधिकरैराज्ययहराजा । पालहिदेशनिभ्रंजनसमाजा॥

श्रीशुक उवाच ।

गुरुहिकृपातेअसवरपायो । भूपसुद्युम्नदेशनिजआयो ॥
दोहा–पाल्योजगतीजननयुत, सोसुद्युम्नजनेश । तद्यपिताकेप्रजनको, छूट्योनाहिंकलेश ॥ ४० ॥
उत्कलगयऔविमलये, भेताकेसुततीन । दक्षिणदिशिकेनृपतिभे, सबैधर्मलवलीन ॥ ४१ ॥
पुनिसुद्युम्नप्रयागमहँ, पुरूरवहिंबैठाइ । जानिजरठतनआपनो, कीन्ह्योंतपवनजाइ ॥ ४२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिगेसुद्युम्नवन, श्राद्धदेवतबभूप । यमुनातटमेंतपकियो, सुतकेहेतअनूप ॥ १ ॥
गयेवर्षशततपमनदीन्हें । फेरिपुत्रहितमनुमखकीन्हें ॥ लहेपुत्रआपनेसमाना । दशइक्ष्वाकुआदिबलवाना ॥२
तिनकेनामप्रथममेंगाई । कुरुपतिदीन्ह्योंतुमहिंसुनाई ॥ तिनमेंजोपृपध्रबलवाना । तासोंकह्योवसिष्ठसुजाना ॥
तुमरक्षहुममगोवनकाहीं । जामेंरातिबापनहिंसाहीं ॥ तबनृपलैकरिकरकरवाला । वीरासनबैठ्योगोशाला ॥
यहिविधिगोवनरक्षणलाग्यो॥दिवसशयनकरिनिशिमहँजाग्यो३एकसमयनिशिमेंघनघोरा।बरषनलगेगरजिनहुँ
दोहा–अंधकारभारीभयो, कछुनहिंपरचोदेखाय । काननतेकढिकेसरी, गोशालैगोधाय ॥

गौवेंसबजागी । गोशालमहँभागनलागी ॥४॥ कूदिधरयोनाहरइककाहीं । गऊपुकारकियोनिशिमाँहीं ॥
हँगऊपुकारा । धावतभोदुखभयोअपारा ॥५॥ रह्योतहाँअतिशयअँधियारा।तातेनृपनहिंबाघनिहारा
रतकितेगनृपाला । गऊशीशकटिगयोउताला ॥ ६ ॥ कह्योकानहींकेहरिकेरो।भाजिगयोसोडरपिघनेरो ॥
धिरमारगमहँताको७नृपजान्योंमैंवधकियवाको॥भयोभोरगोवधलखिराजा।दुखितभयोगुनिकैनिजकाजा८॥
हा-गोवधनिरखिवसिष्ठहूं, कीन्ह्योंअतिसंताप । विनजानेअपराधभो, तदपिदियोतेहिंशाप ॥
धमअहोनरराई । तातेहोहुशूद्रतुमजाई ॥ ९ ॥ गुरुकीशापलियोकरजोरी । भूपहिंभईव्यथानहिंथोरी ॥
इंद्रीभूपतिव्रतकीन्ह्यों॥१०॥वासुदेवचरणनमनदीन्ह्यों॥भयोभक्तयेकोतीराजा११दियोसंगतजिजननसमाजा॥
छुमिलैताहिनृपखाई१२बधिरअंधसमफिरयोसदाई॥१३॥पुनिकछुकालमाहँवनजाई।दावदहनतननदियोजराई।
गुरुशापछूटिगैताकी।लह्योमुक्तिजोजगअतिवाँकी१४रह्योलहुरभ्राताकविताको।राज्यकरनकोमननहिंजाको ॥
दोहा-बंधुनओनिजराजतजि, कविकाननमेंजाय । श्रीपतिभजिवालकपनै, लह्योमुक्तिसुखछाय ॥ १५ ॥
रुकोसुतकरूपनृपजोई । तीनिपुत्रकियउतपतिसोई । तेउत्तरकेभयेभुवाला । ब्रह्मभक्तधर्मनकेपाला ॥ १६ ॥
नुकोपुत्रधृष्टजोरहेऊ । तासुसधार्ष्टकहावतभयऊ ॥ धृष्टवंशकेसहितसमाजा । विप्रभयेतहँकेसबराजा ॥
रुनृगकेसुतमतिप्रवीना । भूतज्योतिजिनकेअघहीना॥भूतज्योतिकेसुतवसुप्यारे॥१७॥ वसुकेभयेप्रतीकउदारे॥
तप्रतीककेओघमानभो । ओघमानकेओघमानभो ॥ ओघवतीकन्यापुनिजाई । संगसुदर्शनभईसगाई॥१८॥
दोहा-नरिष्यंतकेहोतभे, चित्रसेनमतिमान ॥ चित्रसेनकेऋक्षभे, तिनकेभेमीढ़ान ॥
...नकेकूर्चकुमारा । इंद्रसेनताकोवलवारा ॥ १९ ॥ ताकेवीतिहोत्रसुतभयऊ । ताकेसत्यश्रवासुखछयऊ ॥
...रूश्रवामतिधीरा । ताकेदेवदत्तवलवीरा ॥ २० ॥ ताकेअग्निलियोअवतारा । अग्निवेश्ययहनामउचारा ॥
...र्णऔरकानीना । येऊउनकेनामप्रवीना ॥ २१ ॥ तातेभयोब्रह्मकुलभारी । अग्निवेश्ययहगोत्रउचारी ॥
यंतकोवंशहिगाई । दिष्टवंशअवदेहुँसुनाई ॥ २२ ॥ भयोदिष्टकेसुतनाभागा । वैश्यकर्ममहँअतिअनुरागा ॥
दोहा-पुत्रभलंदनतासुभो, वत्सप्रीतिसुततासु ॥ २३ ॥ वत्सप्रीतिकेप्रांशुभो, ताकेप्रमितिप्रकासु ॥
प्रमितिभूपतिकोपुत्रा।जाकोजगमेंनामखनित्रा॥सुतखनित्रकोचाक्षुपभयऊ।तासुतनामविविंशतिकहेऊ॥२४॥
विविंशतिकोसुतप्यारो । खनिनेत्रहुताकोयशवारो॥तासुतभयोकरंधमराजा॥२५॥तासुअवीक्षितपुत्रविराजा ॥
...तनामभोतेहिसुतकाहीं । भयोचक्रवर्तीजगमाहीं ॥ अंगिरसुतसंवर्तमुनीशा । करवायोतेहियज्ञमहीशा ॥२६॥
रटपात्रसवरचिमखमाहीं । यज्ञअंतदियविप्रनकाहीं ॥ गयेनजेविप्रनकेढोये । परेरहेकोउतिनहिंनजोये ॥
दोहा-तिनहिंनलैहयमखकियो, आपपितामहभूप ॥ यदुपतिताहिचतायदिय, सोमखभयोअनूप ॥ २७ ॥
इंद्रसोमलहिभयोसुखारी । भेधनाढ्यजेरहेभिखारी ॥ पवनभयोजहँपरुसनवारो । विश्वेदेवासभासुधारो ॥ २८ ॥
...रुतसमानयज्ञजगमाहीं । कोउनकियोकरिहैअवनाहीं ॥ तिनकोसुतभोदमरणधीरा । तासुराज्यवर्धनसुतवीरा ॥
ताकेसुधृतिपुत्रनरतासू ॥ २९ ॥ तासुतकेवलजगयशजासू ॥ ताकेबंधुमानमतिमाना । ताकेवेगवानवलवाना ॥
...गवानकेबंधुकुमारा । ताकेसुततृणबिंदुउदारा ॥ ३० ॥ सुंदरतृणबिंदुहिवरिलीनी । अलंबुषाअप्सरानवीनी ॥
दोहा-नृपतृणबिंदुसंयोगते, अलंबुषावरनारि ॥ सुताइडविडाप्रगटकिय, अतिसुंदरिसुकुमारि ॥ ३१ ॥
नेरासिइडविडासुंदरिनारी । मोहिगयेविश्रवानिहारी ॥ तासँगकियोप्रसंगघनेरा । तातेप्रगट्योपुत्रकुबेरा ॥
धनदभयोदिगपालसदाहीं ॥३२॥ तिनतृणबिंदुपुत्रभेतीना।जगजाहिरवलबुधनप्रवीना॥
...नायपरमविद्यापितुपाहीं । नृपविशालरचिपुरीविशाला।बंधुलालथाश्रमवसलाला ॥३३॥
प्रथमविशालभयेमतिसेतू।शून्यबंधुअरुधूम्रदुकेतू॥ धूम्रअक्षसंयमसुतपायो । तिनकोसुतविक्रमसुहायो ॥
हेमचंद्रताकेसुतजायो । धूम्रअक्षतेहिपुत्रकहायो ॥ सोमदत्तसुततासु ॥ वानिमेधकरितोषिहरि, ...पुरवासु ॥३५॥
दोहा-सुतकृशाश्वसहदेवको, ॥३४॥ सोमदत्तसुततासु ॥ येविशालकेवंशके, भूपतिनीतिनिवास ॥
सोमदत्तकेसुमतिभे, जनमेजयसुततासु ॥

दोहा–सुरपूजितमुनिवृद्धपति, तिनकोतजियाहिठाम ॥ जारपुरुपसोंप्रीतिकिय, कहाकियोयहकाम ॥
कौनदेशतेआयो । करिअधर्मतेंनेहलगायो ॥२०॥ तेरीमतिकिमिभइविपरीती ।त्यागिदईममकुलकीरीती ॥
कलंकतैंकियेकुमारी।कारकैजारपुरुपसोंयारी॥लाजतज्योनहिंलियोविचारी।दोउकुलदियोनरकमहँडारी२१॥
कोपितपितुवचनकुमारी।बोलिमंदविहँसीसुकुमारी॥अहैंआपकेयेइजमाई । पिताकरहुनहिंभ्रमदुखछाई ॥२२॥
नेजनकहिवृत्तांतसुनायो।जेहिविधिच्यवनयुवावपुपायो।सुनतवचनभयशीतलछाती।कन्यहिमिलेमुदितसरजाती
दोहा–तहाँच्यवनमुनिभूपको, करवायोवरयाग ॥ दियअश्विनीकुमारको, सोमपानकोभाग ॥
मलह्योअश्विनीकुमारा।वासवलखिकरिकोपअपारा।नृपहिहननकहँकुलिशउठायो।देखिच्यवनमुनिअतिदुखपायो
सोंहुंकारहिछाँड्यो।वज्रसहितवासवभुजआड्यो २५ तबसोंजगअश्विनीकुमारा।लह्योसोमपावनअधिकारा॥
नकोप्रथमवैद्यगुनिदेवा । भागनदेतरहेनरदेवा ॥ २६ ॥ नृपसरजातिपुत्रत्रयजाये । तेऐसेजगनामकहाये ॥
कउत्तानबर्हिमतिमाना । दूजोभोआनर्त्तसुजाना ॥ तीजोभूरिषेणअतिदाता । एतीनहुँभेजगविख्याता ॥
दोहा–रैवतसुतआनर्तको, भयोवीरकुरुराय ॥ देशअनर्तहिसिंधुमधि, दियद्वारिकाबसाय ॥ २७ ॥
मेंवसिशत्रुनकहँघाल्यो । आनर्त्तादिदेशसवपाल्यो ॥२८॥ रैवतकेशतभयेकुमारा । तिनमेंज्येष्ठककुद्मिउदारा॥
रुताकेयकभईकुमारी । नामरेवतीरतिछविहारी ॥ ताकोव्याहकरनकेहेतू । पूछनगयेविरंचिनिकेतू ॥
ह्मसभामहँअतिसुखछावत । गणगंधर्वरहेवहुगावत ॥ पूँछनकोऔसरनहिंपायो । राजहुगानसुननमनलायो ॥
योमुहूरतभरिजबवीती।गानसमातभयोयुतप्रीती२९॥३० तबभूपतिलहिआनँदधामा।सादरविधिकहँकियोप्रणामा
दोहा–हेविरंचिकरिकेकृपा, मोकोंदेहुवताय ॥ कोनेवरकोरेवती, देहुँधराणिमहँजाय ॥
धुनिविधिविहँसिकह्योमृदुवानी।अबलोंकसनकह्योविज्ञानी ३१ देनकह्योजिनभूपकुमारन।तेमहिमेंमरिगयेहजारन ॥
तेनकेनातिपनातिहुँनाहीं । नामहुनहिंसुनियतश्रुतिमाहीं ॥३२॥ गयोबीतिइकइतैमुहूरत।सत्ताइसचौकड़ीगईउत॥
तातेभूपभूमिमहँजाई ॥ ३३ ॥ देहुव्याहिकन्यावलराई ॥ हरनहेतभूभारमहाना । भूमहँप्रगटभयेभगवाना ॥ ३४ ॥
जाकीकीरतिकीर्त्तनकीन्हें।होतिपुण्यजानहिंवहुदीन्हें॥ऐसोविधिशासनलहिराजा।आयोनिजपुरव्याहनकाजा॥३५॥
दोहा–तहँयक्षनकेत्रासते, रह्योनकोउमहिपाल ॥ वहुतकालमेंकृष्णप्रभु, विरच्योनगरविशाल ॥
तहँवलिरामहिरेवती, रैवतदियोविवाहि ॥ वदरीवनकोतपकरन, गयेभूपचितचाहि ॥
सोरठा–रामरेवतीव्याह, रुक्मिनिपरिणयग्रंथमें ॥ वरण्योसहितउछाह, विस्तररतेइकसर्गभरि ॥ ३६ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–नभगपुत्रनाभागभो, ब्रह्मचर्य्यलवलीन ॥ काव्यशास्त्रमेंअतिनिरत, पढ़नहेतुमनदीन ॥
गुरुगृहजायशास्त्रपढ़िलीन्ह्यों । वहुतकालतहँवासहुकीन्ह्यों ॥ जववेपढ़नगयेगुरुपाहीं । तवतिनकेभ्रातागृहमाहीं ॥
पितहिदूरिकरिधनअरुराजू । बाँटिलियोसवअपनेकाजू॥जवनाभागलौटिगृहआये।पढ़िकेसकलशास्त्रमनभाये ॥१॥
लख्योभागवाँटेसवभाई । नाभागहुपूछेहुतवजाई ॥ भ्रातदेहुअबभागहमारो । हमरहुहैयामेंअधिकारो ॥
तवसवभ्राताववचनउचारे । अहैपिताप्रभुभागतुम्हारे ॥ गयेभूलिहमवाँटतमाहीं । तातेलेहुजायपितुकाहीं ॥
दोहा–जनकपासनाभागतव, जायकह्योवृत्तांत ॥ देतभागभ्रातानहीं, कहँलेहुपितुदांत ॥
नभगकह्योतवसुतुनाभागा । करिहौकाहहमारदिलेभागा ॥ छलकीन्हेंहतुमसोंसवभाई । पैहमदेहिंदपायवताई ॥२॥
अंगिरविप्रकराइजहँयागा । जाहुतहाँआशुहिनाभागा ॥ यागकमंछटयेदिनकेरो ॥ तिनहिंदनआवतपुत्रघनेरो ॥ ३॥

व्रजयुवतिनकेजीवनकोअबराहिगोयहीअधारा । तौनहुँचहतछँडायोमधुकरकरिउपदेशअपारा ॥ १७ ॥
जाकीअतिशयसुंदरलीलाश्रवणपियूषसमाना । ताकोबिंदुताहुकीकणिकाइकबारहुमतिवाना ॥
कबहूँकौनिहुँकरिउपायजोकैस्योकीन्ह्योपाना । तौतिनकेतनुपुनिसुखदुखकोरहतनेकनहिंभाना ॥
तुरतदीननिजघरकुटुंबतजिकहुँकाननमहँजाई । भौनभौनमेंभीखमाँगिकैजीवनलेतचलाई ॥
भूषणवसनविभौकीआशारहतनहींमनमाँहीं । तिनकोविचरतयहवसुधामेंबीतिवर्षबहुजाँहीं ॥
मधुकरजिनकेचरितसुननकोऐसोहैपरभाऊ । तिनकोकछुनाहिंअचरजमानैऐसोहोबसुभाऊ ॥ १८ ॥
माधवमथुरावैठमधुपअबजोनचहैसोभाषैं । वैकालिंदीकुंजनकीसुधिकाहेकोअबराषैं ॥
जबकरजोरिनैननीचेकरिहाहाखातरहेहैं । तबयेनैननतनकतिरछेह्वैतिनपैजातरहेहैं ॥
बाँधतरहींयशोमतिजबहींतबहमदेहिंछोंडाई । इकअंजलीछाँछकेकारणरहतेहाथओडाई ॥
यहउपकारधूरिमिलिगयऊकछुनहिंमुखकहिजाई । छोटोखायहोतअतिमोटोतजतनखोटखोटाई ॥
असकपटीसोंकरीप्रीतिजोहमसोंनहिंबनिआई । विनहिंविचारकरतकारजजोसोइपीछेपछिताई ॥
पैहमभहामोहनीवामनमोहनकीमृदुबानी । सुनिसुनिसाँचीजानिजीवमेंतामेंरहींलोभानी ॥
जैसेवधिकजायकाननमेंमंजुलवेणुबजाई । मृगनमोहिमनलेतोतेहिंक्षणअपनेनिकटबोलाई ॥
पुनिसमीपमहँदेखिकुरंगनतिनकेअंगनमाँहीं । वेधिबाणकरिदेतप्राणबिनकरतदयाकछुनाँहीं ॥
तैसहिंकपटीकुटिलकान्हरोटेरिकुंजबिचबंसी । वशकीन्ह्योंव्रजबधुनबापुरिनडारिप्रेमकीफंसी ॥
ढिगबुलायदरशायभावबहुकरिनखछतउरमाँहीं । नाचिगायउपजायकलाबहुदियहुलासहमकाँहीं ॥
जबमधुकरबहुरासविलासहुलासहियेसरसानो । तबसबव्रजयुवतीनजीवलैह्वैगोअंतरधानो ॥
जसतसकैबहुदेवमनायेजोपैपुनिप्रगटानो । तौअबकुटिलकंसकेकारणकियमधुपुरीपयानो ॥
कहतबनैनहिंसुनतबनैनहिंसमुझिबनतपछिताते । मधुकरवाकीकथाछोंड़िकैऔरचलावहुबाते ॥
भागिविवशकबहूँजबहमकोनँदनंदनमिलिजैहैं । तबपाछिलीबातकीसुधिकरिनिजमनकीकरिलैहैं ॥
अबैआपनोचलतनवशकछुपरिगोउनकोदाऊ । भेंटभयेइककीदशकरिहैंदेखतहींबलदाऊ ॥ १९ ॥
दीसहुभ्रमरसुशीलबहुततुमलैसंदेशहमारो । किधौंमधुपुरीजायकह्योसबपुनिपठयोइतकारो ॥
होतुमसखाश्यामकेसाँचेयहहमजानोजानो । होइजोमनकामनातिहारीसोअबसकलबखानो ॥
मानकरनकेलायकतुमहौहमकोपरयोजनाई । व्रजसेहमहिंलेवावनकेहितयदुपतिदियोपठाई ॥
पैकौनीविधिकान्हकुँवरढिगतुमहमकोलैजैहौ । जोकदाचिलैजैहौमधुकरतौउतकहँबैठैहौ ॥
कमलाक्षणभरितिन्हैंनछोंडतिनिवसतिनितउरमाँहीं । कहहिंसोंहकरिताकेनीचेकैसेहुँबैठबनाँहीं ॥
हरिकोहमतेऔरआजुलोंरहीनहींकोउप्यारी । करिहैंअबअपमानविहारीकमलावदननिहारी ॥ २० ॥
जनमभरेकोसुखसोहागकोअबमथुरामेंजाई । हमकोकहालाभहैमधुकरआँवैसोऊगमाई ॥
जोतुमश्यामसखाहौसाँचेहमकोहोइुविश्वासू । तुमसोंनाहिंअनरीतिकरैंगेकबहूँरमानिवासू ॥
तौहमासिगरीअबैमधुपुरीचलिहैंसंगतिहारे । नातोऔरभाँतिनहिंबनिहैबिनउनकेपगुधारे ॥
कबहुकबहुमधुराकीसबरैंजहँहैनंदढुलारो । सबलबसतप्रियकुशलसकलविधिगुरुगृहतेपगुधारो ॥
कबहूँनंदयशोमतिकोघरसुरतिकरतबनमाटी । कबहुँसखनकीसुरतिकरतहरिरहेलालअतिख्याटी ॥
[illegible] । कबहूँसुरतिकरतमनमोहनतिनकीनिजमनमाँहीं ॥
[illegible] । अबगोपिनकोमयोतुरतकोमाखनस्वादभुलाना ॥
यमुनाकूलनिकुंजनमेंजोसेल्योखुलिखुलिख्याले । ताकोमुरनिकबहुँआवतिहैनिरमोहीनँदलाले ॥

कबहुँमधुपुरीनारिनागरिनसभामध्यहरिजाई। चरणकिंकरिनव्रजनारिनकीसुरतिकरतमुखगाई॥
पुरनारिनचातुरीचितैचखतिनकीछबिमहँछाकी। अबनआपुरिनव्रजनारिनमेंह्वैहैसुरतिललाकी॥
मधुकरकौनदिवसवहह्वैहैजादिनप्रियव्रजआई। अगरसुरभिनिजभुजशिरधरिकैदेहैंतापमिटाई॥
पूरणशशीसरिसवहआननकबइनआँखिपरैगो। कौनदिवसवहश्यामसुंदरोनिजभुजहमहिंभरैगो॥
ऐसेहुकालकबहुँपुनिह्वैहैव्रजकुंजनमहँआई। सखनसहितहरिधेनुचरैहैंमुखबाँसुरीबजाई॥
मधुकरवहव्रजराजकाजगृहकाजलाजबिसराई। श्रीरघुराजसमाजसहितप्रभुलेहिंआजअपनाई॥ २१॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिविलपतव्रजवधुन, कोमलवदनसुखान। प्रेममूरछाह्वैगई, रह्योनतनुकरभान॥
सुनिव्रजनारिनकीअसबानी। प्रेमदशातिमिनिरखिमहानी॥व्रजनारीहरिदरशलालसी। बीततिघरीकरालकालसी॥
तिनहिंजोरिकरकियोप्रणामा। समुझावतबोल्योमतिधामा॥ २२॥

उद्धव उवाच।

जननिसुनहुयदुनाथसँदेशू। यामेंमिटिहैसकलकलेशू॥ पूरणकामतुमहिंजगमाँहीं। तुमसमकोउदीसतदृगनाँहीं॥
त्रिभुवनवंदितचरणतिहारे। भयेधन्यहमआयनिहारे॥ हमहूँसमजगअहैनकोऊ। शिवविरंचिवासवसमजोऊ॥
जननिजोतुम्हरोदरशनकीन्ह्यों। सोहरिप्रेमरूपलखिलीन्ह्यों॥
दोहा-तुमसमानकोजगतमें, करिहैहरिपदप्रीति। कोलैहैयदुनाथको, प्रीतिरीतिकरिजीति॥ २३॥
जपतपव्रतसंयमअरुदाना। होमपढ़बशास्त्रनकोनाना॥ औरहुकर्मकल्याणहिंकारी। यहजगमेंजितनेहैंभारी॥
तिनकोकरतकरतथकिजाँहीं। पैहरिभक्तिहोतिहियनाँहीं॥कोटिनकलपकलेशनकीन्हें।साधुनकीसंगतिमनदीन्हें॥
भागविवशजबभेहरिदाया।तबजनकृष्णभक्तिकहँपाया॥२४॥ सोहरिभक्तिसहजमहँमाता।तुम्हरेउरआईअवदाता॥
सुरसनकादिकनारदशेशू। वासवऔरविरंचिमहेशू॥औरहुमुनिजेतेजगमाँहीं। असहरिरतिदुर्लभसबकाँहीं॥२५॥
दोहा-पितुपतिसुतसुजनहुँसकल, औरगेहअरुदेह। भलीकरीइनकोजोतजि, तुमकीन्ह्योंहरिनेह॥
अहैंकृष्णप्रभुपुरुषपुराना। शरणागतपालकभगवाना॥तिनुमनतेहरिभक्तिमहाई।जगमेंइकतुमहींकियमाई॥ २६॥
मेरेरह्योज्ञानअभिमाना। निरखिप्रेमतुवसकलभुलाना॥ मोपैकृपाकरीयदुराई। तुवदरशनहितदियोपठाई॥२७॥
मोहिंहरिपदगुनिकैलघुदासा। जननिकियोतुमप्रेमप्रकासा॥ ऋणीरहौंगोसदातिहारो। याकोहैनहिंप्रतिउपकारो॥
अबजोनाथपत्रिकादीनी। निजकरलिखीप्रीतिरसभीनी॥ मेंशिरधरिलायोंतुवपासा॥सुनहुसोअबमेंकरहुँप्रकासा॥
दोहा-नर्मसखापदुराजमोहिं, कियोकृपारसमोइ। तातेमनकीबातकछु, राखतकबहुँनगोइ॥
सोरठा-असकहिपातीखोलि, चरणवंदियदुनाथके। सुनहुजननिअसबोलि, उद्धवतहँबाँचनलग्यो॥ २८॥

श्रीभगवानुवाच।

हैनहमारतुम्हारवियोगू। यहमनशोचिकरहुनहिंसोगू॥ हैसंयोगसुखदसबकाला। यहजानहुँ१शरीव्रजबाला॥
अनिलअनलअपअशनिअकासू।जिमिसिगरेजगइनकरवासू।तैसहिंमैंनिवसहुँसबमाँहीं।जहँमैंनाहिंअसकछुँथलनाँहीं॥
मनबुधिइंद्रिनप्राणअधारा। पालहुँहरहुँसृजहुँसंसारा॥निजसंकल्पहितेसबकरहूँ। सूक्ष्मरूपसबजगसंचरहूँ॥३०॥
रहोंभिन्नगुणतेसबकाला।शुद्धआतमाज्ञानविशाला॥जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिवृत्तिमन।मोरिप्रतीतिरीतिन्रैश्रुतिभन॥३१॥
मनोवृत्तितेभेदप्रतीती। तातकरैआचलमनरीती॥
दोहा-जौनेमनकीवृत्तिते, चिततविषैअनित्य। तौनेमनकीवृत्तिको, करैअचंचलनित्य॥
मनहिंवृत्तितेस्वपनहिंदेखे। ताकोसुखदुखअपनेलेखे॥ जागेसोरहिजातोनाँहीं। फेरिहोतजसजागतमाँहीं॥
[illegible] ॥३२॥ त्यागसत्यसमदमअरुवेदा॥तत्वज्ञानअरुयोगविभेदा॥

मनकीवृत्तिअचंचलठानो । यहीसारसबकोफलमानो ॥ जैसेबहतसरितसमुदाई । मिलिसागरमहँजाहिबिलाई ॥
तैसहिंसबशास्त्रनकोमतभल । मनकोकरबविशेषअचंचल॥३३॥जोहमइतदृगदूरितुम्हारे।कढ़िआयेसोदेहिंउचारे॥
दोहा—हेब्रजनारीविरहवश, ठानिअचंचलचित्त । मोमेंमनहिंलगायकै, ध्यानकरहिंगीनित्त ॥ ३४ ॥
दूरिदेशजबप्रीतमरहतो । तबतियकोजियलगिजसचहतो ॥ तसनाहिंनिरखिनैनकेनेरे । यहआईसाँचीमनमेरे॥३५॥
विषैवृत्तिसबभाँतिविहाई।सबविधिमोमेंमनहिंलगाई॥जोतुममोहिंसुमिरणनितकरिहौ।तौमेरेढिगआशुसिधरिहौ ३६
जबमैंशरदनिशामहँप्यारी । कियोरासब्रजकुंजसुखारी॥ तबजिनतियनगोपमतिहीने।राखेरोकिनआवनदीने ॥
तेतियतहँमोरधरिध्याना । प्रथमहिंममढिगकियेपयाना ॥ तातेमोमेंमनहिंलगाउब । प्यारीसाँचोहैमोहिंपाउब ॥
दोहा—हमतुममेंतुमहममहिंमें, यामेंनाहिंसंदेह । प्रियाहमारतुम्हारहै, मनएकैद्वैदेह ॥

श्रीशुक उवाच ।

ऐसीसुनिप्रीतमकीपाती।ब्रजनारिनशीतलभैछाती॥बोलीकृष्णप्रीतिमहँसानी।आगेकीसिगरीसुधिआनी॥३७।३८॥

गोप्य ऊचुः ।

उद्धवतुमहिंनसमुझिपरतहै । कंतजियतकोउयोगकरतहै ॥ युगयुगजीवहिंकुँवरकन्हाई । हैहमरेअहिवातसदाई ॥
उनकेसंगकियेबहुभोगू । हमरोकीनहोतनहिंयोगू ॥ लिखीकान्हमनथिरकरिलेहीं । सोमनथिरकीरुचिनहिंकेहीं ॥
पैजिनकोमनतनुमहँहोई । करैअचंचलमनकोसोई ॥ हमरोतौमनहरिहरिलीन्ह्यों । अबकसलौटिसिखापनदीन्ह्यों ॥
दोहा—तनुतोयहपापीरह्यो, गयोनहरिकेसंग । पैसुकृतीमनकबहुँनहिं, छोड़ैगोहरिअंग ॥
करैअचंचलचंचलसोई । जाकोमनअपनेहियहोई ॥ क्योंनहिंकहैकंतअसबानी । अबभेराजपायविज्ञानी ॥
उद्धवमनगोविंगरिहमारे । अबसुधरतकैसेहुनसुधारे ॥ जिनअंगनलाग्योपियप्यारो । तिनअँगयोगजातनहिंधारो ॥
जिनदृगसाँवलिसूरतिदेखी।तिनदृगओरपरतिनहिंपेखी।निकरयोहरिहरिजिनमुखमाँहीं।तिनमुखअबनवेदपढ़िजाहीं॥
लपटयोजिनअँगहरिअँगरागा।तिनमेंधूरिधरतमनभागा।पियेजेश्रुतिहरिवचनमिठाई।तिनश्रुतिनहिंपुराणसुनिजाई॥
दोहा—हममान्योंजोहरिकह्यो, पैकछुवशनहमार । येतनुमनमानतनहीं, कियेकोटिउपचार ॥
सोउअहैश्यामकरदोषू । वृथाकरतहमपरकतरोषू ॥ जोपहिलेहितेयोगसिखावत । तौयहतनुअबक्योंदुखपावत ॥
योगविरागभक्तिअरुज्ञाना । इनकेकीन्हेमुक्तिनिदाना ॥ ऐसीमुक्तिपैरअबधूरी । बसबकान्हतेक्षणभरिदूरी ॥
योगकियेबैकुंठहिंजैहैं । तहँचतुर्भुजश्यामकहँपैहैं ॥ पारिहैकबबाँसुरीसुनाई । कहँएहैंहरिधेनुचराई ॥
असबैकुंठलगतनहिंनीको । ब्रजसुंदरबिनहैसबफीको ॥ यद्यपिमनरोकहिंबरियाई । तदपिजातकढिजहाँकन्हाई ॥
दोहा—उद्धवजाकीबानिजो, पहिलेतेपरिजाय । सोनहिंबहकैसेहुमिटाति, कीन्हेकोटिउपाय ॥
परिगैछलकारियोहरिरीती । सोनहिंमिटतिजाहियुगबीती॥अपनोकससमुझहिंसबकाँहीं।लिखीबातकतबहुतवृथाहीं॥
आपनसमुझहमहिंसुझावै । सोकैसेहमरेमनआवै ॥ जोसमरथसमुझावनकोहै । आयसुझावैरोकतकोहै ॥
उक्तनहोतलिखिलिखिपदपाती । कहिनरीनराखतछाती ॥ उद्धवतुमहींकहौविचारी । छोंड़हहमकोउचितबिहारी ॥
अबनहिंऔरबुद्धिअनुरागी । एकलगनलागीसोलागी ॥ उद्धवतुमहिंनलागतलाजू । भोगछोंडावतयोगहिकाज ॥
दोहा—ऐसोअबहोनीकही, सोहगईविशेषि । कद्रुमधुपुरगोलसी, जोआयेदृगदेषि ॥
इमअमकुन्धोकान्हदनिषंगा । कीन्ह्योंपदुबाँसिनदुमसंगा॥सोपदभलोकरिगैनैंदलाला।मिल्योपदुकुलकरकमाल ॥
सोपदुकुन्धोमारनहुमारे । आटकेकैआनगँहारे ॥ मातुपिताकबंधनछोरे । छेहैपिभौपदुवरनाहिंपै ॥
पदसुनिसुनिअस्वादननैना । दुनाइननैनअसँनिजनैना॥रसैकुअरुनमधुपुरदोउभाई । अबउद्धवपदहदुवनाई ॥
दुनिबाईजोउद्धवनारी । कृष्णकुमारगुनपावनहारी ॥ नँदनंदनदरसनिजनैना । नारिनकैमनमांदकनै ॥
दोहा—दुर्नानिनकोनिजितानि, सुनि [illegible] ॥

क्योंनहिंउनकेवशमेंह्वैहैं। हावभावतियबहुतदेखैहैं ॥ हरिचातुरपुरनारिचातुरी । लगीदुहुँनकीबुद्धिआतुरी ।
धौंहरिजीततहैंपुरनारी। धौंपुरयुवतीजितैंविहारी ॥४०॥ पुनिबोलीकोऊहरिप्यारी। श्यामसखायहदेहुउचारी ।
करतरहेजसहमसोंप्रीती । तैसहिंउतहूँराखतरीती॥ हरिकोलखिमथुराकीनारीं। करतींकबहुँकटाक्षसुखारीं।
जिनकोहरिनिरखहिंदृगमाँहीं। तेकबहूँसलाजमुसकाँहीं ॥ जानिगईह्वैहैंछलइनको। मूँदोरह्योहोइगोकिनको।

दोहा–सबदिनतेनँदलालकी, चलिआईयहरीति। सबनारिनसोंहठिकरत, मुखदेखेकीप्रीति ॥

पुनिबोलीकोऊब्रजबामा । सुनहुबैनउद्धवमतिधामा ॥ ४१ ॥ कबहुँकयदुबरसाँझसबेरे। जबबैठतपुरनारिननेरे ।
वचनरचनकरितिन्हैंलोभाई । निजअधीनताविविधदेखाई॥जबतिनकेरसमेंरसिजाँहीं।तबसुधिकरतकबहुँहमकाँहीं।
कबहूँअसमुखभाषतप्यारो। हैयकगोकुलगाँउहमारो ॥ पैनहिंसुरतिकरतवहहोई । पुरनारिनकोकाननजोई ।
हमतोउद्धवग्वारिगमारी । दहीमहीकीबेचनहारी ॥ अहैंकौनहमउनकेलेखे । वोकुलवंतिनकुबरीदेखे ।

दोहा–पैकबहूँवतरातमें, बातबातकेबीच। कहतअवशिह्वैहैंलला, ब्रजतियरहींनगीच ॥ ४२ ॥

ब्रजसुंदरीफेरिकोउबोली। उद्धवसोंयहबातअमोली ॥ रहीशरदकीपूरणमासी । जगतीजगीजोन्हाईखासी ।
फूलेकुंदवृंदचहुँओरा। सरसरविकासितकुमुदनथोरा ॥ तबयहवृंदावनकीधरणी । भईमहाआनँदकीभरणी ।
कान्हकलिंदीकुंजनजाई। टेरिबाँसुरीहमहिंबुलाई॥ रासविलासरच्योतेहिंकाला । मधिनँदलालचहूँकितबाला।
मचीचरणनूपुरझनकारी। सोसुखकिमिमुखजायउचारी॥करमलगींहमहरिगुणगाना।मिट्योअमंगलदशोंदिशाना।

दोहा–तानिशिकीवहकान्हरो, कबहुँसुरतिकरिलेत। जानिशिमेंयाचतरह्यो, हमहिंमिलनकेहेत ॥ ४३ ॥

पुनिबोलीकोऊब्रजबाला। रेउद्धवकहँहैंनँदलाला॥ बढ़ीमहाविरहानलज्वाला । अबतोनहिंसहिजातकसाला ।
कहँअपकारकियोहमवाको। जोअसदुखदियसुतयशुदाको॥ कबहुँगोविंदगोकुलेआई। देहेंहियलगितापबुझाई।
मरीगोपिकनकंतजिऐहैं । अधरसुधारसकबहुँपिऐहैं ॥ जिमिवासववारिदनपठाई । वारिधारवसुधाबरपाई।
सूखोवनकरतोहरियाई। तिमिहरिहमैंकबैब्रजआई ॥ हमहिंजिऐहैंतोयशलैहैं । असअवसरपुनिकबहुँनपैहैं ।

दोहा–ग्रीषमदिनकरविरहकृत, उठीअनलब्रजग्राम। जारतिब्रजवनितालता, कबबरषिहिंघनश्याम॥४४॥

कोउबोलीपुनिगोकुलवारी। सुनहुसखीसबबातहमारी ॥ अबक्योंब्रजऐहैंयदुराई । देहेंक्योंपितमातुपठाई ।
बहुतदिननमेंनिजसुतपाये। हियलगायदुखसकलमिटाये॥हमगरीबिनीगोपिनिकाँहीं।श्यामसुरतिकरिहंअबनाँहीं।
लाग्योराजकाजकोरंगा। रहिहैंसबयदुवंशीसंगा ॥ गोपगमारनक्योंसुधिकरिहैं । रैनदिवससुहृदनमुदभरिहैं।
व्याहिसुंदरीभूपकुमारी। करिहैंकहँअबसुरतिहमारी ॥ कहँगोपीकहँभूपकुमारी। तुमहिंनकसमनलेहुविचारी।

दोहा–समयसुरतिकीतबरही, द्वारद्वारजबआय। हरिमाखनमाँगतरहे, दोऊहाथओडाय ॥ ४५ ॥

ब्रजवनिताकोऊपुनिबोली। साँचीकहीसखीचिततोली ॥ बनवासिनीगमारिनिगोपी। ह्वैहंकसइनकेअबचोपी।
सुनीपरतिअबबड़ीबड़ाई। देहंकसहृतआपगमाई॥ कहवावतयदुकुलकेनाथा । विधिशिवधरततासुपदमाथा।
सबविधितेहैंपूरणकामा। हैंकमलाजिनकीप्रियबामा ॥ रमाविहायअहीरिनिलैंके । रहिहैंकसजगमहँअसकैके।
अबनाहिंहरिआवनअभिलाषी । मेरीबातकहौमनराषी ॥ छूटोशरनशरासनआवै । छूटोनेहनपुनिजुरिजावै ।

दोहा–दर्पणपाहनप्रीतिपय, इनकोएकसुभाउ। फाटेफेरिजुरैनहीं, करियेकोटिउपाउ ॥ ४६ ॥

ब्रजअंगनाफेरिकोउभाषी। सिगरीगोपिनसोंअसभाषी ॥ गणिकारहीपिंगलाकोई । भाषनिर्हीभाषीयहजोई ।
सबतेह्वैकरहुनिराशी। यहीसकलविधिहैसुखराशी॥ महाकठिनसाँसिहोतिमिताई । पहिलेसुखपाछेदुखदाई ।
तातेवनतप्रीतिकेत्यागे। कहिराख्योपिंगलाजोआगे ॥ पैसांसिकाहकैरहिकाला । जाहूहारिगयोनँदलाला।
बिसरतनाहिंवहश्यामसलोनो। हैपाकाहहमैंसासिदोनो॥समुझावहिहममनकोभलभल।क्योंनहिंहोनअपलरनंचल।

दोहा–पैमनमोदनरूपमें, मोहिगयोमनदुष्ट। इततेतोटोटलनहीं, होनहमहिपरदुष्ट ॥ ४७ ॥

कहुँवृंदावनकुंजनमाँहीं। हरिविहारथलगुनितिनकाँहीं ॥ गोपिनसंयुतकरतप्रणामा। व्रजरजलोटतठामहिंठामा ॥
प्रेमविवशमुखकढ़तिनबानी। उद्धवकीतनुसुरतिभुलानी ॥

दोहा-कुसुमितवनसुरभितपवन, शीतलकुंजनछाँह। गोपिनयुतगावतसुयश, सुमिरतश्रीव्रजनाँह ॥

जहँजहँयदुपतिलीलाकीन्हीं।तौनतौनथलउद्धवचीन्हीं॥गोपिनकोहरिसुरतिकरावत।तिनतेसहितआपशिरनावत ॥
व्रजनारिनकोप्रेममहाना। इकमुखकोकरिसकेबखाना ५६ उद्धवअद्भुतलखिहरिप्रेमा। जोफलज्ञानयोगतपनेमा॥
प्रेमरूपसिगरीव्रजनारी। हरिकेहितसबदियोबिसारी ॥ कृष्णकृष्णमुखरटनलगीं हैं। सबकीमतिहरिपगनपगीहैं ॥
उद्धवअचरजमनमहँमानी। गमनमधुपुरीसुरतिभुलानी ॥ काकेकौनकहाँतेआये। प्रेमविवशउद्धवबिसराये ॥

दोहा-एकसमयव्रजकुंजमहँ, बैठिकृष्णकोदास। वंदतव्रजवनितनचरण, गायोसहितहुलास ॥ ५७ ॥

कवित्त-जनममरनमेंपरनतेडरनवारे, मुनिजनजाकोमनपावनसदाचहैं।
तौनयदुनाथजूकेपगनकोपूरोप्रेम, लीन्ह्योंलूटिगोकुलकीग्वालिनीमुदीमहैं ॥
भुविकेभयेकोभूरियेइफलपायोपूरि, बिनहरिनेहकबिदेहसुरदाकहैं।
हाथजोरिमाँगैयदुराजजूसोंरघुराज, व्रजवनितानसोंनकबहुँअदारहैं ॥ ५८ ॥
कहाँतोयेगहनकीग्वालनीगँवारनीवि-शेपिव्यभिचारिणीनरूपकीनकांतिकी।
कहाँहरिप्रेमपूरोजाकोचहैंयोगीजन, जपतपयोगरीतिकरिबहुभाँतिकी ॥
रघुराजपियतपियूपऊँचनीचकोऊ, मृतकजियतकौनऔधिदिनरातिकी।
ऐसेयदुराईप्रीतिकियेअपनाईलेत, गनतबड़ाईनाछोटाईजातिपाँतिकी ॥ ५९ ॥
सौरभसरोजतनुवदनसरोजसम, ऐसीदेवदारामहासुछविप्रकाशिनी।
तिनहूँनपायोनहिंपायोकमलाहुकहूँ, यदपिहियेकींहैनिरंतरनेवासिनी ॥
नृपतिकुमारीऔरनारीहैंविचारीकौन, जेतीरघुराजरतिराजकीविलासिनी।
सुखकीअवधिजोपसारिनिजहाथेमिलि, वृंदावननाथैलूट्योवृंदावनवासिनी ॥ ६० ॥
छोड़ोनहिंजात्जोकुटुम्बताहित्यागिदीन्ह्यों, त्यागिकुलकानिवेदपंथहूँप्रमाणके।
हरिकीसनेहीभईभईवसुधामेंधन्य, जाकेहेतुतरशैंमुनीशब्रह्मज्ञानके ॥
तातेरघुराजव्रजराजकृपाकैकैमोहिं, देहींवरयेईदेनवारेवरदानके।
पावेंजन्मवृंदावनकुंजनलतानिकच-हूँतौपरिजैहैंपगव्रजवनितानिके ॥

दोहा-वृंदावनतरुलतनमें, जन्मआशममभूरि। जातेनितउड़िउड़िपरै, व्रजवनितनपगधूरि ॥ ६१ ॥

सवैया-पंकजपाणिपसारिजिन्हैंपदमानितपूजतिहैनिजदासी।त्योंपदमासनऔरपुरारिमुनीशधरैंहियप्रीतिकेखासी॥
तेयदुनंदनकेपदपंकजगोकुलकीनवलाचपलासी। धारिहियेविरहानलतापबुझायदईभइआनँदरासी ॥६२

दोहा-व्रजवनितनकीचरणरज, वंदहुँबारंबार। जिनमुखनिर्गतहरिसुयश, हरतकलुपसंसार ॥ ६३ ॥

श्रीशुक उवाच।

इहिविधितेउद्धवमतिधामा।व्रजनारिनकरिविविधप्रणामा॥पुनिगोपिनसोंदोउकरजोरी। बोल्योबारहिंबारनिहोरी ॥
मोनिदेहुजोमोहिंरजाई। तोअबजाउँजहाँयदुराई ॥ जानततौबिसबकेपटकी। पैतुवदशाप्रेमलटपटकी ॥
हूँनेकुकहोंतहँजाई। सकैनासिगरोशेषहुगाई ॥ सुनिगोपीह्वैगईअधीरा। उपजीदुसहदूनउरपीरा ॥
लोनिनसोंजलढारत। उद्धवकहामेरकहँमारत ॥ तुमहिंदेखिआयोकछुधीरा। तुमहिंबिनाकिमिरहिहिशरीरा ॥

दोहा-उद्धवतुमकोनिररसिक, रहिगेतनुमेंप्रान। व्रजवनितनतनुदाहिके, तुमहुँकहतअबजान ॥

निउद्धवअतिशयदुखपायो।नंदयशोमतिढिगपुनिआयो॥कह्योसुनहुहेनंदयशोमति। शासनदेहुजाहुँजहँयदुपति॥

कियोसुखदआसवकरपाना। खायोपुनिसुरभितमुखपाना॥ हरिकेमिलनहेतुहरिप्यारी। हरिसमीपहरवरपगुधारी॥ कुवरीकीतहँजानिअवाई। उद्धवबैठोद्वारहिंजाई॥ रत्नजड़ितपरयंकअमोला। झुकीझालरैंमुक्तनलोला॥ तेहिपरयंकजाययदुराई। बैठतभेआशुहिंसुखपाई॥

दोहा-उतैकूबरीसाजिसब, सखिनसहितशृंगार। मिलनहेतुआवतभई, श्रीवसुदेवकुमार॥

करतिकटाक्षमंदमुसक्याई।चलतिकछुकपुनिरहतिलजाई॥हावभावलीलादरशावै।यहिविधिकंतनिकटसोआवै ५॥ ताकोयदुपतिनैनचलाई। लियोसमीपहिंआशुबोलाई॥ नवसंगमलज्जितसुकुमारी। मंदमंदप्रियनिकटसिधारी॥ शंकितचरणधरतिमहिधीरे।चमकहिंचहुँकितनूपुरहीरे॥कंकणकलितकमलकरताको।गह्योकृष्णआनँदरसछाको॥ बरवशलियोसेजबैठाई। तासुभागकछुकहीनजाई॥ नेसुकताकरचंदनलीन्हें। प्रभुतेहिंजगतधन्यकरिदीन्हें॥

दोहा-तरसहिंजाकेदरशको, दिविदेवनकीदार। सोहरिकुबरीसंगमें, कीन्ह्योंविविधविहार॥ ६॥

प्रियहिंपेखिनैननभरिप्यारी। नैनसफलनिजलियोविचारी॥ मध्यउरोजनपायमुकुंदै। वारतिजगकेसकलअनंदै॥ मेट्योमदनतापअतिघोरा।सोसुखकहिनसकतमुखमोरा॥७॥कोटिजन्मजेयत्नकराहीं। तेयोगिनिकबहूँमिलिजाहीं॥ तेहरिताकोलेअँगरागा। मिलेआपकरिअतिअनुरागा॥ सोकैवल्यनाथकहँपाई। बडभागिनिमाँग्योसुखछाई॥ प्रीतमयहवरमोकोदेहू।जोमोपरअतिकरहुसनेहू॥८॥करहुकछुकदिनममगृहवासा। कीजैममसँगविविधविलासा॥

दोहा-सुंदरश्यामसरूपयह, होतनैनतेओट। मेरेउरमेंलागिहै, कुलिशसरिसचटचोट॥ ९॥

कीवचनसुनतयदुराई। बोलेमधुरमंदमुसकाई॥ हमहींहैंमधुपुरीसदाहीं। विहरहिंगेतिहरेसँगमाँहीं॥ मसमाननहिंकोउजगप्यारी। तुवमेंअतिशैप्रीतिहमारी॥यहिविधिदैकुबरीकहँमाना। उद्धवयुतमानदभगवाना॥ सोंपूजितह्वैघनश्यामा॥ आवतभयेआपनेधामा॥१०॥दुराराध्यसर्वेश्वरयदुपति। तेहिंआराधनकरिकैशुभमति॥ रिपदप्रीतिनचितअनुरागै।होइंब्रह्महमअसजोमाँगै॥सोशुभमतिनहिंजगतकहायो।उदधिहुँपैठिसीपलैआयो॥११॥

दोहा-भोरभयेयदुनाथप्रभु, कीन्ह्योंमनहिंविचार। पूर्वकह्योअक्रूरसों, ऐहैंआपअगार॥

असविचारिकैरामहुँश्यामा। लैसँगमेंउद्धवमतिधामा॥ प्रियअक्रूरकरनकेहेतू। बाँधनकछुकारजकोनेतू॥ येककाकेभवनमुरारी॥१२॥ प्रभुआवतअक्रूरनिहारी॥ भाइनसहितदूरितेदौरी। पर्योचरणमहँदोउकरजोरी॥ कह्योअक्रूरनामहैमेरो। लघुसेवकपदपंकजतेरो॥यदुपतिआशुहिंलियोउठाई। अतिमोदितह्वैगिरासुनाई॥ १३॥ तुमसयानहौककाहमारे।पालनीयहमबालतिहारे॥ हमहिंउचितकीबोपरनामा। तुमहिंउलटिकसकियमतिधामा॥ असकहिरामश्यामदोउभाई। सादरअक्रूरहिंशिरनाई॥

दोहा-पृथकपृथकपुनिमिलतभे, उद्धवरामहुँश्याम। कहिनसक्यो कछुप्रेमवश, दानपतीतेहिंठाम।

रामश्यामलैगयोलेवाई। कनकसिंहासनपरबैठाई॥१४॥ दोउप्रभुकेपुनिचरणपखारी। लियोधारिशिरमेंसोवारी॥ पुनिअंगनलेप्योअँगरागा।अरपेउसुमनमालबड़भागा॥भूषणवसनअमोलअनेका। साज्योअँगअँगसहितविवेका॥ सादरधूपदीपदरशायो। विविधभाँतिनैवेद्यलगायो॥ प्रभुकीपूजाकीन्हींजेती। उद्धवआदिकदासनतेती॥ १५॥ यहिविधिपूजिप्रणामहिंकीन्ह्यों।हरिपदनिजगोदहिंधरिलीन्ह्यों॥मंदमंदमींजतकरलाई।बोल्योहरिबलसोंसुखछाई १६

दोहा-जोपापीकंसहिहन्यो, भलोकियोयदुनाथ। यदुकुलकोदुखसिंधुते, लियउधारिनिजहाथ॥

यहयदुकुलहैनाथतिहारा।याकेहौतुमहींरखवारा॥ १७॥ तुमदोउहौपुरुषप्रधाना। जगकारणजगमयभगवाना॥ तुमदोउविनावस्तुनहिंकोई।लघुबडऊँचनीचजगजोई१८निजशक्तिनसिरजतजगमाँहीं। करिप्रवेशभासहुबहुधाँहीं॥ जिमिचरअचरअनेकनयोनिन।भासतपंचतत्त्वबहुविधितिन॥तिमिअनादितुमसदास्वतंत्र।भासहुबहुविधिपहजगतंत्र॥ निजशक्तिनसतरजतमगुनतें।यहजगसिरजहुपालहुहनतें॥बँधहुनतासुकर्मगुणमाँहीं॥ज्ञानीमेंअज्ञानकहुँनाँहीं॥२१॥

दोहा-जेउपाधिदेहादिहैं, तेतुममेंहैनाँहि। तातेतुम्हरोजन्मनहिं, असमुनिकहैंसदाहि॥

रगीतिका—यातेनबंधमोक्षतुमकोबंधमोक्षजेभापहीं । तेपुरुपविमलविचारमनमेंनेकहूँनहिंराखहीं ॥ २२ ॥
तुमतेप्रगटयहवेदपंथपुराणजगमंगलहिते । पाखंडपथतेहोतबाधितजेखलतेचहुँकिते ॥
तबशुद्धसतोगुणमयतुम्हेंअवतारधारिधराथले ।पाखंडपथखंडनकरहुखेलतनिसूदतखलुखले॥२३॥
तिमिअबहुँप्रभुवसुदेवगृहयुतशेपलियअवतारहे । हरिहरणदेतुअपारयहभुवभारतवसंचारहे ॥
करिहौकरैहौअपुरअंशीनृपनकोसंहारहे । अक्षोहिणीहनिअमितदेहौयदुनसुयशअपारहे ॥ २४ ॥
येघरहमारेआयकेपगपरतवडभागीभये । सबदेवअरुनरदेवपितरहुभूतभयतुमइतठये ॥
दोहा—तुवचरणोदकसुरसरी, पावनकरतित्रिलोक । सोप्रवेशतुमहींकियो, धन्यधन्यममवोक ॥ २५
कवित्त—भक्तनकेप्यारसत्यवाणीकेवदनहार, नेकउपकारमेंअपारमानियतुहै ।
बारबारदासनकीकामनाकेदेनहार, तुमसेउदारनहिंठीकठानियतुहै ॥
कहैंरघुराजबढिबोहूघटिबोहूनाहिं, दीसततुम्हारयाविचारआनियतुहै ।
नंदकेकुमारतुम्हैंछोंडिकैभजतआन, पंडितगँवारताहिहमजानियतुहै ॥ २६ ॥
।—शेपमहेशसुरेशहुआदिकनारदआदितिन्हैंतपभारो । दुर्लभहैतिनहूँतुम्हरीगतिसोप्रगटैप्रभुनैननिहारो
श्रीरघुराजकृपाकरिदीजियेयावरदाननआनविचारो । पुत्रकलत्रहुदेहमेंगेहमेंनेहनहोइहमेशहमारो ॥ २
श्रीशुक उवाच ।
दोहा—यहिविधिअस्तुतिसुनतहरि, मंदमंदमुसक्याय । मधुरगिरामोहतमनहिं, बोलतभेयदुराय ॥ २
श्रीभगवानुवाच ।
[illegible] । हमतोबालकअहैंतिहारे ॥ तुमसयानपुनिककाहमारे । अहौसराहनयोगउदा
[illegible] । ज्ञानवृद्धवयवृद्धउछाही ॥ पोपणलालनपालनकारी । तुमहिंहमारेहौमतिधा
[illegible] ॥जेजनअपनोमंगलचहहीं । तुमसमसज्जनकेपदगह
[illegible] ॥ महाभागवतआपसमाना । हैंतुअहेतुकदयानिधाना ॥३
दोहा—माटीपाहनदेवजे, अरुजलतीर्थअगाधु । बहुतकालमहँशुचिकरत, दरशकरतहींसाधु ॥ ३१ ॥
[illegible] । करहुकाजयहककाउदारे ॥ मोरयीतजेपांडुकुमारा । बसैंहस्तिनापुरमँझार
[illegible] । जाहुहस्तिनापुरमतिसेतू ॥ ३२ ॥ हमअससुन्योआपनेकाना । जबतेमरिगेपांडुप्रधान
[illegible] । पांडवरहतधर्मकेधारी ॥ यहवसंतऋतुमहँनृपराई । लियोपांडवनपुरहिंबोलाई ॥ ३
[illegible] । निजसुतपांडुकुमारनकाँहीं॥मानतहैंनहिंतिनहिंसमाना । निजपुत्रनकीप्रीतिलोभान
[illegible] । सोहैसाँचोअवनिअगारा ॥ ३४ ॥
दोहा—जाहुहस्तिनापुरकका, लखहुअंधनृपरीति । नीकीनहिंनीकीकिधौं, कीन्ह्योंसकलप्रतीति ॥
तहँकोसबवृत्तान्तजो, कहिदीजोमोहिंआय । जेहिविधिलहिहैंसुहृदसुख, करिहौंसोइउपाय ॥ ३५
यहिविधिकहिअक्रूरको, रामऔरघनश्याम । पगुधारेउद्धवसहित, मुदितआपनेधाम ॥ ३६ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
अनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे अष्टचत्वारिंशस्तरंगः ॥ ४८ ॥

श्रीशुक उवाच ।
दोहा—सुनिशासनयदुनाथको, सोअक्रूरमतिमान । रथचढ़ितुरतहिंकरतभो, हस्तिनपुरहिंपयान ॥

द्वारदेशपहुँच्योजवजाई । द्वारपालदियखवरिजनाई ॥ अंधनृपतिलियतुरतवोलाई । पहुँच्योजवैसभामधिजाई ।
पौरवेंद्रजसअंकितऐना । निरखतभोअक्रूरनिजनैना ॥ लख्योअंविकासुतमहराजै । शतपुत्रनयुतसहितसमाजै ।
भीष्मद्रोणविदुरमतिवाना॥१॥कृपाचार्य्यवाह्लीकप्रधाना ॥ सोमदत्तअरुभूरिश्रवहू । कर्णद्रोणसुतअरुपांडवहू ।
औरहुसुहृदनसकलनिहारा । निरखिअक्रूरउठेदरवारा॥अंधनृपतिउठिनिकटवुलाई । हाथपकरिलीन्ह्योंवैठाई ॥२॥
दोहा–यथायोग्यसवकोमिले, तहँगांदिनीनंद । कुशलप्रश्नपूँछयोकह्यो, पायोपरमअनंद ॥ ३ ॥
नृपअक्रूरसुवुद्धिविशाला । रह्योनागपुरमहँकछुकाला ॥ देख्योअंधनृपतिकीरीती । करतआपनेसुतपरप्रीती ।
रहतसुयोधनकेआधीना । सोछलमेंअतिअहैप्रवीना ॥४॥ तेजओजवलसद्गुणजेते । निवसहिंपांडुसुतनमहँतेते ।
सोनहिंनीकलगतनृपकाँहीं।प्रजाप्रीतिपांडवहिंनमाँहीं॥सोनलग्योअक्रूरहिंनीको।गुन्योतिनहिंअधरमरतठीको ॥५॥
पुनिअक्रूरकुंतीगृहआये । तहाँअकेलेविदुरसिधाये ॥ विषभोजनलाक्षागृहदाहन । कर्मसुयोधनकेजेआहन ।
दोहा–विदुरकह्योअक्रूरसों, आदिहुअंतलगाय । सोसुनिकैअतिदुखलह्यो, आँखिनआँसुवहाय ॥ ६ ॥
पुनिअक्रूरकेचरणनआई।गिरीपृथाअतिशयदुखछाई॥सुधिकरिनैहरकीभरिआँसू । कह्योभ्रातसोंविगतहुलासू॥७॥
मातापिताभगिनिअरुभाई । भ्रातपुत्रऔरहुभोजाई ॥ कवहुँकसुरतिकरतहैंमेरी । कहहुभ्रातअक्रूरनिवेरी ॥ ८ ॥
मेरेभ्रातपुत्रभगवाना । दासनपालककृपानिधाना ॥ कवहूँपितुभगिनीसुतकाँहीं । सुमिरतहैंनिशिवासरमाँहीं ।
तैसहिंकमलनैनवलरामा । सुरतिकरतकवहूँवलधामा॥९॥रिपुनवीचमेंवसोंदुखारी।जिमिवृकमधिहरिणीभयभारी॥
दोहा–कौनदिवसवहहोइगो, जादिनयदुपतिआय । मोरिगरीविनिकीविपति, देहैंद्रुतहिंमिटाय ॥
कौनदिवसहोईवहभाई । जादिनकरुणाकरियदुराई ॥ पिताहीनवापुरेवालकन।समुझैहैंकहिवचनसुखदघन ॥१०॥
असकहिलगीकरनहरिध्याना । कहतिवचनहेयोगप्रधाना॥हेविश्वात्मविश्वकेभावन।कृष्णकृष्णदासनसुखछावन॥
हेगोविंदमैंहौंशरणागत । पाहिपाहिकसदुखननिवारत॥वूड़हुँसुतयुतशोकसिंधुमहँ।कसनउधारकरहुगहिकरकहँ ॥
तुवपदकमलछोड़ियदुराई । रक्षकदुतियनमोहिंदेखाई ॥ विनाकृपावसुदेवकुमारा । होतनपारसिंधुसंसारा ॥
तुमहीअहौमुक्तिकेदाता । तुमहीअहौविश्वकेत्राता ॥ १२ ॥
दोहा–परब्रह्मपरमातमा, योगेश्वरयदुराज । मैंशरणागतआपकी, राखहुमेरीलाज ॥ १३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिसुमिरिचरणहरिकेरे । तसहिंनिजकुलजननघनेरे॥भूपतिप्रपितामहीरावरी॥रोवनलागीशोकवावरी ॥१४॥
विदुरअक्रूरशोकसमछाये । कुंतीकोयहिविधिसमुझाये ॥ तेंनिजसुतनछोटनहिंजानै । कृपापात्रयदुपतिकेमानै ॥
धर्मअनिलअश्विनीकुमारा । औरइंद्रकेअहंकुमारा ॥१५॥ असकहिपुनिअक्रूरउठिधाये।पिहाहोननृपनिकटसिधाये॥
जानिअंधनृपकोसुतनेही । पांडुसुतनमेंप्रीतिनतेही ॥ सभामध्यतेहिंवचनउचारा । जोनकह्योवसुदेवकुमारा॥१६॥

अक्रूर उवाच ।

दोहा–हेविचित्रवीरजसुवन, कुरुकुलकीरतिदानि ॥ तुमहिंनपैसेचाहिये, देखहुमनअनुमानि ॥
अनुजरावरोपांडुउदारा । जवतेंवदसुरलोकसिधारा ॥ तवतेंतुमराजासुनपाये । यदपिताहिंनेगपैठहुनाये ॥ १७ ॥
धर्मसहितमहिकोमहिपालै । आनँदप्रजजनदेनजोपालै ॥ निजपुत्रसुतसमदीठी । देनकवहुँनाहिंगंगरपीठी ॥
होइनीतिरतशीलसुभाऊ । सोपावतमंगलनृपराऊ ॥ नाहिंकीकीगनिजननाहीं । यामेंनृपसंशयकछुनाहीं ॥ १८ ॥
यातेंआरीतिजोकरहू । सोनृपअवशिनरकमहँपरहू ॥ जगमहँसहनअवशिअपवादा । कवहुँरहननाहिंविनाविषादा ॥
तातेमोरवचनचितआनहुँ । पांडुसुतननिजसुतसममानहुँ ॥ १९ ॥
दोहा–वहुतकालकोजगतमें, नहिंकोहुकोनिवास । रहननकहुँभगिनादिकहु, नांचहिविभौविलास ॥
सुतदारादिकअरुपरिवारा । रहिहैंसंगकरनीअनुसारा ॥ केहिकाहूकेआइननाये । गोकिहिकोउनसंगनराहाये ॥२०॥

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीमद्भागवत–आनन्दाम्बुनिधि ।

दशमस्कंध (उत्तरार्ध) प्रारंभः ।

सोरठा–जयजयआनँदकंद, दासदीहदुखदंशकर । जयवृंदावनचंद, जयलीलालोनीकरन ॥
दोहा–जयहरिगुरुअरविंदपद, तरणिसिंधुसंसार । जयगुरुपितुविश्वनाथपद, वंदौंबारहिंवार ॥
जयवाणीजयगजवदन, जयशुकजयश्रीव्यास । दशमउत्तरार्धैरचौं, पुरवहुमेरीआस ॥
कछुहरिवंशहुकोलियो, गर्गसंहिताकेरि । औरब्रह्मवैवर्त्तकछु, औरहुरोचकहेरि ॥
उत्तरार्धमेंसकलथल, कृष्णकथाविस्तार । व्यंग्यभावभौतरनऊ, हैमूलहिंअनुसार ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–अस्तिप्राप्तिरानीउभे, भोजराजकीजोय । जरासंधनिजजनकथह, जायपरीपगरोय ॥ १ ॥
ह्योपितासोंकंतविनाशा॥२॥सुनिमागधकियकोपप्रकाशा॥करीप्रतिज्ञाभूपतिभारी।करिहौंमहिअयादवीसारी।३।
सकहितेइसअक्षौहिणिदल।साजिचल्योमथुरेकोपितभल॥मथुरेघेरिलियोचहुँओरा।कियोउपद्रवपरमकठोरा॥४।
खिविकलपुरवासिनकाँहीं । हरिबोलेबलरामहिंपाँहीं॥५॥ मागधलैआयोदलभारी । मारहुयाकोविक्रमधारी ॥६।
हींहेतुहमारतुम्हारा।होतभयोअवनीअवतारा।७॥हरिबलके-८।९।१०-असकरतविचारा।नभतेद्वैरथतेजअपारा।
दोहा–दारुकलैआवतभयो,नायनाथपदशीश।करीविनयकरजोरिकै,रथतयारजगदीश।११।१२।१३।१४।१५।
ढिकैदोउवसुदेवकुमारा । करहुजरासुतसैन्यसंहारा॥ सूतवचनसुनिदोउभगवाना । आयुधसहितचढेदोउयाना ।
कछुकसैन्यलीन्हेंनिजसंगा । चलेकरनमागधसोंजंगा ॥ पूरबद्वारहिंकढिभगवाना । कियोशङ्खकोशोरमहाना ॥१६।
ांचजन्यधुनिसुनिअरिसैना।होतभईआशुहीअचैना॥कृष्णनिरखिमागधमुसक्याई।कोपितदीन्ह्योंवचनसुनाई १७।
ालककृष्णलौटिगृहजाहू।तुमसोंहोतनयुद्धउछाहू॥१८॥होयसानुतोलरुबलरामा।मोहिंहनुकीगमनहुयमधामा १९
दोहा–जरासंधकेवचनसुनि, यदुपतिकछुमुसक्याइ । मंदमंदमाधुरवचन, दीन्ह्योंताहिसुनाय ॥

श्रीभगवानुवाच ।

विक्रमकरैंशूरनहिंभापै । तेंतोयमपुरकोअभिलापै ॥ तातेतोरवचननहिंमाने । मरणशीलकिमिऔपधिजाने॥२०॥
माधववचनसुनतमगधेशा । दियोसैन्यकोतुरतनिदेशा ॥ धावहुधरहुधरहुदोउभाई । जामेंकेसहुनाहिंबचिजाई ॥
सुनिप्रभुशासनभटचहुँओरा।छायलियोहनिआयुधघोरा२१परेनलखिहरिबलधनुधारी।दुखितभईतियचढीअटारी ॥
तबहरिबलनिजधनुटंकोरा। छायरह्योअरिदलमहँशोरा॥२३॥शरऐंचतसेंचतधनुदोऊ।लख्योनमागधदलमहँकोऊ॥
दोहा–भयेमंडलाकारधनु, रहेदिशनशरछाय ॥ २४ ॥ गजवाजीराजीकटी, भाजीसैन्यसकाय ॥
करिनकुंभकटिगेतहँकेते । कटेतुरंगसवारसमेते ॥ पैदलरुंडमुंडमहिछाये । टूकटूकबहुरथदरशाये ॥ २५ ॥
बहनलगीतहँशोणितसरिता२६।२७कादरडरहिंभीतिकोभरिता ॥ हलमूसलबलभद्रोधारी।मागधकीसबसैन्यसँहारी
यहिविधिमागधकटकअपारा।रामकृष्णकन्ह्योंसंहारा२९यहनहिंतिनकोअचरजअहई।जोजगविरचिफेरिसंहरई ३०
सिंहसमानदोरितेहिठामा । गह्योविरथमागधकहँरामा॥३१॥ताकेमारनकोमनदीन्ह्यो।आयकृष्णतबवारणकीन्ह्यो॥
दोहा–लैऐहैयहसैन्यपुनि, नाहिंमारोबलभाय । जरासंधकोछोड़िदिय, कृष्णवचनचितलाय ॥ ३२ ॥
चल्योकरनतपमानिगलानी । अबतोजियेहोयपशहानी॥मारगमहँतहँनृपसमुझाई।मगधदेशमहँदिपठाई॥३३॥

तहँधनुशरधरिनृपमुचुकुंदा। रक्षाकीन्होंदेवनवृंदा॥ एकवर्षसोयेनृपनाँहीं। कियोपराजयदैत्यनकाँहीं ॥ १५
तबप्रसन्नह्वैकहँसुरवानी।माँगहुवरभूपतिवलखानी१६।१७मंत्रीतियसुतजनपरिवारा।रहिनगयेसंसारतुम्हारा ॥१९
जैसेगोगोपालचरावैं। तैसेप्रभुयहिजगतनचावैं ॥१९॥ मुक्तिछोडिमाँगहुवरदाना। गतिदातातोहैंभगवाना ॥२०

दोहा–तबभूपतिकरजोरिकै, माँग्योयहवरदान। बहुतदिनातेनहिंकियो, शयनअहौंअलसान ॥

तेमोहिंनींदअतिआवै।भस्महोयजोमोहिंजगावै२१एवमस्तुकहिदेवनदीन्हें।नृपगिरिगुहाशयनतबकीन्हें २२।२
ग्रोयवनजवजरितेहिंठामा।तवनृपढिगआयेघनश्यामा।।अतिसुंदरस्वरूपलखिराजा।शंकितभोसुमिरतनिजकाज
निनवाइभूपतिनिजमाथा। बोल्योवचनजोरियुगहाथा ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

मुचुकुंद उवाच।

ौनआपहैंमोहिंवतावो। निजप्रकाशत्रिभुवनमहँछावो॥ कमलचरणकंटकपथगामी। केहिकारणआयेइतस्वामी
ोरविकीशशिकीसुरराई। कीपावकप्रकाशअधिकाई ॥ ३० ॥

दोहा–पैमोहिंजानोपरतहै, होनारायणनाथ। वचनसुधासमप्याइकै, कसनहिंकरहुसनाथ ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

ृमइक्ष्वाकुवंशकेअहहीं। नाममोरमुचुकुंदहिकहहीं ॥ मांधाताकोअहौंकुमारा ॥३३॥ गयोकालसोवतहिंअपार
मोकोंकोजगायप्रभुदयऊ३४अपनेहिंपापभस्मह्वैगयऊ॥पुनिमोकोतुमपरेलखाई३५तेजविवशनहिंपरोदेखाई।३६
जबमुचुकुंदकहीअसिवानी। तबहँसिबोलेशारँगपानी ॥ ३७ ॥

श्रीभगवानुवाच।

जन्मकर्ममम अहैंअनंता।विधिशिवशेषहुलहैंनअंता॥३८।३९।४०॥पैतुवप्रीतिदेखिनरराई।नेसुकतुमकोदेहुँसुनाइ
हरणभूमिभाराकरतारा। विनयकरीअतिवारहिंवारा ॥ ४१ ॥

दोहा–तबमैंश्रीवसुदेवको, भयोसुवनमहिआय। वासुदेवकहवावतो, जानिलेहुनृपराय ॥ ४२ ॥

कंसप्रलंबादिकखलमारयो।बहुविधिसंतनकोदुखटारयो॥तुम्हरेतेजजरयोयवनेशा।कृपाकरनआयोयहिदेशा ॥४३
पूरवतुममाँग्योवरदाना। मोकोदरशदेहिभगवाना। तुमकोमहाभागवतचीन्ह्यों। यातेआयदरशइतदीन्ह्यों ॥४४
मांगहुवरमोसोंमहिपाला। होहिकामनासिद्धिउताला ॥ मेरीशरणआयकैकोई। भूपतिकबहुँदुखीनहिंहोई ॥ ४५

श्रीशुक उवाच।

यदुपतिकीसुनिगिरासुहाई। नृपमुचुकुंदमोदअतिपाई ॥ गर्गवचनकोसुमिरणकरिकै। प्रेममगनह्वैधीरजधरिकै

दोहा–तीनिलोककेनाथको, जानिआपनोनाथ। करनलग्योअस्तुतिनृपति, मुदितजोरियुगहाथ ॥ ४६ ॥

छंदत्रिभंगी–जयजयसुखकारीलोकविहारीभवभयहारीदासनके। अरिगर्वप्रहारीवरवपुधारीनित्यविहारीरासनके
अजशक्रमहेशाशारदशेशासकलसुरेशापदवंदं। प्रभुकृपानिवेसाधरिबहुवेषाहरहुहमेशादुखदंदं ॥
तुममायामोहेजनदुखपोहेतुमहिंनजोहेअंधलसें। दुखरूपनिकेतैतियासमेतैतहँसुखदेतैविषभरसें ॥ ४७ ॥
लहिवरनरकायाविनहिंउपायानहिंयदुरायातुमहिंभजें। जिमिपशुहरपानेकूपमहानेतृणहिंलोभानेगिरिनछजें ॥४८
सुतवितातियरातेनृपमदमातेकालहिंजातेमैंनगन्यो।तजिजगतअशक्तिहिकियोनभक्तिहिलह्योनमुक्तिहिवृथहिंजन्य
तनुसतिपहिचाने॥४९॥नृपमदमानेचढिवहुयानेसैन्ययुतं।महिफिरेभुलानेकरिमदपानेतुमहिंनजानेनंदसुतं॥५०
बहुविषयहुलासेलोभहिंफाँसेकरतविलासेजेजनहैं। तिनकोतुमकालैभक्षतहालैआपुहिंव्यालैजिमिवनहैं ॥ ५१ ॥
तनुभक्षशृगालनतेहिकरिपालनरचिबहुमालननरपतिहैं।स्यंदनचढिधायोआरिनभगायोकालगमायोशठमतिहै ५२
सबनृपमोहिंवंदैंभजरिदंदैकरिबहुफंदैभूमिजित्यो।रमणिनरसराच्योतिनवशनाच्योमृगगमसाँच्योवारकित्यो ॥५३॥
तजिसबजगभोगैकरिबहुयोगैचाहतलोगैस्वर्गसुखे। तृष्णावशधावैनहिंमुदपावैश्रमभरिपावैहोतदुखे ॥ ५४ ॥
जनभ्रमतअभंगेलहिसतसंगेतबभवभंगेहोतनहै। तवचरितअलेखैंतुमकहँदेखैंअतिसुखलेखैंमगनरहै॥ ५५

चाहतवनजाईसतनृपराईराजिमहाईतजनहितै । सोविनहिंउपाईमैंअवपाईश्रीयदुराईतुमहिंचितै ॥ ५६ ॥
पदकमलहिलागीभजहिंविरागीतेहिंहमत्यागीवरनरैं । तजिदीनदयालैलहिकलिकालैयहिजगजालैकाहँपरैं ॥५७॥
तेहिंतेतजिआशैसहितहुलासैरमानिवासैतुमहिंभजौं । तुमहोअविकारीअधमउधारीयहीविचारीअवनतजौं ॥५८॥
अतितापनितायोलोभसतायोतोपनपायोभाँतिकोई । अवसरनहिंआयोदासकहायोसवसुखछायोचरणजोई ॥
प्रभुकृपाकरीजैयहयशलीजैभक्तिहिंदीजैमोहिहरे । मतितुवरसभीजैदुखसुखछीजैप्रेमहिंपीजैमोदभरे ॥ ५९ ॥

दोहा—सुनिअस्तुतिमुचुकुंदकी, वोलतभेयदुनाथ । महाराजतुमाविमलमति, पैहौंसतिमुदगाथ ॥

वरदीवोकहियदपिलोभायो।तदपिनतुवमनडुल्योडुलायो६०मोरभक्तजेहैंजगमाँहीं।तिन्हैंकामनाउपजतिनाँहीं ६१
जासुवासनाभयनहिंछीनी।कवहुँकतेहिमतिहोतमलीनी।६२।पैजिनकेउरभक्तिविलासै।तिनकीमतिकोविपैनत्रासै॥
विचरहुजगमहँमोकहँध्याई।पैहौभक्तिमेरिसुखदाई६३॥क्षत्रिधर्ममहँजियगनमारा।तपकरितिनकहँकरोउधारा ६४॥
औरेजन्मविप्रवरह्वैकै । सवभूतनदायाहगज्वैकै ॥ करिहौगमनभूपममधामा । जहाँजातयोगीतजिकामा ॥

दोहा—यामेंऔरनहोयगो, जानिलेहुमहिपाल । भक्तहमारेरहहुगे, तुमसर्वदाविशाल ॥ ६५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे एकपंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५१ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—यहिविधिप्रभुकीलहिकृपा, सोमुचुकुंदनरेश । करिप्रदक्षिणाकृष्णको, तजनचह्योवहदेश ॥

कह्योकंदरातेमहिपाला।लखिलघुजीवगुन्योकलिकाला१उत्तरदिशिवदरीवनजाई२कियचितदैतपपरगतिपाई ३।४
तहँतेलौटिकृष्णभगवाना । यवननमारिहरचोधननाना ॥५॥ चलेद्वारिकैवृपनलदाई । जरासंधआयोतहँधाई ॥६॥
मागधसैन्यदेखिप्रभुभागे । मनुजचरित्रकरनअनुरागे॥७॥ छोडिदियोधनमनहुँडेराई । वहुयोजनगेहरिखलराई॥८॥
भगेजातमागधदोउदेखे । लियोयवनधनकादरलेखे ॥ सैन्यसहितधायोमगधेशा । कृष्णरामगमनतजेहिदेशा ॥९॥

दोहा—दूरिजायहरिचलतहाँ, थकिगिरिचढेउतैल । जहँवरपहिंवारिदनितै, नामप्रवर्पणशैल ॥ १० ॥

हरिवललुकेजानिगिरिमाँहीं।घेरिलियोमागधचहुँधाँहीं॥शुचिईंधनादियअनललगाई । शैलप्रवर्पणदियोजराई ॥११॥
जरतशैलतहँतेदोउतरके । एकादशयोजनमहँढ़रके॥१२॥पुनिद्वारिकैगयेदोउभाई।मागधतिनकीखबरनपाई॥१३॥
मरेजानितजिनिजअंदेशा । मगधदेशगमन्योमगधेशा ॥१४॥ द्वारावतीजाययदुराई।वसतभयोअतिशयसुखपाई ।
व्याह्योरेवतिकहँवलराई । नवमस्कंधकथासोगाई॥१५॥ शाल्वऔरमागधशिशुपाला । कुंडिनपुरमहँजुरेभुवाला

दोहा—श्रीभगवानगोविंदपुनि, व्याहेभीष्मसुताहि । कमलारूपिणिरुक्मिणी, स्वयंवरहिदरशादि ॥ १६ ॥

तिनभूपनमदमोरिकै, हरिरुक्मिणिहरिलीन । जैसेदेवनजीतिकै, गरुड़सुधावशकीन ॥ १७ ॥

मुनिशुकदेयवचनकुरुराई । फेरिजोरिकरगिरासुनाई ॥

राजोवाच ।

यदुपतिकरिराक्षसीविधाना।रुक्मिणीहरचोसुन्योयहकाना।जेहिविधिजीतिशाल्वशिशुपाले। हरिरुक्मिणिल्यायेनिजमहलै
कृष्णचंद्रकीकथासुहाई।देहुसुनाइमोहिमुनिराई॥कृष्णकथाअतिशयसुखदाई।श्रवणपरतकलिमलनशिनाई ॥१८
कृपासुधाकोपानदिपाई।कोनरसिकजोजायअघाई॥सुनतपरीक्षितकेमृदुवैना।कहतलगेशुकदेवसुवैना ॥१९॥२०॥

श्रीशुक उवाच ।

[illegible] । तहँकोभीष्मकभूपसुहावन ॥

दोहा—[illegible]कन्याअही, [illegible]नृपपंचकुमार । रुक्मीतिनमेंज्येष्टभो, जगमहँअतिवलवार ॥ २१ ॥ २२ ॥

सुनिरुक्मिणीकृष्णगुणरूपा।वरिलीन्ह्योंमनतेवरभूपा२३।२४भ्रातमातुपितुसहितउछाहू।करनचहेहठिकृष्णविवाहू
तबरुक्मीवरज्योतिनकाँहीं।देनचह्योशिशुपालविवाही२५सुनिरुक्मिणीपरमदुखपायो।इकपंडितहरिपासपठायो२
सोद्वारिकैगयोद्रुतधाई। हरिढिगद्वारपदियपहुँचाई॥ सिंहासनबैठेयदुनाथा। लखिद्विजकहँनायोप्रभुमाथा॥२७
पुनिपूजनकियविविधप्रकारा।जिमिहरिपूजहिंदेवउदारा२८पुनिविप्रहिंभोजनकरवायो।चरणचापिअसवचनसुनायो
दोहा-विप्रकुशलहैधर्मतुव, करोतोनाहिंकलेश। रह्योसदासंतोषकरि, यहद्विजधर्महमेश॥ २९॥ ३०॥
जोसंतोषकरैमनमाँहीं। तासुवचनहैसत्यसदाहीं॥३१॥ असंतोषशक्रहुसुखनाँहीं। सुखसंतोषीदीनहुँकाँहीं॥३२
जेसंतोषीसाधुउदारा। तजेअहंकारहुममकारा॥ जीवदयापरहैतपधामा। शिरसोंतिनकोअमितप्रणामा॥ ३३
विप्रजौनराजाकेराजे। वसैप्रजासुखसहितसमाजे॥ सोभूपतिमोकोअतिप्यारो। मेरेपुरकोगमननहारो॥ ३४॥
जौनदेशतेतुमइतआये। ताकीकुशलकहौसुखछाये॥ हमकोजेहिंविधिशासनदेहू। सोहमकरिहैंनहिंसंदेहू॥३५
दोहा-जबब्राह्मणसोंअसकह्यो, शीलसिंधुयदुनाथ। तबरुक्मिणिकीपत्रिका, दीन्ह्योंहरिकेहाथ॥
तबयदुपतिबोलतभये, तुमहींदेहुसुनाय। तबब्राह्मणबाँचनलग्यो, परमानंदहिपाय॥ ३६॥

रुक्मिण्युवाच।

छंदचौ०-त्रिभुवनसुंदरजनश्रुतिकंदरतवगुनवसिदुखछीने। तवरूपसुहायोजिनदृगआयोदृगफलपूरणकीन्हें॥
सुनिसोगुनरूपैपरमअनूपैममनलाजविहाई। तवपदढिगजाईरह्योलोभाईकह्योसत्ययदुराई॥ ३७॥
असकोकुलवारीअहैकुमारीवरैनतुमहिंनिहारी। विद्याकुलशीलैधनवयर्डीलैतुमसमतुमहिंविहारी॥
अतिआनँदकंदेसबजगवंदेनरलोकहिंअभिरामे। यदुकुलकेनायकसबविधिलायकपूरणसबमनकामे॥३८
तेहितेवरिलीन्ह्योंतनुमनदीन्ह्योंतुमहिंसमर्थहिंजानी। प्रभुदयाविचारीइतपगधारीकरोदारगहिपानी॥
तुववीरहिंअंशैचेदिपदंशैकरैनहींद्रुतजामें। मृगपतिकेभागैअबनहिंलागैजंबुकऔरदगामें॥ ३९॥
मैंजोशुभकर्मैंकरियुतधर्मैंदानयज्ञव्रतनेमा। सरकूपअरामैंरचिअभिरामेजप्योहरिहिंसहप्रेमा॥
तौदेवकिनंदनदुष्टनिकंदनकरैब्याहइतआई। नहिंनृपशिशुपालादिकविकरालागहेंपाणिदुखदाई॥ ४०॥
ममकालिविवाहाहैउरदाहातातेकरिअतुराई। प्रथमहिंछिपिआवोपुनिदलल्यावोसबलदभैकन्हाई॥
चैद्यादिकसैनेहनिशरपैनेमोरिमदेहाठिनाथा। राक्षसविधिसोलैवीरजमोलैमोहिंहरिकरहुसनाथा॥ ४१॥
अंतःपुरमाँहींबंधुनकाँहींहनिहमकेहिंविधिव्याहैं। असजोप्रभुभाषौंतौकरिराखौयहउपायमनमाहैं॥
कुलरीतिहमारीव्याहअगारीगिरिजामंदिरजाँहीं। तहँआयमुरारीकरधनुधारीहरहुहमैंसुखमाँहीं॥ ४२॥
जेहिपदरजकाँहेंशिवसमचाहैंसज्जनहितअघनासे। तेहिंजोनहिंपैहौंतजितनुदैहौंकरिव्रतबिनाहिंप्रयासे।
प्रभुसत्यबखानोयहहठिमानोजबलगिमिलिहोनाँहीं।तबलगिशतजनमैंहैयहमनमैंवरिहौंआपहिकाँहीं॥४३॥
दोहा-यहविधिपातीबाँचिकै, फेरिजोरियुगहाथ। कहनलग्योसोविप्रवर, निरखतमुखयदुनाथ॥

ब्राह्मण उवाच।

दोहा-यहरुक्मिणिसंदेशमें, गोविंदंदियोसुनाय। अनुचितउचितविचारिकै, करहुसोइयदुराय॥ ४४॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे द्विपंचाशत्तमस्तरंगः॥ ५२॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-पातीरुक्मिणिकीसुखद, सुनिकैपायअनंद। करसोंकरगहिविप्रको, हँसिबोलेयदुनंद॥ १॥

दोहा–तहँवृद्धाद्विजनारिसव, विधिकीजाननिहारि । वंदनकरवावतभई, मंगलवचनउचारि ॥

गिरिजावंदनरुक्मिणिकीन्ह्यों ॥४५॥ ऐसेवचनमंदकहिदीन्ह्यों॥शक्तिवतीजोहोहुभवानी।गहैंपाणिममशारँगपानी
स्वारमैंकरौंप्रणामा । पुजवहुआजमोरमनकामा॥४६॥असकहिपुनिमज्जनकरवायो। चंदनअक्षतसुमनचढ़ायो
दीपधुपनिमुदितदेखायो।विविधभाँतिनैवेद्यलगायो॥४७॥ पुनिसधवानारिनकहँपूजी।रुक्मिणिकृष्णआशनहिंदूजी
सधवातियप्युतअहलादा।रुक्मिणिकहँदीन्ह्योंपरसादा॥भूपसुताकियतिन्हैंप्रणामा॥४९॥तज्योमौनव्रतसोछविधामा

दोहा–गिरिजामंदिरसोंकढी, भीषमसुतासुजानि । रत्नजडितकंकणसहित, सखीपाणिगहिपानि ॥ ५० ॥

कुंडलमंडितयुगलकपोला । रत्नमेखलालंकअमोला॥अलकैंलटकिलटकिमुखहलकें।अधरबिंबशोभासुठिझलकें
मधुरकराहिंनूपुरपगशोरा । गमनजासुगजगतिमदमोरा ॥ कुंदकलीसेदंतविराजैं।रतिरंभाजेहिछविलखिलाजैं॥५२
भूपसुताकहँनिरखिनरेशा । मोहिगयेभूलेनिजवेशा ॥ लगेपंचशरशरदुखदाई ॥५३॥ गिरेभूमिमहँसुधिबिसराई
अस्त्रशस्त्रछूटेइकसंगा । तिमिस्यंदनमातंगतुरंगा ॥ मनहुदेवमायामहिआई । सबभूपनकहँलियोलोभाई ॥ ५४

दोहा–मंदमंदगमनतल्ली, जबगेमंदिरद्वार । अलकटारिनिरखनलगी, कहँवसुदेवकुमार ॥
यदुनंदनकोतहँलख्यो, स्यंदनसपदिसवार । दुसहद्वंद्वनिदूरीकियो, आनंदनिइकबार ॥ ५५ ॥
रथआरोहिततुरततहँ, यदुपतिरथहिंचलाय । रुक्मिणिकोशत्रुनलखत, निजरथलियोचढाय ॥
युद्धरामकोसौंपिकै, गमनद्वारिकाकीन्ह । मनहुँशृगालनमध्यतें, सिंहभागनिजलीन्ह ॥ ५६ ॥
जबदलतेरथनिकसिगो, तबजागेसबभूप । गोपहरयोधिकधिकहमैं, असबोलेमतिकूप ॥ ५७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे त्रिपंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–निजनिजवाहनमेंचढ़े, निजनिजलैहथियार । निजनिजदललैचलतभे, सबभूपतिइकबार ॥ १ ॥

आवततिनहिंदेखियदुवीरा । सन्मुखखड़ेभयेरणधीरा ॥ करिकोदंडकठिनटंकोरा । कीन्हेंसिंहनादअतिघोरा ॥२
कोउमतंगकोउचढेतुरंगा । कोउस्यंदनमहँयुद्धउमंगा ॥ नृपनसैन्यमहँएकहिंबारा । यदुवंशीछोड़ेशरधारा ॥
तेसोहमगपादिवबलवाना । बारबारवर्षतभेबाना ॥ जैसेमघामेघगिरिमाहीं । बारबारबूँदनझरिलाहीं ॥ ३
यदुदलमैंछिगयोशरधारा।तबरुक्मिणिकोभयोत्रसभारा॥शंकितपतिमुखनिरखनलागी।कहीनकछुलाजितभैभागी॥४

दोहा–पियहँसिकह्योगोविंदतब, सुंदरिभयमतिमानु । तेरोदलशत्रुनदलै, अबहिंजितेयदजानु ॥ ५ ॥

तोहिक्षणभयोयुद्धअतिघोरा । यदुवंशिनभूपनबरजोरा ॥ तहँगदआदिकयदुबरवीरा । मारिशस्त्रकियअरिनअधीरा
गजवाजिनशिरमहिकटिपरहीं। सिंहनादभटबहुविधिकरहीं।कोटिनकीटकवचकटिजाहीं।मुंडमुंडबहुखंडलखाहीं
अंगदगदासहितकरवाला । परहिंधरणिकटिभुजाविशाला ॥ कटेउरूनानहुँगजशुंडा । बाजीराजीभिदहुगंडा ॥
रथरथटेलअश्वरणनागे । भागहिंरणमहँप्राणनत्यागे ॥ कोटिनिभटनमुंडकटिजाहीं । धावनममककबंधलखाहीं ॥

दोहा–कोटिनशोणितसरितबही, योगिनिभैंनअपान । याकोहुढकोनापदहू, मच्योमहाघमसान ॥ ८॥

इहियुद्धपुनिभोअतिठामा । जुरेवीरसोंवीरललामा ॥ पुनिदलभट्टभयेदलभूपा । पाछिकियोनहिंयुद्धअनूपा ॥
लियोजीतिरिपुदलरणमें । भागेनृपदुखितअतिमनमें॥गनेजरासंधसिसुपालनिसाना।कियेद्राखिकमुनिनपयाना
जरासंधआदिकमहिपाला । गयेभागिजहँरहोसिसुपाला॥सिसुपालहुनि [illegible]
सरिसनघोतुसरोलननोंरी । [illegible] ॥ [illegible] ॥ १०

लेभेटमुदितसबआये।कृष्णरुक्मिणिहिंलखिसुखपाये॥महलनमहलनबँधींपताका।शरदमेघजिमिलसहिंबलाका॥
दोहा–द्वारनद्वारनकनकघट, फैलतसौरभधूप ॥ ५६ ॥ गजमदतेसींचींगली, कदलीखंभअनूप ॥५७॥५८॥
फैलीसबदेशनखबरि, रुक्मिणिहरिहरिलीन । सुनतपरस्परमुदितजन, कहँप्रभुकौतुककीन ॥
रुक्मिणिकोसुनिहरणबहु, राजसुतासुकुमारि । कृष्णमिलनललकनलगीं, अनुपमनाथविचारि ॥ ५९ ॥
द्वारावतीनिवासकिय, श्रीवसुदेवकुमार । करतकलानअनेकनित, रुक्मिणिसहितविहार ॥
रुक्मिणिकृष्णाविवाहमैं, वरण्योंयुतविस्तार । रुक्मिणिपरिणयग्रंथमें, इतसंक्षेपउचार ॥ ६० ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा
बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ
दशमस्कंधे उत्तरार्धे चतुःपंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५४ ॥

दोहा–अबभागवतहूँकीकथा, अरुहरिवंशहुँकेरि । औरहुकछुरोचकरचहुँ, कविजनलेहुनिबेरि ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–जरच्योप्रथमहरतेजते, मारमहासुकुमार । रुक्मिणिकेसोजन्मलिय, भोप्रद्युम्नकुमार ॥ १ ॥ २ ॥
तदिवसकोजबसुतभयऊ । दानवआयताहिहरिलयऊ ॥ रह्योकालशंबरजेहिंनामा । कालहुँकोजीत्योसंग्रामा ॥
ोकामतेतेहिंरिपुताई । तेहिंतेहरच्योकृष्णसुतआई ॥ डारिदियोसुतसागरमाँहीं॥३॥लीन्ह्योंमीनलीलितेहिंकाँहीं ॥
हिमीनकोउकेवटआई । जालडारिकहुँलियोफँसाई॥४॥मीनभखनअतिप्रीतिहिंजानी।ताहिमीनकहँकेवटआनी ॥
बरकेआगेसबराखे । पावनधनबहुमनअभिलाखे ॥ सोमछरीलैशंबरहरष्यो । तिनकेवटनअमितधनबरष्यो ॥
दोहा–दियोसुवारनमीनसो, कह्योरचहुपकपान । करनलगेतसंडबहु,लैलघुचोखकृपान ॥ ५ ॥
ीनउदरफारतमहँभूपा । निकस्योबालकपरमअनूपा ॥ सूपकारलखिअचरजमाने । बालकलैअतिशयहरषाने ॥
ायावतिशंबरकीरानी । सोईकामनारिछबिखानी ॥ जबैकामहरदियोजराई । तबरतिअतिशयतापहिंपाई ॥
ारिशंभुकेचरणनजाई । कह्योमोरपतिदेहुजियाई ॥ तवशंकरकहँशंबरगेहू । पैहैनिजपतिनाहिंसंदेहू ॥
बमायावतिनामधराई । शंबरकीतियभैरतिआई ॥ सोमायावतिकेढिगजाई । सूपकारअसगिरासुनाई ॥
दोहा–मीनउदरमेंहमलहे, यहबालकमहरानि । याकोराखहुपासनिज, पालनकरहुसयानि ॥
।यावतीबालककहँपाई । राख्योनिजगृहअतिहरषाई ॥ तबनारदमुनिआतुरआई । मायावतिहिकह्योसमुझाई ॥
ुंदरियहबालकपतितेरो । भयोपुत्रयहयदुपतिकेरो॥यहिविधिसिगरीकथासुनाई।नारदगमनकियोहरषाई॥६॥७॥
ायावतीजानिपतिबाले । करिकेप्रेमलगीतेहिंपाले॥८॥कछुककालमहँकृष्णकुमारा।भयोकिशोरसुछबिआगारा ॥
नवनीरदसमरूपसुहावन।पद्मपलाशनैनसुखछावन॥युगुलजानिलौंबाहुविशाला।शशिमुखअदिमनुअलकनिमाला९
दोहा–नैसुककरतकटाक्षजेहिं, मोहहिंसुरतियवृंद । मृदुहाँसीफाँसीसरिस, ऐसोरुक्मिणिनंद ॥
सकलशास्त्रकोजाननवारो । विक्रममदात्रिविक्रमप्यारो॥कृष्णसुवनकीसुछबिनिहारी । मायावतीअतिभईसुखारी ॥
एकसमयनिशिमेंहरषाई । फूलनकीसुरसेजबिछाई ॥ केशवसुतकहँलदौबुटाई । मायावतीमंदमुसक्याई ॥
करिकटाक्षअसगिरासुनाई।विरददाहपियदेहुबुझाई॥१०॥सुनिमायावतिगिराकुमारा।कोपितह्वैअसवचनउचारा ॥
रेजननीकसभाषसिबैना । फूटिगयेतेरेदोउनैना ॥ तेंजननीममर्मेसुततेरो । कतयहअनुचितचहतिघनेरो ॥
दोहा–पैअतिचंचलहोतहैं, जगमहँनारिस्वभाव । सुंदरवपुलखिसुतहुको, करहिंकामकेभाव ॥ ११ ॥
मायावतीसुनतिपतिबैना । बोलीहाथजोरिभरिनैना ॥

रतिरुवाच ।

आपअहैंयदुनंदननंदन । मेरेनायकहोजगवंदन ॥ शंबरशठतुमकोहरिल्यायो । आपपिताजाननहिंपायो
आपकाममैंरतितुवनारी । नाथदियोकतसुरतिबिसारी॥१२॥ फेंकिदियोशठसागरमाँहीं।एकमीनलील्योतु
केवटपकरिमीनद्रुतल्याये । तासुउदरमहँतुमकहँपाये॥केवटतुमहिंदियोमोहिंआई । नारदसिगरीकथासुना
यहशंबरजीत्योसुरराजै । महाकालकीकियोपराजै ॥

दोहा–अतिदुर्जयदुर्धर्षहै, शंबरदानवराज । प्रीतमयाकोजोहनो, तोसंतिसुतयदुराज ॥ १४ ॥

मायावीअतिशयबलवारो । कबहुँनकाहूसोंरणहारो ॥ याहिमारिमोहिंलैसुखदायक । चलहुद्वारिकैजहँयदु
सुनिरतिवचनमुकुंदकुमारा।फरकेभुजाकियकोपअपारा॥अबलौंतेंकसगोपनकीन्ह्यो।कसनमोहिंप्रथमहिंकहि
तबहिंनमैंशंबरकोमारी।तोहिंलैजातेउअयनमँझारी ॥ तबपुनिबोलीरतिमुसक्याई । तुमसबविधिसमरथसुख
असकहिमायावतीसुहाई । सबमायाहरिसुतहिंपढाई ॥ अस्त्रशस्त्रजेत्रिभुवनमाँहीं । दियपठायकेशवसुतक

दोहा–सबमायाकीनाशिनी, नामवैष्णवीजासु । सोप्रद्युम्नहिंदेतभे, त्रिभुवनजासुप्रकासु ॥१५॥१६॥

तबकेशवसुतकियोविचारा। केहिंविधिहोवैयुद्धहमारा ॥ अबैमोहिंयहजानतनाँहीं । करिबोछलअनुचितजगम
तातेकरिकौनिहूँउपाई । याहिकोपमैंदेहुँबढाई ॥ याकोजोहैविजयनिशाना । देहुँकाटिमैंहनिइकबाना ॥
तबजबकोपितमारनआवै । तबमोसोंपुनिजाननपावै ॥ असविचारियदुनाथकुमारा । निकरिमहलतेंतेजअगा
मायामयरथतुरँगबनाये । अक्षयतुणीरधनुषशरभाये ॥ यदुपतिनंदनलैइकबाना । काट्योशंबरविजयनिशान

दोहा–जेभटध्वजरक्षकरहे, तेसबआतुरधाय । पाणिजोरियुगशंबरै, कहँअसवचनसुनाय ॥

शिशुपनतेजोबालकपाल्यो।सोतुम्हारविजयध्वजघाल्यो॥आपुभीतिहमताहिनमारा।अतिअनुचितनहिंजायनि
सुनतकालशंबरअतिकोप्यो । कृष्णकुँवरकहँमारनचोप्यो ॥ फरकेअधरअरुणदृगमाप्यो।बारबारबीरनसोंभाष्यो
यहबालकअतिअनुचितकीन्ह्यो।विजयनिशानकाटिममदीन्ह्यो॥मारनलायकहैयहबालक।अतिनिरशंकभयोममपाल
असकहिनिजशतसुतनबोलाई । कह्योकालशंबरअनखाई ॥ मारहुयहिबालककहँजाई । बचैनकौनिहुँओरपराई

दोहा–चित्रसेनअतिशयबली, तिनमेंरह्योप्रधान । हाथजोरिसोकियविनय, सुनियेपितुबलवान ॥

बचिहैनहिंकौनेहुँविधिबालक । हमसबहैंतवशासनपालक । असकहिकवचपहिरिधनुधारे।शंबरकेसुतरणअनियारे
कोउमतंगकोउचढेतुरंगा । कोउस्यंदनमहँयुद्धउमंगा ॥ औरविविधवरवाहनसाजे । विविधभाँतिबजवाजनबाजे
कढेनगरतेशंबरसूना । समरउराउभयोउरदूना ॥ पट्टिशपरिघचक्रअसिशूला । तोमरशक्तिवज्रकेतूला ॥
औरहुआयुधविविधप्रकारा । धारणकीन्हेंसकलजुझारा ॥ गयेजहाँयदुपतिसुतठाढो । समरआँकुराविक्रमबाढो

दोहा–नवनीरदसमरूपजेहिं, सुंदरत्रिभुवनमाँहिं । वामचरणअंगुष्ठले, गहेतुरंगनकाँहिं ॥

चित्रसेनतबकह्योपुकारी । रेबालकसुनिगिराहमारी ॥ पितुकोकाट्योविजयनिशाना । तातेतोरकालनियराना ॥
अबदेखाउँअपनीमनुसाई । भयोपुष्टमेरोधनखाई ॥ मंदविहँसितबकृष्णकुमारा । नेसुकवाजिनादियोइसारा ॥
चंचलरथचमकतचहुँओरा । सन्मुखचल्योकरतअतिशोरा ॥ अद्भुतनामगंधरबजोई । कह्योजायवासवसोंसोई
दानवसतइककृष्णकुमारा । युद्धकरनकाकरतविचारा ॥ कैसेविजयनाथवहपैहै । हारेतुम्हरेहुउरदुखऐहै ॥

दोहा–तबवासवबोलेविहँसि, ममाजियनहिंपछितात । त्रिभुवनविजयीकृष्णसुत, शतसुतकातिकबात ॥

असकहिलेदेवनगंधर्वा । सिद्धमहोरगचारणसर्वा ॥ चढिविमाननभसहितहुलासा । सुरपतिआयेलखनतमासा
। शंबरशतसुतकियेप्रहारा ॥ मुसलभुशुंडीतोमरचक्रा । शक्तिपरश्वधबाणहुँवक्रा ।
शस्त्रसबएकहिंबारे । टियोतोपितहकृष्णकुमारे ॥ तहँकोपितरुक्मिणीकिशोरा।चपलचापतेंहिंछनटंकोरा
पेशरासनतेशरपारा । मनुश्रावणघनबूँदअपारा ॥ सकलशस्त्रकियरेणुसमाना । एकहुनेकहुनहिंदरसान

दोहा-महाप्रबलप्रद्युम्नपुनि, चंचपंचशरमारि। शंबरकेशतसुतनको, दीन्ह्योंगर्वउतारि॥
पुनिदानवरणमाहँअमर्ष। माधवसुतपरबाणनवर्ष॥ तिनकेशरतिलसमकरिडारे। दशशरसोंदशपुत्रनमारे॥
पुनिलैसायकएकप्रचंडा। काट्योचित्रसेनकोमुंडा॥ तबकोपितसबदानवधाये। शरछाँडतसमीपअतिआये॥
तबआतुरलैबाणनवासी। रुक्मिणिनंदनसमरविलासी॥ काट्योसबकोशिरइकबारा। अद्भुतविक्रमकृष्णकुमारा॥
खड़ोभयोपुनिसमरमँझारी। मनहुँसिंहगजराजनमारी॥ जेभटबचेकुमारनकेरे। भागिगयेशंबरकेनेरे॥
दोहा-दरवाजहिंतेकरतभे, आरतसकलपुकार। वहपालकप्रभुरावरो, मार्योशतौंकुमार॥
सुनतकालशंबरसुतनाशा। भयहुकुपितजनुज्वलितहुताशा॥सारथिकोआतुरबोलवायो।शासनसेनासजनसुनायो॥
कह्योलेआवहुसारथिस्यंदन। मैंकरिहौंअबशत्रुनिकंदन॥ सुनतसूतनाथहिंशिरनाई। स्यंदनऔसेनासजवाई॥
नाथहजूरहिंहाजिरकीन्ह्यों। शंबरतेहिंइनामअतिदीन्ह्यों॥ नहेऋक्षरथमाहँहजारा। अहिबंधनजेहिंबँधेअपारा॥
बाजहिंकनककिंकिणीमाला। बाघचर्मतेमढोकराला॥ फविफविफहरतसिंहपताका। घनसमघर्घरातजेहिंचाका॥
दोहा-निरखिकालशंबरसुरथ, कनककवचतनुधारि। चामीकरकरचापकरि, युगलतुणीरसँवारि॥
चढ्योकालशंबररथमाँहीं। भयोकालवशशंकितनाँहीं॥ सेनापतिगवँनेसँगचारी। कुंडलकवचसायकधनुधारी॥
केतुमालिदुर्धररिपुहंता। औरप्रमर्दनओजअनंता॥ आठहजारचलेअसवारा। पैदलबीसहजारउदारा॥
दशहजारहाथीसँगमाँहीं। द्वैशतस्यंदनसजेसोहाँहीं॥ निकसतद्वारहिंशंबरकेरे। होनलगेउतपातघनेरे॥
व्योमगीधमंडलमडराँहीं। वारिदअरुणघोरघहराँहीं॥ शिवाज्वालवमिसन्मुखबोलैं। बारबारसबकेअँगडोलैं॥
दोहा-गिरयोध्वजामहँगिद्धइक, रथमहँगिरयोकबंध। ग्रस्योराहुबिनकालरवि, काकबैठिगोकंध॥
चींचींकूचींकियखगशोरा। वर्षनलगेरुधिरघनघोरा॥ शंबरदृगभुजफरकहिंवामा।हयगयचलिनसकहिंतेहिंठामा॥
उल्कापातहजारनभयऊ। सूतहाथचाबुकगिरिगयऊ॥ ऐसेलखिअनेकउतपाता। शंबरमनमहँनहिंबिलखाता॥
भेरीशंखहुपणवमृदंगा। औरहुबाजबजेइकसंगा॥ डगनलगीधरणीध्वनिपाई। खगमृगडरिसबगयेपराई॥
गयोकालशंबरबलवारा। जहाँखड़ोयदुनाथकुमारा॥ घेरिलियोदलतेचहुँओरा। डरयोनकछुरुक्मिणीकिशोरा॥
दोहा-सहसबाणशंबरहन्यो, प्रद्युम्नहिंइकबार। बिनप्रयासतिलसमकियो, शरहनिकृष्णकुमार॥
पुनितहँधनुपधारिरणधीरा। शलभसरिसछोड्योक्षुरतीरा॥ रह्योनकोउशंबरदलमाँहीं। जाकेबाणलगेतनुनाँहीं॥
भगिसैन्यशंबरकहँछोडी। सक्योनकोउसन्मुखदृगओडी॥शंबरलख्योसैन्यसबभागी।सचिवनकह्योकोपअतिपागी॥
सचिवलखोअबकोनतमासा। करहुबालकहँआशुविनासा॥ यहनहिंअहैबचावनयोगू।जिमिरुजरहेकरततनुसोगू॥
सचिवसुनतशंबरकोशासन। चलेरुक्मिणीसुवनविनाशन॥ बाणनवर्षतरथनधवाये। यदुनंदननंदनढिगआये॥
दोहा-धावतआवतनिरखितहँ, सचिवनकहँरणधीर। धनुपधारनिःशंकह्वै, सन्मुखभयउप्रवीर॥
शरपचीसदुर्धरकहँमारे। केतुमालिपैतिरसठझारे॥ रिपुहंतहिंसत्तरशरभासी। हन्योप्रमर्दनबाणपचासी॥
बेधिगयेशरलागतअंगा। मानहुँबिलमहँपुसेभुजंगा॥ तबचारिहुँमंत्रीअतिकोपे। कृष्णतनयकहँबाणनतोपे॥
तेबाणनकहँबीचहिंकाटी। पुनिप्रद्युम्नदियोशरपाटी॥ पुनिलैअर्धचंद्रइकबाना। दुर्धरसूतहिंहन्योमहाना॥
चारिबाणतेहन्योतुरंगा। एकबाणतेकियध्वजभंगा॥ सातबाणतेस्यंदनकाट्यो। एकबाणतेछत्रहिंछाँट्यो॥
दोहा-शंबरकेदेखततहाँ, लैइकबाणकराल। दुर्धरकेउरमेंहन्यो, करिनेसुकदृगलाल॥
कुलिशसमानलगतउरबाणा। दुर्धरगिरयोधरणिबिनप्राणा॥ केतुमालिलखिदुर्धरनाशा।धायोशरछावतदशआशा॥
कियेवंकभृकुटीअरुनेना। ठाढोरहुअसबोलतबैना॥ तजेबाणतबकृष्णकुमारा। मनहुँधरागिरअंबुधधारा॥
मरेतुरंगकट्योरथआशू। भयउकेतुमालीसुतनाशू॥ केतुमालितबचक्रचलायो। चक्रसुदर्शनकेसमभायो॥
उपरहिंकृदिगयोहरिनंदन। हन्योकेतुमालिहिंअरिदंदन॥ कट्योकेतुमालीकोशीशा। अचरजमानेदेवमुनीशा॥

दोहा–तहँप्रमुदितसुरसुंदरी, बर्षनलगींप्रसून। चारणअरुगंधर्वगण, गावनलागेदून॥

पद्धरी–तहँकेतुमालदुर्धरदुरंत। लखिवीरप्रमर्दनशत्रुहंत॥लैसकलसैन्यकरिसिंहनाद।धायेप्रकोपतजिमनविषाद
तोमरकुठारअरुभिंदिपाल। मुद्गरदुचक्रमूसलकराल॥हनिइकचारकियमहाशोर। तबधारिधनुपयदुपतिकिशोर॥
कलक्षदुलक्षत्रगलक्षबाण। पुनिसायकछोंडेबेप्रमाण॥ रिपुशस्त्रटूटिकटिभयेधूरि। नभमारगमेंशररहेपूरि॥
घिरिगेदिनेशभोअंधकार। धनुतेनिकरेशतशरनधार॥ इकइकदानवपरलाखबाण। जिमिशलभवृक्षपरबेप्रमाण॥
गेनदंतशुंडभेमदमतंग। तिनकेसवारहूँअंगभंग॥ रथरथीसारथीअरुतुरंग। कटिगयेलगतशरइकसंग॥
गजीसमेतमरिगेसवार। भेरुंडमुंडपैदलअपार॥ द्वैदंडमाहँदानवींसेन। यदुपतिकुमारमारीसचैन॥
तहँमाँचिरह्योहाहापुकार। बहिचलीबहुततहँरुधिरधार॥ पदकेअँगूठासोंधरेबाग। रथसमरगद्धिचहुँओरबाग॥
कोउजुरचोनभटप्रद्युम्नपाँहिं।नहिघाउलग्योकछुअंगमाँहिं॥तबशत्रुहंतरथकोचलाइ।लियकृष्णतनयकोशरनछाइ॥
पुनिहन्योहृदयमहँइकबाण। प्रद्युम्नभयोनहिंकंपमान॥यदुपतिकुमारतबशक्तिलीन।रिपुहंतहृदयतकिछोड़िदीन॥
सोलगतशक्तिरिपुहंतवीर। मरिगिरचोधरणिमहँपायपीर॥ तहँवीरप्रमर्दनखेदवंत। लखिसमरभयोरिपुहंतअंत॥

दोहा–वीरप्रमर्दनमुसललै, वोल्योवचनकराल। खड़ोरहैअबसमरमहँ, रेरुक्मिणिकोलाल॥

दानवशत्रुतोरपितुसाँचो। व्रजमेंजोगोपनसँगनाँचो॥ तोकोपुत्रमारिहोंआजू। परमदुखीहोईयदुराजू॥
सुतबधकरिअसुरनसुखदैहों।यदुवंशिनयमपुरहिंपठैहों॥ तेरोशोणितजलकरिलैहों। शंबरसुतनतिलांजलिदैहों॥
सुनिसुतबधभीषमककुमारी।रोदनकरीपुकारिपुकारी॥असकहिरुक्मिणिनंदनओरा।तज्योप्रमर्दनमुशलकठोरा॥
ताहिकूदिगहिकृष्णकुमारा। ताकिप्रमर्दनकोरथमारा॥ लागतमुशलभयोरथचूरा। सारथितुरँगगयेमिलिधूरा॥

दोहा–आपगदालैकूदिगो, हन्योगदासोंवीर॥ स्वईगदागहितेहिहन्यो, कृष्णकुँवररणधीर॥

लागतगदाप्रमर्दनशीशा। घटसमफूटिगयोअवनीशा॥ गिरचोप्रमर्दनमरिमहिमाँहीं। रहेनभटकोउठाढ़तहाँहीं॥
मृगराजहिंडरिजिमिगजराजा। तिमिभागीदानवनसमाजा॥हायहायह्वैरह्योतहाँहीं। लखिप्रद्युम्नरुकतकोउनाँहीं॥
कहँसबैअसवारहिंबारा। यहदानवकुलकालकुमारा॥ भगीसैन्यशंबरकीकैसे। नारिनवोढालखिपतिजैसे॥
शोणितमयीसैन्यभैभारी। मानहुँरजस्वलाहैनारी॥ हरिसुतकोरथचहुँकितचमकै। मनहुँश्यामघनदामिनिदमकै॥

सोरठा–निरखिसैन्यकोनाश, शंबरवोल्योसूतसों। यहिकुमारकेपास, लैचलुचपलचलायरथ॥

बचिहैबालककैसहुनाँहीं।निरखतनाइयोसचिवनकाँहीं॥सुनिसारथिशंबरकोशासन। ऋक्षनकोमारच्योद्रुतताजिन॥
लैरथधायेऋक्षतुरंता। गयेआशुजहँरतिकोकंता॥ शंबरकोआवतलखिवीरा। धरचोधनुपरतिपतिरणधीरा॥
दानवकोमारचोइकबाना॥हृदयफोरिकढ़िगयोमहाना॥ ह्वैकछुविकलबोठकिरथगयऊ।पुनिसम्हारिउठबैठतभयऊ॥
कोपितकठिनशरासनधारचो। सातबाणहरिसुतकहँमारचो॥बीचहिंकाट्योरिपुशरचंडा। सातहुँसातसातभेखंडा॥

दोहा–शंबरकहँसत्तरविशिख, मारचोकृष्णकुमार। पुनिहजारशरहनतभो, पुनिछोडीशरधार॥

जिमिघटशतछिद्रनजलधारा। तिमिधनुतेशरकढ़ेअपारा॥ रहेपूरिदिशिविदिशनबाना। अंधकारभोतहाँमहाना॥
लखिनपरेदिनकरतेहिकाला। मनुभादोंकीकुहूकराला॥तबशंबररविअस्त्रचलायो। रतिपतिकोशरजालजरायो॥
यदुनंदननंदनकोस्यंदन। शंबरछायोहनिशरवृंदन॥ शंबरबाणनतिलतिलकाटी। कृष्णतनयपुनिदियशरपाटी॥
पुनिशंबरकीन्ह्योतहँमाया। बरपिवृक्षप्रद्युम्नहिंछाया॥ कियमायाहरिसुतबड़भागी। लागीचहुँकितवर्षनआगी॥

दोहा–भस्मभयेजरिवृक्षसब, लखिशंबरबलवान। मायाकरिबर्षतभयो, रणमहँअमितपखान॥

छंद–तहँकृष्णकुँवरप्रवीर। प्रगट्योप्रचंडसमीर॥ उड़िगेसबैपापान। तबदानवेशरिपान॥
मायाकियोरणमाँह। बहुसिंहबाघवराह॥ ऊँटहुँतुरंगमतंग। धायेसबैइकसंग॥
तहँकुपितकृष्णकुमार। मायाकियोबलवार॥ प्रगटेपरेतपिशाच। लियखायकोउनहिंबाँच॥

तहँकालशंबरवीर। मायाकियोरणधीर॥ मदमत्तबहुमातंग। प्रगटेमहाउतसंग॥
धायेकुमारहिंओर। करिघोरशोरकठोर। प्रद्युम्नलखिगजयूह। छोड्योसुसिंहसमूह॥
तेगजनलीन्हेंभक्ष। नहिंपरेएकहुलक्ष॥ तबकालशंबरकोपि। मोहनीमायाचोपि॥
तजिदियोहरिसुतओर। तबप्रबलकृष्णकिशोर॥ मायासुसंज्ञानाम। तुरतहिंतज्योतेहिंठाम॥
भोमोहनीकोनास। दशआशप्रगट्योभास॥ मायासोसिंहीजोइ। रणतज्योदानवसोइ॥
धायेगरजिमृगराज। जहँखडोसुतयदुराज॥ शार्दूलमायाछोडि। लियसिंहमायाओडि॥
पगआठचोंचकराल। प्रगटेविहंगविशाल॥ लियकेशरिनकोखाय। एकहुपरेनदेखाय॥

दोहा-सिंहीमायानाशलखि, शंबरकियोविचार॥ चलतनकोनौयतअब, मरतनहींयहद्वार॥

ह्वायभलोमैंनाहिंविचारो। शिशुपनमेंजोमारिनडारो॥ सेइपालिमैंकियोतयारो। सोशठचहतमोहिंअबमारो॥
नागपाशजोहरमोहिंदीन्हीं। जोममरिपुनप्राणहरिलीन्हीं॥ तातेबाँधौंबालककाँहीं। औरउपायचलीअबनाँहीं॥
असकहिदानवलेअहिफाँसी। तज्योकृष्णसुतपरबलरासी॥ यदुनंदननंदनसुतस्यंदन। बाँधिगयेरणमहँअहिबंधन॥
तबमायागारुड़ीप्रवीरा। छोड्योकृष्णसुवनरणधीरा॥ पन्नगारिसबपन्नगखाये। सुरमुनिसबअचरजचितलाये॥

दोहा-लग्योसराहनशंबरहु, धनिधनिकृष्णकुमार। नागफाँसमेरीतजी, जोकरिदियोनिवार॥

पुनिशंबरशंकितसुरघालक।कियोविचारमरैकिमिबालक॥मुद्गरमोहिंगौरीइकदीन्हों।जेहिंनिशुंभशुंभहिंवधकीन्हों॥
परमप्रचंडअमोघकराला। नाशकशत्रुनबलीविशाला॥ सोईमोहिंह्वैहैसुखदाई। यहिबालककोआशुजराई॥
असविचारलियमुद्गरघोरा। तबदेवनकियआरतशोरा॥ डगीधरणिभेलूकनिपाता। दिशनभयोदिगदाहअघाता॥
ग्रहनलग्योशशिसूरजमाँहीं। सिंधुतजेनिजवेलाकाँहीं॥ मुद्गरभीमविलोकिकुमारा। ऐसोमनमहँकियोविचारा॥

दोहा-अबशंबरकेसमरमहँ, वैष्णवास्त्रकोकाम। जाकेसमदूजोनहीं, दायकसुखसबठाम॥

असगुनिवैष्णवास्त्रकरलीन्हों। मानहुँचहतप्रलयकरिदीन्हों॥ इतनेहिमेंशंबरबलवाना। मारेहुमुद्गरभीममहाना॥
हाहाकारकियोसुरवृंदा। मानहुँमरोरुक्मिणीनंदा॥ पैगिरिजाकीकृपामहाई। भयोमोघमुद्गरकुरुराई॥
लगतकंठमुद्गरभोमाला। कृष्णकुँवरछबिलह्योविशाला॥ तबशंबरतहँभयोनिराशा। छूटीसबविधिजीवनआशा॥
ष्णवास्त्रतबकृष्णकुमारा। शंबरदानवओरपँवारा॥ चल्योत्रिलोकप्रकाशहिछावत। कोटिसूर्यसमप्रभादेखावत॥

दोहा-दानवकेउरलगतभो, वैष्णवास्त्रअतिघोर। रथसारथियुतशंबरै, कियोभस्मतेहिठोर॥

शंबरभस्मनिरखिसुरवृंदा। जयजयकीन्हेंपायअनंदा॥ गानमनोहरसुरनउचारे। पूरिरहेदुंदुभीधुकारे॥
तहाँअप्सरानाचनलागी। कृष्णकुमारविजयअनुरागी॥ सुरमुनिभाषैंबारहिंबारा। ऐसोविक्रमकहुँनानिहारा॥
लयोजीतिजोकालहुकाँहीं। ताहिहन्योहरिसुतरणमाँहीं॥ अंबरतेशंबररिपुशीशा। वर्षहिंअमरप्रसूनमहीशा॥
गावतरतिपतिविजयसुखारे। सुरमुनिनिजनिजधामसिधारे॥ रुक्मिणिनंदनशंबरकेरो। भयोआठदिनयुद्धघनेरो॥

दोहा-शंबरारिहनिशंबरै, पुनिशंबरपुरजाय। मायावतिकोमोदयुत, दियवृत्तांतसुनाय॥

मायावतीपरमसुखपाई। हाथजोरिपुनिविनयसुनाई॥ चलहुद्वारकाकोसुखदायक। आपजनकजहँहैंयदुनायक॥
प्रद्युम्नहुँतथास्तुकहिदीन्हों।शंबरपुरतेगमनहिंकीन्हों१७-२४चलेअकाशअकाशहिदोऊ।रह्योसंगतीजोनहिंकोऊ॥
इकक्षणमेंयदुपुरमेंहआये। दंपतिअतिअनूपछबिछाये॥२५॥उतरिपरेअंतःपुरमाँहीं। यदप्रसंगजान्योकोउनाँहीं॥
निजनिजअंगनमेंछबिसानी। बैठीरहींकृष्णकीरानी॥दामिनिसमदमकेदोउआई। सबकेचखनचौंधिगोछाई॥२६॥

दोहा-वसनअनूपप्रलंबभुज, अरुणनैनघनश्याम। कोटिशशीसरिसदनछबि, ॥२७॥ लटकैंअलकललाम॥

तियजानोआयेयदुराई। जहँतहँरहींलजाइलुकाई॥२८॥२९॥ पैटारिकैसैंगमेंइकनारी। नहिंसोतिसबहियेविचारी॥
पुनितहँचीन्हिकप्रद्योपदकोदे।यदुपतिसमसबकोमनमोदे।तहँरुक्मिणिअतिशयदुखपागी।सबसोंवचनकहनअसलागी

मेरोसुतइककोउहरिलयऊ । सातदिनाकोवहजवभयऊ ॥ जोवहजीवतजगमेंहोई । तौऐसेहैहैसुतसोई
अथवाविधिगतिजानिनजाती । यहीहोयमोमतिअकुलाती ॥ याकोरूपअनूपमहेरे । स्रवतपयोधरतेपयमेरे ॥२
दोहा—काकोसुतयहहैसखी, हरिकेरूपसमान । केहिविधिआयोभौनमम, परतनहींकछुजान ॥ २१॥२२
इतनेमेंइकसखीसयानी । बाहरकोगमनीमतिमानी॥यदुपतिकोसवहालसुनायो।पुरुपएकअंतःपुरआयो॥२३॥२
प्रभुआयेअंतःपुरधाई । मातपिताकहँसवपरिजनाई ॥ तहँवसुदेवदेवकीरानी । आतुरआयेविस्मयमानी
बलभद्रौतहँकोपितधाये।अंतःपुरकहँआशुहिंआये॥२५॥यदपिजानिलीन्हींयदुराई । तदपिकह्योकछुनाहिंलजाई
तवनभतेनारदतहँआये । मुनिकहँदेखिसवैशिरनाये ॥ कह्योऋपीशमंदमुसक्याई । निजसुतजानहुँनहिंयदुराई
दोहा—जाकोशंवरहरिलयो, सूतीगृहमेंआय । सोइकुमारयहरावरो, लेहुनकसउरलाय ॥
मारिकालशंवरहिंकुमारा।नारीसहितभौनपगुधारा॥२६॥मुनिनारदकीगिरासोहाई । रुक्मिणिअतिशयआनँदपाई
औरहुकृष्णचंद्रपटरानी । शंवरवधअतिअचरजमानी ॥ मिलैंहेरानसुधाजिमिआई ।पुत्रवधूपुत्रहिंतिमिपाई ॥२७
रुक्मिणिदौरिदुहुनउरलाई । नैननआनँदनीरवहाई ॥ नातिनतोंहुमिलेसुखमानी । श्रीवसुदेवदेवकीरानी
तहँवलभद्रहुआनँदपाई । सुतकहँलियेगोदवैठाई ॥ वारवारमुखचुंवनकरहीं । शिरसूँघहिंदृगमुदजलढरहीं
दोहा—पुत्रवधूअरुपुत्रको, पुनिरुक्मिणीलेवाय । करिपरछनिमणिमंदिरै, दीन्ह्योंसुखितटिकाय ॥ ३८॥
आयोशंवरमारिकै, यदुनंदनकोनंद । द्वारावतिवासीसुनत, पायेपरमअनंद ॥ ३९ ॥
सवैया—रूपअनूपमजासुविलोकतमोहिगईसिगरीमहतारी । कृष्णकोनंदनदुष्टनिकंदनहैजगवंदनआनँदकारी ॥
यौवनअंगप्रभावपसारिविमोहतहैतिहुँलोककिनारी । कौनअचर्जअहैरघुराजजोमोहिगईतेहिंसँगनिहारी ॥४०॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि
राजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनं
दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे पंचपंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५५ ॥

दोहा—कहिरतिपतिउत्पतिकथा, श्रीशुकअतिसुखपाय । कुरुपतिकोपुनिमुनिकथा, दीन्हीसकलसुनाय ॥

श्रीशुक उवाच ।

यदुपतिकोकीन्ह्योंअपराधा ।सत्राजितदुखपायअगाधा॥आपहिंतेउपाययहकीन्हों । कन्यासहितस्यमंतकदीन्हों॥
पुनिकुरुपतिकरजोरिवहोरी । श्रीशुकदेवहिंकह्योनिहोरी ॥ १ ॥

राजोवाच ।

हरिकोकौनकियोअपराधा॥सुतादईकससुछविअगाधा॥केहिविधिमिलीस्यमंतकताको। कहहुनाथपुजवहुआशाको
सुनतपरीक्षितकेवरवैना । कहनलगेशुकदेवसचैना ॥२॥

श्रीशुक उवाच ।

यदुवंशीसत्राजितनामा । रविकोभक्तभयोमतिधामा ॥ कियोभानुकीअतिसेवकाई । भेप्रसन्नआशुहिंदिनराई ।
दोहा—दईस्यमंतकमणिमहा, सत्राजितहिंदिनेश । प्रगटतसुपरभावभो, देशनदेशनरेश ॥ ३ ॥
सत्राजितमणिकंठहिंधारे । रविसमानपरकाशपसारे॥गयोद्वारिकहिंजहँयदुराई । तेजवलितनहिंपरदलखाई ॥ ४ ।
सत्राजितप्रविश्योपुरजवहीं । नगरवाटदेखैंतेहितवहीं ॥ दूरहितेलखितेजविशेषी । लियेमूँदिदृगसकेनदेखी ।
गुनिभूरजनगरीमहँआये । वाटकयदुनंदनपहँधाये ॥ सभासुधर्मामेंतेहिंकाला । लगोरहेदरवारविशाला ।
वैठेउग्रसेनमहाराजा । यदुवंशिनकोसर्जोसमाजा ॥ तहाँकनकसिंहासनमाँहीं । वैठेश्रीयदुराजसोहाहीं ॥
दोहा—खेलतचौपडप्रभुरहे, सात्विकउद्धवसंग । दौंवरामलेतेरहे, करिविनोदबहुरंग ॥

हँजाइअसकियेपुकारा । बारबारबारहिंतेबारा ॥ ५ ॥ चक्रगदाधरअंबुजधारी । यदुनंदनगोविंदमुरारी ॥
मोदरअरविंदविलोचन । नारायणदासनदुखमोचन॥हमसबकीप्रभुलेहुसलामा।सुनहुनाथइकविनयललामा ॥६॥
म्हरेदरशहेतुरविआवत । द्वारावतीतेजनिजछावत ॥७ ॥ हेरैत्रिभुवनमहँतुमकाँहीं । सुरपालकपावहिंकहुँनाहीं ॥
दुकुलप्रगटतुमहिंप्रभुजानी । आवहिंदरशहेतसुखमानी ॥ ८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दुनंदनसुनिबालकबानी । बोलेविहँसिचरित्रहिंजानी ॥

दोहा—बालकसोदिनकरनहीं, हैसत्राजितसोय । धरेस्यमंतककंठमें,तेहिंप्रकाशयहहोय ॥ ९ ॥

रबालकसुनियदुपतिबैना । गवँनेअपनेअपनेअयना ॥ सत्राजितआयोनिजधामा । देवहुदानपूरिद्विजकामा ॥
वसदनमहँप्रविशिसुखारी।तहाँदानदैविप्रनभारी॥करिदर्शननिजमंदिरआयो।यतनसहितसोमणिहिंधरायो ॥ १० ॥
नतप्रतिआठभारचामीकर । उत्पतिकरतिस्यमंतकसुखकर॥जहँपूजितमणिरहैनरेशा । मारीनहिंआवैतेहिंदेशा ॥
र्परोगकीभीतिनहोवै । अरुदुर्भिक्षअमंगलखोवै ॥ रहैनताकेनिकटकुचाली । जहाँस्यमंतकआभामाली ॥ ११ ॥

दोहा—सत्राजितसोइकसमै, गोयदुपतिदरबार । करिप्रणामबैठतभयो, पायपरमसतकार ॥

तबयदुनाथकहीअसबानी । सुनियेसत्राजितबड़ज्ञानी ॥ सुमणिस्यमंतककोकरिनेहू । उग्रसेनमहराजहिंदेहू ॥
यहअमोलमणिपरतनिहारी । भूपहिंहोतरत्नकोहारी ॥ सुनियदुनाथवचनअभिमानी । सत्राजितबोलेहुअसबानी ॥
इयदुनाथतुम्हारसुभाऊ । नीकवस्तुलखिहठिअपनाऊ॥ नहिंराजाहितहममणिलाये । महापरिश्रमकरियहपाये ॥
सुनतवचनभेयदुपतिमौना । सत्राजितउठिगोनिजभौना॥१२॥रह्योप्रसेनतासुइकभाई।सोकरिकैअतिशयचपलाई॥

दोहा—पहिरिस्यमंतककंठमें, खेलनगयोशिकार । तहँकाननमेंसिंहके, नेजाकियोप्रहार ॥ १३ ॥

भयोकेशरीघायलघोरा । धरचोप्रसेनहिंसंयुतघोरा ॥ मारिप्रसेनहिंलैमणिराजा । गिरिकंदराघुस्योमृगराजा ॥
जाम्बमानतहँऋक्षअधीसो।रहतरह्योतेहिंगुहाबलीसो॥सोआशुहिंसिंहहिंवधकीन्ह्यो।रतनस्यमंतकदुहितहिंदीन्ह्यो॥
जाम्बवतीमणिखेलनलागी । धायसंगअतिशयअनुरागी॥गेदिनदुइप्रसेननहिंआयो।तबसत्राजितअतिदुखपायो१५॥
गोपितकहनलग्योयहबाता।मणिहितभ्रातहिंकृष्णनिपाता॥भ्रातपहिरिमणिगयोशिकारा।कियोपापवसुदेवकुमारा॥

दोहा—सत्राजितकेवचनसुनि, पुरजनकानहिंकान । कृष्णहिंलग्योकलंकयह, असलागेबतरान ॥ १६ ॥

कहतकहतकोउहरिसोंकहेऊ । यहकलंककेसेतुमलहेऊ ॥ वृथाकलंकसुनतयदुराई । मनमहँबारबारपछिताई ॥
सोकलंकमेटनयदुनाथा। काननगेपुरजनलैसाथा॥१७॥जहँप्रसेनहिंकेशरिमारचो।सोथलपुरजनसहितनिहारचो ॥
पुनिखोजतखोजतयदुराई । गयेशैलकेऊपरधाई ॥ तहँकेशरिलखिमृतकमुरारी । औरहुइकागिरिगुहानिहारी॥१८॥
गुहाद्वारकरिपुरजनठाढ़े । यदुपतिगुहाघुसेतमगाढ़े ॥१९॥ गयेदूरिनाशतअँधियारा । प्रगटतरविसमतेजअपारा ॥

दोहा—तहँदेख्योइकबालवर, मणिधारेनिजकंठ । खेलतधात्रीसंगमें, शोभाजासुअकुंठ ॥

मणिहिंछोड़ावनलगेमुरारी।तबडेरायअतिधायपुकारी२०॥यहअपूर्वनरकहँतेआयो । बालकंठमणिचहतछोड़ायो ॥
जाम्बवानसुनिआतुरधाये।यदुपतिनिकटकोपिअतिआये॥प्राकृतपुरुषऋक्षपतिजान्यो।करनयुद्धमनठीकहिठान्यो॥
प्रथमभयोआयुधसंग्रामा । हनेपपानफेरिबलधामा ॥ ऋक्षनाथयदुनाथप्रवीरा । हनेवृक्षपुनिदोउरणधीरा ॥
रहेनद्रुमआयुधपाषाना२२भुजनभिरेभटदोउबलवाना॥लरेमाँससहितजिमियुगबाजा।तैसहिंऋक्षराजयदुराजा॥२३॥

दोहा—अट्ठाइसदिनरातिलौं, लरेयुगलबलधाम । थापमुष्टिप्रहारकरि, लियेनकछुविश्राम ॥ २४ ॥

कृष्णमुष्टिलगिवज्रसमाना । बूढ़ेजाम्बवानबलवाना ॥ थकिगोभयेशिथिलसबअंगा।डरतेलरतयोयुद्धउमंगा॥२५॥
तबविचारकीन्ह्योंमतिमाना । येहैंपरमपुरुषभगवाना॥ऋक्षराजयदुपतिकहँचीन्हीं । नारहिंनारविनयअसकीन्हीं ॥
हमजानाहितुमकोभगवान॥सबभूतनकेतुमबलप्रान॥विष्णुजगतपतिपुरुषपुराना२६ जगसिरजकतिरणकहमजाना

कालहुकेतुमकालकराला । ईशहुकेतुमईशविशाला ॥ लोकनपालनपालनकरहू।प्रभुअनंतगुणनामहिंधरहू ।

दोहा—आतमकेआतमअहो, कारणकारणनाथ । तुमसमदीनदयालको, म्वहिंप्रभुकियोसनाथ ॥ २७ ॥

सवैया—नेसुकहीभृकुटीनकेफेरतनकनचकनधारणवारो । भीमभयावनभारीमहोदधिमारगदेतभयोहलचारो
उज्ज्वललंककरीयशतेहितदासविभीषणरावणमारो । श्रीरघुराजसोईरघुराजगरीबनेवाजभोनंददुलारो ।

दोहा—ऋक्षराजजान्योहमें, यहजान्योयदुराज । करुणाकरकरकरहिंकारि, मेटोव्यथादराज ॥ २९ ॥

[illegible] । जानिभक्तकरिकृपामहाई ॥३०॥ पुरजनमृपाकलंकलगाये।ऋक्षराजमणिहितहमअ

[illegible] । सत्राजितहिंदेहुँमेंजाई ॥ ३१ ॥ जाम्बवंतसुनियदुपतिबैना।मणिसमेतदियसुतासु

[illegible] । शीलसुभावभरीछविधामा ॥ ३२ ॥ दरीदुरेद्वादशदिनबीते।पुरजनसकलदुखीभेभ

[illegible] । दुरेदरीदेवकीदुलारे ॥ ३३ ॥ सुनिवसुदेवदेवकीरानी । कियेविलापमहादुखमा

दोहा—ज्ञातिबंधुमंत्रीसुहृद, कीन्हेंपरमविलाप । रुक्मिणिहूँअतिशयलह्यो, दुसहशोकसंताप ॥ ३४ ॥

सत्राजितहिंदेहिंबहुगारी । यदुपतिकहँशठदियोनिकारी ॥ मरयोकहाँयाकोधौंभाई । मिथ्यादियोकलंकलग

सकलद्वारकापुरीनिवासी । दुखितकृष्णकेदर्शनआसी ॥ जायभवानीमंदिरमाँहीं । विधियुतपूजनकियेतहाँ

हरिआवनहितसबहिंमनाये।बारहिंबारगौरिगुणगाये॥३८॥प्रगट्योगौरिप्रभावमहाना।नारिसहितआयेभगवाना।

निरखिकृष्णइमिभयेसुखारे।मनुसुखमृतकअमृतकोउडारे॥नारिसहितधारेमणिकंठा।पुरप्रवेशकीन्ह्योंवैकुंठा ॥

दोहा—मातुपिताकेवंदिपद, सभामध्यपुनिजाय । उग्रसेनमहराजढिग, सत्राजितहिंबोलाय ॥

मणिमिलिबेकीकथासुनाई।पुनिमणिकहँसबजननिदेखाई॥सत्राजितहिसौंपिप्रभुदीन्ही।सोलजायअधमुखकरिलि

गयोभवनकहँअतिपछिताई।सिगरीरैनिनींदनाहिंआई ॥३९॥ लग्योविचारकरनमनमाँहीं।मोसोंबनोकामकछुनाँहिं

कैसेयदुपतिकरहिंप्रसादा।केहिविधिमिटैमोरअपवादा॥४०॥मैंमतिमंदस्यमंतकलोभी।भयोसभामधिआजुअशो

मेरीजोदुहितासतिभामा।ताहिव्याहिहरिदेहुँललामा॥तबकलंकमेरोमिटिजैहै।यदुपतिकोप्रसन्नचितह्वैहै ॥४१॥४

दोहा—सत्राजितअसठीकदै, हरिकहँसुताविवाहि । दायजमेंमणिकोदियो, लह्योमोदमनमाँहि ॥ ४३ ॥

यदुपतिकीन्ह्योंसपदितहँ, सतिभामाकोव्याह । जासुसरिसनहिंसुंदरी, त्रिभुवनमहँनरनाह ॥ ४४ ॥

सत्राजितसोंहरिकह्यो, राखहुमणिनिजभौन । हमतोफलभागीअहैं, हमहिंकाममणिकौन ॥ ४५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ
दशमस्कंधे उत्तरार्धे षट्पंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—लाक्षागृहमेंपांडवन, दियदुर्योधनजारि । सुनतहस्तिनापुरगये, संगहिंरामसुरारि ॥

पांडवबचेयदपियहजाने । तद्यपिउचितगमनउरआने॥१॥जायहस्तिनापुरगिरिधारी । मिलेविदुरभीषमगांधारी ।

द्रोणाचार्यकृपाचारजको । औरहुभूपअंधआरजको ॥ तेपांडवनशोकसोंभीने । रामकृष्णलखिरोदनकीने ।

हरिबलशोकितभयेसमाना । कह्योहायभोकष्टमहाना॥पुनिसबसोंमिलिलहिसतकारा।रहेकछूदिनशौरिकुमारा॥२

इहाँद्वारकामेंकुरुराई । कृष्णगमनकोअंतरपाई ॥ कृतवर्माअक्रूरदोउजाई । शतधन्वासोंगिरासुनाई ॥ ३ ॥

दोहा—हमकोकन्यादेनकहि, सत्राजितमतिमंद । दीन्हीव्याहिमुकुंदको, कपटीकीन्ह्योंफंद ॥

तातेसत्राजितकहँमारी । लेहुछोडाइस्यमंतकभारी ॥ ४ ॥ सुनिअक्रूरकृतवर्मकिबानी।शतधन्वाकुबुद्धिउरआनी॥

[illegible] । गयोअकेलछोडिसबसाथे ॥ सोवतसत्राजितकोशीशा । काट्योछागसरिसअवनीशा॥५॥

लैमणिअपनेअयनसिधाख्यो।नारीआरतशोरपुकारयो॥नारीरुदनसुनतसतिभामा।लियोखबरिजागीनिजधामा।
सुनिपितुवधअतिशयदुखपायो।हायतातअसवचनसुनायो।रोवतमोहतिभोदुखभारी।शतधन्वहिंदीन्हीबहुगारी।
दोहा-पुनिडोंगीमहँतेलभरि, पितुशरीरतेहिराखि। चढिशिबिकाहस्तिनपुरै, चलीचपलअतिमाखि॥
ुपतिरामनिकटसोजाई। दियोपितावधदुखितसुनाई॥८॥सुनिवधश्वशुरकेरदोउवीरा।करतविलापवहतदृगनी
नेस्यंदनचढ़िद्रुतयदुनंदन।भीषमद्रोणआदिकरिवंदन॥लियसमुझायसंगसतिभामै।अरुचढ़ायनिजरथमेंरामै।
रुकसोंअसकहयदुराई। आजुदेहुनगरीपहुँचाई॥ सुनिदारुकहनिकशातुरंगे। चल्योद्वारिकेमारुतसं
रचलेसंध्यापुरआये। शतधन्वहिपुरमहँखोजवाये॥शतधन्वासुनिहरिबलकोपू।जान्योअवाशिहोतममलोपू॥१
दोहा-प्राणवचावनहेतुडरि, गोकृतवर्मसमीप। कह्योवचावहुमोहिंअब, हैयदुनाथप्रतीप॥ ११॥
वकृतवर्मकहीयहवाता। करिहरिवैरकोमंगलपाता॥ हमतोहरिसोंवैरनकरिहैं। तेरेसँगकसकुलहिंउखरिहैं॥१
दुपतिसोंकरिवैरहिकंसा।मरयोराजद्वैगईविध्वंसा॥सत्रहवारजरासुतहारयो।कृष्णसकलदलतासुसँहारयो॥१
ठहुआशुहमरेगृहतेरे। तोहिंवचावनवलनहिंमेरे॥ तवशतधन्वाअतिदुखपाई। जायअक्रूरहिंगिरासुनाइ
थमहितुमअरुभटकृतवर्मा। मोहिंकरायोकुत्सितकर्मा॥ करहुनतुमकसमोरिसहाई। मारहिंमोकोअवयदुरा
दोहा-तवअक्रूरबोलेवचन, नहिंजानहिंमतिमंद॥ १४॥ सिरजतपालतसंहरत, यहिजगकोयदुनंद॥
जेनकीगतिविधिशिवहुनजानै।तिनसोंकसविरोधहमठानै॥१५॥सातवर्षकेजेयदुराई।इककरसोंलियशैलउठाई १
तेनकोवारवारपरणामा। कृष्णअनंतआदिअभिरामा॥ तेरेहितहमनहिंमरिजैहैं। प्रभुसोंकहँपरायवचिजैहैं॥१
उठमेरेगृहतेमतिमंदा। मोहूँकोफाँसतनिजफंदा॥ तवशतधन्वाअतिदुखपाई। अक्रूरहिंमणिदैपछिता
ह्वैसवारइकचपलतुरंगा। भाग्योपूरवकाँपतअंगा॥ १८॥ शतधन्वाभागनसुधिपाई। द्रुतरथचढ़िरामहुँयदुरा
दोहा-शतधन्वापीछेलगे, कीन्हेंकोपअपार। कहँभरिजैहैभागियह, असमनकियेविचार॥ १९॥
शतधन्वाभाग्योशतयोजन। आयोजवहिंजनकपुरउपवन॥तवतुरंगमरिगोतेहिठामा।गयेपहुँचियदुपतिअरुराम
निरखिकृष्णकोअतिभयपाग्यो।पैदलशतधन्वातवभाग्यो॥२०॥रथतेकूदिदौरिगिरिधारी।हन्योचक्रशतधन्वहिंभ
गिरयोधरणिमहँगोकटिशीशा।आयतासुढिगयदुकुलईशा॥ताकेवसननमाहँमुरारी।मणिकोहेरनलगेविचारी॥२
जवमणिमिलीनतवगोहरायो।वड़ेभाग्यहमरतननपायो॥शतधन्वाकोहन्योवृथाँहीं।मणिधरिआयोयहगृहमाँहीं२
दोहा-सुनतवचनश्रीकृष्णके, कीन्ह्योंरामविचार। मोहूँसोंचोरीकरत, चंचलबंधुनमार॥
असविचारिरथतेगोहरायो। भलीभईजोरतननपायो॥ यहमणिअपनेपासनल्यायो। नगरीमहँकाहूदैआयो
तातेयदुनगरीतुमजाहू। खोजिलीजियेमणियदुनाहू॥२३॥तुमविदेहकोचहेंनिहारे। मोहिंजनकलागतअतिप्य
असकहिस्यंदनतजिबलरामा।प्रमुदितगयेजनककेधामा॥२४॥सुनिविदेहवलभद्रअवाई। लीन्ह्योंपुरवाहरअगुअ
पूजनकीन्होंविविधिप्रकारा। प्रेमसहितपुनिचरणपखारा॥ पुनिरामहिंगृहगयेलेवाई। तहँकीनीवहुविधिसेवका
दोहा-वसतभयेकछुकालतहँ, अतिमोदितवलराम॥२५॥ दुर्योधनतहँआयकै, करिचरणनपरणाम॥
सिखीगदाविद्यावलपाँहीं।कियसतकारजनकतेहिकाँहीं२६उतशतधन्वहिमारिमुरारी।तासुवसनमहँमणिननिहा
चढिस्यंदनद्वारकेसिधारे। सतिभामासोंवचनउचारे॥ हममारेशतधन्वहिप्यारी॥तासुपासमेंमणिननिहारी॥२
असकहिपुनिसत्राजितकेरो। प्रेतकर्मकरवायपनेरो॥ वसेद्वारकामहँसुखपागे। मणिकोखोजकरावनलागे॥२
शतधन्वावधसवरीहिपाई। कृतवर्माअक्रूरडेराई॥ भगेद्वारकातेदोउवीरा। काशीमहँदोउवसेअधीरा॥ २९
दोहा-यदुपुरतेजवतेगये, काशीकहँअक्रूर। होनलगेतवतेतहाँ, महाउपद्रवक्रूर॥ ३०॥
असकोउकहँमुनीशमहीशा।जानहिंनहिंप्रभावजगदीशा॥होउजासुनामहितेमंगल।तेहरिजहँतहँकोनअमंगल॥३
वाराणसीदेशइककाला। अनावृष्टिभेदुसदकराला॥ ह्वैवृष्टिश्वफल्कहिंआये। काशिराजअसगुनिसुखपाये

बहुश्वफल्कहिंव्याहिकुमारी। गमनततिनहिंवृष्टिभैभारी॥गांदिनिनामसुताछविवारी।सोअक्रूरकेरिमहतारी ॥३
जहँजहँजातरहेअक्रूरा। सोइप्रभावघनतहँजलपूरा॥ प्रगटैनहिंतिनदेशनमारी। होइनकछुउतपातहुभारी ॥३

दोहा–असवृद्धनवाणीसुनत, यदुपतिकहँअसबैन। यतनैभरकारणनहीं, मणिहुँबिनादुखऐन॥

अक्रूरकहिंयदुपतिचारपठायो। काशीतेअक्रूरबोलायो॥ करिसतकारवचनकहप्यारे।तुमअक्रूरहोककाहमारे॥३४
सबकेमनकेजाननहारे। पुनियदुपतिअसबैनउचारे॥३५॥ शतधन्वातुमकोमणिदैके। भाग्योइततेअतिभयकैकै
ककाप्रथमहमजान्योसोई। पैतुमसोंतवरारूयोगोई॥ ३६॥ सत्राजितकेनाहिंकुमारा। प्रेतकर्महमकियोअपारा
अहैउचितहमकोधनताको॥३७॥पैतुमराखोरत्नप्रभाको ॥ ब्रह्मचर्यधरिपूजनकरहू। तासुजनितधनसबघरधरहू

दोहा–यहीस्यमंतकहेतुहीं, दैकलंकमोहिंराम। ह्वैउदासमिथिलापुरी, बसेजनककेधाम॥ ३८॥

पैतुमइमकोदेहुदेखाई। जामेंममकलंकमिटिजाई॥ जोयहककहहुनहैहमपाहीं। मिल्योतोअसधनकहँतुमकाहीं।
करहुयज्ञरचिसुवरणवेदी।देहुदक्षिणाद्विजनअखेदी॥३९॥सुनिअक्रूरअसयदुपतिबानी।मधिदरबारस्यमंतकआनी।
सोलिवसनतेंहिंदियोदेखाई।रह्योप्रकाशसूर्यसमछाई॥४०॥हरिमणिकोसबजननदेखाई। अपनोदियोकलंकमिटाई।
पुनिमणिअक्रूरहिकहँदीन्हीं।सकलसभासदजयजयकीन्हीं॥जोकोउसुनतस्यमंतकगाथा।करतपाठअतिप्रेमहिंसाथ

दोहा–ताकोदुखनशिजातहै, अपकीरतिनहिंहोइ। सकलभाँतिमंगललहै, करहुनसंशयकोइ॥ ४२॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे सप्तपंचाशत्तमस्तरंगः॥ ५७॥

दोहा–द्रुपदगेहमेंप्रगटभे, पाँचौंपांडववीर। आयेहस्तिननगरमहँ, द्रुपदीयुतरणधीर॥

सोसुनिपरमसुखितयदुनाथा।सात्विकआदिकलैयदुसाथा॥हस्तिननगरगयेयदुराई॥१॥हरिआगमपांडवसुधिपाई॥
जेजसरहेतेतसउठिधाये। हरिअगमानिहेतुद्रुतआये॥ जैसेइंद्रीप्राणहिंपाई। चेतनहोंहिसकलसुखछाई॥ २॥
निरखिपांडवनकोयदुराई।भरिअनुरागदियोमुसक्याई॥ यदुनंदनकोवदननिहारी। सबपांडवअतिभयेसुखारी॥
प्रथममिलेसबएकहिंबारा।अनुचितउचितनरह्योविचारा॥३॥ धर्मभूपकहँयदुपतिबंदे। अरुभीमहुकहँपरमअनंदे॥
पुनिअर्जुनहिंमिलेसुखधामा। माद्रीसुतदोउकियेप्रणामा॥ ४॥

दोहा–पुनिपांडवअपनेअयन, यदुपतिकहँपधराय। पूजनकीन्हेंप्रेमभरि, सिंहासनबैठाय॥

पुनिद्रौपदीपरमसुकुमारी।लज्जितयदुपतिनिकटसिधारी।मंदमंदपदवंदनकीन्ह्यो।अपनोजन्मसफलगुनिलीन्ह्यो॥५॥
पुनिपांडवसात्विकउरलाई। पूजेसादरतेहिंबैठाई॥ पुनिपांडवनकेरकरगहिके। लियबैठायबैनमृदुकहिके॥
बारबारयदुपतिमुखदेखे। धन्यधन्यअपनेकहँलेखे॥ ६॥ पुनिप्रभुकुंतीनिकटसिधारे। करिवंदननैननिजलढारे॥
कुंतीहरिकहँलियेलगाई। पूछीविविधभाँतिकुशलाई॥७॥ यदुपतिहूँपूछीकुशलाता। प्रेमविवशमुखकहीनबाता॥

दोहा–भयेविलोचनसजलयुग, भरिआयोगलतासु। प्रेमविवशकछुक्षणविकल, पुनिसम्हारिउठिआसु॥

पूर्वकलेशनसुमिरिसयानी।दोउकरजोरिकहीअसबानी॥८॥कृपाराबरीममकुशलाई। पठयोममसुधिहितममभाई॥९॥
तबतेहमसबहैंअनंदा। छूटिगयोसिगरोदुखदंदा॥भ्रातअक्रूरआइमोहिंपाहीं।कहितुववचनदल्योदुखकाहीं॥१०॥
नहिंतुवशत्रुमित्रजगगामी।जगतमित्रहोअंतर्यामी॥तद्यपिदासनदीनदयाला। सुमिरतटरहुकलेशकराला॥
धर्मभूपपुनिकहकरजोरी।भैबड़भागआजप्रभुमोरी॥कीन्ह्योंकौनसुकृतनहिंजानो। आवतनहिंकछुमनअनुमानो॥

दोहा–जाकोयोगीयोगबल, दर्शनपावतनाँहि। सोदरशनप्रभुरावरो, मैंकियइनदृगमाँहि॥ ११॥

धर्मराजकीसुनिप्रभुबानी। मोदितभयेपरमप्रियमानी॥ भूपविनयसुनिरमानिवासा। कियनिवासपावससोमासा॥
निगमनिसागिननाथा।निजदर्शनदैकियोसनाथा॥१२॥ एकसमययदुनंदनकाहीं। लैअर्जुनचढ़िस्यंदनमाहीं॥
[illegible]रथवेगप्रवेगहिंतगहनगँभीरा॥व्यालमृगनमयकाननघोरा।तहँप्रवेशकियपांडुकिशोरा॥१३

तहँखुलिखेलनलगेशिकारा। अर्जुनअरुवसुदेवकुमारा॥ हनेबाघअरुरोझवराहा। सामरहरिणमहिषमृगनाहा॥
दोहा-खड्गीस्याहीशशकहनि,॥ १५॥ जानिपर्वदोउवीर। शुचिआमिषजनहाथदे, भेज्योजहँनृपधीर॥
तहँदोउवीरनलगीपियासा।थाकिगयेअतिपरेप्रयासा॥तवगमनेयमुनासरितीरा॥ १६॥ कीन्हेंपानसुधासमनीरा॥
वदनधोइकरचरणपखारे। शीतलछायाघामनिवारे॥ तहँइकसुंदरिलखीकुमारी। यमुनातटबैठीतपधारी॥
तबअर्जुनसोंकहयदुराई।पूँछहुकुँवरिकाँहिढिगजाई॥१७॥जायकुमारीनिकटकिरीटी।पूछनलगेनयनखँजरीटी१८॥
अहोकौनितूँकसइतआई।केहिहिततपधारेचितलाई॥ हमहिंजानिअसिपरतकुमारी। तुमतपकरहुकंतहितभारी॥
दोहा-जबपारथपूछतभये, मंदमंदमुसक्याय। धन्याकन्यातबतुरत, दीन्ह्योंवचनसुनाय॥ १९॥

कालिंद्युवाच।

हमहैंभानुसुताधनुधारी।त्यहिंहितकरहुँतपस्याभारी॥ होहिंहमारकंतगिरिधारी।दूजीनहिंअभिलाषहमारी॥२०॥
मरिहौंवरुवरिहौंनहिंदूजो।विनहरिजिनपदविधाशिवपूजो॥२१॥कालिंदीहैनामहमारा।पितुविरच्योजलमाहँअगारा।
जबलोंमाधवनहिंवरिलैहैं।तबलोंइततेहमनहिंजैहैं॥ २२॥ तबअर्जुनहरिपहँफिरिआये। कालिंदीकेवचनसुनाये॥
तबयदुवरकरिकृपामहाई।कालिंदीनिजरथैचढ़ाई॥नृपतिनिकटअर्जुनयुतआये।लखतयुधिष्ठिरअतिसुखपाये॥२३॥
दोहा-विशुकर्माकोबोलिपुनि, दियशासनयदुराय। पांडवपुरअनुपमरचहु, निपुणाईसरसाय॥
यदुवरकोशासनसोपाई। दियोअनूपमनगरबनाई॥ २४॥ तहाँवसेकछुकालमुरारी। दियोपांडवनआनँदभारी॥
अर्जुनसारथिह्वैयदुराई।खांडोवनदियअग्निजराई॥२५॥धनुतुणीरदियशिखिह्वैराजी।रथअभेदकवचहुसितवाजी २६
जरतबचायोमयदानवको। रचीसभासोसुखप्रदसबको॥ जौनीसभामाहँकुरुराई। दुर्योधनजलथलभ्रमपाई॥२७॥
माँगिविदापुनिधर्मराजते। औरहुसबसुहृदनसमाजते॥ सात्यकादिवीरनसँगलीन्हें।द्वारावतीगमनप्रभुकीन्हें॥२८॥
दोहा-नगरआयशुभलग्नमें, कालिंदीकोव्याह। करतभयेविधिसहितप्रभु, पुरजनलहेउछाह॥ २९॥
विंदऔरअनुविंदसुवेशा। रहेअवंतीनगरनरेशा॥ रहेसुयोधनकेवशदोऊ। तिनकीभागिनिलैनचहसोऊ॥
दुर्योधनबोल्योतिनपाँहीं।यदुवरकोव्याहहुतुमनाँहीं॥हमहिंव्याहितुमदेहुकुमारी।करहुनयदुवरकोभयभारी॥३०॥
नामभित्रविंदाहैजाको। त्रिभुवनमेंअनूपवपुताको॥ ताहिस्वयंवरमध्यमुरारी। दुर्योधनदेखतधनुधारी॥
हरयोमित्रविंदहियदुराई। सबभूपनकोगर्वनशाई॥ ३१॥ धर्मधुरंधरअवधअधीशा। रह्योनग्नजितनाममहीशा॥
दोहा-कन्यासत्यानामकी, परमप्रभाकीजासु। भूपतिऐसोप्रणकियो, करनस्वयंवरतासु॥ ३२॥
जोकोउसातवृषभमदवारे। तीखनशृंगमहाबलधारे॥ नाथैइनकोएकहिंवारा। लेयसुतासोभूपकुमारा॥
यहप्रणसुनतपमंडाहिंछाये। भूपकुमारअवधपुरआये॥ नाथनलगेवृषभइकवारे।वृषभवलीतिनकहँहनिडारे॥३३॥
सुनिप्रणअवधभूपकोभारी।अवधनगरगवनेगिरिधारी॥चल्योसंगमहँकटकमहाना।चल्योसव्यसाचीबलवाना॥३४॥
सुनिअवधेशकृष्णआगमनू। मान्योसकलअमंगलदमनू॥ लीन्हेकछुचलिकैअगुवानी।सादरप्रभुहिंऐनानिजआनी॥
दोहा-प्रीतिसहितपूजनकियो, कौशलेशमतिमान। धन्यभाग्यअपनोगुनो, वारवारहरपान॥ ३५॥
तहाँझरोखनतेसुकुमारी। सत्यानिरखतभयगिरिधारी॥ लखिमोहितअसलगीमनावन।मोपतिहोइँपतितकेपावन॥
जोकछुममजपतपविधिजोवें।तौयदुनायकनायकहोवें३६जिनकेपदपंकजरजकाँहीं।विधिशिवरमाधरहिंशिरमाँहीं॥
रासनधर्महेतुमरयादा। लीलाकरहुदेहुअहलादा॥ ३७॥ पुनिहरिसोंबोल्योअवधेशा। कहाकरौंप्रभुदेहुनिदेशा॥
हेनारायणहेजगदीशा। सबविधिपूरणईशहुईशा॥ मैंलघुकहाकरनकेलायक।तुमसबविधिसमरथयदुनायक॥३८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-तबसिंहासनमेंलसे, मेघसरिसगंभीर। कौशलपतिसोंकहतभो, विहँसिवचनयदुवीर॥ ३९॥

श्रीभगवानुवाच।

मंधुरंधरजेनृपअहहीं। यावतिनहिंनिंदाकविकहहीं॥ तद्यपिमेंतुवप्रीतिनिदारी। माँगहुँनृपराबरीकुमारी॥

न्यामोलतुम्हैंनहिंदैहैं। वचनपूरकरिदुहितालैहैं॥ जवयदुनंदनआशयखोले। तबअवधेशमुदितपुनिबोले॥४०

राजोवाच।

मसेवरवरकोजगमाँही। देहुँजाहिमैंसुताबिवाही॥ गुणनिधितुम्हरेउरमहँकमला।करैंनिवासनिरंतरअमला॥४१॥
मकियेएकप्रणभारी।राजसुतनवलचहहुँनिहारी॥४२॥सातवृषभयेअतिवलवारे।येबहुराजसुतनकहँमारे॥४३॥
दोहा—एकसाथवृषसातहुन, जोनाथहुयदुनाथ। तौकन्याधन्याभई, मैंह्वैगयोसनाथ॥ ४४॥
कौशलपतिप्रणसुनताविशाला। मनमहँकियोविचारकृपाला॥ ऐसेखेलबहुतहमखेले। व्रजमहँगोपनसंगनवेले॥
असगुनिकस्योकठिनकटिफेंटो।उठेआशुलघुकारजसेटो॥सातरूपधरितहँयदुनाथा।नाथेसातवृषभइकसाथा॥४५॥
बाँधिदाममहँनृपढिगलाये।सातहुवृषभनगर्वनशाये॥खेलैदारुवृषभजिमिबालक।तिमिबाँधेवृषभनयदुपालक॥४६॥
अवधनरेशप्रीतिअतिछाई। दीन्हींब्याहिसुतायदुराई॥लियोकुँवरिकहँहरषिविहारी।वेदविधानसकलनिरधारी॥४७॥
दोहा—मतिमानीरानीतहाँ, पायकृष्णजामात। धन्यभाग्यअपनोगुनो, आनँदउरनसमात॥ ४८॥
बजेशंखनौबतिहुनगारे। द्विजवरआशिषवचनउचारे॥ नगरनारिनरआनँदपाये। भूषणवसनसाजिसबआये॥४९॥
दशसहस्रदियेधेनुभुवाला। त्रैसहस्रयुवतीमणिमाला॥५०॥ नौहजारहाथीमदमाते। रथनवलाखसहितसुखमाते॥
दियोकोटिनवचपलतुरंगा।दियोपद्मनवभटजयजंगा॥५१॥सुतासहितयदुनंदनकाँहीं।दियचढ़ायनृपस्यंदनमाँहीं॥
प्रेमविकलदृगमुदजलढारा।रह्योनतनुकरतनकसम्हारा॥यहिविधिदंपतिकहँअवधेश।।बिदाकियेलहिमुदसरितेश॥
दोहा—तबजेसातहुवृपनते, हारेराजकुमार। तेयदुपतिकोव्याहसुनि, करिकैकोपअपार॥
किमिलैजैहैकृष्णकुमारी। असविचारसिगरेधनुधारी॥ मारगरोकिलड़ेभेघेरे। चहकारेनटभाटनकेरे॥५३॥
छोड़ेसकलविविधविधिबाना। छायलईयदुसैन्यमहाना॥ तबअर्जुनगांडीवटँकोरा। छोड़ीबाणधारअतिघोरा॥
एकहिवारसबनकहँमारे। औरहुसकलकटकसंहारे॥ जेबाँचेतेगयेपराई। जिमिमृगवनकेहरीडेराई॥५४॥
लैदायजअतिशयसुखछाये।यदुपतियदुनगरीकहँआये॥लह्योमोदअवधेशकुमारी।भईकृष्णकीअतिशयप्यारी॥५५॥
दोहा—श्रुतिकीरतिफूफूसुता, भद्राजाकोनाम। केकैदेशहिंसोभई, रहीसोछविकीधाम॥
ताकेभ्रातासकलमिलि, कृष्णहिंकियेविवाह। लायेयदुपतियदुनगर, पुरजनलहेउछाह॥ ५६॥
भद्रदेशमहिपालकी, सुतालक्ष्मणानाम। शुभलक्षणतेलक्षिता, सकलअंगअभिराम॥
ताहिशकेलेजायहरि, हरयोस्वयंवरमाँहिं। जिमिपियूषखगपतिहरयो, रोकिसकेसुरनाहिं॥५७
भौमासुरकोमारिकै, औरौसहसननारि। लायेयदुपतिअयनमहँ, शीलसुछविसुकुमारि॥५८॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे अष्टपंचाशत्तमस्तरंगः॥ ५८॥

दोहा—व्याससुवनकेवचनसुनि, तहँमुनिमध्यसमाज। भौमकथाकेसुननको, कह्योपरीक्षितराज॥

राजोवाच।

भौमासुरजेहिविधिहरिमारयो।लैबहुतियद्वारकैसिधारयो॥यहांत्रिविक्रमविक्रमभारो।मोसोंमुनिछिपायनहिंराखो।
सुनिकुरुपतिकेबैनसुहावन। बोलेव्यासमुतपावन॥ १॥

श्रीशुक उवाच।

कृष्णहिंभौमासुरबलवाना। कीन्ह्योंसुरपतिपुरहिंपयाना॥ देवननीत्योबिनहिंप्रयासा। शक्रछत्रहरिलियभयपासा।
।इन्द्रमातुअदितिकेकुंडल।लीनिसकलअमरावतिमंडल।सुरपुरविजयबजायनिशाना।प्राग्ज्योतिषपुरगोबलवाना
।गजनिभयदुसार। गजचढ़िद्वारवतीसिधारे॥

दोहा-सतिभामाकेभौनमें, मोदितरहेमुकुंद। द्वारपालतहँजायके, कीन्हीविनयअमंद ॥
नाथइंद्रठाढ़ेदरवाजे। आपभेटहितमणिगणसाजे ॥ शासनहोइतोसभासिधारे। नातोखड़ोरहैप्रभुद्वारे ॥
वासवआगमसुनियदुराई। कह्योल्याइयोवेगिबोलाई ॥ नाथवचनसुनिद्वारपधायो। वासवकहँहरिढिगपहुँचायो ॥
इंद्रहिंउठिप्रणामप्रभुकीन्ह्यों। सिंहासनआसनहितदीन्ह्यों ॥ पूँछनलगेनाथकुशलाई। तबवासवबोलेदुखछाई ॥
भौमासुरहमकोदुखदीन्ह्यों। कुंडलमातुछत्रममलीन्ह्यों ॥ शरणागतहमभयेतुम्हारे। रक्षकतुमबिनकौनहमारे ॥
दोहा-प्रभुवासवकेवचनसुनि, कह्योमंदमुसक्याय। कतअनाथइवशोचहू, हौममजेठेभाय ॥
मोदितह्वैअबसदनसिधारो। देखहुवासवयुद्धहमारो ॥ सुनियदुनाथवचनसुखपाई। सुरपुरकोगमनेसुरराई ॥ २ ॥
तबयदुपतिखगपतिहिंबोलाये। गमनकरनकहँमनमहँलाये॥तबकरजोरिकहीसतिभामा।हमहूँनाथलखबसंग्रामा ॥
हरितथास्तुकहिआयुधधारे। प्रियासहितभेगरुड़सवारे॥भौमनगरगमनेयदुराई। खगपतिक्षणमहँदियपहुँचाई॥३॥
प्रथमकोटपर्वतकरघोरा। गदामारिताकोप्रभुफोरा ॥ दूजोशस्त्रनकोटनिहारचो। ताकोबाणनवर्षिविदारचो ॥
दोहा-तीजोजलचौथोअनल, पँचयोंमारुतकेर। मारिसुदर्शनचक्रते, नाश्योलगीनबेर ॥
छठयोंमुरदानवकीफाँसी। नंदकतेयदुवरतेहिंनासी ॥ ४ ॥ कियोशंखकोशोरकठोरा। फूटिगईतहँतोपकरोरा ॥
कौमोदकीगदागहिमारी। शहरपनाहफोरिप्रभुडारी ॥५॥ मुरदानवखामाजलमाँहीं। सोवतरह्योशंककछुनाँहीं ॥
शंखशोरसुनिपरमकठोरा।भाग्योमुरदानवअतिघोरा॥लख्योपुरुपतियुतइकसुंदर।खगमहँचढ्योभानमनुमंदर६॥
लियत्रिशूलइकमहाकराला। मनुप्रगटीप्रलयानलज्वाला॥मुरदानवहरिसन्मुखधायो।मनहुँचहतत्रिभुवनकहँखायो॥
दोहा-पंचवदनविकरालस्रति, कज्जलशैलशरीर। खड़ेकेशदृगकूपसम, लखिसुरहोहिंअधीर ॥ ७ ॥
छंदगीतिका-अहिसरिसखगपतिनिकटचलिअतिविकटमारित्रिशूलहै।पुनिशोरघोरकठोरकीन्ह्योंपंचमुखनअतूलहै।
छायोसकलब्रह्मांडमहँसुरसुनतकीनपरावने। सागरउछलिवेलातज्योमुनिलगेस्वस्तिमनावने ॥ ८ ॥
लखिशूललैशारंगयदुवरकियोताहित्रिखंडहै। पुनिविपुलबाणकरालतेहिंसुखहनेसमयमदंडहै ॥
पुनिलैगदागिरिसीगरूगलतकिहनीगोपालके ॥ ९ ॥ तेहिंगदातकिनिजगदाछोडिगदाग्रजहुसमकालके ॥
रिपुगदाचूरचोसहसधावसुधामनोउल्कावली। तबकोपिमुरभुजकोउठायगराजकरिधायोबली ॥
यदुनाथचक्रप्रचंडलैकियमुंडपाँचोंखंडहै। जिमिकुलिशदलितगिरिंद्रगिरतोत्योंगिरयोजलरुंडहै ॥ १० ॥
दोहा-सातरहेमुरकेसुवन, मुरकेनहिंसंग्राम। पितुविनाशलखिकृष्णसों, भयेकोपकेधाम ॥ ११ ॥
वसुविभावसुवरुणअरु, श्रवणताम्रनभस्वान। अंतरिक्षयेसातहूँ, कियरणकोपिपयान ॥
छंदभु०-रह्योभौमसेनापतीपीठजो।दियोसंगरेमेंनहींपीठिजो॥कियोताहिआगेसबैकोपिकै।बड़ीसैन्यसाजेरणैचोपिकै॥
सबैकृष्णकेसन्मुखैधाइकै। तजेअस्त्रभारीढिगैआइकै ॥ गदाशक्तितेगैशरैशूलहै। हनेमूसलैतोमरौतूलहै ॥
विलोकेहरीशस्त्रकोआवते। तजेबाणभारीबड़ेचावते॥कियेहैंतिलैसेसबैशस्त्रको।लियोफेरिभासीमहाअस्त्रको॥१३॥
हन्योपीठिकोओमुरैपुत्रनै। कटेबाहुशीशौभुजावर्मनै ॥ गयेएकबारैयमैऐनको। द्रुतैहींसँहारचोसबैसैन्यको ॥
दोहा-जेबाँचेतेभागिगे, भौमासुरकेपास। अँगकाँपतविनतीकरी, भोप्रभुमहाविनास ॥
एकपुरुषपक्षीचढ़िआयो। सुंदरिनारिसंगमेंलायो ॥ सोसातौंकोटनकोफोरचो। मुरकोमारिदैत्यमदमोरचो ॥
पीठिसहितमुरकेसुतसातौ।आशुहिंसेनासहितनिपातौ॥सुनिकोपितभोधराकुमारा।सबवीरनकोआशुहँकारा ॥१४॥
लैमदमत्तमतंगहजारन। भौमासुरनिकस्योरणकारण॥लख्योगरुडपरतियुतकृष्णै।रविपरचपलायुतघनकृष्णै॥
हरिकहँलखिसोहँस्योठठाई। यहकोआयोस्वाँगबनाई ॥ नारीसंगविहंगसवारा। चारिबाहुधारेहथियारा ॥
दोहा-भौमासुरबोलतभयो, सिगरेभटनसुनाइ। यहिकामीकोमारिकै, तियकोलेहुछुड़ाइ ॥
भौमवचनसुनिभटसमुदाई। मारेहरिकहँतोपलगाई ॥ आयहुहन्योतोपकरधारी। माँचिरहीरणमहँधरारी ॥
लूकसमानचलेबहुगोला। बारांहबारभयेभूडोला ॥ गोलालगतगरुडकेअंगा। चूरचूरभेएकहिंसंगा ॥

दोहा—नीरजनैननननीरकत, ढारतिहैसुकुमारि । मुखमलीनममहोतहै, तुवमुखमलिननिहारि ॥
बरवै—केसररंगितसारीकततजिदीन । बिनाकालसितअंबरकसगहिलीन ॥
भूषणतेबिनभूषितअंगदेखात । बेगिवतावहुप्यारीजियअकुलात ॥
श्वेतवसनवरबाँधेभ्रकुटीवंक । धरणिसोहावनिकरतीतजिपरयंक ॥
तेरीरोपितचितवनिआयसुनीर । मेरेहियउपजावतिअतिशयपीर ॥
कसप्यारीनहिंबोलतिकेहिंअपराध । कसबोरहिमोहिंदुखकेसिंधुअगाध ॥
मंदविहँसिचितवैरीएकहुवार । करुमेरोहियशीतलकरुदुखछार ॥
अंजनयहमनरंजनभंजनशोक । वहतसलिलउरउपजतरंजहिओक ॥
मोरचकोरचखचाहततुवमुखचंद । मनामिलिंदमोहीतुवमुखअरविंद ॥
कौनचूकभैमोसोंदेहुवताइ । काहेदुखउपजावैवदनदुराइ ॥
हैजहाँनमहँजाहिरयहप्रियबात । सेवतसतिभामैहरिनिशिदिनजात ॥
सत्यसत्ययहभापहुँमृषानमान । मोकोऔरनप्रियकोउतुमहिंसमान ॥
दोहा—शशिपियूपधरणीक्षमा, रतिछविरविजसतेज । तिमितोसोंममनेहहै, तुवरुचिनितवधेज ॥
असमुनिप्रीतमकीमृदुवानी । कहतभईमृदुवचनसयानी ॥ मोकहँरह्योआजुलगधोखो।जान्योंकपटतोरनहिंचो
कारेकपटीहोहिंसदाँहीं । प्रीतिरीतिजानहिंकछुनाँहीं ॥ जानीआपरीतिहमभूरी । मुखमहँसुधाहृदयमहँ
चाहहुऔरनदाहहुमोहीं । जानिपरहुँमैंबावरितोहीं ॥ होगोपिनसँगकेखेलवारी । कैसेजानहुँरीतिहमारी
गोपिनकेधोसेयदुराई । हमहूँसोंकीजतचपलाई ॥ माखनदहीचोरावनवारे । कैसेजानहुगुणनहमा
दोहा—बालपनेकोरंकजो, होतभागवशराउ । ताकोकैसेहुमिटतनहिं, अपनोजातसुभाउ ॥
असकहिसत्राजितलली, ढारतिदृगजलधार । मुखहिंनिपटपटओटकरि, फिरिवैठीदुखभार ॥
हरिवहोरिनिजओरकरि, बारहिंबारनिहोरि । वदनओरचलिकहतभे, विरचतविनयकरोरि ॥
तेरोशोकअंगममजारे । कसकारणनहिंतासुउचारे ॥ मेरीशपथतोहिंहैप्यारी । जोकारणनहिंदेहिउचारी
तबनीचेकरिआननचंदा । सुंदरिबोलीमंदहिमंदा ॥ तुमहिंदियोमोहिंप्रथमसोहागा । हरचोतुगर्हितातेदुखलाग
सबतेअधिकमोहिंप्रियमाने । मोकहँअबसबतेलघुजाने ॥ नारदपारिजातसुमलायो । सोतुमरुक्मिणिशीशचढ़ा
सोहंअहैआपकीप्यारी । काहेकोसुधिकरहुहमारी ॥ नारदकीन्हीतासुबड़ाई । सोतुमसुन्योश्रवणमनला
दोहा—नारदकानानिहरे, अनुचितउचितउचार । भीखमाँगियरघरजिये, वनकोनिवसनहार ॥
जाहुरुक्मिणीनिकटमुरारी।जासोंकियोप्रीतिअतिभारी॥प्रथमप्रीतियहिममसुधिकीजे।तातपकरनसोंसमोहिंदे
अपनद्वारकामहँहमरेहं । तपकरिकाननतनुतजिदेहं ॥ जोलहिमानलहतअपमाना । अधमकोनजगताहिसमाना
जसकहिरुदनकरनपुनिलागी।हायनाथमैंसबकोंनत्यागी॥तुमहिंछोड़िहमकेहिवनजैहं।केहिविधिहमतनुकहँताविहं
नाहिंदिनाजनजानपननहं । सकलभाँतिदोउभाँतिनशतहं ॥ तातेतुममेंप्राणलगाई । तनुतजितुवततुगहिहं भा
दोहा—कंतलहोकपटीकठिन, कृपानकरुसुभाउ । काहेकोकुटिलकीजियतु, कोमलपनहेरागउ ॥
सुनतगन्यभामाकीबानी । मंदविहँसिकहशारँगपानी ॥ तुमतोहोस्वामिनममप्यारी । तुवअधीनहमहैंसुकुमारी
अकुसुमलसुननयननकठोर । कृपानगरानिकनाहियमोर॥अमाकरहुअपराधहमारो । कोमलअहैसुभाउतुम्हारो
दिपोहियहुसुनसुनिगहं । मोहिपरमरिसनिर्झजनहाहं ॥ तानेकहोंमरपमैंप्यारी । आशुहिअमरनिवासनिवारी
[illegible] । नाकनिराजिनगतंडनारी ॥ देहौंतेभवनलगाई । एकफूलकीकाहकहों
दोहा—[illegible] । अपतिलैंमरनकीनिपतु, कगनोंहिहुंहगाप ॥
[illegible] । [illegible]॥हमहैंनयअमननमहैंताने । मयनेअधिकमोहिं[illegible]

तबहरिकह्योकहीअवनीकी। करिहौंसकलरावरेजीकी॥ यहिविधिबीतिगईसबरजनी। आईसवेजगावनसजनी।
बंदीगणबिरदावलिगाये। खगरवचहुँकितमधुरसुनाये॥ तबउठिकरिमंजनशुचिनीरा। प्रातकर्मकरिकैयदुवीरा।
बैठेसतिभामागृहजाई। तहँआयेनारदमुनिराई॥ सतिभामायुततहँयदुराई। पूज्योविधियुतमुनिशिरनाई।

दोहा-नारदपदधोवनलगी, सतिभामानिजहाथ। सलिलसुखदढ़ारनलगे, लैझारीयदुनाथ॥

चरणपूजिआसनबैठायो। विविधभाँतिभोजनकरवायो॥ मुनिआशिपलैपुनियदुराई। भोजनकियोप्रियायुतजाई॥
पुनिबैठेनारदढिगआई। तबऋषीशअसगिरासुनाई॥ शासनहोइतौसुरपुरजाहूँ। बोल्योगानसुननसुरनाहूँ।
तबयदुनाथकह्योकरजोरी। सुनुदेवर्षिविनययहमोरी॥ कहियोवासवसोंअसजाई। आपअनुजनारीमनभाई।
माँग्योपारिजाततरुकाँहीं। देहुकृपाकरिकरहुननाँहीं॥कृष्णहुँकियतेहिंहितबहुविनती।कहँलगिकरौंतासुमैंगिनती।

दोहा-औरहुबहुविधिभापियो, सुरपतिसोंसमुझाइ। जामेंसुरतरुदेहिमोहिं, असतुमकिहोउपाइ॥

मैंतोवासवकोलघुभाई। लालनपालनयोग्यबनाई॥ सुरतरुलावनहमप्रणलीन्हें। पूरहोतवासवकेकीन्हें।
अबनहिंऔरकढ़ीमुखबाता। असतभयेप्रणअघगोयाता॥ कहिपुनिकियोमृपानाहिंकबहूँ।बालकरह्योनंदघरजबहूँ।
मिथ्याजोमेरोप्रणहोवै। सकलधर्ममरयादहिंखोवै॥ पन्नगयक्षसिद्धगंधर्वा। सुरराक्षसआदिकजेसर्वा।
सकेंनकोउमेरोप्रणटारी। राखहिंमोरसदाभयभारी॥ कहेहुप्रथमविनतीमुनिमोरी। वारबारवासवहिंनिहोरी।

दोहा-देइनहींजोदेवतरु, कीन्हेंसामउपाय। तौसुरपतिकोममवचन, ऐसहुदिहेहुसुनाय॥

देवदेवद्रुमजोनहिंदेहो। तौपुनिपाछेअतिपछितैहो॥ गदामारिसुरपतिकीछाती। लैएहौंसुरतरुयहिभाँती।
वासवमुखनाँहींसुनिलीजो। तबममआगमतुमकहिदीजो॥ जाहुमुनीशशक्रकेधामा। अबनहिंहैविलंबकोकामा।
कृष्णवचनसुनिमुनिसुखपाये। शचीरमणकेभवनसिधाये॥ नारदलख्योशक्रदरबारा। होतरहैअनुपमनटसारा।
बैठीचहुँकितदेवसमाजा। ताकेमध्यमुदितसुरराजा॥ तहँगंधर्वमधुरसुरगावैं। नाचिअप्सराभावबतावैं।

दोहा-नारदकोनिरखततहाँ, सिगरीउठीसमाज। दियोकनकआसनसुभग, पूजिवंदिसुरराज॥

तबनारदसबसभासुनाई। कह्योवचनसुनियेसुरराई॥ दूतकृष्णकोमैंबनिआयो। कछुकारजहितनाथपठायो।
जौनकृष्णकहँसहितसनेहू। शासनहोइतोसबकहिदेहू॥ तबसुरपतिबोलेमुसक्याई। कहहुकहहुकाकहँयदुराई।
अतिप्रियअहैमोरलघुभाई। बहुदिनमहँताकीसुधिपाई॥ तबदेवर्षिकहनसबलागे। यदुपतिचारुचरणअनुरागे।
मैंइकसमयगयोयदुनगरी। रहेकृष्णयुतरानिनसिगरी॥ प्रभुमेरोकरिकैसतकारा। कनकासनपरमोहिंबैठारा॥

दोहा-दियोदेवद्रुमसुमनमैं, हरिकेशीशचढ़ाय। सोसबरानिनलखतदिय, रुक्मिणिकोयदुराय॥

सोसुनिकैप्यारीसतिभामा। कियोमानजबगेहरिधामा॥ तबहरिअसकहिदियसमुझाई। तोहिंदेवद्रुमदेहौंलाई॥
तेहिंहिततुवढिगमोहिंपठाये। तुमसोंकियोविनयसुखछाये॥ मोप्रणराखहिंअबबड़भाई। पारिजातद्रुमदेहिंपठाई॥
याहीमेंह्वैहैसंबोधू। अनुजअनुजतियमिटैविरोधू॥ सुनतवचनबोल्योसुरईशा। कहिबोतुमअसजायमुनीशा॥
स्वर्गवस्तुनहिंमानुपयोगू। उचितननरनस्वर्गसुखभोगू॥ हरिभूभारस्वर्गजबऐहैं। पारिजातकोतरुतबपैहैं॥

दोहा-गयेदेवद्रुममहिमुनी, मिटिजैहैमरयाद। होईममअपवादअब, पैहैंदेवविपाद॥

अबैसकतनहिंअसुरछोडाई। मेरेकुलिशकेरभैपाई॥ धरणिगयेदानवहठिहरिहैं। असुरनसोंकेहिविधिनरलरिहैं॥
कहाविभूतिथोरिमहिमाँहीं। जोहरिपारिजातलवचाँहीं॥ नारीहितदमसुरतरुदेंकै। रहबस्वर्गमहँकापुनिलैकै।
यहतरुहमकोदियोविधाता। कैसेदेहिंऔरकहँताता॥ पारिजातदशचिहिंपियारा। तातेअतिप्रियअहैहमारा॥
भयोकृष्णअबनारिअधीना। अनुचितउचितविचारनकीना॥ जोहरिपारिजातलैजैहैं। तौदेवनसमाननरह्वैहैं॥

दोहा-शचीरूपिहैमोहिंपर, पारिजातकेहेत। तातेमैंदैहौंनहीं, सुरद्रुमनारीहेत॥

औरजोनमाँगेलघुभाई। सोलैजाहुदेहुतौहिंजाई॥ कसहुपारिजातनाँहिंदेहैं। नारीहितअपयशकिमिलैहैं॥
सुनिवासवकेवचनकठोरा। तबनारदबोल्योतेहिठौरा॥ ऐसेहुकह्योमोहिंयदुराई। सोतुमकोमैंदेहुँसुनाई॥

पन्नगअसुरदेवगंधर्वा । यक्षराक्षसह्वचारणसर्वा ॥ कोउनहिंसकेमोरप्रणटारी । सकोंमृपानहिंवचनउचारी ॥
जोनहिंपारिजातमोहिंदेहै । तोममगदाशकउरलैहै ॥ मारिगदासुरद्रुमलैऐहौं । सबदेवनकोगर्वनशैहौं ॥

दोहा—सुनिनारदकेवचनतहँ, सुरपतिकरिअतिकोप । बोल्योवचनकठोरअति, मानिकृष्णलघुगोप ॥

गईनबालकबालकताई । बोलतमुखकरिचंचलताई ॥ वहउपेंद्रमानुपलघुभाई । मैंमहेंद्रसुरपतिमुनिराई ॥
प्रथमहुँकियोबहुतअपकारा । यहनारदवसुदेवकुमारा ॥ पावकतेखांडववनजारा । लैअपनेसँगपांडुकुमारा ॥
कियोमोरमखभंगसुरारी । गोपनहितगिरिवरकरधारी ॥ क्षमाकियोगणिकैलघुभाई । अबतोसहिनजातमुनिराई ॥
मानतअपनेसममोहिंकाँहीं । सक्योमारिवृत्रासुरनाँहीं ॥ कहेकहाबहुहेमुनिराई । अबदेखबयदुपतिमनुसाई ॥

दोहा—आयदेवद्रुमलेहिंइत, गदैमारिगोविंदु । घदैवीरतातौसही, अहैवंशसतिइंदु ॥

कामकोपवशहैंयदुराई । नारिविवशमतिदियोगमाई ॥ धिगधिगहैधिगनारिनकाँहीं । धिगतिनजेतियवशह्वैजाँहीं ॥
अबलौंभयोनसुरकुलमाँहीं । देवनसमरजीतिनरजाँहीं ॥ अहैनबंधुसरिसरिपुकोई । बंधुसरिसमीतहुनहिंहोई ॥
यदुपतिअबआशुहिंइतआवैं । मोहिंजीतिसुरतरुलैजावैं ॥ करिहोंप्रथमनशस्त्रप्रहारा । वहतोप्रियलघुबंधुहमारा ॥
जाहुजाहुमुनिअसकहिदेहू । आवहिंकृष्णनाहिंसंदेहू ॥ सजिआयुधचढ़िगरुडविहंगे । करैंआयमाधवअवजंगै ॥

दोहा—विनायुद्धपैहैंनहीं, अबसुरतरुयदुनाथ । देतोतोमैंप्रथमहीं, कहतजोरिजोहाथ ॥

वहनरह्वैअसकरतघमंडा । मैंतोस्वर्गअधिपबरिबंडा ॥ मोसेलघुह्वैभीतिदेखावै । तातेनारदकिमिसहिजावै ॥
आजुहियेहीछिनतुमजावहु । हरिकहँमेरेवचनसुनावहु॥अबमुनिवरनाहिंकरहुविवादा । अहैनमोहिंकछुहर्षविषादा॥
ह्वैहैवीरतोआशुहिंऐहै । बिनायुद्धइकपातनपैहै ॥ यहूभापियोमोरनियोगू । छलकरिसुरतरुहरबनयोगू ॥
कपटकरहिंकबहूँनहिंशूरा । रणमहँकपटनकेप्रदपूरा ॥ वासववचनसुनतमुनिराई । करगहिगयेइकांतलिवाई ॥

दोहा—तहँमहेंद्रसोंअसकह्यो, भूलिगयोतुवभान । जानतनहिंत्रिभुवनधनी, वैयदुपतिभगवान ॥

जासुप्रकाशप्रकाशितलोका । नाशतब्रह्मांडैनखनोका ॥ मीनकमठकोलहुमृगराजू । वामनभृगुपतिरघुकुलराजू ॥
अबहैंयदुकुलकमलदिनेशा । तुवहितबहुवपुधरचोसुरेशा॥सहसआँखितुवदेखनकाँहीं । देखिनपरतएकहुनमाँहीं ॥
परमात्मासोंकरैविरोधू । बोधेहुबोधनहोतअबोधू ॥ तबसुरपतिपुनिमुनिसोंभाष्यो । बारबारयदुपतिपैमाण्यो ॥
यहसबसत्यजौनतुमगायो । पैमेरेमननेकुनआयो ॥ विनायुद्धजीतेयदुराई । सुरतरुपैहैंनहिंमुनिराई ॥

दोहा—लखिमघवाकोमदमहा, मायावशतेहिंमानि । मनमहँमुदितमुनीशभो, युद्धहोनसतिजानि ॥

सुरपतिसोंलैसीखमुनीशा । गमन्योआशुजहाँजगदीशा॥द्वारावतीआयतपधामा । देख्योप्रभुहिंसहितसतिभामा ॥
यदुनंदनउठिवंदनकीन्ह्यों । परमअनंदनचंदनदीन्ह्यों ॥ पूछ्योफेरिमंदमुसक्याई । कहियेकहाकह्योसुरराई ॥
तबनारदबोलेअसबानी । सुरपतिगर्वनजाइबखानी ॥ देहैदेवदेवद्रुमनाँहीं । बिनागदालागेउरमाँहीं ॥
असकहिमुनिपुनिसकलसुनायो।जौनवचनवासवमुखगायो॥तबअसबोलेरमानेवासा।लखहुआजुमुनिसमरतमासा॥

दाहा—कहियोमुनितुमजाइकै, सजगहोहुसुरराज । पारिजातकेहरणहित, आवतहैंयदुराज ॥

सुनिनारदसुरसदनसिधारे । वासवसोंहरिवचनउचारे ॥ सोरजनीकरिशयनमुरारी । जागिभोरसंध्यानिरधारी ॥
दारुकसोंअसवचनउचारे । लावहुरथहमजाहिंशिकारे ॥ दारुकलायोतुरतहिंस्यंदन । भयेसवारआशुयदुनंदन ॥
सात्यकिकोपुनिलियोचढाई । पुनिप्रद्युम्नहिंकह्योबोलाई॥खेलनचलहुशिकारकुमारा।ममसँगकरियोविपिनविहारा॥
तबप्रद्युम्नकह्योकरजोरी । तवगतिजाननमतिनहिंमोरी ॥ चलिहौंनाथआपकेसंगा । करिहोंप्रभुकीसेवअभंगा ॥

दोहा—तबयदुपतिनिजपुत्रको, रथमेंलियोचढ़ाय । रैवतगिरिमेंजायके, सूतहिंकह्योवुझाय ॥

तबलगिरथराख्योयहिठाऊँ।जबलगिशक्रहिंजीतिनआऊँ।असकहिगरुडहिंसुमिरणकीन्ह्यों।सोद्रुतआयचरणगहिलीन्ह्यों
सात्यकियुतवसुदेवकुमारा । पक्षिराजपरभयेसवारा ॥ चढ़नहेतुपुनिसुतहिंबोलाये । तबप्रद्युम्नकहेमुसक्याये ॥
पतिसंगहिजेहौं । आपप्रतापतापनहिंपैहौं ॥ असकहिमायायानबनाई । नह्योभुजंगमहाभयदाई ॥

णअखंडकोदंडप्रचंडा। पहिरचोकवचकीटवरिबंडा ॥ कह्योकृष्णसोंकृष्णकुमारा। चलहुनाथजहँहोयविचारा॥

दोहा–तवगरुड़हिंशासनदियो, आशुहितहँभगवान। पहुँचावहुअमरावती, करिकैवेगमहान ॥

हिप्रभुशासनसुखितखगेशा। चल्योअनिलतेअधिकनरेशा ॥ सक्योनदेखिबीचमहँकोई।मनसमगयोशक्रपुरसोई॥
सहिंगरुडपक्षमहँलागे। प्रद्युम्नहुगमनेसुखपागे ॥ नंदनवनयदुनंदनजाई। पारिजातकोलखिसुखपाई ॥
हँदेख्योसुरपतिकेयोधा। सुरतरुकहँकीन्हेंअवरोधा ॥ आयुधधरेअनेकप्रकारा। पारिजातकेहैंरखवारा ॥
तेनकेदेखतदपटिमुरारी। लियोदेवद्रुमद्रुतेउखारी ॥ धरचोब्रह्मपतिपक्षीपतिपर। डरहुनसुरतरुअसकहँयदुवर ॥

दोहा–जाननहितसुरनाथके, गरुडचढेयदुनाथ। नगरप्रदक्षिणकरतभे, सात्यकिनिजसुतसाथ ॥

सात्यकिचहुँदिशिकहपुकारकारि। पारिजातहरिलियेजातहारि ॥ रहेजेपारिजातरखवारे। तेवासवसेजायपुकारे ॥
पक्षीचढेपुरुपत्रयआये। हरचोपारिजातहिंमदछाये ॥ नाथरावरीभीतिनमाने। लियेजातसुरतरुबलवाने ॥
सुनिमहेंद्रकरिकोपमहाना। ऐरावतपरचढिबलवाना ॥ लियोसंगमहँपुत्रजयंते। प्रवरसखाजेहिंओजअनंते॥
झूमतचल्योमतंगमहाना। पीछेयुगलवीरयुगजाना ॥ आवतवासवनिरखिमुरारी। पूरवद्वारखड़ेधनुधारी ॥

दोहा–निरखिमहेंद्रउपेंद्रको, बोल्योवचनकठोर। पारिजातमेरोहरचो; डरचोननंदकिशोर ॥

तवमधुसूदनकहँमुसुक्याई। माँग्योअनुजवधूतुवभाई ॥ पारिजाततातेलैजातो। वृथामोहिंतुमकतअनखातो ॥
वासववचनकोपितवबोला। मेरोबलमनमहँनहिंतोला ॥ पारिजातलैजाननपैहौ। यवभरनहिंवीरतादेखैहौ ॥
हैमेरोछोटोतैंभाई। लेहिशस्त्रतैंप्रथमचलाई ॥ पुनिलखुविक्रममोरमहाना। परिहैकठिनआजुवचिजाना ॥
मारहुमारहुगदामुरारी। सफलप्रतिज्ञाहोइतिहारी ॥ तवमुकुंदशारंगटँकोरा। भरचोभयावनसुरपुरशोरा ॥

दोहा–लैसायकतीखनतुरत, मारचोमाथमतंग। फोरिकुंभशरकढिगयो, भोगजश्वेतसुरंग ॥

छंद–तवकोपिवासवविशिखलैवहुविहँगपतिकेशिरहन्यो। तिनवासुदेवहुवीचकोटिवितानवाणनकोतन्यो ॥
पुनिशक्रशरसहसानमारिमुरारिशरकाटतभयो। शारंगअरुमाहेंद्रधनुकोशोरत्रिभुवनमहँछयो ॥
तहँजानिपितुसोंलरतहरिकोशक्रसुतधावतभयो। सुरतरुहरणहितअतिचपलखगनाथढिगआवतभयो ॥
तेहिंनिकटनिरखिमुकुंदतहँप्रद्युम्नसोंभाषतभये। अचकाकरतहोकरहुरणदुखलहहुगेसुरतरुगये ॥
तवकह्योहरिसुतसुनहुँपितुकतप्रथमदियननिदेशहे। तुवकृपाबलमेंएकहीविनसुरकरोंदिविदेशहे ॥
असकहिशरासनगहितज्योशरवृंदवासवनंदपै। रुकिगयोस्यंदनशचीसुतपहुँच्योनयदुकुलचंदपै ॥
तववाणधारअपारवारहिंवारकृष्णकुमारपै। भरिकोपभारपँवारिहरष्योशक्रबारउदारपै॥
प्रद्युम्नतहँवरिबंडपंडहिखंडकियशरतोमको। पुनिविशिखवासवतनेवेध्योमदनरोमहिरामको ॥
तहँकृष्णनंदनदुष्टदंदनशक्रनंदनशरनको। तिलतिलतुरंतैतूरिमारचोपुनिजयंतैकरनको ॥
दोउभरेजोवनपरमशोभनतजतशरचहुँओरहें। कश्यपाकिशोरकिशोरउतइतयदुकिशोरकिशोरहें ॥
दोउभटपरस्परविजैतत्परतजतशरभभंरमहाँ। दोउवदतवरवरवचनवरदोउहोतपरपररथतहाँ ॥
तहँसिद्धचारणदेवमुनिआयेसुकौतुकलखनको। लखिदुहुनभटसंग्रामचक्रितभेनमृंदहिचखनको ॥
तहँप्रवरनामकविप्रसोवासवसखाधायोवली। चाह्योहरणद्रुतदेवद्रुमजिमिशिशुचहततारावली ॥
द्विजवरेंलखियदुवरकह्योसात्यकिहियाकोरोकियो। पैविप्रहँतातेनसायककठिनयापँझोकियो ॥
यहचपलद्विजकीचपलताअतिसहवसवविधिउचितहै। जोहनतनहिंहनतहुँद्विजहिंपरलोकतेसोइसुचितहै॥
वतरातअसतहँसाठिसायकप्रवरसात्यकिकहँहन्यो। युयुधानसवशरछाँटितेहिंधनुकाटिद्विजवरगोंभन्यो ॥

दोहा–करहुविप्रअपनोकरम, छोड़िदेहुधनुवाण। कहुँतीरथमेंबैठिकै, बाँचहुवेदपुराण ॥
क्षात्रधर्ममेंनिरतहैं, जेक्षत्रीविख्यात। तेअपराधिहुँविप्रको, करतनकवहूँघात ॥
सहजहिमैंमानवद्विजे, सवकोसरलजनाय। पैद्विजमारतमानहाँ, सोहँमानवआय ॥

सोरठा–यदुकुलकीयहरीतिं, चलिआईहैसर्वदा। द्विजपररासहिंप्रीति, करहिंक्षमाअपराधमें॥

भुजंगप्रयात–कह्योवैनवज्रीसखाहाँसकेके। तजोनाहिंयुद्धेक्षमावीरयेके॥
अहोरामकोशिष्यमैंवीरभारी। सुप्यारोसखाजानियोवज्रधारी॥
लरेंकृष्णसोंआजुयेदेवनाँहीं। करौंयुद्धतातेमहीशत्रुपाँहीं॥
तहाँभापियोविप्रलीन्ह्योंकोदंडा। तज्योकालदंडेसमैवाणचंडा॥
भयोसात्यकीविप्रकोयुद्धभारी। तजेंहैंसुशस्त्रैमहास्त्रैप्रचारी॥
जुरेकृष्णकेशक्रकेनंददोऊ। करैंयुद्धकुद्धेटरैनाहिंकोऊ॥
उव्योकंपस्वर्गेजतेस्वर्गचारी। विजैवीरचाहैंनिजैधीरधारी॥
हन्योइंद्रअस्त्रैशचीकोकुमारा। दईरोकिप्रद्युम्नसोवाणधारा॥
तहाँकोपिवज्रीतनैब्रह्मअस्त्रै। चलायोजरायोसुप्रद्युम्नशस्त्रै॥
दियोकृष्णकेपुत्रकोजानलाई। सक्योपैनप्रद्युम्नकोसोजराई॥
गयोकूदिआकाशमेंकृष्णपुत्रा। शचीकेसुतैवैनभाष्योविचित्रा॥
तज्योब्रह्मअस्त्रैजोवज्रीकुमारे। लगैमोहिंऐसेनअस्त्रैहजारे॥
सिख्योऔरहूँजोसवैछोडिदीजे। रणैमध्यमेंआजुक्योंगुप्तकीजे॥
डरौंमैंननेकौंगनौवीरनाहीं। सदादैत्यकोदेवदेखेपराहीं॥
मनौंतेनतूछैसकौपारिजाता। करैतेगहेकीअहैकौनवाता॥
तज्योब्रह्मअस्त्रैदियोजानलाई। सकोंमैंसहस्त्रैतुरंतैबनाई॥

दोहा–यदुपतिसुतकेवचनसुनि, वासवसुतबलवान। यमअस्त्रहिंछोडतभयो, करिकैकोपमहान॥

चल्योकालसमअतिविकराला।छोडतचहुँदिशिपावकज्वाला॥तवप्रद्युम्नछोड्योशरजाला।रोकिदियोयमअस्त्रविशाला॥
सक्योनशस्त्रनिकटतेहिंआई। बीचहिंपावकगयोवताई॥ तबकोपितसुरनाथकुमारा। चारिअस्त्रइकबारपँवारा॥
वारुणपावकमारुतशैला।चहुँकितरोक्योनभकीगैला॥ उठीएकदिशिपावकज्वाला। गिरेएकदिशिशैलविशाला॥
बह्योएकदिशिपवनप्रचंडा। एकदिशाजलधारअखंडा॥ कृष्णकुँवरतबधनुटंकोरा। भयोभयावननभमहँशोरा॥

दोहा–इकइकअस्त्रनकृष्णसुत, कोटिकोटिशरमारि। द्वैद्वैदिव्यास्त्रनैते, चारौंदियोनेवारि॥

तज्योशलभसेशरसमुदाई। गयेवाणचारौंदिशिछाई॥ लक्षलक्षशरएकहिंवारा। गिरहिंशीशमहँशचीकुमारा॥
मूँदिगयोसुरपतिसुतयाना।अंधकारभोदिशनमहाना॥उठहिंगिरहिंपुनिपुनितहँवाजी।ताजिनतजिसारथिभोपाजी॥
गयोजयंतैयुद्धहुलासा। रह्योनशरनतजनअवकासा॥ भोअमरावतिशरअँधियारा। हायहायसबप्रजापुकारा॥
वासवसुतदृगखोलतनाँहीं। वैव्योऔंधशीशरथमाँहीं॥ तहाँपुलोमजयंतहिनाना। निजनातीकोमरणहिंजाना॥

दोहा–समरमध्यआयोतुरत, नातिहिंगोदउठाय। लैगमन्योअमरावती, दियतेहिंमातहिंजाय॥

तवसिधचारणअतिसुखपागे। केशवसुतहिंसराहनलागे॥ लख्योनऐसोविक्रमकवहूँ। भयोसुरासुरसंगरजवहूँ॥
पुनिसात्यकिइकवाणचलाई। प्रवरधनुपकाट्योमुसछाई॥ इंद्रसखाकेयुगदस्ताने। काट्योसात्यकितजिवहुवाने॥
वासवदत्तप्रवरधनुलीन्ह्यों।पावकसरिसवाणतजिदीन्ह्यों॥इंद्रसखासात्याकिधनुकाटयो।रिपुकहँपुनिवाणनतेपाट्यो॥
तबसत्यकदूसरधनुधारी। हन्योहजारनवाणप्रचारी॥ पुनिदोउदोहुनकवचविदारे। तनुतेनिकसेरुधिरपनारे॥

दोहा–फेरिविप्रसात्यकिधनुप, काटितीनिशरमारि। लेतसात्याकिहिद्वितियधनु, मारीगदाप्रचारि॥

किलियचर्मकृपाना।काट्योप्रवरताहिबलवाना।जानिसात्याकिहिंमदनानिरायुध।दियकरवालकरालकरनक्रु
[illegible]।सात्यकिहृदयशूलइकमार्‌यो।मूर्च्छितह्वैसात्यकिगिरिगयऊ।प्रवरसमरमहँमोदितभयऊ
वीरा। गरुडसमीपगयोतजिनीरा॥ पक्षिराजतवपक्षचलाई। दियोद्विजेंद्रकोशरडारा॥

र्‍योविसंज्ञविप्रमहिमाँहीं । भयोचूरस्यंदनौतहाँहीं ॥ तवजयंततेंहिंजायउठाई । द्विजकहँदूजेरथहिंचढाई ॥
दोहा-मूर्च्छातासुनिवारिकै, ल्यायोनिजपितुपास । सावधानकियसात्यकिहिं, करगहिरमानिवास ॥
केसात्यकिदक्षिणओरा । खड़ोवामरुक्मिणीकिशोरा ॥ तिमिजयंतप्रवरहुरणधीरा।खड़ेशक्रकेदोहुँदिशिवीरा ॥
सवकहँसुतसवैवोलाई । कवहुँनजाहुनिकटखगराई ॥ पक्षिराजअतिशयवलवाना । देहैपुनिउडाययुतयाना ॥
उदिशितेताकहुहमकाँहीं । जामेंयदुपतिजीतिनजाँहीं॥ असकहिगरुडहिंवाणहजारा।करिवलकीन्ह्योंशक्रप्रहारा॥
गततनुटूटेसववाना । गन्योनपक्षराजवलवाना ॥ तवसुरपालकह्योगजपाले । गरुडहिंगजसोंआशुहिंचाले ॥
दोहा-पीलपालतवपीलको, पेल्योपक्षीपाँहिं । पक्षिराजगजराजको, भयोसमरदिविमाँहिं ॥
रतदंतशुंडफटकारी । करतनादगजअतिभयकारी ॥ वज्रसरिसनखचोंचहितेरे । दल्योखगेशकुंभगजकेरे ॥
नाविहंगकोएकमुहूरत । भयोभयावनसंगरजयरत ॥ पक्षिराजअतिकोपितहाँहीं । हन्योपक्षऐरावतकाँहीं ॥
हाँस्वर्गतेयुतसुरराजा । गिर्‍योधरणिमहँसोगजराजा ॥ पारियात्रइकशैलअनूपा । गिर्‍योतहाँगजयुतसुरभूपा ॥
केपाछेलगेमुरारी । गरुडचढेआयेधनुधारी ॥ सम्हारिफेरिगजअरुगजसाईं । करनलग्योयुधकरिमनुसाईं ॥
दोहा-हन्योहजारनविशिखवर, यदुपतिकहँइकवार । शक्रवाणहरिकाटिकै, पुनिछोडीशरधार ॥
णमहँतहाँआशुसुरराई । मार्‍योगरुडहिंवज्ररिसाई ॥ तज्योगरुडइकपरअविषादा । राखीवज्रहुकीमर्यादा ॥
वजववासववज्रचलावैं । तवतवइकपरगरुडगिरावैं॥गजअरुगरुडकेरअतिभारा।सहिनसक्योगिरिकियोचिकारा॥
स्योधरणिधरणीधरघोरा । फूटेसकलश्रृंगचहुँओरा ॥ तहँगरुडकहँछोडिगोविंदा । खड़ेभयेनभसहितअनंदा ॥
ुनिप्रद्युम्नहिंकह्योवोलाई । जाहुद्वारकैआतुरधाई ॥ लावहुदारुकयुतरथमेरो । रथचढिकरिहौंसमरघनेरो ॥
दोहा-उग्रसेनअरुरामको, कहिवोमोरिसलाम । कृष्णइंद्रकहँजीतिकै, काल्हिआइहैंधाम ॥
ुनियदुनंदननंदनवीरा । गयोद्वारकैअधिकसमीरा ॥ उग्रसेनकहँअरुवलरामै । कुशलसहितकहिपितासलामै ॥
लैरथदारुकसहितकुमारा । एकदंडमहँतहाँसिधारा ॥ सुतकोविक्रमनिरखिमुरारी । अचरजमनमहँलियोविचारी ॥
चढिस्यंदनयदुनंदनवीरा । धायेजहँवासवरणधीरा ॥ पारिजातलैपीछेपीछे । पक्षिराजउडिचलेतिरीछे ॥
सात्यकिऔयदुनाथकुमारा । भयेगरुडमहँद्रुतेसवारा ॥ कृष्णहिंआवतलखिसुरराई । करनयुद्धकहँचल्योरिसाई ॥
दोहा-पैगरुडहिंगजराजलखि, भर्‍योसक्योनहिंजाइ । वासुदेवतववासवै, बोलतभेमुसक्याइ ॥
गजडेरातआवतनहिंनेरो । करिहैकेहिविधियुद्धघनेरो ॥ ऐसेगजमेंचढ़िसुरराई । जीतौकैसेअसुरनजाई ॥
गयेभानुअस्ताचलकाँहीं । वलहुनरह्योअंगतुवमाँहीं ॥ तातेनिशिनिवारिश्रमलेहू । भोरभयेमोकहँयुधदेहू ॥
तवइंद्रहुतथास्तुकहिदीन्ह्यों।तेहिंनिशिमहँनिवासतहँकीन्ह्यों जववीतीनिशिभयोप्रभाता तवयदुपतिरथचढिविख्याता
युधहितवासवकाहँवोलायो।सोरथचढिरणहितद्रुतधायो॥सुरपतियदुपतिकोसंग्रामा।होनलग्योअतुलिततेहिंठामा ॥
दोहा-करनसहाइसुरेंद्रकी, सुरसेनासवआइ । सहस्राक्षरथघेरिकैं, खड़ीभईहरपाइ ॥
तवयदुपतिछोडीशरधारा । मूँदिगयेसुरदलइकवारा॥पुनिमहेंद्रकहँवहुशरमार्‍यो।इकइकतुरँगनदशदशझार्‍यो ॥
सोउतज्योविशिखवहुतेरे । मनहुँभीमभटहैंयमकेरे॥तिनकहँमधुसूदनद्रुतनाशा । जिमितमनाशतभानुप्रकाशा ॥
पुनिवासवगरुडहिंशरमार्‍यो । वासुदेवगजपरशरझार्‍यो॥रथनकियेमंडलभटदोऊ । निरखिसकेनहिंसुरवरकोऊ॥
दोहुननिरखियुद्धअतिघोरा । सुरनमुनीशनहेगोभोरा ॥ तरणीसीधरणीतहँडोली । भेदिगदाहदिशानअतोली॥
दोहा-पर्वतकँपिफाटतभये, टूटेद्रुमनसमूह । लौटिवहनलागींसरित, गिरेलूकेकेयूह ॥
लगेपरानदिशानगजेशा । ब्रह्महुकोतहँभोअंदेशा ॥ तवविरंचिकश्यपहिंवोलाई । ऐसोभाष्योतादिशुझाई ॥
वासववासुदेवकहँजाई । रोकहुयुद्धदेहुसमुझाई ॥ दोहुनकेरणकरतकटोरा । प्रलयहोतचाहतअवघोरा ॥
तहाँअदितिकश्यपरथचढ़िकै । दोहुँनवीचसरेभनढ़िकै॥दोहुँनसोंअसवैनहिंभाषे । तुमकतप्रलयकरनअभिलाषे ॥
पं[illegible] उनान[illegible]मयावन । मानोहमकहँपितुपावन॥कश्यपअदितिनिरखिदोउवीर [illegible] जानिजपनुदत[illegible]

दोहा-दंपतिकेढिगजाइकै, कीन्ह्योंदंडप्रणाम। अदितिकश्यपहुसुतनकहँ, आशिपदीन्हललाम॥
तबकुंडलजेअदितिकरणके। हरयोभौमनिजहेतुमरणके॥ तेकुंडललैकरयदुराई। अदितिकानदीन्ह्योंपहिराई॥
आशिपदईअदितिसुरमाता। कोतुमसमप्रभुजगविख्याता॥इंद्रकह्योकरजोरिवहोरी। तुमसोंरणनकरनमतिमोरी॥
त्रिभुवनपतितुमरमानिवासा। मानहुमोहिंआपनोदासा॥ पारिजातलैऐनसिधारो। क्षमाकरहुअपराधहमारो॥
तबशक्रहिंदैअभयप्रदाना।निजपुरकियोगवनभगवाना३८मारुतसमरथचल्योप्रचंडा।शोरभरयोतिहुँलोकअखंडा॥
दोहा-पक्षिराजपीछेचल्यो, पारिजातधरिपीठि। सात्यकिऔप्रद्युम्नदोउ, चढेदियेतेहिंदीठि॥
रैवतगिरिआयेयदुराई। तहँतेबिदाकियेखगराई॥ तीनोंभटरथचढिसुरद्रुमधारि। यदुनगरीप्रवेशकियह
सुरनजीतिलैसुरद्रुमकाँहीं। आवतहैंमाधवपुरमाँहीं॥३९॥असमुनिकैसिगरेपुरवासी। लियअगवानजाइ
प्रभुहिंनिरखिकियसफलविलोचन।वारयोतेहिंक्षणमणिगणतनुमन॥पुनिलैपारिजातयदुराई।सतिभामागृहवि
तबतजिमानतहाँसतिभामा।मिलीप्रियहिंह्वैपूरणकामा॥पारिजातमहँस्वर्गमलिंदा।आवहिंतहाँलेनमकरंदा
दोहा-जेहिंप्रभुचरणकिरीटधरि, याचिलह्योमनकाम। सोइसुरपतिहरिसोंलरयो, धिगदेवनमदधाम।
सोरहसहसएकसैनारी। व्याहीइकसँगतिनहिंमुरारी॥ तेतनेईमंदिरछविछाये। तिनमहँतिनकहँवास
तेतनेईवपुधारिविहारी॥४२॥सबकहँइकसँगकियोसुखारी॥४३॥विधिशिवजाकीगतिनहिंजानै।बारबारपदवं
ऐसोकृष्णचंद्रपतिपाई। तिनतियभाग्यनजाइगनाई॥ नितनवमंगलमोदहिंपूरी॥ कोविभूतिवरणैतिनभूरी
यद्यपिइकइकसहसनदासीं। तद्यपिकृष्णप्रेमरसप्यासीं॥ करहिंकृष्णकीआपहिंसेवा। जानिनाथनिजइष्ट
दोहा-जवनिजमंदिरमेंमुदित, माधवकरहिंपयान। तबआगूचलिलेहुकछु, रहिनजाततनुभान॥
सेजआपनेहाथविछावैं। सिंहासननिजहाथनलावैं॥ प्रभुपदपद्मपाणिनिजधोवैं। दैवीरीनिजकरछवि
बहुविलंबलगिव्यजनडोलावैं। निजकरकमलनिचमरचलावैं॥चाँपहिंचरणचारुनिजहाथै।कुसुमकिरीटधरैंप्र
अंगरागप्रियअंगलगावैं। बारहिंबारअलकविलगावैं॥ मनरंजनमंजनकरवावैं। विविधभाँतिजेवनारजेवावैं।
यहिविधिऔरहुबहुसेवकाई। करहिंनित्यतियचित्तलगाई॥प्रियमुखचंदचितैसुखसानी। कियेचकोरचखनस
दोहा-नितप्रतिजिनपरकरतहैं, यदुनायकअनुराग। इकमुखतेतिनकीनृपति, वरणिसकौंकिमिभाग॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे एकोनषष्टितमस्तरंगः॥ ५९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-एकसमयसुखधाममें, बैठेश्रीयदुराज। राजिरहीरुक्मिणितहाँ, संयुतसखिनसमाज॥ १॥
जोलीलाकरिविश्वविशाला। रक्षतसृजतहरतसबकाला॥ सोरक्षणहितधर्महिंसेतू। प्रगटेयदुकुलमोदनिकेतू।
ताकेअंतःपुरछविभारी। वरणिसकैकोसुकविविचारी॥ विपुलकिताकेतनेधिताने। मुक्तनझालरिसहितसु
दीपतदीपप्रदीपतभारी। मणिमयमदनरचितसुखकारी॥२॥ सुमनमल्लिकाझालरभाई। गुंजिरहेअलिसौरभ
झीनीझरफझरोखनमाँहीं। प्रविशिमयंकमरीचिमुदाँहीं॥४॥ पारिजातसौरभितबयारी। मंदमंदआवतिसुखकार
दोहा-अगरतगरकेधूपको, धूमधाममेंछाय। शीतलमंदसमीरयुत, झँझरिनकढतसुहाय॥ ५॥
प्रभापूरपर्यंकसुहावे। मणिमंडितमनमदनलजावे॥ तामेंलैसेजसुखछावनि। शशिकरगोरसफेनलजावनि
रेसमकमनेकमेसुदाये। उपबर्हनअनूपछविछाये॥ तापरसोहतश्रीयदुराई। प्रियामुखनिरखतसुखपाई॥
[illegible]
[illegible]

दोहा-यौंविचारिसुकुमारितहँ, प्रियप्रेमहिंउरधारि। भरिअनंदआतुरउठी, तनुकीसुरतिबिसारि ॥ ७ ॥
ा-नूपुरकेसुरतेसुकुमारिमरालनिशावकसोरलजाई। अंगकेआभतेहीरनमुक्तनहारनहेमकेहारवनाई ॥
ारघुराजत्यौंकांतिमतीकटिसौंकलकिंकिणिकांतिकराई। वेसवलैसुंदरीनकोसोभकपाणिसौंबीजनलेनकोधाई॥
दोहा-जडितजवाहिरतेजगत, जासुप्रकाशअखंड। सखिकरतेनिजकरकियो, बीजनरुचिरसदंड ॥ ८ ॥
ा-सुंदरिकेमुखसुंदरिसोहिरहीमुसक्यानिसुधारसपागी।देखिश्रीमंतसुकंतकोआननप्रेममयीदुगुनीद्युतिजागी ॥
श्रीरघुराजकहैलघुलाजसोंनैननवाइलली अनुरागी । मंदहिंमंदहिंमोहनकेमनमोहनिबीजनबीजनलागी ॥
रूपहिंआपनेरूपअनन्यगतीनिजप्रेमसोंपूरोहियो। अतिरुक्मिणीकोयदुराजचितैपरिहासहिकीयोविचारिलियो
राजकहेअतिप्रीतिसोंप्रीतममंजुमुखेमुसक्यानिकियो। विपरीतिकेबैनवनाइअचैनसोंनैननचाइसुनायदियो ॥९॥
दोहा-राजकुमारीतूँसुनै, ममवचननिचितलाइ। सत्यमानिसोइकीजिये, मेरोआयसुपाइ ॥
उदारसुवलहुविशाले। शोभावंतसरिसदिगपाले ॥ १० ॥ कामीपरमकामनाकीने। तेरीलेनलालसाभीने ॥
भूपअमितकरिचाहे। आयेतुवहितकरनविवाहे ॥ रुक्मीतुवभ्रातानलवारो। शिशुपालहिंकहँदेनविचारो ॥
नहिंनिदरितूँमोहिंवरिलीन्ह्यौं।निजसमवरविचारनहिंकीन्ह्यौं।मैंजिनभूपनअतिहिंडेराई।बस्योउदधिमधिनगरबसाई।
कियोबलवाननसंगे। मथुरातज्योनृपासनभंगे॥१२॥औरहुयहजगरीतिसदाकी।सुनहिंसत्यगुनिभ्रुकुटिसुबाँकी ॥
दोहा-जेवनितनकेविवशनहिं, अरुअविदितआचार। वरितिनकहँयोपितसबै, पावहिंशोकअपार ॥ १३ ॥
धनहोनिर्धनप्रियप्यारी।धनीनरासहिंसुरतिहमारी॥१४॥निजधनकुलवयरूपविभूती।होहिंसमानसकलकरतूती॥
नसोंव्याहमित्रतायोगू।उत्तमअधमअवश्यअयोगू॥१५॥सोतुमनेकुविचारनकीन्ह्यौं।गुणनहीनमोकोंवरिलीन्ह्यौं॥
हिंप्रशंसहिंवृथाभिखारी। तामेंभूलिगईसुकुमारी ॥१६॥ तातेअबहूँवेगिविचारहु। निजसमभूपतिपासपधारहु॥
भैलोकजामेंयनिजावें।जगकविकुलकीरतिकुलिगावें॥१७॥जरासंधशाल्वौशिशुपाला।दंतवक्रआदिकमहिपाला॥
दोहा-रुक्मीतेरोबंधुहू, तिनमिलिमान्योद्रोह। कारणविनमारनचहे, मोहिंकुटिलकरिकोह ॥ १८ ॥
भूपतिवीरजमदवारे । आयेकुंडिनरुक्महँकारे ॥ करीप्रतिज्ञाजोरिसमाजू । नहिंआवनपैहैंयदुराजू ॥
तनकेगर्वगिरावनहेतू। तोहिंलायोतिनजीतिनिकेतू ॥१९॥ मोकोनाहिंइनतेंकछुकामा। इस्त्रीअर्थपुत्रधनधामा॥
रणकामआपहीमाहीं । पावतहैंआनंदसदाहीं ॥ सबमेंरहौंसमानसदाई । निःक्रियअहौंज्योतिकीनाई ॥
ारिवाहुनहिंसुंदररूपा । भूपनअहैभृत्यहैंभूपा ॥ तातेअबनाहिंकरेंविचारें । जहँभावैतहँवेगिसिधारें ॥
दोहा-तुमतोसुंदरिगोरतनु, मैंहौंश्यामअकाम। होतिमित्रतायोगमें, सुंदरिवरसमवाम ॥
प्राणहुँतेप्रियमानती, रहीआपनेकाँहि। हरिवियोगमेरोकबहुँ, ह्वैहैक्षणहूँनाँहि ॥ २० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-तासुगर्वगंजनहितै, विमनहिंसेयदुराज। मौनभयेकहिकटुवचन, मध्यसखीनसमाज ॥ २१ ॥
कवित्त-देवकीकिशोरकोकठोरबैनप्यारीकान, घोरजोरमानोभयोअशनिकोपातहै।
चौंकिचहुँओरचितैस्वप्नहीसोंगुन्योचितै, सुन्योकबहूँनऐसीअहितेकीबातहै ॥
भापेरघुराजभारीभीतिभरीभामिनिसो, रोदनकरनलागीशोकनसमातहै।
क्षणनासिरातथहरातगातबारबार, बातकेसमातजैसेकदलीकँपातहै ॥ २२ ॥
कज्जलसहितदृगजलतेउरोजनको, अंगरागकुंकुमकोवेगिधोइडारयोहै।
दुखकटुबैनतेविभीतित्यागशंकामानि, गरोभरिआयोउरशोककअतिधारयोहै ॥
भापेरघुराजलसेकरनतेकंकणहू, झरेकेतेकुसुमजेकेशनसमारयोहै।
बारबाररोदतहाँनखनितेखोदैमही, मानोंमँगैविवरप्रवेशकोविचारयोहै ॥ २३ ॥

सबपुरुपारथमयसुफलात्मा।तुमहिंचाहिसबतजहिमहात्मा॥तिनसोंतुवसम्बंधउचितहै।सुखदुखभोगिनतेअनुचितहै
कह्योजोममजसवदतभिखारी। सोऊभाप्योसत्यविहारी॥ मननशीलमुनिगर्वविहाई। तिहरोयशगावहियदुराई॥
दोहा-विनहिंविचारेवरेहुमोहिं, कह्योजोनतुमचैन। सोमेंत्रिभुवननाथगुनि, तुमहिंवरयोमुदऐन॥ ३९॥
जोनकह्योहमनृपनडेराई। वसेसिंधुमधिपुरीवनाई॥ सोनहिंसोहतमुसहिंरावरे। मोहिंछिपायलायेनसाँवरे॥
भूपनमध्यधनुपटंकोरी। लायेमोकोंकारिवरजोरी॥ ज्योंजंबुकगणतेनिजभागे। लावेमृगपतिडरनहित्यागे॥ ४०॥
जोनकह्योमोहिंसमजनलहिकै।दुखीहोइतियनेहहिनहिंकै॥ सोऊकहहुनजानिमुरारी। तामेंविनतीसुनहुहमारी॥
अंगपृथुभरतगयादियजाती। तजितजिराज्यविभोबहुभाँती॥वनवसितवपदलहियदुनाथा।किमिवेपावतहैंदुखगाथा॥
दोहा-जोनकह्योहेप्राणपति, अपनेयोग्यविचारि। जाहुनृपतिकेपासतुम, दोऊलोकसुधारि॥
संततसंतप्रशंसतजाको। सुखप्रदमुक्तिरूपजनताको॥ सदाकियेजहँरमानिवासू। ऐसोतुवपदकमलसवासू॥
गुणआगरलहितियतेहित्यागी।भजेऔरकहुँकोनअभागी ४२ तातेमेंसबभाँतिविचारी।वरयोसुवरयदुवरगिरिधारी॥
जगदात्माजगदीशमुरारी। जनदोहुँलोकनदेहुसुधारी॥ भक्तनहरिकरहुसंसारा। असजेतुमयदुनाथउदारा॥
तिनपदपंकजरक्षकमेरे। रहेंसर्वदासुखदघनेरे॥ ४३॥ कह्योजोनयेवचनकृपाला। तजिदिक्पालनसममहिपाला॥
दोहा-मोहिंवरयोमनमेंकवन, करिविचारसुकुमारि। तातेसुनियेप्राणपति, प्यारीविनयहमारि॥
जेभूपनकोआपवखाने। खरबिडालवृपश्वानसमाने॥ शिवचतुराननआननगाई। असितुवकथानजिनश्रुतिपाई॥
नारिनकेपतितेहोवें। भृत्यसरिससेवतमुखजोवें॥ ४४॥ छायोउपरचामनखरोमें। अंतरअस्थिमांसरुधिरोमें॥
कृमिविटपित्तवातकफसाने।जीतहिंमृतकसरिसदरशाने॥ तुवसरोजपदगंधविहाई।भजहिंजोतियअसपतिमनलाई॥
तेनहिंकेपतिवेनृपहोवें। नरकसाजुभारानितढोवें॥ ४५॥ जोननाथयहमोहिंसुनाई। उदासीनआदिकमुखगाई॥
दोहा-आतमरतअतिशैनरत, मोहूँपैबडभाग। ऐसेतुवपदकमलमें, होइमोरअनुराग॥
दासनकेसुखदेनाहित, लीलाकरियदुनाथ। कृपाविलोकनिकरहुजब, तबमेंहोहुँसनाथ॥ ४६॥
जोनकह्योतुमयहयदुनाहू। अबहूँनिजसमनृपकेजाहू॥ सुनियेमधुरिपुविनयहमारी। नहिंअसत्ययहबाततिहारी॥
पैवरवर्णप्रीतिअतिभारी।अवशिलोकमहँकरहिंकुमारी।जिमिअंबाशाल्वहिमनदीन्ह्यो।परवशभीप्मताहिहरलीन्ह्यो।
पुनिशाल्वहिपहँताहिपठायो।सोउपरतियगुनितेहिनटिकायो॥गयोतासुहरिजन्मवृथाँहीं।सुनीकथावृद्धनमुखमाँहीं॥
व्याहिनमेंजेकुलटानारी। तेनितनववरचहँहिंमुरारी॥ तातेकुलटानारिनवरहीं। तेनरउभैलोकसुखचहहीं॥ ४८॥
दोहा-सुनिरुक्मिणिकेवैनप्रभु, बोलेमृदुमुसक्याय। कहैजोतूनहिंअसवचन, तोकोकहैबनाय॥
सुननहेतुयहराजकुमारी। मैंतोसोंयहहँसीपसारी॥ तातेजोतुमउत्तरदीन्ह्यों। सोसबसत्यमानिमेंलीन्ह्यों॥ ४९॥
जेकामनाकरहुमोहिंमाँहीं। मोक्षहेतुतुवहोहिंसदाँहीं॥५०॥पतिपदप्रेमपतिव्रतप्यारी।लख्योतोहिमहँमैंअतिभारी॥
यदपिकरीरचिवचनउपाई।तदपिनतुवमतिचलीचलाई५१जेदंपतिसुखहितमोहिंभजहीं।तेकामीसंसारनतजहीं ५२॥
जेजनमोहिंसंपतिपतिपाई।माँगहिंविपयभोगसमुदाई॥तिनकोमंदभाग्यअतिजानो।अवशिनरकगामीपहिचानो५३॥
दोहा-करिप्रतीतिप्यारीजउन, कहेप्रीतियुतबैन। कुटिलतियनओखलनको, अहैकठिनताऐन॥ ५४॥
पतिव्रतातोहिंसमहेप्यारी। मोहिंनहिंत्रिभुवनपरतनिहारी॥ जेनृपतुमविवाहकेकाले। आयेअगणितओजविशाले॥
पुनिममकथातिनहिंपरित्यागी।मोढिगद्विजपठयोअनुरागी ५५ हरिलेआवततोहिंसुकुमारी।रुक्मीतुवभ्राताधनुधारी॥
लरयोनमंदापारहिंआई। बहुविधिमोपैविशिखचलाई॥ तहँतेरेदेखतसुकुमारी। दियोकाटिस्यंदनशरमारी॥
सुआशुअसिचर्महिंकाटी। लैकरवालताहिपुनिडाटी॥ बंधनकरिशिरमुंडनकीन्ह्यों। तामेंतुमननेकुचितदीन्ह्यों॥
दोहा-मेरेपैअतिप्रीतिकरि, आनँदअधिकबढाइ। मेरेगृहगमनीलली, निजकुलसुधिबिसराइ॥
निअनिरुद्धविवाहहिंमाँहीं। गमनहिंकियेभोजकटकाँहीं॥ तहाँविवाहअंतमेंप्यारी।कलिंगरुक्मसोंगिराउचारी॥
आनखेलनजानहिंरामा। तातेवेगिनोलावहुधामा॥ चौपरिरचहुविजयकेहेतू। बैठहुमोहिंयुतप्रभटसमेतू॥

मीशठतैसहिंकीन्ह्यों । अपनेमरणहेतुमनदीन्ह्यों ॥ ममभ्राताकोवेगिवोलाई । खेलनलग्योपरमसुखपा
जीत्योरुक्मीप्रथमहिंबारा । पुनिद्वैबाजीबलहुउदारा ॥ तवहुँरुक्मकहभैममजीती । पूँछिपंचसोंकरहुप्रतीति
दोहा–कलिंगराजतवअसकह्यो, जीत्योभीष्मकुमार । बलखेलननहिंजानते, गायचरावनहार ॥
भईतहाँतवहीनभवानी । कलिंगराजयहमृषावखानी ॥ कलिंगराजतवदंतदेखाई । सभामध्यशठहँस्योठठा
तवबलरामभ्रातममकोपे।रुक्मवधनकोअतिचितचोपे ॥ खम्भउखारितातिहिनिडारचो।औरहुसुभटसमूहसँहारच
बलहिंविलोकिकलिंगजवभाग्यो।तववलताकेपीछेलाग्यो॥दशयेंकदमपकरितेहिलीन्ह्यों।परिघमारिमुखविनरदकीन्
तैंलेपौत्रवधूहरपाई । मेरेसँगद्वारकासिधाई ॥ एतेहुपैतुमकछुनहिंमान्यो । मेरेप्रेममाहँचितसान्यो
दोहा–तुमरुक्मिणिऐसेगुणनि, मोकोंलीन्ह्योंजीति । तुमसमनहिंकोउकरहिंगी, मोपरप्रीतिप्रतीति ॥ ५६॥
पठयोद्विजममिलनेहेतू । सोसंदेशकहआइनिकेतू ॥ करिहौविलमजोआवनमाँहीं । तौमैंमिलिहौंजीवतनाँहीं
अर्प्योनिजतनुतुमहिंमुरारी । त्रिभुवनसूनोदृगनिनिहारी ॥ ऐसेवचनतुवैसुखयोगू । अहैनऔरेनईशनियोगू
ताकोकरिवोप्रतिउपकारो । मेरोमनसवविधिसोंहारो ॥ तातेमैंतोहिंमोदवढावत । रहौंसराहततुवयशगावत ॥५७

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिरुक्मिणिकोसमुझाई।वारवारतेहिंहियेलगाई ॥ सोऊअतिआनंदहिंपाई।प्रीतमसुखछविदृगनिछकाई॥५८
दोहा–यहिविधिवहुविधिरचतनित, रुक्मिणिसंगविहार । सिखवतजगकेनरनहरि, करतचरित्रउदार ॥ ५९॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीम
हाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे षष्टितमस्तरंगः ॥ ६० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–इकइकरानिकेभये, दशदशप्रबलकुमार । पृथकपृथकसोवरणहूँ, सुनुअभिमन्युकुमार ।१।२।३।४।५।६।
तिनमेंजोनआठपटरानी । तिनकेसुतमेंकहोंवखानी ॥७॥ चारुदेष्णसुदेष्णचारुतन।चारुभद्रअरुचारुचंद्रमन॥८॥
चारुसुचारुविचारहुचारू । येरुक्मिणिनवप्रबलकुमारू॥दशयोंज्येष्ठप्रद्युम्नप्रवीरा।नहिंत्रिभुवनजेहिंसमरणधीरा॥९॥
भानुसुभानुऔरस्वरभानू।भानुमानप्रतिभानुश्रिभानू।चंद्रभानुअरुवृहदभानुवर।रतिभानहुप्रतिभानसुयशकर।
येदशसुतसतिभामाकेरे।होतभयेसवबलीघनेरे॥साम्बसुमित्रसहसजितशतजित११विजयचित्रकेतुहुकतुपुरुजित।
दोहा–द्रविडऔरवसुमानिये, जाम्बवतीदशपुत्र । तिनमेंजेठोसाम्बभे, विक्रमजासुविचित्र ॥ १२ ॥
वीरचंद्रअश्वसेनवसु, वेगवाणवृषआम । शंकुकुंतिषसुदशकुँवर, सत्याकेवलधाम ॥ १३ ॥
श्रुतकविवृषसोमकसुभट, ऐकलभद्रसुबाहु । दर्शपूर्णमासहुछमा, यमुनासुतनरनाहु ॥ १४ ॥
अपराजितसहओजवट, महाशक्तितनुमान । सिहप्रघोषोध्वंगप्रबल, सुतलक्ष्मणासुजान ॥१५॥
अर्कअनिलवृकगृध्रशुचि, पावनवह्निमहीष । पुत्रमित्रविंदागुनो, वर्धननदअघवीस ॥ १६ ॥
वृहदसेनप्रहरणसुजय, आरिजितरणजितवाम । शूरहुसत्यकआयुभद्र, भद्रासुतबलधाम ॥
दीप्तिमानअरुताम्रह, ततादिकबलवान । रोहिण्यादिकरानिके, भेप्रभुतनयअमान ॥ १७ ॥
रुक्मवतीजोरुक्मकुमारी । रुक्मस्वयम्बरकियोविचारी ॥ जुरेसकलभूपतितहँजाई । कन्याहरणमनहिंटलनाई
सोसुनिकैप्रद्युम्नकुमारा । रथचढ़ितेकोंहतदोसिधारा ॥ सबभूपनकेदेखतमाँहीं । रुक्मवतीहरिल्यायोनाँहीं
नृपनजीतिप्रद्युम्नपुरआयो । सबपुरजनपरमसुखछायो ॥ रुक्मवतीकेभयोकुमारा । तासुनामअनिरुद्धउदारा
[illegible]।गौरदसदसनिपानिकुमारा॥तिनकेकोटिनभेसुतनाती।वरणेसुकविकहाँकोंहिभाँती ॥
दोहा–[illegible]निकथा, श्रवननसुधासमान । पटपुरमेंदानवनको, जीत्योजिमिभगवान ॥

रह्योविप्रइकअतितपधामा । ब्रह्मदत्तताकोरहनामा ॥ वेदषडंगनिजाननवारो । याज्ञवल्क्यकोशिष्यसुप्यारो ॥
रह्योसखावसुदेवहुकेरो । पढ़ेएकसँगशास्त्रघनेरो ॥ एकसमयताकोवसुदेवा । वेगिबोलायकियोबहुसेवा ॥
कीन्हीविनययुगुलकरजोरी।करहुवाजिमखद्विजबदिमोरी ॥ तबबोल्योद्विजअतिसुखपाई।अश्वमेधकरिहौंचितलाई॥
असकहिमनहिंविचारयोभूपा । पारियात्रजहँशैलअनूपा ॥ आवर्त्तागंगाजहँपावनि । करोजायतहँयज्ञसुहावनि ॥

दोहा-माँगिविदावसुदेवसों, ऐसोमनहिंविचारि । पारियात्रगिरिकहँचल्यो, लैसँगमेंनिजनारि ॥

रहींपंचशततासुकुमारी । तिनहुँनकहँलियसंगहँकारी॥ जायशैलमहँद्विजविनदम्भा।विधियुतकीन्ह्योंयज्ञअरम्भा ॥
तहाँज्रेसिगरेमुनिराई । ब्रह्मदत्तसुखशासनपाई ॥ याज्ञवल्क्यअरुद्वमपितुव्यासा । जैमिनिजाजालिसुतपप्रकासा ॥
मुनिसुमंतअरुदेवलआदिक । आयेसकलधर्ममरयादिक ॥ ब्रह्मदत्ततबदूतपठायो । वसुदेवहुँदेवकिहुँबुलायो ॥
ब्रह्मदत्तकोशासनपाई । वसुदेवहुँदेवकिसुखछाई ॥ ब्रह्मदत्तकेनिकटसिधारे । भयेमुदितमनमुनिनानिहारे ॥

दोहा-कियेवासवसुदेवतहँ, देवकियुतसुखपाय । दीन्हेंधनबहुमुनिनकहँ, सादरपदशिरनाय ॥

ब्रह्मदत्ततहँद्विजवडभागा । लग्योदेनदेवनमखभागा ॥ तहाँशैलनीचेअतिनेरो । पटपुररह्योदानवनकेरो ॥
रह्योनिकुंभदैत्यबलवाना । दानवसाठिहजारमहाना ॥ ताहीसमयनिकुंभपठाये । दानवचारिविप्रढिगआये ॥
ब्रह्मदत्तसोंरोपितभापे । कहाँनिकुंभभागतुमराखे ॥ ऐसहुदियोनिकुंभनिदेशा । कहियोद्विजसोंयहूसँदेशा ॥
पटपुरनिकटयज्ञद्विजकरिकै।सिद्धकीनचहहमहिंनिदरिकै।।दैत्यनलघुतासुरनबड़ाई।द्विजकहँउचितनपरतदेखाई ॥

दोहा-जोनहिंदेहेभागाद्विज, तोयहनिश्चयजानि । हमबाकीहरिलेइँगे, कन्यापंचशतानि ॥

राख्योजोमखहितधनजोरी । सोसबआइलेइँगेछोरी ॥ ब्राह्मणयज्ञकरननहिंपैहे । जोनहियज्ञभागमोहिंदैहे ॥
ब्रह्मदत्तसुनिदानवबैना । बोल्योभीतिमानिभरिनैना ॥ यज्ञभागअसुरननहिंयोगू । यहविरंचिकोअहैनियोगू ॥
पूँछहुसकलमुनिनकहँजाई । जोमुनिकहैंतोलेहुभँगाई ॥ कन्याजेशतपंचहमारी । तिनकोराख्योमनहिंविचारी ॥
[illegible]खेदींविप्रनकाँहीं । देहुँसुतामैंसकलविवाहीं ॥ कैसेलैजेहोबरजोरा । रक्षकहैंवसुदेवकिशोरा ॥

दोहा-ब्रह्मदत्तकेवचनअस, सुनिदानवबेचारि । जाइनिकुंभसमीपमें, दीन्ह्योंसकलउचारि ॥

[illegible]तनिकुंभकोपअतिकीन्ह्यों । सकलदानवनआयसुदीन्ह्यों॥यज्ञभंगकीजेतुमजाई । ल्यावहुकन्यासकलछुड़ाई॥
[illegible]शालासबदेहुजराई । बाँधहुद्विजकहँबँचिनहिंजाई ॥ इतैदानवनविप्रडेराई । भूपनदियनेवतापठवाई ॥
[illegible]डवकौरवमालवभूपे । दंतवक्रमागधैअनूपे ॥ रुक्मीऔशिशुपालहुकाँहीं । द्रुपदविराटजयद्रथपाँहीं ॥
[illegible]ल्वशल्यशकुनिहुँदलवृंदा । भूपअवंतीविदनुविंदा ॥ औरोसबधरणीकिराजन । बोल्योविप्रसमेतसमाजन ॥

दोहा-भूपनआगमजानिके, नारदकियोविचार । ऐसीकरोउपायमें, जातेदोइसँहार ॥

[illegible]इनिकुंभनिकटमुनिराई । मंदमंदअसगिरासुनाई ॥ ब्रह्मदत्तसबनृपनबोलायो । तुमकोचाहतरणहिंहरायो ॥
[illegible]तिऐसीकरहुउपाई । जेहिविधिअबमेंदेहुँबताई ॥ पावहुशतकन्याद्विजकेरी । लावहुआशुकरहुनहिंदेरी ॥
[illegible]हुबाँटिभूपनबलवारे । तोसबहैहैंअवशितुम्हारे ॥ नारदवचनसुनतअसुरेशा । दीन्ह्योंतिसहिंभटननिदेशा ॥
प्रचंडदानवद्रुतधाये । मापेमखढिगआतुरआये ॥ मखशालासबदियोजराई । फोरेयज्ञपात्रसमुदाई ॥

दोहा-पाँचौंशतकन्याहरयो, ब्रह्मदत्तकहँबाँधि । देवकिऔवसुदेवको, राख्योधामहिंधाधि ॥

[illegible]हाकारकरतदुखपाई । मखकरताद्विजगयेपराई ॥ मानिनिकुंभभीतिसुरभागे । कारिनहिंसकेयुद्धभयपागे ॥
[illegible]षवसुदेवनिकटमुनिजाई । कह्योकहाअबपरतदेखाई ॥ तबवसुदेवकह्योदुखछाई । जाहुद्वारकैद्रुतमुनिराई ॥
[illegible]रिसोंकहियोदशाहमारी । पुनिकहियोममबचनउचारी ॥ परमातुपितुकेदातिदारे । तुमसोंबहुगृहपाँयपसारे ॥
[illegible]ुनिवसुदेववचनक्षपिराई । कह्योहरिसोंद्रुतहिंदेखाई ॥ जसकहियदुनगरीमहँनाई । यदुपतिसोंसबसबखुनाई ॥

दोहा-द्विजबंपनकन्याहरन, कैदमातुपितुजानि । द्रुतहिंबोलिप्रद्युम्नको, भाष्योशारँगपानि ॥

[illegible]टपुरकोनिकुंभअसुरेशा । सुरनसहितजोजित्योसुरेशा ॥ ब्रह्मदत्तकेमखसमदाये । द्विजनमारिपतभौनपरायो॥

विप्रनपगमहँबंधनडारे। कैदकियोपितुमातुहमारे॥ पाँचहुशतजोविप्रकुमारी। हरिलैगयोतिनहिंशठभारी॥
जननीजनकहुबंधनकेरो। मोहिंनतितनोशोचघनेरो॥ जेतनोकन्याहरणविषादा। जातिआजद्विजकीमरयादा॥
पटपुरजाहुपुत्रयहिक्षणमें। रक्षेहुकन्यनडरहुनमनमें॥ हरिसुतविहँसिकह्योकरजोरी। आपप्रतापप्रातयहथोरी॥

दोहा—धौंकन्यनरक्षणहिको, मोकोंहोतनिदेश। धौंशठहनिकन्यासहित, द्विजलाऊँयहिदेश॥

किधौंपितामहापितामहीको। बंधनछोरिदेहुँतिनहीको॥ तवयदुपतिबोलेमुसक्याई। जबलगिहमनहिंआवें
तबलोंकारिकोनिहूँउपाई। कन्यनकोरक्षहुतहँजाई॥ सुनिपितुबैनबंदिरणधीरा। चल्योगगनमगमनहुँस
जायतहाँभोअंतरधाना। मायावीअसकियनिरमाना॥ रच्योपाँचसैसुतासुहाई। राखिदियोनिकुंभगृहजाई
पाँचहुशतजेविप्रकुमारी। हरचोतिनहिंमायापटडारी॥ द्विजदुहितनमखशालामाँहीं। राख्योद्विजवररह्यो

दोहा—युतनिकुंभदानवसबै, जान्योनाहिंचरित्र। मायावीजोकरतभो, यदुपतिकोप्रियपुत्र॥

ब्रह्मदत्तकोनेवताजवहीं। आयोहस्तिनपुरमहँसवहीं॥ तवदुर्योधननृपअभिमानी। कियोमंत्रसबमंत्रिनअ
कर्णशकुनिदुःशासनकाँहीं। भीषमद्रोणहुँकृपहुँतहाँहीं॥ पांडवहुनकहँलियोबुलाई। लाग्योकरनमंत्रमन
बैनतहाँदुर्योधनभाखे। कहौमंत्रजोजियगुनिराखे॥ ब्रह्मदत्तनिजनेवतपठायो। याकोकसविचारमनआ
किधौंउचितहैजावतहाँहीं। किधौंउचितगमनवतहैनाँहीं॥ भीषमदेवतहाँअसभाष्यो। कहेदेतजोमैंसुनिर

दोहा—ब्रह्मदत्तकीपंचशत, सुताहरचोदनुजेश। तातेद्विजपठयोडरो, नेवतासवैनरेश॥

देवकिअरुवसुदेवहुकाँहीं। असुरकैदकियमखगृहमाँहीं॥ तातेतहँयदुवंशीजैहें। कृष्णमातुपितुअवशिछु
यदुपतिआगमसुनतनिकुंभा। करिहिअवशिआतुरअसदंभा॥ लेइहिधनदैतुम्हैंलुभाई। यदुवंशिनसँगयुद्धक
तातेउचितनजावतहाँहीं। बैठोचुपह्वैनिजगृहमाँहीं॥ विदुरद्रोणकृपमंत्रप्रवीने। भीषममंत्रहिंसम्मतकं
तहँदुःशासनशकुनिप्रवीरा। बोलेउरकरिगर्वगँभीरा॥ पाँचशतद्विजसुतासुहाई। औरहुमणिगणधनअधि

दोहा—अपनीकरनसहायहित, जोहमकोवहदेय। तौसहायकरिबोउचित, युधयशकोनहिंलेय॥

सूतपुत्रतबकह्योप्रकोपी। यदुवंशिनजीतनमहँचोपी॥भलीकहीशकुनिहुँदुःशासन।यहिविधिकीजैयदुकुलना
उचितयदपिनहिंदानवयच्छा। तदपियुद्धहितगमनबअच्छा॥ यदुवंशीनृपहुक्मनमानें।अपनेकहँसबतेबडज
यदपिसुयोधनकियबड़वारी। तदपिनजानहिंआदिभिखारी॥ बढ्योगर्वयदुवंशिनकेरे। सबदिनतेकुरुकुलके
तबभीषमकछुकह्योरिसाई। कर्णतोरिशिठतानहिंजाई॥ करहुबैरकसअर्थपराये। यदुवंशिनजीतनमनल

दोहा—यदुवंशीकीन्ह्योंकहा, कुरुकुलकोअपराध। विनाहेतुविनकाजकत, कीजतुकोपअगाध॥

यदुवंशिनजीतबयुधमाँहीं। जानहुँसहजसबैतुमनाँहीं॥ परब्रह्मयदुपतिभगवाना। तिनसोंबैरनहैकल्याना
जबअसभीषमवचनउचारे। कह्योकर्णकीदृगअरुणारे॥ तुम्हरेतौनयुद्धकरचाऊ। यदुवंशिनकहँसदाडेरा
बूढेभयेभईमतिभोरी। आयुर्दायरहीअबथोरी॥ यदुवंशिनकीबहुचपलाई। सोहमसोंअबनाहिंसहिजाई
तबदुर्योधनगिराउचारी। कर्णकह्योतुमबातविचारी॥ जोमानहुँसलाहसबमेरी। पटपुरचलहुकरहुनहिंदेर

दोहा—भलीव्याजयहह्वैगई, दीन्ह्योंदईबनाय। यदुवंशिनकीकीजिये, अवशिपराजयजाय॥

हमरेगमनतसबनृपजैहें। यदुवंशीअबवचननपैहें॥ जहाँभीष्मद्रोणहुँबलवाना। कर्णकृपाचारजमतिमाना
जहँअर्जुनगांडीवहिंधारी। भीमसेनतहँगदाप्रहारी॥ तहँनाहिंशंकाहोनपराजै। होहिंशक्रजोसहितसमाजै
यदुवंशीकरिहैंनलराई। बालकसकैंनशैलउठाई॥ तबभीषमबोलेमतिमाने। तुमअपनेबलफिरहुभुलाने
क्षुद्रनृपनजीत्योसंग्रामा। अबैवीरसोंपरचोनकामा॥ जबधैहैंहलमूसलधारी। तबकोजुरीसमरधनुधारी

दोहा—अबैनदेख्योकृष्णसुत, जासुप्रद्युम्नहिंनाम। जाकेसमदूसरनहीं, रिपुजेतासंग्राम॥

अबैसुन्योनहिंशारँगशोरा। जौनपुरंदरकोमदमोरा॥ देख्योनहिंअनिरुद्धकुमारे। मघामेघजलसमशरडारे
अबैनहिंसात्यकिशूरा। राखतजोधनुगर्वगरूरा॥ गृहबैठेभापहुमनमाने। अबैनदृगयदुवीरदेखाने

करहुजौनतुमकोअतिभावै। चलहुजहाँतुम्हरेमनआवै॥ हमकहिउऋणहोतहैंआजू। करबनवैरउचितयदुराजू॥
हमतुम्हरेआश्रितकुरुनाथा। तातेचलबतुम्हारेसाथा॥ तहँलखबसबकेरतमासा। करहिंजेइतबलबचनविलासा॥

दोहा-असकहिभीषमगृहगये, द्रोणविदुरकृपयुक्त। तबपांडवअसकहतभे, सुनहुसबैममभक्त॥

हमतोहरिकेहाथबिकानें। दूजोप्रभुमनमेंनहिमानें॥ जहँयदुपतिजेहैंतहँजैहैं। करिहैंसोजोआयसुदैहैं॥
असकहिपांडवसदनसिधारे। तबदुर्योधनवचनउचारे॥ इनकीसदाकेरियहरीती। करहिंअवशिममरिपुसोंप्रीती॥
जानदेहुअबनाहिंबलावहु। इनकीकछुनशंकमनलावहु॥ पांडुसुतनकीबदिरणजाई। देहौंशरमैंपाँचचलाई॥
बोल्योकर्णतहाँरणधीरा। साजहुसैन्यचलहुकुरुवीरा॥ उतैपांडुनंदनचढ़िस्यंदन। गयेद्वारकैजहँयदुनंदन॥

दोहा-एकादशअक्षौहिणी, साजिइतैकुरुनाथ। पटपुरकोगमनतभयो, लैबहुभूपनसाथ॥

संजयविदुरअंधनृपतीने। रहेहस्तिनापुरदुखभीने॥ सुनिपटपुरकुरुनाथजवाई। औरहुनृपसबसैन्यसजाई॥
गयेसकलपटपुरहरपाई। सुनियदुवंशिनकेरिअवाई॥ तेइसअक्षौहिणिमगधेशा। इकअक्षौहिणिरुक्मसुवेशा॥
कोउइककोउद्वैकोउत्रयचारी। इमिअक्षौहिणिभूपसँवारी॥ कियेजायपटपुरमहँडेरा। सबकेशीशकालकरफेरा॥
सबभूपनकीसुनतअवाई। तहँनिकुंभदानवसुखपाई॥ निजमंत्रिनकहँदानवकेतू। पठयोकुरुपतिपहँनिजहेतू॥

दोहा-दुर्योधनढिगसचिवचलि, कह्योवचनकरजोरि। कह्युनिकुंभविनतीकरी, सोसुनियेप्रभुमोरि॥

करहुसहायमोरिसबभूपा। लेहुपंचशतसुताअनूपा॥ लीजेबहुधनमणिगणनाना। कीजेअसविक्रमबलवाना॥
यदुपतिपिताछोडावनआवैं। सोयामेंपुनिवाचिनाहिंजावैं॥ औरहुजेयदुवंशीऐहैं। तिनकोदैरिदैत्यसबखैहैं॥
तुमसमनहिंजगमहँधनुधारी।सबैभाँतिहमलियोविचारी॥कर्णसुयोधनशकुनिदुशासन।प्रमुदितभेसुनिदानवशासन॥
मागधदंतवक्रशिशुपाले। शल्यशाल्वविदुरथहुकराले॥ धृष्टद्युम्नजयद्रथपाँहीं। द्रुपदविराटसुशर्माकाँहीं॥

दोहा-बिंदहुअरुअनुविंदको, भीष्मद्रोणकृपकाँहि। रुक्मीअरुभगदत्तको, आन्योनिजढिगमाँहि॥

यथायोग्यतहँभोसतकारा। लागिगयोशोभितदरबारा॥ तबदुर्योधनमनहिंविचारी। सबभूपनसोंगिराउचारी॥
मंत्रीचारिनिकुंभपठाये। विनयकरनमेरेढिगआये॥ दैत्यदेतशतपंचकुमारी। औरहुमणिगणदैधनभारी॥
सबसोंमाँगतकरनसुहाई। यदुवंशिनकीलगीलराई॥ तामेंकहाउचितहैभाई। सबमिलिमोकोंदेहुबताई॥
जोममसम्मतिजाननचाहो। तौसुनियेसिगरेनरनाहो॥ यदुवंशीअबहींकेबाढे। सबसोंहोतसमरमहँठाढे॥

दोहा-कियेवैरसबनृपनसों, सबकेहैंदुखदानि। अपनेकहँसबतेअधिक, मानतहैंबलखानि॥

मरेपरमहँकरहिंविरोधा। मिलिपांडवनवृथाकरिक्रोधा॥ हरहिंस्वयंवरमाहँकुमारी। जगमहँजाहिरहैंव्यभिचारी॥
ातेभलोयोगपरिगयऊ। दानवबसुदेवहिंधरिलयऊ॥ कीजेसबैनिकुंभसहाई। मारहुसबयदुवंशिनधाई॥
तबवेपितैछोडावनआवैं। तबयामेंफिरिनहिंबचिजावैं॥ सबजुरिबैरआजुलैलीजे। यदुकुलजगमेंरहननदीजे॥
अवशिपांडवनकोमेंमारिहों।कुलकलंककोकछुनहिंडारिहों॥यदुवंशीकुमतीसनअहहीं। सबकेदगसिकतासमगहहीं॥

दोहा-लेहोजोनहिंवैरअब, तौपाछितेहोफेरि। कबहुँनपैहौअससमय, कहौसबनसोंटेरि॥

सुनिदुर्योधनकेरनिदेशा। कोपितकह्योतहाँमगधेशा॥ हमतोहारेसत्रहिंबारा। तातेयुधकोअवशिविचारा॥
कौनिहुँभाँतिहरिहिंधरिपाऊँ। तौशरीरकोशोकमिटाऊँ॥ बोलेतबरुक्मीशिशुपाला। बचिनजानपैहैंगोपाला॥
करिनिकुंभकीअवशिसहाई। करबयुद्धयदहउचितदेखाई॥ औरहुसबनृपसम्मतकीन्हें।युद्धकरनकहँसबचितदीन्हें॥
तबभीषमपुनिगिराउचारी।कालिहटेबसबहटहिंनिदारी॥मंत्रहिकरतबीतिदिनगयऊ।अस्तानटहिंअस्तरविभयऊ॥

दोहा-तबनिजनिजडेरागये, भूपसबैबलवान। यदुवंशिनसोंयुधकरन, कीन्हेंसबैप्रमान॥

इतपांडवद्वारावतिआई। सभामध्यहरिकहँशिरनाई॥ यथायोग्यमिलिकैसबभाई। बैठेभामकजलमुखछाई॥
कुशलप्रश्नपूँछ्योयदुनंदन।तबकरजोरिपांडुकुलनंदन॥ कह्योमोदअतिहगनबहावत। कुशलनाथतुवदर्शनपावत॥
हस्तिनपुरकोसुनहुहवाला। दुर्योधनाकियमंत्रकराला॥ दानवएकनिकुंभमदाना। सोतुमसें

तासुओरदुर्योधनधाई । गयोनाथसवनृपनलेवाई ॥ चलनकह्योहमहूँकहँसंगा । चाह्योजीतनयदुकुलजंगा ॥

दोहा—तवहमतासोंरूसिकै, लैनिजचारोंभाय । दर्शावेरेकोकरन, आयेआशुहिंधाय ॥

धनहुँधामधरणीपरिवारा । लाग्योतुमसोंनाथहमारा ॥ कैसेजायँआपअरिओरा । अमीछोंडिविपभक्षहिंघोरा ॥
तवयदुनंदनगिराउचारी । जानीसिगरीदशाहमारी ॥ असकाहिपांडवसंगलेवाये । उग्रसेनकीसभासिधाये ॥
सवयदुवंशिनतहाँबोलाई । मंत्रकरनलागेयदुराई ॥ उग्रसेनप्रथमहिंतवबोले । अपनेउरकीआशयखोले ॥
देवकिअरुवसुदेवहुकाँहीं । कियोनिकुंभकैदमखमाँहीं ॥ हैनिकुंभदानवपरचंडा । दीन्ह्योंसुरयुतशक्रहिंदंडा ॥

दोहा—वज्रहुगह्योनतासुतनु, विनश्रमलियदिविजीति । लुकेरहतलोकनअमर, मानितासुअतिभीति ॥

महादेवकोहैवरदानी । तीनरूपधरेवलखानी ॥ अहैअवध्यसुरासुरतेरे । साठिहजारदैत्यतेहिंकेरे ॥
तेऊहैंअतिशयवलवाना । करहिंअकाशअकाशपयाना ॥ मायावीअतिशयवलवारे । अस्त्रशस्त्रसवजाननहारे ॥
सोदानवकीकिरनसहाई । गयोतहाँदुर्योधनराई ॥ भीपमद्रोणकर्णरणधीरा । कृपदुःशासनशकुनिप्रवीरा ॥
कुरुकुलसिगरोसमिटिसिधारा । लैदलगेनृपऔरअपारा ॥ संगरतहाँभयावनहोई । दानवसोंजुरिसकीनकोई ॥

दोहा—तुमसुकुमारअपारहो, हेवसुदेवकुमार । महाभयंकरदैत्यवह, शक्रसुजीतनहार ॥

तातेमेरेमनअसआवैं । आपसहितयदुदलनहिंजावैं ॥ नारदआदिकमुनिनपठाई । दानवकोवहुविधिसमुझाई ॥
देवकिअरुवसुदेवछोडाई । लीजैसामरीतियदुराई ॥ सवभूपनकोकरिसतकारा । ब्रह्मदत्तकोयज्ञप्रकारा ॥
करवावहुइततेयदुनाथा । होइयुद्धनहिंभूपनसाथा ॥ ऐसोमेरेमनमहँआवै । पुनिजैसोतुम्हरेचितभावै ॥
हगनहोततुवदर्शनओट्टू।लागतवज्रसरिसहियचोट्टू ॥ परतपलककलपहिंसमजाँहीं । तुवदर्शनविनहगविलखाँहीं ॥

दोहा—वरुहमहींतहँजायकै, दानवकोसमुझाय । पाँचौंशतवैकन्यका, द्विजकहँदेवदेवाय ॥

भूपतिवचनसुनतयदुराई । कह्योनकछुदीन्ह्योंमुसक्याई ॥ तवबोलेवलभद्रप्रवीरा । सुनहुवचनममनृपमतिधीरा ॥
भईआजुलोंअसकहुँनाँहीं । पुनिविशेपियहियदुकुलमाँहीं ॥ पिताकैदसुनिकैनिजकानैं । वैठरहवगृहमाहँलुकानैं ॥
द्विजदुहितनकोहरणहुसुनिकै।करवनयुद्धभीतिमनगुनिकै॥विप्रकाजमहँलागहिंप्राना।जगतमध्यकोताहिसमाना ॥
भूपतिसैन्यजौनजुरिआई । रहैंऐनकिमिताहिडेराई ॥ हैनिकुंभयद्यपिवलवाना । साठिहजारहुदैत्यमहाना ॥

दोहा—तद्यपिभयकछुलगतनहिं, मेरेमनहिंनरेश । दानववैकारिहैंकहा, कसनहिंदेहुनिदेश ॥

ऐहैंजोविधिशंकरसंगा । तौविशेपिजीतवहमजंगा ॥ येकौरवहैंकेतिकवाता । तिनमहँकोउनहिंवीरविख्याता ॥
रुक्मीअरुमागधशिशुपालू । दंतवक्रविदुरथअरुशालू ॥ इनकीअहैवीरताजानी । कुंडिनपुरमहँप्रगटलखानी ॥
कर्णसुयोधनशकुनिदुशासन।इनकोकियगंधर्वहुशासन ॥ जिनकोजीतिलियोसुरगायक।तेकैसेयदुकुलरणलायक ॥
हमअवश्यजैहैंनृपतहँहीं । जननीजनककैदहैंजहँहीं ॥ मारिअसुरभूपनमदमोरी । लैहैंजननीजनकहिंछोरी ॥

दोहा—सुनतवैनवलभद्रके, यदुवंशीसववीर । लगेसराहनरामकहँ, कसनकहहुरणधीर ॥

मुहँयदुनाथकहनपुनिलागे । मानहुँवचनअमीरसपागे ॥ करहुभूपशंकानहिंकोई । आपप्रतापसिद्धिसवहोई ॥
वैठहुआपद्वारकामाँहीं । शासनदेहुवेगिहमकाँही ॥ गमनवउचितनअहैआपको । विजयहेतुवलहुवप्रतापको ॥
उग्रसेनतवकह्योदुखारी । जोभावैसोकरहुमुरारी ॥ तवयदुनंदनकेअभिवंदन । सैन्यसाजिआशुहिंआदिदुंदन ॥
यारहिंअसोंहिणिदलकै । पटपुरगवनकियेजयज्यैकै ॥ सारणउद्धवचितरणभोजा । विपृथुपृथुविचक्षअतिओजा ॥

दोहा—कृतवर्मासात्यकिसुभट, चारुदेष्णवलवान । अक्रूरहुगदसांवभट, सनत्कुमारसुजान ॥

अरुअनिरुद्धधनुर्धरधीरा । निशठउल्मुकहुसुतवलवीरा ॥ अनाधृष्टसेनापतिजोई । दलआगेगमन्योभटसोई ॥
यदिविविधयदुवंशीअतिकोपे । पटपुरगयेसमरचितचोपे ॥ ब्रह्मदत्तमखगृहकेनेरे । डेराकियोकृष्णतहँडेरे ॥
तहाँप्रद्युम्नआपशिरनायउ ।कहहरिद्विजदुहितानिछोडायउ॥तवप्रद्युम्नबोलेकरजोरी॥द्विजदुहितनल्यायोंकरिचोरी ॥
[illegible] । राखौदानवभवनमझारी ॥ यदप्रसंगदानवनहिंजाने । अपनेवलमदफिरिंफुलाने ॥

दोहा–यदुवंशिनआगमनसुनि, उतनिकुंभअसुरेश। मायाकीकन्यासकल, दीन्हीनृपनिनरेश॥
ेनिशिमहँपठयोइकचारा। सोदुर्योधनशिविरसिधारा॥ कह्योजोरिकरकुरुपतिपाँहीं। नृपनिकुंभभेज्योमोहिंकाँहीं॥
ोवचनअसदानवराई। सबनृपमिलिअसकरहिंउपाई॥ यदुवंशिनपरकोपहिंकैकै। परहिरैनमहँसैन्यहिंलैकै॥
हेउपायविनश्रमनहिंजैहै। भागतवनिहिननिशिवासिजैहै॥ अथवालगैनरातिउपाई। काल्हिलरौंतोभाजबजाई॥
ोधनतबकहहँसिबानी। परतनिशायुधअनुचितजानी॥ तातेलरहिंकाल्हिदनुजेशा। करिहैंसबैसहायनरेशा॥
दोहा–दुर्योधनकेवचनसुनि, चारिदैत्यढिगआय। कुरुपतिकोसिद्धांतसब, दीन्ह्योंताहिसुनाय॥
ेकृष्णमखशालहिंआये। ब्रह्मदत्तबंधनहिंछोडाये॥ मातपितालखिभयेदुखारी। कैदभवनतेलियेनिकारी॥
वसुदेवसुतनउरलाये। वारवारदृगवारिवहाये॥ कृष्णरामवंदनतहँकीन्हें। मातुपिताआशिषबहुदीन्हें॥
निवसुदेवकहीमृदुवाणी। सुनहुप्राणप्रियशारँगपाणी॥ हैनिकुंभअतिशयबलवाना। उचितनयुद्धपरतमोहिंजाना॥
हँतुमअतिसुकुमारकुमारे। कहँदानवनरभक्षणहारे॥ चलहुद्वारकैअबयदुनाथा। मातपितालैअपनेसाथा॥
दोहा–तबबोलेयदुपतिविहँसि, पितानतुमघबराहु। इतहींबैठेदेखिये, संगरसहितउछाहु॥
ाहीसमयचारद्वैआये। यदुपतिकोअसखबरिसुनाये॥ नृपनिकुंभसंमतसबकीन्हें। छापामारननिश्चितदीन्हें॥
थवाकाल्हिहोतहिंभोरा। करिहैंयुद्धआपसोंघोरा॥ करनमंत्रयदुपतिचितचाये। सबसचिवनानिजनिकटबुलाये॥
ात्यकिउद्धवअरुकृतवर्मा। रामजासुअद्भुतरणकर्मा॥ अनिरुधअरुप्रद्युम्नप्रवीरा। औरहुसबयदुवरमतिधीरा॥
अरुपाँचौंपांडवतहँआये। मंत्रकरनलागेमनलाये॥ प्रथमहिंबोलेयदुकुलकेतू। सबैसुभटबलतोलनहेतू॥
दोहा–हैनिकुंभअतिशयप्रबल, दानवसाठिहजार। तापरपुनिभूपतिबली, समिहैंसबएकबार॥
महारथीभीषमरणधीरा। शलभसरिसछाँडतधनुतीरा॥ क्षत्रीरहितक्षमाकरिदीन्ही। इकइसवारविजयजिनलीन्ही॥
ऐसोप्रबलपरशुधररामा। कियभीषमतासोंसंग्रामा॥ तेइसदिनकरिकैरणघोरा। हारिगयोजमदग्निकिशोरा॥
करीदिग्विजयजगत्रयवारा। कबहुँनकाहूसोंरणहारा॥ सोभीषमआयोधनुधारी। तासोंसकीकोनकरिरारी॥
धनुविद्याआचारजजोई। आयोद्रोणाचारजसोई॥ कर्णकठिनकोदंडविधर्ता। शत्रुनकोटिकतलकोकर्ता॥
दोहा–दशहुदिशनकेनृपनकहँ, जीतिकरणबलवान। करवायोदुर्योधनहिं, अश्वमेधसविधान॥
अहैसुयोधनयुतशतभाई। बलीसुशर्माआयोधाई॥ द्रुपदविराटजयद्रथयोधा। धृष्टद्युम्नशत्रुमदरोधा॥
रुक्मीशाल्वऔरशिशुपाला। दंतवक्रविदुरथहुभुवाला॥ औरहुमहारथीसबआये। यदुवंशिनसोंयुधमनलाये॥
तेमेरेमनअसआवै। यामेंसकलभाँतिबनिजावै॥ अर्जुनअरुप्रद्युम्नकुमारा। भीमसेनअनिरुद्धउदारा॥
चारियेदलकेआगे। करहुतानिदलकेरविभागे॥ सात्यकिअरुउद्धवगदवीरा। रहहिंसैन्यपीछेयुतभीरा॥
दोहा–हमअरुबलअरुधर्मनृप, रहबसैन्यमधिठौर। युगमाद्रीसुतदानपति, फिरहिंसैन्यचहुँओर॥
ेतुमसबयहिविधिसोंलरिहो। तबतेनाहिंभूपनसोंहरिहो॥ सहसाकियेबातनहिंबनिहै। यदुवंशिननिकुंभहटिहनिहै॥
मेरेभरोसअसआवत। जेहिसँगअर्जुनसोंजयपावत॥ नहिंगांडीवसरिसधनुदूजो। त्रिपुरजयीजेहिविक्रमपूजो॥
निहारिकेअसवचनप्रचंडा। फरकेशंबरारिभुजदंडा॥ जोरिपाणिअसवचनउचारा। पितासत्यजोकियोविचारा॥
ादिआपयहिभाँतिबखाने। ताकेसरिसकोनजगआने॥ पैहमारिविनतीसुनिलीजे। कारिकृपाएकहरिकीजे॥
दोहा–श्रीअर्जुनजीतेरिपुन, अबशिवकेटेआज्ञु। कीरिपुजीतनमोहिकहैं, कहिहेंजेपदुराज॥
रथनहमअर्जुनइकसाथ। विजयपराजयनिजनिजहाथे॥ करोकोउकेतोमनुसाई। यद्यपिरिपुनजीतिनयपाई॥
दपिअर्जुनहिंकहैंयदुराई। देहोयुधमहँविजयबड़ाई॥ नहेंअर्जुनहिंभागिपनुधागी। सुननजगतकापरतानिहागी॥
ोकरपरपनुपमभुदाई। विक्रमतासुरहोनाहिंगोई॥ नातोहनकुरायपुषटीजे। जोअतितेहिआपसुदीजे॥
५ रहै। पैअर्जुनसंगतमरनअहै॥ नापननुमरहेजेहिसोंही। मोनीनीरनहंमपनोही॥
दोहा–आपेद्वारकेजेसबे, जानेनहैनरेश। जाकोननभोतिपना, ताकोहहुनिदेश॥

जीत्योविप्रबापुरेकाँहीं । भीपमदेवअबेरणमाँहीं ॥ जबभिरिहैकोउक्षत्रीनाथा । कठिनवचावनपरिहैमाथ
भीपमकेदिगविजयकरतमें । रह्योनहींप्रद्युम्नजगतमें ॥ नातोदिगविजयीनहिंहोते । औधशीशकरिरणमहँसोते
द्रोणाचारजबूढ़महाने । सबैबालकनसिखवनजाने ॥ जौनकर्णकीकरौबडाई । नाथबातयहसाजिनाहिंआई
हमयदुकुलवहसूतकुमारा । किमिसन्मुखतजिहैशरधारा ॥ नीचबडेनकेसोहनआवे । देखतहींश्रुतहींदविजावे
दोहा–औरविचारेभूपसब, करननजानहिंयुद्ध । लालचवशआयेसबै, फाकरिहैंहैंक्रुद्ध ॥
जोअर्जुनतेविजयविचारो । तौमानहुँप्रभुवचनहमारो ॥ जौनदेहुपांडवहुनकाँहीं । जुरेभूपसबजेहिंदलमाँहीं
यदुवंशीकोउकरहिंनयुद्धा । मोकहँआयसुदीजेशुद्धा ॥ अहैनाथतुवचरणदोहाई । धरिलैहौंसबकहँरणधाई
वचीनएकौभूपसमाजा । आपुप्रतापसिद्धसबकाजा ॥ खड़ेआपुइतलखहुतमासा । करैकामजोरावरदासा
मैंनहिंकछूकरनकेलायक । मोपरतुवप्रतापयदुनायक ॥ तुवसुतह्वैयदुकुलमहँजाई । सकौंनविधिशंकरहुँडेराई
दोहा–येदानवअरुभूपसब, हैंप्रभुकेतिकबात । जीतबइनकहँसमरमहँ, मोकहँसरललखात ॥
यदुनंदननंदनकीबानी । सुनिकैसकलसुभटअभिमानी ॥ सभामध्यबोलेकछुनाँहीं । कौतुकसकलगुनैमनमाँहीं
तबसुतकहँहरिआँखिदेखाई । भोप्रद्युम्नचुपशीशनवाई ॥ परासिप्रद्युम्नशीशअभिरामा । तहाँवचनबोलेबलरामा
सत्यकह्योतैंकृष्णकुमारा । जान्योविक्रमतोरहमारा ॥ कृष्णकह्योनहिंवचनविचारी । चहहिंपांडवनकीबडवारी
ऐसीरहीनरीतिहमारी । होहिंऔरसँगविजयविहारी ॥ यदुकुलसदारीतिचलिआई । अपनेबलसोंकरहिंलराई ॥
दोहा–तातेजैसोहमकहैं, तिमिकीजैयदुनाथ ॥ समरभारयहआजुअब, धरिदीजैसुतमाथ ॥
पाँचपांडवनअसकहिदीजै । मखशालातुवरक्षणकीजै ॥ भीमसेनअर्जुनजहँरैहैं । दानवतहाँकबहुँनहिंऐहैं ॥
जोऐहैंअतिआतुरधाई । तौअस्त्रनसोंविजयजराई ॥ यामेंहैनाहिंकछुसंदेहू । बलीसोईजेहिंतुमाकियनेहू ॥
हमअरुतुमनिकुंभसोंभिरहीं । दानवदलसोंयदुदलजुरहीं ॥ भूपनकोदलजौनअपारो । तासोंसमरकरौसुतप
अवनहिंकीजैऔरविचारा । मानहुँयदुपतिवचनहमारा ॥ देखहुविक्रमअबसुतकेरो । बालहिंतेपाल्योजोमेरो
दोहा–सुनतवचनबलभद्रके, कह्योकृष्णमुसक्याय । उचितहोतसबभाँतिसोइ, कहतजोजेठोभाय ॥
धर्मभूपलैतुमनिजभाई । रक्षणकरहुयज्ञगृहजाई ॥ दानवबलिजोसाठिहजारा । तिनकोकरहुपार्थतुमछारा ॥
हमदेखबसबकेरतमाशा । कौनवीरकसकरतप्रकाशा ॥ सुनिपारथयदुपतिपदवंदे । उठ्योसभातेतमाकिअ
गयोयज्ञशालैधनुधारे । भीमादिकयुतनृपहुसिधारे ॥ तबवसुदेवकहीमृदुबानी । लीजेप्रवरजयंतहुआनी ॥
तबदुनहुँनकहँकृष्णबोलाये । शासनपायआयशिरनाये ॥ तबदरबारभयोबरखासू । गयेवीरानिजनिजैनिवार
दोहा–तबप्रद्युम्नसोंहरिकह्यो, रक्षहुतुमनिशिमाँहिं । फिरहुचहूँकितसैन्यके, आयसकैंअरिनाँहिं ॥
बीबीजबैत्रियामात्रियामा । नींदछोडितबहरिबलरामा ॥ प्रातकर्मकरिमज्जनकीने । संध्यावदनकरिसुखभीने ॥
सकलसैन्यमहँचारपठाये । हयमतंगस्यंदनसजवाये ॥ सजगभयेसबआशुहिंवीरा । कसिकसिकूँडकवचरणधी
चढिचढ़िरथनमतंगतुरंगन । आयेहरिढिगयुद्धउमंगन ॥ बाजिउठेतहँविविधनगारे । सिंहनादकीन्हेंभटभारे ॥
मकरव्यूहरचितहँजगदीशा । खड़ेभयेयुधहेतुमहीशा ॥ कूँडकवचनिषंगधनुधारी । रथचढिकरिसबसमरतयारी
दोहा–निकसिअकेलेसैन्यते, यदुनंदनकेनंद । खडोभयोआकाशमें, मनुरवितेजअमंद ॥
बजनलगेतहँबाजजुझाऊ । सबवीरनकेबढ्योउराऊ ॥ पूरबपूँपनप्रगटिप्रकाशा । कीन्ह्योंदशआशनतमनाशा
गरुडचढ़ेसात्यकिहरिरामा । मधिदलखड़ेकरनसंग्रामा ॥ तहाँभूपदुर्योधनजाग्यो । युद्धकरनकहँअतिअनुराग्यो
सबभूपनकोदियोनिदेशा । सजगहोहुयुधहेतुनरेशा ॥ सबभूपनकेबजेनगारे । एकसंगसबभयेतयारे ॥
निजनिजअक्षौहिणिदलसाजे । निकसेसबैबजावतबाजे ॥ द्रोणभीष्मकर्णहिंकरिआगे । ठाढेभयेवीररसपागे ॥
दोहा–मानहुँसातहुँसिंधुबाढि, तजितजिनिजैकरार । बोरनचाहतजगतकहँ, तिमिदललख्योअपार ॥
...। तुरतहिंदानवकेढिगआयो ॥ कह्योयुद्धहितकरहुतयारी । आवहुजुरिसबसमरमँझारी ॥

नि कुंभदानवनिबोलायो। युद्धहेतुसबकहँसजवायो॥ आपहुँलैमुद्गरविकराला। चल्योयुद्धहितमानहुँकाला॥
नवचढेतुरंगमतंगे। युद्धकरनकहुँअंगउमंगे॥ कोउगर्दभकोउमहिषनमाँहीं। कोउगेंडनकोउऊँटनपाँहीं॥
उचढिकच्छमच्छशिशुमारा। निकसेदानवसाठिहजारा॥ आयेभूपनसैन्यमँझारा। प्रलयकरनमनुकियेविचारा॥

दोहा-दानवदलअरुभूपदल, मानहुँसिंधुअपार। ताकेमधियदुदललसत, जिमितडागछविवार॥

रजाहितरजाहिदानवछोरा। छावाहिंदशदिशिशोरकठोरा॥ बजैंशङ्खभेरीसहनाई। मानहुँमेघरहेघहराई॥
बकुरुपतिकोकहअसुरेशा। देहुप्रथममोहियुद्धनिदेशा॥ जोमोतेबचिहैयदुवंशा। ताकोपुनितुमकियोविध्वंसा॥
बकुरुपतितथास्तुकहिदीन्ह्यों। तहँनिकुंभशासनउरकीन्ह्यों॥ दानवजेतुमसाठिहजारा। जायजरावहुयज्ञअगारा॥
ब्रह्मदत्तवसुदेवहुकाँहीं। पांडवहुनकोभखियोतहाँहीं॥ आयसुपायदैत्यद्रुतधाये। मखशालाढिगआशुहिआये॥

दोहा-ब्रह्मदत्तवसुदेवहूँ, आवतदैत्यनदेखि। वंदकियोमखकर्मको, डरेमृत्युनिजलेखि॥

बभकाशतेकृष्णकुमारा। ब्रह्मदत्तसोंवचनउचारा॥ डरहुदानवननहिंद्विजराई। करहुकर्मअपनोमनलाई॥
तगांडीवधनुपकहँधारी। खडोधनंजयविक्रमभारी॥ जहँअर्जुनरहिहैरणधीरा। तहँकालौकरिसकीनपीरा॥
दानवहैंकेतिकबाता। अर्जुनकरीआजुइनघाता॥ इतनीकहतहिंअसुरप्रचंडा। छायगयेनभमहँबरिबंडा॥
हुँदिशितेकरिशोरभयावन। चाहेमखशालाढिगआवन। तहँअर्जुनगांडीवटँकोरा। भयोभयावनचहुँदिशिशोरा॥

दोहा-सभामध्यजोकृष्णसुत, वचनबाणहनिदीन। ताकीसुधिकरिपांडुसुत, कोपितभयेप्रवीन॥

ाज्योएकबाणबिनसोगू। तामेंकियब्रह्मास्त्रप्रयोगू॥ प्रद्युम्नहिंकेदेखतवीरा। छोड़िदियोअसुरनपरतीरा॥
चल्योबाणमनुकालहुकाला। उठीचहूँकितपावकज्वाला॥ जरनलगेदानवविकराला। चल्योनविक्रमकछुतेहिकाला॥
हिजेदानवसाठिहजारा। इकक्षणमहँसबभेजरिछारा॥ गिरीभूमिमहँभस्मतहाँहीं। देखिपरेदानवकोउनाँहीं॥
तबदेवतासराहनलागे। विजयविजयविक्रमअनुरागे॥ प्रद्युम्नहुँअर्जुनहिंसराहीं। कह्योऐसहौतुमकहँचाहीं॥

दोहा-तहँनिकुंभकोपितभयो, लखिदानवनविनाश। चल्योअकेलेयदुनको, जीतनकीकरिआश॥

आवतदेखिनिकुंभहिकाँहीं। अनाधृष्टदलपतिरणमाँहीं॥ अपनोस्यंदनतुरतचलाई। लियोनिकुंभाहिंआगेजाई॥
तबदानवकरिकोपमहाना। छोड्योयदुदलपहँबहुबाना॥ अनाधृष्टतबबाणनकाटी। दियोनिकुंभहिंविशिखनपाटी॥
दानवकेसारथिकोशीशा। काटिदियोयदुदलकोईशा॥ कियेतुरंगअंगसबभंगा। स्यंदनकाटिदियोध्वजसंगा॥
पुनिमार्योसहसनशरतेहिकहँ। देखिनपर्योनिकुंभसमरमहँ॥ गदाधारितबदानवकोपी। अनाधृष्टकहँमारनचोपी॥

दोहा-बाणजालकोफारिकै, अनाधृष्टढिगआय। गदागरूमारतभयो, चह्योनअबबचिजाय॥

लगीगदास्यंदनसबटूट्यो। तुरँगसहितसारथिशिरफूट्यो॥ रथतेकूदिगयोसेनापति। हन्योत्रिशूलरिपुहिंकरिखलअति॥
तबनिकुंभधरिशूलहितोरा। मायाकरिकैतहँअतिघोरा॥ पकरिअनाधृष्टहितहँबाँध्यो। पटपुरगुहातुरततेहिंधाँध्यो॥
सेनापतिबंधनलखिसेना। डगमगानिहैगईअचैना॥ तहाँनिशठउल्मुककृतवरमा। सनत्कुमारभोजधृतवरमा॥
अरुवेहरणआकर्षणधीरा। हन्योनिकुंभहिबाढ़िबहुतीरा॥ तहँकरिअसुरआसुरीमाया। सबवीरनकियथंभितकाया॥

दोहा-पुनिपट्चौरनबाँधिशठ, दियोगुहामहँडारि। तबअक्रूरउद्धवहुँगद, धावतभयेप्रचारि॥

हन्योनिकुंभहिबाणकराला। दानवदौरितिनहिंततकाला॥ मायाबंधनतिनहुँनबाँधी। पटपुरगुहामाहँदियधाँधी॥
औरहुबलीवीरयदुवंशिन। बाँधिगुहाडारयोअरिध्वंसिन॥ येसबवीरनबंधनदेखी। यदुदलभाग्योभयअतिलेखी॥
तहँनिकुंभलैधनुपकराला। तज्योबाणमानहुँबहुव्याला॥ हन्योशतघ्नीपरिघहजारन। पावकतूलशूलअरिदारन॥
फरशाकुंतकृपाणमहाना। मुद्गरमूसलतोमरनाना॥ पुनिबरष्योबहुवृक्षपपाना। भयोतहाँअँधियारमहाना॥
शस्त्रवृष्टिभेचहुँदिशिघोरा। बनतनठाढहोततेहिठोरा॥

दोहा-अतिविषादभरियदुशयन, चलेभागितेहिकाल। मानेसबैनिकुंभको, आयोकालकराल॥

देखिविकलदलरमानिवासू। रतारिविहंगराजतेआसू॥ रथचढिदारुकसोंअसभाषा। लैचलरथजहँदानवमाषा॥

तबदारुकरथद्रुतहिंधवायो। विकटनिकुंभनिकटपहुँचायो॥बलिरामहुँरथचढितहँधायो।दानवपासआशुचलिआयो॥
हनेकुलिशसमविशिखकराला। तेनिकुंभतनुभयेदुशाला॥ दानवगुन्योप्रबलदोउवीरा। अंतरधानभयोताजितीरा॥
गयोकर्णकेनिकटसुरारी। शंकितहैअसगिराउचारी ॥ करहुगुहाकीतुमरखवारी। लेइनकोउयदुवरननिकारी॥

दोहा–जहँतुमरैहौशूरसुत, तहँशंकाकछुनाँहिं। शक्रहुसकीनिकारिनहिं, रामकृष्णकाआहिं॥

दैत्यवचनसुनिभानुकुमारा। ठाढोभयोगुहाकेद्वारा ॥ कीटकवचसायकधनुधारी। मनमेंकछुनहिंशंकविचारी॥
कर्णहिंनिरखिगुहाकेद्वारा। असुरचल्योयुधकरनअपारा॥हनेहुहरिहिंरामहिंबहुबाना। सिंहनादकियमेघसमाना॥
दानवरामकृष्णकोघेरा। होनलग्योसंगरतेहिंठोरा ॥ तबयदुसेनामरुकिसिधाई। शस्त्रनहनतदैत्यढिगआई॥
यदुदलनिरखिसुयोधनबोलो।हेनृपअवनिजनिजबलखोलो॥मारहुयदुदलनहिंबचिजावै।नहिंनिकुंभढिगआवनपावै॥

दोहा–दुर्योधनकोहुकुमसुनि, सकलकौरवीसन। यदुदलपैधावतभई, छाँडतआयुधपैन॥

छोडेंमनहुँसकलनिजवेला। कियेसातहूँसागररेला॥ कह्योकृष्णतबहेबलिभ्राता। अबतोसंगरकठिनजनाता॥
यदुवंशिनदानवगहिलीन्ह्यों। हमतेआययुद्धपुनिकीन्ह्यों॥ हमतुमकरहिंयुद्धयहिसंगा। आयोनृपदलइतैअभंगा॥
कोकरिहैयदुदलरखवारी।लैहैंकौरवआशुहिंमारी॥ कहाँगयोसुतजेहिंकहिराख्यो। सभामध्यजोअतिशयमाख्यो॥
वेगिबोलावहुनिजसुतकाँहीं। करैआजुविक्रमरणमाँहीं ॥ तबबलभद्रकह्योमुसकाई। खड़ोपुत्रमेरायदुराई॥

दोहा–देखहुअबप्रद्युम्नको, कृष्णभयावनयुद्ध। रुकिहिकौनसन्मुखसुभट, जबहोइहिबहक्रुद्ध॥

असकहिटेरिकह्योबलरामा। अहैप्रद्युम्नतोरअबकामा॥ देखहुकहातमाशाठाढे। आवहिंयेकौरवमनबाढे॥
कृष्णकुमारतहाँमुसकाई। रामकृष्णकेपदशिरनाई॥ सारथिसोंअसवचनउचारा। रिपुसन्मुखकरुयानहमारा॥
लावहुभीतिनकछुमनमाँहीं।बहुसँगभिरतनिरखिमोहिंकाँहीं॥ एकहुबाणनलागनपैहै। हमतोकोंसबभाँतिबचैहैं॥
यहठाढ़ोदुर्योधनराजा। शतभाइनयुतजोरिसमाजा॥ शकुनिदुशासनदक्षिणओरा। द्रोणकृपदुहुँवामहिंठोरा॥

दोहा–मातुलरुक्मीशाल्वनृप, अरुमागधशिशुपाल॥ दंतवक्रविदुरथसुभट, पीछेखडेभुवाल॥

धृष्टद्युम्नजयद्रथवीरा। द्रुपदविराटसुशर्माधीरा॥ उत्तरनीलविंदुअनुविंदा। अरुभगदत्तहुचढ़ोकरिंदा॥
येसबभटहैंदलकेआगे। तिनकेमधिमेंरणअनुरागे॥ तारध्वजाजिनकोफहराई। अचलशैलसमजोनदेखा॥
सोईपितामहकुरुकुलकेरो। भीपमहैविक्रमीघनेरो॥ याहीकेभुजबलकुरुराई। यदुवंशिनपरकरीचढ़ाई॥
तातेसुनुसारथिमतिधीरा। लैचलुरथजहँभीपमवीरा॥ जोभीपमढिगद्रुतपहुँचैहो। तोसारथिजगमेंयशलैहो॥

दोहा–सुनतसूतहरिसुतवयन, धारिचैनचितमाँहिं। कह्योवचनबलऐनपहँ, मोहिंकछुभयनजनाँहि॥

असकहिस्यंदनधरणिउतारी। बारबारवाजिनपुचकारी॥ सूधोकरिकौरवदलओरा। सावधानह्वैकैतेहिंठोरा॥
करीबागवाजिनकीऊँची। तनुतजिवेकीतजीनिकूँची॥ अर्धरातस्यंदनअतिघोरा। चल्योशत्रुसन्मुखबरजोरा॥
जैसेकछ्योचापतेबाना। कोहूकोनहिंबीचदेखाना॥ तैसहिंकृष्णकुमारप्रवीरा। आयोनिकटचमूपरधीरा॥
तहँदेवसबलसनतमाशा। आयेचढ़िचढ़ियानअकाशा॥कृष्णकुँवरकहँलखिसुखपागे।आपुसमहँअसभापणलागे॥

दोहा–धन्यधन्यप्रद्युम्नहै, कोजगयाहिसमान। सहसनमहारथीनपै, इकयहकियोपयान॥

सहसनफहराहिंजहाँनिशाना। मारूबाजबजैविधिनाना॥ चमकिरहेहैंचापप्रचंडा। खड़ेवीरबहुभरेघमंडा॥
कौरवसागरमहाअथाहा। लेनगयोहरिसुततहँथाहा॥ इततोलोभीपमरणधीरा। नैनखोलिदेखहुबरबीरा॥
यदजोश्यामवर्णधनुधारे। कीटकवचकरबाणसँवारे॥ कम्मरकसीकृपाणकराली। उभैनिपंगकंधशरजाली॥
सावतहैनकेलचढिस्यंदन। सोहैयहयदुनंदननंदन॥ फहरतहैनिशानछबिभूरी। रथनलखातपरतितोभीरी॥

दोहा–जाकेविक्रमकेरिनब, मनमहँहोयघमंड। हरिकुमारकेसन्मुखै, होवहुसोशरिखंड॥

सभामध्यहस्तिनपुरमाँहीं। जेभापेउदितातनकाँहीं॥ तेअबविक्रमकरहिंनकाहे। देखतकहाँसेनरहाहे

इतनाकहतहिंभीपमकेरे । दरशीधूरिसैन्यकेनेरे ॥ हरिकुमारकोरथदलमाँहीं । प्रविशेउद्धतदेख्योकोउनाँहीं ॥
जाहिंमेघमंडलजिमिभानू।जिमिकाननमहँकुपितकृशानू॥कौरवदलतिमिकृष्णकुमारा।मिल्योधाथकागीनहिंमारा॥
करिशंतनुसुतधनुपटँकोरा।गयोआशुजहँकृष्णकिशोरा॥मारचोसहसबाणविकराला । चलेफुंकरसमानहुँव्याला ॥
दोहा–शरनकाटिप्रद्युम्नतहँ, द्वैहजारहनिवान । पुनिभीपमकेयानपर, मारचोविशिखअमान ॥
तज्योभीपमहुँबाणअपारा । मानहुँतासुमातुजलधारा ॥ जिमिघटशतछिद्रनतेनीरा । तैसहिंकढेभीष्मधनुतीरा ॥
अंबरतेधरणीलोंराजा । बाणवृंदलसिरहेदराजा ॥ तैसहिंतहँयदुनाथकुमारा । बाणछोड़िकीरदियअँधियारा ॥
भीपमबाणकुँवरदलिवारे । कुँवरबाणभीपमहनिवारे ॥ भीपमकरहिंबाणअँधियारा । तबकुमारकरतोउजियारा ॥
जबकुमारकरिदेतअँधेरा । तबभीपमपुनिकरतउजेरा ॥ जैसेमेघवलितादिनमाँहीं । कहुँप्रकाशकहुँतमह्वैजाँहीं ॥
दोहा–रहेमंडलाकारह्वै, दोहुँनकेकोदंड । खैंचतऐंचततजतशर, लखिनपरहिंबरिबंड ॥
दोऊदुहुँनकहँतकिशरछाड़ें।मानहुइकएकहिंमहिगाड़ें ॥ सबदलदेखनलग्योतमाशा । खड्जकेजिमिचित्रअवासा ॥
अंबरअवनिउदधिअरुआशा।छायरहेशरसहितप्रकाश॥कढ़िनसकततहँनेकुसमीरा । सँगसिरहेअतिशयबहुतीरा॥
भूभूधरभेवाणनजंजर । मानहुँविश्वमह्योशरपंजर । सरितसमुद्रसलिलरुकिगयऊ । शरनसेतुथलथलमहँठयऊ ॥
रहिनसकेतहँव्योमविमाना । ब्रह्मलोकसुरकियेपयाना॥कटिकटिगिरहिंतहाँनभचारी । देवनभईभीतिअतिभारी ॥
दोहा–कहहिंपरस्परसकलअस, असनलख्योकहुँयुद्ध । जसदोउविक्रमकरतभे, भीपमहरिशतक्रुद्ध ॥
भीपमनिचयनराचचलावे । कृष्णकुँवरकोरेणुउडावे ॥ कृष्णकुँवरछोड़ेशरभूरी । सुरसरिसुवनकरेसबधूरी ॥
ारिजुरिदोउभटपुनिबिलगाँहीं । कहुँबामदहिनोदेजाँहीं ॥ कहुँसारथिसारथिताकिपारें।कहुँबाजिनपरबाणनिझारें॥
।जोंहितजोंहिदोउरणधीरा । गनहिंनअंगविशिखकीपीरा ॥ भीपमपलकपरतशरसारे । हरिसुतकाटिनरानपँवारे॥
रिरह्योफरपरअतिशोरा । मूँदिगयेदुंदुभिरवघोरा ॥ जिमियुगभानुलरेंमहिमाँहीं । तिमिदोऊभटसमरसोहाँहीं ॥
दोहा–किरणिसरिससायकझरें, चारुचक्रभोचाप । भूपनदलतापितकरें, प्रगटहिंपरमप्रताप ॥
पुनिबोल्योहँसिकृष्णकुमारा । परशुरामनहिंनामहमारा ॥ भीपममैंनहिंशाल्वभुवाला । जासुनारिहरिलइंउताला॥
नहींपांडुकुलनहिंकुरुकुलमें । सिखबहुजिनहीसदनअमलमें ॥ होंयदुवंशीवीरउदारो । कृष्णतनयबलभद्रहुप्यारो॥
जीत्योलघुनभूपजगमाँहीं । कबहुँनपरचोकामभटपाँहीं ॥ भीपमलखहुआजबलमेरो । मैंदेखिहौंसकलबलतेरो ॥
भीपमसुनतकृष्णसुतबानी । बोल्योवचनवीरविज्ञानी ॥ मेरेप्रभुकेअहोकुमारे । तुमसमसुभटनजगतनिहारे॥
दोहा–पुनिकुमारतुमहोयुवा, हमहैंवृद्धमहान । विक्रममेंनहिंहोयहै, बालकवृद्धसमान ॥
यदपिहारिहमतुमसोंजैहैं । तद्यपिकछुलघुतानहिंपैहैं ॥ असकहिपुनिबहुबाणचलाई । लियोकृष्णनंदनकोछाई ॥
भीपमबाणविदारिकुमारा । पुनिछोडीअनुपमशरधारा॥यदपिलियेकरएककमाना।जानिपरतजिमिधनुशतबाना ॥
भीपमधनुपधारशरकेरी।कटतहिंकटततलगतिनहिंदेरी ॥ जिमिघृतधारअग्निमहँजावे।नहिंदेखातिअतिज्वालबढावे॥
तिमिभीपमबलबाढ़तजसजस । दूनकरतहरिनंदनतसतस ॥ दिव्यअस्त्रलैभीपमचारी । प्रद्युम्नहिंपदियोपँवारी ॥
दोहा–अग्निपवनअरुवारुनो, पर्वतास्त्रअतिघोर । आवतलखिसिसंग्राममें, सन्मुखकृष्णकिशोर ॥
धनदयाम्यअरुइंद्रादिनेशा । येचारिहुँअस्त्रनतेंहिदेशा ॥ तजिप्रद्युम्नभीष्मकेअस्त्रन । छिनप्रयाकनाश्योतादोछन ॥
शंतनुसुततबकोपितह्वैके । लियब्रह्मास्त्रहिंनिजधनुलैके॥कृष्णकुँवरकहँनाकिचलायो।कालसरिससन्मुखसोधायो॥
तबप्रद्युम्नब्रह्मशिरमारचो । सोब्रह्मास्त्रहिनाशुहिजारचो ॥ लखबानकारिलानिचपलाई । नग्योकुँवरनहिंपरेदेखाई॥
भीपमधनुसारथिरथबाजी॥काटिकियोतिलतिलरणगाजी॥टिनिधधनुधरयलैनहिलागेपैनहिआयसकयोनहिंआगे ॥
दोहा–तहँप्रद्युम्नकेबाणको, पौनहिंपावतुरंत । भेजेदुर्योधनहिंके, रथतदिघरेदिगंत ॥
तहोंमोहनीमायाफाँसी । हरिसुतदन्योभीष्महिभासी ॥ बाहांत्रभीपनकेअंगे । बंधनपरिगेपकारिमने ॥
गिरभोविसंज्ञभीपममेंभीषण । रह्योसनसनरहेसोलतिभीषन ॥ पावकपनप्रद्युम्नहिपाई । मनुभीनमगरिनापमवाई ॥

/

वृद्धनधरयोमुरारिकुमारा। अबैनआननलख्योहमारा॥ असगुनिसारथिसोंकहबानी। लैचलुरथजहँअरिदुखदानी॥
हैंयदुवंशीकुरुकुलदासा। राखतरहेहमारिनिआसा॥ अबकछुधनलैखायमोटाई। लागेहमसोंकरनखोटाई॥

दोहा–असकहिकुरुपतिकोपकरि, स्यंदनचपलचलाय। हरिनंदनकोहनतभे, दशनराचढिगआय॥

सहजहिंतिनकोकाटिकुमारा। दुर्योधनसोंवचनउचारा॥ कुरुपतियुद्धकरननहिंजानहु। वृथावीरअपनेकहँमानहु॥
हस्तिननगरलौटितुमजाहू। जीववचावनजोचितचाहू॥ विलसहुवनितनसंगविलासी। काहिकरवावहुनिजहाँसी॥
तबदुर्योधनकह्योरिसाई। वृद्धनजीतिगर्वअतिछाई॥ बालकवदसिनबातविचारी। जियेसदाकरिसेवहमारी॥
छोडिदईतैंकुलकीलाजू। ताकोफलपावैगोआजू॥ असकहिपुनिशतबाणचलायो। कृष्णकुँवरतबकाटिगिरायो॥

दोहा–कुरुपतिकीइकबाणते, ध्वजाकाटियदुवीर। सारथिकोशिरसूदिकै, हन्योतुरंगनतीर॥

भेतुरंगपदबिनतहँचारों। पुनिबहुबाणनयानविदारों॥ कवचकाटिदीन्ह्योंशतबानै। कियोखंडत्रयकटिकिरवानै॥
रहेजेसबआयुधरथमाँहीं। तजननपायोनृपतिनकाँहीं॥ रथमहँधरेकटेइकसंगा। वेधेबाणसुयोधनअंगा॥
तजिदुर्योधनयुद्धउमंगा। शिरभरभूपरगिरयोविसंगा॥ जानिमृत्युतहँकुरुपतिकेरी। शल्यकरीवेगताघनेरी॥
यानधवायआशुतहँआई। कुरुपतिकोतियथानचढ़ाई॥ चल्योताहिंलैतुरतपराई। हरिसुतशरतहँसहसचलाई॥

दोहा–शल्यसूतरथधनुकवच, औरपताकतुरंग। रणमहँतहँइकक्षणहिंमें, कणकणकियइकसंग॥

हरिकुमारपुनियानधवाई। शल्यहिंपकरिलियोढिगजाई॥कुरुपतिकोलियक्रीटउतारी॥विहँसिमंदअसगिराउचारी॥
शीशवचायदेतहौंतोरा। सुधिराखियोसदाबलमोरा॥ मैंनहिंपांडवहौंदुर्योधन। जिनकोदावदेहुतुमछनछन॥
सुनिकुरुनाथनीचकरिशीशा। भागिगयोजहँमगधमहीशा॥ मायागुहाशल्यकहँडारी। धायोपुनिप्रद्युम्नप्रचारी॥
उतेसुयोधनपरमदुखारी। सबराजनसोंगिराउचारी॥ तुम्हरेसबकेबलहमआये। तुम्हरेदेखतयहदुखपाये॥

दोहा–अहोनपुंसकसकलनृप, राखहुवृथाघमंड। वासुदेवकोबालइक, जीत्योबहुवरिबंड॥

सुनिकेदुर्योधनकेबैना। बोलिउठेसबनृपबलऐना॥ कतविषादकुरुपतितुमकरहू। नेसुकक्षणलौंधीरजधरहू॥
यहबालककेकितिकबाता। हमकरिहैंसबयदुकुलघाता॥ असकहितहँमागधरणधीरा। विंदऔरअनुविंदप्रवीरा॥
धृष्टद्युम्नहुद्रुपदविराटा। औरसुशर्मामालवराटा॥ दंतवक्ररुक्मीशिशुपाला। आहितअरुविदुरथमहिपाला॥
सोमदत्तभूरिश्रववीरा। तैसहिंबाह्लीकरणधीरा॥ पुरुजितकाशिराजअरुभोजा। युधामन्युअरुनृपउतमोजा॥

दोहा–चेकितानअरुकुंतनृप, धृष्टकेतुअरुशैव। शकुनिदुशासनहूतहाँ, दायककुमतिसदैव॥

तहाँजयद्रथरथचढिराजा। दुर्योधनशतबंधुसमाजा॥ एतेसुभटकोपअतिकीन्हें। प्रद्युम्नहिंजीतनमनदीन्हें॥
लैलैनिजअक्षौहिणिधाये। एकहिवारसमिटिसबआये॥ सहसनगजमदगलितगरट्टा। करिदीन्हेंआगेतेहिंठट्टा॥
पुनिलाखनतुरंगतिनपाछे। बाँध्योठट्टसुभटयुतआछे॥ तिनपीछेंपैदरहुकरोरे। मधिमधिस्यंदनकरिसबठोरे॥
यहिविधिमंडलकरिचहुँओरे। घेरिलियोरुक्मिणीकिशोरे॥ योजनचारिमाहँदलठाढ़ो।कृष्णसुवनतामधिरणगाढ़ो॥

दोहा–अस्त्रशस्त्रसबसुभटतहँ, कोपितह्वैइकवार। चहुँकितते प्रद्युम्नपर, हरबरकियेप्रहार॥

जैसेश्रावणकेघनघोरा। वर्षहिंजललहिपवनझकोरा॥ ऐसहिंशस्त्रवृष्टिभैभारी। गगनक्षमाछाइँअँधियारी॥
रुक्मिणिसुतरथतेनभताई। विविधभाँतिअस्त्रावलिछाई॥ देखिनपरयोकुँवरकोयाना।मनहुँमेघमहँभानुछिपाना॥
हाहाकारहिंकरिअसुरारी। यदुपतिसुतकीमीचविचारी॥ जानिलियोभूपहुअसमनमें।डारयोमारियाहियहिछनमें॥
विजयबाजबाजनबजाये। बंदीगणअनगनगुणगाये॥ अतिप्रमुदितभेसबमहिपाला।विजयविचारिदईतहिंकाला॥

दोहा–तहाँअनोखोअतिप्रबल, वीरधनुर्द्धरधीर। यदुपतिकोप्रियलाडिलो, कियविक्रमगंभीर॥

तजीशरासनतेशरधारा। मनहुँप्रलयघनवृंदअपारा॥ शतसहस्रलाखहुकरोरन। चलेझुंडशरकेचहुँओरन॥
सबअस्त्रनकोकाटिकुमारा। कढ़िआयोशरतजतअपारा॥ जैसेप्रथमधूमछपिआगी।कढ़िआवतपुनिज्वालाहिजागी॥
कोटिनआयुधसुभटनकेरे। क्षणमहँतिलतिलकियेघनेरे॥ देखिपरेदिनकरकछुकाटा। पुनिछिपायमेसायकलाटा॥

नभमहँछाइरहेशरवृंदा । रोकिगईगतिदिनकरचंदा ॥ देवविमाननलैपुनिभागे । ताराहू

दोहा–वारिदव्योमहिंछोडिके, द्रुतहिंदुरानदिशान । पवनहुँपरमप्रचंडतहँ, प्रविशिनवि

वाणवरेजविश्वमहँछायो । नागवेलिदलनजरिनआयो ॥ सातहुँसुरपुरसायकछाये । सुरनप्रल

सातहुँसिंधुनमहँशरपरहीं । वारवारजलनभउच्छरहीं ॥ कटेजाहिंजलजीवअनंता । नीरगँभ

सायकमेरुशृंगलगितिहुकैं

कृष्णसुवनअसजानिपरत

दोहा–देखिपरतनहिंकुँवरको, रथरणमहँतेहिंठोर । वाणधारचहुँओरते, धावतिहैंचहुँओर

कटहिंकुंभकेतेकरिकेरे । बिनादंतबिनशुंडघनेरे ॥ हौदासंयुतसुभटगिराँहीं । महिआवत

केतेभागतनागचिकारत । सुभटहुआरतवचनपुकारत ॥ केतेमहिमरिगिरेकरिंदा । मानहुँप्र

इकइकशरमहँशतशतफूटैं । बचैतेभाजतनिजदलकूटैं ॥ पेलहिंपीलपालगजकाँहीं । चीतकार

फूटिगयोगजमंडलकैसे । प्रबलपवनघनमंडलजैसे ॥ निजदलदलतद्विरदद्रुतदौरी । दूरिगयेब

दोहा–बाँध्योयोजनएकको, मंडलकृष्णकुमार । धावतरथनहिंलखिपरत, देखिपरतिशर

मनहुँअलातचक्रअतिभावैं । चहुँदिशिअग्निपुंजझहरावैं ॥ रथमंडलाकारपरधावत । धनुमंडला

कटहिंतुरंगनअंगअनंता । महिकटिगिरहिंसवारतुरंता ॥ लाखनइकवारहिंउरिधावैं । शरनघातों

जहँलोंजायपरायप्रवीरा । तहँलोंलागेहरिसुततीरा ॥ कटहिंकवचधनुचर्मकृपाना । मुद्गरते

धावहिंसुभटसमिटिचहुँओरा । करहिंजोरसोंघोरहिंशोरा ॥ मारुमारुधरुधरुधरुधाई । अवनहिंकृप

दोहा–लाखनकोटिनसुभटको, धावतआवतझुंड । लाखनकोटिनबाणलगि, कटहिंरुंडअ

जेआयुधलैहाथउठावैं । ॥ देखहिंजेभटआँखिउठाई । तिनकेलगा

मनुअवनीतेअंबरतेरे । जानिपरतअसनहिंकोहुकाँहीं । वाणधारअ

वाणनकीवरषाचहुँओरा । होतिनिरंतरनृपतेहिंठोरा ॥ लागतविशिखप्रचंडतहाँहीं । रुंडमुंड

वाढिहटिसकहिनकोउसंग्रामा । भयभयगिरहिंवीरतेहिंठामा ॥ जबकोउसमरमाहिंधनुधारी । वाणधार

दोहा–तबताकेपाछिलखैं, आवतत्रयशरधार । रथीसारथीयानयुत, होहिंकतलइकवार ॥

तहँशोणितसरितावहुबहहीं । योगिनियूहनृत्यबहुकरहीं ॥ काककंकगीधनगणधावैं । आमिषभखिअ

भईकीचशोणितपलकेरी । समरभूमिभैघोरघनेरी ॥ किलकिलाहिंकालीविकराली । लैकरमें

आयेतहाँभयंकरभूता । गेअघायपलखायअकूता ॥ लागिगयेतहँलोथिपहारा । मनहुँत्रिनेत्र

दिनकरतेजमंदपरिगयऊ । स्वस्तिस्वस्तिअसमुनिगणकहेऊ ॥ रुधिरधारसागरमहँजाई । सागरको

दोहा–द्वैफाँकैह्वैजाततनु, स्यंदनचाकेलाग । तुरँगटापतेफूटिगे, केतनशीशअदाग ॥

रह्योनकोउअसभटदलमाँहीं । जाकेवाणलग्योतनुनाँहीं ॥ तहाँकृष्णनंदनबलवारो । कीन्ह्योरथ

ताकिताकिरथबाणतजतहै । द्वैनजाततववीरलजतहै ॥ यहआयोयहआयोवीरा । असपुकारियो

पेनहिंदेखिपरतहैकाहू । जाकेनिकटजायनहिंताहू ॥ रणमहँवीरनवीरनआगे । हरिसुतशरम

जानिपरतअसदलभटजेते । हरिकुमारप्रगटेअबतेते ॥ जोजिहिंकरतोयुद्धजहाँहै । तेहितहँराख्य

दोहा–एकहिंहरिसुतसोंवचब, दुर्घटरह्योदेखात । अबप्रगटेबहुकिमिबचब, बोलहियदसबचात

हाहाकारकरततेहिंठोरा । भाजिचलेसबभटचहुँओरा ॥ आपुसमहँअससबबतराँहीं । बन्योनजो

निनोंको । मान्योकदानकीन्हींगोंक

कुमारा । यासोंअबनहिंबनइहवारा ॥

दोहा-शरवर्षातिमिहोततहँ, बचतनकोऊभागि। हायहायरवह्वैरह्यो, सकतशस्त्रनहिंत्यागि॥

कृष्णकुँवरकोयुद्धनिहारी। भयोनिकुंभहुँचकितभारी॥ देखनलाग्योसमरतमासा। भूलिगयोनिजयुद्धविलासा॥
लखिप्रद्युम्नपराक्रमघोरा। हरिसोंकहरोहिणीकिशोरा॥ देखेहुकृष्णपुत्ररणआजू। भिरच्योएकबहुवीरसमाजू॥
जिमिगजगणहिंसिंहहिंसमुहाँहीं। सोसुतलखितिमिसुभटपराँहीं॥तबयदुपतिमोदितमुसकाई।बलसोंबोलेमंदलजाई॥
बालकतेपाल्योजेहिंआपू। कसनहोयअसप्रगटप्रतापू॥ कृपासहितजेहिंआपुसिखावें। तासुऔरसमताकिमिपावें॥

दोहा-सोईहैअतिशयबली, सोईहैमतिमान। जापैतुमकीजतकृपा, तासमजगनहिंआन॥

द्वैघटिकामहँकुरुपतिसैना। मारिकृष्णसुतकियोअचैना॥ बच्योनकोऊअसतेहिंजंगा। जाकेकटिनगयेसबअंगा॥
तहँकुरुपतिलखिदलसंहारा। सबभूपनसोंवैनउचारा॥ धावहुरेधावहुबलवारा। बचिनजायअबकृष्णकुमारा॥
तहँचढ्योभगदत्तकरिंदा। चल्योधसावतधरणिगिरिंदा॥कह्योमहाउतसोंअसबानी। रथतोरायडारहुअभिमानी॥
पेल्योपीलवानतहँपीलै। जाकोरह्योमेरुसमडीलै॥ सिंधुरबचबशुंडफटकारत। मानहुँमहिकेशैलउखारत॥

दोहा-निकटआयप्रद्युम्नके, भूपतिहनीत्रिशूल। तीनिशरनसोंकाटिदिय, हरिसुततृणकेतूल॥

पुनियदुनंदननंदनवीरा। कियोवेगरथकोगंभीरा॥ उड़िरथनागशीशमहँदीशा। चाकाचप्योमहाउतशीशा॥
शिरझिझिकारतकरतचिकारा।भागिचल्योसिंधुरबलवारा॥पकरच्योभगदत्तहिंहरिनंदन।डारिपगनमहँमायाबंधन॥
रथउड़िपुनिमहिपरच्योनरेशा। प्राग्जोतिषपुरगयोगजेशा॥ तहँद्रुपदअरुभूपविराटा। आहितअरुमालवकोराटा॥
विदुरथदंतवक्रमगधेशा। विंदऔरअनुविंदनरेशा॥ नीलनरबदातटकोवासी। कुंतिभोजअरुभूपतिकासी॥

दोहा-युधामन्युउतमोजहूँ, औरसुशर्मावीर। हरिसुतकोचहुँओरते, मारनलागेतीर॥

कोउशतकोउशतपंचपँवारा। कोउसहस्रकोउदशैहजारा॥तिनकेबाणकाटियदुवीरा। मारिशरनकीन्ह्योंअतिपीरा॥
पुनिदशलक्षबाणइकबारा। तज्योनृपनपैकृष्णकुमारा॥सबकेसारथिस्यंदनकाट्यो॥ध्वजाधनुपकवचहुँअसिछाट्यो॥
तजीफेरिमायाकीफाँसी। सोलीन्ह्योंसबहिनकहँगाँसी॥ सबकोपकरिकुमारमुरारी। डारिदियोतेहिंगुहामँझारी॥
तहँउत्तरअरुधृष्टद्युम्ना। आयेनिकटआशुप्रद्युम्ना॥ तेनहिंबाणचलावनपाये। बीचहिंबाँधिगुहामहँनाये॥

दोहा-तहँदुश्शासनशकुनिहै, औरसुयोधनवीर। सबभाइनकोसंगलै, तजेआयबहुतीर॥

कृष्णकुँवरबोलेअसबानी। अतिनिर्बलतिनकोअनुमानी॥ तुमकोहमनहिंकरधनुलेहैं। बाँधिबिनाश्रमगुहापठैहैं॥
असकहिरथतजिअंबरजाई। कूद्योशकुनिस्यंदनहिंआई॥शकुनिकेशगहिताहियसेटत। गयोदुशासनरथहिंदपेटत॥
तासुकेशगहिएकहिंसाथा। बाँध्योउभैवीरकोमाथा॥ मायागुहाडारितिनदीन्ह्यों। सबबंधुनपुनिबंधनकीन्ह्यों॥
तिनहुँनकहँपुनिगुहामँझारी। डारिदियोरणमध्यप्रचारी॥पुनिकुरुपतिकेसन्मुखधायो। आवतसोलखिपेलिपरायो॥

दोहा-पीछूधायोकृष्णसुत, कह्योनपैहैजान। कुरुकुलकेतुमनाथहो, बाढ्योगर्वमहान॥

असकहिदोरिसुयोधनकाँहीं। पकरिकेशधरिलियोतहाँहीं॥तरफरानबहुकुरुकुलराई। छूटनकीकियकोटिउपाई॥
छूटिसक्योनहिंहरिसुतकरते। उतरचोतेहिंलैतेहिंरथपरते॥इककरग्रीवएककरपायन।कृष्णकुमारउठायसुभायन॥
मायागुहाडारिदियजाई। बाँध्योनाहिंजानिकुरुराई॥ पुनिरथचढ़ितहँकृष्णकुमारा। लग्योनिहारनसमरमँझारा॥
कोअसरह्योवीरइतबाँकी। मायागुहागयोनहिंढाँकी॥ तहँदेख्योरुक्मीशिशुपालै।निजनिजसैन्यसहिततेहिंकालै॥

दोहा-बोल्योकृष्णकुमारतहँ, शिशुपालहिंकहँटेरि। चेदिपनिजगृहजाइये, अबनकरहुरणफेरि॥

तुमहुँभवनकहँगमनहुमामा। अबतुमबृथालड़ेसंग्रामा॥ हमबालककहँआपसयाने। उचितनहोतयुद्धअबठाने॥
आपुकृपाशत्रुनकहँजीते। समरमध्यमेंरह्योनभीते॥ यदुवंशिननाशनशठआये। तातेनिजकर्मनिफलपाये॥
चेदिपरुक्मसुनतअसबानी। बोलेवचनमहाअभिमानी॥ रेगोपालबालमतिमंदा। इतनेहिंमेंहगभयेबेलंदा॥
नृपतिविचारेदीननकाँहीं। जीतिगर्वबाढ्योमनमाँहीं॥ हमनहिंकियबलसमरविलासा। लखतरहेसबकेरतमासा॥

दोहा-जाहुद्वारकेभागितुम, अपनोजीवबचाय। नातोतोकोंपितुसहित, अबहिंमारिहोंआय॥

रुक्मऔरचेदिपकेबैना । सुनिबोल्योहरिसुतबलऐना ॥ हमतोजानिसयानबताये । तुमतोअतिथमंडमहँछाये ।
प्रथममारियेहमकहँआई । पुनिपितुरामहुँमारहुजाई ॥ हैसुधिनाहिंकुंडिनपुरकेरी । कीन्हीदशाजौनपितुतेरी
जानेअहौवीरतुमदोऊ । तुमसमाननिर्लज्जनकोऊ ॥ सुनतवचनहरिसुतकेवीरा । धायेदोउमारतबहुतीरा ॥
आवतनिरखिरुक्मशिशुपाले । छोड़तबाणजालविकराले॥शरअपारतहँतज्योकुमारा । मानहुँमघामेघजलधारा॥

दोहा—तिलतिलकरितिनशरनको, धायोसन्मुखवीर । जैसेबाजलवानपै, धावतवेगगँभीर ॥ १३ ॥

दोऊहैंयद्यपिबलवाना । मारयोकृष्णसुतहिंबहुबाना ॥ तदपिरुक्योनाहिंस्यंदनताँको । कृष्णकुमारयुद्धमहँबाँको॥
हरिसुतलखिआवतभयपागी । चेदिपरुक्मसैन्यसबभागी ॥ बढ़िदोऊभटसायकमारे । कृष्णकुमारकाटिसबडारे॥
दोहुँनधनुपदल्योइकबारा । दोहुँनकेसारथीसँहारा॥तबदोऊलियशूलविशाला । अतिकरालनिकसतिजेहिंज्वाला॥
शूलचलावनवीरनपाये । करमहँकाटिप्रद्युम्नगिराये ॥ हरिसुततजीनागकीफाँसी । बाँधिलियोदोहुँनबलरासी ॥

दोहा—तहाँरुक्मशिशुपालको, रथतेआशुउतारि । पगमेंबंधनबाँधिकै, दियोगुहामेंडारि ॥ १४ ॥

रह्योनकोऊभटतेहिंठामा । देइजोहरिपुत्रहिंसंग्रामा ॥ चारिहुँओरनिहारनलाग्यो । कृष्णकुँवरअतिकोपहिंपाग्यो॥
लख्योदूरकर्णहिंरणधीरा । गुहाद्वारमहँठाढ़ोवीरा ॥ तबअनिरुद्धहिंवेगिबोलाई । मायाकंदरद्वारटिकाई ॥
कह्योवचनऐसेबलधामैं । कौरवकैसेहुँकढ़ननपामैं ॥ रहियोखड़ेधनुर्धरधीरा । मारेहुजोआवैइतवीरा ॥
तहाँधनुर्धरध्रुवअनिरुद्धा । पितुपदवंदिखड़ोभोक्रुद्धा ॥ गुहाद्वारअनिरुद्धनिहारी । कौरवछूटनशंकानिवारी ॥

दोहा—सारथिसोंबोल्योबहुरि, कोपितकृष्णकिशोर । लैचलुचपलचलायरथ, खड़ोकर्णजेहिंओर ॥

यहअपनेकहँजानतसूता । मोसमऔरनउपज्योपूता ॥ कायरकुटिलकुमतिअतिकूरा । पापकरनमहँअतिशयशूरा॥
कुरुपतिकोकुमंत्रयहदेतो । वृद्धनकियोअनादरकेतो ॥ हैकुमंत्रकोयेहीकारन । जोदुर्योधनआयोमारन ॥
अपनोभुजअरुधनुपनिहारी । सबकहँलीन्ह्योंतुच्छविचारी ॥ तातेयाकोशरनचलैहौं । दौरिकेशधरियहिधरिलैहौं॥
सारथिसुनतरथीकेबैना । रथलैचल्योकरनपैपैना ॥ यदुनंदननंदनलखिआवत । बोल्योकर्णनकछुभयलावत॥

दोहा—आवहुआवहुकृष्णसुत, सन्मुखमेरेधाय । करुअपनोविक्रमसकल, अबनअनततूँजाय ॥

बाणनशीशकाटिमैंलैहौं । उऋणसकलसुभटनसोंह्वैहौं॥कर्णवचनसुनियदुपतिनंदन।दौरयोकूदिछोडिनिजस्यंदन॥
मायापाशलियेइकहाथा । धायोधरनकर्णकरमाथा ॥ तहाँकर्णकोदंडटँकोरा । मारयोशरसमूहअतिघोरा॥
हरिसुतढिगलोंअरुनिजपाँहीं । बाँधिदियोशरसेतुतहाँहीं ॥ तहाँकृष्णनंदनरणधीरा । अतिअद्भुतविक्रमीप्रवीरा॥
शरनबीचह्वैशरनबचावत । तरुनबीचजिमिमारुतधावत॥परयोनदेखिवीरमहिमाँहीं।दमक्योदामिनिसारिसतहाँहीं॥

दोहा—कौतुकीअद्भुतकर्णढिग, परयोदेखिहरिनंद । गयोचौंधभोचखनमें, कर्णधनुपभोबंद ॥

सूतपूततहँखड़ोरहोजकि।सक्योनप्रद्युम्नहिंरणमहँतकि॥हरिसुतकियउरचरणप्रहारा।गिरयोकर्णमहिखायपछारा॥
उठनलग्योतहँसमरतुरंते । होतजानअपनोजियअंते ॥ तहँकृष्णसुतकेशपकरिकै । बाँध्योकरअरुचरणजकरिकै॥
बिनप्रयासकर्णहिंधनुधारी । डारयोमायागुहामँझारी ॥ रहिनगयोकोऊधनुधारी । करैजोहरिसुतसोंरणरारी॥
पुनिचढिरथमहँकृष्णकुमारा । रामकृष्णकेनिकटसिधारा ॥ आवतनिरखिप्रद्युम्नबलरामा।धायेरथतजिआनँदधामा॥

दोहा—मंदमंदपीछेतिन्हें, चलेकृष्णमुसुकात । मनमहँऐसेगुनहिंप्रभु, यहिसमकोउनदेखात ॥

आवतपितुप्रद्युम्ननिहारी । रथतेउतरिपरयोधनुधारी ॥ तहँदौरिद्रुतहीबलराई । हरिसुतकहँलियअंकउठाई॥
शीशसूँघिउरलियोलगाई । आँखिनआनँदअम्बुबहाई ॥ पुनिप्रद्युम्नचरणशिरनायो।अतिआदरगुनिअतिसकुचायो॥
आशिषअमितहरपिदियसोऊ।चिरंजीवप्यारेसुतदोऊ॥निजपटपोंछितासुमुखरामा।बिथुरीअलकसम्हारिललामा॥
पीठिपाणिफेरतहरपाई । बोलेवचनबिहँसिबलराई ॥ तोरेबलहमडरहिनकाहू । छोरिधरेहैंसुचितसनाहू ॥

दोहा—जाकेतुमसोपुत्रहै, सोईजगबड़भाग ॥ सोईअहैअजातअरि, ताकोयशजगजाग ॥

पुनिप्रद्युम्नकृष्णपदपाँहीं । बंदनकीन्ह्योंपरिमहिमाँहीं ॥ मंदमंदआशिपहरिदीनी । कह्योनकछुमनलाजमहँभीनी॥

पुनिप्रद्युम्नसोंकहबलराई । यदुवंशिनअबलेहुछोराई ॥ तबप्रद्युम्नबंदिसुखपाई । पटपुरगुहाद्वारमहँजाई ॥
तबयदुवंशिनबंधनछोरी । लायोकृष्णनिकटद्रुतदौरी ॥ बंधनलखिकौरवदलकेरो । अरुयदुवंशिनमोदघनेरो ॥
भागेजेकछुदानवबाँचे । युद्धकरनकोनहिंमनराँचे ॥ तिनकोरोकिनिकुंभसुरारी । कोपितह्वैअसगिराउचारी ॥
दोहा-जोभागतहैंसमरते, जीवनहेतुडेराय । सोलहिजगमेंअतिअयश, अवशिनरककहँजाय ॥
जोजीतिहोयुद्धमहँवीरा । तोपैहोजगमोदगँभीरा ॥ जोमरिजैहोसंगरमाँहीं । तौबसिहोतुमस्वर्गसदाँहीं ॥
भागिदेखैहोकेहिंमुखजाई । नारिनसोंकिमिअईबताई ॥ सुनिकुंभजकीदानवबानी । कोपितफिरेसकलअभिमानी ॥
आवतनिरखिसुरारिनकाँहीं । रामकृष्णप्रद्युम्नतहाँहीं ॥ सात्यकिअरुउद्धवरणधीरा । गदअक्रूरकृतवर्मप्रवीरा ॥
भीमसेनअरुधर्मनरेशा । नकुलऔरसहदेवसुवेशा ॥ तेऊमखशालातेआये । अर्जुनहीकोतहाँटिकाये ॥
दोहा-असुरनपैछोडेंसबै, बाणजालततकाल । रुंडमुंडबहुखंडभे, भागेदैत्यविहाल ॥
अरिदलजयनिजनिरखिपराजे । भगतदेखिआसुरीसमाजे ॥ तहाँनिकुंभवीरबलवाना । उडिअकाशभोअंतर्धाना ॥
रहेजयंतप्रवरनभमाँहीं । तेशरमारेंताहितहाँहीं ॥ तबनिकुंभकरिकोपकराला । दंतनदंशिअधरततकाला ॥
प्रवरहिंहन्योपरिघइकभारी । गिरचोआयसोमहीमँझारी॥शचीकुँवरतेहिंदौरिउठायो । मूर्च्छितनिवारिजानपैठायो ॥
हन्योकृपाणनिकुंभहिंधाई । पैदानवहिंव्यथानहिंआई ॥ हन्योजयंतहिंपरिघसुरारी । शोणितधारबहीतनुभारी ॥
दोहा-काँपनलाग्योशक्रसुत, रहीनसुधितनुकेरि । तबनिकुंभमनमेंकियो, यहविचारनृपफेरि ॥
येनिर्बलदेवताविचारे । इनकोकहासमरमहँमारे ॥ असविचारिह्वैअंतर्धाना । रामकृष्णढिगकियोपयाना ॥
तहँजयंतपुनिप्रवरउठाई । वासवनिकटगयोसुखपाई ॥ वासवदेखिसुतहिंसुखमान्यो । बारबारअसवचनबखान्यो ॥
असुरहिंखड्गमारिसुतमेरो।लायोप्रवरहिंबलीघनेरो॥असकहिमुदितसराहनलाग्यो।मिल्योसुतहिंप्रवरहिंसुखपाग्यो ॥
बजवायोतहँविजयनिशाना।मानिजयंतहिंअतिबलवाना॥इतनिकुंभमखशालहिंआयो।करिअतिशोरघोररनभद्रायो॥
दोहा-तबगोविंदचढिकेंगरुड, सात्यकिबलहिंचढाय । लैयदुसेनासंगमें, गेमखशालहिंधाय ॥
तहँअर्जुनअरुयदुपतिरामै । सात्यकिसांबभीमअरुकामै ॥ धर्मनृपहिंनकुलहुसहदेवै । औरहुवीररहेबहुजेवै ॥
इनकोनिरखिनिकुंभमहाना । मायाकरिभोअंतर्धाना ॥ तबसबशंकितभेतेहिकाला । कहाकरतयहदैत्यउताला ॥
तबप्रद्युम्नहिंकहबलरामा । मायामेटिदेहुबलधामा ॥ हरिसुततहाँशंकरीमाया । करितेहिंमायामोहरसाया ॥
अमरमध्यतहँपरमप्रकाशी । देखिपरचोनिकुंभबलराशी॥धायोमनहुँशिखरकैलासा । लीलनचहतमनहुँदशआसा॥
दोहा-तहाँपुकारचोबारबहु, खड़ोरहेगोपाल । आवतनिरखिनिकुंभको, कुपितपांडुकोलाल ॥
तहिंचापगांडीवचढायो । दानवपैबहुबाणचलायो ॥ अर्जुनबाणदैत्यतनुपाँहीं । लगिमुरिटूटिगिरेमहिमाँहीं ॥
डिनजबदानवतनुबाना । तबपारथभोदुखितमहाना ॥ यदुपतिसोंबोलेकरजोरी । नाथसुनोविनतीअबमोरी ॥
ाहभयोयहमोहिंबतावो । आशुहिंसंशयसकलमिटावो ॥ शैलविदारकसायकमेरे । गडेनअंगहिंदानवकेरे ॥
तोअबनहिंबाणचलैहौं । जगमेंमुखअबकौनदेखैहौं ॥ तबयदुपतिमोटेमुसकाई । होउअधीरनशंकालाई ॥
दोहा-यार्काहिविस्तरकथा, देहैंफेरिसुनाय । अबविलंबकोकामनहिं, मारहुशरसमुदाय ॥
तबपारथछोडेशरजाला । मूँदिगयोदानवविकराला ॥ दानवतहाँसमरतेभाग्यो । पटपुरगुहाघुस्योभयपाग्यो ॥
तबबलसोंबोलेयदुराई । गयोभागिदानवदुखदाई ॥ आपप्रतापाविजयहमपाई । द्रुतहिंमातुपितुलियेछोडाई ॥
अबकुरुवंशिनदेहुछोराई । पावहिंसुखनिजनिजगृहजाई ॥ इनमहँबडेबडेधनुधारी । तेलज्जितह्वैहैंदुखारी ॥
यदुपतिबैनसुनतबलराई । कारिरमेंतबदयामहाई ॥ कृष्णकुमारहिंबोगिबोलाई । मंदमंदअसकह्योबुझाई ॥
दोहा-छोडिदेहुसबनृपनकहँ, निजनिजगृहअबजाहिं । यहसुधिभूलिकबहूँनहिं, तुमसेलरिहैंनाहिं ॥
तबरुक्मिणिकेनंदनबोले । मैंतोसबहिंदेतहोंखोले ॥ पैनिर्लज्जकुमतिकुरुवंशी । मानतअपनेकहँअरिध्वंसी ॥
इततेछूटिभवनमहँजाई । पुनिबताईहैंबातमढाई ॥ तातेयदुनगरीटेचलिये । अहंकारइनकोसबदलिये ॥

पुनिप्रद्युम्नसोंकहबलराई । यदुवंशिनअबलेहुछोराई ॥ तबप्रद्युम्नवंदिसुखपाई । पटपुरगुहाद्वारमहँजाई ॥
सबयदुवंशिनबंधनछोरी । लायोकृष्णनिकटद्रुतदौरी ॥ बंधनलखिकौरवदलकेरो । अरुयदुवंशिनमोदघनेरो ॥
भागेजेकछुदानवबाँचे । युद्धकरनकोनहिंमनराँचे ॥ तिनकोरोकिनिकुंभसुरारी । कोपितह्वैअसगिराउचारी ॥

दोहा-जोभागतहैंसमरते, जीवनहेतुडेराय । सोलहिजगमेंअतिअयश, अवशिनरककहँजाय ॥

जोजीतिहोयुद्धमहँवीरा । तोपैहोजगमोदगँभीरा ॥ जोमरिजैहोसंगरमाँहीं । तौवसिहोतुमस्वर्गसदाँहीं ॥
भागिदेखैहोकेहिंमुखजाई । नारिनसोंकिमिअईवताई ॥ सुनिकुंभजकीदानवबानी । कोपितफिरेसकलअभिमानी ॥
आवतनिरखिसुरारिनकाँहीं । रामकृष्णप्रद्युम्नतहाँहीं ॥ सात्यकिअरुउद्धवरणधीरा । गदअक्रूरकृतवर्मप्रवीरा ॥
भीमसेनअरुधर्मनरेशा । नकुलऔरसहदेवसुवेशा ॥ तेऊमखशालातेआये । अर्जुनहीकोतहाँटिकाये ॥

दोहा-असुरनपैछोडेंसबै, बाणजालततकाल । रुंडमुंडबहुखंडभे, भागेदैत्यविहाल ॥

रिदलजयनिजनिरखिपराजै । भगतदेखिआसुरीसमाजै ॥ तहाँनिकुंभवीरबलवाना । उडिअकाशभोअंतर्धाना ॥
जयंतप्रवरनभमाँहीं । तेशरमारेंताहितहाँहीं ॥ तबनिकुंभकरिकोपकराला । दंतनदंशिअधरततकाला ॥
ररहिंहन्योपरिघइकभारी । गिरचोआयसोमहीमँझारी॥शचीकुँवरतेहिंदौरिउठायो । मूर्च्छिनिवारिजानबैठायो ॥
न्योकृपाणनिकुंभहिंधाई । पैदानवहिंव्यथानहिंआई ॥ हन्योजयंतहिंपरिघसुरारी । शोणितधारबहीतनुभारी ॥

दोहा-काँपनलाग्योशक्रसुत, रहीनसुधितनुकेरि । तबनिकुंभमनमेंकियो, यहविचारनृपफेरि ॥

निर्बलदेवताविचारे । इनकोकहासमरमहँमारे ॥ असविचारिह्वैअंतर्धाना । रामकृष्णढिगकियोपयाना ॥
हँजयंतपुनिप्रवरउठाई । वासवनिकटगयोसुखपाई ॥ वासवदेखिसुतहिंसुखमान्यो । बारबारअसवचनबखान्यो ॥
सुरहिंखड्गमारिसुतमेरो।लायोप्रवरहिंबलीघनेरो॥असकहिमुदितसराहनलाग्यो।मिल्योसुतहिंप्रवरहिंसुखपाग्यो॥
जवायोतहँविजयनिशाना।मानिजयंतहिंअतिबलवाना॥इतनिकुंभमखशालहिंआयो।करिअतिशोरघोरनभछायो॥

दोहा-तबगोविंदचढिकैगरुड, सात्यकिबलहिंचढाय । लैयदुसेनासंगमें, गेमखशालहिंधाय ॥

हँअर्जुनअरुयदुपतिरामै । सात्यकिसांबभीमअरुकामै ॥ धर्मनृपहिंनकुलहुसहदेवै । औरहुवीररहेंबहुजेवै ॥
तेनकोनिरखिनिकुंभमहाना । मायाकरिभोअंतर्धाना ॥ तबसबशंकितभेतेहिकाला । कहाकरतयहदैत्यउताला ॥
बप्रद्युम्नहिंकहबलरामा । मायामेटिदेहुबलधामा ॥ हरिसुततहाँशंकरीमाया । करितेहिंमायामोहरसाया ॥
मरमध्यतहँपरमप्रकाशी । देखिपरचोनिकुंभबलराशी॥धायोमनहुँशिखरकैलासा । लीलनचहतमनहुँदशआसा॥

दोहा-तहाँपुकारचोबारबहु, खडोरहैगोपाल । आवतनिरखिनिकुंभको, कुपितपांडुकोलाल ॥

द्रुतहिंचापगांडीवचढायो । दानवपैबहुबाणचलायो ॥ अर्जुनबाणदैत्यतनुपाँहीं । लगिमुरिटूटिगिरेमहिमाँहीं ॥
गडेनजबदानवतनुबाना । तबपारथभोदुखितमहाना ॥ यदुपतिसोंबोलेकरजोरी । नाथसुनोविनतीअबमोरी ॥
काहभयोयहमोहिंबतावो । आशुहिंसंशयसकलमिटावो ॥ शैलविदारकसायकमेरे । गडेनअंगहिंदानवकेरे ॥
मंतोअबनहिंबाणचलैहौं । जगमेंमुखअबकौनदेखैहौं ॥ तबयदुपतिबोलेमुसकाई । होउअधीरनशंकाढाई ॥

दोहा-याकीहैविस्तरकथा, देहेंफेरिसुनाय । अबविलंबकोकामनहिं, मारहुशरसमुदाय ॥

तबपारथछोडेशरजाला । मूँदिगयोदानवविकराला ॥ दानवतहाँसमरतेभाग्यो । पटपुरगुहाघुस्योभयपाग्यो ॥
तबबलसोंबोलेयदुराई । गयोभागिदानवदुखदाई ॥ आपप्रतापविजयहमपाई । द्रुतहिंमातुपितुलियेछोडाई ॥
धवकुरुवंशिनदेहुछोराई । पावहिंसुखनिजनिजगृहजाई ॥ इनमहँबडेबडेधनुधारी । तेलज्जितह्वैहैंदुखारी ॥
यदुपतिबनसुनतबलराई । कारिडरमेंतबदयामहाई ॥ कृष्णकुमारहिंबेगिबोलाई । मंदमंदअसकह्योबुझाई ॥

दोहा-छोडिदेहुसबनृपनकहँ, निजनिजगृहअबजाँहि । यहसुधिभूटिकचहैंनहिं, तुमसेलहिंनाँहि ॥

तबरुक्मिणिकेनंदनबोले । मंतोसबहिंदेतहाँसोले ॥ पैनिर्लज्जकुमतिकुरुवंशी । मानतअपनेकहँअरिध्वंसी ॥
इततेछूटिभवनमहँजाई । पुनिवताइहैंबातबढाई ॥ तातेयदुनगरीलैचलिये । अहंकारइनकोसबदलिये ॥

अबनहिंइनकोछोरहुताजा । मेरीकहीमानियेंबाता ॥ इनपांडवसोंवैरबढ़ाई । करिहैंफेरिविशेषलड़ाई ॥
तातेजोपांडवभलआड़ो । तोइनकेबंधननहिंछाड़ो ॥ तबबलरामकह्योमुसकाई । अहैवातसतितैंजोगाई ॥
दोहा–अबहींकायेकरिलिये, फेरिकरेंगेकाह । तातेसबकोछोड़िबो, हैसबभाँतिसलाह ॥
सुनतरामकेवचनसुहाये । हरिकुमारअतिआनँदछाये ॥ सबकेबंधनछोरिकुमारा । सबकोलैसँगएकहिंबारा ॥
रामकृष्णकेनिकटसिधारा । जहँयदुवंशीखड़ेअपारा ॥ तेलज्जितनीचेमुखकीने । कोहुकीदीठिदीठिनहिंदीने ॥
खड़ेभयेहरिनिकटविचारत । मरिबोभलोनबनतनिहारत ॥ रामकृष्णतिनभूपनकाँहीं । गजबाजीरथदियोतहाँहीं ॥
यथायोग्यअभिवंदनकीन्ह्यों । भवनगवनकोशासनदीन्ह्यों ॥ तेलज्जितवीरतागँवाई । शोचतचलेसकलनृपराई ॥
दोहा–हरिकुमारतहँकहतभो, कुरुवंशिनकोटेरि । सदाराखियेचित्तमहँ, सुधियदुवंशिनकेरि ॥
निजनिजधामगयेजबभूपा । तबयदुपतिअरुरामअनूपा ॥ प्रविशेपटपुरगुहामँझारी । रहीजहाँअतिशयअँधियारी ॥
तहँनिकुंभकोपितपुनिधाई । मारचोपरिघशीशयदुराई ॥ कौमोदकीगदाअतिभारी । हरिहुहनीदानवहिंप्रचारी ॥
दोऊमहिमहँगिरेसमाना । कछुविलम्बलगिरह्योनभाना ॥ हरिकहँमूर्च्छिततहाँनिहारी । यदुपांडवभेपरमदुखारी ॥
स्वस्तिमनावनलगेमुनीशा । जीतहिंदानवकहँजगदीशा ॥ उठेतुरंतकृष्णतेहिंकाला । उतेउठ्योदानवविकराला ॥
दोहा–उद्धयुद्धअतिक्रुद्धह्वै, शुद्धविजयकेहेतु । बहुप्रकारकीन्हेंदोऊ, करिकरिमारननेतु ॥
तहँपुनिभैअकाशकीवाणी । हनहुचक्रतेशारँगपाणी ॥ यदुपतितुरतहिंचक्रचलायो । पटपुरगुहाभासअतिछायो ॥
लगतसुदर्शनरवअतिभयऊ । शीशनिकुंभकेरकटिगयऊ ॥ गिरचोरुंडधरणीमहँताको । वज्रहुँलगेकह्योनहिंजाको ॥
निरखिनिकुंभमरणअसुरारी । दियेदुंदुभीदिविमहँभारी ॥ लगेसुमनवर्षनचहुँओरा । जयहरिजयहरिकीन्हेंशोरा ॥
द्वैशतरहींनिकुंभकुमारी । यदुवंशिनकहँदियोमुरारी ॥ पटहजाररथसहिततुरंगा । मणिगणबहुविचित्रबहुरंगा ॥
दोहा–यदुपतिदीन्ह्योंपांडवन, आदरसहितबुलाय । पुनिपटपुरमहँप्रवरकहँ, दीन्ह्योंनाथबसाय ॥
ब्रह्मदत्तकीयज्ञकहँ, पूर्णकरीयदुनाथ । यदुपुरकोगमनतभये, पितामातुदलसाथ ॥
द्वारकेशदैदुंदुभी, द्रुतहिंद्वारकाआय । उग्रसेनकोकरतभे, अभिवंदनशिरनाय ॥
यदुनगरीमहँबसतभे, यदुवंशिनसुखदेत । यदुकुलमर्यादाधरे, श्रीयदुकुलकेकेत ॥
पटपुरकीसुनिकैविजय, तहाँपरीक्षितराज । शुकसोंबोलेजोरिकर, मध्यमुनीनसमाज ॥

राजोवाच ।

यदुवंशीशत्रुनकेहिंभाती । कन्यादईरुक्मअरिघाती ॥ तासुदुर्देशाकरीमुकुंदा । तातेरुक्मतहाँमतिमंदा ॥
चाहतरह्योकृष्णकोघाता । दाउँलगावतरह्योअघाता ॥ रुक्मीअरुपुनिकृष्णहिंकेरो । केहिहितभोसंबंधघनेरो ॥
सोबरणहुमोसोंमुनिराई । देहुविवाहहिंकथासुनाई ॥ भयोजोहैअरुहोवनवारो । जानोहैशुकदेवतिहारो ॥
दूरनेरअरुअंतरजोऊ । जानोहैतुम्हारसबसोऊ ॥ सुनिकुरुपतिकीमंजुलवाणी । सुमिरिकह्योशुकशारँगपाणी ॥ २० ॥ २[illegible]

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–रुक्मवतीजोरुक्मकी, सुतास्वयम्बरमाहँ । रुक्मिणिकोनंदनहरी, जीतिसकलनरनाहँ ॥ २२ ॥
रुक्महुनिजभगिनीप्रियकारण । भयोमुदितनाहिंकियोनिवारण ॥ २३ ॥
दोहा–रुक्मिणिपुत्रीचारुमती, कृतवर्मासुतताहि । महाबलीदीर्घाक्षकहँ, परमउछाहविवाहि ॥ २४ ॥
रुक्मीकेसुतकेरिकुमारी । नामरोचनाअतिसुकुमारी ॥ रुक्मतहाँरुक्मिणिप्रियकाजा । करनचह्योअनिरुधकोकाज ।
रुक्मयदपिअनुचितयहजान्यो । तदपिरुक्मिणीमोहभुलान्यो ॥ २५ ॥ यदुपतिपहँपत्रिकापठाई । आपब्याहकोहाजर[illegible] ।
रुक्मपत्रसुनिहरिहरषाने । अनिरुद्धव्याहकरनमनआने ॥ श्रीबलरामनिकटपुनिजाई । दियोसकलवृत्तांतसुनाई ।
रामहुतहँसंवतकरिदीने । नातीव्याहआनँदरसभीने ॥
दोहा–तहँयदुपतिशासनदियो, साजनतुरतबरात । नातीव्याहउछाहको, आनँदउरनसमात ॥

तहाँरुक्मनिजपत्रपठाई। रुक्मिणिकोनिजभवनबोलाई ॥ उतैबरातसकलविधिसाजे। बजवावतभेअनगनबाजे ॥
रामकृष्णअरुसांबकुमारा। औरप्रद्युम्नमहाछविवारा ॥ सात्यकिउद्धवआदिकवीरा। औरहुयदुवंशीरणधीरा ॥
कोउगजचढिकोउवाजिनस्यंदन।कोऊपालकीचढेअनंदन॥आयेसबयदुपतिकेद्वारा।साजिसाजिसबभाँतिसिंगारा ॥
सजीबरातजानियदुराई। अनिरुधकोपरछनकरवाई ॥ रत्नजड़ितपालकीचढाई। सुदिनमुहूरतसकलशुधाई ॥
दोहा–चलेभोजकटनगरको, सुखितकृष्णबलराम। दूलहकरिआगूलिये, साजिबरातललाम ॥ २६ ॥
चारिदिवसमगडारतडेरे। गयेभोजकटनगरहिंनेरे ॥ रुक्मीसुनतबरातअवाई। लईकछुकचलिकैअगुवाई ॥
नगरनिकटजनवासदेवायो। विविधभाँतिसतकारपठायो ॥ दैवज्ञनशुभलग्नविचारे। करवावतभेद्वारहिंचारे ॥
पुनिजबलग्नघरीशुभआई। करवायेविवाहसुखछाई ॥ व्याहउछाहचारिदिनबीते। जबहिंरुक्मकारजतेरीते ॥
तबकलिंगआदिकमहिपाला। रुक्मसमीपगयेतेहिंकाला ॥ रुक्मीकहँअसवचनसुनाये। हरिसोंआपपराजयपाये॥
दोहा–करीआपकीदुर्दशा, यहगोपालकुमार। वैरलेबतातेउचित, ताकोकरहुविचार ॥
सन्मुखलरेविजयनहिंपैहो। अवशिहारिरणमहँतुमजैहो ॥ तातेकरहुकपटयहिभाँती। जामेंजरहिंरिपुनकीछाती ॥
खेलनजुआरामनहिंजाने। पैखेलनकोरहैंलोभाने ॥ २७ ॥ तातेसबभटलेहुबोलाई। बैठहुइतदरबारलगाई ॥
खेलनजुआहेतुबलरामै। आनहुवेगिआपनेधामै ॥ तुमअरुरामजुआइतखेलो। पैपासालगायतुममेलो ॥
हुपंचवदितुमहमकाँहीं। हारिजीतिहमरेमुखमाँहीं ॥ जेहैंइतैरामजबहारी। पैमानिहैंनहैंमदभारी ॥
दोहा–तबकहिकैकटुवचनकछु, करिदरवाजेबंद। रामशीशकाटबतुरत, चलैनएकौफंद ॥
यदुवंशिनमहँबलेप्रवीरा। औरसबैतोहैंभयभीरा ॥ याकेमरेसकलमरिजैहैं। विनप्रयासहमतुमजयपैहैं ॥
रुक्मीसुनिकलिंगकीवानी। कहँयहभलीवातअनुमानी ॥ असकहिसुभटनवेगिबोलाई। ह्वैतयारदरबारलगाई ॥
पुनिइकचारहिंवेगिबोलायो। ऐसोताकोरुक्मबुझायो ॥ कहोरामसोंतुमअसजाई। मेरेकुलहिंरीतिचलिआई ॥
व्याहअंतसमधीदोउआई। खेलहिंजुआसभासुखपाई ॥ कन्याविदाहोतितेहिंपाछे। साधिमुहूरतशुभदिनआछे ॥
दोहा–तातेतुमकोरुक्मनृप, वेगिबोलायोराम। कीजेनाहिंविलंबअब, नाथचलहुतेहिंधाम ॥
सुनतदूतरुक्मीकीवानी। गयोरामढिगअतिसुखमानी ॥ रामहिंरुक्मीवचनसुनायो।सोसुनतहिंअतिआनँदपायो ॥
कह्योजुआखेलैंगेआई। यामेंतोममप्रीतिमहाई ॥ चलनलगेजबहींबलरामा। तबवारणकिन्ह्योघनश्यामा ॥
रुक्मीहैकपटीअतिखोटो। करिहैदगाबुद्धिकोछोटो ॥ तातेउचितनजावतुम्हारा। असहमरेमनपरतविचारा॥
तबहिंविहँसिबोलेबलराई। याकोडरनहिंहमैंकन्हाई ॥ असकहिचढिस्यंदनयदुनंदन। गयेजुआखेलनजगवंदन ॥
दोहा–सभामध्यजबरामगे, उठ्योसकलदरबार। बैठेसिंहासनसुभग, लह्योअमितसतकार ॥
कुशलपूँछिरुक्मीकहँबानी। खेलहुचौपरतुमबलखानी ॥ हमतुमखेलहिंएकहिसंगा। हारजीतसबकहेकलिंगा ॥
बलरामहुँतथास्तुकहिलीन्ह्यो।रुक्मीमधिचौपररचिदीन्ह्यो।२८। मोहरसहसहिरामलगाये।तसहिंरुक्मिहुदाँउधराये
जीत्योरुक्मप्रथमकीबाजी। होतभयोअतिशयमनराजी ॥ तबठठायकेदाँतनिकासी। हँस्योकलिंगराजकरिहाँसी॥
तबकछुकोपितभेबलरामा। पैनहिंवचनकह्योबलधामा॥२९॥तबबलमोहरलाखलगाई। पासादीन्ह्योतुरतचलाई ॥
दोहा–सोबाजीजीतीतुरत, श्रीबलभद्रप्रवीर। तबरुक्मीबोल्योतहाँ, करिकैकोपगँभीर ॥
हमजीतेतुमजीतेनाँहीं। सभामध्यनहिंमृषावताहीं ॥ पूँछिलेहुपंचनपहँरामा। बोलहुझूठविजयकेकामा ॥ ३० ॥
रुक्मीवचनसुनतबलकेरे। भयेनैनयुगअरुणघनेरे ॥ सागरपर्ववेगजिमिगाढो। तिमिबलसदनकोपतनुबाढो ॥
फरकिउठेभुजदंडउदंडा। करनचहतमनुअंडहिंखंडा ॥ भृकुटीवंकअधरअतिकाँपे। युगुलजानुधरणीमहँचाँपे ॥
पुनिमोहरदशकोटिलगायो। पासारोपितरामचलायो ॥३१॥ भयजीततहँविलम्बलगिबाजी। जीतिअंतरामभेराजी
दोहा–तबरुक्मीबोल्योबहुरि, हमजीतेबलराम। अबतुमफेरिलगाइयो, अपनोसबधनधाम ॥
जोनसत्यमानहुबलराई। पूँछहुपंचनशपथधराई ॥ तबकलिंगसोंकहबलरामा। कोजीत्योसतिकहहुसभामा ॥

तबकलिंगबोल्योअसबाता। जित्योरुक्मअसमोहिंलखाता॥यदुभीष्मकुमारबलवारा। कादूसोंकबहूँनहिंहारा।
तुमहींअसकेतेबलराई। जुआजीतिधनलियोलुटाई॥ देहुलगायद्वारकानगरी। यदुवंशिनकीवनितासिगरी॥
तऊजीतिरुक्मीहठिलेई। माँगेहुँतेतुमकोनहिंदेई॥ असकहिहँस्योकलिंगठठाई। समवराटिकादाँतदेखाई॥३२॥

दोहा–तहँअकाशवाणीभई, बोलतनृपाकलिंग। बलजीतेबाजीउभय, यहसतिअहैप्रसंग॥ ३३॥

तहँनभगिरादुरावनहेतू। रुक्मीगर्जिकह्योदुखदेतू॥ ३४॥ तुमकाजानहुखेलनरामा॥खेलहिंद्युआभूपमतिधामा॥
तुमतोगायनकेचरवैया। गोपसंगकेसदाखेलैया॥ कुरुपतिचेदिपमगधगोसाईं। अरुवाणासुरदानवराई॥
ऐसेनृपयहखेलनजानैं। हारिजीतिउचितैभरिमानैं॥ तेंतोअपनेगर्वभुलाना। सोवहिसदाकियेमदपाना॥
थोरोधनथोरीप्रभुताई। भापहुसदाबातबढिआई॥ तुमहोनहिंनृपहोबनवासी। ताहूपैनिजकुलकेनासी॥

दोहा–अबतोपैहोजाननहिं, बिनदीन्हेंधनधाम। यहिक्षणवचिबोकठिनहै, सत्यकहहुँबलराम॥

सुनतरुक्मकेवचनगँभीरा। हँसेठठायसभाकेबीरा॥ कहीरुक्मसबसोंअसबानी। जायनपावहिंयहअभिमानी
धरिबाँधहुकोठरीमहँराखो। छूटिसकैनयत्नकरिवाखो॥ सुनतवचनअसवीरसमाजे। भुजबलदियदेवायदरवाजे
चहुँकितकरिकैबंददुआरा। तबरुक्मीअसवचनउचारा॥ जोममशरणहोहुबलरामा। देहुमोहिंसिगरोधनधामा
तोतुमकोहमदेहुँबचाई। नातोतेरिमीचुअबआई॥ असकहिसुभटनदियेइशारा। बचिनजायवसुदेवकुमारा

दोहा–रुक्मनैनकिसैनलखि, सकलसैन्यरुखपाय। सैन्यमध्यअतिचैनसों, उठेभयनउरलाय॥ ३५॥

तहाँरामअतिकोपितह्वैकै।धावतधरनभटनकहँज्वैकै॥उव्योआशुभुजबलहिंनिकारयो।दौरिपरिघरुक्मीशिरमारयो
परिघलगतशिरपेटपैठिगो।धरहुतासुइकबारऐंठिगो॥रुक्मीचपटिगयोमहिमाँहीं।लखिनपरयोशरीरतेहिकाँहीं ३६
बलकरतेलखिरुक्मविनाशा। भग्योकलिंगमानिमनत्रासा॥ दरवाजेह्वैभागतदेखी। धायेबलकरिकोपविशेखी।
दशयेंकदमपकरितेहिलीन्ह्यो। मुष्टिप्रहारतासुमुखकीन्ह्यो॥ भरिगेसकलदाँतमुखकेरे। जहँतहँमहिमहँपरेवनेरे॥

दोहा–पकरिकेशपटक्योपुहुमि, पुनिबलताहिउचाय। फेंकिदियोकालिंगको, परयोकलिंगहिंजाय॥ ३७॥

तबसबसुभटकाढितरवारी। धायेबलपरकरिबलभारी॥ मारतबलहिंखङ्गसबटूटे। बलहुपरिघलैसबकहँकूटे॥
केतेनकेशिरभेबहुफाँके। कितेहुछमाचपटेरणबाँके॥ केतेनबाहुउरूसबटूटे। केतेनाशिरमटुकीसमफूटे॥
कूदिकोटसबसुभटपराने। बलदेवहिंकोउनहिंसमुहाने॥ तबबलदेवहुफारिकेंवारे। परिघकंदधरिशिबिरसिधारे॥
घूमतदृगझूमतसबअंगा। मानहुँसोहतमत्तमतंगा॥ जायदूरबैठ्योबलरामा। गयोनकृष्णशिबिरअभिरामा॥३८॥

दोहा–सुनिरुक्मिणिनिजबंधुवध, कीन्ह्योमहाविलाप। उतयदुवंशीसुदितभे, बलकोनिरखिप्रताप॥

जोरुक्मीवधहरिसुखमानैं। तोरुक्मिणिकोअप्रियजानैं॥ जोरुक्मीवधकोदुखल्यावैं। तौबलभद्रहिंनेकुनभावैं।
उभैभाँतिविपरीतविचारी। शोकहर्षनहिंकियोमुरारी॥ ३९॥ तबप्रद्युम्नादिकनबोलाई।कहतभयेबलरामबुझाई।
जौनहोइकोरह्योसोह्वैगो। जोजसकियोसोतसफललैगो॥ चलहुद्वारकेअबसबभाई। दूलहदुलहिनिसंगलेआई॥
तबसात्यकिआदिकउठिधाये। रुक्मभवनपालकीसजाये॥ दुलहिनिदूलहताहिचढाई। [illegible]

दोहा–तहाँरामदैदुंदुभी, कियेकूँचदलसाथ। पीछेलैरुक्मिणिप्रिया, संगचलेयदुनाथ॥

दूलहदुलहिनिजपुरजबआये। पुरवासीसबदेखनधाये॥मंगलसाजिसाजुतहँनारी। दूलहदुलहिनिसुछबिनिहारी।
जेतीदेवकिआदिकरानी। परछनकियोपरमसुखसानी॥ दुलहिनिदूलहऐनलेवाई। गईसकलअतिशयसुखछाई।
मणिमंदिरइकपरमसुहावन। पटऋतुकीशोभासरसावन॥ तेहिंमंदिरवरवधूटिकाई। बसीआयनिजनिजगृहजाई॥
तेहिंमंदिरप्रद्युम्नकुमारा। कियोकालबहुसुखदविहारा॥ करहिंसेवजिनसखीहजारैं। कामकुँवरछबिलखितिनिवारैं।

दोहा–रामकृष्णहूँकरतभे, अनिरुधपैअतिप्रीति। अनिरुद्धहुतिनचरणमें, कीन्ह्योपरमप्रतीति॥ ४०॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे एकषष्टितमस्तरंगः॥ ६१॥

दोहा–तहँपरीक्षितराजमुनि, जोरिहाथशिरनाय। विनयकरीशुकदेवसों, अतिअभिलापजनाय॥

राजोवाच।

दोहा–बाणासुरकीकन्यका, जाकोऊपानाम। व्याह्योतेहिंतहँजाइकै, श्रीअनिरुधबलधाम॥
हरिशंकरयुद्धमहाना। भयोसुनोमैंहूंनिजकाना॥ कहोनाथवहकथासोहाई। होइजोमोपैकृपामहाई॥
निपरीक्षितकोअनुरागे। श्रीशुककहनकथातहँलागे॥ १॥

श्रीशुक उवाच।

हरिकहँदियधरणिधुर। सोबलितासुतनयबाणासुर॥बलिकेशतसुततिनमहँजेठो॥२॥करीभक्तिशिवकीगृहबैठो॥
त्यसिंधुधृतव्रतमतिमाना॥चतुरचलाकबडोबलवाना॥३॥राजकियोशोणितपुरकेरो॥शिवप्रसादसुरगणतेहिचेरो॥
हइजारबाहुनृपजाके। कारकअरिदलतुरतकटाके॥

दोहा–शंकरकेसन्मुखगयो, बाणासुरइकबार। नाचनलाग्योमधुरअति, सहसबाहुदेतार॥ ४॥
करुणाकरशंकरभगवाना। ह्वैप्रसन्नअसवचनबखाना॥ बाणासुरमाँगोवरदाना। जौनमनोरथहोयमहाना॥
बबोल्योकरजोरिसुरारी। करहुनाथममपुररखवारी॥ एवमस्तुकहिशंकरदीन्हें। बाणासुरपुररक्षणकीन्हें॥ ५॥
इकसमयबाणासुरधीरा। शंकरपदवंदतरणधीरा॥ विनयकरीदुर्मदकरजोरी। आपहाथहैसबगतिमोरी॥ ६॥
तुमतोलोकईशगुरुज्ञाता। तुवपदसबमनकामनदाता॥७॥दियोबाहुप्रभुमोहिंहजारा।सोबिनयुद्धलगतअतिभारा॥

दोहा–देययुद्धजोमोहिंअब, असत्रिलोकनहिंकोइ। पैप्रभुतुमकोछोडिकै, द्वितियपरतनहिंजोइ॥ ८॥
जबभुजमोरलगेखजुआई। गयोदिग्गजनकरनलराई॥ मगमहँचूरणकरतपहारा। जायदिग्गजनदौरिनिहारा॥
तेमोहिंदेखतगयेपराई। औरवीरनहिंपरतदेखाई॥ ९॥ बाणवचनसुनिसंयुतगर्वा। कोपितबोलतभेतहँसर्वा॥
जबतेरीयहतुंगपताका। गिरहिंटूटिकैमिलिहिंछमाका॥ तबतेरोमदगंजनहारी। ममसमतेंह्वैहैयुधभारी॥ १०॥
असमुनिशंकरवचनसुरारी। गयोभवनकहँपरमसुखारी॥११॥ऊपानामकन्यकाताकी। वर्णीजातिनहींछबिजाकी॥

दोहा–एकसमयसोऐनमें, करतरहीसुखशैन। लख्योस्वप्नइकचैनको, सुखदायककृतमैन॥
एककुँवरजेहिंश्यामसरूपा। लंबेभुजशशिवदनअनूपा॥ शीशकीटउरमंजुलमाला। पीतांबरतनुलसतविशाला॥
जाकोरूपपरेदृगदोई। फिरिनआँखितरआवतकोई॥ स्वप्नमाहँअसपुरुपपधारा। ऊपातासँगकियोविहारा॥
विरचिकेलिफिरिरूपदुरायो।ऊपाकेमनअतिदुखछायो॥कबहुँनअससुंदरवरदेख्यो।तासुवियोगसोगअतिलेख्यो॥१२॥
कहाँगयोपियअसमुखभाषत।ऊपाउठिबैठीदुखचाषत॥सखिनमध्यउठिअतिहिलजाई।विह्वलह्वैनीचेशिरनाई॥१३॥

दोहा–बाणासुरकोसचिवइक, कुंभांडजेहिंनाम। तासुचित्ररेखासुता, अतिविचित्रगुणधाम॥
रहीनिकटऊपाकेसोऊ। औरहुसखीरहींसबकोऊ॥ ऊपहिनिरखिविकलदुखछाई। तहँचित्रलेखाअसगाई॥
क्योंचटपटतजिनींदसखीरी। उठिचकितचहुँओरलखीरी॥१४॥ काकोतैंखोजतिसुकुमारी।तेरोकौनमनोरथभारी॥
सखीजोनहह्वैमनतेरे। सोजानहिंकरतलममहँमेरे॥ जाकोतैंमोहिंदेहिबताई। ताकोदैहोंतोहिंदेखाई॥
सुनतचित्रलेखाकीबानी। ऊपाकहतभईसुखमानी॥ १५॥

ऊपोवाच।

सखीआजमैंसोइरहिसोई। कोनिहुँव्यथारहीकछुभोई॥

दोहा–लख्योअपूरवस्वप्नमें, जाकोसंभवनाहिं। सुनहुचित्रलेखासखी, वरणतहौंतिहिकाहि॥
कवित्त–आजुलख्योसपनेमेंसखी, इकसाँवरोसुंदरप्राणपियारो। कंजसेनैनपियूपसेबैन, अनंदकोऐनधोमैनसँवारो॥
बाँहविशालसोपायमिल्योमोहि, मैंहूँचहीकरिबोदिपहारो। ताहीसमययहनींदानिगोडी,गईलैगईवहप्राणहमारो१६

दोहा—अधरसुधाअपनोअली, मोकोपानकराय । मोहिंडारिदुखसिंधुमें, कहँधौंगयोपराय ॥
ताहीकोहेरोंमैंआली । मिलैकौनविधिअंबुजमाली ॥ ऊषावचनसुनतमुखछाई । कहीचित्रलेखामुसकाई ॥ १७॥

चित्रलेखोवाच ।

देहौंतेरोविरहनिवारी । सखीकहहुँकरिशपथतिहारी ॥ जोयहत्रिभुवनमेंवहहोई । सखीनतैंकरुसंशयकोई ॥
देहौंल्यायअवशिमैंतोहीं । सखित्रिभुवनलघुलागतमोहीं ॥ त्रिभुवनमेंसुंदरजेवीरा । तिनकीलिखेदेउँतसवीरा ॥
तिनमेंजोतेरोमनहारी । ताहिबतायदेहिमोहिंप्यारी॥ १८॥असकहिसबहिंलिखनसोलागी । ऊषाकेअतिप्रेमहिंपागी॥

दोहा—प्रथमलिख्योदेवनसबहिं, पुनिगंधर्वनरूप । फेरिसिद्धचारणभुजग, पुनिदानवनअनूप ॥
विद्याधरनलिख्योसुविचक्षण।फेरिलिख्योमहिमनुजततक्षण।मनुजनमहँयदुवंशिनखाँची।शूरसविहिंपुनिकैरुचिराँची
पुनिवसुदेवहिंलिख्योकुमारी।पुनिबलकीतसवीरउतारी १९पुनियदुपतिकोचित्रबनायो।निरखिताहिचौंधाँचखछायो।
पुनिप्रद्युम्नसविहिंलिखिदीन्ही।ऊषानिरखिदीठिअधकीन्ही॥रहीलजायकहीनहिंबानी।तहँचित्रलेखाकछुजानी २०॥
पुनिअनिरुद्धसविहिंनिर्मानी । ऊषानिरखिताहिमुसक्यानी ॥ नीचेमुखकरिअतिहिंलजाई । ऊषाबोलीसैनचलाई ॥

दोहा—अरीचित्रलेखासखी, सुन्दरनवलकिशोर । याकोलैआवहुइते, यहीमोरचितचोर ॥ २१ ॥
तबहिंचित्रलेखामुसकाई । ऊषासोंअसकह्योबुझाई ॥ इनकोमैंजानतिहौंप्यारी । यातोमहावीरधनुधारी ॥
यदुवंशीयदुपुरकोवासी । क्षमाशीलक्षितिमेंछविरासी ॥ अतिसुंदररमणीचितचोरा । नंदकिशोरकिशोरकिशोरा॥
सुखीरहेशोचैजनिसजनी । करिहौंकाजतोरयहिरजनी ॥ भापिचित्रलेखाअसबानी । उडीअकाशअकाशसयानी ॥
गईद्वारकापुरीमँझारी । देख्योकृष्णमहलअतिभारी ॥२२॥ पुनिअनिरुद्धअगारगैसोई। चकितभईसुछविहगजोई॥

दोहा—कामकुँवरपर्यंकपर, करतरह्योसुखशैन । करिमायातुरतैलियो, तेहिंउठायभरिचैन ॥
उडिअकाशलैचलीकुमारी । जान्योनहिंतहँकोइनारी॥एकदंडमहँनिजपुरआई।ऊषाहिंअनिरुधकोदरशाई॥२३॥
सुंदरवरलखिबाणकुमारी । धन्यआपनोभाग्यनिहारी ॥ उठीआशुमंजुलमुसक्याई । करगहिकुँवरहिंदियोजगाई ॥
सोऊलखिऊषाकोरूपा । मोहिगयेसुखभयोअनूपा ॥ पुनिकरगहिलैचलीलेवाई । आँखिनआनँदअंबुबहाई ॥
सातपरतअंतःपुरमाँहीं । मनहुँतेजहाँपुरुषनाहिंजाँहीं॥मणिमंदिरसुंदरअतिसोहत।निरखतचंद्रभानुमनमोहत॥२४॥

दोहा—विविधभाँतिपकवानजहँ, विविधभाँतिकेपान । विविधभाँतिमणिगणनके, वासनजिनउपमान ॥
चहुँकितधूपसुरभितहँछाई । लसीफूलकीसेजबनाई ॥ तहँऊषाअनिरुद्धहिंलैके । निवसतभईपरमसुखकैकै॥२५॥
दोऊफँसेप्रीतिकीफाँसी । उभयउभयमुखदर्शनआसी ॥ कालजातनाहिंनेकहुजाने । कियेविहारमहासुखसाने ॥
चारिमासजवयहिविधिबीते । ऊषाअनिरुधप्रीतिप्रतीते ॥ २६ ॥ तबऊषाकीबालकताई । छूटिगईआईतरुणाई ॥
बोलनिचितवनिचलनिविशेषी।निरखिसखीकौतुकउरलेखी ॥ करहिंजेअंतःपुररखवारी।तिनसुभटनसासरीउचारी॥

दोहा—बाणसुताकोलखिपरत, कछुविपरीतसुभाव । कहाभयोकैसोभयो,काकोअहैप्रभाव ॥
सखिनवचनसुनिसुभटसशंके । आपसमेंसबरहेसनंके ॥ ऊषाकोसुभटोइककाला । निरखेपुरुषसंगकछुहाला॥२७॥
सखिनवचनसबसतिश्रुतिमाने, आपुसमहँलागेबतराने ॥ यहकुलदूपणउपज्योकैसे । रविमहँहोपकलंकाजैसे ।
असकहिद्वारपालभयभारे । जायबाणपहँवचनउचारे॥सुनियेभूपतिविनयहमारी । कुलदूपणभइसुतातिहारी॥२८
परतजानिऔरैगतिताकी । जानिनजायदेवगतिवाकी ॥ करीद्वारकीअसरखवारी । गयोनपक्षिहुभानमँझारी ।

दोहा—पैनजानिपरतोकछू, कहाभयोयहनाथ । सूरचंद्रमाहूकहूँ, तक्योनताकोमाथ ॥ २९ ॥
सुनतबाणटगिसोरहिगयऊ । यथावाणबेधितहियभयऊ ॥ बारबारपुनिबाणविचारी । सकलद्वारपनाहिगइदर्री ।
मेरेअंतःपुरकोआयो । कौनहलाहलकोमुखल्यायो ॥ रह्योनअसत्रिभुवनमहँकोई । मरोभानसकैजोई ।
[illegible]कपाकोपपरचंडा । टेकमूछमनहुँयमदंडा ॥ चल्योआशुअंतःपुरकाँहीं । लेदानवसहस्रनमाँहीं ।
सहँऊषाकोमन्दिरबोलाई । कह्योवचनअतिक्रोधदुगाई ॥ कहाँसुतादेहुबताई । कारनकौनकर्मजनदई ।

दोहा-सखीकह्योकरजोरिकै, मणिमंदिरमहँसोय। नाथतहाँकछुदिननते, जाननपावैकोय॥

सखीवचनसुनिकोपहिंछायो। कन्याभवनआशुचलिआयो॥कामकुँवरकहँदेख्योजाई।ताहूकोमनगयोलोभाई॥३०॥
इयामस्वरूपनैनअरविंदा। आननकोटिलजावनचंदा॥ लंबेसुभगबाहुअतिपीने। लसहिंपीतपटयुगलनवीने॥
कलकपोलश्रुतिकुंडलराजे।अलकलटकितिनपरअतिछाजे३१खेलिरहेप्यारीसँगपासा।निरखतबहुनहिंपूजतिआसा।
ऊपाकुचकुंकुमतेरंजित। लसतमालगलमेंअलिगुंजित॥ एकपाणिऊपागलमाँहीं। एकपाणिपासापलटाँहीं॥

दोहा-तहँअनिरुद्धहिंयोंनिरखि, बाणासुरबलवान। सबबीरनसोंकहतभो, अनिरुधरूपलोभान॥३२॥

नबालयहमारनलायक। यदपिअनीतिकरीदुखदायक॥ मैंसकिहौंनहिंशस्त्रचलाई। देखतयाहिदयाउरआई॥
तेलहिअनुमतिभटमेरी। धरिलीजेबालककहँघेरी॥ बाणासुरशासनसुनिवीरा। धायेचहुँदिशितेरणधीरा॥
आवतनिरखिदानवनकाँहीं। उठिबैठ्योअनिरुद्धतहाँहीं॥ लियोनिकारिपरिघइकधाई। द्वारेद्रुतठाढोभोआई॥
मानहुँकालदंडकरभाजा। समरकरनआयोयमराजा॥३३॥ धायेधरनहेतुरणधीरा। चहुँकितर्तेकरिशोरगँभीरा॥

दोहा-परिघभमावतओरचहुँ, धायोश्रीअनिरुद्ध। दानवसम्हरिसकेनहीं, कैनसकेगतिरुद्ध॥

जहँजहँअनिरुधदौरतवागे, तहँतहँदानवकोदलभागे॥ जिमिसूकरघेरहिंशुनजाई। ताकेधावतजाहिंपराई॥
तहँदानवसबवचनउचारा। करहुउपायजायजेहिंमारा॥अबनहिंधरेमिलीयहबालक। ह्वैहैअमितअवशिभटघालक॥
असकहिदानवशस्त्रप्रहारे। परिघहिसोंअनिरुद्धनिवारे॥ परिघभमावतमारनलाग्यो। जालिमजोरयुद्धमहँजाग्यो॥
मुंडफूटिगेकाहुनकेरे। टूट टूकभुजभयेघनेरे॥ रहिनसकेकोऊतहँठाढे। भागेकतलसमरकेगाढे॥

दोहा-भागिगयेजेभौनते, तेईबँचेप्रवीर। डारयोबहुदानवनहनि, द्रुतअनिरुधरणधीर॥३४॥

दानवभागिबाणपहँजाई। सकलयुद्धकीखबरिजनाई॥ कह्योबालहैअतिशयबाँको।कोउभटपकरिसक्योनहिंताको॥
परिघमारिमारेभटकेते। सन्मुखगयेबचेनहिंतेते॥ सुनतबाणअतिशयदुखछायो। कामकुँवरपरकोपितधायो॥
बाणहिंआवतनिरखिकुमारा।धायकियोशिरपरिघप्रहारा॥दानवमूर्च्छितागिरयोतहाँहीं।रहिनगईकछुसुधितनुमाँही॥
तबअनिरुद्धताहिगोहरायो। एकहिंघाउमाहँमहिआयो॥ सुन्योप्रथमऐसोहमकाना। बाणासुरहैअतिबलवाना॥

दोहा-सुनतवचनअनिरुद्धके, उठयोआशुअसुरेश॥ मानहुँचरणप्रहारते, कुपितभयोभुजगेश॥

गुनिअनिरुद्धहिंअतिबलरासी। लैकरब्रह्मदत्तअहिफाँसी॥ बाणचलायदईविकराली। धावतभईयुगलतहँव्याली॥
अनिरुधकेलपटीइकसंगा। एकहिंबारबँधेसबअंगा॥ गिरयोभूमिमहँकामकुमारा। रहिनगयोतनुमाहँसम्हारा॥
लियोउठायबाणतेहिकाँहीं। राख्योकैदकोठरीमाँहीं॥ निरखतअनिरुधबंधनऊपा। ताकोहृदयकमलद्रुतसूपा॥
लाजछोडिबहुकियोविलापा। मरणसरिसपायोसंतापा॥ ताहूकोबाणासुरजाई। राख्योइककोठरींधंधाई॥

दोहा-ताकनहितितिनदुहुनके, तहँटिकायरखवार। आपभवनकोगमनकिय, दुखसुखभोइकबार॥३५॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे द्विपष्टितमस्तरंगः॥६२॥

दोहा-इतैचित्रलेखाहरयो, जबतेअनिरुधकाँहि। तबतेयदुवंशीरहे, शोचतसबमनमाँहि॥

झुरिझुरिअससबकरहिंविचारा। कहँगयेप्रद्युम्नकुमारा॥ कृष्णरामसात्यकिरणधीरा। सारनगदप्रद्युम्नप्रवीरा॥
उद्धवकृतवरमाअक्रूरा। औरहुसांबआदिबहुशूरा॥ उग्रसेनकेसभासिधारी। सकलबैठिकैहंगिराउचारी॥
महाराजप्रद्युम्नकुमारा। रह्योजोहमकोप्राणपियारा॥ सोकहँगयोनजानहिंकोई। पौंकोउहत्योरूपबरजोई॥
ताकोकैसोकरहिंविचारा। जेहिप्रकारसुतमिलहिंमारा॥ बोल्योउग्रसेनमहराजा। सुनहुसबैयदुवंशसमाजा॥

दोहा-सबथलभेजोदूतबहु, सुरनरअहिपुरमाँहि। जहाँसोजसुतकोलगै, तहाँसचिवकोउजाँहि॥

करिकैसामपुत्रकहँल्यावैं। वृथारारिकेहिंहेतुमिटावैं॥ तबबोल्योबलदेवरिसाई। देयखोजजोकोउलगाई॥
जोअनिरुद्धहिंराखिहुगोई। सोशिवविधिलोकहुयदिहोई॥ तोलैऐहैंतोहिंकरिघाता। औरठौरकीकेतिकबाता॥
मासअषाढहिंकुँवरहेरान्यो। अबआश्विनलोंनहिंदरशान्यो॥१॥ इतनोजबबोलेबलराई। तबआयेनारदमुनिराई॥
उठीसभानारदकहँदेखी। सबकेउरभोमोदविशेषी॥ खड़ेखड़ेबोलेमुनिराई। यदुवंशीतुमबुद्धिगमाई॥

दोहा—अनिरुधऐसोलाडिलो, अतिअनोखकुलमाँहिं। ताकोघरतेहरणभो, तुमजानहुकसनाँहिं॥

बाणासुरअतिशयबलवाना। शोणितपुरकोईशमहाना॥ ताकीऊषानामकुमारी। सखीचित्रलेखातेहिंप्यारी॥
हरिलैगईसोइअनिरुद्धै। बाणासुरकीन्ह्योंअवरुद्धै॥ बाणासुरकेभवनमँझारी। परचोकैदअनिरुधधनुधारी॥
तुम्हैंदियोवृत्तांतसुनाई। जोमनआवैकरहुबनाई॥ शिवरक्षहिंशोणितपुरभूरी। योजनसहसद्वादशैदूरी॥
असकहिसुरपुरगेमुनिराई। रामकृष्णअनिरुधसुधिपाई॥ सबसुभटनसोंगिराउचारी। शोणितपुरकीकरोतयारी॥

दोहा—मुनिशासनप्रभुकोतुरत, साजिसाजिनिजसैन। आवतभेद्वारेतहाँ, लखिबलबोलेबैन॥२॥

कवित्त—चंचलचलाकेचारुताकेसाजुढाँकेअंग, परमप्रभाकेत्योंमजाकेरणबाँकेहैं।
सरिसहवाकेसोहैंविविधाकिताकेजात, आशुनाकनाकेबहुधावतनथाकेहैं॥
भापैरघुराजकाठियाकेहैंउडाकेअति, गटतपराकेदेतपगनझमाकेहैं।
ऐसेवाजीसंगजाकेवीरवीररसछाके, आवैसात्यकीसोजासुविजैधराधाकेहैं॥
राजैकसोकनककवचशिरकूँडत्योंहीं, युगकरवालकटिपीठिढाकीढालहै।
कंधनतुणीरतीरपूरेहैंगंभीरवेग, करमेंकोदंडउरमुक्तनकीमालहै॥
मंदमंदगौनैमंदमंदचहुँओरहेरै, मंदमंदफेरैउरमालमुखलालहै।
विक्रमकरालसेरशत्रुनगैसबकाल, बाँकुराविशालआवैसैनिजूकोलालहै॥
कनकाकिरीटशीशजटितजवाहिरात, व्रातचहुँओरचमकातद्युतिवारोहै।
हेमतनत्राणकटिसोहतकृपाणवाम, पाणिमेंकमानबाणदाहिनेमेंधारोहै॥
चंचलतुरंगसखाचारिपांचशतसंग, रणकेउमंगभरोस्यंदनसँवारोहै।
रुक्मिणिदुलारोतीनोंलोकनकोविजैवारो, आवतप्रद्युम्नप्राणप्यारोयाहमारोहै॥
झझकिझमंकैचंचलासेवैचमकैटाप, धरणिधमंकैयोतुरंगएकओरहैं।
मदकेअमंदभरेयुद्धकेअनंदऐसे, वृंदवेगयंदनकेगाढेएकठोरहै॥
ऐंडदारचोजदारसोहैशिरदारसबै, धारेतलवारढालअतिवरजोरहै।
सैनलेअथोरऐसीसमरकठोरआवै, सूरकेकिशोरकेरोसारनकिशोरहै॥
रथमेंदुजानुवैठोक्षणक्षणजातऐंठो, वीररससिंधुपैठोवीरवरख्याताहै।
कवचकृपाणिकूँडकरत्राणधारेअंग, बाणपुरगौनिगुनिमृदुमुसक्याताहै॥
वीरताईधीरताईयौवनलुनाईसुख, प्रकटजनाईसाजिसैन्यइतआताहै।
वीरशिरनामगदनामजाकोआमजग, बाँकुरोबहादुरगोविंदजूकोभ्राताहै॥
नैनअरुणारेटरलालनकीपाटधारे, कटिकोसँवारेकटियुगतरवारहै।
उदितशशीसोमुखमंजुमुसकानिसोहै, मैनकरडारेमानोअंगसुकुमारहै॥
परमछबीलोअलबेलोनवेलोवीर, परमघमंडभरोमोहिअतिप्यारहै।
सैन्यचतुरंगलैकैआननकोआननंग, आवतहैशूरसांबकृष्णकोकुमारहै॥

दोहा—दशनदिनअपिरहे, [illegible]नंदसुजान। सोऊपान्योगोपदल, बाणयुद्ध[illegible]जान॥

सवैया–श्वेतपोशाककियेसिगरेकटिमेंकसिनोईसुकामरिकाँधे । पानकैआसवह्वैकरिमत्तचढेशकटानिमेंबैलमनाँधे ॥
आनँदसोंवतरातहैबातअघातउछाहहियेमहँधाँधे । गोपसबैअतिचोपसोंआयेसोलोहकेबंधनवोंगनबाँधे ॥
दोहा–आईसबविधितेसजी, सकलयादवीसैन । बाणभौनकेगौनको, नहिंसमातउरचैन ॥
छंद–दुंदुभीशोरचहुँओरवरजोरसोंभयोअतिघोरतेहिंठोरभारी ।
मत्तगजचिक्करतवाजिगणहिक्करतदिक्करिनदिक्करतवेगचारी ॥
चक्ररथघरघरतवीरवरखर्वरतहरवरतगर्वरतशीघ्रकारी ।
शुद्धउद्धतदधतशत्रुवुद्धतक्रुद्धतयुद्धउद्धतवधतधीरधारी ॥
दोहा–हरिबलनिजबलसयुगलखि, चढ़िचढ़िनिजनिजयान । अनिरुधहिततुरतहिंकिये, शोणितपुरहिंपयान ॥३॥
चल्योकटकयदुवंशिनकेरो । रजउडायरविमंडलघेरो ॥ फहरिरहेतहँविविधनिशाना । बाजहिंमारूबाजमहाना ॥
बारहिंअक्षौहिणीदलभारी । सबयदुवंशीअतिधनुधारी ॥ अरतालिसहजारहैकोसू । अरिपुरजाबनपरतभरोसू ॥
असससबभटमनकरहिंविचारा।होतनकैसेहुकछुनिरधारा॥यदुपतिजानिभटनकीशंका।कियउपायतहँविगतअतंका ॥
प्रगटियोगमायातेहिकाला।पहुँचेशोणितपुरहिंउताला॥बाणनगरतहँलख्योविशाला । उठतिचहूँकितपावकज्वाला॥
दोहा–घेरिलियोशोणितपुरे, रामकृष्णचहुँओर । खडेभयेसँगमेंसुभट, रह्योनतिलभरठोर ॥
वारुणास्त्रतहँकृष्णचलायो । अनलप्रचंडहिंआशुबुझायो॥४॥शोणितपुरकेबागतडागे । लावनलूटनलोपनलागे ॥
कनककोटजोरह्योउतंगा । खनिखनिफोरिकियेतेहिभंगा ॥ पुनिगिराइदीन्हेंदरवाजा । रह्योजोपुरकेप्रथमदराजा ॥
शोणितपुरकेप्रजादुखारे । बाणद्वारमहँजाइपुकारे ॥ यदुवंशीतुवपुरचढिआये । प्रजनमारिपुनिद्वारगिराये ॥
प्रजनवचनसुनिबाणरिसाई । शासनदीन्ह्योंसचिवबोलाई ॥ लावहुसैन्यसाजिद्रुतमेरी । यदुवंशीलीन्ह्योंपुरघेरी ॥
दोहा–सुनिनिदेशअसुरेशको, सचिवसाजिसबसैन । बाणद्वारलायेतुरत, भरेयुद्धकेचैन ॥
बारहिंअक्षौहिणिदलसाजे।कढ्योबाणवजबावतबाजे ॥ कोपितह्वैअसदियोनिदेशा।बचिनजाइयदुकुलकोलेशा॥५॥
बाणहेतुशंकरभगवाना । यदुवंशिनपैकियेपयाना ॥ कोटिनगणधायेविकराला । पहिरेगलेमुंडकीमाला ॥
स्वामीकार्त्तिकचढेमयूरा । चलेसंगशिवशतअतिशूरा॥नंदीश्वरचढिकेत्रिपुरारी । धरेधनुपकरशरअतिभारी ॥६॥
तहाँजुरेहरिशंकरदोऊ । चाहतनाहिंपराजयकोऊ ॥
दोहा–कार्तिकेयसोंकरतभो, संगरकृष्णकुमार ॥ ७ ॥ कुपकर्णकुंभांडकिय, बलसोंगयुद्धअपार ॥
बाणपुत्रओसांबकुमारा । बाणासुरसात्यकीउदारा ॥ ८ ॥ यदुवंशिनअरुअसुरनकेरो । तुमुलयुद्धतहँभयोघनेरो ॥
ब्रह्मादिकतहँसबसुरेशा । मुनिचारणगंधर्वसिधेशा ॥ चढेविमाननसहितहुलासा । आयेनभमहँलखनतमासा ॥९॥
तहँशारंगनाथटंकोरा । भयोभयावनशोरकठोरा ॥ भूतप्रेतअरुगुह्यकनाना । यातुधानवेतालमहाना ॥
डाकिनिशाकिनिमहायोगिनी।कूष्मांडाअरुमातृभोगिनी१०औरब्रह्मराक्षमहुपिशाचा।इनमँगगणपनितजतनराचा॥
दोहा–एकबारसबांसिमिटिके, करिकेकोपअपार । धायेयदुपतिपरतुरत, नादकरतविकरार ॥
छंदतोमर–तहँहरितजीशरधार । जिनपरमतीक्षनधार ॥ ह्वगयेनहँलेंखिपार । भूतननहायपगार ॥
इकएकपिशाचनपाँहि । शरसरसलागनजाँहि ॥ भूअभहिभूनभुलान । गिरिटारिहिकोपिमहान ॥
कोउकरहिआरतशोर । नहिचलतनेकहुँजोर ॥ केजाहिंजहिहुअकाम । शरनहहुँपहुँचहिपाम ॥
सबभागिपुनिमहिजाइ । इकओटरहहिलुकाइ ॥ नहजाहिंदोकछूटि । गहिजाहिंमर्गहिभीटि ॥
फोरहिकेगिपकटिमुंड । फोटरंटभेरहुरुंड ॥ झटकतभुजकटिजाँहि । नभकेनुमांगिमलजाँहि ॥
जिनकरहिबहुतान । तिनकेलगेशरतान ॥ जिनकेरहेहग्नार । तिनपतनननार ॥
जिनकेरहेबहुदाहु । तिनकटताहिनतनाहु ॥ पदरहेजिनहिदजार । तिनभेंतरंडकजार ॥
जिनकझरीरविशाट । तिनपकाटिमनताट ॥ जिनकेरहेबहुकेश । तिनहनारिंमिटेस ॥

जबलौंकाढैशिवसुतबाना। तबलौंकियोमयूरपयाना ॥ जाइमयूरदुरयोकैलासा। रोकेरुक्योनगुनिअतित्रासा ॥

दोहा-रुक्मिणिनंदनकीविजय, लखियदुवंशीवीर। बहुसराहिजयजयकिये, हर्पितह्वैरणधीर ॥ १५ ॥

कूपकरनकुंभांडदोउ, बाणसचिवबलवान। दलविचलतलखितुरतहीं, रणकहँकियेपयान ॥

छंद-महाप्रचंडचंडमुंडसेअखंडओजके। घमंडकेउमंडमेंभरेउदंडमोजके ॥
करालकालरूपलालनैनबालवेशहैं। विशालदंतमुंडमालतालशेशलेशहैं ॥
करैंकठोरशोरदौरिदौरिचारिओरहैं। अथोरवीरभोरहोतजोरहूँअजोरहैं ॥
लियेत्रिशूलवज्रतूलहूलमारिधावहीं। अतूलशत्रुप्रत्तिकूलफूलसेउडावहीं ॥
भगीयदूनसैन्यह्वैअचैननैनमूँदिकै। उकैनवैसनैनवैनजाहिंशैलकूदिकै ॥
विलोकिवाहिनीसशोकजातिओरधामहै। विशोकसोंविशोकह्वैकह्योसुवैनरामहै ॥
चलोचलाइचंचलैरथैदइत्यहैजहाँ। करैसँहारसैन्यकोमनोसुकालहैमहा ॥
विशोकसूतलैचल्योतुरंतहांतुरंगनै। लख्योकुँभांडकूपकर्णरामकोरणंगनै ॥
कठोरशोरकैअथोरशूलधारिधायकै। हनेप्रयासआशुकैसुरामकोनेरायकै ॥
लगोविशोककेसुएकवाजिवेधिएकगे। विसंज्ञह्वैगिरयोसोसूतवाजिभूमिटेकगे ॥
तहाँसकोपमूसलीसुमूसलैहलैलियो। तुरंतकूदियानतेमहानशोरकोकियो ॥
कुँभांडकोफँसाइकैहलैतेखैंचिलेतभो। सजोरतासुशीशमध्यमूसलैसुदेतभो ॥
भयोछटूकशीशअंगचूरचूरह्वैगये। कुँभांडकेशरीरकेरहाडभूमिमेंछये ॥
प्रकोपिकूपकर्णशूलरामकेद्रुतैहन्यो। बचैगोकैसहूँनदैत्यऐसहींमुखैभन्यो ॥
लियोछँडाइशूलकोलगाइहाथहाथमें। हन्योसुराममूसलैप्रकोपितासुमाथमें ॥
लगेपपाणज्योंघटैपटाकमाथफूटिगो। धराधडाकदैगिरयोदइत्यलंकटूटिगो ॥

दोहा-कूपकर्णकुंभांडको, कीन्ह्योंवधवलराम। बाणासुरकीसैन्यमें, भरयोभांतिकोधाम ॥ १६ ॥

[illegible]णपुत्रअरुशाम्बकुमारा। कियेयुद्धअतिघोरअपारा ॥ रथमंडलदोऊभटकरहीं। बारबारसायकतनुभरहीं ॥
[illegible]ऊदुहुँनताकिशरमारैं। दोऊदुहुँनसुबाणनिवारैं ॥ दोहुँनदोहुँनमूर्च्छितकरहीं। उठिउठिपुनिदोऊभटलरहीं ॥
[illegible]ऊध्वजादुहुँनकीकाटी। दोऊदोहुँनकेरथछाँटी ॥ दोऊदोहुँनहनेतुरंगन। दोऊदुहुँनधनुपकियभंजन ॥
[illegible]उलैचर्मकृपाणप्रवीरा। दौरिभिड़ेरणमहँरणधीरा ॥ तहाँशाम्बकरिअतिचपलाई। बाणपुत्रशिरत्तेगचलाई ॥

दोहा-कट्योशीशताकोतुरत, गिरयोभूमिमहँवीर। निरखिबाणसुतनाशतहँ, भभरिभगानीभीर ॥

[illegible]णासुरमारयोबहुबाना। लियोछाइसात्यकिकोयाना ॥ सात्यकिहूँतहँसायकझुंडा। काटिअनेकदानवनिमुंडा ॥
[illegible]निमारयोबाणहिंबहुबाना। सिंहनादपुनिकियोमहाना ॥ शिवसुतसहितपराजयदेपी। बाणकियोटरशोकनिशेपी ॥
[illegible]जिसात्यकिकहँहरिपरधायो। कालसमीपमनहुँजनिआयो ॥ भुजशतपंचचापशतपाँचा। धारितज्योतहँसहसनराचा ॥
[illegible]हँसुकुंदइकबारहिंकाट्यो। धनुपपंचशतइकसँगछाँट्यो ॥ हरीहन्योशरफेरिहजारा। रथसारथितुरंगदलिडारा ॥

दोहा-पांचजन्यपुनिशंखलै, माधवमुदितबजाइ। एकबाणपुनिकरलियो, हननबाणहरपाइ ॥ १९ ॥

[illegible]णवधतहरिकहँतहँजानी। मातातासुकोटरारानी ॥ खोलिकेशकरिनग्नशरीरा। मानिपुत्रवधकीअतिपीरा ॥
ठाढीभइकृष्णकेआगे। जाकोनिरखिवीरसबभागे ॥ २० ॥ कृष्णहुमुखनीचेकरिलीन्ह्यो। भागुभागुतहँदहकिदीन्ह्यो ॥
यहअवकाशबाणतहँपाइ। स्यंदनलैनगयोपुरधाइ ॥ २१ ॥ भागिगयोजबभूपसमाजा। तहँधायोज्वरकोपितराजा ॥
तीनिशिशिचरणहुहैंतीना। लंबशरीरमांसतेहीना ॥ खड़रोमतनुकेशिरकेशा। महाभयावनदैनेत्रभेशा ॥

दोहा-धायोसन्मुखकृष्णके, लावतदशहुँदिशान। लीन्हेंपटहुँनकरभसम, मानहुँकालमहान ॥ २२ ॥

जगदातातुमएकही, अहैनकोईआन। हमसंसारउधारहित, तुमहिंभजैंभगवान॥ ४४॥
यहबाणासुरदासहमारा। असुरनाथबलिकेरकुमारा॥ धरिनरसिंहसरूपमुरारी। करीकृपाप्रहलादहिंभारी॥
तैसहिंअबहूँकृपानिधाना। करहुकृपायहिपरभगवाना॥ अजरअमरयाकेभुजचारी। ह्वोंहिंनाथलहिकृपातिहारी॥
याकोअभयदानमैंदीन्ह्यों। अपनोदासमानिमैंलीन्ह्यों॥ याकोवधनहिंकरहुमुरारी। राखहुअबतोबातहमारी॥
असकहिबहुविधिअस्तुतिगाई। शिवअपनीदीनतादेखाई४५तबबोलेहँसिकृपानिधाना। सुनहुवचनमेरेईशाना॥
दोहा–जैसेतुमकोप्यारयह, तैसेअहैहमार अभयदानहोहूँदियो, दूसरनाहिंविचार॥ ४६॥
यहअवध्यसबतेअबहोई।याकोजीतिसकिहिनहिंकोई॥प्रहलादहिमैंदियवरऐसो।तुवकुलवधकरिहौंनहिंकैसो॥ ४७॥
याकेगर्वनशावनहेतू। सहसभुजाकाट्योबलसेतू॥ कटकहुयाहीहेतुसंहारा। रह्योजौनअतिभूकरभारा॥ ४८॥
चारिभुजारहैयहिकेरे। ह्वैहैअजरहुँअमरघनेरे॥ आपपारपदयहुसुखिहोई। याकोभीतिकरिहिनहिंकोई॥ ४९॥
जबहरिअभयदानअसदीन्ह्यों।बाणासुरप्रणामतबकीन्ह्यों॥अनिरुधऊपारथहिंचढाई।लायोहरिढिगआशुलेवाई ५०॥
दोहा–चंदनकरिकैलासगो, बाणासुरबलवान। अनिरुद्धहिंइतपाइकै, यदुवंशीहरषान॥
दंपतिकोतहँकरिशृंगारा। दैशोणितपुरमध्यनगारा॥ माँगिविदाशंकरतेनाथा। दुलहिनिदूलहलैनिजसाथा॥
लैसिगरीसेनासुखछाई। चलेद्वारकैतबयदुराई५१यदुनगरीनिकटहिंजबआये। उग्रसेनतबखबरिहिंपाये॥
द्वारबहुध्वजाबँधाये। तोरनतेसंयुतकरवाये॥ द्वारावतीसकलविधिसाजी। कनककलशकीसोहहिंराजी॥
गलिनबजारगुलाबसिंचाये। थलथलकदलीखंभगडाये॥ साजिनगरयहिविधिनरराई।विविधभाँतिबाजनबजवाई॥
दोहा–उग्रसेनगवँनतभये, लेनकृष्णभगवान। संगस्वस्तयनपढहिंद्विज, पुरवासीसुखमान॥
लैअगवानीकृष्णकी, लायेमहलमँझार। ऊषाअरुअनिरुद्धको, राख्योरत्नअगार॥ ५२॥
कृष्णविजयशंकरसमर, जोसुमिरैंपरभात। तासुपराजयहोतनहिं, पावतमोदअघात॥ ५३॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा
बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ
दशमस्कंधे उत्तरार्धे त्रिषष्टितमस्तरंगः॥ ६३॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–एकसमययदुनाथके, प्रद्युम्नादिकुमार। काननमेंसबसमिटिकै,खेलनगयेशिकार॥ १॥
बहुतकाललगिखेलिशिकारा।भयेतृपिततहँसकलकुमारा॥गदप्रद्युम्नसांबधनुधारी।चारुदेष्णतिमिविपिनिविहारी॥
खोजनलगेजलाशयधाई। तहाँकूपइकपर्‍योदेखाई॥ पानकरनजलतहाँसिधारे। पैनकूपमेंनीरनिहारे॥ २॥
लखेकूपमेंइककृकलासा। शैलसरिसतनुपरमप्रकासा॥ निरखितहिविस्मितमनमाँहीं।करिकेकृपाकुमारतहाँहीं॥
ताहिनिकारनकरीउपाई॥ ३॥ चामसूतरसरानिमँगाई॥ बाँधितासुकंमरमेंडोरी। ऐंचनलगेसकलबरजोरी॥
दोहा–पैनसकेतेहिऐंचिकोउ, तबसबरहेलजाय। पुनियदुपतिसोंकहतभे, सबहवालपुरजाय॥ ४॥
तहाँतुरतयदुनाथहुआये। सबयदुवंशिनसंगलेवाये॥कृकलासहिलखिवामहिहाथा।बिनप्रयासऐंच्योयदुनाथा॥ ५॥
भगवतकरपरसततेहिकाला।छूट्योसरटरूपविकराला॥ ततकनकसमचारुशरीरा।जगमगभूषणअनुपमचीरा॥६॥
तबपूछ्योतेहिरमानिकेतू। यदुकुलजननजनावनहेतू॥ होतुमकौनकहोबडभागे। देवसरिसमेरेमनलागे॥ ७॥
कौनकर्मसोंयहतनुपायो। कारणकौनकूपमहँआयो॥कहोजोहोयकहनकेलायक। अपनीदशामहादुखदायक॥८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–कह्योकृष्णयहिभाँतिजब, तबहरिपदशिरनाय। जोरिपाणिबोल्योपुरुष, अतिआनँदउरछाय॥ ९॥

नृगउवाच।

हमहैंनृपइक्ष्वाकुकुमारा। अहैनाथनृगनामहमारा॥ दानीभूपनकथाश्रवणमें। परचोहोयजोनामश्रवणमें॥ १०॥
छिप्योआपतेहैकछुनाँहीं। अंतर्यामीहोसबमाँहीं॥ पैतुम्हारशासनप्रभुपाई। देहुँसकलगाथानिजगाई॥ ११॥
जेतनेहैंअकाशमेंतारा। जेतनेबूँदवर्षकीधारा॥ जेतनेहैंरजकणमहिमाँहीं। तेतनीगोदियविप्रनकाँहीं॥ १२॥
तरुणीशीलवतीपैवारी। वत्सनयुतकपिलामनहारी॥ रूपवतीगुणवतीसुहावनि। देखतहींमनुसुखउपजावनि॥

दोहा—कनकशृंगखुररजतके, तामकपीठिमढ़ाय। न्यायसहितलीन्ह्योंजिन्हैं, वसनमालपहिराय॥ १३॥

ऐसीगऊदईद्विजकाँहीं। धर्मवानजेरहेसदाँहीं॥ शीलवानगुणवानकुटुंबी। तपव्रतवेदसत्यअवलंबी॥
शुभाउदारआपकेदासा। तिनाहिंअलंकृतकरिसहुलासा॥१४॥औरहुभूहिरण्यगजवाजी।दासिनयुतकन्यनकीराजी॥
भूषणवसनरत्नतिलरूपा। साजभरायअवासअनूपा॥ शय्यारथआदिकवहुदाना।दियोद्विजनकारिअतिसनमाना॥
कूपतडागवागवनवायो। निर्जलमगपौसराकरायो॥ १५॥ एकसमयकोऊद्विजकेरी। गऊहेरानिमिलीनहिंहेरी॥

दोहा—मेरीगौवनमहँमिली, गोपनचीन्ह्योंगाइ। धोखेमेंसोलाइकै, दीन्ह्योंदानकराय॥ १६॥

जवमैंगऊद्विजैदैडारी। जासुगायसोआयनिहारी॥ कह्योविप्रसोयहहैमेरी। पूँछिलेहुयहहैनहिंतेरी॥
तववहकह्योभूपमोहिंदीन्ही।विप्ररारिअसकहिदोउकीन्ही १७ लरतलरतमेरेढिगआये।निजनिजदोउवृत्तांतसुनाये॥
सुनिकैमोहिंभयोभ्रमभारी। तासोंमैंअसगिराउचारी॥ १८॥ विप्रगऊसतिअहैतुम्हारी। मैंधोखेमेंयहदैडारी॥
लक्षगऊहमसोंद्विजलीजे। अवयासोंझगरोनाहिंकीजे॥ १९॥ तववोल्योवहद्विजमुहिंपाँहीं।लेहौंसोईलाखमेंनाँहीं॥

दोहा—तवमैंपुनिजाकोदियो, तासोंकह्योवुझाय। आपहिलीजेलाखगौ, दीजेअवयहजाय॥ २०॥

सोऊद्विजमोसनअसभाषो। लेहौंसोइनलेहौंलाषो॥ तवमैंकह्योफेरिकरजोरी। सुनहुविप्रदोउविनतीमोरी॥
नरकपरतमोहिंकरहुउधारा। तुम्हरेकरहैवनवहमारा॥पैदोऊद्विजमान्योनाँहीं। दोऊछोडिगेनिजगृहमाँहीं॥२१॥
कछुककालमहँपुनियदुवीरा। छूटिगयोतहँमोरशरीरा॥ लैगेयमकेदूतयमालै। पूछ्योमोहिंयमराजउताले॥२२॥
प्रथमपापकीपुण्यभोगिहो। भूपतिअवतुमदुहूँयोग्यहो॥ अहैनआपदानकरअंता। पैपापहुकछुभयोतुरंता॥२३॥

दोहा—तवमैंयमसोंअसकह्यो, प्रथमभोगिहोंपाप। तवयमभाष्योगिरहुमहि, होहुसरटयुतपाप॥

तवमैंहैकृकलासमदाना। गिरचोअंधकूपहिंयुतज्ञाना॥२४॥ आपप्रसादसचारिनहिंभूली।मेरीभाग्यजायनहिंठूली॥
रह्योकूपमहँसोभटभयऊ। आपदरशमोकहँप्रभुदयऊ॥२५॥ दिव्यदृष्टियोगीश्वरजाहीं। देखैंअपनेहृदयमाहीं॥
पावतजासुदर्शगतिहोती। मीचुभीतिनहिंहोतिउदोती॥ सोमेरेदृगगोचरकेसे। होतभयेत्रिभुवनपतिऐसे॥ २६॥
देवदेवजगदीशगोविंदा। नारायणअच्युतहुअनंदा॥ हृषीकेशपुरुषोत्तमस्वामी। जगनिवासजगअंतर्यामी॥२७॥

दोहा—मोहिंविदाअवकीजिये, देहुदेवगतिनाथ। रहौंकौनहूँयोनिमें, रहौंआपजनसाथ॥ २८॥

असकहिकैनृपदक्षिणानाथै। वारवारप्रभुपदधरिमाथै॥सबकेदेखतचढ्योविमाना।माँगिविदानृपकियोपयाना॥२९॥
[illegible]देवपरमात्मा। देवकिनंदकृष्णपरमात्मा॥ यदुवंशिनकोटेगोसिखावन। बोलेवचनमंजुसुखछावन॥
[illegible]मतिपमानें। [illegible]॥ [illegible]॥ ३०॥

दोहा—[illegible]

[illegible]। [illegible]। [illegible]

[illegible]॥ ३१॥

दोहा-वर्षसोसाठिहजारभरि, विष्टाकोकृमिहोय। पुनिनिर्जलकेदेशमें, होतसर्पहठिसोय ॥ ३९ ॥
द्विजधनलेनकरैजोचाहा। तासुराजछूटेनरनाहा ॥ हरिब्रह्मस्वधरैजोगेहू। होतपराजयमनहिंसंदेहू ॥
द्विजधनहोयनकवहुँहमारे ॥४०॥ सुनहुसवैयदुवंशकुमारे ॥ करैजोविप्रकाजुअपराधा। क्षत्रीतासुकरैनहिंवाधा ॥
जोमारैगरीवहूँदेवे। क्षत्रीतासुचरणहींसेवे ॥ ४१ ॥ द्विजकहँजसमैंकरौंप्रणामा। तैसेतुमहुकरहुसवयामा ॥
जोममशासननहिंचितलैहै। ममकरअवशिदंडसोपैहै ॥ ४२ ॥ विनजानेहुजोद्विजधनलेतो। नर्कपरैपरिवारसमेतो ॥
दोहा-विनजानेजिमिलेतभो, नृगनरेशद्विजगाय। लक्षवर्षसोसरटह्वै, रहेकूपमहँआय ॥ ४३ ॥
यदुवंशिनकोकृष्णअस, शासनसुखदसुनाय। जगपावननिजमंदिरहिं, गवनकियेहरपाय ॥ ४४ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे चतुःषष्टितमस्तरंगः ॥ ६४ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-सखनलखनकोललकिमन, एकसमयबलराम। यदुपुरतेचढियानद्रुत, गयेनंदकेधाम ॥ १ ॥
जबआयेगोकुलवलराई। नंदयशोमतियहसुधिपाई ॥ सवविधिमंगलसाजसजाई। लेनगयेवलकोअगुआई ॥
नंदयशोदहिंलखिवलरामा। दौरिदुहुनकोकियेप्रणामा ॥ मातुपितावहुदिनमहँनिरखे। नैननतेआनँदजलवरपे ॥
नंदयशोदहुआशिषदीने। रह्योनतनुसम्हारसुखभीने ॥ २ ॥ तेनिजऐनहिंगयेलेवाई। रामहिंलियोअंकवैठाई ॥
पुनिआशिषदियपितअरुमाई।जियोवहुतदिनरामकन्हाई॥३॥गोपीग्वालसवैजुरिआये।रामहिंनिरखिपरमसुखपाये।
दोहा-यथायोग्यसवकोमिले, वृद्धनसखनशिशून। तैसहिंगोपिनकोमिले, उपज्योआनँददून ॥ ४ ॥
नंदगोदतेउठिवलराई। गेइकांतमहँसखनलेवाई ॥ तहँगहिहाथहाथगोपालन। खेलनलागेहाँसीख्यालन ॥
घेरिचहूँदिशिअतिअनुरागे। कुशलक्षेमपूँछनतहँलागे ॥५॥ गद्गदगरोकहैंमृदुवानी।कृष्णप्रेमतनुसुरतिभुलानी ॥
हैवांधवसवकुशलहमारे। यदुवंशीहमकहँअतिप्यारे ॥ अवतोभयेपुत्रअरुनारी। करहुकवहुँसुधिनाथहमारी ॥
संगसखनलैकरिवरजोरी। करतरहेमाखनकीचोरी॥तासुसुरतितुमकोअवभूली। अवतोभूपतिभयेअतूली ॥६॥७॥
दोहा-हन्योकंससोभलभयो, यदुकुलकियोउधार। रिपुनजीतिहनिअवकरहु, द्वारावतीविहार ॥ ८ ॥
तहाँसकलगोपीजुरिआई। रामहिंनिरखिपरमसुखपाई ॥ हँसिहँसितहँपुनिपूँछनलागी।रामकृष्णअनुरागहिंपागी ॥
कहोरामहैकुशलकन्हाई। गयेद्वारकानेहछोडाई ॥ पुरनारिनसोंकीन्हीप्रीती। छोडदियोनिजकुलकीरीती ॥ ९ ॥
कवहूँनंदयशोमतिकेरी। करहिंसुरतिमाधवमनहेरी ॥ सखनसुरतिकहुँकरहिंकन्हाई। जिनकेसंगवनगायचराई ॥
कवहुँयशोमतिदेखनऐहै। व्रजनारिनउरतापवुझैहै ॥ सुरतिकरहिंकवहूँयदुराई। गोपिनकीअतिशयसेवकाई॥१०॥
दोहा-जाहिलियेजननीजनक, भ्रातश्वशुरअरुसासु। सुजनपरमदुस्त्यजतजे, हमसचायिनहिंप्रयासु॥११॥
ऐसेहिमहिंछोडिनिरमोही। भयोजायपुरनारिनछोही ॥ ऐसेकपटीचंचलकेरो। किमिमानहिंविश्वासघनेरो ॥१२॥
कान्हकृतघ्नहैजगजाहिर। उरसेऔरऔरहीवाहिर ॥ ऐसेमोहनतेकेहिरीती। करीचतुरपुरनारिनप्रीती ॥
पैभाषतहैहैमृदुवानी। तातेसवधरहैलोभानी ॥ तासुमंदमुसक्यानिसुहावनि। देखतहीसवसुरतिभुलावनि ॥
पुरनारीताहीकोज्वैके। मोहिगईमनसिजवशह्वैके ॥ १३ ॥ कहाकृष्णकीकथाचलाई। कहियेऔरकथामनभाई॥
दोहा-कालकटतजेसेउन्हैं, तिमिहमारउजात। अहैवगैवरदुहुनपै, दुरसुरसभेदनजात ॥ १४ ॥
असकहिकृष्णतकनिअरुवोलनि।विहँसनिकुंजकुंजकीडोलनि।प्रेमसहितमिलवोद्रुतधाई।कहुँप्रगटवकहुँदुरवलुकाई।
येसवसुधिकरिकैव्रजनारी। रोदनकरनलगींसुकुमारी॥१५॥तिनकोरोदनकरतनिहारी। कहिकैरामसँदेशमुरारी ॥
वहुविधिगोपिनकहँसमुझायो।कृष्णवियोगहिंशोकमिटायो॥१६॥तहाँराममधुमाधवमासा।व्रजमेंकरतभयेसुखवासा॥

जानिमनोरथगोपिनकेरो । तैसहिंपूरणचंदहिंहेरो ॥१७॥ रामकर्णमनंकियबलरामा । देखिसुखदरजनीअभिराम॥

दोहा—सखिनसंगलैरामतहँ, साजेसकलसिंगार । कालिंदीकेपुलिनमें, विरचतभयेविहार ॥

शीतलमंदसुगंधसमीरा । वहतभयोयमुनाकेतीरा ॥ तहँसबनकुंजनमेंरामा । रासविलासकियेयुतबामा ॥ १८॥ वरुणवारुणीसुरापठाई । वृक्षनवृक्षनधारबहाई ॥ तासुसुगंधसकलवनछाई ॥ १९ ॥ लहिसोरामयुवतियुतजाई ॥ गोपिनसहितकियोबलपाना॥२०।करनलगेपुनिहिलिमिलिगाना॥रामचरित्रगोपिकागावें।मंडलमध्यरामअतिभावें॥ मंदमंदनाचहिंरतिराँचे।नृत्यभेदएकौनहिंवाँचे।झुमतझुकतझुझुकितकहुँझाँकत।उझकिउझकिझपिझपिदगताकत

दोहा—टूटिमालआधीगले, कुंडलहैइककान । वैजंतीवनमालहू, टूटतकुसुमझरान ॥

घूमहिंमत्तनैनअरुणारे । रुकतरुकतमुखवचनउचारे ॥ कहुँकहुँराममंदमुसक्याई । लेहिंसखिनमुखमुखहिंलगाई। नीलवसनसुंदरतनुराजे । रासकरहिंलैसखिनसमाजे ॥ रमावदनश्रमबिंदुसुहाये । मनुमधुबिंदुजलजमहँछाये। युवतिनयूथजोरितहँवैठे । मानहुँसुखसागरमहँपैठे॥२२॥करनचह्योबलवारिविहारा । यमुनातकिअसवचनउचारा। यमुनामेरेढिगद्रुतआवै । मोकोशीतलजलनहवावै ॥ यमुनाकियोवचननहिंकाना ॥ मनहुँरामकहुँमदवशजाना ॥

दोहा—कालिंदीआईनहीं, तबकोपितबलराय । सबसखियनकोदेखतै, हलकोदियोचढ़ाय ॥

यमुनाधारमध्यहलघोरा । देतभयोवसुदेवकिशोरा ॥ दक्षिणकरसोंकरितहँजोरा । खैंचिलियोयमुनहिंनिजओरा। ह्वैगवंककोशयुगधारा । सुरमुनिसकलअचर्जविचारा ॥ जहँरामतहँआयोनीरा । रामभूमिह्वैगैअतितीरा ॥ २३। पुनिबोलेबलदेवरिसाई । मत्ततोहिमेंपरयोजनाई ॥ आईतूँनहिंनिकटबोलाये । ताकोफलअबदेहुँदेखाये ॥ हलसोंधारऐंचियहतेरी । करिदेहौंशतटूकनदेरी ॥२४॥ जबयदुपतियमुनहिंडेरवायो । तबकालिंदीउरभयआयो।

दोहा—चकितह्वैधरिमनुजतनु, परीरामपगआय । परमदीनताकेवचन, बलकहँदियोसुनाय ॥ २५ ॥

रामरामहेमहाबाहुबल । जानेहुँनहिंतुम्हारविक्रमभल ॥ जासुएकफणकेइकदेशा।धरीरहतियहधरणिहमेशा॥२६॥ परमप्रभावनतुम्हरोजान्यों।मत्तसरिसतुमकोपहिचान्यों॥सोअपराधक्षमहुँप्रभुमोरा।छोडिदेहुरोहिणीकिशोरा॥२७॥ तबछोड्युयमुनहिंबलवीरा । बहनलग्योतहँतेशुभनीरा ॥ पुनिलैसखिनसगंबलराई । जलविहारकीन्ह्योसुखछाई। जिमिसुरसरिमहँमत्तमतंगा।विहरतलैकरेणुगणसंगा२८यहिविधिकरिजलविविधविहारा।जलतेनिकरिवसनतनुधारा।

दोहा—भूषणअरुसुंदरवसन, अरुमालाछविधाम । देतभयेसबगोपिकन, परमप्रीतियुतराम ॥ २९ ॥

आपहुनीलवसनतनुधारे । कनकमालगलमाहँसँवारे ॥ लेप्योअंगनमेंअँगरागा । लसेराममनुवासवनागा ॥ ३०। यमुनाअबलोंटेढदेखाती।सूचनकरतरामबलजाती ३१ यहिविधिरामब्रजहिंसुखछावन।रजनीमहँछजनीमनभावन। सहसनसखिनसहितबलरामा । रासकियोकुंजनअभिरामा ॥ रामवदनअभिरामनिहारी।हँसनिमाधुरीबोलनिप्यारी। मोहिगईछिगरीतहँगोपी । औरनिहारनभईनचोपी ॥ होतप्रभातजानिबलराई । आयेनंदभवनसुखछाई ॥

दोहा—यहिविधिबीतेमासद्वै, रामहिंकरतविलास । पैगोपिनजान्योपरयो, एकनिशाकोवास ॥ ३२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे पंचषष्टितमस्तरंगः ॥ ६५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दोहा-इककरमेंकीन्हेंकमल, इककरगदाप्रचंड। इककररचितसुदर्शनै, तिमिशारँगकोदंड॥
निजदासनकहँअसकहिरापो। वासुदेवमोकहँनितभापो॥१॥तिसबघेरिताहिचहुँओरा।जयहरिजयहरिछावहिंशोरा॥
कनकसिंहासनमध्यसमाजा। तापरबैठ्योपौंड्रकराजा॥ अंकहिंलियेआपनीदारे। बारबारतेहिंवदननिहारे॥
चामरचारुचलैंचहुँओरा। छज्योछत्रमनुअत्रिकिशोरा॥ खड़ेसभासदहैंकरजोरे। बारबारपौंड्रकहिंनिहोरे॥
तुमहोजगकेअंतरयामी। करुणासिंधुनाथखगगामी॥ वासुदेवतुमहींसतिअहहू। जगमंगलहितनितइतरहहू॥
दोहा-हमपरकीजैअसकृपा, जगकलेशमिटिजाय। कोदयालहैआपसम, गिरेशरणहमआय॥
तबबोल्योपौंड्रकमुसुकाई। सबपैमेरीकृपामहाई॥ पैतुवप्रीतिप्रतीतिविलोकी। करिहौंतुमकहँआशुअशोकी॥
जोकोउआवतशरणहमारे। ताकेपुनिनहिंरहतखँभारे॥वासुदेवमोहिंरच्योविधाता।मोसमाननहिंकोउविख्याता॥
हरिमैंयहधरणीकरभारा। पुनिजैहौंआपनेआगारा॥ सबजीवनकेहितमैंआऊँ। करिकारजनिजलोकसिधाऊँ॥
पौंड्रकवचनसुनतसरदारा। पाणिजोरियहिभाँतिउचारा॥ धनिधनिहौलक्ष्मीनारायण।दीननपैअतिकृपापरायण॥
दोहा-पैइकशंकाहोतिप्रभु, दुखदेतीजियकाँहिं। नामरावरोधारिको, वसतद्वारकामाँहिं॥
बोल्योपौंड्रकसुनिभटबानी। जोतुमकह्योलियोहमजानी॥ अहैप्रथमकीजातिअहीरा। व्रजमेंवसतरह्योभयभीरा॥
बनवनगायचरावतरहेऊ। अबकछुदिनतेकछुधनलहेऊ॥ तबतेगर्वनजातसँभारो। मेरोरूपगोपवहधारो॥
हूगरुडचढ़िवागतरहतो। शंखचक्रमेरेसमगहतो॥ ताते असमतिहोतिहमारी। मारिचकतेहिंदेउँविदारी॥
तबबोलेतेहिंभटधनुधारी। सुनहुनाथकछुविनयहमारी॥ क्षमहुगोपकरयहअपराधा। झूँठसाँचगुनिकीजियबाधा॥
दोहा-बूझहुताकेकर्मसब, प्रथमहिंदूतपठाय। जोकीन्हेंअपराधसति, तोहठिमारोजाय॥
आपवैरकरिहैजोकोई। ताकोनाशआपतेहोई॥ २॥ सुनिपौंड्रकसुभटनकीबानी। लियोबोलिदूतहिंअभिमानी॥
कह्योदूतसोंअससमुझाई। वेगिहिंजाउद्वारकहिंधाई॥ कह्योगोपसोंअसममबानी। मेरोरूपधरोअभिमानी॥
नकलकियेअबनहिंकलपैहै। कुलयुतसकलविकलह्वैहै॥यहिविधिऔरहुकह्योबुझाई।दियोदूतकहँद्रुतैपठाई॥३॥
गयोदूतद्वारकामँझारी। जाययादवीसभानिहारी॥ सिंहासनमणिजटितविशाला। तापरबैठेकृष्णकृपाला॥
दोहा-दूजेदिव्यसिंहासनै, उग्रसेनमहराज। सात्यकिप्रद्युम्नादिसब, बैठेसहितसमाज॥
द्वारपालहरिढिगलैआयो। कह्योपौंड्रकोयाहिपठायो। हरिकहदूतवचनउचरहू। कोमलकठिनकहतनहिंडरहू॥
सुनतदूतजोरियुगहाथा। बोल्योवचननायपदमाथा॥ मोकहँपौंड्रकराजपठायो। राजसँदेशकहनकछुआयो॥४॥
वासुदेवमोहिंरच्योविधाता। मोसमदूजोनाहिंदेखाता॥ मैंसबभूतनकोहितकारी। सबअवतारनकोअवतारी॥
मैंहींहौंसबजगकोकरता। मैंहींपालकअरुसंहरता॥ पैअसकाननपरचोसुनाई। तूहुँचहहुममसरिसबडाई॥५॥
दोहा-मेरेसमरचिचारिभुज, ममसमगरुडबनाइ। तुमहूँवागतजगतमहँ, वासुदेवकहवाइ॥
जोयहझूँठहोयसबभाँती। तोबैठोकरिशीतलछाती॥ जोकदाचिसतिकैवहगोपू। करेरूपममधारणचोपू॥
बिगरिजाइतोसबविधिताको। रहीनरूपरेखकछुवाको॥ ईशविमुखकोउसुखनहिंपावै। ईशदासह्वैसबसुखछावै॥
शासनसुनततजेममरूपा। मरणहेतुकृदतकतकूपा॥ अहैसदाकीरीतिहमारी। क्षमाकरहिंइकवारविचारी॥
तातेचक्रादिकहथियारा। धोखेमाहँगोपजोधारा॥ सोसबकरमेंलैइतआई। मोहिंसोंपिगिरिहैशिरनाई॥
दोहा-तोमैंकरिकैअतिकृपा, देहौंताहिबचाय। नातोगोपहिंसकुलमैं, देहौंसपुरजराय॥६॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-सुनिपौंड्रककेवचनभट, करअरुनैनचढाइ। सभामध्ययदुवरसबै, विहँसेविपुलठठाय॥
उग्रसेनभूपतिकहबानी। याहिआजुलौंहमनहिंजानी॥ कहाँवसतहैकोननरेशा। याकेहनबुद्धिलवलेशा॥७॥
यदुवंशीपुनिअतिशयमापे। तिनहिंहिनिवारतयदुपतिभापे॥ सुनहुदूततुमअसकहिदेहू। हमहैंगोपनकछुसंदेहू॥
हमजेधारेअस्त्रतिहारे। तेनहिंएकेअहैंहमारे॥ आयआपकेनिकटविशेषी। देहछोडिअस्त्रसपलेषी॥८॥

जोकछुबनीकरतसेवकाई । सोहमदेहैंतुमहिंदेखाई ॥ ऐसहिंदूतजायकहिंदीजे । अबकाहेविलंबइतकीजे ॥ ९॥

दोहा—नायमाथयदुनाथको, गयोदूतनिजदेश । पौंड्रकसोंश्रीकृष्णको, वरण्योसकलसँदेश ॥

सुनिपौंड्रकबोल्योमुसक्याई । शासनमान्योमोरिडेराई ॥ इतेद्वारकामहँगिरिधारी । काशीगमनहिंकरीतयारी॥
दारुककोबोलायतेहिंकाला । कह्योलैआवहुयानविशाला ॥ दारुकसाजितुरतहींस्यंदन । लायोजहँबैठेयदुनंदन॥
हरिहुकीटकवचहुँतनुधारे । लियेअनूपमनिजहथियारे ॥ चढनलगेजबरथमहँनाथा । तुरतहिंतबहिंजोरियुगहाथा॥
सात्यकिअरुप्रद्युम्नप्रवीरा । औरहुसबयदुवररणधीरा ॥ कहतभयेभरियुद्धउमंगा । हमहूँचलबरावरसंगा॥

दोहा—तबयदुपतितिनयदुनसों, बोलतभेमुसक्याय । लघुकारजाहितसबनको, उचितनजावदेखाय ॥

यहपौंड्रककोनिबलमानो । गर्वहिंभरियहकियोमहानो ॥ इकशृगालपरबहुमृगराजा । मारनधावतलागतलाजा॥
तबसात्यकिप्रद्युम्नकहऐसे । हमतोचलबरहबनहिंकैसे ॥ आपसमरकहँनाथसिधारैं । हमगृहबैठेनारिनिहारैं॥
तबबोलेयदुपतिमुसकाई । सुनहुपुत्रसात्यकिप्रियभाई ॥ धौंकौरवनसंगरणभारी । धौंमागधपरकरीतयारी॥
धौंदिगपालनजीतनजावैं ॥ धौं दैत्यनसोंरारिबढ़ावैं ॥ कौनकठिनधैंहैउतकामा । जातेचलहुसबैबलधामा॥

दोहा—यहलघुपौंड्रककेलिये, उचितनजावतुम्हार । बलरामहुँनहिंताहिते, ताकहुनगरहमार ॥

तबसात्यकिबोल्योधनुधारी । करहुनाथतोविदाहमारी ॥ मारिदुष्टकहँमैंइतऐहौं । आपकृपातेसुयशबढ़ैहौं॥
तबबोलेहँसिरमानिवासा । हैतुम्हारऐसहिंविश्वासा ॥ पैपौंड्रकइकमोहिंबोलायो । तातेनिजगमनबचितलायो॥
असकहिदारुकसोंकहनाथा । हाँकहुरथकोउलेहुनसाथा॥सुनिदारुकहरिवचनसुहाये।बाजिनपीठिनपाणिछुआये॥
उड़ेअकाशअकाशतुरंगा । घरघरघोपभयोइकसंगा ॥ अतिआतुरकाशीकहँआये।पौंड्रकपहँदारुकहिंपठाये॥१०॥

दोहा—तेहिंढिगदारुकजायकै, कहतभयेइमिबैन । तुवढिगअस्त्रनतजनको, आयेकरुणाऐन ॥

सुनिपौंड्रककियकोपअपारा।बजवायोयुधहोननगारा ॥ द्वैअक्षौहिणिलैसँगमाँहीं।पौंड्रकचल्योकुपितरणकाँहीं॥११॥
तासुमित्रजोकाशिनरेशा । इकअक्षौहिणिलैदलवेशा ॥ पौंड्रकसंगचल्योअतिकोपी । यदुपतिकोमारनअतिचोपी।
दारुकआयकह्योहरिपाँहीं । पौंड्रकआवतहैयुधकाँहीं ॥ त्रयअक्षौहिणिदलकहँसाजे । विविधभाँतिबजवावतबाजे
कढेनगरतेदोउमहिपाला।मानहुँमिलनजातहैंकाला॥निरख्योपौंड्रककाहँमुरारी।आवतचल्योनकलनिजधारी॥१२॥

दोहा—शंखचक्रसरासिजगदा, सोहतउरबनमाल । श्रीवत्सादिकचिह्नसब, मणिकौस्तुभहुविशाल ॥

युगविधिकृतयुगदारुहिंकेरे । चारिबाहुयुतअस्त्रघनेरे ॥ १३ ॥ श्यामरंगपीतांबरधारे । गरुडकाठकोरह्योसवारे।
तैसहिंगरुडध्वजाफहराती । कुंडलकीटप्रभादरशाती ॥१४॥ इमिपौंड्रककहँलखियदुराई।दैरुमालमुखहँसेठठाई।
जैसेभाँडस्वाँगकरिआवे । तैसोपौंड्रकसजोसोहावे॥हँसतानिराखियदुपतिकहँराजा।दीन्ह्योंआयसुसबनसमाजा॥१५॥
धावहुधावहुसबैप्रवीरा । बचिनजायअबभागिअहीरा ॥ सुनतसुभटधायेइकबारा । यदुपतिपरडारेहथियारा ॥

दोहा—शूलपरिघतोमरगदा, शक्तिरिष्टिअसिप्रास । पट्टिशअरुबाणहुविपुल, छायगयेआकाश ॥ १६ ॥

छंद—यदुवंशभूपणबाणतीखणसमरभीपणलेतभे । शरधारछोडिअपाररणअँधियारकरिद्रुतदेतभे ॥ १७ ॥
गजवाजिस्यंदनखंडखंडनमुंडझुंडउडातहैं । कहुँगदाचक्रहुँचक्रवक्रहुँयन्त्रतन्त्रलखातहैं ॥
पुनिकह्योदारुकसोंहरपिहरिकरिसुचंचलस्यंदनै । लैचलहुआशुप्रकाशुकरिजहँखड़ेशत्रुनवृंदनै ॥
सुनिनाथवचननिकरतरचननिलैरथचल्योरथसूतहै । कहुँसरलअतिकहुँतरलधावतमनहुँविनतापूतहै ॥
शारंगकोटंकोरशोरअथोरभोतेहिठोरहै । चहुँओरबाणकरोरझारतशूरशौरिकिशोरहै ॥
बहिचलीशोणितसरिततहँधावतपिशाचबेतालहै । कालीलियेकरखड्गखप्परभावतीतेहिंकालहै ॥
कहुँकंककाकशृगालअतिविकरालभक्षहिंमांसको । करिपानरुधिरअघानअतिपायेमहानहुलासको ॥
कहुँखंडखंडबितुंडशुंडअखंडहैबरखंडितै । कहुँरुंडकेअरुमुंडकेबहुझुंडबसुधामंडितै ॥
कहुँऊटजूटनजूटफूटफूटसेमुखफूटिगे । बहुकूटसेकटिगेकरीजनबूटबूटहुजूटिगे ॥

यहिविधिगयोद्वारकामाँहीं। लग्योजरावननगरीकाँहीं॥३४॥ कृत्यापुरुषनिरखिअतिभासी। हाहाकारकरतपुरवासी॥
जरतनारिनरभगेपुकारत। अतिआरततनुनाहिंसँभारत॥ जैसेवनमहँलगेदँवारी। भागहिंमृगगणपरमदुखारी॥
दोहा-तैसहिंभागतपुरप्रजा, पीछेपुरुषप्रचंड। धावतआवतअतिविकट, धारेशूलउदंड॥ ३५॥
गिरतपरतद्वारकानिवासी। आयेजहाँनाथसुखरासी॥ त्राहित्राहिरक्षकगिरिधारी। कृत्यापुरुषदेतदुखभारी॥
जरतनगरबाँचतअबनाँहीं। तुमहिंछोडिहमकहिंपहँजाँहीं॥ तहाँयादवीसभामँझारी। खेलतचौपरिरहेमुरारी॥
सात्यकिउद्धवहैंइकओरा। एकओरदेवकीकिशोरा॥३६॥ सुनिपुरवासिनआरतशोरा। उठेसकलयदुवरबरजोरा॥
हरिहुसुन्योबोलेकछुनाँहीं॥३७॥कृत्यापुरुषजानिमनमाँहीं॥सहजहिंचक्रसुदर्शनकाँहीं। फेंकिदियोकृत्यानलपाँहीं॥
दोहा-पुनिपासाखेलनलगे, सात्यकिउद्धवसंग। नेकुसोचकीन्ह्योंनहीं, रँगेखेलकेरंग॥ ३८॥
छंदभुजंगप्रयात-चल्योचक्रमानोउदैकोटिभानू। मनोधावतीहैप्रलैकीकृशानू॥
गयोछाइताकोत्रिलोकैप्रकाशा। नदेखीपरैभासपूरीदशाशा॥
जितैकालकृत्यारह्योहैकराला। तितैचक्रधायोवमज्वालमाला॥
सह्योनागयोचक्रकोतेजभारी। भग्योसोद्रुतैबारबारैपुकारी॥ ३९॥
चल्योचक्रपाछेमहावेगताके। महावेगसोंशैलफूटेंधराके॥
गयोभागिकृत्यानलौफेरकासी। गह्योदक्षिणेऋत्विजैयुक्तभासी॥
दियोडारिकुंडैसवैएकबारै। भयेपावकैआशुहीदुष्टछारै॥ ४०॥
पहूँच्योतहाँचक्रतौलौंप्रकाशी। गह्योदौरिकृत्यानलैकोपराशी॥
दियोडारिकृत्यानलैताहिकुंडै। नदेखोपरैताहिकोरुंडमुंडै॥
सह्योनागयोचक्रकोतेजभारी। द्रुतैदौरिकाशीपुरीजारिडारी॥
सभामंदिरौंगोपुरौंऔबजारा। गलीऔअटारीसवैधायजारा॥
जरैंवाजशालेतथानागशाले। जरैंवस्त्रशालेतथाशस्त्रशाले॥
हाहाकारभारीरह्योमाँचिकाशी। बढीचक्रकीज्वालमालाप्रकाशी॥ ४१॥
धरीद्वैकमेंसोपुरीकोजराई। गयोचक्रसोद्वारकैफेरधाई॥
रह्योपूर्वकालैधरचोसोजहाँहीं। गयोवैठितैसेतुरंतैतहाँहीं॥
जरायोपुरीकोखलैमारिआयो। लियोजानिकृष्णैमहामोदछायो॥ ४२॥
दोहा-सुनेसुनावैजोपुरुष, यहहरिविजयसुजान। तासुपापजरिजातसब, शठदक्षिणेसमान॥ ४३॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ
दशमस्कंधे उत्तरार्धे पट्षष्टितमस्तरंगः॥ ६६॥

दोहा-सुनिपौंड्रककीयहकथा, मुदितपरीक्षितराज। फेरिकह्योसुकदेवसों, मध्यमुनीनसमाज॥

राजोवाच।

दोहा-औरसुननहमचहतहैं, श्रीबलदेवचरित्र। सोवरणौअद्भुतपरम, जगजनकरनपवित्र॥
सुनतपरीक्षितकीमृदुबानी। कहनलगेशुकअतिसुखमानी॥ १॥

श्रीशुक उवाच।

जोसुग्रीवमंत्रिवरकरहेऊ। वानरद्विविदनामसोरहेऊ॥ जोमयंदकोहैलघुभाई। मारयोजोगजसमुदाई॥२॥
सोवदकाटयापमहिपाला। हैगोकुमतीक्रूरकराला॥ नरकासुरसोंकरीमिताई। त्यागोकाननपापकराई

दशहजारहाथीकोजोरा। करतरह्योअतिशोरकठोरा ॥ सोनरकासुखधसुनिकाना। कियोकृष्णपरकोपमहाना ॥
चल्योअनर्तदेशकहँकोपी। यदुवंशिनमारनप्रणरोपी ॥

दोहा-आयदेशआनर्तमें, करनलग्योउतपात। करनचह्योसचराजको, एकदिनारनिपात ॥

नगरनपुरनआकरनमाँहीं। गोशलनमखमालनकाँहीं ॥ आगलगायदियोसबजारी।मारिप्रजनकहँकियोदुखारी॥३॥
कहुँशैलनकहँलेतउखारी।चूरणकरतग्रामपुरडारी॥४॥कहूँद्विविदहिलिसागरबीचे। दोउअंजुलिसोंसलिलउलीचे ॥
बोरहिसिंधुतीरकेग्रामा। कहूँबहायदेतबलधामा ॥५॥ मुख्यमुनिनकेआश्रमजाई। भंजनकरतवृक्षसमुदाई ॥
करैमूत्रमलकुंडनमाँहीं। जिनमेंमुनिजनहोमकराँहीं ॥६॥ पकरिसैकेंनहिंपुरनरनारी। देतोशैलकंदरनडारी ॥

दोहा-तिनकेद्वारनमेंद्विविद, देतपपाणदबाय। तहाँनारिनररुदनकरि, मरहिंसबैअकुलाय ॥७॥

यहिविधिकरतउपद्रवभारी।धर्पणकरतसकलकुलनारी॥देशअनर्तहिंवागतभयऊ।सकलप्रजनकहँअतिदुखदयऊ॥
एकसमयरैवतगिरिनेरा। गयोकरतकबहूँकपिफेरा ॥ करतरहेतहँरामविहारा। सखिनसंगलैसजेसिंगारा ॥
बाजिरहेतहँबाजसुहावन। रह्योगानहोतोसुखछावन ॥ सुनतद्विविदअतिसुंदरगाना।रैवतगिरिकहँकियोपयाना॥८॥
शैलशिखरमहँजबचढिगयऊ। तहँबलभद्रहिंदेखतभयऊ ॥ कमलमालपहिरेबलरामा।सुंदरसकलअंगछविधामा ॥

दोहा-सखिमंडलकेमध्यमें, मंडितहैंमुदवार ॥९॥ पानकियेअतिवारुणी, गानकरतलैतार ॥

मदमातेघूमतदोउनैना। एककर्णकुंडलछविऐना ॥ आधेशीशकीटकहँदीने। टूटीमालरंगमहँभीने ॥
घूमतबागतठोरहिठोरा। मनहुँमत्तमातंगकिशोरा ॥ तरुणतरुणतरदोरतबागें। दोरिदोरिआलिनउरलागें ॥१०॥
तहँद्विविदबानरद्रुतजाई। चढ्योवृक्षमहँताहिहलाई ॥ शाखनशाखनकूदतजाई। शाखामृगसबशाखहलाई ॥
कियोकिलकिलाशोरअपावन।प्रगटकियोनिजरूपभयावन॥११॥सखीदेखिमर्कटचपलाई।सिगरीलागीहसनठठाई ॥

दोहा-पुनिबलभद्रहिंआयकै, आलिनदियोबताय। यहबानरअतिशयचपल, करतकलाइतआय ॥१२॥

तहँद्विविदअतिकोपहिंछायो।मुखचलायकैसखिनचिरायो॥लग्योफेरिभृकुटीमटकावन।काढिदंतसबलग्योदेखावन॥
पुनिझुकिसखियनगुदेदेखाई। तहँकछुकरिपरामहिंआई१३हन्योपपानरामतेहिंकाँहीं। सोबचायगोलाग्योनाँहीं ॥
तहँकूदिकैधरणिसिधारो।मदिराकलशफोरिकपिडारो१४रामहुँकहँपुनिलग्योचिरावन।गुदेदेखायभृकुटीमटकावन॥
फेरिसखिनकोवसननिफारचो१५कूदितुरततरुउपरसिधारचो।तासुचपलतारामनिहारी।तेहिंकृतदेशनदुखितविचारी

दोहा-हलमूसलहलधरलियो, कपिकहँहननविचारि। कसिफेंटोकटिमेंतुरत, शोकितसखिननिहारि ॥

द्विविदहुँलियउखारितरुशाला।कियोशोरतहँपरमकराला१६दौरिजोरभरिरामहिंशीशा।मारचोशालवृक्षअवनीशा॥
पकरिलियोतरुकोबलरामा।तोरिफेंकिदीन्ह्योतेहिंठाँमा१७१८हलतेऐंचिरामतेहिंकाँहीं।मारचोमूसलमाथहिमाँहीं॥
फूट्योशिरतेहिंलगतप्रहारा। बहतभईशोणितकीधारा ॥१९॥ जैसेगिरितेगेरुपनारा। सोप्रहारकपिनाहिंविचारा ॥
शालवृक्षइकद्वितियउखारी।मारचोरामहिंकरिबलभारी२०राममारितहँमुसलविशाला।कियोटूकशतसोतरुशाला ॥

दोहा-शालवृक्षलैतीसरो, मारचोबलकेमाथ। ताहूकोशतटूककिय, राममुसलधरिहाथ ॥२१॥

यहिविधियुद्धकरतबहुकीशा।पुनिपुनिवृक्षहनतबलशीशा॥विनावृक्षकोवनसबकीन्ह्यो।सबउखारिबलपरहनिदीन्ह्यो
रहिगेवृक्षनतहाँमहाना॥२२॥तबकपिमारनलग्योपपाना॥तहँबलभद्रमुसलकरलीन्हें।सबपपानकहँचूरनकीन्हें॥२३
तहँद्विविदकरिकोपकराला। भुजाउठायसरिसयुगताला ॥ मूठीबाँधिशोरकरिधाई। उरमहँलपटिगयोद्रुतआई ॥
वसनफारितनुचोंथनलाग्यो॥तहँबलभद्रकोपमहँपाग्यो२४फेंकिदियोहलमूसलकाँहीं।द्विविदहिंधरचोदोहुकरमाँहीं।

दोहा-सुतवाकपिकेपकरिदोउ, लीन्ह्योरामउखारि। द्विविदतहाँशोणितवमरि, मह्यिमहँगिरचोचिकारि॥२५॥

द्विविदगिरतपर्वतसबडोला। बारबारजिमिमंजुहिंडोला ॥ औरहुटूटिगयेसबवृक्षा। भागिगयेतहँकेकपिऋक्षा ॥
डोलिउठीआशुहितबधरणी। सागरपवनपायजिमितरणी॥२६॥तहँदेवगंधर्वमुनीशा। चारणअरुअप्सराऋपीशा॥
नमोजयतिगावतअनुरागे। रामहिंसुखितसराहनलागे ॥ बर्पनभतेफूलनवृंदा। मानतभेअतिउरहिंअनंदा ॥२७॥

यहिविधिजौनद्विविददुखकारी।ताहिरामबिनश्रमतहँमारी ॥ अपनोसुयशसुनतनिजकाना।पुरप्रवेशकीन्ह्योभगवाना ॥

दोहा–द्वारावतिवासीसबै, सुनिकैद्विविदविनास । लगेसराहनरामको, पायोपरमहुलास ॥ २८ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे सप्तषष्टितमस्तरंगः ॥ ६७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–एकसमयहस्तिननगर, दुर्योधनकुरुराज । सुतास्वयंवरकरतभो, जोरिमहीपसमाज ॥

रहीलक्ष्मणानामकुमारी । दुर्योधनकीअतिछविवारी ॥ तासुस्वयंवरसुनिमहिपाला । हस्तिनपुरआयेतेहिकाला ॥
सभामध्यसबजोरिसमाजा । बैठतभेपुहुमीकेराजा ॥ खबरस्वयंवरकीसोइपाई । रामकृष्णकोतुरतछिपाई ॥
अर्धरातियदुपतिकोनंदन । जाकोसांबनामचढिस्यंदन ॥ गयोहस्तिनापुरकहँधाई । लियोनदूजोसंगलेवाई ॥
पहुँच्योहोतस्वयंवरमाँहीं । दूरिखरोभोजहँकोउनाँहीं ॥ निकसीलैजैमालकुमारी । पहिरावनकोहुनृपहिविचारी ॥

दोहा–तहाँसांबरथतेउतारि, दौरिसभामधिजाय । लियोलक्ष्मणाकोतुरत, अपनेअंकउठाय ॥

निजस्यंदनमेंताहिचढाई । चल्योद्वारकाकीदिशिधाई ॥१॥ सांबहिंहरतानिरखिकुरुवीरा।सिगरेकोपकियेगंभीरा ॥
तहँदुर्योधनकह्योरिसाई । यदुकुलकीशठतानहिंजाई ॥ दुर्विनीतहरिसुतव्यभिचारी । लियेजातमरयादहमारी ॥
यहशठहमहिनपुंसकजानै । बलीआपनेकहँअतिमानै ॥ बरबशहरीकुमारकुमारी । सुतानतेहिंजयमालाडारी ॥२॥
तातेधायपरहुशठकाँहीं । जाननपावैयहगृहमाँहीं ॥ घेरिचहूँकिततेयहिबाँधो । ल्यायअंधकोठरीमहँधाँधो ॥

दोहा–जोसांबहिबंधनसुनत, यदुवंशीरिसिछाय । सैन्यसाजिसबआपनी, हमपरऐहैंधाय ॥

ताकाकरिहैंयदुकुलकेरे । अहैंसदाकेसेवकमेरे ॥ भूभोगतहैंदीनिहमारी । चमरछत्रदैकियअधिकारी॥ ३ ॥
जोकरिहैंहठिआयलराई । तोजैहैंवीरतागमाई ॥ यदुवंशिनकोगर्वमहाना । सहिनजातसुनिजातनकाना ॥ ४ ॥
तहँभीषमभाष्योधनुधारी । बधिहैंनहिंबालकव्यभिचारी ॥ कर्णकह्योकरिकोपअघाता । यदुवंशीहैकेतिकबाता ॥
मोहींकहैंआपसुनृपदेहू । आपकरहुनहिंकछुसंदेहू ॥ मर्हीअकेलबालधरिलैहौं । यदुवंशिनउतारिमददैहौं ॥

दोहा–असकहिधनुशरकर्णकरि, कर्णकरनशिशुअंत । सांबओरस्यंदनचल्यो, धावतभयोतुरंत ॥

भूरिश्रवाओरशल्यवीरा । यज्ञकेतुतेसरणधीरा ॥ भीषमभीषमग्रीषमभानू । कियोसांबपरकोपिपयानू ॥
चढिस्यंदनदुर्योधनराजा । धायोसांबधरनकेकाजा ॥ येषटवीरमहाधनुधारी । धायेसांबहिंओरमनारी ॥ ५ ॥
आवतषटवीरनकहँदेखी । सावधानह्वैसांबविशेखी ॥ सारथिसोंअसवचनउचारा । फेरोरथअबभागुहमारा ॥
भागनयदुकुलकोनहिंधर्मा । जायहैसाउबकिमिसुरधर्मा ॥ यदुकुलकीयहरीतिसदाकी । करहिंवीरतारनमहँबाँकी ॥

दोहा–यदुवंशिनकोधर्मयह, आपअकेलेहुहोय । कबहुँमुरहिंनहिंसमरते, सहसनशत्रुनजोय ॥

सुनतसूतस्यंदनतुरतफेरा । सांबहुकियोओरधनुकेरा ॥ भगेअकेलोसिंहसमबीरा । सांबकुमारमहारणधीरा ॥ ६ ॥
[illegible] । [illegible] ॥ ताकोफलअबवेगिहिपैहै । जोरननेकहुँभाजिनजैहै ॥
[illegible] । तैंउपजेअपनोकुलपालक ॥ असकहिकर्णडारनबहुमान्यो । तिमिभीषमबहुबाननतान्यो ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥

दोहा–[illegible] ॥

छंद–[illegible] ॥ ८ ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥

देवव्रतैओनचास। शल्कोहन्योपंचास॥ भूरिश्रवैशतवान। मखकेतुद्विशतशरान॥ ९॥
पुनिकर्णकहँशरचारि। हनिदियतुरंगविदारि॥ पुनिकाटिसूतहिंशीश। रथकाटिदियशरवीश॥
अरुभीपमहिंशरधार। पुनिहन्योसांवकुमार॥ ध्वजसूतस्यंदनकाटि। पुनिशरनदियतेहिंपाटि॥
भूरिश्रवैदशपाँच। कोपितहन्योनाराच॥ हनिसूतरथकहँकाटि। हयचरणदीन्ह्योंछाँटि॥
दुर्योधनैशरधार। मारतभयोवलवार॥हयसूतजानविनाशि। रणमध्यओजप्रकाशि॥
मखकेतुकोतिमिवीर। दलिदियोरथहनितीर॥ भेविरथपटवलवान। लगिसांबकेचहुवान॥
दोहा-सांवओजअद्भुतनिरखि, पटभटरणमहँताहिं, एकवारवोलेवचन, विविधप्रकारसराहिं॥
छंद-धनिधंनिकृष्णकुमारहे। भुजवलहुतोरअपारहे॥ पटवीरकेइकवारहीं। रथदल्योतजिशरधारहीं॥ १०॥
पुनिपटवलीअतिकोपिकै। सांवहिंधरनचितचोपिकै॥ चहुँओरतेवोहिंघेरिकै। मारनलगेशरटेरिकै॥
भटचारिचारितुरंगनै। शरमारिकियविनअंगनै॥ इकहत्योसारथिशीशहे। एकदल्योधनुशरवीसहे॥
ह्वैगयउविरथकुमारहे। लियपरिघकरदशभारहे॥ दोरचोसुभटभटसन्मुखे। मारनरिपुनद्रुतउन्मुखे॥
तहँकर्णपरिघहिंकाटिकै। सांवहिंदियोशरपाटिकै॥११॥पटवीरकोपहिंछायकै। सांबहिंलियोधरिधायकै॥
पुनिबाँधिकृष्णकुमारको। लैचलेनिजहिंअगारको॥ कुरुपतिसुताकोजानमें। चढ़वायमोदमहानमें॥
अतिमुदितहस्तिनपुरगये। निजविजयमनमहँगुनिलये॥ कन्याकुँवरकहँऐनमें। राख्योसजगयुतशैनमें॥
कुरुनाथमनमोदितभयो। हरिरामभयकोतजिदियो॥यदुवंशअवनहिंआयहैं। जोखवरिहूँयहपायहैं॥१२॥
दोहा-निरखिसांवबंधनतहाँ, नारदअतिदुखपाय। गयोद्वारकाकोतुरत, जहाँकृष्णबलराय॥
भासुधर्माअतिछविछाई। तामैंबैठरहेयदुराई॥ कनकसिंहासनअतिछविछाजा। बैठेउग्रसेनमहराजा॥
सहिंसुवरणआसनमाँहीं। राजिरहेबलरामतहाँहीं॥ तहँअनिरुद्धधीरधनुधारी। सोहिरह्योरणअरिदुखकारी॥
हावलीप्रद्युम्नप्रवीरा। राजतरामनिकटरणधीरा॥ सात्यकिअरुउद्धवअक्रूरा। गदसारणकृतवर्माशूरा॥
तिमानअरुभानुजुझारा। औरहुँवैठेकृष्णकुमारा॥ उठीसभानारदकहँदेखी। यदुवंशीमुदलहेविशेखी॥
दोहा-पूजनवंदनकरिमुनिहिं, पूँछीपुनिकुशलात। पुनियदुपतिकरजोरिकै, कहतभयेयहवात॥
कहहुखवरिहस्तिनपुरकेरी। कुरुकुलसुरतिकरहिंकहँमेरी॥ तवनारदयहवचनवखाने। अवलौंनाथआपनहिंजाने॥
सांवहरीकुरुनाथकुमारी। तवकोपितह्वैपटधनुधारी॥ भीपमकर्णसुयोधनवीरा। शलमखकेतुभूरिश्रवधीरा॥
विरथसांवकहँकरितहँबाँधी। राखेउएककोठरीधाँधी॥ नारदवचनसुनतयदुवंशी। कोपवंतभेशत्रुनध्वंशी॥
उग्रसेनभूपतितहँबोले। अपनेउरकीआशयखोले॥ अवलौंऐसीयहिकलिमाँहीं। वातअनैसीभइकहुँनाँहीं॥
दोहा-करिअधर्मपटवीरमिलि, एकबालककोघेरि। करिविरथैधरिलेतभे, परलोकहिंनहिंहेरि॥
तातेअससवकरहुविचारा। जेहिंप्रकारमिलिजायकुमारा॥ सामदामअरुभेदहुदंडा। करहुसवैयदुवरवरिवंडा॥
हैंकुरुवंशीअतिवलवाना। तेहितेकरहिंअधर्ममहाना॥ सात्यकिसुनतभूपकेवैना। मसकिजानुयुगमहिभरिचैना॥
सभासदनसवकाहँसुनाई। बोल्योवचनवीररसछाई॥ भरेघमंडमाहँकुरुवंसी। अपनेकहँमानहिंअरिध्वंसी॥
कृष्णकुँवरबंधनसुनिकाना। क्षणभरिरहतनचनतमकाना॥ हुक्मकरहुयेहीक्षणनाथा। यदुवरलेहिंशस्त्रनिजहाथा॥
दोहा-साजिसकलदलआजुहीं, करिभलचलअवलंब। हस्तिनपुरेपधारिये, अवनहिंकरहुबिलंब॥
तहाँदानपतिगदकृतवर्मा। संवतकीन्हेसात्यकिमर्मा॥ तवअनिरुद्धकह्योअतिकोपी। कुरुवंशिनकटकनमहँचोपी॥
आजुहिंहस्तिनपुरकहँघेरी। मारहुँकुरुवंशिननहिंदेरी॥ इनकेअतिघमंडमनवाढ़ो। मिलोसुभटअवलौंनहिंगाढ़ो॥
खोदिहस्तिनापुरहिंवहैहैं। तवयदुवंशीनामकहैहैं॥ तवबोल्यप्रद्युम्नधनुधारी। सुनहुनाथअववातहमारी॥
जाहुनकोउहस्तिनपुरमाँहीं। देहुअकेलसीसमोहिकाँहीं॥ लघुकाजहितसवयदुवंसी। काहेगँवनकरहिंअरिध्वंसी॥
दोहा-सवकुरुवंशिनपकरिकै, पगमहँबंधनडारि। आपनिकटलैहौंतुरत, तौंसातिघातहमारि॥

कुरुवंशिनजोपकरिनलाऊँ । तोसुतराउरमैंनकहाऊँ ॥ जोकरिहैंशंकरहुसहाई । तोधरिलैहौंआपदोहाई ॥
भीपमविजयकरनकेभुजबल । कीन्हेकौरवहैंघमंडभल ॥ जहँनिर्बलकाहूकोदेखैं । कौरवतहँयुधकराहिंविशेखैं ॥
कौरवअहैंऔरकेधोखे । लखैंनआपदासशरचोखे ॥ पितानअबबेलंबकछुकीजै । मोकहँआसुहिंआयसुदीजै ॥
क्षणभरिरहिजातोअबनाँहीं । बंधनसुनतबंधुपदमाँहीं ॥ सुनिप्रद्युम्नवचनयदुराई । बोलेवचनमंदमुसक्याई ॥

दोहा—हस्तिनपुरचलिहैंहमहुँ, साजिसैन्यचतुरंग । देखबकौरवकसकरत, अबयदुकुलसोंजंग ॥

असकहिसेनापतिहिंबोलायो । सैन्यसजावनहुक्मसुनायो ॥ १३ ॥ कौरवयादवहोतिलराई । जानिवचनबोलेबलराई ॥
सुनहुसुनहुसबवचनहमारा । यहअनुचितनहिंकरहुविचारा ॥ कौरवहैंसबनातहमारे । तिमिपांडवहूँअतिशैप्यारे ॥
तिनसोंअनुचितकरबलराई । अबाशिउभयकुलछैहैजाई ॥ दुर्योधनसोंगयोनशाई । सांबहिंधरत्योकरीचपलाई ॥
तातेहमहस्तिनपुरजैहैं । सांबहिंहठिछोडायइतलैहैं ॥ जैसीकौरवकियअनरीती । तैसेतुमहूँकरतअनरीती ॥

दोहा—सुनतवचनबलभद्रके, यदुवंशीशरदार । भीतिमानसबमौनभे, कोउकछुकियनउचार ॥

तबयदुपतिअसवचनबखाने । हमसबमहँतोआपसयाने ॥ जोमनभावैसोईकीजै । उचितहोयसोआयसुदीजै ॥
शासनहोयजोभ्रातातिहारो । सोइकरिबोउचितहमारो ॥ तबउद्धवबोलेअसबानी । बलविचारिकैबातबखानी ॥
आपुसमहँनहिंउचितविरोधू । तातेकरहुकोपअवरोधू ॥ रामजायकौरवनबुझाई । सांबहिंलैहैंअबाशिछोराई ॥
जोनमानिहैंकहीहमारी । तोचलिकरबउचितपुनिरारी ॥ तहाँवचनबलभद्रउचारा । जोनमानिहैंकहाहमारा ॥

दोहा—तोनहिंबरपठायहैं, सैन्यहेतुहरिपाँहिं । दंडदेइँगेकौरवन, मधिहस्तिनपुरमाँहिं ॥ १४ ॥

असकहिस्यंदनचढिबलरामा । जासुतेजरविसारिसललामा ॥ लियोउद्धवैसंगलेवाई । विप्रनअरुब्रह्मनसमुदाई ॥
विप्रनमधिराजतबलकैसे । तारनमध्यनिशापतिजैसे ॥ १५ ॥ जायरामहस्तिनपुरनेरा । बाहेरनगरबागकियडेरा ॥
कुरुपतिआशयजाननहेतू । उद्धवकहँपठयोमतिसेतू ॥ १६ ॥ उद्धवराजभवनमहँजाई । धृतराष्ट्रहिंबंद्योशिरनाई ॥
बाह्लीकदुर्योधनद्रोणै । वंद्योपुनिभीपममतिभोनै ॥ उद्धवपूँछिसबनकुशलाई । जाहिरकीन्हीरामअवाई ॥ १७ ॥

दोहा—रामआगमनसुनततहँ, कौरवकलितअनंद । उद्धवकोसतकारकरि, जोरिसकलकुलवृंद ॥

मंगलसाजिसाजसबभाँती । गावतआरवधुनलैपाँती ॥ कर्णशकुनिआदिकबलवाना । लैदुर्योधनमुदितमहाना ॥
गयोरामडेरेसुखछाई । औरहुबहुकौरवनलेवाई ॥ १८ ॥ बलहिंनिरखिदुर्योधनधायो । बारबारचरणनशिरनायो ॥
रामहिंविधिवतपूजनकीन्ह्यो । सुरभीरत्नभेंटमहँदीन्ह्यो ॥ औरहुसबकौरवशिरनाई । रामहिंकियप्रणामसुखछाई ॥
सिंहासनबैठेबलराई । दुर्योधनहिंलियोबैठाई ॥ १९ ॥ रामफेरिपूँछीकुशलाता । कुरुपतितहाँकहीअसबाता ॥

दोहा—आपकृपातेसकलविधि, हैप्रभुकुशलहमार । कहहुनाथयदुवरसकल, हैंकुशलीममप्यार ॥

रामकहीयदुकुलकुशलाई । दुर्योधनउरआनँदछाई ॥ २० ॥ फेरिरामअसवचनबखाना । कौरवसकलसुनहुदैकाना ॥
सकलभूपकोजोशिरताजा । ऐसोउग्रसेनमहराजा ॥ ताकोशासनसुनिचितलाई । बिनाविलंबकरहुसबभाई ॥ २१ ॥
पटभटद्धारिअधर्मअतिकरिकै । जीत्योएकबालककहँअरिकै ॥ ताहिबाँधिराख्योनिजऐना । महाराजकीमानहुबैना ॥
उग्रसेनसुनिकोपहिंकीन्ह्यो । यदुवंशिनकहँआयसुदीन्ह्यो ॥ हनहुजाइकुरुवंशिनकाँहीं । बचैनअबहस्तिनपुरमाँहीं ॥

दोहा—तबमैंनृपहिंबुझाइकै, करिकैअमितउपाइ । हेतुबचावनकौरवन, आयोहौंइतधाइ ॥

छोडिदेहुबालकफंदअबहीं । नाहिंविनाशहुहैअबसबहीं ॥ २२ ॥ गर्ववीरताभरेघनेरे । निनतमवचनसुनतबलकेरे ॥
दुर्योधनतनुलागीआगी । बोल्योवचनकोपअतिपागी ॥ २३ ॥ हायकालविपरीतदखाना । सुननपरयोपेसहुँअपमाना ॥
सोहतजोशिरमुकुटमहाना । ताशिरचढनलगीपदत्राना ॥ २४ ॥ यदुवंशिनकहँनातबनायो । चमरछत्रहँशिभौनदेवायो ॥
सपनेआगनमहँबैठायो । हमदीन्हनकहँभूपबनायो ॥ २५ ॥ तेसमतामानन अबलागे । प्रथमहिंभोजनभाजनमांगे ॥

दोहा—जेहमनेपायोसिभो, दियोनेग्रहबनाइ । तेइअबहमपरलगे, शासनकरनबनाइ ॥ २६ ॥

यदुवंशिनकोशिभोरवाढन । भोमुभंगपपरानकराटप ॥ यदुवंशीनिलंममदाने । कुरुकुलकाननिंदुनाँरते

कोयहसुनैकहैकोचाता। सहिनजातिअनरीतिअघाता ॥२७॥ जहँभीष्मअर्जुनधनुधारे। हैंत्रिभुवनकेजीतनवारे ॥
अहैनइतगतिइंद्रहुँकेरी। चहैदावजोकुरुकुलफेरी ॥ मेपजोलेनचहैहरिभागा। तोविनाशह्वैजातअभागा ॥ २८ ॥

श्रीशुक उवाच।

योंकुरुपतिपमंडकेवेरे। रामहिंकहिबहुवचनकठोरे ॥ तमकिउठ्योआसनतेराजा। लैसिगरेकौरवीसमाजा ॥

दोहा-गयेहस्तिनापुरसवै, अतिपापीमतिमंद। गनेनकछुबलदेवकहँ, परेविभवकेफंद ॥ २९ ॥

देखिकुशीलकौरवनकाँहीं। सुनिकठोरवाणीश्रुतिमाँहीं ॥ कियोकोपबलभद्रअनूपा। भयेआशुपावककररूपा ॥
लखिनसकतकोउरामहिंओरा।भयेअरुणलोचनयुगघोरा॥निहँसिरामतहँवारहिंवारा।वचनवज्रसमवचनउचारा ३०॥
होहिंदुष्टजेधनमदअंधा। तेमानतनहिंकछुसंबंधा ॥ तेशठपूरणदंडहिंपाई। देहिंसकलनिजगर्वगँवाई ॥
ज्योंपशुकीनहिंआनउपाई।लगतलकुटद्रुतजातसुधाई॥३१॥यदुवंशीजबकोपहिंकीन्हें।कुरुवंशिनमारनचितदीन्हें ॥

दोहा-तबमैंतिनकहँसकलविधि, करिउपाइसमुझाइ। कुरुवंशिनकल्याणचहि, मैंआयोइतधाइ ॥ ३२ ॥

कौरवदुष्टमहामतिमंदा।कलहनिरतखलअहैंस्वछंदा॥मोहिंसुनाइकहीकटुवानी।जान्योनहिंममबलअभिमानी॥३३॥
भोजवृष्णिअंधककरईशा। उग्रसेनअसअहैमहीशा ॥ जाकेशक्रादिकदिगपाला। खड़ेरहैंद्वारेसबकाला ॥ ३४ ॥
बैठिसुधर्मासभामँझारी। पारिजाततरुकोअधिकारी ॥ सुरपुरतेवासवमदमोरी। मँगवायोसुरतरुबरजोरी ॥
सोनहिंकाकौरवनसमाना। ह्वैहैनहिंकाकेअसज्ञाना ॥३५॥ चरणकमलकमलाजेहिंसेवै।सोहरिधरेदेहनरदेवै ॥३६॥

दोहा-लोकपालजेहिंपदरजहि, पूतहोनकेहेतु। निजशिरमेंधारणहिते, करतसर्वदानेतु ॥

जासुचरणरजतीरथकाँहीं। अतिपावनकरिदेतसदाँहीं ॥ मैंविधिशिवजेहिंअंशहिंअंशा।देतमुक्तकरिजासुप्रशंसा ॥
सोयदुवरकौरवसमनाँहीं। कोअसबातकहैमुखमाँहीं ॥ ३७ ॥ कौरवदीनमहीयदुभोगै। सोदुर्योधनकहतअयोगै ॥
कौरवशिरहमारपदत्राने। केकाकेवलअहैंभुलाने ॥ ३८ ॥ ऐसेमदमत्तनकेवैना। कौनसहैजोहैबलऐना ॥
आयेधौंशरावकरिपाना। धौंगवाइदीन्हेंसवज्ञाना ॥ उद्धवअबतोनहिंसहिजातो। आँखिननहिंकछुमोहिंदेखातो ३९

दोहा-बिनाकौरवनकोमही, करिडारौंगोआज। जोनहिंगिरिहैंदीनह्वै, ममपाँयनकुरुराज ॥

असकहिकोपविवशबलरामा। हलमूसललीन्ह्योंबलधामा ॥ उठ्योसभातेरामतुरंता। मानहुँकरतलोकत्रयअंता ॥
चल्योहस्तिनापुरकीओरा।अतिकोपितरोहिणीकिशोरा॥पगनधरतधसकतिहैधरणी।चल्योमनहुँसिंधुरलघुतरणी ॥
श्वासलेतबलवारहिंवारा। मानहुँकरतजगतसंहारा॥बालसूर्यसमवदनविराजे। अतिशयनीलवसनतनुछाजे ॥४०॥
शहरपनाहनिकटबलजाई। आशुहिंहलकहँदियोगडाई ॥ फूटीधरणिलगतहलपावे। जिमिशरपात्रपारह्वैजावे ॥

दोहा-तहँदबायहलकौतुकै, पुनिलियआशुउठाय। हलैसंगहस्तिनपुरी, चलिआयोकुरुराय ॥

छंद-अमरावतीसमहस्तिनापुरकोशभरतालीश। लौटायकैतेहिंचल्योबोरनगंगमहँजगदीश ॥
पुरउठ्योजबतिरछाभयोधसिचल्योसुरसरिओर। तबपुरप्रजासबकहनलागेकहाभोयहघोर ॥
गिरिगईढेलीसीदिवेटीजेनवेलीऊँच। पुरहाटहाटनवाटवाटनअशुभअतिशयमूँच ॥
हाहापुकारपुकारिपरजाभगेचारिहुँओर। गजवाजिऊँटहुछूटिभागेकरतआरतशोर ॥
गिरिपरतनरउठिभजततजिनिजनारिबालकसंग। कहुँरहतबनतनरसतपगपगकँपतथरथरअंग ॥
कोउकहतपरटैहगइदुर्योधनहिंकेपाप। अबबचबकैसेभागिकहुँनहिंमिटतयहसंताप ॥
सरकूपबापिनदरकिगोजलवृक्षगेसबटूटि। कुरुनाथकेभैमहलउँचेतगयेसबटूटि ॥
कोउकहतकहँगोभीष्मकहँगोपार्थकहँगोकर्ण। कहँद्रोनकहँकृपद्रोनसुतकहँभीमअबभोमर्ण ॥
सबवीरगृहलैनिकरिभागेछोडिकैहथियार। तनुवसनकोसंभारनहिंपुरपर्योहाहाकार ॥ ४१ ॥
जिमितरनिवूडततरणिकैजनहोतबनहिंनधार। तिमिहस्तिनापुरकेजनानिपरकीनमरणविचार ॥

कोउकहतकायहहोतकोउदेहुवेगिवताय। जामेंसकेंबचिसकलहमसोइकराहिंआशुउपाय॥
सववीरचकितह्वैरहेकछुचलतविक्रमनाँहिं। पुरपरयोखरभरहरवरैघरगिरतभरभरजाँहिं॥
कहुँचपीवाजिनराजिकहुँमातंगगणदविजाँहिं। कहुँस्फटिककीफरसैंफटतगोपुरगिरतभहराँहिं॥
बहुध्वजपताकाध्वस्तभेनहिंनेकहूँदरशाय। कुरुनाथकौरवकुलविनाशविलोकिअतिअकुलाय॥
लैबंधुनिजअतिभीतियुतभीषमभवनगोधाय। करजोरिकैपूँछतभयोअतिदीनवचनसुनाय॥
यहकहाहोतवताइयेमोहिंनेकुनाँहिंजनाय॥

दोहा—तवबोलेभीषमविहँसि, सुनकुरुपतिमतिमंद। गंगामहँबोरतनगर, सोरोहिणिकोनंद॥
जापैजायघमंडदेखाये। शठजाकोपदत्राणवनाये॥ करैसोइअबतवकुलनाशा। छोडिदेहुअवजीवनआशा॥
जोजसकरतसोतसफलपावै। यामेंकोउसंदेहनल्यावै॥ सरसवसमजाकेशिरमाँहीं। धरनधरीहैधसकतिनाँहीं॥
तासोंकरिकैवैरमहाना। कुरुपतिअबचाहहुकल्याना॥ ताकेपगनपरहुअबजाई। औरनदीशतवचबउपाई॥४२॥
भीषमवचनसुनतकुरुनाथा। लैकुटुंबसिगरेनिजसाथा॥ सुतालक्ष्मणेरथैचढाई। तासँगसांबहुकहँबैठाई॥

दोहा—तिनकोआगूकरिलिये, सबकौरवकरजोरि। गयेशरणवलरामकी, गुनतआपनीखोरि॥४३॥
कौरवलखेरामकहँजाई। मानहुँमहाकालभयदाई॥ हस्तिनपुरलीन्हेंहलपाहीं। बोरनचाहतसुरसरिमाहीं॥
दौरिकियेसबदंडप्रणामा। कहतभयेरक्षहुबलरामा॥ रामरामहेअखिलअधारा। जान्योनहिंप्रभाउतुम्हारा॥
हमहैंमूढकुबुद्धिअगाधा। क्षमाकरहुहमरोअपराधा॥४४॥ जगउतपतिपालनसंहारा। ताकेतुमहोप्रभुकरतारा॥
आपखेलहितहैंसबलोकू। ऐसेवदहिंवेदकेथोकू॥ ४५॥ सर्षपसरिसएकफणमाहीं। धरेधराहौंसंशयनाहीं॥

दोहा—परमप्रकाशीआपके, सोहतफनाहजार। अंतसमयउरधारिजग, कीजैसैन्यविहार॥४६॥
आपकोपसबरक्षणहेतू। नहिंमत्सरनहिंवैरनिकेतू॥सदासत्त्वगुणधारेरहऊ। स्थितिपालनमहँतत्परअहऊ॥४७॥
सबभूतनकेअंतर्यामी। सर्वशक्तिधरजयबहुनामी॥ जयविशुकर्माजयअविनाशी। जयअनंतजयपरमप्रकाशी॥
तुमहोसदादासकेछोहीं। हमतुम्हरेशरणागतहोहीं॥ ४८॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिदुर्योधनकुरुराई। गिरचोरामचरणनअकुलाई॥ काँपतअंगवहतद्दगनीरा। गयोछूटितनुकोसबधीरा॥
विनयकियोयहिविधिकुरुवीरा। तबप्रसन्नह्वैबलमतिधीरा॥

दोहा—करिकुरुपतिपैअतिकृपा, वचनकहेगंभीर। पैहौसकलअनंदअति, अबनहोहुभयभीर॥४९॥
असकहिपुरतेहलअतिभारी। लियोआशुबलरामनिकारी॥पुनिकुरुपतिसोंगिराउचारी।राखेहुतुमसुधिसदाहमारी॥
दुर्योधनतहँकह्योसुखारी। अबनहिंभूलौसुरतितिहारी॥ असकहिंवारहसैगजभारी। साजिसाजुसुंदरछविवारी॥
दशहजारवाजीजवधारी६०पटहजाररथसाजुसँवारी॥ द्वैहजारदासीछविवारी। दाइजदीन्ह्योसंगकुमारी॥५१॥
लैसिगरोबलरामसुखारी। सुतसुतवधूसंगसुखकारी॥ उद्धवआदिकलियोहँकारी। चलेद्वारकेआशुपधारी॥५२॥

दोहा—चलआयेद्वारावती, सुतसुतवधूसमेत। पुरवासीआगमनसुनि, सबभेमोदनिकेत॥
उग्रसेननृपकीसभा, जायतुरतबलराम। करिबंदनबैठतभये, पावतभेसुखधाम॥
हस्तिनपुरवृत्तांतसब, सभामध्यमहँगाय। यदुवंशिनकोदेतभे, आशुहिरामसुनाय॥५३॥
अबलोंदक्षिणऊँचकछु, नीचोगंगाओर। बलविक्रमसूचनकरत, पुरदेखातसबठोर॥५४॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा
बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ
दशमस्कंधे उत्तरार्धे अष्टषष्टितमस्तरंगः॥ ६८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-भौमासुरहनिकृष्णप्रभु, सोरहसहसकुमारि। ल्याइद्वारकहिंब्याहिलिय, निवसेतहाँसुखारि॥
मंदिरसोरहसहससुहावन। तिनमेंनितहिंरमतमनभावन॥१॥ यहसुनिकैनारदमुनिराई।मनमहँविस्मयकरीमहाई॥
सुंदरनारीअहैंअनेकू। तिनमहँरमहिंकृष्णकिमिएकू॥ २॥ यहविचारिमुनिदेखनहेतू।आयेआशुहिंकृष्णनिकेतू॥
देखनलागेयदुपुरशोभा। जाकोनिरखिशक्रमनलोभा॥ फूलेउपवनवनगृहबागा। गुंजहिंमधुकरउडतपरागा॥३॥
सोहतसरसरसिजकेवृंदा। फूलिरहेसुंदरअरविंदा॥ इंदीवरअंभोजसुहावन। अरुकह्लारकुमुदसुखछावन॥
दोहा-कूजहिंसारसहंसबहु, बैठेप्रमुदितवीर। नीलकमणिसमलसतअति, नीरपरमगंभीर॥ ४॥
जहँयदुवंशिनकेसुखकारी।नवनवलक्षमहलअतिभारी॥रजतफटिककेहैंबहुधामा।बहुतकनकमरकतअभिरामा॥५॥
हटहाटबाटबहुघाटा। तिनमहँठटेअनूपमठाठा॥ शालासभासुरालयनीके। जिनआगेसुरसदनहुँफीके॥
रभिसलिलगलियाँसबसींचीं।रुचहिंसुरभिकीचहुँदिशिवीचीं॥कनककेदेहलीरजतअंगना। तिनमहँबैठीचारुअंगना॥
विधपताकेनभमहँलहरें। रविछपाइछायाछितिछहरें॥६॥अंतःपुरमहँनारदआये। निरखितासुसुखमासुखपाये॥
दोहा-चारिहुँलोकनपालकी, जेतीअहैविभूति। हरिमंदिरमेंएकथल, देखीपरेअकूति॥
हँविशुकर्मानिजनिपुणाई।मनभरिरचिरचिसकलदेखाई॥७॥मंदिरसोरहिंसहससुहावन।शतअरुआठमहाछविछावन॥
कमंदिरमहँनारदआये। जहाँरुक्मिणीकृष्णसुहाये॥८॥ खंभविशालप्रवालनकेरे। जटितजवाहिरलसहिंघनेरे॥
दूरजमणिछज्जाछाजें। विचविचइंद्रनीलमणिराजें॥ मणिनजटिततहँलसैंदेवाला। पुहुमीपन्नगमढ़ीविशाला॥९॥
विविधभाँतिकेतनेविताना। मुक्तझालरैंलहरैंनाना॥ गजदंतनपर्यंकसुहावें। मणिनजटितआसनछविछावें॥१०॥
दोहा-सखीसँवारेंवरवसन, पहिरेहीरनहार। रत्नजरीकरलैछरी, खरीद्वारहींद्वार॥
बाहेरकेदरवाजेनमाहीं। द्वारपालठाढेचहुँघाहीं॥ जरीपागशिरवपुवरजामा। रत्नजटितभूषणअभिरामा॥
कनकदंडसबकेकरभारी।रत्नजटितफैलतिउजियारी॥११॥विविधभाँतिमणिकेतहँदीपा।नखतनबहिमनुलसहिंमहीपा॥
कढतझरोखनसुरभितधूमै। पसरतसोअकाशअरुभूमै॥ तिनहिंनिरखिजलधरमनमाने।करतशोरअतिशयहर्षाने॥
विविधभाँतिवारजेविराजें। नचतमोरतिनमहँअतिभ्राजें॥१२॥ऐसेसुंदरमंदिरमाहीं। सखीसहससंयुतसुखमाहीं॥
दोहा-निजकरकरिढारतचमर, ठाढीकृष्णसमीप। ऐसीरुक्मिणिकोलख्यो, नारदजायमहीप॥ १३॥
नारदकोलखिकैयदुराई। उठेआशुपर्यंकविहाई॥ सकलधर्मकेहैंधुरधारी। चरणगहेदोउकरनपसारी॥
क्रीटसहितमुनिपदशिरनाई।पाणिजोरिआसनबैठाई॥१४॥नारदचरणधोयजगदीशा।धारणकियोसलिलनिजशीशा॥
जोहरिकोचरणोदकगंगा। करतिजगतकोपातकभंगा॥ तेधोयेमुनिपदश्रीधामा। सतिब्रह्मण्यदेवकियनामा॥१५॥
मुनिकहँविधिवतपूजनकरिकै। बोलेवचनप्रेमरसभरिकै॥ कहहुनाथकाकरहिंतिहारो। आपकृपासबबनबहमारो॥
दोहा-सुनियदुपतिकेवचनतहँ, नारदमृदुमुसक्याय। जोरिपाणिबोलेवचन, आनँदउरनसमाय॥ १६॥

नारद उवाच।

आपहिमेंहमलखेंअखंडा। दीनदयादुष्टनपरदंडा॥ सोनहिंकछुअचरजउरआवत। अखिललोकपतिआपकहावत॥
जगतकरनकल्याणतुरंता। धरहुनाथअवतारअनंता॥सोहमभलीभाँतियहजानें। विचरहिंकरतआपयशगानें॥१७॥
ब्रह्मादिकजेबोधअगाधा। तेउरधरनकरहिंजिनसाधा॥ जेसंसारकूपउद्धारण। हैंअपवर्गदानकेकारण॥
ऐसेयदुपतिचरणतिहारे। धन्यभाग्यहमआयनिहारे॥अबअतिकृपाकरहुयदुराई।तवपदतजिमनअनतनजाई॥१८॥

श्रीशुकउवाच।

दोहा-असकहिकैनारदउठे, गेहरिमंदिरओर। छलनयोगमायाचहैं, द्रावतिसबठौर॥ १९॥
तहँदेखेयदुनंदनकाहीं। बैठेसतिभामासँगमाहीं॥ उद्धवसंयुतरमानिवासा। खेलिरहेप्यारीसँगपासा॥

नारदकोलखिउठेमुरारी । पूजनकियोप्रीतियुतभारी ॥ २० ॥ पूछ्योआपकेइतआये । बडेभाग्यदर्शनहमपाये॥
तुमपूरणहमअहेंअपूरण। आपमनोरथकिमिहमपूरण॥२१॥कहहुँतथापिकृपाकरिनाथा।करहुजन्मअबमोरसनाथा॥
सुनिनारदयदुपतिकीवानी । उठेमौनअतिअचरजमानी ॥ औरभवनमहँगेमुनिधाई । तहँजायदेखेयदुराई ॥ २२॥

दोहा—बैठेनारिसमीपमें, लियेगोदबहुबाल । तिनहिंखेलावतहंमुदित, श्रीपतिपरमकृपाल ॥

फेरिऔरगृहगेमुनिराई । तहँनहातदेखेयदुराई ॥ २३ ॥ यहिविधिवागनलगेमुनीशा । दर्शनकरनहेतजगदीशा॥
कहूँयज्ञबहुकरतमुरारी । कहूँजेमावतद्विजगनभारी ॥२४॥ संध्याकरतमौनकहुँनाथा।जपतमंत्रकहुँगोमुखिहाथा॥
कहुँसात्यकिकेसंगसुखारी।खेलतपटाविपुलगिरिधारी॥कहूँतुरंगनफेरतअहहीं।कहुँमतंगयुधलखिसुखलहहीं॥२५॥
कहुँसवारह्वैसुंदरस्यंदन । सखनसंगविचरतयदुनंदन ॥ करतनाथकहुँशैनविहारें । वंदीविरदावलिउच्चारें ॥ २६ ॥

दोहा—मंत्रीउद्धवआदिले, बैठिएकांतविचारि । मंत्रकरतकहुँराजही, यदपिस्वतंत्रमुरारि ॥

कहुँजलक्रीडाकरहिंमुकुंदा । वारवधूलैसहितअनंदा ॥२७॥ कहूँअलंकृतकरियबहुगाई । सादरद्विजनदेतयदुराई ॥
कहूँसुनैइतिहासपुराना । कहूँसुनहिंप्रभुमंगलगाना ॥२८॥ कहूँहँसीकीकथावखानी । हँसहिंप्रियासँगशारँगपानी॥
कहूँधर्मकरसेवनकरहीं । कहूँअर्थकामहुँचितधरहीं॥२९॥कहुँनिजरूपप्रकृतिपरध्यावें । कहुँगुरुसेवनकरतसुहावें॥
भोजनकरतकहूँपकवाना । कहुँविहारमहँरहेलोभाना ॥३०॥ कहूँकरहिंशत्रुनसँगरारी । कहूँसंधिकरिलेतमुरारी॥

दोहा—कहूँबैठिबलभद्रके, संगमुकुंदकृपाल । सज्जनकोचिंतनकरत, मंगलमोदविशाल ॥ ३१ ॥

कहूँकरतहैंपुत्रविवाहू । कहूँसुताकरव्याहउछाहू॥कहुँबेटिनिकीकरहिंबिदाई । कहुँल्यावहिंनिजबधुनलेवाई॥३२॥
कहूँपुत्रकोजन्मउछाहा । कहुँव्रतबंधकरतनरनाहा ॥३३॥ कहुँपूजनकरियज्ञसुरेशन।कहुँतडागकहुँरचतअशेषन॥
कहूँकूपयदुनाथखनावें । विविधबागकहँनाथलगावें ॥ कहुँहरिमंदिरसुंदररचहीं । कुहुँप्रभुबैठेतियगणनचहीं ॥
कहूँसिंधुकेतुरँगसँवारे । सँगलीन्हेंयदुवरशरदारे॥ खेलहिंकाननमाहँशिकारा।करहिंपुनीतपशुनसंहारा॥३४॥३५॥

दोहा—कहूँकामरीओढिकै, पुरजनद्वारहिंद्वार । तिनआशयजाननहिते, विचरहिंशौरिकुमार ॥ ३६ ॥

निरखियोगमायाप्रभुकेरी । जाकोअंतपरतनहिंहेरी ॥ नारदतबप्रभुसोंहँसिबोले । कपटआपनेउरकोखोले ॥ ३७॥
मैंभ्रमसोंआयोइतधाई । देखनतवविभूतियदुराई ॥ आपयोगमायामैंदेखी । योगिनकोदुर्दर्शविशेषी ॥
तुवपदपद्मकृपामैंपाई । लखीतुम्हारिविभूतिमहाई ॥३८॥ अबमोहिंबिदाकरहुयदुराई । कियेरह्योप्रभुकृपामहाई॥
आपुसुयशपूरितसबलोका । तहँमैंविचरहुँसदाअशोका॥जगपावनतुवकीरतिगाई।मैंत्रिभुवनविचरहुँसुखपाई॥३९॥

दोहा—यदुपतितबबोलेविहँसि, सुनहुविप्रमतिमान । करतावकतामोदिता, धर्मनिकेमोहिंजान ॥

लोकनिकेसिखवनकेहेतू । करहुँकर्ममैंसबमुनिकेतू ॥ तातेतातनकौतुकमानो । मोहींकोसबकारणजानो ॥ ४० ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिकरतगृहस्थनकर्मा।शिखवतसबलोकनकहँधर्मा॥वसतद्वारकामहँगिरिधारी।नारदमुनियहिभाँतिनिहारी॥
अनुपमउदयविभूतिविलोकी । नारदमुनिजेसदाअशोकी॥ कौतुकगुनिमुनिवारहिंवारा।लहिहारिसोंसतकारअपारा॥
कृष्णपद्मपदमनमहँध्यावत।नारदगयेकृष्णगुणगावत॥यहिविधिकरतमनुजसमलीला।नारायणयदुपतिशुभशीला॥

दोहा—महिपिनसोरहसहससँग, विहरतसदामुकुंद । हावभावहाँसीकरत, पावतपरमअनंद ॥ ४४ ॥
हरिचरित्रजोप्रीतिसों, गावतसुनतबतात । भक्तिहोतभगवानमें, आशुकृष्णपुरजात ॥४५॥

इति श्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्री श्रीद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ उत्तरार्धे एकोनसप्ततितमस्तरंगः ॥ ६९ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-एकसमयरजनीरही, पाँचदंडअवशेष। लालशिखालागेकरन, सुंदसोररविशेष ॥
दिवसविरहकोआगमजानी। भईदुखितअतिशयसबरानी॥लालसिखनकोदेतसरापा। कंतकंठलागीलहितापा॥१॥
कलरवकियऔरहूविहंगा। मंजुगुंजिकियअलितिनसंगा॥ मानहुवंदीगणहरिकेरे। प्रातजगावनहितबहुटेरे॥
शीतलमंदसुगंधसमीरा। बहनलग्योविरहिनप्रदपीरा॥यद्यपिसुखकसमारुतबहतो।तद्यपिहरिप्यारिनउरदहतो॥२॥
पियभुजमधियद्यपिसुखकरती।तदपिदिवसविरहानलजरती॥३॥ब्रह्ममुहूरतजानिमुरारी।उठिअंबुजकरचरणपखारी॥
दोहा-प्रकृतिहुपरनिजरूपको, यदुनंदनकियध्यान ॥ ४ ॥ उत्पतिपालननाशको, सोईहेतुमहान ॥ ५ ॥
कनककलशभरिसुरभितनीरा।मज्जनहितल्यायेमतिधीरा॥यदुपतिविधिवतकियअस्नान।नित्यकर्मकियसकलमहान॥
युगपीतांबरधारिमुरारी। पूजनकीन्ह्योंविशदसुखारी॥ होमकियोपुनिपावकमाँहीं। गायत्रीजपिमौनतहाँहीं॥ ६॥
उदितअर्ककहँअर्घ्यहिंदीन्ह्यों।उपस्थानविधिवतपुनिकीन्ह्यों॥सुरनऋषिनपितरनकियतर्पन।विप्रनवृद्धनकीन्ह्योंअर्चन॥
मुक्तमालिकासुवरणशृंगा। शुद्धदूधप्रदवछरनसंगा॥ वसनसहितखुररजतहिकेरे। औरहुभूषणसाजिघनेरे॥
दोहा-सहिततिलाजिनयोगऊ, विप्रनकरिसत्कार। नित्यदेततेरासहस, श्रीवसुदेवकुमार ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥
पुनिगोविप्रदेवगुरुवृद्धन। वंदनकीन्ह्योंप्राणिनसिद्धन॥मंगलद्रव्यपरसिगिरिधारी।विविधभाँतिभूषणतनधारी॥१०॥
अद्भुतकीन्ह्योंअँगअँगरागा। पहिरयोतेजवंतपुनिवागा॥ क्रीटशीशमहँदियोप्रकाशी। कटिफेंटोबाँध्योछविराशी॥
कटिपरतलोडारितेहिनंदक। गदाचक्रधरधनुअरिद्वंदक॥धरेचारिहूभुजनविशाला।पहिरिविमलवैजंतीमाला॥११॥
घृतआरसीमाहँमुखदेखी। गोवृषसुरद्विजवंदिविशेषी॥ पुनिकढ़िसभामध्यप्रभुआये।पुरजननिजनिजविनैसुनाये॥
दोहा-यथायोग्यआयसुदियो, पूरिसवैमनकाम। नाथनिरखिइकवारते, प्रमुदितकियेसलाम ॥ १२ ॥
पुनिसबयदुवंशीसरदारा। कियेआयवंदनइकवारा॥ तिनकोदियेहाथनिजवीरा। सुमनमालविप्रनयदुवीरा॥
फेरिसुहृदमंत्रीजनआये। निजनिजकारजसवैसुनाये॥आयसुउचिततिनहिंप्रभुदेके। अंतःपुरकोकारजकेके॥१३॥
दारुकसोबोलेअसवानी। ल्यावहुस्यंदनममछविखानी॥ ताहीक्षणदारुकरथल्याये। सुग्रीवादितुरंगसुहाये॥
करिप्रणामसन्मुखभोठाढो। रथतयारबोल्योसुखबाढो॥१४॥ दारुकपाणिपकरिनिजपानी।रथसवारभेशारँगपानी॥
दोहा-सात्यकिउद्धवसंगचढे, लियेचमरकरछत्र। जातलसेभगवानमनु, पूरवगिरिरवितत्र ॥ १५ ॥
चलेसुधर्माकहँयदुराजा। जहँहैंउग्रसेनमहराजा॥ आवतनिरखितहाँयदुराई। युवतीलगींझरोखनधाई॥
तिनपैताकिमंदमुसकाई। मनहरिलीन्ह्योंप्रीतिदेखाई॥ १६ ॥ जोरिसकलयदुवंशसमाजा।सभासुधरमेंगेयदुराजा॥
शोकमोहअक्षुधापिपासा। जरामृत्युदायकअतित्रासा॥जौनसभामहँजातसदाहीं।येपटउर्मिआशुनशिजाँहीं॥१७॥
बंद्योउग्रसेनयदुराई। बैठेसिंहासनछविछाई॥ फैलिरह्योयदुनाथप्रकाशा। पूरितहोतभईदशआशा॥
दोहा-यथायोग्यबैठेसुभट, यदुपतिशासनपाइ। तिनकेमधिहरिलसतजनु, उडुगणमधिउडुराइ ॥ १८ ॥
तहाँहासरससखाविलासी। आयकरनलागेमृदुहाँसी॥ तहाँनर्तकीनर्तकआये। पृथकपृथकनाचेमनभाये॥ १९॥
करनलगेगायकगणगाना। लैलैमंजुलताननिनाना॥ वीणावेनहुमुरजमृदंगा। तालशंखबाजेइकसंगा॥
नाचिगायबहुभाँतिरिझाई।लहिइनामअधिकमनभाई॥२०॥सभाब्रह्मवादीद्विजआये।पूर्वयशीनृपकथासुनाये॥२१॥
तहँइकपुरुषअपूरवआयो। द्वारपालतवखबरिजनायो॥ कृष्णताहिनिजनिकटवोलायो॥ २२ ॥
दोहा-प्रभुहिनिरखिसोजोरिकर, कीन्ह्योंमुदितप्रणाम। विनयकरनलाग्योवहुरि, सुनियेकरुणाधाम ॥ २३ ॥
मगधराजअतिशयबलधामा। जरासन्धहैजाकोनामा॥ सोदिग्विजयकरीमहिमाँहीं। जीतिलियोबहुभूपनकाँहीं॥
वीसहजारभूपकहँधरिकै। राख्योकारागारहिकरिकै॥ तेनृपतुमढिगमोहिपठाये। भूपतिविनयदेतमैंगाये॥ २४॥
कृष्णकृष्णहेदीनदयाला। नाशकदासदुःखतत्काला॥ हमहैंमंदमतीभवभीते। आपशरणहोंमैंजगमीते ॥ २५ ॥

पापनिरतसिगरेजगलोगू । उत्तमकरमकरतनहिंभोगू ॥ वेदविहिततुवपूजनभूले । वागहिंजगमहँधनमदफूले ॥
दोहा—शतवर्पनलैजेकरैं, अपनोजिअघविचार । तिनकुमतिनतुमनाशहु, आशुहिंनंदकुमार ॥
ऐसतुमहिंअहैपरनामा । दुखनाशकदायकविश्रामा ॥ २६ ॥ खलनाशनसततरक्षणहेतू । तबअवतारहोतसुखसेतू ॥
ऐसेतुमहिंकुमतिनहिंजानै।अरुतुम्हारशासननहिंमानै॥तुम्हरेशरणागतहमह्वैकै।कौतुकगुनहिंकलेशहिभ्वैकै ॥२७॥
भूपतिसुखसबसपनसमानै । तामेंहमसबरहेभुलानै॥प्रथमहिंयहतजितुमकोभजते।तौकाहेअसदुखमहँरजते ॥२८॥
आपचरणदुखनाशनवारे । तातेअबहमशरणतुम्हारे ॥
दोहा—मेपनकोजिमिकेहरी, घेरतभयदरशाय । तिमिहमकोमागधप्रबल, कैदकियोयदुराय ॥
औरनआवतकछूविचारा । मागधबलदशनागहजारा ॥ तुमहींइकप्रणतारतिहारी । तातेहमकोलेहुउबारी ॥ २९॥
हारयोतुमसोंसत्रहिबारा । मागधलैदलसंगअपारा ॥ एकबारतुमसोंयहजीत्यो । तबतेशठयहभयोअभीत्यो ॥
देतदुसहदुखतुवजनजानी । हनहुताहिअबशारँगपानी॥३०॥राजसँदेशदूतअसभाषी।कह्योभूपदर्शनअभि
कैदमगधकोठरीपरेहैं । चरणआशरावरीधरेहैं ॥ करहुदीनदासनकल्याना । यदुपतिहौतुमकृपानिधाना ।
दोहा—राजदूतकेकहतअस, देखिपरेऋपिराय । शीशपीतसोहतजटा, मानहुँहैदिनराय ॥ ३२ ॥
मुनहिनिरखियदुपतिजगदीशा।उठिवंदनकियमहिधरिशीशा॥सिगरेयदुवंशीउठिधाये।नारदचरणआयशिर
नारदपदपूज्योयदुराई । विधिवतआसनमहँबैठाई ॥ प्रीतिसहितअतिकोमलवानी । बोलेमुनिसोंशारँगपानी
लोकअभयसबहेंमुनिराई । कहहुनाथहमसोंसबगाई॥तुम्हरेदरशमहतगुणयेहू।त्रिभुवनखबरिसकलकहिदेहू
ईश्वरजोलोकननिरमाना । तिनमेंकछुनहिंतुमहिछिपाना ॥ कहहुखबरिहस्तिनपुरकेरी। पांडवकहाकरनचि
यदुपतिकेसुनिवचनसुहाये । बोलेनारदअतिसुखपाये ॥ ३६ ॥

नारद उवाच ।

दोहा—जगकरताप्रभुआपजो, शक्तिनसहितलसंत । व्यापिरहीजोसकलतुव, मायाछलीअनंत ॥
छंद—सबजगतमेंतुमव्याप्तहौजिमिदारुअनलछिपानहैं । तुमकौनहैकछुगुप्तपूछहुँमोहिंयदपिसुजानहै ॥ ३
तुवचरितजानतकोउनहींजगरचहुनानाशक्तिते । मायाविवशसुततियगुनतनिजजगतजनअनुरक्तिते
सबतेविलक्षणआपतुमकोबारबारनमामिहे । संसारछोडननहिंजोजानतताहितुमखगगामिहे ॥ ३८ ॥
अज्ञानतमनाशनहितेजसदीपज्वालिप्रकाशिकै । श्रवणनिसुधारसप्याइकैअपनोकरहुसुखराशिकै ॥ ३
दोहा—यद्यपिसबजानोअहै, हेयदुनाथतुम्हार । तद्यपिमैंभापतअहौं, यहवृत्तांतउदार ॥
आपपिताभगिनीकेनंदन । भक्तयुधिष्टिरपरमअनंदन ॥ जोकछुकीन्हेंमनहिविचारा।सोसुनियेवसुदेवकुमारा॥
राजसूयकरिकैबड़यागा । पूजनचहततुमहिबड़भागा ॥ कियेमोक्षकामनाभुवाला । आपहुशासनदेहुदया
यहिकारणमोहिंभूपपठाये । तुमकोनाथबुलावनआये॥चलहुनाथहस्तिनपुरकाँहीं।नृपहिंकरावहुयज्ञतहाँहीं॥
राजसूयमहँसबसुरऐहें । महीमहीपसकलजुरिजैहैं ॥ कोअसशठतुवदरशनहेतू । नहिंऐहैनृपधर्मनिकेतू ॥ ४
दोहा—रूपध्यानकरिनामसुनि, गायचरित्रतुम्हार । पापीपामरपतितहू, गमनतआपअगार ॥
तौपुनिजोप्रभुरावरे, दरशपरशपदकंज । कहँअचरजतरिजातहैं, नाशअघनकेगंज ॥ ४३ ॥
स०-जसरावरोतीनहुलोकनमेंतनोतानोदिशानवितानवनो॥पदकंजनकोमकरंदमदागिकिननामकमम्मरमोर
तिमिभोगवतीभोपताललोंजोंयसुरारिननाशतपापगनो ॥अवनीमेंतरंगिनीगंगभयोरघुराजकियोजगपूतपनो

श्रीशुक उवाच ।

सोरठा—मुनिनारदकेबैन, यदुपतिअतिमोदितभये । बोलेमंजुलबैन, रामओरदरिदेरिकै ॥

श्रीभगवानुवाच ।

[illegible] । दूतभेजितेविनतीकीन्हें ॥ फेरिआयनारदमुनिराई । हस्तिनपुरकी[illegible]

पांडवराजसूयअभिलाषी । मेरीआशउरहिकिरिराषी ॥ उचितप्रथमगमनवकहँकेरो । याकोआरजकरहुनिबेरो ॥
कृष्णवचनसुनिकह्यअलिराई । मेरेमनअसउचितजनाई ॥ शरणागतकोरक्षणकरिबो । सबतेअधिकधर्मध्रुवधरिबो ॥
तातेकूचकरहुहरिआजू । मारहिमागधसहितसमाजू ॥ सबभूपनकोलेहिछोड़ाई । मोहितोसमरउचितयदुराई ॥
दोहा-पांडवतोममदासहैं, अनुचितमनिहैंनाहिं । मारिमागधैआयपुनि, करवाउबमखकाँहिं ॥
पूँछिलेहुसबवीरनपाँहीं । उचितहोइसोकरहुसदाहीं ॥ तबसात्यकिप्रद्युम्नप्रवीरा । गदकृतवर्मसांबरणधीरा ॥
कहेसबैअतिशयसुखमानी । भलीबातयहतातबखानी ॥ जरासंधपरकरबचढाई । हमसबकहँयहउचितदेखाई ॥
मागधकहँदलसहितसँहारी । इंद्रप्रस्थकहँफेरिसिधारी ॥ करवाउबपुनिभूपहिजागै । यहीमंत्रहमकोप्रियलागै ॥
यदुपतिसुनियदुवंशिनवानी । उद्धवसोंअसबातबखानी ॥ ४५ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धवतुमहौनैनहमारे । सुहृदमंत्रकेजाननहारे ॥
दोहा-भापहुमंत्रविचारिकै, उचितजोयामेंहोइ । प्रीतिसहितसबभाँतिसोइ, करिहैंहमसबकोइ ॥ ४६ ॥
तहँउद्धवयदुनाथको, शासनधरिनिजशीश । मृदुलवचनबोलनचह्यो, सभामध्यअवनीश ॥ ४७ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे सप्ततितमस्तरंगः ॥ ७० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-नारदकोअरुकृष्णको, अरुवृद्धनमतदेखि । बोल्योउद्धववचनतहँ, बुद्धिविचारिविशेखि ॥ १ ॥

उद्धव उवाच ।

धर्मभूपकोयज्ञकरावन । जौनकह्योनारदमुनिपावन ॥ मगधदेशतेदूतहुआई । सबभूपनकीविनयसुनाई ॥
तासुउचितजोमोमनआयो । सोमैंतुमकोचहौंसुनायो ॥२॥ प्रथमपधारहुहस्तिनपुरको । जहाँभूपधरधर्महिधरको॥
करवावहुमखताहिमुरारी । तामेंहोतदिगविजयभारी ॥ दिशाविजयमहँमागधकाँहीं । जीतिलेहुगेसंशयनाँहीं ॥
यामेंउभयअर्थबनिजैहैं । धर्मभूपहूआनँदपैहैं ॥ ३ ॥ औरहुहोइहिअर्थहमारा । नाथलहौगेसुयशअपारा ॥
दोहा-बंदिछोरिसबनृपनकी, इंद्रप्रस्थसिधाइ । राजसूयकरवाइये, धर्मभूपकोचाइ ॥ ४ ॥
मागधभूपमहाबलवाना । दशहजारगजजोरमहाना ॥ दूजोहैनाहिंताहिसमाना । एकभीमतेहिसममजाना ॥ ५ ॥
सातअक्षौहिणिजोरिजेजैहौ । तऊनसन्मुखजीतनपैहौ ॥ हैब्रह्मण्यधर्मधुरधारी । नाहिंकनहुँनमुखेउचारी ॥ ६ ॥
तातेभीमपार्थअरुआपू । विप्ररूपधरिगोइप्रतापू ॥ जरासंधकेद्वारेजाई । माँगेहुयुधदानिताहेखाई ॥
आपुकृपालहिभीमप्रचंडा । करिहैंजरासतहिंद्वैखंडा ॥ ७ ॥ आपुसमीपवृकोदरजीती । तासुहननकीऔरनरीती॥
दोहा-जगउत्पत्तिअरुनाशको, परमहेतुहोआप । पैविधिशिवमुखतेकरहु, हेतुवकालप्रताप ॥ ८ ॥
श्लोक-गायंतितेविशदकर्मगृहेषुदेव्योराज्ञांस्वशत्रुवधमात्मविमोक्षणंच ।
गोप्यश्चकुंजरपतेर्जनकात्मजायाःपित्रोश्चलब्धशरणामुनयोवयंच ॥ ९ ॥
दोहा-नाथजरासुतकेहने, हैहैबहुसुखभाग । मागधकेमारेविना, होइहिपूरिनयाग ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिकैउद्धवचुपह्वैकै । रहेकृष्णकेसन्मुखज्वैकै ॥ उद्धवमंत्रसुनतसुखपागे । तबयदुनाथसराहनलागे ॥
यदुवंशीजेवृद्धमहाने । बारबारउद्धवहिंबखाने ॥ नारदमुनिउरआनँदराखे । कह्योउद्धवतुमभलभाखे

पुनिलसतिगोलगयंदकीसाजेसकलशृँगारहैं। डगधरतमंदहिमंदमगमदझरतजलधरधारहैं॥
पुनितासुपीछेनालकीमणिजालकीजिनसोभहै। नारींसिंगारीचलींसंगजिनलखतरंभहुछोभहै॥
दोहा-यहिविधिलैयदुनाथदल, चलेधर्मनृपपाहिं। बंदीगणविरदावली, भाषतसंगहिजाहिं॥ १७॥
प्रथमअनर्तदेशमधिजाई। करतभयेडेरायदुराई॥ पुनिसौवीरदेशगेनाथा। पुनिमरुदेशहिकियोसनाथा॥ २१॥
दृपदवतीसरिउतरिमुरारी। सरस्वतीतिमिउतरिसुखारी॥ पुनिपंजाबदेशकरिडेरा। मच्छदेशपुनिकियोवसेरा॥
गिरिगोशालनग्रामनमाहीं। सैनसहितनिवसतहरिजाहीं॥ कुरुक्षेत्रआयेयदुराई। खबरिधर्मभूपतितबपाई॥ २२॥
साजिसैनचतुरंगिनिराजा। जोरिसबैपांडवनिसमाजा॥ विप्रनसुहृदनसंगलेवाई। चलेलेनहरिकीअगुवाई॥
दोहा-चलेजातअतिशयमुदित, छनछनगिराउचारि। आजुलखबयदुराजको, धनिधनिभागहमारि॥२३॥
गणिकागणगावतसँगजाहीं। चहुँकितमंगलशोरसुहाहीं॥ पढेंविप्रगणवेदसुहावन। थारनलियेदूबदधिपावन॥
औरहुमंगलसाजुसमारी। आगेकलशलियेद्विजनारी॥ उतैवामदेहस्तिनपुरको। छावतदिशनिधूरिसुरपुरको॥
आयेइंद्रप्रस्थमुरारी। देखिपरीसेनाअतिभारी। हरिहिहेरिपांडवसुखछाये। इंद्रियगणजनुप्राणहिपाये॥ २४॥
हरिकहँदेखतपांडवधाये। नैननआनँदनीरबहाये॥ हरिहुलसतउतरेरथतेरे। गयेपांडवनकेचलिनेरे॥
दोहा-हरिहिलपटिगेपाँचहूँ, रहिगोतननसँभार। पुनिपुनिपरसतनाथपद, आनँदउमँगअपार॥
बहुतकालमहँप्राणपियारे। धर्मभूपयदुनाथनिहारे॥२६॥ मिलेरमापतिकोपुनिराजा। गन्योंसिद्धआपनसबकाजा॥
नैननीरपुलकावलितनमें। भूलीसुधिसिगरीतेहिंछनमें॥ मिल्योभीमपुनिकैप्रभुकाहीं। जलधिप्रेमबाढ्योदृगमाहीं॥
नकुलऔरसहदेवहुदोऊ। लीन्हेंप्रभुहिअंकभरिसोऊ॥ गद्गदगरोकढतनहिंबानी। पांडवदशानजायबखानी॥
पुनियदुपतिअरुअर्जुनधाई। मिलेवीरदोऊसुखछाई॥ रहेदंडदुइलगिनहिंछूटे। उभयप्रेमबंधनमहँजूटे॥ २७॥
दोहा-यदुपतिपारथछूटिपुनि, करिनिजतनहिंसम्हार। यथायोग्यपुनिमिलतभे, जाकोजसअधिकार॥
यदुपतिधर्मभूपपदबंदे। भीमहुकहँतैसहीअनंदे॥ मिलेअंकभरिअर्जुनकाहीं। तेसुखइकमुखनहिंकहिजाहीं॥
फेरिनकुलसहदेवहुधाये। प्रभुपदपद्मपुलकिशिरनाये॥ भीमयुधिष्ठिरआशिषदीन्हें। विजयनरोबरबंदनकीन्हें॥
नकुलऔरसहदेवहुकाहीं। आशिषदियदुनाथतहाँहीं॥ पुनिप्रद्युम्नसांबगदवीरा। सात्यकिअनिरुधउद्धवधीरा॥
कियेपंचपांडवनप्रणामा। परममोदउपज्योतेहिंठामा॥ तिनकहँपांडवअंकलगाई। आशिषदियदृगनीरबहाई॥
दोहा-पुनिवृद्धनअरुब्राह्मणन, यदुपतिकियेप्रणाम। तिनआशिषदियविविधविधि, पूजैसबमनकाम॥२८॥
सृंजयकैकयवंशिनकाँहीं। यदुपतिकियसत्कारतहाँहीं॥ पुनिहरिसोंपाँडवकुशलाई। पूँछनलगेप्रीतिअधिकाई॥
सबसेकुशलप्रश्नहरिकहिकै। पूँछ्योतिनकीकुशलउमहिकै॥यथायोग्ययदुवंशिनकाँहीं। पांडवपूँछीकुशलतहाँहीं॥
मागधबंदीसूतअपारा। बिरदबखानहिंबारहिबारा॥ २९॥ शंखमृदंगपटहअरुबीना। गोमुखपणवबजेसुरपीना॥
करहिंनृत्यगणिकागणनाना।गायकतहाँकरहिंगुणगाना॥अस्तुतिकरहिंविप्रहरिकेरी।बारबारयदुपतिमुखहेरी॥३०॥
दोहा-तहँअर्जुनकोकृष्णप्रभु, रथपरलियोचढ़ाय। आगूकेनृपधर्मको, चलेनगरसुखपाय॥
नगरप्रवेशकियोयदुनाथा। पुरवासिनकहँकियोसनाथा॥३१॥ इंद्रप्रस्थअनूपमशोभा।निरखतजाकोशक्रहुलोभा॥
गजमदतेगलियाँसबसींचीं। फहरहिंध्वजादिनेशनगींचीं॥ चामीकरतोरणचहुँओरा। धरेकनकघटठोरहिंठोरा॥
तहँदुकूलभूषणसुममाला। इंद्रप्रस्थनगरकीबाला॥ मज्जनकरिअँगरागलगाई। थारनभरिमुक्तामुदाई॥
हरिदर्शनहितललकतधाई।निजनिजद्वारखड़ीछबिछाई।दर्शनपावतमुक्तलुटावें।नायहिअनमिपललिसुखपावें॥३२॥
दोहा-गृहगृहपैदीपावली, सुंदरमंदिरतुंग। सुरभिधूमझकियनकढ़त, लसहिपताकउतंग॥
चामीकरकलशाचयचमकें। तिनमहँरतननकीद्युतिदमकें॥ऐसोलखतनगरयदुराई।गयेयुधिष्ठिरमहलमहाई॥३३॥
यदुपतिआगमसुनतसुखारी।भईमहीपमहलकीनारी॥लोचनसफलआशअबजेही।हरिहिनिरखिकिमिकोरनहिंलेही॥
असकहिगृहकोकाजबिसारी।भूषणवसनहुनाहिंसुधारी॥ ढीलदुकूलबंधअरुकेशा।चढ़ीअटारिननारिसुवेशा॥३४॥

जवगेराजचौकमेंनाथा। तबसंहर्पभयेजनसाथा॥ रथतुरंगमातंगनसंगा। पीसेंजाययदपिजनअंगा॥

दोहा—रेलिरेलितद्यपिकढै, घुसिघुसिहरिढिगजाय। करहिंनगरवासीदरश, अनिमिपनैनलगाय॥

रानिनसहितकृष्णकहँदेखी।चढ़ींअटातियमुदितविशेपी॥वरापिकुसुमहरिकहँलियछाई।इकटकलखहिंमंदमुसुकाई॥

इंद्रप्रस्थभलेहरिआये। हमहुसवैलोचनफलपाये॥३८॥ पुनिलखिहरिरानिनकहँनारी। मोदितह्वैअसगिराउचारी॥

रानीहरिसँगसोहहिंकैसे। तारापतिसँगताराजैसे॥ पूरवपुण्यकौनइनकीनी। भईकृष्णकीवधूप्रवीनी॥

रसिकशिरोमणिजिनयदुराई।लीलासहितमंदमुसकाई॥कलाकलितअतिआनंददेहीं।छनछनतियसुपमासुखलेहीं३६

दोहा—उपरोहितधौम्यादितहँ, जदुपतिनिकटसिधारि। दधिअक्षतदैभालमें, रथतेलियोउतारि॥

विप्रवेदभापतहरिसंगा। भरेअनंदउमंगअभंगा॥ करतनिछावरमणिगणनाना।यदुपतिसँगमहँकियेपयाना॥३७॥

चलेकृष्णअंतःपुरकाहीं। रहीपृथाद्रौपदीजहाहीं॥ तहँअंतःपुरकेजनआये। विकसेकमलसरिसमुखभाये॥

हाँकतविजनचमरकरढारैं। जयहरिजयहरिवचनउचारैं॥ गयेराजमंदिरयदुनाथा। प्रद्युम्नादिलियेसवसाथा॥३८॥

कुंतीहरिकहँआवतदेखी। धन्यभाग्यअपनीतहँलेखी॥ तजिपर्यंकआशुउठिधाई। लियोकृष्णकहँअंकलगाई॥

दोहा—रह्योनतनकसम्हारतन, वहतनैनजलधार। प्रेमहिपारावारमहँ, मगनभईतेहिंवार॥

पुनिसम्हारिनिजसंगलिवाई। यदुपतिकहँआसनवैठाई॥ लगीचरणचापनचितचाई।इकटकमुखमहँनैनलगाई३९॥

तहाँयुधिष्ठिरअतिसुखपागे। कृष्णकमलपदपूजनलागे॥ पूजनमेंह्वैगयविपरीती। रहीनसुधिबाढीअतिप्रीती।

प्रथमहिनीराजननृपकीन्हें। दीपहिदैधूपहिपुनिदीन्हें॥ दैप्रदक्षिणासुमनचढ़ायो। चंदनदैनैवेद्यलगायो।

पुनियदुपतिकेचरणपखारी। धर्मभूपलीन्ह्योंशिरधारी॥४०॥पुनिगुरुनारिनकहँयदुराई। वंदनकीन्ह्योंशीसनवाई।

दोहा—पांचालीकोवंदिकै, दीन्ह्योंफेरिअशीस। आयसुभद्राकृष्णके, नायोचरणनशीस॥ ४१॥

पांचालीकहँपृथाबुलाई। मृदुलवचनअसदियोसुनाई॥ हरिरानिनकहँल्यावहुजाई। पृथकपृथकगृहदेहुटिकाई।

द्रुपदसुतासुनिआशुहिधाई।सवहरिप्यारिनकहँशिरनाई॥रुक्मिणिजांववतीसातिभामा॥४२॥भद्राकालिंदीछविधामा

शैव्याअरुअवधेशकुमारी। औरमित्रविंदाछविभारी॥ इकशतसोरहसहससुरानी। इनसवकोनिजमंदिरआनी

वारवारमिलिद्रुपदकुमारी।कुशलप्रश्नपूँछीसुखकारी॥ सवकोविधिवतपूजनकीन्ह्यों। भूपणवसननजारिबहुदीन्ह्यों

दोहा—सुमनमालगलडारिकै, अँगअँगरागलगाय। पृथक्पृथक्मणिमंदिरन, दीन्ह्योंतिन्हैंटिकाय॥

हरिकुंतीसोंविदामाँगिकै। धर्मभूपसँगमोदपागिकै॥ प्रभुअर्जुनकोपाणिपकरिकै। अंतःपुरतेआशुनिकरिकै

वाहेरआयेआनँदछाई। धर्मभूपतहँप्रीतिवढाई॥ निजमंदिरमहँरमानिवासैं। दीन्ह्योंसाजिसाजसुखरासैं

यथायोग्ययदुवंशिनकाँहीं। डेरादीन्ह्योंभूपतहाँहीं॥ चारिमासतहँरहेमुरारी। इंद्रप्रस्थजनकरतसुखारी

सैनसुभटवाहनअरुरानी।सचिवनसहितहरिहिसुखमानी॥भूपणवसनविविधपकवाना।नितानितनवनवदियोमहाना

दोहा—पुनियदुनंदनपार्थयुत,खांडववनकहँजाय। वासवकोमदमोरिकै, अग्निहिदियोजराय॥

मयदानवपरकरिकृपा, ताकोलियोवचाय। धर्मराजकीसो[illegible], दीन्हीदिव्यवनाय॥ ४५॥

धर्मभूपकेप्रीतिहित, वसेतहाँयदुनाथ। वनविहरतप्रभुभटनयुत, चढिरथअर्जुनसाथ॥ ४६॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे एकसप्ततितमस्तरंगः॥ ७१॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—एकसमयदरवारमें, बैठेधर्मनरेश। भीमादिकभ्रातासवै, सोहतसुंदरवेश॥ १॥

व्यासादिकमुनिनदसमुदाये। औरजनापपुरोहितआये॥ ज्ञानिनातवांधवछविछाये। अरुकुटुम्बजनतहँ[illegible]

ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यहुजेते। इंद्रप्रस्थरहेबुधतेते॥ सबभूपतिदरबारसिधाई। बैठेआइनृपहिशिरनाई॥
तहँयदुवंशिनसहितसमाजा।आयेसभामध्ययदुराजा॥ धर्मभूपउठिवंदनकीन्ह्यों। कनकसिंहासनआसनदीन्ह्यों॥
सबयदुवंशिनकरिसत्कारा। बैठायोनृपधर्मउदारा। सकलसमाजैतहँसुनाई। हरिसोंकह्योयुधिष्ठिरराई॥ २॥

श्रीयुधिष्ठिर उवाच।

दोहा-मेरेमनअभिलापअस, पूरकरहुयदुनाथ। राजसूयकरवाइकै, मोकोंकरहुसनाथ॥
छंद-मखराजमेंप्रभुपूजितुमकोमोहिंनकछुआशारही। मोपैकृपाहैआपकीयहबातजगजानतसही॥ ३॥
जेरावरेचरणारविंदअनंदनितध्यावतरहैं। जेदेनमंगळचरिततिहरेगावतेनितहीमहैं॥
जेमनुजपावनजगतमेंअपवर्गकोहठिपावहीं। नहिंलहतसोकुमतीकबहुँयहवेदचारिहुगावहीं॥ ४॥
प्रभुरावरेचरणारविंदाहिकृपाकोफलजगलखै। जेभजहिंतुमकोनहिंभजैतेउलखैतुमकोचखै॥
अपनोप्रभावलपाइयेममयज्ञमेंसबजननको। मैंतोकछूनहिंकरनलायककरतनिततुवमननको॥ ५॥
सर्वात्महौसमदिष्टसबपरनित्यआत्मारामहौ। नहिंभेदजेजसभजततुमकहँदेततेहितसकामहौ॥
दोहा-धर्मभूपकेवचनसुनि, यदुपतिअतिहरपाय। बोलतभेमंजुलवचन, सभासदानिसुनाय॥ ६॥

श्रीभगवानुवाच।

विचारकियोनृपराई। ह्वैहैलोकनकीर्तिमहाई॥ ७॥ ऋपिनसुरनसुहृदनपितरनको। राजसूयहैमेरेहुमनको॥
तयहीजगतकेप्रानी। करहियुधिष्ठिरमखसुखदानी॥८॥सबभूपनकोजीतिनरेशा।सकलपुहुमिफैलायनिदेशा॥
कैसकलयज्ञसंभारा। राजसूयनृपकरहुउदारा॥९॥लोकपालसमयेतुवभ्राता। तीनहुँलोकनमेंविख्याता॥
योगिनसोंजीतिनजाहू। सोमोहितुमवशकियनरनाहू॥१०॥जेमोपरहैंसदासनेही। धनहुँधाममममहिततजिदेहीं॥
दोहा-तिनकेसमयशतेजमें, देवहुहैनृपनाहिं। तौपुहुमीकेपुहुमपति, कैसेसमताताहिं॥ ११॥

श्रीशुक उवाच।

तवचनयदुपतिकेराजा। लह्योमोदउरमाहँदराजा॥ विकस्योवदनकमलनृपकेरो। कृष्णअनुग्रहगुन्योघनेरो॥
हुदिशाजीतनअरित्रासन। दीन्ह्योंचारिउभ्रातनशासन॥कृष्णकृपालहिपांडववीरा।चलेदिशाजीतनरणधीरा॥१२
क्षिणदिशिसहदेवसिधारे। सृंजयवंशिनसुदलसमारे॥ पश्चिमनकुलगयेयुतसैना। उत्तरअर्जुनगेबलऐना॥
योवृकोदरपूरबओरा। कैकयमद्रमत्स्यबलघोरा॥ १३॥ तेसबदिशननरेशनजीती। लैलैडाँडफेरिकरिप्रीती॥
दोहा-लैलैसोधनआशुही, आयेनृपतिसमीप। राजसूयकरवावने, जुरिगेसबैमहीप॥ १४॥
ह्योधर्मनृपतबहरिपाँहीं। याशंकाहैमोमनमाँहीं॥ मगधमहीपजीतिनहिंजाई। ताकीयदुपतिकरहुउपाई॥
वयदुराजवचनअसभाखे। उद्धवप्रथमहिमोहिंकहिराखे॥सोइउपायकरिमागधकाँहीं।जीतिलेयकछुसंशयनाहीं१५
सकहिपार्थभीमकहँलैके। कृष्णविप्रकोवेशहिकैकै॥गयेगिरिव्रजकहँत्रयवीरा। वसतजरासुतजहँरणधीरा॥१६॥
सुरीतियहरहीसदाँहीं। पहरदिवसलगिद्वारेमाँहीं॥ बैठतरह्योदेतबहुदाना॥ जोजसमाँगैताहिमहाना॥
दोहा-सोईसमयविचारिकै, भीमविजययदुराय॥ विप्ररूपधारेसबै, कहेवचनतहँजाय॥ १७॥
महाराजहमअतिथिहैं, सुनिदानीतुवनाम॥ दूरदेशतेआयकै,माँगतहैंमनकाम॥
मोहममाँगैंसोतुमदेहू। करहुनमनमेंकछुसंदेहू॥ १८॥ शीलवानकोअसहनकोई। जिमिशठसहजकरहिमरजई।
काअदेइहैदानिनकाँहीं। समदरशीकोपरकोउनाँहीं॥१९॥ जाकेविभौविभूतिमडाई। सोयशकोनहिंकियासमुदाई।
यहअनित्यतनकोनितपाल्यो।दीननकोदारिदनहिंघाल्यो।सोइसबविधिशोचनलायक।जियतहिमरयोगुन[illegible]
रंतिदेवअरुनृपहरिचंदा। शिविअरुबीरविरोचननंदा॥ उंछवृत्तिनृपव्यापकपोतू। दानदियोनप्रा[illegible]
दोहा-यहअनित्यतनतेसबै, करिदीननउपकार। गवनतभेसुरपुरसही, अबलोंसुयशअपार॥ २०॥

श्रीशुक उवाच।

सुनितीनोंविप्रनकीवानी। मागधराजमनहिंअनुमानी॥ इनकेशोरकठोरअघाता। लग्योकरनमेंज्याकरघाता॥
इनकोरूपद्विजनकसनाँहीं। कबहूँहमदेख्योइनकाँहीं॥ २२॥ हैंनहिंद्विजक्षत्रीहैंकोई। आयेअपनेरूपहिगोई॥
असविचारबोल्योमगधेशा। तुमक्षत्रीधारेद्विजवेशा॥ पैहमरेहगृमाँगनआये। दानकालमहँवचनसुनाये॥
देहैंहमजीवहुतुमकाँहीं।जोसबकोप्रियपरमसदाँहीं॥२३॥बलकीकीरतिचहुँदिशिछाई।हमरेहुकाननपरीसुनाई॥२४॥

दोहा—विप्ररूपधरिविष्णुतहँ, देनइंद्रकहँराज। माँगनगेबलिराजपहँ, साधनहितसुरकाज॥

जदपिविष्णुकहँजानिहुँलीन्ह्यो।शुक्राचारजवारणकीन्ह्यो॥तद्यपिवामनकहँबलिराई।त्रिभुवनराजदयोमुखछाई॥२५
जोक्षत्रीविप्रनकेहेतू। दियोनधनजीवहुनिजनेतू॥ तासुजन्महैजगतवृथाहीं। श्वानसमानजियतमरिजाहीं॥२६॥
असगुनिपुनिबोल्योमगधेशा। तीनिहुभटजेधृतद्विजवेशा॥ माँगहुजौनविप्रमनहोई। देहौंतुम्हैंशीशहूँसोई॥
सुनिमागधकेवचनमुरारी। मंदमंदअसगिराउचारी॥ २७॥

भगवानुवाच।

द्वन्द्वयुद्धहमकोनृपदेहू। करहुजोहमपरतुमअतिनेहू॥

दोहा—युद्धहेतुआयेइतै, औरनहैकछुकाज। हमक्षत्रीहैंविप्रनहिं,यहजानोमहराज॥ २८॥

यहतोपार्थवृकोदरनामा।तासुबंधुअर्जुनबलधामा॥इनकोमातुलसुतअनुमानो।कृष्णनाममोहिंनिजरिपुजानो॥२९॥
कृष्णवचनसुनिमागधराई। दैतारीकरहँस्योठठाई॥कोपितकह्योसुनहुमतिमंदा। देहौंअवशितुम्हहिंयुधद्वंदा॥३०॥
यदुपतितोसोंलरिहौंनाँहीं। तेकादरहैंसंगरमाँहीं॥ रहतनयुधमहँचितथिरतेरो। सदाअहैतेछलीघनेरो॥
मोहिंडरमथुराछोंडिपराई।कियोवाससागरमधिजाई॥३१॥अर्जुनतोबालकसबभाँती।निरखतयहिदायाबढ़िजाती॥

दोहा—विक्रमहूऔवपुपमें, मोतेसबविधिहीन। याजानेयुधकरननहिं, योधाहैयहदीन॥

भीमसेनअतिशयबलवाना। मोसोंहैयुधकरनसमाना॥ ताकौमैंविशेपियुधदेहौं। लैहौंयुधकीयमपुरजैहौं॥३२॥
असकहिगृहमेंजायभुवाला। द्वैद्रुतल्यायोगदाविशाला॥ एकगदाअपनेकरलीन्हीं। भीमसेनकहँदूसरदीन्हीं॥
गयोनगरबाहिरमगधेशा। ताक्षणभयोभयंकरवेशा॥ ३३॥ भीमहिलैअर्जुनयदुराई। मागधढिगगेकरनलड़ाई॥
ऊंचनीचजहँनाहिंथलरहेऊ। कोमलभूमियुद्धतहँठयऊ॥ इतहिंभीमउतमगधभुवाला।वज्रसरिसगहिगदाकराला॥

दोहा—रणदुर्मददोउप्रबलअति, दोऊदुहुनप्रचारि। दोऊदोहुनडाटिकै, करनलगेतहँरारि॥ ३४॥

प्रमाणिकाछंद—करैअनेकमंडलै। गदासुपाणिचंडलै॥ जराकुमारदक्षिणै। तौवामभीमदक्षिणै
कहूँसुदूरजातहैं। कहूँभिरेदेखातहैं॥ कहूँलरैंअकासमें। कहूँमहीविलासमें॥

दोहा—भीमसेनमागधतहाँ, शोभितभेतेहिठोर। रंगभूमिमेंयुगलनट, लरहिंमनहुकरिजोर॥

भुजंगप्रयातछंद—तहाँचटचटाशब्दछायोअखंडा। मनोवज्रकोपातहोतोप्रचंडा॥
उड़ैंत्योंगदाकेकनाजोतिजागे। महीमेंझरैंतारमानोंअदागे॥
मनोमत्तमातंगदंतैप्रहारैं॥ ३६॥ जरासंधभीमौगदाताकिमारैं॥
भुजापाणिपादौउरूकंधमाँहीं। हनैजोरतेवेगदाकोतहाँहीं॥
गदाकेलगेअंगह्वैचूरजाहीं। भरेक्रोधदोऊहटैनेकुनाहीं॥
जबैभीममारैतबैसोबचावै। जरासंधत्योंभीमसेनैनपावै॥
कितैपैंतरेधारिधावैंप्रवीरा। भिरैऔफिरैवेगनेनाहिंपीरा॥
मनोनागद्वैअर्कशाखागहेहैं। लड़ैंक्रोधधारेविजयकोचहेहैं॥ ३७॥
गदैदैगदामुष्टिसोंजोरभारी। हनैहाकिकैद्वैरिमाननदारी॥
दोऊवीरद्वैविक्रमीत्योंनमानै। दोऊशत्रुसोंहारिनेकोनमानै॥

दोऊहैंगदासंगरेमेंअतूले। दोऊशत्रुकेजीतिकेगर्वफूले॥
दोऊकेमुखेस्वेदकेबिंदुसोहैं। दोऊआपनोआपनोघातजोहैं॥
दोऊकेबढ्योयुद्धमेंवेगभारी। दोऊकीनजानीपरैआशुहारी॥
दोऊकेभयेलाललैनाविशाले। दोऊकेभयेरूपकालैकराले॥ ३८॥
दोऊकोपकैकैकरेंसिंहनादा। दोऊकेबढ्योयुद्धकोमोदजादा॥
दोऊवीरगाढेटरैंनाहिंटारे। दोऊनाँकुरेजगकेजैतवारे॥ ३९॥

दोहा–महाराजयहिभाँतिसों, सत्ताइसदिनयुद्ध। बसेरातिकेभीतसम, एकहिसेजअक्रुद्ध॥

अट्ठाइसोंदिवसजबआयो। हरिसोंकह्योभीमदुखछायो॥ मागधकोमेंसकतनजीती। लगहिनयदपिनेकहूभीती॥ भयेअंगसबचूरनमेरे।लगेगदाकेघातघनेरे॥ ४०॥ ४१॥ तबबोलेयदुपतिमुसकाई। आजुहिमरितुमकरहुलराई॥ देखेहुममदिशिकरतलराई। तबहमदेवउवायबताई॥ तैसहिभीमकियहुतुमतबहीं। शत्रुहिमरिहोदेखततबहीं॥ असकहिधरचोभीमपरतेजू।कहतबुझायदैतवहुजेजू॥तुमसमानकोजनविख्याता।करिहोअवशिजरासुतघाता ४२॥

दोहा–तहाँभीमअतिभीमभट, वंदिकृष्णपदकंज। युद्धकरनकोसजतभो, गंजिसकलदुखगंज॥

उतैमागधौसजितहँआयो। होनलग्योसंगरमनभायो॥ गदाशब्दतहँहोतकठोरा। मागधभीमकरतबहुशोरा॥ भीमलरतमागधसोंघिरिघिरि।ताकतहरियहँपुनिपुनिफिरिफिरि।यदुपतिश्रमितभीमकहँदेखी।करिदायाउरमाहँविशेषी भीमहिसन्मुखचितैमुरारी। लैइकसींकदुहूँकरफारी॥४३॥भीमसेनकहँकियोइशारा। तहँप्रमुदितह्वैपांडुकुमारा॥ करीचपलतालख्योनकोऊ। पकरिजरासुतकेपगदोऊ॥

दोहा–क्षितिमोंताहिपछारिकै॥ ४४॥ इकपदसोंपगदाबि। एकचरणगहिदोहुनकर, भीमसेनरनफाबि
बीचहितेमागधकोफारो।जिमिशाखाकहँगजमतवारो४५इकइगकरद्दगश्रुतियकओरा।तिमिवियखंडपरयोतेहिंठो
मगधभरेभोहाहाकारा। भीमलह्योतबमोदअपारा॥ अर्जुनऔमुकुंदसुखपागे। भीमहिबहुतसराहनलागे॥
भीमसेनकहँमिलेमुरारी। नृपप्रहारकीपीरनेवारी॥ भीमसेनभोपरमसुखारी। पूर्वसमानभयोबलभारी॥ ४७॥
मागधतनयनामसहदेवा। जानिनाथकरिहैममसेवा॥ कियअभिषेकभवनतेहिंजाई। दियोमगधकोभूपबनाई

दोहा–बंदीखानेआठसे, अरुनृपवीसहजार। तिनकोजायछोडायदिय, श्रीवसुदेवकुमार॥ ४८॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजश्री राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे द्विसप्ततितमस्तरंगः॥ ७२॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–बीससहसशतआठजे, मागधजीतेभूप। तेगिरिकंदरतेकढे, परममलिनजिनरूप॥ १॥

क्षुधाकृशितमुखगयोसुखाई।कैदपे।अतिशयदुखपाई॥ तेकढियदुपतिदरशनकीन्हें। परमभागअपनोंसब[illegible] पीतांबरसोहतछबिधामा।सुंदरतननवीनघनश्यामा॥२॥ उरश्रीवत्सचारिभुजभ्राजें। अरुणकमलदलसम[illegible] चारुवदनमनुपूरणचंदा। क्रीटशीसयुतरतननिवृंदा॥दिपतमकरकुंडलदुकपोला।छबिछलकैंअलकें[illegible] कटिकिटिसूत्रकड़ेकरमाहीं।राजतअंगदबाहुनपाहीं॥सरसिजगदाशंखअरुचक्रा।नासतअमितअरिनगन[illegible]

दोहा–कौस्तुभसोहतकंठमें, जाकीप्रभाविशाल। पाँचरंगकेसुमनकी, मंडितहैवनमाल॥

ऐसेयदुपतिकहँलखिभूपा।पायोतेहिंक्षणमोदअनूपा॥मनुद्दगछबिद्दगपानकराहीं। मनुर हरिपदकमलसुरभिनिजनासे।भ्राणकरहिंमनुसहितहुलासे॥भरहिंअंकमनुभुजापसारी। प्रेमदशान

कियेपुहुमिपरदंडप्रणामा। भिन्नभिन्नकहिसबनिजनामा ॥६॥ निरखतमाधवपदअरविंदा।छूटेजोभूपनकोदुखद्वंदा॥ सिगरेलगेसराहननाथे। अस्तुतिकरीजोरियुगहाथे ॥ ७ ॥

राजोवाच।

देवदेवजयजयतिरमेशा। दासनकोदुखहरहुहमेशा ॥

दोहा—शरणागतहमआपके, अहैंसबैयदुनाथ। भवनिधितेद्रुतकाढिये, गहिहमारप्रभुहाथ ॥ ८ ॥

छंद—चौपैया—हमजराकुमारैभलोविचारैकैदकियोजोल्याई। सुधिआपहमारीकरीमुरारीतुवछबिदृगमहँआई ॥ तुवकृपामहाईजापरआईतबछूटतजगजाला। सोइबुद्धिविशालारूपरसालाहोतनाथततकाला ॥ ९ ॥ इश्वजेमदमातेनृपदुखपातेजानतनहिंकल्याना। तबमायामोहैधनप्रियजोहैसोअनित्यहमजाना ॥ १० ॥ मृगतृष्णाकाँहींजलमनमाहीं।जिमिधावतगुनिप्यासो।तिमिजगतभुलानोतुमहिंनजानोसतिमानतधनवासो॥११॥ हमश्रीमदछयकैअंधहिह्वैकैप्रथमाहिरिपुजयआसा। जनहनेपरस्परशठतातत्परछोडिआपकीत्रासा ॥ १२ ॥ ताकोफलपायोविभोगमायोकैदभयेइतआई। प्रभुदीनदयालाअबयहिकालासुरतिआपकीपाई ॥ १३ ॥ हमचहैंनराजूअतिदुखसाजूयहप्राकृततनहेतू। लघुकालहिकेरोमोदघनेरोवासननाकनिकेतू ॥ १४ ॥ असदेहुबताईनाथउपाईजामैंतवपदकंजे। मनमधुपसदाहींवसितिनमाहींतुवकीरतिकलगुंजे ॥ १५ ॥ वसुदेवकुमारैकृष्णउदारैश्रीहरिदयाअपारे। दासनदुखदारेसुयशपसारेश्रीगोविंदमुरारे ॥ निजआयुधधारेकीटसँवारेसुंदरतनघनकारे। उरमंजुलहारेदृगअरुणारेरक्षकअहौहमारे ॥ १६ ॥

शुक उवाच।

दोहा—कैदछुटेराजासबै, यहिविधिअस्तुतिकीन। तबतिनसोंकरुणायतन, मंजुवचनकहिदीन ॥ १७ ॥

भगवानुवाच।

आजुहितेलैसुमतितिहारी। अखिलईशमोमहँसुखकारी॥लगीरहींअबटरिहिनटारी।तुवउरउपजीभक्तिहमारी॥१८॥ सबैसत्यजोगिराउचारी। यहतोमनमेंभलीविचारी ॥ मेरेशरणभयेरतिधारी। लैहौंतुमकोआशुउधारी ॥ जिनकेधनमदहैतनभारी। सुखीनहौंमैंतिनाहिनिहारी॥१९॥हयहयनहुषवेनमहिधारी। नरकासुररावणअपकारी॥ औरहुवेददनुजनृपभारी।श्रीमदतेसबभयेदुखारी॥श्रीमदवशममसुरतिबिसारी। उभयलोकशठदीनबिगारी॥२०॥

दोहा—यहविचारितुमभूपसब, जगअनित्यजियजानि। प्रजारक्षियेधर्मयुत, पूजहुमोहिमखठानि ॥ २१ ॥

राखहुजगमहँनिजनिजवंशा।सममानेहुअपवादप्रशंसा।।तैसहिदुखसुखमानिसमाना।विचरहुजगमहँधरिममध्याना॥ उदासीनह्वैदेहादिकमहँ।धृतव्रतकरिसंतोषीमनकहँ।।मोमहँमनलगायतजिकामा। अंतसमयजैहौममधामा॥ २२ ॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिभूपनकहँयदुराई। बहुपुरुषननारिनबोलवाई ॥ मज्जनअरुअँगरागकराई। सबभूपनपैंकृपादिखाई ॥ २३ ॥ पुनिसहदेवहिंनाथबोलाई। ऐसोकह्योताहिसमुझाई ॥ सुनियेमागधराजकुमारा। करियेभूपनकरसतकारा ॥

दोहा—सुनिसहदेवअनंदलहि, भूपनकोसनमान। करनलग्योश्रीकृष्णको, शासनसहितविधान ॥

भूषणवसनअनूपमदीन्हें। सुमनमालरंजितगलकीन्हें ॥२५॥ अपनेसँगभोजनकरवाये। भोगवस्तुदीन्ह्योंसुखछाये॥ सादरबीरानृपनिखवायो। चमरछत्रकरिअतरलगायो ॥२६॥ लहिसहदेवकेरसत्कारा। भयेमहीपतिमुदितअपारा॥ कुंडलकटककीटशिरधारे। प्रभुकहँवंदेपाणिपसारे ॥ बंदिद्वंदहतसोहतकैसे। पावसअंतअमलउडुजैसे॥२७॥ रथतुरंगमातंगचढाई। मणिभूषणबहुविधिपहिराई॥ कहिकहिमंजुलवचनमुरारी।विदाकियेकरिनृपनसुखारी॥२८॥

दोहा—हरिकेछोरेबंदिते, भूपतिअतिसुखमानि। निजनिजदेशनकोगये, नाथचरणउरआनि ॥ २९ ॥

गृहमेंबसेकृष्णयशगावत।शासनधरनिकियेहरिध्यावत।जेहिंविधिशासनयदुवरदीन्ह्यो।भूपतिसकलताहिविधिकीन्ह्यो

दोहा–भिरतजानिपांडवनको, उठिआशुहियदुनाथ। बरजतभेकुंतीसुतन, चलितिनकोगहिहाथ॥
नाथकह्योयासोंनाहिंभिरहू। कहोहमारमानितुमफिरहू॥ आवनदेहुइतौशिशुपालै। बँचिआयोयहशठवहुकालै॥
कृष्णहिदेखतचेदिपराई। चल्योकोपिपांडवनविहाई॥चक्रचलाइतहाँयदुनाथा। लियोकाटिचेदिपकरमाथा॥४३॥
गिरयोभूमिमहँभूपभयावन। तेहिपक्षीनृपकियोपरावन॥सभामध्यकोलाहलमाचा॥ हरिप्रभावजान्योसबसाँचा॥४४॥
कढ़ीजोतिचेदिपकेतनते। प्रविशीहरिमुखगईनअनते॥निरखिसभासदअचरजमाने॥हरिचरित्रकाहूनहिंजाने॥४५॥
दोहा–इनकीत्रैजन्महिकथा, मैंवरनीमतिमान। वैरभावकरिकृष्णसों, हरिपुरकियोपयान॥
जैसोकरहिकृष्णमहँभाऊ।मिलहिताहितसकरनसुभाऊ॥कुंतीसुतलखिचेदिपनासा।लहतभयेहियपरमहुलासा ४६
र्मभूपऋत्विजनबोलाई। दियोदक्षिणाधनसमुदाई॥ विधिवतसबकोपूजनकीन्ह्यों। औरहुदानद्विजनकहँदीन्ह्यों॥
मुनिपरिवारसहितमतिवाना।सुरसरिकियअवभृथअस्नाना॥४७॥यहिविधिराजसूयकरवाई।धरमभूपकोआनँदछाई॥
कछुकमासतहँवसेमुरारी। करिपांडवनप्रीतिअतिभारी॥४८॥यद्यपिचहतनकृष्णविछोहू।हरिकोधर्मभूपयुतमोहू॥
दोहा–तदपिधर्मढिगजाइहरि, माँगिविदासकुचाइ। सदलसदारनगमनकिय,द्वारावतियदुराइ॥ ४९॥
पैवैकुंठनगरकेवासी। कह्योचरिततिनकोसुखरासी॥ विप्रशापतेपुनिपुनिआई। जगमहँलियोजन्मकुरुराई॥५०॥
करिअवभृथअस्नानसुवेशा। लस्योसभामधिधर्मनरेशा॥भूपनमध्यलस्योनृपकैसे।सुरपुरसुरयुतसुरपतिजैसे॥५१॥
सुरनरनृपमुनितहाँअपारा। पाइधर्मनृपसोंसत्कारा॥राजसूयऔहरिहिसराहत।निजनिजगृहनगयेसुखगाहत॥५२॥
येदुर्योधनकलिकोरूपा। राजसूयलखिपरमअनूपा॥धर्मभूपकोविभवनिहारी। सहिनसक्योअतिभयोदुखारी॥५३॥
दोहा–राजसूयशिशुपालवध, भूपनमोचनवंदि। हरिचरित्रजोसुनतयह, रहतिनतेहिअघदंदि॥ ५४॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहारा
जाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दा
म्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे चतुःसप्ततितमस्तरंगः॥ ७४॥

दोहा–राजसूयकीसुनिकथा, भूपपरीक्षितफेरि। प्रश्नकियोशुकदेवसों, वारवारमुखहेरि॥

परीक्षित उवाच।

राजसूयलखिधर्मनृपतिको।पायअवधिपरमानँदततको॥सुरऋषिनृपसबकरतबखाना।निजनिजगृहकहँकियेपयाना।
पैदुर्योधनलखिमुखकौंहीं। भयोउदासपरममनमाँहीं॥ ताकोकारणकहहुमुनीशा। दुखितभयोकसकुरुकुलईशा॥
सुनतपरीक्षितवचनसुहावन। कहनलगेश्रीशुकअतिपावन॥ २॥

श्रीशुक उवाच।

मायपितामहकेमखमाँहीं। असबांधवकियकाजतहाँहीं॥ धर्मभूपपैकरिअतिनेहू। करनलगेकारजमतिगेहू॥ ३॥
रमिसेनपकवानसोहावन। बनवावनलागेअतिपावन॥
दोहा–भयोभँडारेकोअधिप, दुर्योधनकुरुनाथ। उचितजहाँजसखर्चको, सोकीन्ह्योंनिजहाथ॥
हदेवहिनृपधर्मउदारा। सौंप्योकरननृपनसत्कारा॥ जेतीआमदनीतहँआवै। नकुलताहिलैकोशपठावै॥ ४॥
गुरुजनकेतहँसेवनमाँहीं। भूपतिराख्योअर्जुनकाँहीं॥ सबसाधुनकेचरणधोवावन। लगेतहाँयदुवरमनभावन॥
पदसुतातहँपरुसनलागी। विप्रनकोअतिशयअनुरागी॥ कर्णहिदियोदानअधिकारै। एकदेवावतदशदेहारै॥५॥
हैविकर्णहार्दिक्ययुयुधाना। अरुविदुरादिकसबैप्रधाना॥ भूरिश्रवादिकसहितकुमारा। बाह्लीकतहँपरमउदारा॥
दोहा–संतर्दनआदिकसबै,॥ ६॥ पायपृथकअधिकार। यज्ञकाजलागेकरन, मानिनृपहिअतिप्यार॥ ७॥
मंनृपतितहँहरिसोंभाषे। रामदशाकहँअतिअभिलाषे॥ बलभद्रहुकहँलैहुबोलाई। तौममयज्ञपूरह्वैजाई॥
पवचनसुनिअतिसुखपायो। यदुपतिरामहिंतुरतबोलायो॥ तहँजबहरिशिशुपालहँहारे।माधृननतबभयेसुम्हारे॥

लहैअग्रपूजनकोआजू । बैठेऋषिमुनिनृपनसमाजू ॥ यकतेएकअधिकदरशाही । परतनहींनिश्चयमनमाहीं ॥
दोहा–पुनिसबतेपूँछनलगे, सभासदनपहँजाय । तेउविचारिनहिंकहिसके, मौनरहेभ्रमल्याय ॥
शंकामचीसभामेंजबहीं । मुनिसहदेवकह्योअसतबहीं ॥१८॥ सुनहुसबैनृपवचनहमारा।जोहमकरिकैकहतविचारा॥
लहैंअग्रपूजनयदुराई । उचितसकलविधिमोहिजनाई ॥ येसज्जनपतिहैंभगवाना।सुरधनदेशकालप्रभुजाना ॥ १९॥
इनकोरूपविश्वकहँजानो । राजसूयइनवपुअनुमानो ॥ शांतयोगअरुआहुतमंत्रा । अग्निहुहैइनकेपरतंत्रा ॥२०॥
एकहियेइनसमनहिंकोऊ । अंतरयामीहैजगसोऊ ॥ इनकोनहिंकोउअहैअधारा । सिरजतपालतकरतसंहारा॥२१॥
दोहा–येईयदुपतिकीकृपा, पायसकलजगलोग । धर्मकर्मसबकरतहैं, लहतमुक्तिअरुभोग ॥ २२ ॥
अतोअग्रपूजनसुखछाई । देहुकृष्णकेचरणचढाई ॥ पूजतइनहिंपूजिसबजैहैं । धर्मभूपअतिआनंदपैहैं ॥ २३ ॥
पुनिपुनिकहहुँपुकारिपुकारी।सुनहुसभासदसज्जनभारी॥चहहुजोफलअनंतमखमाहीं।देहुअग्रपूजनहरिकाहीं २४॥
असकहिमौनभयोसहदेवा । जानतहरिप्रभावकरभेवा ॥ सुनिसहदेववचनमुनिराई । लगेसराहनअतिहरपाई॥२५॥
सबैसभासदसंमतकीन्हें । हरिहिअग्रपूजनकहिदीन्हें ॥ धर्मभूपतहँआनँदपाई । पूज्योकृष्णहिप्रेमबढ़ाई ॥ २६ ॥
दोहा–हरिकेचरणपखारिनृप, जगपवित्रकरवारि । मंत्रीअनुजकुटुंबतिय, सहितलियोशिरधारि ॥ २७ ॥
प्रभुकहँपीतांबरपहिरायो । भूपणअंगदिव्यसजवायो ॥ आनँदअंबुभरेदृगमाहीं । विधिवतपूजनकियोतहाँहीं ॥
प्रेमाकुलनृपधर्ममहाना । लगेकरनयदुपतिपदध्याना ॥२८॥ निरखिअग्रपूजनहरिकेरो । लहेसभासदमोदघनेरो ॥
हाथजोरिजयजयसबगाये । यदुनंदनकेपदशिरनाये ॥ नभतेसुमनदेवझरिलाये । बाजबजायकृष्णगुनगाये ॥२९॥
रह्योतहाँशिशुपालहुबैठो । कृष्णसुयशगुणसुनिअतिऐंठो ॥ उठिआसनतेहाथउठाई । हरिनिंदाकियनाहिंभयटाई ॥
दोहा–सभासदनसनकहतभो, बानीपरमकठोर । बीरबलीगर्वितमहा, नृपदमघोपकिशोर ॥ ३० ॥
कालअहैअतिशयबलवाना । सतिभापैयहवेदपुराना॥वृद्धनबुद्धिनीतिरसपागी। खोइजातिबालकमतिलागी॥३१॥
कहाकरहुरहेअनुचितभाई । अबतोमोसोंदेखिनजाई ॥ सबैपात्रकेजाननहारे । करहुकाजकसबिनाविचारे ॥
दियोअग्रपूजनजोकृष्णै । देहुसबैउत्तरममप्रश्नै ॥ ३२ ॥ होसबतपव्रतविद्याधारी । ज्ञानध्वस्तपातकमभारी ॥
जेब्रह्मर्षिब्रह्मविज्ञाता । देवनपूजितपदजलजाता ॥ ३३ ॥ तिनकोतजिकैसभामँझारी। कृष्णहिपूज्योकाहविचारी ॥
दोहा–कुलकलंककारकसदा, नीचजातिगोपाल । कागनपावतभागमख, सोदेख्योयाहिकाल ॥ ३४ ॥
वर्णाश्रमतेरहितसदाँहीं । धर्मकर्मकछुजानतनाँहीं ॥ जोमनभावैसोईकरतो । परनारिनकेसंगविहरतो ॥
सकलभाँतितेसतगुणहीना। कहाजानियहिपूजनकीना॥३५॥बैठनयोगनसज्जनपाँती।दियोशापययातिकुलहियघाती ॥
भापतहैयहमृपासदाहीं । पानकरतयहमदिराकाहीं ॥ नंदगोपकोसुतअभिमानी । पूजनकियोकाहतुमजानी ॥
मथुरातजिकैकृष्णअहीरा । बस्योजाइसागरकेतीरा ॥ पथिकनलूटतदेदुखचोरा । अहैअहीरसदाकोचोरा ॥
दोहा–ताहिअग्रपूजनदियो, नृपनमध्यमुनिराय । भयोकहासोवुद्धवर, दीन्होंबुद्धिगमाय ॥
ऐसेवचनकठोरकराला।सभामध्यबोल्योशिशुपाला॥बोलेनहिंयदुपतिसुनिकानन।शिवानैनसहिहिमिभिपंचानन ॥
हरिनिंदासुनिकैनिजकाना । रहेसभासदजेतहँनाना ॥ मूँदिकर्णउठिगेतेहिकाले । गारीदेतभूपशिशुपाले ॥
हरिहरिजनकीनिंदाकोई । सुनिनहिंउठतबैठरहजोई॥अवशिनरकसोमनुजासिधारे।सकलपुण्यहोतोनाछारे॥
चेदिपकेसुनिवचनकठोरा । सुभटपाँचऊपांडुकिशोरा॥उठेशस्त्रलैकरनकराले । मारनकोआशुहिशिशुपाले ॥
दोहा–सृंजयकुलकेअरुभली, केकयकुलकेवीर । पांडवसँगउठिचलतभे, चेदिपपैरणधीर ॥ ३६ ॥
पांडवतदेवोलेमसवानी । रेशिशुपालमहाअभिमानी ॥ हमरेसुनतकृष्णकीनिंदा । करसितासुफललैनादंदा ॥
अमकहिचेदिपमन्युरसपाये । धनुपगदाअसिढालउठाये॥ तवनाहिंनेकडरयोशिशुपाला।लियोढालकरवाल ॥
आगुनतेउठिबैठतुरंता । मानहुकरनपांडवनअंता ॥ वचनकह्योकटुननानिकागे । भगहुनआवहुआगे ॥
कमारिगंगकृष्णहिवचकारिकै। बैठोनिजनगरोमुदभारिकै॥असकहिधायोपांडवओरा।सभाभयोकोलाहलघोरा ॥

दोहा–भिरतजानिपांडवनको, उठिआशुहियदुनाथ। बरजतभेकुंतीसुतन, चलितिनकोगहिहाथ॥
नाथकह्योयासोंनहिंभिरहू। कहोहमारमानितुमफिरहू॥ आवनदेहुइतैशिशुपाले। बँचिआयोयहशठनहुकाले॥
कृष्णहिंदेखतचेदिपराई। चल्योकोपिपांडवनविहाई॥चक्रचलाइतहाँयदुनाथा। लियोकाटिचेदिपकरमाथा॥४३॥
गिरच्योभूमिमहँभूपभयावन। तेहिपक्षीनृपकियोपरावन॥सभामध्यकोलाहलमाचा। हरिप्रभावजान्योसबसाँचा४४॥
कढ़ीजोतिचेदिपकेतनते। प्रविशीहरिमुखगईनअनते॥निरखिसभासदअचरजमाने। हरिचरित्रकाहूनहिंजाने॥४५॥
दोहा–इनकीत्रिजन्महिकथा, मैंबरनीमतिमान। वैरभावकरिकृष्णसों, हरिपुरकियोपयान॥
जैसोकरहिकृष्णमहँभाऊ।मिलहिताहितसकरनसुभाऊ॥कुंतीसुतलखिचेदिपनासा।लहतभयेहियपरमहुलासा ४६
धर्मभूपऋत्विजनबोलाई। दियोदक्षिणाधनसमुदाई॥ विधिवतसबकोपूजनकीन्ह्यों। औरहुदानद्विजनकहँदीन्ह्यों॥
मुनिपरिवारसहितमतिवाना॥सुरसरिकियअवभृथअस्नाना॥४७॥यहिविधिराजसूयकरवाई।धरमभूपकोआनँदछाई॥
कछुकमासतहँवसेमुरारी। करिपांडवनप्रीतिअतिभारी॥४८॥यद्यपिचहतनकृष्णविछोहू।हरिकोधर्मभूपयुतमोहू॥
दोहा–तदपिधर्मढिगजाइहरि, माँगिविदासकुचाइ। सदलसदारनगमनकिय,द्वारावतियदुराइ॥ ४९॥
येवैकुंठनगरकेवासी। कह्योचरिततिनकोसुखरासी॥ विप्रशापतेपुनिपुनिआई। जगमहँलियोजन्मकुरुराई॥५०॥
रिअवभृथअस्नानसुवेशा। लस्योसभामधिधर्मनरेशा॥भूपनमध्यलस्योनृपकैसे।सुरपुरसुरयुतसुरपतिजैसे॥५१॥
रनरनृपमुनितहाँअपारा। पाइधर्मनृपसोंसत्कारा॥राजसूयऔहरिहिसराहत।निजनिजगृहनगयेसुखगाहत॥५२॥
दुर्योधनकलिकोरूपा। राजसूयलखिपरमअनूपा॥धर्मभूपकोविभवनिहारी। सहिनसक्योअतिभयोदुखारी॥५३॥
दोहा–राजसूयशिशुपालवध, भूपनमोचनवंदि। हरिचरित्रजोसुनतयह, रहतिनतेहिअघदंदि॥ ५४॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहारा
जाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दा
म्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे चतुःसप्ततितमस्तरंगः॥ ७४॥

दोहा–राजसूयकीसुनिकथा, भूपपरीक्षितफेरि। प्रश्नकियोशुकदेवसों, बारबारसुखहेरि॥

परीक्षित उवाच।

राजसूयलखिधर्मनृपतिको।पायअवधिपरमानँदततको॥सुरऋषिनृपसबकरतबखाना।निजनिजगृहकहँकियेपयाना।
पदुर्योधनलखिदुखरकोंहीं। भयोउदासपरममनमाँहीं॥ ताकोकारणकहहुमुनीशा। दुखितभयोकसकुरुकुलईशा॥
सुनतपरीक्षितवचनसुहावन। कहनलगेश्रीशुकअतिपावन॥ २॥

श्रीशुक उवाच।

आयपितामहकेमखमाँहीं। असबांधवकियकाजतहाँहीं॥ धर्मभूपपैकरिअतिनेहू। करनलगेकारजमतिगेहू॥ ३॥
भीमसेनपकवानसोहावन। बनवावनलागेअतिपावन॥
दोहा–भयोभँडारेकोअधिप, दुर्योधनकुरुनाथ। उचितजहाँजससरचंको, सोकीन्ह्योंनिजहाथ॥
सहदेवहिनृपधर्मउदारा। सौंप्योकरननृपनसत्कारा॥ जेतेआमदनीनहँआनै। नकुलताहिलेकोशपठानै॥ ४॥
गुरुजनकेतहँसेवनमाँहीं। भूपतिराख्योअर्जुनकाँहीं॥ सबसाधुनकेचरणधोवावन। लगेनहाँपदुनम्मनभावन॥
द्रुपदसुतानहँपरसनलागी। विप्रनकोअतिशयअनुरागी॥ कर्णहिदियोदानअधिकारे। एकदेखतदशहदहारे॥८॥
हिविकर्णहार्दिक्ययुयुधाना। अरुविदुरादिकसबैप्रधाना॥ भूरिश्रवादिकमहितकुमारा। बाल्हीकनहँपरमउदारा॥
दोहा–संतदंनआदिकसबे,॥ ६॥ पापपृथकअधिकार। पगरा[illegible]करन, मानिनृपहिअनिप्यार॥ ७॥
मैंनृपतितहँहरिसोंभाषे। रामदरशकहँअतिअभिलाषे॥ बलभद्रदुकहँलैहुबोलाई। नौममयज्ञपूरहैनाई॥
पवचनसुनिअतिसुखपायो। यदुपतिरामहिंतुरतबोलायो॥ नदैंजनराग[illegible]सुपालमैंहोंगनाभूननमबभयेसुखार॥

तहँऋत्विजअरुसदससमाजा । औरसकलसुहृदनकहँराजा ॥ करिसत्कारदक्षिणादैकै । प्रेमवचनकहिमोदितकैकै
सबकोलैसिगरोदलसाजी । पैदलऔमतंगरथवाजी ॥ करनभूपअवभृथअस्नाना । सुखितसुरसरीकियेपयाना

दोहा--तहँकोसुखकहिजातनहिं, इकमुखतेनरनाह । करतकाजयदुराजजहँ, धर्मभूपसँगमाँह ॥ ८ ॥

छंद--तहँशंखपणवमृदंगधुंधुरअनेकगोमुखबजतभे । डफढोलतूरजझाँझवीनसुवेनकेसुरसुजतभे ॥
औरहुअनेकविचित्रबाजेसकलदरवाजेबजे । वरवेदपढ़तसुविप्रराजेबंदिविरदावलिगजे ॥ ९ ॥
तहँसकलसाजिशृँगारवारवधूनकेगणनचतभे । गुरुगुणगणनगर्वितसुगायकगानवहुविधिरचतभे ॥
सोसुभगधुनिदिविलोकलोंछयरहीपरमसुहावनी । गंधर्वअरुअप्सरनकीधुनिकरनआसुलजावनी ॥ १० ॥
तहँवहुकिताकेध्वजपताकेपरमभाकेलहरहीं । रथचक्रकेचयचक्रकीततिवारवारहिघहरहीं ॥
वहुकनककवचहुजटितभूपणक्रीटकोटिचमंकहीं।भटसजितसँगमहँव्रजितअतिहींछजितदीतिमंदकहीं ११॥
मधिमहँविराजतधर्मनृपदक्षिणलसतयदुराजहै । दिशिवामपारथभीमआदिकव्रजितसहितसमाजहैं ॥
कृपद्रोणभीपमविदुरआदिकवृद्धसवआगूचले । कुरुनाथयुतशतबंधुअरुकरणादिभटपीछेभले ॥ १२ ॥
तहँसदसऋत्विजमुनिनऋपिगणकरतवेदउचारहैं । देवर्षिअरुगंधर्वपितरहुलहतमोदअपारहैं ॥
नृपधर्मकेगमनतसदलसुरधुनीअवभृथहिनको । उडिधूरिधारदिशानछाईमूँदिमधिदिनभानको ॥
युतधराधरडोलतधराशिरशेपकेभारपरा । मातंगतुंगतुरंगपदछायोधरारवखरभरा ॥ १३ ॥
नरनारिभूपणवसनअँगअँगरागधारिविराजहीं । वरवारयोपितसकलसाजिशृँगारसँगमहँभ्राजहीं ॥
दधिअतरकेसरिअगरतगरहुरंगरचिपिचकारिलै । सबभटनपैसींचतचलींतेउसींचहींकरवारिलै ॥ १४ ॥
कोउपुरुपसुखअँगरागचलतहिमलतवारवधूनके । तेउकरहिंतिनकोनारिवपुपहिरायहारप्रसूनके ॥ १५ ॥
मणिजालकीचढिनालकीमहिपालकीरानीसबै । करवालकीअरुढालकीछविसहितभटसँगमेंफबै ॥
वहुकरतमंगलगानपुरनारीसबैसँगमेचलीं । सोरासहसशतआठयदुपतिरानिछविवारीभलीं ॥
यहिभाँतिगंगातीरजायविहायनिजनिजजानहैं । वहुकेलिकरतनवेलिनारीलगींमुदितनहानहैं ॥
अतिलसतिमध्यमेंद्रुपदकन्याकृष्णातियचहुँवोरहैं । तहँअर्जुनादिकमज्जनैहितगमनकियतेहिठौरहैं ॥
सुरभितसलिलपिचकारिभरिरह्योजेहिंजसनातहै । तेहिंतसचलावनलगींतेहिंक्षणमोदउरनसमातहै ॥
विकसेवदनसरसिजसरियदुराजातियमुसक्याइकै ॥१६॥ देवरनपरडारहिंसलिलयुतसखिननिकटोन्मारा।
तेउलैकनकपिचकारिकरमेंतजहिंनारिनवदनमें । झिझकारितेमुखटारिफेरिनिहारतींसुखसदनमें ।
अँगतेछुटतअँगरागसुरधुनिधारसुरभितकरतहैं । पटभीनहैतनलीनहैअंगनिप्रगटिमुदभरतहैं ॥
तहँकेशपाशनमालकेवहुसुमनगनझरिझरिपरैं । तिनतेसहितकरकमललैनरनारिहनिउरसुखभरैं ।
यहिभाँतिसलिलविहारकरहिंअपारसुरसरिधारमें । नरनारिलैपिचकारिहारिनमोदपारावारमें ॥ १७
तहँधर्मराजविराजरथतेउतरिगंगातीरमें । मनुक्रियायुतक्रतुराजराजतनिजतियनकेभीरमें ॥ १८ ।
ऋत्विजसदसियुतअवभृथमज्जनद्रुपदकन्यासहितमें। कियधर्मभूपतिमहामतिसुरसरीकल्मपरहितमें
तहँदेवदुंदुभिवजतभेनरदुंदुभीकेसंगमें । सुरापितरवरपेकुसुमकलिआनंदउराहिउमंगमें ॥ २० ॥
पुनिसबभूपतिजाइतहँकियअवभृथमज्जनगंगमें । जाकेनहातनरहतनेकहुपापपापिनअंगमें ॥ २१ ॥
पुनिपहिरिपीतांबरअलंकृतहैसुधर्मनरेशहै । ऋत्विजसदसिबहुविप्रकहँदियवसनभूपणवेशहै ॥ २२
वहुबंधुज्ञातिनमित्रसुहृदनऔरनृपनअपारहै । नृपधर्मवारहिंवारकीन्ह्योंप्रीतिसोंसतकारहै ॥ २३ ॥
पुनिनृपनिसबअरुऔरजननतनपहिरिवागेपागहै । कटिफेटकसिमणिमालउरकुंडलसुसोरभदागहै ॥
सुरभिगमोदमकरन्दजनपुरकोचलेनृपसायहै । तबधर्मएककरपायकोगहिएककरयदुनाथहै ॥
नहँगेनक्रान्दोंभानकोनृपधर्ममंदहिमंदहै । वरमित्रमंत्रीसुहृदसुभटहुससासहितअनंदहै ॥

तबयदुपतिपुनिदियोइशारा । धर्मबोरनहिंनेकुनिहारा ॥ तहँसमाजसबहँस्योठठाई । कहेसुजोधनबुद्धिगमाई
दुर्योधनहिनिरखिसबनारी।लगीहँसनदैदैकरतारी॥३८॥तहँकुरुनाथकोपअतिछाई।तक्योनतिनतनअधिकलजाई ।
पुनिअसमनमहँकियोविचारा । करिहौंअबइनकरसंहारा ॥ असगुनिजरतबरतकुरुराई । चुपह्वैबहुरिचल्योयुतभाई॥
दोहा—सातपँवरिकोनाँविकै, चढिस्यंदनमेंआसु । नागनगरकोगमनकिय, दल्युतछोंडिहुलासु ॥
दुर्योधनकेमुरकतमाँहीं । हाहाकारभयोचहुँघाहीं ॥ रहेवृद्धतहँतेअसभापे । कुरुपतिपांडवपैअतिमापे ॥
भयोठीकमतिवंतनमतको । बीजगडच्योतरुयुधभारतको ॥ धर्मभूपतहँभयेउदासा । जान्योकौरवपांडवननासा ॥
असविचारिनहिंवचनबखाने । पैहरिकृपाजानिसुखमाने ॥ कृष्णचंद्रसुखलह्योघनेरो । जान्योटरच्योभारभुविकेरो॥
याहीहितहमधरणिसिधारे । सोअबछूटेसकलखँभारे ॥ अर्जुनादिसिगरेतहँवीरा । मानेउरमहँमोदगँभीरा ॥ ३९ ॥
दोहा—प्रश्नपरीक्षितजौनकिय, राजसूयकोहाल । दुर्योधनकोकपटहू, मैंसबकह्योविशाल ॥ ४० ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे पंचसप्ततितमस्तरंगः ॥ ७५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—औरकथागोविंदकी, सुनहुपरीक्षितभूप । शाल्वभूपकोवधकियो, लीलाकरतअनूप ॥ १ ॥
सोभदेशकोशाल्वनरेशा । महाबलीमायावीवेशा ॥ शाल्वसखाशिशुपालभूपको । कालसरिसविकरालरूपको ॥
जोशिशुपालकाहिंसुखछायो । कुंडिनपुरमेंव्याहनआयो ॥ तहाँरामसँगभईलराई । जरासंधआदिकनृपराई ॥
गयेहारियदुवंशिनतेरे । भागिगयेरणबहुरिनहेरे ॥ दंतवक्रविदुरथशिशुपाला । जरासंधअरुशाल्वभुवाला ॥
जोशिशुपालधर्ममखसुनिकै । आयोकृष्णवधनचितगुनिकै ॥
दोहा—सभामध्यतेंहिहरिहन्यो, जरासंधकहँभीम । पौंड्रककोकेशवहन्यो, मारिचक्रबलसीम ॥ २ ॥
दंतवक्रविदुरथअरुशालू । बाँचिरहेत्रैभूपकरालू ॥ शाल्वभूपदोउनृपनबोलाई । कियोमंत्रअतिकोपहिछाई॥
यदुवंशीभेअतिबलवाना । सदाकरहिंछलपापमहाना॥हरिचेदिपहिंदगाकरिमारचो । सभामध्यकोउभूपनवारचो॥
करिछलजरासंधढिगजाई । भीमसेनकरताहिहताई ॥ मारचोपौंड्रकनंदकुमारा । करतअनर्थहिवारहिंबारा ॥
तातेअसतुममनहिविचारहु । जेहिप्रकारयदुवंशिनमारहु ॥ दंतवक्रविदुरथअसभाषे । यहविचारहमहूँकरिराखे ।
दोहा—जैसेवेहमसोंकरत, भलछलवारहिंवार । तैसेहमहूँकरिछले, यदुकुलकरहिंसँहार ॥
तबपुनिबोल्योशाल्वप्रवीरा । मेरेवचनसुनहुरणधीरा ॥ जबलोंतपमैंकरिनहिंआऊँ । तबलोंतुमरहिबोयहिठाऊँ।
मैंअबयहप्रणकरहुँमहाना । सुनहुसबैभूपतिदैकाना ॥ अवनीअबअयादवीकरिहौं । रणमहँअतिविक्रमविस्तरिहौं।
देखहुसबनृपविक्रममोरा।किमिबाचतबसुदेवकिशोरा॥३॥असप्रणकरिकैसबनसुनाई।शाल्वकरनतपकोचितलाई।
गयोअकेलेकाननमाँहीं । शंकरकोकरिध्यानतहाँहीं ॥ करनलग्योतपशठयहिभाँती । ठाढोरह्योअचलदिनराती।
दोहा—खातरह्योदिनअंतमें, एकमूठिभरिधूरि ॥ ४ ॥ यहिविधिबीतेवर्षदिन, भईतपस्यापूरि ॥
तबशंकरप्रभुकृपानिधाना।शाल्वनिकटकहँकियेपयाना।शाल्वहिकह्योमाँगुवरदाना।तोहिमैंनिजकिंकरकरिजाना।
सुनतशंभुकेवचनसुहाये । भूपतिखरोभयेसुखछाये ॥ शिवपदकरिकैप्रीतिअथोरी । सोभनाथबोल्योकरजोरी ।
सुरनरअसुरउरगगंधर्वा । राक्षसकिन्नरचारणसर्वा ॥ भेदिसकैंजाकोनहिंकोई । देहुविमाननाथइमिजोई ।
जहँमैंचहौंतहँलैजाऊं । तापरचढिनहिंअरिनदेखाऊं ॥ यदुवंशिनदुखदेहुँमहाना । ऐसोनाथदेहुमोहिजाना ॥५॥
दोहा—शाल्ववचनसुनिशंभुतब, एवमस्तुकहिदीन । मैंदानवकोबोलिद्रुत, ऐसोशासनकीन ॥
[illegible] ।ना। । जीतहिजेहिनाहिंसुरहुमहाना ॥ जहँशाल्वअपनेमनभावे । तहाँताहितुरतलैजावै ।

जोजनएकतासुविस्तारा। आयसकौनकटेशरधारा ॥ शंकरशासनसुनिदनुजेशा । रच्योविमानमहाननरेशा ॥ भटनभीतिभरभूरिभयावन। द्रुतअकाशचारीमनभावन। असविमानरचिदानवराई।दयोशाल्वभूपतिकहँजाई॥७॥ मानहुअंधकारकोधामा। दुसहदुरासदरिपुसंग्रामा॥तामेंचढ्योशाल्वमहिपाला। आयोनिजपुरमोदविशाला ॥८॥

दोहा–दंतवक्रविदुरथहुको, अपनेनिकटबोलाय। निजतपशिववरदानको, दीन्ह्योंहालसुनाय ॥

शाल्वकह्योपुनिकोपप्रकाशत।लगिहिदेरिनहिंयदुकुलनाशत।साजिसैनचढिसोभविमाना।करहुद्वारिकैआशुपयाना॥ एकबातऔरहुअवनीकी। सोमेंतुमसोंभापहुजीकी ॥ रामकृष्णहस्तिनपुरमाहीं। प्रद्युम्नादिकअहैंतहाँहीं ॥ उग्रसेनभरिहैतेहिंनगरी। ताहिमारिल्यावहुतियसिगरी ॥ पुरीलूटिसिगरीपुनिलाई। खोदिसिंधुमहँदेहुवहाई ॥ इंद्रप्रस्थआशुहिपुनिचलिकै। छलकरिपुरबासिनमहँमिलिकै॥पांडवसहितकृष्णबलरामै।मारिपठायदेहुयमधामै॥

दोहा–शाल्ववचनसुनिमुदितह्वै, उभयभूपमतिकीन। साजिसैनचतुरंगिणी, चढेविमाननवीन ॥

–तहँशाल्वभूपरिसाय। असवचनकह्योसुनाय ॥ जोसत्यशिववरदान। तौमोरजानमहान ॥
द्वारावतीकोजाय। नहिंनेकविलंबलगाय ॥ सुनिशाल्ववचनमहान। उडिचल्योव्योमविमान ॥
जिमिश्यामजलधरघोर। धावतगगनकरिजोर ॥ तिमिकरतशोरकठोर। धायोसुयदुपुरओर ॥
जहँपरतछायाजाति। तेहिदेशकीजनपाति ॥ असकहँहिंलखिकैबात। बिनकालग्रहनलखात ॥
गमनतप्रथमसुविमान। पीछेसुपवनमहान ॥ द्वारावतीयहीभाँति। नृपजानगोअधराति ॥
लखियदुपुरीनृपशाल। करिकोपउरहिविशाल ॥ सुधिकरिसुयदुकुलवैर। कियेतुरततोपनफैर ॥
निजजानधरितेहिंठोर। लैउतरिसैनअथोर ॥ ८ ॥ चहुँओरयदुपुरघेरि। इकबारसुभटनटेरि ॥
खोदनलाग्योपुरकोट। हनिकैकुदालनचोट ॥ उपवनहुबागअराम। जेरहेअतिअभिराम ॥
तिनमेंलगायोआगि। नहिंबचेरक्षकभागि ॥ जिमिविपिनलगतिदवारि। तिमिदियोबागउजारि ॥
जेबचेतरुतेकाटि। शरकूपमहँदियपाटि ॥ वाटिकागृहगिरवाय। बहुदेवसदनफोराय ॥ ९ ॥
पुनिकनककोटगिराइ। बहुगुरिजदीनुढहाइ ॥ पुरद्वारखिरकीफोरि। कंचनकपाटनतोरि ॥
भटघुसेपुरमहँधाइ। तहँआगिदीनलगाइ ॥ जेअतिहिंऊँचअवास। तिनखोदिकीनविनास ॥
अट्टालिकानिउतंग। पुनिखोदिकियतिनभंग ॥ बहुविधिविहारअगार। जेरहेअतिछविवार ॥
भटशाल्वकेअतिरूसि। घुसिघुँइसिसेधनघूसि ॥ लूटनलगेपुरनारि। पुरजननहनितरवारि ॥
कोउरहेसोवतलोग। जेलहेकबहुँनसोग ॥ तेविपतिऐसीदेखि। भागेभभरिभयलेखि ॥
इकभागपुरलियलूटि। पुरजननकोबहुकूटि ॥ असशाल्वबोलतजाइ। यदुवचैंनाहिंभगाइ ॥
जेनगररक्षकवीर। तेनिरखिअरिकीभीर ॥ मारनलगेबहुतीर। अरिभटनकीन्हेंपीर ॥
कछुभागिअरिकीभीर। तहँशाल्वअतिरणधीर ॥ करिकोपउरगंभीर। हनिबाणवेगसमीर ॥
पुररक्षकनकोमारि। मायादईविसतारि ॥ १० ॥ बहुशैलवरषनलाग। प्रगटेभयंकरनाग ॥
तेमनुजभक्षहिंधाइ। विषज्वालविविधउड़ाइ ॥ द्वारावतीचहुँओर। भोअशनिपातकठोर ॥
तरुशालतालतमाल। गृहपैगिरेंविकराल ॥ पुनिचल्योपवनप्रचंड। बहुमहलकियबहुखंड ॥
चहुँओरधुंधाकार। भोधूरिकोअँधियार ॥ यदुनगरमहँइकबार। तहँमच्योहाहाकार ॥
चौहट्टहाटनठाट। अरुफूटिगेबहुपाट ॥ नरनारिकरतपुकार। भागेजरतलैबार ॥
सबकहहिंयहकाहोत। कोविपतिकीनउदोत ॥ कहँकृष्णहैंकहँराम। प्रद्युम्नकहँबलधाम ॥
कहँसात्यकीअक्रूर। कृतवर्मकहँअतिशूर ॥ कहँगयोयदुदलभागि। असकहहिंसबभयपागि ॥
यहशाल्वनृपअतिख्यात। यदुनगरकियउतपात ॥ जिमित्रिपुरकहँत्रिपुरारि। हेकुपितदीन्ह्योंजारि ॥
तिमिशाल्वकोपहिछाइ। यदुनगरदीनजराइ ॥ पुनिलग्योवर्षनशस्त्र। पुनिदन्योबहुदिव्यस्त्र ॥

बहुमुशलतोमरबाण । बरभल्लपरिघकृपाण ॥ बर्षतनगरचहुँओर । ज्योंभाद्रजलघनघोर ॥
कहँभागसिंधुरछूटि । बाजीजरेकहँजूटि ॥ यहिभाँतिलखिउतपात । कहँबचबनाहिंदिखात ॥
जनकरतहाहाकार । सँगलियेतियअरुबार ॥ नृपउग्रसेनहिद्वार । जनजाइकीनपुकार ॥
रक्षहुहमैमहिपाल । हमजरहिंपावकज्वाल ॥ कछुजानिपरतोनाहिं । कोदेतदुखपुरमाहिं ॥
नृपसुनतआरतशोर । उठिलख्योभयचहुँओर ॥ तबशंकमनमेंलाइ । अनुचरहिंबोलिबुझाइ ॥
प्रद्युम्नपासपठाइ । असदियोताहिसुनाइ ॥ यहकहाभोउतपात । मोहिंनेकुनाहिंजनात ॥ ११ ॥ १२ ॥

दोहा—अनुचरआशुहिदौरिके, मदनसदनमहँजाइ । सखीबोलिप्रद्युम्नढिग, दीन्ह्योंतुरतपठाइ ॥
जाइसखीरतिकेनिकट, मंदहिचरणदबाइ । ताहिजगाइसुनाइदिय, तुरतनरेशरजाइ ॥
रतिसोंरतिपतिपदपदुम, पंकजपानिलगाइ । उठहुबीररक्षहुनगर, असकहिदियोजगाइ ॥
अरुणारेआलसभरे, अनियारेबिलसंत । मींजतदृगनिजसेजतें, उठिबैठ्योरतिकंत ॥
पूँछनलाग्योहोतकस, पुरमेंहाहाकार । कौनशत्रुइतआइकै, चाह्योकालअगार ॥
सतिबोलीकरजोरिकै, नाहिंजानहिंकुलकेतु । उग्रसेनकोचारइक, आयोयाहीहेतु ॥

उग्रसेनकोशासनसुनिकै । चल्योकुँवरद्रुतकारजगुनिकै ॥ बाहिरकढिपूछ्योतेहिचारै । कौनपरयोनृपकाहिंसँभारै ॥
दूतकह्योनृपतुमहिबोलायो । दुवनदुरासदकोउइकआयो ॥ जारतनगरीनाथतिहारी । रक्षितजानिआपभुजभारी ॥
दूतहिकह्योजाहुनृपगेहू । नृपसोंअससँदेशकहिदेहू ॥ करहिंननृपअबकछुसंदेहू । हमआवतहैंभूपहिगेहू ॥
असकहिकवचकरीटधनुधारी । उभयकंधयुगतूणसवारी ॥ दारुकसुतहिंदूतहिबोलवाई । ल्यावहुरथममकहेहुबुझाई ॥

दोहा—प्रभुशासनसुनिसूततहँ, ल्यायोस्यंदनसाजि । यदुनंदननंदनतुरत, तापरचढ्योविराजि ॥ १३ ॥

पुनिचारणकहँवेगिबोलाई । सबवीरनपैंदियोपठाई ॥ सात्यकिसांबगदौअक्रूरा । भानुबिंदुशुकसारणशूरा ॥
अरुहार्दिकआदिकरणधीरा । कृष्णकुँवरशासनसुनिवीरा ॥ सजिसजिचढ़िचढ़िरथद्रुतधाये । कृष्णकुमारसमीपहिंआये ॥
तबअतिकोपितकृष्णकुमारा । उग्रसेनकेसदनसिधारा ॥ तहँप्रद्युम्नहिभूपनिहारी । बोलेवचननयनजलढारी ॥
होतनगरमहँअतिउतपाता । रक्षणकरहुतुरततुमताता ॥ रामकृष्णहैंगृहमहँनाहीं । हमगुहरावहिंअबकेहिकाहीं ॥

दोहा—तुमसमरथसबभाँतिहौ, कृष्णकुमारप्रवीन । तुम्हरेदेखतहोतरण, पुरवासिनयुतदीन ॥

होतआजुसबनगरविनासा । ऐसीकबहुँलहीनहिंत्रासा ॥ तबबोल्योप्रद्युम्नरिसाई । संशयकरहुनाहिंनृपराई ॥
रामकृष्णहस्तिनपुरछाये । तदपिनहमकछुसंशयल्याये ॥ तिनप्रतापतेइकक्षणमाँहीं । करिहौंअरिनसंहारयहाँहीं ॥
असकहिरथचढ़िकुपितकुमारा । नृपहिंबंदिनिकस्योतेहिद्वारा ॥ प्रद्युम्नहिलखिप्रजादुखारी । आयेआरतवचनपुकारी ॥
तुम्हरेदेखतकृष्णकुमारा । लहिकलेशभेबिनाहिअधारा ॥ यदुनंदननंदनअसभाषो । अबकछुनाहिंशंकामनराखो ॥

दोहा—दीजैमोहिंबतायअब, दुखदायककहँदुष्ट । अर्धरातजोनगरमें, कियोउपद्रवपुष्ट ॥

प्रजनकह्योहमजानतनाहीं । जरतनगरदेखतचहुँघाहीं ॥ तबप्रद्युम्ननिजरथहिबढ़ायो । करमेंकरिनिजधनुपचढ़ायो ॥
तहँसात्यकिअरुसांबप्रवीरा । बढ़िआगेह्वैगेरणधीरा ॥ भानुबिंदहार्दिकअक्रूरा । अरुगदशुकसारणरणशूरा ॥ १४ ॥
औरहुयूथपयूथपयूथा । गजरथतुरँगपदातिवरूथा ॥ कृष्णकुँवरकहँपीछेकरिकै । आगेबढ़ेआयुधनधरिकै ॥
विविधभाँतिबाजेतहँबाजे । फहरतबहुनिशानवरराजे ॥ १५ ॥ सुभटसरोपितगाजनलागे । सुनतक्षुद्रअरिभाजनलागे ॥

दोहा—करतरहेजेशाल्वभट, नगरउपद्रवघोर । तिनपैसात्यकिसांबभट, हनेबाणबरजोर ॥

छंदभुजंगप्रयात—तहाँशाल्वकेवीरधायेप्रचारी । हनेसात्यकीसांबकोशस्त्रभारी ॥
द्रुतैयादवोंसैनकेवीरधाये । हनेशाल्वकीसैनकोकोपछाये ॥
कियेचित्तशुद्धेउभेवीरक्रुद्धे । कियेउद्धतेरुद्धतेजोरयुद्धे ॥

सुदेवासुरैसोभयोयुद्धघोरा। कटेनाहटेतेरटेजीतशोरा॥
चलेभछतैसेतवछोक्रपाना। प्रचछोसुसछोमरैवीरनाना॥
क्षणैएकएकैहनैहेंहकारे। भरेमोदभारेटरैनाहिटारे॥
कहूँअस्त्रमारैंकहूँभूपछारैं। कहूँअंगफारैंकहूँवैप्रचारैं॥
भईसोनिशावीरकीप्राणहारी। रहीछायदीपावलीकीउज्यारी॥
चमंकैउतैंव्योममेभूरितारे। इतैभूमिमेंभूपणैकेकतारे॥
सवेद्वारिकामेंयहीशोरछायो। लरौनाडरौनाटरौशत्रुआयो॥
तुरंगैसँवारेतुरंगैसँवारे। जुरेनागवारेनसानागवारे॥
लरेत्योंरथीसोंरथीकोपधारे। जुरेपैदरेपैदरेसोंप्रचारे॥
तहाँयोगिनीभूतवेतालआये। पियेशोणितैआमिषैखूबखाये॥
कटेनागकेतेपटेवाजिकेते। गिरेऔउठेवीरकेतेसचेते॥
तहाँसात्यकीसांबकेबाणवर्षा। हनेशाल्वकीसैनकोयुक्तहर्षा॥
परीशत्रुकीसैनमेंबाणधारा। मतंगौतुरंगौमरेहैंअपारा॥

दोहा–साम्बसात्यकीशरनको, औगदगदाप्रहार। शाल्वसुभटसहिनाँहिसके, भजेभीतिकेभार॥
पुरतेकढिबाहेरगये, छोडिछोडिहथियार। शाल्वनिकटमहँजायकै, यहिविधिकियेपुकार॥

छंदभुजंगप्रयात–सजीयादवीसैनआईप्रचारी। पुरैतेहमैंकोदियोहैनिकारी॥
लियोलूटिकैजोधनैगोछडाई। दुखीरावरीसैनआईपराई॥
पुरैभीतरैनावनैनाथजातो। हमारैपिछारीदलैभूरिआतो॥
इतेमेंमहाशोरकोछावतेहीं। देखानेभटैआवतैधावतेहीं॥
लख्योसात्यकीसांबकोशाल्वराजा। द्रुतैरोशतैचापमेंबाणसाजा॥
हन्योसांबकोसत्तरैबाणवीरा। असीसात्यकीकोमहाचोखतीरा॥
गदैसाठित्योंभानविंदैपचासा। शुकैसारनैतैसहींजीतिआसा॥
तहाँसात्यकीअक्रूतैयुद्धकीन्ह्यों। सबैशाल्वकेबाणकोभंजिदीन्ह्यों॥
हन्योताहिचालीसचोखेसुबाना। गदौसायकौबीसमारचोमहाना॥
शुकोशारनैबीसबीसैप्रहारे। शरैभानविंदोदशैताहिमारे॥
तहाँसांबकीन्हीमहावेगताई। दल्योशाल्वकोजानबाणैचलाई॥
दल्योशाल्वकीतासुकोदंडभारी। गदैहूँगदालैहन्योवाजिचारी॥
यहीभाँतिकेशाल्वकोहीनजाने। दियोशाल्वकीसैन्यमेंछायबाने॥
दुखीह्वैसबैभूपकीभीरभागी। सुखीह्वैसबैयादवीसैन्यजागी॥
तहाँशाल्वहूभागिकैभाँतिछाई। चढ्योआपनेयानमेंआसधाई॥
लियोताहिपैसैन्यहूकोपठाई। दियोसोविमानैअकाशैउडाई॥

दोहा–यदुवंशीतहँमुदितह्वै, विजयनिशानबजाय। खड़ेभयेतेहिठौरमें, अतिआनँदउरपाय॥

छंदनराच–महानसोविमानआसमानमेंभ्रमैलग्यो। अघातचक्रसोसोहाततेजहूँमहाजग्यो॥
चढ्योप्रवीरशाल्वचापआशुहीटँकोरकै। हन्योकुशानबाणवेप्रमाणघोरशोरकै॥
तहाँअक्रूरभानविंदसांबऔरसात्यकी। पवारिबाणधारवेशुमारशत्रुघातकी॥

कियोअखंडबाणखंडखंडशाल्वभूपके । दियोपचारिफेरिताणमारतंडरूपके ॥
लगेविमानमेंसुबाणट्टटिट्टटिट्टकभे । सबैप्रवीरदेखिकैचरित्रआशुमूकभे ॥
मनोमहानसानुबाणशाल्वडंडलागहीं । प्रचूरह्वैगिरैंमहीननेकुजोरजागहीं ॥
विलोकिचूरतीरकोप्रवीरभेअधीरहैं । तजेप्रकोपिफेरिताम्बारतीरभीरहैं ॥
उतैनरेशबाणधारव्योमतेपवारहैं । मनोमघामहानवृँदआवतेअपारहैं ॥
कटैमतंगऔतुरंगजानवृष्णिसैन्यमें । नभागतेप्रवीरधारिधीरयुद्धचैनमें ॥
तहाँप्रवीरशीवसात्यकीगदौप्रकोपिकै । दलैनरेशबाणजेतजेसुचित्तचोपिकै ॥ १६ ॥
दोहा—ताहीक्षणपूरबदिशा, कीन्होंभानुप्रकाश । नृपविमानदेखोपरो, मानहुकालअवास ॥
निजनिर्फललखिबाणतहँ, शाल्वभूपरिसिछाइ ॥ अतिप्रचंडमायाकरि, जोमुखबरणिनजाइ ॥
छंदनराच—कियोमहानअंधकारचारिहूदिशानहैं । झरैंलगीअनेकआशमानतेकृशानहैं ॥
कृपानऔपपाणकीमहानवृष्टिहोतिभै । अनेकदामिनीनपातिआशुहिउदेतिभै ॥
दशौदिशानबाणधारधावतीकरालहै । महाप्रचंडपौनजोरसोचह्योविशालहै ॥
रहीअकाशधूरिपूरिभूरिधुंधकारभो । प्रपातवारिकोमहावितुंडशुंडधारभो ॥
उडैकटैंवहैदवैप्रवीरवृष्णिसैनके । गिरैंमरैंफिरैंभिरैंथिरैंभरैअचैनके ॥
तुरंगत्योंमतंगस्यंदनौकटैंअनंतहैं । उडातउंडमुंडझुंडव्योममेंलसंतहैं ॥
तहाँसुवृष्णिसैन्यमध्यआर्तशोरह्वैरह्यो । महानभीतिव्याकुलैप्रवीरशस्त्रनागह्यो ॥
सात्यकीनसांबनागदौनहींअक्रूरहू । चलायबाणकोशकेरहेजेवृष्णिशूरहू ॥
नशाल्वकोविमानआसमानमेंदेखातहै । सबैप्रवीरकोसँहारआशुहीलखातहै ॥
सबैप्रवीरमोहिकैगिरैसुजानमेंतहाँ । मच्योहहापुकारवृष्णिसैन्यमेंद्रुतैमहाँ ॥
असंख्यवीरमारिगेअसंख्यहूखराइगे । अनंतशस्त्रडारिगेअनंतहूलुकाइगे ॥
विलोकिसैन्ययादवीविनाशआसुतासमै । मुकुंदकोकुमारसूतसोंकह्योहुलासमै ॥
बढावरेबढावरेबढावजानआशुही । विलोकुआजुवृष्णिवंशकोविशेषिनाशुही ॥
अहैनरेशशाल्वयाकरालकालकेसमैं । लखोंमैंमायदृष्टितेविमानव्योममेंभ्रमैं ॥
सुन्योकुमारबैनसूतहाँकिकैतुरंगनै । गयोसँहारह्वैरह्योजहाँमहारणांगनै ॥
विलोकिकृष्णनंदकोनरेशशाल्वकोपिकै । हन्योहजारबाणकोचढाइचापचोपिकै ॥
पपाणऔकृपाणऔकृशानवृष्टिकोकियो । मुकुंदनंदस्यंदनैसुमंदगौनकैदियो ॥
गिरेतुरंगभूमिमेंविमोहिसारथीगयो । प्रद्युम्नदेखिनापरेसुरानसोकहूभयो ॥
दोहा—जसततसकैउठिसारथी, ताजिघोरेनकीबाग । बोलतभोप्रद्युम्नसों, अतिशयउरभयपाग ॥
छंदनराच—किधौंमरेकुमारतूकिधौंविनाअधारहौ । शरासनैसँभारियेतुविक्रमीअपारहौ ॥
कह्योप्रद्युम्नशोकसूतनेकहूनकीजिये । तुरंगबागसावधानह्वैसुपाणिलीजिये ॥
विलोकियेसुविक्रमैंहमारआजुयुद्धमें । नहोतहैप्रवीरधीरशत्रुफंदरुद्धमें ॥
उचारिबैनऐसहींकोदंडचंडशोरकै । लियोसोब्रह्मअस्त्रघोरशत्रुचित्तभोरकै ॥
दोहा—तामेंसवलितकैदियो, शंकरमायाघोर । खेंचिकमानाहिकानलों, तज्योबाणवरजोर ॥
छूटतविशिखअखंडभो, घोरशोरदिशिछाइ । शाल्वप्रबलमायासकल, क्षणमेंदईनसाइ ॥
जिमितमारिकेउदैते, होतोतमकोनाश । तिमिहारिनंदनबाणते, मायाभईविनाश ॥
देखिपरेंसूरजविमल, देखिपरयोनृपजान । देखिपरीयदुसैन्यसब, रहीजोमृतकसमान ॥ १७ ॥

छंदचामर-देखिशाल्वभूपकोमुकुंदनंदनंदसों। मारिकैपचीसबाणकोपकैअमंदसों॥
शाल्वकोदेबाणसेननाथजोदुमानहै। पाँचसैप्रचंडताहिमारिकैसुबाणहै॥ १८॥
घोरसोसुबाणफेरिशाल्वकोप्रहारिकै। कोटिद्वैसुसायकैपवारिकैप्रचारिकै॥
यानकोछपायदीनजोरबाणजालमें। शाल्वकेभटानफेरिकोपिताहिकालमें॥
एकएकबाणएकएकवीरकोहने। सारथीनकोदशैदशैहनेशरैघने॥
तीनतीनबाणवाहनानिवेधदेतभो। युद्धमेंअमंदकृष्णनंदकीर्तिलेतभो॥ १९॥
व्याकुलैभयेनरेशसैन्यकेभटेमहाँ। बाणधारधावतीप्रद्युम्नकीजहाँतहाँ॥
शत्रुमित्रसैन्यकेलगेसबैसराहने। कृष्णकेकुमारकेसमानवीरनाहिने॥ २०॥
खंडशुंडह्वैवितुंडजानतेगिरेलगे। वाजिअंगभंगह्वैगिरेसवारकेसँगे॥
उंडमुंडझुंडखंडखंडह्वैअकाशमें। राहुकेतुसेलखातघोशकेप्रकाशमें॥
रक्तधारजानतेढरैंसुवारवारहैं। श्यामशैलतेमनोसुगेरुकेपनारहैं॥
शाल्वकेविमानमेंशरैअनेकभाँतिहैं। श्याममेघमध्यजोसुदामनीनपाँतिहैं॥
बाणधारभूमितेविमानलोंदेखातिहैं। गंगधारस्वर्गज्योंपवित्रहेतजातिहैं॥
बाणकीदशानमेंपरंपरादेखातिहैं। स्वर्गवीरगौणकीसुपानसीसुहातिहैं॥
शाल्वकोविमानव्योममेंभ्रमैंजहाँजहाँ। कृष्णपुत्रबाणधारधावतीतहाँतहाँ॥
बाणतेविमानमेंसकैप्रवेशकैनहीं। छायकैनछत्रसेअकाशमेंरहेतहीं॥

दोहा-यदपिभेदकरिसकतनहिं, बाणविमानअभेद। तदपिउपरतेगिरिविशिख, करैंसकलदलखेद॥
यहिविधिलगिप्रद्युम्नशर, भयोव्यथितनृपशाल्व। दशयोजनआकाशमें, लैगोयानविशाल॥
ज्योंपूरुबकोपौनलहि, धावतमेघमहान। तिमिधावतअकाशमें, शाल्वनरेशविमान॥
एकरूपकहुँलखिपरै, कहुबहुरूपदेखात। मायामयमयकृतमनो, शैलसपक्षउडात॥
पैनहिंआवतमहिनिकट, लहिप्रद्युम्नशरघात। दशयोजनकेउपरनभ, यानमहानभ्रमात॥
तेहिंछनश्रीयदुवरकुँवर, निजदलमधिमेंजाय। सात्यकिसांबादिकनको, मोहितदियोजगाय॥
सावधानह्वैसुभटसब, करधनुध्वनिधरिबाण। मारनलगेविमानको, करिकरिकोपमहान॥

छंदचामर-वीरकृष्णपुत्रहूँविचित्रविक्रमेंकियो। वेगसोंप्रहारबाणछाययानकोलियो॥
आशमानमेंजहाँपरायजातयानहै। भासमानहूँतहाँसुजातवृंदबानहै॥ २१॥
भूमिमेंविमानआयकैकहूँदेखातहै। आशमानमेंकहूँदिशानमेंभ्रमातहै॥
शैलशीशमेंगिरैकहूँसुबाणजोरते। सिंधुनीरमेंगिरैकहूँफिरैहिलोरते॥
आशमानमेंअलातचक्रसोंफिरातहै। एकहूपलैनएकहूथलैथिरातहै॥
बाणडोरिसोंप्रद्युम्नजानचंगखेलतो। व्योममेंबढावतोघटावतोसुमेलतो॥ २२॥
कृष्णकेकुमारकीसुबाणधारिदेखिकै। शाल्वराजमारतोअनंतबाणतेखिकै॥
शाल्वकेसुभट्टहूँअनेकशस्त्रमारते। यादवीदलानिकेभटानिकोसँहारते॥
जानतेउठायशीशबाणजोचलावतो। कृष्णपुत्रचित्रबाणमारिकैगिरावतो॥
यानमेंमहानबानवृष्टिव्योमतेभई। शाल्वराजसैन्यकीअपातदुर्दशाठई॥ २३॥
भागतेबनेनबैठतेबनेनयानमें। युद्धकेविलासकोहुलासनाहिंप्राणमें॥
कृष्णचंदनंदकेअमंदवृंदबाणमें। जानऔरभानहूछपानआशमानमें॥
ठढह्वैनरेशकोपिओठदाबिदाँतसों। मूँदिदीनकृष्णपुत्रघोरबाणघातसों॥

महींनपुंसकयहकुलमाँहीं। होतभयोकछुसंशयनाँहीं ॥ सूतमोहिंदियसबविधिखोई। मोरिवीरतातनतेधोई ॥
दोहा–सूतआजुलोशत्रुरण, लखीनमेरीपीठि। सुरहुअसुरकेसनमुखै, नीचभईनहिंदीठि ॥
यहकलंकतेंदियोलगाई। उमिरिभरेकीगईकमाई ॥ २९ ॥ हस्तिनपुरतेजवपितुरामा। ऐहैंआशुसुनतसंग्रामा ॥
तवहमकैसेमुखदरसैहें। कैसेतिनकेपदशिरनैहैं ॥ जवकहिहैंयदुपतिमुसकाई। देहुसमरकीखवरवताई ॥
तवहमकहवकौनगतिगाई। कादरसेतहँरहवलजाई ॥ जवकहिहैंमोसेवलरामा। कसपरायआयेतेंधामा ॥
बालकपनतेतोकहँपाल्यो। गोदधारिचूमतमुखलाल्यो ॥ सोसवमेरोपालनपोषण। कियोअकारथसवतेंयहिक्षण ॥
दोहा–तवहमतिनकोदेइँगे, कैसेचितैजवाव। तातेअवमोहिंलखिपरत, उचितस्वर्गपुरजाव ॥
भुजवलयहयदुनगरी। वसतरहीनिर्भयअतिसिगरी ॥ सूतसोईमेरैभुजदंडा। तेकरिदियेरेडकेदंडा ॥
औरगतिविपतहुनीकी पियहसंशयटरतनजीकी ॥ ३० ॥ जवहमअपनेगृहमेंजैहैं। तवनारिनमुखकोनदेखैहैं ॥
तेहँसिजवपुँछिहैंभाजाई। वीरवीरताकहाँगमाई ॥ तुमतोरहेविक्रमीचोखे। गृहमहँभजिआयेकेहिधोखे ॥
अर्लोसुनीनतुवकदराई। नईवातदेखनमेंआई ॥ धौंप्यारीकीसुधिउरकरिकै। आयेभौनभाजिकेभरिकै ॥
दोहा–धौंरथटूट्योआपको, धौंधनुटूट्योतुम्हार। घाउभीतिधौंतुमभजे, जानिअंगसुकुमार ॥
वऐसोपुछिहैंगृहनारी। वातकहवतवकौनउचारी ॥ तातेमरवनीकअवलागत। अनुचितजिअवयुद्धतेभागत ॥
चलरथसंगरमहमोरा। सूतकियोतेंअनुचितघोरा॥सुनिसारथिहरिसुतकेवैना। बोल्योपाणिजोरिभरिनैना॥३१॥

सारथिरुवाच।

धादेहुमोहिंदोपकुमारा। मैंसारथिकोधर्मविचारा ॥ रथीमुरछिरथमहँगिरिजावै। तवसारथितेहिलैचलिआवै ॥
रहिरथीकहँजवसंकेतू। रक्षहिसारथिकरिवहुनेतू ॥ सोसवधर्मनिआपहुजानो। काहेकोपमोहिंपरठानो ॥ ३२ ॥
दोहा–शत्रुगदातेमुरछिकै, गिरेआपुरथमाँहि। तातेंमैंवाग्योरथहि, धर्मसोचिमनमाँहि ॥ ३३ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे षट्सप्ततितमस्तरंगः ॥ ७६ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–सुनिसारथिकेवचनतहँ, कृष्णसुवनसुरपाइ। धोइसलिलसोंवदनवर, शिरमहँकीटपनाइ ॥
सोरठा–कवचऔरकरत्रान, कटिकृपाणतूणीरयुग। करेकरैवलवान, धनुपधारिअसकहतभो ॥
नाकरुसारथिदेरि, कोपज्वालजारतिअँगनि। स्यंदनमेंगेफेरि, रचकुअग्रसमीपमहँ ॥
सुनिसारथिप्रभुवैन, वाजिनकोताजनदयो। हाँकतभोलहिचैन, टीकमीगसरथकढिगयो ॥
हरिसुतशंखवजाइ, सिंहनादकरिकैमहा। पुनिआनँदउरछाइ, कीन्ह्योधनुटंकोरअति ॥ १ ॥

छंदत्रोटक।

तुर्कीषनिसात्यकिकानसुने। तहँसांबहिसोंजसतेनभने॥यदुनायकुमारजपारवली॥अवघारनआननयांहिगली ॥
सफोजगमेंवलवानअंहै। यहिसन्मुखसंगरसानगहै॥ हरिनंदनकेदलआसनहीं। यदुवीरमुवेल्हिमोदनहीं ॥
जेतरजेपरजेभटहैं। हरजेकरजेअरिजेचटहैं ॥ इकवाणधपागनिशानदने। यदुकेदलकेमदागने ॥
रपुनहिंनाषतदेखितहीं॥द्रुतशालभुजालुसभीनिनहीं॥टिकोटिपुनानहिंवनभन्यो॥रिंगिआननमोनहिंकृतनिचन्यो॥
खारमवेडधनुधरहै। महिनाशनकोअवलंवगहै॥ सुनिवनदुनानसपोतेहिको। नवशीमननुन्यदनोंपहिकै ॥
रपोधनुधारिकेदोपशनिको। ररवापतन्योनगरिजोनुनिको॥रुन्योनरकेन्यारिछगटिदोसहुवीरनवीगहियोदियो॥

नहिंजातद्युमानहिसोंहकोऊ। धनुधारिनमेंजिनथाकसोऊ॥इतकृष्णतनैपहुँच्योदलमें।लखिसैन्यसँहारतेहीथलमें
ध्वनिकैधनुधावतवीरवढ्यो। तनकोपहिज्वालविशालमढ्यो॥भटजौनद्युमानसुबाणतजें।करतोहरिनंदनताहिजें
लखिव्यर्थप्रयासद्युमानतहाँ।हरिकेसुतपैंकरिकोपमहाँ॥निजसारथिसोंअसबातकही। अबघोरेनकीदृढबागगही॥
हरिनंदनस्यंदनसोंहचलो। यहिमारनकोअबकालभलो॥शरसोंयहिकोशिरकाटिसही।मुरिहोंसिगरीयदुसैन्यदही॥
बचिहैअबकीनहिंकृष्णतनै। विधिरक्षहुतेहमसत्यभनै॥सुनिकैअसबैनद्युमानहिते। रथलैनिकस्योद्युतजानहिते॥
कढतेनिरख्योअरिकृष्णतनै।कियअद्भुतविक्रमताहिछनै॥२॥शरचारिपरारिअभंगमको।हनितासुतुरंततुरंगनको॥
इकबाणहिसूतहिशीशदल्यो।इकसोंपुनितुंगपताकमल्यो॥धनुबाणयुगेयुगखंडकियो। पुनिसायकएकप्रचंडलियो॥
हनिकैअरिशीशहिकाटतभो। पुनिबाणसहस्रनपाटतभो॥अरिरुंडहुमुंडहुबाजिनको। ध्वजकोरथचक्रनराजिनको॥
मृतसूतहुखंडकोदंडहुको।युगतूणहुशस्त्रप्रचंडहुको॥शरसोंहनिरेणुसमानकरचो।युतयानद्युमाननदेखिपरयो॥३॥
पुनिकोटिनबाणहन्योक्षणमें।अँधियारअपारभयोरणमें॥ चहुँओरभईशरकीवरषा। अतिबाढिगयोउरआमरषा॥

सोरठा—भयोमंडलाकार, तरणिसरिसकोदंडवर। छोंडतसायकधार, यदुपतिकोसुतपाटवी॥

छंदपद्धरी।

निकसैंकोदंडतेबाणवृंद। नभमारतंडकोकरहिंमंद॥दशदिशनिसिंधुअरुधरनिमाँहिं। प्रद्युम्नतेजसायकदेखाँहिं
असठौररह्योनहिंचहूँघोर। जहँबाणसंडसिगेनहींघोर॥ शरपंखशोरदशदिशनहोत। मनुप्रलैपवनकोरवउदोत॥
जिमिजेठमासकोपवनपाइ।अतिधरणिरेणुद्रुतहींउडाइ॥ भरभरअखर्वेतिमिकढतबान।नहिंदेखिपरतकरमेंकमान
[illegible]
कोटिनअकाशतेगिरतबान।तिलगतभटनकेमधिविमान।तहँरहतबनतनहिंक्षणहुएक।लगिविशिखकटेभटचटअनेक
यद्यपिसुशाल्वनृपदलतजात।तद्यपिनकृष्णसुतशरघटात [illegible]
[illegible]
गेयरतुरंगभेअंगभंग। भटकितेकटेशिरएकसंग॥ नहिंरहतबनोजबमधिविमान। तबशाल्वभूपकेभटप्रधान
तजिजानकूदिभागेअकाश। सबछूटिगयोरणकोहुलाश॥ तहँसांबसात्यकीगदसुवीर। धरिधनुपहननलागेसुधीर
कटिशीशउरुपदकरहुग्रीव। कटिझरनलगेनभतेअतीव॥ मनुभयोसुरासुरयुद्धस्वर्ग। तहँतेगिराहिंबहुअंगवर्ग
जेगिरहिंघायलहुशाल्ववीर। तेबूडिमरहिंसागरगँभीर॥तहँउदधिमाहँबहुरुंडझुंड। सबठौरछायगोझुंडझुंड॥
मरिगिरेबहुतबाजीवितुंड। भोसिंधुतहाँशोणितेकुंड॥ तहँमच्छकच्छअरुगीधकाग। [illegible]
यादवनकाहियादइहूँसर्व। मंगलमनावतेसुहअखर्व॥ यहिभाँतिभयोदलकोसँहार। सबगयेमारिनृपभटउदार
तबशाल्ववीरबहुभाँतिमान। लैगोउडायदूरौविमान॥ तहँविजैमानियदुवरकुमार। कियसिंहनादअतिशयउदार
तहँसुमनसुमनवरपेअनंत। सबकहतभयेजयसुरतिकंत॥ गदसांबआदियदुवंशवीर। हरिसुतहिसराहनलगेधीर
यहिभाँतिजीतिनृपशाल्वकाहिं।प्रद्युम्नलरयोरणमध्यमाहिं।बाजतनिशानफहरतनिशान।यदुवीरकहतजयजयबखान

दोहा—जबसिगरेशरझरिगये, प्रगट्योभानुप्रताप। तबविमानचढिहनतशर, आयोशाल्वसताप॥

आवतफेरिशाल्वकहँदेखी। कियोकोपप्रद्युम्नविशेषी॥ गदसात्यकिअरुसांबप्रवीरा। लागेबढिबढिमारनतीरा
प्रद्युम्नहुरथआशुधवाई। शाल्वविमानबाणझरिलाई॥ विदुरथदंतवक्रअरुशालू। रहेतीनहाँसुभटकराला
औरनकोउभटरह्योविमाना। भेप्रद्युम्नादिककेबाना॥ उतशाल्वविदुरथदंतवक्रा। [illegible]
सात्यकिविदुरथदोउरणकीनो। दंतवक्रगदसांबप्रवीनो॥ शाल्वऔरश्रीकृष्णकुमारा। छोंडनलगेबाणकरारा

दोहा—तहँकृतवर्माकोपिकै, विदुरथकोबहुबान। मारयोधनुटंकोरिकै, करिकैकोपमहान॥

तीनहुभूपविमानहिओटे। यदुवंशिनपरमारहिंचोटे॥ तिनकेबाणकाटिरणधीरा। [illegible]

धर्मभूपतवकह्योदुखारी । मनभावेसोकरहुमुरारी ॥ भीष्मद्रोणकृपादिकपाँहीं । माँगिबिदाप्रभुतुरततहाँहीं ॥ भीमहिपृथहिनृपहिकरिवंदन।अर्जुनसोंमिलिकैयदुनंदन।।नकुलओरसहदेवनआदिक।आशिपदैअतिशैअहलादिक॥

दोहा—माँगिबिदापुनिमुनिनसों, करिवंदनयदुराज । दारुकसोंपुनिकहतभे, ल्यावहुरथद्रुतकाज ॥

स्यंदनसाजितुरतसोल्यायो । यदुवरसोंकरजोरिजनायो ॥ रामकृष्णद्रुतभयेसवारा । दारुकसोंअसवचनउचारा॥ सारथिएकद्योसनिशिमाँहीं । पुरपहुँचायदेहुमोहिंकाँहीं ॥ सारथिकह्योयुगुलकरजोरी । आपप्रतापचलतयहथोरी॥ असकहिहँकयोतुरंगनपीठी । चल्योयानसँगजातिनडीठी ॥ चक्रनकीभोघरघरशोरा।किंकिणिकोरवभयोनथोरा॥ तवयदुनाथकहनअसलागे । अशुभविचारिशोकअतिपागे ॥ चलिआयेहमतुमदोउभाई । रहेइतैवहुकालबिताई॥

दोहा—शून्यजानिद्वारावती, चेदिपमित्रनरेश । अवशिउपद्रवकरहिंगे, जायआशुतेहिदेश ॥

भुजंगप्रयातछंद ।

पुरीद्वारकालूटिलैहैंविशेषी । हनैंगेकुमारानिकोशत्रुतेषी ॥ तहाँरोहिणीकेतनैयोंउचारे । सवैविक्रमीवीरमेरेकुमारे॥ पुरीयद्यपैजायँगेभूपभारी । सुनोतद्यपैजाँयगेशत्रुमारी॥तहाँसूतकीन्ह्योंजरीवागऊची।चलेवाजिमानोंकढैवेधसूची॥ भयोशोरभारीउडीभूरिधूरी।दिशाआसमानैरहेदोउपूरी।।नहींकृष्णकोयानमार्गदेखातो।छुटोचापतेवाणसोवेगजातो॥ तज्योइंद्रप्रस्थैप्रभातैमुरारी।रह्योद्योसवाकीजवैदंडचारी।।लखेआयकेद्वारकाकेपताके।हरैमानजेचंचलाकेप्रभाके॥ लख्योदूरतेपुत्रकोवाणजाला।सुन्योंशोरसंग्रामकोत्योंकराला।लख्योशाल्वकोजानधावैअकासै।महाभीतिकारीतमकोअवासै॥ उडैतासुपीछैरथैपुत्रकेरो। तजैसात्यकीसांवहूवाणढेरो।कह्योकृष्णरामैलखोयुद्धभारी।कोऊभूपआयोमहापापकारी॥ पुरीकोटभंज्योसुगंज्योअरामैं।लरैयादवीसैन्यसोंजीतिकामैं।पुरीशून्यजानीहमारीभुवाला।जितैंहेतआयोइतैयाहिकाला॥ कह्योरामहैभूपयाशाल्वभारी।चढोकामगैयानमैंशस्त्रधारी।करैयुद्धप्रद्युम्नआकाशपाहीं।लरैंसात्यकीसांवहूभूमिमाँहीं॥ कह्योसूतसोंदेवकीकोकिशोरा।चलोसंगरैलैतुहूँयानमोरा।।तज्योदारुकौपंथद्वारावतीको।दियोफेरिवाजीनकीवेगनीको॥ गयेआशुसंग्रामकीभूमिमाँहीं।गदैसात्यकीसांवठाढेजहाँहीं।।लखेनाथकोआशुहींवीरधाये।सवैरामकृष्णैपदैमाथनाये॥ प्रद्युम्नौनभैतेरथैकोउतारी।कियोवंदनारामकृष्णैसुखारी।।लख्योयादवीसैन्यकोसोसँहारा।भरेरामकृष्णौमहाकोपभारा॥ कह्योसात्यकीसंगरैकोहवालू।जेहींभाँतिआयोपुरीशत्रुसालू ॥ कह्योआजुसत्ताइसैद्योसवीते।भयोयुद्धभारीक्षणोनाहिंरीते॥ दोऊनाथतूंद्वारकाकोपधारो।हनोशाल्वकोमैंनहींशंकधारो।।तवैकृष्णसोंयोंकह्योरामवैना।पधारोगृहैयादवीसंगसैना॥ हनोशाल्वकोमैंअकेलेप्रचारी।नवारोअहैआशुऐसीहमारी।।तहाँकृष्णरामैभन्योवैनऐसे।तुम्हैंयुद्धमैंछाडिकेजाउँकैसे॥ करोप्रीतिजोमोहिपैभ्रातभारी।करोगोनतोभोनकोह्वैसुखारी।।सवैवीरसत्ताइसौद्योसजागे।लियेजाउसंगैअहैधायजागे॥ पुरीआपरक्षौसजेसावधानै।करौंशाल्वकेसन्मुखैहौंपयानै।।अहैआपकोराममेरीदोहाई । पधारोपुरीकोकृपाकैमहाई॥ तहाँबाँकुरोवीरप्रद्युम्नभाखे । नजैहौंपुरैकोविनाजीतिचाखे।वचीभागितौनोंपुरैशाल्वनाँहीं।कहोंहौंप्रनैकोकयँमैंनकाँहीं॥ तवैकृष्णआँखैंसुतैकोदेखाई।कियोशीशनीचेपिताकोडेराई।कह्योरामकृष्णैखुसीजोतिहारी।करौंगोसोईमैंनदूजोविचारी॥

सोरठा—असकहितहँवलराम, प्रद्युम्नादिलेवाइकै । गयेआपनेधाम, करनलगेरक्षणनगर ॥
यहअंतरलहिशाल, मारतसरभरभरनिकर । लैनिजयानविशाल, धनुपधुनतधावतभयो ॥
शाल्वहिआवतदेखि, दारुकसोंकेशवकह्यो ॥ १० ॥ करुरथचपलविशेपि, लैचलुशाल्वसमीपमैं॥
जामेंसौभविमान, मेरेवायेंदिशिपरै । तैसहिलैचलुयान, अवविलंवनहिंकीजिये ॥
मानहुनेकुनभीति, मायावीहैशाल्वनृप । जानतसारथिनीति, बुद्धिमानदारुकअहो ॥ ११ ॥
दारुकसुनिप्रभुवैन, विनयकरीकरजोरिकै । नाथमोहिकछुभैन, पदप्रतापवलरावरो ॥
असकहिदारुकसूत, सावधानसवभाँतिह्वै । वाजीवेगअकूत, नेकुवागऊँचीकरी ॥
नेशुकपानिलगाय, पीठपोंछिपुचकारिकै । तुरँगनदियोवढाय, किंकिणिझनकारीभई ॥

छंदमोती०-रथचक्रनघर्घरशोरभयो।कढिवाणसमानसुजानगयो।मगमेंनहिंदेखिपरचोदृगमें।रथगे

अतिधूरिहिधुंधुरकारभयो।नृपशाल्वविमानहुमूँदिगयो॥ खगराजपताकविराजिरह्यो। रथमेंयदुनायकगाजिरह्यो॥
चमक्योचपलासमयानतहीं।नृपकेचखचौधभरयोतवहीं॥लखिकेशवकोनृपशाल्वतहाँ।उरआनतभोरणमोदमहाँ॥
द्रुतयानहिमेंकढिकैत्रढिकै।लघुमानतक्रोधहिमेंमढिकै॥ करकालसमानहिशूललियो। हरिमारनहेतविचारकियो॥
रथचंचलचारिहुँओरभ्रमैं।नहिंदेखिपरैकेहिठोररमें॥निजजानहियेअतिकोपभरयो।करशक्तिलियोनृपशाल्वफिरयो।
गहिंमारनकोअवकाशलह्यो।रथमंडलशोचहुँओररह्यो॥तवदारुकपैकरिकोपतहाँ।तजिदीनसुशक्तिकरालमहाँ १३॥
त्रमकीचपलासमचारुचली।भरिगैध्वनिचारिहुओरभली॥नभओदिशिमेंपरकाशछयो।सबदेवनकोअतिभोरभयो॥
उलकासमआवतताहिहरी।हनिवाणनसौशतटूककरी॥१४॥पुनिशाल्वहिषोडशबाणहने। तनवेधिगयेकढिवेगघने॥
[illegible]ह्वैनृपजानयुते। उडिअंवरलागभ्रमानद्रुते॥ तहँशारँगकोहरिशोरकियो। बहुसायकधारिपवारिदियो॥

दो०-हरिकेसायकसौभमें, वेधिगयेचहुँओर। जैसेनभमेंरविकिरनि, छायजातसबठौर॥ १५॥

छंद-शाल्वमहिपालकरिकोपविकरालयदुपालकेबाणतेहिकालकाटयो।
धारिकोदंडपरचंडयमदंडसबबाणवरिखंडतजिहारिहिपाटयो॥
शौरिकोनंदरिपुशरनकेवृंदलखिपूरिनिजबाणतेहिधूरिकीन्ह्यो।
कोपकरिशाल्वयुगसहसशरजालतजिवामभुजकृष्णकीवेधिदीन्ह्यो॥
छूटशारंगशारंगधरहाथतेगिरयोझनकारकरियानपाहीं।
निरखियहअद्भुतेसिद्धमुनिसुरयुतैकँपेहाहाउतैव्योममाहीं॥ १६॥
सौभपतिकोपभरिजीतिकोलोभकरिवलगिवहुवारकरिघोरशोरा।
हाथकोऊँचकरिशीशिझमकायकैकह्योरेसुनहितेनंदछोरा॥ १७॥
दौरियहिकालतूकालकेमुखपरयोवचतनाहिहालकौनिहूँभाँती।
बहुतदिनमाहिममहगनपथपहँपरयोमारितोहिकरहुशीतलहिछाती॥
बारहीवारतेकियेअपकारवहुभयोपरदारलैव्रजविहारी।
कुंडनैनगरमहँभूपशिशुपालकीनारिहरिलैगयोदगाकारी॥
राजगृहमाहमगधेशसोंकियोछलपाँडुसुतहाथतेहिकोहतायो।
भीष्मकेसुवनशिरकेशकियमुंडनैमुंचसोकंसपोपेगिरायो॥
सभामध्यफेरिमहिपालशिशुपालकोदगाकरिशीशतकाटिलीन्ह्यो।
औरधरमातमाधराकेनृपनतद्वेपकारिदाहितदुसाहिदीन्ह्यो॥
रह्योशिशुपालमहिपालमोहिप्यारअतिसखाअरुसचिवस्वामीशसाँहीं।
तासुवधसुनतमोहिंवज्रसमलगतभोएकक्षणसाहसैहोतनाहीं॥ १८॥
मारिशरपोरिशिरकाटिकैतोरअवपठयमलोककोआशुदेहीं।
भूपशिशुपालआदिकनसवसरनतसकलविधिआजुमदारिणहैदीं॥
मोरप्रणसत्यदेतोरवधकरनकोएकप्रणओरहैयमंधारी।
धीरकेभजतमैवाहतोवाणनीहताहितहातदरशंकभारी॥
जायभजिजोकहूँयुद्धतेगोपसुतहोयनोआजनहिमोगिपूरी।
ताहितेभागुमतिटाटरहुसन्मुखरहोयजोवीरताजोरिभूरी॥
पुत्रप्रद्युम्नआदिकनवालिरामकोमोहिहारिनृदियोपुरभगाइं।
आपनाओविदेयुद्धमहँमोहिपदैनृवददलकटानिनकुटवनाइं॥
राखुनाहिकृष्णजोभिटापजहननाहिमदैगोहिदनितोरपांविवाम्नारी।

जाइहौंऐनकीविजययशसहितयहद्वारकापुरीसिगरीउजारी ॥ १९ ॥
सुनतअसशाल्वकेवचनबहुरचनयुतमंदमुसकाइबोलेमुरारी ।
लखतनहिंकालनिजहालरेशाल्वशठबकतकतबातबहुबिनविचारी ॥
शूरजेयुद्धजगहोतहैंयुद्धमहँशूरताकबहुँनहिंवदनभाखै ।
क्रूरऔकायरौकुमतिकपटीसदावचनकोबलहितेमनहिराखैं ॥ २० ॥

दोहा—असकहिकैकौमोदकी, गहिकैगदागोविंद । शाल्वभूपकेउरहन्यो, करिकैकोपअमंद ॥

छंदमोतीदाम ।

गदालगतैतहँशाल्वभुआल।वम्योरुधिरैगिरिभूमिविहाल॥रह्योघटिकायुगमूर्च्छितभूमि।उठ्योपुनिभूपतिघायलघूमि
तहाँहरिकोबलजानिमहान । भयोशठआशुहिअंतरधान ॥ घरीयुगमेंइकपूरुषआइ । कह्योहरिसोंनिजशीशनवाइ॥
लग्योपुनिरोवनसन्मुखठाढ।बहावतनीरबढ्योदुखगाढ॥कह्यौपुनिजोरियुगैनिजहाथ।सुनोविनतीहमरीयदुनाथ २२॥
तुम्हैंडरिशाल्वभुआलुकराल।गयोतुम्हरेमनिमंदिरहाल॥लियोवसुदेवहिकोशठबाँधि।भग्योरथमेंचढिवाजिननाँधि॥
गहैजिमियागपशूकरविप्र।गह्योतिमिआपपिताकहँछिप्र॥ दियोमोहिंदेवकिमातुपठाइ।कह्योमोहिंकोयहिभाँतिबुझाइ
कहोतुमकृष्णहिजाइतुरंत।कियोइतशाल्वपिताकरअंत॥ करैंघरकीसुधिआइकुमार।गयेमरिहैंइतकेवलवार॥२३॥
निजैपितुबंधनकोसुनिकान । सबैहरिकोयुधहर्षभुलान ॥ लगेहगतेबहुढारननीर । कियोबहुरोदनह्वैविनधीर
कह्योपुनिवित्तसँभारिमुरारि।कहोसबदूतवृतांतविचारि ॥२४॥ [illegible]
गदोअरुसात्यकिसांबहुवीर । सबैयदुवीरवधेरणधीर ॥ गयेबलखोइकिधौंसबसोइ । रहेकहुंगोइकिधौंअरिजोइ ।
लियोधरिशाल्वपिताकहँजाइ।नहींयहमोमनबातसमाइ॥नहींकछुजानिपरेविधिलेख।तऊनहिंहोतविचारविशेख२५॥
बतातयहीविधिदूतहिपाहिं । देखाइपरचोरणशाल्वतहाँहिं ॥ धरेकरकेशहरीपितुकेर । [illegible]
घसीटतल्याइरणैमधिशालु।कह्योहरिसोंअसवैनकरालु॥२[illegible]
यहीहितजीवहुयाजगमाहिं । गुमानभरेतुमगोपसदाहिं ॥ वधौंयहिकोतुवदेखतआजु । बचावहुआइइतैयदुराजु
जोपैंसतिहोतुमयाहिकुमार।तोपैंकिनहोहुनहींरखवार२७तहाँअसवैनहिंशाल्वउचारि।करालकृपाणहिहालनिकारि
लियोवसुदेवहिकोशिरकाटि।तक्योहरिकीदिशिहूँअतिडाँटि॥गयोपुनिसौभविमानहिआसु।लख्योनृपशाल्वभुआलु२८
विनाशविलोकिनिजौपितुकेर । गिरेहरिमूर्च्छितशोकघनेर ॥ रहेयुगदंडप्रजंतविहाल । रहीतनमेंसुधिनाततकाल
तहाँपितुकोतनऔसोइदूत।विलाइगयेजिमिचेटकभूत॥कह्योतबदारुकनाथहिटेरि।गुनोप्रभुमायहिशाल्वहिकेरि
नहींवसुदेवनदूतदेखात । करैअबशाल्वविशेषिहिघात ॥ उठेप्रभुभूपतिकोछलजानि । गहेहर्षाइशरासनपानि

दोहा—शाल्वभूपमायासकल, क्षणमहँगईविलाइ । जैसेजागेस्वप्नके, सबदुखजातनशाइ ॥३०॥३१॥ ३२॥३३॥

छंद—कृष्णतहँशाल्वकेवधनहितकोपिके । पानिमेंलीनसारंगचितचोपिके ॥
देखितहँसौभपतिधारिधनुहाथमें । हन्योबहुशस्त्रयदुनाथकेमाथमें ॥
कृष्णअरिशस्त्रसबनाशिबहुबाणते । काटिदियतासुध्वजविशिखबलवानते ॥
मारिपुनिसहसशरकवचतोहिडाँटिकै । खड्गद्वैधनुपकियशत्रुकहडाँटिकै ॥
तीनिशरमारिकियकोटबहुखंडहै । लीनकौमोदकीगदापरचंडहै ॥
तादिकैनोरसोंसौभकोदनतभे । कौनिहूभाँतिनहिंबचतअसभनतभे ॥ ३४ ॥
लगतहरिहाथकीगदातेहिंयानमें । टूककेसहसगोसौभअसमानमें ॥
सिंधुमेंगिरतभोमनहुँतारावली । भूमिमेंगिरोभोशाल्वअतिशयबली ॥
शोरकरिशाल्वगहिगदाअतियोग्दै । कोपकरिचल्योयदुनाथकीओरहै ॥ ३५ ॥
देखिनारिजावतेभउच्छरटेतभे । कृष्णकरिकोपतेदियाहुमेंदेतभे ॥

बाहुयुतगदाकटिगयोशरलागतै । रुक्योनहिंशाल्वअरिलधनअनुरागतै ॥
शाल्वकेवधनहितचक्रतबहरिलियो । कोटिरविउदयगिरिमनहुँभासैकियो ॥ ३६ ॥
छोड़िदियचक्रआनंदउरछायकै । शाल्वशिरकाटिलियआशुहीधायकै ॥
कुंडलैयुक्तअरिशीशअवनीगिरचौ । रुंडहूँसन्मुखैपरचोनहिंकछुफिरचो ॥
वृत्रकोवज्रधरयुद्धमेंज्योंदल्यो । शाल्वकहँकृष्णतिमिसमरसन्मुखमल्यो ॥
शाल्वकेगिरतमेंहहारवह्वैरह्यो । देवऋषिसिद्धगणमुदितह्वैजयकह्यो ॥ ३७ ॥

दोहा–सुमनसुमनवरषेमुदित, बहुदुंदुभीबजाय । नाचनलागीअप्सरा, गंधर्वयुतबहुगाय ॥
सोरठा–शाल्वविनाशविलोकि, दंतवक्रअतिकोपिकै । धावतभोभुजठोंकि, सखावैरकेलेनहित ॥ ३८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्री राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे सप्तसप्ततितमस्तरंगः ॥ ७७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–शाल्वऔरशिशुपालको, अरुपौंड्रककोमित्र । दंतवक्रदुर्मदमहा, कृष्णहिंमानिअमित्र ॥
मित्रनकोनिरखिविनाशा।गदाधारिकरिकोपप्रकाशा॥१॥शैलसमानविशालशरीरा।महाभयंकरअतिरणधीरा॥
पायनतेपुहुमिकँपावत।अपनेसन्मुखधावतआवत ॥दंतवक्रएकहरिहिदिखान्यो।दूजोभटनहिंसंगमहान्यो॥२॥
क्रकहँतहाँनिहारी । गदागदाधरनिजकरधारी ॥ रथकोतजिसन्मुखप्रभुधाये । दंतवक्रढिगआशुहिआये ॥
कहँनिरखिरुक्योशठकैसे । उदधिवेलावारिधिजलजैसे ॥३॥ बोल्योदुर्मदगदाउठाई । भलीबाततोसोंवनिआई ॥

दोहा–बहुतदिननतेखोजतै, रह्योतोहिनंदनंद । बहुतदिननलोंबचिगयो, करतअनेकनफंद ॥
ोनयनपथमहँपरिआई । तोरमीचइतहींलैआई ॥ ४ ॥ मातुलसुततैंमाधवमोरा । तेरअहैधर्मनहिंथोरा ॥
न्बंधीअहौंतिहारो । तासुहननकहँभयोतयारो ॥ तातेअबनहिंतोहिंबचैहौं । मारिगदायमपुरैपठैहौं ॥
टवज्रसमगदाहमारी । तासुचोटमहँमीचतिहारी ॥५॥ आजुतोहिंहतिकैरणमाँहीं । उऋणहोउंगोमित्रनकाँहीं॥
छलकरिभूपनमारे । रहेनृपतितेमोकहँप्यारे ॥ तोहिमारिसुखपहौंकैसे । तनतेव्याधिदूरिभयजैसे ॥ ६ ॥

दोहा–दंतवक्रयदुनाथको, असकहिवचनकठोर । गदाधारिधावतभयो, करतसिंहसमशोर ॥
किवचनसुनेहरिऐसे । लागतचाबुकगजतनजैसे ॥ हनीगदायदुपतिकेशीशा । कीन्ह्योंघोरशोरअवनीशा ॥ ७ ॥
पतितासुगदाकेमारे । तिलभरितहाँटरेनटारे ॥ कौमोदकीगदागहिहाथा । हनातासुउरमहँयदुनाथा ॥ ८ ॥
वक्रउरगदाप्रहारा । लाग्योमानहुँकुलिशप्रहारा ॥ भयेउटकछातीतिहिकेरी । रुधिरधारमुखकढ़ीघनेरी ॥
वक्रपगकरनपसारी।महीगिरचोमारिगोंखनिकारी९सूक्ष्मज्योतितासुननानिकसी।सबकेदेखतहरिमहँप्रविसी१०॥

दोहा–भ्राताताससुविदुरथो, निरखिबंधुकरनाश । धावतभोअसिचर्मगहि, शोकितलेतउसाँस ॥ ११ ॥
पितकृष्णहिमारनआयो । निरखितासुहरिचक्रचलायो॥कुंडलकीटसहिततेहिशीशा।काटिगिरायोमर्दीमर्दीशा॥
पजयशोरसुरनसबकीन्हें।प्रभुपैपुहुपवरपिबहुदीन्हें॥१२॥ यहिविधिशाल्वविदूरथकोंही।दंतवक्रकरमारिगिनहोंही॥
रनरतेअस्तुतिबहुपावत । रथमहँचढ़ेमोदअतिछावत ॥ चढेदारुककादैयदुराई । रणमहँविजयनिशानबजाई॥
याधरगंधर्वमहोरग । गावतचलेसुयशहरिकेसंग१३मुनिऋषिसिद्धपितरगननाना।किन्नरऔचारणहुमहाना १४॥

दोहा–गायगायहरिकोसुयश, पायपायमुदमोद । बरषिबरषिपुनिपुनिसुमन, गेनिजनिजसबलोग ॥
पुष्पादिकसंगटिवारं । लायेराजसेनअगुआरं ॥ निरखेपुरदारिपथमसुनागे । कियप्रवेशद्वारिकामेंआगे ॥
रशोभानिरखतयदुराई । गयेमहलचकरेंलनिसुरछाई॥१५॥ [illegible]

जेकुमतीपशुसमजगमाहीं।कबहूँतेकहहिंहारिहारिजाहीं ॥ नहिंजानहिंलीलाहरिकेरी।करहिंदासरक्षणबिनदेरी॥१६॥
बसेद्वारिकामहँकछुकाला । रामयदुवरनसहितकृपाला ॥ इतैकौरवनपांडवसंगा । जुरिगोमहाभयानकजंगा ॥

दोहा–अर्जुनसारथिहोनाहित, श्रीवसुदेवकिशोर ॥ तजिकेआयुधकरिकृपा, भयेपांडवनओर ॥

तबइहिविधिबलरामविचारे । अहेंबरोबरदोउहमारे ॥ उभयसहायकरबनहिंनीको । यहीउचितमनमेंदैठीको ॥
प्रद्युम्नहिंटिकायनिजधामा । तीरथकरनव्याजबलरामा ॥ लैसँगवृद्धनविप्रनकाहीं।तीरथकरनचलेसुखमाहीं॥१७॥
प्रथमहिगमनेक्षेत्रप्रभासा । पितरनदेवनदियेहुलासा॥पुनिसरस्वतिकेतीरहितीरा । तीरथकरतचलेबलवीरा॥१८॥
गयेपृथूदकमहँसुखछाये । पुनिप्रभुबिंदुसरोवरआये ॥ मज्जनकरिकैपुनित्रितकूपा । गयेसुदर्शनतीर्थअनूपा ॥

दोहा–नरनारायणकोरह्यो, जहाँसुभगतपठाम । ऐसेबदरीवनगये, अतिमोदितबलराम ॥

फेरिब्रह्मतीरथमहँआई । दियअन्हायमणिगणबहुगाई ॥ गयेचक्रतीरथपुनिचारू । तहाँदानदैविविधउदारू ॥
प्राचीसरस्वतीकहँजाई । मज्जनकरिदियदानमहाई॥१९॥पुनियमुनागंगातटआये । मज्जनकरिअतिशयसुखछाये॥
गंगायमुनातीरहितीरा । तीरथकरतचलेबलवीरा ॥ आयेनैमिषारजगदीशा । जहाँअठासीसहसमुनीशा ॥
करहिंयज्ञपरिपूरणपावन।ध्यावहिंसदाकृष्णजगभावन२०आवतरामहिंलखिमुनिराई।उठेसकलअतिशयसुखछाई॥

दोहा–चलिआगेसबकरतभे, रामहिंविविधप्रणाम । प्रीतिसहिततिनकोकिये, बहुप्रणामबलराम ॥

बलकोबहुविधिपूजनकीने।कुशलप्रश्नकहिकैसुखभीने॥२१॥यहिविधिविप्रनयुतबलराई।बहुसतकारमुनिनसोंपाई॥
विप्रनसहिततहाँहलधारी । बैठेसुखितसिंहासनभारी॥जासुरोमहर्षणअसनामा । व्यासदेवकोशिष्यललामा॥२२॥
कथाकहतसोबैठतखतमें ।उठोनसोबलरामलखतमें॥नहिंकरजोरिकियोसोवंदन । ताहिनिरखिकोपेयदुनंदन॥२३॥
मनमहँलागेकरनविचारा । सूतनकियोमोरसतकारा ॥ बैठोसबविप्रनतेऊँचो । हैसबभाँतिजातिकोनीचो ॥

दोहा–जानिपरतसोहैतनहिं, हैयहअतिमतिमंद । धर्मपालमोहुकहँनिरखि, उठ्योनमधिमुनिवृंद ॥ २४ ॥

व्यासशिष्यबहुपढ़ेपुराना।धर्मशास्त्रइतिहासमहाना॥२५॥यहशठभरोमहाअभिमाने । अपनेकहँपंडितअतिमाने ॥
पढ़ेपदापिशास्त्रसमुदाई । तऊनशठकीशठताजाई ॥ जैसेनटनिजउदरनिमित्ता । करैकलाबहुचंचलचित्ता॥२६॥
जेपाखंडीअतिशयपापी । अहैंसदाजीवनसंतापी ॥ तिनकेवधहितममअवतारा । होतभयोयहिजगतमँझारा ॥
तातेयहहैमारनलायक । असविचारिमनमेंयदुनायक ॥२७॥ यद्यपिकरतरहेतीरथभल । रह्योनहींसँगमेंमुसलहल ॥

दोहा–तदपिटेकरमेंकुशा, कोपितह्वैजगदीश । फेंकिसूतपैआशुही, काटिदियोतेहिशीश ॥ २८ ॥

गिरयोसूतआसनतेजबहीं । हाहाकारकियेमुनितबहीं ॥ पुनिभार्गवकोप्रबलविचारी । कह्योरामसोंपरमदुखारी ॥
यहोअपर्मकियोयदुरामा । तुमतोरहेसदामतिधामा॥२९॥हमपौराणिकयाकहँकीन्हें। प्रतिलोमजतेद्विजकरिदीन्हें ॥
ऊँचआसनहमदैबैठाये । कथासुननहितअतिचितचाये ॥ दईयाहिआयुपावनेरी । जबलोंहोययज्ञमखकेरी ॥
येमहुदिपैदेवरदाना । यहाकहेदयदमकल्पपुगना॥३०॥सोतुमबिनजानतअसगमा । कियोब्रह्मवधअतिअघ[illegible]

दोहा–यद्यपिईश्वरजगतके, वेदप्रमाणकआप । फक्छुनीकनेवरकरम, लगेपुण्यनहिंपाप ॥ ३१ ॥

मदपिपरहिनरल्पामाहीं । प्रायश्चितकरोनोनाहीं ॥ नातिप्रनकहँपथिबहुपापी । ह्वैहैनहिंअतिशयसंतापी ॥
सुनहिं[illegible]नअसरामकी[illegible]मुनिकहबहुमनकाम्न॥सुननमुनिनकेबचनसुहाये।बोलेरामपरमसुखछाये॥

बलभद्र उवाच ।

[illegible]॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

दोहा–[illegible] । [illegible] ॥ ३२ ॥

ऋषय ऊचुः।

आपुअस्त्रअरुवचनहमारे। सत्यहोहिंदोउसबहिप्रकारे॥ करहुनाथतुमसोइउपाई। जामेंउभयभाँतिबनिजाई॥ सुनिकैरामऋषीसनवानी। बोलेवचनहियेअनुमानी॥ ३५॥

बलदेव उवाच।

पुत्रआतमावेदउचारे। तातेअसशंकानिरवारे॥ होइहिसोसुतसूतसमाना। भाषिहिवेदपुरानहुनाना॥ ह्वैहैआयुर्दायमहानी। ममप्रसादलीजैसतिजानी॥ ३६॥ कहहुऔरजोआशतुम्हारी। सोउकरनकीचाहहमारी॥ कियोविनाजानेमैंपापा। जामेंकरहिंनसोसंतापा॥

दोहा-सुनतवचनबलदेवके, हरषितभयेमुनीश। जोरिपाणिकीन्हेंविनय, नायरामकहँशीश॥ ३७॥

ऋषय ऊचुः।

बल्वलसुतदानवअतिघोरा। बल्वलनाममहाबरजोरा॥ पर्वपर्वमहँसोइतआवै। करैउपद्रवत्रासदिखावै॥ ३८॥ सुरामूत्रमलशोणितपीवा। मज्जामांसहुहाड़अतीवा॥ वरषंहिमखवेदिनमहँधाई। करहिनदेतयज्ञदुखदाई॥ ताकोवधकीजैबलरामा। तौहमरोपूजैमनकामा॥ यहैहमारिकरहुसेवकाई। होब्रह्मण्यदेवबलराई॥ ३९॥ भरतखंडकीकरिप्रदक्षिणा। तहाँद्विजनकहँदेवदक्षिणा॥ जावोयहिविधिद्वादशमासे। करिआवोइतसहितहुलासै॥

दोहा-तहँइततीरथमेंसविधि, मज्जनकीजेतात। तवपातकसबछूटिहै, यहिविधिवेदविख्यात॥ ४०॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे अष्टसप्ततितमस्तरंगः॥ ७८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-सुनतमुनिनकेवचनबल, मुदितकहेमुसक्याई। बल्वलकोवधहमकरब, नहींशंकदरशाई॥

असकहिरहेराममखशाले। करतविचारदैत्यकरकाले॥ जबपहुँचीपूरणमासी। होमकरनलागेतपरासी॥ धमहिधूरिपारदिशिधाई। प्रगटेमेघमहाभयदाई॥ लगेरुधिरवर्षनमखमाँहीं। मुनिगणभेअतिदुखिततहाँहीं॥ ह्योप्रचंडपवनअतिघोरा। होतभयोनभशोरकठोरा॥ वर्षनलगीपीवकीधारा। होतभईदुरगंधिअपारा॥ १॥ निमलमूत्रहाड़अरुमाँसा। महावृष्टिभेतुरतअकासा॥ हाहाकारसकलमुनिकीने। कहाँगयेबलभद्रप्रवीने॥

दोहा-पुनिमखशालैलखिपर्यो, बल्वलदानवघोर। गरजतघनसमवारबहु, लीन्हेंशूलकठोर॥ २॥

मानहुँमेदुरमेघभयावन। तुरतहिचहतमुनिनकहँखावन॥ मानहुँकज्जलकेरपहारा। महारूपअतिशयविकरारा॥ गढ़ेलालबालशिरमाँहीं। तरुखजूरसममूछसोहाहीं॥ कालडाढ़समडाढ़विशाला। केतुसरिसदोभ्रुकुटिकराला॥ नेपटनरकसमआननभारी।श्रवणशैलकंदरभयकारी॥ बारहिबारवमतशिखिज्वाला।बल्वलमनुकालहुकरकाला॥ भमहँदेखिपर्योयहिभाँती।छाइगयोतमभैमनुराती॥तबमुनिअतिशयदुखितपुकारे।कहाँरामरखवारहमारे॥ ३॥

दोहा-तबबलभद्रप्रवीरतहँ, हलमूसलसुधिकीन। तेतहँतुरतहिंआइगे, बज्रहुतेबहुपीन॥

शत्रुसेनसंहारनवारे। कितेदानवनिप्राणनिकारे॥ तेहलमूसललैहलधारी। मखगृहतेंद्रुतकढ़ेप्रचारी॥ ४॥ बल्वलबलभद्रहुकहँदेरी। धायोकरिउरकोपविशेरी॥ रामतहाँनिजहलहिपसारी। दियोअकाशहितेहिगरडारी॥ खैचिबल्वलहिनिजढिगलीन्ह्यों।तासुशीशमहँमूसलदीन्ह्यों ५ मूसललागतफट्योललाटा।शोणितधारवहीमुखबाटा॥ गेरयोधरणिमहँकरतचिकारा।गिरैशैलजिमिवज्रविदारा॥६॥ तबमुनिबलहिमखाननलागे।आशीर्वाददियेअनुरागे॥

दोहा-करतभयेबलभद्रको, मुनिगणसबअभिषेक। वृत्रहनेजिमिवासवहि, कीन्हेंदेवअनेक॥ ७॥

जंतीसुमनोहरमाला। दैदेजाहिमेंकंजरशाला॥ रामहिमुनिजनदियपहिराई। दिव्यविभूषणवसनमँगाई॥

तातेरामहिभूपितकीने । आशिरवादविविधविधिदीने ॥८॥ तिनतेविदामाँगिबलराई । तीरथकरनचलेसुखछाई ।
विप्रनसहितकौशिकीआई । दानदियेतहँसविधिनहाई ॥ मानसरोवरगेसुखभरिता । प्रगटीजहँतेशरयूसरिता ॥९
पुनिशरयूकेतीरहितीरा । आयेद्रुतप्रयागबलवीरा ॥ मज्जनकरिदानहुतहँदीन्हें । ऋषिसुरपितरनतर्पणकीन्हें ।
दोहा–पुनिहरिहरक्षेत्रहिगये, ॥ १० ॥ पुनिगोमतीनहाय । करिमज्जनपुनिगंडकी, तीर्थविपासाजाय ॥
दियेदानतहँसविधिनहाई । वासत्रिरातकियेसुखछाई ॥ करिमज्जनदानहुपुनिदीन्हें । शोणभद्रपुनिदर्शनकीन्हें ॥
गमनेगंगासागरसंगम । तहाँत्रिरातवसेयुतसंयम ॥११॥ गयाजायपितरनकहँतरपे । पिंडदानविधियुतबहुअरपे ॥
गोदावरीगयेमुदभारिकै ॥ यदुनंदनअभिवंदनकरिकै । दानदियेविप्रनमनरंजन ॥ १२ ॥
पुनिमहेंद्रपर्वतमहँजाई । परशुरामकहँलखेतहाँई ॥ भीमरथीमहँकीन्हेंमज्जन । दानदियेविप्रनमनरंजन ॥ १२ ॥
कृष्णासरिमहँफेरिनहाई । पंपासरगेपुनिबलराई ॥ गमनाकियेश्रीशैलकहँ, जहँशंकरकोधाम ॥
दोहा–कार्तिकेयकोकरिदरश, तहँतेपुनिबलराम । वेङ्कटशैलनिरखियदुराई । पुरीकामकोष्णीपुनिआई ॥ १३
महापुण्यजोद्राविडदेशा । तहाँगयेबलरामसुवेशा ॥ परमपुण्यप्रदजेहिमुनिगाये ॥
कांचीपुरीगयेसुखपाई । कावेरीसरिसविधिनहाई ॥ पुनिश्रीरंगनगरकहँआये । हरिक्षेत्रकहँजायनिहारी ।
जहाँरहतनितहींभगवाना । वासकरहिंसंतहुतहँनाना ॥१४॥ ऋषभशैलकहँगेहलधारी । महापापजहँनशतनहाये ॥ १५
पुनिदक्षिणमथुराकहँदरसे । विप्रनपूजिअमितधनबरसे ॥ सेतुबंधरामेश्वरआये । प्रीतिसहितकरिसेव ॥
दोहा–दशहजारगौवेंदई, विप्रनकहँबलदेव । शंकरकोपूजनाकिये, तहाँदानदैसविधिविशेषी ।
फेरिताम्रपर्णीकृतमाला । मज्जनकियेपुण्यप्रदहाला ॥ मलयकुलाचलपर्वतदेषी । गयेसमुद्रहियुतअह्लादा ॥
तहाँरहेअगस्तिमुनिराई । तिनकोजायरामशिरनाई ॥ तिनतेप्रभुलैआशिरवादा । सदावासजहँरमानिवासा
पुनिकन्यादुर्गाकहँदेपे । फाल्गुनक्षेत्रआयशुभवेपे ॥ १७ ॥ पंचअप्सरातीर्थप्रकाशा । गेगोकर्णहुँयदुवंशेशा
रामतहाँविधिसहितनहाई । दशहजारदीनीवरगाई ॥ १८ ॥ पुनित्रिगर्तअरुकेरलदेशा । आर्याकोबलराम ॥ १९ ॥
दोहा–वसतजहाँशंकरसदा, शिवक्षेत्रजेहिनाम । दीपमध्यदेवीलखे, तहँत्रिकालकीन्हींबलसंग
सूर्यक्षेत्रकहँपुनिबलआये । तापीसरितामाँहनहाये ॥ फेरिपयोष्णीसरिनिर्विंध्या । माडिलानगरीकियेपयान
पुनिदंडकारण्यह्रेरामा ॥ २० ॥ गयेनर्मदातटबलधामा ॥ तहँमज्जनकरिदैबहुदाना । मिलेविप्रतहँसहितहुलासू ॥ २१
पुनिरेवाकेतीरहितीरा । मनुतीरथकोपरसतनीरा ॥ आवतभेपुनिक्षेत्रप्रभासू । कुरुपांडवजसभईलराई ॥
तहँविप्रनसोंपूछेरामा । केहिविधिभोभारतसंग्रामा ॥ दियेविप्रसबकथासुनाई । सकलभूमिकोभार ॥ २२
दोहा–सुनिभारतकोसमरवल, मनमेंकियोविचार । केशवदियोउतारिअब, करहिंगदायुधदोउजयकांक्षी
फेरिविप्रबोलेअसबानी । भीमभीमबलकोअभिमानी ॥ अरुदुर्योधनहूविनयोधन । [illegible]
असमुनितहँबलभद्रउदारा । मनमहँकीन्ह्योविमलविचारा ॥ [illegible]
इनकोवरजिदेहुँमेंजाई । होहिंशांतदोउतजोंहिलराई॥असविचारिवसुदेवकुमारा । [illegible]
आवतबलभद्रतहँदेपी । पांडवदलभोशोकविशेषी ॥ धर्मभूपअर्जुनयदुराई । नकुलओरसहदेवहुधाई ॥
दोहा–आगेबढ़िचढ़िकरतभे, मोदितसकलप्रणाम । तिनकोआशिषदेतभे, यथाउचितबलराम ॥
टोटिटोटिपुनिनिजनिजठामा । बैठतभयेमौनभयरामा॥लखोविचारनसोकहिछाये । रामकौनकारणइतआये [illegible]
जहाँभीमदुर्योधनवीरा । करतरहेयुधदोउरणधीरा ॥ दोउवीरविजयअभिलाषी । [illegible]
मंडलकरहिंविचित्रअनेकन । नाहिंविश्रामलेहिंएकहुछन॥तहाँजाइबलभद्रउदारा।कोपितह्वैअसवचनउचारा
मुनहुभीमदुर्योधनराजा । तुमसमानदोउबलीदराजा ॥ वृथालरहुअबकोपबढाई । बसहुआपनेआपनेठाईं ॥
दोहा–भीमसेनतुमतेअधिक, बलमेंअहैअनूप । भीमसेनतेतुमअधिक, शिक्षामहँकुरुभूप ॥ २६
तातेविजयपराजयनाहीं।जानिपरतयुधमहँमोहिकाहीं २७ [illegible]
[illegible] ॥ २८ ॥ तहँनिजशिष्यनकोबलमेनू । [illegible]
श्रीबलभद्रवचनभटदोऊ । पैरनमान्योनाहिंकोऊ [illegible]

वैठिगयेतेहिथलवलरामा । लागेलखनयुद्धअभिरामा ॥ धर्मनरेशनकुलसहदेवा । बैठेइकथलमानहुँ देवा ॥
अर्जुनयदुपतिइकथलजाई । बैठतभेवलभयसकुचाई ॥ लाग्योहोनगदायुधभारी । कहँलोंसोमुखजाइउचारी ॥
दोहा-जोरजासुगजसहसदश, ऐसोभीमअनूप । गदायुद्धतिमिअतिचतुर, दुर्योधनकुरुभूप ॥
तलरतबोल्योबहुकाला । हारेनहिंदोउवीरविशाला ॥ भीमसेननेसुकथकिगयऊ । तवहरिओरनिहारतभयऊ ॥
महिश्रमितजानियदुराई । जाँघठोंकिसंज्ञादरशाई ॥ भीमसेनतहँजानिइशारा । लरनलग्योलहिमोदअपारा ॥
किसुयोधनभीमहिशीशा । मारीगदाजोरिअवनीशा॥जानचह्योपुनितेहिथलमाँहीं । भीमहन्योतवभूपतिकाँहीं ॥
ीजाँघमहँगदाप्रचंडा । टूटिजंघजोसमगजशुंडा ॥ गिरोभूपतहँखाइपछारा । मान्योचहुँदिशिहाहाकारा ॥
दोहा-करीप्रतिज्ञाभीमजो, सभामध्यवरजोरि । तेरेशिरपगदेहुँगो, जांघगदातेटोरि ॥
इसुधिकरिरदरदछ्ददावी।भीमदयावनवीरसितावी ॥ मुकुटसहितदुर्योधनशीशा।निजपदधरिदीन्ह्योंअवनीशा ॥
हलखिधर्मभूपदुखमान्यो । पैनकछूमुखवचनवखान्यो ॥ निरखिअधर्मयुद्धतेहिठामा । कियोप्रचंडकोपवलरामा॥
रधदोउवाहुउठाई । धिगधिगभीमहिंकह्योसुनाई ॥ तैंअधर्मकीन्ह्योंयहिठोरा । मान्योनहिंसकोचकछुमोरा ॥
रधअभिषेकितनृपशीशा । धरयोचरणकछुधर्मनदीशा॥याकेअतिशयभरयोगुमाना।अपनेसमजानतनहिंआना॥
दोहा-आजुहिविनपांडवमही, मैंकरिहौंहलमारि । असकहिहलमूसलगहे, वारहिवारपुकारि ॥
ठयोरामरोपितअतिघोरा । धायोभीमसेनकीओरा ॥ भयोरूपतहँमहाभयावन । मानहुँचहतजगतकहलावन ॥
र्मभूपलखिकोपितरामैं । मानिमीचुमूर्च्छितभेठामैं ॥ भीमसेनतहँगयोसुखाई । मानौमीचुनगीचाहिआई ॥
ाढोभयोगदामहिडारी । वारवारवलवदननिहारी ॥ अर्जुनहूँतहँगयोसुखाई । हरिहिलख्योदीनतादेखाई ॥
कुलऔरसहदेवहुदोऊ । महारथीतहँकेसवकोऊ ॥ कीन्ह्योंमनमहँसत्यविचारा । ह्वैगोअर्जुनभीमसँहारा ॥
दोहा-चलधावतधरणीधर्षी, धरणिधरनभोकंप । वारिधिहूवेलातजी, रविभेमानहुचंप ॥
ानिपांडवनकोसंहारा । धायोतहँवसुदेवकुमारा ॥ भीमहिजुमकतमहँहलधारी । गह्योकृष्णदोउभुजापसारी ॥
कह्योसमुझिलीजैकछुवाता । भीमघातकीजैपुनिभ्राता ॥ रेल्योरामभीमकीओरा । ऐंचतभोदेवकीकिशोरा ॥
उसेसितासितदोउतहाँहीं । मनुरविशशिसँगसाँझसोहाँहीं ॥ कह्योवैनयदुनाथवहोरी । सुनियेभ्रातविनयकछुमोरी॥
भीमनकीन्ह्योंकछुअपराधा । दुर्योधनकीन्हीवहुवाधा ॥ द्रुपदसुताकहँसभामँझारी । विनपटकरनचह्योअवकारी॥
दोहा-खेलिजुवांछलकरिसभा, हरयोराजधनधाम । वारहवर्षनिकारिदिय, वागेठामहिठाम ॥
भीमकियोप्रणसभामँझारी । तोरिहौंजंघगदातुवमारी ॥ धरिहौंमैंपदतेरेशीशा । ह्वैहैनाहिंओरविसवीसा ॥
ोप्रणभीमपूरकरिलीन्ह्यों । राउरकछुअपराधनकीन्ह्यों॥तवबलठोंटिकह्योघनश्यामें । अनुजतोरहैयह्कृतकामें
तहाअधर्मीपांडुकुमारा । जानतनाहिंकछुधर्मविचारा ॥ असअनुचितकेसोलघुभाई । अपनेसन्मुखनहिंसहिजाई
रीछूटिनचंचलताई । कीजतवारवारलरिकाई ॥ तोहिंमोहिंकौरवपांडुसमाना । तेंगहिपांडवपक्षमहाना
दोहा-देतासियापनइनहिंको, हैअर्जुनकोसूत । तोहिंनऐसीचाहिये, तेंयदुवंशसपूत ॥
ववोलेयदुवरमुसकाई । मोरमीतपांडवहैंभाई ॥ धर्मधुराधरनीमहधारी । धीरधराधरयुद्धविहारी ॥
ासवैकौरवअतिपापी । वृथापांडुपुत्रनसंतापी ॥ इनकोपक्षछोडिहैभाई । पापिनपक्षगहेंकिमिजाई ॥
ाडवमित्रसोमित्रहमारो । पांडवशत्रुसोशत्रुविचारो ॥ तुम्हेंशपथहैभ्राततहमारी । तजहुभीममुखमोरनिहारी
हलमूसलमहिमहँडारी । वोलेहलधरतहाँपुकारी ॥ दुर्योधनपापीहैनाहीं । यहिपापीसवकहहुवृथाहीं
दोहा-सवसुभटनकेदेखतइत, दुर्योधनकहँआज । देहुँमुक्तिमैंशाश्वती, लहतजोयोगिराज ॥
हुसुयोधनमुक्तिसुखारी । गेअघजरिजिमिदारुदवारी ॥ असकहिचढेजाइरथरामा । चलेद्वारका
पतजानिरामकहज्वैके । धर्मनृपतिअतिविमनसह्वैके ॥ चलेमनावनरामहिकाहीं । तवयदुवर
ोनअवसवनहुमहराजा । राममनावनकेरणकाजा ॥ जानतहुयदुकुरुभ्राताको । काको

कँपतअंगअतिवदनमलीना । पियसोंकह्योवचनअतिदीना॥हमहिंतुम्हैंदारिद्रसतावै।अबतोगृहमेंनहिंरहिजावै ॥८॥

दोहा–कहतरहेयहबाततुम, प्रथमहिमोतेकंत । मोरमित्रयदुनाथहैं, श्रीरुक्मिणिकेकंत ॥

परब्रह्मसोईभगवाना । हैंब्रह्मण्यशरण्यसुजाना ॥ हैंअंधकयदुमधुकुलपालक । दीरघदुवनदनुजकुलघालक ॥ ९ ॥
दीहदुरितदरदीनदयाला । दासनदेखिद्रवततत्काला ॥ तिनकेनिकटसहितअनुरागा । काहेनहिंगमनहुबडभागा॥
जिनकेमित्रअहैंभगवाना । तिनकोदुखआश्चर्यमहाना ॥ तुमकहँदेखतकृष्णकृपाला । करिहैंतुमकहँतुरतनिहाला ॥
जानितुम्हैंसकुटुंबदुखारी । देहैंधनबहुतुम्हैंमुरारी ॥ बसैंद्वारिकामहँयदुराजू । अबैगयेनहिंकौनेहुकाजू ॥

दोहा–अपनोपदसुमिरतहिमैं, यदुपतिदीनदयाल । अपनेजनकोदेतहैं, आतमहूँतत्काल ॥ १० ॥ ११ ॥

जोसबछोडिकृष्णकोध्यावै । दुर्लभताहिनकछुदरशावै ॥ तातेजाहुकंतअबआसू । जहाँबसतहैंरमानिवासू ॥
यहिविधिमृदुलगिराद्विजनारी।पतिसोंबहुविधिकह्योदुखारी॥तबविचारिमनकह्योसुदामा।कहतिनीकमेरीयहबामा॥
मिलिहैधनकोमिलिहैनाँहीं । पैहरिदरशमिलीहगमाँहीं॥होईमोहिंपरमयहलाभै । मिलिहौंभुजभरिअंबुजनाभै॥१२॥
बारिअतिशयरतिभीनी गमनकरनकहँद्विजमतिकीनी पुनिबोल्योनिजतियसोंबानी भलीबाततुमकहीसयानी

दोहा–छूछेकरमित्रहिमिलब, उचितपरतनहिंजोय । भेटदेनकहँदेहुकछु, जोतुम्हरेघरहोय ॥ १३ ॥

वचनसुनततियधाई । माँगिचारिघरचाउरल्याई ॥ चारिहुँमूठीदियपतिकाँहीं । विप्रपायमोदितमनमाँहीं ॥
नमहँसातपरतकरि । बाँध्योब्राह्मणपरमजतनधरि॥१४॥फटेवसनबहुकटिमहबाँधी।तामेंतंदुलपुटकीकाँधी॥
थिरेवसननिजशीशा।चलोद्वारिकाहिजहँजगदीशा॥मारगमहँअसलग्योविचारन।किमिपैहौंमैंहरिहिनिहारन ॥
लकिमिदेहैंजाना । कहँमिलिहैंमोकहँभगवाना ॥ असविचारकरतैमतिधीरा । गयोअगमसागरकेतीरा॥१५॥

दोहा–चढितरणिउतरचोतुरत, रोक्योतहँकोउनाहिं । गयोद्वारकानगरमहँ, अतिमोदितमनमाहिं ॥

नपुरकेदरवाजे । सुभटहजारनतहाँविराजे ॥ तेऊतहँद्विजकोनहिंरोकें । नाँघतपुरपुरजनहुनटोकें ॥
केलाकेजबगोनेरे । जहँमंदिरयदुवंशिनकेरे ॥ सोहहिंजहाँमहलनौलाखा । निजकरविशुकर्मारचिराखा ॥
लिख्योकृष्णअसनामा।सुरपतिसदनहुतेअभिरामा १६पुनिडेउढीनाँघ्यौद्विजतीना।तहाँलख्योबहुवासनवीन।
सहसमहलअतिराजैं।जिनकोदेखिदेवगृहलाजैं।देखितिनहिंजकिरह्योसुदामा । पुनिविचारकीन्ह्योतेहिठामा ॥

दोहा–धनियदुपतिधनिद्वारका, धनियदुवंशप्रवीन । मोहिरंकहिरोक्योनहीं, जानिविप्रअतिदीन ॥

केहिविधिहरिकहँपाऊं।कौनेभवनआशुअबजाऊँ॥असकहिमंदहिमंदसिधारचो।तहँअद्भुतएकभवननिहारचो॥
डरतपैठचोतेहिमाहीं । कोऊतहाँतेहिरोक्योनाहीं॥चलोगयोद्विजधीरेधीरे । पुलकतजकतरुकतकछुभीरे ॥
मंदिरकछुरुकितहँगयऊ।ब्रह्मानंदमगनमनभयऊ॥जायसक्योनहिंद्विजपुनिआगे।जकोखरोरहिगोसुखपागे १७
हेयदुपतिपरयंका । लीन्हेंरुक्मिणिकोनिजअंका ॥ दूरिहितेतहँलख्योसुदामें । पायोमनहुसकलमनकामें ॥

दोहा–उठेआशुपरयंकते, तजिरुक्मिणिकोनाथ । धावतभेअतिवेगसों, युगुलपसारेहाथ ॥

नेजतनकीसबविसारी।मीतमीतकहिमिलेमुरारी॥१८॥ढारतयदुपतिहगजलधारा।बाढ्योउरमहँमोदअपारा ॥
भलेतुमतोइतआये।बहुतदिननमहँवदनदेखाये॥१९॥पुनिकरिकैद्विजकोगलबाहीं।ल्यायेनिजसेजहिढिगमाहीं॥
पर्यंकमाहँबैठाये । लगेकरनपूजनसुखछाये ॥ निजहाथनसोंचरणपखारी । लियोशीशमहँसोजलधारी ॥ २०॥
पदजलजगपावनकरहीं । तेद्विजपदजलनिजशिरधरहीं ॥ जनिअचरजमानहुँकोउभाई । हैब्रह्मण्यदेवयदुराई ॥

दोहा–पुनिनिजहाथनविप्रतन, चंदनदियोलगाइ । चंदनकुंकुमअगरकी, रहीसुरभितहँछाइ ॥ २१ ॥

मित्रहिदीन्ह्योहरिधूपा । देखरायोतिमिदीपअनूपा ॥ निजकरसोंपुनिद्विजहिजेंवायो।तेसहिबीरापानखवायो ॥
नेआरतीसाजिमनथारे । निजमतिपरलगेढतारे ॥ देमदक्षिणागऊदेखाये । कुशलप्रश्नकीन्हेंचितलाये ॥ २२ ॥
कुटपटअतिमलिनसुदामा । रह्योक्षुधातेअतितनछामा ॥ निकसीनससिगरीदरशाई।सोचन्योपरयंकहिमाहीं ॥
रुक्मिणिअतिशयसुखपागी।विप्रहिचमरचलावनलागी॥हरिनिजहाथनपंखाहाँकैं।निजनैननमीतहिमुखताकैं २३

जेविद्यातुमपढीकुमारा।सदानवीनरहैसुखसारा॥असकहिहमसबकहँगृहल्याये।विविधभाँतिभोजनकरवाये॥ ४२ ॥
यहिविधिवसतगुरूगृहमाँहीं। खेलेबहुविधिखेलनकाँहीं॥ जापरगुरुकीकृपामहाई । ताकेदोऊलोकवनिजाई ॥
यदुपतिकेसुनिवचनसुहावन। बोलतभयेसुदामापावन॥ ४३ ॥

ब्राह्मण उवाच।

पूरवकौनपुण्यमैंकीनो। कौनदेवसेवामनदीनो। जातेहमतुमकरिअतिनेहू। वसेएकसंगहिगुरुगेहू॥
पूरेसवैमनोरथमेरे। पहुँचेआजुआपकेनेरे॥ ४४ ॥

दोहा–सकलवेदमेंजासुतन, यशमंगलकोमूल। ताकोगुरुगृहमेंवसब, कहबसुनबबाडिभूल॥ ४५ ॥

ति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे अशीतितमस्तरंगः॥ ८०॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–मित्रमित्रयहिभाँतिवहु, अतिशयआनँदपाय। अपनी २ सबकथा, दियोपरसपरगाय॥ १॥
ब्रह्मण्यदेवखगगामी। सबभूतनकेअंतर्यामी ॥ प्रेमहिपगेमीतमुखदेखत । आनँदअवधिउरहिमहँलेखत ॥
सुदामातेयदुराई। बोलेमंदमंदमुसकाई॥ २॥

श्रीभगवानुवाच।

मीतअवदेहुबताई । देपठयोमोहिंकाभौजाई ॥ जोमोहिंदेनहेतइतल्यायो । देहुवेगिकसमीतदुरायो ॥
भक्तममप्रेमहिपूरी। थोरहुदेहुगुनौसौभूरी॥ जोविनप्रेममोहिंवहुदेतो । सोमैंकवहुँताहिनहिंलेतो ॥ ३ ॥
पुहुपफलजलजनजोई। मोकहँदेयप्रीतिरसमोई॥

दोहा–सोमैंअतिआदरसहित, भोजनकरहुँसप्रीति । मीतजानियोयहसदा, अहैहमारीरीति॥ ४॥
मोहिंजोममहितल्याये।अवतुमसोंनहिंछिपतछिपाये॥यदुपतिकेसुनिवचनसुदामा।करनलग्योविचारमतिधामा॥
उरयेमूठीचारी। श्रीपतिकहँकहदेहुँविचारी॥ असविचारिनीचेशिरनाई। रह्योसुदामातहाँलजाई॥
गेनहींतंदुलहरिकाहीं। दावेरहेकाँखरीमाँहीं॥ ५॥ ताकोआवनहेतुविचारी। धनहितपठयोयहियहिनारी॥
तौरह्योअकामसदाहीं। धनहितभज्योनाहिंमोहिंकाँहीं॥६॥तातेभीतनारिप्रियहेतू।यहिकंचनकोकरहुनिकेतू॥

दोहा–धरणीमेंजोनृपनकहँ, दुर्लभअहैविभूति। सोमैंदेहोविप्रकहँ, सबसंभारसंभूति॥ ७॥
सगुनिविप्रहिवचनसुनाये। मीतकहातुमकाखचोराये॥ असकहिपुटरीचाउरकेरी। लईऐंचिहरिकरीनदेरी॥
टवसनसबखोलिमुरारी।मूठीचाउरचारिनिहारी॥ ८॥ कहनलगेअसपुलकितबानी। येतंदुलतेअतिसुखदानी॥
होमीतकसरहेछिपाये। चाउरचारुनमोहिंदेखराये॥ जोतुमल्यायेमीतहमारे। येतंदुलमोहिंपरमपियारे॥
नेचाउरमैंद्विजराई। जेहैसिगरोविश्वअघाई॥ ९॥ असकहिमूठीभरीमुरारी। लियेआपनेआननडारी॥

दोहा–तहाँमुरावततंदुलन, पुनिपुनिजातवतात। स्वादसुधामहँअसनहीं, जसइनमाहँजनात॥
भुवनव्यंजनलागतसीठे। राउरचाउरहैंअसमीठे। पायेकवहुँनअसअहलादू। मीतमिल्योजसतंदुलस्वादू॥
सकहिभरिप्रभुमूठदूसरी।चाह्योडारनमुखहिसुखकरी॥तवरुक्मिणीअसमनहिविचारी।त्रिभुवनसंपतिदिप्रभुडारी॥
नचहतअवमोकहँनाथा। असगुनिगहिलीन्ह्योहरिहाथा॥१०॥करीविनयकरजोरिसदोरी।इकमूठीकहँप्रभुथोरी॥
कमूठीतंदुलपियखाई। दीन्हीसकलविभूतिसुहाई॥ पैअवहमहूकोकछुराखो। सबैनमीतचाउरचाखो॥

दोहा–सुनिरुक्मिणिकेबैनप्रभु, तंदुलदीन्ह्योताहि। देखिसुदामायहदशा, अतिमनरहेसराहि॥ ११॥
पुनिपुनिभोजनपानकरावत।चापतचरणनिचँवरचलावत॥ प[illegible]

चलींदेवकीआदिसयानी । औरहुउग्रसेनकीरानी ॥ पहिरेसवभटकंचनमाळा । लियेढालकरवालकराला ।
दिव्यविभूषणवसनसँवारे । कवचकुंडकरत्राणहुधारे ॥ यदुवंशीसोहतमगमाहीं । मानहुअवनिदेवदरशाहीं

दोहा–कुरुक्षेत्रयहिविधिगये, मज्जनकरिव्रतकीन ॥९॥ कंचनभूषणपटललित, गऊद्विजनकहँदीन

पुनिभृगुपतिकेकुंडनमाहीं । कियमज्जनयदुवंशतहाँहीं ॥१०॥ विप्रनबहुविधिअन्नखवाई।दियेदानअतिप्रीति
देतदानअसवचनउचारे । कृष्णचरणरतिहोयहमारे॥पुनिविप्रनसोंशासनमाँगी । भोजनकियेकृष्णअनुरागी
पुनिघनतरुजहँशीतलछाया । सलिलसुधासममोदनिकाया॥तहँडेराबहुभाँतिलगाई । वसतभयेयदुपतिसुख
तहँयदुवंशिनदेखनहेतू । बंधुसुहृदामित्रहुसुखसेतू ॥१२॥मत्स्यउशीनरकोसलराजा । कुरुविदर्भसृंजयसम

दोहा–केरलकेकैकुंतिनृप, अरुकांबोजनरेश । अरुआनर्तनृपमद्रके, जेहरिदासहमेश ॥ १३ ॥

औरहुशत्रुमित्रइकवारा । हरिकेदर्शनहेतअपारा ॥ यदुवंशिनकेशिविरसिधारे । प्रभुहिंविलोकतभयेसुखारे
तहँलीन्हेंबहुगोपसमाजा । आयोनंदअनंददराजा ॥ बहुदिनतेहरिदरशनप्यासी । गोपिहुआईपरमहुलासी
कौरवपांडवहूसबआये । औरहुभूपबहुतसुखछाये ॥१४॥ निरखिपरस्परआनँदबाढे । मिलतभयेभुजभरिभा
ढारेमदेजलबारहिंबारा । रह्योनतनमहँतनकसँभारा ॥ पुलकावलिछिगरेतनछाई । गद्गदगरोगिरारुकिजाई॥

दोहा–कमलसरिसविकसेवदन, पुनिपुनिप्रमुदितधाइ । यथायोग्यसबजनमिलहिं, सोसुखकहोनजाइ ॥

नारींनारिसोंललकि, निरखिमंदमुसक्याइ । मिलहिपरस्परभुजनिभरि, आनँदअंबुबहाइ ॥

प्रगटभयोतहँप्रेमको, पूरणपारावार । कृष्णचंद्रकेदरशते, बाढतभयोअपार ॥ १६ ॥

पुनिबालकवृद्धनकहँवंदे । तेऊआशिषदियेअनंदे ॥ पूँछिपरस्परपुनिकुशलाई । कृष्णकथावरणैसुखछाई ॥
भगिनिभ्रातसुतपितहिनिहारी । औरहुभ्रातनकीवरनारी॥तिमियदुपतिकोवदनविलोकी। तहाँपृथानैननजलरो
वसुदेवहिकेपायँनपरिकै । बोलीवचनकरुणरसभरिकै ॥ १८ ॥

कुंती उवाच ।

मानींहहमअभागनिजभाई । जोतुमहूँदियसुधिबिसराई ॥ विपतिपरीअतिउपरहमारे । तबहुनकछुसुधिभईतिन
दूतहुभरभेजेहुनाहिंभाई । औरबातकीकहाँचलाई ॥ १९ ॥

दोहा–सुहृदज्ञातिसुतभ्रातपितु, सुजनऔरअनुकूल । तासुसुरतिकरतेनहीं, जाहिदैवप्रतिकूल ॥

पृथावचनसुनिपरमदुखारी । कहवसुदेवनैननभरिवारी ॥२०॥

वसुदेव उवाच ।

वृथापृथामोहिंदोषलगावै । सबकहँईश्वरनाचनचावै ॥ चलततनअपनोबलजगमाहीं । तातेदोषकोहुकोनाहीं॥ २
कंसभीतितेगयेपराई । हमसबदशदिशिरहेलुकाई॥ भाग्यवशातअवहिंघरआये । भाग्यवशातमोदअतिपाये॥२

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिदोउभगिनीअरुभ्राता । कैसंवादलहेसुखत्राता ॥ पुनिजेभूपतिडेरहिआये । कृष्णदरशकरिअतिसुखपा
तिनकहँउग्रसेनमदराजा । अरुवसुदेवहुसहितसमाजा ॥

दोहा–विविधभाँतिसत्कारकरि, कुशलप्रश्नकरिभूरि। साँझजानिकीन्हीबिदा, वसेआपुमुदपूरि ॥ २१ ॥

भोजजानिहरिदरशनहेतू । आयेरमानिकेतनिकेतू ॥ भीष्मदेवअरुद्रोणाचारज । नृपधृतराष्ट्रऔरकृपचारज।
गांधारीदुर्योधनभूपा । अपनेभाइनसहितअनूपा ॥ पांडुपुत्रदारनयुतआये । कुंतिहुआईमोदबढाये ॥
संजयअरुविदुरहुमतिवाना॥२४॥कुंतिभोजअरुशल्यसुजाना॥नग्नजीतअरुभूपविराटा।भीष्मकहुपद्...
...५८५ । तिमिदमघोषहुचेदिमहीशा॥२५॥मैथिलकेकैमद्रभुआला । युधामन्युत्रिगर्तनरेश...

दोहा–बाह्लीकभूरिश्रवा, सोमदत्तबलवान ॥ २६ ॥ धर्मभूपकेमित्रजे, औरहुभूपमहान ॥

हरिदरशनहितलैसँगनारी।गयेकृष्णकेशिबिरसुखारी२७आवतनिरखिसकलमहिपाला।रामकृष्णकछुबढितेहिंकाले॥
सबकोअपनेशिविरलेआये। यथायोग्यआसनबैठाये॥ मधिमहउग्रसेनमहराजा। वामरामदहिनेयदुराजा॥
कृष्णदहिनिदिशिपांडुकुमारा। भीष्मद्रोणकृपसबैउदारा॥रामवामदिशिप्रद्युम्नादिक। दुर्योधनभटअरुकरणादिक॥
लागिगयोजबअसदरबारा। तबउठियदुपतिरामउदारा॥ निजकरसबकेअतरलगाये। दियेसबनताँबूलसुहाये॥
दोहा–शीतलसुरभितअतिसुखद, मणिभाजनभरिनीर। रामकृष्णअतिप्रीतिसों, सींचेसबनशरीर॥ २८॥
पुनिबैठेनिजनिजसिंहासन। तहाँसबैनृपभरेहुलासन॥ उग्रसेनसोंसबइकबारा। भीष्मादिकअसवचनउचारा॥
उग्रसेनतुमधन्यधन्यहो। महिमहिपनकेअग्रगण्यहो॥ सफलजन्महैजगततिहारो। तुवसमाननहिंआननिहारो॥
योगिनकोजेकबहुँलखाँहीं।तिनहरिकोतुमलखौसदाँहीं॥२९॥जासुकथाजगपावनकरनी।बारहिबारजाहिश्रुतिबरनी॥
जाकोचरणोदकहैगंगा। जासुवचनहैशास्त्रअभंगा॥ यद्यपिकालविवशयहधरणी। रहीप्रजानिमहादुखकरणी॥
दोहा–अवसोइपरसतकृष्णके, सुंदरचरणसरोज। अखिलअर्थहमसबनकहँ, वर्षतहैंप्रतिरोज॥ ३०॥
प्रगटेहरितुवग्रहमाँहीं। करहिंसदासबकारजकाँहीं॥ तिनकोदर्शनपर्शनकरहू। संगगमनकरिअतिमुदभरहू॥
ठिएकआसनबतराहू। बहुविधिभोजनयकसँगखाहू॥ तिनतेहैंसंबंधअनेके। बसहुप्रमोदितभवनाहियेके॥
रकहुस्वर्गनिवारनहारे। निजपदकेपहुँचावनवारे॥हैंजिनकोहरिसंगसदाँहीं।तिनकोभाग्यवरणिकिमिजाँहीं॥३१॥

श्रीशुक उवाच।

सेवचनभूपसबभाषी। ह्वैकैविदाकृष्णउररापी॥ करिवंदनसबशिविरसिधारे। उग्रसेनकहँधन्यविचारे॥
दोहा–तहँशकटनमेंसबचढे, मित्रनदेखनहेत। नंदगोपआवतभये, गोपिनगोपसमेत॥ ३२॥
दुवंशीलखिआवतनंदे। लियआगूचलिसहितअनंदे॥ मृतशरीरजिमिप्राणहिपाये। उठैतेसहीसबउठिधाये॥
भरिभरिअंकमिलेमुदभारी।बहुतदिननमहमीतनिहारी॥३३॥पुनिवसुदेवनंदकहँधाई।मिलतभयेतनसुधिबिसराई॥
सुमिरिकंसकृतकठिनकलेशू।तिमिगोकुलनिजबालनिवेशू॥आनकदुंदुभिप्रीतिबढाई।मिलेनंदकहँदृगजलछाई३४॥
मेलेफेरिहरिबलव्रजराजे। अभिवंदनकीन्ह्योसुखसाजे॥ प्रेमविवशकछुबोलिनआयो। गद्गदगरोदृगनजलछायो॥
दोहा–फेरियशोमतिकेपगन, परेकृष्णअरुराम। अंकहिलियोउठाइसो, चूमिवदनअभिराम॥ ३५॥
बारबारनैननजलढारी। कृष्णहिलखितनसुरतिबिसारी॥ हरिबलनंदयशोमतिकाहीं। बैठायोसिंहासनमाहीं॥
नंदयशोमतिहरिअरुरामें। बैठायोनिजअंकललामें॥३६॥ पुनिरोहिणीदेवकीआई। मिलीयशोमतिकोसुखछाई॥
सुमिरिमित्रतापूरुबकेरी। बहीदृगनजलधारघनेरी॥ पुनिजसतसकैधीरजधारी। रोहिणिदेवकिगिराउचारी॥३७॥
भूलतितेहिरावरीमिताई।कहँलोंवरणेंआपबढाई॥शक्रहुसमलहिविभौअपारा।करिनसकहिकछुप्रतिउपकारा॥३८॥
दोहा–थातीसमतुवपररहे, येदोउबालहमार। जिमिपलकनकेवोटमें, नैनलहतसुखसार॥
यशुमतियेबालकतबपाले। तुम्हरिहिदयादनुजबहुघाले॥ तुम्हहीइनकहँपोषणकीन्हें। भाँतिअनेकनकेसुखदीन्हें॥
जातकर्मसबआपकराये। आपहिकेयेबढेबढाये॥ यशुमतिहैंयेबाटतिहारे। नाममात्रकेअहैंहमारे॥
जेसज्जनजगमेंमतिमाने। तेआपनपरायनहिजाने॥ ३९॥

श्रीशुक उवाच।

सुनिदेवकिरोहिणिकीवानी। मोदितभईनंदकीरानी॥ पुनिगोपीसिगरीतहँआई। कृष्णहिनिरखिपरमसुखछाई॥
आपुसमहँअसभाषनलागी। सिगरीनिरहज्वालतनपागी॥
दोहा–जिनाहियरनकेबीचमें, परेकसकतेहार। तिनहियरनकेबीचनमें, परिगेदायप्रहार॥
सवैया–जबतेव्रजतेव्रजराजव्रजेतबतेसबईशमनायथकी। जसहूँतसहूँइतद्वारलौआयगोपालकोलोइतलायतकी॥
तबहूँनहिंदेखनपाउतीहैंइनआँखिनकोकरिएकटकी। विधिनिर्दईपेदईजनदईपलकैंकटपैंसिपरैंदुसकी॥

तासुपदधोवनमेंनित्तसुखजोवनमें, जनमजनमबाढैप्रीतिगेहमारीहै ॥ १२ ॥

दोहा–पुनिसत्याबोलीवचन, सुनपांचालिपियारि । अवधपुरीमहँब्याहकिय, जेहिविधिमोरसुरारि ॥

कवित्त–तीक्षणविषाणवारेसातवलवारेबैल, भूपबलजाननकेहेतुपितुकेरहे ।
अवधपुरीमेंजायइकसाथमिजहाथ, नाथिनाथविनहीप्रयासतिनकोगहे ॥ १३ ॥
मोहिंब्याहिलैकेचलेमारगमेंरोकेभूप, मारिसहसानबाणइकछिनमेंदहे ।
ऐसेयदुनंदकेपदारविंदकेरीरहौं, दासीमैंसदाहींकरौंसेवामोदकोलहे ॥ १४ ॥

दोहा–फेरिमित्रविंदाकह्यो, सुनुद्रौपदीसयानि । जेहिविधिब्याह्योकृष्णमोहिं, सोमैंकहौंबखानि ॥

सवैया–मोरपिताअतिशयमतिमानहरीपरमोरिरुखैअनुमानी ।
सादरश्रीयदुनाथबोलायविवाहकियोधनिभाग्यकोमानी ॥
दाइजमेंचतुरंगनीसैन्यसखीनसमाजदियोछविखानी ॥ १५ ॥
कर्मवशेजेहिंयोनिभ्रमौंतहँमोहिंमिलैप्रभुशार्ङ्गपानी ॥ १६ ॥

सोरठा–सुनिलक्ष्मणासयानि, द्रुपदीकेगर्वितवचन । लागीकहनबखानि, ममविवाहसिगरीकथा ॥

लक्ष्मणोवाच ।

अवसुनुद्रुपदीमोरविवाहू । जोसुनिपैहौपरमउछाहू ॥ बृहत्सेनऐसोजेहिनामा । सोमेरोपितुअतिमतिधामा ॥ तासुभवनजबरह्योकुमारी । तबनारदमुनिजायनिहारी ॥ मोहिंसुनायतहँमुनिमतिमाना । करनलगेगोविंदगुणगाना ॥ सुनिमाधवलीलामनहारी । मैंलियअपनेमनहिंविचारी ॥ कीतोमैंयदुपतिकहँवरिहौं । नातोज्वलनज्वालमहँजरिहौं ॥ जिमिसबलोकनपालविहाई । रमारमापतिवरच्योसुहाई ॥ १७ ॥ यहप्रणजानिमोरपितमेरो । कारिकैमोपरप्रेमघनेरो ॥

दोहा–रच्योस्वयंवरतहँमुदित, मीनलक्षलटकाय । द्रुपदनगरमहँजसरह्यो, तैसहिदियोबनाय ॥ १८ ॥

ताहूतेयहकठिनविशेषी । परैनबाहेरहूँतेदेषी ॥ सोतोगमनथंभढिगकीन्हें । परतरह्योलखिअतिद्दगकीन्हें ॥ यहतोथंभनिकटहूजाई । परतरह्योनहिंमीनलखाई ॥ खंभनिकटघटजलहगदीन्हें । परतरह्योलखिअतिश्रमकीन्हें ॥ १९ ॥ सुनतस्वयंवरपरमअनूपा । आयेपितुनगरीबहुभूपा ॥ अस्त्रशस्त्रकेजाननहारे । रहेजगतमहँजेउजियारे ॥ चलीसुभटसँगलियेहजारन । आवतभयेसकलममकारन ॥ २० ॥ तिनकोममपितुपरमउदारा । यथायोगकीन्ह्योसतकारा ॥

दोहा–पुनिसबभूपनहरिसहित, सभामध्यपितुआनि । करिपूजनबोलतभये, ऐसेवचनबखानि ॥

जोकोउजलततकिमीनहिमारी । सोब्याहीयहसुताहमारी ॥ असकहिधनुषबाणमँगवाई । सभामध्यदियधरवाई ॥ चलेभूपबहुउठिसुखारी । लगेचढ़ावनतेधनुभारी ॥ पैप्रणिचानहिंचढ़ीचढाई । तबसंचहिमाधिपरेलजाई ॥ २१ ॥ पुनिभूपतिकोटजोरदेखायो । गुनाहिरोशकरिगोसमिलायो ॥ ककिनमस्योगुनतहँछुटिगयऊ । सोलगिमहिनृपगनसिरखयऊ ॥ जरासंधअरुनृपशिशुपाला । अरुअंबष्टभूपविकराला ॥ धायधनुषदुतहाथउठाई । करिअतिशयबललियचढाई ॥

दोहा–धनसाजिशरतेहिसके, सकेनलैनिकमान । तबपुद्रुमीमेताहिधरि, बैठेआयलजान ॥

पुनिदुर्योधनअरुभटभीमा । रच्योकरनआशुदिखलसीमा ॥ धनुषचढायसाजिशरभारी । चहेंनटावनमीनमँझारी ॥ तिनकोदेखिपरयोनहिंमीना । भ्रमतरह्योअतिवेगाहिंभीना ॥ तुरतनिकटुभटगपेलजाई । बैठेनिजनिजआसनआई ॥ पुनिभालोलअर्जुनधनुपार्यो । तिनमघाणधनुमहँज्याडार्यो ॥ मा[illegible]रजलमहँलखिमीना । ताकिकेतुगननासर्प ॥ मीनहिंछेदनगनपायजसाशा । फटरोननेककहुभयोनिगशा ॥ बैठोपुनिआसनमहँजाई । अर्जुनहूकछुपटिलनाई ॥

दोहा–[illegible] पैठगरंगमाय । नयमुकुंदमोहिनटे, मंदमंदमुसक्याय ॥

[illegible] पुनिधनसेहिमाहँल्याई ॥ योकृष्णअभिजितनामा । नामंमिलदानकरावा ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ रहेपगनहँनहि[illegible]ना । [illegible]

सुमनससुमनसुवर्पनलागे । कृष्णचंद्रचरणनअनुरागे ॥ गावनलगेसकलगंधर्वा । मुदितअप्सरानाचहिसर्वा ॥ २७॥

दोहा-मत्स्यवेधलखिकृष्णकर, हौंअतिआनँदपाय । सखिनसहिततहँतेउठी, धनिनिजभाग्यगनाय ॥

सवैया-केशनमल्लिकामोतीगुहेकरतीकलनूपुरकीझनकारी । भूरिविभूषणअंगनिधारिपितांबरकीपहिरेशुभसारी ॥ कुंचितकुंतलकुंडलसंयुतलोलकपोलनमेंछविकारी । पानिमेंमंजुललैमणिमालसभामधिमंदहिमंदसिधारी ॥ २८ ॥ देखिकेश्रीयदुनाथकोआननकिंचितमेंहूकटाक्षचलाई । लाजभरीअनुरागपगीतहँनेसुकहीमुखमेंमुसकाई ॥ देखतहीसबराजनकेयदुनंदनकेढिगमेंदुतजाई । श्रीनँदलालकेकंठविशालमेहौंमणिमालदईपहिराई ॥ २९ ॥

दोहा-तहाँशंखभेरीपटह, अरुमृदंगकरनाल । एकबारबाजेसकल, बाजेमधुरविशाल ॥ ३० ॥

मोहिडारतहरिगलजयमाला।देखिनसकेतहाँमहिपाला॥हरिकेहँधरनहेतसबधाये।मोहिछडावनकहचितचाये॥३१॥ तबदारुकतुरतैरथल्यायो । तामेंमोकहँनाथचढायो ॥ खड़ेभयोफिरिकैधनुलैकै । महिपालनपालनमनकैकै॥३२॥ तबदारुककहँप्रभुसुनिर्लाजे । चढिरथशत्रुनसँगयुधकीजे ॥ तबरथमहँचढिगयेमुरारी । दारुकसोंअसगिराउचारी ॥ चलहुद्वारकेकैअतुराई । इनभूपनमेंदेतभगाई ॥ सूततुरंगनकियोइशारा । निकसिगयोरथसैनिमँझारा ॥

दोहा-जिमिमतंगगणमध्यते, निकसतहैमृगराज । तिमिभूपनकेमध्यते, निकसिचलेयदुराज ॥ ३३ ॥

तहँभूपसबकोपहिछाये । मारगमहँरोकनकहँधाये ॥ छोडेआयुधविविधमहाना।जिमिरोकहिसिंहहिसमश्वाना॥३४॥ तबशारंगशरनकीधारा । परीमहीपनसैनमँझारा ॥ भयेखंडकेहुकेभुजदंडा । चरणकरनलगिशरनप्रचंडा ॥ केसेमरेगिरेमहिमाँहीं । भागतभेकेतेपरकाँहीं ॥ ३५ ॥ यहिविधिहरिसबभूपनजीती । आयेयदुनगरीयुतप्रीती ॥ फहरिरहेजहँविविधनिशाना । जिनकीछायाभानछिपाना ॥ ठौरनठौरनतोरनराजें । चित्रविचित्रअवासविराजें ॥

दोहा-नरपुरसुरपुरनागपुर, ढूँढिलेहुसबठोर । यदुपुरसमशोभानहीं, यहमतमानहुँमोर ॥

तहँप्रभुप्रविशेअतिसुखमाँहीं।जैसेभानभौनकहँजाहीं॥३६॥पुनिमेरोपितुअतिबलवाना।सुहृदबांधवनबहुसनमाना ॥ बसनविभूषणअनुपमदीन्हें । सज्याआसनरतननवीने॥३७॥पुनिदासीतुरंगमातंगा । रथअरुआयुधअमितअभंगा ॥ यदुपतिपैदाइजपठवायो।जनमआपनोसफलबनायो ॥ ३८ ॥ सोयदुनंदनकीमेंदासी । चरणकमलसेवनकीआसी ॥ चाहोंमैनविभूतिमहाई । रहैंकृपाकीन्हेंयदुराई ॥ असकहितहँलक्ष्मणासुहाई । मगनभईअतिआनँदछाई ॥ ३९ ॥

दोहा-पुनिबोलींसोरासहस, हरिरानीछविखानि । भयोहमारोंव्याहजस, सुनुद्रौपदीसुजानि ॥

दिशाविजयभौमासुरकीन्ह्यों।बहुराजनकन्याहरिलीन्ह्यों ॥ तहाँगरुडचढिगयेगोविंदा।सदलभौमकहँकियेनिकंदा॥ निजपदकीगुनिआसहमारी।हमसबकोकीन्ह्योंनिजनारी॥पूरणकामयदपियदुराई।तद्यपिकीन्हीकृपामहाई ॥ ४० ॥ तिनप्रभुकेपदकीहमदासी । रहैंसर्वदाहियेहुलासी ॥ औरआशनहिंकछुउररासी । येकबातकीहैंअभिलासी ॥ सोसुनुद्रुपदसुतासुकुमारी ।सभामध्यहमकहहिंपुकारी ॥ यद्यपिअहैतेरऊजानी । तदपिप्रीतिलखिकहैंबखानी ॥

दोहा-सोईसतसोईसुखद, सोईउदधिसँसार । पारकरनवारोसही, सज्जनकोसुखसार ॥

कवित्त-पुहुमीप्रमोदवर्गस्वर्गत्योंअसर्वब्रह्म, पदअपवर्गहूँकोनेकुनहिंचाँहहैं ॥ ४१ ॥
वृंदावनविपिनसुगोवनचरावतमें [illegible]हैंजोनात्रिनतरुमाँहहैं ॥
विपुलपुलिंदीलह्योयदुराजपदरेणु, [illegible]कारमेंकिजादिलेनकीउमाँहहैं ॥
सोईपदकंजमनरंजनकीरेणुपाय, शीशमेंलगायनिजभाग्यकोसराँहहैं ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे त्र्यशीतितमस्तरंगः ॥ ८३ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—गांधारीअरुद्रुपदजा, औरसुभद्राजोय। अरुव्रजगोपीजेसवै, अरुनृपरानीसोय॥

हरिरानिनकोसुनतविवाहा।अचरजगुनिअतिलह्योउछाहा॥हरिपदकियोपरमअनुरागा।गुणिसंबंधगुन्योधनिभागा॥ सबकेबहनलग्योदृगनीरा।सबकोपुलकितभयोशरीरा॥ १॥ यहिविधिहोततहाँसंवादा।नरनारिनपावतअह्लादा॥ कृष्णरामदर्शनकेहेतू।आयेसबमुनीशतपसेतू॥ २॥ देवलच्यवनदेवऋषिव्यासू। विश्वामित्रअसितमतिरासू॥

[illegible] । कश्यपअत्रिपुलस्त्यसुखारी॥

[illegible] अंगिरा, अरुअगस्त्यमतिभौन॥

[illegible] । उठेभूपइनसबनिनिहारी॥

बैठेप्रथमउठेतेप्रथमै। वंदनकीन्हेंऋपिगणप्रथमै॥ पुनिपांडवअरुयदुपतिरामा। उठिसादरकीन्हींपरिनामा॥ ६॥ पूजनकरिआसनबैठाये। कुशलप्रश्नपूँछेसुखछाये॥ अर्घ्यपादआचमनहुदीने। धूपदीपबहुफूलनवीने॥ अंगनअंगरागअनुरागे।यदुपतिनिजकरलेपनलागे॥७॥जबबैठेमुनिनिजनिजआसन।तबकरजोरिकृष्णभवनाशन॥

दोहा—सभामध्यअतिमृदुवचन, सभासदानिसुनाय। बोलेयदुपतिमुनिनसों, अतिशयआनँदपाय॥ ८॥

श्रीभगवानुवाच।

जन्मसफलभेआजुहमारे।जोइनदृगतुवचरणनिहारे॥कहँहमलघुजनअतिमतिमंदा।कहँतुमसबगुरुज्ञानअनंदा॥९॥ दरशपरशपूजनहुतिहारो॥हमकहँदुर्लभपरतविचारो॥जापैंईशकरहिंअनुरागा॥ताकोमिलहिंसंतवडभागा॥ १०॥ जेतीरथअघखोवनहारे। मृदुपपाणमयसुरहुअपारे। तेतोबहुदिनसेवनलेते। तबजनकहँपावनकरिदेते॥ जेसज्जनजगमहँसंचरहीं। दरशकरतहींपावनकरहीं॥११॥ सूरजअगिनिचंद्रअरुतारा। जलनभमारुतपेदअपारा॥

दोहा—तिनकोसेवनजोकरै, अमितकालचितलाइ। तौमनकीसबकामना, कबहुँकबहुँमिलिजाइ॥

तैसहिसज्जनकीमनलाई। करैदंडद्वैहूसेवकाई॥ तौसबपूजिमनोरथजाहीं। रहैंनकछुभाकीजगमाहीं॥ १२ जोकुमतीयहिअधमशरीरै। सुततियअरुकुटुंबकीभीरै॥ हमहमारजानतकरिमोहू। राखतसदावित्तपरछोहू मृदुपपाणकीमूरतिपाहीं। करैतुम्हैंतजिप्रीतिसदाहीं॥ नीरहिभरितीरथजेमानै। सज्जनचरणनवंदनठानै गर्दभबैलअहैनरसोई। जासुसाधुपदप्रीतिनहोई॥ १३॥

श्रीशुक उवाच।

सुनिमुकुंदकीअद्भुतवानी। रहेमौनचिंतनविज्ञानी॥ १४॥

दोहा—करिविचारकछुवारलगि, पुनिकीन्ह्योंयहठीक। जनशिक्षणहितहरिकह्यो, वचनधर्मकेलीक॥

कहेमुदितमुनिपुनिमुसक्याई। यदुपतिकोअसवचनसुनाई॥ १५॥

मुनय ऊचुः।

जाकीमायापरमअपारा। मोहिहमशंकरतारा॥ यद्यपिबहुतत्त्वनमनलावैं। तद्यपितिहरोपारनपावैं॥ परब्रह्मतुमपरणिपधारी। लीलाकरहुविचित्रमुरारी॥ १६॥ होअनंतयकेअविकारी। जगउतपतिपालनसंहारी॥ जिमिमृदुकेघटनानदिअनेका। पमृत्तिकारहतिवहएका॥आपचरित्रविचित्रअपारा। जाकोशेपहुलहैनपारा॥ १७॥ एसहुहोयद्यपितुमनाथा। तद्यपिदासनकरनसनाथा॥

दोहा—मनुजसरिससविचरोधरणि, दासनदुखनसँहारि। राखिधर्ममर्यादसब, देहुभारभुविटारि॥

ब्रह्मनिपुन्यपनअहोनिरलक्षण। दीननरक्षणकरहुततक्षण॥१८॥चारिवेदहँहृदयतिहारा। होतजाहितेतपअवतारा॥ [illegible]आनवेदमानिवाना। जाननकारणकारजनाना॥१९॥ शास्त्रपढ़ेजोपुतअनुरागा। सोजानतुमकहँवडभागा॥ २०॥ होहिनुवसुदेवसुभागा। विधनकोकौजतमनकागा॥ तानेंपायहुदर्शप्रथापा। जगब्रह्मण्यदेवअसनामा॥ २१॥ [illegible]धानवढ़गजन्मदमारे। भयेसफलजबतुमहिनिहारे॥ कियेराबरोदर्शनगोई। मंगलमूलमुदितभंगोई॥ २२॥

होनलगीजबयज्ञअनूपा । तबयदुवंशीआनँदरूपा ॥ मज्जनकरिकंजनउरमाला । धारेभूपणवसनविशाला ॥
औरहुभूपतहाँबहुआये । करनसहायलगेसुखछाये ॥४४॥ भूपणवसनसाजिमनहारी । आनकदुंदुभिकीसबनारी ॥
मखशालागवनीछविखानी । मंगलसाजीनिजनिजपानी ॥४५॥ शंखमृदंगपटहढफभेरी।बजतभयेधुनिभईघनेरी ॥
नचनलगीनर्तकीसयानी । बंदीबिरदावलीबखानी ॥ तहँगंधर्वअप्सराआई । गावननाचनलगीसुहाई ॥४६॥

दोहा–अष्टादशनारीसहित, श्रीवसुदेवसुजान । सोहिरह्योजिमिउडुनमधि, परिपूरणसितभान ॥

तहँअंगनऔषधीलगाये।अंजनरंजितदृगअतिभाये॥असआनकदुंदुभिढिगआये।सविधिऋपिनअभिषेककराये ४७॥
सुभगदुकूलवलैअरुहारे।कुंडलकलकपोलछविवारे॥नूपुरकरहिंपगनमहँशोरा । वसनविभूपणजनचितचोरा ॥
ऐसीअष्टादशतियसंगै । दीक्षितधारेअजिनअभंगै ॥ ४८ ॥ सोहेतहँवसुदेवसुखारे । ऋत्विजरतनपीतपटधारे ॥
तहाँइंद्रकेयज्ञसमाना । लसेसभासदसुमतिमहाना ॥ ४९ ॥ श्रीवलभद्रऔरयदुराई । सोहतभेसंयुतनिजभाई ॥

दोहा–रेवतिरुक्मिणिआदितिय, युतसोहेहरिराम । मनहुँविभूतिनतेसहित, जीवईशअभिराम ॥५०॥

अग्निहोत्रआदिकबहुयागा।कियेसविधिसंयुतअनुरागा॥प्रकृतिविकृतियुतयज्ञनिकाँहीं।क्रियाज्ञानद्रव्यनियुततांहीं॥
प्रभुकेप्रीतिहेतमखकीन्ही ५१ ऋत्विजद्विजनदक्षिणादीन्ही॥भूपणभूकन्याअरुगाई।दियोद्विजनकहँधनसमुदाई५२
पुनिअवभृथकेसहितविधाना।परशुरामह्रदकियेपयाना॥यजमानहितहँआगूकरिकै।मज्जनकीन्हेंअतिसुखभरि
भूपणवसनसुवंदिननारिन । देतभयेबहुदानभिखारिन॥जीवमात्रभरिजेतहँआये । भोजनवसनउचितसबपाये

दोहा–पुनिसुततियुतबांधवन, कीन्ह्योबहुसतकार । भूपणवसनअनेकदिय, श्रीवसुदेवउदार ॥

[illegible]

[illegible]

भीष्मद्रोणनारदअरुव्यासा।सुहृदनातबांधवसहुलासा५७प्रेमभरेयदुवंशिनमिलिकै।विरहजनितदुखसागरहि
निजनिजदेशनकियेपयाना । यदुवंशिनकरकरतबखाना॥५८॥गोपनसहितनंदगोपालै।यदुवरकियसत्कारवि

दोहा–उग्रसेनमहराजअरु, रामकृष्णसुखछाइ । कछुकदिवसलौंनंदकहँ, राख्यौतहाँटिकाइ ॥ ५९ ॥

निजहिमनोरथपारावारा । आनकदुंदुभितरचोउदारा ॥ तहँवसुदेवप्रीतिकरिभारी । नंदशिबिरयुतमित्रसि
नंदहाथनिजहाथहिगहिकै । बोलेश्रीवसुदेवउमहिकै ॥ ६० ॥

श्रीवसुदेव उवाच ।

नेहपासयहविधिकृतजोई । हेभाईछूटतनहिंसोई ॥ बहुयोगिनअरुसूरनकाँहीं । छूटतज्ञानहुवलतेनाँहीं ॥
ऐसीतुमकियमीतमिताई । जासुसरिसदूजीनदिखाई॥ सकौंनमैकरिप्रतिउपकारो । रहौंतनभरिऋणीतिहारो॥
रहेप्रथमकरिवेनहिंलायक । रह्योकंसभयअतिव्रजनायक ॥

दोहा–अवतोधनमदछाइकै, होतभयेअतिअंधु । निजनिकटहुनहिंलखिपरत, सुनहुनंदप्रियबंधु ॥ ६३ ॥

असधनमदकाहुहिनहिंहोवै।जातेमित्रमित्रताखोवै॥अनुचितउचितभूलिसबजातो।पुनिआँखिनमेंकछुनदिखातो
असकहिआनकदुंदुभिधीरा।प्रेमविकलहृगढारतनीरा॥पुनिपुनिसुधिकरिनंदमिताई।रोदनकियेपरमदुखछाई॥
यहिविधिनंदसहितयदुवंशी । कुरुक्षेत्रमहँवसेप्रशंसी ॥ नितनंदमागहिंविदातहाँहीं । कहियेतौवृंदावनजाँहीं ॥
तवयदुवंशीयुतअभिलापै । कालिहजाइयोनितअसभापै ॥ कहसाँझकेकहहिंसबेरे । प्रातहिकहतसाँझपुनि

दोहा–विदाहोतयहिभाँतितहँ, बीतिगयेत्रयमास । यदुवंशीसिगरेबँधे, नंदनेहकेपास ॥ ६६ ॥

[illegible] । देकैभूपनवसनअपारा ॥ ६७ ॥ कृष्णरामउद्धववसुदेवा । तैसेउग्रसेननरदेवा ॥
[illegible] पभाँतिलैधनदुमहाना
[illegible] । रासिगोविंदचरणउरमाहीं ॥ विरदविवशशकटनपरिसाजू। व्रजहितव्रजहिंनंदब्रजरा

दावनजबनंदसिधारे। तबयदुवंशीप्रभुकेप्यारे॥ आवतपावसकालनिहारी। गयेद्वारकैपरमसुखारी॥ ७०

दोहा-कुरुक्षेत्रमेंजोकियो, आनकदुंदुभियाग। नंदसमागमहूँकहे, पुरजनसोंयुतराग॥ ७१॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे चतुरशीतितमस्तरंगः॥ ८४॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-एकसमयवसुदेवके, निकटगयेहरिराम। सहितनम्रताकरतभे, पितुकहँमुदितप्रणाम॥

सोऊदीन्ह्योंहरपिअशीशा।जियोपुत्रदोउकोटिवरीशा॥१॥पुनिनारदकीसुधिकरिबानी। निजपुत्रनपरमातमजानं लखिविक्रमहुवन्योविश्वासा। बोलेपुत्रनसोंमृदुभासा॥ २॥ कृष्णकृष्णहेयोगिमहाने। बलहुसनातनहेबलवा तुमहौदोऊपुरुपपुराना। यहमेरेमनपरयोप्रमाना॥३॥ पटकारकहुअधीनतिहारे। हौप्रधानपुरुपेशमुरारे॥ विरचिविविधविधिविश्वअपारा।तामेंप्रविशिकरहुसंचारा॥ अंतर्यामीहैजगमाहीं। धारणपालनकरहुसदाहीं॥

दोहा-सिरजनादिकीशक्तिवहु, प्राणादिकमहँजौन। सकलशक्तिसोआपकी, जिमितृणउडतसपौन॥ ६

शशिरविउडुदामिनिअरुपावक।इनकोतेजजौनजगछावत॥अवनिगंधगिरिथिरताजोऊ७जलमहँतर्पणजीवनसोउ मारुतमहँगतिवलजोरहई। सोसबशक्तिआपकीअहई॥८॥दिशिकोजोसिगरोअवकाशू।अरुजोशब्दहोतआकाश परमध्यमपश्यंतिवैखरी ९ इंद्रिनशक्तिशक्तिहैतिहरी॥बुद्धिबोधगुनजियगुणसुमिरण॥१०॥पंचभूतकोतामसकार अहंकारइंद्रिनकोराजस। देवनकोशाल्वकहैतादस॥ बद्धजीवबंधनजोमाया। सोसबशक्तिआपकीगाया॥ ११

दोहा-जेअनित्यकारजअहैं, तिनकारणहौनित्य। जैसेघटपटकार्यमें, अहैमृत्तिकासत्य॥ १२॥

सतरजतमअरुवृत्तितिन, परब्रह्मतुवमाहिं। रचितयोगमायासवै, यहजगअहैसदाहिं॥ १३॥

तातेतुमतेभिन्नकछु, सत्यपरतनहिंजानि। भीतरबाहिरव्यापहौ, नाहिंप्योहारहिठानि॥ १४॥

अज्ञानीजानतनहीं, अखिलात्मातुमकाहिं। तातेयहसंसारमें, पुनिपुनिभ्रमैसदाहिं॥ १५॥

अतिदुर्लभयहमनुजतन, कबहुँगयोतेहिपाय। प्रभुमायावशताहुको, हमसबदेहिभुलाय॥ १६॥

हमहमारमायामहा, फाँसीगलमहँडारि। यहजगकोबाँधेअहौ, तुमहीएकमुरारि॥ १७॥

तुमहौमेरेपुत्रनहिं, हौदोउपुरुपप्रधान। धरणिभारकेहरणहित, लियअवतारमहान॥ १८॥

पारकरनभवसिंधुको, चरणरावरोनाथ। शरणतासुहमहोतहैं, दरनकरोदुखगाथ॥

अबयहविपयभोगकीचाहा। होतमोहिंअतिशयदुखदाहा॥ तबमायावशरहेभुलाने।पुत्रआपनोतुमकोमाने॥१९ सूतीग्रहमहँजोप्रभुकहेऊ। मोहिंअबलोंभुलानसोरहेऊ॥ हरणहेतअवनीकरभारा। होतजन्मबहुवारहमारा सोसतिहैप्रभुवचनआपके। तुमहौप्रभुअनुपमप्रतापके॥ जबजबहोतिधर्मकीहानी। तबतबरक्षहुबहुबपुठानी जानतकोउनआपकीमाया। पैतुमकरहुदीनपैदाया॥ २०॥

श्रीशुक उवाच।

सुनिपितुगिराकृष्णभगवाना। बोलेहँसिभरिप्रेममहाना॥ २१॥

श्रीभगवानुवाच।

दोहा-निजपुत्रनकेव्याजते, तत्त्वकहेसबतात। सोयथार्थनहिंअन्यथा, अहैवेदविख्यात॥ २२॥

हमतुमयदुवंशीसकल, अरुपुरजनसबजोइ। जगतचराचरजानिये, परब्रह्मसोइ॥ २३॥

आत्मप्रकाशअनादिइक, नित्यप्रकृतिगुणहीन। निजकृतजगमहँलखिपरत, बहुवपुमनुगुणलीन॥२४॥

जिमिनभमारुतजोतिजल, कहुँलघुकहुवहुहोत। अहैसकलतेएकही, तिमिआतमाउदोत॥ २५॥

तिनकोकंसभूपहनिडारचो।सभयउचितअनुचितनविचारचो॥तिनसुतहितशोचतिममसाता।तुम्हरेनिकटरहहितेतात
याहीहेतुहमहुँइतआये। तुमकोसबवृत्तांतसुनाये॥ जननिशोकनेवारणहेतू। देहुमँगायसुतनमतिकेतू॥
तिनकोजननीढिगलैजैहैं। शापमेटितिनपुरपहुँचैहैं॥ असमरअरुउदगीथपतंगा। घृणीक्षुद्रभुकअरुपरिष्वंगा
येपटसुरलहिकृपाहमारी।पैहेंगतिविधिशापनेवारी॥८१॥ असकहिलेपटदेवकिबालक।बलिसोंपूजितह्वैयदुपालक।
दोहा–आवतभेपुनिद्वारकै, कृष्णचंद्रबलिराम। देवकिकोदीन्ह्योंसुतन, करिकैपगनप्रणाम॥ ८२॥
देखिदेवकीपुत्रनकाहीं। बैठायोनिजअंकहिमाहीं॥ स्रवीपयोधरतेपयधारा। तिनकोशिरसूँघ्योबहुबारा॥ ८३।
तहाँप्रीतिकरिकैअतिभारी।लगींपियावनपयमहतारी॥ मोहिगईहरिमायामाहीं। जातेजगउपजतोसदाहीं॥ ८४॥
कृष्णप्रसादीपयकरिपाना। अरुहरिअंगनिपरसिसुजाना॥पटसुरभयेतुरतविनुतापा।मिटीमहाधाताकीशापा॥८५॥
तेदेवकिवसुदेवहुकाहीं। औगोविंदरामपदमाहीं॥ करिबंदनसबजनकेदेखत। गेनिजलोकमहामुदलेखत॥ ८६॥
दोहा–मृतकआगमननिरखितहँ, देवकिविस्मयमानि। कृष्णचंद्रमायाप्रबल, लईसत्यजियजानि॥ ८७॥
महाराजयहिभाँतिबहु, अद्भुतकृष्णचरित्र। श्रवणसुधाडारनसदा, पामँरकरनपवित्र॥ ८८॥

सूत उवाच।

वैया–श्रीशुकआननइंदुहीतेहरिकीरतिकीसुधाधारसुढारी।काननअंजुलितेकरिपानसुप्रीतिप्रतीतिसमेतसुखारी॥
श्रीरघुराजकहैसोविशेपितरैभवसागरसोचनिवारी।याकलिकालकरालमेंआँखिनआनउपायपरैननिहारी८९

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौदशमस्कंधे उत्तरार्धे पंचाशीतितमस्तरंगः॥ ८५॥

दोहा–भूपपरीक्षितहरपिकै, श्रीशुकसोंकरजोरि। मृदुलगिराबोलतभयो, बारहिंबारनिहोरि॥

राजोवाच।

हहमसुननचहतमुनिराई। रामकृष्णकीभगिनिंसुहाई॥ जाकोरह्योसुभद्रानामा। मेरीपितामहीवरश्यामा॥
ाकोअर्जुनकेहिविधिव्याहा।सोसुनायदीजैमुनिनाहा॥सुनतपरीक्षितनृपकीबानी।कहनलगेश्रीशुकविज्ञानी॥ १॥

श्रीशुक उवाच।

एकसमयअर्जुनमतिमाना। करनतीरथनकियोपयाना॥ करतपर्यटनपुहुमीसबहीं। गयोप्रभासक्षेत्रमहँजबहीं॥
तंबसुभद्रामातुलकन्या। सुनतभयोअतिसुंदरधन्या॥ २॥ औरोंअससुनिकाननमाहीं। देहिंरामदुर्योधनकाहीं॥
दोहा–यदुवंशीअरुकृष्णहू, यद्यपिकह्योबुझाय। तदपिआनकेदेनहित, नहिमान्योंबलराय॥
पहसुनिअर्जुनशंकितभयऊ।विपत्रिदंडीकोपरिलयऊ॥ हरणकरनमातुलदुहिताको।गयोद्वारकाकोछलछाको॥३॥
वरपाकेतहँचारिहुमासा। विजयत्रिदंडीकियोनिवासा॥ निजअर्थहिकेसाधनहेतू। माँगेहुभीखनिकेतनिकेतू॥
पुरजनसबकरिकैसन्माना। नितहिजिमावहिंबहुपकवाना॥ एकसमैकहुँपायइकंता। यदुपतिसोंकहिगोविरतंता॥
यदुपतिहरनकरनकहिदीने। सुनतसव्यसाचीमुदभीने॥ यदुवरमातुपितापहँजाई। यहहवालसबदियोसुनाई॥
दोहा–तेउसंमतकरिदिय, विजयसुभद्रादेन। जानिविरूपतहँरामकी, प्रगटकहेनहिंवैन॥ ४॥
एकसमयहमहँबलिरामा।अतिथिनपूजनकियमनकामा॥ न्योंताकरिबहुअतिथिबुलाये।तिनकेसंगअर्जुनहुआये॥
यहचरित्रबलभद्रनजान्यो।अतिथिमानिअतिशैसनमान्यो॥निजहाथनसोंतिनहिंजिमाये।सादरशुभआसनबैठाये५॥
तहाँसुभद्रारहीकुमारी।अनुपमसकलवीरमनहारी॥ अर्जुनताकोनदोनिहारी। चकितभयोमनहरणविचारी॥ ६॥
सोऊअर्जुनकोछविदेखी।करनकंतमनचह्योविशेखी॥७॥ करिकटाक्षललितमुसक्याई।अर्जुनमहँमनदियोलगाई॥

दोहा–विजयसुभद्राकोलख्यो, जबतेवलगृहमाँहि । तबतेताकेनैनमें, परीनींदनिशिनाँहि ॥
दियोताहिमेंचित्तलगाई । हेरनलाग्योहरणउपाई ॥ ८ ॥ एकसमयद्वारावतिमाँहीं । देवनयात्राभईतहाँहीं ॥
तहँगमनकीन्हेंपुरवासी । यदुवंशीसबपरमहुलासी ॥ तादिनदारुकसूतबुलाई । श्रीमुकुंदअसदियोबुझाई ॥
भगिनिसुभद्रैरथहिचढाई । देवनदरशनदेहुकराई ॥ तहँअर्जुनहरिहैंभागिनीको । सोसंमतहैमेरोठीको ॥
अर्जुनयदिरथचढिहरिलैहैं । सहितसुभद्रैनिजपुरजैहैं ॥ तबतुमअतिद्रुतरथहिधवाई । इंद्रप्रस्थदियहुपहुँचाई ॥
दोहा–दारुकसुनिहरिकोहुकुम, निकटसुभद्राजाय । ताहिचढायसुयानमहँ, लैगमन्योंहरपाय ॥
निकरिकिलातेजवरथआयो।तबअर्जुनकहँकृष्णबुलायो॥हरनकरनकहँसैन्यचलायो।तबअर्जुनआशुहितहँधायो ९॥
रथपरचढिगांडीवटँकोरा । भरयोभयावनचहुँकितशोरा ॥ हरतसुभद्रैअर्जुनकाँहीं । निरखेसिगरेसुभटतहाँहीं ॥
घेरिलियेताकोचहुँवोरा । मारनलगेशस्त्रकठोरा ॥ अर्जुनकरीबाणकीवरपा । गयोछूटिसबवरिनहरपा ॥
तबदारुकछुइपीठितुरंगा । कीन्ह्योंगौनपौनकेसंगा ॥विजयकरयोदलमधितेंकैसे । इवाननमध्यपँचाननजैसे ॥१०॥
दोहा–हरयोसुभद्राकोइहाँ, आयोकहँकोचोर । लैगोलैगोहैरह्यो, यहीशोरचहुँवोर ॥
आयसुभटसबहरिबलद्वारे । हरनसुभद्रादुखितपुकारे ॥ सुनतरामभोकोपितभूपा । मानहुमहाकालकोरूपा ॥
जैसेसिंधुपर्वकहँपाई । बाढतअमिततरंगबढाई ॥ तिमिसुनिभगिनिहरणबलराई । बाढतभयोकोपभयदाई ॥
भटनसुनावतवचनउचारा । बचैनअबशठपांडुकुमारा ॥ मैंअपांडवीधरनीकरिहौं । यदुवंशिनउरआनँदभरिहौं ॥
असकहिलैहलमूसलरामा । चल्योआशुअर्जुनवधकामा ॥ जानिअनर्थमहायदुराई । पकरेपाँयरामकेधाई ॥
दोहा–कहतभयेबलभद्रसों, बानीदीनसुनाय । मोहिंमारिपुनिमारिये, मेरेमीतहिजाय ॥
नातोकोपतातसंहारो । कछुकवचनसुनिलेहुहमारो ॥ दुर्योधनअर्जुनसमदोऊ । तातेकहीनअनुचितकोऊ ॥
यहधरमात्मावहममद्वेपी । यतनोयामेंअहैविशेपी ॥ तातेअबनकरौकछुरोसू । गनहुँनकछुअर्जुनकरदोसू ॥
सुनतसात्यकीउद्धवआदिक । बोलेवचनधर्ममरयादिक ॥ देवकिअरुवसुदेवहुकेरो । संमतकृष्णहुकेरघनेरो ॥
हमहूकोअनुचितनहिंदीसै । करियेक्षमात्यागिप्रभुरीसै ॥ तबहरिसोंबलवचनउचारो । अहैसकलकृतकर्मतिहारो ॥
दोहा–असकहिकैतजिहलमुसल, रोकिरोपबलराम । लौटतभेतुरतैंतहाँ, गयेआपनेधाम ॥ ११ ॥
मोदितह्वैपठयोतहाँ, दाइजअर्जुनपास । हयगयरथभूपणवसन, बहुधनदासीदास ॥ १२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

विप्रभक्तइकयदुपतिकेरो । नामजासुश्रुतदेवनिवेरो ॥ कृष्णभक्तितेपूरितकामा । कबहुनचाहतविपयअरामा ॥
सुकविशांतप्रियबोलनवारो।रह्योजनकपुरतासुअगारो॥१३॥विनमाँगेजोकछुमिलिजावै।ताहीतेगृहकाजचलावै १४
करैनउद्यमकछुनिजहेतू । बसैभवनसंतोपनिकेतू ॥ १५ ॥ तैसेमिथिलाधिपबहुलाशू।तनकनतनअभिमानप्रकाशू॥
उभैभक्तयदुपतिकहँप्यारे । यदुपतिदरशआशउरधारे ॥१६॥ तिनकोजानिमनोरथनाथ।दारुकसोंबोलेधरिहाथा॥
दोहा–ल्यावहुरथहमजायँगे, मिथिलापुरकहँसूत । सोसुनिल्यायोरथतुरत, दारुकबुद्धिअकूत ॥
रथमहँचढिवहुमुनिसँगलीन्हे।मिथिलापुरहिगमनप्रभुकीन्हें॥वामदेवनारदअरुव्यासू।असितअरुणअरुअत्रियदासू॥
मित्रासुतहुकण्वभृगुरामा । सुरगुरुअरुच्यवनादिललामा ॥ विचरतरहेहमहुकहुँराजा । मारगमहँदेखेयदुराजा ॥
सादरअपनेसंगलेवाई । चलेविदेहनगरयदुराई ॥ १८ ॥ मारगमहँजहँजहँप्रभुजावें । तहँतहँपुरजनधावतआवें ॥
अर्घ्यपाद्यआचमनहुदेहीं । देकेभेटपरममुदलेहीं ॥ मुनिनसहिततहँहरिराजहिंकैसे । ग्रहनसमेतदिवाकरजैसे ॥ १९ ॥
दोहा–प्रथमअनर्तहिधन्वकुरु, जांगलकंकपँजाब । मत्स्यकुंतिमधुकेकयो, कोसलअरुअरनाब ॥
२. महँकरतनिवासा । मिथिलागमनेरमानिवासा ॥ जेहिजेहिदेशनमहँप्रभुआये । तहँतहँकेनारीनरधाये ॥
रुछविरसकरिपाने।अनिमिपरहेननेकअघाने॥२०॥तिनकोनिरखिमंदमुसक्याई।कारिसनाथदीन्हेंपुरगाई॥
उपगावतसबकेउरज्ञाना।करतअनुग्रहअतिभगवाना ॥ अशुभहरनदिशिकरतप्रकाशू।जेहिगावतसुरनरसहुलासू॥

असनिजसुयशसुनतनिजकाना।गयेजनकपुरकृपानिधाना॥हरिआगममिथिलापुरवासी।सुनतभयेअतिआनँदरा
दोहा–लैलैमंगलसाजुकर, तनकीसुरतिविसारि। जेजसरहेतेतसचले, दरशनहेतमुरारि॥ २२॥
निरखतयदुपतिमुखसुखपाये।विकसितवदननैनजलछाये॥शिरमेंधरिधरिअंजुलिधाई।प्रभुकहँकियप्रणामसुखछा
जेमुनीशप्रथमेंसुनिराखे। तिनकोवंदिमुदितअसभाखे॥ हमरेभागनतेइतआये। हमकोआजुसनाथबनाथे॥ २
सुनिहरिआगमभूपविदेहू। तिमिश्रुतदेवविप्रयुतनेहू॥ प्रेमभरेदोउवेगहिधाई। परेचरणतनसुरतिभुलाई॥ २
तहँदोउधीरजधारिवहोरी। दोउविनैकियेकरजोरी॥कहेदोऊममभवनपधारो। मुनिनसहितममकुलउद्धारो॥२
दोहा–दोहुनकेमृदुवचनसुनि, प्रीतिबरोबरजानि। उभयरूपह्वैगेतुरत, मुनियुतशारँगपानि॥
दोहुनकेप्रभुसदनसिधारे। दोहुँनबरोबरभक्तनिहारे॥ भूपविप्रयहमर्मनजान्यो। प्रथमैनिजग्रहआगतमान्यो॥२
श्रवणहुमहँदुहुनतेदेरी। ऐसेमुनिननिरखिसुखपूरी॥ प्रेमविवशह्वैभूपविदेहू। ल्यायोनिजगृहसहितसनेहू॥
यदुपतिकहतहँमुनिनसमेतू।आसनआसितकरिमतिसेतू२७परमप्रीतितेचरणपखारी।सहितकुटुंबशीशनिजधारी
निजकरचंदनअंगलगाई। भूषणवसनमालपहिराई॥ धूपदीपनैवेद्यलगाई। गोवृषसगुणहेतदरशाई॥ २९॥
दोहा–तनमनधनपुनिअरपिकै, कृष्णचरणधरिअंक।मांजतमृदुबोल्योवचन, मिथिलानृपतिनिशंक॥३

राजोवाच।

सबभूतनकेआतमआपू। साक्षीविभुहौपरमप्रतापू॥ जोहमबहुदिनतेकरिरापा। सोप्रभुपूरीकियअभिलापा॥
चरणकमलकोदरशनपाई। आजुनैनगेमोरअघाई॥ ३१॥ जोयहवेदपुराणहुगावैं। निजदासनग्रहहरिहठिआं
सोईवचनसतिकरनमुरारी। मोहिसनाथकियइतहिसिधारी॥ श्रीअजशंकरशेषउदारे। हैंनमोहिदासनतेप्यारे॥
यहजोतुमभाषहुयदुराई। सोसवजगमहँप्रगटदिखाई॥३२॥ऐसेतुमकहँछोडिगोविंदा। भजहिंओरकहँतेमतिमं
दोहा–जेसज्जनसबछोडिकै, तवपदकमललुभान। तिनकोकृपानिधानतुम, देहुआपनोप्रान॥ ३३॥
लैयदुवंशमाहँअवतारा। सुंदरसुयशदिशनिविस्तारा॥ दुखीजीवसागरसंसारा। गाइगाइतेउतरहिपारा॥
यदुपतिऐसोसुयशतिहारो।त्रिभुवनकोदुखनाशनवारो३४ज्ञानसरूपकृष्णभगवाना।नारायणऋषिशांतमहाना ३
कछुदिनवसियेमुनिनसमेतू।यहगृहमेंप्रभुकृपानिकेतू॥चरणकमलकीरजइतडारी।निमिकुलपावनकरहुमुरारी३
ऐसीसुनिविदेहकीवानी। अतिप्रसन्नह्वैशारंगपानी॥वसेविदेहनगरकछुकाला। मिथिलापुरजनकरतनिहाला॥३
दोहा–जिमिविदेहकेगेहमें, मुनियुतकीनपयान। तिमिश्रुतदेवहुसदनमें, गमनकीनभगवान॥
गृहमहँआयेलखियदुनाथै।नायसकलमुनिकेपदमाथै॥द्विजश्रुतदेवपरमअनुराग्यो।पटफहरावतनाचनलाग्यो॥३
काठकुशासनआसनमाहीं। बैठायोमुनियुतहरिकाहीं॥ कुशलप्रश्नकरिपुनिअसभाषा।आजुपूर्यिगेममअभिलाषा
असकहिसहितनारिमुदलोयो।मुनिनसहितयदुपतिपदधोयो३९सोजललैअपनेशिरधारा।सोचिशुद्धकियगृहपरिव
पूजेसकलमनोरथताके। प्रेमदशावर्णतकविथाके॥४०॥निजकरलैसबप्रभुहिसुंघायो। सुरभिमृत्तिकाअंगलगायो
सोरठा–हरिआगमगृहजानि, तोरिधरेफलप्रथमते। तेअरपेनिजपानि, प्रेमविवशश्रुतदेवद्विज॥
प्रभुद्विजप्रीतिउदधिअवगाही।खायेफलनिसराहिसराही॥पुनिद्विजशीतलजललैआयो।निजकरप्रभुकहँपानकरायो।
पुनितुलसीअरुअंबुजमाला।हरिकहँपहिरायोततकाला॥यहिविधिहरिकहँमुनियुतपूजो।गन्योआपनेसमनहिंदूजो॥
पुनिअसमनहिविचारनलागो।कौनसुकृतमेंकियोअभागो॥परेरह्योगृहअंधकूपा। किमिहरिदरशनलह्योअनूपा॥
जिनपदरजसबतीरथमूला।असमुनियुतहरिभेअनुकूला॥४२॥असविचारिश्रुतदेवउदारा।प्रभुकेनिकटजायसुतदारा
दोहा–निरखतयदुपतिकोवदन, चापतचरणसप्रेम। मृदुलवचनबोलतभयो, छूटिगयोसबनेम॥ ४३॥

श्रुतदेवउवाच।

तुमनहिंआतआजुमोहिभयऊ।जबशक्तिनतेजगरचिदयऊ॥विश्वविरचिजबकियोप्रवेशा।तबहीतेमोहिमिल्योरमेशा॥

दोहा–तामेंमेंइतिहासइक, वरणौयुतअहलाद। नारायणकोजोभयो, नारदसँगसंवाद ॥ ४ ॥
एकसमयनारदमुनिराई। विचरतलोकनमहँसुखदाई॥ नारायणकेदर्शनहेतू। गयेबद्रिकाश्रममतिसेतू ॥ ५ ॥
जेहिवद्रीवनमहँजगस्वामी। सबभूतनकेमंगलकामी॥ धर्मज्ञानसमसहितसुखारी। कल्पप्रयंतकरततपभारी ॥६
तहाँकलापग्रामकेवासी। बैठेचहुँकितमुनिसुखरासी॥ नारायणपदशीशनवाई। कियप्रणामनारदमुनिजाई॥
यहीप्रश्नकीन्ह्योंतिनपाँहीं।जोपूछ्यौतुमनृपमोहिंकाँहीं॥७॥तबनारायणमुनिनसुनाई।कहीकथासनकादिजोगाई॥८

श्रीभगवानुवाच।

दोहा–एकसमयजनलोकमें, सनकादिकमतिवार। बैठितहाँमोदितमहाँ, कीन्हेंब्रह्मविचार ॥
जामेंसकलश्रुतिनकोअर्था। होयएकहीमिटैअनर्था ॥ ९ ॥ नारायणदर्शनहितजवहीं। गयेश्वेतद्वीपहितुमतबहीं ॥
ब्रह्मविचारभयोसुखसारा। तातेसुन्योनब्रह्मकुमारा॥१०॥तहाँप्रश्नयहभयोसुहावन।जोतुमपूछ्योमोहिंमुनिपावन॥
...लतपसबेसमाना। जिनकेशत्रुमित्रसमभाना॥ सनकसनातनसनतकुमारा। तेइश्रोताह्वैप्रश्नउचारा॥
...दनतिनहिंसमाना। कीन्ह्योंतिनसोंतुरतबखाना ॥ ११ ॥

सनंदन उवाच।

...राजितजगनिजकरिलीना। शक्तिसहितसोवतसुखभीना॥
दोहा–ताप्रभुकीअस्तुतिकरत, वहश्रुतिमूरतिमान। सिगरीहरिहिजगावतीं, करिकैविविधबखान ॥ १२॥
सोरठा–जिमिप्रभातकोपाय, राजद्वारमहँजायकै। बिरदावलीसुनाय, बंदीभूपजगावहीं ॥ १३ ॥

श्रुतय ऊचुः।

...हा–जयजयअजितछोडाइये, जीवनकोअज्ञान। सतदोषहुमहँगुणग्रहक, प्रगटोविभवमहान॥
ज्ञानादिकऐश्वर्यसव, स्वतहबसैतुवमाँहि। शक्तिचराचरजीवकी, तुमतेप्रभुप्रगटाहिं॥
होंविशिष्टचितअचिततुम, जगसिरजकभगवान। यहप्रतिपादनहमकरैं, तुमकोकरतबखान ॥ १४ ॥
उत्पतिथितिलयतुमहिंते, तातेजगतुवरूप। जिमिघटह्वैमृदुतेमिलत, पुनिमृदुमेंअनुरूप॥
जेऔरहुसुरकोभजत, तेनकहातुमकाँहिं। काठपषाणहिंपगधरे, कापगनहिंमहिमाँहि ॥ १५ ॥
त्रिगुणनाथतुवजोकथा, सुधासिंधुहरपाप। तेंहिअन्हवाइसुसाधुजन, हरहिंजननत्रयताप॥
तोपुनिजेतुवध्यानकरि, निर्मलमनमतिवान। रहततुम्हारेनिकटजे, तिनकोकहौंबखान ॥ १६ ॥
जासुअनुग्रहतेरचे, महदादिकब्रह्मंड। अन्नमयादिकमेंपुरुष, मुदमयजोनअखंड॥
अन्नमयादिकचारिके, विनशेजोरहिजात। चिदऔअचिदविलक्षने, निर्विकारदर्शात॥
असतुवभजनदियोगके, पायमनुजतनजोइ। भजैंनतनपोपसदा, समहिंपलायतमोइ ॥ १७ ॥
उदरअँगुष्ठप्रमाणतुम, भजैस्थूलमतिवार। सूक्ष्ममतिकेभजतहैं, दहराकाशउदार॥
हियतेशिरलौरहतिहै, नारिसुषुम्णाजोनि। तेहिंस्थिरजेतुमकोभजैं, तेउनजनैयहिंयोनि ॥ १८ ॥
निजनिर्मितबहुयोनिमें, प्राप्तजेजीवनव्रात। तिनसमअंतर्यामिहो, न्यूनाधिकदर्शात॥
जैसेतृणअरुदारुमें, न्यूनाधिकतेआगि। कहूँनिरासिटेटीपरति, कहूँमुचिदीजागि ॥ १९ ॥
यहअनित्यसंसारमें, नित्यएकरसरूप। तुवज्ञानीजनभजतहैं, त्यागिस्वर्गदुखकूप॥
...तिरयादिरव्यापक, सकलशक्तिधरजाप। निगमगम्यप्रदजननगनि, अमकहेवेदकलाप॥
असगुनिपुपविश्वासकरि, भवदातुवपदकाहि। वृंदावनअवधादिमें, वसिकैभजनमहाहि ॥ २० ॥
अतिदुर्गमनिजतत्वको, जननजनावनहेत। प्रगटहुपुहुमीमिमदा, ...
सुधासिंधुतुवचरितमें, करिमज्जननजिताप। ताहजनमनमंगकारे, नाशनविपकलाप॥

प्रभुतुवपदकमलमें, हंससरिसकरिनेह । भक्तमुक्तिहूँनाहिंचहत, विचरतविनसंदेह ॥ २१ ॥
तुवसेवनकेयोगयह, दुर्लभमनुजशरीर । मानतआतमसुहृदप्रिय, नेहकरतगंभीर ॥
सबकेप्रियतुमअरुसकल, हितकरजेतुवदास । तिनहिंभजहिंनहिंमंदमति, करहिंकुसंगप्रयास ॥
जौनकुसंगप्रभावते, पुनिपुनियहसंसार । जनतमरतबहुयोनिमहँ, लहतनकबहुँउवार ॥ २२ ॥
रोकिइन्द्रियनतीतिमन, योगीप्राणचढ़ाइ । जोतवपदकंजहिलहत, निशिदिनध्यानलगाइ ॥
सोईचरणसरोजको, सुमिरतवैरबढाइ । पावतभेवैरिहुविपुल, चैद्यादिकरराइ ॥
ब्रजनारिहुँसोईलह्यो, भुजभरिभुजनभराइ । हमहुँलह्योसोइरावरे, प्रभुताकहीनजाइ ॥
होसमानसबमेंसदा, समरथहोसबभाँति । लहततुम्हैंवेधिकौनिहूँ, जोसुमिरैंदिनराति ॥ २३ ॥
जिनकोउतपतिआधुनिक, तुमकोतेकिमिजान । अहोअग्रसरनाथतुम, तुमतेविधिप्रगटान ॥
मरीच्यादिजेप्रवृतिरत, निवृतितैसनकादि । द्विविधिदेवप्रगटतभये, जेहिंविधितेजगत्रादि ॥
वेदउदरधरिरहतहौ, जबमुकुंदतुमसोइ । स्थूलजगतअरुकालगति, रहिनजाततबकोइ ॥ २४ ॥
पूरवयहजगनहिंरह्यो, उतपतिभोयहिकाल । आतमनवगुणध्वंसगति, यहकणादमतजाल ॥
रतानप्रथमहिजीवमें, जोब्रह्मत्वमहान । उतपतितासोमुक्तिहै, पातंजलमतजान ॥
पटइंद्रीपटविपैपट, उर्मीसुखदुखदेह । येयेइसकोनाशगति, नैयाइकमतयेह ॥
आत्मजियतआत्मैमरत, आतमकृशअरुस्थूल । अहैदेहहीआतमा, चार्वाकमतमूल ॥
स्वर्गनित्यहैनसतनहिं, हैजगकर्मप्रधान । यहमतमीमासकनको, नहिंकोउईशमहान ॥
ब्रह्मभिन्नमिथ्यासकल, अहैब्रह्मसतिएक । कल्पितब्रह्महिमेंजगत, यहअद्वैतमतटेक ॥
प्रकृतिपुरुपयेतत्वद्वै, अहैंअपरनहिंईश । तासुविवेकहिमुक्तिहै, यहीसांख्यमतदीश ॥
प्रेमसुधारसरावरो, जोनकियोजनपान । भ्रमतरहतहैसोसदा, येसबमतनभुलान ॥
प्रकृतिपुरुपतेपरअहौ, सदासच्चिदानंद । ऐसेतुमकोजानतही, छूटतसबमतफंद ॥ २५ ॥
त्रिगुणवलितयहमनपरत, कारजकारीजानि । शुद्धभयेविनआपको, सकैनहींपहिचानि ॥
जिनकोह्वैगोशुद्धमन, तेजनयहसंसार । चितअरुअचितविशिष्टप्रभु, मानतरूपतुम्हार ॥
जैसेजोजनचहतहैं, कनकलेनमनमाँहिं । सोकबहूँकातजतहैं, कटककुंडलहुकाँहिं ॥
तुवविरचितप्रविशतजगत, जानिस्थूलतुवरूप । मृपानमानतहैकबहूँ; जिनकेज्ञानअनूप ॥ २६ ॥
सकलचराचरमेंतुम्हें, मानिभजेंमतिवार । मृत्युशीशमेंचरणधरि, तेउतरहिंसंसार ॥
जेतुवअनुरागहिंरँगे, करहिंकथारसपान । तेभवाब्धिउतरतसहज, याहिविचारनहिंआन ॥
पैजेतुवविमुखहुँअहैं, तिनहुँनकृपानिधान । बाँधिकथागुणतेकरहु, निजवशपशुनसमान ॥ २७ ॥
तुमसबकारकशक्तिधर, करनअधीननज्ञान । तुवदीन्ह्योंअधिकारलहि, सुरबलिदेहिंडेरान ॥
विभोआपुप्रदभोगही, जैसेलघुनरपाल । चक्रवर्तिनृपदंडदे, भोगहिंभोगविशाल ॥ २८ ॥
सकलचराचरप्रकृतिवश, पावतदुःखमहान । तिनउधारविनतुवकृपा, हैनहिंकृपानिधान ॥
अहौप्रकृतिपरप्रभुसदा, तुमतेपरकोउनाहिं । दोपलिप्तनहिंहोहुकहुँ, नभसमसबथलमाहिं ॥ २९ ॥
जोविभुमानहुजीवतो, आवागमननयोग । तुवशासननहिंहोयगो, नहिंईश्वरताभोग ॥
जीवहिअनुविभुईशको, मानेसबबनिजाय । अहैनिअंताव्याप्तसो, जडचेतनसमुदाय ॥
जोकरिनिमलविचारमन, यहमनजानतनाहिं । [illegible]
प्रकृतिपुरुपदोउअजयदपि, उत्पतिसंभवनाहिं । तदपिपुरुपप्रकृतिहुमिले, जगउत्पतितुममाहिं ॥
जैसेसलिलमहिंबुदबुदा, [illegible] । [illegible]

होयलीनवशतुम्हहिंमें, जगबहुरूपसनाम । जैसेसरितासिंधुमहँ, मधुमहँज्योंरसग्राम ॥ ३१ ॥
तुममायावशनरनभ्रम, जानिहेतुसंसार । भवहारीतुमकोभजहिं, जेजनबुद्धिउदार ॥
जोतुवप्रेमसुधापिये, भवभयताहिनहोय । कालभ्रुकुटितुवदेतभय, तुवविमुखीजनजोय ॥ ३२ ॥
जीतेहुप्राणहुइंद्रियन, चंचलमनहितुरंग । विनगुरुपदवशकियचहत, करिउपायबहुरंग ॥
तेमूरखलहिदुखभ्रमत, होतसिद्धिनहिंकाज । उदधिभ्रमतकेवटविना, जिमिचढिवणिकजहाज ॥ ३३
जगदात्माआनंदमय, तुवपदकरहिजोनेह । तिनहिंस्वजनसुततियधरनि, धामधनहुअरुदेह ॥
इनतेअहैनहेतुकछु, जोयहजानतनाँहि । सुखदकहातिनतियवसिन, दुःखरूपजगमाँहि ॥ ३४ ॥
जेतुवपदपंकजनमें, मनदियएकहुवार । तेविरागहारीसदन, पुनिनकरहिंसंचार ॥
तुवपदप्रेमहिपानकरि, कामक्रोधमदत्यागि । निजपदजलजगअघदरत, विचरततीर्थविरागि ॥ ३५
सतउत्थितजगसतअहैं, तर्कपराहतसोइ । जोयहभापोतौनहीं, कहुँव्यभिचारहुहोइ ॥
शुक्तिरजतस्वप्नादिमें, कहोजोहैव्यभिचार । तौवहसतमिथ्यानहीं, ऐसोवेदविचार ॥
कहोजोजगसतहीअहै, तौउत्पतिकिमिहोत । तौकारणकेरूपयह, प्रथमहिरह्योउदोत ॥
अवकारजकेरूपभो, सोइउतपतिजान । सोउतपतिव्यवहारहित, मानैसकलसुजान ॥
एकब्रह्मसतिहैसदा, हैमिथ्यासबओर । यहजोतुववानीकहै, होतसोजडमतिभोर ॥ ३६ ॥
रह्योनयहजगप्रथमहीं, ह्वैहैअंतहुनाँहि । कहँतेआयोमध्यमें, मृषाजगततुममाँहि ॥
तातेमृदहुघटादिको, दियोतासुदृष्टांत । यहमतअज्ञानीगुनै, सतिनहिंविदवेदांत ॥ ३७ ॥
मायामोहितजीवह्वै, सुरनररूपहिधारि । विषयभोगरतदेहको, आतमलेतविचारि ॥
तवआनंदादिकविगत, जनतमरतबहुवार । नहिंउधारविनतुवकृपा, भ्रमतरहतसंसार ॥
तुममायाकोतजतहौ, जिमिकेंचुरिकहँनाग । वसुगुणपडज्ञानादियुत, रहहुसदाबडभाग ॥ ३८ ॥
कामवासनाजोयती, डरतेइंद्रियनविहाय । मिलहुनतिनतुमस्थितिहूहृदि, जिमिगलमणिसुधिजाय ॥
इतेनश्योसुखजगतको, उतेनश्योपरलोक । मिलेआपताकोनहीं, बाल्योजनमसशोक ॥ ३९ ॥
जेजनजानतआपको, कियेभक्तिरसपान । पापपुण्यफलदुःखसुख, तिनकोहोतनभान ॥
तौपुनिकाजोनाहिंसुनै, अस्तुतिनिंदाकान । तुवदासनकेसंगमें, विचरतसखीसुजान ॥
युगयुगकोतुवरसकथा, करहिंसदापान । ताहिकृपाकरिदेहुगति, तुमहीकृपानिधान ॥ ४० ॥
तुवअनंतमहिमासुरहु, आपहुलहहुनपार । तुवरोमनजिमिगगनरज, तिमिब्रह्मांडअपार ॥
तातेपुरुषप्रधानते, अहौविलक्षणआप । इतनोईकहिसफलहम, महिमाआपअमाप ॥ ४१ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

[illegible]ुसुभगसनंदनवानी।सनकादिकअतिशयसुखमानी॥आतमस्वरूपजानिसबलीन्हें।परपूजनसनंदनहिकीन्हें ॥
[illegible]नेपदओरपुराना । करिनिर्णयसिद्धांतबखाना ॥ करहिगगनमगसदापयाना । पूर्वहुकेहपूर्वमहाना ॥ ४३ ॥
[illegible]तुमब्रह्मकुमारा । आतमशासनसुखदअपारा ॥ मेटतकामवासनाजनकी । देतपरमगतिमनजनमनकी ॥
[illegible]रियाकोउरधारी । विचरहुजहँअभिलाषपतिहारी ॥ ४४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

[illegible]ायणऋषिकोशासन । श्रद्धाकरिशिरधरिमुनिताछन ॥
दोहा-ह्वैप्रसन्नश्रुतधरमहा, नारदनेप्रमान । नारायणसोंकहतभे, जोरिपाणिहरपान ॥ ४६ ॥

नारद उवाच ।

[illegible]मलकीरतिभगवाना । नमोकृष्णजेकृपानिधाना ॥ जगजनकेमंगलकेहेतू । परहुअनेकअवतारगकेतू

रावणकेनेशुकतपकीन्हें। त्रिभुवनअधिकविभौप्रभुदीन्हें ॥ तिमिवाणासुरकेरमहेशा। पुरपालकह्वैरहेह

दोहा-यद्यपिलह्योकलेशबहु, शंकरदेवरदान। तदपिनसेवासहिसके, सेवककीईशान ॥ १६ ॥

असमुनिदानवनारदवानी। करनलग्योहरभक्तिमहानी ॥ दानवद्रुतकेदारमहँजाई। विरचिकुंडपावकप्रगटाई काटिमांसनिजहोमनलाग्यो।हरप्रसन्नहितअतिसुखपाग्यो १७बीतेयहिविधिजबपटवासर।प्रगटभयेनहिंतहाँचंद्रध सतयेंदिनसुरसरीनहाई।काटनलग्योशीशतहँआई॥१८॥तबशंकरअतिकृपानिधाना।शिखितेप्रगटेशिखीसमाना निजहाथनगहिदानवहाथा। कियोनिवारणतेहिगिरिनाथा॥हरकरस्पर्शपायतेहिक्षणमें।जसकीतसपलभैतेहितन

दोहा-पुनिबोलेनहिंकाटुनिज, असुरशीशबलवान। हौंप्रसन्नमैंतोहिपर, माँगुमाँगुवरदान ॥

जेजनप्रीतिसाहितजलदेहीं। तिनकेहमह्वेइजाहिसनेहीं ॥ तैतनकाटहिकसबहुवारा। भयेदासतैअसुरहमारा ॥ दानवजोमँगिहैवरदाना। सोईहमदेहैनहिंआना ॥ २० ॥ असमुनिशंकरवचनमुरारी। महाभयावनगिराउचारी जोप्रसन्नमोपरप्रभुहोहू।यहवरदानदेहुकरछोहू॥जेहिजेहिशीशधरहुँनिजहाथा।तेहितेहिफाटिजाहिद्रुतमाथा॥२१ असुरवचनसुनिहरभगवाना। अपनेमनमहँअतिदुखमाना ॥ पुनिहँसिकह्योएसहीहोई। यामेंहैसंदहनकोई ॥

दोहा-देतभयेशिवअसुरको, महाघोरवरदान। सुधापिआयेसर्पके, जिमिविषहोतमहान ॥ २२ ॥

असुरपायशिवकोवरदाना। मान्योमनमहँमोदमहाना ॥ देखिउमाकोअतिअभिरामा। दानवदुष्टभयोवशकामा। करनपरिक्ष्यासोवरकेरी। गौरीहरनहेतहियहेरी ॥ धरनहाथशंकरकेमाथा। आयोसन्मुखदानवनाथा ॥ २३ ॥ सत्यवचननिजराखनहेतू। लैगौरीभागेवृषकेतू ॥ कँपतभगतदशहूदिशिधावत। तासुउपायनकछुमनआवत ॥ सातखंडनौद्वीपनमाहीं। औपतालकेलोकनपाहीं ॥ सुरपुरमहँदेवनकेधामा। भ्रमतरहेभवस्थिरनहियामा ॥२४ ॥

दोहा-ताकोवारणकीनहिं, जानेदेवउपाय। मौनरहेतातेसबै, अतिकौतुकाचितलाय ॥

तबशंकरअसमनहिविचारो। औरठौरनहिंबचबहमारो ॥ शरणागतपालकभगवाना। तहाँअबशिमैंकरहुँपयाना॥ असकहिकैवैकुंठासिधारा। प्रकृतिपारजेहितेजअपारा॥२५॥ जहँसंतनकेपरमपियारे। श्रीपतिवशहिदयाउरधारे ॥ जहाँगयेपुनिआवतनाहीं॥नित्यभक्तजहँवसतसदाहीं॥२६॥दुरीजानिशंकरहिमुरारी॥अद्भुतआशुवपुषबटुधारी२७॥ अजिनमेखलादंडहिधारे। पावकसमप्रभुतेजपसारे ॥ लियेहाथमेंकुशछबिपूरी। शंभुहिलियेनाथचलिदूरी ॥

दोहा-कह्योआपयहकाकियो, विपतिलियोंदेदान। तुमबैठहुवैकुंठमें, हमअबकरहिंपयान ॥

असकहिनिकटवृकासुरकेरे। गवनेनाथविनीतपनेरे॥२८॥दानवकहँलखिवचनउचारे। शकुनिपुत्रकहँआपपधारे॥ देखिपरहुतनमेंश्रमछाये। कियोंबहुतदूरितेआये ॥ क्षणभरिइतनेवारिश्रमलेहु। यहुश्रमकोहितनकँदेहू ॥ २९ ॥ हिजो हमेंसुनिवेलायक।तौकहिकृपाअसुरकुलनायक ॥ कहहुसकलनिजआवनहेतू।हमहुसहायकरहिंमतिसेतू ॥ बलवानहुजनपायसहाई। सिद्धिकरहिंकारजसुखदाई ॥ ३० ॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिप्रभुकीसुनिमृदुबानी। सुधासमानकानसुखदानी ॥

दोहा-दानवतुरतेंसुरितहैं, हरिकोदियोसुनाय। हरकोवरनिजकृतकरम, जेहिहितआयोधाय ॥

माधवसुनिदानवकेबैना। बोलेवचनविहँसिछलऐना ॥ ३१ ॥

श्रीभगवानुवाच।

यहिविधिजोहैकामतुम्हारो। तामेंसुनियेवचनहमारो ॥ हमनहिंसंभुवचननमानें। अबरैमद्यासमरत्यवखानै ॥ जबतेदक्षशापकहँपाई। तबतेभोपिशाचगिरिराई ॥ प्रेतभूतगनकोवानी। तुमसुजानकमानियसनिमानी ॥ ३२ ॥ शंकरवचनमाहँबलवारो। जोसतितोहहिविश्वासितुम्हारो ॥ नोअपनेशिरमहँधरिहाथा। करहुपरीक्षादानवनाथा ॥ लागततातनतातकरच्यारनो। तबशंकरकहतिवचनाविचारो ॥ ३३ ॥

दोहा-जोपैतपकरनहिंलगें, तवरिपुकोपमहान । ताडहुतेहिजातेकमहुँ, करहिनमृपावलान ॥ ३४ ॥
ऐसेमधुरवचनप्रभुकेरो । सुनिदानवगुनिउचितघनेरो ॥ भूलिगईसुधिउठनिजहाथा।धारयोतुरतआपनेमाथा॥३५॥
धरतहाथतेहिशिरफटिगयेऊ।मरिअसुरेशगिरतमहिभयऊ।देखिदेवतहँअसुरविनाशा।जयजयकीन्हेंसबहिअकाशा॥
पुनिबहुभाँतिसराहनलागे । प्रभुहिप्रणामकियेमुदपागे ॥ पितरदेवगंधर्वनपाँती । वर्षनलगेसुमनबहुभाँती ॥
यहिविधिशंकरसंकटकाटी॥३७॥बोलेहरसोंहरिमुदठाटी॥यहपापीनिजपापहितेरे।गमनकियोयमराजहिनेरे ॥३८॥
दोहा-सहजहुजनकोजोकरत, जगमहँअतिअपकार । सोउकल्याणनपावतो, पुनिकाकहैंतुम्हार ॥ ३९ ॥
यहिविधिशिवकोनाशिदुख, विदाकीनभगवान । गेगिरीशकैलासको, उमासहितहरपान ॥
हरिकोयहशिवदुखदलन, गावैसुनैजोकोइ । सोछूटैसंसारते, शत्रुभीतिनहिंहोइ ॥ ४० ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा
बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ
दशमस्कंधे उत्तरार्धे अष्टाशीतितमस्तरंगः ॥ ८८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-महाराजइककालमें, सरस्वतीकेतीर । करतरहेमखविधिसहित, जुरीमुनिनकीभीर ॥
होतभयोतिनकोसंदेहू । कहेपरस्परमिस्योनकेहू ॥ विधिहरिहरयेबडेसदाहीं । अहैअधिककोतिनहूँमाहीं ॥ १ ॥
यहजाननहितसकलमुनीशा । भृगुहिपठावतभयेमहीशा॥प्रथमविरंचिसभासोजाई॥२॥वंदनकियोनतेहिशिरनाई॥
तवविरंचिकीन्ह्योंअतिरोपू३पुनिसुतजानिगन्योनहिंदोपू॥४॥तवभृगुगमनकियोकैलासा।रहेउमायुतजहँदिग्वासा॥
निजभ्राताकहँलखित्रिपुरारी । उठेमिलनकहँभुजापसारी ॥५ ॥ भृगुकहँमिलनयोगनहिंमेरे । वेदविरुद्धकर्महिंतेरे ॥
दोहा-सुनिमहेशकैअरुणदृग, लीन्ह्योंशूलविशाल । धावतभेभृगुहननको, करिकैकोपकराल ॥ ६ ॥
तबगौरीपदपरिसमुझायो।मृदुलवचनकहिकोपमिटायो।।पुनिभृगुगमनकियोवैकुंठा।जहँकमलापतिबुद्धिअकुंठा ७॥
रमासेजसोवतसुखकारी । ऐसेभृगुमुनिलख्योमुरारी ॥ कीन्ह्योंउरमहँचरणप्रहारा । तवहरिउठिभृगुमुनिहिनिहारा॥
उतरिसेजतेयुतनिजवामा । शिरसोंमुनिकहँकीनप्रणामा॥८॥पुनिबोलेमाधवसुखछाई । बैठोमुनियहिसेजसुहाई ॥ ९॥
मोपरकरिकैकृपामहाई । दर्शनदियोनाथइतआई ॥ आगमजान्योनाहिंतिहारो । क्षमाकरहुअपराधहमारो ॥
दोहा-अतिशयकोमलचरणतव, अतिकठोरहियमोर । दरदहोतिह्वैहैसही, यहदुखहोतनथोर ॥
असकहिविप्रचरणनिजहाथा । मींजनलागेत्रिभुवननाथा॥१०॥पुनिबोलेप्रभुमंजुलबानी।सुनहुँविनैमेरीमुनिज्ञानी॥
लोकलोकपनयुतमुदभरहू । मोहिंपदजलतेपावनकरहू॥११॥लक्ष्मीयोग्यभयोमैंआजू।कृपापायतुम्हरीद्विजराजू॥
तवपदहतगतअघममछाती । वसीआजुतेश्रीदिनराती ॥ १२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असमुनिअद्भुतवचननाथके । जेदीननकर्तासनाथके॥गद्गदभरभृगुभरिदृगनीरा । चल्योमौनलहिमोदगँभीरा॥१३॥
मुनिनयज्ञमहँसोफिरिआयो । तिनहुदेवचरितसोगायो ॥ १४ ॥
दोहा-सुनिभृगुमुनिकेवचनसव, अतिशयआनँदपाय । विस्मितभेहरिचरितमहँ, शंकासकलविहाय ॥
कृष्णहिसबतेअधिकगुनि, तिनकेचरणसरोज । भजनलगेअतिप्रीतिकरि, सिगरेमुनिप्रतिरोज ॥
[illegible]केभजेशांतिहोइजाती । हरिकेभजेअभैसबभाँती ॥ १५ ॥ हरिकेभजेधर्मसबपूरे । हरिकेभजेपापसबदूरे ॥
[illegible]होतहैज्ञाना । हरिकेभजेविरागमहाना ॥ हरिकेभजेविभौसबपावै । हरिकेभजेसुयशजगछावै ॥
[illegible]केभजेभक्तिउरहोती । हरिकेभजेबुद्धिनहिंकाती ॥ हरिकेभजेहोतभवपारा । हरिकेभजेमिलतसुखसारा ॥
हरिकेभजेनरकनहिंजावै । हरिकेभजेनपुनिभवआवै ॥ हरिकेभजेउभैगतिवनती । हरिकेभजेसंतमेंगनती ॥

जाकेसन्मुखकरहुँतमासा । सोप्रसन्नपुजवहिममआसा ॥ गतिनरोकिकहुँजायहमारी । गमनहिनहिंजहँसुरहुसुरा
एवमस्तुकहिसबहिमुनीशा । गमनकियेनिजधाममहीशा॥असवरमुनिगणतेनटपायो॥त्रिभुवनविचरनलग्योसुहा
दोहा—तेहिऔसरवासवहरषि, धार्तराष्ट्रजेहंस । तिनकोआसुबोलायकै, ऐसोकियोप्रशंस ॥
हंसवज्रपुरगवनहुआसू । तहँसरसिनमहँकरहुविलासू ॥ वज्रनाभकीजोइककन्या । प्रभावतीनामकजगधन्या॥
चंद्रसरिसजेहिवदनप्रकासा । पसरतिजासुप्रभाचहुँपासा ॥ करिउपायताकेढिगजाई । दिहेहुकृष्णसुतकथासुना
कुलअरुशीलरूपप्रभुताई । बलविक्रमदीन्ह्योंसबगाई ॥ जबप्रद्युम्नमहँवहअनुरागै । तासुबाततेहिश्रुतिप्रियलागै
तबद्वारावतिआशुहिजाई । लैजैयोप्रद्युम्नलेवाई ॥ हरिसुतदैत्यसुताकोसंगा । करवायेहुतुमहंसअभंगा ॥
दोहा—पुनिकीजोअसजतनतुम, जातेकृष्णकुमार । वज्रनाभकोसैनयुत, संगरकरैसँहार ॥
हमसुरसहितसकैंनसँहारी । वज्रनाभहैभटबलभारी ॥ वज्रनाभकोमारनहारो । हयजगमेंइककृष्णकुमारो ॥
तेहिंपुरप्रविशिसकैनहिंकोई । महाबलीजगमहँहैसोई ॥ ममशासनशिरधरितुमहंसा । यहउपायकरिकरुअरिध्वंसा
हंससुनतवासवकेबैना । एवमस्तुकहिलहिअतिचैना ॥ वज्रनगरकहँकियेपयाना । वासववचनपरमहितमाना ॥
अतिरमणीयतडागसोहावन।बिलसहिंविपुलकमलसुखछावन।कनकवापिकाजहँसोहाहीं।बनीवाटिकाथलथलमाँहीं
दोहा—मंजुमनोहरनादकरि, बसेहंसतहँजाइ । वज्रनाभअंतहपुरहि, सरसिनरहेलोभाइ ॥
सुनतमनोहरसुरतिनकेरो । भूपअनूपरूपतिनहेरो ॥ वज्रनाभहंसनढिगजाई । दियोमनोहरवचनसुनाई ॥
रहहुहंसतुमसदास्वर्गमहँ । बोलहुसदामनोहरस्वरकहँ ॥ रहहुसदाइतआवतजाता । हमतेनिर्भयरहोविख्याता ॥
वज्रनाभकेवचनमानिकै । वसेहंसअतिमोदजानिकै ॥ सुरपतिकार्यकरनकेहेतू । करिलीन्हेंपरिचयमतिसेतू ॥
मानुपसमबोलनतेलागे । नरनारिनमहँअतिअनुरागे ॥ एकसमयतहँविचरतमाँहीं । लखेहंसपरभावतिकाँहीं ॥
दोहा—हंसीइकअतिशयचतुरि, नामशुचीचिमुखिजासु । प्रभावतीसौकारिलियो, अतिमित्रताप्रकासु ॥
एकैसंगरहनदोउलार्गी । प्रीतिरीतिकेरसमेंपार्गी ॥ एकसमैशुचिमुखीसयानी । प्रभावतीसोंबोलीबानी ॥
अतिशयसुंदररूपतिहारो । सकलगुणनयुतशीलअगारो ॥ तातेमैंकछुकहनचहतिहौं । पैतुवभयवशमौनिरहतिहौं ॥
ऐसोरूपभरयोअतियौवन । विनविलासबीततहैछनछन ॥ जोजोहैसोसबहुरिनऐहै । सरितनीरसोपुनिनंदसेहै ॥
भोगयोगतुमभईसयानी । पैकोउवारनमिल्योछविखानी ॥ ऐसीउमिरिमिल्योवरनाहीं । तातेदुखनहिंऔरजनाहीं ॥
दोहा—करनस्वयंवरकहततहै, तवपितुअतिमातिवान । सुरअसुरनकेसुनतमहँ, पैहौपैनसमान ॥
कहँऐहैइतकृष्णकुमारा । नामजासुप्रद्युम्नउदारा ॥ जाकेरूपसरिससुनुप्यारी । मैंत्रिभुवनमहँकहुँननिहारी ॥
परमविमलकुलहैयदुकेरो । जेहिपरशंसतवेदघनेरो ॥ तामेंकृष्णलियोअवतारा । ताकोहैप्रद्युम्नकुमारा ॥
जासुसरिसत्रिभुवननहिंशूरा । सकलगुननतेवहहैपूरा ॥ देवनमेंहैदेवसमाना । दानवमेंदानवपरधाना ॥
मानुपमेंअतिमानुपसोई । धरमात्मातेहिसमनहिंकोई ॥ जेतनीमायाहैंजगमाहीं । असनहिंकोउजोजानतनाहीं ॥
दोहा—त्रिभुवनकेसबवस्तुको, ऐंचिऐंचिसबसार । प्रगटायोयहजगतमें, हरिप्रद्युम्नकुमार ॥
स०—कोटिशशीसिलसीमुखमेंछटिसीसिसुधासीढरेंमृदुबानी।भौंहकसीधनुसीविलसीगतिमैंनासिकेहारिकीगतिमानी ।
कामफँसीसिफवैमुसक्यानियशीजगमेंसबभाँतिसयानी । नैसुकनैनकिसैनलखेदिविदेवनदारहुहोतिदिमानी ॥
तेजमेंभूरजसोजगमेंसुगभीरतासिंधुसीशीलकिभाई । पावकसेहैंप्रकाशमेंपूरछमासीछमासबकासुखदाई ॥
विक्रममेंतोत्रिविक्रमकेसमशक्रोअतिक्रमतानहिंपाई । मारहिकृष्णकुमारभयोताकहाँलगिजायगढापनोकाँ
सोरठा—तेरेभाग्यवशात, कृष्णकुँवरजोपैमिलिहि । तोसतिमानहिबात, पूजिहितुवमनकामना ॥
दोहा—सखीशुचीमुखिकेवचन, चंद्रमुखीसुनिकान । प्रभावतीअसिकहतिभै, आनँदउरनसमान ॥
[illegible] रा । नारदअरुपितुवचनउचारा ॥ अच्युतलियअवनीअवतारा।मनुजसरिसयदुकरांसिलाल ।
आमुपदेरपनरुन्दनारा।दोइनकमअसतासुकुमारा ॥ पितुकुलतेपतिकुलचढवारा।असवेदनसौतोक्यांउनन ।

मारगमहँमुनिअतिसुखछाई। रामलखनकहकथासुनाई॥ पुनिताडकेहन्योरघुनाथा।पुनिमुनिआश्रमगेधनुहाथा॥
तहँमारीचहिरामउडायो॥ हन्योसुबाहुपरमसुखछायो॥ पुनिविशालपुरगेरघुराई। मिलेसुमतिकहँअतिहरषाई॥
रघुवरपदलहिगौतमनारी। प्रगटकियोसत्कारहिभारी॥ जनकनगरगेपुनिदोउभाई। सभामध्यधनुभंज्योजाई।
दोहा—सीयस्वयंवरहोतभो, भारिउवंधुविवाह। परशुरामकोमदहन्यो, अवधगयेसउछाह॥
रामतिलकलखिकेकइशोकू। पुरजनकाहभयोदुखथोकू॥ रामसीयलछिमनवनगौने। दशरथगेसुरपतिकेभौने॥
गंगातटवशिमिलेनिपादे। पुनिप्रयागगेयुतअहलादे॥ चित्रकूटगेअतिसुखधामा। वसेजानकीलछिमनरामा॥
भरतशत्रुहनअवधहिआये। करिपितकृत्तिपरमदुखछाये॥ चित्रकूटगेरामलेवामें। लेपादुकागयेनिजधामें॥
अनसुइयाआश्रमगेरामा। लैपादुकावसेनिजधामा॥ मिलिशरभंगहिकृपानिकेतू। मिलेअगस्तिहिशिष्यसमेतू॥
दोहा—पंचवटीमहँवसतभे, काटिसुपनखानाक। खरदूषणत्रिशिरादिवधि, कियोविजैकीधाक॥
हन्योमरीचहिपुनिरघुराई। रावनहरीसीयकहँआई॥ पुनिजटायुसँगसंगरभयऊ। ताहिसीयसुधिपितुगतिदयऊ॥
पुनिकबंधकरकियोविनाशा। शवरीकहमिलिसहितहुलासा॥ कियोसुकंठहिसंगमिताई।वहुरिवालिमारयोरघुराई॥
मारुतसुतहिसीयसुधिहेते। पठयोलंकाधिपतिनिकेते॥ सोकूद्योशतयोजनसागर।सियहिरामसुधिदियसुखआगर॥
बागउजारिराक्षसनमारी। आयोतहँलंकापुरजारी॥ सागरतटगवनेरघुराई। सेतुरचेकपितरुगिरिल्याई।
दोहा—सेनसहितसागरउतरि, जायलंकरघुनाथ। सकुलसदलरणघोरकरि, हनतभयेदशमाथ॥
सीतालहिचढिपुहुपविमाने। कियेअवधपुररामपयाने॥ पुनिभोरघुपतिनृपअभिषेकू। भयेसुखीपुरप्रजाअनेकू॥
रामचरित्रनिरखितेहिठामा। जकिसवरहेलहेसुखधामा॥ वृद्धअसुरतेहिकालहिकेरे॥ वारवारवचननअसटेरे॥
हँसतिहँसतिहँसतिभयऊ।यहनटअतिअचरजकरिगयऊ।उठिउठिरेलिरेलिझुकिझुकिकै।लखहितमासाकोउलुकिलुकिकै
अनमिषदानवसवैनिहारैं। अपनेउरविस्मयअतिधारैं॥ बारबारसबनटनसराहैं। सबकेअतिशयबढ्योउछाहैं॥
दोहा—मणिनमनोहरहारबहु, वसनअमोलअनेक। ल्यायल्यायनिजगृहनते, दीन्हेंनटनअनेक॥
कोउदानवद्रुतहीतहँधाई। वज्रनाभकोविनयसुनाई॥ नाथनवीननगरनटआये। अबलोंआँखिनअसनलखाये॥
गाउबनाचबबाजबजाउब। तिनकोसत्यसुधाकरप्याउब॥लख्योननैननसुन्योनकाना।जसनटकौतुककरहिमहाना॥
वज्रनाभसुनिदानवबानी। दूतनबोलिकह्योसुखमानी॥ शाखानगरजाहुतुमधाई। ल्यावहुममढिगनटनबोलाई॥
दूतहुनटननिकझटआई। वज्रपुरहिलैगयेलेवाई॥ तिनकोपेरिसबैपुरवासी। चलेसंगमहँआनँदरासी॥
दोहा—वज्रनाभकेनिकटमहँ, चलिनटकीनसलाम। तिननिवासहितदेतभो, नवअवाससुखधाम॥
बहुविधिभोजनहितपकवाना। पठयकियोसत्कारमहाना॥ सभामध्यवैठोअसुरेशा। सजवायोसवसाजुनिवेशा॥
महामहादानवनबुलाई। अतिदीरघदर्वारलगाई॥ नटनबोलावनदूतपठायो। तेनटसभाजायशिरनायो॥
मोहितभोलखिनटनसुरारी। दियोभूरिभूषणपटभारी॥ तहँझरोखनचिकनदुराई।लखनतमासातियनबोलाई॥
सकलसमाजजवैजुरिआई। तबदानवअसगिरासुनाई॥ नटअबअपनोकरहुतमाशा। देखनकीसबकीमनआशा॥
दोहा—सुनिप्रद्युम्नउठिकैतुरत, दियोलगायकनात। पहिरिपोशाकसुहावनी, कौतुककियोविख्यात॥
लगेसुहावनबाजबजावन। सुधासरिसश्रवणनसुरप्यावन॥ हरिसुतलियनिजहाथमृदंगा। तेसहिसांबवीनवहुरंगा॥
गदसाँसुरीचजावनलागे। सबदानवनमोहसोपागे॥ नाचनलगीनटीगतिधारी। इकटकदानवरहेनिहारी॥
कियोअरंभरागगांधारा। काननपरीअमीसीधारा॥ सुरसंपदासहितलैताला। गावतभईनटीतेहिकाला॥
लीलाकियगंगाअवतारा। ल्ययेभूपभगीरथधारा॥ पुनिप्रद्युम्नअसवचनबखाना। औरतमाशालखहुसुजाना॥
दोहा—रावणकृतरंभागवन, नलकूबरकीशाप। सोहमदेतदेखाइहैं, तुमकोमहाप्रताप॥
देभूरनाभयदुकाही। रावणरूपबनायतहाँही॥ पुनिमायामयरचिकैलासा। मनोवतीरंभासविलासा॥
।सांबकुमारविदूषकभयऊ॥ गह्योदशाननजेहिविधिरंभे। सोइलीलासबकियोसदंभे॥

जेहिविधिनलकूबरिदियशापा। लहीदशाननजेहिविधितापा॥ सो...
नाचहिंगावहिंभाउबतावहिं। नकलदेखावहिंबाजवजावहिं॥ मोहिगयेसबदानववीरा।...

दोहा-वज्रनाभअतिमोदलहि, बारहिंबारसराहिं। कह्योनअसनिरख्योकबहुँ, सुन्योनकाननमाहिं॥

असकहिभूपणवसनअमोला। औरहुमणिगणपरमअतोला॥ वैदूरजमणिकेबहुहारा।...
कामगरथअकाशकेगामी। गजअकाशचारीबहुनामी॥ शीतलसुखदसरसअँगरागा। वज्रनाभदीन्ह्योंसुखपागा
औरहुबहुतरतनपटभारी। नटनदियेदानवदरबारी॥ दियोइनामअमितसुखमानी। वज्रनाभदानवकीरानी
बारबारकरिकैसतकारा। वज्रनाभवरवचनउचारा॥ नटदीन्ह्योंहमकोसुखभारी। कबहुँनहमअसनृत्यनिहारी

दोहा-जाहुसदनकहँआजुअब, कालिहआइयोफेरि। वसहुहमारेनगरमहँ, करिकैप्रीतिघनेरि॥

असकहिनटनबिदाकरिदीन्ह्यों। आपहुगवनभवनकहँदीन्ह्यों॥तहँहंसीशुचिमुखीसुहाई।प्रभावतीकेनिकटहिजाई
बोलीवचनमंदमुसक्याई। मैंद्वारिकापुरीमहँजाई॥ लखिइकांतमहँकृष्णकुमारे। तोरिप्रीतिकहिगईअपारे॥
सोसुनिअतिआनंदितभयऊ। मोहिंनिदेशवेशअसदयऊ॥ आजुसाँझकेहमउतऐहैं। प्रभावतीकहँअतिसुखछैहैं
कंतमिलनकीकरहुतयारी। धनिहैभाग्यतोरसखिप्यारी॥ मेरेवचनसत्यउररासे। मृषाकबहुँयदुकुलनहिंभासे

दोहा-सखीशुचीमुखिकेवचन, प्रभावतीसुनिकान। हरषीवरषीनैनजल, रह्योनतनमनभान॥

पुनिहंसीसोंगिराउचारी। आजुसत्यसखिभईहमारी॥ आजुनिशामहँममगृहमाहीं। सैनकरहुकछुसंशयनाहीं
तुमतेयुतमैंप्राणपियारो। देखनचहौंमहाछबिवारो॥ मिलतअकेलेमोंहिभयलागी। बोलिनअईलाजअतिजागी॥
हंसीकह्योसैनमेंकरिहो। तुवकारजकरिअतिमुदभरिहो॥ तबहंसीकहँलैसँगप्यारी। मणिमंडितचढिगईअटारी॥
चितजोनविश्वकर्माकरकी। मनुप्रगटीसुखमाआकरकी॥ तहँसाजुसबसुखदसजाई। बैठीकंतमिलनचितचाई॥

दोहा-विदामाँगितातेतुरत, हंसीवायुसमान। कृष्णकुँवरआननहितै, आशुहिकियोपयान॥

जायप्रद्युम्ननिकटसोहंसी। कहीप्रभावतिप्रीतिप्रशंसी॥ दनुजसुताढिगआशुहिआई। अतिप्रमुदितह्वैगिरासुनाई॥
इकक्षणधीरजधरहुकुमारी। आवतहैंतुवआनँदकारी॥ उतैकृष्णनंदनछबिवारो। मालिनिकोमगमाहिंनिहारो॥
प्रभावतीहितलैसुममाला।जातरहीसंयुतअलिजाला॥तबमधुकरह्वैकृष्णकुमारा। मिलिप्रविश्योअलिअवलिमँझारा॥
मुदितमालमालिनलैजाई। प्रभावतीकहँनजरकराई॥ तासुसमीपधरयोसुमभाजन। गुंजहिभृंगपरमसुखसाजन॥

दोहा-एतनेमेंआवतभई, साँझसमयसुखदानि। जातभईउडिअलिअवलि, गुंजतमत्तमहानि॥

अलिवपुकृष्णकुमारतहँ, अलिअवलीनविहीन। धारिरूपलघुलुकिरह्यो, तेहिंताटंकप्रवीन॥
इतनेहींमेंउदितभो, पूरुवपूरणचंद। विरहिनकोदुखदंदकर, संयोगिनआनंद॥

बरवैछन्द-वेदमुखीलखिचंदैगहिसखिहाथ। बोलीवदकबऐहैंसुतयदुनाथ॥
शशिकरनिकरशरीरैसरसीलागि। होतीहालदुशालेअतिदुखपागि॥
तनकंपतमुखसूखतबहद्दगवारि। विरहज्वालजारतिअँगमलयनयारि॥
ललकतमेरोजियरादरशनहेत। अबसखिवेगिमिलनकोकछुकरुनेत॥
यदपिसुधाकरसुखकरसबकहँहोत। तदपिआजुमोहिंदाहतकियोउदोत॥
एकरविअस्तप्रतीचिलियजलसेज। एकरविप्रगटेप्राचीतीखनतेज॥
असदुखपरयोनकबहूँसजनीमोहिं। वेगिमिलौवेंपियकोदयानतोहिं॥
श्रवणसुन्योनहिंदेख्यातासुसरूप। जरनलगअबहैतिअंगअनूप॥
धिगधिगहैपिगहैसखिनारिसुभाउ। धीरेहिमेंदुखधोगेहिहोतउछाउ॥
हेसजनीसतिमानैमेरीबात। विनापियमिलनभयोजियजमपुरजात॥
नहिंसोहातपरवादेरनहिंपरिवार। छलियाअतिछटकन्हिप्रांछलीकुमार॥

मदनभुजंगमकाटयोमोहिसखिधाय। चढिआयोविषकैसेजहिंहाय॥
आलीअबअचरजयहलेहिनिहारि। चंद्रकिरणतेप्रगटीआजुदमारि॥
सुनतरहीमलयानिलशीतलहोत। मेरेअँगअँगपावककरतउदोत॥
लागीउरमेंआलीमदनदमारि। प्यायपियाअधरामृतदेहिनेवारि॥
सजनीजसजसरजनीआवतजाति। तसतसउरहिधीरतामोरिपराति॥
अंगशिथिलसबह्वैगेदृगनदेखात। येतेहुपरबहकपटीनहिंदरशात॥

दोहा—मरीमरींमैंयहघरी, सुनुरीअरीसयानि। असउचरीरीपीरिपरी, विरहभरीमुरझानि॥

प्रभावतीताटंकहितेतब। हंसीकोसुनिपरयोसुखदरब॥ मोविरहानलजरतिकुमारी। प्रगटबउचिताहिपरतनिहारी॥
तातेप्रगटतहौंअबहंसी। देहौंसुखयाकोदुखध्वंसी॥असकहिप्रगटयोकृष्णकुमारा। मनहुकोटिशशिप्रभापसारा॥
रह्योप्रकाशअवासहिछाई। देखतबनैबरणिनहिंजाई॥ प्रभावतीसोंतबकहहंसी। उठुलखुपतिनिजजगतप्रशंसी॥
उठीचंद्रमुखिचौंकितुरंते। लख्योकंतविलसंतअनंते॥ उरहिभर्योआनंदअपारा। पर्वपायजिमिपारावारा॥

दोहा—कबहुँलख्योअसरूपनहिं, प्रभावतीनिजनैन। मदनभयोमाधवसुवन, कोवरणैमतिऐन॥

सवैया—नेशुकहीतिरछोहेचितैपुनिघूँघुटकोपटवोटहिकीन्हीं।मंदहिमंदमुखैमुसक्यायनवायनिजैनवलामिरलीन्हीं॥
श्रीरघुराजप्रमोददराजमनैमनआपनेकंतहिचीन्ही। बोलनकोकियोकेतोविचारपैलाजानिगोडिनबोलनदीन्ही॥

दोहा—तुमतनपुलकावलिवलित, गहिप्यारीकोहाथ। मंदमंदबोल्योवचन, देतमोदरतिनाथ॥

कवित्त—तेरोपायसासनमैंद्वारिकातेआयोधाय, करिकैउपायकेतीआयइतहूँगयो।
तेरोचंदवदनविलोकिकैअशोकह्वैकै, लहिमुदथोकमैनिहालअतिशयभयो॥
रघुराजमोहिलखिबोलतिनकाहेबैन, अमलकमलसेनवायनैनक्योलयो।
प्रथमसुधाकेकुंडमोहिअन्हवायप्यारी, अबविषबेलिबीजमेरेउरक्योंवयो॥

स०—कोटिशशीसीप्रभामुखकीनहिंतेरेछिपायेछिपैगीकहीरी।प्रीतिकीरीतिकरैतजिभीतिअरीअनरीतियोंकाहेगहीरी॥
जोरिकरैंमैनिहोरिकहौंविनतीयहमोरिसुनैतौसहीरी। मोहिलगाउहियेमहँप्यारीनतोममजीवनरैहैनहीरी॥

सोरठा—रचिगंधर्वविवाह, करैअनुग्रहमोहिंपर। अबहैकालउछाह, प्यारीप्रीतिनिबाहिये॥

असकहिकैमनिखंभहिमाँहीं। पावककोप्रगटायतहाँहीं॥ सुमनहोमतहँकियोकुमारा। पाणिग्रहणकेमंत्रउचारा॥
कंकणकलितकमलकरताको।गहिरतिकंतपरममुदछाको।पावककोपरदक्षिणदीन्ह्यो।यहिविधितासुव्याहतहँकीन्ह्यो॥
पुनिहंसीसोंकह्योकुमारा। बैठहुजाइसखीतुमद्वारा॥ काहूकोनहिंआवनदेहू। हमदुनहुँनरक्षहुकरिनेहू॥
हंसीजाइद्वारमहँबैठी। मानहुँसुखसमुद्रमहँपैठी॥ तबअतिमोदितह्वैरतिनाथा। मंदमंदगहिसुंदरिहाथा॥

दोहा—सेजहिपैबैठाइतेहिं, कियअधरामृतपान। जिमिअरविंदमरंदमें, रहैमिलिंदलोभान॥

सवैया—सोइमनोजविधारसमोइरहेदोउसेजमेसोइससारी। सेदकेबुंदनवृंदनसोंअरविंदसेआननसोहतभारी॥
श्रीरघुराजसुवासविलासअवासकरैचहुँपासपसारी। मानोहेमंतमेंहेमलतालपटीहितमालहिमेकनधारी॥

दोहा—करतप्रभावतिसंगमहँ, बहुविधिरासविलास। पूषणप्रभुप्राचीदिशा, पूरणकियोप्रकाश॥

जानिभोरप्रदुम्नकुमारा। प्रभावतीसोंवचनउचारा॥ डेरहिगमनहिजोकहुँप्यारी। फिरिऐहौंतुवनिकटमिपरी।
प्रभावतीजानिप्रद्युम्नछाईं। जमनसकेतेहिदयोबिदाई॥ जायदिवसभरिरहिनिजडेरा। आयोफेरिसांझदोलेरा।
[illegible]। रस्योप्रभावतिपुनसनंदन॥ वज्रनाभकेनितनिवासा। आपकरैनटनर्तितमासा॥
[illegible]। दानवकरैनटनपरप्रीती॥ एतनेमेंकश्यपकेजागा। [illegible]

दोहा—वज्रनाभपदजानिकै, [illegible]। [illegible]को, मंत्रकियोमनलाय॥

कवित्त—नदतनिराखिनवघननभठौरठौर, पुच्छपसराइशोरकैकैमतवारेहैं।
मंडितकरतकुलिकाननमहलहूँको, नाचतमयूरचहँओरछविधारेहैं॥
भाषैरघुराजसुखीसंगलैमयूरिनको विहरैंहरिततृणमध्यमुदवारेहैं॥
प्यारीअहैपूरेवैरीविश्वमेंवियोगिनके, तेसहीसंयोगिनकेसाँचेसुखकारेहैं॥
सवैया—वारिकेधारनछैनिकसैअतिशीतलमंदसुगंधसुखारी। हेलिनकोसुखहेतसहीहठिहारकहैरतिस्वेदकोप्यारी॥
श्रीरघुराजनयासमदूसरोदेखिपरैजगमेंसुखकारी। पावसकालमेंपौनविनापरिपूरणप्रीतिनहोतीहमारी॥
दोहा—मोरनकोअतिमुदितलखि, भयेमानतेध्वंस। मानसरोवरवासके, लोभीउडिगेहंस॥
सारससहितकराकुलौ, निरखिपुलनिजलपूर। चातकतेअपमानलहि, गवनतभेबहुदूर॥
शेषसेजमेंशैनकीय, नारायणयहिकाल। अमलाकमलाकरतमैं, सेवनकलारसाल॥
सवैया—मंजुलवंजुलफूलिरहेतिमिकेतकिकाननमेछविछावैं। सोहैंकदंबकदंबहरेलतिकालहरेतरुसौंमिलिभावैं॥
वारिभरेविलतेविपकेधरवाहेरवीरुधमंचढिजावैं। तेपुनिकैपुहुमीमेंपरैंतहँभोरनभीरतेजाननपावैं॥
सोहिरहीअरिभूमिहरीद्दगहेरतहींहियमोदवढावै। वीचहिवीचहिवीरवधूटिनकीअवलीअतिशैछविछावै॥
श्रीरघुराजविचारिकहैउपमाअसमेरेहियेमहँभावै। चूनरीवोढेनईदुलहीउमहीमहीमेघमिलैमनुजावै॥
दोहा—प्यारीयहनभमेंलखै, कौतुककरतसमीर। मेघनमेघलरावतो, करिकैवेगगँभीर॥
सवैया—घेरिचहूँकितितेघनघोरधराओधारधरमेंजलढारे। फूटिगयेसरऔसरिसेतसबैथलपूरितवारिकिधारे॥
चातककेमुखएकहूबूँदपरयोनहिंश्रीरघुराजउचारे। ज्योंसुकियाकेविलोचनमेंपरपूरुषकेपरतेनासेगारे॥
सोरठा—दादुरधुनिचहुँओर, ठोरठोरसोहतिभली। मनहुवेदकोशोर, शिष्यसहितद्विजवरकरहिं॥
सवैया—ग्रीषमभीषमतापतचीमहिकोकहोशीतलकौनबनावत। विश्वप्रजानिकेजीवनहेतअनेकनऔषधकोउपजावत।
श्रीरघुराजसँयोगिनकोयोअनूपमआनँदकोसरसावत। माननीमाननशावतकोपियाजोयहमासअषाढनआवत॥
दोहा—पैप्यारीयहपावसै, मोहिइकदोपदेखात। तेरेमुखसमइंदुयह, वारहिंवारछिपात॥
कबहुँकबहुँजबलखिपरत, मधिमेघनकेवृंद। मीतसरिसतबमोहिंमिलत, यहअनंदकरचंद॥
संयोगिनसुखकरसदा, विरहिनकोदुखदानि। एकरूपतेकरतहै, गुणऐगुणछविखानि॥
यदपिछिपायोविधिविभा, येवारिदकेवृंद। तदपिचारुयहचाँदिनी, फैलीतुवमुखचंद॥
यदुकुलकोमूलकशशिजानो। ताकोबुधउत्तमसुतमानो॥ बुधसुतपुरूरवामहराजा। जौनचक्रवर्तीक्षितिराजा।
आयुआदिकहुभेसुततिनके।सुवननहुषभूपतिभेजिनके॥ सुरपतिराजनहुषनृपकीन्ह्यो।त्रिभुवनसुयशपूरिनिजलीन्ह्यो।
पुनिजेहिवंशमाहसुनुप्यारी।वसुयदुभूपतिभेजसधारी॥ पुनिजेहिवंशहिमहनृपभोजू। भयेजगतमहँअनुपमओजू।
जेहिवंशहिमहँत्रिभुवनवाला।मोपितुप्रगटेकृष्णकृपाला॥नहिंअधर्मरतजेहिकुलभयऊ।नहिंमिथ्याभाषीकोउठयऊ।
दोहा—नहिंनास्तिककपटीभयो, नहिंकादरनकुरूप। नहिंअदानिनहिंऐगुनी, यहिकुलप्रगट्योभूप॥
तासुवंशकीतिवधू, होतभईगुणखानि। करुप्रणामनिशिनाथको, ममकुलवृद्धिहिजानि॥
नारायनममजनकको,जोत्रिभुवनकेनाथ। करुप्रणामसुंदरीतिन्है, जोरिजलजयुगहाथ॥
यहिविधिवर्णतपावसकाहीं। विहरतप्रभावतीगृहमाहीं॥ वीतिगयेवरपाकेमासा। छायोशरदप्रकाशअकासा॥
भईममापतिकरूपपरपागा। तहँगवनेसुरअसुरसरागा॥ गयोवज्रनाभउनहाँहीं। त्रिभुवनविजयनद्योमनमाहीं॥
दानवमोरूपपनवचोले। वज्रनामतुमहाँउनभोले॥ तुमनइंद्रपदपावनलायक। निजतपअधिकअहैगुनानायक॥
[illegible]। कालिंदनगृहकिपोपयाना॥ भौनआयनिजसेनचोलाई। कियवासवपरकोविचराई॥
दोहा—[illegible]पदसुविपापकै, हैसनतुरनबोलाय। कहिमैंदेसहागवनी; दीन्हेंतुरतपठाय॥
इंद्रलोकपरांगोश्रमभाषे। शामवजवलगमनअभिलाषे॥ अवप्रदुम्नआदिकयदुवाग। वज्रनाभकोकरहिंभंग॥

ह्वैगोतहाँअँधियार। पुनिमच्योहाहाकार॥ यहवज्रनाभविलोकि। दौरतभयेअतिशोकि॥
सेहिंसंगसुनाभसुरारि। धावतभयेधनुधारि॥ प्रद्युम्नदैदोउवीर। मारेअनंतननतीर॥
तिनकेशरनसबकाटि। हरिसुतदियोशरपाटि॥ लखवेतमासाहेत। नभरहेनाकनिकेत॥
गदसांबविरथहिजानि। वासवउरैदुखआनि॥ निजनागअरुनिजजान। भेज्योतुरतहरपान॥
गदचढ्योगदपरजाय। सांबहुरथैसुखपाय॥ लहिवीरवाहनदोय। दियअसुरगर्वनखोय॥
पुनिप्रवरऔरजयंत। लहिशक्रहुकुमतुरंत॥ प्रद्युम्नकरनसहाय। आयेसमरमहँधाय॥
तिनसोंकह्योहरिनंद। तजियोनअवसरवृंद॥ जबहमकेंहेंगेटेरि। तबछोडियोशरफेरि॥
रक्षहुसुतनातियजाय। दानवनऔवेंधाय॥ गदसांबहूँयुधकाहिं। आयेनिकरिदलमाहिं॥

दोहा—नारिनधरपनजगतमें, सुनियेप्रवरजयंत। होतमरनहूँतेकठिन, तातेजाहुतुरंत॥

छंद—सुनीहरिकेसुतकीवरबानि। गयेदोउवीरमहासुखमानि॥चढेदोउऐनतजेबहुबाण।लियेबहुदानवकेहरिप्राण॥
सुवज्रहुनाभसुनाभप्रवीर। बलीसबदानवहूरणधीर॥ झुकेहरिनंदनपैइकबार। हनेअतिकोपितह्वैहथियार॥
कहेवचिहैंनाहिंकृष्णकुमार। कियेअपकारहमारअपार॥ रहेअबलौंछिपिकैइतचोर। नजानेहुकालवशैबलमोर॥
सुनेअसदानवकीतहँबानि। कह्योहरिनंदनकैमुसक्यानि॥खडोतुवसैन्यहिमध्यअकेल।करोमोहिमारनकीकनफेल॥
तहाँअसुरेशमहाउरकोपि। दियोहरिकेसुतपैशरतोपि॥ कियोरणमायहिकोअँधियार। भईवर्पावहुशोणितधार॥
मलौअरुमूत्रहुपीवहुवारि। रणैवरप्योबहुवारसुरारि॥ तहाँहरिकोसुतमायप्रधान। कियोसत्वात्मिकमायविधान॥
तुरंतहिनाशिदियोअँधियार। सबैअरिमायभईजरिक्षार॥ कियोहरिनंदनमायअनूप। रचेरणमेंनिजकोटिनरूप॥
रहेजेतनेअसुरेशप्रवीर। लडेतितसोंहरिनंदनवीर॥ सुरारिसबैयहकौतुकदेखि। भगेभयमानिमनेअसलेखि॥

दोहा—इकप्रद्युम्नसोसमरमहँ, बचतरहेनहिंसोय। कोटिनप्रगटप्रद्युम्नभे, अबबचिहैंकिमिकोय॥

छंद—लखीदेवराजोहरीपुत्रमाया। भयोचक्ततेठीकयेकोनआया॥
तहाँकीनमायाबलीवज्रनाभा। देखायोसोऊआपनीकोटिआभा॥
कुमारौतहाँपावकीकीनमाया। दलैदानवैज्वालमालानिछाया॥
तहाँवारुणीकोकियोदानवेशा। जलैधारधाईसबैयुद्धदेशा॥
तहाँवायवीकोपसारयोकुमारा। उडेमेघमाच्योमहाधुंधकारा॥
महापार्वतीकोपसारयोसुरारी। गिरव्योमतेशैलपापाणभारी॥
नश्योवायुकोवेगसंग्राममाँहीं। रच्योवज्रमायाप्रद्युम्नौतहाँहीं॥
तबैतोपिसाँचीरचीदैत्यमाया। कटीयोगिनीभूतिनीभीमकाया॥
तहँदेवमायाप्रकाश्योरतीशा। तुरंतैदह्योयोगिनीऔपवीशा॥
महादैत्यगंधर्वमापापसारी। रच्योयुद्धकेमध्यमेंग्रामभारी॥
नचैअप्सरागानगंधर्वकर्तें। महामाधुरैशोरकैमोदभर्तें॥
तहाँज्ञानमायाप्रकाश्योकुमारा। नश्योआशुगंधर्वकोनाट्यसारा॥
सुमायामहामोहिनीदैत्यकीनी। सबैदेवतैकोमहाभीतिदीनी॥
रचीसंगिमायातहाँकृष्णनंदा। महामोहिनीकोकियोतत्रमंदा॥
रचीसर्पमायातहाँदैत्यराया। महीअंबरैसर्पसंघातछाया॥
गोविंदातनैगाडुरीकोपसारयो। कढैवैनतेवैअहीभक्षडारयो॥

दोहा—मायाबलीविचारिकै, प्रद्युम्नहिअसुरेश। हननलग्योदिव्यास्त्रतहँ, करिकैकोपअशेश॥

मेंप्रविशतहैंदानवदलमें।करिहौंनाशसकलखलपलमें॥गदसांबहुसंमतकरिदीन्ह्यो।निजनिजद्वारहिकहँगांहिलीन्ह्यो॥
तहाँकृष्णसुतसमरसवाना। कियोनिरायुधनभहिंपयाना॥ सबमायाकोजाननवारो। महाबलीरुक्मिणिदुलारो॥
मायाकोरथतुरतबनायो। तैसहितूणधनुपशरभायो॥रच्योसहसशिरकोइकनागा। तेहिसारथिकीन्ह्योसुतपागा॥
दोहा–निकसतमिरखिनेवासते, दानवकृष्णकुमार। धरहुधरहुधावहुधुवै, सबबोलेइकवार॥
छंद वामन–असकहिअसुरवरिवंड। गहिशस्त्रपरमप्रचंड॥ धायेसबैइकवार। कियसिंहनादअपार॥
तबकृष्णनंदनकोपि। दानवदलमचितचोपि॥ कीन्ह्योंधनुपटँकोर। छायोदिगंतनशोर॥
छोडीशरनकीधार। मनुशलभवृंदअपार॥ फुंकरतमानहुँव्याल। धायेविशिखविकराल॥
मुखतजतज्वालामाल। मनुमहाकालहुकाल॥ सोविशिखवृष्टिअपार। रहिछाइखलनमँझार॥
बहुअर्धचंद्रसवान। बहुहरेअसुरनजान॥ इकएकशरनअनूप। दशदशकढेतिनरूप॥
दलदलनदानवकेर। हरिपुत्रशरनघनेर॥ सूखोकृशानकछार। जिमिकरतआसुहिआर॥
तहँअसुरकोऊभागि। असुरेशपैंदुखपागि॥ असकियेदीनपुकार। वहचोरअतिवलवार॥
कियअसुरदलसंहार। मचिगयोहाहाकार॥ अबकरहुनाथउपाय। जेहिभाँतिवहनधिजाय॥
दोहा–वज्रनाभदानवबचन, सुनिअतिशयकरिकोपि। बोलिसुनाभैभ्रातको, शासनदियोसचोपि॥
वेगिबुलावहुसैन्यहमारी। करहुसमरकीतुरततयारी॥ सुनिसुनाभअसुरेशमहाना। बोलेदानवदलबलवाना॥
दैत्यवलीजेतीनकरोरा। विधिकेवरतेअतिबरजोरा॥ स्यंदनतरलतुरंगमतंगा। महारथीअतिरथीअभंगा॥
परशुपरिघकरवालकराला। मुद्गरमूशलभिंडहुपाला॥औरहुआयुधतीक्षणनाना। धारिअसुरचढिचढिनिजयाना॥
आयेवज्रनाभकेद्वारे। सुरनसमरमेंसूदनवारे॥ वज्रनाभलखिसैन्यअपारा। रथचढिसंगरकरनसिधारा॥
दोहा–वज्रनाभरणमहँगयो, हरिसुतपरचोदेखाय। सबैदानवनकहतभो, धरौनअबबँचिजाय॥
सुनिस्वामीकेवचनकठोरा। धायेदानवतीनकरोरा॥ घेरचोहरिपुत्रहिचहुँओरा। मारनलागेशस्त्रकठोरा॥
तीरनतोपितुरंतहिताको। जिमितोयदतीतिरानिप्रभाको॥ तहँअद्भुतविक्रमीकुमारा। छाँडीधनुपधुनतशरधारा॥
धुरधुरभनालीकनाराचा। कढेबाणबहुवदनपिशाचा॥ छायरहेदानवदलमाँहीं। असनहिंकोउजेहितनशरनाहीं॥
कहूँफिरहिंबिनशुंडवितुंडा। कहूँउडहिमुंडनकेझुंडा॥ इकशरलागिदशविशतनफूटे। एकहिसाथअसुरमरिगूटे॥
दोहा–उठतगिरतपुनिपुनिभ्रमत, नदतवढतभजिजात। सहिनसकतदानवप्रवल, कृष्णकुँवरशरघात॥
संतालितेकृष्णकुमारा। छोडतवारवारशरधारा॥ अंशुमानजिमिउदितअकाशा। किरणछायजगकरतप्रकाशा॥
तैसहिकढतधनुपशरधारा। लखिनपरतगोविंदकुमारा॥ तीनकरोरदैत्यरणमाहीं। भिड़ियाकुंभसरिसदुरङ्गाहीं॥
कियोदानवीदलदलनागा। परमदुखितहँहाहाकारा॥ शोणितनदीवहनतहँलागी। प्रगटीयोगिनतानिअनुरागी॥
फारफंफअरुगृद्धअपारा। रुधिरपानपलकरहिंअहारा॥ धावतभूतपिशाचवेताला। गावतनाचतदेदैताला॥
दोहा–लोथिनमोंपुहुमीपटी, कटीसैन्यतहँआसु। घटीद्रिकमदैभटनकी, पटीविजयकीआसु॥
छंदतोमर–भोमनकृष्णकुमार। दलवनदहततोहिवार॥ कोउसकयोनहिसमुदाय। सबनलैदैत्यपराय॥
गदमारि[illegible]नाप। लागिकृष्णरणनाप॥ गदगदिगदागुरुवान। कियसमरमध्यमदान॥
[illegible]लोमनेकनलाप। भंग्योपनबहुगाप॥ इकवारअसुरदमार। फलिहैंप्रहारअपार॥
[illegible]नकोलरणननाहि। गहचारनोभिनाहि॥ कहुँडिगददंतउगाहि। वपकृष्णनागुपनाहि॥
[illegible]नैन्सैहदाप। पोमनअसुरमनमाप॥ गहलगनदानवमूद। भागनकरलनानिरूद॥
[illegible]नरतालकराल। दानवहुमेंनेहिकाल॥ उनमारवीग्मनाहि। दानवनपैगरजाहि॥
[illegible]। [illegible]॥ [illegible]। मगुभटदानवमुन्य॥
[illegible]। [illegible]॥ सुनिदनिननौकोनंद। वण्यांविजिमकंद॥

ह्वैगोतहाँअँधियार। पुनिमच्योहाहाकार॥ यहवज्रनाभविलोकि। दोउरतभयेअतिशोकि॥
सेहिंसंगसुनाभसुरारि। धावतभयेधनुधारि॥ प्रद्युम्नदेदोउवीर। मारेअनंतनतीर॥
तिनकेशरनसबकाटि। हरिसुतदियोशरपाटि॥ लखबेतमासाहेत। नभरहेनाकनिकेत॥
गदसांबविरथहिजानि। वासवउरैदुखआनि॥ निजनागअरुनिजजान। भेज्योतुरतहरपान॥
गदचढ्योगदपरजाय। सांबहुरथैसुखपाय॥ लहिवीरवाहनदोय। दियअसुरगर्वनखोय॥
पुनिप्रवरऔरजयंत। लहिशक्रहुकुमतुरंत॥ प्रद्युम्नकरनसहाय। आयेसमरमहँधाय॥
तिनसोंकह्योहरिनंद। तजियोनअवसरवृंद॥ जबहमकेंहैंगेटेरि। तबछोडियोशरफेरि॥
रक्षहुसुतनतियजाय। दानवनऔवेंधाय॥ गदसांबहूँयुधकाहिं। आयेनिकरिदलमाहिं॥

दोहा—नारिनधरपनजगतमें, सुनियेप्रवरजयंत। होतमरनहूँतेकठिन, तातेजाहुतुरंत॥

छंद—सुनीहरिकेसुतकीवरबानि। गयेदोउवीरमहासुखमानि॥चढेदोउऐनतजेबहुवाण।लियेबहुदानवकेहरिप्राण॥
सुवज्रहुनाभसुनाभप्रवीर। बलीसबदानवहूरणधीर॥ झुकेहरिनंदनपेइकवार। हनेअतिकोपितह्वैहथियार॥
कहेवचिहैनाहिंकृष्णकुमार। कियेअपकारहमारअपार॥ रहेअबलोंछिपिकैइतचोर। नजानेहुकालवशैबलमोर॥
सुनेअसदानवकीतहँबानि। कह्योहरिनंदनकैमुसक्यानि॥खडोतुवसैन्यहिमध्यअकेल।करोमोहिंमारनकीकनफेल॥
तहाँअसुरेशमहाउरकोपि। दियोहरिकेसुतपैशरतोपि॥ कियोरणमायहिकोअँधियार। भईबर्पाबहुशोणितधार॥
मलौअरुमूत्रहुपीबहुवारि। रणैवरष्योबहुवारसुरारि॥ तहाँहरिकोसुतमायप्रधान। कियोसत्वात्मिकमायविधान॥
तुरंतहिनाशिदियोअँधियार। सबैअरिमायभईजरिक्षार॥ कियोहरिनंदनमायअनूप। रचेरणमेंनिजकोटिनरूप॥
रहेजेतनेअसुरेशप्रवीर। लडेतितसोंहरिनंदनवीर॥ सुरारिसबैयहकौतुकदेखि। भगेभयमानिमनेअसलेखि॥

दोहा—इकप्रद्युम्नसोंसमरमहँ, बचतरहेनहिंसोय। कोटिनप्रगटप्रद्युम्नभे, अबबचिहैंकिमिकोय॥

छंद—लखीदेवराजौहरीपुत्रमाया। भयोचक्रतेठीकयेकोनआया॥
तहाँकीनमायाबलीवज्रनाभा। देखायोसोऊआपनीकोटिआभा॥
कुमारौतहाँपावकीकीनमाया। दलेदानवैज्वालमालानिछाया॥
तहाँवारुणीकोकियोदानवेशा। जलैधारधाईसबैयुद्धदेशा॥
तहाँवायवीकोपसारचोकुमारा। उडेमेघमाच्योमहाधुंधकारा॥
महापार्वतीकोपसारचोसुरारी। गिरेव्योमतेशैलपाषाणभारी॥
नश्योवायुकोवेगसंग्राममाँहीं। रच्योवज्रमायाप्रद्युम्नौतहाँहीं॥
तबैतोपिसाँचीरचीदैत्यमाया। कटीयोगिनीभूतिनीभीमकाया॥
तहँदिव्यमायाप्रकाश्योरतीशा। तुरंतैदह्योयोगिनीऔपवीशा॥
महादैत्यगंधर्वमायापसारी। रच्योयुद्धकेमध्यमेंग्रामभारी॥
नचैअप्सरागानगंधर्वकर्ते। महामाधुरैशोरकैमोदभर्ते॥
तहाँज्ञानमायाप्रकाश्योकुमारा। नश्योआशुगंधर्वकोनाट्यसारा॥
सुमायामहाँमोहिनीदैत्यकीनी। सबैदेवतैकोमहाभीतिदीनी॥
रचीसंगिमायातहाँकृष्णनंदा। महामोहिनीकोकियोतन्त्रमंदा॥
रचीसर्पमायातहाँदैत्यराया। महीअंबरैसर्पसंघातछाया॥
गोविंदोतनैगारुडीकोपसारचो। कढेवैनतेवअहीभक्ष्यडारचो॥

दोहा—मायाबलीविचारिकै, प्रद्युम्नहिअसुरेश। हननलग्योदिव्यास्त्रतहँ, करिकैकोपअशेश॥

छंद त्रोटक ।

वरुणास्त्रहिवेगिचलायदियो । पढिमंत्रहिंकोइकवाणलियो॥हरिकोसुतआवतदेखितहाँ । तुरतैधनदास्त्रचलायमहाँ॥
कियवारणवारुणअस्त्रहिको । तंबदैत्यलियोइकशस्त्रहिको॥यमराजहिमंत्रहिकोपढिकै । हनिदीनप्रद्युम्नहिकोनढिकै॥
तबवासवअस्त्रकुमारलयो । हनियाम्यसुअस्त्रहिरोंकिदियो॥तबलैविधिअस्त्रसुरारिहन्यो।अबबाँचतनाअसवैनभन्यो॥
तहँकृष्णकुमारहुब्रह्मशिरै । लियचित्तविचारिनऔरभिरै॥ दोउसायकजायअकाशलरे ।समतालहितेतहँआशुजरे॥
तबदानवपाशुपतास्त्रलियो।सबलोकनकोअतिभीतिकियो॥चहुँओरहहारवछायरह्यो।सुरसिद्धहुस्वस्तिसखेदकह्यो॥
लखिपाशुपतास्त्रप्रकाशमहाँ।पितुकोलियअस्त्रकुमारतहाँ॥उतशंकरअस्त्रचल्योरवकै। इतअच्युतअस्त्रचल्योजवकै॥
सुरमानिमहापरलैमनमैं । भजिगेतजिअंबरताक्षणमैं ॥ लहिवैष्णवअस्त्रप्रकाशबडो।छिपिगोशिवअस्त्रक्षणौनअडो॥
दलदानवजारनलागतभो । असुरेशसभ्रातहुभागतभो ॥ भटहूँसबभागिचलेभभरे । रनमेंयुधहोतनहींसँभरे ॥

दोहा—जेभागेतेबँचिगये, रुकेभयेतेछार ॥ तबनिजपितुकेअस्त्रको, कियकुमारसंहार ॥

छंदगीतिका—तहँवज्रनाभसुनाभदानवनिरखिअस्त्रसँहारको । धावतभयेदोउधनुपधरिवधकरनकृष्णकुमारको ॥
औरहुसबैदानवबलीमुरिकैगहेहथियारको । इकवारशोरअपारकैकैकियेविपुलप्रहारको ॥
तहँकृष्णनंदनखलनिकंदनरोंकिस्यंदनव्योममें । हनिसुरप्रचंडनअसुरमुंडनकियोखंडनजोममें ॥
चहुँओरतेशरधारधावतिधधकिपावकज्वालसी । केतेजरेकेतेमरेकेतेभरेभयआलसी ॥
कोदंडतहँमंडलाकारहिदामिनीसोदमकतो । वरपाचहूँकितविशिखकीटंकोरघनसोंघमकतो ॥
उतवज्रनाभसुनाभदोउकरिसिंहनादअपारको । हर्पतेमनाहिंकर्पतधनुपवर्पतशरनिकीधारको ॥
तिनकेअँगनतेहिक्षणशरनरणमहँरजयकारिघोरहे । चहुँओरसायकघोरझोरतचलतकृष्णकिशोरहे ॥
नहिंलखिपरंतप्रद्युम्नवपुनाहिंरथहुसारथितेहिछनै । शरपुंजशत्रुनगंजचहुँकितकटतभरभरतेहिरनै ॥
कहुँलीकसोंकढिजातहगनदेखातकृष्णकुमारहे । कहुँठोरठोरहिंदोरिदोरिकरोरिकरतसँहारहे ॥
सुरसिद्धऋपिगंधर्वसर्वविलोकिविक्रममारको । वहुविधिसराहतविजयचाहतझारिसुमननिधारको ॥
दानवनजियकीहरनहारीनिशाभैकारीभई । धरितेगकंधकबंधधावतमारुधरुसुखध्वनिठई ॥
सबकहँहिंयदुवंशीनहींयहकालवपुधरिआइगो । भागहुसबैअबलरबउचितनसकलदलयहखाइगो ॥
असकहतभाजतअसुरसबपैबँचतनाहिंशरधारते । कोउगिरतपुनिकोउउठतपुनिकोउभ्रमतआर्तपुकारते ॥
हैरह्योहाहाकारसिगरेदानवीदलमेंतहाँ । मिटिगयेयुद्धउछाहदानवनाहदुःखितभोमहाँ ॥
यहिभाँतिवीतीरातिसार्धत्रियामअतिहिभयावनी । प्राचीदिशामहँप्रगटभेपूपणप्रभापरपावनी ॥
बँचिरह्योरणत्रैभागकोत्रैभागदानवदलतहँ । अरुसबैकृष्णकुमारशरसंहारकियअसुरनमहँ ॥

सोरठा—चारिदंडनिशिजानि, संध्याकालविचारिकै । प्रवरजयंतहिआनि, कहतभयोकेशवकुँवर ॥

दोहा—जोतुमअरुरोकोसमर, घरीद्वैकलोंवीर । संध्याकरिआऊँतुरत, नभगंगाकेतीर ॥

प्रवरजयंतकह्योअसवानी । संध्याकरहिजाहुबलखानी ॥ हमकरिहंसंगरयहिकाला । पधविशेपिदानवनविशाला ॥
तोप्रद्युम्नउडिगयोअकाशा ॥ जहाँकरतिनभगंगाविलासा॥प्रातकर्मकियकरिअस्नाना॥संध्याकरिकियापितुकोध्याना॥
इतजयंतअरुप्रवरप्रवीरा । मारनलगेदानवनतीरा ॥ इकशतद्वैशतत्रैशतवाना । इकसहस्रद्वैसहसमदाना ॥
मारतभिरेदानवनदलमें । कियोनाशअसुरनबहुपलमें । तवप्रगटायकालसीआभा । वज्रनाभअरुदैत्यसुनाभा ॥
गयेप्रवरजयंतहिवीरा । काटिशरनमारतशरघोरा ॥

दोहा—वज्रनाभदानवइतै, अरुसुनाभरणधीर । उतैजयंतसुरेशसुतसखाप्रवरप्रवीर ॥
[illegible] । सुरअसुरनकोभयदरपजावन ॥ दोऊदुहूनकेवाणनकाटे । दोऊदोहुनकेतनअरपाटे॥

दोऊबहुविधिरपनधुवावें। झुरिझुरिफेरिविलगह्वैजावें॥ दोउकेधनुपमंडलाकारा। दोऊभरेकोपकेभारा॥
दोऊभटविक्रमोमहाने। दोऊछोंडेबाणसमाने॥ दोऊदोहुनकेधनुभंजे। दोऊदुहुनवाजिनगतिगंजे॥
दोऊदुहुनपरशूलचलाये। दोउदुहुनकेकाटिगिराये॥ दोऊदुहुनमारिशरचोखे। दोउदोहुनकियमुरछितरोखे॥

दोहा-इतनेमेंअस्नानकरि, प्रातकर्मनिधारि। आयोकृष्णकुमारतहँ, दानवयुद्धविचारि॥

हननलग्योसाथकरिसपागी। मनुदानवदललागीआगी॥ इतनेमेंपरकाशपसारी। पूरुवप्रकटतभयेतमारी॥
जानिवज्रनाभहिवधकाला। गरुडचढेतहँकृष्णकृपाला॥ जहँअकाशमहँवासवठएऊ। यदुपतितहाँतुरंताहिगएऊ॥
लखनलगेतहँरहेतमाशा। पांचजन्यकोशोरप्रकाशा॥ लखियदुपतिकहँहंससुखारी। आयकामसोंगिराउचारी॥
पितारावरेकेइतआये। वासवनिकटखड़ेसुखछाये॥ शंखशोरयहयदुपतिकीन्ह्यों। कुँवरताहितुमकसनहिंचीन्ह्यों॥

दोहा-जानिपिताआनवनतहँ, दरशनकरनविचारि। तुरतहिउडिआकाशमें, गयोकुमारसिधारि॥

निरखिपिताकहँकियोप्रणामा। सुतहिविलोकिकह्योश्रीधामा। अबलोंतुमबेलंबकसकीन्ह्यों। दानवक्षयकरिजयनहिंलीन्ह्यों॥
चढहुगरुड़परजाहुकुमारा। करहुद्रुतदानवसंहारा॥ प्रभुकोशासनधरिनिजशीशा। चढ्योगरुड़परसुतजगदीशा॥
तुरतहिवज्रनाभढिगआयो। जोरशोरकरिगदाचलायो॥ दानवकेउरगदाप्रहारा। लगतभयोजसकुलिशपहारा॥
गिरयोभूमिमेंमूर्च्छिसुरारी। निकसीरुधिरधारमुखभारी॥ उठ्योसँभारिफेरिबलवाना। लग्योकुँवरकरकरनबखाना॥

दोहा-जगतसराहनजोगहो, हेममरिपुबलवान। मोहिमुरछाकारकसमर, त्रिभुवनमहँनहिंआन॥

पैअबसहहुप्रहारहमारा। परेरहहुनहिंभगहुकुमारा॥ असकहिकीन्ह्योंशोरकठोरा। मानहुँघहरिउठेघनघोरा॥
बहुकंटकघंटनयुतजोई। हन्योगदाप्रद्युम्नहिंसोई॥ वज्रनाभकीजोरपवारी। लागीगदाललाटहिभारी॥
शोणितवमतविकलहरिनंदन। गिरयोभूमिपरयदुकुलचंदन॥ निरखिपुत्रमोहितयदुराई। दियोजोरकरशंखबजाई॥
सुनतप्रद्युम्नशंखधुनिभारी। उठ्योतुरंतशरीरसम्हारी॥ छोड़नचहीबाणरणगाढ़ो। सन्मुखवज्रनाभलखिठाढ़ो॥
तबयदुनंदनचक्रपठायो। तुरतप्रद्युम्ननिकटसोआयो॥

दोहा-उडिअकाशमेंआशुही, गह्योआपनेहाथ। छोडतभयोतुरंततकि, वज्रनाभकोमाथ॥

भयोसुदर्शनकेरप्रकाशा। मानहुँकोटिभानुकरभासा॥ लग्योतुरंतचक्रगलजाई। वज्रनाभशिरदियोगिराई॥
तबसुनाभलखिबंधुविनाशू। धावतभोप्रद्युम्नपरआशू॥ तेहिप्रद्युम्नपरजातविलोकी। लियोताहिगदबीचहिरोकी॥
करिकेअतिशयजोरतहाँहीं। हनीगदागदतेहिउरमाँहीं॥ लागतगदकरगदाप्रहारा। कढीअसुरउरशोणितधारा॥
कढीपीठह्वैगदामहानी। मरिमहिगिरयोअसुरअभिमानी॥ शतपचासजेदानवबाचे। भागिगयेतेअतिभयराचे॥

दोहा-श्रीप्रद्युम्नगदसांबभट, कीन्ह्योंअसुरविनास। देखिदेवअंबरखड़े, पायेपरमहुलास॥

वर्षाहिंसुमनससुमनअथोरा। करहिंदुंदभिनकोबहुशोरा॥ नचहिंतहाँअप्सराकरोरा। देवनकेदिलकीद्रुतचोरा॥
दानवभागिगयेबरजोरा। निरखिवज्रनाभहिवधघोरा॥ तहँकश्यपकोसुखितकिशोरा। अरुवसुदेवहिछोटोछोरा॥
उतरिअवनिआयेतेंहिठोरा। जहँठाढोरुक्मिणीकिशोरा॥ वासववचनकह्योसुखओरा। चितैरुक्मिणीनंदनओरा॥
अद्भुतहैविक्रमसुततोरा। जेहिंलखिभाप्रसन्नमनमोरा॥ तैसहिगदबाहुँनकोजोरा। गदामारिजोअरिउरफोरा॥

दोहा-फेरिचक्रधरवज्रधर, गमनवज्रपुरकीन। बालवृद्धदानवनको, संबोधनबहुदीन॥

केशववासवतहँसुखपागे। वज्रनाभधनकियचौभागे॥ प्रद्युम्नहिसांबहिगदकाँहीं। विजयजयंतहिसुतहितहाँहीं॥
भागचारिचारिहुभटकाहीं। बाँटिदियोहरिकरिसुखमाहीं॥ चारिकोटदानवकेग्रामा। तेऊबाँटिदियोतेहिठामा॥
चारिभागतहँपुरकोकरिकै। दियोचारिहुँनकोसुखभरिकै॥ हंसकेतुआदिकसुतकाँहीं। करिदीन्ह्योंअभिषेकतहाँहीं॥
हरिवासवदीन्ह्योवरदाना। अमरहोहुसिगरेबलवाना॥ रुकैनगतितिहुँलोकतिहारी। कीजैराज्यसदायहभारी॥

दोहा-तबसिगरेसुतमुदितह्वै, भूषणवसनमनीन। रथतुरंगमातंगबहु, हरिवासवकहँदीन॥
गदप्रद्युम्नादिकनको, बोलितहाँयदुराय। कछुककालतहँवसनको, शासनदियोसुनाय॥

तबसिगरेभटकियेप्रणामा।गमनकियेसबनिजनिजधामा॥असकहिहरिअतिआनँदछाये॥चढिखगपतिद्वारावतिआ
अरुऐरावतचढिअमरेशा । गमनकियोअमरावतिदेशा ॥ सुनिप्रद्युम्नविजयपुरवासी । होतभयेअतिआनँदरासी
नहिंप्रद्युम्नकेसमबलवाना।ऐसोकियोठीकअनुमाना ॥ गावतरहहिंकृष्णगुणगाना । प्रेममगनतनरहहिनभाना
अवलोंनृपतिनपुत्रनकेरी । मेरुनिकटहैराजघनेरी ॥ कहुँकहुँजातरहेगदआदिक । कछुदिनवसतरहेअहलादिक

दोहा—रुक्मिणिनंदनकीविजय, सुनैजोकोउचितलाइ । पुत्रपौत्रसबसंपदा, ताहिदेहियदुराई ॥

श्रीशुक उवाच ।

विप्रएकसंतुष्टसदाँहीं । वसतरह्योद्वारावतिमाँहीं ॥ एकसमयताकेसुतभयऊ । धरणिछुवततुरतेमरिगयऊ ॥२२॥
मृतकबालकैविप्रदुखारी । राजद्वारगवन्योयुतनारी ॥ तहँबालकवसुधामहधरिकै । लगोविलापकरनदुखभरिकै ॥
लागोकहनपुकारिपुकारी । सुनहुसबैजनगिराहमारी ॥ २३ ॥ ब्राह्मणवैरिनपापिनचूडो । विषयमोदसारमहँबूडो॥
अतिलोभीक्षत्रिनमहँनीचो । कियोधर्मकोकर्मनऊँचो ॥ ऐसेभूपतिकर्मदोषते । मरचोमोरसुतकालरोषते ॥२४॥

दोहा—हिंसाकारीशीलविन, अजितइंद्रियनजोय । ऐसेनृपकेराज्यमे, प्रजादुखितहठिहोय ॥

जेसेवहिंऐसेनृपकाहीं । तेदरिद्रजनरहैंसदाहीं ॥ असकहिबहुविधिकरतविलापा । गयोऐनकहँभरिसंतापा ॥ २५ ॥
पुनिताकेसुतदूसरभयऊ । तेहिविधिसोहोतैमरिगयऊ ॥ ब्राह्मणराजद्वारलैजाई । कियोविलापमहादुखछाई ॥
पुनितीसरसुतजबद्विजजायो । सोऊहोतहिमृतकदेखायो॥यहिविधिआठबालद्विजकेरे।मरेहोतहीदुखदघनेरे ॥२६॥
नवयोंबालककलैद्विजराई । आशुहिराजद्वारमहँजाई ॥ अतिशयनिंदितागिराउचारी । दियोउग्रसेनहिबहुगारी ॥
तहाँकृष्णकीसभामँझारी । बैठेअर्जुनहूँधनुधारी ॥

दोहा—सोसुनिआरतविप्रके, बैनआपनेकान । बोल्योअर्जुनतमकिअति, करिकैकोपमहान ॥ २७ ॥

रोदनकरहुवृथाद्विजराई । इहाँधनुर्धरमोहिंनदेखाई ॥ येसबक्षत्रीनामहिकेरे । यज्ञदानभरिकरहिंघनेरे ॥२८॥
जहँधनसुतदाराकेहेतू । शोचकरतद्विजवसतनिकेतू ॥ तिनक्षत्रिनक्षत्रियपननाहीं । वृथाधरहिधनुशरकरमाहीं॥
केवलउदरहिभरभरतेवे हैंनटवेभूपतिकेभेवे ॥ २९ ॥ तुमदंपतिकहँअतिसुखभरिहौ । कालहुतेसुतरक्षणकरिहौ ॥
सुनहुँप्रतिज्ञाविप्रहमारी । सभामध्यहमकहतपुकारी ॥ जोतुवसुतैनरक्षनकरिहौं । तौविशेषिपावकमहँजरिहौं ॥

दोहा—गर्वभरेकपिकेतुके, वचनसुनतद्विजराज । विस्मितह्वैबोल्योवचन, बैठ्योबीचसमाज ॥ ३० ॥

ब्राह्मण उवाच ।

जिनसमजगतनकोउबलधामा । ऐसेअहैंयहाँबलरामा ॥ पुनियदुपतित्रिभुवनकेनायक । बैठेइतसमरथसबलायक॥
पुनित्रिभुवनकोजीतनवारो । नामप्रद्युम्नहिकृष्णकुमारो ॥ वीरधनुर्धरजासुसमाना।कोउनहिंलख्योसुन्योनहिंकाना॥
ध्रुवअनिरुद्धधनुर्धरधीरा । जाकेसरिसऔरकोवीरा ॥ येप्रभुरक्षिसकेनहिंजोई । करनचहततुमदुर्लभसोई ॥ ३१ ॥
मोहिंविश्वासनहिंवचनतिहारे।होमूरखतुमपांडुकुमारे॥विप्रवचनसुनिकैनिजकाना।अर्जुनबोल्योकोपिमहाना॥३२॥

अर्जुन उवाच ।

दोहा—विप्रनहौंबलिरामँमें, नहिंप्रद्युम्नयदुनाथ । अर्जुनमैंगांडीवधनु, रहतसदाजेहिहाथ ॥ ३३ ॥

नहिंइनसममोहिंद्विजटगहेरो । त्र्यम्बकतोपकविक्रममेरो॥ मीचबीचहियवाणलगाई । लैऐहौंतुवसुतद्विजराई॥३४॥
सुनिफाल्गुनकीगर्वितबानी । ब्राह्मणमनविश्वासहिमानी ॥ कहिनबैनकछुभरोचैनको । गयोरैनआपनेऐनको ॥
अर्जुनविक्रमसुनतअपारा । वसतभयोआपनेअगारा ॥३५॥ आयोजबप्रसूतिकोकाला । तासुनारिजबभईविहाला॥
तबपुकारिकरिआरतशोरा । रक्षहुरक्षहुपांडुकिशोरा॥असकहिगिरचोपार्थढिगआई।दीनदशाद्विजदईदेखाई॥३६॥

दोहा—तबअर्जुनयदुपतिनिकट, जायविनयअसकीन । केहिविधिरक्षणहमकराहिं, शासनदेहुप्रवीन ॥

तबबोलेयदुवरमुसकाई । हमसोंकापूछहुकुरुराई ॥ हमतोक्षत्रिभेषभरिधारे । नटसमजीवतबसैंअगारे ॥

रक्षहुजायविप्रसुतकाँहीं । मीचनगीचजायजोहिनाँहीं ॥ हमनाँहिजेहेंसंगतिहारे । यदुवंशिनलैजाउउदारे ॥
प्रद्युम्नहिअरुआरजरामैं । लैनजाइयोतुमवोहिधामैं ॥ औरचहौमनमेंतुमजाको । लैजैवोअपनेसँगताको ॥
वहवालकवेवृद्धमहाने । धनुपधरनकरकवहुँनजाने ॥ तत्रअर्जुनकछुशंकितह्वैके । वारवारमाधवमुखज्वैके ॥

दोहा–गयोविप्रकेगृहतुरत, लैगांडीवहिहाथ । यदुवंशिनऔरनसबै, लियोनअपनेसाथ ॥

तहाँजायमंजनकरिवीरा । पहिरिकवचआचमनसुनीरा ॥ करिवंदनमहेशचरणनको । आवाहनकारिदिव्यास्त्रनको ॥
धनुगांडीवहितुरतचढाई । छोडनलग्योशरनसमुदाई ॥३७॥ अवनीतेअकासलौंराजा । छायदियोबहुवाणदराजा ॥
कारकजेशत्रुनतनजंजर । सातपरतकोकियशरपंजर ॥ यहिविधिकियअतिकाअगारा । रह्योनपवनहुकरपैठारा ॥
छोडिवालकोमरनखभारे । आपगयोयदुनाथअगारे ॥३८॥तबवालकजायोद्विजनारी । भूमिगिरतसोपरचोनिहारी ॥

दोहा–पुनिविलानबालकतहाँ, रोयउठीद्विजनारि । लैगोलैगोपुत्रमम, लागीकहनपुकारि ॥ ३९ ॥

तवधायोद्विजकरतपुकारा । आयोयदुपतिसभामँझारा ॥ देनलग्योअर्जुनकहँगारी । देखहुयहमूढताहमारी ॥
वचननपुंसककेसतिजानी । मैंभरोसलीन्ह्योंउरआनी ॥४०॥ जोप्रद्युम्नअनिरुद्धहुधीरा । श्रीबलभद्रऔरयदुवीरा ॥
कारिनसकेसुतरक्षणमेरे । राखेरहैंकिपारथकेरे ॥ यहविराटपुरकेरनचैया । अहैउत्तराकोखेलवैया ॥
गिनतीवीरनमेंनहियाकी । बलकवीरसमबडीदगाकी ॥ ४१ ॥ रेमिथ्याकोबोलनहारा । अर्जुनअहेतोहिधिक्कारा ॥

दोहा–वृथासराहतनिजवलहि, दुर्मतिपांडुकुमार । तेरेधनुगांडीवको, वारवारधिक्कार ॥

ल्यायोंदेवजेसुतगृहमाँहीं । तिनकोचाहतल्यावनकाँहीं॥तातेतोरिकुमतिप्रगटाती। तोहिजोहिछातीजरिजाती॥४२॥
सुनतविप्रवाणीवलऐना । उच्योमौनकछुकह्योनवैना ॥ पठ्योसव्यसाचीवरमंत्रा । स्यंदनचढिउडिचल्योस्वतंत्रा ॥
गोयमराजऐनबलवारो । तहँनविप्रबालकननिहारो॥४३॥तबपुनिआशुइंद्रपुरगयऊ । तहाँनद्विजसुतदेखतभयऊ ॥
अग्निलोकपुनिगयोप्रवीरा । वायुलोकपुनिगेरणधीरा ॥ वरुणलोकपुनिलोककुबेरा । कियोसातहूँलोकनफेरा ॥

दोहा–अतलहुवितलहुसुतलतिमि, औरतलातलवीर । महातलौसुरसातलौं, औपातालहुधीर ॥

द्विजसुतखोजोइनमहँजाई॥४४॥पैनकतहुँद्विगपरेदेखाई॥तबसुधिकरिप्रणपांडुकुमारा । दुखीद्वारकैबहुरिसिधारा ॥
नगरबाहिरेचितावनाई । जरनचह्योअर्जुनदुखछाई ॥ यदुवंशीसवयहसुधिपाई । प्रद्युम्नादिकहँसेठठाई ॥
आपहुजरचोवालकनिखोयो । तनतेनिजविक्रमसवधोयो ॥ जेअसविनविचारवतराहीं । तिनकीयहीदशाजगमाहीं॥
पुनिअर्जुनकहँजरतमुरारी।गयेआपुअतिआशुसिधारी।लियोचितातेतहिउतारी।सुधासरिसमुखगिराउचारी॥४५॥
अवनाहिजरहुअनलअरिपालक।हमदेखायदेहैंद्विजबालक।ह्वैहैकीरतिविमलतिहारी।गेहैंजाहिमनुजगुणिप्यारी ४६

दोहा–असअर्जुनसोंकहिहरी, दारुकसूतबोलाय । ल्यावहुरथमेरोतुरत, दियोनिदेशसुनाय ॥
ल्यायोदारुकतुरतरथ, जेहिरविसरिसप्रकास । अर्जुनकोकारिसारथी, चढिगेरमानिवास ॥

कह्योपार्थतेतबयदुराई । पश्चिमदिशिचलुरथहिधवाई ॥४७॥ सुनिपारथकेसवकेबैना । वाजिनवागगह्योभरिचैना ॥
हरिकहँनेकुपीठछुइदेहू । अतिदृढनिजआसनकरिलेहू॥पारथपीठछुयोवाजिनकी । मचीझनकाकिंकिनिराजिनकी॥
लूकसरिसकढिगेहरिजाना । कोहुकेहगमेंनाहिंदेखाना ॥ छायरह्योतहँपरपरशोरा । मानहुँपहरिरहेपनघोरा ॥
सिंधुतीरजवगेयदुराई । तबअर्जुनकहँशंकाआई ॥ हरिकहँकछुसंदेहनकीजे । वारिधिमधिवाजिनकरिदीजे ॥

दोहा–तबअर्जुनकछुपीठछुइ, ऊँचीकरिहैवाग । हूँकीदेसागरबिचे, डारचोविलमनलाग ॥

सागरजलमहँकृष्णतुरंगा । परसतपगकढिगयेअभंगा ॥ यदिविपिसातसमुद्रनडाके । तदपितुरंगनेकनहिंथाके ॥
सातहुद्वीपनमहँयदुराई । मारुतसमकढिगेसुरछाई ॥ जहँजहँयदुनंदनरथजाती । तहँतहँशोरदिमात्रसुनाती ॥
सकेदेखिनाहिंद्वीपनिवासी । चकितखडेदेखनकेआसी ॥ रहेजेगिरिसातहुद्वीपनमें । तिनकोनाघिगयेपकछिनमें ॥
निरख्योलोकालोकपहारा । ध्रुवसुमेरुतेऊँचअपारा ॥ अतिउतंगलखिअर्जुनवीरा । ह्वैशंकितकियवाजिनधीरा ॥

दोहा–तबहरिपारथसोंकह्यो, टेचलुचपलचढाय । यहिपहारवाहिओरमें, रविप्रकाशनहिंजाय ॥

अर्जुनऊँचबागकछुकीन्ही । तवहितुरंगपवनगतिलीन्ही ॥ तुरतहिलोकालोकहिशृंगा । विनविलंबचढिगयेतुरंगा ॥
तहँमहातममहाभयावन।सुरासुरहुजहँसकहिनजावन॥४८॥अर्जुननिरखिरोंकितहँस्यंदन।कह्योजोरिकरहेयदुनंद
अवतोआगूअतिअँधियारा । गमनयोगनहिंपरैनिहारा ॥ हरिकहँसीधेकरहुतुरंगा । प्रविशेमारगमिलीअभंगा ॥
पारथवाजिनदियेइशारा । सनमुखचलेमहाअँधियारा ॥ निरखिमहातमशिरझिझकारी । लौटिभगेतुरंगजवधारी
दोहा–तबहरिकहताजनहनो, वाजिनवागउठाउ । डारिदेहुतममहँतुरँग, मनमहँशंकनलाउ ॥
पारथतुरतहिफेरितुरंगन । ताजनहन्योजोरिकरअंगन॥कलातगतचपलासमचमके । वाजीउडिअकाशमहँझमके
परेकूदितेहिंअतिअँधियारा । कर्दमसमतमगाढअपारा ॥ गडिगेतहँचारिहूतुरंगा । उठतउठायेनहिंतिनअंगा
मारुमारुताजनहरिकहेऊ । अर्जुनतुरतकसाहनिदयऊ ॥ वाजिनताजनहन्योत्रिवारा । पैतुरंगनहिंलहेउवारा॥
तवअर्जुनकहअवकाहोवै । अंधकारवाजिनवलखोवै ॥ हरिकहकछुसंदेहनकीजै । अश्वनकोआश्वासनदीजै
दोहा–असकहिपारथसोंतहाँ, तुरतहिरमानिवास । लियोसुदर्शनचक्रकर, कोटिनभानुप्रकास ॥
छंद–चक्रहितज्योयदुनंदस्यंदनअग्रसोनृपचलतभो ॥५०॥ कर्दमसरिसतमअतिभयावनतेजसोंनिजदलत
जहँजहँचलतअँधियारफारतकरतचक्रप्रकाशको । तहँतहँतुरतगमनतसुरथकरिवेगजगतनेवासको
तमदलतसोहतचक्रभलरघुनाथकोजिमिवाणहै । लंकाधिपतिकीमूलसैन्यविनाशकीनमहानहै ॥ ५
लखिकैसुदर्शनभासअर्जुनताकिसक्योनहिंसन्मुखै । व्याकुलितदोउदृगमूँदिकीनोआपनोनीचेमुखै
इमिसार्धद्वादशकोटियोजनमहातमनाँघतभये । महिनीरमारुततेजनभअ।त्ररनपाँचौंनाँघिगये ॥
त्रयकोटियोजनकनकधरणीशून्यजनतेनघतभे । तहँपरमअद्भुतधामइकअभिरामकामदतकतभे
मनिजटितकंचनखंभसहसविराजमानअमानहैं ॥ ५३ ॥ तेहिमध्यसहसफणशेपसोहतशंभु
अतिभीमभावतनैनरसनाकंठश्यामविराजहीं ॥ ५४ ॥ तेहिमध्यपरमप्रभावपुरुषोत्तमजगतप
घनश्यामतनपीरोवसनशशिसमवदनईशनभले ॥ ५५ मणिमयकिरीटविभातशीशसुकुंडलो
झलकैंसुआननआयकैंअलकैंअमलसुखमाभरीं । सोहतप्रलंबसुबाहुआठहुहियेकौस्तुभमणि
वनमालऔश्रीवत्सरेखविशेषउरमहँसोहनी । कमलाकरनचाँपतिचरणनिजकंतआननजोहनी
पार्षदसुनंदहुनंदआदिकचक्रआदिकआयुधौ । चहुँओरसोहतसुभगतनपरिपूरप्रेमपयोनिधि
श्रीपुष्टिकीरतिअजाअणिमादिकहुसिद्धिसुतनधरी । सेवनकरहिंप्रभुकोसदाचहुँओरतेमोवि
असनिरखिनारायणसुभौमैंछोडिरथढिगजाइकै । वंदनाकियोयदुनंदतिमिकछुपांडुनंदडेर
हरिपार्थकोलखिमुदितह्वैभौमामृदुलमुसकाइकै । अतिमधुरमंदहिमंदसुंदरवचनकहशिर
मैंविप्रबालकआपदर्शनहेतहारिल्यावतभयो । अवपाइदर्शनरावरोममकामपूरणह्वगयो ॥
दोहा–हरणहेतभूभारके, लियभूमेंअवतार । सोहरिइतआवहुतुरत, हेवसुदेवकुमार ।
नरनारायणपूरणकामा । देनहेतजगमंगलधामा ॥ प्रगटकरहदोउधर्मअनंता । जोकरिलहत
ससक दिआटहुबाटकर्दीन्ह्यो।दोउतथास्तुकहिवंदनकीन्ह्यो॥लैद्विजबालकचढिरथमाँहीं।अ
विप्रहिवाटकदीन्हेजाई।सोआशिषदियआनँदछाई॥६१॥अर्जुनविष्णुधामकहँदेखी।मनमहँ
पुनिजन्ममानिटियोमनमाँहीं।विनहरिकृपामोरबलनाँहीं॥६२॥असनहुचरितननंदलावत।क
दोहा–विषयभोगभोगनत्रसित, वपतजनमनकाम । मानतविप्रनहृदनिज, वसन
निजफल अर्जुनआदिकर, पापिनत्रपननशाइ । धर्मचलायोधरणिमें, धर्मगाम
इति सिद्धिश्रीमहराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमद
....श्रीमहाराजबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिं
....पकाननवनितमन्तरंगः ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-अबसुनियेकुरुपतिकथा, श्रीवसुदेवकुमार। लैयदुवंशिनसंगमें, कीन्ह्योंवारिविहार॥
एकसमयद्वारावतिमाँहीं। रामकृष्णकेवसततहाँहीं॥ भैसमुद्रयात्रातेहिकाला। तबपरजालहिमोदविशाला।
गयेक्षेत्रपिंडारकासिगरे। मज्जनदानकियेमतिअगरे॥ तहँवसुदेवहिआहुकराजै। औरहुवृद्धनछोडिसमाजै॥
पुत्रपउत्रनमित्रनमंत्रिन। सुहृदसखाअरुलैबाजंत्रिन॥ निजराणीअरुसबयदुनारी। हरिबललैसंगगयेसिधारी॥
तहँलाखनगणिकागणगवने। गायकनर्तकतजिताजिभवने॥ जबसागरतटगेयदुराई। जुरीसभाजमहासुखदाई॥
दोहा-प्रथमहिरेवतिकोकमल, करगहिबलबलवान। विहरनहितप्रविशेउदधि, करिकदंवरीपान॥
पुनिसोरहसहस्रछविखानी। अरुशतअरुआठौपटरानी॥ लैसँगप्रविशेजलयदुनाथा।पुनिसबयदुप्रविशेतियसाथा॥
तबयदुनंदनगिरासुनाई। हिलतकोउनहिंकरैलराई॥ हरिप्रतापतेसागरनीरा। भयोसुखदनहिरह्योगंभीरा॥
शीतलसुखदसुगंधसमीरा। बहतभयोतेहिक्षणअतिधीरा॥वारवधूसजिसकलशृंगारन।जलमहँप्रविशतभईहजारन॥
तहँमणिजटितकनकलघुतरनी।ल्यायेदूतपरममुदभरनी॥मकरविहँगमृगमुखबहुसोहैं। नारिपरस्परतिनआरोहैं॥
दोहा-तहँवाजेबाजेविपुल, रह्योमधुरसुरछाय। गानकरनलागीललित, वारवधूहरपाय॥
गंधर्वनआवाहनकीन्ह्यों। अरुहरिशक्रहिशासनदीन्ह्यों॥ तहाँअप्सराकोटिनआईं। स्वर्गलोकतेअतिछविछाईं॥
तहँकिन्नरगंधर्वबहुनाना। आयेलैलैबाजविधाना॥ तिनअप्सरनकह्योभगवाना। यादवसबहैंहमहिंसमाना॥
तातेइकइकयदुवरपाहीं। शतशतकरहुविहारइहाँहीं॥ तेहरिशासनधरिधरिशीशा। सबसुंदरीमुदितअवनीशा॥
यदुवंशिनकेसंगअपारा। लगीकरनबहुभाँतिविहारा॥गावहिंनाचहिंबाजबजावहिं। यदुवंशिनउरसुखउपजावहिं॥
दोहा-राणिनसोरहसहसमधि,यदुपतिकरहिविहार। तिमिनिजनिजनवलानिसँग, सोहतसकलकुमार॥
करतभयेसबआसवपाना। होतभयेमदमत्तमहाना॥ करतकटाक्षमंदमुसकाई। लेहिअप्सराचित्तचोराई॥
हँसतहँसावतहुलसतहेरें। वारवारमुखमहँकरफेरें॥ कोउअप्सरनसंगलैजावे। रैवतगिरिविहारकरिआवे॥
सुरसुंदरिनसहितगृहजाई। कोउतहँविहरहिअतिसुखछाई॥ कोउअप्सरनसहितअनुरागे।बननबननबागनवरबागे॥
सुधासरिसभोसागरनीरा। पानकरहिंमोदितयदुवीरा॥ कटिलौंभयोउदधिइकयोजन। प्रगटायोरँगचारिसरोजन॥
दोहा-विविधभाँतिसरसिजप्रभा, परीउदधिजलमाहिं। विविधभाँतिथलथलसबै, सललितललितदशाहिं॥
विविधभाँतिप्रगटेपकवाना। विविधभाँतिसुंदरअतिपाना॥विविधभाँतितहँसुमनसुहाये।विविधभाँतिमाला[illegible]रशाये।
विविधभाँतितहँकुसुमविभूषण।विविधभाँतिपहिरेयदुवरतन।विविधभाँतिभाजनतहँल्याये।विविधभाँतिकेरत्नसुहाये
विविधभाँतिकेवसननवीने। विविधभाँतिपहिरेपरवीने॥विविधभाँतिकीनाउविराजें। विविधभाँतिकेमणिपटछाजें॥
विविधभाँतिकेतहँअँगरागा। विविधभाँतिलेपहिबडभागा॥
दोहा-विविधभाँतिमज्जनकरें, करिकरिविविधविहार। विविधभाँतिकीन्हेंतहाँ, नरनारिनशृंगार॥
विविधभाँतिकीलैपिचकारी।विविधभाँतिसींचहिनरनारी॥विविधभाँतितहँउडैपरागा।विविधभाँतिबाढ्योअनुरागा॥
विविधभाँतिबोलतेविहंगा। विविधभाँतिकीउठतितरंगा॥विविधभाँतिप्रगटेतहँबागा। विविधभाँतितहँबनेतडागा॥
विविधभाँतिकेकुंजसोहाहीं॥विविधभाँतिलतिकालहराहीं॥विविधभाँतिमुरलीनागावैं।विविधभाँतिकेयानचलावैं॥
विविधभाँतिकीगतिनिदरसावैं।विविधभाँतिकेभावबतावैं॥विविधभाँतिआनँदप्रगटाने। विविधभाँतिकेकौतुकमाने॥
दोहा-विविधभाँतिकीमाधुरी, बोलहिवनितावानि। विविधभाँतिकीकामिनदै, विविधभाँतिदरशानि॥
विविधभाँतिकोबहसमीरा।विविधभाँतिअप्सराशरीरा॥विविधभाँतिआलिंगनदेहीं।विविधभाँतिदेतीमुदनेहीं॥
विविधभाँतिकेऋतुप्रगटानी।विविधभाँतिकीरतिदरसानी।विविधभाँतितहँगगनविमाना।विविधभाँतिकेदरसनिशाना
विविधभाँतितहँहोतनमाशा।विविधभाँतिउपजीहरनाशा॥विविधभाँतिप्रगटेतहँरागा। विविधभाँतिगगनी

विविधभाँतिसुनिपरतसुताला।विविधभाँतिकीतानरसाला।विविधभाँतिकोविभौदेखानो।विविधभाँतिसुरपतिललचानो

दोहा—विविधभाँतियदुनाथजो, कीन्ह्योंसलिलविहार । विविधभाँतितेसुकविजन, करतभयेउच्चार ॥

छंदगीतिका—तहँकलितचंदनपंकतनकादंबरीकरिपानहे । दृगअरुणसोहतलंबबाहुप्रयातझुकतमहानहे ॥
बरबसनधारेनीलनीलनवीननीरदसमलसें । तेहिमध्यमुदितमयंकसोमुखहासछनछविकोहसें ॥
यककानकुंडलकलितटेढ़ीमुकुटभ्रुकुटीनैनहें । बलरामआनंदधामविहरतहरतसुखमामैनहें ॥
कहुँभ्रमतकहुँरुकिरमतकहुँडगडगतडगमगचलतहें । करिपानआसवरेवतीसँगकेलिरसरँगरँगतहें ॥
तहँकृष्णसुरसुंदरिनशासनदेतभैयहिभाँतिहें । बलरामकोसबघेरिनाचहुजोरिजोरिजमातिहें ॥
तहँकृष्णशासनपायसुरतियबंदिरेवतिरामको । नाँचनलगींगावनलगींछावनलगींत्रियग्रामको ॥
बाजनबजावनलगींसिगरींतालदेततितालहें । बलरामकृष्णचरित्रगावहिंभरीआनँदवालहें ॥
तहँआशुउठिदैतालदोउकरपकरिरेवतिहाथको । अतिशयसुहावनलगेगावनरामझमकतमाथको ॥
गावतनिरखिबलभद्रकहँगहिसत्यभामाकरनको । यदुनाथहूमुखमधुरसुरगावनलगेमुदभरनको ॥
अर्ज्जुनसुभद्रासहितआसवपानकरिहरिसंगमें । गावनलगेनाचनलगेमातेमहारसरंगमें ॥
रतिनाथतहँरतिसहितआसवपानकरिगावनलगे । गदसांबसात्यकिशुकहुसारनचारुदेष्णहुरसरँगे ॥
बलभद्रसुतदोउनिशठउल्मुकअनाधिष्टअक्रूरहूँ । अरुभानदीपतिमानपूरणमासउद्धवसूरहू ॥
निजनारिलैलैसंगमहँगावतबजावतनचतहें । आसवमतेचहुँकितभमतगतिभेदबहुविधिरचतहें ॥
यहदेखिकौतुककृष्णकोनारदपरमसुखपायकै । लैवीणपाणिप्रवीणप्रेमहिभीनआशुहिआयकै ॥
यदुवंशकेमधिजायकैपरवीणवीणबजायकै । छूटेजटानाचनलगेचहुँओरभाउवतायकै ॥
लखिसत्यभामैमाधवैपारथसुभद्रैवामको । विहँसतहँसावतदेवऋपितहँरेवतीबलरामको ॥
इकहाथसत्याकोपकरिएकहाथनारदकोगहे । जलकरतरासविलासमाधवहिलेसागरसुखनहे ॥
अर्ज्जुनसुभद्रासहिततहँझूमतझुकतहिलिगेजवै । श्रीकृष्णयदुवंशिनबुलायसुनायशासनदियतवै ॥
आधेहमारेओरआधेरामओरहिजायकै । कीजेविविधजलकेलिनीरतरंगफोलिउडायकै ॥
तिनमहँरहेआधेहमारेसुतनसंगयदुवरसवै । अरुनिशठउल्मुकसंगआधेहोंइयदुवंशीअवै ॥
असकहिसहितसत्याहरीमुनिपैलगेजलसींचने । मुनिविमलवीणबजायनाचतलगेहरिपटखींचने ॥
बलभद्रतुरतसमुद्रप्रविशेरेवतीकरपकरिकै । तबधसेउल्मुकनिशठआदिककमरअंबरजकरिकै ॥
[illegible] तकरनसोअरुनलनसोनिशठादिनीरउडावहीं ॥
[illegible] गावतबजावतबाजबहुभावतभ्रमतभुजभारिभिरं ॥
हनिसुमनकंदुकसुमनकंदुकसुमनढालहिरोंकहीं । अरविंदकेलैवृंदबहुइकयेकपैंझिलिझोंकहीं ॥
तहँरेवतीरुक्मिणिसुभद्रासत्यभामासखिनलै । करतीकुतूहलकेलिकुलकरकमलअबलिविशेषलै ॥
तेइयुवतिमध्यसमुद्रविलसहिंकरहिकेलिकुतूहलें । मनुसहसइंदुप्रकाशप्रगटिप्रकाशकीन्हेंभूतलें ॥
कहुँचपलचटकचलायगेंदनचतुरिचातुरिकरतिहें । जिमिशरदघनमेंदमकिदामिनिचहूँकितछविभरतिहें ॥
तहँसंगनारदसहितमित्रनपानिपिचकारिनगहे । गावतबजावतझुकतझूमतरामकोसींचनचहे ॥
तहँरामसखनसमाजसंयुतधायपिचकारिनहने । दुहुँओरतेतहँकंजकंदुकबलतभेअतिशयघने ॥
तहँरुचिररेवतिरुक्मिणीपैजायपिचकारीहनी । सोउसकलसखिनसमाजयुतहनिअमलकमलनिमुखमनी ॥
मदमत्तअतिजलकेलिरतलखिसकलनारिननरनको । श्रमकेनिवारणहेतवारणकियोहरिसुखभरनको ॥
यदुनाथकीरुखजानिसबनेकियबंदकंदुकयुद्धहें । पुनिसकलढिलिमिलिनचनलागेरागरागेशुद्धहें ॥
अर्जुनहुनारदसहितयदुपतिजलतरंगबजावहीं । तेहिमध्यमेंबलभद्रनाचहिरागसोरठगावहीं ॥

यहिभाँतिकरिजलकेलिबहुविधिनिकसिततटठाढेभये। तनलपटिपटअँगप्रगटलखिविहँसतपरस्परसुखछये
पुनिपहिरिपटभूषणअनूपमअंगअँगरागितकिये। तहँनारदहिनिजहाथसोंहरिवसनभूषणसजिदिये॥
पुनिरेवतीरुकमिणीआदिकवरवसनपहिरतभई। बैठींसखीनसमाजजोरिकरोरिशशिमुखमाछई॥
तहँरामकृष्णहुपार्थनारदसहितयदुवंशिनसँगे। बैठतभयेदरबारसुभगलगायरसरँगहिँरंगे॥
तहँमंजुमनरंजनसुव्यंजनसूपकरल्यावतभये। बहुभाँतिअन्नप्रकारपानप्रकारअतिस्वादनिछये॥
बहुमांसकेपरकारसुफलप्रकारसुमनप्रकारहैं। दधिकेप्रकारसुपयप्रकारहघृतप्रकारअपारहैं॥
मधुकेप्रकारहुशरकरापरकारलवनप्रकारहैं। कटुकेप्रकारहुतिक्तकेपरकारअम्लप्रकारहैं॥
मिष्टानकेपरकारत्योंपक्वानकेपरकारहैं। आसवप्रकारहुजलप्रकारसुकंदमूलप्रकारहैं॥
वटकेप्रकारहुवटीकेपरकारशाकप्रकारहैं। चोसनप्रकारसुलेह्यकेपरकारचर्वप्रकारहैं॥
यदुनाथकीज्यौनारएकमुखवरनिकेहिविधिमैंसकौं। जोकियोवर्णनताहिकविमधिवारवारहिमैंजकौं॥
यहिभाँतियदुपतिरामपुत्रनमित्रसुहृदसखानिलै। भोजनकरतरुक्मिणीसुरेवतिआदितियछविखानिलै॥
विहँसतहँसावतएकइकभोजनकरावतकरनते। इकइकदुरावतपुनिदिखावतलजिलजावतनरनते॥
यहिभाँतिभोजनकरततहँरविअस्तगिरिअथवतभये। आईनिशाअतिशैसुहावनिकृष्णबलअतिसुखछये॥
प्रमुदितसबैकरपदपखारिसुपानआसवकरितहाँ। बैठतभईसिगरीसभायदुराजराजतमधिजहँ॥
इकओरपुरुषसमाजलैबलरामअतिअभिरामहैं। इकओररुकिमिणिरेवतीबैठीसहितचहुवामहैं॥
ताहीसमैबाजेबजावतरामतहँगावतभये। उतरेवतीयुतरमणिगणगावतमधुरसुरसुखछये॥
तेहिमध्यपरमप्रवीणनारदवीणसरसबजायकै। नाचनलगेपहिरेवसनदोहुओरभावबतायकै॥
तहँकृष्णमंजुमृदंगलैकरविविधभेदबजावहीं। लैबाँसुरीमाधुरसुरीबहुरागपारथगावहीं॥
इकहाथउद्धवकंधधरिइकहाथसात्यकिकोगहे। बलरामझूमतझुकतझझकतझपतदृगउठिअसकहे॥
अगधरणिइततेटारियेमोहिदेहुनाचनहेसखा। आसवसलिलयहसिंधुमोमुखआवईअतिशयतृपा॥
भभभभ्रमतिभूभभरिमोहिमैंभ्रमहुनाहिंभमरौंनहीं। ललललंबमानविलोकुचंदहिचारुताअसनाहिंकहीं॥
धधधरक्कतधराधरचहुँओरशोरसनातहै। ढढढरक्कतसुखदआसवव्योमतेसरसातहै॥
तहँमिस्रकेशीमेनकारंभासुकेशितिलोत्तमा। उरवशीहेमाअरुघृताचीमंजुलघोषाउत्तमा॥
सबनचनलागीमोदपागीगायरागनरागिनी। बलकृष्णओरबतायभावनभामिनीबडभागिनी॥
तहँरामकृष्णसराहिबहुतांबूलनिजकरदेतभे। गावतसुयशयदुनाथकोसबलोकआशुहिसेतभे॥
यहनिरखितहँप्रद्युम्नमंजुलमधुरसुरगावनलगे। रंभादिसुरसुंदरिनगणसुनतेसबेसुखमहँपगे॥
तहँकृष्णपारथरामनारदचूमिप्रद्युम्नैमुखै। गावनलगेचहुँओरतेतेहिसंगमंजुलयुतसुखै॥
तहँसुनतसिगरेनारिनरमोहतभयेएकवारहीं। अनमिषअचलतेहिक्षणभयेनहिंनेकुअंगसम्हारहीं॥
यहिभाँतिकौतुककरतरासविलासगावतनचतहीं। बीत्योदिवसबीतीनिशाक्षणएकसममानततहीं॥
पुनिसुरतियनिगंधर्वगणकोविदाकियहरिरामहैं। मणिगणविभूषणवसनवरबहुदीनमुदितइनामहैं॥
सोरठा-यहिविधिरासविलास, होतसिंधुमधिविविधविधि। तहँयदुनाथनिवास, भयोएककौतुकसुनो॥
जोनिकुंभदानवपल्वाना। यदुवंशिनकोशत्रुमदाना॥ तीनरूपतेजगमहँरहेऊ। एकरूपषट्पुरहनिगयऊ॥
वज्रनाभयकताकोभ्राता। हन्योप्रद्युम्नताहिविख्याता॥ व्यादप्रद्युम्नप्रभावतिकेरो। सुनिनिकुंभकियकोपघनेरो॥
आयोकुशस्थलीअभिमानी। सूनमहलयदुपतिकेजानी॥ मायाकरीमहलमदभारी। अंतपानहिभयोसुरारी॥
सिगरोउग्रसेनकीरानी। देवकिरोहिणिहूँछविखानी॥ सोइगईकोउमरमनजाना। तेहिसमैआयोबल्वाना॥
दोहा-रहेभानुयदुवरकोउ, तासुसुताशुकुमारि। भानुमतीअसनामकी, विनव्याहीछविवारि॥

भानुरहेतपतितनगौहीं । महाग्रुनपरतात्रुतमौहीं ॥ दानवअपमतजौंदूनगयऊ । हरतभानुदुहिताकहँभयऊ ॥
तहँदानवकेरतकुमारी । आरतउँचीगिरापुकारी ॥ तवगिरधीअंतहपुरनारी । भानुमतीकोहरननिहारी ॥
रोदनकरनलगींइकवारा । भयोशोरचहुँओरअपारा ॥ दानवभानुमतीकहँहरिकै । उड्योंनगरतेंतुरतनिकरिकै ॥
अंतहपुरसुनिआरतशोरा । कोपकियोगगुदेवकठोरा ॥ तेसहिउग्रसेनमहराजा । दानवपैकरिकोपदराजा ॥
दोहा–पठिरिकनवदोउभ्रूदरहँ, चढिस्पंदनधनुधारि । निकसतभेदानवदलन, छेनछुडावनकुमारि ॥
लखिनपरयोदानवअपकारी । गेदोउचहुँओरनिहारी ॥ तवदोउगयेसरितदअपारा । करततहँजहँकृष्णविहारा ॥
पितुसकउग्रसेनमहराजे । लखियदुपतिमानेअतिलाजे ॥ कारिवंदनकीन्होंअगवानी । आयसुकहाकहोनसवानी ॥
तवदोउकह्योकोपअतिकीने । तुमतोजलविहारसभीने ॥ सिगरीभूलिगईसुधियरकी । मानहुनहींभीतिकछुपरकी ॥
दानवउतनिकुंभइकआयो । अंतहपुरमहअतिभयछायो ॥ भानुमतीजोभानुकुमारी । हरयोताहिमायाविस्तारी ॥
दोहा–सुताछुडावनहमगये, चढिस्यंदनधनुधारि । पैनभयपयहूँनिकसिगो, परयोनहमहिनिहारि ॥
असुरहरीमरयादहमारी । करीभीतिनहिनेकुतुम्हारी ॥ सुनिअतिअनुचिततहँयदुनाथा । बोलेदुहुनजोरियुगहाथा ॥
आपजायगेउहुअहमौहीं । हमगमनतहँअसुरजहाँहीं ॥ असकहिदोउनविदाप्रभुकरिकै । उद्धवसोंबोलेसुखभरिकै ॥
आरजरामहिदेहुसुनाई । हरयोभानुपतिदानवआई ॥ चलहितासुमारनकेहेतू । अवविलंवकोहैनाहिनेतू ॥
असकहिसकलतियनयदुराई । दियोमहलकहँतुरतपठाई ॥ उद्धवतुरतरामढिगजाई । दियोकृष्णसंदेशसुनाई ॥
दोहा–मोदितरासविलासमें, आसवकीन्हेंपान । रामसुनतउद्धववचन, प्रथमकियोनहिंकान ॥
पुनिउद्धवबोलेमुसकाई । हरिसँदेशसुनियेबलराई ॥ असकहितीनवारगहिपानी । उद्धवकहीरामसोंवानी ॥
तवमूँदेदृगउद्धवओरा । कह्योमंदरोहिणीकिशोरा ॥ उद्धवहमहिजगावहुनाँहीं । काहिदीजेअसकेशवपाँहीं ॥
करेंजौनवाकेमनआवे । यहिअवसरकछुहमहिनभावे ॥ जायचहैनहिजायतहाँहीं । अबकहूँहमजहँनाहीं ॥
उद्धवसुनतरामकीवानी । हँसतगयेजहँशारंगपानी ॥ कह्योसुनहुहेरमानिवासा । रामरँगेरसरमानिवासा ॥
दोहा–उचितहोयसोकीजिये, आपसमेंविचारि । वैनपधारेंगेकतहुँ, असतोविनयहमारि ॥
उद्धववचनसुनतमुसकाई । गरुडहिवेगिवोलियदुराई ॥ गहिशारंगचढेसुखछाई । अर्जुनकोसंगलियोचढाई ॥
पुनिप्रद्युम्नसोंवचनउचारा । चलहुहमारेसंगकुमारा ॥ कहप्रद्युम्नमेंरथचढिऐहों । पक्षिराजपक्षहिसँगजैहों ॥
असकहिमायामयरथरचिकै । चढ्योकुँवरधनुधरसिसितचिकै॥गरुडहिदियशासनयदुराई।दानवनिकटदेहुपहुँचाई ॥
पवनहुतेकरिवेगप्रचंडा । लैहरिउड्योगरुडवरिवंडा ॥ पक्षलग्योरथचढोकुमारा । चलोजातकरिवेगअपारा ॥
दोहा–तहाँवज्रपुरकेनिकट, लखिनिकुंभयदुनाथ । पांचजन्यवरशंखको, दियवजायगहिहाथ ॥
दानवपांचजन्यधुनिसुनिकै । लौटयोयदुपतिआगमगुनिकै॥दानवतीनहुवीरनिहारी।तीनरूपकरिलियअतिभारी॥
करिकैघोरशोरदिशिछायो । दानवयदुपतिसन्मुखधायो॥प्रभुसन्मुखधावततेहिंदेखी । कृष्णकुँवरकरिकोपविशेखी॥
तीनरूपअपनहुकरिलयऊ । यदुपतिकेआगूवढिगयऊ ॥ मारनलाग्योविशिखकराला । धायेलाखलेतमनुव्याला ॥
तीननिकुंभतीनहरिनंदन । करतयुद्धउरभरेअनंदन ॥ गदाधारिधावतवलवारा । रोंकतसरहनिकृष्णकुमारा ॥
दोहा–गरुडचढेअर्जुनसहित, मधिठढेयदुवीर । दानवधावतओरचहुँ, हरिसुतमारततीर ॥
दानवनिकटनआवनपावै । मारिवाणप्रद्युम्नहटावै ॥ तवकढिगयोदूरिअसुरेशा । तहँतेधायोकोपितवेशा ॥
अतिलाघवकरितवहरिनंदन।छायदियोअरिपथशरवृंदन॥पुनिअरिमूँदिदियोशरधारन।जलवुंदनजिमिजलदपहारन॥
सगासिगयेसरनभमहिमाहीं । मारतंडतहँनहिंदरशाहीं ॥ वाणजालफारतअसुरेशा । धावतआवतजहँहरिजेहिदेशा ॥
जिमिअतिशयघनशरवनमाहीं । धावतत्रयमतंगदरशाहीं॥ रुक्योनजवदानवढिगआयो।तवप्रद्युम्नइकवाणचलायो॥
दोहा–मारिवज्रसमशीसमहँ, दीन्ह्योंताहिहटाय । तवनिकुंभइकरूपकिय, लियवियरूपदुराय ॥
दुपतिअसवचनउचारा । तुमनयुद्धअवकरहुँकुमारा॥ पुनिअर्जुनसोंकह्योमुरारी । करहुयुद्धअवतुवधनुधारी॥

सुनतवचनगांडीवटँकोरा । तजेसहसशरपांडुकिशोरा ॥ बाणनलियोनिकुंभहिछाई । शरपंजरपरिगोनदेखाई ॥
तहाँअसुरअतिशयअकुलाई । वचनहेतअसरचोउपाई ॥ भानुमतिहिलैअरिकरवामा । [illegible]
बाणनरोकतकन्यामाहीं । सन्मुखधायोअसुरतहाँहीं ॥ शंकितभयोसव्यसाचीतहँ । कियोबंदसायकछोडनकहँ
दोहा-तबकेशवअसकहतभे, कन्यहिविजैबचाय । मारहुँअसुरहिबाणबहु, जातेनहिंबचिजाय ॥
पारथलैबयतस्तिकबाना । अहिगतिसमछोड्योचलबाना ॥ कन्यहिबहुतबचाइबचाई । मारतभयेबाणसमुदाई ॥
गडेबाणताकेतनमाहीं । तिलभरठौररह्योकहुनाहीं ॥ भयोसछिकीसमअसुरेशा । तबउपज्योमनमहँअंदेशा ॥
तबकन्याकेसहितसुरारी । अंतरहितभोगुनिभयभारी ॥ तबप्रद्युम्नसोंकह्योमुरारी । तुमहिंकहाँअरिपरतनिहारी ॥
कह्योमदनपश्चिमदिशिनाथा । भगोजातहैनहिंकोउसाथा॥चलहुँयहीदिशिअबखगगामी।मैगमनहुँआगूअबस्वामी॥
दोहा-मीनकेतअसकहितहाँ, चल्योअग्रकरिजान । गरुडचढेअर्जुनहरी, पीछेकियोपयान ॥
पहुँचेतुरततासुढिगजाई । निरखितिन्हिंदानवभयपाई ॥ तबमायाशठकरीविशाला । हारिलविहँगभयोततकाला ॥
खडोभयोसन्मुखतिनकेरे । विजयबाणतबहनेघनेरे ॥ कन्याकोरक्षततेहिक्षणमें । विधेबाणबयतस्तिकतनमें ॥
सहिनसक्योसायकअतिघोरा । तबभाग्योकरिआरतशोरा॥पुनिधायेतीनिहुतेहिपाछे।मारतनिशितबाणअतिआछे॥
धरणिसातहूँद्वीपनमाहीं । भग्योनिकुंभबच्योकहुँनाहीं ॥ आगेजातनिकुंभपराना । पाछेगरुडमदनकरयाना ॥
दोहा-जिमिधावतहैंअतिक्षुधित, तीतरपैत्रयबाज । ससुतसखातिमिअसुरपै, धावतभेयदुराज ॥
गोगोकरनशैलपरजबहीं । नघनचह्योगिरिकोशठतबहीं ॥ गिरचोसुतायुतदानवराई । परचोइ गामहँजाई ॥
सुरासुरहुजेहिनकिनहिजाहीं । शिवकोवरतेहिगंगाकाहीं॥गिरतअसुरलखिजलचरकेतू।रथर्ता योअतिबलसेतू॥
भानुमतीकहँलियोछँडाई । अर्जुनकृष्णबाणझरिलाई ॥ नरनारायणकेशरघाता । सहिनस शानवबिलखाता ॥
माँग्योभानुमतीकहँछोडी । सक्योनशठसन्मुखउरओडी ॥ दक्षिणदिशिषटपुरकहँजाई । गहिरगुहामहँरह्योदुराई॥
दोहा-तबकहयदुपतिकुँवरसों, भानुमतीपहुँचाइ । द्वारवतीआवहुतुरत, मोसमीपमहँधाइ ॥
मदनभानुमतियानचढाई । गयोआशुद्वारावतिधाई ॥ ताकेभवनताहिपहुँचाई । चल्योबहुरिजहँपितुयदुराई ॥
इतअर्जुनवसुदेवकुमारा । चलेअसुरपैगरुडसँवारा ॥ षटपुरगुहाद्वारजबआये । तहँआइहरिसुताशिरनाये ॥
तेहिगुहामहँअसुरहिजानी । सहितसखासुतशारँगपानी ॥ खडेरहेताकिसोइद्वारा । बीतीनिशाभयोभिनुसारा ॥
असुरजानिलीन्ह्योमनमाहीं । गयेकृष्णअपनेगृहकाहीं । गदागहेनिकस्योबिललेरे । तबयदुपतिअर्जुनकहँटेरे ॥
दोहा-मारहुमारहुपार्थतुम, नहिनिकुंभबचिजाय । करिउपद्रवफेरिबहु, जोअबरहहिपराय ॥
तबअर्जुनगांडीवटँकोरा । हन्योंनिकुंभहिबाणकरोरा॥ प्रथमकियोताकोतनजर्जर । पुनिकरिदियोताहिशरपंजर ॥
पुनिअकाशमहिदिशिकपिकेतू।बाँधिदियोबाणनकरसेतू॥देखिपरतनहितहाँनिकुंभा।भोतनतोहिझिझिपाकसकुंभा।
तहँअतिकोप्योअसुरमहाना।फारतबाणजालबलवाना।मंदहिमंदपार्थदिशिधायो। पुनिपुनिअर्जुननिशिशिखनछायो ॥
बहुकंटकगदाकरधारे । परतलालनैननननिहारे ॥ अर्जुनशीशगदाशठमारी । बचतनअबअसगिराउचारी ॥
दोहा-लगतगदापारथगिरचो, शोणितवमतविहाल । रुक्मिणिनंदनतबहन्यों, असुरहिबाणकराल ॥
घेषिदियोरोमनप्रतिबाना । मनुभूधरमहँभूरुहनाना ॥ टसिनपरचोनहँदानवराई । शरअवलीअकाशमहिछाई ॥
विशिखनकोहिगोआँधियारा । मदनपनुपछूटनशरधारा ॥ ताहिबाननममाहिमहीपा । दानवहूनगोकामसमीपा ॥
छिपिकगदाहन्योतेहिशीशा।पुनिउठिअंबरमहँशठदीशा॥लगनगदागिरकृष्णाकिशोग।गिरचोमहिमहिनिनोरिओ॥
दोउबीरनकहँमूर्च्छितदेखी।दानवहँस्योजीतिनिजलेखी ॥ सोनाहिदहिदयदुपतिअनिकोपी॥गदाधारिधायेतभ्यारी॥
दोहा-आवतनिरखिगोविंदको, गदागहेभुजमेरु । दोपिपुठलाग्योकरन, कम्पिमंडलनहिहेरु ॥
गदायुद्धसोदानवकेरो । भयोभयावनलखोपनेरो ॥ तहँसुरमुनपुनमुनननसारे । युद्धलग्नकंदनामिसार ॥
दोऊवीरमंडलचहुदागरो । कहुँनिकटकहुँदूरविचारो ॥ दोउन्नर्नाहिदावाहिदाचे । [illegible]

दोऊसोंहैंरणमहँकैसे । अतिवलमत्तमतंगजजैसे । पायतहाँअंतरजगदीशा । गदाहनोंदानवकेशीशा ॥
सोऊगदाहरिकेशिरमारी । दोऊपाइप्रहारहिभारी ॥ गिरेमूर्च्छितमहरिमहिमाहीं । हाहाकारभयेचहुँवाहीं ॥
दोहा—उतैनिकुंभहुमूर्च्छिके, गिरचोधरणिलहिपीर । पुनिदानवउतउठतभो, इतैउठेयदुवीर ॥
तबलैचक्रकह्योयदुराई । ठाढरहसिजनिजाहिपराई ॥ तहँआपनोवधविचारी । मायाकरीतहाँअतिभारी ॥
मृतकएकनिजतनमहिडारी।अंतरहितह्वैगयोमुरारी॥जानिमृतकहरिचक्रनमारचो । सखापुत्रकेनिकटसिधारचो ॥
दोहुनशंखवजायजगायो । विजैमानिअतिशैसुखपायो ॥ जानिसकलदानवकीमाया । तबहरिसोंमकरध्वजगाया ॥
मरचोअवैयहशठहैनाहीं । मैंदेखोंदानवनभमाहीं ॥ गुनिकौतुकदानवयदुराई । हँसनलगेदोउवीरठठाई ॥
दोहा—पुनिनिकुंभमायाकरी, कियोहजारनरूप । अवनिअकाशहिदिशिविदिशि, रहेछायतेभूप ॥
कोटिनकृष्णहुकृष्णकुमारा ।मायाकरिशठरच्योअपारा ॥ बहुनिकुंभआशुहितहँधाई । लपटिगयेअर्जुनतनआई ॥
कोउचरणकोउकर्णगहतभे । कोउतूणीरधनुपकरिरहतभे ॥ अर्जुनकहँलैगयेउडाई । अतिऊँचेअकाशमहँजाई ॥
अर्जुनकोकचगहिवलवाना । काटतशीशनिकारिकृपाना ॥ ऐसेकोटिनरूपअसुरके । परेदेखिहगपतियदुपुरके ॥
निरखिनिकुंभअंततहँनाहीं । हरिकेभ्रमदुखभयेतहाँहीं ॥ कौननिकुंभहिचक्रहिमारें । कौनअर्जुनहिसत्यविचारें ॥
दोहा—मकरकेतुतबकहतभो, इतनिकुंभहैनाँहि । लियेजातसतिअर्जुनहि, सहसयोजनहिमाँहि ॥
मारहुचक्रअमोघमुरारी । कटिजैहैताकोशिरभारी ॥ तबजेहिदिशिप्रद्युम्नबतायो । तहँतकिमाधवचक्रचलायो ॥
लग्योनिकुंभशीशमहँजाई । शिरविहीनभोदानवराई ॥ मरतनिकुंभगईमिटिमाया । गिरीअवनिमहँताकीकाया ॥
अधमुखपार्थहिगिरतनिहारी । हरिप्रद्युम्नसोंगिराउचारी ॥ धरहुधरहुअवगिरननपावै । जेहिपारथकेप्राणनजावै ॥
सुनिपितुवचनकुँवरतहँआशू।रथतजिकैउडिगयोअकाशू।सहजहिउभैपाणिसोंगहिकै।ल्यायोकृष्णनिकटसुखलहिकै
दोहा—बहुविधिसुतहिसराहिकै, अर्जुनमोहनिवारि । पारथऔप्रद्युम्नयुत, गेद्वारकैमुरारि ॥
हरिआगमजान्योपुरवासी।धायप्रणामकियेमुदरासी ॥ सहितसखासुतअतिसुखछाये । यदुनंदनमहलनमहँआये ॥
उग्रसेनकोकियोसलामा । पुनिवसुदेवहिकियेप्रणामा ॥ पुनिवलभद्रचरणशिरनाये । रामहुआशिषवचनसुनाये ॥
पुनिवलरामकह्योमुसकाई । तुमसोंवनीनघातकन्हाई ॥ हमहिंछोडिकसगयेसिधारी । तीनहुबालकवडेखेलारी ॥
रह्योनकोऊसंगसयाना।यहअतिअनुचितमोहिंदेखाना ॥ तबबोलेकरजोरिमुरारी । माफकरहुयहचूकहमारी ॥
दोहा—बालककेअपराधबहु, गनैनवृद्धसुजान । तातेहमविनतीकरत, समरथआपसयान ॥
रामकह्योकहिजाहुहवाला।केहिविधिमारचोअसुरकराला॥तबयदुपतिवृत्तांतसुनाये । सुनतरामअतिआनँदपाये ॥
सभामध्यनारदतहँआये । सबयदुवंशीउठिशिरनाये ॥ कह्योभानुयादवसोंमुनिवर । सुताहरणजनितेदुखजनिकर ॥
याकोशापदईदुरवासा । सोईभयोसुनोअनयासा ॥ भानुमतीहैशुद्धकुमारी । उचितमोहिंअसपरतनिहारी ॥
देहुव्याहिसहदेवहिकाहीं । माद्रीसुतजाहिरजगमाहीं ॥ नारदवचनसुनततहँभानू । सहदेवहिव्याहीमतिमानू ॥
दोहा—सहदेवहिभूपणवसन, दैसादरयदुराय । इंद्रप्रस्थकोकरिविदा, दियोमोदअतिछाय ॥
यहिविधिकरतअनेकचरित्रा।सुनतजाहिजनहोहिंपवित्रा॥वसहिंकृष्णद्वारावतिमाहीं।जाकीछविमुखवरणिनजाहीं ॥
सबसंपदापरीमहँपूरी । यदुवंशिननिवासततिभूरी ॥ १ ॥ उत्तमभूपणवसनसमारे । औरहुपोडशकरिशृंगारे ॥
यौवनजोमभरींछविरासी।खेलहिंगेंदनवलाचपलासी॥जहँतहँमहलनपरैंनिहारी।जिनछविसुरललनालखिहारी ॥२॥
नितसिंधुरसंकुलपथरहतो । तहँजलधारनसममदबहतो ॥ भूपणवसननअंगसमारे । तरलतुरंगनरथनसँवारे ॥
दोहा—डगरडगरसबनगरमहँ, यदुवंशीसरदार । सैरकरतविचरतफिरैं, मानहुँमूरतिमार ॥ ३ ॥
कहुँसोहतसुखदतडागा । फूलिरहेउपवनवनवागा ॥ लफिलोनीलतिकालहराहीं । गुंजहिंमत्तमधुपतिनमाहीं ।
· · · हुरंगविहंगा । चहुँदिशिछायरह्योरससंगा ॥ ४ ॥ इमियदुनगरीमहँयदुराई । पोडशसहसमहलसुखदाई ।
सहसरूपधरिनाथा । पोडशसहसनारिकेसाथा ॥ करहिंविहारसमारिशृंगारा । नितनवमंगलमोदअपारा ।

गृहवाटिकाविराजहिंलोनी।जगमगातिमरकतकीक्षोनी॥८॥सरसीसोहिरहींसुखखानी।मणिसमनिर्मलसुरभितपानी।
विकसेचारिरंगअरविंदा । उडतपरागढरतमकरंदा ॥

दोहा–कनकघाटमंडितमणिन, जगमगातचहुँओर । गुंजिरहेमधुकरनिकर, करहिमंजुखगशोर ॥ ६ ॥

कौनिहुँसमयतहाँयदुराई । सबरानिनकहँसंगलेवाई ॥ करनहेततहँसलिलविहारा । गयेसजेसुंदरशृंगारा ॥
प्रविशेसरसीमहँयुतनारी । गहेकरनकंचनपिचकारी ॥ कुंकुमकलितअंगअँगरागा । पूरणउरपियकेअनुरागा ॥
बैठींसोरहसहससुंदरी । इकइककरगहिसहितमुंदरी ॥ सखीबजावहिबीनमृदंगा । छायरह्योरागनरसरंगा ॥ ७ ॥
तहँगंधर्वअकाशहिआये । जलविहारदेखनसुखछाये ॥ बरबाजेबहुभाँतिबजाई । संयुततालशुद्धसुरछाई ॥

दोहा–रचिरचिरुचिरपदनको, पावनयशयदुनाथ । गावतभेगंधर्वगण, रागरागिनिनसाथ ॥

छंदचौबोला–कोउभैरोभैरोंवैराटहूआनँदभैरोकलगावैं । कोउबहारभैरोंरगभैरोमंगलभैरोभलभावैं ॥
कोऊभैरवीसिंधुभैरवीमुदितमध्यमहुबंगाली । खंभावतीविभासदेशकरखरवपारकोउरसशाली ॥
कोऊविभाकरभटिहारहिकोउललितललितकोइसुखसाने।कोइकुंतलआनंदितगायोरामकलीगुणकरिगाने ॥
कोइदेवंतीदेवगिरीकोउदेवहुतीकोउसुरठाने । कोऊविचित्रबिलावलकोऊसुकुलबिलावलसुखमाने ॥
हंसबिलावलशुद्धबिलावलजीतबिलावलसुरछाये । इमनबिलावलकोइबिलावलीकुकुभसुकुभकोउमनलाये॥
कोउकुंभारगायकोउहरपनकोउसंक्रमनसुरसभीने । कोउनटनारायणीअलहियाकोउअलहीयासुरलीने ॥
मंझअलहियाकोउसरपरदाभूपशाखरागहिकोऊ । दीपशाखकोउलक्षशाखकोउदेवशाखगायेतोऊ ॥
कोउसुघराईसूहासूहीकोउअसावरीसरसावैं । कोऊगूजरीरामगँधारहिकोईजोगियासुरछावैं ॥
कोइगँधारकोइदेवगँधारहिकोउदेशीकोउपटरागा । कोऊवरारीटोडीकोऊकोउबहादुरीयुतरागा ॥
यमनपुरीलछमीढोढीकोउसरस्वतीकोउलाचारी । दरबारीटोडीगायोकोउपारवतीटोडीभारी ॥
मुलतानीटोडीतुरकानीकोइमधुमाधहिबडहंसा । वृंदावनीगायकोउसारँगकीनीयदुपतिपरशंसा ॥
कोउकुरंगशाँरगसुधशाँरगकोउसेमंतसारँगगायो । कोऊगौरसारँगकोउजूहीकोउमुलतानीरसछायो ॥
भीमपलासीमालसरीकोउश्रीरागहिकोउमुखल्यायो।धनाशिरीकोउरूपशिरीकोउधवलसिरीकोभलभायो ॥
पटमंजरीशिरीकोउवरवाबंगशिरीकोउरससराचे । कोईभीमपलाशीगावतवरहिंडोलहीकोउसाचे ॥
कोउवसंतकोउपंचमकोऊकोऊवसंतहीबाहारे । कोऊवहारअडानागावतकोऊसहानाबाहारे ॥
कोउपंचमवहारकोइगावतश्रीबहारहिबाहारे । कोउवहारखंभाइचभनतेकोईपरजहिबाहारे॥
कोईहिंडोलबहारहिगावतजयतबहारकोऊभावे । पटमंजरीबहारविकासतकोउगँधारवडवागावे ॥
शिरीरागकोउशिरीटंककोउनिराटंककोउसुरछाको । धनाशिरीपूरियाकहतकोउकोउपूरियाशंकराको ॥
ललितपूरियात्रिमनपूरियाकोऊपूरियाभैरवको । कोऊपूरवाकोऊपूरवीकोऊत्रिमनसुखदेवेको ॥
कोईमारवामालीगौरागौरीआशाकोउगौरी । कोउगौरीकुसुंभियाचैतीगौरीगरीविनीगौरी ॥
कोउगौरीनायकीअलाप्योकोऊगौरीभटिआरी । कोउगौरीबडहंसीगायोकोउगौरीपुनिलाचारी ॥
कोउगौरीगोधनीभनतभेकोउराझियागौरीगायो । कोऊविराटीगौरीमंजुलकोउदीपकसुरमुसल्यायो ॥
कोऊपूरियाकोईजयतपुनिकोउतहँइमनकल्याणा । कोऊशुद्धसालंकइमनकोउपुनिकोउशुद्धहिकल्याणा ॥
कोऊशुद्धसंकीरनबरण्योविजयकल्याणभन्योकोई । कोउविनोदकल्यानबखानतभूपकल्यानकोऊसोई ॥
कोउगोचरनकोऊतहँहेमैकोऊश्यामनटकल्याणा । कोउकामोदश्यामगायोतहँकोईकमोदहिकल्याणा ॥
कोऊकमोदहितिलककमोदहिकोईकामोदीकेदारा । कोईकमोदहमीरहिगायोकोईहमीरहिटचारा ॥
कोईपरजकोईखंभाइचकोउधूरियासमायचको । देवनाटकोउनटनारायनकोउनटगायोसुरचयको ॥
नटभूपालीछायानटकोउकेदारानाटहिगायो । शुद्धनाटकोउनाटहमीरहिकोइइमनीसुरसुरसछायो ॥

कोउकेदारागावतहैंतहँकोईजलधरकेदारा। कोईमालेहाकेदाराकोईपूरियाकेदारा॥
कोईगोलिरीकेदाराकहकोईसंकराकेदारा। कोइभूपालीमंजहिगावहिकोइहमीरहिकेदारा॥
कोऊभूपालीकोईसिंधुकहँकोऊसोहनीसुखसाने। कोउकाफीकोउकावेरीकहँकोउविडंगरागहिगाने॥
कोइवरधनकोउशारँगदेशैकोऊकलँगराकोगावैं। कोउकरनाटीकोउआनँदकहँकोऊझँझोटीसुरछावैं॥
कोऊपहारीकोईपीलूकोईगावतहैंमारू। कोऊअहेरीकोईकान्हरीकोऊसहनासुखसारू॥
कोईअजनाकोऊकान्हरावागेसरीकोईगायो। कोइअडंवरीकोईनायकीकोईमुद्रिकाहिसुरछायो॥
कोइकौशिकलीलावतिकहँकोईकोईछेमकान्हैरा। कोउमंगलकान्हरासुनायोकोऊदरवारीऐरा॥
कोइकेहरीकान्हरागावतकोइनराचकेसुरछाये। कोउगाराकोइरासाकान्हरजाजकान्हराकोउभाये॥
कोईदेशकान्हरासुनावतकोइकान्हरापूरियाको। कोईजाजवंतीकोठानैकोइमंगलरागहिछाको॥
कोईमालकोशहिकोगावतकोउविहागराकीतानै। कोउविहागकोउइमनविहागैकोउविहागदेसहिगानै॥
कोईसंकरावलीसुनावतकोईसंकरासरसावैं। कोईसंकराभरानअलापैकोउसुधंकरासुरछावैं॥
कोईसंकरामेलनगावतकोईगावतरतिवाही। कोउसोरठकोइदेशसुनावतकोउसिंदूराउतसाही॥
मेघरागकोउगावतहैंतहँमेघमलारहिकोइगावैं। कोइकान्हरामलारसुनावतकोइमल्लारशुद्धछावैं॥
कोइगंधर्वगोडमुखगावतसूरमलारहिकोउभाँखे। गोडमलारहिगोडनायकीगोडगिरीकोसुखराखे॥
कोइसावंतीमल्लारइकोकोईअडानामल्लारै। कोइमलारसुहराईगावतकोईसूहामल्लारै॥
कोइमलारकेदाराछावतकोईजाजहिमल्लारै। कोइभामनीमलारहिगावतकोऊअहीरीमल्लारै॥
कोइमलारसिंदूरागावतकोइगावतनटमल्लारै। कोइधूरीयामलारसुनावतकोइतहँगौरीमल्लारै॥
कोइसावनीमलारसुनावतरूपभामिनीमिल्लारै। कोउकुकुभीमल्लारसुनावतऔरहुरागनउच्चारैं॥
सोरठा--अष्टयामकेराग, समयसमयगंधर्वगण। गावहिसहितविभाग, तालमूर्छनासुरसहित॥
वजेहजारनपवनमृदंगा। वीणाडफमुरचंगउपंगा॥ ८॥ तहँपोडशहजारवरनारी। लैकरमणिनजटितपिचकारी॥
हरिपैसींचहिसुरभितनीरा। हँसहिहँसावहिंमोदगभीरा॥ मणिनभईकंचनपिचकारी। तिनपरडारहिदौरिविहारी॥
जलविहाररतसोहतकैसे। यक्षिणसहितयक्षपतिजैसे॥ कहुँहरिनाथनतेपिचकारी। लेहिछुडाइदौरिकोउनारी॥
पुनिकहुँहरिहुछुडावहिधाई। तेझिझिकारतजाहिपराई॥९॥खसहिकचनतेसुमनचमेली।दौरहिंचहुँकितचारुनवेली॥
दोहा—लपटिगयेपटअंगमें, निपटप्रगटदरशात। सुमनमारियदुपतिहँसत, उरअनंगअधिकात॥
कंचनकोकरिओटनवेली।लज्जितलौटहिंसहितसहेली॥१०॥कुचकुंकुमरंजितहरिमाला।छूटिरहींअलकनकीजाला॥
मिलेंदौरियदुपतिकहुँआली। हनिपिचकारिनप्रभाविशाली॥तेऊपियमुखमलहिंपरागा।बढतपरस्परअतिअनुरागा॥
युवतिमध्यसोहतयदुराजा।मनहुमतंगिनमधिगजराजा॥११॥यहिविधिकरिवहुवारिविहारा।अतिमोदितवसुदेवकुमारा॥
नटनरतकिनगायकनकाँहीं। अनुपमभूषणवसनतहाँहीं॥ यदुपतिदेतहँविविधइनामा।गयेप्रमोदितअपनेधामा॥१२॥
दोहा—मंदहँसनिचितवनिललित, वचनरचनिसुखदानि। यदुपतिकीलखियुवतिसव, मोहिरहीछविखानि॥१३॥
शेनकरयोनिजनिजसदन, सहितरमणसवरानि। तिनकोसुखमुखएकते, कैसेसक्योवखानि॥
आगमजानिप्रभातको, दिवसवियोगविचारि। वदनलगीउनमत्तसे, वचननिकलहरिनारि॥
सोमैंवरणनकरतहौं, मध्यमुनीनसमाज। चितदैकैअवसोसुनहु, सुमतिपरीक्षितराज॥ १४॥
बोलीकहूँकराकुली, प्रमुदितपायप्रभात। शोकसनीसुनिरुक्मिणी, भनीभामिनीवात॥

रुक्मिण्युवाच।

छंद—रेकुररीनिठपलिआधीनिशिनैननींदनहिंआई। सोवतपियकोवृथाजगावतिकोयदरीतिसिखाई॥
भोंदोरिचितवनिदेशनिफाँसिमेंदमसमतहूँफँसीरी। तानेसमयसुरतिसवभूलीवोलसिनिकटवसीरी॥

दोहा–पुनिचकईकीवानिसुन, मनमहँअतिबिलखानि । सतिभामाबोलीवचन, कंतविरहजियजानि ॥

सत्यभामोवाच ।

छंदचौबोला–रेचकवाकीनिशिवियोगिनीकरुणगिराबहुरोवै । अबैभोरनहिंभयोभयावनसुखितसेजपियसोवै ॥
धौंयदुपतिकेसुछबिसिंधुमहँबूडिगयोमनतेरो । शिरमहँधरनचहसिपदपंकजतासुकरासिअवसेरो ॥१६

दोहा–घरघरशोरसमुद्रको, भानुसुतासुनिकान । सुनिप्रभातअतिशैदुखित, लागीकरनबखान ॥

कालिंद्युवाच ।

छंद–हेसरितापतिनिशिनहिंसोवहुसदाकरहुरवभारी । जानिपरतिभयदशातिहारिहुजैसीभईहमारी ॥
नैननपथह्वैप्रविशिहियेमहँमनकोहरोहमारो । तैसहिकौस्तुभहरच्योसाँवरोमथिकेउदरतिहारो ॥ १७

दोहा–निरखिमलीनमयंकको, दिवसवियोगविचारि । कहतभईअतिशयदुखित, कौसलराजकुमारि ॥

नाग्नजित्युवाच ।

छंद–अरीजोन्हैंयासुखदजोन्हाईकाहेलेतछिपाई । कैधौंकियेजोरजछमातोहितेहिंप्रगटीप्रियराई ॥
कैगोविंदकेवचनफंदमेंफँसिआनँदअतिभाये । तातेअचलअकाशविराजसिमंदतेजदरशाये ॥ १८

दोहा–बहतिविलोकिबयारितहँ, शीतलमंदसुगंध । कह्योलक्ष्मणावचनअस, जान्योनिशानिबंध ॥

लक्ष्मणोवाच ।

छंद–अरेमलैकोअनिलकहाहमकियअपकारातिहारो । बहतबावरोबारहिंबारहिंक्योंरिपुहोतहमारो ॥
इकतोयदुपतिनैनबाणतेजरजरहियोबनायो । तापरतूअबमदनदहनतेपुनिपुनिआयजरायो ॥ १९

दोहा–बिरलेतेहिक्षणगगनमहँ, निरखियननगुनिभोर । जाम्बवतीअसभनतभै, बाढ्योविरहअथोर ॥

जांबवत्युवाच ।

छंद–भीतमेघमाधवकेमुदकररूपसमानहिंपाये । नेहनहेध्यावहुतिनहीकोउरअभिलापबढाये ॥
हमहींसमतुमहूँतेहिंसुमिरतढारहुआँसुनधारा । अतिदुखदाईतासुमिताईप्रथमनकियोविचारा ॥२०॥

दोहा–फेरिमित्रविंदासुपरि, सुनिकोकिलकोबोल । बोलीविपुलविपादभरि, मंजुलबैनअतोल ॥

मित्रविंदोवाच ।

कोकिलकंतसरिसअतिकोमलबोलहुबोलपियारे । श्रमननसुधासरिससोलागतमृतकजिआवनहारे ॥
कौनकरहिंउपकारतिहारोहमकोदेहुबताई । असउपायकलकंठकीजियेजगनजेहियदुराई ॥ २१ ॥

दोहा–यदुपतिअबउठिजायँगे, यहगुनिदुखनसमात । पुनिभद्राभाषतभई, भयभरिजानिप्रभात ॥

भद्रोवाच ।

छंद–हेरैवतधरणीधरसुनियेंचलहुवदहुकछुनाहीं । तातेजानिपरतकारियतकछुबडविचारमनमाहीं ॥
तुमहूँपोंहमरेसमपियकीछबिमहँमोहिगयेहो । तासुचरणउरधरनलालसामनमहँअतिदिढयेहो ॥
पैउरदयाधारिअबकीजियहउपकारहमारो । देहुदुरायदिवसकरकोबढिमोहिंभरोसतुम्हारो ॥ २२ ॥

दोहा–पुनिशतरानीकृष्णकी, निजनिजभौननमाहिं । जानिभोरअतिशयदुखित, हरिवियोगवतराहिं ॥

छंद–मूखेह्वदसरसिजसरितनकेशोभाहीनदेखाहीं । जानिपरतपियकोवियोगबहुइनहूँकेमनमाहीं ॥
जैसेहमसबदिवसपायबिनबालमबदननिहारी । क्षणक्षणसूखततनमनबिलसतदुखनहिंजातउचारी ॥ २३॥

दोहा–पुनिरानीसोरहसहस, दिवसवियोगविचारि । निरखिहंसभापनलगीं, बहुविधिगिराउचारि ॥

छंद–भलेहंसतुमतोइतआयेकरहुसुखदपयपाना। तुमतोदूतकृष्णकेकीजेअबतिनकोगुणगाना॥
अहैंकुशलपियसुमिरतकहुप्रणजोप्रथमहिमुखभाख्यो। पैवहचारुचतुरचंचलचितहमसोंनेहनराख्यो॥
जोअसकहहुहंसतुमबिरहबिदुखनाशनवारे। तौवेएकरुक्मिणीकेवशह्वैहमरोप्रेमबिसारे॥
जायकहोउनहीसमीपमहँहंसवचनसमुझाई। इतहैकामनकछूतिहारोजानीहमचतुराई॥ २४॥

दोहा–यहिविधिभाउअनेककरि, यदुपतिमहँसबरानि। वसतिभईद्वारावती, सिगरीछबिगुणखानि॥ २५।
परतनामजाकोतियकानन।हठिमनहरतरहेतनभानन॥सोहरिकोनिरखतदृगमाँहीं।मोहिंजाहितोंअचरजनाँहीं॥२६॥
जेकरिप्रेमजगतगुरुकेरो। पदसेवनआदिकबहुतेरो॥ मानिप्राणपतिसेवनकीन्ह्यो। निशिदिनहरिध्यावनमनदीन्ह्यो॥
तिनकोपूरुवतपकुरुराई।मैंकेहिभाँतिसकौंमुखगाई॥२७॥यहिविधिवेदभनितसबधर्मा।करतसंतपतिबहुविधिकर्मा॥
अर्थधर्मकामहुँपदकाँहीं। दरशायोनिजगृहजगमाँहीं॥२८॥ करतगृहस्थधर्मतिनकाँहीं। वसतद्वारकानगरीमाँहीं॥

दोहा–आठऔरशतसोरहै, सहसनारिसुकुमारि। आठपट्टरानीरहीं, तिनमेंअतिछबिवारि॥ २९॥
रुक्मिणिआदिप्रियाहरिकेरी।प्रथमकह्योतिननामनिवेरी॥३०॥दशदशसुतइकइकतियकेरे।महाबलीविक्रमीघनेरे॥३१
महारथीतिनमाहँअठारे। तिनकेनामनिकरहुँउचारे॥३२॥ श्रीप्रद्युम्नअनिरुधरणधीरा। दीतिमानअरुभानुप्रवीरा॥
बृहद्भानुअरुचित्रभानुवर। सांबअरुणवृकमधुअतिधनुधर॥३३॥पुष्करवेदबाहुश्रुतिदेवा।कविन्यग्रोधविरूपसभेवा॥
चित्रभानुअरुवीरसुनंदन। येअष्टादशदुष्टनिकंदन॥ ३४॥ इनहुनमहँसुनियेमहराजा। भोप्रद्युम्नअतिरथीदराजा॥

दोहा–बलबुधिविक्रमरूपगुन, शीलसकोचसुभाउ। भयोपिताकेसरिससो, त्रिभुवनविदितप्रभाउ॥ ३५॥
रुक्मीसुताव्याहिसोलीन्ह्यो।सुतअनिरुद्धप्रगटतेहिंकीन्ह्यो॥दशहजारगजकोजेहिंजोरा।जोसुरअसुरहुकोमदमोरा॥३६
सोरुक्मीकीनातिनव्याही। वज्रतासुसुतभोअरिदाही॥ भोजबमूसलतेसंहारा। बच्योएकसोइवज्रकुमारा॥ ३७॥
तासुपुत्रनामकप्रतिबाहू। तासुसुवनभोसबलसुबाहू॥ शांतसेनभोतासुकुमारा। तासुसूनुश्रुतसेनउदारा॥ ३८॥
अधनअपुत्रअबलअलपायुप।यदुकुलमहँकोउभोनाविनासुप॥भूसुरभक्तिहीननहिंकोई।वीरधरिविजईअरिसोई॥३९॥

दोहा–जगजाहिरयदुकुलभयो, संख्यातासुअपार। सकैकौनकरिजोजिऐ, दशहूँवर्षहजार॥ ४०॥
सहसअठासीतीनिकरोरी। वालकगुरुभेबुद्धिनथोरी॥४१॥संख्यासबयदुवंशिनकेरी।क्योंकरिसकैनृपतिमतिमेरी॥
दशहजारकेदशौंहजारा। यदुवंशीसिगरेसरदारा॥ तिनयुतउग्रसेनमहराजा। राजकियोतहँसहितसमाजा॥४२॥
देवासुरसंग्रामहिजेते। मरेअसुरप्रगटेमहितेते॥ देनप्रजनपीडाबहुलागे। कियेअनर्थगर्वमहँपागे॥ ४३॥
तिनकेनाशनहितभगवाना।प्रगटायोयदुकुलसुरनाना॥भयेएकशतइककुलजिनके।यदुनायकनायकभेतिनके॥४४॥

दोहा–यदुपतिपदसेवनकरत, बढ्योसकलयदुवंश। तिनबाधककोउनहिंभयो, सकलजगतअवतंस॥ ४५॥
मज्जनभोजनशैनसुख, विचरनबोलनिवानि। निशिदिनहरिसँगकरतते, सकैननिजतनजानि॥ ४६॥

कवित्त–जाकीभक्तिकीनेअरुवैरहूतेदीनेमन, पूरनपरमपदपावतसमानहै।
जाकीनेकुनजरगिरीशब्रह्मचाहैंसदा, सोऊरमाकरेजाकोरूपरसपानहै॥
आपनेसुयशआगेसुरसरिहूकोनीर, न्यूनकरिदीन्ह्योपापनाशकमहानहै।
भोपरघुराजयदुराजजूकोछोडिमोहि, दृगनदिखातआनकरुणानिधानहै॥
जाकोएकबारनामश्रवणकरतश्रुति, मुखहूँभनतअघओघनिजरावैहै।
धर्मधुराधारनकैधरणिचलायोधर्म, कर्न्हैजादिसम्मनअनंदअतिपावैहै॥
भोपरघुराजजाकोकाटैचक्रआयुपद, [illegible] सुरनरसकलनशावैहै।
ताकोभूमिभागकोउताि [illegible] अनमनंनाहिंआवैहै॥ ४७॥

छंद-जयतिजननेवासदेवकीमेंजन्मवाद, ब्रह्मकेसमाजमध्यमेंसदाविराजमान।
दोरदंडसोंअधर्मखंडखंडखंडकारि, पातकप्रचंडचराचरकेविनाशमान॥
भापेरघुराजमंदमधुरसमुसक्यान, पूरसीतभानहाँसोआननप्रकाशमान।
कोटिनमनोजगर्वगारकसरूपमान, व्रजबनितानवेशवेधकमदनबान॥ ४८॥

सवैया-जगमेंनिजधर्महिरक्षणकोयदुनायकरूपअनेकधरैं। जगमित्रपवित्रअमित्रननाशतचित्रविचित्रनलीलाकरैं.
रघुराजचहैंतिनकेपदप्रीतिजोतोनिजकानकथाकोभरैं। यहघोरमहाकलिकेपहरेनहिंऔरउपायनिहारिपरैं॥ ४९
जहँदुस्तरकालकोवेगनहींजेहिहेतमहीपवनैगवने। नहिंऔरउपायकियेमिलतोभगवानकोभासितसोभवने॥
रघुराजसप्रीतिसोंगानकियोजोकथारुचिरुक्मिणिकेरमने। करतेहरिकेपुरताहिपयाननिवारणकीन्ह्योंकहोकवने५०

दोहा-वदनवदनहरिकीकथा, श्रवणश्रवणमनध्यान। जोईकरतसोईतरत, कलिउपायनहिंआन॥
निधिनभनिधिशशिसंयुते, माघमासबुधवार। कृष्णपक्षप्रतिपददशमि, उत्तरार्धअवतार॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे नवतितमस्तरंगः॥ ९०॥

दोहा-महाराजरघुराजकृत, दशमोत्तरअसकंध। यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध॥

समाप्तमिदं दशमस्कंधोत्तरार्धम्।

इति

श्रीमद्भागवत-आनन्दाम्बुनिधि

दशमस्कन्धोत्तरार्ध समाप्तम् १०.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-बम्बई.

ल्यायकनकआसनबैठायो।चरणधोइनिजशिरजलनायो॥पूजनकियषोडशउपचारा२६सनका... पसरतजिनकोपरमप्रकाशा।पूरणकरततुरतदशआशा।नेहनहेनिमिनृपतिनिहोरी।विनयकियोतिनसोंकरजोरी२७

विदेह उवाच।

दोहा—मधुसूदनकेपारपद, हममानहिंतुमकाहिं। विचरहुपावनकरनहित, हरिमयलोकनमाहिं॥ २८॥

क्षणभंगुरयहमनुजशरीरा। देहिनकोदुर्लभमतिधीरा॥ मनुजशरीरहुपायमुनीशा। दुर्लभदरशदासजगदीशा॥ मिल्योआजसमसकलअभागा।तुवपददरशनतेवड़भागा॥२९॥ यातेहमपूँछहिंमुनिराई।देहुअछिन्नकल्याणवताई॥ आधहुक्षणसाधुनसतसंगा। यहजगमेंआनंदअभंगा॥ ३०॥ कहहुभागवतधर्मअसोगू। जोहमहोंहिंसुननकेजोगू॥ जौनधर्मकेकियेमुनीशा। होतअधीनआशुजगदीशा॥ ३१॥

नारद उवाच।

यहिविधिजबपूँछ्योमिथिलेशू। तबसराहिकैनवयोगेशू॥

दोहा—तिनमेंजिनकोनामकवि, तेऋतुजननसुनाय। नृपहिंभागवतधर्मसब, कहनलगेसुखपाय॥ ३२॥

कविरुवाच।

यहजगमेंसुनियेमिथिलेशू। हरिपदभजेनभयकरलेशू॥ यहमेंहैअछिन्नकल्याना। हैउपायजनकोनहिंआना॥ रहतचित्तउद्विग्नसदाहीं। दीसतभयजगमहँचहुँघाहीं॥ हरिपदपंकजभजेविदेहू। रहतनहींपुनिजगसंदेहू॥ ३३॥ निजपदपावनहितयदुराई।निजमुखवरण्योजौनउपाई॥ सोईभागवतधर्मकहावै। जोकरिमूढ़हुमाधवपावै॥ ३४॥ करतजाहिनहिंहोतप्रमादा। दिनदिनदूनबढ़तअहलादा॥ धावैमूँदिनैनहुँनकाँहीं। छुटैगिरैनसुमारगमाहीं॥

दोहा—करतभागवतधर्मतिमि, होतविघनकहुँनाहिं। विघनहुँभयेविदेहसुनु, हानिनहींफलमाहिं॥ ३५॥

मनसावाचाकर्मणा, इंद्रियबुद्धिसुभाउ। करैकर्मजोकृष्णको, सोअरपैनृपराउ॥

नारायणप्रभुकर्महमारा।लेहुसबैअसकरैउचारा॥३६॥जोनस्वामिसेवकमतिराखत।तेहिंअतिहोतिभीतिश्रुतिभाखत॥ सोईयदुपतिविमुखअज्ञानी। मायाविवशहोतअभिमानी॥ तातेगुरुप्रत्यक्षहरिजानी। सेवकस्वामिभावउरठानी॥ करैअनन्यभक्तिमतिमाना।तबहिंहोतजगमहँकल्याना३७हमस्वतंत्रहैंजेहिपहिचानैं। अरुशरीरआतमकरिमानैं॥ येभ्रमहैंनृपउभयप्रकारा। वेदविरुद्धहिंकरहुविचारा॥ जैसेमनवशस्वप्नसदाहीं। जागेसकलतुरतमिटिजाहीं॥ तैसहिमनकारणभ्रमअहई। नितसंकल्पविकल्पहिगहई॥

दोहा—तातेमनकोअचलकरि, हरिमहँदेयलगाय। तौविदेहभूपतिसुनहु, आशुअभयह्वैजाय॥ ३८॥

जन्मकर्मजेयदुपतिकेरे। गायेवेदमुनिनबहुतेरे॥ तिनकोगावतसुनतसदाहीं। लाजछोंड़िविचरैमहिमाहीं॥ पुनिनहिंराखैदूसरिआसा।भजैनिरंतररमानिवासा॥ ३९॥ यहिविधिव्रतधारैबड़भागा। नामलेतउमँगैअनुराग॥ करिभावनाकृष्णसँगकेरी। हेगोविंदगोहरावैटेरी॥ रोवैनाचैहँसैअरुगावै। उतकीदशाइतैदरशावै॥ विचरैजगउन्मत्तसमाना।रहैलोकवाहिरमतिमाना ४० अनिलअनलअपअवनिअकाशा।द्रुमनछत्रसुरनरदश...

दोहा—सरितससुद्रहुआदिसब, हरिकोरूपविचारि। करैप्रणामअनन्यह्वै, दोउपाणिपसारि॥ ४१॥

प्रथमभक्तिहरिकीहियहोवै। पुनिहरिकोअनुभवजनजोवै॥ फेरिविषयमहँहोतविरागा। ऐसीभक्तिरीतिबड़भागा॥ जैसेभोजनकरैजोकोई। क्षुधानिवारणप्रथमहिंहोई॥ आवततुष्टिफेरिमनमाँहीं। फेरिपुष्टिसबअंगनकाँहीं॥ ग्रासग्रासमहँकछुकछुलीने। जैसेहोतनरेशप्रवीने॥तिमिभक्तिहुअनुभवहिविरागे। कछुकछुयककालमहँजागे॥ यहिविधिनृपयदुपतिपदध्यावत।भक्तिविरक्तिहुअनुभवआवत।तबजानतयदुपतिकररूपा।तबपुनिपावतसुक्ख...

दोहा—भागवतनजोहोतहै, मैंक्रमदियोबताय। अबजोतुमपूँछहुनृपति, सोऊदेहुँसुनाय॥

[illegible] । पूँछिहुनृपतिजोरियुगपानी॥ ४२॥

राजोवाच ।

अबभागवतजननकेलक्षण । तिनकोधरमहुकहहुँविचक्षण ॥ तिनकीरीतिहुवैनसुभाऊ । मोसेतुमबरणहुमुनिराऊ ॥
निमिनरेशकीसुनिमृदुबानी । हरिजोगेश्वरकह्योविज्ञानी ॥ ४४ ॥

हरिरुवाच ।

सबभूतनमेंभगवतभाऊ । अपनेहिंमहँदेखहिंनृपराऊ ॥ लखैकृष्णमहँसबजगकाहीं । तेउत्तमभागवतकहाहीं ॥४५॥
यदुपतिचरणजासुअतिप्रेमा । संतनसोसनेहकरनेमा ॥ दीननपैराखैअतिदाया । हरिविमुखिनत्यागैनृपराया ॥
दोहा–सोमध्यमभागवतहै, यहजानहुमतिमान । अबप्राकृतभागवतको, सुनियेंकरौंबखान ॥ ४६ ॥
केवलहरिमूरतिमहँप्रीती । पूजाकरैवेदकीरीती ॥ हरिभक्तनगोविप्रनमाहीं । जाकोहैसनेहकछुनाहीं ॥
सोप्राकृतभागवतकहावै । क्रमक्रमसोउत्तमह्वैजावै ॥ ४७ ॥ लहिकैअर्थअनर्थनकाँहीं । गनैनजोदुखसुखमनमाँहीं ॥
हरिमायादेखैसंसारा । सोउत्तमभागवतउचारा ॥ ४८ ॥ इंद्रियदेहप्राणमनमतिके । जन्ममरणभयतृष्णाअतिके ॥
क्षुधातृषादिकसकलकलेशा । मोहैनहिंइनमाहँनरेशा॥राखैकृष्णसुरतिसबकाला । सोउत्तमभागवतभुवाला ॥४९॥
दोहा–कामकर्मअरुवासना, जेहिमनकबहुँनहोय । केवलकेसबप्रेमरत, कृष्णभक्तवरसोय ॥ ५० ॥
ामजन्मकर्मउत्तमते । उत्तमजातिऔरआश्रमते । होइनतनहिंतनकअभिमाना । सोजनहैभागवतप्रधाना॥५१॥
ातममेंअरुवित्तहुमाहीं । निजपरभेदजिन्हेंकछुनाहीं ॥ शांतरहैसबभूतसमाना । सोहैनृपभागवतप्रधाना ॥ ५२ ॥
भुवनविभवहुँपावनहेतू । क्षणचौथईजासुमतिसेतू ॥ चलैनहरिपदतेमतिजाकी । गिनतीश्रेष्ठभक्तमहँताकी ॥
ायदुपतिपदकोसुररोजे । पावैकबहुँनश्रमकरिखोजे ॥ सोहरिपदजाकीमतिलागी । कैसेतजैसंतबड़भागी ॥५३॥
दोहा–यदुपतिपदनखचंदकी, जोतिजगतिहियजासु । यहसंसारअसारकी, तापजातिनशितासु ॥
ामिशशिपूरणउगेनरेशा।रहतनदिनकरकरनकलेशा॥तिमिजबमिटीविषैहरिध्याये।सोफिरिनहिंलौटतलौटाये ५४
ोहरिचरणनेहकीडोरी । बाँधिलियोकरिकैबरजोरी ॥ जासुहृदयहरिकबहुँनत्यागै । जासुनामभयअघबहुभागै ॥
ृष्णप्रेमसरितापतिमाँहीं । रहतजासुमनमगनसदाहीं ॥ रसनारटनिकृष्णकहिवेकी । रीतिइकांतजासुरहिवेकी ॥
ोदीननदायाहगदेखै । परसुखदुखनिजसुखदुखलेखै ॥ तेहिंजानहुभागवतप्रधाना । तेहिसमानजगमेंनहिंआना ॥
दोहा–भागवतनकेमैंसकल, लक्षणदियोबखानि । औरसुननकीचाहजो, सोपूँछहुमतिखानि ॥ ५५ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

दोहा–निमिनरेशकरजोरिकै, संतचरणशिरनाय । अतिमंजुलबोल्योवचन, अतिअभिलाषदेखाय ॥

राजोवाच ।

परयदुनंदनकीयहमाया । विधिमहेशमोहनिमुनिराया॥सोमोहिंजाननकीहैआशा । मुनिवरताकोकरहुप्रकाशा॥१॥
कृष्णकथामृतवचनतिहारे । सुनिअघाउनहिंहोतहमारे ॥ मैंतापितभवरोगहिंभारी । हैऔषधिमुनिगिरातिहारी ॥
निमिनरेशकेसुनिअसबैना । बोल्योअंतरिक्षभरिचैना ॥ २ ॥

अंतरिक्ष उवाच ।

पंचभूततेभूतनकाँहीं । रच्योईशनृपपूरुबमाँहीं ॥ विषयभोगअरुमोक्षहुहेतू । जीवनकेजानहुमतिसेतू ॥ ३ ॥
निजविरचितप्रभुभूतनमाहीं । करिप्रवेशनृपबसतसदाहीं॥मनहुँरूपअरुइंद्रिहुरूपा। करतविभागजीवहितभूपा॥४॥
दोहा–इंद्रिनद्वाराजीवकहँ, विषयकरावतभोग । जियआपहितनकोसुनत, रहतहरपअरुसोग ॥ ५ ॥
विषयवासनाभरिबहुभानी।जगमेंकरतकर्मअभिमानी॥तिनतिनकरमनकेफलपावत।जगमहँभ्रमतशोकसुखछावत ६

यहिविधिभ्रमतकर्मगतिमाहीं । जननमरणछूटतकहुँनाहीं ॥ जबलगिमोक्षमोदनहिंलूटै । तबलगियहसंसारनछूटै ॥
प्रलयकालजबभूपतिआवै । कारणमहँकारजमिलिजावै ॥ ८ ॥ होयवर्षशतलौंनहिंवर्षा । [illegible]
तरणितापतेतीनिहुँलोका । होततपितपावतअतिशोका ९ [illegible]

दोहा—मारुतमहाप्रचंडतब, हननलगतमहिपाल । फैलित्रिलोकहिंजारती, शेषमुखानलज्वाल ॥ १०

पुनिशतवर्षप्रयंतभुवाला । सांवर्तकगतमेघकराला ॥ बरपिवितुंडशुंडसमधारा । बोरिदेतसिगरोसंसारा ॥ ११
सिगरेजीवसहितकरतारे । लीनहोतवसुदेवकुमारे ॥ जैसेईंधनजबजरिजातो । अनलमहानलमाहिंसमातो ॥
तैसहिजीवईशमिलिरहहीं । स्थूलछोंडिसूक्ष्मवपुगहहीं ॥ १२ [illegible]
पुहुमीहोतिसलिलमहँलीना । सलिलप्रवेशतेजमहँकीना ॥ १३ [illegible]

दोहा—अहंकारपुनितामसै, होतोलीनअकास ॥ १४ ॥ अहंकारपुनिसात्विकै, इंद्रिनसुरयुतवास ॥

भूपतिअहंकारपुनिदोऊ । महत्तत्त्वमेंलयभेसोऊ ॥ महत्तत्त्वकियेप्रकृतिप्रवेशा । प्रकृतिलीनभयजायपरेशा ॥
जगउतपतिपालनसंहरनी । यहहरिकीमायामैंबरनी ॥ यहत्रिगुणामायातुमजानो । कहहुऔरजोसोयबखानो ॥
पुनियोगेश्वरभूपनिहोरी । बोलेमंजुलअंजुलिजोरी ॥ १६ ॥

राजोवाच ।

यहअपारयदुपतिकीमाया । किमिजनसहजतरहिंमुनिराया ॥ सोउपायअबदेहुबताई । [illegible]

प्रबुद्ध उवाच ।

करिकैनरनारीसोंनेहू । मानतमोदविगतसंदेहू ॥

दोहा—दुखनाशनसुखमिलनको, करहिंकर्मनरनारि । पैतिनकोपरिणाममें, दुखहीलेहुविचारि ॥ १८ ॥

हैधनसदामहादुखदाई । ताहूपरदुर्लभनृपराई ॥ धनकेहेतमीचुहठिहोती । धनहितमतिहोतीनितकोती ॥
ग्रहसुतअरुदारहुपरिवारा । अरुवसुधापुरदेशभँडारा ॥ विभववाजिस्यंदनअरुहाथी । येहैंनहिंसबदिनकेसाथी ॥
असविचारिइनकीतजिप्रीती ॥ १९ ॥ ऐसहिजानहिस्वर्गहुरीती ॥ स्वर्गहुमहँभैइरपानिंदा । तातेतहुँकेदुखनिंदा ॥
जसभूपनकीदशादेखाई । तैसहिदेवनकीनृपराई ॥ २० ॥ असविचारिअपनेमनमाँहीं । लेनभक्तिउपदेशनकाँहीं ॥
जौनगुरूयदुपतिपदप्रेमी । शीतसुभावकरनजगक्षेमी ॥

दोहा—ताकेशरणहिंजायके ॥ २१ ॥ कपटछोंड़िमतिमान । सिखैभागवतधर्मको, जोचाहैकल्यान ॥

सबविधिकरैगुरूसेवकाई । गुरुकहँजानैश्रीयदुराई ॥ गुरुसेवनतेसुनहुभुवाला । होतप्रसन्नआशुनंदलाला ॥ २२ ॥
प्रथमकरैसाधुनकरसंगा । सबविपइनितेरहेअसंगा ॥ करैदयाहरिदीननमाहीं । निजसमानसोंनेहसदाहीं ॥
उत्तमहोयआपतेजोई । तासोंकहैनम्रतासोई ॥ २३ ॥ करैसुमतिसबकालअचारा । कायकलेशहुक्षमाअपारा ॥
वृथावचनमुखतेनहिंबोले । मनवचकर्मएकरसतोले ॥ ब्रह्मचर्यकरिवेदपढ़ैजन । कबहुँनहिंसाकरनकरैमन ॥ २४ ॥

दोहा—सबथलदेखैकृष्णको, दुखसुखगनैसमान । करैवासएकांतमहँ, तजैअवशिअभिमान ॥

पहिरैवल्कलवसनअदोषू । यथालाभराखैसंतोषू ॥ २५ ॥ श्रीभागवतशास्त्रमहँप्रीती । राखैतनमनवचनप्रतीती ॥
औरदेवऔरैग्रंथनकी । औरैमननऔरपंथनकी ॥ [illegible] पदप्रेमलोभाना ॥
प्राणायामकरैमनवशहित । जतैवचनमौनताधारि. [illegible] । यहिविधिनिजवशकरै [illegible]
बोलैहितकारीततिवानी । शमदमधरैसदामतिखानी २६ हरियशनामसुनैअरुगावै । यदुपतिचरणसरोजमें [illegible]
करैअखिलकारिकैहितकरमा । जीवजातजनतजैनधरमा ॥ २७ ॥

दोहा—दानयज्ञजपतपहुव्रत, सुतवितगृहजियदार । अरपैनंदकुमारको, औरवस्तुनिजप्यार ॥

[illegible] । तिनकोकरैअवशिसेवकाई ॥ दसैचराचरमहँभगवाने । मनुजनमेंविशेपिपहिचानै ॥

मनुजनतेपुनिसंतनमाहीं । लखैविशेषिकृष्णप्रभुकाहीं॥२९॥कहैपरस्परहरिगुणगाथा।जोअनाथकोकरनसनाथा
रावैसुमतिपरस्परप्रीती । विचरैधरैतोषसुनिरीती ॥ हरियशसुनतहोइआनंदा । परैनमतिमंदनकेफंदा ॥ ३० ॥
सुमिरतसुरतिकरावतमाहीं।अघनाशनहरिप्रगटसदाहीं॥होतभक्तिउपजैअनुरागा । तनपुलकावलिलहिबडभागा३१

दोहा–हरिकेसँगकोकरतहै, अरुभवचित्तलगाय । तहँजसदेखतअरुसुनत, सोयहितनदरशाय ॥

हरिवियोगमहँशोकहिरोवत,कवहुँहँसतहुलसतहरिजोवत कवहुँकहतकोमलकटुवानी,चलहुमिलहुनछलहुनिजजानी
कहुँनाचतगावतसुदभरई । निरखतयशउततसइतकरई॥ कहुँहरिकोहियमाहँलगाई । पायप्रमोदमोदह्वैजाई॥३२॥
असभागवतधर्मकीरीती । करैसुसतिकरिप्रीतिप्रतीती ॥ तातेपरमभक्तिहठिहोवै । कोटिजन्मकेपातकखोवै ॥
तरतसहजदुस्तरहरिमाया।यहिविधिमिलतकृष्णनिमिराया॥सुनिप्रबुद्धयोगेश्वरवैना।निमिनरेशबोल्योभरिचैना ३३

राजोवाच ।

दोहा–परब्रह्मपरमातमा, नारायणजेहिनाम । तासुरूपमोहिंभापिये, ब्रह्मज्ञानिसरनाम ॥

मिथिलाधिपकोलखिअनुरागा । भन्योपिप्पलायनबड़भागा ॥ ३४ ॥

पिप्पलायन उवाच ।

आपुअहेतहेतजगकेरो । त्रिविधकरतजगअसश्रुतिटेरो ॥ स्वप्नसुषुप्तिहुजागरमाहीं । अरुसमाधिमहँसोदरशाहीं ॥
इंद्रियदेहहृदयअरुप्राना । जेहिंसत्तातेपावतभाना॥निजनिजकरतसकलव्यापारा । सोनारायणगुणहुँउदारा ॥३५॥
गिराचक्षुबुद्धिहुमनप्राना।करहिंनजेहिंप्रवेशमतिमाना॥अनलकणनहिंअनलप्रकासै।तिमिअनीशनहिंईशहिभासै ॥
विधिनिषेधकरिवेदवखानै । तातपर्यकरिकरहिप्रमानै ॥ नेतिनेतितेऊमुनिगावै । जाकोकहिकाहिपारनपावै ॥३६॥

दोहा–सतरजतमगुणजाहिवश, महत्तत्वअहंकार । जीवहुजासुशरीरहै, सोयज्ञनभोक्तार ॥

अहैअचिंत्यशक्तिनृपजाकी । अहैअगमगतिजेहिमायाकी॥जडचेतनमहँव्यापकजोई । तेहितेपरसविलक्षणहोई ३७
जोनमरतजन्मतकोहुकाला । वढतघटतनहिंजोमहिपाला ॥ देहअवस्थाकोहैसाखी । सचतनवसतप्रेमअभिलाखी॥
शुद्धसत्वगुणज्ञानस्वरूपा । इंद्रिनकोचेतनकरभूपा॥३८॥स्वेदजउद्भिजअंडजपिंडज । इनकोचेतनकरतमेटिरुज॥
इंद्रिनसोवतजागेहुमाहीं । निर्विकारसोरहतसदाहीं ॥ जोसुषुप्तिपरमातममिलतो।जागेसोसुखकीसुधिकरतो ॥ ३९॥

दोहा–सोनारायणजानियें, यदुपतिअंबुजनाम । तिनमूरतिमंगलमई, नवनीरदसमश्याम ॥

करैतासुपदभक्तिमहाई । मिटैतबैमनकीमलिनाई ॥ आतमअरुपरमातमरूपा । जानिपरततबहींसुनुभूपा ॥
जैसअमलदीठिभेजवहीं।रविप्रकाशदीसतहैतबहीं ॥सुनतपिप्पलायनकीवानी । बोल्योनिमिनरेशविज्ञानी ॥ ४० ॥

राजोवाच ।

णहुंकर्मयोगमुनिराई।जेहिकरिअशुभकर्मनशिजाई॥भक्तियोगपावतहैप्रानी॥मिलतजाहिकरिशारंगपानी ॥ ४१ ॥
एकसमयममपितासमीपा।आयेसनकादिकमुनिदीपा॥यहप्रश्नतिनसोंहमकीन्ह्यों । केहिकारणतिनउतरनदीन्ह्यों ॥

दोहा–ताकोकारणकहहुमुनि, मैंपूंछौंशिरनाय । आविर्होत्रमुनीशतव, बोलेआनँदपाय ॥ ४२ ॥

आविर्होत्र उवाच ।

काम्यकर्मअरुकर्मअकामा । कर्मनिषिद्धसुनहुमतिधामा ॥ परतवेदहीतेयहजानी । कवहुँनलौकिकतेअनुमानी ॥
हरितेप्रगटचारिहूँवेदा । जाकोज्ञानिहुँलहतनभेदा॥सनकादिकनुपकोशुनिवाला॥उत्तरनहिंदीन्ह्योंतेहिकाला ॥४३॥
वेदकहतजोस्वर्गउपाई । करहुयज्ञकर्मनिसमुदाई ॥ तातपर्यनाकोयहनाहीं । यहअज्ञानिनमिथ्यवकाहीं ॥
जोपैहोतजिमिनीमिसखाये ।जेहिशिशुकहँपितुकहतभुलाये ॥ नीमस्वादुनहींनोदककैहैं । मुखकटुतानुरोगमिटिजैहैं ॥
ऐसहिस्वर्गभोगदर्शाई । केहहिंनशुभकर्मलगाई ॥

दोहा–करनलग्योशुभकर्मजब, हृदयशुद्धभोभूप । तबहरिपदमेंप्रीतिभै, ताकेमोक्षअनूप ॥ ४४ ॥

दोहा-तमगुणतेपुनिरुद्रभे, करनजगतसंहार । त्रिगुणमयोयहजगतको, जानहुँसृष्टिप्रकार ॥ ५ ॥
जोविधिविष्णुरुद्रकेद्वारा । करतसृष्टिपालनसंहारा ॥ आदिपुरुषनारायणसोई । जाकीगतिजानतनहिंकोई ॥ ६
दक्षसुतामूरतिजेहिंनामा । ऐसीजौनधर्मकीवामा ॥ नरनारायणऋषिअवतारा । लेतभयेप्रभुशांतउदारा
नारदादिकहँसुनहुँनरेशा । आतमज्ञानकियोउपदेशा ॥ वसतअवहुँवदरीवनमाँहीं । मुनिवरसेवितचरणसदाँहीं
तिनकोशककठिनतपदेखी । मोरधाममँलैहैअसलेखी ॥ मत्तमदनकहँतुरतवोलायो । वदरीवनकहँताहिपठायो
पायपाकशासनकरशासन । आयोनारायणतपनाशन ॥
दोहा-ऋतुवसंतलखिसकलवन, वाह्योसुरभिसमीर । लग्योगवाइनचावने, सुंदरनारिनभीर ॥
सुमनधनुषलैनिजशरमारयो।प्रभुप्रभावनहिंनेकुविचारयो॥७॥नरनारायणभयोनमोहू।नहिंकीन्ह्योतापरकछुकोहू ॥
तवमनसिजमनमाँहिडेरायो । देशापहिमोहिंचहतजरायो ॥ लागेकँपनमदनकेगाता । सूखगयोमुखकढतिनवाता॥
तवनारायणवोलेवानी । हेमनसिजहेतियछविखानी ॥ डरहुनकछुलीजैसतकारा । आश्रमकीजैसफलहमारा ॥
यहसिगरोवासवअपराधा । हँमजानेनिजज्ञानअगाधा ॥ यामेंकछुनहिंदोपतिहारा । गमनहुँअवअपनेआगारा ॥८॥
दोहा-अभैप्रदाताप्रभुजवै, कहेवचनअभिराम । तवलजायशिरनायकै, तिययुतवोल्योकाम ॥
तुम्हैंनअचरजयहअपहारी । तुवपदसेवतसुनितपधारी॥९॥तुवपदपंकजभजतगोविंद।।विघनकरतवहुसुरमतिमंदा॥
पैतेहिंविघनहोतकछुनाँहीं । नहिंशंकालागतिमनमाँहीं ॥ जेजनसुरनदेतमखभागा । सुरनहिंविघनकरैंजेहिंयागा ॥
तुमनिजकरजिनकेशिरमाँहीं।तेसुरशिरपगधरिकढिजाँहीं॥तिनकोहैकोरोकनहारो।जिनकेआपुसरिसरखवारो॥१०॥
जिनकोतुवपदभईनप्रीती । केवलकरहिंतपैकीरीती ॥ शीतउष्णअरुक्षुधापिपासा । रसनापवनशिश्नमनआसा ॥
दोहा-जीतिलेतयद्यपिइन्हें, करितपकठिनकलेश । पैहारतहठिक्रोधसों, ऐसीरीतिहमेश ॥
करतकठिनतपवसिवनमाँहीं।क्रोधविवशतमहोतवृथाहीं॥अगमउतरिसागरगोविंदा।वूडहिंगोपदमहँमतिमंदा॥११॥
अस्तुतिजवैकामअसकीनी । दरशायोनिजवहुतअधीनी ॥ तवनरनारायणमहिपाला । योगवलेप्रगटीवहुवाला ॥
चमकैचहुँदिशिकनकलतासी । भूपणवसनकांतिहैलासी ॥ नरनारायणकेपदसेवै । तिनकेनहिंजानैकोउभेवै॥१२॥
रतिपतिअरुरतिअरुरतिआली । देखिनारिमनुरमारसाली ॥ सुरभिपायतिनकेतनकेरी । मोहिंगइलागेंमनुचेरी ॥
दोहा-सुंदरतातिनकीनिरखि,मदनहुँगयोविमोहि । नैननिनिमिपनिवारिकै, रह्योठाढतहँजोहि ॥ १३ ॥
कामहिंजानिप्रणतभगवाना । विहँसतऐसोवचनवखाना ॥ इननारिनमेंतुमइकलेहू । जोपैतुम्हरोहोयसनेहू ॥
स्वर्गहुइनतेभूपितहोई । अवगमनहुँइततेसवकोई ॥ सुनिनिदेशनारायणकेरो । मनसिजमुदमनमानिघनेरो ॥
नारायणपदमेंधरिमाथे । लियोउर्वशीकोगहिहाथे ॥ सकलअप्सरनमेंवरजोई । चितवतिदेतमोदमनमोई ॥
करिउर्वशीकाहिनिजआगे।गमनतभयोकामसुखपागे॥१४।१५॥तुरतहिंगयोइंद्रदरवारा।करिप्रणामसवसुरनमँझारा
नारायणकोतपवलगायो । सोसुनिशक्रत्रासअतिपायो ॥
दोहा-चकितरह्योनहिंकछुकह्यो, करिविचारनिजकाज । नैननकोनीचेकियो, मनहिंमानिअतिलाज॥१६॥
पुनिहरिलियोहंसअवतारा । ज्ञानयोगजोकियोउचारा ॥ पुनिभेदत्तात्रयभगवाना । पुनिसनकादिकभयेसुजाना ॥
ऋपभदेवपुनिपिताहमारे । जोमंगलसवजगतपसारे ॥ येसवकृष्णकलाअवतारा । औरसुनहुँअवतारउदारा ॥
हरिलैहयग्रीवअवतारा । हनिमधुकैटभवेदउधारा ॥ प्रलयपयोनिधिधरिवपुमीना । महिमनुओपधिरक्षणकीना ॥
पुनिलियप्रभुवराहअवतारा। कियोडाढसोंधराउधारा॥१७॥दितिसुतहिरण्याक्षविकरारा । ताकोकियसंगरसंहारा॥
दोहा-फेरिकमठअवतारले, धरिमंदरनिजपीठि । मथनकरायोक्षीरनिधि, अमीप्रगटभोमीठ ॥
ग्राहग्रसितगजराजहिजानी।आयतुरतहरिअभैप्रदानी॥नक्रचक्रहनिवक्रविदारयो।गहिहाथीकोहाथउधारयो॥१८॥
एकसमयसुनुभूपउदारा । वालखिल्यमुनिसाठिहजारा ॥ रहेपढ़तकश्यपकेगेहू । गुरुचरणनकरिपरमसनेहू ॥
गुरुगुनिअनध्यायदिनअठयो । ईंधनआननकाननपठयो ॥ तहँगोखुरनभरोजललहेऊ । तेसवपरतपारनलहेऊ ॥

कर्मजोवेदकथितनहिंकरतो।अपनेमनकीरीतिजोधरतो ॥ जीत्योइंद्रिननहिंअज्ञानी । कियोअधर्मसदा खूंदतनहिंताकोसंसारा।जन्मतमरतसोबारहिंबारा ॥ ४६ ॥ वेदविहितकरिकर्मअकामें । ज्ञानविरागभक्तितेहिंहोई।गमनकरतयदुपतिपुरसोई॥कर्मनकोफलस्वर्गजोगायो।कर्मकरनमेंरुचिउपजायो ॥ ४ हृदयग्रंथद्रुतचहैजोछोरी।तौभूपतिअनुमतिअसमोरी ॥ वेदविहितअरुतंत्रविधाना।आदरयुतपूजैभगवाना ॥ ४

दोहा–गुरुशरणागतह्वैप्रथम, जोगुरुदेइबताय । तसपूजैयदुनाथको, जसमूरतिमनभाय ॥ ४८ ॥

मज्जनकरिहरिसन्मुखजाई । बैठेशुचिआसनेबिछाई ॥ करिप्राणायामैमतिधीरा । करहिंशुद्धमनसहितशरीरा पुनिगुरुमंत्रकरैतनन्यासा । पुनिपूजैश्रीरमानिवासा ॥४९॥ प्रतिमासहअथवाहियमाँहीं । यथाविभौपूजैहरिकँ मूलमंत्रपढिपूजनसाजू।सींचैसलिलशुद्धकेकाजू॥पुनिनिजतनमहिआसनसींचै।सत्रथलतेनिजमनकहँखींचै ॥ ५ पाद्यअर्घ्यआचमनहुँपात्रन।अरुअस्नानपात्रधरिशुचिमन ॥ मधिशुद्धोदकपात्रहिंराखै।पुनिअष्टोकध्यानकरा

दोहा–न्यासहृदादिकमूर्त्तिमें, करैमूलपढिमंत्र ॥ ५१ ॥ सांगसपार्षदकृष्णको, पूजैभक्तिस्वतंत्र ॥

प्रथमअर्घ्यपुनिपाद्यहुदीजै । पुनिआचमनहुँकीविधिकीजै ॥ शुद्धोदकअस्नानकरावै । शंखोदकतेपुनिन पोंछिसिंहासनमेंबैठावै । वसनचढायजनेउचढावै ॥ ५२ ॥ पुनिचंदनपुनिफूलचढाई । पुनिप्रभुकहँमालपहिराई प्रथमधूपपुनिदीपदेखावै । बहुप्रकारनैवेद्यलगावै ॥ फलदक्षिणाअदर्शदेखावै । प्रभुपरचामरचारुचलावै ॥ पाठकरैपुनिभागवतादिक । करैनिरांजनपुनिअहलादिक ॥

दोहा–अर्घ्यपाद्यआचमनदै, पुष्पांजलिमतिधाम । चारिप्रदक्षिणदैकरै, अरुसाष्टांगप्रणाम ॥ ५३ ॥

निजआतमपरमातमें, देखैपूजनकाल । हरिनिरमायलशीशधरि, मोदितबुद्धिविशाल ॥

फेरिविसर्जननाथको, करैसप्रेमअनूप । शालग्रामशिलानिमैं, हैनविसर्जनभूप ॥ ५४ ॥

यहिविधिपावकरविसलिल, अतिथिहृदैमहँजोय । हरिपूजैअनुरागसों, तासुआशुगतिहोय ॥ ५५

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्री राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

दोहा–निमिनरेशआनँदलह्यो, सुनिहरिपूजनरीति । बोल्योपुनिकरजोरिकै, योगिनसोंयुतप्रीति ॥

राजोवाच ।

लैस्वतंत्रयदुपतिऔतारा । करतचरितजेसदाउदारा ॥ तेमोसोंवरणहुँमुनिराई । सुनिबेकीलालसामहाई ॥ सुनिविदेहकेवचनसुहाये । द्रुमिलकहनलागेसुखछाये ॥ १ ॥

द्रुमिल उवाच ।

जोयदुपतिलीलागुणकाँहीं । गननचहैअपनेमुखमाँहीं ॥ ताहिकहतमतिमंदसुजाना । हरिचरितनकोहैनप्रमाना कोटिनजन्मबिताइजोदेई । धरणीकोरजकनगनिलेई ॥ पैगनिसकतनहरिगुणकाँहीं । यामेंनृपसंशयकछुनाहीं ॥ पंचतत्वरचिजबभगवाना । कियब्रह्मंडकेरनिरमाना ॥

दोहा–निजअंशहिंमेंतादिमें, करिपरवेशनरेश । पुरुषनामकहवावते, नारायणहिंहमेश ॥ २ ॥

जेहिंनारायणकेवपुमाहीं । निवसतत्रिभुवनभूपसदाहीं ॥ नारायणइंद्रिनतेभूपा । प्रगटहोहिंइंद्रीदशरूपा ॥ नरपतिनारायणकेज्ञाना । लहतमनुजज्ञानहुँविज्ञाना ॥ नारायणकेप्राणहुँपाई । लहतमनुजशक्तिनृपराई ॥ नारायणजगउत्पतिकरता।नारायणपालकसंहरता ॥३॥सृष्टिसमयमहँसुनुमहराजा । यहजगकेरचनकेकाजा नारायणनाभीतेपायो । रजगुणतेब्रह्माद्रुतजायो ॥ सतगुणतेपुनिपालनहेतू । प्रगटेविष्णुधर्मकरसेतू ॥

दोहा–तमगुणतेपुनिरुद्रभे, करनजगतसंहार । त्रिगुणमयोयहजगतको, जानहुँसृष्टिप्रकार ॥ ५ ॥
जोविधिविष्णुरुद्रकेद्वारा । करतसृष्टिपालनसंहारा ॥ आदिपुरुषनारायणसोई । जाकीगतिजानतनहिंकोई ॥ ६
दक्षसुतामूरतिजेहिंनामा । ऐसीजौनधर्मकीवामा ॥ नरनारायणऋषिअवतारा । लेतभयेप्रभुशांतउदारा
नारदादिकहँसुनहुँनरेशा । आतमज्ञानकियोउपदेशा ॥ वसतअबहुँबदरीवनमाँहीं । मुनिवरसेवितचरणसदाँहीं
तिनकोशककठिनतपदेखी । मोरधामलैहैअसलेखी ॥ मत्तमदनकहँतुरतबोलायो । बदरीवनकहँताहिपठायो
पायपाकशासनकरशासन । आयोनारायणतपनाशन ॥

दोहा–ऋतुवसंतलखिसकलवन, बाह्योसुरभिसमीर । लग्योगवाइनचावनै, सुंदरनारिनभीर ॥
सुमनधनुपलैनिजशरमारयो।प्रभुप्रभावनहिंनेकुविचारयो॥७॥नरनारायणभयोनमोहू।नहिंकीन्ह्योंतापरकछुकोहू ।
तबमनसिजमनमाँहिडेरायो । देशापहिमोहिंचहतजरायो ॥ लागेकँपनमदनकेगाता । सूखगयोमुखकढतिनबाता॥
तबनारायणबोलेबानी । हेमनसिजहेतियछविखानी ॥ डरहुनकछुलीजैसतकारा । आश्रमकीजैसफलहमारा ॥
यहसिगरोवासवअपराधा । हँमजानैंनिजज्ञानअगाधा॥ यामेंकछुनहिंदोषतिहारा । गमनहुँअबअपनेआगारा ॥८॥

दोहा–अभैप्रदाताप्रभुजबै, कहेवचनअभिराम । तबलजायशिरनायकै, तियुतबोल्योकाम ॥
तुम्हेंनअचरजयहअपहारी । तुवपदसेवतमुनितपधारी॥९॥तुवपदपंकजभजतगोविंद।विघनकरतबहुसुरमतिमंद॥
पैतेहिंविघनहोतकछुनाँहीं । नहिंशंकालागतिमनमाँहीं ॥ जेजनसुरनदेतमखभागा । सुरनहिंविघनकरैंजेहिंयागा ॥
तुमनिजकरजिनकेशिरमाँहीं।तेसुरशिरपगधरिकढिजाँहीं॥तिनकोहैकोरोकनहारो।जिनकेआपुसरिसरखवारो॥१०॥
जिनकोतुवपदभईनप्रीती । केवलकरहिंतपैकीरीती ॥ शीतउष्णअरुक्षुधापिपासा । रसनापवनशिश्नमनआसा ॥

दोहा–जीतिलेतयद्यपिइन्हें, करितपकठिनकलेश । पैहारतहठिक्रोधसों, ऐसीरीतिहमेश ॥
करतकठिनतपवसिवनमाँहीं।क्रोधविवशतमहोतवृथाहीं॥अगमउतरिसागरगोविंदा।बूडहिंगोपदमहँमतिमंदा॥११॥
अस्तुतिजबैकामअसकीनी । दरशायोनिजबहुतअधीनी ॥ तबनरनारायणमहिपाला । योगबलैप्रगटीबहुबाला ॥
चमकैंचहुँदिशिकनकलतासी । भूषणवसनकांतिहैलासी ॥ नरनारायणकेपदसेवैं । तिनकेनहिंजानैंकोउभेवैं॥१२॥
रतिपतिअरुरतिअरुरतिआली । देखिनारिमनुरमारसाली ॥ सुरभिपायतिनकेतनकेरी । मोहिंगईलागैमनुचेरी ॥

दोहा–सुंदरतातिनकीनिरखि,मदनहुँगयोविमोहि । नैननिनिमिषनिवारिकै, रह्योठाढतहँजोहि ॥ १३ ॥
कामहिंजानिप्रणतभगवाना । बिहँसतऐसोवचनबखाना ॥ इननारिनमेंतुमइकलेहू । जोपैतुम्हरोहोयसनेहू ॥
स्वर्गहुइनतेभूपितहोई । अबगमनहुँइततेसबकोई ॥ सुनिनिदेशनारायणकेरो । मनसिजमुदमनमानिघनेरो ॥
नारायणपदमेंधरिमाथे । लियेउर्वशीकोगहिहाथे ॥ सकलअप्सरनमेंवरजोई । चितवतिदेतमोदमनमोई ॥
करिउर्वशीकाहिनिजआगे।गमनतभयोकामसुखपागे॥१४।१५॥तुरतहिंगयोइंद्रदरबारा।करिप्रणामसबसुरनमँझारा
नारायणकोतपबलगायो । सोसुनिशक्रत्रासअतिपायो ॥

दोहा–चकितरह्योनहिंकछुकह्यो, करिविचारनिजकाज । नैननकोनीचेकियो, मनहिंमानिअतिलाज॥१६॥
पुनिहरिलियेहंसअवतारा । ज्ञानयोगजोकियोउचारा ॥ पुनिभेदत्तात्रयभगवाना । पुनिसनकादिकभयेसुजाना ॥
ऋषभदेवपुनिपिताहमारे । जोमंगलसबजगतपसारे ॥ येसबकृष्णकलाअवतारा । औरसुनहुँअवतारउदारा ॥
हरिलैहयग्रीवअवतारा । हनिमधुकैटभवेदउधारा ॥ प्रलयपयोनिधिधरिवपुमीना । महिमनुऔषधिरक्षणकीना ॥
पुनिलियप्रभुवराहअवतारा। कियोडाढसोंधराउधारा॥१७॥दितिसुतहिरण्याक्षविकरारा । ताकोकियसंगरसंहारा॥

दोहा–फेरिकमठअवतारलै, धरिमंदरनिजपीठि । मथनकरायोक्षीरनिधि, अमीप्रगटभोमीठ ॥
ग्राहग्रसितगजराजहिजानी।आयतुरतहरिअभैप्रदानी॥नक्रचक्रहनिवक्रविदारयो।गहिहाथीकोहाथउधारयो॥१८॥
एकसमयसुनुभूपउदारा । वालखिल्यमुनिसाठिहजारा ॥ रहेपढ़तकश्यपकेगेहू । गुरुचरणनकरिपरमसनेहू ॥
गुरुगुनिअनध्यायदिनअठयो । ईंधनआननकाननपठयो ॥ तहँगोखुरनभरेजलरहेऊ । तेसबपैरतपारनलहेऊ ॥

बूडनलगेबीचहींमाहीं । हँस्योइंद्रलखिकैतिनकाँहीं ॥ बालखिल्यतबअतिहिंखिजाई । सुमिरतभयेचरणयदुरा
आयतुरतहरितिनहिंउधारे । ईंधनलैतेभयनासिधारे ॥

दोहा–पुनिवृत्रासुरकोहन्यो, शचीकंतजेहिकाल । ताहिब्रह्महत्यालगी, लुक्योकंजकीनाल ॥

द्विजहत्याहरिआपछोडाई । इंद्रासनपरदियबैठाई ॥ महादुखीअसुरनकेमाथा । सुरवनितनलखिनाथअन
प्रभुप्रहलाददासनिजहेतू । मध्यसभामहँअसुरनिकेतू ॥ खंभविदारिकढेकरिशोरा । धरेनृसिंहरूपअतिघोरा ।
हन्योहिरणकश्यपबलवानै । देवनकोदियमोदमहानै ॥ १९ ॥ देवासुरसंगरमहराजा । श्रीपतिसुरनविजैकेका
करिकैदानवदैत्यविनाशा । जगरक्षणकियरमानिवासा ॥ पुनिलीन्ह्योंवामनअवतारा । गमनकियोबलियज्ञअग

दोहा–बलिसोंवसुधातीनिपग, माँगिसरूपबढाय । नापित्रिलोकअशोककिय, देवनदियोटिकाय ॥ २०

पुनिलियपरशुरामअवतारा । कियनिछत्रछितिइकइसवारा ॥ हयहयकुलवनपावकजोई । वसतमहेंद्राचलमहँसो
फेरिअवधनगरीअभिरामा । तहँभूपतिदशरथअसनामा ॥ तिनकेलैतभयेअवतारा । रामनामअसजगतउचा
तुवकुलसुताजानकीकाँहीं । भुजबलशिवधनुतोरिविवाहीं॥पितुनिदेशलहिवनपगुधारे । तहँखरआदिकराक्षस
हरचोसीयदशकंधरआई । तेहिंहितकीन्हींकपिनमिताई ॥ सेतुबाँधिपुनिसागरमाँहीं । हन्योसकुलदशकंधरकाँहि
आयेअवधनगरयदुनाथा । अवलोकविगावतजिनगाथा ॥

दोहा–कीरतिकोसलनाथकी, करतिलोकअघछार । गायगायजाकोसुकवि, कबहुँनपावतपार ॥ २१ ॥

हरनहेतभूपतिभूभारा । लैहैंहरियदुकुलअवतारा ॥ करिहैंव्रजमहँसुंदरलीला । गैहैंजासुसंतशुभशीला ॥
मथुराअरुद्वारावतिमाहीं । सुरदुर्लभकरिकरमणिकाहीं ॥ ह्वैपारथसारथिगिरिधारी । देहैंभूकरभारउतारी ॥
लगेकरनजबयज्ञमुरारी । तिनकोनहिंमुनिमखअधिकारी ॥ दैत्यदानवनमोहनहेतू । बौद्धहोंहिगेकृपानिकेतू ॥
पुनिजबकलिहोइअतिघोरा । प्रगटिहिपापधरणिचहुँओरा॥तबप्रभुलैकलकीअवतारा।करिहैंअघीनृपनसंहारा॥२२

दोहा–जन्मकर्मभगवंतके, हैंअनंतयशवंत । यहिविधिकछुवर्णनकियो, मैंतुमसोंमतिवंत ॥ २३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

दोहा–पुनिनवयोगेश्वरनसों, निमिनरेशकरजोरि । कह्योवचनशिरनायकै, बारहिंबारनिहोरि ॥

राजोवाच ।

हमुनिवरजेजनमतिमंदा । बहुधाभजतनयदुकुलचंदा ॥ तेकुमतीशठविपइनकेरी । होतिकौनगतिकहहुनिबेरी ।
सुनिविदेहकेवचनविनीते । चमसकहँनलागेअतिप्रीते ॥ १ ॥

चमस उवाच ।

ब्राह्मणभेहरिकेमुखतेरे । भयेबाहुतेक्षत्रिवनेरे ॥ ऊरुतेभेवैश्यअरुशुद्रा । भयेचरणतेभूपतिशूद्रा ॥
हरिअंगनतेचारिहुवरना । प्रगटेनिजनिजधर्महिकरना ॥ ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यहुशूद्रा । यदुपतिभजैंनसोइंछुद्रा ॥
चारिहुवरणचारिहैआश्रम । प्रगटकियोप्रभुऔरनेमयम ॥ २ ॥

दोहा–हरिअंगनतेआपनी, उतपतिजानिअजान । भजतनयदुकुलचंदको, सोखलतिनहिंसमान ॥

पितुहोरनिदरिऔररतिराचे । अहैंवरणसंकरतेसाँचे ॥ जेनभजैंहरिकृपानिधाना । करहिंअवशितेनरकपयाना ।
[illegible] । विमुखजोनयदुपतिपदहोई ॥ राजाराजधनीधनहेरी । रहतनकछुहरिविमुखनकेरी ॥ ३ ।
केश्रवणकृष्णगुणगाथा । परचोनहींकबहूँनरनाथा ॥ जिनकीरसनासोंहरिनामा । निकस्योभूपनएकौयाम ।

जेनकरीसंतनसेवकाई । वृथादियोतेजन्मगमाई ॥ जानतजेयदुपतिकहँनाहीं । तेनरसूकरकूकरआहीं ॥

दोहा–केहिविधितिनकोहोइगो, यहसंसारउधार । नारिशूद्रकेसरिसजे, छत्रिहुपुरुषगँवार ॥

कृष्णभक्तजेआपसमाना । तिनकोउचितपरतअसजाना ॥ मूढनपरकरिकृपामहाई । देहिकृष्णकीभक्तिसिखाई ॥
तौतिनकोसबविधिबनिजैहै । कालहिगालविहालनह्वैहै ॥४॥ क्षत्रीविप्रवेदअधिकारी । तैसहिवैश्यहुलेहुविचारी ॥
तिनकोउचितभजबगिरिधारी । जोचाहैंनिजलेवसुधारी॥तेशठकृष्णभजननहिंकरहीं । [illegible]
विप्रनवेदनकोअभिमाना । भजतनहींहरिकृपानिधाना ॥ अपनासगदूजोनहिंमानैं । क्रियाअचारअनेकनठानें ॥
तेशठघोरनर्कमहँजाहीं । सकैंनवेदरोंकितिनकाहीं ॥

दोहा–वेदपढ्योअरुहरिभज्यो, सकलपढ्नहैतौन । वेदपढ्योनहिंहरिभज्यो, अवशिजातयमभौन ॥

राजहिंहोतराजअभिमाना । मानतअपनेसमनहिंआना ॥ विषयकरतबीततदिनराती । तदपिनइंद्रियकबहुँअघाती ॥
सुधिनकरतकबहूँहरिकेरी । पायँनपरीराजकीबेरी ॥ सबहरिकोयहजानतनाहीं । कीन्हेंहियेगुमानवृथाहीं ॥
करतनिरादरसंतनकेरो । भूलेविभवविलासघनेरो ॥ तेनृपसहतघोरयमदंडा । रोंकिसकतनहिंराजअखंडा ॥
मरेसकलइतहींरहिजातो । रहतधर्मकर्महिंसोंनातो ॥ विभवविलासकृष्णकोजानी । जोभोगतसंतनसनमानी ॥

दोहा–यदुपतिपदमेंप्रीतिकरि, त्यागैसकलगुमान । जेहिंनविभवविपत्यापतो, करतननरकपयान ॥

वैश्यछोंड़िहरिपदसेवकाई । गेहनिरतादियजन्मबिताई ॥ देनलेनमहँनिशिदिनबीत्यो । अहंकारजतेकबहुँनरीत्यो ॥
निजधननिरखिभयोअभिमाना । कियोनसंतनकोसन्माना॥विभौनिरखिनिजबागतफूले।अतिप्रचंडयमदंडहिंभूले ॥
जन्मदियोहरिनिजसेवनहित । वेतिनकोनकबहुँचाहतचित॥ तेनरनरकनिकेतनमाहीं । नहिंजाहींतौकोपुनिजाहीं॥
भयोजन्मब्राह्मणकुलमाँहीं । करिव्रतबंधपढ़ैश्रुतिकाँहीं॥तिनहिंजोकोउहरिभक्तिसिखावत।तौतेवेदऋचामुखगावत॥
कहहिंकाहवैरागीआहीं । रामरामजोरटैंसदाहीं ॥ ५ ॥

दोहा–वेदपढ़ेआचारयुत, राखेशिरमहँवार । श्रीयदुपतिपदभजनको, कबहुँनभेसरतार ॥

गुनिकैकोउनिजजातिबड़ाई । दियोनसंतनपदशिरनाई ॥ करमेंमालालेतलजाहीं । संतचरणधोवतसकुचाहीं ॥
कबहुँजोअतिथिगयोदरवाजे । तौनहिंगनतगर्वरमिजाजे ॥ मानहिंभागलिख्योसोहोई । देख्योनहिंपरलोकाहिंकोई॥
कोहभरेनंगनमहँबैठे । अयशकोठरीमहँकोपैठे ॥ जेअसभापतरहतसदाहीं । तेनरअवशिनरकमहँजाहीं ॥
औरनदेतबहुतउपदेशू । आपनसुमिरतकबहुँरमेशू ॥ पढ़िविद्याघमंडमनमाँहीं । शठपंडितलखिसंतनकाँहीं ॥

दोहा–वादविवादविशेषिकै, करतविजयकेहेत । नहिंसेवततिनकेचरण, तेनरपापनिकेत ॥

करिकैकर्मस्वर्गहमजैहैं । काह्वैहैहरिनामनलैहैं ॥ ब्रह्मचर्यकरिकालवितावैं । कबहुँनकथासुननकोआवैं ॥
कहहिंलगतकथनीनहिंनीकी । करहिंसदाअपनेहीजीकी ॥ आनेकोअसधर्मसिखावैं । करहुकर्मतुमहूवसुजावैं ॥
जोकोउकृष्णकथानितबाँचे । तिनकोगुनहिंपखंडीसाँचे ॥ धर्मकर्मनितकोनहिंत्यागी । सुनेनकृष्णकथाअनुरागी ॥
तेसोंचेगदहाजगमाहीं । पढ़िवेदनक्रियधर्मवृथाहीं ॥ कियेअनेकनकरमनकाँहीं । पैअसकर्मकियोकोउनाहीं ॥
जामेंयहछूटैंसंसारा । ऐसेकर्मनकियेगमारा ॥

दोहा–कुमतिआपनेगर्ववश, औरनमानतछोट । हरिदासनसोंदीनसों, करतखोटाईखोट ॥

संतनसोंहठिकरहिंविवादा । उपजावहिंअतिउरहिंविषादा ॥ शास्त्रविषेजोताहिनआई । तौनिजविजयकहतगोहराई॥
कोउअसजगमेंहोइनरेशा । गर्वहिंभरिविद्यानहिंलेशा ॥ बातहिंकहतकुपितह्वैजाहीं । हारेहुहारगुनतहियनाहीं ॥
सम्हरतनहिंकोहुकालमिजाजा । गुनतबरोबररंकहुराजा ॥ दीनहिंधक्काद्वारदिवावैं । गणिकालखिसमीपबैठावैं ॥
देखितिलकधारीहरिदासै । करैंकुमतिताकोउपहासै ॥ संतनकेआसनकेनीचे । बैठहिंनहिंविद्यामदसींचे ॥

दोहा–कारागारपाहूँजेऊ, पऱ्योनकेनिहुँकाल । गर्वभरेपढ़शास्त्रको, चलहिंबुधनकीचाल ॥

काहूकोदककोडिहुदीन्हें । अपनेकोदानीगुनिलीन्हें ॥ देतएकभोकबहुँसवाई । लेखासमुझतदिवससिराई ॥

कबहूँकरैनसज्जनसंगा । राचेरमनिरूपरुचिरंगा ॥ संतदेखिमानतेभिखारी । निजकरनीनाहिंलेतविचारी ॥
जोकोउकरैतिन्हैंउपदेशा । तापैखीझतरहेंहमेशा ॥ संतनिकटगमनतसकुचाहीं । गणिकाघरजूतीनहुखाहीं ॥
दिनभरिपढ़ैंशास्त्रबहुभाँती । गणिकागृहमहँसोवतराती॥ जोकोउमारगमहँधरिलेहीं । अवनकह्योकहुँअसकहिदेह
दिनपंडितनिशिवामगुलामा । तऊगुनहिंनिजकहँमतिधामा॥ दैवयोगसाधनढिगमाहीं॥कोहुकेसंगकबहुँचलिजाहीं
भक्तिरीतिहरिकथानपूँछैं । बैठेरहैंमुरेरतमूछैं ॥ जेपढ़िशास्त्रनकियहरिप्रीती । करतविवादवृथावयवीती ॥

दोहा--कथासुननकेहेतजो, बैठनकबहूँजाहिं । चटरचटरबतरातकरि, शंकापदपदमाहिं ॥

जोनहिंशठकछुबोलनपावैं । तौजमुहाइसोइतहँजावैं ॥ श्वानकरतमूत्रहिमुखआई । कथाभयेकोउदेतजगाई ॥
बोलहिश्रोतारसिकसमाजू । सुधावृष्टिआछीभैआजू ॥ आपहुकहँनलग्योजबजाग्यो । हमकोतौनोंनखर
जैसीकपटीकुमतिसदाहीं । जीतहुमरेनरकतिनकाहीं॥कोउशठमुखमंजुलअसबोलै । हियकीमलिनगाठि
साधनसन्मुखरुखलहिमाषै । घरआयेसुधितासुनरापै ॥ कोऊकहेहमयज्ञकिहेहैं । द्विजनदक्षिणाबहुतदिहेहैं ॥
स्वर्गजायपैहैंसुखभारी । ह्वैहैंबहुअपसराविहारी ॥ शठयहनहिंजानतमनमाँहीं । जौनस्वर्गसोअहैइहाँहीं ॥
गणिकामुखचूमतनिशिबीती । छूटीनाहिंकालकीभीती ॥ इतेवर्षशतउतेहजारा । जीवनहैअसकरहुविचारा ॥

दोहा--अंतसमयदोऊथलै, छूटिजायगीदेह । अचलदेहह्वैहैतबै, जबह्वैहैहरिनेह ॥ ६ ॥

रजोगुणीकोउजनजगमाहीं । धावतधनकेहेतसदाहीं ॥ रहतरहतभूपतिकेनेरे । सचिवहुह्वैजातेबहुतेरे ॥
तबउनकेबाढ़तअभिमाना । नहिंजानतबहुहैभगवाना ॥ साधुनकोलखिनैनतरेरैं । नीचनजनबैठावहिनेरैं ॥
भ्रातननातननेउतिखवावैं । भोजनहितनहिंसाधुबोलावैं ॥ जोकोउभक्तिकरैहरिकेरी । ऐसीनिंदाकरहिंघनेरी ॥
यहतौसबघरकोधनफूँकै । करतसकलकारजमहँचूकै ॥ बडोपखंडीठगहैपूरो । मुखमृदुबैनहृदयजसछूरो ॥
चुगुलीकरैंभूपसोंताकी । आपहुखबरिलेहुनहिंथाकी ॥ निजनदेतनृपसोनदेवावैं । नृपहिंदियेकोपितह्वैजावैं ॥
जोनृपकबहुँसाधुसनमानै । तौद्वारपकहँबोलिबखानै ॥ नृपढिगसाधुजाननहिंपावैं । गयेसमीपमकरफैलावैं ॥

दोहा—करतद्रोहहठिसाधुसों, राखतपापिनिपीति । अपनेकोज्ञानीगुनत, करतनयमकीभीति ॥

जासोंकछुईरपाबढ़ावैं । पुरश्चरणमारणकरवावैं ॥ रहतविचारतमनमहँऐसे । सबकोबिगरिबनैममकैसे ॥
आपलेहिंधनप्रगटचोराई । साधुनदियेजायरिसिहाई ॥ भडुवाभाँडभमैयनकेरी । नृपसोंविनतीकरहिंघनेरी ॥
देतदेवावतनहिंसकुचाहीं । साधुनदेखिदुखितह्वैजाहीं ॥ असनहिंकहतकबहुँमुखबानी । साधुनदेहुकहाममवानी ।
राखिहिंपरनारिनसोंयारी । करवकुकर्मगुणबबड़वारी ॥ जाकीनीकनारिकहँदेखैं । तेहिपतिकहँधनदेतविशेखैं ॥
वरवशधुसतपरायेघरमें । मारिहुगयेनेकुनहिंसरमै ॥ संगतिकरैंगुलामनकेरी । कराहिनगरअधरातहिंफेरी ॥
करहिंचूतियाबडोचिकनपटातेललगाइपहिरिपटचटपट ॥७॥ आपुसमहँऐसोबतराहीं।लेहुमजाकरिअबजगमाहीं।

दोहा—वारिवधूकोराखिबो, ऐसकरबसबकाल । यहीसारसंसारमें, औरसबैजंजाल ॥

जोकोउकछुउपदेशहुभाषे । तापरनैनलालकरिमाषे ॥ नारिहिपूँछिकरैंसबकारज । मानतनाहिंकहेकोउआरज।
करतधर्महठकबहुँनकरहीं । पापकर्महठकरिअनुसरहीं ॥ साधुनहितनदुलीकहुकाला । फिरतनारिकेहेतबिहाल।
परैफंदजेकबहुँपातुरी । तिनकीभूलतिसबैचातुरी ॥ तजहिंनारिकुलकीतजिलाजू । बैठहिंभँडुवनमध्यसमाजू ॥
कुलकलंककोनेकुनडरहीं । पातुरिहेतपापबहुकरहीं ॥ लखिसंतनकोहँसहिंठठाई । कहहिंलखहुइनकीबौराई ॥
फिरहिंराहमेंसानजनावत । गजलदोहरावेतसुनावत ॥ होतनाचकहुँसुनेजोकाना । तौसबतजितहँकरहिंपयान।
आदरकरैयदपिनहिंकोई । तदपिजायबैठहिंसुखमोई ॥ जूतीयदपिसैकरनलागैं । तदपिनतहँतेकैसेहुभागैं ॥

दोहा—यहिमेंरजपूतीसकल, मजबूतीदरशाय।पुनिपुनिजूतीखातहैं, करतूतीकहवाय ॥

तमशठकोपितुरहतसदाहीं । जरतबरतबोलतसबपाहीं ॥ कारजबिनकारजमहिपाला । रहैनाकमेंकोपकराल

साधारणहिउठतअरुबैठत । श्वासलेतअहिसमअतिऐंठत ॥ ऊर्ध्वपुंड्रलखिवैष्णवकेरो । पापीकरहिंकोपघनेरो ॥
डारहिंकुमतिपुछाइधोवाई । लेतनरककीराहबनाई ॥ देतदानकरिआदरनाहीं । तानदानहैजातवृथाहीं ॥
संतनकोकटुमलियाकहहीं।तिनकोकरनअनादरचहहीं॥मातुपितागुरुकीकटुबानी।सहतकबहुँनहिंअतिअभिमानी॥
जोगणिकागृतिहुभरिमारे । घरतेगारीदेतनिकारे ॥ तापुनिपुनिताकोशिरनामे । पुनिपुनितासुधामकोधामे ॥
देखतलगहिंबडेरजपूते । हंसासेकुलकेरकपूते ॥ बदहिंवीरतानारिनमाहीं । कामपरेतबअवशिपराहीं ॥

दोहा–कह्योमानिनिजनारिको, जननिजनकगुरुकाहिं । देतनिकारिनिकेततें, कहहिंकामअबनाहिं ॥

राहचलतसबसोंहठिलरहीं । कोहुसोंसकसीकरतनडरहीं ॥ भूपतिकोशासननहिंमानै । थोरेधनमदफिरतभुलानै ॥
कछुछोरखाविप्रनकोभाषें । दीननपेविशेषपतमाषें ॥ अपनोलखिकेमोटशरीरा । कोहुकोनहिंसमुझहिंकछुवीरा ॥
बोलहिंवचनकृपाणउठाई । कोहुसोंकरहिंनकबहुँमिताई ॥ कोहुकोलखिथोरहुअपराधा । लूटिलेतसरबसदेबाधा ॥
जाहिकबहुँजोनृपदरबारें । बारबारनिजअंगसुधारें ॥ लहटहलजबभूपतिकेरी । तबतेंहिंनिंदाकरहिंघनेरी ॥
सबसोंअवशिकरहिंकुन्याऊ । मानहिंनहिंभूपतिकृतन्याऊ ॥ सुतानारिमारहिंनिजहाथे । फोरहिंभूपद्वारनिजमाथे ॥
नहिंगरीबकीसुनतगरीबी । मानतअपनेकोचिरजीवी ॥ करहिंनक्षमाछोटअपराधा । करतदेवपरकोपअगाधा ॥

दोहा–घरलावहिंविपदेतहैं, लूटिलेतहैगाउँ । हरिविमुखीअसजननको, अहैनारकीनाउँ ॥

अबनृपसुनहुपखंडिनकाहीं । जीवनजिनकोअहैवृथाहीं ॥ ऊर्ध्वपुंड्रदेललितललाटा । बागहिंपुरमहँघाटनबाटा ॥
मालातीनिचारिगलमाहीं । राखेबारशीशचहुँघाहीं ॥ घरघरबोलहिंसीतारामा । कहतनहमकोहैकछुकामा ॥
नजरबचायगृहीजनकेरी । चोरीकरहिंचटकबहुतेरी ॥ पुरकेबाहिरबैठहिंजाई । रातिघातदिनध्यानलगाई ॥
कहहिंरसायनहमहुबनावें । कछुककियाताकीदरशावें ॥ देयहिभाँतिजननविश्वासा । लैधनबहुतराखिनिजपासा ॥
भागेंरातिनकोउजननजाना । होयजायदशकोसविहाना ॥ कोहुसोंकहैंपुत्रहमदेहीं । दशहजारखरचीहमलेहीं ॥
लहिबहुधनविप्रनसोंराजा । वरणकरावतसहितसमाजा ॥ जबनभयोकारजकछुकोई । तबभाषतआगेसुतहोई ॥

दोहा–अथवाविघनबतायकछु, नृपनलगावतखोरि । यहिविधिबहुभरमाइकै, ठानहिंकर्मबहोरि ॥

वेषबनायेपंडितकेरो । करतरहैंअपकर्मघनेरो ॥ हरिदासनकोअतिलघुमानै । विद्याकोघमंडअतिठानै ॥
धर्मकर्मसबपेटहिंहेतू । करतनकछुपरलोकहुनेतू ॥ छोटछोटसबसुतालेवाई । मँगवावतधनखानामिटाई ॥
नेजपरिवारहिंकेउपकारी । झूँठहिंबनेधर्मव्रतधारी ॥ रहहिंएकादशिनिरजलकोई । सरिमहँबूड़िपियतजलसोई ॥
रहिव्रतदिवसखानकहँनाटैं । जननिछिपाइखाइनिशिगाटैं ॥ चौहटमहँपूजाविस्तारैं । राहचलतसबलोकनिहारैं ॥
संध्याकरहिंपनिघटमाहीं । बैठेनिरखहिंनारिनकाहीं ॥ दानाध्यक्षहोतनृपकेरे । आधेलेहिंदानईतेरे ॥
सभाजायभाषतबहुधर्मा । घरमेंआयकरतअपकर्मा ॥ नातनभ्रातनअतिथिबनावैं । भूपतिसोंपूजनकरवावैं ॥

दोहा–युवतीनारिनकोकरहिं, चेलीबहुतमहंत । ऐसेपाखंडीबहुत, नरकनिवासबसंत ॥

अबअभिमानिनकोमैंगाऊँ । पूरेअघीसंतहैनाऊँ ॥ नाममहंतकर्मकछुनाहीं । लोभकरतसबजन्मसिराहीं ॥
नहिंसंतनऊँचबैठावैं । नहिंसंतनकेपदशिरनावैं ॥ गुणहिंहोतिआपनीछोटाई । जोरतघरमेंधनसमुदाई ॥
लेनदेनसबजनसोंराखत । संतहिसबजीवनपरमाखत ॥ जगमेंकहवावतवैरागी । हैंकौड़ीलौड़ीअनुरागी ॥
लरतमरतधनभूमिहिहेतू । हैनकछुकपरलोकहिंचेतू ॥ जितनोमनधनमाहिंलगावैं । तितनोहरिपूजननहिंभावैं ॥
नृपसोंकोउनअधिकअभिमानी।जेनगुनतकबहूँनिजहानी ॥ आदरकरतसंतकहँसकुचैं।बाँधहिंपीठिअधर्महिंबकुचैं ॥
करहिंनविप्रसंतपरनामा । बैठहितिननहिंनीचेठामा ॥ सुनैनदीनद्विजनकीबानी । कबहुँभजैनहिंशारँगपानी ॥

दोहा–जौनसुहासितआपनी, बारबारबतराय ॥ बुद्धिमानताकोगुनैं, लेतनिकटबैठाय ॥

जौनयथारथवचनउचारैं । ताकोटेढ़ीनजरनिहारैं ॥ बारिचलियनकेमुखिमाहीं । ...

कोउशठब्राह्मणनेउतिबोलावैं । द्विजआयोभागततजिधावैं ॥ देंदेताहिपापिकहँशापा । बहुरहिविप्रपायसंतापा ॥
कोउशठकरहिंयज्ञअतिभारी।सुनिसुनिधावहिंबहुतभिखारी ॥भूपतिसोंजाचनबहुकैकै । दशपंद्रहिहजारधनलैकै
अपनेघरगाडहिंधनभूरी । अन्नकाटिकरतेमखपूरी ॥ बरुवाकाजछठीअरुबरहौं । मृतककियाकरमहुँदिनतेरहौं
झूँठहिंनृपहिंसुनाइसुनाई । माँगिलेतधनकरिठगहाई ॥ वेदइलाजहेतधनलेतो । अमराहरपवाइतेहिंदेतो ॥
निबलग्रहनजोतिपीदेखाई । लेतधनीसोंवरनकराई ॥ विप्रनसोंआधौवदिलेहीं । कोउशठकबहूँकछूनदेहीं ॥

दोहा—थोरेकारजकेलिये, लाखनधनलगवाय । लूटिलेतयजमानको, काजबनैकिनसाय ॥

मारिमारिजीवनचंडाला । बेंचतरहैंमाससबकाला ॥ यहीजीविकालेतबनाई । जातनरकयुतकुलसमुदाई ॥
छागमनाइदेविग्रहजाई । कहैंपुत्रदेलेबलिमाई ॥ असकहिछागमारिग्रहल्यावैं । नेउतकुटुंबनखायखवावैं ॥
भगवतधर्मनजानहिंपापी । रहतउभयलोकनसंतापी ॥ जपिकैसाबरमंत्रनकाँहीं । मुरदाजागिमसाननमाँहीं ॥
लोगनकोअजमतदरशावैं । बैठिसभाफलफूलमँगावैं ॥ तिनकोमरणकालजबआवै । भूतअवशिमुखमेंमलनावै ॥
कहवावैकोउपुरुषअघोरी । तिनकीसबशठतेमतिभोरी ॥ जीतहिंसूकरसाबरखाते । शेरनरुधिरपानकरिजाते ॥
मूत्रपियेंमलअंगलगावैं । जीतहिंनरकभोगसोपावैं ॥ उदरनिमित्तकरहिंबहुवेषा । हैपरलोकमृपातेहिलेखा ॥

दोहा—मीठमीठभोजनहितै, परमहंसह्वैजाहिं । घरघरनंगेमागते, दूधसोहारीखाहिं ॥

धनमतवारनकीसबसुनिये । पूरेहरिद्रोहीतिनगुनिये ॥ जसजसतिन्हैंमिलतधनजाँही । तसतसलैगाड़तघरमाहीं ॥
संतनकेविप्रनकेहेतू । कौड़िहुखरचनकरहिंननेतू ॥ धनकेअहंकारकरिघोरा । चितवहिंनहिंसाधुनकीओरा ॥
अपनेतेसाधुनलघुमानैं । तिनकेसन्मुखगर्ववखानैं ॥ मुँदरीकंठाकड़ेलगाई । वातकरैंतिनकोचमकाई ॥
साधुनदेखिदेतहठिगारी । देहिद्वारतेनंगिनटारी ॥ लूटिलेइनृपचोरचोरावें । अथवाधनखराबह्वैजावैं ॥
पैनदेनसंतनकेनामा । तिनकोबनोनरकमेंधामा ॥ मरेहोतहठिभूतभुजंगा । बैठेरहैंधनहिंकेसंगा ॥
लाखनकोधनहैघरमाँहीं । कौड़ीबाँटतविप्रनकाँहीं ॥ खोटहिरुपियाकथाचढ़ावैं । ताहूमेंपाछेपछितावैं ॥

दोहा—आपखातव्यंजनविविध, प्रभुहिंनिवेदतखाँड । साधुनदेखेजरमरत, ढिगबैठावतभाँड ॥

वसुनुईश्वजेमतवारनकी । जासुदशाहैकलवारनकी ॥ वसनपहिरिकैआछेआछे । आगेचलतनिहारतपाछे ॥
गिहैधूरिअंगअसलेखी । वरकावहिंसाधुनकहँदेखी ॥ कोउचढ़ितुरँगमाँहिझमकावैं । नगरडगरदीननकचरावैं ॥
कोउचढ़िमत्तमतंगनमाहीं । आगेलखिजनरोकतनाहीं ॥ कोहुकेसँगमेंबहुसरदारा । आसाअरुसोटाबरदारा ॥
ककफरकतेबोलहिंआगे । बड़ेजलूसजेबकेजागे ॥ जोकेहुँसंतनविप्रनताकें । मानततुच्छमहामदछाकें ॥
सुनैनदीननकेरपुकारा । भरेआपनेगर्वगँवारा ॥ गरबीभूपभौनमहँपौढी । सातआठलगवावतड्योढी ॥
करैंनसाधुसमीपपयानें । प्रभुतेअधिकआपकहँमानें ॥ कहहिंवचनअसपापकुसंगति । करैंनहमनंगनकीसंगति ॥

दोहा—भूलिहुकेजोसंतकहुँ, आपभवनमेजायँ । तौआसनतेउठतनहिं, देतभूमिबैठायँ ॥

जोमानैनिजजातिबड़ाई । ताकीदशादेहुँसबगाई ॥ परमाभेदशपाँचकुमारा । औरहुभईपाँचदशवारा ॥
दिनबीततितिनकोसनमानत । साधुचरणसेवननाहिंठानत ॥ साधुनदेखिकहैंअसबानी । भक्तिआपकीहमरीजानी ॥
असकहिपरतेदेतनिकारी । संतवैरमानतबड़वारी ॥ राजहिंदेतासिखापनजाई । नंगनसंगहोतिहलुकाई ॥
तुम्हरीतौहैबड़ीबड़ाई । करहुएकारजचितलाई ॥ लैपत्रापंडितकेसंगा । काहेकरहुकाजसबभंगा ॥
पुनिआपुसमेंअसबतराहीं । इनतेबनिहैकबहूँनाहीं ॥ राहचलनकहँदेतसिखापन । साधुनकोमान्योनहिंआपन ॥
जोकोउकहेभजेहरिकाहीं । तौतापैअतिहौंअनखाहीं ॥ तजिहैंनहिंकुलकीमरयादा । जोचाहैसोहोयविपादा ॥

दोहा—जौनबड़ापनहेतशठ, निदरतसंतनतात । सोगणिकाकेगेहमें, जूतिनलागिनसात ॥

उपजोकुमतिजोसुंदररूपा । सोहठिगिरतगर्वकेकूपा ॥ लैआरसालखतनिजआनन । निजसमानमानतहैआनन ॥

अँतरेरोजवारबनवावत । दोऊजूनहितैलगावत ॥ स्याहीसुरखीदेहिलिलारे । डाढ़ीमूछैंराखतकारे ॥
लोटहिंमहिमहँधूरिलगावैं । टेढ़ीअलककपोलबनावैं ॥ साधुनकोतनदेखितनाहीं । धोखेहुकरतदंडवतनाहीं ॥
करतव्रतनगरमीह्वैजावै । गंगहिलतसरदीह्वैजावै ॥ कथासुनतमेंदेहँपिराती । पूजाकरतहिआलसआती ॥
ऐसेकुमतिरूपमतवारे । जाहिनरकमहँताजनमारे ॥ पालनदेहजतनकरिजोई । मरघटजरतचितामहँसोई ॥
कतावनाइछैलकहवाई । जाहिपातुरीकेघरधाई ॥ तहँजोव्यसनीदूसरआयो । तेहितनकोजूतनपिटवायो ॥

दोहा–खोइगईभलमानसी, ताकीसुरतिबिसारि । पुनिजसकेतसवागते, करैंबड़ेनसोंरारि ॥

अबसुनुविद्याअंधनकाँहीं । तिनकोजातगर्वकहिनाँहीं ॥ कोऊपढ़ैबहुतव्याकरणा । निशिदिनरहतविचारतवरण
वादविवादहिंकरतकरावत । कृष्णभजनविनकालबितावत॥ साधुनसोंबोलतबहुफाँकी । करतबड़ाईनिजविद्य
कबहुँनतिनकेउपजतप्रेमा । वकतबकतदुरगंधमुहेमा ॥ न्यायशास्त्रकोऊपढ़िलेहीं । जनमबितायताहिमहँदेहीं
करतरहतसबपरअनुमाना । कबहुँनध्यावतकृपानिधाना ॥ पढतन्यायअरुकरतविचारा । वैकलसेह्वैजायँअपारा
कबहुँनकरैंविष्णुपदप्रीती।यहिविधिजातिउमिरिसबबीती॥मरतहुँनहिंहरिकीसुधिआवै।न्यायशास्त्रपाँतीमुखगावै
कोउवेदांतनपढ़ैविशाला । नहिंछाँडतघरकरजंजाला ॥ सबथलपूरणब्रह्महिंभाषैं । करतविवादविशेषहिंमाषैं ॥

दोहा–तिनकीजडमतिहोतहै, उपजतकबहुँनप्रेम । कृष्णकथाकेसुननको, करतनकबहूँनेम ॥

सुनिहरिकथानहोतहुलासू । कबहुँनआवतआँखिनआँसू ॥ पढ़तभागवतहूरामायण । तेकैसेहैंकृष्णपरायण ॥
राखहिंअतिविज्ञानअभिमाना । करहिंनसंतनकरसनमाना॥ विनाप्रेमनहिंमिलहिंमुरारी।विनसंतनपदरजशिरधार
कोउमीमांसाशास्त्रहिंपढहीं । कर्मप्रधानमानमनमढहीं॥ कर्महिंकरतवितावतकाला । कबहुँनध्यावतकृष्णकृपाल
करतरहतनितकर्मअभागा । कबहुँनउपजतहरिअनुरागा॥पढ़िपढ़ियोगशास्त्रकहँयोगी।विनहरिप्रेमहोतदुखभोगी
कायकलेशकरहिंबहुतेरे । तासुभरेअभिमानघनेरे ॥ कृष्णकथाकीनिंदाकरहीं । तिनकीगतिनहिंकबहुंसुधरहीं
ज्योतिषशास्त्रपढ़ैजनकोई । तामेंदेतजन्मसबखोई ॥ करहिंनसंतनदेखिप्रणामा । अपनेगणितकेरअभिमाना ॥

दोहा–वेदशास्त्रकोऊपढे, भरेतासुअभिमान । सनमानतनहिंसंतको, तिनकोनरकनिदान ॥

कोईदेतअहैबहुदाना । ताकेभरेमहाअभिमाना ॥ देतदेतबरुसबदैडारैं । हरिअर्पणनहिंकबहुँउचारैं ॥
मनमेंकरिकामनाअनेकै । दानदेतयद्यपिसाविवेकै ॥ पैहरिअर्पणकरतजोनाहीं । तेलहिकालवृथाह्वैजाहीं ॥
दानगुमानहिंभरेअपारा । करहिंनहरिदासनसत्कारा ॥ करहिंनहरिपदमहँविश्वासा । जबलगिबनीरहततनश्वासा
चारिचूतियातिनहिंसराहैं । तुमसमकोदानीजगमाहैं ॥ ऐसेवैनसुनतअतिफूलैं । अपनेसमपुनिकाहुनतूलैं ॥
तीर्थनजायकरतबहुदानै । तहाँनकछुसंतनसनमानै ॥ रहतविचारतअसमनमाहीं । हरिकीभक्तिकिहेकछुनाहीं
दानकिहेजगमेंयशहोई । परलोकहुपैहैपुनिसोई ॥ कछुनहिंमानतअधिकदानते । रहतअंधशठयहीगुमानते ॥

दोहा–सबसोंभाषतबैनअस, हमकीन्ह्योंअसदान । कृष्णभक्तसिखवतजोकोउ, ताहिगुनतअज्ञान ॥

अबअंधनकीसुनोंकहानी । हैंजगमहँअतिशयअज्ञानी ॥ बालपनेतेमहिमहँलोटैं । सहतपहलमाननकीचोटैं ॥
लैजगमुद्गरभाजतरहहीं । हरिपदप्रीतिकबहुँनहिंचहहीं ॥ धूरिलगायमरोरतबाँहैं । मगमहँचलतनिहारतछाँहैं ॥
राहचलतदीननधकिआमैं । सबसोंअपनोजोरजनामैं ॥ कहतकबहुँनहिंनरकासिधैहैं । यमकोधक्कादैकटिजैहैं
जानतनहिंयहमहागँवारा । हमरेहिहेतबनोयमद्वारा ॥ मोटदेहलखिश्वानबनावैं । कबहुँनसंतनकोशिरनावैं ॥
कुस्तीलरिहारजोपावैं । जियतहिमृतकसरिसह्वैजावैं ॥ छोडहिंसोनहिंकबहुँकुचालू । ऐंठतचलहिंगहेअसिढाल
मेंषहुसरिसअहैबलनाहीं । रेलनचहतमतंगनकाहीं ॥ यहिविधिदेतेउमिरिबिताई । भजतनहींकबहूँयदुराई ॥

दोहा–यदुपतिकेपदभजनके, लायकमनुजशरीर । तामेंधूरिलगायके, वृथासहतगमपीर ॥

कुमतिकरिकुत्सितकर्मा । छोडहिंसुखप्रदभगवतधर्मा॥कोउशठबाजबजावनसीखें। यहउद्यमकरिमाँगनभीखें
निजातबजाई । गणिकागेहबजावतजाई ॥ चारिवियोगसराहतजबहीं । धन्यगुनतअपनेकरतबहीं

ोउशठगाइगाइबहुरागा । वृथाबितावतजन्मविभागा ॥ जिनमेंहरियशनाहिंरसाला । ऐसेटप्पाधुरपदख्याला ॥
ावँहिंलेहिंअनेकनताना । फोरतमनहुँसुनैयनकाना ॥ तुलसीसूरऔरजयदेवा । औरहुकरीजेहरिपदसेवा ॥
ानकेविरचितहरिपदसुंदर । रसिकनश्रवणसदाअतिसुखभर ॥तिनकोकबहुँनगावहिंमूढा।यद्यपिह्वैजातेअतिबूढा॥
रिपदगावतमेंसकुचाहीं । गुणहिंतुच्छअपनेमनमाँहीं ॥ उल्लूचारिवाहवहदेहीं । तेअपनेकोधनिगुनिलेहीं ॥

दोहा—हरिमंदिरमेंकबहुँनहिं, गावतहैंशठजाय । चारिपातुरीबीचमें, गावैंसानबनाय ॥

ाहरियशगावतनहिंगायक । तेजगमेंगरधभकेलायक ॥ गावतसुनतविष्णुपदकाँहीं । कछुअनुरागहोतहियनाँहीं ॥
पपाणतेहृदयकठोरा । तेयमदंडलहतशठघोरा ॥ हरिपदसुननसदाजेचहहीं । तिनकोकनरसियाशठकहहीं ॥
ोउआल्हागावतेगँवारा । सुकवितिन्हेंअसवचनउचारा ॥ आल्हाबड़ेगँवारनगावा । चारिगँवारनबैठिसुनावा ॥
सहुसुनिनहिंकुमतिलजाहीं । आल्हासुनिबेपुनिपुनिजाहीं॥कोउभरथरीमूढजनगावैं । चारिचूतियासुनिसुखपावैं॥
ोउविरहाकोउदादरिफागू । गावहिंमूढसहितअनुरागू॥करहिंकृष्णदासनपरकोपा।गुनहिंननिजशठसरवसलोपा॥
ोउशठनाचनसिखेंअनेकन । खोवतदुर्लभवृथामनुजतन॥ औरनकेढिगनचेंभलाई । हरिसन्मुखमहँनचतलजाई ॥

दोहा—नचिबोऔरबजाइबो, अरुगाइबोसदाहिं । हरिसन्मुखसबविधिसफल, हरिकेविमुखवृथाहिं ॥

ोउजनपढ़हिंग्रंथबहुभाषा।करहिंग्रंथविचरनअभिलाषा॥पैदुरमतिहरियशनहिंगावैं।नहिंहरिसुयशसुनतसुखपावैं॥
ारिनकेअँगवरननकरहीं । नारिकथासुनिसुनिसुखभरहीं ॥ सूरदासअरुतुलसीदासा । बाल्मीकब्रह्माअरुव्यासा ॥
नकेविरचितग्रंथनमाहीं । दोषदेतनहिंकुमतिलजाहीं ॥ अपनोनामधरतशृंगारी । साधुनसोंठानतहठिरारी ॥
शठघोरनरकमहँजाई । यमजातनासहतदुखदाई ॥ कोउआरबीफारसीपढहीं । कोउअँगरेजीपढ़िमुदभरहीं ॥
ेतयहीमहँजन्मबिताई । भजतनहींकबहूँयदुराई ॥ मुनसीअमलाऔरउकीला । कहवावैंतनलेशनशीला ॥
ृपाबनाइरचेंबहुजाला । लेतअकोररहैंसबकाला ॥ छोंड़िसबैहिंदुनकीरीती । म्लेच्छधर्ममहँकरहिंप्रतीती ॥
तिनकोजानहुँनरकनिकेतू । समुझायहुपरहोतनचेतू ॥

दोहा—यहिविधिकलिकेकुमतिबहु, करतबहुतअपकार । तिनकोकहँलोंमेंकरौं, अपनेवदनउचार ॥ ८ ॥ ९ ॥

सबप्राणिनउरबसतसदाहीं । जिमिअकाशहैसबथलमाहीं ॥हैंयदुपतिसबकेअतिप्यारे । जगतनियंताजगरखवारे ॥
जिनकोवेदविविधविधिगावें । पैमहिमाकोउपारनपावें ॥ तेयदुपतिकीकथासुहावनि।आनँदउपजावनिअघलावनि॥
सोनसुनहिंशठकौनहुँकाला।पेररहतजगकेजंजाला ॥ खेलिखेलिबहुभाँतिशिकारा । खलआमिषकरकरहिंअहारा ॥
देखिदेखिसुंदरपरनारी । मिलननेतबाँधतव्यभिचारी ॥ हाटनबाटनघाटनमाहीं । तररिबनाइतियनपछिताहीं ॥
दिनौरातियहिभाँतिबितावें।नहिंपरलोकसुरतिमतिल्यावें ॥ कोकग्रंथपढ़िपढ़िमतिमंदा।मानतहैंतेहिमाहँअनंदा ॥
कवितदोहारसग्रंथनके । तियबरणनकामिनिमंथनके ॥ लिखिलिखिबाँधेरहततनीमें । सोरिसोरिभापतरजनीमें ॥

दोहा—जौनपाटमज्जनहिते, गमनतासिगरीवाम । तौनघाटमेंजातहैं, गुंडाऔरगुलाम ॥

अनतबतातेअनतनिहारें । बोलेंइतेचितेउतटारें ॥ चारिगुलामनकेढिगबैठें । सूधेहुबातकहेतेऐंठें ॥
देतयहीमहँजन्मबिताई । भोगततिनहिंनरकसिराई ॥कोटकरिकेशराबकोपाना । गणिकाचारिखुलाइमकाना ॥
आपहुअपनोबसनविहाई । अगरुणिकनकेबसनछोराई ॥ नंगेरहेंरनसबयामा । औरनहींतिनकेकछुकामा ॥ १० ॥
मद्यमांसमैथुनयेतीना । यहिविधितेजानियोप्रवीना ॥ निजनारीमहँमैथुनजानो । मखमहँआमिषभक्षनमानो ॥
सौत्रामणीयज्ञमहँराजा । जानहुसुरापानकरकाजा ॥ नित्यकरनकोवेदनभाखें । ताकोनातपर्यंअसराखें ॥
निजनारीमहँऋतुकेकाला । सुतहितमैथुनहैमहिपाला ॥ कबहुँयज्ञमहँआमिषभोजन । तसहिंसुरापाननृपयोजन ॥

दोहा—चारहुवेदनकोनृपति, तातपर्यंयहजान । क्रमक्रमताहिंघटाइबो, ऐसोअर्थनिदान ॥ ११ ॥

नकोएकअहैफलयमा । धनलहिकरैसुमतिसबकर्मा ॥ ताकोहैविज्ञानफलभूपा । हैविज्ञानफलशांतअनूपा ॥

सोधनपाइकुमतिजगमाहीं।करतअधर्महिंऐससदाँहीं ॥ अजरअमरअपनेकहँमाने । अपनेशीशकालनहिंजाने॥१
लिख्योयज्ञमहँजोमदपाना । सोजानहुँकेवलअघ्राना ॥ लिखीपशुनहिंसामखजोई । परसनमा-
ऐसेसुतहितमैथुनजानो । नहिंअपनेसुखकेहितभानो ॥ जानतनहिंयहधर्मकुचाली । मारतपशुनकरतचंडाल
विपयभोगमहँनिशिदिनराचे।जानहुँतिनहिंनारकीसाँचे ॥१३॥ वेदनतातपर्यनहिंजानी । अपने
मारिपशुनआमिपपुनिखावें । यमकीशंकाकछूनलावें।।तेजवमरियमपुरकहँजाहीं। तिनकीमासतेइपशुखाहीं ॥१

दोहा–पुरश्चरणमारणकरत, करिकैवैरअजान । जानतनहिंजीवनसकल, निवसतहैंभगवान ॥

कुंभीपाकनरकतेजाहीं । रोकतमंत्रशास्त्रहैंनाहीं ॥ पुत्रदारभ्रातापरिवारा । इनमेंकीन्हेंनेहअपारा ॥ १५ ॥
इनहींकेहितकरतअधर्मा । मानतकुमतिसोइंशुभकर्मा ॥ क्षणभरिनहिंतनकोविश्वासा । तामेंकरतअमरअसभ
एकहोतहैमहाअज्ञानी । एकहोतहैंसाँचेज्ञानी ॥ एकहोतज्ञानीअज्ञानी । तीनिभाँतिजानहुँजगप्रानी ॥
ज्ञानीतौसवविधितेनीको । उतरतभवसागरयहठीको ॥ औअज्ञानीअहैनरेशा । सोसुधरतहैलहिउपदेशा ॥
जोकछुज्ञानीअरुअज्ञानी । सोहैंमहानष्टअभिमानी ॥ तेकवहूँशठसुधरतनाहीं । अपनेगरवहिभरेसदाहीं ॥
सुनतनहींकोहुकोउपदेशा । जानतनहींभक्तिकरलेशा ॥ आपहिंउपदेशतसवकाहीं । कहैंधर्मतुमजानतनाहीं ॥

दोहा–भरेकाममदमोहअरु, मत्सरअरुधनलोभ । तेसंतनकेमध्यमें, कवहुँनपावतशोभ ॥

धनकेहेतऋणीगरजाई । धरनकरतदेदुःखमहाई ॥ काटैंजाँवपेटहूँमारैं । फोरहिंमूँडताहिकेद्वारें ॥
तेकहवावतआतमघाती । अतिकठोरहोतीतिनछाती ॥ १६ ॥ पेटमारिकैजेजनमरहीं । होतभूतमलभक्षण
भूतयोनिलहिवर्षहजारे । नामअसुरजानरकासिधारे ॥ भूपतितहाँमहाअँधियारा । तहँतेकवहुँनहोतउधारा॥
जेयदुपतिपदपदुमनध्यावें । तेउआतमघातीकहवावें ॥ तिनहूँकीहोतीगतिसोई । यामेंसंशयकरैनकोई ॥
हैअज्ञानीमानतज्ञानी । कवहुँभजतनहिंशारँगपानी॥ सिद्धनहोतमनोरथतिनके।जन्मवृथाहैंअसपापिनके ॥१
गुनतकृतारथअपनेकाँहीं । घरघरनीतजिवनकहँजाहीं ॥ तहाँकरहिंतपकरतकलेशा । ध्यावतनिर्गुणब्रह्महमेशा

दोहा–सोहंरटनलगीरहत, तेजवतजतशरीर । हरिपदप्रेमप्रमोदको, नहिंपावतमतिधीर ॥

कोउप्रयासकरिधनहिंलगाई । लेतअनेकनभवनवनाई ॥ तामेंफँसोरहतदिनराती । बीततकालतासुयहिभाँती
करतकोऊदशपाँचविवाहा । तामेंफँसोरहैनरनाहा ॥ कोहुकेभेकुमारदशवीशा । तिनहिंखेलावतधरिनिजशीश
जोरिजोरिधननितघरधरतो। दमरिहुएकदाननहिंकरतो ॥ अजरअमरअपनेकहँमानत। दीखनरककोयहैव
यदुपतिचरणकरतनहिंप्रीती ।मानतनहिंयमकीकछुभीती ॥ तेहरिविमुखिनकहँवरियाई । देतनरकयमदूतागिराइ
ऐसीसुनिमुनिवरकीवानी । निमिनरेशबोल्योसुखमानी ॥ १८ ॥

राजोवाच ।

कौनकौनकालहिभगवाना । कौनकौनवपुवर्णवखाना ॥ कौनयामकौनेयुगमाहीं । केहिविधितेपूजेप्रभुजाहीं॥
देहुकृपाकरिमोहिंसुनाई।सुननहेतममतिललचाई॥सुनिनृपवचनकह्योकरभाजन।यदुपतिपदपंकजरसभाजन।

करभाजन उवाच ।

दोहा–सतयुगत्रेताद्वापरौ, औकलियेयुगचारि । इंनमेंनानावरणवपु, नानानाममुरारि ॥

तिमिनानाविधिपूजनरीती।सोमैंवरणौंसकलसप्रीती ॥२०॥ सतयुगशुक्लवरणअवतारा । चारिबाहुहरिलसँ
जटाशीशवल्कलपटधारे । कृष्णाजिनप्रभुअंगसमारे॥इककरदंडकमंडलइककर।उपवीतहुकमलाछमलाधर
लि।प्रीतिसहितगावतहरिलीला॥वैरिविगतसवसुहृदसमाना।तपदमशमपूजाहिंभगवा
सुपर्णधर्मवैकुंठा । पुरुपसमलअव्यक्तअकुंठा ॥ परमात्मायोगेश्वरईश्वर । येसतयुगकेकृष्णनामवर ॥२१
रक्तवर्णभगवाना । चारिबाहुहेपुरुषप्रधाना ॥ त्रिगुणमेखलाकटिमहँधारे । कनकसरिसशिरकेशसँवारे ॥

करहिंकर्मवेदोक्तसदाहीं । मखमूरतिसुरुवाकरमाँहीं ॥ २४ ॥ त्रेताकेजनवेदविज्ञाता । धर्मात्माहोतेअतिदाता
पूजहिहरिकहँवेदविधाना । सर्वदेवमयजेभगवाना ॥ २५ ॥

दोहा-विष्णुउरुक्रमयज्ञवपु, पृश्निगर्भउरुगाय । सर्वदेवअरुवृपाकपि, अरुजयंतनिमिराय ॥

रईनामनाथकेगावैं । त्रेताकेजनमोक्षहिंपावैं ॥ २६ ॥ द्वापरमेंश्रीपतिभेश्यामा । पीतांवरसोहतअभिरामा ॥
चक्रादिकचारिहुभुजधारे । श्रीवत्सादिकसकलसँवारे ॥ २७॥ द्वापरकेजनसहितसमाजू । पूजहिमहाराजकीसाजू॥
पंचरात्रअरुवेदविधानैं । पूजहिंप्रीतिसहितभगवानैं॥चाहहिंकृष्णकमलपदप्रेमा । जपहिमंत्रयहकरिहाठिनेमा॥२८॥

श्लोक-"नमस्तेवासुदेवायनमःसंकर्पणायच । प्रद्युम्नायानिरुद्धायतुभ्यंभगवतेनमः ॥ २९ ॥
नारायणायऋषयेपुरुपायमहात्मने । विश्वेश्वरायविश्वायसर्वभूतात्मनेनमः" ॥ ३० ॥

हिविधिद्वापरकेमतिवाना।पूजहिंहरिकहँतंत्रविधाना ॥अबकलियुगमहँसुनहुनरेशा।जेहिविधिप्रगटेपुरुपरमेशा ३१
कृष्णवर्णहैपरमप्रकासी । सोहतपार्पदसंगविभासी ॥ सुंदरअंगपीतपटसोहै । जेहिलखिसुरनरमुनिमनमोहै ॥
कलिमहँकहवकृष्णकरनामा । यहीयज्ञजपतपमतिधामा॥कृष्णनामकीर्तनजगमाँहीं । यहीसविधिपूजनहरिकाँहीं॥
कलिमेंयेद्वैमंत्रभुवाला । जपेमिलतआशुहिंनंदलाला ॥ ३२ ॥

श्लोक-"ध्येयंसदापरिभवघ्नमभीष्टदोहं, तीर्थास्पदंशिवविरंचिनुतंशरण्यम् ॥
भृत्यार्तिहंप्रणतपालभवाब्धिपोतं, वंदेमहापुरुपतेचरणारविंदम् ॥
त्यक्त्वासुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं, धर्मिष्ठआर्यवचसायदगादरण्यम् ॥
मायामृगंदयितयेप्सितमन्वधाव, द्वंदेमहापुरुपतेचरणारविंदम् ॥

दोहा-प्रातसाँझहरिसन्मुखे, दोऊमंत्रजोकोय । पढ़ैप्रीतिसोंताहिहठि, प्रीतिकृष्णमेंहोय ॥

कवित्त-मनुजमनोरथकेपूरणकरनहार, वोहितअपारजगपारावारपारके ।
भुवनकेतीरथकेतीरथकेदेनवारे, वंदितहमेशहैंमहेशकरतारके ॥
रघुराजदासनकेदुरितनेवारेकेते, शरनकेपालनमेंकरननेवारके ।
ध्यावनकेयोगहैंनसैयाकर्मरोगऐसे, पदअरविंदएकदेवकीकुमारके ॥ ३३ ॥
सैगुनीसुरेशहूकीसाहिवीतेअधिकअधी, सताईअवधकीअवधिअनंदकी ॥
पितुप्रणपालिवेकोतुच्छतृणहीसोत्यागि, वनमेंनिवासकीन्होंछायातरुवृंदकी ॥
मायामृगजातिहूकेजानकीकेहेततासु, पाछेपाछेधायेछोडिगतिहूगयंदकी ।
दूसरोदयालऐसोकोनयातेरघुराज, ध्यावतचरणरजकोसिलाकेनंदकी ॥ ३४ ॥

दोहा-यहिविधियुगयुगमहँनृपति, धरिहरिनामहुरूप । पूजिजातयुगजननते, मंगलकरतअनूप ॥ ३५ ॥

जेगुणग्राहीजनविज्ञानी । सदासारभागीमतिखानी ॥ तेकलियुगकीकरहिंवड़ाई । कलियुगसमनहिंऔरदेसाई ॥
जामेंभापतमुनिहरिनामा । पावतपुरुपसकलमनकामा॥३६॥भ्रमतभ्रपमनुजनजगमाहीं।यातेलाभऔरकछुनाहीं॥
जातेहोइकृष्णपदप्रीती । मिटैसकलयहभवरुजभीती ॥३७॥सतयुगहूकेप्रजासदाहीं । चहतजन्महमपोकलिमाहीं ॥
कलियुगमहँनिमिभूपविशेपी । लेहुसत्यमनमहँअसलेपी॥कवहुँकवहुँकहुँकहुँमहराजा।कलिमहँजीवनपावनकाजा॥
नारायणपारायणहैहैं । जीवनकोउधारकरिदेहैं ॥ ३८ ॥ द्राविडदेशमाहँअवतारा । लैहैंहरिकेभक्तउदारा ॥
जाताम्रपर्णीसरिताहैं । कृतमालापयस्विनीजहँहैं ॥ ३९ ॥ महापुण्यप्रदजहँकावेरी । नासतिजोमज्जतअघढेरी ॥

दोहा-महानदीजहँहैनृपति, नामप्रतीचीजासु । जोतामेंमज्जनकरत, रहतपापनाहिंतासु ॥

कोकरतजोकोउजलपाना।सोहठिहोतभक्तभगवाना॥होतअमलआशयानिनकेरो।यदुपतिकेपदप्रीतिघनेरो ४०॥
जनत्यागिजगतकीआसा।मनक्रमवचनभयोहरिदासा॥तोऋपितुरनरपितरनकेरो।नाहिंकिंकरनाहिऋणीनिवेरो४१
अनन्यजोहरिपदध्यावे । तेहिअपराधजोकछुहूआवे॥क्षमाकरनसोप्रभुअपराधा।कोअसकरुणासिंधुअगाधा॥४२॥

नारद उवाच ।

यहिविधिभगवतधर्मप्रधाना।सुनिमिथिलाधिपअतिमुदमाना।प्रीतिसहितनवयोगेश्वरकहँ।सहितपुरोहितपूजन
तहँसबकेदेखतमतिवाना।भेनवयोगीअंतरधाना ॥४३॥ निमिनरेशकरिभगवतधर्मा।लहीपरमगतितजिभवभर्मा
हेवसुदेवतुमहिमतिवाना। भगवतधर्मसुन्योंजोकाना॥प्रीतिसहितकरिकरितिनकाहीं।जहोअंतकृष्णपुरमाहीं॥४

दोहा–तुमदंपतिकेसुयशसे, पूरितभयोजहान। धनदेवकिवसुदेवजग, जिनकेसुतभगवान ॥ ४६ ॥

दरशनआलिंगनसंभापन। भोजनसैनहुलासनमापन ॥ करिकैकृष्णसंगयदुवंसी। भयेसकलजगमाहँप्रशंसी॥
तुमकरिपुत्ररीतिकीप्रीती।दियोविहायजगतकीभीती॥४७॥पौंड्रकशाल्वऔरशिशुपाला।औरहुदुष्ट
वैरभावकरिकैहरिमाहीं। लीन्ह्योंयोगिनिकीगतिकाँहीं ॥कृष्णविलोकनिगमनविलासा।औरहु
केतेनृपतकिकेतरिगेहैं। तौकापुनिअनुरागीजेहैं ॥४८॥ हरिमहँकरहुनअसुतभाऊ। इनकोजानहुपरम
सबकेहैंप्रभुअंतर्यामी। नहींमनुजहैंपूरणकामी ॥ ४९ ॥ हरणहेतअवनीकरभारा। करनप्रलनभूपनसंहारा॥
दासनरक्षणकरनउदारा। तुम्हरेघरलीन्ह्योंअवतारा ॥ यशतेभरिदीन्ह्योंसंसारा। कहवावतहैंआपकुमारा ॥५

श्रीशुक उवाच।

दोहा–सुनिइमिनारदकेवचन, परमानंदहिपाय। तहँदेवकिवसुदेवहू, दियंनिजमोहविहाय ॥ ५१ ॥
परमपुण्यइतिहासयह, सुनिधारैचितलाय। सोसबदुरितनसायकै, बसैकृष्णपुरजाय ॥ ५२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा
बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे पंचमस्तरंगः॥ ५ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–कुरुपतिपुनिकछुकालमैं, सकलदेवतावृंद। आवतभेद्वारावती, दरशनकरनगोविंद ॥
युतमरीचआदिकनकुमारा।देवनलैआयोकरतारा ॥ भूतनगणयुतशंकरआये ॥ १ ॥ मरुतनयुतवासवहुसिधाये
वसुआदित्यअश्विनीकुमारा। ऋभुअंगिरसहुरुद्रउदारा ॥ विश्वेदेवासाध्यहुसर्वा ॥ २ ॥ अप्सरनागसिद्धगंधर्वा
चारणगुह्यकपितरऋषीशा।विद्याधरकिन्नरअवनीशा ॥ ३ ॥ कुशस्थलीमहँसिगरेआये। उग्रसेनकेसभासिधाये
द्वारपउग्रसेनमहँराजे। कह्योआगमनदेवसमाजे ॥ भूपतिकहँल्यावहुइतआसू। मोहिदेवनदरशनकीआसू॥
द्वारपालदेवनलैगयऊ। भूपतिनिरखिउठततहँभयऊ॥ लगीरहैयदुकुलदरबारा। बैठेसबकुमारसरदारा॥
कनकसिंहासनमध्यविराजा। तामेंउग्रसेनमहराजा ॥ दहिनेकनकासनअभिरामा। तामेंराजिरहेउनलिरामा

दोहा–तेहिसिंहासनमेंनृपति, आगेचलिकेसोय। बैठ्योरह्योप्रद्युम्नवर, जेहिसमवलीनकोय ॥
रामदहिनदिशिसांबविराजे। पुनिअनिरुद्धकुँवरछविछाजे ॥ पुनिगदगदागेहतहँबैठे। दीप्तिमानआदिकसुतजेठे
औरहुहरिकेबंधुकुमारा। बैठेयथायोगदरबारा ॥ उग्रसेनबायेंदिशिमाहीं। रतनजडितसिंहासनपाहीं ॥ ४ ॥
मधिसमाजराजतयदुराजू। जेकरतादेवनकेकाजू ॥ सिंहासननीचेछविछायें। दहिनेसात्विकउद्धवबायें॥
निसठऔरउल्मुकसुखरामा। निजआगेबैठायेश्यामा ॥ प्रभुआगेअक्रूरकृतवर्मा। अनाधृष्टआदिकधृतवर्मा॥
यथायोगबैठेसरदारा। होतरह्योमंजुलनटसारा ॥ देवनदेखिउठेमहराजा। उठेकृष्णसबउठीसमाजा ॥
लखिसुरउग्रसेनदरबारा। धन्यधन्यनृपवचनउचारा ॥ महामनोहरयदुपतिरूपा। लखिलाजतमदनहुँजेहिरूपा
दोहा–जोनरूपतेकृष्णप्रभु, हरयोभूमिकरभार। भरयोभूमिमेंनिजसुयश, जगअघजारनहार ॥
। । नहिंअघानमनमेंसुरभूपा ॥ सुरनशीशनायेदरबारी। जेसहिनृपबलभद्रमुरारी॥

दियेदेवसबआशिरवादा । लहहुभूपअतिशयअहलादा ॥ पुनिसिंहासनविविधमँगाये । सादरसकलसुरनबैठाये ॥
पुनिमँगायसबपूजनसाजू । उग्रसेनउठिसहितसमाजू ॥ पूज्योयथायोगसबकाँहीं । पूँछीकुशलविनीततहाँहीं ॥ ५ ॥
पुनिशुभपारिजातकेमाला । लैआयेजेदेवविशाला ॥ पृथकपृथकहरिकोपहिराये । पृथकपृथकहरिकोशिरनाये ॥
औरहुँपुहुपकृष्णपरवरपे । बारहिंबारदेवसबहरपे ॥ करनहेतपुनिहरिकीसेवा । रचिरचिसुंदरपदसबदेवा ॥
अद्भुतअर्थराखितिनमाहीं । मंदमंदहरिसन्मुखपाहीं ॥ अतिविनीतह्वैमृदुलसुभाऊ । मानिआपनेहियेदुराऊ ॥
दोहा-यदुकुलकेदरबारमधि, जोरिजलजयुगहाथ । लगेकरनअस्तुतिसबै, हरिकहँनायेमाथ ॥ ६ ॥

देवा ऊचुः ।

छन्द-मनबुद्धिइंद्रियप्राणबैननतेंसदासुखधाम । हमकरहिंसबसुररावरेकेचरणकमलप्रणाम ॥
जेहिचरणकोभवबंधत्यागनहेतसुमतिसदाँहिं । करिभक्तिभावअनेकचिंततरहतनिजहियमाँहिं ॥ ७ ॥
विधिह्वैसृजहुहरह्वैहरहुह्वैविष्णुपालहुविश्व । संसारयहतुममेंरहतहैंसंतकेसर्वस्व ॥
सच्चिदानंदस्वरूपमायाकर्मकेनअधीन । वसुदेवनंदनजगतबंधअदोपपरमप्रवीन ॥ ८ ॥
जससुनिसप्रीतिकथातुम्हारीकुमतिशुचिह्वैजात । तसशास्त्रतेतपदानतेमखयोगतेनदेखात ॥ ९ ॥
दिविकोउलंघिविकुंठनेवसनहेतजिहिहितमान । यहपंचरात्रप्रकारतेपूजनकरतसविधान ॥
कल्यानहितजेहियोगिध्यावतसोइतुवपदकंज । प्रभुधूमकेतुहमारहोवैकरनदुखवनभंज ॥ १० ॥
लेहाथहविमखअनलद्विजतुवचरणध्यावतनित्त । बहुसांख्यवादीऔरयोगीभजतसोइदैचित्त ॥ ११ ॥
वनमालकोहरिईरपाश्रीभजतजोपदकंज । सोधूमकेतुहमारहोवैदहनदुखवनपुंज ॥ १२ ॥
विधिभौनकोजोदंडसुरधुनिधारजासुपताक । सुरअसुरदलकोभयअभयकरजासुधरनीधाक ॥
साधुनअसाधुनसुखददुखकरकंजचरणतुम्हार । ध्यावतहमारोहरैसिगरोपापनंदकुमार ॥ १३ ॥
नाथेवृपभसमजासुवशहमआदिसुरसबकोय । सोकालप्रेरकआपपदकल्याणप्रदप्रभुहोय ॥ १४ ॥
यहजगतकोउतपत्तिपालनहरणकीजतुआपु । जियप्रकृतिअरुमहत्तत्त्वकेतुमईशपरमप्रतापु ॥
ह्वैवेगजासुगंभीरसबकाहरणहारविशाल । असभूतभावीवर्तमानहुअहोतुमहीकाल ॥ १५ ॥
अनिरुद्धलहिअधिकारतुमसोंप्रकृतितेमहतत्त्व । उतपत्तिकर्तातेप्रगटब्रह्मांडहोतससत्त्व ॥ १६ ॥
चरअचरकेउरप्रविशिकरसबकरहुतुमहींभोग । पैताहिमेंनहिंतेहिंलिससुनिजेहिडरतकरतहुजोग ॥ १७ ॥
मुसक्यायचितवनिभाववहुभ्रुवबंकपरसनिमंथि । पोडशसहसतियमैनमन्मथसक्योतुवमनमंथि ॥ १८ ॥
तुवकथासारिताचरणसारिताहरहिंअघत्रैलोक । इकसेइयेश्रुतिसोंदुतियतनसोंलहनमुदवोक ॥ १९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-यहिविधिअस्तुतिकृष्णकी, करिशंकरकरतार । करिप्रणामयदुनाथको, गमनेमुदितअगार ॥
गगनमहँपुनिकछुदूरी । धाताजोरिपाणिमुदपूरी ॥ मधुरकृष्णसोंवचनउचारा । बारहिंबारकरतसतकारा ॥ २० ॥

ब्रह्मोवाच ।

हेतप्रभुभूकरभारा । जोपूरुबमैंवचनउचारा ॥ सोममविनयमानिकीन्हाया । [illegible] ॥ २१ ॥
नमेंपाल्योनिजधर्मा । अपनीतेकियदूरिअधर्मा ॥ कीरतिछाइदसोंदिशानन । [illegible]अपकानन ॥ २२ ॥
कुलमहँप्रभुलेअवतारा । परयोरूपमर्दनमदमारा ॥ [illegible] । [illegible]हेतकियेअपारा ॥ २३ ॥
प्रीतिजनचरिततुम्हारा । सुनिहैंगेहेंकलियुगवारा ॥ [illegible] । [illegible]पावहिंगेपारा ॥
कुलमहँप्रगटेजगदीशा । वितेवरसएकसेपचीसा ॥ २५ ॥ [illegible]
दोहा-यदुकुलहूद्विजशापते, ह्वैनाशपुविनाश ॥ २६ ॥ [illegible] ॥

लोकलोकपालनकहँनाथा । वसिबैकुंठमहँकरहुसनाथा ॥ ऐसीसुनिब्रह्माकीवानी । बोलतभेतहँशारँगपानी ॥

श्रीभगवानुवाच ।

जोतुमकह्योसमझिहमलीन्ह्यों॥तिहरोकाजसकलकरिदीन्ह्यों॥दियोउतारिअवनिकरभारा२८ ॥
विक्रमअरुशूरतावडाई । औरमहाधनकीसमुदाई ॥ यदुकुलसमत्रिभुवनमहँनाहीं । कोउन॥
यदुवंशीअससवैविचारे । यहत्रिभुवनसबहोयहमारे ॥ शिवविरंचिवासवकहँजीती । मेटिदेहिंजगमेंयमभीती ।
कोउनहिंसन्मुखरुकीहमारे । झारतधनुपनतेशरधारे ॥ यदुवंशिनविचारअसदेखी । महाप्रबलतिनकोमैंलेखी ।
जानिनत्रिभुवनमेंतिनजोरी । शंकामहँराचीमतिमोरी ॥
मैंरोक्योतिनकोबरियाई । अपनीअतिशयत्रासदेखाई ॥ तबयेरुकेबैठिघरमाहीं । जिमिसागरछ्वैवेलाकाहीं ॥

दोहा—नातोचारिहुलोकपन, यदुकुललेतेजीति । कोउनरुकतइनतेसमर, ऐसीअहैप्रतीति ॥ २९ ॥

तौपुनिअसकोत्रिभुवनमाहीं ।
नहिंयदुकुलकरकरिसंहारा । जोजैहौंमैंनिजैंअगारा ॥ तौपुनिअसकोत्रिभुवनमाहीं । ॥३०॥ लाग्योनाशयोगयहिकाला ।
त्रिभुवनकोकरिहैहठिनासा । कोहूकीमनिहैंनहिंत्रासा ॥३०॥
तातेयदुकुलकरिसंहारा । मैंजैहौंनिजपुरकरतारा ॥ ३१ ॥

श्रीशुक उवाच ।

लोकनाथकीसुनिअसवानी । होनलगेअतिचारिहुँओरा । जेसूचकअशुभनकेघोरा
पुनिकछुकालमाहँसुनुताता । द्वारावतीमाहँउतपाता ॥ अक्रूरादिकवृद्धनकाहीं । तुरतबोलायसमीपहिमाहीं ॥
तेउतपातननिरखिसुरारी । सभासुधर्मातुरतसिधारी ॥ ॥ ३२ ॥
विविधभाँतिउतपातदेखाई । सबकहँमंजुलगिरासुनाई ॥ ३२ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा—चारिहुँदिशिद्वारावती, होतमहाउतपात । अतिअमोघब्राह्मणनकी, शापहुभईअघात ॥ ३४ ॥

रहेंनहींद्वारावतिमाहीं । गमनहिक्षेत्रप्रभासहिकाहीं ॥
तातेयदुकुलकेसबलोगू । जीवनहितअसकरहिंप्रयोगू ॥ तहाँगयेहैंजीवनआसा ॥ १ ॥
कौनदेरिचलैअबआजू । चढिचढिवाहनसहितसमाजू॥ महापुण्यप्रदक्षेत्रप्रभासा । तहँनहायसबरोगमिटायो॥ २॥
दक्षशापभेजबविधुकाहीं॥भयेरोगयक्ष्मातनमाहीं ॥ तबशशिक्षेत्रप्रभासहिआयो॥ सुनिसुपात्रबहुविप्रबोलाई ॥ ३॥
तातेहमसबतहाँनहाई । तर्पितसुरनपितरनसमुदाई ॥ विप्रनबहुविधिअन्नजेंवाई । नौकाव्हैउतरबजगमाहीं॥४॥
तिनकोदैसप्रीतिबहुदाना । करिहैंनाशकलेशमहाना ॥ दानदेवदुखसागरकाहीं ।

श्रीशुकउवाच ।

यदुवंशीअससुनिहरिशासन।जानिसकलविधिविपतिविनाशन॥साजिसाजिहयगैबहुस्यंदन।
दोहा—हरिकेएसेवचनसुनि, लखिअनेकउतपात । गुनिकैगौनप्रभासको, यदुकुलकोपरभात ॥ ४० ॥
उद्धवकेमनशंकाआई । करतचरित्रकछुकयदुराई ॥ भेदरबारजबेवरखासू । चलेभवनकहँरमानिवासू ॥
उद्धवसंगहिसंगहिआयो । लहिइकांतपगमेंशिरनायो ॥ पुनिढिगबैठिजोरियुगहाथे । बोल्योवचनमृदुलयदुनाथे ॥

उद्धव उवाच ।

पुण्यश्रवणकीर्तनयोगेशा । यदुनंदनकृपालदेवेशा ॥ मोहिअसजानिपरतमनमाहीं । हरनचहहुतुमयदुकुलकाहीं ।
फारिकपदुकुलकरसंहारा । जानचहहुनिजलोकउदारा ॥ विप्रशापकेनाशनमाहीं । तुमसमरथहौनाथसदाहीं ।
पैहिनशापनाशनहिंकीन्ह्यों । तातेसत्यजानिमैंलीन्ह्यों ॥ ४२ ॥ जानेरहौनाथयदबाता॥छोडिरावरोपदजलजाता॥
॥ दुनाहीं॥ रहिचाहियेनिजपुरमोहुकाहीं॥४३॥नाथतिहारोचरितसुहावन॥सुनतहिकरनअघारन॥
दोहा—कृपासुपात्रप्रभुगवरी, फारिकानननपान । पुनिनहिंकछुनीकोलगै, औरप्रपंचविधान ॥ ४४ ॥

सोवतवागतबैठतनाथ । निहरतखातपदतसुखगाथा ॥ कौनहुकालनाथतुमकाँहीं । हमछोड्योइकक्षणभरन
सोअवनाथछोडिकिमिजाहू । प्राणहुतेप्रियपदुकुलनाहू॥४५॥तुम्हरीजूँठपहिरिवहुमाला।चंदनतुम्हरोजूँठरस
भूषणवसनहुजूठतिहारे । हमअपनेअंगनमहँधारे ॥ भोजनजूँठतिहारोखायो । याहीमेंअतिशयसुखपायो ॥
यनीसुकृतिकछुदूसरनाँहीं । तुम्हरेदासरहेजगमाँहीं ॥ तातेतुमबिनतुम्हरीमाया । कौनभाँतितरिहैंयदुराया ।
जोतुवसंगयहीविधिरहैं । तौतुवमायापारहिपैहैं ॥ ४६ ॥ सिद्धदिगंबरओसंन्यासी । औरऊर्द्ध्वरेतातपरासी ॥
ब्रह्मनामजोधामतिहारा।तेगमनतह्वैअमलअपारा॥४७॥हमतोभ्रमतकर्मपथमाँहीं।ज्ञानजोगजानहिकछुनाँहीं॥
पैप्रभुसुमिरततुवपदकंजन । लेतनामतुम्हरोमतिरंजन ॥

दोहा–गायगायतिहरोसुयश, प्रेमपयोधिनहाय । तुम्हरेदासनसंगकरि, तुवमूरतिमनध्याय ॥
सहजहिमेंअतिशयअगम, यहसागरसंसार । कृपापायप्रभुरावरी, हमह्वैहैंहठिपार ॥ ४९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिउद्धवकोविनै, सुनियुतप्रीतिनरेश । जानिआपनोप्रियसखा, बोलेवचनरमेश ॥ ५० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्री
महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

दोहा–शुद्धबुद्धिउद्धववचन, सुनिकैकृपानिधान । कह्योमनोहरबैनतहँ, राजिवनैनसुजान ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा–जौनकह्योहमसोंसखा, करिशंकामनमाँहिं । सोहमरेमनमेंअहै, यामेंसंशयनाँहिं ॥ ९

ोकपालशंकरकरतारा । चहतवासवैकुंठहमारा ॥१॥ करीजोविनैप्रथमकरतारा । जेहिहितमैलियभुविअवत
ामैंसबकरिदेवनकाजा । हरयोभारभुवहनिखलराजा ॥ २॥ यदुकुलभईमुनिनकीशापा । तातेहोईअतिसंता
ानिपरस्परवैरविधाना । ह्वैहैयदुकुलनाशमहाना ॥ सतयेंदिनाआजुतेऊधव । बोरिहैसागरयहनगरीसब ॥
ादिनतेमैंतजिमहिकाँहीं । जैहौंअपनेधामहिमाँहीं ॥ तादिनतेकलिकोसंचारा । होईजगमेंअवशिअपारा ॥
बहमदेहिमहीकहँत्यागी । तुमहुनइतरहियोबडभागी॥कलियुगमहँअधर्मअतिहोई । धर्ममाहँरुचिकरीनकोई
ाजिकैसुजनबंधुअरुगेहू । मोमहँकरिकैनिपटसनेहू ॥ समदर्शीह्वैकैजगमाँहीं । विचरेहुऊधवतुमहुँसदाँहीं ॥

दोहा–जोमनवचदृगश्रवणते, कौनिहुवस्तुजनाय । सोअनित्यतुमजानियो, असकहवेदनिकाय ॥ ७

मायाकेअधीनमनजिनको । यहसुखनीकलगतहैतिनको॥ ममव्यतिरिक्तवस्तुजोजानै । सोईभ्रमश्रुतिशास्त्रबर
सोइभ्रमस्वर्गनरककरदाता । यहजानहुसिगरोसतिताता ॥ कर्मअकर्मविकर्मसखेदा । अहैंदोषगुणबुधिकेभेदा
ातेसबइंद्रिनकोजीती । मोपरकरिकैप्रीतिप्रतीती ॥ जगकोजानहुजीवअधारा । जियअधारमोहिंजानुउदारा
ज्ञानविज्ञानसहितह्वैजाहू । अपनेसमजानहुसबकाहू ॥ सदाकरहुजियमेंसंतोषू । कबहुँनउठैविषयकरदोषू ॥
सोजोकरिहौबडभागा । तौनहिंहोईखंडविरागा ॥ पापकियेनरकैहठिहोई । कीन्हेंपुण्यस्वर्गसुखजोई ॥ १
नेपापपुण्ययेदोऊ । तजिममभक्तिकरैसबकोऊ ॥ ११ ॥ मानैसुहृदसकलजगप्रानी । होयशांतज्ञानीविज्ञा

दोहा–ऊधोनिरखैसबदा, मोररूपसंसार । रहितसोआवागमनते, होइविशेषिउद्धार ॥ १२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिसुनिहरिकेवचन, ऊधवयदुपतिदास । बोल्योपुनिशिरनाइकै, तत्वजानियेआस ॥ १३

गुरूपंद्रहोंहरिणप्रवीना । सोरहोंगुरुजानहुनृपमीना ॥ गणिकानामपिंगलाजोई । गुरुसत्रहोंहमारोसोई ॥
कुररविहँगहैगुरूअठारो । गुरूउनैसोबालविचारो ॥

दोहा–विसयोंगुरूकुमारिका, जानहुभूपहमार । गुरूयकैसोजानिये, बानचनावनहार ॥

गुरुबाईसोंभुजँगहमारो । तेइसोंगुरुमकरीउरधारो ॥ चौबिसयोंगुरुभृंगीजानो । यहिविधिहमरेगुरुपहिचानो ॥२४॥
नेरखिनिरखिइनकेगुणकाहीं।हमसीखेअपनेमनमाहीं॥२५॥जातेजौनसिख्योगुरुजैसो।सोहमकहतसुनहुनृपतैसो ॥२६॥
रहिकेउपरबसतबहुप्रानी । खनिखनिखूबनिकारतपानी ॥ करिमलमूत्रहिकरतमलानी । ऐसेहुलहिकैपीरमहानी ॥
छमाकरतिछोनीसबकाला । शिख्योक्षमागुणतासुभुवाला॥२७॥ [illegible]
फलतृणफूलदारुपापाना । परउपकाराहिहेतसुजाना ॥ काटैखनैतिन्हेकितनोई । पैनाहिंक्षमातजतहैसोई ॥ २८
प्राणवायुइकजगसंचारी । पवनलेहुविधिउभयविचारी ॥ प्राणवायुभोजनभरिखाई । कछुनहिंचाहतजातअघाई ॥

दोहा–सोगुणताकोमैंसिख्यो, करतोकछुकअहार । जातेघटैनज्ञानअरु, बढ़ैनविपर्यविकार ॥ २९ ॥

उत्तमअधमहुवस्तुनकाँहीं । परसतरहतसमीरसदाहीं ॥ पैदुखसुखकरताहिनभाना । सबतेरहतआपअलगाना
सोउपवनगुनमेंसिखिलीन्ह्यो।हर्षशोककबहूँनहिंचीन्ह्यो॥४०॥जानिपरतजोबासपवनमें।सोगुणजानहुमहिकोमनमें॥
ऐसहिदेवमनुजकृशथूला । जानहिंजियमायामहँभूला ॥ यहगुणहैनआतमाकेरो । देहहिंकोयहधर्मनिबेरो ॥
सिख्योपवनतेयहीप्रकारा । अबसुनुनभजसगुरूहमारा ॥४१॥ जसअकाशहैसबथलमाहीं।पैकोहुमेंलपटतहैनाहीं॥
जिमिपरमात्माभीतरबाहेर।हैसबठौरअजाहिरजाहिर॥४२॥कोहुकोदोपनलगतअकासै।तिमिपरमात्महिदोपनभासै
यहगुणमैंनभसोंसिखिलीन्ह्यो।अबसुनुजसजलकोगुरुकीन्ह्यो॥अमलमधुरशीतलहितकारी।शुचिहुसचिक्कनताहिनिहारी

दोहा–दरशतपरशतकरतशुचि, तीर्थरूपहैनीर । येगुणसीख्योंसलिलते, तातेगुरुमतिधीर ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

पावकहैदुरधर्षप्रकासी । स्वादअस्वादकेरनहिंआसी॥जोकछुमिलैसोसबभखिलेतो । द्वितियदिवसकोकरतननेतो॥
कछूवस्तुकोदोपनलागै । निर्मलजोतिएकरसजागै ॥ ४५॥कहूँगुप्तकहुँप्रगटजनाई । हविदाताकोसबसुखदाई ॥
सकलपापकोनाशनवारो । यहगुणसिख्योशिखीतेप्यारो ॥४६॥ लघुमेंलघुभारीमेंभारी । यथादारुतसपरतनिहारी॥
पावकसमपरमात्महिजान्यो।तातेअगिनिहुँकोगुरुमान्यो॥४७॥घटबबढ़यहैचंदकलाको।हैनहिंकछुचंदहिअमलाको॥
घटबबढबहैतिमितनकाँहीं । कबहूँहोतआतमहिनाँहीं ॥ यहगुणसिख्योचंद्रमाकेरो । तातेगुरूचंदहूमेरो ॥ ४८ ॥
ज्वालनघटबबढबहगदीख्यो।येहीगुणहुअगिनितेसीख्यो४९शोपतसलिलभागुनौमासा।तीनमाससोइकरतप्रकासा॥

दोहा–जोलेतोसोदेतपुनि, राखिपासनहिंलेय । लेयकालमेंसुमतितिमि, कालपायपुनिदेय ॥ ५० ॥

जलमेंडोलतरविपरछाँहीं । अबुधगुनतडोलतमनमाहीं ॥ तिमिशरीरकोजौनविकारा । आतममाहँगुनैअविचारा ॥
यहगुनहूरवितेशिखिलीन्ह्यो।सुनहुकपोतहिजिमिगुरुकीन्ह्यो॥५१॥ करैनकोहुतेबहुतसनेहू।करैनबहुसंगहुकोहुकोहू
जोअतिसंगसनेहकरतहैं । सोपाछेअतितापभरतहैं ॥५२॥मैंइकसमयगयोवनमाँहीं । लख्योकपोतकपोतीकाँहीं ॥
वृक्षकोटखोथारचिदोऊ । जहाँनजातरह्योजनकोऊ ॥ ५३ ॥ तहँबसेखगसहितअनंदा । परेपरसपरप्रीतिहिफंदा ॥
यहिविधिबीतिगयोकछुकाला।खगनकरतग्रहधर्मविशाला॥अँगअँगडीठिडीठिमनतेमन।विचरतरहेमिलायछनैछन॥
एकहिसाथसैनदोउकरहीं॥एकहिसँगचारादोउचरहीं॥५४॥एकहिसँगबैठहितरुमाँहीं।एकहिसँगवनवनविचराँहीं॥५५॥

दोहा–जोनकपोतीचितवहै, सोकपोतद्रुतल्याय । रह्योदततेहिहरापिकै, प्रीतिपरमदरशाय ॥ ५६ ॥

पुनिकछुकालमाहँनृपराई।दियोकपोतीअंडाजाई॥५७॥अंडाफूटिगयेशिशुतिनके।पक्षभयेपुनिकोमलजिनके॥५८॥
दोरिदोउचारालैआवैं । बारबारबालकनखवावैं ॥ तिनकोसुनिसुनिमंजुलशोरा । पावहिदंपतिमोदअथोरा ॥ ५९ ॥
कहुँडोलतलखिपुत्रनकाँहीं । आपहुसंगसंगमहँजाँहीं॥तिनकोपुनिलैआयग्रहल्यावैं । दिनादिनदूनदूनमुदपावैं॥६०॥
तयसुतनेहुपरीपगबेरी । तिनमहँबाँतीउमिरिपनेरी ॥ बाँधिकपोतकपोतीनिनू ॥ ६१ ॥ एकसमयसुतचाराहेतू ॥
गयेकहूँकाननकाढ़िदूरी । चारालेतविलम्बभैभूरी ॥६२॥ तोहिवनमेंब्याधाइकआयो । खगफाँसनहितजालछगायो ॥

दोहा-ऐसहिपरसतनारिकहँ, तासुनेहफँसिजात । मरेजातहैनरकहठि, वलीकरततेहिंघात ॥ १३ ॥
रकीमीचुअहैसतिनारी । ऐसीमनमेंसुमतिविचारी ॥ चरणहुतेदारुहुकीदारा । छुवैनकवहूँसुमतिउदारा ॥ १४ ॥
हिविधिभोगजगुरूहमारो।अवसुनुजसगुरुकियमधुहारो।मधुमाखीकरिकैश्रमभारी।रचतमधुरमधुगुनिहितकारी।
आपनभखैनकोहुकहँदेहीं । वरवशभिल्लमारिहरिलेहीं ॥ ऐसहिलोभीजोरहिंधनको । आपनखासनदेतजननको ।
कोनृपवरवशधनहरई । हरैचोरकीपावकजरई ॥ तातेधनजोरैनहिज्ञानी । जोरैतौहोवैहठिहानी ॥ १५ ॥
रोरतधनकोधनीसदाहीं । यतीखातपहिलेतेहिकाँहीं ॥ तातेयोगीधनकेहेतू । कौनौकालनवाँधैनेतू ॥ १६ ॥
हिविधिगुरुमधुहारनवारो । अवसुनुजसगुरुहरिणहमारो॥सुनिकैव्याधज्ञानमृगमोहै।अपनीमृत्युनिकटनहिंजोहै॥
दोहा-तातेयोगीकवहुँनहिं, सुनैगाँउकोगान । सुनेजोहठितौनाशतेहि, होयज्ञानविज्ञान ॥ १७ ॥
सुन्योशृंगिऋषियोपितगाना।जपतपताकोसकलभुलाना॥भयोहरिणगुरुतसकहिदीना।अवसुनुजसभोममगुरुमीना॥
आयसकंटकमहँलखिचारा । मीनदौरिकैकरतअहारा ॥ तवतेहिजलतेतुरतनिकारी । थलमहँडारतमारिसिकारी॥
ऐसहियोगीजोरसनाको।चहतस्वाददेअनरथताको॥१९॥भोजनतजेहोहिइंद्रीवशापैनहिंजीभजीतिजातीतस॥२०॥
सवलोंजीभजीतिनहिंजाती । इंद्रीजिततवलोंनहिंख्याती॥जवरसनाइंद्रियलियेजीती।तवसवइंद्रीविजैप्रतीती॥२१॥
यहिविधिभयोमीनगुरुअमला।अवसुनुजसगुरुभईपिंगला॥गणिकाएकपिंगलानामा।रहीविदेहनगरतेहिधामा॥२२॥
एकसमयसोकरिशृंगारा । वैठीरहीआपनेद्वारा॥२३॥कीन्हेंआशधनीकोउआवै।मोहिधनदैअतिसुखउपजावै॥२४॥
दोहा-जोछोटोआयोधनी, दियोताहिलौटाय । वडेधनीकीआशकरि, वैठीचित्तलगाय ॥ २५ ॥
कहुँवैठीकहुँरहतीठाढी । धनवासनावहुतावितवाढी॥भीतरवाहेरनहिंठहरानी । यहिविधिआधीनिशासिरानी॥२६॥
कोइनहिंधनीद्वारअसआयो । देइजोधनताकोमनभायो ॥ तवताकेमनभयोविरागा । जोआनंदहेतवडभागा॥२७॥
आशापाशकाटिकैवैरी । अहैविरागकृपाणकरेरी ॥ जाहिनभयोविरागभुवाला। ताहिनछूटतजगजंजाला ॥
बोलीवचनपिंगलाजोई । भूपतिसुनहुकहतमैंसोई ॥ २८ ॥ २९ ॥

पिंगलोवाच ।

उसोतोमहामोहयहमेरो । जाकोअंतपरतनहिंहेरो ॥ हायराममैंयहकाकीन्हों । जोअपनोमनजीतिनलीन्हों ॥
तुच्छधनीतेमैंमतिहीनी । धनकीलैनकामनाकीनी ॥ ३० ॥ अपनेहियकोसदावसैया । धनसुतदाताजगतगोसैया॥
ऐसोधनीमुकुंदविसारी । तुच्छधनीमेंभजोगँवारी ॥
दोहा-शोकमोहभयदानिअति, जगकेजनमतिमंद । भजौंतिन्हेंमैंमूढिनी, तजिकैरघुकुलचंद ॥ ३१ ॥
हायदियोमैंमनकहँतापा । कियोनजोप्रथमहिहरिजापा ॥ लंपटलोभीसोचनलायक । कुमतिकुरूपअहैजेनायक ॥
तिनकेकरमेंवेचिशरीरा । धनअरुसुखचाह्योमदपीरा॥३२॥ अस्थिवंशकोठाठवनायो । त्वचारोमनखतृणसोंछायो॥
तनरूपीघरमेंनवद्वारा । वहतनित्यमलमूत्रहुधारा ॥ ऐसेतनकोअतिप्रियमान्यों । कवहुँनरामकृष्णकोजान्यों ॥
मोतेअधिककौनमतिमंदा । हरिपदछोडिचह्योंआनंदा ॥ ३३ ॥ वहुजनहोंविदेहपुरमाँहीं । मोतेमूढअहैकोउनाँहीं ॥
भजतजोदासनआतमदेतो । ताहिकरतअपनोकरिलेतो ॥ ऐसोतजिवैकुंठविहारी । वृथाकरीतुच्छनसोंयारी॥३४॥
सवकोसुहृदप्राणतेप्यारो । सवजगकेउरनिवसनहारो ॥ ऐसेहरिसोंप्रीतिकरोंगी । लक्ष्मीसहितप्रमोदभरोंगी ॥
दोहा-कमलापतिकेहाथमें, वेंचिविशेषिशरीर । हरिहोंआशुसनाथमें, मेटिसकलभवपीर ॥ ३५ ॥
केतनोसुरदेहेंसुरभोगू । कितनोहितकरिहैंजगलोगू ॥ हैंअनित्यसुरनरसवकाले । डरतरहेंसवकालकराले ॥
तातेहरितजिअनतनजेहों । यतनोमोदकहाँमेंपैहों ॥ ३६ ॥ पूरुवपुण्यकरीकछुनीकी । तातेयहमतिभैममजीकी ॥
उपज्योमनमेंसुखदविरागा।हरिकियमोपरकछुअनुरागा॥३७नातोअसविरागकहँहोवत।धनपरिवारमोहजोसोवत॥३८॥
तातेयहहरिकृतउपकारा । मैंअपनेशिरधारिसुखसारा॥तजिकैकुमतिसंगधनआसा । शरणजाउँमैंरमानिवासा॥३९॥

तौनजालमहँएकहिबारा । फँदिगेसकलकपोतकुमारा ॥ ६३ ॥ मातुपिताचारालैआये । हे

दोहा—हेरनलागेनिजशिशुन, दंपतिदुहुँदिशिजाय ॥ ६४ ॥ लख्योकपोतीशिशुनको,

जालफँदेनिजबालकदेखी।मनमेंभयोकलेशविसेषी ॥६५॥ हायहायकहिगिरीजालमें।फँदीक

हेरततहाँकपोतहुआयो । तियसुतबँधेनिराखिदुखपायो॥कह्योवचनतहँहायपुकारी॥६७॥नि

पूरवपुण्यकियोमैंथोरी । पूजीआशकछूनहिंमोरी ॥ लूटिगयेमेरेसुतदारा । क्योंबसिहौंमैएक

पतिव्रतामेरीजोनारी।मोहितजिलैसुतस्वर्गसिधारी॥६९॥सूनभवनमहँमृतकसमाना।जीवन

यहिविधिमनहिंकपोतविचारी।फँदेजालसुतनारिनिहारी॥मोहविवशआपहुतहँजाई।गयेजाल

तबविहंगदोउशिशुनसमेतू।पायोव्याधिमानिसुखसेतू॥लैतिनकोअतिआनँदमाहीं।व्याधलौटि

दोहा—यहिविधिजौनकुटुंबको, नेहीहोतनरेश । ताकीयहीकपोतअस, होतीदशाहमे

मुक्तिजोगलहिमनुजतन, गृहकुलमोहीहोय । चढिऊँचेनीचेगिरै, नरकपोतसम

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा

महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेव

आनन्दाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

दत्तात्रेय उवाच ।

अबजेहिविधिमेरोगुरू, अजगरभयोनरेश । सोमैसिगरोआपको, करतअहौंउप

अनायासजैसेदुखआवैं । तैसैभागविवशसुखपावैं ॥ तातेसुखहितसोचनकरई । सुखदुखएका

नरकस्वर्गकोगुनैसमाना । रहैअचाहसदामतिमाना ॥ १ ॥ लख्योएकअजगरबनमाहीं । प

स्वादअस्वादथोरबहुजोई।मिलैभागबलशातोसोई ॥२ ॥ तातेयहगुनमैंशिखिलीन्यो । अजग

तनकेहितनहिंकरैउपाई । जोनामिलैतौनहिपछिताई ॥ परोरहैनहिंधनहितधावै । भागभरोस

होपपदपितनमनबलवाना । करहिंतदपिनहिंउद्यमनाना ॥ परब्रह्मकोरूपविचारैं । नैननतेह

अबजोसीख्योसागरतेगुन । सोमैंभाषतअहौंभूपसुन ॥ बाहेररहैप्रसन्नअतिरूपा । भीतररहैगँभी

दोहा—ऐसहियोगीहूरहै, अभिप्रायगंभीर ॥ ऊपरसहजसुभावअति, दयामानमतिधीर

जैसेसरितनमिलिसरितापति।बढतकबहुँनहिपावसमेंअति ॥घटतकबहुँनहिंग्रीषममाहीं । सिधु

तिमियोगीअप्रियप्रियपाई । सोचैदरपैनहिंनृपराई ॥ ६ ॥ अबपतंगमेंजससगुरुकीनो । सोसुनि

दीपशिखालखिगिरतपतंगा । जानतनहिंनिजनाशप्रसंगा ॥ ऐसहिरूपवतीलखिनारी । मोहित

जानतनहिंआपनोबिनाशा । अंतहोयगोनरकनिवासा॥७॥कनकरजतवसनादिकमाहीं।भोगक

दीपशिखासमनिजहितलेखी।तेउपतंगसमजरहिंविशेखी॥८॥अबजसभँवरभयोगुरुमोरा।सोसु

थोरथोरबहुफूलनकोरस । लैलैउदरभरतमधुकरजस ॥ तैसहियोगीघरघरमाहीं । जाँचिजाँ

दोहा—उदरभरैअपनोसदा, करैशरीरनिबाहु । जामेंमनुजनदेहमें, दुखनहोइकहुँकाहु ॥

लघुअरुबडफूलनतेरससारा । लेतजौनविधिभ्रमरउदारा ॥ तिमिलघुबडशास्त्रनसारहू । योगीलय

भ्रमरकियोगुरुतसदियोभासी।अबसुनुजसगुरुकियमधुमाखी॥ लाखनमधुमाखीरसल्याई।छात

नपछातामेंमधुभरिनावे । जारिझारितमजनलैजावे ॥ जैसहिसंग्रहकरैजोकोई । भवनसमेतना

तानेनहिंपिदानकोरासे । जोपावेसोतुरतचासे ॥ उदरभरैअपनोननमें। योगीकरैसोजतेतनमें

[illegible]

दोहा-ऐसहिपरसतनारिकहँ, तासुनेहफँसिजात। मरेजातहैनरकहठि, वलीकरततेहिंघात ॥ १३ ॥
नरकीमीचुअहैसतिनारी। ऐसीमनमेंसुमतिविचारी ॥ चरणहुतेदारुहुकीदारा। छुवैनकवहूँसुमतिउदारा ॥ १४ ॥
यहिविधिभोगजगुरूहमारो।अवसुनुजसगुरुकियमधुहारो॥मधुमाखीकरिकैश्रमभारी।रचतमधुरमधुगुनिहितकारी॥
आपनभखैनकोहुकहँदेहीं। वरवशभिल्लमारिहरिलेहीं ॥ ऐसहिलोभीजोरहिंधनको । आपनखासनदेतजननको।
ताकोनृपवरवशधनहरई। हरैचोरकीपावकजरई ॥ तातेधनजोरैनहिज्ञानी। जोरैतोहोवैहठिहानी ॥ १५ ॥
जोरतधनकोधनीसदाहीं। यतिखातपहिलेतेहिकाँहीं ॥ तातेयोगीधनकेहेतू। कौनौकालनवाँधैनेतू ॥ १६ ॥
यहिविधिगुरुमधुझारनवारो। अवसुनुजसगुरुहरिणहमारो॥सुनिकैव्याधज्ञानमृगमोहै।अपनीमृत्युनिकटनहिंजोहै॥

दोहा-तातेयोगीकवहुँनहिं, सुनैगाँउकोगान। सुनैजोहठितौनाशतेहि, होयज्ञानविज्ञान ॥ १७ ॥
सुन्योशृंगिऋषियोपितगाना।जपतपताकोसकलभुलाना॥भयोहरिणगुरुतसकहिदीना।अवसुनुजसभोममगुरुमीना॥
आयसकंटकमहँलखिचारा। मीनदौरिकैकरतअहारा ॥ तवतेहिजलतेतुरतनिकारी। थलमहँडारतमारिसिकारी॥
ऐसहियोगीजोरसनाको।चहतस्वाददेअनरथताको॥१९॥भोजनतजेहोहिइंद्रीवश।पैनहिंजीभजीतिजातीतस॥२०॥
जवलोंजीभजीतिनहिंजाती। इंद्रीजिततवलोंनहिंख्याती॥जवरसनाइंद्रियलियेजीती।तवसवइंद्रीविजैप्रतीती॥२१॥
यहिविधिभयोमीनगुरुअमला।अवसुनुजसगुरुभईपिंगला॥गणिकाएकपिंगलानामा।रहीविदेहनगरतेहिधामा॥२२॥
एकसमयसोकरिशृंगारा। बैठीरहीआपनेद्वारा॥२३॥कीन्हेंआशधनीकोउआवै।मोहिधनदैअतिसुखउपजावै॥२४॥

दोहा-जोछोटोआयोधनी, दियोताहिलौटाय। वडेधनीकीआशकरि, बैठीचित्तलगाय ॥ २५ ॥
कहुँवैठिकहुँरहतीठाढी। धनवासनाबहुतचितवाढी॥भीतरवाहेरनहिंठहरानी। यहिविधिआधीनिशासिरानी॥२६॥
कोइनहिंधनीद्वारअसआयो। देइजोधनताकोमनभायो ॥ तवताकेमनभयोविरागा। जोआनंदहेतवडभागा॥२७॥
आशापाशकाटिकेवैरी। अहैविरागकृपाणकरेरी ॥ जाहिनभयोविरागभुवाला। ताहिनछूटतजगजंजाला ॥
वोलीवचनपिंगलाजोई। भूपतिसुनहुकहतमेंसोई ॥ २८ ॥ २९ ॥

पिंगलोवाच।

लखोतोमहामोहयहमेरो। जाकोअंतपरतनहिंहेरो ॥ हायराममेंयहकाकीन्हों। जोअपनोमनजीतिनलीन्हों ॥
तुच्छधनीतेमेंमतिहीनी। धनकीलैनकामनाकीनी ॥ ३० ॥ अपनेहियकोसदावसैया। धनसुतदाताजगतगोसैया॥
ऐसोधनीमुकुंदविसारी। तुच्छधनीमेंभजोगँवारी ॥

दोहा-शोकमोहभयदानिअति, जगकेजनमतिमंद। भजौंतिन्हेंमैंमूढिनी, तजिकैरघुकुलचंद ॥ ३१ ॥
हायदियोंमैंमनकहँतापा। कियोनजोप्रथमहिहरिजापा ॥ लंपटलोभीसोचनलायक। कुमतिकुरूपअहैजेनायक ॥
तिनकेकरमेंवेचिशरीरा। धनअरुसुखचाह्योमदपीरा॥३२॥ अस्थिवंशकोठाठवनायो। त्वचारोमनखतृणसोंछायो॥
तनरूपीपरमेंनवद्वारा। वहतनित्यमलमूत्रहुधारा ॥ ऐसेतनकोअतिप्रियमान्यों। कवहुँनरामकृष्णकोजान्यों ॥
मोतेअधिककौनमतिमंदा। हरिपदछोडिचहौंआनंदा ॥ ३३ ॥ वहुजनहैंविदेहपुरमाँहीं। मोतेमूढअहैकोउनाँहीं ॥
भजतजोदासनआतमदेतो। ज्ञाहिकरतअपनोकरिलेतो ॥ ऐसोतजिवैकुंठविहारी। वृथाकरीतुच्छनसोंयारी॥३४॥
सवकोसुहृदप्राणतेप्यारो। सवजगकेउरनिवसनहारो ॥ ऐसेहरिसोंप्रीतिकरोंगी। लक्ष्मीसहितप्रमोदभरोंगी ॥

दोहा-कमलापतिकेहाथमें, वेंचिविशेषिशरीर। हैहोंआशुसनाथमें, मेटिसकलभवपीर ॥ ३५ ॥
कितनोसुरदेहंसुखभोगू। कितनोहितकारहंजगलोगू ॥ हैंअनित्यसुरनरसवकाटे। हरतरहंसवकालकराटे ॥
तातेहरितजिअनतनजैहों। यतनोमोदकहाँमेंपैहों ॥ ३६ ॥ पूरवपुण्यकरीकछुनीकी। तातेयहमतिभैममजीकी ॥
उपज्योमनमेंसुखदविरागा।हरिकियमोपरकछुअनुरागा॥३७॥तातोअसविरागकहँहोवत।धनपरिवारमोदनोसोवत॥३८॥
तातेयहहरिकृतउपकारा। मेंअपनेशिरधारिसुखसारा॥तजिकेकुमतिसंगधनआशा। शरणजाउंमेंरमानिवासा॥३९॥

ऐसहियोगिहुरहैसदाहीं। बसनहेतविरचैगृहनाहीं ॥ नियतवचनमुखतेनितभाखै।कोहुकीआशकबहुँनहिंराखै॥१९
यहगुणशिख्योभुजँगतेभूपा। अबसुनुजसमकरीगुरुरूपा ॥ जसप्रगटैनिजउरतेजाला।तामेंकरिविहारकछुकाला
दोहा-पुनिमकरीजालासकल, उदरहिभरतिसमेटि। रहतिअकेलेआपहीं, सुखीनकोहुकहभेटि ॥
ऐसहिइकनारायणभूपा। रहतअकेलहिअमलअनूपा ॥ मुनिविचरतसिगरोसंसारा। तेहिमहँकरतेआपविहारा।
प्रलयकालमहँपुनिजगकाँहीं। लेतसमेटिआपनेमाहीं ॥ रहतअकेलेपुनिजगदीशा। जगअधारसोइजानिमहीशा।
उनकोकोउनहिंअहैअधारा। सोईएकसबविरचनहारा ॥ उपादानअरुनिमितहुकारन।यकहरिहैसोइअघमउधारन।
स्वाभाविकजोदानअनंदा।तेहिपरिपूरणसोइमुकुंदा ॥१८॥ रचतजगतजगसोइयदुराया। संकल्पहितेप्रेरितमाया।
प्रगटावतहैतत्त्वमहाना। जगतमूलसोइजानुसुजाना॥गुहीसूतमहँजिमिसुममाला। तिमितेहिमहँजगगुह्योविशाला॥
महत्तत्वतेलेहुविचारी।लहिनहोतजीवनसंसारी ॥०२॥ यहिविधिमकरीगुरुकरिलीन्ह्यों।अबसुनुजसभृंगीगुरुकीन्ह्यों॥
दोहा-भृंगीगहिजिमिकीटको, राखतनिजगृहल्याय। कीटलखततोहिंभीतिसों, ताहीसमह्वैजाय ॥ २३ ॥
तिमिकरिनेहभीतिअरुद्रोहू। ध्यावतजाहिकियेअतिकोहू॥ सोईरूपसोहठिह्वैजातो। यहकौतुकप्रत्यक्षदरशातो ॥
तातेकरिएकाग्रमनमानी। ध्यावैनिशिदिनशारंगपानी ॥ भृंगीतेसीख्योयहमतिको। हरिध्यायेहोवैश्रीपतिको ॥
येगुरुमैंनिजकह्योनरेशा। लह्योविविधजिनतेउपदेशा॥२४॥अबजोतनतेसिख्योअनूपा। सोबरणोंसुनियेयदुभूपा ॥
तनहैहेतविवेकविरागा। तातेमोरगुरूबडभागा॥ उतपतिनाशहुहोतसदाहीं। केवलदुखहैदोहुनमाहीं ॥
यहितनतेसबहोतविवेकू। भोउपदेशमोहियइएकू ॥ तनअनित्यगुनभयोविरागा। यहउपदेशदुतियबडभागा ॥
ऐसोयहतनहैउपकारी। भैश्वानादिकभक्षविचारी। यामेंकरोंनमैंअभिमाना। विचरहुँजगमहँसुखीमहाना ॥ २९ ॥
दोहा-तियसुतधनपशुभृत्यगृह, पालततनकेहेत। सोतनहूनहिंजातसँग, औरकहामतिसेत ॥
दुसरेजन्मकेरमतिसेतू। जानोअपनोकर्महिहेतू ॥ तनप्रियकर्मकरतजोकोई। आवागमनरहितनहिंहोई ॥ २६ ॥
रसनास्वादभखनकोचाहै। कामकरततियमिलनउछाहै॥ चहतपियासाजलकोपाना। चाहतउदरउभोजननाना॥
श्रवणहुचहतसुननमृदुरागा। चहतसुगंधनाकबडभागा॥ दृगचाहतदेखनशुभरूपा। चहतकहनमुखवचनअनूपा॥
हाथलेनकोचाहतराजा। चाहतचरणगमनकरकाजा॥ येसबइंद्रीनिजनिजबोरी। खैंचहिंजियकोकरिबरजोरी ॥
जैसेसवतिबहुतगृहमाहीं।निजनिजढिगखैचहिपतिकाँहीं२७वृक्षविहंगपशुमशकहुमीना।विषधरआदियोनिरचिदीना
पैनप्रसन्नभयेभगवाना। तबकीन्ह्योंनरतननिरमाना॥ जातेहोतज्ञानविज्ञाना। जातेंकरतभक्तिरसपाना ॥
दोहा-ऐसोनरतनविरचिके, याकोकछुनाविचारि। परमानँदपावतभये, पूरणजगतनिहारि ॥ २८ ॥
कोटिनवर्षजीवचौरासी। भटकतफिरतलहतदुखरासी॥ कबहुँभागवशनरतनपावै। तबहूँजोनहिंजन्मबनावै ॥
ताकिसमकोमतिमंदा। भजैजोनहिंकरिप्रीतिमुकुंदा ॥ तातेजबलगिरहैशरीरा। तबलगिभजैकृष्णमतिधीरा॥
बपैमोदनहिंजन्मवितावै। सोतौसबशरीरमहँपावै॥२९॥यहिविधिमेंलहिज्ञानविरागा। करिकेअहंकारकरित्यागा॥
बेचरहुसुखीसकलजगमाहीं।मोरेहियकछुसंशयनाहीं॥३०॥ब्रह्मदिवहुविधिकहैंरूपीशा।हवनिश्चयनहिंहोतमहीशा॥
एकगुरुसोदृढज्ञाननहोई। तातेबहुगुरुकियमुदमोई ॥ ३१ ॥

श्रीभगवानुवाच।

सकहिकेयदुसोंमुनिराई।अतिमोदितह्वैमाँगिबिदाई।।नृपकरसोंटहिकेसतकारा।।चल्योकरनपुनिजगतविहारा३२॥
दोहा-सर्वसंगकोत्यागिकै, कियनिजचित्तसमान। मेरेपदकोध्यायके, ममपदकियोपयान ॥ ३३ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि
श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

श्रीभगवानुवाच।

दोहा–उद्धवगीतामाहँजो, पंचरात्रमेजौन। मैंभाष्योनिजधर्मबहु, करैभक्तममतौन॥
सावधाननररहैसदाहीं। वर्णाश्रमकुलधर्मकराँहीं॥ कर्मअकामकरैमोहिअर्पै। करैशुद्धमनतजिकैदर्पै॥
शुद्धभयेमनजानहिज्ञाना। मैसेवकस्वामीभगवाना॥ जौनजौनवाँधैसुखनेतू। तौनतौनहोतोदुखहेतू॥
होतविपैतेतंचहिविरागा। उपजतजियतेयहजगत्यागा॥ २ ॥ सोवतमाँहिंस्वप्नजोदेखै। जागतजौन
तेजससकलवृथाह्वैजाहीं। तैसेविपैविनोदसदाहीं॥ ३ ॥ प्रवृतमार्गममदासनसेवैं। निवृतमार्गसेवैंसुखलेवैं॥
मोरतत्त्वकीजाननआसा। रहैसदाकरतोममदासा॥ कर्मसकामअनित्यविचारी। नहिंआदरैमोरव्रतधारी॥
बाहेरभीतरइंद्रिनकाँहीं। मोरभक्तवशकरैसदाँहीं॥ चलैचलायोजौनअचारा। सोईआचरैदासहमारा॥
दोहा–अतिशैशांतस्वभावमृदु, मोरभक्तजोहोय। करैताहिगुरुमोरवपु, तेहिमानैभ्रमसोय॥ ५॥
करैनतासुकवहुँअपमाना। तासोंनहिंदरशावैमाना॥ तासोंकवहुँनमत्सरकरई। गुरुसेवानिशिदिनअनुसरई॥
ममताकवहुँनकोहुतेराखै। गुरुपदकमलप्रीतिरसचाखै॥ सावधानगुरुसेवनठानै। गुरुमुखतेसतअसतहुजा
काहूकीनिंदानहिंकरई। वृथावचननहिंकवहुँउचरई॥ ६ ॥ तियसुतगृहधरनीपरिवारा। कवहुँनमानैअहैहम
सवथलराखैदीठिसमाना। अपनेसमसवगुनैसुजाना॥७॥स्थूलसूक्ष्मतनतेजियकाँहीं। गुनैविलक्षणसुमतिसदा
कहैज्ञानगुणस्वयंप्रकासा। जानैजियकोमेरोदासा॥ जैसेभिन्नदारुतेआगी। तिमितनतेजियगुनैविरागी॥
यथादारुगुणपावकपरसै। तिमितमगुणआतममहँदरसै॥९॥ पंचतत्त्वविरचिततनजोई।तेहिलहिलियसंसार
दोहा–संसारीजियजोसुमति, तजनचहैसंसार। उद्धवतौविज्ञानलहि, होवैभक्तहमार॥ १०॥
तातेकरिकैविमलविचारै। अंतरयामीमोहिनिहारै॥ सवतेपरेमोहिकहँदेखै। दोपरहितमोकहँवुधलेखै॥
जगमेंनित्यबुद्धिनहिंराखै। क्रमक्रमसोंअज्ञानपथनाखै॥११॥ नीचेकीअरणीगुरुजानो।शिष्यउपरकीअरणीं
गुरुउपदेशमथनकोदारू।पावकज्ञानहिकरहिंविचारू॥१२॥ सोइज्ञानानलपरमप्रकासी।नाशतहैअज्ञ
जवनहिंदाहनकोरहिगयऊ।आपहिआपशांततवभयऊ॥१३॥जोअसकहोकर्मकोकर्ता। औरहुजोसुखदुखकर्ता
औरहुसुखदुखभोगनलोकू।कालवेदगुनअरुसवओकू॥ येसवनित्यपरतमोहिजानै।कैसेआपअनित्यवखानै॥
पुनिऐसहुजोकहौपियारे। जेउपजेतेनसेनिहारे॥ उतपतिनहिंस्वर्गादिककेरी। तिनकोनाशकौनविधिहेरी॥
दोहा–स्वर्गादिकतोनित्यहैं, असगुनिकैमनमाहिं। प्रवृतकर्मताकेहिते, करिबोउचितसदाहिं॥
काहेप्रवृतिकर्मपरमापौ।निवृतकर्मकरिवोकसभापौ॥ १५ ॥ जोअसकरहुसखासंदेहू। तौअससमाधानसुनि
तनसंबंधकाललहिप्यारे। जीवहिजन्मादिकवहुवारे॥ जननमरणमहँजियहिकलेसा। उद्धवकहौंकहोतहमेसा
जैसोकर्मकरतजगमाँहीं। तसभोगतजियसुखदुखकाँहीं॥ जीवहिजानहुकर्मअधीना। तातेजीवहिंसदा
प्रवृतिकर्मतेकाफलहोई।तातेप्रवृतितजैसवकोई॥ १७ ॥ जेप्रवृत्तिकर्पनकेज्ञाता। तिनहूकोकछुसुखनाहिं
तौमृढनकोक्योंदुखनाहीं।करहिगुमानवृथापनमाँहीं॥ १८ ॥ दुखवारनसुखदानिउपाई। जानहिंजेमगनहु
तेऊसकैनमीचुनेवारी। ऐसीतौमतिअहैहमारी॥ १९ ॥ कालशीशनाचतसवहीके। कहाकौनसुखदैनन
दोहा–जाकोमृत्युदिनको, राजदूतलैजात। ताकोकौनअनंदहै, वहुविधिव्यंजनखात॥ २०॥
नमपदलोकमाहँहैभोगू। तसहिस्वर्गहिमहँसुनयोगू॥ शोककोदुखइपानाश। स्वर्गहुमहँपैकरहिन
स्वर्गमाहमहँदोपनअनेका।जानहुतुमकागविमलविवेका॥ कृपीजमनिकहुँकहँसुखाती॥प्रवृतिकर्मजानहु
सोनिश्चिमकर्मनिपिदोहं।उद्धवसुनहुतासुफलजोहं॥२२॥ करिकयज्ञस्वर्गयमजावै। देवसमानभोगवहांतो
नेपुन्यविरचितमनिसाना।रतननजडितनवटिकनकविमाना॥ गंधर्वनकेमधिछविछावै।मदामनोहर
रकिंनमाहनाहपुनमानन।अपसरसुनाविहरैसुरकानन॥ नानाविधअपनोनाहिनेपाता।भरस्वर्गंगुन

तवलगिस्वर्गमाहँसुखजोवै । जवलगिपुण्यक्षीणनहिंहोवै ॥ जवह्वैगईपुण्यसबछीना । बरबशगिरहिकालआधीना ।
दोहा-तातेस्वर्गअनित्यहै, ताहूमेंसुखथोर । जननमरणनहिंमिटतहै, विनपायेपदमोर ॥ २६ ॥
अघपापिनगतिसुनहुसुजाना । जिनकेहोतनधर्मनज्ञाना ॥ दुष्टसंगतेकरहिंअधर्मा । नहिइंद्रीजीतेंअघकर्मा ॥
कामीकृपणलोभवशरहहीं।नारिनकेरसिखापनगहहीं।।दयाछोडिजीवनकहँमारें ॥ २७ ॥ विनाविधानपशुनसंहारें ।
भूतप्रेतकहँपशुबलिदेहीं।निवसतघोरनरकतेदेहीं ॥ जेहितेहिभाँतिनरकतेनिकसैं।तरुपापाणह्वैजगमेंनिवसैं ॥२८॥
नरतनपाइकर्मदुखदाई । करतदेतनिजजन्मविताई ॥ तेकर्मनतेपुनितनपावैं । पुनिअघकर्महिकरतवितावैं ॥
तातेमनुजनकछुसुखनाहीं। जन्मतमरतेरहतसदाहीं ॥२९॥ लोकलोकपालोजेअहहीं। कल्पप्रयंतजियतजेरहहीं ॥
यहीदशातिनहूकीजानहुँ । ब्रह्महुकहँमोतेभयमानहुँ॥३०॥सतरजतमगुणवशजगजीवा।करहिंअनेकनकर्मअतीवा॥
दोहा-पावतहैपुनिदेहजिय, सोइकर्मनअनुसार । तेइकर्मनकेविवश, भोगतभोगअपार ॥ ३१ ॥
जवलगिगुणवशआतमरहतो।देवमनुजभ्रमतवलगिगहतो॥जवलगियहभ्रमरहतप्रवीना।तवलगिजियहैकर्मअधीना॥
जवलगिकर्मअधीनरहतहै । तवलगिमोसेभीतिलहतहै ॥ तातेदेहआत्मअभिमाना । सवविधित्यागकरैमतिवाना ॥
तवहींतोपरमानँदपावै । औरउपायनमोमनभावै ॥३२॥ जोअसकहोभीतितुमतेकिमि।तोमोतेहैसुनहुभीतिजिमि॥
होतोजवैसृष्टिकरकाला । कोउइमहीकहभापहिकाला॥कोउआतमकोउआगमकहहीं । कोउसुभावधर्मकरिरहहीं॥
यहिविधिमोकोवहुविधिभाखें । निहचैएकहमहिपररावैं॥ऐसीसुनियदुपतिकीवानी । वोल्योउद्धववरविज्ञानी॥३४॥

उद्धव उवाच ।

गुणकारणजोहैयहदेहू । तामेंआतमकियेसनेहू ॥ विपयासक्तरहतसवकाला । गुणतेकिमिछूटतोकृपाला ॥
दोहा-जोअनादिसंसारको, नहिंकरिहौभगवान । तौवंधननहिंजीवको, होतमोहिंअसभान ॥ ३५ ॥
केहिविधितेज्ञानीरहै, विहरैकौनीभाँति । कालक्षणभक्षणकहा, करैकहादिनराति ॥ ३६ ॥
इमिप्रश्नकोदीजिये, उत्तरमोहियदुनाथ । वंधमोक्षकिमिएकको, कहिमोहिंकरहुसनाथ ॥ ३७ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

दोहा-सुनिउद्धवकोप्रश्नयह, विहँसतकृपानिधान । लगेदेनउत्तरसुखद, मानेमोदमहान ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा-बद्धमुक्तआख्यानयह, उद्धवगुणतेहिहोहि । सोगुणमायामूलहै, सोमायानहिंमोहि ॥
ायाप्रेरकमोकोजानो । मेरोवंधमोक्षनहिंजानो ॥ ऐसेनित्यमुक्तममदासा । तिनकोगुननहिंकरतप्रकासा ॥
ंगुनवद्धजीवजगमाँहीं । वंधमोक्षहैतिनहीकाँहीं॥१॥शोकमोहसुखदुखतनयोगू । सपनसारिसजियजानहुभोगू ॥२॥
वेद्याऔरअविद्याजोई । ज्ञानअज्ञानजानियेदोई ॥ येदोऊममअहैंअधीना । जिमितियकेवशदेहप्रवीना ॥
ीवनकेकर्महिअनुसारा । होयज्ञानअज्ञानअपारा ॥ ३ ॥ जवमैंजियहिदेहुँअज्ञाना । तवलगिताकोवंधमहाना ॥
नवमैंजियहिज्ञाननिजदेहू । तवतेहिजननमरणहरिलेहू ॥ एकअंसचितजीवहमारो । वंधमोक्षश्रुतिताहिउचारो ॥
ःअज्ञानतेवंधअनादी । मोक्षज्ञानतेहैअह्लादी ॥ ४ ॥ अवमैंवद्धमुक्तकोलक्षण । तुमसोंभापहुँसकलविचक्षण ॥
दोहा-जीवईशएकांतनर, रहहिंविरुपदोउधर्म । शोकधर्महैजीवको, ईशधर्महैशर्म ॥ ५ ॥
रुतनईशअनीशविहंगा । वसहिसखादोउएकहिसंगा ॥ जीवकर्मफलभोजनगहई । ईशअनंदितताहिनलहई ॥
दपिईशनहिनेकहुखावै । तदपिमहावलतेहिश्रुतिगावै॥६॥उद्धवपरमात्माअवदाता ।निजस्वरूपपररूपहुज्ञाता॥
ीहिसंवंधअविद्याकेरो । नित्य कृयहहेतनिवेरो ॥ जीवहिहैअज्ञानसँयोगू । तातेवद्धवदतवुधलोगू ॥ ७ ॥

यदपिदेहमेंरहैसुजाना । तदपिनकरैतासुअभिमाना ॥ जिमिअभिमानस्वप्नतनकेरो । जागेतेमिटिजातघनेरो
यदपिनहैतेहिकोयहदेहू । तदपिमूढराखततेहिनेहू ॥ जैसेसोवतस्वप्ननिहारी । मानतहैयहदेहहमारी ॥ ८ ॥
इंद्रीनिजनिजअर्थनकाहीं । ग्रहणकरैयहरीतिसदाहीं ॥ तेहिमेंबुधअभिमाननराखें । तातेतेहिविचारिनहिंचाखें

दोहा–कर्मअधीनशरीरको, हैहमरोअसलेखि । मूरखइंद्रिनभोगसब, अपनोगुनतविशेखि ॥

यहितेबद्धहोतअज्ञानी । पुनिनहिंछूटतहैमतिखानी ॥ १० ॥ सोवनजागतबैठतमाँहीं । मज्जतदरशपरशतन
सूँघतसुनतखातमहँज्ञानी । इंद्रिनगतिलेवैअसमानी ॥ ११ ॥ मैनकरहुँइंद्रीसबकरहीं । असजानतबंधननहिं
जिमिव्यापितमारुतनभमाना । पैनदोपतिनकोलपटाना ॥ ऐसेंविषैभोगबुधभोगें । पैनहिंताकेसुखदुखजोगें ॥ १
करिअसंगतेतीक्षणज्ञाना । काटैसबसंशैमतिवाना ॥ तबतनकोछूटैअभिमाना । जागेजिमिनस्वपनकरभाना ॥ १
प्राणमनहुबुधिइंद्रिहुअलपा । उठैनकबहूँजेहिसंकलपा ॥ यदपिअहैसोदेहहुमाँहीं । तदपिदेहगुनलागतनाहीं ॥ १
जोदुर्जनकबहूँदुखदेई । तबहूँजोदुखनहिंगनिलेई ॥ कबहुँकोऊजोअर्चनठानै । तौकबहूँजोनहिंसुखमानै ॥

दोहा–दुखमेंदुखजाकोनहीं, सुखमेसुखनहिंजाहि । रहतसदाहिंसमानजो, बुधभापतबुधताहि ॥ १५ ॥

उत्तमअधमकर्मजोकरई । भलोबुरोतेहिनहिंउच्चरई ॥ निजनिंदानिजसुनैबखाना । सोइपंडितजोसमकरिजाना ॥ १
तनतेकरैकहैजोज्ञानी । होनतासुकबहूँअभिमानी ॥ उत्तममध्यमकबहुँनध्यावैं । निजआतमआनँदअतिभावैं
यहीवृत्तितेजडवतज्ञानी । विचरैजोतेहिमुक्तिबखानी ॥ १७ ॥ वेदशास्त्रजोपढ्योअपारा । यज्ञदानतप
मेरीभक्तिकियोजोनाँहीं । ताकोजानोंसकलवृथाहीं ॥ वंध्यासुरभीजिमिलियकोई । ताहिचरायेश्रमभारिहोई ॥ १
बूढिगायजिमिपयकेहेतू । राखैतेहिश्रमभरिमतिसेतू ॥ जिमिसुखहेतककर्कशानारी । जोराखैतेहिदुखैविचारी ॥
जैसेपराधीनतनमाँहीं । कबहूँमोदमौजतेहिनाहीं ॥ जैसेभयोकपूतकुमारा । तातेपावतशोकअपारा ॥

दोहा–जैसेधनकोजोरिकै, दियोपात्रमैंनाहिं । ताकोधनसिगरोवृथा, डारतनरकाहिमाहिं ॥

तैसहिममगुणकरमहुनामा । जोनकहतपढिशास्त्रललामा ॥ ताकोसुखकबहूँनहिंहोई । नरकजातरोकतनहिंकोई ॥ १९
ममकृतउत्पतिथितिसंहारा । मनविचारनहिंकरतउचारा ॥ मेरोजन्मचरित्रविचित्रा । जोनहिंगावैजगतपवित्रा
वाँझगिराकेवलतेहिजानी । भाषैनहिंऐसीसुखवानी ॥ २० ॥ याहिविधिकरिकैविमलविचारा । त्यागैतनअभिमानअपारा
जगअंतरयामीमोहिजोवै । जगकीसकलवासनाखोवै ॥ शुद्धचित्तमोहिमाहँलगाई । लौकिककरमनिदेहविहाई ॥ २१ ॥
अचलचित्तजोकोउमोहिंमाहीं । हैअसमर्थसकैकरिनाहीं ॥ सोसबधर्मकर्ममोहिअरपै । तजिसबआशाकोउनहिंडरपै २२
पावनकरनजगतमनहारी । सुनैप्रीतियुतकथाहमारी ॥ मोहिसुमिरतगावैंनितलीला । करैजन्मउत्सवशुभशीला ॥ २३

दोहा–अर्थधर्मअरुकामहू, करैसुमतिममहेतु । मेरोदासकहाइके, विचरैजगसुखसेतु ॥

उद्धवकरैजोकोउयहिभाँती । लहैसोमोरिभक्तिदुखगाती ॥ ताकेउरतेभक्तिहमारी । कैसेहुँकबहुँटरैनहिंटारी ॥ २४ ॥
फरिसतसंगभक्तिजबआवै । तातेप्रेमसहितमोहिंध्यावै ॥ तबपावतसहजहिममधामा । जेहिवर्णतसज्जनअभिरामा ॥
ऐसीसुनियदुपतिकीबानी । पुनिबोलेउद्धवविज्ञानी ॥ २५ ॥

उद्धव उवाच ।

जगमहँसज्जनबहुतप्रकारे । पैप्रभुतुमकहँकौनपियारे ॥ कौनभाँतिसोंभक्तितिहारी । जोतुवढिगपहुँचावनहारी ॥
नारदादिजेहिकरतप्रशंसा । जाकेहोतभयेभ्रमभ्रंसा ॥ २६ ॥ मोपरकरिकैकृपामहाई । यहसिगरोमोहिदेहुबताई ॥
तुमहौब्रह्माशंकरनाथा । मैंतुम्हरेपदनावहुँमाथा ॥ तुमहौसबलोकनकेनायक । मैंहौंदासदयाकेलायक ॥
तुमहौयदुपतिजगरखवारे । मैंशरणागतअहौंतिहारे ॥ २७ ॥

दोहा–परब्रह्मतुमप्रकृतिपर, व्यापकपुरुषाकार । करिदायानिजजननपर, लीन्ह्योंजगअवतार ॥

ता । बोलेयदुपतिजानिविनीता ॥ २८ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

मोरदासउद्धवसवकाला । होइअवशिकेदीनदयाला ॥ क्षमाकरैसवप्राणिनमाहीं । कोहुपैकोपकरैकोहुनाहीं ॥
सत्यवदैईरपानरापै । करिवोउपकारहिअभिलापै ॥ समदर्शीनहिंविपैविलासी । धीरजवंतचतुरशुचिरासी ॥२९॥
मृदुलसुभावचहैंकछुनाहीं।नियमितभोजनशांतसदाहीं ॥ मोहितेअधिकनदूसरजानै।मोहीकोनिजरक्षकमानै॥३०॥
सावधानआशयगंभीरा । अचलचित्तहोवैमतिधीरा ॥ शोकमोहअक्षुधापियासे । जहाँमृत्युपटगुणनहिंभासे ॥
औरेनमानदआपअमानी । प्राणिनउपदेशकविज्ञानी ॥ करैकर्महैकरुनसदाहीं । सवकोमीतगुनैजगमाहीं ॥
मेरोजसकोमलपदरचिरचि । सुनैसुनावैममरतिरचिरचि ॥ ३१ ॥

दोहा—वेदशास्त्रममसुखप्रगट, तिनमेंजेगुणदोप । तिनकोसकलविचारिकै, करिकैमनसंतोप ॥
सकलधर्मकोछोडिकै, हैअनन्यमोहिकाहिं । भजैप्रेममैमगनजो, सोइसाधुजगमाहिं ॥ ३२ ॥

जानिजानिममरूपसुभाऊ । ऐश्वर्यहुअरुपरमप्रभाऊ ॥ मोहिभजैजोपुरुपअनन्या।मोरभक्तसोहैमतिधन्या ॥ ३३॥
मोरिमूर्त्तिअरुभक्तनकेरी । पूजैकरिकैप्रीतिघनेरी ॥ दरशैपरशैयुतअनुरागा । करिअस्तुतिवंदैवडभागा ॥
सेवनकरैसुजननितगावै-॥३४॥-मेरीकथासुनैहठिजावै ॥ मेरोरूपकरैमनध्याना । अरपैसवप्रियवस्तुसुजाना ॥
मोहिस्वामीगुनिहोवैदासा । आत्मनिवेदैसहितहुलासा ॥ ३५ ॥ मेरोचरितऔरअवतारा ।लाजछोडिगावैवहुवारा ॥
जन्माष्टमीरामनवम्यादिक । उत्सवकरैपरमअहलादिक ॥ गाननृत्यममंदिरमाहीं । करैकरावैसुमतिसदाहीं ॥
जोरिसकलआपनीसमाजा । ममगृहउत्सवकरैदराजा ॥ ३६ ॥ ममतीरथकहँकरैपयाना ।पूजैमोकहँवेदविधाना ॥

दोहा—उद्धवप्रतिएकादशी, जेवरपनमहँपर्व । तिनमहँपूजनवृहदमम, करैछोडितनगर्व ॥

दिकऔरतांत्रिकीदिच्छाकरैसकलत्यागैफलइच्छा ॥ चौविसएकादशिसुखदाई।चारिजयंतीममनभाई ॥३७॥
तिसुंदरमंदिरवनवावै । ममविग्रहस्थापनाकरावै ॥ मंदिरकेढिगवागलगावै । सुमनमोहिंवहुभाँतिचढावै ॥ ३८॥
नेजकरमंदिरझारिपखारा।चारुचौकनितहीविस्तारै॥कपटछोडिममसेवनकरई ॥३९॥ मनअभिमाननेकुनहिंधरई ॥
नेजकृतनीककर्मनहिंभाखै । दंभकर्मकवहूँनहिंराखै ॥ देहिअखंडदीपममगेहू । करैऔरपूजनयुतनेहू ॥
ोकोदीपदेइजोआरज । तातेअपनोकहैनकारज ॥ औरदेवअर्पितनैवेदू । मोहिननिवेदैअसकहवेदू ॥
ोरनिवेदितवस्तुजोहोई । औरदेवकहँअरपैसोई ॥ ४० ॥ जगमेंजौनवस्तुप्रियहोई । अरुआपहिप्रियलागैजोई ॥

दोहा—सोइसोइअरपैमोहिअवशि, करैअनेकनभाउ । तेहिअक्षयफलहोतहठि, प्रगटतपरमप्रभाउ ॥ ४१ ॥

ूरजअग्निविप्रअरुगाई।वैष्णवनभमारुतसुखदाई ॥ जलधरनीआतपसवप्रानी । येसवममपूजनथलजानी ॥ ४२ ॥
ेदत्रयीजेसूरजमाहीं । पूजैमोरभक्तमोहिंकाहीं ॥ हविदैमोहिंपावकमहँअरचै । करिसतकारविप्रमहँविरचै ॥
ृणदैगोमहँपूजैमोकहँ-॥४३॥-पूजैवंधुसरिसवैष्णवमहँ ॥ पूजैहियअकाशधरिध्याना।मारुतमहँकारिअस्तुतिनाना ॥
ूजैजलमहँतर्पणकरिकै-॥४४॥-यंत्रविरचिमहिमहँमुदभरिकै ॥आतममहँपुजैदैभोगू । पैनहिंशास्त्रविरुद्धसंजोगू ॥
ोहिगुनिकैसवजीवनमाहीं।सवमेंपूजनकरैसदाहीं ॥४५॥ सूरजआदिकमहँमतिवाना।करैमोरवपुयहिविधिध्याना ॥
दाशंखचक्रहुजलजाता।चारुवाहुविलसितअवदाता ॥ ऐसोशांतरूपममध्यावत।सावधानपूजैमुदछावत ॥ ४६ ॥

दोहा—श्रुतिऔरस्मृतिधर्मजे, तिनकोकरियुतप्रेम । मेरेपूजनकोसदा, जोराखतअसनेम ॥
साधुसंगजोकरतनित, मोहिसुमिरतसवकाल । मोरभक्तितेहिहोतहठि, छूटतजगजंजाल ॥ ४७ ॥
सज्जनकेसतसंगते, मोरभक्तजोहोय । ताहीतेमैंहठिमिलौं, औरउपायनकोय ॥ ४८ ॥
औरपरमगोपितजोकछु, सोभापहुँतुमपाहिं । तुमसोंमोकोदूसरो, सखासुहृदप्रियनाहिं ॥ ४९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे एकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा—मोहिनयोगवशकरतहै, नहितत्त्वनकोज्ञान । नहींधर्मनहिवेदतप, नहिंसंन्यासहुदान ॥
कूपतडागबागनिर्माना । नहिंमोकोवशकरतसुजाना ॥ अग्निहोत्रआदिकमखजेते । मोहिंनवशकारहितेते ।
नहिंव्रतनहिंसुरपूजनमंत्रा । नहितीरथयमनेमहुतंत्रा ॥ नहिंमोहिंवशकरसकलप्रसंगा । ...
सज्जनसंगकियेजगमाहीं । पुनिरहतीकुसंगभयनाहीं ॥ २ ॥ जेकरिसंतसंगजगमाँहीं । ...
दितिसुतमरुतशक्रसँगकेके । भयेअसुरकेसुरमुदज्वेके ॥ कालनेमिलहिहनुमतसंगा । ...
लहियदुभरतसंगमृगशावक।भयोपवित्रनाशिजगपावक॥सगीपूजनीपायेकरहेऊ । ...
गंधर्वजोउपवर्हणनामा । लहिमुनिशापशूद्रकेधामा ॥ जनमलियोकरिमुनिसेवकाई । लहीभक्तिमेरीसुखदाई ॥
दोहा—रंभालहिशुकसंगको, पाइंगतिअवदात । पांडवगतिलहिनहुपअहि, लहीमुक्तिहेतात ॥
ऋषभदेवसँगनवसुतपाई । भेनवसिद्धमुक्तिकेदाई ॥ चारणकरिपृथुकीसेवकाई । लहेमुक्तिसंसारनझाई ॥
गुह्यकनलकूवरमणिग्रीवा।नारदसँगगतिलियसुखसीवा ॥३॥ विद्याधरहुसुदर्शननामा । ...
नारदसनकादिकसँगकेके । ध्रुवपृथुआदितरेसुखलेके ॥ व्यासवाल्मीकादिकविप्रा । नारदसँगकरितरिगे...
वैश्यसमाधिआदिसुखभारिकै।ऋषिसुमेधआदिकसँगकरिकै॥नाशिदियेसिगरीजगबाधा । ...
[illegible]
वालमीकइकअंत्यजरहेऊ।मुनिसेवननितहोगहिलयऊ ॥ यदपिधर्मभूपतिमखमाहीं । ...
दोहा—पैताकेआयेविना, भयोनपूरणयाग । मुनिकेसंगप्रभावते, श्वपचहुहोवडभाग ॥
रजतमप्रकृतीअसबहुभाँती ।करिसतसंगभयेदुखघाती॥युगनयुगनयहरीतिविचारो । सतसँगतेपदमिलोहमारो ॥
औरहुजेप्रसिद्धजगमाहीं । मैंवर्णहुसुनियेतिनकाहीं ॥ नारदअंगिरकोकरिसंगा । चित्रकेतुकीन्ह्योभवभंगा ॥
सिवाशापवशअसुरहुभयऊ । ममअस्मरणतासुनहिंगयऊ॥सुनिनारदसुखज्ञानअयादा । ...
शुक्रसंगकरिसोवृषपर्वा । लीन्हीगतिसुधारिनिजसर्वा॥ सिखिप्रहलादपितामहरीती । ...
नृपतियुधिष्ठिरकोसँगपाई । मयदानवलियमोपदध्याई॥निशिचरराजविभीषणजोई।करिममसंगसुधारिगोसोई ॥
कपिपतिजाम्बवानहनुमाना । ममसँगलहिभेमुक्तप्रधाना ॥ इंद्रद्युम्नलहिकुंभजशापा । भयोयदपिगजपरमप्रतापा ॥
दोहा—पैऋषिसंगप्रभाववश, मोहिंसुमिरयोदुखपाइ । कीन्ह्योंतासुउधारमें, अतिआतुरढिगजाइ ॥
गीधजटायुपायसँगमोरा । लहीमुक्तिभवबंधनतोरा ॥ तुलाधारइकवनिकहँरहेऊ । साधुसंगतेममपदलहेऊ ॥
करिवानरीसंगइकव्याधा । लहीमुक्तिमेटीयमव्याधा ॥ कुबरीऔव्रजगोपकुमारी । औमथुरावासिनिद्विजनारी ॥
येनहिंवेदशास्त्रपढिलीन्हे।गुरुगृहवासकबहुँनहिंकीन्हे॥कियेनजपतपव्रतमखध्याना।ममसँगतेममपुरकियेजाना ॥
गोगोपीतरुमृगव्रजकेरे । केवलकरिकैभावघनेरे ॥ ममपुरकहँसबकियेपयाना । यहिविधिऔरहुजानुसुजाना ॥
कालीआदिकतिर्यकयोनी।ममभावहितेलियगतिलोनी ॥८॥ मिलैनजोकबहूँकरियोगू । मिलैनजोनसांख्यसंयोगू ॥
यज्ञदानव्रततपकरिजोई । लह्योनजोकबहूँकहुँकोई ॥ मिलैनवेदशास्त्रजोपढिकै । मिलैनजोसंन्यासहुमढिकै ॥
दोहा—सोमोमेंकरिप्रेमअति, सहजलहेमोहिकाहिं । जसमैंमिलतोभक्तिते, तसऔरनतेनाहिं ॥ ९ ॥
जबअक्रूरमोहिंसंयुतरामा । ल्यायेमथुरापुरीललामा ॥ तबमोमहँअतिचित्तलगाई । व्रजवनिताबहुप्रीतिबढाई ॥
ममवियोगसोंभोदुखभारी । परचोशून्यत्रैलोक्यनिहारी ॥१०॥ मैंवृंदावनकुंजविहारी । गोपिनप्राणहुतेप्रियभारी ॥
ममसँगसुखभोगतजेरजनी।क्षणसमरहीवितावतसजनी॥तेनिशिमोहिविनगोपिनकाहीं।कल्पसरिसह्वैगईतहाहीं ॥
... । उभैलोकतनसुरतिबिसारी ॥ जैसेसिद्धसमाधिलगाई । देतसुरतिसिगरीबिसराई ॥
... बाला । मगनभईसरिसमतेहिकाला॥१२॥व्रजतियप्रेमकहामहुगाये । उद्धवतुमहिंदेसिदिखाये ॥
... । जारभावकरिप्रेमहिठान्यो ॥

दोहा–केवलप्रेमप्रभावते, लाखनतेव्रजनारि। परब्रह्ममम पदलह्यो, जगजंजालबिसारि ॥ १३ ॥
तातेउद्धवधर्मननाना। औरअहेजेजोगमहाना ॥ औरहुजगमहँसाधनजेते। आशुहित्यागिदेहुतुमतेते ॥ १४
केवलमोपदप्रेमबढावो। सबदेहिनआतमामोहिंभावो ॥ होहुअवशिमेरेअनुरागी। मेरेशरणहोहुवडभागी ॥
तवहीसवविधिधनीतिहारो। औरउपायनकछूविचारो ॥ विनमोरेशरणहितेआये। कबहुँभीतिनहिंमिटतमिटाये
सुनियदुपतिकीकोमलवानी। कहउद्धवसंशयउरआनी ॥ १५ ॥

उद्धव उवाच।

तुवपदपावनकेरउपाई। मोकहँसबविधिपरीजनाई ॥ धौंइंद्रिनप्रेरकतुमअहहू। धौंजीवहिंप्रेरकप्रभुकहहू ॥
यहशंकाममदेहुमिटाई। विनयकरौंपगमेंशिरनाई ॥ उद्धवकोमनशंकितजाना। तवबोलेहँसिकृपानिधाना ॥ १६

श्रीभगवानुवाच।

जियहेह्रदयअकाशप्रकाशी। प्राणघोपयुतगुणमतिराशी ॥
दोहा–प्रथमघोपधरिसूक्ष्मवपु, रहतोमूलाधार। ताकोभापतहैपरा, जेवुधवुद्धिउदार ॥
पुनिनाभीमेंसोइजवआयो। तवपश्यंतीनामकहायो ॥ आयोघोपजवैहियमाँहीं। तवमध्यमाकहैतेहिकाहीं ॥
जववहघोपकढ्योमुखतेरे। तववैखरीसवैतेहिटेरे ॥ स्वरमात्रावर्णहुहैसोई। शब्दथूलभापहिसवकोई ॥ १७ ॥
दारुमाहँजिमिसूक्षमरूपा। रहतप्रथमहीअनलअनूपा ॥ मथनहोतअनुपावकसोई। पौनसहायपायवहुहोई ॥
पुनिजोपायोहविपरसाला। तवप्रगटतपुनिज्वालनिमाला॥ऐसहिक्रमक्रमप्रगटतवानी।ममअधीनलीजैतेहिजानी१८॥
एसहिस्पर्शश्रवणदृगघ्राना।मनबुधिचित्रऔरअभिमाना॥गुनगुनकारजजगतहिकाहीं।ममअधीनजानहुमनमाँहीं १९
जेयनेवासब्रह्मांडविचारो। मायाकेअधीनउरधारो ॥ जानहुतेहिअनादिअविनाशी।कालविवशनाहिंशक्तिप्रकाशी ॥
दोहा–देखिपरैवहुरूपसो, देवमनुजतनपाय। जिमिअंकुरइकलखिपरै, पुनिवहुरूपदेखाय ॥
सोमायाजीवहुवहुतेरे। जानहुसखाअधीनहुमेरे ॥ सोस्वतंत्रह्वैप्रेरकनाहीं। ममवशप्रेरकअहैंसदाहीं ॥ २० ॥
इंद्रिनकोनिवासतनतेसे। पटमेंसूतगुँथेसवजेसे ॥ यहसंसाररूपतरुदेहू। जियसंबंधनछूटतकेहू ॥
कर्मकरततनरहेसदाहीं।सुखदुखफलफूलहुतेहिमाहीं ॥२१॥ तनतरुवीजपुण्यअरुपापा।लोभादिकजरवहुप्रदतापा॥
मोटमूलतीनहुगुणजानो। पंचभूतशाखाअनुमानो ॥ शब्दादिकपाँचौरसभाखा। एकादशइंद्रीलघुशाखा ॥
ह्रदेनीडयुगखगजियईशा। कफपितवाततवचात्रयदीशा॥ बंधमोक्षफलउभैविशेषा। आलबालत्रैतापविशेषा॥२२॥
गीधग्रामवासीजनजेते। बंधरूपफलचाखततेते ॥ वनवासीमुनिहैंखगहंसा। चखतमोक्षफलकरतप्रशंसा ॥
दोहा–मायामयतनतरुजोकोउ, गुरुमुखतेलियजानि। सोइपंडितजगतमें, सखालेहुअनुमानि ॥ २३ ॥
यहिविधिगुरुमुखतेसुमति, गहिसितज्ञानकुठार। दलितनतरुमोहिमिलितजहु, सोऊज्ञानउदार ॥ २४॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

श्रीभगवानुवाच।

दोहा–सतरजतमयेप्रकृतिगुण, नहिंआत्माकेजान। सतसेवनतेरजतमहु, दूरिकरैमतिवान ॥
पुनिशतगुणतेशतगुणनाशै। शुद्धसतोगुणचित्तप्रकाशै ॥१॥शुद्धसतोगुणबाढतजवहीं। मोरभक्तिहोतीउरतवहीं॥
सज्जनसंगसतोगुणबाढे। मोरधर्महोतीतोतवगाढे ॥ २ ॥ भक्तधर्मजबभोउरमाहीं। रजतमआपनाशह्वैजाहीं ॥
जवभोरजगुणतमगुणनाशा। तवनहिंहोतअधर्मप्रकाशा ॥३॥सेवैममशास्त्रहीसदाहीं।मज्जाहिहाठिमतीर्थहिमाहीं ॥
करैसंगममदासहिकेरो। ममदेशहिमहँवासवनेरो ॥ मेरेव्रतहिउपासनकरई। मेरेकर्महिकोअनुसरई ॥

मनवचआदिकइंद्रिनतेरे । ग्रहणहोहिंजेअर्थघनेरे ॥ तिनकोमेंतोभिन्नजानों । सिगरोममशरीरअनुमानों ॥ २४
गुणमेंचितचितमेंगुणजोई । जेहिविलगावकौनविधिहोई ॥ यहजोप्रश्नकियोमुनिराई । ताकोउत्तरदेहुँसुनाई ॥
दोहा–ममशरीरजोजीवहे, वाकोजौनशरीर । तामेंचितगुणदोउवसत, यहजानहुमतिधीर ॥ २५ ॥
गुनसेवतहैचितबहुवारा । तातेगुणमहँलीनअपारा ॥ चिततेगुणकोहोतप्रकासा । तातेचितमहँगुणनिनिवासा ॥
जबममध्यानकरैमनमाँहीं।तबगुणचितचितगुणविलगाँहीं॥२६॥जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिहुतीनो।सतरजतमतेहोतप्रवीनो॥
बुद्धिवृत्तियेतीनिहुजानो । इनतेभिन्नसाक्षिजियमानो ॥ तीनिअवस्थातेहैन्यारा । कृष्णदासहैजीवहमारा ॥ २७ ॥
ऐसोहोतजबैहियज्ञाना । तबछूटतभवदुखदमहाना ॥ सोइविलगवहैचितगुनकेरो।ऐसोमतमानहुमुनिमेरो ॥ २८ ॥
अहंकारकृतहेसंसारा । सोइबाधकहैमोक्षअपारा ॥ ऐसोजानिविषैसबत्यागी । जानैनिजसरूपबडभागी ॥
असविचारिनिर्मलमनदासा।फिरिनकरैभवनिधिकीत्रासा॥जबलोंदनुजमनुजमतिनाना।छूटतिनहिंलहिज्ञानविज्ञाना
दोहा–तबलोंजागतहूयदपि, पैसोवतैसमान । जिमिस्वपनेहिमेसोइके, जगिबोवृथासुजान ॥ ३० ॥
तनसंबधजीवनितनाहीं । कर्मविवशतेहोतसदाहीं ॥ तातेदेहदेहकरधर्मा । ताकेहेतशुभाशुभकर्मा ॥
येअनित्यजानियेसदाई । स्वप्नसरिसमानहुमुनिराई ॥३१॥ जोजागतमहँसुखदुखभोगे।तेहिसमस्वप्नेहुहोतसँयोगे ॥
सोइसुषुप्तिमहँभाननेकू । तीनहुकालरहतजियएकू ॥ जोइसोवतहैजागतसोई । असअनुभवतेजियइकहोई ॥
सोईजीवइंद्रियनईशा । तीनिअवस्थालखतमुनीशा ॥ ३२ ॥ तीनिअवस्थामेंमनकेरी । तेजानहुमायाकृतमेरी ॥
मनसंबंधजीवकोजानो । तातेताहूमेंअनुमानो ॥ जीवहुकोमेंअहोंअधारा । तातेमोहुमहँकरहुविचारा ॥
असनिश्चैकरिउरसुखठाटी।ज्ञानकृपाणपासभ्रमकाटी॥भजहुमोहिंमुनिकरिअतिप्रेमा।तौपैहौसबविधितेछेमा ॥३३॥
दोहा–मनुजादिकतनअनितहैं, चक्रअलातसमान । थूलकृशादिकहोइबो, मनविलासअनुमान ॥
सकलजीवहेएकसमाना । मानतभ्रमवशसुरनरनाना ॥ सोभ्रमहूमायाकृतहोई । मममायाथिरचैजगजोई ॥ ३४ ॥
विषैविमुखइंद्रियनकरावै । मनमेंचाहनपुनिकछुल्यावै ॥ वृथामृषाभाषैमुखनाहीं । प्रेमसिंधुममग्रमसदाहीं ॥
जबलगितनतबलगिअसजोई।रहैजोकोउतेहिभ्रमनहिंहोई३५प्रेमविवशतनभानभुलाना।जान्योनिजसरूपमतिमाना।
सोयहजगमहँअनितशरीरा । बैठतउठतनजानतधीरा ॥ छूटैरहैकर्मवशदेहू । पैतेहिभाननजेहिममनेहू ॥
जैसेजोकियआसवपाना । रहैगिरैपटताहिनभाना ॥ ३६ ॥ जबलगिहैप्रारब्धहिभोगू । तबलोंरहतदेहसंयोगू ॥
पैममप्रेमीजोजगबंधू । सोनहिमानततनसंबंधू ॥ जिमिजागेजनस्वप्नपदारथ । मानतसिगरेअहैअकारथ ॥ ३७ ॥
दोहा–परमगोप्ययहज्ञानहम, तुमसोंकियोउचार । तुमहिंकरनउपदेशमें, लियोहंसअवतार ॥ ३८ ॥
सांख्ययोगअरुशास्त्रहुधर्मा । श्रीकीरतिदमओरसुकर्मा॥सत्यतेजअरुसमसमुदाई।इनफलसमजानहुमुनिराई॥३९॥
मैंहोंसबकामनाविहीना । मैंप्राकृतगुणरहोंअधीना ॥ सबकोसुहृदमोहिंअनुमानो । मोकोसबकोआतमजानो ॥
याहीतेंसबकोअतिप्यारो । रहैसदासबहीतेन्यारो ॥ सकलदिव्यगुणहैमोमाहीं । जेकबहूँकाहूकेनाहीं ॥ ४० ॥
उद्धवऐसोसुनिममबानी । सनकादिकअतिशयसुखमानी ॥ दूरिकियोसंदेहअपारा । मेरोकियोपरमसत्कारा ॥
पुनिबहुविधिममअस्तुतिकीनी।मेरेपदपंकजमतिदीनी४१सनकादिककृतअस्तुतिसुनिकै।मैंहूँउरअतिआनँदगुनिकै
तिनतेसादरपूजनपाई । विधिहूकोभ्रमसकलमिटाई ॥ मैंहूँतिनकीकरीबडाई । तुमसमदुतियनसुमतिदेखाई ॥
दोहा–पुनिब्रह्मासनकादिकै, देखतहीतेहिठाम । मेंतुरतहिगमनतभयो, निजधामहिअभिराम ॥ ४२ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

दोहा–ऐसेसुनियदुपतिवचन, अतिविनीतकरजोरि । पुनिउद्धवबोलतभये, बारहिंबारनिहोरि ॥

दोहा-नहींधर्मवशकरतहै, नहींकरतवशवेद । नहींदानवशकरतमोहिं, नहिंजपजेहिंअतिखेद ॥

केवलभक्तिकरतवशमोको।यहसिद्धांतबतावहुँतोको॥२०॥कियेभक्तिहीमेंमिलिजातो।साधनदुतियनहगदरशातो ॥
मोहिंजानहुसंतनकोप्यारो । हेउद्धवपदप्रेमहमारो ॥ जातश्वपचकीअतिअविनीते।तिनहूँकोहठिकरतपुनीते॥२१॥
धर्मदयातपसत्यहुहोई । पढ़ैबहुतजोशास्त्रहुकोई ॥ पैजोहैममभक्तिविहीना । सोनहिंहोतपुनीतप्रवीना ॥ २२ ॥
मेरीकथासुधाकरिपाना । जाहिनभोरोमांचसुजाना ॥ द्रविनगयोद्रुतहीदिलजाको । हगनबहायदियोअसुवाको ॥
ताकेकैसेभक्तिविचारी । कैसेहृदयपुनीतनिहारी ॥२३॥ममयशकहतगरोभरिआवै । मोहिंध्यावतदिलहूद्रविजावै॥
ध्यानकरतमनमेंममलीला । कहुँरोवतकहुँहँसतसुशीला ॥ गावतअरुनाचततजिलाजू ।ताकोसिद्धिसकलहैकाजू ॥

दोहा-ऐसेमेरीभक्तियुत, भरेमोरअनुराग । करहिभुवनपावनसकल, यहजानहुबड़भाग ॥ २४ ॥

तथाहेमपरिपावकमाँहीं । चोखोहोततजतमलकाँहीं ॥ तथाभक्तिकरिमनुजहमारी । मनकीसकलवासनाजारी ॥
जगनिरमोहीहैममोही।भजतमोहिंकहुकोनहिंद्रोही॥२५॥कनकअमलबिनअमलनजैसे।ममपदप्रीतिहीनजनतैसे॥
सुनतकहतजसजसममगाथा । जसजसकरतसंतकरसाथा ॥ तसतसबाढ़तप्रेमविशेषै । सूक्षमतत्त्वमोरजनदेषै ॥
जिमिक्रमक्रमहगअंजनलाई।लखैपदारथरोगविलाई२६ध्यावतविषैहोततेहिलीना।तिमिमोहिंलीनजोमोहिंमनदीना॥
तातेविषयमोददुखकारी।स्वप्नमनोरथसरिसविचारी।करिमनअचलविषयसुखत्यागी।भजहुमोहिंह्वैअतिअनुरागी२८
[illegible]रीनारीसंगनिसंगा । तजैदूरितेरँगैनरंगा ॥ बैठेशुचियकांतथलजाई । ध्यावैमोहिंआलसैविहाई ॥ २९ ॥

दोहा-तसनहिंनारीसंगते, जगमहंपुरुषनसात । जसतियसंगीसंगते, लहतकलेशअघात ॥

औरसंगशोकदनहिंकैसो । नारिनारिसंगिनिसँगजैसो॥सुनियदुनाथवचनसुखकारी।पुनिउद्धवअसगिराउचारी॥३०॥

उद्धव उवाच ।

जौनरूपअरुजोकरिरीती । तुमकोध्यावहिसुमतिसप्रीती ॥ हेअरविंदनैनयदुराया । देहुसुनायसकलकरिदाया ॥
जानिसखाकीअतिअभिलाषा । कहनलगेहरिगोपनराषा ॥ ३१ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

ऊनवसनसमधरणिविछाई । तनसूधोकरिअतिसुखछाई॥करिकैअंकपाणितरऊपर । करैदीठिनासिकाअग्रपर॥३२॥
पूरककुंभकरेचककरिकै । प्राणमार्गशोधैसुखभरिकै ॥३३॥ उरमहँपुनिप्रणवहिकाहिंध्यावै।प्राणवायुतेताहिउठावै॥
जवद्वादशअंगुलवहआवै । कमलनालसूतहिसमभावै ॥ घंटानादसरिसतेहिनादा । ध्यानकरैबुधयुतअहलादा ॥

दोहा-मूलाधारहितेउठै, आवैशिरपरयंत । स्वरअरुबिंदुमिलायकै, ध्यावैप्रणवसुतंत्र ॥

जौनेक्रमतेप्रणवउठावै । तेहिक्रमतेपुनितहँबैठावै ॥३४॥यहिविधिक्रमसोंदशदशवारा । करैत्रिकालजोबुद्धिउदारा॥
यकमासहिमहँसद्धुलासू।इंद्रिजितहठिजीतहिश्वासू॥३५॥पुनियहिविधिहियपंकजध्यावै।ऊरधनालअधोमुखभावै।
कीकरिभावनासुजाना । उपरलठायकरैअसध्याना॥३६॥आठपत्रकर्णिकासुतामें । प्रथमसूर्यमंडलहैजामें ॥
रिचंद्रमंडलकहँदेखै । फेरिआनिमंडलहिपरेखै ॥ पावकमंडलकेमधिमाँहीं । ध्यानकरैयहिविधिमोहिंकाँहीं॥३७॥
गसमानसुशांतसरूपा । चारिबाहुवरवदनअनूपा ॥ अतिसुंदरहैकंठकपोला । तिनमेंअलकछलकछविलोला ॥
दहँसनिपुतश्रवणसमाना । मकरसुकुंडलभासमहाना॥कनकसरिसपटवपुघनश्यामा।श्रीवत्सादिकचिह्नललामा॥

दोहा-रमालसतिउरमेंअमल, जिमिनीरदछनजोति । शंखचक्रअंबुजगदा, युतवनमालाजोति ॥ ३९ ॥

पुरपगकिंकिणिकटिमाँहीं।कौस्तुभछटादिशनिछहराहीं।कोटिशशिरविकोटिप्रकासी।रतनजटितकरकटकविभासी
तनजटितअंगदमणिबाहू । कमलनैननाशकदुखदाहू ॥ सुंदरअंगसकलमनहारी । देहिकोटिमनसिजछबिवारी॥४१
यकपृथकममअंगनिमाहीं । रारोचित्तसुजानसदाहीं ॥ मनकोइंद्रियविषयनतेरे । सोचित्लावैरूपहिमेरे ॥ ४२ ॥

उद्धव उवाच।

ब्रह्मवादिजेज्ञानिउदारा। करहिंविविधसाधनपरकारा॥ धौंबहुसाधनमेंमनदीन्हें। धौंतुमभिल्हुएकहीकीन्हें॥ भक्तियोगतुमकह्योअकामा। सबतजिमोहिभजैबसुजामा॥औरअनेकनमुनिविज्ञानी। मुक्तिरीतिबहुभाँ तातेभयोमोहिंभ्रमभारी। नाथकृपाकरिदेहुनिवारी॥सखावचनसुनिकृपानिधाना। कहेवचननाशकभ्रमनाना

श्रीभगवानुवाच।

वेदनमहँममधर्मविशाला। नष्टभयेतेप्रलयहिकाला॥ सृष्टिकालमहँवेदनकाँहीं। उपदेशोमैंब्रह्मापाहीं॥ ३॥ निजसुतमनुकहपुनिकरतारा।चारिहुवेदनकियोउचारा।मनुभृगुआदिकशांतऋपीशन।कियवे पुनिऋपिसप्तहुवेदनचारी। वरन्योजानिजानिअधिकारी ॥ देवदनुजअरुमनुजअपारा।

दोहा-विद्याधरचारणभुजग, राक्षसजेवलरासि। किंपुरुषहुअरुकिन्नरहु, औरहुद्वीपनिवासि॥ ५॥

तिनकोभाँतिअनेकप्रभाऊ।सतरजतमयुतविविधसुभाऊ॥विविधभाँतिकेअहैनिवासा।विविधभाँ त्रिगुणरुभावहितेबहुभाँती।प्रगटतभिन्नभिन्नमतिजाँती॥ जससुभावतसबोलहिंबानी। वेदअर्थकोबहुविधिकरहीं। अनुचितउचितनकछुचितधरहीं॥ ७॥ परंपरासोईचलिआई। तातेभैपखं वेदअर्थसमुझैंनहिंनेकू। करैंअर्थमनकेरअनेकू॥ ८॥ ममआयामोहितमतिजिनकी।बहुसाधन जैसेउनकेमनमहँआवै। तैसेसाधनमुखनिजगावै॥ ९॥ मीमांसकअसकरहिंबखानी। कर्महिं करहिंकाम्यभापहिंकविलोगू। कीरतिहीतेस्वर्गसँयोगू॥ जबलगिसुयशकहैसबकोई। तबलगिवा

दोहा-वात्स्यायनमतकेजोकोउ, तेगुनिकामप्रधान। भोगहेतुसाधनकरत, कहततातहिकल्यान॥

सदायोगशास्त्रहिजोधारे। तेऐसोनिजमतहिउचारे॥ शमदमसत्यअहैसबसाधन। यहितेकछुनईशअ नीतिशास्त्रवारेअसभाखैं। जाकेधनसोइसुखफलचाखैं॥ चारवाकनास्तिककहैंजेते। भोजननित्यगुनतसुखतेते जामेंहोइनतनकोपीरा। सोइसाधनकरतेधरिधीरा॥ कोऊयज्ञकोसाधनमानै। कोउसाधनमानतहैदानै॥ कोउसाधनमानतयमनियमें।कोउव्रतसाधनमानतहियमें॥१०॥येजोसाधनदियोबखानी। लेहुतुच्छसबकेफ इनतेअंतसमयदुखहोई। इनतेकोउनलियोमोहिजोई॥ इनकेकियेबढतअज्ञाना। क्षुद्रअनंदलेहुअनुमाना॥ शोकमोहकेदायकसिगरे।इनकेकियेजनमसबबिगरे॥११॥जोकोउछोड़िसकलमनकामा।मोपदध्यावतहैंम

दोहा-ताकोसुखजैसोमिलत, सोसुखलहैनकोय। मैंआतमसबकोअहौं, आतमतेसुखहोय॥ १२॥

सबसाधनकोतजिजोकोई। इंद्रियजीतिशांतिपुनिहोई॥समदरशीमोपदअनुरागी। तेहिसमनहिंकोउज सबैकालसबदेशनपाहीं। मगनरहतपरमानंद्रमाहीं॥ कौनेहुसुखनरहततेहिवाकी। मैंपूरहुंमनकीरतिताकी॥१३ हैअनन्यजेदासहमारे। तेकबहूँनहिंकरतखँभारे॥ भूपचक्रवर्तीपदकाहीं। मोहिंविनचाहतकबहूँनाहीं॥ सातपतालनकीठकुराई।मोहिंविनातिनकोतुच्छदेखाई॥पुनिमहेंद्रपदअरुविरंचिपद।मोहिंविनममजनदेखतदुख योगसिद्धिहोतीजगजेती।मोहिंविनचहतनसज्जनतेती॥औरकहाँलगिउद्धवभाषैं।मोहिविनमुक्तिहुनहिंअभिलाषैं ऐसेजेहैंदासहमारे। तेप्राणहुतेमोहिंपियारे॥ असप्रियमोरदासमोहिंकाहीं। तसशंकरसंकर्षणनाहीं॥

दोहा-नहिंपदमानहिंपदमजहु, नहिंतसममप्रियदेह। जसमोकोममदासप्रिय, जोकियसबतजिनेह॥

जैसेप्रियहौआपहमारे। तसकोउदृगनहिंपरतनिहारे॥१५॥जेमुनित्यागहिंवैरविलासा। समदरशीहैंशांतनिरा तिनकोमैंनितहीपछियाहूँ। पदरजलहिपवित्रह्वैजाहूँ॥१६॥जेमेरेपदमहँकियप्रीती। मोहिंताजिदुतियनकरपर शांतमहांतदयाकेसागर। हैंअकामसिगरेगुणआगर॥ तिनकोममसेवतसुखजोई। सोमुक्तिहुलहिलहतनकोई नहिंइंद्रिहुजितजोममदासा।राखतमोहिंमिलनकीआसा॥कबहुँजोविषैजोरतेहिकरहीं।भक्तिअनलतेतोहठिनर लघुअनलअनिललहिबाढ़ो।जारतदारुसमूहनिगाढ़ो॥ तैसेथोरिहुभक्तिहमारी। लहिसतसंगहोतअतिभ नाशतिपापसमूहनिकाहीं। राखतनहिंशंकामनमाहीं॥१९॥नहिंवशकरतमोहिंबहुयोगू। नहिंवशक

कालांतरयामीमोहिंजानी । करैउपासनजोविज्ञानी ॥ सोइईशतासिद्धिहिपावै । अवसुनुजोवशिताकहवावै ॥१५
विषयभोगयद्यपिवहुलहई । तामेंकवहुँअसक्तिनरहई॥वशितासिद्धितासुहैनामा । जेहिविधिलहैसोसुनुमतिधामा
जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिअवस्था । इनतेरहितजीवजोस्वस्था ॥ तेहिअंतरयामीभगवाना । नारायणमोहिंभजैसुजाना
सोईसिद्धिवशिताकहवावत।अवसुनुकामिकजोनकहावत॥जोसुखकरिसवसुखमिलिजाहीं।कामिकसिद्धिकहैतेहिकाहीं॥
मैंप्राकृतगुणतेहौंहीना । दिव्यगुणनतेसहितप्रवीन॥ऐसोमोहिंकरैजोध्याना । सोइकामिककोलहतमतिवाना॥१७॥

दोहा–आठसिद्धिकेसिद्धिकी, दईउपायसुनाय । विषयसिद्धिहूसुनहुअव, तिनकीकहौंउपाय ॥

गुणमेंविषयसिद्धिदशजेई । अवमैंवरणौंतुमतेतेई ॥ जरामरणऔक्षुधापिपासा । शोकमोहजेहितेहैनासा ॥
ऐसीसिद्धिअनूर्मिकहावै । वरणौंमैंजेहिविधितेहिपावै ॥ श्वेतद्वीपकेहैंप्रभुनाथा । शुद्धसत्त्वधर्मनकेमाथा ॥
असगुनिमोमहँचित्तलगावै।शुद्धरूपताकोह्वैजावै॥ सिद्धिअनूर्मिलहतसुखभरनी । अवसुनुदूरदरशनीश्रवनी ॥१८॥
नभअंतरयामीमोहिंमाहीं । सुमिरैजोजनसुखितसदाहीं ॥ दशप्रकारकेजेहैंनादा । तिनकोध्यावैविगतविषादा ॥
सुनहिअकाशहुकीसववानी । कहहिंदूरकोउलेइसुजानी ॥१९॥ सूरजकहँजोदृगमहँध्यावै।दृगमहँसूरजकाहलगावै॥
दृगमहँसूरजयहममरूपा । ध्यानकरैजोसुमतिअनूपा ॥ सूक्ष्मदीठितेहिहोतिविशेषै।सिगरीवस्तुभवनकीदेषै॥२०॥

दोहा–तीजीसिद्धिमनोजवी, यहीकहतकविराय । जहाँजायमनवेगतेतहँदेहतिमिजाय ॥

मनोजवीसिधियहिविधिपावे । मनकोपवनसँयोगकरावे ॥ करहितनहुपुनिमनसंयोगू । तनमनपवनहुमहँवुधलोगू॥
करैमोरसुंदरवपुध्याना । मनोजवीसोलहतसुजाना ॥ २१ ॥ वहुतरूपधरैजोकोई । सिद्धिप्रत्यक्षवेसहैसोई ॥
तौनसिद्धिजेहिविधिमिलिजाई।सोउपायमैंदेतसुनाई ॥ शक्तिविचित्रयुक्तिमोहिजानी।प्रथमयोगकरैसिधिविज्ञानी ॥
ोगसिद्धिजवतेहिह्वैजावै । तवजोइजोइरूपउरध्यावै ॥ तेहीकालमेंरोकरिध्याना । होयरूपसोतुरतसुजाना ॥२२॥
वसुनुसिधिपरकायप्रवेशा । तेहिसाधनअसजानुमहेशा ॥ चहैप्रवेशजौनतनमाहीं । तेहितनमेंसुमिरैमोहिंकाहीं ॥
ीवहिप्राणवायुकेसंगा।करवावैप्रवेशसवअंगा॥सिधिपरतनप्रवेशइमिभावै।जिमिसुमतजिअलिसुमनहजावै ॥२३॥

दोहा–अवसुनुइच्छामरणसिधि, जेहिउपायसोंहोय । तुमसोंवरणनकरतहौं, सुनौचित्तदेसोय ॥

वयोगीचाहैतनत्यागन । करहिविशेषितवहियहसाधन ॥ एडीकोगुदमाहँलगाई । प्राणवायुहियलेइचढ़ाई ॥
हियतेपुनिउरमेंपहुँचावै । उरतेपुनिकंठहिलैजावै । कंठहितेपुनिशिरपहुँचावै । ताकोतहँनेगुरुठहरावै ॥
फेरिकरिकैपदसुरतिहमारी ।ब्रह्मरंध्रतेदेहनिकारी ॥ यहिविधितेजोतजैशरीरा । जहँमनकरैजायतहँधीरा ॥ २४ ॥
अवजेहिसिधितेदेवनसंगा । करैविहारसोसुनहुप्रसंगा ॥ शुद्धसत्त्वमेंगेवपुध्यावै । पुनिनहिंमनओरथलैजावै ॥
सोविमानचढ़िदेवअरामा।सुरवनितनसँगकरैअरामा ॥२५ ॥ जोमनकरैमिलैतेहिसोई । सोउपायवरणौंजिमिहोई ॥
सतिसंकल्पमोहिजोजानी॥अचलचित्तकरिभजैविज्ञानी॥मिलनताहिमनवांछितफलहै।वचनसिद्धिअवसुनहुसकलहै .

दोहा–मोहिंस्वतंत्रप्रेरकगुनै, करैभजनममजोय । सोगुणताकोमिलतहै, वचनसिद्धिदृढ़िहोय ॥

कलजगतकेप्रभुहँवासी। असगुनिमोहिंध्यावैमतिरासी॥जहँजहँचाहैतहँचलिजावै।तेहिगतिमैंकतहूँनहिपावै॥२७
शीसोद्धविषयमदगाई । पाँचसिद्धिकीकहौंउपाई॥करनभक्तममनिग्रहनितमन।उदनत्रिकालज्ञानसेअगमन ॥
मनकोजानतसोइज्ञानी॥सुखदुखआदिकपरननजानी ॥अवसुनुजेहिविधितेविज्ञानी॥[illegible]
सिधिवमिंगकलउपाई । उद्धवसुनकोदेहुँसुनाई ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥२९॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ ३० ॥

दोहा–[illegible] ॥ ३१ ॥

चंचलचित्तरहननहिंपावै । अचलमोहिंमहँताहिलगावै ॥ जबसबअंगध्यानकरिलेई । तबचितदैसतमोमु... पुनिनहिंदेखैदूसरअंगा । रहैभरोआनंदउमंगा ॥ ४३ ॥ जबथिरमनममसुखह्वैजावै । त... ध्यानक्रियापुनिदेइबिसारी।रहैप्रेममहँमगननिहारी॥४४॥जीवहुकेभीतरमोहिंकाहीं । यहीरूपवुधलखैसदाहीं॥ दोहा–यहिविधिकरिकैध्यानमम, योगीमनहिलगाय । गगनतहँवैकुंठको, जगभ्रमसकलनशाय ॥

इतिसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाराजश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौएकादशस्कन्धेचतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा–जोयोगीइंद्रियजितै, जितैमनहुअरुश्वास । होइदासममताहिसब, सिद्धिमिलैअनयास ॥ सुनिवसुदेवकुँवरकेबैना । विनयकरीउद्धवभरिचैना ॥ १ ॥

उद्धव उवाच ।

कहहुनाथधारणाप्रकारा । कितीसिद्धिसंसारमँझारा ॥ कहहुसकलसिद्धिनकेनामा । कैसीसिद्धिहोतिश्रीधामा ॥ कौनधारणातेयदुराई । कौनसिद्धिजनकोमिलिजाई ॥ तुमहौसबसिद्धिनकेदाता । मोसेकहहुकृपाकरिताता ॥ सुनिउद्धवकेवचनकृपाला । कहनलगेसिद्धिनकेमाला ॥ २ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

भनहिंसिद्धजनसिद्धिअठारैं।उतनेहीधारणाउचारैं॥तिनमेंआठसिद्धिमोहिंप्यारी। दशसिधिदेहिंविषयसुखभारी॥ अणिमामहिमालघिमाजानो । प्राप्तिप्रकाशईशतामानो॥४॥वशिताऔरकामिकाजेई । उद्धवआठसिद्धिहैंयेई । येसिधिजोगिनिमिलहिंसदाहीं।सुनहुदशौअबसिद्धिनकाहीं॥पहिलीक्षुधातृषादिकहरनी ... दोहा–मनोजवीतीजीचउथि, करनियथेच्छावेश । ऊधौजानोंपाँचई, परकायापरवेश ॥ ६ ॥ इच्छामरणजानियोंछठई । देवविहारदेखिबोसतई ॥ जोमनहोइमिलैसोअठई । कहैसोहोइजानियेंनवई ॥ उड़िअकाशगवनेजहँचाहै । द... औरहु... पहिलीहैत्रिकालकरज्ञाना।द्वितियनउष्णशीतकरभाना॥तीजीपरमनगतिविलोकिबो ... पँचईकोहुतेहारबनाहीं ॥८॥ इमिगुनिपाँचोंसिद्धिनकाहीं ॥ जौनधारणातेसिधिजोई । ... प्रथमआठसिधिकेरिउपाई । सकलदेहुँमैंतुमहिंगनाई ॥ ९ ॥ अणिमासिद्धिवहीकहवावै । बड़वपुतेसूक्षमह्वैजावै॥ सूक्ष्मप्रकृतिकोअंतरबासी । मोहिंजानिजोभजैहुलासी॥अणिमासिद्धिसोइजनपावै । अबसुनुजोमहिमाकहवावै॥ दोहा–जोछोटोवपुआपनो, करैबड़ोविस्तार । ताकोमहिमाजानियें, उद्धवबुद्धिउदार ॥ महत्तत्त्वकेअंतरयामी। ध्यावैजोमोहिंगुनिबहुनामी॥महिमासिद्धिमिलतिहैताको।अबसुनुउद्धवसिधिलघिमाको॥ गरुयेतेहलुकोह्वैजावै । ताकोकविलघिमासिधिगावै ॥ अंतरयामीसूक्ष्मकालको । असध्यावैजोमोहिंदयालको॥ लहतसोलघिमासिद्धिसुजाना।प्राप्तिसिद्धिअनकरहुँबखाना१२सबकेइंद्रिनमेंसुसिताता।सकलविषयसुखकरबल... फिरिआवैअपनेतनमाहीं । वरणहिप्राप्तिसिद्धितेहिकाहीं॥सात्त्विकअहँकारमहँवासी। मोहिंध्यावतजोपरमहुलासी॥ सोइप्राप्तिसिद्धिकहवावै । सुनुप्रकाशिकाजसकविगावै ॥१३॥विनासुनीदेखीजोअहई । ताकोजानियथारथकहई । ताकोकरैसकलविधिजोई । सिधिप्रकाशिकाकविकहसोई ॥ महातत्त्वसबजगतअधारा । तामेंध्यावैरूपहमारा। दोहा–सोप्रकाशिकासिद्धिको, पावतहैमतिवान । सिद्धिईशताजोनहै, सोमैंकरोंबखान ॥ १४ ॥ ... । दैरासैआशुहिसोइताको ॥ यहीईशतासिद्धिकहावै । सुनुअबजेहिविधियहिजनपावै ।

तेजनमहँमेंभानुदराजा । मोररूपमनुजनमहंराजा ॥ १७ ॥ उचैःश्रवातुरंगनमाहीं । उद्धवतुमजानहुमोहिंकाहीं
धातुनमहँसुवर्णवपुमेरो । शासकमहँयमकरहुनिबेरो ॥ सर्पनमहँवासुकीउचारो ॥ १८ ॥ नागेंद्रनमहशेषाविचारो
हेउद्धववनजीवनमाहीं । जानहुतुममृगेंद्रमोहिंकाहीं ॥ आश्रममाहिंजानुसंन्यासा । वरणनमहँमेंविप्रनिराशा ॥१९॥
तीर्थनमेंसुरधुनिममरूपा।सरनमाहिंगुनिसिंधुअनूपा॥आयुधमाहिंशरासनजानो।धनुधरमहँत्रिपुरारिबखानो ॥२०॥
गिरिनमाहिंमोहिंगुनोसुमेरा । गहननमहँहिमगिरिवपुमेरा ॥ पीपरलेहुतरुनमहँमानी । लेहुजवाअन्नमहँजानी ।
गुनोवसिष्ठपुरोहितमाहीं । वेदविदनमहँसुरगुरुकाहीं ॥ चमूपतिनमहँरूपहमारा । जानहुतुमकृत्तिकाकुमारा ॥

दोहा—करहिप्रवर्तनजेसदा, संप्रदायजगमाहिं । तिनमेंचतुराननगुनो, मेरोरूपसदाहिं ॥ २२ ॥

ब्रह्मयज्ञमहँयज्ञनमाहीं।व्रतौअहिंसनसबव्रतनाहीं॥अनिलअनलजलवचनहुभापहु।शुचिकरमहँपाँचोंमोहिंमानहु २३
आठहुअंगअहैंजोयोगू । कहैसमाधिमाहिंबुधलोगू ॥ जीतनकोजेचहैंसदाहीं । विजयमंत्रमैंहौंतिनकाहीं ॥
अहैजोज्ञानयोगवहुतेरो । तिनमेंआत्मज्ञानवपुमेरो॥ख्यातिवादिजेशास्त्रकहावैं।तिनमेंमुनिविकल्पमोहिंगावें॥२४॥
रनमेंमैंहौंसतरूपा । पुरुषनमेंमैंहौंमनुभूपा ॥ जेतेमुनिहैंधर्मपरायण । तेहिमेंमोहिंगुनिनरनारायण ॥
लब्रह्मचारिनमहँप्यारे । सनकादिकहैंरूपहमारे ॥ २५ ॥ सकलधर्ममेंधर्मप्रधानो।शरणागतमेरोवपुजानो ॥
नेहैंजगमेंकल्याना । मोरिसुरतिमोहिंजानुसुजाना ॥ गोप्यवस्तुजेजगमहँज्ञानी । तिनमेंमैंमौनहुप्रियबानी ॥

दोहा—जेतेदंपतिजगतमें, तिनमेंमोहिंविधिमान ॥ २६ ॥ संवत्सरमोहिंजानिये, कालनमेंमतिवान ॥

ऋतुमेंमैंअहौंवसंता।मार्गशीर्षमासनमहँसंता ॥ नक्षत्रनमहँअभिजितजानों ॥२७॥ युगमेंमोहिंसतयुगपहिचानो॥
लअसितधीरनरमाहीं।बुधमहँव्यासजानुमोहिकाहीं॥शुक्राचारजजानिकविनमहँ॥२८॥वासुदेवमेंभगवाननमहँ ॥
क्तनमेंतुमहमैंसुजाना । वारणमेंमैंहौंहनुमाना ॥ विद्याधरनमाहँमतिधामा । जानहुमोहिंसुदर्शननामा ॥ २९ ॥
मरागमेंरतननमाहीं । कमलकोशहैंसुंदरपाहीं ॥ तृणजातिनमेंकुशादिव्यमें । गोघृतजानेहोमद्रव्यमें ॥ ३० ॥
यनहितबहुकरैंउपाई । तिनकोधनमोहिंगुणसमुदाई ॥ छलनमाहँमोहिंयुवाविचारो । क्षमिनकेरिममक्षमाउचारो॥
हीसतोगुणसात्त्विककेरो ॥३१॥ वाजिनवोजरूपहैंमेरो ॥ बलिनकेरबलमोकहँजानो । भक्तनकर्ममोहिंअनुमानो॥

दोहा—मत्स्यादिकऔतारदश, तिनमहँमहीप्रधान ॥ ३२ ॥ गंधर्वनमहँजानुमोहिं, विश्वावसुमतिवान ॥

पूर्वचित्तिमेंअपसरमाहीं । गिरिथिरतागुनियेमोहिंकाहीं ॥ धरागंधगुणमोहिंविचारो ॥३३॥ रसमेंमधुरसरूपहमारो॥
तेजनमहँशिखिमूरतिमेरी।प्रभासूर्य्यशशितारनकेरी॥नभमेंशब्दस्वरूपहमारो॥३४॥पवनहुमहँमोहिपरसविचारो ॥
जेब्रह्मण्यजगतमहँजानो । तिनमहँबलिमोकहँपहिचानो ॥ जेजगमहँहैंअनुपमवीरा । तिनमहँमेंअर्जुनहौंधीरा ॥
उत्पतिस्थितिलैभूतनकेरी । उद्धवजानहुमूरतिमेरी ॥३५॥ पदकीगतिमोहींकहँजानो । वानीउक्तिमोहिंपहिचानो॥
इंद्रीपायुविसर्गमहीहीं । करकोटीबोमहीसहीहीं ॥ इंद्रिउपस्थमोदमोहिंगुनिये । त्वचापरसुमेंहौंअबसुनिये ॥
दृगकोदेरखरसनास्वादू । श्रुतिकोश्रवणघ्राणअह्लादू ॥ ३६॥ येसबमोकहँकरोविचारा । मंहौंपंचभूतअहँकारा ॥

दोहा—जीवप्रकृतिगुणमुक्तिजन, येसबमोरसरूप । ज्ञानतत्त्वसांख्यादिसब, ममवपुजानुअनूप ॥ ३७ ॥

चेतनअरुअचितपदारथजोई।ममबिनअहैनकहुँकछुकोई३८यद्यपिधृरिकनागिनगनतो।पदपिननिजविभूतिगनिसकतो।
कोटिनअंडरचनकरतूती । सकौंनगनिआपनीविभूती॥३९॥तेजविभवश्रीकीरतित्यागा।लाजक्षमाबलज्ञानविरागा॥
उद्धवजहँजहँतुमदेखहु । तहँतहँमोरिविभूतिपरेखहु ॥ ४०॥ संक्षेपपदकह्योविभूती । ममसंकल्पहिकीकरतूती ॥
राहिवेदयहिभौंतिउचारा । औरहुसुनुकछुवचनहमारा॥४१॥तनमनवचनहुइंद्रिनप्राना।मोकहँदेहुसमर्पिसुजाना॥
आवागमनरहिततबहेहो । बसिवैकुंठमोदबहुपैहो ॥४२॥ जोनहिंइंद्रियजीततज्ञानी । तामुदानतपव्रतमतिसानी ॥
पनतेनिकासिजातसबकैसे । काचेघटजलरुकतनजैसे ॥४३॥तातेरोचिसकलपटतेमन । मोमहँदेहुलगाइसंतजन ॥

दोहा–गुरुसेवैकरिआपनो, नीचोअनुसंधान । गुरुसज्जासनजानिकै, रहैनअतिनियरान ॥

गुरुकोआसनसेजहुजाना। निरखिहाथजोरैमतिवाना ॥ २९ ॥ असआचरणकरतगुरुकेहू । वसैब्रह्मचारीयुतनेहू ॥
करैनभोगविशालनिआसा । जबलौंकरैगुरूगृहवासा ॥ जबलौंपढ़ैनवेदउदंडा । ब्रह्मचर्यव्रतधरैअखंडा ॥ ३० ॥
मुक्तिब्रह्मचारीजोचाहै । तौयहिविधितेजन्मनिबाहै ॥ करैसमर्पणगुरुकहँदेहू । मोहिंगुनिगुरुपदकरैसनेहू ॥ ३१ ॥
अग्निगुरूअरुआतमकाहीं।मानैमेरोरूपसदाहीं ॥ यहिविधिगुरुगृहजनमबितावै । विनअघब्रह्मतेजसोपावै ॥ ३२ ॥
नारिनदेखबपरसबहाँसी । संभापणछोड़ैमतिरासी ॥ रहैजेएकैसँगनरनारी । दूरिहुतेनलखैव्रतधारी ॥ ३३ ॥
आचमनहुअचारअस्नाना । संध्योपासनशीलमहाना ॥ यहसबकरैसुजानअद्वेषी । पापिनपरसैनाहिंविशेषी ॥

दोहा–भोजनकरैअभक्षनहिं, पापिनसोनबताय ॥ ३४ ॥ यहीधर्मऔरहुनको, जोचहसुखसमुदाय ॥

लखैमोहिंसबभूतनमाहीं।करैनेमतनमनवचकाहीं ॥ ३५ ॥ यहिविधिजोकोउजनव्रतधारै ।सोपावकसमतेजपसारै ॥
मोरभक्तपावकअघजारै । सोसुधह्वैममसदनसिधारै ॥ ३६ ॥ पुनिजोब्रह्मचर्यतेकोई । चहैगृहस्थआश्रमैहोई ॥
सोपुनिवेदनअर्थविचारी । दैकैगुरुगुरुदक्षिणाभारी ॥ गुरुशासनलैमज्जनकरई।पुनिजोगृहनिवासचितधरई ॥३७॥
करैगृहस्थाश्रमजोआई । मनशुचिचहैवसैवनजाई ॥ अथवाचहैमुक्तिसुखरासी । तौसबत्यागिहोइसंन्यासी ॥
रौभक्तिहोइजोनाहीं । तौइकआश्रमरहैसदाहीं ॥ मोरेप्रेममगनजोहोई । तौजहँचहैरहैतहँसोई ॥ ३८ ॥
बबरनौंगृहस्थकीरीती । सुनियेउद्धवकरिअतिप्रीती ॥ पढ़िगुरुगृहनिवसैघरमाहीं । यहिविधिकरैविवाहतहाँहीं ॥

दोहा–अपनेतेकमउमिरिजेहि, होवैवरणसमान । सुंदरसरलसुशीलिनी, तियव्याहैमतिमान ॥

ौरहोइतियकोजौआसा।वरणक्रमहिव्याहैसहुलासा ॥ ३९ ॥ यज्ञवेदपढिबोअरुदाना ।धर्मद्विजातिनकेरप्रधाना ॥
दपढावबलीबोदाना । औरकराउबयज्ञननाना ॥ यहहैब्राह्मणहीकोधर्मा । विप्रजीवकायहिसोकर्मा ॥ ४० ॥
शैतेजतपजसलैदाना । असजोमनहिंकरैअनुमाना ॥ वेदपढावैयज्ञकरावै । यहिविधिनिजजीविकाचलावै ॥
ाहूमेंजोदोषविचारै । शिलावीनितौकरैअहारै ॥ ४१ ॥ जगसुखहेतविप्रवपुनाहीं । तवव्रतहितद्विजतनजगमाहीं॥
रेअनंतकरतसुखभोगू । तातेतपहिकरैबुधलोगू ॥ ४२ ॥ शिलानिनिजीविकाकराई । तातेउरसंतोषहिभराई ॥
ताकोमननिर्मलह्वैजातो । मोपदमहँप्रेमहिअधिकातो ॥ ऐसेपुरुषभवनहूमाहीं । निवसिलहैमेरेपदकाहीं ॥ ४३ ॥

दोहा–दुखितविप्रजोदासमम, तेहिजेकराहिंउधार । तिनकोआपतितेअवशि, मैंद्विजकरहुँउबार ॥

जिमिजलबूडतबोहितपावै । ताकोआशुशोकमिटिजावै।।तैसहिदीनपरायणजनको।करहुँउधारविलमनहिछणको ॥
नृपतिसुतसमप्रजनविचारै । प्रजाशोकसबभाँतिनिवारै ॥ जोभूपतिकेउरदुखहोवै । तोकरिमोरज्ञानतेहिखोवै ॥
मिगजफँस्योगजेशउबारै । तैसहिज्ञानसकलदुखदारै॥होयवीरधारैध्रुवधीरा । लखिनसकैगोब्राह्मणपीरा ॥४५॥
ोजोजगहोयभुवाला । सोसबपापजारिततकाला ॥ चढिकैभानुसमानविमाना । लहिकवासवतेसनमाना ॥
पुरकोहठिकरतपयाना।तहँपावतहैमोदमहाना ॥४६॥ विप्रहिंजोविपत्तिपरिजावै । वैश्यवृत्तिगहिकालवितावै ॥
थवाक्षत्रिवृत्तिसउछाहू । खड्गबाँधिकैकरैनिबाहू ॥ पैनहिंकरैनीचसेवकाई । नीचहिसेवतधर्मनशाई ॥ ४७ ॥

दोहा–जोक्षत्रीकोआपदा, कर्मविवशपरिजाय । वैश्यवृत्तितोकरिसदा, लेइनिवाहचलाइ ॥

थवाजीवहिलेशिकारै । अथवाविप्रभेषकोधारै ॥ पैनहिंकरैनीचसेवकाई । नीचहिंसेवतधर्मनशाई ॥ ४८ ॥
यहिआपदजोपरिजावै । शूद्रवृत्तिकरिकामचलावै ॥ जोशूद्रहिविपत्तिपरिजाई । करैजीविकाशूपिचढाई ॥
नेजजबविपत्तितेछूटै । तबनिजनिजसबधर्महिजूटै ॥ ४९ ॥ पढिकैवेदहोमकरिप्रानी । देवनकोपूजैगुरुमानी ॥
पितरनस्वधाउचारी । बलिदैभूतनकैसुखारी ॥ करितर्पणपूजैऋषिकाहीं । मनुजनकोअन्नादिकमाहीं ॥
जीवनकोअंतरयामी । मोकोजानतरहैअकामी ॥ ५० ॥ विनअधर्मजोधनमिलिजावै । ताहीतेनिर्वाहचलावै ॥
धनतेमखकरैसदाहीं । पालैपोषिभृत्यनकाहीं ॥ ५१ ॥ यद्यपिहोइकुटुंबहुगेहू । नहिंकुटुंबमहँकरैसनेहू ॥

दोहा–भूलैमेरोभजननहिं, लहिसुखदुखमतिमान । जगसुखसमसुखस्वर्गको, करैअनितअनुमान ॥ ५२ ॥

दोहा-गुरुसेवैकरिआपनो, नीचोअनुसंधान । गुरुसज्जासनआनिकै, रहैनअतिनियरान ॥
गुरुकोआसनसेजहुजाना । निरखिहाथजोरैमतिवाना ॥ २९ ॥ असआचरणकरतगुरुकेहू । बसैब्रह्मचारीयुतनेहू ॥
करैनभोगविशालनिआसा । जबलौंकरैगुरुगृहवासा ॥ जबलौंपढ़ैनवेदउदंडा । ब्रह्मचर्यव्रतधरैअखंडा ॥ ३० ॥
मुक्तिब्रह्मचारीजोचाहै । तौयहिविधितेजन्मनिबाहै ॥ करैसमर्पणगुरुकहँदेहू । मोहिंगुनिगुरुपदकरैसनेहू ॥ ३१ ॥
अग्निगुरूअरुआतमकाहीं।मानैमेरोरूपसदाहीं ॥ यहिविधिगुरुगृहजनमवितावै । विनअघब्रह्मतेजसोपावै ॥ ३२ ॥
नारिनदेखचपरसवहाँसी । संभापणछोड़ैमतिरासी ॥ रहैजेएकैसँगनरनारी । दूरिहुतेनलखैव्रतधारी ॥ ३३ ॥
आचमनहुअचारअस्नाना । संध्योपासनशीलमहाना ॥ यहसबकरैसुजानअद्वेपी । पापिनपरसैनाहिंविशेपी ॥
दोहा-भोजनकरैअभक्षनहिं, पापिनसोनबताय ॥ ३४ ॥ यहीधर्मऔरहुनको, जोचहसुखसमुदाय ॥
लखैमोहिंसबभूतनमाहीं।करैनेमतनमनवचकाहीं ॥ ३५ ॥ यहिविधिजोकोउजनव्रतधारै ।सोपावकसमतेजपसारै ॥
तीरभक्तपावकअघजारै । सोसुधह्वैममसदनसिधारै ॥ ३६ ॥ पुनिजोब्रह्मचर्यतेकोई । चहैगृहस्थआश्रमैहोई ॥
सोपुनिवेदनअर्थविचारी । दैकैगुरुगुरुदक्षिणाभारी ॥ गुरुशासनलैमज्जनकरई।पुनिजोगृहनिवासचितधरई ॥३७॥
करैगृहस्थाश्रमजोआई । मनशुचिचहैवसैवनजाई ॥ अथवाचहैमुक्तिसुखरासी । तौसवत्यागिहोइसंन्यासी ॥
मेरीभक्तिहोइजोनाहीं । तौइकआश्रमरहैसदाहीं ॥ मोरेप्रेममगनजोहोई । तौजहँचहैरहैतहँसोई ॥ ३८ ॥
अबबरनौंगृहस्थकीरीती । सुनियेउद्धवकरिअतिप्रीती ॥ पढ़िगुरुगृहनिवसैघरमाहीं । यहिविधिकरैविवाहतहाँहीं ॥
दोहा-अपनेतेकमउमिरिजेहि, होवैवरणसमान । सुंदरसरलसुशीलिनी, तियब्याहैमतिमान ॥
औरहोइतियकोजोआसा।वरणक्रमहिब्याहैसहुलासा ॥ ३९ ॥ यज्ञवेदपढिबोअरुदाना ।धर्मद्विजातिनकेरप्रधाना ॥
वेदपढावबलीबोदाना । औरकराउबयज्ञननाना ॥ यहहैब्राह्मणहीकोधर्मा । विप्रजीवकायहिसोकर्मा ॥ ४० ॥
नशैतेजतपजसलैदाना । असजोमनहिंकरैअनुमाना ॥ वेदपढावैयज्ञकरावै । यहिविधिनिजजीविकाचलावै ॥
याहूमेंजोदोपविचारै । शिलवीनितोकरैअहारै ॥ ४१ ॥ जगसुखहेतविप्रवपुनाहीं । तवव्रतहितद्विजतनजगमाहीं॥
मरेअनंतकरतसुखभोगू । तातेतपहिकरैबुधलोगू ॥ ४२ ॥ शिलानीनिजीविकाकराई । तातेउरसंतोषहिभराई ॥
ताकोमननिर्मलह्वैजातो । मोपदमहँप्रेमहिअधिकातो ॥ ऐसेपुरुपभवनहूमाहीं । निवसिलहैमेरेपदकाहीं ॥ ४३ ॥
दोहा-दुखितविप्रजोदासमम, तेहिजेकरहिंउधार । तिनकोआपतितेअवशि, मैंद्विजकरहुँउबार ॥
जिमिजलबूडतबोहितपावै । ताकोआशुशोकमिटिजावै।तैसहिदीनपरायणजनको।करहुँउधारचिलमनहिंछणको॥
तेसुतसमप्रजनविचारै । प्रजाशोकसबभाँतिनिवारै ॥ जोभूपतिकेउरदुखहोवै । तोकरिमोरज्ञानतेहिखोवै ॥
गजफँस्योगजेशउबारै । तैसहिज्ञानसकलदुखदारै॥होयवीरधारैध्रुवधीरा । लखिनसकैगोब्राह्मणपीरा ॥४५॥
जोजगदोपभुवाला । सोसबपापजारिततकाला ॥ चढ़िकैभानुसमानविमाना । लहिकैवासवतेसनमाना ॥
रकोदण्ठकरतपयाना।तहँपावतहैमोदमहाना ॥४६॥ विप्रहिंजोविपत्तिपरिजावै । वैश्यवृत्तिगहिकालवितावै ॥
वाक्षत्रिवृत्तिसरछाहू । खड्गबाँधिकैकरैनिबाहू ॥ पैनहिंकरैनीचसेवकाई । नीचहिसेवतधर्मनशाई ॥ ४७ ॥
दोहा-जोक्षत्रीकोआपदा, कर्मविवशपरिजाय । वैश्यवृत्तितोकरिसदा, लेइनिबाहचलाइ ॥
वाजीवादिसेलिशिकारै । अथवाविप्रवेपकोधारै ॥ पैनहिंकरैनीचसेवकाई । नीचहिंसेवतधर्मनशाई ॥ ४८ ॥
हिआपदजोपरिजावै । शूद्रवृत्तिकरिकामचलावै ॥ जोशूद्रहिविपत्तिपरिजाई । करैजीविकागूँथिचढाई ॥
जबविपतितेछूटै । तबनिजनिजसबधर्महिजूटै ॥ ४९ ॥ पढिकैवेदहोमकरिज्ञानी । देवनकोपूजैसुखमानी ॥
पितरनस्वधाउचारी । बलिदैभूतनकरैसुखारी ॥ करितर्पणपूजैऋपिकाहीं । मनुजनकोअन्नादिकमाहीं ॥
जीवनकोअंतरयामी । मोकोजानतरहैअकामी ॥ ५० ॥ विनअधर्मजोधनमिलिजावै । ताहीतेनिर्वाहचलावै ॥
अपनेतमसकैरसदाहीं । पालैपोपैभृत्यनकाहीं ॥ ५१ ॥ यद्यपिहोइकुटुंबहुगेहू । नहिंकुटुंबमहँकरैसनेहू ॥
दोहा-भृत्यमेरोभजननहिं, दहिसुखदुखमतिमान । जगसुखसमसुखस्वर्गको, करैअनितअनुमान ॥ ५२ ॥

संन्यासीकहँदेवविचारत । हमहिंनिदरिवैकुंठसिधारत॥१४॥ जोपटपहिरनचहैनवीना । पहिरेअचलाअरुकोपीना॥
दंडकमंडलगहेसदाहीं । तजीवस्तुधारैकछुनाहीं ॥ परैजोआपतितौमतिधीरा । धरैऔररक्षणेशरीरा ॥ १५ ॥
यतीनिरखिआगेपगधरई । वसनछानिजलपानहिकरई ॥ सत्यपूतबोलैसुखवानी । मनप्रसन्नजेहिकरैसुज्ञानी ॥१६॥
मौनहिदंडअहैवानीको । दंडअकामतनहिंज्ञानीको ॥ प्राणायामचित्तकोदंडा । यहीयतीकोअहैत्रिदंडा ॥

दोहा-तीनदंडजोधरतनहिं, धरतवंशहीदंड । ताकोउद्धवजानिये, यतीपूरपाखंड ॥ १७ ॥

चारिवरणमेंभिक्षामांगे । पैपतितनअशुचिनगृहत्यागै ॥ जाँचैसातभवनमहँजाई । नीकमिलनकोलोभविहाई ॥
जोपावैतेहिमेंसंतोषू । करैनविनदीन्हेपररोषू ॥ १८ ॥ पुरबाहेरसरिसरतटजाई ॥ बैठेशुचिह्वैमौनलगाई ॥
माँगेभोजनआयजोकोई । भोजनकरैताहिदैसोई ॥ नहिंवाकीविहानकोराखै । जगअकेलविचरैसुखराखै ॥ १९ ॥
इंद्रियजीतैआतमरामा । अपनेमेंमानैसुखधामा ॥ समदरशीमनकोहठिजीतै । रहैएकांतरहितजगभीतै ॥ २० ॥
मोमहँकरैप्रेमअरुभाऊ । आशैविमलसदाचितचाऊ ॥ मोरदासजानैजियकाहीं । मानैमोहिंव्यापकसबमाहीं ॥२१॥
इंद्रिनविषयभोगिबोबन्धन । विषयत्यागिहैमोक्षअबंधन॥यहीभाँतितेयतीसुजाना । बंधनमोक्षलखैकरिज्ञाना ॥२२॥

दोहा-इंद्रिनकोआधीनकरि, करिभावनाहमारि । विचरैजगमेंअतिमुदित, विषयविनोदविसारि ॥ २३ ॥

तीकेवलेभिक्षाहेतू । जायग्रामपुरमहँमतिसेतू ॥ पुण्यदेशवनसरितनमाहीं । विचरैयतीअकामसदाहीं ॥ २४ ॥
छुधावानप्रस्थतेमाँगे । तोममतामेंहिद्रुतत्यागे॥२५॥लखैअनित्यजगतसबकाला।तजेनेहदुहुलोकविशाला॥२६॥
ायाकाजजगतकहँजानी।निजस्वरूपलखितजेविज्ञानी।२७।अवसुनुपरमहंसकीरीती।जोसबतजिकियमोमहँप्रीती
ोडिजगतभ्रमकरैविरागा । करैज्ञानकरिममअनुरागा ॥ चारिहुआश्रमदेइविहाई । छोडेमनआशासमुदाई ॥२८॥
ालकजडगोवृषभसमाना । विचरैपरमहंसमतिमाना॥वैकलसरिसबकेबहुवानी । परमहंसमेरोजोध्यानी ॥ २९ ॥
ोवेदकर्मनिकछुनाहीं । धरेपपंडनहींतनमाहीं ॥ करेकबहुँनहिंहेतविवादा । गहिकोहुपक्षकरैनहिंवादा ॥

दोहा-सुखवादसोईअहे, जामेंममजसनाहिं । सोकबहूँमुखनहिंवदे, रँगोप्रेमरँगमाहि ॥ ३० ॥

ोहुनहिंडरेनहींडरवावे । कटुकवचनसबकेसहिजावे ॥ करैनकाहूकोअपमाना । तनहितकरैनवैरविधाना ॥ ३१॥
द्रवमेंव्यापकसबमाहीं।जिमिबहुजलपात्रनशशिछाहीं॥वैरकियोजोकोहुसोज्ञानी । तोमोसोंदियवैरहिठानी॥३२॥
ायमाहिजोमिलैनभोजन । सोनविषादकरैअपनेमन॥भोजनमिलैमोदनहिंमानै।मिलबनमिलबदैववशजानै॥३३॥
ानहितकरैउपाई । जातेनहिंशरीरनशिजाई ॥ तनकेरहेहोतहैजाना । तातेपावतमोक्षमहाना ॥ ३४ ॥
ासनसज्जादिककोई । अपनेतेमिलिजावैसोई ॥ ताहीतेनिर्वाहचलावै । तासुहेतनहिजतनलगावै ॥ ३५ ॥
ाआचमनहुआचारा । औरहुजेहैनेमअपारा ॥ परमहंसविधिसोंनहिंकरई । निजमतिकेअनुसरअनुसरई ॥
ोस्वतंत्रसबभाँती । डोलाकरतरहौंदिनराती ॥ ३६ ॥

दोहा-जातिसुरतितेहिरहतिनहिं, रह्योमोटमेंदेह ॥ ३७ ॥ जरीरज्जुजेहिविधिरहै, तिमिरहतीतेहिदेह ॥

ोरहुकछुसुनुमतिमाना।जेहिविरागभोनहिंममज्ञाना॥सोममप्रेमीगुरुढिगजाई । लेहिभक्तिउपदेशमहाई ॥३८॥
ोदोइनज्ञानविज्ञाना । तवलगिसेवहिगुरुहिंसुजाना ॥ मोररूपमानैगुरुकाहीं ।सेवनकरैप्रतीतिसदाहीं ॥ ३९ ॥
ोविषमभोगनहिंछूटो । ज्ञानविरागमोहिंनहिंजूटो ॥ तासुत्रिदंडपखंडउचारो । धर्मकर्मतेहिवृथाविचारो॥४०॥
ोकोअरुदेवनकाहीं । सेवनकरैप्रतीतिसदाहीं ॥ महाअधर्मीविषयविलासी । उभयलोकसोदियोविनासी ॥४१॥
ोहिंसासमतादोई । भिक्षुकधर्मजानियेसोई ॥ वनवासिनकोतपअरुयागा । जानहुमुख्यधर्मबडभागा ॥
ोदयापन्नसुविधाना । गृहीधर्मयुगजानुप्रधाना ॥ सुनहुब्रह्मचारीकेधर्मा । गुरुकोसेवनकरैसुकर्मा ॥ ४२ ॥

दोहा-ब्रह्मचर्यतपतोपव्रत, जीवदयाआचार । सकलब्रह्मचारीधरम, जानहुबुद्धिउदार ॥

ोनारिगमनजोटानै । ब्रह्मचर्यपहगृहिनबखानै ॥ यहीब्रह्मचारीकोधर्मा । जानुगृहस्थनकेपदशर्मा ॥
[illegible]ई । जानहुमुख्यधर्मसुखदाई॥४३॥यहिविधिकरिनिजधर्ममहान॥भजेअनन्यमोहिंमतिमाना ॥

...भाउसवजियमेंराखे। सोममभक्तिसुधारसचाखे॥ यहीभाँतितेउद्धवप्यारे। होहिदासजगजीवहमारे॥ ४

...सिवलोकनकरस्वामी। उतपतिस्थितिलैकरवहुनामी॥मोरिभक्तिजाकेहियहोई।उद्धवमिलतमोहिहैसोई

...रिनिजधर्मअमलमनभयऊ।मेरीरीतिजानिजोलयऊ॥ज्ञानविज्ञानसहितसोप्रानी।मोपुरगमनतद्रुतमतिखानी

...हजोवर्णआश्रमनधर्मा। कह्योअचारहुलक्षणकर्मा॥मोरिभक्तियुतजोयहकरई।सोवैकुंठवसिअतिमुदभरई॥

दोहा-यहपूछ्योउद्धवजोमोहिं, सोसवदियोवताय। भक्तिधर्मजेहिभाँतिकरि, मोहिमिलतजनजाय॥ ४८

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे अष्टादशस्तरंगः॥ १८॥

श्रीभगवानुवाच।

दोहा-शास्त्रयथारथअर्थयुत, जानेजोनसुजान। आतमअरुपरमात्मको, जाहिहोयसतज्ञान॥

तर्ककरैशास्त्रअनुसारा। मायाकृतजानैसंसारा॥ ज्ञानरूपसोजीवहिमानी। तेहिअर्पमोकोसुखमानी॥ १॥

ज्ञानीकोमैंपरमपियारो। मानतफलअरुफलदातारो॥ स्वर्गऔरअपवर्गहुकाहीं। मोतेप्रियमानतकछुनाहीं॥

ज्ञानविज्ञानयुक्तजोप्रानी। लेतविलक्षणसवतेमानी॥ [illegible]

तपअरुतीरथजपअरुज्ञाना। करतनपावनज्ञानसमाना॥ज्ञानभक्तिकेलेशहुकाहीं।जपतपतीरथपहुचतनाहीं॥

तातेमोहिंगुनिजियउरवासी।ज्ञानविज्ञानसहितमतिरासी॥भक्तिभावतेभजियेमोही।अवनहोहुभवसागरछोहीं॥

ज्ञानविज्ञानयक्षकरिप्रानी।सवमखफलदायकमोहिमानी॥लेहिसिद्धिमुनिवहुतउदारा।उतरिगयेभवसागरपारा।

दोहा-जियमेंउद्धवहैनहीं, त्रैजन्मादिविकार। येविकारहैंतनहिके, ऐसोकरहुविचार॥

हैनहिंआदिअंतहूनाहीं। मधिमहगुनहुविकारहिकाहीं॥ आदिमध्यअंतहुजोहोई। आत्मानित्यकहैसवकोई

सुनिमधुसूदनकीअसवानी। उद्धवकह्योजोरियुगपानी॥ ७॥

उद्धव उवाच।

[illegible]

जेभवसागरमाहँपरेहैं। त्रैतापनतेतापितखरेहैं॥ तुवपदछत्रसुधाश्रवजोई। तिनविनतिनहिंनरक्षकहोई॥ ९॥

भवविलगिरेकालअहिकाटे। तदपिक्षुद्रसुखठाढहिठाटे॥ तिनकेवचनसुधारससींची। [illegible]

सुनिउद्धवकेवचनअतोले। करुणाकरकरुणाकरिबोले॥ १०॥

श्रीभगवानुवाच।

सखाप्रश्नतुमजोयहकीन्हो। सुनहुतासुइतिहासप्रवीनो॥११॥भारतयुद्धभयोजेहिकाला।भयेनाशसववीरविशाला॥

दोहा-तवकुलनिधनविलोकिकै, धर्मभूपदुखपाय। शरशय्याभीपमपरे, तहाँगयेयुतभाय॥

गयेहमहुँतिनकेसँगमाँहीं। जुरेमुनीशअनेकतहाँहीं॥ भीपमसोंसादरतेहिकाला। पूछतभेवहुधर्मभुवाला॥

सुनिवहुधर्मधर्मनृपआछे। मोक्षधर्मपूँछतभेपाछे॥ मोक्षधर्मभीपमवहुभाषे। नृपसोंकछुछिपायनहिंराखे॥

सुनेभीष्मदेवहिमुखजोई। उद्धवतुमसोंवरणहुँसोई॥ श्रद्धाभक्तिविज्ञानविरागा। ज्ञानसहितभाष्योवड़भागा।

प्रकृतिपुरुपमहँतोअहँकारा। पंचविपयइंद्रियइग्यारा॥ पंचभूतऔरहुगुनतीना। अष्टाविंशतितत्त्वप्रवीना।

...नमेंआतमएकस्वरूपा। यहीजानिवोज्ञानअनूपा॥१४ [illegible] तनतेदूजेतनमेंजाई। विनहुशरीरसोहरहिजाई॥

[illegible]। सत्यसोईजोरहतसदाहीं॥ १६॥

[illegible]। अववरणहुँवैराग्यविधाना॥

दोहा-श्रुतिप्रत्यक्षइतिहासअरु, चौथोहैअनुमान। इनमेंनिश्चयहोतनहिं, विनवेदांतनिदान॥ १७॥
होतयहीवेदांतते, तृनतेविधिपरयंत। यहजगदुखदअनित्यहै, कर्महिफलमतिवंत॥
असविचारितेहिकरहिननेहू। यहविरागगुणविनसंदेहू॥१८॥ भक्तियोगतोपहिलेगायो। पैतुमसुननफेर्‍
तातेपुनिकैदेहुसुनाई। प्रथमसुनहुसाधनमनलाई॥ १९॥ मेरीकथासुधामतिमाना। श्रवणसप्रीतिकरैनितपाना
कीर्त्तनकरैचरित्रहिमेरो। पूजनकरैसप्रेमननेरो॥ करैपाठपूजनकेअंता। रामायणभागवतलसंता॥ २०॥
सादरसेवनकरेहमारा। अरुप्रणामसाष्टांगउदारा॥ मोतेअधिकमोरदासनकी। पूजाकरैविनावंचनकी॥
सबजीवनमहँमोकहँदेखै। मोतेअधिकभक्तममलेखै॥२१॥ ममहितकरैलौकिककहुकर्मा। सहजेकहेनामशुभधर्मा
मनकोमोपददेइलगाई। कामकर्मसबदेइविहाई॥ २२॥ मेरेहितबहुधनहुलगावै। मोहिंनिवेदभोजननितखावै।
दोहा-ममलीलामहँसुमतिनित, करैप्रमोदअनेक। मोरविरोधीहोइजो, तेहितनतकैननेक॥
जपतपव्रतमखनेमहुदाना। ममप्रसादहितकरैसुजाना॥ २३॥ ऐसोधर्मकरैजोकोई। आतममोहिंनिवेदैजोई।
ताहिहोतिहठिभक्तिहमारी। सकलमनोरथपूरणहारी॥ पुनिकछुताहिरहतनहिंवाकी। मैंमिलतोसुधिछोडिरमाकी २४।
रिसतोगुणकरिसमताई। जोमोमेंमनदेइलगाई॥ ताहिविभवअरुधर्ममहाना। मेंवकसौंवैराग्यविज्ञाना॥२५॥
मोहिंछोड़िविपयरसभोगै। कवहुँनतेहिछूटतभवरोगै॥ देखिपरतसिगरोविपरीती। होतअधर्महिमाहँप्रतीती॥२६॥
द्धवधर्मजानियेसोई। जातेमोरभक्तहियहोई॥ मेरोराखवसवथलभाना। सखाजानुसोईविज्ञाना॥
रैजोविपयभोगकरत्यागा। ताकोजानहुविमलविरागा॥ अणिमादिकसिधिमिलिवोजोई। अहोमहाऐश्वर्य्यहिसोई॥
दोहा-सुनतरुक्मिणीरमणके, वचनश्रवणसुखखानि। पुनिपूछ्योउद्धवसुमाति, जोरिजलजयुगपानि॥ २७॥

उद्धव उवाच।

कविधिकेयमनेमकहावैं। केहिकोशमअरुदमकविगावैं॥ कौनतितिक्षाअहैमुरारी। कौनधीरतादेहुउचारी॥ २८॥
कौनदानतपकौनशूरता। कौनसत्यऋतकौनकूरता॥ कौनत्यागअरुकाप्रियधनहू। कहँमखकहादक्षिणाभनहू॥२९॥
कौनपुरुपकोबलभगवाना। कौनविभवकालाभमहाना॥ काविद्याकाहैप्रभुलाजू। काश्रीकासुखदुखयदुराजू॥३०॥
कोपंडितकोमूरखअहई। कौनकुपथकेहिसुपथहिकहई॥ कहास्वर्गकानरकमहाना। कौनबंधुकाअहैमकाना॥३१॥
कौनदरिद्रीकोधनवाना। कौनकृपणकेहिईशवखाना॥ येतेप्रश्नऔरविपरीती। मोसोंवरणहुकरिअतिप्रीती॥
उद्धवप्रश्नसुनतसुखदाई। उत्तरदेनलगेयदुराई॥ ३२॥

श्रीभगवानुवाच।

सखाअहिंसासत्यअचोरी। लाजअसँगधनधरखनजोरी॥
दोहा-ब्रह्मचर्यअरुमौनता, आस्तिकताअरुधीर। क्षमाअभययेद्वादशों, यमजानहुमतिधीर॥ ३३॥
जपतपश्रद्धाहोमअचारा। अतिथनकोकरिवोसतकारा॥ तीर्थाटनअरुपरउपकारा। गुरुसेवनसंतोपअपारा॥
कोनिर्मलकरवसुजाना। येद्वादशकविनेमवखाना॥३४॥ प्रवृतिनिवृतिहूकेअधिकारी। येयमनेमसवैसुखकारी ३५॥
तेशयमोमहँबुद्धिलगावै। उद्धवसोईसमकहवावै॥ इंद्रिनकोअपनेवशराखै। ताकोदमश्रुतिशास्त्रहुभाखै॥
ाकठिनसहिवोदुखनाना। ताहितितिक्षाकहतसुजाना॥ रसनाऔरकामसुखजीतव। धीरजताहिकहतहैंकविसव ३६
रनकोदुप्राणिनकहँपीरा। परमदानतेहिकहमतिधीरा॥ करवसकलभोगनकहँत्यागा। यहैकहावततपवड़भागा॥
ागवअपनोकुटिलसुभाऊ। यहैशूरताकहकविराऊ॥ मोकहँसवथलदेखवप्यारे। यहीसत्यकविसकलउचारे॥ ३७॥
दोहा-सत्यमनोहरवचनजो, ऋतकहवावैसोइ। वैरअकाजहिकोकरव, यहीक्रूरताहोय॥
ागवकर्मकरवअभिमाना। ताकोशोचकहतमतिमाना॥ द्विवोनहिंधर्महिफलआसी। ताहित्यागिभापतमतिरासी३८॥
मेंहिप्रियहैपनसनकाला। सखामहीहोयागविशाला॥ करिवोज्ञानभक्तिउपदेशा। यहीदक्षिणागुनहुहमेशा॥

सबतेबल यहबलभारी । प्राणायामहिकैरैसुखारी ॥ ३९ ॥ ज्ञानादिकपट्गुणजेमेरे । तेइंहैंऐश्वर्यघनेरे ॥
होयजाहिममभक्तिमहाई । यातेअधिकनलाभदेखाई ॥ तजबतियहिसुरमानुपभाना । विद्यायहीजानुमतिमाना
नीचकर्ममहँहोयअप्रीती।यहीलाजकीजानहुरीती ॥ ४० ॥ सबमेंकरबअचाहसदाहीं । यहीकहतहैंकविश्रीकाहीं
सुखदुखसमनहिंमानबजोई । यहसुखतेसुखऔरनहोई ॥ निरतविपयसुखरहबसदाहीं । यहदुखतेदूजोदुखनाहीं

दोहा–बंधमोक्षकोजानतो, सोइंपंडितमतिमान । मूरुखसोईकहावतो, जाकेतनअभिमान ॥ ४१ ॥

मेरोभक्तिमार्गहैजोई । उद्धवसुपथजानियेंसोई ॥ मेरीभक्तिविमुखह्वैजावै । सोईकुपथकुरीतकहावै ॥
उदयसतोगुणकीमनमाहीं।कहतस्वर्गकविजनतेहिकाहीं ॥४२॥जबैतमोगुणहियअधिकाना।सोइकहावतनरकमहान
गुरुसमबंधुद्वितियजगनाहीं । सखामोरवपुगुनुगुरुकाहीं ॥ जोजगमेंयहमनुजशरीरा । सोईगृहजानहुमतिधीरा ।
जाकेगुणमहँसबजनराचो।सोईधनीजगतमहँसाचो ॥४३ ॥ जोनहिंतोपकरैजगमाहीं । कहतदरिद्रीकवितेहिकाहीं।
जोइंद्रिनकोलियोनजीती । सोईकृपणभरतभवभीती ॥ रँग्योविपयसुखमहँनहिंजोई । ईशसमर्थकहावतसोई ॥
करैजोकोइगुणमहँसंगा । सोइजानहुविपरीतिप्रसंगा ॥ ४४ ॥ उद्धवप्रश्नकियेतुमजेते । मैंउत्तरदीन्ह्योंसबतेते ।

दोहा–लक्षणतेगुणदोपके, बहुतकहेतेकाह । दोपदोपगुणदेखिबो, गुणनलखबतेहिकाह ॥ ४५ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ श्रीमद्भागवते एकादशस्कंधे एकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥

दोहा–उत्तरसुनिसबप्रश्नके, उद्धवबुद्धिप्रबुद्धि । बोलतभोकरजोरिकै, ज्ञानविज्ञानप्रबुद्धि ॥

उद्धव उवाच ।

विधिनिपेधतुवशासनवेदा । तासुप्रथमअसकियोविभेदा ॥ जोविधिकरैपुण्यफलहोवै । करैनिपिद्धपापसोजोवै ॥
अवगुणदोपनदेखनकहेऊ । तातेमोहिंसँदेहअतिभयऊ ॥ १ ॥ वर्णआश्रमहुचारिउचारे । ऊँचनीचहैजातिअपारे ॥
द्रव्यदेशवयकालहुआदिक।कह्योस्वर्गनरकहुमरयादिक ॥२॥ विनगुणदोपलखेयदुराई।विधिनिपेधजोतुमदियगाई॥
तामेंकेहिविधिहोइविश्वासा।विनविश्वासकिमिलहैहुलासा॥३॥पितरदेवअरुमनुजनकेरो।तुवभापितश्रुतिनैननिबेरो
विनावेदस्वर्गहुअपवर्गा । जानिपरतनहिंदुखसुखवर्गा ॥ साधनसाध्यपरतनहिंजानी । तातेशंकामोहिंमहानी ॥४॥
जानेविनगुणदोपनकाँहीं । किमिकल्याणहोतजगमाँहीं ॥ जानिपरतगुणदोपवेदते । पुण्यपापहैयहीभेदते ॥

दोहा–यहशंकाअबमिटतिनहिं, सोतुमदेहुमिटाय । सुनिउद्धवकेवचनअस, पुनिबोलेयदुराय ॥ ५ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

करनमनुष्यनकोकल्याना । तीनियोगमैंकियोबखाना ॥ कर्मज्ञानअरुभक्तिहुयोगू । सोजानहिंसिगरेमुनिलोगू ।
पावनकोकल्याणसदाहीं । चौथउपायअहैकछुनाहीं ॥ ६ ॥ देहिकर्मफलसकलविहाई ।तिनकोज्ञानयोगसुखदाई।
चहहिंकर्मफलजेजनभारी।तिनकोकर्मयोगसुखकारी॥७॥कौनिहुभाग्यउदयभैभारी । भईकथारुचिसुननहमारी।
भक्तियोगतेहिप्रदकल्याना।यदपिनभयोविरागविज्ञाना ॥८॥ तबलोंकरैकर्मबड़भागा । जबलोंहियेनहोयविरागा।
तबहींलोंविरागसुखकारी । जबलगिरुचिनहिंकथाहमारी॥९॥जोनिजधर्मनिरतमतिधामा।करैकर्मजनसदाअकामा
सोनहिंस्वर्गनरककहँजावै।जोनपापमहँचित्तलगावै ॥ १० ॥ यहीलोकमहँरहियहदेहू । तजिअपशुचिहिधर्मसनेहू।
पापविशुद्धज्ञानमतिमाना । लहतअनुग्रहमोरमहाना ॥

दोहा–भक्तिमोरिजबलहततेहि, उपजतजबअनुराग । तबमेरेपुरकोअवशि, गमनकरतबड़भाग ॥ ११ ॥

स्वर्गहुऔरनरककेवासी । रहतमनुजजन्महिकेआसी ॥ भक्तिज्ञानसाधकमतिधीरा । जानहुएकहिमनुजशरीरा।
मेरोपदप्रेमा । जोहैगतिसेमहुकरक्षेमा ॥१२॥ जससजनचहतनरककहँनाहीं । तसनुधचहैंनस्वर्गहुकाहीं।

यहूलोकमहँकरैननेहू । अतिअभिमानहोतयहदेहू ॥ भूलिजाततातेसवज्ञाना । विपयभोगमहँरहतलोभाना
तातेलहिकैमनुजशरीरा । जानैमृत्युनिकटमतिधीरा ॥जबलोंयहतननाहिंनशाई । तबलोंमोक्षहिकरैउपाई ॥ १
जिमितरुवरमहँकियेअगारा । तेहिकाटैकोइधारिकुठारा ॥ जबलोंतरुकहँकाटिनडारै । तब१९
तबहींतौसुखलहतमहाना।नहिंकलेशकोलहतनिदाना ॥१५

दोहा–तातेतनकोनेहतजि, भवसागरहिडेराय । तजिकुसंगलहिभक्तिमम, अपनोलेयबनाय ॥ १६ ॥

नरकस्वर्गअपवर्गहुकेरो । साधनमनुजशरीरनिवेरो ॥ अतिदुर्लभमिलिबोपुनियाको । दे१७
भौसागरकीबोहितजानो । ताकोगुरुनाविकअनुमानो ॥ ममप्रेरितलहिभक्तिबयारी ।
ऐसीनरतननावहिपाई । जोभवसागरनहिंतरिजाई ॥ तेहिसमपुरुपकोजगमाँहीं । गुनुआतमघातीतेहिकाँहीं ॥१
कर्मनिजानैदुखदाई । तौविरक्तआशुहिह्वैजाई ॥ इंद्रिनजीतिअचलमनकरिकै । मोहिंलगावैदृढताधरिकै ॥
बहुँजोकरैचित्तचपलाई । तबकछुविपयहुदेहुलगाई॥क्रमक्रमसोंतेहिवशकरिलेई । वशाहिभयेपुनिजाननदेई॥
नकोकरैनकबहुँविश्वासू । दगादारजानैनिजपासू ॥ भलीभाँतिजबमनवशहोई । तबपावतअनँदअतिसोई ॥२०

दोहा–मनकोकरबअचंचलो, परमयोगयहजान । ताकोक्रमक्रमसोंकरै, अपनेवशमतिमान ॥

वेगरोतुरँगजौनमुँहजोरा । तजिमगगमनतऔरहुठोरा ॥ ताकोकछुचढायक्षुरकावै । तौतुरंगअपनेवशआवै ॥
सहिविपयचपलमनजोई । निकसिजातहैवरवशसोई ॥ कछुकछुविपयभोगतेहिदैकै । क्रमक्रमसोंअपनेवशकैकै
ोपदमहँपुनिदेइलगाई । तौमनअवशिअचलह्वैजाई ॥२१॥ जोममपदमहँमननहिंलागे ।
थमप्रकृतितेजगप्रगटाई । पुनिप्रकृतिहिमहँदेहिलगाई॥जबलोंअचलनमनह्वैजावै।तबलोंयहीकरतरहिजावै ॥२२
ताकोमनतेभयोविरागा । पैमनअचलनभोवडभागा ॥ तौहठिकरैजेगुरुउपदेशै । तौमनहोवैअचलहमेसै ॥ २३
कहेयमादियोगपथजेते । ज्ञानविज्ञानऔरहैंतेते ॥ औरकरैममध्यानहुपूजन । तौवशह्वैसुमिरतमोहिंकोमन ॥२४॥

दोहा–जोप्रमादवशकबहुँकछु, निंदितकर्मह्वैजाय । तौअघज्ञानाहितेजरत, करतनऔरउपाय ॥ २५ ॥

निजनिजधर्महिप्रीतिप्रतीती । सोउपायनाशतिअघभीती ॥ ज्ञानीभक्तनकोमतिमाना । औरनप्रायश्चित्तविधाना ॥
अघनाशनहितकियोजोकर्मा । सोईताकोलगैअधर्मा॥२६॥सुनतप्रीतिमैंकथाहमारी । दियोसकलसुखभोगबिसारी॥
सकलकर्मजान्योदुखदाई । पैनतिनहिंजोसकतविहाई॥२७॥तौकरिमोहिमहँदृढविश्वासू।करैभक्तिकरिप्रीतिप्रकाशू॥
विपैभोगनिंदितमनमाँहीं।क्रमक्रमतेत्यागततिनकाँहीं॥भोगतविपैमोहिंजोभजतो।सोऊपुनिभवनिधिनहिंव्रजतो २८
भक्तियोगतेबारहिबारा । भजतमोहिंजोभक्तहमारा ॥ ताकेहियविशेपिमैंआऊँ । विपयवासनासकलनशाऊँ ॥२९॥
छूटिजाइसबजियकीगाँठी।सिगरोसंशयदेहुउकाठी॥काम्यकर्मह्वैजावहिछीना।निरखतमोहिंहियजबहिंप्रवीना ॥३०॥

दोहा–मोरभक्तजसभक्तते, तुरतमिलतमोहिकाहिं । तैसोज्ञानविरागते, मोकोपावतनाहिं ॥ ३१ ॥

धर्मकर्मकरिजोफलपावै । तपहुदानतेजोमिलिजावै ॥ तीर्थगमनतेनेमव्रतादिक । जोफलपावतहैश्रुतिवादिक ॥
जोफलपावतकिदेविरागा । ज्ञानहुतेजोफलवडभागा॥३२॥येफलसकलसखाअनयासू । भक्तिहितेपावतममदासू ॥
स्वर्गऔरअपवर्गविकुंठा । चहतभक्तिजोबुद्धिअकुंठा ॥ तौदुर्लभकछुहैतेहिनाहीं । यहासिद्धांतगुनौमनमाहीं ॥३३॥
रभक्तसज्जनमतिधीरा । एकांतीनाशकभवपीरा॥तिनकोयदपिमुक्तिहमदेहीं । तदपिभक्ततजिमुक्तिनलेहीं॥३४॥
बफलतजवपरमकल्याना । यातेअधिकधर्मनहिंआना॥जाकेहोतनकछुफलआसा।सोईभक्तिलहतममदासा॥३५॥
कांतीजेभक्तहमारे । समदर्शीहंसाधुउदारे ॥ प्रकृतिहुपरममरूपमिलापी । तिनगुणदोपहोतनहिंपापी ॥ ३६ ॥

दोहा–यहपथमेरेमुखकथित, चलैजोकोउसुजान । रूपजानिममसोलहत, ममपुरमोदमहान ॥ ३७ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि
श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे विंशस्तरंगः ॥ २० ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा—गुणदोषनकेप्रश्नजो, तुमकीन्ह्योंमतिमान । सोतुमसोंविस्तरसहित, अबमैंकरौंबखान ॥
कर्मज्ञानभक्तिहुसुखदाई । यहममभाषितपंथविहाई ॥ तुच्छविषयभोगतसुखजोई । परतअहौभवसागरसोई
निजनिजअधिकारनमहँप्रीती । सोगुणहैअसकरहुप्रतीती ॥ जेनिजनिजअधिकारविहाई । औरेनमहँमनदेइलगाई
सोइविपरीतिजानियेंदोषू । यहीदोषगुणगुणहुअदोषू ॥ २ ॥ पंचभूतकरिकैअनुमाना । यदपिवस्तुसबअहैसमाना॥
शुद्धअशुद्धहुतेहिमहँजानी । तजैअशुद्धगहैशुधज्ञानी ॥ ३ ॥ धर्मऔरव्यौहारहिहेतू । तननिर्वाहहेतुमतिसेतू ॥
यहजोतुमसोंकह्योंअचारा । सोसकामहितजानुउदारा ॥ ४ ॥ पंचभूतकृततननिर्माना । तृणतेविधिपर्यंतसमाना
आतमहूसमानसबमाहीं। जीवनधर्मनिजाननकाहीं॥५ [illegible]

दोहा—देशकालफलवस्तुके, हैगुणदोषविधान । जातेगुनेस्वतंत्रनहिं, कोऊजानअजान ॥ ७ ॥
जौनदेशमेंनहिंमृगकारो । तौनदेशअतिअशुचिविचारो ॥ ब्राह्मणभक्तजहाँनाहिंकोऊ । देशअशुद्धजानियेसोऊ ॥
श्यामहुमृगपैजहँनहिंसाधू । तौनहुदेशअशुद्धअगाधू ॥ मगधदेशअरुअंगहुबंगहु । जानिअशुद्धहिऔरकलिंगहु ॥
कीकटदेशअशुद्धअपारा । तौनशोणनददक्षिणपारा ॥ जहँऊसरजहँयवननिवासू । भूमिअशुद्धजानियेतासू ॥८॥
अबसुनुकालअशुचिशुचिताता।ह्वैस्वतंत्रसुधकालप्रभाता॥युगयामहिभरिकरैसुकर्मा । पितरकर्मअपराह्नसुधर्मा ॥
द्रव्यशुद्धसोइकालसुजाना । जबैमिलैतबकीजैदाना ॥ अबसुनियेंअशुद्धजोकाला । जामेंहोतनधर्मविशाला ॥
सोवरसूदकअशुचिसदाहीं । तिनमेंयागयोगतपनाहीं ॥ द्रव्यजहाँमिलतीनहिंजोई । नानाजहाँउपद्रवहोई ॥

दोहा—तौनकालकोजानियें, अहैअशुद्धविशेषि । धर्मकर्मनहिंकीजिये, ऐसोकालपरेखि ॥ ९ ॥
शुद्धअशुद्धद्रव्यअबसुनहूँ । भणतवेदजससतसमैंभणहूँ ॥ पराशिमलादिअशुचिजोहोई । तनवसनादिशुद्धिजलधोई॥
भैशंकाकछुवस्तुनमाहीं । विप्रवचनतेशुद्धसदाहीं ॥ कुसुमादिकशुचिहैंजलसींचे । सूंघेयोगनदेवनगींचे ॥
वृष्टिअकालकेरजलहोई । दशदिनरहतअपावनसोई ॥ कालकेरवरषाजलजानी । अशुचितीनिदिनलौजैजानी ॥
थोरोजलपरसतचंडाला । होतअपावनहैततकाला । होइबहुतजलजहँसुनुताता । पापिहुपरसतनाहिंनसाता॥१०॥
जाकेहोइबहुतधनधाना । ताकोअसव्यौहारबखाना ॥ ग्रहणपरेकोपाकअनाजू । राखेनहिंभोजनकेकाजू ॥
जाहिमिलैनहिंपुनिकेभोजन । सोतेहिखायजायनहिंखोजन ॥ परघरकोसूतककोअन्ना । खायनहींजोधनसंपन्ना ॥

दोहा—सोवरसूतकअशुचिता, लगतसुनेतेतात । पैसोवरलागतनहीं, दशदिनकेउपरांत ॥
बसनमलीनधनीनहिंधारे । जोहैनिर्धनसोनविचारे ॥ गुणअरुदोषहुयहजगमाहीं । बालवृद्धरोगीकोनाहीं ॥ ११ ॥
आतपतेअरुमारुततेरे । शुद्धहोतहैअन्नघनेरे ॥ जलतेअरुछीलेतेदारू । होतशुद्धयहकरोविचारू ॥
शुद्धहोतगजदंतपुराना । वंशविशुद्धवारितेजाना ॥ अग्निपकेतेसबरसताता । जानहुशुद्धहोतअवदाता ॥
शुद्धहोतजलपोपेचर्मा । धातुमृत्तिकातेशुभकर्मा ॥ १२ ॥ तातेजौनशुद्धहैजाई । सोइंताहुशुद्धतागाई ॥ १३ ॥
संस्कारमज्जनतपदाना । औरअवस्थावीर्यसुजाना ॥ संध्योपासनआदिकतेरे । होतशरीरशुद्धसबकेरे ॥
शुद्धहोपापमुख्यसुनुजोई।सुमिरतमोंहिसपदशुचिहोई ॥ १४ ॥ मंत्रनकोजानियोंप्रकारा । यहीमंत्रकीशुद्धउदारा ॥
कर्मशुद्धनयहीहठिहोई । कहिकैमोंहिनरपैनाकोई ॥

दोहा—कर्तामंत्रहुद्रव्यअरु, देशकालअरुकर्म । होतजासुयहशुद्धये, तासुशुद्धहैधर्म ॥
ताकेशुधनहिंपर्यैपदारथ । ताकोजानहुधर्मअकारथ ॥ १५ ॥ कहुँदोषगुणकहुँगुणदोषू । ताकोपेखोकहुँगुनदोषू ॥
[illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] ॥ १६ ॥ [illegible] । [illegible]

पतितनमदिरापियेनपापा । द्विजकोअतिशयकारकतापा ॥ यतिनदोषहैजगकरसंगा ।
जैसोखडोसोइगिरिजावै । धरनिपरोतेहिकोनगिरावै॥१ [illegible]
यहीधर्ममनुजनसुखराशी । देतकामभयमोहविनाशी ॥ १८ ॥
दोहा–चहतरहतजोविषयसुख, तासुताहिमेंराग । तातेउपजतकामसुख, दुखदायकबडभाग ॥
होतकामतेक्रोधअपारा।तेहितेप्रगटतकलहउदारा॥१९॥मिटतकलहतेसकलवि [illegible] रहतनहिं [illegible]
बुद्धिगयेकरतोबहुपापा ।तातेलहतनरकसंतापा ॥ २१ ॥ शुद्धिविनाआपनोपरायो । [illegible] रतनहि [illegible]
जाकीबुद्धिभ्रष्टभैताता । तरुसमानजानहुतेहिगाता॥श्वासलेतभस्त्राकसमाना।उपजतकबहुँनज्ञानविज्ञाना ॥ [illegible]
प्रवृतिकर्मकरिस्वर्गहिजावै। वेदपुराणशास्त्रजोगावै ॥ ताकोतातपर्यमैंभनहूं । सोतुमसावधानह्वैसुनहू ॥
विषयिनस्वर्गविनोददेखाई । प्रवृतिकर्ममहँदेतलगाई ॥ क्रमक्रमतेतेहुकाँहछोडावै । [illegible]
जैसेपितुसुतकहँलखिरोगू । नींमखवावनकरतप्रयोगू ॥ तेहिपहिलेदरशायमिठाई । ताहिनीमपुनिदेतखवाई ॥
दोहा–तासुमिठाईफलनहीं, फलहैरोगविनाश । ऐसहिस्वर्गनवेदमत, तिनमतमुक्तिविलास ॥ २३ ॥
मित्रविषयसुखअरुपरिवारा । येजियकोदायकदुखभारा॥इनमेंप्रथमाहितेसंसारी । फँसोरहतममसुरतिविसारी ॥२
वेदवचनमेंकरिविश्वासा । उभयलोककोचहतसुपासा ॥ तिनकोस्वर्गविषैसुखभोगू । [illegible]
जौनकर्मकरिजियबहुवारा।आवतजातरहतसंसारा ।।वेदचहतजियमुक्तिहमेशा । वेदकरतनहिंसोउपदेशा ॥ २
तातपर्ययहवेदनकेरो । नहिंजानतमतिमंदघनेरो ॥ करैकर्मकांडीबहुकर्मा । चहततुच्छसुखतजिममधर्मा ॥
स्वर्गहिकोभाषैपुरुपारथ।नहिंजानतश्रुतिअर्थयथारथ॥व्यासादिकजेवेदविज्ञाता।वेदअर्थअसकहतनताता ॥२६
लोभीकामीकृपणकुचाली । जेजनरहतसदाजंजाली ॥ तेकरिकर्मस्वर्गहठिजाहीं । जानतपरमारथकछुनाहीं ॥
दोहा–होमकर्ममोहितरहै, करैसर्वदायाग । मोरलोकजानतनहीं, घेरेरहतअभाग ॥
जबभरजियतरहैजगमाँहीं । तबभरिसहैधूमदुखकाँहीं ॥ मरिकैकरिअपसराविहारा । गिरैआययाहिसंसारा ॥ २[illegible]
हियवासीउतपातिकरिनासी । सिगरेजगकोएकविलासी ॥ तेऐसोमोकोनहिंजानैं । भरेरहतकर्महिअभिमानैं ॥
मखतेअधिककछूनहिंजानैं । पोषतसदाआपनेप्रानैं ॥ होमधूमलगिआँखिनमाँहीं । फूटिहियोउपरौकीजाहीं ॥२[illegible]
होतनकबहुँमोरअनुरागी । यज्ञकर्ममहँनिरतअभागी ॥ निर्दयपशुमारहिंमखमाहीं । तेजबमरियमलोकहिंजाहीं
तबतिनकेतनकोपशुतेई । मारतखातसींगमहँरेई ॥ लिखोवेदहिंसनमखमाहीं । हिंसातातपर्यतेहिनाहीं ॥
हिंसावेदछोडावनचाहै । याज्ञकनहिंजानततेहिकाहै ॥ २९ ॥ मारिपशुनकहँदेवनपूजें । यातेअधिकनमानतदूजें
दोहा–बहुतकर्मकांडीकुमति, ऐसेयहजगमाहिं । स्वर्गसुखैअभिलाषमन, मारिपशुनकहँखाहिं ॥
आमिषखाहिंयज्ञकेव्याजू । तिनकोसिद्धकबहुँनहिंकाजू ॥ भूतनभैरवऔरभवानी । पूजहिंहनिकैछागअज्ञानी ।
मानहिंअपनेकहँबड़भागी । तेखलपूरनरककेभागी ॥ ३० ॥ स्वप्नसारिसतुमजानहुस्वर्गा । [illegible]
तौनस्वर्गहितधनहिलगाई । करहिंयज्ञसहिदुखसमुदाई ॥ जैसेआपवधनकेहेतू । खनहिपतालप्रयंतअचेतू ॥
सहिकलेशकरियज्ञमहाई । देतताहिमहँदेहवितांई ॥ मरेक्षुद्रस्वर्गहिकहँपावैं । पुण्यक्षीणह्वैपुनिमहिआवैं ॥
ह्वैगेकबहुँविघ्नजोयागा । तौस्वर्गहुनहिंलहैअभागा ॥ जैसेबणिकजोरिधनभूरी । चढिजहाजगमन्योबहुदूरी ॥
बूडिगईमधिसिंधुजहाजा । नश्योधरहुकोधनहुदराजा ॥ ऐसहिकर्मकांडकेकर्त्ता । विघनपाइहोतेदुखभर्त्ता ॥ ३१
दोहा–तमोगुणीजेजनअहैं, पूजैंतामसदेव । रजोगुणीजनहठिकरैं, रजोगुणीसुरसेव ॥
सतोगुणीजनकरिमनकामा । पूजहिंइंद्रादिकनललामा॥जसतिनकोपूजहिंमनलाई।तसनहिंमोहिंपूजैंसुखछाई॥३२॥
याज्ञिकअसमानहिंमनमाहीं । करिकैजगमहँयज्ञनकाँहीं॥जाइस्वर्गमहँलखिसुखसारा । करिकैबहुअपसराविहारा॥
फेरिजन्मउत्तमकुललैहैं । भोगविलासविविधविधिपैहैं ॥३३॥ असविचारकरिमोहितमूढ़ा । करतकर्मह्वैजातेबूढ़ा
तबहुनछोड़तकरिबोयागैं । मोरिबातहूनीकनलागैं॥कर्मफलनवेदनमहँमानिमति । [illegible]

होतकर्मंहीकेअभिमानी । तिनकेसरिसनकोउअज्ञानी ॥२४॥ कर्मदेवअरुज्ञानहुकांड
ऐसोतातपर्य्यवेदनको । भासितहोतसदासज्जनको ॥ यहीवेदकोअर्थउदारो । उद्धव
दोहा–वेदअर्थकोजगतमें, उद्धवजानतकौन । महींएकहीजानतो, वेदअर्थहैजो
इंद्रियप्राणमनोमयवेदा । समुझतयाहिहोतअतिखेदा ॥ याकोकोउनहिंपावतपारा ।
सागरसरिसअर्थगंभीरा । विरलेकोइजानहिंमतिधीरा॥२६॥मैंअनंतशक्तिनकोधारी ।
सोमैंप्रथमहिब्रह्मापाहीं । कियोप्रकाशितवेदनकाँहीं ॥ सूक्ष्मरूपसंसारिनमाँहीं । चारों
जैसेकमलनालकेभीतर । सूतसमूहरहतसूक्षमतर॥२७॥जिमिमकरीमुखतेवमिजाला ।
तिमिहियतेविधिवेदप्रकाशी । जगविस्तारतआनंदराशी ॥२८॥
ऐसेब्रह्माकेमुखतेरे । वेदनकेभेभेदघनेरे ॥ जानहुमूलसकलओंकारा । तातेचौसठवरण
दोहा–भईजगतमेंताहिते, भाषाविविधप्रकार । बहुतभाँतिकेछंदभे, तिनकोहैनहिं
ब्रह्माइनकोप्रकटकरि, करतफेरिनिजलीन । ऐसेप्राणिनप्राणहू, जानहुपरम
कहतकौनकोकाकहत, कैसोकरतविधान । तीनिवस्तुयेवेदकी, मोहिंबिनव
वेदवदतममधर्महै, मोकहँकहतसमर्थ । परमतत्त्वमोकोभनत, यहजानहुअ
तनअंतर्यामीजोजिय, तनविकारतेहिनाहिं । जियअंतर्यामीजोमैं, नहिंविका
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वना
श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्र
चकृते आनन्दाम्बुनिधौ श्रीमद्भागवते एकादशस्कंधे एकविंशस्तरंगः

दोहा–उद्धवशुद्धअशुद्धको, सुनिसबध्रुवसिद्धांत । शुद्धबुद्धिबोलतभयो, शास्त्र

उद्धव उवाच ।

वेदविदांवरसबमुनिराई । तत्वअनेककह्योयदुराई ॥ आपअठाइसतत्वउचारे । सोसबक
कोउमुनिकहहिंतत्त्वछब्बीसा।कोउमुनिभाषहिंतत्वपचीसा।कोउनवकोउषट्कोउमुनिसाता।
कोउसत्रहिकोउसोरहिकहहीं । कोऊतत्वतेरहिकहिरहहीं ॥ यहसंख्यातत्वनकीजोई ।
तौनहेतमोहिंदेहुबताई । करिकैकृपानाथयदुराई ॥ सुनिउद्धवकेवचनसुहावन । बोलत

श्रीभगवानुवाच ।

ममभायागहिकैमुनिराई।कहैजौनसोउचितलखाई॥४॥जानिपरतयहसकलविरुद्धा।मैंभा
कोउतत्त्वनकरिअंतरभाऊ । तत्त्वनकरहिंघटाउबढाऊ ॥ जेअंतर्यामीनहिंजानें । तेबहुत
दोहा–जानोअंतर्यामिजब, तबजानतयकतत्त्व । तबविवादरहिजातनहिं, निरख
जोतत्त्वनकोदियोमिलाई । तबसंख्याकमतीह्वैजाई ॥ जबतत्त्वनकोदियोबढ़ाई । तबतिन
वक्ताकीइच्छायहिमाहीं । घटबबढ़बनहिंतत्त्वनकाहीं ॥ ७ ॥ जैसेपावकदारुहिमाहीं ।
तिमिकारजमहँकारणजानो।कारणमहँकारजअनुमानो॥८॥तातेन्यूनाधिकजेकहहीं।श्रुति
लक्षओरससरवज्ञभेदते । गुनोउभयजियईशभेदते ॥ ईशअनीशहिगुनोजोएकू । तौकोदेह
तातेभिन्नज्ञानप्रदईसा । यहितेतत्त्वकहैछब्बीसा ॥ १० ॥ ज्ञानगुणकर्मअरुज्ञानसरूपा ।
यातेएकतत्त्वदोउमानो।तत्त्वपचीसकहैमुनिज्ञानी ॥११॥ जगउत्पतिपालनसंहारी । प्रकृ
दोहा–गुणकीसमतादोइयो, सोइप्रकृतिपहिचानु । तातेतत्त्वपचीसको, कछुविरो

गुणकोविषमहेतुहैकाला।सोईसूत्रस्वभावविशाला ॥ सत्ताइसहैंकालमिलाये ॥१३॥ [illegible]

[illegible]

श्रवणत्वचादृगघ्राणहुरसनहु।वाक्पाणिपादपायुउपस्थहु॥अरुमनयुतएकादशजानो।पाँचतत्वअवदातवखानो

शब्दस्पर्शरूपरसगंधू । पाँचतत्वजानहुमतिसिंधू ॥ पाँचकर्मइंद्रियजोगाई । ज्ञानेंद्रीमेंलेहुमिळाई ॥ १६ ॥

सृष्टिआदिमेंप्रकृतिमहाई । सतरजतमगुणयुतश्रुतिगाई ॥ सोईकारणकार्यरूपिणी । [illegible]

तौनप्रकृतिकोप्रेरणवारा । मोहींकोतुमकरहुविचारा ॥ १७ ॥

दोहा-ममसंकल्पहितेप्रकृति, प्रगटावैमहदादि । तेमहदादिकमिलिरचैं, ब्रह्मांडैमरयादि ॥ १८ ॥

आकाशादिकपाँचोंजेई । ईशअनीशहुकोगुनिलेई ॥ जगतमूलयेजानहुसाता । इनतेंदेहादिकहैंताता ॥ १९ ॥

यहिविधिसाततत्वकहकोई । अवजसषट्भापहिंसुनुसोई ॥ ईशअनीशभेदनहिंमानै । नभआदिकछैपटैवखानै ॥

इनतेयुतरचिकैसंसारा । तामेंकरोप्रवेशउदारा ॥ २० ॥ कोउमानतहैंतत्वहिचारी । ताकीविधिमैंदेहुँउचारी ॥

पृथ्वीसलिलतेजयेतीना । अरुआतमअसचारिप्रवीना॥२१॥अवसत्रहिकीविधिसुनिलीजै । [illegible]

पाँचौशब्दादिकतुमजानो । पाँचज्ञानइंद्रियअनुमानो ॥ इकआतमइकमनहूँहोई । सत्रहितत्वजानियेसोई ॥२२

जोआतममनविलगनजानो । पोडशतत्वतवहिंअनुमानो ॥

दोहा-येईतत्वतेरहकहत, कोईमुनिमतिमान । अवग्यारहकोउकहतजस, तसमेंकरौंवखान ॥ २३ ॥

पंचभूतज्ञानेंद्रियपाँचै । अरुआत्माएकादशसाँचै ॥ प्रकृतिपुरुपमहँतौअहँकारा । पंचभूतपुनिकरहुविचारा ॥

तत्वनवैअसभापतकोई । मैंवरण्योंप्रथमैयहसोई ॥ चितअरुअचितईशयेतीना । यहसिद्धांतजानुपरवीना ॥ २४

[illegible]

जवअसकहद्वारकाविलासी । तवबोल्योउद्धवमतिरासी ॥ २५ ॥

उद्धव उवाच ।

पुरुपप्रकृतियेदोउविलक्षण।अहैंपरस्परमिलतविचक्षण॥यातेभेदपरतनहिंजानी।प्रभुसमुझायसोकहोवखानी ॥२६

प्रकृतिजीवमेंजीवप्रकृतिमें । जानिपरतअसमेरीमतिमें ॥ यहसंशयममनहिंमहाई । करिकैवचननकरिचनाई

मेटहुकमलनयनभगवाना । तुमसोंलहतजीवसवज्ञाना ॥

दोहा-तुवमायावशहोतहै, प्राणिनकोअज्ञान ।निजमायाकीगतितुमहिं, जानतहौंनहिंआन ॥

सुनिउद्धवकेवचनरसाला । वोलतभेतहँदीनदयाला ॥ २८ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

प्रकृतिपुरुपकोभेदसदाहै । ताकीअसश्रुतिरीतिकहाहै॥अहैविकारवानजगताते।जीवहिप्रकृतिअभेदलखाते ॥२९

अहैगुणमयीजोमममाया । सोजियकेवहुभेददेखाया ॥ वैकारिकप्रपंचत्रैभाती । दैहिकदैविकभौतिकजाती ॥३०

इंद्रियविपयदेवतातीनै । निजनिजथलमेंरहतप्रवीनै ॥ सवमिलिकारजकरैंसदाहीं । येसवजीवप्रकाशकनाहीं ॥

हियअकाशजियस्वयंप्रकासा । सकलवस्तुकोदेतविभासा॥३१॥ प्रकृतयहजोहैसंसारा । सोहैमहातत्वविस्तारा

प्रकृतिहितेमहत्तत्वअनूपा । तातेअहंकारत्रैरूपा॥सोइसतरजतमतीनिप्रकारा । जनअभिमानसोदेतउचारा॥३२॥

ज्ञानसरूपजीवकहँमानो । तामेंनहिंविकारकछुजानो ॥

दोहा-अस्तिआदिपट्भावजे, हैंतनकेजियनाहिं । विनाज्ञाननहिंमिटतभ्रम, ममविभुखीजनकाहिं ॥

ऐसेसुनियदुवरकेवैना । पुनिवोलेउद्धवभरिचैना ॥ ३३ ॥

उद्धव उवाच ।

कर्मविवशजोजियतनपावै । इंद्रिनयुतपोपकहिजावै ॥ ३४ ॥ मेटिदेहुप्रभुयहभ्रम / औरतनयंनहैकेहुकेहू ॥

दोहा-तातेयाकेसहनको, होयजोकछुउपाय । तौमोपरअतिकरिकृपा, दाजनाथबताय ॥ ६० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे द्वाविंशस्तरंगः ॥ २२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-यदुवंशीसरदारवर, हैभागवतप्रधान । ऐसेउद्धवकेवचन, सुनिकैकृपानिधान ॥
उद्धवसवैसराहिमुरारी । अतिशयकोमलगिराउचारी ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

सखाप्रश्नयहसुंदरकीन्ह्यो।मोकोअतिशयआनँददीन्ह्यो॥सुनहुबृहस्पतिशिष्यउदारा [illegible]
जोदुर्जनकेवचनकठोरा।सहैशोकदुखगुनैनथोरा॥२ [illegible]
यामेंमुनिभापहिंइतिहासा।सुनतकरतजोपुण्यप्रकासा ॥ सोमैंउद्धवदेहुँसुनाई।सुनहुताहिअतिशयचितलाई ॥
सहिदुर्जनकेअतिकटुवैना।सुमिरिकर्मफलधीरजऐना ॥भिक्षुकएकजौनमुखगायो।सोतुमसोंभापहुँसुखछायो ॥
कोउद्विजपुरीअवंतीमाहीं । रह्योधनीउद्यमीसदाहीं ॥ कामीलोभीकृपणप्रकोपी ॥६॥ [illegible]
वचनहुँतेसोविप्रगमारा । कबहुँनकियोअतिथिसतकारा ॥ ७ ॥

दोहा-धर्मकर्मकीन्ह्योंनकछु, रह्योगेहधनभूरि । भोगहुकछुभोग्योनहिं, रह्योपापतनपूरि ॥
भृत्यसुतासुतबांधवदारा । ताकोजानिकुशीलअगारा ॥ तौनकृपिणसोकियोननेहू । बाँधेवैरबसेतेहिगेहू ॥ ८ ॥
अपनेदूनोलोकसनाथो । धनमेंनिशिदिनचित्तलगायो ॥ धर्महीनतेहिजानिअभागी । कीन्हेंकोपदेवबडभागी ॥
छीनपुण्यह्वैगेतेहिकेरी । लागीघटनिविभूतिघनेरी ॥ होनलग्योउद्यमहिवृथाहीं । सूझ्योताहितयहुँकछुनाहीं ॥[illegible]
कछुधनलियोबंधुबरियाई । कछुधनलीन्ह्योंचोरचोराई ॥ कछुजरिगयोआगिकेलागे । कछुसरिगयोगडोजोभागे
बाकीरह्योजोकछुघरमाहीं । लियोछुडाइभूपतेहिकाहीं ॥ ११ ॥ [illegible]
परतेदीन्ह्योंबंधुनिकारी । तबताकोंचिताभैभारी ॥ १२ ॥ रोवतबैठिइकांतहिमाहीं । शोचनलग्योनशेधनकाहीं

दोहा-शोचतशोचतनिजधनहि, रोवतरोवतभूरि । सोवतनहिंदिनरैनहू, भैविरागतेहिपूरि ॥ १३ ॥
यहिविधिभैजबपूरिविरागा । कह्योवचनतबह्वैबडभागा ॥ हायवृथामैंजन्मवितायो । वृथाजगतमेंअतिदुखपायो
जोरिजोरिधनधर्मनकीन्ह्यों । तेहिकछुतनकोभोगहिदीन्ह्यों॥जन्मभरेकेमेहनतिमेरी । ह्वैगआजवृथाबहुतेरी ॥१[illegible]
कृपणीकीसंततिजगमाहीं । कौनेहुकामेआवतिनाहीं॥जियतलहतधनहितसंतापा । मरेजातनरककरिपापा
यशीयशेअरुगुणीगुणनकहैं । नाशतथोरहुलोभजगतमहँ॥जैसेकुष्टरोगतनमाहीं । नाशतहैतनशोभाकाहीं ॥१६
धनसमृद्धितियनजनसुखपाती । धनमहँहैकलेशबहुभाँती ॥ जोरतरचतरक्षतमाहीं । परमहँधरेवढावततांहीं
अरुतेहिदेखतनैनततेरे । होतमनुजकहँशोकघनेरे ॥ धनजोरतमेंपरिश्रमहोवै । सिद्धभयेअतिशयभैभोवे ॥

दोहा-रक्षतरचतभोगते, उपजतदुःखमहान । होतमहाभ्रमनक्षतमें, असधनदुरदसुजान ॥ १७ ॥
हैअनर्थपंद्रहधनमाहीं । वरणौमैंउद्धवतिनकाहीं ॥ चोरीहिंसाअसतपखंडा । कामक्रोधमदगर्वअखंडा ॥
भेदवैरद्यूतअविश्वासू । युवानारिमदपानहुलासू ॥ १८ ॥ येपंद्रहिअनर्थकेकारी । धनतेहोतअहैदुखभारी ॥
जोअपनोचाहैकल्याना । तजैदूरितेधनहिसुजाना ॥ १९ ॥ धनतेफूटिजातनियभाई । धननेसुहृदपिताअरुमाई
करतशत्रुकौडीकेहेतू । कुलसोंबांधतवैरहिनेतू ॥२०॥ [illegible]
टारिटारिकएकनदानिहारे । जातिनातिकोनहिविचारे ॥ २१ ॥ दुर्लभपरमानुषतनपाई । भयेनाहूमेंनाहिजगाई
ताहूपैपदधनकेहेतू । करहिनकछुपरलोकहिनेतू ॥ कोपवित्रइककाकिनबहुपापा । मरिनरकेंपरिपावततापा ॥ २२

यहसबवस्तुनजाननवारो । तुमबिनम्बाहिंनहिंपरैनिहारो ॥ तुममायामोहितसंसारा । कोउ
सुनिउद्धवकीमंजुलवाणी । करुणानिधिबोलेप्रियबाणी ॥ ३५ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

इंद्रिनविषैभोगसुखकेरी । रहतिवासनामनहिंघनेरी ॥ तातेज्ञानेंद्रियनसमेतू । मानसकेसँगजियकुलकेतू
यकतनतेदूजेतनजावैं । जसवासनातसैतनपावैं ॥३६॥ तहाँविषयसुखकोमनध्यावै ।

दोहा–भिन्नआतमातेतनहि, मानतकबहूँनाहिं ।
कर्मविवशजबजीवकहँ, देहबुद्धिह्वैजाति । भयोकर्मवशविस्मरण, सोईमरणजियकाहिं ॥ ?
स्वप्ननि॰ खिपुनिस्वप्नहिदेखै । ताकोभूलिताहिजिमिलेखै ॥ सोईजन्महैजीवको, कहतवेदयहिभाँति ॥ ३९ ॥
आत्म दपिअहैप्राचीना । पैअपनेकहँगुनतनवीना ॥ ऐसहिप्रथमदेहकोत्यागी ।
जियकातनअनर्थकोहेतू । तनलहिबालवृद्धजियमानै॥सोइजियकोअज्ञानमहानै ॥
क्षणक्षणमहँनवीनतनहोई । पीछेनशतजातहैसोई ॥ अतिसूक्षमतेकोउनाहिंजानै । कालवेगहैअलखमहानै ॥
सरिप्रवाहफलपावकज्वाला।घटबबढबइनकोसबकाला॥इनकोजानिसकतनहिंकोई।तैसहिदेहअवस्थाहोई ॥
दीपशिखाजिमिनिकसतजाहीं।पैसबबोहिकहैतेहिकाहीं ॥ नवनवजलआवतप्रतिधारै ।

दोहा–यहिविधिनवनवहोततहँ, क्षणक्षणप्राणिनकेर । सोइतनहैअसकहतसब, करिकैभ्रमहिघनेर ॥ ४४ ॥
कर्मबीजतेहोतशरीरा । नशतकर्महीतेमतिधीरा ॥ जननमरणहैजियकोनाहीं । जननमरणहैतनहीकाहीं ॥
पैअसगावहिंमूढअतीवा।मरयोजीवजनम्योहैजीवा॥रहतअनलजिमिदारुसदाहीं।उपजतनशतकहतभ्रममाहीं ४
प्रथमगर्भपुनिघाटिबोजानो । पुनिजन्महिबालकअनुमानो ॥ पुनिकुमारयौवनहुबुढाई ।
तनहिअवस्थायेनवजानो॥४६॥नहिंजियकोमनमेंअनुमानो॥गहतकर्मसबजीवअवस्था
हजननमरणहिकोज्ञाता।अहैदेहतेभिन्नहिताता ॥ जिमितरुजामतनशतसदाहीं।देखतऔरकोइतेहिकाहीं ॥ ४९

दोहा–हमतेभिन्नहिजीवको, जोजानतहैनाहिं । जननमरणतेहिमूढको, नहिंछूटतजगमाहिं ॥ ५० ॥
त्विककर्मकिहेसबकाला ।लहतदेवऋषिदेहविशाला ॥ राजसकर्महिकरिसंसारा । दनुजमनुजतनलहतअपारा
हिंजेतामसकर्मघनेरे।लहहिंप्रेतपशुतनबहुतेरे॥५१॥नाचतगावततिमिकोउदेखी । आपहुतैसहिकरतविशेखी॥
हिजोतनगुननिजमानत।सोइतनकेसुखदुखजियसानत॥जिमितरुछायाजलमहँआई।जलडोलतडोलतदरशाई॥
रिभयेभ्रमतोहगजाको।जानतभ्रमतसकलवसुधाको॥तनअभिमानहितेयहरीती।जियमेंतनगुणहोतप्रतीती५३॥
नोसुखजागेजिमिजाई।तिमिभ्रममिटैमिटैभवभाई॥५४॥यदपिविषैरहतोढिगनाहीं।तदपितिहैंचिंततमनमाहीं ॥
नहिंछूटतसंसारा ।जिमिस्वपनेकोवीर्यविकारा ॥५५॥ तातेउद्धवविषयअनेकन । इंद्रीजीततजोतुमयहछन॥

दोहा–विनाज्ञानविज्ञानके, भयेनयहभ्रमजाय । उद्धवऐसोजानिकै, दीजैविषयविहाय ॥
षयसुखज्ञानविरोधी।जीतहुतिनकोमनाहिनिरोधी ५६ देइकोउकेतनहूखलगारी।करैजोअपमानहुअविचारी॥
कोकोउदोपहुभापे । हाँसीकरैकेतहूभापे ॥ करैकैदअरुकेतोमारे । कोऊकितनोधर्मविचारे ॥
वकाजोहरिलेई ॥ ५७ ॥ थुँकिजोअपनेपरकोइदेई ॥ अरुमलमूत्रहुकरैजोकोई । कौनौभाँतिउपद्रवहोई॥
भक्तिनहिंछोडै । सुखदुखसकलतनहिमेंजोडै ॥ जोअपनोचाहैकल्याना । तौयहिभाँतिरहैमतिमाना॥
नसुनतसुखदाई।पुनिउद्धवबोलेशिरनाई॥५८॥ज्ञानिहुयाहिसकतकरिनाहीं।तौपुनिसहजअहैकेहिकाहीं॥
दनेदइगाये । तिनकेसहजदेखातसुभाये ॥

दोहा-तातेयाकेसहनको, होयजोकछूउपाय । तौमोपरअतिकरिकृपा, दाजनाथबताय ॥ ६० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे द्वाविंशस्तरंगः ॥ २२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-यदुवंशीसरदारवर, हैभागवतप्रधान । ऐसेउद्धवकेवचन, सुनिकैकृपानिधान ॥
उद्धवसवैसराहिमुरारी । अतिशयकोमलगिराउचारी ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

सखाप्रश्नयहसुंदरकीन्ह्यो।मोकोअतिशयआनँददीन्ह्यो॥सुनहुबृहस्पतिशिष्यउदारा ।असनसाधुकोउपरतविह जोदुर्जनकेवचनकठोरा।सहैशोकदुखगुनैनथोरा॥२॥तसनहिंशरहियलगिदुखदानी।जसहियसालतिदुर्जनबानी॥ यामेंमुनिभाषहिंइतिहासा ।सुनतकरतजोपुण्यप्रकासा ॥ सोमैंउद्धवदेहुँसुनाई।सुनहुताहिअतिशयचितलाई ॥ सहिदुर्जनकेअतिकटुबैना।सुमिरिकर्मफलधीरजऐना ॥भिक्षुकएकजौनसुखगायो।सोतुमसोंभाषहुँसुखछायो ॥ कोउद्विजपुरीअवंतीमाहीं । रह्योधनीउद्यमीसदाहीं ॥ कामीलोभीकृपणप्रकोपी ॥६॥ रह्योजातिव्याहारविलो वचनहुँतेसोविप्रगमारा । कबहुँनकियोअतिथिसतकारा ॥ ७ ॥

दोहा-धर्मकर्मकीन्ह्योंनकछु, रह्योगेहधनभूरि । भोगहुकछुभोग्योनहिं, रह्योपापतनपूरि ॥
भृत्यसुतासुतबांधवदारा । ताकोजानिकुशीलअगारा ॥ तौनकृपिणसोकियोननेहू । बाँधेवैरबसेतेहिगेहू ॥ ८ ॥ अपनेदूनोलोकसनाथो । धनमेंनिशिदिनचित्तलगायो ॥ धर्महीनतेहिजानिअभागी । कीन्हेंकोपदेवबडभागी ॥ छीनपुण्यह्वैगेतेहिकेरी । लागीघटनिविभूतिघनेरी ॥ होनलग्योउद्यमहिवृथाहीं । सूझ्योताहितबहुँकछुनाहीं ॥१० कछुधनलियोबंधुबरियाई । कछुधनलीन्ह्योंचोरचोराई ॥ कछुजरिगयोआगिकेलागे । कछुसरिगयोगडोजोआगे बाकीरह्योजोकछुघरमाहीं । लियोछुडाइभूपतेहिकाहीं ॥ ११ ॥ यहिविधिभयोदारिद्रीसोई।गईविभूतिजबैसबखोई घरतेदीन्ह्योंबंधुनिकारी । तबताकोंचिताभैभारी ॥ १२ ॥ रोवतबैठिइकांतहिमाहीं । शोचनलग्योनशेधनकाहीं

दोहा-शोचतशोचतनिजधनहि, रोवतरोवतभूरि । सोवतनहिंदिनरैनहू, भैविरागतेहिपूरि ॥ १३ ॥
याहिविधिभैजबपूरिविरागा । कह्योवचनतबह्वैबडभागा ॥ हायवृथामैंजन्मबितायो । वृथाजगतमेंअतिदुखपायो । जोरिजोरिधनधर्मनकीन्ह्यों । तेहिकछुतनकोभोगहिदीन्ह्यों॥जन्मभरेकैमेहनतिमेरी । ह्वैगैआजवृथाबहुतेरी ॥१४॥ कृपणीकीसंततिजगमाहीं । कौनेहुकामेआवतिनाहीं॥जियतलहतधनहितसंतापा । मरेजातनरकैकरिपापा ॥१५॥ यशीयशैअरुगुणीगुणनकहँ । नाशतथोरहुलोभजगतमहँ॥जैसेकुष्टरोगतनमाहीं । नाशतहैतनशोभाकाहीं ॥१६॥ धनसमद्धितियनजनसुखघाती । धनमहँहैकलेशबहुभाँती ॥ जोरतखरचतरक्षतमाहीं । घरमहँधरेबढावतताहीं ॥ अरुतेहिदेखतनैनततेरे । होतमनुजकहँशोकघनेरे ॥ धनजोरतमेंपरिश्रमहोवै । सिद्धभयेअतिशयभैभोवै ॥

दोहा-रक्षतखरचतभोगते, उपजतदुःखमहान । होतमहाभ्रमनशतमें, असधनदुखदसुजान ॥ १७ ॥
हैअनर्थपंद्रहधनमाहीं । वरणौंमैंउद्धवतिनकाहीं ॥ चोरीहिंसाअसतपखंडा । कामक्रोधमदगर्वअखंडा ॥ भेदवैरईर्षाअविश्वासू । युवानारिमदपानहुलासू ॥ १८ ॥ येपंद्रहिअनर्थकेकारी । धनतेहोतअहैदुखभारी ॥ जोअपनोचाहैकल्याना । तजैदूरितेधनाहिसुजाना ॥ १९ ॥ धनतेफूटिजाततियभाई । धनतेसुहृदापिताअलगाई ॥ करतरारिकौडीकेहेतू । कुलसोंबांधतवैराहिनेतू ॥२०॥ दमरीहितकरिकोपअघाता।करहिंकुमतिहठिआतमघाता॥ लरिलरिइकएकनहानिडारैं । जातिनातिकोनेहबिसारैं ॥ २१ ॥ दुर्लभयहमानुपतनपाई । भयेताहुमेंजोद्विजराई ॥ ताहूपैयहधनकेहेतू । करहिनकछुपरलोकहिचेतू ॥ क्रोधविवशकरिकैबहुपापा । मरिनरकैपरिपावततापा ॥ २२॥

दोहा—स्वर्गऔरअपवर्गको, नरशरीरहैद्वार । तेहिलहिहरिविसरावतो, तेहिसमकौनगँवार ॥
यहधनहैअनर्थकोग्रामा ।तेहिमहँकोभूलैमतिधामा ॥२३॥ देवि...
जोधनइनकेहितनठगावत । अंतनिवासनरकसोपावत ॥२४॥ कियोपरिश्रममैंधनहेतू । ...
सोऊधननशिगयोवृथाहीं । मेरेकामहिआयोनाहीं ॥ जेहिधनतेगतिलेतसुजाना । तेहिधनमेंमैंकियअघनाना ॥
गईअवस्थाऔरसवस्था । ...
जानिहुकैधनकोदुखकारी । पैनिजजन्मनलेतसुधारी॥हरिमायामोहितयहलोका । तातेधनहितपावतशोका
काधनतेकाधनदातासे । कछुनहिंकामकामत्रातासे ॥ जन्मदानिजेकामघनेरे । तिनतेहैनपरोजनमेरे ॥
दोहा—कालगालमेंसवपरे, वचैनकुमतिप्रवीन ॥ २७ ॥ करीकृपामोपैहरी, जोदरिद्रमोहिंकीन ॥
भोदरिद्रतेमोहिंविरागा।भवनिधितरनतरनिसवत्यागा॥२८ ॥ तातेममआयुपजोवाकी।ताहीमेंअतिशयदुखछाकी
सावधानह्वैकरितपभारी । लैहौंअपनोसकलसुधारी ॥२९ ॥ तातेअवत्रिभुवनकेराया । ...
रह्योजोनृपखट्वांगउदंडा । तेहिआयुधवाकीद्वैदंडा ॥ ताहीमेंनिजलिशोसुधारी । ब्रह्मलोककोगयोसुखारी ॥ ३०

श्रीभगवानुवाच ।

यहिविधिमनविचारिमतिरासी । विप्रअवंतीपुरकोवासी ॥ तेहिक्षणहृदयग्रंथिसवछूटी । मोचरणनइंद्रियवशजूटी
ज्ञानविज्ञानमानमतिवाना।संन्यासीह्वैगयोप्रधाना॥३१॥इंद्रियजितमोमहँअनुराग्यो।सुखितमहीमहँविचरनलाग्यो
ग्रामनगरभिक्षाकेहेतू । जातरह्योअकेलमतिसेतू ॥ रह्योरूपआपनोछिपाई । जामेंकोऊजानिनजाई ॥ ३२ ॥
दोहा—यहिविधिगमनतनितनगर, करतइकांतहिवास । एकसमयउद्धवतहाँ, कोदुकेगृहकेपास ॥
कोउचिन्हारताकोलियचीन्ही । सवसोंवाणीअसकहिदीन्ही।। यहतौयहीगाँउकोवासी । कियोपखंडभयोसंन्यासी
सुनतहिखलवहुपुरकेलोगू।देनलगेताकोदुखभोगू ॥३३॥कोउतिदंडलियतासुछोडाई।जलभाजनकोउलियचोराई॥
कोउलियतासुछोडायकमंडल कोउमृगचर्मछोडावतभोखल।कोउछोडायलियोजपमाला।कोउगूदरीमेंखलाविशाला
तेहिदेखायपुनिकोउलैभागे । करैताहिकोईशठनागे ॥ भिक्षामांगेसरिततटजाई । भोजनकरतजवैयदुराई ॥ ३५ ॥
तेहिपरमूत्रकरैशठकोई । कोइशिरपरथूकैअघमोई ॥ मौनजानिकैताहिबोलावै । नहिंबोलैतौलातचलावै ॥ ३६ ॥
कोउडरवावतहैतेहिकाँहीं । कहतचोरआयोपुरमाँहीं ॥ कहिमारोमारोअवयाको । कोउबाँधतरसरीलैताको ॥३७॥
दोहा—तेहिगारीकोउदेतहै, गनिपाखंडीपूर । जवैदरिद्रीह्वैगयो, तवकुलकेकियदूर ॥
जवनसाइवेकोकछुपायो । तवसंन्यासीवेष्वनायो ॥३८॥ धीरजवंतवडोवलवाना । अचलसरिसयहअचलमहाना॥
वकसमानयहमौनरहतहै । निजकारजसिधिकरनचहतहै॥३९॥असकहिहँसैंठठायपरस्पर।अपोवायुछोडैतेहिऊपर॥
कोईताहिजँजीरनवाँधे । कोईताहिकोठरीधाँधे ॥ जसपाटेपर्शौकहुँवाटा । सेटतरहतअहैसवकाटा ॥ ४० ॥
देहिकदैविकभौतिकतापा ... ॥४१॥
दुष्टनतेदहिकेअपमाना । ...

द्विज उवाच ।

सुरशरीरग्रहकर्मदुकाटा । अरुयेसवपुरजनयहिकाटा ॥ देनाहिंमेरेसुखदुखदेतू । बाँधतजोसंश्रितकरनेतू ॥ ४३ ॥
दोहा—सोइमनमेरोसदा, सुखदुखकोदेहेतु । औरनहींमेरोहिये, बांधतसुखदुखसेतु ॥
सोपन्तौभमदलादिकनेते । प्रगटतपतोमनहिंदेतेते ॥ सात्विकराजसतामसकर्मा । तिनतेतैप्रगटतशुभधर्मा ॥
...प्रकारा । होतशरीरकर्मअनुसारा॥४४॥मनसंकल्पविकल्पहिकरई । तेहिसँगदंशनसुगदुखभरई ।
... । सोपरमातमसत्ताहमारो । सबकोसाहिअर्थाशिरताकी ॥
मनकोदृढ... । भोगविषैवैविनातनजीवा ॥ ४६ ॥ दानधर्मयमनियमव्रतादी । औरहुकर्मधर्मदरदादी ॥

इनकोफलमनकोवशकरिवो।मनवशिभयोनतोश्रमभरिवो॥मनवशकरिबोहैयहयोगू।विनामनहिवशहैदुखभोगू
जाकोमनअपनेवशभयऊ। श्रीपतिचरणमाहँलगिगयऊ ॥ तेहिदानादिकतेकछुनाहीं। यहनिश्चयजानहुमनम

दोहा–निजवशभयोनजासुमन, लग्योनहरिपदमाहिं। ताकोदानहुधर्मतप, जानहुसकलवृथाहिं ॥

तातेजातेमनवशहोई। सोइउपायकरैसवकोई ॥ ४७ ॥ इंद्रियहैंमनकेवशमाँहीं। इंद्रिनकेवशहैमननाहीं ॥
जनकेमानसकेवशकारी। हरिकोछोडिनद्वितियविचारी ॥ दानादिकअरपैहरिकाँहीं। तेइमनवशकरिदेतसदा
वलिनवलीसोइदेवनदेवा। भयकरविमुखअभयकरसेवा ॥ ४८ ॥ दुजयमहावेगहैभारी। यहमनडारतमर्मवि
जगमहँमूढताहिनहिंजीती। शत्रुमित्रबहुकरतप्रतीती ॥ ४९ ॥ मनकीदईदेहयहपाई। हमहमारकरिगर्वमह
अंधबुद्धिनहिंकरहिविवेकू। डरतननरकपरनकहँनेकू ॥ मैंहोंआनअहैयहआना। यहीमाहँजगभ्रमतभुलाना॥
कहोजोजनकहँसुखदुखदाता। तौमोकोयहवृथाजनाता ॥ आतमकोसुखदुखहैनाहीं। सिगरोसुखदुखदेहहिक

दोहा–जैसेअपनेदंतसों, जीभजोकाटैकोय। ताकोदुखगुनिमनुजको, कोपकौनपरहोय ॥ ५१ ॥

कहोजोसुरहैसुखदुखदाई। तौआत्मैनहिंदोपदेखाई ॥ काटहुहाथहितेजोहाथै। हैनदोपआतमकेमाथै ॥ ५
गुनौतोजियकोजियदुखहेतू। तऊठीकहैनहिंयहहेतू ॥ आतममेंहैनहींविकारा। तौसुखदुखकोकोदातारा ॥
कहौजोनिजआत्मैदुखदाई।तौनिजतेनिजकोदुखपाई५३कहौजोगृहसुखदुखकोमूला।तौअजजियहिनगृहप्रतिकू
गृहसुखदुखदेहहिकोदेही। अथवागृहगृहशत्रुसनेही ॥ जियतौभिन्नगृहहुतनतेरे। सुखदुखजाततासुनहिंनेरे ॥५
जोकर्महिसुखदुखप्रदकहहू। तौविचारकरिअसमतगहहू ॥ जबदेहहिआत्माह्वैजावै। तबकर्मनकेसुखदुखपा
तनतौजडहैआत्मसचेतू।भयोकर्मकवसुखदुखहेतू॥५५॥कालहिकहहुजोसुखदुखदाई।तौनहिंसत्यलगतमोहिंभ

दोहा–कालसरूपहिआतमा, सुखदुखनाहिंप्रतीत। दहनदहनदाहिनहिसकै, हिमिहिमिकरैनशीत ॥ ५

कबहूँकहूँकोऊअसनाहीं। सुखदुखदेइजोआतमकाहीं ॥ अहोभिन्नआतमतनतेरे। ऐसेसिगरेवेदानिवेरे ॥
जेहिनहिंभयोदेहअभिमाना।सोउकोउकहनहिंडरतसुजाना५७गह्योमहर्षियहीविज्ञाना।यातेअहैअधिकनहिंआन
मैंहूँचढियहज्ञानजहाजा। सेइमुकुंदचरणतजिलाजा॥तरिहौंयहभवसिंधुदराजा।करिहौंअवनजगतकोकाजा ॥५

श्रीभगवानुवाच ।

सोद्विजवरयहिभाँतिविचारी।ज्ञानानलकलेशसबजारी ॥त्यागिसकलवस्तुनकीआसा।महिविचरयालहिपरमहुला
यदपिखलनसोंलह्योअनादर। तदपिनभयोधर्मतेकादर॥मोदितभयोछोडिसबसाथा।विचरतमहिगावतयहगाथा
जीवहिनहिंकोउसुखदुखदाई। हैकेवलभ्रमहीभरिभाई ॥ उदासीनअरुमित्रनकोई। अज्ञानहितेसंश्रितहोई ॥ ६

दोहा–तातेउद्धवबुद्धिते, मनवशकरिसबभाँति। पूरयोगजानहुयही, मोहिंघ्यावहुदिनराति ॥ ६१ ॥
सुखदभिक्षुगीतायही, सावधानह्वैकोय। कहैसुनैसमुझैगहै, तेहिदुखकबहुँनहोय ॥ ६२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दा
म्बुनिधौ एकादशस्कंधे त्रयोविंशस्तरंगः ॥ २३ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा–पूर्वाचारजजेअहैं, कपिलादिभगवान। सांख्यशास्त्रतिनकोकह्यो, मैंअबकरहुँबपान ॥

जेशरीरकोआतममाने। तिनकोभ्रमविनसतयहजाने ॥ १ ॥ सृष्टिआदिमहँज्ञानसरूपा। रह्योएकमैंब्रह्मअनूपा ॥
रहेप्रकृतिपुरुषहुमोहिलीना। नामरूपतेरहोविहीना ॥ उद्धवतातेसतयुगमाहीं। रहेउपासकब्रह्महिकाहीं ॥ २ ॥
बानीमनजेहिपहुचिनलयऊ।तातेमायाअरुफलभयऊ ॥ ३ ॥ सोइमायाप्रकृतिकहावै। वेदसोईफलकोजियगावै ॥
मायाकारणकार्यरूपिनी। सकलजगतकीभ्रमनिरूपिनी ॥४॥ मैंकरिकैजीवनपरदाया।सृष्टिहेतप्रेर्योजबमाया ॥

तबसतरजतमगुनबिलगाना॥५॥ तातेप्रगट्योतत्त्वमहाना ॥ ताकोजानतजगतअधारा । ...
सोईहैअज्ञानकरहेतू ॥६ ॥ ताकोत्रिविधिजानिमतिसेतू ॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधू । ...

दोहा—अहंकारतामसहिते, शब्दादिकभेपाँच । अहंकारराजसहिते, प्रगटींइंद्रियसाँच ॥
सात्विकअहंकारतेदेवा।प्रगटभयेकरिबेममसेवा ॥८॥ येसबममसंकल्पहिपाई । मिलिब्रह्मांडदियोउपजाई
रह्योसोबतोमेंजलमाँहीं । नाभीतेभोकमलतहाँहीं ॥ तातेप्रगटतभोकरतारा । रजोगुणीसोअहेअपारा ॥ १०
करितपमोरअनुग्रहपाई । रजतेरच्योलोकविधिराई ॥ ११ ॥ स्वर्गलोकहैदेवनिवासा । ...
महीलोकमनुजादिअगारा।येतीनिहुकेउपरउदारा॥महर्लोकआदिकमतिमाना।सिद्धलोकश्रुतिचारिबखाना॥
असुरनकोअरुनागनकेरो । अवनीनीचेवासनिबेरो ॥ लहैसात्विकीस्वर्गअवासा । लहैराजसीधरणीनिवासा ॥
नागलोकतामसीसिधारै॥१३॥औरसुनहुजोवेदउचारै ॥ महर्लोकजनलोकहिकाहीं । ...

दोहा—सत्यलोककोजातहै, जनसंन्यासहिधारि । भक्तियोगकरिलहतहै, उद्धवपुरीहमारि ॥ १४ ॥
कालशक्तिधारीमोहिंतेरे । लहतजीवहैलोकघनेरे ॥ उत्तमकरमीऊरधजाहीं । रहैंमध्यकर्मीमहिमाहीं ॥
अधमकर्मकरिअधैसिधारै।वेदकर्मगतियहीउचारै॥१६॥ ... जानहुतेते
जोइकारजकोकारणजोई । आदिअंतमध्यहुहैसोई ॥ हैज्योंहारहेततेहिकारज। ...
जातेवस्तुप्रगटजोहोई । आदिहुअंतमध्यहैजोई ॥ कारणसदासत्यहैसोई । कारजअनितकहतसबकोई ॥ १८ ॥
उपादानकारजजगकेरो । हैप्रकृतीयहवेदनिबेरो ॥ जीवप्रकृतिपरजगतअधारा । जगनिमित्तहैकालउदारा ॥
तीनिहुलोकमैंअंतरयामी । महीब्रह्मत्रैवपुबहुनामी ॥ १९ ॥ ममसंकल्पपायसंसारा । ... तनसतबहु॥१॥

दोहा—गयोएकआयोदुतिय, यहविधितेसंसार । बनोरहतनितजियनके, भोगनहेतअपार ॥ २० ॥
होतप्रलयजगकीजेहिभाँती । सोवरनौंमैंसुनुअघघाती ॥ पृथिवीआदिलोकजेहिमाहीं । ऐसोयहब्रह्मांडहिकाहीं
ममइच्छालहिकालकराला।यहिविधिनाशतबुद्धिविशाला॥२१॥शतवरषैवर्षैघननाहीं।अतिदुर्भिक्षपरतमहिमाहीं
मनुजक्षुधावशबहुमरिजाहीं।छीनभूमिमहँअन्नतहाँहीं॥भूमिभईगंधहिमहँलीना ॥ २२ ॥ गंधभयोजललीनप्रवीना
जलभोजायलीनरसमाहीं । लीनरसौपुनितेजसमाहीं ॥ तेजलीनभोरूपहिजाई ॥ २३ ॥ रूपपवनमहँगयोसमाई
पवनपरसमहपुनिमिलिगयऊ।नभमहपरसमिलतपुनिभयऊ॥अंबरमिल्योशब्दमहजाई।इंद्रीनिजसुरगईसमाई२४॥
सुरयुतमनसात्विकअहंकारा । मिलतभयेपुनिजायउदारा ॥ तामसअहंकारमहलीना । होतभयोपुनिशब्दप्रवीना ॥

दोहा—अहंकारपुनितीनिभे, महत्तत्वमेंलीन । महत्तत्वपुनिगुणनमें, ह्वैगोलीनप्रवीन ॥ २५ ॥
त्रैगुणप्रकृतिमाहभेलीना । प्रकृतिकालमेंलीनबलीना ॥२६॥ मायाशबलितजीवनमाहीं । कालहुह्वैगोलीनतहाँहीं॥
रहतजीवमोह्मिमहह्वैलीना।जिमिवनमहमृगरहतप्रवीना॥मोहिंअधीनकोहुकेनविचारो।मोहितेउतपतिप्रलयनिहारो॥
लीनहोहिंहमकोउमहनाहीं । विनविकारहमरहैसदाहीं ॥२७॥ यहिविधिईशजीवअरुमाया।भेदअभेदवेदजसगाया ॥
तैसहिजोउरकरतविचारा । सोईहैजगमाहउदारा ॥ देवहुदनुजमनुजतननाना । मेहैंऐसोरहतनभाना ॥
देवयोगजोतनअभिमाना । कबहूजोह्वैजायसुजाना ॥ तबहूँउद्धवतेहिउरमाहीं । ज्ञानभीतिलहिरहतोनाहीं ॥
जैसेजबकियभानुप्रकाशा।होतगगनकरतमतबनाशा ॥ २८ ॥ यहमैंसांख्यशास्त्रमतगाई।उद्धवतुमकोदियोसुनाई ॥

दोहा—संशयकीगाँठीकठिन, यहितेछूटहिसर्व । सृष्टिप्रलयक्रमजानिअस, होवहुसखाअगर्व ॥ २९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघु
राजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे चतुर्विंशस्तरंगः ॥ २४ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा–सतरजतमगुणतीनिये, जेहिगुणतेजोहोय । सोबरणनमैंकरतहौं, करहुग्रहनतुमसोय ॥ १ ॥
शमदमक्षमासत्यतपदाया । अरुविवेकसुधिवस्तुनिकाया ॥ श्रद्धालाजतोपअरुत्यागा । शरणपालिबोदान।
आत्मानंदहोयजोप्रानी । सतोगुणीलीजैतेहिजानी ॥ २ ॥ उद्यमअसंतोपजसआसा । सर्वविपयसुखहासविला
मदउत्साहप्रवाहप्रगटिबो । बलकरिकबहुँनकोहुसोंहठिबो ॥ येगुणलेहुजाइमेंजोई । रजोगुणीजानहुजनसोई ॥
क्रोधलोभदुखमिथ्यावानी। हिंसाअरुजाचबछलठानी ॥ दंभगलानिहुकलहसबैसो । शोकहुमोहसुभावअनैं
आलसनींददीनताभीती । करतद्रव्यहितयतनअनीती ॥ इतनेगुणजामेंतनदेखो । पूरोतमोगुणीतेहिलेखो ॥
गुणकेमेलनतेजोहोई । मैंवरणहुँसुनुउद्धवसोई ॥ ८ ॥ उद्धवअहंकारममकारा। तनमनइंद्रियकोव्यवहारा ॥

दोहा–सतरजतमगुणमेलको, यहीजानियेंकाज्ञु ॥ अर्थधर्मअरुकामरति, सोउगुणमेलनसाज्ञु ॥ ७ ॥
प्रवृतिधर्ममहँजबभैप्रीती । लाग्योकरनगृहाश्रमरीती॥करतोरहैसदानिजधर्मा । सोउगुणमेलगुणहुशुभकर्मा ॥
जाकेशमदमादिअधिकाई । सोजनसतोगुणिसुखदाई ॥ कामादिकजिनकेअधिकाने । रजोगुणीपरतेजाने ॥
क्रोधादिकजिनकेबढिजाहीं।तमोगुणीजानहुतिनकाहीं९सकलआशतजिकरिनिजकर्मा।भजहिमोहिंजेज
सतोगुणीतेहैंनरनारी । तेकबहूँनहोतसंसारी ॥ १० ॥ कर्मनकोफलचाहिबडोई । करिकैकर्मभजैमोहिंजोई ॥
जानोरजोगुणीतेहिताता।होतबहुतदिनमहँअवदाता॥कोहुकोमरणचाहिमोहिंभजतो।सोतामसीसाधुमधिलजतो
तीनिहुगुणमोमहंहैनाहीं । रहतजीवकेचित्तहिमाहीं ॥ होतबद्धतेहिगुणतेजीवा । लहतनरककहुँस्वर्गअतीव॥१

दोहा–बढोसतोगुणजबाहिये, रजतमकोलियजीति । धर्मज्ञानसुखपायतन, करतोमोपदप्रीति ॥ १२ ॥
बढ्योरजोगुणजबमनमाहीं।लियदबायतबसततमकाहीं॥तबसुखकर्मसुयशश्रीपावै।निवृतिप्रवृतिकर्महिह्वैजावै॥१
जबैतमोगुणमनअधिकावै । शोकमोहनिद्रातबआवै ॥ हिंसाजडताऔरमूढ़ता । पापहिमेंमतिरहतिरूढता ॥१
जबहींचित्तप्रसन्नह्वैजावै।अरुसबइंद्रिनकोसुखआवै॥होयसतोगुणजबअसमनमें।तबममपदध्यावतछनछनमें ॥ १
जबभैमतिचंचलकरिकर्मा । लहतएकक्षणनेकुनशर्मा ॥ रहतनसावधानजेहिगाता । भ्रमतरहतमनसबदिनताता।
ऐसेलक्षणहोवैंजामें । रजगुणबढोजानियेतामें ॥ १७ ॥ जाकेचितानितरहैविपादा । छोडतसकलधर्ममरयादा ॥
सकतनमनाथिरकरिअभिमानी । रहतमनहिंअज्ञानगलानि ॥

दोहा–येतेलक्षणजाहिमें, सखालिह्योजबदेखि । अधिकतमोगुणताहिमें, अवशिलीजियेलेखि ॥ १८ ॥
सतगुणबढेदेवबलबाढे । रजगुणबढैअसुरबलगाढे ॥ जबतमगुणबाढतमतिमाना । तबराक्षसबलबढतमहाना ॥१९
सतगुणतेजागरणविचारो । रजगुणतेस्वपनहिउरधारो ॥ तमगुणतेसुपुप्तिह्वैजावै । तीनिहुदशाजीवकहवावै ॥२०
ब्राह्मणसतोगुणेजेधारैं । उपरउपरकेलोकसिधारैं ॥ माधिमधिरजोगुणीजनजाहीं । अधअधगमनतामसीकाहीं॥२१
मरैसतोगुणमेंजोप्रानी । पावतस्वर्गलोकसुखदानी ॥ मरैरजोगुणमहजनजेई । रहैंमृत्युलोकहिमहँतेई ॥
मरहितमोगुणमहँजेलोगू । तेसबलहतनरककेभोगू ॥ मरैंजेनिर्गुणमेंपदध्याई । तेमोहिंलहतविकुंठहिआई ॥ २२
अरपैमोहिंकर्मफलकोई । अथवाकरैअकामहिजोई ॥ सोईसात्विककर्मकहावै । ताकेकियेअवशिमोहिंपावै ॥

दोहा–फलइच्छाकरिकरतजो, कर्मसोराजसजान । हिंसादिकजेकर्महैं, तिनकहैंतामससमान ॥ २३ ॥
जानहुसात्विकआतमज्ञाना । राजसजानुदेहअभिमाना ॥ जिनकेनाहिंपरलोकहिभाना । सोहैतामसज्ञानसुजाना ।
मेरीभक्तिसहितजोज्ञाना । सोनिर्गुणसबवेदबखाना ॥२४॥ सात्विकहैअरण्यकरवासा । राजसहैपुरग्रामनिवासा ।
पुवासुरापिनकेहमकाना । जानुतामसीदुखमदनाना ॥ जोनिवासममंदिरकेरो । सोनिर्गुणहैसुखदघनेरो ॥ २५ ।
करैकर्मजोनाहिंअशक्ता । सोसात्विककर्ताहैव्यक्ता ॥ अतिअशक्तह्वैकरैजोकर्मा । सोराजसकर्तासुनधर्मा ॥
करैकर्मसुधिछोडिआलसी । उद्धवकर्तातेनतामसी ॥ करैकर्मजोकोउममहेतू । सोनिर्गुणकर्तासुखसेतू ॥ २६ ।
श्रद्धाआतमज्ञानहिकेरी । अहैसात्विकीश्रुतिनिनिबेरी ॥ कर्मकांडकीश्रद्धाजोई । तेहिराजसीकहैंसबकोई ॥

तबसतरजतमगुनबिलगाना॥५॥ तातेप्रगट्योतत्वमहाना ॥ ताकोजानतजगतअधारा । तातेप्रगटभयोअहँ
सोईहैअज्ञानकरहेतू ॥६ ॥ ताकोत्रिविधिजानिमतिसेतू ॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधू । मनइंद्रियकारणमतिा

दोहा—अहंकारतामसहिते, शब्दादिकभेपाँच । अहंकारराजसहिते, प्रगटींइंद्रियसाँच ॥

सात्विकअहंकारतेदेवा।प्रगटभयेकारिवेममसेवा ॥८॥ येसबपममसंकल्पहिपाई । मिलिब्रह्मांडदियोउपजाई
रह्योसोवतोमैंजलमाँहीं । नाभीतेभोकमलतहाँहीं ॥ तातेप्रगटतभोकरतारा । रजोगुणीसोअहैअपारा ॥ १
करितपमोरअनुग्रहपाई । रजतेरच्योलोकविधिराई ॥ ११ ॥ स्वर्गलोकहैदेवनिवासा । अंतरिक्षप्रेतादिक
महीलोकमनुजादिअगारा।येतीनिहुकेउपरउदारा॥महर्लोकआदिकमतिमाना॥सिद्धलोकश्रुतिचारिबखाना॥
असुरनकोअरुनागनकेरो । अवनीनीचेवासनिवेरो ॥ लहैसात्विकीस्वर्गअवासा । लहैराजसीधरणिनिवासा ।
नागलोकतामसीसिधारै॥१३॥औरसुनहुजोवेदउचारै ॥ महर्लोकजनलोकाहिकाहीं । योगऔरतपकरिजियज

दोहा—सत्यलोककोजातहै, जनसंन्यासहिधारि । भक्तियोगकरिलहतहै, उद्धवपुरीहमारि ॥ १४ ॥

कालशक्तिधारीमोहितेरे । लहतजीवहैलोकघनेरे ॥ उत्तमकरमीऊरधजाहीं । रहैंमध्यकर्मीमहिमाहीं ॥
अधमकर्मकरिअधैसिधारै।वेदकर्मगतियहीउचारै॥१५॥लघुबडकृशहुथूलसबजेते।प्रकृतिपुरुषयुतजानहुतेते॥
जोइकारजकोकारणजोई । आदिअंतमध्यहुहैसोई ॥ हैव्यौहारहेततेहिकारज। जिमिघटपटकटकंकुंडलआरज॥
जातेवस्तुप्रगटजोहोई । आदिहुअंतमध्यहैजोई ॥ कारणसदासत्यहैसोई । कारजअनितकहतसबकोई ॥ १८ ।
उपादानकारजजगकेरो । हैप्रकृतीयहवेदनिवेरो ॥ जीवप्रकृतिपरजगतअधारा । जगनिमित्तहैकालउदारा ॥
तीनिहुलोकमेंअंतरयामी । महीब्रह्मत्रैवपुबहुनामी ॥ १९ ॥ ममसंकलपपायसंसारा । प्रगटतपलतनसतबहुवा

दोहा—गयोएकआयोदुतिय, यहविधितेसंसार । बनोरहतनितजियनके, भोगनहेतअपार ॥ २० ॥

होतप्रलयजगकीजेहिभाँती । सोबरनौंमैंसुनुअघघाती ॥ पृथिवीआदिलोकजेहिमाहीं । ऐसोयहब्रह्मांडहिकाहीं
[illegible]यहिविधिनाशतबद्धिविशाला॥२१॥शतवरषैवपैघननाहीं।अतिदुर्भिक्षपरतमहिमाहीं
[illegible] ॥ २२ ॥ गंधभयोजललीनप्रवीना
जलभोजायलीनरसमाहीं । लीनरसौपुनितेजसमाहीं ॥ तेजलीनभोरूपहिजाई ॥ २३ ॥ रूपपवनमहँगयोसमाई
पवनपरसमहपुनिमिलिगयऊ।नभमहपरसमिलतपुनिभयऊ॥अंबरमिल्योशब्दमहजाई।इंद्रीनिजसुरगईसमाई २४
सुरयुतमनसात्विकअहंकारा । मिलतभयेपुनिजायउदारा ॥ तामसअहंकारमहलीना । होतभयोपुनिशब्दप्रवीना ।

दोहा—अहंकारपुनितीनिभे, महत्तत्वमेंलीन । महत्तत्वपुनिगुणनमें, ह्वैगोलीनप्रवीन ॥ २५ ॥

त्रैगुणप्रकृतिमाहभेलीना । प्रकृतिकालमेंलीनचलीना ॥२६॥ मायाशबलितजीवनमाहीं । कालहुह्वैगोलीनतहाँहीं॥
रहतजीवमोहिमहह्वैलीना।जिमिवनमहमृगरहतप्रवीना॥मोहिंअधीनकोहुकेनविचारो।मोहितेउतपतिप्रलयनिहारो॥
लीनहोहिंहमकोउमहनाहीं । विनविकारहमरहैसदाहीं ॥२७॥ यहिविधिईशजीवअरुमायाँ।भेदअभेदवेदजसगाया॥
तेसहिजोउरकरतविचारा । सोईहैजगमाहउदारा ॥ देवहुदनुजमनुजतननाना । मेंहोंऐसोरहतनभाना ॥
देवयोगजोतनअभिमाना । कबहूंजोंह्वैजायसुजाना ॥ तबहूँउद्धवतेहिउरमाहीं । ज्ञानभीतिलहिरहतोनाहीं ॥
जैसेजबकियभानुप्रकाशा।होतगगनकरतमतबनाशा ॥ २८ ॥ यहमैंसांख्यशास्त्रमतगाई।उद्धवतुमकोदियोसुनाई ॥

दोहा—संशयकीगाँठिकाठिन, यहितेछूटहिसर्व । सृष्टिप्रलयक्रमजानिअस, होवहुससाअगर्व ॥ २९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघु
राजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे चतुर्विंशस्तरंगः ॥ २४ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा-सतरजतमगुणतीनिये, जेहिगुणतेजोहोय । सोवरणनमैंकरतहौं, करहुग्रहनतुमसोय ॥ १ ॥
शमदमक्षमासत्यतपदाया । अरुविवेकसुधिवस्तुनिकाया ॥ श्रद्धालाजतोपअरुत्यागा । शरणपालिबोदान
आत्मानंदहोयजोप्रानी । सतोगुणीलीजैतेहिजानी ॥ २ ॥ उद्यमअसंतोपजसआसा । सर्वविषयसुखहासविला
दउत्साहप्रवाहप्रगटिबो । बलकरिकबहुँनकोहुसोंहठिबो ॥ येगुणलेहुजाइमेंजोई । रजोगुणीजानहुजनसोई ॥
क्रोधलोभदुखमिथ्यावानी । हिंसाअरुजाचबछलठानी ॥ दंभगलानिहुकलहसवैसो । शोकहुमोहसुभावअनै
आलसनींददीनताभीती । करतद्रव्यहितयतनअनीती ॥ इतनेगुणजामेंतनदेखो । पूरोतमोगुणीतेहिलेखो ॥
गुणकेमेलनतेजोहोई । मैंवरणहुँसुनुउद्धवसोई ॥ ५ ॥ उद्धवअहंकारममकारा । तनमनइंद्रियकोव्यवहारा ॥
दोहा-सतरजतमगुणमेलको, यहीजानियेकाजु ॥ अर्थधर्मअरुकामरति, सोउगुणमेलनसाजु ॥ ७ ॥
प्रवृतिधर्ममहँजबभेप्रीती । लाग्योकरनगृहाश्रमरीती॥करतोरहैसदानिजधर्मा । सोउगुणमेलगुणहुशुभकर्मा ॥
जाकेशमदमादिअधिकाई । सोजनसतोगुणिसुखदाई ॥ कामादिकजिनकेअधिकाने । रजोगुणीपरततेजाने ॥
क्रोधादिकजिनकेबढिजाहीं।तमोगुणीजानहुतिनकाहीं९सकलआशतजिकरिनिजकर्मा।भजहिमोहिजेज
सतोगुणीतेहैंनरनारी । तेकबहूँनहोतसंसारी ॥ १० ॥ कर्मनकोफलचाहिबडोई । करिकैकर्मभजैमोहिंजोई ॥
जानोरजोगुणीतेहितात॥होतबहुतदिनमहँअवदात॥कोहुकोमरणचाहिमोहिंभजतो॥सोतामसीसाधुमधिलजतो
तीनिहुगुणमोमहहैंनाहीं । रहतजीवकेचित्तहिमाहीं ॥ होतबद्धतेहिगुणतेजीवा । लहतनरककहुँस्वर्गअतीवा॥१
दोहा-बढोसतोगुणजबहिये, रजतमकोलियजीति । धर्मज्ञानसुखपायतन, करतोमोपदप्रीति ॥ १३ ॥
बढ्योरजोगुणजबमनमाहीं॥लियदबायतबसततमकाहीं॥तबसुखकर्मसुयशश्रीपावे॥निवृतिप्रवृतिकर्महिह्वैजावै॥१
जबैतमोगुणमनअधिकावै । शोकमोहनिद्रातबआवै ॥ हिंसाजडताऔरमूढता । पापहिमेंमतिरहतिरूढता ॥१
जबहींचित्तप्रसन्नह्वैजावै॥अरुसबइंद्रिनकोसुखआवै॥होयसतोगुणजबअसमनमें॥तबममपदध्यावतछनछनमें ॥ १
जबभैमतिचंचलकरिकर्मा । लहतएकक्षणनेकुनशर्मा ॥ रहतनसावधानजेहिगाता । भ्रमतरहतमनसबदिनताता
ऐसेलक्षणहोवैंजामें । रजगुणबढोजानियेतामें ॥ १७ ॥ जाकेचितनितरहैविषादा । छोडतसकलधर्ममरयादा ॥
सकतनमनथिरकरिअभिमानी । रहतमनहिअज्ञानगलानि ॥
दोहा-येतेलक्षणजाहिमें, सखालिहुजबदेखि । अधिकतमोगुणताहिमें, अवशिलीजियेलेखि ॥ १८ ॥
सतगुणबढेदेवबलबाढे । रजगुणबढेअसुरबलगाढे ॥ जबतमगुणवाढतमतिमाना । तबराक्षसबलबढतमहाना ॥१९
सतगुणतेजागरणविचारो । रजगुणतेस्वपनहिउरधारो ॥ तमगुणतेसुषुप्तिह्वैजावै । तीनिहुदशाजीवकहवावै ॥२०
ब्राह्मणसतोगुणेजेधारैं । उपरउपरकेलोकसिधारैं ॥ मधिमधिरजोगुणीजनजाहीं । अधअधगमनतामसीकाहीं॥२१
मरैसतोगुणमेंजोप्रानी । पावतस्वर्गलोकसुखदानी ॥ मरैरजोगुणमहजनजेई । रहैंमृत्युलोकहिमहँतेई ॥
मरहितमोगुणमहँजेलोगू । तेसबलहतनरककेभोगू ॥ मरैजेनिर्गुणमेंपदध्याई । तेमोहिलहतवैकुंठहिआई ॥ २२ ।
अरपेमोहिकर्मफलकोई । अथवाकरैअकामहिजोई ॥ सोईसात्विककर्मकहावै । ताकेकियेअवशिमोहिपावै ॥
दोहा-फलइच्छाकरिकरतजो, कर्मसोराजसजान । हिंसादिकजेकर्महैं, तिनकहँतामसमान ॥ २३ ॥
जानहुसात्विकआतमज्ञाना । राजसजानुदेहअभिमाना ॥ जिनकेनहिपरलोकहिभाना । सोहैतामसज्ञानसुजाना ।
मेरीभक्तिसहितजोज्ञाना । सोनिर्गुणसबवेदबखाना ॥२४॥ सात्विकहैअरण्यकरवासा । राजसहैपुरग्रामनिवासा ॥
जुवासुरापिनकेहमकाना । जानुतामसोदुखप्रदनाना ॥ जोनिवासममर्मंदिरकेरो । सोनिर्गुणहसुखदघनेरो ॥ २५ ॥
करैकर्मजोनाहिअशक्ता । सोसात्विककर्ताहैव्यक्ता ॥ अतिअशक्तह्वैकरैजोकर्मा । सोराजसकर्तासुनधर्मा ॥
करैकर्मसुधिछोडिआलसी । उद्धवकर्तातेनतामसी ॥ करैकर्मजोकोउममहेतू । सोनिर्गुणकर्तासुखसेतू ॥ २६ ॥
श्रद्धाआतमज्ञानहिकेरी । अहैसात्विकीश्रुतिनानिबेरी ॥ कर्मकांडकीश्रद्धाजोई । तेहिराजसीकहैसबकोई ॥

दोहा–हिंसाऔरअधर्ममें, श्रद्धाजाकीहोय । सोश्रद्धाहैतामसी, असभापैंसबकोय ॥
...मसेवनजोश्रद्धाराखै । सोनिर्गुणश्रद्धाश्रुतिभाषै ॥२७॥ पथ्यपूतविनश्रमजोखावै ।...
...ोइंद्रिनकोसुखउपजावै । सोराजसभोजनबुधगावै ॥ अशुचिदुखदभोजनजोहोई ।...
...मोहिंसमर्पिजोभोजनकरई।सोनिर्गुणभोजनसुखभरई॥२...
विषयकिहेतेजोसुखहोई । राजसताहिकहैंसबकोई ॥ मोहदीनतातेसुखभयऊ ।...
मेरीभक्तिकिहेजोहर्षा । सोनिर्गुणबसतेउतकर्षा ॥ २९ ॥ द्रव्यदेशअरुकालहुज्ञाना ।...
श्रद्धाऔरअवस्थाजेती।आकृतिनिष्ठात्रैगुणतेती॥३०...

दोहा–देख्योसुन्योगुन्योजोकछु, आयोजोबुधिमाहिं । सबत्रैगुणअसकहुँनहीं, जोत्रिगुणहैनाहिं ॥ ३...
जौनपदारथहमकहिआये।तेसबजगतहेतकविगाये॥जीवजोजीतिइन्हैंसबलीन्ह्यो ॥३२॥
सोजनहोतमोक्षकेयोगू । औरसबैजानहुदुखभोगू ॥ तातेसाधकज्ञानविज्ञाना । ऐसोनरतनलहिमतिवाना
त्रिगुणसंगतजिकरिअतिप्रेमा । मोहिंभजैचाहैजोक्षेमा ॥ जीतैइंद्रिनकेरप्रसंगा । करैनमोरभक्तजगसंगा ॥
रहैसावधानैसबकाला । करिकैसेवनसत्वविशाला ॥ ३४ ॥ जीतैरजोतमोगुणकाहीं ।...
रहैसदाहीशांतसुभाऊ । प्रगटकरैनहिंनिजपरभाऊ ॥ यहिविधिरहैजोकोउजगमाहीं ।...
प्राकृततनतजितौनसुजाना।करहिअवशिममपुरहिपयाना ॥३५॥

दोहा–मोरभक्तह्वैकैसदा, लखतमोहिंसबठौर । विचरेत्रिभुवनमेंमुदित, ध्यावैकबहुँनऔर ॥ ३६ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्री रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे पंचविंशस्तरंगः ॥ २५ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा–साधकमेरेज्ञानको, ऐसोमनुजशरीर । ताहिपायकरिधर्ममम, मोहिंमिलतमतिधीर ॥
अंतर्यामीजीवको, मैंहौंसखाअमंद । मोररूपतुमजानियो सदासच्चिदानंद ॥ १ ॥
भयोजीवकहँजवममज्ञाना।छूटततवहिंदेहअभिमाना ॥ रहैयदपिसंसारहिमाहीं । विषयरंगतेहिलागतनाहीं
करैकबहुँनहिंकामिनिसंगा ।छोडेपेटारथिनप्रसंगा ॥ करैजोकामिनिसंगसुजाना । गिरतअंधसँगअंधसमाना
तामेंसुनहुएकइतिहासा । मैंतुमसोंअबकरहुँप्रकासा ॥ पूरुवपुरूरवामहराजा । रह्योएकतेहिमुयशदराजा
मिलीउर्वशीताकहँआई । नृपसोंअसप्रणलियोकराई ॥ देखिहौंतुम्हैंनगनमेंजबहीं । संगतुम्हारोतजिहौंतबहीं
असकहिरहनलगीनृपसंगा । करणअनेकभाँतिरतिरंगा ॥४॥ एकसमयविनवसनतहाँहीं ।...
कीन्ह्योसुरपुरतुरतपयाना।तवनरेशअतिशयविलखाना ॥ वेकलसीरसमहादुखपाग्यो । जगतीपतिजगतीमहँ...

दोहा–असनवसनकीसुधिनहीं, करतविलापकलाप । हायउर्वशीमोहिते, वृथादयोसंताप ॥
हायउर्वशीमिलतिकसनाहीं।तोहिंविनसूनजगतमोहिंकाहीं...
हैपपानसमहृदयकठोरा।नाहिंदिलद्रवेदेखिदुखमोरा॥ ... ॥ यहिविधिविचरतविचरतजगमें । भूपउर्वशीकेरि...
विषयभोगकरिमैंनअघानो । ... । कियगंधर्वयज्ञनृपराई
... । बीत्योकालबहूतगेँ...
करुगंधर्वयज्ञम... । ता...
कियोपयानउर्वर... उद्धवसुनहुसम्हारि ॥

पुरूरवा उवाच ।

रोमनमन्मथमथिडारचो।हायमोहमैंअतिविस्तारचो ॥ करिउर्वशीकेरगलबाहीं । बीततकालगुन्योमैंनाहीं ॥
यहउर्वशीअंगलपटान्यो।उगतअस्तदिनकरनहिजान्यो ॥सुरगणिकालीन्ह्योठगिमोहीं।मैंह्वैगयोज्ञानकरद्रोहीं ॥
ह्योचक्रवर्तीमहराजा । शास्योसिगरीनृपनसमाजा ॥ सोमैंरँगिनारिनकेरंगा । नच्योंनचतजसकाठकुरंगा ॥
ह्योशक्रसमविभवहमारा । फैल्योसुयशसकलसंसारा ॥ ऐसेहुमोहिंतृणहुसमत्यागी । गैउर्वशीनेहतजिभागी ।
ताकेहेतप्रमत्तसमाना । मैंरोवतविनवसनअयाना॥विचरचोमैंसबवसुधामाहीं । लागीलाजनेकुमोहिंनाहीं ॥१
जोकामीतियपाछेधावत । सोअपनोसर्वस्वनशावत ॥ जैसेखरीसंगखरधावै । पदप्रहारबहुबारहिपावै ॥

दोहा—जैसहिनारीसंगमें, जनकोज्ञानहुमान । तेजबुद्धिबलवीरता, तुरतहिकरतपयान ॥ ११ ॥
काविद्यातपदानते, कावहुसुनेपुरान । काइकांतबसिमौनते, कहाकथेबहुज्ञान ॥

तासुवृथासबलेहुविचारी।जाकोमनहरिलीन्ह्योंनारी॥१२॥धिक्मोकोस्वारथनहिंजान्यो।होंमूरुखपंडित
भयोचक्रवर्तीमेंभारी।ऐसेहुलियोजीतिमोहिंनारी ॥खरअरुवृषभसरिसजगमाहीं।तियपीछूविचरचोचहुँघाहीं ॥१
सहसनबरसउर्वशीकेरो । अधरअमीमैंपियोघनेरो ॥ पैनतोपभोवाढीआशा । जिमिआहुतिलहियढ़तहुताशा॥१
जोतियचितलिपनेहफँसाई।हरिविनतेहिकोसकतछुडाई १५ यदपिउर्वशीबहुसमुझायो।ममदुर्मतिमनकछून
रह्योलोभिलालसाबढ़ायेमैंअबूझबूझोनबुझाये ॥ १६ ॥ यामेंकछुननारिअपराधा । हैकामिहिअपराधअगाधा
जान्योरज्जुहिजोसर्पअज्ञानी।कौनदोषजोरज्जुहिवखानी॥१७॥मलअरुमूत्ररुधिरअरुचामा।निकसतदुर्गंधहिसबठाम

दोहा—कनकलताअरुचंदकी, उपमाताकीदेव । अतिअज्ञानकीपोटरी, अपनेशिरधरिलेव ॥ १८ ॥

कहतमातुपितुहैंतनमेरो । नारिकहतपतिसुखदघनेरो ॥ कहतस्वामियहमोरशरीरा । कामपरेसहिहैअतिपीरा
अग्निकहतमैंअंतजरेहों । गीधश्वानकहमैंयहखैहों ॥ जीवकहततनअहैहमारा । गुनतमीतलखिनिजउपकारा
तनयककोनहिंमोहिजनातो।गहेअनेकनिनिजनिजनातो॥१९॥ऐसोअशुचितुच्छनिंदिततन।तामेंकरिकैमोहमूढज
वरणतहैसुंदरछविताकी । कैसीतकनिनैनकीबाँकी ॥ प्यारीतुवविहसनिअतिमीठी । दीन्हीसपदिसुधाकरिसीठी
तुवमुखदेखतलजतमयंका।वहकलंकयुतयहअकलंका॥यहिविधिकामीबहुबतराहीं।नारिशरीरगुनतअसनाहीं॥२०
उपरचामतेहिनीचेमासू । पुनिमेदाअरुरुधिरनिवासू ॥ फेरिहाडमज्जातेहिभीतर । जकरोबहुतनसनतेदुखकर ।

दोहा—रेतपीवमलमूत्रते, सिगरोभरोशरीर । जसमलमेंबहुक्रिमिरहैं, तसतनमेंप्रदपीर ॥

असतनमेंसनेहहैजिनको । भेदकौनमलक्रिमितेतिनको॥२१॥तातेकामिनिकामिनिमाहीं।करैसनेहसुमतिकहुँनाहीं॥
करैजोकामिनिकामिनिनेहू । तौनहिंवचैनरकतेकेहू ॥२२॥ प्रथमकियोजेतियअनुरागा।तेपुनिकीन्हेतदपिविरागा॥
धरहिध्यानएकांतहिजाई।तियमूरतिहठितिन्हैदेखाई॥विनमनकेवशसुधरतनाहीं।मानसअजितजाततियपाहीं॥२३॥
तातेनारीलंपटकेरो । करैनसंगरहैनहिंनेरो ॥ महाप्रबलहैकामदमारी । सुमतिहुकोमनडारतजारी ॥
तौमोसमकुमतीजगमाँहीं । करैखरावतिन्हैंकिमिनाहीं ॥ २४ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

यहिविधिपुरूरवामदराजा । गायगाथलहिशोकदराजा ॥ निजआतममहँमोकहँजानी । तजिउर्वशीलोकमतिसानी॥
प्रेममगनमेरोह्वैगयऊ । मेरेपुरकोआवतभयऊ ॥ २५ ॥

दोहा—तातेछोडिकुसंगको, करैसंतकोसंग । संतहिकरिउपदेशबहु, करतकामविषभंग ॥ २६ ॥

संतनकेमनदोदनजासा । मोरप्रेमकोसदाहुलासा ॥ समदरशीशांतहूउदारा । विगतअहंकारहुममकारा ॥
शीतउष्णमानतसमाना । करतवस्तुसंग्रहनाहिंनाना ॥ २७॥ तेइमहाभागनडभागी । होहिंजवहिं[illegible]
तिनकेनिकटबैठिजोकोई।सुनतकथाममआनँदमोई॥तिनकेतनरहिजातनपापा।गमनत[illegible] ॥२८॥

नोमयीममसूरतिकेरो । मंदिरजीवहिवेदनिवेरो ॥ शिलाधातुमणिदारुहिकेरी । रचीजोमूरतिसुछविघने
किहितबहुधनहिलगाई । सुंदरमंदिरलेहिबनाई ॥ तामेंमूरतिविधियुतधरई । द्वैविधितासुप्रतिष्ठाकरई ॥
वलअरुअचलहोयमतिजैसी । मेरीकरैप्रतिष्ठातैसी ॥ उद्धवआवाहनोविसर्जन । अचलमूर्त्तिमेंकरैनज्ञन
रावाहनोविसर्जनदोई । चलमेंकरैमनैजसहोई ॥

दोहा-लेपिभूमिमूरतिलिखी, चित्रलिखीहैजोय । वालूकीइनमेंकरै, आवाहनसबकोय ॥

पूजनअंतविसर्जनभावै । मार्जनतेमज्जनकरवावै ॥ १४ ॥ औरमूर्त्तिजलतेनहवावै ।
तातेपूजाकरैहमारी । कपटछोड़िकैप्रीतिपसारी ॥ अथवायथाशक्तिसवसाजू । लेहिप्रीतियुतपूजनकाजू
मनोमयीममसूरतिकाहीं । करिकैममभावनासदाहीं ॥ पूजैदिव्यसाजुसबजोरी । जाकोहोयकहूँनहिंजोरी
मज्जनभूषणवसनहुआदिक।विग्रहमहँमोहिंअतिअह्लादिक॥पूजैभूमिलेपिजोलिखिकै । त
घृतहविदैपूजैपावकमहँ॥१६॥उपस्थानआदिककरिरविपहँ ॥ जलमेंजलदैपूजनकरई । बहु [illegible]
प्रीतिसहितजलहूजेदेहीं । तौहमतोपितह्वैलेहीं ॥ १७ ॥ तौपुनिचंदनधूपहुदीपा ।

दोहा-जोअप्रीतितेमोहिंकोऊ, अरपैसहसप्रकार । तबहूँतोपितहोहुँनहिं, करैकोटिउपचार ॥

पूजनसाजसकलविधिजोरी । सुचिह्वैमोहिंबहुभाँतिनिहोरी ॥ पूरुवअग्रकुशासनधरिकै ।
बैठैपूजकहमरेसन्मुख ॥१९॥ न्यासकरैकहिमूलमंत्रमुख ॥ धरैकलशनिजवामदिशामें ।
मूलमंत्रअभिमंत्रितकरई । चंदनफूलहुतेहिमहँभरई ॥ २० ॥ सोजललैपढिमूलमंत्रकहँ ।
यज्ञभूमिअरुनिजतनमाँहीं । सींचिलेयसोईजलकाँहीं॥सोईकलशजलतेरतिराँचा॥भरैसलिलशुभपात्रनप
अर्घ्यपाद्यअरुआचमनीया । शुद्धोदकअरुअस्नानीया ॥ करिजलपूरिऔपधीडारै । हृदयमंत्रपुनिसुम
तातेअर्घ्यपाद्यअभिमंत्रै । भापैफेरिशीर्षकरमंत्रै ॥ तातेपाद्यपात्रसिधिकरई । फेरिशिखाकोमंत्रउचरई

दोहा-आचमनीयहिपात्रको, अभिमंत्रैतेहिमाहिं । अभिमंत्रैगायत्रिते, अर्घ्यानीयहिकाहिं ॥

मूलमंत्रपढिपुनिसबगात्रै । अभिमंत्रैशुद्धोदकपात्रै ॥ असभावनाकरैतनमाँहीं । शोपिगयोतनमारुतपा
फेरिअगिनितेताकोजारै । अमीबरसिपुनितनहिसम्हारै ॥ हृदयमध्यसरसिजहैजोई । तामेंमोहिंध्या
ममूरतिहियकमलहिमाहीं । मनतेतेहिपूजैप्रथमाहीं ॥२३॥ फेरिमनहितेताहिनिकासी॥प्रतिमामेंमेले
र्वप्रतिष्ठितमूरतिमेरी । ताकोपूजैप्रीतियनेरी ॥ २४ ॥ आठपाउँसिंहासनमाहीं । करैभावनाताहिसदा
ऐश्वर्यधर्मविरागविज्ञाना । औइनकीविपरीतिसुजाना ॥ आठपाउँयेहीकहवावै । ताकेऊपरकमलपुनि
कमलदलननवशक्तिनरापै । विमलादिकजेश्रुतिगनभापै ॥ कमलमध्यरविमंडलभावै । तासुप्रकाशसि

दोहा-मेरीमूरतिकमलके, मध्यविराजैसंत । ताकेचहुँकितआयुधन, करैसविधिविलसंत ॥ २६

शंखचक्रधनुगदाकृपाणा । हलमूसलकौस्तुभअरुबाणा॥श्रीवत्सहुऔरहुवनमाला।प्रथमहिंपूजैबुद्धिविश
नंदसुनंदकुमुदपरचंडा॥बलमहँबलकुमुदेक्षनचंडा॥आठौपार्षदआठोंदिशिमहँ।ममसन्मुखराखहिगरुडहि
दुर्गाव्यासगणेशविशाला । विष्वक्सेनआठदिगपाला ॥ करैकोनमहँइनकहँथापित।गुरुपरगुरुवायेदिशि
इंद्रादिकपूर्वादिकआसा । इनहूँकोपूजैसहुलासा ॥ अर्घ्यमोहिंदेवैइकबारा । पाद्यफेरिद्वैबारउदारा ॥
तीनिवारआचमनहुदेवै । मूलमंत्रसबमेंपढ़िलेवै ॥ दंतधावनादिकविधिनाना । रचैसुपंचामृतअस्नाना ॥
चंदनअरुकपूरउशीरा । कुंकुमअगरुसुगंधितनीरा ॥ मूलमंत्रपढिमोहिंनहवावै । विभवभयेनितहीअसभ
स्वर्णघर्मयहमंत्रउचारै । सहसशीर्षपढ़ैउदारै ॥ महापुरुषविद्यापढिदेवै । अष्टाक्षरमंत्रहिपढिलेवै ॥

दोहा-सामनिराजनआदिसब, मंत्रनपढैसुजान । मूलमंत्रपढिवस्त्रको, मोहिंअरपैसविधान ॥ ३

अरपैफेरियज्ञउपवीता । अरपैपुनिआभरणपुनीता ॥ कुंकुमयुतचंदनहिचढावै । तामेंरचनाविविपदेसा

अरपैफूलफूलकीमाला । तुलसीधात्रीद्रव्यविशाला ॥ ३२ ॥ फेरिधूपमोकोदरशावै ।
पुनिचंदनयुतकुसुमचढ़ावै।पुनिअर्घ्यादिकमोहिंकरावै॥पुनिमधुपर्कदेइमोहिंपाहीं।अबभापहुँनवेद्यनकाहीं ॥
गुड़पायसशष्कुलिहुमोदक।मोहनभोगपुवादधिमोदक॥औरहुमोहनमोहनभोगू।यहिविधिअरपैसबबुधलोगू ॥
देइसुगंधितमोहिंजलपाना । उद्वर्तनचंदनहुविधाना ॥ पाद्यऔरआचमनकरावै । पुनिअरपैतांबूलसोहावै ॥
फलदक्षिणामुकुरदरशावै । चायचारुचामरैचलावै ॥ ३५ ॥ वेदविदितवेदिकाबनाई ।

दोहा–कुंडमाहिपावकधरै, तीनोंअगिनिमिलाइ ॥ ३६ ॥ मूलमंत्रतेसींचिकै, देवैकुशाबिछाइ ॥

होमसाजुपुनिमूलमंत्रते।सींचैविधियुतवेदतंत्रते ॥ करैअगिनिमहँपुनिममध्याना।ताकोउद्धवसुनहुबखाना ॥
तपतकनकसमसुभगशरीरा । शंखचक्रअंबुजहरपीरा ॥ गदाचारिभुजलसहिविशाला ।
वसनकंजकेसरसमपीता ॥ ३८ ॥ कटकक्रीटकिंकिनीपुनीता ॥ अंगदऔरहुभूषणजेते । मेरेतनमहँभावहिंतेते
श्रीवत्सहुवक्षसमहछाजै । तैसहिसुंदरकौस्तुभराजै॥३९
इंद्रप्रजापतिआहुतिदोई । दक्षिणउत्तरदैसबकोई ॥ अग्निसोमद्वैआहुतिदेई ॥ ४० ॥ मूलमंत्रपुनिमुखपढ़िलेई
तातेआहुतिपोडशदेवै । सहसशीर्षहुपुनिपढ़िलेवै ॥ देयताहुतेपोडशआहुति । यहिविधिकरैभक्तिसबदृढ़मति

दोहा–धर्मादिकपुनिआठकहँ, आठहिआहुतिदेय । विमलादिकनवशक्तिकहँ, नवआहुतिकरिलेइ ॥

आहुतिअंतअगिनिकहँदेई ॥ ४१ ॥ करैप्रणामफेरिपदसेई ॥ पुनिसिगरेपार्षदनअखेदू । देयनिवेदितमोरनिवेदू
मोरमंत्रपुनियथाशक्तिबुध ।जपैचित्तकोकरिसबतेरुध ॥ ४२ ॥ दैआचमनकरैपुनिध्याना । नैवेदैपुनिविष्वक्सेना
पूगीफलसुरभिततांबूला । पुनिपूजैभोजनलैफूला ॥ ४३ ॥ सुंदरमेरेपदरचिगावै । नाचैबहुविधिबाजबजावै
सुनैसुनावैकथाहमारी।तेहिक्षणसुखदुखदेयबिसारी॥४४॥पौराणिकअथवासज्जनकृत
पुनिनीराजनकरैसुजाना।कर्पूरहुवर्तिकाविधाना ॥पुनिपुष्पांजलिदेइसोदक्षिण।मोरिचारिपुनिकरैप्रदक्षिण ॥ ४५
तरपरकरकरिउभैचरणमम । मनकरिअसभावनानैनसम ॥ दंडसरिससमकरैप्रणामा । यहीमंत्रकहिकैमतिधामा

प्रपन्नंपाहिमामीश । भीतंमृत्युग्रहार्णवात् ॥ ४६ ॥

पूजैविभवहोयतोअसनित । नातोपरबपायकैसमचित ॥ पूजाअंतहिमोरप्रसादू । ग्रहणकरैसंयुतअह्लादू ॥
असमानैनाथैमोहिंदीन्ह्यों । मैंनहिंकछुकिंकजंहुकीन्ह्यों ॥

दोहा–करैविसर्जनजोसुमति, करैसुमतिमनमाहिं । लियोधारिमैंआपने, उरपुनिश्रीपतिकाहिं ॥ ४७ ॥

यहिविधिपूजनकरैहमारो । जौनरूपमेंप्रेमअपारो ॥ अंतर्यामीजड़चेतनमें । मानहिमोकोअपनेमनमें ॥ ४८ ॥
यहिविधिवैदिकतांत्रिकविधिते।पूजतमोहिंयथाविधिरिधिते ॥ ताकोदोउलोकबनिजावै।मोसोंअवशिमुक्तिफलपावै॥
सुंदरमंदिरजबरचनावै । ताकेढिगवाटिकालगावै ॥ जामेंमूरतिमोरिविराजै । उत्सवकरैजोरिबहुसाजै ॥ ५० ॥
मंदिररागभोगकेहेतू । ग्रामचढायदेयमतिसेतू ॥ जातेउत्सवचलैसदाहीं । अटकैवस्तुकोनिहूँनाहीं ॥
पर्वपर्वउत्सवैकरावै । यथाविभवतसपनहिलगावै ॥ विभवविचारिजीविकादेवै । तौविकुंठवसिअतिसुखलेवै ॥५१॥
करैप्रतिष्ठाममजोकोई । भूपचक्रवर्तीसोहोई ॥ जोमंदिरमेरोबनवावै । सोत्रिभुवनअधीशतापावै ॥
जोममपूजाकरैसुजाना । ब्रह्मलोकसोकरैपयाना ॥

दोहा–जोकोउयहतीनोंकरै, भक्तिसहितमतिमान । नगरापवैकुंठहिमेंनिवसि, होयहमसमान ॥ ५२ ॥
यहिविधितेपूजतजोकोउ, ह्वैकैसुमतिअकाम । भक्तियोगसोपायकै, मोहिपावैमतिधाम ॥ ५३ ॥
निजदीन्हींपरकीदई, वृत्तिविप्रसुरकेरि । हरहिंजेशठहठिलोभवश, देतलगायनकेरि ॥
त्यासबपंतगितेकुमति, मलकर्ताराहोत । तिनहिंहोतकमहूँनहीं, नेकहुमोदउदोत ॥ ५४ ॥

करताओरसराहतो, अरुजोकरसहाये । अरुसलाहजोदेतहै, सबमलक्रमिह्वैजाय ॥
ऐसहिजेजेदेतभे, करहिसुमतिउपकार । तेतेकरताकेसरिस, पावतफलहिअपार ॥ ५९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजाश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे सप्तविंशस्तरंगः ॥ २७ ॥

श्रीभगवानुवाच।

दोहा–आनहुकेरस्वभावअरु, कर्महुकोमतिमान । कबहूँनिंदानहिंकरै, कबहुँनकरैबखान ॥
तिनअरुजडयहसंसारा । तामेंदेखैरूपहमारा ॥ १ ॥ परस्वभावपरकर्महुँकाहीं । निंदहिपरशसहिजग
तेनकरअर्थहोतसबनासा । लहतनरकभरिजीवतत्रासा॥तेईअहैदेहअभिमानी । तिनकेज्ञानलेशनहिंज
होवतरहतनततनअभिमाना। [illegible]
दृत्यजोदेवहुमनुजशरीरा । तेहैंसबअनित्यमतिधीरा ॥ तिनकीभद्रअभद्रकहाहै । अहंकारउरमाहिमहा
आतममेंसुरमानुषमानव।अहैअसत्यहुसुखदुखखानव ॥४॥ छायाप्रतिधुनिमहँभयपावै।जानिआपनी
ऐसहिदेहादिकजेभावै । बिनजातेअतिहीडरपावे ॥ उद्धवयहसिगरोसंसारा । जडचेतनमेंअहैअपारा ॥
दोहा–हैशरीरमेरोसकल, अहौंमहीसबरूप ॥ अपनेकोमेंआपही, उतपतिकरहुँअनूप ॥
अपनेतेआपनेकहुँपालौं । अपनेतेअपनेकहँघालौं ॥ ६ ॥ ब्रह्मशरीरभयोसबजाते । सकलजगतहैब्रह्महि
निंदाअरुअस्तुतिअरुत्यागा । ह्वैनिर्मूलसबैबडभागा ॥ यहगुणमेंजगतीनिप्रकारा । [illegible]
जडचेतनमेंरूपहमारा । तासुलगतनहिंमोंहिविकारा॥७॥यहजोज्ञानविज्ञानउचारा । [illegible]
सोनिंदानहिंअस्तुतिकरई।मानसमानजहानविचरई॥८॥प्रत्यक्षहुनिगमहुअनुमाना।अरुअनुभवकरिकेम
उपजतनशतजानिजगकाहीं।गुनिअनित्यविचरेंजगमाहीं॥देवकिउदरउदधिविधुबैना।सुनिबोलेउद्धवभरि

उद्धव उवाच।

शुद्धसरूपआतमाभाख्यो । भौतिकपंचदेहकारराख्यो॥तौकोहोतनाथसंसारी । सुखदुखपरैप्रत्यक्षनिहा
दोहा–आत्माअव्ययगुणरहित, शुद्धस्वयंपरकास । कर्मआवरणरहितहै, ऐसोशास्त्रविलास ॥
तनतोयहजडतुमहिउचारा । मोरेमनअसपरतविचारा ॥ भेददारुपावककहँजैसे । आत्मादेहभेदहैतैसे ॥
तौकोपुनिभोगतसंसारा । भाषहुयहवसुदेवकुमारा ॥ उद्धववचनसुनतभगवानं । भाषनलागेकृपानिधान

श्रीभगवानुवाच।

जबलोंइंद्रियदेहसंयोगू । तबलोंजियहिसंश्रितभोगू॥यदपिशुद्धआतमाअपारा।जियमहँनाहिंसुरमनुजाविचार
चिततविषयनिरंतररहई । तातेंजियसंसारहिलहई ॥ जिमिसपनेकोसुखदुखभारी । सपनाहिभरिहैंसुखदुख
ऐसहिजबलोंतनअभिमाना।तबलगिसंश्रितजियहिमहाना॥१४॥शोकहर्षभयकोपहुलोभू।अहंकारमोहहिअ
वांछाजननमरणजगमाहीं । इतनकेआतमकेनाहीं ॥१५॥ तनमनइंद्रियजियअभिमाना।जीवकालगुणकर्म
दोहा–महत्तत्त्वमनुजादिवपु, यहीजानिसंसार । सोअधीनहैकालके, होवतबारहिंबार ॥ १६ ॥
मनवचकर्ममाततनरूपा । इसंसारहिवृक्षअनुरूपा ॥ करिगुरुपदरतिगहिअसिज्ञाना । भवतरुकरैअमूलसु
छोडिआशविचरेमहिमाहीं । ताकोभीतिनेकुकहुँनाहीं॥१७॥ज्ञानविवेकनिगमतपयोगू।अनुमानहुउपदेश
आत्मअनात्मविचारनहेतू । यहीसकलसाधनमतिसेतू ॥ तनकेआदिअंतमहँजोई । मध्यहुमाहरहतहैसोई ॥
आतमशुद्धरहतत्रैकाला । तनहिजियनहिंबुद्धिविशाला॥१८॥जैसेकनककुंडलनपाहीं । कनकाहिआदिअंतहु

मध्यद्रुमहँकनकहिरद्विजातो।मिलोरजतपुनितेहिनदेखातो।
करताकारणकार्यउदारा। इनकोकारणहंहंकारा॥ इनतेआतमाअहेविलक्षण। तनमधिजबलगिरहतविचक्षण
तबलगिअहैसकलव्यवहारा। तेहिबिनकछुनहिंअहैउदारा॥ २०॥

दोहा—जोयहपूरुषनहिंरह्यो, अंतहुरहिहैनाहिं। केसेमधिमेंआतमा, कहियेयहतनकाहिं॥

जियहिस्थूलकृशमानवभ्रमहै।तौनिहुकालमाहजियसमहै॥कबहुँनजियहँमाहविकारा।उद्धवअसमतअहैहमारा
देहादिकअरुजीवहुकेरो। इनकोनहिंसनबंधनिबेरो॥ पैप्रारब्धविवशयहजीवा। देहभोगभोगतदुखसीवा॥
अहैजीवयहस्वयंप्रकासा। परब्रह्मकोहैयहदासा॥ तातेकरेंप्रेमजोमेरो। तौभ्रमतजिसुखलहतघनेरो॥
जगतविविधविधिप्रकृतिविकारा।मोहिंभजेयहपावतपारा२२
हैपरतंत्रजीवप्रभुकेरे। जानतअसभ्रमनशतघनेरे॥छोडिसुमतिकुमतिनकरसंगा। विचरैजगभरिमोदअभंगा
तनइंद्रियसुरपवनहुप्राना।क्षितिनभमनबुधिसलिलकृशाना॥अहंप्रकृतिशब्दादिकजेते।भिन्नअहैंआतमतेतेते

दोहा—जोअसभापहुतुमसखा, हैविज्ञानीजोय। तेहिकुसंगतेदोषकहँ, तजेकौनगुणहोय॥

जिमिघनतेनाहिकछुरविकाहीं।रहैगगनमेंअथवानाहीं॥२५
असजोशंकामनमेंकरहू। तौमेरीवाणीउरधरहू॥ २६॥ जबलोंमोरभक्तउरमाहीं। जनकेहोतभईदृढनाहीं॥
भक्तिप्रभावक्रोधअरुकामा। नहिंछूटैजबलोंमतिधामा॥ तबलोंविपइनकोसँगत्यागै। कबहुँ
जबहियभैदृढभक्तिहमारी।तबनहिंडरकुसंगकोभारी॥२
भलीभाँतिजिमिऔषधदेकै। वैदरोगदीन्ह्योंनहिंछेकै॥ भीतररह्योउपरमिटिजावै। तौनरोगतैसेउठिआवै॥
तैसेकियेयदपिबहुयोगू। भीतररह्योवासनारोगू॥ कालपायकैसोवढिआवै। विषयकूपमहँताहिगिरावै॥

दोहा—विषयवासनाहृदयते, जिनकीभइननास। तेइकुयोगिनकेरजग, होतोवृथाप्रयास॥

तेहिकुयोगिनकहँजगमाहीं।प्रेरिनरनसुरविघनकराहीं॥बहुधातिनहिंसिद्धिनहिंहोई।कबहुँकबहुँसिधिपावतकोई
उद्धवजोनहिंहैअज्ञानी। सुखदुखमानतकर्महिठानी॥ देतयहीविधिजन्मबिताई। सुखितनहोतमोरपदपाई॥
ज्ञानीकर्मविवशजगमाहीं।करहियदपिबहुकर्मनिकाहीं॥पैनहिंसुखदुखमानहितनमें।रहतमगनप्रेमानँदघनमें॥३
बैठतसोवतचितवतवागत। भोजनकरतमूत्रमलत्यागत॥ परमहंसजेजहँकहुँरहहीं। मेरेप्रेममगनतहँअहहीं॥
तनकोरहतनतनकोभाना।कर्मविवशतहँफिरतजहाना३१
जैसेस्वप्नविलोकतनाना।जानतजागिअसतमतिमाना३२तबलगिभनुजहिंहोतनज्ञाना।जबलगिरहतदेहअभिमाना

दोहा—ज्ञानभयोजबजीवको, तबछूटतअनुमान। छूटिगयोअभिमानजब, तबनरहततनभान॥ ३३॥

भानुउदयजिमिरहनअंधेरी। विसरतनहिंकछुवस्तुघनेरी॥तैसहिभक्तियोगयहमेरो।हरिअज्ञानतनकरतउजेरो॥३४
आतमअजयहस्वयंप्रकाशा। अप्रमेययाकोनविनाशा॥ एकजीवतनलहतअनेकू। तनसनबंधनजियकहँनेकू॥
सबइंद्रिनकोप्रेरकस्वामी। बहुतनपायहोतबहुनामी॥३५॥ देवमनुजअपनेकहँमानव। यहअज्ञानकोकर्महिठानव
विनउपजेस्वरूपकरज्ञाना। पावतयहनहिंमोदमहाना॥ ३६॥ अहैपंचभौतिकयहदेहू। मीमांसकयहिकरतसनेहू
मानतहैयहनित्यशरीरा।नित्यस्वर्गसुखगुनहिअपीरा॥गुनहिअबुधयहपंडितमानी। पैनयथारथमानहिज्ञानी॥३७
योगकरतमेंयोगिनिकाहीं। विघ्नकबहुँजोतेहिह्वैजाहीं॥ ताकेमेटनकेरउपाई। मैंतुमकोसबदेहुँबताई॥ ३८॥

दोहा—विघ्नभयोजोयोगमें, तौयोगीपुनिकोय। फेरियोगकोदृढ़करै, विघ्नदेयसबखोय॥

तपकरिकैबहुपापनशावै। मंत्रनतेग्रहदशामिटावै। सर्पादिकविपऔषधितेरे। नाशकरहियइभाँतिघनेरे॥ ३९॥
कोउयोगीलहिविघ्नमहाना। लैममनामधारिममध्याना॥ कारकैसंतनकीसेवकाई। करहिनाशसबविघ्नमहाई॥४०॥
करहियोगकोउसिद्धिनहेतू। जामेंबँधैभोगकरनेतू॥ जननमरनकेछूटनकाहीं। कबहुँउपायकरततेनाहीं॥ ४१॥

करतभक्तिममजोजनकाहीं । तनकेसुखअनेकमिलिजाहीं ॥ वृद्धहुतेतरुणहुह्वैजावै । तबहुँ... ...
सोतनसुखमहँभूलैनाहीं । भक्तिरीतिनिहितजैसदाहीं ॥ ४३ ॥ उद्धवजोममपदअनुरागी।सोइजगमेंहैबडभागी

दोहा–भक्तियोगकेकरतमें, तिनहिंविघ्ननहिंहोत । मोपदरसिकनकेहिये, नितनवप्रेमउदोत ॥ ४४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे अष्टविंशस्तरंगः ॥ २८ ॥

दोहा–सुनियदुवरकेवचनवर, पुनिउद्धवकरजोरि । कह्योवचनमंगलमुदित, बारहिबारनिहोरि ॥

उद्धव उवाच ।

दोहा–योगमार्गजोआपुप्रभु, मोकोदियोसुनाय । सोबिनजीतेइंद्रियन, अतिशयकठिनलखाय ॥
तातेजेहिविधिसहजमें, सकलयोगफलहोय । मिलैपरमपदरावरो, कहहुसहजविधिसोय ॥ १ ॥
मनचंचलयोगहिकरत, होतअचंचलनाहिं । तातेयोगीलहतहे, अतिशयदुखजगमाहिं ॥ २ ॥

कवित्त–श्वासकोचढ़ाइबोघटाइसमराखिबोहू, महामनचंचलअचंचलहूँकरिबो ॥ ३ ॥
ऐसहीअनेककठिनाईयोगकीनिहारि, परमहंसलीन्हेंगहितुवपदपरिबो ॥
सुनहुगोविंदअरविंदहगरघुराज, रावरेकीभक्तिमायाफंदतेउबरिबो ।
ज्ञानमेंगुमानऔविरागमेंगुमान, औरयोगमेंगुमानपोरिसागरकोतरिबो ॥
दीनकेदयालजेअनन्यदासरावरेके, मगनतिहारेप्रेमसागरसदाअहें ।
तिनकेअधीनह्वैबोरक्षणकोकीबोनाथ, तुमकोआश्चर्य्यनहींवेदसवैयोंकहें ॥
रघुराजविधिसबइंद्रआदिजेदिगीश, प्रभुपदपीठकोकिरीटतेनितेगहें ॥ ४ ॥
तेईआपगोपिनकेकपिनकेसंगसंग, युगयुगहारमेंविहारकरतेरहें ॥
प्राणिनकोप्यारेजगरखवारेरघुराज, लहेफलभारेभारेदासप्रेमवारहें ।
आपकृतउपकारेकबहुँविसारेजेन, तुमहिंविसारितेनऔरपैनिहारहें ॥
दायकसंभारेविषयसुखजेअसारेताके, हेतऔरदेवभजेंमंदमतिवारेहें ।
यदुराजदासनकेहेतफलदुरलभ, सुलभकेडारेनाथचरणतिहारेहें ॥ ५ ॥
द्वारकाअधीशदीनमोहिंनदयालऐसो, दूसरोदुनियामेंजोनदीनहितकारीहे ।
उरमेंनिवासकरिउरकोअज्ञाननाशि, उरकोअमलकरिकरहुसुखारीहे ॥
रघुराजगुरुकोसरूपधारिधरणीमें, विचारिअज्ञानहरोऊपरकोभारीहे ।
अजहूकोआयुपलैऐसेउपकारीकाहि, उऋणनहोतकविकहींमैविचारीहै ॥ ६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिजबउद्धवकह्यो, करिकेप्रेमअपार । तबजेजगलीलाललित, गहिनिजशक्तिउदार ॥
जगउतपतिपालनकरन, धरींहरूपत्रैनाथ । तेबोलेविहँसतहरी, प्रगटिप्रेमकोगाथ ॥ ७ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धवसुनियेसखाप्यारे । जेमंगलप्रदधर्महमारे ॥ जिनकोकरतप्रीतियुतलोगू । सहजहिनाशकरतभवरोगू ॥
सहजहिमरेमेरोपुरपावे । आवागवननरहितहुजावे ॥ ८ ॥ क्रमक्रममोहिंसुमिरतशुभधर्मा । मेरेअर्थकरेसबकर्मा

सुतपरिवारदारदेहहूकोछोड़िनेह, बनबसिभजेरीतियाविरागमानकी ॥
चितऔअचितमेंविलोकैजौनमेरोभाव, देहतेपृथकगुनैआतमगतिज्ञानकी ॥ ३३ ॥
तातेसर्वधर्मकर्मछोड़िअर्पआतममोहिं, सरलउपाययहमोपुरपयानकी ॥
सर्वधर्मछोड़िजबअर्प्योमोहिंआतमाको, ताहिचाहौकरनमैंसबतेविशेपहीं ।
तबभवपारावारपारपायप्राणीतौन, बसतविकुंठजायआनँदअलेपहीं ॥
रघुराजकरतरहतसेवकाईमोरि, लहतसमानविभौमेरेसबवेपहीं ।
फेरिनफँसतयहजगतकीफाँसीमाँहिं, छकितविलोकिछविमेरीअनमेपहीं ॥ ३४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-यहिविधिजबयदुवरकह्यो, ज्ञानविज्ञानविराग । भक्तयोगसाधनसकल, हेकुरुपतिबड़भाग ॥
सुनियदुनायककेवचन, जोरिजलजयुगपाणि । पुलकिततनगद्गदगरो, कढ़ीनकछुमुखवाणि ॥
सजलजलजदृगहरिसखा, धरिधीरजभरिप्रीति । मानिकृतारथआपको, त्यागिजगतकीभीति ॥ ३५
यदुपतिचरणसरोजमें, नायशीशतजिलाज । कह्योवचनउद्धवमृदुल, हेकुरुकुलमहराज ॥ ३६ ॥

उद्धव उवाच ।

छंद-मोपरकृपाकरिज्ञानभानहिउदितकीनउदार । हरिलियोमेरोउरअज्ञानहियामहाअँधियार ॥
मोसमअज्ञानीअधमअवनीरह्योदूजोनाँहिं । तुम्हरोवचनसुनिरह्योनहिंअज्ञानममउरमाँहिं ॥
नहिंशीततमकीभीतिआवतनाथअगिनसमीप । मोहिंदासजानिकृपालचकस्योज्ञानभक्तिप्रदीप ॥ ३७ ।
उपकारयहप्रभुरावरोसुधिकरतबुद्धिविशाल । कोजातदूजेकेशरणअसकौनदीनदयाल ॥ ३८॥
दाशार्हअंधकभोजयदुकुलमाहिंजोममनेह । सोगयोसिगरोछूटिउरमेंरह्योनहिंसंदेह ॥
यदुवंशकीयहवृद्धियदुवरअहैसर्गतुम्हार । यहदेहमेंयहगेहमेंनहिंअहैनेहहमार ॥ ३९ ॥
जयमहायोगीदासकेतुमहरनहारसँभार । करजोरिकैवरदानमाँगहुँदेहुदानिउदार ॥
तुवचरणपंकजमेंसदाजेहिभाँतिरहइसनेह । सोइकृपाकरिकैदीजियेजगहोयफिरिनाहिंदेह ॥
दोहा-सुनिउद्धवकेवचनवर, यदुवरकरुणाऐन । मंजुविहसिअतिप्रेमसों, बोलेमंजुलबैन ॥ ४० ॥

श्रीभगवानुवाच ।

शिरधरिशासनसखाहमारो । तुमबदरीवनआशुसिधारो ॥ तहँमेरोपदजलअघभंगा । नामअलकनंदाहैगंगा ॥ ४१
तामेंकरिमज्जनमतिमाना । तनकेधोयपापजेनाना॥वल्कलवसनपहिरिफलखाई । सुखकीआशासकलबिहाई॥४२।
शीतउष्णसहिहैशुभशीला । इंद्रियजितगावतममलीला॥सावधानह्वैशांतसुजाना।धरिकैहियमेंज्ञानविज्ञाना ॥४३।
जोमैंतुमहिंकियोउपदेशा । बैठइकांतध्यायतेहिवेशा ॥ तनमनवचनहुमोमहँरापी । मोहिंध्यावहुजसमैंदियभापी।
तौतुमत्रिगुणात्मकगतिनाकी । मोपुरबसिहौअतिसुखछाकी ॥ ४४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

वदरीवनकेगमनदिहेतू । कह्योवचनजबकृपानिकेतू ॥ नाथवियोगहोतगुनिमनमें । रहीज्ञानकीसुधिनहिंतनमें ॥
देप्रदक्षिणाअतिअकुलाई । गिरयोनाथचरणनदुखछाई ॥
दोहा-चरणकमलनिजनाथके, धोयविलोचनवारि । पुनिजडसोतहँह्वैरह्यो, सक्योनतनाहिसम्हारि ॥ ४५ ॥
जन्मभरेकीकृष्णमिताई । उद्धवसकतनताहिविदाई ॥ रोवनलग्योपुकारिपुकारी । हायदुनंदनहागिरिधारी ॥
यदपिदियोमोहिज्ञानसुनाई।तदपितुम्हैंतजिसकौंनजाई॥क्षणभरियदुवरविरहतुम्हारा।सहिनसकतममनमृ
तुमहिंछोडिकैसेमजैहों । तुमअसनाथकहाँपुनिपैहौं ॥ सकलज ‍ वैताये । सपनेहुकबहुँ

मोपदमहँमनदेइलगाई । मेरेधर्महिकरैसदाई ॥ ९ ॥ मेरेक्षेत्रनकरैनिवासा । जहाँकरैबहुसंतविलासा ॥
देवअसुरमनुजनमहँकोई । मोरभक्तहठिकैजोहोई ॥ तिनकोजोआचरणसुहावन । सोईकरैदासममपावन ॥
करैमोरउत्सवजनभारी । विभवहोयगृहतेहिअनुसारी ॥ विभवहोयजोनहिंगृहमाँहीं । [illegible]
पर्वपर्वमहँकरैउछाहू । लेयबोलायसंतसबकाहू ॥ मेरीसबयात्राकरवावै । सिगरीसुंदरसाजसजावै ॥

दोहा–करवावैमंजुलसदा, मोमंदिरमहँगान । बजवावैतेसहिसुभग, बाजेविविधविधान ॥

नृत्यकरावैमंदिरमाहीं । नितनवउत्सवकरैसदाहीं ॥११॥ जगभीतरबाहरमोहिंदेखै । [illegible]
अपनेमेंसबप्राणिनमाहीं । मोरभावनाकरैसदाहीं ॥ १२ ॥ मोररूपगुनिसंतउदारा । [illegible]
परमभक्तिहैयहीहमारी । मोहिंभजैसबविपयविसारी ॥१३॥ ब्राह्मणअरुचंडालहुमाहीं । [illegible]
क्रूरअक्रूरतरनितिनगामें । समदृगजोसोबुधवसुधामें ॥ १४ ॥ तिरस्कारऔरहुअहँकारा । [illegible]
येसबनशतआशुतेहिकाँहीं।जोमोहिंनिरखतसबजगमाँहीं१५ [illegible]
श्वानश्वपचगोखरपरयंता । करैप्रणामदंडवतसंता ॥ १६ ॥ मोरभावजबलगिसबमाहीं । [illegible]

दोहा–तबलगिसबविधितेसुमति, भजैमोहिंयहिरीति । जबमोहिंनिरखैसकलमहँ, तबनताहिकछुभीति ॥ १७

मोररूपजबलखतजगतहै।तबनहिंकछुभ्रमभ्रमहुकरतहै॥१८ [illegible]
मनक्रमवचनजोमोकहँध्यावत । सोईउद्धवमोकहँपावत॥१९॥मेरीभक्तिकरतजगमाहीं। [illegible]
रजतमआदिकगुणनहिंजामें।बंधनहोतकछूनहिंयामें [illegible]
अहैनिरर्थककर्महुजोई।अरपैमोहिंसफलतबहोई ॥२०॥ शोकमोहभयक्रोधहुकामा।मेरेहितसबसुखदललामा॥२१
बुधिवंतनकीबुधियहजानो।[illegible]
प्रथमहिमैंकरिकैविस्तारा । तुमकोदियोसुनायउदारा ॥ ताकोयहिसमेटिसिद्धांता । [illegible]

दोहा–यहदेवनदुर्लभअहै, मनुजनकीकहबात । यहीकियेमैंमिलतहौं, औरउपायनतात ॥ २३ ॥

युक्तिसहितकरिकैविस्तारा । जोतुमसोंमैंकियेउचारा॥ताकोजानतसबविधिजोई । संशयरहितमुक्तिहठिहोई॥२४
जौनजौनतुमप्रश्नहिकीन्ह्यो । तौनतौनहमउत्तरदीन्ह्यो ॥ तौनतौनजोसबसुधिराखै।सोवैकुंठवागफलचाखै ॥ २५
ममभापितयहभक्तिप्रकारा । जोसादरकरिकैविस्तारा ॥ देतसुनायसुभक्तनकाहीं । ताकेहमअधीनह्वैजाहीं २६
परमपवित्रपढ़तयहजोई । ज्ञानप्रकाशतासुहियहोई ॥ औरनकोकरिदेतोज्ञानी । सांचोसोइमुक्तिकोदानी ॥ २७
जोकोउसुनतयाहियुतप्रीती । ताहिहोतिहैमोरिप्रतीती ॥ पराभक्तिसोईहठिपावै । आवागवनरहितह्वैजावै ॥ २८
कह्योज्ञानमैंजोतुवपाँहीं । कहौसखाबूझ्योकीनाहीं ॥ मोहशोकमिटिगयोतुम्हारा । कीअवहूँकछुअहैखभारा ।
अवहूँमिटोहोयजोनाहीं । तौपुनिज्ञानकहौंतुवपाहीं ॥ २९ ॥

दोहा–येममभापितज्ञानयह, तुमजोधारयोहोय । तौपाखंडीजननसों, राखेहुसबविधिगोय ॥

नहिंशठकोनहिंनास्तिककाहीं । जाकेउपजैश्रद्धानाहीं ॥ जोअभक्तजोनम्रनहोई । तिनसोंकहेहुज्ञाननहिंसोई॥३०॥
इनदोपनतेहोयविहीना । विप्रभक्तिमहँपरमप्रवीना ॥ ताकोसखादिहेउयहज्ञाना । जौनसाधुसेवीमतिमाना ॥
अंतःकरणजासुशुचिहोई । तासोंयहनहिंराख्योगोई ॥ होयभक्तजोशूद्रहुनारी । ताहूसोयहदियोउचारी ॥ ३१ ॥
भक्तियोगअरुज्ञानविरागा । सुनिममयहभापितबडभागा ॥ जाननकोपुनिकैजगमाहीं । सखारहतबाकीकछुनाहीं
जैसेकरिपियूपकरपाना । पुनिनरहतकछुपियनसुजाना ॥ ३२ ॥ धर्मकर्मकरजोफलहोई । ज्ञानविरागयोगतेजोई ॥
कृपीकर्मअरुराजनीतिहू । औरहुजिनकर्मनिप्रतीतिहू॥येसिगरेनकोफलमोहिंजानो । औरहुकहूँकोइकोनहिंमानो॥

दोहा–अर्थधर्मअरुकामहू, अरुमोक्षहूप्रधान । मोहिंपायोतोचारिहू, पायगयोमतिमान ॥

कवित्त–भोजननियतकरिरोकैश्वासजीतिमन, जानोमरयादऐसीयोगकेविधानकी ।

सुतपरिवारदारदेहहूकोछोड़िनेह, वनवसिभजेरीतियाविरागमानकी ॥
चितऔअचितमेंविलोकैजोनमेरोभाव, देहतेपृथकगुनेआत्मगतिज्ञानकी ॥ ३३ ॥
तातेसर्वधर्मकर्मछोड़िअर्पआतममोहिं, सरलउपाययहमोपुरपयानकी ॥
सर्वधर्मछोड़िजबअर्प्योमोहिंआतमाको, ताहिचाहौकरनमेंसबतेविशेषहीं ।
तबभवपारावारपारपायप्राणीतौन, वसतविकुंठजायआनँदअलेपहीं ॥
रघुराजकरतरहतसेवकाईमोरि, लहतसमानविभौमेरेसबवेषहीं ।
फेरिनफँसतयहजगतकीफाँसीमाँहि, छकितविलोकिछविमेरीअनमेषहीं ॥ ३४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिजबयदुवरकह्यो, ज्ञानविज्ञानविराग । भक्तयोगसाधनसकल, हेकुरुपतिबड़भाग ॥
सुनियदुनायककेवचन, जोरिजलजयुगपाणि । पुलकिततनगद्गदगरो, कढ़ीनकछुमुखवाणि ॥
सजलजलजदृगहरिसखा, धरिधीरजभरिप्रीति । मानिकृतारथआपको, त्यागिजगतकीभीति ॥ ३५
यदुपतिचरणसरोजमें, नायशीशतजिलाज । कह्योवचनउद्धवमृदुल, हेकुरुकुलमहराज ॥ ३६ ॥

उद्धव उवाच ।

छंद–मोपरकृपाकरिज्ञानभानहिउदितकीनउदार । हरिलियोमेरोउरअज्ञानहियामहाअँधियार ॥
मोसमअज्ञानीअधमअवनीरह्योदूजोनाँहिं । तुम्हरोवचनसुनिरह्योनहिंअज्ञानममउरमाँहिं ॥
नहिंशीततमकीभीतिआवतनाथअगिनसमीप । मोहिंदासजानिकृपालबकस्योज्ञानभक्तिप्रदीप ॥ ३७
उपकारयहप्रभुरावरोसुधिकरतबुद्धिविशाल । कोजातदूजेकेशरणअसकौनदीनदयाल ॥ ३८ ॥
दाशार्हअंधकभोजयदुकुलमाहिंजोममनेह । सोगयोसिगरोछूटिउरमेंरह्योनहिंसंदेह ॥
यदुवंशकीयहवृद्धियदुवरअहैसर्गतुम्हार । यहदेहमेंयहगेहमेंनहिंअहैनेहहमार ॥ ३९ ॥
जयमहायोगीदासकेतुमहरनहारखँभार । करजोरिकैवरदानमाँगहुँदेहुदानिउदार ॥
तुवचरणपंकजमेंसदाजेहिभाँतिरहइसनेह । सोइकृपाकरिकैदीजियेजगहोयफिरिनहिंदेह ॥
दोहा–सुनिउद्धवकेवचनवर, यदुवरकरुणाऐन । मंजुविहसिअतिप्रेमसों, बोलेमंजुलबैन ॥ ४० ॥

श्रीभगवानुवाच ।

शिरधरिशासनसखाहमारो । तुमवदरीवनआशुसिधारो ॥ तहँमेरोपदजलअघभंगा । नामअलकनंदाहैगंगा ॥ ४१
तामेंकरिमज्जनमतिमाना । तनकेधोयपापजेनाना॥वलकलवसनपहिरिफलखाई । सुखकीआशासकलविहाई॥४२॥
शीतउष्णसहिहैशुभशीला । इंद्रियजितगावतममलीला॥सावधानह्वैशांतसुजाना।धरिकैहियमेंज्ञानविज्ञाना ॥४३॥
जोमैंतुमहिंकियोउपदेशा । वैठइकांतध्यायतेहिवेशा ॥ तनमनवचनहुमोमहँरापी । मोहिंध्यावहुजसमैंदियभाषी॥
तौतुमत्रिगुणात्मकगतिनाकी । मोपुरवसिहौअतिसुखछाकी ॥ ४४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

बदरीवनकेगमनहिहेतू । कह्योवचनजबकृपानिकेतू ॥ नाथवियोगहोतगुनिमनमें । रहीज्ञानकीसुधिनहिंतनमें ॥
देप्रदक्षिणाअतिअकुलाई । गिरयोनाथचरणनदुखछाई ॥
दोहा–चरणकमलनिजनाथके, धोयविलोचनवारि । पुनिजडसोतहँह्वैरह्यो, सक्योनतनाहिसम्हारि ॥ ४५ ॥
जन्मभरेकीकृष्णमिताई । उद्धवसकतनताहिविहाई ॥ रोवनलग्योपुकारिपुकारी । हायदुनंदनहागिरिधारी ॥
[illegible] ॥
तुमहिंछोडिकैसेमेंजैहों । तुमअसनाथकहाँपुनिपैहों ॥ सकलजन्मइकसंगवितायें । [illegible]

मोहिंमान्योआपनेसमाना । कियोभोगसुरदुर्लभनाना ॥ होतरहेक्षणआँखिनओटू ।
अधिकमोहिंप्राणहितेमान्यो । विनमोहिंपूछेकर्मनठान्यो ॥ कोदूजोस्वामीअसहोई ।
दोहा–जगतजन्मजोदेइविधि, तौअसकरैसँयोग । स्वामीकोअरुसेवकहि, कबहुँनहोयवियोग ॥
जोविधिहोइमोहिंपरछोही । तौप्रभुमिलैतुम्हैअसमोही ॥ तुवपदपदुमैरहैअधारा । औरनकछुजगमाँहिंहमा
यदपिज्ञानबहुभाँतिउचारो । पैभुलायदियविरहतुम्हारो ॥ हायदुनायकप्राणपियारे । हादेवकिवसुदेवदुला
हाअर्जुनकेमीतमुरारी । हामोसमप्रभुअधमउधारी ॥ हागोपीवल्लभव्रजवासी । हायशुदाकेआनँदरासी ॥
कोकरिहैमोपरअसप्रीती ॥ तुमविनपलककलपसमबीती ॥ मैंमनकरतोकरनपयाना ।
यहशरीरछूटैयहठाऊँ । येपदपद्मत्यागिकहँजाऊँ ॥ यहिविधिकहतअनेकनबानी ।
अनमिपनिरखतयदुपतिआनन ।
दोहा–सखाप्रतीतिअतिजानिकै, श्रीवसुदेवकुमार । दईपादुकाआपनी, ताकोप्राणअधार ॥
प्रभुपादुकाशीशमहँधारी । उद्धवरोयपुकारिपुकारी ॥ बारबारचरणनशिरनाई । उद्धवगमनकियोबिल
प्राणरह्योहरिचरणनमाँहीं ।
बदरीवनकहँउद्धवजाई । जौनरीतियदुनाथबताई ॥ सोईरीतिभागवतप्रधाना । करिकैत्यागिदियोतहँप्र
भयोतुरतवैकुंठविलासी । हरिपार्षदआनँदकररासी ॥ कुरुपतिउद्धवसमकोहोई । जेहियदुनाथसखालि
जोउद्धवसोश्रीभगवाना । जानिसखाआपनोसुजाना ॥ ज्ञानसिंधुमथिप्रेमसुधाको । ऐंचिदियोआपनो
ताकोप्रीतिसहितजोकोई । करतोश्रवणविषयसबखोई ॥ चिततकहतरहतहैताको ।
दोहा–सोसागरसंसारको, आशुपापकेपार । नैश्रेयसवनमेंकरत, नितप्रतिमुदितविहार ॥ ४
छंद मालिनी–भवभयभ्रमहारी, ज्ञानविज्ञानकारी । अलिसरिसमुकुंदा, वेदफूलैमरंदा ॥
अतिरुचिरसुधाको, प्यायदीन्ह्योंसखाको । उदधिमथनहारे, हैप्रणामैअपारे ॥ ४
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदे
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे एकोनत्रिंशस्तरंगः ॥ २९

दोहा–हरिउद्धवसंवादसुनि, लहिकैमोदअपार । पुनिबोल्योकरजोरिकै, नृपअभिमन्युकु

राजोवाच ।

हरिशासनकोनिजशिरलयऊ । जबउद्धवबदरीवनगयऊ॥तबद्वारकापुरीकरिवास॥कहाकियोपु
ब्रह्मशापजबयदुकुलमाँहीं । होतभईजेहिवारणनाँहीं ॥ महाप्रबलयदुवंशअपारा । होतभयोकि
सबप्राणिनदृगकेसुखकारी॥केहिविधिगेनिजधाममुरारी॥२॥जिनकोनिरखिजगतकीनारी॥सकत
जिनकोयशकारिकरनप्रवेश॥पुनिनहिंनिकसतअहहमेश॥कोअससुनिहरिकोयशकाना॥नहिंद
कोशुकदेवजगतअसजोई । यदुपतिलखिमोहितनहिंहोई ॥ कौनजगतमेंअसकविराई । जो
कोनसुकविअसहजगमाहीं । हरियशकहतमोदहियनाहीं ॥ निजदासनकोकरतसनाथा । पा
दोहा–इन्द्रियाजिनबागकर, विचरनरणबनश्याम । ग्रसेजेतिनकोनिरखि, तेगवनेति
तेकिमिगवनकियेपदुराई । सोमोमनवरणहुमुनिराई ॥ सुनिकैभूपप्रश्नितबैना । व्याससुव

श्रीशुक उवाच ।

श्रीभगवानुवाच।

ोहिनथोरघोरउतपाता। द्वारावतीमाहँदुखदाता॥ नगरमाँहिंमुनिमोरनियोगू। क्षणभरिरहवअहैनहिंयोगू॥
्रमहँवृद्धवालअरुबाला। शंखोद्धारजाँययहिकाला॥ हमसबलैयदुवंशसमाजू। जैहैंक्षेत्रप्रभासहिंआजू॥
नहाँसरस्वतिपश्चिमवाहिनि। सबजीवनअघओघनिदाहिनि॥६

दोहा–पूजाकरिहैंसुरनकी, देभूषणअंगराग। पुनिस्वस्त्ययनपढ़ाइहैं, विप्रनसोंवडभाग॥७॥

धेनुधरणिधनुधाममतंगा। सुंदरस्यंदनवसनतुरंगा॥ सादरदेहैंविप्रनकाहीं। यातेविघ्नसकलमिटिजाहीं॥
धेनुदेवद्विजपूजनकीन्हें। औरहुदानविविधविधिदीन्हे॥ मिटतअमंगलमंगलहोई। तातेचलहुतहैंसबकोई॥
यहिविधिसुनियदुपतिकीवानी।
चढ़िकैनावउतरिकैसागर।चढ़िचढ़िरथनसबैगुणआगर॥यदुवंशीसबजायप्रभासा।कहिराख्योजसरमानिवासा॥
तैसहिकरतभयेसबकर्मा। कीन्हेंदानविविधविधिधर्मा॥ पुनिप्रभासमहँकुरुकुलराई।
तहँसकलयदुवरसरदारा। बैठेअतिलगायदरबारा॥ रामकृष्णगुनिकारणमनते। बैठेजायदूरिकहुँअनते॥ ११

दोहा–तहँयदुवंशीभटसकल, भयेभागवुधिहीन। देइकएकनकोतहाँ, पानवारुणीकीन॥१२॥

भयेमत्तगर्वितरणधीरा। हरिमायामोहितसबवीरा॥ तहँकुरुपतिदरबारहिमाँहीं। लगेबतानवीरचहुँघाहीं॥
कहतकहतकारणवढ़िआयो। रोपसकलवीरनकेछायो॥ १३॥ उठेवीरलैलैकरवाला।
धनुअसितोमरगदाप्रचंडा। मारनलगेवीरवरिबंडा॥ १४॥ कोऊचढ़ेतुरंगमतंगा।
कोउखरऊँटमहिपअरुबैला। नहेरथनमहँयदुकुलछैला॥ कोउपैदरैपसरकरिदीन्हें। शस्त्रप्रहारपरस्परकीन्हें॥

दोहा–चलेबाणकिरवाणबहु, मच्योघोरघमसान। तहँपरायअरुआपनो, परचोनकोहुकहँजान॥

जिमिवनलरैदंतसोंदंती। तिमिलरिमरेवीरअनगंती॥ १५॥ सांबऔरप्रद्युम्नप्रवीरा।
अरुअक्रूरवीरअनिरुद्धा। औरसुभद्रहुगदअतिक्रुद्धा॥औरसुदारुनजितसंग्रामा। निसठऔरउल्मुकबलधामा॥१
शतजितऔरसहस्रजितभानू। सुरथसुमित्रपरमबलवानू॥यहिविधिभटकररहेप्रधाना।तेलरिकियनिजज
तबह्वैगईसेनद्वैभागा। सबकेहियेवीररसजागा॥ मोहितकियोकृष्णकीमाया। यदुवंशीसबज्ञानभुलाया॥ १७
अंधकअरुदशार्हअरुभोजू। शूरसेनमाथुरअतिओजू॥ कुंतैकुकुरहुसात्यकिवंसी। मधुअर्बुदआदिकअरिध्वंसी
कोटिनवीरबड़ेअरुनान्हे। लरतभयेसिगरेमध्यान्हे॥१८॥ पितापुत्रअरुभ्रातहुभ्राता।
काकामातुलमित्रहुमित्रा। सुहृदजातिअरुनातिविचित्रा॥ सिगरेलरेछोड़िकैनेहू। कछुनकियोमनमेंसंदेहू॥ १९
अस्त्रशस्त्रसबकेचुकिगेजब। लरनलगेकरिमल्लयुद्धतब॥ सांबउदरमूसलनृपराई। सागरदियोफेकायरेताई॥
ताकोगुदिलाभयेकराला। तेइउखारिलियेतेहिकाला॥ हननलगेतेवीरविशाला। लागहितेमानहुकरवाला॥२०॥

दोहा–यदुकुलकोलखिनाशतहँ, दौरिवीचमेंआय। लगेबचावनसबनकहँ, रामकृष्णदोउभाय॥२१॥

तेकरिकोपमहाउरमाँहीं। मारनलगेकृष्णहीकाँहीं॥ तबबलभद्रहिकदयदुराई। हनहुशठनसबकहँलभाई॥२२॥
तबबलरामकोपमहँपागे। लैगुदिलाकरमारनलागे॥ हरिहुहाथगुदिलाकरलीन्हें। मारनलगेकोपरसभीने॥ २३॥
दंडद्वैकमहँतहँमहराजा। रहिनगईयदुवंशसमाजा॥ ब्रह्मशापकोकारणपाई। हरिमायामोहितनृपराई॥
वेनुपरसपरतेजिमिजागी।नाशकरतसबकाननआगी॥२४॥ऐसहिआपुसमहँसबलरिकै।निजनिजकुलकौक्षयमुदभरिकै।
यहिविधिभोयदुकुलसंहारा।हरिमनमेंअसकियोविचारा॥याकोयदुकुलरह्योअपारा। सोउतरोमोभूतलभारा॥२५॥
निजकुललखिविनाशयदुराई।तुरतदिसागरकेतटजाई॥ योगमार्गकरितहाँअनूपा। प्रगटेशेषनागकेरूपा॥ २६॥

दोहा–रामगवनलखिकैतहाँ, देवकिसुतभगवान। बैठजायपीपरतरे, मौनमुद्रितमान॥२७॥

सोहतचारिहुबाहुविशाला।फैलतिदिशनिप्रभाकरमाला॥मनहुविधूमअग्निकरज्वाला।औरतसविशाला॥
तपितकनकसमतनघनश्यामा।सोहतपीतांबरअभिरामा २९

मुखअरविंदनैनअरविंदा।लसतकीटमानहुँरविवृंदा॥२० ...
नूपुरचरणलसतउरहारा।मणिकौस्तुभपरकाशअपारा॥तिमिअंगुलिमुद्रिकासोहाहीं॥२१ ...
मूर्तिवंतआयुधसबठाढ़े । ...
मुसलबीचकोरह्योजोलोहा । सोव्याधाशरमुखमहँपोहा ॥ मृगयाखेलनतेहिवनमाहीं । ...
हरिपगलखिमृगमुखअनुमान्यो । कछुढुकिकैशरधनुसंधान्यो ॥

दोहा—जरानामकोव्याधसो, हन्योनाथपदबान । पुनिआयोअतिवेगसों, मृगतनअतिहिलोभान ॥ ३३ ॥
निरखिचतुर्भुजयदुवररूपा।निजअपराधमानिअतिभूपा॥आयगिरयोचरणनमहँधाई।बारबारप्रभुपदशिरनाई
कह्योवचनहेकृपानिधाना । मोतेभोअपराधमहाना ॥ मोपापीकरयहअपराधा । क्षमहुनाथहेसुयशअगाधा ॥
नाथतिहारोपदअस्मरना । रविहैतमअज्ञानकोहरना ॥ ऐसोकहैवेदप्रभुचारो । मोतेभोअपराधअपारो ॥
करहुकृपाजोरमानिवासा।तौकीजैआशुहिममनासा ॥ तामेंकरहुँनअसपुनिकाजू । ...
ब्रह्मशिवादिकतुवसंकल्पा।जानतनहिंप्रभुकौनेहुकल्पा ॥ तुवमायामेंमोहितरहहीं । ...
तौमैंपापीकेहिविधिभापौं । तिनहीपापकर्मअभिलापौं ॥ सुनिकैजराव्याधकीबानी।बोलेहँसितबसारँगपानी

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा—व्याधभीतिनहिंमानुमन, सावधानउठिआसु । ममइच्छातेतैंकियो, यहकर्महिअनयासु ॥
ममशासनधरिकैशिरमाहीं।गमनहुअबमेरेपुरकाहीं ॥ ३९ ॥ हरिशासनपावतसोव्याधा । ...
चढ़िविमानसोमहाप्रकासी ।भयोजायबैकुंठविलासी ॥ ४० ॥ यदुपुरमहँकछुकारणहेतू । ...
सुनिश्रवणनयदुकुलसंहारा । दौरयोतनकोछोडिसम्हारा॥तेहिवनप्रभुकोहेरनचाह्यो । ...
हरिपदतुलसिसुरभिकहँपायो।तेहिसन्मुखरथद्रुतलैधायो४१ ...
यहिविधिदारुकलखिनिजनाथै।रथचढ़िधायजोरियुगहाथै॥गिरयोनाथपदढारतआँसू।कह्योहायहेरमानिवासू॥
विनालखेतुवपदअरविंदा । लखिनपरतकछुनैनमुकुंदा ॥ ...
तुमविनअंधभयेहमऐसे । तुमकहँत्यागिजायँकहँकैसे ॥ ४३ ॥

दोहा—यहिविधिभापतसूतके, स्यंदनगरुडपताक । आशुअकाशहिउड़िगयो, युततुरंगवरचाक ॥ ४४ ॥
पुनिदारुककेदेखतमाहीं।हरिआयुधगमनेनभकाहीं ॥ ठाढ़ोसूतठग्योतेहिठामा । तबतासोंबोलेघनश्यामा ॥

श्रीभगवानुवाच ।

जाहुद्वारिकैदारुकधाई । देहुसकलयहखबरिसुनाई ॥ करिकैसकलपरस्परारी । यदुवंशीगेलोकसिधारी ॥
अरुआपनोरूपविस्तारी । सागरकियप्रवेशहलधारी ॥ देखहुजैसीदशाहमारी । सोऊसिगरीदेउउचारी ॥ ४६
उग्रसेनसोंकहियोऐसेहु । रहिहैनाहिंपुरीमहँकैसेहु ॥ यहद्वारिकापुरीममत्यागी । बोरिहैसिंधुवारनहिंलागी
दारुकअर्जुनकोयहिहेतू । आयोराखितहाँमतिसेतू ॥ लैसिगरेअपनेपरिवारे । उग्रसेनपितुमातुहमारे ॥
अर्जुनतेरक्षिततेहिकाला । इंद्रप्रस्थकहँजाहिंउताला ॥ ४८ ॥ दारुकतुमकरिमेरोधर्मा । ...
मेरोरचितमानिसंसारै ॥ तनतजिऐहौधामहमारै ॥ ४९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—यहिविधिसुनिप्रभुकेवचन, पुनिपुनिपदशिरनाय । दैपरदक्षिणद्वारका, दारुकगोदुखछाय ॥ ५० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे त्रिंशस्तरंगः ॥ ३० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-यदुपतिकोनिजलोकको, गवनजानिसबदेव । आवतभेआकाशमें, करननाथकीसेव ॥
ब्रह्माशिवगौरीयुतआये । इंद्रआदिसुरअतिसुखछाये ॥ मुनिप्रजेशपितरहुगंधर्वा । विद्याधरचारणसिधिसर्वा ।
यक्षमहोरगकिन्नरनाना।अरुअप्सरासुविप्रप्रधाना॥११॥गावहियदुपतियशसुखरासी।अतिआनंदितनाकनिवा
हरिपदभक्तिनिरतमतिवाना।चढ़ेविमाननहनहिनिशाना॥वरषहिनभतेबहुविधिफूला।जेहरिकेहंसबेअनुकूला ॥
निजविभूतिब्रह्मादिककाहीं।लखिकेश्रीयदुनाथतहाँहीं॥कमलनैनतहँमुद्रितकीन्ह्यो।आतममेंआतमकरिदीन्ह्यो
योगधारणातेधरिध्याना । हूगेतेहिथलअंतरध्याना ॥ ६ ॥ हनेदेवतहँविविधिनगारे । वरषनलागेसुमनअपारे ।
कीरतिश्रीसतिधर्महुधीरा । हरिपाछेगवनेमतिधीरा ॥ ७ ॥ ब्रह्मादिकअसुरारिनकाहीं । गवनतदेखिपरेहरिना

दोहा-एड़ेरहेअकाशमें, जकेसकलसुरवृंद । अतिविस्मितहेजातभे, निरखिचरितगोविंद ॥ ८ ॥
जिमिछपिघोछनजोतिको, जानतमानुपनाहिं । तिमिहरिकीगतिदेवता, जान्योनहिनभमाहिं ॥ ९ ।
ब्रह्मशिवादिकजानिके, हरिबैकुंठपयान । विस्मितसकलसराहते, गमनेनिजनिजथान ॥ १० ॥

सवैया-हेकुरुनाथसुनोयदुनाथकोजन्मपयाननटकोतमाशा ॥ पैयहशोचअहेसिगरोयहपूरोअसाँचयावेदप्रका
जोजगकोरचिकेविहरेकरलीनहुआपनेमेंअनयासा ॥ सोहरिकोजनिबोमरिबोमुखभाषेजोसोअहेमूरखखासा॥

कवित्त-जौनयदुनाथगुरुदक्षिणाकेदेनहेत, जैसेमरेगुरुसुततैसेताहिल्यायेहें ।
परमप्रचंडद्रोणनंदनकोब्रह्मशिर, तातेतुम्हेंउत्तराकेगर्भमेंबचायेहें ॥
कालहूकोकालचंद्रभालहूकोमोह्योजोन, व्याधकोसदेहहीविकुंठकोपठायेहें ।
कहैरघुराजऐसोयदुकुलराजनिज, तनरक्षिवेकोक्योंसमर्थनाहिभायेहें ॥ १२ ॥
जगउतपतिऔरपालनसंहारहूको, कारणस्वतंत्रमुख्यसर्वशक्तिधारीहै ।
तद्यपिमनुजलोकरहनकोचाह्योनाहिं, गयेनिजधामयहहेतगिरिधारीहे ॥
भक्तिकरीसज्जनसिधारेद्रुतधाममेरे, रहैनहिंऐसीरीतिदेखिकैहमारीहै ।
गवनविकुंठहूकोकीन्ह्योहे, परायेहेतरघुराजऐसोकौनदीनहितकारिहै ॥ १३ ॥

दोहा-प्रभुपदवीप्राणीजोकोऊ, पढेसप्रीतिप्रभात । पुरपुरमेंसोपहुँचिके, पायप्रेमपुलकात ॥ १४ ॥
जायदारुकोद्वारिके, उग्रसेनदरबार । उग्रसेनवसुदेवके, गहिपदकरतपुकार ॥

गिरयोभूमिकहिहायदुनाथा । तुमबिनअबमैंभयोअनाथा॥१५॥उग्रसेनवसुदेवहुकाहीं।बरणीदशासकलदुखमाहीं
सुनिकेयदुकुलकोसंहारा । धामगवनवसुदेवकुमारा ॥ मूर्छितभूमिगिरयोमहराजा । तैसहिमूर्छितभईसमाजा ॥
हाहरिकहिमहिगिरिगेजबहीं।नृपकेप्राणनिकसिगेतबहीं॥औरहुसिगरेनगरनिवासी।होतभयेअतिशयदुखरासी १६
जेजससुन्योतेतैसहिधाये । पुरजनसबतनभानभुलाये ॥ कृष्णविरहतहँगहिसाहिगयऊ । मानहुवज्रपातउरभयऊ ।
गयेप्रभासाहिसबनरनारी । मृतकबंधुतहँसबैनिहारी॥धुननलगेतहँनिजनिजशीशा । कहतहायकहँगेजगदीशा॥१७॥
तहँरोहिणीदेवकीदोऊ । औरहुयदुकुलतियसबकोऊ॥ पहुँचीजायजबैरणधरणी । लखीसबैवीरनकीकरनी ॥

दोहा-देवकिअरुतहँरोहिणी, लखिनश्यामअरुराम । हाहरिहावलकहिगिरी, धरणीमेंतेहिठाम ॥ १८ ॥
हाहरिकहिसुमिरतभगवाना।तनतेतिनकेनिकसेप्राना॥वसुदेवहुनहिसुतलखिलीन्ह्यो।रामकृष्णकहितनतजिदीन्ह्यो।
औरहुबहुयदुनाथसनेही । हाहरिकहिकहिभयेअदेही ॥ कोकहिसकैदशातहँकेरी । कहतनबनतिरचनमतिमेरी ॥
औरहुयदुकुलकीबहुनारी । पतिशरीरसँगदियतनजारी॥१९॥रामनारिरामहिवपुध्याई । दीन्ह्योअग्निशरीरजराई ॥
औरहुआनकदुंदुभिनारी । पतितनलैदीन्ह्योतनजारी ॥ औरप्रद्युम्नादिककीवामा । कियोप्रवेशअग्निनितेहिठामा ॥
रुक्मिणिआदिआठपटरानी ।भईलीनपावकछविखानी॥२०॥अर्जुनसुनियदुकुलसंहारा।धायोतनकोछोडिसम्हारा॥

तेहिसमयपहुँच्योतहँजाई। लखिसंहाररिस्योमुरझाई॥ कृष्णविरहसुधिरहीनतनमें। मृतकसमानभयोतेहिक्ष
दोहा–पुनिजोहरिगीताकह्यो, सोसुधिकरिमनमाहिं। उठ्योसँम्हारिसचेतह्वै, अर्जुनरणथलपाहिं॥ २
मृतकक्रियासबकींकरवाई। जैसीलोकवेदविधिगाई॥२२॥जादिनहरितजिगेमहिकाहीं। तादिनतेसतयें
दियोद्वारिकासिंधुडुबाई। हरिमंदिरभरिदियोबचाई॥२३॥ महाराजतेहिमन्दिरमाहीं।बसतरुक्मिणकृष्ण
सुमिरतसबअघकरतनिपाता। सबमंगलकेमंगलदाता॥२४॥ बालकवृद्धऔरजेनारी। बचेरहेद्वारकामझारी
तिनकोलैपारथसँगमाहीं। गवन्योंइंद्रप्रस्थपुरकाहीं॥ मथुरामेंवज्रहिबैठायो। सविधिराजअभिषेककरायो॥
आयोइंद्रप्रस्थमेंजबहीं। कृष्णपयानकहतभोतबहीं॥ अर्जुनमुखसुनिकृष्णपयाना। आपपितामहपाँचप्र
तुमकोराजासनबैठाई। सुरदुर्लभसबविभवविहाई॥ तुरतमहापथकियोपयाना। तहँतेगवनेजहँभगवाना॥
दोहा–देवदेवयदुनाथको, जन्मकर्मजोकोय। गावहिप्रीतिसमेतनर, पापरहितसोहोय॥ २७॥
क०-श्रीयदुनाथकेजेअवतारके,बाल्युवाकेचरित्रसोहावन। द्वारकाकेव्रजकेमथुराकेदिलीके,सोऔरथलेके
गावतहैंतिनकोजोसप्रीतिसों, औरसुनैंऔगुनैंमनभावन। श्रीरघुराजलहैहरिभक्तिसो, जातेनऔरकछूसुखछ
दोहा–रुद्रऔरनिधिशशिसुभग, संवतमारगमास। कृष्णपक्षछाठिवारभृगु, एकादशैप्रकाश॥ २८॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहारा धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे एकत्रिंशस्तरंगः॥ ३१॥

दोहा–आनँदअम्बुधिग्रंथको, शुभग्यारहोंस्कंध। यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछन्दप्रबन्ध॥

समाप्तोऽयमेकादशस्कन्धः ११.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–मुम्बई.

कपास

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीमद्भागवत–आनन्दाम्बुनिधि ।

द्वादशस्कंधप्रारंभः ।

दो०–जयजययदुवरवरचरण, मुनिमानससरहंस । ज्ञानक्षीरअज्ञानजल, कारकभिन्नप्रशंस ॥ १ ॥
जयबानीजयगजवदन, जयशुकजयश्रीव्यास । जेहिपदध्यावतहोतहठि, बुद्धिविलासविकास ॥ २ ॥
जयमुकुंदहरिगुरुचरण, जोमोहिंएकअधार । जेहिध्यावततरिहौंसहज, याभवपारावार ॥ ३ ॥
जयहरिपितुविशुनाथपद, जेहिसबभाँतिभरोस । जाकेबलमिटिहैंमिटे, मनकेसबअफसोस ॥ ४ ॥
एकादशअस्कंधको, सुनिकैकुरुकुलनाथ । पुनिबोल्योशुकदेवसों, जोरिजलजयुगहाथ ॥ ५ ॥

राजोवाच ।

चंद्रयदुवंशहिभूपन । जबगवनेनिजपुरमुनिभूपन । तबमहिमहँकेहिनृपकोवंसा । होतभयोसोकरहुप्रशंसा ॥
मुनिपतिकुरुपतिकीबानी । बोलतभेअतिआनँदमानी ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच ।

थकेवंशहिजोई । नामपुरंजयनृपइकहोई ॥ शुनकनाममंत्रीसोकरिहै । सोनिजस्वामीकोहनिडरिहै ॥ २ ॥
द्योतहृहैइकताको । करिहैतेहिठाकुरवसुधाको ॥ तासुतह्वैहैपालकनामा । तासुविशाखयूपबलधामा ॥
जकसुतइकजोई ॥ ३ ॥ नंदिवर्धनोतासुतहोई ॥ तिनकोनामप्रद्योतनजानो । अवमेंइनकोभोगबखानो ॥
शतओअरतीसा । भूमिभोगिहैंपाँचमहीसा ॥ ४ ॥ पुनिह्वैहैभूपतिशिशुनागा । ताकेकाकवर्णबड़भागा ॥
धर्मापुनिहोई । पुनिक्षेत्रज्ञतासुसुतहोई ॥ ५ ॥

दोहा–ताकेह्वैहैएकसुत, जासुनामविधिसार । पुनिअजातरिपुतासुसुत, ह्वैहैपरमउदार ॥

भकनामकुमारा । तासुअजयसुतजानुउदारा ॥ ६ ॥ पुत्रनंदिवर्धनपुनिताके । महानंदिह्वैहैसुतजाके ॥
गादिकदशनृपमहिभलि।भोगिहैंत्रिशतसाठिवर्षनकलि ॥ महानंदिनृपकोसुतजोई । शूद्रीगर्भहितेसोहोई ॥
ह्वैनंदहिनामा ॥ ७ ॥ ८ ॥ महापद्मदलपतिबलधामा॥सोकरिहैछत्रिनसंहारा।तहँनृपह्वैहशूद्रअचारा ॥९ ॥
अतिअधर्मजगमाहीं । शासनवेदमानिहैंनाहीं ॥ तिनछत्रिनकोतोननरेशा । शासनकरिहैंदेतकलेशा ॥
समसोबलवाना।भोगिहैंसकलभूमिपरधाना ॥ १० ॥ ताकेह्वैहैंआठकुमारा । नामसुमाल्यादिकहिउचारा॥
तवरपहिपरयंता । करिहैंभूमिभोगबलवंता ॥ ११ ॥ चाणकद्विजह्वैहमहिमाहीं । तेआठौंसुतयुतनंदकाहीं॥

दोहा–हनिडारिहैंविशेषिकै, चंद्रगुप्तनिजपूत । ताकोचाणकदेइंगे, भूकोभोगअकूत ॥ १२ ॥

सुतह्वैहैंजेते । मौर्यानामकह्वैहैंतेते ॥ वारिसारतिनकोसुतहोई । तेहिअशोकवर्धनसुतजोई ॥ १३ ॥
हैसुयशकुमारा । तासुसुवनसंगतसुकुमारा ॥ ह्वैहैंशालिसूकतेहिपुत्रा । तासुसोमशर्मासुविचित्रा ॥ १४ ॥
तधन्वाबलवाना । तासुवृहद्रथपुत्रसुजाना ॥ येदशमौर्यनृपनिकरइमा । कलिमहँइकशतओसैंतीसा ॥
तेवर्षहिराजू । पुष्यमित्रतेहिसचिवदराजू ॥ सोमंत्रीस्वामीकहँमारी । निजसुतकोदैहमहिमारी ॥
मित्रतेहिनामउचारा।ताकेफेरिसुज्येष्ठकुमारा॥१५॥१६॥ताकेपुनिवसुमित्रउदारा । होइभद्रकतासुकुमारा ॥
निपुलिंदसुतहोई । ह्वैहैतासुघोषसुतजोई ॥ ताकेवज्रमित्रसुतह्वैहै । तासुपुत्रभागवतकहैहै ॥ १७ ॥
दोहा–देवभूतिताकोसुवन, येदशशुंगभुवाल । भोगकरैंगेभूमिको, इकशतओदशसाल ॥ १८ ॥

देवभूतिकामीअतिहोई। कण्वनाममंत्रीतेहिजोई॥ स्वामिहिमारिहरीधनधामा। निजवसुदेवधरेहेनामा॥
तासुपुत्रभूमित्रउदारा। नामविक्रमादित्यप्रचारा॥ यहथलतेकछुअबकेनामा। मैंबरणनकरिहौंमतिग्रामा
कियशुकऔरैनामबखाना। तेईनामअबऔरविधाना॥ सोमैंसबकेजाननकाजा। [illegible]
भूपविक्रमादित्यसुजाना। पायोदेवीकरवरदाना॥ जबजबतासुमरणनियरावै। तबदेवीकोशीशचढावै॥
तातेजियोभूपबहुकाला। अबलोंशाकाचलतिविशाला॥ भयोशालिवाहननृपकोई। [illegible]
सोऊनर्मदादक्षिणपारा। अपनोशाकाकियोप्रचारा॥ रचिमृत्तिकाकेरदलभारी। [illegible]
दोहा—उतरनलाग्योनर्मदा, तबतेहिसैनअपार। जलपरसतसिगरीबुरी, तातेलह्योनपार॥
तातेरेवाउत्तरपारा। शाकाविक्रमनृपतिप्रचारा॥ अबभागवतप्रसंगहिगाऊँ। शुकनृपकोसंवादसुनाऊँ॥
विक्रमसुतनारायणह्वैहै। तासुकुमारस्वशर्माढैहै॥२०॥ बरपतीनिशतपैतालीसा। करिहैराजचारिअवनीसा॥
रहीस्वशरमाकेइकमंत्री। शूद्रबलीनामकअबजंत्री। तौनस्वशरमाकोहनिडारी। आपहिराजकाजविस्तारी
राजकरीसोईकछुकाला। कृष्णनामतेहिभ्रातविशाला॥२२॥तेहिपीछूप्रभुसबवसुधाको। श[illegible]रनह्वैहैसुतत[illegible]
ताकोसुतपुनिपौरनमासा। लंबोदरसुततासुप्रकासा॥२३॥ चिविलकनामतासुसुतहोई। मे[illegible]ति[illegible]
ताकोसुतहोईअटमाना। तेहिअनिष्टकर्मामतिवाना॥ २४॥ ताकोसुतहोईहालेया। तळकना[illegible]
दोहा—भीरुपुरीपहुतासुसुत, तासुसुनंदननंद। होईतासुचकोरसुत, तासुतनवमअमंद॥ २५॥
तासुतकोशिवहोईनामा। ताकोस्वातिपरमबलधामा॥ तासुगोमतीपुत्रसुजाना। ह्वैहैतासुपुत्रपुरिमाना॥ २
ताकोमेदशिरासुतहोई। शिवअस्कंधतासुसुतजोई॥ यज्ञश्रीताकोसुतजानी। ताकोतनैविजयपहिचानी॥
ताकेभाव्यपुत्रअतिसाके। चंद्रविसिप्रकटीसुतताके॥ तासुसलोमधिसुतअरिध्वंसा।येतनोबलीशूद्रनृपवंसा॥ २
चारिशतैअरुवर्षछियासी। करिहैंभूमिभोगसुखरासी॥२८॥ ताकेपीछेपुनिमतिधीरा। ह्वैहै[illegible]हीर
सातपुस्तिकरिहैंतेराजू। पालनकरिहैंप्रजासमाजू॥ पुनिगर्दभीभूपजेह्वैहैं। प्रगटनामतोमरकहवैहैं॥
करिहैंतेदशपुस्तहिराजू। रखिहैंबहुसबचरनसमाजू॥ तिनकेपीछूशुकमुनिराई। सोरहिभूपनदियोगनाई॥
दोहा—कंकनामतिनकोकह्यो, चक्रवर्तीहैनाहिं। हैंमहीपमंडलहिके, मैंबरणोंतिनकाँहिं॥
पृथीराजजयचन्दनवेला। औरहुसारंगदेवबवेला॥ अरुइकनृपचँदेलपरिमाला। अरुपवाँरजगदेवभुवाला॥
औरहुअसमंडलहिमहीपा। सोरहकेमधिहैंकुलदीपा॥ शारँगदेवबघेलबलीना। बड़ोकामयहजगमहँकीना॥
नृपपरमालचँदेलहिनेरे। आल्हाऊदलबलीबनेरे॥ बांधवगढऊदलकहुँआयो। शारंगदेवताहिबँधवायो॥
तबतेताकोजगतललामा। भोसंग्रामसिंहअसनामा॥ जगतदेवरानाकीकन्या। ब्याहीसंग्रामहिजगधन्या॥
अरुपरमालचँदेलकुमारी। ब्याहीसँग्रामहिबलभारी॥ रह्योजोपृथीराजचहुआना। सोलैसंगहिकटकमहाना॥
करीचँदेलनपाँहचढ़ाई। दोउदलमेंभैबडीलड़ाई॥ ऊदलरह्योचँदेलहरौला। सोकीन्ह्योंपरदलपररौला॥
दोहा—पृथ्वीराजनरनाहके, रहेजोसौसामंत। तिन्हमेंकान्हबलीरह्यो, कियोसोऊदलअंत॥
मारिचँदेलनकोपृथिराजू। लियोछीनितिनकासबराजू॥ पुनिजयचंदहिकेरिकुमारी। संयोगितासुनामउचारी॥
तेहिछविसुनिअतिमनहिलोभायो।ताहिहरनपृथिराजहुआयो॥रह्योभूपजयचंदउदारा। ताकेअशीलाखअसवारा॥
सत्तरसहसमत्तमातंगा। रहीछापताकीदलपंगा॥ संयोगितेहरच्योपृथिराजू। कियोयुद्धजेचंदहुराजू॥
जूझेओरसबैसामंता। बाकीरहेपाँचबलवंता॥ पृथीराजयहिविधिकरिरारी। हरिलैगोचैचंदकुमारी॥
दिल्लीजायकियोबहुभोगू। भूलिगयोसबराजनियोगू॥ गाफिलपृथीराजकहँजानी। काबुलकोमलेच्छबलखानी॥
गौरीअलाउदीनहिनामा। चढिआयोदिल्लीबलधामा॥ पकरिलियोपृथिराजहिकाहीं। राख्योकैदहिकाबुलमाहीं॥
दोहा—बहुतकालमेंचंदकवि, खोजतकाबुलजाय। पृथीराजकेबाणते, म्लेच्छहिदियोढटाय॥ २९॥
आठयवनजेशुकमुनिभापे। तिनकोमेंयहिविधिगुनिराखे॥प्रथमअलाउदीनहैसोई। तिमिरलिंगतेहिवधकियनोई॥

भयेशाहमीरासुतताके । भोसुलतानमहम्मदजाके ॥ अबूसैदपुनितासुकुमारा । ताकेबाबरशाहउदारा ॥
ताकेभयेहमायूशाहा । भयोतासुअकबरनरनाहा ॥ जैसोअकबरजगयशलयऊ । ऐसोबादशाहनहिंभयऊ ॥
ताकीउतपतिदेतगनाई । शेरशाहकोउकरीचढ़ाई ॥ तासोंकरिकैअतिशयरारी । रणमेंगयोहुमायूँहारी ॥
दुरयोहुमायूँचलिकंधारा । शेरशाहकियअमलअपारा ॥ रानीएकहुमायूँकेरी । चोलीबेगमनामनिबेरी ॥
ताकोतहँनरहरिकविजाई।लियोमाँगिनिजबुद्धिदेखाई [illegible]

दोहा—चोलीबेगमसंगलै, नरहरिकविमतिमान । बीरभानुबघेलढिग, आयोबांधवथान ॥

बीरभानुभूपतितेहिकाहीं । दियटिकायबांधवपुरमाहीं ॥ अकबरजनमसुनतनृपशेरा । [illegible]
बीरभानसुनिशाहअवाई । लैअकबरबांधवगढ़जाई ॥ लरनहेततहँसैनसमेटी । शेरशाहकहँअतिलघुसेटी ॥
बारहिलाखसैनलैशाहा । गेरयोबांधवबिजैउछाहा ॥ बारहबरसरह्योसोगेरे । पैनजानपायोगढ़गेरे ॥
उतैहुमायूँयवनसैनलै । चल्योदिल्लीपैपरमचैनलै ॥ यहसुनिशेरदिलीकहँगयऊ । तासोंलरिजूझततहँभयऊ
बीरभानुसुतरामसिंहजो । सबबीरनमेंरह्योसिंहजो ॥ तेहिसँगकरिपुनिअकबरशाहै । दिल्लीबैठामनकीचाहै
बीरभानुदियपठैउदारा । करिसँगअसीहजारसवारा ॥ बीचसलेमशाहमिलिगयऊ । [illegible]

दोहा—दिल्लीमेंजबरामनृप, पहुँच्योअकबरसंग । तबहिहुमायूँलखनहित, चल्योअवासउतंग ॥

भागविवशतहँतेगिरिगयऊ । गिरतहिप्राणरहितसोभयऊ ॥ अकबरशाहतखतमहँबैठे । [illegible]
भयोखानखानातिनमंत्री । बीरबलहुभोसखासुतंत्री ॥ मानसिंहआमेरनरेशा । रामसिंहबांधवनृपवेशा ॥
येसबसुहृदशाहअकबरके । रहेप्रधानसकलबुधिवरके ॥ अकबरशाहपुत्रजहँगीरा । [illegible]
आठयवनजेकहहुनिराई । तेइंआठमेंदियोंगनाई ॥ चौदहिओरतुरुष्कनकाहीं । जोशुकदेवकह्योनृपपाहीं ॥
तिनमेंप्रथमभयोनरनाहा । नामतासुभोआदमशाहा ॥ भयोबहादुरशाहदूसरो । मज्जुदीनभोशाहतीसरो ॥
फतुकशेरचौथोनृपवादा । पचयोंरफीयूँदरजादा ॥ ताकेसुतनहिंदियविधिराई । तातेतखतबैठतेहिभाई ॥

दोहा—ताकेसमशुद्दीनभो, ताकेमहमदशाह । ताकेअहमदशाहभो, दायकप्रजनउछाह ॥

भयोतासुसुतआलमगीरा । ताकेगौहरशाहप्रवीरा ॥ येदशबादशाहहैआये । परम्परातेतिनहिंगनाये ॥
इनकेबीचबीचमहँजेते । दिल्लीआयअमलकियकेते ॥ तिनहूँकोमेंदेहुगनाई । नादरशाहेकरीचढाई ॥
दिल्लीआयकटासोकीन्ह्यों । फेरिसोंपिशाहिंकोदीन्ह्यों ॥ आपचलेगोनगरइराना । दिल्लीमेंराख्योनहिंथाना ॥
महमदशाहकोऊअबदाली।सोऊआयकियदिल्लीखाली॥पुनिगुलामकादरइकभयऊ । [illegible]
बरबसलीन्ह्योंआलिनिकारी । पुनिमनमेंयहिभाँतिविचारी ॥ गौहरकेवंशहिजोहोई । बादशाहह्वैहैठिसोई ॥
रह्योविदारबसतकोउतिनकुल । दियोबादशाहीतेहिबिलकुल॥यहसुनिजेपुरकेमहराजा । [illegible]

दोहा—चासहजारअसवारलै, चढिपायेअतिआशु । तबगुलामकादरभग्यो, करिजीवनकीआशु ॥

पचिगुलामकादरगोनाहीं । पकरिल्यियेबृंदावनमाहीं ॥ बसननेतेलपेटिशरीरा । दहनलगेपदिविधिदिपीरा ॥
इकतिसदिनयहिविधितेहिलायो।मरयोनतबअचरजउरलायो॥सपन[illegible]
मजमेंमरेसुक्तिहजाती । यहशठदेनिजठाकुरपाती ॥ तबलायोनिहिब्रजयाहरकारि । [illegible]
फिरिगौहरशाहहिबैठायो । अंपशाहकछुकालबितायो ॥ पुनिदक्खिनतेभीमलेभारी । [illegible]
तबगौहरकीबेगमजोई । रहीगर्भनेसंयुतसोई ॥ ताकोलैनबगौहरजादा । भग्योछोडिदिल्लीनरनाहा ॥
आयोनाशुनगरगोविंमह । जहँअर्जीतमेंप्रापिनामह ॥ नृपअर्जीनसोबचनउचारे । दायजोभवरलभूपतुम्हारे ॥

दोहा—तौनिजपुरमेंराखिये, हमकोतुमयहिकाल । इनदासिनोअतिभन्यो, गह्योपाणिविशाल ॥

तबअर्जीनकरयुतउत्साहा । गहोतुकुंदपुरमेंशाहा ॥ अनकदिनृपनुकुंदपुरमाँहीं । गह्योगौहरशाहहिकाँहीं ॥
भोमुकुंदपुरमाँहउदारा । गौहरकेभेअकबरजादा ॥ पुनिअर्जीनलैगौहरजादै । गमन्योदिल्लीसहितउछाहै ॥

शाहेदिल्लीमहँबैठाई। फिरिआयोअजीतनृपराई ॥ यहिविधिभयेतुरुष्कचतुर्दस।
फेरितुरुष्कनअंतहिमाँहीं। शुकजोकह्योगोरंडनकाँहीं ॥ नामगोरंडयहीअँगरेजू।
तेपहिलेतोकरिव्यापारा। हिंदुथानमहँकियोप्रचारा ॥ जोरिफौजकलकत्तेआये। यहशुजातदौलासुनिपाये
जोरिफौजयउकरीचढाई। बकसरमेंतहँभईलडाई ॥ तहँनवाबकीभईपराजे। लियअंगरेजअमलसबराजे ॥
जबअंगरेजआगरेआयो। अपनोअमलसकलफैलायो ॥

दोहा–अट्ठारहसैसाठिमें, अकबरशाहसुनाथ। सौंपिदियोसिगरेमुलुक, अंगरेजनकेहाथ ॥
ममपितुअधिकारीसियरामा। रहविशुनाथसिंहजेहिनामा ॥ तेटीकाभागवतबनाई। तामेंसंख्यासकलगनाई
सोईसंख्याकेअनुसारा। यहकीन्ह्योमैंसत्यप्रचारा ॥ दुइसैऔरहुसत्रहिवर्षा। हैअंगरेजराजउतकर्षा ॥
वितेपचासवर्षयहिकाला। बाकीइकसैसरसठिसाला ॥ अबभागवतप्रबंधहिगाऊँ। ... शुककोविद...
गोरंडनकेअंतहिमाँहीं। मौनशासिहैंयहिमहिकाँहीं॥३०॥३१॥ ... एकादश
नगरीएककिलकिलाठामा। अबजेहिहैकलकत्तानामा ॥ सोईराजधानीपुनिह्वैहै। तामेंएकभूपबसिजैहै ॥
भूपनंदप्रथमैनृपह्वैहै। ताकोसुतवंगिरकहवैहै ॥ ३२ ॥ तासुभ्राताशिशुनंदीनामा। ताकोजसोनंदिवलधामा ॥

दोहा–ताकोपुत्रप्रवीरको, येभुवालजेपाँच। वर्षएकशतपट्उपर, भोगिहैंभोगनिसाँच ॥ ३३ ॥
पुनितेरहितिनकेसुतह्वैहैं। वाह्लीकनामहिकहवैहैं ॥ पुष्पमित्रह्वैहैकोउराजू। सोईकरिहैंसबमहिराजू ॥
तासुपुत्रदुर्मित्रहिहोई। राजकरीपुनिमहिकीसोई ॥ ३४ ॥ तासुउपरपुनिसुनहुभुवाला। सातअंधह्वैहैंमहि...
ह्वैहैंपुनिकौशलनृपसाता। वैदूरहिदेशहिपतिताता ॥ कुरुपतिनिपधदेशकेवासी। ह्वैहैंऔरभूपसुखरासी ॥
पुनिमागधवंशीजेराजा। तेह्वैहैंमहिनाथदराजा ॥ ३५ ॥ प्रथमतासुविस्फूरजनामा। सोईपुरंजयहैबलधामा ॥
थपिहैंसोशठबरननवीना। यदुपुलिंदमद्रकयेतीना ॥ ३६ ॥ तेसबह्वैहैंम्लेच्छसमाना। ...
तेइप्रजनकहँसोनृपपाली। धर्मात्माक्षत्रिनकहँघाली ॥ पद्मावतीपुरीतेहिधामा। पद्माप्रगटपुहुमिजेहिनामा ॥

दोहा–हरद्वारतेलैनृपति, औप्रयागपर्यंत। अमलकरीसोअवनिमें, अतिपापीबलवंत ॥ ३७ ॥
पुनिसौराष्ट्रअवंतीमाँहीं। अर्बुदमालवदेशनपाँहीं ॥ ह्वैहैंविप्रधर्मतेहीने। म्लेच्छसमानमहाअघलीने ॥
व्रतबंधादिककरिहैंनाँहीं। ह्वैहैंतेइनृपतितहाँहीं ॥ ३८ ॥ सिंधुचंद्रभागाकेतीरा। कुंतिदेशऔरहुकश्मीरा ॥
तेइविप्रतहाँकेवासी। अरुभूपहुह्वैहैंअघरासी ॥ विप्रहिरूपम्लेच्छपरचंडा। करिहैंपापबडेबरिबंडा ॥
थोरोदानाकोपमहाना। धर्मकेरकबहूँनहिंमाना ॥ ३९ ॥ ४० ॥ बालगऊब्राह्मणअरुनारी। निर्दयइन्हेंडारिहैंमारी
परधनपरदाराहरिलैहैं। जलदीह्वैजलदीमरिजैहैं ॥ थोरीआयुपअरुबलथोरा। ह्वैहैंधनहुभयेबरचोरा ॥ ४१ ॥
संसकारनहिंनेकुकरैहैं। धर्महीनसबकालहिरैहैं ॥ रजोतमोगुणकरिहैंप्रीती। करिहैंनाहिंनरककीभीती ॥
भूपरूपअसम्लेच्छमहाना। हनिहैंप्रजनअधर्मनिधाना ॥ ४२ ॥

दोहा–राजाजिनकेजैसही, प्रजातैसहीतासु। लरिमरिहैंकछुपरसपर, कछुनृपकरीविनासु ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–कलिमेंकुरुमहराजसुनु, क्षमासत्यआचार। बलआयुपसुधिबुधिदया, धर्मघटीहरबार ॥ १ ॥
... ॥ गुणीकुलीनधर्मयुतसोई ॥ जोह्वैहैअतिशयबलवाना। सोनियाउजीतीविधिनाना ॥ २ ॥
लगीकोनिहूनोकजोनारी। तेसनेहकरिहैंजनभारी। तेहिमिलिकेदंपतिकहवैहैं। कुलअरुजातिविचारिनलैहैं ॥

जोकरिहेंसवछलकमेंनमहँ । महाचतुरकहिहेंजनतेहिकहँ॥ह्वैहैंजगमहँकोकमतीजे । कहि...
रतिमेंचतुरनारिजोहोई । वरतियतेहिकहिहेंसवकोई ॥ कलिमेंपहिरवएकजनेऊ ॥ ३ ॥ ह्वैहैंविप्रशूद्रकरभे
विप्रधर्मव्राह्मणनहिंकरिहें । शूद्रनकेसंगसदाविचरिहें ॥ राखिनहाअरुशिरमहँवारा । ...
सवैब्रह्मचारीकहवैहें । कौड़ीकेहितघरघरधैहें ॥ कुमतिकुशीलकपटमेंनागर । सवअवगुणमेंपरमउजागर

दोहा-अतिथिपूजनादिककरम, हेंगृहस्थकेजोइ । तिनहिंजोकरिहेंकवहुँनहिं, गृहीकहैहेंसोइ ॥

जेवसिहेंकाननमहँजाई । धनकेहितएहेंपुरधाई ॥ ऊपरतापसवेषवनाये । भीतररहिहैंरांडठिकाये ॥
ऐसेवानप्रस्थकहवैहें । धनहितअघकरिहेंकरवैहें ॥ गेरुवावस्त्रकोऊतनधरिहें । राखलगायेपुरनविचरिहें ॥
लीन्हेंदंडहरीहरवोलिहें । सवसोंलालचवचनहिवोलिहें ॥ ऐसेजनपखंडविलासी । कहवेहेंकलिमेंसंन्यासी
दिनकोकरिहेंजोपरनामा । रातिभूलिहेंताकरधामा ॥ धनवानहिंकलियुगमहँजीती । देअंकोरपाइनहिंभी
जौनदरिद्रीह्वैहेंभारी । न्यायकुन्यायहुमेंसोहारी ॥ जौनचपलवहुवचनवतैहें । सोकलिमहँपंडितकहवैहें ॥
जौनदरिद्रीअतिशयहोई । कहवेहैंअसाधुकलिसोई ॥ जोकरिहेंवहुविधिपाखंडा । सोइकहवैहेंसंतउदंडा ॥

दोहा-कौनिहुनारीजोकोऊ, घरमेंलैहैराखि । सोइविवाहकहवाइहै, नहिंह्वैहैंश्रुतिभाखि ॥

देहेंदिवसनहातविताई । मलिमलिकरिहेंअंगसफाई ॥ यतनोईभूषणकलिमाहीं । नहिंकरिहेंभूषिततनकाह
ह्वैहैंदूरजोनदीतडागा । सोइतीरथमानिहेंअभागा ॥ तहँनहानहेतहठिजैहें । गुरुपदजलमहँनाहिंनहैहें ॥
होइजेतनैतीरथदूरी । तेतनेकरिहेंमहिमाभूरी ॥ तेलऔरजोसलिललगाई । निजकेशनअतिशयचिकनाई
औरटेढ़कछुजुलुफवनाई । तासुकहेंगेसुंदरताई ॥ सदाउदरभरभरीजोकोई । पुरुषारथीकहैहेंसोई ॥
जोवतातमहँकरीढिठाई । सोईसत्यवादीकहवाई ॥ ६ ॥ जेपालीअपनेकुलकाहीं । औरेनकोदेहेंकछुनाहीं
जोरैगोघरमेंधननाना । सोईकहैहैचतुरसुजाना ॥ धर्मकरेंगेयशकेहेतू । नहिंपरलोककेरकछुनेतू ॥

दोहा-यहिविधिपापिनतेपरम, पुहुमीह्वैहैपूरि । मनुजनकेतनतेतवै, धर्महोइगोदूरि ॥ ७ ॥

ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यहुशूद्रा । औरहुकलिकेजेजनक्षुद्रा ॥ तिनमेंजवरजौनजनहोई । ह्वैहैवरियाईनृपसोई ॥
अतिलोभीकलिकेमहिपाला । प्रजनलूटिहेंदेतकशाला ॥ जवधनधामधरणिअरुदारा । ...
तवेदरिद्रीप्रजादुखारी । ह्वैहैंगिरिकाननकेचारी ॥ शाकवीजवलकलफलफूला । ... मधुमांसहुअरुमूला ।
नहिंवर्षिहेंमेघजलधारा । परीअकालवारहीवारा ॥ होईशीतहुपवनप्रचंडा । उपलपरहिंगेअतिहिअखंडा ।
तातेंह्वैहेंप्रजादुखारी । करिहेंआपुसमहँवहुरारी ॥ १० ॥ भूखपियासव्याधिवहुहोई । ...
पैहेंनिशिवासरसंतापा । ताहूपैकरिहेंपुनिपापा ॥ वीसतीसवर्षहिनृपराया । ह्वैहैंकलिपरमायुरदाया ॥ ११
वढिहंजवकलिदोषप्रवीना । जवह्वैहेंप्राणीसवछीना ॥

दोहा-जववर्णाश्रमधर्मसव, ह्वैहेंजगतविनाश । जववेदनकेपंथको, नेकुनरहीप्रकाश ॥ १२ ॥

जवपाखंडधर्मअतिह्वैहें । जवनृपचोरसरिसह्वैजैहें ॥ जवहिंसाअसत्यअरुचोरी । लैहेंयहीजीविकाजोरी ॥
जवसववरणशूद्रसमह्वैहें । जवगोअजासरिसह्वैजैहें ॥ जवह्वैहैगृहस्थसमसवआश्रम । जवह्वैहेंनातेभ्रातासम ॥
जवसूक्ष्मह्वैजाइअनाजू । जवतरुह्वैहेंनाहिंदराजू ॥ जवदामिनिभरचमकनलागी । जवनवर्षिहेंघनवड़भागी
जवह्वैजैहेंसवघरसूना । जवदिनदिनवढ़िहैअघदूना ॥ जवखरसरिसमनुजह्वैजैहें । ...
जवयहिविधिकलियुगवढिजैहै । धर्मलेशकहुँनाहिंदरशैहै॥तवसवधर्मनिरीक्षणहारा।लैहैरमारमणअौतारा॥१
जोनचराचरकेगुरुस्वामी । सवजीवनकेअंतरयामी ॥ जिनकोजन्मकर्ममतिसेतू । संतधर्मकेरक्षणहेतू ॥

दोहा-गंगाकेतटमेंजहै, संभलनामकग्राम । तहाँविष्णुयशविप्रकोट, ह्वैहैंअतिमतिधाम ॥

ताकेगृहमेंमाघवमासा॥शुक्लद्वादशीदानहुलासा॥लैहेंप्रभुकल्कीअवतारा । हरिहैंअवनिपापकरभारा ॥१
देहेंकोउसुगतिनाहिं रंगा । तामेंचढिहैंगिकेरणरंगा ॥ करमेंकरिकगहकरवाला । आठविभूतिसमेतकृपाला

चहुँकितचपलतुरंगचलाई। धीरजधारिधरापरधाई ॥ भूपरूपजेशूद्रअपारा। तिनकोटिनकरिहैंसंहारा॥ जबपापिनह्वैगेहैंनासा। अरुकलकीअँगरागसुवासा॥ फैलीपौनपायजगमाँहीं। सोइशुचिकरिहैंजीवनकाँहीं प्रजायथोचितउतपतिह्वैहैं। वासुदेवपदचित्तलगैहैं॥२२॥ जबहोईकलकीअवतारा। तबह्वैहैसतयुगसंचारा चंद्रसूर्यअरुसुरगुरुभूपा। तीनिहुएकहिसाथअनूपा॥ प्रविशैपुष्यनखतमहँजबहीं।सतयुगप्रगटहोतहैतबहीं

दोहा—सोमसूर्य्यवंशीनृपति, जेतनेभेमतिमान। वर्त्तमानअरुभाविहू, मैंसोकियेबखान॥ २५॥

तुमतेलैनंदहिपरयंता। ग्यारहसैपंद्रहिमतिवंता॥ इतनेवर्षबीचहींमाँहीं। येसबनृपह्वैहैंकलिपाँहीं॥ २६॥ उत्तरदिशिजेशकटाकारा। उदितहोहिसप्तर्षिउदारा॥ तिनमेंप्रथमकेरदुइतारा। पुलहऔरक्रतुनामउचारा तिनकेमधिनखतनमहँएकू। रहतसदाअसशास्त्रविवेकू॥२७॥सोसौवर्षभोगनोसोई। [illegible] अहैमघातिनमधियहकाला।यहिविधिकालभेदमहिपाला॥२८॥ [illegible]

दोहा—तादिनतेयहअवनिमें, कलियुगकियोप्रचार। जेहिकलियुगमेंमनुजसब, भयेअधर्मअधार॥ २९

जबभरिहरिपदपरस्यौधरणी।तबभरचलीनकलियुगकरणी॥३०॥ [illegible] तबतेयहकलियुगपरगटतो। दिव्यवर्षद्वादशशतरहतो॥३१॥ जबसप्तर्षिमघाकहँत्यागी। [illegible] तबप्रद्योतनृपतितेलैकै।कलियुगबढीधर्मछैकैकै॥३२॥जादिनहरिविकुंठअनुराग्यो।ताहीदिनतेकलियुगलाग्यो दिव्यवर्षबीतिहैंहजारा। तबसतयुगपुनिकरीप्रचारा॥ निजनिजधर्मवर्णसबकरिहैं [illegible] यहजोवरण्योमानववंसा। तेहिविधिहेकुरुकुलअवतंसा॥विप्रक्षत्रिवैश्यहुशूद्रनके।जानहुयुगयुगसबवरणनके धर्मात्माजेयशीमहीपा। भयेमहात्माजेकुलदीपा॥ तिनकीकथाकीर्त्तिअवरहिगै।सोऊकविसुजानमुखकहिगै॥

दोहा—भ्राताशांतनुभूपके, देवापीजेहिनाम। चंद्रवंशकोभूपयक, सुनुदूजोमतिधाम॥ ३७॥

कलिकेअंतमाहकुरुराई। येदोउनृपहरिशिक्षापाई॥ करिहैंपुनिकैवंशविवर्धन। थपिहैंवर्णाश्रमभरिश्रद्धन॥ ३ सतयुगत्रेताद्वापरकलऊ। यहिविधिहोतवेदकहिदियऊ॥३९॥ भयेजेहैंअरुह्वैहैंराजा। [illegible] ममताकरिभूमिकीभारी। पैनभूमिगैसंगसिधारी॥ ४०॥ राजहुहोयतदपिमतिधीरा। अंतसमैमहँतासुशरीरा कृमिविटभस्महोतहठिसोई। तेहिशरीरकेहोतहिजोई॥ द्रोहकरैसबजीवनपाँहीं। तातेअवशिनरककहँजाहीं॥४ भूकेभूपतिअसमुखभाषे। यहपुरपाकमायमहिराषे॥ यहधरणीसबअहैहमारी। केहिविधिमोसुतपालैसारी॥ ऐसीकौनिहुँकरैंउपाई। जामेंकोउनहिंलेयछोडाई॥ पुत्रपौत्रजेहोहिंहमारे। तेइभोगहिंभुविभोगअपारे॥

दोहा—करतकरतमरिजातहैं, धरणीहेतउपाय। अंतसमैजरिजाततन, धरणीसंगनजाय॥
भारिकैअतिअभिमानजे, भोगकरतनृपराय। तिनकोकछुनहिंरहतहै, कथाएकरहिजाय॥ ४२॥४३॥४४

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धि श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे द्वितीयस्तरंगः॥ २॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—अपनेकोजीततनिरखि, हँसतिनृपनयहभूमि। अहोखेलौनामृत्युके, नृपजितिहैंकाधूमि॥ १॥

हैनरेंद्रमतिमंतहुजेऊ। वृथाकरतअभिमानहुतेऊ॥ राजसैनधनधरनिहमारी। कियेगर्वऐसहिउरभारी॥ फेनसरिसयहअनितशरीरा। तामेंकियेविश्वासगँभीरा॥२॥मनमेंकरहिंविचारसदाहीं। जीतिकामक्रोधादिककाँहीं पुनिमंत्रिनकोबुधितेजीती। अवशिचलाउबअपनीरीती॥ कंटकरिपुजेहैंममराजू।तिनकोजीतनसहितसमाजू॥ ३॥ [illegible] करबजीतिमहिराजएकला॥ यहीबँधेआशाकीपासा। लखतनकालआपनेपासा॥ ४॥ यहूकरहिंपुनिभूपविचारा। पुनिजीतबसागरहुअपारा॥ द्वीपांतरलैहैंहमजीती। कबहूँकोहुकीकरबनभीती॥

यहशठनाहिंविचारेंमनमें । कहाभोगक्षणभंगुरतनमें ॥ जेतनोश्रममोहिंजीतनकाँहीं । मूढनृपतिजेकरहिंस
तेतनीकरैजोमोक्षउपाई । तौतिनकोसबविधिबनिजाई ॥ ५ ॥

दोहा-मनुआदिकमहराजसब, मोहितजिगेसुरधाम । तौअबकेशठनृपतिक्यों, जितिहैंमोहितमाम ॥ ६
मोरेहितपितुपुत्रहुभ्राता । औरहुजातिबंधुअरुनाता ॥ करिकरिकुमतिपरस्परवारी । फँसेफाँसममताकेभा
कृष्णभजनकेयोगशरीरा।ताकोदेहिंनशाइअधीरा।।ऐसहिममहितलरिमरिजाहीं।नहिंसमुझहिंअनित्यतनकाँ
पुरूरवापृथुगाधिनरेशा । नहुपभरतसहस्रार्जुनवेशा ॥ मांधातासगरहुपदंगा । धुंधुमाररघुअतिशुभअंगा
तृणविंदहुशांतनुसरजाती।नलनृगगयहुककुत्स्थसजाती।।कुवलयाशुअरुभूपभगीरथ।औरहुजेनरनाथमहार
हिरणकशिपत्रिभुवनजयवारो । रावणलोकरोवावनहारो॥नमुचिवृत्रसंबरभौमासुर।हिरण्याक्षतारकताडकसु
औरहुदैत्यऔरसबराजा । सिगरेज्ञाताशूरदराजा ॥ जीतेसबहिआपनहिंहारे । विदितविश्वविजयबिलवारे ।

दोहा-तेअतिममतामोहिमहँ, कियेमरेसबकोय । रहेनसबदिनमोरप्रभु, कथारहीअबसोय ॥ १३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-यशीमृतकभूपनकथा, मेंजोकह्योनरेश । सोसबज्ञानविरागहित, नहिंपरमारथवेश ॥ १४ ॥
सवैया-जोजनश्रीयदुनाथचरित्रअमंगलमूलउखारनहारो।काननमेंसुनैरोजहरीरोजगुनैअरुगावैमहासुखसारो
सोलहिभक्तिकहैरघुराजनआवतफेरिसँसारअसारो । देवकिनंदनकेमिलिवेकोउपाययहीनाहिंदूजोविचारो ॥

दोहा-व्याससुवनकेवचनसुनि, वारहिवारनिहोरि । पुनिबोल्यौकुरुकुलकमल, दिनकरदोउकरजोरि

राजोवाच ।

कलिकेजनकरिकौनउपाई । देहैंकलिकेदोपनशाई ॥ सोभापौमोसेमुनिराई । कलिमोहिकालकरालदेखाई ।
युगअरुयुगयुगकेजेधर्मा । थितिअरुप्रलैकालमुनिशर्मा ॥ यहदाजैमोहिंसकलउचारी । जाननचहौंकालगति
नगअरिसुतसुतसुतकेवैना।विधिसुतसुतसुतसुतसुतचैना।भरिबोलेअतिमंजुलवानी।लखिभूपतिमतिभगतिले

श्रीशुक उवाच ।

सतयुगमाहिधर्मपदचारी । रह्योसबैजनलियतेहिधारी॥सत्यदयाऔरहुतपदाना । धर्मचारिपदजानसुजाना
तोपितक्षमीमित्रअरुदांता।समदर्शीकरुणाकरशांता।।आत्मारामशीलमयसिगरे।सतयुगकेजनकोउनहिंबिगरे
हिंसाअसतिअतोपलराई । चारिअधर्मचरणदियगाई ॥ धर्मसत्यपदत्रेतामाहीं । कह्योअनृततेएकतहाँहीं ॥
यज्ञतपोनिष्ठायहत्रेता । जानहुधर्मअरीनविजेता ॥

दोहा-नहिलंपटनहिंहिंसको, त्रेताकेसबलोग । अर्थधर्मअरुकाममें, पारायणबिनशोग ॥
वेदत्रयीकेसबअभ्यासी।विप्रनपूजकप्रीतिप्रकासी ॥ २० ॥ २१ ॥ द्वापरमाहिधर्मद्वैपाद।रहेदानतपयुतमर
जनकुलीनवेदहिअभ्यासी।यशीकुटुंबीधनीहुलासी।।ऐसेद्वापरकेजनजानो । क्षत्रीब्राह्मणश्रेष्ठबखानो ॥२२॥
कलियुगएकधर्मपददाना।कलिअंतहिसोउनशीनिदाना।।क्रमसोंबढिअधर्मकेपाद।क्रमसोंहरिहैंधर्ममरयाद।
दुराचारकलिकेजनह्वैहें । जीवनपैनदयाचितलैहैं ॥ करिहैंवैरसबैबिनहेतू । बँधिहैंसदापापकरनेतू ॥
लोभीअरुलालचीअभागी।अनुचितकरतलाजनहिंलागी।।कलियुगमहँनृपशूद्रनकेरी।ह्वैहैंमहिमाभूतिघनेरी ॥
सतरजतमत्रैगुणजनमाहीं।रहिहैंदेनरनाहसदाहीं।।तपअरुज्ञानहोयरुचिजबहीं।उदैसतोगुणकीगुणतबहीं।।२६
कामकर्ममहँजयरुचिहोई । उदैरजोगुणकोगुनसोई ॥ २८ ॥

दोहा-असंतोषअरुलोभहूँ, मदमत्सरपाखंड । रजतमकोयहदैउदै, जानहुभूपउदंड ॥ २९ ॥
हिंसादुखअसत्यछलतंद्रा।शोकमोहभयदैन्यहुनिद्रा ॥ येसबदोहिजैनजनकाहीं।उदैतमोगुणकैतिहिमाहीं ॥
सतयुगमाहिसतोगुणजानो । त्रेतामाहिरजोगुणमानो ॥ रजतमद्वापरमाहिविचारो । कलिमहँकेवलतमहिउच

लियुगमहँसुनियेंकुरुराई। क्षुद्रसबैह्वैहैंनृपराई॥ ह्वैहैंसबजनमहाअभागी। सपनेहुनाहिंधर्मअनुरागी॥
इघरदारिद्रप्रचारा। मनुजकरैंगेबहुतअहारा॥ ह्वैहैंसबजनअतिशयकामी। करिहैंनारिनकेरगुलामी॥
रमेंधनरहिहैकछुनाहीं। ऐशकरनचाहिहैंसदाहीं॥ तियकरिहैंपरपूरुषप्रीती। मनिहैंनहिंनेकहुपतिभीती
श्शुरसाससोंकरिहैंरारी। देहैंसदापरोसिनगारी॥ धैहैंदेशनचहुँकितचोरा। करिहैंपुरनउपद्रवघोरा॥ ३

दोहा—साधुनकोधरिभेषशठ, वेदअर्थकरिखंड। अपनीरीतिचलायकै, फैलैहैंपाखंड॥

१ जाप्रजनलूटिसबलैहैं। निजदलसोंनिजराजजरैहैं॥ विप्रमहाविषयीह्वैजैहैं। गणिकाकोनिजघरहिबसैहैं॥
करिहैंसोईकहीजोनारी। देहैंपढ़िसबशास्त्रबिसारी। उदरहेतकरिहैंबहुकर्मा। कौडीकेहितछोडिहैंधर्मा॥
बचिहैंनीचकर्मअसनाहीं। करिहैंविप्रनाहिंजिनकाहीं॥ ३२॥ कुमतिब्रह्मचारीकहवैहैं। ...
करिहैंअनाचारसबकाला। धारेरहिहैंतेमृगछाला॥ जिनकोबहुहोईपरिवारा। भीखमाँगिहैंद्वारहिद्वारा॥
तपीकरैंगेतपघरमाहीं। बसनहेतजैहैंबननाहीं॥ सन्यासीलोभीअतिह्वैहैं। कौड़ीकेहितघरघरधैहैं॥ ३३॥
अतिछोटीह्वैहैंकलिनारी। तापरह्वैहैंबहुतअहारी॥ ह्वैहैंबहुतसुतासुततिनके। असनबसनहोइनहिंजिनके॥

दोहा—कलिकीनारीकबहुँनहिं, करिहैंकोहुकोलाज। रहिहैंपरघररातिकै, तजिनिजघरकोकाज॥

जोकोउसूधहुवचनउचारी। तोदैहैंतेहिलाखनगारी॥ करिहैंरातिशहरमहँचोरी। बागतफिरिहैंखोरिनखोरी।
कोहुसोंकबहुँनसत्यबतैहैं। देखिनपरदेशिनठगिलैहैं॥ अपनेयारहेतकलिकाला। मरिहैंपतिसुतलैकरवाला।
अथवाविषदैडरिहैंमारी।अथवाफाँसिगलेमहँडारी॥३४॥ कलिकेवणिकछलीअतिह्वैहैं। ...
देहैंतौलतमाहिंघटाई। लैहैंतासोंदामबढ़ाई॥ क्षत्रीऔरब्राह्मणहुजेते। करिहैंवणिकउद्यमहितेते॥
विनाविपत्तिहुपरेनरेशा। त्यागिदेइँगेधर्महमेशा॥ जोकोउकोहुकीचुगुलीकरिहैं। ...
नीचहुकर्मकरतजगमाहीं। कोऊकोहुकोबरजीनाहीं॥ सोऊकरिहैंअसमनटीको। हमहूँकरहिकर्मयहनीको॥

दोहा—ठाकुरदाताआपनो, सुभगशीलमतिधाम। ताकोचाकरछोड़िहैं, ह्वैहैंनिमकहराम॥

पालनकरीजन्मतेलैकै। असनबसनबहुविधितेदैकै॥ तेहिठाकुरकहँविपतिपरेहीं। तजिदैहैंचाकरबिनतेहीं॥
ह्वैहैंचाकरनिमकहरामा। तिनकोनरकहुमहँनहिठामा॥ ऐसेकलिकेस्वामिहुह्वैहैं। बिनकसूरचाकरहिछोड़ैहैं।
सेवाकरतकरतजोकोई। रोगीअथवाबूढहुहोई॥ ताकोप्रभुपालननहिंकरिहैं। ज्वानीलौंताकोधनभरिहैं॥
बूढिगायजबदूधनदैहै।तबपालकतेहिनाहिंखबैहै॥३६॥ पिताभ्रातअरुजातिहुनाता। भगिनीमीतगुरूअरुमात
जहँहोइगीअपनीयारी। ताहीकेह्वैहैंउपकारी॥ सारीसारसलाहीह्वैहैं। निशिदिननरतियकोमुखज्वैहैं॥
पापकरतमेंपरमप्रवीना। धर्मकरतमेंह्वैहैंदीना॥ ३७॥ लैहैंशूद्रसकलविधिदाना। विप्रसरिसकरिहैंअभिमाना

दोहा—ब्राह्मणकोधरिभेषशठ, अपनेपेटहिहेत। करिहैंतपपाखंडबहु, बँधिहैंधनकरनेत॥

बैठतसतमहँकरिअभिमाना।शूद्रबाँचिहैंकथापुराना॥ महाअधर्मीधर्मभाषिहैं। क्षत्रिनविप्रनपादिमाषिहैं॥ ३८
नितहीचित्तरहीदरिद्रिग्न। रहिहैंदुखसागरमहँमग्न॥ नहिंवर्षिहैंमेघनिजकाला। बारबारकलिपरीअकाला
जुरीअन्ननहिभोजनकाहीं।भीखमाँगिहैंघरघरमाहीं॥ तापरनृपतिलगायपियादा। लैलैहैंघरकीमरयादा॥ ३९
बसनमिलैनहिंपहिरनकाहीं। ताभूपणकीकौनचलाहीं॥ मिलैनखाटभूमिमहसैहैं। पियनहेतभलजलहुनपैहैं
करिहैंमैथुनपशुनसमाना। भोजनकरिहैंविनअस्नाना॥ ह्वैहैंसकलबस्तुतेहीना। महाकुरूपीपापप्रवीना॥
ऐसेकलिमहँह्वैहैंप्रानी। जायकहौंलगिदशाघरानी॥ रहिनहिंजैहैकछुविवेका। ह्वैहैंचारिवरणमिलिएका॥ ४०॥

दोहा—पकयककौड़ीकेलिये, तजिताजिपरमसनेह। मारिमारिमरिमरिकुमति, सबजैहैंयमगेह॥ ४१॥

मातापितावृद्धजबह्वैहैं। निनदिनिकागिदहैंतेहैं॥ सुतअरुसुतबिनिशठडारिहैं। जातिनातकोनेकुनडरिहैं॥
दोनादिकन्यापानकराई। कहिहैंपरम्परगचलिआई॥ शिश्नउदरहितचहुँदिशिधैहैं। यदिनिधिपिसिगगीजपिरसैंगे।
जगतगुरुत्रिलोककेस्वामी। सबजीवनकेअंतरयामी॥जेहिपदमहँविधिशिवदिगपाला। नायनायशिरहोतनिराला

ऐसेयदुवरकोकलिमाहीं । कबहूँमनुजपूजिहनाहीं ॥ करिहंऔरअनेकपखंडा । जातेह्वैहंशुभमतिखंड़ा॥४२
नृपजोयदुनंदनकोनामा । लेतमरतमहँकोउमतिधामा ॥ अथवाजबकहुँलहैकलेशा । कहतरामहरिकृष्णनरे
गिरतपरतछटिलतमहँजई । हरयेनमऐसेहुकहिदेई ॥ सोसबजगबंधनतेछूटी । लेतविकुंठवाससुखलूटी ॥

दोहा–ऐसोदीनदयालप्रभु, जोनदेवकीलाल । ताकोनहिंभजिहैंकुमति, यहिकरालकलिकाल ॥ ४४

कलिकेजेतेदोषहैं, मनुजनकेदुखदानी । तेसबाहियमेंबैठिकै, नाशतशारँगपानी ॥ ४५ ॥

स०-कृष्णकथाजोसुनैचितलायत्योंकृष्णकोनामसदासुखगावै।कृष्णकोध्यावतकृष्णकोपूजतकृष्णकोसादरशी
ताकेहियेचलिकृष्णबसैंहठिकृष्णहिसोंअघओघजरावै । कृष्णहिभक्तिभरैरघुराजसोकृष्णहिआपनेधामपठावै
जैसेहिरण्यमेंधातुअनेकहिरण्यकेरंगाहिदेतनशाई । ताहिज्योंपावकधातुजराइकैदेताहिरण्यकोरंगबनाई ॥
तैसेहिश्रीरघुराजहियेयदुराजदयाभरिकैद्रुतआई । दासनकेदुरितानिकोदाहिदुनीदुगुनीदुतिदेतदेखाई ॥ ४

घनाक्षरी–अतिश्रमकरिकैरिविद्याबहुपढिलीबोवनमेंनिवासकैकेमहातपठानिबो ।
मनकोअचलकीबोसंध्याआदिअर्घ्यदीबोतीरिथनहाइबोहूँव्रतविधिजानिबो ॥
विविधप्रकारनकेमंत्रनकोजपिलीबोदानदीबोऔरविषयसुखकोगलानिबो ॥ ४८ ॥
रघुराजयेतेसबैतेसेनापवित्रकारीजैसोहैपवित्रकारीहरिहियआनिबो ॥

दोहा–तातेकुरुमहराजतुम, कुरुकेसबउरमाहीं । मरतजाहिधावतमनुज, माधवपुरकोजाहि ॥ ४९ ॥

मरतसमयजोमनुजकोउ, रामकृष्णलियध्याय । ताकोदीनदयालप्रभु, लेतआशुअपनाय ॥ ५

सवैया–याकलिकालकरालमहाखलव्यालसोजीवनभक्षणहारी । पैकुरुनाथसुनोयहमेंगुणएकअपूरुबलेहुनिह
श्रीरघुराजनयोगहुजापनदानव्रतौजेलियेकछुधारी।जीवतरेभवसागरकोमुखमेंयुगआखरकृष्णउचारी। ।

घनाक्षरी–बरपअनेकजौनमनकोअचलकीन्हेंसतयुगहोतरह्योहरिपदध्यायेते ।
त्रेतायुगजौनयागकीन्हेंफलहोतरह्योजोरिजोरिधनहुअसंख्यनलगायेते ॥
कहैरघुराजजौनद्वापरमेंपूजेहरिहोतफलनेमजपव्रतकेबढायेते ।
तौनकलिकालमाहिंबिनाहिप्रयासहोतयादवेंद्रराघवेंद्रनामगुणगायेते ॥ ५२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मजसिद्धिश्री
महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–परमाणुहिजेहिआदिहै, द्विपरार्धहैअंत । कहिआयोसोकालमें, तुमसोंसबमतिमंत ॥

औरहुभाष्योयुगनप्रमाना । अबसुनुकल्पहुप्रलैविधाना॥१॥सहसबारजबहीयुगचारी।बीतहिसोइविधिदिवसउ
एककल्पकहवावतसोई । भोगचौदहौमनुकोहोई ॥ २ ॥ सोइकल्पकेअंतहिमाहीं । ब्रह्माकोनिशिहोतिसदा
जितनेयुगकोविधिदिनजानो।तितनेयुगकोविधिनिशिमानो॥ब्रह्माकेदिनअंतहिमाहीं।प्रलयहोतितिहुँलोकनका
यहनैमित्तिकप्रलयविचारा । जामेंसोवतहैकरतारा ॥ शेषसेजनारायणसोवत । थिगरेजगकोनिजतनगोवत ॥
जबब्रह्माकेसोइदिनराती । बीतहिशतवर्षहियहिभाँती ॥ प्राकृतप्रलयहोतितेहिकाला । ताकोसुनहुप्रकारभुवा
सातहुप्रकृतिलीनह्वैजाहीं।अपनेअपनेकारणमाहीं॥५॥यहब्रह्माण्डप्रकृतिकोकारज।लीनहोतप्रकृतिहिमहँआरज

दोहा–धरणीमहँसौवर्षलौं, मेघवर्षिहैनाहीं । ह्वैहतबपरजादुखी, अन्नविनामहिमाहीं ॥

क्षुधाविवशहनिकैयकयकन । करिलैहैंक्रमसोंसबभक्षन॥७॥यहिविधिह्वैहैप्रजाविनाशा॥करिहंद्वादशभानुप्रका

काकेमुखमेंजीहहे, जोहरिचरितअपार । वरणिसकलविधिताहिको, केहुविधिपवैपार ॥ ३९ ॥
कवित्तरूपघनाक्षरी—विविधिकठोरघोरदुखकीदवानलसोजरतजेपापीपूरप्राणीअतिविलखात ।
तेऊजोअपारभवपारावारपारजानविनहीप्रयासचाहेहियहठिहरपात ॥
भनेरघुराजदोऊहाथनउठाइतिन्हेंओरनाउपाइमेरेहगनमेंदरशात ॥
नंदलाललीलाकथारसकीजंहाँजपाइकेतेगयेकेतेजेहेंकेतेअवैचलेजात ॥ ४० ॥
दोहा—यहपुराणशुभसंहिता, नामभागवतजासु । नारायणप्रथमहिकियो, नारदसोंपरकासु ॥
नारदमुनिममजनकसों, व्यासदेवजेहिनाम । कह्योभागवतग्रंथयह, ज्ञानभक्तिकोधाम ॥ ४१ ॥
सोकहिकैमोहिंपरकृपा, व्यासदेवभगवान । दियोपढाइसुझाइसब, यहभागवतपुरान ॥ ४२ ॥
कुरुपतिअबयहकालमें, नैमिषवनमेंबैठि । शौनकआदिकमुनिसबै, सुखसागरमेंपैठि ॥
इनहींसूतसुजानको, पौराणिकैबनाइ । सुनिहैंयहभागवतको, पूँछिप्रीतिदरशाइ ॥ ४३ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—यहपुराणमेंसुनहुनृप, हरिपरत्वसबठौर । जेहिहरिकोपरसादविधि, शंकरकोपकठौर ॥ १ ॥
अवशिमरेंगेहमयहिकाला । यहपशुबुद्धिछोडुमहिपाला ॥ कबहुँभयोनहिंजन्मतुम्हारा।कबहुँनाशनहिंअहैउदा
तनभरिजन्मतमरतरहतहें । जननमरणनहिंजीवगहतहें ॥२॥ ह्वैउत्पन्नपूतअरुनाती । अबतुमनहिंह्वैहोअरु
जैसेबीजबीजतेअंकुर । ह्वैहौतिमितुमनाहिंधमंधुर ॥ देहादिकतेभिन्नभुवाला । जानहुअपनेकोसबकाला ॥
जैसेपावकदारुहिमाहीं । दरशतहेंपैभिन्नसदाहीं ॥ ३ ॥ जैसेस्वप्नकह्योनिजशीशा । आत्मभिन्नह्वैलखतमही
तैसेभूपतिजागेहुमाहीं । निरखतजियतनभिन्नसदाहीं ॥ आत्माअजरअमरअविकारी।विषयविवशहोतोसंसारी।
घटाकाशजबघटफुटिजातो । तबवहशुद्धतहेंरहिजातो ॥ ऐसहिजीवहुनशेशरीरा । शुद्धसरूपरहतमतिधीरा ॥
दोहा—जीवहितनकेबंधको, मनहींकारणजान ॥ मनहींतेहैत्रिगुणतन, तनतेकर्मअमान ॥
सोमनहैमायाकोकारज । चारिहुतेसंसारहिआरज ॥ ६ ॥ तेलअगिनिपात्रहुअरुबाती । दीपतारितेंहैतमघाती
ऐसहितनमनकर्महुमाया । चारिहुतेसंसृतिनृपराया ॥ सतरजतमगुणतेतनहोई । ताहीमेंपुनिनाशहुसोई ॥
देहजन्मनहिंजन्मजीवको।मरेमरणनहिंज्ञानसीवको ॥ ७ ॥ आत्माहैनृपस्वयंप्रकासी । देहप्रकृतिपरज्ञानविभास
जिमिअकाशघटकेरअधारा।तिमितनकोजियजानउदारा।अपरिच्छिन्नस्वभावहितेजिय।निजसरूपमेंनहिंविकार
ऐसहिशास्त्ररीतितेराजा।भजौसकलविधितुमयदुराजा॥परमात्माहैआत्मअधारा।तेहिभजितरहुसिंधुसंसारा॥८॥
विप्रशापवशतक्षकनागा । तुमहिनजारिसकौबड़भागा ॥ अहेंमृत्युकेमृत्युमुरारी । तिनमेंनृपमतिलगीतिहारी
दोहा—तातेमृत्युहुतुमहिंनृप, कछुकरिसकिहैनाहिं । पंचरचितयहतनअहै, सोमिलिहैनिजमाहिं ॥ १० ॥
मेंहौंशुद्धसरूपअति, परमात्माकोदास । परमप्राप्यपरमातमा, यदुपतिरमानिवास ॥
यहिविधिअनुसंधानकरि, हरिपदचित्तलगाय । ईशभिन्नतुमजगतको, नहिंलखिहौनृपराय ॥ ११ ॥
चाटतरदपटविषवदन, कालसमानकराल । निजतनभक्षततक्षकहि, नहिंलखिहौभुवाल ॥ १२ ॥
हरिचरित्रयहभागवत, तुमकोदियोसुनाइ । ज्योंपूछ्योभाष्योंकहा, अबसुनिहौनृपराइ ॥ १३ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

दोहा-जरोवसनसमभूपतन, लहिअहिविपशिखिज्वाल । सबदेहिनकेदेखते, भयोभस्मतेहिकाल ॥
भस्मभयोजबभूपउदारा । मच्योचहूँकितहाहाकारा ॥ सुरनरविस्मितभयेअपारे । बजोव्योममहँविविधन
तहँअपसराऔरगंधर्वा । लगेबजावनगावनसर्वा ॥ बर्षेदेवसुमनसुखपागे।कुरुपतिकाहँसराहनलागे ॥ १४ ॥
सुवनपरीक्षितकारकरिपुजय।जाकोनामरह्योजनमेजय ॥ तक्षकभक्षितपितुसुनिसोई । तेहीसमयकरिकोपबड़
आशुहिमुनिवरसकलहँकारी।करनलग्योमखसर्पसँहारी ॥१६॥ कीन्हेविप्रहोमजेहिकाला।उठीकुंडतेपावकज्व
लागेगिरनभुजंगहजारन । करनलगेकरिघोरचिकारन ॥ पावकज्वाललगीतिनजारन । लागेजरनकरतफुफुका
होतविनाअहिकोजगदेखी।तक्षकवधआपनोपरेखी ॥ लुक्योशक्रकेशरणहिजाई । कह्योनाथमोहिंलेहुबचाई ॥

दोहा-कोटिनसर्पनकोजरत, इतैकुंडमहँदेखि । बोल्योजनमेजयद्विजन, नहिंतक्षककहँपेखि ॥
जरेअमितअहिपावकमाहीं।तक्षकअधमजरतकसनाहीं ॥ तबबोलेसिगरेमुनिराई।तक्षकछिप्यौइंद्रढिगजाई ॥ १
वासवआवनदेतनताको।रक्षणकियेकुलिशगहिवाको ॥तातेपरतनपावकमाहीं । भूपतिकहाकरैतेहिकाहीं ॥ १
तबबोल्योजनमेजयकोपी । तक्षकअहैमोरपितुलोपी ॥ तेहिरक्षतवासवबरियाई । तातेसोउममशत्रुमहाई ॥
तातेशक्रहुसाहितअहीशा ।होमहुपावकमाहिमुनीशा ॥ २० ॥ सुनिनृपवचनसबैमुनिराई । एकबारसबसुवाउठ
तक्षकसहितइंद्रकीस्वाहा।बोलतभेकरिकोपअथाहा॥२१॥विप्रवचनमुखकढतहिमाहीं । देवराजद्रुतकँप्योतहाँ
भयोचकितअतिशयतेहिकाला।गुन्योमरबअपनोसुरपाला॥रह्योबैठितेहिसमयविमाना।तामेंतक्षकरह्योलुकाना

दोहा-तक्षकयुतवासवतहाँ, तैसहिचढ्योविमान । देवलोकतेगिरतभो, जरनहितेतकृशान ॥
तक्षकसहितइंद्रतेहिकाले । नभतेगिरतआशुसुरपाले ॥ त्रिभुवनहोतविनावासवको । ऐसोजानिपर्‌योतहँस
असअनर्थलखिपरमउदारा।नृपहिबृहस्पतिवचनउचारा॥सुनियेंजनमेजयमहराजा।होतमहाअनुचितयहकाजा
तक्षककियोअमृतकरपाना । यहनहिंवधलायकमतिवाना ॥ करिकैतापरकृपामहाई । इंद्रहुकोनृपदेहुबचाई ॥
अजरअमरसिगरेसुरहोहीं।तिनपरहोहुतुमहुअबछोहीं ॥नातोहोतइंद्रबिनलोका।तातेउपजतअतिउरशोका ॥ २
जीवनमरणहुप्राणिनकेरो । कर्महिकेवशहोतघनेरो ॥ ईशअहैसबसुखदुखदाता । यामेंकोहुकोजोरनताता ॥२
चोरअग्निअहिगाजनिपाता।क्षुधातृषाअरुरोगअघाता॥इनतेमरहिंजेपुरुषअपारा।सोसबनिजकर्महिअनुसारा ॥२
तातेयज्ञबंदअबकीजे । जनमेजयजगमेंयशलीजे ॥

दोहा-कोटिनविषधरवापुरे, जरेविनाअपराध । जोजसकर्महिकरततस, सुखदुखलहतअगाध ॥
सुनतबृहस्पतिकेवचन, जनमेजयलियमानि । सर्पविनाशीयज्ञको, कियोबंदअघजानि ॥ २७ ॥

सूत उवाच ।

सुरगुरुकोबहुभाँतिसों, करिकेभूपबखान । वासवकोअरुतक्षके, दियोप्राणकोदान ॥ २८ ॥
शौनकादिसिगरेसुनहु, यहमायाहरिकेरि । यामेंमोहितहोतसब, फेरिफिरतितफेरि ॥ २९ ॥
गुनेजोआछीविधिमनमाहीं । तौमायाईशहिमहिमाहीं ॥ जोमायापखंडकीकरनी । जनकोमोहफाँसविस्तरनी
अरुसंकल्पविकल्पविवादा । हनइंशमेंमनमर्यादा ॥ ३० ॥ अहैनप्राकृततनप्रभुकेरो । प्राकृतकर्महिनाहिंनियेरो
सुखदुखहैप्रभुमेंकछुनाहीं । यहिविधिजानियदुवरकाहीं ॥ तौत्रिगुणकेमशजोजीवा । सोपटउरमिनत्यागिअतीवा
पावतदेयदुपतिपदकाहीं।पुनिआवतसंसारहिनाहीं।विष्णवपदसोइपरमकहावत।नेतिनेतिजेहिश्रुतिगणगावत३१-३
जेअनन्यप्रेमेदारदासा । तैसबछोडिजगतकीआसा ॥ कृष्णरूपहियेछकेरहतहैं । भानदहकोनाहिंगहतहैं ॥
अहंकारममकारविहीने । देहगेहमेंनेहनकीने ॥ विष्णुपरमपदहेद्विजजोई । जाततहाँवैष्णवजनसोई ॥ ३३ ॥

दोहा-जोकोउनिंदाकरै, सोसहिलेहिसुजान । यहअनित्यतनपायकै, तजैबैरअपमान ॥ ३४ ॥
जपजपव्यासकृष्णभगवाना।उद्धतशुद्धसुबुद्धिनिधाना॥ जासुपदुमपदकोधरिध्याना।मैंपढिलियभागवतपुराना॥३
सुनतसूतकेवचनसुहावन । बोलेशौनकमुनिअतिपावन ॥

पढ्योजोमोसोंसोंद्रुतत्यागी।ममआश्रमतेभागुअभागी ॥ ...
यजुर्वेदगनजोपढिलीन्ह्यों । ताकोतुरतवमनकरिदीन्ह्यों ॥

दोहा-याज्ञवल्क्यगमनतभये, तवतहँकेसवविप्र ॥ ६३ ॥ तीतरपक्षीह्वैद्रुतै, लियोवेदचुनिक्षिप्र ॥
तैत्तिरीयशाखाभई, यजुर्वेदरमणीय ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ याज्ञवल्क्यपुनिजायकै, ...
गुरुवहुजोजानतनहीं, सोऊपढ़नकरिआस । आराधनकियोभानुको, करिकैपरमप्रयास ॥ ६
याज्ञवल्क्ययहमंत्रपढि, रविचरणनचितदीन । गायत्रीसममंत्रगुनि, मैंभापानहिंकीन ॥

याज्ञवल्क्य उवाच ।

ॐनमो भगवते आदित्यायाखिलजगतामात्मस्वरूपेण कालस्वरूपेण चतुर्विधभूतनिकायानां ... पर्यंतानामन्तर्हृदयेषु बहिरपि चाकाश इवोपाधिनाऽव्यवधीयमानो भगवानेक एव ... संवत्सरगणेनादानविसर्गाभ्यामिमां लोकयात्रामनुवहति ॥ ६७ ॥ यदु ह वाव विबुधर्षभ ... सवनमहरहराम्नायविधिनोपतिष्ठमानानामखिलदुरितवृजिनबीजावभर्जन भगवतः ... य इह वाव स्थिरचरनिकराणां निजनिकेतनानां मनइंद्रियासुरगणाननात्मनः स्वयमात्मान्तर्यामी ... य एवेमं लोकमतिकरालवदनांधकारसंज्ञाजगरग्रहगिलितं मृतकमिव विचेतनमवलोक्यानुकंपया ... ईक्षयेवोत्थाप्याहरहरनुसवनं श्रेयसि स्वधर्माख्यात्मावस्थाने प्रवर्त्तयत्यवनिपतिरिवासाधूनां ... परित आशापालैस्तत्र तत्र कमलकोशांजलिभिरुपहृताहंणः ॥ ७१ ॥ अथ ह भगवंस्तव ... त्रिभुवनगुरुभिरभिवंदितमहमयातयामयजुःकाम उपसरामीति ॥ ७२ ॥

सूत उवाच ।

दोहा-सूर्य्यमंत्रयेपढ़ैं, रविसन्मुखहीनित्त । जपैजपावैजोकोऊ, सविधिसप्रीतिसुचित्त ॥
ताकोभानुप्रसन्नह्वै, करहिंकामनापूर । ताकेतनतेहोतहैं, महापापसवदूर ॥

यहिविधियाज्ञवल्क्यमतिमानू । आराधनकीन्ह्योंजवभानू॥तववाजीकोवपुरविधरिकै। ...
याज्ञवल्क्यकहदीन्ह्योंवेदा । गुरुअपमानजनितहरिखेदा॥यजुर्वेदहैजाकोनामा । ...
यजुर्वेदकहयाज्ञवल्क्यमुनि । कियोपंचदशशाखातिनपुनि ॥ अश्वकेशतेनिकस्योजोई । ...
कण्वऔरमाध्यंदिनआदिक । मुनिकियग्रहणधर्ममर्यादिक॥७४॥जैमिनिके ...
जैमिनिनिजसुतनातिहुकाहीं।दियपढायसंहितनतहहीं॥७५जैमिनिशिष्यसुकर्माकोई।सहसशाख ...
शिष्यसुकर्माकेमतिधामा । हिरननामपौष्यंजीनामा ॥ एकअवंतीपुरकोवासी । जानतरह्योब्रह्मसुखरासी ॥ ७६

दोहा-तीनसुकर्माशिष्ययै, पढ्योसहस्त्रहुशाख । तासुशिष्यशतपंचभे, चहीजगततिनशाख ॥ ७७ ॥
आधेब्राह्मणकरतभे, उत्तरदिशानिवास । अरुआधेनिवसतभये, ब्राह्मणपूरुवआस ॥ ७८ ॥
लौगाक्षिअरुकुशिहू, मांगलिकुल्यकुसीद । शिष्यपांचपौष्यंजिके, करिकैगुरुहिंप्रसीद ॥
सामवेदशाखानिको, तेद्विजपरमप्रवीन । विस्तारनहितविश्वमें, यकयकशतसवकीन ॥ ७९ ॥
हिरणनाभकेशिष्यकृत, सोनिजशिष्यनकाहिं । दीन्हींचौविससंहिता, अतिहिंआनँदमाहिं ॥ ८० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे षष्टस्तरंगः ॥ ६ ॥

सूत उवाच ।

दोहा-फोरिलअथर्वणवेदके, ज्ञातासुमतिसुमंत । तिनकोशिष्यकबन्धयक, ताके ... ॥

ताहिअथर्वणदियोसंहिता । जोसबमुनिकीमनहिरंजिता ॥ भयेकबंधशिष्यपुनिदोई ।
उभैविभागसंहिताकरिकै।दियोपढायतिनहिंमुदभरिकै ॥१॥ ... तिनको ...
सुनकशिष्यबभ्रूसिंधवायन।यकयकपढेसंहिताचायन ॥ सैंधवादिकेशिष्यउदारा । सावर्ण्यादिकभयेअप
औरअथर्ववेदआचारज । होतभयेहैंशौनकआरज ॥ कश्यपशांतनुछत्रहुकल्पा । ...
येअथर्वआचारजजानो । अबपुरानआचार्यबखानो ॥ ४ ॥ ...
दोहा–अक्रितव्रनहारीतये, पटपुरानआचार्य्य । व्यासशिष्यजेममपिता, तिनमुखसोहेआर्य्य ॥
येपटमुनिहैंगुरूहमारे । इनतेपढ्योपुराणअपारे ॥ रामशिष्यअक्रितव्रनजोई । अरुकश्यपसावरणिहुसोई
व्यासशिष्यममपितावदनते । येसबपढेपुराणसुमनते ॥ ७॥चारिअहैंद्विजमूलपुराना । ...
वरणहुँवेदशास्त्रअनुसारा । जिमिऋषिगणसबकियेउचारा॥८॥सर्गविसर्गवृत्तिअरुरक्षा । ...
राजवंशवंशनकेकर्मा । अरुसंस्थाअरुहेतसुधर्मा ॥ औरअपाश्रयश्रीभगवाना । येदशलक्षणमहापुराना ॥
कोईपंचलक्षनहिंभाखैं । महत्अल्पकोभेदाहिराखैं ॥ १० ॥ विषमहोतजबहींगुणतीना । तातेमहत्तत्व
तातेहोतत्रिविधहंकारा । तातेइंद्रियआदिअपारा ॥ ११ ॥ यहिविधिउतपतिजोमेंगाई । ...
दोहा–औरचराचरकीसबै, उतपतिअहैविसर्ग । जिमिबीजहितेहोततरु, पुनिबीजहिकोवर्ग ॥ १२ ॥
द्विजजगमेंचरप्राणिनकाहीं । जीवनचरअचरहुजगमाँहीं ॥ जाहिजौनवरजितनहिंहोई । ताकी ...
यहीवृत्तिलक्षणअनुमानो । अबरक्षालक्षणहुबखानो ॥ १३ ॥ हरिलैविविधभाँतिअवतारा । ...
रक्षालक्षणयहीविचारो । अबमन्वंतरकरहुँउचारो ॥ मनुमनुसुतसुरसुरपतिजेते । हरिअंशावतारऋपिकेते ॥
शौनकयेपट्जामेंरहहीं । ताकोमन्वंतरकविकहहीं ॥ १५॥मनुसुतशुद्धवंशविस्तारा । ...
तेराजनकेचरितअपारा । वंशचरितसोइअहैउदारा ॥ १६ ॥ चारिप्रकारप्रलयजेगाई । सोईसंस्थाहैमुनिराई
भोगकिहेजेपुण्यहुपापा । वंचततेईकरतसंतापा ॥ सोईफेरिजगतमहँल्यावै । लक्षणहेतसोईकहवावै ॥
नामरूपकरनाहिविभागा । जीवहिकोउभापहिबड़भागा ॥ १८ ॥
दोहा–जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिहू, जीवअवस्थातीन । तामेंहैपरमातमा, पैतामेंवहिलीन ॥
यहअन्वयव्यतिरेककहावै । यहगुनजियहरिआश्रैपावै ॥ सोईअपाश्रैलक्षणजानो । तामेंमैंदृष्टांतबखानो ॥
जसमृत्तिकाकेरजगमाँहीं । होतरहतहैवस्तुसदाँहीं ॥ पैमृत्तिकारहतिहैसोई । बिचबिचबहुतअवस्थाहोई ॥
तिमिपरमातमआतममाहीं । शौनकयद्यपिरहतसदाहीं॥ होतअवस्थाआतमकेरी । नहिंपरमात्माकेरनिवेरी॥
योगअभ्यासहितेद्विजराई । मनकीतीनिहुवृत्तिविहाई ॥ विषयवासनाकोजियत्यागै । ...
तबसंसारछूटितेहिंजातो । पुनिताकोनहिंदुखदरशातो ॥२१॥येदशलक्षणहैंपुराणके । ... निधानज्ञा
शौनकअहैपुराणअठारा । तिनकेनामहिकरौंउचारा ॥ २२ ॥ ब्रह्मऔरहैपद्मपुराना । ...
दोहा–शौनकलिंगपुराणहू, औरहुगरुडपुरान । नारदअगिनपुराणहू, अरुअस्कंदमहान ॥ २३ ॥
औरभविष्यपुराणहू, औरब्रह्मवैवर्त्त । मार्कंडेयपुराणहू, अरुवामनअघहर्त्त ॥
औवाराहपुराणहू, औरहुमहापुरान । कूर्मऔरब्रह्मांडहू, श्रीभागवतमहान ॥ २४ ॥
अष्टादशहिपुराणये, अरुवेदनकीशाख । शिष्यनशिष्यप्रशिष्यहू, कह्योसहितअभिलाख ॥
वेदनऔरपुराणको, वरण्योजौनविभाग । ताहिसुनतजनकोबढ़त, ब्रह्मतेजबड़भाग ॥ २५ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

दोहा-सुनतसूतकेवचनअस, शौनकतहँसुखपाइ । बोलतभेमधुरीगिरा, अतिशयप्रीतिबढ़ाइ ॥

शौनक उवाच ।

साधुसूततुमबुद्धिविशाला । जियतरहोतुधवरबहुकाला ॥ भ्रमतजेजीवसिंधुसंसारे । तिनकेपारलगावनहा
यहशंकाहमरेमनआई । सूतताहितुमदेहुमिटाई ॥१॥ परमचिरायुपजनजगमाहीं ।
जामेंडूबिजातसंसारा । तौनप्रलयमहँलाग्योपारा ॥ २ ॥ सोयहभृगुकुलकोपरधाना ।
अवैप्रलयभइकौनिहुनाहीं । जामेंलोकलीनह्वेजाहीं ॥ कैसेप्रलयसलिलमहँसोई । भ्रमतरह्योपैरतदुखमोई
किमिवटपत्रमाहँमुनिराई । सोवतलख्योबालसुखदाई ॥ ४ ॥ यहसंशयहैसूतहमारे । मेटहुतुमहौबुद्धिउद
जानेतिहरेसकलपुराना । औरसबैजेयोगविधाना ॥ सुनतसूतशौनककेबैना । बोलेभरिउरमेंअतिचैना ॥

सूत उवाच ।

दोहा-कीन्ह्योप्रश्नमहापियह, जगभ्रमनाशनहार । कृष्णकथाजहँहोतितहँ, कलिहोतोजरिछार ॥
मार्कंडेयमुनीशसुहावन । विप्रसंसकारहिलहिपावन ॥ पढ्योपितासोंवेदहुचारी । भयोमहातपधर्महिधारि
ब्रह्मचर्यव्रतगह्योअखंडल ।धारयोवलकलदंडकमंडल ॥ शीशजटाअरुशांतसरूप।अरुमेखलाजनेउअनूप
मृगचर्महुकमलाक्षहिमाला । कटिसूत्रहुअरुकुशाविशाला ॥ येसबनेमवृद्धिकेहेतू ।
अग्निअर्कगुरुविप्रनमाहीं । हरिकोपूजतरह्योसदाहीं ॥ दोउसंध्यनमहँसोमतिमाना।धारतरह्योधीरहरिध्यान
सांझप्रातभिक्षाकोमाँगी।देतरह्योगुरुकोअनुरागी ॥ गुरुसन्मुखबहुवचननभाष्यो ।
भोजनकरतरह्योयकवारा।जोनकहैगुरुतौनअहारा ॥१०॥

दोहा-बीतेलाखनबरसतेहि, लियोमृत्युकोजीति । जोनमृत्युकेभीतिते, कोउनहिंहोतअभीति ॥
ब्रह्माभृगुदक्षहुसनकादी।अरुशंकरविज्ञानमर्यादी।।अरुसुरनरपितरहुसबजेते।मुनितपलखिविस्मितभेतेते ।
यहिविधिब्रह्मचर्यव्रतधारी।मार्कंडेयकियोतपभारी ॥धरयोध्यानयदुपतिकोपूरो।कियकलेशहियतेसबदूरो
यहिविधिहरिपदमनहिलगाये।महायोगकरिअतिसुखछाये ॥ बीतेपटमन्वंतरताको ।
कियोविघ्नतपकरनविचारा।मान्योमुनिपदलेतहमारा॥१४
तिनकोआशुहिनिकटबुलाई । ऐसोशासनदियोसुनाई ॥ मार्कंडेयकरततपभारी । विघ्नकरहुतुमतहाँसिधारि
यहिविधितिनकोतहाँपठायो । फेरिलोभअरुमदहिबोलायो ॥ तिनहूँकोशासनदियसोई ।

दोहा-लहेपाकशासनहिको, शासनतेसुखपाय ॥ १६ ॥ गेतपकेनाशनहिते, जहँआसनमुनिराय ।
शैलहिमालयउत्तरपापा।चैल्योमुनिकरिहरिअभिलापा ॥ नदीपुष्पभद्राजहँसोहै । चित्रानामशिलामनमोहै
परमपुण्यआश्रमसुखदाई । प्रगटीतहँवसंतऋतुजाई ॥ रहेविलसिबनबेलिविताना । बोलहिंवरविहंगविधिन
अतिमंजुलतहँतालतलाई।निर्मलसलिलसकलसुखदाई॥१८॥गुंजहिमत्तभँवरचहुँ
कूजहिंकोकिलमत्तसुहावन।नाचहिमोरमंजुमनभावन॥सारसहंसऔरचकवाका।सोहिरहेतिमिविविधबलाका
हिमनिर्झरलैनाशकपीरा । बहतमंदतहँमलयसमीरा ॥ सुमनसुमनकोपरसतसोई । तातेपरमसुगंधितहोई ।
उपजावतमनसिजतेहिकाला।कोनहोततेहिकालविहाला२०

दोहा-पल्लवपल्लमेंतहाँ, गईचंद्रकरछाय । फूलिटटीसिगरीलता, संध्यासमयसुहाय ॥ २१ ॥ २२ ॥
तहँगंधर्वहुगावहिरागे । बाजेविविधिबजावनलागे ॥ मनसिजकुसुमधनुपधारिधायो । मार्कंडेयसमीपहिआयो
फारिकेहोमतहाँमुनिराई । धारेरह्योध्यानयदुराई ॥ रह्योननमूँदनहिकाला । मानहुमूर्त्तिवंताशिखिज्वाला ॥
जसमार्कंडेयहिमुनिकाहीं।वासवकिंकरलखेतहाँहीं ॥२३॥मुनिआगेशौनकमतिमाना । नाचनलगीअप्सरा
गानकरनलागीतेहिठोरा । मच्योमृदंगमनोहरशोरा ॥ बाजेपणवऔरबहुबीना । सजेपंचशरकामप्रवीना ॥
यहिविधितहँवसंतमनभावन।मुनिमानसकोलगेकँपावन॥लोभऔरमदमुनिमनजाई।मुनिमनलेनचहेअपनाई

पुंजिकथलीअपसराजोई । आयगईसन्मुखमहँसोई ॥ खेलनलागींगेंदतहाँहीं । डोलतकुचडोलतचहुँवाहीं ॥

दोहा—खसतकेशतेसुमनबहु, लचतलंकलचकील । करतिकटाक्षनसांकटा, चढ़ीमत्तमदपील ॥ २६

कंदुकहेतधरणिमहँधावत।चंचलअंचलपवनउड़ावत ॥२७॥ [illegible] संध

भेनिष्फलमनसिजकेबाना।मुनिहिनभयोतनकतनभाना॥जैसेहरिविमुखीजनकेरे।होतविफलसंकलपघनेरे ॥

यहिविधिकरतविघ्नतेहिकाला।मुनितननिकसीपावकज्वाला ॥ [illegible]

जिमिबालकसोवतअहिकाहीं।देतजगायभागिपुनिजाहीं२९॥ [illegible]

नहिंविकारभोमुनिमनमाहीं।यहअचरजनहिंसंतनकाहीं ॥३०॥ [illegible]

मदनहिलखिविनतेजसुरेशा । मनमेंमान्योअतिअंदेशा ॥ सुनतमार्कंडेयप्रभाऊ । बारबारडरप्योसुरराऊ ॥

दोहा—मुनिध्यायेयहिभाँतिजब, करितपाचित्तलगाय । करनकृपाप्रगटेतहाँ, नरनारायणआय ॥ ३२

कवित्त—लसतसरूपएककेरोनिशिभूपकैसो, एककोसरूपत्योंअनूपघनश्यामहै ।
वारिजविलोचनविमोचनअखिलताप, चारिबाहुराजतमृगाजिनललामहै ॥
रघुराजकरमेंपवित्रहूँविचित्रराजै, यज्ञउपवीतभ्राजैअतिअभिरामहै ।
दंडऔकमंडलअखंडलउदंडआभ, मेदिनिकेमंडलकोमंडलमुदामहै ॥
ऊर्ध्वपुंड्रतिलकविराजतविशालभाल, तैसेसबकालउरपदुमाक्षमालहै ।
करमेंरसालकुशसदाधर्मपालप्रभु, असुरकरालनकोकालसोकरालहै ॥
तनछविभाललसेदामिनिकेजालहीसो, कंजपदलालमुनिमानसमरालहै ।
करतउतालरघुराजकोनिहालदेव, वृंदपैदयालयेहींदेवकीकोलालहै ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

दोहा—नरनारायणकोनिरखि, मुनिलहिआनँदधाम । सादरधरणीमेंकियो, दंडसरिसपरणाम ॥ ३५ ॥
गन्योजन्मआपनोसफल, गयोमनोरथपूरी । पुलकिततनलोचनसजल, भयोदुसहदुखदूरी ॥
सक्योचितैनहिंप्रेमवश, पुनिउठिकैकरजोरि । जयहरिजयहरिकरतभो, बारहिबारनिहोरि ॥ ३६ ॥
गदगदगरअनुरागअति, मनहुँलेतउरलाय । पुनिधीरजधरिनाथके, चरणधोयशिरनाय ॥ ३७ ॥
बैठायेप्रभुदुहुनकहँ, सुंदरआसनमाहीं । सुमनमालधूपादिते, पूजनकियोतहाँहीं ॥ ३८ ॥
जबबैठेप्रभुदोउसुखित, तबमुनिपदशिरनाय । लग्योकरनअस्तुतितहाँ, अनुरागहिउमँगाय ॥

मार्कंडेय उवाच ।

छंद हरिगीतिका—तुवप्रेरणातेप्राणचलतेब्रह्मशिवसुरआदिके । पुनिवचनइंद्रियमनहुचलतेआपुकृतमरयादके
जेरावरेपदभजतनितहींमित्रहौतिनकेसही । केहिभाँतितुम्हरोकरहुँवर्णनकहनकीकछुगतिनहीं ॥ ४०
यहरूपयुगतिहरोसुहावनजगतमंगलहेतहै । दलितापत्रैबाँधतरहतहठिसदामुक्तिहिनेतहै ॥
प्रभुधर्मकीमर्यादराखनलेहुबहुअवतारहै । यहजगतरचिपुनिपालिनिजमहँकरहुपुनिसंहारहै ॥ ४१ ॥
जिमिविरचिमकरीजालतामेंआपहीबहुखेलती । पुनिऐंचिंजालासकलसोईआपनेउरमेलती ॥
हेभुवनरक्षकजगतिनेतायुगलपदअरविंदको । हेएकनिःश्चलवाससुखथलमोरमनहिमिलिंदको ॥
तुवपदकमलजेभजतनिततिनकेनमनमलरहतहै । सोइपदलहनकेहेतजगयहरीतिमुनिगणगहतहै ॥
कोउकरहिवंदनप्रणतकोउपूजनकरेकोउनित्तही । कोउसुनहिगाथारटहिनामहिध्यानधारहिचित्तही ॥ ४२
तुवचरणपंकजछोड़िजियहिनदूसरोकल्याणहै । तुवचरणपंकजभजतजोसोजगअभीतअमानहै ॥
द्विपरार्धआयुर्दायजाकीऐसेहूकरतारजो । तुवभृकुटिभंगहिडरतसोकहवातयहसंसारजो ॥
तुवसत्तिहैसंकल्पगुरुकेगुरूतुवपदकंजको । तजितुच्छतनअभिमानभजतेहमहुँमुनिमनरंजको ॥ ४३ ॥

तुवपदकमलजोभजतप्राणीताहिकछुदुर्लभनहीं । तु११८९
उत्पत्तिपालनसंहरनहिततीनिमूरतिधारते । शुधसत्त्वमूरतितेसदाप्रभुमोक्षमोदपसारते ॥
प्रभुराजसीअरुतामसीभजिपुरुषमोहितहोतहै । येहितेसुमतिकेहियेसात्त्विकरूपसदहिउदोतहै ॥ ४५
तेहिकोपुरुषसवभक्तभापताहिभजिभैतजतहैं । संसारसागरकोउतरिवैकुंठपुरकोव्रजतहैं ॥ ४६ ॥
जयकृष्णजयभगवानभूमाविश्वगुरुजगदीशजै । परदेवनरनारायणौजयहंसकुशस्थलीशजै ॥
जयसत्यवाणीनिगमप्रभुजयअखिलधर्मअधारहै । नहिंगूढ़जानतजननकेहियद्यपिवासतुम्हारहै ॥
मायातिहारीकियोमोहितसकलयहसंसारहै । सोइजानतोजोतुवकृपातेकरतवेदविचारहै ॥ ४८ ॥
तिहरोसरूपसुभावसुंदरकरतवेदप्रकाशहै । तुम्हरोप्रभावविरंचिशंकरआदिकननहिंभासहै ॥
बहुशास्त्रतुमकोकहतबहुविधिपैनपावतपारहै । हेपुरुषबोधअगाधतुमहिप्रणाममबहुवारहै ॥ ४९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

सूत उवाच ।

दोहा-यहिविधिजबअस्तुतिकियो, मार्कंडेयसुजान । तबनारायणनरसहित, बोलेकृपानिधान ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

हेब्रह्मर्षिवर्य्यमतिधामा । भयेसिद्धकरिभक्तिअकामा ॥ संयमतपस्वाध्यायतिहारो । सफलआजुह्वैगयोउदारो ॥
मनवांछितमाँगहुवरदाना । हमवरदानिनमाहँप्रधाना ॥ सुनिनरनारायणकीयहबानी । बोलेमार्कंडेयविज्ञानी ॥

मार्कंडेय उवाच ।

देवदेवअच्युतगिरिधारी । सबदासनकेआरतिहारी ॥ यहीबहुतवरमैंप्रभुपायो । जोनिजसुंदररूपदेखायो ॥ ४
करिकैयोगशंभुकरतारा । मनहिलखतपदकमलतिहारा ॥ खड़ेतेप्रभुप्रत्यक्षममआगे । औरकाहवरमाँगे ॥ ५ ॥
पैहतनीमनआशहमारी । मायादेखनचहौंतिहारी ॥ ब्रह्मादिकजेहिमायामाहीं । जगमेंमोहितरहहिंसदाहीं ॥ ६ ॥

सूत उवाच ।

यहिविधिसुनिमुनिकीवरवाणी । हँसितथास्तुकहिशारंगपाणी ॥
दोहा-लहिमुनितेपूजनसविधि, नरनारायणदोय । बदरीवनकहँगवनकिय, महामोदमनमोय ॥ ७ ॥
सुमिरतहरिकेवचनमुनीशा । ध्यानकरतउरमहँजगदीशा ॥ आश्रममाहँबस्योमुनिराई । मायाद[illegible]
इंदुअर्कअपअवनीपाहीं । अनिलअनलअकाशउरमाँहीं ॥ ८ ॥ इनमेंहरिकहँदेखनलाग्यो । कियमानस[illegible]
प्रमविवशभूलीकहुँपूजा । हरितजिदेखिपरयोनाहिंदूजा ॥ ९ ॥ नदीपुष्पभद्राकेतीरा । एक[illegible] ॥ १०
संध्याकरतरह्योतेहिकाला । चल्योपवनतहँमहाकराला ॥ ११ ॥ उदितभयेतहँद्वादशभानू । [illegible]
पुनिचहुँदिशिकरिशोरप्रचंडा । छायेनभपनघुमडिअखंडा ॥ मेघशोरअरुपवनहुशोरा । [illegible]
परनलगेतहँवज्रअपाता । होनलग्योपुनिजलहुनिपाता ॥ बुंदवितुंडशुंडसमगिरहीं । [illegible]
पुनिचहुँदिशितेसिंधुअपारा । कीन्ह्योंरिलाछोड़िकिरारा ॥ [illegible]
दोहा-बोरयोसिगरीधरणिको, मारुतवह्योप्रचंड । रटनलगीचहुँओरते, [illegible]
चकनकचकहिचहुँपाहीं । विचरनलगेभीतिदरशाहीं ॥ १२ ॥ बूड़िगयोनवखंडन[illegible] ॥ १५
जरतलपनेदुकाहेनिहारी । तबमुनिमनसंशयभेभारी ॥ पवनप्रसंगपायद्रि[illegible] ॥ १६ ॥

बारबारसागरअरराई । बरपहिंजलधरधारमहाई ॥ सातद्वीपह्वैगयेसमाना । नेकहुथलनहिंकहींदेखाना ॥ १
महिअकाशस्वर्गहुअरुतारा।बूड़िगयेदिशिविदिशअपारा ॥मार्कंडेयएकरहिगयऊ।प्रलयसलिलमहँबहतसो
खुलीजटातनमेंसुधिनाहीं।बहतभ्रमतजलमेंचहुँघाहीं॥१५॥नैननदेखिपरतकछुनाहीं।क्षुधिततृपितभोअति
कोउबड़मीनलीलिलेहिलेहीं।मलमारगपुनितेहितजिदेहीं ॥ लगततरंगलहतदुखभारी।कबहुँडरतबड़म
दोहा—कबहूँतेहिमारुतप्रबल, दूरहिंदेतउड़ाय । नहिंअकाशनहिंमहिदिशा, ताकोपरतदेखाय ॥
कबहूँमिलतमहाअँधियारा । ताहूकोपावतनहिंपारा ॥ १६ ॥ परिकैकहँभौरनमुनिराई । बूड़िगँभीरतीरमहँ
लहिजलजोरकहूँउतराता।कहुँपुनिलगततरंगनवाता ॥ धरततारहिकोउदंतनमीना । कोउपुनिछीनततालहिवल
लीलिलेतजबकोउतेहिकाहीं।तेहिकोउकहुँमेलतउरमाहीं।यहिविधिशोकलहतकोहुकाला।कहूँमोहपुनिलहतवि
कहुँदुखपावतहैमुनिराई।कहूँकहूँसुखलहतमहाई।कहूँमरतकहुँजियतमुनीसा।कहुँभयकहुँरोगहुविसवीसा ॥
यहिविधिसहसनलाखनवर्षा । बीतिगयेताकोविनहर्षा ॥ प्रलयपयोनिधिमहँमुनिराई । भ्रमतरह्योकहुँथाहनप
जोदेखनमाँग्योचितलाई।तेहिमायामहँगयोभुलाई ॥ २० ॥ बहतबहतऊँचीमहिमाहीं।निरख्योलघुवटवृक्षतह
दोहा—अतिकोमलपछवअमल, फलभलसकलसुहाय । ताकेउत्तरशाखमें, मुनिकोपरचोदेखाय ॥ २० ।
इककोमलदलपरइकबालक।सोवतहैनिजदुतितमघालक।अतिसुंदरतनमरकतश्यामा।पंकजसरिसवदनअभि
कम्बुकंठउन्नतअसकंधू।सुभगभ्रुकुटिनासाछविसिंधू।२१।कुंचितकुंतलकोमलकारे।लहिमुखपवनहलतसुकुम
कानलहरदाड़िमआकारा । शंखसरिसभीतरसुकुमारा ॥ विद्रुमसरिसअधरयुगसोहैं।हाँसछटानेशुकअरुणोहैं॥
वारिजकोशविलोचनकोरे।चितवतलेतमनहुँचितचोरे।चलदलदलदुतिउदरसुअमली।श्वासलेतकाँपतशुभ
नाभिशोभअतिशयगंभीरा।चारुअंगअंगुलिमतिधीरा।२४।दोउकरसोंगहिदक्षिणपाऊ।पियतअंगूठाबाल
असबालकजबदेखतभयऊ।मुनिअतिशयविस्मितह्वैगयऊ।दरशनकरतभयोश्रमदूरी।विकस्योहियपंकजसुख
दोहा—निमिपखोलिदेखनलग्यो, पुलकावलिसबअंग । लग्यौविचारनचित्तमें, कोबालकविनसंग ॥
पूछनहेतगयोशिशुपासा । लागीतबबालककीश्वासा।श्वासहिलगतगयोउरमाहीं।जिमिमुखमशकश्वासवशजाहि
बालकउदरमाहँमुनिराई । निरखतभयोजगतसमुदाई ॥ जैसेप्रलयपूर्वजगदेख्यो । बालउदरतैसहीपरेख्यो ॥ २
नभधरणीसागरशशितारा । द्वीपखंडदिशिशैलअपारा ॥ वनसरितापुरआकरग्रामा । व्रजआश्रमअरुदेशललाम
औरसुरासुरचारिहुवर्णा । आश्रमधर्मवेदजसवर्णा ॥ २८ ॥ पंचभूतअरुयुगअरुकाला । औरहुसबजगकरजंजाल
यहलखिकेअतिमोहितभयऊ।तेहिहिमशैलपहुँचिपुनिगयऊ।नदीपुहुपभद्राकहँदेख्यो।अपनोआश्रमसकल
निजआश्रमवासिनऋषिकाँहीं। देखतभोमुनिनाथतहाँहीं।तहाँवसनकोकियोविचारा।तबछोड्योपुनिश्वासकु
छोडतश्वासबाहिरेआयो । प्रलयसलिलमहँपुनिउतरायो ॥ २९ ॥ ३० ॥
दोहा—सोइवटसोइवटकेदलहि, सोइबालककहँदीख । बालकहुँविहँसतलख्यो, पैनदियोकछुसीख ॥ ३१ ॥
मार्कंडेयमुनीशतहँ, बालककाहँविलोकि । ध्यानधारिमिलवेहिते, चलेनिकटअतिशोकि ॥ ३२ ॥
तबह्वैगोतुरतैतहाँ, बालकअंतरधान । हरिविमुखिनकेहोतजिमि, व्यर्थमनोरथमहान ॥ ३३ ॥
मिट्योवटहुअरुमिटतभो, रह्योप्रलयजलजोय । वेख्योमुनिप्रथमहिसरिस, निजआश्रममहँसोय ॥ ३४
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि
श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

दोहा—मार्कंडेयमुनीशसों, हरिमायाकोदेखि । अतिविस्मितहरिशरणमें, जातभयोमुदलेखि ॥
रिपदकमलदियेनिजधारी । बोलतभोपुनिवचनपुकारी ॥ १ ॥

मार्कंडेय उवाच ।

माधवहरेमुकुंदमुरारी । निजदासनकेभवभयहारी ॥ हमशरणागतचरणतिहारे । हौंअधारप्रभुतुमहिंहमारे ॥ तुवमायामोहितसुरसर्वा । तुमहिंनजानतकरिअतिगर्वा ॥ २ ॥

सूत उवाच ।

हरिअस्तुतिहिकरतयहिभाँती । बस्योतहाँबितवतिदिनराती ॥ एकसमयतहँवृषभसँवारा । ...
गौरीसहितशंभुभगवाना । संगमाहिंगणसोहतनाना ॥ ३ ॥ मार्कंडेयहिआश्रमहैकै । ...
शंकरतौनकह्योकछुवैना । उमादयाकरिभरिजलनैना॥कहीमहेशहिअतिमृदुवानी । ...
अचलवैठहैमौनहिधारी । विगतवाताजिमिवारिधिवारी ॥ करतकठिनतपयहत्रिपुरारी । ...
मुनिकोजौनमनोरथहोई । पूरणकरहुनाथतुमसोई ॥

दोहा–दातासिगरीसिद्धिके, आपहिअहोमहेश । तुमजाकेढिगहैकढो, तेहिकिमिरहैकलेश ॥

कवित्त–विधिसुतताकोसुतताकोसुतताकोसुत, ताकोसुतताकोसुतताकोगुरुअवदात ।
ताकोपितुताकोपितुताकोपितुताकोपितु, ताकोबंधुताकीदिशाताकोनाथताकोतात ॥
ताकोरिपुताकोनाथताकोसुतताकीसुता, ताकोपतिताकोपितुताकोपितुलोकत्रात ।
ताकोपदजलजाकेशिरमेंसदाहीरहै, ताकीनारिजबअसहुलसिकेबोलीबात ॥
चातककोजीवनजोताकोपतिताकोमित्र, ताकोधनताकोरसताकोजोकरतपान ।
ताकोरिपुताकोवर्णजातेहोतताकोजौन, पूरोसहकारीताकेउरकोनिवासीजान ॥
ताकोवासताकोरिपुताकोरिपुताकीनिधि, ताकोरिपुताकोपितुताकोपितुअनुमान ।
ताकोजौनधरेतामेंसोवैजौनताकीनारि, ताकोबंधुजाकेशीशकह्योवैनमुसुकान ॥ ५ ॥

शंकर उवाच ।

कंजजातताकोजातताकोजातताकोजात, ताकोजातताकोजातताकोजातताकोजात ।
ताकोगुरुताकोगुरुताकोगुरुताकोगुरु, ताकोगुरुताकोगुरुताकोगुरुअवदात ॥
रघुराजसोईनामजाकोअहैताकोभ्रात, ताकोभ्रातताकोभ्रातताकोरिपुजोअपात ।
ताकोवासताहीमेंजोकरतसदानिवास, यामुनिलगायेमनताकेपदजलजात ॥

दोहा–याकेमनमेंकौनिहू, अहैउमानहिंआस । कृष्णप्रेममेंमगनयह, हैअनन्यहरिदास ॥ ६ ॥

पैहमयाकेनिकटसिधारी । करिहैंसंभाषणहेप्यारी ॥ साधुसमागमसोंजगमाहीं । उमालाभद्सरकछुनाहीं ॥ ७

सूत उवाच ।

असकहितहँशंकरभगवाना॥मुनिकेनिकटहिकियोपयाना॥सबविद्यासबदेहिनस्वामी।हैंजगकेप्रभुअंतरयामी ॥ ८
उमासहितशंकरआगमनू । जान्योनहिंमुनिप्रेमहिमगनू॥रहीनसुधिकछुतासुशरीरा।अचलवैठ्यावतयदुवीरा॥९
मुनिमनकीगतिजानिमहेशा॥कीरयोगदिउरकियोप्रवेशा ॥ देखिपरेमुनिध्यानहिमाहीं॥तडितपीतशिरजटासोहाहीं
तीननैनसुंदरदशवाहू । उन्नततनललाटनिशिनाहू ॥ ११ ॥ अंगदुकूलव्यामकोचर्मा । धनुशरशूलसद्गअरुचर्मा
डमरूअरुरुद्राक्षहिमाला । धारणकियेकुठारकपाला ॥ उदितप्रभाकरसरिसकाशा । नाशतअंधकारदशआशा

दोहा–शंभुरूपअसध्यानमें, देखिपरचोजबताहि । तबअतिशयविस्मितभयो, मुनिअपनेमनमाहि ॥

मैंतोपरचोंचतुर्भुजध्याना।यादशभुजकोआनदेखाना॥१२-१३ ...
सगणनिरखितहँशंकरकाहीं॥त्रिभुवनकोगुरुगुनिमनमाहीं॥शिरधरिकीन्ह्योशिवहिप्रणामा। ...
गणनसहिततहँगिरिशै । पाद्यअर्घ्यदियनावतशीशै ॥ देचंदनमालापहिराई । धूपदीपनैवेद्यादिखाई ॥ १५ ॥

बोल्योफेरिजोरियुगहाथा । कहाकरनलायककेनाथा ॥ तुमतोहौप्रभुपूरणकामा।तुमसोंपावतजगतअरामा।
जयशंकरशिवशांतस्वरूपा।त्रिगुणईशनाशकभवकूपा।।संतनकेतुमहौसुखदाता।संततअसंतनकारकघाता ॥

सूत उवाच।

यहिविधिअस्तुतिमुनित्रिपुरारी । हँसप्रसन्नदैसिगिराउचारी ॥ १८ ॥

श्रीभगवानुवाच।

माँगहुमुनिवरतुमवरदाना । वरदायकहमनिधिभगवाना ॥

दोहा–हमरोतीनहुदेवको, दरशनअहैअमोघ । तीनिहुँदेवउपासना, होतिकबहुँनहिमोघ ॥ १९ ॥

विप्रसाधुजेशांतउदारा । करहिंसदादीननउपकारा ॥ समदर्शीजगसंगविहीना । विनावैरहरिभक्तप्रवीना ॥ २

ऐसेविप्रनकहँदिगपाला।करिप्रणामपूजहिंसबकाला।।हमअरुविधिप्रभुकृष्णसदाहीं।वंदनकरहिंसुविप्रनकाहीं।

मेरोअरुविधिअंतरयामी । ऐसोजोयदुपतिबहुनामी ॥ तामेंनेकुभेदनहिरापें । कोहुसोंनेहनकोहुपेभापें ॥

आपसरिसजेविप्रप्रवीना।वंदनकरहिंतिनहिंहमतीना ॥२२॥ जलतीरथप्रतिमामयदेवा । ३

तुमसमानजेकृष्णसनेही । तेदरशतहिपूतकरिदेही ॥ २३ ॥ हमविप्रनकोकरहिंप्रणामा ।

वेदत्रयीजोरूपहमारा । ताकोधारहिंविप्रउदारा ॥ २४ ॥ संतनकेपददरशकियेते । संतकथामहँचित्तदियेते ॥

महापापतनमेंनहिरहहीं । संभाषणतेमुनिकाकहहीं ॥ २५ ॥

सूत उवाच।

दोहा–शंकरमुखशशितेयदपि, वचनसुधाकियपान । पैमुनिमार्कंडेयको, नेकुनचित्तअघान ॥

हरिमायामेंभ्रमतबहु, दीन्योकालबिताय । अमीवचनसुनिशंभुके, सोदुखगयोविलाय ॥

फेरिकृपीशयुगलकरजोरी । कह्योशंभुसोंबहुतनिहोरी ॥ २६ ॥ २७ ॥

मार्कण्डेय उवाच।

ईश्वरकीयहअद्भुतलीला । कोउनहिंजानतहेगलनीला॥वंदततुमनिजदासनकाहीं।कोदयालतुमसमजगमाहीं॥

धर्मसिखावनहेतमहेशा । करतकर्मतुमरहौहमेशा ॥ धर्मात्माकोसदासराहौ । धर्मकरावनकरहुउछाहौ ॥

तुमहींवक्ताधर्मनिकेरे । तुमतेजनसुखलहतघनेरे ॥ सबकोकरहुँप्रणाममहेशा । घटतनतुवप्रभावलवलेशा ॥ २

करतइंद्रजालीजिमिमाया।पैनघटतिताकीकछुकाया२०निजमनतेयहविश्वविरचिकै।तामेंप्रवि

पुनिअपनेमहँकरहुसँहारा।गुणकृतजगतुममेंनविकारा॥२१॥निर्गुणसगुणशंभुभगवाना ।मायारहित

परब्रह्ममूरतित्रिपुरारी । तुमकोप्रणतिअनेकहमारी ॥ २२ ॥

दोहा–माँगहुँकावरदानमैं, तुमसोंचंदललाम । तुवदरशनतेहोतजन, सबविधिपूरणकाम ॥ ३३ ॥

पैप्रभुपायतुम्हेंअसनाथा । माँगहुँयहबरजोरेहाथा ॥ यदुपतिपदमहँप्रीतिहमारी । रहैअचलप्रभुटरैनटारी ॥

तैसहिसबहरिदासनमाहीं । होयप्रीतितैसहितुवपाहीं ॥ ३४ ॥

सूत उवाच।

यहिविधिमुनिमाँग्योवरदाना।लह्योशंभुतबमोदमहाना॥कह्योमहेशहिउमातहाँहीं।मनवांछितदीजेमुनिकाहीं ॥३

मुनिसोंबोलेवचनमहेशा।कृष्णभक्तितोहिंहोयहमेशा।कल्पप्रयंतसुयशशुभछैहौ।तबभरिअजरअमरमुनिह्वैहौ॥३

ह्वैहैतुमकोज्ञानत्रिकाला । अरुविरागविज्ञानविशाला ॥ ब्रह्मतेजह्वैहैअतिआरज । अरुह्वैहौपुरानआचारज ॥ ३

सूत उवाच।

यहिविधिदैमुनिकोवरदाना । करतउमासोंतासुबखाना॥गणनसहितकैलासविहारी।मुनिआश्रमतेचलेसिधारी॥३

मार्कंडेयमुनीशसुजाना । भयेपरमभागवतप्रधाना ॥

दोहा-एकांतीहरिभक्तहै, ध्यावतहरिपदकाँहिं । अबलौंविचरतजगतमें, मगनप्रेमरसमाहिं ॥ ३९ ॥
मार्कंडेयसुजानको, मैंकियचरितबखान । जेहिविधिनिरख्योकृष्णको, मायाविभवमहान ॥
हरिमायाकोआदिनाहिं, यहअनादिसंसार । जोवरणतआधुनिकयहि, सोमतिमंदगँवार ॥ ४१ ॥
हरिप्रभावतेयुक्तयह, मार्कंडेयचरित्र । सुनैसुनावैजोकोउ, तेदोउहोतपवित्र ॥ ४२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

दोहा-सुनतसूतमुखतेसकल, मार्कंडेयचरित्र । पुनिपूछ्योअतिशयमुदित, शौनकपरमपवित्र ॥

शौनक उवाच ।

हेभागवतसूतबहुज्ञाता । तुमजानहुतंत्रनकीबाता ॥ हमतुमतेयहप्रश्नकरतहैं । जेहिसुनिजनमनमोदभरतहैं ।
पंचरात्रकेजाननवारे । जेश्रीपतिकेपूजनहारे ॥ १ ॥ तेजनकौनभाँतिप्रभुअंगा । ध्यावतहैंरँगिप्रेमहिरंगा ॥
प्रभुआयुधकेहिभाँतिविचारैं । पार्षदवाहनकौननिहारैं ॥ भूषणअहैकौनप्रभुकेरे । जाननयहीमनोरथमेरे ॥
सोवरणहुतुमसूतसुजाना । जैसीपूजनविधिभगवाना ॥ जेहिविधितेपूजेहरिकाहीं । मर्त्यअमर्त्यहोतजगमाहीं
सुनिशौनककीमंजुलवानी । बोलेसूतमहामुदमानी ॥ ३ ॥

सूत उवाच ।

करिकेअपनेगुरुनप्रणामा । हरिविभूतिभाषौंअभिरामा ॥ वेदतंत्रमेंजोसबगाई । नारदादिब्रह्मादिसुनाई ॥
मायामहत्तत्त्वआदिकनव । पंचभूतऔरौइंद्रियसब ॥ शौनकयहीविराटकहावै । श्रीपतिअंगयहीश्रुतिगावै ॥
दोहा-त्रिभुवनयामेंजानियो, कोटिनजीवनिवास । पुरुषरूपयहिकोउकहत, सुनियेऔरप्रकास ॥ ६ ॥
धरणीचरणकृष्णकोजानो । शौनकस्वर्गलोकशिरमानो ॥ अहैनाभिनभयदुपतिकेरी । [illegible]
कर्णदिशाअरुमारुतनासा । मेढ्रप्रजापतिवेदप्रकासा ॥ मृत्युजानिप्रभुअंगअपाना । लोकपालहरिभुजामहाना
मनुचंद्रमाभृकुटिमनुराजू । प्रभुकोउपरवोठहैलाजू ॥ अधकोअधरलोभद्विजराई । प्रभुदंतनकोजानुजोन्हाई ॥
प्रभुकोमंदहँसनिभ्रमभारी । लेहुवृक्षप्रभुरोमविचारी ॥८॥ मेघजानुकेशनकेकेशा । जसनरतनतसहैप्रभुवेशा ॥
कौस्तुभमणिसबजीवनिमानो । जीवज्ञानश्रीवत्सहिजानो॥१०॥मायाहैप्रभुके[illegible]
अहैप्रणवप्रभुकेरजनेऊ । सांख्ययोगकुंडलयुगनिलेऊ॥११॥[illegible]
दोहा-शुद्धसतोगुणजानिये, पदुमासनमुरलेर । ओजसहोबलसहितहै, प्राणगदाप्रभुकेर ॥ १२ ॥
अहैशंखजलयदुपतिकेरो । अहैसुदर्शनतेजघनेरो ॥ १४ ॥ प्रभुकृपाणजानहुतुमज्ञाना । प्रभु[illegible]
अहैकालकोदंडदंडा । कर्मअहैप्रभुतूणअखंडा ॥ १५ ॥ इंद्रियजानहुप्रभुकबाना । [illegible]
शब्दस्पर्शरूपरसगंधू । प्रभुरथसाजुजानुमतिसिंधू ॥ अभैहस्तजनकरशुभकरनी॥ [illegible]
प्रभुकोसंसकारजनादिक्षा । पापनाशप्रभुपूजनइक्षा ॥ १७ ॥ षटऐश्वर्यंकोटिअरविंदा । अहैधर्मनामरनयचंदा
अहैसुयशप्रभुविजनअकुंठा । प्रभुकोछत्रजानुवैकुंठा॥१८॥विप्रमुख्यमंदिरप्रभुकेरो। [illegible]
लक्ष्मीजानहुप्रभुकीनारी । विष्वक्सेनशास्त्रबलभारी२०द्वारपालआठौनंदादिक।अनिमादिकहरिगुनअहलादिक
दोहा-वासुदेवसंकर्षणहु, प्रद्युम्नहुअनिरुद्ध । कृष्णचंद्रकोजानिये, चारिमूर्तिपरशुद्ध ॥ २१ ॥
जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिहू, औरतुरीयाजोय । इनअभिमाननिकोअधिप, चारिमूर्तिप्रभुसोय ॥ २२ ॥
भूषणआयुधअंगरूप, अंगसहितजनजेय । हरिकोध्यावतनिनाहिहरि, चारिपदारथदेय ॥ २४ ॥

कवित्तरूपघनाक्षरी–शौनकसुनहुयदुनाथब्रह्मकारणहै, आपनेप्रकाशहीतेपरमप्रकाशमान ।
महिमामहानमहिमाहिजाकीपूरणहै, विधिवपुधारिविश्वरचतअहैअमान ॥
पालतरमेशरूपघालतमहेशरूप, मूढ़नकोगूढ़हैअगूढजेहैभक्तिमान ।
ज्ञातासबजगतकोत्राताानिजदासनको, दातारघुराजैनिजकंजपदप्रीतिदान ॥ २४

घनाक्षरी–मूढ़नमहीपनकोमदकोमथैयाभूको, भारउतरैयाधर्मधुराकोधरैयाहै ॥
ब्रजवनितानिसंगरासकोरचैयावृंदावनको, वसैयाद्रुतदीनपैद्रवैयाहै ॥
जाकोनामपापिनकोपापकोहरैयाप्रभुपारथको, सारथिह्वैभारथजितैयाहै ॥
यदुकुलउदधिकोअमलजोन्हैयासोकन्हैया, रघुराजदीनकृपाकोकरैयाहै ॥ २५ ॥

दोहा–महापुरुषलक्षणयही, जोनितपढ़ैप्रभात । अंतर्यामीकृष्णको, साजोनैअवदात ॥

कमल १ ब्रह्मा २ मरीचि ३ कश्यप ४ सूर्य्य ५ मनु ६ इक्ष्वाकु
कवित्त–शेषशाईनाभिजात, ताकोजात ताकोजात । ताकोजात ताकोजात, ताकोजात ताकोजा
कुक्षि ८ विकुक्षि ९ बाण १० अनरण्य ११ पृथु १२ त्रिशंकु १३ धुंधुमार १४ युव
ताकोजात ताकोजात, ताकोजात ताकोजात । ताकोजात ताकोजात, ताकोजात ताक
मांधाता १६ सुसंधि १७ ध्रुवसंधि १८ भरत १९ असित २० सगर २१ असमंजस २२ अं
ताकोजात ताकोजात, ताकोजात ताकोजात । ताकोजात ताकोजात, ताकोजात ता
दिलीप २४ भगीरथ २५ ककुत्स्थ २६ रघु २७
ताकोजात ताकोजात, ताकोजात ताकोजात । सोईरघुवंशअवतंस, रघुराजत्रात ॥ २६

सुनिकैसूतवचनसुखमानी । बोलेशौनकपुनिअसुवानी ॥

शौनक उवाच ।

भूपपरीक्षितविनयसुनाई । पूछ्योजोअतिशयचितचाई ॥ तवशुकदेवपरममतिवाना ॥ मासमासकेभानुबखा
सूतदेहुसोमोहिंसुनाई । भानुनामकर्मनिसमुदाई ॥ सूरजकेआतमयदुनाथा । ह्वैहौंतिनयशसुनतसनाथा
सुनतसूतशौनककेबेना । बोलेअतिशयभरिउरचैना ॥ २८ ॥

सूत उवाच ।

सूतकेरसवक्रियाप्रकासी । शौनकजानहुभानुविभासी ॥ हरिमायाविरचितसंसारा । जानहुयाहिअनादिउदा
सूरजकोहरिमूरतिजानो । जगकेकर्त्तातेहिअनुमानो ॥ वेदक्रियाकेतेहैंमूला । बहुविधिभाषहिंबुद्धिअतूला
काळक्रियाकारणअरुकारज । आगमकर्तादेशहुआरज ॥ द्रव्यऔरफलयेनवभाँती ॥ हरिकहँवदहिंविप्रअघघात

दोहा–चैत्रादिकजेद्वादशौ, मासअहैमतिवान । तिनमेंद्वादशरूपधरि, भ्रमैभानुभगवान ॥

प्रथमचैततेकरहुँबखाना ॥ ताकोसुनिशौनकमतिवाना ॥ ३२ ॥ चैतमासमहँदिनकरधाता ॥ कृतस्थलीअप्सराविद
राक्षसहेतहँहेतीनामा । नागवासुकीहैअभिरामा ॥ रथकृतनामयक्षहैसंगा । हैपुलस्त्यऋषिसाथअभंगा ॥
तहँतुंबुरुगंधर्वसुअंगा । चित्तदैचैतमासरविसंगा ॥ ३३ ॥ अबवैशाखमासकेसुनिये । नामअर्यमारवितहँ
ऋषिहैंपुलहअथौजापक्षा । राक्षसहैप्रहेतिअतिदक्षा ॥ पुंजिकथलीअप्सराजानो । गंधर्वनारदनामबखानो ॥
कच्छनीरनामकतहँनागा । चितवहिंवैशाखदिवरभागा ॥ ३४ ॥ जेठमासमेंमित्रदिवाकर । जानहुतहाँअत्रिहैमुनि
पौरुषराक्षसतक्षकनागा । यक्षरथस्वनतहँबड़भागा ॥ तहँमेनकाअप्सरानामा । अरुहाहागंधर्वउद्दामा ॥
एचितवाहिंसबजेठहिमासा । अबसुनियेआषाढ़सहुलासा ॥ ३५ ॥

दोहा–वरुणनामकेभानुहैं, हैवशिष्टमुनिदक्ष । रंभाहैतहँअप्सरा, अहसहजन्यहुयक्ष ॥

२८ । शुक्रनागतहँसंहअसवा ॥ राक्षसअहैचित्रस्वननामा । येचितवहिंआषाढ़मतिधामा ॥
२८ ऐनामा । विश्वावसुगंधर्वउद्दामा ॥ श्रोतानामयक्षबड़भागा । एलापत्रनामकोनागा ॥

तहँजानहुअंगिराऋपीशा । प्रमलोचाअप्सरामुनीशा ॥ वर्यनामराक्षसवलवाना । बितवहिंसावन
भादौंविवस्वानरविनामा । उग्रसेनगंधर्वललामा ॥ व्याघ्रनामराक्षसतहँजानो । नामअसारनयक्षवखानो ॥
अप्सरअनुलोचाहैभृगुमुनि । शंखपालतहँनागलेहुगुनि॥येसबरविकेसंगहिमाहीं ।
माघमासमहँसुनियेंमुनिवर । पूपानामजानियेंदिनकर ॥ तहँहैप्रवलधनंजयनागा । हैऋपीशगोतमवडभागा
अहैतहाँगंधर्वसुखेना । वातनामराक्षसजितसेना ॥ हैअप्सराघृताचीनामा । सुरुचिनामकोयक्षललामा ॥
येसबरविकेसंगहिमाहीं । बितवहिंमाघहिमाससदाहीं ॥ ३९ ॥ फागुनमासमाहमुनिराई ।
वर्चोराक्षसहैकृतयक्षा । सेनजिताअप्सराप्रत्यक्षा ॥ विश्वनामगंधर्वसुजाना । अहिऐरावतअहैमहाना ॥
भरद्वाजहैंतहँऋपिराई । बितवहिंफागुनमाससदाई ॥ ४० ॥ मार्गशीर्षमहँहैमतिमान् ।
कश्यपऋपितहँयक्षहैरक्षा । महाशंखहैनागप्रत्यक्षा ॥ हैऋतुसेनतहाँगंधर्वा । राक्षसविद्युतशत्रुअखर्वा ॥
हैअप्सराउर्वशीनामा । बितवहिंअगहनमासललामा ॥ ४१ ॥ पूसमासमहँहैभगसूर्या ।
अहैअरिष्टनेमगंधर्वा । ऊरननामयक्षगुणगर्वा ॥ आयुपनामकअहैमुनीशा । कर्कोटकतहँअहैअहीशा ॥

दोहा-पूर्वचितीतहँअप्सरा, येसबरविकेसंग । पूसमासबितवहिंतहाँ, पावहिंमोदअभंग ॥ ४२ ॥

आश्विनमासमाहँद्विजराई । त्वष्टानामअहैदिनराई ॥ अग्निसरिसजमदग्निमुनीशा । कंबलनामकअहैफनीशा

दोहा-तहँतिलोत्तमाअप्सरा, राक्षसब्रह्मापेत । सतजितनामकयक्षहै, तेहिजानहुमतिसेत ॥

धृतराष्ट्रहुगंधर्वउदारा । येसबबितवहिंमासकुँवारा ॥ ४३ ॥ विष्णुसूर्यहैकार्तिकमाहीं ।
रंभातहँअप्सरासुहाई । सूर्यवर्चगंधर्वतहाँई ॥ अहैसत्यजितनामकयक्षा । मखापेतनामकतहँरक्षा ॥
विश्वामित्रमुनीशतहाँहीं । बितवहिंकार्तिकमाससदाहीं॥४
प्रीतिसहितजेसुमिरणकरहीं।तिनकेनिशिदिनकेअघजरहीं४५यहिविधिद्वादशमासनमाहीं
उभयलोककेरासुखदाई । देतउभयतमअवशिनशाई ॥ ४६ ॥ जेजेमेंअप्सरागनाई ।
जेजेमेंगंधर्वबखाना । करहिंतेरविसन्मुखनितगाना ॥ जेजेमैंभापेहुँऋपिराई । करहिंतेअस्तुतिवेदनगाई ॥

दोहा-जेजेनागनमैंकह्यौं, तेतेरविरथमाहिं । बंधनहैसबसाजके, त्यागतकबहूँनाहिं ॥

जेजेयक्षदियोमैंगाई । तेरविरथकोदेहिंसजाई ॥ कह्यौंराक्षसनमैंजिनकाहीं । पीछेतेरथझेलतजाँहीं ॥ ४८ ॥
[illegible]
सूर्यरूपजानहुहरिकाहीं । यामेंहैकछुसंशयनाहीं ॥ जिनकोअहैनआदिहुअंता । अहैसकलजगकेरनियंता ॥
कल्पकल्पमहँद्वादशरूपा । जानहुदिनकरकेरअनूपा ॥ करिकैतेइरूपविभागा । करहिंजगतरक्षणवडभागा ।

दोहा-पूछ्यौशौनकजौनतुम, सूरजचरितअपार । सोमैंतुमसोंसकलयह, कीन्ह्योंसविधिउचार ॥ ५०

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे एकादशस्तरंगः ॥ ११

सूत उवाच ।

दोहा-परमधरमकोप्रणतिकरि, यदुपतिपदशिरनाय । विप्रनकेपदवंदिकै, वरणौंधर्मनिकाय ॥ १ ॥
हरिचरित्रअद्भुतपरम, पूछ्योजोनमुनीश । सोमैंवरण्योसकलविधि, सकलचरितजगदीश ॥
जेहिविधियहसंसारमें, पावतजनकल्यान । शौनकादितुमसोंसकल, सोमैंकियोबखान ॥ २ ॥
हरणहारसबपापके, नारायणयदुनाथ । हृपीकेशभगवानप्रभु, भक्तनकरनसनाथ ॥
जगसिरजकपालकहरन, परब्रह्मगंभीर । यहपुराणभागवतमें, वरणितयकयदुवीर ॥ ३ ॥

अवशौनकभागवतको, यहसुनियेसंक्षेप। जाहिपढ़तहरिमिलतहैं, होतपापपरलेप॥

विष्णुपद।

जयभागवतरूपयदुवरकोज्ञानाविज्ञानभक्तिदाता। सुनतसुनावतसमुझतजाकोंमिलतकृष्णपदजलजाता॥
शौनकऔरसूतसंभाषणनैमिषवनमेंप्रथमकह्यो। वरणनचौविसअवतारनकोहरिमहिमाकहिमोदलह्यो॥
व्यासभवननारदकोआगमव्यासहिनारदउपदेशा। नारदकीपुनिजनमकथासबसनकादिकआगमवेशा॥
व्यासबोधभागवतरचनपुनियथासमरकुरुपतिकेरो। भीमसेनकृतजंगभंगपुनिकोपद्रोणसुतकरटेरो॥
पांडवसुवनपंचनिशिवधिबोद्रुपदसुताकोवधभारी। बहुरिद्रोणनंदनकोबंधनजिमिकियपारथगिरिधारी॥
पुनिशिरतेमणितासुखैंचिबोपुनिपांडवविलापगायो। चारिबंधुयुतधर्मसुवनकोसंतनसुताजिमिसमुझायो॥
बहुरिकह्योयदुपतिकोध्यावतजेहिविधिभीषमतनत्यागा। धर्मराजकोराजकरवपुनिबरण्योकुंतीअनुरागा॥
द्रोणतनैकेअस्त्राहितेपुनिगर्भहिरक्षनवैराटी। पुनिद्वारिकागवनयदुवरकोकह्योप्रजनमुदपरिपाटी॥
पारथकोपयानद्वारावतिपुनिहस्तिनपुरआगमनू। बहुरिकह्योअर्जुनविलापसबपांडुसुवनसबसुखसमनू॥
तिलकपरीक्षितपांडुसुवनकोगवनमहापथकोगायो। कलिकोदमनशापद्विजकोलहिगंगातटजिमिनृपआयो॥
मुनिसमाजमधिबहुरिकह्योजसकुरुपतिशुककरसंवादा॥४॥५॥६॥ योगधारणाबहुरिबखान्योहरिवंदनकी
पुनिसंवादब्रह्मनारदकोपुनिबरण्योहरिअवतारा। जगतरचनकोबहुरिकह्योक्रमपुनिपुराणलक्षणसारा॥
मित्रासुतअरुविदुरकेरपुनिकहसंवादमोददाई। यदुकुलकीसंहारकथापुनिमहापुरुषकीथितिगाई॥ ७॥ ८
प्रकृतिसर्गपुनिब्रह्मसर्गअरुपुनिभगवतविराटरूपा॥ ९॥ सूक्षमथूलकालकीगतिजिमिपुनिउपज्योजिमिमनु
पुनिवराहअवतारकृष्णकोवरण्योधरणीउद्धारा। पुनिबरणनबिकुंठकोगायोहिरण्याक्षकोसंहारा॥ १०॥ १
कर्दमउत्पतिमनुमिलापपुनिबरण्योदेवहुतीव्याहू। पुनिविमानकीविहरनिगाईकपिलजननकोउत्साहू॥
देवहुतीअरुकपिलदेवकोपुनिबरण्योसबसंवादा॥१२॥१३॥ पुनिकहशिवकृतदक्षभंगमखध्रुवचरित्रप्रदअह
बहुरिकह्योपृथुकथासुहावनिपुनिप्रचीनवरहीगाथा॥१४॥फेरिपुरंजनकथाबखानीकथाप्रचेतनसुखसाथा॥
पुनिसुवादप्रियव्रतनारदकोराजप्रियव्रतकीभाई। पुनिअगनीध्रअप्सरासंगमनाभिनृपतिउतपतिगाई॥
ऋषभदेवकोचरितकह्योपुनिभरतचरितसुकमुखभाष्यो१५॥पुनिभूगोलखगोलकह्योपुनिअरुपतालवरणनआ
नरकबरणिपुनिकथाअजामिलपुनिप्रभावकहहरिनामा १६ दक्षजन्मपुनिचरितप्रचेतनपुनितिनसततिसु
पुनिनारायणकवचवृत्रवधचित्रकेतुकीकथाकही। पुनिप्रहलादजनमगुणगायोहिरणकशिपसुरविजैसही॥
पुनिप्रहलादचरितसबगायोपुनिकहनरहरिअवतारा।हिरणकशिपकोनाशबखान्यौवरणधरमकहसुखसारा १७॥
पुनिमन्वंतरकथाकहीकछुपुनिगजेंद्रमोक्षहिगायो॥ १९॥ पुनिकच्छपअवतारकथाकहिक्षीरसिंधुमंथनभाया
देवासुरसंग्रामकह्योपुनिबरण्योवामनअवतारा। बलिकोछलननापिबोत्रिभुवनसुतलअसुरपतिपगुधारा॥
मीनसरूपबरणियदुपतिकोसूरजवंशहिविस्तारयो॥२०॥ पुनिइक्ष्वाकुसुद्युम्नजन्मकहिइलाचरितपुनि
पुनितारआख्यानकह्योसबनृपससादनृगचरितकह्यौ॥२२॥पुनिसर्यातिककुस्थचरितकहिखट्वांगहिजस
मांधाताकोचरितकह्योपुनिसौभरिमुनिगाथागाई। सगरसगरकेसुवनचरितकहिकथाभगीरथसुखदाई॥ २३॥
वरण्योकौशलेशरघुपतिकोचरितसकलकलिमलहारी। निमिनरेशकोकह्योतजनतनवंशविदेहमोदकारी॥ २४
क्षमानिक्षत्रकरबभृगुपतिकोजेहिविधितेयकइसबारा। पुरूरवाकोचरितकह्योपुनिचंद्रवंशपुनिविस्तारा॥
पुनिययातिअरुनहुपचरितकहिभरतचरितबरण्योभारी।शंतनुभीषमपांडुपांडवनचरितकह्योअतिसुखकारी॥
नृपययातिकोजेठसुवनयदुवरण्योतासुबहुरिवंसा। जौनवंशमेंत्रिभुवननायकलियअवतारदुष्टध्वंसा॥ २५॥ २६
निवसुदेवभवनदेवकीतिप्रगटतभेयदुकुलचंदा॥ २७॥ पयपानहिमिसिमारिपूतनाशकटगिरायोगोविंदा॥ २८
णावर्तअरुवत्सासुरहनिहन्योबकासुरगिरिधारी। मारिअघासुरविधिमोहनकरिधेनुकमारयोहलधारी॥

रिकालीकोदमनपारकरिदावानलव्रजगाँउँधनी। पुनिप्रलम्बवधकह्योरामकृतवरण्योवेनुगीतरमनी ॥ २९ ॥
नेपावसअरुशरदवरणिपुनिगोपसुताव्रतआचरना । चीरहरणलीलागोविंदकीव्रजतियहरिवरपुनिवरना ॥
जनारिनकृतव्यंजनभोजनविप्रनकोपुनिसंतापा ॥ ३१ ॥ बहुरिकह्योवासवमखभंजनइंद्रकोपकृतव्रजतापा ॥
वर्द्धनउद्धरनकह्योपुनिकहसुरभीकृतअभिषेका । वरुणदूतकृतहरणनंदकोहरिपुरदरशनसविवेका ॥
ह्योरासपंचाध्यायीपुनिनंदचरणगहिभुजगतरच्यो॥३२॥फागुचरितपुनिकहयदुवरकोशंखचूड़जेहिभाँतिदरच्यो
गलगीतपुनिवृषभविनाशननारदकंसहिसंवादा । केशीवधनारदआगमव्रजपुनिव्योमासुरवधवादा ॥
निआगमअक्रूरकोगोकुलमहाविरहपुनिव्रजनारी ॥ ३३ ॥ पुनिमधुपुरीगवनहरिवलकोदानपतिहिदरशनभारी
निमधुपुरीप्रवेशरजकवधधनुपभंगगेअरघाता । पुनिमुष्टिकचाणूरविनाशनकियोकंसमंचहिपाता ॥ ३४ ॥
ग्रसेनकोराजतिलककहिगुरुसुतमृतकगुरुहिदीनो । उद्धवकोव्रजगवनकह्योपुनिगोपिनकोप्रबोधकीनो ॥
हुरिकह्योकुब्जाविहारवहुदानपतीगृहआगमनू । पुनिसुफलकसुतअस्तुतिगाईनागनगरताकोगवनू ॥ ३५ ॥
रिसत्तदशवारमगधपतिदलनदलनपुनिकहिदीन्ह्यो । पुनिकहकालयमनकोजेहिविधिनृपमुचकुंदभसमकीन्ह्यो
हुरिकह्योरुक्मिणिविवाहजिमिकियथदुपतिनृपमदमोरी । पुनिप्रद्युम्नकोजन्मवखान्यौअरुशंबरवधवरजोरी ॥
ह्योसिमंतकमणिचरित्रसवसत्राजितवधआदिसवै । जाम्बवानकोसमरकह्योपुनिजाम्बवतीकोव्याहतवै ॥
वधभूपकोसुतास्वयंवरऔरहुहरिविवाहभायो । भौमऔरसुरमथनकथनकरिसोरहसहसव्याहगायो ॥ २६ ॥
ाधवमघवामदमर्दनकरिनिजपुरमेंसुरद्रुमल्याये । पुनिपरिहासकह्योरुक्मिणिकोअनिरुधकोविवाहगाये ॥
पास्वप्रहरणअनिरुधकोहरिशंकरसंगरभारी । मृगउद्धारविप्रकीमहिमाकह्योगवनव्रजहलधारी ॥ २७ ॥ २८ ॥
मेथ्यावासुदेवकोवधकहिशंकरपुरीदहनगायो । वहुरिद्विविदवधहलधरकृतकहिसांवकैदमहँजिमिआयो ॥
निकहजिमिहलधरहलकरकरिनागनगरकरपनकीन्ह्यों । पुनिकहहरिजिमिनारदकोनिजमायाविभवदरशदीन्ह्यों ॥
द्रप्रस्थआगमयदुपतिकोभीममगधपतिजिमिमारच्यो । धर्मराजकीराजसूयजिमिशिशुपालहिहरिसंहारच्यो ॥
ज्ञअंतमज्जनउछाहकहिवरण्योशाल्वयुद्धभारी । दंतवक्रविदुरथकोवधकहिबलतीरथयात्रासारी ॥
रणिसूतवधकह्योफेरितहँकौरवकुलकोसंहारा । पारथसारथिह्वैयदुवरजिमिभंज्यौभुवभारीभारा ॥ ३९ ॥ ४० ॥
हुरिसुदामाचरितवरणिपुनिकुरुक्षेत्रयात्रागाई । देवकिकेमृतसुतजिमिलायेपितुहिज्ञानदियसुखदाई ॥
ह्योसुभद्राहरणवहुरिकहजनकनगरहरिकोगैवो । वेदनअस्तुतिवहुरिवखानीतीनदेवमहँवरठैवो ॥
ह्योविप्रसुतमृतकल्याइवोमहिपीगीतसकलगायो । वरण्योवहुरिजोनविधियदुकुलशापदंडमुनिसोंपायो ॥
ारदकोअरुवसुदेवहिकोवरण्योसुखकरसंवादा । हरिउद्धवसंवादकह्योपुनिज्ञानभक्तिकीमरयादा ॥
पुनियदुकुलसंहारवखान्योपुनिभावीभूपनगाथा । कलियुगकोपुनिधर्मकह्योसवकलिकीअवतारहिनाथा ॥ ४१ ॥
वहुरिचारिविधिप्रलयवखानीउत्पतिकह्योभाँतितीना४२शुककोगवनकह्योपुनिपरिक्षितजेहिविधितनत्यागनकीना॥
वेदविभागवहुरिसववरण्योमार्कंडेयकथागाई । पुनिविराटवपुवरणनकीन्ह्योंसूरजकथामोददाई ॥ ४४ ॥
हरिकीमहिमागायसकलविधिश्रीभागवतप्रभावकहे । यहसमासभागवतसुहावनगायमनुजफलचारिलहे ॥
एकआशयदुनाथतिहारीदूजाहैननाथमेरे । परचोअहैरघुराजशरणमेंजायकहाँतजिपदतेरे ॥ ४५ ॥

दोहा–गिरतपरतछींकतछटत, विवशहुमहँजोकोय । हरयेनमअसमुखकहत, सकलपापहतहोय ॥ ४६ ॥

पद–कोअससाहेवसरलदूसरोयदुपतिसमत्रिभुवनमाँहीं । रामकृष्णमुखकहतसुनतहूँहियमेंअवशिप्रविशिजाहीं ॥
कोटिनजन्मनअघओघनकोदरशतिनहिंपुनिपरछाहीं । जैसेपवनप्रचंडचलेनभघनमंडलसवउडिजाहीं ॥
जैसेभानुउदयतमनाशतपावकतूलराशिकाहीं । विगरीजन्मअनेकनकीप्रभुलेतसुधारिक्षणमाहीं ॥
कायरकपटिनकूरकुचालिहुनिजपुरकोप्रभुपहुँचाहीं । देखतदोषनकवहुँदयानिधिदीननपैद्रुतद्रविजाहीं ॥
मोसमपतितनअहैपुहुमिमेंतुमसमपावनकोउनाहीं । यहसँयोगयदुराजदेखिअवतारहुरघुराजहिकाहीं ॥ ४७॥

भजनलावनी–हरिलीलाजेहिमेंनहिंगाई । सोईअसतिअपावनअनुचितकथाअहैअतिदुखदाई ॥

सोइअहैअभागिनकोप्यारी । नरकनिवासविलासकरनकोसुनाहिअघीरुचिभरिभारी ॥

सोइकरनिकुमतिकलिमलभरनी । आयुपविभवसुयशसुखसंपतिशीलस्वभावसकलहरनी ॥

सोइसाधुनकानकुलिशसीहै । कोटिजन्मकोपुण्यमीनगणखैंचनकोवन्सीसीहै ॥

सोइधरमगहनपावकज्वाला । सुमतिविटपकेकाटनकोसतिसोइकुठारहैविकराला ॥

सोइविपैअनलकोघृतभूरी । ज्ञानविज्ञानविनाशकरनकीअडीखडीहैसोइशूरी ॥

मनविहँगफँदावनकीफाँसी । जपतपसंयमधनहरिवेकोसोइखासीहैगणिकासी ॥

हरिलीलाजामेंहैगाई । सोईपरमसुहावनजगमेंकथासंतजनसुखदाई ॥

सोइप्रेमकृपीकीऋतुवर्षा । हरिपदपहुँचनसोईनिसेनीलगलिलितदेनीहर्षा ॥ ४८ ॥

सोइखुलीखजानामंगलको । सोइसावनघनअहैबढावनजननसुकृतकेजंगलको ॥

कलिमलहरनीसुरधुनिधारा । कोटिनविपयवासनाकदलीकदनकरनकीअसिधारा ॥

भवभक्तिसृजनकोकरतारा । सुमतिकमलकुलकरनप्रफुल्लितसोइरविअघहरअँधियारा ॥

करिसकैबड़ाईकोताकी । तासुजनममधनिधनिधरनीमेंकृष्णकथामहँरुचिजाकी ॥

यदुराजदेहुवररघुराजै । करहुँपानतुवकथासुधानिततजितनलाजैकुसमाजै ॥

कृष्णजसजामेंसुखदाई । सोइपुराणसतिसोइप्रबंधसतिसोइउत्तमहैकविताई ॥

रुचिरनहिंकछुजगमेंताते । सुमतिकुमतिकोकछुविचारनहिंसुनतहिजाहिमोहिजाते ॥

बढ़तनितनितनवनवसुखहै । देशजनमकायाकुलकरनीहोतपुनीतकहतमुखहै ॥

लहतमनक्षणक्षणउत्साहू । दीरघदुसहदुरितदुरिजातेहगमेंदरशतव्रजनाहू ॥

शोकसागरशोपनहारो । कियोकरतकरिहैकेतनकोयहजगअधमनउद्धारो ॥

करैरघुराजयहीअरजी । यदुपतिसुयशसुधापीवनकोरहौंसदाअतिशयगरजी ॥ ४९ ॥

यदपिमनोहरसुंदरबहुपदउक्तियुक्तिखासीवहहोई । तद्यपिजगपावनहरियशविनकथावृथापरतीमोहिंजोई ॥

जेहिथलजेहिगृहजेहिसमाजमेंगोविंदगुणगावहिनाहिंकोई।मलभक्षकवायसहिवासदुखदायकहैसाँचोथलसोई॥

जेजडयदुपतिकथाछांडिहठिऔरकथागावैंमुदमोई । तेसुरद्रुमकोबीजऐंचितहँदेतेगरलबीजकोबोई ॥ ५० ॥

जहँगावतहरिसुयशसुहावनमनभावनतनलाजविगोई । तहँहरिदासजातसुनिहाठिकैभारिअनुरागदेतहँरोई ॥

सोइसवतीरथसोइसवसंपतितहँसबमोदजातह्वैढोई । तहँकलिमलप्रचारनहिंकरतोसुधरतलोकअहैतहँदोई ॥

वेदपुराणशास्त्रसवग्रंथनलेहुसकलरघुराजटटोई । विनयदुराजकथामुखगायेकैसेहुकलिमलजातनधोई ॥

सोइसतिसुंदरसुखकरखानी । जामेंपदपदछंदछंदमेंयदुपतिकीरतिविमलबखानी ॥

छंदबद्धअथवाअछंदहूजेहरिकीरतिरतिकरिगावें । तेईजनसमूहकेकलिमलकलिमदँसकलसाकहैजावें ॥

हरियशअंकितसुभगमृदुलपदअतिशयप्रीतिप्रतीतिबढाई । गावतगुनतसुनतधारतचितसंतसमाजसदासुखदाई

धनिधनिधरनीमेंरसनासोइकृष्णकथाजोनितरटलाई । विनयकरैरघुराजकृष्णतुवकथाछोडिमतिमनतननाई ॥

यदपिविज्ञानपरमहैपावन । तदपिकृष्णअनुरागविनासोउअहैनयोरहुसुखदसुहावन ॥

ज्ञानविज्ञानपाइजनपावतब्रह्मानंदमहामनभावन । पैयदुपतितिसेवासुखअनुपमकबहुँनलहतहियोहुलसावन ॥

ज्ञानविज्ञानहुसकलतर्जदअनुरागहिसमतापहुँचावन । तोपुनिजागादिककरमनकीकौनभाँतिकिकियाचलावन ॥

हरिकोअरपैसफलकर्ममवविनहरिअरपैसकलअपावन । हरपुरानउपायसरलपदनिशदिनयदुनंदनगुणगावन॥५

[illegible] । सदैवृथासवअंतव्यथाप्रदविनहरिकथासुधाकोपाग ॥

।कृपोकटिननपपरवीपाममपदुमुन्योपुरागअनेकनकोंही । हरिपदपदुमप्रीतिनाहिंउपजैनीनाकोश्रमगकल्पयारी

नधरमतपश्रुतिअचारकोयहीसत्यफललेहुविचारा। हरिपदयुगलकमलअमलनतेकबहूँमतिगतिटरैनटारी॥
यदुनाथअनाथनाथप्रभुधरिमेरेमाथहिनिजहाथा। रघुराजहिनिजकथासुधाकोपानकरावहुसंततसनाथा॥ ५२
गफलहरिपदसुरतिनदेती। कोटिजनमकीकरमवासनायकक्षणमाहिंछीनिसबलेती॥
नपदारथहोतसुलभनहिंमंगलखानिखुलतनहिंकेती। योगभक्तिअरुज्ञानविरागहुमिलतमुक्तिसंपदसबजेती
मिहियथलमेंभक्तिबीजबयकरिकरुणाकरकरुणाखेती।देहुमोहिंनिजचरणप्रीतिफलविनेकरतरघुराजहियेती॥
दोहा–हेशौनकबडभागतुम, नारायणकेदास। जेहिनारायणकेसरिस, द्वितियनदेवप्रकाश॥
नविधनिहोतुमधरणीमाहीं।कृष्णकथाजोसुनौसदाहीं५५ [illegible]
[illegible]
इमहूँबैठेरहेतहाँहीं। पियोपुराणअमीरसकाहीं॥ ५६॥ सोतुमशौनकसुरतिकराई। [illegible]
यहयदुपतिकोचरितसुहावन। कोटिजन्मकोपापनशावन॥ सोमैंतुमसोंकियोबखाना। वासुदेवमाहात्म्यमहाना
कयामहुभरिक्षणहुँजोकोई।सुनैभागवतरतिरसमोई॥५७॥अथवाप्रीतिसमेतसुनावै।ज्ञानभक्तिउरबरबसआवै॥५८
एकादशीद्वादशीमाहीं। जोकोउसुनैभागवतकाहीं॥ अथवापढैविहायअहारा। सावधानह्वैसुमतिउदारा॥
दोहा–सोजनपावतअवशिकै, पूरणआयुदांय। कोटिनजन्मनकोदुरित, क्षणहींमेंजरिजाय॥ ५९॥
पुष्करअथवामथुरामाहीं। द्वारावतिनगरीअथवाहीं॥ इंद्रियजीतिसविधिव्रतकरिकै। पढैभागवतश्रद्धाभरिकै।
तेहिनहोतिसंसारिकभीती।उपजतिकृष्णपदुमपदप्रीती६०सिद्धदेवमुनिपितरनरेशा।पूरततेहिमनकामहमेशा ६१
जोभागवतसुनैअरुगावै। पढ़नचारिवेदनफलपावै॥ मधुकुल्याऔरहुघृतकुल्या। अरुतीरथजोहैपकुल्या॥
इनकेमज्जनकोफलपावत।जौनभागवतसुनतसुनावत॥६२॥परमहंससंहितासुनामा।यहिस्वामीयदुपतिघनश्याम।
पढैजोयहपुराणअरुसुनई।सावधानजोअर्थहिगुनई॥ जातपरमपदसोहठिप्रानी।जोहरिश्रुतिपुरदियोनसानी॥६३
पढ़तभागवतजोकोउविप्रा। शुद्धिबुद्धिपावतसोक्षिप्रा॥ राजापढ़तभागवतजोई। होतचक्रवर्तीहठिसोई॥
दोहा–वैश्यपढ़ैजोभागवत, अथवासुनैसप्रीति। धनदसरिसधनलहतसो, मिटतिजगतकीभीति॥
सुनैशूद्रअथवापढ़ै, जोभागवतपुरान। कोटिजन्मकेपापतेहि, जरततुरतसहसान॥ ६४॥
कवित्त–औरेनपुराणनमेंग्रंथनअनेकनमें, भाँतिनअनेकनकीकथाकोबखानहै।
शिवकोपरत्वकहूँविधिकोपरत्वकहूँ, देवीकोपरत्वकहूँकहूँभगवानहै॥
कहैरघुराजयापरमहंससंहितामें, अधमउधारनजोजाहिरजहानहै।
सोईहरिकोपरत्वभाष्योआदिअंतहूँलों, तातेसबग्रंथमेंपुराणमेंप्रधानहै॥
असकंधअसकंधपरबंधपरबंध, अध्यायअध्यायनमेंकथाकेविराममें।
प्रश्नप्रश्नहूमेंत्योंहींउत्तरउत्तरहूमें, कथाकथामाहित्योंहीवंदनललाममें॥
असलोकअसलोकतुकतुकपादपाद, पदपदआखरनआखरनआममें।
कहैरघुराजसत्यपरमहंससंहितामें, कहतहैकेशवकृपाकेसबठाममें॥
अजहैअनंतनिजशक्तिहीतेरचिरचिपालै, अरुघालैयहजगबहुबारहै।
आपनेप्रकाशहीतेपरमप्रकाशमान, अधमउधारीनाथदयापारावारहै। [illegible] तेभूतात्मनित्त
स्वर्गकेनिवासीसुरशक्रऔस्वयंभुशंभु, [illegible] तदासनसनाथ
ताकेपदकरहुँप्रणामबारबारसोई, [illegible] ईश्वरअनंत॥ २
निजनवशक्तिनतेरचिकैजगतजाल, [illegible] ययनिधिसुजान॥
धर्मयशश्रीऐश्वर्यज्ञानऔविरागयुत, [illegible]
भासमानजाकोधामसदैवसनातनहै, [illegible] तउत्तमहुअप्रमेय

करहुँप्रणामताकेचरणकोबारबार, दीनरघुराजैयदुराजहीकीआसहै ॥
दोहा-यदुपतिचरणसरोजको, यहिविधिमुदितमनाय। अवधंदौशुकदेवपद, बारबारशिरनाय ॥ ६७॥
कवित्त-कृष्णहिकृपातेजाकोव्यापीकृष्णमायानाहिं, कृष्णहीकोप्रेमरसपानकोकरैयाहै।
कृष्णभावनातेभिन्नजगतकोदेखैनाहिं, साँचोकृष्णलीलालोनीलालचीलखैयाहै ॥
कृपाकरिकृष्णकोपुरानतत्वदीपकह्यो, कृष्णमुनिनंदनआनंदकोदैवैयाहै।
कृष्णकोअनन्यभक्तताकेबंदौपदद्वंद्व, सोईरघुराजकेकलेशकोहरैयाहै ॥ ६८ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्री महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज सिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

सूत उवाच।

कवित्त-ब्रह्मावरुणइंद्ररुद्रअरुमरुतगण, जाकीकरैंअस्तुतिसुदिव्यपदगाइकै।
अंगक्रमपदऔउपनिषदवेदनते, जाकोसदागावतमुनीशगणछाइकै ॥
बैठिकैइकांतध्यानधारिजाकोयोगीजोवैं, सुरासुरजासुअंतपावैंनाबनाइकै।
यादवसमाजसिंहदेवकीदुलारोतासु, ध्यावतचरणरघुराजशिरनाइकै ॥ १ ॥
कमठस्वरूपजबधारिकैमुकुंदप्रभु, धारयोपीठिमंदरअमंदनिधिक्षीरमें।
मथतसुरासुरधराधरभ्रमनलाग्यो, सोयेनाथमानिखजुआयबोशरीरमें ॥
हरिमुखश्वासपौनपायकैप्रचंडतहाँ, उठनतरंगतुंगलागीतेहिनीरमें।
तौनेश्वासवेगवीचीअवलौंनबंदहोती, सोईकरैरक्षारघुराजैभवभीरमें ॥ २ ॥

सूत उवाच।

दोहा-अबपुराणसंख्यासुनहु, विषयभागवतकेर। औरभागवतदानविधि, दानमहातमढेर ॥ ३ ॥
दशहजारहैब्रह्मपुराना। पचपनसहसैपदुमयहाना ॥ तेइससहसैविष्णुपुराना। शिवपुराणचौविसपरमाना ॥ ४ ॥
नारदसहसपचीसउचारा। मार्कंडेयहुनवैहजारा ॥ पंद्रहसहसहिअग्निपुराणा । औरचारसैतासुप्रमाणा ॥ ५ ॥
साढ़ेचौदहसहसप्रमाणा। शौनकजानुभविष्यपुराणा ॥ कहौंब्रह्मवैवर्तपुराणा। सहसअठारहतासुप्रमाणा ॥
लिंगपुराणहुसहसइग्यारा ॥ ६ ॥ चौबिससहसवराहउचारा ॥ अस्कंदहुपुराणसुखरासी।अहैएकसैसहसइक्यासी ॥
दशहजारवामनैपुराना ॥ ७ ॥ सत्रहिसहसकूर्मकोमाना ॥ सहसचतुर्दशमत्स्यपुराणा।सहसओनसैगरुड़प्रमाणा ॥
अबब्रह्मांडपुराणविचारो। तेहिप्रमाणद्वादशैहजारो ॥ ८ ॥ सबपुराणकोहैसुखसारा। श्रीभागवतहजारअठारा ॥
दोहा-चारिलाखअश्लोकहैं, अष्टादशहुपुरान। सारभूतश्रीभागवत, कृष्णरूपमतिमान ॥ ९ ॥
प्रथमकालमहँबुद्धिअगारा। संसारहिडरप्योकरतारा ॥ तबहरिकरिकैकृपामहाई। दीन्ह्योयहभागवतसुनाई ॥
नाभिकमलबैठ्योसुखचारी।सुनिभागवतमिटीभयभारी १० श्रीभागवतपुराणहिंपाहीं।आदिमध्यअरुअंतहुमाहीं ॥
अहैविज्ञानविरागबखाना।हरिलीलारससुधाप्रधाना ॥ श्रीभागवतपुराणमहाई। सुरनरमुनिसबकोसुखदाई ॥ ११॥
वेदऔरवेदांतनकेरो। औरशास्त्रजेकियेनिबेरो ॥ अहैभागवततिनकोसारा। परब्रह्मकोरूपउदारा ॥
जौनवस्तुयामेंमुनिराई। सोनहिंमोहिंकहुँपरैलखाई ॥ सकलशास्त्रअरुसकलपुराना। औरग्रंथजेछोटमहाना ॥
तिनकोभेदेख्योबहुतोई। अहैभागवतसरिसनकोई ॥ याकेसरिसनदूसरग्रंथा। हेप्रत्यक्षपदहरिपुरपंथा ॥
[illegible]मैंअस्थलहैनाहिकोई। मुक्तिप्रयोजनजहँनहिंहोई ॥
दोहा-यहसतिआनँदअंबुनिधि, श्रीभागवतपुरान। यामेंयदुपतिछोडिकै, द्वितियनअहैबखान ॥ १२ ॥

करहुँप्रणामताकेचरणकोबारबार, दीनरघुराजैयदुराजहीकीआसहै ॥
दोहा–यदुपतिचरणसरोजको, यहिविधिमुदितमनाय । अबबंदौंशुकदेवपद, बारबारशिरनाय ॥ ६७ ॥
कवित्त–कृष्णहिकृपातेजाकोव्यापीकृष्णमायानाहिं, कृष्णहीकोप्रेमरसपानकोकरैयाहै ।
कृष्णभावनातेभिन्नजगतकोदेखैनाहिं, साँचोकृष्णलीलालोनीलालचीलखैयाहै ॥
कृपाकरिकृष्णकोपुरानतत्वदीपकह्यौ, कृष्णमुनिनंदनआनंदकोदेवैयाहै ।
कृष्णकोअनन्यभक्तताकेबंदौंपदद्वंद्व, सोईरघुराजकेकलेशकोहरैयाहै ॥ ६८ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्री
महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

सूत उवाच ।

कवित्त–ब्रह्मावरुणइंद्ररुद्रअरुमरुतगण, जाकीकरैंअस्तुतिसुदिव्यपदगाइकै ।
अंगक्रमपदऔउपनिपदवेदनते, जाकोसदागावतमुनीशगणलाइकै ॥
बैठिकैइकांतध्यानधारिजाकोयोगीजोवैं, सुरासुरजासुअंतपावैंनाबनाइकै ।
यादवसमाजसिंहदेवकीदुलारोतासु, ध्यावतचरणरघुराजशिरनाइकै ॥ १ ॥
कमठस्वरूपजबधारिकैमुकुंदप्रभु, धारयोपीठिमंदरअमंदनिधिक्षीरमें ।
मथतसुरासुरधराधरभ्रमनलाग्यो, सोयेनाथमानिखजुआयबोशरीरमें ॥
हरिमुखश्वासपौनपायकेप्रचंडतहाँ, उठनतरंगतुंगलागीतेहिनीरमें ।
तौनेश्वासवेगबीचीअबलौंनबंदहोती, सोईकरैरक्षारघुराजैभवभीरमें ॥ २ ॥

सूत उवाच ।

दोहा–अबपुराणसंख्यासुनहु, विषयभागवतकेर । औरभागवतदानविधि, दानमहातमढेर ॥ ३ ॥
दशहजारहैब्रह्मपुराना । पचपनसहसेपदुमबखाना ॥ तेइससहसैविष्णुपुराना । शिवपुराणचौविसपरमाना ॥ ४ ॥
नारदसहसपचीसउचारा । मार्कंडेयहुनवैहजारा ॥ पंद्रहसहसहिअग्निपुराणा । औरचारसैतासुप्रमाणा ॥ ५ ॥
साढ़ेचौदहसहसप्रमाणा । शौनकजानुभविष्यपुराणा ॥ कहौंब्रह्मवैवर्तपुराणा । सहसअठारहतासुप्रमाणा ॥
लिंगपुराणहुसहसइग्यारा ॥ ६ ॥ चौबिससहसवराहउचारा ॥ अस्कंदहुपुराणसुखरासी । अहैएकसैसहसइक्यासी ॥
दशहजारवामनैपुराना ॥ ७ ॥ सत्रहिसहसकूर्मकोमाना ॥ सहसचतुर्दशमत्स्यपुराणा । सहसओनसैगरुड़प्रमाणा ॥
अपब्रह्मांडपुराणविचारो । तेहिप्रमाणद्वादशैहजारो ॥ ८ ॥ सबपुराणकोहैसुखसारा । श्रीभागवतहजारअठारा ॥
दोहा–चारिलाखअश्लोकहैं, अष्टादशहुपुरान । सारभूतश्रीभागवत, कृष्णरूपमतिमान ॥ ९ ॥
प्रथमकालमहँबुद्धिअगारा । संसारहिडरप्योंकरतारा ॥ तबहरिकरिकैकृपामहाई । दीन्ह्योंयहभागवतसुनाई ॥
नाभिकमलबैठ्योमुखचारी । सुनिभागवतमिटीभयभारी ॥ १० ॥ श्रीभागवतपुराणहिमाहीं । आदिमध्यअरुअंतहुमाहीं ॥
अहैविज्ञानविरागबखाना । हरिलीलारससुधाप्रधाना ॥ श्रीभागवतपुराणमहाई । सुरनरमुनिसबकोसुखदाई ॥ ११ ॥
वेदऔरवेदांतनकेरो । औरशास्त्रजेकियेनिबेरो ॥ अहैभागवततिनकोसारा । परब्रह्मकोरूपउदारा ॥
जौनवस्तुपामेंमुनिराई । सोनाहिमोहिकहुँपरलखाई ॥ सकलशास्त्रअरुसकलपुराना । औरग्रंथजेछोटमहाना ॥
तिनकोमेंदेख्योबहुतोई । अहैभागवतसरिसनकोई ॥ याकेसरिसनदूसरग्रंथा । हमत्यक्षयदहरिपुरपंथा ॥
ऐसेंअस्पष्टहैनाहिकोई । मुक्तिप्रयोजनमहँनाहिहोई ॥
दोहा–परमनिवानंदअंबुनिधि, श्रीभागवतपुरान । यामेंयदुपतिछोड़िकै, द्वितियनअहैबखान ॥ १२ ॥

जयहृषीकेशजयपद्मनाभ।जयअमरप्रभोघनश्यामआ ... नसुत्पहा ...
जयध्रुवअग्राह्यहुसरसिजाक्ष।जयशाश्वतकृष्णहुलोहिताक्ष।जयजयतिप्रतर्दनजयप्रभूत।ज ...
जयकरनपातकिनकहँपवित्र।जयमंगलपरईशान ...
जयहिरणगर्भभूगर्भधारि । जयमाधवमधुसूदनमुरारि ॥ जयईश्वरजयविक्रमीराम।जयधन्वीमेधावीअरा
जयविक्रमजयक्रमकौशलेश।जयजयतिअनुत्तमद्वारकेश।जयदुराधर्षजयजयकृतज्ञ।ज ...
जयजयसुरेशजयशरणशर्म।जयविश्वरेतधारकसुधर्म ... जयसंवत्सर ...
... जयअच्युतजयस
जयजयतिवृषाकापिअमेयात्म।जयसर्वयोगविनश्रितमहात्म।जैवसुवसुमनससुसतिसमात्म।जैसंमितसमजअमोघ
जैजयतिपुंडरीकाक्षदक्ष । जैजैवृषकर्माप्रबलपक्ष ॥ जयजयतिवृषाकृतिरुद्ररूप । जयबहुसिरजैबभ्रूअनूप
जैविश्वयोनिशुचिश्रवससत्य।जैअमृतशाश्वतस्थाणुनित्य॥जैवरारोहयादवप्रधान।जयजयतिमहातपप्रभु
... जयजय ...
अव्यंगजयतिवेदांगज्ञात।जयजयतिवेदविदकविविख्यात।जयजयतिसकललोकनअध्यक्ष ...
जैधर्माध्यक्षहुजैसुआत्म । ...
जैजैभोजनभोक्तालाम । ...
जैजयतिपुनर्वसुजैउपेंद्र । जैवामनजैप्रांसूप्रजेंद्र ॥ जैजैअमोघजयशुचिसरूप । जैऊर्जितअतिइंद्रहुअनूप
जैसंग्रहसर्गधृतात्मसोय।जैनियमजयतिजमवैद्यजोय ॥ जैवैद्यसदायोगीअकाम । वीरघ्नजयतिजयकृष्णरा
जैमाधवजैमधुरमाकंत । जैअतींद्रियहुआधारसंत ॥ जैमहामायजैमहोत्साह । जैजयतिमहाबलयशअथाह
जैमहाबुद्धिजैमहावीर्य्य । जैमहाशक्तिजैमहाधीर्य्य॥जैजयतिमहाद्युतिजगतवास । जैअनिर्देश्यवपुश्रीनिवा
जैअमेयात्मईश्वरमहान । जैमहाअद्रिधृतयुतविज्ञान॥जैमहेष्वासजैमहीभर्त्त । जैश्रीनिवासखलदलनदर्त्त
जैसंतनगतिअनिरुद्धशुद्ध । जैसुरानंदगोविंदबुद्ध ॥ जैजयतिगोविंदनपतिसुजान।जैजैमरीचिदमनोमहान
...
... स्तहुविश्रुतात्म । ...
जैगुरुतमजैजैधामसत्य।जैसत्यपराक्रमरूपनित्य ॥ जैनिमिषजयतिअनिमिषसुमाल । जैय ...
जैबुधिउदारअग्रणीज्ञान।जैजयतिग्रामणीजैश्रीमान॥जयन्यायसमीरनजयनियंत । ...
... थसहस ...
जयजयअहसंवर्त्तकपरेश।जयवह्निअनिलधरणीधरेश।जयसुप्रसादजयप्रसन्नात्म।जगविश्वसृजकजयशुद्धआ
जयविश्वभोजिविभुसतकरंत।जयजयसतकृतजयसाधुसंत॥जयजन्हुनरायननराक।ज ...
...
... तिस ...
...
जयओजतेजद्युतिधृतअनंत।जयप्रकाशात्मजयरमाकंत।जयजयतिप्रतापनऋद्धसोय।जयजयअसपष्टाक्षरहु
...
जयसत्यधर्मविक्रमअमान।जयभूतभव्यभवपतिमहान॥जयपौनजयतिपावनमुरारि।जै- ...
...

जयदुःकृतिघ्नजयपुण्यशील।दुःस्वप्नविनाशनजयसुशील १२१ जीवनरक्षनवीरप्रसंत।जयजयतिपर्यवास्थितअ
जयजयअनंतश्रीविजितमन्नु।जैजैतिभयापहप्रबलधंनु॥जयजयचतुरस्रगभीरआत्म।जैविदिशव्या।दिशहुदिशअ
जैजैअनादिभूर्भुवलाम।जयजयसुवीरलक्ष्मीअकाम॥१२३॥जयरुचिरांगदजयजननईस।जनजन्मादिहुसुविसे
जयभीमपराक्रमभीमकर्म।आधारानिलैधातासुधर्म १२४ जयजयतिप्रजागरपुष्पहास।जयऊर्ध्वगप्रभुलक्ष्मीनि
जयजयतिसत्पथाचारज्ञान।जयप्राणदप्रणवहुपणप्रमान ॥ जयप्राणनिलयजयप्राणभर्त । जैजैतिप्राणजीवनशुभ
जयतत्वतत्वविदजयइकात्म।जैजन्महुमृत्युजरातिगात्म १२६ जयभूर्भुवस्वःतरुस्तार।जयसपिताप्रपितामहउद
जययज्ञयज्ञपतियज्वरूप।यज्ञागयज्ञवाहनअनूप ॥ १२७ ॥ जयजयतियज्ञभृतयज्ञकारि।जैयज्ञीयज्ञभुजीमुरा
जयजयतियज्ञसाधनपरेश।जययज्ञअंतकृतजैरमेश ॥१२८॥जययज्ञगुह्यअन्नादअन्न।स्वयजातआत्मयोनिहुप्रस
वसानसामगायनगोविंद । जयजयस्रष्टादेवकीनंद ॥ १२९ ॥ जैजैतिपापनाशनक्षितीश । जैजैतिशंखधारीमही
जयजयचक्रीनंदकीनाथ।जयजयकोदंडशारंगहाथ १३ जयजयतिगदाधररमाजानि।जैजयतिअछोभ्यरथांगपा
जयसर्वप्रहरणायुधउदार । रघुराजदीनकेजयअधार ॥ ३१ ॥

दोहा–सहसनामयहमैंकह्यौं, तुकहितऔरमिलाय । छंदभंगनहिंहोयजेहि, सोबुधलिदेहुलगाय ॥ १ ॥

जययदुनंदनदीनदयाला । दासनकेरक्षकसबकाला ॥ तुमसमानकोअधमउधारी । तुम्हेंलैवयासुरतिहमारी ॥
अहैभागवतसहसअठारा । सत्यसत्यप्रभुरूपतुम्हारा ॥ २ ॥ जानिदीनकरिकृपामहाई । मेरेहियेबैठियदुराई ॥
रच्योंसुभगभाषाकरपंथा । आनंदअंबुधिनामकग्रंथा॥८॥यामेंनहिंकछुमोरिसपूती । हैसबयदुपतिकीकरतूती ॥
जानहुँमैंनछंदकीचाली।कव्यशास्त्रमेंमतिनविशाली॥७॥अहैशक्तिनहिंकछूरचनकी।नहिंसहूरकछुवदनवचनकी
मतिहिसकहैनाहिंदूजो।सबपापिनप्रधानकरिपूजो ॥९॥ अतिशयहौंचंचलचितवारो।होतनधर्महिकरनविचारो॥१
मतेअधिकनकोउकलिकामी।डरहुँनकवहुँहोनवदनामी ११ प्रभुकीसुरतिहोतिहियनाहीं।खड़ोरहोंजगजालहिमाहिं

दोहा–अधमअलालहुआलसी, करहुँअनुचितकर्म । चलतिमोरमतिसर्वदा, करिबेहेतअधर्म ॥ २ ॥

कहँलगिअपनेऔगुणगाऊँ । जोगाऊँतोपारनपाऊँ ॥ १ ॥ ऐसेहुपतिततलाजतेहीना । दीनदयालजानिअतिदीना
मेरेहियबैठियदुराई । आनँदअँबुधिदियोबनाई ॥ ३ ॥ यामेंरहेसहायकदोई । तिनकेनामकहौंमुदमोई ॥ ४ ॥
दक्षिणयादवाद्रिकेवासी।अतिसुशीलसुंदरमतिरासी ॥५॥ जिनकोनामअनंताचारी । तिनकेपुत्रनृसिंहाचारी ॥ ६
रंगाचार्यपुत्रहैतिनके।शीलस्वभावअनूपमजिनके॥७॥न्यायवेदांतव्याकरणआदिक।सकलशास्त्रज्ञातामरयादिक८
जतिघंटावतारपरकाला । तिनकेशिष्यसुबुद्धिविशाला॥९॥करिदायारीवाँपगुधारे।भयेसहायकआपदमारे ॥ १०
मोहनाजिकेशिष्यमहाना।रामचंदपादार्यसुजाना॥११॥तासुशिष्यश्रीअवधनिवासा।नामगासुरामानुजदासा॥१२

दोहा–रतनसिंहासनकेविमल, सोइमहंतपरवीन । रामायणअरुभागवत, मोहिपढ़ायगोदीन ॥ ३ ॥

वेदांतादिशास्त्रकेज्ञाता।शीलस्वभावप्रभावविख्याता॥१॥तेऊकृपाकरिभयेसहायक।मोकोअतिआनँदकेदायक॥२
निदारामनामजिनकेरो । सकलप्रधानप्रधाननिवेरो ॥ ३ ॥ ठाकुररामपुत्रभोतिनको।गणनाथनंदनभोतिनको ॥४
रामभक्तशुभबुद्धिउदारा।करतसकलरसकाव्यअपारा ॥ ५ ॥मेरेपितुकेनाजोमंत्री । नियमानंदधर्मनिमंत्री ॥ ६ ॥
इताकोनंदनहनुमाना । सोइलिख्योयहग्रंथमहाना॥७॥ संवतओनइससमुगच्छायन । मानमानकोपरमसुहावन॥८
कातिकमासअरंभहिकीनो । आनँदअँबुधिग्रंथनवीनो॥९॥रचतरीतिगँवरपादिचारी।कियाकृपाकरिपाग्गुरारी॥१०
मोनइससैग्यारहकोसाला।पूसमासगुरुवारविशाला॥११॥कृष्णपक्षदशमीसुखदाई।धनकीनसमंकोनिहुआई ॥१२
आनँदअंबुनिधिहेशुभग्रंथा।जोसंतनसंततसतपंथा॥१३॥तवपदग्रंथपठमापनभयउ।ममवांछितपूरणदिगयउ॥१४ ॥

दोहा–सत्यसत्यमेंकहतहौं, दोउहाथउठाय । मेरोनहिंकरतूतिकछु, सबकीन्हीयदुराय ॥ ४ ॥

भयोसमाप्तग्रंथवडभागा । बैठेशुभथलछिमनवागा॥१॥जयदायिगुरुलुइंदुपदकंजा। निजदासनकेभवभयभंजा॥२॥
जिनकेसुमिरणकियेसदाहीं।रहतकलेशलेशतननाहीं॥३॥सोइभवसागरकेदरपोतृ । नमअज्ञानकोभानुउदोतृ ॥ ४॥
के करकुमुदकलानिधिसोई।भवफाँसीकाटननसजोई॥५॥जपतमदनकेदनकमला।रामजगलकर्मपुनाला॥६॥
अपिनतापत्रयजीवनकाहीं।प्रेमपयोनिधिसोइसदाहीं॥७॥भवननभुवनहुसदअगरिदा।भक्तसदानकमलानंदा॥८॥
रघुपतिपुरकोकरनपयाना।हरिदासनकोसोइसुपाना॥९॥त्वाविधुदयावानकदानके।सन्तनुभगुवनभगवनके १०

तिनमेंसुमतिभक्तभगवाना । होतभयोजगविदितमहाना॥हनिसुबाहुमारीचहुकाहीं । [illegible]
श्रीरघुनंदनलषणसमेतू । विश्वामित्रसंगमतिसेतू ॥ सुमतिहिपावनकरनकृपाला । [illegible]
सुनतभूपआगेचलिलीन्ह्यों । रामहिंमुनियुतपूजनकीन्ह्यों॥ मुनियुतलषणसहितरघुराई । [illegible]
धनअरुधामसहितपरिवारै । सौंपिदियोअवधेशकुमारै ॥ रघुवरचरणभक्तिनृपपाई । [illegible]

दोहा—ऐसोसुमतिनरेशको, पावनचरितअनूप ॥ नेशुकरामचरित्रयुत, तुमहिंसुनायोभूप ॥ ३६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—मनुकेशतसरजातिनृप, वेदप्रवीणसुधर्म ॥ जोअंगिरमखकोकह्यो, दुसरेदिनकोकर्म ॥ १ ॥

नामसुकन्याकन्याताकी । त्रिभुवनमेंजोपरमप्रभाकी ॥ सोकन्यालैनृपसरजाती । गवनकियोकाननअरियाती
गयेच्यवनमुनिआश्रममाहीं।कछुककालनृपबसेतहाँहीं॥२ [illegible]
करतरहेतपच्यवनतहाँहीं । लागिगयोविमोटतनमाहीं ॥ जींगनसरिसनैनद्युतिदेखी।नृपकन्याअचरजउरलेखी॥
लैकरकंटककयचपलाई । छेद्योयुगजोतिनबरिआई ॥ तातेकढीरुधिरकीधारा । बालसुभावनकियोबिचारा ॥

दोहा—तबनृपदलमलमूत्रको, होतभयोअवरोध ॥ लखिभूपतिविसमितभयो, पायोनहिंकछुशोध ॥

निजसुभटनसोंपूछनलागे । कौनकर्मकरितुमदुखपागे॥५॥ किधौंकियोमुनिकोअपराधा । [illegible]
सुभटोमोहिंपरतअसजानी।कोउदूख्योआश्रमअज्ञानी॥६॥तबकन्याडेरायकहिदीन्ह्यों।पिताकर्ममैंअसकछुकीन्ह्यों
गईकरनमेंविपिनविहारा।यकविमोटयुतज्योतिनिहारा॥कंटकलैतेहिंबेधनकीन्ह्यों।कछुविचारिमनमेंनहिंलीन्ह्यों॥
सुनिकन्याकेवचननरेशा । अतिडेरायकीन्ह्योंअंदेशा ॥ जानिच्यवनमुनिकोअपराधा । [illegible]

दोहा—मेरीसुताअयानते, कियोआपअपराध ॥ करियेकृपाकृपालअब, मिटहिसैनकोबाध ॥ ८ ॥

तबनृपसोंपूछ्योमुनिराई । कितेवर्पकीसुतासुहाई ॥ हैविवाहिताकिधौंकुमारी । देहुबतायहमहिंधनुधारी ॥
ऐसेसुनिमुनिवचनभुवाला।मुनिअभिलापजानितेहिकाला॥ दियोविवाहिसुतामुनिकाहीं।तबअनंदभोनृपदलमाहीं॥
च्यवनहिंकरिप्रसन्ननरनाहा।आयेनिजपुरसहितउछाहा ॥९॥ कन्याअतिकोपीपतिपाई।कियप्रसन्नकारिकैसेवकाई॥
जैसेहोइच्यवनअभिलापे । तैसेकर्मकरैरुचिरापे ॥ १० ॥ यहिविधिबीतिगयेकछुवारा । आयेतबअश्विनीकुमारा

दोहा—तिनकोकरिपूजनच्यवन, कियोविनैकरजोरि दीजैवरअसहोइद्रुत, युवाअवस्थामोरि ॥

जामेंमुदितहोइललिबाला । ऐसोदीजेरूपरसाला ॥ ११ ॥ तोमेंकरिकैयज्ञसुजाना । देहौंतुम्हेंसोमकोपाना ॥
सोमपानअबलोंतुमकाहीं । करिकैयज्ञदेतकोउनाहीं ॥१२॥ कह्योवचनतबवेदअधीशा । ऐसेहोइहैतुमहिंमुनीशा
म मद्दुसिद्धिसरोवरमाहीं।अबविलंबकीजेकछुनाहीं॥१३॥मुनिमुनिकहहमवृद्धमहाना।केहिविधिजायकरेंअस्नाना
तबनिनकहेंअश्विनीकुमारा।आशुउठायतडागसिधारा॥सरबरहिलिच्यवनहिंनहवाये।मुनिवपुअपनेसरिसबनाये॥

दोहा—धरतेनिकरेपुरुपत्रय, पहिरेवसनअनूप । कमलमालकुंडललसत, तियमनहरणस्वरूप ॥ १५ ॥

निरखिपुरुपत्रयभानुसमाना । सुंदरिकोभ्रमभयोमहाना ॥ इनमेंकोनअहैपतिमेरो । हेअश्विनीकुमारनिबेरो ॥१६॥
तबअश्विनीकुमारसुखपाई।तियपतितियकेदियोबताई॥पुनिह्वबिदाच्यवनसोंदेवा।गयेधामकोउरल्योनभेवा ॥१७॥
सदैनपरकरनेदनसपाती । च्यवनाश्रमहिंगयेतेहिराती॥ युवापुरुषलखिसुतासमीपे।महाकोपभोतहाँमहीपे ॥१८॥
[illegible]कन्यावंदनकीन्ह्यो । नृपउदासआशिषनहिंदीन्ह्यो॥१९॥दुहितासोंबोलेनृपज्ञानी।अरेपापिनिसुतानदानी

दोहा–सुरपूजितमुनिवृद्धपति, तिनकोतजियहिठाम ॥ जारपुरुपसोंप्रीतिकिय, कहाकियोयहकाम ॥
[illegible] । करिअधर्मतेंनेहलगायो ॥२०॥ तेरीमतिकिमिभइविपरीती ।त्यागिदईममकुलकीरीती ॥
[illegible] ॥२१॥
मुनिकोपितापितुवचनकुमारी।बोलिमंदविहँसीसुकुमारी॥अहेंआपकेयेइजमाई । पिताकरहुनहिंभ्रमदुखछाई ॥२२॥
मुनिजनकहिवृत्तांतसुनाये।जेहिविधिच्यवनयुवावपुपायो।सुनतवचनभयशीतलछाती।कन्यहिमिलेमुदितसरजाती।
दोहा–तहाँच्यवनमुनिभूपको, करवायोवरयाग ॥ दियअश्विनीकुमारको, सोमपानकोभाग ॥
सोमलह्योअश्विनीकुमारा।वासवलखिकोपअपारा।नृपहिहननकहँकुलिशउठायो।देखिच्यवनमुनिअतिदुखपायो
तपवलसोंहुंकारहिछाँड्यो।वज्रसहितवासवभुजआड्यो २५ तवसोंजगअश्विनीकुमारा।लह्योसोमपावनअधिकारा॥
तिनकोप्रथमवैद्यगुनिदेवा । भागनदेतरहेनरदेवा ॥ २६ ॥ नृपसरजातिपुत्रत्रयजाये । तेऐसेजगनामकहाये ॥
एकउत्तानवर्हिमतिमाना । दूजोभोआनर्त्तसुजाना ॥ तीजोभूरिपेणअतिदाता । एतीनहुंभेजगविख्याता ॥
दोहा–रैवतसुतआनर्तको, भयोवीरकुरुराय ॥ देशअनर्तहिसिंधुमधि, दियद्वारिकावसाय ॥ २७ ॥
तामेंवसिशत्रुनकहँघाल्यो । आनर्त्तादिदेशसवपाल्यो ॥२८॥ रैवतकेशतभयेकुमारा । तिनमेंज्येष्ठककुद्मिउदारा॥
अरुताकेयकभईकुमारी । नामरेवतीरतिछविहारी ॥ ताकोव्याहकरनकेहेतू । पूछनगयेविरंचिनिकेतू ॥
[illegible] ।महँआतिसुखछावत । गणगंधर्वरहेवहुगावत ॥ पूँछनकोऔसरनहिंपायो । राजहुगानसुननमनलायो ॥
[illegible]मुहूरतमारिजवबीती [illegible] ॥२९॥३० तवभूपतिलहिआनँदधामा।सादरविधिकहँकियोप्रणाम।
दोहा–हेविरंचिकरिकैकृपा, मोकोंदेहुवताय ॥ कोनेवरकोरेवती, देहुँधरणिमहँजाय ॥
सुनिविधिविहँसिकह्योमृदुवानी।अवलोंकसनकह्योविज्ञानी ३१ देनकह्योजिनभूपकुमारन।तेमहिमेंमरिगयेहजारन॥
तिनकेनातिपनातिहुँनाहीं । नामहुनाहिंसुनियतश्रुतिमाहीं ॥३२॥ गयोवीतिइकइतेमुहूरत।सत्ताइसचौकड़ीगईउत॥
तातेभूपभूमिमहँजाई ॥ ३३ ॥ देहुव्याहिकन्यावलराई ॥ हरनहेतभूभारमहाना । भूमहँप्रगटभयेभगवाना ॥ ३४ ॥
जाकीकीरतिकीर्त्तनकीन्हें।होतिपुण्यजानहिंवहुदीन्हें।ऐसोविधिशासनलहिराजा।आयोनिजपुरव्याहनकाजा॥३५॥
दोहा–तहँयक्षनकेत्रासते, रह्योनकोउमहिपाल ॥ वहुतकालमेंकृष्णप्रभु, विरच्योनगरविशाल ॥
तहँवलिरामहिंरेवती, रैवतदियोविवाहि ॥ वदरीवनकोतपकरन, गयेभूपचितचाहि ॥
सोरठा–रामरेवतीव्याह, रुक्मिनिपरिणयग्रंथमें ॥ वरण्योसहितउछाह, विस्तरतेइकसर्गभरि ॥ ३६ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–नभगपुत्रनाभागभो, ब्रह्मचर्य्यलवलीन ॥ काव्यशास्त्रमेंअतिनिरत, पढ़नहेतुमनदीन ॥
गुरुगृहजायशास्त्रपढ़िलीन्हों । वहुतकालतहँवासहुकीन्हों ॥ जववेपढ़नगयेगुरुपाहीं । तवतिनकेभ्राताग्रहमाहीं ॥
पितहिदूरिकरिधनअरुराजू । वाँटिलियोसवअपनेकाजू॥जवनाभागलौटिगृहआये।पढिकैसकलशास्त्रमनभाये ॥१॥
लख्योभागवाँटसवभाई । नाभागहुपूछेहुतवजाई ॥ भ्रातदेहुअवभागहमारो । हमरहुहैयामेंअधिकारो ॥
तवसवभ्रातावचनउचारे । अहैंपिताप्रभुभागतुम्हारे ॥ गयेभूलिहमवाँटतमाहीं । तातेलेहुजायपितुकाहीं ॥
दोहा–जनकपासनाभागतव, जायकह्योवृत्तांत ॥ देतभागभ्रातानहीं, कहेलेहुपितुदांत ॥
नभगकह्योतवसुनुनाभागा । करिहोकाहहमाहिंलेभागा ॥ छलकीन्हेंहुतुमसोंसवभाई । पैहमदेहिंदपायवताई ॥२॥
अंगिरविप्रकराहिंजहँयागा । जाहुतहाँआशुहिनाभागा ॥ यागकर्मछठयेंदिनकेरो ॥ तिनहिंदिनआवतपुत्रयनेरो ॥ ३॥

दुर्वासा उवाच।

महिमाहरिदासनकीभारी।लियोआजुमैंअवशिनिहारी॥यद्यपिमैंअपराधहुकीन्ह्यों।तदपिवचायभूपतुमलीन्ह्यों॥
कठिनकहासज्जनकोहोतो। समरथसवत्यागनमेंसोतो॥
दोहा–जेसज्जननिजप्रेमवल, हरिहिवश्यकरिलेयँ॥ तेमुक्तिहुकोलेतनहिं, यद्यपिहरिहठिदेयँ॥ १६॥
जाकोनामपरतजनकाना। छूटिजातकलिकलुपमहाना॥तेहिमाधवकेदासनकाहीं।दुर्लभकहाअहैजगमाहीं॥
गन्योनमोरभूपअपराधा।मोहिंरक्ष्योकरिकृपाअगाधा॥१७॥सुनिमुनिवाणीसहितसमाजा।मोदितअंबरीपमहराजा॥
दुरवासाकेपदशिरनायो। बहुप्रकारभोजनकरवायो॥१८॥करिभोजनसंतोपहिलहेऊ।अतिप्रसन्ननृपसोंमुनिकहेऊ॥
भोजनकरहुतुमहुँअवराजा॥१९॥ मोरसुधारिदियोसवकाजा॥अंवरीपतुवदरशनपाई। मैंपावनह्वैगयोवनाई॥
दोहा–महाराजयहआपको, जाहिरसुयशमहान॥ स्वर्गहुमेंसुरसुंदरी, करिहैंनितप्रतिगान॥ २१॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिराजासोंदुरवासा। ब्रह्मलोकगोउड़तअकासा॥ २२॥ चक्रत्रासभागतदुरवासै। गयोवर्पइकविनाहुलासै॥
तवलोंभूपरह्योतहँठाढ़ो। सलिलपानकरिकैव्रतगाढ़ो॥२३॥जवदुरवासागमनहिकीन्ह्यों।तवराजाभोजनमनदीन्ह्यों॥
अतिपवित्रद्विजकृतपकवाना। द्विजभोजनकोशेपप्रमाना॥अंवरीपसोभोजनकीन्यों।निजपरिवारसहितसुखभीन्यों॥
द्विजदुखमोचनअरुनिजधीरा। जान्योंसवैकृपायदुवीरा॥ ऐसेअंवरीपमहराजा। भयेश्रेष्ठहरिदाससमाजा॥२५॥
दोहा–करिकैभक्तिअनेकविधि, कृष्णचरणचितदीन॥ विभौभोगविधिलोकलौं, नरकसरिसगुनिलीन॥२५॥
पुनिनिजसुतकोराजदै, अंवरीपवनजाय। तनतजिवैकुंठैगयो, हरिपदचित्तलगाय॥ २६॥
अंवरीपकीयहकथा, जोगावतचितलाय॥ होतभक्तभगवानको, अवशिकृष्णपुरजाय॥ २७॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे पंचमस्तरंगः॥ ५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–अंवरीपमहराजके, भेशततीनिअनूप॥ केतुमानअरुशंभुद्वै, तिनतेज्येष्ठविरूप॥
सुतविरूपपृपदश्वनरेशा। भयोरथीतरतासुसुवेशा॥ १॥ रह्योनपुत्ररथीतरकेरे। तहँअंगिरातेहिसमय...
मोतियमेंसुतप्रगटकरीजै। याकोकछुनदोपाचितदीजै॥ तवअंगिराअमितसुखपाये। नृपतियमहँसुतवहुउपजाये॥
ब्रह्मतेजयुतभयेकुमारा॥२॥ जिनहिंअंगिरानामउचारा॥ क्षेत्ररथीतरकोतहँरहेऊ। तातेगोत्ररथीतरकहेऊ॥३॥
मनुछींकतइक्ष्वाकुनरेशा। प्रगटभयोजनुद्वितियदिनेशा॥ श्रद्धातेइक्ष्वाकुजोगायो। सोसमुदायहिअर्थजनायो॥
दोहा–शतकुमारइक्ष्वाकुके, तिनमेंतीनिप्रधान॥ इकविकुक्षिनिमिदूसरो, दंडकतृतियसुजान॥ ४॥
आर्य्यावर्त्तहिसहितसमाजा। भेपचीसपूरवकेराजा॥ अरुपश्चिमकेभूपपचीसा। मध्यदेशकेतीनिअधीशा॥
तेइसवदक्षिणकेनरनाहा। चौविसभेनृपउत्तरमाहा॥५॥ एकसमयइक्ष्वाकुनरेशा। सुतविकुक्षिकहँदियोनिदेशा॥
ह्यःअष्टकाश्राद्धगृहमाहीं। टाटोद्रुतशुचिआमिपकाहीं॥६॥तवविकुक्षिवेगिहिवनजाई।मारयोमृगनशशनसमुदाई॥
टगीभूखलीन्योंशशखाई। पितुकाशासनदियोभुलाई॥७॥ औरसवैपितुपहँलैआये। तवइक्ष्वाकुवसिष्ठवुलाये॥
दोहा–कह्योपाविशुचिकीजिये, दोपश्राद्धकेपाग॥ तववसिष्ठमनमानिजिय, ऐसोदियोनियोग॥
यहआमिपनहिंदेवगना। [illegible]श्राद्धककाजा॥ सुतसुनखियोशशाइकखाई। औरमृगनतुमकोदियल्याई॥
यहसुनिकइक्ष्वाकु[illegible]। [illegible]॥[illegible]अतिभारी॥दियोराज्यतेतुरतनिकारी॥

क्ष्वाकुअभंगा । गुरुवसिष्ठसोंकरिसतसंगा॥कछुककालमहँत्यागिशरीरा।गयेकृष्णपुरकोमतिधीरा ॥१०॥
मरणविकुक्षिकुमारा।आयोकोशलनगरउदारा॥राजासनलहिमहिचहुँओरा।शासनकियइक्ष्वाकुकिशोरा ॥
-बहुमखकरिहरितुष्टकिय, राखिधर्ममरयाद ॥ शशखायोतातेपरयो, ताकोनामशशाद ॥ ११ ॥
लपुत्रएकजायो । कर्मप्रभावनामत्रयपायो ॥ प्रथमककुत्स्थपुरंजयदूजो । इंद्रवाहभोनामसुतीजो ॥ १२॥
सुररणभोघोरा । चल्योनतबदेवनकोजोरा ॥ हारिमानिसबसुरदुखपाये । सिगरेअवधनगरमहँआये ॥
क्योककुत्स्थढिगजाई । करियेभूपहमारिसहाई ॥१३॥ तबभूपतिअसवचनउचारे।नाहिंवाहनरणयोगहमारे॥
वाहनममहोवैं । तौहमचलिअसुरनदलखोवैं ॥ सुनिवासवअसगयोलजाई । तबमुकुंदआसिगिरासुनाई ॥
ा-नृपकेवाहनहोहुतुम, लाजछोंड़िसुरराज ॥ अनुचितकरमहुँकोकरब, उचितआपनेकाज ॥
वभोवृषभअनूपा ॥१४॥ ताकेचढ्योककुदपरभूपा॥तातेनामककुत्स्थकहायो।असुरनजीतनकोमनलायो ॥
हिरिसायकधनुधारी१५तापैकृपाकियोगिरिधारी॥नृपककुत्स्थलैसुरनसमाजा।चल्योअसुरजीतनकेकाजा॥
ुरपश्चिमदिशिमाहीं।घेरिलियोताकोचहुँधाहीं ॥१६॥ निरखिदैत्यनिकसेवरजोरा । भयोसुरासुरसंगरघोरा॥
द्रमहँचढ्योभुवाला।तज्योविशिखधाराविकराला १७ उठीशरनतेपावकज्वाला।जरनलगेतहँअसुरकराला ॥
हा-तबदानवसिगरेसमिटि, धायेनृपकीओर । शरनमारिजर्जरकियो, नृपककुत्स्थवरजोर ॥
भूपतिवाणप्रचंडा । खंडखंडभेरुंडहुमुंडा ॥ नृपककुत्स्थनिजबलप्रगटायो । मारिअसुरयमलोकपठायो ॥
वबँचेतेहिकाला।तजिआयुधभजिगयेपताला१८याहिविधिजीतिदानवनराजा।शोभितभोअतिसुरनसमाजा ॥
पुरकोसबधनलीन्ह्यों । वासवकाँहँबकसिनृपदीन्ह्यों ॥ तातेपायपुरंजयनामा । नृपककुत्स्थआयोनिजधामा ॥
वाहनभोनृपकेरो । इंद्रवाहतेहिंनामनिवेरो ॥ १९ ॥ पुत्रपुरंजयभयोअनेना । ताकोसुतप्रभुभोबहुसेना ॥
हा-विश्वरंधितेहिसुतभयो, विश्वरंधिसुतचंद । चंद्रसुवनयुवनाश्वभो, दाताद्विजनअनंद ॥ २० ॥
भयोयुवनाश्वकुमारा । नामजासुशावस्तिउचारा ॥ जोशावस्तीपुरीबसायो । ताकोसुतबृहदश्वकहायो ॥
तकुवलआश्वजगभयऊ।सोनितरामनामसुखलयऊ॥ जबबृहदश्वलगेवनजाना । तबउतंकमुनिकियेपयाना ॥
विनयबृहदश्वहिपाहीं । हमहिंरक्षिजैयेबनमाहीं ॥ धुंधुनामदानवइकघोरा । नाशिदियोसबआश्रममोरा ॥
जमहँछोडतश्वासा । रजउड़ायनाशतपरकाशा ॥ जंबुद्वीपहिकोशहजारा । ह्वैजातोअतिशयअंधियारा ॥
ोहा-ताकोमारिनरेशतुम, पुनितपहितवनजाहु । राजनकोयहधर्महै, दूरिकरनद्विजराहु ॥
ृहदश्वकह्योमुनिपाहीं । हमअबअसुरमारिहैंनाहीं ॥ मोसुतकुवलयाश्वबलवारा । ताकेसुतइकईसहजारा ॥
पुत्रनतहाँसिधारी । अवशिधुंधुदानवकोमारी ॥ असकहिदैनिजसुतहिंनिदेशा।वनहिंगयेबृहदश्वनरेशा ॥२१॥
लयाश्वकहसुतनसमेतू । लैगवनेमुनिनिजहिंनिकेतू ॥धुंधुकरततपजहँबलवाना। कुवलयाश्वतहँकियोपयाना ॥
योजबनहिंदानवकाहीं । धरणिखनावनलगेतहाँहीं ॥ कोसएकजबमहिपनिडारयो।तबहिंधुंधुदानवहिंनिवारयो॥
दोहा-महाभयंकरपीततन, रह्योलगायेध्यान । कुवलयाश्वताकेहन्यो, उरमेंशूलमहान ॥
खोल्योदानवदृगकाहीं । देख्योबड़ीसेनचहुँधाहीं ॥ तबकोपितह्वैपावकज्वाला । मुखतेछोड्योअसुरकराला ॥
केसुतइकईसहजारा । तिनकोअसुरक्षणहिंमेंजारा ॥ तीनिपुत्रबाँचेनृपकेरे । सेनहुराहिनगईनृपनेरे ॥ २२॥२३॥
् २ पिलाश्वदूसरो । अनुभारतभद्राश्वतीसरो ॥येत्रयसुतनसहितमहिपाला।काटितेकाढिकठिनकरवाला ॥
यधुंधुदानवकहँमारा । उभयखंडआशुहिकरिडारा ॥ तबउतंकमुनिलहिसुखधामा । धुंधुमारदियभूपहिनामा ॥
दोहा-यहिविधिदानवमारिकै, अवधपुरीमहँआय । देहढाश्वकोराजनृप, तपकीन्ह्योंवनजाय ॥
ेदृढाश्वकोभयोकुमारा । जासुनामहर्यश्वउदारा ॥ ताकोतनयनिकुंभप्रवीरा ॥२४॥ ताकेबर्हणाश्वरणधीरा ॥
केभयेकृशाश्वकुमारा । तासुसेनजितभूपउदारा ॥ सेनजीतकोपुत्रमहाना । भोयुवनाश्वभूपबलवाना ॥
केतनयभयोजबनाहीं । सौरानीलैगोवनमाहीं ॥ २५॥ देखिदुखीयौवनाश्वभुवाला।तापरमुनिकरिकृपाकृपाला ॥

पुत्रइष्टतेहिंयज्ञकरायो॥२६॥अभिमंत्रितजलघटहिभरायो॥रानिनपीवनहेतानिशाला। स.

दोहा–एकसमयतहँरातिके, राजहिलगीपियास। सोवतविप्रनजानिके, गयोकलशके

कियोपुत्रदायकजलपाना। भयोभूपकेगर्भमहाना॥२७॥ [illegible]

पूछेहुकौनकर्मयहकीन्ह्यो२ [illegible]

तबसिगरेमुनिवचनउचारा। लिखोभाग्यकोटरतनटारा॥ परमेश्वरकहादियोप्रणामा।देहुसु

पुनिजबबीतिगयेदशमासा। सबैसुयोगकियेपरकासा॥तबनृपदक्षिणकुक्षहिफारी।काढिआ

दोहा–तबमुनिकियोविचारसब, बिनमाताकोलेखि। दूधपियेगोकोनको, रोवतबालक

तबप्रसन्नह्वैवासवआयो। सबैमुनिनकोवचनसुनायो॥ मैंयाकोपयपानकरैहौं। रक्षणकब

पुनिबालकमुखअंगुलिडारी।रोवहुमतिअसिगिराउचारी॥ वासवतर्जनिअंगुलिपाई। सुध

यातेनामपरयोमांधाता। भयोभूपजगमेंविख्याता॥३१ [illegible]

तपकारितहँयुवनाश्वनरेशा। बस्योजायवैकुंठप्रदेशा॥३२॥ भयोचक्रवर्तीमांधाता। जा

दोहा–एकसमयकुरुनाथसों, मांधातानरनाह। चढ़िविमानगमनतभयो, सुरपुरसहित

करिकैवासवकोदरबारा। पायतहाँअतिशयसतकारा॥चढ़िविमानमहँपुनिमांधाता।अवध

सुमनमालअंगनिअँगरागा। पहिरेदिव्यवसनबड़भागा॥ सुरसुंदरीकरहिंकलगाना। फल

यहिविधिभूपमेरुनियरानो।तहँरावणहूँकियोपयानो॥ चंदलोककेजीतनकाहीं। जातरहे

लखिविमानमांधाताकेरो। रावणविस्मयकियोघनेरो॥ खड़ोभयोकोपहिउरछाये। तब

दोहा–तबदशशिरमुनिसोंकह्यो, काकोअहैविमान॥ आवतमेरेसनमुखे, करतप्रकाश

तबरावणसोंकह्योमुनीशा। यहहैअवधकेरअवनीशा॥ याकोनामअहैमांधाता। त्रिभुव

तबरावणपूछ्योमुनिपाहीं। मोसोंयालरिहैकीनाहीं॥ मुनितबकह्योसुनोभुजबीशा। य

यातोऐसोयुद्धकरैगो। जामेंतुमकोजानिपरैगो॥ तबकोपितदशशिरबलवाना। [illegible]

जबभूपतिविमानढिगआयो। तबमांधातैवचनसुनायो॥ कारिरणमोसोंतबतुमजाहू। अ

दोहा–वचनसुनतदशशीशके, कह्योभूपबलधाम॥ जोजीवनचाहैनहीं, तोतैंकरुसंग्रा

सुनिदशकंधरवचनउचारा। नहिंजानौबलभूपहमारा॥ वरुणकुवेरइंद्रयमराजे।

तैंमानुपलघुकेतिकबाता। नारिनमेंमदमत्तदेखाता॥ असकहिदीन्ह्योंसचिवनशासन।

शुकसारनप्रहस्तरणधीरा। औरमहोदरयुद्धगँभीरा॥ विरूपाक्षअरुबलीअकंपन।

लैप्रभुशासनयेपटबीरा। मारयोमांधातहिबहुतीरा॥ पुनिनृपपैछोड़ीशरधारा। मन

दोहा–दीपकगयेछपायसब, सुरतियलगीपराय॥ धरयोधरापतिधनुपकर, कियोयुद्धम

छंदवामन–भूपतितजीसरधार। मूँछोसचिवइकवार॥ नृपबाणलगतकठोर। गिरिगेसचिव

पुनिउठ्योवीरप्रहस्त। गहिकैशरासनहस्त॥ द्वैसहसबाणचलाय। अवधेशक

पुनिकैभुशुंडीभल्ल। अरुभिंडिपालतवल्ल॥ यकवारतजिनृपराय। दियराक्षस

रावणसचिवतहँसोय। भागेसमरतजिरोय॥ दशवदनसमरअकेल। रहिगयोवी

मुद्गरलियोनरराय। बहुवारताहिभँमाय॥ दशशीशकोरणहाँकि। मुद्गरहन्योते

सोलग्योराक्षसशीस। मुरछितगिरयोभुजबीस॥ नृपबढ्योमुदजयपेखि। ज्यों

तहाँभयोहाहाकार। निशिचरसबैइकबार॥ रावणहिलीन्ह्योंघेरि। नृपओरसके

द्वैदंडमहँलंकेश। ह्वैसावधानसुवेश॥ लैबाणपरमकराल। मारयोनृपतिकेभाल

मुरछितभयोनरनाह। नहिंसुधिरहीतनमाँह॥ तबसचिवआयेधाय। गुनिमरोसे

तबकन्यनढिगगयेसिधारी । तहँलखिमुनिकहँनृपतिकुमारी॥मोहिगईसबएकहिवारा । रह्योनतनको
मुनिकोसबैसुतावरिलीन्ही४३आपुसमाहँकलहअतिकीन्ही॥यहसुंदरवरहमरेलायक।तुम्हरेयोगनहै
दोहा-ऐसोमांधातासुन्यो, दुहितनकेराविवाद । दियोपचासोंकन्यका, मुनिकहँयुतअहलाद ॥
लैदुहितनआश्रमहिसिधारे । तपबलरचेअनूपअगारे ॥ रचीविपुलवाटिकासुहाई । जहाँवहतमारुतसु
सहितसरोजसरोवरसोहैं । मंजुमरालमुनिनमनमोहैं॥काननकलितकुंजचहुँओरा।मत्तमिलिंदकरहिंकल
ठौरठौरवरसेजबिछाई । भूषणवसननकीससुदाई ॥ मज्जनहेतसुगंधितनीरा । अंगरागसुममालसुवीरा।
नानाविधिव्यंजनपकवाना । धूमधूमचहुँओरमहाना ॥ करनहेततहँमुनिसेवकाई । सजेदासदासीससुदा
दोहा-ऐसोथलरचिमुनितहाँ, कीन्ह्योंविविधविहार । जहँवंदीगणहोतभे, भृंगविहंगअपार ॥ ४६ ॥
सौभरिकोलखिविभौमहाना।तज्योचक्रवर्तीअभिमाना४[illegible]
[illegible]
लखतमीनमैथुनजलमाहीं।मनसिजवाणहन्योमोहिकाहीं ४९ [illegible]
मैंशठमीनमैथुनैजोई । ब्रह्मज्ञानदीन्ह्योंसबखोई ॥५०॥ जोकोउमुक्तिलहनमनलावै । तौकामिनसँगजियनल
दोहा-जोगृहस्थकोसँगकरै, तौहरिभक्तनकेर । भजनकरैभगवानको, वैठिसाधुकेनेर ॥ ५१ ॥
मैंतौप्रथमहिरह्योअकेलो।कियोकबहुँनहिंएकहुचेलो ॥ निरखिमीनमैथुनदुखकारी । [illegible]
तबममभयेपचासस्वरूपा । कीन्ह्योंइहाँविहारअनूपा ॥ [illegible]
विपयतोपतद्यपिभोनाहीं।हमसोंकुमतीकोजगमाहीं५२[illegible]
तहँकरितपयोगानलमाहीं । दियजरायअपनेतनकाहीं॥श्रीभगवानचरणचितलाई । भयेमुक्तसौभरिमुनिराई॥
दोहा-तिनकीनारीछोडिगृह, जायकंतकेसंग । पावकमेंतनजारिकै, लीन्हींमुक्तिअभंग ॥ ५५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-मांधाताकोप्रवरसुत, अंबरीषभोजोइ । ताकोनृपयुवनाश्वकिय, अपनोसुतमुदभोइ ॥
अंबरीषकोसुतबलधामा । यौवनाश्वभोताकोनामा ॥ यौवनाश्वसुतभयोहरीता । मांधाताकेगोत्रपुनीता ॥ १ ॥
मांधताकोसुतबलवाना ॥ जोपुरुकुत्सभयोमतिमाना ॥ तिनकोअवधनगरअहिआई । दियोनर्मदाभगिनिसुहा
तासुकुमारीकेसबभ्राता । कह्योनर्मदासोंअसिबाता ॥ लैआवैभूपतिहिरसाले । इतैवसावहुविरचिसुआले ॥
तबभूपतिहिनर्मदारानी । लगपनीपतालसुखदानी ॥ तहाँजायभूपतिवलवाना । लहिकैकृपाकृष्णभगवाना ॥ २
दोहा-गंधर्वनमारयोतहाँ, करिकैजंगमहान ॥ सर्पनकोतहँमुदितकरि, पायोअसवरदान ॥
जोनृपयहतुम्हारजसगावै । तोसर्पनतेंनहिंभयपावै ॥ ३ ॥ त्रसतदस्युपुरुकुत्सकुमारा । [illegible]
ताकेभोअनरण्यकुमारा । दीन्ह्योंदानअनेकप्रकारा । तबराजासनमहँमहराजा । वैठिवलीअनरण्यविराजा ॥
तबरावणकोशलपुरआयो । युद्धकरनकहँवचनसुनायो ॥ तबकोपितअनरण्यनरेशा । सेनसजनकहँदियोनिदेश
तबमंत्रीसबसेनसजाई । दियअनरण्यदिसचदिसाई ॥ तबअनरण्यकढ्योमहराजा । भाइनभृत्यनसहितसमाजा
दोहा-त्रदैदशशिरसोंनृपतिसों, होतभयोरणघोर । निशिचरनृपभटबहुमरे, चलेबाणचहुँओर ॥
[illegible] । द्वंद्वयुद्धतहँभयोघनेरो ॥ भूपतितहँशरजालचलाई । दीन्ह्योंदशकंधरकहँछाई ॥
[illegible]रअनरण्यदशशीदिकाला । हँसाटटायतदोदशभाला ॥ कह्योनभूपमोरबलजान्यो । तातेमोसोंसंगरठान्यो ।

तबअनरण्यकह्योअसबानी । सुतुरेशठदशकंधरमानी ॥ हमतोबूढभयेयहिकाला । रह्योनममविक्रमहुविशाला
दोहा–मोकोंसंगरमेंहने, तेंनकहेहैवीर ॥ पैमेरेकोउवंशमें, जोह्वैहैरघुवीर ॥
सोतोकोंपरिवारसमेतू । वधकरिहैरचिसागरसेतू ॥ असकहिसोअनरण्यभुवाला । तज्योप्राणरणमहँतेहिकाल
ऊँकहिगयोमुदितलंकेशा । कियोनकछुमनमहँअंदेशा ॥ नृपअनरण्यपुत्रइकरहेऊ । नामतासुहर्यश्वहिकहेउ
ताकोसुतभोअरुणमहीशा । तासुत्रिबंधनअवधिअधीशा ॥४॥ ताकेभयोत्रिशंकुकुमारा।गुरुवसिष्ठसोंवचनउचा
मोहिंऐसोतुमयज्ञकरावो । यहितनतेस्वर्गहिपहुँचावो ॥ तबवशिष्ठबोलेअसबानी । यहअसाध्यहैनृपअज्ञानी ॥
दोहा–तबत्रिशंकुअतिदुखितह्वै, गुरुपुत्रनपहँजाय ॥ बोलेयहितनुतेस्वरग, दीजैमोहिंपहुँचाय ॥
तबअसकहेवसिष्ठकुमारा । तुम्हरेभूपननेकविचारा ॥ जोनहिंपितावसिष्ठकरायो । सोहमरोनहिंबनतबनायो
तबअसकह्योत्रिशंकुमहीशा ।अबहमजैहेंअनतमुनीशा॥होइअवशिकल्याणतुम्हारा । असकहितहँतेभूपसिधार
तबगुरुसुतकरिकोपकराला । दीन्ह्योंशापहोहुचांडाला ॥ तबनृपअवधनगरमहँआई । शोचतसिगरीरैनबित
भयेभोरनृपभेचंडाला । नीलवसनतनुश्यामविशाला ॥ हेमरजतभूषणजेधारे । भयेलोहकेतेअतिकारे ॥
दोहा–महाज्वालहियतेउठी, जरोजातसबगात ॥ भूपतिव्याकुलभ्रमतभो, कहुँनलह्योनिजत्रात ॥
गुरुपुत्रनकोशापकराला । तेहितेजरोजातमहिपाला ॥ गोत्रिशंकुतबकौशिकपाहीं । दोउकरजोरिपरयोपगमा
तबअपनोंकहिगयोहवाला।जेहिहितशापितभयोभुवाला॥सुनिकौशिकअसवचनउचारा।करुत्रिशंकुनहिंशोचअ
याहीतनुतेतोहिंदिविमाहीं । पहुचैहौंकछुसंशयनाहीं ॥ असकहिविश्वामित्रमुनीशा । रच्योयज्ञतहँबैठमहीश
सबदेवनकोभागसुदीन्हा । पैकोउदेवभागनहिंलीन्हा ॥ गाधितनयतबाकियमखपूरो । मंत्रनसोंमंत्रितकरिरू
दोहा–नृपत्रिशंकुकोवेगिही, पठयोदिविमुनिराज । अतिशंकिततहँहोतभो, सुरनसहितसुरराज ॥
आवतलखित्रिशंकुकहँदेवा । बोलेइंद्रजानिनृपभेवा ॥ तुमगुरुशापहिंदूपितराजा । इहाँतुम्हारनेकनहिंकाज
ततेजाहुवेगिमहिपाला । असकहिसुरपठयेततकाला ॥ दिवितेगिरतपुकारयोभूपा । इहाँनरहनदेतसुरभूप
गाधितनयसुनिनृपतिपुकारा । तिष्ठतिष्ठअसवचनउचारा॥मुनितपबलनृपरहेतहाँहीं । करिऊरधपगमुखअधका
गाधितनयपुनिकोपहिकीन्हा । दूसरस्वर्गरचनमनदीन्हा ॥ विरचेसिगरेनखतसमाजू । नरियरादिफलऔरअन
दोहा–कौशिककीकरतूतिलखि, रचनचहतसंसार ॥ मुनिसमीपसुरपतिसहित, आवतभेकरतार ॥
बोलेविधिकौशिकमुनिपाहीं । काहकरनदीन्ह्योंमनमाहीं ॥ तुमत्रिशंकुकोस्वर्गपठाये । तेउतरहेनाफिरिइतआ
तोसुखसुरपुरकोह्वैहै । तेतोतहँत्रिशंकुनृपपैहै ॥ अबतुममुनिनरचहुसंसारा । मानहुइतनोकहाहमारा
विश्वामित्रमानिप्रियबैना । कीनविदाविधिगेनिजऐना ॥ तबतेतहँत्रिशंकुभुवारा । अबलौंअहैनहतमुखलार
मुदिसेंकर्मनाशासरिसोई । जगमहँजानतहैसबकोई ॥ अंबुअपावनपरसतजासू । होतसकलशुभकर्मविनासू
दोहा–गुरुसुतशापहितेभयो, असत्रिशंकुकोहाल ॥ तातेसदावचाइये, गुरुअपमानभुवाल ॥ ६ ॥
तइकरह्योत्रिशंकुधरेशा । तासुनामहरिचंदनरेशा ॥ विश्वामित्रवसिष्ठहुकेरो । लैहिहितभोसंग्रामघनेरो
सोईआडीबकसंग्रामा । जाकोजगमेंजाहिरनामा ॥ ७ ॥ भेहरिचंददुखितसुतहीना । तबनारदतिनसोंकहिदीन
वरुणवरुणकेजाहुनरेशा । ह्वैहैसुतयहमोरनिदेशा ॥ वरुणशरणतबगेहरिचंदा । कह्योपुत्रदेकरहुअनंदा ॥ ८
जोपुत्रहमेरेजोहोई । बलिदैतुम्हेंपूजिहैंसोई ॥ तबहरिचंदहिकोअतिगुनिहित । वरुणदियोसुतताकोरोहित ॥९
दोहा–वरुणकह्योहरिचंदसों, मोहिंपूजहुअबभूप ॥ तबनृपअसबोलतभये, लखिकेपुत्रअनूप ॥
लैनपातेकारजकोई ॥ १० ॥ दशदिनगयेपुत्रशुचिहोई ॥ षबदशदिनबीतेकुरुराई । वरुणपुत्रपुनिमाँग्योआई
बहरिचंदकह्योतेहिजोई । दंतनभयेपुत्रशुचिहोई ॥ ११ ॥ दंतहुभयेवरुणफिरिआई । देहुपुत्रआसिगिरासुनाई
। दंतनगिरेपुत्रशुचिहोई ॥ १२ ॥ जबफिरिगिरेदूधकेदाँता । वरुणकह्योरिकहो

तबहरिचंदकह्योदुखभोई । अबरदभयेपुत्रशुचिहोई ॥ १३ ॥ जबपुनिदंतभयेसुतकेरे । तबतहँवरुणआयसोइंग

दोहा–तबबोलेहरिचंदनृप, क्षत्रिजातिहमआहिं ॥ जबपहिरेंगोसुतकवच, तबदैहेंतुमकाहिं ॥ १४ ॥

यहिविधिकहतकहतमहिपाला।टारिदियोशिशुकोबहुकाला ॥जबभोरोहितवीरसयानो।नि

कवचपहिरिसायकधनुधारयो।निजजियरक्षणवनहिंसिधारयो।तबहरिचंदहिपैजलराजा।

नृपकोदियोजलंधररोगू । सोलैकियेभूपदुखभोगू ॥ यहसुनिरोहितदुखितमहाना । पितुसमीपकहँकीनपयान

विप्रवृद्धतबवासवह्वैके । रोक्योआइरोहिताहिज्वैके ॥ १७ ॥ करहुतीर्थपर्यटननरेशा । यहितेमिटिहैजनककलेश

दोहा–तबवासवउपदेशलहि, काननबसेनरेश ॥ कियेतीर्थसबपुहुमिके, मेटनजनककलेश ॥ १८ ॥

पितुदर्शनकोवर्षप्रति, रोहितकरहिंविचार ॥ विप्रवेषधरिइंद्रतहँ, रोकहिंबारहिंबार ॥ १९ ॥

पांचवर्षबीतेयहिभाँती । छठयेमहँरोहितरिपुघाती ॥ आवनलगेजगेपितुपाहीं । अजीगर्तमिलिगेमगमाहीं ॥

तेहिमाँझिलशुनशेपकुमारा । रोहितलैतेहिमोलउदारा॥२०॥दीन्ह्योंपिताहिअवधपुरआई।पगवंदनकीन्ह्योंशिरना

तबहरिचंदकियोवरयागा।पूज्योवरुणहिंयुतअनुरागा।।होताविश्वामित्रहिभयऊ॥२१॥२२॥अध्वर्यूजमदग्निहुरहे

ब्रह्माभेवसिष्ठअवदाता । भेअगस्त्यमुनितहँउदगाता ॥ जबशुनशेपहिचहबलिदीन्ह्यों । इंद्रआइतबवारणकीन्ह्यों

दोहा–भूपतिसोंहरिचंदको, मिट्योजलंधररोग । यहिंविधिकर्मसमाप्तभो, पायोमखफलभोग ॥

इकसुवर्णस्यंदनसुरनाहू । राजहिदीन्ह्योंसहितउछाहू ॥२३॥ लखिहरिचंदभूपकोधीरा । विश्वामित्रज्ञानगंभीर

रानीयुतहरिचंदनरेशै । सादरकियोज्ञानउपदेशै ॥ सोहरिचंदभूपमतिमाना । यहिप्रकारसोकीन्ह्योंध्यान

मनकोमहिमेंदियोमिलाई।महिमेल्योजलमेंनृपराई।।जलकियसंगमतेजहिमाहीं।तेजहुलैकियपवनहुपाहीं।२४॥२५

पवनहुदियोमिलाइअकासै । अहंकारमहँनभसहुलासै ॥ महत्तत्त्वमेंअहंकारको । दियमिलायकरिकैविचार

महत्तत्त्वमेंजीवहिध्यायो । तातेसबअज्ञाननशायो ॥ २६ ॥

दोहा–जियसुरूपतेभिन्नहै, यहउपासनाजानि । विगतफंदहरिचंदनृप, लह्योमुक्तिसुखखानि ॥ २७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–रोहितकेपुनिहरितभे, तिनकेभेनृपचंद । जोबसाइचंपापुरी, अरिसोंभयेअकंप ॥

चंपभूपकेभयेसुदेवा ॥ १ ॥ तिनकेभयेमरुकनरदेवा ॥ तिनकेवृकवृककेभेबाहुक । तिनकीराजहरीअरिदाहुक

तबरानिनयुतबाहुकराजा । वनगमनेतजिसचिवसमाजा ॥२॥ रहेवृद्धतहँमरेभुवाला।रानिहुँजरनलगीतेहिकाला

तहँमुनिच्यवनगर्भयुतजानी । वारणकियोजरहुजनिरानी॥रानीच्यवनवचनसुनिसोई । जरीनगर्भवतीरहजोई ॥३

औरसवतितेहिभोजनसंगै । दियोगरलगर्भहिहितभंगै ॥ पैनहिंभयोगर्भकोनासा । च्यवनकृपातेगैसवत्रासा ।

दोहा–गरलसहितजनम्योसुवन, भयोसगरतेहिंनाम ॥ ४ ॥ भयोचक्रवर्त्तीनृपति, यशप्रतापबलधाम ॥

सगरनरेशअयोध्यहिआये । तहाँआपनोबलप्रगटाये ॥ बरबरहैहयसकधरवीरा । औरतालजंघहुरणधीरा

येसबयमननसगरभुवाला।मारनलगेकोपितेहिकाला॥५॥तबवारणकियच्यवनमुनीशा।

इनसबकोकरिदेहुविरूपा । देहुनिकारिदेशतेंभूपा ॥ तबयमननकोपकरितहाँहीं । सगरकरतविरूपतिनकाहीं

कोहुयमननकेमूँडमुँडाये।कोउकेमूँछनकोबनवाये।।कोउकेसातशिखादियरासी।कोउकोअधमूँड़ोकियभासी ॥६

दोहा–कोहुनकोबिनबसनकिय, कोहुनबसनहिएक । ऐसीकरियमननदशा, दियोनिकारिअनेक ॥

रहीभूपकेदुइमहरानी । सुमतिकेशिनीनामबखानी ॥ तिनतेसहितसगरवनजाई । बसेच्यवनआश्रमसुखदाई

्यवनहिंसेवनकियदोउरानी । मुनिप्रसन्नह्वैबोलेबानी ॥ कोइकपुत्रवंशकरिलेहै । काकोबहुसुतमाहँसनेहै ॥
वकेशिनीकह्योकरजोरे । होइवंशकरसुतइकमोरे ॥ सुमतिकह्योहिच्यवनउदारा । मोहिंदीजैबहुबलीकुमारा ॥
नितथास्तुकहिआश्रमआये।रानिनकेभेगर्भसुहाये॥ असमंजसकेशिनीजाई । सुमतिएकतुंबाजनमाई ॥
दोहा–सोतुंबातेप्रगटभे, साठिहजारकुमार । धाइतिन्हेंसेवनकियो, भेबलतेजअगार ॥
गरअश्वमेधहिशतकीन्हें।अंतयज्ञहरिहरिहरिलीन्हें॥७॥८॥तबराजासुतसाठिहजारा।बोलिनिकटअसबचनउचारा॥
ोजिलेआवहुबेगितुरंगा । तौहमारमखहोइअभंगा ॥ तबपितुशासनमानिकुमारा । खोजनलगेतुरंगउदारा ॥
हुँदिशिहेरिबाजिनहिंपाये । तबकुमारअतिकोपहिछाये ॥ खननलगेधरणीचहुँओरा । लैखनित्रकरपरमकठोरा ॥
गरसुवनखनिसागरकीन्हें । धरणीजीवनकोदुखदीन्हें।९।खनतखनतजबपूरबआये।कपिलकुटीकुमारनियराये ॥
दोहा–कपिलदेवकेनिकटमें, लखेतुरंगकुमार । कोपितह्वैतबकटुवचन, बोलेसाठिहजार ॥
हैचोरमखहयहरिल्यायो।इहाँआयबकध्यानलगायो॥१०॥मारहुमारहुअसकहिधाये।आयुधलियेकपिलढिगआये॥
पिलदेवतबनयनउघारे११साठिहजारभयेजरिछारे१२जोअसकह्योकपिलभगवाना यहिविधिकियकसकोपमहाना।
नहिंकियोकपिलकछुबाधा।भस्मभयेअपनेहिंअपराधा।बेतौसांख्यशास्त्रभवसागर।नावसरिसविरच्योगुनआगर॥
नमेंतामससंभवनाहीं । कुरुपतिजानिलेहुमनमाहीं ॥१४॥ साठिहजारसुवननहिंआये।तबनृपसगरमहादुखपाये ॥
दोहा–जोअसमंजसज्येष्ठसुत, रह्योपूर्वयुतयोग । योगभ्रष्टनृपसुतभयो, गयोनज्ञानसंयोग ॥ १५ ॥ १६ ॥
मनकियोकरनकोपापा । जामेंहोहिपिताहिंसंतापा ॥ देहिमोहिंबनकाहँनिकारी । तौमैंतपकरिलेहुँसुधारी ॥
सविचारिसरयूसरिमाहीं।बोरेप्रजनबालकनकाहीं॥१७॥देखिसगरनिजप्रजनदुखारी।असमंजसकहँदियोनिकारी ॥
असमंजसप्रजनकुमारा।सरयूसरितेआशुनिकारा।दैपितुकोवनकियोपयाना१८लखिकेप्रजनअचंभवमाना १९॥
समंजसकेभयोकुमारा । अंशुमानजेहिनामउदारा ॥ अंशुमानकोसगरनरेशा । अतिदुःखितह्वैदियोनिदेशा ॥
दोहा–अंशुमानतुमजायके, लावहुखोजितुरंग । खोजमिलतनहिंजेगये, तुवकाकाइकसंग ॥
शुमानकरिसगरप्रणामा । खोजनचल्योसुरंगललामा ॥ खोदीमहिकीपायनिशानी । तेहिमारगगमन्योविज्ञानी ॥
निहुँदिशाखोजिनृपडारच्यो।तबविस्मितह्वैपूर्वपधारच्यो॥तहाँलख्योइकभस्मपहारा।ताकेनिकटतुरंगनिहारा २०॥
कपिलमुनिकहलखिराजा।महिठाढ़ेनिजमंगलकाजा॥करनलगेअस्तुतिमहिठाढ़े।अंशुमानधीरजकेगाढ़े ॥२१॥

अंशुमानुवाच ।

रैकैबहुसमाधिविख्याता।अबलौंतुमहिंनजानतधाता।तौहमपामरकेहिविधिजानै।आपअहौश्रीपतिभगवानै २२॥
दोहा–सदाबसहुसबकेहिये, पैजानतकोउनाहिं । विषयवासनावलितजन, मोहिमायामाहिं ॥ २३ ॥
छंदनाराच–विभूतिभेदमोहियोसनत्कुमारआदिजे । कलेशकेलगायध्यानजानहींअनादिजे ॥ २४ ॥
अधीनकर्मकेनदेहदिव्यरूपआपहौ । उधारकोवतारहैविहीनपुण्यपापहौ ॥ २५ ॥
कलत्रपुत्रदेहमेंलगायनेहकैभ्रमै । विमोहकोहतेभरेपरेभवाब्धिमेंभ्रमै ॥ २६ ॥
गयोसोछूटिआजुघोरमोरमोहपासहौ । पदारविंदरावरेविलोकिवेप्रयासहौ ॥
दोहा–इकरसनासोंआपको, कैसेकरहुँबखान । तातेंकरहुँप्रणाममैं, तुमहौपुरुषपुरान ॥ २७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

शुमानजबअस्तुतिकीन्ह्यो । कपिलकृपाकरियहकहिदीन्ह्यो ॥ २८ ॥

कपिल उवाच ।

पितामहकोयहबाजी । तातजाहुलैमैंअतिराजी ॥ अंशुमानयेककातुम्हारे । भयेभस्मसबनिकटहमारे ॥
हितेस्वर्धुनीउतारहु । साठिहजारककातुमतारहु ॥ औरयतनइननहिंउद्धारा । बिनआनेधरस्वर्धुनिधारा॥२९॥

मुनिकेकापिलदेवकेवैना । अंशुमानपायेअतिचैना ॥ देप्रदक्षिणाकरीप्रणामा । लायोमख
सगरभूपमखवाजीपाई । कीन्ह्योमखपूरणसुखछाई ॥ २० ॥
दोहा-अंशुमानकोराजदै, छोडिमहावनजाय । च्यवनगुरूतेज्ञानलहि, सगरसुकिलि

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजासिंहजूदेव
आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-अंशुमाननरनाहके, भयोदिलीपकुमार । नृपदिलीपकोअंशुमत, सौंपिराज्यकोभ
करनमहातपगंगाआनन । अंशुमानकढ़िगेतबकानन ॥ बहुतकालतपकीनमहाई । तज्यो
इतदिलीपसुतभोमतिधामा । जाकोभयोभगीरथनामा ॥ दैकैराज्यभगीरथकाहीं । तपकी
पैस्वर्धुनीधरणिनहिंआई । सुरपुरगेदिलीपनरराई ॥ पुनिजबभयोभगीरथराजा । पाल्योप्र
धरिशिरसचिवराज्यकोभारा।चल्योलैआवनस्वर्धुनिधारा॥वर्षहजारदिलीपकिशोरा।कीन्ह्य
दोहा-तबगंगातहँप्रगटभे, कह्योमाँगुबरदान, तबैभगीरथजोरिकर, ऐसोकियोबखान ॥
जौप्रसन्नमोपैतैंमाता । तौचलुधरणिराखुममबाता ॥ जोआवैधरणीतबधारा । तरैंपितरमम
तबगंगाअतिआनँदपायो । भूपभगीरथसोंअसगायो ॥ ३ ॥

गंगोवाच ।

मेरीधारधराकिमिधारी । औरहुयहतुमलेहुविचारी ॥ ४ ॥ निवसतबहुपुहुमीमहँपापी । तेमे
तिनपापिनकेपापनशाई । मैंकहँपापछुडैहौंजाई ॥ तातेनहिंजैहौंमहिमाहीं । इहसंदेहटरत
सुनतभगीरथभयेदुखारी । पुनिगंगासोंगिराउचारी ॥
दोहा-तवधाराकोधारिहैं, धूरजटीसुखपाइ । तेरोपापनशाइहैं, संतसमाजनहाइ ॥ ६ ॥
कह्योभगीरथसोंतबगंगा । ध्यावहुशिवधरिध्यानअभंगा ॥ तबैभगीरथवनमहँजाई । कियो
रह्योअंगुष्ठहिकेबलठाढ़ो । संवतलौंकरिअतिव्रतगाढो ॥ तबप्रसन्नह्वैकहत्रिपुरारी । स्वर्धुनि
तबगंगासोंकह्योनरेशा । चलहुमातुशिरधरहिमहेशा ॥ सुनिगंगामनकियोविचारा । किमिश
धरिनिजधारादेमाहँमहेशे । करिहौंअवशिपतालप्रवेशे ॥ असगुनिकरिनिजवेगप्रचंडा । चल
दोहा-धूरजटीकेजटनिमें, गिरीगंगकीधार । बहुवर्षनलौंसोतहाँ, भ्रमतनपायोपार ॥
यहलखिचरितभगीरथराजा।पुनिकियशिवअस्तुतिनिजकाजा तबगंगाहिंशंकरमुदमाहीं ।छ
भईसातगंगाकीधारा । चलीधरणिमहँवेगअपारा ॥ अहलादिनिपावनिओनलिनी । पूर्वदिश
अरुसुचक्षुअरुसिंधुसोता।गईतीनपश्चिमजलसोता ॥९॥ भागीरथीसातईधारा । चलीभगी
होतभयोनदशोरकठोरा । फोरतशैलकढ़ीबरजोरा ॥ १० ॥ स्यंदनचढ़िकैभूपभगीरथ । आ
दोहा-ताकेपाछेधरनिमहँ, गंगधारअतिजोर ॥ पावतिछविपावतिमहा, मच्छकच्छयुत
भुजंगप्रयातछंद-लसैस्वर्धुनीकोप्रवाहोविलासा । सबैदेवआयेतकेकौतमासा ॥
कहूँतुच्छमच्छकच्छादिस्वच्छै । मनोदामिनीसितमेघानिलच्छै ॥
कहूँवेगवारिकहूँमंदचारे । कहूँफेनिमालाकहूँगलआरे ॥
कहूँनांनदेऊनकोभावनांदे । कहूँऊँचहूनीनकोआवर्तादे ॥

कहूँधारकोभेदिकैधारधावै । कहूँकुंडलावर्तह्वैवेगिजावै ॥
कहूँशैलकोफोरिकैगैलकीन्ही । कहूँवृक्षकीपातिकोढाहिदीन्ही ॥
उठैतोयमेंरंगरंगैतरंगैं । करैंभूमिकेपापतापानिभंगैं ॥
करैंशोरपक्षीकहूँठौरठौरैं । यहीभाँतिगंगानृपैसंगदौरैं ॥

दोहा–जेहिंजेहिंपथरथजातहै, भूपभगीरथकेर ॥ तहँतहँगमनतगंगजल, नाशतपातकढेर ॥

सुरनरमुनिगुनित्रिभुवनपावन।मज्जनकियनिजपापनशावन। सुरसरिजलपदजलजगदीशा।पावनहितशिरधरयोगिरीशा।
आगेजातभूपबड़भागी । पीछेगंगजाहिंसँगलागी ॥ तिनपीछेसुरतियसुरगायक । गावतचलेजातसुखदायक ॥
हिविधिगवनकीन्हतहँगंगा।गईकपिलआश्रमहिअभंगा॥सगरसुतनकीछारवहाई।सबकोदियहरिपुरपहुँचाई ॥११॥
द्यपित्रह्मदंडतेतापी । तदपिमुक्तिपायेजिमिजापी ॥ भस्मभयेजेसगरकुमारे । परसिजाहिंहरिधामसिधारे॥१२॥

दोहा–अससुरसरिमेंभक्तियुत, जोकोउपुरुषनहाहिं ॥ सोगवनैहरिधामको, तौकाअचरजआहिं ॥ १३ ॥

[illegible]हजोई । ताकोअचरजगुनहुँनकोई ॥ हरिचरणनतेप्रगटभईहै । पापिनभवनिधितारिदईहै ॥ १४॥
[illegible]रिकीमहिमाकिमिगाऊँ।कहँहजाररसनामुखपाऊँ १५
[illegible] । तेहिसुतनाभनामजगठयऊ।सिंधुद्वीपभोनाभकुमारा।अयुतायहुभोताकोवारा॥१६॥
केभोऋतुपर्णनरेशा । नलमहीपकोसखासुवेशा ॥ लह्योअश्वविद्यानलपाहीं । दियोअक्षविद्यातिनकाहीं ॥

दोहा–पुत्रभयोऋतुपर्णके, सर्वकामअसनाम ॥ १७ ॥ ताकेभोसौदासनृप, मदयंतीजेहिंवाम ॥

वसिष्ठकीशापहिपाई । राक्षसभयोमहादुखछाई॥भोकलमापपादजेहिंनामा । विनसुतरह्योमहादुखधामा ॥ १८॥
कुरुपतिबोल्योकरजोरी । सुनियेंशुकविनतीयहमोरी ॥

राजोवाच ।

हिंकारणसौदासभुवाला।लह्योवसिष्टशापदुखजाला॥होइजोमेरेसुनिवेलायक।तौवरणनकरियेमुनिनायक ॥ १९॥
नशुकदेवमोदअतिपाई । कुरुपतिसोंबोलेचितलाई ॥

श्रीशुक उवाच ।

कसमयसौदासउदारा । वनमहँखेलनगयोशिकारा ॥ तहँइकघोरराक्षसैमारयो । ताकोभ्रातातहांसिधारयो॥२०॥

दोहा–ताकोवदलोलेनको, राक्षसवेपसुधार ॥ धरिगमन्यौअतिवेगहीं, नृपसौदासअगार ॥

आमिषजेउनारवनाई।नृपसौदासहिंदियोदेखाई॥गुरुवसिष्ठकहँपरुस्योराजा॥२१॥मनुजमांसचीन्ह्योमुनिराजा ॥
निबोलेरेभूपअपावन । मनुजमांसमोहिंचहेखवावन ॥ तातेराक्षसहोहुनरेशा । खाहुमनुजकोमांसहमेशा ॥ २२॥
राजाअसठीकहिकीन्ह्यो । विनहिंविचारशापगुरुदीन्ह्यो ॥ तातेमहूँशापअबदेहौं । गुरुसोंमेंपलटोलैलेहौं ॥
सविचारिजललैकरमाहीं । लाग्योदेनशापगुरुकाहीं॥२३॥तबमदयंतीवारणकीन्ह्यो । गुरुकोशापदेननहिंदीन्ह्यो॥

दोहा–तबनृपदिशिमहिनभनिरखि, सकलजीवमेंजानि ॥ सोजलडारयोनिजचरण, बडीदयाउरआनि ॥

रयोजलनिजचरणनजवहीं । नृपकल्मापपादभोतवहीं ॥ तबवसिष्ठराक्षसकृतकर्मा । जान्योसकलज्ञानतेमर्मा ॥
ासोंकहकछुदोपनतोरा । पमेंशापदियोअतिघोरा ॥ तातेद्वादशवर्षहिताँई । रहिहौराक्षसअवधगोसाँई ॥ २४ ॥
ासहनृपगेवनमाहीं । करनलगेभक्षणनरकाहीं ॥ एकसमयद्विजदंपतिकाहीं । करतविहारलख्योवनमाहीं॥२५॥
तेभूखेभक्षणकेहेतू । विप्रहिगहिलीन्ह्योनृपकेतू ॥ तबह्वैदुखितकह्योद्विजनारी ॥ कैसेपापकरहुनृपभारी ॥

दोहा–आपअहेराक्षसनहीं, मदयंतीकेकंत ॥ होइक्ष्वाकुहिवंशके, नृपअवतंससुसंत ॥ २६ ॥

निपूरयोममरतिकामा । भयेनमेरेसुतसुखधामा ॥ तातेत्यागिदेहुद्विजकाहीं । करिकेदयाभूपमनमाहीं ॥ २७॥
मनुष्यकोतनमहराजा । प्रगटभयोपरमारथकाजा ॥ तातेविप्रहिकियेविनाश [illegible]॥

रघुकेअजमहाराजभे, जेकीन्हेंसुरकाज । चक्रवर्तिताकेभये, श्रीदशरथमहाराज ॥ १ ॥
श्रीदशरथमहाराजके, स्वयंब्रह्मभगवान । निजअंशहितेचारिवपु, प्रगटेहितविबुधान ॥ २ ॥
श्रीरघुनंदनलषणअरु, भरतशत्रुहननाम । रामचरितसोकोटिहे, इकअक्षरप्रदकाम ॥
वाल्मीकिभगवानऋषि, गायोरामचरित्र । वहुतवारकुरुनाथतुम, कीन्ह्योंश्रवणविचित्र ॥ ३ ॥
कवित्त–पितुप्रणधारीराजओरनानिहारीप्राणप्यारीपानिहूतेजाकीअतिसुकुमारीहे ॥
ऐसेपदकंजनतेवनकेविहारीभयेसखनकपीशसेवाकीन्हीसुखवारीहे ॥
कारककुरूपनारीसीताविरहेविचारीनेकुभ्रूकेभंगहीतेसिंधुसेतकारीहे ॥
खलदलकाननकेदाहकदहनरघुराजएकआसरघुराजगतिहारीहे ॥ ४ ॥
।–चंडऔमुंडहिसेवरिबंडपमंडभरेजेप्रचंडप्रहारी । वीरसुबाहुमरीचिनिशाचरकौशिकयज्ञविध्वंसनकारी
लेभुजदंडअखंडकोदंडहन्योयमदंडसेबाणप्रचारी । खंडहिखंडकियोखलवृंदनश्रीरघुनंदनआनंदकारी ॥ ५ ॥
ेशतयोधनल्यायसभामधिशंकरचापप्रतापउदारो । रावणबाणहुआदिकवीरसकेनउठाइगयोमदमारो ॥
सीतास्वयंवरमेंरघुनंदनसोधनुपाणिविनाश्रमधारो । इक्षुकोदंडदलेगजज्यौंतिमिशंभुकोदंडत्रिखंडकेडारो ॥ ६
डारिदईवनमालगरेअवधेशलल्लाकेविदेहकुमारी । शीलवयोगुणरूपसमानसुजीतियोजानकीकोधनुधारी ॥
आवतओधकेमारगमेंमिलेश्रीभृगुनंदनकोपकेभारी । सोविनदर्पभयोक्षणमेंक्षितिवारइकीसनिक्षत्रकोकारी ॥ ७
ारिअधीनबँधेसतिपाशजोसोपितुशासनशीशमेंधारी । राजनिवासविलासविभौनिजमंत्रिनमित्रनतुच्छविचारी
ानकीलच्छनकोसँगलेकरिकाननकोगयेरामसिधारी।ज्योंप्रियप्राणनकोतजिकेवरयोगीविकुंठकोजातसुखारी॥
ूपनखाकोविरूपकियेमनुभेज्योतिलाकहीपासदशानन । चौदेहजारनिशाचरवैखरदूषणऔत्रिशिराबलमानन
डलीकैकरमाहँकोदंडहनेक्षणछोंडिअखंडनबाणन । कौशलनाथकृपाकरिकैनहिंराख्योकलेशकोलेशहुकानन
ीताकथासुनिकैदशकंधरभेज्योमरीचैकुरंगबनाई । जानकीकीरुखराखनकेहितलैधनुबाणगयेप्रभुधाई ॥
ारितदूरदुरातदेखातलेवाइगयोरघुनाथैलोभाई । जानिखलैतेहिनाथदल्योशरतेजिमिदक्षकोत्र्यक्षरिपाई ॥१०॥
न्यकुटीवृकसोंदशशीशहरीहरिणीसीविदेहकुमारी । ताकेवियोगकोशोकवड़ोकरिभाइसमेततहाँधनुधारी ॥
ाननकुंजनगोदावरीपहँपूछ्योवतावोपियारीहमारी । दीन्ह्योदेखाइसबैजगकोदशानारीअधीननकेरिखरारी ॥१
ापनेहाँथसोंदाहकियोजोगयोमरिजानकीहेतजटाई । त्योंहींकबंधकीशापछोडाइसरोवरमेंशबरीफलखाई ॥
ित्रवनाइसुकंठकपीशकोतालनवेध्योसुबाणचलाई । वालिकोमारिकैवालिकेबंधुकोवालिकोराजदियोरघुराई ॥
मप्रतापतेरामकोदूतगयोशतयोजनएकैफलंका । भौननभौननजानकीहेरचोसुरावणकीनगरीमेंनिशंका ॥
थनिदेशसुनायकेसीयकोमारिनिशाचरजारिकैलंका । वारिधिकूदिकैआयोबलीवरवानरवायुकोबालकवंका ॥
रुतकेमुखतेरघुनंदनमोदमयीसियकीसुधिपाई । वानरसैनलैसागरकेसमसागरतीरबसेप्रभुजाई ॥
ानिविभीषणकोशरणागतलंककोराजदियोरघुराई । जोपदपूजतहैंविधिशंकरसोपदसेवकलीन्ह्योंबनाई ॥ १२ ॥
कुचढ़ावतहींभ्रकुटीतहँघोरसमुद्रकोबंधभोशोरा । मकरऔनक्रकेचक्रनिकारिकैवक्रभ्रमैलगेचक्रअथोरा ॥
ालकीमालकरालविशालउठीतनकालजलैचहुँओरा ॥ भेटलैकंधमेंदीनकेबंधुकेपायनमेंगिरिसिंधुनिहोरा ॥१३
शलनाथहेदीनदयालविकारविवर्जितपुर्पपुरानै । रावरेसत्त्वतमैरजतेप्रगटैसुरभूतप्रजेशअमानै ॥
केवंशकेहअवतंसप्रशंसजसैखलध्वंसमहानैं । ऐसेअखंडप्रभावतुम्हेंकुमतीहमसेकेहिभाँतितेजानैं ॥ १४ ॥
नँदकंदसुनोरघुनंदनमोजलजारिकैचाहोपधारो । पैरचिसेतुकृपाकरिमोपररावणकोकुलतेयुतमारो ॥
मिथिलेशलल्लीकोलेवाइकेऔधपुरीकोसुखीह्वैसिधारो । तौविजयीवसुधाकेसबैवसुधाधिपगैहैंचरित्रातिहारो १५॥
सुनिरामपठाइकपीशनपादपसंयुतशैलमँगाये । वाँधिकैसिंधुमेंसेतुमहाउतरेप्रभुलैदलकोसुखछाये ॥
रहनूमतआपसुकंठहुभारिअनीकपिसैनबनाये । लंककोघेरिलियोचहुँओरजहाँह्वैविभीषणराहवताये ॥ १६ ॥

व्रजवावतविप्रनवेदपढ़ावतचाई । नंदिगिरामतेपायनसोंनिजनाथकोलेनचल्योअगुआई ॥ ३७ ॥
ताकेरथैफहरैंत्योंहजारनमत्तमतंगतुरंगा । त्योंकनकैकवचैपहिरेभटरामकेदेखनछायेउमंगा ॥
।रवधूकेरैंमंमलगानलियेघटमंगलसाजिकैसँगा।चारहिंवारविलोकैविमानभयोतिनकोक्षणकल्पअभंगा॥३८॥३९॥
केकईकेरोकुमारतहाँलखिकैदशरत्थकुमारकोधाई । प्रेमभरोपरोपायनमेंअतिचायनदेहदशाबिसराई ॥ ४० ॥
रामहूधायउठायलगायलियोउरमेंदृगमेंजलछाई । आनँदतौनेसमैकोकहोरसनाइकसोंकविकोसकेगाई ॥
उक्षनहूभरतैकियोवंदनजानकीकोभरतौशिरनाये ॥ ४१ ॥ एकहींवारयथोचितराममिलेपुरवासिनकोसुखछाये ॥
कौशलवासीभयेसुखराशीसुफूलनआँसुनकीझरिलाये । भावकेसाँचेसुप्रेममेंराँचेसबैतहँनाचेपटैफहराये ॥
लीन्हेसुकंठविभीषणचौरसुछत्रसितैलियेपौनकुमारहै४२॥४३शत्रुकेसूदनचापनिषंगकमंडलुजानकीपाणिउदारहै॥
उक्षणपंखाकृपाणकोअंगदढालकोऋक्षनकोसरदारहै४४वंदिनवंदितपुष्पविमानमेंरामलसेशशिज्योंयुततारहै ४५॥
आवतभेइमिऔधनरेशसोऔधपुरीभईऔधिअनंदे । रामवसिष्ठकेपायनमेंपरिनाइयोवियोगहिकोदुखदंदे ॥
राजनिवासमेंजायकेफेरिसोमातनपायपरेकुलचंदे।तेऊउठायलगायलियेदृगवारिसोंसींचेसुतैसुखकंदे ४६॥४७॥४८
धारिहुबंधुनकेतहँआयवसिष्ठजीशीशजटानिरवारे । चारोंसमुद्रनकोजलआनिसबैअभिषेककीसाजुसँवारे ॥
जानकीसंयुतश्रीरघुनाथकोहेमसिंहासनमेंबयठारे । तीनिहुँलोकनकेतिलकैतिनकोतिलकैगुरुमोदितसारे ॥ ४९ ॥
आनँदकंदतहाँरघुनंदपदैयुवराजभरत्थकोदीन्ह्यों । शत्रुकेसूदनकोदियोकोशसुलक्षनैलक्षनैसेवककीन्ह्यों ॥ ५० ॥
पाल्योप्रजानिकोपुत्रसमानप्रजाहूपितासमरामकोचीन्ह्यों५१त्रेतायुगैअपनेपरभावतेराघवआदियुगैकरिलीन्ह्यों५२
रामहिराजाभयेमहिमेंसबकेगयेपूजिमनोरथभारी । आधिहूव्याधिजराभयशोककोपायकैकोऊभयेनदुखारी॥५३॥
जीचहूआईनचाहेविनासबभाँतिरहेसबलोगसुखारी । ह्वैगेसनाथअनाथसबैजगकौशलनाथसोनाथनिहारी ॥ ५४ ॥

घनाक्षरी–एकनारिव्रतवारेधर्मवारेयशवारेनीतिवारेसबैलोगसीखदेनवारेहैं ।
सुखदअशोकवाटिकाकेसोविहारवारेसीतासंगमोदवारेरसरूपवारेहैं ॥
अधमउधारवारेशत्रुनसंहारवारेक्षमाकीसमानक्षमावारेतेजवारेहैं ॥
मुनिमनवासवारेदीननपैदयावारेदीनरघुराजैदयावखशनवारेहैं ॥

दोहा–सीयप्रेममेंमोहिकै, श्रीदशरत्थकुमार ॥ दशसहस्रसंवतसुभग, कीन्हेविपुलविहार ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–लोकनशिक्षाहेततहँ, यज्ञरूपश्रीराम ॥ अश्वमेधमखकरतभे, मुनिनसंगतपधाम ॥ १ ॥
ज्ञदक्षिणामहँमहराजा । होतहिदियोपूर्वदिशिराजा ॥ ब्रह्माकहँदक्षिणदिशिदीन्यों । पश्चिमअध्वरजैसुखभीन्यों ॥
उत्तरदियउदगाताकाहीं॥२॥दियोमध्यकीमहिगुरुपाहीं ३करहिंभोगद्विजअवनिअपारा।ऐसोप्रभुमनकियोविचारा॥
गपटराखिरामवयदेही।दियोद्विजनसबद्विजनसनेही४ब्रह्मण्यतानिहारिविप्रवर।प्रीतिसहितद्विजकह्योजोरिकर॥५॥

ब्राह्मणा ऊचुः ।

ालहुपुहुमीत्रिभुवननायक । तुमसमतुमहिंअहोरघुनायक॥प्रगटितेजकरिहृदयप्रवेशा। नाशहुतमअज्ञानकलेशा॥
दोहा–अवप्रभुवाकीकारह्यो, तुमहिंदेनकहनाथ ॥ ब्राह्मणतेनहिंहोइगी, यहमहिसदासनाथ ॥ ६ ॥
ायब्रह्मण्यदेवधनुधारी । जयरघुनंदनअवधविहारी ॥ मतिअकुंठवैकुंठनिवासी । जयअतिपावनसुयशप्रका

जयजयधराधर्मधुरधारी । जयमुनिमानसविमलविहारी ॥ इमिसुनिद्विजनवचनरघुराई। धनदैपाल्योपुहुमिसुहाई
एकसमयअसकियउत्तयोगू । हमकोकहाकहतसबलोगू ॥ असविचारिनिजवेषछिपाई ! अर्द्धरातिमहँश्रीरघुराई
अवधनगरमहँचागनलागे।गलिनगलिनसिगरीनिशिजागे॥८॥तियसोंरजककह्योयकमाखी।तैंकुलकीमर्यादा
दोहा—परघरमेंरहिकैअरी, आईमेरेपास ॥ अबतोकोंनहिंराखिहौं, सहिंअपनोउपहास ॥
मोहिंनरामचंद्रसमजाने । परघरतेजेनिजतियआने ॥ ९ ॥ ऐसोसुनिअपनोअपवादा । रघुनंदनहियभयोविषादा
तहाँजानकीकोरघुराई । बालमीकिआश्रममैंपठाई ॥ तहँकुशलवद्वैभयेकुमारा । जातकर्ममुनिकियेउदारा ॥ ॥
अंगदचित्रकेतुबलवाना । लषनपुत्रभेअतिमतिमाना ॥ पुष्कलतक्षभरतकेजाये । परमधनुर्धरजगयशछाये॥॥
रिपुहनसुतसुबाहुश्रुतसेना । भयेबलीनाशकरिपुसेना ॥ भरतजायउत्तरकीओरा । हनिगंधर्वनतीनिकरोरा॥॥
दोहा—तहँनिजपुत्रनराजदै, लैधनअवधहिआय । रघुनंदनकोनजरकिय, अतिआनँदउरछाय ॥
रिपुहनलवणासुरहिनशाई१४मधुवनमेंवनपुरीबसाई॥कुशलवसीयसौंपिमुनिकाहीं १५सुमिरिरामप्रविशीमहिमाहीं
सोसुनियदपिधरच्योप्रभुधीरा१६पैसियसुधिकरिभयेअधीरा ॥ ऐसोहैनरनारिप्रसंगा॥१७॥करतईशहूकोचितभंगा
तौविषयीजनकोनरराई । अचरजकौनहोबदुखदाई ॥ तीनिहजारवर्षरघुराई । धारिब्रह्मचर्जेचितलाई ॥
कीन्हेंअग्निहोत्रमखनाना।दैदक्षिणाद्विजनसनमाना॥१८॥पुनिप्रभुसबैअयोध्यावासिन।कीटभृंगपशुपक्षिनिवासिन
दोहा—लैअपनेसँगमेंसकल, रघुपतिकृपानिधान । भ्रातनसखनसमेतप्रभु, कियसाकेतपयान ॥ १९ ॥

श्लोक—नेदं यशो रघुपतेः सुरयाच्ञायात्तलीलातनोरधिकसाम्यविमुक्तधाम्नः ॥
रक्षोवधोजलधिबन्धनमस्त्रपूगैः किं तस्य शत्रुहनने कपयः सहायाः ॥ १ ॥
यस्यामलं नृपसदस्सु यशोऽधुनापि गायन्त्यघघ्नमृषयो दिगिभेंद्रपट्टम् ॥
तन्नाकपालवसुपालकिरीटजुष्टपादाम्बुजं रघुपतेः शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥

कवित्त—देवनकीदायादेखिमनुजस्वरूपधारिधरमविचित्रकियोलीलासुखछावनी ।
तिनकोसुयशऐसोबहुतनजानोजातजाकीएकवारनतिनरकनशावनी ॥
भापैरघुराजकोईअधिककहाँतेहोइनेकहूसमानताईकहूपैनआवनी ।
ताकेसेतुबंधनमेंखलनकेखंडनमेंकपिनकोसेनक्योंसहायकीकरावनी ॥ २० ॥
पापकेनशावनप्रमोदउपजावनादिशानदिग्गजानभालपट्टसेसोहावैहै ॥
अबलोंगिरीशऔगिरेशऔनरेशनकेसभामध्यजायकेमुनीशसबैगावैहैं ॥
ऐसेरघुनंदनपदारविंदरघुराजवंदनकरतदुखद्वंद्वकोनशावैहैं ।
जिननखज्योतिभूमिपालदिगपालनकेमुकुटमणीनकेप्रकाशकोबढावैहै ॥ २१ ॥

सवैया—रामकेजेतनकोपरसेअरुरामकीमूरतिजेदरसे । अरुरामकोआदरजेउकियेअरुरामकेसंगचलेपरसे ॥
रघुराजजेरामकीराजबसेअरुरामविलोकनकेतरसे । सिगरेबसितेअपराजितमेंनितरामेविलोकिनितैहरसे ॥
कोटिशतेअहैरामचरित्रत्रिलोककेवासिनमोदबढ़ावे । श्रीतिप्रतीतितेताकोसुनैकहोकौतुकजोफलचारिहुपावै
भापतहैरघुराजसुनोइकआखरजोमुखतेकढ़िआवे । ह्वैकेअपापसोरामप्रतापतेरामकेधामविशेषिसिधावै ॥
दोहा—यहसुनिकैकुरुपतिनृपति, अद्भुतआनँदपाय । पुनिपूछ्योशुकदेवसों, रामचरितचितलाय ॥ २२

राजोवाच ।

कौनआचरणतेश्रीरामा । रहतभयेकोशलपुरधामा ॥ भ्रातनपुरवासिनसुखरासी । केहिविधिकीन्हेंपरमहुलासी
लखभ्रातापुरवासीगमे।केहिविधिसेवनाकियसुखधामे॥सुनिकुरुपतिकेवचनसुहाये।कहनलगेश्रीशुकसुखछाये॥

श्रीशुक उवाच ।

गजतिलककजबभयोरामको । पायेनवसबसकलकामको॥ तबनिजभ्रातनकोसुखछायो।करनदिग्विजयपठवायो
भ्रजनपिनाममपाटनकीन्यो।माननपालमग्निमुदर्दीन्यो॥गमचन्द्रिदललैकरगोसिगारा।कहुँकहुँसेलनकहुँसागारा

दोहा–निरखहिंनगरनवीनछवि, नितप्रतिश्रीरघुनंद । पुरवासीलखिरामको, नितनवलहैअनंद ॥ २५ ॥
लिनगलिनगुलाबजलसींच्यो।तैसहिंतहँगजमदहुउलीच्यो।अवधपुरीलखिमनुश्रीरामैं।ढारतआनँदआँसुनग्रामैं२६
रवाजेद्राजतहँराजे । अतिउत्तंगमंदिरअतिभ्राजे ॥ कनककलशविलसैतिनमाहीं । सभादेवग्रहदिपैतहाँहीं ॥
[illegible] ॥
लितआरसीकलितकेंवारे । बँधेचौरयुतवंदनवारे ॥ तेजवंततहँतनेविताने । मनुबहुरंगमेघदरशाने ॥
दोहा–मणिनसहिततोरणसजै, झालरिमुक्तनकेरि । स्वच्छगवाक्षविराजहीं, अच्छटरतनहिंहेरि ॥ २८ ॥
[illegible]आवैअवधविलासी । तहँतहँअवधनगरकेवासी ॥ मंगलसाजुसाजिकरथारन । खडेहोहिंनिजद्वारनद्वारन ॥
[illegible] । जीवौसदारामवैदेहीं ॥ धरिवराहवपुधरणिउधारी । तातेअग्रपालहुधनुधारी ॥ २९ ॥
दहवर्षत्रसेवनमाहीं । चौदहिंकल्पगयेहमकाहीं ॥ असकहिचढ़िचढ़िऊँचअटारी । वरपहिंसुमनमुदितनरनारी ॥
[illegible]
दोहा–राममहलकीसंपदा, लखिलखिकैदिगपाल । सकुचिसकुचिमनमेंरहैं, लघुगुनिदिवितेहिकाल ॥ ३१ ॥
ुमकीदेहरीविराजैं । पन्ननकेखंभाअतिभ्राजैं ॥ स्फटिकफरशसोहैंछविश्रेणी । मनुथलथलमेंलसीत्रिवेणी॥३२॥
[illegible] । मुक्तझालरैंकरहिंविलासा॥ चंदचाँदनीसरिसचाँदिनी।चितवतहीमुनिमननिफाँदिनी॥
नेविचित्रविलासनेवासा।भोगसाजसबकरहिंप्रकासा॥३३॥सुरभितधूपधूमचहुँओरा।फैलतपरिमलपवनझकोरा ॥
मनसेजतहँपरमसुहावनि।मणिनदीपअवलीसुखछावनि॥सुछविमयीतहँसखीसुहाहीं।जिनहिंदेखिरतिरमालजाहीं।
दोहा–रसिकशिरोमणिजायतहँ, श्रीरघुवंशकुमार । जनकललीकिसंगमहँ, नितप्रतिकरहिंविहार ॥ ३५ ॥
यहिविधिकौशलनगरमहँ, निवसहिंश्रीरघुनाथ । धर्मधरतप्रगटतसुयश, करतप्रजानिसनाथ ॥ ३६ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे एकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–कुशकेअतिथिकुमारभो, भयोनिषधसुततासु । ताकेभयोनरेशनभ, पुंडरीकसुतजासु ॥
किक्षेमधन्वसुतजायो ॥ १ ॥ देवानीकतासुसुतभायो ॥ तासुअहीनपुत्रबलवाना । पारिजाततासुतमतिमाना ॥
केवलभोबलकोधामा । ताकेथलभोगुरुनिलामा ॥ ताकेवज्रनाभमहिपाला । सूर्यअंशतेभयोविशाला ॥ २ ॥
सुतखगनविधृतनृपताते । भयोहिरण्यनाभसुतजाते॥ जैमिनिशिष्यभयोसोराजा । जेयोगाचारजतपभ्राजा॥३॥
रणनाभसोंयाज्ञवल्क्यमुनि।योगशास्त्रपढ़िलीन्होबुधगुनि॥जाकेपढ़ेविमलमतिहोवै।वरवसहृदयग्रंथिकहँखोवै४॥
दोहा–हेमनाभकोपुष्पसुत, ध्रुवसंधिहुसुततासु ॥ भयोसुदर्शनतेहिसुवन, अग्निवरणसुतजासु ॥
केशीघ्रभयोमहिपाला।शीघ्रसुवनभोमरुतविशाला॥५॥योगसिद्धजोहिपरमप्रतापा।अबलोंनिवसतग्रामकलापा॥
रविवंशहिनाशहिहोई । कलियुगअंतचलैहैसोई ॥ ६ ॥ मरुकेभयोप्रसुश्रुतवीरा । तेहिसुतसंधिमहारणधीरा ॥
हसुतभयोअमरपणनामा।महस्वानतासुतबलधामा॥ताकेविश्वसाहुनृपभयऊ॥७॥नृपप्रसेनजिततासुतठयऊ ॥
केतक्षकभयोकुमारा । तासुबृहदबलसुवनउदारा ॥ भारतसमरमाहँकुरुराई । आपपितामारयोतेहिजाई ॥ ८ ॥
दोहा–यहइक्ष्वाकुसुवंशमें, अबलोंभेयेभूप ॥ अबजेहैंहैंभूपवर, वरणोंतिन्हैंअनूप ॥
भतेहिसुवनबृहद्रनहैहै ॥ ९ ॥ तासुउरुक्रियसुतयशछैहै ॥ ताकेवत्सवृद्धसुतहोई । प्रतिव्योमतासुतसलसोई ॥
सुभानुसुततासुदिवाकृ ॥१०॥ हैहैसुतसहदेवहुताकृ ॥ तासुतबृहदश्वनवरवीरा । भानुमानुतासुनरणधीरा ॥
ीकाशुसुतभानुमानुको । सुप्रतीकसुततासुमानुको ॥११॥ तासुतहैहैपुनिमरुदेवा । तासुनक्षत्रनरदेवा ॥

ताकोसुतपुष्कलपुनिह्वैहै । तासुतअंतरिक्षमुदर्दैहै॥ पुनिह्वैहैसुतपासुतताको।पुनिअमित्रजितपरमप्रभाको॥
दोहा-बृहदभोजपुनिहोइगो, तासुसुवनबलवान ॥ ताकोसुतवरहीप्रगट, करिहैसुयशमहान ॥
तासुऋतंजयसुतपुनिहोई । तासुरनुंजैसुतमुदमोई ॥ ह्वैहैतेहिसुतसंजयनामा॥१२॥तेहिसुतशा
ताकेसुतशुद्धेतसुजाना । तासुतलांगलअतिबलवाना॥ताकोसुतप्रसेनाजितवीरा । ताकोसुतक्षुद्रकमतिधीरा॥
रनककुमारहोइगोताके । तासुतसुरतानिधानविभाके ॥ ताकेह्वैहैपरमउदारा । जाकोनामसुमित्रउचारा॥
येतेभूपबृहदबलतेरे । ह्वैहैंभूतलबलीघनेरे ॥ नृपसुमित्रलगिनृपअवतंसा । कियइक्ष्वाकुवंशपरशंसा॥
दोहा-यहइक्ष्वाकुनरेशको, वंशविमलमहिमाहिं ॥ नृपसुमित्रतेजगतमें, चलिहैंभूपतिनाहिं ॥ १६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-नृपइक्ष्वाकुकुमारभो, निमिनरपतिकुरुराय ॥ यज्ञकरनहितसोकह्यो, गुरुवसिष्ठतेजाय ॥
मोहिंमखकरवावहुगुरुज्ञानी । तववसिष्ठबोलेअसवानी ॥ प्रथममोहिंवासवबोलवायो । इतैआशुमेरेढिगआयो॥
सोमेंइंद्रहिमखकरवाई । तुमहिंकरैहौंपुनिइतआई ॥ तबलौंतुममोहिंपरख्योभूपा । कियोनकौनहुयज्ञअनूपा॥
मुनिराजाचुपरह्योतहाँहीं।गेमुनिमघवाकेमखमाहीं॥२॥निमिअनित्यनिजजानिशरीरा।औरेनऋत्विजलैमतिधीरा
यज्ञकरनलागेअतिहरपे । गुरुवसिष्ठआगवननपरिपे ॥३॥ उतवासवकोयज्ञकराई । आयलख्योनिमिमखपुनि
दोहा-निरख्योअपनेशिष्यको, कियोजोआज्ञाभंग ॥ दियोशापनिमिराजको, करिकैकोपअभंग ॥
रेमूरुखपंडितअभिमानी । कियोयज्ञममकहोनमानी ॥ तातेहोइतोरतनपाता । जामेंकरहिनकोउअसवाता॥
निमिहुगुरुहिदीन्ह्योंतवशापा।तुमहुँत्यागितनलहहुसँतापा।कारिकैलोभमोरमखछोडी।लियोजाइवासवमखओडी
तज्योभूपतनशापहिभापी । सक्योवसिष्ठहुनहिंतनरापी ॥ एकसमयउरवशीनिहारी । मित्रावरुणवीर्यतजिभारी
राख्योकुंभमहँतेहिकाला । तेहितेभयेवसिष्ठभुवाला ॥६॥ तेलमाहँद्विजनृपतनरापे।मखकरिपूरसुरनसोंभाषे
दोहा-जोतुमहोहुप्रसन्नतौ, निमिकोदेहुजिआय ॥ सुरतथास्तुसबकहतभे, तबनिमिकह्योबुझाय ॥
मैंनाहिंचाहोंअवतनकाहीं॥८॥जेहिवियोगभयमानिसदाहीं॥पुनिसंबंधचहैंमुनिनाहीं।भजतरहैंहरिपदमनमाहीं॥९॥
तबसबदेवनृपहिगुनिज्ञानी । बोलेपरमप्रमोदितवानी ॥

देवा ऊचुः ।

निमितुमबसहुनिमिपमहँजाई । मूँदहुप्रगटहुनैनबनाई॥तबतेंह्वैविदेहदृगमाहीं । निमिनिवसतसबजीवनपाहीं॥
बिनभूपतिभूनिरखमुनीशा।द्विजसबनिमितनमथ्योमहीशा॥तातेप्रगटयोएककुमारा।कियोजोमहिमेंधर्मअपारा॥
भयोविलक्षणजन्मसुहायो । तातेजनकनामसोपायो ॥
दोहा-भयोनजीवतदेहते, तातेभयेविदेह । मंथनतेसोमिथिलभो, मिथिलारच्योसनेह ॥ १३ ॥
तासुउदावसुभयोकुमारा । नंदीवर्धनतासुउदारा ॥ तासुसुकेतुतासुसुरराता ॥ १४ ॥ तासुबृहद्रथजगती
ताकेमहावीर्यनरनाहा । ताकेसुधृतिभयेगुननाहा ॥ ताकेधृष्टकेतुबलवाना । ताकेभोहरियश्वमहाना ॥
-१५-मरुपुत्रप्रतीपकताकेभोकुलरयकुलदीपक॥ताकेदेवमीढमहराजा । ताकेविश्रुतकृतद्विजकाजा
॥१६॥ तासुनभोकुलनिगनउदारा ॥ तासुमहारोमावलवाना । त
[illegible]हा-तासुह्रस्वरोमाभयो, ॥१७॥ [illegible] निप्रधान । सीरध्वजमहराजभे, सीतापितासुजान ॥
महिमाही । मी [illegible] ॥ १८ ॥ मी [illegible] धान ।

।कृतधुजमितधुजज्ञानघनेरे॥१९॥केशध्वजभेसुतसुतधुजके। भेखांडिक्यपुत्रमितधुजके॥
केशिध्वजभोआतमज्ञानी२०कर्मकांडखांडिकलियजानी॥केशिध्वजभूपतिभयपाई।खांडिकअनुजघस्योवनजाई॥
॥२१॥ ताकेशुचिभोनृपतिप्रधाना।ताकेसनद्वाजमतिमाना॥
दोहा–ऊर्ध्वकेतुताकेभयो, ताकेअजसुकुमार। ताकेपुरजितहोतभो, सिगरेगुणनअगार॥ २२॥
। परमबलीश्रुतायुभोजाके॥ भयोसुपार्श्वश्रुतायुकुमारा। तासुचित्ररथपरमउदारा॥
ताकेक्षेमाधिमिथिलाधीशा॥२३॥ ताकेसमरथभयोमहीशा॥ तासुसत्यरथभयोसुजाना।ताकेउपगुरुभोबलवाना॥
तासुपुत्रउपगुप्तप्रशंसा। भयोभूपसोपावकअंसा॥ २४॥ वस्वनंतताकेबलवाना। ताकेभोभूपतियुयुधाना॥
ताकेभयोसुभाषणवीरा। ताकेश्रुतताकेजयधीरा॥ जयकेविजयपुत्रऋतुताके॥२५॥शुनकतासुसुतपरमप्रभाके॥
दोहा–वीतिहव्यताकेभये, जेकीन्हेंबहुयाग। ताकेधृतनरनाहभे, जेकियहरिअनुराग॥
तिनकेश्रीबहुलाश्वभो, मिथिलाकियोसनाथ। आपहितेजिनकेसदन, जातभयेयदुनाथ॥
भेबहुलाश्वनरेशके, कृतिकुमारमतिधाम। तिनकेमहावशीभये, जेपूरेद्विजकाम॥ २६॥
येतेमिथिलकेभये, महाराजमतिमान। हरिप्रसादतेघरहुमें, निवसेमुक्तसमान॥ २७॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदांबुनिधौ नवमस्कंधे त्रयोदशस्तरंगः॥ १३॥

शुक उवाच।

दोहा–सोमवंश अतिपावनो, अवसुनियेकुरुराय। पुण्ययशीजहँहोतभे, ऐलादिकसमुदाय॥ १॥
हरिनाभीतेसरसिजजायो। तामेंब्रह्माजनमहिपायो॥ ताकेअत्रिपुत्रमतिमाना। अपनेगुणतेपितासमाना॥ २॥
तिनकेदृगतेपरमप्रकासी। भयोचंद्रमाजगतहुलासी॥ विप्रऔषधीउडुगणकेरो। ब्रह्माताकोनाथनिबेरो॥ ३॥
त्रिभुवनजीतिविजयमदपागा।राजसूयकीन्ह्योंतबयागा॥नारिबृहस्पतिकीतहँआई।हरिलीन्ह्योंतेहिविधुबरियाई॥४॥
गुरुमाँग्योनिजतियबहुबारा।पैनचंद्रकियदेनविचारा॥लैगुरुतियशशिशुक्रहिपाहीं।जातभयोरोपितमनमाहीं॥ ५॥
दोहा–शुक्रबृहस्पतिवैरगुनि, कीन्ह्योंचंद्रसहाय। इतसुरगुरुकीओरभे, शिवगणयुतहरपाय॥ ६॥
सुरपतिसुरनसहितगुरुओरा। होतभयोकरिकोपअथोरा॥ उतदानवशुक्रहिढिगजाई। कीन्ह्योंशशिकीसँचसहाई॥
भयोसुरासुरकोसंग्रामा। समरतारकामयजेहिनामा॥ ७॥ तबअंगिरागयेविधिपाहीं। कह्योसोमकोकर्मतहाँहीं॥
तबब्रह्माअतिकोपहिछाई। निंदाकरिसोमहिंडेरवाई॥ तारहिदियोबृहस्पतिकाहीं। गर्भवतीगुरुलख्योतहाँहीं॥८॥
तबकोपितबोलेतारासों। पापिनडरीनअघभारासों॥ परकृतगर्भक्षेत्रममधारे। ताहित्यागुतेंनिर्नाहिविचारे॥
दोहा–मैंकरिदेहौंभस्मतोहिं, करिकेकोपप्रकाश। पैसंततिकीआशकरि, तोकोंकरहुननाश॥ ९॥
तबलज्जितह्वैकेतहँतारा। जनमीसुवरणवरणकुमारा॥ सुरगुरुसुंदरशिशुहिनिहारा। कहनलगेसुतअहैहमारा॥
तबचंद्रमाकह्योअसिबानी१०यहतोसुतमेरोगुणखानी॥शशिशशिगुरुकोभयोविवादा।तबसुरमुनिरासनमरयादा॥
तारासोंपूँछ्योअसजाई। काकोसुतयहदेहुबताई॥ तबलज्जिततारानहिंबोली। काहूसोंसुतमरमनखोली॥ ११॥
तबमातासोंकुपितकुमारा। बोल्योहमकाकेहैंवारा॥ देदुरमतितेदेहिबताई। काहेतेंअबवृथालजाई॥ १२॥
दोहा–ताहूपैबोलीनहीं, तबब्रह्माढिगजाइ॥ तारहिलैएकांतमें, पूँछतभेसमुझाइ॥
...दमंदबोलीतबतारा। अहैचंद्रमाकोयहबारा॥ तबचंद्रमापुत्रकरलैलीन्ह्यों॥ १३॥ विधिबुधतासुनामधरिदीन्ह्यों॥
...बुधसुत... ...दाये... १४ तासुइलातियमहँकुरुराजा।प्रगटयोपुरूरवामहँराजा॥
...सुशीलगुणरूपउदारा॥१५॥ नारदभन्योदेवदरबारा॥ सुनिसोगेटरवशीलोभाई।पुरूरवाभूपतिढिगआई॥१...

मित्रावरुणशापतेहिंदीन्ह्यो । तेहिंतेअवनिआगवनकीन्ह्यो॥कामसमानरूपनृपकेरो।तेसाहिवलहुप्रतापघनेरो॥
दोहा–ऐसोनिरखिपुरूरवै, तिरछोहितेहिताकि ॥ व्यथितपंचशरशरनते, खड़ीभईछविछाकि ॥
तेहिंलखिपुरूरवौमहिपाला।अतिमोदितदृगकंजविशाला॥अंगअंगपुलकायलिछाई।गिरामाधुरीताहिसुनाई॥

पुरूरवा उवाच ।

भलीकरीसुंदरिजोआई । बैठोममसमीपसुखछाई ॥ करोंकाममैंकौनतिहारो । सोहमसोंअववेगिउचारो ॥
विधुवदनीअववपंअपारा । मेरेसँगमेंकरहुविहारा ॥ १९ ॥ सुनिकेपुरूरवाकेवैना । कह्योउरवशीउरभरिचैना॥

उर्वश्युवाच ।

तुमहिंनिरखिअसकोजगमाहीं । जातियकोमनमोहतनाहीं ॥
दोहा–लालनतवउरलगतहीं, वालदशाअसिहोइ ॥ तजिकुलकानिसयानिहू, त्यागिसकेनहिंकोइ॥२०
येदुइपालहुमेपहमारे । अहैंपुत्रसमपरमपियारे ॥ देहुभूपहमकोयहमाना । तुमसमानकोऔरसुजाना॥
मेपनजवलौंपालनकरिहौं । तवलौंमोसँगमेंमुदभरिहौं ॥ तुमललनागणकेमनहारी । धराधर्मधुरकेधुवधारी॥
पुरूरवाहेसुछविनिकेतू । देहुमोहिंघृतभक्षणहेतू ॥ विनमैथुनतोहिंनगननरेशा । निरखतमैंजहौंनिजदेशा॥
तवराजातथास्तुकहिदीन्ह्यो । परमानंदमनहिंगुनिलीन्ह्यो॥२२॥पुनिमोदितवोलेनृपराई । [illegible]
दोहा–अपनेतेआईनिरखि, तोकोंसुपमाखानि ॥ कोअसजोसेवैनहीं, यहजगमेंसुखमानि ॥ २३ ॥
असकहिनरवरसुंदरिसंगा । विहरनलगेरचतरतिरंगा ॥ चैत्ररथादिकवननउदारा । कियेउर्वशीसंगविहारा॥
कमलसरिसमुखसौरभताको।निशिदिनसेवनकरतनथाको [illegible]
विनाउर्वशीसभानिहारी । सुरपुरसुरपतिभयोदुखारी ॥ तवगंधर्वनकाहिंवोलायो । ऐसोशासनतिनहिंसुनायो
विनाउर्वशीसभाहमारी । फीकीसवविधिपरतिनिहारी ॥
दोहा–तेहितेआशुहिअवनिते, लायलेआवहुताहि ॥ सोसुनिकेगंधर्वसव, गवनेसोइचितचाहि ॥ २६ ॥
अर्धरातिभूपतिगृहआये । युगलमेपलैस्वरगसिधाये ॥२७॥ मेपकियेतवआरतशोरा । [illegible]
निजसुतहरणउरवशीजान्यो । रोवतऐसेवचनवखान्यो ॥ नृपतिनपुंसककेवशपरिकै । भईअपुत्रामैंदुखभरिकै॥
हैनवीरयहमानलवीरा । याकेनहिंकछुहैममपीरा ॥ ऐसोमैंकुतासितपतिपाई । अपनीगतिसवदियोनशाई॥
वलीविलोकिकियोविश्वासा । यहिधोखेममसुतभेनासा ॥ लियेजातमेरेसुतचोरा । [illegible]
दोहा–जागतहैपरयंकमें, परोनजातडेरात ॥ जिमिनारीसोसकुचवश, वाहरकढोनजात ॥ २९ ॥
उरवशिवचनवाणजवमारयो । जिमिगजकोउअंकुशप्रहारयो ॥लैतरवारिनगननरराई।कोपितगयमेपहितधाई
तवगंधर्वमेपतजिभागे । भूपतिमेपपाइसुखपागे॥ [illegible]
पूर्वप्रतिज्ञाजानिउरवसी । तेहिक्षणजाइस्वर्गमहँनिवसी॥३१॥ [illegible]
अतिविह्वलह्वैमत्तसमाना । फिरनलगेकरिशोचमहाना ॥ खाननहानपाननृपत्यागे । उरवशिहेतरैनदिनजागे॥
दोहा–यहीभाँतिविचरतनृपति, कुरुक्षेत्रमहँजाय ॥ सखिनसहितलखिउरवशिहिं, वोलेधाययहहाय ॥ ३३ ॥

पुरूरवा उवाच ।

रेउरवशीखड़ीरहुप्यारी । अवहूँतंकरुसुरतिहमारी ॥ ममसंकटकाटहिसुकुमारी । तजैनअवमोहिंदासविचारी
नलिएकांतचोरहिमृदुवैना । अवैनपूरभयोरतिचैना॥३४॥जोमोकोंअवतूँतजिजैहै।मृतमोतनहिंगीधगणखैहैं
सुनिअसपुरूरवाकीवानी । कहनलगीउरवशीसयानी ॥

उर्वश्युवाच ।

[illegible] ॥ सदानकरहिंएकसोंयारी । नारिसुभावहिलेहुविचार
[illegible] ॥

दोहा-कर्मकरहिंसहसासबहि, असहनक्रूरसुभाव ॥ निजलघुकारजहेतपति, भ्रातहिघालहिंधाव ॥ ३७ ॥
यमजननकहँलेहिलोभाई। करिप्रतीतिपुनिदेहिविहाई ॥ नितनवनवनरचाहहियारी। अराधुंश्चलीहोतिहैनारी ॥
तिकरहुननारिसनेहू। अबमहीपमोकोंतजिदेहू॥३८॥जोहठवशतजिहोनहिंमोहीं। तौमैमिलिहौंयहिविधितोहीं॥
वतसरकेअंतहिमाहीं। एकरैनरमिहोंमोहिपाहीं ॥ तुम्हरेहैहैंपुत्रसुजाना। ममविनतीमानहुमतिमाना ॥ ३९ ॥
भंवतीउरवशिहिनिहारी। अपनेपुरगोभूपसुखारी ॥ संवतसरअंताहितहँजाई। लियोउरवशीअंकलगाई ॥ ४० ॥
दोहा-रमेरातिभरताहिसँग, पुरूरवामहराज ॥ मानतभेअपनेहिये, सफलभयोसबकाज ॥
निवियोगगुनिमहादुखारी। पुरूरवैउरवशीनिहारी॥४१॥कहगंधरवनितोपहुभूपा। करिकैअस्तुतिपरमअनूपा॥
वैतुमहिंदेहिंगेमोही। पुनिहमतुमनहिंहोबविछोही ॥ तवराजागंधरवनतोपा। अग्निपात्रयकलह्योअनोपो ॥
कोभूपउरवशीमान्यों। मनहिचरनलाग्योसुखसान्यों॥तातेजबउरवशीनप्रगटी। तबजान्येगँधरवहैकपटी॥४२॥
निपात्रधरिकाननमाहीं। आयेनृपअपनेघरकाहीं ॥ यहिविधिबीतिगयेबहुकाला। तहँत्रेतायुगलग्योविशाला ॥
दोहा-पुरूरवाकेमनहितब, प्रगटेचारिहुँवेद ॥ कर्मप्रबोधकजगतजेहिं, करिनरहोतअखेद ॥ ४३ ॥
बनृपतेहिंकाननहिंसिधायो।जहाँअग्निपात्रहिधरिआयो॥तहँलखिसमीवृक्षमधिपीपर।ताकोकियद्वइअरनीनृपवर ॥
रधनिजअधउरवशिकाहीं।मध्यसुतहिगुनिनृपमनमाहीं॥मंत्रहितेसोमंथनकीन्ह्यों।तातेअगिनिप्रगटकरिलीन्ह्यों ॥
सकारकरिपावककेरो। जान्योपुत्रयहीहैमेरो ॥ ४६ ॥ उरवशिलोकजानकेहेतू। सोइगावबतभूपतिकेतू ॥
रिमखपूजनकियभगवाने। जोसबकेघटघटकीजानै॥यहिविधिपुरूरवामखकरिकै। गोगंधर्वलोकमुदभरिकै॥४७॥
दोहा-प्रथमरह्योयकप्रणवही, अरुपावकपरवीन ॥ पुरूरवानृपतेभये, त्रेतामेंयेतीन ॥ ४८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे चतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-पुरूरवासंयोगते, उरवशिमहँपटपूत। होतभयेअतिशैप्रबल, जगयशछायोपूत ॥
युश्रुतायूअरुसत्यायू। रयजयविजयसबैदीर्घायू ॥१॥ नृपश्रुतायुकोसुतवसुमाना। सुतसत्यायुश्रुतंजयजाना॥
सुतभयोनामजेहिंएका। जयसुतभयोअमितसविवेका॥२॥विजयभूपकेभीमकुमारा। ताकेकांचनभयोउदारा॥
केहोत्रकपरमप्रवीना। ताकेजह्नुमहातपलीना ॥ जोगंगहिगंडूपहिभरिकै। कीन्ह्योंपानप्रकोपहिकरिकै ॥
सुनिविनयभगीरथकेरी। श्रुतिपयतज्योसुतागुनिफेरी॥पुनिभोजह्नुपुत्रपुरुनामा।तासुतभोबलाकबलधामा ॥
दोहा-अजकतासुसुत-॥३॥-तासुकुश, ताकेसुतभेचार। वसुमूर्तकुशनाभहू, अरुकुशांबुबलवार ॥
कुशांबुकेगाधिनरेशा। जाकोजगमेंप्रगटनिदेशा ॥४॥ ताकेसत्यवतीइककन्या। तेहिंऋचीकमाँग्योगुनिधन्या॥
न्यासरिसनवरनृपदेखी। कहऋचीकसोंअनुचितलेखी ॥५॥श्यामकर्णशशिसरिसतुरंगा।देहुहजारदमहियकसंगा॥
यहसुतातुमहिंदेडारें। कन्याकोयहमोलविचारें ॥ ६ ॥ मुनिनृपवचनमुनीशप्रवीना। वरुणहितेयाजीलेदीना ॥
कन्याकोदियेभुवाला।त्रिभुवनजाकोसुयशविशाला॥७॥पुनिसुतहितऋचीकसोंरानी। जोरिपाणियोलीमृदुवानी॥
दोहा-मोदुहिताकेमेरेहु, देहुपुत्रबलवान। सूनुविनाजगसूनयह, मैंमानोंमतिमान ॥
किअतिशयहरपाने। द्वैपायसआशुहिनिरमाने ॥ रच्योएकछत्रीमंत्रहिते। दूजोब्रह्ममंत्रतंत्रहिते ॥
रविभागातिनकोमुनिराई।गेमज्जनहितसरितसुहाई ॥८॥ मातादुहितातेअनुरागी।वरगुनितेहिभागहिलियमाँगी॥
दुहिताजननीकरभागा।भोजनकियोसहितअनुरागा॥९॥जानिव्यतिक्रमतहँमुनिराई।बोलेनिजतियसोंदुखछाई।
तोहेंहैसुतघोरा। जाकोदंडचलहिचहुँओरा ॥ द्विजपूजकहैहैतवभाई। सकलवेदविदजनसुखदाई ॥ १० ॥
दोहा-सत्यवतीतबदुखितहै, कहपतिकोमुखजोइ ॥ ऐसीकीजैप्रभुकृपा, ऐसोसुतनहिंहोइ ॥

तबऋचीकयोलेयहिभाँती । सुतनहितसपैहैहैनाती ॥ तबप्रगट्योजमदग्निकुमारा । जोजगमेंतपतेजअपारा॥
सत्यवतीसरितामेंपावनि । नामकौशिकीपापनशावनि॥रेणुसुतारेणुकासुहाई । व्याह्योतेहिंजमदग्निलोभाई॥
वसुमतआदितासुसुतजाये।बहुतजातिनहिंनामगनाये॥तिनकेअनुजविष्णुकेअंसा।परशुरामभेभृगुअवतंसा
जोहैयहयवंशिनसंहारा।कियनिक्षत्रक्षितिइकइसवारा१४॥१५॥ ... ॥१५॥

राजोवाच ।

दोहा—क्षोणीकेक्षत्रीसबै, कौनकियोअपराध ॥ परशुरामजातेकियो, तिनकेकुलकोबाध ॥ १६॥
यहिविधिकियजबविनयमहीशा । कहनलगेतबमुदितमुनीशा ॥

श्रीशुक उवाच ।

हैहयवंशकेरअवतंसा । अर्जुनप्रगट्योजगतप्रशंसा ॥ चक्रसुदर्शनकोअवतारा । दत्तात्रयदियबाहुहजारा॥
जासुपराक्रमसुयशप्रतापा।छायपुहुमिकियवैरिनतापा ...
वाढ्योवैभवशक्रसमाना । पवनसरिसकियभुवनपयाना ॥१९॥ एकसमयलैबहुवरनारी । ...
करनलग्योमदमत्तविहारा । सबभूषणअँगपहिरिउदारा ॥

दोहा—खेलतहीअर्जुनतहाँ, सरिनर्मदागँभीर । सहसधाररोकतभयो, सहसबाहुसोवीर ॥ २० ॥
तहाँरहाकहुँरावणडेरा । सरितनर्मदाकेअतिनेरा ॥ बोरच्योताहिउलटिकैधारा । औरोमहिमेंकियोपसारा॥
... दनको ... अर्जुनस ... नानि ... ॥२१॥
... ॥२२॥ ... हजा ...
विचरतनृपनिर्जनवनमाहीं।गोजमदग्निआश्रमपाहीं॥२३॥हैहयेंद्रकोलखिमुनिराई ।तेहिसतकारकरनचितलाई॥

दोहा—कामधेनुकेजायढिग, सकलवस्तुप्रगटाय । अर्जुनकोसेनासहित, कियसतकारसुहाय ॥ २४॥
लखिअपूर्वअसधेनुभुवाला । लेनलालसाकियतेहिकाला॥ ... ॥२५॥
तेहिंजमदग्निगऊनहिंदीन्ह्यो । ...
सुनिभटवत्ससहिततेहिंछोरी । लैगेनिजनगरीवरजोरी॥२६॥ ...
परशुरामपुनिआश्रमआये । पितातिन्हैंवृत्तांतसुनाये ॥ सुनिनृपकर्मभयोअतिकोपी । ...

दोहा—नाथआपकोहोउँगो, जोसतिपुत्रप्रवीर । तौअर्जुनकोमारिहौं, आजुहिंसंयुतभीर ॥ २७॥

छंदनराच—प्रभापिराममाखियोकुठारराखिकंधमें । कृपाणकालकेसमानबाँधिलंकबंधमें ॥
प्रचंडचापधारिबाणपूरद्वैनिषंगहैं । त्रिकाशवानवर्मतेविराजमानअंगहैं ॥
मक्षत्रपालसीविशालढालपीठिपैंकसी । कुरंगचर्मअंबरैजटाछटाशिरैलसी ॥
नरेंद्रहैहयेंद्रपैद्विजेंद्रकोपछावतो । गयोगजेंद्रपैमृगेंद्रज्योंप्रकोपिधावतो ॥
पुरीप्रवेशकर्तहींलख्योनरेशरामको । मनोसँहारहेतरुद्रजाततीनिग्रामको ॥ २८ ॥ २९॥
तुरंगऔमतंगपैदरानिऔरथानको । दियोनिदेशहैहयेशरामयुद्धजानको ॥
सुभट्टउट्टझट्टपट्टपाणिपट्टकोलये । प्रकोपियुद्धचोपिचित्तरामपैद्रुतैगये ॥
शतघ्निशक्तिवानरिष्टयष्टिवृष्टिकैमहाँ । कियोअट्टरामकोचहूँदिशानितेतहाँ ॥
परशुरामकालसोकरालल्लैकुठारको । कियोनरेशसैनमध्यवेगसोसँचारको ॥ ३० ॥
करकुठारकोप्रहाररामजूजहाँजहाँ । कटैमतंगत्योंतुरंगजानहूतहाँतहाँ ॥
अखंडरुंडमुंडझुंडमंडितेमहीभई । प्रचंडमारतंडसोकुठारकीप्रभाछई ॥
सद्योगयोनरामकेप्रहारकोसँभारहे । अपारसेनभागतीपुकारिवारबारहे ॥

कठोरशोररामकेसुचारिओरधावहीं । परायकैदुरायकेनवीरबाँचिजावहीं ॥
बहैंल्गींप्रवाहकेअथाहशोणितेसरी । अनेकजातियोगिनीजमातिनाचतीखरी ॥
विलोकिसैनकोसँहाररामकेकुठारसों । लियोप्रचंडपांचसैकोदंडकोपभारसों ॥
सवेगरामकेसमीपमेंमहीपआयकै । चलायवेप्रमाणबाणआशुरामछायकै ॥
दोहा–बोल्योवैनकठोरअति, रेभार्गवमतिमंद । अबनबचैगोयुद्धमें, करेकेतऊफंद ॥ ३१ ॥ ३२ ॥
भुजंगप्रयात–तहाँरामकोदंडलैकोपकीन्ह्यों । शरैधारतेशत्रुकोछायलीन्ह्यों ।
भयेक्रुद्धदोऊकियेयुद्धभारी । कियेआशुहीरुद्धआकाशचारी ॥
गयेमूँदिचंडांशुभोअंधकारा । दशौंहूँदिशामेंछईवारुधारा ॥
तहाँरामकीन्ह्योमहावेगवारी । सबैशत्रुकीबाणवर्षाविदारी ॥
शतैपंचलैबाणरामोपवारा । शतैपंचचापैदल्योएकबारा ॥
कियोभूपकोस्यंदनेआशुभंगै । दल्योसारथीकोमल्योंत्योंतुरंगै ॥ ३३ ॥
तहाँपंचशैढालत्योंहींकृपानैं । गह्योहाथमेंहैहरासोमहानैं ॥
महाकोपकैरामकीओरधायो । सबैएकबारैंसकोपैचलायो ॥
हन्योपर्शुरामौतहाँपर्शुधारी । सबैशत्रुकेखड्गढालौविदारी ॥
सहस्रार्जुनैकेसहस्रोभुजाको । दल्योएकबारेनहींनेकुथाको ॥ ३४ ॥
तहाँरामताकोतहाँकाटिडारचो । सुरैअंबरैमेंविजैकोउचारचो ॥
गिरचोभूमिमेंभूपकोशीशभारी । गिरायोमनोशैलकोवज्रधारी ॥
भगेपुत्रताकेपितानाशदेषी । लह्योराममोदैविजैकोविशेषी ॥ ३५ ॥
तहाँधेनुकोलैसवत्सासुखारी । पिताकोदियोभोपितैमोदभारी ॥ ३६ ॥
महायुद्धवृत्तांतआनंदछायो । पिताऔरभ्रातानिसोंरामगायो ॥
सुन्योंहैहयेशेवधैपुत्रतेरे । कह्योकोपकैकैपितारामकेरे ॥ ३७ ॥
दोहा–वृथाहन्योहैरामसुत, तुमहैहयकोजाय । महापापतुमयहकियो, सबसुरमयनरनाथ ॥ ३८ ॥
हमसबब्राह्मणकरिक्षमा, पूजितहैंजगमाहिं । क्षमाप्रतापविरंचिहू, लह्योब्रह्मपदकाहिं ॥ ३९ ॥
क्षमामानद्विजकोवढ़त, रविसमतेजमहान । क्षमामानद्विजपैरहत, अतिप्रसन्नभगवान ॥ ४० ॥
अभिषेकितभूपालवध, द्विजवधतेगुरुहोइ । तातेतीरथकरिसकल, डारहुपातकधोइ ॥ ४१ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे पंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–मुनिपितुशासनमानिकै, तहँकुरुपतिभृगुराम । संवत्सरभरतीर्थकरि, पुनिआयेनिजधाम ॥ १ ॥
मुनिजमदग्निनारिएककाला।नामरेणुकासुछविविशाला॥गईभरनजलसुरसरिमाहीं।निरख्योगँधरवपतिहितहाँहीं ॥
कंजमालपहिरेतियसंगा।करतविहाररँग्योरतिरंगा ॥२॥ कारितापैकछुमनमुनिनारी।निरखनलगीविहारसुखारी॥३॥
होमकालभूल्योतेहिकाहीं।पुनिसुधिकैशंकितमनमाहीं॥आइकलशधारिदोउकरजोरी।खड़ीभईमुनिनिकटथहोरी ४
लखिनिजतियकोमुनिव्यभिचारा।कुपितसुतनसोंवचनउचारा।यहिपापिनकोतुमहनिडारो।अनुचितउचितननेकुविचारो
दोहा–मातुजानितेहिसुतसबै, ताकोवधनाहिंकीन ॥ ५ ॥ तबकोपितजमदग्निअति, रामहि[illegible]नदीन ॥

पिताप्रभावरामतहँजानी । मातुहिभ्रातनिहन्योविज्ञानी ॥६॥ तबपितुह्वैप्रसन्नअतिबोले । माँगहुवर...
परशुरामतबअतिअनुराग्यो । यहवरदानपितासोंमाँग्यो ॥ ...
... दतकाहिदी ... वितसेज ... हौनव ...
रहेजेअर्जुनभूपकुमारा । तेपितुवधलखिदुखीअपारा ॥ परशुरामकोअतिभयपाई । वसतरहेतेवनहिलुकाई ।
दोहा–एकसमयभ्रातनसहित, गयेरामवनमाहिं ॥ सोईअंतरलहिभूपसुत, साधनवैरतहाँहिं ॥
मुनिजमदग्निआश्रमहिंआये१० ... पिकहँ ...
पैपापीनहिंकछुचितलाई।मुनिशिरकाटिलियोवरियाई॥ ...
लख्योरेणुकानिजपतिनासा ।रोवनलागीविगतहुलासा ॥हायगमनकीन्ह्योंकितरामा । ...
असकहिबाराहिबारदुखारी । रामहिंऊँचेसुराहिपुकारी॥१३॥सुनिद्वारिहितेमातुपुकारा । ...
दोहा–जोहिजनकवध–॥१४॥–अतिदुखित, रोवनलागेराम ॥ हायताततमोहिंछोंड़िके, ...
...
धरिकैकंधपरशुअतिघोरा॥१६॥मँडिलापुरीगयोवरजोरा॥अर्जुनसुतजेदशौंहजारा।तिनकेशिरकाट्योइकवारा।
तिनकेशोणितनदीबहाई । ब्राह्मणवधफलदियोदेखाई ॥ रामआपनेपितुवधकारन । ...
परशुरामअतिकोपअपारा१ ...
दोहा–लैकरिनिजपितुशीशको, घरमेंदियोलगाय ॥ सर्वदेवमयदेवको, मखकरिपूज्योचाय ॥ २० ॥
...
औरऋत्विजनदियोदिशांतर।मध्यदेशकश्यपकहँद्विजवर॥आर्यावर्त्तदियोउपदिष्टै।औरसदस्यनकोविनकष्टै।
पुनिसरसुतीसरितमहँजाई।कियअवभृथमज्जनसुखछाई॥तातेभोसबकलुषविनाशा। ...
यज्ञप्रभाउतहाँअवनीशा॥२३॥जियेआशुजमदग्निमुनीशा॥सप्तऋषिनिमंडलमहँजाई।भयेसातयोंऋषिकुरराई।
दोहा–दुसरेमन्वंतरनृपति, परशुरामहूजाइ ॥ ह्वैहैंसप्तऋषीनमें, सतयोंऋषिश्रुतिगाय ॥ २५ ॥
अवनिवसतमहेंद्रगिरिमाहीं । शांतचित्ततजिआयुधकाहीं॥तहाँसिद्धचारणगंधर्वा।रामसुयशगावतनितसर्वा।
यहिविधिभृगुवंशहिअवतारा।लैहरिमेट्योभूतलभारा॥२ ... २१ ...
तपकरिक्षत्रियधर्मकहँत्यागी।भयेब्रह्मऋषिहरिअनुरागी॥२८॥विश्वामित्रपुत्रशतजाये।सबहिंनाममधुछंदपाये।
एकसमयहरिचंदनरेशा । कियोयज्ञमुनिदियोनिदेशा ॥ ल्यावहुभूपयज्ञपशुकाहीं । तवपूजिहैंयज्ञसुखमाहीं।
दोहा–तवऋचीकढिगजायके, देतिनकोधनवृंद ॥ मझिलोसुतश्वनशेफको, लैगमन्योहरिचंद ॥
विश्वामित्रआश्रमेजवहीं । आयेनृपश्वनशेफहुतवहीं ॥ तहँश्वनशेफगाधिसुतकेरे । ...
मातुलपैसोकरदुखपाई । पूर्जेमसममजियवाचिजाई ॥ तबमुनिनिजसुतशतहुबोलाई । कह्योगुनहुँयहिजेठाई।
पितुकेयेनपचासहिमाने । अरुपचासमनमेंनहिंआने ॥ तिन्हैंदियोकौशिकमुनिशापा । होहुम्लेच्छसहहुसंतापा।
पुनिपचासजेपितुपनधारी। तिनसोंकौशिकगिराउचारी॥ तुमशासनशिरधरयोहमारा। ...
दोहा–पुनिश्वनशेफहिकरिदया, दीन्ह्योंमंत्रसिखाय ॥ भूपतिकोमखपूरभे, सुतवचिआयोपाय ॥
भगवंशीश्वनशेफहमि,कौशिकभयोनरेश॥कौशिककेभेऔरसुत,अष्टकादिवरवेश ३०।३१।३२।३३।३४।३५

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहज-
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे षोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-पुरूरवाकोपुत्रजो, आयुनामभोजासु ॥ ताकेपांचकुमारभे, जिनकोयशचहुँपासु ॥
त्रवृद्धअरुनहुपसुजाना । रजीरंभअतिशयबलवाना ॥१॥पंचमपुत्रअनेनसभयऊ । जोजगमहँअनुपमयशछयऊ॥
त्रवृद्धभूपतिकोवंसा । सुनियेंअबकुरुकुलअवतंसा ॥ क्षत्रवृद्धसुतभोसुहोत्रवर । ताकेत्रयसुतभेजगयशकर ॥ २॥
इयकुसौगृत्समदनरेशा।सुतगृतसमदहुसुनकशुवेशा।ताकेशौनकभेऋगवेदी।सुन्योंपुराणसकलअघछेदी ॥ ३ ॥
इयपुत्रभोकाशिप्रवीना । ताकोराष्ट्रभक्तिरसलीना ॥ ताकेदीरघतमसुतजायो । तासुधन्वंतरतनयसुहायो ॥४॥
दोहा-भयोजोभगवतअंशते, वेदशास्त्रआचार्य ॥ नशहिंरोगजेहिंनामते, जानहुकुरुकुलआर्य ॥
तुमानभोतासुकुमारा । तासुभीमरथपुत्रउदारा ॥ ५ ॥ दिवोदासतेहिसुवनद्युमाना । तासुप्रतर्दनभोमतिमाना॥
सुअलर्कभूपभोदानी । जाकीकीरतिविबुधबखानी॥६॥छाछठसहसवर्षकियराजू।रह्योयुवानृपसहितसमाजू॥७॥
तअलर्ककीसंततिभयऊ । तासुसुनीतनामजगठयऊ ॥ ताकेभयोसुकेतनवीरा । ताकेधर्मकेतुरणधीरा ॥
केसत्यकेतुमतिमाना ॥८॥ ताकेधृष्टकेतुबलवाना ॥ ताकेभोसुकुमारकुमारा । ताकेवीतिहोत्रयशधारा ॥
दोहा-वीतिहोत्रकेभर्गभो, भार्गभूमिसुततासु ॥ ९ ॥ क्षत्रवृद्धकोवंशमैं, वरण्योंसहितहुलासु ॥
भूपकोरभसकुमारा । ताकेअक्रियदानउदारा ॥ १० ॥ तिनकोवंशविप्रह्वैगयऊ । सुनहुँअनेनवंशजोभयऊ ॥
भनेनकोशुद्धकुमारा । ताकेशुचिभोअतिसुकुमारा ॥ धर्मसारथीसुतभोतासू ॥११॥ भयोशांतिरैभूपतिजासू॥
नृपभयोपुत्रतेहीना । करिविरागहरिपदमनदीना॥रजीपंचशतसुतउपजाये।अपनोसुयशजगतमहँछाये ॥ १२ ॥
पदेवपतिपदहरिलीने । तबसुरसबहिप्रार्थनाकीने ॥ रजीभूपतबसुरपुरजाई । मारचोसबहिंदैत्यसमुदाई ॥
दोहा-दियोइंद्रकोइंद्रपद, रजीभूपहरपाय ॥ वासवडरिप्रहलादते, दियोनृपहिंपुनिआय ॥ १३ ॥
रवभयेभूपआधीना । लैशासनकारजसबकीना ॥ गयेरजीनृपजबहरिधामै । तबतिनकेकुमारअभिरामै ॥ १४॥
हिलगेआपहिसुरराजू । इंद्रहिकारिदीन्हेविनकाजू॥तबसुरगुरुप्रयोगकरिघोरा॥१५॥नृपपुत्रनकीन्ह्योविनजोरा॥
वर्त्रलैवज्रमहाना । मारयोसकलसुवनबलवाना ॥ कुशकोवंशसुनहुकुरुराई । कुशकेप्रतिसुतभोसुखदाई ॥
केसंजयभयोप्रवीना । तासुभयोजयधर्मअधीना ॥ १६ ॥ ताकेकृतहर्यवनहुताके । ताकेभेसहदेवप्रभाके ॥
दोहा-तासुहीनसुतहोतभो, तासुभयोजनसेन ॥ १७ ॥ ताकेसंकृतितासुजय, क्षत्रधर्मकोऐन ॥
क्षत्रवृद्धकेवंशये, मैंगायेमतिवान ॥ सुनियेंकुरुकुलनाथअब, नाहुषवंशप्रधान ॥ १८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यतिययातिसंयातिकृति, अयतीवियतिसुजान । नहुपराजकेपुत्रषट, जिमिइंद्रीयुतप्रान ॥ १ ॥
गोदेनयतिकोपितुराजू । पैसोलियोनगुनिदुखकाजू॥२॥बैठिइंद्रपदनहुपनरेशा । पाल्योस्वर्गदिकरतनिदेशा॥
गिमनकरहुँजबमनकीन्ह्यों । शचीताहितबशासनदीन्ह्यों ॥ मेरेनिकटमैंचढ़िसुरराई । आवतरह्योपरमसुखछाई ॥
वेकामदैमुनिरह्योलगावत।तौपथदुतरह्योसुखछावत।सोसुनिनहुपमुनिनबोलवाई। शिविकानदिनिमसोंउँचवाई
योशचीकेनिकटनरेशा । सर्पसर्पअसदेतनिदेशा ॥ तबअगस्त्यमुनिदीन्ह्योशापा।सर्पहोहुपावहुसंतापा ॥
दोहा-भयोसर्पतबनहुपनृप, गिरयोधरणिमेंजाय । लह्योस्वर्गकोराजतब, अविश्रमुदितसुरराय ॥
तबययातिमहराजा।पाल्योसुतसमप्रजनिसमाजा।३।दियोचारिदिशिचारिहुभ्रातन।न्यायाकरिवेहानवहेदुहितन।४॥
वेलोमक्षत्रीद्विजव्याह । पूछ्योतबशुकसोंनरनाह ॥

राजोवाच ।

शुक्राचार्यसुताकहँकैसे । लियोययातिकहहुमुनिजैसे ॥५॥ सुनतपरीक्षितगिरासुहाई । शुकाचार्यबोलेसुखपाई ॥

श्रीशुक उवाच ।

दानवेंद्रवृषपर्वाकन्या । नामजासुशरमिष्ठाधन्या ॥ एकसमयवनकरनविहारा । शरमिष्ठालैससीहजारा ॥
देवयानिइकशुक्रकुमारी । ताकोलैसँगविपिनिसिधारी ॥ ६ ॥

दोहा–उपवनमेंतरुगणसबै, फूलिरहेचहुँओर । मधुमातेमधुकरनिकर, मधुरकरहिंतहँशोर ॥
नलिनीपुलिनअतीवसोहावन।विकसेकंजपरमसुखछावन७तहाँजायसिगरीसुकुमारी।जलविहरनहितवसनउतारी
सबैहिलींजलपटधरितीरा । सींचनलगींपरस्परनीरा ॥८॥ ताहिसमैशिवसहितभवानी।तहँह्वैकेढेचढेवृषजानी।
शंकरनिरखिलजाइकुमारी।अतिआतुरसिगरीपटधारी ॥ देवयानिवसनेनिजजानी । शर्मिष्ठापहिरयोछविसानी
निजपटयुतशरमिष्ठहिदेपी । कह्योदेवयानीअतिद्वेपी ॥ ९ ॥ १० ॥

देवयानी उवाच ।

लखहुसखीदासीयहमेरी । कीन्हीअनुचितरीतिघनेरी ॥

दोहा–लियोवसनमेरोपहिरि, समतानाहिंनिहारि । चाहहिमखकोभागजिमि, लेनश्वानकीनारि ॥ ११
हरिमुखविप्रहिवेदवखाना । द्विजतेप्रगटतजगतमहाना ॥ परब्रह्मकोविप्रहिध्यावे । विप्रहुवेदमार्गप्रगटावे ॥ १२
द्विजनलोकपतिकरहिंप्रणामा।विप्रहिवँदेहरिहुअकामा ॥१३॥ हमहैंशुक्राचार्यकुमारी ।जोयाकेपितकोगुरुभारी
सोसंबंधननेकविचारी । मेरोवसनालियोतनधारी ॥ जैसेशूद्रलेहिपढ़िवेदा । सुनतहोहिविप्रनमनखेदा ॥ १४
कह्योदेवयानीअसजवहीं । कोपितशरमिष्ठाभैतवहीं ॥ साँपिनिसरिसश्वासलैसोई । दशननअधरदाविरिसिभोई

दोहा–गुरुदुहितासोंकहतिभै, ॥ १५ ॥ रेभिक्षुकीअबूझि, करहिप्रशंसाआपनी, निजकरनीनहिंबूझि ॥
कागसमानधाममममाहीं।लैभिक्षातैंजियसिसदाहीं १६ असकहिशरमिष्ठारिपिरूपा।छीनिलियोतेहिंवसनअनूपा
ताहिकूपमेंदियोगिराई । आपुआपनेभवनसिधाई ॥१७॥ तहँययातिनरनाहउदारा । आयेखेलनगहनशिकारा
तृषावंतभेनृपतिनतहाँहीं । आयेभूपकूपढ़िगमाँहीं ॥ लख्योदेवयानीतहँराजा । विनावसनतनसंयुतलाजा ॥ १
झटकटिकोपटुकातेहिदीन्ह्यों।करगहिकाढ़िआशुतेहिलीन्ह्यों।नृपहिदेवयानीतहँबोली।निजउरकीआश
दोहा–मेरोकरसोंकरगह्यो, हेययातिमहँराज । करहुदारनिजमोहिंअव, वाहँगहेकीलाज ॥ २० ॥
गह्योजोकरतुमदैवहियोगू । सोकरऔरहिगहवअयोगू॥यहसंबंधईशकृतजानो । तातेतुमअनुचितनहिंमानो
कहाँकूपकोगिरवहमारा । कहँतुवआउवकरतशिकारा॥पुत्रवृहस्पतिकचजेहिनामा । सोदियशापमो
तेरोपतिब्राह्मणनहिंह्वैहै । क्षत्रीनाथपाइसुखपैहै ॥ तातेमोहिंकरहुनिजदारा । ब्राह्मणिजानिनकरहुविचारा
तवययातिमनलगेविचारन । केहिविधिकरहुँधर्मनिरधारन ॥ दैवयोगतेविप्रकुमारी । वरवसहोनचहतिममदारी

दोहा–निरखिदेवयानीसुछवि, मोरहुमनललचात । ग्रहणकरवयाकोइहाँ, नहिंअधर्मदरशात ॥
असविचारिमुनिकेनिजकाजा । कह्योदेवयानीसोंराजा ॥ जोपितुतोरतोहिमोहिंदेहैं।तौतोकोविशेपिहमलैहैं
असकहिनृपतिगयेनिजधामा । गईदेवयानिहुनिजठामा॥शुक्रनिकटरोवनसोलागी।सववृत्तांतकह्योदुखपागी
सुनिकेशुक्रसुताकीवानी । दुखीभयेउरआनिगलानी ॥ निदरयोवृत्तिपुरोहितकेरी । जियमेंअनुचितमा
नराहिपोनाहिंनीको । रहवस्वतंत्रविप्रकहँठीको।।जिमिकपोतवनविचरिसदाहीं । चाराचुनतमुदितमन
दोहा–असविचारिकेअसुरगुरु, लेसँगसुतातहाँहि ॥ निकरिचलेतेहिंनगरते, अतिउदासमनमाहिं ॥ २५
वृषपर्वागुरुगमनवदेसी । सुरसहायकरिहैंअसलेसी ॥ तवविचारिदानवद्रुतधाई।गिरयोगुरुचरणनपधनाई
क्षमभारिकोपकियेभृगुराई । पुनिनृपपर्वगिरासुनाई ॥ परहुदेवयानीकेपायन । ताकोकरहुसकल

बतुमपैप्रसन्नहमहैंहैं । नातोयाकेसंगसिधैहैं ॥ २७ ॥ सुनिगुरुवचनदैत्यसुखपायो । तहँदेवयानिहिसमुझायो ॥
बदानवसोंशुक्रकुमारी । कोपितह्वैअसगिराउचारी॥ ममपितुमोहिंजेहिंपासपठावे । तहँतुवसुतासखिनयुतजावें॥
दोहा-ह्वैदासीतहँमोरिवइ, सेवाकराहिसदाहि ॥ तौहमपितुयुतमुदितह्वै, बसिहैंतुवपुरमाहिं ॥ २८ ॥
निगुरुसुतागिराअसुरेशा । शरमिष्ठाकोदियोनिदेशा ॥ कह्योदेवयानीजसतोकों । कारितैसेअबदेमुदमोकों ॥
सुतासुनतपितुबैना । करनलगीतैसेभरिचैना ॥ सखीसहसलैहेनरदेवा । करीदेवयानीकीसेवा ॥ २९ ॥
क्राचारजतहँहरपाई । दियोययातिहिंसुतासुहाई ॥ शरमिष्ठहुकोतेहिसँगदीन्ह्यों । ऐसोनृपसोंमुनिकहिलीन्ह्यों ॥
मिष्ठाकहलैपरयंका । कबहुँननृपलइयोनिजअंका॥तबययातिह्वैमौनलजाये । लैनारिननिजधामसिधाये॥३०॥
दोहा-शुक्रसुताकेतहँभये, उभैपुत्रबलधाम ॥ परमयशीयहजगतमें, यदुऔतुरवसुनाम ॥
खिशरमिष्ठाअतिदुखपाई।पतिकेनिकटएकांतहिजाई।ऐसीविनतीकियकरजोरी।देहुपुत्रकरिकृपाअथोरी ॥३१॥
रमिष्ठाविनयभुवाला।कियोविहारजानिऋतुकाला३२तबशरमिष्ठात्रयसुतजाये।द्रुह्युपुरूअनुनामकहाये ३३
रमिष्ठैसुतवतीनिहारी । निजपतिकृतसुतजन्मविचारी ॥ तहँदेवयानीअनखाई ।अपनेपितुकेधामासिधाई॥३४॥
ययातिनृपचलिपथपाहीं । गिरेदेवयानीपदमाहीं ॥ बहुप्रकारताकोससुझायो । सोनहिंनृपतिवचनचितलायो ॥
दोहा-तहँदेवयानीकुपित, पितुकेभौनहिंजाइ ॥ शुक्राचारजकोदियो, सबवृत्तांतसुनाइ ॥ ३५ ॥
केपाछेनृपहुसिधाये । शुक्रचरणमहँमाथनवाये ॥ निरखिअसुरगुरुकोपितबोले । रेअसत्यवादीनृपबोले ॥
रिविवशह्वैप्रणनहिंराख्यो । जोप्रथमहिमैंतोसनभाख्यो ॥ तातेवृद्धहोहुतुमभूपा । होइतुम्हारसुरूपकुरूपा॥३६॥
ययातिअतिशयदुखपाई । दानवगुरुसोंगिरासुनाई ॥

ययातिरुवाच ।

दुहितासँगकरतविलासा । पूरीअबैमोरिनहिंआसा ॥ मुनिअसदेहुउपायबताई । जातेजराछूटिममजाई ॥
सुरअचारजतबसुखछाये । नृपययातिसोंतहँअसगाये ॥
दोहा-पलटिलीजियोकाहुकी, युवाउमिरिनरनाह ॥ जराउमिरितेहिदीजियो, अपनीसहितउछाह ॥ ३७ ॥
शुक्रवचनसुनिराजा । शुक्रसुतालैसहितसमाजा ॥ आशुआपनेऐनहिंआये । निजसुतयदुकोगिरासुनाये ॥
नीयुवाउमिरिमोहिंदेहू । मेरीजरापुत्रतुमलेहू ॥ २८ ॥ तुवमातामहदईबुढाई । हितविलासमोमतिनअघाई ॥
राउमिरिलैपुत्रातिहारी । मैंह्वैहौंकछुकालविहारी ॥३९॥ जबययातिभूपतिअसभाषे । तबयदुबोलतभेअतिमाषे॥

यदुरुवाच ।

ामध्यमेंपिताबुढाई । ग्रहणकरबनहिंउचितदेखाई ॥ भयेवृद्धतुमतजेनआसा । हमकिमिछाँडदियुवाविलासा ॥
दोहा-विनविलासबहुविधिकिये, विनभोगेबहुभोग ॥ नहिंउपजतवैराग्यमन, तृष्णातजतनलोग ॥ ४० ॥
द्रुह्यूअनुकाहीं।युवादेनदितकह्योतहाँहीं॥पितुशासनतेनहिंशिरधारे।अधरमरततनानित्यविचारे ॥ ४१ ॥
ालेनअरुदेनबुढाई । पुनिपितुपुरुसोंगिरासुनाई ॥ जिमिममसुतसबशासनभंगे । तिमितुमकरहुनसुयशअभंगे॥
पिसबनतेहोतुमछोटे।तदपिसबनतेहोगुणमोटे ॥४२॥ सुनपुरुपितावचनसुरसाने।जोरिपाणिअसविनयबखाने॥

पुरुरुवाच ।

असशठजगमहँमहराजा।करेनजोतनमनपितुकाजा॥जोपितुतनप्रदअतिउपकारी।तेहिंनहिंटारिणहोततनधारी॥
दोहा-पितुशासनमेंजोकरत, अनुचितउचितविचार ॥ सोपापगिमनतनरक, कबहुँनहोतउधार ॥ ४३ ॥
उत्तमसुतमनकोकरहि, मध्यमपायरजाय ॥ करहिंमातिविनअधमसो, करेनसोमलजाय ॥
ुशासनधारतजोशीशा । तापैकृपाकरतजगदीशा ॥ पितुसेवकसबपटसुरपावे । पितुआज्ञाद्रुपकद्रुलछावे ॥
देवसमजेपितुमानें । इहांहंसुगतियहिपापदुटानें॥४४॥असकहिह्वैप्रसन्नपुरुज्ञानी।पितुकोजराटियोसुरमानी॥

युवाउमिरिलैतासुययाती॥भोगेहुभोगभूरिवहुभाँती४६ ... ॥४७॥
देवयानिहूकरिपरतीती॥निशिदिनसेयोपतिरतिरीती॥४ ...

दोहा—सर्वहिंदेवमेंकृष्णको, पूज्योसहितविधान ॥ ४८ ॥ जिनमेंजगनभपनसारिस, प्रगटतदुरतमहान
नारायणकोध्यानधरि, भूपययातिउदार ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ह्वैअकामप्रियभोगको, भोग्योविषयंहजा
तदपिचक्रवर्तीनृपाति, छदिइंद्रिनकोदोप ॥ भोगतवहुविधिभोगको, पायोनहिंसंतोप ॥ ५१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि
राजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे अष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—यहिविधिविहरततियविवश, एकसमयनरनाहँ ॥ भूलआपनीजानिकै, भयेदुखितमनमाहँ ॥
देवयानिकोनिकटवोलाई। तासोंकहनलगेनृपराई ॥ १ ॥ सुनहुप्रियायहकथासुहाई। ...
करनीकरहिंजेअसगृहवासी। तिनकोशोचहिंमुनितपरासी॥२॥छागएककाननमेंजाई। ...
परीकूपदेख्योतहँछागी॥३॥छागहितहाँदयाअतिलागी॥ताहिनिकारनकियोउपाई। ...
... ॥६॥ ... ॥७॥ ...

दोहा—सुभगकेशसुंदरवपुप, रतिवलीनअतिपीन। प्रतिछागिनसोंरमतनित, भयोछागनहिंछीन॥
याहिविधिरमतगयोवहुकाला।जान्योनहिंनिजकर्मकराला॥रमतऔरछागिनसोंदेपी।सोछागीकरिकोपविशेषी॥
अतिकपटीनिजनाहककाहीं।गुनिगमनीनिजपालकपाहीं ८ ...
मारगरोकिपुकारिपुकारी। ताकेपगनपरचोशिरधारी ॥ पैमानेहुनहिंनेकहुछागी। ...
छागीनिजपालकपहँआई। सबैआपनीदशासुनाई ॥९॥ ...

दोहा—ह्वैअधीनपुनिछागतहँ, विनयकरीपरिपाव। ताकोफेरिवनायदिय, पालकमंत्रप्रभाव ॥ १० ॥
छागवृपणलहिपुनिवहुकाला। ...
ऐसेहमतोसोंकरिप्रीती॥दियोत्यागिपरमारथरीती॥१२ ...
हयगयधरणिधान्यधनधामा॥करिनसकहिंतेहिंपूरणकामा१३ ...
जेतजिदीन्हेंवैरामिताई। तिनकोसकलठौरसुखदाई ॥१५॥ तनुहुयदपिजीरणह्वैजाई। ...

दोहा—तातेजोमंगलचहै, चहैनरकनहिंजान। तौतृष्णादुखदानियह, आशुतजैमतिमान ॥ १६ ॥
भगिनिमातदुहिताढिगजाई।बैठहिनहिंइकांतकहँपाई ॥इंद्रीगणअतिशयवलवाना।ज्ञानिहुकेरमुलावहिंज्ञाना।
तुवसँगविहरतवपेहजारा।वीतिगयेमोहिलगीनवारा॥तदपिनतृष्णानेकुघुताई।दिनदिनवढतिअधिकअधिकाई।
तातेअवयहतृष्णाहित्यागी। ह्वैकैकृष्णचरणअनुरागी॥वसिहौंमुनिसँगकाननजाई। कामक्रोहमदमोहविहाई।
मृत्युलोकदिविलोकहुभोगा। ताकोतुच्छजानिजोलोगा॥कहैंसुनैंहियकरहिंविचारा।सोईपंडितपरमउदारा।

दोहा—असकहिनिजतियसोंनृपति, पुरुहियुवापुनिदीन। लियोजठरपनआपनो, भोसवविषयविहीन।
...
...
... ॥२०॥ भयेपक्षपर्ती।
तहाँज्ञानगहित्रिगुणमिटायो॥तनुतजिहरिपुरवसिसुखछायो॥भूपययातिकथाजोगाई।सुनतदेवयानीदुखछाई।

दोहा-प्रीतिमोरिअरुआपनी, तोरनकेहितकंत । मोसोंकरिपरिहाससम, गेकाननमतिवंत ॥ २६ ॥
शुक्रसुताअसमनहिंगुनि, तजिअनित्यकुलनेह॥२७॥हरिचरणनचितराखिकै, तजिदीन्हीनिजदेह ॥२८
देवयानिअतिकामिनिहु, तेहिगतिदियसुखधाम । ऐसेकरुणासिंधुको, बारहिंबारप्रणाम ॥ २९ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे एकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-अबवरणहुँपुरुवंशजेहि, भेराजर्षिउदार । जामेंकुरुपतिराबरो, होतभयोअवतार ॥ १ ॥
जैभोपुरूकुमारा । प्राचिनवंतभोतासुउदारा ॥ तासुप्रवीरनमसुभोताके । तासुचारुभेचारुप्रभाके ॥ २ ॥
ुद्युबहुगवसुततासू । भोसंयातिभूपसुतजासू ॥ अहंजातिभोसुतसंजाती । ताकेरऊद्राश्वअरिघाती ॥ ३ ॥
श्वकहँपायघृताची । प्रगटायोदशसुतरतिराची ॥ नृपऋतेयुकुक्षेयुकृतेयू । स्थंडिलेयुसततेयुजनेयू ॥
सतेयुव्रतेयू । सबलेछोटोभयोवनेयू ॥ येदशसुतभूपतिजनमाये । तिमिहरिदशइंद्रीप्रगटाये ॥ ४ ॥ ५
दोहा-रंतिभारयहनामको, भयोऋतेयुकुमार । अप्रतिरथध्रुवसुमतिये, तासुतत्तीनिउदार ॥
॥६॥ ताकेमेधातिथिमतिमाना॥प्रसकण्वादिकतासुद्विजाती॥काननमेंतपकियबहुभाँती
तेपुत्रभोरैभमहाना । तासुतनयदुष्यंतसुजाना ॥ ७ ॥ एकसमयदुष्यंतनरेशा । खेलनगयोशिकारसुवेशा
श्रममाहीं । लख्योएकसुंदरातियकाहीं ॥ निजप्रकाशकरिवनहिंप्रकाशै।रमासमानसुरूपविलासै।
उखिमोहिगयेमहिपाला।लैनिजसखनसंगतेहिकाला।अतिप्रमुदिततजिदियोशिकारा।मारताहिनिजसायकमार
दोहा-मंदमंदताकेनिकट, जायमंदमुसक्याय । पूँछनलागेतेहिनृपति, मधुरेबैनसुनाय ॥ १० ॥
उनैनितेंकोनिकुमारी। कौनिअहेमेरोमनहारी ॥११॥ यहनिरजनवनमहँसुकुमारी।कहाकरासितेंजनमनहारी।
असिमतिहोतहमारी । हैतैंकोउमहराजकुमारी ॥ राजसुताजोतैंनहिंहोती । तोममनमनहिंप्रीतिउदोती ॥
ंशिनकोअधरममाहीं । कबहूँचित्तजातहैनाहीं॥१२॥सुनिभूपतिकीगिरासुहावनि।शकुंतलाबोलीमनभावनि।

शकुंतलोवाच ।

। एकसमयरतिकियवनमाहीं ॥ तातेंमैंमेनकाकुमारी । प्रगटभईवनमेंधनुधारी ॥
दोहा-त्यागिमोहिइतमेनका, आपुगईसुरधाम । जानिचरितयहकण्वमुनि, पाल्योमोहियहिठाम ॥
ोभाग्यभेआजुहमारी । करहुँकौनमैंसेवतुम्हारी ॥ १३ ॥ बैठहुआसनअंबुजनैना । ममसतकारलेहुभरिचैना ॥
मूलफलभोजनलीजै।चहौतोइकनिशिवासहिकीजै॥१४॥शकुंतलाकीसुनिमृदुबानी।नृपदुष्यंतकह्योसुखमानी॥

दुष्यंत उवाच ।

शिकवंशकीआपकुमारी । उचितआपनेगिराउचारी॥ राजसुताअपनेवरयोगू । अपनेनतेवरिकरहिसंयोगू॥१५॥

श्रीशुक उवाच ।

बानी । तहँशकुंतलामहासयानी ॥ भाष्योवचनसुनहुनरनाहा । करिएनिहमारप्रभुब्याहा॥
दोहा-गंधरवविधिकरिकेतहाँ, परमसहितनरनाह ॥ देशकालकोजानिकै, कियशकुंतलब्याह ॥ १६ ॥
। तेहिरजनीनृपकियोविलासा ॥ गर्भवतीह्वैगइछविवारी । भोरगयेनिजपुरनृपभारी ॥
शकुंतलाकेटाहिकाला।प्रगट्योअतिसुंदररूपकमाला १७ जातकर्मकियकण्वमुनीशा।भयोकुमारलंशजगदीशा ॥
बालकखेलनवनजावै । सहजैसिंहबाघधरिल्यावै ॥ १८ ॥ ऐसोनिरखिपुत्रबलवाना । भोशकुंतलैमोदमहाना ॥

लैशकुंतलाबालककाहीं।गैदुष्यंतकंतगृहमाहीं॥१९॥जबनिजसुततियभूपनचीन्ह्यो।ग्रहणकरनकोमननहिंकीन्ह्यो

दोहा—तबअकाशवाणीभई, कुरुपतिसबैसुनाय ॥ २० ॥ हेतुमात्रमाताअहै, सुतपितुरूपबनाय ॥
तातेयहसुतरावरो, प्रगट्योजगतअनूप ॥ तज्योनवीरशकुंतलै, पालहुपुत्रहिभूप ॥ २१ ॥

जौनपुत्रनिजवंशचलावै । सोइपितरनकहँनर्कबचावै ॥ यहतौसुततुम्हारयशकारी । सतिशकुंतलागिराउचारी ॥ तबनृपसुतशकुंतलैराख्यो।भरतनामसोसुतकहँभाख्यो॥२२॥करिदुष्यंतराजबहुकाला।स्वर्गलोकज भयोचक्रवर्त्तीमहिमाहीं । भरतभूपजेहिसमकोउनाहीं॥२३॥चक्रचिह्नजेहिदक्षिणहाथा।पद्मचिह्नपायनशुभगाथा मुनिसबआयतहाँसुखभीने । महाराजअभिषेकहिकीने॥२४॥भरतभूपसुरसरिकेतीरा।पचपनअश्वमेधकियधीरा

दोहा—सामतेयअसनामकिय, भयेपुरोहितजासु ॥ २५ ॥ अश्वमेधअठहत्तरै, भइयमुनातटतासु ॥

तेरासहसधेनुप्रतियागा । दियोद्विजनप्रतिनृपबड़भागा ॥२६॥ औरौंतीर्थनमेंसुखभीने । अश्वमेधतेतिसतेकीने चकितभयेनृपतिनसमुदाई।लखिविभूतिसुरगयेलजाई॥२७॥कनकसाजुतेसजेमतंगा।चौदहिलक्षदियोइकसंगा भूमेंभूपतिभरतसमाना । भयेनहैंनहिंह्वैहैंआना ॥ भरतभूपसमताकोपावै । जिमिभुजबलनहिंस्वर्गसिधावै॥ भरतभूपबहुयवननकाहीं।कारिदिगविजयहन्योरणमाहीं॥द्विजद्वेषीभूपनकहँनाश्यो।त्रिभुवनअपनोसुयशप्रकाश्यो

दोहा—एकसमयसबसुरनको, जीतिअसुरसुरनारि ॥ हरिकैजाइरसातलै, बसेनशंकविचारि ॥

देवसकेनहिंलैनिजनारी । भरतद्वारकहँजाइपुकारी ॥ सुरनदुखितलखिभरतनरेशा । पठयोनारजहाँअसुरेशा दूतद्रुतैगेदानवदेशा । भरतभूपकोकह्योनिदेशा ॥ देहुदेवतियदानवराई । नातोहोतिहमारिचढ़ाई ॥ कियसंमततबअसुरमहाना । भरतभूपभारीबलवाना ॥ अबनहिंरहहुसुरनकेधोखे । भरतकरिहिंविध ऐसोदानवसकलविचारी । पठैदईदेवनकीनारी ॥ ३१ ॥ भरतकरतशासनअभिरामा । पूरीपुहुमि

दोहा—भरतचक्रवर्त्तीभयो, सप्तद्वीपमहँराज ॥ संवतसत्ताइससहस, महिमहँकीन्ह्योराज ॥ ३२ ॥

विभौजासुवासवलखिलाजै।नामसुनतरिपुहोतपराजै ॥३३॥ ताकेतीनिसतीसमरानी। देशविदर्भहिकीछविखानी भयेतीनिकेतीनिकुमारा । तिनहिंननृपनिजसारिसनिहारा ॥ रानिनसोंअसकह्योनरेशा । हमरेसारिसनइनकेवेशा सुनिनृपबानीमानिगलानी।सुतनमारिडारेसबरानी॥३४॥भरतपुत्रहितपुनिकिययागा।मरुतभूपपरकरिअनुरागा भरद्वाजनामकसुतदीन्ह्यो।तबनृपपाइप्रणामहिकीन्ह्यो॥३५॥मुनिउतथ्यसुरगुरुकेभाई।तिनकीममतानारिसुहाई

दोहा—गर्भवतीसोइकसमै, होतभईतहँबाल ॥ गयेबृहस्पतितासुढिग, भोगकरननिशिकाल ॥

सुरगुरुग्रहणकियोजबताको । बोलतभयोगर्भममताको ॥ इहाँनदुतीगर्भकीजागा । तजहिरेतकतअजअभागा तबसुरगुरुकोपितदियशापा । होहिअंधपावहिसंतापा ॥ पुनिमैथुनकीन्ह्योबरियाई । त तबजोरह्योगर्भउरमाहीं।पगतेदियढकेलितेहिकाहीं॥परतपुहुमिभोतुरतकुमारा॥३६॥ताकोममतातजनविचारा तबसुरगुरुयहगिराउचारी । तजहुनतुमसुतकहँसुकुमारी॥तबतियकह्योतुम्हींसुतलेहू।उचितनहमक

दोहा—करतपरस्परवादइमि, सुततजिदोऊदीन । मरुतदेवतेहिपुत्रकहँ, लैगृहपालनकीन ॥
दुइतेउतपतिसुतभयो, जानिदेवअभिराम । हरपितसिगरेधरतभे, भरद्वाजअसनाम ॥
व्यर्थजानिजननीतज्यो, तातेवितथहुनाम।भरद्वाजसोऋपिभयो, जगमहँअतितपधाम ॥ ३८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे विंशस्तरंगः ॥ २० ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-भरद्वाजकेमन्युभे, ताकेपंचकुमार। बृहच्छत्रजयनरगरग, महावीर्यमतिवार ॥

रसुतसंकृतिअतिरणबाँके। गुरुअरुरंतिदेवसुतताके॥१॥रतिदेवकोसुयशमहाना।उभयलोकसुरनरकियगाना २
नेजभोजनकोजोपकवाना। देतरह्योसोद्विजनसुजान॥माँगतरह्योनकोहुसोंराजा।निष्किंचननिजभोजनकाजा ॥
तकुटुंबसबइंद्रिनजीते॥३॥बिनजलअरतालिसदिनबीते॥उनचासयेंदिवसमेंभोरा।घृतयुतपायससमिलिगोथोरा॥४॥
...। भोजनकरनचह्योयकसंगा ॥ ताहीसमयअतिथिइकआयो॥५॥भूखाहौंयहवचनसुनायो॥

दोहा-निजभोजनतेंहिंअतिथिको, रंतिदेवमतिवंत। देतभयेअसजानिकै, सबमेंहैंश्रीकंत ॥

भोजनकरिगयोसिधारी॥६॥शेषरह्योतेहिंयुतसुतनारी॥भोजनकरनलग्योमहिपाला।आयोएकशूद्रतेहिंकाला ॥
निअतिथिदुर्लभबड़भागा।दियोताहिभूपतिनिजभागा॥७॥जबपुनिशूद्रगयोनिजधामा।तबदूजोआयोतेहिंठामा॥
न्हेनिजसंगहिबहुश्वाना।रंतिदेवसोंवचनबखाना॥श्वानसहितनृपभोजनदीजै।अतिशयक्षुधितजानिमोहिंलीजै॥८॥
बकुटुंबकोभागहिलैकै।दियोताहिसतकारहिंकैकै ॥ सबथलमाहँजानिनिजनाथा।वंद्योतिन्हेंजोरियुगहाथा ॥ ९॥

दोहा-जबजलभरवाकीरह्यो,ताकेकरतहिंपान। तहाँआयचंडालइक, कह्योदेहुजलदान ॥ १० ॥

निताकीअतिआरतबानी। देख्योप्राणजातबिनपानी॥ तबऐसेनृपवचनबखाने।अतिशयकरुणारसमेंसाने॥११॥
ष्टऋद्धियुतमुक्तिहुकाहीं। येनहिंमैंमाँगहुँहरिपाहीं ॥ सिगरेजगतजीवसुखपावैं। सिगरेनकेदुखमोमेंआवैं ॥१२॥
धातृपाश्रममोहविपादा। शोकदीनताअरुअपवादा॥येसबकरिहैंतुरतपयाना। प्यासेकहँदीन्हेजलदाना ॥१३॥
सकहितृपाआपनीसहिकै।चंडालहिजलदियसुखचहिकै १४ लखिसुररंतिदेवकरदाना।प्रगटेसबफलदायकनाना॥

दोहा-देखिभूपसबसुरनको, सादरकियोप्रणाम। तिनसोंकछुमाँग्योनहीं, नृपहरिभक्तअकाम ॥ १६ ॥

तेदेवकरिजीवनदाया। स्वप्नसरिसतरिगेहरिमाया ॥ १७॥ जेकियरंतिदेवसतसंगा। तेऊयोगीभयेअभंगा ॥
रायणपारायणह्वैकै। गेहरिलोकवासनाछैकै ॥ १८ ॥ गर्गसुवनशिनितासुतगारग। क्षत्रीतेद्विजभेश्रुतिपारग ॥
नेभोमहावीर्य्यमहराजा। ताकेदुरितक्षयसुतभ्राजा॥ताकेसबैसुवनश्रुतिलीना।त्रैयारुणिपुष्करकविलीना ॥१९॥
ब्राह्मणभेकुरुराई। कीन्हेंतपसिगरेमनलाई ॥ हस्तीबृहतक्षत्रकेजाये।तेंइहस्तिनापुरहिबसाये॥२०॥

दोहा-हस्तीकेत्रयसुवनभे, इकअजमीढसुजान ॥ पुनिदुमीढपुरुमीढपुनि, महावीरबलवान ॥

अजमीढवंशविख्याता। प्रियमेधादिकगुनअवदाता॥२१॥औरौइकअजमीढकुमारा।बृहदिषुताकोनामउदारा॥
केभयोबृहद्धनुवीरा। ताकेबृहत्कायरणधीरा। तासुजयद्रथभयोकुमारा। महावीरबलतेजअपारा॥ २२॥
केविशदसेनजितताके। ताकेरुचिरअश्वपरभाके ॥ २३ ॥ रुचिरअश्वकेपारकुमारा। ताकेसैनारहीअपारा ॥
तनयभोनीपमहीपा। सोजायोशतसुतकुलदीपा॥२४॥ छायाशुककीकृतीकुमारी। तासुतब्रह्मदत्तयशकारी॥

दोहा-ब्रह्मदत्तगविनारिके, विष्वक्सेनसुजान ॥ २५ ॥ जिगीषव्यउपदेशते, विरच्योयोगमहान ॥

सुउदकसनधृतमरयादा। ताकेप्रबलपुत्रभल्लादा॥२६॥ सोद्विमीढकेभयोयवीनर। ताकेभोकृतिमानमोदकर॥
कभयोसत्यधृतिनामा। भोदढनेमितासुबलधामा॥ताकेभोसुपार्श्वमहिपाला॥२७॥ताकेभयोसुमतिअरिकाला॥
तिपुत्रभोसंनतिमाना।ताकोहिरणिनाभबलवाना॥हिरणिनाभकोकृतीकुमारा।जोश्रुतिषट्संहिताउचारा॥२८॥
हसोनीपपुत्रउग्रायुध। ताकेक्षेमभूपवरआयुध ॥ तासुसुवीररिपुंजयतासू ॥ २९ ॥ ताकेबहुरथसुयशप्रकासू॥

दोहा-भयोनसुतपुरुमीढके, हेकुरुपतिमहराज ॥ नृपअजमीढहिकेरही, नलिनीतियुतलाज ॥

केभयोनीलबलवाना। ताकेशांतिकुमारसुजाना ॥३०॥ ताकेभयोसुशांतिकुमारा। ताकेपुरुजभयोयशवारा॥
केअर्कताग्रभरम्यासू। ताकेमुदगलादियुतभासू ॥ ३१ ॥ बृहतविश्नकांपिल्लपवीनर।मुदगलसंजयपुत्रपंचवर॥
नकेपिताकहीअसबानी। येममपंचपुत्रगुणखानी ॥ पंचदेशकोरक्षणकरिहैं। औरपुत्रलैअपकाकरिहैं ॥ ३२ ॥

लैशकुंतलाबालककाहीं।गैदुष्यंतकंतगृहमाहीं॥१९॥जबनिजसुततियभूपनचीन्ह्यों।ग्रहणकरनकोम

दोहा–तबअकाशवाणीभई, कुरुपतिसबैसुनाय ॥ २० ॥ हेतुमात्रमाताअहै, सुतपितुरूपबना

तातेयहसुतरावरो, प्रगट्योजगतअनूप ॥ तज्योनवीरशकुंतलै, पालहुपुत्रहिभूप ॥ २१

जौनपुत्रनिजवंशचलावै । सोइपितरनकहँनर्कबचावै ॥ यहतौसुततुम्हारयशकारी । सतिशकुं

तबनृपसुतशकुंतलैराख्यो।भरतनामसोसुतकहँभाख्यो॥२२॥करिदुष्यंतराजबहुकाला । स्वर्गलै

भयोचक्रवर्त्तीमहिमाहीं । भरतभूपजेहिसमकोउनाहीं॥२३॥चक्रचिह्नजेहिदक्षिणहाथा।पद्मचि

मुनिसबआयतहाँसुखभीने । महाराजअभिषेकहिकीने॥२४॥भरतभूपसुरसरिकेतीरा । पचप

दोहा–सामतेयअसनामकिय, भयेपुरोहितजासु ॥ २५ ॥ अश्वमेधअठहत्तरे, भइयमु

तेरासहसधेनुप्रतियागा । दियोद्विजनप्रतिनृपबड़भागा ॥२६॥ औरौंतीर्थनमेंसुखभीने ।

चकितभयेनृपतिनसमुदाई।लखिविभूतिसुरगयेलजाई॥२७॥कनकसाजुतसजेमतंगा।चौ

भूमेंभूपतिभरतसमाना । भयेनहैंनहिह्वैहैंआना ॥ भरतभूपसमताकोपावै । जिमिभुजब

भरतभूपबहुयवननकाहीं।करिदिगविजयहन्योरणमाहीं॥द्विजद्वेषीभूपनकहँनाश्यो।त्रिह

दोहा–एकसमयसबसुरनको, जीतिअसुरसुरनारि ॥ हरिकैजाइरसातलै, बसेनशं

देवसकेनहिलैनिजनारी । भरतद्वारकहँजाइपुकारी ॥ सुरनदुखितलखिभरतनरेश

दूतहुतैगेदानवदेशा । भरतभूपकोकह्योनिदेशा ॥ देहुदेवतियदानवराई । नातोहो

कियसंमततबअसुरमहाना । भरतभूपभारीबलवाना ॥ अबनहिरहहुसुरनकेधोखे

ऐसोदानवसकलविचारी । पठैदईदेवनकीनारी ॥ ३१ ॥ भरतकरतशासनअभि

दोहा–भरतचक्रवर्त्तीभयो, सप्तद्वीपमहँराज ॥ संवतसत्ताइससहस, महिम

विभौजासुवासवलखिलाजै।नामसुनतरिपुहोतपराजै ॥३३॥ ताकेतीनिसतीए

भयेतीनिकेतीनिकुमारा । तिनहिंननृपनिजसारिसनिहारा ॥ रानिनसोंअसक

सुनिनृपबानीमानिगलानी।सुतनमारिडारेसबरानी॥३४॥भरतपुत्रहितपुनि

भरद्वाजनामकसुतदीन्ह्यों।तबनृपपाइप्रणामहिकीन्ह्यों॥३५॥मुनिउतथ्यय

दोहा–गर्भवतीसोइकसमै, होतभईतहँबाल ॥ गयेबृहस्पतितासुढिग,

सुरगुरुग्रहणकियोजबताको । बोलतभयोगर्भममताको ॥ इहाँनदुतीग

तबसुरगुरुकोपितदियशापा । होहिअंधपावहिसंतापा ॥ पुनिमैथुन

तबजोरह्योगर्भउरमाहीं।पगतेदियढकेलितेहिकाहीं॥परतपुहुमिभोतुरत

तबसुरगुरुयहगिराउचारी । तजहुनतुमसुतकहँसुकुमारी॥तबतियकह्यो

दोहा–करतपरस्परवादइमि, सुततजिदोउदीन । मरुतदेवतेहि

दुइतेउतपतिसुतभयो, जानिदेवअभिराम । हरपितसिग

व्यर्थजानिजननीतज्यो, तातेवितथहुनाम।भरद्वाजसोकी

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंह

श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिका

आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे विंशस्तरंगः

दोहा–तासुनृपंजयहोइगो, दूरवतासुकुमार ॥ ताकेतिमितेहिवृहद्रथ, ह्वैहैपरमउदार
पुनिसुदासह्वैहैकुरुराई ॥४२॥४३॥ शतानीकतासुतसुसदाई ॥ ह्वैहैशतानीकसुतजोई ।
तासुवहीनरह्वैहैवीरा । दंडपाणिताकोरणधीरा ॥ पुनिनिमिह्वैहैतासुकुमारा । तासु
वरण्योब्रह्मक्षत्रकोवंशा । जाकोसुरनरमुनिहुँप्रशंशा ॥४४॥ क्षेमकनृपयोंकलियुगमाहीं ।
अवमागधराजाजेह्वैहैं । तिनकोहमवृत्तांतसुनैहैं ॥ ४६ ॥ जरासंधसुतजोसहदेवा ।
दोहा–ह्वैहैताकेश्रुतश्रवा, ताकोसुतअयुतायु ॥ ह्वैहैतेहिनिरमित्रसुत, जोपायोबड़आयु
सुनक्षत्रपुनिहोइगो, वृहदसेनतेहिपुत्र ॥ ४७ ॥ ताकेह्वैहैकर्मजित, जगमेंपरमपा
तासुश्रुतंजयविप्रतेहिं, ताकोशुचिबड़भाग ॥ तासुक्षेमतेहिसुव्रततेहिं, धर्मनेत्र
तासुतसमह्वैहैजगत, द्युमदसेनसुततासु ॥ तासुसुमतितेहिसुवलसुत, ह्वैहैनीति
पुनिसुनीथपुनिसत्यजित, विश्वजीतरिपुजीत ॥ मगधदेशमेंयेनृपति, ह्वैहैंसकल
जेभावीवरण्योंनृपति, तिनहिंलेहुनृपजानिं ॥ सहसवर्षकेअंतरे, नशिजैहैंवखानि

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्री
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिं
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे द्वाविंशस्तरंगः ॥ २२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–चक्षुपरोक्षसभानरो, अनुकेतीनिकुमारु ॥ भयोसभानरकेसुवन, नामकालनरचा
तासुपुत्रभोसंजयनामा॥१॥ताकोजनमेजयबलधामा ॥ ताकोमहाशीलमतिमाना ।
तेहितितिक्षुसुतऔरउशीनरा।उशीनरहुकेचारिपुत्रवर॥शिविवनसमिअरुदक्षप्रधाना॥२॥
केकयभद्रवृषदर्भसुवीरा । पुत्रतितिक्षुउशद्रथधीरा ॥३॥ तासुहेमसुतपासुतताको । सुत
दीर्घतमागलिकेतियमाहीं । उपजायोपटपुत्रनकाहीं ॥ सुह्मकलिंगपुंड्रअरुअंगा । पंचमआं
दोहा–कुरुपतियेपटभूमिपति, निजनामनअनुसार ॥ पटदेशनकोरचतभे, करिप्राचींविद
अंगकुमारभयोखनपाना । ताकोदिविरथपरमसुजाना ॥ तासुधर्मरथतासुचित्ररथ ॥६॥
[illegible] हिताको [illegible]
रहेविभांडकइकमुनिख्याता । भोतिनकोपटरेतनिपाता ॥ सोपटकहँधोयेसरिमाहीं । पानकि
तेहिहरिणीकेभयोकुमारा । शृंगीऋषियहनामउचारा ॥ रोमपादकेराजिहिमाहीं ।
दोहा–शृंगीऋषिआगमनते, ह्वैहैवृष्टिवनाय ॥ रोमपादअसजानिमन, गणिकनदियोपठा
वारवधूमुनिकेढिगजाई । कहिफलमोदकदियोखवाई॥मधुरगायनिजनाचदेखाई ।
गणिकामुनिहिंनगरजबल्याई।होतभईतबवृष्टितहाँई॥८॥शृंगीऋषितहँयज्ञकरायो ॥९॥ रोमप
ताकोनामभयोचतुरंगा । तासुभयोप्रपुलाक्षसुअंगा॥१० [illegible]
भयोवृहद्रथवृहदभानुसुत।तासुजयद्रथपुत्रभोजयुत॥तासुविजयधृतितासुकुमारा ११
दोहा–सतकर्माताकोसुवन, आधिरथतासुकुमार ॥ १२ ॥ गंगातटमेंयकसमै, करतरह्योस
[illegible] । सोलितातिहिइकलख्योकुमारा ॥ ताकोनिजसुतमानिबढ़ायो ।
[illegible] । जाहिहन्यो अर्जुनबलऐना ॥ तीजोसुतजोद्रुह्युययाती । ताकोपुत्रब
[illegible] ॥१४॥ ताकोसुतगांधारकविनसुत ॥ ताकोधर्मपुत्रधृततासू ।
[illegible] उत्तरादिशिनृपम्लेच्छनयुतभे।तुरवसुजोसुतद्वितिययपाती।ताके

दोहा-ताकेभागकुमारभो, भानुमानसुततासु ॥ १६ ॥ तासुत्रिभानुनरेशभो, पुत्रकरंधमजासु ॥
मरुतकरंधमकेसुतभयऊ॥१७॥जोदुष्यंतहिसुतगुनिलयऊ॥असुवरणमैंनृपयदुवंशा१८परमपुण्यप्रदजगतप्रशंशा
श्रवणनश्रवणकरतजेहिकाहीं।तनकौपापरहततनुनाहीं॥१९॥जहँभगवानलियोअवतारा।करिलीलाभूभारउतारा॥
यदुभूपतिकेचारिपुत्रभल।सहसजीतकोष्टाअरुरिपुनल २० सहसजीतकेसतजितभयऊ।ताकेतीनिपुत्रविधिदयऊ॥
प्रथममहाहेद्वितियवेनुहय।तीजोभयोभूपपुनिहैहय॥ २१ ॥ हैहयकोभोधर्मकुमारा । तासुनेत्रतेहिंकुंतिउदारा॥
दोहा-सोहंजीताकेभयो, महिपमानसुततासु । भद्रसेन-॥२२॥-ताकेभयो, दुर्मदधनकहुजासु ॥
धनकहिचारिपुत्रयुतओजा।कृतवीरजकृताग्निधृतओजा॥अरुकृतवर्मामहाउदारा।जोयदुवंशिनमहँशिरदारा॥२३॥
कृतवीरजकेअर्जुनभयऊ । सातौंद्वीपराजिकरिलयऊ॥दत्तात्रयतेयोगहिपायो॥अनुपमसुयशप्रहुमिपरछायो॥२४॥
महिकेमिलिमहीपसमुदाई।हयहयेंद्रसमतानहिंपाई॥२५॥करतराजतेहिंविजयविलासी।बीतेसंवत्सहसपचासी२६॥
रहेपुत्रयुगपंचहजारा । बचेपाँचभृगुपतिसंहारा ॥ जयधुजशूरसेनमधुवीरा । ऊर्जितवृषभपंचरणधीरा ॥
दोहा-यज्ञदानतपयोगबहु, कीन्ह्योंअर्जुनभूप । यदुपतिपदरतिनिरतअति, सुमिरतसदाअनूप ॥
अर्जुनकहँसुमिरतजनकाहीं । कबहुँहोतदारिदभयनाहीं॥२७॥तासुजेष्ठसुतजयधुजनामा।ताकेतालजंघबलधामा॥
ताकेभेशतपुत्रमहाना । तिनकोहन्योंसगरबलवाना॥२८॥वीतिहोत्रजेठोतिनरहेऊ।तिनकेसुतमधुनामककहेऊ॥
तिनकेवृष्णिआदिशतसूना । होतभयेइकइकतेदूना ॥ २९ ॥ तबतेयादवभेमधुवंशी । वृष्णिवंशिहूभयेप्रशंशी॥
ह्योजोयदुसुतकोष्टहिनामा।तासुतवृजिनवानबलधामा ३० तासुतश्वाहितासुअनशेकू।तासुचित्ररथसहितविवेकू॥
दोहा-ताकेभोशशिबिंदुनृप, कीन्ह्योंभोगमहान ॥ ३१ ॥ लह्योचौदहौंरतनको, चक्रवर्तिगुणवान ॥
नीताकेदशैहजारा ॥ ३२ ॥ तिनकेभेदशलाखकुमारा ॥ तिनमेंपटसुतभयेप्रधाना । पृथुश्रवादिमहाबलवाना ॥
थुश्रवाकोभोसुत-॥३३॥-धर्मा।ताकेभोउशनासुतकर्मा॥करिकैअश्वमेधशतराजा।कियोअयाचकविप्रसमाजा॥
किप्रगटेपंचकुमारा । तिनकेऐसेनामउचारा ॥ ज्यामघरुक्मऔररुकुमेपू ॥ ३४ ॥ औपुरुजितऔपृथुवरवेपू ॥
यामघकेसुतविधिनहिंदीन्ह्यों।तियभयवियविवाहनहिंकीन्ह्यों।पैअरिजीतिकुँवरिइकलायो।पतिआगमसुनितियसुखपायो॥
दोहा-चढिशिविकामहँआपहूँ, लेनगईअगवानि । रथपरलखितेहिंसवतिगुनि, बोलीकोपितबानि ॥ ३६ ॥
रेकपटीयहकौनको, लायोमोहिंछिपाय । बैठारचोममआसनहिं, मेरीसवतिबनाय ॥
तबबोलेनृपमानिभय, यहसुतवधूतुम्हारि ॥ ३७ ॥ बिनासुतहिंकहँसुतवधू, रानीकह्योपुकारि ॥
एकतोमैंवंध्याअहों, दूजेसवतिविहीनि । पुत्रवधूयहकौनविधि, आइइतेनवीनि ॥
तबज्यामघकंपतकह्यो, तुवसुतह्वैहैजौन । ताकीह्वैहैनारियह, अबविवादहैकौन ॥ ३८ ॥
सुरनभूपकेवचनसुनि, एवमस्तुकहिदीन । रानीहूमानतभई, फेरिकोपनहिंकीन ॥
तबरानीकेहोतभो, नामविदर्भकुमार । तेहिंकन्याकोकरतभो, तासुविवाहउदार ॥ ३९ ॥

इतिसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे त्रयोविंशस्तरंगः ॥ २३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-सोविदर्भभूपतिभयो, भयेतीनिसुतजासु । इककुशकियकैथिकतृतिय,रोमपादसहुलासु ॥ १ ॥
पादसुतबभ्रुसुजाना । ताकोकृतिभोअतिबलवाना॥ताकेकुशिककुशिकसुतचेदी।ताकेचैद्यादिकअरिभेदी॥२॥
किकुंतिवृष्टिसुततासू । ताकेनिरवृतिजगयशभासू॥तासुदशार्हव्योमसुतताको॥३॥तासुतभोजीमूतप्रभाको॥
कोविकृतिभीमरथताको॥ताकोनवरथदशरथजाको ४ दशरथसुवनशकुनिनरनाहा॥तासुकरंभियशजगमाहा॥
कोदेवरातमहिपाला।ताकोदेवक्षत्रअरिकाला॥तासुतमधुताकोसुतकुरुवश।तेहिअनु-५-तहिपुरुहोत्रविपुलयश।
दोहा-तासुआयुपुनितासुसुत, सात्वतभोमहिपाल । सात्वतकेसुतसातभे, सुनियेनामभुवाल ॥

दिव्यवृष्णिभजओभजमाना । अंधकदेवावृधवखाना ॥ ६ ॥ सातममदाभोजयशवाग । भभनमानदिपथकुमार॥
धृष्टकिंकिणीओनिमिलोची।यकतियगेयेत्रयदुरसोर्नी॥शतजितसहसजीतअयुताजित।यकतियकत्रयसुतसुन्दर
देवावृधकेबभ्रुकुमारा । तिनयशकवियदिभाँतिउचारा ॥जसयशसुन्योह्रिस्तिदनको । दूर्योआदतसंतनिनको॥९
मनुजनमेंहंबभ्रुमहाना । देवावृधदेवसमाना ॥ जिनसँगकरिजनमुक्तिदिपाये । पंसठिनादहसहसमुहाये ॥ १०

दोहा--धर्मात्माअतिहोतभो, महाभोजमहिपाल । कहवायोजेहिसुयशतें, भोजवंशसबकाल ॥ ११ ॥

वृष्णिसुमित्रपुत्रइकवीरा । दूजोभयोयुधाजितधीरा ॥ द्वैसुतभयेयुधाजितकेरे । इकशिनिइकअनिमित्रनिवेरे॥
भोअनिमित्रहिनिम्नकुमारा ॥१२॥ ताकेभेद्वैपुत्रउदारा ॥ सत्राजितप्रसेनजितनामा । होतभयेअतिशयबलधामा॥
शिनिकेभोसत्यकबलवाना१३तासुसात्यकीसमरसुजाना॥ताकेविजयविजयसुतकुनिहैं।ता[illegible]
अनिमित्रहियकओरकुमारा।ताहुनामसबवृष्णिउचारा॥१४॥तासुश्वफल्कचित्ररथदोइ।नारिफश्वल्कगांदिनीजोइ॥

दोहा—तासुत्रयोदशपुत्रभे, अक्रूरादिसुजान । तिनकेगुनियेनामनृप, मैंअबकरहुँबखान ॥ १५ ॥

मृदुवितमृदुरहुगिरिआसंगा । सारमेयशत्रुघ्नसुअंगा ॥ धर्मवृद्धिपातिबाहुसुधर्मा । क्षेत्रोपेक्षकलितशुभकर्मा॥
गंधमादअरिमर्दनवीरा । अरुभगिनीइकनामसुवीरा॥ १६ १७॥ देववानउपदेवउदारा । भयेउभयअक्रूरकुमारा॥
पृथुविदूरथादिकबहुवीरा । भयेचित्ररथकेरणधीरा ॥१८॥शुचिकंबलबरहिपभजमाना॥कुकुरादिअंधककुलगाना॥
कुकुरकेभेवह्निकुमारा । ताकेभयेविलोमउदारा ॥ १९ ॥ सोकपोतरोमासुतजायो । [illegible]

दोहा—अनुकेअँधकहोतभे, ताकेदुंदुभिवीर । दुंदुभिकेदरिद्योतभे, तासुपुनर्वसुधीर ॥ २० ॥

सोएककन्याइकसुतजाये । तेआहुकआहुकीकहाये ॥ आहुककेद्वैसुतकृतकाजा । देवकउग्रसेनमहराजा॥
देवककेसुतचारिसुहाये ॥ २१ ॥ तिनकेऐसेनामगनाये ॥ देववानउपदेवसुदेवा । औरदेववर्धननरदेवा॥
अरुदेवककेसातकुमारी । धृतदेवादिकअतिछबिवारी ॥ २२ ॥ सातहुमाहँदेवकीछोटी। सबतेभईभाग्यकीमोटी॥
तिनसातहुवसुदेवविवाहा ॥ २३ ॥ नवसुतउग्रसेननरनाहा ॥ कंसकंकानिग्रोधहुशंकू । राजपालकुहुसुष्टिनिशंकू॥

दोहा—अरुसुनामबलवानअति, तुष्टिमानतौपुत्र । उग्रसेनकेहोतभे, सिगरेधर्मअमित्र ॥ २४ ॥

कंसाआदिकपंचकुमारी । भईदेवभागादिकनारी ॥ २५ ॥ भयोविदूरथकोसुतशूरा । भोभजमानतासुसुतरूरा॥
ताकोशिनिसुतस्वयंभोजतेहि।भयोहृदीककुमारनामजेहि॥२६॥देवबाहुशतधनकृतवर्मा।येताकेत्रयसुतशुभकर्मा॥
देवमीढसुतशूरसुहायो । तातियनाममारिषागायो ॥ २७ ॥ ताकेभेदशप्रबलकुमारा । तिनकेऐसेनामउचारा॥
देवभागवसुदेवहुआनकदेवश्रवस–२८–सृं [illegible]

दोहा—जबमहिमेंवसुदेवको, जन्मभयोसुखछाय । तबआनकअरुदुंदुभी, सुरनरदियोबजाय ॥ २९ ॥

तातेआनकदुंदुभिनामा । होतभयोहरिजनकललामा ॥ पांचभगिनिवसुदेवहिकेरी । होतभईजिनसुछबिघनेरी॥
श्रुतिकीरतिकुंतीश्रुतदेवी।श्रुतश्रवाहु-३०-राजाअधिदेवी॥कुंतिभोजकहँकुंतीकाहीं।शूरदियोगुनिसखातहाँहीं॥
एकसमयदुर्वासाआये । कुंतीकहँइकमंत्रबताये ॥ तासुपरीक्षाहेतुकुमारी । सूरजसनमुखमंत्रउचारी ॥
भानुदेवकोआशुबोलायो।सूरजआशुउतरितहँआयो ३२ तबकुंतीअतिअचरजमानी।रविसोंविनयकियोमृदुबानी॥

दोहा—मंत्रपरीक्षाहेतुमैं, तुवसनमुखपढ़िदीन । तातेअबकरिकैक्षमा, निजथलजाहुप्रवीन ॥ ३३ ॥

तबसूरजअसवचनउचारा । हैअमोघजगदरशहमारा ॥ तैंसुतपैहैआज्ञामेरी । जैहैनहिंकुमारितातेरी ॥ ३४ ॥
असकहिकुंतिहिगर्भहिदीन्ह्यो।सूरजस्वर्गहिगमनहिकीन्ह्यो॥सोकुंतिकेभयोकुमारा।भानुसरिसतेहितेजअपारा॥
[illegible] पाकि[illegible] पितामह [illegible] कुंतिहि [illegible]
[illegible] । सोईहैकरूपनरनाहा ॥ दंतवक्रभोतासुकुमारा । जोजगमेंजाहिरबलवारा ॥ ३७ ॥

दोहा—धृष्टकेतुअरुकेकयो, विप्रचित्तदनुजेश । श्रुतिकीर्तिहितेतरतभे, रतिचोराइयकदेश ॥

[illegible] पंचकुमा[illegible] । परमबलीअरुपरमउदारा ॥ ३८ ॥ लहिराजाधिदेविजयसेना । [illegible]
विंदुऔरअनुविंदुहिनामा । [illegible] ॥ श्रुतश्रवव्याह्योदमघोषा ॥३९॥ [illegible]

कंसादेवभागकहँपायो।परमबलीद्वैसुतउपजायो॥चित्रकेतुअरुद्वितिहिबृहदबल।जिनकीन्ह्योंभारतविक्रमभल ४०॥
कंसवतीलहिदेवश्रवानै । जन्योसुवीरऔरइपुवानै ॥
दोहा—आनकलहिकंकातिया, द्वैसुतजन्योअजीत । शत्रुजीतइकहोतभो, दूजोभोपुरुजीत ॥ ४१ ॥
सृंजयराष्ट्रपालिकापायो । वृषदुर्मर्षनादिसुतजायो ॥ श्यामकशूरभूमितियमाहीं । जन्योहिरणिहरिकेशहिकाहीं ॥
वत्सकमिश्रकेशिकहँपाई । सुतवृकादिदीन्ह्योंउपजाई॥वृकदुर्वामहँअतिअहलादिक।पुष्कलतक्षजन्योशालादिक॥
लैसुदामिनीभूपसमोका । सुमित्रादिजनम्योसुतनीका ॥ कंककर्णिकामहँऋतुधामै । औजयकोजनम्योगुणगामैं ॥
पौरविरोहिणिन।लनलोचना । मदिराभद्राइलारोचना ॥ येवसुदेवहिकीहैंरानी । इनमेंदेवकिअहैंसयानी ॥ ४५ ॥
दोहा—दुर्मदगदध्रुवविपुलकृत, औसारणमतिधाम । रोहिणियेकेसुतभये, औजेठेबलराम ॥ ४६ ॥
भद्रसुभद्रहभद्रभुज, दुर्मदादिबलवान । येद्वादशभटहोतभे, पौरविपुत्रसुजान ॥ ४७ ॥
मदिराकेसुतहोतभे, शूरादिकअतिशूर । भद्राकेकेशीभयो, एकपुत्रजगरूर ॥ ४८ ॥
हस्तादिकरोचनाकुमारा । उरुवलकलसुतइलाउदारा ॥ भेविपृष्टधृतदेवाकेरे । शांतिदेवप्रशमादिघनेरे ॥ ५० ॥
उपदेवाकेदशसुतभाये । कल्पवर्षआदिककहवाये ॥ भयेपुत्रपटश्रीदेवाके । वसुहंसादिकश्रमदेवाके ॥ ५१ ॥
नवसुतदेवरक्षिताकेरे । भयेगदादिकवलीघनेरे ॥ सहदेवाकेआठकुमारा ॥ ५२ ॥ पुरुविश्रुतआदिकबलवारा ॥
श्रीदेवकीआठसुतजाये । तिनकेऐसेनामगनाये ॥ ५३ ॥ कीर्तिमंतऋजुभद्रसुषेना । संतर्दनअरुमंगलसेना ॥
दोहा—तहँसातयोंहोतभो, श्रीबलभद्रकुमार ॥ ५४ ॥ अठयेमेंअंशनसहित । कृष्णलियोअवतार ॥
सुतासुभद्राअतिबड़भागिनि।पितामहीरावरीसोहागिनि॥५५॥जबजबहोइधर्मकरनाशा।औपुहुमीपरपापप्रकाशा॥
तबतबकृष्णलेहिंअवतारा।भंजैभूरिभूमिकरभारा॥५६॥औरजन्मकरकछूनहेतू।प्रगटहिंइच्छितकृपानिकेतू ॥५७॥
जिनकीलीलाअहैअपारा।हितउतपतिपालनसंहारा॥मुक्तिहेतुजगजीवनकाहीं।लीलाकरहिंअमितजगमाहीं ॥५८॥
पुहुमीपरपुहुमीपतिपापी । होतभयेजबविप्रसँतापी ॥ तबह्वैश्रीवसुदेवकुमारा । करिभारतभूभारउतारा ॥ ५९ ॥
दोहा—अजशिवशक्रहुमनहिंते, जानहिंजाकोनाहिं । ऐसीलीलाकरतभे, बलयुतहरिमहिमाहिं ॥ ६० ॥
कलिमहँनिजभक्तनकेहेतू । प्रगटकियेयशकृपानिकेतू॥नाशकशोकमोहअज्ञाना।पावनपावनकरनमहाना ॥ ६१॥
हरियशतीरथमहँजोजाई । करणांजुलिह्वैजनमनलाई ॥ एकहुवारकराहिजोपाना । छूटहिंकर्मवासनानाना ॥६२॥
मधुदशार्हअंधकअरुभोजू । शूरसेनसंजययुतओजू ॥ यदुवंशीकुरुवंशिहुजेते । कियेप्रशंसनप्रभुकहँतेते ॥ ६३ ॥
मधुरबोलिलखिमृदुमुसक्याई । लीलाविक्रमसहितदेखाई ॥ मनुजलोककोमोदबढायो । भूपअनूपरूपछविछायो॥
दोहा—जेहिंजेहिंदेशननगरमहँ, गवनकीनयदुनाथ । तहँतहँकेनरनारिसब, निरखतभयेसनाथ ॥ ६४ ॥
कवित्त—सोहिरहेमकराकृतकुंडलचारुकपोलनमेंलगिकानन ।
आनँदरूपसोहासप्रकाशितयोंयदुनंदनकोवरआनन ॥
नित्यहीनारीनरोनिरखेवरपेजलनैननेकअघानन ।
कोपितवारहिंवारकहैपलकेंचखकाहेरच्योचतुरानन ॥ ६५ ॥
मथुराजनमित्रजलीलाकरिमारिरिपुकरिबहुव्याहबहुसुतउपजायेहैं ।
लोकशिक्षाहेतकीन्हेंनयज्ञकेनिकेतपांडवानिकौरवमेंकलहबढ़ायेहैं ॥ ६६ ॥
वीरनकोवलहरिनिजदीठिहीसोंविजैयानतेहत्तायविजैविजयीबनायेहैं ॥
भाषेरघुराजदैकेंउद्धवकोज्ञानयदुराजकरिकाजनिजधामकोसिधायेहैं ॥
दोहा—निधिनभनिधिशशिसंवतै, शितप्रतिपदभृगुवार । मासअषाढहिपूरभो, नवमस्कंधउदार ॥ ६७ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्री राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे चतुर्विंशस्तरंगः २४
दोहा—महाराजरघुराजकृत, भाषानवमस्कंध । यहसमातमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध ॥

समाप्तोऽयं नवमस्कंधः ९.

इति

श्रीमद्भागवत–आनन्दाम्बुनिधि

नवमस्कन्धः समाप्तः ९.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–बम्बई.

इति

श्रीमद्भागवत-आनन्दाम्बुनिधि

नवमस्कन्धः समाप्तः ९.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-बम्बई.

अंबिका
नंद
गोप
अरिष्टासुर

श्रीगणेशाय नमः ।
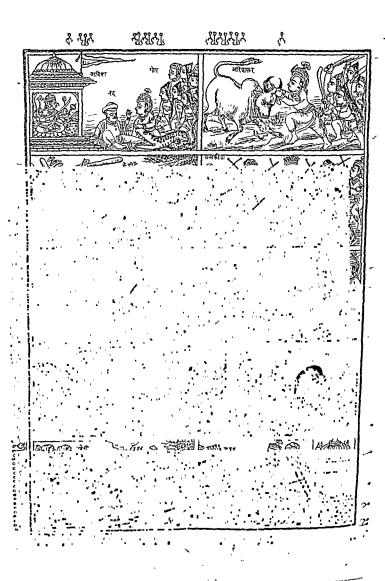
श्रीमद्भागवत-आनन्दाम्बुनिधि ।

दशमस्कंध (पूर्वार्ध) प्रारंभः ।

सोरठा-जयजयश्रीव्रजचंद, नंदनंदआनंदकर ॥ मतिदायकजनवृंद, व्रजवनितामुखकंजअलि ॥
।-पारथसारथिचरणमें, चितनकृतारथजासु ॥ स्वारथपरमारथसकल, अहेअकारथतासु ॥
जयजयश्रीसिंधुरवदन, चरणहरणसवशोक ॥ हरणविघनआनँदभरन, नरनसदामुदओक ॥
जयशारदपारदप्रभा, करुणाआरदबुद्धि ॥ नारदआदिकवंद्यपद, गारदकरनिकुबुद्धि ॥
जयमुकुंदहरिगुरुचरण, जोमोहिंसदाअधार ॥ जासुकृपातरिहौंसहज, यहसागरसंसार ॥
रघुपतिचरणसरोजमहँ, जाकोचितनितलीन ॥ सोपितुश्रीविशुनाथपद, वंदतहौंमुदभीन ॥

कवित्त-नातोनीलशैलवासनाहिंभयोपक्षीपति, नाहिंवलमीककहूँतेजनमकोपाइये ।
नाहिंहाथवीनापुलिनोमेंजन्मलीन्ह्योनाहिं, सुरअसुरौनउपरोहितकहाइये ॥
कहैरघुराजकृपाकैकैसुनोव्रजराज, रावरेकोचरितअपारक्योंवनाइये ॥
नातोभयेचारिमुखनातोभयेपांचमुख, नातोभोसहसमुखकहोकैसेगाइये ॥

दोहा-पैआनँदअंबुधिदशम, पूर्वारधयदुराय ॥ मेरेउरमेंबैठिकै, दीजैनाथबनाय ॥
सुनिकैअसकंधहिनवम, नृपकुरुकुलकोनाथ ॥ फेरिकह्योशुकदेवसों, मुदितजोरियुगहाथ ॥

परीक्षित उवाच ।

सोमसूर्यवंशहिविस्तारा । तिननृपअद्भुतचरितअपारा॥मोहिंसकलमुनिदियोसुनाई।जदुनृपकीगाथासवगाई ।
पैअवनाथकृपाकरिभारी । सुनिकैनेशुकविनयहमारी ॥ यदुकुलहरिवल्लैअवतारा । जौनकरीलीलासुखसा
सिगरीआदिअंतसोंगाई । धन्यकरहुमोहिंसकलसुनाई॥२॥वसिकैनंदगेहनँदलाला । कहौकियोजोचरितविशा
अरुमथुराद्वारावतिमाहीं । कहोजोकियोचरित्रनकाहीं॥३॥भवआमयऔषधिहैसोई । मनहिंहरतश्रवणनपरिज
जिनकेउरतृष्णानहिंआवैं । तेजनताहिंप्रीतियुतगावैं ॥

दोहा-ऐसोयदुपतियशसुधा, जगमेंअतिविख्यात ॥ पशुघातीकोछोड़िकै, कोकरिपानअघात ॥ ४ ॥

कवित्त-दुर्योधनवाडोआगिनीरजामेंसोवल, दुशासनगँभीरतातरंगवहुवीरकी ।
भीषमऔद्रोणकर्णआदिअतिरथीसवै, जामेंमहाग्राहमरयादनृपभीरकी ॥
कहैरघुराजऐसोकौरवसमुद्रघोर, वाव्योचकराईपाइद्रोपदीकेचीरकी ।
ताकोपितामहमेरेगोपदसमानतरे, पायकैजहाजएकवाहुयदुवीरकी ॥ ५ ॥
पांडुकुरुकुलकोसंतानवीजमेरोतन, रह्योजननीकेगर्भहीमेंजेहिकालहै ।
तापैकोपकरिकैप्रचंडद्रोणनंदन, पवारयोव्रह्मशिरअस्त्रपरमकरालहै ॥
सुनतपुकारउत्तराकीकहैरघुराज, जानिनिरमूलदोउवंशकोउतालहै ।
पैठिकैउदरगदागहिकैकृपालकाल, मुहसोंवचायोमोहिंदेवकीकोलालहै ॥ ६ ॥
जगतप्रकासीजगअंतरकोवासीकाल, रूपजगनाशीयहमायजासुदासीहै ।
पुरुषसुरूपभासीदेनवारोमुक्तिसासी, भक्तशत्रुत्रासीपालेप्रजनहुलासीहै ॥
देवसरितासीताकीलीलासुखरासीकहीं, कृपाकैजोनरवपुधारयोअविनाशीहै ।
कहैरघुराजवृंदावनकोनिवासीचारु, चंद्रचंद्रिकाधव्रजवनितानिलासीहै ॥ ७ ॥

–रामरोहिणीकेतनय, प्रथमकह्योमुनिजोय ॥ तिन्हैंदेवकिहुकेकह्यो, विनद्वैतनकिमिहोय ॥
तेकरिकृपामहाई। यहशंकाममदेहुमिटाई॥८॥केहिहितयदुपतितजिपितुगेहू। वसेजायव्रजमेंकरिनेहू ॥
नकियचरितउदारा। गोपसखनसँगनंदकुमारा॥९॥व्रजमथुराद्वारावतिमाहीं॥कियेचरितवरणहुँतिनकाहीं॥
तुलकंसहिंकेहिंहेतू। कियअयोगवधकृपानिकेतू॥१०॥पुरीद्वारकामहँमुनिराई। यदुवंशिनसँगमहँयदुराई॥
पैनकियेनिवासा। सोमोसोंमुनिकरहुप्रकासा॥कितनीभईकृष्णकीरानी॥११॥हरिचरित्रऔरहुसुखदानी॥
नाथसहितविस्तारा। श्रवणकरनमनचहतहमारा ॥ १२ ॥
हा–परमदुसहयद्यपिछुधा, यहजगमेंमुनिराय ॥ तापरमैंत्याग्योजलहु, बैठ्योमुनिमधिआय ॥
निरगततुवमुखजलजते, यदुपतिकथापियूष ॥ पानकरतश्रुतिअंजुली, बाधतितृपानभूप ॥ १३ ॥

सूत उवाच।

नकअसनृपकीबानी। सुनिशुकदेवमहामुदमानी॥ कलिकल्मषकीनाशनहारी। हरिकीकथासराहिसुखारी॥
॥अरंभहिकरनबखाना। व्याससुवनभागवतप्रधाना ॥ १४ ॥

श्रीशुक उवाच।

ोबुद्धियहभईतिहारी। सुननकृष्णगाथासुखकारी॥१५॥कृष्णकथाकोप्रश्नसुजाना॥करततीनितनपूतमहाना॥
तापृच्छकऔरहुश्रोतै। जिमिपापिनगंगाकरसोतै ॥ १६ ॥ दैत्यअंशभेभूपअपारा। तातेभयोभूमिकहँभारा॥
भारभूपीड़ितह्वैकै। कौनहुँविधिननाशतेहिंज्वैकै ॥
दोहा–ब्रह्माकेशरणहिंगई, भू–॥१७॥–धरिसुरभिसरूप। करुणाकरिरोवनलगी, वरण्योनिजदुखभूप ॥१८॥
नेविरंचिधरणीदुखभारी। लैसँगमेंसुरमहित्रिपुरारी॥गयेक्षीरसागरकहँआसू। शयनकरतजहँरमानिवासू॥१९॥
ड़भयेक्षीरनिधितीरा। ब्रह्माशंकरयुतसुरभीरा॥ पुरुषसूक्तपढ़िकैजगदीशै। अस्तुतिकरनलगेनतशीशै॥२०॥
भैतहँअकाशतेबानी। ताकोसुनिब्रह्मासुखमानी॥ सबदेवनअसगिरासुनाई। सुनहुसकलसुरअबचितलाई॥
समाधिमहँअतिसुखदाई।गगनगिरामोहिंपरीसुनाई॥सुनिकैकरहुसुरहुतेहिभाँती।तबमिटिहैसिगरीदुखपाँती २१
दोहा–प्रथमहिंसुररिपुजानिलिय, यहधरणीकोभार। यदुकुलमेंसिगरेअमर, लेहुआशुअवतार ॥ २२ ॥
वसुदेवभवनमहँजाई। ह्वैहैंप्रगटकृष्णसुखदाई ॥ हरिकेप्रियहितसबसुरदारा। लेहिंजाइअवनीअवतारा॥
भलोंरहहिंकृष्णमहिमाहीं। तबलोंतुमसबरहहुतहाँहीं॥ भूभारहिउतारिहरिदेहैं। धरणीमेंध्रुवधर्मचलैहैं ॥ २३ ॥
सुदेवकीकलाअनंता। सहसवदनजिनतेजनअंता॥ तेहरिकेतहँअग्रजह्वैहैं। हरिहितखलनखलककेख्वैहैं॥२४॥
भगवतीकृष्णकीमाया। जेहिंसिगरेजगकोभरमाया॥सोमुकुंदकोशासनपाई। कछुकारजहितप्रगटीजाई॥२५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–यहिविधिकदिसबसुरनसों, धरणिहिंबहुसमुझाय। गवँनतभोनिजधामको, धाताअतिसुखपाय ॥ २६ ॥
रसेनअसनामविशाला।मधुरामंडलकोमहिपाला॥मथुरामहँसोनिवसतरहेऊ।विविधभाँतिकेभोगहिलहेऊ ॥२७॥
धुरायदुवंशिनसुखदानी। भईराजधानीछविखानी ॥ मथुरातेहिंनितरहहिंमुरारी। ऐसोभाषहिंवेदविचारी॥२८॥
निकछुकालमाँहसुरराजा। प्रगट्योउग्रसेनमहराजा॥ ताकेप्रगटचोसुतबलधामा। ताकोरह्योकंसअसनामा॥
वकउग्रसेनलघुभाई। तासुदेवकीसुतासुहाई ॥ उग्रसेनह्वैपरमउछाही। वसुदेवहिदेवकीविवाही ॥
दोहा–बहुदाइजदैप्रीतिकरि, दुहितारथहिंचढ़ाइ ॥ २९ ॥ उग्रसेनकीन्हीविदा, नैननीरबहाइ ॥
ागिनीप्रीतिपरेसिविशेखी। चढ्योकंसरथपेसुखलेखी ॥ निजकरगह्योतुरंगनिडोरी। रहीतहाँरथभीरनथोरी॥
ींपियोचपलह्वैमरथकंसा। करीसकलजगतासुप्रशंसा॥३०॥ कनकसाजसाजेमदवारे। दियोचारिशतनागदतारे॥
दियोपंचदशशतदशतुरंगा।अष्टादशशतरथदुबभंगा ॥ ३१ ॥ द्वैसैदियदुहितासँगदासी। अलंकारसंयुतछविरासी॥

यहिविधिदेवकदाइजदीन्यों।दुहिताप्रीतिरीतिरसभीन्यों॥तुरहीशङ्खमृदङ्गनगारे।बाजतभेतहँबाजअपारे॥३२॥३
दोहा–कछुकदूरजबदेवकी, गवँनतभैरथमाँहि । तबनभवाणीहोतिभै, अतिकटुकंसहिंकाँहि ॥
सुनुरेकंसमहाअज्ञानी । जेहिरथमेंचढायसुखमानी ॥ चलोजातपहुँचावनहेतू । हैनकछूतेरेचितचेतू
अठयोंगर्भदेवकीकेरो । करिहैअवशिकंसवधतेरो ॥ ३४ ॥ ऐसीसुनततहाँनभवानी । कुलदूपणपापीअभिमानी
ऐसोकंसदयासबत्यागी । भगिनीहननचह्योभैपागी॥पकरचोकेशकाढ़ितरवारी।काटनलग्योशीशअविचारी॥३५
ताकोअतिनिंदितयहकरमा।त्याग्योलाजऔरसबधरमा॥सोवसुदेवनिरखिदुखपागे।कंसहिंअससमुझावनलागे ३६

वसुदेव उवाच ।

दोहा–शूरसराहैंआपुगुण, हौंनिजकुलयशकारि । सोविवाहिभगिनीहनन, कतकाढीतरवारि ॥ ३७ ॥
जबतेजीवजन्मजगपावै । तबतेमृत्युसंगमहँआवै ॥ मरैआजुकीबहुदिनमाँहीं । मीचुगुनहुँध्रुवजीवनकाँहीं ॥३८
मरणकालजबगोनगिचाई । तबतनुदुतियकर्मवशपाई॥यहतनुकोत्यागतहैजीवा।सोदृष्टांतसुनहुमतिसीवा ॥३९
जिमिआगेजोरईपदधरई । पीछेपगतृणत्यागनकरई॥जिमिधरिप्रथमचरणनरराऊ। नरहुउठावतपाछिलपाऊ ४०
जिमिजागतमहँजोहतजोई । देखतपुरुपसपनमहँसोई ॥ जागतकीसबसुधिबिसरावै । ऐसेहिंश्रुतिदेहिनगतिगावै
दोहा–जबदूजोतनुकोलहत, जिययहतनुहिंविहाय ॥ तबहींयहतनुकीसुरति, भूलिजीवकहँजाय ॥ ४१ ॥
मरणसमयजहँजहँमनजावै।करमाविवशजियसोइतनुपावै४२जिमिजलडोलेडोलतचंदा।तिमिमोहतजियमायाफंदा।
असगुनिकरहुनकेहुसोंद्रोहू । सबअघमूलजानियेंकोहू ॥ जोआपनचाहैकल्याना । तौछोड़ैसबवैरविधाना ॥
जोसबसोंराखतरिपुरीती । ताकोभोजरोजहैभीती ॥ ४४ ॥ सुतासरिसभगिनीयहतेरी। अतिशयदीननारिभैमेरी।
हनहुनयहिकरिकोपकराला । अहहुकंसतुमदीनदयाला ॥ ४५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिसामभेदकेवचना । कहवसुदेवकरतबहुरचना ॥
दोहा–पैअतिदारुणभोजपति, समुझ्योनेकहुनाहिं ॥ दैत्यअंशतेप्रगटभो, दयानभैउरमाँहिं ॥ ४६ ॥
जबनहिंमान्योकंसकराला।तबवसुदेवहुबुद्धिविशाला॥असविचारकीन्ह्योंमनमाहीं।कहाकरबअबउचितयहाँहीं४७॥
यदपिमृत्युनहिंबचैबचाई । तदपिबुद्धिबलजहँलोंजाई ॥ तहँलोंउचितैकरबउपाई । भगवतगतिकछुजानिनजाई ॥
बचैउपायहुकियोजोनाहीं।तौनहिंकछूदोपहमकाहीं ॥४८॥ कंसहिदेवकिपुत्रदेनकहि।लेहुँबचाइनारिनिजकरगहि॥
जोकदाचिबीचहिंयहकंसा । मरैतौहोयसकलदुखध्वंसा ॥ जोकदाचिजीवतहीरैहै । देहैंसुतहोनीसोह्वैहै ॥ ४९ ॥
दोहा–अथवाहोयविपर्य्ययहु, हनैपुत्रइकंस ॥ जानीजायनईशगति, जगमहँएकहुअंस ॥
हालकालतेतौनचिजैहैं।कौनदोपजोपुनिमृतिपैहैं॥५०॥लगतदवारिजोकाननमाहीं । नेरेहुपरिकोउतरुनचिजाहीं ॥
ऐसहिंजननमरणगतिसाँची।होतसोइजोविधिकछुराँची५१यहिविधिकरिवसुदेवविचारा।मुखप्रसन्नदुखहियेअपारा ॥
पापीअतिनिरदयतेहिंकंसै । कह्योवचनअसकरतप्रशंसै ॥ ५२ ॥

वसुदेव उवाच ।

भोजराजजोभैनभवानी । सोयहिभाँतिपरतमोहिंजानी ॥ हैनदेवकीतेतोहिंभीती । याकेसुततेमरणप्रतीती ॥
तातेजबयाकेसुतह्वैहैं । तबहमतुमहिंसोंपिसबदेहैं ॥ ५४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–सुनतवचनवसुदेवके, कंसमानिमनलीन ॥ देवकिकेकचछोड़िकै, गमनभवननिजकीन ॥
वसुदेवहुलैदेवकिकाहीं । ह्वैप्रसन्नगेनिजघरमाहीं॥५५॥देवकिप्रतिवरपहिंकुरुराई । आठपुत्रदुहिताइकजाई॥५६॥
कीर्तिवंतजेठोसुतजोई । अतिशयविकलसत्यनिजजोई॥होतहिंदियोकंसकहँजाई।आनकदुंदुभिआवुबड़ाई।

।सहतनहिंसाधुसुजाना।कहँचाहतपंडितमतिवाना॥कहाकरहिनहिंकपटीक्रूरा।त्यागतकहानधीरहुशूरा॥५८॥
।नकदुंदुभिकोसतिदेखी।कंसकह्योहँसिमुदितविशेखी ॥ लैवसुदेवजाहुसुतकाहीं । यहितेमोहिंभीतीकछुनाहीं ॥
ऐनभईमोकोंनभवानी । सोअठयोंसुतमीचुवखानी ॥ ५९ ॥ ६० ॥

दोहा–कहिवसुदेवतथास्तुतहँ, ल्यायेसुतकहँगेह ॥ कंससुभाउविचारिकै, मिट्योनकछुसंदेह ॥ ६१ ॥

तवहिंकंसढिगनारदआये । लैइकांतमहँवचनसुनाये ॥ गोपनंदआदिकव्रजवासी । औरहुतिनकीतियछविरासी ॥
वसुदेवादिकजेयदुवंसी । देवकिआदिकनारिप्रशंसी॥६२॥भोजराजयेसवसुरजानों॥इनकोयोखोकवहुंनमानों॥६३॥
हरिउतारिहैंहाठिभूभारा । करिकैदैत्यनकोसंहारा॥६४॥यहिविधिकंसहिसकलवुझाई । गवँनकियोतहँतेमुनिराई ॥
यदुवंशिनकहँदेवविचारी । ऐहैंदेवकिगर्भमुरारी ॥ यदुवंशिनतियसुरतियमानी॥हरिकेहाथमीचनिजजानी ॥६५॥

दोहा–पुनिअसमनमेंगुनतभो, कंसमहामतिमंद ॥ जहँतेगनियेंआठसोइ, इनमेंकोनगोविंद ॥

तातेसवपुत्रनकोमारौं । अवनहिंनेकुदयाउरधारौं ॥ असविचारिकैकंसतहाँहीं । देवकिअरुवसुदेवहुकाँहीं ॥
पकरिपगनवेडीभरिदीन्ह्यों । कारागारकैदपुनिकीन्ह्यों ॥ प्रथमपुत्रतुरतहिंमँगवाई । ताहिकियोवधदयाविहाई ॥
जेजेभेदेवकिकेवारे । तेतेगयेकंसकरमारे ॥६६॥ सुहृदमातुपितुभ्रातनकाहीं । हनहिंलोभवशनृपवसुधाहीं॥६७॥
कालनेमिमैंपूरवकेरो । मारयोहरिकरिवैरघनेरो ॥ अवहूँयदुकुलप्रगटिमुरारी । मोकहँअवशिडारिहैंमारी ॥
असविचारिमनकरिअतिक्रोधू ।यदुवंशिनसोंकियोविरोधू ॥ ६८ ॥

दोहा–भोजअंधयदुकुलअधिप, उग्रसेनमहराज ॥ हरिसनवंधीताहिगुनि, कियोननिजपितुलाज ॥
पकरिपगनवेरीभरी, राख्योकारागार ॥ वैठिनृपासनकरतभो, शासनदेशमझार ॥ ६९ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–तृणवर्त्तचाणूरवक, केशीद्विविदप्रलंब ॥ अघअरिष्टमुष्टिकबकी, अरुधेनुकतनलंब ॥

येसवअपनेमत्रिनकाहीं । बोलिमंत्रकरिमुदिततहाँहीं ॥ १ ॥ बाणभौमआदिकअसुरेशा । इनतेलैबहुपापनिदेशा॥
मागधकेवाहुवलपाई । नाश्योयदुवंशिनवरियाई ॥ २ ॥ पायकंसकृतमहाकलेशा । यदुवंशीभागेतजिदेशा॥
केकैकोशलकुरुपांचालू । निषधविदेहविदर्भहुशालू ॥ इनदेशनमहँवसेपराई । कंसराजजहँखवरिनपाई ॥ ३ ॥
अक्रूरादिजेरहेसयाने । तेकंसहिमिलिकियनपयाने ॥ कंसदेवकीकेपट्वालक । जवकीन्ह्योंवधयदुकुलपालक॥४॥

दोहा–देवकिकेसप्तमगरभ, गयेशेशभगवान ॥ तवदेवकिकेहोतभो, हरपहुशोकसमान ॥ ५ ॥

जानिकंसकोभेभगवाना । करनहेतुयदुवंशिनत्राना ॥ कह्योयोगमायासोंनाथा । हमतेयदुकुलअहैसनाथा ॥ ६ ॥
तातेजाहुवेगिव्रजकाहीं । गोपगऊजहँलसहिंसदाहीं ॥ रोहिणिआनकदुंदुभिनारी । मानिकंसनृपकीभयभारी ॥
वसैनंदगोकुलमहँसोई ॥ ७ ॥ औरहुगिरिदरीनमहँकोई ॥ शेशगर्भजोदेवकिकेरो । ऐंचिताहिशासनगुनिमेरो ॥
राखहुरोहिणिउदराहिमाहीं । यहप्रसंगजानैकोउनाहीं ॥८॥ हमदेवकितेलैअवतारा । करिहैंजगमहँचरितअपारा ॥

दोहा–यशुमतिरानीनंदकी, ताकेतुमहूंजाय । प्रगटहोहुव्रजमेंअवशि, ममनिदेशकहँपाय ॥ ९ ॥

तुमकोजगमेंमनुजअपारा । पूजनकरिहैंदैउपहारा॥मनुजनसर्वकामनादायिनि । ह्वैहौदेविनिकीठकुरायिनि॥१०॥
विजयाअरुवैष्णवीइशानी । दुर्गाभद्रकालिसुखदानी ॥११॥ कृष्णाकुमुदाऔरचंडिका।शारदनारायणीअंबिका।
मायाअरुमाधवीसुकन्या । ऐसेनामपाइहौधन्या ॥ रचिरचिविमलसुथलजगलोगू । थापितोहिंपैहैंसुखभोगू ॥१२॥

शेशगर्भकोभोसंकर्पण। तातेनामभयोसंकर्पण॥ जगमेंह्वैहेअतिअभिरामा। ह्वैहैतासुरामअसनामा॥
अतिबलसोंअरिअमितनशैहैं। तातेजगबलभद्रकहैहैं॥ १३॥

दोहा–सुन्योयोगमायाजबहिं, ऐसोनाथनिदेश। कहितथास्तुगवँनतभई, आईमाथुरदेश॥

जसमधुसूदनशासनदीन्ह्यों।तहाँयोगमायातसकीन्ह्यों॥१४॥देवकिकोद्रुतगर्भनिकारी।राख्योरोहिणिउदरमँझारी॥
तबपुरजनअसकियोनिवेरो।गयोगर्भगिरिदेवकिकेरो॥१५॥अभैप्रदाताभक्तरमेशा।वसुदेवहिमनकियोप्रवेशा॥१६॥
तबतेभेवसुदेवसहर्पा। महादुरासदअरुदुरधर्पा॥भयोभासकरसरिसप्रकासा। अवलोकतउपजतअरित्रासा॥१७॥
पुनिदेवकीउदरमहँस्वामी। आवतभेजगअंतरयामी॥जिमिपूरबदिशिचंदहिधारै।तिमिदेवकिमुकुंदसुखसारै॥१८॥
जगतनिवासहुकेरनिवासा। भईदेवकीसहितहुलासा॥

दोहा–शिखीशिखासमदेवकी, रुकीभोजकेभौन। नाहिंसोहतशठकंठजिमि, सरस्वतीधरिमौन॥ १९॥

देवकितेजबढ़तलखिरोजू। करतशोचनितनितचितभोजू॥तबमनमेंअसकंसविचारयो।हरिदेवकिकेगर्भसिधारयो॥
अहैसत्यमेरोवधकारी। असनदेवकिहिंकबहुँनिहारी॥२०॥ करबउचितअबकौनउपाई। जातेमिटैमीचदुचिताई॥
यदपिदेवकीहिवधयोगू। तदपिभगिनिवधअहैअयोगू॥गर्भवतीकोजोवधकरिहैं।तौअपनोयशआयुपहरिहैं॥२१॥
जीतहिमरोमनुजहैसोई। गर्भवतीतियवधकियजोई॥ बिनविचारजेकर्मकराहीं।जगनिंदालहिनरकहिंजाहीं॥२२॥
तातेजबयाकेसुतहोई। तबहींअवशिमारिहौंसोई॥

दोहा–असविचारिमनकंसकरि, भगिनीवधबविहाय। ह्वैहैहरिकोजन्मकब, यहीचित्योचितलाय॥ २३॥
बैठतवागतखातहूं, सोवतकरतविहार। हरिकोचिंततहरिमयो, निरख्योनृपसंसार॥ २४॥
जानिदेवकीगर्भमें, हरिकोसुरविधिसर्व। नारदादिमुनिसंगले, अस्तुतिकीन्हेंसर्व॥ २५॥

ब्रह्मादय ऊचुः।

छंद–जयसत्यव्रतजयसत्यपरजयसत्यतीनिहुँकाल। जयसत्यजगमहँसत्यवासीसत्यसत्यविशाल॥
जयसत्यसमदरशीअहौजयसत्यवक्तानाथ। जयसत्यवपुहमआपहीतेसत्यसत्यसनाथ॥ २६॥
यहजगततरुआधारप्रकृतित्रिमूलहैंगुणतीन। फलयुगलसुखदुखधर्मआदिकचारिरसमहँभीन॥
हैपंचप्राणहुपाँचअंकुरऊर्मिपटपटभाव। हैंसातधातुहुसातत्वचनवछिद्रकोटरगाव॥
मनबुद्धिअरुअहंकारपाँचहुभूतआठहुँशाख। दशइंद्रिपल्लवईशजीवहुयुगलखगश्रुतिभाख॥ २७॥
ऐसेजगततरुआपकारणहरहुपालहुनित्य। तुमसोंजगतकोभिन्नमानहिंज्ञाननहिंतिनचित्य॥
ज्ञानीगुणहिंआधारतुमहौजगतकेभगवान॥ २८॥ जगकरनमंगलहेतुधारहुसत्त्वरूपअमान॥
संतनसुखददुष्टनदुखदहौरावरेकेरूप॥ २९॥ अरविंदनैनप्रकाशऐनविराजपरमअनूप॥
तुवदासकोसतसंगकरितुवचरणप्रेमजहाज। चढ़ितुरतगोपदसरिसयहसंसारसिंधुदराज॥ ३०॥
संसारसागरतरणकोप्रभुऔरनाहिंउपाय। तरिगेतरततरिहैंसकलतुवचरणचित्तलगाय॥ ३१॥

कवित्त–दानीऔरज्ञानीऔरध्यानीतपठानीबड़े, जगकेगलानीनिरवानीकेमनैयाहैं।
धर्मीऔरकर्मीऔरशर्मीवाडेमर्मीविन, तजेधनगर्वीजन्मीसुकुलखडैयाहैं॥
रघुराजयद्यपिअनेकविधिऐसेभये, करतविवादवादजन्मवितवैयाहैं।
रामरावरेकेपदप्रेमकोनकीन्ह्योपान, चढेअतिऊँचेपदतुरंतगिरैयाहैं॥
कोईभेअचारीकोईधर्मधुरधारीध्रुव, कोईउपकारीबड़ेकोईनिर्विकारीहैं।
कोईबड़ेपंडितविरागतेनखंडितअ, दंडितअवनिमेंउदंडितविचारीहैं॥
कोईपटशास्त्रपढ़ेवादऔविवादवढे, कोईकुलकाव्यगढेदयामढेभारीहैं।

छाकेनाहिंसीकेपीकेप्रेमरसपीकेनीके, कहाकियेजीकेजीकेफीकेसुखकारीहैं ॥ ३२ ॥
माधवजेरावरेकेदासहैंअनोखेचोखेधोखे, हूँसुपंथतेनगिरतलखेपरें ॥
प्रभुपदपंकजसुप्रेमकीजँजीरेंडारि, कोठरीहियेमेंराखिनिजवशमेंकरें ।
रघुराजरक्षितरमेशबाहुदंडतेहु, मेशदेअदंडयमदंडकोनहींडरें ॥
भैरोंऔभवानिनकेशीशनमेंपाँवदेदे, निरभैसदाहींजगमाहींसुखिसंचरें ॥ ३३ ॥
शुद्धसतोगुणआपनोरूपहितेजगमंगलकेतुमधारो ।
ताकहँवेद्यसमाधिक्रियातपयोगतेपूजतआश्रमचारो ॥
जोप्रगटोअसरूपनकेसबहोइविनाशविश्वासतिहारो ।
कैअतिमानुपकर्महरेरघुराजहरोअवनीकरभारो ॥ ३४ ॥ ३५ ॥
नामऔरूपहुधामऔलीलासकैगनिनाजोअनंतगनैया ।
पैतिहरेपदपूरणप्रेमिलखैनितहींहियध्यानधरैया ॥ ३६ ॥
जेअरपैंसबकर्मतुम्हैंअरुऔरेनकेउपदेशदेवैया ।
तेनहिंआवतहैंजगमेंजेतिहारीकथाकेकहैयासुनैया ॥ ३७ ॥
पुरुषोत्तमकोपदहैपुहुमीअवताकरभारटरोसिगरो ॥
धनिभागहैरावरेपाँयनसोंयहअंकितह्वैहैथरोईथरो ॥ ३८ ॥
अवतारहैआपकोलीलाहितेकहैधर्मअधीनसोमूढ़खरो ।
जनजेतुम्हैंजानेवनोतिनकोतुम्हैंजानेनहींतिनकोविगरो ॥ ३९ ॥
मीनहयग्रीवअरुकच्छपवराहनर, सिंहअरुवामनहूँहंसभृगुरामहौ ।
कौशलाकुमारआदिलैकैअवतारटारयो, भूरिभूमिभाररखवारतीनोंधामहौ ।
रघुराजतैसहीकृपाकोकैकैदेवनपै, ह्वैकैवसुदेवकेदुलारेअभिरामहौ ॥
भूपदैत्यअंशनविध्वंसिबलरामसँग, होहुयदुराजहैप्रणामघनश्यामहौ ॥ ४० ॥
फेरिदेवकीसोंसबैदेवअसबोलेबैन, परमपुरुषजाकोधामहैअशोकको ।
जगतनिवाससोनिवासकीन्ह्योंतेरेकुक्षि, त्रासनाशिवेकोसबदेवनकेथोकको ॥
जगतजनकजननीतूधन्यरघुराज, कंसकालनिकटनकामकछुशोकको ।
यदुकुलपालकअरीनकुलघालकसो, ह्वैहैंतुववालकजोमालिकत्रिलोकको ॥ ४१ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—यहिविधिअस्तुतिकरतभे, जहँलोंजान्योभेव ॥ निजनिजभवननगवँनकिय, ब्रह्मशिवादिकदेव ॥ ४२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—परमसुहावनकालजब, पुनिआयोमहिपाल ॥ छायरह्योत्रैलोकमें, आनँदआशुविशाल ॥
लाग्योभादवमाससुहावन । ग्रहनक्षत्रशांतसुखछावन ॥ १ ॥ परमप्रसन्नभईसबआशा । भयोगगनमहँअमलप्रकाशा ॥
निरमलभयेनछत्रहुतारा । मंगलदायिनिमहीअपारा ॥ पुरआकरऔरहुव्रजगामा । उपज्योआनँदठामहिठामा ॥

बहेंनदीनिर्मलजलधारा । विकसेसरनसरोजअपारा ॥ काननकलरवकियेविहंगा । तरुराजीफूलीबहुरंगा ॥ ३ ॥
शीतलमंदसुगंधसमीरा । बहनलग्योनाशकसबपीरा॥ विप्रनकेरिहोमशिखिज्वाला । प्रगटीदहिनावर्त्तविशाला॥४॥
दोहा-सबसाधुनकेजगतमें, भेप्रसन्नमनभूरि ॥ नभमंडलमेंदेवसब, दुंदुभिधुनिदियपूरि ॥ ५ ॥
गावहिंबहुकिन्नरगंधर्वा । कियअस्तुतिसिधचारणसर्वा ॥ विद्याधरीअप्सरानाना । नाचनलगींकरतकलगाना ॥६॥
नभतेबरषहिंसुरसुनिफूला । जानिमहामुदमंगलमूला ॥ सागरउपरउपरसंचरहीं । मंदमंदधुनिजलधरकरहीं ॥ ७॥
रहेसूरजबासिंहहिंरासी । भादौंकृष्णपक्षसुखरासी ॥ नखतरोहिणीअतिसुखदाई । तिथिअष्टमीलगनसोसुहाई ॥
रह्योअनूपमसोबुधवारा । पूरवदिशिशशिभासपसारा ॥ अर्धरातजबभेकुरुराई । देवकितेप्रगटेयदुराई ॥
दोहा-जैसेनृपपूरबदिशा, प्रगटेपूरणचंद ॥ तिमिप्रगटतिभेदेवकी, यदुकुलआनँदकंद ॥ ८ ॥
छंदमनोहरा-सरसिजयुगनैनासुखमाऐनादायकचैनाअनियारे, कछुअरुणारे ।
भुजचारिविशालाउरबनमालामणिहुँरसालाकरधारे, आयुधचारे ॥
श्रीवत्सलखामाजलधरश्यामातनअभिरामादुखभारे, नाशनहारे ।
मणिमुकुटविराजेकुंडलभ्राजेअलकसमाजेमददहारे, अहिसुतकारे ॥
पटपीतसुहावनताडितलजावनमुनिमनभावनछविरासी,-॥९॥-कटिचौरासी ।
कंकनकरमाहींअतिहिंसोहाहींअरुभुजपाहींछबिबासी, अंगदभासी ॥
मंजुलमंजीराजडितसुहीराछविगंभीरापदवासी, जेसमकासी ।
सोहतनखश्रेणीमुनिमुददेनीशशिछविलेनीअघनासी, सुरसरितासी ॥ १० ॥
दोहा-हेअभिमन्युकुमारनृप, सोसूतिकाअगार । हरिप्रकाशसोंपूरिगो, रहिनगयोअँधियार ॥
छंदचौपैया-लखिकेअसबालकत्रिभुवनपालकश्रीवसुदेवतहाँहीं॥दृगनीरबहायोआनँदपायोकढ्योवचनमुखनाहीं ॥
गुनिहरिअवतारापरमउदारासोअपनेमनमाहीं । गोदसैहजारादियइकबारामोदितविप्रनकाँहीं ॥ ११ ॥
पुनिधारिउरधीराबुद्धिगँभीराचरणनमेंशिरनाई । पंकजकरजोरीबहुतनिहोरीचरणनचित्तलगाई ॥
करिरखसमदुंदुभिआनकदुंदुभिकंसविभीतविहाई।गुनिहरिपरभाऊमृदुलसुभाऊअस्तुतियहमुखगाई॥१२॥

वसुदेव उवाच ।

दोहा-अहोप्रकृतिपरनाथतुम, जानतहैंसबकोय ॥ सदासच्चिदानंदवपु, बुद्धिप्रकाशकसोय ॥ १३ ॥
प्रथमप्रकृतिनिजजगतरचि, यद्यपितेहिंनिविष्ट ॥ तद्यपितुमदेखेपरौ, मानहुँअहहुप्रविष्ट ॥ १४ ॥
जैसेमहदादिकसबै, करहिंजगतनिरमान ॥१५॥ हैंप्रथमहिंतेताहिते, लीननलीनसमान ॥ १६ ॥
ज्ञानग्राह्यरूपादियुत, यद्यपिरहेमुरारि । जसरूपादिकलखिपरैं, तसनहिंपरोनिहारि ॥
सबथलव्यापीहौसदा, नहिंआवरणतुम्हार ॥ १७ ॥ तुमसोंभिन्नजोजगलखे, सोमतिमंदअपार ॥
जोकोउकरतविचारभल, तौयहजगतसदाहिं । तुमतेभिन्नतौहैनहीं, भिन्नलखैकेहिकाहिं ॥ १८ ॥
उतपतिअरुपालनहरन, जगकोहेतुवहाथ । अगुनौअमलअनीहतुम, परब्रह्महोनाथ ॥
तुवअधीनयहप्रकृतिजो, करैसकलजगकाज । तातेकरतातुमहिंहौ, भाषहिंवेदसमाज ॥ १९ ॥
तमगुणधरिनाशहुजगत, त्रैगुणईशमुरारि । सतगुणधरिपालनकरहु, उतपतिरजगुणधारि ॥ २० ॥
रक्षणहितयहधरणिके, ममगृहलियअवतार ।मारिअसुरअंशीनृपन, हरिहौभूकरभार ॥ २१ ॥
हेप्रभुपापीकंसवह, मारयोतवशठभ्रात । तुवउतपतिसुनिअस्त्रगहि, ऐहैतुलअनखात ॥ २२ ॥

शुक उवाच ।

सोरठा-त्रिभुवनधनीकुमार, अपनोलखिकेदेवकी । अस्तुतिकरीउदार, मंदविहँसितजिकंसभय ॥ २३ ॥

देवक्युवाच।

कवित्त—आदिहैअव्यक्तपरब्रह्मपरकाशमान, निर्विकारसत्तामात्रदिव्यगुणरासीरूप।
निर्विशेषऔनिरीहज्ञानदीपआपहीहौ, अधमउधारेजेपरेरहेभवांधकूप ॥ २४ ॥
विधिहुनसततवपाँचौभूतजाइमिले, महत्तत्त्वहीमेंसोउमिलतप्रकृतयूप ॥
प्रकृतिविलीनहोतआपहीमेंरघुराज, तवरहिजातप्रभुएकआपहीअनूप ॥ २५ ॥
हैंनिमेषजाकेआदिसंवतहैजाकेअंत, जातेविश्वरचनामहानजौनकालहै ॥
सोहैरावरेकीलीलाभाषेंअसचारोंवेद, अभैप्रदआपपदप्रणतिविशालहै ॥ २६ ॥
कालव्यालभीतितेपलातसवठौरप्राणी, कवहूँनपावैत्राणरहतविहालहै ॥
भागवशगिरतजोशरणतिहारेआय, ताहीसमैताकोछूटिजातजगजालहै ॥ २७ ॥

दोहा—हेकृपालअवकंसकृत, हरहुहमारीभीति। अभयदानदीनोजनन, यहैरावरीरीति ॥ २८ ॥

डरहिंकंसतेंहमभगवाना। सोशठराखतवैरमहाना ॥ मोतेप्रगटवनाथतिहारो। जानैकंसनपापअगारो ॥
जोजानिहैदुष्टयहभेदू। तौमोकहँदैहैखलखेदू ॥ तुमकोकछूनअहैछपाना। सवथलव्यापीहोभगवाना ॥ २९
गदाचक्रदरअंबुजधारी। चारिवाहुशोभाअतिभारी ॥ यहअद्भुतहैरूपतिहारो। योगीगणतेहिंध्यानहिंधा
सोमोपरकरिकृपामहाई। लेहुनाथअवआशुछिपाई॥ ३० ॥ प्रलयअंतमहँरचिसंसारा।राखहुनिजतनुयुतवि

दोहा—सोप्रभुमेरेउदरते, प्रगटभयेसुरवर्ज। हैयहलीलाआपकी, पैमोहिंलगतअवर्ज ॥ ३१ ॥

सुनिदेवकिकीगिरादुखारी। वोलतभेकरिकृपामुरारी ॥

श्रीभगवानुवाच।

स्वायंभूमन्वंतरमाहीं। पृश्निनामतेरहीतहाँहीं ॥ सुतपानामप्रजापतिजोई। तेरोकंतरह्योतवसोई ॥ ३२ ॥
तुमदोउनकहँतहँकरतारा। सृष्टिकरनहितवचनउचारा॥इंद्रीजितह्वैतुमवनजाई। कीन्ह्योदंपतितपमनलाई ॥
आतपवातवारिहिमसहेऊ।श्वासरोकिदारुणव्रतगहेऊ ॥३४॥ कहुँसूखैपत्रनकोखाई।कवहुँवातभखिकालवित
ह्वैकैअमलचित्ततुमदोई। मोहिंआराधनकियमुदमोई ॥ ३५ ॥

दोहा—ऐसोतपकरिमोहिंसों, चह्योलेनवरदान। यहिविधिवीतेचारियुग, करतकलेशमहान ॥ ३६ ॥

लखिकैअतितपकठिनतिहारो।अतिकोमलदिलद्रयोहमारो॥तपश्रद्धाअरुभक्तितिहारी।भयमममनप्रसन्नताका
तवमैंतुवसमीपमहँआई। वरमाँगहुअसगिरासुनाई ॥ ३८ ॥ कवहूँसुखभोग्योतुमनाहीं।
यहितेमुक्तिनमोसनयाची। सुरमायामेंतुवमतिराची॥माँग्योतुमसुतमोहिंसमाना।औरहुभोगविलासहुनाना ॥
मैंतुम्हरीकरिपूरणआसा। पुनिगमन्योआपनैनिवासा॥४०॥पैअपनेसमदुतियनदेखी।अपनोवचनविचारिविशे
भयोपुत्रमैंजायतिहारो। पृश्निगर्भभोनामहमारो ॥ ४१ ॥

दोहा—अदितिकश्यपहुतुमभये, दुसरेजन्महिमाहिं। हमवामनतवसुतभये, नामउपेंद्रतहाँहिं ॥ ४२ ॥

अवतीसरेजन्मअसमानो। सोकश्यपवसुदेवहिजानो ॥ अदितिअहौतुमदेवकिमाई। तातेमैंप्रगट्योइतआई॥४
सोइसुरतिकरावनहेतू। मैंप्रगट्योवपुप्रभानिकेतू ॥ जोप्रगटतोवालवपुधारी। तौनतुम्हेंसुधिहोतिहमारी ॥ ४
पुत्रभावकरिमोकहँध्यावहु।कहुँकहुँब्रह्महुँभावलगावहु॥यहिविधिकरिमोमहँअतिनेहू।जैहौअवशिअंतममगेहू॥४
जोकंसहितेअतिहिडेराहू। तौमोहिंगोकुलकोलैजाहू ॥ यशुदाअंकमोहिंधरिदीजे। तासुसुतातुरतहिलैलीजे।
सोदेवकिकहँदीजोआई। यहप्रसंगनहिंपरिहिजनाई ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—मौनभयेवसुदेवसों, असकहिकृपानिधान। पितुमाताकेलखतहीं, भेवालकभगवान ॥ ४६ ॥

लह्योमोदवसुदेवघनेरो। यहिविधिलखिचरित्रहरिकेरो॥ हरिकेवचनमानितेहिंकाले। पारिसूयमहँतुरतहिंवाले॥ सोशिरधरिवसुदेवसुजाना। सूतीगृहतेकियोपयाना॥उतगोकुलनंदहिंकीजाया। प्रगटतभैनिशिमेंहरिमाया॥४७॥ इतआनकदुंदुभिमनमाँहीं। शंकाकियकिमिगोकुलजाहीं॥ अहैंवंदसातहुँदरवाजा। जागहिंचौकीदारदराजा॥ चरणनवेरीपरीहमारे। ताहूपरवरसैंघनकारे॥ तहाँयोगमायाहरिकेरी। कीन्हींअसगतिभईनदेरी॥ आपुहिआपुखुलीपगवेरी। भईद्वारपननींदघनेरी॥

दोहा—जकरेलोहिजँजीरसे, रहेजेवंदकेंवार॥ ४८॥ आवतहींवसुदेवके, खुलिगेसातहुँद्वार॥

जिमिरविउदैनशतअँधियारा। तिमिहरिआगमखुलेकेंवारा॥ पुरबाहरकढ़िगेवसुदेऊ।जानिपरयोतिनकोनहिंभेऊ॥ गरजिगरजिबरसैंघनघोरा। अंधकारभारीचहुँओरा॥ सूझतमारगहैकछुनाहीं। वारिधारधावतिचहुँधाँहीं॥ आगेआगेदमकतिदामिनि। मनहुँपंथदेखरावतियामिनि॥ आनकदुंदुभिपीछेभूपा। कियेऊँचफनसहसअनूपा॥ छत्रसरिसवारतजलधारे। मंदमंदमगशेषसिधारे॥ ४९॥ महावृष्टिजलधारनपाई। कालिंदीअतिशयबढ़िआई॥

दोहा—उठतींतुंगतरंगबहु, होतघर्घराशोर। भूरिभयानकभँवरबहु, भ्रमतवहतजलजोर॥

आनकदुंदुभियमुनातीरा। जायजोहिमेंपरमअधीरा॥ खड़ेतीरमहँकरतविचारा। केहिविधिजाँइयमुनकेपारा॥ हरिवचनहिंपुनिकरिविश्वासा।हिलेनीरमहँतजिसबत्रासा॥जसजसआनकदुंदुभिजाँहीं॥मिलतथाहथलयमुनामाहीं॥ दोहुँदिशियमुनधारकढिजाती॥तासुचरणछ्वैनहिंअधिकाती॥जिमिरघुपतिहितसागरभूपा॥दीन्ह्योंमारगपरमअनूपा॥ तिमिवसुदेवहिसरितकलिंदी। मारगदीन्होंपरमअनंदी॥५०॥ गेवसुदेवयमुनकेपारा। गोकुलपहुँचेनंदअगारा॥

दोहा—रहेनींदवशगोपसब, खुलिगेद्वारकेंवार। जहाँयशोदासोवती, तहँगेशूरकुमार॥

निजबालकधरियशुमतिसेजू। सुताउठाइलियोअतितेजू॥ सोइसूपमहँधरिवसुदेवा। लैगवनेकोउजाननभेवा॥ तेहिविधिउतरियमुनपुनिआये॥हरिचरणनमहँचित्तलगाये॥आयआशुअपनेगृहमाहीं ५१ दईदारिकादेवकिकाँहीं॥ तबजसपूरवसातहुद्वारा। वंदरहेतसलगेकेंवारा॥ पुनिवसुदेवपगनमहँवेरी। परतभईलागीनहिंदेरी॥ कहाँकहाँकरिधुनिवड़भागी। दुहितातहँपुनिरोवनलागी॥५२॥उतैयशोदागोकुलमाहीं॥सेजहिंसोवतहुतीतहाँहीं॥

दोहा—जान्योमेरेउदरते, एकभयोहैवार। निद्रावशजान्योनहीं, दुहिताकिधौंकुमार॥ ५३॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजावान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे तृतीयस्तरंगः॥ ३॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—रहेवंदजसप्रथमहीं, भीतरबाहरद्वार। तैसहिजबह्वैजातभे, तबजागेरखवार॥

तबवसुदेवहिंभौनमझारी। कहाँकहाँअसगिरापुकारी॥ रोवनलागीनंदकुमारी। तबजेकरतरहेरखवारी॥ वालकधुनिसुनिउठेतुरंते। गुनिशिशुकरनहारनृपअंते॥ सिगरेअर्धनिशामहँधाई। भोजराजकेद्वारेआई॥ एकहिंवारहिंकियेपुकारा। देवकिअठयोंजन्योकुमारा॥१॥जाकोशोचतनिशिदिनजाहीं॥लहीनींदनहिंनैननमाहीं। सोदेवकिअवजन्योकुमारा। करहुनाथजोहोयविचारा॥ २॥ सुनिकैकंसभटनकीवानी॥उठ्योसेजतेअतिदुखमानी॥

दोहा—ह्वैकैअतिशयविकलतहँ, मीचजानिविशवीश। दौरयोसूतीभवनको, पागहुधरयोनशीश॥

खुलेकेशपगलटपटपरई। गेहकृपाणधीरनहिंधरई॥ सूतीभवनकंसद्रुतआयो। दुहितादेखिदीहदुखपायो॥ ३॥ दीनदेवकीवचनहुँदीना। पाणिजोरिकंसहिकहिदीना॥ भगिनिसुतायहभाँजतिहारी॥नहिंमारहुदायाउरधारी॥४॥ पटभाईयाकेतुममारे। रहेसकलजेसुछविअगारे॥ यहपुत्रिकादेहुमोहिंभ्राता। यातेतुमहिंभीतिनहिंताता॥ ५॥ मैंलघुभगिनीअहौंतिहारी। मेरेपुत्रगयेपटमारी॥ एकसुतातोदीजेमोहीं। दायदयानहिंलागततोहीं॥ ६॥

सुतमुखलखिअसआनँदआयो। जनुनिरधनीदेवतरुपायो ॥ रोवनलगेतहाँनँदलाला। सोसुनिजागेगोपीग्वाला॥ गायेनंदमहलमहँधाई। लखिसुतमणिगणदियेलुटाई ॥ नंदनिकरिपुनिवाहेरआये। सुखदसुगंधितनीरनहाये॥

दोहा—युगलपीतपटधारितन, भूषणपहिरिअमोल ॥ बोलवायोउपरोहितन, जिनकेज्ञानअडोल ॥ १ ॥

उपरोहितसुनिजनमकुमारा। आयेआशुनंदकेद्वारा ॥ तिनकोलैनँदभीतरआये। मंगलहेतुवेदपढवाये॥ जातकर्महुँसविधिकराये। पितरदेवतनवहुपुजवाये॥२॥सुवरणशृंगरूपखुरजिनके। परीपीठपामरिसवहिनके॥ असमुरभीद्वैलाखमँगाई। वछरासहितक्षीरवहुदाई ॥ विप्रनवोलिपूजिपदसादर। दीन्हेंनंदमगनसुखसागर॥ पुनितिलपरवतसातवनाई। थलथलमणिगणदियसजवाई ॥ तामेंदियोलपेटिदुशाले। रचेकनककेशृंगविशाले॥ ऐसेपरवतविप्रनदीन्हें। औरहुदानविविधविधिकीन्हें ॥ ३ ॥

दोहा—होततोपतेशुद्धमन, भूमिकालतेपूत ॥ मज्जनतेतनुहोतशुचि, धोयेवस्तुअपूत ॥
होतयज्ञकरिविप्रशुचि, जीवआतमहिंज्ञान। संसकारतेगर्भशुचि, धनपवित्रकरिदान ॥ ४ ॥

तातेनंददियेबहुदाना। भयेअयाचकयाचकनाना ॥ देहिंनंदकहँविप्रअशीसा। जियेकुँवरतुवकोटिवरीसा॥ मागधसूतऔरबहुवंदी। आयेनंदहिंद्वारअनंदी ॥ भोसंघर्षनंदकेद्वारा। गोपलुटावहिंमणिभरिथारा॥ गावहिंगायकमंगलगीता। वजाहिंनगारेपरमपुनीता ॥ नौवतिवाजहिंद्वारहिंद्वारा। जैजैकरहिंगोपबहुवारा ॥ ५ ॥ सींचीगलीसुगंधितनीरा। जहँतहँधावहिंमुदितअहीरा ॥ द्वारनद्वारनवंदनवारे। फूलबिछेअंगननिअपारे॥

दोहा—लाखनगोपनगेहमें, भीतरवाहेरभूप ॥ बिछेविछौनारेशमी, सींचेअँतरअनूप ॥

कनकदंडमणिजटितअपारे।बँधेलसतजेऊँचअगारे ॥ तिनमेंपँचरँगफहरिपताके। सोहतमनुरोकतरविचाके॥ चौकनचौकनतनीचाँदनी। तिनकेनीचेविछीचाँदनी ॥ मोतिनकीझालरिझुकिझूलें। रतननिकरछरपरमअतूलें॥ कदलीखंभगडेसबठोरा। दीपावलिजगमगचहुँओरा॥६॥धेनुवृषभवछराअरुवाछी। सोहहिंपीठिझूलतिनआछी॥ केसरहरदअतरमहँवोरी। धरिगेयनवछरावरजोरी ॥ रँगहिंगोपतिनकोनिजहाथा। लालमालबाँधहिंतिनमाथा॥ गेरेपुरटपनवापहिराये। खरिकहिमहँसवखड़ेकराये ॥ ७ ॥

दोहा—गोपकहहिंइकएकसों, व्रजउमग्योआनंद ॥ नंदमहरकेमहलमें, जन्योयशोमतिनंद ॥

सुनिसुनियुवावृद्धगोपाला।पहिरिपहिरिमणिमोतिनमाला।बाँधिबाँधिशिरपागललामा।पहिरिपहिरिजरकसकेजामा॥ कसिकसिकटिपटछोरनछोरे।भरिभरिथारनरतनअथोरे ॥ जोरिजोरिनिजनिजहिसमाजे।चोपिचोपिव्रजवावतवाजे॥ पगपगमणिनलुटावतदीनन। चलेगोपकोउआनँदहीनन ॥ नंदरायकेनिकटहिआई। देहिंसबैसुतजनमबधाई॥ कहहिंकनहुँअससुखनहिंभयऊ।जसयहकुँवरजनममुदभयऊ।कोउपुनिकुँवरहिंदेखनजाहीं।मणिननिछावरिकरतलजाहीं॥ कोउभीतरतेवाहेरआवें। निजहाथनदुंदुभीवजावें ॥ ८ ॥

दोहा—जहँतहँधावहिंगोपिका, इकइककहँहिंपुकारि ॥ येरीयशुमतिसुतजन्यो, लेरीजायनिहारि ॥

जिनगोपिनकेदूरिनिवासा। तेउसुनिनंदनिवासहुलासा ॥ व्रजयुवतीजुरियमुननहाई। भूषणभूपितअंगवनाई॥ केसरतनुअँगरागलगाई। अंजनखंजननैननिलाई ॥ सारीपहिरिसवैजरतारी। रतनभरितथारसँवारी ॥ ९ ॥ कनकथारभरिमणिसमुदाई।निजनिजढोटनसंगलेवाई॥कोउकोउकनककलशधरिशीशा। देननंदकहँदूबमहीशा॥ चलींसकलसानिसनिव्रजगोरी। कृष्णजनमआनँदरसबोरी ॥ महामनोहरसोहरशोरा। छायरह्योव्रजमेंचहुँओरा॥ चमकहिंनपटकपोलनकुंडल। छविसरमनुमरालकेमंडल ॥

दोहा—अधरामृतमकरंदजिन, फैलतिविपुलसुवास ॥ विकसितवारिजवृंदसे, गोपिनवदनविलास ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

राँहशीशतेंकुसुमचमेली। मनुव्रजमहिपूजाँहव्रजेहेली॥ पन्ननलालनहीरनहारे। चंचलचहुँकितपरहिँनिहारे॥
नुहरिजनमजानिसुखपाई। धारत्रिवेणिनबहुचलिआई॥ आईनंदमहलमहँगोपीं। नंदकुँवरदेखनचितचोपीं॥
ईदूवव्रजनाथहाथमें। पुनिगावतसवएकसाथमें॥ ११॥

दोहा–गईयशोमतिभवनमें, कहहिँकुँवरदेखराउ। थकींमनायमनायहरि, तवयहभयोउराउ॥

शुमतिलियेगोदनिजवालक। जोतीनहुँलोकनकोपालक॥धारहिँसबकेगोदयशोदा। कहहिँपुण्यतुवभोयहमोदा॥
ालकनिरखिसबैव्रजनारीं। मणिगणवारितनुहुँमनवारी॥ सबैअशीशहिँलेहिँवलैया। जियेवहुतदिनकुँवरकन्हैया॥
ुखचूमहिँहियलेहिँलगाई। कहहिँधन्यतेंयशुमतिमाई॥ कोउभीतरतेबाहेरआवैं। कोउबाहेरतेंभीतरजावैं॥
ोउआँगनमहँनाचतगावैं। कोउयकएकनटेरिसुनावैं॥ कोउसखिधनलैबाहेरआई। देहिँलुटायलेहिँपुनिजाई॥

दोहा–जेयाचकधनलूटहीं, तेऊदेहिँलुटाय॥ खानपानतनुभानको, दीन्हींसबैभुलाय॥

कनकरजतकेकलशहजारन। तैसहिँकुंभहुँऔरहुथारन॥ भरिभरिदहीघृतहुअरुक्षीरा। औरहुसुखदसुगंधितनीरा॥
केसरहरदऔरकस्तूरी। अँतरनकुंभदियोभरिपूरी॥ लैपिचकीगोपीअरुग्वाला। गावतमुखजैजैनँदलाला॥
डारहिँइकइकपेदधिक्षीरा। नँदआँगनभैजनकीभीरा॥ ग्वालिनभरिगुलालकीझोरी। गोपनपकरिमलहिँमुखरोरी॥
गोपहुअतरनसोंनहवावैं। कहुँदुरिजाहिँकहूँपुनिआवैं॥ दैदैतारीगावहिँगारी। भरिसुरंगमारहिँपिचकारी॥

दोहा–अवरखऔरगुलालतहँ, गयोव्योममहँछाय॥ मानहुँसंध्याकालमें, प्रगटीउडुसमुदाय॥ १२॥

बाजहिँतालपखाउजवीणा। नाचहिँबहुव्रजबालप्रवीणा॥ माखनमेलहिँहाथउठाई। हँसहिँगोपअंचलउड़िजाई॥
कोउगोपीगोपनकहँधरिकै। हरहिँवसनमाखनमुखभरिकै॥ सारीअरुलहँगेपहिराई। देहिँनारिकोवेपबनाई॥
पुनितारीदैहँसैंठठाई। कहहिँनईदुलहीबनिआई॥ १३॥ गोपहुकुंडदूधदधिकेरे। बोरहिँगोपिनधाइघनेरे॥
लहिदधिदूधधीरसुखभरिता। भैयमुनापयस्त्रवणीसरिता॥देखहिँसुरसबचढ़ेविमाना। कहहिँननंदसरिसजगआना॥

दोहा–धनिव्रजकेखगधनिमृगा, धनितरुधनिव्रजभूमि॥ धनिधनिगोपीग्वालजे, निरखहिँहरिमुखचूमि॥

कहूँगोपगोपीमिलिजाहीं। मेलिगुलालफेरिविलगाहीं॥ होतीकहुँअवीरअँधियारी। भूलेफिरहिँगोपव्रजनारी॥
पायदूधदधिकीअधिकाई। पुनितमारिकहुँपरहिँदेखाई॥झिलिझिलिझिकहिरोरिनझोरी॥चपलासीचमकैंव्रजगोरी॥
बाजिरहीचहुँओरवधाई। प्रगटेनंदनिवासकन्हाई॥ लपटतटूटहिमोतिनमाला। मनुतारागणझरहिँविशाला॥
रह्योनतनुसँभारतेहिँकाला। सुखमुदमोदितग्वालिगुवाला॥ कोउहरिकोलखिबाहिरआवैंमैंदेख्योअससबनिसुनावैं

दोहा–दधिकाँदोतहँअसमच्यो, ठौरठौरमहिपाल॥ कियगुलालसोंलालव्रज, जुरिजुरिगोपीग्वाल॥

बहतिदूधधारायमुनामें। छायगयोगुलालपुनितामें॥ मनुहरिजनमजानिसुखश्रेणी। प्रगटीव्रजमेंआयत्रिवेणी॥
खेलतदधिकंदोकुरुराऊ। होतनकोहुकेनेकअघाऊ॥ जेदूरीतेदेखनआवैं। तेउमुदमानितहँमिलिजावैं॥
यकएकनकोसिखवतजाहीं। खेलहुअवैजाहुघरनाहीं॥ असप्रमोदपुनिकवहुँनपैहो। यदपिभागवशइंद्रहुह्वैहो॥
बछराबृषभऔरव्रजगैयाँ। कूदहिँतेउजनुदोहिवधैयाँ॥ कूदिपरहिँरंगनकेकुंडन। धावहिँगेचहूँकितझुंडन॥

दोहा–बछरनदूधपियायवो, तृणचरिवोतेहिँकाल॥ भूलिगयोगोगणहुँको, भयेनंदकोटाल॥

यहिविधिपहरद्वैकदिनवीत्यो।दधिकाँदोंसोकोउनहिँरीत्यो॥यद्यपियशुमतिवारनकरहीं। तदपिनवचनकानकोउधरहीं
पुनिसवगोपनगोपिनचोपिन। नंदबोलायोआभावेपिन॥ पृथकपृथकसवकोनहवाये।पृथकपृथकअँगरागलगाये॥
पृथकपृथकभूपणसजवाये। पृथकपृथकभोजनकरवाये॥ पृथकपृथकसबकोवैठाये। पृथकपृथकतांबूलखवाये॥
पृथकपृथकपुनिअँतरलगाये।पृथकपृथकसतकारकराये।पृथकपृथकजोजोजियकीन्हें।पृथकपृथकतिनकोनँददीन्हें

दोहा–पृथकपृथकसबसोंकरी, विनययुगलकरजोरि॥ भयोपुत्रतुवपुण्यते, यामेंकछुनाहिँमोरि॥

मागधबंदीसूतहुनाना। चारणसुकविसवैमतिवाना॥ गावहिँनंदसुयशसुखसारा। कहहिँजियहुबहुकालकु॥

सुनिसुनिनंदसुपूतसनेहीं । मनवांछिततिनकोधनदेहीं ॥ १५ ॥ सादरवहुविप्रनदैदाना । फेरिजेमावैंव्यंजननाना॥
देअशीशद्विजकहैंपुकारी । रक्षहुनंदकुमारमुरारी ॥ छायरह्योव्रजसवैदकारा । निकरिगयोनरनाथनकारा ॥
ठौरठौरवाजेवहुवाजैं । जिनरवसुनिजलधरगणलाजैं ॥ नंदविभौलखिदेवासिहाँहीं । कहहिंसुन्योदेख्योअसनाहीं ॥

दोहा—जाकोललकतलखनको, विधिशिवसुरनसमाज ॥ सोयशुदाकीगोदमें, विलसतवालकआज ॥ १६ ॥

ह्वैसवसुरनारिव्रजनारी । देवहुसकलगोपवपुधारी ॥ प्रविसहियशुदामंदिरमाहीं । हरिदरशनकरिघुनिदिविजाहीं ॥
तहाँरोहिणीअतिसुखपाई । मज्जनकरिअँगरागलगाई ॥ भूपणवसनपहिरिछविवारे । अरुसोरहूसिंगारसिंगारे ॥
कनकथारभरिरतनअपारा।जननलुटावतिवारहिंवारा॥आनँदउमगीफिरतिभवनमें। करतकाजनहिंथकतिगवनमें॥
दियोरामकीसुधिविसराई । जनुजनम्योआपुहींकन्हाई ॥ यशुदातेदूनोसुखताको । यहीरीतिनिर्मलमनजाको ॥

दोहा—जोहिरोहिणीकीदशा, नंदअनंदअपार ॥ वारहिंवारसराहिकै, करहिंतासुसतकार ॥ १७ ॥

व्रजवासीद्रुतनिजघरजावैं । खेलनहेतखेलौनालावैं ॥ कोउफुलेहरावाँधहिंआई । कोऊधरहिंदिवारिसोहाई ॥
नंदकुँवरढिगकोउव्रजनारी । रक्षाकरहिंमंत्रपढ़िझारी ॥ कोऊनीलपटदेहिंओढ़ाई । कोउदिठौनादेहिंलगाई ॥
कोउवालकविलोकिनलिजाहीं।कहहिंहरपवाकीकछुनाहीं॥निगचारजसजाकहँयोगू । यशुमतिकरपावहिंतसलोगू ॥
सुनिसुनिसुतकीकलकिलकारी।यशुमतिसुखनहिंजायसम्हारी॥द्वारनद्वारनगृहगृहपाहीं ।अतिकसमसनिकसतपरिमाहीं

दोहा—कृष्णजनमव्रजकोहरप, नंदयशोमतिनेहुँ ॥ सहसहुमुखसवनहिंकहत, यकमुखकिमिकहिदेहुँ ॥

जवतेप्रगटेव्रजनँदलाला । तवतेनितनवमोदविशाला ॥ वसहिंऋद्धिसिधिव्रजथलथलमें।दूनदूनसुखभोपलपलमें ॥
करहिंकामनाजोइजोइजोई।तुरतहिंपावहिंसोइसोइसोई।रहीनकोहुकेकछुअभिलाखा।कछुसुखकोउचवाइनहिंराखा॥
जोधनइकइककेगृहमाहीं । सपनेहुधनदलख्योसोनाहीं ॥ नंदविभौलखिअतुलनरेशा । लजहिंसुरेशप्रजेशमहेशा ॥
कमलाकीकटाक्षकछुपाई । लहैंसकलसुरविभौवडाई ॥ सोकमलाव्रजमेंनितवागै । कोउनहिंतासुओरअनुरागै ॥

दोहा—अतुलविभौनँदरायको, कोकहिपावैपार । जहँप्रतिक्षत्रिभुवनधनी, आयलीनअवतार ॥ १८ ॥

कियोछठीवरहीनँदराई । सोआनंदसकैकोगाई ॥ यहिविधिवीतिगयोकछुकाला । तवगोपनकोवोलिउताला ॥
नंदसवनअसवैनसुनायो । करकोदिनकालअवआयो ॥ सोहमजेहैंमथुराहिंभाई । कंसहिंडाँड़देनअतुराई ॥
तुमरक्षेहुगोकुलसवभाँती । सावधानरहियोदिनराती॥असकहिमथुराहिंगयेव्रजेशा।कियेगोपजसनंदनिदेशा ॥१९॥
जायनंदकंसहिकरदीन्ह्यों । मथुरामेंडेराकहुँकीन्ह्यों ॥ सुनिवसुदेवनंदआगमनू । मान्योअमितमोदउसदमनू ।

दोहा—नंदहिपूँछतरेनमें, मानिकंसकोत्रास । जातभयेवसुदेवचलि, आशुहिंनंदनिवास ॥ २० ॥

वसुदेवहिंविलोकिव्रजराई । उठ्योआशुमनुसरवसुपाई ॥ प्रीतिसमेतसखाप्रियकाहीं। दोउभुजभरिलगायउरमाहीं
प्रेमविकलनैननजलछाये।मिलतनछूटेयामवितायो॥पुनिजसतसकेकछुटिगयेदोऊ।धनिधनिकहँदोहुँनसवकोऊ॥२१॥
पुनिआसनमहँवानिसुखदाई । आनकदुंदुभिकहँवैठाई ॥ करिसतकारसप्रीतिमहाई । पूँछ्योनंदसकलकुशलाई।
नवसुदेवहुगिरउचारी।दोउसुनकोसुधिकरतदुखारी ॥२२॥ भलोभईतुमकहँहमदेखे ।आजहिंमोदभूलसरलेखे।

दोहा—[illegible]मिरि, भयेवृद्धनँदराय । तवतुम्हरेसुतप्रगटभो, ईशकृपाअतिपाय ॥

[illegible]पुत्रनाना । तवदीन्ह्योंसुनरम्यानिवासा॥पायोमोदजरठपनमाहीं॥यातेअधिकजगतकछुनाहीं॥२३॥
[illegible]भगभाग । मिलेमनहुँपुनिभोअवनाग ॥ गहैकेदहमकंसअगारा । तातेदुर्लभदरशतिहारा ॥ २४॥
[illegible]॥विपुरहिमिलेहमनिनाहिंदेरी॥भागवशानामित्रमिलिजाहीं॥कहुँअभागवशपुनिविलगाहीं॥
[illegible]मिलनकहुँनिपुनगहनेर२५कहहुगऊहैंनिकजनिहारी।जिनकोपेवालकहितकारी।

दोहा—[illegible]दिसार । [illegible]सुखदयुत, तहँसवहैंसुखकारि ॥ २६ ॥

[illegible]नाना । [illegible]थाना॥तुमरोक्षितुमाननवालक। तुमहीहोनाकिअवपालक॥

मित्रहेतुजिनकोधनधर्मा। तिनहींकेसाँचेसवकर्मा॥ जिनकेंमित्ररहैंदुखमाहीं। तिनकेधर्महुँधनहुँवृथाहीं॥
सुनिवसुदेववचनव्रजराई। वोलतभयेमहादुखछाई ॥ २८॥

नंद उवाच।

गायेदेवकीपुत्रतिहारे। पापीकंसछहोंहनिडारे॥ रहीवाँचिदुहिताइकजोई। गगनपंथगमनतभैसोई॥ २९॥
भालपट्टजोलिखतविधाता। औरनहोतहोतसोइभ्राता॥
दोहा-जाकेमनमेंरहतहै, भागहिकेरविश्वास। सोकवहूँनाहिंहोततै, पावतसदाहुलास॥
सुनतनंदकेवचनसुहावन। वोलेआनकदुंदुभिपावन॥३०॥

वसुदेव उवाच।

करदेचुकेकंसकहँभाई। हमहूँकहँनिरखेसुखछाई॥ जाहुआशुमथुरातेताता। गोकुलमेंह्वैहेंउतपाता॥
इहाँवहुतदिनरहननलायक। साजहुसकलशकटव्रजनायक ॥३१॥

श्रीशुक उवाच।

आनकदुंदुभिकेसुनिवैना। पुनिपुनिमिलिढारतजलनैना। प्रेमविकलह्वैमाँगिविदाई। गोपनकोतुरतहिंवोलवाई॥
तिनमेंचाढिसवसाजलदाई। गोकुलकहँगवँनेव्रजराई ॥३२॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पंचमस्तरंगः॥ ५॥

श्रीशुक उवाच।

आनकदुंदुभिवचननकाँहीं। चिंताकरतचलेमगमाँहीं॥
दोहा-कह्योमितवसुदेवजो, मृषानह्वैहैसोय॥ गोकुलत्रातागोविंदे, औरनदूजोकोय॥ १॥
जादिनतेनिजभटनको, दीन्ह्योंकंसनिदेश॥ तादिनतेवालकहनत, विचरतभेसवदेश॥
रहीपूतनावालकघातिनि। मानोमहाकालकीनातिनि॥हनतशिशुनव्रजपुरअरुग्रामा॥विचरैकरतकंसकरकामा॥२॥
जहँहरिकथाहोतिकुरुराई। जहँहरिनामउचारसदाई॥ भूतपिशाचहुप्रेततहाँहीं। सकेंउपद्रवकरिकोउनाहीं॥
सोजहँहैंप्रतिक्षभगवाना। करैकोतहँउतपातमहाना॥ ३॥ पैइकसमैपूतनाघोरा। मनमेंकियोविचारकठोरा
मैंमारचोमहिशिशुनकरोरा। वाकीरहचोनंदकोछोरा॥ मारहुँताहिगोकुलैजाई। पैपरगटनहिंलगीउपाई॥
तातेकरिसुंदररतिरूपा। हनहुँनंदसुतपरमअनूपा॥
दोहा-असविचारितहँपूतना, धारिमनोहरवेस। मंदमंदकरिगजगवँन, गवँनीनंदनिवेस॥ ४॥
त्रिभंगीछंद-शिरसुमनचमेलीनारिनवेली। सुवरणवेलीसमभाई॥
अतिशयकटिखीनीकसिकिंकीनी। छलनप्रवीनीव्रजआई॥
तनुजरकसमारीघँघरभारी। मुखछविजियारीप्रघटिरही॥
युगअमलकपोलाकुंडललोला। परमअमोलाशोभसही॥
कुचसुवरणकुंभारंगकुसुंभा। जंघारंभासंभासे॥
उरमोतिनमालाहीरनजाला। लालविशालाअतिभासे॥
अलकैंमुखहलकैंअतिछविछलकैं। पराइनपलकैंजेहिंदेपी॥ ५॥

चहुँओरनिरखतीमोदवरपती। चित्तकरपतीछलवेपी॥
सिगरीव्रजनारीताहिनिहारी। रमाविचारीचकितरहीं॥
नहिंवारणकीन्हीजानहिंदीन्ही। छलयुतचीन्हीताहिनहीं॥
घरघरदृगफेरतनँदसुतहेरत। शिशुवधमेंरतमंदचली।
कहुँमृदुमुसकातीकहुँदुरिजाती। कहुँप्रगटातीगालिनगली॥ ६॥

दोहा–यहिविधितेंसोपूतना, नंदमहलमहँजाय॥ लखिशोभातहँठगिरही, निजकारजबिसराय॥
कंसनिदेशफेरिसुधिकरिके। पूँछ्योगोपिनसोंमुदभरिके॥ नंदलालकहँदेहुबताई। मैंआईइतदेनबधाई॥
लेहुँललकभरिलालखेलाई। बिनदेखेअबजायनजाई॥ असकहिभीतरचलीअशोकी। तासुप्रेमलखिकाहुनरोकी॥
पलनामाहिंपरेतेहिकाला। खेलतरहेनंदकेलाला॥ रहीनकोउतहँसखीसयानी। निजनिजकारजसबैलोभानी॥
लखिइकांतपूतनाविचारी।डारहुँआशुहिंबालकमारी॥भस्मछिपितजिमिपावकराशी।जान्योनहिंसोअसुरविनाशी॥
इतैउतैपूतनानिहारी। जबनहिंरोकीकोउव्रजनारी॥ जिमिसोवतकोरेअहिकाँहीं। गहैकुमतिगुनिगुनमनमाँहीं॥
लियोअंकतिमिहरिहिंउठाई।मुखचुम्बनकरिकछुकखेलाई॥ ८॥

दोहा–आवतलखिकैपूतने, कृष्णमंदमुसक्याय॥ मूँदिलियेदोऊदृगन, जानितासुचितभाय॥
बैठिगईपलनातरआई। लीन्ह्योंहरिकीरोगबलाई॥ मुखमंजुलउरअतिहिंकठोरा। भरेकुचनमहँविषअतिघोरा॥
मूँदीम्यानमनहुँतरवारी।जान्योछलनहिंहरिमहतारी॥लखिपूतनासुछविमनमोहिनि।चकितभईतहँयशुमतिरोहिनि॥
रहीदूरिरोक्योनहिंताको। जान्योकछुनकपटातिनताको॥ ९॥

दोहा–भरोघोरजिनमेंगरल, असआपनेउरोज॥ दूधपियावनमिसिधरयो, बालकवदनसरोज॥
कुचकरगाढ़ेगहिभगवाना। कीन्ह्योंप्राणसहितपैपाना॥भयेशिथिलताकेसबअंगा।भयोतासुसिगरोछलभंगा॥१०॥
व्याकुलभैतनसुरतिबिसारी। छोंडुछोंडुअसागिराउचारी॥ आँखनिकारिचरणकरपटकै। बारबारबालककहँझटकै॥
तनुतेबह्योप्रसेदअपारा। पुनिकीन्ह्योंअतिघोरचिकारा॥११॥घोरशोरताकोसुनिभारी। गिरेसकलव्रजकेनरनारी॥
उठेसकलअसकियेविचारा। वज्रपातधौंभयोहजारा॥ धरणिशैलसागरग्रहतारा। डोलिउठेसबएकहिबारा॥

दोहा–झनकारीतेहिंशब्दकी, छाईदशहुँदिशान॥ मानहुँएकहिंवारभो, चहुँकितशोरमहान॥ १२॥

छंदभुजंगप्रयात–गिरीबाहिरेपूतनाभागिआई। तज्योनाहिंताकेउरोजैकन्हाई॥
तहाँपूतनाकोभयोरूपभारी। भुजाकेशहूँकोपदौंकोपसारी॥
परीसोव्रजैमेंमहाभीतिकारी। गिरयोवृत्रज्योंवज्रलागेसुरारी॥ १३॥
पटेकोसकेह्वैगयेवृक्षचूरा। रह्योपूरिआकाशलोंधुंधधूरा॥ १४॥
रहीतासुडाढ़ैहलैकेसमाना। दरीतुल्यनासागुहातुल्यकाना॥
उरोजेउभैहैंशिलासेविशाला। करैभूरिमेंशीशकेकेशलाला॥ १५॥
उभैनैनमानोंउभैअंधकूपा। नितंबौनदीकूलसेजासुभूपा॥
भुजाऔउरूपादहूसेतुसेहैं। महामुंजसेजासुरोमागसेहैं॥
सुखानेसरैसीउभैकुक्षजाकी। कहींकालकेफाँससाजीहताकी॥
वटवृक्षकेशाखसीअंगुलीहैं। परीअंगजाकेवलीहूँपलीहै॥ १६॥

दोहा–असपूतनाशरीरलखि, महाकरालविशाल॥ गुनिअचरजअतिशयडरे, सिगरेगोपीग्वाल॥
[illegible]। पुनिताकोलखिकैनपुघोरा॥ कहहिंपरस्परगोपीग्वाला। कहाँरहीराक्षसीकराला॥

कौनहेतुकियशोरमहाना। फूटेमनहुँहमारेकाना॥१७॥अबतौमृतकसमानदेखाती।विधिकीगतिकछुजानिनजाती॥
असकहिमंदमंदनरनारी। जायनिकटपूतनौनिहारी ॥ ताकेउरखेलतनँदलाला। डरतजिन्हहिंकालहुसबकाला॥
गोपीतुरतहिंतिनहिंउठाई। बारबारहियनैनलगाई ॥ १८ ॥ दौरियशोदाहिंदीन्ह्योंआई। ढारतआँसुनागिरासुनाई ॥

दोहा-कहँकीपापिनिराक्षसी, सुतहिंलियोतैंखाय ॥ यैविधितुमपैकारिकृपा, दीन्ह्योंयाहिबचाय ॥

फेरिप्राणसमनिजसुतपाई। यशुदालीन्ह्योंहियेलगाई ॥ आईरोहिणिहूँतहँधाई। हरिहिंलियोनिजअंकउठाई ॥
तहँऔरहुगोपीजुरिआई। बारबारहरिकहँबलिजाई ॥ कहहिंधन्यतैंयशुमातिमाई। मीचवदनतेबालकपाई ॥
राईलोनउतारहिंकोई। बाँधहिंयंत्रपूजिपदधोई॥ पढ़तमंत्रगोपुच्छभवावैं। जलउतारिचुटकीचटकावैं ॥ १९ ॥
कोऊजनार्दनधूपहिंदेहीं। कोउश्रीफलउतारिपुनिलेहीं ॥ पुनिहरिकहँगोमूत्रहिंमाहीं।नहवायोविधिसहिततहाँहीं ॥

दोहा-गोपदरजअंगनिमल्यो, दियोदिठौनाभाल ॥ मूपमथानीसरसंवा, फेरहिंसबव्रजबाल ॥

द्वादशकेशवादिलैनामा। नंदनँदनअँगद्वादशठामा॥गोबरकीटिकुलीदैदीन्ही।पुनियशुदारोहिणिअसकीन्ही॥२०॥
सबैबंदकरिद्वारहुखिरकी।करपदधोययमुनजलछिरकी निजतनमेंप्रथमहिंकारिलीन्ह्यों।बीजन्यासपुनिसुततनुकीन्ह्यों
रक्षहिंतुवपदअजभगवाना।रक्षहिजानुतोरमणिमाना ॥ रक्षहिंउरूयज्ञअधीशा।रक्षहिंकटिअच्युतजगदीशा॥
रक्षहिंहयग्रीवउदरहिंको। रक्षहिंकेशवसदेहृदहिंको ॥ रक्षहिंवक्षहिंईशकृपाला। रक्षहिंइनकंठहिंसबकाला ॥

दोहा-रक्षहिंभुजकोविष्णुप्रभु, मुखहिंउरुक्रमईश ॥ रक्षहिंईश्वरसर्वदा, बालकतेरोशीश ॥ २२ ॥

रक्षहिंआगेहरिहिचक्रकर। रक्षहिंपाछेसदागदाधर ॥ रक्षहिंदक्षिणमधुरिपुधनुधर। रक्षहिंबामेअजननँदककर ॥
रक्षहिंकोणशंखकरधारे। रक्षहिंउपरखगेशसवारे॥ रक्षहिंअवनीहलधरशेशा। रक्षहिंचहुँकितपुरुषपरेशा ॥ २३ ॥
रक्षहिंहृषीकेशइंद्रीगण। रक्षहिंप्राणनकोनारायण ॥ रक्षहिंश्वेतद्वीपपतिचित्ते। रक्षहिंमनयोगीश्वरनित्ते ॥ २४ ॥
रक्षहिंपृश्निगर्भबुधिकाहीं। रक्षहिंजियभगवानसदाहीं ॥ रक्षहिंगोविंदखेलतमाहीं। रक्षहिंमाधवसोवतपाहीं ॥२५॥

दोहा-रक्षहिंचलतविकुंठपति, बैठतरमानिवास ॥ रक्षहिंभोजनकरतमें, यज्ञभोगसहुलास ॥ २६ ॥

यातुधानडाकिनीशाकिनी। कूष्मांडहुयोगिनीबाकिनी॥भूतहुप्रेतपिशाचवेताला। यक्षविनायकरक्षकराला॥२७॥
ज्येष्ठाअरुरेवतीपूतना। कोटरादिजेऔरपूतना ॥ औरहुग्रहजेबालकनासी। महाभयावनमरघटवासी ॥
अपस्मारछेआदिकरोगू। अरुजेजियदायकदुखभोगू॥२८॥ सपनेहूँमहँअतिउतपाता। बालवृद्धजेग्रहदुखदाता ॥
तेसिगरेहरिनामउचारे।दुरहिंद्रुतहिंनाहिंपरहिंनिहारे॥२९॥ यहिविधिप्रीतिसहिततहँगोपी।हरिहिंरक्षकियमंगलचोपी

दोहा-फेरियशोदामोदभरि, सुतहिंगोदबैठाय ॥ पैकोपानकराइकै, पलनादियोसोवाय ॥ ३० ॥

तबलोंमधुरातेअतुराई। आयेगोपनयुतनँदराई ॥ व्रजमेंपरीपूतनादेखी। डरसकलअचरजअतिलेखी ॥ ३१ ॥
बोलेसकलपरस्परबानी।कह्योजोआनकदुंदुभिज्ञानी॥सोइउत्पातभयोव्रजमाहीं।सज्जनवचनमृषाकिमिजाहीं ॥३२॥
पुनिसिगरेजुरिगोपतहाँहीं। लैकुठारनिजनिजकरमाँहीं ॥ काटनलगेपूतनाअंगा। जुरिजुरिजोरकरतयकसंगा ॥
जबैखंडबहुभयोशरीरा। इकइकखंडउठायअहीरा ॥ फेंकेव्रजबाहेरतेहिंजाई। फेरिगोपईंधनबहुलाई ॥
तापरशुचिपुनिक्षनलगाये। यहिविधिसबपूतनेजराये ॥ ३३ ॥

दोहा-दहनपूतनादेहते, कढ्योधूमकुरराउ ॥ अगरसुरभिव्रजछैरह्यो, सोहरिपरसप्रभाउ ॥ ३४ ॥

जगतशिशुनकोमारनहारी। सदामांसअरुरुधिरअहारी ॥ विपलगायकुचनंदनिकेतू। आइंहरिकेमारनहेतू ॥
ऐसिदुरतेपूतनापापिनि। सोगतिलहीजोदुरलभजापिनि ॥ ३५ ॥

दोहा-परमात्माश्रीकृष्णहीं, प्रियतमवस्तुहिदेत ॥ तौपुनिश्रद्धाभक्तिकरि, मानाप्रेमसमेत ॥३६॥

जेपदयोगीजनहियधरहीं॥जिनपदनौविधिशिवशिरपरहीं॥तेपदधरिपूतनेउरागिरा।पानकियोहरिविषयुतक्षीरा ॥३७॥
सोपूतनामातुगतिपाई। तौपुनिकाजेप्रीतिलगाई ॥ कृष्णचंद्रकेचरणनध्यावैं। ब्रजजनकानोगोपुरपावैं ॥ ३८ ॥
हरिहिंसउटविषक्षीरपिआई। सोउपूतनापरमगतिपाई ॥

तिनकीभागकेरिप्रभुताई । सकेनसदसहुवदनगनाई ॥४०॥ अगरसुगंधधूमकरिप्राना । करनलगेअ
यहकाहेकहतेइतआई । रहीसुरभिसिगरेव्रजछाई ॥ असभापतसिगरेनँदगेहू । आयेसकलकरतसंदेह
पुनिपूतनाआगमनजेसो । भयोकृष्णकरतेवधतेसो ॥ सोसवकह्योनंदसोंगोपा । सोठगुन्योविचनभ

दोहा–पुनिसुतकोलैगोदमें, शीशसूँघिनँदराय । आनँदअवधिनपायकै, दियपलनापोढाय ॥
कृष्णचरितवधपूतना, यहजोसुनैसुरीति । सोगोविंदपदपदुममें, पावतपूरीप्रीति ॥ ४

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहारा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृ
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

दोहा–तहाँपरीक्षितजोरिकर, अतिशयआनँदपाय । विनयकरीशुकदेवसों, निजअभिलापदेखा

राजोवाच ।

जौनजौनहरिलैअवतारा । कृ [illegible]
तद्यपिकृष्णचरित्रसुहावन । [illegible]
जाहिसुनेवाढ़तिअतिप्रीती।पुनिनहिंरहतिजगतकीभीती॥यहिहितमनुजलोकहरिआवें।छायसुयशग
सुनिकैकुरुपतिकीमृदुवानी । बोलेव्यासमुवनसुखमानी ॥

श्रीशुक उवाच ।

हरिजनमहितेसहितहुलासा । यहिविधिवीतिगयेत्रयमासा ॥

दोहा–रह्योरोहिणीनखतनृप, जौनेदिनसुखभीन । ताहीदिनपलनापरे, कृष्णकरौटालीन ॥

लखिकरौटनिजबालककेरो । यशुमतिआनँदमानिघनेरो ॥ सिगरीगोपिनकोबोलवाई । द्वारेमेंनौबति
आशुहिंउपरोहितनबोलायो । विविधमंत्रमंगलपढवायो ॥ पुनिगोविंदकोलैनिजगोदू । गोपिनमध्य
विप्रनकरतेसहितविवेका । करवायोसुतकरअभिषेका ॥ तहँवजेनौबतिहुनगारा । वेणुमृदंगझाँझ
औरहुगोदसवैजुरिआये । नंदभवनदरबारलगाये ॥ तहाँमनोहरसोहरशोरा । गोपीकरनलगींचहुँओ

दोहा–यहिविधित्रिभुवननाथको, नँदरानीसुखछाय । सगुनसहितद्विजकरनते, अभिपेकहिक

करपदकड़ेछुगुनकटिमाहीं। गलतहवीजनजंत्रनकाहीं॥बालककहँयशुमतिपहिराई। नीलवसनपुनित
जानिसुतहिआईऔंघाई । तवदीन्ह्योपलनहिंपोढाई ॥ मंदमंदपगठोकतमाई । यहिविधिदीन्ह्योहरि
सोवतजानिसुतहिंसुखछाई । पुनियशुमतिवाहेरकढिआई ॥ विप्रनकेपदमेंशिरनाई । दियोअन्नवस्त्र
पहिरायेगलमोतिनमाला । दियोओढायअमोलदुशाला॥ यशुदाकरतेलहिसतकारा।दियआशिषस

दोहा–जियेपुत्रतेरोसदा,नितनवकरैविनोद । असकहिद्विजनिजनिजभवन, गवँनकियेमढिमोद ॥

करवटलियोनंदकेनंदा । यशुमतिभवनभयोआनंदा॥यहसुनिकैसिगरीव्रजनारी । प्रमुदितयशुमतिम
लैलैहरिकीरोगवलाई । वारिवारिमणिगणसुखछाई ॥ नँदआँगनव्रजांगनावैठीं । अनुपमआनँदअंबुधि
तिनकोकरनहेतुव्यवहारा । वीरीअतरआदिधरिथारा ॥ उठिसुतकेढिगतेनँदरानी । आईजहँव्रजवधू
पृथकपृथकतनुअतरलगायो । पुनिसवकोतांबूलखवायो ॥ भईविलंबकरतसतकारा । तबउतजागे
शकटहितरपलनापरसोये । दूधपियनहेतुहिंहरिरोये ॥

श्रीशुक उवाच।

नामकरणकरिसुनियहिभाँती । हरिदरशनतेशीतलछाती ॥ नंदरायसोंमाँगिविदाई । भवनगवँनकीन्हेहरषाई ॥
नंदहुपूर्णमनोरथमान्यो । भाग्यवंतदोउपुत्रनजान्यो ॥ २० ॥

दोहा—पुनिअतिआनँदसोंबित्यो, भूपजबैकछुकाल ॥ तबहिंघुटुरुवनचलतभे, रामकृष्णदोउबाल ॥ २१ ॥
नँदआँगनमहँअतिछविपागे।हरिबलइतउतविचरनलागे॥पगनूपुरअतिसुछविप्रकासी।चलतबजतिकटिमहँचौरासी॥
पंदसिकोरिकहुँहाथनचलहींकहुँकिलकतव्रजधरणिघिसलहींकहुँसुनिकिंकिणिकीझनकारी।आपहुँकरहिंपुलकिकिलकारी
धूरधूसरितअंगसोहाहीं । घुंघुवारीअलकैंमुखमाँहीं ॥ कहुँव्रजकीचबीचदोउखेलैं । लैकरमेंकरदमकहुँमेलैं ॥
मनुहरिबलरूपहिंलखिमोहीं सात्विकभावप्रगटिमहिसोहीं।कहुँचौंकाहिचितवहिंचहुँओरा।कहुँक्षितिमेंबिछलहिंदोउछोरा

दोहा—कहूँदूरिकढ़िजातकछु, चलहिंलोगमगमाँह ॥ पीछेपीछेजननके, चलहिंतकततिनछाँह ॥
द्वारेलगिमातहुँसँगजाहीं । पुनिपठवहिंसँगगोपिनकाहीं ॥ गोपीअंकउठावनलागैं । तबतबघिसलतदोऊभागैं ॥
पुनिक्षणमहँकोउजनकहँडरिकै।भागहिंमुखकिलकारिनकरिकै।मातुसमीपदौरिदोउआवैं।कहुँकहुँतोतरिबानिसुनावैं
लेहिंजननिद्रुतदौरिउठाई । चूमिवदनअतिशयसुखछाई ॥ पोंछहिंकछुकरदमतनुकेरो।कहाँहिरहोकन्हुवाकहमेरो॥
शिशुनसपंकअंकवैठाई । देहिंयशोमतिदूधपियाई ॥ कहुँरोहिणीदुहुँनपयप्यावैं । आनँदअंबुधितनुनहवावैं ॥

दोहा—धूरिझारिझालरिनकी, सुरभिततेललगाय ॥ भालडिठौनादैदुहुँन, नीलनिचोलओढाय ॥
लैकनियाँमहँसुतनझुलावैं।आपहुँहँसिपुनिसुतनहँसावैं॥विहँसतचमकहिंचारुदँतलियाँ।कुंदकलीसीसुछविअतुलियाँ
कहुँरोपितमैयाकहँमारैं । मचलैंकहुँनचलैंतजिद्वारैं ॥ माखनदैपुनिमायमनावैं । तबपुनिदौरिअंकमहँआवैं ॥
दोहुँकरयशुदालेहिंबलैया।होहिंमुदितव्रजलोगलोगैया।२३॥पुनिपुनिराईलोनउतारैं।तिनहिंनिराखिगृहकाजविसारैं॥
कहुँपलनापरशिशुनसोवावैं । तेदोउनिकासिबाहिरेआवैं ॥ अंकलेतकहुँरोदनकरहीं । कहुँआँगनचहुँकितसंचरहीं॥

दोहा—कहूँनमानहिंजबकहो, तबहिंयशोमतिमाय ॥ हाऊआयेभापिअस, शिशुनदेतिडेरवाय ॥
हाऊसुनतहिंअतिहिंडेराई । जाहिंमातुगोदीलपटाई ॥ करउठायहाऊदरशावैं । तबयशुमतिबालकनबुझावैं ॥
ललानहाऊआवनपैहैं । हमलकुटीलैतिनहिंभगैहैं ॥ यशुमतिलालनलीलालोनी ।विचरहिंकिलकिघुटरुवनछोनी।
सोइदेखनकोअतिचितचोपी । धायधायसिगरीव्रजगोपी ॥ आवहिंरोजयशोमतिद्वारे।निजनिजघरकरकाजविसारे।
देमाखनकोउनिकटबोलावैं । निकटगयेहरिहियेलगावैं ॥ कोऊखेलौनालैघरतेरे । यहिमिसिजाहिंललनकेनेरे।
कोऊकहहिंदेखरायखेलौना । हमरेघरकसलालचलौना ॥

दोहा—यदपियशोमतिडाँटती, छुवोनमेरोलाल ॥ तद्यपितहँतेटरहिंनहिं, हरिहेरतव्रजबाल ॥
कोउअसगोपीकहहिंसुनाई । मतिमापैमोकहँतेमाई ॥ जोअससुतघरहोतहमारे । तौनआवतींऐनतिहारे ॥
दृगभरिदेखनदेहुललाको । अवेहमारोमननहिंथाको ॥ धनिधनितूयशुमतिमहरानी । जायोजोबालकसुखदानी।
असकहिअनमिपदेखतजाहीं।तदपिनतिनकेनैनअघाहीं॥तिनहिंबोलावनकोजेआवें।तेउताकिहरिछविछकिरहिंजावैं
भूलेउखानपानतनुभाना । करेकौनव्रजवधूपयाना ॥ होतिनंदअंगनानितभीरा । सुखसागरकोउलहतनतीरा ॥

सोरठा—नंदयशोमतिभाग, बालचरितनँदलालको । गोपिनकोअनुराग, मैंएकमुखकिमिकहिसको ॥
कहुँबछराजेछोटेछोटे । नोटेजोटेमोटेमोटे ॥ गलमेंबँधीकनककचौरासी । श्वेतश्यामअरुनोछविरासी ॥
छुटिगोशालातेकहुँआई।कूँदहिंसेलहिंचहुँकितधाई॥तिनकोनिरखिरामघनश्यामा।घसिलपसिलचाटिकोतिनअ
पकरैपूँछनपाछेपाछे । डहरैंसंघिकचहुँतिरीछे ॥ किलकतकुलकतपुलकतजाहीं । कहुँतोतरिवचनहुँबतराहीं।
कहुँगिरिपरहिंरुदनचहुकरहीं।नृपमहिकदिजननीउरधरहीं॥रुदनकरहिंपुनिविहँसनलागैं।बछरनगहहिंतेहुपुनिभ

दोहा—जबनहिंपकरनपावहीं, करतरुदनतबमंद । गहनहेतुबछरानिकहँ, जननीकोनँदनंद ॥

जननिफेरिबछरनिगहिल्यावें।पकरिपूँछिपुनिशिशुनगहावें।यहलीलालखिकेव्रजनारी।हँसहिंसबैलहिआनँदभारी२४
कहुँगृहपालेकुरँगनकेरे । जाहिधायदोउबालकनेरे ॥ देखियशोदाआशुहिधाई । असकहिलेतीअंकउठाई ॥
इनकेहोतसींगखुरचोखे । जाहुनढिगबछरनकेधोखे ॥ असकहिदेतिमृगनकहँहाँकी।सुतनखेलावतिसुखमितिनाँकी
जहँकहुँजातदूधचैठायो।अधिकअगिनिलहिकछुचहिआयो।तेहिलखिकौतुकगुनिनँदलाला। जातघुटुरुवनतहँततकाला
दोहा–तबयशुमतिद्रुतदौरिकै, बोलतिवचनबुझाय । जाहुललाजनिअगिनिढिग, दूधदेहुँमैंलाय ॥
जननिजबैकारजलगिजावें । तबकहुँकहुँबाहेरकढ़िआवें ॥ तबकोउगोपीअंकउठाई । देहिंयशोमतिकहँरिसिहाई ॥
अपनोलालनताकहुमैया । बाहेरलौंकढ़िजातकन्हैया ॥ सुनेजोतोकोपहिंव्रजनाहा । यहवनमेंबहुवाघवराहा ॥
तबयशुमतिगोपिकनबोलाई ।कह्योरहहुजहँरहहिंकन्हाई।।लैअसिआदिकरक्षणसाजू । रक्षहुलालनसहितसमाजू ॥
लखिकृपाणकहँनंदकुमारा । करिचपलईधरहिंतेहिधारा ॥ करगहिगोपीलेहिंछँडाई । कहहिंकहूँलगिजायकन्हाई ॥
दोहा–भरेरहतजलजहँकहूँ, तहँकहुँजातगोविंद । परसनाहितप्रतिबिंबलखि, नावतकरअरविंद ॥
छायामिटतिहलैतेजबहीं । कहँहिंअंगुलिसोंगोपिनतबहीं ॥ बहछायाहैलालतिहारी । बारबारभापहिंव्रजनारी ॥
शुकसारिकापिंजरनिदेखी ।दोउकरगहिकिलकहिमुदलेखी ॥ हंससारसहुमोरनकेरे । जाहिंघुटुरुवनकहुँअतिनेरे ॥
जबबरजहिंतिनकोव्रजनारी । मचलिपरहिंतबरोयमुरारी ॥कहुँकरीलकेकुंजनमाँहीं । खेलतखेलतहरिबिलजाँहीं ॥
तबगोपीअसकहँहिंबुझाई । जाहुनललाकाँटलगिजाई ॥ पैनहिमानतचपलकन्हाई । वारतमारतहाथउठाई ॥
दोहा–जबगोपीबरबसद्रुतै, अंकहिंलेहिंउठाय । तबरोवतऐंचतकचन, खसिलिजाँहिमहिआय ॥
गोपीकहहिंयशोमतिकाँहीं । तेरोलालनमानतनाँहीं ॥ तबरोहिणीऔरनंदरानी । आवहिंदौरिकहहिंअसबानी ॥
अबहींइतनोकरहुबकाई । तबआगेकेतनीप्रगटाई ॥ असकहिचूमिबदनाशिशुकेरो । जननीपावहिंमोदघनेरो ॥
सौंपिसुतनकहँजबनँदरानी । गृहकारजमहँरहहिंलोभानी ॥ तबपुनिकरनलगेचपलाई।कह्योनमानहिंरामकन्हाई॥
पुनिगोपीयशुदाहिंगोहरावें । कारजतजिसोइआशुहिआवें॥यहिविधिहरिकीचंचलताई।यशुमतिकोगृहकाजभुलाई॥
क्षणहूँभरिबिनलखेकन्हाई । पावहिनहिकलदीनहुँमाई ॥ २५ ॥
दोहा–यहिविधिबीत्योकालकछु, कुरुपतिराजऋषीश । धावनलागेव्रजधरणि, रामकृष्णजगदीश ॥ २६ ॥
जेतनीवयकेत्रिभुवनपालक । तेतनीवयकेबहुव्रजबालक ॥ नंदलालसँगखेलनलागे । दिनादिनदूनदूनअनुरागे ॥
व्रजकेगलिनगलिनमहँजाई । खेलहिंबहुविधिखेलकन्हाई॥जुरिजुरिगोपीदेखहिंआई । लखिलखिपावहिंमोदमहाई ॥
ग्वालबालसबहोतप्रभाता । आवहिंनंदद्वारनिततााता ॥ खेलनजूनजानिहरिकेरी । देतिजगाययशोमतिटेरी ॥
जागहुललाभयोअबभोरा । आयेखेलवारीसबछोरा ॥ मातुबचनसुनिउठेकन्हाई । आयेआशुहिंबाहेरधाई ॥
दोहा–सखनसहितव्रजछबिलसन, माखनचाखनलाल ॥ गलिनगलिनग्वालनसहित, लीलाकरहिंरसाल॥२७॥
निरखिनंदसुतकीचपलाई । भीतरमुदितउपररिसिहाई ॥ हरिकेदरशनकीअतिचोपी ।बोरहनदेनब्याजव्रजगोपी ॥
जुरिजुरियशुदाकेगृहजाई । कहँहिंवचनअसताहिसुनाई २८ तेरोपूतयशोमतिमैया । अतिशयचंचलभयोकन्हैया॥
देतप्रभातहिंबछरनछोरी।कोउकीभयमानतनहिंथोरी ॥ बछरादूधपानकरिलेहीं । कछुदुहिआपहुँबालनदेहीं ॥
जोहमनिरखिकोपकछुकीन्ह्यों।तोहमकोलखिसोहँसिदीन्ह्यों॥विहँसतवदनतासुहमदेखी।रहतकोपनहिंरहहिंविशेषी।
दोहा–पुनिकोउगोपीकहतभै, सुनोयशोमतिमाय ॥ ल्लातोरचोरीसिखी, सोकछुकहीनजाय ॥
राखतनहिंकोउकोनिजभेदे । सूनेगृहमेंजातअकेले ॥ दूधदहीअरुमाखनकौंदीं । खातऐंचिअपनेकरमौंदीं ॥
सबैसबैमिठाइमिठाई । खातऔरसबदेतलड़ाई ॥ जोकोउआइपरेनहिकाला । तौछिपिजाततहँनँदलाला ॥
मटुकाओटनपरैलसाई । तहँतेभागतदीठिबचाई ॥ पुनिआवततेपायकरिवासी । बजतनन्नूपुरऔचोरासी ॥
चपलासरिसचमकिकहुँजातो । खोलिकपाटफेरिकहुँजातो॥ पुनिकोउबोलकहीव्रजनारी ।औरसुनोजोदेतबिगारी॥

दोहा-दधिमाखनअरुदूधळ, जोआपहुँभरिखाय ॥ तौसबकोनीकोलगे, नेकहुँनाहिंगढ़ाय ॥
पुखातअरुसखनखवावे । पुनिमरकटनअनेकबोलावे ॥ तिनकोदूधदहीअरुमाखन । देतखवायखूबअभिलाषन ॥
परजोपुनिकछुबचिजाई । सोसबदेतधरणिढरकाई ॥ पुनिदोहँनीमट्ठकासबफोरे । गलिनगलिनग्वालनयुतदोरे ॥
नेब्रजबधूऔरकहँकोऊ । औरहुकरतसुनहुँकछुसोऊ ॥ जोकाहूकेगृहमेंजाई । तहाँदूधदधिसकहिनपाई ॥
ऽअसकहतपुकारिपुकारी । देहोंरैनतोरघरजारी ॥ पुनिजेबालकपलनामाँहीं । सोवतपरेरहैंतिनकाँहीं ॥
ऽप्रहारकरिदेतरोवाई । जाततहाँतेआशुपराई ॥ २९ ॥

दोहा-पुनिगोपीकोउकहतभै, सुनोयशोमतिमाय ॥ धौंकेतनीतेहिंआवतीं, चोरीकरनउपाय ॥
हँनहिंपावतहाथपसारी । तहँअसकरतउपायविचारी ॥ राखिद्वारमहँबालकचौकी । धरतउलूखलपरइकचौकी ॥
केउपरआपचढ़िजाई । सिकहरहूँपरलेतोखाई ॥ देतउपरतेधारलगाई । पियहिंसखासबमुखफैलाई ॥
नहिंपीठउलूखलपावत । तबलकुटीहनिछेदबनावत ॥ दधिकीधारसोऊमुखलेतो । तेहिंविधिसखनभखनकंदिदेतो ॥
थवासखाकंधचाढ़िसोई । लेतऐंचिमाखनदधिजोई ॥ बहुतोजोहमधरहिंछिपाई । तऊँजानिहीलेतकन्हाई ॥ ३६ ॥

दोहा-दूधदहीअरुमाखनौ, धरैंजोजहँअँधियार ॥ तौताकेमुखतेतहाँ, होतआशुउजियार ॥
निऔरहुगोपीतहँबोलीं । अपनेउरकीआशयखोलीं ॥ जबहमगृहकारजलगिजाहीं । तबहिंआशुआवतघरमाहीं ॥
तोपकरितोहिंदेखरावे । तेरेउरविश्वासबढावे ॥ ३० ॥ तेरोललाभयोअतिढीठो । उरमेंछलबोलतमुखमीठो ॥
हाँहिंजेचोरनंदकोछोरा । तिनहिंउलटिकहतोतैंचोरा ॥ लीपितमाँजितगृहमहँजावे । मेहनकरिकैअशुचिबनावे ॥
हुकेउपरमट्ठुकिदेमारे । बाँधतपलँगपायकोउबारे ॥ काहूकीफारतहैसारी । देतलकुटियाकेहुकोमारी ॥

दोहा-तेरोहाँसकरावतो, गलिनगलिनब्रजगाँउ ॥ नंदरायकोपूतहै, चोरधरायोनाँउ ॥
वैया-भोरहितेब्रजछोरनकोलियेछोरनकोबछराअरुगैया । धावतबागतहैघरहीघरमानतहैनकहोकछुमैया ॥
तुमहींब्रजकीठकुराइनिजोतुम्हरोअसह्वैगोकन्हैया । तौरघुराजकहौतुमहींअबकेसेबसैंब्रजलोगलोगैया ॥
लकुटीपहिरेझँगुलीगलिहींगलिबागतहैअतिऐंठो । बाँध्योनहींअसभौनहुँजामेंनहींदधिकेहितकान्हरपैठो ॥
हँनीऔमट्ठकामट्ठकीरघुराजगनैकोजोफोरेहुकैठो । पैअबसूधकोवेषबनाइयशोमतितेरेसमीपमेंबैठो ॥
तिभरेदृगआँसूबहावतखोदतहैनखतेमहिकाँहीं । मौनताधारेमुनीनसमानअजानसेबैठेहैंकोनहिंमाँहीं ॥
ायेअबैदधिखायचहूँकितमाखेहूँपैनहिंनेकुडेराहीं । श्रीरघुराजकहाँलोकहैंइनकेगुणजातकहेकछुनाहीं ॥
बमनायमनायथकींतबएकआनंदभोनंदबवाके । श्यामसलोनोहरैमनकोहठिअंगहैताकेसबैउपमाके ॥
लेमहामधुरीबतियाँसुनिकैउपजैनहिंआनँदकाके । चंचलचोरजोहोतोनहींतौअमोलरहेगुणतेरेललाके ॥
ोपिनकीबतियाँसुनिकैनिजआनँदकंदसमीपहिंपेपी । डाँटनकोकछुकीन्ह्योविचारकुनामकन्हाईकोजानिविशेषी ॥
ैरतनारेभरेअँसुवाअरविंदविलोचनलालकेदेखी । तासोंकछूकहिआयोनहींउरलीन्ह्योलगायमहामुदलेखी ॥
प्रीतिप्रमोदभरीसोयशोमतिलीन्ह्योगोविंदहिंअंकउठाई । चूमिकैआननकाननमेंलगिवैनकह्योबहुभाँतिवुझाई ॥
दूधदहीअरुमाखनकीललातेरेहिभौनमेंहैअधिकाई । काहेकोजाइचबाइनिकेघरलेतहौचोरकोनामधराई ॥
कान्हकह्योनितगोकुलकीगलिखेलनजाहुँसखानिलेवाई । आपहींतेभैंडरौंसबकेघरजातचोराबतचीजपराई ॥
येब्रजनारीमहाछलवारीबोलावतिमोहिंलखेमुसक्याई । आपहीआवतीतेरेसमीपयेझूंठहिंदोषलगावतिमाई ॥
पूतकीतोतरिवाणीसुनेनंदरानीकहैब्रजनारिनमाखी । चोरीकरैकन्हुवाकहजानैकहोकोउऔरअहेब्रजसाखी ॥
लेतिबलाइउतैमुसक्याइइतैतोसुनावहुझूंठहिभाखी । जानतीहौंमैंतिहारोपियामदमातीमहातुमकोकरिराखी ॥

दोहा-सुनतियशोमतिकेवचन, ब्रजनारीमुसक्याय । निजनिजगृहगमनतभई, अतिशयआनँदपाय ॥ ३१ ॥
। हरिहिंजगायोयशुमतिमाता ॥ उठहुलालसबसखानोलावें । तुमहिंलखेबिनमोदनपावें ॥

मातुवचनसुनिपरमरसाला । उठेआँखिमीजतनँदलाला ॥ यशुदालैकरखोदअँगोछी । दियोलालकरदृगमु
माखनरोटीमाँगनलागे। इतनेमेंबलरामहुँजागे ॥ यशुमतिमाखनरोटील्याई । दईरामश्यामहिंसुखछाई ॥
ठाढेखानलगेअतुराई । दियोऔरहूमाखनबोलाई ॥ जोकछुखातभूमिगिरिजाई । ताहिसखासबलेहिंउठाई ॥

दोहा–जबभोजनदोउकरिचुके, तबहिंयशोमतिमाय । मुखधोवाइजलप्याइके, दियअँगुलीपहिरा

सखनसहिततहँरामकन्हाई । खेलनचलेचपलचितचाई ॥ खेलतखेलततहँसुखछाये । दोउब्रह्मांडघाटमहँ
तहँकीरहीसोंधअतिमाटी । सोहरिखायोनखनउपाटी ॥ सोलखिबालकसबरिसिहाई । दियोरामसोंसकलसु
रामहुँआयकह्योहरिकाँहीं । क्योंमेलीमाटीमुखमाँहीं ॥ छोंडिमिठाईमधुरससानी । कसमाटीतोहिंबहुतमि
तबनँदनंदनअतिहिंडेराई । कह्योरामसोंहाहाखाई ॥ अबनकहोजननीपहँजाई । सुनतहिंअतिमोकहँरिसि
इतनेमेंबालककोउआई । कह्योटेरिहेयशुमतिमाई ॥

दोहा–कह्योनमानतलालतुव, ह्वैगोअबअतिढीठ । माटीमुखमेंमेलिलिय, तजिघरमाखनमीठ ॥ ३

सुनतहिंयशुमतिआशुहिंधाई । पहुँचिगईजहँरहेकन्हाई ॥ कह्योरामसोंदेहुबताई । कन्हुवाँआजुमृत्तिकाख
कह्योरामसतिहैयहबाता । खाईकान्हमृत्तिकामाता ॥ तबयशुदाहरिकहँधरिलीन्ह्यो।कछुककोपसखहुँनपर
मातामुखताकततेहिंकाला । रहेमौनह्वैदीनगोपाला ॥ बारबारनिजपूतहिंडाँटी । कह्योकान्हखाईकसमाटी
रोगहोतबहुमाटीखाये । यहमोकोंबहुवैद्यबताये ॥ ३३ ॥ रेचंचलतेंमाखनचोराई । माखनतजिमाटीकसख

दोहा–कह्योलल्लामैयानहीं, मैंमाटीमुखदीन ॥ कालिंदीकेतटरह्यो, खेलतखेलनवीन ॥

तबपुनिकह्योनंदकीरानी । यहझूँठीतेंबातबखानी ॥ सखातोरमोसेंकहिदीन्हें । जोनचोरायखायतेंलीन्हें
मनमानतीतबहुँविश्वासू । यदपिकहेबालकममपासू ॥ येतेरोजेठोयहभाई । रामहुँमोसोंदियोबताई
तातेसतिमाटीतेंखाई । तबबोलेपुनिकाँन्हडेराई ॥ ३४ ॥ बारबारदृगवारिबहाई । मैंनमातुमाटीकहु
सखादोषदियमृषालगाई । मेरीबातमानुसतिमाई ॥ जोमाटीमेंखायोहोई । ममसुखलगीहोइगीसोई

दोहा–तातेंमैंमुखआपनो, देतोअबहिंबगारि ॥ करनहेतुविश्वासडर, मैयालेहिनिहारि ॥ ३५ ॥

यशुदाकह्योकहीतैंनीकी । जानिलईमेरअबजीकी ॥ वदनबगारुदाखिमेंटेहूँ । मनिहौंओरभाँतिनहिंकहूँ
जबयशुदाअसवचनउचार्यो।तबभगवानहुँवदनबगार्यो३६ जननीनिजलालनमुखमाँहीं।निरखतभेखिगेर
थावरजंगमअवनिअकाशा।शैलद्वीपसागरअरुआशा॥अनिलअनलरविशशिसबतारा३७ इनतेसहितचक्रा
पंचभूतहुनकेआवरना । सातहुस्वर्गलोकसुरभरना३८ निजयुतनंदहुअरुब्रजकाँहीं।निरख्योजननीसुतमु

दोहा–असलिखरोब्रह्मांडको, तहाँयशोमतिदेखि ॥ अतिशयशंकाकरतिभै, अतिशयअचरजलेखि ।

कहामोहिंसपनोधौंभयऊ । बुद्धिमोहिंकैघोंटगिगयऊ ॥ कैधोंअहैईशकीमाया । कैधोंममसुतहैहरिराया ।
यहचरित्रकछुजानिनजाती । बारबारममनाबिल्खाती ॥ जोजगपालनसिरजतहरई । जाकोपददुर्लभश्रु
यहसतिहैत्रिभुवनकोपालक।भोअपराधगुन्योजोबालक॥४१॥भयममसुतममपतिब्रजमेरो।गोपगोपिगन
जेहिमायावशमेंनिजमान्यों । कबहूँनहिंनिजप्रभुपहिचान्यों ॥ रक्षणकरेईशअबसोई।कबहुँमनामनाहिमुझ

दोहा–वात्सल्यरसमिटतलखि, यशुदाकोभगवान ॥ निजमायापुनिछायउर, मेटिदियोसोज्ञान ॥ ४२

भूल्योज्ञानसकलयशुदाको । लीन्ह्योअंकउठाइलालाको॥पुनिवदनलाइनिजअंग्ह । प्रथमहुँतेअतिकियोमनेह
सांख्यवेदआकोयशगावें।शिवब्रह्मादिजाहिशिरनावैं॥सोहरिकोयशुदासुतमानी।ताकुभागकोसिकाइबखानी
बालचरितहरिकोसुनिराजा । बोल्योसम्पतुर्नानसनाजा ॥

राजोवाच ।

पूरबजन्मभोइमुनिराई । कौनसुकृतकीन्ह्योनंदराई॥कौनसुकृतयशुदाकियलीन्ह्यो।दृगनाननाहुँदीन्हीन्ह्यो
आहिसुनतअपनिकटनजावै । जसहरिजसनवरोकाविलावैं ॥

दोहा—बालचरितआनंदउधि, यातेअधिकनकोय । सोदेवाकिवसुदेवको, केहिहितपरचोनजोय ॥
कहहुतासुकारणबड़भागा । मेरेमनअतिअचरजलागा ४७ सुनिकुरुपतिकेवचनसुहाये । बोलेशुकअतिआनँदछाये

श्रीशुक उवाच ।

वसुनप्रधानरह्योकोउद्रोना । नारीतासुधराछविभोना ॥ विधिशासनलहिकैअहलादी । वैश्यकर्मगोपालनआदी
करनलगेजबद्रोणसुखारी । तबब्रह्मासोंगिराउचारी ॥ ४८ ॥ जबमहिहोइकृष्णअवतारा । बालचरितजोकरहिंअपारा
सोहमलखहिंसकलकरतारा । यहीमनोरथअहैहमारा ॥ ४९ ॥ ब्रह्माकह्योसवैतुमलखिहौ । पुत्रभावहरिपैनितरखिहौ

दोहा—जौनबालहरिकोचरित, सुनेलखेजगमाहिं । सहजहिमैंभवसिंधुको, उतरिसकलजनजाहिं ॥ ५० ॥
सोईद्रोणव्रजनंदभो, धरायशोमतिभूप । पुत्रभावहरिमेंकिये, लीलालखीअनूप ॥ ५१ ॥
कृष्णहुँविधिकेवचनसब, सत्यकरनकेहेतु । बालचरितबलरामयुत, व्रजमेंकियसुतसेतु ॥ ५२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—एकसमयतहँभोरहीं, उठीयशोमतिमाय । सबदासिनकोबोलिगृह, कारजदियोलगाय ॥
करनकलेऊलालनकाँहीं । भरिबहुदधिइकमट्टकामाँहीं ॥ मंथनलागीमाखनहेतू । करिकैमहरिमनहिंअसनेतू ॥
जबलोंकन्हवाँजगननपावै । तबलोंजोमाखनबनिजावै ॥ जगतैइतमाखनजोपैहै । तौकहुँचोरीकरननजैहै ॥
असविचारिकैमंथनलागी । यशुमतिरामश्यामअनुरागी १ जौनजौनकियबालकलीला । गावहिंजेहिसज्जनशुभशीला ॥
सोसुधिकरिकरियशुमतिमाई । गावतमुदितमथतदधिजाई ॥ २ ॥ जानिभोरतहँजगेकन्हाई । माइमाइकहितेहिगोहराई ॥

दोहा—होतरह्योदधिमथतमें, भूपतिशोरमहान । तातेलालनकेवचन, जननीकियोनकान ॥

छंदमनोहरा—पटपीतप्रकासीकटिचौरासीसुवरणगासीमणिरासी, द्युतिचपलासी ।
तेहिमथतहुलासीनृपधुनिजासीफैलतिखासीअविनासी, आनँदभासी ॥
कुंडलहुँडौलाहींकुचकंपाहींपयहुश्रवाहींसुतकाहीं, सुमिरतजाहीं ।
श्रमबिंदुसोहाहींकचविलगाहींसुमनखसाहींसुधिनाहीं, कछुतनुमाहीं ॥

दोहा—कंकणयुगयुगकरनिसों, गहिडोरीनँदरानि । दधिमंथतिमोदितमहा, माखनसुतप्रियजानि ॥ ३ ॥
गोहरायहुपरजबमहतारी । सुन्योनहींतबउठेमुरारी ॥ करनहेतुजननीपयपाना । मंथानीढिगकियोपयाना ॥
पकरिलियोदोउहाथमथानी । रोवतरह्योयशोदहिचानी ॥ जबलोंमोहिंनहिंदूधपिऐहै । तबलोंमातुमथननहिंपैहै ॥ ४ ॥
सुनिलालनकेतोरतबैना । यशुदालियउठाइभरिचैना ५ तुरतहितांजिदधिमंथनकाँहीं । प्यावनलगींसुतहिमुखमाँहीं ॥
मंदहँसनियुतसुतमुखदेखी । पावतक्षणक्षणमोदविशेखी ॥ रह्योदूधतहँकहुँबैठायो । तेहिक्षणपायआँचउफनायो ॥
बहुतदूधकहँलखिनँदरानी । जानिअशुभकछुशंकामानी ॥

दोहा—यदपिपानपयकोकरत, कान्हगयेनअघाय । तदपिलालकोछोडितहँ, दईदूधढिगधाय ॥
तबहरिअसअपनेमनमान्यों । मोतेंप्रियजननीपयजान्यों ॥ असगुनिनेशुककोपहिपागे । अरुणअधरतहँफरकनलागे ।
अधरदाबिदंतनसोंआसू । झूँठहिंआँखिनहावतआँसू ॥ लेपखानलालनकरमाँहीं । फोरयोद्रुतदधिभाजनकाँहीं ।
गेपुनिदौरिभौनकेभीतर । फोरेदधिभाजनसबघरकर ॥ दूधदहीकीधारबहाई । माखनऐंचिऐंचिलियखाई ॥ ६ ॥
पशुनातिको [illegible] ॥ धरिकैआशुउलूखलनीचे । तामेंचढ़िकैपहुँचनगींचे ।
[illegible] ॥

दोहा–बैठेजायइकांतमें, लैदधिभाजनहाथ। बोलिबाँदरनबाँटहीं, निजकरत्रिभुवननाथ॥
इतैयशोमतिदूधउतारी। पुनिधरिदीन्ह्योंआँचनवारी॥ आईमथतरहीजहँसोई। फूटोदधिमटुकाकहँजोई॥
भीतरभवनजाइनँदरानी। लखीसकलमटुकीढ़रकानी॥ औरहुसबदधिदूधमटूका। फूटिफूटिभेटूकहिटूका॥
दधिकाँदवसिगरेघरमाँच्यो। एकहुदधिभाजननहिंबाँच्यो॥ यहचरित्रलखितहँनँदरानी।हँसीठठायलखाकरजानं
पैनहिंललैलख्योतेहिंठोरा। तबहेरनलागीचहुँओरा॥ ७॥ हेरतहेरतयकथलमाँहीं। लख्योआपनेलालनकाँहीं
दोहा–दक्षिणपदधरिवामपर, बैठिउलूखलमाहिं॥ चौंकिचौंकिकैअतिचपल, चितवतहैंचहुँधाहिं॥
बोलिबाँनरनदहीखवावैं। माखनभरआपहिंसबखावैं॥ तहँविचारअसकियहरिमाई। मोकहँलखतेंजाहिंपराई
तातेपाछेह्वैनियराई। लेहुपकरिलालनकहँधाई॥ असविचारकरिमंदहिंमंदे। पाछूह्वैपकरननँदनंदे॥
लीयशोमतिलिहेछरीकर। मुखमहँक्रोधमोदउरअंतर॥८॥मातहिंलखिआवतभयपागे।उतरिउलूखलतेहरिभागे
करछरीहरिहिपछिआई। पकरनकोयशुदाद्रुतधाई॥ योगिनकोमनजाहिनपावै।तेहिपकरनहितगोपीधावै॥
होधन्यधनिहैंव्रजधरनी। धन्ययशोमतिपूरुबकरनी॥ ९॥
दोहा–कहतिमुकुंदहिंमातुअस, कहँलोंजैहैभागि॥ बाँधितोहिंहनिहौंछरी, बचिहैनहिंकहुँलागि॥
बतेंकरनलगेबड़िखोरी। व्रजमेंचोरभयेकरिचोरी॥ दधिमटुकाडारेसबफोरी। नेकभीतमानतनहिंमोरी॥
ावतअसकान्हैंगोहरावति। पैनाहितिनकोपकरनपावति॥ लचतलंकमनुविनहिंअधारा।गवनतिमंदनितंबहिंभार
रतजातवेनीकेफूला। मनुनभतेउडुआभअतूला॥ वदनस्वेदकेबिंदुनिहारी। श्रमितजानिनिजजननिमुरारी
दमंदतबधावनलागे। मातुनिरातनिरखिनाहिंभागे॥ लियोपकरिकरदहिनयशोदा। ऊपरकोपभरीउरमोदा
दोहा–अंजनयुतदोउदृगनको, बाँयेंकरसोंलाल॥ मीजतहैरोवतफफाकि, तोरतउरकोमाल॥
कहुँमातामुखकोडरिताकें। कबहुँलौटिपुनिपीछूझाँकें॥ कहतियशोमतिकन्हुबातोकों।बाँधतदयानलागिहिमोकों
तूअबकरतबहुतचपलाई। मानतकछूनबातसिखाई॥ असकहिपकरिभौनमहँलाई। ह्वैगेहरितबदीनडेराई ॥११
जानिभयाकुललालनकाँहीं। दीन्हींफेंकिछरीमहिमाँहीं॥पुनिगहिकैसिकहरकीडोरी। बाँधनचह्योजानिबडखोरी
यदपिकृष्णकेप्रगटप्रभाऊ। निरख्योनँदरानीव्रजराऊ॥ तदपिवातसल्यहिरसवशमें।भूल्योगुन्योहरिहिंआगसमें
दोहा–जाकोभीतरबाहेरहुँ, पूरुबअपरहुँनाहिं॥ सबकोपूरुबपरसोई, हैसबजगजेहिमाँहिं॥ १२॥
ऐसेश्रीहरिकोनँदरानी। अपनोछोटछोहरामानी॥ जोपूरुबबलिबाँधनहारो। जगमहँमायाबंधनडारो॥
बाँध्योसेतसमुद्रमझारो। बाँधिवासुकिहिंमंदरधारो॥ विधिशिवआदिदेवसमुदाई। जासुवचनमहँबँधेसदाई॥
ताहिउलूखलमहँनँदरानी। बाँधनलगीसहजगहिपानी॥१४॥बाँधतमहँसिकहरकीडोरी। होतभईदुइआँगुरथोरी
तबदूसरियशुमतिगहिडोरी।बाँधतभयहरिकहँतहँजोरी॥१५॥सोऊकमीअंगुरेदोई॥तबऔरौंपुनिदियोसमोई॥१६
यहिविधिभवनभरेकीडोरी। यदपियशोमतितेहिमहँजोरी॥
दोहा–तबहूँद्वैआँगुरकमी, भईनबाँधनपूरि॥ लखिचरित्रसबसुरकहैं, यशुमतिभागहिभूरि॥
बँधेउलूखलजबैकन्हाई। तबगोपीदेखनजुरिआई॥ कहनलगींअसयशुमतिकाँहीं। लागतितोहिदयाकसनाँहीं
कोमलअंगनबंधनयोगू। वृथालहतकान्हरदुखभोगू॥ कोटकहजबपहिलेहमआई। कान्हरकीसबदशासुनाई
तबतोवचनझूँठसबमान्यों। अबतोचोरपरयोसातिजान्यों॥पुनिकान्हरकहँटेरिमुसक्याई।कोटव्रजनारीगिरासुनाई
अबतोकहाँगईचपलाई। चोरीकोफलपरचोदेखाई॥ तबतोबातअनेकबताते। अबतोमूपसारिसदरझाते॥
दोहा–यशुदागोपिनसोंकह्यो, निजनिजघरसबजाउ॥ क्योंमोकोंमेरेसुतहिं, बारबारभनसाउ॥ १७॥
बाँधतबाँधतथाकिगैमाई। केशविलगसुमगेझदराई॥जानिश्रमितानिजमातुमुरारी। आपहिंबँधेकृपाकरिभारी॥१८
भक्तनकेवशहैजगदीशा। जिनकेवशजगयुतविधिईशा॥१९॥कमलासनत्रोरहुत्रिपुरारी।रमामदाउरनिवसनहारी।

हरिलीलासुखअसुनहिंपायो।जसयशुदेआँखिनतरआयो२०॥जसंसहजैप्रेमिनजनकाँहीं।यशुदाकेनंदनमिलिजाँहीं॥
तसनहिंज्ञानिनामिलैमुकुंदा।जिनकीबुधिबहुवादवसिंदा॥२१॥हरिकहँबाँधिउलूखलमाँहीं।करनहेतुगृहकारजकाँहीं॥
दोहा–यशुमतिजवउठिजातभे, तबहरिकियोविचार ॥ येद्वैवृक्षनकोकरौं, आशुहिंजायउधार ॥ २२ ॥
नलकूवरमणिग्रीवद्वै, धनदपुत्रमदछाय ॥ प्रथमहिंनारदशापलहि, भयेवृक्षव्रजआय ॥ २३ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

दोहा–धनदसुतनकीवृक्षता, सुनिकैकुरुकुलनाथ । प्रश्नकियोशुकदेवसों, जोरिजलजयुगहाथ ॥

राजोवाच ।

कहहुशापकारणतिनकेरो । नारदकियकसकोपघनेरो ॥ नलकूवरदूजोमणिग्रीवा । कौनकियोअपराधअतीवा॥१॥
सुनिकैकुरुपतिकीअसबानी । बोलेशुकाचार्यविज्ञानी ॥

श्रीशुक उवाच ।

येदोउभूपकुबेरकुमारे । भयेरुद्रसेवकअतिप्यारे ॥ गर्वभरेइकसमयतहाँहीं । कैलासहिकेकाननमाँहीं ॥
मंदाकिनिगंगामहराजा । जोरिसकलसुंदरिनसमाजा ॥ २ ॥ दोऊकरिवारुणिकरपाना । घूमतनैनभरेअभिमाना॥
गावतनाचतबाजबजावत । विचरतवनमहँअतिसुखपावत ॥ ३ ॥
दोहा–श्रमितभयेतबयुवतियुत, करनकेलिमनरंज । प्रविशेसुरधुनिधारमधि, जहँविकसेबहुकंज ॥
कियजलकेलितहाँबहुभाँती।जिमियुगगजयुतगजिनजमाती ४ तहँविहरतनारदकहुँआये।देखतभेदोउनमदछाये॥
नारदकहँलखिकेसुरनारी । लज्जितह्वैअंबरतनुधारी ॥ शापदेनकहँसवेडेराई । जहँतहँसिगरीरहीलुकाई ॥
येदोऊतहँधनदकुमारे । मदमातेवसनाहिंनहिंधारे ॥६॥ तिनहिंमदांधनिरखिमुनिराई । शापदईजनुकृपादेखाई॥७॥

नारद उवाच ।

विपर्याजनकोयहजगमाँहीं । तसबुधिनाशऔरविधिनाँहीं॥ जसधनमदतेबुद्धिविनाशा।रहतनकछुविवेकपरकाशा॥
दोहा–धनमदतेखेलतजुवाँ, धनमदतेमदपान । धनमदतेनितनारिमें, अतिशयरहतलोभान ॥ ८ ॥
अजरअमरअपनोतनुमानी।मारतजीवदयानहिंआनी ॥९॥ तदपिजनमराजहुघरपावें । तबहुँअंतयहतनुजरिजावें॥
जोनजरचोतोदहिक्रिमिपरहीं । कीभखसूकरकूकरकरहीं॥ ऐसेतनुहितजोभरिकोहू । कियोसकलप्राणिनसोंद्रोहू॥
सोअपनोंदोउलोकनशायो।वृथाजगतमहँजन्मगँवायो॥१०॥ मातापिताअन्नकोदाता । अरुजोमाताकोजनमाता॥
बलीमोललेतोहजोई । अग्निश्वानभखैजोकोई ॥ ११ ॥ आठोंकोपनग्रंथविमानी । केहिअधीनतनुपरैनजानी॥
दोहा–पंचभूततेप्रगटहै, पंचभूतमेंलीन । ऐसेतनुकेहेतुको, जीवनहनेप्रवीन ॥ १२ ॥
श्रीमदांधमतिमंदनकेरो । अंजनहैदारिद्रघनेरो ॥ धननिअपनेसमसबजानें । दारिद्रीजनसमसबजानें ॥ १३॥
विनकंटकलागेपगमाँहीं।कंटकपीराजानतनाँहीं॥१४॥दारिद्रिनकेनहिंअभिमाना।लहहिंजोदुखसोइसुतपमहाना॥१५॥
भएदारिद्रतेदुरबलदेहू । रहतसदाअन्नपरनेहू ॥ तबइंद्रीबलचलतेनाँहीं । सकैनकारिसोहिंसहुँकाँहीं ॥ १६॥
मिलेंदीनहिंकहँदारिद्साधू । जेसमदरशीबुद्धिअगाधू ॥ जोसततसंगकियोजनकोई । तृष्णातासुआशुगसाई ॥ १७॥
दोहा–जेसमदरशीसाधुजन, श्रीमुकुंदकेदास । तिनकोशठधनमदनते, कबहुँनकोनिहुँआस॥ १८॥
[illegible] छाके । यद्यपिमोहिमतिमहुताके ॥ तदपिवसनतेतनुनाँहिढाँके । जलमहँविहरतविनसंकुचाँ
[illegible] रकेरो । दारिदारिदमैंमदहिघनेरो ॥१९॥ लोकपालकेसुतहैदोई । पहिरचोनाहिवसनमोरिसोई

दोउदुरमदतनुकीसुधिभूले। अतिअविनीतफिरहिंफविफूले॥२०॥ तातेकहवाकेतरुह्वैके।व्रजमेंवसेजायदुखम्वैके॥
जामेंअसपुनिकरैनकबहूँ। ममप्रसादसुधिरैहैतबहूँ॥२१॥ दिव्यवर्षशतजबबितिजाँहीं। हरिप्रगटिहैंजबव्रजमाँहीं॥
दोहा-तबहरिकेपदपरसिके, लहिपुनिदेवसरूप॥ मोरिअनुग्रहतेतबहुँ, पैहैभक्तिअनूप॥२२॥

श्रीशुक उवाच।

धनदसुतनअसशापसुनाई। बदरीवनगवँनेमुनिराई॥ नलकूबरमणिग्रीवोसोऊ। यमलार्जुनभेव्रजमहँदोऊ॥२३॥
सत्यकरनसोईऋषिबानी। मंदमंदतहँशारँगपानी॥ बँधेउलूखलघँसिलतजाई। यमलार्जुनढिगपहुँचिकन्हाई॥२४॥
तहँमनमेंअसकियोविचारा। जौनदेवऋषिवचनउचारा॥ सोमैंसिगरोसत्यदेखाऊँ। यमलार्जुनकोआशुगिराऊँ२५
असविचारिदोउतरुमधिजाई। दियोउलूखलटेढलगाई॥२६॥ दामोदरकियनेसुकजोरा।तहँकँपियुगवृक्षकठोरा॥
दोहा-शाखनपातनसहितमहि, भयोतरुनकोपात॥ सिगरेव्रजमेंछाइगो, तिनकोशोरअघात॥२७॥
पुरुषयुगलदोउतरुतेनिकसे। तिनकेमुखमनुवारिजविकसे॥ छावतदशहूँदिशिनप्रकासा। मनहुँमरातेवंतहुतासा॥
कृष्णहिंअखिललोककेनाथै।कियोप्रणामजोरियुगहाथै॥पुनिनलकूबरअतिहिंविनीता।हरिकीअस्तुतिकरीसप्रीता॥

नलकूबरमणिग्रीवावूचतुः।

कृष्णकृष्णतुमआदिपुरुषपर। अहोमहायोगीदीनोद्धर॥ सूक्षमथूलविश्वतवरूपा। जानैंब्राह्मणबुद्धिअनूपा॥
भूतदेहआत्माइंद्रीपति। तुमहींएककालहौयदुपति॥ अविनाशीव्यापकभगवाना। तुमहिंनियंताकृपानिधाना२९
दोहा-सूक्षमसतरजतममई, प्रकृतिहिंप्रेरकआप॥ तुमहींपुरुषअध्यक्षहो, त्रिभुवनप्रगटप्रताप॥
छंद-तुमसकलक्षेत्रविकारज्ञातासदादीनदयाल॥ ३१॥ प्राकृतिनइंद्रिनतेअगमप्रभुरहतसोसबकाल॥
कोउकरहिंतुमहिंप्रकाशनहिंतुमकरहुसबहिंप्रकाश। नहिंतुमहिंजानहिंबद्धजिवजेफँसेमायापाश॥ ३२॥
जयवासुदेवअनादिवेधापरब्रह्ममुरारि॥ ३३॥ जयजयअमितअवतारधारीअखिलअधमनउधारि॥
जयकृतअमानुपकर्मभासकआपनोपरभाव॥ ३४॥ जयलोककेकल्याणकारीसरलशीलसुभाव॥
जयव्रजधरणिविहरनकरनजनकामनापरिपूरि। जयपरममंगलभरनसुंदरअंगधूसरधूरि॥ ३५॥
वसुदेवनंदननंदनंदनशांतमधुरसरूप। यदुवंशकेअवतंसदुष्टनध्वंससुयशअनूप॥ ३६॥
दोहा-जानहुअपनेदासको, दासहमेंयदुराय॥ हमहिंदेखायोकरिकृपा, तुवपदसोंऋषिराय॥
पैअबमाँगहिंजोरिकर, भवनाशकभगवान॥ नाथकृपाकरिदीजिये, हमकोयहवरदान॥ ३७॥
कवित्त-कथाकृष्णरावरेकीश्रवणसदाहींसुनै, बानीसदारावरेकोयशकहिबोकरै॥
हाथयेहमारेरावरेकीसेवकाईलागैं, चारुचरणारविंदचितचहिबोकरै॥
जगतचराचरतिहारोरूपमानिनाथ, रघुराजमाथझुकिसुखलहिबोकरै॥
रावरेकेदासनकोदौरिदौरिदेखिदेखि, दृगकोदुरितदुतदृगदहिबोकरै॥ ३८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिजबअस्तुतिकरी, नलकूबरमणिग्रीव॥ तबहँसिबँधेउलूखलै, हरिबोलेसुखसींव॥ ३९॥

श्रीभगवानुवाच।

मदांधजेहिविधितुमभयऊ।मुनिहुँनिरखिपटपहिरिनलयऊ॥मदमत्ततादतनदितभूरी।कियोअनुग्रहमुनिपुनिपूरी॥
मोहिंविदितधनेशकुमारे।होतदासयहिभाँतिहमारे॥४०॥ममदासनदरशनतेआशू। यहभवबंधनहोतविनाशू॥
तुउदितजिमिधनदकुमारा। देखिनपरतनोरिजंधियारा४१नलकूबरमणिग्रीवसुजाना।करहुआपनेऐनपयाना॥
हिभक्तिचरणनकीमेरी। जोनाशनभवभीतिघनेरी॥ ४२॥

श्रीशुक उवाच ।

कृष्णवचनसुनिधनदकुमारे । दैपरदक्षिणमोदअपारे ॥

दोहा—बँधेउलूखलकृष्णको, करिप्रणामबहुवार । गवँनकियोउत्तरदिशा, जैहरिकरतउचार ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमकंधे पूर्वार्धे दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—नंदादिकव्रजगोपसब, युगद्रुमपतनअवाज ॥ सुनिचहुँकितधावतभये, जोनिगिरीकहुँगाज ॥ १ ॥

निरखतभेयमलार्जुनपाता । करतभयेशंकाउत्पाता॥चहुँकितभ्रमनलगेसबताके । गोपिग्वालअतिविस्मयछाके ॥
गिरबोकारणपरैनजानी । आपुसमहँअसभापहिंवानी ॥ कैसेगिरेवृक्षयेदोऊ । यहथलमहँलखिपरैनकोऊ ॥
अनायासभोविटपनिपाता । तातेजानिपरैउत्पाता ॥ पुनिदोहुँनविरुद्धविचमाँहीं । निरखतभेनँदनंदनकाँहीं॥ २ ॥
बँधेउलूखलऐंचतजाँहीं । चितवतचकितचखनचहुँधाँहीं ॥ आयेनंदहुतहँद्रुतधाई । कह्योकौनतरुदियोगिराई ॥३॥

दोहा—तबबालकबोलेसकल, कोउनहिंदियोगिराय ॥ बँधोउलूखलकान्हरो, क्रमक्रमसोंघसिलाय ॥
दोहुँनतरुनबीचमहँआई । दीनउलूखलटेढ़लगाई ॥ तबहींगिरेवृक्षयेदोऊ । सुनहुऔरकौतुकभोजोऊ ॥
वृक्षनतेयुगपुरुपप्रकासी । काढ़िआयेतनुभूपणरासी ॥ तुम्हरेसुतसोंकछुबतराने । ताकोहमनेकहुँनहिंजाने ॥
तिनसोंकछुकान्हरकहिदीन्हें । तेयाकेपदमहँशिरकीन्हें ॥ यहथलतेदोउगयेविलाई । सत्यकहेंनहिंबातबनाई ॥४॥
सुनिबालकनकेरिअसबानी । कोऊतादिसत्यनहिंमानी ॥ कहँलघुबालककहँतरुपाता ॥शिशुसबकहेंमृपायहबाता॥

दोहा—कोउकोउतहँनँदलालके, सुधिकरिचरितमहान ॥ तेसिगरेबालकनिके, मानेवचनप्रमान ॥ ५ ॥

तहँयशुमतिअतिशयपैमापी । नंदरायवाणीअसभापी ॥ याकेउरदायाकछुनाहीं । बाँध्योबालककाहेंवृथाहीं ॥
कोमलअंगनबंधनयोगू । निरखतउपजतममनसोगू ॥ असकहिलालनकेढिगजाई । दामोदरकीदामछोड़ाई ॥
चूमिवदनलियअंकउठाई । लालनसोंबोलेमुसकाई ॥ कछुनाहिंखेदकरहुअबताता । बंधनकीन्ह्योंजोतुवमाता ॥
हनोंलकुटियाअबमैंताको । घरतेअवनिकासिहोंवाको ॥ असकहिभवनहिंभीतरजाई । कान्हरकोभोजनकरवाई ॥
दीन्ह्योंदानद्विजातिनकाँहीं । बाजनबाजेघरघरमाँहीं ॥

दोहा—यहिविधिबहुलीलाकरत, गोकुलमेंगोपाल ॥ बसतभयेअतिमोदसों, व्रजजनकरतनिहाल ॥ ६ ॥

कहुँव्रजनारिदेकरतारी । ललाललाकहिहरिहिपुकारी ॥ नईनाचनाचहुहरिनीकी । पूजहुआशहमारेजीकी ॥
तबहरिनाचनलगेनवीने । मानहुँसबदिननाचप्रवीने ॥ जबगोगीगावनसबलागें । तबहरिहूँगावतअनुरागें ॥
हरिकोगानसुनतव्रजनारीं । देहिंअनेकनमणिगणवारीं ॥७॥ कहुँकोउगोपीकहिंपुकारी । लावहुचौकीकान्हहमारी ॥
तुरतहिपायपलायहरिदेहीं । तबहरिवदनचूमितियलेहीं ॥ कोउकहसेरपसेरीलावो । ललामोहिआनँदअतिलावो ॥

दोहा—दोरिउठावहिंकान्हतेहिं, उठउठायेनाँहि । पुनिल्यावेजनुजोरिकर, सिगरीसखियनकाँहि ॥

कहँसखीकोउटाटसराऊँ । तौकन्हुवेंमिंबहुतखेलाऊँ ॥ दोरिकान्हपादुकाउठाई । हँसतदेहिंसखियनकहँनाई ॥
सबोअसोसदेहिंशिरछ्केक । छकितदाहिंआननछबिन्येके ॥ कहुँकहुँनिजसमससानिहारी। तालदेहिंजनुमहकुपुरी ॥
[illegible] ...पिकरतअनेकनलीला।सुखदगोपगोपिनशुभशीला ॥८ दरशावततनगमहप्रवीने।
[illegible] ॥पावतनितनवआनँदगामी ॥९॥ एकसमयफलवेचनवारी । नंदद्वारमहँआइपुकारी

हाँमहावनगोकुलमाँहीं । होतअमितउत्पातनकाँहीं ॥ निरखिनंदजियअतिहिंडेराई । वृद्धवृद्धगोपनबोलवाई ॥
ऊसलाहकरनतहँलागे । तबैनंदबोलेदुखपागे ॥ इतअतिहोहिंउपद्रवघोरा । ईशकृपाबाँचतममछोरा ॥
ौनउपायकरैंअबभाई । सोसिगरेमिलिदेहुबताई ॥ २० ॥ तबउपनंदगोपइकबूढो । ज्ञानीबडोमंत्रजोहैंगूढो ॥
दोहा–देशकालसोंसकलगुनि, रामकृष्णप्रियहेत । कह्योमंत्रमंजुलवचन, बाँधिमनहिंमननेत ॥ २१ ॥
नहुतातजोमोमनआई । सोसलाहमैंदेतसुनाई ॥ गोधनहींधनअहैहमारा । इकयहवृत्तिनग्रामअगारा ॥
हैंराखिगोधनरहिजाहीं । सोईसुखदहैभवनसदाहीं ॥ तातेजोगोकुलहितचहिये । तोइततेअंतेचलिरहिये ॥
आवहिंअनेकउत्पाता । बालकनाशहेतुहेताता ॥ २२ ॥ लेतिसकलबालकजोखाई । सोराक्षसीपूतनाआई ॥
तिबाचिगयोयहबालक।ईशकृपातुमपरब्रजपालक॥गिरचोशकटयापैअतिघोरा । हरिदायाबाँच्योतुवछोरा॥२३॥
दोहा–बौंडेडरवपुधारिकै, आयोदैत्यकराल ॥ धुंधकारब्रजछायकै, नभलैगोतुवलाल ॥
मरिगोगिरिवृहदपपाना । कियोईशबालककरत्राना ॥२४॥ अर्जुनवृक्षगिरेअरराई । परचोबीचहूँबँच्योकन्हाई॥
ऊसबहैहरिकीदाया । यहीसत्यजानहुनँदराया ॥२५॥ तातेजबलौंअबउतपाता । आवहिंनहिंब्रजमहँदुखदाता॥
बलौंग्वालग्वालिनीलैकै । चलियेगोगणआगेकैकै ॥ २६ ॥ जोयहकहोबसैंकहँजाई । तौसोथलहमदेतबताई ॥
दावनजेहिवनकरनामा। सबथलजोअतिशयअभिरामा॥गौवनकोअतिसुखदनिवासा।सबकाननसोहतचहुँपासा ॥
दोहा–गोपीगोपनकेसदा, सेवनलायकसोय ॥ तेहिंवनमेंतेहिंगिरिकहत, गोवर्धनसबकोय ॥
हापुण्यप्रदसोगिरिराजा । सेवतसदासुसिद्धसमाजा ॥ सदाहरिततृणथलथलरहहीं । शाखनझुकिपादपमहिगहहीं
ोमललतालतिततहँलहरैं । सुखीकुरंगविहंगहुँविहरैं ॥ अतिनिर्मलजललेतहिलोरा ।यमुनाबहैतहाँत्रैओरा ॥
हिनजायवृंदावनशोभा।निरखतसुरनरमुनिमनलोभा॥सुदिनपूँछितहँचलहुब्रजेशा।अबनरहनलायकयहदेशा २७
ाज़ुहिसुदिनहुँहैअतिनीको । यहतौहैहमारमतठीको ॥ गौवनकोआगूकरिदेहू । लादिसाजिशकटननधिलेहु ॥
दोहा–तिनमेंगोपीगोपचढ़ि, चलैंसकलसानंद ॥ पुनिविचारजसहोइतुव, तसकीजेअबनंद ॥ २८ ॥
निउपनंदगोपकीबानी । बोलेसकलगोपमुदमानी ॥ भलीकहीउपनंदसलाहू । वृंदावनबसियेब्रजनाहू ॥
दतहाँचहुदूतपठाई । दियसिगरेब्रजमेंगोहराई ॥ वृंदावनगमनहिंसबकोई । बालकयुवावृद्धजोहोई ॥
दनिदेशसुनतसबगोपा । साजिसाजिशकटनअतिचोपा २९ भरिभरिअपनीसिगरीसाजू। बालकवृधनरनारिसमाज
ोवृषभनाधिशकटनमाँहीं । ह्वैतयारगहिधनुपनकाँहीं ॥३०॥ गौवनकोआगूकरिलीने । नंदद्वारआयेशुभभीने॥
दोहा–जानितयारीनंदसब, भयेशकटअसवार ॥ तेहींसमयचहुँओरब्रज, तुरहीबजीअपार ॥
ोपहुविपुलविपाणबजाये। महाशोरब्रजमंडलछाये ॥ करिकैगौवनकोगणआगे । चलेपुरोहितपुनिबड़भागे॥
तनकेपीछेगोपसमाजा । तिनकेमध्यलसेब्रजराजा ॥ ३१ ॥ केसारिकेसरिकेसारिअंगा । बेसरिबेसरिबेसरिसंगा।
रिवसनबेपब्रजनारी । हीरनहारहियेहियहारी ॥ रथनचढ़ीक्षितिमेंछबिछावें । हरिलीलासप्रीतिमुखगावें ॥३२।
शुमतिरोहिणियुतबलश्यामे।चढ़ीएकरथमहँअभिरामे॥सुनिसुनिलालनकथासुहावनि।लहहिमोदमातामनभावनि
दोहा–यहिविधिगोकुलतेतुरत, गमनकियोब्रजराय ॥ पहुँचेवृंदाविपिनिमें, गोपनयुतसुखछाय ॥
हिंवसंतऋतुरहैसदाहीं । कबहूँकोनहुँदुखतहँनाहीं ॥ अर्धचंद्रसमशकटनरापी ॥ निजनिजथलनपरस्परभाँती
दावनमहँकियेनिवासा । गोपसहितनंदसहितहुलासा ॥३४॥ वृंदावनगोवर्धनदेखी । यमुनापुलिनप्रमोदपरेखी ॥
ामद्दपामहूँकोअतिप्रीती । बादतभइंनिदारप्रतीती॥३५॥करतबाललीलामनभावन। ब्रजवासिनविनोदउपजावन
...दिकन्तोतारिसानी । कहुँगतिचलहिमंदसुखदानी ॥ कहुँलकुटीलैसेलहिधूरी । दौरिजाइँकहुँपरताँहीं
... । पगनपुरवाजतअतिमाछे ॥
दोहा–चपरनानिताहिरोलावहीं, अतिशयप्रीतिबढ़ाय ॥ कहुँछोरहिकहुँबाँधहीं, कहुँजलदेहिपिआय ॥

सुतकीलखिबछरनपरप्रीती । चारिबरषउमरिहुजबबीती ॥ नंदकाँन्हकोकह्योबोलाई । बछरालैचरावहुजाई ॥
पैरहिबोबलरामहिंसाथे । अलगनहोयहुतजितेहिहाथे॥३६॥औरहुग्वालनबालबोलाई।नंदकह्योअसतिनहिंबुझाई ॥
कन्हवाँकोतुमताकेरहियो ।दौरतकूदतकैकरगहियो ॥ बहुतदूरियहजाननपावै । निकटचरायवत्सगृहलावै ॥
असकहिबिदाकियोसुतकाँहीं । गयेरामबालकसँगमाँहीं ॥ नेसुकजाइदूरिबछरनको । लगेचरावनतृणकछरनको ॥

दोहा-आपहुँतहँबहुखेलको, खेलनलगेगोपाल ॥ कामपालतेहिंसंगमें, ग्वालबालततकाल ॥ ३७ ॥

कहूँबजावतवेणुमुरारी । दोहिंसखासिंगेरेतबतारी ॥ कहूँबेलअमराकरतूरी । फेंकहिंइकइकअधिकहिदूरी ॥
गयोहमारअधिकअसकहहीं।जिनकमजाततेलजिकैरहहीं॥ कहुँकिंकिणिकीकरिझनकारी।चलहिंबंककैचरणमुरारी
कहुँवनिजाहिंगऊअरुबछरा।डोलतबागतकछरनकछरा॥३८बलीवृषभसमकरिकहुँनाद।मल्लयुद्धहितभरिअहलाद।
लरहिंपरस्परगोपकुमारा । कोउजीतहिंकोउखाहिंपछारा ॥ कहूँहंसकीबोलहिंबोली।कहुँमयूरसमविचरहिंडोली ॥

दोहा-यहिविधिवृंदाविपिनिमें, विविधविनोदविहार ॥ ग्वालबालसँगकरतहैं, रामहुँनंदकुमार ॥ ३९ ॥

चरतचरतसिंगेरेतहँबछरा । जातभयेयमुनाकेकछरा ॥ खेलतखेलततहँघनश्यामा । ग्वालबालसंगहिंलैरामा ॥
जातभयेयमुनाकेतीरा । जहाँत्रिविधनितबहतसमीरा ॥४०॥ तहँधरिकैबछराकररूपा । वत्सासुरआयोसुनुभूपा ॥
रामकृष्णकोहननविचारी । बछरनमेंमिलिगयोसुरारी ॥ चरतचरतहरिकोनियरायो । तबरामहिंनँदनंदबतायो ॥
यहिजानवदानवबलदाऊ । वत्सरूपकारिकियेदुराऊ ॥ कंसपठायोमारनहेतू । ताकोशठबाँधतहैनेतू ॥

दोहा-कानेमेंकहिरामके, करिकैगोपनगोपि ॥ मंदमंददानवनिकट, गेहरिवधचितचोपि ॥ ४१ ॥

पूँछसहितपिछलेपददोऊ । पकरयोहरिमान्योभयसोऊ ॥ चटपटानबहुयदपिसुरारी । तदपिनकरतेतज्योमुरारी ॥
तेहिंचठाइबहुवारभ्रमाई । पटक्योतरुकपित्थमहँजाई॥ फूट्योशिरटूट्योतनुभूपा । प्रगटभयोदानवकररूपा ॥
सोकपित्थगिरिगोतेहिकाला।ताहिगिरततरुटुटेविशाला॥लखिकरालकायातेहिकेरी।विसमितग्वालताहिलियघेरी॥
पुनिकान्हरकोलगेसराहन । खूबजोरहैतेरेबाँहन ॥ देखिपरततेतौअतिछोटो । जानिपरतबलकोअतिमोटो ॥

दोहा-देवसुमनबरषनलगे, दुंदुभिदीहबजाय ॥ वत्सासुरकोनिधनलखि, भेप्रसन्नसुखपाय ॥ ४३ ॥

सर्वलोककेपालकजोऊ । व्रजबछरापालकभेसोऊ ॥ डेढ़पहरदिनजबचढिआयो। मातुकलेवातुरतपठायो ॥
सखनसहिततहँरामकन्हाई।वटछायामहँहिलिमिलिखाई॥लगेचरावनपुनितिनकाँहीं।यमुनातटविहरतचहुँधाहीं ४४
ग्वालबालदुपहरदिनदेखी । बछरनकोअतितृपितपरेखी ॥ लैलैनिजबछरनकेजूहा । चलेसलिलप्यावनकरिकूहा ॥
यमुनतीरपहुँचेजबजाई । पियेपानिबछरनप्याई ॥ ४५ ॥ तहँकालिंदीकेतटमाँहीं । महाभीमबकलखेतहाँहीं ॥

दोहा-मनहुँवज्रलगिशैलको, शृंगगिरयोइतआय ॥ नामबकासुरजासुहै, दीन्ह्योंकंसपठाय ॥ ४६ ॥

बकुलध्यानसोरह्योलगाई । कह्योकृष्णआवैनियराई ॥ हरिहुजानिताकेमनकेरी । कढेनिकटह्वैतेहितनुहेरी ॥
हरिहिंनिकटलखिचोंचपसारी।दानवलियोतुरतमुखडारी ४७ बकमुखग्रसितगोविंदहिंदेषी।गोपसबैदुखमानिविशेषी
हायहायसबलगेपुकारन । करिनसकेकोऊतेहिंवारन ॥ जैसेबिनाप्राणकीदेही । भयेगोपतिमिकृष्णसनेही ॥
यद्यपिभ्रातप्रभावहुज्ञाता । खडेरहेरामहुँतहँताता ॥ तद्यपिवातसल्यरसवशमें । रामहुँकामनभोकसमसमें ॥४८॥

दोहा-जगतगुरूजगकेपिता, अगिनिवीजगोपालु ॥ तिनकोलील्योवकजबै, जरनलग्योतेहिंतालु ॥

उगिल्योसपदिशामरेकाँहीं। चोंचचोखकरिसूधतहाँहीं॥मारनधायोपुनिनँदलालै।गुन्योननिजकालैतेहिंकालै॥४९॥
आवतनिरखिताहियदुराई।धरयोचोंचयुगयुगकरधाई।भूमिगिरायवदनतेहिंफारयो।सहजहिंबकासुरहिंहरिमारयो।
तृणसमफारतबककोआनन।सखानिरखिकालिंदीकानन।५०।लियेदौरिदुतहरिकहँघेरी । लगेप्रशंसाकरनघनेरी॥
कान्हरतुमतोअतिबलवाने । हमतोअसपूरुबनहिंजाने ॥ तुमहिंमातुबहुदूधपियावै । माखनमिसरीनितहिंखवावै ॥
तातेबहुततुम्हारेजोरा । होतदूपहमरेपरथोरा ॥

दोहा—उतेगगननौबतिबजी, बजेशंखकरनाद। देवफूलबहुबरपिके, छायलियोनँदलाल॥
अस्तुतिबहुविधिकीनमुनीशा।कहेबकारिनामजगदीशा।सुनिकैशोरसखानभदेखें।कोहुकोनहिलखिअचरजलेखें॥५१॥
निकसेबकमुखतेहरिआये। सखामनहुँपुनिप्राणहिंपाये॥ बाहुपूजिहरिकीसबगोपा। करीभवनगमननकीचोपा॥
सबबछरनसमेटितहँलीन्ह्यों। लैसँगसखनकृष्णचलिदीन्ह्यों॥आयेभवनजबनँदलाला। लियेसंगबहुग्वालनबाला॥
नंदयशोमतिकेढिगजाई। ग्वालबालअससबरिसुनाई॥ बतसरूपधरिदानवआयो। ताकोकान्हरमारिगिरायो॥
दोहा—पुनिइकबककोवपुधरि, बैठ्यमुनकेतीर॥ लीलिलियोसोलालको, हमलखिभयेअधीर॥
मुखबाहेरपुनिनिलचललाको।फारचोचोंचकृष्णपुनिताको॥५२॥सुनियहबातगोपव्रजनारी।जुरिआयेआश्चर्यविचारी॥
नँदनंदनमुखअनामिपदेखें। बालककोनलअदभुतलेखें॥५३॥कहहिंपरस्परतेअसबानी।अबव्रजदशापरैनहिंजानी॥
कान्हअलपटरिगैबहुबारा। कियोईशयहिकृपाअपारा॥ जेकोउआयेकान्हहिमारन। तेईमारिगयेबहुबारन॥५४॥
तबबोलीपुनियशुमतिबानी। मैंपूरुबकरनीकाठानी॥ जातेसुतकोनितभेहोई। अथवाहैबैरीममकोई॥
पैममसुतबधजेमनकरते। तेपावकपतंगसमजरते॥ ५५॥

दोहा—अहोब्रह्मज्ञानीगरग, मृपानताकेबैन। कह्योजौनतैसेभयो, आयहमारेऐन॥ ५६॥
कह्योनंदपुनिवचनतहाँहीं।शोचठानिअबहमकहँजाहीं॥ वोहिंविधिनँचेकुमारहमारा। अबहमकाहकरीकरतारा॥
वृद्धगोपतबकहेबुझाई। ईशकृपातबसुतबँचिजाई॥ पुनियशुमतिदोउलालनकाँहीं। करगहिलैगैनिजगृहमाँहीं॥
दानकराइअशनकरवाई। राईलोनउतारिसोवाई॥ निशिदिनकरतकृष्णकीसेवा। हरिसुखहेतुमनावहिंदेवा॥
रामकृष्णगाथानितगावत। आनँदयुतबसुयामबितावत॥गोपगोपिकाबसेसुखारी।जानिनपरचोशोकसंसारी॥५७॥
दोहा—यहिविधिकरतविहारबहु, व्रजमहँनंदकुमार। पंचवर्षकेपूरभे, नाघेवैसुकुमार॥ ५८॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे एकादशस्तरंगः॥ ११॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—एकसमयव्रजगाँउमें, जबनृपभयोप्रभात। रामश्यामजागेप्रथम, पलनामेंअलसात॥
कियोविचारतबैमनमाँहीं। आजुजायबनहींमहँसाँहीं॥ असविचारियशुमतिपहँजाई। मायमायकहिदियोजगाई॥
कह्योआजुहमबनमहँखैहैं। सखनसाहितउतवत्सचरैहैं॥ तबयशुमतिबोलीसुखसाजू। जन्मनक्षत्ररामकरआजू॥
तातेरामनजाहिंचरावन। जाहुसखनयुततुममनभावन॥ सुनतमातुकेवचनसुहाये। रामबहुरिपुनिभीतरआये॥
हरिघरतेकढिशृंगबजायो।मधुरशोरसिगरेव्रजछायो॥१॥ग्वालबालसबधुनिसुनिजागे।निजनिजबछरनकोकरिआगे॥
दोहा—नंदद्वारआवतभये, कीन्हेंहरिहिंप्रणाम। लकुटीवेणुविपाणहूँ, धारेअतिअभिराम॥
कटिकिंकिणीकाछनीकाछे। लिहेकामरीभूपणआछे॥२॥निरखिहजारनसखनमुरारी।विपिनगवँनकीकरीतयारी॥
छोरिसकलबछरनकोनाथा। हाँक्योलैलकुटीनिजहाथा॥ कटिकिंकिणिपगमणिमंजीरा। हीरनहारहियेगंभीरा॥
मोरमुकुटशिरमेंअतिसोहे। जोहतजाहिरमामनमोहे॥ इककरमुरलीइककरलकुटी। कटिमहँकसेपीतपटदुपटी॥
अपनेलासनबछरनकाहीं। आगूकरिप्रभुलियेतहाँहीं॥ ग्वालनबालनसहितगोपाला। बछरनहाँकतचलेउताला॥
दोहा—निजनिजघरसोंसबसखा, लियेकलेऊकाँध। डगरतभेबहुविपिनिके, खेलतखेलतबाँध॥
[illegible]। माखनमिसरीऔबहुमेवा॥ औरवस्तुजोसुतहिंमिठानी। पठईसंगहिमेंनँदरानी॥
[illegible]॥ बटभाँडीरनिकटहरिआये। टेरिटेरिसबवत्समिलाये॥

बछरातहँचरावनलागे । विहरतआपुमहासुखपागे ॥ ३ ॥ मणिनजडितभूषणसुवरणके । पहिरायेमातासुवरणके।
तद्यपिफलअरुपल्लवगुच्छा । फूलऔरमोरनकेपुच्छा ॥ धातुअनेकनरंगनकेरी । काचऔरगुंजनकीढेरी ॥
दोहा–धायधायवनतेसखा, लावहिंमुदितअपार । रुचिरचिरुचिसोंअतिरुचिर, करहिंकृष्णशृंगार ॥
नवपल्लवकेमुकुटबनावैं । सुमनरूपपुनिरतनलगावैं ॥ रँगहिंधातुकेरंगनकेरे । साजेंमोरपखानघनेरे ॥
असकिरीटरचिहरिशिरदेहीं । फेरिफूलमालारचिलेहीं ॥ तामेंबिचविचपल्लवगुंजा । साजहिंबीचफलनकेपुंजा ॥
हरिकोपहिरावहिंवनमाला । तिमिऔरहुभूषणगोपाला ॥ धातुरंगहरिअंगनमाँहीं । हँसतहँसावतरंगतजाँहीं ॥
हरिहुआपनेकररचिमाला।बकसहिंसखनिभूरितेहिंकाला ॥ कोहुकोसुमनमुकुटरचिदेहीं।तेप्रणामकरिशिरधरिलेहीं
दोहा–रचहिंपरस्परभाँतियहि, अतिसुंदरसिंगार । करहिंग्वालबालनसहित, वृंदाविपिनिविहार ॥ ४ ॥
जबपुनिपहरदिवसचढिआयो । तबहरिसिगरेसखनबोलायो ॥ कह्योसकलअबकरहुकलेवा। हमहूँदेहैंअपनेमेवा ॥
सुनतकृष्णवाणीसबबाला । बैठतभेजहँबैठगोपाला । खोलिखोलिनिजनिजतहँसीके । करनलगेभोजनरुचिजीके॥
कोहुकोसीकोकोऊचोरावैं । तबतेद्रुतहिछुँडावनधावैं ॥ वेतबदूरिफेंकितेहिदेहीं । कोउपुनिधायउठावहितेहीं ॥
तेऊफेंकहिंताकहँदूरी । हँसहिंठठायमोदभरिभूरी ॥ कोउपुनिल्याइदेहिहैजाको । मिलतमीतकहिसोपुनिताको ॥
दोहा–निजहाथनसोकृष्णप्रभु, देतसखानिखवाय ॥ तेऊहरिमुखमेलहीं, मंदमंदमुसक्याय ॥ ५ ॥
यहिविधिहरितहँभोजनकरिकै । करअरुचरणधोइसुखभरिकै।देखनकहुँवृंदावनशोभा।चलेकृष्णअतिशयमनलोभा
चलेसखाहरिआगेधाई । हमहीपहिलेदेखबजाई ॥ इकतेइकआगूचढ़िजाहीं । कोउलखिहरिसोंलौटिवताहीं ॥
कहुँकान्हरकढ़िजाहिंअकेले । तबसँगकेसबसखानवेले ॥ मैंआगेहरिकोछ्वैऐहों । तुमहिंलौटिमगमहँलैलेहों ॥
असकहिबडोवेगकरिधावैं । हरिकरपरसफेरिफिरिआवैं ॥ ६ ॥ कोऊबालकवेणुबजावैं । कोऊशृंगशोरवनछावैं ॥
कोऊसुनिभृंगनकीगुंजन । तेहिंमिलिगावतभरिसुखपुंजन ॥
दोहा–कोईकोकिलकूकसुनि, तामेंसुरहिमिलाय ॥ गावतहैंअनुरागभरि, रागिनिरागसुहाय ॥ ७ ॥
कोउनभउड़तविहंगनदेखी । निजसोअधिकवेगनहिंलेखी ॥ तेहिंछायाछायाद्रुतधावैं । जबबैठेखगतबफिरिआवैं ॥
कोउहंसनलखिडोलतसरिमहँ । तैसहिआपहुडोलततहँतहँ। कोउबैठेलखिबकजलमाँहीं।तैसहिआपुबैठतहँजाँहीं॥
कोउनाचतलखिमत्तमयूरे।आपहुतिमिनाचतसुखपूरे ८ कोउकपिपुच्छहिझूलतदेखी।खींचहितेइकरजोरविशेखी॥
कोउकपिपुच्छपकरितरुचढ़हीं।कोउमरकटविरायमुदमढहीं।कोउकपिजसकूदतसकूदैं।कोउद्रुतकपिनहगनदुरिमूँदे
दोहा–कोउदादुरकूदतनिरखि, तैसहिंकूदतआपु ॥ कोउनहातभरिखेलश्रम, यमुनसलिलहरपापु ॥
कोउडगरहिंटेढीकरिकाया । हँसहिठठायचंकलखिछाया ॥ कोइदेकूकोसुनिझनकारी । तासोंकरैंबातदैगारी ॥
कहुँखेलहिंअँखमुदउलश्यामा । जोरिसखनसंयुतअभिरामा ॥ कहुँवनिआपरामरघुनंदन। जोरिग्वालकेवृंदनवृंदन॥
रामायणलीलासबकरहीं । सकलदेवलखिअतिमुदभरहीं ॥ कहुँखेलतेचढाउगोटाऊ।सखासहितहरिकरिचितचाऊ॥
जीतहिंसखाहरिहिंखिसिआवें।जीतहिंश्यामसखनसकुचावैं॥निजनिजदलकीजबजेदेखें।सबैसखाअतिशयसुखलेखें ॥
दोहा–यहिविधिकरतअनेकविधि, लीलानंदकुमार ॥ सखनसहितआनँदभरे, वृंदाविपिनिमझार ॥ १० ॥

कवित्त–योगीजाहियुगयुगयोगकरिजोहैंकहूँ, ब्रह्मज्ञानीजाकोपरब्रह्मअनुमानहीं ।
भक्तिवारिभक्तनकोदेकैमनआतमाहूँ, तिनकेअधीनरहैनितपहिचानहीं ॥
नरसीनिरखिलीलाजाहिनरमूढनिज, चित्तमेंविचारैनरप्राकृतसमानहीं ।
ऐसेश्रीगोपालसंगखेलतजेग्वालबाल, रघुराजतिनकोसुपुण्यक्योंबखानहीं ॥ ११ ॥
शिवसनकादिशेषनारदपराशरादि, विश्वामित्रऔवासिष्ठब्रह्मवादिजेतेहैं ।
करिकेअनेकयोगयागजाकीपदरज, जनमअनेकहूँमेंपायेनहिंकेतेहैं ॥

रघुराजकहाँलोंवखानेकहोंगोपभागि, जोनप्रभुपंचहुँप्रकारमुक्तिदेतेहैं ।
सतचिदानंदरासीव्रजकोविलासीभयो, व्रजकेनिवासीतेहिभुजभरिलेतेहैं ॥१२॥
दोहा—कंसपठायोतेहिसमै, बलीअघासुरजोय ॥ आयोद्रुतवृंदावनहि, हरिकोमारनसोय ॥
यद्यपिअमरअमीकियपाना । सपन्योनाहिंमरणकरभाना ॥ तद्यपिनिरखिअघासुरकाहीं । मरनहेतुसुरसदाडेराहीं॥
केहिविधिहोयअघासुरनाशा । परखेरहतकियेयहआशा॥१३॥ बकीबकासुरकोलघुभाई।तोनअघासुरव्रजमहँआई॥
ग्वालबालसँगतहँनंदलाले । खेलतलखिजरिगयोकराले ॥ तबअसमनमहँकियोविचारा। मोरभ्रातभगिनीयहमारा॥
तातेसखनसहितनँदछोरे । करिहोंआजुएकहीकोरे ॥१४॥ इनकेमरेसबैमरिजैहैं । व्रजवासीनाहिंएकौरहैं ॥
दोहा—व्रजवासिनकोप्राणयह, तातेमारहुयाहि ॥ तनुतेनिकसेप्राणजिमि, रहतशरीरहुनाहिं ॥
कृष्णहिंविनाप्राणतेकीबो।भगिनीभ्राततिलोदकदीबो॥१५॥असविचारिशठसर्पसुरूपा। रच्योएकयोजनभरिभूपा॥
महाशैलकेसरिसमोटाई । अतिकठोरतातनुहिंदेखाई ॥ दीहदरीसमवदनवगारी । सबकोलीलनमनहिंविचारी ॥
पसर्योअजगरमारगरोकी।जोदेवनकोकारकशोकी॥१६॥एकओंठमाहिमहँअहिराख्यो । एकओंठतेमेघननाख्यो॥
डाढशैलकेशृंगसमाना । तासुवदनअँधियारमहाना ॥ लंबीपथसमजीभअखंडा । कढतश्वासमनुपवनप्रचंडा॥
दावानलसमनैनभयावन । पर्योपंथमहँअतिहिंअपावन ॥ १७ ॥
दोहा—निरखिमहाअजगरतहाँ, ग्वालबालतेहिकाल ॥ मानेंवृंदावनसुछवि, नहिंजानेनिजकाल ॥ १८ ॥
लगेपरस्परभाषनऐसो । देखहुसखाशैलयहकैसो ॥ मनहुँमहाअजगरमधिकानन । देखीपरैदरीजनुआनन ॥
मानहुँहमरेलीलनहेतू । बगरायोमुखव्यालसचेतू ॥ १९ ॥ कोउकहसत्यकहोतुमभाई । मोहूकहँअसपरैजनाई ॥
गेरुअंगलखिपरैदराजै । जनुसंध्यारविकरघनभ्राजै ॥ मानोंओंठउपरकीसोई । तेहिंछायाअधरहुअधजोई ॥२०॥
उभैदरीदुहुँओरसुहावै । ओंठप्रांततेईछविछावै ॥ तुंगशृंगजेमधिलखिपरहीं । तेइजनुडाढमहाभयभरहीं ॥२१॥
दोहा—जोमारगयहलखिपरै, सोमनुरसनाजासु ॥ दरीकेरतमलखिपरै, सोईमुखतमतासु ॥ २२ ॥
दावदहितवनमारुतआवै । सोअजगरश्वासहिसमभावै॥दहनदह्योवहुजीवनकाँहीं।तेहिंउरुगंधअहैयहिमाँहीं ॥२३॥
सखाकह्योकोउविहँसितहाँहीं । जोहमजैहैंयहिपथमाँहीं ॥ तोयहपरवतअजगररूपा । हमकोगहिडारिहैसुखकूपा ॥
तबकोउकहकसमृपावतावो । वृथाशैलकोसर्पवनावो ॥ जोअजगरहूहैहैभाई । तोबकहीसमहनाईकन्हाई ॥
तासुवचनसुनिसखासुखारी । हँसतभयेसबदैदैतारी॥चलेअघासुरमुखकीओरा । हरिकोमुखनिरखतसबछोरा॥२४॥
सुनिकैसखनपरस्परबानी । नँदनंदनमनमेंअनुमानी ॥
दोहा—निरखिअघासुरकोसखा, करिकैमृषाविचार ॥ प्रविशनचाहतवदनमें, रोकबउचितहमार ॥ २५ ॥
असविचारिजबलोंयदुराई । रोकहिंसखनदौरिनियराई ॥ तबलोंबालकवत्सनरेशा । कियेअघासुरवदनप्रवेशा ॥
चंदकियोनहिंवदनसुरारी।परखिरह्योआगमनमुरारी॥२६॥सखनअघासुरउदरविलोकी।प्रीतिविवशह्वैगेहरिशोकी॥
पुनिअसमनमहँकृष्णविचारे । ग्वालबालहैंदासहमारे ॥ हमरेकरतेयेसबछूटी । अहिजठरानलजरिहैंजूटी ॥२७॥
धौंइनकीअभागअबआई । कहाउचितकरिबोयाहिठाँई ॥
दोहा—सखाबँचैंअजगरमरे, येदोऊइकसाथ ॥ होयकौनविधियहिसमै, इनकेहमहींनाथ ॥
अबमेरेप्रविशेविना, अजगरआननमाँहिं ॥ ग्वालबालबचिहैंनहीं, यहशठमरिहैनाँहिं ॥
असविचारिप्रविशेतेहिसुखमें।दुखीदयालदासकेदुखमें॥२८॥प्रविशेलखिअहिवदनगोविंदे । रहेजेमेघओटसुरवृंदे॥
तेसभीतकियहाहाकारा । हरिद्रोहीभेसुखितअसारा॥कंसहुँखबरिपाइसुखमान्यो।राक्षसगणजैवचनबखान्यो॥२९॥
। दोऊशोरसुनतभगवाना॥जरतजोहिजठरानलमाँहीं । बछरनग्वालनबालनकाँहीं ।
। दियोवढायकृष्णनिजरूपा३०॥रुकीअघासुरकीतवश्वासू । निकसेनैनवहतवहुआँसू ।
ओरा । लह्योअघासुरकसमलघोरा ॥

दोहा-रुकीश्वाससबमार्गकी, तबफूट्योब्रहमंड। ताहीमारगह्वैकढ्यो, अजगरजीवअखंड ॥ ३१ ॥
जबमरिगयोअघासुरभारी। तबहिंजियावनदीठिनिहारी ॥ बालकवत्सजियायमुरारी। ताकेमुखतेतुरतनिकारी ॥
आपहुनिकसेताकेमुखते।अतिशयसुखीसखनकेसुखते॥अतिअदभुतअहिजीवप्रकाशी। भयेदशहुदिशितेजहिराशी
निकस्योताकेतनुतेतबहीं॥विस्मयभरतसुरनउरसबहीं॥कछुक्षणनभमेंपेखिकृष्णकहँ॥निकस्योहरिलखिप्रविश्योतिनमहँ॥
देवसबैअतिआनँदपाये। हरिपैअमितसुमनझरिलाये ॥ नाचनलगींअप्सरानानां। करतभयेगंधर्वहुगाना ॥
दोहा-चारणदीन्हेंदुंदुभी, मुनिगणअस्तुतिकीन। जैहरिजैहरिकरतभे, हरिपारषदप्रवीन ॥ ३४ ॥
मंगलशोरसुनतअतिभारी। औरहुबाजनकीझनकारी॥ब्रह्मलोकतेब्रह्माआयो। देखिचरितअतिविस्मयपायो॥३५॥
चर्मअघासुरकोमहराजा। वृंदावनमहँरह्योदराजा ॥ भोसुखायकंदरासमाना। बहुतकाललगिनाहिंनशाना ॥
केलिकंदरागोपनकेरी। होतभईअहिदेहबडेरी ॥ ३६ ॥ यहचरित्रबालनकेसाथा। कियकौमारवैसमहँनाथा ॥
पैअहितेआपनोबचाउब। दुष्टअघासुरकेरनशाउब ॥ यहपौगंडवैसमहँआई। व्रजमहँबालनदियेसुनाई ॥ ३७ ॥
दोहा-नहिंअचरजकछुकृष्णको,कृपासिंधुजगदीश। जेहिपरसतअघअनघह्वै,लहगतिअसतअदीश॥३८॥
जासुरूपध्यावतउरमाँहीं।पतितहुद्रुतवैकुंठहिंजाँहीं ॥ सोप्रभुअहिउरगयेप्रत्यच्छा।काअचरजगतिलहीजोस्वच्छा॥
प्रभुसताचितआनँदघनरासी। अहजासुमायानितदासी ॥ ३९ ॥

श्रीसूत उवाच।

यहिविधिशुकमुखतेद्विजराई। यादवदेवदत्तनृपराई ॥ सुनिकैकृष्णचरित्रसुहावन। मोहिगयोनृपकोमनपावन ॥
पूछ्योव्यासपुत्रयहपुनिके। कछुसंबंधलगतनहिंगुनिकै ॥ ४० ॥

राजोवाच।

पंचवर्षकेजबजगपालक। मारिअघासुररक्ष्योबालक ॥ बालकवर्षरोजमहँआये। हननअघासुरसबनसुनाये॥४१॥
दोहा-बालकइतनेकाललों, कहँरहेमुनिराय। यहअचरजलागतहमें, सोसबदेहुसुनाय ॥
याहूमेंकछुहोयगो, हरिलीलाविस्तार। अबनहिंगोवहुकरिकृपा, मैंतिकरहुविचार ॥ ४२ ॥
क्षत्रिनमेंहमनीचहैं, तदपिधन्यहैंनाथ। क्षणक्षणपीवाहिंआपसों, कृष्णकथामुदपाथ ॥ ४३ ॥

श्रीसूत उवाच।

सवैया-पूँछतभेअसजोरिकेहाथतहाँकुरुनाथजवैमुनिनाथे। प्रेमवसैरहीभूलीशुकेंजोसोऊसुधिआइसुविस्तरसाथे ॥
एकमुहूरतलौंरघुराजरह्योमगनैसुखकेनिधिपाथे। फेरिसम्हारिकैकृष्णकेदाससोलागेकहेमुनिकृष्णकीगाथे४४॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-भलोप्रश्नकीन्ह्योनृपति, महाभागकुरुराज। सबभागवतनमेंअहो, सत्यसत्यशिरताज ॥
नवनवकथासुननहरिकेरी। क्षणक्षणबढ़ैभूपरुचितेरी ॥ १ ॥ जेजनअहैंसारकेमाही। तिनकोयहीसुभावसदाही ॥
कृष्णकथाक्षणक्षणमेंसुनते। तदपिताहिनवनवनितगुनते ॥ वाणीश्रवणचित्तहरिमाँहीं। लगेरहतछूटतकहुँनाँहीं॥
जिमिकामीकामिनकीबाता। सुनतरहैनहिंकबहुँअघाता॥ तसहियदुपतिकथासदाहीं॥सुनतसंतनहिंकबहुँअघाहीं २
अबमैंगुपतहुचारितभाषिहौं। तुमसोंकछुनछिपायराखिहौं॥सुमतिशिष्यभोगुरुसुजाना॥वस्तुगोपहूकरैबखाना॥३॥
दोहा-जबहिंअघासुरबदनते, निकसेबछराग्वाल ॥ तबतिनसोंविहँसततहाँ, बोलतभयेगोपाल ॥

चलहुयमुनकेपुलिनमझारी । तहँअतिशीतलबहैबयारी॥ ग्वालबालसुनिहरिकीबानी।निजनिजबछरालैसुखमानी
यमुनापुलिनगयेचलिआसू।तहँअतिशयसबलहेहुलासू॥सकलसखनअसवचनसुनाई।बोलतभेतहँकुँवरकन्हाई॥
लखौसखौयमुनाकोतीरा । बहतसदाजहँत्रिविधसमीरा ॥ खेलनलायककोमलबालू।अतिहिस्वच्छमनुरतनरसाल
सरसमलसाँहिंयमुनकेसोता । जिनहिंनिरखिमुदहोतउदोता॥विकसेवारिजचारिप्रकारा।तिनमेंभ्रमरकरहिंगुंजारा

दोहा–कालिंदीकेकूलमें, काननकुलकमनीय ॥ केकीकीरहुकोकिला, कलरवकरहिंसुकीय ॥

नवपल्लवकुसमिततरुसोहैं । कोअसजोलखिकैनहिंमोहैं॥अतिशीतलछायासुखदाई । झरेसुमनमनुसेजबिछाई॥
असमेरेमनआवतभाई । लैहैमोदइतसबमिलिखाई ॥ दिनदुपहरतेअधिकहुँआयो । ग्वालनबालनक्षुधासतायो
तातेखाययमुनतटमाँहीं । पुनिखेलहिंबहुखेलनकाँहीं॥बछरहुकरहिंयमुनजलपाना।फेरिचरहिंकोमलतृणनाना॥
सुनिकैकाँन्हकुँवरकीबानी । बोलेसखासबैसुखमानी ॥ भलोवचनयहकाँन्हसुनायो । हमहूँकोअतिक्षुधासतायो

दोहा–असकहिकैबालकसबै, निजनिजबछरनआनि ॥ पानकरायोयमुनजल, अतिप्यासेतिनजानि ॥

पुनितहँछायातृणहुँनवीने । तहाँराखिबछरनसुखभीने ॥ आयेसकलरहेजहँश्यामा । बैठेहरिहिंघेरितेहिठामा ॥
खोलिबालकननिजनिजसीके । ऍचेअन्नमधुरअतिनीके॥७॥ हरिकेअतिसमीपसबबैठे । अनुपमआनँदअंबुधिपैठे
कियेसखामंडलीअनेका।निरखहिंसबयदुपतिमुखएका।जिमिविकसेसरसिजरविदेखी।तिमिहरिमुखलखिसुखितविसेखी
कमलकर्णिकाजिमिमधिराजैं।चहुँकितअमलदलनगणभ्राजैं।तिमिमधिमाधवबालनचहुँकित।बैठेवृंदावनमहँपुलकित

दोहा–कोउकदलीकोउकुसुमदल, कोउपुरइनिकेपात ॥ कोउकोमलदलदोनरचि, कोउबहुतृणलैतात ॥

नारिकेलफलकोकोउफोरी। कोउकदलीबोकलाबहुजोरी॥यहिविधितेबहुभाजनकरिकै।ऍचिसीकतेभोजनधरिकै॥
सीकहिमहँकोउसखातहाँहीं । खानलगेमाधवसँगमाँहीं॥९॥निजनिजयकएकनदरशावैं। अपनेनमहँबहुस्वादबतावैं॥
कोउकहहैतेरोअतिसीठो । तेरेतेमेरोअतिमीठो ॥ कोउकहमधुरमोहिंनाहिंप्यारो । खानअमिलमनरहतहमारो ॥
कोउकहतीततोरअतिभोजन । ऐसहिसखाखातप्रतिरोजन ॥ लेहिंखायइकएकदेखाई।करपसारिसोरहेलजाई॥

दोहा–कोउकाहूकोबरबसै, भोजनलेहिंछोंडाय ॥ अबलमानिताकोसखा, सिगरेहँसेठठाय ॥

यकएकनमुखकौरहिडारें । बडोस्वादअसवचनउचारें ॥ कोहुकोहरिनिजहाथनदेहीं । बरबससखाखैंचिकोउलेहीं॥
खातखातकोउधूईमचावें । ब्रजवल्लभपरिवीचबचावें ॥ कोउकाहूपैमाखनडारी । जातपरायदूरिदैतारी ॥
कोहुकोदधिकोउलेतचोराई । पूछेबोलहिंबातबनाई ॥ कोहुकोहुकेमुखमाखनमेलैं । कोउकोहुकहँआगूकहँठेलैं॥
कोउकहमैंतोरउबहुखायो । तबहूँमैंनाहिंआजुअघायो ॥ सोकहतंघरकोकंगाला । कसनखाइलहिबहुयहिकाला॥

दोहा–यहिविधिभोजनकरततहँ, बालनसहितगोपाल ॥ विविधिभाँतिआनँदभरत, लीलारचतरसाल ॥ १०॥

सं०–कटिकेपटमेंकसीबंसीलसीदुपटीलपटीलकुटीबिलसै।तिमिकाछनीबीचविपाणकसेशिरमोरपखानिकोमोरलसै।
रघुराजविराजतवामकरेफलगावनमेंनहिकोरखसे । असमाधुरीमूरतिमाधवकीकहुकाकोलखेनाहियोहुलसै ॥
बैठेसखातुलसीवनमेंचहुँओरतेघेरिकेनंदकिशोरै । खायखवायहँसायहँसैअतिआनँदमाचिरह्योतेहिठौरै ॥
श्रीरघुराजलखेसबदेवकहैंजोगहैमखभागकरोरै । ग्वालनबालनकेकरतेसोगोपालछोड़ावतमाखनकोरै ॥ ११॥

दोहा–हेकुरुपतियहिभाँतितहँ, करतसुभोजनकाँहि ॥ तृणलोभीबछराचरत, गयेदूरिवनमाँहि ॥ १२॥

बछरननिकटनबालविलोकी । भोजनत्यागिभयेअतिशोकी॥शंकितसखननिहारिमुरारी।तिनसोंमंजुलगिराउचारी
बैठिमित्रभोजनतुमकरहू । बछरनकोसंदेहनधरहू ॥ मंहोंलैलकुटीकरदोरी । लैहोंबछरनआशुबटोरी ॥ १३॥
असकहिकैगटिहकरमाँहीं।इककरलकुटलिसीतहाँहीं॥बछरनहेरनहितनँदलाला । चलेतहाँतेअतिहितताला॥
. . . . . . ।मनमोंकिचितकौतुकलेगो॥ ओगह्वलनकृष्णकोदीला । विधिब्रजआयोहुतोउदेसे

दोहा–बछरनलौश्रीकृष्णके . . . . . . ॥ बछरनहरिलैगोतुरत, अजआपनेअगार ॥

वछरनढूँढनअतिअतुराई । गयेदूरिकढ़िजवहिंकन्हाई ॥ तवपुनिआइइतैसुखचारी । बालनहूँलैगयोसिधारी ॥१५॥
उतैकृष्णवछरननहिंपाये । लौटिआशुताहीथलआये ॥ सखउनकोनहिंतहाँनिहारे। मित्रमित्रकहिऊँचपुकारे॥१६॥
पुनिखोज्योतिनकोचहुँओरा।मिलेनवछराअरुव्रजछोरा॥विधिकोकर्मसकलप्रभुजान्यो।तवअपनेमनअसअनुमान्यो
जोहमघरअकेलअवजैहें । ज्वावकोनव्रजवासिनदैहें ॥ जवपुँछिहैंहमसेव्रजपालक । कहँछोरेवछराअरुवालक॥१८॥

दोहा-वनिहिनऊतरुदेततव, तातेअसअनयोग । मेंहीवछरावालह्वै, जाउँजहाँव्रजलोग ॥
तिनमातनमुददेनहित, असविचारिव्रजचंद । आपहिंतहँह्वैजातभे, वछरावालकवृंद ॥

कवित्त-जैसेजोनरंगवच्छजैसोजोनरूपवाल, जैसोजासुपदपानिजैसीजासुचालहै ॥
जैसोजासुवेणुओविषाणदीनसींकछरी, जैसोजासुभूषणऔवसनविशालहै ॥
रघुराजजैसोजासुशीलगुणवैननैन, जैसीजासुवैसऔविहारभोंहभालहै ॥
तैसेरूपतैसेरँगतैसीरुचितैसीरति, तैसीमतितैसीगतिह्वैगयोगोपालहै ॥

दोहा-निजरूपीवछरनसखन, संगखेलिकछुकाल । वहुरतभेव्रजगाउँको, संध्यासमैगोपाल ॥ १९ ॥

वालनवछरनसहितरमेशा।नितप्रतिसमव्रजकियोप्रवेशा॥जिनकेजौनवच्छअसवालक।तिनतिनघरलैत्रिभुवनपालक
सवकोयथायोगपहुँचाये । निजवछरनयुतनिजगृहआये२१वालकसवनिजनिजगृहआई। द्वारहिंतेदियवेणुवजाई ॥
वेणुशोरसुनितिनकीमाता । धायउठायलायलियगाता॥सुधासरिसपैपानकरायो।वहुविधिभोजनतिनहिंजेमायो२२
कान्हरआपआपनेद्वारे। वेणुटेरिनिजमातुपुकारे ॥ सुनतवेणुयशुमतिउठिधाई । लियोलालकहँअंकउठाई ॥

दोहा-गैभीतरलैलालको, चौकीपरवैठाय । लगीचरणचापनजननि, जेहिंपीरामिटिजाय ॥

पुनिउवटनसवअंगलगायो।सुरभिसलिललालहिनह्वायो॥ अलंकारअंगनिपहिरायो । केसरिचंदनभाललगायो ॥
शिरटोपीझंगुलिपहिराई । मिश्रीमाखनसुतहिंखवाई ॥ पुनिपूँछनलागीतहँमाता । खेल्योखेलआजुकाताता ॥
काँन्हकह्योहमवच्छचरायो । वृंदावनलखिअतिसुखपायो ॥ पुनिपलनापरदियपौढाई । कथाकहनलागीसुखदाई ॥
देनलगेहरिहुलसिहुँकारी । तवयशुमतियहकथाउचारी ॥ रहेएकदशरथनरनाहू । ललातासुभेतीनिविवाहू ॥
इकद्वैद्वैकेइकइकएकै । रानिनकेसुतभेसविवेकै ॥

दोहा-जनकनृपतिइककोउरहे, रहीसुतातेहिंचारि । तिनसोंचारिहुँकुँवरके, भयेविवाहविचारि ॥

रामज्येष्ठपुनिभरतकुमारा । पुनिलछिमनरिपुदवनउदारा ॥ देनलगेरामहिंनृपराजू । संमतकरिसवप्रजनसमाजू ॥
तवकेकइभरतमहतारी । राजासोंअसगिराउचारी ॥ देनकहेजेद्वैवरदाना । तेअवदेहुतुरतमतिमाना ॥
भरतहिराजरामकहँकानन । होइहिकंतवातअवआनन ॥ दशरथपरेधर्मकीफाँसी । दियोरामकहँवनहिंनिकासी
रघुवरकोलछिमनलघुभाई । रामनारिजानकीसुहाई ॥ येदोउगयेरामसँगलाला । चित्रकूटवनवसेविशाला ॥

दोहा-तिनहिंलेवावनभरतगे, तवहुँनआयेधाम । गयेदंडकारण्यको, सीतालछिमनराम ॥

पंचवटीमहँकुटीवनाई । वसेजानकीयुतदोउभाई ॥ तहँलंकापतिआयलोभाना । हरिसीताकहँतुरतपराना ॥
इतनाकहतयशोमतिकेरे । चौंकितहाँकान्हरअसटेरे ॥ लछिमनधनुपमोरद्रुतदेहू । तुमहुँशरासननिज[illegible] ॥
काटहुदशशिरदशशिरकेरे । देखहुवाणवृंदअवमेरे ॥ सुनिकैमातुललाकीवानी । डरेसपनमहँसुतकहँजानी ॥
कह्योललाइतहैकोउनाँहीं । मैंवैठीतुवनिकटहिमाँहीं ॥ असकहिराईलोनउतारी । हरिअँगतारिधनीइकवारी ॥

दोहा-ठोंकिठोंकिपुनिकृष्णको, दीन्ह्योंमातुसोवाय । लगीविचारनपुनिमनहिं, कासुत[illegible] ॥२३॥

गौवेंसुनिवछरनगणशोरें । दौरीकरिहुंकारअथोरें॥निजनिजवछरनलगींपियावन । चाटहिंअंगप्रेम[illegible] ॥२४॥
वछरावालभयेहरिजवते । अधिकप्रीतिवाढीव्रजतवते॥जानीनहिंकोउहरिकीमाया । विनाकप[illegible] २५
यहिविधिवछरावालकह्वैकै । दीन्ह्योंसुखलीलावहुकैकै२६नितहिंचरायवाछरेलावें।नितहिंवाल[illegible] ॥२७॥
वीतेवर्षदिवसयहिभाँती। वाकीरहीपाँचछवराती ॥ एकसमयवलरामहिंसाथा । वच्छचराव[illegible] ॥ २८ ॥

दोहा—औरसयानहुँगोपसब, लीन्हेंलाखनगाय । गोवर्धनकेशिखरमें, तिनकोरहेचराय ॥ २९ ॥
शैलशिखरतेअतिशयदूरी । निरखेउनिजनिजबछरनभूरी ॥ गऊगोवरधनतेंसबधाई । राहुकुराहनकछुचितलाई
कूँदतकानहुँपुच्छउठाई । करतशोरहुंकारहुआई॥३०॥सबबछरनकहँचाटनलागीं । स्रवतपयोधरअतिअनुरागीं
लगीकरावनतेपयपाना । बछ्योदूधकछुधरणिअडाना ॥३१॥ रोकनलगेगोपबरजोरी । रुकीनधेनुप्रेमरसबोरी ॥
तबबाँधनलागेबहुनोई । तबहुँनरुकीबाछरनजोई ॥ हारिलजायरहेसबगोपा । कियेबालकनपैअतिकोपा ॥

दोहा—जसतसकैबहुकुपथते, उतरिगोवर्धनशैल । आयेबालकनकेनिकट, ताड़नहेतुउतैल ॥ ३२ ॥
निरखतबालकआँखिनमाँहीं।कोपरह्योतनकौतनुनाँहीं॥शीशसूंघिलियअंकउठाई । चूमतमुखदृगआँसुबहाई॥३३
गौवेंनौबछरनकहँत्यागी।भईप्रथमबछरनअनुरागी॥गोपहुसुतनपरसिसुखपाये । जसतसकैपुनिभवनसिधाये॥३४
लखिकैप्रीतिअलौकिकरामा।मनमेंकियविचारमतिधामा॥जेबछरात्यागेपयपाना । धेनुप्रेमतिनपैअधिकाना॥३५
जसबालनपैपूरुबप्रीती । तेहुँतेअधिकभईरतिरीती ॥ कहाभयोयहजानिनजातो।यहअतिअचरजमोहिंदरशातो।

दोहा—ब्रजमेंबछरनबालपै, प्रेमरह्योअसनाँहिं । बिनाअवधिजसप्रेमअब, यहसंशयमनमाँहिं ॥ ३६ ॥
कहँतेंयहमायाब्रजआई । धौंसुरमनिधौंअसुरबनाई ॥ मोहिनमोइहिदूजीमाया । यहकीन्हीविशेषियदुराया ॥
मोप्रभुकोकछुअचरजनाहीं । ईशहुकेहैंईशसदाहीं॥३७॥असविचारकरिकैबलरामा। दिव्यदृष्टिकरिकैतेहिठामा।
बछरनअरुबालकनअनूपा।जानिलियोसबहैंहरिरूपा॥३८॥पुनिइकांतमहँहरिपहँआई । रोहिणिनंदनगिरासुनाई।
प्रथमहिंब्रजबछराअरुबालक । सुरऋषिअंशरहेजगपालक ॥ तेयहिकालनपरैंनिहारे । जानिपरैंसबरूपतिहारे।
यहलीलाकीन्हीप्रभुकैसी । सोकहियेमोसोंअबजैसी ॥

दोहा—तबबलसोंहरिकहतभे, बछराबालनकाँहिं ॥ हरिलैगोकरतारसब, अपनेधामहिंमाँहिं ॥
मैंब्रजवासिनखेदविचारी । लियोबालबछरनवपुधारी ॥ बीत्योसंवतइकबलराई । तुमहूँकोनहिंपरयोजनाई ॥
असकहिवत्सचरावनलागे।रामहुँसुनिअतिशयसुखपागे॥उतविरंचिकोबीत्योइकछिन।यहाँव्यतीतभयोसुवरषदिन।
धरिनिजधामबालबछरनको।आयोपुनिविधिहरिनिरखनको।हरिकोबछरनबालनसंगा।तैसहिंखेलतलख्योअभंगा॥
करनलग्योतबमनहिंविचारा । काहभयोआश्चर्यअपारा ॥ मैंहरिबछरनबालनकाँहीं । राख्योमायासेजहिंमाँहीं।

दोहा—तेअबलौंनाहिंउठतभे, येकि—॥ ४१ ॥—ततेइतआय ॥ खेलतहैंहरिसंगमें, कछुनाहिंपरेजनाय ॥
पूरुषरहेजौनजसजेई । तैसहिवत्सबालजनतेई ॥ ४२ ॥ वेहैसाँचकियेहैंसाँचे । जानिपरहिनाहिंसाँचअसाँचे ॥
बहुतबारलगिअसकरतारा।खड़ोगगनमनकरतविचारा॥४३॥आयोहरिकेमोहनहेतू।मोहिआपहीभयोअचेतू॥४४
जिमिनिशितमननिहारबढ़ावे । नहिंरविढिगजोंगनदुतिपावे ॥ ऊँचसमीपनीचकीमाया। सकैनकरिप्रभावनसाया।
परेआपनेऊपरआई । देतसबैनिजज्ञाननशाई ॥ ४५ ॥ देखतहीतुरतेविधिकेरे । बछराबालकसबघनेरे ॥

दोहा—वृंदावनकेमध्यमें, करतप्रकाशअनूप ॥ देखिपरेकरतारको, सबनारायणरूप ॥

छंदगीतिका—तनश्यामजलदसमानसुंदरपीतपटअतिराजहीं।४६।भुजचारिअंबुजशंखचक्रगदादिकरमहँभ्राजहीं।
शिरकीटकुंडलकानहीरनहारवरवनमालहे ॥ ४७ ॥ कटिसूत्रकंकणकटकअंगदअंगुलीयविशालहे ॥
श्रीवत्सअरुकौस्तुभलसतपगमणिननूपुरसोहहीं४८निजजनसमर्पिततुलसिमालसुशीशपगलोंराजहीं॥४९
मंजुलमयंकमरीचिसममुसक्यानकीआभाभली।अतिचारुचंचलचखनचितवनिमुनिनकोआनंदथली॥५०
विपिनादितृणपरयंतलोंधारिरूपजगतचराचरं । तनानिगायअनेकअस्तुतिपृथकप्रभुकोसबकरं ॥ ५१ ॥
अनिमादिमहिमाअरुअजादिकशक्तितत्त्वहुचौबिसों।५२।गुणकालआदिकरूपधारीभजैप्रभुकोनिशिदिनै।
आनंदरूपअनंतज्ञानछदेवमूरतिपरमे । वेदांतज्ञातनदृष्टियेनहिंसकलतिनमहिमावसे ॥ ५४ ॥
जाकेप्रकाशदिविश्वपदप्रकाशहोनछदेवहीं । तहिनायकोबहुरूपदेख्योनाथिवदनतदेवहीं ॥ ५५ ॥

दोहा-यहअचरजलखिअजतहां, करिकेविविधविचार ॥ रह्योअचलह्वैमौनतहँ, पटपूतरीअकार ॥ ५६ ॥
हरिमहिमाअतर्कसुखराशी। जोसवमायाकीहैनाशी ॥ नेतिनेतिजेहिंवेदवखानै। मुनिजेहिंप्रकृतहुपरअनुमानै ॥
कछुककाललगिलखिमुखचारी।पुनिनसक्योनैनहूँनिहारी।असविधिकीहरिदशाविलोकी।लियमायाकनातनिजरोकी
तवविधिसावधानह्वैगयऊ।जससतसकैहगखोलतभयऊ।निजतेसहितविश्वकहँदेखी।मृतकसरिसउठिअचरजलेखी५८
चकितचहूँदिशिलखतदिशानन।जनजीवनवहुतुलसीकानन५९भूपतिजेहिंवृंदावनमाँहीं।वैरछोंडिनिजजंतुसदाँहीं॥
नरमृगसिंहसर्पखगजेते। मित्रसरिसविहरैंसँगतेते ॥ ६० ॥

दोहा-परब्रह्मनहिंअंतजेहिं, अद्वैबोधअगाध ॥ सोइँनँदनंदनकरत, व्रजमहँचरितअवाध ॥
पुनिसिगरेवछराअरुवालक।तिसहिलख्योव्रह्मपुरपालक॥लिहेकौरकरमहँनँदलाले। हेरतवछरनसखनउताले॥६१॥
निरखिचतुरमुखतजिनिजहंसा।करतकृष्णकीविपुलप्रशंसा।गिरयोकनकदंडहिंसमधरणी।निंदनकरतआपनीकरणी
चारिहुमुकुटकोटिहरिचरणा।वारवारपरसतसुखभरणा॥पुलकिततनुढारतहगआँसू।करिप्रणामपुनिसाहितहुलासू ॥
पुनिपुनिउठिउठिकरतप्रणामा।निरखतनँदनंदनघनश्यामा।सुमिरिसुमिरिनिजमननिजकरनी। लखिलखिहरिमहिमासुखभरनी

दोहा-करिप्रणामवहुवारलगि, पुनिउठिमंदहिंमंद ॥ लखिमुकुंदमीजतहगन, पावतपरमअनंद ॥
कंधरनेकुनवायकें, जोरिजलजयुगहाथ ॥ ह्वैविनीतगदगदगिरा, वोल्योवाणीनाथ ॥ ६४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

ब्रह्मोवाच।

कवित्त-नवनीरदनीरजसोहततनें, शिरमोरपखानकोमोरभलो।
वरभूषणगुंजनकेपहिरे, वनफूलनकोवनमालगलो ॥
कटिमेंमुरलीलकुटीकरमें, यकपाणिमेंकौरकियेअमलो।
मनमोहनकोमनमोहनरूप, निहारिगयोनहिंकोनछलो ॥

दोहा-कमलाकोधृतचिह्नउर, मृदुपदविचरहुँपाग। मैंशरणागतरावरे, परउँआयशिरनाय ॥ १ ॥
छंद-मोपरकृपाकरियोगिदुर्लभरूपदीनदेखाय। जानेंनकोउमहिमातिहारीतोअचजनआय ॥ २ ॥
नहिंकछुप्रयासविज्ञानमेंकरिजेपुरुषचितचाय। सज्जनवदनतेसुनततुम्हरीकथानितमनलाय ॥
मनवचनकरमहुँतेकरतसेवनातिहारीनाथ। तेजीतितुमकोकरहिंनिजवशजगअजितयदुनाथ ॥ ३ ॥
जेमृदुमंगलदायनीतुवचरणभक्तिविहाय। नितज्ञानअरुविज्ञानकेरविवादवदतवढ़ाय ॥
तेलहतनाहिंतुमकोलहतकेवलक्लेशहमेश। जिमिकूटिवदगघानकोनहिंलहततंदुललेश ॥ ४ ॥
योगीजनेकनयोगकरिनहिंलहेतुम्हरोज्ञान। मुनिकैकथातुवभक्तजननतुवनिकटकरहिंपयान ॥
नहितुमहिंजानतयोगकरिनहिंज्ञाननहिंविज्ञान। जानतलहेंतुमकोअवशिनिजभक्तिगुकियपान॥ ५ ॥
चितअचितव्यापकव्रह्मकोजानौपदापिटियजानि। यभांतिविनमायुर्गमृगनिमकतनहिंहरखानि ॥ ६॥
नभतारहिमकरपरनिरजकनयदापिजिनगनिलीन। नहिंनदपिनेहहुकालमहँतुवगुणनगनहिंप्रवीना॥७॥
कवहोइगोहरिकृपामोपरअसमचहतमनमाँहि। ननमनहुँनेतुमकोनवनजेजनकेहिनजांहि ॥
तेपुरुषहैंसतिमुक्तिभागीतिनहिंनाहिंनसार। सुनिमुनिकपानिनहीनिजनतुवप्रेमपारावार॥ ८ ॥

प्रभुलखहुममतिमंदताजोतुवसमीपहिआय । देखनचह्योतुवविभौवैभववालवत्सचोराय ॥
मायाविकेमायावितुममायाकरीतिनपाहिं । कहुँवाडवानलकेनिकटदीपतफुलिंगदेखाँहिं ॥ ९ ॥
मैंईशमानीहौंअज्ञानीविवशमायाअंधु । अपराधमेरोछमहुप्रभुअवआशुहींजगवंधु ॥
यहनाथकीसतिनाथताकरतोअनाथसनाथ । मेरेतुमहिंहौनाथतातेमाथधरियेहाथ ॥ १० ॥
कहँएकमैंब्रह्मांडमधिजेहिंसप्तवीताकाय । कहँआपजाकेरोमरोमनिहैंब्रह्मांडनिकाय ॥ ११ ॥
शिशुपदचलाउवउदरजननीगुनतनहिंअपराध । तुवकुक्षमेंजगतेहिमहूँतातेक्षमहुँपतिसाध ॥ १२ ॥
जगप्रलैसागरशैननारायणसुनाभीकंज । तातेप्रगटविधिवातयहनहिंमृपाहेदुखभंज ॥ १३ ॥
तुवसत्यनारायणजगतसाक्षीत्रिलोकअधीश । जलशायनारायणतिहारीमूर्तिहैयदुईश ॥ १४ ॥
उतपतिभयेजवहमकहातुवरूपदेखेनाँहिं । तवआपहींकरिकैकृपादरशनदियोमोहिकाँहिं ॥ १५ ॥
अवतारयहिनिजमुखदेखायोजननिकहँसंसार । ऐश्वर्यअपनोप्रगटकरिकियव्रजधरणिसंसार ॥ १६ ॥
जसकुक्षिमहँतिहरेजगततसवाहिरहुदरशाय । केहिभाँतितेप्रभुरावरीमहिमासकैकोगाय ॥ १७ ॥
प्रथमहिंरहेतुवएकपुनिजेतेसुवालकवच्छ । लेतेभयेसवतुमहिंपुनिभुजचारिभेसवस्वच्छ ॥
मैंसकलतत्त्वनसहिततिनकोकियोअतिशयसेव । पुनिआपुहीकोलखतयकसन्मुखखडोयदुदेव ॥ १८
जोरावरीपदवीनजानततिनहिंविविधप्रकार । तुमहींप्रकाशितहोहुकरिमायाविपुलविस्तार ॥
जिमिसृजनमेंमैंविष्णुपालनहरनमेंत्रिपुरारि । ज्ञानीगुनहिंयेरूपतीनौअहैरूपमुरारि ॥ १९ ॥
निजदासपालनदुष्टघालनहेतुनाथअनूप । सुरनररूपिनतिरजकसलिलचरधरहुविविधसरूप ॥ २०
केहिंविधिकहाँकेहिकाजकवकितनेधरहुअवतार।भगवानव्यापकयोगपतिकोजानिचरितअपार ॥ २१
यहअसतस्वप्रसमानदुखमयअहैविश्वमहान । तुवशक्तितेतुमगेंत्रिविधलखिपरतनित्यसमान ॥ २२
परमात्मपुरुषपुरानसत्यअनादिआत्मप्रकास । अक्षरनिरंजननित्यसुखमयपूर्णरमानिवास ॥ २३ ॥
गुरुभानतेलहिज्ञानदृगअज्ञानतमकरिनास । तुमकोभजततेतरतयहभवसिंधुविनाहिंप्रयास ॥ २४ ॥
चितअचितव्यापकब्रह्मजानतनसतयहसंसार । जिमिदाममेंअहिभोगकीभ्रमनसतकरतविचार ॥ २५
अज्ञानतेभवबंधमोक्षनज्ञानतेयहवात । सतचितअनंदसरूपतुम्हरोभजनभ्रमभजिजात ॥
जिमिभानुकेढिगरैनवासरकोरहतनहिंभान । तिमिआपुकोप्रभुजानतैनहिंरहतहैअज्ञान ॥ २६ ॥
परमातमैनहिंजानिदेहहिआतमाकोमानि । खोजतरहतआतमहिंवाहेरअहैकुमतीखानि ॥ २७ ॥
जगमेंअनंतसुसंतजेतेजड़हुचेतनत्यागि । सवतेविलक्षणआपुकोगुनिहोतहैअनुरागि ॥
भ्रमजोभुजँगकोरज्जुमहँत्यागेविनाप्रभुताहि । नहिंसत्यहोनिप्रतीतिजियतेपुरुषकोगुणमाहि ॥ २८
विनतुवचरणपंकजकृपानहिंपरतितुवगतिजानि । चाहैअनेकनयोगजपतपकरैकोउश्रमठानि ॥ २९
अवनाथकरिकैकृपामोपरदेहुयहवरदान । यहजन्मतिरजकयोनिमहँजहँजन्महोयप्रमान ॥
तहँरावरेकेदासकोसतसंगमोकोंहोय । वडभागहैतुवचरणपंकजसेवहूँदुखखोय ॥ ३० ॥
•अमरोअमरारिमुनीशमहीशकियेमखकोटिविभूतिवनी । अवलोंनहिंतोपैतुम्हैंयदुनाथतेईतुमआपतेप्रीतिवर्द
व्रजशिशुह्वैजिनदूधपियोरघुराजसुभागनजाइभनी । धनिहैंधनिधेनुसवैव्रजकीधनिहैंधनिहैंव्रजकीरमनी ॥ ३१
दुचौवोला—अहोभाग्यहैअहोभाग्यहैव्रजवासिनकोनाथा । जिनकेपूरणब्रह्ममीतह्वैखेलहुएकहिसाथा ॥ ३२ ॥
व्रजवासिनकीभागकहाँलगिमोमुखजाइगनाई । पैहमहूँसवदेवधन्यहैंव्रजमंडलमहँआई ॥
प्रभुरावरोपदारविंदमकरंदअमीकरमूलें । वारहिंवारपियतनैननतेकोहमकहँजगतूलें ॥ ३३ ॥
यकतौदुरलभमनुजजन्महीपुनिव्रजमंडलमाँहीं । पुनिदुरलभवृंदावनमेंअतिगोकुलगोपनहाँहीं ॥

जिनव्रजवासिनकेतुमजीवनतेइहैंबड़भागी। तिनपदरजकेपरसहेतुमेंरहतसदाअनुरागी॥
देहुनाथअबमोहिंकृपाकरियहवृंदावनमाँहीं। लतागुल्मतृणतरुह्वैपाऊँगोपनपदरजकाँहीं॥
जेमुकुंदपदरजकहँश्रुतिगणखोजतरहैंसदाई। तेगोपालग्वालसंगखेलतरहतमीतकीनाई॥ ३४॥
कहादेहुगेव्रजवासिनकोयहबड़शोचहमारे। त्रिभुवनफलकेरूपआपहींचारिहुवेदउचारे॥
गरलदेनहितकपटरूपधरिव्रजपूतनासिधाई। सोऊसकलपापिनीपूरीजननीकीगतिपाई॥
येव्रजवासीतनुमनधनसबतुमहिंअरपिप्रमुदीन्हें। वाकीकौनवस्तुप्रभुमनमेंदेनविचारहिंकीन्हें॥ ३५॥
रागरोषमदलोभमोहसबतबहींलौंदुखदाई। यहसंसारकेदखानोसोतबलौंपरतदेखाई॥
महामोहकीजबरजँजीरैंतबहींलौंपगमाँहीं। जबलौंयदुपतिजीवजगतमेंहोतआपकोनाँहीं॥ ३६॥
बिनुप्रपंचतुमयदपिनाथहोतदपिप्रपंचप्रपंचो। लीलाललितदासहितकैकेधरणीमहँसुखसंचो॥ ३७॥
जेअसकहैंतुम्हेंहमजानेंतेजानैंमनमानैं। हमतौवचनतनुहुँअरुमनतेतुवप्रभावनहिंजानैं॥ ३८॥
तुमतौअहौनाथत्रिभुवनकेतुमतेकछुनछिपानो। आयसुदेहुकृपाकरिमोकहँनिजपुरकरहुँपयानो॥
क्षमहुनाथअबमोरकृपाकरियहसिगरोअपराधै। करहुदयामोपरयदुपतिअसतबमायानहिंबाधै॥ ३९॥
कवित्त-यदुकुलकमलदिवाकरक्षमाकेखानि, देवद्विजगौवेंसाधुउदधिमयंकजे।
परमप्रचंडजोपखंडसोअखंडतरु, दोरदंडपरशुविखंडननिशंकजे॥
क्षितिमेंक्षपाचरणक्षयकेकरनहार,भूमिकेहरनभारखलगणबाकजे।
कोटिनकलपमेरीकोटिनप्रणामतुम्हें, भानुआदिदेवनतेवंदअकलंकजे॥ ४०॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिहरिकीकरितहाँ, बहुअस्तुतिकरतार। दैपरदक्षिणकृष्णको, चारिचारित्रैबार॥
नेजपुरगमनहेतुमनदीन्ह्यो।पुनिपुनिप्रभुकोवंदनकीन्ह्यो॥४१॥माँगिसीखहरिहूविधिपाँहीं।लैनिजबालकबछरनकाँहीं॥
आयेजहाँरहेपहिलेहीं। भोजनकरतसखानिसनेहीं॥ तेहाँपुलिनमहँबछरनल्याई। बालनहूँकहँदियबैठाई॥ ४२॥
यहचरित्रबालकनहिंजाने। बैठेतहँअपनेकहँमाने॥ हरिबिनबीतिगयोइकशाला। पैक्षणार्धजानेसबग्वाला॥ ४३॥
हरिमायामोहितसंसारी। कहाकहानहिंदेतबिसारी॥ ४४॥ बछरनयुतहरिआवतदेखी। बोलेसखामहामुदलेखी॥
दोहा-आवहुआवहुकान्हतुम, बैठहुमधिमेंआय। अतिआतुरलौटतभये। बछरनकोलौटाय॥
तुमबिनहमयककौरनखाये। परखेरहेसनेहलगाये॥४५॥ हरिकहँभलोकियोनहिंखायो।यहितेमेंजलदीतहँआयो॥
असकहिहरितहँभोजनकरिकै। सखनसहितउरआनँदभरिकै॥उठितहँतेयमुनैद्रुतजाई।सखनसहितकरधोयकन्हाई॥
बछरनकोआगूकरिलीन्हें। वनतेगवँनभवनकहँकीन्हें॥ बालकवत्सलसतचहुँओरा। मधिमहँराजतनंदकिशोरा॥
सूखोचर्मअघासुरकेरो। सखनदेखायकृष्णअसटेरो॥ अतिआशुहियहगयोसुखाई। पैरनकारणकछूजनाई॥
दोहा-सुखदुखसबैकौतुकगुनत, बछरनहाँकतमंद। आवतभेव्रजगाँउको, संगसंगनँदनंद॥ ४६॥
सवैया-बरहीपखकोवनफूलनकोशिरमोरमहाछबिछावतुहैं।
बहुधातुनरंगतेरंगितअंगहियेवनमालसुहावतुहैं॥
लकुटीकरमेंकटिमेंकसेशृंगमनोहरवेणुबजावतुहैं।
कहिनामबोलावतहैंबछरानँदनंदनयोंव्रजआवतुहैं॥
दोहा-गावहिंमाधुरस्वरसखा, हरिचरित्रसुखसानि। जहँतहँठाढ़ीदेखतीं, व्रजवनितासुखमानि॥ ४७॥
यहिविधिनिजनिवेसहरिआये। बालहुनिजनिजभवनसिधाये॥निजनिजमातुनपदेसबजाई।दियेसबैअसबचनसुनाई॥

नंदलालइकअजगरमारयो । आजुमीचतेहमहिंउवारयो ॥ हरिकोनिरखितहाँनँदरानी।करगहिगईभवनसु
चरणचापिमज्जनकरवायो । दैभोजनपुनिसेजसोवायो ॥ ४८ ॥

सूत उवाच ।

हरिचरित्रयहसुनिकुरुराई । शुकाचार्यसोंगिरासुनाई ॥

राजोवाच ।

निजसुतहूपैअसअतिप्रीती । कबहुँनहोतजगतयहरीती ॥ सोयशुदासुतपैव्रजवासी । कसअसप्रीतिकरीसु
यहसंशयमुनिदेहुमिटाई । तबशुकदेवकह्योमुसक्याई ॥ ४९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—प्राणिनकोप्रियआतमा, तेंहिहितप्रियसबकोय।जसप्रियहोतोआतमा, तस कोउनहिंप्रियहोय॥५०
जेदेहैंआतमहाठिमानै । तिनहुँदेहुँमैंनेहमहानै५१देहात्मवादीजिमिपुरुपनको।अतिप्रियदेहनतिमिपुत्रनको॥५२
यदपिदेहजीरणह्वैजाती । तदपिनजीवनआशसिराती५३ तातेआतमाप्रियसबकाँहीं।भूपतिजगतचराचरमाँहीं५४
सबकेआतमहैंयदुराई ॥ देहीसमदरशैंव्रजआई ॥ तातेतिनमेंसबव्रजवासी । करीप्रीतिअतिशयसुखरासी ॥५५
थावरजंगमहैंहरिरूपा । असज्ञानीजानहिंसुनुभूपा ॥ ५६ ॥ जोभूपतिकारणजगकेरो । तेहुकारणहरिवेदनिवेरो
तिनतेभिन्नवस्तुजगमाँहीं । कहौभूपभापौंकेहिंकाँहीं ॥ ५७ ॥

दोहा—जेमुरारिपदकमलकी, प्रीतिपोतरचिलीन । तेगोपदसमभवउदधि, उतरिगयेसुखभीन ॥
जेहरिकेपदपंकजप्रेमी । तेपदपदमहँक्षणक्षणक्षेमी ॥ होयअवशिवैकुंठविलासी । पुनिनहोयसंसारनिवासी ॥५८
यहजोतुमपूछ्योकुरुराई । सोमैंतुमकोदियोसुनाई ॥ कियेचरितहरिवैसकुमारै । व्रजमेंभेपौगंडप्रचारै ॥५९
अवविनाशिहरिसखनसमेतू । भोजनकीन्ह्योंमोदनिकेतू ॥ पुनिभेवालकबछराआपू।विधिमोहनकियपरमप्रतापू।
पुनिविरंचिजोअस्तुतिकीनी।हरिमायामिटायपुनिलीनी।।यहहरिचरितसुनैजोगावै।सोनरअखिलमनोरथपावै।६०
दोहा—यहिविधिनंदकुमारप्रभु, व्रजमहँविविधिप्रकार । करिलीलालोनीअमित, निशिदिनकरहिंविहार ॥६१॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौदशमस्कंधेपूर्वार्द्धेचतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—भयेकृष्णपटवर्पके, तबयशुमतिनँदराय । गोपनसोंकरिसंमते, दियगोपालबनाय ॥
कह्योलल्लातुमभयेसयाने । लैगौवनवनकरौपयाने ॥ पैरामहिंसँगरह्योकन्हाई । कीन्ह्योनहिंअतिशयचपलाई ॥
नंदवचनसुनिमुदितगोपाला।विहरनलगेसहितव्रजबाला।।निजचरणनवृंदावनधरणी।।करहिंत्रिलोकधन्यमुदभरणी १
एकसमयउठिकाँन्हप्रभाता । रामहिंकह्योउठहुहेताता।। ताहीसमययशोमतिजागी । हरिहिंकलेऊदेसुखपागी ॥
भूषणवसनमंजुपहिराये । धेनुचरावनहेतुपठाये ॥ कढ़िबाहेरद्रुतरामकन्हाई । सखनबोलायोवेणुबजाई ॥
दोहा—वेणुटेरसुनिकेसखा, लैलैनिजनिजधेनु । नंदद्वारआवतभये, छावतअंबररेनु ॥
कृष्णहुँनिजसुरभिनकहँछोरी । करिलीन्हीआगूसबजोरी ॥ वृंदावनगौवनसुखदाई । चलेचरावनधेनुकन्हाई ॥
कियप्रवेशसुंदरवनमाँहीं॥२॥सीरीसुखदकदंबनछाँहीं ॥तहँवसंतऋतुरहीसुहावनि।जोअतिशयआनँदउपजावनि ॥
। गुंजाहिंकुंजनिकुंजनिभौंरा ॥ काननकलरवकरहिंविहंगा । विहरहिंजहँतहँसकुलकुरंगा ॥

नमनसमनिर्मलनीरा। यमुनाकोसोहतगंभीरा॥ बहतसदाजहँत्रिविधिसमीरा। हरतसकलप्राणिनकीपीरा॥
लजलबहुतालतलाई। विकसितअरविंदनसमुदाई॥

दोहा-पवनपरसबहुरंगको, चहुँकितउडतपराग। नवकोमलतृणसोंभरी, हरीभूमिबड़भाग॥

लखिवृंदावनकाँहीं। रामश्याममोदितमनमाँहीं॥ तहँविहरनकोकरतविचारा। गौवनलगेचरावनचारा॥ ३॥
एकतरुशीतलछाया। तहाँसखनयुतश्रीयदुराया॥बैठेनिरखहिंकाननशोभा। जेहिंलखिसिद्धमुनिनमनलोभा॥
किशलयकोमलदलपूरे। फूलेफरेवृक्षअतिरूरे॥ नमितफूलफलकेअतिभारा। सायाकराहिंधरणिसंचारा॥
हुँपरसिवृंदावनधरणी। वृक्षसराहँहिंअपनीकरणी॥ ऐसेद्रुमननिरखियदुराई। अतिमोदितनेसुकमुसक्याई॥

दोहा-बोलतभेबलदेवसों, पंकजपाणिउठाइ। वृंदावनकेतरुनको, अतिविनीतदरशाय॥ ४॥

श्रीकृष्णचंद्र उवाच।

हुदेववरहेबलरामा। वृंदावनतरुअतिमतिधामा॥ करशाखनसोंभरफलफूला। वंदहिंतुवपदपंकजमूला॥
वनतरुजन्महिंदाता॥तुमकोमानिनवहिंसुनुताता॥५॥ अखिललोकअघनाशनहारो॥सुयशरावरोमोकहँप्यारो॥
भँवरसोचहुँकितगावैं॥मोकहँमुनिगणसरिससुहावैं॥यदपिआपव्रजरहेलुकाई॥तदपिनतुमकहँसक्तविहाई॥ ६॥
कोनिरखिमहासुखपाई॥नाचहिंमोरचहूँकित भाई॥हरिणीगणनिरखहिंतुमकाँहीं॥छनछनतुवछविमहँछकिजाँहीं॥

दोहा-व्रजवानतनसमधन्यहैं, पीवहिंप्रेमपियूप। तुम्हरेदरशनहेतुइत, तजीतृपाअरुभूप॥

हिंआपनेघरमहँआये॥जानिसबैकोकिलसुखपाये॥ चहुँकितकरहिंमनोहरशोरा। उपजावहिंआनँदनहिंथोरा॥
हसंतकोयहैसुभाऊ। आयेअतिथिकरैंचितचाऊ॥ ७॥ धन्यधन्यवृंदावनधरणी। तुवपदपरसिभईमुदभरणी॥
निवृंदावनतृणलतिकाली। तुवरजपदपरसैंवनमाली॥ धनिवृंदावनतरुगणकुंजें। तुवकरपरसिलहतसुखपुंजें॥
निधनिगोवरधनगिरिराजू! जहँविहरहुयुतसखनसमाजू॥धनियमुनासरितासुखदाई॥जहँतुमनितमज्जहुबलराई॥
निवृंदावनविहँगकुरंगा। करेंजोतुवदरशनयकसंगा॥

दोहा-धनिवृंदावनकीवधू, तुमहिंजेभुजभरिलेहिं। जेहिउरकोतरसतिरमा, तेहिउरमहँउरदेहिं॥ ८॥

श्रीशुक उवाच।

हिविधिवृंदावनकीशोभा॥वरणतयदुपतिअतिमनलोभा॥धेनुचरावततुलसीवनमें॥अतिमोदिततनुमनछनछनमें॥
हुँगोवर्धनपेचढिजाँहीं। कहुँआवेंयमुनातटमाँहीं॥९॥ कहूँसखनसंयुतनँदलाला। मत्तमधुपधुनिसुनिदेताला॥
वहिंमाधुरवेणुबजावें। सकलसखनसुठिसुखसरसावें॥रामसहितसबसखासराहैं॥पहिरावैंमालागलमाहैं॥ १०॥
हँकलहंसनकोधुनिकूकें। तेसहिंबोलतआपुअचूकें॥ कहूँशिखीगणनाचतदेपी। तैसहिंआपहुँनचतविशेपी॥
किननचतसखाजोकोई। देतारीविहँसततेहिंजोई॥ ११॥

दोहा-चरतचरतवनमेंजबै, जाँहिधेनुकढ़िदूरि। मेघसरिसनिजवाणिको, गोहरावतमुदपूरि॥

ारीकाजरधूसरधौरी। वेणुमुखीहंसिनिबलबौरी॥ सखनलगतवानीयहप्यारी। आपहुगौवनलेहिंपुकारी॥
रिकिटिरसुनतसबगैयाँ। आवहिंदौरिकृष्णजेहिंठैयाँ॥१२॥चक्रवाकचातकौंचकोरा। कीरकपोतकराकुलमोरा॥
नकोशोरसुनतघनश्यामा॥सखनसहितवनठामहिठामा॥बोलहिंतिनकेबोलसमाना। करहिंकौतिनसोंभगवाना॥
रिकैकहूँव्यामसमशोरा। कहँआयगोकेहरीछोरा॥असकहिभागेसखनभगावैं॥पुनिअपनेहंसिसरनहँसावैं॥१३॥

दोहा-कहूँरामथकिजाँहिजब, सखाअंकपरिशीश॥ करनलगहिंविसरामकहँ, कुंजनमहँजगदीश॥

चपदमीजनलगेकन्हाई। कहहिंव्यथामेंदेतमिटाई॥१४॥ कहुँनाचतकहुँगावतदोऊ। तैसहिंसखाकरतसबकोऊ॥
सिकाछनीठोंकिकहुँताल॥सखनप्रचारिप्रचारिगोपाल॥करहिंमल्लरलाबहुभाँती॥करिकरिजोरभिड़ावहिंछाती॥

तैसहिंलरहिंपरस्परगोपा। यकएकनजीतनकरिचोपा॥ जेकोउसखारामसोंलरहीं। विनप्रयासबलति
जेकोउलरहिंश्यामसोंजाई। हारहिंकोउकोउदेहिंहराई॥ सखाहँसहिंसबदैकरताला। हैंबलसबलअबल

दोहा—कहूँसखाकोहाथगहि, रामहुँनंदकिशोर॥ वैझेलहिंउनओरतेहिं, वैझेलहिंउनओर॥

झेलाझेलीतासुनिहारी। हँसैंसखासिगरेदैतारी॥ कहुँद्वैपाणिभगहिंघनश्यामा। तिनहिंछुवनहितध
हरिकढिजाहिंदूरिनाहिंपावैं। लज्जितलौटिथानतेहिंआवैं॥ पुनिबलभागहिंहरिकरछैकै।दौरहिंश्यामवेग
छुवहिंरामकहँचलिकछुदूरी।हँसहिंसखाहाँसीकरिपूरी।कहहिंनधावतबनतरामसों।किमिआगेकाढिजाहिं
पुनिथकिकैकहुँकुंजनछाँहीं। वैठहिंरामश्यामसँगमाँहीं॥तहाँसखाकिशलयबहुल्याई। देहिंशयनहितं
तामेंलेटिरहैंसुखछाई। सखनअंकशिरधरिदोउभाई॥ १६॥

दोहा—लगेचरणचापनसखा, कोमलकरनलगाय॥ कोउपल्लववीजनविरचि, वीजहिंमंदडोलाय॥
कोउतहँरागसुहावनगावैं। सखासनेहसरससरसावैं॥ ऊँचगिराकरिकोउनवताई।जामेंसोवहिंसुखितकन्ह
यहिविधिग्वालनवालनसंगा। करहिंकृष्णलीलाबहुरंगा॥ जोनरमाललितपदपल्लव। सोपरसहिंक्षणक्षण
जोविधिशिवसुरआदिकईशा। व्रजवासिनसँगसोंजगदीशा॥विहरतकरहिंअनेककलाको।लखैचरितकोनं
तहँपुनिजवैकृष्णबलजागे। सखनसहितवैठेसुखपागे॥१९॥रामकृष्णकोसखाललामा। रह्योनामजाको
सुबलतोककृष्णादिककाँहीं। सखनलिहेअपनेसँगमाँहीं॥

दोहा—रामश्यामकेनिकटहीं, अतिआशुहिंउठिआय॥ कह्योवचनकरजोरिकै, औरहुसखनसुनाय॥
रामरामहेबाहुविशाला। दुष्टविनाशनहेनँदलाला॥ हमकोअतिशयक्षुधासतायो। घरहूँतेभोजनना
क्षुधामिटनकोजोनउपाई। सोतुमसोंहमदेहिंबताई॥ इततेकछुकदूरिवनमाँहीं। नामतालवनहैजेहिंकाँहीं
तहाँतालफलपकेझरतहैं। पुहुमीपरबहुपरेलसतहैं॥ पैफलखाननपावतकोई। बसतधेनुकासुर
रोकततहँकोउजाननदेतो। आपहिंसबभोजनकरिलेतो॥२२॥महाबलीखरकोवपुधारी।करतसदातेहिंवन
औरहुतासुजातिखरघोरा। बसहिंतासुवनठोरहिंठोरा॥ २३॥

दोहा—पशुपक्षिकोउजातनहिं, ताकोअतिभयमानि॥ भक्षतधेनुकमनुजको, देखतहींअघखानि॥
कबहुँनदमततेहिंवनफलखाये। गयेनतहँधेनुकहिंडेराये॥ पैफलहैंहरिसुधासमाने। अहहैंमारसबैविधि
तेहिंवनतेयहमारुतआवै। सुखदसुगंधचहूँदिशिछावै॥२५॥तेहिंवनकेफलहमकहँदेहू। यहयशरामकृष्ण
सुरभिपायमनक्षुभितहमारा। होतरामहरिवारहिंवारा॥ अतिलालसाबढ़ीहियमाँहीं। तातेविनयकीनतुम
जोतुमहूँनहिंतादिडेरावहु।तोउठिचलहुविलंबनलावहु॥ सखनवचनसुनिरामकन्हाई।अतिप्रियमानिदियो
मित्रमनोरथपूरणहेतू। चलेसखनयुतदोउबलसेतू॥ २७॥

दोहा—सबकेआगेरामभे, तिनपाछेघनश्याम। तिनपाछेसिगरेसखा, सोहतअतिअभिराम॥
प्रथमहिंगमनतालवनजाई। गजसमताटनदियोकँपाई॥गिरेतालफलबहुतेहिंठोरा।तेहिंवनभयोभभंगसोरा
सोरसुनिधेनुकबलवाना।उठ्योतुरतकरिकोपमहाना॥धायोधरणीशैलकँपावत।लख्योरामकहँताडतआ
निकटआपनेटरुपिनअपारा। कियदोउपाछिलचरणप्रहारा॥बलउरमारिचरणकछुदूरी। कढिगोदेतु
इनिकद्भकोक्रोधअनिझोरा।आयोकुपितगमकरिजोरा॥फिरिपाछिलेकियचरणप्रहारा॥२१त

दोहा—एकहिकरमेंपाछिलै, दोऊपदगहिलीन। चारअनेकभ्रमाइतेहिं, पटकितालपरदीन॥
कहिंभ्रमावतराशि...ना। भयेमगतमृग्मदाना॥३२॥ गोनकनालकैंपतगिरिगिपड। जोतेहिंढिगिढ
...तेहिंवनकोताइतास्टॉनेतु...॥३२॥पदितिविभवनालपननाल।कैंपेपायगनुपवर...

नंतकोअचरजनाँहीं।सरसबसमजगजिनशिरमाँहीं॥३५॥सुनिधेनुककोआरतशोरा।ताकोवधशुनिकैतेहिंठोरा॥
भयेप्रकोपिहजारन।करतशोरहरिरामहिंमारन॥३६॥तिनकोआवतनिरखितुरंता।बढ़िआगूतहँकृष्णअनंता॥
ाछिलेचरणदोउभाई । पटकनलगेभमाइभमाई ॥

दोहा-केतेनकेशिरफूटिगे, केतेनकेपदटूटि । केतेनकेअँगटूटिगे, गयेप्राणसबछूटि ॥ ३७ ॥

अरुगरदभदेहँअपारा।परेतालवनभूमिमँझारा ॥ तहँकीधरणीशोभितकैसी।गगनमध्यजलदावलिजैसी ॥३८॥
कर्मलखिहरिबलकेरो । बिबुधवृंदलहिमोदघनेरो ॥ बरपनलगेसुमनचहुँओरा । दैदुंदुभीकियोजैशोरा ॥
बहुअस्तुतिवचनउचारे।अतिमोदितनिजसदनसिधारे३९॥तबतेमनुजतालवनजाँहीं।ह्वैअभीततहँकेफलखाँहीं
वरहिंनवतृणतहँजाई।हरिदियधेनुकभीतिमिटाई॥४०॥आयसखातहँअतिअनुरागे।रामहिंहरिहिसराहनलागे॥

दोहा-भलेदुष्टकोवधकियो, कोतुमसमबलवान । साँझसमयअबह्वैगई, व्रजकोकरहुपयान ॥

कहीअबहरिहुबखानी । वेणुटेरिगोवनकहँआनी ॥ गौवनकोआगूकरिनाथा । तहँतेचलेसखनकेसाथा ॥
गकमलदलनैनसुहावन।जिनकोयशत्रिभुवनकरपावन ॥आगेरामश्यामातिनपाछे।चहुँकितसखालसतअतिआछे
खालअसवचनउचारत । तुमबिनकोधेनुककहँमारत ॥ जायतालवनअबफललैहैं । तहाँसुखिवसबधेनुचरैहैं ॥
भुजदंडनकोबलदेषी । लखिनपरैभटऔरविशेषी ॥ तुम्हरेबलहमनिरभैरहहीं । नितनवबनव्रजआनँदलहहीं॥

दोहा-यहिविधिभाषतबैनबहु, गमनतयदुपतिसंग । तिनसोंमुरिमुरिकहतहरि, वचनविरचिबहुरंग ॥४१॥

कवित्त-गोरजसोंरंजितसुगोलनकपोलनपै; अलकहलकछबिछलकपरतजात ।
बरहीपखानकोबिराजनमुकुटशीश, मंदमुसक्यानसुधाढारसीढ़रतजात ॥
गावतगोपालयशग्वालबालचारोंओर, रघुराजवंशीसुरआपहूँभरतजात ।
दरशकीआशभरीगोपिनकीगोलनपै, कान्हरोकटाक्षनसोंकतलकरतजात ॥ ४२ ॥
गोकुलगलीमेंठाढीव्रजकीअलीजेभली, दरशकीप्यासीचलीश्यामैंआवतैंनिहारि ।
नैनअलिवृंदसोंमुकुंदमुखअरविंद, सुछबिमरंदपानकरिकैअनंदधारि ॥
चारिहूपहरदिनविरहजहरकेरी, कहरगहरबिनडहरलईनिवारि ।
पुलकैंप्रमोदभरींललकैंमिलनहित,झलकैंदृगनजलपलकैंदईबिसारि ॥

दोहा-चितवनिहँसनिसलाजलखि, गोपिनकीघनश्याम।अतिमोदितगमनतभये, सखनसाहिव्रनिजधाम ॥४३॥

प्रभुगयेनंदकेद्वारे । निजनिजसदनसखहुपगुधारे ॥ रामश्यामकीजानिअवाई । यशुमतिअरुरोहिणिउठिधाई ॥
ल्योदुहुँनकोअंकउठाई । मुखचूम्योअतिआनँदपाई॥पोंछिवदनतनुकीरजझारी।आशिषदईदोउमहतारी ॥४४॥
निकरगहिगइभौनलेवाई । चामीकरचौकीबैठाई ॥ मींजतपदनिजहाथलगाई । गोचारणश्रमदियोमिटाई ॥
निसुखउबटनअंगलगाई । सुरभिसलिलदोहुँननहवाई ॥ पोंछिवदनअँगुलीपहिराई।पुनिशिरमेंदियताजसोहाई ॥
निबहुविधिभूषणपहिरायो । अंगनमेंअँगरागलगायो ॥ ४५ ॥

दोहा-कनकपीठिपरदोउसुतन, यशुमतिततहँबैठाय । राखेव्यंजनविरचिजेहि, कनकथारभरिल्याय ॥

गीखवावनपुत्रनकाँहीं । बीजनबीजतिमुदिततहाँहीं ॥ कहुँबलकौरकृष्णलैलेहीं । कहुँअपनौबलरामहिंदेहीं ॥
जिनकरतजवेराहिजाहीं । तबयशुदाबोलतितिनपाहीं ॥ एककौरमेरोबदिखाहू । एककौरयादिहैव्रजनाहू ॥
हिविधिवदतअनेकनधाता।सुतनखवावतियशुमतिमाता॥ सबव्यंजनकोपूँछतिस्वादू।सुतहुवतावतयुतअह्लादू ॥
दपिमातुतेंरचेअनेकू । पैप्रियदधिमाखनमोहिंएकू ॥ पुनिजबजेंइउठेदोउभाई । यशुमतिमुसकरदियोधोवाई ॥

दोहा-पुनिकोमलइकसेजपर, दोहुँनदियपोढाय॥मंदमंदचापतिचरण, दीन्ह्योंसुतनसोवाय ॥ ४६ ॥

हिविधिश्रीवृंदावनचारी । करतअनेककलानिमुरारी ॥ एकसमैउठिकैन्हिप्रभाता । जागेजबनहिंजेठेभ्राता ॥

सुकेशा॥३१॥करिवालकआगूतेहिंदेशा॥महिपरपरिकरिहरिहिप्रणामा। खडीभईकरजोरिललामा॥
ारिसफणटूटत। लाखबहुवारशीसनिजकूटत ॥ अपनोकंतछोडावनहेतू। रचिरचिपदकोमलसुखसेतू॥
ोहा-गद्गदगरदृगजलतजत, दीनदशादरशाय ॥ हरिकीअस्तुतिनागिनी, करनलगींमनलाय ॥ ३२ ॥

नागपत्न्य ऊचुः ।

:-यहउचितकृतअपराधमहँयहिदंडदीन्होंआप। खलशासनैकेहेतुतुवअवतारपरमप्रताप ॥
प्रभुशत्रुपुत्रहुपरसदाखतसमानहिंभाव। जोजसकरतसोतसलहतसुखदुखहुरङ्कहुराव ॥ ३३ ॥
यहसर्पकोजोकियोनिग्रहसोअनुग्रहभूरि। तुवहाथतेलहिदंडासिगरेहोतकल्मषदूरि ॥
करिपापपाईसर्पयोनिअतीवक्रूरसुभाव। अबभयोशुद्धशरीरयाकोतुवचरणपरभाव ॥ ३४ ॥
यहकियोपूरबकौनतपदैमानतजिअभिमान। कियकौनकर्महुँधर्मजामेंतुममिलेभगवान ॥ ३५ ॥
जेहिचरणरजकेहेतुकमलासकलतजितपकीन। तेहिंकौनपुण्यप्रभावतेअहिशीशसोंरजलीन ॥३६॥
नहिंभूपपदनहिंशक्रपदनहिंशम्भुपदविधिभौन।नहिंयोगसिद्धिनमुक्तिचाहततुवरसिकजनजौन॥३७॥
यहधन्यतामसयोनितुवपदरेणुधारीशीश। जेहिचहतसिगरेविभौनिजतेलहतजगजगदीश ॥ ३८ ॥
जयजयमहात्माजयपरात्मापुरुषजगतनिवास। जयपरमकारणआदिजैभगवानपरमप्रकाश॥ ३९ ॥
जैज्ञाननिधिविज्ञाननिधिजैब्रह्मशक्तिअनंत। जैअगुणअप्राकृतविकारविहीनकमलाकंत ॥ ४० ॥
जैकालजैजैकालनाभत्रिकालसाक्षीसत्य। जैविश्वरूपीविश्वद्रष्टाविश्वकारणनित्य ॥ ४१ ॥
जयभूतमात्राप्राणइंद्रीमनोचितबुधिनाथ। जैअहंकारअदृश्यरूपसुरूपनितमुदगाथ ॥ ४२ ॥
जयसूक्ष्मजयकूटस्थजयसर्वज्ञजयातिअनंत। जयविविधवादप्रवृत्तिकारणशब्दअर्थलसंत ॥ ४३ ॥
जयवेदशास्त्रनमूलकविजयप्रवृत्तिनिवृत्तिसरूप। जयजयतिनिगमागमप्रवर्तकउद्धरनभवकूप॥४४॥
जयकृष्णजयबलरामजयवसुदेवसुतअरिकंस। प्रद्युम्नजयअनिरुद्धजययदुवंशकेअवतंस ॥ ४५ ॥
जयगुणप्रदीपगुणावरणगुणवृत्तिदृश्यगुणेश। जयज्ञानरूपविहारविमलअतर्कमहिममहेश ॥ ४६ ॥
जयसबप्रकाशिनकेप्रकाशकहृषीकेशगोविंद। जयआत्मरामसुनीशज्ञातापरअपरगतिवृंद ॥ ४७ ॥
जयजगतपतिजयजगविलक्षणजगतवपुजगदीश।जयजगतसिरजनहरनपालनकालशक्तिअधीश४८॥
जयसत्त्वरजतमगुणसुभाउप्रकाशकारीएक। जयजयअमोघविहारकारकदलनखलनअनेक ॥ ४९ ॥
तुवशांतमूढअशांतलीलहितुवपुहैंतीन। अबशांततुमकोप्रियकरहुनितधर्मरक्षप्रवीन ॥५० ॥
-जोअपनोपरजाकरत, कहुँअपनोअपराध ॥ तौभूपतिकरतोक्षमा, देतताहिनहिंबाध ॥
पनतुमकोजानी। करहुक्षमाअबशारँगपानी॥५१ कृपाकिहेविनकृपानिधाना।तजनचहतअबपन्नगप्राना। ॥
जैपतिदाना ॥५२॥ हैंतुम्हरीदासीभगवाना॥जोप्रभुकहहुकरहिंहमसोई।तुवअज्ञामहँभैनहिंहोई॥५३॥

श्रीशुक उवाच ।

अस्तुतिगाई।हरिकोदीनदशादरशाई॥दयादयानिधितहँउरभरिकै। तज्योभुजँगपदचिह्नितकरिकै
। रद्योदंडद्वैपरमविहाला॥५४॥ पुनिजसततसकैधरिजधरिकै।श्वासलेतकरमैकरकरिकै ॥
। भीतिभरीअतिवाणिरसाली ॥ ५५ ॥

कालिय उवाच ।

-हमस्वाभाविकखलअहैं, कोपीतामसयोनि ॥ दुस्त्यजदुष्टस्वभावप्रभु, करैंसदाअनहोनि ॥ ५६ ॥
।आकृतियोनिसुभाउअपारा॥५७॥हमकोपीप्रभुदेंअहिजाती।निजसुभावछोडैकेहिभाँती॥

कोमाँगिहिमाखनअवमोसों । केहिंचोरिकोदेहैंदोसो ॥ केहिमणिकेभूषणपहिरैहौं । केहिरचिव्यंजनविविधखवैहौं ॥
पूतनादिदुष्टनतेबाले । प्रभुबचायल्यायोयहिकाले ॥ अबफाँसिकैकालकैफाँसी । नशतहाययहसुतसुखरासी ॥
कहाकरौंकेहिदेवमनाऊँ । हायकौनविधिलालबचाऊँ॥ बिनलालनममजियबवृथाहीं॥ द्वितियअधारपरतलखिनाहीं॥
असकहिबूडनचलीकलिंदी । बहुविधिभागआपनीनिंदी ॥ पकरेरहींचारिसखिताको । तिमिगोपहुबहुनंदबबाको॥

दोहा–सखिनफिटिकियशुमतिचली, सोलखिकैब्रजराज । बूडनकोआपहुचले, रेलतगोपसमाज ॥ २१ ॥

मच्योचहूँकितहाहाकारा । रह्योनकोहुकेतनकसम्हारा॥ बूडनचलेसकलब्रजवासी । हरिविनह्वैसबजियननिरासी॥
तहँबलअनुजप्रभावहिंज्ञाता । नंदयशोमतिसोंकहबाता ॥ कोउनहिंबूडहधीरजधरहू । मेरेवचनकानसबकरहू ॥
ऐहैनिकसिनंदकोलाला । सकिहिनडसितेहिसर्पकराला॥असकहिपाणिपकरियशुदाको।तैसहिंगहिकरनंदबबाको॥
तरुछायातरदियबैठाई । वचनकह्योबहुभाँतिबुझाई॥२२॥ मृतकसरिससिगरेब्रजवासी।परेपुहुमिहरिदर्शनआसी ॥

दोहा–अनमिषनिरखहिंकृष्णकहँ, लेहिंश्वासबहुबार । सूखिगयोसबकोवदन, शोकितभयोअपार ॥

बालयुवानिजहेतुदुखारी । ब्रजवासिनअसदशानिहारी ॥ एकमुहूरतभरिभगवाना । रहेभोगिकेभोगमहाना ॥२३॥
पुनिमोटोकियनाथशरीरा । उठीभुजंगमकेतनुपीरा ॥ फाटतअंगजानिअहिराई । तबहींहरितनुदियोविहाई ॥
फननउठायठाढभोकाली । श्वासलेतनिरखतवनमाली॥कोपिततजतफननफुफकारा । मनहुँकरतयमुनाजलछारा॥
निकसतवदनविषानलज्वाला मनुप्रलयानलज्वालकराला॥अरुणनयनइकटकअहिदेखत।बालबाहुबलअचरजलेखत॥
एकएकमुखरसनाद्वैदोई । चाटतअधरक्षणैक्षणसोई ॥

दोहा–पुनिकरालकालीतहाँ, दीठिविषानलहेरि । कृष्णडसनधावतभयो, उरहिउरगारिसंढेरि ॥

हरिहूतबतेहिसन्मुखधाई । तासुवदनकीचोटबचाई ॥ गयेतुरतपीछेप्रभुतासू । सोऊफिरचोमुखतजतहुतासू॥
तबफिरिकृष्णदाहिनेआये । गरुडसरिसनिजवेगबढाये॥जितहरितितकालीपुनिआयो।तासुदाउहरिफेरिबचायो॥२५॥
यहिविधिभ्रमहिंदोउजलमाहीं । कालीहरिकहँपावतनाहीं॥कहुँहरितासुपूँछगहिलेहीं॥फिरततातहितुरतहिंतजिदेहीं॥
यहिविधिभ्रमहिंदोउदहमाँहीं । तुंगतरंगउठहिंचहुँधाँहीं ॥ कालीकहयहिभाँतिखेलाई । दियोथकायनन्दनायककनाई॥

दोहा–जबथकिगोकालीतहाँ, चलतोमंदहिंमंद । तबऔंचकइकबारहीं, कूदतभयेगोविंद ॥

ताकेशीसगयेचढिनाथा । दियोनवायतासुवरमाथा ॥ ताकेशिरमणिपरसतचरणा । ह्वैगेआशुअरुणअतिवरणा॥
अखिलकलाकेगुरुसुखपागे । कालीफनमहँनाचनलागे॥२६॥नाचतनिरखिकृष्णकहँसर्वा । चारणकिन्नरसुरगंधर्वा॥
परमप्रीतिसोंवेणुमृदंगा । लगेबजावनसबइकसंगा ॥ गावहिंसुरसुंदरीसुहावन । वर्षहिंफूलमोदउपजावन ॥
अस्तुतिकरहिंकृष्णकीभारी । जैजैकालीदमनविहारी॥२७॥फणीफणनगतिलेतविहारी।उठतपगनवूपुरफनकारी॥
मुख्यतासुफणइकसेएकू । अरुछोटेनृपरहेअनेकू ॥

दोहा–जोइजोइशीशउठावतो, तेहितेहिमहँनँदलाल । औरफणनपरगतिनलै, देतउतालदिताल ॥

हरिपदलगतशीसलचिजाहीं।पुनिनउठावतसोशिरकाहीं॥यहिविधिसकलभुजंगमशीशा।नचतनंदनंदनअवनीशा॥
सबशिरदियेनवायप्रभुजबहीं। अहिदृगभवनलगेनृपतबहीं ॥ वमनलग्योमुखशोणितधारा।काल
ससतबसनतेविषअतिघोरा । तरफरातकालीचहुँओरा ॥ चारहिंचारलेतमुखश्वासू । लहतनडसनकेरअवकासू॥
कालिंदिदमतानिरखिहरिकाँहीं।देवसराहतअतिमुदमाँहीं।वर्षहिनभतेविपुलप्रसूना।नचतनिरखिपावतदुखदूना॥
लागतपदवैकुंठपनीके । फूटिगयेफणसकलफणीके ॥

दोहा–मरणलग्योकालीनबै, शिथिलभयेसबगात। पर्योअचलह्वैसलिलपर, पौरुषनाहिंबसात ॥

तबनागपत्नपुरुषपुराने।अखिलचराचरगुरुभगवाने॥मनतेंसुमिरिशरणभोकाली।अबरक्षाहिंमोहिंभुजमाली॥
निजपतिमरतभुजंगिनिदेखी । पुरुषपुराणकृष्णकहँलेखी॥अतिआतुरहिंकालीकीनारी।आईहरि

ीशाहिंअंगा। चह्योरारिउरगारिहिंसंगा ॥६॥ तबतारिछभरिकोपप्रचंडा। करिकेतुरतहिंवेगउदंडा ॥
ेजवामा। कद्रूसुतहिंहन्योवलधामा ॥ ७ ॥
ारुडपक्षलागततुरत, कालीभयेविहाल। तहँतेभजिव्रजयमुनदह, निवसतभयोभुवाल ॥ ८ ॥
इ। तासुहेतुमैंकहौंबुझाई ॥ एकसमयखगपतितहँआई। लगेखानजलचरसमुदाई ॥
ुनिधीरा। दीननमीननकीलखिपीरा॥खगपतिकोवारणबहुकीन्ह्यो। सोमुनिवचनमाननिहिंलीन्ह्यो॥
ोनपतिकाँहीं॥९॥ मीनदीनभागेजलमाँहीं॥तवसौभरिदायाअतिकरिकै।बोलेवचनकोपउरभरिकै १०
ुतेऐहैं। यदिदहकेजलचरगहिखैहैं ॥ तौविशेपह्वैहैविनप्राणा। हैयहमेरोवचनप्रमाणा ॥ ११ ॥
ानतरहेऊ। तातेभागिवासतहँलहेऊ ॥
गरुडभीतिततहँवसतभो, तेहिंहरिदियोनिकारि। यहकारणअहिवासको, मैंसवदियोविचारि ॥ १२ ॥
हिंनिकारी। पैरतआयेतीरमुरारी ॥ पहिरेभूपणवसनविशाला। मोतिनमणिनकंजवनमाला ॥
पितअँगरागा। पसरतअँगपरिमलचहुँभागा॥१३॥निरखिग्वालगोपीद्रुतधाये। जैसेइंद्रीप्राणहिंपाये ॥
किलगाई। वारवारदृगवारिवहाई॥पुनिपुनिमिलतवदनपुनिचूमै। कोउपुनिगहहिंचरणगिरिभूमै॥
कढतनवातैं।सोसुखइकमुखनहिंकहिजातैं ॥ पुनिइकएकनकहँगोहराये। यमुनातेकान्हरकढिआये ॥
-दौरिदौरितेऊद्रुतहिं, हरिकहँहियेलगाय। वारेमणिगणनिजकरन, आनँदउरनसमाय ॥ १४ ॥
यशोमतिपाँहीं।जेहिंहितपरीअहोमहिमाँहीं॥सोलालनजलतेकढिआयो।सबव्रजवासिनमरतजियायो ॥
मनोअसजानी। चितवनलगींमहाभ्रममानी॥मिलतनिरखिलालनव्रजवासी।धावतभईजननिचपलासी॥
हँकान्हपुकारी। पुनिनसकीकछुवचनउचारी ॥ परीरहीपगमहँद्वैदंडा। लियउठायहरिनिजभुजदंडा ॥
खिचूमनलागी। सूंघतियशुमतिशिरवडभागी ॥ इतनेमेंनँदहुँतहँजाई। लियोकृष्णकहँअंकउठाई ॥
ीनी। लैगमनीहरिकहँसुखभीनी।
-तासुअंकतेरोहिणी, हरिकहँलियोछोडाय। लेतिवलैयाचूमिमुख, तरुतरदियबैठाय ॥
अँगपोंछनलागी। कहतिकौनमोसमवडभागी ॥ नंदअनंदभरेतहँआये। हरिकरतेवहुदानदेवाये ॥
हरिअंगा।कहँकहँलालहिंडस्योभुजंगा ॥ कोउऔपधिल्यावतव्रजवासी। कोउझारतमंत्रनिसुखरासी ॥
गप्रभुकेरे।कोउझुकिहरिआननहेरे॥कोउकहयशुमतिहैवड़भागी। सुतहिंजोअहिविपज्वालनलागी
ुखतेवचिआयो।कालीविपनहियाहिसतायो॥यशुमतिकहतिईशकरिदाया।यहवालककोआपुवचाया ॥
-विरहभानव्रजजनकृपी, सूखतलखियहिठाम। प्रेमनीरझरिल्यायकै, लियजियायघनश्याम ॥१५॥
आये।विहँसतमिलतमहासुदछाये ॥ ज्ञातावलयदुनाथप्रभाऊ। तातेदुखसुखगुनतनकाऊ ॥
वासी।भयेसमानहिंआनँदरासी॥गिरिलतिकातरुतृणतेहिंकाला।लहेप्रमोदमिलेनँदलाला॥१६॥
केरो। भयोशोरचहुँओरघनेरो ॥ सुनिसुनिद्विजलैलैसुतनारी। आवतभेतहँपरमसुखारी ॥
ोंगिरासोहाई। तुवसुतकोप्रभुलियोवचाई ॥ कालीमुखतेवचिकढ़िऐवो। नयोजन्मकान्हरकोह्वैवो ॥
-धन्यभागहैनंदतुव, धन्ययशोमतिमाय। धन्यअहैयहछोहरो, हमकोलियोजियाय ॥ १७ ॥
। गऊकनकअरुमणिगणनाना ॥ विप्रवचनसुनिनंदसुजाना। सुवरणगऊरतनविधिनाना ॥
नकहँकरिसतकारा। कहतभयोयहपुत्रहमारा॥जियोकृपाल्हिविप्रतिहारी। यामेंनहिंकरतूतिहमारी ॥
चिरंजीवतुवसुतअविपादा १८पुनिपुनियशुमतिलालनकाँहीं।चूमतमुखअघातहियनाँहीं
।लगततातमिलतेतेयोरा।।गुनतियशोमतिअसमतिमाँहीं।दारातिटगआनँदजलकाँहीं ॥
हा-वारवारपूछतिहरिहिं, दरदतोनहिंअँगहोय ॥ हायतुम्हेंवरजेनहीं, सहेरहेसवकोय ॥

मोहितकठिनरावरीमाया । योगीजनजेहिंपारनपाया ॥ ५८ ॥ विनसर्वज्ञकृपातुवपाई । मायासिंधुपारनहिंजाई ॥
निग्रहऔरअनुग्रहजोई । जसअवचहहुकरहुप्रभुसोई॥हमसवभाँतिअधीनतुम्हारे।सकलभाँतितुमनाथहमारे॥५९॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिसुनिकालीकीवाणी । बोलेविहँसतशारँगपाणी ॥ रहहुसर्पयमुनामहँनाहीं।जाहुनारिसुतलैसँगमाँहीं॥६०॥

दोहा–रमणकद्वीपसमुद्रमहँ, वसहुतहाँतुमजाइ ॥ गोगोपीअरुगोपनित, पियहिंसलिलइतआइ ॥

कालीदमनचरित्रहमारा । दोउसंध्याजोसुनैउदारा ॥ सुमिरैपाठकरैजोकोई । ताहिसर्पतेभयनहिंहोई ॥ ६१ ॥
जोकालीदहआयनहैहैं । देवनपितरनतर्पणठैहैं ॥ करिव्रतसुमिरतजोमोहिंपूजी । जरिहैंपापमनोरथपूजी ॥ ६२ ॥
पायगरुडकीभीतिमहाई । रमणकद्वीपछोडिइतआई ॥ वसेसर्पयमुनाजलमाँहीं । सोअवगरुड़भीतितोहिंनाँहीं ॥
ममपदअंकितलखितुवशीशा । तोकोनहिंभक्षिहिपक्षीशा ॥ ६३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिकहीकृष्णजबवानी।तबकालीअतिशयसुखमानी॥नागिनिसहितनागवड़भागा।कृष्णहिंपूज्योयुतअनुराग

दोहा–भूषणवसनअमोलमणि, पहिरायेहरिअंग ॥ अंगरागलेपनकियो, सुरभितसुखदसुरंग ॥

पुनिपहिरायोअंवुजमाला । कह्योकृपाकीजैनँदलाला॥६५॥यहिविधिपूजनकरिजगदीशै।वारहिंवारनाइपदशीशै
दैप्रदक्षिणाप्रभुकहँचारी।माँगिकृष्णसोंविदासुखारी॥६६॥नागिनिनागवालयुतनागा । रमणकद्वीपगयोवड़भागा
कृष्णअनुग्रहयहिविधिपाई । तबतेकालिंदीसुखदाई ॥ भईविगतविपतेहिंदहमाँहीं । गऊग्वालजलपीवनजाँहीं ॥
सबथलतेनृपतेहिंथलकेरो । भयोसलिलसवमीठघनेरो ॥ यहजोचरितकियोभगवाना । सोमैंतुमसोंकियोवखाना

दोहा–व्रजमंडलमेंआइकै, यहिविधिनंदकुमार ॥ करतअनेकननितनवै, लीलाललितउदार ॥ ६७ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीम
हाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे षोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

दोहा–सुनिकालीअहिकीकथा, तहाँपरीक्षितराज । फेरिकह्योशुकदेवसों, मध्यमुनीनसमाज ॥

राजोवाच ।

नागालैरमणकजोद्वीपा । कालीकासुनितज्योमतीपा॥कौनगरुडकोकियअपराधा। यहभापौमुनिज्ञानअगाधा ।
सुनिकेकुरुपतिकीअसवानी । वोलेशुकाचार्यविज्ञानी ॥

श्रीशुक उवाच ।

रमणकद्वीपजोनागनिवासा।तहँअहिसकलगरुडकीत्रासा॥करिलीन्हेंखगेशसोंअसप्रण।करहुनतुमासिगेरअहिभ
मासमासमहँहमतुमकाँहीं । वलिदेहैंअतिशयमुदमाँहीं ॥ २ ॥ तवतेतहँकेभुजँगघनेरे । लैवहुवलिइकतरु
धरिआवैंहरिपूरणमासी।निजनिजपारीखगपतित्रासी॥यहिविधितहँकेअहिकुरुराई।निजनिजकुलदवलीहवआ

दोहा–यहिविधिवीत्योकालवहु, इकदिनतहँकुरुराय । पारीकालीकीभई, तेहिंअहिदियोसुनाय ॥

सोसगेशकहँनाँहिडेराई । कालीविषमरूपमदछाई॥लियआपहिखगपतिवलिसाई । खडोरह्योतहँफणनउठा
सोसुनिगरुडकोपअतिकीन्ह्यो।कालीमारनकोमनदीन्ह्यो॥परमवेगकरिधावतभयऊ५ कालिहुतहँ
। कोपितविहँगराजढिगजाई ॥ जीभनिकोरैनैनकराला । छे

।-जायसबैनिजनिजभवन, बसतभयेसुखछाय। नितनितनवलीलाकरैं, रामसंगयदुराय ॥१॥

। सुखयुतबीतिगयेबहुकाले॥ तहँआईग्रीषमऋतुघोरा।जोप्राणिनप्रियलागतिथोरा ॥२॥

। ग्रीषमहूँवसंतसमभाई ॥ रामश्यामतहँकरहिंविहारा । तहँकोसुखकोकरैउचारा ॥ ३ ॥

। शीतलमंदसुगंधसमीरा ॥ निर्झरझरतहोतझनकारी । झिल्लिनझनकनिढाँपनहारी ॥

। नवनगतरुकोमलदलपरहीं ॥ शीतलमंजुकुंजअलिगुंजैं । वंजुलतरुमंजुलसुखपुंजैं॥

। द्रुममंडलमंडितथलजेते ॥

, अंकुरतहँबहुरङ्ग । मनुवसुधामेंबिछिरही । बहुरँगसेजअभङ्ग ॥ ४ ॥

। मंडितमहासुनिनमनमोहत ॥ फूलेसरसिजचारिप्रकारा । तिनतेझरतमरंदअपारा ॥

। जनुवसंतऋतुखेलतफागा ॥ वृक्षनकीछायाक्षितिछाई । रविप्रतापकीतापनजाई ॥

॥उठहिंतरंगअमितमनहारी।परसतपुलिनसुशीतलवारी ॥

-शीतलताईतासुनित, रहीतटनमहँछाय। अतिप्रचंडकरचंडकर, होतठंढ़तहँजाय ॥ ६ ॥

। बैठेतटनसतियसुखछाके ॥ करहिंचहूँकितमाधुरशोरा। सोसुनिउपजतसुखनहिंथोरा ॥

। करतअनेकनमंजुलशोरा ॥ डगरडगरडगरहिंतियसंगा। चरतनवीनेतृणनकुरंगा ॥

। भमरीसंगकरतकलगुंजनि॥वृंदावनसमवननहिंदूजो। ताकीछविनंदननहिंपूजो॥७॥

-एकसमयतहँभोरहीं, जगेकृष्णबलराम। गहिवंशीटेरतभये, सुंदरसुरसुखधाम ॥

। लेगौवनडगरेततकाला ॥ इतैयशोमतिउठिसुखछाई । कृष्णहिंतुरतकलेऊल्याई ॥

। पुनिसुंदरझँगुलीपहिराई ॥ तैसहिंरामहुँकहँनँदराई। दियपठायभोजनकरवाई ॥

। औरहुगऊसहितगोपाला ॥ चलेचरावनवृंदावनमें । जेहिलखिउपजतसुखछनछनमें ॥८॥

। जाकीछायाअतिसुखदाई ॥ तहँबैठेप्रभुसखनसमेतू । गौवेंचरनलगींमतिसेतू ॥

। ल्यायेसखाहरापितेहिंकाला ॥

-औरहुबहुरँगलाइतहँ, धातुनकोगोपाल॥ हरिबलकेअंगनिरँगे, हरितपीतसितलाल ॥

। हरिबलकेशिरदियोसुहाई ॥ पँचरँगपुहुपपत्रतेहिंकाला। तिनकीरचिवैजंतीमाला ॥

। हरिबलदियतिमितिनहिंबनाई ॥ रामकृष्णयुततहँसबगोपा।नाचनलगेगाइभरिचोपा॥

। हारेहुजीतेउरसुखभरहीं॥कहुँगावनलागहिंसबग्वाला। सुरमिलाइदेदेकरताला ॥९॥

। लखहुसबैअबनृत्यहमारी ॥ असकहिकरिनूपुरझनकारी। नचनलगेहरिदेकरतारी ॥

।-लेततानमुखमाधुरी, गावतरागवसंत ॥ भरतअमितगतिचरणसों, भूमहँभूरिभ्रमंत ॥

। गावनलगेसखातेहिंठोरे ॥ सुरमिलाइकोउवेणुवजावै। कोउविषाणकेसुरनिमिलावै॥

। कोऊसराहतहरिकहँग्वाला ॥ असहमनृत्यकहूँनहिंदेपी। जसतुमनाचहुकान्हविशेषी ॥

। मानतमीतगोपभगवानें॥१०॥गोपरूपधरिनाकनिवासी।सिगरेहोतभयेब्रजवासी ॥

। महामोदअपनेउरभरहीं ॥ जिमिनटसवप्रधाननटकोंहीं। चारहिंबारसराहतजोंहीं ॥

। जातसराहतदेदेताले ॥११॥

।-ऐसखेंचिकहुँरेणुमें, तेहिंबिचहैपनश्याम ॥ छुवहिंदौरिकैसखनको, पुनिआवहिंतेहिंठाम ॥

। बलओहिओरहतेवनमाली ॥ कूदिकूदिइकपगसोंग्वाला।छुवहिंएकएकनततकाला॥

असकहिलीन्ह्योहियेलगाई। कहतमाहिंपुनिमिलेकन्हाई। औरहुसवप्रमुदितव्रजवासी। भयेअनेकनवचनविलासी ॥१९॥
यहिविधितहँनिरखतवनमाली। कोहुकहँतृपाक्षुधानहिंशाली। यदपिगयेथकिधावतआये। हरिनिरखततनुसुधिविसराये॥
ताहीसमयसाँझभैराजा। कहैंनंदतवबोलिसमाजा ॥ इततेतौगोकुलहैदूरी। अँधियारीरजनीभैभूरी ॥
तातेवसहुसवैयमुनातट। सेजवनाइलेहुनिजनिजपट ॥ कहाँगोपभलकहँनँदराई। दीजेइतहींरजनिविताई ॥
भोरभयेजैहैंवृंदावन। हरिनिरखतवीतिहिनिशिजनुछन ॥

दोहा—असकहियमुनातटवसे, गोपयशोमतिनंद। दिनभरिकेश्रममेंभरे, सोयेलहिआनंद ॥ २० ॥

छंदभुजंगप्रयात—चल्योपौनभारीरह्योज्येष्ठमासा। गयोलागिसोकाननैमेंहुतासा ॥
उठीचारिहूँओरतेंज्वालमाला। मनौहैंप्रलैपावकैकीकराला ॥
लपट्टैंझपट्टैंउठैंधूमधारा। झटैंवंशफुट्टैंरवैभोअपारा ॥
कुरंगौविहँगौभगेएकसंगे। कितेशैलकेशृंगह्वैजातभंगे ॥
उठैंलूकचारौंदिशामेंउतंगा। मनौहोतउल्कापपातैंअभंगा ॥
कहूँचिक्करैंमत्तमातंगघोरा। कहूँकैगराजैंभजैंसिंहजोरा ॥
वढ़ीज्वालमालाछुवैमेघमाला। कहूँपीतभासीकहूँरंगलाला ॥
लियेगोपगोपीगऊघेरिआगी। नजानेसकैंकौनिहूँओरभागी ॥ २१ ॥

दोहा—शोरभभराहोतभो, जागेगोपीग्वाल। देखतभेचारौंदिशा, पावकज्वालकराल ॥
उठेसकलइकएकनटेरी। कहतभयेपावकलियघेरी ॥ हाहाकारकियेव्रजवासी। जीवनतेभैसवैनिरासी ॥
कहँनलगेसवआपसमाँहीं। केहिविधिवचैंकहाँभजिजाँहीं ॥ कोउकहभईभीतिव्रजजेती। नँदसुतनाश्योनिजकरतेती॥
तातेरामकृष्णढिगजाई। देहुसवैयहदशाजनाई ॥ पहुँचेरामकृष्णकेनेरे। जाइगोपगोपीअसटेरे ॥ २२ ॥
कृष्णकृष्णनँदसुतवड़भागी। रामअमितविक्रमअवजागी ॥ दहनचहतयहदहनकठोरा। व्रजवासिनघेरेचहुँओरा॥

दोहा—नेसुककरताविलंवहीं, जरततुम्हारेदास ॥ उठहुलालततकालअव, मेटहुपावकत्रास ॥ २३ ॥

वड़ेवड़ेसंकटतुमटारे। वड़ेवड़ेअसुरनकहँमारे ॥ वड़ेवड़ेमेटेउतपाता। यहदावानलकेतिकवाता ॥
आजुसवनकहँलेहुवचाई। तुमअतिवलहोरामकन्हाई ॥ वरुहमयाहिंठौरेजरिजैहैं। तुमहिंत्यागिअंतैनहिंजैहैं॥
तुम्हरेनिकटभीतिहैनाहीं। असविश्वासहमरेमनमाँहीं ॥ २४ ॥ गोपनवचनसुनततेहिकाला। उठेतुरतरामहुनँदलाला॥
लखेचहूँकितपरमकराला। पसरतआवतिपावकज्वाला ॥ [illegible]

दोहा—केशवकेसववचनसुनि, निजनिजमूँदेनैन ॥ हरिहरिपावकज्वालसव, कियोपानपलएन ॥ २५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—नयननखोलिनिरखेसवै, कहुँनपावकदीख। मनहुँकल्पतरुकृष्णको, पायेजियकीभीख ॥
कहनलगेसवआपुसमाँहीं। लाटनचापाटियोसवकाँहीं ॥ यहधौंकौनदेवह्वआयो। [illegible]
कोउकहनरगगिगआनिभाषी। सोदमासिगरीसुधिकरिराखी ॥ नारायणसमगणहिजाके। [illegible]
[illegible]
[illegible]कालिन्द्यो। वृंदावनहिगमनसवकीन्ह्यो ॥ चलेमध्यातिनकेहरिरामा। [illegible]
[illegible] मारगमहँलखिआनँदपावैं ॥

॥ रहेमुंजवनमाँहहेराई ॥ तहँदावानललाग्योघोरा । जियनभरोसरह्योनहिंथोरा ॥
। दियपहुँचाइगयेहमजहँते ॥१॥सुनतबालकनकीअसबानी । नरनारीबहुविस्मयमानी ॥
–आपुसमेंअसकहतभे, रामऔरनँदलाल । हैंकोऊवरदेवता, व्रजआयेयहिकाल ॥
यहिविधिकरतचरित्रबहु, वृंदावनमहँनाथ । रामसहिततहँवसतभे, व्रजजनकरतसनाथ ॥ २ ॥
कवित्त–ग्रीषमकेभीषमतमारितापतापितवि-लोकिकैमहीकोजानिपरमदुखारीहै ।
तेसहिंपहारनकोझरेपत्रपूरेपेखि, मोरनमतंगनपरावनेनिहारीहै ॥
दीनसेसरितसरसरसीसलिलहीन, विश्वकोवहुतविधिव्याकुलविचारीहै ।
जेठकीकठिनशठताईमेटिवेकोअव-नीपतिअपाढ़आयोकरिकैतयारीहै ॥
कारीकारीघटामतवारेहैंमतंगमनु, विविधिकिताकेलसैंदामिनिपताकेहै ।
घनकीगरजसोईदुंदुभिधुकारहोत, वाँसुरीसिफूकैंमोरपैदरवलाकेहैं ॥
चातकनकीववोलिपावसअदंकदेत, सुखितकुरंगतेतुरंगममजाकेहैं ।
वाणवारिमारिदियोग्रीपमैंनिकारिवसुधातेमजबूतमेघभेजेमघवाकेहैं ॥
पावसऋतुव्रजमेंलगी, उतपतिप्रभुपदजीव । छाईदशहुँदिशानमें, घनमंडलीअतीव ॥ ३ ॥
करतशोरदामिनिसहित, घनलीन्हेंनभछाइ । जिमिअज्ञानआवर्णते, सगुणब्रह्मछपिजाइ ॥ ४ ॥
आठमासनिजकिरणिसों, जलशोखतहेभानु । चारिमासवरपतसोई, ज्योंभूपतिवरदानु ॥ ५ ॥
जलवरपहिंचपलासहित, घनलहिपवनझकोर । द्रवहिंसाधुजिमिदीनपर, जीवनदेसवठोर ॥ ६ ॥
ग्रीपमतापतपीधरणि, लहिघनभेसुखभीन । जिमितपफललहितपकृशित, तपीहोततपपीन ॥ ७ ॥
नखतनभासितहोतनिशि, जौंगनभासअपार । जिमिकलियुगमेंवेदनहिं, होतपखंडप्रचार ॥ ८ ॥
घनकीघोरगरजसुनि, दादुरकीन्हेंशोर । नेमसमापतवेदजिमि, भापतविप्रकिशोर ॥ ९ ॥
क्षुद्रनदीबाढ़ीविपुल, कीन्हेंवेगविशाल । धनलहिचलतकुचालज्यों, जनमकेरकंगाल ॥ १० ॥
अरुणचँदेनीहरिततृण, युतछत्राकवलाक । जनुपावसआवतसदल, छाजतछत्रपताक ॥ ११ ॥
कृपिककृपीवाढ़तनिरखि, हरपलहतादिनदून । जैसेलोभीधननिरखि, मानतकवहुँनऊन ॥ १२ ॥
जलथलवासीजीवलहि, नवजलभेसुखरूप । जिमिहरिभजनप्रभावते, होतरुचिरवपुभूप ॥ १३ ॥
मिलैंनदीसागरउठे, पवनप्रसंगतरंग । विपयलहैयोगीनयो, जिमिमनकरवहुरंग ॥ १४ ॥
हनेजातजलधारागिरि, पैनहिंकरतखँभार । जिमिहरिजनकोविपयकी, वाधानहिंसंसार ॥ १५ ॥
जानिपरैमारगनहीं, तृणसंकुलजलधार । विनअभ्यासजिमिवेदको, द्विजमुखनहिंसंचार ॥ १६ ॥
सुखकरघनमेंछनछिपति, छनछहरतिछनजोति।गुनिहुँकंतकुलटानिकी, जिमिथिरप्रीतिनहोति ॥१७॥
इंद्रचापआकाशमें, विनगुणअसछविदेहि । विनगुणकेबहुपुरुपजस, यहजगमहँयशलेहि ॥ १८ ॥
निजकरशोभितघननसों, छपितशशीनसोहाय । अहंकारसवलितपुरुप, जिमिनछजतनृपराय ॥१९॥
देखिघटाघनकीघटा, नचतमोरचहुँओर । दुखितगृहीजिमिसाधुको, लहिमुदलहतअथोर ॥ २० ॥
नवजललहिवनकेविटप, भयेसपत्रसशाख । तपकृशितफलपायजिमि, पूरहिंसुखअभिलाख ॥ २१ ॥
सरतटकंटककीचविच, कढुँवससारसकोक । जिमिकुमतीलहिदुसहदुअति, तजहिनआपनओक॥२२॥
सलिलधारकेजोरसों, फूटिगयेवहुसेत । वेदनकीमरयादजिमि, कलिपखंडहरिलेत ॥ २३ ॥
मारुतप्रेरितजलदजिमि, जीवनजीवनदेत । द्विजप्रेरितनृपसोंयथा, प्रजामनोरथलेत ॥ २४ ॥
हुँओररसाला । मनुउपकारीपुरुपविशाला ॥ पकेजंवुफलभूमहँगिरहीं । द्रव्यदानदानीजनुकरहीं ॥

कहाँगईसबधेनुहमारी।असकहिकहिचहुँओरँहिहुलारी॥३॥तिनखुरलखितबिलोकिमईको।चलेसबैजेहिदिशोहलवाँको॥
धेनुदंततृणकटेनिहारी। तेहिंमारगगोगमनविचारी॥४॥खोजतचलेगयेयहिभाँती।मुंजविपिनमधिगऊजमाती॥५॥
तहँनिरखेहरिसहितगुवाला। तृपितखरींजहँगऊविहाला॥५॥कारीकाजरिधूसरिधौरी। हँसिनवंशिनवासिनगौरी॥
दोहा-तिनकेलैलैनामअस, हरिसाँसुरीवजाइ। लीन्हेतिनकोआशुहीं, अपनेनिकटबोलाइ॥६॥
गोपहुतृपितश्रमितअतिह्वैगे। गोवनसाहितमहादुखछैगे॥ मुरुकिचलेहाँकततिनकाँहीं। मध्यमुंजकेकाननमाँहीं॥
मिल्योनकहुँतहँमारगतिनको।उठ्योकोटमनुमुंजहितृणको।तहँआपदितेनृपतेहिकाला।लागिगयोवनअनलकराला॥
धूमधुंधधायोचहुँओरा। अंधकारकीन्ह्योंअतिघोरा॥ पुनितेहिंविचविचतेविकराला। उठनलगीदावानलज्वाला॥
पवनचल्योतहँदेतझकोरा। उठीलूकचहुँओरकरोरा॥ कोहुकीरहीनजीवनआशा। मानेसबैआपनोनाशा॥
दोहा-चटचटाइतहँवंशगण, फूटिफूटिफटिजात। पटपटाइतृणगणजरत, आरतजंतुभगात॥
मनहुँप्रलयपावकवनआयो।सिगरेजगकोचहतजरायो॥लपटेंझपटेंविकटेंभारी। चटकेंशिलाअगिनिकीझारी॥
चहुँकितेतेलखिपावकआवत। गोपसबैअतिशयभयपावत॥ रामकृष्णकेचरणनआई। गिरेगोपगोविंदुसहाई॥
मीचुभीतिजिमिप्रजाघनेरे। जातशरणनारायणकेरे॥ कहेगोपसबएकहिंवारा॥८॥ कृष्णकृष्णहेवलीअपारा॥
हेअथाहविक्रमवलरामा। रक्षणकरहुआजुयहिठामा॥ दावानलजारतहमकाँहीं। दूजोरक्षकदरशतनाँहीं॥९॥
दोहा-यहअचरजलागतमनहिं, हमसबसखातुम्हार। तुम्हरेदेखतशोकके, बूडतपारावार॥
तुमतौसबधर्मकेज्ञाता। रक्षहुकसहमकोनहिंताता॥ अहौनाथयकतुम्हींहमारे। द्वितियनदरशतनैननिहारे॥
तुमकोतजिकेहिंठौरहिंजाँहीं। कसनहिंहोतिदयाउरमाँहीं॥ १०॥

श्रीशुक उवाच।

दीनवचनसुनिदीनदयाला।कह्योसखनसोंवचनउताला॥मूँदहुआँखिसबैयकवारा।करहुनकछुजियमाहँसँभारा॥
सखासुनतहरिवचनतहाँहीं।मूँदिलियेनिजनिजदृगकाँहीं॥तवनिजमुखसोंतहँभगवाना।करिलीन्ह्योंदावानलपाना॥
सबकोनिकटवटैभाँडीरे। दियपहुँचाइमेटिसबपीरे॥

दोहा-कह्योनैनकोखोलहू, सिगरेसखासुजान। दावानलसबमिटिगयो, आयेपुनितेहिंथान॥
खोलेसखाचखनसुखलेखे। दावानलकोकतहुँनदेखे॥ खड़ेसबैभाँडीरहिंनेरे। तवविसमितयकएकनहेरे॥
सपनोंसोतिनकहँह्वैगयऊ।सबकेउरअतिआनँदभयऊ॥१२॥प्रभुकोऐसोनिरखिप्रभाऊ। कहनलगेसिगरेतृप...
अहैनंदसुतसत्यविधाता।यहिप्रभावकछुजानिनजाता॥१४॥तवहरिकह्योसाँझअवआई। [illegible]
असकहिगोवनहाँकिमुरारी।सखनसहितव्रजचलेसुखारी॥ग्वालबालमधिवेणुबजावत।मंदमंदनँदनंदनआवत॥
दोहा-तहँगोपीसबदेखिकै, दरशनचोपीआसु। कढिकढिमगठाढीभईं, तजितजिनिजैनिवासु॥
जिनकोहरिदरशनविना, क्षणसोयुगसमजाइ।तिनकोहरिमुखदरशको, सुखमुखकहिनसिराइ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदांबुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे एकोनविंशस्तरंगः॥ १९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-हरिवलअपनीधेनुलै, नंदभौनमेंजाइ। निजनिजथलमेंसबनको, लीन्हींबाँधिलगाइ॥
यशुमतिकरगहिहरिबलकाँहीं। लैगैभीतरभौनहिंमाँहीं॥ चरणचापिभोजनकरवाई। [illegible]
[illegible] । निजनिजभवननगयेभुवाला॥ नरनारिनयहकथासुनाई। [illegible]

पुनिगोअनहेरतहमजाई ॥ रहेमुंजवनमाँहहेराई ॥ तहँदावानललाग्योघोरा । जियनभरोसरह्योनाहिंथोरा ॥
लियोबचाइनंदसुततहँते । दियपहुँचाइगयेहमजहँते ॥१॥सुनतबालकनकीअसबानी । नरनारीबहुविस्मयमानी

दोहा-आपुसमेंअसकहतभे, रामऔरनँदलाल । हैंकोऊवरदेवता, व्रजआयेयहिकाल ॥
यहिविधिकरतचरित्रबहु, वृंदावनमहँनाथ । रामसहिततहँवसतभे, व्रजजनकरतसनाथ ॥ २

कवित्त-ग्रीपमकेभीपमतमारितापतापितवि-लोकिकैमहीकोजानिपरमदुखारीहै ।
तैसहिंपहारनकोझरेपत्रपूरेपेखि, मोरनमतंगनपरावनेनिहारीहै ॥
दीनसेसरितसरसरसीसलिलहीन, विश्वकोबहुतविधिव्याकुलविचारीहै ।
जेठकीकठिनशठताईमेटिवेकोअव-नीपतिअषाढ़आयोकरिकैतयारीहै ॥
कारीकारीघटामतवारेहैंमतंगमनु, विविधिकिताकेलसैंदामिनिपताकेहै ।
घनकीगरजसोईदुंदुभिधुकारहोत, बाँसुरीसिफूकैंमोरपैदरबलाकेहैं ॥
चातकनकीबबोलिपावसअदंकदेत, सुखितकुरंगतेतुरंगममजाकेहैं ।
बाणवारिमारिदियोग्रीपमैंनिकारिवसुधातेमजबूतमेघभैजेमघवाकेहैं ॥

हा-पावसऋतुव्रजमेंलगी, उतपतिप्रभुपदजीव । छाईदशहुँदिशानमें, घनमंडलीअतीव ॥ ३ ॥
करतशोरदामिनिसहित, घनलीन्हेंनभछाइ । जिमिअज्ञानआवर्णते, सगुणब्रह्मछपिजाइ ॥ ४ ॥
आठमासनिजकिरणिसों, जलशोखतहैभानु । चारिमासवरषतसोई, ज्योंभूपतिवरदानु ॥ ५ ॥
जलधरपाहिंचपलासहित, घनलहिपवनझकोर । द्रवहिंसाधुजिमिदीनपर, जीवनदेसबठोर ॥ ६ ॥
ग्रीपमतापतपीधरणि, लहिघनभैसुखभीन । जिमितपफललहितपकृशित, तपीहोततपपीन ॥ ७
नखतनभासितहोतनिशि, जँगनभासअपार । जिमिकलियुगमेंवेदनहिं, होतपखंडप्रचार ॥ ८ ॥
घनकीघोरगरजसुनि, दादुरकीन्हेंशोर । नेमसमापतवेदजिमि, भाषतविप्रकिशोर ॥ ९ ॥
क्षुद्रनदीबाढ़ीविपुल, कीन्हेंवेगविशाल । धनलहिचलतकुचालज्यों, जनमकेरकंगाल ॥ १० ॥
अरुणचँदेनीहरिततृण, युतछत्राकबलाक । जनुपावसआवतसदल, छाजतछत्रपताक ॥ ११ ॥
कृपिककृषीबाढ़तनिरखि, हरषलहतादिनदून । जैसेलोभीधननिरखि, मानतकबहुँनऊन ॥ १२ ॥
जलथलवासीजीवलहि, नवजलभेसुखरूप । जिमिहरिभजनप्रभावते, होतरुचिरवपुभूप ॥ १३ ॥
मिलेंनदीसागरउठे, पवनप्रसंगतरंग । विषयलहैयोगीनयो, जिमिमनकरबहुरंग ॥ १४ ॥
इनेजातजलधारागिरि, पैनाहिंकरतखँभार । जिमिहरिजनकोविषयकी, बाधानहिंसंसार ॥ १५ ॥
जानिपरेमारगनहीं, तृणसंकुलजलधार । बिनअभ्यासजिमिवेदको, द्विजमुखनहिंसंचार ॥ १६ ॥
सुखकरपनमेंछनछिपति, छनछहरतिछनजोति।गुनिहुँकंतकुलटानिकी, जिमिथिरप्रीतिनहोति ॥१७
इंद्रचापआकाशमें, बिनगुणअसछविदेहिं । विनगुणकेबहुपुरुपजस, यहजगमहँयशलेहिं ॥ १८ ॥
निजकरशोभितघननसों, छपितशशिनसोहाय । अहंकारसघालितपुरुष, जिमिनछजतनृपराय ॥१९
देखिपर्टीघनकीघटा, नचतमोरचहुँओर । दुखितगृहीजिमिसाधुको, लहिमुदलहतअथोर ॥ २० ॥
नवजललहिवनकेविटप, भयेसपत्रसशाख । तपीकृशितफलपायजिमि, पूरहिंसुखअभिलाख ॥ २१
सरतटकंटककीचबिच, कहुँबकसारसकोक । जिमिकुमतीलहिदुखबहुत, तजहिनआपनओक॥२२
सलिलपारकेओरसों, फूटिगयेबहुसेत । बेदनकीमरयादजिमि, कलिपखंडहरलेत ॥ २३ ॥
मारुतप्रेरितजलदजिमि, जीवनजीवनदेत । द्विजप्रेरितनृपसोंयथा, प्रजामनोरथलेत ॥ २४ ॥
कबहुँओररसाला । मनुउपकारीपुरुपविशाला ॥ पकेजंबुफलभ्रमरहिंगिरहीं । द्रव्यदानदानीजनुकरहीं ॥

कहाँगईसबधेनुहमारी।असकहिकहिबहुहोंहिंदुखारी॥२ तिनसुरसानितवि८...
धेनुदंततृणकटेनिहारी। तेहिंमारगगोगमनविचारी॥४॥खोजतचलेगयेयहिभाँती।मुंजविपिनमधिगऊजमाती॥
तहँनिरखेहरिसहितगुवाला। तृपितसरीजहँगऊविहाला॥५॥कारीकाजरिधूसारिधोरी। हंसिनवंशिन...

दोहा–तिनकेलैलैनामअस, हरिबाँसुरीबजाइ। लीन्हेतिनकोआशुहीं, अपनेनिकटबोलाइ॥६॥

गोपहुतृपितश्रमितअतिह्वैगे। गोवनसहितमहादुखछैगे॥ मुरुकिचलेहाँकततिनकाँहीं। ...
... ...
धूमधुंधधायोचहुँओरा। अंधकारकीन्ह्योंअतिघोरा॥ पुनितेहिंविचविचतेविकराला। उठनलगीदावानलज्वाला।
पवनचल्योतहँदेतझकोरा। उठीलूकचहुँओरकरोरा॥ कोहुकीरहीनजीवनआशा। मानेसबैआपनोनाशा॥

दोहा–चटचटाइतहँवंशगण, फूटिफूटिफाटिजात। पटपटाइतृणगणजरत, आरतजंतुभगात॥

मनहुँप्रलयपावकवनआयो।सिगरेजगकोचहतजरायो॥लपटैंझपटैंविकटैंभारी। चटकैंशिलाअगिनिकीझारी॥
चहुँकितलखिपावकआवत। गोपसबैअतिशयभयपावत॥ रामकृष्णकेचरणनआई। ...
मीचुभीतिजिमिप्रजाघनेरे। जातशरणनारायणकेरे॥ कहेगोपसबएकहिंवारा॥८॥ कृष्णकृष्णहेबलीअपारा
हेअथाहविक्रमबलरामा। रक्षणकरहुआजुयहिठामा॥ दावानलजारतहमकाँहीं। दूजोरक्षकदरशतनाँहीं॥९॥

दोहा–यहअचरजलागतमनहिं, हमसबसखातुम्हार। तुम्हरेदेखतशोकके, बूडतपारावार॥

तुमतौसबधर्मकेज्ञाता। रक्षहुकसहमकोनहिंताता॥ अहौनाथयकतुम्हींहमारे। ...
तुमकोतजिकेहिंठौरहिंजाँहीं। कसनहिंहोतिदयाउरमाँहीं॥ १०॥

श्रीशुक उवाच।

दीनवचनसुनिदीनदयाला।कह्योसखनसोंवचनउताला॥मूँदहुआँखिसबैयकवारा।करहुनकछुजियमाहँसँभारा।
सखासुनतहरिवचनतहाँहीं।मूँदिलियेनिजनिजदृगकाँहीं॥तबनिजमुखसोंतहँभगवाना।करिलीन्ह्योंदावानलपाना।
सबकोनिकटबटैभाँडीरे। दियपहुँचाइमेटिसबपीरे॥

दोहा–कह्योनैनकोखोलहू, सिगरेसखासुजान। दावानलसबमिटिगयो, आयेपुनितेहिंथान॥

खोलेसखाचखनसुखलेखे। दावानलकोकतहुँनदेखे॥ खड़ेसबैभाँडीरहिंनेरे। तबविसमितयकएकनहेरे॥
सपनोंसोतिनकहँह्वैगयऊ।सबकेउरअतिआनँदभयऊ॥१३॥प्रभुकोऐसोनिरखिप्रभाऊ। कहनलगेसिगरेतृप...
अहैनंदसुतसत्यविधाता।यहिप्रभावकछुजानिनजाता॥१४॥तबहरिकह्योसाँझअबआई। चलहुसबैव्रजको...
असकहिगौवनहाँकिमुरारी।सखनसहितव्रजचलेसुखारी॥ग्वालबालमधिवेणुबजावत।मंदमंदनँदनंदनआवत॥

दोहा–तहँगोपीसबदेखिकै, दरशनचोपीआसु। कढिकढिमगठाढीभई, तजितजिनिजैनिवासु॥

जिनकोहरिदरशनविना, क्षणसोयुगसमजाइ।तिनकोहरिमुखदरशको, ...

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदांबुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे एकोनविंशस्तरंगः॥ १९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–हरिबलअपनीधेनुले, नंदभौनमेंजाइ। निजनिजथलमेंसबनको, लीन्हींबाँधिलगाइ॥

यशुमतिकरगहिहरिबलकाँहीं। लैगेभीतरभौनहिंमाँहीं॥ चरणचापिभोजनकरवाई। पलनापरदियसुइ...
लैलैधेनुऔरसबग्वाला। निजनिजभवननगयेभुवाला॥ नरनारिनयहकथासुनाई। आजहु मुर...

पुनिगोअनहेरतहमजाई ॥ रहेमुंजवनमाँहहेराई ॥ तहँदावानललाग्योघोरा। जियनभरोसरह्योनहिंथोरा ॥
लियोबचाइनंदसुततहँते। दियपहुँचाइगयेहमजहँते ॥१॥सुनतबालकनकीअसबानी। नरनारीबहुविस्मयमा

दोहा-आपुसमेंअसकहतभे, रामऔरनँदलाल। हैंकोऊवरदेवता, व्रजआयेयहिकाल ॥
यहिविधिकरतचरित्रबहु, वृंदावनमहँनाथ। रामसहिततहँबसतभे, व्रजजनकरतसनाथ ॥ २

कवित्त-ग्रीषमकेभीषमतमारितापतापितवि-लोकिकैमहीकोजानिपरमदुखारीहै।
तेसहिंपहारनकोझरेपत्रपूरेपेखि, मोरनमतंगनपरावनोनिहारीहै ॥
दीनसेसरितसरसरसीसलिलहीन, विश्वकोबहुतविधिव्याकुलविचारीहै।
जेठकीकठिनशठताईमेटिवेकोअब-नीपतिअषाढ़आयोकरिकैतयारीहै ॥
कारीकारीघटामतवारेहैंमतंगमनु, विविधिकिताकेलसैंदामिनिपताकेहै।
घनकीगरजसोईदुंदुभिधुकारहोत, बाँसुरीसिफूँकैंमोरपेदरवलाकेहैं ॥
चातकनकीबबोलिपावसअदंकदेत, सुखितकुरंगतेतुरंगममजाकेहैं।
बाणवारिमारिदियोग्रीषमैनिकारिवसुधातेमजबूतमेघभेजेमघवाकेहैं ॥

१-पावसऋतुव्रजमेंलगी, उतपतिप्रभुपदजीव। छाईदशहुँदिशानमें, घनमंडलीअतीव ॥ ३ ॥
करतशोरदामिनिसहित, घनलीन्होंनभछाइ। जिमिअज्ञानआवर्णते, सगुणब्रह्मछपिजाइ ॥ ४ ॥
आठमासनिजकिरणिसों, जलशोखतहेभानु। चारिमासवरपतसोई, ज्योंभूपतिवरदानु ॥ ५ ॥
जलवरषहिंचपलासहित, घनलहिपवनझकोर। द्रवहिंसाधुजिमिदीनपर, जीवनदेसबठोर ॥ ६ ॥
ग्रीषमतापतपीधरणि, लहिघनभैसुखभीन। जिमितपफललहितपकृशित, तपीहोततपपीन ॥ ७
नखतनभासितहोतनिशि, जँगनभासअपार। जिमिकलियुगमेंवेदनहिं, होतपखंडप्रचार ॥ ८ ।
घनकीघोरगरजसुनि, दादुरकीन्हेंशोर। नेमसमापतवेदजिमि, भाषतविप्रकिशोर ॥ ९ ॥
क्षुद्रनदीबाढ़ीविपुल, कीन्हेंवेगविशाल। धनलहिचलतकुचालज्यों, जनमकेरकंगाल ॥ १० ॥
अरुणचँदेनीहरिततृण, युतछत्राकवलाक। जनुपावसआवतसदल, छाजतछत्रपताक ॥ ११ ॥
कृषिककृषीबाढ़तनिरखि, हरषलहतदिनदून। जैसेलोभीधननिरखि, मानतकबहुँनऊन ॥ १२ ॥
जलथलवासीजीवलहि, नवजलभेसुखरूप। जिमिहरिभजनप्रभावतें, होतरुचिरवपुभूप ॥ १३ ॥
मिलैंनदीसागरउठे, पवनप्रसंगतरंग। विपयलहेयोगीनयो, जिमिमनकरबहुरंग ॥ १४ ॥
हनेजातजलधारगिरि, पैनहिंकरतखँभार। जिमिहरिजनकोविपयकी, बाधानहिंसंसार ॥ १५ ॥
जानिपरेमारगनहीं, तृणसंकुलजलधार। विनअभ्यासजिमिवेदको, द्विजगुसनहिंसंचार ॥ १६ ॥
सुरकरघनमेंछनछिपति, छनछहरातिछनजोति।गुनिहुँकंतकुलटानिकी, जिमिथिरप्रीतिनहोति ॥१
इंद्रचापआकाशमें, विनगुणअसछबिदेहिं। विनगुणकेबहुपुरुषजस, यहजगमहँयशलेहिं ॥ १८ ॥
निजकरशोभितघननसों, छपितशशीनसोहाय। अहंकारसवलितपुरुष, जिमिनछजततनृपराय ॥१
देखिपटीघनकीघटा, नचतमोरचहुँओर। दुखितगृहीजिमिसाधुको, लहिमुदलहतअथोर ॥ २०
नवजललहिवनकेविटप, भयेसपत्रसझार। तपीकृशितफलपायजिमि, पूरहिंसुखअभिलार ॥ २
सरतटकंटककीचबिच, फहुँवससारसकोक। जिमिकुमतीलहिदुसहदुखनि, तनहिनआपनओक॥२
सलिलधारकेजोरसों, फूटिगयेबहुसेत। वेदनकीमरयादजिमि, कलिपखंडहरलेत ॥ २३ ॥
मारुतप्रेरितजलदजिमि, जीवनजीवनदेत। द्विजप्रेरितनृपत्योंयथा, प्रजामनोरथलेत ॥ २४ ॥
बहुँओररसाला। मनुउपकारीपुरुषविशाला ॥ पकेजंबुफलभूमदोनिरहीं। द्रव्यदानदानीजनुकरहीं ॥

कहाँगईसबधेनुहमारी।असकहिकहिबहुहोंहिंदुखारी॥३॥तिनखुरखनितविलोकिमहीको।चलेसबैखलहिसोहहींको।
धेनुदंततृणकटेनिहारी। तेहिंमारगगोगमनविचारी॥४॥खोजतचलेगयेयहिभाँती।मुंजविपिनमधिगऊजमाती॥५
तहँनिरखेहरिसहितगुवाला। तृपितखरींजहँगऊविहाला॥५॥कारीकाजरिधूसरिधौरी। हंसिनवंशिनवासिनगोरी।

दोहा–तिनकेलैलैनामअस, हरिबाँसुरीबजाइ। लीन्हेतिनकोआशुहीं, अपनेनिकटबोलाइ॥६॥

गोपहुतृपितश्रमितअतिह्वैगे। गौवनसहितमहादुखछैगे॥ मुरुकिचलेहाँकततिनकाँहीं। मध्यमुंजकेकाननमाँहीं
मिल्योनकहुँतहँमारगतिनको।उठ्योकोटमनुमुंजहितृणको।तहँआपहिंतेनृपतेहिंकाला।लागिगयोबनअनलकराल
धूमधुंधधायोचहुँओरा। अंधकारकीन्ह्योंअतिघोरा॥ पुनितेहिंबिचबिचतेविकराला। उठनलगीदावानलज्वाला।
पवनचल्योतहँदेतझकोरा। उठीलूकचहुँओरकरोरा॥ कोहुकीरहीनजीवनआशा। मानेसबैआपनोनाशा॥

दोहा–चटचटाइतहँवंशगण, फूटिफूटिफटिजात। पटपटाइतृणगणजरत, आरतजंतुभगात॥

मनहुँप्रलयपावकबनआयो।सिगरेजगकोचहतजरायो॥लपटैंझपटैंविकटैंभारी। चटकैंशिलाअगिनिकीझारी॥७
चहुँकितलखिपावकआवत। गोपसबैअतिशयभयपावत॥ रामकृष्णकेचरणनआई। गिरेगोपगौवैंदुखछाई।
मीचुभीतिजिमिप्रजाघनेरे! जातशरणनारायणकेरे॥ कहेगोपसबएकहिंबारा॥८॥ कृष्णकृष्णहेबलीअपार
हेअथाहविक्रमबलरामा। रक्षणकरहुआजुयहिठामा॥ दावानलजारतहमकाँहीं। दूजोरक्षकदरशतनाँहीं॥९।

दोहा–यहअचरजलागतमनहिं, हमसबसखातुम्हार। तुम्हरेदेखतशोकके, बूडतपारावार॥

तुमतौसबधर्मकेज्ञाता। रक्षहुकसहमकोनहिंताता॥ अहौनाथयकतुम्हींहमारे। द्वितियनदरशतनैननिहारे।
तुमकोतजिकेहिंठौरहिंजाँहीं। कसनहिंहोतिदयाउरमाँहीं॥ १०॥

श्रीशुक उवाच।

दीनवचनसुनिदीनदयाला।कह्योसखनसोंवचनउताला॥मूँदहुआँखिसबैयकबारा।करहुनकछुजियमाहँसँभारा॥
सखासुनतहरिवचनतहाँहीं।मूँदिलियेनिजनिजहगकाँहीं॥तबनिजमुखसोंतहँभगवाना।करिलीन्ह्योंदावानलपाना
सबकोनिकटबटैभाँडीरे। दियपहुँचाइमेटिसबपीरे॥

दोहा–कह्योनैनकोखोलहू, सिगरेसखासुजान। दावानलसबमिटिगयो, आयेपुनितेहिंथान॥

खोलेसखाचखनसुखलेखे। दावानलकोकतहुँनदेखे॥ खड़ेसबैभाँडीरहिंनेरे। तबविसमितयकएकनहेरे॥
सपनोंसोतिनकहँह्वैगयऊ।सबकेउरअतिआनँदभयऊ॥१३॥प्रभुकोऐसोनिरखिप्रभाऊ। कहनलगे
अहैंनंदसुतसत्यविधाता।यहिप्रभावकछुजानिनजाता॥१४॥तबहरिकह्योसाँझअबआई। चलहुसबैव्रजकाँहैं
असकहिगौवनहाँकिमुरारी।सखनसहितव्रजचलेसुखारी।ग्वालबालमधिवेणुबजावत।मंदमंदनँदनंदनआवत।

दोहा–तहँगोपीसबदेखिकै, दरशनचोपीआसु। कढिकढिमगठाढीभईं, तजितजिनिजैनिवासु॥
जिनकोहरिदरशनबिना, क्षणसोयुगसमजाइ।तिनकोहरिमुखदरशको, सुखमुखकहिनतिराइ

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदांबुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे एकोनविंशस्तरंगः॥ १९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–हरिखलअपनीधेनुलै, नंदभौनमेंजाइ। निजनिजथलमेंसबनको, लीन्हींबाँधिलगाइ॥

यशुमतिकरगहिहरिखलकाँहीं। लैगेभीतरभौनहिंमाँहीं॥ चरणचापिभोजनकरवाई। पलनापरदियपुढ़
लैलैधेनुलौरसबग्वाला। निजनिजभवननगयेभुवाला॥ नरनारिनयहकथासुनाई।अ

क्रमक्रमसोंकरदमसुख्यो, पीनलतातरुडारि। जिमिक्रमक्रममतातजैं, धीरधीरताधारि ॥ ३९ ॥
खजवकमकारिअचलजल, सिंधुभयोसबठाम। परमहंसजनहोतथिर, तजिसिगरेजगकाम ॥ ४० ॥
बाँधिसेतुसींचनकृपी, लावतसलिलकिपान। जिमिविषयनतेखैंचिमन, थिरराखतमतिमान ॥ ४१
तरणितापदिनकीहरत, जीवनकोनिशिचंद। जिमिविज्ञानअभिमानअरु, व्रजतियतापमुकुंद ॥ ४२
अमलतारनिर्मलगगन, अतिशयशोभितहोय। वेदअर्थधारीसतो, गुणयुतमनजससोय ॥ ४३ ॥
व्योमअखंडलमंडलै, सोहतउडुयुतचंद। जिमियदुनगरीयदुनयुत, सोहतश्रीयदुनंद ॥ ४४ ॥
तापरहितसवजनभये, परसतत्रिविधसमीर। पैविनहरिहियरालगे, मिटीनगोपिनपीर ॥ ४५ ॥
भेसगर्भगोखगमृगी, तिनपाछेपतिजाँहिं। जिमिकीन्हेहरिभक्तिके, सिगरेफलपछिआँहिं ॥ ४६ ॥
भानुउदेकुमुदिनविना, विकसहिंकंजअथोर। जिमिधर्मीलहिनृपतिको, प्रजासुखीविनचोर ॥ ४७
पकीकृपीग्रामनपुरन, प्रचरचोअन्ननवीन। घरघरउत्सवहोतजिमि, हरिलहिमहिसुखभीन ॥ ४८ ॥
व्रतीवनिकनृपअर्थहित, गमनकियेतजिओक। जिमिसुकाललहिसिद्धजन,तनुतजिजिनजसलोक४९

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे विंशतितमस्तरंगः ॥ २१ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–एकसमयतहँभोरहीं, जगेरामअरुश्याम। सखनसहितगमनतभये, धेनुचरावनकाम ॥

कवित्त–पन्नासमपूरेनीरपरमगँभीरसर, विकसीजलजभरिकैंउरपारिहैं।
शीतलसुगंधधीरवहतसमीरतहाँ, तीरतीरतरुनमेंबोलिरहेकीरिहैं ॥
मुनिमतिधीरहूँविलोकतअधीरहोत, मदनअमीरउरवेधैतीखेतीरिहैं।
छीरदाचरावनकोसहितअहीरवृंद, वृंदावनपैठेबलवीरबलवीरहैं ॥ १ ॥
फूलिरहेफूलबहुफैलिरहींलोनीलता, फाबिरहींफटिककेफरससीधरनी।
शीतलसघनकुंजमंजुतहँभौंरनके, पुंजनकीगुंजछाईअतिमुदभरनी ॥
रघुराजरंगरंगकेविहंगबोलिरहे, आनँदउमंगभरेसंगनिजघरनी।
मोहनजूमुरलीबजाईतहाँमाधुरीसों, व्रजवनितानजोमनोजवशकरनी ॥ २ ॥
बाँसुरीकीटेरव्रजबालनकेकाननमें, काननसोंआपसुधाधारहींसीढरकी।
चौंकिचौंकिचारोंदिशाचितैकेचकितह्वैके, चातुरीबिसारिभूलिगईसुधिघरकी ॥
रघुराजदौरिदौरिआईंजुरिएकैठौर, छूटीअलकालीसारीसम्हरैनधरकी।
आननमेंआनरंगभाननकलेवरमें, प्राणनमेंपूरीप्रीतिनँदकेकुँवरकी ॥ ३ ॥
कान्हरकलाकोकछुकहनकोचाहीचित, पैनकहीनेसुकहूँवदनतेवानीहै।
नंदजूकेनंदनकीमंदविहँसनिचित-वनिऔचलनिचारुसुधिकेलोभानीहै ॥
मदनमहीपनेदोहाईतनफेरिदीन्हीं, कहैरघुराजव्रजबालदहरानीहै।
पलकैंपरतनाहिंललकैंललनुलागि, ललनालगनलागींलाजहूँपरानीहै ॥

सोरठा–पुनिमनमोहनरूप, धारिहियेमहँधीरधारि। बोलींवचनअनूप, जसतसकैइकएकसों ॥ ४ ॥

कवित्त–काननमेंसोहैंकर्णिकारकेकुसुमभाटी, माथेमोरपंखमोरछविकोछैयाहै।

पकेगुच्छसोहतखरजूरा। मानहुँसड़ेजीतिरणशूरा ॥ ऐसीलखिकाननकीशोभा। हरिबलकोविहरनमनलोभा॥
लियोआशुसबसखनबोलाई। धेनुचरावनचलेकन्हाई ॥ पुनिमाधुरिबाँसुरीबजाई। लैलैनामनिधेनुबोलाई॥
वेणुटेरसुनिगौवेंधाई। आशुहिंनँदनंदनढिगआई ॥ २५ ॥ बोयनभारहिंमंदगामिनी। हरिआगेगवँनीसोहावनी॥
थनतेढारहिंपयकीधारें। फिरिफिरिनिरखहिंनंदकुमारें॥ २६ ॥

दोहा—यहिविधिग्वालनबालअरु, गौवनयुतगोपाल। जातभयेविहरनहिते, वृंदाविपिनिरसाल ॥
गिरितेगिरहिंशोरकरिघोरा। जलकीधारचारुचहुँओरा ॥ हरितवरणसिगरीवनराजीं। मधुधाराढरकततरुराजीं॥
तहँगिरिगुहाअनेकसोहाँहीं। तिनमेंसलिलधारनाहिंजाँहीं॥ऐसोवनविलोकिनँदलाला। मुदितभयेयुतग्वालनबाला॥
धेनुचरावनतहँप्रभुलागे।सखनसहितअतिशयअनुरागे॥२७॥उमडिघुमडितहँनभघनश्यामा। बरषनलगेजहाँघनश्यामा
तरुकोटरहरिभागिलुकाने। ऐसहिऔरहुसखादुराने ॥ तहँतेइकएकनगोहरावें। हमरेनिकटबूँदनहिंआवें॥

दोहा—झरझरजलधाराझरति, मरमरतरुदलहोंय। तरतरथरथरजलबहत, उपरउपरसबकोय ॥
नेसुकनिकरिगयेजबमेघा। बोलनलगेचहूँदिशिमेघा ॥ निजनिजकोटरतेतबग्वाला। आयेनिकसिजहाँनँदलाला॥
खोजिखोजितहँकंदमूलफल। लायदियेकहँलेहुकृष्णबल ॥ सखनबाँटिहरिबलसुखपागे।भोजनकरनआपहूलागे॥
फलभोजनकरिरामकन्हाई। लगेचरावनविहरतगाई॥२८॥इतेयशोमतिदुपहरजानी। ह्वैहैंक्षुधितकृष्णअनुमानी॥
दधिओदनमिश्रीअरुमाखन। औरहुविजनयोग्यजोचाखन॥थारनकलशनछीटभराई। गोपिनहाथदियोपठवाई॥
सोलहिकृष्णपरमसुखपाई। सखनसहितयमुनातटजाई॥

दोहा—मृदुलशिलाछायाघनी, बहतिधारचहुँफेरि। तहँहरिबलबैठतभये, सखासबैतिनघेरि ॥
सखनबाँटितहँव्यंजननाना। भोजनकरनलगेभगवाना ॥ स्वादसराहिआपुकहँदेहीं। कबहूँसखनकेरलैलेहीं॥२९॥
हरिचहुँओरहरिततृणमाँहीं। चरिचरिआयमूँदिदृगकाँहीं ॥ वृपभगऊबछराअलसाँहीं। बैठेपागुरिकरतसोहाँहीं॥
तिनहिंनिरखिहरिबलअरुग्वाला।भोजनकरतलहतसुखमाला ३० बारहिंबारकहैंसबपाँहीं। पावससींदूजीऋतुनाँहीं॥
यहसबकोहैआनँदकारी। प्रीतिबढ़ावनहारिहमारी ॥ पावसमेंवृंदावनशोभा। कहहुकौनलखिकैनहिंलोभा॥३१॥

दोहा—यहिविधिविहरतविविधविधि, गोपनयुतगोपाल। लागीव्रजमेंशरदऋतु, बीत्योबरषाकाल॥

कवित्त—मोरऔपपीहनसोंनिरखिनिरादरम-रालचक्रवाकनकोसारसनहदहै।
तैसेचंदचाँदनीकीचाँदनीनपूरीपेखि, मेघनकीमाछाघेरिकीन्हीजाहिरदहै॥
रघुराजसलिलसरनमेंसरसहैकै, बोरिदियोवारिजकेवृंदनविहदहै।
जानिकैदरदऐसीपावसैगरदकैकै, आयगयोवृंदावनमरदशरदहै॥
मंदभयोमारुतअमंदभयोचंदअर-विंदनकेवृंदवैअनंदभरेविकसे।
मत्तभेमतंगऔकुरंगऔविहंगबहु, त्योंहीह्वैअमत्तमोरदुरिगेवनिकसे॥
पुलिनदेखावतींघटावतींसलिलयोंसो-हावतींसरितआयेखंजनपथिकसे।
रघुराजमेघनकेमंडलमयंककेम-यूखकोडेरायनभमंडलतेनिकसे॥ ३२॥

दोहा—शरदपायजलअमलभो, फूलेकंजप्रसिद्ध। योगभ्रष्टपुनियोगकरि, जिमिसुधरतहैसिद्ध॥ ३३॥
नभकेघनजनज्ञरिरहत, जलमलपुहुमीपंक। शरदहन्योंजिमिकृष्णकी, पदरतिहरतिकलंक॥ ३४॥
विनघहरणिविनवारिके, विलसतवारिदसेत। जिमिजगआशुनिराशह्वै, लसतसंतमतिसेत॥ ३५॥
कहुँढारतजलधारगिरि, कहुँढारतहैनाहिं। देतकबहुँनहिंदेतजिमि, ज्ञानीज्ञानहिंकाँहिं॥ ३६॥
दिनादिनसूखतक्षुद्रजल, जानतहैंनहिंमीन। जिमिक्षणक्षणआयुघटत, गुनतनजनमतिहीन॥ ३७॥
होतदुखीलघुसरनके, जियलहितरनिप्रताप। कृपिणकुटुंबीदारिदी, जिमिपावतबहुताप॥ ३८॥

क्रमक्रमसोंकरदमसुख्यो, पीनलतातरुडारि। जिमिक्रमक्रममतातजैं, धीरधीरताधारि ॥ ३९ ॥
खजबकमकरिअचलजल, सिंधुभयोसवठाम। परमहंसजनहोतथिर, तजिसिगरेजगकाम ॥ ४० ॥
बाँधिसेतुसींचनकृपी, लावतसलिलकिपान। जिमिविषयनतेखैंचिमन, थिरराखतमतिमान ॥ ४१
तरणितापदिनकीहरत, जीवनकीनिशिचंद। जिमिविज्ञानअभिमानअरु, व्रजतियतापमुकुंद ॥ ४२
अमलतारनिर्मलगगन, अतिशयशोभितहोय। वेदअर्थधारीसतो, गुणयुतमनजससोय ॥ ४३ ॥
व्योमअखंडलमंडलै, सोहतउडुयुतचंद। जिमियदुनगरीयदुनयुत, सोहतश्रीयदुनंद ॥ ४४ ॥
तापरहितसबजनभये, परसतत्रिविधसमीर। पैविनहरिहियरालगे, मिटीनगोपिनपीर ॥ ४५ ॥
भेसगर्भगोखगमृगी, तिनपाछेपतिजाँहिं। जिमिकीन्हेहरिभक्तिके, सिगरेफलपछिआँहिं ॥ ४६ ॥
भानुउदैकुमुदिनविना, विकसहिंकंजअथोर। जिमिधर्मीलहिनृपतिको, प्रजासुखीविनचोर ॥ ४७
पकीकृपीग्रामनपुरन, प्रचरचोअन्ननवीन। घरघरउत्सवहोतजिमि, हरिलहिमहिसुखभीन ॥ ४८ ॥
व्रतीवनिकनृपअर्थेहित, गमनकियेतजिओक। जिमिसुकाललहिसिद्धजन,तनुतजिजिनजसलोक४९

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे विंशतितमस्तरंगः ॥ २१ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–एकसमयतहँभोरहीं, जगेरामअरुश्याम। सखनसहितगमनतभये, धेनुचरावनकाम ॥

कवित्त–पन्नासमपूरेनीरपरमगँभीरसर, विकसीजलजभरिकैउरपारिहैं।
शीतलसुगंधधीरवहतसमीरतहाँ, तीरतीरतरुनमेंबोलिरहेकीरिहैं ॥
मुनिमतिधीरहूँविलोकतअधीरहोत, मदनअमीरउरवेधेतीखेतीरिहैं।
छीरदाचरावनकोसहितअहीरवृंद, वृंदावनपैठेवलवीरवलवीरहैं ॥ १ ॥
फूलिरहेफूलवहुफलिरहीलोनीलता, फाविरहीफटिककेफरससीधरनी।
शीतलसघनकुंजमंजुतहँभौंरनके, पुंजनकीगुंजछाईअतिमुदभरनी ॥
रघुराजरंगरंगकेविहंगबोलिरहे, आनँदउमंगभरेसंगनिजघरनी।
मोहनजूमुरलीवजाईतहाँमाधुरीसों, व्रजवनितानजोमनोजवशकरनी ॥ २ ॥
बाँसुरीकीटेरव्रजबालनकेकाननमें, काननसोंआपसुधाधारहीसीढरकी।
चौंकिचौंकिचारोंदिशाचितैकैचकितह्वैकै, चातुरीविसारिभूलिगईसुधिघरकी ॥
रघुराजदौरिदौरिआईजुरिएकैठौर, छूटीअलकालीसारीसम्हरैनधरकी।
आननमेंआनरंगभाननकलेवरमें, प्राणनमेंपूरीप्रीतिनँदकेकुँवरकी ॥ ३ ॥
कान्हरकलाकोकछुकहनकोचाहीचित, पैनकहिनेसुकहूँवदनतेवानींहै।
नंदजूकेनंदनकीमंदविहँसानिचित-वनिऔचलनिचारुसुधिकैलोभानीहै ॥
मदनमहीपनेदोहाईतनफेरिदीन्ही, कहैरघुराजव्रजवालचवरानीहै।
पलकेंपरतनाहिंललकेंललनुलागि, ललनालगनलागीलाजहूँपरानीहै ॥

सोरठा–पुनिमनमोहनरूप, धारिहियेमहँधीरधरि। वोलींवचनअनूप, जसतसकैइकएकसों ॥ ४ ॥

कवित्त–काननमेंसोहेंकर्णिकारकेकुसुमआली, माथेमोरपंखमोरछविकोछैयाहै।

पुरटप्रभाकोपटकटिमेंविराजिरह्यो, उरवैजयंतीमालमनकोहरैयाहै ॥
वंशीविधआँगुलीदेतानलैप्रमोदभरे, रघुराजग्वालनमेंआगूकिहैगैयाहै ॥
निजपदवृंदावनशरणीकरतधन्य, नटवरवेषवरोशामरोकन्हैयाहै ॥ ५ ॥

दोहा–यहिविधिकाहिकहिव्रजवधू, सुनिमुनिवंशीटेर । लगींकरनवरणनसबै, इकएकनसोंफेर ॥ ६ ॥

गोप्य ऊचुः ।

सवैया–संगसखालैचलैंतुलसीवनधेनुचरावनकोअनुरागी । भौंहकमानकोतानिकैनैनकेवाणकोमारिकिरींविरा
श्रीरघुराजबजायकैबाँसुरीदेतसवैव्रजकोसुखपागी । तानँदनंदनकेमुखकीछविजेदृगपीवैतेहीबडभागी ॥ ७ ॥
लालरसालरसालकेपल्लवनीरजमोरहुपंखलगाई । सोपहिरेपटपीतकेऊपरलालहियेवनमालवनाई ॥
श्रीरघुराजसिंगारकियेअनुरागनसोंरह्योरागनगाई । कुंजकदंबतरेनटनागरसोहतग्वालनमध्यकन्हाई ॥ ८ ॥
जोसिगरीव्रजनारिनकोरघुराजछनैछनदेतहुलासुरी । पीवतहीजोहिहोतभईविरहागिव्यथाकोविशेषविनाशुरी ॥
पूरीभईयहसौतिहमारिकरैनितलालनकेमुखबाँसुरी । पानकरैहरिकोअधरामृतकौनकियोतपबाँसकीबाँसुरी ॥
विकसीअरविंदनकीअवलीपुलकावलीसोसरसीनकीहै । मकरंदहीढारैअनंदकेआँसुविचारैनिजैदुखछीनकीहै ॥
हमरेपयतेह्वैगईअतिपीननडाटिठईकहुँवीणकीहै । रघुराजलगीहरिकेमुखमेंमुरलीभईप्यारीप्रवीनकीहै ॥ ९ ॥
जिनकीरजपावनदेहअरीजगयोगीअनेकनयोगकरैं । विरहानलतापबुझावनकोहमहूँहठिकैकुचबीचधरैं ॥
नँदनंदनकेपदपंकजसोंव्रजमेंथरहींथरमेंविचरैं । तुलसीवनसोंरघुराजसखीदृगदूसरेदेशनदेखिपरैं ॥
मनमोहनीवाधुनिकोसुनिकैघनश्यामहिंकोघनश्यामगनै । मनमोहिमहामतवारेमयूरनगीचहीनाचैछनैहिछनै ॥
तिनकोलखिनाचतओरहुजंतुरहैंसवठाढ़ेठगेसेवनै । रघुराजकहोसखिकौनवनायगहाइदईमुरलीमोहनै ॥ १० ॥
जोमतिमंदकहैव्रजकीहरिणीनकोसोमतिमंदकुरागी । साँवरेकीछविमेंछकिकैढिगठाढीरहैपतिलैअनुरागी ॥
श्रीरघुराजललाकोकटाक्षनिसोंसतकारकरैंबडभागी । तेहरिकेहियलागिवेकोहमेंरोकतगोपगँवारअभागी ॥ ११ ॥
ग्वालनवृंदअनंदकोदायकशीलभरोनँदनंदनरूपहै । ठाढोकदंबकेकुंजथलीअलीवाँसुरीकीधुनिछावैअनूपहै ॥
सोसुनिव्योमविलासिनीबालविमानमेंमोहैविसारिसरूपहै।ढीलभैनीविखसैसुमकेशतयद्यपिसंगसुरासुरभूपहै ॥ १२ ॥
वामुरलीधुनिमंजुगोपालकीगौवनकानसुधासीढ़रैहै । चौंकिकेकानउठायकैधायसमीपमेंगोगणआयअरैहै ॥
त्यौंबछरासुरभीमुखकौरलियेनहिलीलहिनाहिझरैहै । श्रीरघुराजनिवारिनिमेषनिहारिललाकोप्रमोदभरैहै ॥ १३ ॥
बाँसुरीकीधुनिश्रौणकेहेतुलगायकैऔननमेंमसोखाँचे । बोलनवंदकैकुंदकदंबनिशाखनवैठअनंदमेंराँचे ॥
नैननिमूँदिअचंचलह्वैपियैवेणुसुधामनकेनहिकाँचे । श्यामसनेहीविहंगसवैतुलसीवनकेयेविहंगहैसाँचे ॥ १४ ॥
माधवकीमहामाधुरीवामुरलीधुनिकोसुनिआभअमंदी । कामसोंकाँपिउठोहियरोभईताहीसमैअतिवेगतेमंदी ॥
श्रीरघुराजतरंगभुजानिसोंकंजनकेगहिपुंजअनंदी । प्रीतमकेपदपंकजकोपागिप्रेममेंपूजतप्यारीकलिंदी ॥
उपजीव्रजमेंयमुनाजलसोंअतियोपितह्वैसकलासुरीभै । गिरिकाननऔरकुरंगविहंगनआनँददायनिआसुरीभै ॥
रघुराजसखीकिहिकारणसोंयहिकीइतनीमतिआसुरीभै । विलसैव्रजनाथकेहाथपरीव्रजवासिनीवैरिणिबाँसुरीभै ॥ १५ ॥
ग्वालनबालनसंगलियेविचरैंसुरभीनकेपीछेकन्हाई । चेतनकोतोअचेतकरैऔअचेतनचेतनवेणुबजाई ॥
श्रीरघुराजप्रमोदितह्वैघनआतपवारणहेतुतहाँई । छत्रसेछायेरहैनभमेंकलकुंदसेबुंदनकीझरिलाई ॥ १६ ॥
कमलाकुचकुंकुममंडितमंजुलकंजसेकोमलपायनिसों । तुलसीवनमेंसुरभीनकेपीछेचलैंहरिचौगुनेचायनिसों ॥
रघुराजलग्योतृणसोंअँगरागपुलिंदीउठायउडायनिसों।विरहागिबुझावैलगायाहियेधनितेहमऐसीलोगाइनिसों ॥ १७ ॥
नँदनंदनकेअरविंदपदैनितहीलहिमोदउरैभरतो । फलफूलनसोंझिरनाजलसोंसतकारसखानिज्रुतेकरतो ॥
धनिहैधनियाधरणीधरजोमुरलीसुनिधीरजनाधरतो । हमहायतहाँकीशिलौनभईकवहूँहरिकोपगतोपरतो ॥ १८ ॥

श्रीशुक उवाच।

सुनिग्वालनवालनकीवानी। भक्तआपनीद्विजातियजानी ॥ तिनपैकृपाकरनकेहेतू। तासुवाँधिमनमेंअसनेतू॥
कह्योसबनसोंतहँनँदलाला। यहउपायकीजैसवग्वाला ॥ २ ॥ मथुरानगरीकेढिगमाँहीं। इततेसोऊदूरिहैनाँहीं॥
तहाँब्रह्मवादीद्विजआई। स्वर्गगवँनकेहितमनलाई ॥ करहिंआंगिरसयज्ञसोहाई। जोरेअमितअन्नसमुदाई ॥ ३ ॥
सखाजायतहँयाचहुओदन। औरहुव्यंजनस्वादुसुमोदन ॥ तिनकोऐसोवचनसुनायो। रामकृष्णहमकोपठवायो॥

दोहा—गऊचरावनहेतुइत, कढ़िआयेअतिदूरि। गृहभोजनआयोनहीं, क्षुधासवनिभैभूरि॥

सुखस्वादुभोजनवहुदेहू। क्षुधानिवारियज्ञफललेहू ॥ ४ ॥ सुनतग्वालअसप्रभुकीवानी। यज्ञभवनगवनेसुखमानी॥
विप्रनदेखिजोरियुगहाथा। कियेप्रणामधरणिधरिमाथा॥तिनसोंभोजनमाँगनलागे। वचनविनीतक्षुधारसपागे॥५॥
सुनहुविप्रहमकृष्णसखाहैं। पठयोरामनकहतमृषाहैं ॥ नंदकुँवरकेअज्ञाकारी। चितदैसुनियेवातहमारी ॥
गऊचरावतदूरिगोपाला। कढिआयेसंयुतवहुग्वाला ॥ ६ ॥ इततेहैंवहुदूरहुनाँहीं। रामश्यामसधिग्वालनमाँहीं॥

दोहा—दुपहरभैकछुघरहुते, आयोभोजननाँहिं। सखनसहितअतिक्षुधितभे, रामश्यामवनमाँहिं॥

तातेतुवसमीपमतिसेतू। हमहिंपठायोभोजनहेतू ॥ जोद्विजश्रद्धाहोइतिहारी। तौभोजनदीजैसुखकारी ॥ ७ ॥
तुमतोसकलधर्मकेज्ञाता। क्षुधितसखायेफलवहुताता ॥ जायसवैजववचनवखाना। पैद्विजनेकुकियोनहिंकाना॥
बैठेद्विजअंगिरायज्ञमहँ। पशुहिंसनविधिसहितकरततहँ ॥ सौत्रामणीसोयज्ञविहाई। अन्नदानमखउचितलखाई॥
असद्विजसवमनाकियोविचारा।अनुचितभापतगोपगँवारा।जेनहोहिंदीक्षितमखमाँहीं।मखभोजनअनुचिततिनकाँहीं॥
भोजनकरैआनजोआई। तौमखविघनअवशिहैजाई ॥ ८ ॥

दोहा—असविचारिगोपनवचन, सुनेहुनसुनेद्विजेश। क्षुद्रस्वर्गकेवासहित, करहिंकर्मसकलेश॥

मूरखमहाभक्तिनहिंजाने। अपनेकोपंडितवरमाने ॥९॥ देशकालऋत्विजअरुतंत्रा। अगिनिद्रव्यदेवतासुमंत्रा॥
धर्मयज्ञऔरहुयजमाना। इनमेंसवमेंहैंभगवाना ॥ १० ॥ परब्रह्मसोकृष्णमुरारी। इनकोद्विजवरमनुजविचारी॥
करीयाचनातिनकीभंगा। मूरखभरेयज्ञकेरंगा ॥ ११ ॥ हाँनाहींजवकछुनप्रकाशा। ग्वालवालतवभयेनिराशा॥
लौटिकृष्णवलकेढिगआई। क्षुधितदीनह्वैगिरासुनाई ॥ द्विजतौवोलतऊभरिनाँहीं। देवनदेवकौनकहिजाँहीं॥१२॥

दोहा—ग्वालगिरागोविंदसुनि, कह्योफेरिमुसक्याय। सखाजायअवफेरितहँ, असतुमकरहुउपाय॥ १३॥

द्विजनारिनसोंकहहुवुझाई। आयेवलयुतइतैकन्हाई ॥ सुनतैमोरनामतेआसू। भोजनदैहैंसहितहुलासू॥
मेरेचरणप्रीतिलौलीनी। द्विजनारीहैपरमप्रवीनी ॥१४॥ सुनतकृष्णकेवचनगुवाला। गयेफेरिआशुहिंमखशाला॥
द्विजनारिनकहँकियेशृँगारा। वैठीगृहमहँलखेगुआरा॥ह्वैविनीतकरिदंडप्रणामा। वोलेवचनगोपसुखधामा॥१५॥
वचनसुनहुद्विजनारिहमारे। इतसमीपनँदकुँवरपधारे ॥ १६ ॥ गऊचरावतआयेदूरी। सखनसहितभूँखेदैभूरी॥

दोहा—पठयोहमकोतुवनिकट, भोजनहितद्विजनारि। विरचेव्यंजनविविधविधि, दीजेविमलविसारि ॥ १७॥

कृष्णकथाप्रथमहिंसुनिराखी। तवतेदर्शनकीअभिलाखी॥पुनिसमीपसुनिनाथहिंआये।तिनकेमनप्रमोदअतिपाये॥
जेसहिंवैठिरहींद्विजनारी तिसहिंउठीत्वराकरिभारी॥१८॥भोजनचारिप्रकारसुस्वादू।भरिभरिथारनयुतअहलादू॥
चलींतहाँनँदनंदजहाँहीं। जिमिसरितासागरपहँजाईं॥१९॥तिनकोनिरखिकंतसुतभाई। रोकनलगेतिन्हैंबरियाई॥
कृष्णप्रीतिवशरुकीनरोके।कढिआईतिनकोदैठोके॥२०॥आईकान्हकुँवरजहँसोहत।जेनिरखतवनितनुमनमोहत॥

दोहा—कालिंदीकेकूलमें, नवअशोककीकुंज। वहतत्रिविधमारुतसुखद, गुंजतभृंगनिपुंज ॥ २१ ॥

कवित्त—साँवरोसलोनोगातपीतपटफहरात,उरमेंसुहावतवनमालहुँविशालहै।
अंगनरचीहैधातुमोरमौलिदरशात, नटवरवेपसेविलयातछविजालहै॥

कुंडलसोकानझलकातत्योंकपोलन, अलकछविछलकातअधरप्रवालहै।
एककरसराकाँधएककरजलजात, सुरिमुसक्यातवतरावतनँदलालहै ॥ २२ ॥
रूपगुनोप्रथमैसुनकेहरिदरसनकीअतिलालसाजागी। आयप्रत्यक्षलखीतिनकोअपनेकोगुनीजगमेंवड़भागी॥
श्रीरघुराजअनूपमरूपहियेधरिमैंदिदृगेअनुरागी।मोहनकोमिलिकेमनमेंद्विजनारिवुझाइदईविरहागी॥२३॥
दोहा-सर्वसुतजिनिजदरशहित, आईप्रीतिवढाय। गुनिगोविंदयहिविधितिन्हें, वोलेमृदुमुसक्याय ॥ २४ ॥
भागिनिसवद्विजनारी। सिगरीतुमइतभलेसिधारीं॥ चढहुइतहिसमीपहिंआई। कहहुजोहमसवकरहिंवनाई॥
हमदेखनयहिठांई। उचितहिकियोयदपिथरिआई ॥२५॥ जमतिमंतभक्तिरसपूरे। ममअनुरागरँगेअतिरूरे॥
होहिंकवहुँफलआसी।तिनमतिकेवलप्रेमपियासी॥ तिनकेहमप्राणहुँतेप्यारे। प्राणहुँतेप्रियतेईहमारे ॥ २६ ॥
बुद्धिमनतनुधनदारा। आतमयोगहोतअतिप्यारा॥तेआतमकेआतमहमहैं।कोप्रियदूजोजगमोहिंसमहैं॥२७॥
दोहा-जाहुसवैमखभवनको, तुमहिंसंगलैविप्र। सविधिसमापतिकरहिंगे, मखआनँदभरिछिप्र ॥ २८ ॥
सोरठा-तवबोलीकरजोरि, द्विजनारींहरिछविछकीं। बहुविधिहरिहिंनिहोरि, वेनविनयरसमेंसने ॥

विप्रपत्न्य ऊचुः।

कवित्त-नंदकेकुमारऐसोकरोनाउचारअव, कोमलवदनवैनकठिनहोहते।
एकवारभजेमोहिंताकोमेंतजहुँनाहिं, ऐसीनिजवाणीसत्यकरौकहाजोहते ॥
रघुराजरावरेकेचरणशरनभई, तजिकुलकानिकान्हआपहीकेमोहते ॥
पदअरविंदकीउतारीतुलसीकोहमें, शीशधारिवेकोनाथदेहुअतिछोहते ॥ २९ ॥
पतिपितुभ्रातमातुनातमित्रबंधुजेते, राखेंगेनभौनयहदोषकोलगायके।
ऐनहींकीऐसीदशावाहेरकीकौनकहै, सूझतनऔरठौरतुमकोविहायके ॥
पदअरविंदमकरंदकीपियासीदासी, काहेदुखदेहुनिठुराईदरशायके।
मनकीहरनहारीमूरतितिहारीत्यागि, कौनदईमारेकेसमीपवसैजायके ॥ ३० ॥
दोहा-सुनिद्विजनारिनकीगिरा, जानिअनूपमप्रीति। वोलेप्रभुमंजुलवचन, दरशावतरसरीति ॥

श्रीभगवानुवाच।

तुसुतवंधुनवृंदा। करिहैंनहींतिहारीनिंदा॥ हैंममरचितलोकसवजेते। तहँकेवासीदेवहुतेते॥
तेसवैतिहारी। करिहैंसदाप्रशंसाभारी ॥ ३१ ॥ हेद्विजजियअँगसँगजगमाँहीं। सुखअनुरागहेतुहैनाँहीं॥
नहिंलगायेरैहो। तोमोकहँआशुहितुमपैहो॥ सुमिरणदर्शनअरुममध्याना। अरुकरिवोमेरोयशगाना॥
तिहोतिहमारी। तसनहिंनिकटरहेद्विजनारी॥ तातेजाहुभवनकहँआसू। पूरहुयज्ञकर्मसहुलासू॥३२॥

श्रीशुक उवाच।

-ऐसेसुनिहरिकेवचन, द्विजनारीसुखमानि। गवँनकियोमखभवनको, हरियशविशदवखानि ॥ ३३ ॥
यमहिंआवतमाँहीं।रोकेद्विजवरयकइककाँहीं॥सोजसहरिमूरतिसुनिराखी।सोइधरिध्यानमिलनअभिलाखी॥
दिव्यरूपकहँपाई।हरिहिंमिलीप्रथमहिंसोजाई॥३४॥द्विजनारिनलायेपकवाना।सखनसहिततहँलैभगवाना॥
सवग्वालनदैके।वहुविधिताहिप्रशंसनकैके॥यमुनातटकुंजनकीछाँहीं।भोजनकियोपरमसुखमाँहीं॥३५॥
लीलाललितअपारा।करतमनुजसमनंदकुमारा॥वपुदरशायमधुरकहिवानी।दियोगोपगोपिनसुखमानी॥
दोहा-जवद्विजनारीयज्ञगृह,गवनीपतिनसमीप। तिनहिंदेखिनिंदनवचन, कहेनविप्रमहीप॥
नारिनकाँहीं। कियोसमाप्तयज्ञसुखमाँहीं॥ सुमिरिसुमिरिअपनोअपराधा। पावतभयेविप्रअतिवाधा॥

दोहा-तातेतातकियोजोकछु, मनमेंहोयविचार। सोहमपूँछतजोरिकर, कीजेसकलउचार॥
परंपरातेधौंचलिआयो। धौंकोउपंडितआयबतायो॥ ७॥ सुनिकेश्यामवचननँदराई। वदनताकिवोलेमुसका

श्रीनंद उवाच।

कान्हकोनपोथीपढ़िआजू। कहेवृद्धसममध्यसमाजू॥ तेनहिंजानतहैकछुकाजू। सुरपतिपूजनकीयहसाजू
सुरपतिमूरतिमेघमहाने। तिनकेहितपूजनहमठाने॥ लहिपूजावरषहिंमहिमाँहीं। जीवनजीवनजीवनकाँहीं॥
तिनवरषाजलपायदुलारे। अन्नहोंहिंमहिविविधप्रकारे॥ सोईअन्नलैवारिदनाथै। हमऔरहुपूजहिंसुखसाथै॥
दोहा-अन्नशेषलैपुनिसबै, कुलयुतकरैंअहार। अर्थधर्मअरुकामहूँ, तातेहोतअपार॥
पुरुषनकेपुरुषारथदाता। हैंपरजन्यसकलविधिताता॥१०॥हमरेपरम्पराचलिआई। कोउपंडितनहिंआजुवता
कामलोभभयद्रोहविचारी। तजेजोयहपूजनसुखकारी॥तौनहिंहोततासुकल्याना। यामेंहैविचारनहिंआना॥१

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिनंदवैनजबवोले। सत्यसत्यगोपहुसबवोले॥सुनतेतहाँविहँसिभगवाना।शक्रकोपहितवचनबखाना॥१

श्रीभगवानुवाच।

मतौपढ़ेनशास्त्रपुराना। पैकछुकहतसुनहुँदैकाना॥ जीवजनतसबकरमहिंतेरे। करमहिंतेपुनिलीनघनेरे
दोहा-भीतिक्षेमअरुसुखदुखहु, होतकर्मतेतात। विनाकर्मतेकबहुँनहिं, होतिकौनिहुँवात॥ १३॥
जोमानेफलदायकईशै। देतकर्मफलसोउविसवीशै॥ करैकर्मजोनहिंजगमाँहीं। तेहिंदेसकैईशफलनाँहीं
अहैईशतेनहिंकछुहेतू। करमहिंसबबाँधतहैंनेतू॥ १४॥ लहैंकर्मनिजनिजफलप्रानी। तौपूजहिंकाइंद्रहिंजानी
पूरबकर्मजोनकरिराखत।सकैनमेटिइंद्रश्रुतिभाषत॥१५॥देवअदेवमनुजसंसारा।सकलकर्मवशअहैअपारा॥ १६
लघुबड़योनिकर्मवशपावै। कर्महिंवशतनुतेजियजावै॥ शत्रुमित्रआदिकसबजेते। होतकर्मअनुसारहिंतेते
दोहा-कर्महिंईश्वरकर्मगुरु, कर्महिंजगतप्रधान॥ १७॥ तातेपूजहुकर्मको, अहैईशनहिंआन॥ १८॥
भजैऔरनिजकर्मविहाई। सोकबहूँमंगलनहिंपाई॥जिमिनारीनिजपतिकहँत्यागी। भजैजाइसोसदाअभागी॥१९
त्तिहैब्राह्मणकेरी। क्षितिपालनक्षत्रीकीहेरी॥ वैश्यवृत्तिजानहुव्यापारा। शूद्रवृत्तिद्विजसेवउचारा॥२०
कृषिवाणिज्यपालिबोगाई। उचितव्याजलीबोव्रजराई॥वैश्यवृत्तियेहैंविधिचारी। पैगोपालनअबशिहमारी॥२१
सतरजतमथितिउतपतिलयके।हेतुगुनहुपितुसकलसमयके॥रजगुणतेउत्पतिसंसारी२२रजप्रेरितबरषहिंघनवारी
दोहा-तातेजीवनप्रजनको, होतसिद्धिसबकाज। पिताबृथाहींपूजिके, काकरिहैसुरराज॥ २३॥
हिंहमरेपुरदेशहुग्रामा। नहिंगृहएकठौरअभिरामा॥ हमहैंनित्यपितागिरिवासी। रहेंसदावनमेंसुखरासी।
हमारा। जोगौवनतृणदेतअपारा॥ २४॥ तातेऔरदेवनहिंपूजो। करौविचारनअबकछुदूजो॥
गकोजोसंभारा। निजनिजकरलैविविधप्रकारा॥ गौवेंसिगरीआगेकीजे। विप्रनकोअपनेसँगलीजे॥
हुपितुगोवर्धनकाँहीं।यहकुलरक्षणकरिहिसदाँहीं॥२५॥विविधभाँतिपाकनबनवाओ।मूँगसितामोदकबँधवाओ॥
दोहा-पायसपूरीपूपपै, पपरीपपरीपान। पालपैराकहुपपचिहू, पैराप्रथितअमान॥
ष्कुलीआदिबहुव्यंजन। बनवावहुपितुद्रुतमनरंजन॥ तीनदिवसकोदूधसमेटी। भरिभरिताकोमेटनमेटी॥
त्रासोंधीवाफा। विविधमलाईरबरीसाफा॥ औरहुजेव्यंजनजोइजानें। सोनिजनिजगृहमेंनिरमानें॥२६॥
। लेहुसविधिहोमहुँकरवाई॥ धेनुदक्षिणाविप्रनदीजे। औरहुअन्नदानबहुकीजे॥२७॥
तितनचंडालनश्वानन। दीजेअन्नसहितसनमानन॥ गौवनकोनवतृणहुँसवाई। गोवर्धनदेवहिंदेगाई॥
दोहा-गिरिराजाहिंसबसाजिके, दीजेभोगलगाइ। जोरिसमाजपितातहाँ, लेहुप्रसादहिंखाइ॥२८॥

भूषणवसनपहिरिपुनिताता । अंगरागलेपितकरिगाता ॥ सिगरेगोपनजोरिसमाजू । बै
गोवरधनपरदक्षिणदेहू । फेरिलौटिऐयेनिजगेहू ॥ २९ ॥ यहमततौपितुअहैहमारा । पुनि
वासवबलिगिरिपतिकहँदीबो।पुनिप्रदक्षिणताकीकीबो।यहमोकोंलागतअतिनीको।यहीक

श्रीशुक उवाच ।

कालात्मावासयमदनासी । तेहरिभेवृंदावनवासी ॥ तिनकेवचनसुनतनँदराई । बोलेगो
यहबालकदेखतकोछोटो । पैहैबुद्धिकेरअतिमोटो ॥

दोहा–पुनिहरिकोमुखचूमिके, कहैंवचननँदराय । लालकह्योजोअर्थतुव, सोसबहै
जामेंप्रीतितोरिहठिहोई । हमसिगरेकरिहैंअबसोई ॥ जोतोहिंनीकनलागहिंलाला । हमबे
बोलिउठेगोपहुइकबारा । करहुनंदजोकहतकुमारा ॥३१॥ नंदतहाँनिजदूतबोलाई । दि
चलहुसाजुलैहमरेसाथै । प्रातकालपूजबगिरिनाथै ॥ नंदनिदेशसुनतब्रजवासी । कियेतैस
पहरनिशाबाकीनँदराई । उठिमज्जनकियमुनैजाई ॥ भोनआइव्यंजनबहुजोरी । पूजनसा

दोहा–सकलवेदवादीद्विजन, आशुहिंतहँबोलवाय । चलेधेनुआगूकिहे, बहुस्वस्तै
इतनेमेंसिगरेब्रजग्वाला । लैगिरिपूजनसाजउताला ॥ गवँनेनंदसंगसानंदा । गावतसुंदरसु
गोवरधनढिगपहुँचेजाई । क्षिप्रहिंविप्रनसबनबोलाई ॥ करनलगेपूजनगिरिकेरो । वेदविधा
प्रथमहिंपंचामृतनहवाये । विविधवरणअंबरनचढ़ाये ॥ अगरतगरमृगमदअरुचंदन । अरु
सोगिरिराजहिंनंदलगाये । विविधभाँतिपुनिसुमनमँगाये॥

दोहा–खुलेफूलभरिटोपरन, औरहुदियेचढ़ाय । शैलनाथकेमध्यजनु, सुमनशैलद
दीन्हींफेरिविविधाविधिधूपा । दीपदेखायोअतिहिअनूपा३२
लेपिलेपिअंगनअँगरागा । लीन्हेसंगविप्रबडभागा ॥ पतितनअरुचांडालनश्वाने । तिनको
गौवतकोनवतृणनचरावत। औरहुदीननधनलुटवावत॥३
गिरिकोकरनप्रदक्षिणलागीं।आशिपदेतविप्रबडभागीं॥३४॥ पुनिजेविविधभाँतिपकवाना।
तेसबगिरिकोअर्पणलागे । नंदादिकअतिशयअनुरागे ॥ रचीअन्नकीथलथलरासी । औरि
दहीदूधघृतनदीबताई । माखनमेवादियोचढाई ॥ तहँयककौतुककियग्रदुराई । वपुआपनो
अतिशयबृहतलंबभुजदंडा । दिशनवदनपरकाशअखंडा ॥ अतिशयथूलजंघपदजानू । शै
भूषणवसनमुकुटमणिमाला । शैलमध्यअतिरूपविशाला ॥

दोहा–पेखिप्रतिक्षग्रुवालसब, गोवर्धनकोरूप । मानिमानिवंदनकिये, कौतुकनिरखि
गोवर्धनवपुवचनउचारा । पूजनलेनप्रतिक्षतुम्हारा ॥ हमप्रगटेकरिकृपामहाई । लेहैंआजुभ
असकहिअपनीभुजापसारी।सिगरोभोजनकियोमुरारी३५तबहरिचहुँकितलगेपुकारन।गोव
लखहुप्रतिक्षदेवसबग्वाला । यहिसमदूजोनाहिंकृपाला ॥ करहुसबैसाष्टांगप्रणामा । यहतुम
असकहिअपनरूपहिकाँहीं । नँदनंदनगोपनसँगमाँहीं ॥ जेप्रतिक्षप्रभुकहिवनश्यामा । कि

दोहा–पुनिग्वालनसोंकहतभे, लखेकबहुँजेहिनाँहि । तेहिवासवपूजावृथा, करतरहेब्र
ऐसोदेवमानिकोचाही । प्रगटेजोपूजितेंसदाही ॥ ३६ ॥ यहप्रत्यक्षदेवनाहिंमनिहौ । त
भुजंगनापवपुधारिभारिकोपा । लेहैंखायतुमाहिंसबगोपा ॥ जोअपनोअरुगाँवनकेरो । मंगल
तोनितपूजिकरोपरनामा । यहदैहैसिगरेमनकामा ॥३७॥ सुतकेवचनसुनतनँदराई । गोपन

सहसबातिआरतीबनाई। कनकथारधरिहाथउठाई॥ लगेउतारनश्रीगिरिराजै। विविधभाँतिबजबावतबाजै॥
सबगोपीलैपाणिआरतीं। गिरिगोवर्धनकोउतारतीं॥

दोहा-निजनिजकरलैआरती, गोपहुसबसुखपाय। लगेउतारनशैलको, बाजनविविधबजाय॥

यहिविधितहँआरतीउतारी। करनप्रदक्षिणनंदविचारी॥पुनिजेव्यंजनकछुतहँबाँचे। तिनकोभोजनकरिसुखराँचे॥

दोहा-यहिविधितेगिरिराजको, गोपिनसंयुतगोप। दैप्रदक्षिणासुखभरे, मानेनिजदुखलोप॥
पुनिग्वालनलैकृष्णयुत, ब्रजपतिपूरणकाम। मंदमंदआवतभये, साँझजानिनिजधाम॥ ३८॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे चतुर्विंशस्तरंगः॥ २४॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-ब्रजमेंबासवदेखिकै, निजपूजाकोनाश। हरिदासननंदादिपै, कीन्ह्योंकोपप्रकाश॥ १॥

तंकगणमेघअधीशा। करतजोजगकीप्रलयमहीशा॥ ताहितुरतबासवबोलवायो।अतिकठोरअसवचनसुनायो॥
सिगरेमेघननिजपासू। ब्रजमंडलघोरहुअबआसू॥२॥ नंदगोपकरिममअपमाना। कियमखभंगभरोअभिमाना॥
गोपकाननकेवासी। थेरेहविभैगर्वकेरासी॥ इनकोधनमदनहिंसहिजाता। छोटेनछमामहाउतपाता॥
सोंकीन्हीइनहाँसी। गसीसोहमरेहियमहँगाँसी॥ कृष्णमनुजकेबलसबगोपा। कियोहमारेमखकोलोपा॥३॥

दोहा-जैसेज्ञानजहाजतजि, चढ़िमखनाउअयान। तरनहेतुजगजलधिको, हठवशठानतठान॥ ४॥

हैकृष्णअतिहीवाचाला। हैकुमतीकठोरअरुबाला॥ बिनाशीलकोसामरवेशा। विद्याकोताकेनहिंलेशा॥
रपनेकोपंडितअतिमानै। अनुचितउचितनेकुनहिंजानै॥ ऐसेकृष्णमनुजबलभारा। हमैनसमझहिंगोप[illegible]
मअप्रियममदेखतकीन्ह्यों। यज्ञभागपरबतकहँदीन्ह्यों॥५॥ सबैमानिकृष्णभरोसो। जीवनचहतबरक्रो[illegible]
तेकृष्णभरोसिनकेरो। बढ्योविभौमदजोनघनेरो॥ सोमैंआजुहिंकरिहोंनाशा। देखतहोंअबकृष्ण[illegible]
[illegible]मैंयाघरमाँहीं। अपनेममपानतकोउनाँहीं॥

जलैसिंधुसाता । भरेतेअघाता ॥ करैंशोरभारी । जगैभीतिकारी ॥
भरेघोरघोरा । गिरैंसेकरोरा ॥ महावेगधाये । द्रुतैव्योमछाये ॥
व्रजेखंडखंडा । करैंकोपचंडा ॥ भरेहैंघमंडा । बलीहैंअखंडा ॥
दशोहूँदिशानै । तमैभोमहानै ॥ भईयामिनीहीं । दियेदामिनीहीं ॥
भईभीतिभारी । कँपीभूमिसारी ॥ कहैदेवराजा । करोआशुकाजा ॥
व्रजैबोरिदीन्हें । बेलैबैनकीन्हें ॥ हनेगोपग्रामा । लहौगेइनामा ॥
बँचैंएकनाँहीं । कहूँजोपराहीं ॥ करैंकृष्णरक्षा । बलीजोप्रतक्षा ॥

दोहा-याहिविधिभापतघननसों, व्रजचौरासीकोस । घेरिलियोसुरपतिकुमति, करिमनमेंअतिरोस ॥ ८ ॥

छंदनराच-तहाँजलभ्रजोरसोंकियोकठोरशोरहै । प्रलैसमानभोरहैगयोसोचारिओरहै ॥
क्षणैक्षणैप्रकाशकोकरैंदमंकिदामिनी । मनौमहाभयंकरीकरालकालयामिनी ॥
प्रचंडवेगकैतहाँपवन्नवन्नचासहूँ । चलेदिशानचारितेतजेनिजैनिवासहूँ ॥
व्रजैधरासुछैगईमहानधूरिधारहै । नदेखिनेकहूँपरैनिजैभुजैपसारहै ॥ ९ ॥
तजैलगेअकाशतेजलभ्रवारिधारहै । अतीवआतुरैवितुंडसुंडकेअकारहै ॥
गिरैलगेकरोरिघोरओरचारिओरते । महानशैलकेसमानतेअतीवजोरते ॥
अघातशोरतेव्रजैअनेकवज्रपातभे । झकोरपौनतेततक्षवृक्षव्रातघातभे ॥
नदीसतीदिशानिशानघोपहूँगुनोपरै । ननेकहूँनगीचकानबैनहूँसुनोपरै ॥
गँभीरहैनवीननीरधारधावतीधरा । परैअवर्त्तहूँउठैतरंगशोरभभरा ॥
परैनऊँचनीचठौरजानिगोकुलैमही । कलिंदिजाकरारकोविहायऊपरैबही ॥
वनैनजातआवतोकहूँव्रजैपगैभरै । खडोनहोतहूँबनैकछूनिहारिनापरै ॥
कुरंगऔविहंगचीतकारकोकरैलगे । कहुँभ्रमैंकहूँथिरैंकहूँचलैंकहूँभगे ॥
अनेकजीवगाजकीगराजसोंअप्रानभे । अनेकतासुज्वालत्लागभस्मकेसमानभे ॥
अनेकतासुज्योतिकोविलोकिअंधहैगये । अनेकजंतुनीरधारमध्यबूड़तेभये ॥ १० ॥
परायवच्छवाछिधेनुबैलगोष्टमेंगिरे । तहूँशिलाप्रहारतेनबैठतोबनैथिरे ॥
गुवालऔगुवालिनींकरैंहहापुकारहैं । नदेहकीनगेहकीतिन्हैंकछूसम्हारहैं ॥

दोहा-यदपिघुसेघरमेंसवै, तद्यपिपवनझकोर । रहतबनतनाँहिनेकहूँ, लागतवीरकरोर ॥

छंदतोमर-विलखनेगोपीग्वाल । सबकहहिंआयोकाल ॥ अबबचबदीसतनाँहि । हमभागिकेहिपलजाँहि ॥
नहिंनीककीन्ह्योनंद । कियशक्रयागहिंबंद ॥ निजसुतकह्योउरआनि । दुखलियोगिरिमखठानि ॥
अबहोतव्रजकरनाश । सबतजोजीवनआश ॥ असकहतरोवतगोप । कियवैसघासवकोप ॥
कोउसुतनकोउरलाय । गोपीरहींशिरनाय ॥ कोउकहैंनारिनपासु । भजिआवरीइतआसु ॥
टहिघोरपातकराट । गिरतींविशालदेवाल ॥ छप्परउडतलहिपौन । टूटतशकटघृतभौन ॥
फटफटफुटनपटवृंद । तटततटटूटततरुकंद ॥ कचहूँनभोजिनसोग । तेअतिदुखीव्रजलोग ॥
भापहिंपरसपरपात । जेहिंहितभयोउतपात ॥ सोनंदसुतहिंनजोक । अबचलसरणकोनोक ॥
फरिहैंअवाशिरोग्स । समरत्थकान्दप्रतक्ष ॥ यचिहैंनऔरेठोर । विननिकटनंदकिशोर ॥

दोहा-असकहिगोपीग्वालसब, हाहाकरतपुकार । इकएकनकोगहिद्रुत, गेनदनंदकुमार ॥

[illegible]॥ ११ ॥ गोवनवछरनउरहिंटिपाइ [illegible]

कवित्त–सनमुखसामरेकेआयव्रजबालकोऊ, तकीतिरछौंहेंचखचंचलचलायकै ।
ताहीसमैकान्हकरकाँपतहीकाँप्योगिरि, व्रजजनजानेगिरिगिरतबनायकै ॥
रघुराजरामतहाँऐसीदशादेखतहीं, बंधुपैविलोक्योनेकुमंदमुसक्यायकै ।
अवलोकिअग्रजाकोआननतवायनैन, शैलकोसँभार्योफेरिलालनलजायकै ॥

दोहा–गिरिधरकोगिरिकरधरे, बीतिगयेदिनसात । व्रजवासीमोदितवसे, लगीनवरपावात ॥ २३ ॥

सातादिवसनिशिशक्रअथोरा । व्रजमंडलवरस्योजलघोरा ॥ पैनलहेदुखकोउव्रजवासी । तबमघवाहैगयोनिरासी ॥ निरखिकृष्णकोमहाप्रभाऊ।अतिशयविस्मितभोसुरराऊ॥वारणकीन्ह्योंमेघनकाँहीं।अबव्रजमेंवरषहुकोउनाँहीं २४ सुरनसहितलैमेघसमाजू । सुरपुरकहँगवनेउसुरराजू ॥ उदितभानुभोअमलअकाशा । मिटीवातवरषाकीत्रासा । तहँसिगरेगोपनगिरिधारी । गहेगोवर्द्धनगिराउचारी ॥ २५ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

सुनहुवैनव्रजकेसवलोगू । अबनकरौवरपाकरशोगू ॥

दोहा–लैलैअपनीसाजसब, नारीसुतनसमेत । गिरितरतेअवनिकसिकै, गमनहुनिजनिकेत ॥

भयोभानुकरविमलप्रकाशा।दीसतपवननहिंकोनिहुँआशा॥वहैयमुनअववीचकरारा।छस्योछोनिकोसलिलअपारा ऐसीसुनतकृष्णकीवानी । सिगरेगोपमहासुखमानी ॥ निजनिजशकटनभरिसवसाजू । बालवृद्धसवसहितसमाजू गोवँचछराआगूकरिकै । गवँनेगिरितरतेमुदभरिकै ॥ बाहेरठाढभयेव्रजवासी । पावतभेअतिआनँदरासी ॥ २७ तहँसवकोदेखतागिरिधारी।जैसोरह्योप्रथममहिधारी॥तैसाहिपुनिताकोधरिदीन्ह्यों।आपहुगवँनतहाँतेकीन्ह्यों ॥२८

दोहा–देखतहींनँदनंदको, व्रजवासीद्रुतधाय । प्रेमसिंधुमहँमगनसव, लियोघेरितहँआय ॥

कोउछूमैमुखलालनकेरो । मिलैप्रभुहिंकोमोदघनेरो ॥ गोपीहरिभुजमींजनलागी । बोलहिंवचनप्रेमरसपागी ॥ परयोलालतुमकोश्रमभारी । हैहैभुजापिरातातिहारी ॥ दधिअक्षतलैसहितउछाहू । कोउगोपीपूजाहिंहरिनाहू । देहिंवृद्धसवआशिरवादा । बढेवहुतआयुपमरयादा ॥२९॥ यशुमतिरोहिणितहँद्रुतआई।लियोगोविंदगोदउठाई। पुनिकरजललैलैलगींउतारन । निजसुतबलकीनजरनिवारन॥रामआयपुनिमिलेगोविंदे । विहँसतपावतपरमअनंदे

दोहा–नंदगयतहँआयकै, अपनेसुतकेहाथ । भयेदेवावतद्विजनको, गोधनमणिगणसाथ ॥ ३० ॥

गगनसाध्यअरुसिद्धसिधारे । भयेवजावतशंखनगारे ॥ चारणविद्याधरगंधर्वा । हरियशगावतमोदितसर्वा ॥ वरपहिंसुमनदेववहुरिआई।हरिकीअस्तुतिकरहिंसोहाई३१लगींअपसरानाचननाना।सोसुखकहिविधिजायबखाना नदैआगूकरिगोधनकाँही । गोपसबैअतिआनँदमाँही ॥ नंदलालकोमधिमहँकीन्हें । वृद्धनदेशकटनमुखदीन्हें हरिकीरतिगावहिंसबगोपी । निरखतहरिमुखआनँदवोपी ॥ बजवावतबहुविधितहँबाजा।मंदमंदचलिगोपसमाजा आवतभेवृंदावनकाँही । निवसेतबनिजनिजगृहमाँही ॥

दोहा–यहविधिपट्दशअंकविप, व्रजमंडलमहँघोर । हरिप्रभावतेतहँपिनहँ, नश्योनएकौठोर ॥ ३१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे पंचविंशस्तरंगः ॥ २५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–कहैं [illegible] निरखि कृष्णकेगात । [illegible], हम [illegible] ॥ [illegible] ॥ १ ॥ सुनसुनके [illegible] । निरखि [illegible]

एकहींहाथसोंमंदहँसिनंदसुतद्रुतैगोवर्धनैलियउपारी ॥
सातदिनधारिछत्राकसमछोनिधरलियोव्रजराखिहरिगर्वगारी ।
कहतरघुराजव्रजचंदनँदनंदगोविंदसोइसुधिकरैअवहमारी ॥ २५ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे षड्विंशस्तरंगः ॥ २६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—जादिनगिरिधरगिरिधरच्यो, धराताहिनिशिभोर । गऊचरावनसखनयुत, गमनेनंदकिशोर ॥
वनमेंगऊचरावनलागे । सखनसाहितअतिआनँदपागे ॥ सुनिसुरभीअरुशक्रअवाई । बैठेकृष्णइकांतहिंजाई ॥
तवजोदियगोपनकहँबाधा । सोअतिगुनिअपनोअपराधा ॥ क्षमाकरावनहितप्रभुकाँहीं।आवतभोवासवव्रजमाँहीं ॥
तहँगोलोकतेसुरभिहुआई । बैठेजेहिथलमहँयदुराई॥१॥हरिहिंनिरखिसुरनाथलजाई । गिरयोदंडसमचरणनधाई ॥
निजकिरीटसोंप्रभुपदपरस्यो । बारबारनैननजलबरस्यो ॥२॥ देख्योसुन्योकृष्णपरभाऊ।विनागर्वकोसोउरराऊ ॥
दोहा—आगेठाढोजोरिकर, कंपतगातविनीत । लग्योकरनअस्तुतितहाँ, यदुपतिकीअतिभीति ॥ ३ ॥

इंद्र उवाच ।

छंद—तुवरूपसत्यविशुद्धसत्त्वसुशांततपमेंतमनहीं । मायाप्रवाहनिबद्धयहसंसारतुममेंनाहिंसहीं ॥ ४ ॥
अज्ञानबोधकलोभआदिकनाहिंहैयहकाकही । तद्यपिखलनकेदलनाहितप्रभुदंडदायनिमतिगही ॥ ५ ॥
तुमगुरुपिताजगदीशकालसरूपधारकदंडहौ । जगकरनमंगलहेतुकरहुचरित्रनाथअखंडहौ ॥
जगदीशमानिनमानमोरनहेतुतुवअवतारहै । तुवगायसुयशगोविंदजनद्रुतलहतभवनिधिपारहै ॥ ६ ॥
जगदीशमोसमजेअज्ञानीअभैतुमहिंविलोकिकै । मदतेरहितह्वैभक्तिमारगचलतअतिमनरोकिकै ॥ ७ ॥
ऐश्वर्यकेमदमत्तमैंजान्योप्रभावनरावरो । अपराधक्षमिकरियेकृपाफिरिहौंउँअसनहिंबावरो ॥ ८ ॥
अघओघनृपसंहारकरिकैहरणहितभुवभारको । निजचरणदासनकरनमंगललेहुमहिअवतारको ॥ ९ ॥
जयपुरुपजयभगवानजयतिमहानजयसुखधामहै । वसुदेवनंदनकृष्णयदुकुलनाथतुमहिंप्रणामहै ॥ १० ॥
निजभक्तइच्छातेविशुद्धविज्ञानमूरतिधरतहौ । सर्वात्मतुमहौसर्वकारणवाससबउरकरतहौ ॥ ११ ॥
मैंमूढनिजमखभंगलखिकरिकोपव्रजलोपनहितै । बहुपवनपानीअरुपपानहुपविहुवरस्योचहुँकितै ॥
तुवकृपाहितेगोकुलबच्योमैंगर्वहतह्वैजकिरह्यो । करुणायतनयदुनाथतातेआयतुवपदकोगह्यो ॥
अवकृपाकीजैनाथमोपरमाफकीजैचूककै । यहरावरेअपराधकीनाहिंमिटीजनमहुँहूकहै ॥ १२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—यहिविधिअस्तुतिजबकरी, सुरपतिअतिभयभीर । तवहिंविहँसिहरिवचनकहँ, मेघसरिसगंभीर ॥

श्रीभगवानुवाच ।

तोपिकरनकृपाकेहेतू । मैंमखभंगकियोसुरकेतू ॥ शक्रहेमदमत्तमहाना । मेरोसुमिरणतेहिंभुलाना ॥
हमनिजसुरनिकराखनकाजा । गर्वपरयोतेरोसुरराजा ॥१५॥ श्रीमदअंधमोहिंनहिंदेखै । यद्यपिदंडदै
गुन्योमादिपरकरनकृपाको।श्रीमदसकलदेहुँहरिताको ॥सुरपतिअवनिजलोकसिधारो।होइअबहि
शिक्रनअकरबरा । पैटहुनाहिमदानिजअधिकारा ॥ १६ ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

पुनिसुरभीहरिकेढ़िगआई । बारहिंबारचरणशिरनाई ॥
दोहा–गौवेंबछराबाछरी, निजसंतानबोलाय । कह्योनंदसुतसोंवचन, परमप्रीतिदरशाय ॥ १८ ॥

सुरभिरुवाच ।

कृष्णकृष्णहेयोगअधीशा॥विश्वात्माजगकरलछमीशा॥लोकनाथलहितुमसमनाथा॥आजुभईहमसबैसनाथा १९॥
इष्टदेवतुमअहोउदारे । तुमहींहोप्रभुइंद्रहमारे ॥ गोविप्रनसाधुनसुखदीजे । सदायहींविधिरक्षणकीजे ॥ २० ॥
हरणहेतुयहभूवरभारा । लियोनाथव्रजमेंअवतारा ॥ करनहेतुअभिषेकतिहारा । हमहिंपठायदियोकरतारा॥२१॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिसुरभीसुरभितकाँहीं।अपनेनिकटबोलायतहाँहीं॥निजथनपयधारणयदुनाथै। कियअभिषेकसहितसुखगाथै
दोहा–अदितिआदिसुरमातुसब, कह्योशकसोंबैन । तुमहुँकरहुँअभिषेकअब, यदुपतिकोभरिचैन ॥
अकाशगंगाकोजलभरि । लायोऐरावतघटकरधरि ॥ तेहिंजलसोंसँगलैअसुरारी । इंद्रकियोअभिषेकसुखारी ॥
रख्योगोविंदनामहरिकेरो । देवलहेसबमोदघनेरो ॥ २३ ॥ नारदतुंबरुआदिकआये । विद्याधरगंधर्वहुचाये ॥
। करनलगेयदुपतियशगाना॥जाहिंसुनतसबलोकनपापा । पुनिनकरतप्राणिनकहँतापा॥
ंअपसरानाना। मढ़ोमोदमंजुललैताना॥२४॥सुरगणफूलनबरपनलागे । अस्तुतिकरहिंअतिहिंअनुरागे॥
त्रिभुवनआनंदा। कहहिंसबैजयजयगोविंदा॥
दोहा–गौवेंनिजथनढारिपय, दीन्हीभूमिभिगाय ॥ २५ ॥ सरितनमेंबहुरसबह्यो, त· दियमधुढ़रकाय ॥
जबतेहरिअभिषेकभो, तबतेअन्नअनंत । विनजोतेव्रजधरणिमें, लगेपकन त्यंत ॥
धरणीधरप्रगटनलगे, मणिनअनेकनभाँति ॥ २६ ॥ छोरिबैरइकथलबसे, गौबापहुपशुजाति ॥
सिगरेजीवजहानके, यदपिक्रूरकुरुराय । अभिषेकेजेकृष्णके, तेस्वभावबिसराय ॥ २७ ॥
यहिविधिगोकुलचंदको, धरेकेनामगोविंद । विदामाँगिगवनैभवन, शक्रादिकसुरवृंद ॥ २८ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे सप्तविंशस्तरंगः॥ २७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–एकसमयएकादशी, व्रजमेंरहीनरेश । निराहारव्रतनंदकरि, पूज्योसविधिरमेश ॥
डएकद्वादशीविहाने । ज्योतिषविदव्रजपतिहिबखाने ॥ टिक्योशास्त्रमहँअसनृपराई । कलाअर्द्धद्वादशीटसाई ॥
एकादशिकीनिशिमाँहीं । बीतिजबैयुगयामहिजाँहीं ॥ तबहीतेमध्याह्नभरेकी । निरवाहिंसबक्रियाविवेकी ॥
रेद्वादशीहोमेंपारण । यहिविधितेकीजैव्रतधारण ॥ करेत्रयोदशिपारणकोई । तौएकादशिफलनहिंहोई ॥
द्वादशीजोव्रतपारे । तबहित्रयोदशिकरेजदारे ॥ ऐसीविधिमनमाहँविचारी । उठेनंदनिशिअर्द्धनिहारी ॥
दोहा–यमुनामेंमज्जनकरन, गमनतभेनँदराय । सुनीनवेलाआसुरी, जलप्रविशेनरराय ॥ १ ॥
रुणदूतविचरततेहिकाला । गह्योनंदकहँआशुभुवाला॥वरुणलोकपगपलैलाग्यो। कोंकेअतिशयकोपकक्ष [illegible]
पसबैनाहिंनंदनिहारे । रामकृष्णकहितुरतपुकारे ॥ सुतपितुकोकोउहरिलैगयऊ । काहुकोडनिरनननहिंभयऊ ॥
रुणदूतहरिबोहरिजानी । वरुणलोकगेशारँगपानी ॥ निमदानकेआभेमानै ॥३॥ [illegible]

दौरिदूरितेगिरयोचरणमें । शिरधरिपुनिपदपरसिकरनमें ॥ सिंहासनबैठायनाथको । अतिपूजनकरिजोरिहाथको ॥
धन्यधन्यअपनेकहँमानी । अतिहर्षितबोल्योमृदुबानी ॥ ४ ॥

वरुण उवाच ।

दोहा—आजुजन्मभोसफलमम, सबकछुपायोआज । तेइभवनिधिउतरेअवशि, तुवजनजेयदुराज ॥ ५ ॥
परब्रह्मजयजयभगवाना । परमात्माजैकृपानिधाना ॥ तुममेंसुनीपरैनहिंमाया । जोविरचैयहजगतनिकाया ॥ ६ ॥
मेरोदूतमहामतिमंदा । हरिलायोतुम्हरोपितुनंदा ॥ जानतरह्योननेकहुँकाजा । सोअपराधक्षमहुँयदुराजा ॥ ७ ॥
हेगोविंदनिजपितुयहलीजे । मोपरनाथअनुग्रहकीजे ॥ ८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

तबैवरुणपैह्वैप्रसन्नहरि । चलेतहाँतेलैपितुमुदभरि ॥ आयेपुनिवृंदावनमाँहीं । दीन्ह्योंआनँदगोपनकाँहीं ॥ ९ ॥
ब्रजवासिनकहँनंदबोलाई । विस्मितदीन्ह्योंवचनसुनाई ॥ जैसोविभौवरुणपुरमाँहीं । तसतोहमदेखेकहुँनाहीं ॥
दोहा—लोकपालसोंवरुणहूँ, कृष्णहिंकियोप्रणाम । तातेकान्हरसत्यकै, हैंईश्वरसुखधाम ॥ १० ॥
सुनतनंदकेवचनगुवालै । मान्योपरमेश्वरनँदलालै ॥ मनमेंकरनलगेअसिआसा । देहैंहमेंविकुंठविलासा ॥ ११ ॥
अभिलाषाब्रजवासिनकेरी । निजपुरदेखनहेतुघनेरी ॥ जानिकृष्णसर्वज्ञउदारा । लगेकरनकरिकृपाविचारा ।
ब्रजवासिनजोमनसंकल्पा । सोकौनिहुँविधिहोइनअल्पा ॥ १२ ॥ कर्मविवशसंसारहिमाँहीं । भ्रमतरहतयहजीवसदाँहीं ।
कहुँनरकहुँतिर्यककहुँदेवा । पावतयहिविधियोनिनभेवा ॥ जानतकबहुँनआतमगतिको । करतनकबहूँममपद
ब्रजवासीतोममअनुरागी । इनसमाननहिंकोउबडभागी ॥ इनकोयहींदेहलैजाई । देहुँविकुंठलोकदरशाई
दोहा—असविचारिनिजचित्तमें, करुणासिंधुमुरारि । आशुवैष्णवीशक्तिनिज, सिगरेब्रजविस्तारि
युवाबालवृद्धनब्रजवासिन । गोयुतनिजपुरदरशहुलासिन ॥ दियोविकुंठलोकदरशाई । हरिविमुखीजहँकबहुँन
ब्रह्मअनंतज्ञानसतिरूपा । सूर्यप्रकाशअनादिअनूपा ॥ त्रैगुणहीनसिद्धिजेहिंदेखैं । धन्यधन्यअपनेकहलेखैं
असविकुंठमहँसबब्रजवासी । भयेसच्चिदानंदहिरासी ॥ सोइविकुंठलखिकैमुदपूरा । पूरबजहँगवँन्योअक्रूरा
तहँमणिसिंहासनमधिमाँहीं । रमासहितनिरख्योसुतकाँहीं ॥ निगममूर्त्तिधरिअस्तुतिकरहीं । पार्षदगणचहुँकित
दोहा—नंदादिकअसदेखिकै, विस्मितभेमनमाँहिं । पुनितिनकोहरितुरतहीं, पहुँचायोब्रजकाँहिं ॥ १७

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधि
राजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे अष्टाविंशस्तरंगः ॥ २८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—पुनिब्रजमेंआवतभई, शरदनिशाछविखानि । तहँचाँदिनिसीचाँदिनी, चारुचंदद्युतिदानि ॥
फूलिरहीचहुँओरचमेली । लहरिलहरिछहरैंछितिवेली ॥ तबहरिब्रजनारिनकेसंगा । विहरनकियोविचारउमंगा
भईशरदकीपूरणमासी । जानितहीअतिआनँदरासी ॥ मातुपिताकहँकृष्णछिपाई । यमुनातटआशुहिप्रभुआई
पूरनकरनरासमुखमाको । सुमिरणकियोयोगमायाको ॥ दिव्यविभूषणवसनहुँनाना । अंगरागतिमिविविधविधाना
औरहुबाजेविविधप्रकारा । प्रगटतभेतहँएकहिंबारा ॥ षटऋतुकेफूलेसबफूला । घनीकुंजह्वैगईअतूला ॥
दोहा—मंदवेगयमुनाकियो, उथलनीरगंभीर । बहनलग्योसुरभितमहा, शीतलमंदसमीर ॥ १ ॥
कवित्त—चापुरवियोगिनिकेवेधनविरहबाण, सुखदसयोगिनिकेश्रमकोहरणहे ।
रघुराजकरतप्रफुल्लितकुमुदकुल, उदितभयोहेइंदुआनंदभरनहे ॥

शरदनिशाकेमुखपूरवादिशाकेमुख, लेपतसोंअंगरागअरुणकरनेहैं।
वालमविदेशीबहुदिवसचिताइजैसे, प्यारीकोमिलतधायआयकैघरनेहैं ॥ २ ॥
मेदनीकेमंडलमयंककीमयूखनको, मंडलअखंडलअखंडछविछाईहै।
कुंकुमनवीनदललालिमालिलितकम, लोकचारुवदनकीदुतिदरशाईहै ॥
रघुराजकालिंदीकेकूलनकेकुंजकुंज, कांतिनकलापकलानिधिअधिकाईहै।
मनमोहनीनमनमोहनकेहेतुमन, मोहनजूवंशीमनमोहनीवजाईहै ॥ ३ ॥
मदनकोवीजदैकैकान्हजवलैकेतान, व्रजसुंदरीनकोवोलायोवंशीटेरिकै।
वेणुकीझनकनिजकाननमेंझनकिरही, प्रथमेंसनकिव्रजनारीउठींफेरिकै ॥
रघुराजजेईजहाँजैसीरहींतेईतैसी, चलींअकुलाइइकएकननहेरिकै।
तनुकोसम्हारनहिंघरकोसँभारकछु, प्राणहूतेप्यारनँदनँदनैनिवेरिकै ॥

दोहा—गमनैमगअतिहींचपल, डोलींहकुंडलकान। तद्यपिपगपगपंथतिन, कोटिनकोशदेखान ॥
हरिलीन्होंहियरोहरिजिनको। सूझेविपमपंथनहिंतिनको ॥ हमहींसवतेपहिलेजैहैं। हमहींमिलिपहिलेसुखलैहैं ॥
याहीहितइकएकनकाँहीं। व्रजसुंदरीकह्योकछुनाँहीं ॥४॥ दुहतरहींसुरभीकोउनारी। तेतजिदुहबतुरंतसिधारी ॥
दियेरहींकोउदूधचढाई। नहिंउतारितेअतिअतुराई ॥ गमनीकृष्णप्रेमरससानी। घरकीसिगरीसुरतिभुलानी ॥
रचतरहींकोउमोहनभोगू। लहिमोहनकोमुरलिनियोगू॥गयोपाकिपयतेहिंनउतारी॥तुरतगईजवकुंजविहारी ॥५॥
दोहा—कोउपरसतजननिनरहीं, सुनिमुरलीधुनिकान। पटकिपुहुमिमहँथारद्रुत, आशुहिंकियोपयान ॥
पियावतकोउशिशुकाँहीं।तेतुरतैतजितिनहिंतहाँहीं॥गइयमुनातटजहँगिरिधारी।तृणसमनिजनिजतनैविचारी ॥
तिसेवनकोउकरतरहींतिय।तेउतुरतैहरिनिकटगमनकिय॥भोजनकरतरहींकोउप्यारी।तेगमनीसवक्षुधाविसारी ६
कोऊअँगरागा। तेउगमनीभरिहरिअनुरागा ॥ करतरहींकोउउवटनप्यारीं। तैसहिंमुरलीसुनतसिधारीं॥
जतरहींआँखिकोउअंजन।करतरहींकोउगृहमहँमंजन॥अधअंजितदृगअधमंजिततन।गईकृष्णकेनिकटमुदितमन।
दोहा—कोऊकानवंशीसुनत, अतिआतुरव्रजवाल। ओढ़िअंगमेंघाघरो, सारीपहिरिविशाल ॥
ईकृष्णढिगकुंजनमाँहीं। तनुकोभानरह्योकछुनाँहीं ॥ कंकणपगनूपुरकरमाँहीं। गलकिंकिणिकटिमालसोहाँहीं॥
धिकरिभूपणविपरीती।चलींचपलहियभरिहरिप्रीती७ पतिपितुभ्रातबंधुतिनकेरे।वारणहितकियजतनघनेरे॥
लेयहरिहियरो। तनुतोइतेकृष्णढिगजियरो ८ कोउगोपिनकहँगोपगँवारा। रोकतभैदेभवनकेवारा॥
हिमनतिनकोतहँगयऊ। पियवियोगइनसहतनभयऊ॥मूँदिनैनहरिनटवररूपा।उरधरिकरीभावनाभूपा॥९॥
दोहा—हमनँदनंदननिकटचलि, दोऊभुजनवढाय। कालिंदीकेकुंजमधि, लैहैअंकलगाय ॥
करततेहिंक्षणमें।पुण्यपापनहिंरहिगेतनुमें।१०भववंधनछूट्योतेहिंकाला।दियोतुरततनुतजिव्रजवाला॥
दव्यरूपलहिप्रथहिंसवते।मिलीमोहनेचलिअतिजवते॥यदपिजारमतिहरिमहँठानी।तदपिबालप्रभुउरहिंसोहानी॥
सुनिअतिशंकितकुरुराई। कह्योवचनशुकसोंशिरनाई ॥

राजोवाच।

परब्रह्मनहिमान्यो। केवलकंतगोपिकनजान्यो ॥ तिनकोकिमिछूट्योसंसारा। मेटहुयहसंदेहहमारा॥१२॥
उनतपरीक्षितकीइमिवानी। वोलेशुकाचार्यविज्ञानी ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—यहतोहमतुमसोंनृपति, प्रथमहिंकियोवखान। हरिवैरीशिशुपालजिमि, हरिपुराकियोपयान ॥
रिहुकोगतिदेतमुरारी। तौकापुनिजेहरिकीप्यारी ॥१३॥ जनकोमंगलकरनअपारा। लेहिंवैकुंठनाथअवतारा॥

उरसोहतिवैजंतीमाला। जनुनीरदमधिधनुसुरपाला॥करतरासयहिभाँतिअखंडित। थलथलभोवृंदावनमंडित
दोहा—यहिविधिविहरतकान्हतहँ, लैसँगसखिनजमाति। तहँमहामुदमचिरह्यो, शरदपूनिमाराति॥
रासकरनसरिपुलिनविचारी। लैव्रजनारिनकुंजविहारी॥ नाचतगावतदैकरताला। गमनेयमुनापुलिनविशाल
तहँकोमलवालुकारसाला। शीतलसरससुखदसबकाला॥बहतपवनसुरभितचहुँओरा। छायपरागरह्योतेहिठौरा
गुंजतमधुपमत्तमनहारी। फैलिरहीशशिकीउजियारी॥तहँव्रजवालननंदकुमारा। विहरतंआनँददेतअपारा॥
कोउसखिकोहरिहाथपसारी।परसिकपोलदेहिमुदभारी॥कोहुकहँमिलतधायमनमोहन।चूमतवदनसछविछकिछोहन
दोहा—कोउनाचतव्रजगोपिका, विथुरिजातिअलकालि। निजकरताहिसँभारते, अतिमोदितवनमालि॥
कोउसखिकीऊरूपरसि, रम्भखम्भदरशाय। यहिसमताईकरहुतुम, असकहिहँसेहँसाय॥
कोहुकीनीवीहरिगहे, सोलखिकैमुसक्याति। मनहुँआपनेप्रेमको, गर्वदेखावतजाति॥
कोहुकेकुचनकठोरनिज, करपरसतयदुराय। रूपदरपतेदरपनहिं, तहँसोदियोदेखाय॥
कोउकामिनिकोकान्हगुनि, कामकलानिप्रवीन। नखछततेहिंअंगनिकियो, मनुमोहरकरिदीन॥
कोउसखिकोकौतुकलखनि, मिसिबोलाइयदुराउ। मिलतभयेमोदितमनो, सोकियमुग्धाभाउ॥
कोहुकोकरगहिनचतमुरारी।सोसुखताकिछाकिछविप्यारी॥थिरह्वैरहतिफिरतिनहिंबाला।थकीथकीकहिहँसतगोपाला
कोहुकोकरिकटाक्षमुसकाई। लियोआशुहीचित्तचोराई॥ सोजबमिलनहेतुढिगआई। आपगयेतबअनतपराई
नीचेशिरकरिरहीलजाई। हरिहँसिहेलिनदियोहँसाई॥ कोहकोनैननचाइविहारी। कहतभयेकहँआसतिहारी
कोहुसोंहँसिकहँसुनहुकामिनी॥विरहनलायकशरदयामिनी॥चलहुरहसियहरासविहाई। तौलहिहौसुखकीअधिकाई
दोहा—यहिविधिहरिव्रजसुंदरिन, विविधभावदरशाय। कलाकुतूहलकरतबहु, मनसिजदियोबढाय॥४७॥
सबकोकियसनमानविहारी। सबकोदीन्ह्योआनँदभारी॥ मान्योअससिगरीव्रजनारी। हमरेहीवशभेगिरिधारी
बहुआदरकरवावनलागी। अतिशयप्रेमगर्वमहँपागी॥ अपनेकाहँगुन्योमनमाँहीं॥हमसमऔरयुवतिजगनाहीं
कहनलगीहरिसोंअसबाँनी।श्रमितभईगतिजातिनठाँनी॥कोउकहनृत्यदेखाउकन्हाई। कोउकहदीजेअलकबनाई
कोउकहबाजबजायसुनावो।कोउकहतुमहिंकान्हअबगावो।कोउकहसुमनलाइमोहिंदीजे कोउकहभूषणभूषित कीजे
दोहा—ऐसोव्रजनारिननिरखि, निजवशकोअभिमान। विप्रलंभरससुखलहन, हरिवेहेतुगुमान॥
अलिनमंडलीमध्यमें, चितचपलचहुँओर। अंतरहितह्वैजातभे, आशुहिनंदकिशोर॥४८॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहनृदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौदशमस्कंधेपूर्वार्धेएकोनत्रिंशस्तरंगः॥२९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—बिनमाधवसखिमंडली, परीननेकुसुहाय। जिमितारापतिकेबिना, तारनकीसमुदाय।
मोहनकोमधिमेंनलखि, प्रथमचकितअकुलाय। पुनिसबकेइकबारहीं, कढ्योवदनतेहाय॥

छंदद्रुतविलंबित।

पुनिमनीमिनीसुरिकेनहीं। विरहतापनपावनुमेंमहीं॥ निपटनागरिबावरिसीभईं। कहाँहिबागीबिरागीगईं
[illegible]॥बिनकाँदिदिपावनिदेय्यथ॥निमिमुकुंदबिनाव्रजकीवधू।बिलसतीलिलनीतरहीं
[illegible]। नटिनिनंदनिनै।नि[illegible]नंदकी॥हैमनित्योंदागकीसुविलासकी॥बचनकै [illegible]
[illegible]। मधुरगानगुनानपदायके॥ करनकुंजनकुंजविहारहै। मुरलिमोहनकै [illegible]
[illegible]। सुविरंगिरहानलविहुया॥तनहूँनमनतेहरिमेंलगी। रमनिबिरनै

कहइंबैनपरस्परतेसखी। गुनहुँतूँहरिकोहमहीलखी ॥ परमचंचलसोछलिकैगयो। विपिनिकेविचप्राणनिकोल
निरदईनँदनंदनहादई। कहँगइहियतेकरुणानई ॥ विपिनिमेंव्रजबालविहायकै। कितछिप्यौछलियाछलछायवै
सबचारिपुकारिपुकारिकै।चकितचौंकितकंजुनिहारिकै॥हरिहिंटेरहिंप्रेमजनाइकै।मिलहुमोहनआशुहिंआयकै
कहूँकेहुँकाननधावतीं। लहिनतेपियकोफिरिआवतीं ॥ युवतिजोरिजमातिनफेरिकै।कहहिंमाधवपूँकहँटेरि
लसिकाननकीतियवासनी।विनहरीनिजजीवनिराशनी॥ तुलसिकेवनकेतरुवृंदको।पियहिंपूँछहिंछोंडिअनंदव

बरवै-हेचलदलकरुणाकरिदेहुवताय। वहचंचलचितकेहिवनरह्योदुराय ॥
पाकरिपरमकृपाकरिनाकरिदेर। पियहिवताबोनाहिंपछितेहैंफेर ॥
वटवताउयहिवाटैगोचितचोर। भूरिभामरीभरिहैंहोतहिंभोर ॥ ५ ॥
हेकुरवकतौवकसमधारेध्यान। जोनवतेहोकेहिदिशिगेप्रियप्रान ॥
विगतशोकतुमनितहींरहहुअशोक। हमसशोककहँकीजैआशुअशोक ॥
नामतुम्हारोजाहिरजगमेंनाग। पियनवतैहौतौसतितक्षकनाग ॥
तुमहूँताकेभाईहौपुंनाग। जोप्रीतमैंवतावोतौवड़भाग ॥
अलिद्रोहीनहिंमोहीचंपसदाहिं। वोहीनिरमोहीकोकहिहौनाहिं ॥
मानिनमानविनाशीअतिहिंअपीर। मिल्योमीततुवह्वैहैइतवलवीर ॥ ६ ॥
तुलसीहरिपदप्यारीसरलसुभाउ। पियाबताउविहाउसवतियाभाउ ॥ ७ ॥
अलिनसहिततुमनिवसहुनितवनमाल। तातेजानेह्वैहैमोहनलाल ॥
सत्यचमेलीहेलीदेख्योकंत। पियकरपरसतफूलीविनहुँवसंत ॥
बेलाअवयहिवेलामतिहिंदुराउ। कितगोनाहनवेलावेगिवताउ ॥
जातीनिजसुमनेरँगहमहिंनिहारि। कसनप्रकाशहुपियकोदायाधारि ॥
जूहीतूँहीकोमलहोतकठोर। कसबतायनहिंदेतीनंदकिशोर ॥ ८ ॥
आमअरामप्रदायकतुमवसुयाम। तुमसतिदेखेह्वैहौकहँघनश्याम ॥
हेप्रियालतुम्हरोहियकोमलभूरि। कहहुकृष्णकितगमनेकेतकिदूरि ॥
यदपिकठिनतुवऊपरकोमलहीय। क्योंनपनसकहिदीजैकहँगेपीय ॥
असनअसनअवकीजेयहिवनमाँहिं। विनहरिकेहियरेलगियेजियजाँहिं ॥
कोविदारतुमकोविदकरुउपकार। पल्लवचितायवतावहुनंदकुमार ॥
जामुनतुम्हरोहमहिंनपरतप्रमान। कारिकारेहोतेएकसमान ॥
विषधारीतुमजाहिरहोमंदार। विरहविषमविषहरिहौतुमनहमार ॥
बिल्वसदाप्रियहरकेहररिपुकाम। क्योंनवतायविनाशहुकहँघनश्याम ॥
मंजुलमंजुलसुखप्रदहरिसँगमाँहि। अवदुखप्रदकतहोतेकहितेहिंनाँहिं ॥
एकअलंवरहेतुमहमहिंकदंब। अवजियजातोहरिविनहोतविलंब ॥

दोहा-यहिविधितरुणीतरुलतन, पूँछतपूँछतजाय। कुंजकलिंदीकूलकी, लखिवोलीदुखछाय ॥
[...]या-एकहीठौरमेंजन्मभयोअरुएकहीठौरबसेसुखपाई। वारहिंवारकियोउपकाररहेतुमामित्रहमारेसदाई ॥
[...]सुनातटकीलतिकातरुक्योंनवतावहुआजुकन्हाई। साँकरेमेंजोसहायकरैरघुराजसोमीतकीसाँचमिताई ॥
[...]रेकह्योक्षितिसोंव्रजबालकरेतेदयानिजमाहवँसेकी। नातोवराहकेअंगछुयेकनिवामनकेपदकेपरसेकी ॥
वेपरपुलकावलीतोमेंसोहइतह्वैहरिकेनिकसेकी। श्रीरघुराजवतावतीनासुधिह्वैहरसवयलकेविलसेकी ॥ १०

लखिफेरिकैहैहरिनीनसोंहेलीलखीतुममूरतिलालकीहै।चकितैचितवोचलिओरवहीछविनीकीसोंनैननांवंशाल
इतहींह्वैगयेयहजानिपरैयावयारिवहैउरसालकीहै। कोउकामिनिकेकुचकुंकुमरंजितसौरभयावनमालकी॥

कवित्त–पुनिव्रजबालकहैवृंदावनवृक्षनसों, कीन्ह्योंहैप्रणामतुमश्यामपगलपटी।
प्रीतमकेपीतपगींउमगींअनंदअति, अवलोंतिहारीशाखाछोनीछायछपटी॥
रघुराजनिकस्योविशेषिइतह्वैकैकान्ह, तुलसीसुगंधरहेभौरझौरझपटी।
कामिनिकोकंधएककरसोंकलितएक, करमैंकमलकमलाकोकंतकपटी॥ १२॥
सखियासयानकोईकह्योपुनिसखिनसों, लहरैंललितलतिकालीआलीदेखिये।
लपटींतरुनहूँपैकपटीनिपटकान्ह, करकोपरसपायआनँदअलेखिये॥
रघुराजजाकेहितत्यागिदीन्हीकुलकानि, आईवनवीचतजिवासकोविशेखिये।
व्रजकीनवेलिनविहायकेविहारीलाल, प्रीतिकीन्हींवेलिनसोंबूझितौपरेखिये॥ १३॥

दोहा–विरहविकलवहुविधिवचन, वदतविविधव्रजबाल। विषमवियोगविथाव्यथित, विचरहिंविपिनविशाल
पुनिथकिथकिसिगरीव्रजनारी। इकथलैबठतभईदुखारी॥ सूखेवदनशिथिलसवअंगा। तापरजारतभंगअनंगा
तनुमनसकलकृष्णमहँलाग्यो॥विषमविरहवडवानलजाग्यो॥प्राणपयानजानिव्रजबाला।करनलगींहरिचरितरसाला
कोउपूतनासरूपसखिधरहीं।कोउहरिह्वैपयपानहिंकरहीं॥ शकटसरिसकोउथिरह्वैजाहीं। कोउशिशुह्वैखेलतीतेहि
करहिंआशुहींचरणप्रहारा।गिरैंभूमिसोखायपछारा॥१८॥तृणावर्तवपुधरिकोउप्यारी।कोउसखिकोनँदलालविचारि
दोहा–ताकोअंकउठायकै, लैदूरीकछुजाति। तेहिंऊपरकरिगिरतमहि, मृतकसरिसदरशाति॥
नूपुरपगनिबजायरसाला।कोऊघुटुरुवनिगवँनतिबाला१९कोउसखिरामकृष्णह्वैजाहीं।पुनिकोउसखाहोइसँगमाहीं
कोउवत्सासुरह्वैतहँआवै।हरिरूपीसखिताहिगिरावै॥कोउपुनिहोयवकासुरनारी।कोउहरिह्वैतेहिदेतिपछारी॥
कोउसखिव्रजगौवैह्वैजाती।तिनटेरहिंकोउहरिकीभाँती॥ कोउविहरतपुनिवेणुबजावैं।तेहिसराहिकोउसुरउपमावैं
कोहुकोउकंधननिजभुजधरिकै।गमनहिंमंदकटाक्षनकरिकै॥हमहैंकृष्णकहहिंव्रजनारी।लेहुललितगतिमोहिनिहारी
दोहा–कोउकहपानीपवनते, अवनडरहुव्रजलोग। मैंरक्षणकरिहौंअवशि, मेटिसवनकोशोग॥
असकहिएकवसनफहराई।लियोगोपिकाऊँचउठाई२०पुनियकसखिकोउसखिशिरमाहीं।पदधरिबोलतभईतहाहीं
रेकालीअहिविषधरघोरा।तजहुआशुतुमअवयहिठोरा॥मैंखलमदखंडनअवतारा। लीन्ह्योंव्रजटारनभुवभारा
पुनिसखियनसोंकोउसखिबोली।अपनेउरकीआशयखोली॥देख्योसखाकरालदवारी।जारनचहतिप्रगटिदिशिचारी
मूँदहुनयनसवैइकवारा। तौहरिहौंदुखसकलतिहारा॥२२॥दूसरिसखिकहँमानिमुरारी।कोउसखिपुनिमाटकी
दोहा–शिलाउलूखलथापिकै, बाँधितताहिमहँताँहि। अतिशयडेरवावनलगी, लैलकुटीकरमाँहि॥
मैंपीसखीसोमुखअसगायो। मैयामैंदधिनाहिंचोरायो॥असकहिमूँदिलियोदृगदोऊ। भईभयाकुलसीतहँसोऊ
यहिविधिभोरकृष्णकीलीला। विचरतभईंसुखीशुभशीला॥पुनिसिगरीजुरिकैव्रजबाला।आगेगमनींविरहबिहाला
पूँछतवृंदावनतरुलतिकन।शरदछपामहँछीजतछनछन॥कछुआगेचलिकैव्रजनारी।धरणीमहँहरिचरणनिहारी
कह्योसखिनसोंतहँकोउप्यारी।इतहींह्वैनिकस्योछलकारी। जवध्वजअंकुशकुलिशहुकंजा।हरिपदचिह्नलख्यमनरंजा
दोहा–यहींपंथह्वैकढिगयो, सोकपटीचितचोर। यहिमगह्वैआलीचलहु, अवआशुहियहिमोर॥
असकहिचपलचलीव्रजनारी।निरखतहरिपदचिह्नदुखारी॥ढसतभईचलिकैकछुदूरी।पियपदयुततियपदअति
निरखिनिर्गनिदौरिआई। एकएकनकोवचनसुनाई॥ लखहुकपटकपटीकरआली। हमकोपरिहरि
कोउप्यारीकोलैनिजसाथा। रह्योलुकायपगदेतेदिदाया॥२६॥कोननारिकियेपदसजनी।कोनधौंहरि
हिमुगरसीदमकरअधिकारी। सोमुखलेतिपकवदनारी॥इकपगप्रगटनएकप्रगटत्तभटी

दोहा–इककरकामिनिकंधमें, करिकेकान्हरजात। अवलपरततातेचरण, नहिंभलकैप्रगटात॥
जिमिकरिंदकरिणीकेकंधे। कैआपनीशुंडसनबंधे॥झूँमतझुकतमहामदछाको। तिमिगमनतसुतनंदबबाको॥२७॥
कारिसनेहहरिकोअबराधा। तातेलहिनविरहकीबाधा॥ संगसंगडोलतिवनमाँहीं। तेहिंसमभागऔरकीनाँहीं॥
गुणअनगुणपियकेहैंनामा। सोनहिंदीसतहैंयहिजामा॥ कहवावतुदक्षिणभगवाना। चहियेसबमेंभाउसमाना॥
जलैइकप्यारी। छिपेकुंजमहँकुंजविहारी॥ हरहिंकलेशनामहरिताते। सोगुणअबनहिंनेकुदेखाते॥
दोहा–तजिकुलकुलिकुलकानिहूँ, आईवनजिनहेत। सोछलिहमकोछिपिरह्यो, क्योंदुखनहिंहरिलेत॥
भापे। वहईश्वरतानेकुनरापे॥ जोसमरथहोवैसबभाँती। तौदुखहरैआययहिराती॥
। मेटतविपतिननिकसतप्रानै॥वहसखियहतजिसखिनसमाजू॥व्रजमेंसुखलूटतिसतिआजू॥
अभीतसबातिनसोंआली। लगतिहोयगीहियवनमाली॥२८॥ सोधनधनधनिधनिधरणीमें॥वरवरणीवरवरवरणीमें॥
कमलाकरतारा। नाशनहितअघजन्मअपारा॥ जेहिंपियकीपदरजशिरधारे। सोपियकीरजबारहिंबारे॥
होयगीआजुअकेले। विहरतवनवनकान्हरभेले॥ २९॥
दोहा–तबकोउपुनिबोलीसखी, साँचकहतितैंबीर। पियपदपरतेहिंपदपरखि, उपजतिपूरीपीर॥
दुर्लभअधरामृतपियको। रह्योअधारहमारेजियको॥ आजुअकेलीसोइअनोखी। पियतहोइगीभागनिचोखी॥
।पियकोतजिअबक्योंइतऐहै॥३०॥पुनिकछुआगूचलिव्रजनारी।नवतृणकेअंकुरनिनिहारी॥
। तबबोलींचितमेंअसलेखी॥ प्यारीकेपदतृणगडिजैहैं। तौममसंगखेदअतिपैहै॥
सविचारितेहिंकंधचढाई। चलोगयोअबहींकितधाई॥ तिनकोतनुमनतेसोइप्यारी। सुधिनहिंताकोनेकुहमारी॥
। सत्यकहतितैंबातअताली॥
दोहा–कामिनिकोकाँधेलिये, कामीकान्हरजात। भारभरेपदधसिगये, तेपरगटदरशात॥ ३१॥
। देखिकुसुमचुनीयकबेली॥ तहँबोलीकोउलखइकसजनी। लीलाकरीजोपीतमरजनी॥
। दियउतारिकंधतेप्रियाको॥ लगेकुसुमतोरननिजहाथा। प्राणपियारीकोलेसाथा॥
जोई। ऊँचेकरकरितोरयोसोई॥ येंडीउठीकरतकरऊँचाहिं। पगअँगुरीउपटीरजबीचाहिं॥
मिनिकरचेरो। करतसोइतेहिकेमनकेरो॥३२॥पुनिकोउबोलीव्रजनारी।यहथलतोसखिलेहुनिहारी॥
दोहा–प्यारीकेबैठाइकै, याहींकुंजरसाल। निजकरसोंबहुकुसुमचुनि, वेणीगुहीगोपाल॥ ३३॥
आली। नँदनंदनकपटीवनमाली॥हमकोछलिछलियाइतआई। लियनिशंकतियअंकलगाई॥
तिसनेहहिसनोसाँवरो।ताकीछबिमहँभयोबावरो॥३४॥यहिविधिकइतविविधविधिनैना।बारबारढारहिंजलनैना॥
रहिहरिकहँकुंजनिकुंजनि।तपैंतापसुनिसुनिअलिगुंजनि॥लगैंचंदकरशरसमतिनतन। कलपसरिसबीततहैंछनछन
योमनप्रियचंद्राननमें। विलसितवागेंवृंदावनमें॥ गोपिनमधितेजेहिंलियकाँहीं।लैदुरिगेहरिकाननमाँहीं॥३५॥
दोहा–सोसिगरिनतेआपनो, मान्योपरमसोहाग। सखिनत्यागिमोपरकियो, हरिअतिशयअनुराग॥
वशहैंकुंजविहारी। मोहींकोमाननिजप्यारी॥ जोकहिहौंमेंकरिहैंसोई। औरसखींसोंभीतिनहोई॥ ३६॥
बवेणीगुहिचलेविहारी। तबहरिसोंसखिगिराउचारी॥ बहुतदूरिसखियनतजिआई।विविधभाँतिकीकलादेखाई॥
लिनाँहीं। कहाकरौंअबकाननमाँहीं॥ तुमतोसरसनसंगखेलैया। बहुतदूरलोंनादियकैया॥
गे। श्रमितकहाँचलिहौंकिमिआगे॥ जोहमेरेपररासहुप्रीती। तौअबकरहुलालयहरीती॥
हिलेहुनिजकंधचढ़ाई। चलहुजहाँमनहोयकन्हाई॥ ३७॥
दोहा–सुनिप्यारीकेबैनअस, गर्वितजानिवनाय। नँदनंदनबोलेवचन, मंदमंदमुसक्याय॥
रतिमेरीप्राणपियारी। मनिहौंसबविधिसीखतिहारी॥ चढ़िममकंधचलैद्रुतआछे। आवनचहहिंसखीसबपाछे॥

असकहिबैठिगयेगिरिधारी।चढ़नलगीसोगोपकुमारी।तेहिंक्षणमेंहरिअंतरधाना।पियहिनलखिउतरयोअभिमाना॥३८
गिरीभूमिमहँविलपतप्यारी।तनुकीसुधिनहिनेकुसँभारी॥पसरिपुहुमिउठिकेपुनिप्यारी।चहुँकितचितवनिकरिपुकारी
हायनाथहेप्राणपियारे।मोहिंतजिअवतुमकहाँसिधारे।केहिदिशिकेहिथलकेहिवनमाँहीं।होकहँकहहुकंतकतनाहीं॥

दोहा—जिनकुंजनमेंमोहिंमिले, भरिभरिवाहुविशाल । तिनकुंजनतेअवनकत, कढ़िआवोनँदलाल॥

कियोकौनदासीअपराधा । दईजोदुसहविरहकीवाधा ॥ मेंगरीविनीहौंव्रजनारी । सवविधिपीतमआशातिहारी॥
तुमविनइकक्षणनाहिंजियोंगी।सोजिगरलयहिठौरपियोंगी॥तुवविनइकक्षणकल्पसमाना।वीततमोहिंकहँअहैसुजाना।
ऐसीहाँसीमतिपियकीजै । जामेंयहतनुक्षणक्षणछीजे ॥ विनावरीमूरतिदेखे । त्रिभुवनसूनसत्यममलेखे॥
वेगिमिलहुमोकहँअवप्यारे । कसनदयाहियहोतितिहारे ॥ मोहिंअकेलीछाँड़िछिपाने । तेरेगुणइतहींप्रगटाने।

दोहा—रेकपटीअतिनिरदई, कारेनंदकिशोर । कसतरसावतदरशविन, व्रजवनिताचितचोर ॥ ३९ ॥

विलपतियहिविधिसोव्रजवाला।डोलतिमंदहिमंदविहाला॥श्यामश्याममुखटेरतिश्यामा।छनछनछीजिहोतितनुछाम
सोसखिकोअतिकरुणविलापा।सुनियेऊसखिलहिसंतापा ॥ तासुनिकटचलिगईतुरंतै। देखीतेहिविलपतविनकंतै।
पूँछनलगीताहिकसप्यारी । फिरहुअकेलीविपिनिमँझारी ॥ धौंइततुमकोकान्हलेवाई । छोंडिअकेलेगयोछिपाई।
कैधौंतजिसवसखिनसमाजै।हेरहुतुमहुँआजुव्रजराजै॥४०॥सुनिऐसीसखियनकीवानी । वोलीव्रजसुंदरिछविसानी

दोहा—तुम्हरेमधितेमोहिंसखी, लैआयोइतश्याम । सेवकाईसवविधिकरी, यहिवनठामहिंठाम ॥

अवहींमोहिंदगादैप्यारी । कहुँदुरिगोकपटीगिरिधारी ॥ सुनिमृदुवचनभईमतिभोरी । ताकोछलजानेउनहिंगोरी।
जोपहिलेअसजनतीसजनी । तौनआवतीसँगयहिरजनी॥प्रथमहिंबाँधिप्रीतिकीडोरी । पुनिक्षणहींमेंडारयोतोरी।
दईनिर्दईकेसँगमाँहीं । विरचैप्रीतिरीतिकीनाँहीं ॥ सुनितीकीअसगिरादुखारी । वोलतभईसकलव्रजनारी॥
कोअसजोकरिहरिसँगप्रीती।पाइहिपुनिनाविरहकीभीती॥ कान्हवानिजेकरैंप्रतीती। नितकीहोतिअवशियहरीती
दोहा—मुखकोमलउरअतिकठिन, छलतनहोतअघाउ । छलिछलिछलियाअलिनको, केहिउरकियोनघाउ॥४१॥
असकहिकैतेहिंसंगलेवाई । हरिहेरनहितसकलसिधाई ॥ जहँलगिरहीमयंकजोन्हाई । तहँलगिहेरतभईकन्हाई
आगेरह्योसघनवनघोरा । ठौरठौरअँधियारअथोरा ॥ सोतमलखिसजनीकोउवोली । आगेजायहोहुकतभोली
चंदचाँदिनीचहुँकितछाई।छिपतिनकौनिहुँवस्तुछिपाई॥यहिमहँकिमिछिपिहैंघनश्याँमा।होतीतौदीसतकहुँअँ
कहँहुजोवनछिपानकहुँह्वैहें।खोजेतेहठितिनकहँपैहें।तोतेहिंमुखशशिकोटिप्रकाशा।किमिछिपिहैत

दोहा—तातेअवहेरहुनहीं, हेरेमिलिहैंनाँहिं । मिलिहैंतवह्वैहैअवशि, दायाजवउरमाँहिं ॥

चलहुकलिंदीतटमहँआली।तनुमनसोंसुमिरहुवनमाली॥गावहुतिनकीकीरतिप्यारी । तोमिलिहैंहठिकुंजविहारी
यहसुनिलौटिचलींव्रजवाला।मनलाग्योसवकोनँदलाला॥४२करहिंगोविंदकेरगुणगाना।हरिचरित्रको
तनुमनसकलकृष्णसोंलाग्यो।दुसहविरहवडवानलजाग्यो।भूलिहुघरसुधिआवतिनाँहीं।छाईहरिछविनैननिमाँहीं
आयपुलिनपुनिअलियमुनाके ।ताकतितरलतरंगनिताके ॥ वैठींसवसमाजनिजजोरी । वोरीविरहविथाव्रजगोरी

दोहा—प्रगटनहितनँदलालके, रचिरचिपदनरसाल । विनयकरतगावनलगीं, अतिविनीतव्रजवाल ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे त्रिंशस्तरंगः ॥ ३० ॥

गोप्य ऊचुः।

अथ गोपीगीतललितपद।

जयतिनँदनंदनप्राणप्रिया, व्रजमेंप्रगटिनाथव्रजकोगोपुरतेअधिककिया ॥
रामविहरेंव्रजमेंनितहीं, तेहिव्रजकीअवलातुमविनविरहानलमेंजातदही ॥
मिलहुअबकहुँदिशितेआई, प्रानपियारेबहुतभईअबछोंडहुनिठुराई ॥
लगेतुममेंतनुमनप्राना, वनवनखोजिथकीहियमेंधरितुवमूरतिध्याना ॥ १ ॥
शरदसरसरसिजदृगवारे, ताकितिरीछेसैनशरनकसअवलनकोमारे ॥
आयअबऔषधिअसकीजे, कोमलकरनदुसालघाउछेपूरणकरिदीजे ॥
बिकानीमोलविनातुमसों, ऐसीदगाकरबतुमकोनहिंउचितरह्योहमसों ॥
कहावधहोतकृपाणहिंते, जेहिंउपायजियजायसोईवधसुकविवखानहिंते ॥
वृथाहींकियोवियोगलला, जोनभईसोभईअवहुँतौदरशनदेहुभला ॥ २ ॥
महाअहिकालीविषजलसों, वकहुअघासुरइंद्रकोपतेअरुदावानलसों ॥
भईजबजबव्रजमेंभीती, तबतबअभैतुम्हींकरिदीन्हीकरिहमपरप्रीती ॥
नहींयहजानिपरेरीती, काकेवशह्वैमनमोहनजूकरियतुअनरीती ॥
विरहवैरीव्रजवासिनको, विथावृथाहींकरततुम्हेंविनतुवपददासिनको ॥
आयकसनहिंयहअरिमारो, तुमविनअवनदूसरोदीसतगोपिनरखवारो ॥ ३ ॥
नहींयशुदेभरिसुखदाता, सबदेहिनकेउरनिवसतहौसतिमतिगतिज्ञाता ॥
विरंचिविनैसुनिकैनाथा, हरणहेतुभूभारलियोऔतारमोदगाथा ॥
हरोहमरोयदिदुखभारा, तौमहिभारउतारिप्रतीतिकरीसतिकरतारा ॥
भयेयदुकुलकेसुखदाई, प्रीतिरीतितिरावरीरुचिरअतिकहँपियविसराई ॥ ४ ॥
सदाशरणागतपालकहौ, निजदासनसंसारदीहदुखआशुहिघालकहौ ॥
दयाकरिविनतीसुनिलीजे, हमगरीविनीगोपिनकोपियअवनविथादीजे ॥
कमलकरकमलाकरधारी, मनकोसकलमनोरथदायकविरहतापहारी ॥
कमलकरऐसोनिजप्यारे, हमरेशिरमहँधरहुआयअबमतिहोवहुन्यारे ॥ ५ ॥
सुनोपियगोकुलदुखनासी, हेलिनकोहरिलेहुगर्वकरिमंजुलमुसहाँसी ॥
नहमसमविरहीजगमाँहीं, यहीगर्वमुसक्यायलालअवनाशहुकसनाँहीं ॥
सुनेवलवीरवीरसाँचे, वैरीविरहविनाशनमेंपियहोहुनअवकाँचे ॥
किंकरीहमचरणनकेरी, निजअधीनजनतजनवानकवहूँनरहीतेरी ॥
चलावहुअवनहिंरीतिनई, गहतनिर्दईवानिसखीनहिंजोहिहायदई ॥
देखावहुसरसिजचारुमुखे, अबनलाजव्रजराजकरहुमिलिदारहुदीहदुखे ॥ ६ ॥
जौनपदकालीशिरसोह्यो, दासनकोदुखहरणहारजोहिकमलामनमोह्यो ॥
चलेगोवैंनपीछेपीछे, जातटलितमंदगतिकोवनकेगयंदसांछे ॥
आपनोचरनकमलसोई, कुचनवीचधरिमदनवियाकरकदनकरहुजोई ॥ ७ ॥
तिहारीवैमधुरीवातियाँ, अवसुधिकरिकरिव्रजवनितनकीफटीजातिछतियाँ ॥
कौनचतुरोअसजगमाँहीं, जोतुम्हरोसुनिवचनरचनकोमोहतहैं[illegible]हीं ॥

पियाबहुलालनअधरअमी, व्रजयुवतिनकीविरहव्याधिविनपानकियेनकमी ॥ ८ ॥
तिहारीकथापरमलोनी, मुनिजनगावतरहतदिवसनिशिनाशतिअनहोनी ॥
श्रवणमंगलप्रदछबिछाई, पूरवपुण्यकियेतेइजेमहिवितवहिंवयगाई ॥
सोईअवरह्योअधारहमें, नातोक्षणविछुरेतुमकोजियभेंटतजाययमें ॥ ९ ॥
हँसनिहारिहेलिनिसुखदाई, प्रेमपगीवहतकनितिरीछीचलनिचारुताई ॥
ललितविहरनिकुंजनिमाँहीं, हाँसीकरनिरावरीहँसिहँसिविसरतिअबनाँहीं ॥
करैजोकोउतिहरोध्याना, ताकीविथानरहतितनकतनुसुखपावतनाना ॥
हियेधरिमूरतितिरभंगी, बैठींहमयमुनाकेतटमेंप्रेमरंगरंगी ॥
नहोतिविथातनुकीदूरी, यहमनमेंगोपाललालअचरजलागतभूरी ॥
छपेकहँरेकपटीकारे, कतनसुनतअबबातहमारीजातचलोमारे ॥ १० ॥
कठिनवनकोमलपदतेरे, लगिनजाहिंकहुँकंटकआवहुआशुसखिननेरे ॥
चलहुजबगोवनकेपाछे, लैकरलकुटीवेणुबजावतबानिकबनिआछे ॥
तबहिंमनहोतरह्योऐसो, लालहिधेनुचरावनपठवतनंदबबाकेसो ॥
कमलकोमलसुंदरपगमें, लगतकबहुँकंटककंकरजोकाहकहतजगमें ॥
हमारोमनअबहूँडरपै, हैकरीलकीकुंजघनीवृंदावनथरथरपै ॥ ११ ॥
जचैतुमसाँझसमैप्यारे, आवतहौगोवनकेपाछेमुरलीकरधारे ॥
कपोलनझलकिअलककारी, गोरजरंजितरुचिरवदनछबिआलिनसुखकारी ॥
मनहुँइंदीवरअलिमाला, ऐसोमोहनतुवमुखनिरखतमोहैंव्रजबाला ॥
ललालचावहुक्योंजियरो, क्योनहुलसिहरिनिजहियकीजतुव्रजहेलिनहियरो ॥ १२ ॥
मनोरथपूरकपदतेरे, जोकोउविपतिपरेपरसुमिरतदुखनरहतनेरे ॥
सुन्योंऐसोहमनिजकाना, धरहुआयनिजपदहियरेहमरेतोफलजाना ॥
धरणिमंडलमंडनकारी, जोकोउपरसतचरणतिहारोतेहिंआनँदभारी ॥
मिलौनहिंतोपगभारिदेहू, तौहमविरहविपतितजिवनतेजैहैंनिजगेहू ॥
चरणजसपूजतिहैकमला, तातेअधिकप्रेमभरिपुजिहैंगोकुलकीनवला ॥
नसोहतिऐसीनिठुराई, जोअसकरनहतोतोकरपरकसलियगिरिराई ॥ १३ ॥
तिहारोअधरामृतप्यारे, सुरतिसमैंआनँदउपजावनहरतशोकसारे ॥
सवतिमुरलीकियतेहिंजूँठो, तदपिदेहुहमपानकरैंगीकहहिंनहींझूँठो ॥
ललातेहिंएककहुवारापिये, पुनिनरहतिसुखआशऔरकछुतेहिंविनकाहजिये ॥ १४ ॥
कुटिलकुंतलतुवअहिकारे, हेरतहींहठिमदनविषमविषपसरततनुसारे ॥
कलानिधिकोटिनछविछावै, देखतहींमुखवनतकहतमुखकछुनहिंबनिआवै ॥
विरंचिमहाजडहमजाने, तुवमुखनिरखतइननैननमेंपलकनिनिरमाने ॥
जाहुजबधेनुचरावनको, तबतुवविनइकपलककलपसमवीततयातनको ॥ १५ ॥
पितापतिपूतसुजनभ्राता, तुम्हरेहितगोपालनराख्योतिनसोंकछुनाता ॥
सुनतमुरलीधुनिइतआई, ताकोफलतुमदियोलालजूवनवनविलखाई ॥
नंदकोपूतधूतधूते, व्रजनारिनदेदगादुरयोनहिंआवतअजहूँते ॥

करतकोउजगमहँअसनाँहीं, प्रथमपियाहिपियूषफेरिविषमेलतसुखमाँहीं।
रसिकतुमनामहींकेलाला, जोरसरीतिजानतेतौनिशितजतेब्रजबाला॥ १६॥
ललावैविसरिगईबतियाँ, कहतहतेब्रजबालनकोलखिशीतलमममछातियाँ।
यदपितुमभूलिजाहुहमहीं, तद्यपिहमभूलेहुनभूलिहैंकबहुँकंततुमहीं॥
हँसनिकीफँसनिफँसितेरी, तापरपुनिचितवनिकोचाबुकमारयोहरिहेरी।
धाँधिपुनिप्रेमकोठरीमें, क्योंनआयदरशावतआननअबकाहेजीमें॥
कौनहमकीन्ह्योंअपराधा, जातेहमेंबोलायबीचमनदीन्हीअसबाधा।
करौतकसीरमाफप्यारे, निजविशालउरमेंलगायअबहोउनहिंन्यारे॥
यदपितहँकीवासीकमला, तद्यपितासुदासिकाह्वैसबरहीहैंब्रजअबला।
ललकलागीहियलागनकी, मिलहुहमैकरिशपथलालअबपुनिनहिंत्यागनकी॥
मोहनामोहिलियोमनको, मनमोहनकतकरतहमारोतजतप्राणतनुको॥ १७॥
अहोब्रजजीवनयशुदाके, महामाधुरीमूरतितेरीबसीनउरकाके।
निरखितुमकोदुखकेहिनगयो, तुवपदप्रेमपगेब्रजनायकमंगलकेहिंनभयो॥
तुम्हेंहमहींभरिअधिकभई, प्राणदानकिमिआयदेहुनहिंविरहसतायतई।
बिनातुम्हरोहियमेंलागे, विरहानलजरिहैब्रजगोरीअबनबनतत्यागे॥
सखिनसुखदायकबनमाली, कतयहनामधरावतअपनोदुखदायकआली।
मिलेगेजबलौंनहिंप्यारे, तबलौंइतहींबैठिरहैगींअनशनव्रतधारे॥ १८॥
कवित्त—चरणसरोजरोजरोजजेउरोजनमें, नाशनमनोजओजहेतुधारतींरहीं।
पैअतिकठोरकुचकोमलपदारविंद, निजजियजानिकैविथाविचारतींरहीं॥
तेईमृदुपायँनसोंविचरौकठिनभूमि, जामेंहमतनुमनधनवारतींरहीं।
रघुराजयहदुखअबतौसह्योनजात, औरजसतसकेइहाँबिसारतींरहीं॥ १९॥
श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
आनंदांबुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे एकत्रिंशस्तरंगः॥ ३१॥

श्रीशुक उवाच।

, बीतिगयोकछुकाल। ब्रजनारिनविरहिनतहाँ, मिलेनहींनँदलाल॥
धीरजासिगरोभाग। ब्रजवनितारोवनलगीं, रागतरागविराग॥
भरीलालसाबाल। केवलजियजैबोरह्यो, सरिततटपरींविहाल॥ १॥
, बरसेसालिलज्योंसुखातलखिशालीहै।
, पारावारिबूडतमेंनौकाज्योंविशालीहै॥
, जनमदालिद्रेंदेवद्रुमज्योंसुसालीहै।
, प्रगटभातेसेपनश्यामबनमालीहै॥
।
, कटिचरासीपमनूपुररसाल्है॥

पियावहुलालनअधरअमी, व्रजयुवतिनकीविरहव्याधिविनपानकियेनकमी ॥ ८ ॥
तिहारीकथापरमलोनी, मुनिजनगावतरहतदिवसनिशिनाशतिअनहोनी ॥
श्रवणमंगलप्रदछविछाई, पूरवपुण्यकियेतेइजेमांहिवितवांहिंवयगाई ॥
सोईअवरह्योअधारहमैं, नातोक्षणविछुरेतुमकोजियभेंटतजाययमैं ॥ ९ ॥
हँसनिहारिहेलिनिसुखदाई, प्रेमपगीवहतकानितिरीछीचलनिचारुताई ॥
ललितविहरनिकुंजनिमाँहीं, हाँसीकरनिरावरीहँसिहँसिविसरतिअबनाँहीं ॥
करैजोकोउतिहरोध्याना, ताकीविथानरहतितनकतनुसुखपावतनाना ॥
हियेधरिमूरतितिरभंगी, वैठींहमयमुनाकेतटमेंप्रेमरंगरंगी ॥
नहोतिविथातनुकीदूरी, यहमनमेंगोपाललालअचरजलागतभूरी ॥
छपेकहँरेकपटीकारे, कतनसुनतअववातहमारीजातचलीमारे ॥ १० ॥
कठिनवनकोमलपदतेरे, लगिनजांहिकहुँकंटकआवहुआशुसखिननेरे ॥
चलहुजवगौवनकेपाछे, लैकरलकुटीवेणुवजावतवानिकवनिआछे ॥
तवहिंमनहोतरह्योऐसो, लालहिधेनुचरावनपठवतनंदवबाकैसो ॥
कमलकोमलसुंदरपगमें, लगतकवहुँकंटककंकरजोकाहकहतजगमें ॥
हमारोमनअवहूँडरपै, हैकरीलकीकुंजघनीवृंदावनथरथरपै ॥ ११ ॥
जवैतुमसाँझसमैप्यारे, आवतहौगौवनकेपाछेमुरलीकरधारे ॥
कपोलनझलकिअलककारी, गोरजरंजितरुचिरवदनछविआलिनसुखकारी ॥
मनहुँइंदीवरअलिमाला, ऐसोमोहनतुवमुखनिरखतमोहैंव्रजबाला ॥
ललाललचावहुक्योंजियरो, क्योनहुलसिहरिनिजहियकीजतुंव्रजहेलिनहियरो ॥ १२ ॥
मनोरथपूरकपदतेरे, जोकोउविपतिपरेपरसुमिरतदुखनरहतनेरे ॥
सुन्योंऐसोहमनिजकाना, धरहुआयनिजपदहियरेहमरेतोफलजाना ॥
धरणिमंडलमंडनकारी, जोकोउपरसतचरणतिहारोतेहिआनँदभारी ॥
मिलोनाहिंतौपगभारिदेहू, तौहमविरहविपतितजिवनतेजैहेंनिजगेहू ॥
चरणजसपूजतिहेकमला, तातेअधिकप्रेमभरिपुजिहैंगोकुलकीनवला ॥
नसोहतिऐसीनिठुराई, जोअसकरनहतोतोकरपरकसलियगिरिराई ॥ १३ ॥
तिहारोअधरामृतप्यारे, सुरतिसमैंआनँदउपजावनहरतशोकसारे ॥
सवतिमुरलीकियतेहिजूँठो, तदपिदेहुहमपानकरेंगींकहांहिनहींजूँठो ॥
टलातेहिएककछुवारापिये, पुनिनरहतिसुखआशऔरकछुतेहिविनकाहजिये ॥ १४ ॥
कुटिलकुंतलतुवअहिकारे, हेरतहीहिठमदनविषमविषपसरततनुसारे ॥
कलानिधिकोटिनछविछावे, देखतहींमुखचनतकहतमुखकछुनांहिवनिआवे ॥
विरंचिमहाजडहमजाने, तुवमुखनिरखतइननैननमेंपलकनिनिरमाने ॥
जाहुजवधेनुचरावनको, तवतुवविनइकपलककलपसमवीततयातनको ॥ १५ ॥
पितापतिपूतसुजनभ्राता, तुम्हरेहितगोपालनराख्योतिनसोंकछुनाता ॥
सुनतमुरलीधुनिहितआई, ताकोफलतुमदियोलालसूवनवनाविलसाई ॥
नंदकोपूतधूतधूतै, व्रजनारिनदेदगादुराँ योनाहिआवतमनहूँतै ॥

करतकोउजगमहँअसनाँहीं, प्रथमपियाहिपियूपफेरिविषमेलतसुखमाँहीं।
रसिकतुमनामहींकेलाला, जोरसरीतिजानतेतौनिशितजतेव्रजबाला ॥ १६ ॥
ललवेविसरिगईबतियाँ, कहतहतेव्रजबालनकोलखिशीतलममछातियाँ।
यदपितुमभूलिजाहुहमहीं, तद्यपिहमभूलेहुनभूलिहैंकबहुँकंततुमहीं ॥
हँसनिकीफँसनिफाँसितेरी, तापरपुनिचितवनिकोचाबुकमारचोहरिहेरी।
धाँधिपुनिप्रेमकोठरीमें, क्योंनआयदरशावतआननअबकाहेजीमें ॥
कौनहमकीन्ह्योंअपराधा, जातेहमेंबोलायबीचमनदीन्हीअसबाधा।
करौतकसीरमाफप्यारे, निजविशालउरमेंलगायअबहोउनहिंन्यारे ॥
यदपितहँकीवासीकमला, तद्यपितासुदासिकाह्वैसबरहींहैंव्रजअबला।
ललकलागीहियलागनकी, मिलहुहमैकरिशपथलालअबपुनिनहिंत्यागनकी ॥
मोहनामोहिलियोमनको, मनमोहनकतकरतहमारोतजतप्राणतनुको ॥ १७ ॥
अहोव्रजजीवनयशुदाके, महामाधुरीमूरतितेरीबसीनउरकाके।
निरखितुमकोदुखकेहिनगयो, तुवपदप्रेमपगेव्रजनायकमंगलकेहिनभयो ॥
तुम्हेंहमहींभरिअधिकभई, प्राणदानकिमिआयदेहुनहिंविरहसतायतई।
विनातुम्हरोहियमेंलागे, विरहानलजरिहैव्रजगोरीभवनबनतत्यागे ॥
सखिनसुखदायकवनमाली, कतयहनामधरावतअपनोदुखदायकआली।
मिलेगेजबलौंनहिंप्यारे, तबलौंइतहींबैठिरहैंगीअनशनव्रतधारे ॥ १८ ॥
कवित्त—चरणसरोजरोजरोजजेउरोजनमें, नाशनमनोजओजहेतुधारतींरहीं।
पैअतिकठोरकुचकोमलपदारविंद, निजजियजानिकेवियाविचारतींरहीं ॥
तेईमृदुपायँनसोंविचरौकठिनभूमि, जामेंहमतनुमनधनवारतींरहीं।
रघुराजयहदुखअबतोसह्योनजात, औरजसतसकेइहाँचिसारतींरहीं ॥ १९ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते आनंदांबुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे एकत्रिंशस्तरंगः ॥ ३१ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—यहिविधिकरतप्रलापबहु, बीतिगयोकछुकाल। व्रजनारिनविरहिनतहाँ, मिलेनहींनँदलाल ॥
तबतिनकेतनुतेतुरत, धीरजासिगरोभाग। व्रजबनितारोवनलगीं, रागलरागविराग ॥
तलफिरहीहरिदरशको, भरीलालसाबाल। केवलजियजेबोरह्यो, सरितलपरींबिहाल ॥ १ ॥
कवित्त—ओंधरेकोओंरिजैसेकलपवितापमिले, बरसेसालिलज्योंसुखातलसिझालीहै।
मृतककेमुरसजैसेपरातिपियूपधार, पारावारिबूडतमेंनौकान्योंविझालीहै ॥
रघुराजचातकवदनजैसेस्वातिबुंद, जनमदलिद्रैदेवदुमज्योंसुसालीहै।
भरतनिहारीविरहागिव्रजहेलीवेली, प्रगटभोतेहिपनश्यामवनमालीहै ॥
लसतअमंदमंदहँसवसुखारविंदपीतपटफहरातउरवनमालहै।
चपिराधबोंसुरीलैहारिनेटकुंडलोनी, कटिचरलोपमकुरसमालहै ॥

अलकेंअमोललोलकुंडलकपोलगोल, मौलिमोरपङ्खनकोमुकुटविशालहै ।
कोटिमनमथनकेमनकोमथनवारो, बीचव्रजवालनकेविलस्योगोपालहै ॥ २ ॥
प्रीतमकोलखिप्यारिनकेविकसेहगवारिजसेछविरासी । एकहिंवारउठींअतुराइमिल्योमृतकेमनुप्राणप्रवासी ॥
सुबाँतेभयेसुखकेअँसुवाअतिप्रीतिप्रकासी।चारिहुँओरतेचैनसनीवनश्यामकोघेरयोघनीचपलासी ॥३॥
हियेपियकोपुनिप्रीतमकेरसमेंअतिबोरी । कान्हरकोकरकंजगह्योअपनेकरकंजनसोंव्रजगोरी ॥
राजकहैमनोवालवपायकरोअवलालकरोरी । पैअवजाननपैहोकहूँहमसोंकरिकैकेतनौंवरजोरी ॥
लीललाकोहियलाइअन्हायप्रमोदकेसिंधुसोहाई । चंदनचर्चितचारुभुजापियकोलियोकंधमेंधारितहाँहीं ॥
राजकहैमनोगोरीरहेअवलोकेहिंकुंजदुराई । येभुजभ्राजैंहमारेभुजानिपैनाहिंलताविपैराजैंकन्हाई ॥ ४ ॥
ईनिशंकतहाँभरिकंतकोअंकहिंप्रेमकिप्यासी । प्रीतमकेमुखकीगिरिचीरिगहीयुगहाथनसोंसुखरासी ॥
राजकहैमनुऐसोयहीलहिवेकिरहीहमआसी । जूँठिहुँहैमुरलीकीसहीपैतऊतजिजातनमीठिसुधासी ॥
खीहरिकोहियरोअपनेहियरेधरिकामकोजीती । फेरिगोविंदपदैअरविंदधरयोउरमेंसुखकंदसप्रीती ॥
राजमनोव्रजराजैकहैयुनिकैश्रमभीती । येउरधारिवेयोगलह्याविचरेवनमेंसोवडीविपरीती ॥ ५ ॥
त्रिकुटीकरिदंतनिसोंअधरानिकोदाराति । प्रीतमप्रेममेंपूरीप्रियारसहूरिसिकेहगआँसुनिढाराति ॥
गकीभूलिहियेमहँवारहिंवारविचाराति कितीकलाकैकटाक्षनिसोंमनोकान्हकोकामकशानिसोंमाराति
तहँलालनकोलखिलायउरैखडीसामनेजाई । कान्हकेआननकीसुखमासुधापीवनहेतुप्रियाललचाई ॥
नेवारिपलैरघुराजचलैनचलाई । पानकरेंक्षणहूँक्षणपैअधिकातितृपानहिंनेकअघाई ॥ ७ ॥
प्राणप्रियाहरिकीक्षणमेंछकिकैमनमोहिगई । हरिकीमहामाधुरीमूरतिधारिहियेहठिऐसिविचारिलई ॥
भई । असठीकहिठानिठगींसीठईठकुराइनिनैननिमूँदिलई ॥ ८ ॥
दोहा–जिमिचतुराकोपायकै, चितलेकुमारिपराय । तिमिव्रजपतिलहिवालदिय, विरहव्यथाबिसराय ॥९॥
छविशेषी।हरिकहँप्राणहुँतेप्रियलेपी॥चहुँकितघेरिखडींछविछाई । हरिआननिरखहिंटकलाई ॥
मधिसोहतघनश्यामा।मनुशक्तिनमधिव्रह्मललामा॥पुनिहरिहेलिनसोंअसगायो। तुमहिंविरहदुखवहुतसतायो
तापतेतपीसुंदरी । पहिरीकंकणसरिससुंदरी ॥ चलहुयमुनतटमहँसवप्यारी । छतियाँशीतलहोयँतिहारी ॥
हिसिगरीसखिनलेवाई । यमुनापुलिनगयेयदुराई ॥ विकसेकुंदवृंदमंदारा । वहतत्रिविधमारुतसुखसारा ॥
कुंजनिकुंजनिभृंगा । निशिहूँबोलहिंविविधविहंगा ॥ ११ ॥
दोहा–चंदचाँदनीचारुअति, चारिहुदिशिक्षितिछाय । अतिआनँदउपजावती, इकमुखवरणिनजाय ॥
यमुनकीतरलतरंगा।उडहिंशीतकणपवनप्रसंगा॥कोमलअमलपुलिनतेकरहीं।मिलिपरागवहुरँगछविभरहीं ॥
सहितसरियाँतहँजाई।मनकोसकलमनोरथपाई॥विरहतपितआँसुनतेभीनो।कुचकुंकुमसवलितअतिझीनो ॥
जनिजवसनउतारी । महिमहँबैठनहेतुमुरारी ॥ निजहाथनसोंदियोविछाई । मानहुँविरहदशादरशाई ॥१३॥
नादियकोवैठनवारो । सोवैठोतेहिनंददुलारो ॥ चहुँकिततेसिगरीव्रजनारी । वैठतभईघेरिगिरिधारी ॥
दोहा–जोहरिमूरतिमेंवसी, त्रिभुवनकोसवशोभ । तेहिदर्शनचाहततियन, क्षणक्षणनवनवलोभ ॥ १४ ॥
हँसिकरिभृकुटिविलासू।हेरिहेरिहरिहरहिंहुलासू॥वहुविधिप्रियकोतियसनमानी।निजनिजउरधारिपियपदपानी
सगहिसगहिकन्हाई।प्रणयकोपनसुकदरशाई॥युवतीयुगलजलजकरजोरी।कहींकृष्णसोंगिरानिहोरी ॥१५॥

गोप्य ऊचुः ।

नपियजसयसतजगतहैं।भजनिनितेहिंनापुभजतहैं॥ कोउअसजगमहँहैंहहृदयाला।विनहूँभजेभजहिंसवकाला
निरदेहेनेजगमाँहीं । भजेहुनभजेहृभजतेनाँहीं॥इनमेंकहोकौनपियनीको।सोहमकहिवेहिंमनठीको॥१६॥
दोहा–सुनिव्रजवनितनकेवचन, युतिभेप्यदुराय । मंदमंदवोलतभये, मंदमंदमुसकाय ॥

॥ ६॥

। नाचहिंचलिचितवहिंचितचोरा ॥

रासमंडलीमध्यमें, रहीमधुरधुनिछाय । गावहिंरागसुहावने, चतुराईदरशाय ॥ ६ ॥

। बीचविहारीकेब्रजनारी ॥ मानहुँपुष्पराजकोमाला। मधिमधिनीलकमणिछविजाला॥७॥

। लेहिंभेदकरिबहुविधितोरा ॥ कोउफेरीलैवसनउढावें । विविधभाँतिकेभावदेखावें ॥

। नैननवावातिलाजदेखाई ॥ कोऊनचावतिभृकुटिनकाँहीं । तालबधानडगतिकहुँनाँहीं

। ताकीकटिनाहिंपरैनिहारी॥ कोउचितचंचलनिरखिकन्हाई।निजअंचलपटदेतिउडा॥

दोहा—कोऊआपनेअमलजे, अनुपमगोलकपोल । माधिमुक्तननिरतावती, कुंडलमंडललोल ॥

। मनमोहनमुखमेंटकलावहिं॥नीवीशिथिलबहततनुस्वेदू।नचतकरतश्रमतदपिअखेद

। मनहुँश्यामघनशशिदरशाहीं।श्यामाश्यामश्यामसँगश्यामा।जनुबहुदामिनिबहुघनश्या

। तेहीतालपैनचतकन्हैया॥८॥ अतिऊँचेसुरसुखदलगाई । गावहिंहरिप्यारीमनभाई

।भयोविश्वयहस्वरकोआलै॥कोकहिसकैभागतिनकेरी॥क्षणक्षणजिनपरसहिहरिहेरी॥९

दोहा—तानलेतकहुँकान्हतहँ, पंचमत्रिविधबोलाय । तहँप्यारीकोउतानलै, टीपाहिदेतिलगाय ॥

। बारहिंबारसराहततीको ॥ सोसुनिकोउसखिकृष्णसनेही । टीपहुकीटीपहुलैलेही ॥

। ...पनिकरलहिथिरहिरहीअरि।

।असमरसरकरज्वरभरादियदारि।कोऊश्रमितहरिनिकटनिहारी। हरिकंधहिंअपनोभुजधारि

दोहा—इंदीवरकीसुरभिजेहिं, केसरलेपितबाहु । सुखीसखीपुलकितवपुप, चूमतिसहितउछाहु ॥ १२ ॥

। लेतितालयुगगतिअतिसाँची॥गतिजतिजेचरणनतेलेती।कुंडलकरहिंकपोलनतेती।

पुनिहरिकोबहुभाउबताई । देतिकपोलकपोलमिलाई ॥ निजमुखकीबीरीब्रजसाँई । तेहिंआलीकहँदियोखवाई ॥

मनहुँश्रमिततेहिंजानिमुरारी।देपियूपश्रमदियोनिवारी१३कोउनाचतिगावतितहँप्यारी।करतिचरणनूपुरझनकारी॥

नूपुरपगकटिमणिमंजीरा। करहिंसमानशोरगंभीरा ॥ नाचतनाचतहरिढिगआई । हरिहिंविरहकोभाउदेखाई ॥

दोहा—हरिकोकरनिजकुचनमधि, लीन्ह्योंललकिलगाय । मदनविजैहितमनुहरहि, पूज्योकमलचढाय ॥१४॥

यहिविधिकरहिंअनेकनभाऊ।हरिनिरखतबाढतचितचाऊ॥कमलाकंतकंतजिनकेरो।तिनकोसुखकहकिमिमुखमेरो।

कुंजनकुंजनमेंब्रजनारी । विहरहिंविविधकलाकरिप्यारी॥ हरितिनकेकीन्हेंगलबाँहीं।डोलततिनमुखनिरखतजाँहीं॥

गावहिंनाचहिंगोपिनसंगा।उपजावहिंबहुविधिरसरंगा॥१५॥केशनढिगचमकतताटंका।मनुघनढिगदामिनीदमंका॥

माँगमध्यमोतीदरशातीं । मानहुँबकपाँतीलहरातीं ॥ झरहिंकपोलनतेश्रमवारी । जनुबहुवर्षाऋतुवपुधारी ॥

दोहा—पूरणशशिसममुखलसत, पसरतिप्रभाअपार । खंजनदृगकुचकोककल, उडुगणहीरनहार ॥

मनहुँशरदऋतुअतिछविछाई । ब्रजवनितनसरूपधरिआई। फहरतपीतवसनचहुँओरा। शालिपकीमनुठौरहिंठौरा॥

करपसारिअंगुलिनसकेली । लेहिंविविधविधिगतिब्रजहेली । तेइमनुविनपंकजनिमृणाला।नूपुरसारसशोररसाला ॥

पत्राछविगोधूमकिआरी । मनुहेमंतऋतुमूरतिधारी॥कँपतगातहरिकोलखिसाखियन।भोरोमांचबहतजलअँखियन॥

मनहुँशिशिरऋतुबहुवपुधरिकै । आईरासमध्यसुखभरिकै ॥ केशनतेप्रसूनबहुरंगा । परहिंपुहुमिपरपरनिप्रसंगा ॥

दोहा—अलिगणअलिगणसुखभरहिं, पिकरवनूपुरशोर । करपिकवल्लभपल्लवे, पंकजमुखचहुँओर ॥

जनुबसंतऋतुयदुपतिरासा।नाचतिबहुवपुधरिचहुँपासा॥किंकिणिझिल्लिनकीझनकारी।तैसहिंमुखमयंकउजियारी॥

हरिमिलिबोअनंदरविपाई। विरहसरितसरगयेसुखाई ॥ मनुग्रीपमऋतुधरिबहुमूरति। आईलखनसाँवरीसूरति ॥
कबहुँजोहोयमदनकरतारू। शोभाचक्रचैशिशुमारू ॥ प्रेमपयोनिधिउपजाहिइंदू। उडुगणप्रीतिसुधाकेबिंदू ॥
होयगगनजोरसशृंगारू। परमानंदसुमेरुपहारू ॥ तौकछुकृष्णरासछविकेरी। उपमाकहैसकुचिमतिमेरी ॥

दोहा-विचसोहतव्रजचंदजू, चहुँकितनेव्रजबाल। मनुमंडितमहताबमधि, चहुँकितमालमशाल ॥

सवैया-गायगोविंदकीकीरतिग्वालिनीशंभुकोशैलत्रिलोकबनावैंमोहनकोतकिवारहिंबारअनेकप्रकारकेभावबतावैं
बेणीछुटीसवैंफूलफबेछविछाकीशरीरकोभानभुलावैं। रासविलासमेंश्रीरघुराजभरेंसुरभौरकीभीरहँभावें ॥
जोगतिलैलेनचैसिगरीतेउतालविशालकेकोटिकलैया। जौनहींतानमहानहूलेतीप्रवीणवैगोकुलगाँउलगैया ॥
तैसहीताननतेईगतीसहजैमहँलेतोरिझायकन्हैया। नाचिरह्योमधिमेंमनमोहनदैकरतालकहैततथेइया ॥ १६ ॥

घनाक्षरी-कहूँहरिधायलेतहेलीउरलायकहूँहेलीगहिहारिहिंहुलासउपजावतीं।
कहूँकान्हकरतकटाक्षकामिनीपैकुलिकामिनीकटाक्षकहूँकान्हपैचलावतीं ॥
मृदुमुसक्याइकहूँलेतव्रजचंदजीतिचंदमुखीकहूँव्रजचंदकोलजावतीं।
बालनकेबीचकहूँलालछविछावैंकहूँलालनकेवीचव्रजबालछविछावतीं ॥ १७ ॥
कोईमृगनैनीकीसुवेणीछविवनीछुटीकोईपिकबैनीवाहिनीवीहूँसम्हरतीं।
कोईचातुरीकोभयोअंचलहूँचंचलपैनेकहूँद्दगंचलकोचंचलनकरतीं ॥
रघुराजभूपणकेजालतनुछूटेटूटेफूलनकेमालतनुहालकोबिसरतीं।
प्रीतमकोप्रेममदपानकैकैप्यारीसबैभईमतवारीव्रजकुंजनविचरतीं ॥ १८ ॥

दोहा-यदुपतिरासविलासलखि, मोहिगईसुरनारि। जेजहँतेतहँअचलह्वै, इकटकरहींनिहारि ॥

कृष्णमिलनकहँललकतरहहीं। धन्यधन्यगोपिनकहँकहहीं॥तारनपतितारनयुतजोही।गमनविसारिरह्योतहँमोही।
शरदपूर्णिमादीरघराती। होतभईव्रजतियदुखघाती॥हरिकोरासनिरखिसुखसारा।थिरह्वैरह्योचक्रशिशुमारा ॥१९॥
रहींतहाँजेतीव्रजनारी। पुनितेतनेहिंह्वगयेविहारी ॥ तितनेहींकुंजनमहँजाई। विहरतभेकरिकलाकन्हाई ॥२० ॥
जानिश्रमितगोपिनगिरिधारी। निजपटपीतकमलकरधारी ॥ पोंछनलगेस्वेदअनुकूला।भेदक्षिणनायकमुदमूला ॥

दोहा-कोकविव्रजसुंदरिनकी, बरणिसकैमुखभाग। जिनकेवशवैकुंठपति, ह्वैगेकरिअनुराग ॥ २१ ॥

छंदमनोहरा-कुंडलछविवासीअलकप्रकासीगंडविलासीछविभासी, अतिउल्लासी।
असमरसरगासीदुखद्रुतनासीचंद्रकलासीमृदुहाँसी, पियमनफाँसी ॥
हरिकोसुखरासीदेहरिदासीप्रेमपियासीकमलासी, नचिचपलासी ॥
हरिकीतिसुधासीकलपलतासीत्रिभुवनवासीगंगासी, गामैजासी ॥ २२ ॥

दोहा-श्रमितजानिसखियनसकल, करनयमुनधनिलाल। जलविहारसुखलेनहित, बोलेवचनरसाल ॥

चलहुकरैंअबसलिलविहारा। बहुतकियोकुंजनसंचारा ॥ करिजलकेलिकरैंश्रमदूरी। जेहैंसकलआशतहँपूरी ॥
सुनतकह्योव्रजबालसुखारी। चलहुलालजहँखुसीतिहारी ॥ तबलैसखिनसमाजकन्हाई।चलेयमुनमज्जनसुखछाई ॥
मधिमोहनचहुँकितव्रजनारी। चलेजातगावतदेतारी ॥ यहिविधिचलेयमुनागिरिधारी। प्रीतमसंगप्रमोदितप्यारी ॥
मिलतसखिनभेमर्दितमाला। कुचकुंकुमतेरँगीरसाला॥लहतसुरभिसँगकियेपयाना॥गँधरवसरिसकरतअलिगाना॥
तहँजलकेलिकरनसखिलागीं। परमप्रेमपागींबडभागीं। नँदनंदनअरुगोपनंदिनी। मनुगयंदइकबहुगयंदिनी ॥

दोहा-कुचकुंकुमकामिनिनको, छुट्योयमुनजलमाँहि। श्यामपीतसुरभितसलिल, थलथलमेंदरशाहिं॥ २३ ॥

रतनजडितकंचनपिचकारी। निजनिजकरलैसबव्रजनारी ॥ हरिपैडारहिंबारहिंबारा। करहिंआडकरनंदकुमारा ॥
आपहुँलैमारहिंपिचकारी। चमकिजाहिंचंचलव्रजनारी॥ ताकिउरोजसरोजनमारें। चंचलअंचलसखीनिवारें ॥

हरिमिलिबोअनंदरविपाई। विरहसरितसरगयेसुखाई ॥ मनुग्रीषमऋतुधरिवहुमूरति। आईलखनसाँवरीसूरति ॥
कबहुँजोहोयमदनकरतारू। शोभाचक्रचैशिशुमारू ॥ प्रेमपयोनिधिउपजाहिइंदू। उडुगणप्रीतिसुधाकेबिंदू ॥
होयगगनजोरसशृंगारू। परमानंदसुमेरुपहारू ॥ तौकछुकृष्णरासछबिकेरी। उपमाकहैसकुचिमतिमेरी ॥

दोहा-बिचसोहतव्रजचंदजू, चहुँकिततेव्रजबाल। मनुमंडितमहताबमधि, चहुँकितमालमशाल ॥

सवैया-गायगोविंदकीकीरतिग्वालिनीशंभुकोशैलत्रिलोकबनावैं।मोहनकोतकिवारहिंवारअनेकप्रकारकेभाउबतावैं
वेणीछुटीखसैंफूलफबेछविछाकीशरीरकोभानभुलावैं। रासविलासमेंश्रीरघुराजभरेंसुरभौंरकीभीरहँभावैं ॥
जोगतिलैलैनचैसिगरीतिउतालविशालकैकोटिकलैया। जौनहींतानमहानहूलेतीप्रवीणवेगोकुलगाँउलँगैया ॥
तेसहीताननतेइंगतीसहजेमहँलेतोरिझायकन्हैया। नाचिरह्योमधिमेंमनमोहनदैकरतालकहैततथेइया ॥ १६ ॥

घनाक्षरी-कहूँहरिधायलेतहेलीउरलायकहूँहेलीगाहिहारिहिंहुलासउपजाउतीं।
कहूँकान्हकरतकटाक्षकामिनीपैकुलिकामिनीकटाक्षकहूँकान्हपेचलाउतीं ॥
मृदुमुसक्याइकहूँलेतव्रजचंदजीतिचंदमुखीकहूँव्रजचंदकोलजाउतीं।
बालनकेबीचकहूँलालछविछावैंकहूँलालनकेबीचव्रजबालछविछाउतीं ॥ १७ ॥
कोईमृगनैनीकीसुवेणीछविपनीछुटीकोईपिकवैनीवाहिनीबीहूँसम्हरतीं।
कोईचातुरीकोभयोअंचलहूँचंचलपैनेकहूँदृगंचलकोचंचलनकरतीं ॥
रघुराजभूषणकेजालतनुछूटेटूटेफूलनकेमालतनुहालकोविसरतीं।
प्रीतमकोप्रेममदपानकैकेप्यारीसवैभईमतवारीव्रजकुंजनविचरतीं ॥ १८ ॥

दोहा-यदुपतिरासविलासलखि, मोहिगईसुरनारि। जेजहँतेतहँअचलह्वै, इकटकरहींनिहारि ॥

कृष्णमिलनकहँललकतरहहीं। धन्यधन्यगोपिनकहँकहहीं॥तारनपतितारनयुतजोही।गमनविसारिरह्योतहँमोही।
शरदपूर्णिमादोरघराती। होतभईव्रजतियदुखघाती॥हरिकोरासनिरखिसुखसारा।थिरह्वैरह्योचक्रशिशुमारा ॥१९॥
रहींतहाँजेतीव्रजनारी। पुनितेतनेहिह्वैगयेविहारी ॥ तितनेहींकुंजनमहँजाई। विहरतभेकरिकलाकन्हाई ॥२० ॥
जानिश्रमितगोपिनगिरिधारी। निजपटपीतकमलकरधारी ॥ पोंछनलगेस्वेदअनुकूला।भेदक्षिणनायकमुदमूला ॥

दोहा-कोकविव्रजसुंदरिनकी, वरणिसकेसुखभाग। जिनकेवशवैकुंठपति, ह्वैगेकरिअनुराग ॥ २१ ॥

छंदमनोहरा-कुंडलछबिखासीअलकप्रकासीगंडविलासीछविभासी, अतिउछासी।
असमरसरगासीदुखद्रुतनासीचंद्रकलासीमृदुहाँसी, पियमनफाँसी ॥
हरिकोसुखरासीदेहरिदासीप्रेमपियासीकमलासी, नचिचपलासी ॥
हरिकीतिसुधासीकलपलतासीत्रिभुवनवासीगंगासी, गामेजासी ॥ २२ ॥

दोहा-श्रमितजानिसखियनसकल, करनयमुनधनिलाल। जलविहारसुखलेनहित, बोलेवचनरसाल ॥

चलहुकरैंअघसलिलविहारा। बहुतकियोकुंजनसंचारा ॥ करिजलकेलिकरैंश्रमदूरी। जेंहैंसकलआशतहँपूरी ॥
सुनतकह्योव्रजबालसुखारी। चलहुलालजहँसुखीतिहारी ॥ तबलैसखिनसमाजकन्हाई।चलेयमुनमज्जनसुखछाई ॥
मधिमोहनचहुँकितव्रजनारी। चलेजातगावतदैतारी ॥ यहिविधिचलेयमुनागिरिधारी। प्रीतमसंगप्रमोदितप्यारी ॥
मिलतसखिनभैमर्दितमाला। कुचकुंकुमतेरँगीरसाला॥लहतसुरभिसँगकियेपयाना।गैंधरवसरिसकरतअलिगाना॥
तहँजलकेलिकरनसखिलागीं। परमप्रेमपागीबडभागीं। नँदनंदनअरुगोपनंदिनी। मनुगयंदइकबहुगयंदिनी ॥

दोहा-कुचकुंकुमकामिनिनको, छुट्योयमुनजलमाँहि। श्यामपीतसुरभितसलिल, थलथलमेंदरशाहि॥ २३ ॥

रतनमढितकंचनपिचकारी। निजनिजकरलैसबव्रजनारी ॥ हरिपैडारहिंवारहिंवारा। करहिंआइकरनंदकुमारा ॥
आपहूलैमारहिंपिचकारी। चमकिजाहिंचंचलव्रजनारी॥ताकेउरोजसरोजनमारें। चंचलअंचलसखीनिवारें ॥

रिमुसक्यायकटाक्षनिकरहीं। प्रीतमकेउरआनँदभरहीं॥ कहुँकुचकेसरिसखियनकेरी।धोवतहरिविहँसतकरफेरी।
कपोललखिकज्जलरेखा। पोंछहिंविहँसिअनंदअलेखा॥ वर्षहिंकुसुमदेवबहुरंगा। चढ़ेविमाननअतिहिउतंगा।

दोहा—भईकलिंदीकुसुममय, उडतसुरभिचहुँओर। सखिनसहितविहरतसलिल, हिलिमिलिनंदकिशोर॥

जमिकिरणनमधिमत्तकरिंदा।केलिकलाकरिदेतअनंदा॥तैसहिंकरतसखिनसनमाना।विहरतबहुविधिश्यामसुजाना।
हिविधिबहुकरिसलिलविहारा सखिनसहितपुनिनंदकुमारा।निकसिसलिलतेसखिनसमेतू पहिरेनवलवसनछविसेतू
लिनसहिततहाँवनमाली।यमुनाकूलनकुंजरसाली॥ विहरनलगेलखतवनशोभा।जेहिंलखिकाकोमननहिंलोभा॥
थलकुसुमनिसेजविछाई। उडतपरागपरमसुखदाई॥ करतेभौंरशोरचहुँओरा। नवलतिकालहरैंसबठोरा॥

दोहा—कलाकुतूहलविविधविधि, कुंजनकुंजनमाँहिं। कान्हकरतकामिनिसहित, इकमुखकिमिकहिजाँहिं २५

यहिविधिशरदनिशामहँभूपा।कियोरासयदुनाथअनूपा।कोउनहिंअसजान्योव्रजनारी।हमतेअधिकद्वितियपियप्यारी
सबकोकियोमनोरथपूरो। तनुतेभयोविरहदुखदूरो॥ सौरतरुद्धरहेभगवाना। यहप्रसंगसखिकोउनहिंजाना॥
कहेकाव्यमहँजेरसनाना। तेसेवनकियरसिकसुजाना॥ सोयदुपतिकोरासविलासा। सुनतकाहिनहिंपूजतिआसा॥
कामिनकोनिजकथासुहावन। यहलीलाकीन्हीव्रजभावन॥ सबसखियनसमानहरिप्रीती। दईनिबाहिप्रेमकीरीती॥

दोहा—जेतेनायकनायका, हाउभाउअनुभाउ। व्रजनारीव्रजनाथहूँ, कियतेतेचितचाउ॥ २६॥

सुनिकैरासकथाकुरुराई। भयेसुखितपुनिविनयसुनाई॥

राजोवाच।

राखनहेतुधरममरयादा। देनहेतुसंतनअहलादा॥ नाशनहेतुपापसंसारा। जगमहँलियोकृष्णअवतारा॥ २७॥
धर्मसेतुकेवकताकरता। अरुरक्षितारमाकेभरता॥ अतिअयहपरसनपरदारा। कौनहेतुकियनंदकुमारा॥२८॥
यदुपतितोहैंपूरणकामा। कसयहकीन्ह्योंनिंदितकामा॥ अभिप्राययाकोजोहोई। नाशहुसंशयकहिमुनिसोई॥२९॥
सुनतनरेशवचनमुनिराई। बोलतभयोमंदमुसक्याई॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—धर्मव्यतिक्रमसाहसहु, लख्योईश्वरनमाँहिं। तेजस्विनकोदोपनहिं, जैसेपावककाँहिं॥ ३०॥

ईश्वरछोंडिऔरजगमाँहीं।मनहुँतेकरहिंकबहुँअसनाहीं।करहिंजोहठवशनशहिंअजाना।पीवहिंविपजिमिहरतजिआना।
वचनईश्वरनकेसतिजानो। पैआचरणकहुँसतिमानो॥ धर्मविरुद्धईश्वरहुबैना। सोनहिंग्रहणकरहिंमतिऐना॥
संमतधर्मकेरजोहोई। ईश्वरवचनगहहिंसबकोई॥अनुचितउचितजोईश्वरकरई।तेहिंफलदुखसुखनहिंअनुसरई३२।
तिनकेनहींदेहअभिमाना। वेकिमिलहैंकर्मफलनाना॥जेजगमहँअनन्यहरिदासा।तिनहिंनपापहुपुण्यप्रकाशा।३३।

दोहा—तौजगकेप्रेरकसदा, यदुपतिपरमप्रताप। महाराजकैसेकहैं, तिनकोपुण्यहुँपाप॥ ३४॥

सवैया—जोपदपंकजपरागकोसेवतपूरणकामभयेबड़भागी। योगप्रभावसबैजगबंधनछूटिगयेभयेपूरोविरागी॥
तेहरिदासनकोसपन्योजगपुण्यऔपापसकेंनहिंलागी।तोयदुराजकोश्रीरघुराजकहैकिमिपापऔपुण्यकेभागी॥३५॥

दोहा—गोपिनकेतिनपतिनके, अंतरयामीनाथ। तौपरदाराकहँभई, हियेगुणहुनरनाथ॥ ३६॥

करनअनुग्रहप्राणिनकाँहीं।धरयोमनुजवपुहरिव्रजमाँहीं॥ऐसीलीलाकरीउदोती।जाहिसुनतहरिपदरतिहोती॥३७॥
गोपसबैहरिमायामोहे।निजनिजतियननिकटनिजजोहे।दोपदियेकोउकृष्णहिनाहीं।रहेसबैनिजनिजगृहमाँहीं॥३८॥
रहीनिशाजबदंडद्वैचारी। तबव्रजनारिनकह्योविहारी॥ गमनहुनिजनिजगेहनप्यारी। मानहुअबयहसीखहमारी॥
सुनिप्रियवचनदुखितव्रजबाला।भवनगमनलागतसमकाला॥ पैजसतसकैहरिहिंविदाई। गमनींगेहनकोदुखछाई॥

दोहा—सुनियदुनायकहूँतदौं, नंदभवनमेंआय। कियोशयननिजसेजपर, काहुनपरयोजनाय॥ ३९॥

छंदहरगीतिका–व्रजवधुनसंगव्रजचंदकोयहरासपरमसोहानो। गावतसुनतश्रद्धासहितआनंदपरमउपजावनो॥
अनयासआशुहिंआशपूरतिकृष्णभक्तिसुपावतो। अघओघपरमअमोघमोघविशेषहैजरिजावतो॥
दोहा–कामविजययहकृष्णकी, सुनैकहैजोकोय। कामविजयतेहिंपुरुषको, जगतमध्यद्दठिहोय॥ ४०॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे त्रयस्त्रिंशस्तरंगः॥ ३३॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–एकसमयव्रजअंबिका, उत्सवरहोनरेश। नंदादिकगोपालतहँ, सिगरेविगतकलेश॥
नाँधिशकटबैलनबलवानन। गमनतभयेअम्बिकाकानन॥१॥ तहाँसरस्वतीनदीनहाई।शिवकोपूजिपरमसुखछाई॥
लैबहुविधिपूजाकीसाजू। नंदसकललैगोपसमाजू॥ सविधिअंबिकापूजनकीन्ह्यों॥२॥ रतनवसनगोविप्रनदीन्ह्यों॥
अन्नविविधविधिऔरमिठाई। सादरविप्रनदियोजिमाई॥ ईशप्रसन्नकृष्णपरहोहीं। असबोलेसिगरेहरिमोहीं॥ ३॥
पुनिसिगरेसरस्वतिकेतीरा। निवसतभेअतिमुदितअहीरा॥करतभयेनहिंकछुकअहारा।केवलसलिलपानसविचारा॥

दोहा–असव्रतकरिसोवतभये, निशिमहँदिवसबिताय। मधिमहँकरिकेकान्हको, चहुँकितगोपनिकाय॥ ४॥
तेहिंवनमहँइकमहाभुजंगा। रहतरह्योकछुशापप्रसंगा॥सोअतिक्षुधितभयोतेहिंकाला।आयोजहँसोवतसबग्वाला॥
ग्रस्योनंदपदतुरतहिंआई॥५॥ जागिपुकारकियोव्रजराई॥ कृष्णकृष्णहेप्राणपियारो। ग्रसेउरगइकचरणहमारो॥
आयछोडावहुआशुहिंलाला।तुवबलहमअभीतसबकाला॥६॥नंदपुकारसुनतसबग्वाला।उठेतुरतकरिशोरविहाला॥
वारिलुकेठनमारनलागे। तबहींनंदलालहूजागे॥ ७॥ हायहायसबगोपपुकारैं। बहुविधियदपिलुकेठनमारैं॥
तदपिभुजँगअतिक्रूरस्वभाऊ। छोंड़तनाहिंनंदकरपाऊ॥

दोहा–तबयदुपतिद्रुतदौरिकिय, अहिकहँचरणप्रहार॥ ८॥ प्रभुपदपरसतहींभये, ताकोअघजरिछार॥
त्यागिवपुपतजिसुंदररूपा। हैगोवरविद्याधरभूपा॥९॥ पहिरेकनकमालछविराशी।करतदिशनचहुँओरप्रकाशी॥
करिप्रणामहरिकोकरजोरी। ठाढोभयोप्रीतिनहिंथोरी॥तबहरिकहीताहिअसबानी॥१०॥आपकौनशोभाकीखानी॥
अतिअद्भुतहैरूपतिहारो। कसनिंदितभुजंगवपुधारो॥११॥ विद्याधरसुनियदुपतिबैना। बोलतभोकरजोरिसचैना॥

विद्याधर उवाच।

विद्याधरकीजातिहमारी। नामसुदर्शनरह्योमुरारी॥ अतिसुंदरममरह्योशरीरा। रहेसराहतसबमतिधीरा॥
दोहा–एकसमयहमसजिसुभग, चढिकैविमलविमान। भरेगर्बनिजरूपके, विचरतरहेदिशान॥ १२॥
अतिविरूपअंगिराऋषीशा।हँसेतिनहिंलखिहमजगदीशा।तबमुनिकोपिदियोमोहिंशापा।अजगरहोहुलहोअतिता[illegible]
यहिविधिमैंकरिमुनिअपकारा। भयोभुजंगमनंदकुमारा॥१३॥करुणाकरअंगिरमुनिराई। मोपैकीन्हीकृपामहा[illegible]
जातेतुवपदपरसनपायो। कोटिजन्मकेपापनशायो १४॥ शरणागतभवभीतनकेरे। [illegible]
शासनहोयतोसदनसिधारौं। अतिमोदितपरिकरननिहारौं१५[illegible]
जानहुयदुपतिमोहिंनिजदासा। तुमसज्जनकेपूरकआसा॥ १६॥
दोहा–तिहरोपदपंकजपरसि, मुनिकोशापदुरंत। जोकबहूँनहिंछूटतो, छूट्योतौनतुरंत॥
जाकोनामसुनेमुखगावत।पुनिनतनकतनुमेंअघआवत॥१[illegible]

हिविधिकरिविनतीघनश्यामे।देप्रदक्षिणाकियोप्रणामे।गयोसुदर्शननिजेनिवेशा।छुटचोनंदकोसकलकलेशा॥१८॥
सदिदेखिकृष्णप्रभुताई। सिगरेव्रजकेलोगलोगाई॥ अतिशयअचरजमनमेंमाने। कियेसमापतनेमजोठाने॥
वढ़िचढ़िशकटनबैलळगाई। आवतभेव्रजकोसुखछाई॥आदरसहितमोदउपजावन।गावतयदुपतिसुयशसुहावन॥
दोहा–यहिविधिनिवसतभेसकल, ब्रजमेंगोपीग्वाल। नितनूतनलीलाकरत, नितनूतननँदलाल॥ १९॥
यहिविधिबीत्योकालकछु, आयोफागुनमास। जोव्रजलोगनशोकहर, दायकपरमहुलास॥
स०-फागुनमासकीपूरणमाशीभईसुखराशीजबैव्रजगाँउमें।चंदकीचाँदिनीचाँदनीचारुतनीदिशिचारिहूँठाँउहिंठाँउमें
गोपसबैइततेजुरिकैगयेग्वालिनीआईउतैनिजदाँउमें। फागुमचीरघुराजतहाँबरसानेकेआनँदगाँउकेगाँउमें॥
फाबिरहेकटिफेंटेकसेकरमेंलियेकंचनकीपिचकारी। शीशमेंसूरसेसोहैंकिरीटलसैंतिमिबागेबनेजरतारी॥
रोरिभरीलियेझोरीसखाकटिपीतपिछोरीसुहोरीतथारी। गोपसमाजमेंश्रीरघुराजविराजिरहेबलदेवविहारी॥
सजिकैबरसानेतेआईअलीकियेखेलनफागुतयारीभली । तहँठाढीभईगहिगोकुलकीगलीलैपिचकीदुनलीतिनली॥
तनुसारीविराजिरहीअमलीरघुराजमनोबहुचंपकली। इमिगोपललींप्रणरोपिचलींवचिजैहैंहलीनहिंछैलछली॥
बाजेतहाँडफढोलउभैदिशिरागबहारमेंगायधमारी। ह्वैगोझिलाझिलिदोहुँनकीचलींमूठिगुलालकीऔपिचकारी
सावनसाँझसोंसोह्योअकाशअबीरकीछायगईअँधियारी। केसरिकीचकेबीचमेंभूलेभ्रमैंबलिरामऔकुंजविहारी॥
खेलतींफागफबींअबलाकमलासीअनेककलानिदेखावैं। लैपिचकीकहुँऔचकआयविहारीकेअंगनिरंगचलावैं॥
जौलौंगुलालकीमूठिभरैंरघुराजचलावनकोहरिधावैं। तौलगिवैव्रजकीनवलाचमकैंचपलासीललानहिंपावैं॥
बादलेकीह्वैगईवसुधातिमिगाँठीगुलालकीभैअँधियारी। बाजिरहेबहुबाजेसुहावनह्वैरहिकिंकिणिकीझनकारी॥
देखोपरैनहिंनैननसोंरघुराजभयोतहँयोंभ्रमभारी। लालनधायगहैंलतिकानतमालनधायगहैंव्रजनारी॥
गोकुलगाँउकेगोपनगोलसोआगूगोविंदकहूँकढ़िआये। त्योंबरसानेकीप्यारीललीइतजेनिकसींसुखसिंधुनहाये॥
होतजुराजुरीश्रीरघुराजचलावनकोचलेमूठिउठाये। दोऊरहेछबिमैंछकिकैव्रजबालगोपालगुलालनहाये॥
लैकैअबीरकीझोरिनकोकरफूटिसखानिसोंरामकन्हाई। धायधसेव्रजग्वालिनगोलमेंचारिहूँओरअबीरउडाई॥
धाईसबैगहिबेकोअलीजुरिकेसरिकीपिचकारिचलाई। चंचलतोचपलासोचमंकिगोगोपिकाँघेरिगह्योबलराई॥२

घनाक्षरी–लीन्ह्योगहिरामैबामभालींबदुलालदीन्ह्योटीकुलींदैत्रिकुटीमैंभ्रुकुटीनचायकै।
बाहुनमेंबाजूबंदगलमेंत्योंगुलबंदबाँधिदृगकंजनमेंअंजनलगायकै॥
कटिकिंकिणीकोकसिनूपुरचरणचारुसारीरघुराजविधुवदनओढ़ायकै।
फागखेलिबेकोफेरिऐयोरोहिणीकेलालछोंड्योव्रजनारिनयोंतारिनबजायकै॥

दोहा–जोचितवतअंचलतियन, अतिचंचलचितचोर। तहाँकह्योकोईसखी, वचिगोनंदकिशोर॥

सवै०-कोईसखीतहँबोलीनिशंकनशंककरोहौंतिहारईबोरिहौं। गायधमारिकोधायधरापरग्वालनगोलनहौंहठिफोरिहौं
तेरियेसौंहँकरौंरघुराजलगेपिचकारीनमैंमुखमोरिहौं।गोपिनभीरलैमेलिअबीररँगेबलवीरकेबीरकोबोरिहौं॥
धीरधरौनडरौनटरौसबदेखिहौंआजुजोखेलिहौंख्यालै। गाइयेगीतबजाइयेबाजबुलाइयेऔरसुहागनबालै॥
आवनदेरघुराजइतैसजिलावनदेसँगग्वालनलालै। गोपिनगोलगुलालकीगेरिकैघेरिकैहौंगहिलेहौंगोपालै॥
रोरीकिझोरीभरेव्रजगोरीसुखेलतींहोरीजहाँछबिछाई। आयोतहाँसुखसोंसनिकैधरवानकसोबनिकैव्रजराई॥
जोलोंचलायोचहैंलखिकैउनपैभरिमूठिचहूँकितधाई।तौलौंकियोसबकोसुखलालगोपालगुलालबिनामुसकाई॥
मूठिगुलाललैआलिनतेकढ़िसाँवरेपैचलगोपकिशोरी। त्योंनँदनंदनहूँउतधायमहासुखछायलईकररोरी॥
होतजुराजुरीहाँउमड़ेदोउखेलैंअनूपमप्रेमकीहोरी। हाथदुहूँकेउठायेउठेंनरहेलिखेचित्रसेनैननजोरी॥

दोहा–ताकोदशाविलोकिअस, तहँसिगरीव्रजबाल। गहनहेतुगोपालको, गमनतभईउताल॥

सवैया-गहिकेसरिरंगभरींपिचकीसबवालरसालगुलाललई। रघुराजबजावतबीनधमारिकोगावत
अतिआनँदसोंउतवोऊखड़ेजुडिठाढीभईअनुरागमई॥ जकिकैभयोसाँवरोबावरोसोव्रजडार

कवित्त-सजनीसयानीबरसानेकीसम्हारितन, चंचलासीचमकिकैचंचलनगीचमें।
चटकीलीचटकपकरिपदुकाकोछोर, आननअबीरमल्योआनँदउलीचमें॥
रघुराजकेतीकरीछूटनछतीसीछैल, छूटेनाछबीलीसोंछबीलिनकेबीचमें।
करिकरजोरीब्रजगोरीहोरीखेलतमें, लैगिरीगोविंदजूकोकेसरिकेकीचमें॥
मुकुटउतारिचारुचंद्रिकासमारिशीश, कुंडलउतारिपहिराईढारदामिनी।
दूरिकैबलाकनाकबेसरिविरचिपट, पीतकोउतारिसारीसाजीदबिछामिनी॥
नूपुरनिकारिअँगलीनबिछियाँनिडारि, रघुराजकह्योयदुराजैव्रजभामिनी।
फागुनकीयामिनीमेंगजगतिगामिनीधौं, कौनव्रजवासीकीसिधारीनईकामिनी॥

दोहा-गयेसखनमधिलालजब, तबहँसिहँसिसबग्वाल। पहिरायेपुनिकैनये, भूषणबसनरसाल॥

कवित्त-फेरियशुदाकेरोहिणीकेलालदोऊआय, गारीगायगायकहीवाणीसुखसानेकी।
साँचीचंदमुखीरदेरैनहींमेंसुखीदुखी; दंपतिकहायेबिनरुखीरूपवानेकी॥
गैलगैलछैलनकोछेवतीनछोड़तीहैं, रघुराजबातेंकरैंबिबिधबहानेकी।
अजबअनोखीनारिऊधुमअपारकरैं, बचतबटोहीकैसेबाटबरसानेकी॥
गारीसुनिगोविंदकीग्वालिनिहूँगायकह्यो, करतकहाहैबातलाजनहिंलागती।
जायोऔरहीकोकहवायोऔरहीकोआय, औरहीकोखायजियोकीरतियौंजागती॥
रघुराजआयबरसानेमेंबहानेकैकै, तेरीमायथोरीथोरीछाँछनितमाँगती।
जानैहैबड़ाईसुनोकपटीकन्हाईतेरी, बैनरचनामेंकोईचतुरिनरागती॥

दोहा-यहिविधिफागुनमेंमुदित, खेलतयदुपतिफाग। विहरहिंचहुँकितगोपिका, रहिलहिपर
कुंजनकुंजनगुंजहिंभौंरा। वहतत्रिविधमारुतचहुँओरा॥ विकसेकुमुदचंदकरपाई। फूलिमल्लि
वनकुंजनमहँगोपिनसंगा। खेलतफागुकरतबहुरंगा॥२२॥गावतपरमसुहावनदोऊ। मोहतसुनित्रि
जैसेहीरवलसुरनलगावें। तैसेकोउगोपीनहिंगावें॥ जोनतानहरिबलमुखलेहीं। सोआवैकहुँकामि
रामकृष्णसोंसुनिधुनिगाना।व्रजवनितनतनुभानभुलाना॥ झरेंसुमनछूटेंशिरकेशा। ढीलेह्वैगेवस

दोहा-यहिविधिविहरतरामहरि, पावैफागुसमोद। व्रजवनिताचहुँकितकरें, रुचिरविवि

तहँकुरुपतिधनपतिअनचारी।शंखचूडनामकबलभारी॥जातरह्योकहुँकोनिहुँकाजा। सो
आयोतुरतकामवशह्वैके।विहरिरहींजहँतियमुदम्वैकै॥२५॥रामकृष्णकेदेखतमाँहीं। हर
लैगमन्योउत्तरदिशिआसू। करनिकछुहरिदलपरत्रासू॥२६॥तहँआरतगोपिकापुकारी।
यहशठलिहेजातबरियाई। जैसेचोरहरेबहुगाई॥ तुमहिंहचितनहिंअसदारिगमा। हर

दोहा-सुनिगोपिनआरतगिरा, आशुहिरामसुरारि। धावतभेधनिधेगसों, युगत

गोहरायोगोपिनकहँदोऊ। अबनहिंभीतिमानियेकोऊ॥ जैहैदुष्टकहाँलगिभागी। हटिह
नसकहिनिकटगयेदोउभाई।तबचितयोशठलोटिडेराई।कालमृत्युसमदोउकहँदेख्यो।
धायोप्राणबचावनभागी। शङ्खचूडतबगोपिनत्यागी॥ भाग्योशठदिशिउत्तरओग।
आपताकिपेप्यारिनकाँहीं।मैंअबनेहोंयाहिरलपाँहीं॥२९॥नसककहिगगिरामकहँतहँवे।

दोहा-शङ्खचूडजहँजहँसभै, भागतधावतजात। तहँतहँमोनिकेहग्नाहिन,

गोपकलोंमेंपरमप्रवीनोयदपिनकोउसिखायदीनी । तदपियशोमतिललातिहारोजबमुरलीकीधुनिकीनी ॥ १४ ॥
तबधुनिसुनतशंभुविधिवासवयदपिसुकविजगकहवावें । तदपिनवाइकंधरनदेंमनआनंदमगनमोहिजावें ॥
सुनैअचंचलमुरलीकीधुनिचढेविमाननदेकाना । रागविभागतालततिसुरकोहोतनकछुकतिंह्वैज्ञाना ॥ १५ ॥
पंकजअंकुशकुलिशसोहावनजिनचरणनमेंछविधारे । गोखुरखनीअवनीकीपीरानाशतचलीयशुदाप्यारे ॥
गहिगयंदगतिव्रजव्रजचंदवजावतवंशीमुदबाढी ॥ १६ ॥ टेढीतकनिअनीअनियारीहियलगिकढतिनहींकाढी ॥
ऐसेमनमोहनकहँ देखिहमसन्नतरुसमह्वैजाँहीं । बसनकेशकीसुरतिरहतिनहिंवहतनीरनैननिमाँहीं ॥ १७ ॥
तुलसीसुरभिलगतिप्रियपियकोतातेपहिरततेहिंमाले । इकभुजसखाकंधमहँधारेमणिनगनतगोवनजाले ॥
छाँहकदंबनिखडोत्रिभंगीजवटेरतलालनवंसी ॥ १८ ॥ तबहरिणीधुनिसुनिमनहरिणीफँसीकंतप्रेमहिंफंसी ॥
आयअचलसमीपमहँठाढीरहैंअनंदितचहुँपासा । मोहनकीमूरतिमहँमातीजिमिगोपीतजिगृहआसा ॥ १९ ॥
कुंदकलिनकोलसतमालउरगोपनगोवनयुतप्यारो । यमुनापुलिनप्रमोदितविहरतप्रियनप्रमोददेनहारो ॥ २० ॥
मलैपरसितबमारुतबहतसुगंधितशीतलसुखदाई । बाजवजावतवलिहिंचढावतगावतसुरसबढिगआई ॥ २१ ॥
व्रजवासिनगोवनकोप्यारोनंददुलारोगिरिधारी । साँझसमयआगेसुरभिनकरिआवतगोपिनहियहारी ॥
सखासंगमहँगावतकीरतिआपुबजावतमुखमुरली । आयआयमगमहँब्रह्मादिकनिजशिरपगरजलेतभली ॥ २२ ॥
गोरजरजितअलकछलकतछविसेदबिंदुमुखझलकभली। पेखतपलककलपसमबीततलखनललकनहिंअलपअली॥
घूमिरहेयुगदृगमदमातेचंचलनेसुकअरुणारे । वनमालाविशालउरराजतिसखनमानयखशनहारे ॥
कुंडलकनककपोललोलअतिवदरपांडुसमदुतिधारे । देवकिउदरउदधिविधुआवतमनशाकेपूरनहारे ॥ २४ ॥
मदगयंदसमविहरनिजाकीजेहिंलखिदिनदुखनशिजावे।कोटिछपाकरकीछविछावतसाँझसमययदुपतिआवे ॥२५॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—हरिलीलायहिविधिदिवस, व्रजनारीसबगाय । प्रीतमसोंविहरैंनिशा, अतिआनँदउपजाय ॥ २६ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे पंचत्रिंशस्तरंगः ॥ ३५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—आयोएकदिनभूपव्रज, वृपभासुरबलवान । डीलजासुराजतबडी, नीलजलभ्रसमान ॥
खुरसोंखनतमहीबहुवारा।रेणुउडायकरतअँधियारा॥दहकतदिशनिभरतकटुशोरा।धरणिकँपावतअतिबरजोरा॥ १॥
जहँजहँखुरमारतमहिमाँहीं । दरीसरिसतहँथलह्वैजाँहीं ॥ उठीउतंगजासुलंगूला । अतिशयपीनतालुतरुतूला ॥
खनतशृंगकालिंदीकँगारा । शोरहोतमनुगिरतपहारा ॥२॥ करतमूत्रमलयोरहिंयोरा । खुलेनैनआयेअतियोरा ॥
जासुशोरमानहुँपविपाता । करतअकालहिंगर्भनिपाता॥३॥जेहिंदेखतगोवेंव्रजकेरी । स्रवहिंगर्भभयमानिघनेरी ॥
दोहा—वृपभासुरकेककुदको, मानिमहानपहार । आयआयजलधरसबै, करतसदासंचार ॥ ४ ॥
ऐसोवृपभासुरबलवाना । आयोव्रजमहँचोखविषाना ॥ निरखिताहिगोपीअरुग्वाला । मानतभेआयोमनुकाला ॥
ह्वैकेसबजीवनकेआसी । गोकुलतजिभागेव्रजवासी ॥ धेनुकरतआरतअतिशोरा । भागीलैछ्रनचहुँओरा ॥ ५ ॥
कृष्णकृष्णहेव्रजरखवारे । कहाँगयेयशुदाकेप्यारे ॥ यहिविधिकहतगोविंदसमीपा । गयेभागिव्रजलोगमहीपा ॥
कृष्णहुँधेनुचरावनहेतू । जातरहेकाननवलसेतू । आवतनिरखिवृपासुरकोंहीं । सुनिहाहापुकारव्रजमाँहीं ॥
गोकुलकोभयव्याकुलदेषी । जान्योहरिआयोव्रजद्वेषी ॥ ६ ॥

ेउनकेमारनहेतू। बाँधहुभोजराजबहुनेतू॥ सुनतकंसनारदकीबानी। दोउसुतमीचुआपनीमानी ॥ १९ ॥
वसुदेवदेवकीकाँहीं। भरिदीन्हींबेरीपगमाँहीं॥ तिनकोकैदभवनमहँरापी। बैठ्योसिंहासनमनमापी॥
देवर्षिसिद्धिलखिकाजा।गमनेव्रजकहँजहँयदुराजा॥ केशीकहँतबकंसबोलायो। सादरतेहिंअसवचनसुनायो॥
जानहुसबदशाहमारी।तुमसमाननहिंकोउहितकारी॥तुमसबविधितेहौबलवाना।तुम्हरोबलदेवनकोजाना॥२०॥
कृष्णवसुदेवकुमारे। काँजेजतनजाहिंजेहिंमारे॥ केशीगोकुलगमनहुआशू। दुहूँदुवनकरकरहुविनाशू॥
दोहा–कंसबैनकेशीसुनत, बोल्योआनँदपाय। अबलोंआपकह्योनहीं, हनतोतबहींजाय॥
व्रजमंडलैविशेषा। रखिहौंनहिंराउररिपुरेषा॥ असकहिवंदनकरिव्रजगयऊ। कंसदूतसोंबोलतभयऊ॥
मल्लमुष्टिकचाणूरा।शलतोशलआदिकबलपूरा॥२१॥अरुअंबष्ठबलीगजपाला। लावहुबोलिइन्हैंयहिकाला॥
मंत्रिनलेहुबोलाई। सबकोशासनदेहुसुनाई॥ दूतसुनततुरतैतहँधाई। लायेसबकोसभाबोलाई॥
ोंकहीभोजपतिबानी। बाततिहारीहैसबजानी॥२२॥ मेरेरिपुवसुदेवकुमारा। रामकृष्णजिननामउचारा॥
दोहा–मोहिंछपायवसुदेवयह, होतहिंअठयोंबाल। नंदभवनपहुँचायदिय, जोसाँचोममकाल॥ २३॥
असकियोउपाई। लेतदुहुँनकोइतैबोलाई॥ रंगसभामहँजबदोउआवैं। मारयोअबशिजाननहिंपावैं॥
द्धकेमिसिरिपुमारो। तौहमारकियसबउपकारो॥ हेमंत्रीममशासनसुनिये। तामेंऔरनअबमनगुनिये॥
ायहिभाँतिबनावो। ऊँचनीचबहुमंचगड़ावो॥खोदिअवनिरचिदेहुअखारो। ताकोहोयनलघुविस्तारो॥२४॥
खासीसहुलासा। मल्लयुद्धकोलखहितमासा॥ तेअंबष्ठसुनहुगजपाला। नागकुवलयापीडकराला॥
ुमताकोमधिद्वारा। जबआवैंवसुदेवकुमारा॥ २५॥
दोहा–बचिआवैंपावैंनहीं, डारेहुतहँहतवाय। यातेअधिकनदूसरो, मेरोहितदरशाय॥
नचतुर्दशीदिनदंभा।धनुपयागकोहोयअरंभा॥ पशुनमँगावहुवलिकेयोगू। भूतराजकोलागैभोगू॥ २६॥
हेमंत्रिनसोंनृपराई। पुनिअक्रूरहिंनिकटबोलाई॥करसोंकरगहिगिरासुनाई २७ सुनहुदानपतितुमचितलाई॥
ॉडिकंजियहकाजू।तुमसमानममीतनआजू॥अंधकवृष्णिभोजकुलमाँहीं।तुमसमानहितकरकोउनाँहीं २८
धिकारजहेतू। तुमहिंनियोगकरहुँमतिसेतू॥ जिमिगहिइंद्रविष्णुकरपक्षा। साधेउसिगरेअर्थततक्षा॥
दोहा–तसहितुम्हरोपक्षगहि, हमचाहतनिजअर्थ। तुम्हरेकीन्हेकबहुनहिं, ह्वैहैकारजव्यर्थ॥ २९॥
हूरनंदव्रजकाँहीं। आनकदुंदुभिपुत्रजहाँहीं॥ रथचढ़ायदोहुँनइतलैयो। कारणकछूनतिन्हैंबतैयो॥ ३०॥
वैकुंठअधीशा। तिनकेबलहैदेवदिगीशा॥ तेसुरमोहिंमारनकेहेतू। प्रगटेरामश्यामबलसेतू॥
ावहुदोउभाई। पैअसकियोअक्रूरउपाई॥ कहवेनँदसोंतुमयहिभाँती। चलहुमधुपुरीजोरिजमाती॥
सिगरीविधिसाजी।जामेंहोयभूपअतिराजी॥ असकहिनंदसहिततिनकाँहीं। ल्यावहुआशुमधुपुरीमाँहीं॥
कहेजानिनहिंपैहैं। नंदसहितमथुराकहँऐहैं॥
हा–औरहुकह्योअक्रूरतुम, धनुपयज्ञतहँहोय। सोकौतुककेलखनको, जातचलोसबकोय॥ ३१॥
निदोउलखनतमासा। बालकऐहैंबिनहिंप्रयासा॥गजकुवलयापीडसमकाला। रहिहैद्वारखड़ोविकराला॥
वचननहिंपैहैं। जोकैसेहुँपुनिइतबचिऐहैं॥ तौपुनिवज्रसरिसभुजदंडा। मुष्टिकअरुचाणूरप्रचंडा॥
उयुद्धकरवाई। डरिहौंसभामध्यहतवाई३२॥यहिविधिहनिवसुदेवसुतनको।पुनिकरिहौंसबअपनेमनको॥
हौंवसुदेवहुमाथा। औरहुजेरहिहैंतिनसाथा॥ जेवसुदेवमित्रयदुवंसी। करिहौंनाशडारिगलफंसी॥ ३३॥
हा–उग्रसेनमेरोपिता, भयोयदपिअतिवृद्ध। तदपिराजकरिबोचहत, मोहिंनिदरिकैमूढ़॥
ताकेपगबेरी। तदपिराजलालसापनेरी॥ लैअपनेकरमेंकरवाला। तासुशीशकाटिहौंउताला॥
रमरिपुउपजायो। तासुपितादेवककहवायो॥ उग्रसेनकोलहुरोभाई। वेहिंवधकरिहौंबिचिनहिजाई॥

।।नलखयोजन। नृपअष्टाइसअहैनखतगन।। इनकीहैपूरवगतिनाहीं।चक्रहिगतितेचलतसदाही।।११।।
नद्वैलच्छा। असुरपुरोहितराजतस्वच्छा।।शीघ्रसमानऔरगतिमंदा। शुक्रतीनिगतिकहमुनिवृंदा।।
मेमहँजबजावै। तबरविकेआगूदरशावै।। चलहिअसुरगुरुजबगतिमंदा। तबरविपाछूरहाहिविलंदा।।
।।तिकहँगहही। तबदिनकरकेसंगहिरहही।। सदारहैजीवनअनुकूला। कोहुकेकबहुँनहींप्रतिकूला।।
--अतीचारजबशुक्रको, होइवृष्टितबहोइ। वृष्टिविरोधीग्रहणफल, अवशिडारतीखोइ।। १२।।-
नहुबुधकेरी। औरवातकछुकहौनिवेरी। कवितेपरयोजनद्वैलाखा। बुधकोअस्थलमुनिजनभाखा।।
विनहितकारी। सदासंचरतसंगतमारी।। कबहुँजोहोतविलगरवितेरे। रहहितबैरविकहवनघेरे।।
हँवहतनयारी। वृष्टिनहोतसृष्टिसुखकारी।।१३।।युगलखयोजनबुधकेपर। जानहुनरवरमंगलकेघर।।
गतइकरासी।यदिनवक्रगतिहोतविलासी।।बहुधाकरतअशुभजनकाहीं।गनतपापग्रहसुमतिसदाहीं।।१४।।
।--मंगलकेऊपरनृपति, द्वैलखयोजनमाहि। अहइबृहस्पतिसुरगुरू, सुखदायकद्विजकाहि।।
।तिसुरगुरुभोगै। तौइकमासवर्षभरभोगै।।१५।। ताकेपरयोजनद्वैलाखा। रहहिंशनैश्चरकविगनभाषा।।
गतइकराशी। चलतग्रहनपीछेतमराशी।। सबकोहैदुखदायककोरा। अहैक्रूरग्रहअतिवरजोरा।।१६।।
उतरदिशिपाहीं। एकादशयोजनलखमाहीं।। जानहुनृपसप्तर्षिनिवासा। तेध्यावहिंनितरमानिवासा।।
णपदअतिअभिरामा। जाकोकहैंसबैबुधिधामा।। तेहिसप्तर्षिप्रदक्षिणदेही। जामेंसुखपावहिसबदेही।।
हा--कश्यपअत्रिवशिष्टहू, गौतमविश्वामित्र, भरद्वाजजमदग्निअरु, हैसप्तर्षिपवित्र।। १७।।

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशश्रीमहाराजविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धि
श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधेद्वाविंशस्तरंगः।। २२।।

शुक उवाच।

ोहा--सप्तऋषिनकेउपरनृप, योजनतेरहलाख। अहैविष्णुकोअचलपद, ऐसोमुनिजनभाख।।
तभागवतउदारा। ध्रुवउत्तानहिपादकुमारा।। अगिनिइंद्रपरजापतिधर्मा। अरुकश्यपदायकजगशर्मा।।
पतेपरमसनेही। ध्रुवहिसदापरदक्षिणदेही।। जियहिकल्पहूभरजेजीवा। तिनकेध्रुवआधारअतीवा।।
राजचरित्रसोहावन। पूरवमेंवरण्योअतिपावन।।१।।रविअरुचंदनखतअरुतारा।भ्रमतरहैंतेव्योमअपारा।।२।।
खंभहिंमाहीं। बँधेबैलचहुँओरफिराहीं।। ऐसेचक्रगथेसबतारा। भ्रमतरहहिलहिपवनअपारा।।
दोहा--जैसेमेघविहंगवहु, लहिकेपवनअपार। नभमंडलमहँफिरतहै, गिरहिनधरणिमँझार।। ३।।
हिकहहिचक्रशिशुमारा। कालचक्रकोउकहहिउदारा।।४।। पुच्छउपरनीचमुखताको। रूपजासुहैपरमप्रभाको।।
राजहाथतेहिपुच्छा। कुंडलसोहैचक्रप्रतिच्छा।। पुच्छमध्यमहँसुवसेचारी। ब्रह्माअगिनिपरमपविधारी।।
मूलमहँधातविधाता।कटिमहँहैसप्तर्षिविख्याता।।दक्षिणआवर्तहितिहिकुंडल। तेहितनसकलनखतकरमंडल।।
चतुर्दशदक्षिणऐना। वामअंगमहँहैमतिऐना।। उत्तरायणकेनखतचतुर्दश। दक्षिणअंगमाँहतेहैतस।।
दोहा--पवनपंथतेहिपीठमें, अहैउदरनभगंग।। ५।। नखतपुनर्वसुपुष्यद्वै, उभयनितंबअभंग।।
अरुआश्लेपादोई। पीछेकेपायनमहँहोई।। अभिजितऔरउत्तरापाढ़। अहैनासिकामहँसुदवाढ़े।।
पूर्वापाढ़सुवेशा। दक्षिणवामहिनेत्रनरेशा।। दक्षिणवामहिकाननमाहीं। रहतधनिष्ठामूलसदाहीं।।
मघादिकआठहुजेते। वायेंपार्श्वरहतनृपतेते।। पूर्वभाद्रमृगशिरपर्यता। दक्षिणपार्श्वहिमहँमतिवंता।।
मपअरुज्येष्ठानृपराई। दक्षिणवामाहिकंधदेखाई।।६।। दक्षिणकपोलहिकुंभजराजे।वामकपोलहिमहँयमसाजे।।
हमंगलशान्त्तिपस्थमहँ। ककुदबृहस्पतिरविहैउरमहँ।।

अरुजेममवैरीनहुतेरे। बचिहैंनहींवाणतेमेरे ॥३४॥ बिनअरिकीअवनीयहकरिकै। क
ससुरअहैममजराकुमारा। जाकेवलगजदशहजारा ॥ सखाद्विविदवानरहैमेरो। जोरण
दोहा—कालसरिसशंवरअसुर, नरकासुरवलवान। वाणासुरयेतीनिहूँ, मेरेमित्रम
मोकोंतनुमनतेअतिमानैं। मेरोवलसवविधितेजानैं ॥ तिनकेसहितसैनलैभारी। सु
ह्वैकेचक्रवर्तिमहराजू। करिहौंसुखितअशंकितराजू ॥३६॥ यहअक्रूरसवलेहुविचारी।
पुरछविधनुमखदेखनकाँहीं। ऐहैंदोऊविलंवविनाहीं ॥ ३७ ॥ सुनिअक्रूरक्रूरनृपवानी

अक्रूर उवाच।

महाराजभलकियोविचारा। पैकछुसुनियेवचनहमारा ॥ अपनोमरणनिवारणहेतू।
सोजेहंपोंकाकेमाथे। सिद्धिअसिद्धिदैवकेहाथे ॥ ३८ ॥

दोहा—करतअभागिहुपुरुषवहु, मनकामनाअनूप। दैवविवशसुखदुखलहत, न
पैहमकोमहिपालतुम, आयसुदीन्ह्योंजोय। सोअवश्यकरिबोहमहिं, जस

श्रीशुक उवाच।

दोहा—असकहिगेअक्रूरगृह, विदासचिवकरिकंस। अंतःपुरहिप्रवेशकिय, मा
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीम
श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंह
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे षट्त्रिंशस्तरंगः॥ ३६ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—पठयेकेशीकंसको, धारिघोरतनुघोर। आयोवृंदावनतुरत, करतघोरसुर
छंदनराच—रनैखुरैमहीमहावतंगहेतुरंगसो। मनैसमानवेगजासुधावतोउतंगसो।
सटानिमेंविमानदेवतानकेअरूझहीं। महीध्रसेवसेजलध्रकेसकोनवूझ
कठोरदंतपांसिपांसिहीन्सिहीन्सिहेरतो। हरोलकंसकोव्रजैहरीहलीहि
दिशानकेप्रमानलौंअमानशोरछावतो। अघातवज्रघातकेनिपातको
कराललालकालसेविशालजासुनैनहैं। दरीसमानआननैअतीवदंतपै
अकुंठजोनदीहकंठशुद्दहविकुंठको। सतीवकुंठबुद्धिपैचलोचहेविकुंठ
अटोलडोलनीलमेघसोमहाभयावनो। विलोकिदेवतानिलोकमेंपरेपरा
करंक्रूदतुपापकोनिकेतकंसकाजको। तुरंतकेदुरंतकोपभृत्यभोजराज
पम्पागुनंदकेव्रजैनगनगसमानहीं। कँपैमहीतहींतहींजहींजहींपयान
सुरंगनाकिआमनोनिगाहमाणकेभये। व्रजैविचारिलोपगोपभागिहालि
[illegible]रिगोकुलैगोविदैसटानिकै। सिधारिसन्मुखैगयेतुरंग
[illegible]गमांडेपनै। प्रचंडयुद्धहेतुसोजतोहै
[illegible]नभापनेभये। फिरैनओरठोरमा
[illegible]मयो। मृगेंद्रसोगगन
[illegible]मानको। निका
[illegible]मदाद। महादुगध

दोहा-मारिपाछिलेचरणजब, मुरकनलग्योसुरारि। तबबचायद्रुतपगनको, निजकरगह्योमुरारि॥
छंदरूपमाला-प्रभुआशुताहिंउठाइचहुँदिशिबारबारभमाय। अतिऊर्ध्वताकोफेंकिदीन्ह्योंओजनिजदरशाय॥
सोचारसैकरपैपरचोतेहिंगिरतडोलीभूमि। अतिविकलह्वैगोवमतशोणितउठतभोपुनिघूमि॥
जिमिपातिविहंगभुजंगफेंकतपरतकछुनप्रयास। तिमिसहजहींठाढेरहेबाढ़ेगोविंदहुलास॥ ४॥
पुनिसम्हरिकेशीदीर्घकेशझिपटिकेसबओर। विकरालवदनबगारिधायोकरतशोरकठोर॥
आवतनिरखिहरिअसुरकहँचलिकछुकआगूलीन। असुरेशमुखमेंवामभुजहरिडारिहरबरदीन॥
विषधरघुसतजिमिबिलरुखिततिमिगयोबाहुसमाय। केशीकियोनिजरदनसोंअतिकदनकोपबढ़ाय॥ ५॥
परसतभुजाखलदंतसबटूटेदुरंततुरंत। जिमिलागिआयसदारुदरकतचूरहोतअनंत॥
हरिभुजगयोघुसिउदरलौंमनुभोजलोदररोग॥६॥ तहँबढ्योभुजअरुपरचोमोटोमनोवासुकिभोग॥
रुकिगईसिगरीश्वासतनुकीरह्योनहिंअवकाश। पटकनलग्योचहुँकितचरणह्वैगयोजीवनिराश॥
बहुवहनलाग्योस्वेदसकलशरीरतेतेहिंकाल। युगदृगनिकसिचटउलटिगेविकराललालविशाल॥
करिदियोमूत्रहुमलहुगुदमुखचलीशोणितधार। गिरिपरचोधरनीमेंतुरतकरिमरच्योघोरचिकार॥ ७॥
तहँकायकेशीकीफटीकरकटीसारिसकराल। तेहिंमृतकगुनितेहिंउदरतेकरखैंचिलीनगोपाल॥
केशवकमलकरतेनिरखिकेशीकदनसुरवृंद। हरपेसकलबरपेसुमनह्वैगेविगतदुखदंद॥
बहुभाँतिबाजबजायजैजैशोरचहुँकितछाय। गावनलगेगोविंदगुणगंधर्वगणनभआय॥
गोपालकोमिलिग्वालसबपूजनलगेभुजदंड। असकहहिंनंदकुमारतेसमकौनजगबरिबंड॥
तहँसखनकोसतकारकरिहरिजायबैठएकंत। मनमेंगुन्योऐहैंइतैनारदअबाशिमतिवंत॥ ८॥
दोहा-जानिअकेलेकृष्णको, तहँनारदमुनिराय। आयकमलपदवंदिकै, बोलेप्रीतिबढाय॥ ९॥

नारद उवाच।

कृष्णकृष्णजगपतिअविनाशी। वासुदेवयोगेशप्रकाशी॥जगव्यापीयदुकुलकेस्वामी।सबजीवनकेअंतरयामी॥१०॥
जिमिनिवसतपावकसबदारू।तिमिजगमहँवसुदेवकुमारू॥देखिपरोनहिंपुरुषपुराना।जगसाक्षीईश्वरभगवाना ११॥
होआत्मातुमजगतअधारा।प्रथमहिंतुमगुणतीनिप्रकारा॥मायातेसिरजनकरिदीन्ह्यो।तिनतेजगनिरमाणहिंकीन्ह्यो॥
पालहुसृजहुहरहुसंसारा। अहैसत्यसंकलपतिहारा॥१२॥ राक्षसदैत्यदुष्टमहिपाला। तिनकेनाशनहेतुकृपाला॥
रक्षणहेतुधर्मसंभारा। धरचोधरणिमहँतुमअवतारा॥ १३॥
दोहा-घोरवपुपयहधारिकै, दानवआयोघोर। तेहिंलीलाकरितुमहन्यो, भलकियनंदकिशोर॥
घोरशोरसुनिकैसुरयाको।भगतरहेडेरायंतजिनाको॥यहिकरनाशलख्योहमआजू।अबसुनियेऔरहुयदुराजू॥१४॥
मुष्टिकचाणूरादिकमल्ला।करीकुवलयापीडप्रबल्ला॥अरुकंसहुँकहँतुम्हरेकरसों।लखिहौंहनिहतअबाशिहमपरसों १५
शङ्खयवनमुरनरकसुरारी।इनकोवधकरिहोगिरिधारी॥करिहौंपारिजातकरहरना। अरुप्रभुशक्रदर्पकरदरना॥१६॥
विक्रमभोलनरेशकुमारी। हरिकरिहौतुमव्याहमुरारी॥पुनिनिवसतद्वारावतिमाँहीं। देहौमोक्षभूपनृगकाँहीं॥१७॥
दोहा-जाम्बतीयुतनाथतुम, सेमंतकमणिल्याय। सत्राजितकीकन्यका, ब्याहौगेसुखछाय॥
मृतकपुत्रब्राह्मणकोदेहो।अर्जुनयुतनिजपुरतेलैहो॥१८॥पौंड्रककोकरिहौप्रभुगादन। पुनिकरिहौकाशीकरदादन॥
हनिहोदंतवक्रहूँकाँहीं। चेदिपकरवधनृपमगमाँहीं॥१९॥बसिद्वारावतिमहँशुभशाला।औरहुजोननौनतुमलीला॥
करिहौतीनतौनहमदेखिहैं।धनिधनिजन्मआपनोलेखिहैं॥सज्जनसुकृतीसुकविसदाँहीं।गैहैंचारिहुयुगजगमाँहीं॥२०॥
भयोजोयहअवनीकरभारा। जुरिहैंअक्षौहिणीअठारा॥ तबहमपारथकेरथमाहीं। सारथितुमकोलखबतहाँहीं॥
दोहा-कालहीठिसोंआपनी, कुंतीपुत्रनहाथ। हरिहौअवनीभारको, करिहौसुजनसनाथ॥ २१॥

कौनपुण्यमेंपूरबकीन्ह्यों। कौनदानविप्रनकहँदीन्ह्यों ॥ पूरबकियोकौनतपभारी। जातेलखिहौंआजुमुरारी॥ ३
हरिकोदर्शनदुर्लभमानें। हमनितहौंअघओघनठानें ॥ जैसेविपयीशूद्रनकाँहीं । दुर्लभवेदपढ़नजगमाँहीं ॥ ४ ॥
मोहिंअधमेहरिदरशनहोई । यहअचरजमानिहिसबकोई ॥ पैरहिबहुतसिंधुसंसारा।तिनमेंकोउजनलागतपारा॥५
दोहा-मोरअमंगलनाशभो, भयोसकलकृतकाजु। योगीजनवंदितचरण, वंदनकरिहौंआजु ॥ ६ ॥
करीकंसमोहिंकृपामहाई।दियोजोगोकुलकहँपठवाई॥ इनआँखिनसोंहरिपदकंजन।लखिहौंलकिमुनिनमनरंजन
जेहिंनखकोदुतिमंडलदेखी । अंबरीपआदिकसुखलेखी ॥ तीखनतमसंसारनशाई । भयेमुक्तवैकुंठसिधाई ॥ ७ ॥
जेपदपूजहिंविधित्रिपुरारी । कमलाअरुमुनिप्रीतिपसारी ॥ जेपदभक्तनआनँददाई । सुमिरतभवरुजदेतमिटाई ॥
जेपदगोवनपाछेपाछे । विचरतव्रजधरणीमहँआछे ॥ व्रजनारीकुचकुंकुमअंकित । तेपदगहिहौंआजअशंकित॥८॥
जेहिंमुखमेंयुगअमलकपोला।कुंडलमंडललोलअमोला।जेहिंमुखमेंअतिशुभगनासिका।मंदहँसनिआनँदप्रकाशिका
वारिजअरुणविलोचनचारू।चितवनितियउपजावनमारू।जेहिंमुखअलककुटिलछबिछावनि।चितवतहींचखचित्तचोरावनि
सोमुकुंदमुखमेंचलिआजू । देखहुँगोमधिग्वालसमाजू ॥
दोहा-मेरेरथकोदाहिनो, देदेजाहिंकुरंग। होतसुमंगलप्रदसगुन, करनअमंगलभंग ॥ ९ ॥
हरनदेतुहरिभूकरभारा । व्रजमेंलियोमनुजअवतारा ॥ त्रिभुवनकीसबसुंदरताई । नंदकुवँरकेतनुदरशाई ॥
नँदनंदनछबिनैनछकेहौं । यातेअधिककौनफलपैहौं॥१०॥ यदपिकार्यकारणकेकरता । तद्यपिअहंकारनाहिंधरता॥
निजतेजहिंअज्ञानभ्रमनाशी।निजमायाकृतजगतप्रकाशी।११॥सखनसहितवृंदावनमाँहीं।रमाकंतविलसंतसदाँहीं ॥
हरिगुणलीलासवलितवानी । नाशहिंकोटिअघनकीखानी ॥
दोहा-जगशुचिकरशोभनकरन, जीवनजीवनदानि। हरियशबिनवाणीसोई, लेहुमृतकसमजानि ॥ १२ ॥
निजमरयादपालअसुरारी । श्रीहरितिनकेमंगलकारी ॥ लीन्ह्योयदुकुलमहँअवतारा । हरणहेतुप्रभुभूकरभारा ॥
निजयशविस्तारतव्रजमाँहीं।निवसतकरतचरितबहुकाँहीं॥मंगलकरनसुयशजगकेरो।गावतसुरलहिमोदघनेरो१३॥
सोसज्जनकेगतिगिरिधारी । त्रिभुवनकेगुरुदुष्टनदारी ॥ नहिंसुंदरअसत्रिभुवनकोई । कमलारहीमोहिंजेहिंजोई ॥
दोहा-जोकोउदेख्योकृष्णको, सपनेहुँमाइँनजीक । ताकेनैननमेंनितै, लागतत्रिभुवनफीक ॥
सोछबिइनदृगकरिअनुरागा।करिहौंपानआजधनिभागा॥ भयोआजुमोहिंसुखदप्रभाता।देखिहौंकृष्णचरणजलजाता
जबदेखिहौंरामघनश्यामै । रथतजिहौंतुरतैतेहिठामै ॥ गिरिहौंदौरिचरणमहँजाई । लेहौंपदरजनैनलगाई ॥
जिनअंध्रिनबुधबुधिधरिध्याना।पावहिंआशु[illegible]नोरथनाना॥तेइंचरणकरनसोंगहिहौं। पुनिनहिंकबहुँयोगअसलहिहौं॥
रामश्यामपदवंदिललामा।पुनिकरिहौंसबसखनप्रणामा॥धनिव्रजधामधन्यव्रजधरणी।धनिव्रजतरुधनिव्रजवरवरणी।
दोहा-जवमेंधरिहौंदौरिकै, यदुपतिपदनिजमाथ । तबविशेषिप्रभुशीशमम, करिहैंपंकजहाथ ॥
जोकरकालभुजँगभयमेटत । शरणागतभवरुजलघुसेटत ॥ जोकरपूजिइंद्रसुखछायो।यहत्रिलोककोएश्वजपायो ॥
त्रिभुवनदैकेजेहिंकरमाँहीं।वलिनिजवशकीन्ह्योतिनकाँहीं१६जोकरव्रजवालनमधिरासा।परसतहींविहारश्रमनासा ॥
सरसिजसौरभहैजेहिंकरकी । हरतव्यथाव्रजनारिननरकी॥सोकरताकिदयादृगकोरे ।धरिहैंनाथमाथमहँमोरे॥१७॥
यदपिकंसकोपठयोजातो । वारहिंबारमनहिंपछितातो ॥ तद्यपिवैरबुद्धिमोहिंमाँहीं । करिहैंकबहुँदयानिधिनाँहीं ॥
वैतौसबघटघटकेवासी । जानहिँजियकीजगतप्रकासी ॥ १८ ॥
दोहा-पगपरिहैहौंठाढमें, जबसमीपकरजोरि । तबमोतनतकिहैंतुरत, करिकेकृपानथोरि ॥

बहतिनैनआनँदजलधारा । रहिनगयोतनुतनकसँभारा ॥ प्रगटीपुलकावलीशरीरा । गद्गदगरहिगयोनधीरा ॥
कछिनसकतिमुखतेकछुबानी।प्रेमदशाकिमिजाइवखानी॥३५॥लखिअक्रूरहिंतहँयदुराई।लियोदौरिद्रुततताहिंउठाई॥
उभैभुजाभरिमिलिभगवाना । प्रेमविकलह्वैगयेसमाना ॥३६॥ रामहुँदौरिद्रुतैअक्रूरे । मिलतभयेअतिआनँदपूरे ॥
पुनिअक्रूरकरकोकरतेगहि । लैगेभवनलेवाइचलोकहिं ॥३७॥ अक्रूरहिंसादरदोउभाई । दियपरयंककनककेठाई॥

दोहा-रामश्यामनिजहाथसों, पुनिअक्रूरकेपाय । धोवतभेअतिप्रीतिसों, सुरभिसलिलढरकाय ॥

पुनिमधुपर्कदियोकरमाँहीं॥३८॥दियोधेनुदरशायतहाँहीं॥पुनिअक्रूरकहँथकेविचारी।चाँपनलगेचरणगिरिधारी ॥
सादरपुनिप्रभुवचनउचारे । रहेकुशलतुमककाहमारे।प्रेममगनतेहितनुसुधिनाहीं । बोलतनहिंचितवतहरिकाँहीं॥
पुनिप्रभुकहीगिरासुखपागी । तुमकोककाक्षुधाअतिलागी॥तातेभोजनकरहुविशेषी । सकलभाँतिअपनोगृहलेषी॥
असकहिभोजनविविधप्रकारा । लायेनिजकरनंदकुमारा॥सादरदियअक्रूरजेमाई।बहुविधिव्यंजननामबताई ॥३९॥

दोहा-सोजबभोजनकेचुके, तबअचमनकरवाय । बैठायोपरयंकमें, अतिशयआनँदपाय ॥

तबबलिरामधरमकेज्ञाता । लैबीरादीन्ह्योंकहितात॥सुमनमालपुनिदियपहिराई।पुनिदीन्ह्योंबहुअतरलगाई ॥४०॥
इतनेबीचनंदतहँआये । अक्रूरहिंमिलिअतिसुखपाये ॥ पूछिभापिउतइतकुशलाई । बोलतभेआनँदअतिपाई ॥
अतिनिरदयहैकंसमहीपा।केहिंविधिजीवहुतासुसमीपा॥जैसेअजासमीपकसाई।सोइअचरजजेहिंदिनबचिजाई॥४१॥
जोनिजभगिनीसुतनसँहारयो । यदपिदेवकीदीनपुकारयो॥निकहुदयानतेहिंचितआई।किमिवरणैंखलकीखलताई ॥
ताकेपुरतुमकरहुनिवासा । पूँछहिंकौनतुम्हारसुपासा ॥ ४२ ॥

दोहा-यहिविधिभाष्योनंदजब, तबअक्रूरनृपराय । मारगकोश्रमदूरकिय, अतिशयआनँदपाय ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे अष्टत्रिंशस्तरंगः ॥ ३८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-बैठेमोदितपलँगमें, लहिहरिकृतसतकार । पूरयोमार्गमनोरथै, सकलश्वफलककुमार ॥ १ ॥

भेप्रसन्नयदुपतिजेहिंपाँहीं । तेहिंपुनिकछुदुरलभहैनाहीं॥पैनृपजेअनन्यहरिदासा । कबहूँकरहिंनकौनिहुँआसा॥२॥
पुनिहरिगवँनेकरनवियारी । जहँबैठीयशुमतिमहतारी ॥ राख्योव्यंजनजौनबनाई । सेदीन्ह्योंदोउसुतनखवाई ॥
करिब्यारूहरिराममहीपा । बैठेआयअक्रूरसमीपा ॥ पुनिइकांतयदुकुलकुशलाता । पूँछीकंसमनोरथबाता॥ ३ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

भलेअक्रूरकाकातुमआये । हमकोसबकोआनँदछाये॥यदुकुलकीभापहुकुशलाईहैसबसुखीसुहृदअरुभाई ॥ ४ ॥

दोहा-पैतहँकौनहिंकुशलकछु, जहँअधीशहैकंस । रोगरूपमातुलअतुल, ममकुलकोसुखध्वंस ॥ ५ ॥

हायमातुपितुहेतुहमारे । परेमधुपुरीकैदअगारे ॥ परीजँजीरैंममहितचरणा । ममहितभयोसुतनकरमरणा ॥
यातेअधिकनमोहिंकलेसू । परेमातुपितुकैदनिवेसू ॥ ६ ॥ पैभलभौयहदर्शतुम्हारा । रह्योमनोरथयहीहमारा ॥
आवनकोकारणकहुताता । पठयोकंसकिधौंदुखदाता ॥ ७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिंविधिजबपूछ्योभगवाना । करनलग्योअक्रूरबखाना॥बाँध्योंवैरयदुनसोंकंसा । करनचहतवसुदेवविध्वंसा॥८॥
नारदकंसनिकटमहँजाई । दियोसकलविधिभेदबताई ॥

दोहा-रच्योधनुपमखमधुपुरी, आपबोलावनहेतु । पठयोइतैबनायमोहिं, बाँधेछलकोनेतु ॥ ९ ॥

…निगअक्रूरपचनयहिभाँती। रामश्यामगआशुदितेहिराती॥ गिहँसतजायनंदपहँगाये। कंसगजपितुतुमहिंबोलाये॥ …तिधनुपमखमधुरामाँहीं। हमहुँचलचतुपसंगतदोहीं॥ …कसनिदेशसुनतब्रजराजू। जान्योअगशिगवँनकरकाजू॥ सबगोपनकहँतुरतबोलाई। दियशासनयहिभाँतिसुनाई॥ …दहीदूधमाखनअरुमेवा। जोरहुसबकरननृपसेवा॥ औरहुभेटदेनर्पतिसाजू। सबसमटिलहुनिशिआजू॥

दोहा–साजहुसिगरेशकटतुम, धेनलेहुबोलाइ। अबविलंबनहिंकीजिये, ममनिदेशअसपाय॥ ११॥

मधुरेअवशिकालिहमजैहैं। बहुविधिभेंटभूपकहँदैहैं॥ धनुपयज्ञकरचाबतराजा। जाहिमनुजसबजोरिसमाजा॥ लखबहमहुँमखधनुपतमासा। कछुदिनबसिआउबनिजवासा॥ यहिविधिशासनसबहिंसुनाई। दूतनगररक्षकपठनाई॥ सिगरेब्रजमहँदियगोहराई। मधुराकालिहगमनब्रजराई॥ भईखबरिसिगरेब्रजमाँहीं। हरिबलरामलेबावनकाँहीं॥ यहअक्रूरगोकुलमहँआयो। दोउकहँचहतकालिहलैजायो॥ १२ रामश्यामसुनिगवँनप्रभाता। गोपिनलग्योवज्रकसपाता॥ जेजसरहींतहाँब्रजनारी। तेतसतहँतनुसुरतिविसारी॥

दोहा–जौनअंगजैसेरहे, करतहुतींजेकाज। तौनअंगतैसेरहे, ह्वैगोसकलअकाज॥ १३॥

कोईनैननर्नीचेकरिप्यारी। यकटकअवनीरहींनिहारी॥ कोइठगीठठकीसीठाढ़ी। बैठीकोऊविरहअतिबाढी॥ कोइउआननचंदसमाना। हरिपयानसुनिभयोमलाना॥ लागीकोउउरविरहदवारी। क्षणमहँचहतदेहजनुजारी॥ कोहुकेभयेअंगसबपीले॥ कोहुकेतनुप्रसेदकीधारा। बहनलगीतववारहिंवारा॥ कोहुकेभयेवसनबहुढीले। कोहुकेभयेअंगसबपीले॥ कोहुकेतनुप्रसेदकीधारा। … भूलिगयोनिजतनुकरभाना कोहुकीछूटिगईशिरवेणी। कोहुकीखसीवलयकीश्रेणी॥ १४ कोउसखिकरनलगींहरिध्याना। ब्रजवनितनब्रजराजबिन, दूसरदीसतनाँहिं॥ १५॥

दोहा–सुरपुरनरपुरनागपुर, अरुवैकुंठहुमाँहिं। ब्रजवनितनब्रजराजबिन, दूसरदीसतनाँहिं॥ १५॥

कोउहरिकोसुमिरहिंअनुरागा। जेहिंलखिलोगकहैंधनिभागा॥ कोउतिरछीताकतिहरिकेरी। जोहियलागिकढतिनहिंफेरी॥ कोऊमंदहँसनिसुनिकरिकै। विलपहिंवारवारदुखभरिकै॥ सुमिरिसुमिरिसोइसखीसयानी। सरसैंसपदिशोककीसानी॥ सुमिरिसुमिरिसखिहोतिविहाला। वरणिनजातिदशातेहिकाला॥ कोउनँदनंदनकीमृदुवानी। वशकरणीतरुनीमुददानी॥ कोउसुधिकरिवंशीकीसुधरनि॥ कोउसुमिरैंगजगतिगिरिधरकी। जेहिंलखिविसरिजातिसुधिघरकी॥ कोउकुंजनकुंजनकीविहरनि। अतिशयविरहविहाल॥

दोहा–कोउविहँसनिनँदनंदकी, सुधिकरिकरिब्रजवाल। अंगशिथिलह्वैजातसब, अतिशयविरहविहाल॥

कोउसखिनँदनंदनकीहाँसी। जेहिंलखिपरहिंप्रेमकीफाँसी॥ सोसुधिकरतदुखितअतिहोहीं। ब्रजनारीमाधवकीमोहीं॥ हरिकोसुखदउदारविहारा। सोसुधिकरिअसकरहिंविचारा॥ अबकेहिंलखिब्रजमेंहमरहिहैं। काकोसुखदकमलकरगहिहैं॥ कोविरहानलतापवुझाई। कौनविपिनिवाँसुरीवजाई॥ यहिविधिसबब्रजमेंब्रजनारी। रमनगमनसुनिभईंदुखारी॥ १७॥ इकएकनकोकहहिंबोलाई। सुनीसखीकहँजातकन्हाई॥ सोकहँतैंनहिंजानातिआली। जातकालिहमथुरैंबनमाली॥

दोहा–यहिविधिइकएकनकहहिं, कहतदेहिंसखिरोय। गोकुलमेंघरघरसखी, परभरमच्योबड़ोय॥

इकएकनकोवेगिबोलाई। धायधायगोपींजुरिआई॥ बैठिगईंसबजोरिजमाती। कहहिंहोहिविधिकीयहराती॥ गोपिनतनुमनहरिमहँलाग्यो। मूरतिवंतप्रेमजनुजाग्यो॥ कृष्णविरहदुखबढ्योअपारा। बहीसरितआँसुनकीधारा॥ सूखेमुखकाँपहिंसबगाता। जिमिमारुतलहिकदलीपाता॥ गिरीमुंदरिनरतनसँवारी। करिलीन्ह्योंकंकणकरप्यारी॥ हायहायनिकसतमुखमाँहीं। सुनतधीरछूटतकेहींनाँहीं॥ पुनिजसतसकैधीरजधारी। सुमिरतमथुरागमनमुरारी॥

दोहा–गदगदगरगोपीसबै, इकएकनकहँहेरि। कहनलगींमंजुलगिरा, विधिकरतूतिनिवेरि॥ १८॥

अथ गोपीविलाप।

गोप्य ऊचुः।

… । कोहूकोनहिंकबहुँफलोतैं॥ क्योंदीन्ह्योंजगमेंजनमाई। पुनिकाहेतैंरचीमिताई॥ … । कसनहिंहोतमीचकोदाता … विधा … । तौकसरच्योवियोगअनारी॥ जोवियोगतैंरचेविधाता।

प्रथमलगायदुरंतसनेहू । अबकसपुनिवियोगविधिदेहू ॥ कछुनकामनापूरणपाई । बीचहिंहरिसोंकरतजुदाई ॥
तातेतुवकरतबकरतारा । बालखेलसमपरतनिहारा ॥ भयोयदपिबूढोविधिराई । पैनगईतेरीलरिकाई ॥
दोहा-कौनवैरतोहिंपावनो, व्रजसोंरह्योविरंच । जोव्रजराजविछोहमें, छोहनआवतरंच ॥ १९ ॥
जामुखमेंअलकैंघुँघुरारी । इलकनिहेरातिहीहियहारी ॥ मदनआरसीसारिसकपोला । तामेंकुंडललोलअमोला ॥
अतिशयसुभगनासिकाराजै । जेहिंलखिकीरतुंडमदभाजै ॥ वामुखकीमुसक्यानिमिठाई। जानतसोइजोनेकहुँपाई॥
धोखेहुजोहरिहँसनिविलोकी । होतमुदितसोकैसहुशोकी॥ भ्रुकुटीअहिशावकसीसोहैं। काकोनिरखतनहिंमनमोहैं॥
ऐसोसुंदरमुखलालनको । जीवनप्रदसबव्रजबालनको ॥ सोतैंप्रथमहिंहमहिंदेखाई। रेविधिअबकसदेतदुराई ॥
दोहा-अबहूँबूझअबूझविधि, तोहिनकछुदरशात । वृथाव्यथादेतोहमहिं, वनतिनतोसोंबात ॥ २० ॥
रेकरतारक्रूरदुखदाई । निजअक्रूरलियनामधराई ॥ धरिकैयदुवंशीकररूपा । भेज्योकहतकंसमोहिंभूपा ॥
आयोकृष्णलेवावनहेतू । बाँध्योव्रजवधूनवधनेतू ॥ रच्योनैनहमरेतनुमाँहीं । जिननैननितेसुखितइहाँहीं ॥
रचीतोरिसबसुंदरताई । औरहुजोनाहिंबनैबनाई ॥ सोसबनंदकुँवरइकअंगा । हमसखियाँदेखीयकसंगा ॥
सोदृगदेअबकसहरिलेतो । लेतोकोउनवस्तुजोदेतो ॥ बिनदेखेयहनंददुलारे । रहिहेंकैसेनैनहमारे ॥
दोहा-चतुराननसिरजनचतुर, पुनितेरेचकआठ । अचरजयहदीसतनहीं, तौकहँपाठकुपाठ ॥ २१ ॥
कोउकहनहिंविधिकहँकछुदोषू ।कारोकान्हकपटकरकोपू॥याकेनाहिंप्रीतिकरलेशू।कोउनकरतकछुयहिउपदेशू ॥
यहव्रजराजकाजव्रजनारी । हमदियगृहपरिवारबिसारी ॥ भईजाइचरणनकीदासी । अधरसुधापीवनकीप्यासी ॥
तिनकेतनुनहिंतनकनिहारत । बरबशमथुरागमनविचारत ॥ जोव्रजतेनव्रजैव्रजराई । काअक्रूरबरबशलैजाई ॥
पैकपटीअसमनहिंविचारी । मिलिहैंमथुरानवनवनारी ॥ तातेइतसनेहसबतोरी । जातचलोकीन्हेंबरजोरी ॥
दोहा-नँदनंदननहिंनेहकी, जानतनेकहुँरीति । सबसोंराखतहैकपट, मुखदेखेकीप्रीति ॥ २२ ॥
सजनीयहरजनीपरभाता । ह्वैहैपुरनारिनसुखदाता ॥ कीन्हेंरहींमनोरथजोरी । ह्वैहैसुफलकालिहअबसोई ॥
मोहनकोमुखकमलसोहावन।आसवहँसनिभरोसुखछावन॥जामुखमेंदृगकोरअलीरी।करहिंकतलजेहिकढहिंगलीरी।
सोमुखमथुराप्रविशतमाँहीं।धायधायपथजहाँतहाँहीं॥कैतींचाढिचढिऊँचअटारी।निरखहिंगीमोदितपुरनारी ॥२३॥
कहिहैंऐसहुँबैनहुँजीके । मोहनकहोरहेतुमनीके ॥
दोहा-आयेमथुरामेंभले, पूरकरीमनआस । वहुतदिवसलगिनाथतुम। कीन्ह्योविपिनिविलास ॥
तिनकीसुनतमाधुरीबानी । यहचंचलचितअतिसुखमानी ॥ तिनकेविवशअवशिह्वैजैहैं । यद्यपिनंदयमासँगरैहैं ॥
लोभिललापुरनारिनमाँहीं । रहिजैहैउरधीरजनाँहीं ॥ कबहूँनहिंसुधिकरीहमारी । नाहिंऐहैंव्रजमेंबनवारी ॥
निपटनागरीनगरवासिनी।कामिनकेहियकीहुलासिनी॥विहँसनिलाजसहिततिनकेरी।तिनकीनचनिभ्रुकुटिकीहेरी॥
हमगँवारिनीगोपिनकाँहीं । कबहूँमनहिंआनिहैंनाँहीं ॥ लखिलखिमणिनजटितबहुगेहा।तजिहैंव्रजकुंजनकरनेहा ॥
दोहा-वृंदाविपिनिनिकुंजसुख, गमनतअवेविहाय ॥ पैपुनिमोहनकोअवशि, बीतिहिंदिनपछिताय ॥ २४ ॥
अंधकभोजदशारहवंशी । औरहुयदुकुलकेअरिध्वंसी ॥ येसबनैननकोफलपैहैं । बहुतदिननकीललकमिटैहैं ॥
कमलाकंतसकलगुणआगर । नँदनंदनसुंदरनटनागर ॥ जबजैहैंजेहिंमारगमाँहीं । तबपुरजनसबतेहिपथपाँहीं ॥
दौरिदौरिदेखनकोऐहैं । परकोकाजसकलविसरैहैं ॥ देखिदेखिमनमोहनरूपा । ह्वैजैहैंमानसकेभूपा ॥
कोअसहैत्रिभुवनमेंआली । नाहिंदेखनदौरेवनमाली ॥ कोयदजगमेंअसनारी । जोनछकेनँदनंदनिहारी ॥
दोहा-मुसमीठीबतियाँबसें, रूपमदनमदचोर । कारोभीतरबाहिरेहु, जान्योनंदकिशोर ॥ २५ ॥
कोउकहजोमधुरातेआयो । दयाकरबयहिकोउनासिसायो ॥ कहवावतदयहअक्रूरा । देसाँचोजगमेंअतिक्रूरा ॥
लेतपापव्रजभायमहाना । हरनकरतव्रजनारिनप्राना ॥ व्रजनारिनकोप्राणपियारा । एकअनोखोनंदकुमारा ॥

हाययशोमतिकेपियलालन । हासुकुमारसुखदव्रजआलन ॥ हामंजुलमुरलीमुखधारी । हायसुरासविलासविहारी ॥
दोहा-हाव्रजजीवनप्राणपति, हानाशकव्रजशोक । हायहायव्रजराजवर, तुमबिनसूनत्रिलोक ॥ ३१ ॥
यहिविधिविलपतव्रजवधुन, भयोभूपभिनसार । प्राचीपतिप्राचीदिशा, कियोप्रकाशपसार ॥
तवअक्रूरकालिंदिनहाई । संध्यावंदनकरिअतुराई॥नंदभवनपुनिआशुहिआयो । चलनहेतुस्यंदनसजवायो ॥३२॥
गोपहुनिजनिजसहितसमाजे । भरिभरिसाजनशकटनसाजे ॥ गमनमधुपुरीभेरउमंगा । चलनहेतुअक्रूरहिंसंगा ॥
नंदहुँअपनोशकटसजाई । दहीदूधमाखनभरवाई ॥ पुनिअक्रूरसोंकहअससोऊ । लेहुबोलाइलाड़िलेदोऊ ॥
द्रुतअक्रूरहरिबलहिंबोलाई । लियोआपनेरथहिंचढ़ाई ॥ पुनिनंदादिकसोंअसटेरे । हमपरखिहैंमधुपुरीनेरे ॥
दोहा-असकहिऊँचकरीतुरत, गहिवाजिनकीवाग । घोरशोरहरिरथचल्यो, व्रजसोंबिलमनलाग ॥ ३३ ॥
लखिव्रजवनगवँनीव्रजनारी।तेहिंक्षणकुलिकुलकानिबिसारी॥धाईकहतहायघनश्यामा। कहाँजाततजिकैव्रजधाम॥
बालपनेकीप्रीतिकन्हाई । तोरिचलेतिनुकाकीनाई ॥ रह्योनउचिततुमहिंअसमोहन । तजिव्रजचलेक्रूरकेगोहन ॥
कहतहतेहमसेंहिप्यारे । तुमसमानकोउप्रियनहमारे॥भूलिगईरतियाँकीबतियाँ। सोइसुधिकरतफटातिअबछातियाँ॥
विरहवारिनिधिकतव्रजओरत।लालनलगातिलताकततोरत ॥ होतदयानहिंकतहियतेरे । रेकपटीकान्हरनंदकेरे ॥
दोहा-तैंतोमथुराकोचल्यो, नागरनंदकुमार । दिहेजातकाबापुरिन, व्रजवनितनआधार ॥
यहिविधिकहतविविधविधिबानी।चलीजाहिंरथमेंलपटानी॥गिरहिंपरहिंपुनिउठहिंभामिनी।छूटीवेणीखुलीदामिनी॥
रजरंजितह्वैगेसबअंगा । भोकरदममहिआशुप्रसंगा ॥ हायहायमँच्योचहुँओरा । दुखितयुवाजरठहुअरुछोरा ॥
कोहुकेतनुनहिंतनकसँम्हारा । देखहिंहगभरिनंदकुमारा॥व्रजनारिनकोदेखतशोका।गयोशोकमढितीनिहुँलोका ॥
हरिणीहरिणहेरिहरिरोवैं । रहेअचलतरुहरिमनुजोवैं ॥ बोलिरहींवनकुंजचिरैयाँ । मनहुँकहहिंकहँजातकन्हैयाँ ॥
दोहा-सुनिव्रजवधुनिविलापतहँ, जाकोमिलतनपार । विरहव्यथितह्वैथम्हिरही, तेहिंथलयमुनहुँधार ॥
जिनकेतनुधनप्राणते, अतिप्रियनंदकुमार । तेव्रजनारिनकोविरह, कोकहिपावतपार ॥ ३४ ॥
व्रजवनितानिविलोकिविनाशा।जानिनकैसहुँजीवनआशा।।मुरिमुकुंदचितयोमुसक्याई।मनुआलिनजियआशजमाई
सुबलआदिसबसखनबुलाई । कह्योकहहुगोपिनसमुझाई ॥ हमऐहैंविशेषिव्रजमाँहीं । यामेंहैकछुसंशयनाँहीं ॥
लगेगोपगोपिनसमुझावन।कान्हरकहतवहुरिव्रजआवन॥३५॥चल्योचपलउतरथहरिकेरो।उड़ीधूरिकछुपरतनहेरो॥
बलोंदेखतरहींपताका । जबलोंसुनतरहींध्वनिचाका ॥ जबलोंदेखिपरीरथधूरी । जबलोंकढिनगयेहरिदूरी
दोहा-तबलोंइकटकनैनसों, निरखिरहींतेहिंकाल । अचलखरींदुखमेंभरीं, चित्रलिखीसीबाल ॥ ३६ ॥
रीदेखिजबधूरिहुनाँहीं । हाकहिसखीगिरींमहिमाँहीं ॥ रह्योएकहरिनामअधारा । जनुजियनिकसतलगेकेवारा ॥
श्यामश्यामेटरतमुखमाँहीं । गोपिनबीतिदिवसनिशिजाँहीं ॥ बैठिबैठिहरिलीलागावें।उठतज्वालजनुकछुजलनावें ॥
आपुसमहँअसभापहिंताता । कहिगेपियआवनकीबाता ॥ ऐहैंकाहिअवशिव्रजमाँहीं।त्यागेतनुमिलिहैंकेहिकाँहीं॥
यदपिदुसहसहिजातिनपीरा।तदपिकृष्णहितधरोंशरीरा।यहिविधिनितनितकरहिंमनोरथ।ऐहैंआजुअवशिहरिचढिरथ।
दोहा-यहिआशाअटकेरहत, तिनकेतनुमेंप्रान । नातोहरिबिछुरननिरखि, तबहींकरतपयान ॥ ३७ ॥
उतेअक्रूरसहितहरिरामा । करिसवेगरथअतिअभिरामा ॥ यमुनाकेतटपहुँचेजाई । पहरएकआयेदिनराई ॥३८॥
रहीतहाँशीतलअमराई । मारुतवहतत्रिविधसुखदाई ॥ तबअक्रूरकह्योमृदुबानी । दोहुँनमुखद्युतिभईमलानी ॥
यमुनामेंमज्जनकरिलीजे।चढिरथचपलफेरिचालिदीजै॥कालिंदीकलिमलविनाशिनी। आशुहिंअतिआनँदप्रकाशिनी
सुनतदानपतिकेअसबैना । रथतेउतरिदोऊभरिचैना ॥ कालिंदीतटकियोपयाना । कियमज्जनहिलिकैभगवाना ॥
दोहा-गयेअक्रूरहुसंगमें, खडेरहेसरितीर । पहिरेवसननवीनपुनि, चलेवीरद्दुबलवीर ॥
पन्नासरिससलिलयमुनाको । अतिशयमीठसुधाकोनाको॥ भरिभरिअंजुलतहँभगवाना।कीन्ह्योंपरमप्रीतिसोंपाना॥

येफेरिहुतोजहँस्यंदन । बलअक्रूरसहितयदुनंदन ॥३९॥ तबअक्रूरकहीयुनिबाता । जोतुमरथचढिबैठहुताता ॥
कछुनहिंइतचपलाई । तौमैंआवहुँयमुननहाई ॥ असकहिदोहुँनयानबैठाई । यमुनातीरआशुहीं...ई ॥
ल्योगहिरदहसहितविधाना॥लग्योदानपतिसुखितनहाँना४० बुडकीदईफेरिजलभीतर।जप्योमंत्रगायत्रीसुखकर॥

दोहा—तहाँरामश्यामाहिंलख्यो, जलभीतरमतिवान । करनलग्योतबमनहिंमन, अससंदेहमहान ॥ ४१ ॥

यदोऊवसुदेवकुमारा । आयेजलमधिकौनप्रकारा ॥ मैंआयोरथमेंबैठाई । आयगयेकरिकैचपलाई ॥
असगुनिजलतेशीशनिकारी।देखेरथपरहरिहलधारी४२तबपुनिलग्योविचारनमनमें।भयोमोहिंकछुभ्रमयहिछनमें ॥
पुनिजलबूडिलखनसोलाग्यो । श्वफलकसुवनमहाभ्रमपाग्यो॥तहँदेख्योयाहिविधिकुरुराई।सोमैंतुमकोदेहुँजनाई४३
सिधचारणकिन्नरगंधर्वा । शीशनवायेदेवहुसर्वा ॥ अस्तुतिकरहिंखड़ेचहुँओरा।तिनकेमध्यप्रकाशअथोरा॥ ४४॥
सहसमौलियुतसहसहुशीशा । लसतकुंडलाकारफणीशा॥

दोहा—नीलवसनतनुअतिलसत, प्रगटतपरमप्रकास । सहसशृंगमेंघनमढो, मनुउतंगकैलास॥ ४५ ॥

ताकेभोगमध्यछविधामा।लसतपुरुषसुंदरघनश्यामा॥पीतांबरसोहततनुमाँहीं।दृगछविलखिसरसिजसकुचाँहीं४६॥
चारुचारिभुजलसैंविशाला।चारुप्रसन्नवदनमहिपाला॥चारुहँसनिचितवनिअतिचारू।चारुभ्रुकुटिफेरनसुखसारू ॥
चारुश्रवणअरुचारुकपोला।चारुलसतकुंडलअतिलोला॥अरुणअधरचिबुकहुअतिचारू।छविहरिकंठकंबुकृतमारू
वृषभकंधउरआयतअमला।जामेंवासकरतनितकमला॥त्रिवलीवलितनाभिगंभीरा।चलदलसुदलउदरमतिधीरा४८
कटिसूक्षमानितंबअतिपीना । ऊरूयुगलपरमछविमीना ॥

दोहा—युगुलजानुअतिचारुहै, युगुलजंघअतिचारु ॥४९॥ तुंगगुलफनखज्योतिवर, परपंकजसुकुमारु ॥५०॥

मणिमंडितशिरमुकुटविशाला । सोहतउरसुंदरवनमाला ॥ भुजअंगदकरकटकविभासी॥कटिमेंचामीकरचौरासी ॥
जातरूपकोलसतजनेऊ।पगनूपुरशोभितअतितेऊ ॥५१॥ पद्मचक्रकरगदासुहावन।चारिहुँकरमेंअतिछविछावन॥
वक्षलसतश्रीवत्सविभासी।कौस्तुभमणिसोहतिछविरासी॥पार्षदनंदसुनंदहुआदिक।औरहुखड़ेसुखितसनकादिक॥
ब्रह्मसुरेंद्ररुद्रदिगपाला । नवौंप्रजापतिबुद्धिविशाला ५३ नारदअरुवसुअरुप्रहलादा।बहुभागवतसहितअह्लादा ॥
पृथकपृथकनिजवचननतेरे । प्रभुकीअस्तुतिकरहिंघनेरे ॥ ५४॥

दोहा—कांतिकीर्तिश्रीपुष्टिअरु, ऊर्जाइलागिरादि । येशक्तिनतेसहितप्रभु, सोहतअलखअनादि ॥

वियाऔरअवियादोई । अरुमायाजगमोहतिजोई ॥ मूर्तिवंतठाढींप्रभुपासा । हरिहिंहेरिहियलहहिंहुलासा ॥५५॥
ऐसोलखिवैकुंठहरिधामा । तिमिश्रीपतिसुंदरघनश्यामा ॥ परमप्रसन्नभयोअक्रूरा । परमप्रेमसोंहियभोपूरा ॥
भयेसकलरोमातनुठाढे।युगुलनैनआनँदजलबाढे॥५६॥गद्गदगरअतिशिथिलशरीरा । पुनिधरिकैधीरजमतिधीरा ॥
कियोधरणिधरिशीशप्रणामा । सावधानह्वैउटिमतिधामा॥जोहतयुगुलजलजकरजोरी। मंदमंदकहिगिराअथोरी ॥

दोहा—लग्योकरनअस्तुतिविमल, हरिकीआनँदछाय । व्रजरजलोटनकोतुरत, गोअक्रूरफलपाइ ॥ ५७ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे नवत्रिंशस्तरंगः ॥ ३९ ॥

अक्रूर उवाच ।

छंदहरिगीतिका ।

जयपरमपूरुषसकलआदिअनादिआनँदधामहे । जयअखिलकारणहेतुनारायणकरौंपरनामहे ॥
जोहिनाभिपंकजतेंटियोकरतारहूँओनारहे । जेहिवरोलैशक्तिविरच्योसकलयहसंसारहे ॥ १ ॥

भूसलिलपावकपवननभअहंकारतत्त्वमहानहूँ। मायामनहुँइद्रीपुरुपइंद्रीविपैगिर्वानहूँ ॥
येअखिलकारणजगतकेउपजेतुम्हारेअंगते ॥ २ ॥ जानतनतिहरोरूपसवजडअहेयाहिप्रसंगते ॥
मायागुणनतेवँध्योब्रह्मागुणनतुवपररूपको। नहिंजानतोतपठानतोउरआनतोअनरूपको ॥ ३ ॥
योगीतुम्हैंवहुयोगकरिध्यावतसमाधिलगायकै। अध्यात्मऔअधिभूतऔअधिदैवसाक्षीभायकै ॥
वहुसांख्यवादीजीवअंतरयामितुमकोजानिकै। ध्यावतरहतपावतसकलफलपरमश्रमतनठानिकै ॥ ४ ॥
मीमांसिकौतुमकोभजतपढिवेदत्रीनिहुँनेमसों। करियज्ञवहुतुवरूपदेवनभागदैअतिप्रेमसों ॥ ५ ॥
ज्ञानीअरपिसवकर्मतुमकोशांतह्वैथिरचित्तहीं। वहुज्ञानमखकोठानिज्ञानसरूपभजतेनित्तहीं ॥ ६ ॥
तुमकोभजतश्रीवैष्णवहुप्रभुपंचरात्रप्रकारते। ह्वैतसचक्रांकितहूअशंकितरहतयहसंसारते ॥
संकर्पणहुँप्रद्युम्नअनिरुध्यवासुदेवहुँचारिमें। नारायणैअंशीगुनततुवऔरहूँअवतारमें ॥ ७ ॥
वहुशैवतुमकोशिवसरूपीशैवमारगतेभजैं। तिनमेंअनेकनभेदकरिकरिवादआपुसमेंगजैं ॥ ८ ॥
औरहुजेऔरनदेवभजतेतेतुमहिंभजतेसही। सवदेवमययदुनाथतुमसुरभिन्नकोउतुमतेनहीं ॥ ९ ॥
जिमिशैलतेसरितानिकसिसागरसमिटिजातीसवै। तैसहिंसकलतिहरोअहैसवसुरनकोआराधवै ॥ १० ॥
प्रभुप्रकृतितिहरीशक्तितातेसतोरजतमहोतहै। तिनतेप्रगटित्रिनविधिप्रगटिविशेपिविश्वउदोतहै ॥ ११ ॥
जयसकलअंतरयामिजगसाक्षीअखंडितज्ञानहौ। गुणकार्यजगउपजतनशततुमएकरूपअमानहौ ॥ १२ ॥
तुववदनपावकपगपुहुमिचखचंदसूरजश्रुतिदिशा। नभनाभिशिरहैस्वर्गसुरसववाहुपलकैदिननिशा ॥
हैंकुक्षिसागरश्वासपवनहुँरोमऔपधितरुलता। शिरकेशघनगिरिअस्थिनखहैंवीजवरपामहिगता॥१३॥१४॥
वहुजीवसंकुलसकलजगहैतुमहिंपुरुपप्रधानमें। जिमिमसकऊमरिमेंवसतजलजीवज्योंसलिलानमें ॥१५॥
जोइजोइकरनवहुचरितधारहुरूपआपुसुहावने। व्यापितभुवनतिहरोसुयशगावतमुदितकविपावने ॥१६॥
जयमीनरूपअनूपप्रलैपयोधिकरनविहारहे। जयहयग्रीवप्रचंडमधुकैटभकरनसंहारहे ॥ १७ ॥
जयरूपकच्छपउदधिमंथनमंदराचलधारने। जैवपुपवृहदवराहदानवदलनधरणिउधारने ॥ १८ ॥
जयअतिउदंडनृसिंहअदभुतरूपजनभयहारिणे। जयसुरनपालनअसुरघालनभक्तलालनकारिणे ॥
जयविदितवामनपुनित्रिविक्रमनापित्रिभुवनकोलये। दैराजत्रिभुवनइंद्रकोवलिद्वारपालकह्वैगये ॥ १९ ॥
जयअमलभृगुकुलकमलदिनकरछुद्रछत्रिनछयकिये। कुरुक्षेत्रशोणितकुंडनवरचिधरणिकश्यपकोदिये ॥
जयरघुकुलोदधिचंद्रदशरथनंदजनकललीशहैं। जेहिंवानतरणिप्रकाशकीनविनाशतनुदशशीशहैं॥ २० ॥
जयदेवकीदुखदलनजयवसुदेवआनँदकंदहे। जयकरनभूमिअदंडकौरवकंसक्रूरनिकंदहे ॥
जयमुसलधरवलभद्रदासनभद्रप्रदरेवतिपते। जयनागपुरकरपणसुसंकर्पणविकर्पणअरिफते ॥
जयमदनवपुप्रद्युम्नशंवरसंवरनसंगरमहा। जयवज्रनाभविनाशिजयकौरवदलनमदद्रुहसहा ॥
जयवाणदुहितारमणशुद्धसरूपश्रीअनिरुद्धहैं। जिनक्रुद्धशरगतियुद्धमहँअवरुद्धशत्रुअवुद्धहैं ॥ २१ ॥
जयवुद्धशुद्धसरूपप्रगटेदैत्यदानवमोहने। जयकृष्णकल्कीरूपम्लेच्छनसरिसक्षत्रिनकोहने ॥ २२ ॥
हममेंहमारोहैसकलयहरावरीमायामहा। सवजगतकोमोहितभ्रमावतिज्ञाननहिंकोडुकेरहा ॥ २३ ॥
हममेंहमारअगारदारकुमारअरुपरिवारहूँ। मेंहूँभ्रमहुँयहिभ्रमपरोसतिमानिविनहिंविचारहूँ ॥ २४ ॥
नहिंकर्मफलहैनित्यतिनकोनित्यगुनिविपरीतिसों। अँधियारयहसंसारकूपहिंपरोतुवविनप्रीतिसों ॥ २५ ॥
जिमिअवुधतृणछादितसलिलतजिचलतमृगतृष्णाजलै। तिमिनेहतनुधनठानितुमसोविमुखमूरखमेंभलै॥२६॥
मतिमंदमेंमनासिजमथितमनचपलरोकिनसकतहौं ॥ २७॥ तातेतुम्हारेचरणकीअववेगिशरणहिंतकतहौं ॥
तुवचरणपंकजदुष्टदुरलभमोहिंजोअवमिलिगयो। सोऔरकारणकछुकनाहिंगुनिदीनमोहिंनिजकरिलयो ॥

जबभोगिभवकछुभाग्यभयतबतुमकृपाप्रभुकरतहौ।तबसंतसेवनलगतमतितबमोक्षमुदतुमभरतहौ।॥२८॥
जपुज्ञानवपुसबज्ञानकारणकालरूपप्रधानहौ। परपुरुप-॥२९॥-जयवसुदेवनंदनसर्वभूतनिदानहौ॥
जयहृषीकेशप्रपन्नरक्षककालभक्षकनामहै। मैंहौंतिहारीशरणयदुपतिवारवारप्रणामहै॥ ३०॥
इति श्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे चत्वारिंशत्तमस्तरंगः॥ ४०॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिअस्तुतिजबकरी, सोअक्रूरमतिवान। तबअंतरहिंतकारिलियो, निजसरूपभगवान॥ १॥
निरखिकृष्णवपुअंतरधाना।जलतेनिकसिअक्रूरसुजाना॥नित्यकर्मकरितुरततहाँहीं।विस्मितगोबलकृष्णजहाँहीं २॥
तबबोलेयदुपतिमुसकाते।कहँकौतुकतुमलखेनहाते।धौंजलधौंमहिकिधौंअकाशा।जानिपरतकछुलखेतमाशा॥३॥
तबअक्रूरदोउकरजोरी। बोलेबहुविधिहरिहिंनिहोरी॥

अक्रूर उवाच।

भूमहँजलमहँगगनहुँपाँहीं। जेतनेकौतुकहैंजगमाँहीं॥ विश्वरूपतुममेंसबतेते। तुमहिंदेखिदेखिहैअबकेते॥ ४॥
अबनमोहिंलखिबेकोबाकी। तवपदप्रीतिरहैमतिछाकी॥ ५॥
दोहा-चलहुनाथअबमधुपुरी, मारगहोतबिलम्ब। पुरवासिनदीजेदरश, यदुकुलकेअवलम्ब॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिचढिरथवाजिनहाँकी।लैगमन्योहरिसुखबलछाकी॥६॥थलथलसबग्रामनकेवासी।आयेहरिबलदरशनआसी
निरखियुगुलवसुदेवकुमारे।पुनिनहिंओरनओरनिहारे॥७॥डेढपहरजबदिनरहिगयऊ।मथुराढिगपहुँचतरथभयऊ॥
इनकोबिलँबभईयमुनामें। नंदादिकहुआइमथुरामें॥ ठाढेरहेपहुँचिअमराई। हरिबलकोपारिखेसुखछाई॥
हरिअक्रूरबलआयेजबहीं। डेराकरतभयेतहँतबहीं॥८॥तबकरसोंकरगहियदुराई। कहअक्रूरसोंमृदुमुसकाई॥९॥
दोहा-नगरडगरगहिकैकका, लैस्यंदनतुमजाहु॥ हमरेहैंइतआपपुनि, लखिहैंनगरउछाहु॥ १०॥
सुनिअक्रूरकृष्णकीबानी। कीन्हीविनयप्रेमरससानी॥

अक्रूर उवाच।

तुमबिनहमजैहैंनाहिंनगरी। तुमबिनसिगरीगतिममबिगरी॥ अहैंभक्तहमनाथतिहारे। तुमकोभक्तअहैंअतिप्यारे॥
तजहुनाथमोकोंअबनाँहीं। तुमहिंछोंडिअबहमकहँजाँहीं॥ ११ लैअग्रजअरुसबगोपालन।नंदसहितयशुदाकेलालन॥
मेरेभवनचलहुयदुराई। देहुपूतपरिवारबनाई॥ १२॥ टूटिपुरानीमोरिमडैया। तुमबिनकोनपुनीतकरैया॥
डारितहाँपदपंकजधूरी। कीजेअबाशिआशममपूरी॥
दोहा-हमगृहमेधीमूढअति, परमअपावनकर्म। बिपेनिरतनितहौंरहत, लहेंकौनबिधिशर्म॥
पैभरोसनपतोंहिपदोई।तरिहौंआपचरणजलधोई।सींचतवपदसलिलअदोपित।होंहिंपितरपावकसुरतोपित॥१३॥
तुवपदपंकजपोपमुरारी। बलिलीन्हीगतिसबकलसुधारी॥भयोजगतमेंअतियशकारी। पायोविभोइंद्रतेभारी॥१४॥
[illegible]। कियोपुनीतत्रिलोकहुसोई॥ जाकोपरसतसगरकुमारा। मुक्तभयेद्रुतसाठिहजारा॥
जाकोईशमुण्डशिरधारे। निजपुनीतकोहेतुविचारे॥ सोतुवपदजलमेंनिजगेहू। आनुसींचिहौंसहितसनेहू॥१५॥
दोहा-[illegible]सुपक्ष, पाँवरहोतपुनीत। यदुपनिजगपनिदेवपति, बंदौंतुम्हैंविनीत॥ १६॥
सुनिअक्रूरकेवचनसुहाये। बोलेप्रभुअतिआनँदपाये॥

श्रीभगवानुवाच।

हमआरजयुतधामतिहारे। अवशिआइहैंविनहिंविचारे॥ यदुवंशिनकोरिपुहनिकंसै। देहौंसुहृदनमोदअसंसै॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिजबैवचनहरिकहेऊ। तबअक्रूरअतिशयदुखलहेऊ॥ कह्योनकछुमुखरह्योविलोकी। नगरडगरडगरचोअतिशोकी।
प्रथमहिंगमन्योकंसअगारा। भोजराजकहँजायजोहारा॥ मंदमंदअसवचनसुनाये। रामकृष्णयुतनंदसिधाये॥
डेराहैपुरकीअमराई। दूतपठैनृपलैहुदखाई॥

दोहा-यहिविधिभाषिश्वफल्कसुत, गोनिजसदनसिधारि। गुन्योकंसपूरणभई, मनअभिलाषहमारि॥१८॥

सोरठा-उतैरामअरुश्याम, पहरदिवसबाकीरहे। देखननगरललाम, सखनसहितगमनतभये॥ १९॥

छंदत्रिभंगी-जहँफटिकप्रकारातुंगदुवाराहेमकेंवाराराजिरहे। छोटेहुदरवाजेथलथलभ्राजेतोरणछाजेद्युतिउमहे॥
परिखागंभीरापूरणनीरायुतभटभीराशस्त्रगहे। वाटिकाललामाबहुआरामाउपवनरामाचित्तचहे॥ २०॥
चामीकरचारूबनीवजारूधनिकअगारूअतिऊँचे। बहुवणिकदुकानैंतनीवितानैंदेवमकानैंनपहुँचे॥
बहुरतनसमाजैंछज्जाछाजैंसभादराजैंमणिनजडी॥ २१॥ पारावतपोखेमंजुझरोखेमोरअनोखेध्वनिउमडी॥
सुरभितजलसींचीऊँचननीचींअँतरउलीचींपुरराहैं। अंगनहुँरसालाफूलनमालाबँधीविशालागृहमाहैं॥
तंदुलअरुलाजेमंगलकाजेथलथलसाजेशोभभरे॥ २२॥ दधिचंदनडारेकुंभकतारेसुमनअपारेद्वारधरे॥
दीपनकीअवलीसोहतिअमलीनहिंकहुँविगलीगलिनगली। बहुपल्लवरम्भातिनकेखम्भामोदअरम्भाभाँतिभली॥
बहुखम्भसुपारीनवफलधारीपटजरतारीपरभाके। बहुलसतपताकेअमितकिताकेछैरविचाकेनभनाके॥ २३॥

दोहा-यहिविधिनिरखतनगरतहँ, नागरनंदकिशोर। मंदमंदगमनतमगै, युतरोहिणीकिशोर॥
मच्योमहीपतिमधुपुरी, पौरपौरयहशोर। व्रजतेआयेआजुयुग, सुंदरनवलकिशोर॥

कवित्त-खोरिखोरिखुशिआलीखलककीआयपरी, माँचिरह्योखरभरखबरकेपावते।
खेलतीजेखेलनखुआरकरिखेलनको, खोलिखिरकीनखड़ीखुशीकेखरावते॥
रघुराजखासीसौखवारीआमखासनतें, खिजमितखामिद्खराबकेउरावते।
खुलिगेखजानेखेरखूबकैविचारिनारि, धाईनिजसुतनखेलावतेखवावते॥ २४॥
कोईसारीघाँघरेकीघाँघरोकैसारीकोई, कोईहारकींकिणींकिंकिणीकोहारहै।
कोईएककरनकरनत्योंचरनहूँमें, कुंडलऔकंकणऔनूपुरसिंगारहै॥
परख्योनकोईएकएकनकोरघुराज, कीन्हीनहिंकोईएकएकनपुकारहै।
वाममधुरामेंचढीऊँचेनअटामेंयहगामेंयह, नामेंआयोनंदकोकुमारहै॥
एकदृगखंजनमेंअंजनलगायेउठी, कोईएककोरमुखगोरेउठिधाईहै॥ २५॥
कोईअँगरागआधेअंगनलगायेचली, कोईपुरनारीचलीआधेहीनहाईहै॥
रघुराजकोईगृहकारजविसारिचली, कोईबालअधप्यायोबालकविहाईहै।
चहरपहरमाच्योशहरपहरदिनै, डहरडहरडोलेकुँवरकन्हाईहै॥ २६॥
तकिकैतिरीछेनैनबाणसमवेधिसैन, दैतहैपरमचैनभृकुटीनचाइकै।
सुखमानिकायदेखेकामनिकिजायऐसो, रूपदरशायकीन्ह्योंविवशवनाइकै॥
रघुराजआलिनसमाजतेपरानीलाज, देखैयदुराजप्यारीपलकेंविहाइकै।
मंदमंदगोवनगयंदगतिमोह्योमन, मधुराकेमगमेंसुकुंदमुसकाइकै॥

साजिकैसिंगारसँगरोहिणीकुमारसखा, सोहैंरघुराजमुरिमोदहिंभरतजात।
करिकैकटाक्षनिमृगछिनिछकावैंछैल, धामधामधूमधामपुरमेंकरतजात॥
केतीभईकायलतेपरींघूमैंघायलसी, केतीबालबायलसीजियरोजरतजात।
जौनहींडहरह्वैकैकान्हरोकढततहँ, तौनहींडहरमेंकहरसीपरतजात॥ २७॥
निमिपनेवारिघनश्यामकोनिहारिचित्र, पूतरीसीठाढीपुरनारिआनँदैभरी।
कान्हकीतकनित्योंहींहँसनिसुधाकीसींची, पायकैसोहागअनुरागयुतहैंखरी॥
रघुराजप्यारोप्रेमबेरीपायनायदीन्ही, तापहरिलीन्हीभईपुलकघरीघरी।
माधवकीमूरतिमनोहरीकोमथुराकी, पलककपाटदैकैधाँधीउरकोठरी॥ २८॥

दोहा—चढ़िकैउच्चअटानिमें, विकसितमुखजलजात। वरपहिंहरिबलपरसुमन, हरपहिंपुलकितगात॥ २९
औरहुपुरवासीद्विजआये। दधिअक्षतसुगंधवहुलाये॥ सुरभितजलहरिबलपगधोई। पूजनकरहिंपरममुदमो
नजरदेहिंबहुविविधप्रकारा॥३०॥जोरिपाणिअसकरहिंउचारा॥ धनिधनिहैंसिंगरेव्रजवासी।कौनकरीपूरबतपरास
जोइनयुगलकुमारनकाँहीं। दृगदेखततिनकेदिनजाँहीं॥ त्रिभुवनकोआनंदबटोरी। रचीविरंचिमनोहरजोरी
यहिविधिलहतविविधसतकारा।गमनतदोउवसुदेवकुमारा॥जहँजहँविचरहिंहरिहलधारी।तहँतहँथकितहोहिंनरन
कछुआगेचलिगेजवदोऊ। औरहुसँगपुरजनसवकोऊ॥

दोहा—तबइकचाकरकंसको, जातिरजककीनीच। उद्यमजेहिंरँगरेजको, मिलतभयोमगबीच॥
कंसहेतुरँगिविमलदुकूला। लिहेजातबहुरह्योअतूला॥ आवतताहिनिरखिगिरिधारी। तुरतठाढ़ह्वैगिराउचारी
ऐहोपथिककौनतुमआहू। वसनविचित्रलिहेकहँजाहू॥ वसनअनेकरँगेअतिनीके। अतिप्रियअहैंहमारेजीके॥३
देखिदोऊभाइनकररूपा। देहुहमैंसववसनअनूपा॥ हमरेहिंयोगऔरकेयोगन। असतगुनहुँतौपूँछहुँलोगन
जोहमकोतुमअंवरदैहौ। तौविनसंशयमंगलपैहौ॥ ३३॥ यहिविधिजवजाँच्योयदुराई। तवतोरजककोपअतिछा

दोहा—प्रथमहिंयदुपतिकेवचन, कियोनहींकछुकान। कछुकचित्तमहँगर्वभरि, करिकैभौंहकमान॥
टेढीनजरताकिकहँवानी। भोजराजचाकरअभिमानी॥३४॥मतिवोलैअसवैनअहीरा। तौहिंनलगतजीवकीपीरा
सुखतौदेखिलेहुतुमअपने। पहिरेहुवसनकवहुँअससपने॥ होतुमगाइचरावनहारे। निवसहुवनगिरिविरचिअगारे
राजपोशाकलेनअभिलापौ। अपनीजातिसुरतिनहिंरापौ॥३५॥सूधेचलेजाहुजहँजाते। कसवढ़िवातवहुतवतराते
जान्योंतुमभूरखदोउभाई। अनुचितउचितनपरतजनाई॥ अवहूँमोरसिखापनगहियो।कोहुसोंऐसेवचननकहियो

दोहा—चहौबचावनआपने, जोअहीरतुमप्रान। तौतुरतहिंअवकीजिये, इततेअवशिपयान॥
जोकहुँकंसराजसुनिपावै। तौदोहुँनवंधनबँधवावै॥ ३६॥ गोपनकोलूटहिंधनभूरी। तुमकोअवशिदेवावैसूरी॥
गर्वनरहतभूपकेनेरे। तातेवचनमानियेमेरे॥ रजकवचनसुनिपरमकठोरा। कुपितभयोदेवकीकिशोरा॥
वढ़िद्वैपगथापरइकमारयो।तासुकंधतेशीशउतारयो॥मृतकरजकगिरिगोधरणीमें।भयेचकितजनहरिकरणीमें ३७॥
अनुचररजकरहेसँगतेते। भगेडारिपोटरिपटतेते॥ जवसवभागिगयेचहुँओरा। तवहितुरतवसुदेवकिशोरा॥३८॥
आपहुवसनपहिरिकछुलीने। वसनकछुकवालरामहिंदीने॥

दोहा—औरहुदीन्हेंसखनको, रहेजेजाकेयोग। व्यर्थवहुतमहिंफेंकिदिय, हँसेदेखिपुरलोग॥ ३९॥
पहिरिपोशाकनटोलेटोले। हँसतचलेआगेयुतग्वाले॥ रह्योएकछीपीकरगेहा। ताकेद्वारगयेयुतनेहा॥
[illegible]। अंगदारपटदेहुवनाई॥ सुनतहिंप्रेमभरोसोधायो। रामश्यामचरणनशिरनायो॥
साधिदियोअंवरअँगतारा। वेलिबूँटरचिदियोअपारा॥ वसनविचित्रपहिरियदुराई।सहितरामग्वालनसमुदाई॥४०॥
शोभितभेनातिशत्रुप्रमाथी।सनेअसितसितजनुयुगहाथी॥अतिप्रसन्नह्वैपुनियदुराई।तीदियायककहँनिकटबोलाई॥४१॥

दोहा-दियोमुक्तिसारूप्यतेहिं, जगमहँविभौअतूल। शोभाऔरशरीरबल, सुमतिसकलसुखमूल ॥ ४२
आगेचलेबहुरिदोउभाई। सखनसहितअतिआनँदपाई ॥ मालाकारएकमतिवाना। रह्योमधुपुरीभक्तप्रधाना
रह्योसुदामाताकरनामा। तासुहाटमधिहाटकधामा ॥ ताकेभवनगयेदोउभाई । सोदेखतअतिशयअतुराई
परयोचरणकहिहेवनमाली। मैंतुवदासजातिकोमाली॥करहुपुनीतगेहयदुराई।असकहिभीतरगयोलेवाई ॥ ४३
सुंदरआसनमेंबैठायो। अर्घ्यपाद्यआचमनकरायो ॥ धूपदीपनैवेद्यहुदीन्ह्यों। चंदनप्रभुअँगलेपनकीन्ह्यों ॥
दोहा-जसपूजाप्रभुकीकरी, मालाकारसुजान। तैसहिंसिगरेसखनको, कीन्ह्योंअसिसनमान ॥
पुनिसबकोतांबूलखवायो ४४ जोरिपाणिअसवचनसुनायो॥पावनमोरजन्मकुलआजू।तुमकीन्ह्योंसबविधियदुराजू
देवपितरऋपिऋणहुँहमारे। आयनाथतुमसकलउधारे॥४५॥अहौजगतपरकारणदोऊ।यहप्रसंगजानतकोउकोऊ
लियोधरणिमहँप्रभुअवतारा। करनेहेतुमंगलसंसारा ४६ विपमदृष्टिनहिंअहैतिहारी। तुमदोऊजगकेहितकारी
सबमेंहौसमानभगवाना। जेजसभजेताहितसजाना ॥४७॥ मैंहौंप्रभुलघुदासतुम्हारा। शासनदेहुजोहोइविचारा
दोहा-धन्यभागतेहिंपुरुपकी, तेहिंसमजगतनआन। जापैतुवशासनकरहु, ह्वैप्रसन्नभगवान ॥ ४८ ॥
सुनिमालीकेवचनमुरारी। रहेमौननहिंगिराउचारी ॥ मालीमाधवमनकीजानी। धन्यभाग्यआपनअनुमानी ॥
महासुगंधितकोमलफूला। तिनकीरचिद्वैमालअतूला॥रामश्यामकेगलपहिराई। औबहुदीन्ह्योंसखनबनाई ॥४९
सखनसहितहरिबलछविछाये। मालीगृहमेंअतिसुखपाये॥हरिबलजानिताहिनिजदासा। कह्योमाँगुजोहोविश्वासा५०
तबकरजोरिकह्योपुनिमाली। निजपदभक्तिदेहुवनमाली॥होवैप्रीतिसंतपदपाँहीं। परमदयासबजीवनमाँहीं ॥५१
दोहा-सुनिमालीकहँदेतभे, येतीनिहुँवरदान। विभौपुस्तदरपुस्तको, दीन्ह्योंताहिमहान ॥
अरुशरीरबलजगसुयश, आयुषपूर्णप्रमान। दैताकोबलिरामयुत, तहँतेकियोपयान ॥ ५२ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू देवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे एकचत्वारिंशस्तरंगः ॥ ४१ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-पुनिवसुदेवकुमारदोउ, चलेबजारबजार। संगसखासोहतसकल, कियेविविधशृंगार ॥
कछुआगेचलिकेदोउभाई। आवतनारिनिहारिसुहाई ॥ हैकुबरीपैउमिरिकिशोरी। करमेंलीन्हेंकनककटोरी ॥
तामेंकुंकुमचंदनघोरा। चितवतचलीजातिचहुँओरा॥ताकोनिकटनिहारिविहारी। भौचलाइहँसिगिराउचारी ॥१
सुंदरितुमहोकोनिबतावहु। अंगरागकेहिहितलेजावहु ॥ हमहिंनदेहौयहअँगरागा। तुमतोनिरसिपरौबड़भागा
जोअँगरागहमहिंकहँदेहो। तोसुंदरिद्रुतमंगलपैहो ॥ हरिकीगिरासुनतअतिप्यारी। परममनोहररूपनिहारी ॥
दोहा-मोहिगईकुबरीतहाँ, बाढ्योप्रेमविशाल। खड़ीभईकरजोरिकै, कीन्हीविनयरसाल ॥ २ ॥

सैरंध्र्युवाच।

नंदकुँवरसुंदरछविरासी। मैंहोंभूपकंसकीदासी ॥ हेकुबरीयहनामहमारो। कंसहिं प्रियममचंदनगारो ॥
तातेमेंअँगरागबनाऊँ। नृपतिनिकटनिततहाँपहुँचाऊँ ॥ सौंपेहुमोहिकर्मयहराजा । औरकरहुँनहिंकोनहुँकाजा।
पैप्रियतुमसोकोयदुनंदन।जाहिदेहुँगारोनिजचंदन॥३॥असकहिलगीलखनयुगरूपा।जेहिंलखिमोहतत्रिभुवनभूपा॥
मधुरवचनबोलनिमनहारी। चितवनिचलनिचारुसुकुमारी॥मोहिगईयदुपतिकोदेखी।कुबरीधन्यभाग्यनिजलेखी।
दोहा-रामश्यामकेअंगमें, सोकुंकुमअँगराग। लेपनकीन्ह्योनिजकरन, करिअतिशयअनुराग ॥ ४ ॥
नाभिउपरतेकंठलगि, लसतपीतअँगराग। मनहुँयमुनअरुगंगमहँ, आवतप्रातप्रयाग ॥ ५ ॥
भेप्रसन्नवसुदेवकुमारा। तहँमनमेंअसकियेविचारा ॥ यहकुबरीकोशुभगवनावें । निजदरशनकोफलदरशावें ।

उरुग्रीवाकटिटेढ़ीअहई। तातेजगकुबरीअसकहई॥ मुखहूँकीद्युतिहैअतिनीकी। चमिरिय्युवारमणीममजीकी॥६॥
असविचारकरितहँयदुराई।करअँगुरीद्वैचिबुकलगाई॥पगअँगुठनसोंपगनदबाई। वदनतासुदियउपरउठाई॥७॥
मिल्योतासुकूबरतेहिकाला। भयोकूबरीरूपरसाला॥ उन्नतकुचहैगेकटिछीनी। रंभखम्भसीजंघनवीनी॥

दोहा—खंजनदृगभ्रुकुटीधनुष, मुखशशिभालरसाल। रूपकूबरीलखिलजीं, सुरललनातेहिकाल॥८॥

भयोरूपगुणपरमउदारू।हरिहेरतउपज्योहियमारू॥ यदुपतिकोपटुकाकरछोरा।गहिबोलीहँसिकैतेहिठोरा॥९॥
प्रीतमचलहुअवासहमारे।निकसतजियअवतजततिहारे।मैनछोंडिहौंइकक्षणतुमको।द्वितियनप्रियअसलागतहमको
रूपरावरोलखिमनमेरो।परचोकामकरफिरतनफेरो॥अबकीजैकछुकृपाकन्हाई।लेहुमोहिंपियमरताजियाई॥१०॥
सुनिकुबरीकीविनयविहारी।गयेसकुचिबलवदननिहारी॥ सखनमुखनपुनिश्यामविलोकी।कह्योवचनकुबरीकरठोंकी
ऐहैंसुंदरिभवनतिहारे। करिकारजजेहिहेतुसिधारे॥

दोहा—परदेशिनकोअतिसुखद, कुबरीतोरअगार। जेपरदेशीनारिबिन, तिनकोतुहींअधार॥१२॥

सुनिमुकुंदमुखमंजुलहाँसी। लहिकूबरीमहासुखरासी॥ तजिपटुकागमनीनिजगेहू। यदुपतिपैकियपरमसनेहू॥
हरिहुचलेपुनिवणिकबजारा। थलथललहतअमितसतकारा॥ कोउपुरजनतांबूलखवावैं।कोउफूलनमालापहिरावैं॥
कोईचंदनचरणचढ़ावैं। कोईअतरलैवसनलगावैं॥१३॥ हरिबलरूपनिरखिपुरबाला। देहभानभूलीतेहिकाला॥
मनसिजविवशभयेमनतिनके। हरिबलदेखिपरेदृगजिनके॥ छूटेवसनऔरशिरकेशा।लुटिगोललिनलाजकलेशा॥

दोहा—चित्रपूतरीसीखड़ीं, निरखहिंयुगलकुमार। बारबारतनुमनधनहुँ, वारहिंवारहिंवार॥१४॥

पुनिआगेचलिकछुदोउभाई। पूँछनलागेजननबोलाई॥ अहैकहाँमखधनुपनिवासा। हमहूँआयेलखनतमासा॥
लोगनकह्योचलेइतजाहू।आगेलखिहौधनुपउछाहू१५पुरजनवचनसुनतनँदलाला।कछुचलिलख्योधनुपमखशाला॥
बारनयदपिकियोमखपालक। पैनहिंमान्योत्रिभुवनपालक॥गेमखभवनप्रविशिधरिआई।देख्योमहाधनुपदोउभाई॥
खड़ेवलीवहुरक्षणवारे। विविधभाँतिकेशस्त्रनधारे॥ बडोविभौपूजितबहुसाजू। लखनजननकोजुरचोसमाजू॥

दोहा—यदुपतिचापनिहारिकै, गहनहेतुमनदीन। तवरखवारेधनुपके, कोपबडोईकीन॥

कहोअहौकाकेतुमजाये। कारणकौनकहाँतेआये॥ बरज्योनहिंमानोकेहुकेरो। जाहुअनतटेढेक्योंहेरो॥
देहुइन्हेंकोउपुरुपनिकारी। छुवनचहतधनुपूजितभारी॥ ऐसोहिंकहतरहेरखवारे। हरिकरवामतुरतधनुधारे॥१६॥
ख्यालहिंसोलियताहिचढ़ाई।सकलजननजोहतयदुराई॥तोरचोधनुपसहजमुसक्याई।जिगिगयंदकरऊखलगाई१७
टूटतधनुभोशोरअखंडा। पूरिरह्योसिगरेब्रह्मंडा॥ परचोशोरसोकंसहुँकाना। बैठसभामधिबहुतडेराना॥१८॥
टूटतधनुपधनुपरखवारे। अतिकोपितह्वैवचनउचारे॥

दोहा—देखनकोअतिमीठये, दोऊबालकढीठ। बाँधहुइनकोआशुहीं, करिकरदोहुँनपीठ॥

पुनिमारहुदायाउरखोई।धरहुधरहुधावहुसबकोई॥ असकहिकैसिगरेशठधाये। रामश्यामकेजबढिगआये॥१९॥
तबगहिकरहरिबलधनुटूकें। कसिकसिकोपितकमरपटूकें॥ दौरिदौरितिनकेशिरमारे। केतेनकेउरतुरतविदारे॥
चरनकरनकेतेनकेतोरे। केतेनशिरमटुकीसमफोरे॥२०॥ हायकहतभागेरखवारे। कंसद्वारमहँजायपुकारे॥
जेब्रजबालकआयेदोई। नँदकेतिन्हेंकहतसबकोई॥ तेडारेउधनुराउरतोरी। मखशालामधिकरिबरजोरी॥

दोहा—कछुमारेमर्देकछुक, कछूमिलायेधूरि। कछुरखवारेभागिहम, आयेभरिभयभूरि॥

सुनतकंसअतिकोपहिछायो।जाहुहनहुकहिभटनपठायो॥तेप्रभुशासनशिरधरिधाये। मारुमारुधरुधरुकहिआये॥
तिनकोरामश्यामधनुखंडन। मारितुरंतहिकियोविखंडन॥ भगेकंसभटहायपुकारत।रामश्यामबलधामविचारत॥
यहिविधिनृपकेभटनसँहारी।मखगृहतेनिकसेगिरिधारी॥२१॥हरिबलबलछवितेजढिठाई।औरअनूपचरितबहुताई॥
दोहा—सुनेबहुतदेखेबहुत, मथुरापुरनरनारि॥ रामश्यामकोदेवबर, लीन्हेसकलविचारि॥२२॥
छविनिरखतविहरतपुरमाँहीं।लौटतभेदोउडेराकाँहीं॥अस्ताचलरविगेतेहिकाला।पितुढिगहरिबलगेयुतग्वाला२३

माशाकोअतुराये। नंदादिकजेव्रजतेआये ॥ तिनकोलावहुआशुलेवाई । कौतुकलखहिंतेऊइतआई ॥
रद्रुतनंदसमीपा। आयकह्योअसवचनमहीपा ॥ भोजराजतुमकोबोलवायो। मल्लअखारेसकलसजायो ॥
हरसुनिनृपतिनिदेसा। लैगोपनगेरंगनिवेसा ॥ भूपतिकहँसवकियेसलामा । दूधदहीमाखनकहिनामा ॥
दियोपूँछीकुशलाई ; बैठेरायरजायसुपाई ॥ व्रजकेरहेगोपसवजेते । बैठेएकमंचमहँतेते ॥
दोहा–करीकुवलयापीडजो, एकसहसगजजोर। रंगद्वारपरकंसतेहिँ, ठाढकियोअतिघोर ॥ ३८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदांबुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे द्विचत्वारिंशस्तरंगः ॥ ४२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–चलनलगेजवशिबिरते, रंगभूमिकोनंद। तवकरगहिबोलतभये, हलधरअरुनँदनंद ॥
हमहूँचलिहैंलखनतमाशा । देखनकीमनमेंअतिआशा ॥ रहिहैंहमडेरामहँनाँहीं । लैचलुनंदववासँगमाँहीं ॥
बोलेमहरतवैरिसिहाई। करहुनवहुतलालरिकाई ॥ उहाँनहैकछुकामतिहारो। कियोबोलावननृपतिहमारो ॥
असकहिशिविरराखिसुतदोऊ । गयेनंदऔरहुसवकोऊ ॥ कछुकवारमहँसुनतनगारे। गमनहेतुदोउभयेतयारे ॥
द्रुतगंजनकरिभोजनकरिकै। पहिरिपोशाकसखासवजुरिकै॥रंगभूमिकहँचलेमुरारी। संगसखासोहतहलधारी ॥१॥
दोहा–करीकुवलयापीडकहँ, लख्योद्वारमहँठाढ़। गजपालकअंवष्ठशिर, चढ्योकोपअतिवाढ़ ॥ २ ॥
छंदनराच–विलोकिमत्तनागरामकृष्णकाछनीकसी। सँवारिकुंतलानिवाँधिलीनमंजुलैरसी ॥
कह्योपुकारिपीलवानसोंजलंधशोरकै। हटायनागनागपालदेहुऔरठोरकै ॥ ३ ॥
तुरंतदेहुपंथरंगभूमिजानहेतुहै। नतोनगीचमीचकेपठाइहैंअचेतहै ॥
सुनैनहींलखैनहींहटावतोनसिंधुरै। चहैपयानआपनोगजैयुतैयमैपुरै ॥ ४ ॥
सुनेमुकुंदवैनपीलपालकोपकैमहाँ। दवायकैकरींद्रकुंभपैनअंकुशैतहाँ ॥
तुरंतदेवकीकिशोरघोरओरजोरसों। सवेगधाइआइगोकियोकठोरशोरसों ॥
करिंदसोकरालहैमनोसरूपकालको ॥ ५ ॥ लपेटशुंडसोंलियोतुरंतनंदलालको ॥
द्रुतैवितुंडशुंडकोछोड़ायदेवकीलला। कियोतलैप्रहारतासुदंतऊपरैभला ॥
गयेलुकायतासुपायवीचकीनचातुरी ॥६॥ फिरैलग्योमहाकरीकरीगोविंदआतुरी ॥
सुगंधिपायशुंडकोपसारिमाधवैगह्यो। छुड्योगयंदहाथतेहरीधरोनहींरह्यो ॥ ७ ॥
गोविंदजायपाछिलेगहेप्रतक्षपुच्छको। पचीसचापलैगयेघसीटिनागतुच्छको ॥
महाबलीअहींद्रकोविहंगनाथज्योंगहे। गयंदतेसहींगह्योहरीनजोरकेमहे ॥ ८ ॥
इतेउतेविलोकतेचलेगयोहटोकरी। नसावकाशठाढहोनकोलह्योतेहाँघरी ॥
जहाँजहाँकरीभ्रमतहाँतहाँभ्रमैहरी। भ्रमैद्विवर्षबालज्योंगहेसोपुच्छबाछरी ॥ ९ ॥
तुरंतहोतराधिकमुकुंदजायसन्मुखे। भगेनवेगसोंचलायपायपरेकरीमुखे ॥
चल्योपछेइमैगजोसगर्वसोगराजतो। गहैपदैपदैमनोगोविंदमंदभाजतो ॥ १० ॥
धोसाटेनदितागिरेमुकुंदधावतेधरा। तहाँसुदंतकेभरैगिरयोप्रकोपमेंभरा ॥
तराधिदेवकीकिशोरआगेठारजातभे। मतंगदंतजोरसोंधरासवेसमातभे ॥ ११ ॥
नपीछिकैमहाउठायशीशनागठाढभो। नपाइकेगोविंदकोगयंदगर्वगाढभो ॥

तुरंतपीलपालहूजोहैअंबष्ठनामको । दवायकुंभअंकुशैप्रचारिरामश्यामको ॥
धवायकैमतंगकोतुरंततत्रआइगो । हलीकह्योहनौहरीकरीखरोखेलायगो ॥ १२ ॥
तबेनभागकान्हठाढसन्मुखैभयेतहाँ । नगीचहींपहूँचिगोद्रुतैमतंगजोमहाँ ॥
वितुंडशुंडकोगह्योपसारिदोरदंडको । गिरायदीनभूतलैहरीकरीप्रचंडको ॥ १३ ॥
गिरेगजैमृगेंद्रसोंदवायशीशपाँउसों । उखारिलीनदंतएकहाथसोंउराउसों ॥
दोहा-पीलपालअंबष्ठको, तेहींदंतसोंनाथ । मारिनेकहींजोरसों, कियोछूटूकोमाथ ॥
बलिरामहुँयकदंतउखारा । मरयोनागकरिघोरचिकारा ॥ मरोमतंगजतहाँनिहारी । औरहुपीलपालबलभारी ।
धायेअसकहिहरिबलओरा । बचिनजाहिंवसुदेवकिशोरा॥तिनहिंदंतहनिहरिहलधारी।बचेनएकहुडारेमारी॥ १४ ।
मृतकमतंगजत्यागिमुरारी । रंगभूमिकहँचलेसिधारी ॥ निजनिजकंधधरेगजदंता । करनहारमनुअंतकअंता ।
हरितनुगजशोणितकीबूटी । मनुतमालपरबीरबहूटी॥बिचबिचगजमदबिंदुसोहाँहीं।तैसहिंस्वेदबिंदुदरशाँहीं॥१५।
दोहा-रामश्यामग्वालनसहित, रंगभूमिमधिजाय । रहीजाहिजसभावना, तेहितसपरेदेखाय ॥ १६ ॥
कवित्त-मल्लजान्योवज्रआयोनरजानेनरवर, नारीजान्योसभामध्यआयोमूर्तिमानमार ।
गोपजान्योमीतनिजपापीजेपुहुमीपति, तेऊमनजान्योआयोशासनकरनहार ॥
रघुराजवसुदेवदेवकीतोजानेबाल, मूढतोविराटजानेयादवगुनेअधार ।
योगीजान्योपरतत्त्वकंसजान्योआयोकाल, रंगभूमिभायोरामसंगदेवकीकुमार ॥ १७ ॥
दोहा-करीकुवलयापीडको, सुनिकैकंसविनास । लखिदोहुँनदुरजैमहा, मानीमनअतित्रास ॥ १८ ॥
ाहिंरोहिणिदेवकिलाला । सोहतभेदोउबाहुविशाला ॥ अंबरअभरणअरुवनमाला।सोहिरह्योअतिशयछबिजाल।
ानहुँउत्तमनटयुगआई।चितवतहींचितलियोचोराई॥१९॥ सभामध्यऔरहुदशआशा।छायोरामश्यामपरकाशा ।
ठिरहेमंचहुँमहँजेते । पुरजनऔररहेमहिकेते ॥ तेसबनिरखतयुगलकिशोरा । पायेकुरुपतिमोदनथोरा ॥
ुखयकटकहृगरहेलगाई । तदपिनिरखिनहिंगयेअघाई ॥२०॥ पियेलेतमनुनैनलगाई । चाटतहैमनुजीहचढाई ॥
दोहा-नासातेजनुसूँघवे, मिलतभुजानिबढाय । पुरजनासिगरेमोहिगे, देखतहींदोउभाय ॥ २१ ॥
हहिंपरस्परमनुजअलेखे । जैसहिंसुनेतैसहींदेखे ॥ रूपमधुरासिगरेगुणआगर । महाप्रबलदोऊनटनागर ॥
ौनजौनकाननसुनिरापे । सोलखिहरिबलपुरजनभापे॥२२॥येनारायणकेअवतारा।प्रगटतभेवसुदेवअगारा॥२३॥
देवकिउदरउदधिविधुभयऊ। वसुदेवहुव्रजकोलैगयऊ॥बढ़ेगुप्तदोउनंदनिवासा॥२४॥शिशुपनकियपूतनाविनासा ॥
तृणावर्त्तदानवकोमारयो।युगअर्जुनतरुतुरतउखारयो ॥ शंखचूडकेशीसंहारयो।औरहुबहुदानवनविदारयो ॥२५॥
दोहा-ग्वालनगौवनकोलियो, दावानलतेराखि । कालीमथिमघवानको, बिनमदकियइनमाखि ॥ २६ ॥
सातदिनागिरिवरकोधारयो।वातवर्षतेव्रजेउधारयो॥विहँसितमुदितनिरखिमुखइनको ।विरहकलेशमिट्योगोपिनको
यहउद्धतयदुवंशउजागर । जगजाहिरविशुद्धगुणसागर॥इनहींतेमहत्त्वअतिपैहैं। जबयहकुटिलकंसहनिजैहैं ॥२९॥
येजेठेभाईहरिकेरे । रामनामजगओजघनेरे ॥ शोभामानसरोरुहनैना । सुधासमानमधुरजेहिंबैना ॥
वत्सप्रलंबबकादिकवीरा।हन्योसबनकहँयेबलवीरा॥३०॥यहिविधिकहेसकलपुरवासी।हरिबलउलखिपायेसुखरासी ॥
रंगभूमिमहँवजेनगारे । ठोंकेंतालमल्लबलवारे ॥
दोहा-रामश्यामकोतुरततहँ, अपनेनिकटबोलाय ॥ गर्वभरोचाणूरभट, दीन्ह्योंवचनसुनाय ॥ ३१ ॥

चाणूर उवाच ।

हेव्रजराजकुँवरहेरामा । तुमदोऊहोअतिबलधामा ॥ मल्लयुद्धमहँपरमप्रवीना । सुनिनृपतुमहिंलखनमनकीना ॥
मल्लयुद्धकरवावनहेतू । तुमहिंबोलायोरंगनिकेतू ॥३२॥ मथुरामंडलमेंजेप्रानी । तेसबकंसप्रजासुखसानी ॥

असहरिबलमुष्टिकचाणूरा।करहिंयुद्धचाहतजैशूरा॥करहिंपरस्परपेंचअपारा।कछुश्रमकोनहिंकरहिंविचारा॥ ५ ॥

दोहा-अतिसुकुमारकुमारदोउ, मल्लप्रबलमहान। रंगभूमिमहँलरततहँ, तियनअयोगदेखान॥

भरिउरअतिदायामहराजा। कहहिंपरस्परनारिसमाजा॥६॥ राजसभामधिहोतअधर्मा। बैठेसज्जनसकलसुकर्मा॥
होतबलाबलयुद्धअयोगू। कोउनकरतवारणकसलोगू॥ राजहुकहुँरोकतकसनाँहीं।कढ़तनकछुकोहुकेमुखमाँहीं॥
जोनसिखापनभूपतिमानै।तौसज्जनउठिकरहिंपयानै॥७॥ कहँमल्लअँगकुलिशकठोरा। कहँसुकुमारअंगयुगछोरा॥
कहँगिरिसारिसमल्लबलरूरे।कहँबालकयौवननहिंपूरे॥८॥ अबनहिंदेखिजातयहभाई। बैठहिंचलहुभवनमहँजाई॥

दोहा-होतअधर्मसमाजमधि, कैसेदेखोजाय। पुहुमीपतिपापीदियो, बलअरुअबललराय॥

जोनसभामहँहोइअधर्मा। तहँनहिंबैठहिंकबहुँसुकर्मा॥९॥ लिख्योधर्मशास्त्रहुमहँभाई। सोहमसिगरोदेहिंसुनाई॥
सभासदनदूषणगुनिनाना।जाइनसभाकबहुँमतिवाना॥लखिअनुचितजोरोक्योनाँहीं। तौअतिपापभयोतेहिकाँहीं॥
जोअनुचितनृपकोरुखराख्योतबहूँसकलपापफलचाख्यो१०तबकोउकहीफेरिअसिबाता।लखुसजनीहरिमुखअवदाता
शत्रुओरधावतश्रमपाये।स्वेदबुंदसिगरेमुखआये॥कमलकोशजिमिजलकनसोहै।तिमिहरिमुखश्रमजलमनमोहै ११

दोहा-पुनिकोउकहलखुरामको, मुखअंबुजदृगलाल। मुष्टिकपरअतिकोपकरि, विहँसतरोहिणिलाल॥१२॥

सवैया-जिनकेपदशंभुस्वयंभुरमाकरसेविततेनरसेदरसैं। बहुधेनुचरावतवेणुबजावतगावतसंगसखाविलसैं॥
वनमालविराजतहेरघुराजसुबैनकहैंजनुफूलखसैं। धनिहैव्रजकीधरणीजहँयेप्रभुदोऊविकुंठविहायबसैं॥ १३॥
सुंदरतासिगरेजगकीइनहींकेशरीरबसीसबआई। हैनबरोबरकोऊकहूँअधिकैइनतेमुखक्योंकहिजाई॥
श्रीरघुराजरमाहूँरहीरमिसोंछविपीवहिंनैनलगाई। गोकुलगाँउकीग्वारिगमारिनीपूरबकौनकियोतपमाई॥ १४॥
दोहनमेंगृहलेपनमेंदधिमंथनमेंअरुमंदिरझारत। झूलतमेंत्योंझुलावतमेंशिशुकोदुलिरावतसेजमेंपारत॥
अंगनमेंअँगरागलगावतवेधनिहैंरघुराजउचारत। गोकुलगाँउकीग्वारिनीग्वालगोविंदगोविंदगरेसोंपुकारत॥ १५॥
भोरसमैंअरुसाँझसमैंसुरभीनसखानलैजातओआवत। वेणुकीटेरसुनेसिगरीव्रजकीवनितागृहकाजभुलावत॥
श्रीरघुराजकहींपरतेखरीखोरिविधन्निरितिन्हेंकविगावत। देखहिंश्यामकोसुंदरआननैनानिमेंननिमेषलगावत॥१६॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिनारिनिकेकहत, यदुनंदनकरिकोप। महामल्लचाणूरके, वधकीकीन्हीचोप॥ १७॥

कहहिंनारिसबआरतवानी। रामश्यामकेनेहहिसानी॥ बाँधेहतोकंसअसनेतू। निजपुत्रनवधदेखनहेतू॥
वसुदेवहिंदेवकिहिंबोलाई। दियोएकमंचहिंबैठाई॥ तेनिजपुत्रनमल्लनसंगा। लरतविलोकिशिथिलभेअंगा॥
कहेंकुमारनरक्षईशा। इमहिंअधारअहैंजगदीशा॥ नहिंजानतसुतबलमतिभोरी। जिनकीनहिंत्रिभुवनमहँजोरी॥
जसजसमल्लरतकरिजोरा। तसतसबदतदुहुँनदुखघोरा॥वसुदेवहुदेवकिदुखतापी।भापहिंहायकंसबड़पापी॥१८॥

दोहा-इतैप्रबल्लनमल्लसँग, मल्लयुद्धकेरंग। रँगेरामअरुश्यामदोउ, थकेनयोरेहुअंग॥

कृष्णओरचाणूरप्रवीरा। करहिंविविधविधिपेंचअपीरा॥ तैसहिंमुष्टिकअरुबलरामा।लरहिंपेंचकरिकरितेहिंठामा॥
कुलिशकठोरकृष्णकेअंगा। तिनकेलहतप्रहारअभंगा॥ महाप्रबल्लमल्लचाणूरा। ताकेअंगभयेसबचूरा॥ १९॥
हैगोशिथिल्यथाकअतिलागी।तबतोकेपज्वालजियजागी२०बाजवेगकरिकेअतिरूटी।हरिउरहन्योबाँधियुगमूटी२१
टरेनहरितिलभरितहँटारे। जिमिमतंगप्रसूनमालनमारे॥पुनियदुपतिचाणूरभुजागहि।पटक्योबहुभमाइताकोमहि२२
पटकतभूमिनिकसिगेप्राना। गिरचोकुलिशमनुमहीमहाना॥

दोहा-विलगभयेशिरकेशसब, मुरककढिआईजीह। रुधिरधारदृशद्वारह्वै, बहनलगीतहँदीह॥ २३॥

इनकेपहिलेमुष्टिकमल्ला। हन्योरामकहँमुष्टिप्रबल्ला॥ तबसकोपह्वैतहँबलगई। तलप्रहारकीन्ह्योनजिकाई॥२४॥
रामपाणिकरलगतप्रहारा। कम्पतमुष्टिकसापपछारा॥गिरचोधरणिमहँसोविनप्राना॥जिमिपादपटहिपवनमहाना॥

मुखतेनिकसीशोणितधारा । विथुरिगयेसिगरेशिरवारा॥२५॥मुष्टिकअरुचाणूरविनास॥लखिकैकूटमल्लछविनत्रास॥
तुरतरामकेपीछेआई । बाँधिमुष्टिभरिजोरचलाई ॥ तेहिंनचितेरोहिणीकिशोरा । हनीवाममूठीकरिजोरा ॥
लागतरामवामकरघाता । मरयोमनहुँभोवज्रनिपाता ॥ २६ ॥

दोहा–तोशलमल्लप्रबल्लअति, यदुपतिपैद्रुतधाइ । मारनचाह्योतेगशिर, अतिशयवेगबढाय ॥
ताकेपहिलेहितहँयदुराई । चरणप्रहारकियोशिरधाई ॥ भयोछटूकतासुतहँशीशा॥ मरिकैगिरयोअवनिअवनीशा॥
पुनितोशलकोपितअतिधायो । ह्वैसवेगतहँतेगचलायो ॥ तेहिंहरिकियद्रुतचरणप्रहारा। ताकोह्रदयभयोदुइफारा॥
तोशलमारिगिरिगोधरणीमें । जनमोदितभेहरिकरणीमें॥२७॥ शलतोशलमुष्टिकचाणूरा।औरहुकूटमल्लअतिशूरा॥
जबपाँचहुँनकृष्णबलमारे । तबसबमल्लभगेभैभारे ॥ लैलैजीवदिगंतनजाईं । कृष्णरामभयरहेलुकाईं ॥ २८॥

दोहा–रह्योनकोऊलरनको, रंगभूमिमहँभूप । रामश्यामठाढेरहे, शोभापरमअनूप ॥
पुनिसखानिकहँनिकटबोलाई । करनलगेप्रभुमल्ललड़ाई ॥ बहुविधिपेंचनकोदरशावैं । हारैंकबहूँतिनहिंहरावैं ॥
रंगभूमिनूपुरझनकारी । लायरहीअतिआनँदकारी ॥ रामश्यामतालनबहुठोकें । करहिंपेंचपेंचनकहुँरोकें॥ २९॥
करनीदोहुनकेरिनिहारी । पुरवासीपायेसुखभारी ॥ लगेसराहनरामश्यामको । सकलपुकारिपुकारिनामको ॥
भलोकियोमल्लनकोमारयो । कंसमहीपतिकोमदगारयो ॥ औरसबैपायेआनंदा । छोडेएककंसमतिमंदा ॥
भयेतहोंदुंदुभिधुंकारा । औरहुबाजनबजेअपारा ॥ ३० ॥

दोहा–चाणूरादिकमारिगे, मल्लऔरजबभाग । रंगभूमिदुंदुभिबजे, कंसहिंनीकनलाग ॥
तबमंचहिंतेआपुपुकारा । धंदरहुमतिमंदनगारा ॥ पुनिसिगरेवीरनगोहरायो । अतिसकोपतिनवैनसुनायो॥३१॥
दोउबसुदेवकुमारनकाँहीं । देहुनिकारिरहैंइतनाँहीं ॥ मथुरामेंकहुँरहननपावैं । रहैंतौअवशिदोउबधिजावैं ॥
लूटिलेहुसबगोपनकाँहीं । नंदमुसुकबाँधियोइहाँहीं ॥ नंदमहामतिमंदअहीरा । याकेकछुनमोरिहैपीरा ॥ ३२
काटहुवसुदेवहुकरमाथा । यहकुमतीऔगुनकरगाथा ॥ मेरेसँगछलकियोमहाना । अबनविलंबहुवीरप्रधाना ॥

दोहा–कहवावतजोममपिता, उग्रसेनअसनाम । ताहूकोबधकीजिये, लायआशुयहिठाम ॥
हैमेरोरिपुपूरसो, राजकरनकीआश । मोरेरिपुसोंनेहकरि, चाहतमोरविनाश ॥
उग्रसेनकेओरजे, हितकरसाथीहोय । तेसिगरेबधिजायँअब, वचननपावैंकोय ॥ ३३ ॥

कवित्त–भूपललकारसुनिउठेसरदारसबै, काढेशस्त्रचारिओरचमकेचमाकदै ।
धायेरामश्यामपैसुनायेमारुघरुशोर, आयेनजिकायतेगँवारनधमाकदै ॥
रंगभूमिरघुराजबाजेबजिरहेतामें, नूपुरबजाइइतैगतिलैछमाकदै ।
तरकिदमंकिदामिनीसोकंसमंचपै, तुरंतनंदलालतालदेतभोझमाकदै ॥ ३४ ॥

दोहा–कंसकान्हलखिमंचपर, गुनिनिजकालकराल । उठिआसनतेतुरतहीं, गह्योढालकरवाल ॥ ३५
प०छंद–उडिगयोकंसतुरतेअकास।नाहिंकरीकान्हकीनेकुत्रास॥यदुनाथगगनमेंगोतुरंत। द्रुतकरनहेतुम
महुँओरमंचकेभ्रमतकंस । मनचहतकरनभगिनेयध्वंस॥दोउफिरतमंचकेचारिओर।जिमिव्योमबाजिवि
जबकान्हजातदाहिनीओर ।तबकंसआवतोवामठोर ॥ जबकंसजाततदिशिवामकोपि।तबकृष्णचलतदा
नहिंलहतघातमारनकृपान।द्रुतचमकिजातयदुकुलप्रधान॥अतिवेगकियोयदुकुलदिनेश।युतकीटगह्यो
जिमिगहतविहँगपतिभुजँगकाँहिँ।तिमिगह्योकंसकहँमंचमाँहिँ॥जेसचिवरहेतेहिंमंचठौतेकूदिभगेभय
नहिंचलीतासुकरवालढाल । दियपटकिपुहुमिपरनंदलाल॥ सोरंगभूमिमधिगिरयोआय।प्रभुकूदिपरे
तहँकंजनाभधारिविश्वभार।परिकंसपीठिपरबलअपार॥निनप्राणकियोनिजअरिरमेश।पुनिपकरिपा
घसिटायताहिमधिरंगभूमि।सबसभासदनाठिगघूमिघूमि॥यदुराजफेंकिदियफेरिकंस।जिमिसिंहतजेक
तहँकंजनाभधारिविश्वभार।परिकंसपीठिपरबलअपार॥ —

हरिभयतेसोभोजपति, वागतबैठतमाँहिं। खातपियतसोहतश्वसत, निरख्योश्रीपतिकाँहिं॥
तातेदुरलभयोगिहुन, जोयदुनाथसरूप। कंसलीनभोताहिमें, ताहीक्षणमेंभूप॥ ३९॥
भुजंगप्रयातछंद-तहाँकंसकेकंकन्यग्रोधआदी। रहेआठभाईबडेजेप्रमादी॥
लखेकंसकोध्वंसतेकोपकैकै। चलेरामश्यामैवधैशस्त्रलैकै॥
अदाहोनभ्रातेरणेआठभ्राता। धरौमारुबालैसभामध्यजाता॥ ४०॥
रहेकंसकोकपतेकृष्णलीन्हें। तिन्हेंओरनेकौनहींचित्तकीन्हें॥
रहेरामठाढेतहाँओजधामा॥ चितेकंसभ्रातानिकोताहिठामा॥
लियोद्वारकोबेडनासोनिकारी॥ चलेकंककेसन्मुखैकोपधारी॥
हन्योबेडनाकंककेशीशभारी। मिल्योसोमहीमेंपरचोनानिहारी॥
तबैआपन्यग्रोधमारचोकृपाना। गईटूटिसोलागिजैसेपपाना॥
हन्येबेडनाताहुकेशीशमाँहीं। सबैअंगटूटेमरचोसोतहाँहीं॥
रहेऔरहूँजेसबैकंसभ्राता। कियेएकबारैवलैशस्त्रघाता॥
तहाँअद्भुतैविक्रमैरामकीन्ह्यो। चल्योचक्रहींसोपरचोनाहिंचीन्ह्यो॥
कियेबेडनाकोप्रहारेअपारे। कितेकेपगैऔभुजैतोरिडारे॥
कितेशीशफूटेकितेलंकटूटे। कितेएकजूटेभयेबूटबूटे॥
मरेकंसकेजेरहेआठभाई। भटोजेबचेतेगयेहेपराई॥
हनेसिंहजैसेमतंगैवरूथे। हन्योरामत्योंकंसकेभ्रातयूथे॥
पड़ोकालसोरंगकेभूमिमाँहीं। कोऊरामओरैसकैदेखिनाँहीं॥ ४१॥
दोहा-रामकृष्णकोलखिविजै, शिवब्रह्मादिप्रवीन। हरपतअतिवरपतसुमन, देवदुंदुभीदीन॥
नाचनलगींअप्सरानाना। करनलगेगंधर्वहुगाना॥ सुरमुनिकिन्नरभेउछाहन। रामश्यामकोलगेसराहन॥ ४२॥
सुनिवधकंसकंसकीनारी। महाराजह्वैपरमदुखारी॥ शिरपीटतदृगआँसुनढारत। हायहायवहुबारपुकारत॥
गिरिकंसकेऊपरआई। छूटेकेशतनुभानभुलाई॥ औरहुनृपभ्रातनकीनारी। निजनिजपतिपगिरीदुखारी॥ ४३॥
करिआलिंगनरोदनकरहीं।वारवारपतिशिरउरधरहीं॥निजनिजपतिमुखलखिदुखसानी।बोलहिंनारिविविधविधिबानी
दोहा-हायनाथधरमज्ञप्रिय, करुणाकरगुणधाम। हमअनाथतुमबिनभई, हायअवशियहिठाम॥
तुमबिनगृहसुतअरुपरिवारा।हमहिंभयोसिगरोदुखभारा।तुमबिनश्रीतममथुरानगरी।नहिंसोहतिसिगरीविधिबिगरी॥
भईसकलमंगलतेहीनी। लियोदेवसबआनँदछीनी॥ ४६॥ सवभूतनतेबिनअपराधा। कियद्रोहताते भैबाधा॥
[illegible]नाँधिसबप्राणिनमाँहीं। मंगलपावतहैकोउनाँहीं॥४७॥जगसिरजकपालकसंहारक। रामकृष्णजगमंगलकारक॥
भूपतवभागिनिकुमारा। इनसोंवैरकियोनविचारा॥हरिद्रोहिनकोयाजगमाँहीं। सुखपावतकहुँदेख्योनाँहीं॥४८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-विलपतनृपरानिननिरखि, यदुनंदनढिगजाय। तिनकोबहुसमझायकै, दीन्ह्योंप्रभुरसवाय॥
पुनिजेकंसादिकमरे, तिनकोतहँयदुराय। मृतकक्रियाकरवायदिय, यमुनातटपहुँचाय॥ ४९॥
पुनिहरिबलवसुदेवअरु, देवकिकेढिगजाय। तिनकेचरणनकोतुरत, बेरीदईकटाय॥
पुनिजननीअरुजनककों, पंकजपाणिपसारि। कियप्रणामशिरधरिपगन, हलधरऔमुरारि॥ ५०॥
तहँवसुदेवहुदेवकी, जानिदुहुँनजगदीश। शंकितह्वैनहिंमिलतभे, रहेचितैअवनीश॥ ५१॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे चतुश्चत्वारिंशत्तमस्तरंगः॥ ४४॥

दोहा-हमनिजमीतनकोमिलन, अवशिआइहैंफेरि।मेटिव्यथासिगरीइहाँ, यदुकुलसुहृदनकेरि ॥
मेरेविरहअवशिव्रजवासी।ह्वैहैंआजुअमितदुखरासी ॥ कीजेअवशंकाकछुनाँहीं । हमऐहैंविशेषिव्रजमाँहीं ॥ २
यहिविधिबहुप्रकारसमुझाई । भूपणवसनबहुतमँगवाई ॥ कनकरजतकेपात्रघनेरे । औरहुकाँसआदिबहुते
दियोनंदकहँसादरनाथा। कियोप्रणामजोरियुगहाथा ॥२४॥ पुनिपुनिनंदमिलेहरिकाँहीं।रहीतनकतनुमेंसुधिनाँ
प्रेमविकलमुखकढ़तिनबाता । आँसुनधारनैनजलजाता ॥ नंदप्रेमकरपारावारा । कोकविवर्णिलहतहैपारा ॥
जेतनेकहैंलगेंसबथोरी । किमिवरणौंथोरीमतिमोरी ॥

दोहा-असतसकैनँदग्वालयुत, बसतभयेव्रजजाय । मानहुँसरबसआपनो, मथुराँहिंदियोगँवाय ॥ २५ ॥
पुनिवसुदेवसुतनबोलवाई । दोउव्रतबंधकरनमनचाई ॥ गर्गाचारजतुरतबोलाई । औरबोलिब्राह्मणसुखछाई ॥
वेदविहितव्रतबंधकरायो।दीननमणिगणअमितलुटायो २६ पुनिबछरनयुतगायमँगाई।तिनकोकनकमालपहिरा
औरहुसिगरेभूपणसाजी । वसनविशेपिढाँपिविनदाजी ॥ विप्रनअलंकारपहिराई । पूजिपाँवदीन्हीसबगाई ॥
बहुधनतासुदक्षिणादीन्ही । धरणीशिरधरिनतिबहुकीन्ही२७पुनिजोकृष्णजनमदिनमाँहीं।दशहजारगोविप्रनकाँ

दोहा-कंसभीतिकोमानिकै, मनहींमेंवसुदेव । देवेकोसंकलपकिय, जान्योनहिंकोउभेव ॥
तेसुरभीमँगायतेहिंकाला।दईद्विजनकहँबुद्धिविशाला ॥२८॥ जबव्रतबंधदुहुँनह्वैगयऊ।ब्रह्मचर्य्यतबदोउगहिलय
गर्गाचार्य्यआयसुखछाई । गायत्रीदियदुहुँनपढाई ॥ २९ ॥ सबविद्यनकेप्रगटनहारे । जगपतिदोउवसुदेवकुमा
दिव्यज्ञानअपनोदोउभाई। प्रगटिमनुजवपुदियोछपाई॥३०॥ऐसेरामश्यामतेहिंछनमें।गुरुगृहवासकरनकियमन
सुवरणस्यंदनचढ़िछविधामा । गेअवंतिकापुरीललामा ॥ तहँमुनिसांदीपिनिअसनामा।रहेउजैननगरमतिधाम
तिनकेनिकटजायदोउभाई । कियोप्रणामपगनशिरनाई ॥ ३१ ॥

दोहा-विनैकियोकरजोरिकै, हमेंपढावहुनाथ । हमदोऊतुवशिष्यहैं, धरहुमाथमहँहाथ ॥
सुंदरसरलस्वभावहिदोऊ । जाकोंनिदतकबहुँनकोऊ ॥ सोइरीतिगहिनिवसनलागे । गुरुकेचरणअमितअनुरा
गुरुपगकेसेवनकीरीती । अरुकरिबोजैसीगुरुप्रीती ॥ सोजगकहँसिखवतदोउभाई।गुरुगृहमहँनिवसेसुखपाई ॥३
शुद्धवृत्तिदोहुँनकीदेखी । उत्तमशिष्यलियेचितलेखी ॥ सांदिपिनिअतिआनँदपाई।लगेपढावनदुहुँनबोलाई ॥
प्रथमहिवेदअंगअरुवेदा । फेरिउपनिषदसहितविभेदा ॥ ३२ ॥ धनुर्वेदपुनिसकलपढायो । मंत्रदेवतातासुबताये
धर्मशास्त्रपुनिदियोपढ़ाई । पुनिमीमांसादियोबताई ॥

दोहा-न्यायशास्त्रसिगरोसिखे, पढविधिभूपतिनीति । रामश्यामसांदीपिनी, दियपढाययुतप्रीति ॥ ३४
सबविद्याकेदोउनिधाना । सबपुरुषनमेंदोउप्रधाना॥एकबारजोगुरुकहिदीन्है । सुनतहिसकलकंठकरिलीन्है॥३
चौसठविद्याचौसठदिनमें । रामश्यामधरिलियोबुधिनमें ॥ प्रथमगाइबोद्वितियबजाउब । तीजोनाचभाउदशांउब
चौथोनटकोनाचबजानो । पँचयोंचित्रलिखबअनुमानो ॥ छटयोंतिलकदेबबहुभाँती । सतयोंतंदुलफूलनजाती
तिनकीचौकबनाउबनीकी । हेरतहरणहारजोहीकी ॥ अठयोंफूलनसेजविरचिबो । नवयोंदशनवसनअँगरचिबो

दोहा-सभावैठवेकोरचन, वसनविछाउबतत्र । जोहिंजसतेहितसथापिबो, दशयोंजानहुअत्र ॥
पलँगसेजरचिबोइग्यारहिं । सलिलतरंगबजाउबबारहिं ॥ परबजलरोकिबोत्रयोदश । चेटककरिबोअहैचतुर्दश
सुमनमालनिरमाणपंचदश । पागबाँधिबोजानहुपोडश ॥ रतननजड़बजानियेसतदश । नारीभूपणरचबअष्टदश
बहुसुगंधनिरमाणबोनीसा । भूपणपहिराउबहैबीसा ॥ इंद्रजालजानिबोइकीसा । करिबोबहुरूपहिबाइसा ॥
हस्तलाघवहितेइसा । पाकविविधरचिबोचौबीसा ॥ रचिबोबहुमदपानपचीसा । छीपीकर्मजानुछब्बीसा ॥

दोहा-कढपूतरीनचाइबो, सत्ताइसयोंभेद । बीनाडमरूबजायबो, अठाइसयोंवेद ॥
कहनीजानबहेलनतीसा । मूर्तिरचनजानियेपनीसा ॥ सभाचातुरीहिइकतीसा । पुस्तकबाँचबहैबत्तीसा ॥

नाटकशास्त्रज्ञानतेतीसा। पुरनसमस्याहैचौतीसा॥ शरचढायरचिवोपैंतीसा। धातुनतारस्चबछत्तीसा॥
काष्ठकर्मजानहुँसैंतीसा। गृहरचिवोसबविधिअरतीसा॥ धातुज्ञानहैउनतालीसा। सुवरणरजतरचबचालीसा॥
रतनरंगरचिवोइकतालिस। रतनखानिजानिवोबयालिस॥वृक्षजातजानिबोतेतालिस।पशुखगयुधविद्याचौवालिस॥
दोहा–शुकमैनादिपढ़ाइवो, जानहुपैंतालीस। घरतेउचाटनकरब, यहहैपटचालीस॥
केशरचबऐंचबसैंतालिस। मुष्टिप्रश्नकहिवोअरतालिस॥ पढ़बपारसीहैउनचासा। ज्ञानदेशभाषापंचासा॥
कहबभविष्यप्रश्नइक्यावन। पूजनयंत्ररचबहैबावन॥ तंत्रशास्त्रपढ़िवोहैतिरपन। रतनबेधिबोजानहुचौवन॥
मानसप्रश्नकहबहैपचपन। विविधकोपकोजानबछप्पन॥ बहुकरिएकसिद्धिसत्तावन। ठगबदूसरेकोअट्ठावन॥
सूतरचबरेशमपुनिउनसठि। जुवाखेलिवोसाठिजानुगठि॥आकर्षणकरिबोहैइकसठ। वालखेलकहियेपुनिबासठ॥
दोहा–तिरसठविघ्नविनाशिबो, कौनिहुँविधिजोहोय। चौसठिथोरीवस्तुको, वहुतदेखावेसोय॥
ये हैंचौसठहूँकला, वर्णहिंकविमतिधाम। इकइकदिनमेंसिखिलिये, रामऔरघनश्याम॥
गुरुकेनिकटजाइकुरुराई। जोरिपाणिअसविनयसुनाई॥ माँगहुगुरुदक्षिणाविचारी।देहैंजोरुचिहोयतुम्हारी॥३६॥
रामश्यामकीसुनिमृदुवानी। मनहिंगुन्योसांदीपिनिज्ञानी॥ इनकीमहिमाअहैमहाई। नहिंमानुषकैसीप्रभुताई॥
तातेकरिसलाहनारीसों। लेवदक्षिणागिरिधारीसों॥ असकहिउठिनारीढिगजाई। करिसलाहद्रुतबाहरआई॥
रामश्यामसोंवचनउचारा।क्षेत्रप्रभासहिंमोरकुमारा॥ बूडिमरयोसागरमहँजाई। सोईदक्षिणादीजेल्याई॥ ३७॥
दोहा–रामश्यामगुरुवचनसुनि, कह्योजोरिकरवात। देहैंतुवसुतदक्षिणा, भलीकहीयहतात॥
असकहिचढ़िस्यंदनप्रभुदोऊ। गयोनऔरसंगमहँकोऊ॥ क्षेत्रप्रभाससिंधुकेतीरा। जायभयेठाढेदोउवीरा॥
हरिबलआगमजानिनदीशा।तेहिंक्षणलैवहुरतनमहीशा॥आयभेंटदैपगशिरनायो॥३८॥तबप्रभुताकोवचनसुनायो॥
देहुसिंधुगुरुपुत्रतुरंता। नातोकरबतिहारोअंता॥ तिहरीलुंगतरंगअपारा। बूड़िगयोयहिठौरकुमारा॥ ३९॥
तबसागरकरजोरिडेराई। रामश्यामकोविनयसुनाई॥

समुद्र उवाच।

हमनहरयोगुरुपुत्रतिहारो।दैत्यपंचजनइकबलवारो॥रहतसलिलमधिशंखसरूपा॥४०॥ तौनहरयोगुरुपुत्रअनूपा॥
दोहा–सुनतसिंधुकेवचनप्रभु, तुरतसलिलमहँजाय। निरखिपंचजनदैत्यको, दियोकृपाणचलाय॥
तुरतकट्योदानवकरशीशा।ताकेउदरमाँहजगदीशा॥हेरयोगुरुसुतकोनहिंपायो॥४१॥निरख्योएकशंखछविछायो॥
पांचजन्यजाकरहैनामा। गह्योतुरंततताहिघनश्यामा॥ सागरतेकढिरथमहँआये। यमपुरकोगमनेअतुराये॥४२॥
रामसहितयमपुरमहँजाई। पांचजन्यदियशंखबजाई॥ सुनतशंखध्वनितहँयमराजा। आयोआगूजोरिसमाजा॥
रामश्यामकहँकियोप्रणामा।लैगोपुनिलेवायनिजधामा॥४३॥ पूजनकियपोडशहुप्रकारा।नैननबहतिप्रेमजलधारा॥
दोहा–पुनियमबोल्योजोरिकर, मैंतुम्हरोहौंदास। करौंकाहमैंआपको, आयसुरमानिवास॥ ४४॥
सुनियमवचनतहाँभगवाना। मंदमंदमुखकियोबयाना॥ तासुकर्मवशगुनिअधिकारा। लायेसंदीपिनीकुमारा॥
सोगुरुसुतममदेहुमँगाई। ममशासनशिरधरियमराई॥४५॥ सुनिहरिवाणीसंयमनीशा।दियोतुरतसुतलायमहीशा॥
रामश्यामलैगुरुसुतकाँहीं। आयेलौटिगुरूगृहमाँहीं॥ दियोगुरूकहँगुरुसुतप्यारो।कहँलैहौंपुनिवचनउचारो॥४६॥
सांदीपिनिअतिआनँदपाई। रामश्यामकहँगिरासुनाई॥तुमसबविधिगुरुदाछिनादीन्ह्यों।कोउनहिंअसगुरुपूजनकीन्ह्यों॥
दोहा–जाकेतुमसमाशिष्यहैं, तागुरुकोमनकाम। कबहुँनकछुवाकीरहत, रहतमुदितवसुयाम॥ ४७॥
जाहुभवनअपनेदोउभाई। जगमेंकीरतिहोइमहाई॥ यहलोकहुपरलोकअतूली। कबहुँनकौनिहुँविद्याभूली॥४८॥
यहिविधिगुरुशासनकहँपाई। रामश्यामअतिआनँदछाई॥सुवरणस्यंदनचढितेहिंकाला।गमनेआनकदुंदुभिलाला॥

मारुतसरिसवेगहैजाका। घहरतमेघसरिसजेहिचाका॥ ऐसेस्यंदनचढ़िदोउभाई। आयेमथुरापुरीसोहाई॥ ४९॥
रामश्यामकहँलखिपुरवासी। भयेसकलअतिआनँदरासी॥ जेदिनबीतेबिनभगवाना। तेदिनबीतेबरपसमाना॥
दोहा–पुनिमथुराकेजनसबै, हरिपदनैनलगाय। मनहुँहेरानोसर्वसहु, गयेफेरिसबपाय॥ ५०॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे पंचचत्वारिंशस्तरंगः॥ ४५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–यदुपुरमेंमंत्रीप्रवर, कृष्णसखाअतिप्यार। शिष्यबृहस्पतिकोरह्यो, उद्धवबुद्धिउदार॥ १॥
हरिभक्तनमेंपरमप्रधाना। हरिबिनदूजोकबहुँनजाना॥ अंतरंगसंगीहरिकेरो। प्रीतिपात्रप्रभुकेरनिबेरो॥
ऐसेउद्धवकहँइककाला। करसोंकरगहिकैनँदलाला॥ बोलेमधुरवचनमुसक्याई॥ २॥ सखाजाहुद्रुतव्रजैसिधाई॥
मातुपिताममनंदयशोमति। ह्वैहैंमेरेविरहदुखितअति॥ जिनकोजायदेहुसमुझाई। ऐहैंव्रजमेंअवशिकन्हाई॥
नंदयशोमतिदुखनहिंकरहू। कछुककालउरधीरजधरहू॥ कान्हतुम्हारपुत्रकहवाई। अबनऔरकेह्वैहैंजाई॥
दोहा–असकहियोंकान्हरकह्यो, वहमाखनअतिमीठ। ताकीसुधिकरिकैहमहिं, लगतसुधासुठिसीठ॥
औरहुतुमबहुभाँतिबुझाई। विरहशोकसबदियहुमिटाई॥पुनिगोपिनकेनिकटसिधारी। यहपातीतुमदिहेहुहमारी॥
कहियोकोमलकोमलबतियाँ। नातोफटिजैहैतिनछतियाँ॥३॥गोपिनकेहमप्राणपियारे। हमपरतनुमनधनजनवारे॥
ममहितछोंड़िदईकुलकानें।मोहिंछोंड़िदूसरनहिंजानें॥ऐसीव्रजवासिनीवियोगिनि।मोहिंबिनशोकसिंधुकीभोगिनि॥
केवलव्रजमेंपरोशरीरा।तिनकोजियममढिगमतिधीरा॥ममपथलखतदिवसनिशिजाती।पपिहातकतपंथजिमिस्वाती
दोहा–लोकलाजकुलधर्मसब, तजेंजेमेरेहेतु। तिनकींमेंसबभाँतिते, सुरतिकरौंकुलकेतु॥ ४॥
सवैया–विरहानलतेसबदेहदहीममनेहकीबाँधीजँजीरिनीहैं।अँगुरीनमेंछालेपरेगनतेतजेभोजनपानहुजीरिनीहैं॥
रघुराजबुझाइयोऊधवजायसबैपहिलेकीअमीरिनीहैं। अबमेरेबिछोहतेप्यारीअहीरिनीह्वैगईलासीफकीरिनीहैं॥
दोहा–वृंदावनतेमधुपुरी, यदपितीनहींकोस। तदपिकोसकोटिनभई, व्रजवनितनबिनहोस॥ ५॥
सखाकरततिनकोसुधिमोरी। व्यथाहोतह्वैहैनहिंथोरी॥ जीवतपावहुधौंअबनाहीं। यहसंशयमेरेमनमाँहीं॥
पैहमआवतसमेंपुकारी। कह्योतिन्हेंआइहौंसिधारी॥ यहआशाअटकेजियह्वैहैं। विनागवँनतुवतनुतजिदैहैं॥
अबनहिंऊधवकरहुविलम्बा। जाहुहोहुव्रजकेअवलम्बा॥ मेरेविरहवारिनिधिमाँहीं। बूड़तगहहुसुंदरिनकाँहीं॥
तेमोहुँकोतनुमनतेप्यारी। तिनसुधिबिसरतिनाहिंबिसारी॥ कारजवशमेंरहोंइहाँहीं। प्राणवसतव्रजनारिनमाँहीं॥
दोहा–मेरेअरुव्रजतियनके, जुरतरहेजबनैन। कबहुँपलकपरिकल्पसम, करतेरहेअचैन॥
बहुतकहोंकातुमहिंबुझाई।जसमानहिंतसदिहेहुमनाई॥व्रजनारिनगाथासुखगावत।वचनकढ़तनहिंगरभरिआवत॥
उद्धवप्रीतिरीतिहैजैसी। व्रजमेंजायदेखिहौतैसी॥ वेकालिंदीकुंजनकेरी। केहिविधितजेंसुरतिमतिमेरी॥
त्रिभुवनराजविभौबहुनीको। व्रजसुधिकरतलगतमोहिंफीको॥गोपीप्रेमपयोनिधिभारी। व्रजधरणीवटपत्रसुखारी॥
ादिबालखेलततनुमेरो। लहिसुरकारजपवनघनेरो॥ लागिअक्रूरतरंगमदाई। वटदलतेदीन्ह्योंबिलगाई॥
दोहा–औरहुअसकहियोउन्हैं, हमतुमनहिंबिलगंत। जहाँकंततहँकामिनी, जहँकामिनितहँकंत॥ ६॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिप्रभुकोआयसुपाई।उद्धवअतिशयआनँदछाई॥करिवंदनयदुनंदनपायन। चढ़िस्यंदनगवँन्योअतिचायन॥
गयोनंदगोकुलनृपराई॥७॥ अस्ताचलअथवतदिनराई॥ साँझसमैसुरभीचरिवनते। आवतरहींसमैसरिकनते॥

उड़ीचहूँकितगोखुरधूरी । ठौरठौरव्रजमेंगयपूरी ॥ ८ ॥ कहुँकहुँवृषभमहामतवारे । लरहिंधेनुहितसींगसुधारे ॥ गर्जहिंमेघसरिसचहुँओरा । चलहिंधेनुपाछेसवठोरा ॥ बोयनभारभरींतहँगाई । विचरहिंचहुँकितआनँदछाई ॥

दोहा–तिनकेपाछेवाछरा, चलहिंकरतमृदुशोर । मानहुँनिजनिजमातुप्रति, पयहितकरहिंनिहोर ॥

गौवैंनिजबछरनप्रतिधावैं । रोकनकहँअहीरकहुँआवैं ॥ ९ ॥ जहँतहँबछराकूदिरहेहैं । पियनहेतुअतिशयउमहेहैं ॥ छायरह्योगोदोहनशोरा । प्रतिगोशालनमेंचहुँओरा॥कहुँकोउकहहिंबाछराछाँड़हु । कहुँकोउकहैंअबैकछुआड़हु ॥ कोउकहधेनुधूमरीधोरी । हैंकहँनीलीलालकलोरी ॥ कोऊकहतदूधलैजाहू । दोहनिदेहुकहतकोउकाहू ॥ कोऊगोपतहँवेणुबजावैं । कृष्णविचित्रचरित्रनगावैं ॥ १० ॥ ऐहैंआजुविशेषकन्हाई । असगोपीअभिलापबढ़ाई ॥ भूपणवसनपहिरिअतुराई । खड़ींपंथमहँनैनलगाई ॥

दोहा–ऐसहिंअभिलाषाभरे, गोकुलगोपीग्वाल । चितवहिंमथुराकीडगर, आवनचहतगोपाल ॥

रामश्यामकेचरितसोहावन।गोपीगायरहींमनभावन॥११॥कोउगोकुलकेग्वालिनिग्वाला । आवनहेतुनंदकेलाला ॥ पूजहिंदेवीदेवमनावैं । धूपदीपनैवेद्यलगावैं ॥ अग्निअतिथिरविपितरनपूजैं । जामेंसकलमनोरथपूजैं ॥ कहहिंप्रीतिअबछोडिविहारी । औरठौरनहिंहोयहमारी ॥ जन्मदेहिंतेहियोनिविधाता।जहँनिरखहिंनैननदोउभ्राता॥ असकहिफूलनमालचढाई । करहिंवंदनाशशिनवाई ॥ कृष्णप्रीतिव्रजखोरिनखोरी । विहरतिमनुसरूपधरिगोरी ॥ धामधामअरुठामहिंठामा । निकसिरह्योमुखश्यामहिंश्यामा ॥

दोहा–कुरुपतिवहगोकुलनगर, लखिनपरचोअसकोय । हायश्याममिलिहोकबै, असनकहतजोहोय ॥

ऐसहुउद्धवतहँनहिंजोवत । श्यामनामसुनिजोनहिंरोवत॥१२॥फूलेकुसुमढरतमकरंदा।हरिविरहीमनुआँसुनवृंदा॥ बैठतरुनखगशोरसुनावत । मानहुँकहहिंकृष्णअबआवत॥कुंजनकुंजनगुंजहिंभौंरा । कहहिंमनहुँकहँनंदकिशोरा॥ विकसहिंसरसिजसरनिप्रभाते। मनुहरिआगमगुनिहरषाते॥साँझसमयमुद्रितनहिंभाये।मनहुँदुखीगुनिहरिनहिंआये॥ कोककराकुलमदगुमराला । टेरतमनहुँहायनँदलाला ॥ गौवैंमथुरामगकछुजावैं । हरिहिनतकिरोवतफिरिआवैं॥

दोहा–हरिणीअरुहरिणीसकल, जेव्रजवसतसदाहिं । धावतकुंजनिकुंजप्रति, मनुहेरहिंहरिकाँहिं ॥

उद्धवप्रेममयोव्रजदेख्यो । धन्यधन्यत्रिभुवनतेलेख्यो ॥ असलागतउद्धवकेमनमें । कहुँतेकृष्णकढ़तयहिछनमें॥ लख्योनकोनोछलव्रजमाँहीं । जहँहरिचरणचिह्नहेंनाहीं॥खातपियतबागतअरुबैठत । हँसतवतातकढ़तअरुपैठत॥ गोकुलमेंसवटोलहिंटोलें । गोविंदगोविंदगोविंदबोलें ॥ सोहतश्यामरंगयमुनाको । मनुहरिध्यानप्रगटरँगताको॥ मंदधारभेकृशिततरंगा । हरिविनबाँधतमनहुँअनंगा॥निरखिपरतिपियरीव्रजधरणी । कृष्णविरहमनुभईविवरणी॥

दोहा–उद्धवव्रजमंडललख्यो, रँग्योकृष्णअनुराग । परमप्रमोदितकरतभो, त्रैप्रणामबड़भाग ॥

रहेसेलतेबाहरबाला । उद्धवकोरथनिरखिविशाला ॥ तेद्रुतदौरिकह्योसबपाँहीं । नंदलालआवतव्रजमाँहीं॥ बालवचनसुनिकेव्रजवासी । धायेदेखनलहिसुखरासी ॥ कहँहैंकहँहैंअसरवभयऊ । घरीएकसबदुखमिटिगयऊ॥ नंदहुँनिकसिबाहिरेआई । पूँछनलागेशिशुनबोलाई ॥१३॥ देख्योउद्धवकोरथजबहीं । जान्योकृष्णसखाहितबहीं॥ हरिकोमिलनमोदभोआधा।चलेमहरमिटिगेकछुबाधा॥आगूचलिउद्धवकहँलीन्ह्यो।नंदहिंलखिसोउरथतजिदीन्ह्यो॥

दोहा–आयआशुदौनंदढिग, कीन्ह्योचरणप्रणाम । लीन्ह्योनंदलगायउर, उद्धवकोतेहिठाम ॥

भयोतासुउरआनँदधामा । मानहुँआजुमिलेघनश्यामा ॥ पुनिकरगहिगेभवनलेवाई । दीन्ह्योपर्यकहिंबैठाई ॥ यदुपतिसमजाना । नंदकियोसतकारमहाना॥१४॥विविधभाँतिमेवापकवाना।अरुव्यंजनमनरंजननाना॥ निजकरलाये । सादरउद्धवकोंहिजिमाये ॥ पदपसारितांबूलखवाई । सुखितसेजउद्धवबैठाई ॥ नंदगनिमाने । मेटिपंथश्रमवचनवखाने ॥ मधुरगतेउद्धवभलकीन्ह्यो । आयजोहमकहँदर्शनदीन्ह्यो॥ तुमहिंअनिप्यारे । प्राणहुँतेप्रियवदोदमारे ॥

दोहा-अवहमपैकरिकैकृपा, कहहुसकलकुशलात। रामश्यामकोछोंड़िमम, हगनहिंद्वितियदेखात ॥१५॥

हैंवसुदेवकुशलवड़भागी। सखाहमारपरमअनुरागी॥मिटनसहितवसतगृहनीके। अहैंसुहृदउनकेप्रियजकि ॥१६॥ भलीभईवैरीपगछूटी। भलीभईचिंताचितटूटी॥ भलीभईजोभ्रातसमेतू। कंसमारिगोपापनिकेतू॥ निजपापहिंतेलह्योविनासा। करतरह्योसाधुनकहँत्रासा ॥ मानतरह्योवैरयदुकुलको। फोरनचह्योधर्मकेपुलको ॥ पैइकअचरजलागतप्यारे।लघुवालककंसहिंकिमिमारे१७॥उद्धवकहहुएकअवबाता।जेहिंसुधिआवतमानभुलाता ॥

दोहा-कबहूँकाहूसोंकहूँ, कान्हरसुरतिहमारि। करतअहैंकीनिपटकै, दीन्ह्योंहमहिंबिसारि ॥

कबहुँयशोमतिकीसुधिकरहीं। जेतिनकेदुखपावकजरहीं॥ जबतेमैंमथुरातेआयो। तबतेयशुमतिअन्ननपायो॥ श्यामश्यामरटमुखमेंलागी। जरतिवियोगदशाकीआगी॥ उद्धवकहहुसखालालनके। रहेअनोखसुवनग्वालनके॥ तिनकीकरतकबहुँसुधिप्यारो। धौंव्रजकोखेलिवोबिसारो॥ केहिंवनआजुचरावनजाँहीं। रहोपूँछतोअसजिनपाँहीं॥ तिनकीसुरतिकरतकहुँलाला। कीधौंभूलिगयोयहिकाला॥ जिनगोपनकेघरमहँजाई। माखनखातोरह्योचोराई॥

दोहा-करतसुरतितिनकीलला, उद्धवदेहुबताय। सरबसमेरोमधुपुरी, लीन्ह्योंदैवछोड़ाय ॥

उद्धवकहहुकान्हव्रजकेरी। करतकबहुँसुधियहिदिशिहेरी॥ जाव्रजमेंकरिमाखनचोरी।खातफिरयोवहखोरिनखोरी॥ याव्रजकोहैकान्हरनाथा। उद्धवकहोंछुयेतुवमाथा॥ वृंदावनकोसुमिरणआवत। जहँरह्योवाँसुरीवजावत॥ गिरिकीसुधिभूलीकीनाँहीं।जेहिंदिनसातधरयोकरमाँहीं१८उद्धवकबहुँआइहैलालन।कबहुँकरिहिंग्वालनकुलपालन। कबहुँआपनेसखनविलोकी। कबहुँकरिहिगोकुलहिंअशोकी॥कबहुँनरह्योनिठुरअसलाला।ऐहैइतविशेपिकेहुँकाला॥

दोहा-कौनदिवसवहहोइगो, जबऐहैंव्रजलाल। पूरणचंदसमानमुख, कबलखिहोंवनिहाल ॥

जबऐहैंव्रजनगरकन्हाई। आननआभदिशानभछाई॥ जेहिंआननमहँसुभगनासिका।मंदहँसनिआनँदप्रकाशिका॥ प्रफुल्लितनीरजसमयुगनैना।चितवतकेहिंनभरतचितचैना।दावानलतेव्रजहिउबारयो।सातदिवसनखपरगिरिधारयो। वृपभासुरकालीभयतेरे। लियबचायव्रजग्वालघनेरे॥ जबजबआयपरीव्रजभीती। लियबचायकान्हरअरिजीती॥ उद्धवअवव्रजकोनवचैहै। हमहिंयशोमतिकोसुखदैहै॥ २०॥ कोवृंदावनधेनुचरैहै। कौनमाधुरीवेणुवजैहै॥ कोदधिमाखनदूधचोरैहै। कोहँसिहँसिमृदुबैननतैहै ॥

दोहा-नंदयवाकहिकौनअस, गोदरहैमोहिंजोन। मैयाभोजनदेहुमोहिं, कहिहैयशुदेकौन ॥

उद्धवकान्हसुरतिजबआवति। तबदवारिसीदेहँजरावति॥ सिगरेअंगशिथिलह्वैजाहीं।फिरिकरहिकारजकछुनाँहीं॥ दिनबीततनहिंविनाकन्हाई। नैननींदनाहिंनिशासिराई॥२१॥इयमुनाकीकूलनिकुंजें। जिनमेंअलिकुलमंजुलगुंजें॥ तेकान्हरविनसोहहिंनाहीं। जिमिविनजीवशरीरवृथाहीं॥ यागोवर्धनगोसुखदाई। भोदुखदायकविनाकन्हाई॥ यावृंदावनअतिरमणीको। विनलालनलागतअतिफीको॥ परेश्यामपगजेहिंथस्थाना। तेउपटेव्रविगयोपपाना॥

दोहा-तेसुखपातीअबभये, लखिछातीफटिजाति। केहिंभाँतिव्रजमेंबसैं, नहिंजातीदिनराति॥

जहँजहँखेलतरहेकन्हाई। तेथलअबकेखेलखिजाई॥ येइंथलतबरहेरसाला। तेइंलखततनुहोतदुशाला॥ उद्धवकेहिविधिसुधिबिसरावैं।असकहुँनाहिजहँलालनभावैं२२उद्धवरामश्यामसुतदोऊ।इनहिंकहतसुरवरमयकोऊ॥ देवकाजहितव्रजमहँआये। ऐसहिहमसोंगर्गहुगाये॥२३॥ कंसरह्योअतिशयरणयोग। दशहजारदार्यीकरजोग॥ निमिमहुमुष्टिकचाणूरा। शलतोशलकूटहुबलपूरा॥ नागकुवलयापीडमदाना। सुहमनगममजोपलवाना॥

दोहा-इनसबकोअतिसदजहीं, इनेरामअरुश्याम। विनश्रमज्योंगजपदुहनिमि, इनैंमिदवलधाम ॥२४॥

तीनतालकीधनुटलाई। वज्रसारसमजेहिकठिनाई॥ तादिएककरनेगहिनीग। उमहंहानिमिमिधुखोरा॥ सातदिनानखपरगिरिधारयो॥२५॥वृषभरुवधेनुकसंहारयो॥तृणावर्त्तबकआदिसुगर्ग॥इन्योमिलनहिमदहिंगिरिधारी। तातेअसमनपरतविचारा।रामहुँश्यामईशअवतारा॥निरखिहुदुनकरमरलसुभाऊ।नहिंजनानमोहिंईश्वरभाऊ।२६॥

दोहा–कान्हविरहतेप्राणमम, कढ़नचहतयहिकाल । उद्धवसमुझावतकहा, रचिरचिवातनजाल ॥

यहिविधिउद्धवनंदयशोमति । कियव्यतीतवतरातनिशाअनि ॥चारिदंडजवरहीत्रियामा॥उठतभईसिगरीव्रजवामा॥
इकएकनकोकहीपुकारी । उठहुसवैसखिकरहुतयारी ॥ तुरतसवैदधिमंथहुआली । ऐहैंआजुअवशिवनमाली ॥
जागितुरंततहाँव्रजनारी । निजनिजभौनदीपवहुवारी ॥ निजनिजगेहलीपिअरुझारी।गृहकीसवविधिसुछविसँवारी॥
महामधुरदधिमंथनलागीं।यदुपतिचरणकमलअनुरागीं॥हरिऐहैंअसकियेविचारा।कीन्हेंसकलभाँतिशृंगारा ॥ ४४ ॥

दोहा–इकदृगसोंदधिदेखतीं, इकदृगभरिअनुराग । मथुराकीमगहेरतीं, माधोमेंमनलाग ॥ ४५ ॥

ऐंचहिंरजुयुगपंकजपानी । जगमगातजेवरछविखानी ॥ होतकरनकंकणझनकारी । फैलतिवदनचंदउजियारी ॥
लफतिलंककछुकछुकुचभारा । टूटनचहतमनहुँहरिवारा॥उपरउरोजनडोलतहारा।मनुयुगशिवशिवसुरधुनिधारा॥
डोलतकुंडलअमलकपोला।मदनमीनमनुछविसरलोला॥उदितपूरशशिमुखछविजागा।मनउमँग्योहरिकोअनुरागा।
ऐंचतरज्जुवपुपचलिजाँहीं । मनहुँकनकलतिकालहराहीं ॥ चंदनचंद्रकयदपिलगावैं । तदपितजीविरहानलजावैं ॥

दोहा–भैरविआदिकरागिनी, भैरवआदिकराग । प्रातकालकेऔरसव, करिकैसुरनविभाग ॥

श्रीअरविंदविलोचनकेरो । गावहिंगोपीसुयशघनेरो ॥ स्वरलगायलेतींवहुताना । नकिजातींतीनऊप्रमाना ॥
वोलतसुंदरसुरनमथानी । मानहुँदेतिखरजसुरसानी ॥ गोपीगावनकीध्वनिजाई । रहतिदेवलोकनलगिछाई ॥
श्रीगोविंदकेगुणगणगाना।करतअमंगलभंगदिशाना॥४६॥श्यामसुयशव्रजमेंचहुँओरा।छायरह्योअतिमंजुलशोरा ॥
सोसुनिउद्धवजानिप्रभाता । गयेयमुनमज्जनहितगाता ॥ उदितभयेपूरवदिशिभाना । पूरणभयोप्रकाशदिशाना ॥

दोहा–उद्धवकोस्यंदनकनक, रचितपरमछविवार । खडोरह्योनिशिभरनृपति, निकटनंदकेद्वार ॥

।निप्रभातसवैव्रजनारी । दधिकोमथिवोदियोनिवारी ॥ नंदद्वारह्वैयमुननहानै । जुरिव्रजवनितनकियोपयानै ॥
दनस्यंदनउद्धवकेरो । व्रजनारीनिजनैननहेरो ॥ ह्वैकैचकितभईतहँठाढीं । पूँछतभईशंकउरवाढ़ी ॥
ठीकौनकोयहरथआयो।नंदद्वारकछुउजरवनायो॥४७॥कोउकहआयोअवशिकन्हाई।फेरितातिव्रजकीसुधिआई॥
ोउकहश्यामवडोनिरमोही । कवहुँनऐहैंव्रजसुधिवोही ॥ काहेकोवहव्रजमेंऐहैं । कौनसुमतियहवातासिखैहैं ॥

दोहा–कोउपुनिवोलीसुनिसखी, असमेरेमनमाँहिं । रथचढिगमनतनंदपुनि, कान्हलेवावनकाँहिं ॥

ोउकहयहूवातनहिंठीकी । सुनहुसजनिसिगरीममजीकी ॥ नामअक्रूरक्रूरनिरदाया । जाकोप्रथमहिंकंसपठाया ॥
ोआयोजेहिकारजहेतू । सोमैंकहेदेतिहौंनेतू ॥ प्रथमहिंव्रजमंडलमहँआयो । रामश्यामकोमधुवहकायो ॥
रलैजायकंसकुटवायो । ठगिनंदहिंव्रजकोपठवायो ॥ अवव्रजवालनपालनकाँहीं । आयोपुनिकैयहव्रजमाँहीं ॥
हविश्वासघातकोपूरा । नामअक्रूरकलुपकोकूरा ॥ निजस्वामीकोभोसगनाँहीं । तौअवसगह्वैहैकेहिकाँहीं ॥

दोहा–कोउकहयहपायोकहाँ, हरिव्रजतेलैजाय । इतव्रजतियउतकंसकी, दियआयुपाघटाय ॥

ोउकहहायफेरियहआयो।अवधौंचाहतकाहकरायो॥कमलविलोचनप्राणपियारो।करिदीन्ह्योंनिननिसोंन्यारो ४८॥
नुलगायकेविरहदवारी । डारीजारिसकलव्रजनारी ॥ विरहजरीलैमासहमारी । जाययमुनतटपहँदुखकारी ॥
उऋणहेतुनिजस्वामीकेरे । तारनहेतुपितरवहुतेरे ॥ आमिपपिंडदानयहकरिहै । ऐसोअपशअवशिजगभरिहै ॥
कोउकहभईसाठिवुधिनाशा । अवहूँराखतजीवनआशा ॥ जसयहदियोहमहिंदुखपापी । तसयमपुरह्वैहैसंतापी ॥

दोहा–कोउकहअसतिसरीकह्यो, मानतिनहिंमतिमोरि । पुनिकावदनदेखाइहै, करिकैअसचढ़िसोरि ॥

यहिविधिकहहिंविविधविधिवानी । रथविलोकिव्रजतियचौआनी॥उतैयमुनउद्धवह्नुनहाई।प्रातकर्मकरिकेअतुराई ॥
भूपणवसनसाजिशृंगारा । वंदिद्वंदपदनंदकुमारा ॥ व्रजनारिनसंभापणहेतू । देखनकृष्णप्रेमकरसेतू ॥
हियमहँकीन्हेंपरमहुलासा । उद्धवगमन्योनंदनिवासा॥करतमनहिंमनविविधविचारा । कहँमिलिहैंगोपनकारा ॥

जिनसोंकहौंसकलसंदेशू। जोदीन्ह्योंयदुनाथनिदेशू ॥ जोइकांतसिगरीमिलिजाँहीं। तौसमुझायदेहुँसबकाँही॥
दोहा–यहिविधिउद्धवगुनतमन, नंदनिलैनियरान। तबताकेरथकेनिकट, गोपिनयूहदेखान ॥ ४१ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे षट्चत्वारिंशस्तरंगः ॥ ४६ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–आवतउद्धवकोतहाँ, अवलोक्योव्रजवाल। प्रथमहिंसबकेमनपरचो, यहसाँचोनँदलाल ॥
हैंसुंदरयुगबाहुविशाला। पहिरेनवनीरजकरमाला ॥ पीताम्बरअतिशयछविछावै। मुखसरोजद्दगमीनजनदावे॥
अमलआरसीसरिसकपोला। मुक्तनयुक्तसुकुंडललोला ॥ नीरजनैनरुचिररतनारे। रतनजड़ितशिरकीटसँवारे ॥
करकंकणकटिमेंचौराशी। हीरनहारहियेछविराशी ॥ मुखयौवनजागतिअरुणाई। महामधुरमुसक्यानिसोहाई॥
नवनीरदसमश्यामशरीरा। सोहतचरणमंजुमंजीरा ॥ ऐसोकृष्णसखाकहँदेखी। तियसबपायोमोदविशेखी॥
दोहा–आयसबैव्रजसुंदरीं, भृकुटीनैनचलाय। मंदमंदभाषणलगीं, मंदमंदमुसक्याय ॥
सुंदरपुरुषश्यामअनुहारी। तैसहिंभूषणवसनहुँधारी। कौनअहैयहरूपअनूपा। यहरथयाहीकेअनुरूपा॥
कौनदेशतेव्रजमेंआयो। भागवंतकाकोहैजायो ॥ नंदनिवासवासकसकीन्ह्यों। कैसेकैव्रजपतिकहँचीन्ह्यों॥
जानिपरतअतिमृदुलसुभाऊ। जाननहितकछुकरहुउपाऊ॥ धौंहरिकेसमीपतेआयो।जननिजनकपहँकृष्णपठायो॥
हमहिंनिरखिअतिशयरतिराँचो। सजनीसखाश्यामकोसाँचो ॥ चलहुसबैपूँछहिंढिगजाई।देहैभेदविशेषबताई॥
दोहा–असकहिसिगरीगोपिका, भरींअलेखउछाह। उद्धवकहँद्रुतदौरिकै, घेरिलियोमगमाहँ ॥
यदुपतिप्रीतिरीतिमहँसानी। बोलतभईमहामृदुबानी ॥ कोहौकौनदेशतेआयो। कौनहेतुइतकौनपठायो ॥
कबतेकीन्हीनंदचिन्हारी। जानहुँतुमजोहैंगिरिधारी ॥ धौंउनहींतुमकाँहिंपठायो। रथचढ़िकैमथुरातेआयो ॥
धौंतुमहौअक्रूरकुमारा। जोलैगोव्रजप्राणअधारा ॥ हरिकोहरिव्रजबापजरायो। राखउठावनपूतसिधायो ॥
आवतअसहमरेमनमाँहीं। तुमनिवसहुहरिसंगसदाहीं ॥ तुमहिंनिरखिबाढ़तिउरप्रीती। लागतनाहिंअक्रूरकसभीती॥
दोहा–तातेजोतुमहोहुअब, आयेजौनेहेतु। सोबतायदीजैसकल, गोपहुनाहिंमतिसेतु ॥
सुनिव्रजवनितनकीमृदुवानी।उद्धवअतिशयआनँदमानी॥तिनहिंमनहिंमनकियोप्रणामा॥बोल्योवचनमहासुखधामा॥
मैंहौंयदुपतिपदलघुदासा॥तिनहींकीसबविधिमोहिंआसा २ मोहिंरमापतिनिकटबोलाई।कह्योविविधविधिवैनबुझाई॥
पठयोनंदयशोमतिनेरे। समुझावनकहिवचनघनेरे ॥ तुम्हरेहीतलशीतलकारी। असपातीदियकुंजविहारी ॥
औरहुकह्योबहुतसंदेशू। सोकहिहौंइकांतलहिदेशू ॥ व्रजाहिंआइतुवदरशनपाई। लियोजनमनिजसफलबनाई॥
दोहा–चलियेकहूँइकांतमें, अबसिगरीव्रजनारि। तहँप्रभुकोसंदेशमें, देहौंसकलउचारि ॥
उद्धववचनसुधांबुधिमाँहीं। करिमज्जनगोपिकातहाँहीं॥ जानिश्यामकोसखापियारो। करिउरमेंअभिलाषअपारो॥
अतिविनीतह्वैमृदुमुसक्याई। मंजुलवचनपूँछिकुशलाई ॥ तिमिकरिकैसतकारमहाई। [illegible]
चलहुयमुनतटकृष्णपियारे। तहँहुकह्योजेहिंहेतुसिधारे ॥ असकहिगईयमुनतटमाँहीं। थलइकांतकुंजनकीछाँहीं॥
[illegible] । गोपीआसनदियोबिछाई ॥ तेहिंआसनपरउद्धवबैठे। यदुपतिप्रेमपयोनिधिपैठे ॥
दोहा–उद्धवकोचहुँओरते, घेरिसकलव्रजबाल। बैठतभईसनेहयुत, बोलींवचनरसाल ॥ २ ॥
उद्धवतुमकोजान्योजान्यो। जेहिंहिततुमआवनइतठान्यो॥पठयोश्यामतुमहिंव्रजमाँहीं॥समुझावनमातापितुकाँहीं॥
उनकोनंदयशोमतिदोई। प्रीतियोगहैंऔरनकोई ॥ हमतोहैंव्रजनारिगँवारी। काहेकोसुधिकरहिंविहारी॥

होतरह्योजिनबिनयुगसमछिन । तिनबिनबीतेहायबहुतदिन॥हरिबिनजीवनअहैवृथाहीं । पापीप्राणकढतकसनाँ
यहपपिहाहैमीतहमारो । पियपियकहिकछुकरतअधारो ॥ परतिदीठियमुनैजबजाई । तबकछुनैनहोतिसियरा
रहेजेहरिसँगमीतहमारे । तेअबभयेसकलदुखकारे ॥ रहीसुखदजोयहब्रजधरणी । सोअबभईमहादुखभरणी
रह्योशशीप्रथमहिंसुखदाई । सोनिजकरनदवारिलगाई ॥ रहींजेकुसुमसेजअतिकोमल । तेकृपाणकीधारभईभ

दोहा—यहिविधिकरहिंविलापबहु, करिगोविंदगुणगान । तलफिरहींब्रजकीवधू, क्षणक्षणदुखअधिकान ॥

रोदनकरहिंपुकारिपुकारी।दीन्हीतनुतेलाजनिकारी॥ध्यानकरहिंयदुपतिकीमूरति।चौंकिकहहिंकहँसाँवलिसूरति
तहँकहुँतेइकअलिउड़िआयो । बैठोनवलननिकटसोहायो॥उद्धवकेअपनेमधिमाँहीं।लखिब्रजवनितामधुकरकाँ
कहँनहेतुविरहाकुलबानी । तेहिंमधुकरकहँउद्धवमानी ॥ यहप्रीतमकोपठयोआयो । वरणसमानमीतकहवाय
कहनचहतहरिकोसंदेशू ॥ यदिनहिंविरहव्यथाकरलेशू ॥ तातेहमहिंप्रथमकहिदेहीं । मनकीपुनिसुनाइहैंकेहीं

दोहा—असविचारिब्रजसुंदरी, उद्धवकाँहसुनाय । कहनलगींवहिभ्रमरसों, विविधभावदरशाय॥ ११॥

गोप्युवाच ।

भ्रमरगीत—रेरेमधुकरयाब्रजमेंतूकैसेकैचलिआयो । जानिपरतयहकपटीकारोकान्हरतोहिंपठायो ॥
जौनछोंड़ियहअनुपमआनँदगोकुलकुंजगलीको । भयोकंतकुबजाकुरूपकोनायकछैलछलीको ॥
ताकेतुमहुँमीतहौमधुकरवदनपीतदरशानो । तातेसबहवालमथुराकोहमहिंपरोअबजानो ॥
कान्हकूबरीकेपगपरिपरिबहुतकबारमनायो । पैकुलटाकेसेहुनहिंमान्योतबतुमहूँशिरनायो ॥
श्यामभालकीकेसरितापदसोतुववदनलगीहै । सोतुम्हरीतुम्हरेठाकुरकीकीरतिजगतजगीहै ॥
मधुपजाहुमधुपुरीलौटितुमइतनहिंकामतुम्हारो । कहियोउन्हेंसँदेशोऐसोछुवौनचरणहमारो ॥
कुबरीकुचकुंकुमतेरंजितउनकेउरकीमाला । हमरेउरमहँपरसहोतमहँह्वैहैदुसहकसाला ॥
अबनहिंकामकान्हकोब्रजमेंकाहेकोइतआवैं । मानवतीमथुराकीनारीतिनकोअबशिमनावैं ॥
ग्वालसमाजविहायलालअबराजसमाजविराजे । भूलिगयोमाँगबमाखनकोदरवाजेदरवाजे ॥
यदुवंशिनमेंउनकीचोरीकरिसुखप्रीतप्रकासी । जिनकेतुमसेदूतजगतमेंतिन्हेंहोतिहठिहाँसी ॥ १२ ॥
तुम्हरीऔरश्यामकीसंगतिसाँचीहैहमजानी । अपनीरीतिसिखायदईतुमउनहूँकीछलसानी ॥
तुमवनवनमेंसुमनसुमनकोकरिकैसबरसपाना । पुनितेहिंसुमनओरनहिंझाँकहुकबहूँसाँझविहाना ॥
ऐसोवहकारोछलवारोप्यारोनंदकुमारो । जाकेहेतुविसारोभारोहमसारोपरिवारो ॥
मधुकरसोइकबारअधरकोआसवपानकराई । चलोगयोमथुराकोमाधवछलियाहमेंछिपाई ॥
जोकारेनसोंलगनलगावततासुयहीगतिजोई । वहवाकेहितदेहदेतपैताकेदरदनहोई ॥
पैउपजतअफसोसएकमनसोतुमदेहुमिटाई । कौनेकारणसोंवरुकमलाहरिपदरहीलोभाई ॥
जानीजानीहमअबसोऊपियकीकोमलबानी । घरीघरीछलभरीनजानतिसुनिसुनिताहिलोभानी ॥१३॥
भौंरजायकहियोकमलासोंयहहमारसंदेशा । भूलिनजायदेखिमनमोहनमनमोहनकरवेशा ॥
सुंदररूपसुधासमबतियाँऊपरमृदुलसुभाऊ । भीतरभरोछैलकेछलबलप्रगटतसमैप्रभाऊ ॥
देखतसूधोसुंदरछोटोपावकरतगंभीरा । जानिलेहुयदुपतिकहँतैसेज्योंनावककोतीरा ॥
मधुकरऐसेठाकुरकोतुमगावहुबहुतबड़ाई । सोहमरेमनमहँअबकैसेसाँचीपरैजनाई ॥
जोनहिंजानेकान्हरकेगुणसोतिनकोसतिमानै । सोउसमेंकैसेसतिमानैजोउनकेगुणजानै ॥
ब्रजमेंएकसंगमेंइतनीउनकीओरहमारी । बीतीटमिरिखेलबहुखेलतजानिपरीअबसारी ॥
उनकोनहिंअयोगकछुमधुकरअसमनकाँहिंएझावें । अर्जुननामकपांडुसुवनकेकान्हरसखाकहावें ॥